

অনুম্পা কেমিক্যাল: কলিকাতা

# প্রবাসী, ৪৭শ ভাগ, প্রথম খণ্ড, ১৩৫৪ সূচীপত্ত

## বৈশাখ-আশ্বিন

# मन्नापक - बीरकनात्रनाथ ठटहानाधात्र

## লেখকগণ ও তাঁহাদের রচনা

नीयमानवपु रख			<b>অ</b> কুমারলাল মাশগুন্ত		
—ধনতন্ত্রী সভাভার সংঘাতে প্রাণিজগতের ধ্বংস	•••	81	— বিরোপাস্ত (সচিত্র পঞ্চ)	44	, <b>)</b> ?
—ধনতান্ত্ৰিক উৎপাদনে আর্থিক সম্পাদের বিনাশ	•••	260	শীকুমুদরঞ্জন সলিক		
শ্রী শ্রনিলকুষার বন্দ্যোপাধার			জ্ঞস জঙ্গ (কবিডা)	•••	2,1
—বিশ্লেষণী মনোবিঞ্জানের সূপস্ত	•••	440	—একেহি ( ঐ )	***	2
শ্রীমপুকুগচন্দ্র চৌধুরী			—বিদায়-আরডি ( ঐ )	•••	98
वटपटमञ्ज जाका	•••	865	क्षेत्रभागाममाम (४		
নী অপূৰ্বাকুক ভট্টাচাৰ্য্য			– বেদনার বিনিমধ্যে (কবিতা)	1 ===	87
— मृंख- धारगात भित्न सक्ष अत्र (कविका)	•••	-	শ্ৰীগোশীনাৰ সেন		
শ্ৰীৰসিভাকুমারী বস্থ			—ভারতীর অভতবের আবিধার	•• ·	4>
— পশ্চিম খাটের প্রাপ্তে	•••	467	बैंशिक्षनाथ मृत्यांनास्त्र		
ঐ অমিঃসুমার দত্ত			—সাওতাল আইনে নারীর স্থান	•••••	>+
— পুথিবীর <b>অভ্যন্ত</b> র (সচিত্র)	•••	393	<b>६०क प्लिन, এ</b> স. এম.		
क्रियार्क्यक्रमात्र शःकाणाशास			—হাইছুল ও শিল-শিক্ষা	•••	۹;
—ভারতের শিক্ষা ভয়ে কলা-শিলের স্থান	•••	39	<b>ंभ क</b> शरी मध्या ८५		
আশ্ৰাফ সিদ্দিকী			वाःमा कावात अ-वाःला मक	•••	÷.
—মেঘমলার (কবিভা)	***	296	द्यैक्टिक्टक मूर्याभाषाव		
मैं बाल्टराव मानाव		•	পৃথিবীর বৃহত্তম দূরবীণ (সচিত্র)	***	2 95
শ্ৰক্শ (ক্ৰিডা)	•••	487	विजीवनमन् त्रात्र		
—কাৰা ও জীবন ( ঐ )	•••	796	—শিবনাথ জন্মশতবাধিকী	•••	80-
श्रीहेन्सित्रा (पर्वे)		•	मस्थान (अब)	•••	222
বৰীস্ত্ৰ-সন্ধীতসাৰ	•••	7-05	শীতারাপদ রাহা		
শ্রীভ্রমা সেন		• •	শেব অধ্যার (পঞ্জ)	•••	> 9 =
ধশের উপর আধুনিক বুগের আক্রমণ	•••	4.3	<b>জীদিনীপ দাশগুপ্ত</b>		
वैद्धिश विश्वाम			—দিন আগত ঐ (কৰিতা) 🐞	•••	عندو
—বাংলা শিশু-সাহিত্য সম্বন্ধে করেকটি কথা	•••	660	विशेनवध् भाग		
ঞ্জিকরশাময় বস্ত			- ভাৰত-মাৰ্কিন বাণিজ্য	•••	ern
—সেদিন মিলায়ে পেছে (কবিভা)	•••	292	क्षेत्रोतनष्टक पाम		
— বলিবার কথা ছিল ( ঐ )		698	শ্রীষ্ট্র ও সংস্কৃত সাহিত্য	•••	٤٠)
क्रिक्वानी (मनक्ष			—-श्रीवीदनमध्य कंडांडांडा		
—হু'ল্পনে বাঁধিব ঘণ্ণ (কৰিতা)	***	624	কুলপঞ্চীতে সেকালের সামাজিক চিত্র	•••	دح
श्रिकश्चर्याम गानश्चरानी			ত্ৰিবেণীৰ জগন্নাৰ ভৰ্কপঞ্চানন (সচিত্ৰ)	•••	2 8 4
—বাধীন ভারতে কুবি-পরিকল্পনার একটি দিক	***	928	—"এই ও সংস্থৃত সাহিত্য" (স্বালোচনা)	•••	*
व्यादकवयमार सम्बर्धा			কালীসাধক মিৰ্জা হুসেন জালি (সচিত্ৰ)	100	688
—পাড়ি (কৰিতা)		433	—"আগমধার্গীল ভট্টাচাব্যের কালনির্ণর" (আলোচনা)	•••	
वैकानीहत्रन द्याय			वियोद्यानमञ्जू সরকার		
—		228	ভদ্ৰচাৰ্য্য কুমানন্দ আগমৰাগীণ	•••	OF 2
क्षेकिश्रनमध्य प्रमध्य	•••	~,***	श्चीत्ववक मृत्यांनायात्र		
—;cচাথ (কবিডা)		244	—জেবুলাছ	•••	89.
में कुश्वविहाती शाम	,	400	वित्रस्थनाथ स्टोशांशात्र		
—ভারতে দিয়াশলাই শিল্প	•••	246	—ৰাঙালীর হিলীশিকা	•••	784
- ( u - a. ( d. u)   1   1   1   1   1   1   1   1   1		300			

#### লেখকগণ ও ভাঁহাদের রচনা

	बैदरदर्गाञ्च रोम			<b>ञ</b> ेविनव्र <b>ष्</b> रण पाम <b>श्र</b>		
	ৰালোকে-ৰ"াণাৱে (কবিডা)	•••	. 77	ৰিষানে ভূ-প্ৰদক্ষিণ (সচিত্ৰ)	88	۵, ۰۰۰
	—একাডে ( ঐ )	•••	. <b>4</b> 2•	<b>এ</b> ৰিভূতিভূষণ <del>ওও</del>		
	विश्वनाम बृत्थाणांगांत्र			খনে-ৰাইনে (গল)	•••	4 > 7
	– অক্কারের মাসুব (গরু)	•••	. २१४	— <b>নেতু</b> ( ঐ )	100	₹81
	बीधीरतव्यक्ष हवा			🗐 বিভূতিভূষণ মুণোপাধ্যায়		
	— <b>ঞা</b> হ্লান (কৰিডা)	•••	. 96	—নৰ সন্ধাস (উপস্থাস) ৬০, ১৪:	, ২২৮	r, <b>•</b> 90
	·· <b>इवना (</b> वे )	•••	. २५४	विविश्वतिक कहां विशेषा		
	– ভটিনী ( ঐ )	•••	. 966	উচ্চশিশ্ব সমস্তা	•••	242
	—প্রণতি ( ঐ )	•••	. 84.	শ্ৰীবিমলাচরণ দেব		
ź.				— অন্তা ও আদা	•••	45
	শৈৰাচাৰ্য্য জাপ্পান্ত	•••		नीवीदबन्द घटहे।भाषाव		
	<b>ब्रोननीयां</b> धव क्रोयुंबी			—পুশ∫কনের প্রতি (কবিডা)	•••	
	—वाहेनिशानां ७ व्याय	•••	450	वीरवन् अंटम (भाषा) इ		
	देशिक आर्थ ७ हेशारीह जांग	•••	. >5>	– স্বাহানা (ক্ৰিডা)		<b>⊅&gt;</b> 5
	वीवतिनोक्षाद <b>छ</b> त			जीवदश्वनाथं बदमार्थाशांत्र		
	— নবীন আরাল ও (সচিত্র)	••••	. 983	—ৰ্ক্যকুষাগ্ধ নৈত্ত্বের (সচিত্র)		<b>)</b> 08
	क्रेनात्रायपंटल <i>हमा</i>			—লোতিরিশ্রনাথ ঠাকুর ( ঐ )	•••	44.
		•••	<b>૨</b> ૨૬	— निश्चिनाच त्राप्त ( <i>ो</i> )		847
	निकाद नवगुत्र		856	-সভোক্ষনাথের সন্ধিক্ষণ (আলোচনা)	•••	٤)
	:শক্ষার প্রথম শ্রীকারকান্তি খোষ দ্ভিদার		• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	পুরেশচন্দ্র সমাক্ষপতি (সচিত্র)	,	800
	•		96)	ই:ভবাৰীগোপাল সাল্ল্যাল		
	ঞাটিকা (কবিভা)		73	—সাম্মতিক কালের কবিতা		829
	(প্রম শ্বপ্প (কবিতা)		•	—गा धारूप परनात्र पापका वैमधुरानम हर्देशांशांग		•
	स्क्ल वेमनाव कोधूबी					
	ভারতীয় শর্কগাশিল	:	2.9	— অসম্ভা (কবিতা)	•••	•••
	জীপরিষণ গোখামী	_		শ্ৰীমনোরপ্পন চক্রবন্তী		
	—- অরণাপথের ভারারি (সচিত্র)	. ?	8, 38>	ব্ৰহ্মপ্ৰৰামী বাঙালী হিন্দুদেৰ বৰ্ডমান সমস্থা	•••	: 42
	भू <b>क्</b> रवजीय हिन्सू			জ্মিষ্টাদেব রায়		
	কলিকাভার খতন্ত্র মৃস্লিম বিখবিভালর ছাপন			—হে আষাঢ়. ভোমারে প্রণাম (কবিন্তা) শ্রীমায়া গুপ্ত	•••	२ळ७
	<b>শশ্বকে কয়েকটি কথা</b>	•••	<b>P 8</b>	•		>>0
	শ্ৰীপৃথ শৈচন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ্য্য			—বিহারের লোক সলীত		8 • 8
	সাম্য্রিক (গ্র	***	ev.	— বৃক্ত-প্রদেশের থান্তিক লোক-সঙ্গীত	* ***	9.8
	यांबी अळानानम			শ্ৰিত্ৰাথ সূত্ৰকাত		
	—হরিবংশ পুরাণে ভারতীর সঙ্গীত	***	\$ 00	— শাণীনতার উবার চিম্বা	•••	
	শীঅশাভকুমার বিজ			वैवानरवळनाथ गीका		
	—প্ৰতীক্ষা (কবিতা)	104	>8.	—"ৰেভিক্যাল কলেজ প্ৰভৃতিতে নিৰোগ" (খালোচনা)		43.
	<b>অ</b> ফণিভূবণ রায়			নীৰোপেণচন্দ্ৰ ৰাগল		
	—চরকা (কবিতা)	***	4.7	—আধ্ৰিক ভুৰণ্ধ ও তাহার প্ৰগঠন-গচেষ্টা (সচিত্ৰ)	•••	22,
	विकासनी मूर्शिभाषात			জাধুনিক পালেষ্টাইন ও ইহনী-আরব-সমস্তা ( ঐ )	•••	
	— লঠন (গ <b>ন্ধ)</b>	•••	t	দারকানাশ ঠাকুর ( ঐ )		969
	रजगृत त्रभार थे. थन. थम			—প্রাচীন অমৃতবালার পত্রিকা ও ভারতবর্ষের বাধীনতা	о <b>ъ</b> ,	264
	—জাবাঢ়ের প্রথম দিবসে (কবিতা)		220	শ্রীরঞ্জনকুমার দণ্ড		
	—গাছৰীণা ( ঐ )	•••	**	—পাকিছানে হিন্দুদের মানুষের মত বাঁচিৰার উপায়	•••	314
	— মৃত্যু (ঐ)	•••	ers	পুনবসভিকাষে জামাদের পলদ কোখার	104	748
	वीवानी त्रांत			শ্রীরঞ্জিত সিংহ		
	•••पाविकात (शंक्ष) -		sre	আমেরিকার শিক্ষাবাবছা ও কিশোর-আন্দোলন (প্রচি	ና)	44
	· •	•••		—ভারতীর চিত্র-প্রদর্শনী ও চিত্রশিল্পী (সচিত্র)		e 46
	वैविकारमाना वर्ष			শ্ৰাৰাক্ত চটোপাধ্যাৰ		
	—পুলনার ইতিহাসে রণবিজ্ঞাপুর	•••	294	—চিঠি (কৰিতা)	•••	>69
	—চোৰৱা আমের প্রাচীন বৈভৰ	•••	<b>+&gt;</b> 1,	<b>এ</b> রামণত মুখোপাধ্যায়		
	विवृत्नवर कीति।		•	—আন্ধ-আগাৰীকাল (উপন্যাস)	•••	667
	—िरिगाषा (काहिनी)	•••	813	—ব্ৰণ (পৰ্য)	•••	<b>6</b> 35
	— रवीस्त्रस्त्रांश कविकां	-	44.		•••	<b>.</b>

#### হচী-পঞ

শীয়েশু দাসপ্তপ্তা			শীস্থীরসুমার নদী		
मझर यह कुसीछ	***	441	—বুগান্তরে এল বাধীনতা (কবিছা)		
बैजनहोरक्षम जिल्ह		•••	•		89:
-ৰথও অগৰা থবিত ভারতের মাইভাষা		6 # <b>.0</b>	শ্রীমণ্টারকুমার মিজ		
<b>ब</b> िनश्रीयव निरङ्			—লবণ ব্যবসায়ের ইতিক্রা	-	2 98
—সভাতার আয়র্ণ ও নিকার রূপ	• • •	•ts	শ্ৰিহনীলচন্দ্ৰ ৰহু		
<b>4</b> 4:		_	—বাংলা গান ও রবীক্সনাধ	•••	Ch.
—"কুৰে আছি"	•••	322	नै द्नीनहन् बांब		
🖣 শক্তিপদ রাজস্তুক			— গুগুমুমার সন্ধাটগণের ব্যক্তি-কীবা <b>ন</b> র প্রতিকলন (সচি	理)	483
—- छ।मदरमिङ्गु (१४८)	•••	-8>	<b>এ</b> ফুব•্•মল রায়		
<b>এ</b> ণচীজগাল রার			—রাসারাবক কাব্যোহাইছেটস্	***	24
—"ৰণন বৃদি সভা হয়" (পঞ্চ)	•••	948	শীক্ষাস ভাল চৌধুরী		
नैरेनलक्षक महा			बाक्शानिश्वादन्त्र वर्डमान भागमनीखि		S elv
—বিপন্ন বাংল।	•••	4>	_	•••	
—বাণীন ভারত (কবিতা)		8 > 8	विश्वतिथ आह		
बैदेग्दमस विष्यंत्र			—তীৰ্থ পৰিক (কৰিতা)		>*>
—বসন্তের পান (কবিতা)	•••	310	🖴 প্রভিৎ শারী		
वित्नोशिक्षनाथ स्ट्वांतार्था			– সূত্ৰভাৱ কুলেৰ কথা		444
—অমৃতের সন্তান (কৰিতা)		498	শ্ৰীহুক্সচি দেনগুপ্তা		
— গৈৰী দেশে (কৰিন্তা)	•••	797	अध्यक्षियो (अझ)		***
শ্রীসভাক্তির চট্টোপাধ্যার			শ্রীসুরের চক্ত গোষামী		
·· কিটলংৰ ও চাৰ্চ্চ:লর পতন	•••	<b>3</b> · 8	— জ্বাস্থার হাতিকার — জ্বাস্থার হাতিকার		675
विम-रक्षात ६७			•	•••	* , 4
নৰী-চন্ত্ৰেৰ 'গুড়' নিৰ্দ্বাল্য'		963	ৰীসুষ্যপ্ৰদ্ধ ৰাজপেয়ী চৌধুৱী		
बीनबोब कास खद			—এশিয়ার ঐকা	•••	4.2
ভবিৰ ং কাৰ্য্যের সম্ভাবনা ও ধারা	•••		দার ঠা সম্ভ সাঞ্চিত্তা	•••	•
🖣 🕫 हरू यात वृत्वाणावास			—হি <b>ন্দা</b> ভাষা ও পা <b>ন্চা</b> জা প <b>ত্তি</b> ৪ <b>গ</b> ণ	•••	6.
— चनावारवद वस्त्रुती	•••	398	শ্রহরগোপাল বিখাদ		
এ ब्राव की वंदव	•••	99.	গাছগাছড়া ছইতে বাংলার রাসারনিক শিলের সভাবন	1	894
🖣 एशरक व्यानायाच			বালোর বাদ শস্ত উৎপাদন ও ম্যালেভিয়া	•••	re
घीटनम् अकड	•••	814	সমূদ্রের কল হইতে বাংলার রাসারনিক শিলের সভাব	ના	196
প্ৰবাশী ভাৰ নীয় সমস্তা : জামেকা, ত্ৰিনিবাদ,			<b>বি</b> হয়েশ্রচন্দ্র পাস		
बिहिन शास्त्रना	•••	2>5	—কোৱানে আলা বা ভগৰানের বরুপ	•••	229
	£		<b></b> _		
	1,	ব্বয়	-সূচী		
অক্তব্যাৰ হৈত্ত্বের (সচিত্র)—জীব্রতেজনাথ বজ্যোপাধার	•••	3 63,	"আগমধানীল ভট্টাচার্ব্যের ঝ'লনির্ণর" (আলোচনা)		
অধন ভাৰত অধনা থকিত ভারতের রাইভানা			শ্লি <b>ণীনেশচন্ত্র ভট্টাচা</b> থা	***	
	• • •	146	আন্ত—ৰাগামী কাল (উপন্তাস)—জীৱামপুদ মুখোপাধাক	***	669
শগ্ৰ-বিনী (গ্ৰহ)—ইঃগ্ৰহ সেনভগ্ৰা	•••	287	আধুনিক তুরত্ব ও তাহার পুনর্গঠন প্রচেষ্টা (সচিত্র)		
শত্তা ও শাভ	•••	45	चैर्दारतणह्या वीभन	•••	849
অন্ধ-চনের মাত্রুৰ (গর)—জীধর্মদাস মুখোপাধাার -	•••	२१४	चार्निक् भारमहादेव ७ देश्री-चात्रव मबळा (मञ्जि)		
<b>बतः १</b> च-कृष्णे ५≒८१५ वामक्षा		**1	— विद्यारामाञ्च वाशन	•••	SAP
জাকাল (কৰিতা)—শ্ৰৈজান্তে হোৰ মলিক	•••	489	আক্রানিছানের বর্তমান শাসননীতি—বীহবাস রায় চৌধুরী	•••	8.7
অষণতা (কবিতা) —শ্বীমধুস্দন চটোপাধার	•••	222	আবিভার (গর)—ছাবাৰী রায়	•••	274
अपूर १४ म्य न (कविका) — श्रामीशीलनाव कडीाहारी	•••	618	আবেরিকায় শিকাবাবহা ও কিশোর আন্দোলন (সচিত্র)		
অংশ-পণের ভারারি (সচিত্র)— ইপ্রিমণ গোষারী	₹8	, 265	— শ্রীরঞ্জিত সিংছ	•••	47
অগগ এঞ্চ (কৰি ডা)— জীকুমুন্বপঞ্জন মলিক	•••	२१७	আলোকে-বাঁধারে (কবিভা)—বীবেবেশচন্দ্র দাপ	•••	**
অথবোৰের বস্ত্রপূরী — ইপ্রাক্তিক কুমার মুখোপাধার	•••	>18	आरमाहम् e», ७०७		
অপ্যান্ত হার প্রতিকার - শ্রীক্তরেন্দ্রকর বোধারী	***	<b>4</b> > <b>4</b>	আবাঢ়ের প্রথম হিবসে—এ. এন. এন. বনসূর রখীয়		520
चारेबिन्नाना ७ वार्य-विननीनायन होनुनी	•••	489	আহ্বান (কবিডা)—শীণীয়েজকুক চজ	-	•6

বিৰয়-সূচী

উচ্চলিক্ষার সমস্তাজীবিষলচন্দ্র ভট্টাচার্ব্য	•••	263	পুনৰ্বসতি কাৰ্বে আমানের ধনৰ কোষার ?		
ৰংখনের রাজা—জ্বিত্রকুল্চজ্র চৌধুরী	•••	SFA	শ্রীবপ্রনকুমার শস্ত		>
अकारक (कविन्त) जीरमरवणध्या माम	•••	••₹	পুণ কিনের প্রতি (কবিতা)—শ্রীবীরেক্স চট্টোপাধ্যার	•••	
এ বুনের ভীর্বছর—শ্রীহৃজিতকুষার মুগোপাধ্যার	•••	<b>99</b> •	পুস্তক-পরিচয় ••• ১৫, ১৯৯, ৬•৫, ৪১০	, •30	<b>, •</b> ₹
এশিরার ঐক্য শ্রীপূর্বাপ্রসর বাচপেনী চৌধুরী	•••	<b>&gt;&gt;</b>	পৃথিবীর অভান্তর (সচিত্র)—জীঅবিরকুমার বন্ধ	***	>1
এ'ছিছ (কবিতা)—শ্ৰীকুমুৰণপ্ৰন মনিক	•••	5.6	পৃথিবীর বৃহত্তম দূরবীণ (সচিত্র)—জীক্তিক্রেচক্র মুখোপাধার	•••	₹0
ইনিকাভার বছন্ত্র মুস্লিম বিখবিদ্যালয় স্থাপন সম্বন্ধ করেকা	ট কথ	1	এপতি (কৰিতা) – শ্ৰীধীধেন্সকৃষ্ণ চন্ত্ৰ	•••	84
—क्टेनक পূर्वत्रकोत्र हिन्मू	•••	78	গ্ৰহীকা (কৰিতা)—শ্ৰীগ্ৰশাস্তকুষাৰ মিত্ৰ	•••	28
কাৰ্য ও জীবন (কবিতা)—জীব্যান্তহোৰ সাম্ভাল	•••	294	প্রধানী ভারতীয় সমস্তা: ঞ:মেকা, জিনিদাদ বিটিশ <b>গালেনা</b>		
কালীসাধক বিৰ্জা হুসেন আলি (সচিত্ৰ)			শ্ৰীপ্ৰধাংক্তবিদ্বল মূৰ্বোপাধাৰ্য •	•••	72:
— 🖹 मोरनमध्या खडे। हार्या	•••	488	আচীন অমুভবাঞার পত্রিকা ও ভারভংবের স্বাধীনকা		
কুলপঞ্জীতে সেকালের সামাজিক চিত্র প্রদীনেশচন্দ্র ভট্টাচার্য	•••	F.)	<u>\$100109</u> 4190	. •	. 54
কোরানে 'অ'রা' বা ভগবানের বরণ—জনজেনতা পাল		***	প্রেম বয় (কবিডা) – ইলীহারকান্তি বে'ন দম্ভিদার		9 3
পুলনার ইতিহাসে রণবিস্তঃপুর শ্রিবিষরগোপাল বহ	•••	794	বালবার কথা ছিল (কবিতা)—শ্রীকরণ ময় বথ	900	4>8
চলনা (কবিডা)ইটীরলুকুক চল্ল	•••	200	বসজের পান (কবিভা)—জীলৈলেল বিখাস		<b>Ş</b> r4
भगीनका : हेहात छटमञ्च ७ चारशास्त्र मेनातासगठन हत्त	•••	3,3 €	ৰাংলা গাল ও বৰীক্ষনাথ — শুসুনালচক্স বঞ্চ		414
গাছগাছটা হইতে বংলার রামার্নিক শিল্পের স্থাবনা			बारमा छावाव स्थ-दारमा भक् है क्रमने महस्य रा	•••	er.
শ্ৰহংগোপাল বিহাস	•••	816	বাংলার অল্ল শ্রন্থা - শ্রীকালীচরণ স্থোব	***	221
ওপ্তমুদ্রায় সমাটগণের ব্যক্তি-জীবনের প্রতিফণন (সচিত্র)			বাংলার খাণাশক্ত উৎপাধন ও মাতের্রিরা		
শ্রীপ্রনিসম্প্রায় শ্রীপ্রনিসম্প্রায়		482	্ শ্রীহরপোপাল বিখান		
— অভনাগতত গায় গৈড়ী দেশে (কবিড়া)—শ্রীলোরীক্সমোহন ছট্টাচাবা		252	আংমানোল বিধান বাংলা পিশু সাহিত্য সম্বন্ধে করে কটি কণা—ইউবা বিধান		49.2
যান-বাইডে (সহা)জীবিভূতিভূষণ গুপ্ত		492	वाडाकीय क्यी निका—वैद्यार क्यान्य कर्यान्य स्टिश्वाय		22.5
ব্যসংবাহতে (সন্ধ)—আন্তর্গুত্তপূর্ণ কন্ত ট্রকা (কবিতা) - শ্রীক্ষিক্রণ ব্লার	•••	(.,	ৰাভাল্য বিশা শিকা—আনেত্তজন্ম চেলোৰায় বিশার-আর্ডি (কবিতা)—শ্রীকৃষ্ণঃপ্রম মর্লিক		
চিটি (কবিতা) - প্রাণস্থা মার চিটি (কবিতা) - প্রাণী চটোপাধার		744	বিপন্ন বাংলা—এলৈলেন্ড্ৰফ লাহা		4.
कोटनर अक्षरे वैद्यक्षक क्षर्याचारात्र		892	विविध द्यात्रक्ष ३, ३०६, २०३, ७३७		
कारण (कविका)— श्रीकित्रग्नक्य प्रतक्षर्थ		277	विमारम कु-द्राक्षणिन (महिद्ध)—श्चैविनहकुवन संमुक्क · · ·	 . 48.p.	
চোৰ কোৰতা;— আক্ৰম্ভিছ সেন্দ্ৰত চোৰৰা প্ৰায়েৰ প্ৰচৌন বৈভব— ছিবিভয়গোপাল বৰ্ণ	•••	427	विनादम कुन्यमः सम् (माठक)— स्थापन ह्यून प्राम्बद्धः ••• विद्योत्रास्त्रः (माठक त्रक) स्थेक्साक्षमान भागकथः ••		, U
	***	OD)			u, u. 8 92
জাটিকা (কবিন্তা)—জ্মীকারকা'স্ক বে।বংডিশার	•••		বিলাখা—উনিধুশেষর ভট্টাচার্য		• 7•
জোতিরিজনাথ ঠাকুর (সচিত্র) জ্বীরভেক্ষনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	•••	463	বিলেবণী সনোবিজ্ঞানের মূলসূত্র		41
ভটিনী (কবিতা)—শ্ৰধীরেঞ্জ চল্ল	100	960	—ই,শ্বনিক্ষার ব্যেন্সাধ্যার		214
ठञ्जाठार्था कृष्णानम् चात्रमयात्रीन—चेत्रोतन्तरकः नवकाव	•••	ONS	. বিহারের লোকসগীত—শ্রীমারা হুপ্ত	***	893
তীৰ্বপৰিক (কৰিতা)—শ্ৰীপ্ৰবোধ রাম	-	2 SP	বেগনার বিনিময়ে (কবিঙা)—ইজোপললাল বে	•••	
বিবেশীৰ ৰূপদ্বাপ ভৰ্কপঞ্চানন (সচিত্ৰ)			বৈদিক আৰু ও ইরাশীর আব—শ্রীননীয়াধৰ চৌধুরী	•••	253
—विवोदमण्डल चहु।हार्यः	•••	250	ত্রং (গর)—শ্রীরামণদ মুধোপাধারি 🖟	•	981
দিন আগত ঐ (কবিতা)—শ্ৰীদিনীপ দাশৰপ্ত	•••	486	ৰক্ষণ্ৰবাসী বাঙালী হিন্দুদের বৰ্ডবাৰ সমস্তা		
ছ'লনে বাধিব 🏰 বিক্তা)—ইংকল্যাণী সেনগুল	***	8>0	জিমনোরপ্লন চক্রবন্তী	•••	293
त्मन-विद्यालय कर्ने (मिठिक) •→ ১•२, २•१,	42.	, <b>42</b> 8	ভবিবাৎ কাৰ্যের সভাবনা ও ধারা—শ্রীসবীরকাভ ভত	•••	85
দাৰকানাথ ঠাকুৰ (সচিত্ৰ) — শ্ৰীবোগেশচন্দ্ৰ বাগল	***	461	ভারত-মাকিন বাণিজাজীদীনবন্ধু দাস	•••	ers
ধনভন্তী সভাভাৰ সংখাতে প্ৰাণিকগতের ধাংস			ভারতীর চিত্র-এমর্শনী ও চিত্রশিদ্ধী (সচিত্র)—শ্রীরঞ্জিত সিংহ	•••	***
— শ্ৰীক্ষনাধৰকু কন্ত	•••	87	ভারতীয় প্রভূতক্ষের ক্ষাবিকার—জ্ঞানীনাথ সেব	100	6 75
ধনভান্তিক উৎপাদনে আধিক সম্পদের বিনাশ			ভারতীয় শর্কমাশিক-শুক্রস ইসলাম চৌধুরী	•••	
	***	<b>300</b>	ভারতে দিয়াললাই লিজ—ছিবুপ্লবিহারী পাল		>>0
ধর্ম্মের উপর আধুনিক যুগের আক্রমণ— নীউমা সেন	•••	4.3	ভারতের শিক্ষান্তত্তে কলা-শিক্ষেব ছান		
নৰ-সন্ত্ৰাস ৬-, ১৪১,	227	914	— শ্রিঅর্ডেকুর্যার গজোপাধারি	•••	31
ন্বীন আরাক 😻 (সচিত)—জীনলিনীকুষার জন্ত	•••	487	<b>ভালবেস্চিদ্র । গর)—≒ैनकिशम नोण्यक</b>	•••	447
नवीमहरस्य 'एक-निर्मामा'	•••	•62	মারাঠা-সন্ত সাহিত্যজীমুরাঞ্জসন্ত বান্ধণেরী চৌধুরী	•••	ؕ9
নিধিলনাথ বার (সচিত্র)—এবভেন্তানাথ বন্দ্যোপাধ্যাত	•••	80)	মৃক্তি-যোৰণাৰ দিনে অঞ্চ ৰংশ (কৰিডা)		
পশ্চিৰ খাটের প্রাক্তে—শ্রীক্ষিতাকুষারী বঞ্	•••	٠٧٤	— 🗎 অপুৰ্বকৃষ্ণ ভট্টাচাৰ্য্য		<b>9</b> ¢
পাকিস্থানে হিন্দুদের মৃত্যুবের মত বাঁচিবার উপার			মৃত্যু (কৰিড়া)—এ. এন. এম. ৰঞ্চপুৰ রশীদ	•••	645
— শীৰঞ্জনকুমাৰ দত্ত	•••	014	মেঘমলার (গবিভা)—আশ্বাফ নিজিকী	•••	२१७
পাড়ি (কৰিডা)—ইন্দেত্ৰপ্ৰসাহ সেনপৰ্বা	•••	<b>C&gt;&gt;</b>	"ৰেভিক্যাল কলেজ প্ৰভৃতিতে নিয়োগ" (আলোচনা)		
भाष्ट्रीमा (करिका)	•••	**	विशहरवळनांचे नीजा	•••	<b>(5)</b>

#### **776**]-90

বৃত্তপ্রদেশের প্রান্তিক লোক-সঙ্গীতশ্রীবারা গুপ্ত	:	8 • 8	সৰ্বহারা (কৰিতা)—শ্রীবেণু গঙ্গোপাধ্যার
বুগান্তরে এল বাধীনতা (কবিতা)—শ্রীসুধীরকুমার নন্দী	•••	895	সরবতীর কুলের কথা— ইন্থরজিং শাস্ত্রী
वरीख मःनानन्तिकाश्चिविषुर्यानव कठीठावा	•••		সাওতাল আইনে নারীর স্থান—এচারলাল মুখোপাধাার
রবীক্র-সঙ্গীভূসারজিইন্দিরা দেবী	**	. ગુજર	সামন্ত্রিক (গল)—শ্রীপৃধ্ীলচক্র ভটাচাধ্য
রবীক্সলোপ কণিকা – শীবিধুশেখর ভট্টাচার্য্য	08	9, 44-	সাম্প্রতিক কালের ক্বিডা—শ্রভগ্নীগোপাল সাম্ভাল
বাসায়নিক কার্কোচাইড়েউস—শ্রীসুবর্ক্ষল রায়		•	"হলে অ।ছি"—-শ্ৰিশঃ
লঠন (বছ)—- শ্ৰীক্ষ্কেনী মুগোপাধ্যার	•••		ফরেশচক্র সমাজগতি (সচিত্র) —জ্বিচেক্সনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়
লবণ-বাৰসায়ের ইতিকণাশীপধীয়ণু মার মিত্র		298	শেতু <b>(গৰ)—</b> শ্ৰীবিস্তৃতি সূৰণ শুগু
লেৰুগাছ (গল)—জ্বীদেৰব্ৰক্ত সুখোপাধায়	•••	81-	সেদিন মিলায়ে গেছে (কবিতা)—শ্রীকঙ্গণ:মর বহু
শিক্ষার নববুগ শ্রীনারায়ণচন্দ্র চন্দ	•••	866	"খণন যদি সভা হয়—" (গর) —শ্লীশচীস্রধাণ রার
निवनाच क्यान स्वाविकीश्रकीयनमञ्जूषा	•••	807	স্বাক্ষর (গর)—শ্রীরামপন মুখোপাধ্যার
শেষ অধ্যার (গর)— শ্রীভারাপদ রাচা	•••	39-	স্বাধীনতাৰ উষায় চিস্তা — শ্বহুনাপ সৰকার
শৈবাচাৰ্যা আগ্লার জীননীগোপাল চক্ৰবন্তী	•••	6 8 8	শাধীন ভারত (কবিভা)শ্লীলৈনেক্সকৃষ্ণ লাহা
শ্রীষ্ট ও সংস্কৃত সাহিত্য-শ্রীদীনেশচন্দ্র দাস	•••	••>	স্বাধীন ভারতে কৃষি পরিকলনার একটি দিক
ঐ ( জালোচনা )"গ্ৰহুৰুত্ৰ'	•••	•	
সভেক্ষনাধের 'সন্ধিশ্বণ' (স্বালোচনা)			হরিবংশ-পুরাণে ভারতীয় সঙ্গীত—স্বামী গুঞানানন
श्रेडरकस्मनाथ बरम्माशाधाः	•••		হাইস্কুল ও শিঞ্জিক্:এস. এম. ছদ্রুজিন
সম্ভান (গ্রা)—এক্টাবনময় হার	•	. <b>&gt;</b> >>	হিটলার ও চার্চিলের পত্ন জীমভাকিছর চট্টোপাধায়
সভাতার আদর্শ ও শিক্ষার রূপ — শ্রীলক্ষ্মীয়র সিংহ	•••	. 948	হিন্দীভাষা ও পাদ্যান্তা পশ্চিত্রগণ
সমুদ্রের জল হইতে বাংলার রাণায়নিক লিরের স্স্থাবনা			
শ্রীহরগোপাল'বিষ্যে	•••		ce আ্বাট, ভোমারে প্রণাম (কবিতা)—ইনিহাদের রায়

# বিবিধ প্রসঙ্গ

অস্বাচাবিক মূল্য বৃদ্ধি		45 P	প্রিসে রুদ্রমত
ডাঃ আনন্দ কুমাঃখামী	•••	604	পূর্ব ও প্রক্রিম কালোর শাল্পিরক্ষার আবেদন
ন্যোর খাদা-সম্ভা		*20	পূধাবঙ্গের মাইন্রিটি
আ্বার তুর্ভিক্ষের আশকা	•••	२२७	পে কমিশ <b>ের রিপো</b> ট
আসামের জমি বে-দখলের চেষ্টা	•	>>1	গ্রতিকার কোন পথে
উদ্ভিৰ্যায় ৰাঙালী-বিষেধ		454	বক্স-বিভাগ ও লীগ
উপেক্ষিত চিবিৎসক	•••	503	ব্ল-বিভাগ সমর্থনে হরিজন আন্দোলন
কলিকাতার দালা ও মহাত্মানীর অনশন	•••	839	बक्र-विकारभन्न माबि
ৰুলিকাতার হিন্দু-বুসলমান সম্প্রীতি	***	426	বঙ্গ-বিভাগের দাবি প্রতিরোধের মৃতন বড়বত্ত
কলিকাভার অবস্থা	•••	28	বন্ধ-বিভাগের সিভান্ত
শ্ৰীবৃদ্ধ কিরণশঙ্কর রায়ের বিবৃত্তি	•••	410	বজের বাছিরে বাঙালী
কেন্দ্রীয় ও প্রাদেশিক যৌথ নির্বাচন ব্যবস্থা		833	
প্রণপরিষ্টে বাংলার প্রতিনিধি	•••	<b>२</b> >•	বাংলা আসাম রেলপথের ভবিবাৎ
शवर्गदात्र मान्त्रिक	•••	<b>e છ</b> ા	বাংলা ও প্রীষ্টের সীমানা সম্বন্ধে র্যাড্রিক সাহেবের রায়
গ্নবর্ণরের বঞ্জুতা	•••	529	বাংলার ক্ষমিদারী উচ্ছেদের প্রতাব
জয়-পর্যক্তম	100	>•4	বাংলায় স্থায় বিচারের নমুনা
नववर्ष		>	वारमाद्र अस्तिवनम
নারীহরণে রেল-কন্মচারীর সহারজ;	•••	2.0	বাংলায় মুসলমান গরিষ্ঠতা প্রকৃতির বিধান নয়
নোরাখালীতে এখনও অরাতকতা	•••	>•	বাংলার অবস্থা ও বাৰত্বা
পঞ্জাৰ সম্বক্ষে দীমানা কমিশনের চেরারম্যানের রায়	***	6-96	বাংলার জনসংখ্যার মানচিত্র
পশ্চিম-পঞ্লাবের অবস্থা	***	6-34	বাংলার ভবিষাৎ
পশ্চিমবলে কর্মচারী হ্রাস	•••	e > >	বাংলার সীমানা
পশ্চিম বাংলার শাসনবন্ত	•••	478	ব্রি <b>টিশ পরিকল্পনা সম্পর্কে পঞ্চিত নেহরু</b>
পশ্চিম বাংলার সমস্তা	***	452	ব্রিটিশ সরকারের খোৰণার পূর্ণ বিবরণ
পাকিছানের সংখ্যালঘুদের কণ্ড গাখীকীর উদ্বেগ	•••	₩.	ভারত ও পাকিছান ভোনিনিরন বিল
পাকিস্থানের সংখ্যালযুদের রক্ষার দারিত		239	ভারত ও বাংলার ভবিবাৎ

#### किंद-श्रुठी

ভারতবর্ষে পুনরায় খাড-সকটের সভাবনা মথ্রিছের দেড্যাস মন্ত্রী-নির্বাচন পশ্বতি	•••	));; 8 <b>22</b> 2.2	সীমনো কমিশন সীমানা নির্দ্ধরেণ কমিশন সীমনে, নির্দ্ধরেণ <b>দিতীর বজ</b> বঃ	•••	536 536
ময়মন'সংহ ও কলিকাভা সম্মেলন	•••	<b>9</b> 22	সীমান্তে পশভোটের ফলাকল	•••	<b>6</b> 2 9
মরসন্মিংহ সরস্থাহ বিভাগের অকল্পাত।	•••	>>.	ৰাধীন ভাৰতের জাঠীঃ পুতাকা	•••	৩২ ৭
भाषात्म व्यर्थमिटियम वर्ष्ट्र जा	•••	4.28	শরৎচক্র চট্টোপাধারের শ্বভিরক্ষা	•••	>4-
(भोनवो कञ्जून हरकद (नव धार्चन)	***	24	শাসন-কাৰ্যা ও আইন রচনার জন্ম মৌলিক রাষ্ট্রনীতি	•••	854
নাভিক্লিক নিপোর্ট	•••	₽5 <i>€</i> 2	শাসন-শস্ত্র	•••	<b>8</b> 2 •
রাডিক্লিফ রোরেলাদের পর পূর্ব্ব ও পশ্চিমবঙ্গের আকার	•••	827	শিক্ষকের বেডন	•••	275
সংবাদপত্তের উপর নিধেধা <b>কা</b>	•••	20	শীহটের খণডোট	•••	२३२
সৰ্দাৰ বলদেৰ সিংহেৰ বঞ্জা	•••	225	শ্রীস্ট্রবাসী সরকারী কর্মচারীদের প্রতি জাসামের মনোভাব হিন্দুদের প্রতি পাকিস্থান কর্তৃপক্ষের আখাস—কথার ও কাজে	•••	७२६
সাক্ষীগোপাল মহীসভা সামরিক শিক্ষা	•••	e58 572	हिन्दुतम् योज गाण्डान पर्यापनः वादान —क्वान ज काटक हिन्दुतमाक मध्येन ममिछि		७३.३ ७३.३
नानाज्ञ । चन्दा			***************************************		
	1	চিত্ৰ	-সূচী		
রঙীন চিত্ত			—ভাৰলৈনের একটি ছাসপাতাল	•••	<b>0</b> 4 <b>8</b>
শাকাশ ও প্রান্তর জীদেবী বসাদ রায় চৌপুরী		5+4	· ৰাট-চিনির কারথানা	•••	-988
भावान ७ मध्यम व्यक्ति यात्र आहरणानुमः भूभातिमे वीनोहाउद्यक्षत समस्य		2	লিগো অঞ্জের শক্তক্ষেত্র	• • •	98 €
भक्रि ७ आनमः स्थानस्य स्थानस्य भक्रि ७ आनमः		ಎನ್	সমৰাৰ সমিভির <b>লেকেরা মাগন ৰাঞ্</b> লাভ করি <mark>ভেছে</mark>	•••	985
ব্যোৰ্থ মূলে তিৰ রক্ষিতা নীতিলক ৰলোগোধনার	•••	6:59	উপেকিকা		
सबुद श्रुष्टि औरमबी धमान बाब किंधुबी		٠,	— ইাদেৰী শুসাৰ জাছ চৌধুৱা	•••	ર •≱
भिज्ञ - विदेशानाभ मान	•••	8 %	গুওমুজায় সম্রাচনণের ৰ ক্তিজীবন		e 8 % -49
			চিত্ৰ-প্ৰদৰ্শনী ও চিত্ৰশিকী		€9€-à
একৰৰ্ণ চিত্ৰ			স্কুপঞ্জাপ তৰ্কপঞ্জানন কোতিবিজ্ঞানৰ ও উচ্ছাৰ সৃত্ধশ্ৰিণী	•••	÷84
•			रक्षाा शास्त्रमाय उ शर्भ गर्यात्रम सर्हत्र सांबी	•••	. ,
विकास के अपने देवर व्यक्त	•••	ર્ <b>લ્સ્</b>		•••	2
অরণ পথের ভারারি			ভূমন		
লড়ের মধ্যে পোনা হাতীর দল কড়ক গলী হাতীদের	• • •	રક	থাকারার একটি কমাশিগাল কলেগ		86.5
ডপর পাক্রমণ ৬০জী ডাকবাংলোর সপ্গুণর দৃষ্ঠ		`& Z	আছাব্য়ে নিকটব্রী কিউবাক বাঁধ	•••	828
– ছইস্ত্ৰীতে বৃদ্ধা নেপালী		. 68	३%ापूर्ण	•	880
— ভিমা কোরারিতে পাধর-কাটার কাজের শ্বন্যথে রার	1	21	কৃষি-কলেজ, আকার।	•••	886
ডিমা কোয়ারির একট কুলী মেরে	•••	₹8	জঙ্গালডাক কমলার খনি অঞ্জ	•••	823
ডিমা (কায়ারির সম্কুর		ર્¢	জঙ্গালভাক-ৰাটিন রাজপথ 	•••	82.
—ছিমা কোরারির সাধারণ চেহার:	•••	٥.	পুরানো আমলের রাঞ্পথ ও ধ্বৰাড়ী	•••	8>3
ডিমার ছিমালরের একটি অংশ	•••	₹ 5	ত্রেছোরায় পিয়ানোবানন-রক্ত ভূকী মাহলা	•••	8:5
ভিমার কলাধার	•••	₹-	দারকানাণ ঠাকুর	•••	<b>564</b>
ডিবার ভূটিয়া পল্লী	•••	٦৮	নিধিলনাথ রায়	•••	8 <b>6)</b>
– বন্ধী বুনো হাতীর ভর্জন গড়ন	•••	<b>⇒</b> €	প্ৰিৰীর শভ্নত্তর		
ভূটাৰ সীমানায় বাইবার পেয়া	•••	262	ভূকশপন তরঙ্গ	•••	24.5
— রার্ডাক নদার অভুত পেলা নৌকা	100	265	— সিদ্দোগ্রাক —শুর-বি <b>ত্তা</b> স	•••	: 6.
—বারভাক নদীর অপর পারে ভূটান পাহাড়ের দৃগু	•••	260	তঃ-ৰেজান পুৰিবীয় বৃষ্ণুম দূরবীন	•••	نه9: 58-≪8
—হর ডিরার	•••	>44	পূ বৰার বৃহত্তৰ দুর্বাণ পা লেষ্ঠ ইন	٦,	0∢
<b>নায়াল'ও</b>			স্যাংশভাংশ আরুর প্রীদারিচ্যের নিদ্শব	•••	3 b b
—আইরিশ মেলার প্রামা কুটারশিলের প্রদর্শনী	<b>. ` · · ·</b>	485	জড়ৰ নদীৰ পাৰ্থৰতী ক্ষুগ্ৰাপ্ত কৰি	•••	2 ma
—অক্তিনাকুশার ছাইছো-ইলেকট্রক পাওয়ার টেশন	•••	989	– হাইকা নগরী	•••	200
—'ককে' ৰোটন-কারের একটি কারখানা	•••	988	— रारका नगमा <b>बार्</b> वाय <b>४८ठा</b> नगमा	•••	> 8
—প্ৰভবের 'ভার <b>বও</b> সাউন্টেন'	•••	●8€	Market Ambi static		

ৰাতুড়া বিলব-বলিয়ে বন্দীৰল পরিবৃত ডাঃ ভাষাথসাই			নাৰ্ণাৰি স্থলের ছেলেনেনেনের চীনা-নাটক অভিনয়	•••	Š
बृद्धांभाषांच	***	₹•9	—প্ৰাণ্যিক বিছাগয়ে লেখাপড়া	•••	45
विवादन कृधविक्त			স্থৰায়-ৰাড়ীয় আধুনিক পাঠাপায়	***	43
ওবেট্ডিন্ট্রার রাজপ্রাসাদের ক্লকটা ওরার	•••	865	শ্বলের একটি লাউবেরী ঘর	***	*
কারবোর রাজপধের একটি দৃষ্ট	***	85>	—কুলের ক্রামাশ লাইরেনি-'বাস'	• • •	>
—শিরাষিড, চিওপ স্	• • •	<b>es</b> :	স্থ্রের স্থাত-চক্র	***	**
পুরাতন নিমীয় একটি রাস্তার দৃষ্ঠ	•••	84-	রাধাকান্তরীটর সন্দির	***	425
—বাণিজা-মুখর বসর।	•-•	8Ġ3	<b>319</b> 4		
—বাৰহা পরিষদ-ভবৰ, নুডন দিলী	•••	883	—ওয়েইমিন্টার এবি		•.0
नीमन(एउ अक्रि ए <del>क</del> ्र)	•••	88>	—ট্রাফালগার স্বোয়ার		•->
পঞ্চৰ <b>অৰ্থেন বন্ধত-জনন্তী উপলক্ষে ভিট্টো</b> নিয়া বেখো	—্নেশ্কাল গালারি	•••	•••		
পরিক্রমা	•••	860	— হুখসৰা বিভে লণ্ডন বিশ্ববিদ্যালয়ের ৫ <del>০ ব্রীয় ভবন</del>	•••	4-5
—লভন নগরীর রাজপথে বানবাহন চলাচলের একটি <b>দৃত</b>	· · · ·	8 4 5	সমারসেট্ ভবন		
—ক্ষিক্ষন, কাররে৷		885	—সি <b>গভা</b> র টাউনপ্তরে	•••	4.)
—হাভাহর মন্দির	***	652	—হোরাইট হলের সন্মুখে রাচা প্রথম চাল সের		
মির্জা হসেন আনির মসকিং	•••	4 88	<b>শ্ৰন্তি</b> শ্ৰন্তি	•••	•••
पू <del>क</del> ्रा 🛊			শিংলাগ শাস্ত্ৰী	•••	831
—উচ্চ विशासक	•••	••	ফুরেশচন্দ্র সমাজপতি	•••	208
ক <b>লে</b> ছ লাইবেরী	•••	4>	প্ৰকৃষাৰ চক্ৰৰটা, গোগালচন্দ্ৰ দীল, ধাৰকানাৰ ৰঙ্		
— প্রাম্যবিভালরের ছেলেবেরেনের সঙ্গীত-শিক্ষা	•••	٩.	ভোলানাথ ৰঞ	•••	٠.

প্রকাশিত হইয়াছে প্ৰবিভয়শা লেখিকা শ্ৰীশান্তা দেবীর ভারত-মুক্তিদাধক

# बायानम ठ छोनाशास

# অৰ্দ্ধ শতাব্দীর বাংলা

বাংলার সাংখ্যতিক আন্দোলনের পটকুমিকার বর্তমান বুলের অক্তড্য ब्रिकं भनोबाद कोयनावानंत्र स्थित्न वर्गन छ विक्रायन।

প্ৰবাসীৰ ৰাকাৰে বহু পৃষ্ঠায় সম্পূৰ্ণ, বহু চিত্ৰশোভিত, বাংলা-महित्का बिक्रमद बीवमहित्क। हेश अकाषाःत मनीवा अभानम চটোপাধায়ের বাবনী এবং সমসাময়িক বাংলার সাংস্কৃতিক প্রগতির ইতিহাস। বিশ্বত পঞ্চাল বৎসরের বাংলার সাহিত্যিক, রাজনৈতিক ও সামাজিক ইভানি বাবভীর আন্দোলনের প্রকৃত বরুণ উপলব্ধি করিছে হুইলে এই পুশ্বকথানি অপরিহার।।

युना इह देवि याज

#### প্রবাসী কার্য্যালয়

্রি২-।২, আপার সাকুলার বোগু, কলিকাঙা

প্রথিত্যশা লেখিকা শান্ত। দেবা প্রণীত

১ | অলখ-ঝোরা ( উপর্যাস ) युन्। 😘 া উপন্যাস : ২ ৷ ছছিছা ৩। সিখিব সিছব > 1, ६ । বধুবরণ প্রপ্রসিদ্ধ লেখিকা শ্রীসীতা দেবী প্রণীত ১ স্পণিকের অভিথি (উপক্রাস্) 31. ২। নিবেট গুরুর কাহিনী (ছোটদের গঞ্চ প্রাপ্তিদান—শ্রশান্তা দেবীর নিকট াপ-২৬, বাজা বসস্থ রায় বোড, কলিকাডে। 🕾 সমস্ত বিখ্যাত পুস্তকানমে প্রাপ্তবা।

· পণ্ডিভ **ুরমানাথ চক্রবর্তী সন্থলিভ** এবং ভক্তিভার্থ প্রীউষেশ চক্রবর্তী সম্পাদিত ও প্রকাশিত (সামৰ ধ বয়ব) প্ৰীপ্ৰীচণ্ডী

अर्जना, कोनक, करत, पूनक्की, स्कावि अवर बरुक्कारप्रज अवन स्कायुनाव ও বাাখা।, পৃত্তাবিধি এবং বর্ণাযুক্তমিক লোকপ্রচীতে শুসম্পূর্ণ ।

**এ এ এবল চন্ট্রাপুলা ও কথা** শ্ৰীশ্ৰীসভ্যনারায়ণপুৰা ও কথা

াশনিপৃক্তা ও কথা

**4**>°

শ্রীশ্রীলক্ষ্মীপুজা ও কথা ১/১০ थाश्विदान-अक्षेत्रन नोरंखनी अकृष्ठि नरेरनन लाकान अनः अकानरकन নিকট—১২-।২ আপার সারকুলার রোভ, কলিকাতা।

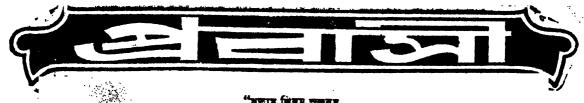




ৰামে**িকার স্থলে**র ভাষ্যমাণ পাইত্তেরি-<sup>6</sup>বাস'



আমেরিকার নাসারি-ভ্লের ছেলেমেরেরা চীনা-নাটক অভিনর ক্রিভেছে



"সভাৰ শিৰষ্ সুৰুত্তৰ শাৰণামা বলহীবেল গভাঃ"

৪৭শ ভাগ

# বৈশাখ, ১৩৫৪

>ম সংখ্যা

## বিবিধ প্রসঙ্গ

#### নববর্ষ

বাংলার ইতিহালে ১৩৫০ ও ১০৫৪ সাল চিন্নদিশ বিশেষ ভাবে শ্বনীর হইবা থাকিবে। ১৩৫০ সাল অশেষ বঙ্গবান মধ্য দিয়া শেষ হইবা থাকিবে। ১৩৫০ সাল অশেষ বঙ্গবান মধ্য দিয়া শেষ হইবা গেল, বর্তমান ১৩৫৪ সাল নানাঞ্জনার অটল সম্বভা বহন করিবা আনিবাছে। ১৩৫০ সালে বাঙালী হিন্দুকে দলন ও দাসছে নিক্ষেণ করিবার চেট্টা চহমে উটিল, ভাহার বন-মান-সপ্রম, পরিবার-পরিজনের প্রাণ পর্যন্ত বিশন্ত হইল আমাদের চন্দের সন্তুবে। আছও বেশবাসীর মন বিশন্তে আশ্বাহার আঞ্চন, দেশের গোকের জীবন্যাত্রার পথ প্রতি পদে বিপংসভ্ল এ বাংলার বাহিরেও এই সাম্প্রদায়িক বড়ের আবতে পড়িরা বিহার, পঞ্চার ও সীমান্ত প্রদেশ বিশন্ত ও বিব্রুত হইল এই ১৩৫৩ সালে। মৃদ্য বংসত্রে কি পান্তি আদিবে, সাম্বাহারিক বিষ্কু ক্ষিত্রিত গেঁলে বিত্রাপতা কি পুনঃপ্রতিষ্ঠিত হইবে ৪

ছর কোট লোকের বসতি বে প্রদেশে, যে প্রদেশের लाक्य मीर्बर्ड परम निष्ठे परमाक नकन वाद्य परिकाद হুইতে বঞ্চিত ক্রিড়ে উভত ও উৎসুক, সে প্রদেশের শাসন ও বিচারের অধিকারীবর্গের পথ অভি ছুত্রছ, অভিশয় সমস্তাপূর্ব। अवन चरमात्र विष क्रमण शास्त्र भर्म प्रति चर्म चर्मिकारी-वर्ग अवर कर्जुनक नक्ष्माण्याच सरेटल अन्तूर्ग मुक्त बादक एटन হয়ত হেলে শান্তি ও শুখলা কিরিতে পারে। বর্তমানে যে দলের ছাতে বাংলার ভাগ্য বিদেশীর মার্কত ভুলিরা দেওয়া হইয়াছে, ति करणव विकेष्ठ काव विकाद वा निवरणक वावका कामा कवा बाकुनका। बारमात विषक नक्त वरमद्यत रेकिशास अञ्चल শোচনীয় দিন অৱই বিয়াছে বৰন বাঙালী হিন্দুর সন্থাৰে এত অবিচায় এত বিপদ আগিয়াছে যেকণ আৰু বাংলাদেশে क्षेत्रशिक । वर्जभावन बादन वर भारत क्षानिक व्हेरकाह कावारक অচিয়ে বাংলার সর্বনাশ ত্নিন্ডিড, কেননা, চালকের দল चपुत्रपर्नी, भन्नपर्राटः चढ अवर बृगठः विषावृद्धिरीमः। अवेक्रभ অবস্থার বাংলা বিভাগ ভিন্ন এই বিপদের শাভিন্ন অভ কোন উপায় মাই---ইহা এবন দিবালোকের ভার স্থলই। :ভোড-वाटका विशान के कि विशेष क्या नाव मधार मधार मधार मधार मधार मधार

করিতে প্রৱত <sup>।</sup> ধাঁকেন ভবে বলিতে হইবেই বে ভিনি বিহুতমৃতিত।

ভোকৰাক্যে ভূলিরা আলেরার পাছে ছুট্টরা বাঙালী তো আৰু কর বুন বরিরা বরিভেছে। কোবার গিরাছে বাধীনভা, বাভরা, সংখতি, কোবার গিরাছে লাভি তুব বাছল্য ? সর্ববাছ ক্টরা ভিলে ভিলে বরিবে বাঙালী আর কড বিন ? বাভরা, বাবীনভা ও লাভির পথ অভি কটন ইঘাই তো ইভিহালের গিবন। তবে কেন এই বুধা চেঙা সহত্বপথের সরামের জন্য ? বল-বিভাগের কন্য অনেক কিছু যাড়িতে ক্টবে, অনেক বিপবের সন্মুবীন ক্টতে ক্টবে ইহা হির করিরা বাঙালীকে বাভরোর পথে অগ্রসর ক্টবার করা প্রস্তুত ক্টবে।

বস্ততঃ বাংলাদেশ আগতন রাইনীতি, গঠননীতি সমতা ও লোকসমষ্টির হিসাবেই এখন ছুই প্রবেশে বিভক্ত হওয়া উচিত। কাৰ্জনের ছুরভিগত্তি বলভল-আলোলন-কলে সাম্বিক ভাবে বাৰ্থ হইয়াহিল মাত্ৰ। পৱবৰ্তী বছলাট ও প্ৰৰ্ণৱবৰ্গ প্ৰজন্মভাবে मिर काम हानारेश अकर अरहरन हरे अकाश विहास ध वावशाब ध्यवर्ण न करता। करण विभ वरमत बावर अहे ध्यापान কাজির বিচারই চলিতেছে। হিন্দু-উচ্ছেদ ও হিন্দু-শিপীকন ত্রিট্রশ শাসক্ষর্প এত ধিন হলে ও কৌশলে চালাইরা আসিরাছে এবং সেই ঘুণ্য নীভিত্ৰ প্ৰধান পৰিপোষক হিল লীগ। আৰু লীগ ইংরেভের চঞাতে সমন্ত ক্ষমতা নিজের হাতে পাইরা পশুবলের সাহায়ো দ্রুত কার্বোদার করিতে উচ্চত হইবে ইহা আর আশ্চর্য কি ? আয়াদের ক্তব্য এবন আয়াদের সম্ভ শক্তি সামৰ্থ্য ও সংহতি সম্পূৰ্ণভাবে বন্ধ-বিভাগে মিঁরোগ করিয়া नीत्रत वसम (समम कतां। देश्यकीरण धारामवाका चारह. 'নরকের প্রশৃত্তি সরল'---এই ক্রা শ্বন ক্রিয়া আ্যাছের আখীরবিচ্ছের বন্ধবিচ্ছেরের শোক সম্ব করিরা স্বাতন্ত্রের इक्कर नाम क्रिक्ट प्रदेश। जामान्य बादना और या यह-विकान चिक नहरम् अवर नजनकार्य स्वेटव । चार्यारमञ्जू বিষয়ে সন্দেহ আছে। আমাদের বিশাস বাঙালীকে আরও অনেক ভাগে বীকার করিয়া, অনেক ছংবক্ট বরণ ক্রিয়া এই কাৰ্বোদার করিতে হইবে।

কংগ্ৰেলের উচ্চতন পরিবদ বাংলা ও পঞ্চাব বিভাগকে রাষ্ট্রবৈভিক 'ব'ডের চাল' হিসাবে চালিভেছেন এই সলেহ অনেকের বনে আসিতেছে। বাংগার কংপ্রেস-সভাপতি সুর্বেজনার লাবের বিরতির শেবাংশেও ঐ ভাতীর পরিকর্মার আভাস রহিরাছে। বলা বাহল্য, এইরপ চাল ভূল
ও বিপক্ষনক। এবনকার পরিছিতেতে ঐ সকল চালবালী
হাছিরা শেপ্রভাবার বোষণা করা প্ররোজন শনান্য: পছা
বিষ্যুতে অরনার"। বাংগার সংস্কৃতি, রাজনৈতিক প্রগতি
এবং আতিগত অপ্রগতি বে ভাতীরভাবালী বলের অশেষ ক্ষৃতি
বীকার ও আলাহতির কলে হইরাছে, বহু-বিভাগ না হইলে
ভাষার অভিছলোপ হইবে এ বিবরে সন্দেহের অবকাশ নাই
এবং বাংলার ভাতীরভাবাদ পুভিরা ছাই হইলে ভারতের অন্য
প্রবেশে আভন লাসিবে ভাছাও বিঃসন্দেহ। পঞ্চাবের অবছা
অস্ত্রেশ না হইলেও বৃগতঃ একই সমস্যার অন্তর্গত। স্বভরাং
এই হই প্রদেশের বিভাগ যে কোন হিসাবে কংপ্রেসের উচ্চতরপরিবরের বীভার করা প্রয়োজন।

বেশে অরাজকতা; গবর্ণর অকর্মণ্য ও নির্বোধ, মন্ত্রীদল ভারঅভার আনশ্না, মিধ্যাচার ও বিষম পক্ষণাতিত্ব দোবে হুই,
সমজ বিচার ও শাসমব্যবহা কদ্মিত, এইরপ অবহার মববর্ষ
আসিরাহে। আমাদের জাতীর জীবন এখন ঘোরতর বিপন্ন এবং
অতিশর বৃচ্তার সহিত নিজেবের শক্তি ও সংহতির উপর
মাত্র নির্ভার করিরা অরসর হুইতে না পারিলে তবিত্রং আরও
ভরাবহ হুইরা ইাড়াইবেই এবং আশার আলো এখন যাহা
কেবা বাইতেহে তাহাও রান হুইরা বাইবে যদি আমরা মিধ্যা
হলনার তুলিরা বা বিপদের আশহার অবসর হুইরা বাধীনতার
সংগ্রাম হুইতে বিরত হুই।

রাজিয় পর দিন আসিবেই। বাংগাদেশে আৰু প্রার বিশ বংগর রাজির অভকার বন হইতে ঘনতর হইরাই চলিতেছে। ভোরের আগেই অভকার গাচ্তম হয় এ কথা মরণ রাখিরা আমাদের শেষ পরীক্ষার অন্য প্রস্তুত হইতে হইবে। বাংলার ৬০ লক্ষ লোক ছুর্ভিক্ষেও অনশনক্ষিত ব্যাবিতে মরিল এই সে দিন, প্রকাশের মহন্তরে। এতওলি প্রাণ গেল বিকলে, বিনা কান্ধে, লাভ হইল তুরধাের শাসক্ষরের এবং তাহা্দের পরিপােষক চােরাকারবারীর। স্বাধীনভার বুদ্ধে ভদপেকা অবিক ক্ষতি হইগেও শেষ পর্যন্ত লাভ ইট্রিক্ট সকলেরই। কেন্দা, সক্ষ কর্ম নাশকারী হাবীনভার আলাের দেশের পথ উক্ষ্ হইরা প্রকাশিত হইবেই।

বেশবাসীর কর্তব্য এবন এই শেষ পরীকার ক্যা প্রকৃত হওয়া। বৃচ্চিত্তে ও নব উভনে যদি চেটা করা যার তবে জাভীরভাবালী বাঙালীর পক্ষে কিছুই অসম্ভব নবে। প্রবদ-প্রভাপ সসাগরা বস্থভার অধীবর বিটিশ সিংহ এক বিন হার মানিরাহিল যে বাঙালীর কাছে ভাহাকে কি পরাক্ষর শীকার করিতে হইবে এই "ইরাববেশের কাজি"বিগের নিকট ?

অবত একণা শীকার করিতে হইবে বে এবনকার অবছা অন্যরণ। গৃহবিবাদ এবং গৃহশক্ষর আক্ষমণ অবিকতর বিপয়ের কারণ। কিন্তু মন ছির করিয়া বিপয়ের সন্মুখীন মুইলে বিপদ কাষ্ট্রয়া বাইবেই।

#### বঙ্গ-বিভাগের দাবি

वय-विचार्तित वावि गंछ हरे भारतत भरता क्षेत्रण वहेता উটিয়াছে। এক দিকে কংগ্ৰেদের উল্লেখন কর্তপক প্রভাৱে বোষণা করিরাছেন বে এই দাবির প্রতি ভাঁদাদের পূর্ব প্ৰামুভুতি বহিবাহে, অপর পক্তে লীগ বছ-বিভাগ হোধ করি-বার বর সর্বশক্তি নিযুক্ত করিবে বলিয়া প্রচার প্রক্ল করিয়াতে। वर्ण बारम वारमारमस्य प्रमामान क्षराम अवन अक्रिक अमाका मारे राबारन हिन्दा निर्कालय बनवान अवर नादीव मचान নিয়াপথ বলিয়া মনে করিতে পারে। রাজনানী কলিকাভারই এমন অবস্থা হইয়াছে যে, স্বাভাবিক জীবনযাত্রা প্রায় অচগ হইরা হাভাইরাছে। অকতদেহে বাড়ী ফিরিয়া আসিব এই ভৱদা দইরা বাড়ী হইতে বাহির হইবার উপার নাই, কেহই জামে না শেষ পর্বন্ধ সে বাড়ী ফিরিয়া আসিতে পারিবে অববা ভোন হাসপাড়ালে বা মর্গে আশ্রহ লাভ করিবে। বাহী কিবিলেও আসিরা কি দেখিবে সে সখছেও কেই নিশ্চিড নৰে। অৰচ জীবিকা অৰ্জনের ৰঙ বাহিত্র না হইয়াও উপায় बाहे। चहरतत रह प्राप्त विकास मार्फीय परत-वस चाहरवत বলে মাত্রুষকে বরে চুকিতে বাব্য করা হইতেছে, কলে ২৪ ৰকীর দিন সহচিত হইয়া ১৩ বন্টার দাভাইয়াছে। ইকারই মধ্যে সকল কাৰ্য সমাপন করা কিন্তুপ কটিন ভাছা সলকারের ক্ৰিবরপৰ ব্যতীত সক্ষেই অমুভ্য ক্রিভেছেন। এই ছর্ঘনার क्छ क्रमाराज्य पात्री नटर, देशाह मन्पूर्व पात्रिक भौत्रिज अदर সম্প্রচায়-বিশেষের গুণ্ডা দমনে অক্স এবং অনিছ্ ক সরকারের। পুৰক নির্বাচনের উপর নির্ভরশীল গবর্ণমেণ্টের शक्त श्रीय मध्यमास्य क्षणास्य अम्बहे कविवाद देशांत नारे. बहे कर भछा श्रीकाद कविवादश भव बाहे. च्रुकार मिविरवाशी লোকদের লাঞ্নার মাজা বৃদ্ধি করিবাই ভাঁহাদের শাসন-ভংগৱভা দেখাইতে হইভেছে। স্থান্তর সময় যে সব নামজাদা ভভাকে এেপ্তার করার কলিকাভার রাখালানি প্রায় বহু হইয়া গিৱাছিল ভাণাদিগকে বভ ৰানে খণ্ডামির মূল নারক ভানিরাও ৰুক্ত ৱাৰা হইৱাছে। তবু কলিকাভা নৱ নোৱাৰালী, ঢাকা, বঙ্গা, রাখসাহী প্রভৃতি স্থানেও বে অভ্যাচার অস্ট্রভ হইভেছে এবং বে নির্দক্ষতার সহিত লীগমন্ত্রীরা উহা উপেকা করিয়া এবং সাকাই গাহিয়া চলিয়াহেন ভাহাতে বাংলার সকল অঞ্লের নির্বাভিড হিন্দু সময়রে দাবি ভূলিরাহেন যে অবিলখে বন্ধ বিভাগ করিয়া এই ছঃসহ প্রভন হইতে বাঙালীকে वृक्ति (एथवा रहेक ।

বদ-বিভাগের দাবিতে লীগ ভর পাইরাহে ইহার প্রমাণ আক্ষাল লীগ সংবাদপত্তে এবং লীগ নারকদের কাহারও কাহারও উভিতে বিলিভেছে। বাহারা এত দিন হিন্দু বুসলমান ভিন্ন ভাতি, উভরে ক্থনও বিল হইতেই পারে না বলিয়া চীংকার করিরা আসিরাহেন এবন ভাহারেরই কঠে হিন্দু বুসলমান ভাই ভাই এবং উভরে একই বাঙালী ভাতি বলিয়া ধনি উটিবাছে। প্রধানমন্ত্রী নিঃ স্থানমন্তি এই ধানিতে কণ্ঠ
নিলাইরাছেন। বাঁহারা বুললবাদের ভাষা বাংলা নহে, উর্
বিলার এভকাল কাহির করিরা আসিরাছেন এবং বকভাবাকে
উর্ নিপ্রিত বিচুকীতে পরিপত করিবার ক্ষপ্ত প্রাণপণ চেটা
করিবাছেন উাহারাই এবন মুসলমানকে বাংলাভাষাভাষী
বুলিরা বাঙালী হিন্দুর সহিত ভাহার অভিন্নতা প্রমাণ করিতে
চাহিতেছেন। তবে হিন্দুর প্রতি দরদ ও কর্তব্য পালনে
ইহাদের ইক্ষা বে ভগু মুবের বচনে ও কাগকের লেবাভেই
সীমাবছ ভাহাও সহকেই বরা পভিতেছে। কলিকাভা এবং
নোরাবালীতে পাকিস্থানী প্রেতন্ত্যের কের এবনও একই রূপে
চলিতেছে। তাহা বন্ধ করিবার চেটা অরই ইইরাছে, অভনিকে
ঢাকা এবং বঙ্গা প্রভৃতি হানে প্রানাক্ষাক উহা ছভাইরা
পভিতেছে এবং মন্ত্রমন্তিই ক্লোকে বাঁটি করিরা লীগের
আলাম আক্রমণে বাংলা-সরকারের সমর্থনও নানা ভাবে
প্রকাল পাইতেছে।

এবারকার সাম্প্রদারিক আক্রমণে একট বিষয় অভিশয় সুস্পষ্ট হইরা উঠিরাছে। বাংলা, পঞ্চাব ও সীমাছের ঘটনার দেখা গিয়াছে, শভানীর পর শভানী যে বুসলমান হিন্দুর সহিত शामाशामि वान कविशास, जागरम-विशास शब्दाबर माहाश করিয়াছে, পরস্পবের উৎসবে যোগ দিয়া আনন্দ উপভোগ कतिवाद. जारावार अक्यार अकाना अहमा अबू मान्हे नाव কানা এক ব্যক্তির আহ্বানে প্রতিবেশী এবং যুগ যুগ পরিচিত লোককে স্ত্ৰীপুত্ৰকভাগৰ পাণবিক অভ্যাচাৱে নিপীড়িভ কৱিভে ও হত্যা করিতে যুহুত মাত্র দিবা করে নাই। অশিক্তিত लाटक देश कविवाद, निक्छ लाक देशांख वांश सम नारे এবং উচ্চশিক্ষিত সরকারী পদাবিকারীরা এই নরপশুগুলিকে আইনের হাত হইতে বাঁচাইবার ভয় প্রকারে এবং অপ্রকারে সৰ্ববিধ চেঙা করিয়াছেন। বর্ষের নামে যে সমাজের শিক্ষিত অশিক্ষিত নিবিশেষে সর্বশ্রেণীর লোক পশুর পর্বারে নামিরা খাসিতে পারে, স্বস্থ লোকে ভাষার সহিত একত্র বাস করিবে কিনা সে সিহাতে উপনীত হইবার অধিকার আন মানুষ-মাত্রেরই আছে। কথার কথার বিহার, গড়রুভেখর প্রভৃতির দিকে অধুদি বেলন করিবা ইঁহারা নিজেদের হছতি ঢাকিবার (b) करवन किथ छैरा निवर्षक । कावन विराव, अपनुरक्ष्यव **अकृष्टि अफिक्सि माज, जाकमन नरह ।** 

লীগনেতারা এক ধুরা ভূলিয়াহেন বে, বাংলা বিভাগ
করিতে হইলে বিহার, র্জপ্রবেশ প্রভৃতিও ভাগ করিতে
হইবে। কারণ র্জপ্রবেশে ৮০ লক, বিহারে ৫০ লক,
বোহাইরে ৪০ লক, বাজাকে ৪০ লক র্নল্যান আছে।
ইংগারাও নাকি ভাহাবের 'হোমল্যাও' লাবি করিতে হাছিবে
না। কিছ বাহারা কোনদিন ভারতবর্ষকে বরেশ ব্লিরা
বীভার করে নাই, ভারতবর্ষের বাধীনভা-সংগ্রামে সাহায্য বা
করিরা সামাজ্যবাধী ইংরেজের চর অভ্চরের কাজই করিরাহে

এবং সর্বঞ্জারে বাবা শৃষ্ট করিয়া আলিবাতে, ছুই পুরুষে বুসলমান হইয়া মাহারা নিজেবের বাস আরবের অবিবাসী হালসাকিন বসিরহাট বলিরা পরিচর দিরাতে, ভাহারের বুবে
'হোমল্যাঙের' বুলি কেন ? ভারতবর্ণ হিন্দুর দেশ, ভারতবর্ণর
বাবীনতা অর্জন করিরাতে হিন্দু, বাবীন ভারতে বাবীনতা
ভোগ করিবার অবিকার যদি কাহারও বাকে তবে সে হিন্দুর।
হিন্দুর পুশাসনে বুসলমান নিরাপদে বসবাস করিতে পারিবে
বছজোর এই প্রতিশ্রুতি ভাহারা চাহিতে পারে এবং উহা
পাইবেও নিশ্চর সে বিবরে সন্দেহ নাই। কংপ্রোস-শাসিত
প্রদেশে বুসলমানের উপর অভ্যাচারের কাহিনী বে সর্বৈর
মিব্যা পীরপুর বিপোর্টেই ভাহা প্রমাণিত হইয়া নিরাতে।
সম্রতি বে করেকট হানাহানি ঘটরাতে ভাহার ভাল সর্বৈর
দারী বুসলিম লীগের উকানি। ভারতবর্ণ ভাগ করিরা 'হোমল্যাও' গভিবার আবার ভূলিবার কোন অবিকার ইহানের
নাই।

বাংলার হিন্দুর 'হোমল্যাও' বাংলা এবং পঞ্চাবের হিন্দু ও শিৰের হোমল্যাও পঞ্জাব। হিন্দু ভাষার স্বভাবসিত্র উদারতা-বলে মসলমানকে বাভিতে দিয়া নিজেই ছবেল হইতে উচ্ছেছ হইতে বসিয়াছে। হোমল্যাও দাবি এবং হোমল্যাও বহিঃশক্ত এবং গুৰুশক্ষর আক্ষরণ হইতে রক্ষা করিবার অধিকার ও দারিছ हिमूत । अवर क्रिक के कातरवर मुख्यातम, विश्वात, व्याचार, যাত্ৰাক ভাগ হইবে কিনা ভাহা নিৰ্বারণের অধিকারের কণা ছাড়িয়া দিয়াও সৰ্ব্বপ্ৰথমে আমন্ত্ৰা বলিতে পানি, ঐ সৰ প্রদেশ কোণার তোমরা ভাগ করিতে চাও বেণাও, কি বৃক্তি আছে বল। "Wholesale লোক বিশিষৰ অপৱিহাৰ্ব হইৱা উটিবে।" অভএব ভাহাদের জভ হিন্দুকে সরাইরা ভারণা টিক ताबिए स्टेर्ट बिलाम हिन्द ना। जासाता जानित किया. কে ভাষাদের আনিবে ভাষা পরিভার করিব। বলিভে ষ্টবে। আদকাটি পাঠাইয়া ভাষাই আছর এবং সরকারী বরচে আছার थ वामधारमञ्जातमा कविद्याश बारमा-महकाव विधारहत १० লক্ষের মধ্যে লাখ বেড়েকের বেশী লোক আনিতে পায়েন नारे এবং যাহারা আসিরাছিল ভারাদেরও অবিকাংশই ছিল পুৰ্যাৱা, ভবসুৱে, গুভাশ্ৰেণীর লোক। "হোলসেল" লোক বিনিষ্কের কর্ত বাহার। আৰু কোর গলার প্রচার করিতেছেন মাত্ৰ মাসবানেক আগে ভাষাৱাই কলিকাতা হইতে বিহাৱী-দের বিভাভিত করিয়া বিহারী কাঁটা উপলাইবার ভঙ আর্ভ নাদ করিবাছিলেন একবাও বেন তাঁহারা ভূলিরা না বান। তালিগড় বিশ্ববিদ্যালয় ন্যাগান্ধিনের পাকিস্থান সংখ্যার বোদ জিলা সাহেবই লাহোর পাকিছান এভাব এহণের পর লিবিরা-হিলেন যে, লোক বিনিময় কলনা অসম্ভব ও অবাভব এবং উহা বাছনীরও নহে। বাংলার বিহারী আম্দানীর চেঠার ৰেবা গিৱাছে লীগওৱালাদের সাধ্য উহা নৱ।

ভারতবর্বের উত্তর-পশ্চিম ও উত্তর-পূর্বের হয়ট প্রয়েশ প্রাস

ক্রিরা পাকিস্থান প্রতিষ্ঠার দাবি বিনি আত্ম চুলিরাছেন, সেই ৰিঃ বিল্লা আৰু ক্ৰেক বংগর আগেও পাকিলানের সীৰা মিৰ'বিৰ সহতে কি বলিবাছিলেৰ ভাষা ভিৰি প্ৰাৰ:ক্ৰণ করিতে চাহিতেছেন। ১৯৪২ সালে আমেরিকার ঘনৈক লাংবাৰিক ভিচা সাহেবকে পাকিছাৰ নৰতে প্ৰশ্ন করিলে ভিনি বলেন বে-সব এলাকায় মুসলথাদের অত্পাত শতকরা অভতঃ ৭৫ জন সেই এলাকাওলিতেই তিনি পাকিয়ান এতিঠা ভতিতে চাতের। 🗳 বংসরই আগই মাসে কংগ্রেস ওয়ার্ভিং ক্ষিট্র প্রভাবের উপর মন্তব্য করিতে গিরা আবারও তিনি वरनम् (य-जव बनाकांत्र रूजनमारमञ्जूषा) भारतका १८ सम সেইওলি লইৱাই তিনি পাকিছান প্রতিষ্ঠা করিতে চান। এই হিসাবে তিনি পঞ্চাবের বছজোর চুইট ভিভিস্ন এবং বাংলার চাকা ও চইপ্রার ভিভিসন এবং রাজসাহী ভিভিসনের একাংশ ৰাত্ৰ চাছিতে পাৱেন। অবাঞ্চিত বিতাকার উপত্রব এবং সদৰ্শ পুৰবাদের নিয়ত ছলিভা ব্ইতে বুক্তিলাভের জভ এই আভার অভার জানিয়াও বাঙালী তাহা পুরণ করিতে পারে। क्षि त निवास डेमनीच स्टेवां बवर मूचन वारनां जीमा বির্বারণের চড়াত অবিকার আছে আতীরভাবাদী বাঙালীর।

#### বঙ্গ বিভাগ ও লীগ

বদ বিভাগ আন্দোলনের গতি ও পরিণতি দেখিবা লীগ বেভ্রুক প্রবাদ গবিরাছেন ইহা তাঁহানের অনেক অসংলাই উভিতে প্রবাদিত হইতেছে। সভ্রতি নরাহিনীতে বিঃ প্রবাদর্শীর সাংবাদিক সন্দোলনর বভূতা, বিঃ জিয়ার বিরতি, বাংলার লীগ সেকেটারী বিঃ আবুল হাসেনের বিরতি এবং বলীর লীগ গুরার্কিং কমিটর প্রভাব তাহার প্রবাণ। বিঃ প্ররাবর্গী বদ বিভাগ আন্দোলনকে হিন্দু মহাসভার কাল এবং পরান্ধিতের বনোর্ভিসঞ্জাত বলিরা হিন্দুদের মধ্যে এ বিবরে বিমত আছে এই চাগানি বেলিতে চাহিয়াছেন। তিনি বলিরাছেন বে রাজনীতি ক্ষেত্র হইতে বিভাতিত হিন্দু মহাসভা এই প্রবাদেশ আবার কিয়িরা আলিবার চেটা করিতেছে। তিনি একথা বলেন নাই বে, হিন্দু মহাসভাকে যে কংগ্রেস গত নির্বাচনে পরাভ ও পর্যন্ত করিবাছিল সেই কংগ্রেস বল বিভাগের প্রভাব প্রবাদ করিছে। উল্

বদ বিভাগ অসাৰাভ কতিকাৰক হইবে (So fraught with unending mischief) এই বলিবা বি: সুৱাৰহাঁ আন্দোলন বহু করিতে উপবেশ বিবাহেব। কতিটা বেন হিন্দুৰই বেশী হুইবে এবন একটা ভাব ভিনি বেবাইতে চাহিবাহেন। ইহা ছুল; বদ বিভাগে কতি হুইবে একই, সে কতি বাবীনতাকানী আভীৱতাবাদী বাঙালীয় হুইবে না, পরস্বাপহরণে উদ্যত গুঙা শ্রেইব বে সব লোক গ্রন্থ হোতে পাইখা নাছবের বদরান প্রথম বারীয় লখ্যন কইবা বেলা করিবা বাংলায় ঘরে বরে আশাভিত্র আভ্যা আলাইবাহে কতি হুইবে ভাহাবেরই; কারন

বদ বিভাগের বারা ভারাদের শক্তির সমস্ত উৎস হাত হইতে বাহির হইবা যাইবে। হিন্দুর টাকা, হিন্দুর সম্পত্তি হাত করিরা হিন্দুর উপর যে অভ্যাতার চলিতেছে বদ বিভাগের পর সেই টাকা লীগের হস্ত্যুত হইবে এবং ভাষাতে কতি হিন্দুর হনবৈ মা, হই নিনের আব্বেগনেনীতে বাবা টিক রাবিতে না পারিয়া বাহারা হাতে বাবা কাটিতে উষ্যত হইবাহিলেন ক্তি ভারাদেরই হইবে! সুতরাং বারা দেওবার চেটা রবা।

মি: সুরাবর্গী তাঁহার বড়তার "বাবীন ও নাব তৌর কেন্দ্র হইতে বিজ্ঞির বাংলার" লোভনীর চিক্র আঁকিয়াহেন এবং আরাস দিয়াহেন সেই বাংলার হিন্দুর কোন ভর বাকিবে না। এই আবাস, প্রতিশ্রুতি বা প্রলোভনে আর কেন্দ্র ভূলিবে এরপ সভাবনা নাই। সিমুর হিন্দু, পঞ্চাবের হিন্দু ও শিব, বাংলার হিন্দু হাভা সীমান্তের পাঠানের বহন্তম অংশ পর্গন্ত পাকিহানের নরকে প্রবেশ করিতে বোর আপত্তি জানাইয়াছে কার্ল্লনিক বিষেষবলে নর, লীগওরালাদের মনোর্ত্তর পহিচর লাভ ভরিরাই ভাহারা লীগশাসনে মাধা গলাইতে আশ'ত জানাই— রাছে। বাংলা হইতে যে লীগ অভিযান স্থান হইয়াছে আগ্রের সুসলমানেরা পর্যন্ত ভাহার বিক্লাচরণ করিতেছে। গ্রন্থই জ্লো পাকিহানে প্রবেশের বিক্লছে মত প্রকাশ করিয়াছে। পাকিহানের অবঞ্চরাবী পরিণতি।

মিঃ প্ররাবর্ণী যুক নির্বাচন বানিবেন কিনা, লীগ কর্তৃ-পক্ষের সহিত হিন্দুর প্রতি আচরণ সহছে মতভেদ হইলে কি করিবেন ইত্যাদি প্ররের উত্তর না দিরা এড়াইয়া গিরাছেন। দিলীর হিশুছান টাইমস মন্তব্য করিয়াছেন বে বাংলার মাধা-বারাপ (erratic) প্রধান দ্রী বোব হয় রাজ্বানীন্তভ সমভ লাংবাদিককে বোকা ঠাওরাইয়াছিলেন।

ভবিশ্বং বাংলার সাম্রালায়িক মুখ্রীমঙল পাকিতে পারিবে मा रिजा प्रदार्थी जाएक जानाज विचारक किन अवस्थे रह কেন নাজ্ঞদারিক মন্ত্রীয়ঙল ভাঙিরা কেওৱা হইবে না ভাষা ৰলেন নাই। বে বাংলার ছবি তিনি আঁকিয়াছেন দেই বাংলার লেলান মি: পুরাবর্দীর হাতে পাকিবে। ভারার সভানিত্রার যে পরিচর আবাবের জানা আছে ভাহাতে ১৯৪৮ সালের ভিলেখন মালে মুডম সেজাস লইয়া বাংলার বিস্তুর সংখ্যা শভ क्यां विन चन देश (पर्वादेश चाम्या विचित्र स्टेन मा । अदे-লপ মনোরভির পরিচর ভাঁছার ঐ বিবৃতিতেই বহিয়াছে। चिनि वनिशास्म (व. ১৯৪১ नाम्बर त्नकारम समनवानस्वर প্ৰতি অবিচার হইরাহে বলিয়া ভাহারা মনে করে এবং উহাতে हिन्द मर्गा पूर ति कविया वियोगा स्टेशांट विवश छारा-(मब बाबबा। शदबब मूर्च निर्मन कथा जागावेरण खलान विः युवायमी चल: १४ विलाखाय व विक्वा विवयवारे विलाखाय পশ্চিম বচ্ছের হিন্দু ক্ষিকু এবং পূর্ব বহের বুসলমান ব্যক্তি ; ভংগড়েও ক্ষেৰ করিবা ১৯৩১ সালের সাক্ষরারিক অন্তর্গাড়

বজার থাকে। ইহা তিনি বৃকিংত অক্ষ। সর্বশেষে তাঁহার মন্তব্য এই বে, বাংলাদেশে এমন একট থানাও বুলিরা পাওয়া কটিন ধেথানে ংবহিন্দু এবং তপদীলী মিদাইয়াও বিদ্রা সংব্যাগরিষ্ঠ। ইহার সত্য নয়।

ভগশীলীবের মধ্যে কংগ্রেস অপেক্য আবেদকরী কেতা্রেশন দলের প্রভাব বেনী ইলা দেশালগের অলও বিঃ স্করাবর্দী
অগভোর আপ্রের লইয়াছেন। তিনে ব'লবাছেন, গত নির্বাচনে
অনিকাংশ কেডারেশনী প্রার্দ্ধী শেষ পণ্ড পরাজিত হন বটে,
কিন্দ্র প্রাথমিক নিবংচনে উল্লেখিই স্বাপেক্যা অবিক ভোট পাইরাছিলেন। প্রকৃত তথ্য এইরূপ: বলীর পরিবদে বোট ৩০ট তপশীলী আসনের মধ্যে ১৯টতে কংগ্রেস প্রার্দ্ধী দিছ করাশো হয়। তথ্যে ১০ জন বিন্যু বাধার নির্বাচিত হন। ১২ জন বিপুল ভোটাবিক্যে ক্ষলাক্ষ্করেন। ক্লোয়েশন মোট চ ক্য প্রার্দ্ধীর ভোট পান হল,১৫১ ক্যোরেশনীর।
হন। কংগ্রেসপ্রার্দ্ধীর ভোট পান হল,১৫১ ক্যোরেশনীর।
পান ১৭,৩১২। প্রার্থমক নির্বাচনে কংগ্রেস এবং স্বতর্ম প্রার্শ্ধীর। পান ১,০৮,২২০। ভোট, ক্যোরেশনীর। পান ১১,১২১।

মিঃ স্থাবদার বিবৃতি প্রকাশের প্রধিন বলার প্রাথশিক ব্সগীন লাগের সেক্টোরী মিঃ আবুল হাসেন এক বিবৃতিতে বলেন, সংখ্যালয় সম্প্রধারের লোকেরা যদি নিজেবের নিরাপরার কর্ম কত্র নিরাচন বাবহার দাবি না-করেন তবে ক্র্ডেশনবাচন-বাবহার বারা পাকিহান গবর্কেট পঠিত হইবে। ঘারীন বলে হিল্ম ও মুসলমানবের স্ব-স্থনীর ব্যাপারে হাচা আর কোনও ব্যাপারে কোনও প্রকার হতর অবিকাম সংয়ক্তি বাকিবে না। অতঃপর বিভক্ত বলের পরিপান সম্বর্কে হিল্মের তর ধেবাইরা হাসেন সাহেব লিবিতেত্বেন, 'বিভক্ত বদ্ধ সহরে মাত্রীর হাজালকুল্ম রচনা করা হউক না কেন আমি এ কবা লাইই ব্রিতে পারিরাহি যে তাহাতে হিল্মা বিদেশী পুলিপতিদের অবীনই দিন্যকুরের স্বান অবহাপ্রাপ্ত হইবে।"

লীগ ওয়াকিং কমিট বৌলানা আক্রার বার সভাপতিছে এক বৈঠকে নেতাদের সকে বদ বিভাগ সকৰে আলোচনা চালাইবার কচ একট কমিট গঠন করিবাছেন, তার নব্যে বৌলবী নিরাস্থীন পাঠান অভতন। আলাম অভিযানের কচ বিরাহে ইনিই তাহার বচ বিরাহার এবং অভিযানের প্রথম নারক। কমিট এক থিকে আলাম অভিযান এবং বাংলার হিন্দুদলন কার্ব চালাইতে বাজিবেন, অপর দিকে বিজ্ঞ বলে বিদেশী পূঁজিপতিদের অথাকা হইতে হিন্দুকে রক্ষা করিবার কচ হাত বাভাইবেন এবং তাহাদের বারণা ভাতীরতাবাদী বাঙালী এত নির্বোধ বে ইহাই মানিরা লইবে। গীগ নেতারা বাঙালী কিনুর বিধান একেবারে নিঃলেবে হারাইরাছেন, উলারতার ও ভবিন্যুতে কর্তব্য পালনের সহস্ত প্রতিক্রতিতেও আর কেহ ভ্লিবে না। উহাদের বিধানার, তাহাদের অত্যাচার এবং ব্যাইনীর

বৰ্ব ব্ৰতা বিংশ শতাকীতে 'কলাইরা আদিশার জন্ত ওঁংহাবের আঞ্চ ও চেষ্টার যে পহিচর বাঙালী পাইরংকে তাহাতে আর ভাহাবের উপত্ত আহা কি'হবার কোন আশা নাই।

মি: হা:সমের বিরতি সম্পর্কে আজাদ লিবিরাছেন, "একবার মি: হাসেহ বৃহত্ত বহের প্রতিষ্ঠার কালে কাদেবেল কংগ্ৰেমী মেতা মিঃ সরংচক্ত ২৬ছ সাবে বে ভাবে মিলিয়া-ছিলেন ভার কথা পাঠকগণ আক্ও ভূলিয়া যান নাই। এবার ভিমি পুনৱার তার চিরাচ রত ভূষিকার নামিরাছেম এবং অৰও বাংলার ভরিন্ততের ভাবনার তিনি তাঁর বেয়ালযাকিক একা একাই বাংলার ভিদ্পণ্ডে শতকরা ৫০ট রাজনৈতিক অবিকার ভাষের পালভরা প্রতিশ্রুতি বোষণা করিয়াছেন। মিঃ আবুল হাসেম বংলার মেড়ছের বৃথির ভারিছে ও মালিকামার একজত অবিকারীর ভূমিকা এহণ করির৷ নাটকীর ভগীতে ভানাইতেছেন, বাংলার হিন্দু ও মুসলমান বিঃ সি, আরু ছাসের ২০:২০-এর ভিত্তিতে বাংলার রাজনৈতিক সুৰোগ ও অধনৈতিক প্ৰবি। ভোগ করক। মিঃ আবুল श्टारायद अभव कवा छ'नेटनरे (भर धवाव वाकावेरे बटव প্ৰে---'বেৰানে কেৱেৰ ভ পা বাড়াইতে ভর পার সেবাৰে আহম্মক কাঁপাইহা পছে।…"

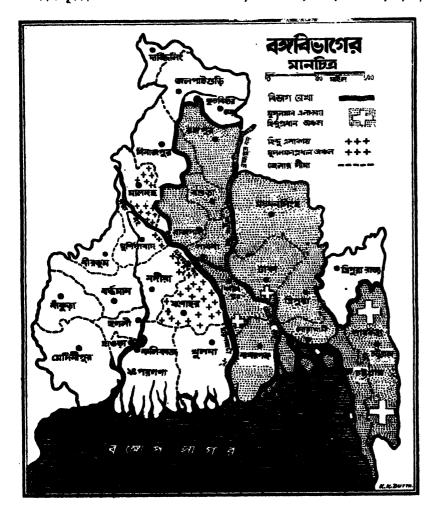
পুরাবর্ধি ও আবুল হাসেমের ভোকবাক্য কভচুর অসার সে কৰা আলাদ না বলিলেও বুদিনান লোক্ষাত্রেই ভাষা বুবে। আলাদ লীগদলের মনোবৃত্তি পরিকার ভাবে বুবাইরা বলিবার পরও বাহারা অবও সাক্ষভৌর বাংলার কবা বলে ভাষাত্রের আহাত্রকি বাত্তিকই অসীর।

### বাংলার দীখানা

বল-বিভাগের পর মুভন বাংলার শীমানা কিরপ হইবে ভাছা আলোচনা আরম্ভ হইয়াছে এবং অনভিবিস্থে এ বিষয়ে একট খির সিভাতে উপনীত হওয়া ভাবতক। সীমানা নির্ধারণ ক্ষিণনের কৰা উটিয়াছে কিছ তার পূর্বে বাচালীর নিজের यन चित्र कता वतकात । श्रीमामा त्रवटक मामा करम मामा खकाव ৰুক্তি-ভৰ্কের অবভারণা করিয়াছেন এবং মানা ত্রপ বানচিত্রও প্রকাশিত হইরাছে। সীমানা নির্ধারণ বিষয়ে পঞ্চাবের পছা বাংলাভেও অনুসভ হইতে পারে। কেলা বা বাদার লোক-সংখ্যাসুপাতের ভিত্তিতে শীষানা নির্দেশ অপেকা আরও সহক পছার অভ্সরণ বাহ্নীয়। পহাব ও বাংলা উভয় প্রবেশেই গাঁচট করিয়া ডিভিসন আছে ত্তৰব্যে ছুইট ডিভিসনে হিন্দু अवर इरेडेटल ब्रुजनमान जरवाजितिहै। वक्षमहित अकारत्व रिक् चनवाराम बुननवान नरना त्वी । नदात्व वावि देवैचाद्यः ৰে, ছুইট ক্রিয়া ভিভিন্ন এক এক অংশকে ছাভিয়া বিয়া প্ৰথম ভাগ কৰা হউক। বাংগাতেও টক এই বাবি ভোলাই বুক্তিসকত। এই হিসাবে বে ছুইট ভাগ হইবে ভাহার আরভন, लाकमर्या अवर बूजनवात्मव मर्याष्ट्रभाष कि स्टेर्स छोरा निता (क्यात्मा स्टेन :

		प्यचाना			2.662
		পশ্চিম বঞ্চ			
	বৰ্গৰাইল	নমত্র লোকসংখ্যা	ৰ্সলযান	অৰুসলমান	ৰুগলয়ানের অহুপাত শঙ্করা
সম্ঞ বৰ মান বিভাগ	28 <b>,2</b> 0¢	3,0 <b>2,79,06</b> 2	<b>38,₹≥,€</b> ∕©0	<i><b>tr,e9,t6</b></i>	
সম্ভ্ৰ প্ৰেসিডেখী বিভাগ	<b>36,8</b> 0₹	১,২৮,১৭,০৮৭	4 <b>1,</b> 55, <b>06</b> 8	13,00,100	88.4
ৱাজসাহী জিলার ২ট পানা	200	3,36,59>	£8,666	<b>৬</b> ২,৩১৩	84'9
यानपर किना	२,००८	22,02, <b>6</b> 34	<b>4,&gt;&gt;,&gt;</b> 8¢	<i>৽</i> ,৩২, <b>৬</b> ৭৩	66'F
৪ট বাদা ব্যভিৱেকে দিনাকপুর বিলা	৩,৪২৮	> <b>5,</b> > <b>6,</b> 960	9,48,553	۶, <b>۵</b> ۵,۹٤۵	84'1
খলপাইওড়ি খিলা	0,000	30, <b>53,63</b> 9	<b>२,43,8%</b> 0	r,0r,0e0	50.7
पार्किनिং किना	2,352	७,१६,७५३	2,396	৩,৬৭,২৪৪	₹'8
সম্ভ্ৰ পশ্চিম বৃদ	80,833	2,90,06,260	bb, 30,983	>, > 6, 24, 488	ه. ده.
•		পূৰ্ব্যব <b>হ্ন</b>			
সম্প্র চট্টগ্রাম বিভাগ	33,900	<b>⊬8</b> ,99, <b>⊬</b> ≽0	<b>6</b> 0,22,22)	२० <b>,४१,१३३</b>	9 <b>6 * 8</b>
সম্ভ্ৰ ঢাকা বিভাগ	30,8 <b>3</b> 2	১ <b>,৬৬,৮</b> ৩.৭১৪	১,১ <b>৯,</b> ৪৪,১१२	89,00,482	9 ) *&
রদপুর বিশা	<i>ত</i> ,৬০৬	<b>২৮,</b> ૧૧ <b>,৮</b> ৪૧	२०, <b>११,</b> ३৮७	४,२२,७७३	4.2.8
দিনাজপুর হইতে ৪ট বানা	<b>6</b> 2 <b>6</b>	<i>∞</i> ,20,8⊁∞	2,32,000	<b>৯৭,৯</b> ২৮	<i>ଜ</i> <mark>৮ '                                  </mark>
বঞ্চা জিলা	894,د	<i>&gt;&gt;</i> '#0'8 <i></i> #@	५० <b>,६१,</b> ७०३	२,०२, <b>१</b> ७১	F0,9
পাৰদা বিদা ২ট বাদা ব্যভিৱেকে	2,20b	<b>&gt;1,00,</b> 012	70'70'>AF	o,>3,308	44,7
রাজসাহী জিলা	२,७२७	<u> </u>	77,75,675	@,:56,765	96.5
সমগ্র পূর্ববঙ্গ	७१,०७১	७,२११०,२४०	2,80,38,630	b6,94,489	90.6

(elate)



## দীমানা নিধারণে প্রথম বক্তব্য

সীমানা নিৰ্বাহণকলে ক্ষেক্ট মুখ্য বিষয়ে আমাদের বারণা পরিষার থাকা দরকার। প্রথমত: বাংলা বাঙালী হিন্দুর দেশ। মুসল-मान अवादन जानककमाळ । मूंत्रन-মানের সহিত মিলিয়া-মিলিয়া হিন্দু একত বাস করিবার ২৩ ব্যাসাব্য চেঠা করিয়াছে এবং শেষ পর্বভ ভাছাভে বাৰ্থ হইৱাছে। নোৱা-ৰালী, ঢাকা প্ৰভৃতি যে সৰ ৰুসল-মান-প্ৰধান ছানে পাঞ্চদাৱিক গোলবোগ হইয়াহে সেবানে একট বিষয় অত্যন্ত উল্লেখযোগ্য যে খানীর লোকেয়াই হৃদর্বের নারক। देशारमञ्ज व्यवाम উरम्छ रिम्हरक বলপূৰ্বক ধৰ্মান্তৱিত করিয়া পাকি-ছাৰ প্ৰতিষ্ঠা। বৰ্তমান সাম্প্ৰ-দারিক মনোরভি ইংরেজ আমলের সাঞ্চারিক পুরক নির্বাচনের কল, ভংপূৰ্বে ইহা ছিল না এই আছ ধারণা বাঁহারা পোষণ করিভেছেন ভারতে ও ভারতের বাহিরে ইগলাম লাভাজ্য ছাপনের ইভিহাস পাঠ ক্ষিলেই ভাষাদের এই ছল णाहित्य। वर्षस्रकात्वय वागक

চেষ্টা এবং তার ক্ষা বলপ্রয়োগ বুসলমান শাননের ইতিহাসের বিশেষত্ব। ইংরেক-প্রবর্তিত পূথক নির্বাচন-প্রথা এই স্প্রটুপ্রবৃত্তি কাগাইরা ভূলিরাছে এই মাত্র প্রক্রেণ। বিকর অন্তের মনসামলন কাব্যে বে বর্ণনা আছে তার কিরদংশ এছলে উদ্ধুত হুইল:

হাস্য হসের ভারা ছই ভাইরের নাম।

ছইজনে করে ভারা বিপরীত কাম।

কাজিরানী করে ভারা জানে বিপরীত।

ভালের সর্বে নাই হিন্দুরানী রীত।

যাহার মাধার দেখে ছুলসীর পাভ।

হাতে গলে বাছি নের কাজির সাক্ষাং।

বৃক্ষভলে গুইরা মারে বল্লকিল।

পাধরের প্রমাণ বেন কড়ে গড়ে শিল।

বংশীধাসের মনসামণ্ড কাব্যে আছে:—

সাক সাক বলিয়া হাসন পাছে ডাক।
এক ডাকে বাহিরিল বোকা তিন লাব।
আসিয়া মিলিল সবে পর পূকা হান।
ই দেখিরা হিন্দুয়ানের উছিল পরাব।
কেহ পলাইয়া পেল কেহ দিল লড়।
কেহকে মারিল বাছি করে বছ কছ।
পূকা ভালি ঘটবারি ভালিয়া কেলায়।
যতেক বলল দ্রব্য পাছে হুই পায়।

মুসগমান শাসনে শাসকবর্গের সহায়তায় ও সমর্থনে এই অত্যাচার হইত। এইরূপ অত্যাচারের কল সেই প্রাচীনকালে কি সুইয়াছিল সে বিষয়ে বংশীদাসেছ মনসামদল কাব্যে নিয়োছত বিবয়ণও পাই:—

এই সব ৰুক্তি ভাষা করই বসিয়া।

ক্ষেকালে গোপ সব আইল সাজিয়া।
কয় বর মার মার বলে গোপ গণে।

মিঞা সব পদাইল ভর পায়া। মনে।

বনে কোপে গেল ভাষা সভালভি পাভি।

মিনা কাজি পদাইতে বরিলেক বেভি।

বাংগার ব্সল্যান আগমনের ছই শতাকীর মব্যেই এই
ব্যাপার স্কুক হইরা যার। তদবি এই সংঘর্ষ চলিরাছে,
ক্ষমণ্ড বেশী কর্ষমণ্ড বা কয়। স্প্রতান কাগাল্থীন এবং
নবাব মুশিরকুলি বা এই ছই ক্ষমের আমলেই বলপুর্যক বর্ষাত্তরকরন এবং হিন্দু দলনের চেটা অভ্যক্ত তীর ও ব্যাপক ভাবে
হয়। ভারতবর্ষে মাত্র ছই বার এই আক্রমণ প্রভিত্তর এবং
বিংশ শতাকীতে হামী প্রভানকের হারা। হিন্দুকে ব্সল্মান
এবং ব্সল্মানকে হিন্দু করিবার উভর চেটাই ব্যর্থ হইরাছে;
মারামারি হামাহামির হারাও কল হইবে মা ইহাও বেবা
গিরাছে। স্বভ্রাং বিনা রক্তপাতে এবং আপোষে এই সর্গ্রনারী
বিরোধের অবসাব চেটা হওটা উচিত।
মুসল্মানের মধ্যে হিন্দু এবং হিন্দুর মধ্যে ব্যল্যান অহলহ

ভীতির মধ্যে বাস করা অপেকা সীধানা পাহারা বেওরার ব্যবস্থা করা সহজ।

#### সামানা নিধারণে দ্বিতীয় বক্তব্য

সীমানা মিৰ্বারণে ছিতীর বক্তব্য এই বে, বাংলা কৰ্মও একট প্রদেশ ছিল না, বিভিন্ন সমরে উহার সীমানা বিভিন্ন রূপ ছিল। বাচ, বল ও বরেল্ল এই তিনটি লইরাই বর্তমান বাংলা গঠিত। স্করাং রাচ ও বল আলালা করা এবং বরেল্ল ভূমির মধ্যে বাঙালীর প্রাচীনতম ক্লটির প্রতীক স্থান গৌড় রাচ্চের সবিভ বুক্ত করা বল-বিভাগের সর্বোংক্লট উপার। গৌড় ও নবছীপ বাংলার ফ্লটিকেল, ইহাদিগতে বাদ দিরা বাঙালী হিন্দুর বাংলা গঠিত হইতে পারে না।

বিভক্ত বলের উভয় অংশের আয়তন ও জনসংখ্যার যে হিণাব দেওৱা হইয়াছে ভাহাতে পশ্চিম বদ এলাকার আরভন বেশী ক্টৱাছে। এই দাবিও বৃক্তিসমত। গত আৰ্চ বালের হানাহানিতে দেবা বিয়াছে পূৰ্ববদের হিন্দুরা পৈত্রিক ভিটা মাটি হাছিয়া চলিয়া আসিতেহেন এবং ইযোগপ্রাপ্তি মাত্র তাঁহাদের মধ্যে বহু লক্ষ্ণ লোক এবদই চলিয়া আসিতে প্রস্তুত। কিও পশ্চিম বলের একট মুসলমানও আৰু পর্যন্ত বছান পরিত্যাগ করিয়া পাকিস্থানে উটিয়া যাওয়ার অভিগ্রার প্রকাশ করেন নাই। ইহা হইতে অপুনান করা যায় বে, বিভক্ত বাংলার অধিবাসী বিবিময়ের প্রশ্ন অবাভর, কারণ প্রক্রিম বাংলার মুসলমানেথা পূর্ব-বছের পাকিছানে বাইভে চাহিবেন না, কিছ পূর্ববদের হিন্দুরা নিংশেষে চলিয়া আসিতে চাহিবেন। স্তরাং পশ্চিম বাংশার আরতন নির্বারণের সময় এই কবা भरन वाविधा पूर्ववरणव रिकृत्यव वर्ष क्या वावा चावतक इटेर्स्य । रक-विकारमञ्जूष च्याब्राम कटे कथा भर्तमा मान जाना দরকার যে, বাংলা বাঙালী হিন্দুর দেশ, এ দেশের উপর পূর্ব वकाविकात काशास्त्र । अक एम विटल्ली कामक वारमाध আসিয়া ছলে-বলে-কৌশলে সংখ্যাবৃদ্ধি করিয়া লইয়াছে বলিয়াই বাঙালী হিন্দু অনস্কলাল তাহাদের প্রটেক্টেড মাইনবিটি' হইয়া উহাদের দ্বার উপর নির্ভর করিয়া অভুগৃহীত জীবন যাপন করা অপস্থানজনক বলিরা মনে করে। বিজের দেশে পূর্ব আত্মকর্তৃথের দাবি বাঙাদী কিছুতেই ত্যাগ করিতে भारव ना ।

## বঙ্গ-বিভাগের দাবী প্রতিরোধের নৃতন ষড়যন্ত্র

বন্ধ-বিভাগের দাবী প্রতিয়োবের চেটার বুসলির লীগ-নেভারা নিত্য নৃত্য 'বৃক্তি ও তব্যে'র অবভারণা তুরু করিরা-দেন। বদবিভাগ সন্দর্কে তপদীলীদের মভামত এবং হিন্দুদের মধ্যে ভাহাদের সংখ্যা সহছে নানারূপ তুল সংবাদ প্রচাবের চেটা হইতেছে। গভ সেলাগে বহু হিন্দু নিজ নিজ জাতি না লিবাইয়া নিজেবের তবু হিন্দু বনিরা পরিচয় বিরাহেন। ইত্যাহের মধ্যে দর্শ হিন্দু এবং তপদীলী উভরেই আহেন। এ সকৰে ডাঃ ভাষাপ্ৰসাদ মুৰোপাখ্যাম বে বিবৃতি দিয়াছেন ভাষা বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগ্য এবং নিয়ে উহা প্ৰয়ন্ত কইল :

"এই মৰ্মে এক অভি আৰম্ভবি সংবাদ চান্নি দিকে প্ৰচানিত ' হইতেছে বে, কলিকাভাৱ হিন্দুদেৱ সংখ্যা হইতেহে 😘 লক্ষ बन्द जाराव बार्या जगनेनी मच्चनावरे सरेटज्य ३०। गज चावयत्रवात्रीय तिरुपार्ट वारनाय विकृत्यय विजान व्यवता रहेशाद जिमके विचित्र प्रकार, और जिमके टार्च रहेन अध्यक्त. ভপৰীলী আভি : হিভীয়ভ: হিন্দু তবে কোন বৰ্ণ তুক্ত ভাষা चामी बनारे एवं मारे अवर छुठीवछः, चश्र नकत्न। नका ক্ষিলে ৰেবা যাইবে বে, অভ কোন প্ৰদেশেই হিন্দের এইরূপ পুৰক পুৰক জাতিত্ব নামে আলাদা করিয়া বেক্ট করা হয় ৰাই। অভ সকল প্ৰদেশের সেজাসে হিন্দের ওবু তপৰীলী জাতি ও অপরাপর সকল এই ছুই ভাগে বিভক্ত করা হইরাছে। বাংলার রিপোর্ট এইরূপ বিশেষভাবে লিবিবার अक्षे कावन बहैशाधिन । जायबन्धशबीय मध्य वनीय आरमिक হিন্দু মহাগভা সমস্ত হিন্দের মধ্যে সকল একার শ্রেণীভেদ लाग करिया किनवार कर बारनवानि अक छोड चात्ना-नत्वर एक्के करवन अवर मकन रियुद्ध मिक्के अरे बनिया चारव-एम करतन (व. छोशांचा (वम मिणारिन मिरकरमंत्र ७५ हिन् वनिवा नाव ल्यान এবং निक्टाइव वच्छ वर्ष व क्या किश्रमाञ्च **देशक मा** करवम ।

"রিপোর্টে বৃসলমানদের মধ্যে বর্ণ জেদ বা শ্রেণীজেদগত কোন পৃথক ভাতির পৃথক উল্লেখ করা হয় মাই। তাহাদের সঁকলকেই গুরু বৃসলমান বলিয়া লেখা হইরাছে। সেবারকার প্রচারকার্বের মুলে আমাদের উদ্ধে হিল বাহাতে সম্প্র হিন্দুকের মধ্যে একভার ভাব আগ্রত হয়। কিছু তপশীলী লগ্রদারের মধ্যে এই আন্দোলন সম্পূর্ণ সাক্ষল্যরভিত হয় মাই কারণ তাহাদের মধ্যে বিক্রন্থ প্রচারকার্যন্ত অবিরাম চলিতে-ছিল। ইহা বাতীত তপশীলীকের মধ্যে বারণা অবিরাহিল বে, উাহারা নিজেনের আভি লাই করিরা মা লিখাইলে তাহার কলে হয়ত উহিলের। উাহারো উাহাদের প্রাপ্ত অবিকারসমূহ হইতে বঞ্চিত হইবেন।

"আবাদের এই আনোলনের কলে তপশীলী সন্ধান ব্যতীত অন্ত সকল সন্ধানরের বব্যে বাংলার সকল জেলাতেই বেশ তাল রকর সাড়া পাওরা সিরাহিল। এই উপলক্ষেত্রার লক্ষ্য কালারের বিলি করিবা বাংলার সর্বত্র হিন্দুদের আবাদের নির্দেশ অনুনারে কাক্ কনিবার ক্ষ্য আবেদন করিবাহিলার। ঐ সবর আবরা কাক্ষ্য আবন্ধ করিবাহিলার । ঐ সবর আবরা কাক্ষ্য আবন্ধ করিবাহিলার করিবাহিলার আশীর্বাধি সইবা, এবন কি কলিকাতা হবতে করি নিজ্ঞে ই সবরে আব্যবস্থারীতে নিজেকে তথু 'হিন্দু' বলিবা লিখাইরাহিলেন।

ভীনিবিত অবছার এ কথা বলা অত্যন্ত অভূত বে, বে-সকল নামের পহিচ বিশেষ বংশ র কোন কথা উল্লেখ নাই ভাছার মূব্যে তপশীলারা বংশই সংখ্যার বহিষাহেশ। বাংলার অন-সাধারণের বিভিন্ন অংশের লোকের সংখ্যা নির্ধারণের অভ বলি পুনরার লোকপণনা কয়া হয়, ভাষা ধ্ইলে হিন্দুরাই ভাষাতে দর্বাশেকা বেশী আমন্তি হইবে। গভ গোক-গণনার বৃদ্দির লীগের প্রবোচনার গবর্থেণ্ট অভারভাবে হতকেশ করিরাহিলেন বলিয়া ভাষার কলে বিন্দুরা দারণ ক্তিএভ হইয়াছে। আজু যদি বাংলার টক্ষত লোকগণনার ব্যবহা করা হয় ভাষা হইলে হয়ত ধেবা যাইবে বে এই প্রবেশে হিন্দুরা আলে) সংখ্যালঘু নয়।

"আৰি আশা করি বভঁমান সহটের সময় উপরি-উক্ত বিষয়-সমূহ হইতে কেহ কোনজপ রাজনৈতিক সুবিধা করিয়া সইবার চেষ্টা করিবেন না। এই সকল বিষয় উথাপন করিয়া বদ-বিভাগের দাবির বিরোধিভার চেষ্টা করা চলে নিমক্ষমান ব্যক্তির পক্ষে তৃণৰঙ আশ্রয় করিবার চেষ্টারই সমত্লা।"

ভাঃ ভাষাপ্রসাদের এই লাটোজির পরেও প্রধান বন্ধী মিঃ
ভ্রাবদী দিলীর সাংবাদিক সন্দেশনে সেখাসের এই বিষয়টির
ভ্রোগ লইরা দেবাইবার চেটা করিরাছেন বে, যে সব হিন্দু
সেলাসে ভাতি লিবান মাই তাঁহার! তপনীলী এবং বস-ভরের
বিরোধী।

### বাংলায় স্থায় বিচারের নমুনা

খন্দ্র মুক্ত কারীদের আইনের হাত হইছে রক্ষা করিবার চেটা কিভাবে চলিতেছে নোরাবালীতে তাহা বুব ভাল ভাবে বেবা নিয়াছে। সন্তাতি আলিপুর আঘালতেও তাহার একট উৎকট্ট নিগর্দন বিলিহাছে। গত আগট মানে মেটরাবৃক্ত আনা এলাকার সংখ্যালঘুদের উপর বে নুশংস আক্রমণ হয় সেই সন্দর্কে পূলিগ তবন্ধ করিবা ৪১০ ব্যক্তির বিরুদ্ধে ১১ট চার্কাসট ঘাবিল করে। কিছ দামলা কয়েক বার মূলভূবী বাকার পর ২৪ পরগণার অভিরক্ত পূলিস সুপারিক্টেডেন্টের বির্দ্ধের কোট লাব-ইন্ন্লেটর মামলাগুলি ভূলিরা লওচার ক্ত আবালতে বরবাভ করেব এবং বিচারকারী ব্যাক্টেটরা ঐ প্রার্থনা মঞ্জর করিবা আগামীদের সুক্ত দেন।

ব্যাভিট্রেটদের উপরোক্ত আদেশ নাকচ করিবার প্রার্থনা কানাইরা ১১ ব্যক্তি ২৪ পরগণার কেলা ক্ষত্রের আদালতে দরণান্ত করে। করু ঐ সকল দরণান্ত বিবেচনা করিরা ব্যাভেট্রেটদের আদেশ চলি নাকচ করিরা দেন এবং নামলাভূলি আইন অধ্যারে বিচারের করু আদেশ দেন। আদেশ দান প্রসাদে করু নিয়লিখিত মন্তব্য করেন:

"মানলার বিবরণ ছইতে যনে হয় যে, বেটরাবৃক্ত থানা অঞ্চল অভিনর ভরানক অপরাধসমূহ ব্যাপকভাবে অস্কৃতিত হয় এবং ভাহা হইতে এই মানলাগুলির উত্তব হইবাছে। বটনা লম্পূর্কে ভারতীয় মুক্তবিবির ৩০২, ৩০৭, ৩২৬, ৪৩৬ ও ২১৫ বারা অস্থলারে চার্জনীট হাবিল করে। ইহার বব্যে অবিকাংশ মানলাই সাজ্য এহণের পূর্বেই প্রভ্যাহার করিবা লইবার করে অসমতি দেওরা হয়। নামলাগুলির কোনটর যে সাজ্য-প্রমাণ বিচার করিবা ভাহা প্রভ্যাহার করিবা লহবাছে এবম বহু।

শ্বামি কানিতে পারিষাছি যে, অতিরিক্ত পুলিস স্থারি-ক্টেকেটের নির্দেশক্রমে কোর্ট সাব-ইব্যপেষ্টর নামলা প্রত্যা-হারের করু দর্শান্ত করেন এবং বিষয়ট সক্ষরে পাবলিক প্রানিকটির বা অতিরিক্ত পাবলিক প্রসিকিটির কাহারও সহিত পরামর্শন করা হর নাই। যাত্র হুইট মামলা সক্ষরে প্রাবলিক প্রসিকিটির প্রত্যাহারের পক্ষে মত দিয়াছিলেন, কিন্তু কো ম্যাকিট্রেট বা অতিরিক্ত কেলা ম্যাকিট্রেটের স্থ্পপ্র অন্থাতি সইরাই যে এই ছুইট মামলা প্রত্যাহার করা হুইরা-ছিল ভাহারও কোন প্রমাণ নাই।

"পাৰ্বলিক প্ৰসিকিটটৰ বলিয়াছেন যে, এই সকল মাম্লা প্রভাগেরের উদ্বেশ্ব ছিল সাজদায়িক সন্তাতি স্থাপনের চেটা। তিনি আছও বলিয়াছেন যে, কল্লেকবানি দরবান্তে মূল कतिशामीया याथमा প্রजाहात मन्त्रिक विशासम । अधिरक अ বিষয় সম্পর্কে বভ্যান ধংখাওকারীদের পক্ষ হইতে বলা एरेबाट्स (य. कठक श्रीण भवनात्त्र कदिवामीत्मव नाम चात्मी মাই, আবার পুলিদ স্বশারিকেভেকের নিক্ট প্রেরিভ দরবান্তে ক্রিরাধীর ধে নাম সহি আছে তাহা কাল। বলা হইরাছে যে, আগলে উভর পঞ্জের মধ্যে মতৈক্য আছে। ছর নাই এবং শান্তি ও সম্প্ৰীতির কৰা যাহা বলা হইয়াছে তাহা একটা বাজে অভুগত ছাড়া আর কিছুই নয়। আগলে মামলাংলি একট িবিশেষ দশুনায়ের লোকের বিজ্ঞান চলিয়াছে, পুলিদ ঐন্তলি काणः किरात अञ्च अकियातात्र जः भव कहेशा के द्विशाविक । अहे সকল অভিযোগ সত। কিনা তাহা বিচার করার আয়ার কোন **धार्याक्त मार्थ, जाद आभारक मिलिए एडेटव एव, माकिएब्रेडेबा** মামলাগুলি প্রভ্যাহারের জন্ত যে অনুমতি দিয়াছেন ভাষা কোনৱাপ অভারভাবে প্রভাবিত হইয়াখিল কিনা।

"अक्र विभिन्न (तन म्लेट दूव: याहेट उट्टा हेरा इटेट उट्टा बारे (य. चनदाव छनि प अविवि आ विदाय प्रवादाश्वक ৰৱণের এবং দেই সকল অপরাব অনুষ্ঠিত হইয়াছিল অভি ব্যাপকভাবে। ঘটনা খলি খুটিনাটির বর্ণনার ভায়াবছ পাশ্বিক-ভার এমন পরিচয় পাওরা যায় বাহার তুলন; মেলা ভার। এ ক্ষা ঠিক যে, সরকার পক্ত তাংগদের দরখাতে সন্মতিদাতা ৰাজিটেটরা মানলা প্রত্যাহারে সহায়তা করিয়া অরতর ভাষিত হাতে লইৱাছেন। যে সকল অপরাধের অভিযোগে ৰামলা হইয়াছিল তাহার কোনটই পক্ষয়ের সন্তিক্ষ্যে बिहारना चारेनभक्त रह ना। देश चलास चान्द्रवेद विवद যে, দালা সন্পর্কে কলিকাতা, হাওড়া ও আলিপুরে বহু মামলা नवर्ष के (कारवत महिल हानाहेश बाहे (करबन, अपह अला-स्टिब्र अट्याक्त एकेन ७९ (महिश्राद्क्टक्त मामनाथनि । वीहाबा यामणाश्चल लाखावाद कदिवादबन, छाशादवत छेटक्ट या मर्रहे क्षेक ना दबन, अ कार्यंत करण जागावती निजास प्रवंतजात পরিচারক বলিয়া মনে হউবে এবং যে উচ্চেপ্তে এ কাল করা क्टेम (महे देखके देशांक वार्य क्टेश वादेवांत महावना।

সমত বিষয় বিচার করিয়া আমি এই সিছাতে উপনীত হইয়াছি বে, মামলাগুলি প্রত্যাহারের অহমতি ধিয়া আসামীদের গালাগ দেওয়া মাজিট্রেইদের পক্ষে উচিত হয় মাই। আমি সমত মামলা পৃথকভাবে বিচার করিয়া দেখিয়াছি এবং আমার এই বারণ। হইয়াছে বে, প্রত্যেকটি ক্ষেত্রেই ম্যানিট্রেটের সিছাত ভূল হইয়াছে।"

আলোচনা করিবা বলেন বে, আসামীদের মব্যে ক্রেক্ডমকে
পূলিন পূর্বে অভিনর বদমায়েস ও ভরতর বভাবের বলিরা
বর্ণনা করিবাছিল এবং ক্রেক্ডনের জানিনের দর্ধান্তে পূলিস
বুস জোরের সহিভ বাবা দিরা বলিরাছিল বে, ভাহাদের বৃদ্ধি
দিলে পুনরার সাপ্রভাৱিক হালামার স্টি হইভে পারে। ইহা
ব্যভীত ক্রেক্ডন আসামীকে প্রাথমিক সাক্ষ্যপ্রধাণ অপুসারে
পূলিস দোমী বলিরাই বরিরা লইরাছিল, অবচ পরে সকলেরই
বিরুদ্ধে মামলা প্রভাহারের অভুমতি দেওবা হইল।

পরিশেষে কর্ম বংগন যে, বে ভাবে এই মামলা প্রত্যাহারের অম্মতি দেওরা হইবাহে তাহাতে ভার বিচারের মর্বাদা দ্বাপনে সহারতা করা হয় নাই। তিনি এই আদেশ খেন যে, ন্যাকিপ্রেটদের আধেশ বাতিল করা হইবে এবং আগামীদের আইন অধুসারে বিচার করিতে হইবে।

शास्त्रपादिक पार्वभावक एक दिल्लास्त्र है पत माजवकात ন্ত বাকায় অপবাধীদের শ্রেপ্তার করিয়া আদালতে ভার্কির ক্রিতে গাঞ্চিপতি হইতেছে, বিবেকবৃদ্ধিশপর কোন কর্মচারী ছুৰ্প্তদেৱ গ্ৰেপ্তাৰ কৰিয়া চালান দিলে উৰ্ছতন লীপ কৰ্মচাৰীয়া মামলা প্রভাগেরের আদেশ দিভেছেন এবং মামলা প্রভাগের অসম্ভব হইলে পরে দ্রাদেশ সাধ্ব অধ্বা স্থগিত করিবার वावश स्ट्रेट्ड । अया या नामक दावेश मुश्राम नीत्रद সভাপতির বিরুদ্ধে একট চৌছ বংসরের বালককে খলি করিয়া ছত্যা করার থাবে অভিবক্ত করা হয়। বিচারে গুলা বাঁর लानमञ्जू चारम्य इस । हाहरकार्टेख बहे मधारम्यहे यहाम बारक अवर विठावनिज्ञा मध्या करवन य वानक विक् सब् এই কারণে ভাষাকে যে ব্যক্তি হত্যা করিয়াছে দে কোনরপ দ্বা লাভের উপযক্ত নহে। কিন্তু লীপের দ্বা উৎলিয়া উঠিতে विजय एवं मारे, समा बाव लानपनारम्म मक्त कवा एरेबारम। हाका (क्लाइ अक्षे देखेनियन त्वार्डव (अनिएक्डे क्यू मिका এক জন হরিজন নেডাকে মারারক আবাত করিয়া ভাঁচার ल्यानश्वि पहारेगांव क्रियांव प्रवाद विकाद क्रियां भागांच হর এবং মাত্র আটি মাস সভ্রম কারাদতে দ<sup>্</sup>ওত হয়। বাংলা সরকার অসু যিঞার এই মঙাদেশ ভোগ স্থপিত রাবিবার আদেশ দেন। আর একট মামলার কুলিকাতা পুলিসের अक क्रम अभिकेषि क्रिमनाय अक क्रम देशालकेय अवर अक्री बानाव भावताल बारवाना, जिन करनर बुननमान, रागरवाचा খলি করিয়া বাদের একট আরোহীর বুড়া বটাইবার অভি-

বোদে কলিকাভার অভিরিক্ত প্রেলিভেলি ব্যাজিট্রেট বিঃ আলি রেজার আবালতে অভিযুক্ত হয়। অভিযোগের ভগতের ভার নৈগরা হয় ইহাদেরই উর্ক্তন একজন পুলিল কর্মচারীকে এবং ভাহার রিপোর্টে নির্ভৱ করিরা কোন লাক্য প্রযাণ না লইধা অথবা কোন প্রকার বিচারের চেটা না করিরা ম্যাজিট্রেট উহাদিগকে যুক্তিকান করেন।

নোরাধালীতে বাহাদিগকে গ্রেপ্তার করা হইরাছিল তাহাদের বার করেকখন ছাড়া লকলকে হয় একেবারে নরত স্থামিশে বুক্তি দেওরা হইরাছে। ইহাদের মধ্যে অনেকে হিন্দুদের নাবে পান্টা বামলা করিরাছে। এই সব পান্টা মামলার বিচার আলে আরম্ভ হইরাছে, বুল মামলা মুলতুবী আছে।

পুলিসের কাক অপরাবের সাক্ষ্যপ্রমাণ সংগ্রহ এবং বিচারকের কাম প্রকারে ঐ সব সাক্ষ্যপ্রমাণ গ্রহণ করিয়া অপরাধীয় দওবিধান। পাকিস্থানী রাজত্বে বাংলার এই ছই ব্যবস্থাই উঠিয়া সিয়াছে। বুন, মারাত্মক কবম, গুছে করি-সংযোগ, নারীবর্ধন প্রভৃতির স্বায় গুরুতর অপরাবের প্রমান সংএহ করিবার দায়িত্ব পুলিগের, যে পুলিস ইহাতে অসমর্থ ভাছার পদচুটি স্বাভাবিক নিয়মে অপরিহার্থ। অবচ বর্তমান মন্ত্ৰীদের আমলে বেৰানে হিন্দুদের উপর এই প্রকার অপরাধ অনুষ্ঠিত হইতেছে সেধানে পূৰ্ণলগ পরম নিবিকার চিত্তে "কোন প্রমাণ নাই" বলিয়া রিপোর্ট দের এবং বিচারপতিরাও এই পুলিদ রিপোটকেই চরম দিছাত মানিয়া পুট্যা অপরাধীদের ছাভিয়া দেন। এত মারাত্মক সব অপরাধের প্রমাণ পুলিস কেন সংগ্রহ করিতে পারে নাই এবং পুলিসের প্রাথমিক দারিত পালনে এই অক্মতার বত তদত্ত্বারী কর্মচারীদের পদচ্যত করা উচিত এরপ একটও মন্তব্য কোন বিচারকের निक्र रहेए लामा (नन मा। देशात कातन तान एक अहे বে. এক দল পাকিছানী অভ্যাচারের সমর্থক অপর দল চাকুরীর তরে অববা পলোরতির লোভে সভ্য স্বীকারে ও প্ৰকাশে ভীত।

#### নোয়াখালীতে এখনও অরাজকতা

নোরাধালীর পরী অঞ্চল এবনও লুঠন, অগ্নিকাও প্রভৃতি
নানারপ অরাজকতা চলিতেছে। প্রীরুক্ত সতীলচক্ত দালওও
এবং প্রীরুক্ত হারাণচক্ত বোব চৌবুরী নহাদা গাড়ীকে নোরাধালীতে পুনরার উপত্রব বুলির সংবাদ জানাইলে গাড়ীকী
বিচলিত হইরা এই মর্মে তার করির। তাহাদিগকে জানাম
বে, তিনি মনে করেন নোরাধালী হইতে সংখ্যালয় সম্প্রদারের
লোকদের চলিরা আসা উচিত। অভবার তাহাদের এই
উন্নতার আওমে পুড়িরা মরিবার অভ এডত হইতে হইবে।
সংখ্যালয়্ সম্প্রদারের লোকদের এই হুইটর একট পধ্ব
বাছিরা লইতে হববে।

ব্যবাদী নিৰ্বাশের খন্ত প্রবোজনীয় সম্প্রাহানি না

পণ্ডেরার পুনর্বস্তি কার্ব অসম্ভব হুইরা উঠিবাছে। ইহা ব্যতীত সংখ্যালবুদের বরবাড়ী আলাইয়া দেওয়া, বলপুর্বক পক বাহুর দইরা বাওয়া, রাজে দলবভাবে ভাহাদের উপর আক্রমণ প্রভৃতির সংখ্যাও দিনের পর দিন বাছিরা চলিরাছে। এমন কি উংশীভিতগণ ঘরে কিরিয়া গিয়া ক্ষমি চাষ করিতে চাহিলেও বাৰা দেওৱা হইতেছে। চুবুভি এবং পদাভক আসামীপৰ বিনা বাৰায় ঘুরিয়া বেড়াইভেছে এবং প্রকাঞে সভাস্মিতিও করিতেছে। নরস্ত্যা, অরিকাও ও সুঠনের অভিযোগে যে সব মামলা দারের করা হইরাছিল উপর্জ সাক্ষ্য-প্ৰমাণাদি পাওৱা যায় নাই বলিয়া সেওলির চুড়াত রিপোর্ট বেওরা হইভেছে। ১২০টি মামলার ৬৯১ কনের विक्रटक ठार्कनीठे पाविन कता एटेशाबिन। देशापत यदा ৪৮০ ক্ষ এখনও এেপ্তার হয় নাই। ইহাদিগকে পলাভক বলিয়া বলা হয় কিন্তু প্রকাণ্ডে ইছারা গ্রামে ঘুরিয়া বেড়াইলেও পুলিস ভাহাদিগকে ধরে না। অক্টোবরের ঘটনা সম্পর্কে श्रीय हुई शकांव याथमा मार्यिय कवा क्रियाधिम । जन्द्रा উপর্ক্ত সাক্ষ্যপ্রমাণ পাওয়া যার নাই এই অভুহাতে ৭৬০ট মামলা বাভিল কয়া হইয়াছে। মোট ১০৬১ জনকে গ্ৰেপ্তার कवा रहेशाधिम । जबर्रा ७०१ चनरक मुक्ति (एउदा रहेशास्त्र, ৬৬৮ খন খামীনে খালাস পাইহাছে এবং মাত ৫৪ খন বৰ্তমানে হাজতে আছে। উপক্ৰত এলাকায় ধানাখলি **इटेंटि अब्छ हिम्मू कर्म जातीक दम्भी कर्दा इट्डाइ.। या** जब कर्म हाबी इब्रिंडर बिक्र का हा नी है भाविल करिया कि ভাষাদিগকেও বদলী করা ছইয়াছে। যে স্ব কর্মচাতী ভালামা দমনের বা গুঙা ভোগ্তারের চেটা করিয়াছিল ভাভাদের विकृत्य अधिवात छेपालन कहा श्रेशात्य । अहे भव कर्माधीत मत्या चत्मरकं नात्म भाष्ठा मामणा भारतत कविया जाश-দিপকে পর্যাপত করা হইতেছে।

এই প্রকার অবহা অবগত হইরা গানীকী মি: ছরাবর্গীকে এই মর্মে টেগিগ্রাম করেন, "আমি নোরাবালী জেলার অরাজক অবহা সম্পর্কে বহু তার পাইতেছি। এই সমন্ত তারে মর্মন্তেদ ঘটনার বিবরণ দেওরা হইয়াছে। গ্রীযুক্ত সতীশচল হাশওতের নিকট হইতে যে সমন্ত তার পাওরা গিরাছে তংগ্রতি আপনার দৃষ্টি আকর্ষণ করিতেছি এবং এতংসম্পর্কে অবিলয়ে ব্যবহা অবলয়ন করিতে অনুরোধ করিতেছি।"

গাঙীখীর এই টেপিথাম প্রকাশের পথ মি: সুরাবর্ষী এক বিরতি নিরা নোরাবালীর অভামির সংবাদ উভাইরা দেওরার চেটা করেন। তিনি বলেন:—

"অসমবিত সংবাদের উপরে নির্ভর করিরা সংবাদগত্তে করেকট টেলিগ্রাম প্রকাশিত হওরার আমি ছ:বিত। ইহাতে এক অবাহ্যকর অবহার প্রট হইরাছে। আমি যথমই শ্রীসতীল চালগুপ্ত কিহা মহাদ্যা গাছী কিহা অভ কাহারও নিকট হইতে কোনও অভ্যাচার, অঞ্জীতকর ঘটনা কিহা

ভাহার আভাদের সংবাদ পাই, ভবনই আমি উপর্জ বাবছা " অবস্থম করি এবং সমন্ত পরিছিতিট পরীকা করিয়া দেখি। স্থানীর কর্তপক্ষ এই সহতে সমন্ত ব্যবস্থা প্রহণ করেন এবং প্ৰাৰই ইছা দেখা দিৱাহে বে, এই সমন্ত সংবাদ ভিডিহীন কিছা অভিনন্ধিত এবং তাহা আভকপ্রস্ত, অভএব এই সমন্ত সংবাদাদি 'বৰোপৰ্কভাবে পৰীকা না করিবা প্রকাশ করা অভ্যন্ত অবিবে-हमात काक स्टेबाट्ट। देशाटण हैटलकमा बृद्धि भाईबाद अवर পরিছিভির অবনভিরই সম্ভাবনা। সাম্প্রদায়িক মনোভাব উঞ হইরা উঠে এমন সমস্ত বিবৃতি প্রকালের আমি নিকা করি-তেছি। এই সম্বদ্ধে বিশেষ সাবধানতা অবলম্বনের ভয় এবং যত উচ্চ মহল হইতেই এই জাতীয় সংবাদ প্রকাশিত হউক না কেন তাহা সংবাদপতে না প্রকাশ করার ছত আমি অপ্রোধ সানাইতেছি।" প্রধান মন্ত্রী স্বারও বলিয়াছেন যে, "তাঁছার যত পূর জানা আছে ভাষাতে নোয়াবালির অবস্থা খাভাবিক चारह। भुषक भुषक पहेनात मश्रद भुषक भुषक वावश्र অবদন্ধিত হইবে এবং সেইঞ্জি ঘটলে আকাশ ভাঙিয়া পড়িগ বলিধা মনে করা উচিত ছইবে না। তিনি মহাতা গাড়ীর নিকট হইতে ঐ সম্পর্কে এক টেলিপ্রাম পাইয়াছেন বলিয়া জানান। তিনি ঐ সহতে ধানীয় অফিশারদের সঙ্গে জালাপ-चारलाम्मा मानावेरण्डम अवर खार्याक्य व्हेर्ण, मरवामापि পাইবার পর মহাত্মানীকে উত্তর দিবেন।"

নোয়াৰাণীর অবস্থা খাভাবিক বলিয়া দেবাইবার এই চেষ্টায় অত্যন্ত বিক্লোভের সঞ্চার হয় এবং ডাঃ স্থায়াপ্রসাদ মুবোপাব্যায় উহার জবাব দিয়া বলেন:—

"নোরাখালির অবছা বাভাবিক বলিরা প্রবান মন্ত্রী সংবাদপত্রে যে বিশ্বতি দিয়াছেন ভাষা পাঠ করিয়া আমি বিশ্বিত
ছইয়াছি। অনসাবারণের শ্ববণ থাকিতে পাবে বে, নোরাখালী
সম্বন্ধে ব্যবস্থা-পরিষদের করেকজন হিশু ও মুসলমান
সদক্ষের এক সন্মেলন আহ্বান করেন। ঐ সন্মেলনে করেকট
অব্রন্ধপূর্ণ সিভান্ত করা ছর। প্রথমতঃ দ্বির হয় যে সাহায্যক্ষেত্রভূলি বন্ধ করিরা দিবার যে কথা উঠিরাছিল ভদত্যারে
কাল না ছইরা পুনরাদেশ না ছওরা পর্যন্ত ওভুলি বোলা
রাখা ছইবে। বিভান্ততঃ, সন্মেলনে আম্বা সংব্যালধিন্তিদের
উপর অভ্যাচার সম্পর্কে করেকট ঘটনার উল্লেখ করিলে পর
প্রধান মন্ত্রী প্রতিশ্রুতি দেন বে, অবিলক্ষে তিনি ঐ সকল
অভিবাস সম্বন্ধে নিরপেক ভদত্যের আদেশ দিবেন।

"সংম্পানের পরদিন আমি দিল্লী চলিরা যাই। বাইবার সমর আমি শ্রীর্জ্ঞ নির্মানন্ত চটোপাব্যারকে বলি যে ভিনি বেম নোরাবালীর উপক্রেড অঞ্চলগুলির হানীর নেড্রন্থের সহিত পরামর্শ করিরা ও উংশীভিত ব্যক্তিদের প্রতিনিধিদের সহিত আলোচনা করিবা এই সক্ল ঘটনার একটি সম্পূর্ণ তালিকা প্রস্তুত ভ্রেম। শ্রীর্জ্ঞ চটোপাব্যার গত ২৪শে মার্চ এই

তালিকাট প্রধান মহীর নিকট পাঠাইরা বেব। উহাতে চারিপটিরও অবিক পূর্তন, অরিসংযোগ, বলাংকার, অবনৈতিক বরকট ও সংখ্যালবির্চ সম্প্রদারের উপর উংশীক্ষনের বটনার উরোধ করা হইরাছিল। ইহা ব্যতীত অভিবাপ করা হইরাছিল বে, একট পরিবারের ১> অব লোককে পাশবিক্ষণেবে হত্যা সম্পর্কিত একট ঘটনার কেরার আলামী প্রকাপ্তে রিরা বেড়াইতেছিল এবং পোভাষারা প্রভৃতিতে নেতৃত্ব করিতেছিল অবচ পুলিস ভাহাকে প্রেপ্তার করে নাই। বে ভারিধে এই সকল অভিযোগের বিবরণ দাবিল করা হয় ভাষার পরও উপরোজ্ঞ বরণের আরও ঘটনার কবা আমাদের আনান হইরাছে।

"ঐ সকল ব্যাপার সম্পর্কে সুরাবর্ধী কোমরূপ ভদন্তের আদেশ দিরাছেন কিনা ভাষা আমাদের বা নোরাবালীর উংশীভিত অধিবাসীদের কেবই জানে না। যদি তিনি নিরপেক তদন্ত করিবার প্রতিশ্রুতি রক্ষা না করিরা বাকেন ভাষা হইলে ভাষার হারাই তাঁহার ৩৯৩র কর্ত বাচ্যুতি ঘটরাছে। আর সমন্ত বিষয় জানা সন্তেও তিনি যে কিছুই না জানার ভান করিভেছেন ইয়া আরও ওঞ্জন্তর চিত্তার ক্ষা।"

এই বিশ্বতি প্রকাশের পর দিন, ১০ই এপ্রিল, জীর্জ নির্বাচন্দ্র চটোপাব্যার এবং আরও করেকজন নোরাবাদী অভিমুবে রওনা হইরা যান। প্রধান মন্ত্রীও জনমতের চাপে বাব্য হইরা হানীর কভিপর কর্মচারীকে কৃষ্ণিকাভার আহ্বান করিয়া একটা মুবরজা গোছের বৈঠক করেন এবং ভার পরেও বলেন বে এমন কিছুই বটে নাই বার জল নোরাবাদীর অবস্থা বারাণ মনে করিতে হটবে।

ত্রীর্জ গতীশচল্ল দাশগুর অভঃশর কাকিছবিল ক্যাম্প হইতে একট বির্ভি দিলে দেবা যার বে প্রবান মন্ত্রীর উজি ভিত্তিহীন। তিনি বলেন যে, ১৪ই কেব্রুরারী হইতে ১৪ই এপ্রিল পর্যন্ত তিনি নোরাধালীর পুলিস মুণারিক্টেডেন্টকে ৯০ট অপরাবের বিবরণ দাবিল করিয়াহেন কিছ তার কোন প্রতিকার করা হর নাই। ত্রীর্জ দাশগুরের পূর্ণ বির্ভিট এই (তারিব ১৫ই এপ্রিল):

"জারি এতদিন সংবাদশতে কোন বিরতি প্রকাশ করিতে চাহি নাই। আমি এতদিন তবু নোরাবাদীতে ঘটনাওলি সন্দর্কে সমস্ত বিষয় হানীর কর্তৃপক্ষকে ও প্রধান মন্ত্রীকে জানাইরা বাইতেছিলাম ও গাছীলীর নিকট সমস্ত বিবরণের একট করিরা অস্থলিপি পাঠাইরা বিতেছিলাম। আমি বে এতদিন এ সকল ব্যাপার সন্দর্কে সংবাদপত্তে কোন বিরতি দিই নাই ভাহার কারণ এই বে, গবর্ত্তের কার্বে সন্তবশর কোন কিছু বাবার স্কট করা আমার অভিপ্রেত ছিল না এবং আমার আশা ছিল বে, গবর্ত্তের প্রবোদনবোধ করিলে ভারারের কার্বপ্রণালী পরিবর্ত্ত করিতে পারিবেন। কিছু কলার প্রবাদ করিছে কার্বনার প্রবাদ বিরতি প্রকাশ করিরাহেন ভাহার

একটা উত্তর দেওরা প্রবোদন ক্ষরা পঞ্চিরাছে। আনি সংবাধ-পত্তে কোনত্রপ রিপোর্ট ছিলা থাকি একথা বলিরা প্রধান মন্ত্রী একট ভূল করিয়াহেন।

"প্ৰবাদ মন্ত্ৰী জেলা কৰ্ডপক্ষের দিক্টী বে বিপোট পাইৱা ৰাতুন না কেন বৰ্ত নানে নোৱাৰালীতে অৱি-সংযোগ, ব্যুক্ট ও ভীতিপ্রদর্শন চলিতেছে। আমরা চাই হিন্দরা এবানে বাস করক। এই কারণেই আতত্তের স্ষ্ট করা আমাদের নীতি ও উদেভের পরিপত্নী। প্রধান মন্ত্রী ও গাড়ীকীর নিকট আমি বে সকল টেলিএাম পাঠাইয়াছি তাহা সমন্ত সতা বটনার উপর দির্ভর করিয়া করা ঘটয়াছে। প্রধান মন্ত্রী বলিয়াছেন যে ঐ সকল বৰ্ণনা আৰু ছবি। এ বিষয়ে ভাছার সহিত আমি ভিন্ন মত হইতে বাধ্য। পত ১৪ই কেব্ৰুৱারী হইতে এয়াবং আমি পুলিদ সুপারিকেতেকের নিকট মোট ১৩ট ঘটনার বিবরণ पार्थिल क्षित्राहि। अर्थे त्रकल प्रतिमा त्रन्तर्थ अपूत्रकान रुख्या উচিত। এই সকল ঘটনা হইতে কেলার সাম্প্রদারিক পরিছিতি সন্দৰ্কেও কতকটা আনাৰ পাওৱা যাইতে পাৱে। শোনা যাইতেছে যে, গত অক্টোবর মাণের ছালামা সম্পর্কে যে সকল লোকের বিক্রছে মামলা চলিতেছে ভাষাদের অধিকাংলের विकास चार अहे मामना हामात्मा करेरव ना । अहे व्यानादि বেষৰ অৰ্থপূৰ্ব ভেষনি উৱেগৰনকও বটে। কেরারী আসামীর! চতুৰিকে উপদ্ৰব স্কট্ট ক্ৰিয়া ফ্ৰিবিতেছে। তাহাদের এই সকল ভার্মকলাপ বন্ধ করিবার বাবস্থা করিতে হইবে।

বিংলাদেশের রচনাত্মক কার্বের প্রধান কর্মারা এবন গাড়ী ক্যান্সে কান্ধ করিছেছেন, ইহা ব্যতীত গাড়ীকীর সেবা-প্রায়ের করেকন্দন সহকর্মাও এবানে রহিয়াছেন। ইহাদের মধ্যে করেকন্দন সহকর্মাও আছেন। বর্তমান পরিছিতি সম্পর্কে আমাদের সকলেরই মত এক; তবে এক এক অঞ্চলে অবস্থা এক এক রক্ষ রহিয়াছে।

"আৰৱা আশা করি, সমানে কাম করিরা যাইব এবং জনসাধারণ বিপদের মধ্যে ছির থাকিতে চেষ্টা করিবেন। প্রধান মন্ত্রী যে বিশ্বতি দিরাছেন তাহার পরও আমি আশা করিতে থাকিব যে তিনি যদি সভাই গাড়ীজীকে বিহারে কার্যতে রাধিতে চাহেন তাহা হইলে তিনি এবনও তাঁহার নীতির পরিবর্তন করিবেন।"

ত্ৰীৰ্জ নিৰ্বাচক চটোপাব্যার বিহনত এলাকাণ্ডলি পরি-ধর্ণন করিরা কিরিয়া আসিরা যে বিশ্বতি বেন তাহাতেও ত্রীৰ্জ সতীশ দাশগুরের উক্তিই সম্বিত হয়। এই বিশ্বতিতে বলা হয়:—

"সংখ্যালন্ সন্তালার ছানীর শাসন-ব্যবছার সম্পূর্ণ আছা হারাইবাছে। সন্তাভি আবার গোল্যাল স্থান্থ হইরাছে। অবিসংযোগ, চুরি, বর ভাতিরা ভোর করিরা কিনিস্পত্র অপ-নারণ হামেগাই বইভেছে। কাজিয়াগল ক্যাম্প হইতে এইরপ ৭০ট অটনা ভব্যবহ কর্তৃপক্ষকে, জানানো হইরাছে কিছ এবনও এ সম্পর্কে কোনও ভদত হয় নাই। প্রায়গঞ্জ থানাভেই গোলবোগ বেশী চলিয়াছে। এই অঞ্চেই ছবুভাষের বাসছাম। গোণেরবার মামলার আসামী এখনও কেরার অবচ ১০ই এপ্ৰিল ঐ ব্যক্তিকে পোড়াদহ বেল-টেশনে দেবিতে পাওয়া याद । ১৩ই এপ্রিল রামগঞ্জ বানার অধীনে এক চাবের দোকানে উহাকে দেখিতে পাওয়া যায়, অৰচ পুলিসই নাকি ভাছাকে দেবিভে পার না। সানীর শাসন-বাৰয়াডেও গাল্ডায়াত্বিক মনোভাব প্রকাশ পাইয়াছে। বর্তমানে বে সকল ঘটনা ঘটতেছে ভাষার মব্যে একটি ঘটতেছে সংখ্যালয় সম্প্রদারের অর্থনৈতিক বছকট। কোন কোন স্থানে বাহির ফুটতে দুৱলা আটকাইয়া বাডীতে আৰুন ব্রাইয়া দেওয়া ছইতেছে। সংব্যালয় সম্প্রদানের একটি সোকের একবানি কটর অভত স্থাইয়া লওয়া ছইয়াছে, বেপ্থোয়া ভাবে ১৪৪ বারা ভঙ্গ করা হইতেছে। শোভাষ্ট্রো বাহির করা, অনি উচ্চারণ ও সভাগমিতি করিয়া সংখ্যাসঘুদের উপর অভ্যাচাহের উস্থানি দেওয়া ছামেদাই চলিতেছে। **ছ**লৈক মন্ত্ৰী মহালয় বামদ**্ৰে** शाकिष्ठान हिराम भक्षा करियार काम बादाश करियारहर । পক্ষরি ও প্রত্তাং নিত্রকার ঘটনা হট্যা ইভাইয়াছে। ষামলা প্রভাবের করিবার জন্ধ অনেক্ষেই শাসান क्रेबाटक ।

"এই সকল সংবাদ নিয়খিত থানার পাঠান সন্তেও কোনও
ব্যবস্থাই অবলখিত হউতেছে না। ৭৬০টি মানলার চুড়াল্ড
বিবরণ পুলিসের তরফ হউতে পেশ করা হইবাছে। সাবাহণ
ভাবে অভিযোগগুলিকেও সত্য ধলিয়াই ধরা হইবাছে কিছ্ব
পুলিস চার্জনীট দালিল করে নাই। নৃতন পুলিস অপারিন্টেনেন্ট বলিয়াছেন ভাঁচাকে না দেখাইয়া কোনও চার্জনীট
দালিল করা চলিবে না। ইহার ফলেই পুলিনী লাসন-ব্যবস্থার
উপর হইতে লোকের আহা চলিয়া যাইতেছে। এমন কি
চার্জনীট দালিল করা সত্তেও অবিকাশে ক্লেতেই আসামী
করার। ৬১১ জন লোকের মধ্যে ৪৮১ জন এবনও কেরার
অপচ তাছাদের এেথার করার উপযুক্ত ব্যবস্থা হয় নাই।
বোট ১০০২ ব্যক্তিকে তেথার করা হয়। উহার মধ্যে ৩০৭
জনকেই ছাড়িয়া দেওয়া হইবাছে। ৬৬৮ জনকে জামিনে
বালাস দেওয়া হইবাছে। মান্ত ৫৪ জনকে হাজতে রাবা
হুইবাছে।

শ্রেকে ত এই ব্যাপার তাহাতে আবার সংব্যালবুদের বিরুদ্ধে মানলা আনা হটরাছে। এইরূপ নানলার সংব্যা ১০০টা। রারপুর বানার ভারপ্রান্ত কর্মচারী ছিলেন সংব্যালবু সম্প্রদারের। তাহার আমলে ৪০ট চার্কনিট লাবিল করা হয়। লন্তবতঃ এই অপরাধে তাহাকে বদলী করা হইরাছে। সন্ধাণ বানাতেও একই অবস্থা। গেবান হইতেও সংব্যালবু সম্প্রদারের পূলিস অকিসারকে সংবিধা তাহার মলে এক অন সংব্যাভক্ত সম্প্রাত্তক সম্প্রাত্তক

গঞ্জে একই ব্যবহা কয়। হইয়াছে। উচ্চপ্ৰহ সকল প্লিস কৰ্মচায়ীই সংখ্যাপ্তক সম্ভাগাৰত্ক। প্ৰধান মন্ত্ৰী যদি নোহা-ধালীতে সভাই শাভি কিৱাইয়া আনিতে চান ভাষা হইলে ছানীয় পুলিস' কৰ্মচানীদের মধ্যে আনক ব্যবহল ক্রিতে ছইবে এবং খোলাভাসম্পন্ন এমন সব কর্মচান্ত্ৰী নিরোগ ক্রিতে অইবে যাহারা সম্ভাগানিবিশেষে শাভি ও ল্খলা ছাপন ক্রিবে। বিহারের বুসলিম লীগ যেমন পুলিস বিভাগে সংখ্যা-লঘু সম্ভাগায়ের লোক নিষোগের দাবি আনাইয়াভে, নোৱাবালীর ছাবিও ঠিক ভাই।

"নোয়াধালির বিশিষ্ট ব্যক্তিবর্গের মত এই যে, করেকজন ছুর্ম্বতকে আটকাইরা রালিলেই নানা প্রকারের উৎপাত বছ ছইবে। আর একটি কথা। আসাম আক্রমণের অভ নোয়া-বালিতে লীগ গৈছদের কুচকার্বাক চলিতেছে। সাম্প্রদায়িক অবলা বিবেচনা করিয়া উলা অবিলম্বে বছ হওয়া প্রয়োজন।"

ইয়ার পর এইমতী সচেত। ক্রপাদনী নোরাবাদী সিরা-ছিলেন এবং তিনিও দেখিরা আসিরাছেন যে চ্রুজেরা বে-পরোয়া ভাবে ঘ্রিয়া বেডাইতেছে এবং আসের সঞ্চার করিয়া পুন্ধগতি-কার্য অসাবা করিয়া তুলিতেছে। ইছার পরগু প্রধান মন্ত্রী নোরাবাদীর চ্রুজ দমনের কোন চেষ্টা করেন নাই, পরং এখনও পেথানকার অরাক্কতাকে স্বাভাবিক অবহা বলিধা প্রচার করিবার চেষ্টা করিতেছেন।

#### সংখ্যদপত্রের উপর নিষেধাজ্ঞা

কলিকাভায় সমন্ত্র পুলিসে পঞ্চাবী মুসলমান নিয়োগের পর হইতে উহাদের বিক্রছে প্রকৃতর অভিযোগ উঠিতে আরম্ভ स्टेशारमः यानिकण्लाय निक्षे धुन्ने शाला (अरन करशक्ति नुरस् लारान कविद्या करवक्षन औरमाक ७ निकड देशव शावशिरहेद অভিযোগ হয় কিছ পুলিস রিপোর্টে উছা চাপা পড়ে। অতঃপর ১০০ वर शाबिमन बाख्य ग्राह बार्ख श्रारम क्रिया चला-চারের এবং ছই জন পঞ্চাবী সলগ্র পুলিদ-কর্তৃক নাতী বর্ষণের च किर्यान एवं। अरे परेशांत प्रमुन विस्मारकत रही एत अरर কলিকাভার এমন এক হয়তাল হয় যাহাতে প্রধান মন্ত্রী মিঃ -পুরাবর্দী জুড় হন কিন্তু উহার শুরুত্ব উড়াইরা দিতে অক্সম क्य। चाट्यानस्य हार्य छिथि छेछ पूनिमद्दरक दिहारार्थ चानाभएक প्रवत् कतिएक वादा हत । अरवानभएबद बहे मंख्य ধর্ব করিবার জন্ধ অতঃপর তিনি এই মর্মে এক আদেশ জারী করেন যে, সরকারকে পূর্বে না দেখাইরা পুলিদের বিক্রছে काम चित्रात शकाम कहा हिमटन मा। देशात भद्रश चट्नक श्कुलव चढेना बढेबाट्य क्षवर लागशानिक स्टेबाट्य किस मश्वाय প্রকাশ করা যায় নাই। আদাপতের রিপোটকেও এই নিবেৰাজার আমলে আনা হইয়াছে।

বাংলার সংবাদপত্র বলনের সাকাই রূপে প্রবাদ মন্ত্রী
বার বার বলিয়াছেন বে সংবাদ প্রকাশ বন্ধ হইলেই

সাআদারিক গোলবাদের অবসান ঘটবে। এই বারণা হইতে
তিনি সাআদারিক কারণে সংঘটত ভূক্তম ঘটনার বেলাতেও
হান কাল এবং পাত্রের নাম ও সআদার প্রকাশ করা হয়
করিরাহেন। প্রায় হয় বাস কাল এই নিষেধালা বহাল আছে,
সাআদারিক হানাহানি ইহাতে করে নাই বরং আক্রমণ-হানের
সঠিক বিবরণ প্রকাশ না হওরাতে অনেক নিরীহ লোক
বিপদজনক হানে প্রবেশ করিরাপ্রাণ হারাইরাহে। সাআদারিক
উমানি বছ করিবার নামে সংবাদশক্রের নিরোনামা এবং
উহার হরক ছোট করা হইরাছে ক্রি সাপ্রদারিক বিবের
তেক ইহাতে করে নাই।

বলীয় ব্যবস্থা পরিষ্ঠে এবং ব্যবস্থাপক সভায় সংবাদ প্রকাশের পূর্বে দেখাইয়া লওয়ার যে আদেশ দেওয়া দ্ইয়াছে তাহার প্রতিবাদকলে মুলডুবী প্রভাব উবাপিত হয়। উভয় সভাতেই প্রভাব ভোটের কোরে অগ্রাছ হর এবং উভয় क्टिबर देश्तक भम्दाता बुखायरश्चत वाशीनण एदरनंत बरे चाराम रक्ष्णाह अवर (छाटित हाता मधर्म करतम । अवाम মন্ত্রী বাংলার সৃহিত অপরাপর প্রচেশের সংবাদপত্তের খাৰীনতার তুলনা ক্রিয়া বলিয়াছেন যে, সকল খানেই উছায়া স্থানীয় গব্যে তিই সহিত সহযোগিতা করে, বিরোধিতা করে ভবু বাংলায়। প্রধান মন্ত্রী ভূলিয়া গিয়াছেন বে, অভাত প্রদেশে কংগ্ৰেস গৰনে কি প্ৰতিষ্ঠিত, তাহাৱা ছিন্দু স্বাৰ্থের স্বস্ক উদ্বিশ্ ना एवेंद्रा अल्लासिनिदित्यास क्याराई दक्षात वस्त्रविकत अवर नवर्ष्य के भवर के कि विदार माद्या के वर्षा मन्त्राप्त के वर्षाप्त के সমূহও আগ্রহনীল। অবস্থা বিবেচনার ভাঁহারা নিজেরাই বভ:-প্রবৃত্ত হটবা কতক্ঞলি নিষেধান্তা মানিয়া চলিতেছেন, বাংলার লীৰ সহকাৰের ভায় ঐসব বংৰে উ সংবাদপত্ৰসমূহের স্বাধীনভা क्तर्यंत क्ष काम चारम काती करतम माहे। वारकात वि: সুরাবর্ধীর প্রদেশি সাম্প্রদায়িক সার্থক্ষার জন্ন বছপরিকর বাংলার পাকিলান প্রতিষ্ঠা তাঁহাদের কাষ্য এবং এই উদ্বেশ্ন সাংনের জন তাহারা হিন্দুর সকল অবিকার ও সাধীনভার কংশ সাধনে প্রবৃত্ত। শাসনবল্লে, পুলিদে, দিভিল সালাই विवादन, मद क छोहाबा मान्डमाबिक वार्रश्रकाटण्डे वाज अवर এই স্বাৰ্থকো কৃতিতে পিছা সাধারণ ভাবে গণ-সার্থ এবং विट्मयकाटन विकाशादनंत विन्धादन कांकाटमत (काम विन नाके. वदर छैरमाएडे बाहु । पूछवार वारमात नन-वार्यंत नविवर्ष সাম্মলায়িক বার্ব ও ব্যক্তিবার্ব প্রতিষ্ঠার চেষ্টার বারালামের टेमिक पातिक मरवायभग्रममृत्य अवर मरवायभग्रक्त अहे অবিকার ব্যাসভাব সংঘ্যের সহিত পালন করিয়া আসিতে-ছেন। সীগ সরকার ক্ৰার ক্ৰার বলেন সংবাদপত্রগুলি বিধ্যা অধ্বা অভিবন্ধিত সংবাদ প্রকাশ করিয়া সাক্ষদায়িক ছাৰাহানিতে উকানি দেৱ। ইংৱেছ প্ৰতিনিধিৱাও ইছা সমৰ্থন करिया जीनरकरे छांशास्त्र (छाडे सम । किन्न अरे चिल्हान बकाब चमछा। मदकारबद शास्त्र चाहरन बनर चिंडशास

এত কৰতা আহে বে উহার বলে বিব্যা, অতির প্রত অববা উমানিদারক সংবাদ বা বছব্য প্রকাশকে কঠোর ভাবে দণ্ডিত করা বার। এত কমতা হাতে বাকা সত্ত্বেও সংবাদ প্রকাশ বহু করিবার চেঠা করিলে ইহাই প্রবাশিত হর বে, প্রকাশিত সংবাদ উক্ত তিন পর্বাহে ক্লেতে পারা বার বা বলিরাই উহারা সর্বশক্তি প্ররোগ করিরা উহার প্রকাশ বহু করিবার ক্লেই এত আগ্রহাহিত।

#### কলিকাতার অবস্থা

মাসাধিককাল যাবং কলিকাভার জীবনহাত্রা বিপর্বন্ত হইল হহিয়াছে। শহরের উত্তর ও কজিপের হুইট ছান ব্যতীত প্রায় সর্বত্র ব্যৱ-বৃদ্ধ আইনাহুসারে সভ্যা সাভটার সময় লকলকে গুহু প্রবেশ করিতে হয়। দৈনলিন কাকে বাহির হুইবার সময় কোন লোকই অক্ষত থেছে বে বাড়ী করিবে কিনা অথবা কিরিলেও পরিবারত্ব সকলকে একত্র দেবিবে কিনা অথবা কিরিলেও পরিবারত্ব সকলকে একত্র দেবিবে কিনা অথবা কিরিলেও পরিবারত্ব সকলকে একত্র দেবিবে কিনা অথবা কিরিলেও পারে না। প্রতিদিনই বেশ করেক্ষম লোককে কার্যোপলকে বাড়ী হুইতে বাহির হুইয়া হয় হাসপাতালে নভুবা মর্গে হান এহণ করিতে হুইতেছে। সভ্যায় পরও লোকের বন্ধি নাই। শান্ধি রক্ষার ভার বাহাদের উপর তাহারা কবন কোন অহিলার দরজা ভাতিরা ঘরে চুকিরা নারবর করিবে অথবা নারীর উপর অত্যাচার করিবে তাহারও বিক্রেরতা নাই। নগরের হাভাবিক জীবনযাত্রা একেবারে বিশ্বন্ধক হুইরা সিরাহে বলিলেও অত্যান্ধি হুর না।

লীগ সরকারের কর্ণারেরা কঠোর ব্যবস্থা অবলহনের क्या विनारित्य अवर कार्यकः अवनकार्य देश श्रासान ক্রিতেবেন বাহাতে হাই লোকের অসং কার্য সাধনে বাবা পঢ়িতেছে না, লাঞ্চিত হইতেছে নিরীহ নাগরিক। বুসলমান বাৰ বুজাৰ আন প্ৰৰেণ্ট কলিকাতাৰ সনৰ পুলিস পঞাৰী बुजनबाव चाबलावी क्रियारहर अवर छम्यवि महरद अक बुछव छेनसम प्रस स्वेतारह। धाराम मही देशासन विकास कान অভিযোগে কর্ণণাত করিতে প্রস্তুত নহেন এবং ইহাদের धानश्याद छिनि नक्ष्य । ১०० नर शादिनम (दाएक रेशायद . ছুই ব্যক্তি বাজে খোৱ কৰিবা বাৰ চুকিবা নাৱীৰ উপৰ चलाहात कतिवाद अरे चिर्दांत स्टेल खनान मही खन्द ইছা চাপা দিবার ২৬ চেঠা করেন কিছ কনমত হতাত তীত্র হইৱা উঠিতে হেৰিৱা শেব পৰ্যন্ত উহাহিগকে প্ৰেপ্তায় করিৱা বিচারার্থ প্রেরণ করেন। জনমতের এই তীব্রতা দেবিরা অভঃপর আন্দোলন এড়াইবার ভঙ ভিনি ইহাদের অভ্যা-চাৰের বিলয়ে অভিবোগ প্রকাশ কোর করিয়া বন্ধ করিয়া वार्विवाद्यम् ।

যঞ্জ পুলিলের বেপরোরা খলি চালনা এবং বরের ভিতর বেরেকের পর্বত্ব আহত হওলার সংবাদ প্রকাশিত হইতেতে। প্রবাদ মন্ত্রী ইহাতেও নির্বিভাষ। তাহার সাকাই এই বে, অন- নাবারণ এবং বেতারাই বছবার অভিবােগ করিবাছেল বে,
পূলিন কেন খলি চালার না , এবন তাহারা খলি চালাইতেছে,
স্তরাং অভিবােগ করিবার অবিকার কাহারও নাই । পূলিন
প্ররোজনরত খলি চালাইলে আভতারীরা ভীত হইবে, অতএব
খলি চালনা একান্ড আবন্তক, এ কবার এই অর্থ নর বে
পূলিনকে বত্রতর এলোপাবাড়ি খলি ছুড়িরা নিরীহ লোকের
প্রাণহানি বটাইরা খলি ছোড়ার বহিষা বেবাইতে হইবে।
কাহাকেও আবাত হানিতে অববা এনিত ছুড়িতে বেবিরা
পূলিন তাহাকে খলি করিবা হত্যা করিলেও তাহাতে কেহ
আপত্তি করিবে না, সে আভতারী বে কোন সম্রোধারেরই লোক
হউক না কেন। কোবাও কোন বটনা ঘটবার পর পূলিন
সেবানে উপহিত হইরা এলোপাবাড়ি খলি ছুড়িতে আরম্ভ
করিলে লোকে অবস্তই ভাহার ভীত্র প্রতিবাদ করিবে।

পাইকারী ছারিমানা বার্বের প্রভাব কোন কোন সংবাদ-পত্র করিরাছিলেন এবং বাংলা-সরকারও এই প্রভাব সুফিরা লইরাছিলেন। সম্প্রতি বলীর ব্যবহা-পরিষদে এক প্রয়োছরে দেখা গিরাছে বে, আক্রান্ত ও সর্ববান্ত যাহারা হইরাছে পাই-কারী ছারিমানা ভাছাদেরই উপর বেশী করিয়া বার্ব হইরাছে। ছারিমানা বগাইবার জন্ম বাঁছারা উৎসাহিত হইরাছিলেন পরে ভাছারাই উহাকে পাইকারী পক্ষপাত আব্যা দিয়া আত্নাদ করিরাছেন।

খবে-বৰ আইন সহৰেও ঠিক অভুত্ৰণ পক্ষণাতিত্ব প্ৰকট হইয়াছে। সামাভ অহিলার এক এলাকার ২৪ বা ৩৩ ঘণ্টা बद्ध बद्धत हरूम बादी हरेबाह बब्ध बन्द हांत नदहला छ ছবি মারার পরেও কোন কিছু করা হর নাই। যে সব রাভা এই এলাকার মধ্যে পভিয়াছে সেগুলিকে প্রচারীদের বাভাৱাভের জন্য ছাভিৱা দিলেও বেৰানে অস্থবিধার কারণ ছিল না পেৰানে গাড়ী চলাচল পৰ্যন্ত বন্ধ রাখা ভইয়াছে। কঠোর ব্যবস্থা নিরপেক ভাবে গণ-সার্থের থাভিরে প্রযুক্ত না হইৱা সাম্মধারিক পক্ষণাতিছের অন্ত হইৱা উঠিলে উহাতে বিপরীত কল কলিতে বাব্য। শান্তিরকার কঠোর উপার্থনি লোকে নিৰ্বাতনের অথবা অভ করিবার অভ বলিয়া মনে ক্রিবার সুবোগ পাইলে উহার পরিণাম ভাল হইভে পারে মা। লীগ সরকারের হাতে ক্ষ্যতা অর্পণ করিলে উহার বাৰহার কিল্প হয় ভাষার পরাপ্ত নিমর্শন পাইবার পরও নেতারা ইহাদেরই ক্ষতা বৃত্তির কথা এবনও ক্ষেত্র করিয়া বলিভেছেন আৰৱা তাহা বুৰিভে অক্ষ।

#### বাংলায় জমিদারী উচ্ছেদের প্রস্তাব

वनीय वावशा शतियस क्यामात्री केट्या विन क्रेपाशम क्या स्टेशास । विनम्ब शावस्य अटे :

বিলট সাধারণভাবে 'ক্ষিয়ারী এবা বিলোপ বিল' নাবে প্রিটিভ ৷ উক্ত প্ৰভাবিত আইনে বাহায়া কৰক নহে, তাহাদের নিকট ক্ষি হভাভর করা নিবিত হইবাছে এবং অৱসংব্যক লোক বাহাতে বহু পরিষাণ ক্ষিত্র অধিকারী না হইতে পারেন সেক্ত ব্যবহা করা হইয়াছে।

বিলের উদ্ধেষ্ঠ ও কারণ বর্ণনা প্রস্কেন্দ নিঃ কলপুর রহমান ইছাছার বিশ্বতিতে বলেন বে, গবর্ষেণ্ট প্রকৃত কৃষকদের সহিত সরকারের সাক্ষাংসম্পর্ক হাপনের নীতি প্রকৃত কৃষকদের সহিত করিরাহেন। এই উদ্দেশ্তে সরকার, বাহারা বাক্ষনা পাইরা বাক্ষেন, এইরূপ সর্ব প্রেণীর লোকের স্বত্ব অধিকার করিবেন। বহু অধিকার করিবার সমর সরকার বর্তবান সহাধিকারীর নীট লাজের ভিত্তিতে ক্তিপূরণ প্রদান করিবেন। সরকার হাট, বাকার, বন, কলল, কলাত্মি ও বাল্চরের বহুও জের করিবেন।

উক্ত বিবৃতিতে আরও বলা হইরাছে বে, অমিদার ও বাষভাগের হাতে বিশেষভাবে নির্বাহিত পরিমাণের অভিহিক্ত ৰে আবাদী কমি আছে, সরকার ভাষাও অধিকার করা প্রভাকন মনে করেন। উক্ত অধিকৃত কমি ধরিজ কৃষক, ভামিতীন শ্রমিক ও বর্গাদারদের মধ্যে বিলি করা হইবে। সরকার-কর্তক জমি ও অভাত জিনিধের সত্ত অধিকত ভইবার পর প্রকারা ক্ষির একমাত্র মালিক হিসাবে সরকারের সহিত সাকাং সম্পর্কে আসিবে। **উক্ত** প্রকারেও স্বত্ত সংবক্ষণের জন্ধ প্রয়োজনীয় ব্যবস্থা করিতে ছইবে। কেবল-মাত্র এক প্রেণীর প্রকা বাকিবে। উক্ত রাবভদের ক্ষিত্র উপর পূৰ্ব অধিকায় পাকিবে। নিটিষ্ট পৱিষাণ কৰি অংশকা কম ভামির মালিক আসল ক্ষকের নিকট এক জন রায়ত ভামি বিক্রম্ব করিতে পারিবে। করেকট বিশেষ ক্রেম্ব ভিন্ন অপরের নিকট ভামি বিলি করা একেবারে নিষিত্ব ত্ইবে। ভামি বঙ ৰও করা সম্পর্কে একট বিশেষ সীমা নির্দিষ্ট থাকিবে। সমবার ও বৈজ্ঞানিক প্রতিতে ক্রিকার্য পরিচালনা করিবার ব্বত হোট হোট কমিৰও একত্ৰিত করার ব্যবহা করা स्टेट्व ।

এই প্রসংদ স্লাউড ক্ষিণনের সুপারিশের কবা উরেব করিরা

বিঃ কলসূর রহমান বলেম বে, ক্ষিণনের অধিকাংশ সমন্তের

মতে অমিদারী প্রবা আতীর খার্থের পরিপুষ্ট সামন করিতেহে

মা। তদক্ষারী ভাঁহারা এই মর্নে সুপারিশ করিরাহেম যে,

চিরহারী বন্দোবভের পরিবর্তে রারতিদিকে অমি বিলি করার
পছতি প্রচলিত করা হউক। ইহার কলে সরকারের সহিত
প্রকৃত কুষ্কদের সাক্ষাং সম্পর্ক হাণিত হইবে। ১৯৪০ সালে
ক্ষিণনের রিপোর্ট প্রকাশিত হইবার পর সংবাদপত্তে, ক্ষম
সভার ও আইন সভার এ সম্পর্কে বহু আলোচনা হইরাহে।

বর্তবানে প্রচলিত ক্ষিবিলি-প্রতির আব্ল পরিবর্ত্ন করা

না হইলে বে দেশের কৃষিকর্বের প্রস্ঠন করা সভব নহে,

ইহা জোর হিরা বলা হইরাহে।

ক্তিপুরণ প্রদান সম্পর্কে উক্ত বিলে যে পছতি অবলহনের কবা বলা হইরাছে, তাহাতে সম্পত্তির নীট আর বস্ত কর হবৈ, ক্তিপুরণের হার তত অবিক হবৈ। ক্তিপুরণ প্রদানের উক্ত পথতি অনুবারী নীট আহের ভিভিতে নির্দ্ধিত হারে ক্তিপুরণ প্রহান করা হবৈ।

(क) বেবানে নীট আর ২০০০ টাকার অবিক নহে,
সেবানে নীট আরের ১৫ গুণ ক্তিপ্রণ হিসাবে প্রদান করা
হইবে; (ব) যে ক্লেন্তে নীট আর ২০০০-এর অবিক, কিছ
৫০০০-এর বেশী নহে, সে ক্লেন্তে নীট আরের ১২ গুণ
ক্লিপ্রণ হিসাবে প্রদান করা হইবে। এ ক্লেন্তে ক্লিপ্রণ
হিসাবে বাহা প্রদান করা হইবে, ভাহা 'ক'এ বর্ণিভ সর্বোচ্চ
ক্লিপ্রণের পরিষাণ অপেকা কোন ক্লেন্তেই কর হইবে মা;
(গ) যে ক্লেন্তে নীট আর ৫০০০-এর বেশী, কিছ ১০০০০-এর
অবিক নহে, সে ক্লেন্তে নীট আরের ১০ গুণ ক্লিপ্রণ হিসাবে
প্রবন্ধ হইবে। 'গ'এ বর্ণিভ ক্লিপ্রণের পরিষাণ 'ব'এ বর্ণিভ
সর্বোচ্চ ক্লিপ্রণের পরিষাণ অপেকা কোনক্লেন্তে কর হইবে
না; (ব) বেবাবে নীট আর ১০০০০-এর অবিক, সেবাবে
নীট আরের ৮ গুণ ক্লিপ্রণ হিসাবে প্রমণ্ড ক্লিপ্রণের
পরিষাণ অপেকা ক্রেন্তে পরিষাণ 'গ'এ বর্ণিভ সর্বোচ্চ ক্লিপ্রণের
পরিষাণ অপেকা কর হইবে না।

চিব্ৰদায়ী বন্দোৰভের বিলোপসাৰৰ সন্দৰ্কে ছাভীয়ভাৰালী বাংলায় দ্বিত নাই কিছ বত যান সাম্প্রদায়িক মন্ত্রীয়ঙলের উহা সাৰ্য কি ৰা সে সম্বন্ধে সংশব্ধ প্ৰকাশের অবসর করেইই রহিরাছে। শীগ সরকারের আমলে বাংলার আর্থিক ছুর্গভি বেল্প প্রচও দ্বরা দাভাইরাছে ভালাভে ইলালের ভাতে আরও শুরু ব্যৱসাধ্য কাল তুলিয়া দেওৱা আত্মহত্যার নামান্তর হইতে পারে। তা ছাড়া বিলট তাড়াভাড়ি পাস করিবা পশ্চিম वामत क्रि प्रवालत क्रमा हैशायत शाक हैएकीव क्रवत चार्क অকর্ষ নর। পতিত ক্ষমি দ্বলের ক্ষন্য ধাহাদের এড আগ্ৰহ, ভাল ভৰি ভৰিদাৱের হাত হইতে কাছিরা দইরা উহা খবর্মীদের মধ্যে বিলি করিবা পশ্চিমবদে বুসলমান সংখ্যাত্মপাত বৃদ্ধির চেঠা ইহারা করিবে এ আশকা সম্পূর্ণ বৃদ্ধি-जक्छ। विक्रष्ठ भाग स्ट्राल अवनरे अक्षा विद्रार्ड विकास विना (बार्ड वर्ष नानाविय हाकृषि स्ट्रिड कविया वन्त्रं विद्यार मियात्रात्वत (हडी अन्दर्वे स्टेट्ड शांतित । अहे विन अच्दर জাতীরতাবাদী বাঙালীর অভিনত এই বে, দেড় শত বংসর বদি ভাষারা চিরসামী বন্দোবন্তের ওক্ল ভার সহিতে পারিয়া থাকে ভবে আর এক বংসরও পারিবে। স্বাধীন ভারতে স্বাধীন ৰাঙালী ৱাক্ৰণৈতিক খাণীনতার প্ৰশ্ন সুঠুভাবে ৰীৰাংসা ক্রিতে পারিলে অবনৈতিক ও সামাভিক সম্ভা সমাবাদের অবসর ও ক্ষতা উভরই লাভ করিবে। জনমত জানিবার चना विनष्ठ बहाद कविवाद बचाद चनाच कविदा छैरा छाए।-্ৰছতা কৰিছা গিলেট কৰিটতে প্ৰেছণ কৰাৰ লোকে গৰুৰে কৈছ

অভিনান সহছে সংশ্বেই পোষৰ করিবে। বিলট বে দিন
পরিবদে উপাপন করা হয় সে দিন হরতালের কন্য কংগ্রেস
সহস্যেরা উপহিত হন নাই। ইহার পর দিন আমহার্ট হীট
আনা এলাকার একট ক্ষত ব্যাপারের প্রতিবাদে কংগ্রেস পক্
হতে অবিবেশন ছুরিতের প্রভাব উপাপনে অব্যতি না
বেগুরার কংগ্রেস দল পরিষদ হইতে বাহির হইয়। যান।
উহাদের অব্পশ্বিতির প্রযোগ লইরা ঐদিনই ক্রট বেক্রিটির
কোরে সরকার পক্ষ বিলট নিগেট ক্রিটিতে প্রেরণ করিমাক্রেম। এই কার্ব্যে তাহাদের সাজ্ঞদারিক কিদ প্রকাশ পাইরাহে—কিছ সজ্ঞার নিবিশেরে ক্রম্বার্থ রক্ষার আগ্রহের
পরিচর উহাতে নাই।

মৌলবী ফজলুল হকের শেষ প্রার্থনা

त्योगरी क्यमून एक गठ अक मारमद मरगा अक वाद बांबा अवर अक यात्र हैरदिएक निकृष्ठे बुशनशानदक क्षमा कवियाद मण त्यव आर्थना कानावेदारहर । काकाव करवनागरक कराव क्याब भटकट बाबिवाब अवर भाषीकोटक राम भाव कविबा ভাভাইরা দিবার হুমকী যি नি দিরাছেন, দশ লক মুসলমান क्न (का है दिव्य प्रमान अहे कवा विनि प्रमुख (बायन) कतिया-ट्य, जारशब जीव प्रत्यन्त विवि शाकिश्य अखाव छेवायन ক্রিরাছিলেন, সাভানা লইরা পাকিস্থান রক্ষা করিবার নাবে सवाद्वीय मुन्दम वर्दत्रण चरमद्दानत क्या दिमाए श्रीशांत करे चन एव मारे, वारलाव भूजभूव धवान मन्नी (भोलवी कव्यम् एक ক্লিকাভার ডুড়ীর পর্ব পাকিস্থানী আক্রমণ হওয়ার দিন ব্যৱসালে এক সভায় কাঁদিয়া এই বলিয়া প্রার্থনা করেন, "হে चात्रा, ष्ट्रीय चायारमय सक्ता करा। चायता धर्रम, प्रश्नि चायारमय ৰল হাও। আহরা না বাঁচিলে ভারতে ওবং পুৰিবীতে ভোষার কোৱাণের আলো প্রচার করিবার ব্রুগ এবং তোষার ক্রগান করিবার কর কেছ বাকিবে না।" ইছার টিক এক মাস পর चाराव जिनि कैंकिया धार्यना कवियादन, "एर खर् देश्यव, ८कावता चावाटमत वाकिया त्राटन चावता वाकित ना. चावाटमत - বুক্ষণাবেক্ষণের ভার লইর। ভূবি বেমন হিলে ভেমনি পাক।" 'बिः क्याद मान बहे (नेपास वार्यनाद चार्क्य मिन चार्क, wca अरम्ब और एक विश्वा मारहर चाकारत रेकिट हेरारे चुढाहे छिएन, एक मारहरवत शांत माहे कावात कश्वण धार्यना कानादेश शाकिशायद स्वभ अकान करवन नारे।

নারীহরণে রেল-ক্ম চারীর সহায়তা

মরমনসিংহ খেলার নেএকোণার ভেপ্ট ম্যানিট্রেট মিঃ জি, এন. মঙল আক্স হাকিম নামক এক ব্যক্তিকে নামীর মর্বাদাহানির অভিযোগে দোষী সাব্যত করিয়া উহাকে দেছ বংসর সপ্রব জারাদতে দঙ্ভিত করিয়াছেন।

ষ্ট্ৰমার বিবয়ণ এইরপ: ১৯৪৬ সালের ২৫ মে রঞ্জে বেল বিভাগ কর্তৃক অবিলয়ে কিশোর গোরামী নামক কনৈক রাজণ ভাষার সমপরিশীতা শ্রেণীর কর্মচানীদের বুঁজিরা বাঁদি বোড়শ্যবাঁরা পত্নী শ্রীমতী নির্মলা দেখীকে সম্লে অইরা সকাল- করিবার ব্যবহা করা আবঞ্জক।

नाएक बन्दीय त्याद्यमध्य द्वन-द्वेन्टन व्यवज्येन कटवन। পদ্মীকে টেশন প্ৰাদৰে বসাইবা বাবিবা ত্ৰান্ধৰ নৌকা ভাড়া कविवाद क्रम (बंबाचारके नवन करवन। छोड़ारमद नहन्। चुन ষ্টেশন হইতে জলপথে দশ মাইণ দূৱ। কিরিৱা আগিয়া তিনি দেৰিতে পান আগানী আৰু ল ছাকিব তাঁহার পত্নীর হাত ব্যৱস্থা টানিতেহে এবং তিনি উহার হাত ছাড়াইবার জ্ঞ প্রাণপণ চেষ্টা করিতেছেন। ত্রাহ্মণ ও ত্রাহ্মণীর চীংকারে আঞ্চ হট্যা ভাষাদের এক সহযাত্রী দিনাকপুর কেলার কালিবাগঞ্ছাই ছুলের প্রধান শিক্ষক জীবুক্ত ববীক্ত চৌধুৱী সেবানে আসিয়া উপস্থিত হন এবং **সূত্র ভিন্ন ক্**ৰণ হইভে তাঁহাকে উভার করেন। আবুল হাকিম ত্রীর্জ রবীক্ষ চৌধুৱার আঙ্ল ভীষণভাবে কাম্চাইয়া দেয় এবং मारायात का अक क्य द्रावदा शार्ड अवर है-है-हेटक कास्ताय করেন। উদারা উভয়েই ঘটনাখলে আদিয়া উপস্থিত হয় এবং B-B-ই শেরাই একট অভিরিক্ত ভাড়ার রসিদ আসামীর পকেটে দিয়া দেয়। আসামী হাকিম ভৰন হেকাৰতে। গার্ড আলি মিঞা আসামীকে পুলিশের হেকাকত হইতে হিনাইয়া সইয়া ভাগাকে পলায়নের সুযোগ করিয়া (पच।

বাবে ম্যাকিট্রেট মন্তব্য করিয়াছেন, "এই মামলা এতদকলের কতকওলৈ মতলববাক লোকের সহায়তার বেপরোরা হুর্বজগণ কর্তৃক নারীহরণের গভীর যভ্যন্তের একটি নিদর্শন । বারদান কালে আমি এই মন্তব্য না করিয়া পারি না যে, টাভোকং টিকিট একজানিনার শেরাই এবং বার্ড আলি মিঞার কার্য অতিশয় নিক্ষীয়; প্রকাশ্ত দিবালোকে এই ক্ষত অপরাবের আসামী হাতেনাতে ধরা পড়িবার পর এই ছুই জন সরকারী কর্মনারী যেতাবে উহাকে উহার করিবার চেটা করিয়াছে ভাহা অভ্যন্ত জ্বন্য মনোভাবের পরিচারক।

রাষের নকল বেল কর্তৃ পক্ষের নিকট প্রেরণ করা হইয়াছে।
পূর্ব বিদের কোন কোন অঞ্চল বেলকর্যনায়ীর। নারীহরণ
এরং পৃঠন প্রভৃতি অন্যান্য অপরাধেরও সহায়তা করিতেছে
এরণ অভিযোগ হইয়াছে।

ক্ষেক বংসর যাবং পূর্ব বিদর রেলপথের ক্ষেকট এলাকা সহতে এরণ গুরুতর অভিযোগ ক্ষরাতে; বর্তমান বাজেট অবিবেশনের গোড়ার দিকে শ্রীযুক্ত ক্ষিতীশচন্দ্র নিরোধী কেন্দ্রীর ব্যবহা-পরিরাধে রেলওয়ে বিজাপের ভারপ্রাপ্ত সদশ্যের কৃষ্টিও পূর্ব বিদের কোন কোন অঞ্চলের রেলপথের অরাজকতার প্রতি আকর্ষণ করিরাছেন। বর্তমান মানলার চুইট রেল কর্মচারীয় কীতি প্রকাশ পাইয়াতে বটে, কিন্ত এরপ আরও অনেক আছে ইহা বিখাস করিবার সম্প্ত কারণ আছে। রেল বিভাগ কর্তক অবিলধে পূথাপ্রপূথ তথ্যের হারা এই শ্রেণীর কর্মচারীকের বুলিয়া বাহির ক্ষিরা উহাধিগকে যভিত

# ভারতের শিক্ষাতদ্রৈ কলা-শিপ্পের স্থান

## [ ভাগনী নিবেদিভা লৌকিক বিভালরের সমাবর্ডন-উংসবে অভিভাষণ ]

### ঐঅর্কেন্দ্রকার গঙ্গোপাধায়

অাক্তকের অফুঠানের কার্য্য-তালিকায় এই বিভালয়ের সমা– বর্ত্তন উৎসবের অভিভাষণ দেবার ভার দেওয়া হয়েছে এমন একজন অবোগ্য মাছবের উপর, যে মাহুষ বাচালভায় পটু নহে, কথার পথে যার যাতায়াত অতি অল্প। জ্ঞান-সর্জ্ঞান ষে পথে তার যাওয়া আসা—সেটা হ'ল বিদ্যা শিক্ষার নিরক্ষর পথ---্যে পথে কথা বলে সিদ্ধি লাভ করা যায় ना,— य পথের সাধনা কথার কথা বন্ধ হলেই সিদ্ধ হয়। এই স্থলের কর্মকর্তার: নিশ্চয়ই বলতে পারেন যে এই विकालाय-निवक्षात्व পথে कानलाट्य माधनाव यथहे আবোজন, বথেষ্ট ফ্ষোগ দেওয়া হয় এবং ভাহার প্রমাণ আন্তকের এই বিদ্যালয়ের প্রদর্শনীতে যথেষ্ট পাওয়া পিষেছে। সাহিত্য ও শিল্পকলার ঘটি বিভিন্ন ক্ষেত্র— জ্ঞান-**অর্জনের চুটি ব**ংস্ক সাধনার পথ পড়ে রয়েছে। সাধারণত:, আমাদের প্রচলিত সাধারণ বিদ্যাপীঠের পাঠা-ভালিকায়-শকেভাবের ছাপার অক্ষরের পথে-বিদ্যা-निकात वहन वावन्ना अभन औड़ करत थाक रेंग, निवक्त वज পাধনার অবসর ও হুযোগ অনেক সম**য**ু একবারে মেলে ন। সূত্রাং, জ্ঞানের একটা পথ-এই চোথের মধ্য দিয়ে—নিবক্ষর শিল্পকলার পথটা—এক বক্ষ বন্ধই থাকে व्यामारमय नाधावन विमा-मन्दिरत । किन्ह এই विद्यानरमय কর্ত্তপকরা সাহস ক'রে বলতে চেয়েছেন যে, আমরা জানের কোনও দরভাই বন্ধ রাধব না, অব্দরের ও নিরক্ষরের তুই পথই আমরা খোলা রাধব এবং শিকা-প্রতিতে শিল্পকলার জন্ম একটা বড স্থান আমরা দেব। কথাটা একট ত্রংসাহসের, শক্ত কথা হয়ে দীড়ায়।

কারণ সাধারণ দৃষ্টিতে, ছোট ছোট শিশুদের ছবিব ছেলেমো ছাড়াবার স্বস্তুই ত বানানের ব্যবস্থা; স্লেট, কাগজ ও দেওয়ালের গায়ে হিজিবিজির ত্রস্ক-পানা দমন করবার জন্তুই ত—কেতাবের ক্লাস। অক্ষরের লাপটে নিরক্ষরের স্থাকে তৃলিয়ে দেবার দারুণ দায়িত দেওয়া হয়েছে ক্লাসের মান্তারমহাশয়দের মাথায়। কারণ অভিভাবকেরা প্রায় অভিবোগ করে বলেন বে, তাঁদের ছেলেমেয়েরা হড়োছড়ি আর হটোপুটির অবসরে নানা রক্ষের "বগাবগার" ছবি এঁকে, হেঁড়া কাগজের নৌকা বানিয়ে, আর বালির কেলা আর মাটির পুতৃল-গড়ে সারাদিনটা নই করে, কেতাবের কিনারা দিয়েও বায় না। ভাদের এই শারীরিক ও মানসিক উচ্ছ অলভার রোগ— তাদের ঐ খেলার ও ছবিলেধার ব্যারাম সারাবার অন্তই ত 'লেখাপড়ার হাসপাতালে' পাঠানো। স্কুতরাং মাটার-মহাশয়রা যদি আবার বুড়ী মন্টিসেরির কাছে মাধা মৃড়িরে, ছেলেমেয়েদের ছেলেমোর প্রশ্রম দিয়ে, ছবিলেখার ছাড়ন পত্র দিখে দেন, তা হলে লেখাপড়ার বিদ্যা ত বিদ্যারভেই বন্ধ হয়ে যাবে, ছেলেমেয়েদের মাত্রম করে ভোলা মৃশ্কিল হবে

যাবা লেগাপড়া শিখতে চায় না, বা যাদের লেখাপড়া শেখবার যোগ্যতা নাই, তাদের গুন্ত ত হাতৃড়ী পেটবার আর এ নক্সা ছক্বাব টেকনিক্যাগ স্থল, আর আর্ট স্থল রয়েছে। কেতাবী কারখানাকে শিল্পের কারখানা কবে তুললে নিরক্তার সমস্তা সমাধান হবে কেমন করে? লিখতে পড়তে পাকা না হলে কেরাণীকুল যে নির্দ্ধুল হয়ে যাবে।

স্থতরাং কেতাবীবিদ্যার বিদ্যালয়ে কলা-শিল্পের শিক্ষার ব্যবস্থা করা উচিত কি না, লেখাপড়ার পাঠ্যতালিকায় একটা ছবির স্লাস কুড়ে দেওয়া, হঠকারিতা কিনা সেটা বিচার করে দেখতে হয়।

এই হংসাহসের শিকার আদর্শ আলোচনা করতে হলে শিকাভবের একটা নিগৃত বহস্তের আলোচনা করতে হয়। আমরা দেখতে পাছি বে, শিকাপছভিতে যে শিরকলার একটা বড় স্থান আছে, এই ক্থাটা এই বিদ্যালয়ের কর্তৃপক বিশাস করেন—যদিও আমাদের সাধারণ পড়া-লেখা শিখবার বিদ্যালয়ে ভার বিপরীত ব্যবহার—একটা নৃতন পরিক্রনার শিকা গড়ে ভোলবার দারুণ দান্তিকভার পরিচয় ব'লে হঠাৎ মনে হতে পারে।

আগেই বলেছি যে পড়া-লেখা শিখবার ইছুলে কলা-শিক্ষের স্থান আছে কি না তার সঠিক বিচার করতে হলে - শিক্ষাতত্ত্বের ভিত্তিগত কডকগুলো রহস্তের আলো-চনা করতে হয়।

শিক্ষার আদর্শ সহক্ষে নানা ম্নির নানা মত প্রচলিত আছে। আমাদের দেশের নানা বিশ্ববিদ্যালয়ে বাৎস্ত্রিক সমাবর্জন উৎসবে, আমাদের দেশের শিক্ষাতত্ত্বের বিশেষজ্ঞ মনীবীরা—শিক্ষার আদর্শ সহক্ষে নানা সারগর্ভ উপদেশ আমাদের দিয়ে আসছেন।

क्डि वरनन, व्यामारमव निकाय व्यामारमव भूववामीध.

বর্ষবাপাননে পাকা করে ভোলা উচিত,—duties of citizenship সহছে সজাগ ও সনাকাগ্রত করে ভোলা হ'ল শিক্ষার আগল উদ্বেশ্ন। কেউ বলেন সেবাধর্মে মঞ্জবুৎ ক'রে ভোলা হ'ল শিক্ষার আদল উদ্দেশ্ত-মাছবের **छःथ कुर्किना मृद क'टर भारू एवद व्यक्षक है नहें कटद मिटा, स्मर्टर** थवर मत्न नृजन जात्ना त्कत्न मिर्दे मासूरवे नमाक्रक সর্বভোভাবে স্থাধর সংসার করে ভোলাই শিক্ষার আদর্শ। কেউ বলেন, জীবনসংগ্রামে জয়লাভ করবার শক্তিলাভ क्वारे र'न निकाद উष्टक ; नाना चार्ष्य चय ७ স্থারামারি কাটাকাটির মধ্যে টি'কে থাকবার কৌশল অর্জন করাই হ'ল শিক্ষার উদ্দেশ্য। যারা লিখতে পড়তে শেখে তাঁরাই নাকি জীবনমুদ্ধে জান বাঁচাতে পারে,—মৃদিও অনেক সময়ে ভার উন্টোই চোখে পড়ে-মনিকিড বাবদাদার দোকানীরা ও ব্যাপারীরা অনেক সময় नि-এইচ ডि-क निहान काल हान यात्र। এই बजरे कि কেউ বলেন যে, যে শিকা আমাদের ভাল-ভাতের সমস্তা সমাধানে সাহাযা করবে সেই শিকাই হ'ল আসল শিকা। কেউ কেউ বলেন, শিক্ষাকে বছমুখী কবে তুলে মাতৃষকে জীবনের সমস্ত ক্ষেত্রে সিদ্ধিলাভ করণার শক্তি দিতে হবে, মনের চাব, শ্রীবের চাব, ফগ-ফুগ ফগলের চাব কাপড়ের চাব, বিজ্ঞানের চাব, অর্থনীতির চাব, কর্ষণবিদ্যার দকল ক্ষেত্রেই, মানুষ আপন আপন শক্তি অনুসারে কৃষ্টিলাভ করে' মান্থবের সমাজকে বড় করে তুগবে, সর্বডোভাবে পূর্ণ করে তুলবে—এই হ'ল শিক্ষার উদ্দেশ্য।

🗣 মাম্ববের সমস্তবকম শব্ভিকে 'মামুব' করে ডোলা. বড করে তোলা যে শিকার প্রথম উদ্দেশ্য-এ সম্বন্ধে প্রায়ই সমন্ত শিক্ষা-ভাত্তিকের। একমত। তবে অবস্থাভে:n. অর্থাভাবে, শিক্ষকের অভাবে সব সময়ে আমাদের বিদ্যালয়ে সর্বতোমুখী শিক্ষাকে সফল করে ভোলা সম্ভব হয় নাই। পঞ্চাশ বছর পূর্বের চেয়ে বর্ত্তমান কালে স্বাস্থা-তত্ব শিকা ও পারীরিক শিক। আমাদের শিকা-ভালিকায় বড স্থান পেরেছে। শিক্ষণীয় আর একটি বস্তু বর্ত্তমান काल चार्यात्वय निकामन्त्रिय मचारनव भान (भारत्क-এটি হ'ল দলীতবিদ্যা। ত্রিশ চল্লিশ বংসর আপে পর্যান্ত ৰিকিত সমান্ত্ৰ—শ্ৰীতবিদ্যার খালোচনার উপর বিকিত সমাজের একটা বিক্তম মনোভাব বর্ত্তমান চিল। ববীজনাথের পানের প্রচলনে ও জনপ্রিয়তার সঙ্গে সংগ শিক্ষিত সমাজে मको छ अ मको खरिनााव मयधिक मयानव रवरक छैर्टिक। Radio-র মারকং বিনরাত অনেক গান খনে খনেক 'অত্ব' প্রকৃতির মাত্রবও স্থবের পিশাসী হয়ে উঠেছে। সাধারণ মাতুবের মধ্যেও একটা স্থীতের আছর ও সম্বীতের বসবোধশক্তি বেড়ে উঠেছে ৷ ছোট ছোট ছোল-

মেরেরা বে সব কঠিন রাগরাগিনীর কসরত করতে নির্মিত্ব করেক বৎসর আগে আমরা তা করনাও করতে পারত্য না। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় প্রবেশিকা পরীকার একটা অবশানিকার বিষয় না হলেও সলীতবিদ্যা ঐচ্ছিক শিক্ষণীয় বিষয় বলে নির্দিষ্ট হয়েছে। তা ছাড়া অনেক বে-সরকারী সলীত বিদ্যালয়ে উচ্চ অলের সলীত শিক্ষা ও বোগাত। অহুসারে 'হ্রব-ব্রী', 'গীত-ব্রী' প্রভৃতি নানা উপাধি দেওয়া হয়। মোট কথা, সলীতের ক্ষেত্রে একটা নৃত্য আন্দোলনের স্বান্ত হয়েছে—শিক্ষা-তত্ত্বের একটা দৃত্য আন্দোলনের স্বান্ত হয়েছে।

কিছু স্বানিরের কেত্রে বে ন্তন আন্দোলনের স্টি হয়েছে তার অফুরূপ কোনও চেটা রূপনিরের কেত্রে আন্তর দেখা দেয় নাই। সাধারণ লেখাপড়ার বিদ্যালয়ে রূপবিছার বড় একটা স্থান নাই। কোনও কোনও স্থানে কিছু কিছু ডুইং শেখান হয় বটে, কিছু রূপ-গ্রহণের শক্তি, রূপনিরের বসগ্রহণের শক্তি, তার দোর-গুণ ব্রবার শক্তিকে স্থানিকত ও পরিণত করবার কোন ব্যবস্থাই থাকে না। মাছ্যের ঈশ্বদত্ত নানা শক্তির মধ্যে রূপগ্রহণ এবং বর্ণবাধ শক্তি একটা বহুমূল্য শক্তি—ব্যাবহারিক জীবনে ও শ্রম-শিল্পের কেত্রেও এই শক্তি সাধনার ও প্রয়ো-গের যথেই উপকারিতা আছে। এই রূপগ্রহণের শক্তি একটা সৌধীন বিলাসের উপকরণ নহে। দৈনন্দিন জীবন-যাত্রার অনেক ক্ষেত্রেই এই শক্তি সাধনার স্বত্যন্ত প্রয়োজন আছে।

ষে সব হাতে-পড়া বা কলকারখানার গড়া পণান্রবা রঙে, বেখায়, ও নক্ষায় মনোহারী নহে, সে দব রূপহীন পণাদ্রবা বিশেব বাজাবে অক্ত অক্ত দেশের পণাদ্রবাের সহিত প্ৰতিযোগিতায় টি'কে থাকতে পাবে না। এক কালে আমাদের দেশের নানা পণ্যত্র্য তাহার বেধা-রঙের মনোহারী মহিখার এবং নম্বন-তুলান নক্ষায় সারা লগতে সম্মানের স্থান অধিকার করেছিল। উৎকট খদেশীয়তা ও দেশভক্তির প্রচুর বৃষ্টি বর্ষণ করেও আমাদের দেশের কোনও পণ্যত্রব্যকেই উচ্চ শিল্পের আসনে উন্নত করতে পার্চি না। ভাছার প্রধান কারণ আমাদের সাধারণ মাস্কুবের এবং শিল্পীদের চোধ থেকে রূপ-বৃদ্ধি ও রূপর্স-বোধশক্তি উপযুক্ত শিক্ষার অভাবে লুগু হয়ে গেছে। মুখন-যুগের প্রাচীন শিল্পকলার একটি সামায় निवर्गान (व केक चाक्य बनदम, व्य नकाद मूनियाना, त्व वर्षम्यात्वत्वव कोनम चामात्वव मूख कत्व, चामात्वव । অনেক 'আদরে' মাছ্য করা—বর্তমান কালের কোনও খ্যেশভাত প্ৰান্তব্যতে ভাহার কোনও গুণ্ট আমরা গড়ে ভুলতে পারি নাই। এই ব্যাপারটা বে ঘটেছে,

তার কারণ কেবল যারা হাতে গড়বেন সেই শিল্পীদের
শিক্ষার দৈয়তা নহে, যারা সেটা ব্যবহার করবেন. যারা
তার ধরিষ্কার ও পৃষ্ঠপোষক হবেন তাঁলেরও রুপবিদ্যার
শিক্ষার অভাবে কচিবিকার ঘটেছে। স্ক্তরাং কেবল
আটি ছল আর টেকনিক্যাল ছলের শিক্ষার সংস্কার করেই
আমালের শ্রমজাত শিল্পের সমস্তার সমাধান হবে না—
যারা এই শিল্পজাত সামগ্রী ব্যবহার করবেন তাদেরও
উপযুক্ত পরিমাণ শিক্ষার আবশ্যক। এবং এই শিক্ষার
ব্যবহা করতে হবে আমাদের সাধারণ বিদ্যালয়ের
প্রাথমিক ক্লান পেকে।

মাহুষের সৌন্দর্যাবোধ-শক্তি-- যার ধারা মাহুষ স্থান্ত কর্তার নিজের হাতে লেখা স্বভাবের স্থূদ্ধা দৃশ্য-পটে 'बरनोकिक भोन्मरयात मभारतार्थक मरधा व्यवनाहम क'रत বর্ণ ও রূপ-রেখার সার্থকতা কি তার আয়ানন ও কারণ অমুসম্বান করবার শক্তি সংগ্রহ করে,—সেই সৌন্দর্যা-শক্তি, সেই দৌন্দ্যাবোধ-শক্তি, ভগবৎ দত্ত একটি বিশিষ্ট ব্লীভির আধ্যাত্মিক শক্তি। শিক্ষার দায়িত নিয়ে যার। বদেভেন তাঁদের অবশ্য কর্ত্ততা বালক-বালিকাদের মধ্যে এই ঈশঃদত্ত শক্তি, এই স্বাভাবিক মানসিক বুভিকে রক্ষ। করা, পরিপুট করা, সম্মাজ্জিত ও শ্রশিক্ষিত করা। হুন্দরকে, সভ্যকে, শিবকে, মঞ্লকে আম্বাদন করবার এবং ভাকে নৃতন রূপ দিয়ে নৃতন সৃষ্টি করবার দৈবী শক্তি মাছ্যের মনের অক্সাক্ত বুরির মত সাধনাসাপেক। প্রকাশ, অফুশীলন, ও সাধনার হুযোগ না পেলে মাতুষের भोन्मध्य-तृष्टि । रुष्टि-शक्ति पृत्रम ५ मकिहान इत्य क्रयमः লোপ পায়-মৃত্যুমুখে পড়ে।

এই সম্বন্ধে জগছিখ্যাত বৈজ্ঞানিক চালস ভারউইনের স্বীকারোক্তি অভ্যন্ত শিক্ষাপ্রদ—তিনি তাহার এক বন্ধুকে পত্তে লিখেছিলেন—

"Up to the age of thirty, or beyond it, poetry of many kinds . . . . gave me great pleasure, and even as a school-boy I took intense delight in Shakespeare, especially in the historical plays. I have also said that formerly pictures gave me considerable, and music very great delight. But now for many years I cannot endure to read a line of poetry; I have tried lately to read Shakespeare and found it so intolerably dull that it neuseated me. I have also almost lost my taste for pictures and music . . . My mind seems to have become a machine for grinding general laws out of large collections of facts: but why it should have caused the atrophy of that part of my brain alone on which the higher tastes depend—I cannot conceive . . . If I had to live my life again I would have made it a rule to read some poctry, to listen to some music and to look at some pictures at least once a week,—for, perhaps the parts of my brain now atrophied would thus have been kept alive through use. The loss of these tastes is a loss of happiness, and may probably be injurious to the intellect and more probably to the moral character by enfeebling the emotional part of

ভারউইনের উক্তি থেকে এই কথাট। প্রমাণ হচ্ছে বে, মাহবের মনকে কেবল বৃদ্ধিকীবী করে তুললে ভার অনেক স্কা ও উৎক্ট বৃত্তিকলি নট হয়ে যায় এবং ভার নৈতিক বৃত্তিকলি দৃষিত হয়ে উঠে।

স্তরং শিক্ষা-ভালিকায় কেবলমাত্র লেখাপড়ার উপর অভিমাত্রায় ঝোক দিলে মাস্থবের মনের অক্ত অক্ত শক্তি পরু হয়ে যায় এবং একেবারে লোপ পায়। লেখাপড়ার স্থলের পাঠ্যপুত্তকের বানান-পাঠের উপর কুঁকে পড়ে দিন-রাভ B-L-A (রে) বলে চীৎকার করলে শক্ত শাস্তের স্থালিক এটা বটে, কিন্তু বিছাখীর অক্তাক্ত শক্তির কভিপ্রণের স্থোগ ও অবদর মেলে না,—বালক ও বালিকাটি কেবল কেতাবী বিদ্যায় আবদ্ধ হয়ে যে পরিমাণে শক্ত প্রকার অক্তর ও অভিধানে কাঁচা হতে থাকে, রূপের রূপবিছার অক্তর ও অভিধানে কাঁচা হতে থাকে, রূপের রূপ-বোধ শক্তি ক্রমণঃ হারাতে থাকে। এইরূপে তাদের যত বয়ন বাড়ে, লিখিত-পড়িত বিদ্যায় যত পারদ্রশী হয়ে উঠে—ক্রম্বর্যন্ত একটি শক্তির অধিকার থেকে তারা তত্ত বঞ্চিত হয়, রূপরাজ্যের অম্বাব্দী তারা হারায়।

এটা আমরা নিতাই চোবের সামনে দেখতে পাছি বে, লিখিত-পাঁড়ত বিদ্যার পারদর্শিতার প্রমাণ-স্বরূপ নানা "প্রাইজ", "পারিতোষিক" ও "সার্টিফিকেটের" সম্ভার নিয়ে, নানা "মেডেল" ও "ভিস্নোমা"র ভালি নিয়ে আমাদের ছেলেমেয়েরা বেদিন স্থল-কলেজের সিংহছার অভিক্রম করে বেরিয়ে এসে দাঁড়ান, তথন দেখা যায় তাঁদের মধ্যে খনেকেই গান শোনবার কান হারিয়ে বসেছেন, স্থলারক দেখবার, ব্রবার, চেনবার চক্ষ্ হারিয়ে বসেছেন—মাহয়ের সৌল্ব্য-সাধ্নার শ্রেষ্ঠ রচনার বাণা ও আবেদনকে অগ্রাহ্ম করতে তারা বেশ পট্ট হয়ে উঠেছেন—স্বর্গতের শ্রেষ্ঠ শিল্পকীপ্তির পরিচয়্ব নেবার, ভাদের শুণ বিচার করবার, রস্ আস্বাদন করবার, ভা থেকে আনন্দ ও আনলাভ করবার শক্তি একেবারে হারিয়ে বসেছেন।

আপনারা জানেন আধুনিক মনোবিজ্ঞান-শাল্প মাহুবের মনের চিৎশক্তি ও চিন্তা-শক্তির ক্রিয়া-প্রক্রিয়া সম্বন্ধে আনেক নৃতন তত্ত্ব আবিদ্ধার করেছে। নানা পর্যবেকণ ও পরীক্ষা বারা মনোবিজ্ঞানীরা আবিদ্ধার করেছেন বে প্রথমতঃ, শিশুর স্বাচাবিক বোধশক্তি puberby বা বয়:প্রাপ্তির পর বেশী কিছু বেড়ে উঠতে পারে না। বিতীয়তঃ, শিশুমনের মানসিক বৃত্তি বা প্রবৃত্তি, তার চরিত্রের বিশিষ্ট পতি ও ভাবগুলি—ভা স্বাচাবিক হউক বা অস্বাচাবিক হউক—শুব অল্প বয়স থেকেই দেখা দেয়। বেমন মনে কক্ষন, কোনও শিশুর আ্বাচাবিক স্কুল-শক্তি কিছা স্থীতের প্রতিভা, কিছা কোনও

ছাইবৃত্তি বা পাপের দিকে মনের বেশিক ও প্রবৃত্তি-এই সমস্ত বিশিষ্ট রকমের মনের গতি ও প্রবৃদ্ধি, মানসিক জীবনের জড়ি প্রভাবেই দেখা দেয়। ভতীয়ভ:. শিশুমনের ভাবুকভা করনা-শক্তি এবং বছর রূপগ্রহণ করবার শক্তি বয়:সদ্ধি প্রাপ্তি পর্যন্ত খুব প্রথর ও উজ্জ্বল স্বস্থার থাকে। শিশুমনের ক্মবিকাশ বারা মনোবোগ **मिर्टे भर्गात्यक्य क'र्द्ध मिर्थिह्म छादा वरमह्म.**— শিশুর কথা ফুটবার আগে, অর্থাৎ কথার ভিতর দিয়ে পরিকার রূপে ও বৃক্তিযুক্ত শব্দ অবলঘন ক'রে চিন্তা প্রকাশের শক্তি অর্জন করবার আগের বয়সে শিশুর মন ও জীবন-লীলা ব্লপের মধ্য দিয়ে আপনাকে প্রকাশ করতে চেষ্টা করে এবং কথা বলতেও বধন শিখেছে, তখনও লিখে বলবার বিছা অর্জনের পূর্বের বয়সে শিশুর মন সহজ্ব ও সরল ভাবে আত্মপ্রকাশ ক'বে নিরক্ষরের ভাষায়, রেখা-অহন ও রূপবিভার অক্তান্ত চাকৃষ ভাষা অবলমন কারে শিশুমন আপনাকে প্রকাশ কারে আনন্দ পায়.---ব্দরের ও শব্দের তুরহ পথ এড়িয়ে চনতে চায়। অনেক ছিজিবিজির ছবি লিখে তার মনের কথা সরল ভাবে বলভে চার এবং বলভে পারে। মাছবের সভ্যভার ক্রম-বিকাশের ইভিহাসে আমরা এই একই "আগে-পিছে"র পারস্পর্যা সাহিত্য ও শিল্পকলার উৎপত্তির মধ্যে দেখতে भारे ।

মান্ত্ৰ কথিত ও লিখিত ভাষায় আত্মপ্ৰকাশ কৰিবার বহু সহল্ৰ বংসর পূৰ্ব্বে চিত্ৰকলার চাক্ত্ৰ ও নিরক্ষর ভাষায় আত্মপ্রকাশ করবার কৌশল অর্জ্ঞন করেছে। স্পেনের আলভামীরা শুহায় ইভিহাসের বহু যুগ আগে লিখিত চিত্রাবলী পঁচিশ হাজার বংসর বয়সের দাবি করে। মান্ত্রের সভ্যতার ইভিহাসে রূপবিদ্যাই মান্ত্রের মনের কথা প্রকাশ করবার অতি আদিম ও প্রাচীন ভাষা। শিশুমনের বিবর্ত্তনের শুরে গুরে এই কথাটাই সপ্রমাণ হচ্ছে।

শিক্ষাভন্তের আধুনিক গবেষকর। প্রমাণ করেছেন বেং
শিক্ষচিন্তের ইভিহাসে, emotion বা ভাব বা রসবোধ-শক্তির
বিশেষ উর্বোধন হয় চার থেকে দশ বংসর বয়সের মধ্যে।
এই সমরটাকে মনোবিক্ষানীরা শিক্ষনের চিন্তাশক্তি
বা যুক্তিপ্রয়োগের পূর্ববৃগ বলেন, এটি হ'ল মনের prelogical বা non-logical অবস্থা। মন তথন যুক্তির পথে
চিন্তা করতে পারে না, চিন্তার ধার ধারে না, কিন্তু মন
তথন ভাবরসে ভরপুর। শিক্তমনের এই অবস্থাটি বড়
সন্ধীন, বড় critical অবস্থা। এই করেক বংসরের মধ্যেই
শিক্তর ভাবরসশক্তি এবং ভাহার ভাবরান্তা পড়ে উঠে।
এই emotional life বা ভাবনীবনকে বাড়িরে ভোলবার

ব্য — বধাবোগ্য রস ও খাল্য বোগাতে হবে, ভার ভাব ও করনাশক্তি বড় ক'বে ভূলতে হবে নানা "থেলাধূলার" মধ্য দিয়ে, নানা রূপকথা, নানা ছড়া-উপকথার আহার ক্যিয়ে।

মনোবিজ্ঞানীরা আরও প্রমাণ করেছেন বে. শিগু-মনের এই কল্পনাশক্তির বিকাশ ও পরিপোবণ কেবল বে শিশুর ভাবজীবনের পক্ষেই আবশুক তা নয়—শিশুর চিৎশক্তি, চিস্তাশক্তি, মননশক্তি ও বৃদ্ধিবিকাশের দিক দিয়ে মানসিক খাখ্যৱকার গরজে এই কলনাশক্তির পরিপোষণ একান্ত আবশ্রক। উইলিয়ম হেলী আধনিক শিকা-বিজ্ঞানের একজন শ্রেষ্ঠ পণ্ডিত. প্রমাণ করেছেন যে, শিশুমনের এই কল্পনালীলা যেটি ভার বয়সকালের সহস্ত ও সাধারণ ধর্ম তাকে নিরোধ করলে, দমন করলে, ভাব প্রকাশের পথ না দিলে, পরবর্তী বয়সে নানা উৎপাতের স্ঠাই হয়। ভার মনে নানা পাপ-বৃত্তি, **प्यत्मक प्यवाश्मीय वृष्टे-श्र**वृष्टि छाद हित्र कृति ५८ठे। স্থতরাং শিওদীবনের এই emotionকে বা ভাব-বুত্তিকে মাস্থ্য করে ভোলা. ক্লশিকিত করে ভোলা প্রত্যেক শিক্ষা-প্রতিষ্ঠানের অবশ্রকর্ত্তবা ও পালনীয় ধর্ম। এই emotionকে বাঁচিয়ে রাখবার খান্ত কেবল ক্ষিত ভাষার ব্লুপক্থা, উপক্থা নহে, ভার প্রধান থাত হ'ল রূপ-বদের বেখা-বর্ণের চাক্ষ্য জগতের সহিত সাক্ষাৎ ও ঘনিষ্ঠ পরিচয় লাভ। নানা স্বচিত্তিত ও স্থলিপিত চিত্রপট তাদের চোথের সামনে ধরতে হবে, যার মারা শিশুর বর্ণবোধ-শক্তি পরিবন্ধিত, স্থশিক্ষিত ও স্থমার্জিত হবে। এই colour sense বা বঙ চেনা এবং বঙ ফলান. এবং কোন রঙের সঙ্গে কোন রঙ খাপ খায়, কোন রঙ कान बढ़त महा भिना भारत. धरे वर्णत स्वत-स्नान अ স্থর-সভতির সমাবেশ ও সমালোচনার শক্তি আমাদের ব্যবহারিক জীবনের, আমাদের নিত্য ব্যবহারের নানা craft e industryর সার্থকভার হিসাবে খুব একটা বড় कथा. थेव এकটा कांटबंद कथा। वर्षकान ना थाकरन আমাদের সমগু জীবন যে কেবল মলিন, মদীলিপ্ত ও বিবর্ণ হয়ে উঠে তা নয়, আমাদের প্রমন্ত industrial arta নমুনা বাজাবে বিকোষ না। চীন, জাপান ও যুৱোপের ওন্তাদ শিল্পীরা তাঁদের কারধানায় নানা শিল্পাত জব্যকে রঙের যাত্রবিদ্যায় ধেমন চিত্তহারী করে তুলতে পারেন, বৰ্ণকানহীন আমাদের দেশের আধুনিক অশিক্ষিত প্রম-শিল্লীরা ভার সঙ্গে এখনও পাল্ল। দিতে পারছেন না। প্রাচীন কালের ভারভের শিল্পীরা এই বর্ণজ্ঞানের কৌশলে পুর পাকা ছিলেন 🗠 ভাঁদের হাতের প্রাচীন কালের ভারতের কাককলার নানা প্রেষ্ঠ নমুনা বর্ণবিজ্ঞানের অলৌকিক

রসবোধের দুষ্টাস্তস্করণ পশ্চিম দেশের নানা হাড়্ঘরে সম্বানের আসনে পূজা পাইতেছে। স্বভরাং এই বর্ণের "ব্দ" "পদ্ধ" জ্ঞান কেবল সৌধীন ভাবুকভার দিক দিয়ে নয়, শিল-বৃত্তির ও দেশের শিলের উন্নতি-বিধানের দিক দিয়ে একটা মন্ত্ৰ বড় কথা এবং অত্যম্ভ কালের কথা। এই নিরক্ষর বিদ্যার বর্ণবোধের সঙ্গে সঙ্গে শিশুর form-sense বা রূপ-গ্রহণ ও রূপ-বিচারের শক্তি অতি সম্বর্পণে গড়ে ভোলা আবশ্রক। এই রূপ-গ্রহণের শক্তি আমাদের জীবনের প্রভাক অন্ব-প্রভাবের গঠন-রীভির গোডার কথা। কাতিগত ভাবে আমবা form-sense হারিয়েছি,—তাই কোনও জিনিষ্ট এখন "গড়ে" তুলতে পারি না। কি সমাজে, কি শিক্ষাভয়ে, কি বাষ্ট্ৰভয়ে জীবনের কোনও বিভাগেই আমাদের আদর্শকে মনের মত "রূপ" দিয়ে খাড়া করে তলতে পারি না। এই "রপবিদ্যা", এই গড়বার বৃত্তি, গঠনবীতিব কৌশল এই plastic sense, এই রূপ গড়বার শক্তি আমরা হারিয়েছি। আমাদের इाट्ड-शडा भव कि निषड़े (कमन 'এলোমেলো' इर्घ अर्ठ--তার রূপের নানা অজ-প্রত্যঞ্জের মধ্যে কোনও সঙ্গতি, কোনও সামঞ্জ, কোনও গঠনবীতি খুঁজে পাওয়া যায় ना। এই ব্যাধির কারণ হ'ল এই যে, আমরা ঈশবদত্ত রূপশক্তি, স্প্রীপক্তি, রুদ্বোধ-শক্তি aesthetic sense আমরা হারিয়েছি। ছেলেবয়সে পঠদ্দশায় এই সব শক্তির অফুশীলন করবার কোনও স্থযোগ-স্থবিধ। আমরা পাট্ট নাই---আমাদের শিক্ষা-পদ্ধতিতে একট। একটা বড় ফাঁক অনেক দিন পেকে মুখব্যাদান করে यदम्दर्भ ।

শিক্ষায়তনে শিশুদের এই ঈবরদত্ত মানদিক বৃত্তি এই রপর্বদ্ধির অঞ্শীলন ও সাধনার নানা ব্যবস্থা ও হযোগ পশ্চিম দেশের প্রায় সমস্ত বিদ্যালয়ে কিছু কিছু আছে। কার্মেনীতে, ক্রান্সে ও ইংলণ্ডেও রূপবিদ্যার অমুশীলন ও উন্নতি সাধনের যথোচিত বিধি-ব্যবস্থা আছে। শিল্পকলার माधना এवः भिन्नकनात्र भिका ও প্রচাব সকল দেশেই একটা বড় জাভীয় কর্ম্বব্য বদিয়া স্বীকৃত হয়েছে। ফ্রান্স দেশে Ministry of Fine Art নামে স্ভন্ন মন্ত্ৰীৰ দপ্তৰ ভাচে। ইংলতে ত্রিটিশ মিউঞ্জিয়মের কর্তারা শিক্ষার এই বিভাগের দায়িত্ব বহন করেন এবং বিলাভের সাউধ কেনসিংটন মিউজিয়ম, বোর্ড অব এডুকেশন বা শিক্ষা-সংযদে विद्यालय कनानियात जात्नाहनात नाना स्यान ও স্বাৰ্ম্বা ক'রে থাকেন। সামন্ত্রিক প্রদর্শনী, আম্য-यां। श्रवनी, कनाविहा। प्रश्य नाना वकुछायांनाव वावचा क'रव धवः विज्ञभानात मः श्रव वहेरछ नाना स्वर्ध-চিত্তের নিমর্শনের সন্তা ও ফুম্মর প্রতিলিপি প্রকাশ ক'রে,

মিউজিয়মের কর্তৃপক্ষরা সকল রক্ষের শিল্প-সাধকদের নানা উপারে সাহায্য করে থাকেন এবং নানা পথে জাতীয় শিল্পকলাকে উচ্চ আসনে প্রতিষ্টিত ক্ষরিতে অক্লান্ত পরিপ্রম করেন।

আমেরিকার শিক্ষাতত্ত্বে কলাবিদ্যার শিক্ষার ব্যবস্থা আরও অধিক পরিমাণে স্থ'চন্তিত ও স্থপরিকল্পিত পদ্ধতিতে প্রতিষ্ঠিত। সে দেশে শহরে শহরে চিত্রশালা ও সংগ্রহ-শালার সন্দে স্থল ও কলেজের পাঠ্যভালিকার একটা ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক আছে—স্থলে ও কলেজে যে সব বিষয় শিক্ষা দেওয়া হয় ভার চাক্ষ্য উপলব্ধির জন্ত ছেলেদের নিয়মিজ ভাবে প্রতি সপ্তাহে চিত্রশালায় নিয়ে গিয়ে পৃস্তকে পঠিজ জ্ঞানের বিষয়গুলি চিত্রের মারফত সহদ্ধ, সরস ও প্রভাক্ষ জ্ঞানে পরিণত করা হয়। কেবল যে নানা যুগের নানা শ্রেষ্ঠ শিল্পের শ্রেষ্ঠ নিদর্শনগুলির সাক্ষাৎ পরিচয় করাইয়া ছাত্রছাত্রীদের রূপবৃদ্ধি পরিণত ও স্থাশিক্ষত করা হয় ভা নয়, ইতিহাসের প্রত্যেক যুগের পাঠ্যবস্তকে নানা ঐতিহাসিক প্রাবস্তর নিদর্শনের মারফত চাক্ষ্য রূপে জীবয় ক'রে, প্রত্যক্ষ ক'রে দেখান হয়।

এই visual method বা চাকুব পছতিতে জ্ঞান-বিজ্ঞানের সমস্ত বিভাগই একটা সরস, সজীব ও প্রত্যক্ষ দৃষ্টির সহক্ষ অহন্তৃতিতে উজ্জ্ঞা হয়ে ওঠে।

অতীত কালে নানা যুগে নানা শিল্পকলা—ব্যনশিল্প, মুং-শিল্প, কাঠের শিল্প—ধাতৃশিল্প—কত উচ্চ আগর্শে প্রতিষ্ঠিত ছিল—কি নম্মায়, কি পরিকল্পনায়, কি বর্ণবাধে, কি কারিগরী ও মুন্সীয়ানায় দেকালের শিল্প-শৃষ্টি কি উচ্চ ভবে পৌছেছিল, চাকুষ নিদর্শনের মধ্য দিয়ে ভার তুগনা করবার হযোগ পেয়ে বর্ত্তমান কালের শিল্প উন্নতির দিকে অগ্রস্ব ইইবার শিক্ষা ও যোগাত! লাভ করে।

এই রূপে রূপবিদ্যার চাক্ষ্ম পথে এমন অনেক রকমের জ্ঞান অর্জ্জন করা যায়, মাফ্ষের কৃষ্টিশক্তির এমন অনেক গুপ্তরহক্ত অধিকার করা যায়, যার সন্ধান লেখা পূথী আর ভাপা কেভাবের পাতায় পাওয়া যায় না

শিক্ষাভত্ত্বের এই বন্ধৃদ্য সভাটি স্বীকার ক'রে নিম্নে পশ্চিম দেশের শিক্ষাভন্ত একটা স্থচিত্তিত বৈজ্ঞানিক পরি-কল্পনার স্থগঠিত হয়েছে বার প্রয়োগে মাহুষের স্বাভাবিক বৃত্তির সমস্ত শক্তির স্বভাগে ও স্বাহুশীলনের সমাক্ স্বযোগের ব্যবস্থা করা হয়েছে।

আমেরিকার নিউ ইয়র্ক শহবের মেটোপলিটন যিউজিয়মেরেরাজ অন্ততঃ এক হাজার ছেলেমেয়ে নানা মূল থেকে পালা করে এ চিত্রশালায় চাকুষ শিক্ষা লাভ করতে উপস্থিত হয়। বিশেষজ্ঞ শিক্ষকের ভত্বাবধানে ভালের নানা চিত্রহস্ত ও পুরাবস্ত লেখিয়ে দিয়ে নানা বিষয়ে ভালের জ্ঞান পাক। ক'বে ভোলা হয়। এইরূপে নিউ ইয়র্কের চিত্রশালায়

প্রতি বৎসর তিন লক্ষ ছেলেমেয়ে চকুর পথে শিক্ষা লাভ করে, ভালের রূপদৃষ্টিকে পরিপূর্ণ ও পরিণত ক'রে, ভোলে, সার্থক ক'রে ভোলে। তা ছাড়া প্রভােক স্থলের দেওয়ালে বথাযোগ্য ছবি টাভিয়ে রাখা হয় এবং সেগুলি মধ্যে মধ্যে বদলে দিয়ে ছেলেমেয়েদের রূপ-রস বোধের জ্ঞাসটা পড়ে তুলে ভাদের দৃষ্টিশক্তি স্থশিক্ষিত ও স্থাক্ষিত করে ভোলা হয়। ভানের মধ্যে যাদের শিল্পত প্রতিভা থাকে ভাদের জল্প আর্ট স্থলে বিশিষ্ট রকম শিক্ষা দেবার স্থচাক্ষ বাবস্থা আছে। কিন্তু সাধারণতঃ সকল ছেলেমেয়েকেই ভাদের দৃষ্টিশক্তি স্থশিক্ষিত করবার যথেষ্ট স্থাগে দেওয়া হয়। কেবল পূর্ণের পাভায় নিবজ্ব রেখে ভাদের ঈশবদভ রূপদৃষ্টি ও রূপনৃদ্ধিকে হত্যা করা হয় না।

কারণ যাঁরা কলাবিভাকে উপজীবিকা বলে না নিয়ে জীবনের অভান্ত ক্ষেত্তে কাজ কর:বন, তাঁদেরও উপযুক্ত রকম বসবোধ-শক্তি থাকা চাই—এই কণাটা শিক্ষাতত্ত্বের একটা মুলগত সভা গলে গুহীত হয়েছে:

কারণ সমাজে ক্লচিসম্পন্ন 'রসবিং' সমজদার না থাকলে 'বসরুং' বা শিল্প-স্প্রকারদের শিল্প-স্প্রকার, অর্থাৎ শিল্পীর হবে না, এবং সমাজে শিল্প-স্প্রকার, অর্থাৎ শিল্পীর যথাযোগ্য আদর, প্রশংসা ও পুরস্কার লাভ ক'রে সমাজকে তাঁদের শ্রেষ্ঠ স্প্রী দিয়ে পরিপূর্ণ করবার অবকাশ পাবেন না। আমাদের দেশের অক্সান্ত প্রদেশে সাধারণ বিদ্যালয়ে শিল্পকলার দৃষ্টি স্থশিক্ষিত করবার অক্স নানা নৃতন পরিক্রনার শিক্ষাপছতির প্রবর্তনের চেটা স্ক্রক হয়েছে। গত নবেছর মাসে ত্রিবাঙ্গর রাজ্যে একটি পরিকর্তনা ধার্য্য হয়েছে। এই পরিক্রনাটিতে প্রাইমারী স্থল থেকে আরম্ভ করে ইউনিভার্গিটির পোট-গ্রাকুয়েট ক্লাদ পর্যন্ত শিক্ষাব্যাপারের প্রভ্রেক স্তরেই ক্লপশিল্পের সহিত সম্যক্ পরিচ্যের স্থব্যক্ষা হয়েছে।

ইতিমধ্যে বোষাই প্রদেশের গবর্ণমেন্ট একটি বিশেষজ্ঞকমিটি নিযুক্ত করেছেন—শিক্ষা ব্যাপারের প্রভ্যেক গুরে
কি ভাবে কলাবিতা শিক্ষার ব্যবস্থা করা উচিত তার
একটি পর্কিল্পনা এই কমিটি স্থিব করবেন। আমাকে এই
কমিটির সভ্যা নিযুক্ত করা হয়েছে। কমিটির কাজ ক্রভ বেগে অগ্রস্ব হচ্ছে।

বাংলাদেশে সাধারণ বিদ্যালয়ে কলা-শিকার ব্যবস্থার

বিছ কিছু স্চনা হয়েছে। কলিকাভা বিশ্ববিদ্যালয় আমার অন্থরোধে প্রবেশিকা পত্রীক্ষার Art Appreciation Course নামে একটি নৃতন কোর্সের প্রবর্তন করেছেন। অনেক স্থালের ছেলেমেয়েরা প্রবেশিকা পরীক্ষার এই কোর্সের পরীক্ষা আন্ত পাঁচ বংসর বাবং দিয়ে আসছেন। সাহস করে বলা খেতে পারে—এই কোর্সের ছেলেমেয়েরা ধুব ভাল ফল দেখাতে পেরেছে। এই সম্পর্কে Trained Art Teachers তৈয়ারী করবার জন্ম বিশ্ববিদ্যালয়ে গ্রীত্মের অবকাশে তৃ'মাসের জন্ম বিশ্ববিদ্যালয়ে গ্রীত্মের অবকাশে ত্মাসের জন্ম শিক্ষক এই বিদ্যায় special training-এর ভিস্নোমা নিয়েছেন।

ভদ্রকালীর এই বিদ্যালয়ে—সাধারণ পাঠাতালিকার সঙ্গে সঙ্গে কলাবিদ্যা অঞ্শীলনের যে স্বর্বস্থা হয়েছে, ছা অভ্যস্ত বাঞ্নীয় এবং অভ্যন্ত প্রশংসনীয় উদাম। ঠিক এই রক্ষের ব্যবস্থা আর কোনও স্থলে আমি দেখিনি। এই স্থলের কতুপক যে শিক্ষার ক্ষেত্রে একটা নৃতন রীভির প্রবত্তন করেছেন প্রাচীন গ্রাম্য শিক্ষার পথ অবলম্বন ক'রে এবং ইভিমধ্যে যে বেশ ভাল ফল দেখিয়েছেন সেটা এই স্থলের শিক্ষকমণ্ডলী এবং কত্তেপক্ষীয়দের পক্ষে বিশেষ গৌরবের কথা।

কলিকাভার অনেক দুরে এই ছোট গ্রামের মধ্যে এমন একটা সর্বাভায়েশী শিক্ষার বাবস্থা করা যে কভ বড় শক্ত কাজ তা ভৃক্তভোগী ছাড়া অন্যের পক্ষে হঠাং হাদয়জম করা খ্ব শক্ত। আমি মৃক্ত কঠে বলতে পারি যে, যারা এই শিক্ষা-প্রতিষ্ঠানের করনা করেছেন এবং অক্লান্ত পরিপ্রেম সফল করে ভুলেছেন তাঁরা দেশবাসীকে একটি ম্লাবান জাভীয় সম্পত্তি দান ক'রে ধনা করেছেন। আমাদের সকলের কর্জব্য এই জাভীয় প্রতিষ্ঠানকে আরও বড় ক'রে ভোলা, পূর্ণ ক'রে ভোলা, সার্থক ক'রে ভোলা।

শিক্ষাতত্ত্ব এই ছ্লের শিক্ষকেরা একটি নৃতন দান দিয়েছেন, সেটি হ'ল এই যে শিক্ষাদান কার্য্য কেবল একটা ধবর সরববাহ করবার পছতি মাত্র নহে। শিক্ষা হ'ল আধ্যাত্মিকতার পথে স্বচেয়ে বড়, স্বচেয়ে অসমসাহসিক অভিযান ও অম্বাত্রা, এবং কলা-শিল্প এই জন্ধ-যাত্রার জীবন্ত, মদলময় আর পবিত্র পথ।\*

২৮শে আমুমারী ১৯৪৭ ভারিখে পটিত।

# এছেহি

## প্রীকৃমুদরঞ্জন মল্লিক

হে প্রভূ, জালিছ ভূমি কি ?
রাঙা হয়ে কেন উঠিতেছে বর।
জানিতে পেরেছে ভূমি কি ?
জন-সমুদ্র কেন উতরোল ?
কোবা বেকে এলো হেন হিলোল ?
কলোল-ভরা যত প্রল,
দেখিয়া হাড়াই ব্যকি !

ভূমি কি আসিছ, হে কেশব ?

রয়ে রয়ে মোর কানে যে পশিছে

তব অবের হেয়া রব।

বর করবালে রভের রেবা—
করে বক্ষক, ক্ষণে যার দেবা,

যঙলী করি নর্ডন করে

ব্যারাষ্ট্রী সেনা ওকি সব ?

ওকি উৎসব মরণের ! এই চরাচর ইকিত পেলে
বুবি তব অবতরণের ?
উবাধনার বার জীব মরি,
কদহরেণু সম পড়ে বরি,
হিজোলে এসে হম দোল লাগে
কোনু নে শকা হরণের ?

কুখ্ৰ চেকেছে পিৰালে—
ভীৰ শীৰ ইনুমু বিকে
এমন কৰে কে ভিৰালে ?
প্ৰলৱ বোলের বাঙা পিচকারী—
বিশ্বিত ভীত চিনিতে বে পাহি,
তুবন ভৱিষা উড়ে বাঙা কাগ্,
ও মন্তবাহী হিঁবালে।

দেবি আঁবি মেলে কি করি ?
কিরীটে তোমার কোটী অর্ব্যের
কিরণ পভিছে ঠিকরি'।
তীত্র জ্যোভিতে হারা হ'ল সব,
তুমি হাড়া মাই কিছুই কেশব,
বিচ্ছিন্ন এ বিধে বাঁবুক
ভোমার প্রেমের মিগড়ই

বট হে তুমিই বট হে,
পাক্ষম্য কপু-নিনাদ
পশিছে কৰ্ণপটহে।
নহে আনন্দ, নহে সং চিং,
এ বিশ্বরূপ লোকক্ষরতং,
নব পৃথিবীর শুতন মুগের
ভচি ভাডোদ্য হটরে।

কই শাক পাণিতে ?

দৃষ্ঠতি দলে দলিতে আসিছ

সাধুরে অভয় দানিতে।

মহাসবৃদ্ধ উঠিছে কাঁপিয়া,

দীবময়ী বরা উঠিছে কাঁপিয়া,

করাল কোটাল লোয়ার আসিছে

সক্ষী পেরেছে কানিতে

বরাভলে ছুটে প্রথমি,
ভূবন টগানো তব আগমন
প্রভি পলে পলে গণত্তি।
বহু দিন পর আগিছ আবার,
ভূবারে, চ্বায়ে, ভ্রা-পারাবার,
বেবে বাই নভি—জানিনে রহিব
ভোষায় কি হরে জনত্তি।

## অরণ্যপথের ডায়ারি

## শ্রীপরিমূল গোস্বামী

আরদাবারু ইতিষ্বের বেলা বেকে একটু দূরে অবহিত জার
ক্যান্দে সিরেছিলেন, অনোকও লেখানে সিরেছিল। ওরা
কিরে এল প্রার ছটোর সরর। অন্ধাবার্র কাছ বেকে জানা
পেল এইবার বুনো হাতীর গলার কাঁস পরাবোর কাজ আরস্থ
হবে, সূতরাং কোটোপ্রাক তোলার করে আলে বাকতেই
প্রস্তুত হওরা হরকার। তিনি চূতীর নাচাট দেখিরে বললেন
এইবানে উঠুন। কিছ সে নাচার তবন এত লোক বে
সেখানে ওঠা অসম্ভব। অন্ধাবার্ তা দেবে সেখান বেকে
তালের নামিরে দিলেন। আমি উপরে উঠেই ব্রুতে পারলার
অন্ধাবার্ টকই বলেছেন, কারণ একমান্ত এইবানে কাঁলালেই
মর্ব প্রার পিছনে বাকে। অভ চুট মাচার কাঁলালে মুর্ব প্রার
তাবের উপর, সূতরাং ক্যানেরার লেকেরও উপর।
তবে এবানেও একট অসুবিধা আছে। গঙ্কের বেভার গাহগুলোর করেকটা একটু বেলি উঁচু---ক্যানেরাকে বাবা দের।

আমি যে বাচাট সম্পূর্ণ একা শেলাম তা নয়, একজন জন্ত্র-লোক ওবানে বলে গছের মব্যে কলাগাছের এক একটা টুকরো বাবে বাবে কলছিলেন খুনো ছাতীদের মব্যে । তিনি রইলেন, তা ছাড়া আরো অনেকে উঠে এল একটু পরেই । ইতিমব্যে চুর গুরান্তর বেকে বহু দর্শক এলে পড়েছে, তার মব্যে বাঙালী বেরেও আছে অনেক । ইউরোপীর জন্তলোক হ্'বনও ক্যারেরা নিবে আমার ভান বারের বাচা বেকে আমার পালে উঠে এলেব । কিছ বভ লোক এলেছে তাদের স্বার জামগা তিনট বাত্র বাচার উপর হতে পারে না, তারা গড়ের বেড়া বেরে উপরে উঠে অববা নিচে ইাড়িরে বেড়ার কাকে চোব লাগিরে দেবতে লাগল।

আষার ট্রক বিপরীত দিকেই গড়ের দরজা, সেও সরু সরু গাছ কেটে তৈরি। পোষা হাতীর দল এই দরজা দিরেই এগে চুক্তবে গড়ের যথ্যে, ভাদের প্রভ্যেকের শিঠে বাক্তব এক্সন করে মাহত, বুনো হাতীর গলার কাঁস পরাবার কভে।

শোষা হাজী আসবার সরবা হৈবে গেছে। সবাই উত্থ হরে আছে, তবু কেব বেন বেরি হচ্ছে। নিচে কড দেশের লোককে দেবা বাছে। নেণালী, ভূটরা, হিল্ছানী, শিখ, বাঙালী—ন্দৰ জাতীর যেবে-পুরুষ। আমি ক্যাযেরা প্রভত করে ইাছিলে আছি। এবন বিপক্ষনক জারগা বে একটু অভ্যনত হলে গড়ের ভিতরে গড়ে বাব। অথবা ভানবারে এক ইফি পা ক্ষালে বাইরে পড়ব। হু'বিকেই সরাম বিপদ। এক হিকে বুনো হাতী, আর এক হিকে বোঁচা বোঁচা বাঁশ ও কার্তের প্রাত্ত। নাচাট টুক্রো বাঁশ পাশাশালি বেনে তৈরি, চেরা বাঁশ নর, আভ গোল গোল। বনসন্থিবিষ্ট নয়, প্রভ্যেক
রুট বাঁশের নাথবানে একটু করে কাঁক আছে। সমস্ত নাচাটা
চার সাড়ে চার হাত লখা-চওছা। তার উপরে তবন আমরা
অস্তঃ হ'কন লোক আছি, আমার পিছনে আমাদের ফ্রাক
চালকের সহকারী লালু নামক একট ছেলে। আমার রক্ষক
হিসাবে হাঁছিরে আছে সে—যদি হঠাং পা করে বার সে
আমাকে বরে কেলবে। কিন্তু ইভিমধ্যে তাকেই হু'বার পঞ্চে
যাওরার হাত বেকে আমি বাঁচিরে দিলাম।

গড় পনর-যোগ হাত উঁচু এবং ভিতরের গোগ আভিনার ব্যাস হবে প্রার পঁচিশ হাত। বাইরের দিকে মোটামোটা কার্ট দিরে করেক হাত পর পর গড়ের বেড়াকে ঠেলে রাখঃ হরেছে গড়কে বেলি প্রক্ষিত করার উক্তেও। গড়ের ঠিক মাববামে একট আব-মোটা গাছ।

এইভাবে ইভিয়ে থেকে থেকে পা অবশ হয়ে আগছে, বাবে বাবে উপর থেকে বুলে-পঢ়া সরু একথানা ভাল ধরে বিপ্রাম করছি। সেও ধুব নির্ভরযোগ্য নর, হুভোর মভো দরু এবং শুকুনো। এমন সমর পোমা হাতীর পিঠে মাহতদের মাধা দেখা গেল গড়ের দরজার বাইরে পাতাবেরা পথে। ভারা দরজার কাছে এগিয়ে আসামাত্র মুহুতে এক কাও ঘটে গেল। ভাদের সাড়া পেরেই গড়ের ভিতরের রুনো হাতীরা হঠাং ক্ষিপ্ত হয়ে প্রবল বেগে খাঁপিরে পড়ল দরজার উপর। এরক্ষ সমলবলে গড়ে অনধিকার-প্রবেশকারীদের উপর হঠাং আক্রমণ থেবে বোঝা গেল ওদের বেরোঝার পর্য থাকলে কড সহছে শক্রদের চুর্ণ করে ক্ষালে পালিরে যেতে পারত। কিছ ওবের এই আক্রমণ এখন সম্পূর্ণ নিক্ষল।

গেটের সঙ্গে সংগর যে যাচাট ছিল ইভিপূর্বে সেই বাচাটভেই আমি ছিগাম। হাতীর আক্রমণে তা বার বার কেপে উঠছিল। কিন্তু এবন বে বাচার আছি তা গড়ের বেছা বেকে তিন-চার ইকি তকাতে, তাই ছবি নেওরার পক্ষে কে কিন্তু দিয়ে অনেকবানি নিশ্চিত্ত। কিন্তু বভ হাতীকে প্রথম কাস গাগিরে বাবার কান্ধ যে এবন আক্রমকমের একট ব্যাপার সে বিষয়ে আমার কোনোই বারণা ছিল মা। এর মব্যে বিষয়কর কৌশল, হৈছিক শক্তি, বেলার ওভাবি এবং চরম্বতম নির্ভ্রতার যে সম্ব ভ্রম্ম উভেন্দ্রাপূর্ণ চুত্ত দেবলার তাতে ছবি ভূলব, না সেই বেলা হেবব, তা ঠিক করাই হ'ল বিষয় সম্বভা। এ ক্যা সভ্য যে আগে যদি এ সম্বত্তে কিছুবার বারণা বাক্ত তা হলে আরও অনেক রক্ষ অবস্থার ছবি নেওৱা বেত।

क्षपत्त स'हे राजी हुकन शरूब बर्गा, जिनहे वाहेरत बहेन।





# শেষার গড়ে পোষা হাতীর দল কংকী হাতীদের উপার আক্রমণ চালাইবার কল চুকিতেছে





ওবা চুকেই বুনো হাতী গলোকে অভি প্রবল বেলে আক্রমণ করতেই বুনো হাতীওলো হঠাং বিপ্রান্ত হরে পড়ল। ওরাও কিরে আক্রমণ করার চেটা করল বটে, কিন্ত পোরা হাতীবের অভি হিংলে আক্রমণের বুবে ওলের সকল চেটা নিকল হতে লাগল, ওবা বুনোদের বুব ক্লোতেই বিল লা।

बरे शाबा राजीकरना बरमत कार्य जाकारत जरनक वक् अवैर अपन माद्या माकना अवर कूनकी पूरेरे चाहा। शिलान হাতীর ছ-একটার গতে সশুবের দিকে করাত দিরে কাটা। श्रद्धा मार्चः निदय अवर कांक निदय श्रद्धा श्रद्धम त्यदक हार्क তিনট অনভিজ হাগীর পিছনে (ছোট করতে লাগল। ছটকে ভো দেবাই যাছে না )—অভ চলো ওভাদ হাভী। মাহত পোষা হাতীর মাধার ক্রমাগত লড়কির বোচা মারছে चार शृर्व अक्तकम नक क्राह--- (बीहार चारम अरबर मावा দিয়ে বর্বর্ করে রক্ত বরছে আর কেপে গেয়ে বুলো হাতীদের উপর বাংপরে পড়ছে। এইভাবে আঞ্জন চালাভে চালাতে ওরা ব্ৰোদের গড়ের এক পালে একেবারে কোর্প্যাসা করে কেলল। বাচ্চা হুটো হাতী বড় তিন্টর মধ্যে সর্বদা मुकिरव चारक, भारब मारब छाएनत भा एमबा बारक। अता কোণঠাপা হয়ে আছে আর পিছনের হাতীরা ওখের দাঁত দিয়ে माना मिरव, अवर ७ फ भिरव अभन (हरण द्वारवाह रव करवक बिभिष्ठे भवारे त्यम अन्तर्भ चान्न श्रह परम्राहा कि ब चरहार चानककन बाका यात्र ना । निश्चतन राजीबालांद চাপ একটু টিলে পঞ্চে যাবার সঙ্গে সঙ্গে গে এক বীভংস কাও पटि त्रिन बृहुर्छित यहा। अवस्त त्रक्-बक्टी बूक्क्रिब পরিণত হ'ল। এমন উত্তেমনাপূর্ণ বেলা ইতিপূর্বে আর (भिष नि ।

মাখতদের পিঠে নিয়ে আক্রমণকারী হাতীখলো উথাদের মতে। বুনো হাতীগুলোর পারে যেবানে-সেবানে আঘাত হানতে লাগল। নিচের বুলো-বালি উক্তে সমন্ত সুহক্তের বোঁরাটে হয়ে দেল। মাহতরা বেমে উঠল। ভারা ভাষের হাতীদের মাধার ক্রমাগত শঙ্কির বোঁচা মেরে কিন্ত হিংল্ল হাতীদের মাধার ক্রমাগত শঙ্কির বোঁচা মেরে কিন্ত হিংল্ল হাতাখলোকে আরও হিংল্ল করে ডুলতে লাগল। মার্ভভরা ভাষের পা হাতীর গলার অভানো আলের মধ্যে হু'দিক থেকে চালার দিয়ে নিজেন্তর প্রকিত করে রেবেছে, নইলে এ রক্তম অবহার ভারা যত গুভাগই হোক নিচে পক্তে যেত।

আমার ভান দিকের বাচার অরণা বাবু এক কোনে বসে থেলার মাঠের ফর্শক যেখন নিজের দলকে চীংকার ক'রে উৎসাহ বের তেথনি ভাবে উৎসাহ দিজেন মাহতদের। স্বাংগুর ক্যামেরার লেলে গোলা স্থেরে আলো লাগছে, অভএব ক্যামেরা ছেকে হাতীর সভাই বেবছে। অলোকও ব্র উত্তেজিভভাবে তার পালে ইাছিরে। সমুবের মাচার স্থান বারু ও বিভাগ বারু এবং আরও দল বারো বন দর্শক। গভের বেভা বেরে বছ লোক উপরে মাধা বের করে সভাই বেবছে। নিচে ভো ইাছাবারই ভারগা নেই। বুৰো হাতীখনো একে তো ক'ছিল অৰ্থাহায়ে ছবল, তায় উপয় এই অপ্ৰত্যাশিত আঞ্চৰণ—এ বেল আয় সহ কয়তে



ভিষা কোষাবির ষত্র

পাবছে না। ওবের চোব দিবে জগ গছিরে পড়ছে। বাজা-ভলোকে এই বিপহরের অবগাতেও চেপে আছাগ ক'রে রাবছে। ওরা হাঁপাছে—কিছ তবু হয় তো আলা করছে এর পরেও ওরা পাগাবার পথ পাবে, তাই ওরা প্রাণশন পঞ্জিতে বিজ্ঞাহ ক'রে উঠছে মুহুতে মুহুতে ।

শোধ হাজীদের এই স্বন্ধাতিবিদেয় কেমন অধুত লাসে ।
মনে হয় যেন এক দিন বর পাকে ওরা যে অত্যাচার নিজেরা 
সহ করেছে, আৰু ঠিক সেই অত্যাচারই চালাছে ওরা মতুনবরা হাজীদের উপর।

মাহতদের হাতে মোটা দড়ির কাঁগ। এইবার ভারা জমাগত চেটা করতে গাগল কোন্ কাঁকে তা ওলের গলায় পরাবে। কিও অবস্থা যা দেবা গেল তাতে কাঞ্চী যোটেই সহক্ষ নয়। বুনো হাতীয়া সম্পূর্ণ পরাক্ষয় যীকার না করলে কাঁগ পথানো প্রায় অসম্ভব।

এইবার গড়ের যাকথানের গাছট বিরে ওচের লড়াই চলতে লাগল। বুনো হাতীদের উপর ওবু পোষা হাতীর আক্রমণ নয়, মাহতরাও তাদের শড়কি দিয়ে ওদের মাধার বোঁচা মারতে লাগল।

তৃণু বুনো হাতীরাই যথন গড়ের মধ্যে হিল তথন তালের
শক্তি দেবে বিশ্বিত হয়েছিলাম। এখন দেবছি তারাই ক্রমে
সম্পূর্ণ অসহায় হয়ে পড়াহে পোষা হাতীকের আক্রমণে। কাঁস
হাতে করে মাহতরা তালের হাতীওলোকে যথন বুনো
হাতীকের উপর নিয়ে কেলল তথন ওলের আর এক ইঞ্ডিও
নক্তবার উপার বইল না। বুনো হাতীওলো গড়ের বেড়ার



ভিষার বিয়ালয়ের একট পাল অসিরা বাড়া প্রাচারের মত ক্রিয়াছে—ছট মাজ্যকে দেবাইতেছে পিঁপড়ের মত

সক্ষে মাথা ঠেকিবে পরপার গারে গারে কটিনভাবে এঁটে ইাছিরে আছে—পোষা হাতীরা রয়েছে তাথের পিছনে। এ আবহার বুনোদের গলা জনেক দূরে থাকায় কাঁস পরানো সভব হ'ল না। কাঁস পরাতে হলে হুটো পোষা হাতীর সাহায্যে হু'দিক থেকে একটা বুনো হাতীকে চেপে বরা ধরকার, কিছ সে আর কিছুতেই হয়ে উঠছে না। বুনো হাতীরা আল্বরকার জঙে মরীরা হয়ে উঠেছে। পোষা হাতীরা গোড়া থেকেই প্ররোগ করছে পশুস্তি, কিছ বুনো হাতীদের আর কোনো শক্তি আবশিষ্ট নেই, তাই ভারা পাণ্টা প্রযোগ করছে ভবু ভাদের বুহিকৌণল। ওরা ঠিক বুবতে পেরেছে যে শক্ষপক্ষ ভার শেষ অন্ত হেনে ওদের বন্ধী করবে—ভাই ওরা অনুত চাতুর্বের সঙ্গে ভাদের গকল চেপ্তা বার্থ করে হিছে। কিছ ওরা হব তো এবনও জানে না যে অনিধিষ্ট কালের কচে প্রবল শক্ষকে এভিনে যাওৱা চলবে না।

পূর্বোক্ত অচল অবহা ছু'তিন মিনিট ছারী হ'ল। তার
পরেই আরম্ভ হ'ল নতুন আর একটা রুছ। এবারেও ঠিক
আগের মতোই সমন্ত আভিনার গুলো উছিরে ওরা সমন্তচ্ট্
আরগার পাক থেরে কিরতে লাগণ। মিনিট পাঁচেক লড়াইরের
পর হঠাং স্থবোগ পাওরা গেল ছোট বাতাল হাতীটার গলার
কাঁন পরিবে দেবার। তবন বেগার মাঠে এক পক্ষে গোল হলে
বিকরী দলের সমর্বকেরা যেনন উল্লাপ প্রকাশ করে তেমনি একটা
অর্থনি শোনা গেল বেগার লোকদের রুব থেকে। হঠাং
আনার ভান বারের মাচার দিকে চেরে দেবি আশোক এবং
প্রথান্ড সেবানে নেই—তান্বের আরগার বহু বাঙালী বহিলা।
ভারাই বে ক্ষমণ্ড ওবের স্থাবচ্যুত করেকেন ভাতে আর সক্ষেত্

রইল দা। এক কোণে শোলা হাটের নিচে অর্থাবাব্র বুৰবানা দেবা বাজে—ভিনি একট হাতী বাবা পড়াভে উর্লিত হবে উঠেছেন।

2068

কাঁস সাসিরে বাচ্চা হাতীটাকে পোষা হাতীর সলে বেঁথে দেওৱা হ'ল। তারপর তাকে বাইরে নিরে যাবার পালা। কিন্তু এই বাইরে নিরে যাওরা দেবলাম একটা মন্ত বহু সমভা। বাচ্চা হাতী বেঁকে হাঁচাল, সে কিছুতেই যাবে না। লে এমন লক্ষ ভাবে হাঁডিয়েছে বে তাকে হামচ্যুত করে কার সাব্য। প্রকাও পোষা হাতী তার সমন্ত শক্তি প্রয়োগ করেও হিন্তিমম বেরে পেল। একবানা স্টামার নদীর চছার আটকে গেলে অভ প্রমার তাকে দল্ভি বেঁথে টানতে থাকে কিন্তু নছাতে পারে না, সেই ছবিটিই মনে পড়ল এই টানাটানির হুও দেবে। পোষা হাতী এক দিকে প্রাণপন টানছে, বাচ্চা হাতী গড়-মন্যুছ গাছের সঙ্গে দল্ভি বাবিরে আর এক দিক থেকে টানছে— কলে কেউ কোনো দিকে সগ্রহে না।

অধিকে অভগ্রেলার উপর আবার পোষা হাতীর আক্রমণ প্রশাহরেছে—এ অর পরিসর আরগার মধ্যে সেই আক্রমণের বাকা এগে পাগল ছোট হাতীটার উপর, এবং ভার কলে সেধানচ্যভ হতে বাব্য হ'ল, আর ঠিক সেই প্রযোগে বড় হাতীটা ওকে এমন আেরে টান মারল থে সে ভার বেগ সামলাতে নাপেরে একেবারে চিং হরে পড়ে হাঁ ক'রে কেলল। গলার কাঁস কঠিন হয়ে এঁটে গেছে। সে কি বীভংগ দৃশ্য। ভাকে মৃত্যুরী হাত থেকে রক্ষা করতে বেশ কিছু সময় লাগল।

এদিকে অভগুণোর উপর আক্রমণ চলতে চলতে বছ আর একটার গলায় কাঁপ পরানো দেবলাম। প্রমার-বাঁধা ছড়ির মতো মোটা দভির কাঁদ মার্ডরা সর্বকণ হাতে ক'রে লছাই চালাছে। ক্ষোগ পাওৱা মাত্র বুনো হাতীর মাধার উপর তা কেলে দের, এবং যত বার কেলে তত বার সে ভঁড় দিয়ে সেটাকে নামিয়ে দের'। নামানোর সময় শভ্কির বোঁচা! পড়ে মাধার—কিছ ভাভেও কোনো কল হয় না। এইভাকে বছ বারের ব্যর্গ চেটার পরে ভবে সকল হওয়া যার।

কাঁস টিক মতো পরালো হলে তা টেনে গলার সক্ষে এটি বেওয়া হয়, এবং পরে বনী হাতীর হুই পাশে হুট পোষা হাতীর সক্ষে তাকে এবন শক্ত করে বেঁবে দেওরা হয় যে তথন আর তার পালাবার বা বাধা দেবার কোনো উপার থাকে বা ।—এ রকম ধীর্বহারী উত্তেজনাপূর্ণ চুক্ত টিক্টি বিক্রি করে দেবালেও দর্শকের ভিড় কমবে বলে মনে হয় না। কিন্তু সমস্ত দেবে-ভনে কেবপই মনে হতে লাগণ হাতী বরার এই প্রাচীন নির্ভ্র প্রধার কি কোনো পরিবর্তন করা বায় না ? এ সমস্ত কাকই কি যথের লাহায্যে হতে পারে না ?

আমি মাচার উপর একই ভাবে ইাভিয়ে আছি—ভিভের চাপে আমার অবহা অভ্যন্ত বিপক্ষনক হয়ে উঠেছে, এবং এমন অবহা হয়েছে যে একটা কিন্তু শেব করে ক্যাবেরার নতুক কিন্দ্ৰ পরানো সে অবহার একেবারে অসম্ভব। নিচে নামলেও আর ওঠবার উপার নেই, কালেই নির্দিষ্ট পরিমাণ ছবিতেই সম্ভষ্ট বাকতে হ'ল। আরও কড রকম ভলি ভোলা বেড, তা ভেবে হংব হ'ল। কিন্তু কোনো উপারই ছিল না। তা ছাড়া আলোর ভেন্দু তবঁক একেবারে কমে গেছে —ভিসেম্বর মাসের বেন্দ্র সাড়ে চারটে। তহুপরি হর্ব মেবে ঢেকে গেছে। নিনেমা ক্যামেরা ভিন্ন এ রকম একটা দুক্তের মনের মতো ছবি অভ কিছুতে সম্ভব নর। অভ দেশ হলে তার বাবস্থা হ'ত অবক্ট।

ভ্ৰমণাম ছট হাতী বাঁবাতেই আনকের মত বেলা শেষ।
তবন নিচে নেমে এনে সবাই কিছু বেরে নিলাম। অশোক ও
ত্থাংভ নিচে নেমে এসেছিল জনেক আর্লেই মেয়েদের
ভিছে। সমন্ত দিন ঐ অবস্থার দাঁভিয়ে থেকে সামি এমন স্থবল
হয়ে পড়েছি যে এতক্ষণ কি করে দাঁভিয়ে ছিলাম তা ভেবে
বিশ্বিত হলাম। বেলার উত্তেজনাই বােধ হয় এতক্ষণ আমাকে
বাড়া রেখেছিল। অতংশর বাবা হাতী কোঝার নিরে যাওয়া
হ'ল এবং সেবানে লিয়ে নিচে থেকে আরও ছবি নেওয়ার
দরকার কি না— এ সব কথা ভাববার মতো সার তবন
উৎসাহ ছিল না।

এমন সময় শোনা গেল একবানা ট্রাকে কুমারপ্রাম পর্যন্ত যাবার স্থবিধা আছে। শোনা মাত্র আমরা উঠে পছলার। ট্রাকে তৰ্মই না গেলে অল্লাবাবুর গাভিতে হ' বাবে হ' দলে ভাগ হয়ে যেভে হয়ে। কিছ জন্স থেকে বেরিয়ে এনে দেবি क्लारना बक्राय बालवा बारव वरहे. कि ब बावाब प्रविदा राष्ट्रेक् পাওয়া যাবে তেবেছিলায় তা আর হ'ল না। প্রায় হ' ভবন बहिना द्वीक चार्तिह प्रवेन करत्रह्म । छुहिन्छारत्रत्र शास्त्र अक পাঞ্চাবী ভদ্রলোক এবং তাঁর স্ত্রী। আমরা হয়-সাভ কন মাভগার্ড এবং কুটবোর্ডে ভতি বিপক্ষনকভাবে দাভিয়ে গেলাম। ক্লকাভার বাগ্-এ এ রক্ষ ভিড়ের অভিজ্ঞতা সকলেরই चाटर। দেই ৰাজা-উঁচু এবং ৰাজ্:-নিচু চভাই উভৱাই-এর প্ৰহীন পৰে সে অবস্থার বিপক্ষনক হলেও সূতনত্বের কোঁকে ৰুব উপভোগ্য মনে হচ্ছিল। সমন্তটা পৰেই খন জল্প। महीर् भरवत इ' बात (बरक वालात कि ७ मारहत छान আমাদের মাধার আঘাত করবে বলেই যেন দলে দলে বেরিছে এলেছে। জ্ঞৰাগত যাথা নিচু ক'বে ক'বে আগুৱকা করতে হচ্ছিল। এক স্বায়গার বাড়াভাবে নিচে নেবে এলাম এক শুক্ষো নদীর বুকে। সেধানে নেষে ট্রাক আর উপরে উঠতে চার না। তথন আমরা অনেকেই নেমে পড়ে তাকে ঠেলে भाव करव विमाय (पर के पृ भवहूक्।

তিন-চার মাইল এইভাবে এসে ছুই সমতল বিপরীত পথের সক্ষম-ছলে শৌহলাম। ওবানে বাবার সময়েও এই পথেই সিরেছিলাম। পথের এক দিক গেছে রায়ভাক নদীত দিকে আর এক দিক কুমারপ্রামের দিকে। ট্রাক এই বিপরীত পথে নিউল্যাও ভাক্ষর পর্যন্ত হাবে। এইবান থেকে রায়ভাক নদী প্রার ছ' মাইদ। আমরা নেমে পড়লাম, কিছ আমারের সঙ্গে ছিলেম নিউল্যাভের পোন্টমান্টার। তিনি বললেম



ভিমা কোৱারিতে পাধর কাটার কাকের অবসরে রাহা

আপনার। গাড়িতেট থাকুন, এখান থেকে খুরে আবার আপনাদের পৌছে দেওরা যাবে। প্রভাবটি ভাল মনে হ'ল-। ইাক গিরে থামল ডাকখরের সপুথে। মেষেরা সব দেরে গ্রেলন এখানে। কিন্তু ভবুনি টাকে ওঠা গেল না, কারণ পোন্ট্রান্টার আমাদের অভ্যথনা মা ক'রে ছাভবেন মা।

ভাকগরের সলে সংগগ্ন তার নিক্ষ হর। অবর মহলও একটা আছে—কিছ তিনি একাই আছেন বাসায়। তরুণ মুবক, নাম নিশীপকৃষ্ণ মুনসী। টেবিলে করেক বও মডার্ম রিভিউ—ভি এল রারের নাটক ও অভাভ বই। বর্মবানি বক্ককে পরিভার। কি উৎসাহ তার। পাঁচ মিনিটের মধ্যে তড়িং গতিতে আমাদের অভে ডিম ভালা, ফল ও চারের ব্যবহা করে কোলেন। বুব আমক্ষ হ'ল তার ব্যবহারে। সম্ভ দিমের ক্লাভি ঘৃচল এইবানে।

আমধা গুৰান বেকে ট্ৰাকে রায়ভাক নদীর পাকে এসে
পৌছলাব। আমাদের ট্রাক অপর পারে অপেকা করছিল।
আমরা সভ্যার কিছু আগেই নদী পার হচ্ছি বেবা-নোকোর।
রায়ভাক নদী এবান বেকে বে রকম চমংকার বেবার, ভাতে
এ অঞ্চলে নৈস্পিক বৃত্ত হিসাবে বোব করি এট প্রথম শ্রেনীতে
পকে। প্রশন্ত মহী—পটভূমিতে স্থ-উচ্চ হিমালর। নদীর
মারবানে চর। চর আগাগোড়া উপলবতে ঢাকা। রোদের
আলোর সেগুলো উক্লে হরে গঠে—ভবন গাঁচ মীল পাহাকের

সকে, তুই জীয়ের সবুক অবংশার সকে, বু বু বিজীপ উত্বল বেড দ্যাখ, যন নীল নণীউর, উপলবতের বাজার থাকার কলগান কুলে নক্তরবেগে ছুটে চলার বুক বর্ণনার ভাষা নেই।



क्षित्रात जुडेश नही

এ নদীর ছলের ভিতরেও একট আকর্ব শোভা আছে।
ছল ব্ব বেলি নর এবং ভা এমনই কক্ষ বে একবাত্র লেকের
বক্ষ কাচের সকেই ভূলবীর। নদী কোবারও হ হাত,
কোবারও চার হাত গভীর। উপরের ভরে প্রোতে এবং
হাওরার ক্ষ নিলের কাল করা। উপরের ভর ভেদ ক'রে
নীচের দিকে চাইলে মনে হর বেন আলাঘনের আক্র্য
রাটের দিকে চাইলে মনে হর বেন আলাঘনের আক্র্য
রাটির দিকে চাইলে মনে হর বেন আলাঘনের আক্র্য
রাটির দিকে চাইলে মনে হর বেন আলাঘনের আক্র্য
রাজ্য কগতে প্রবেশ করলাম। ছলের নিছলর বক্ষ দেহ
ভবন মেন সক্ষ্য অভিহান। চোবের সক্ষ্যে কক্ষ লক্ষ্য বিচত্র
বর্ণের ছভিওলোর কি বর্ণমহিল। কোনোটা সমুক্ত, কোনোটা
নীল, কোনোটা হলদে, কোনোটা জরদা, কোনোটা বেতমি,
কোনোটা চকোলেট, কোনোটা উক্টকে লাল। ছলের
আবর্ণ ভালের আরও রহভ্যের ক'রে ভূলেছে। নৌকোর বনে
নিক্ট গৃষ্টতে জলের নিচের এই বে অপরূপ শোভা বেণলাম
ভা কোনো বিন ভূলন না।

এ পাৰে টাকে এনে ইঠনাৰ সভ্যাবেলা, এবং সমভ প্ৰচী সমভ বিশেষ বিচিত্ৰ অভজভা 24 বনে নীয়ৰে কেটে পেল। বাংলােছ কিছে কৰা হ'ল, সুনীল বাবু পর বিশই ভাবে যথনা হয়ে বাবেন টাক নিয়ে। সকে বেভিও-সেটটও চলে বাবে। স্ভয়াং পর দিন হতে আবরা বহির্জগৎ বেকে সম্পূর্ণ বিজিয় হয়ে প্রচুত অরব্যবাসী হব এই কর্মা এক নিকে উৎসাহত্যমত্ হতেও বাবে বাবে বারাণ লাগতে লাগল। এননি সময় সেই অছকাতে, নীয়ৰ ভইতীয় বুকে চার বার বেকে সময়রে শেষাল

ভেকে উঠল। বছকাল ব্যৱহ পাশে শেরালের ডাক শোনার নৌজানা হর নি-ভাই এই উপলক্ষ্যে আবর। নিজ পরী-অভিজ্ঞভার ত্বতিভাগার উত্তপ্ত করণার।

ভিছুক্ত পরে বিভলা বাবু কিরে একেন এবং পর্যাদন আমাদের 'নরে ভিমা 'কোছারি'তে বাবেন প্রভাব ক্রলেন। নেবারে পাবর-কাটার বিরাট আহোকন নাকি দেববার মতো।

৩ ভিলেখর। আজ সকালে জইঙী বাংলোর সমুবঁছ शाशास्त्र अक जाकर सन (मना (मन। विमानस्य ८) के ষেন এবানেই এসে আসর ক্ষিয়েছে। পাংগড়ের চূড়াকলো ৰিৱে কত বিচিত্ৰ আকাৱের যেৰ প্ৰায় চলিল ৰণ্টা আডচা विटक्षः। अवट्य (मरवद्य (मनव किम नाः। प्रश्निव्यत मटक সলে একবানি শিশুঘেৰ দেবা দিল গুৱের একটা চুড়ার। किहुक्तवह मत्वा भावत करवक्षांना अरम जाव नाटन केकान। बहे जादि जांव चलीत महिं। जहिंक कुरना चल स्व जहां राजन (भवारम । 'अहा करम अम्ख हकांद्र शास्त्र शास्त्र (मन । क्षक थरण बाद्व विटिष्ट (बट्य चात्ररक्, क्षक थरणा चरवक **উপরে নিজেদের বিভার করে দিচ্ছে। কিন্তু যতই পুরোশরে** বেড়াক, চূড়ার আশ্রয় বেকে বেশি দুরে যাছে না। আরও কিছুক্দণ পরে মেবখলো পুঞ্জীভূত হরে অবেকি আকাশ হেরে (क्लाम । जनवे जांका (भव-- छाटबंद केंक्क किट्स किटर मीज আকাশ একটু একটু দেবা যাছে। আরও একটু পরে সম্ভ মেৰ কুখাসায় ৰূপান্তরিত হ'ল, আর সমস্ত দৃষ্ঠ চকিতে সেই कुशनाव चाष्ट्रव रूट (ठाटबंत नचूब (बंटक विनिर्द (नन । चन নীল কুৱাসা। নীল বং গাঢ় হতে গাঢ়তর হবে উঠছে। এ রক্ষ নীল কুরাসা কোবাও দেবি নি। আথরা কালো খেবের কালো অধকার দেবেছি, কিছ এবানে এবন যে অছকার নেমে আসতে তা বিওছ নীল, অভকার। মনে হচ্ছে যেন সক্ষ লক্ষ মণ চুৰ্নীল সমস্ত আকালে আর পাহাড়ে শ্রে ক'রে দেওরা राष्ट्र । बहुछ ।

সকালেই বাওয়া-দাওয়া শেষ ক'বে বেলা দশট। আলাজ সমতে তিমা কোয়ায়ি দেবতে রওমা হলাম—স্বাংকপ্রকাশ ও আমি। শীতলা বাবু আথানের ট্রলিতে ক'রে নিয়ে বাবায় ব্যবস্থা করলেম। অশোক আৰু আর বেরবে না, সে শিকারের সঙাম করবে।

ইলিতে রেলপথে বেতে খুব ভাল লাগছিল। করেক্তন কুলি ইলি ঠেলে নিষে চলেছে, কিছ কিছু দুৱ বাবার পরেই আর ঠেলতে হ'ল না, এবান থেকে ভিন মাইল দুরে অবস্থিত বন্ধা রোড পর্যন্ত কমিন নিচের বিকে এবন ঢালু হরে নেনে পেছে বে আনাদের গতি ক্রমেই ক্রম্ভ হতে ক্রম্ভতর হতে লাগল। ত্রিশ মাইল বেগ থেকে অবশেষে বাট মাইল বেগে ছুটতে লাগলার পালা নবীর লেতু পর্যন্ত। ভার পর বন্ধা রোড ক্রেন্সে গিরে ইলিকে বরাবরি ক'রে ভূলে ভিনা কোমারিতে

ৰাবাছ লাইনে বসিছে কেওৱা হ'ল। এইবান বেঁকে প্ৰেন্ত ছ'বাবে গভীৱ ক্ষমন। বেল-লাইনও এবান বেকে ক্ৰমন আবায় উপৱের নিকে উঠে বাচ্ছে, ভাই ইলির বেগ ক্ষম, কারণ এইবার আবার ভাকে ঠেনে নিভে হচ্ছে।

অগনে কর্তানকর বাছ। শাল, সেখন, শিশু, রহনা, রহনা, নাম, কাঠাল আরও কর্তা কি। বাটার সঙ্গে লতিয়ে আছে কান, আর পবের ছ'বারে কোপ স্কৃষ্টি করেছে আসাম লতা। কোনো কোনো শালগাছের ছাল কেটে আঠা বেরিয়েছে। সেওলো ওকিরে গেলে গুনো হিসেবে ব্যবহার করা হয়। আমরা যে গুনোর সঙ্গে পরিচিত তা ঐ শালগাছেরই ওকনো আঠা।

ষাইলখানেক যাবার পর ঘন জলগ থেকে যুক্তি। ভার পর আরপ্ত হ'ল রেগের হ'বারে আলাম লভার হর্ডেল বোপ। ভার মব্যে অনেক গুলো বুনো পাতিলেব্র গাছও দেবলাম। লগুবে দ্রে পাছাডের গারে বজা ভিটেনলন ক্যাম্প এখান থেকে দেবা যায়। আব মাইল পরেই ডিমা কোরারি। এখানে পাহাড় কেটে কেটে পাবর বের করা হর, ভার পর ভাকে নামা আকারে ভেঙে শ্রেমী বিভাগ ক'রে বাইরে চালান দেওয়া হয়। এক মাড়োয়ারী প্রভিষ্ঠান এই কোরারির ইজারা নিয়েছে। এই কোরারিভে রেলেরও ঘেষন আর, ইজারান্যারেরও ভেমনি আর, এবং শুবু এই ভিমা কেয়ারির জভেই বল্পা রোভ স্টেশন থেকে দেও মাইল অভিরিক্ত রেল-লাইন পাত। হরেছে।

क्षित्र अहेबारन अहे खनक छिमा मधीय तूरक अहे विकीर्ग কারবানা অঞ্চল কুলিদের এবং কোরারি সম্পর্কিত অভাত লোকদের পক্ষে স্থায়ীভাবে বাস করা এক রক্ষ অসম্ভব ছিল। ভার প্রধান কারণ কলের অভাব। কল যে সময়ে অভি সুলভ, चर्नार वर्ताकारण, जनन मधी कानाव कानाव पूर्व रख कर्त्त. এবং দে সময় পাবর কাটার কাষত বন্ধ বাকে। ভারপর मधी शक्ति (शत कांक चुक्र रहा। मधी चरत मन्नृन शक्ति ह वाद मा, मावबादम प्रव कारम, चर्यना पूरे भारम प्रव विकृष्ठ स्म, তৰ্ম ন্দীয় বেগ থাকে না প্ৰোত কীৰ হয়ে আসে, সে সময় वनिक चक्न (बरक वह पृत्र निर्देश का हिर्म चानरक रहे। কিছ এ ভাবে একটা উপনিবেশ চলতে পারে না। কিছ তবু এড বিন খারুণ ছর্ডোর সম্ভ করেও ভাষের সেধানে বাস করতে र'छ । अदे चन्नविश चरानात हुत कातात्वन नैधनाकात नैन । এঁর পরিচয় আগেই দিবেছি। ইনিই নিজের বৃত্তিত পরিক্রনার এবং ছঃসাহসে অপরিসীর বাধাবিপতি অঞাহ করে প্রায় ছ' মাইল দুরের এক ছোট পাখালী নদী (মাগানি-বোলা ) বেকে পাইপের সাহাব্যে ভিনা উপনিবেশে ছায়ী-ভাবে কলের জলের ব্যবহা করেছেন। পাইপ পাভতে হ্রেছে व्यवहीय विश्रप्रकृत व्यवत्यात्र यया पिट्य ।

আহলা ভিষার ইলি থেকে নেমে ইাড়ালান। ইলি

কোরারি লাইবে ভোলা হলে আবার ভাতে উঠে এবরতঃ আমরা কোরাহির কেন্দ্রে বিরে পৌছলায় : সেবানে বিভিন্ন



ডিমা কলাবার

चर्टन कि काटन काक बनटक दम्बनाय । दुनिया माहे काहेटक. পাংগড় কাটিছে, পাণ্ড ভাঙ্ছে, কেউ কেট স্বাগ করে খাচ্ছে। বুরে বুরে সমস্ত দেবলায়। ভারপর আহরা রওমা হলাম শীতলা-বাবুর ভতিত্-ভলের রিভাংভয়ার (ভলাধার) দেবতে। সেবানে शास (इंटि याथ्या चित्र छेशास (मह। जाशासाका १४३ नधीत बुद्ध छेनद पिरव: अहे नमीके अल विरम्ध प्रिया नमीत माम । नमीड अवन लाव ककिएव (माह--- शाकारणव अक शाम ৰিয়ে পাঁচ-ছ' ছাত চঙ্ডা আেতের ধারা কলকল শব্দে বয়ে চলেছে। আমরা ক্রমাগত পাধরের পর পংগর ডিভিয়ে हरलेक् । हलएक हलएक मा (यदा योटक, भारत वाया बरव वाटक । किञ्चन शरबंदे अवकी नार्द्य बादात निरंत वरम ना (बर्फ नवस कामा जब बूरन क्लामाय--- (जश्र न वरश्र निरम हमन সচের একট ছেলে। যত এগিরে যাছি ৫৩ট ন**ীর 'গর্ডের'** প্রদত্ততা করে আসছে। নদীর বাক পার হতে হ'ল করেক কারগার। পাণর ভিঙিবে ভিডিবে পার বওয়া অভি বিপক্ষক। সৰ ভাষপায় পা কেলবায় মতো পাৰয় মেই। শে সৰ ছায়গায় পাণর টেনে এনে পাততে হ'ল। কিছ ভাভেও সৰ সময় সুবিধা হ'ল না. লেখ পহঁত একবানা ভাঙা ভক্ষো গাছের ভাল সংগ্রহ কল্পে ভাইতে ভর করে পার হলাম। কিছ ৰত বাই ততই ভনি আরও কিছু দূরে। শেষে क्रायहे सन्ता धार्यन कथि। अक्षी वारकत कार्य अंक्षी क्षकां भारताच्य भाग अमनकाटन स्तरम त्रिट (व मरन करक ति अके थाहीय। कार्य वात क्ष व्य--ति वाय निर्मा . ষাট কুট উ'চ্—ভার গাবে লখা লখা খাদ গলিবে গেছে। আমরা খেন অভিকার একট হুর্গে প্রবেশ করলায়।



ডিমা কোষারির সাবারণ চেহারা

ইতিমব্যে আকাশ মেখে ছেয়ে আগছে, এবং ভার চেছারা নৈরাপ্তমনক, মনে হচ্ছে বৃষ্টি অনিবার্য। ভা হাড়াও ভ্রের কারণ হিল, অবপ্ত সেটা আমার নিভান্তই ব্যক্তিগত। শীতলা বাবু এই রকম জনহীন অরণ্যপথে অভ্যন্ত নিশ্চিত্তমনে চলেছেম এটা আমার পুর ভাল লাগছিল না। সে রকম আবহাওয়ার আমরা ক্ষমও পড়ি নি, ভার যে-কোন দিকে চাইলেই মন অবসন্ত হয়ে আগে। এক দিকে আকাশে অনিশ্চরভা, আর এক দিকে মনে আভঙ্ক, এই নিয়ে এগিরে চলেছি। এ রকম অবস্থার অরণ্য পাহাড় নদী আকাশের একটা রহস্তমন্ত অবাত্তর চেছারা সূক্টে ওঠে মনশ্চকে।

নদীর বুকে বেধানেই একটু কল এধানে সেধানে কমে আহে, সেধানেই দেখি ছোট ছোট অসংখ্য মাছ থেলা করে বেছাছে। একটা ভারগার হরিপের পারের চিহ্ন। যেধানে কল সেইধানেই বাব হরিপ প্রভৃতি কাছাকাছি থাকে। চার দিকে সুগভীর নিভরতা—কেই নিভরতা কল করছে মালানিধালা নদীর প্রোভোজনি। এগিরে বেতে গা ছমছম করছে, পরিশ্রমণ্ড হরেছে বুব। আমরা পাছাছের গা গেঁসে—পাছাছ থেকে বেরিরে আসা গাছ, যাস, ভাঙা ভাল প্রভৃতির হাত থেকে মাথা বাঁচিরে কথমণ্ড বা মাথা নিচ্ ক'রে, কথমণ্ড বা সেওলো হু'হাতে ঠেলে রেধে কথমণ্ড বা সেগুলো টেনে থ'রে একটু একটু ক'রে এগোছি। এমনিভাবে চলতে চলতে অবলেষে আমাদের গভবে। গিরে পেঁছিলাম।

ঐ একট্থানি মাসুষের চিহুপূর্ণ কারগা। নদীলোত উল্লান বিকের ছুই পাহাকের আভাল বেকে তীর বেগে হুটে আগতে। তালর বিভারতবারট পুব হোট, বছর বরকার নেই, এরই মধ্যে কলকল শব্দে স্রোভের তাল এগে চুক্তে এবং তালের পাইপে বাজে। অভিনিক্ত তাল পাশের আর একটা পথ দিরে বেরিরে বাজে—পাম্পিভের বরকার হজে না, কারণ তাল উচু ভারগা থেকে নিচু ভারগার বাজে।

দেৰতে দেৰতে বৃষ্টি নেমে এল। আকাশ আৰও অছকার इत्ह अन । जायदा ७वाम जाववछ। विज्ञाम करवरे छेर्छ अछ-नाम। विद्व विद्व क'रद दृष्टि भएरच-- छद् छात्र मरगुरे अक्राह ক্যানেরা খুলতে হ'ল। আমরা কেরবার সময় পাহাকের উপরের জলের পাইপ এই পথেই ডিমা উপনিবেশে পধ श्वनाय। अरमध्य। शास (इंटि वन चत्रायात शव अहे क्षेत्र। नदीव वृत्कत छेशत भित्त दाँडिएडरे चत्र रक्षिल, अवात्त चचकात অরণ্য আর বোপ-ক্ষণ। এটাকে পথ বললে ভুল হবে। লভাপাতা কাঁটা গাছ কত রকষের। বাঁশের মভো দেৰতে মাকুধনমান উচু খাদ। শৌরাফলের পাছ, বিভাল-আঁচভা কাঁচ। আর চোরকাঁচার কোপ। সেই সব ঠেলে ঠেলে এগিছে আগতে সমন্ত কাপড় কামা এবং মাধার बाबादकम काँहा समाज लामन। यह त्याम निरम्भित किस ৰেবে আকাশ ঢাকাই এইল। আগতে আগতে থেড মাইল পার হরে আমরা পৌছে গেদাম এক ভূটরা পরীতে। তারা সৰ কোহারিতে তুলির কাব্দ করে। এক দল ভূটিয়া ও নেপালী ভাস বেলছিল, আমাধের দিকে কিরেও চাইলে না। ছোট ছোট ভীৰ্ণ ৰড়ের খর। ভার ভিতরে মাচা---সেই মাচার ওদের বাদ। প্রকৃত কংলী চেহারা। অনেকগুলো ভূটরা মেরে-পুরুষ এগিয়ে এল আমাদের দেখতে। ওদের করেকজনের ছবি निन:म. किस जानक करहे। जावा वात वात मैजना वातूरक বিজ্ঞানা করতে লাগল টাকা লাগবে না তো ? এক ভুটিয়া বুৰক হঠাৎ এসে শীতলা বাবুৰ পা অভিয়ে বয়ল। কারণ किहरे नइ, अराद आक हरेत थिम, अठअव मवारे अकरे तिन পরিমাণে মন্ত অবস্থায় ছিল।

ন এবানে আমাদের প্রার আববকী দেরি হ'ল, বর্বন চলে
আসহি তবন পালের এক নেপালী বতীর মব্যে হঠাং বুব
পোলমাল তনে দেবি ওদের মব্যে তীবণ মালামারি ত্রক হবে
পেছে। এই মারামারি অতি হিংলা, ভোজালির ব্যবহারও
হচ্চিল। বড় অর্যভিক্র বোর হওরাতে ত্র্বাংশু ও আমি
সরে এলাম নেবান বেজে, শীতলা বারু এগিরে গিরে ব্র
কৌত্রুক্রে সঙ্গে সম্ভ ব্যাপার্ট দেবতে লাগলেন।

মাড়োরারী ইজারাদানের ডেরার চা বেরে আমরা বর্ণন উঠলান তবন বেলা চারটে। বজা রোভে এলে টলি প্রবান লাইনে তুলতে হর, সেই উপলক্ষ্যে শীতলা বাবু নেমে স্টেশন-বরে দিরে জানতে পারলেন একবানা পাবরটানা যালগাড়ি একটু পরেই সে পথে অইভীতে কিরবে এবং আমরা ইচ্ছে ভ্রলে রেই গাড়িতে বেতে পারি। ভবে

উৎসূত্র হরে উঠলাব। কারণ ইলিভে কেরা নামে আগাগোড়া পথ আবপন শক্তিভে ইলিকে উপরের দিকে ঠেলে নেওরা, এবং অইডীভে শৌহনোর ভাভে অনেক দেরি। দেরির অস্থবিধা বেকে আমরা, এবং ইলি ঠেলার যার বেকে ক্লিরা, এই উপলক্ষ্যে কৃত্তি শেরে গেল।

ু কৌশনের এক পাশে অনেকগুলো আল্যারী ও লোহার বাট। কীলের পাতে কিতের মতো হাওরা বাটগুলো। আরও অনেক রক্ষ টুকরো ছিনিস। ভনগাম ভিটেনশন ক্যাম্প ভেঙে ধেওরার পর ভার সম্পত্তিতো এবানে আনা হরেছে। দেশের কৃত হুর্গান্ত যুবক এই সব লোহার বাটে ভবে ভবে দেশ খাবীন করার স্বপ্ন দেখেছেন, আৰু আর উাদের উঁচু পাহাড়ের বুকে সভর্ক গ্রহরী পরিবেটিভ হরে সাম্রাক্ষ্য নিরাপদ রাববার ব্যরকার নেই—ব্রিটশ শাসনেরই ইম্পাতের ফ্রেম আক্

বহু বেদনামর স্বভিবিক্তিত ঐ পরিত্যক্ত তুক্ত টুকরো কিনিধুওলোর ভূপের দিকে নীরব বিশ্বস্থে চেয়ে রইগাম।

মিনিট পাঁচেকের মব্যেই মালগাছিবানা এসে পছল। পাধরটানা এই গাছিওলো অস্তুত। প্রভ্যেক ওরাগনের উপরটা কাঁকা, এবং মাঝবানে একট ক'রে প্রিং-রেক, এবং প্রভ্যেক রেকের কাছে একজন ক'রে লোক বসে আছে। আমরা উঠে পছলাম একবানা গাছিতে। ভিতরে বেকিতে বসার মতো পা বুলিরে বসা গেল। গাছিতে পাধর বোনাই বাকলে ইঞ্জিন যবন পাছাছের উপরের দিকে-উঠতে থাকে তবন প্রায়ই ইঞ্জিনের গতি বেমে যার। সেই সময় সবস্থা গভিবে গাছি নিচের দিকে নেমে মা আসে ভারই প্রভিষেক হিসাবে এই সব স্পিং-রেক—দেবতে মোটরগাছির ফিয়ারিং-এর মভো। বিশ্যা আশ্রাক করলেই ইঞ্জিন থেকে সাক্ষেতিক ফানি করা হয়, সঙ্গে সঙ্গে প্রভ্যেক গুরাগন থেকে ব্রেক করে দেয়।

আসবার সমর ইলিকে নিরাপ্রয় ভাবে ছেড়ে আসা হয় নি—ভাকে বেঁবে নেওয়া হয়েছে পিছনের গাড়ির সলে— এবারে কুলিরা ভাতে বদে আরাম ক'রে আসছে।

শীতলাকার শীল কলের কল ক'রে ভিষা উপনিবেশের এবং লেই সঙ্গে রেলওয়ের যে সব স্থবিধা করে দিয়েছেন ভার

कारिमी जानारमाना अननाम। जारन देशित्नत वन निर्फ হ'ত আট মাইল দুৱে অবহিত ৱালাভাতৰাওৱা কৌশন বেকে, কারণ ডিমা থেকে জল নেওয়া সম্ভব ছিল না। এখন আর সে অনুবিধা নেই ৷ সব চেয়ে বভ কাছ বা **ব্যাহতে তা বছে** बरे त् बरे कनकानत कृतात किया केनियत्न मकुत्रावत बर মত স্বার স্বায়ীভাবে বাদ করার বে মারাগ্রক অসুবিধা ছিল তা দূর হরেছে। নদীর কল বেরে নানাবিব অনুধ হ'ত, তাতে কুলিরা অনেকে পালিরে যেত, কিছ এবন আর সে ভয় নেই। এই ৰূপ আমার ব্যবহাট দেবতে সহৰ হলেও গড়ে তুলতে যে অমাহ্যবিক অপুবিধা ভোগ করতে হয়েছিল তা না দেবলৈ বিখাস করা শব্দ হ'ত। সমন্ত কাক যুদ্ধকালে চু' সপ্তাহের মধ্যে শেষ क्रवाल श्रावाद अवर (य क्रमणश्राव अवस्थित अवर नमस् রাভ ধরে পাইণ পাভতে হয়েছে দে হচ্ছে বাব, হাজী এবং সাপের স্বায়ী বাসভূমি। এবানকার সকল জলগেই অবস্থ এ সৰ আছে কিন্তু তবু সমন্ত ৱাত ধরে অৱক্তিত অবহায় এ রক্ষ ভাষপায় কাভ করা কতবানি বিপঞ্জনক তা সহভেই বোৰ। গেল। কাজ করতে করতে বাদ ও হাতীর দেবাও এঁরা পেষেছেন।

একজন বাঙালী ওভাবসিয়ার এই কাজট করেছেন দেখে আনদলাভ করপাম। কোনো ইউরোপীয় এঞ্জিনীয়রের হাতে হলে এটা একটা 'glorions achievement' হিসাবে ইভিহাসের পাভায় লেখা প্রভ, এবং তিনি পুরস্কতও হতেন। কিছু ভানগাম এঁর ভাগ্যে হুটোর কোনোটাই লোটে নি।

কিরে এসে দেখি আশোক বন্দুক নিরে বেরিয়ে গেছে।
কিন্তু একটু পরেই আর একট উদ্বেশক ববর শুনে শুন্তিত হরে
গোম। অইতী বেকে ছ' নাইগের ভিতরে গত কাল সন্থায়
নাকি একটা বুনো হাতী অঙ্গলের এক ফুলিকে শুঁড়ে অভিয়ে
পায়ে পিষে মেরে কেলেছে। ছ'জন ফুলি আগে পিছে
চলছিল, একজন একটু দুরে ছিল। হাতী যথন আক্রমণ করে
ভবন একজন কোনো মতে ছুটে পালিয়ে প্রাণে বেঁচে পেছে,
পিছনের লোকট আছরকা করতে পারে নি।

দীর্থনিরাস কেলে ভাবলার আমরা কিছ আককের মত পেরেছি।. জনশঃ



## স্বাক্র

## ঞ্জীরামপদ মুখোপাধ্যায়

यक्षत्र छत्रम चार्मारमय कछहे वा । भाछ । करवा चाहे। ठीक्व-मा चाद मारबद बूट र श्रेष ७८० ७८० मध्यद मरना सन-কৰার বং বরতে সুঞ্জরেছে। তবু মরিপুত্র, রাজপুত্র, পঞ্চী-রাজ বোড়া, রাজ্সের পুরী, সাত-সমুদ্র তের-বদী পারের বুম্ভ প্রাসাদে গোনার কাটি, রূপোর কাটি শিষরে নিরে নিজামর কেশবভী কথার কথা নর---রামারণের চিত্রকৃট পর্বত, मक्षात्रगा जाव मश्राजाद्वरण्य बाक्यत्व, क्राप्क्य--- अगर्यद ছবিও রীতিমত মনের পরণার ছারা কেলছে। কলমার তো অবাৰ গতি। একটা পৰ্যে বাভি ধুৱ বেকে দেৰেই রাক্ষপপুরীয় वश्य यन्तरक चानका को जुन्दान रवाना विरष्ठ वारक, वाधिक है। त्यान-वार्क्य निव्दय प्रक्राज्ञत्याज व्यव न्यडे एव । नाराक् দেৰবার পৌভাগ্য হয় নি বলেই--বইয়ে-দেবা ছবির সঙ্গে कान कान विन विकास (बनाका विकास कान करक निर्म याद ; মার মূবে শোমা হিষালয় ও কৈলাগ পর্বত মনে পছে।… এমনি করে কলনা দিন দিন আধাদের ছংসাৎসী করে তুলছিল। সে মুগের রাজপুএ বা মঞ্জিপুএরা কেন যে সুবৈধব্য ছেডে ছঃব বিপদের মধ্যে সাথ করে থাপ দিভেন--ভার জন্দাই আভাস अ शूर्वत मारावन प्रश्च चरवत (सरमास्त कारनव वारका कार्ति (भाजभाज वाबिट्स भिएछ जानज।

তিন বন্ধু মিলে এক দিন পরাধর্শ করা গেল—এীখের ছপুৰ বেলাধ রোদ যধন বা বা করে---বাভিত্র মেরেরা কাজ-कर्ष (भरत र्वाक्षा स्वरंबन्न प्रकृष्ट्री व्यक्त अक्ट्रे यूत्रिय स्वन-ज्यन (वितिदा गफ्रवा भारेण इरे प्रति गर्का भील-कृष्ठित छेर्फर्म। কুঠিটা আমরা দূর বেকে কয়েকবার দেবেছি। বাঁওকে নাইতে याबाद नाब अक बादेनहीक (भानदे दी-शाएक स्व बरमद जङ्ग পৰ দেবা বাহ-ভাই ধরে গেলেই ঐ কৃঠিতে নাকি পৌছনো यात्र । (जाटक चांड्रज शिर्द धम (मध्यत्र चक्न (प्रविद्ध वर्ष, ---- ७३--- ७३ वाटन । कृष्टित इ'वाटतत चटनक कवि निटार्ट छ वन मीनहाद ए'छ, कारकर वीछए यावात त्राचात ह'वारत पन ছুঠেড ব-ক্লের বোপের সঙ্গে অঞ্জ বুলো নীলের গাছ Cotte भाष । कून क्लाही व मध्य मान क्य आकाम द्वाक দেবতারা নীল চাধর িছিরে দিবেছেন মাটতে—হর তো রাত্তের (वशाब किरवा निर्क्त इपूर्ध मासूय यवन पूर्वव (नशाब आक्रब क्रा पर्क-छन्म छन्। (यर्पन यहे निष्य स्ट्रा अर्थ राजय स्ट्री क्षारमञ्ज ७९४। चानिक मध-धक्य---चानिक वा प्रुरहेश्रिक्ष कृद्य चार्याए-चार्शाय कर्यम । चार्यारपय रायम चान नागरच मा-(वाक (वाक बाधवा, वांवा वाखाव वा बार्फ (बना-बुना, সভালে সভাার বানিক পঢ়া আর খুমের আগে বা, ঠাকুর-বার পর শোষা-- উদেরও তেম্মি আকাশ এক বেরে লাগে হরভো। ···वारे (राक् शुरवत के क्षेत्री अर्थियम राज्यामि विदय

ভাকত আবাবের। ওর সহতে অনেক গর ওবেহি বা, ঠাকুর-বার রুবে। নীল সাহেববের কুল্ব অবরণতি, বাহুবকে বাটরে পরলা না বেওরা, চাবুক বারা, কুকুর লেলিরে বেওরা, অবাব্য চাবীকে দেওরালে পেঁবে শাভি ধেওরা—এরনি অবেক কথা। সেই পাপেই তে৷ সারেবরা উচ্ছরে গেল। এবন ওই অললের বব্য ভাঙা কুঠতে শেরাল আর ইাকোলের আজা। বাহও নাকি আছে। ঠিক চুপুর বেলার কি মার্ব রাজিতে ভারা গোঙাতে থাকে—একটানা কারার আওরার বহু ভূর বেকে শোনা বার। বোট কথা—বেবতা, বাথ, ভূত, সব নিলিরে বত রক্ষের অলৌকিক রহুত মাহুবকে আতর্জ-রোমাঞ্চিত করতে পারে তার কোনটার অভাব ওই নীলকুটি—অভিযানের মধ্যে ছিল না।

শগীৰ বললে, ভা হোক--- নিৰেৱ বেলাই ভ।

রবীন বললে, তা ছাড়া আমরা তিন জন আছি। একটা করে লাঠি না হয় নেব, আর কাগজে রামনাম লিবে পকেটে রাধব।

আৰি বললাম, আমার হাতে রাম-নৃদিংহ কবচ আছে, রামনাম লেখা কাগৰ দরকার হবে না।

অদীয় আমাদের চেবে বছর থানেকের বছ। গারে তার বল আছে, যনে সাংগও খুব। বলতে গেলে গে-ই আমাদের দলের গর্দার। রবীন আর আমার বরস আট। একই ক্লাসে আমরা গড়ি বলে আমাদের ভাবটা জনেছে বেশী। ইছে করলে এই অভিয়ানে আরও সদী নিতে পারভাম, কিছ হু:সাংদিক অভিযানের গৌরব ভাতে একটুও বাছবে না। সকলের বেকে আমরা বে আলালা এটুকু অভতঃ না জানাদে আমাদের কথা লোকে হাঁ করে ভনবেই বা কেন আর বাছবাই বা দেবে কেন।

চৈত মাসের প্রথম: বেল গাছ মাধা ভাঙা করেছে, আম গাছের সংক পাতার বিলিমিলি বুলে সগা মুক্লর্জ আমের ওটিওলি রোল বাতাসের ছোঁরা লেনে শিউরে শিউরে উঠছে। বনে কুটেছে অনেক মাম-না-আমা কুল— গছে ম' ম' করছে ভারণাটা। বোদের তেল বুব চড়ে মি—তবু পথের বুলো ঈষং তও হরেছে আর গাছের ছারা মিটি লাগছে। ওকনো পাতার ওপর শক্ষ ভূলে বাতাস বইছে এলোমেলো। কোধার একটা গুলু ভাকছে ভাগরে কাংরে আর মারে মারে টুন্টুনি পানীর আওয়াজ অচতরা পেতলের গামলার গারে লোহা দিরে শক্ষ করার বভ বোপের মধ্যে দিরে গকিরে চলেছে। লুরের মাঠে হর তো লোক আছে—কিড বন্দ্রল, বৈটি, কালকার্মনা, মহনা ও আলক্সির কোণে ভরা মাঠজলো বিজন বনের মত বাঁ বাঁ করছে। গভীর মধ্যাক্ত তিনটি বীর্ত্তরাক্ত অনুষ্ট করলে।

অগীৰ তাভাতাভি পকেট বেকে একবানা বড় চাঞ্ছুৱি বার করে বগগে, ভগুছাতে বনে ঢোকা ঠিক নর, আর শঞ্চদেৰে ভিনটে ময়নার ডাল কেটে নিই।

শক্ত গাছ---ছুরিতে বার বাকলেও আ্নারের শক্তি কম। ছুটো ভাগ কাইতে অনেকবানি সময় গেল। টাচ! ছোলা বা করেই একটা ভাগ কেটে ধুবানা করে একটা আ্নারেক আর একটা রবীনকে দিয়ে অসীম বলগ --মেলা বড় হলে ভোৱা আ্বার চালাতে পারবি নে। নিকে যেটা নিলে-দেটা আ্নারের হু' খন।

লাঠি নিয়ে একযোগে আমরা কালকামুকা কোপ ঠেড়াতে লাগলাম। গাছপ্রলো ছিভেছুঁড়ে যেভেট অসীম হেগে বললে—মধুনার লাটিজে বাখ মারা যায় জানিস ? এই যে रमयिम अक अक्षे शार्षेत big भिरक bigeb काकि---- अ লোহার মত শুক্ত। বলে সবেগে সে সভাবের। একটা বোপের মাবার বিদিয়ে দিলে। ঝেপেটা বৈচির--ভক্নো র্টচ লভায় মাৰাটা ভার ঢাকা ছিল। লাঠি পড়তেই বড় বড় বন হ'ল : লতা গেল ছি'ছে, শুক্রনা শুটিওলো কেটে বেরিয়ে পঞ্ল का(भा कृष्ठे (५७४। भाग भाग भग। मत्न र'म এর মত তুর্গন্ত জিনিষ আর নেই। সাকরাকে সোনা ওজন করতে त्मरविष् a भिरत । अखबाए--- यक भावनाम --- कृष्टिय भरकृष्टे ভর্তি করলাম। ভার পর নজর পঞ্লো সর্ক পাভার মধ্যবর্তী ক্চি ক্চি আমগুলির উপর! মাঠের গাছ নীচু-ছোট লাঠির লোচায় অনেক চলি পাছা পেল। একখানি মাত্র ছবি--আব ভা দিয়ে ছাড়াভে গেলে দেনি হবে বলে—পাছের ভাঁড়িভে বেৰে কিন্স মেরে সেওলি কাটিয়ে নেওয়া গেল।

জ্ঞসীম বল্লে--জার জাম পাড়ে লা---ফিরে যাবার সময় দেখা যাবে।

তার পর আম চিবুতে চিবুতে বাঁ। দিকের পথ বরে আমরা চাল ক্ষিতে নেমে গেলাম ।

বানিকটা কাঁকা ক্ষি—ভাতে বড় বড় ভোবা। এই সব ভোবায় শীতকালে কল বাকে বানিকটা, কাগ্ধনে ভকিয়ে কাদা ক্ষে—এবন সেই কাদা শক্ত হতে আরপ্ত হয়েছে। কাদাতে মাছ আছে কিনা কানি না—কিন্তু আমাদের দেবে কয়েকটা পাৰী উড়ে গেল। ওদের লহালয়া ঠোটে কাদা লেগে রয়েছে।

জনীম বললে—কাধাবোঁচা পাৰী—মাছ বরতে এসেছিল। ছবেও বা ! কাদাবোঁচা এই প্রথম দেবলাম-তাও ভাল কবে ময়। লখা ঠোঁট ছাড়া ওদের গারের বং বা ওদের আকার কোনটাই মনে নেই।

ভোবা ছাভিয়ে পাওয়া গেল বনকুলের কোপ। পথ ক্রমশঃ সঞ্চ হয়েছে আর ধোপ হয়েছে খন।

ৰলপাম অগীমকে, হাঁৱে—পথ আছে তো ? নেই তো আমরা যাচ্ছি কি করে ! অগীম শাসনের সুরে। লেগে। বিজ্ঞাপা করাটা অঞায় হবেছে। কেননা আমরা বেরিরেছি যে উদ্দেশ্য তা পুগম পথ কেনেও নয়—বিষা বাবায় পৌছে বিনা আয়ামে কিয়ে আসব এ সাঞ্ভ্রাতেও নয়। তবু কিয়ে যে আসব তা কানতাম বলেই হুর্গম পথকে কল্পনার ভাগই তো বেগেছিলাম। কল্পনাকে বিদায় দিয়ে ভাবছি—পথ যদি বনকুলের কোপে হারিয়েই বায়—আ্লাদের গতি কি হবে।

জনে আরও সঙ্কীর্ণ হ'ল পথ। ছ' পাল থেকে কুলের ভাল এসে আমাদের পারে মাধা কুটিছে লাগল, যেরো না— বেয়ো না। ওদের অলন প্রকলন নয়। পা গেল ছড়ে—কাপড় গেল ভিছে। কাপড়ের কাঁটা ছাড়াছে সময় নই হ'ল অনেকবানি।

অগীন বগলে—দ্র - কি বোকা আমরা। হাতে লাটি বাকতে কিনা বলেই সে বসিয়ে দিলে লাটি। কুলের ভাল থয়ে প্রুল পায়ের তলায়—পর বানিকটা চওচা হ'ল।

হাতের গাঠি কুলের বোপে পড়ছে বপারণ- বুকের রক্তও ছগাং করে সাফিষে উঠছে সেই তালে। এ শব্দ অবশা রণবাদ্যের নর—তব্ হাতের হাতিয়ার শক্তর খাড়ে পড়লে রক্ত চগাচল যে বেছে যায় এ আমরা ভাল করেই বুবলাম। ভর গেল ভ্রম পথ কি করে পার হব সে ভাবনা গেল— আমাদের কুম তিনটি প্রাণীর শক্তি কত্টুক্ তাও ভূলগাম। শব্দ হচ্ছে বণারণ ই আমরা বীর দর্শে এগিয়ে চগেছি অনেক-ক্ষণ ধরে।

হঠাৎ ডান দিকের বোপ বেকে কি একটা কানোরার বার হয়েই দাঁ করে বাঁ দিকের ঝোপে চুকে পেল। নিষেধে পা জামাদের সেইবানে পুঁতে পেল—ছাভের লাঠি কোপের মাধা বেকে আর উঠল না।

কিরে? রবীন বিজ্ঞানা করলে।

স্—স্—স্। সোঁটে আঞ্জ চেপে অগীয় চূপ করে থাকার ইঞ্চিত করলো। চূপ তেঃ করলামই— কিন্তু- বুকের মধ্যের কলকস্বাধ্যলো ইঙ্গ-বসার ঘন্টাহ্বনির মত শব্দ করে উঠছে।

আমার ওকনো গলা থেকে শন্ধ বাহ হ'ল, বাধ ?
অসীম চাপা গলায় বললে, না— হাঁভোল বোৰ হয়।
কামভায় ? রবীন জিলালা করলে।
না, তা কি থার—আলর করে। অসীম তেংচে উঠল।
রবীন রেলে বললে—হাঁভোল না হাতী।
অসীম চোৰ পাকিয়ে বলল—তবে কি ?

শেয়াল। ঐ দেব।—বলে গে আফুল ভূলে বাঁ দিকের বোপ নির্দেশ করল।

ঠিকই তো। বোণের ওপালে পরিধার এক টুকরো কমি। তার মাঝবানে সেই ধূপর রঙের জানোয়ারটা কোতৃহলী দৃষ্টতে ঘাড় বাঁকিরে এই তিন বীর প্রবরকে দেবছে। স্ফালো বুবে লেশা কালির দাস—জ্ব মালে, চোব আর যোটা

ुनरक्त त्राहा निहत्वत ह्'नार्यय नारक विरयस चेरक । च्य, কৌতৃহল আর ধূর্তানিও হয়তো ওর দাঁচানোর ভদিতে ও **हाडेनिएड (नर्श बरबर्छ**।

অসীমকে অপ্ৰক্ত হতে দেখে ৱবীন খিল খিল করে ছেনে বোণের মাধার লাঠি আছভে এসিয়ে গেল। শেরালটা লেক ষ্ট্রীরে আর একটা বোণে গিয়ে চুকলো---আমরাও নির্ভয় रणाम ।

় রবীন বললে, বাথ কি হাঁছোল দিনের বেলার বেরর না। অসীয় সৃধ সাহস ফিরে পেয়ে বললে, সে ভো গাঁরে। ৰনে ভো ওৱা থাকেই --ভা আবার বেরুবে কি ৷

वरीन वलरल, छ। बाक्क ११-- विस्मत (वला अवा प्रधात ! ৰুষোৱা ভাস্থ করণেও বুষোবে ? কি বুছি। বাধ-ভরে ও হেদে উঠল।

বাল হলেও কৰাটা মনে লাগল। আথানের উচ্চত আর্ব কুলের বোপে আর পড়ণ না। ঝোপ ঠাাভাবার দরকারও विन मा। (बान विवा रक्ष अम्बद्ध नव रखाव अन्छ। ভৰু আমৱা ঠ্যাঙামোৱ যোহে বাঞ্চি দিবে চলেছিলাম কোপে বোণে। এবার দেবলাম কুলের বদলে বুনো নীলের চারা আসছে এগিছে। সূলে সুলম্ব মাঠ--নীলের চাদর পাতা হয়েছে--- নিশুর চারদিক। হলুদ রঙের ছুপুর সেই নীল চাগৱে সোনালী পাড় বুনে চলেছে হাওৱার কাঁপনে। সামনে একটা বাদ পরিবার মত। সেটা নীল চাদরে ঢাকা, ভার পা বেরে থাড়া ছরে উঠেছে কৃঠির দেওরাল--শ্যাওলায় সবুক। ছেওরালের মাধার মানা কাডের গাছ। ছাধ অলিক দরকা ভানালা চত্তর কিছুই দেবা যার না-তবু গাছ ভার গাছ। মাস্বকে পরাভূত করে বন ধবল করে নিয়েছে কুঠি। সেগুন বট অববের পাছ প্রবীণ সেনাপভির মত অটল হয়ে ইাভিরে আছে কুঠির চওড়া পাকা-গাঁধনির বেওয়ালের মাধার। ওদের 🕽 কিবে সিরে গল করলে কেউ বিধাস করবে 🤊 বিক্রমে ছাদ হয়েছে ভূমিসাং। আর চারা গাছগুলি বনশতিদের ইট্রে নীচের সঙ্গীনের মভ সাবালো বরেছে শিখিল ভদীতে। আক্রমণকারীরা কোন মুগে হয়তো কিরে चात्रद मा এই मिवद्या भूबी प्रथम क्वरण--- जोने अवा भवम विकिश्व।

चनीय रनल, धरे कृष्टि । व्रवीय वजरम, है:--कि कम्म । चामि वननाम, यावि माकि खबादन ?

**क्ये देख किला मा। अक्डी वर्डा शक्यां निवन स्था**क ভাঙা করে নীল কুটির জললে সিমে আহড়ে পড়ল। ধানিক আৰে বেষন করে আমরা কুলের কোপ ঠেলাচ্ছিলাম--ভার এক শ' ঋণ বেশী বেল আহু শব্দ নিহে বড়ের লাটি গিছে **१५० वटनद मार्थाय। एव प्यामाद्याय वटन्डेट एटबर्टिन---**ৰইলে ভিনটকে গাৰে গা ঠেকিছে হাছিছে পড়লাম কেন---निছर्मद स्थिरिय मण ।

অসীৰ ও বৰীৰ বুক পকেট বেকে বাৰবাৰ লেখা কাগত

বার করলে-সামি বাঁ হাত দিরে বাছলি সবেত ভান হাতের কন্থই চেপে বরলায়। বড় একনাগাড়ে বন ঠেডাভেই লাগল।

হঠাং অনীম বুকে চাপড় মেরে বললে, মন্তর বল্—মন্তর। সবে সবে সে উচ্চৈ:খবে আবৃত্তি করলে—আমরাও বো**স** षिनाम :

> টিক ছপুর বেলা ভূতে মারে চেলা, ভূতের নাম রসি হাঁটু গেছে ৰসি।

সঙ্গে সঙ্গে হাঁটু গেড়ে ৰগে পঞ্চায় ভিন কৰে। **শতঃপর শুগীষের সং**শ গলা মিলিয়ে *আর একটা* মন্ত্র ৰাওড়ালাম:

> ভূত আমার পূত, পেত্নী আমার বি রাম লক্ষণ বুকে আছে করবে আবার কি।

তিন বার করে মন্ত্র আওড়াভে অনেক্রানি সময় গেল। বজের বেগ ভতক্ষণে ৰাভাগের একটু নিশানা রেখে কোৰায় विनिद्य (श्रंद ।

অগীয় উচ্চল মুখে ৰণলে, দেখলি 🤊 অবার্থ মন্ত্রে বিশ্বাপ আমানের কিরে এল।

অসীম বললে, দিনের বেলা কিনা ঘূরো বছ নিয়ে ওঁরা चारभव ।

রবীন বললে, চ—কিরে যাই।

অগীষ বললে, ভয় কিবে---ষা মোক্ষ মন্তয় দেখা গেল----আর কেউ আসবেন না।

কিন্ত এ ক্ষপে কোণায় যাব ?

ওই কুঠীর ছাদের ওপর। আমরা যে এখানে এগেছিলাম

বলসাম, কিছ আমরা তো এসেছি।

ष्द् (वाका--- अकठे। िश्च ना (बर्च वा निरम्न (बर्ध खना ৰণৰে চালবাব্দি।

রবীন বললে, বেল ডো এই ময়নার ভাল চিহ্ন রইলো হাতে।

আহা---নীল্টুট হাড়া ও বেন আর কোবাও পাওয়া वात ना ।

ভা কি চিঞ্ নেছা যাবে ?

চ' ভো আৰ্গে—-দেৰি কি পাওৱা বাৰ। সভ্যি বগভে কি আমারও এওতে ইচ্ছে কয়ছিল না। এমন নিজন্ত ছুপুর চারদিকে জনমন্থ্য নেই—কোধাও একটা চোধে পড়ে না, দ্ব বেকে কুকুরের ভাকও লোনা বাচ্ছে না। চারদিক বনে ৰেৱা--- মাঠে মাঠে মাওৱা নীল কুল--কৰা কইলে কোন্ শুভে ভেলে যাছে---আর বিরাট এই পরিষ্ণলৈ করেকটা বিভুর মত আৰৱা তেনে বেড়াছি। রাভের আকাশে বড় উঠে খলবলে নক্ষজলোকে বৈটাৰে বেন নেবের কঞ্চালে বিশিয়ে কোবায়

ঠেলে নিরে বার—তেষনই বনে বড় উঠলে আমরাও বিশিরে
তে পারি কিংবা রোদের মাবেও বিলিয়ে বেতে পারি।
বই বিশ্ববে আমরা আহি কি নেই সে বোবশক্তি ক্রমে বাপসা
হরে আসহে।

ভবু এগিরে চল্লাম। বন আমাদের আপন নর জেনেই ব্যুভো—খর তা হোক সে আদা—ভারই হাতথানি ধরে, নির্ভর হবার আবাসে এগিরে চলেছি। আর কৌতৃহল—সে ভো ছিলই। প্রথম থেকে সেই ভো টেনে এনেছে আমাদের এই বহুতপুরীর অসনে।

পরিবা পেরিয়ে এলাম সেই বিরাট পুরীর সামনে। कि চওছা আর পাকা গাঁবুনির দেওয়াল। প্রকাও বিলানের নীচে ছয়ার-ভানালার কোকর। কপাট নেই---উইয়েই হোক আর চোরেই হোক সেগুলি আত্মসাৎ করেছে। ভর তানের বিভুতি বিশ্বর বাড়াছে। একটা সিঁড়ি পাওরা গেল উপরে উঠবার। প্রশন্ত-শাকা। তাই দিয়ে উঠলাম উপরে। শুরু धापिक विक्--- श्वरण भीति काम शाक्षा वेन केर्किए যেকের সর্বাদ খিরে। পাঁচিলের মাধার পাহারাওয়ালার মত হাড়িয়ে যে গাছওলো এতক্ষণ আমাদের তয় দেবাছিল --- अत्रो मेळ निकरण्य जनश्या चाधुन मिरम रहरण बरतरण নীলকুঠির গলাটা। একদিন বনের গাছকে নিখুলি করে जाना माध्य भूगोका निकारतत जानाव अवास्य देशांवर छूटन-ছিল-জাৰ কালের সুযোগ পেরে জরণ্যের সেনাগুলি নিজে ভার প্রতিলোধ। ইয়ারতের গায়ে অঞ্জ- বিক্ত চালিছে খরা টেনে নিচ্ছে দেই মুনাকার রস---নইলে পাকা ভিভের ওপর কি রসদ পেয়ে ওরা এমন সভেক ও বলশালী হয়ে

অনেকটা উচ্চত উঠেছি বলে ভয়ও কমে গেছে। ওই মাঠ পড়ে বয়েছে আমাদের পায়ের তলায়—ও পালের বনের গলা বরে টাটিয়েছি আমরা। কুদ গাছের কোপকে অভান্ত নিরীছ পাভা ছাভা আর কিছু বোব হচ্ছে না। ছুপুরের হলদে রোদ এই দেওবাগ-কুঁছে-ওঠা বটের ছারার বিমিয়ে প্রেচে । পকেট থেকে আমের গ্রট্ডিলি বার করে চির্ছি

আর ভাবছি—কি চিহ্ন নিরে গেলে আমানের এই অভিবাদ-কাহিনীতে বিধাস ছাপন করাতে পারব সহপাসিধের। ওরা চমকে উঠে বলবে, সাবাস—সাবাস।

অসীম পকেট থেকে ছুৱিখানা বার করে বললে, ঐ গাছটার গারে নামের একটা অক্ষর লিখে যাব। কেউ বিখাস না করে দেখে বাক এলে। বলে সে কেনে উঠল।

নাম বাক্ষর শেষ হলে তিন কনেই উচ্চৈঃবরে থেকে উঠলাম। ভাবলাম, বাস----যে চিফ রেপে বাচ্ছি এই গাছের গালে--- তা চিরদিন অক্ষর হয়ে থাকবে।

হু' ৰূগ পরে একখানা নিগিচারি গরীতে চেপে চলেছিলার

—এক ছেলা থেকে আর এক ছেগার। হু' ছেগার নার্থানে
পতে একটা বাঁওত আর থানিকটা বন। বাঁওত বাবা পতেছে
ভাসমান পুলের শিক্তে—খন নিগুল হরেছে পথের প্রয়োজনে। এখান দিয়ে পথ তৈরি করার কল্পনা কারও
কোন কালে ছিল না—কিছ জাপানী সেনাকে পর্যুত্ত করথার ভাগিদে জ্ব্যাত এই নাঠের বুকে পথের নিগত তৈরি
হয়েছে।

এক ভাষণায় দেখলায়—পথের হ্বার চালু —পরিবার মত।
নীলকুটির স্থৃতি আই হয়ে উঠল। কিছ---কুটির একবানি
ইটও নেই—বনস্ভিরা তো নিভিক্ত। অত বড় কুটির দেহঅধি নিয়ে এ কালের বিশ্বকর্মারা তৈরি করেছেন প্রশত পাকা
পথ— যা বিশ্বকৃত্বের ভ্র-পরাজ্যে বৃহৎ একটা অংশ এছব
করবে।

কালের শ্রোভ বরে চলেছে। সবাই কামে সে শ্রোভের ভাষা— অবচ সবাই চেষ্টা করে প্রাণপণ শক্তিভে ভাকে উপেকা করতে। কৃঠি আর বনকে পরাক্তি করে পব এসেছে এগিরে। রৌলোজ্বল মধ্যাঞ্জ্ব স্থত্ব দেহ বেকে ভার পিছলে প্রত্থে মব জীবনের উদ্বভ হাসি।

মনে পছল—ছু' বুগ আগে ঠিক এই কারগাঁটতেই গাছের 
থকে ছুরি দিয়ে নিকেদের নামের আগ্যাক্ষর ক্ষে আবরাও 
একদিন অমন করে কেসেছিলাম।

## আহ্বান

## बीधीरतसकुक ध्य

গরশীর প্রান্তে বসি' চাহি নির্ণিষেয়।
গোধুলির রঞ্জাগে কৃষ্টল যে ছবি,
কর্মোলে হিরোল তুলি গাহিল যে কবি,
কাকলীর কলকঠে তারি অবশেষ
দিগতে মিলার। রক্তিম লীলার শোভি
পশ্চিম গগন-প্রান্ত একটি নিমেষ
আনতা বধুর মত, এলাইরা কেশ

রকনীর অভিসার। কুখ্য-সুরজি
চুখন আঁকিয়া দের সর্বাদেখে ভার।
তটিনী গাহিয়া চলে প্রেমপূর্ণ গান,
বল্যোতের নৃত্য-ছক্ষ ভারি বক্ষনার,
নৌন ধরা ধক্ষ পাতি সঁগি দের প্রাণ
প্রণাম রাধিরা যার বণ্প-বছার;
আঁধারে আলোকে শুনি উলাভ আহ্বান

# প্রাচীন অমৃত বাজার পত্রিকা ও ভারতবর্ষের স্বাধীনতা

### গ্রীযোগেশচন্দ্র বাগল

গত শতান্দীর ষদ্ধ দশকেই বঞ্চলেশ অমৃতবাদ্ধার পরিক।
বাবীনভার বাণী প্রচার করেন। পৃর্ব প্রবন্ধে আমর। ইংগর
কতকটা পরিচর পাইয়াছি। বর্তমান প্রবন্ধেও এই সময়কার
পজিকা হইতে এমন কতকগুলি মন্তবা সংযোজিত ইইল
যাহার বারা ঐ সময়ের বানীনভা প্রচেষ্টার বহুম্থীনতা
আমাণের নিকট পরিক্ষ্ট ইইবে। পরাধীনতা মহাপাপ, ইহা
সহু করা মাহ্যবের পক্ষে একান্ত গহিত কার্যা—পজিকা এ
কথা মৃক্তকর্গে ঘোষণা করেন। কি উপায়ে পরাধীনতা পাশ
হইতে আমরা মৃক্ত ইইতে পারি, মন্তবাপ্তলির মধ্যে ভাহার ও
প্র মিলিভেছে। নিবল্প জাতির পক্ষে হিসোর পথে না গিয়া
অমিদার-প্রজা, ধনী নিধ্ন সকলেরই ঐক্যবদ্ধ প্রচেষ্টান্বারা
একদা যে আমাদের স্থাপীনতা লক্ষ হইবে পত্রিকা ভাহার
ক্ষেষ্ট ইন্ধিত করিয়াছেন। শাসক ইংরেজ এই সম্বেই
হিন্দু-মুসলমানে কিরপে ভেদ স্পষ্ট করিতে অগ্রণী হয় ভাহার
আমরা ইহা হইতে জানিতে পাণিভেছি।

#### [ভারতবর্ষের স্বাধীনতা]

ভারতব্য এইকণ বে সক্ল ঘটনাভালে পঢ়িয়াছেন ভাহাতে তাহার স্বাধীনত৷ লাভের আর অবিক দিন বিলয় ছইবে না। ইংরেক শাসন্ট ভারতথ্যের স্বাধীনতার যন্ত্রস্ক্রপ ধ্ববৈ। সমুদার ইংৱেক আজি মাধা কুটলেও ভারতের সে পৌভাগ্য ধরিয়া রাখিতে পারিবে না। ভারতব্যে ইংরেজদের नाभन १६ए७ इटे कम १६ए७ शारत। (कान ना (कान करन ছুই জাতির শক্তির ভারতম্য দুরীভূত হুইবে :---এখন সাধীনতা ইংগতে দুচ রূপে মুলবদ্ধ হইয়াছে। এদিকে ভারতবর্গে ভাষার বিপরীত ভাব হইয়াছে। পুরাতন ত্রীস ও রোমের ছায় ভারতবর্বের সভাতা এক কালে আকাল পর্যান্ত উঠিয়া ক্রমে অধোগতি হইতে আরম্ভ হয়। শত শত বংসরের পরাধীনভায় चाराज्य वीश्वायम भूखशांश इटेशांचिम । अटे चवचार चाराज्यर ইংলভের ছভে পড়িয়াছেন। এবং যজ দিন সেই আবিক্য ধাকিখে, ইংলভের প্রভুত্ব জটল ধাকিবে। কিন্ধ এই ভারতম্য আর বাকিতে পারে না৷ হয় ইংগও অব:পাতিত হইয়া ভারতবর্ণের সমান হইবেন, কিয়া ভারতবর্ণের উন্নতি হইরা ভিনি ইংগ্রের সমন্ত্রি হইবেন। কলে ছয়েতেই ভারতবর্ষের পাৰীনতা নিশ্চিত।…

ষে সকল ইংরেজেরা ভারতবর্গে আইসেন, তাঁছারা অবিকাংশই সিরাজদৌলার ছোট ভাই, ইংরেজ নামের যাহা গৌরব ভাহা ভাহাজে উঠিবার সময়েই তাঁছারা পশ্চাং রেবে আসেন। এখানে আসিয়া তাঁছারা আমাদিগকে দাস মনে করিয়া আচরব করেন। কিন্তু বে বুপ উপকারের ছিবিধ মুল্ল, তেম্বনি অপকারের ছিবিধ আনিই—বে করে আর বার

প্রতি করা যায়। দাস্থ চাহিতে গেলেই দাস হইতে হয়।
ইংরেজেরা মনে করেন, মরা ভারতবর্ষীয়দের উপর দেল পুরে
প্রভূত্ব করিতেছেন কিন্তু ও দিক্তে ভাবার তাঁহাদের গৌরব
থে বলবীর্য ভাহা সেই সঙ্গে বিস্ক্রিত হইতেছে। স্তরাং
বাহার ভোরে ভারতবর্ষকে ভাবীন রাবিরাছেন, এই এপ কুবাবহারে ক্রমে ভাহা প্রাস হইতেছে। ভাতএব চুই উপ্টা দিক হইতে ভারতবর্ষর সাবীনভার প্র পরিষ্কৃত হইতেছে।
ভার ভাহা কাহারও সাব্য নাই যে নিবারণ করে। (২১
ভারোবর ১৮৬৮)

#### পিশ্চাত্য সংস্রবের কুকল 🕽

আৰু মাস আষ্টেক মধ্যে তাঁহার। আমাদের সথকে এই ক্ষেত্রট কাল করিয়াছেন, অর্থাৎ আবিসিনিয়ার মুছের কতক বার আমাদের করে অর্পন করিয়াছেন, আমাদিগকে সিবিল সর্ববিদে প্রবৈশের দার প্রকারান্তরে রোধ করিয়াছেন, লাাইনেল ট্রাক্স প্রচলিত হইয়াছে, চিরপ্লামী বন্দবন্তর উপর হন্তার্পন করিয়া শিক্ষাকর বসাইতেছেন, চূঞি ও বিবাহ সম্বছে আইনের পাঞ্জুলিপি প্রস্তুত হইয়াছে এবং ইংলভে ক্ষেত্রকলন ছাত্র প্রেরণের নিমিন্ত ১২টি ফলানিপ গ্রাপন করা হইয়াছে। ইহার শেষোক্ত কুইটি ভিন্ন আর সমুদ্ধগুলি আমাদের পক্ষে অনিষ্টকর, অত্ঞব কেমন করিয়া সেম্বার্ক্ত আমাদের প্রক্ষে

ইংরেজেরা আমাদের দেশের যেমন আনেক ইলি মঞ্চল সম্পাদন করিয়াছেন তেমনি অনেক গুলি দোষও তাঁহাদের সঙ্গে আসিরা চুকিরাছে। ইংরেজ সমাজ আমাদের দেশের বর্তমান সমাজ হইতে অনেক উচ্চ এবং হুইটি সম্পূর্ণ সভ্যন্ত প্রকৃতি। তাঁহারা সহসা ইউরোগায় সভ্যতা প্রবেশ করাইয়া আমাদিগকে অপুণী বই পুণী করেন নাই। হুইতে পারে পরিণামে ইহাতে মঙ্গল হুইবে, কিছ এখন ইহাতে আমাদের সমাজ বিশ্বন করিয়া কেলিয়াছে এবং আমরা এখন ইংরেজ না হুইলে এক মুহুও বাঁচি না। আমাদের মানসিক শক্তি নাাছতেছে বটে, কিছ দিনহ পারীরিক শক্তির লোগ হুইতেছে এবং জানি না শেষে পারীরিক শক্তির জভাবে মানসিক শক্তি থাকে কি না। এতদ্ভির মদ। ইংরেজেয়া বত উপকার করিতেছেন সেগুলি, আর মঞ্জনিত দোষ্ভলি, ওক্ন করিলে কোন্ দিকে যে ভারি হুইবে তাহা আমরা বলিতে পারি না।

আমাদের বোধ হয়, ইংরেজেরা বে প্রণাদীতে দেশের উরতি করিতে নির্ক্ত হইরাছেন, সেট স্থাহকর ও রাভাবিক নর, তাহাতেই এত গোগধোন হইতেছে। বিশেষতঃ দেশের উন্নতি প্রধোকক বে তিনট প্রধান, সেই তিনটতে আমাদিগকে বির্ধ রাধিতেছেন। আমাদের এবানে ব্যাদি প্রশ্বত করন শিক্ষার কোন বিভাগর নাই। এবানে সামাদ একট কল
চালাইতে হইলে, ইংলত হইতে ইঞ্জিনিয়ার আনিতে হয়।…
বিভার অভাব বাণিজ্য বিষয়ক কোনগণ শিক্ষা গবর্গ মেন্ট
হইতে না দেওয়া।…তৃতীয়, শস্ত্র শিক্ষা না দেওয়া। এট
যত দিন ইংরেজেয়া না দিবেন, তত দিন আমরা তাঁহাদিগকে
বার্থণর মনে করিব। কল এ দেশীয়গন যেমন নিরীছ ও
রাজভক্ত, সেবানে বোব হয় ইংরেজেয়া অনায়াসে নিঃশকে
তাহাদিগকে অগ্র শিক্ষা দিতে পারেন। ইহাতে আপাতত
এই লাভ যে, দেশীয়গন যদি অগ্রশিক্ষায় তংপর হয়, তবে
গবর্গ মেন্টের এত বায়ে আর সৈঞ্চ রাখিতে হয় না। (২১
আক্টোবর ১৮৬৮)

#### [ कि कर्डरा १ ]

নিম্লিখিত পদ্ৰখনি আমরা এ খলে এহণ করিলায়।
সভ সংখ্যক পদ্ধিকায় "একজন নিবেদক" স্বাক্ষর করিয়া
এক বান্ডি যে পদ্ধ লিখিয়াছেন, তাহার মহো একট প্রশ্নের
উত্তর দিতে প্রবন্ধ হইলাম, অন্থ্যহ করিয়া প্রকাশ করিবেন।
এ বিষয়ে প্রবন্ধ হওয়ার প্রধান কারণ এই যে, ভ্রনিলাম পদ্ধখানি বিখ্যাত ভ্রাঞ্জ বিজয় বার্ক লিখিয়াছেন।…

কাতি বিচার অঞায়, অভএব ইছা না মানা কণ্ডবা, কিন্ত উহা না মানিলে নিজের স্থী, পুল, পিতামাতা, বন্ধু বাছবের याविषेक कहे, अभाज इत्न कि कतिएक इट्टर १ भागान महास-চিত্ৰেশহিতিহী ৰাশ্বিক মুবা পুরুষ বলিবেন, আপনি কট পাই পাৰ, স্ত্ৰী পুত্ৰে কট পায় পাউক, কাতি বিচার মন্দ্ অভেত্রর উহাদুরীকৃত করিতে যাহা প্রয়োজন দর করিব। আংখ্যে অত উদ্ধাৰ্থন লা। আতি বিচার মুক্ত কৈ বলিল গু পেটা কি ঠিক সাবান্ত হইয়াছে ? জাতি বিচার কিন্সপে প্রথমে ছইল ভাছা জানা হইয়াছে ? কেন এরপ করা ইইয়াছিল কানা আছে ? কাতি বিচার ক্রমে ক্রমে উঠাইবার পছা যে আমাদের সমাজেই আছে তাহা কি কান ? যেন জাতি বিচার অকায় ইছা সাবাভ হইল। তাবে আমাদের দেশে আর একট ইছাপেকা গুঞ্জর অক্লায় দেবাইয়া দিতেছি। ইংবেকেরা আমাদের দেশ শাসন করিতেছেন, এটি সর্বতোভাবে অভায়। এটি যাহাতে যাইয়া এদেশে সাহারণতন্ত্র রাজ্য স্থাপিত হয় তাছা করা কওঁব্য। ভাহা যদি ২ইল, ভবে এরপ অভার কাৰ্যো উৎসাহ দেওয়া আমাদের কর্ত্তব্য নয়। কালেইবীতে ধাৰুনা দিও না, আদালতে মক্তমা করিও না, মহারাণীর নামাভিত মুধা ব্যবহার করিও না। ইহাতে ভোমার কট हरेंदवक, भरभाद्ध बाका इक्त हरेंद्द, जारा हरेंक ! कर्षवा कर्य সাধন অবশ্বই করিতে হইবে। ওছ ইহা করিলে চলিবে না. বন্দুক ৰৱ, বুছ কৱ, বুছ করিয়া ইংরেজদিগকে ভাভাইয়া দাও। পারিরা উঠিবা না ? তাহাতে কি ? তোমার কর্তব্য সাবন

তুমি কর। ইংরেজগণকে ভাভাইতে গেলে অরাজক হইবে, তাহাতেই বা ভোমার কি ? ফল দেবিবার অবিকার ভোমার নাই, ভাহা ঈশ্বর দেবিবেন।… ( ৩ জুন ১৮৬২ )

#### সংবাদপত সম্পাদকদিপের সভাই

ইংরেছের। বনী, রাজকার্য সর্থার ইংরেছিনের হন্ডে।
স্বতরাং ঐ বিষরক সংবাধ সর্থার ইংরেছিনের বত ঠিক ও
শীর পাওরার সন্তব এত বালালীর নর। ইংরেছ বেরুপ নিঃশ্রুছ
চিন্তে মনের কথা বলিতে পারেন বালালীরা তাহা পারে না।
এই সকল কারণে ইংরেছী কাগজের সঙ্গে বালালী কাগজের
পারিরা উঠা ভার। কিও ইছা সজেও হিন্দু পেট্রিরট পত্রিকা
সহিষ্কৃতার সহিত পরিপ্রম করিয়া আন্তেহ একট মন্ত পদ
প্রাপ্ত হইরাছেন। এই পদের ভিত্তিভূমি আন্তে আন্তে গঠিত
হওরাতে উহা অতিশর দৃঢ় হইরাছে। ইংলিশম্যান বহুকালের
বলিরা, মন্ত কাগজ বলিরা, মীলকরদিসের স্বপক্ষ বলিরা,
বালালীর বিধেষক বলিরা, ও ফ্রেন্ড | অফ ইন্ডিরা ] এই সমন্ত
কারণে, তবে হীন শিবিলিরান ও মিসনারিদিসের পৌতা,
সংবাদপত্রের মধ্যে প্রধানতম স্থান পাইরাছেন।…

পাঠক। আপনারা কখন দংসের মুদ্ধ দেখিয়াছেন ? দংসের মধ্যে মুদ্ধ প্রথমে ছুইটিতে আরপ্ত হয়, ক্রমে সকলে প্রেলন করে, পরক্ষার পরক্ষারকে দংশন করে। তখন দিয়িদিক জান বাকেনা। মেট কর্ত্তক দংশিত হইতেছে, তাছাকে পরিত্যাগ করিয়া সেইটি আর একটি ধরে, এমনও হইতে পারে যে লে যাছাকে বরিয়াছে সে তাছার শক্রর শক্ত। সম্পাদকগণের লড়াই সেইরপ। তবে একটু ভিন্ন আছে। ইংরেজী কাগজের সম্পাদকেরা এক সময় একভূট হটয়া বাকেন। এমনি শ্রাণ ক্রবে কত বিবাদ, দেখা হইলেই বর্গড়া করে, কিছ একটি মুদ্ধ। পাইলে তখন উভয়ের বিবাদ লোপ হইয়া উভরে মহা আনন্দ গলিত মাংস ভক্ষণ করিতে বাকে। যদি বাহালী স্থতে কবা হয়, তখন সকলে একজুট, তা বেশ ঠিক আছে।

আমাদের প্রব্যেক বিজ্ঞাপ কর, দেখিবে যে, উছা করেকটি ব্যবসাদার ইংরেজ ও সিবিলিধান দারা গঠিত। ইংরেজী কাগজগণও ইছাদের পক্ষ সমর্থন করেন। এরা বেশ হবেছিলেন, কিছা বালাগীরা একণে অন্বিকার প্রবেশ আরম্ভ করিয়াছে। ইছার প্রধান সেনাপতি হিন্দু পেট্রিলট। অকুট, দম্ভ দেখানতে, পর্কনে আর সে পদ্টি যায় না, কাজেই হিন্দু পেট্রিলট ইংরেজদিগের চক্ষুপ্র।

আবার রাজকার্য্য সহতে আমরা কম জানি। কোন্ট ভাল, কোন্ট মন্দ, কোন্ সাহেবট ভাল ইত্যাদি আমাদের

প্রবাদি 'সম্পাদকীয়' বলিয়া মনে করিবার সক্ষত কারণ

আছে। ৮ই ভিস্পের ১৮৭০ ভারিবের 'পত্রিকা'য় "হিন্দু
সমাজ" শীর্ষক সম্পাদকীয় নিবতে পত্রেভে বিষয়ট মূলতঃ
সরিবেশিত ইইরাছে।

হঠাং আনিবার বো নাই। আনাবের সে সর্বার ইংরেজী কাগজেরা প্রকারান্তরে আনাইরা বাকেন। তাঁহাদের বেট কোবের পাল, সেট আনরা নিশ্চিত জানি, আনাবের বড় প্রির পাল। বে নিয়ম্বট্ট তাঁহারা বোবেন, আমরা জানি বে সেট বড় তাল। প্রবারে এই উপারে আমরা প্রে মহোদরকে জানিরা লইরাছি। ক্রেও ও ইংলিশয়ান লেং গবর্ণর প্রে সাহেবকে গালি ছিলেন, ও ভেলিনিউন লেই সঙ্গে মিশিরা গেলেম। আমরা জানিতাম না বে প্রে সাহেব প্রভ তাল। পুরাভন কালের কথা, বথন হরকরা কাগজ ইভেন সাহেবকে গালি দিতে আরম্ভ করিল তখন দেশ সমেত ভাবিতে পালিল যে ইভেন সাহেব কত ভালই লোক। প্রে সাহেবের বিপক্ষেত্রীট ইংরেজী কাগজ। প্রে সাহেব তবে কি দেবতা গ (২২ জুলাই, ১৮৬১)

#### ৰুসলমানদিগের অবস্থা

करतक वरमत मेछ हरेन अक्षम बाधा अक्षे वकुणात अरे क्षण बच वाक करवन रव युजनभागितिय शक्त भवर्गाम क বিশ্ব । বালালীর কাছে আমরা প্রথম এইরূপ ভবি । এইকংগ জনক্ষেক ইংরেজ সম্পাদক জাবার এই কথা উবাপন করিয়াছেন। এইশ্রপ কৰা উপস্থিত হইবার ছইট কারণ হইতে পারে। প্রবন্ধভ ভারের অভুরোবে, আর না হয় অভ কোন ছুষ্ট রাজনৈতিক অভিসন্ধির অন্থরোধে। লেখেরটা আগে বলি, हिन्दु ७ बूजनशास्त्र अदिराजित्र विकक्त । बूजनशान-দিপের রাজ্য বাওরাতে হিন্দুদিপের প্রাবাচ হইরাছে। হিন্দু-দিগের এত প্রাধান ক্টরাছে বে. তাহারা রাজপুরুষদিগের সহিত রাজনৈতিক সমর করিতেছেন। শুছ তাহা নর। রাজ-পুরুষপূর্ণের দল ছইতে বহুতর প্রধান প্রধান লোক খীয় দলে আনমন করিয়াছেন। এখন দেখিখেন যে ছুট ইংরেজেরা সহসা কোন অভার করিতে পারেন না কি আমাদিগকে গালি দিতে পারেন না। সে বে ৩ছ হিন্দুদিগের ভরে ভাহা নর, ভাহা ক্ষিলে অনেক মহাশ্ব ইংরেজেরা আমাদের পক্ষ হইরা আমাদিগের সহায়তা করেন।...

বীহারা হিন্দুদিপের বাবের বিরোধী তাহারা এইরপে পথে
পদে পরাজিত হুওরাতে একবে বুসলমানবিপের সহারতা
লইরাছেন। হানিবলে ও সিপিওতে যথন হছ হয় তথম
হানিবল কতকওলি অকর্থণা সৈত সমূবে রাবেন, তাহার
মানে এই বে ইহারা আর কিছু কাজে না লাভক ইহারিপের
ব্য করিতেও রোমানেরা কাভ হইতে পারে। মুসলমানবিপকে
কোনং ইংরেজ হিন্দুদিপের সমূবে বরিতেছেন। আরো
কারণ আছে। মুসলমানে ও হিন্দুতে এইরপ বিবাদ হইলে
উভরে হুর্মাপ হইবে। আপাতত তেপুট ম্যাজিট্রেটওলি ভাগ
হইরা গেলেও অনেক কাজ হইবে। একটি নিগুচ কারণ
একণতক বলা হয় নাই। মুসলমানেরা ইংরেজিগের কর্তুক
সম্প্রতি রাজ্যচাত হুইরাছে, তাহারিপের সে জোৰ অল্যাপি

বার নাই। হিন্দুরা শাভ বভাব, তাহারা বড় কোব করে মকু মকু করিবে, কিড রুসলয়ানেরা আর কিছু করক না করক অনেক কট দিতে পারে। সিতানার ও হাজারার ও সিপাহী বুছ তাহারি প্রমাণ। অতথ্য রুসলমানদিসকে উৎকোচের করপ ছটা মিটি কথা ও ছই একট ভাল চাকুরী বেওরা উচিত। ···(১২ আগই, ১৮৬৯)

#### ইংরাজ রাজত্বের স্থারিত

সিপাছী মুছ যে এক দল সৈতের মুছ একপ নর, ইছা একণে সকলে থীকার করেন। পরাধীন অবছা অবাছ্যকর ও ভারতবর্ষীরেরা থাবীনভার নিমিছ এক বার প্রাণপণে মুছ করেন। এ মুছে ভাঁছারা পরাজিত হরেন, এই নিমিছ উহাকে সিপাছী বিজ্ঞাহ বলিয়া ইংরেজেরা ও এতক্ষেরেরা উক্ত করেন। জরী হইলে উহাকে আর বিজ্ঞাহ বলা হইত না। পরাধীনভা মোচনের নিমিছ ভারতবর্ষীরেরা চেষ্টা করিতে পিরা একণে আরো অধিক জবীন হইরা পঢ়িরাছেন।

এবন বাঁহারা শাধীনতার নিষিত ব্যাক্স, তাঁহারা এক প্রকার নিরাশ শবহার শাছেন। উলাম হইপেই নিরুণাম হর ও সেই নিষিও সিপাহী মুখের উলামের নিষিত ভারতবর্ষীরদের শনেক কাপ নিরুলাম শবহার থাকিতে হইবে। ভাহার পরে ইংপ্রেক্ষরা শাবার একটি মুদ্ধ না হর ভাহার সুন্ধর উপার শবল্যন করিয়াছেন।…

পূর্বাপেকা একণে জ্রেষ জ্রেষ অনেক ইংরেক এতছেশে
নানা উদ্বেশ্ত আগমন করিতেছেন। যদিও ইহার মধ্যে
আনেকে গবর্ণমেন্টের কোন বার বারেন না, কিছ তবু বিপদকালে ইহারা পর্বযেন্টের চাকরের ভায় কার্ক করেন।
সিপাহী রুখে এরপ লাকে অনেক কার্ক করেন। কলের
গাড়ি বদিও আমাদের দেলের বিস্তর উপকার করিতেছে, কিছ
উহা তেমনি আবার ইংরুজেদিনের বিপদকালের মহা ভ্রুলাহুল। ভারতবর্ষ রেলগুঞ্জ হারা বচিত হইতেছে। ভারতবর্ষর
কোন এক হানে গোলের সন্তাবনা হইলে ভাবং হানের সৈচ
রেলগুঞ্জ হারা চক্কের নিমিষে সেই হানে নীত হয়। ভার
কর্ত্তক এক মিনিটের মধ্যে ভাবং হানের সংবাদ পাওরা বার।
এতছেনীরেরা মুক্ক করিতে প্রবন্ধ হইলে এ সমুদার স্থবিবা
হইতে তাহাদের বঞ্চিত থাকিতে হয়। তাহারা বড় পারেন,
ইংরেজিদকে কিয়ংপরিষাণে এই স্থবিবা হইতে বঞ্চিত
ভরিতে পারেন।…

এই উপলক্ষে ইহার বিপরীত দিকে দেবাইতে প্রবর্ত হইলাম। প্রবর্ণ কেই ইহাতে আমাধিপকে বন্যবাদ করিবেন কিনা জানি না কিছ করা উচিত। উপরে যে সকল স্থবিধার উল্লেখ করা পেল সীপাহী মুছের সময় সর্গর না হউক ইহার আনেকটা হিল। কিছ ভাহাদের মধ্যে একট বাকিলে ভাহারা জরী হইতে পারিত। সেট ঐক্যভা। সকলের বার্ণ একরপ হইলে সে হার্থ-লাবন অনারাসে হর। যদি সিপাহী- দের কি তাহাদের বাধ্যকারীগণের সক্ষরের স্বাধীনভার নিবিত্ত মুখু থাকিত তবে সিপাহীরা নিভিত জ্বরাত করিত ৷···

আসল কথা হইতেছে ঐক্যতা। বে দিবস ভারতথ্যীখেরা একবাক্য হইবেন, সেই দিবস ইংরেজখিলের এ দেশ ত্যাগ করিতে হইবেন, কবে এরণ ঐক্যতা হইবে কি আদেই ক্ষমিনকালে এরণ ঐক্যতা হইবে কিনা তাহা অগনীখর আনন। কিছু আমরা এ পর্যান্ত বলিতে পারি এ ঐক্যতা হইতে দেওয়া না দেওরার কর্তা ইংরেজেরা। অত্যাচারেই এরণ দেশের মব্যে একবাকা হয়। (০১ ক্ষেরারী ১৮৭০)

#### [ ইংৱেক ও বালালী ]

আমরা সর্বাণা দেবিভেছি যে ইংরেছ ও বালালীতে মকর্মনা হউলে বালালীর পারিয়া উঠা ভার। এখন সিবিলিয়ান थाय नार्वे विनि वाशानीय निकृष्टे कुष्टे अकृष्टि अश्वाय ना कविशास्त्र । आभाभित्रेव दृष कक लक्ष्मार्छ भागाभ ना করার বাবু রাজ্ঞ্জ মিত্রের উপর ভারি বিরঞ্জন, এ কবা আবার সংবাদপত্রে উঠে। সফোড সাহেব ঘরন একটি भाषाना लाहेर्वल भक्क्षायक ताक्क्ष वायुर्क अक वरभव কাটক দিবার ত্তুম দেন, তখন কি তাঁছার ঐ সেলাম করার कथांकि भाग दिल ? मान ना बाकिएल शांबाबर अखत, कि स लाख देव लाक मिर्नद मर्दा छ अक्र मभूमा व मर्दा ভাব। অতএব নব্য সিবিলিয়ানগণ যে কথায় কথায় এক্লপ প্রধান ক্রিবেন ভাহারই সম্ভব্। এক্ষে বিজ্ঞান্ত, কে কোৰায় কৰে শুনিৱাছেন যে বাসালীর শভিষোগে একজন সিবিলিয়ান দওপ্ৰাপ্ত ছইয়াছেন ? এই নিমিও দেশ স্থেত অনেক সময় উংরেজদিগের উপর চটেন কিছ আমা-দিবের বোরা উচিত যে এরপ পক্ষণাতিত্ব ব্যতীত ভিন্ন কাতির (सम्मानम करण ना चा (समाविकात करा करण ना। चना एमाविकात कता कुकर्या यशि अक्टी कुकर्य कता (नन जर्द चात अक्टी उटक । यथन चात्राटमत आहेटरा अकर्षमा উপস্থিত হুইল তৰ্ম সকল ইংরেক কুটরা আমাদিগকে হারাইয়া দিলেন তাছারা ভাবিদেন এ মকর্মার বালালী করী হইলে. যুলোহর কুফনগর প্রকৃতি ছানে আর সিবিলিয়ানগণ ট কিতে পারিবেন না এ কথাট সভ্য। অভএব আমরা এরপ বোর বিপদে পঢ়িয়াছি, ও ইংরেজেরা আমাধিগকে সইয়া এরপ খোর বিপদে পভিয়াছেন যে এমন একট উপার পাওরা ষায় লা যাহাতে উভয়ের লাভ কি অন্তত একজনের ক্তি না হইরা আর একজনের লাভ হয়। অতএব ইংরেজেরা অনেক সময় আমাদের ভাষ্য কথা শুনিভে বৰির হয়েন. অনেক সময় তাঁহার৷ অত্যাচার করেন তাহার কারণ এই। ভাছারা যত অভ্যাচারই করুন আমরা কিছু দোষ

विভাম ना. यादा पार्ट क्वल छादायत वक्ष्मात निमित्त । যতদূর ওঁণাৰ্ব্য নাই ভাহা দেখান, যতদূর ক্ষতা নাই ততদুর দত্ত করা, প্রতিজ্ঞা করা ও তথতে তল করা हरेबाट्ड चाबाटवंत नवर्ग स्वत्केत त्वाय। हीका चात यम-श्रार्थना इवे अदक्रवादा चणाव। यथि त्रवर्गमिक च्योच्या প্রকাশ করিয়া বলেন যে লাভের নিষিত্ত মত্নুত্ত চলাক্ষেরা করে. লাভের নিষিত্ত তাঁহারা এ খেলে আসিয়াছেন, যাহাতে তাঁহা-দের লাভ হয় তাঁহারা তাহাই করেন ভবে **অনেক গোলমাল** চুকিয়া বায়। কিন্তু তাহার। মুখে বলেন যে ভারতবর্ষের লাভের নিমিও তাঁহারা এ দেশ শাসন করিভেছেন, ভারতবর্ষীরদের লাভই ভাঁহাদের প্রবাধ স্বাধ অবচ একটা বাভীভ টেট ঝলাবশিশ, আর সেটা দেওয়া মাত্র অমনি উঠাইরা প্রয়াছেন ---এই এক শত বংসরের মধ্যে নিক খার্ব ব্যতীত এক পদত্ত विध्वन करवन नारे. रेशांट कारकर लारक विवक एव । दर्श क्षमात्रिम प्रापन कविद्या त्यक्षण अत्मित्रमग्रक महारे करवन উহা উঠাইয়া দিৱা ভাষা অপেকা পত ধণ বিৱঞ্ক করিয়াছেন।

ভবে ইংরেকেরা ইছা কভক পরিমাণে বুকেন যে, যে পরি-বাণে তাঁছারা নিকে গাভের দিকে দৃষ্ট করিবেন সেই পরিমাণে তাঁছাদের এদেশে খামিছে প্রভি আধাভ করিখেন। আর দেশীর গোভের ভাগবাসার তাঁছাদের যভ বল বাড়িবে, গক্ষ স্লাইভরে তাঁছাদের গে প্রকার ছইবে না। (২৪ মার্ক ১৮৭০)

**शृ**क्षिटम्

রাকায় প্রকাষ যে পরিমাণে সম্ভাবের হ্রাসতা হয় সেই পরিমাণে উভয়ের ক্ষতি ও অসুধঃ…

ুক্তি কি ত্রিশ বংগর পূর্বে এতদেশীয়েরা নিতান্ত ইংরেজতক্ত ছিপেন। সিরাকদৌলার অত্যাচারের জনরব তবন
প্রত্যেক মগুয়ের হাদর কম্পিত করিত। তবন ইংরেজেরা
স্থাসন কাহাকে বলে প্রথমে দেখাইপেন। তবন ইংরেজেরা
যে অত্যাচার করিতেন তাহাও লোককে তত আক্ষর্যাথিত
করিত না। ইংরেজেরা যে অত্যাচারই করুন কিছু তাহারা
কর্মন গতিই রমশীর উদর বিভাগ করেন নাই। ইংরেজিদিগের
পরম্পর ঐক্যতা, তাহাদের প্রভুত্তি, বীর্ম, সাহস ও লেশ
শাসনের পারগতা দেখিরা লোকে মনের সহিত ইংরেজিদিগের
অন্থ্যত হইল। ইংরেজিদিগের তার স্থবে আর হইবে না,
এ তথনকার কথা ও অদ্যাপি র্ছেরা উহা বলিরা থাকেন।
বাহালীরা তথন ইংরেজিদিগের উপর সম্পূর্ণ নির্ভর করিতেন।

এই সমুখানের কল কি ভাষা অনারাসে বোকা বার।
বালালীর সাহায্যে ইংরেজেরা এ দেশ অবিকার করেন।
বালালীরা নিরীষ, বৃতিনান, সহিষ্ণু ও তাঁহাদের নিভাল
অল্পত দেবিরা ইংরেজেরা তবন বালালীকে দরা ব্যতীত
মুণা করিতেন না। যদি কোন ইংরেজে অভ্যাচার করিতেন,
আর একজন তমতে তাঁহাকে বিক্কার করিতেন। যদি
কোন মন্ত্রী বালালীর কোন বার্ণের কার্থে প্রক্র ইংতেন তবন

যশোহরে অয়ভ বাজার পত্রিকার বিরুদ্ধে বিধাইদহ
য়হতুমা-হাকিম রাইট সাহেব কর্তৃক আমীত।

আর একজন তদতে বাগাগীর সপক হইয়া ইণ্ডাইতেন।
ইংরেজী পড়াইতে বর্বন ইংরেজের এদেশে প্রথমে সাগিলেন,
সে সমর অনেক ক্ষালয় ইংরেজেরা বিপক্ষ হইরা ইণ্ডান
কিছ তর্বন ভারতসভা [ ব্রিটিশ ইভিয়ান এসোসিয়েশন ]
কোষার হিল ? যবন ১৮৩৫ সালের নীসকর্বদিসের কন্টাই
আইন রল হর, তর্বন সংবাদপত্র সম্পার কোষার হিল ?
সেধিনকার ক্ষা, যবন ১৮৫৪ সালে প্রথম শিকা সংক্রাভ
আদেশ প্রচার হর তর্বন বাগাগীরা মা নিক্রিত ছিলেন ?
এ সমুদার ইংরেজেরা তর্বন নিক্ষ ওদার্যাগ্রণে করিয়াছিলেন
কিছ আর সেধিন নাই, আমরা উপাসনা করিরা মাধা
কৃষ্টীয়াও আর গর্বশ্বেটের মন গলাইতে পারি না।

আমরা অভীব ছঃবের সহিত দিবিভেছি যে গবর্ণমেন্ট ও প্রকার মনের অনেক অমিল হইয়াছে। প্রথমেণ্ট এখন যে कान काय करवन लाटक खर्ख खार वेदांत भण्यत कि। গ্ৰণ্ডেন্ট সহস্ৰ বার বৰ্ষ যে তাহাদের অভ কোন অভিপ্রায় नारे. अकात मण्लरे छाशायत अक्याब छेटक, किन्न छत् লোকের মনে সম্পেহ পাকিয়া যায়। আবার গবর্ণমেন্ট ভাবেন যে বাঙ্গালীরা সকলেই ইংরেজকে ধেষ করে যে, পর্বথেটের উপরে ভাছাদের ধেষ, ভাছারা পারিষা উঠে না বলিয়া মুবে রাক্তভি দেখার। এরপ যে হইয়াছে, তাহা আর গোপন ক্রিতে যাওয়া কেবল পাগলামি, একটি পাড়াকে প্রশ্রয় দেওয়া মাত্র। ইংরেজী কাগজে দেব কেবল বাগালীর গালাগালিতে পরিপূর্ব আবার বাগাল। কাগতে কেবল ইংরেছদিগতে পালাগালি। তবে যাহাদের গামে বল বেলী ভাহারা যত অকুত ভৱে গালি দিতে পারেন বালালীরা তাহা পারিয়া উঠে না। এই যাত্ৰ বিভিন্নতা। একট কোন কাষ উপস্থিত इक्टान्ट (स. पिट्क नवर्गायके भव देशदानी कार्यक (महे पिटक. व्यावात भव वाजाणी अक भिटक ।... भवनंदभके द्यावी कि ना (म विश्वय महेशा ७० कदिवात किছ श्राद्यांकन नाहे, जामार्गित দেখিতে হইবে যে প্রথমেন্টের সারলোর প্রতি এরূপ সন্দেহ লোকের ছবিয়াছে কিনা যদি প্রকৃত এরণ হইয়া থাকে তবে পবৰ্ণমেন্টের যে প্রকৃত ভিভিত্মি তাছাতে কীট পাগিয়াছে। ইছাতে করিয়া হবে কি ন: বাঙ্গালীর উন্নতি হইবে না. প্রবর্ণমেক্টের শান্তি থাকিবে না ও পরিণামে অনর্থ হইতে शादा। ( ১४ धुनाई ১৮१० )

#### বিদ্রোহস্কক ভাষা প্রয়োগের ভাইন

আৰু বংসৱ চুই আছাই হুইগ একবার একট কনবর উঠে যে গ্রগমেন্ট দেশীর সহায়পত্তের মুখ বছ করিবার সংকল করিছে-হেন। উনবিংশ শতাখীতে সহায়পত্তের স্থানীনতা হরণ করা আর গলার প্রোত বছ করা আমাদের কাছে এক কথা বলিয়া বোৰ হয়। এবং আমরা তাহা প্রায় করি মা, কিছ গর্ড মের্ঘের রাজ্য শাসনে সকলই অহুত হইতেছে, ··· তিনি বে সহায়পত্তের মুখ বছ করিবার যথু করিবেন ভার বিচিত্র কি ?

ভারতবর্ষীয়গণের অদৃষ্টে বিশাভা দিখিয়া থাকেন্ তাহারা कड़े मह कविद्य, किंद अबन ज्यानक काठीव जाहेत्वत আবশ্রক কি ? আজ ১০ বংগর পর্যাত্ত (সার বার্নস) শিকক সাহেবের পেনাল কোড ছারা রাজ্যের শান্তিরকা হইতেছে, ইহার মধ্যে কয়েক জন রাজবিলোহিতা করি-য়াছে এবং কয়েকজন বা গবৰ্ণমেণ্টের প্রতি প্রজার বীত-রাগ ক্বাইয়া গিয়াছে ? ইংরেজ্গণ এত বুবেন কিব এট কি বুৰোন না যে, তাঁহাদের সকে আমাদের সম্বন্ধট সম্পূর্ণ অনৈস্থিক, তাহার। সহল উপকার ক্রিয়াও ঘর্ণন ভারতবর্ষীয়গণের স্লেহ ও ভালবাদা উপলব্ধি করিতে পারেন কিনা সেট সন্দেহ, সেধানে একপ গৌহদও দারা শাসন করিলে কি কখনই ভাষারা ভাষাদের অঞ্পত হইবে? বাষ্ণীয় যানের সেকট বলবের মুখ বন্ধ করিয়া বাষ্ণা বাহির हरेए ना एए छप्ता (यक्षण विश्वप. वन अध्याग धावा अनाव युव বন্ধ করা তাহা অপেকা কম বিপদ নহে, বিশেষতঃ এরপ প্রকার যাহার সঙ্গে রাজার সাভাবিক কোন সগত নাই। ইংলিশ প্রণ্মেন্টের প্রতিষ্ঠিত অধিচারসমূহ এখেশের লোকে সহ করে তাহার অভ কারণ বাকিতে পারে, কিন্তু ভাহারা যে আমাদিগকে মুখে ৬ট আবল-তাবল বকিয়া গায়ের জালা মিটাইতে দেন সেটিও ইছার একটি প্রধান কারণ। এল বছ ক্রিয়া ৩৯০ হারে ট্যাক্স বসাইলে প্রকার। এডদিন কি করিয়। উঠিত কে জানে ? ইংরেজগণের এটিও মনে করঃ উচিত যে. তাঁহাদের অনেক শঞ্ ইহার পরে ভারতবর্ষের ১৪ কোট প্রসার বিরাগের ভারন হওয়া নিতান্ত তাঞ্চিলোর বিষয় নতে। লর্ড মেয়োর আর কি. ৩ বংশর পরে ভার তবর্ষের ভাল মন্দের সদে তাঁহার সম্বন্ধ লোপ পাইবে, কিন্তু তাহা কণ্ডক বপিত ৰীক্ষ পরিণামে যে কি বিষময় ফল ধরে ভাছা কে বলিভে পারে ? জ্যাপত কয়েকজন গবর্ণর জেনারেলের অনুবদ্শিতা নিবৰন সিপাহী যুদ্ধ হয় এবং জগদীবর না করেন যে সর্চ মেরোর ভ্রমে ভারতবর্ষ আবার রক্তে প্লাবিত হয়। কল এভার প্ৰতি অবিচার হইলে সে বাজ-বিজোহ না হইয়া মূৰ আঁবার ক্রিতে পারিবে ন'। এরপ নিয়ম প্রচলিত হইলে, ভারতবর্ষীয়-গৰের ইংলিশ গবর্ণমেন্টের বিরুদ্ধে অগ্র বারণ কি ভারতবর্ষ পরিত্যাপ করা, অধবা সবংশে বিনষ্ট হওয়া বই আর পতি থাকিবে না। এবং রাজ্যক্ত ভারতবর্ষীয়গণের পক্ষে ধর্মন অস্ত্র बद्या जमस्यत् । এवर जार्थावरण यथम भिभाष स्टेवाद वरण अह সেধানে তাঁহাদের ভারতবর্ষ পরিভ্যাগ করাই সর্বাণেকা मस्रावना । ( ) (मर्क्षिय , ১৮१० )

৮ ডিলেম্বর ১৮৭০ ভারিবে 'পত্রিকা' লেবেন—

The law is passed. Mr. Stephen has immortalized his name. History shall never forget him as it has not forget Sir Metcalfe."

ভাহাদের প্রভি

প্ৰভাৱ বন্ধ কোৰাৰ ? (১)

**नवर्ग्यक** 

স্সে কর প্রভৃতি বসাইরা

ভ্ষিদারগণের শিক্ট হইতে রাজ্য সম্ভীয় কর এছণ

ক্রিয়া প্রণ্মেণ্ট প্রতিজ্ঞা ভদের পাপে কধ্বিত হইতে-

(एन । क्यि निवस श्रमानित्त्रव মিষ্ট কর এহণ করিগে

প্রবর্ষ ভাছাদের মুখের

পাপ করিবেন। আহরা বলিতে

পারি মা সেস কর ঘারা

কৃত হংৰী প্ৰজাৱা অকালে

কালকরালে পভিত হয়।

একণ ডাজারেয়া বলিভেছেন

বে প্রকাদিগের আহার ও বসভির কষ্ট ও জবস্বভার বার!

দেশে সংক্রায়ক খর আসি-

मार्ट जर जर निमिष्ठ इ:बी

লোকের মধ্যে জরে জৰিক

অনিষ্ঠ করে। সেস করে

প্রভার অবস্থা আরো ক্রমন্য

क्तिर्व। श्रकानिश्व अरे

বিপদ কিন্ত ইহা তাহারা

किह्न कार्य मा। अहे जनान

चरवांव वाक्नूना चन्नकरहे

चक्छि क्षेत्रादा किहूरे कारन

ৰা বে, ভাহাদের মন্তকোপরি বন্ধ গৰ্জন করিভেছে কিছ

**जाबाद्यत्र " त्वरम कि अ**मन

নিঃখাৰ্থ সহাত্মা কেছ নাই যে এই আগন্ধ বিপদ হইতে প্রভারণকে রক্ষার যত্ন করেন।

ৰে ৰহাণৱৱা একবার প্রভাৱ

উন্নতি সাধন নিমিত কুত্সংকল

चन्न छेटाक्न

করায় মহা

প্রসারণ করিভেছেন, এবার গবর্ণযেন্টেই লোভ ভৃত্তির ত্রিবিভ ভাষাদের অভিযাৎস **भ्रदास विकास क्**तिएक स्टेर्र ।

ब्रजावित्रेत त्वर तक्वित् क्षिमाद्यता त्वार्य क्रायम जानात

উপর কর সাব্যক্ত হইলে বাঁহারা সর্ক্ষণাশ হইল,সর্ক্ষণাশ হইল, विज्ञा द्वापन कविवादित्तव, छारावा व्यवस्य वृत्रू, शरकत





সাধ্যাহিৰ

SE कीलन बुरुक्तिकात प्रम्य शाल । २०४ एकत्मवाति अन्तर वृः वकः।

५ मगःगा

অমূত বাভার পরিকাং

হ'ট ফালুন। হুহ্ম্পতিবার।

इटेटक এकवात स्टाब ध्यकारत छेकात गरुरण प्रया बरतव। ার অধিক চিঙার বিষয়

कृतिकः हिन्द्रः सानिद्रश

বাজ করেন বে উচ্চাদের এছ বিধিবার বাালিয়া রাউ করিয়া আনিখেছেন বারির করার আয়োলন কি চ कात्रण वक्षुत्रराज्य, कि श्रद्धात श्राद्यम । स्मि चायश अकुक्छ चीकात सहिरक्छि, (ग पा जीकन अका विनास।

हरेवाहि ।

লেখের হিত সাধন করা আমাদের

बॉनएड लास्त्र ।

হটবে ভাগুর আলিকা দেবরার ছটটা বৃত্ত করি। আপতি আছে। প্রথমতা আনিনা অকণ

্ব কেন্দ্ৰ অভ আক্ষা কৰিছা কৰিছা কৰিছা কৰিছা আৰংসা কৰিছা আৰু প্ৰস্পাৱন কৰোপক্ষৰৰ ভাষিত ইইবার u wivice লোকের নিকট নিক্ষনীর গভাবনা। একথা মিভাছ ক্ষমত নর, তে , খানকে এর নিবিয়া ভূমিকার ইরনা । হলোও বাহেব বরাবর অগত ত্পরের নিক্ষাচর্চা করিবখা তবে পরিকা कीश्व व्यक्तिका क्ष भगरमते कृता अवथ পृथियीत काषात्र कथन कटक वात्रात्र करू बना कि अवभ कता राखीत। मारे, अवह फाराक आधानियानि वनिया भागता करे वाका अत्यात कतिए ए दल বেশ্বনাই, বলুচভূক মান্তিক ছই নাই। কেছ বিজ্ঞাপ করে না। ক্ষান্ত্রেক এটা কুংপ্র, রছণ করিছেক সেই রূপ করেছ আম্বা আপুনাৰা> অনেক কৰ্ম বিভৰ্ক বাৰ্ণার, প্রভরাং ভাষাবের এগবন্ধে ছুটি বাকিসাম। পাঠড, দলে নাথিও, এই ক্টু সংখ্যা সংখ্যাবা সংখ্যা কৰা কৰি কৰা কৰি পেলে উল্লিখিত রীমানু বাকা খেন চিকিৎসংকর ক্ষান্তের নাৰি খীল্ল ও मारत रवाच मन्न रमाय बनिया भना महरवमा। जू सम्मातक मन्न ।

षामावा मनक कतिहासि, त्य अदयभीत्र केरिया चार्ट्स कि मा जानी बनियन शाहि क हेजेटबालीस विविध मध्यान, सूचन वाला नियुक्त निवाहित सूचता अवाली ভংকলা আহে কি নাজাৰ বাগতে গাছৰ লাইনের মর্থ্য, ব্রিটিশ ও এবেশক্ষ জনানা করি, বে পাঠক রুলকে বেশ বিকেন্দ্র, উল্লেখ্য আহেব বেশের মুক্তর বেশের মুক্তর বিকেন্দ্র স্থানির বাবের করিব বেশের মুক্তর বাহেব ক্ৰিখনে নাম কৰিয়া লামা বিধ লোক প্ৰশাসের গুণালগ প্রভূতি প্রিকার প্রকৃতি বিভিন্ন বলিতে পাতি, যে বছৰিল স্থাবি-কালবার নাম কালের লানা বিব চনার্থ থেলের এক অসকল ঘটাইতেছে বে জালতা বেশার তাত ভাষৰত ঘটাইতেছে বে পাশন। বেশার্থিয় সহাস্থা ইংরাজ বাংছিরের। বিলকে সেই বলার পরিচর বেওরা বেশার বনে করিনা, করে বে ভাষ হইতে বেশার বনে করিনা, করে বে ভাষ হইতে 

এই পরিকাতে দি কি বিষয় লিবিভ পালে জারছ আছি, ভাষা পরিশোধের

(स्वश "at Som करि, करिनारक कार। (व काकिरेशने। अवन शनिरंक लाहिना, क আৰ্নায় প্ৰিয়ে অপেনি বেইনা পাৰ্ব করিতে পারি কি নাঁ৷ বিভানতঃ একবে প্রায়েকত পরে কথা একা কবিতে প্রথম নিশ্রম এই নম্মান হ্রাপ্তম পূল পাছে এইট-একা-জার কিল কাথাভিয়ান পারিব না, করেও ভাষা হইলে ভূমগুলের ্ব্যান্ত বাব ক্ষান্ত সংবাহ পার সম্পাদ্ধের পের নিকট আই দেবাইতেও ভয় ধর, কি জানি পাছে সমাজুল্য ও এক্যরিয়া। করিবেন। ক্ষেত্রত পুরুষ প্রতিক্ষা। এই যার আ্যাবের কথা বিশাস করিয়া পত্রিকাটী বিলেশ্যত লালি ও নিন্দা সাবাহ পত্রের জীবন, শুদ্ধ সংবাদ পত্ৰ কেন, গালি ও े किन श्रीकि चार्ट, शावनातीता शिक्ता प्रध्ना हरिक कवितन मन्द्रचात मध्या

त्रकत क्षत्रात करू चत्रकत्र, स्वतन

जात्रता शास्त्र मृदिन मरकोष वर्गा कृतिका छाराजित्तव निकृष्ठे त्व वन: व्या. ७ वनि स्कृत-वान्धरस्का अञ्चनवन

অমৃত বাজার পত্রিকার প্রথম বর্ধের প্রথম সংখ্যার প্রতিলিপি

[ क्षेत्रहेकरक्षं म्रानाशास्त्रव मोकरण

रम छोरायत समय कि कड़िन হইয়া পিয়াছে ? মহাত্মা বিদ্যাপাগরের দ্যা, দেশহিতৈযিতা, পরোপকার স্থা कि निःশেব एইবা त्रिवाट ? देनकव है।। जिन সময় বাঁছারা বীর বুকোদরের ভার সংগ্রাম করিয়াছিলেন ভাঁহারা একণ কোণার ?> বাহাছের অর্থ অবছল ভাহাদের

💣 অর্ড বাজার পত্রিকা বরাবর ইনক্ষ ট্যালের দপক

विलেশ, कांचन देश प्रतिज अकारक न्यार्ग कविल मा। > मार्क ১৮৭১ ভারিখে 'পত্রিকা' লেখেন,----

শ্ৰামরা ইবক্ষ ট্যান্তের সপক। প্রেসিডেলি ভিবিক্সের ক্সিশ্লার জীৰ্জ---লাহেবের এই মত। তিনি ব্বিরাহেন যে ঘলিত, আশ্রহ বিহীন দীন হীন মলিন অঞান প্রকাশিক উপরে বে ভ্রানক কর সংহাণিত হইতেছে তাহা কোধার বিসরা দেখিতেছেন? আমরা এদেশীর ইংরেজ সংবাদপজের সম্পাদক্ষিপের কথা ধরি না, তাহারা খার্থের দাস, কিছ যে মিশনারিগণ চিরকাল প্রকার হংবে কাতর, বাহারা চিরকাল নিঃমার্থ তাবে প্রজার মদল দেখিরাছেন এবং বাহাদের মহতে এদেশের প্রভারা যে একটু উন্নতি করিয়াছে তাহারা এ বিশদ কালে কোধার? সেস কর বসিলে দেশে যে অত্যাচার হুতাশন প্রজ্ঞাকিত হইবে তাহা মনে করিলে আমাদের আতম্ব ভ্রারীর অবসর হয়। হা জগলীবর এ বিশদ কালে প্রজার বছু কোধার গাঁ (১ জুন ১৮৭১)

#### প্ৰকার বন্ধু কোৰার ? (২)

--- ব্রিটাশ ইভিয়ান এসোগিয়েশনকে বৃল করিয়া কেলায় **क्लाइ এक এक्ट अलाइ जिल्लाम क्यम । अलाइ नामहै** পরিবর্ডন করিয়া সাধারণের বার্থ বোঝার উহার এমন কোন নাম বাধা কর্মব্য বিষ্টেশ ইভিয়ান এসোসিয়েশনকে লোকে ভয়িলারের সভা বলিরা জানে সুতরাং ও নাম থাকিলে কাছ इटेरव ना, कम यज्ञिन म्म भरमज लाकू अकवाका हरेता প্ৰণ মেন্টের স্বেছাচারী কার্যোর প্রতিরোধ না করিবে তত দিন দেশের মঙ্গল নাই। বে দেশ খাবীন পেখানে রাজনৈতিক দলাদলি দ্বারা মলল হয় বটে, কিন্তু থেছোচারী রাজ শাসন ছারা যে দেশ শাসিত হয় সেধানে সকল রক্ষ ঘরোয়া বিবাদই चनर्दद मून एव। अक्रम (मर्म भर्ग स्वर्कत भरवाश विवास ক্রাইরা দেওরার ইট্ট আছে। কারণ ভাষা হইলে তাঁহারা ঘৰন যে দিকে সুবিধা পান ভাছার সঙ্গে খোগ দিয়া নিজের शार्व जायन कतिएल शादान । स्विमाद्य अवर क्षमात्र अपन दय এভ বিবাদ উপস্থিত হইয়াছে তাহার প্রকৃত মূল এই এবং প্রকা ও ক্ষিণাৱেরা যত দিন এ ভ্রম বুকিবেন না তত দিন কেছ নিজের খার্ব রক্ষা করিতে পারিবেন না প্রভাত আপন অনিট আপনি করিবেন। ... ভ্যানারেরা প্রভার সংখ মিলিভ হইখে শুদ্ধ প্রকাকে বক্ষা করা হইবে তাহা নহে তাহাদের বলও धनश्वा क्षा वृद्धि घटेरत । यति कथन भवर्ग स्मार्केद कान कार्या পতি প্রতিরোধ করিতে কেহ পারে ভবে সে বাদলার নিরীষ্ क्षकांत्रन । देशांबा भिष्ठत्व, भाष जात्व, व्यविष्ठणिष्ठ विरक्ष, मृह প্রতিজ্ঞা সহকারে, বিনা আন্তে, বিনা শোণিত পতনে বেরুপ যুদ্ধ ক্রিতে জানে পুথিবীর কোন জাতিতে তাহা জানে না।…

ইনকম ট্যাক্স সহতে যত গোলবোগ কইতেতে তাহার মূল ইংরেকেরা।" নীল বাধামার সময় ভাষাদের লে শাভি ভাব ও অব্যবসায়
আমাদের ববন মনে ব্যৱ ভবনই আমাদের বিশাস হয় বে বহি
ভাষাদের সেইরপ সাধু ও বেবভাব একবার উভেজন করা যার
ভাষা হইলে প্রবর্গ অধুবে নিশ্চর হয়ার ও প্রবিচারের
আবির্ভাব হুইবে। (২৫ আহুরারি ১৮৭২)

#### একজন মহুয়ের বল

সমধের এইরপ ক্রকর মন্ত । চৈতত নেপোলিয়ন, রণজিংসিংছ, শিবাকী । পৃথিবীতে ক্ষুপ্রহণ করিবা থাকেন। যদি এইরপ এক একট কণক্যা লোক এখন আমাদের ৰাকিতেন ভবে আমাদের দেশের অবস্থা এরপ বাকিত না, সাধীন অবহা প্রাপ্ত হইত। মুদ্ধ করিয়া যে ভারতবর্ষ ইংবেৰদের হস্ত হইতে কাভিয়া লইবার যো আছে ভাষা আমাদের বোৰ হয় না। যুদ্ধ করিয়া আমাদের দেশ লওয়া একরণ সাধ্যাতীত হইয়াছে কারণ আমাদের অল্লখন্ত নাই. উহা সংগ্ৰহ ক্রিবার কোন উপায়ই নাই। গবর্ণর **ৰে**নাৱেলে ও ষ্টেট সেক্টোৱিতে ভাঙ্গিত বাৰ্ত্তাবহু যোগে এৰন দিবারাত্রও কৰাবার্তা চলিতে পারে, লৌহ পৰে ভারতবর্ষ ৰচিত হইয়াছে, এমন কি যদি ভারতবর্ষে মুদ্ধ আরম্ভ হয় তবে ছুই মাণের মধ্যে ইংগও হুইতে সৈচ আসিয়া ভারতবর্ণের যেখানে ইচ্ছা সেখানে উপস্থিত ২ইতে পারে। অভএব যুদ্ধ করিয়া আমাদের স্বাধীনতা লাভ করিতে আলা বিভয়না মাত্র। যদি আমরা কৰন স্বাধীনভা লাভ করিতে পারি সে আৰু উপায়ে, মুখ করিয়া নছে। ভারতবব্যারদিদের খছ অপহরণ করিয়া ইংরেক জাতি এবন পরন কুবে ভারতবর্ষ ভোগ করিতেছেন। এই স্বত্বের এক একট আমাদিগকে প্রত্যপুর্ব ক্রিছে হুইবে, ও প্রত্যপুর্ব করিয়া ইংরেছ ভাতি प्रविद्यम (य कांद्रज्यर्थ दाविया छै।शास्त्र कांन माक नाहे, यहर শ্বতি হইতেছে তথ্য কাজেই ভারতবর্গ ত্যাগ করা তাঁহাদের चार्च रहेटर ७ जामदा जाबीन हरेन। हेश्टदरकदा बाहा बनूब चामदा य अक्षिनकान शाबीन रहेव, देश चामायद मयन पान, जात कि नेशायद निकृष्ट जामता अल जनदाशी (व পুৰিবীর মধ্যে কেবল আমরাই পরাধীন থাকিব ? উপরে বে হেতুর কথা উল্লেখ করা গেল ঐ হেতুতে বে আমরা খাৰীন ষ্ট্ৰ আমাদের আপাভত: ইছাই বোৰ হয়।

্ৰিলাতে একজন উপযুক্ত ভারতীর প্রতিনিধির ছারী বদবাসের বিষয় আলোচনা করিয়া 'পত্রিকা' এই বলিয়া প্রভাব শেষ করেন যে, ] আমরা আর কোনরূপ সম্ব চাই না। ইংলগু আমাদিপের নিজের একট পার্গিরামেন্ট দিউন। (১১ আগষ্ট, ১৮৭১)

<sup>†</sup> ১৫ জুন ১৮৭১ ভারিবে 'পজিকা' লেখেন,—"ভবে সেস কর নির্দ্ধারিত হইল। দেশকে হারধার করিবার নিমিত্ত জার একটি জাওন অজ্ঞানিত হইল। ব্যালিকার চুই পরসা, ইহা বহন করা এনে মর-দের পদে জ্যাধ্য হইবে।"

এই প্রসাদে মহাত্মা গানী ও তংবর্তিত অবিংল গণ-আন্দোলনের কথা শর্মীর।

# ভবিষ্যৎ কাব্যের সম্ভাবনা ও ধারা

ঐসমরকান্ত গুপু

আবুনিক এবং প্রাচীন কবিকুলের সক্ষে আমাদের পরিচর হরেছে। এবন তবিয়তের কাব্য সহতে কিছু আলোচনা জরতে চাই। মাহুবের জীবনের গভীরতম উপগত্তি, মহতম আশা-আকাজন দিরেই ভবিয়তের কাব্য রচিত হবে। আবুনিকভার অঞ্জত করাসী, করাসীর অভ্যাবুনিক কবি পর্যান্ত বলছেন—যা শীণ ছ্র্মলকে সৌল্র্য্যে পরিবর্ত্তিত করে ভোলে কাব্যাশিল সেই রসায়ন। এ এরপ ক্ষেত্রে কোন কবি বলি বলেন—

কেপে আছে ভাৱা ভবনও যাদের জোটে নাই বনের,
ছুটেছে যাদের—পাবা বুলে দিরে ভূতের নৃত্য করে
মনে আর গানে, চাটে, বারা-ভবলার।
ছলিত বচনে হন ঘন ভারা পানওরালারে ভাকে,
জকারণে চূরু বার, হাদে কাঁদে, গান গায় জকারণে।
বুলুছ-সম কারেলি নোট হাওয়ায় মিলায়ে যায়।†

त्रिक्कम अवन चांद्रुष्ठ क्रवर्यन, चादार्गं वनर्यन ( स्व-ভাষা যদি তাঁর জানা খাকে )— নৈতং পরভরং, এর পর আর নেই। প্রধান সমস্রা তা হলে সৌন্ধ্য বলতে কি বুৰি ? যা দৃষ্ণ, নয়ন-প্ৰতিভাত, ভূপ-ইজিয়মুগকর তাই কি সম্পূৰ্ণ সৌৰুষা ? আমি মনে করি প্রত্যেক বাধ বা জীবের ভিতরে একটি সহস্ত রয়েছে, ভার নিভৃত সন্ত: , কবি অধবা **ৰিল্লী ভাকে আশ্ৰয় করে সভাকে যগন প্রকাশ করতে** পেরেছেন অপস্ত করে দিরেছেন ভার সন্মুধ থেকে সেই হিরগম পাত্র---ক্রিন, বর্ণ বা বাক্শক্তিতে তথনই ভিনি সৌশ্ব্য স্ট্র করেছেন। কবি ভাকে প্রকাশ করতে গিরে ভার উপর খারোপ করেন, ভার সঙ্গে মিশ্রিভ করে দেন আপনার নিজ্ব মানগ-গঠনের ক্রিয়া-প্রতিক্রিয়া, জীবনের ইছা, লিপা ও খাবেগ। এইরপেই প্রত্যেক কবির বিশেষত্ ৰিক্ত দেবা দেৱ। এই হেডু সৌন্দৰ্য্যস্তীর মধ্যে---আমি कार्तात जन्मर्क्र वन्दि-धामर धकात्रक्ष, माळाएक, শেৰীবিভাস--- সৰ্বই এক বৰ্ণের ও একই ভূমির নর ৷ কিছ ভার পুর্বেক কাব্য বচনার প্রাথমিক অপরিচার্ব্য একটা উপাদানের উর্বেধ করা প্রয়োজন। কাব্যের প্রাণ হ'ল অহুভূতি, উপ-লব্বির উত্তাপ, আবেগ ( শ্বরণ করুন কালিদাসের: "ভদর মা উভাষ্য")। প্রথম যে উদ্ধৃতিট দিয়েছি ভার সলে একটা कुननां बोर्न कदान वखना जरूक रूटि शादा:

কি কহিলি, বাসভি ? পৰ্বত-বৃহ ছাভি বাহিনার ববে নদী সিজুর উদেশ্রে কার হেন সাধ্য…

পাঠকের খার অবকাশ নেই—ভাবের খাবেপে ক্বি ভাকে ভাসিরে নিরে সিরেছেন।

মণুখদন বে কৌশল অবলয়ন করেছেন, ভাব এবং ছব্দ ভবের উভরতঃ, সেট তাঁর বিশেষ বর্দ্ধেরই (ওবং অবের—এবানে বলভে ছয় প্রাবেন্দা-জ্রোভের) পরিচায়ক। এই ভাবাবেশের অভাব কেতুই রাজারামের ভীর্থমললকে কাব্য হিনাবে মুগলুকের অপেকা নিশ্রাণ ও বহু ভবে নিক্স্ক বলভে হয়। বছতঃ ভীর্থমললের ঐতিহাসিক মূল্য যাই নির্দারিভ হোক ভাকে উভয় কাব্যবেসের নির্কৃত্তিনী বলভে সংকাচ হয়। মুগলুকের কবি যথার্থ কবি।

আমরা বলহিলাম সৌন্দর্যের প্রকারতেদের কথা, বিভিন্ন জরের বিভিন্ন মাত্রার সৌন্দর্যের কথা। এই পার্থক্য নির্ণয় করা হরুহ সন্দেহ নেই। তারপর বিতর্ক উঠতে পারে সকল সৌন্দর্যাই সৌন্দর্যা, তার মধ্যে উচ্চ-নীচের বিভাগ ও জর-বিভাগ নিস্প্রয়াকন, অভতঃ অসন্তব যদি না-ই হর। কথাটি তর্ক হিসাবে ভনতে সহক কিছু পরীক্ষা করে দেখা যাক সভ্য হিসাবে এতে যথার্গ মৃল্যা কিছু আছে কি ? করেকটি বৃষ্টাছ গ্রহণ করি এথানে,---

নজ্ঞলের :

প্রলয়-দোলার ছলিছে ত্রিকাল ! প্রলয়-দোলার ছলিছে ত্রিকাল !!

करि भएडासनाट्यत :

বিখালে বে বল অমিত গেই অমৃতের দরকা দাও বুলে,
অভযুগতা ৷ গৌছিয়ে দাও পরম অন্নদাতার চরণ-মূলে ৷
কিলা ববীক্ষনাথেব :

কাপোয় ঢেকেছে আলো,—জানে না ভ কেউ রাজি আছে কি না আছে ঃ দিগন্তে কেনারে উঠে ঢেউ—

উদ্ধৃতিসবৃহের মধ্যে কাব্যরসের সম্পর্কে বলা চলে সবভলিই কবিভের পর্যায়ে সিরে পভেছে। কিন্তু তবু এরই
ভিতর একের সলে অপরেব যে পার্ক্য তা পরিস্কৃট হয়ে
দেবা দিয়েছে। প্রথম কবি এনেছেন বিপুল গতির একটা
প্রবাহ, শব্দ ভবু মাত্র অর্থে পর্যারসিত হয়ে পড়ে নি, তা
দিরেছে প্রাণকেলে এক অতিমানবিক কাগতিক শক্তির
আভাস; কিন্তু আভাস মাত্রই। এই অতিমানবিক কপতের
রহন্ত কবির দৃষ্টিতে ক্ষম্ম হয়ে দেবা দের নি—কবির উপলবি
যেন অনেকটা অস্পাই ভাবে, একটা সভ্যের ব্যক্তর পরিবির
কীব স্পর্ণ পেয়েছেন তিনি, কেন্দ্রের রহন্ত বের করে নি তার
কবিঙ্কী। সত্যেল্পনার্থ দত্ত তার কাব্যরচনার মভিক এবং
বিচারের এত প্রাণান্ত দিয়েছেন বে তারা প্রার অলকারণালের

<sup>\*</sup> L'art des vers est l'alchimie qui transforme en beautes les faiblesses.— Louis Aragon.

<sup>† &</sup>quot;बाक्र्रत"—जक्मीकास मात्र ।

নীভিছনের সমবর্মী হরে উঠেছে। আবুনিকের প্রধান বারাই চলেছে এই পথে। ভবাপি কবি বেবানে মননজিয়াকে সর্কোর বলে মনে করে রাখেন নি নেবানে বানিকটা কবিত্ব, সভ্যকারেরই কবিত্ব, পরিচ্ছিত্র শব্দের ভাষার মধ্যে এলে পড়েছে (কবির নিজের ভাষার বলভে হলে বারাবী সেম্প্রাক' ভ বটেই)—

বিখাসে বে বল অমিত সেই অন্তের দরকা যাও খুলে: রবীন্দ্রনাথে এসে একাবারে কাব্যের গভীরতা ও সমুচ্চতা ক্বেতে পাই। আমরা প্রকৃত 'বলাকা' ও 'উর্কানী' অংশের উদ্ধেব করতে পারি। কিছ রবীন্দ্রনাথের আর একটি বিশেষ বারা প্রকাশ পেরেছে 'গভাঞ্চলি'তে, 'গভালি'র মধ্যেও ভার রেশ লক্ষ্য করা বার—

আকো সমর হয়নি কি ভা'র, কান্ধ কি আছে বাকি ? ওগো ঐ বে সহ্যা নামে সাগরতীরে। মলিন আলোহ পাধা মেলে সিছ্পারের পাধী আপন কুলারমাবে সবাই এল কিরে। কথন ভূমি আলবে বাটের পরে ?…

जवना,

যেন আমার সাগছে মনে,
মন্দ মধ্র এই পবনে
সিম্পারের হাসিট কার
জাবার বেয়ে আস্তে আজি।

नमस बाध्निक कार्रात जरक कुनन। कर्तान এ এकडी অভিনৰ লোক আবিষ্কার বলে মনে হতে পারে। বস্তত: কৰি এবানে বে লোক জয় করেছেন তা জন্তর্লোক--জামি ভার নাম দিতে চাই 'শুভাত্মকগং'। এইবান বেকে প্রেরণা নিয়ে কবির যে **স্**ট্ট তা হ'ল ইংরেখীডে ৰলে Psychic poetry। ভভাৰিক কৰিভাৱ ধৰ্ম কি. विष्यंत्र कि ? या नवन भर्क कार्य करत्वत्र शृह चन्नजन বেকে বাহির হয়ে আলে; প্রেম, সৌকর্যা, কোমলভা ("sweetness and light") ভার স্বাভাবিক অলহার। ইংরেছী কাব্যে শেলী এবং ব্লেকের উল্লেখ করা যেতে পারে। বৰভাষাৰ সম্ৰ বৈষ্ণব কাব্য-সাহিত্য --পদাবলী---এই নিদৰ্শনে পরিপূর্ব। করাসীরা এই দিকে তেমন সক্ষ্য দের নি। ভবে ৰালাৰ্বে আর এক ভাবে করাসীর ক্ষতি পরিপূর্ব করে দিছে-ছেন। মাগাৰ্মে আব্যান্ত্ৰিক অগতেই এলে নিয়েছেন। ইংরেজী कारा देखहेन, ब.दे. चाला करत बक्दे चचित्रू हरनाह । এলিরট ভাবে ক্লিরে এসেছেন চিরন্তন সভ্যের বাণীবাহক হরে, কিছ ভলীতে হতে চেরেছেন উএ আধুনিক। পরিণানে ভার কাৰ্যস্টির মধ্যে একটা বিৰঞ্জা ভাষা ও ভাবের মধ্যে ব্যবধান গজে ভূলেছে। বলহিলার ইংরেখী ভাষা পেরেছে এ, ই, এবং ইবেটন। বাংলার পক্ষে ররেছেন রবীঞ্চনাব। রবীক্ষনাবে त् चावाधिकण जाव वृत्र त्यन्नवाव वावा हत्न विरवर छेन-

বেবামাং চকু: কুডগা বহুতী
বেতং নৱতী কুণুৰীক্ষণং।
উষা অংশি ৱন্মিভিৰ্ব্যক্তা
চিত্ৰামখা বিশ্বমস্থাভূতা [বশিঠ]

আনক্ষর উবা দেবভাদের চকু ( বিব্যুদ্টি ) এনেছে, অথে নিবে চলেছে সুদৃটিসম্পর খেত অব, উবা দৃর্কমান সকল রখিতে ব্যক্ত, বিবিধ ঐবর্থ্যে পরিপূর্ণ, সকল বস্তুতে ভার আবির্ভাব প্রকৃষ্ট করে চলেছে সে।

ধাবেদের কাব্য আব্যাদ্বিক কাব্য। থাবি কবিগণ মান্থবের জীবনের গভীরভন এবং স্ক্রীর নিগৃচ্ভন সভ্যপ্তলি অন্তর্গ ক্রীর বারা প্রভাক করেছিলেন, এই উপলব্ধির বারীর্ভি তাঁদের ভাষাতেও বেন দৃষ্টিলাভ করেছে—ভাই ভারা হ'ল 'পর্বভী বাক্', বে বাণী দেখে, চকুমান্। কার্য্যভঃ থারােদর কবি বহু মূল প্রতীক আশ্রম করেছেন বাদের মর্ম্ম উপলব্ধি করলেই ভাবের বাণীবিহুল অসীনের স্পর্ণ পেতে পারে। ভবাপি ধাবেদের প্রতীকরূপ ও অভিবার মধ্যে বর্ত্তরান একটা অচ্ছেভ এবং অবিভাল্য সম্বন্ধ, এরা ভাষা-সৌক্র্যাের ওভাব-লালিভারে কৌশল হিসাবে, উপমা হিসাবে ব্যবক্ত হয় নি; যেমন কালিগাসের—

গঙীরারাঃ পরসি সরিভক্তেসীর প্রসত্নে হারাহাপি প্রকৃতিস্করে। লগ্যান্ডে তে প্রবেশস্থ ।

সাৰাৱণতঃ ৰশ্বসংক্ৰান্ত বা কিছু ভাকেই আৰ্যান্থিক বলে অভিহিত করা হয়েছে। আব্যান্ত্রিকভার এর অপেকা অমাত্মক ব্যাখ্যা আর হতে পারে না। সচরাচর বর্ম বাকে বলি ভা মনের একটা বিশেষ প্রবণভার বিকাশ হাড়া আর কিছু নয়। এই ধর্ম হতে পারে মাহুষের অভ্যন্ত মূল चरन्य-- मन्छ वहनांश्टन बहे भर्गाब्रह्क-किबाक्नांभ, আচার-বিচার, গভাভুগভিক অভ্যাস পর্যন্ত। 'ভূর্গামলল' 'গণামলণ', 'জগভাত্ৰী মুখণ' মুখলকাব্যগুলির মধ্যে কোৰাও কবির গভীরতম আতর প্রদেশের আতাস পাই নে। ছর্গা, नेकां, वनवाबीय ७१-कीर्डरम्७ काना छेरवर्ड रख ७८५ নি। অভত্র বেধানে হাতে অভ্যত্ত পাৰিব বন্ধ ছংবের क्या वनरस्य (Io no piangeva: si dentro impietrai...)--चामि कॅकि मि, चल्दत चामि चन भावत रुख निर्दाह्माम ; खबरा ७व्हिन वर्ग नगरहम, जम्छ किनि-বের বধ্যে অঞ ক্যাট বেঁণে ররেছে, বৃত্যু কি একটা ভীৰণ দিনিয় দ্বাহুৰের এমন দ্বে মন ডাকেও সে এলে আছয় করে (sunt lachrymae rerum et mentem mortalia

tangunt) দেখাৰেই বৰং উভৰ কাৰ্যের স্ট ক্রেছে।

অবস্থাই তব্ মাত্র তগবাৰের নাম বা ক্রেছেবীর মহিমাকীর্ডনই
ক্রিভাকে আব্যান্থিক গতীর করে তোলে না। নাছ্যের
বেষন রয়েছে পঞ্চেরির তেমনি আবার তারের মূলে রয়েছে
আত্রা। অব্যান্থ বন্ধ বন্ধতে পারি আত্রাকে অভিক্রম করে
আত্রায়ও উপরে—মাত্রের মধ্যে তগবানের সাক্ষাং বে অংশ
রয়েছে তাই। আব্যান্থিক কার্য, যা এই গতীরতমের উর্থ্
তমের ক্র্রেণ নিয়ে আগে, তার ক্য অবিমানস লোক থেকে,
মানগোভর চেতনার বাণী তার বাহক।

এখন একটা প্ৰশ্ন এই কাৰ্যস্কীয় সম্ভাবনা কভৰানি चानाश्रम ? मच्छ कर्राण (मन् यात्र त्य कार्रात अक्छे। ক্ৰমোপ্ৰতি চলেছে। এই ক্ৰমোৰ্দ্ধগতি ইংরেজীর মধ্যে বোৰ एक गर्कारभक्त। (वनि भविकृष्ठे । 'विकृष्ठे ने '- अब गाया, हमारवद चाद्रश्र भित्रक 'द्यानाएक' महक श्राप्तद्रहे च्यापन, क्राहेरकम পোপে এদে যনের এক বরণের তীক্ষ বিচারশীলতা, পেল-**श**शरबंद (यन अकडी काइम चापूर्व विपूत खानमञ्ज-चाब শেশপাৰবের ভাষার প্রকাশ শক্তির ভুলনা হয় কি ? মিলটনের আত্মনুষ্ঠ মানসচেতনা, সংযত পরিমার্কিত, এমন কি কোৰাও काबा अ मरन एक जांद्र मरना शक्क मरना बिद **जारना. अ. दे.** বা ইয়েটসের হাতে ত্রপ নিরেছে অভ অগেকিক কর্গতের ইপ্ৰকাণ। এ, ই, এবং ইরেট্স ত আব্যাব্রিক ক্সতের কথাই थामा वाना वान के प्रकृषा काहिनी, श्राचीक-म्याद्वारहव মধ্যে। বাংলা কাব্যের মধ্যে ভাবের এরপ একটা বারাবাহিক পরিণতি ঘটে নি। গঠনের দিক খেকে দেখি আমরা এসে **१८७ कि कर्मार्ट विध्य ७ इहर भूर्वजात निक्डे। (शाविक्यार्मित** পরার থেকে আত্তকের রবীজ্ঞ-রচনার দিকে লক্ষ্য করলেই এ সভ্য পরিষ্কৃষ্ট হয়ে ওঠে। ভাবের চিন্তাগৃভবের দিক দিয়ে আযাদের মধ্যে সেই লোকোন্তর ব্রুতের এক চির্থন প্রোভ ববে চলেছে। বাংলার প্রাচীনতম পদ্মীগাবা অসংস্কৃত বর্করের আদিন প্রাণকর্তির আবেগনরতা (Bewulf-এর শৌর্যকাহিনী) নিয়ে রচিত হয় নি। বাঙাগীর গভীর হৃদরে যেন চির দিন বিভাপতি ভাঞত ছিল: ঠাকুরের কথা ছেড়ে দিলেও, বাংলার নিভুত অঞ্চল যে কৰা ও গান প্ৰচলিত হিল ভাৱ ভিভৱে যে ("एड पिश्व ना क्डि ब क्ल, वरण किलावी")।

আব্যাপ্ত্রিক কাঁব্যের সভাই জীবনের স্ক্রির গভীরতম সভ্য, গভীরতম সৌদর্ব্য, গভীরতম উপলব্ধিসমূহ ব্যক্ত করা— বিচাবের সিদ্ধান্তর পর সিদ্ধান্ত টেনে দিয়ে নর, তাকে পেতে হবে শুভি দিয়ে, দেবতে হবে অঞ্চক্ দিয়ে, এই মল্লের ভাষাকেই বোধ করি থবি-কবিরা বলতেন 'সভ্য স্বাক্সিড':

> Let thy hue-winged lyrics hover like birds Over the swirl of the heart's sea, . Touch into sight with thy fire-words The blind indwelling deity.

> > (Musa Spiritus-Amafam)

वि क्रानव---

नवादणीमायरबिज नाव चादणीमार धनमा नवणीमाम् । मुख्यको चीनवृतीवद-

ন্ত্যুষা মুভং কং চন বোৰমুখী

বিবাতীতের লক্ষ্যে চলেছে বারা তাদের অহুগমন করছে উবা, ভবিষ্যতে বে অনস্থ উবার আগমন হবে এই উবা তাদের প্রথম। উবা প্রদারিত হরে চলেছে—স্থীবকে স্থাপ্রত করে, মৃত কেউ ছিল তাকে চৈত্য্য দান করে।

আধাণিকের লক্ষাই বেন চলে গিরেছে লোকাভীভের দিকে। পাৰ্থিব স্কীৱ আকার ও আকৃতি ধরে কি কাব্যস্কী হতে পারে না—ইছর, বাছড়, গর্মত, চা, ক্ষেত্রা, ক্ষেট ইত্যাদি নিয়ে আধুনিকেরা যেমন মুখর ? আসল সমভার কথা বলছি। আসল সমস্তা বিষয়বছকে নিমে ততথানি নয় বতথানি বিষয়বন্ধর জ্ঞষ্ঠাকে নিয়ে। অবস্থ উপাদান গ্রহণে একটা সংবয बाका द्वाराक्त । दहन-अवानी, व्यादाय-कोमलद व्यक्तिदावि. यहकूमा (वार्छद कार्य) निकार-পद्ध अछम्मयूपदेश कि कार्याद অন্তৰ্ভ করে নিভে হবে ? এরপ চেষ্টার পরিণামে কি পরিষাণ সাক্ষ্য নিহিত থাকতে পারে একমাত্র ভবিষ্যভের কালই ভার নিতুলি উত্তর দেবে। আমরা বলতে চাই বঙর আকার ও আঞ্চিগত বাহুত্রণ বেষন সত্য, তেমনি তার আর একট রূপ ররেছে যা আভ্যন্তরিক অপৌকিক, বস্তর বা শীবের নিভ্ত সভা : উভয়ই সভ্য। উপনিষ্ণের কবি, ঝংখদের কবি বান্তব মৃত্তি রূপ এছৰ করেছেন-ভ্রষা, অগ্নি, গো, অগ্ন, বিহল সমুদ্র, নধী, আকাশ, চন্দ্র, তারকা, বৃক্ষ ইত্যাদি, কিছ এদের মধ্যে তাঁরা ভরে দিয়েছেন অন্তর্জনতের ইন্দিত অর্থ দ্যোতনা। করাগীর বোদেলের কি বীভংস চিত্র এ কৈছেন, ভবে ভিনিও ভার মধ্যে এনে দিয়েছেন ক্লপান্তরের বাছদভের স্পর্ন- কলে তার শিল্প রসবন্ধর পর্যায়ে উঠে গিবেছে। কবির এই শক্তিই কাব্যশক্তি।

এখন এক বরণের কাব্য দেখা দিরেছে বার নাম গছ-পছ
—যার বভাব গছও নর গছও নর। অথচ এরই মধ্যে কিছু
কবিছের অবকাশ থাকবে। এই গছ কাব্যের মূলে কবির যে
মনোর্ছি সক্রির তা হল ঘটনাকে ঘটনার মতই নিঃলেবে ব্যক্ত
করা—নাবারণের 'প্রাকৃতজনা'র নৌধিক ভাষার অহুগারী
করে ভোলার চেটা ভার মধ্যে। এই প্রকারের বাদী রচনা,
যার একমাত্র শব-গান্তীর্ঘ ছালা কোন নিম্নমিত ছান্সসিক ভিছি
নেই, স্থারিছিত স্থনিষ্ঠিই আকার নেই, তার যা কিছু মূল্য বা
ছারিছের সভাবনা সে সমন্তই ভার ভাব-পদার্থের ( thought
power) উপর নির্ভর করে। ছইউম্যান প্রাণের প্রবল শক্তিতে
একটা সভীবভা রাধতে পেরেছেন। এলিরট প্রকেবারেই বৃত্তি
সর্কার—আধুনিকের নাম রূপ স্থভাব ভার মধ্যে পরিপূর্ণ সূটে
উঠেছে। এলিরটের শাণিত বৃত্তি; তা বেন অহুসভান করে

করে কোণার চলেতে, তার মধ্যে পাই নে হইটবাান বা কার্পেনীরের মত প্রকেটক সূত্র, বৃদ্ধীর বিশালতা ও মানবাদ্ধার জরগান। রবীজনাধ—রবীজোতার রুগের কথা আর নাই বললায—পর্যন্ত গভকাব্যের মধ্যে এলে নিরেছেন। গভকাব্য সর্কাণ নিরমিত হক্ষকে এভিয়ে চলতে চার। রবীজনাবের গভকাব্য তাঁর হলোবহু বাবীর সঙ্গে তুলনাত্ব অনেক নিরভ্রের বলে আমার মনে হয়।

বেৰেছি সূদ্র মুগান্তর
বাল্র ভরে প্রছের,
বেন হঠাং বঞ্চার বাপটা লেগে
কোন্ মহাভরী
হঠাং ভূবল ধুসর সর্মভলে,
সকল আশা নিরে, গান নিরে, স্থতি নিরে।
এই অনিত্যের বাবধান দিয়ে চলতে চলতে
অভূতব করি আযার হাংশান্সনে
অসীমের ভর্তা।

(শেষ সপ্তক—চৌত্রিশ) এর সঙ্গে দেখুন কবির নিজের প্রদন্ত একই ভাবের ভিন্ন রূপ কত গাচ হয়ে উঠেছে,—

দেবিপাম বাদ্ভরে
প্রাক্তর সুদ্র মুগান্তর, গুসর সমুদ্রতলে
বেন মর্য মহাতরী অকুমাং বঞাবর্ত্তলে
লরে তার সব ভাষা, সর্ব দিনরজনীর আলা,
মুব্রিত ক্ষা ড্ফা, বাসনা-প্রদীপ্ত ভালবাসা।
তবু করি অকুভব বৃদিং এই অনিত্যের বুকে
অগীমের ভংশ্বন তরলিছে মোর ছংবে সুবে ।
রবীক্রনাবের সদ্য কাব্যের মধ্যে দেবা যার অনেক ক্ষেত্রে এসে
পঞ্জেছে ছক্ষ, একেবারে অতি শাই ভাবে:

ভিছের কল | বব পেরিরে | আসছে গানের | আহ্বান--রবীক্রমার্থ গুরু হুক্তুপালী বলেই নন, তার কবি-চেডমার সক্রে
ছুক্ত গুলুগুলি ভাবে বিশে ররেছে—কবির পক্ষে ভাই এই
ছুক্তের আবির্ভাব বাভাবিক, বেখানে তার সতর্ক মন নির্লিপ্ত
সেবানেই এনে পড়েছে ছুক্ত । শ্রেষ্ঠ কাব্যের ছুক্ত গুরু বাহিরের
কারকার্য নর—ভবে যথাবর্থ সুনিরপ্তিত শক্ষিভাসের উপর
বানিকটা নির্ভর করে বটে । গোটে বলেছেন—

Das wenige verschwindet leicht dem Blicke Der vorwarts sieht, wie viel noch ubrig bleibt\*—

সন্মুৰে ভাকালে বেৰি আমাদের যে আরও কভ কাৰ করতে হবে তার ভূলনায় সামাভ বেটুকু করেছি তা কভই অকিকিংকর।

রচনার দিক বেকে গোটের উদ্ধৃতিতে ফ্রাট্ট নেই, তবুও

একটা অভাব কোৰার বেন বেকে নিরেছে, এবই বব্য অভঃক্রতি পরিভ্র হরে ওঠে না। হল বলেছি কেবল সুল ফ্রনিসক্ষা নর। হল ভাবের গতির নর্বের শৃথলা, বে সভ্য বে রূপ
প্রকাশ হতে চার, কবি বাকে আহ্বান করেছেন, ভার নিজয়
একটা সূর শৃথলা আছে। এই হল হলট বেবানে (বিশেষ
করে শেলী, সুইমবার্ণ, ও ইরেট্স-এর মব্যে লক্ষ্য করা বেভে
পারে) সুল ছল্বের ফ্রনির কাঠামের কাঁকে কাঁকে ভরে ওঠে
সেবানেই পরিপূর্ণ ছল্কের বিকাশ।

Love, a moment drop thy hands; Night within my soul expends.

(Night by the Sea— ঐপরবিদ্ধ)

প্রচলিত ছল অনেক সমর পূতন চেতনার পূতন ভাবনারণে সমর্থ হয় না—তথন অবক্টই প্রয়োজন পূতন ছলের। প্রাচীনের হিরোরিক কাপলেট তেঙে দিরে শেলপীয়র সমুক্তের মুক্ত কলোলিত প্রবাহ নিরে এলেন Blank Verse-এ, যেমম মর্পদন করলেন বাংলা ভাষায় অমিঞাকরের প্রবর্তন করে। শেলপীয়র বা দন্ত কবি ছল্ফকে অবক্তা করে ওাঁদের অভিনব স্টি গড়ে ভোলেন নি, তাঁদের গতিবিধি ছল্ফের মধ্যে। এই ছই মহাকবির তুলনা কোপায় ? বাখাকি, ব্যাস, শেলপীয়র প্রমুধ প্রাচীম কবিদের মধ্যে এই যে অগ পূর্ণমান্তায় ছিল, আাব্নিকের হাতে ছানে স্থানে ভার কথকিং নিমভর প্রামের একটা প্রতিধনি এবনও পাই:

আমার আরতি দীপ শুন্যতার সাজার শর্করী।
( 'ক্রন্সসী'---সুধীক্রনাধ দম্ভ )

অথবা প্রাণচাঞ্চল্য যেখানে আরো সংহত শান্ত হয়েছে ভার মধ্যে—

মহাসাগরের আবরণ শুধু অগীম আকাশ আছে
( 'রাজহংগ'—সঞ্জনীকান্ত দাস )

কিখা নিশিকাভের:

আলোর তলের কালোঁ পাতালের বেলা ছবে অবসাম, রূপান্তরের শুক্ত ময়ুর আলে !

সৰ অগোচর তাৰস-বিবর পাবে যে পরিত্রাণ---

আমরা যথন আব্যাদ্মিক কবিতার কথা বলছি তার আর্থ বনে করি নে যে ধরেদ-উপনিষদ-গতারই পুনরাবর্তন, আক্ষরিক স্থনিপুণ একটা অন্থকরণই কাব্যের পরম সাধ্যতা। ভবিয়তের কবির কাষ্য হবে বৈদিক হৃষ্টর ও উপলব্ধির গভীরতা এবং পরিষিত-ভাষণ, বালীকির এই বহুনীরতা,

সম্জ ইব গাড়ীর্বে বৈর্থেণ হিমবানিব । বিষ্ণুনা সম্বৃদ্ধো বীর্বে লোমবংগ্রিরদর্শনঃ । কালারিসমূলঃ জোবে ক্ষরা পৃথিবীলমঃ । আব্নিক কবির বাইশিল এই উচ্চতম শিবরে আত্মগ্রাশের পরিপূর্ণ রুক্তির আনক অপেকা করে আহে ।

ভবে একটা কথা। আব্যান্থিক কাব্য, বিৱাসীরা বলেন, মনে হয় একটা যাহহীন দার্শনিক ভাষণ। ফ্রান্ট আব্যান্থিক

<sup>\* &</sup>quot;The little that is done seems nothing when we ook forward and see how much we have yet to do."

কাৰ্যের কি অপারপ রস্ঞাহীর সে-ক্থা নিয়ে আমি তর্ক ছুলতে চাই নে। কাব্য শুষ্ট রন্তিকা ধনন বা পরঃপ্রণালী রচমা নর—পেশীবল বছর গত্য হতে পারে, কিন্তু কাব্যরস বোধ—ভার কত চাই স্কুমার রসবোবের অস্থাসন, তার কতে চাই স্ক্ল থেকে স্থক্ষতম স্পর্ন, ধর্মনি চিন্তে পারার কাঞ্জ রুন্তি, ধরেদের ক্ষি হয়ত বলবেন সভ্যকে দেখতে হর সহপ্র বার দিয়ে, সহস্র ধার দিয়ে সভ্যের আগমন।

মাত্র্য ক্রমেই এগিরে চলেছে—আজ বে ভূমি ভার নিকট দ্রের বন্ধ বলে প্রতীয়মান হয়, ফালের প্রবাহে দেবি অদ্য ভবিস্ততে তা চেতনার মধ্যে অবিগত হরে গিরেছে। এক সময় শ্রোভা নিধুবাবুর টগায় মুগ্ধ বিহ্নপ ছিল, রবীক্রনাথ তথন ভাদের নিকট দ্রবিগম্য বলে মনে হয়েছিল। আজ রবীপ্র-মাথ বাংলা কাব্যকগতে একছেল স্মাট্—দ্রভিক্ষ্যভার বাধা থেন কেটে গিথেছে। মাত্র্যের চেতনার মব্যেই চলেছে ক্রম-গতি—ক্রপ থেকে অর্গ্রে, উর্দ্ধকে ভদ্ত্রে; মাত্র্যের বার্থি তেষনি ভার অনুগানী হয়ে চলেছে। মহন্তমের শ্রেছের বিকাপ পুলরতম বাদির মধ্যে, এক্ষিন ভার নিকট পরম আদ্ধারের মন্ত পরিচিত হয়ে ওঠা অসম্ভব নর। শুবু জীবনের মধ্যে নর, বাদ-নিজের মধ্যে আছে যে বিভ্রান্ত দৃষ্টি ও প্রবেশ্রাহিতার মুগ চলেছে ভার অভে কবির এটার মধ্যে জ্যোতির উল্লেখে দেখা দেবে সভাবোৰ ও শ্রের: দৃষ্টির স্থানিশ্চিয়ভা, তারই মধ্যে থেকে হবে এক নবয়ুগের শ্রুচনা:

But a day anay yet come when the tiger crouches and leaps no more in the dangerous heart of the forest,

As the mammoth shakes no more the plains of Asia; Still then shall the brautiful wild deer drink from the coolness of great pools in the leaves' shadow.

The mighty perish in their might; The slain survive the slayer.

(The Tiger and the Deer-Amagam)

# ধনতন্ত্রী সভ্যতার সংঘাতে প্রাণিজগতের ধংস

গ্রীঅনাথবন্ধু দত্ত

সভ্যতার বৃদ্ধি ও ফ্রত উৎপাদনের লাভের আলার পৃথিবীর দশ্যদ আল বৈপরোরাভাবে দুঠিত হইতেছে। পৃথিবীর কোন দেশ বা কোন মঙল, এীয়া বা হিম মঙলই ইউক, এই বেপরোরা উৎপাদন বা দুঠন এবং অপচাদ হইতে অব্যাহতি পাইতেছে না।

প্রথমে বনসম্পাদের কথা ধরা যাউক। নাতিশীতোঞ্ মঙলের উত্তর ভাগ খেঁ সিয়া এই বিরাট বনভূমি বরাবর চলিরা সিয়াহে। উত্তর আমেরিকায় প্রশাস্ত মহাসাগর হইতে আটলাতিক মহাসাগর পর্যান্ত এবং ইউরোপে নরওয়ে হইতে সাইবেরিয়ার পূর্বে প্রান্ত পর্যান্ত এই বিশাল বনভূমি বিভূত। দক্ষিণে চাবের ভ্যাতিত আসিয়া এবং উত্তরে হিমমণ্ডলের বরকের মধ্যে এই বনরাভির প্রসার শেষ হইয়া সিয়াহে।

বনের গাছগুলিকে ছুই তাগে তাগ করা হয়। একতাগকে শৈরম কাঠ' (soft wood) বলা হয়। এই কাঠ ছুইতেই কাগক প্রভৃতি তৈয়ার হয়। অভ প্রকায় কাঠ অপেকারত লক্ত এবং নানা শিল্পকার্য্যে প্রচুর পরিমাণে ব্যবস্থাত হয়।

ষ্টিও লৌহ ও অভাভ ৰাত্র ব্যবহার ধ্বই বাভিষা চলিরাহে, ভবাণি কাঠের ব্যবহার কিছু মাত্র কমে নাই। বছদেশে প্রচুৱ পরিমাণে কাঠ ছালানীয়ণে ব্যবহুত হয়। সকল প্রকার রেশম ও কাগছ প্রভতের প্রধান উপাদানও কাঠ। 'নরম কাঠ' এই সকল কাজে এতই ব্যবহৃত হইতেহে যে অর্ভণভাষীর মব্যেই এই প্রকার কাঠের ছর্জিক দেখা দিলে ভাছাতে আক্র্য হইবার কিছু নাই।

পুষাতৰ বহাদেশওলিতে বহ শতাকী বরিরা এই বন

নির্মূপ করার কাল চলিয়াছে। বিশেষতঃ, ইংগভের মত শিল্প-সমূহ দেশে আদিম বনের অতি সমাছই অবশিষ্ট আছে। অবঞ্চ নিঃশেষে বন ধ্বংস করার কাজ অপেকারত আছ-কাল পূর্বেই ক্লুফু হইয়াছে। উনবিংশ শতাখীর চতুধ পাদে দুর অঞ্চলের গভীর বনভূষির গাছ কাটা ক্লুফুইয়াছে।

কশিয়াকে বাদ দিলে যুক্তরাই ও কানাডা এই চুইট দেশই পৃথিবীর আর্ছক 'নরম কাঠ' এবং কাগন্ধ তৈরির মণ্ড যোগাইয়া বাকে। পত আশী বংগরে এই চুই দেশের সরবরাহ কমিয়া এক-তৃতীয়াংশ হইয়াধে।

বুজরাষ্ট্রের প্রেট গেক অঞ্চলে এই অরণ্য-সংহার-পর্ব্য জেমশ: বাছিয়া চলিয়াছে। মিনিগান টেট হইতেই সর্ব্যাপেক। বেশী কাঠ পাওয়া যাইত। ১৯০০ হইতে ১৯১০ সনের মধ্যে এ স্থানের সরবরাহ কমিয়া অর্থ্যেক হয়। ১৯২০ সালে এই সরবরাহ আরও অর্থ্যেক কমিয়া যায়। বর্ত্তমানে এই টেটে বাছির হইতে কাঠ আমদানী করিতে হয়। মিনিগানের কাঠ নিঃশেষ হইলে উইস্কন্সিন্ উহার স্থান গ্রহণ করে।

কিছ এবানেও কিছুদিন পরে বন নির্মূল হয়। শেষে সিনেয়োটা ষ্টেটে কাঠ কাটা স্থান হয় এবং সেহানেয়ও এই একই পরিণতি হয়। অতঃপর কার্ঠ-সংগ্রহকারীরা দক্ষিণ অঞ্চলের অরপ্যে ভাহাদের কাক আরম্ভ করে।

মান্ত্ৰের হন্তক্ষেপ ব্যতীত দাবনল বারাও অরণ্যের সমূহ কৃতি হইয়া থাকে। অবস্ত এই দৈবছ্কিপাক নিবারণের কোন ব্যবস্থা, না বাকার হরুনই দাবানল অত্যবিক কৃতির কারণ হয়। বে ভাবে 'বরষ কাঠেয়' ব্যংস্থক সম্পন্ন হইতেহে ভাহাতে ভবিভাতে ৩০।৪০ বংসরের মব্যেই ইহা নিঃশেষিত হইবে বলিরা আলভা হয়। কিছুদিন পূর্বের সাজাত্য বন-সম্প্রেন (Empire Forestry Conference) বভায় করা হয় বে, বনের কাঠ আহরণ সহতে কোন বাবাবরা নিরম করিতে গেলে কোন রাষ্ট্রের পক্ষেই ভাহা বানিবার সভাবনা নাই, অবচ এরপ বাবাবাবিতে কাঠের ব্যবসায়ীরা প্রবল্প ভাবে আগভি করিবে। এবন কাঠের ভবিভাৎ ভরসা সাইবেরিয়ার বিশাল অরণ্যানী।

প্রীথনতদের বিভার ও চন্দন গাছ প্রায় নির্দৃদ্ধরা আগিবাছে। নহীপুর রাজ্যে গবর্ণনেও চন্দন গাছ ও উহা হুইতে উংপাদিত প্রব্যাদি সরকারের নিরপ্রণে একচেটিয়া করিয়া রাবিরাছেন। ইহাতে প্রকারার ব্যবস্থা উত্তরই হুইরাছে।

বেণরোয়ভাবে বন নির্লুল করার আর এক বিপদ বাভিরাছে। ইহাতে এক দিকে বেনন বর্ণার জনির বাট গুইরা কর
হইরা বাইতেছে, অভ দিকে তেননি বভার স্পষ্ট হইরা ফ্রির
বিপুল ক্ষতি করিতেছে। বধন পর্কতিগাত্তের গাহগুলি কাটরা
কেলা হর তথন বৃদ্ধির ক্ষল আর মাটতে বাধা পাইরা ক্ষরির
থাকে না, সরাসরি পাহাডের গা বাহিরা নিচের উপত্যকার
নামিরা যার। মাট গুইরা যাওয়ার পর্কতিগাত্র বৃক্ষহীন ভবর
ক্ষরিতে পরিণত হর এবং নিরভূমিতে বভার স্পষ্ট হর।

উনবিংশ শতাকীর বিভীরার্ছে বিটিশের রেল লাইন প্রভৃতি নির্দ্ধাণ ও অভাভ কাকের কভ বিভর কাঠ দরকার দ্ইলে হিমালরের উপত্যকার বিরাট অরণ্য নির্দ্ধন তাবে ব্যংগ করা হরু। কলে বৃক্ষহীন পর্বতেগাত্র আর বৃষ্টির কল বিরার রাবে না বলিরা নিয়-প্রদেশে বর্ষাকালে বভা ও অভাভ সমরে কলাভাব দেখা দিরাছে। ইহা ব্যতীত পাহাকের গা-বোরা বৃষ্টির কল পাহাভী বাল্কা বহিরা আনিরা নিয়াকলে যে বভার স্টি করে ভাহাতে কবি চাবের অন্থণমুক্ত দ্ইরা বার। এইরণে চাবের ক্ষতি, প্রামবাসিগণের গৃহাদি নির্দ্ধাণের উপক্রণ ও আলানী কাঠের মুখ্যাপ্যতা, এবং চারণভূবির অভাবে কীর্মাণ গৃহপালিত প্রাধির বাভের অপ্রভুল বট্টবাছে।

উপনিবেশিকেরা আট্রেলিরার বাবে নদীর উপত্যকার উচ্চ বালভূমিতে জনল কাইরা পরিকার করার দরন, পাছাত হইতে বাট ক্রেলিরা ও বভার স্টে হইরা বহু উর্বার চাথের অমি ও বেবচারণ-ভূমি নট হইরা সিরাছে। র্জ্করাট্রে আলেলিভিরান পর্বতের অরণ্য ধ্বংস করিরা উপনিবেশিকগণ করেক বংসর ভূলা, ভাষাক ও ভূটা চাব করিতে সমর্থ হইরাছিল, কিছু পরে প্রবাদ বৃষ্টিতে জমি গুইরা গেলে উহা আর কৃষির উপর্ক্ত বহিল বা।

কিছ অরণ্য ধংলে সর্বাণেকা কতি হইতেতে বারিত্র্য ও মুডিক্ষের কেন উভর চীনের। এবানে হোরাং হো নদীর নিকট-

বর্তী প্রবেশের পাহাড়ী ভষিত্র মালিকগণ গাছ ভাটরা বচ্চত্তের जाराया मिक्**डेवर्की** वाष्ट्रांद जरेवा त्रिहा विक्रद करत । অবর্ড বাজার দূরে ভ্রনে লাভের অনেকটা মতুরীতে বাইরা যার। চড়া হাথের আশা বাঞ্চিলে বড় বড় ব্যবসায়ীয়াও এ কাবে হাত বের এবং চুর হইতে কাঠুরিয়া আনাইয়া কাব্দ করার। পাহ কাটরা ব্দল পরিভার করা হইলে কৃষক এই উৰ্বাৱা কৰিতে ওটু ও আলুৱ চায় দেৱ। বড়-च्यांत प्रमा वरमञ्ज कांग अवैक्षण हरण अवर वेशांत मरवावे বুটির কলে জ্যাগত করপ্রাও হইরা ক্ষমি এরপ ক্যুক্তির হয় বে, সে অধির আর হইতে আর বাজনা দেওয়া কুলাইয়া ওঠে না। অপত্যা কৃষক তৰন দূতন ক্ষিতে পিয়া চাষ আবাদ চালার, এইরণে নির্বিচারে জ্বাগত বনাঞ্চ অংগের কার্য্য চলিয়াছে। ইহা ছইতেই দেখা যায় জন্নগা বংগের সহিত ক্ষির প্তথের কি ছনিষ্ঠ সম্পর্ক। অবচ সভা মালুয আজিকার দিনেও এই অবিবেচনার কার্যা অবিরাম চালাইরা ষাইভেছে।

ষাধ্যের হাতে প্রাণিকগতেও এই নির্দ্ধন ধ্বংদ-লীলা অবিরাম চলিরাছে। কত জন্ধ ও পাবী এইরূপে ধরাপৃষ্ঠ হইতে গোপ পাইরাছে ও পাইতেহে তাহার লেধাকোবা নাই। একণে বিশেষভাবে যে কয়েকটি প্রাণী মান্ত্যের আবিক প্রয়োজনে অত্যাবশ্রক তাহাদের বিষয় বিবেচনা করা যাক।

পুৰিবীর উত্তর হিমময় দেশখলির ৰুদলে বহু প্রকারের ৰুদ্ধ वाम करता वह मछाको बित्रियो और अकन बहुरक हाम्छा ও 'কারে'র (শোম) জ্ঞ মুক্তরাষ্ট্র, কানাভা ও রুলিয়ার লোকের। ধ্বংস করিয়া আসিতেছে। 'কারে'র জন্ম-বিজয় একট লাভজনক ব্যবসা। খেত জাতির লোকেদের জাগমনের পূৰ্বে ইভিয়ান ও একিলোগণ এই সকল কানোৱার ধরিত अवर याहाएक देशायब वरन भिर्माण ना एव जिल्लि नका রাখিত। ইংরেজ এবং করাসীরা এই ব্যবসায়ে প্রবৃত্ত হইয়া এই দক্ত গোক্তে আরও গভীর বনে প্রবেদ ক্রিয়া কাঁচা চামছা সংগ্রহ করিতে উৎসাহিত করিল। এই সমভ মুল্যবান 'কার' ইউরোপীয় সভ্যতার বিলাস-দ্রব্যাধির বিনিম্বে বন্ধ মূল্যে অসভ্য লোকদের মিক্ট হইভে জ্বর করা হইত। সুবিতীর্ণ সমুদ্রোপকৃলের এক দিক হইতে আর এক দিক পৰ্যান্ত ইংৱেছ জাভি বাণিজ্য-কৃষ্টি ছাপন করিয়া 'কার' সংগ্রহে ব্রভী হইল এবং 'কায়ে'র বদলে সভ্যভার ঠুনুকো ত্রব্যাদি **অগন্ত**ব রকষ উচ্চ বৃল্যে বিজয় করিতে লাগিল। কলে আছিবাসিগণ চিন্নদিনের যত বণজালে জড়াইয়া পড়িডে লাগিল। পুঁজিপভিষের ধর্মরে পড়িয়া অভ বেশেও বাহা হইরাছে এবানেও ভাষাই হইল। প্রবিকরণ বনভৱের হালছ-मृथान जायव एरेवा काव काव कारतव वृत्य इतिएक नाजिन।

ভাগিকে অরণ্যের ধ্বংগে বিভিন্ন জীবপুলের ধ্বংস অনিবার্ব্য হইরা উঠিল। উহাদের আত্রর ও বাসহান লোণ শাওরার ইহাদিগকে আক্ররণ ও বিনাশ করাও সহজ হইরা পঢ়িল। অবঙ পরে বাহাতে জ্যুভালি একেবারে লোপ না পার এজভ বুক্তরাই ও কানাডা চুক্তিহারা 'ফার' ব্যবদায়কে সংহত করিরা জীবজভ ব্যংস নির্দ্রিত করি-রাহে, তবুও বে ক্ষতি হইরা সিরাহে তাহা অপ্রশীর। প্রার ২৫ বংসর পূর্ব্বে বিবর নামক স্করে প্রান্ধী, লিন্ক্স, ওটার এবং কালো ভন্তক একেবারে লোপ পাইরাছে।

আবন্ধ বন্ধ আনোরারগুলিকে ধ্বংস না করিবা এবং পৃছ-পালিত পশু হিসাবে এগুলিকে পালন করিবা 'কার' সংগ্রহ হইতে পারে কিনা সে সহছে পরীকা চলিতেছে। 'কারে'র চাহিদা হয়ত এই পৃহপালিত অন্তর বারা মিটবে না, কিন্তু কিছু পরিবাবে আনোরার তো প্রাবে বাঁচিবে।

উত্তর-আমেরিকার বিরাট অকলে ঠিক এইরপ নির্মান্তাবেই বছ মহিষ (বাইসন) নিপাত করা হইরাছে। গত শতাখার সপ্তম দলকে মাত্র চারি বংগরেই দক্ষিণ অকথের বছ পক্ষ বাইসনকে হত্যা করা হয়। দশ বংগর পরে উত্তর অকথের বাইসন বং করা হইত। গক্ষ লক্ষ চামছার অভই সাবারণতঃ বাইসন বং করা হইত। গক্ষ লক্ষ চামছা রুজরাইরের প্রাঞ্চলম্ব কার্নানার চালান দেওরা হইত। বাইসনের জিল্লাগুলিও ছিল দামী—এক একট ৫০ দেও দরে বিক্রর হইত। ১৯০৬ সনে হিসাবে করিরা দেবা যার, যাহারা এককালে সংব্যার লক্ষ লক্ষ্ হিল, সেই বাইসন কাতির মাত্র ৫০০ট প্রাণ্ট করিত আছে। উহাদিগকে সংরক্ষিত অকলে (National Parks) আবছ রাবিরা যাহাতে আর ধ্বংসপ্রাপ্ত না হয় তাহার ব্যবহা করা হইবাছে। প্রেট প্লেত লেকের পার্থবর্ত্তী ক্ষণ্টেও ইহাদিগকে নির্প্রশন্তবে বাস করিতে দেওরা হইতেছে।

চামছা ও মাংসের দিক দিয়া বাইসন গরু অপেকা উংক্ট। আকারে বছ এবং অবিকতর সবল ত বটেই। বাই-সনের মাংসও বেশী দিন সংরক্ষণ করা চলে, স্তরাং খাদ্যা-ভাবের সময় ইহা বেশী উপযোগী এবং ইহা গোমাংস অপেকা সহক্ষণাচ্য। বাইসনের চামছাও বেশী পুরু এবং শঞ্চ। উপরত্ত বাইসনের গোম হইতেও পশমী কাপড়ের ছায় বর প্রভত করা চলে।

ক্ষর মধ্যে উত্তর-আমেরিকার বৃহৎ হরিণ, সাধারণ হরিণ, পাবীর মধ্যে টার্কী (র্য়নী) এবং অনেক প্রকমের বত হাঁগ বে বাজ্যের ক্ষত কি পরিমাণ ধ্বংস হইয়াছে তাহার ইয়তা নাই। ডটার হর্ণাভে বলেন যে এক আমেরিকারই, মাহুষের কাছে লাসিতে,পারে এরুপ গুড়পারী পশু ও পাবীর শতকরা ১৫টি বাছ্যের হাতেই ধ্বংস্থাও হইরাছে।

আফ্রিকার ইাতের জন্ধ বেশরোরা ভাবে বে পরিমাণ হন্তী ক্ষংস হইরাছে ভাহার ভুলনা মেলে লা। উলবিংল শভাকীর মধ্যভাবে ইউরোপীয় ও আমেরিকান ব্যবসারীদের আগমনের পূর্ব্বে পূর্ব্ব-আফ্রিকার সমন্ত গঞ্চনন্তর ব্যবসার ছিল আরব কারবারীদের একচেটিরা। সামান্ত এক টুকরা বোটা কাপন্তের বিনিময়ে আরব ব্যবসারী বিশ বা দ্রিশ পাউও মূল্যের হজিদভ ক্রে করিত। ইহাকে বিনিমর-প্রধা না বলিরা সূঠন বা অন্তর্মণ অন্ত কোন নাম দেওরা চলে। কিন্ত দেশীয় লোকবিগের উপয় আর কোন অভ্যাচার হইত না। ইউরোপীয়েরা আরবিগের নিকট হইতে রাইকেলের বিনিমরে গঞ্চভ ক্রে করিতে লাগিল এবং বিনিমরে আরও বেশী পরিমাণ মান্ত চাহিল। ব্যবসারও বাছতির পথে চলিল।

বন্দুকের সাহাব্যে আরবেরা আদিবাসীদিগের গঞ্চতের আছতসমূহ দবল করিয়া লইতে লাগিল এবং লেগুলির মালিক-গবকে কূলীর কাল করিতে বাব্য করিল। দীর্ঘ সারি বীবিয়া জীতদাসের দল গজদন্তের বোঝা বহিরা আঞ্জিবারের বাজারে উপস্থিত হইতে গাগিল। যথন ব্যবসারের বুব মরভ্য তথম বংসরে ১,৫০,০০০ জীতদাস এই মূল্যবান পণ্য বহন করিত। অবশ্ব ইহাদের মধ্যে মাত্র ৩০,০০০ জন প্রাণ লইয়া সমুদ্রোপ-কুলের বন্ধরে গৌছিত।

আরবীরগণের হাত হইতে বাণিজ্য চলিয়া গেলে ইউ-রোণীয় মৃলবণের সাহাযের হাতীয় ধ্বংসলীলা চলিল। গত আল বংসর বরিয়া, সকল শ্রেণীয় হতীহত্যা নির্মিচায়ে চলিয়াছে। আল উংক্লঃ হাতী লোপ পাইয়াছে, পূর্ণবর্ষ হইবায় পূর্বেই হাতীগুলিকে মারিয়া কেলা হইতেছে। পঞ্চাল বংসর পূর্বের চলাইও ওজনের হাত পাইলে ববেঃ মনে করা হয়। বর্তমানে বেলজিয়াম কলো ও উগাতা হইতে গলগত রপ্তামী হইয়া বাকে। হতিমৃবের অবলিটাংল পলাইয়া হর্সম অস্বাস্থ্যকর কললে আশ্রয় লইয়াছে, কিও ধ্বংসের বিয়াম নাই।

উট পাৰীর উৎক্রই পালকের চাহিলা ইউরোপের বাজারে পুরই প্রবল। অবক্ত ইহা বিলালের সামগ্রী মান্ত। হাজার হাজার পাৰীকে কেবলমান্ত পাৰার লোকে মারা হইতে লাগিল। গত লভাকীর মারামান্তি ধেবা পেল উত্তর-আফ্রিকা আইচ বা উটপাৰীপুত হইয়াছে। মুক্তরাষ্ট্রেও মাহুষের বিলাস-সামগ্রী বোগাইতে বিরা অনেক পাৰীর বংশ লোপ পাইয়াছে।

ষ্থাসমূদ্রের খানোয়ারথের উপরেও এই ধ্বংসগীলা খাব্যাহত ভাবে চলিয়াছে। ভাতিতে ভাতিতে এ বিবরে প্রতিবালিতা চলিয়াছে। খানেরিকা, ইংগও ওভাগান উত্তর ও দক্ষিণ মের-ম্থাসাগরে ব্যাপক ভাবে সীল হত্যা করিয়া চলিয়াছে। বর্তমান শতাখীর প্রথম হশকেই থেবা গেগ, ইংল্বের বংশ এত কমিরা সিয়াছে বে, হক্ষিণ-মেরু মহাসাগরে সীল শিকার খার লাভখনক নহে। ক্রেক বংসরেই কত্ল্যাও বীশের সীল-বংশ লোপ পাইল। নরওবের সীল-শিকারীগণ

ত্রীনল্যাভের পূর্ব-উপকূলের সীল-বংশ নিপাত করিল। এই সকল সীল ত্রীপল্যাভের অধিবাসিগণের জীবিকার অবলখন ছিল, এই কার্ণ্যের কলে তাহারা দিঃম্ব হইল।

বছ বংসর বরিরা আলাকার অদ্যবর্তী প্রিবিলক দীপ সীলবের বাচ্চা অবলানের স্থান ছিল। এই দীপ ছিল আন্ধে-রিকানদের অবিকারে। গভীর অলেও সীলগুলিকে নির্বিচারে শিকার করার দর্মন ফল এই ইাড়াইল যে, বেবানে বংসরে প্রায় জিল লক্ষ সীল বাচ্চা দিতে আসিত, ১৯১১ সনে সেবানে উচ্চাদের সংখ্যা ক্ষিয়া এক লক্ষ পঁচিল হাজারে পৌছিরাছে। যাহাতে সীল-বংশ একেবারে ধ্বংস না হয় এক্ষ্যা সংশ্লিষ্ট দেশসমূহের মধ্যে সীল শিকার সম্বন্ধে এক চুক্তি ইইয়াছে, ইহার বলে আমেরিকার রুক্তরাট্র শতকরা সত্তরটি সীল চর্দের অবিকারী হইয়াছে।

কিছ সমুদ্ৰের বিরাট জীব তিমি-মংগ্র রজার ব্যাপারে আছেলিভিক চুক্তি বিশেষ কলপ্রদ্ব হয় নাই। যথন মৌকার করিয়া ভিমি লিকার করা হইত তথন তিমিকুলের একেবারে ধ্বংসপ্রাপ্ত হইবার আলকা ছিল না। এখন তিমি লিকারের জ্বত্ত ২০,০০০ টনের ভাগমান কারণানা তৈরার হইরাছে। এই সকল আহাকে তিমি লিকারের জন্য কলের কামান ব্যবহৃত হয়। কাজে কাজেই তিমি লিকার ব্যাপক তিমি-হত্যায় প্রিণত হইরাছে।

প্রীনল্যাও ও উত্তর-সাগর হইতে তিমি গোণ পাইগে শিকারীয়া দক্ষিণ সমুদ্রের দিকে খুঁকিল এবং বংসরে ২০,০০০ হাঞারের বেশী তিমি শিকার করিতে গাগিল। সকল রাষ্ট্র মিলিয়া ধ্বংসের মাত্রা কমাইতেও চেটা করিল। কিছ লাগানীয়া নবাগত বলিয়া কোন চুক্তিতে রাজী হইল না, কেমমা তাছাধের তিমির তেলের (whale oil) চাহিদা এও বেশী যে, যাহাতে তেলের পরিমাণ বার্ষিক ২৫,০০০ টন হইতে চতুর্ব বাজে সেই চেটার শিকারের মাত্রা বাজাইয়া দিল। স্তরাং ধ্বংসের হাত হইতে তিমির রক্ষা পাওয়ার আলা কম। তবে বিতীয় বিশ্বরুদ্ধে জাপান মুদ্ধে পরাজিত হওয়ার তিমি বংশ আরও কিছুকাল সমুদ্রগর্ভে বিরাজ্যান আজিবে আলা করা যায়।

মান্ত্ৰের একট প্রধান বাভ মাত সহত্তেও এই হ্বংসলীলা বেশবোরা চলিতেতে।

উত্তর-সাগরে, নিউ কাউওল্যাতের চতুর্বিকের সমুদ্রে এবং উত্তর-জাগানের সমুদ্রে প্রচুর পরিমাণে হেরিং ও কভ মাছ পাওরা বার। ক্রমবর্জনান চাহিদার সহিত ভাল রাবিরা এই মংজ সরবরাহের পরিমাণও বাভিয়াই চলিরাছে। কিভ বিগভ করেক বংসর যাবং যে ভাবে জীমারের সাহায্যে প্রচুর মাছ বরা হইভেছে ভাহাতে আশবা হয় বনভান্তিক বভ ব্যবসায়ের চাপে পভিরা এই ছুইট মংস্তও ভূপভ হুইরা পভিবে।

বেপরোষা মংশু শিকারের জন্য নদীর মাছও লোপ পাইতে বসিরাছে। ছোট, বছ ডিমওরালা সকল রক্ম মাছ মারা হয় বলিরাও মংশু জাতি ক্রুত ধ্বংসের পথে চলিরাছে। এই বিষয় মিয়ন্তিত হওয়ার পুব প্রয়োজন আছে। বাংলা-সরকার এই বিষয় অনুস্কান করিখাই আপাত্তঃ ক্রুব। শেষ ক্রিয়াছেন। মংশু সংরক্ষণ বিষয়ে মাজাক গ্রণ্থেন্ট ্রনী স্কাস বলিয়া মনে হয়।

আমেরিকার প্রশান্ত মহাসাগরের উপকৃলে নদীর মধ্যে বল্ পরিমাণে ভালমল মাছ ধরা হয়। এই অঞ্চলে লোকসংখ্যা কম বলিরা মংশু-রক্ষার জন্য ক্যামিং শিল্প কেন্দ্র প্রভিতিত হই-রাছে। নদীর মুখেই এই করেবানাগুলি প্রভিতিত হওরার সেবানেই জ্লালধারা লক্ষ্য লাভ বরা হয়। কিন্দু অনেক নদীর মাছ, বিশেষতঃ পেক্রামেন্টো নদীর মাছ, ইতিমধ্যেই নিংশেষ হইরাছে, অন্তল্প শতকরা ৮০০২০ ভাল ক্মিয়াছে। মাধ এত রাস পাইলেও মংগুলিকার-প্রতিঠানগুলি কোনএণে মাছ বরা ক্যাইতে রাজী নম্ব। পূর্বের নিউ ইয়র্কের উত্তর অংশে আটলান্টিক মহাসাগরলামী ছাব্লিক্টি নদীতে প্রচুর আলমন মাছ পাওরা যাইত, কিন্তু বেপরোরা মাছ ধরার ফলে এবন নাল্ল এক্টি নদীতে স্যালমন পাওয়া যায়। ইহা হইতেও প্রশান্ত মহাসাগরের উপকৃল্ছ কারবারীগণ শিক্ষা গ্রহণ ক্রিতে নারাজ। মাছবের অভি লাভের আলা এতই ছনিবার।

বাংলা দেশেও মংস্থ-সংবক্ষণ ও মংস্পের চাষের বৈঞ্জানিক প্রধানী অবলম্বন না করিলে মংস্থাছাত্রী বাঙালীর ভবিদ্যতে বাদ্য বিষয়ক এক গুরুতার সমস্যা দেখা দিবে!

# পুশ্কিনের প্রতি শ্বীরেশ্র চট্টোপাধ্যায়

আজো শৃথলিত হাত্রি বক্ষে আনে তোষার কবিতা।
এটিয়ারে নিরানক সদীবীন গভীর বার্তার
মন বার বন্ধীসম প্রতীকিত রুত্যু-বন্ধনার;
সে তোষারে বুঁকে পার, ভিরতীর্বে চিরজীবী মিতা।
সাইবেরিয়ার প্রভ ত্বারেও বুঁকেছো সবিতা।
আশার আকাশ তব হেসেছিলো প্রাণ-অদীকারে;
বুবি আহে সর্বোভর কোহিত্বর অ্পাবে, অদারে।

নিদ্রাহীন অনভগাবন ভাই স্কছ সাধৰীতা।
ভোষার সমূবে পথ, সুর্যান্তাও প্রেরগী বনিতা;
কত অনকার রাত হিছে তারে দিরেহো প্রভাত।
পার্ধের অবশ হাতে হেসে তুরি মিলারেছ হাত;
নিরাশা ক্লীবের বস্ত্র; পৌরুবের সে নহে সংহিতা।
স্থালিত হুই হতে ভোষারেই করি প্রণিণাত;
বনিও এ হন্ত হেশে আজো হলে হুর্তাগ্যের চিতা।

# বিপন্ন বাংলা

## ब्रीटेनलब्दक्क नाश

শশাবের একজন নামজাদা সাম্প্রদায়িক কিছু দিন পূর্ব্বে হংগপ্রকাশ করিয়াছিলেন, ভারতবর্বের বাহিরে, বিশেষতঃ করার্কিনে, ইভিয়ার অবিবাসীগণকে "হিন্দু" নামে অভিহিত করা হয়।

ক্রান্সের অধিবাসীকে লোকে করাসী, ইংলভের অধিবাসীকে ইংরেজ থলে। একই নিয়ন-অন্সাধে ইণ্ডিয়ার অধিবাসীকে গোকে হিন্দুই বলিবে।

হিন্দুহান অথবা হিন্দু হইতেই Ind এবং India হইরাছে।
মহাভারতের মূগে এবং তাহারও পূর্বে এ দেশ ভারতবর্ব নামে
অভিহিত হইত। এখনও সে নাম আছে।

ছর সহত্র বর্ব পূর্বের যে সভাতার পরিচর মহেক্ষোদারো ও হরপ্লার অংগাবশেষের মধ্যে পাই তাহা অপূর্বা। সিদ্ধু-নদতীরে সেই স্প্রাচীন সভ্যতা দিসম্ভ উদ্লাসিত করিয়াছিল।

সঞ্চৰতঃ হিন্ সিক্র অপঞ্গে। আবেভাতেও সিক্ হিন্এবং সরমূহররুহইয়াছে।

ভারত-মহাগাগরের অগাধ জলরালি যে উপধীপের তিন দিক বেটন করিয়া ভাতে এই সিদ্ধু-সভ্যতা ধদি সেই রহং তুবভের নামকরণ করিয়া থাকে তাহাতে আল্চর্যোর কি ভাতে ?

কেবল কোন ধর্মবিশেষের উপর নির্ভর করিয়া কোন জাতি গঠিত হয় নাই। ভৌগোলিক সীমা, সংস্থৃতি, ভাষা, ঐতিহ্ন, দেশাশ্ববোৰ এবং ইতিহাসের অবিভিন্ন ধারা এই ওলিকে উপকর্ম করিয়াই জাতি গড়িয়া উর্নিয়াছ।

হিন্দু নাম সম্পর্কিত উপরি-উক্ত ব্যাপারট কৌতৃকপ্রন। কাহিনীট কৌতৃককর হইষাই থাকিত যদি-না-কি উতার শিহ্দবে যে মনোভাব রহিরাছে সে মনোভাব অভের পক্ষে ছাব ও অনিষ্টের কারণ হইত।

সে মনোভাব এই। তুমি আমি এক দেশে বাস করি
বটে আমরা এক নই, ভোমা হইতে আমি ভিন্ন, তুমি পর,
আমার সহিত অসম্পর্কিত, তোমার নাম কইতে আমি কচ্ছিত
হই। এই মনোভাবের উপরই পাকিস্থানী আদর্শের প্রতিষ্ঠা।

নাংসীবাদের বৃলে ইহুদী-বিবেষ। পাকিস্থানী মনোভাবও সেইরণ হিন্দুর সহিত অনান্ধীরতা-বোংরে উপর প্রতিষ্ঠিত। প্রেম বীরে বীরে কান্ধ করে, বিষের মত বিধেষও অতি সহকে স্কারিত হয়।

বিগত ডিসেশ্বর মাসে লওনের কিংস-ওয়ে হলে মহম্মদ আলি দিয়া এক বক্তৃতার পাকিছানের ব্যাব্যা-কালে বলেন, "ইতিহাস-অভিজ্ঞ লোকমান্তই জানেন, আমাদের বরেণ্য বীরবৃন্দ, আমাদের সংস্কৃতি, আমাদের ভাষা, আমাদের সলীত, আমাদের ছাপত্য, আমাদের বিবি-বিবাদ, আ্যাদের নামান্তিক জীবন একান্ত পুর্বক এবং হতন্ত্ব।"ক তিনি আরো বলেন, "ভারতের উত্তর-পূর্ব্ধ ও উত্তর-পশ্চিম
অঞ্চল আমাদেরই বাসভূমি (our homeland) । সেবামে
আমরা সংবাগরিষ্ঠ-—শতকরা সন্তর জম। সেই উত্তর-পশ্চিম ও
উত্তর-পূর্ব্বে আমরা পূর্বক রাব্র চাই। সেবামে জীবনসম্পর্কে আমরা আমাদের নিজেদের বারণ; অনুসারে বাস
করিব।"†

কোন দেশের সীমা ধর্মের ছারা নির্ছারিত ছইয়াছে এ কথা ইতিহাসে সেখে না!--উত্তর-পশ্চিমাঞ্চলর কথা থাক্ উত্তর-পূর্বের কথাই এখন বলি। বাংলা এই উত্তর-পূর্বে অঞ্চলর মধোই পড়ে।

বাংলার সামান্ত্রিক ও কাতীর কীবনের উপর দিয়া বে ভীষণ বড় বহিয়া গেল ইতিহাসে ভাহার ভুলনা নাই। পঞ্চালের মন্তর পার হইভেনা হইভেই কলিকাভার ভিলাল সালের ভাত্ত-আহিনের হভ্যালীলা সুরু হইল। মোরাবালির দুলংসভা দে হভ্যাকাভকেও রান করিয়া দিল।

বাঙালী আমরা বর্তমানে ষে-ভাবে আছি ভাষাকে বাঁচিয়া থাকা বলা চলে না। এরপ প্রাণধারণ জীবন্ধ্যুর নামান্তর। আমাদের সামাজিক জীবন বিববন্ধ, রাইজীবন পরহন্তগত, অর্থনৈতিক জীবন চূর্ণ-বিচূর্ণ। আমাদের বর্ত্ত বিপন্ন, গৃহ বিপন্ন, প্রাণ বিপন্ন। যে সাধীনতার সংগ্রামে বার বার আত্মবলি দিতে আদরা পরার্থ হই নাই লেই সাধীনতা আৰু সুদ্র-পরাহত। যে বন্ধ-সংগতি একদিন বিশের প্রভার উল্লেক করিয়াছে লেই সংগতি আৰু বিশ্বের বর্ষার আধাতে হত্ত্রা।

বাঙালী হিন্দু ও বাঙালী মুসলমানের ভাষা কি বিভিন্ন ? বাংলা ছাড়া বাঙালী মুসলমান অহু কোন্ ভাষার কবা কর ? উত্তর-পশ্চিমাঞ্চলের উর্জুভাষী স্বর্গীব্যের কবা পূর্বব্যের পাকিস্থানী বীরেরা কি বুকিতে পারে ?

ওভাদের। কোন্ ক্রের কোন্ সদীত গার ? বাগেঞী, ভৈরবী কাহাদের রাগিনী ? ধর্মনিবিবলেয়ে কলাবিংগণ প্রণদ গায়ককেই শ্রেষ্ঠ আসন দান করে। বাঙালী বুসলমানেরাও যে ক্ররে গান গায় তাহা হিন্দু-সদীত হইতে ভিন্ন নয়।

বে স্থাপত্যের গর্ব্ব বাঙালী করিতে পারে ভাষা হিন্দু স্থাপত্য। তমলুকের বর্গভীমার মন্দিরে সে স্থাপত্যের নিম্পনি আছে। পূর্ব্বাঞ্চলের পাকিখানীরা ভাক্তমহলের গর্ব করিবে কি ? ভাক্তমহলও ইম্পামিক স্থাপত্যের নিম্পন নত্মে, ছিন্দু-সারাসেনিক স্থাপত্যের মিশ্রব।

<sup>&</sup>quot;It is well-known to any student of history that our of life."

heroes, our culture, our language, our music, our architecture, our jurisprudence, our social life are absolutely distinct and different."

<sup>† &</sup>quot;In the north-west and north-east zones of India, which are our homeland and where we are in a majority of 70 per cent, we say we want a separate state of our own. There we can live according to our own notions of life."

নাৰাজিক জীবন বলিতে যদি বছপদ্বীকন্ন, বিবাহক্ষেদ, নাৱীব আত্মাকে অধীকার, পরবর্গে অসহিকৃতা প্রভৃতি বুবার, সে কথা হতন্ত্ব। তবে আমন্ত্রা আমি, পদ্ধীর গার্হয় জীবন-সম্পর্কে বাঙালী মুসলমান ও বাঙালী হিন্দুর মধ্যে বিচশয় পার্বক্য মাই।

ৰাঙালী সুসলমান যদি আৱব-ভূকি বীরের গর্ক করে সে গর্ক মিধ্যা গর্কাই ছইবে।

বাংলা কাছাদের বাসকুমি? বহিষ্টক ও হরপ্রসাদ শান্তীর সহিত আমরাও বলি, বাঙালী আছবিশ্বত আতি। বাঙালী বিজের ইতিহাস ভরণ করে না বলিরা বাঙালী হিন্দু স্বদেশে পর-দেশী হইবার উপক্রম করিরাছে। সে আছবিশ্বত বলিরাই বিজেশে পাকিয়ানী প্রচারকেরা অনারাসে বলিতে পারে—The north-east zone which is our homeland…!

١

শুৰু ঐতিহাসিক কাল ধরিলে বাঙালীর ছই হাজার বংসবের ইভিহাস পাওয়া যার, সে তুলনায় ইংরেজ বা করাসী নাম সেই দিনকার জাতি। বাঙালীর ঐতিহ আরও চারি সহস্র বর্ষের প্রাচীন।

পুরাণের কথা এহণ করিতে অনেকের হয়ত ঐতিহাসিক সংকারে বাবে। প্রশিদ্ধ ঐতিহাসিক জরগাল পুরাণে প্রাচীন ইতিহাসের সভান করিয়াছেন। পুরাণবিং গিরীজ্পেধর বহু পৌরাণিক রাজবংশের কাল নির্ণর করিয়াছেন। জাতির জীবনে ইতিহাস অপেকা ঐতিহের গুরুত্ব অল নয়। মনের দিক দিয়া ঐতিহাসিক তথ্যের অপেকা ঐতিহের সভ্য বশব্দর।

স্তপাপুত্র বলি অন-বদ-কলিলের রাজা ছিলেন। অন-বদ-কলিল এই তিম প্রদেশ স্তল মাধে অভিহিত হইত। স্তল পাতালের অন্তর্গত। এই-পূর্ব্য ৩৪৫৭ অকে বলি রাজ্য করিতেন।

ভন্ন । এই-পূর্ব ২৮০০ ) ছুতলে যে গলা আনরম করেন তাহার নাম ভানীরবী। বর্ণাচ্য পৌরাণিক বর্ণনার অর্থ করিলে এইরূপ দালার।—গলার বারা পরিবর্তন করিরা বল্লুমে প্রবাহিত করিতে সগর মিল পুরের কর্তৃথানীনে যাই সহস্র কর্মা ও প্রমিক নির্ত্তন করেন। অর-অব্যাহিত নির্ভ্যাহিত কাল করিতে যাই হালার লোকই প্রাণ হারার। সেই বংশের উত্তর পুরুষ ভগীরব সগরের অসমাপ্ত কার্য্য সরাপ্ত করেন।—ইলা নিহক গর মর। বাংলার নদ-নদী বিশেষভাবে পর্যাহেক্ষণ করিবা Sir William Willcocks—এর মত ব্যাতনামা বিশরে-আজিত্যনা ইঞ্লিনীরর বলিরা গিরাহেন, ভাগীরবী প্রতিত্ত

প্রমাণ করে অতি প্রাচীনকালে হান্ত্রিক প্রতিভার বাঙালী অপ্রশ্ব ছিল।

ঐতরের রাজণে পৃত্রগণ এবং পৃত্রগরের কথা এবং ঐতরের জারণ্যকে বলগণের কথা পাওরা বার। রামারণ-মহাভারতেও পৃত্র, স্থল এবং বল জাভির বভাভ পাই। বৈদিক সাহিত্যে পৃক্ষাঞ্চলবাসী রাত্য পভিতরণের উল্লেখ জাতে। পতিত হইপেও ভাঁহাদের পাঙ্ভা জল ছিল না।

পূরাণ হইতে ইভিছাসে আসিলে দেবি এই-পূর্ব্ধ ৩২৬ আছে প্রভাগশালী গলারিটী এবং প্রানিব্রৈগণ (গলারাইী ও প্রাচ্যগণ) বাধাদান-কল্পে সন্ধবদ্ধ হইলে সেকেন্দ্রকে বিপাশা তীর হইতে প্রত্যাবর্তন করিতে হয়। ইহা হইতে বুঝা বায় সেকেন্দ্রের আগমনের বহু পূর্ব্ব হইতেই এক পরাক্রান্ত স্থসভা আতি গলার পূর্ব্বতীরবর্তী প্রদেশে বাস করিত। ভাষারা বর্তমান বাঙালীর পূর্ব্বপুরুষ।

কার্ট রাস, প্লুটার্ক, সোলিনাস, ডিরোডোরাস প্রস্কৃতি প্রাচীন থ্রীক-লাতিন লেখকগণের বিবরণ হইতেও কানিতে পারি, সমগ্র বাংলার ব-দ্বীপে সে দেশের এক পরাক্রান্ত কাতি প্রস্তীয় প্রথম-দ্বিতীর শতাকীতে বাস করিত। রাষ্ট্রকীবনে কুশুখল এই প্রাচীন বাঙালী কাতির স্থান্তিত এবং স্থান্তিত চত্:সহস্র হুতী-সৈত্ত ছিল। ইহাদের রাজবানী ছিল গালে; বন্দর ছিল ভাত্তলিপ্রি।

ভাত্রলিথি হইতে বহিপ্ত হইয়া বঙ্গের বাণিজ্যভারী এছ-জেশ, মলম উপদীপ, সুমাত্রা, বোণিও, বালি এবং যবদীপে গমন করিত।—বাংলার নৌ-বাহিনী ইভিহাস-বিশ্বাত।

বাংলার এক রাজপুত্র বিজয়সিংক ভারতের দক্ষিণে তালী-নারিকেল-কুঞ্জশোভিত দ্বীপে উপনিবেশ স্থাপন করেন। সিংক্ল নামের সহিত সে স্থতি কড়িত।

মলয়ে-উংকীণ চতুৰ-পঞ্চম শতাকীর এক শিলালিশিতে রঙ্গয়ন্তিকা অৰ্থাং রাঙামাটির অধিবাসী মহানাবিক ব্যত্তের নাম পাই।

বিখ্যাত নালন্ধা বিখবিদ্যালয় বলেই অবস্থিত ছিল। বলের সন্থান দীপত্বর ঞ্রিজান তিব্বতে জ্ঞানবর্ত্তিকা প্রস্থালিত করেন। চীন রাজ্যে বাঙালী পশ্চিত এবং বাঙালী বণিকের গতিবিধি চিল।

গুণ্ড-সাত্রান্দ্যের গৌরবের দিনেও চতুর্ব শতাবীর সমভট থাবীন রাজ্য হিল। ৬০৬ ইটাবে শশাহ গৌজের রাজা হুইরা বিভূত সাত্রাভ্য প্রাপন করেন।

শাষ্ট্রম শতান্দীর বাংলার এক আক্ষর্য ব্যাপার ঘটে।
মাংগুড়ার-প্রশীড়িত বাংলা দেশের প্রজাগণ নিজেনের মধ্য
হইতে এক নেতৃত্বপুত্রিত পুরুষকে শাসক নির্বাচিত করে।
তাঁহার নাম গোপাল। পাল বংশের আদিপুরুষ গোপাল রাজা
হইরা সম্প্র বাংলার শান্তি, শৃথলা ও স্থাসন প্রতিষ্ঠা করেন।
আজি হইতে হালশ শত বর্ষ পূর্বে জাতীর স্বার্থের মুহুছর

<sup>•</sup> History of Bengal, Vol. I, Ed. R. C. Majumdar. Chap. I and II, by Prof. H. C. Raychaudhuri

গ্ৰহোজনে ব্যক্তিগত স্বাৰ্থ বিসৰ্জনে বাঙালী কাতর হয় নাই। অষ্ট্ৰয় শতান্দীর বাংলায় যাহা বট্টয়াহিল অষ্ট্ৰায়ল শতান্দীর ইউরোপেও তাহা সম্পূর্ণ সম্ভব হয় নাই।

৭৭০ এটাবে রাজা হইরা ভাঁছার পুত্র বর্ষপাল উত্তর-ভারতে বিভ্ত সাত্রাজ্য স্থাপন করেন। আরব পরিত্রাজক স্লোমানের ৮৫১ এটাবে লিবিত স্বভাঙ্কে আছে, বর্ষপালের পুত্র রাজা দেবপাল পঞ্চাশ সহত্র হতী-গৈছ লইরা বিজয়-অভিযানে বাজা করিতেন।

(সন-বংশের বিজয় সেনের ( এ: ১০৯৫-১১৫৮ ) রাজ্য মিৰিলা পৰ্যান্ত বিভূত ছিল। তাঁহার পুত্র বল্লালনের নাম নানাবিধ সমাজ-সংস্থারের সহিত ভড়িত। বল্লালপুত্র লক্ষ্মণ সেনের রাজ্যতা কর্মের, বোরী, গোবর্জন এবং হলায়ধ অলম্ভত করিছেন। যৌবনে বলের সর্ব্ব সীমান্তে এবং সীমান্ত হইতে বহু দূরে বিশ্বয় অভিযান পরিচালনা করিয়া ভিনি গৌড়েশর উপাধি বারণ করেন। বার্ছক্যে তাঁহার শাসনে কোন चा कोर्यना अरवन करता। (प्रवे चारवारा कागारिकी कर्क रयाका महस्रक दर्श जिल्लात विश्वकि अवादताही रेजक-नह रेनन-व्यवगु-मङ्ग बाङ्ग(७३ वनविद्रम भरवद मन् दिया त्राभान সহসা নবধীপে প্রবেশ করে। এই আক্ষিক বিপদের গুরুত্ব উপপত্তি করিয়া লক্ষণ সেম পূর্ববৈঙ্গে প্রস্থান করেন এবং ভগায় রাকত করিতে থাকেন। বারহার লুঠনে নবধীপ কনশভ হইয়া পড়ে। তবুও পূর্ণ অর্দ্ধ শতাকী ব্যিয়া বলের এই প্রাচীন নগরী ভূকি অভিযান প্রহত করে। অস্বোদশ শতাব্দীর শেষ-ভাগ পর্যান্ত সেনবংশকে পূর্ববেদে রাজত্ব করিতে দেবা যায়। ভাহার পর বঞ্চের ইতিহাসে সেনবংশের নাম লুগু হয়।

ইহাই হইল বাঙালীর ছই সহস্র বংসরের অতি-সংক্ষিপ্ত ইতিহাস। ইহার পিছনে শ্রণাতীত কালের ঐতিহ্ন বর্ত্তমান। এই ইতিহাস গৌরবের, ইহাতে লব্দার কিছু নাই। যে প্রাচীন জাতি একদা প্রতাপে, জনধলে, সামরিক ঐথর্ষে এবং রাট্রক শ্রধায় দিবিজয়ী সেকেন্সরের স্তদরে ভীতির সঞ্চার করিয়াছিল, যে স্বাতি সহস্র বংসরেরও পূর্বে সার্ব্যক্ষীন কল্যাণ-কল্পে ব্যক্তিবার্থকে ধর্ম করিয়া প্রকাগণের মধ্য হইতে রাষ্ট্রপতি নিৰ্মাচিত করিতে বিধাবোদ করে নাই, যে ছাতির বৌদ্ধ শাসক ভিন্নৰৰ্মী প্ৰকার উপর অভ্যাচার করিত মা এবং ব্ৰহ্মণ্যৰন্মীবলমী রাভারা বৌদ্ধ হিন্দু প্রভার প্রতি সমভাবে ভাচরণ করিত, ৰে ভাতি দূরদূরান্তরে সমুদ্রযাত্রা করিত, যে ভাতি প্রশান্ত এবং ভারত-মহাসাগরের হীপে হীপে উপনিবেশ ছাপন করিয়া-হিল বে ভাতি ভাৰবভিকা-হতে তিকত চীন ভাপান খাম কাৰোকে সংস্কৃতির বিভার করিরাছিল, যে জাতির বাণিজ্যতরী দেশ-বিদেশ হইতে সৰ্বিভাৱ বহন কৰিবা আনিত, যে ভাতিব ভৱে প্রস্তুত অভি-ছম্ম বস্ত্র পরিধান করিতে সর্বাদার এবং সকল মহাদেশের পরাক্রাভ নুপভিগণ গৌরব বোধ করিত, **অতি হুৰ্মনাত্ৰ দিনেও বে ভাতিত্ব প্ৰতিভা**নৰ নৰ বিষয়ে

স্থাত স্ইয়াছে, ৰে জাতির মধ্যে বার্যার মহামানৰ জন-এহণ করিয়াছে, সে জাতির সাধনা বার্থ হইবে না।

3

ইহার পর বাংলার ইতিহালে বে রুগ আরম্ভ হইল ভাহাকে মুসলমানী আমল বলা হর। সপ্তঞাম ১২৯৮ এটাকে, পূর্কবদ ১৩২২ এটাকে এবং দক্ষিণ-বল ১৪৬৫ এটাকে বিভিত হয়। মোটার্ট চতুর্বল পতানীর মধ্যভাগ হইতে অটাকল পভানীর মধ্যভাগ পর্যন্ত এই চারি শত বর্ষ মুসলমানী আমল।

ইতিহাসের ছুই হাজার বংগর জুগনা ঐতিছের চতুঃসহস্র বর্ণের তুলনার মুগলমানী জামলের মাত্র চারি শতাকী কড়টুক কাল ? এই চারি শত এবং কোগাও কোগাও গাড়ে চারি শত বর্ণের লাসনকে বিবর্মীর লাসন বলা বাইতে পারে, বিদেশী লাসন বলা চলে না। কেন না এইকালে যাহারা রাজ্য করিরাছে ভূর্ক-মোগলের বংশবর হইলেও ভাহারা এই দেশের জবিনামী। পূর্ব্ববলে আজ ইসলামবর্মীরা সংব্যাগরিষ্ঠ। ভূর্ক জভিযানের ইতিহাস পর্ব্যালোচনা করিলে একট বিষয়ে বিশেষ লক্ষ্য পড়ে ভাহা এই—১২০২ প্রীঠাকের নবনীপ আক্রমণেই পাঠান আগমনের হুচনা বর্টে, কিছ নবনীপে নর লক্ষ্যাবতীতে বর্ণভিয়ার নিজেকে প্রভিটিত করে। "বর্ণভিয়ার কর্ত্বক লক্ষ্যাবতী অবিশ্বত হইলে সপাদ শতবর্ণ করিয়াহিলেন।" ক্

চতুর্দশ শতাবীর দ্বিতীর দশকে অবিশ্বত হইলেও পূর্ববদ বুসপমানপ্রবান হইল কেন ? বলিরাছি বাংলার তুর্ক-যোগলের লাসন-কাহিনী বাংলার পরাবীনতার ইতিহাস নহে। তুর্কেরা বাংলার বিদেশী রহিল না। সত্য । কিছ ইতিহাসের বারা একাছভাবে পরিবর্তিত হইরা গেল। হিন্দু বৌছ আমলে বাংলার রাষ্ট্রেও সমাকে বিচ্ছেদ ছিল না। মুসলমানী শাসমে সমাজ পাবীন রহিল বটে, কিছ রাষ্ট্র বিব্দ্ধীর করায়ও হইল। রাষ্ট্রে তিরবর্ত্তীর প্রাবাদ্ধে সমাজের উপরও আঘাত পঢ়িল। রাষ্ট্রেও সমাজে একটা সংবর্থ বাবিয়াই রহিল। যে জাতি সম-উপালানে গঠিত ছিল ভাহা বিষম হইরা উঠিল। প্রথম দিকে বাহা ঘটন ভাহা রালালগার বজ্যোপাব্যারের "বালালার ইতিহাস" হইতে উদ্ধত করিতেছি।

"বিব্দার সহিত বৃদ্ধ বুসলমানের পক্ষে বর্ণমুদ্ধ, মুসলমান সেনা অবলর পাইপেট হিন্দুরাজ্য আক্রমণ করিত। কবনও সন্ধি হাপিত হইত না, প্রতরাং বুসলমানরাজ্যের সীমাভছিত হিন্দুরাজ্যে লাভি ছিল না। বুসলমানগণ হিন্দুরাজ্যপূর্তন অভার মনে করিতেন না। বিলেষতঃ তুরক জাতীর বুসলমান ধ্বংসেও সূঠনে বিলেষ পারদর্শী। বুসলমান রাজ্যের সীমাজে অবছিত হিন্দু রাজ্যের প্রাম ও নগরগুলি অচিরে ধ্বংস হইত।" এমনি করিরা মুসলমান রাজ্যের বিভূতি ঘটল। রাজ্য

<sup>•</sup> History of Bengal, Vol. I, Chap. IV, V, VI by R. C. Majumdar

বিভারের সঙ্গে বর্ষবিভারেও একটা বোগ রহিরা গেল। বিজেপ হইতে ভাগ্যাবেশে আলিরা বাহারা রাজত প্রতিটা করিল তাহাদের বংশর্ডির জভ বে শাসকবর্ষীর সংখ্যা হৃছি পাইতে লাগিল তাহা বর, বর্ষাভ্রীকরণ এবং বর্ষাভ্রপ্রহণ ইহার মুখ্য কারণ।

বাংলাদেশ নানা কুদ্র বও রাজ্যে বিভক্ত হইল। হিন্দু রাজা ও কমিদারগণও অনেক ছানে প্রার বাধীন হইরা রহিল।

চতুর্ঘণ শতাধীর শেষভাগে অথবা পঞ্চল শতাধীর প্রথম ভাগে রাজা গণেশ পরাক্রান্ত হইরা গৌভের সিংহাসনে আরোহণ করেন। আনকে তাহাকে অভ্যন্তমর্থন দেবের সহিত অভিয়মনে করেন। রাজা গণেশের নাম বাঙাগীর নিকট চিরশ্বরশীয় হইরা থাকিবে:

"রাজা গণেশের সময় হইতে গৌড়ে ও বদে পুনরার সংখ্রত চক্ষা আরম্ভ হইরা ছিল এবং বাংলা ভাষার উন্নভিত্ত শুচনা হইরাছিল। এই সকল কারণের জন্ধ গণেশ বাংলার ইতিহাসে, ভারতবর্ষের ইতিহাসে ও ভারতীয় সাহিত্যের ইতিহাসে উচ্চালন লাভ করিবাছেন। সম্ভবতঃ ১৪১৪ প্রীপ্তাকে তাহার বৃদ্ধা হইরাছিল।"

"মুসলমান-বিশ্বিভ ভারতে বহুকাল পরে একজন হিদ্
রাজা পরাক্রাভ হইরা উঠার গৌডদেশের মুসলমান সম্প্রদার
অত্যন্ত বিচলিত হইরা উঠিরাছিল। গৌড় ও বলে নিমশ্রেণীর
জনসমাজ মুসলমান শীর ও ক্কীরগণের অত্যাচারের তরে,
মুসলমান বর্ষে হিন্দুবর্ষের কঠোরতার অতাব দেখিয়া এবং
মুসলমান-শাসিত রাজ্যে উচ্চজাতীর হিন্দু অপেকং মুসলমান
বর্ষাবলধী ইতর শ্রেণীর ব্যক্তিগণের অধিকতর সমাদর দেখিয়া
মুসলমান-বর্ষ অবলম্বন করিয়াছিল। এই সকল নিমশ্রেণীর
মুসলমান-সমাজে রাজা অপেকা শীর ক্কীর মুরসিদ প্রভৃতি
উপাধিবারী বর্ষাজকগণের প্রভাব অভাভ অধিক ছিল।"

অভএব উছ্ভি হইতে পাই, নিয়শ্রেণীর জনসমাজ বর্ণান্তর এছণ করিরাছিল। বর্ণান্তর এছণের কারণ—(১) অভ্যাচারের ভয়, (২) রাষ্ট্রের পৃষ্ঠপোষকতা, (৩) প্রলোজন এবং (৪) ইসলামে হিন্দু বর্ণের কঠোরভার অভাব। এই সকে আর একট বটনার উল্লেখ করিলে ব্যাপারট পরিকার ছইবে। বৈকব সাহিভ্যে অভিজ্ঞ ব্যক্তিগণের নিকট ঘটনাট অঞাভ নছে।

আরও এক-শ বছর পরের কথা। চৈতছদেবের কাল। হোলেন শাহ্তধন গোড়ের অধিপতি।

"ক্ষানন্দ রচিত চৈত্তখন্দলাত্সারে গৌড়েখন হোসেন লাহ্ এক সময় শুনিয়াছিলেন বে প্রবাদাত্সারে নবধীপের রাজ্যপদ মুসলমান রাজ্য থবংস করিয়া হিন্দু রাজ্য প্রতিঠা করিবে এবং গৌড়নগর অধিকার করিবে।" "বাদশাহের আদেশে লিপ্লসাগ্রামনিবাসী মুসলমানগণ নবধীপবাসী রাজ্য-গণের উপর ভীষণ অভ্যাচার আরম্ভ করিয়াছিল।" "নবৰীপে শথধনে ভবে যার ধরে।
বনপ্রাণ লয় ভার ছাভি নাশ করে।
কপালে ভিলক দেখে যজ্জুল কাৰে।
বর্ষার লোকে ভার লোকপাশে বাবে।
পিরুল্যা প্রামেভে বৈসে যভেক ধবন।
উচ্ছর করিল নব-দ্বীপের রাজ্ঞণ।"†

সে কালেও বাঙালী প্রতিভা যে ধর্ম হর নাই, প্রীচৈতভের আবির্ভাব ভাছার প্রমাণ। বৈক্য সাহিত্য ও বৈক্য দর্শন প্রমাণ করে, রাষ্ট্র হারাইয়াও হিন্দু বাঙালী সংস্কৃতির ক্ষেত্রে আপনার প্রেষ্ঠত্ব প্রতিষ্ঠা করিয়াছে। বৈক্য বর্ষ ইসলামের প্রাবন হইতে বাঙালীকে রক্ষা করিয়াছে।

দীনেশচন্দ্ৰ সেনের মতামুসারে চৈতছদেবের আবির্জাবে বাংলা দেশের একটি সামাজিক সমস্থা পূরণ হইয়াছিল। তানৰ প্রচলিত ধর্মে বর্ণাপ্রম বিচার ছিল না। পূর্ব্বে সমাজভাই ও জাতি এই নরনারী প্রস্ক্রা প্রহণ করিয়া বৌদ সজ্পে আব্রের লাভ করিছে। বৌদ বর্ম্ম প্রপ্রায় হইদে এই সকল নরনারী নিরূপায় হইয়াছিল। ইহারা প্রস্তীয় প্রদেশ শতাজীর শেষভাগে ও বোদ্ধল শতাজীর প্রথম ভাগে বাংলা দেশে নেড:—নেডী নামে পরিচিত ছিল। নিত্যান্দ্র ও অহৈত;চার্হা এই সকল ভিন্দু ও ভিন্দুবাগণকে নবীন বৈশ্বৰ ধর্ম্মে দীক্ষিত করিয়া উদ্ধার করিয়াছিলেন। "প্র

হরপ্রসাদ শাস্ত্রীর মতে এই অবঃপ্তিত বৌষ্ণণ হিন্দু-সমাজে প্রবেশ করিতে না পারিয়াদলে দলে ইদলাম ধর্ম গ্রহণ করিতে আরম্ভ করে। পূর্ববঙ্গে মুসলিম সংখ্যাধিক্যের ইহাও এক কারণ।

বিটিশ যুগে একদঃ ইংরেজী-শিক্ষিতদের মধ্যে জীশান হইবার ধুম পভিয়া সিয়াভিগ। রামমোহন-প্রবর্তিত রাজ্বর্শা ইপ্রীধানিটির সেই গতিরোধ করিতে সমর্থ হয়। ক্ষণমানী আমলেও সমাক্ষারা বৌধগণকে আপনার আত্ররে টানিয়া লইয়া বৈক্ষব ধর্ম হিন্দু সমাক্ষকে ইসলামের প্লাবন হইতে বক্ষা করে।

পরধর্মের আক্রমণ হরতে আত্মরকার হুট মাত্র উপায়
আছে। এক একাছ সংরক্ষণীপতা যাহার কঠিন আচ্ছাদন
আথাতকে প্রহুত করিবার সামর্থ্য দেয়। আর-এক অতি
উদারতা যাহার বলে নিজেদের মধ্যে সকল বিভেদ সৃপ্ত হইমা
সাম্যের প্রতিষ্ঠা হয়: বাঙালী আত্মহক্ষার হুই উপায়ই
অবলম্বন করিবাছিল। (১) তাহার সামাজিক কঠোরতা,
বাব্যতামূলক বিধি-নিষ্ধের এই রক্ষণীলভার রক্ষাক্ষচ।
(২) বৈহ্বের সর্বজীবে সমৃদ্ধী এবং জাতিভেদবিলোণ এই
উদারনীতির অপুর্ব্ব উদাহরণ।

মোগল মুগে বাংলার রাই ক্রমেই ঐক্যবদ হইতে লাগিল বটে, কিছ রাই ও সমাজের অভবিবোৰ ঘুচিল না। সমাজের গতি সভার ও ভিন্নাই হইয়াই বহিল।

পরবর্ষে অসহিস্কৃতা সেমিটক জাতির একট লক্ষণ। সেমিটক আরবেই ইসলামের উত্তব । সেমিটক মা হইলেও

ৰাদালার ইতিহাল, বিভীর ভাগ ( ১৩২৪ ), রাণাল্যাল বন্দ্যোপাব্যার

<sup>† &</sup>quot;বালালার ইভিহাস", পু. ৩০৭

এই বৰ্ষ গ্ৰহণ করিবার সজে সজে অঞাত দেশের নবলীকিত নুসলমানেরা সেমিটক অসহিফুতার অধিকারী হটল। বল-পূর্বকে বর্ষান্তরীকরণ, বিধর্মী-নিপীড়ন, ঘবর্মীর প্রতি আতান্তিক পক্ষপাতিছ, দেবমন্দির-ব্যংস প্রভৃতি এই অসহিফুতারই বিভিন্ন প্রকাশ। ত

আর্থ্য হিন্দু ভাবিতে পারে, কোন বর্গাই তুচ্ছ নয়, এক বর্গা অন্ত বর্ণোর তুলনায় হীন নয়, সকল বর্ণোর মব্যেই সতা আছে। ইতার সহিত বাইবেল এবং কোরাণকেও সে একা করিছে পারে। বেদ, আবেভা অববা ত্রিপিটককে কোনরূপ মর্থ্যাদা দেওরা একায়ভাবেই সেমিটক-মন্দোভাবাপর মুসলমানের প্রস্তুতি-বিরুদ্ধ। বিষয়ীর প্রতি বিরুপ্তাই ভাহার সভাব।

বলবিজ্ঞার অভিযানে যাধার। এ দেশে আসিরাছিল সলবন্ধ হউলেও পরিবার-পরিজ্ঞা-সহ সংখ্যার ভাষ্থারা করেক লক্ষ্যান্ধ। সেই সব তুর্ক-মোগলের সন্তান-সন্ধতি বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হউয়া করেক শতাকীতে সমগ্র প্রদেশের জনগংখ্যার অর্জেক অভিজ্ঞা করিতে পারে নং। আদমসুমারীর বিবরণে দেখিতে পাই, মুসলিম কৃষ্ণিকী সংখ্যার্থলা প্রক্রুত্তপক্ষে ঐ ধর্মাবলধী জনসাধারণ ধর্মান্তরিত্তদেরত বংশধর।

শ্বেল: হিসাবে নোয়াবালি বিশেষভাবে মুসলিম-সংখ্যাগবিষ্ঠ। পূৰ্বে এই ভেলা যে সম্পূৰ্বভাবে হিন্দুর আবাসস্থল
ছিল এট্যের নামগুলিই তাহার প্রমাণ। মহাস্থার প্রমীপরিক্রা উপলক্ষে যে সকল নাম সংবাদপত্তে প্রতি দিন
দেবিতে পাই তাহাদের স্বত্তনিই সংস্কৃত; আর্বা, কার্সী বা
উহ্নাম এ প্রান্ত প্রত্যক্ষ করি নাই। পল্লীবাসীরা পূর্বে
হিন্দু ছিল বলিয়া গ্রামের হিন্দু নাটেই মহিলা সিয়াছেন ভব্
কন্যাবারণ ভুক-যোগলের আম্লে বর্গান্তরে দীক্ষিত হইয়াছে।

বাথ্রে বাবিকার প্রতিষ্ঠা করিতে সামান্ত্রিক জাবে নিশীছিত হিছু মোগল-মুগেও অল চেষ্টা করে নাই। সে সব ব্রভান্ত ইতিহাসের গৌরবময় কাহিনী। প্রতাপাদিত্য, চাল রাষ, কেলার রায়, সীতারাম রায়ের নাম বাঙালী চির্দিন প্রভার সহিত অরণ করিবে।

ভিন্নবর্গাবলগীদের একয়-বাস একেবারে নিক্ষণ হর নাই।
ধর্মবিধেষ অতিক্রম করিয়া পরস্পারের প্রতি সহজ মানবিক
সহাত্ত্তিত বীরে বীরে জয়ী হইতে আরম্ভ করিয়াছিল। এ
দেশকে জন্মভূমি বলিয়া, প্রতিবেশীকে বছু বলিয়া এবং একই
অবহার মধ্যে বাকিয়া বর্গানিবিলেধে পরস্পারকে সমস্থতঃবভারী বলিয়া মুসলমানেরা ভাবিতে শিবিয়াছিল।

এইরপ মনোভাবের মধ্যে হিন্দু-মুসলমান উভর সম্প্রদায়ের পরামর্শদাতা এবং পারিষদবর্গের চক্ষান্তে বাংলার শেষ খাবীন নবাব হতভাগ্য সিরাক্দৌলার জীবন ও রাজধ্যে অবসান হইল।

0

বংশর রজমধ্যে পটপরিবর্তন ছইল। বণিকের মানদও রাজদতে কণাভরিত ছইল। যাহারা রাষ্ট্রের অবিকারী ছিল এবং যাহারা দে অবিকারে বকিত ছিল তাহারা উভযেই বিদেশী শাসনের অধীন হইল। পরাধীনতার নাগপাশে বছ হইছা হিন্দু-মুসলমানের চারি শত বংসরের বিভেদ চুর্ণ হইছা সেল।

পলাপীর ব্যের শতবর্ব পরে এই বিধেশী শাসন-পাশ হইতে নিজেদের বৃক্ত করিবার বে বৃক্ত চেটা হয়, ইংরেজ ঐতিহাসিকগণ ভাহাকে 'মিউটিনি' নামে অভিহিত করিয়াছে। সেই বৃক্ত অভাবান বাহিরে ব্যর্থ হইল বটে, মনের মধ্যে সে বিপ্লবের ক্রিয়া রহিয়া গেল। নীল-বিজোধের সময় হিন্দু-মুসলমানের এইয়প একাম্বভা আর একবার দেখিতে পাই।

বিদেশী শাসক ইহা হইতে একটি শিক্ষালাভ করিল।
উত্তর সম্প্রধারের মিলনে দেশের লোকের শক্তিবৃদ্ধি হয়।
নাঞ্জারাদ বজার রাশিতে গেলে প্রকাশনারণের মধ্যে
ভেদস্টিট শাসন করিবার প্রেষ্ঠ উপায়।

রামমোহন রাধের সময় হইতে বাঙালী করালী-বিপ্লধকে প্রছা করিতে লিবিয়াছে। পাশ্চান্তঃ লিক্ষার কলে বিপ্লবের প্রতি এই প্রছা জ্রমেই বর্ষিত হইতে লাগিল। সাম্য-খাবীনতা-মৈন্ত্রীর বাই লিক্ষিত বাঙালী বেমন করিয়া গ্রহণ করিল এসিয়ার কল কোন কাতি তেমন করিয়া গ্রহণ করে নাই।

শিক্ষিত বাঙালী বলিতে এবানে বাংলার শিক্ষিত হিন্দুকেই বুকিতে হইবে। আবহুমানকাল উচ্চপ্রেণীর হিন্দুর মধ্যে শিক্ষার প্রদার ছিল। বাংগারা চাম-বাস বা হাতের কাজ করিয়া জীবিকা অর্জন করিত ভাষারা কোনকালেই শিক্ষা-লাভে ব্যক্ত ছিল মা। মুসলিম জনসাবারণ প্রায়শঃ ইহামের মব্য হইতেই বর্ষান্তরিত।

অতএব হিন্দু ও মুসলমান কনগণের মধ্যে নিকাহীনতা-বিষয়ে বিশেষ পার্থক্য ছিল না। আজও নাই। হিন্দুদের মধ্যে উচ্চশ্রেষীর সংখ্যাবিক্য বশতঃ নিক্ষিতের সংখ্যাও অবিক। বিটিশ মুলে গোড়া হুইতেই উভয় সম্প্রদায় শিক্ষার সমান সুযোগ পাইয়াছিল। হিন্দু সে সুযোগের সধ্যবহার করিয়াছে, মুসলমান করে নাই।

শাসন-যথের প্রপরিচালনার জ্ঞ শিক্ষা-বিভারে সরকারই তবু আগ্রহণীল ছিল না, শিক্ষাগ্রহণে মধ্যবিত্ত হিন্দুর ব্যক্তা প্রবিদিত। সেই উৎসাহে এবং সেই প্রেরণার উনবিংশ শক্ষান্ধীর প্রথম ভাগ হইতেই বাঙালী হিন্দু সর্বাত্র শিক্ষা-প্রতি-ঠান গড়িয়া আসিরাছে—সরকারী সাহায্য নিরপেক্ষ ভাবে, গ্রীয় অবে এবং খীয় সামর্ব্যে। শিক্ষার ক্ষণ্ঠ হিন্দু বাঙালীর শভাকীব্যাণী বদান্যভার কর্বা: সবিভারে বলিবার প্রয়োজন নাই। মুসলমান দাভাদের মধ্যে একমাত্র মহম্মদ মহ্মীন ভিন্ন প্রস্পর্কে নাম করিবার মত কে আছে ? আছও অবিকাংশ শিক্ষা-প্রতিঠান হিন্দু বাঙালীর অবে চলিতেছে।

পাচ্চান্তা শিক্ষার কলে হিন্দুর মনে হও রাইচেত্রা জাগিয়া উঠিল। দেশাল্ববোবে তাহার মন পরিপূর্ণ হইল। হিন্দু কবি কহিলেন,

দেশের কুরুর বরি কত মত ম্বেস্থ করি
থিদেশের ঠাকুর কেলিয়া।
পরাবীনভার বেগনার কাতর কবি বলিলেন,
স্বাবীনভা-শীনভার কে বাঁচিভে চার হে, কে বাঁচিভে চায় ?

বিদেশী বণিক বাংলার মসনদ মুসলমান নবাবের হাত হুইতেই কাজিলা লইলাহিল। আদ্দর্যা এই, সার্থ-শতাধিক বংসরেল মধ্যে, হুলে-বলে-কোশলে বিজলী ইংরেজের উপর বাংলার মুসলমান কোম দিনই রুপ্ত হর নাই। তাহার জ্যোব হিন্দুকেই বার বার সহিতে হুইরাছে। ইংরেজ বাহাকে পেট্রিরটজ্ম' বলে, আমলা বাহাকে পেশপ্রেম আব্যা দিই, তাহার প্রকাশ উক্ত সম্ভাগরের মধ্যে কচিং দেখা সিলাছে।

নীতি-নির্ণ হৈ সামাজ্যবাদীর ইহাতে বছ প্রবিধা হইরাছে। হিন্দু বাঙালীর এই রাই-চেতনা উনবিংশ শতাবীর শেবতাগে ববন কংগ্রেসের আভার বারণ করিয়া সর্ক্ষ-ভারতীয় হইবার উপক্রেম করিল, সামাজ্যবাদী তথন সন্ধান হইরা উঠিল।

ইংরেজের নীতি বীরে বীরে বৃধি পরিপ্রক্ করিয়া ১৯০৫ সালে বছবিভাগ-রূপে আত্মপ্রকাশ করিল। 'পার্টপনে'র গোড়ার কবা এই।—বিংশ শভাকীর ত্মনা হইতেই ইংরেজ্পাই ব্বিরাছিল, রাজনৈতিক আলোলনকারী হিন্দুর প্রভাব হইতে ছত-গৌরব রাজভক্ত রুসলমানকে পরাইয়া লইতে মা পারিলে রক্ষা নাই। প্রদেশ বিভাগ করিয়া ত্মন হইল ক্ট-নীতির কৌশলজাল-বিভার, কুলারী-ক্ষনা-রঞ্জিত হরোরাই হরোরাইর বেলা, fayourite wife policy-র প্ররোগ। বিজ্ঞো ইংরেজের সে আবরে নবাবী-বল্প-নার রাজভক্তেরা উংকুল হইরা উঠিল। সাম্প্রদারিকভার বীজ বল্পদেশই প্রবাধ উপ্ত হইল।

ভারণর আসিল মাল-মিন্টো বিকর্ম। সাম্প্রদায়িক নির্বাচন প্রবর্তনের জন্য ১৯০৯ সালে বছলাট মিন্টোর আঞার আগা বাঁর নেতৃত্বে এক রুসলিষ ভেণ্টেশনের অভিনয়—এক command performance অষ্ট্রিভ হইল। বিষয়কে কুল কুটিল।

ৰক্টেও-চেমগ্ৰেগত বিকৰে গে নীতি কাষেম হইয়া দেখা দিল। তারপর আসিল র্যামণে ম্যাকভোনাকের সাজালারিক নিশাভি—Communal Award। যিনি প্রধান মার্লমের মোহে জীবনব্যাপী সাধনা ও ব-দল ভ্যাগ করিতে কৃষ্টিভ হন নাই, অনিজুকের উপর এই নিশাভির আরোপ ভাহারই উপরুক্ত। বিষয়কে কল বরিল।

বিতীয় গোল টেবিল বৈঠকে 'নাধা চেকে' সহি দিতে রাজী হইয়াও নহাছা গাড়ী সাক্রধায়িক মুসলমানদের সহযোগিতা লাভ করিতে পারিলেন না।

বৃচ সহয়ের অভাব উতুত কংগ্রেসের না-গ্রহণ না-বর্জন নীতির কলে সাম্রেলারিকভার শিক্ত রাই-ভিডির বৃদদেশ পর্যন্ত শৌবিল। ১৯৩৫ সালের জ্যান্ত শাবা-প্রশাধা বিভার করিরা বিবর্জ বহাক্রমে পরিণত হইল। ক্যাবিনেট বিশনের দৌতোও এ নীভির ব্যতিক্রম হর নাই। পূর্ব্জ-পশ্চিম পাকি-ছানের পরিবর্জ-স্বরূপ বৃদ্দামান-সংব্যাগরিত বি-প্রপ ও সি-প্রশেষ পরিক্রমনা করা হইরাছে। তের-মন্ত্রের কলে সাম্রাজ্যবাধীর প্রপ্রের সাম্প্রদারিক পাকিছান অর্থাং বিভক্ত ভারতের লাবি ভীত্রতর হুইতে ভীত্রতর হুইরা উঠিবাছে।

अर्थं कविनाम मा वर्ष्क्मक कविनाम मा. देशांत क्यांन भएक ताक्किक व्यविकास वर्ष्क्रमा वर्ष्क्रमा क्रेसारह ।

অৰ্থ নাই। বাহা মৰ, বাহা অন্যায়, বাহা পাপ ভাহার প্রতি
নিরপেক থাকা ভাহাকে প্রপ্রার বেওরারই নামান্তর। বাহা
বর্জন করিলাম না ভাহা আপনিই গৃহীত হইরা পছে। ক্র
অহম বীক কোন কাঁকে বর্ধন দেউলের কাইলে আপ্রয়লাভ
করে ভবন প্রাচীর বিদি বলে, "ভোমার প্রহণও করিব না
ভ্যাপও করিব না," ভাহার ফল এই হাভার, বীরে বীরে
অহ্রিভ হইরা বৃক্ষ বর্ধন বাভিরা উঠে ভবন শিক্ষের
সাংখাভিক বন্ধন হইতে সে আর আপনাকে মৃক্ষ করিভে
পারে না।

এই নেতিমূলক অদ্রদর্শী নীতি বিধা ও দৌর্জন্যের পরিচারক। এই চুর্জনতার অ্ববাসে সাম্ভদারিকতার বিষ সমাজ-দেবের সর্জাদে ছড়াইরা পঢ়িরাছে। আজ যে দারুণ সমজা দেখা দিরাছে তাছা ইহারই পরিণতি। ধিশা-সঞ্জাত বলহীনতার কলতোর করিতেই ছইবে।

ছুৰ্বলের নিকট বলবানের দাবি বাছিরাই চলে। শক্তিহীন সেই বৰ্ত্বমান দাবিকে কোন কালেই মিটাইতে পারে না।

সারাজ্যবাদীর প্রশ্রের পাকিস্থানের দাবি অতি উপ্র আকার বারণ করিবাছে। বিদেশী শাসকের এ পক্ষণাত কেন? প্রথমতঃ, গে জানে কাঁচা দিরাই কাঁচা তুলিতে হর। সারাজ্যবাদের পথে হিন্দু কণ্টক-স্করপ। বিতীয়তঃ, দেশকে ভালবাসা বিদেশী শাসকের চক্ষে অপরাধ। বিপ্লবী হিন্দু বাঙালীর শান্তি এই, চিরদিন ভাষাকে সংখ্যালধিঠকণে ভাতীয়তা-বিরোধী লীগ-শাসনের নিকট মাধা নত করিয়া থাকিতে হইবে।

বিদেশী ইরোরোপীর বাংলার জনসংখ্যার ভূলনার শতকর।
'০১ অর্থাং প্রতি দশ সহস্রে একজন। কিন্তু ব্যবস্থাপক সভার
ভাহারা শতকরা দশ জন। অর্থাং ২৫০ জন সদস্তের মধ্যে
২৫ জন ইরোরোপীর।

ইরোরোপীর প্রতিনিধির সংখ্যাবিক্যের কারণস্বরূপ বলা হইরা থাকে, এথানে তাহাদের স্বার্থ বিপূল, সপ্রদার হিসাবে অক্সম্বত্ত অধিক। সংখ্যাস্থপাতে তাহাদের মাপা চলিবে না। এ বৃক্তি অভ কোন সম্প্রদার সম্পর্কে প্রযোগ করা হর কি?

হিন্দু সমাজের দিকে চোধ কিরাইলে কি থেবি ? থেপের সার্বাক্তিক ক্লেন্তে হিন্দুর কৃতিছ অসাধারণ।

এ সন্তালারের অবিকাংশই জাতীরভাবালী। সন্তালারগত বার্থ তুলিরা বিদেশী শাসকের হাত হইতে ক্ষমতা অবিকারের প্রবল প্রচেষ্টা বাহারা করিয়াছে ভাহারের অবিকাংশই হিন্দু। বদেশী আন্দোলন হইতে নেতাজী স্কাবচলের ঘাবীন হিন্দু শালনভৱের প্রতিষ্ঠার হিন পর্ব্যন্ত হিন্দু বাঙালী বে ভ্যাগ বীকার করিয়াছে ভাহার ভুলনা নাই। জীবন, মান, মণ, আর্ব, প্রবা, খাজ্লা, ভুল্ল করিয়া লে বৈত বরণ করিয়াছে, হালির্বে কাসীরকে আরোহণ করিবাছে। এই অপরিসীন ভ্যাগের কলে নিবিল ভারতের প্রক্রাইন অবিকার অর্জনের পর ভ্রম্ন চাইনারে।

সংস্তির ক্ষেত্রে বিশু বাঙালীর অবহাব অভুলবীর। ভূলিয়াহে। যেবাবে সংখ্যারতার প্রশ্ন প্রশ্নই বর, সেই লব वानवारमं, त्यत्वनाय, बानत्यायाम, रविक्वत, बानक्क, বিবেড়ানন, বিদ্যাসাগর, কেলবচন্ত্র, মবুছদন, বভিষ্চত্ত, चरतक्षमान, जानसरमारन, त्रनीखमान, मतरहस, बरकस मन, भवनिम, मननीनहळ, बाजूबहळ, बाज्यिकावी, भाकरणाव, हिस-वश्रम, विभिन्नक्ष, जनमीखनाय, प्रकायक्ष-जीवत्वव विविध ক্ষে ইংাদের মত পুরুষ কোন দেশে এক পভাষীতে সমুষ ক্ষরাহে। বর্ষসংখারে, রাকানীভিতে, বাগ্মিতার, শিকার, गारित्छा, विकास, कनाव, भागम विकास, विकास विकास, আইনে চিকিংলার---জীবদের সকল ক্ষেত্রে হিন্দু বাঙালী প্রতিষ্ঠা-লাভ কৰিবাছে। শিক্ষা ও স্বাস্থ্য প্ৰতিঠান, সেবা ও বৰ্ষ প্ৰতি-ঠাৰ, বৈজ্ঞানিক, রাজনৈভিক, সাংস্থৃতিক, আছক্ষাভিক প্রভৃতি मामाविद श्रीकृष्ठी म प्रकृति बाढानी दिन्दे चश्री प्रदेशायः।

সারা বাংলার চার ভাগের ভিন ভাগ রাজ্য ও কর একা रिक्रे अमान करता

আৰিক, সাংগতিক, রাজনৈতিক এত শুরুত্ব সন্তেও ব্যবস্থাপক সভার তাহার আগন ৮০ মাত্র, মুসলিম ১১১। আব্দক্ষানীর প্রদায় বর্ত্ত্যানে বাংগার হিন্দু অপেকারত সংখ্যাল । মাইনৱিট হিসাবে প্রতিনিবিছের অনুপাত তাহারই বেশী হওৱা উচিত ছিল। বাংলা সন্দৰ্কে ইহার বিপরীত बावहारे व्यविष्ठ शारे। সংব্যালখির সম্প্রদার হইরাও অছ-পাতের তুলনার ব্যবস্থা-পরিষদে হিন্দু অল, মুসলমান অবিক।

বাংলা এক সমস্তাৰীভিত প্ৰদেশ। অভাত সমস্তা সৌৰ, विषि नागत्मत कन्यात माख्यमात्रिक ममञ्जादे पूर्व प्रदेश এই প্রধান প্রশ্নের সমাধান হইলে দেশের স্বানীনভার পথ সরল হইত।

ইহা যদি একান্ত প্রাদেশিক ব্যাপার হইত তাহা হইলে ভোষ কৰা ছিল না। বাংলা নিৰিল-ভারতের অংশ মাত্র নত্ত তাহার অদ। এই অহাদী সহতে সহত বলিয়া বাংলার প্রশ্ন সমগ্র ভারতের প্রশ্ন। ভারতীয়তা-বোধ বাঙালীয় মধ্যেই প্রথম উৰ্ভ হইরাছে। বাঙালী কবি প্রথম ভারত-দলীত গাছিরাছে। ঘটাত প্রবেশের লোকেরা তাবিরা মরে, বাংলার এত ঘল কেন ? বাংলার সমভাকে নানাভাবে সমাবান করিতে সিরা नामा-मजाननशीत एक स्टेशाट । वारमात नमजारक अकारेश बारेफ भिर्म कावरकव ध्याम धरत्रव धिक पृष्टे वृपिक क्रिएक হর। এই কথা উপলব্ধি করিতেন বলিয়া ভারতবর্বের শ্রেষ্ঠ দায়ক প্ৰাৰ্চল বলিভেন, বাংলা বলি ময়ে ভ কে বাঁচিয়া वाकित्व, वाश्ना यनि वाटा छ त्क-रे वा मन्नित्व ?

সর্বা-ভারতের সকল বেতা এই প্রশ্ন সহছে সম্পূর্ণ সচেত্র হিলেৰ যা বলিহা না-প্ৰহণ না-বৰ্জন মীতি প্ৰহণ করিতে পারিরাহিবেন। ভবি ভাহাতে ভোলে নাই, কিছ এই আছ ৰীতি, ভারতের বাধীনভা-সমস্যাকে অভ্যন্ত কটন করিয়া

व्यक्तिय रिक् काराय्य रहे निवय दिन । काराया कारिएक. প্ৰস্যাৰ্ক বুক্তপ্ৰবেশ, বোৰাই, মাত্ৰাক বৰি শাসন্তৱের অধিকারী হয়, বাংলা ও পঞ্চাবের কৰা পরে বিবেচনা ক্ষিলেই চলিবে। পুৰক নিৰ্কাচনের বিরুদ্ধে গোড়াভেই ভারতব্যাপী এবদ আপত্তি উবাপিত হইলে আজিভার সাধীৰতা-সমস্যা এমৰ শুক্লতর আকার ধারণ করিত না।

नुषक निर्काटमञ्ज ऋरवार्थ वाश्माद चाक वर्ष परमंत्र मीन শানন প্ৰতিষ্ঠিত হইবাছে। এই দশ বংসৱে বাঙালী সৰ্বাহাৰ হইতে বসিয়াছে।

অবোগ্ডার অপেকা দাসন-সন্দর্কে শুরুতর অপরাধ আর নাই। শাসনভৱের সর্ক্রিভাগে এই অবোগ্যভাই আজ ক্ষী। রাই সুশাসিত না হইলে ক্ষুসাবারণের ক্ষীবন্ধারা ছুদ্র হইরা উঠে। ব্যবস্থাপক এবং শাসক্রপের স্থবোগ্যতা সুশাসনের অপরিহার্য্য অহ। সাম্প্রদায়িক অনুপাতের জ্ঞ ৰোগ্য কাকে ৰোগ্য ব্যক্তি নিৰ্ব্বাচিত হৰ না। স্থৰোগ্য না स्टेबाक मल्लाय-विट्नारय जन्म स्टेशक मामय-विकास বিচার-বিভাগ, শিক্ষা-বিভাগ, পুলিখ-বিভাগ অথবা বে কোল বিভাগের রাজকার্য্যে নিযুক্ত হওরা বার। কলে চুর্নীতি এতই প্ৰশ্ৰৰ পাইবাৰে যে বাংগার শাসন সম্পর্কে ইছা ভার ব্যতিক্রম মর, নিরমে গাভাইরাছে। রোল্যাও সু কমিটর রিপোর্ট বাহারা পাঠ করিয়াছেন ভাছারাই জানেন শাসন-ব্যবস্থার দুর্নীভি क्छी। चतुर्यभाषी परेवाट्य।

वाश्मात क्षेकारक विश्वक्षे कवियात एक यह विचान करा रहेबादिन । विचक्त वह प्रकृष्ट: वृक्त रहेन वर्षे, किन्त कृष्टेनीणिव কৌশলে পুৰক নিৰ্মাচনের কলে সেই বিভেদ সাংবাতিক বৃষ্টি ধারণ করিল। দশ বংসরের দীগ-শাসন তাহারই পরিণতি।

बुजनमान-विम नक वाहानी वह मञ्जूष्ट इंटिक जननत्त প্রাণ ছারাইল। সাগন-ব্যাপারে অবোগ্যতা এমনিই চরমে উঠিরাছে যে এই লক্ষ্যক লোকের অনশন-মুক্তার সায়িত্ব লাট **इटे**ए मही शर्वाच काहारकथ न्यर्थ कविन मा। **डेड**एड ক্ষিশনের রিপোটে বাংলার সর্বাবাদী ছর্নীতি এবং বোগ্যতা-ছীন শাসনের পরিচয় লিপিবছ হইয়াছে।

मांचि ७ मधना बचाब चना माखिव पिरम शूनिरमंत्र निष्दा অৰম্ৰ অৰ্থ ব্যৱিত হইৱাছে। কিন্তু সত্যই ধৰ্বৰ শান্তি ও দুখলা রকার সময় আসিল, কলিকাভার দেই বীতংস হত্যা-ভাওবের দিনে পুলিশের অকর্ম্বণ্যতা বেরুপ নির্গক্তাবে প্রকট হইরা উঠিল ভাহা বিশয়কর। সে বিশয়কে অভিক্রম করিরা. **(नाहाबानित वर्क्सकांत परवांत्र) मात्रस्य मध स्वत छेरकडेणार्व** উল্লাষ্টত হইয়া পঢ়িল। পুৰক নিৰ্বাচন এবং রাজকার্ব্যে नात्रानाविक निर्दार्शव कन देशहै।

বাংলার ব্যবহা-পরিবদে উপছাশিত বাজেট, সরকার পক্ষের বক্তভা এবং প্রয়োজর আলোচনা করিলেই বেবা বাইবে, क्षक्रमान असूरन कृष्ट्, मत्त्रवादनक चार्यर कान्य । मात्रवादिक अधिकारित नदरबरे विश्व वर्ष बनाव दन, नाव्यवानिक

প্রৱোজনে ব্যবস্থা-পরিবাদে বিল আনা হয়, সাক্ষায়েক উচ্ছেও পভিত জনি বাস করিবার কথা উঠে, সাক্ষায়িক ভারণে<sup>ই</sup> উচ্চতত্ত্ব পদে লোক-সংগ্রহ চলে।

আৰভা গাছে আৰু কলে না। পৃথক নিৰ্বাচনে নিৰ্বাচিত সৰ্ভ উভৰ সন্ধান্তৰ প্ৰতি সৰ্ভ্ৰীনন্দাৰ হইবে, এবন আশা ক্ষা বুখা। এক সন্ধান্তৰ কুকি নিৰ্বাচিত হইবা কেনই বা কেছ ভিন্নসন্ধান্তকুত অপনিচিত ক্ষাপ্ৰেৰ সাৰ্ব্যক্ষাৰ সচেষ্ট হইবে? এবন লোক সমগ্ৰ জাতিৰ প্ৰতিনিধি হইতে পাৰে না। 'বে কংগ্ৰেস বাংলাৰ সম্প্ৰ ক্ষাপ্তান্ত প্ৰবেশন বাংলাৰ সম্প্ৰ ক্ষাপ্তান্ত প্ৰৱেশন নাই কেন,'—এই প্ৰশ্ন ক্ষাপ্ত প্ৰহৰ প্ৰত্ত হয়, 'লাসন ব্যাপাৰে কোন মলের সহিত বন্ধণা ক্ষা গ্ৰণ্বেক্টের পক্ষে সন্তব্ত নত্ত।'

এই শাসনব্যবহার ক্লপার দরিত্র আৰু অন্নহীন, বব্যবিদ্ধ আর্ছাহার-ক্লিট, ক্লনসাধারণ ভরত্রভ, অভাবর্যন্ত। জীবনধারণের ক্লন্য বাহা কিছু প্রবোজনীয়—চাল, আটা, চিনি, ভৈল, স্থভ, বন্ধ বাংলাবেশে এ সমন্তই চুর্গত বন্ধ। স্থলত ভবু অপাতি, অন্নদন এবং অভিন্যাল।

এবন বাহা হইরাহে, ভবিছতে বাহা হইবে ভাহারই ছচনা করে। দীগ-শাসন পাকিছানের পূর্বাভাস।—এই অবস্থার প্রতিকার কি ?

নানা কারণে ভারতবর্ষকে ভার অধিক দিন আয়তে য়াধা বিটিশ গবর্ণনেকেয় পক্ষে সভবপর নয়। ক্ষমতা হতাভরের দিন আমাইলা আনিতেছে। হর এই বৃহুর্চে বাঙালী হিন্দুকে ব-প্রতিষ্ঠ হইরা আগ্রহকার চেঙা করিতে হইবে, না হর রাজ-বৈতিক সভা বিসর্জনে দিয়া চিরদিনের ক্ষম্ত পরতম্ব হইতে হইবে। ভাহার অর্জ শতাকীর আগ্রত্যার, শতাকীব্যাণী রাজনৈতিক আন্দোলন, ভাহার হই সহত্র বর্ষের ইতিহাস এবং চারি সহত্র বর্ষের ঐতিহ অনুলি-সর্ভেত পথ নির্দেশ করি-ভেছে। হর বিস্তি না হর প্রতিষ্ঠা। হিন্দু বাঙালী কোন্পর বাহিরা লইবে ?

কাহারও কাহারও মতে বৃহত্তর বদ এই অবহা হইতে আমাদের উভার করিতে পারে। বদবিভাগ রদ হইবার পর স্থান করিবা বিহার, উভিয়াও আসাম প্রদেশ গটিত হইতে বাস-বাংসার কতক অংশ দ্তম প্রদেশগুলির অতত্তি করিবা লগুরা হইত। সিংভ্র, নাবভূর, প্রিরা, শ্রীহট বলের সহিত প্ররার র্ভ হইতে, সংব্যার হিন্দু কিছু বাভিলেও অনুপাতে সেংব্যালবিটই থাকিবা যার। তাহাতেও পাকিহাম বিবারিত হর না।

পাকিছান হইতে উদার বা পাইলে বাংলার হিন্দুর রাজ-নৈতিক অভিছ বিলুপ্ত হইবে। জিরার কথা লইরা প্রবদ্ধ আরম্ভ করিরাহিলান, উপসংহারে তাঁহার আর একট উজি-উদ্ধৃত করিলে এ কথার বাধার্য্যে সন্দেহ থাকিবে না।

ৰোৱাইয়ের ভাজনহল হোটেলে মুসলিন লাংবাবিক্ষের প্ভার ১২ই মার্চ ভারিবে ভিনি বলিয়াবেন, "আবাদের চিভাবারা, আবর্ণ, সক্যা, মুলনীতি ও কর্মণছা বিক্লের হইতে ওবু পুরক নর—বিরোধী। অভএব উভরে বিলিভ হইলা সহবোগিভার ভিভিতে বে কাল করিতে পারে না ইহা স্থলাই। সহবোগের অববা ঐক্যবহ হইলা কাল করিবার কোন ক্ষেই নাই।"

ইহাই যদি সভ্য হয়, হিন্দু বাংলা ও বুললিম বাংলার একত্র অবহান অসভব। সহবোগ যদি না সভব হয় বিভেচ্ছ শ্রের।

ৰুসলিম সম্প্ৰদাৰের মধ্যে আৰু জাতীয়ভাবাদীর সংব্যা -নগণ্য । অবিকাংশই জিলার হিন্দু-বিলোধী মদ্রে উধুছ, পাকিভানী মনোভাবে উদীপ্ত ।

এই ভাবে ভাবিত হইরা দীগ বাংলা শাসন করিতেছে।
এবং ক্ষমতা হভাভরিত হইলে নিক্টকে এই ভাবেই রাই
শাসন করিবে।

পশ্চিম বদ হিন্দুপ্রধান। ইছোর বিরুদ্ধে সেধানকার হিন্দুদের সীগৃ-শাসন মানিরা লইতে হইতেছে। একজন পাশ্চান্তা মনীধী বলিয়াছেন, "শাসিতের ইছোর বিরুদ্ধে শাসনই দাসত্বের একমাত্র সংজা।"†

বিটিশ-উত্তাবিত এই নৃত্যতর দাসত্ব হাইতে মুক্তিলাত করিতে হইলে বদ বিভক্ত করিরা পশ্চিম বলে হিন্দুপ্রধান রাই প্রতিষ্ঠিত করিতে হইবে। হিন্দুত্ব ও জাতীয়ত বিরোধী বস্ত্ব মহে। একাত হিন্দু হইরাও কি নেতালী বস্ত্র একাত তারতীয় এবং সর্বপ্রেষ্ঠ জাতীয়তাবাদী হইতে পারেন নাই ?

আৰু হিন্দুকে শুৰু বাৰীনতার যথ্নে মস্থল হইরা থাকিলে চলিবে না, কঠিন বাশুবের সন্মুৰীন হইতে হইবে।

ঐক্য নই হইলে পাছে স্বাধীনতা-লাভে বাধা ৰটে বলিয়া বাঙালী এক দিন বল-ভলের বিক্লছে আন্দোলন করিয়াছে। প্রভিজিয়ানীল লীগ ঘাধীনতার পথ বিছ-সমূল করিয়া তুলিয়াছে বলিয়াই আছু সে বল-বিভাগ চাহিতেছে। সে বুকিয়াছে ঘাধীনতা আৰ্জন করিতে' হইলে হিন্দুকে বাঁচিতে হইবে। বাঁচিতে হইলে বাধীনতাকানী জাতীয়তাবাদী হিন্দুকে পশ্চিম বলে সংহত হইতে হইবে।

বৰ্জনান বাংলার যুক্ত নিৰ্বাচন প্ৰধা প্ৰবৰ্তিত হইবার সন্তাবনা নাই। সে সন্তাবনা থাকিলে বৃহত্তর বলের বত আব্যোলন করিলে চলিত। আমরা সাক্ষেদারিক নই, জাতীরতা-বালী। কিন্তু বাতবকে অধীকার করিবা লাভ নাই।

জিলা বলিলাহেন, "আমলা পৃথক ও বডল্ল", "ওবু পৃথক নয় সম্পূৰ্ণ বিলোধী, অভএব হিন্দুদের সহিত সহযোগ অসম্ভব।" বাংলার সকল সভাধকে যে আপন মনে কলে, বদস্থিকে

<sup>\* &</sup>quot;Our ideology, our goal, our basic and fundamental principles and programme are not only different from the Hindu organisations, but are in conflict. It is obvious, therefore, that the two cannot be put together and work in co-operation. There is no ground for co-operation or harmonious working."

<sup>† &</sup>quot;Government against the will of the people governed is the only definition of slavery."—Gratten,

বে ক্ষভ্ৰি নৰে করে, সেই বেশাশ্ববাধনপার ব্যক্তি—হিন্দু হোক, বুনলবান হোক, পার্লী হোক; জীন্চান হোক—বে আনার আপন, সে আনার আশ্বীর, তাহার শুভাগুতের লারিছ আনাদের সকলের লারিছ। বে তাহা ননে করে না তাহার লারিছ আরারে নর। বেশের নাটির সহিত বদি তোমার বোগ বা থাকে, বেশের লোকের সহিত বদি রক্তের সম্পর্ক না থাকে, তাহা হইলে বাংগা ভোনার বাশ্ব নর, বাংলার নাটীর উপর ভোনার নৈতিক অধিকার নাই। বৈ আশান হইতে চার সে আপন হোক, বে পর হইতে চার সে পর হোক। যে আশ্বীরতা অবীকার করে দেশের সন্তান তাহাকে বহিরাগত পরাই ননে করিবে।

অভএব, বল-বিভাগ যদি অবস্থাবী হয়, সে ধারিত্ব আমাদের নর। একা, মিলন ও সহযোগ-বিরোধী দীগই ভাহার জন্য ধারী। ভারত-বিভাগ যাহারা চার, প্রদেশ-বিভাগে ভাহারা আপত্তি করিতে পারে না। বল-বিভাগ অবাহনীর হইলে ভারত-বিভাগ আরো অবাহনীর।

আত্ম-নিষ্ণপ্ৰতি বৃদ্ধীতি হয় হিন্দু বাঙালীর সে অধিকার আছে।

বে দিন এক সাহিত্য-সভার এই প্রবন্ধ প্রথম পাঠ করি সে কর দিনেরই বা কথা। । সে দিন বদ-বিভাগের প্রভাবে অনেকে সচকিত হইরা উঠিরাছিলেন। ছদরাবেদের নিকট র্জি হান পার নাই। সমবের ক্রত পরিবর্জনে বদ-বিভাগ আৰু আর অপরিচিত ধারণা নর। মিলনের পুরোহিত বহারাও খীকার করিরাহেন, "ভাই ভাই কগড়া করিরা ঠাই ঠাই হর ইছা অবাভাবিক নর।" ঠাই ঠাই না হওরা মিলন-কামী আভার উপর নির্ভর করে না।

আর সতাই কি ইহাতে আমরা বিভক্ত হইগাম ? লীগআসম কার্যাতঃ পাকিছান। এই প্রভাব কার্য্যে পরিণত
হইলে পাকিছান হইতে খতন্ত হইরা পশ্চিম বদ স্থিলিত
হিন্দুছানের সহিত যুক্ত হইবে। ইহা বিচ্ছেদ মন্ত্র্যালান।

ভারতবর্বে অনেক গুলি প্রদেশ আছে। আর একট প্রদেশ বাছিলে কি এমন আলিয়া যার ? ইহা বিভাগ মর, আর একট ভাতীরভাবাদী প্রদেশের স্কট। এই সে দিন মাত্র বদ হুইতে বিভিন্ন হুইয়া বিহার নবপ্রদেশরণে গঠিত হুইরাছে। কোন অনিষ্ঠি ভবিষ্ঠতে বাংলায় ভাগ্য কিন্তিরা বাইতে পারে ভাবিরা এই স্বট্টভালে নিজেট বাভিলে চলিবে না। পূথক নির্বাচনের কলে বাংলা ত বিভক্ত হইরাই আহে, প্রবেশরণে বিভক্ত হইলে বয়ং অনিকারহীন অর্থাংশ আছ-নিয়ন্ত্রণে অধিকার পাইবে।

বে শক্তি বদ-বিভাগের আন্দোলমকে নার্থক করিবে লেই শক্তি সকরের প্ররোজন। শক্তির বুল উংল সংকৃতি। সর্বা বলে জাতীরভাবাণী হিন্দুর সংকৃতি চাই। সন্দেবর কৃতিতে না পারিলে আন্দোলন নির্থক। প্রতি ব্রাবে, প্রতি নগরীতে, নগরীর প্রতি পরীতে সকল হিন্দুকে সন্দেবর কৃত্রা সরবেভ ভাবে কার্য্য করিতে কৃত্রে।

আকোলন ও আদ্মরকার কন্য ব্রতীবল গঠন করা আবঞ্চ । লীগের যদি ভালনাল ব্ললিন গার্ভ থাকে ভাতীরভাবাদী ব্রতীবল থাকিলে অভার হইবে না। এই বল প্রদেশব্যাপী হইবে, শৃথলাবহভাবে কার্ব্য করিবে এবং প্রশারের সহিত সংযোগ বক্ষা করিবে।

আছ বাঙালীর অগ্নিপরীকা। এই পরীকার উত্তীর্ণ হইলে
সে চিরবাছিত খাবীনভার অধিকারী হইবে। পূর্ববদের
ভয় নাই। যাহা বিভাগ বলিয়া বনে হইভেছে ভাহা সাম্বিক বিজ্ঞেয় যাত্র। এ বির্ভেষ্ বিলম্বেক নিক্টভর করিবে।

যাধীনতার মুদ্ধে সকল সম্প্রদারের সহবৌগিতা পাইলাম না বলিরা হংব করিবার প্রয়োজন নাই। কোনু বেশের আপামর জনসাধারণ বাধীনতা-সংপ্রামে যোগ বিরাহে ? শ্রেনী-নির্কিনেথে কোনু দেশের সব লোক এক হইরা বেশকে ঘাধীন করিরাহে ? আমেরিকার বাধীনতা-সংপ্রাম, করাসী বিপ্লব, রুষ বিপ্লব—কোন বিপ্লবই এ কথা সমর্থন করে না। ঘাধীনতা প্রক্রবন্ধ করে। পূর্ণ প্রক্রা প্রতিষ্ঠার খারা ঘাধীনতা-জর্জন কলে না নামিরা সাঁতার শেবার মত।

পরাধীনতার কল ছংব। বাধীনতা সকল ভত আনরব করে। সীগ-লাসন বাধীনতার পথে প্রকাণ বাধা। এ লাসন হইতে রুক্ত হইরা পশ্চিম বলে কাতীরতাবাধী বাঙালীকে সংহত হইতে হইবে। বংসর সুরাইতে না সুরাইতে বে ক্ষাতা হভাভরিত হইতে চুগিরাছে তাহার অবিকারী হইতে হইবে। কাতীরতার চুরিতার্শতা চাই। বাধীনতা সকল চুরিতার্শতা ধান করে।

### আলোচনা

### সত্যেন্দ্রনাথের 'সন্ধিক্ষণ'

শীৰ্থক প্ৰকল্পে, গড চৈত্ৰ-সংখ্যা 'প্ৰবাসী'তে লিখিয়াছিলাম.বে, 'সন্ধিৰূপ' পুতিকাৰানি -আর পূন্মুলিত হয় নাই। কৰির সকল কাব্যএছের প্ৰথম সংক্ষমণ কেথিয়াই উল্লেখ মন্তব্য করিয়াছিলাম। ১৩২৯ সালে ( ১৫-৯-১৯২২ ) সভোজনাথের মৃত্যুর অভবিন পরে প্রকাশিত ২র সংক্ষরণের এক থণ্ড 'বেণু ও বীণা' সম্মতি আবার হত্তরত হইরাছে; উহাতে 'সভিজ্প' পুনমুশাত্রত হইরাছে দেখিতেছি।

প্ৰিত্ৰক্তেনাথ বন্দ্যোপাধ্যাৰ

<sup>•</sup> রবি-বাসর, ১৮ই কান্তন ১৩৫৩ অবিবেশনে পঠিত

## নৰ-সন্মাস

### **এ**বিভৃতিভূবৰ মুখোপাধ্যার

কাবের বব্যে চিভার উপ্রভাটুকু বিলাইরা আসিরাহিল,
কিছ চিভাটা একেবারে বার নাই। বাগান কোপানোই
হোক, পভাই হোক বা পভানোই হোক—সব কাবের মধ্যেই
এক এক বার উঁকি মারিরা অভ্যনক করিরা কেলিভেছিল,
টুলু আবার চাণা বিরা অঞ্জনর হইভেছিল, বৈকাল পর্যন্ত
আসিরা ভাহাকে কিছ হার মানিভেই হইল। বনে হইল
একটু বুরিরা আসিলে মনটা হয় ভো কুছির হুইভে পারে,

ৰোঘটা নৱম হইলে বাহির হইয়া পছিল।

এলোবেলা ভাবে ছবিতে ছবিতে একবার বভির মধ্যে প্রবিশ করিল। মাবে আরও বারহুরেক আলিয়াছিল, পরিচরটা বাজিয়াছে, আরও বাজিয়াছে ঔষধ দেওরা আরভ করা থেকে, ক্থাবাতারি থানিকটা সময় গেল, বাছারা ঔষধ দেবন করিতেছে ছবিয়া ছবিয়া ভাছাদের থবর লাইল। থানিকটা অভ্যমক হইরা কাইল মল নর, ভাছার পর বালার কিরিবার অভ বটভলার পথটা ধরিল।

খেলাচা এখন ওর ওখানেই জনে, বটভলাচা প্রায় থালি।
একটা শিলাখণ্ডের উপর সিরা বলিল। সোরু ছাগল লইরা হ'
চার জন বে ছেলে ছিল ভাষাদের সহিত একটু সম্বঞ্জব করিল
—নাটারনশাইনের চিঠি হইতে বেন পলাইরা বেড়াইতেছে।
বেলা বেশ পঢ়িরা আগিলে ভাষারাও বখন চলিরা সোন, আবার
নাটারনশাইরের চিঠি আসিরা বনটা দখল করিল। নাটারমশাই ভাষা ইইলে বিপ্লবী। নাছানে ছানে আগুন আলাইরা
বেড়াইতেছেন।

টুস্র বেন ভর করিতেছে—ভাহার বনেও জনিরাছে নাকি
আগুন ? এ তবে কি ?···আতকের মব্যেই মনে হইল, বর্বন
নিজবাবার আশ্রমের নিক বেকে তাহাকে কেরান নে সমরেও
টিক এই রক্ষ একটা জনাভির জালা ছিল নাকি ওর মনে
জানিয়া ? সে না কিরিবার জনেক চেঙা করিরাছিল, কিছ
কিরিল তো শেব পর্বত । ভাল হইরাছে কি মল হইরাছে
নে-ক্ষা ভ এবন জাসে না, জাসল কবা, ও চেঙা করিরাছিল,
চেঙা করিরা হারিরাছিল, হার মানিরা কিরিবাছিল । মাঙারমলাই একটা জনোব শক্তি !···আতকের মব্যেই টুস্র হঠাং
আর একটা কবা মনে হইরা সমন্ত পরীরটা বেন শিহরিরা
উঠিল—এ-ই মাঙারমশাইরের প্লান নর তো ? প্রথম বাশ
ধর্ম বেকে বিচ্ছির করিরা নিরীহ সেবাকার্য, ববন সেটা বেশ
নহিরা আসিল ভবন এই বিভীয় বাণ—বিপ্লব !···মাঙারবলাই বোর শান্ত, বলি চান—ভার জাগে বলিকে ভার
আরাব্যার উপবারী করিরা লন।

লখোহিত পাৰী সাপের আবোৰ, ছিল চ্টাতে লাবনে বেষৰ তাবে চাহিলা বাকে, টুলু মাটারমণাইরের কালনিক চ্টার্য সামনে সেই তাবে বহিল চাহিলা। তাহাল পর এক লমর সংবাহিত পাৰীর বতই বাবা বত ভ্রিলা চুইল অঞ্জনন। তর্কের বারা গেল বহলাইরা। হুরে হুল আর বাসা লইরা ইলাটার উপর হুর্বের শেব রখির ব্লান আলো আসিরা পরিরাহে, ঐ কিকে চাহিরা চাহিরা ওবানকার জীবনের চিত্রটা হুটরা উঠিতে চাহিল চোবের সামনে—অন্ধ ভিবারিক, চম্পা, হীরফ, ঐ একটা বিক্লভয়ভিক জীব বন্যালী; বুব স্থবোর স্থীল সামী আর প্র গোহালো লী লইরা চম্পার মিতিনের সংসার, একটা বেন নির্মবদ্ধ, যরচালিত ব্যাপার; ঐ চরবলান—বেশা হাছিরা ভাল হইরা আলার সঙ্গে বেন বিজ্ঞান হইরা আসিতেহে—এই এনের লইরা সারা জীবনটা কাটাইরা দিভে হইবে তাকে? না হর এন্যেরই মত আরও হ'জন আসিল। স্টিরবারা ভূল, কিন্তু ওঁকে লক্ষ্য করিয়া যে জীবনের সন্থানে নামিরাহিল টুলু সেটা তো হিল বিরাট। তাহার পরিবর্তে কি এই অকিঞ্চনম্বিত্তি

টলু মনের চাকল্যে শিলাভল ছাড়িয়া ভারগাটাভে পার-চারি করিতে লাগিল। চিম্বা একেবারে দিক পরিবর্ভন করিয়াছে: না সেই বিরাচের জারগার বদি অভ কিছকে আনিয়া বসাইতে হয় তো সে বিপ্লবেরই মত বিরাট একটা কিছু, আরু কিছুই মানায় না, আরু কিছু আনিতে গেলেই জীবনে যেন একটা পুছতা, একটা হাহাকার বাকিব। যার। जब रहेर्द ना । विश्ववे ठावे. माद्रोदम्याहेरवस छेरवधेवे विष् । কিছ উদেও ঠিক হইগেও পরিকল্পনার বুঁত আহে--ভড অল অল করিয়া বাণে বাণে অএসর হওরা নয়, বিপ্লবীর আক্সিক্তারই বিপ্লবের মশাল লইরা যাবা ভূলিতে হইবে। বিপ্লৰ বছ---ৰজের যভই দে নিভান্ত অপ্ৰভ্যাশিভ ছানে श्वानित्र चाराच। ... चात्र चात्रचि माडाद्यमारे, चाशनाद ওপর দিরেই আমার বিজ্ঞােহ হবে আরভ, আপনার অবাধ্য হরে, আপনারই রচা ঐ শেকল তেতে দিবে আমি আসহি। আপনার আত্মপোপনের চেটা বাটবে না, ব্যৱিষা কাংরাসগড় ভন্ন ভন্ন কৰে আপনাকে খুঁকে বেন্ন কন্নৰ—কন্নৰই বেন্ন, ভাৰ পত্ন আপনার ম্বালের পালে আমারও ম্বালটা বরব ভূলে।

—উভেক্তি চয়ণে টুৰ্ ছুলের নিকে চলিন—চিন্তার শ্রোভ হুইরা উটিতেহে কেনিল, আবর্তনয়।

বৰন ছুলের কাছাকাছি পৌছিল, সন্থ্যা বেশ পাচ হইরা আসিরাছে। বেবে কটকের কাছে জটলা করিরা বনবালী, প্রজ্ঞান, প্রজ্ঞানের স্ত্রী, বুড়ীর নাতনী গুরে কোবার গৃষ্ট কেলিরা কি দেখিতেছে। ও বে বিক হইতে আসিতেছে সেই বিকেই। একবার গুরিরা দেখিরা লইরা কিছু বুখিতে পারিল না, আসাইরা আসিরা প্রশ্ন করিল—"কি বেন বেবছ ভোনরা ?"

বনবালী বলিল—"আ<del>ঙ্ক</del>ৰ লেগেছে বটে।"

"আগুন! কোৰাৰ ?" বলিৱা গঞ্জেৰ বিকে চাহিবা বুলিৱা গাঁডাইল, কিছু বেৰিভে বা পাইৱা আবাৰ বুলিৱা বলিল, "কোৰাৰ ? বেৰহি বা তো।" বনবালী, অফাান, বেরেট একসলে আত্ল বেবাইরা জলা-কটি করিরা বলিল—"হই বে পাহাতে ভণবেতে···"

পাহাকে আশুন। সমতদের মান্ত্র, টুবুর কাবে সূত্র ঠেকিল। তাহার পর মনে পঢ়িল মাবারির কথা। দৃষ্টিটা ততক্ষে তক্তনিরার উপর সিরা পক্ষিরাহে, দেখিল সতাই এক আরপার মহর থানিকটা খোঁরার হুওলী, তাল করিরা লক্ষ্য করিতে মনে হইল নিচে থাবলা থাবলা আলো চিক্চিক করিতেহে। আর একটু দৃষ্টি গুরাইরা দেখিল থানিকটা দুরে আর একটা ঐ রকম এত দূর থেকে মনে হর বিশ পাঁচিশ হাত তক্ষাতে, কিছ বুবিল ছটার মধ্যে অভত মাইল তিন চারের কম ব্যবধান মর। একেবারে মৃত্য অভিন্নতা, টুলু হির দৃষ্টিতে থানিকক্ষণ চাহিরা রহিল, তাহার পর মনের বিহলেতার অবোবের মতই প্রশ্ন করিরা বসিল—"পাহাত্তেও আগুন লাগে নাক্তি এ রকম করে ? আপনি লাগে ?"

বনমালী বলিল—"হ লাগে, আপুনি লাগে, আপুনি বার, ভাৰভার বৰন পরিভূষ্ট হয়।"

ক্ষাটার স্তগতে টুল্ একবার বনমালীর রুবের পানে চাহিল, তাহার পর বিশারের বোঁকেই দৃষ্টি কিরাইরা আবার দ্রলার করিল। লেই চিক্মিকি—অংভিকর অবচ চোর্ব কিরানো বার না। এতদিন বাকিতে আবাই এই বোগারোগ কেন? মাইরেমশাইরের প্রথম চিট্রতে এক অদৃশ্র শক্তির ক্যা হিল, তাহারই বিবানে নাকি সে হীরক্ষে ওভাবে পার। আবা তিনিই কি এই বহিলতেতে আবার মৃত্য পথের নির্দেশ করিতেহেন? মনে বিক্ষোভ তরিরা কতক্ষণ যে একভাবে হাছাইরা ছিল হ'স নাই, একবার মধন কিরিরা বেবিল, দেবে বনমালী প্রভৃতি সকলেই চলিরা গেছে। সেই সমরই আবার সামনে অস্থাই কঠবর ভনিরা করিয়ো চাহিল, দেবে অল দ্রেই চন্দা বৃতীর নাতির সহিত গল করিতে করিতে টলার রাভা বাহিরা উটিরা আসিতেহে। কাহে আসিরা একটু বিশিত ভাবে প্রশ্ন করিল, "আপনি এবানে—এবন্ন!"

টুৰু বলিল—"ভভনিৱা পাহাড়ে আৰুৰ লেগেছে।"

চম্পা কিবিৱা চাহিল, বলিল— তাই ভো দেবছি। ক'ছিন বেকে ভক্ষো হাওৱা বইছে কিবা।

ছ্রিরা ইাড়াইরা একটু চাহিরা থাকিরা বলিল---"চমংকার বেখতে কিছ।"

চন্দার কথাতে টুগু একবার বুরিরা দেখিরা লইল—নিক্ষ-কালো অকারের বুকে আগুনের মালা—নিধার নিধার বলমল চমংকার বৈকি; কিছ মন তার আল অভিনিক্ষ চন্দল, একেবারে অভ পুরে বাঁধা, গৃষ্টিটা থকে আবদ্ধ হইতে পারিল না। হঠাং মুখটা গুরাইরা লইরা চন্দার পানে চাহিরা প্রার করিল—"অভ সংখার বলে একটা কথা আহে গুনেহ চন্দা ?"

ব্যৱহার অগ্রাসন্দিকভার চলা বৃত্ততের কর একটু বিশ্বিত

হইল ভাষার পর একটু হানিরাই বলিল—অভ ভাল করে আনা আর কোন কথাই নেই আনার। আপনি বোব হর আনেন না, আমি বিনক্তক একটা নিশনরি হুলে পড়ভার, আনাবের ভাতের মধ্যে ঐ জিনিবট হাড়া বে আর কিছুই নেই বছর হুরেক বরে শুবু এইটুকু শিবিবেছিল ভারা।

উভয়টার টুল্র কোছুক বোৰ বইল, বে কথাটা বলিতে বাইতেহিল সেটা ছাভিয়া একটু হাসিরা ক্ষিল—"বাড়, ভোষার বাড় থেকে ভা হলে ওসৰ ভুড নামিরে হেড়েছে।"

চন্দা আবার একটু বেশী করিরা হাসিল, বলিল— "বোটেই নর, আরও একরাল চাপিরেছে বরং, এত বে আছে আনতামও না; বেটার নাম করেছে সেইটেই এসে বছুদ করে বাজে চেপেছে তার রধ্যে আবার কতকওলো বিলিতি ভূত আছে, এখন তেরো নহর দেবলেও আংকে উট্ট।"

গভীর আলোচনার পক্ষে বাতানটা হালকা হইরা গেছে, ওর ননে বে বছ বহিতেছে তাহার প্রসদটা আবার কি ভরিরা আনিবে টুবু তাবিতেছিল, চলা বলিল—"বেশী চ্রে বাওরার কি দরকার ? এই এখনই তো একটা অভসংভার নিরে ইাভিরে আহি, পাহাতে আগুন লাগা বেশীক্ষণ ইাভিরে নাকি ধেশতে নেই, এতথানি দেখে কেলে তরে কাঁটা হরে উঠেছি…"

টুল্ বিশ্বিত দৃষ্টিতে চাহিতে বলিল—তাই, দেবতার বিধে পেরেছে বাচ্ছেদ, ওতে নজর দেওরা নাকি উচিত নয়—তাতে, বে দের তার ওপর নাকি তাঁর নজর গড়ে।

বে বরণের একটু হাসিল ভাহাতে স্পঠই বোঝা বায় এলব বৃত্তিহীন বিঝাস কাটাইয়াই উঠিয়াছে। টুলু সেটা বৃবিয়াই গুল হাসির উপর একটু হাসিল, বলিল—"ভাই গুলে বেধি বন্দালী প্রস্লাদের বে ভালা সব কেউ নেই।"

সংক্ষ প্ৰস্কৃতী আনিয়া কেলিল, বলিল—"কাকে ছ্বৰ ? এই আওম লাগা নিয়ে আমিই ত একটা বেঁকায় প্ৰে গেছি ]"

ক্ৰাটা হতাল ভাবে বলে কিনা লক্ষ্য কৰিবাৰ বভ চলা বুবের দিকে চোৰ তুলিয়া চাহিল। টুমুর মুবের ভাবটা এই টুকুতেই লেছে বদলাইয়া, মনটা বেন কোৰা বেকে কোৰায় সেছে চলিয়া, কভকটা আত্মণত ভাবেই আৱম্ভ করিল—"চলা, কাল আমি মাইারমশাইরের—"

এই পৰ্যন্ত বলিয়া সাভ হইল, চূপ কৰিয়া গেল। চন্দাৰ বুবের পানে একবার চাহিল, এই রকম সব বৃহতে চন্দার বুব একটা দেবিবার জিনিসই—বুকিয়াহে কোন একটা গৃচ রহত প্রকাশ করিয়া কেনিবার মূবে টুবু হঠাং থানিয়া গেল, এতটুক্ কিছ কোতৃহল নাই, একট আগ্রহের রেখা পর্যন্ত কোটে নাই কোবাও বুবে। গোপন করিতে হইল বলিয়া টুবু নিজেই বেন একটু অগ্রতিভ হইয়া পছিল। তাহার পর লে ভাবটা সামলাইয়া লইয়া বলিল—"আমি ভাবহিলাম চন্দা,মাপ্তারমণাই কি আমার এই সমের কতেই এবাবে বলিবে বিবে গেছেন গুণ

চন্দার মুবটা একেবারে ভকাইব। বেল, ভাহার এবিক্জার এই বৃত্ন জীবনে সবচেরে বছু আপরা বেন কনিতে চলি-রাহে। জিজানা করিল—"কেন ?—ও কবা বললেন বে ?" এই ক'টা কবা বলিভেই ভাহাকে একবার টোক সিলিভে হইল।

টুৰু বলিল—"ভোষায় বলে কি হবে ভাও ভ বুৰি না, ভোষার মনে বানিকটা অপাতি চেলে বেওরা; আবার এও ভাৰছি শোৰা ভোষার ধরকার, কেমনা বে করেই হোক আমার জীবনের মধ্যে তোমার জীবন বানিকটা এসেই পড়েছে, আমার বাড়ের বোকা ভূবি ইচ্ছে করেই বেশ বানিকটা নিজের বাড়ে ভূলে নিরেছ। কিছ এই যে বোকা, कि स्टब बरना विकिन अनव वरत ? पुनि म्यारनकारवद धवारन মাঠারমণাইরের চিটিটা ভনেছিলে, ভাইতে ভিনি আমার ক্তক্তলো কাৰের কৰা নিৰেছিলেন—আপাতত তিনটে ভোষার মনে আছে বোৰ হয়। কিছ এও নিকর মনে আছে বে, মাষ্টারমণাইবের চিটির গোড়ার কথা ছিল এদের অত্যাচার -- ७९ अरम्बरे (कम १-अवा हार्यंद नायत्म अक्वी प्रमास्वत् हावदित्वरे छ अरे चलाहात-अक पन निरुद्ध अक पन निर्दे হছে: মভার কৰা এই যে বারা পিঠ হছে তারাই শেষবার ক্ষতাটা বাছে ভূসিরে। একেবারে রাজা-প্রভার সম্বাদ্ধের কৰা বেকেই বরো না: বৰন নিকের রাজা ছিল, একটা কৰা ছিল: কিছ এরা তো বলতে পারবে না---আমরা পূৰ্ববংশ, বা চন্দ্ৰবংশ, আকাশ বেকে নেষে এলেছি ভোষাদের শাসনের জন্ত-কিসের জোরে ওরা জেঁকে বসেছে আমাদের थनव १--- अरवद अवक्ना चाव चावारवद प्रवंगठाव चारवरे ত ? ভার পর ক্রমাগভই পিষে যাছে।—ধনির ক্রাভেই খাসা বাক--- হীরকের যা খ্যম খাবে মরবে কেন ? বরাবর ত ওই কোন্দানীর আহের ঘরে ভয়ার আঁক বসিরে এসেতে निरक्त पूर्व मध्नका विरव-वागीत कीवन वर्षक विरव, अकी যাস কোম্পানী ভার কবাটা একটু ভারতে পারত না ?"

উভেদনার গলা কাঁণিয়া যাইতেহে, কৰাওলা মাটার মুলাইরের কালকের চিটি বেকে চাঁটুকা ভোলা, কিন্তু স্থাকৃতি মুক্তা করিতে পারিতেহে না; উভেদনার মাধার এলোমেলো স্ইয়া বাইতেহে। শেবে বেন বেই হারাইয়াই হঠাং বানিয়া কোন।

**हम्भा मध्यस्य हम कविवा श्रेशदेश वरिन ।** 

টুগু মনটাকে একটু ভহাইরা সইরা আবার আরভ করিল
—আনেক কাল আমি নিরেছি, না, হীরককে, রাহ্য করে
ভোলবার; তার গলে হুটো নিওকে নিজা হিচ্ছি,—কবে
ভারা বভ হবে। বাহুবের যত নিজের কড়া-গঙা বুবে নিজে
পারবে, অভ্যাচারের বিরুদ্ধে বাবা ভূলে হাডাবে। ভভজ্প কভ চরবলাস, কভ হীরকের যা বে নিঃশেষ হরে বাবে সেটা
ভ এক্বার ভেবে বেবছি বা। না, এ চল্যে বা। এভ বৈৰ্ব আষার নেই চন্দা। আবে অত্যাচারের পথ বন্ধ করতে হবে, তারপরে গঢ়ার কাজ। আজ হ'বিন থেকে আনি এই কথাই ভাবছি। তুরি জান কিনা বলতে পারি না। চারহিকে বনিতে বর্ষট আরত হরে গেছে, গুনজ্বনও হরেছে—
তা হোক, অনন হর, কিন্ত শেব পর্যন্ত এতেই ভাল হবে, এই একমাত্র উপার। আমিও এবানে এ-ই আরত করব—লোক ক্লেপিরে ঘোব, নেহাত না পারি এবানে, বেবানে আগুন অলেহে সেবানে যাব। আমি আজকে তার নির্দেশ পেরেছি, ভাইতেই অন্তনংভার বা অধ্বিধাসের ক্বাটা তুলেছিলাম তোষার কাছে।"

চলা তেষনই অৱ ভাবে মাথা নিচু করিয়া নিজের আলহা লইয়া ইছিব। আহে। ভাহার জানা কথা এই রকষটি হইবে; —একটু সেবা, সামাভ একটা নিজের ছটি কচি হাতের বাঁথন থিয়া এ বাহুবকে বরিয়া রাথা বাইবে না; অথচ নিজের সব বোরাইয়া ত সে এরই পালে আসিরা ইছিটল—কভ উচ্চ আলা, কভ বড় একটা মূভন জগভের কলনা লইয়া। ভব ভাবে শুনিয়া বাইভেছিল, লেখের কথার মূর্ব ভূলিয়া চাহিল, বলিল—"বুবলাম না, অধবিবাসের কি আছে এর মধ্যে ?"

"ভঙনিবার ঐ আঞ্চন। ভোষার মনে আছে কিনা আদি না যাইারমণাইবের সেই চিটিটাতে এক আয়গার কোন অনুত পঞ্জির কথা লেখা ছিল। অবক্ত কার্যকারণ কোন সহস্ক নেই, তবুও আয়ার বেন মন্ত্রে কেই শক্তি ঐ আঞ্চম আলিরে আবারও আঞ্চন আলাবার ইসারা দিলেন। বুবছি ছটোর কোন গছত নেই—তবুও বেন মনে হচ্ছে, সমর হরে এসেছে, এভাবে এই বাড়িটুকু আঁক্তে বসে থাকা অভার হবে।"

একটু বামিয়া হঠাৎ প্রশ্ন করিল--"ভূমি कি করবে ?"

সক্তে উভর না পাইরা এই প্রশ্নেরই জের ব্যিরা বলিল—"তোরার আমি কতকটা অভিরে কেলেছি এই সব কাজে; তুমি ওছিককার পাট চুকিরে ছিল্লে এলেছ, তাই তোমার কবাও মনে উঠছে বজ্ঞ বেদী করে।"

চম্পার উত্তর তভক্ষণে ক্লিক হইরাছে, ব্লান হাসিরা বলিল —"ভগবান আনার বেরেছেলে করে গড়েছেন, বাছি আঁকচে পড়ে থাকাই ভো আনার কপালের লেখন।"

কণাগুলিভে অভিযান বেন উপচিয়া পড়িভেছে, টুলু রুবের পানে চাহিল। চম্পা একটু হানিরা বলিল—"কিছ আমার একটা কথা ভনবেন কি ?"

"4CM 1"

"কথাটা একেবাৰেই আমার মনের কথা, বর্ব সাকী করে বলছি—আপনি না মনে ভাবেন আপনাকে কেরাবার করে আনি বাকে তর্ক করছি একটা। কথাটা কলে, আপনি বলছেন আপনার হাত বিবে আগুন আলাবার করে ভাবান ঐ একটা নিশালা বিয়েহেন আল। কিন্ত এবনও কি কতে পারে

দা, আপদার মধে বে কবাটা উঠেছে বলছেন কাল বেকে, ভাই বেকে আগৰাকে কেৱাবারই এ একটা উপায় ভার १---यत्न अकडी बडेका मानित्व वित्त---"

"कि वक्त ?"

চলা এক্টু ভাবিল, ভাষার পরে বলিল---"আসলে লে সব किहरे मन, बी जानिक व्वर्धम-मामन मरना मरना प्रकार বেরালটা ৩ঠে লেটাকে মান্থবে বাইরের ব্যাপারের সদে জড়িয়ে বেৰে; আশুন বেৰানে লাগৰার লেগেছে, তার সকে আপনার কি করা উচিত অস্চিত ভার কিই বা সময় থাকতে পারে वज्य ? छवू अकवात (करव स्वयूय-कि वर्षनामा ना स्टब्स আৰু ঐ পাহাড়ের গারে—কি অপবাত—কত হাজারে হাজারে আপনার, এই পাণের টাকার ওর শরীর গড়ে উঠলে সে ৰৱছে পৰ ৷--পুছতে, আৰপোড়া হয়ে বাঁচবার হুছে মিছে ছটে আবার গেই আঞ্বে পড়ছে বাচ্চাকাচ্চাবের নিয়ে, কিবা হরতো নিজের প্রাণ বাঁচাতে ভাষের আঞ্চনের মধ্যেই क्ल-विश्वान इत का भावान भागांक बार्वत करवरे. अवन इरमा ठावरमा शंख निर्दे वैशिख शंख राव द्राव राज । --- জাপনার জাওন জালা কি বরণের টিক বুবতে পারছি না, তবে সৰ আধনই তো আধন, কমবেশী করে কল তো এই। ভগবান যাছয়কে কি জেনে ভনে এই রক্ষ একটা কালের দিকে ঠেলে দেবেন १---ভবে আর কার কাছেই বা ভরসা माश्रद्यव १..."

ৰুখীৰ ৰাভিট পাণেই একটু পিছনে ছাড়াইয়াহিল, আঁচলের বুঁটটা বরিয়া একটু টান দিছে চম্পার হস হইল, খুরিরা বলিল--"ভূই এবনও দাঁড়িয়ে এবানে ?--ভা ষা, আমি ভাগছি।"

হেলেট প্ৰশ্ন ক্রিল—"কাপুছগুলো কাকে দিববো ?" হাতে বানকতক বাঙিগ একটা কি দিয়া বাঁবা, মনে হয় যেন बरहा विटिंब कान्छ। हेन् विन-"रीवाब कर नाकि ?" এত কাপড় একটা কচি ছেলের মতে ?"

**हम्मा अक** कृष्ठिल जारन निमन-- "धन निस्मन नारबन चट्ड वद्द छट्द..."

ক্ৰাটা শেষ করিতে দিবার ক্ষা একটু অপেকা করিরা हेमू क्षत्र कविम—"छद्द···कि ?"

"ৱাগ কয়বেৰ মা. আপনি তো সবই দিছেন, বাবায় ওবিক বেকেও বাঁচে আজকাল, তবে হীরার বরচের বডে…"

টুৰু অভিযাত্ত বিশিত হইয়া ভনিতেছিল, বলিল--"বুৰলায मा ।"

"কিছু হিট বাজার থেকে কিনে নিয়ে এলান, জানা, পিরান সেলাই করে বোব, বিক্রির ক্ষাে; একটা বোকামও টিক करबंदि∙∙∙"

"হীয়ার বন্ধচ জোগাবার কন্যে ?…কিছ ভার, ভো ভাতা **भाव्य भरबब है।को करब…"** 

--अफ्ट्रे विश्वक कर्द्धर विजि-"इन्मा, शीवा भवीरवव

ছেলে, পরীবের বভই ভাঞ্চে বাছ্য করতে হবে। ভার বরচের ব্যাত এভ…"

গরীবের ছেলের মতই করহি মাত্রম তাকে ভগু ভাভার টাকার বদলে---বাবে, ও টাকাটা পুরিরে নিভে--"

বছলে মানে ৷ ভোষার বিচ্ছে মা ও চাকাটা ? কেন. काक (बर्फ विरम्ध वरन ?"

চম্পা অন্ন একটু হাসিরা বলিল—"কান্দের সন্দেও টাকাটার কোন সৰৎ যে নেই খানেনই ভো: কিনের সঙ্গে সম্বন্ধ তাও কানেন আপনি। কভদিন আর এ সব অপহান সইব ? তাও , আর হীরা আগে বার হেলেই বাক, এবন পাপ কি এ কৰে নিটবে কৰনও ?"

সলে সলেই এই বড় কৰাচীকে চাপা দেওয়ার ভভ ভাড়া-তাতি আরম্ভ করিল—"ইন আমাদের যা কৰা হচ্ছিল— धमस्यत चादन निष्य क्यांचरणा यमगाव वर्ष्ट चानवारक, কিছ একটুকুর জভেও ভাববেন না বে---

এইবানে বাবা পঢ়িয়া গেল। দেবভার বাওয়ার বজর পড়ার ভবে বনমালী এভক্ষণ ঘদ বন্ধ করিয়া ভিভৱে বসিয়া হিল, আর পারিল না, বুড়ীর নাভনীকে সদে করিয়া কটকের वारित चानिया वनिन-रं, बारेएरं बबन्ध : हे बारवक-हेब **পরিচু** । चरन…

ভাষার পরই সামনে টুলু, চম্পা আর ছেলেটর উপর নত্ত্ব পদিল, টুলুকেই উদ্দেশ করিয়া বলিল-এবনও ভকু দেবছেন আপুনি ? সজরট দিতে নাই গো!

টুলু হাসিয়া বলিল-এত ঢাক পিটায়ে বেলে মাহুয়ে নজুৱ ছকোর কোৰার বনবালী সেটা বলো। বাক্, আযার পেটেও চুকেছেন; একটু ঠাঙা করবার ব্যবস্থা করোগে চলা।

নিজে বাসায় দিকে পা বাড়াইল।

( 00 )

हुन्द मन्डी जरमक्यानि शनका स्टेन।

চম্পার যুক্তির কাছে ঠিক যে পরাক্তর মানিল এমন বন্ধ, ভবে যুক্তির কথাওলা ওনিয়া যেন বাঁচিল। স্বাসল কথা बाक्य मिर्का मनरकरे रहरन भवरहरा कर, चक्र पूर्व কাছের জিনিস বলিরা চিনিরা কেলিয়াহে বনে করিরা প্রতি পথেই বোঁকা বার। অনেক সমর মন বেটা একেবারেই চার না সেইটা লইয়াই সবচেয়ে বেশি লক্ষক পুরু করিবা (एव ) हेन्द्र मन विश्ववी नव, चक्टः अवन गर्वेड छाराध স্বাভাবিক কোমল বৃত্তিখলা ভত্তী নট হয় নাই, জীবনের সদে আরও প্রত্যক্ষ বোগ বয়কার, আরও ভিক্ততার অভিত্রতা मञ्जाब : डारे—विश्ववी मञ्ज विन्नारे विश्वविद चूरव चमन ক্রিরা মাভিরা উঠিরাহিল। --- কাঁকা আওরাজে ওবু অভকে क्य रिवासारे रव मा. यन जातात अक अक नवत निरम्ह क्षेत्रकेमां ७ कर्ड ।

हैन বেন বাঁচিন। সভাই তো—বিপ্লবের আঙ্গ ভঙনিবার ঐ আঙনের বতো অবধাই ভরতর ভো.। ওটা নেই অবৃত শক্তির নিবেব না হইরা যদি নির্দেশই হর ভো সভাই আর কাহার কাহে ভয়সা বাস্তবের ?

অনেক রাত পর্বন্ধ রহিল আদিরা, তবে হিরভাবে চিডা

করিবার ক্ষরতা লইরা। বারার্যনাই কি সভাই তাহাকে

বিপ্লবের বব্যে বাঁপাইরা পভিতে বলিরাছেন ? সমত চিটিবানার নিজের একটা পরিচরই তাহার নামনে মেলিরা বরা
কেন তাহার উদ্দেশ্য-নিজের অতীত ও বর্ত রানের কর্মধীবন,
আর অবিহাতের আশা-কর্মনা লইরা বে তাহার জীবন।

নিজেকে টুর্র কাছে আর পোপন রাবিতে চাম না, তাহারক্র

একটা উদ্বেশ্ব নিজর এই বে—আনাইরা দেওরা কত্ত্ব পর্বন্ধ
ভিনি আশা রাবেন ভাহার কাছে, প্ররোজন হইলে টুর্কে

কতটার ছত প্রভত হইরা বাকিতে হইবে। আপাতত টুর্কে

কি করিতে হইবে তাহার নির্দেশ তো বিবাছেন শেবের

বিক্ষে—"আরও নিজকে ভূমি বুকের কাছে টেনে নাও, আরও

নারীর জীবনকে ভূমি রামির্ক্ত করো, চরপরানের মতো আরও

যারা ভাবের এক এক করে নাও ভূমি ভূলে।"…

এই কাজে নামিরা চম্পা হীরককে সইরা টুগ্র জীবন বে একটা বিশেষ রূপ সইরাহে ভাহার কথাও লিখিতে ভোলেন নাই।

এই গড়া ভিনিদ হাড়িয়া চলিয়া বাওয়া ?—উচিত ? অভনিয়ার আগুনের ক্বার চন্দার ক্বাই তো কলে ভাষা रहेल। अवरव छ देशांबारे प्रदेख विमर्ड-- के निस्त, कि प्रदेख খর পরিণতি ? ভিবারিণী, ভাষার নাভি-নাভনি ছুট-এই ক্ষটা বিনেই কভ নিচু থেকে কভ উচুভে আসিৱা উঠিয়াহে, আবার কোবার ভলাইরা বাইবে। চরণদাসের জীবনের দিকচক্ষবাল পরিছার হইরা আসিরাতে, সেই সঙ্গে ওর সদী আরও অনেকের। আর চলা, ভাবিভেও আন্চর্ব লাগে, कि व्यक्तारात मर्था वारेष्ठिक प्रविता ।-- अवन विरमत स्नरे দেবা-ছুৱারের চৌকাঠ বরিরা বাড়াইরা আছে, সজার ভদিষাৰ সৰকের অভিস্তি লইৱা---তাহার পর বালিয়াড়ির পৰের সেই অভিনার। ... সেই চম্পা আজ, কনুষের হারা আছে বলিয়া হীরকের কত অভ করিয়া চাহিয়া লওৱা চীকাচীর এক কথাতেই মারা কাচীইরা বসিল। বাঠার वनारे निविद्यादित्नम--"अक्ठी मात्री प्रवत्रादेश (शत्न अक्ठी चांचि चनवारेवा वारेटा भारत ।"--- हम्भा ८नरे नवटनेव नावी । ভণু ভাতাকে বাঁচাইয়া ভোলাই তো একটা জীবনের সাবনা হইতে পারে।--- টুলু আব্দ গঞ্জিবি হাজিয়া বাকু--চন্দা ভাষাৰ ঐ ৰূপ, এই ভীকু বৃদ্ধি দইরা কোবার নাবিরা বাইবে ---গভীর নিরাশার হর ভো আরও মত ভর্মর হইরা উঠিবে ভাষায় কি কোন বিলাব আছে গ

चन्छ अरु क्यांटिक नवानान स्टेन ना, बन्छ। विश्रवन

বিবাট প্রসার বেকে কিরিয়া আসিয়া এই ছোট গভিত্ব বংশ্য বেন আরও ইংশাইরা উটিল। অভতঃ আরও কিছু কংজ চাই, এই করট প্রাইকে লইরা অল পরিসরের একবেরে জীবন করেই বেন অসহ হইরা উটিতে লাসিল। তাহার পর একবিন হঠাং একটা সাবাভ ব্যাপারে টুলু বানিকটা নুতন কাজের লভান পাইরা পেল; ভাজচুকু বেশ মনের বত, তা ভিত্র বিভারেরও বেশ চবংকার সভাবনা আছে।

বিশক্ষেক পরের কথা। আজ্কাল বভিতে নির্মিত তাবেই বার একবার করিরা। ওর হোমিওপ্যাধির বপ বাভিয়াহে, অনেকগুলি রোমী হাতে, সবের চিকিংলার সবের রোমিও আছে আবার প্রকৃত রোমীও আছে, একবার বেবিরা ভনিরা ববর সইরা, বানিকটা বেড়াইরা সন্ধ্যার সময় চলিরা আসে।

উববের লকে পথ্যেরও ব্যবহা করিতে হয় এক আব কনের। গরীব বোক, কিছ প্রায় সবারই এদিক দিয়া একটা লকোচ থাকায় ধুব বে বেশি থরচ হয় এমন নয় , অনেক সময় নিকেই জোর করিরা হাতে হ'আনা এক আনা বাহা দয়কায় উলিয়' দেয়। সেদিন এই ভাবেই একবার ব্যাগটা বাহির করিতে সিয়া দেখে সেটা নাই। একটু অপ্রতিভ হইয়া গেল, ভাহা ভিয় মনটা গেল বায়াপ হইয়া। অনেক সময় একটু ভালোয়কম রোমী দেখার সময় দশ বায় অন ভিড় করিয়া বাছার চায়ি দিকে, বেশির ভাগই ছেলেমেয়েয় দল। ভচিবাই নাই বলিয়া, বয়ং য়েটুকু আছে সেটুকুকেও নির্মা করিবায় কচ কিছু বলে না টুলু, অভেয়া সরাইয়া দিবার চেটা করিলেও কিছু যায়ই থাকিয়া,—সাধারণতঃ বেমন হয় এসব কেষে।

আকও এই রকম একট দল বিরিরা আছে। কেছ বাহির করিরা লইল মাকি ব্যাগটা ? রোগ একজম বৃদ্ধ, পাঁচ ছয় দিনের ছরে বিছামার পঢ়িরা আছে, মুখের ভাব দেখিরা প্রশ্ন করিল —"কি ছইছে বারুষদায় ?"

সদে সদেই বিছানাৰ উঠিয়া বসিয়া রাগে চীংকার করিয়া উঠিল--"বুৰেছিঁ, পকেট মারলেক ৷ তুরা ইাছা, আমি বিশ্ব ভূষের কাপভ, যত সব অবটো ভিভ করে ইাছাবে পকেট মারবায় করে ৷…"

এরা পলাইলেও গোলষাল গুনিরা অভ লোক ভূটল। বৃদ্ধ উঠিরা তাভা করিতে বাইতে টুলু তাভাকে বরিরা কেলিল, বলিল—'হরেছে গো কর্তা, মনে পড়েছে, আমি বেরই করি নি ব্যাসটা, আনিই নি—ভূলে গেহলাম কথাটা।'

অনেক বলার ঠাঙা হইল। বনটা কিছ বড় অঞানর হইরা বহিল টুলুর। বেশ শ্বরণ আহে বাহির করিরাছিল ব্যাসটা, এই ভাবে গেল १—এবেরই উপকার করিভে আসিরা।

পাৰে ঢাপা বিভেৰে বলিয়া কেব দৰেব কৰে দেইকচ

বোশবিবের বড়ই বিজ্ঞাসাবার করিরা করিল একটু; ভাবার পর কিছ বেড়াইতে গেল না, সোজা বালার চলিরা গেল।

য়াভার বারের ভাবালা দিরা ভিভরে নতর পভিডে দেবিল ব্যাপন্থী বিভানার উপর পড়িরা আছে। বাড়িতে ুক্তি ষ্টবোল, বুড়ীর ওণিক্টার। চরণবাদের যাতলাবির ষ্টপোল নম, বুড়ীর নাতি-নাতনীবের যাবা পড়ার ভাষারই টুকরা-টাকরা আটদশট ছেলেমেরের যুক্তকঠে প্রভিঞ্চনিত হুইভেছে। ব্যাগটা ভুলিয়া লইয়া বিভক্তি নিয়া দেবে বুড়ীয় শাতদী একট ছড়ি লইয়া একটা চেয়ারে গন্ধীরভাবে বসিরা আছে, বাকি স্বাই---ছেলেমেরের যত বেল্ডে সার বাবিরা শানের উপর বসিরা পড়ার মছ---স্বার সামনে এক একধানি কৰিবা ৰোটা বই ৰোলা মাঠার মণাইরের শিক্ষা রাইতত্ত, সমাঞ্জন্তের বই, ভাষার বর হইতে সংগ্রহ করা। ভাষাকে विविद्या नवारे अवस्वाद्य निकृष स्रेश तन । विक स्रेक বে ৰেজাৰ দইৱা আসিৱাছিল, গেটা বাকিলে বোৰ হয় বমক विच काने नावशाय मुक्कीय को कुटक्य विकरोडे ৰ্বে লাগিল বেশী করিয়া, তা ভিন্ন মাধার একটা আইভিয়াও আসিভেছে থীরে থীরে, মনটা হরতো ভালো থাকার কচই।

বুড়ীর নাভি কতকটা বোধ হয় অবভিকর নিজনতাটুকু কাটাইবার কর দিদির দিকে আঙ্গুল দেখাইরা বলিল---'উ বুল্লেক বই আনতে।---বুল্লিক নাই ভুই ?'

চুপু অনামনত্তাবে আর একটু ইড়াইরা রহিল, কবাটা বোব হর কানেও গেল না তাহার। একটু পরে যেরেটকেই প্রশ্ন করিল—'চম্পা বাগার আছে ?'

নাই যে গেটা পাঠশালার ঘটা দেবিয়াই বোকা উচিত ছিল, সাজার ব্যবহা যনে করিয়া মেয়েট সমূচিতভাবে যাত্র একটু চোৰ ভূলিয়া চাহিল, ছেলেট বলিল—'উ ভো দাহটির লাবে কুবার গেল বটে।'

অন্যস্থকভাবেই কিছু না বলিরা টুক্ বীরে বীরে কিরিয়া পেল।

সন্ধার একটু আগে চন্দা আদিয়া উপন্থিত হইল; সদে সদে ছেলেট—সেই ভাকিয়া আদিয়াছে, এই করিয়া টুলুর মৃতটা মন পাওয়া বার। চন্দা একটু রাগতভাবেই প্রশ্ন ক্ষিল—'এরা নাকি আপনার বই টেবিল বেকে টেনে নিয়ে সিমেছিল গ'

টুলু হাসিরা প্রশ্ন করিল—'নাঞ্চা দেবে নাকি ?' 'ধোর প্রমাণ হলে পাবে বৈকি সালা।'

'লোবের কাল করেছে, কিন্তু সেটা দাঁছাতে পারেনি বোবে। — বাক ওকবা, চলা, আমি ছুল বুলব ঠিক করেছি।'

'ছুল বুলবেন। কোবার গু' 'ঐ ছুলেই। এবন ভো ছুটই রবেছে।' চন্দা চূপ করিয়া বুবের পানে একটু চাবিয়া বাকিয়া প্রশ্ন করিল—'হঠাং এ বেয়াল হ'ল বে ?'

'ক্ৰাটা বয়ং একটু খুবিৰে জিলাস কৰো, আৰ্থাং এতদিব এ বোৱাল হয় নি কেন। আনিও সেই ক্ৰাই ভবে ভৱে ভাৰছিলান,—এইটই আমায় সবচেয়ে মনের মতন কাল, এ ত হবিবেও, আৰচ এতদিন হয় নি কেন মনে। কিছুদিন আগেকার ক্ৰা—ছ্লেয় হুট ছেলেকে বছ ভালো লেগছিল আমায়—বাগায় ভেকে এনে গল্পল ক্ষতাম। হঠাং একদিন টের পেলাম ভাগের এবানে আলা• মানা। সেই বেকে সেকেও মাটারের ভয়েই হোক বা ভার ওপর বেলাভেই হোক, মনটা এমন গুটারে গেল যে সেই ক্রেই হয় ভো ছ্লেয় ক্ৰা

(नरव किक्टाव अक्ट्रे श्रामन।

শেষের দিকটাতেই চম্পার ঠোটের একপ্রাপ্ত বিযক্তিতে একটু ক্ষিত হইরা উঠিয়াছিল, যঙ্ব্য করিল—'এ নতানি কি নেকেও যাটাবের ?'

'না, ম্যানেকারের । ... সেইকনোই তো বেয়ার কৰা বললাম, বারকরা নইমির ওপর নিকের মহয়ত বিঞ্জি করে দেওরার শিলমোহর থাকে কিমা। ... এই লোকটাই মাটার-মশাইরের চেয়ারের অমর্যাদা করছে আককাল। ... যাক কিকাম কিকথ। এসে পেল। মোটের ওপর, ছলের কথা আবিনি, আজ ওদের ছলের ঘট। দেবে হঠাংই মনে হ'ল—তবে আমি নিজেই বা একট। না বসাই কেন ?'

ভিতরে ভিতরে একট আনন্দের জোয়ার যেন কুল ছাপাইয়া সুলিরা উঠিতেছিল চন্দার মনে। গুলুনিয়ার সেই আগুন লইয়া যে সেদিন কথা হইল তাহার পর হইতে একটা চাপা আশবার তাহার মনটা ছিল ভরিয়া। টুলু যার নাই কোপাও, আগুন লাগাইবার মত করে নাই কিছু, দিনগত কালগুলি নাপেকার মতই করিলা যাইতেছে, তবে ভাষটা প্রথমে, তর হয় যে-কোন মুহুতেই হয়তো বাঁধন হিছিলা চলিরা বাইতে পারে। যার নাই, তবে চন্দার মুক্তি যে মনে বসিয়াছে এমন কোন প্রমাণও পার নাই চন্দা। প্রসক্ষী নুতন করিয়া ভূলিতে সাহসও হইতেছিল না, মূধ বুলিয়া প্রহল শবিত দৃষ্টিতে গতিবিধি লক্ষ্য করিয়া যাইতেছিল।

এ সব উল্লাস প্রকাশ করিতেও সাহস হয় না বরং ভয় হয় পাছে আপনা হইতে প্রকাশ হইয়া পড়ে। চম্পা নিজেকে সংযত করিয়া লইয়া টেবিলে ঠেস দিয়া দাঁড়াইল, প্রশ্ন করিল, "তা আমায় ডেকেছেন যে ?"

"হেলে কোগাড় করতে হবে, আড়কাটি চাই মা ?"—একটু হাসিল।

্বড় বিট লাগিতেহে চুম্পায়, এমমই এই দেবার আহ্বাৰ-খলা লাগে বিট, আৰু আশহার অবসানে আয়ও বিট লানিছেছে, একটু বাঁটাইরা কথা বাড়াইতে ইছা করিতেতে। বলিল---"আমার বারা হবে বনে করেন ?"

"নে কি কৰা ? ভূমি আবার কেন্দে আমতে পার যে হেলে।"

বেশ কোরেই হাসিরা উঠিল, চম্পাও হাসিরা মুবটা মুরাইরা লইল, বলিল—"হীরের বন্ধনার আবার যাবে না জীবন বেকে দেবছি। বেশ, দেবৰ আনি চেষ্টা, আবার কেন্ডে আবা ছেলের যবন পর আছেও দেবছি। কিন্তু একটা কবা ওরা ও-মুলে ভারগা দেবে কেন ?"

"সেইটেই তে। আধার উদেও।"

"বুৰলাম না।"

"কোর করে নোব জারগা, আমার যা কাজ ভাভেও বোঝাণড়াটা ভো এক সময় মা এক সময় করভেই হবে এদের সলে চলা।"

চন্দার মুধের দীপ্তিটা যেন নিভিন্না গেল, সেই বিজ্ঞোছ, সেই শুশুনিয়ার আঞ্চন মনে মনে বিকি-বিকি অলিভেছে; প্রচানো একটা অছিলা মাত্র।

সমত আশহার ক্ৰাটা না ব্বিলেও টুলু আবার একটু নরম হইরা দেল, হয় তো এই ভাবিরা যে চন্দা এতটার ভঙ প্রভুত নর, সহারতা দিরা উঠিতে পারিবে না। বলিক—কিছ এবন লে তর নেই, ছুল বড, আমি নিজে পঞ্চান্দি, এতে আর কার কি আপত্তি বাকতে পারে, বিশেষ করে ম্যানেকার নেই যধন।

চলা প্রশ্ন করিল-এর পরে-ছুল ধুললে ?

"আমার স্পটা হবে সকালে, কারুর স্পোর খাছের ওপর তো সুল বসাতে যাছি না।"

ক্ৰাটা এমন একটু চাণা উন্নান্ত সহিত বলিল যেন চন্দা ও-পন্দের উকিল, ভাহার মারকতে ও-পন্দকেই শুনাইরা হিতেহে ক্ৰাটা। চন্দা হাসিরা কেলিল, বলিল—"আবার ওপর রাগের কিছু বেই, আবি তো বাড়ের ওপর হুল বসাতে চাইলেও ছেলে-বেরে এনে বোব আপবাকে, অভতঃ চেঠা করব। বলহিলায চারবিক বিরে কবাওলো একবার তেবে বেবা টক বর কি গোড়াতেই ?

চুবু আবার নরন হইগ, বোব হয় একটু অপ্রতিভও, বলিল—"না, আমি যে ওলের বাতে পড়ে বগড়াই করতে চাইছি এমন নর। তাতেও আপত্তি হয় ওলের, তবন এইবানে সরিয়ে আনব আবার হুল। বেঞ্চ ভেডভলো যে এতই দরকারী এমন তো নয়…"

চম্পা একটু যাথা নিচুকরিরা রহিল, ভাহার পর একটু সহুচিতভাবেই বলিল-এইবানেও ঐ ভর খাসে না কি ?

টুপু এবার বেশ ভাল ভাবেই রাগিয়া গেল, বিহানার উপর
ভটাইয়া বসিয়া বলিল—'না চন্দা, এবানে আমি কারুর
অধিকার মেনে নোব না। আমি যে তার ছঙে কভদূর পর্বপ্ত
ভোরের আহি, আর কেউ না ভাসুক ভূমি তো ভান সেকবা।
এ মাইারমণাইরের বাসা, আমার চোবে তার মন্দির; তার
ভীবনের যা রভ—ভার মতটুকু আমার হাতে ভূলে ধিরেছেম
তা, সাব্যমত আমি পালন করবই—দে সাব্যমতর মানে কি
ভূমি ভা ভানোও। ভোমার সাহায্য আমি চেছেছি এই
বিশ্বাদে যে বামিকটা পর্বস্ত আমার সদে এওতে ভূমি ভোমের
আহ, তা যদি না বাক ভো…'

চম্পা বীরে বীরে মুবটা তুলিল, একটু অপ্রতিত ভাবেই বিলিল— "বানিকটা কেন ? যতদূর আপনি নিয়ে যাবেন দরা করে। বলগাম তো ভারের কতে নর, কাক বাতে আপনার ভাগো করেই হর তাই অভেই চারদিক ওবু একটু ভেবেচিন্তে দেবা; সেও কি আপনার চেবে আমি ভাগো করে দেবতে পারি ?"

क्यमः

# পান্থৰীণা

এ এন এম বজলুর রশীদ

ধুসর ধুলার পথ বেরে বার পাছ বাজার বীণ্—
অন্তরে তার কোন্ অতীতের বেগনা অন্তরীন।
বাজে বাজে প্রর বিরহ-বিগ্র তবু তা মধ্র লাগে—
তারে তারে তার চির-ক্ষর অনন্ত অন্তরাগে,
তকু মন বন অঞ্জলি নাগি আপনি তাহারে নির'—
কত না লীলার বুগ হতে বুগ ওঠে লে উচ্ছ্, গিরা।
লে যে বীণ্ কার—আগে সক্ষেহ আগে শভ সংশর
আগনার হাতে পাছ বাজার—কোবা পুর-তান-লর ?
ল'পি দের বেহ-বীণাধানি তার ক্ষর আসি আগে—
মধু গাছারে বেহনার তারে এ কি সংঘাত লাগে !

এত যে হংব দৈন্য অপার তবুও তাহার বাবে

চিরবঙ্র গ্রীতির বারতা নব বৈবতে বাজে—

বাজে বাজে সুর অজানা বঁবুর পাছবীবার তারে—

কুল কোটে, তার পরাবপদ্ম বিকশিত ববুতারে;

তবু অহুত্তি—নামে তবু কাঁকি তবু কলকোলাহল

ভাকি—ভাকি ভারে, ভূমি যে আমার আমল উজ্ল।

বাজাও বুকের তারে তারে তব বিচিত্র সলীত,

আমি শ্রোতা তার—হারাই আমার হুংবের সহিং।

ভূমি ভূলে লহ পাছের বীবা, আমল-বেষনার
প্রিক্ত চলিবে অভর মধি যে স্থরে ভাকিবে ভার।

# আমেরিকার শৈক্ষাব্যবস্থা ও কিশোর আন্দোলন

### শ্রীরঞ্চিত সিংহ

• আমেরিকার শিকাব্যবহা খাবীন মনোবৃত্তি বিকাশের অন্তুক্ত এবং ছেলেমেরেনের শিক্ষার সঙ্গে জীবনের একটা গজীর যোগ খাছে। খাষেরিকার ছুলের ছেলেয়েরেরা বুব ছোটবেলা त्यत्करे भगज्ञात चानार्ग छेत्र एत. काल निकास ७ कात्क ভারা আদর্শ মানুষ হবার সুযোগ পার। কিভারগাটেন ছলে পছবার সময় থেকেই ভারা দেশ ও সমাজের প্রতি कर्खरा अरः निक्स्पद चापर्न ७ पाविष नवस्य जाता नरहजन হরে ওঠে, নিজের দেশ ও জাতীর ইভিহাস সহতে পর্বা-বোৰ করতে শেৰে। ভারা ভাবীকালের দিকে দৃষ্টি প্রসারিত करत भीवरनत गर्य हरण, विविनित्यय अवर अरक्षारतत भग्धन পাধরকে তেডেচরে চলার পথকে সুগম করে তোলে। আৰু আমেরিকার প্রামাঞ্চল নিরক্ষরতা বলে কোন জিনিষ নেই वनाम इत्र मणका ३० वन निर्वाण महात वाता । कुन-কলেছের সৰ রক্ষ কাভেও বেলার যেরেরা কোন সংশে (धरनप्यत क्रांत क्रम यात्र मा। भवित (धरनप्यविता पून-বেকে বৃত্তি পার। ভারা বৃশীমত নিজ নিজ শিক্ষার বিষয় (वरह (नव, कुल-करलाक्ट शास्त्रवा निरम्पाव प्रविश्वर पीवन গঠনের স্থােগ লাভ করে !

আমেরিকার বিভিন্ন প্রদেশের অবস্থা অসুষারী নানা মত ও পথ অনুসরণকারীদের নিয়ে শিক্ষা আন্দোলন সুরু হয়। বেশীর ভাগ কেত্রে বেসরকারী সাহায্য এই আন্দোলনকে মব-ফীবন দান করে। আমেরিকার সমন্ত প্রদেশেই ৬ থেকে ১৪ ও ১৮ বছরের ছেলেমেয়দের কর্ম আবন্তিক শিক্ষার ব্যবস্থা আছে। বছরে ভিন মাস চুট, বাকী নর মাস সকাল নয়টা বেকে বেলা চারটা পর্যান্ত স্থান। শীতকালে বিভালরসমূহে প্রভার চাপ একটু কম। সে সমস্ত প্রভারেই স্থান ধাবি। আমেরিকার প্রার ২,৪০,০০০ বিদ্যালরের মধ্যে বেশীর ভাগই 'পার্থলিক'-মূল। যে যে শ্রেণীর পার্থিক-মূল আছে, ভাদের হিলাব নিয়ে প্রথম্ভ হ'ল— এই সমও ছুলে প্রাথমিক শিক্ষা থেকে ছুক্র করে বিশ্ববিদ্যালয়ের সব রক্ষ শিক্ষার ব্যবস্থা থাকে। তা ছাড়া
ছাতে কলমে কান্ধ শেখাবার কার্য্যকরী-ছুল, বিশেষ বিশেষ
শিল্প-বিদ্যালয়, বেসরকারী ছুল ইত্যালি আছে। ছুঃছ ছেলেমেরেদের ভঙ্গ পৃথকভাবে বিশেষ বিশেষ বিষয় শিক্ষার ব্যবহা
করা হর। রোমান, ক্যাপলিক, কোগ্রেকার্স ও মার্যান্স্ প্রভৃতি
বর্ষ্য-প্রতিষ্ঠানের মিক্ষার বিদ্যালয় বিদ্যালন। সাধারণভঃ এই
সব প্রতিষ্ঠানে ১২ বছর ব্যবেই প্রাথমিক শিক্ষা শেষ করে
যার। ১৮ বংগর ব্যবে উক্ত বিদ্যালয়ের শিক্ষা শেষ করে
মিতে হর, ভারশ্র আগ্রো চার বছর ধরে চলে বিশ্ববিদ্যালয়ের শিক্ষা।



अकड़े केल विद्यालय

আমেরিকার ক্লের মব্যে প্রথম উলেপ করতে ইয় নার্সারি-ক্লের (শিশু-বিদ্যাপর) কথা। এই সব ক্লে কুই-ভিন্ন বছরের ছেলেমেরেরা থেলার মব্যে ভূবে থাকে। এথানে থরচ একটু বেশী দিভে হয়। ভালের কল আলাদা থাক্ষার ভাষণা, চেয়ার টেবিল, বইপ্র ও থেলার ভিনিষ

বিদ্যাশয়		বিদ্যালয়-সংখ্যা
১। সাৰাৱৰ প্ৰাথমিক ও উচ্চ বিদ্যালয় (কিঙাৱগার্টেন সংৰ্ভ)		<b>২২৩,২৯৫ ( লক</b> )
২। বেগরকারী প্রাথমিক বিদ্যালয়		১১,৩০৬ (হাৰার)
৩। বেগরকারী উচ্চ বিদ্যালয়		७,१६५ ( " )
৪। কলেৰ বিবৰিদ্যালয় ও শেশাদায়ী খুল		( ۾ ) دهورد
৫। বোভিং-ছুল		<b>4</b> F3
৬। বেদরকারী ব্যবসায় ভূচ	7	২,০৯৯ (হালার)
A L STEEL STEEL STEEL		( ۾ ) دھورد



प्रभव अकृष्टे का हरदावी-पत

এবং আলাদা ভাঞার ও নাগ বাকে। এই লমভ নাগারিছুল (সংবার ১৫০০) সাবারণতঃ সরকারী সাহায্য এছব
করে। অবপ্ত বেসরকারী ভাবেও অনেক ছুল পরিচালিত
ছর। প্রত্যেক ছুলে ৩০ জন ছাত্র নিরে ছর এক একটি
ফ্লাস, তাভে তিন জন করে শিক্ষক বাকেন। বেলাগুলার
ব্যবহাও ববেট বাকে। তারা যে জগতে বাস করে ভাকে
বাতবিক্ট বলা চলে আনক্ষয় ছগং।

আমেরিকার কিভারগাটেন স্থলের বাহু দৃষ্ঠ বেমন পুক্ষর তেমনি সেওলি সুপ্রতিষ্ঠিতও বটে। আমেরিকার সমস্ত কিঙার-গার্টেন স্থল কেডারিক কোরেবেল্ ও মালাম মন্টেগরি উভরেরই শিক্ষা-পদ্ধতি নাচ-গান, হাতের কাক ও খেলাগুলার মধ্য দিয়ে অসুসরণ করে।

শহীর ও মন উভরেরই উরতির দিকে লক্ষ্য রেবে সাজ্যতিক প্রাথমিক স্থলের হেলেমেরেরা বছ হরে ওঠে। ৬ থেকে ১২ বছর পর্যান্ত তাদের প্রাথমিক শিক্ষার কাল। স্থলের শিক্ষর বিবর হ'ল—লেবা-পড়া, সংখ্যা ও রালি-জান, ইতিহাস, ভূগোল, সমাজনীতি, চিত্রকলা ও সদীত, ভাষা-লিক্ষা, বিজ্ঞান, বাহ্যরক্ষা ও ব্যারামচর্চা। সর্বান্ন বিজ্ঞানসম্মত উপারে শিক্ষা বেওরা হর। এই সব স্থলের কিশোরব্যক ছাত্রছাত্রীদের হুলের ক্ত্রতি এক একট কিশোর-ফল। এই দল ও হুলের নেতাদের বিশেব কথর আহে। ভারা হাত্তে-কল্যে কাল্ক্ করে নানা বিষর শেবে, ছবি আঁক্রে ও লেবাপড়া করে, ভূলের ক্লান-ক্রের পালাপালি বলে নানা বিবরে আলাল-আলোচনা করে। হালক্যাগাবের বে সম্বন্ধ প্রাথমিক বিদ্যালয়

আহে, লেধানকার শিক্ষা-পছভিত্তে এবন ব্যবস্থা অবলম্বন করা হয় वाकान কোন শিক্ষিত লোকের সঙ্গে বিঃসভোচে যেলাযেশা করে ওক্ত-তত্ৰ বিষয়েও আলাপ-আলোচনা করতে পারে। ভারা বিদ্ধে– দের খার্যরক্ষার প্রতি বিশেষ ভাবে মনোবোদী হয় আরু ভ-ছ শিক্ষা ও জীবনের আবর্শ বারা পারিপারিককে ভোলে। আমেরিকার সর্বান্ত বিভিন্ন প্রদেশের শহরে বড় বড় ভুল কিশোর-প্রতিষ্ঠান আছে। শহর থেকে দূরে কোণাও কোৰাও ছয়েকটা মিশম-ছল বিভ-ষাম। পাৰ্বভা অঞ্লে 'বেরি-খলে' প্ৰাথমিক লিকার ব্যবস্থা আছে। এই বিদ্যালয়ের প্রতি-হাতা যিস মাৰ্ণা বেলি আমে-

রিকার কিশোর-শিক্ষা-আন্ফোগনের একজন অধিনারিকা।
এবনও আনেরিকার প্রানাকলের অনেক বিদ্যালয়ে দূরবর্তী ভিন্ন ভিন্ন জারগা থেকে অনেক ছেলেমেরে পদতে
আন্দে। প্রান্ধ্য বিদ্যালয়ে পদ্ধা ছাত্রছাত্রীর সংব্যা
প্রার ১২০ গক। এক একট প্রান্ধ্য বিদ্যালয়ে সাবারণভঃ
একজন নাল শিক্ষক দিয়ে কাক চালানো হন। বোলা নাঠের
বারে আলো-বাতাসপূর্ণ, কাঠের তৈরি ভূল-বাড়ীতে তাদের
ক্লান বসে। এই সব ছোটবাটো প্রান্ধ্য বিদ্যালয় পরিচালনার
ভার শহরের বড় বড় ভূল-ক্ষিটির গুণর ভগ্ত।

আগে বে সক্ল বৰ্ণকলে কাঠের তৈরি ঘরে পাইওনিরর ঘনের শিক্ষা-কেন্ত ছিল আক্লাল সে সব ছানে শহরের পদ্ধন হরেছে এবং সেওলোতে সম্রুতি অনেকটা কারণা কুছে শীচ হাকার ছাত্র ও ২২৮ কন শিক্ষক নিরে এক একটি আটনহলা 'আগুনিক' শিক্ষাকেন্দ্র গড়ে উঠেছে। সেই সব আগুনিক খুল-বাচীখলো বেবতে ভারি সুক্র। প্রত্যেক বিধ্যালয়ে আছে—

১। গাইহ্য-বিজ্ঞান অব্যয়নের জন্ন গাতবানি ক্লাস-প্রন্ধ।
১। উদ্বিত্ব শিক্ষার বিশেব মহল। ৩। চি ভিরাবানার
কর-কানোরারদের বাগহান। ৪। জানা-কাণ্ড পরিভার
করার বোকান। ৫। বস্তরীবানা। ৬। বই ও আসবাবপ্রর
সমেত ব্যাহিং বিজ্ঞান। ৭। ২০০ কোই কলের কাজের
জন্ম গাতবানি ক্লাস-ক্লন। ৮। ২০০ টাইশ-বন্ধ সম্বেভ ক্লাসক্লম। ১। ব্যবসার-বিজ্ঞান। ১০। ব্যোভগার বাজ্ঞেই-বল
বেলার বার্ট। ১১। স্থানাগার গ্রেভ চারবানি ব্যারাবাগার।
অবঞ্জ সম্ব জারগাভেই এক স্কুল্ম ব্যবহা কর। সাবার্ষ্ণ

হুল-বাজীর গাঁপুনি থাকে পাকা, লোভলা কি ভেডলা বিভালর-গৃহ, বেশ আলো-বাভাস থেলে, প্রভ্যেক ক্লানে থাকে ভেড় ও টেবিল, দেয়ালে হেলেমেরেদের হাতে-আঁকা হবি ও ভালের হাতে-গড়া মাটর কুল্যানি আর কুলের ভোড়া। বিদ্যালয়ের হেলেমেরেরা বাধীনভাবে মিকের নিকের কাজ ও পড়াঙ্কনা করে।

শহর অঞ্চের হাতের। সময় সময় হল বেঁথে মিউজিয়ম ও প্রদর্শনী দেখতে বেরিরে পঞ্চে, কারখানা ও বন্ধরাদিতে গিয়ে কিছুকাল কাটায়। ভারা মূলের ক্ষেত্তেকাল করে, বাগান ভৈরি করে—
ভাষের মিশ্বর ক্লাসর আছে।
আমেরিকার সব বিদ্যালয়েই স্লায়চর্চা হাত্রদের একটা প্রধান

শিক্ষীর বিষয়। প্রভ্যেক বিদ্যালয়েই খেলার মাঠ থাকে। খেলাধ্লো সেবানকার শিক্ষার অপরিহার্থ্য অল। শীতের সময় কী, ক্ষেটং ইজ্যাদি খেলা এবং গ্রীফোর সময় সম্বরণাদি ক্লাঞ্জীকার ব্যবস্থা আছে।



ছুলের 'সদীত-চক্র'

बरे अवं विकानत्त्व निका ७४ विकानत्त्व अधीर्य संबोद बर्या जीवांवक वह । विकानत्त्व वाहेरत वर्णक करण्ड



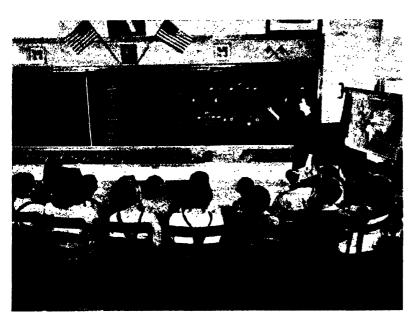
. अक्र कालक-माहे (बर्बी

সংক্ষ কাৰ ও খেলার ভিতর দিবে তাদের পরিচর থটে।
তাদের নিক্র টেডিয়ান, বিতর্ক-সভা এবং বক্তৃতারক ও নাট্যমক আছে। বিভিন্ন ফুলের ছাত্র-প্রতিনিবিয়া সভ্য-সমিতিতে
যোগদান করে নানা সম্ভার আলোচনা করে। তাদের
সেই সব বিতর্ক-সভার শিক্ষকেরা সভাপতির আসন এছণ
ক্রেম: সাবারণতঃ তাদের বিতর্কের বিষয় থাকে—কৃত্ত ও
অর্থনৈতিক সমন্তা, আভান্ধাতিক সমতা ইত্যাদি।

চুটর দিনে ছাত্রদের নাচ-গানের আসর বদে। প্রত্যেক বুল-লাইবেরিতে ববরের কাগক পথবার এবং পড়ে শোনাবার ব্যবছা আছে। প্রাযাকলে মুটে-মজুরদের ছেলেমেরেরা পর্বায় ববরের কাগক পড়ে। শহরের ছেলেমেরেরা ছুট পেলেই কালারবানা, বৈজ্ঞানিক গবেষণাগার ও ফ্রি-প্রতিঠানাদি পরিদর্শন করতে বেরিরে পড়ে। এমন কি, দেশের ব্যবছা-পরিষদের অধিবেশনে উপস্থিত হরে পর্বায়ন্ত সেবানকার আলোচনা শোনে।

আবেরিকার বিশ্ববিদ্যালয়গুলো শিল্প, বিজ্ঞান ও সাহিত্য-চর্চার কেন্দ্র । উচ্চ বিভালয় থেকে পাস করে বেরিয়ে এলে বে-কোন ছাত্র এখানে আইমবিভা, চিকিৎসাবিভা, বিজ্ঞান বা সাংবাদিকতা বিষয়ে শিক্ষাগাভ করতে পারে । সাবারণতঃ শিক্ষা-সমাপ্তির কাগ চার বংগর । কোন কোন আরগার মাহিনা অভ্যন্ত বেশী, অবভ বৃত্তির ব্যবহা আছে ।

বিশ্ববিভাগর হাড়াও আবেরিকার জ্নিরর কলেশগুলো সভাতি হাতে-কলনে শিল-শিকার কেন্দ্র হরে উঠেছে। এ-ভলোতে সাধারণতঃ শিকার সময় হ'বছর। এ বরপের আর ২০০ জ্নিরর কলেকের ছাত্রসংখ্যা হ'ল ১৩৬৬২৩।



গ্ৰাষ্য বিদ্যালৰে ছেলেমেয়েদের সগীত-শিক্ষা

সপ্রতি আবেরিকার প্রগতিপথী শিক্ষায়তনগুলো ব্র ক্ষমির হরে উঠেছে। বাধীনতাবে শিক্ত-মনের ঘাতাবিক বিকাশই এই শিক্ষাপ্রতিষ্ঠান হলোর আসল লক্ষ্য। এবানকার হাজেরা বই পচ্চে যতটা, তার চেরে চের বেশী শেবে কাজ করে । এই প্রতিষ্ঠানের কর্তুপক্ষের আসল উদ্দেশ্য হ'ল শিক্তদের এবনতাবে বৃহত্তর ক্পতের সঙ্গে বনিষ্ঠ পরিচর সাবন ক্রিরে বেওরা, যাতে তারা নিজেদের পায়ে তর বিরে দাঁড়াতে পারে।

আবেরিকার শিল্পবিদ্যালয়গুলোতে কৃষি, ব্যবসায়-বাণিজ্য, ছাভের কাজ বরনশিল, চিত্রকলা ও সদীত ইত্যাদি শিক্ষার ব্যবহা করা হয়। এখানে পার্ট-চাইম (আংশিক সময়) ক্লাসের ব্যবহা। নিউইয়র্কের কলেকের ১৭ বছরের ছেলে-বেরেরা পর্যন্ত এই সব বিদ্যালয়ে সপ্তাহে চার বন্ধী করে ক্লাস করে।

আমেরিকার বেগরকারী বিহ্যালয়পুৎসমূহ আধুনিক কচিল্যত এবং তার পরিবেশও ধূব সুন্দর। মেরেদের ক্ষত বোর্চিং-ছুল, চার্চ-ছুল ও আন্তর্জাতিক বিভালর আহে। রোমান ক্যাথলিক 'লেপারেট-ছুল' আরও ক্ষনপ্রিয়। তাদের বিদ্যালয়সমূহের ছাত্রসংখ্যা হ'ল—২৩,৮৫,০০০। বেসরকারী বিদ্যালয়ের ছাত্রসংখ্যা—২,৫০,৫০০। ধর্মবাক্ষেরাই সেই সব বিদ্যালয় পরিচালনা করেম।

ছু:ছ ছেলেবেরেদের থতে আবেরিকার বিশেষ শিক্ষার ক্যবছা আছে। তাদের কতে আলাদা কুল, আলাদা শিক্ষার সরস্থার। অভ ছেলেবেরেদের বোর্ডিং-খুলের সংখ্যা ৫০, ববির ছেলেবেরেদের ভুল ৭৯ট, বুল ও পাণ্ল ছেলেবেরেদের ভুল ১০৪ট, ছ্বল ও কথ ছেলে-বেরেদের ছুল ১৪২টা। তা ছাড়া আরও প্রার ৩২৫০০০ জন হুঃছু ছেলেনেরের শিক্ষার জড় বিশেষ বরণের বিভালর আছে। তারাও রীতিবত লেবাপড়া করে, বেতের চেরার টেবিল ও নাহর বোলে, জামা কাপড় তৈরি করে। বিভিন্ন শহরে এই শিক্ষা-কেল্লের শাবা আছে। সেইলব শিক্ষাক্তেশ্রের ছাত্র- সংব্যা হ'ল ১৪ হাজার ও বিক্ষাক্ত ১৫০ জন।

আমেরিকার প্রাথমিক বিধ্যাপরে বেশীর ভাগ মহিলারাই শিক্ষভার ভার প্রহণ করেন। তাঁদের বার্ষিক বেতন সাধারণতঃ ১৬২৫ টাকা থেকে ৪৫৫০ টাকা পর্যন্ত। শহর অঞ্চলের শিক্ষকদের বার্ষিক বেতন হ'ল ৬৫০০ টাকা

প্রামাঞ্চলের ২৭০০ টাকা। বেশীর ভাগ শিক্ষ থ্রামের লাবারণ বিদ্যালয়ে কাজ করেন। প্রামের পুরনো শিক্ষকেরা (সংখ্যার ১২ হাজার) বাধিক ৯৭৫ টাকা মাত্র বেতন পান। প্রতি বংসরে আমেরিকার নর্মাণ স্থুল থেকে প্রায় বিশ হাজার শিক্ষক নানা বিষয়ে বিশেষ ভাবে শিক্ষা লাভ করেন। তাদের শিক্ষাব্যবহার উর্ভির জভ প্রায় ২৩,৩০,০০০ জন সভ্য নিরে যে 'জাতীর শিক্ষক মহাসমিতি' গঠিত হয়েছে, তার প্রতিনিধিদের কাজ হচ্ছে কলেজ পরিহর্শন করা।

আমেরিকার বিদ্যালয়-বিভাগ প্রতিষ্ট ছাত্রের শিক্ষা ও স্বাহ্য লহুছে বিশেষ ভাবে অবহিত। শিক্ষকেরা প্রত্যেক ছাত্রকে নানা ভাবে পরার্মণ দেম, নির্দেশ দেম, গবেষণার সাহাব্য করেন। বিভালর, জুল-মিউজিয়ম, পাঠাগার ও প্রকর্ণনী— সর্কল ক্ষেত্রেই ছাত্র-শিক্ষকের মিলিত শক্তি কাল করে। শিক্ষা-বিভাগ থেকে প্রত্যেক বিদ্যালয়ে লাইত্রেরি, রেডিও, ইত্যাদি দেওরা হয় এবং হাতে-কল্যের শিক্ষার ক্ষা অর্থসাহাত্য করা হয়। শিক্ষা-বিভাগের সভ্যেরা পাঠ্য পুক্তক নির্বাচন করেন।

আবেরিকার ক্ষি ও ব্যবহারিক শিক্ষার বাত সক্ষ ক্ষ ভলার বরুচ হয়। ব্যবহারিক বিভা শিক্ষার প্রতিষ্ঠানসমূহের হাত্র-সংখ্যা প্রার ২৪,৩৪,৩৪১, কৃষি-বিদ্যালয়ের প্রার ৫,৯৬,০৩০, শিল্প ও বাণিজ্য-বিদ্যালয়ের প্রার ৮,১০,১০২, বরোরা বিদ্যালয়ের প্রার ৮,১১,৫৯১ এবং অভাভ শিক্ষালয়ের প্রার ১,৫৬,৬১৫ ক্ষা। ভাবের ক্ষ ৩০,০০০ শিক্ষ আছেন। সেবামকার, স্বস্থারেড ১,১৭,০০০ ক্ষম শিক্ষাকের ক্ষ



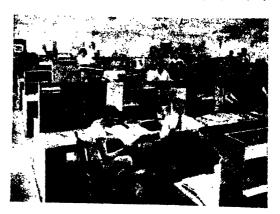
একট প্রাথমিক বিভাগয়ে লেখাপড়া চলছে
১৭৫১ট শিকা-প্রতিষ্ঠান আছে। সেই সব প্রতিষ্ঠানের বার্থিক
আর ১৯৫ কোট টাকা। আমেরিকার ব্যবহারিক বিদ্যা
শিকা-দানের বাব্তীর প্রতিষ্ঠানের শিক্ষকদের মধ্যে ১,৮৬,৫০০
কন বি-এ, ২৬৭৩১ কন এম-এ, আর ৩১৯০ কন ভটুরেট
ভিত্রীবারী।

সেদেশে পাবলিক ফুলের ছাত্রদের বরচ অনেক কম। বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্রদের বাহিক বেতন ২৫৬ টাকা। যারা বোর্ডিং-ছোটেলে বেকে পছে, তাদের বরচ বুব বেলী। তাদের জন্য যে কি প্রচুর পরিমাণে টাকা বরচ হয়, তা ভাবলে আকর্ষ্য হতে হয়। ববা—

- ১। বেগরকারী প্রতিষ্ঠানে— বার্ষিক ৩১৭০ টাকা
- ২। রোমান ক্যাবলিক প্রতিষ্ঠানে—" ২১২৫
- ৩। অঞ্চান্য প্রভিষ্ঠানে--- " ১৫৬০
- 8। नवकावी अणिकीरन-- " ১৪৭৫ "
- e। जबकादी निक्क-श्रक्तिश्रांत--- " ১०२०
- **७। बिट्या विश्वविद्यालस्य--- " ৮**8¢

আমেরিকার শিক্ষা-আব্যোলনের ইতিহাসে বাদের নাম ব্যবহৃত্ব আছে, তাঁদের মধ্যে ইমাস কেলারসন, বেঞ্জামিন ক্যাকলিন্, হেনরী বার্মার্ড ও হোরেসম্যানের নাম বিশেষ উল্লেখবোগ্য। আক্ষকের আমেরিকার 'ম্যান'-বিদ্যালর ও বার্মার্ড-বিদ্যালর ধুব ক্ষরিরা আমেরিকার কলেকের 'সমবার-

ভবন' ভার একট ভাবল বিকেন্তন। প্রত্যেক বাড়ীভেই বিরাট পরনাগার, রেভোর'। ও লাইরেরি ভাবে। ভাবের সরভ কাল সমবার-নীভিতে পরিচালিত হয়। লভাতি প্রায় ৪০০ 'লনবার-ভবন' ভাবে। মারা পাঁচ বছর ভাবে শিক্ষাক্ষেরে এই সমবার ভাবেলন সুরু হয়। গোড়ার বিকে পহরে ও প্রামে ভবেক বাসগৃহ ভৈরি করে ছারুবের থাকবার জন্যে ভাড়া বেওরা হর, পরে সেই বরভাড়ার টাকা প্রভিটানের ভাঙারে গিরে কমা হয়। বর্তমানে প্রভিট সমবার-ভবনে শোবার ঘর, কান্দের ঘর, লাকের ঘর, সানাগার, ভালো-বাতাসমৃত্যু পাঠাগার এবং ভাসবারণত্তে পূর্ব বসবার ঘর ভাবে। কোন কোন কলেজের 'সমবার-বাড়ী'র বিশেষ প্রতি-



সমবায়-রাভীর আধুনিক পঠাগার

নিবি-দল থাকে, তারা সপ্তাহে ছর বন্টা করে টেলিকোনের স্ট্রচ-বোর্ডের কাজ, বাগানের কাজ, টাইপের কাজ ইত্যাদি আরো হরেক রকম কাজ করে। অনেক কলেজের দশ বারটা 'সমবার-বাড়ী' থাকে। বিবাহিত ছাত্রদের জন্যে আলায়া বাড়ীর ব্যবহা করা হয়। প্রতিঠানের বেলার্লোর প্রোঞ্জার সমিতির সভ্যেরা ঠিক করে। বিভিন্ন প্রদেশে বে সব সমবার প্রতিঠান ও সভ্য আছে তাদের নির্মিত বার্ষিক সম্বোজন হয়। এই সব 'সমবার-বাড়ী'র প্রায় এক সক্ষ ছাত্র নির্দেশের প্রতিঠানের কাজ চালার।

### প্রেম-স্বপ্ন

🖷 নীহারকান্তি ঘোষ দন্তিদার

বাসভী সন্ধার কোনো ভারারাও বহি নেযে আসে ভোষার ধুসর-নীল পৃথিবীর এই চারিপালে, বেবানে পলালবন বোবনেরে করে অভ্তব—
নাহবের ভিড বেবা করে সেহে বহু কলরব, বেবানে পাহাড় আজো হল্ল দেবে 'বরাক' নবীর, ভোষার ভ্রারী-চোব তবু জানি হবে না অবীর।
ভবু জানি ভব ববে বোলা বেবে বুবীর বাভাগ,

নিটোল ছ'চোৰ ভূপে চেয়ে চেয়ে দেবিবে আঞ্চাশ।
সে আকাশ এ পৃথিবীর বাসে বাসে দেবেছে স্থপন,
সাগরিকা-মন নিয়ে কত প্রেন্ন করেছে বপন
নাহ্যের সাবনার। মুন্তিকার করি তা সন্ধান
তাই আনি আনমনে তারি নীল-সমুদ্রের গান।
সে গান অনেক চুরে তব প্রেম্ন করিবে প্রচার—
নোর কাছে চুপি এসে দেবা চুবি বেবে বত বার।

## অন্তা ও আদ্য

### শ্রীবিমলাচরণ দেব

ৰহাভারত, ১২, ২০১, ৮ (চি ডে) পাই ( বহু প্রকাপতিমুহম্পতি সংবাদে ) প্রকাপতি বহুর কাছে বহুরি রুহম্পতি
গিরে বলহেন—

"ৰক্সামসংখাংক বকুংবি চাণি ছক্ষাংসি নক্ষ্যপতিং নিক্লস্। অধীত্য চ ব্যাক্ষণং সক্ষং শিক্ষাং চ ভৃতপ্ৰকৃতিং ন ৰেৱি ॥"

আর্থাং বক্, সাম, বকু:, সমন্ত পঢ়লাম, হল:, জ্যোতিষ, নিক্লন্ত, ব্যাকরণ, কল্প, শিক্ষা সমন্ত। কিন্তু ভূতপ্রকৃতি, আর্থাং সংসারের হাসচাল বুকতে পারলাম না।

গভীর হভাশার ভাব পরিক্ট হয়ে উঠেছে। "এত পড়লাম, এত বাটলাম, সংসারের রক্ষবানা ব্রলাম না।"

বেদ নিজের জ্ঞাতেই বৃহস্তি আসল ক্ৰাটাই বলে কেলেছেন, বেনন ছালোগ্য উপনিবং ৭. ১. ১-৩-এ নারদ বলে কেলেছেন সনংক্রারের কাবে।

বৃহস্তি বেন বলছেন—তার সমন্তই পুঁবিপড়া বিভা, সমন্তই theoretical, বাকে মহাভারতে অহন 'আগম' বলেছে, বা 'প্রত্যক্ষ', practical, বেকে একাভ তকাং। বভতঃ, 'আগম' বঢ় বেনী অগ্নীলন করলে ( আবাং 'প্রত্যক্ষ' হারা বাজিলে না নিলে ) সেটা প্রায়ই 'আগক্ষ বাগক্ষ্' হরে ইন্ডার। বোব হয় এই ভেবেই ক্রীমন্ভাগবত ১১. ৭. ২০ বলেছেন—'প্রত্যক্ষ ও তংগ্রস্ত অন্মান'ই মাধ্যের সর্ব প্রেয়ঃ করে: 'আগম', 'নকপ্রমাণ' বাদ। মহাভাবতেও আছে—'আগম শুনতে চাই না, প্রত্যক্ষ কি কান, বলো "।

এ হিসাবে, মহাভারতে এবানে যে বৃহস্পতিকে 'মহবি' বলা হরেছে, দেটা 'প্রৌচীবাদ' বলে মনে হর। তাঁর বিভা পুঁবিপড়া মাত্র, 'শ্রুত' মাত্র থেকে হওয়ার তিনি 'শ্রুতবি'। 'শ্রুবি' নহেন। কারন, 'বর্নে'র সহিত্ত 'সাক্ষাংকৃত' না হতে পারলে কেউ 'শ্রুবি" পদবাচ্য হতে পারেন না। 'মহবি' ভ লারও উপরে। তাই বলহি, এবানকার বৃহস্পতি 'শ্রুতবি' বাত্র।

রংশতি বে হতাশ হরে পড়েছেন, সেটা ধুবই বাডাবিক।
স্ক্রী বা বিরাট, তাতে রক্ষারিও এত; নানা বৈচিত্র্য; রাডা
কত, গোলকবাঁবার মত; মত কত, পরশারের থেকে কত
ভকাং, অনেক কাষণার পরশারবিরোবাঁ। নাবা ভলিরে
বাঙরা, 'বুবতে পারলাম না' বলা আশ্রুর্ব নর। বিশেষ করে
ভিতাবীল ব্যক্তির পকে।

কিন্ত যদি এত পড়া, 'প্রত্যক্ষে'র সঙ্গে বিসিত্তে বাজিত্তে বেওরা বার, বেবা যার—স্কৃতিত 'অগব্যহ'র নীচে বুলগভভাবে 'একছ', অধৈত' আছে। স্ক্লীতে অগংখ্য প্রকারের বস্ত আছে বটে, যার সংখ্যা ভাষতে যাথা বুরে যার, কিন্তু শেষে কেবা যার যে সমত সুলতঃ 'এক'।

बहे बुल्छः 'बल्'-ब्रव क्यां (क्यांवे हेशिनेष्ठ वालाहम—'क्ष्म नाट्यांक क्ष्मने' (क्यांवे ह्यांविष्ठ) च्यांवे 'गाहव त्यांव्यांवे च्यांवे व्यांवे च्यांवे च्यांवे व्यांवे व्यांवे च्यांवे व्यांवे च्यांवे व्यांवे च्यांवे च्यांव

বিতীয় কথা হচ্ছে—'একমেবাবিতীয়ন্', আনন্দ্রিরি বলছেন—'একম্---সলাতীয়বগতভেদহীনম্,' অর্থাং থায় 'সলাতীয়' কিছুই নেই, তাঁর 'লাতীয়' তিনি একা। তা ছাভা তাঁর 'বণতভেদ' নেই। যেমন হাত সম্বন্ধ চেটো, গিঠ, আঙ্গুল বা কোন প্রব্য বা ছানের দক্ষিণ, বাম, উত্তর, দক্ষিণ বলা হায়। এঁর সম্বন্ধ সে সব বলা যায় না, তিনি এ রক্ষ 'হৃহং' যে সমন্ত স্ক্রীকে একাছভাবে আছ্লার করে 'অত্য-তিঠদ্ দশাপুলম্'—তাঁর ভাইনে বানে, উত্তর দক্ষিণ বলি কিক্রে ? এই ত হ'ল 'এক্ষ্'।

তার পর 'অবিতীয়ন'। আনক্ষিরি বলছেন "বিজাতীর ভেদশৃত্ন" অর্থাং একর ব্যাব্যা করে বললেন বে তার 'নজাতীর কিছুই নেই ও তার স্বপতভেদও নেই, বেল, তার বেকে অভ জাতীর কিছু বাকতে পারে ত ? উভর হচ্ছে—'না তার বেকে অভ জাতীরও কিছু নেই'।

বোৰ হয় এয় চেয়ে 'আভ্যন্তিক এক' (absolutely one) হতে পাৱে না ।

প্তীয় ভিতৰিত্ৰমকায়ী নানাদের মধ্যে মূলগত "একড়" হর্নন সহতে ঈশাবাজোপনিষং ৭ বলেছেন—

"বন্ধ সৰ্বাণি ভূভাভাৱৈবাভূদ্ বিভানভঃ

তৰ কো যোহ: কঃ শোক একসময়পটত: "

তা হলে ইাছাল—ছটিতে যত ব্যক্ষই দেশ, মূলত: লয়ভই "এক"।

बनात्म बन्छै। एवा नत्म निर्दे । देवरिक विद्या छोत्स्य

"বৃষ্টি"তে যে "একড়" দেবেছিলেন, আৰু পাশ্চান্ত্য বিজ্ঞান যন্ত্ৰ সাহাব্যে সেই "একড়" দেবছে। তবে বোৰ হয় ক্ষিদেয় "একড়" স্কাতয় ভাবেয়।

এ সংৰে এক জন আমেরিকান লেখকের লেখা একটু উভ্ত করছি—

"It is to J. J. Thomson (E) that Science is chiefly indebted for the experimental verification of the Electron theory. Thomson benefited from the invention (1897) by Wilson (E) of an extraordinarily ingenious instrument known as a cloud chamber, which makes it possible to photograph and actually see the tracks left by electrons and protons as they move about. In 1899, Thomson succeeded in detaching electrons from atoms by the use of the X-Rays, studied them in Wilson's cloud chamber, determined for the first time the charge of a single electron and showed that, regardless of what sort of matter they come from, the ultimate particles are the same. Thus did scientists finally demonstrate that the hypotheses advanced by Prout and Lorentz are true, and that all matter is composed of the same material."-(Erik Achorn, European Civilisation and Politics Since 1815, r. **687)**.

#### একজন বিশ্ববিশ্যাত মনীবীর একখানি পৃত্তক **বেকে উছ**ত করি ---

"It (Chemistry) divides ponderable bodies into some seventy-eight elements, the relations of which to each other have been determined in the periodic system of the elements, and their probable common origin from some primitive matter (prothyl) been shown." (Ersst Haeckel, The Wonders of Life, Chapter XVIII, p. 151).

#### এঁরই ভার একথানি পুস্তকে আছে --

"The recent speculations of Gusiav Wendt, Wilnelm Preyer. Sir William Crockes, and others have pointed out how we may conceive the evolution of the elements from a simple primitive material, the prothyl." —(Ernst Haeckel, The Riddle of the Universe, Chapter XII, p. 79).

এতেও দেবছি—Some primitive matter বা material, কোনও আদি বস্ত এক প্ৰকান স্থল এবা। কিছ ইনিই নিজের দ্বিতীয় পুত্তকবানিতে স্থাতন ভাবে পৌছেছেন—

"Among the various modifications which the fundamental idea of substance has undergone in unodern physics, in association with the prevalent atomism, we shall select only two of the most divergent theories for a brief discussion, the kinetic and the pyknotic. Both theories agree that we have succeeded in reducing all the different forces of nature to one common original force, gravity and chemical action, electricity and magnetism, light and heat, etc., are only different manifestations, forms, or dynamodes of a single primitive force (prodynamis)."—(Riddle of the Universe, Chapt. XII, p. 77).

দেশছি বে এই মনীবী প্রথমে ছুল primitive matter বলে পরে এলে পৌছেছেন হল primitive force-এ—বা থেকে সারা হাই উদ্বভ করেছে।

এতে যনে পথে এএচি।, ১,৬০— "বচ্চ কিংচিং কচিদ বন্ধ সদসদ বাধিলান্বিকে। ভস্ত সৰ্বস্ত বা শক্তিঃ সা ২ং কিং ভূষুসে তদা"

সংই হোক, বা অসংই হোক, বেবানে বা কিছু বঙ্চ আছে, তার শক্তি ভূমিই। আদি শক্তি, বা থেকে সমগুই উরুত।

প্রাঞ্জিক নিষমাস্থারে স্ক্রীর আদি আকার বোধ হয় "রড"। দেবি—বন্ধ আদি শক্তি বেকে উত্ত হরে অনিবার্য্য গভিতে চেটা করছে, রভ সম্পূর্ণ ক'রে, ভার উৎপত্তি ছামে (আদিশক্তিতে) ফিরে বেতে। এই কবাই সাংখ্যদর্শন ১,১২১ এ বলেছেন—"নালঃ কারণগরঃ"।

বছবিশেষ সময়বিশেষে আকারবিশেষ পরিএছ ক'রে দেবা দের: তার পরে কোনও সময়ে সে বস্তু "মাল" হলে দেবা যার যে সে তার "কারণ"-এ কিরে দেছে। ছুল দৃষ্টান্তে বলি—জল জয়ে বরক হ'ল, সেই বরক ঘবন "নাল" হ'ল, তবম সে জলে কিরে গেল। আদি বস্তু বা শক্তিতে কেরবার চেষ্টা। আদি "একড়" তাকে আকর্ষণ করে কিরিয়ে আনহে।

আর এক রক্ষে এই "একছে" ফেরবার স্থলভাবে চেটা ছেবি—কারণ, সেটা "আদি একছ" নর। "জীব" নানা প্রকার বস্তু এহণ করে। যথা, হাবর গাছ নাট থেকে জল, সার প্রভৃতি, বায়ু থেকে নানা প্রকার বালা, ও সময়ে সমরে প্রাণিক প্রব্য নিক শরীর-মধ্যে নের এবং জলম প্রাণী উন্থিক, প্রাণিক প্রভৃতি নানা প্রকার প্রব্য নিক শরীর মধ্যে প্রবেশ করার—উভরে একই উদ্ধেশ্য—ভাগের নানাক বৃচিয়ে নিক শরীরের সহিত ভাগের একত্ব সম্পাদন করবার কয়।

বছতপক্ষে যত দিন "কীব" "কীবিত" বাকে, তত দিনই এইবাপে "নানা"কে নিক্ষের ভিতরে প্রহণ করে নিক্ষের সহিত তাদের একত্ব সম্পাদন করতে সক্ষম হর। আবার—এরই বিপরীতরূপে নিক্ষের "এক" বেকে "নানা"র উন্তৃতি সম্পাদন করে। সমাক সহছেও এই একই নিয়ম প্রযোজা। সমাকও যত দিন "কীবিত" বাকে, তত দিন অব্যাহত প্রাকৃতিক নির্মাত্সারে নিক্ষ "পরীর" বেকে "নানা"র অভিব্যক্তি করে এবং আবার বাহির বেকে "নানা"কে প্রহণপূর্কক নিক্ষ শরীরের সহিত এক করে নিয়ে নিক্ষ পৃষ্টিসাবন করে। কোন "কীব" বা "সমাক্ষের" র্ডাকারে এই উভয় কর্ম করতে অক্ষমতা প্রকাশ পোল ব্রতে হবে যে, সে "কীব" বা সমাক্ষ্মত বা মরবোগ্যব।

কাকেই একট বণ্ড দেবছি, "এক" থেকে "নানা"র উভূতি এবং আবার, "নানা"র "এক"-এ প্রত্যাবর্ত ন।

बनन बहे इरखन विजीधार्य व कथा नमन---

. "নানা"র "এক"-এ প্রত্যাবর্তম। এই দ্বিতীয়ার্বের বেবতে পাই, "ভূতপ্রকৃতি"র একট বিশেষ ক্ষতিব্যক্তি, বাকে বৈত ও অবৈতের বেলা বলতে পারা বার। এই
বেলাতেই "ভূতপ্রকৃতি"র সঞ্জিরতম অভিব্যক্তি। এই
অভিব্যক্তি ঘারাই ভূত নিকের সভার রক্ষা ও পৃষ্টিসাবন করে,
এবং সেই রক্ষা ও পৃষ্টিসাবন সম্পন্ন হলে তবেই অপর সমস্ত
অভিব্যক্তি সভব হয়। এই বেলা অপর সমস্ত অভিব্যক্তির
মূলীভূত বলেই সঞ্জিরতম হতে বাব্য।

সারা শ্বাক একাবিক গৃষ্টকোণ থেকে দেখা বেতে পারে। প্রত্যেক গৃষ্টকোণেই বৈত দেখা বাব, অর্থাৎ সারা শৃষ্টি বেন মুট পরস্পরবিদক্ষণ, পরস্পরবিরোধী দলে তাগ হরে পছে,—বেষন, সত্য-মিখ্যা, দেব-অসুর, আলো-ছারা, মুখ-মুখ ইত্যাদি। এই বৈত প্রাচীন ধরিদের গৃষ্টতে বুবই প্রমেছিল, বুবা যায়। তাই শতপথ ভাষণে একাবিক স্থানে আছে—"বয়ং বা ইন্স্", এবং তংসহ পাওরাও বার "ন ভৃতীরমন্তি"।

উপরোক্ত সমস্ত অভিব্যক্তির সূলীভূত, সঞ্জিরতম অভি-ব্যক্তির দৃষ্টিকোণ থেকে যে হৈত দেবা বার, তা হচ্ছে "অভা" ও "আদ্য"—অর্বাং বাদক ও বাদ্য। শতপথ রান্ধণ ১০.৬.-৩.১-এ আছে—

"ৰবং" বা বছৰ অভা চৈৰাদ্যং চ।
ভদ্ বদোভবং সমাগছতি অভৈবাৰ্যায়তে নাদ্যৰ্"
ঐ বাশ মহ ৫.৩৩ বলেন—
নাভা হ্যাভ্যধয়াব্যান্ প্ৰাণিনোহহুছ্ছপি।
বাবৈৰ স্টা হাদ্যান্চ প্ৰাণিনোহভাৱ এব চ।

সায়া স্ট চুই ভাগে বিভক্ত—(১) যে বাবে এবং (১) বাকে বাবে। "ন স্ভীয়মভি"। ইংৱেলীভেও বলে—"You must be either the hammer or the anvil এবং Kill or be killed."

এই ছরের যথ্যে বে প্রবলতর সেই "অভা" অর্থাং দে-ই বাবে। সেইজভ "অভা" ও "আখা" যদি এক ছলে সলত হয়, তা হলে "অভা"ই অবশিষ্ট বাকে, কারণ "অভা" আলা "আলা"কে প্রাস করে নিজের অংশ (অর্থাং নিজের সহিত একাথীছত) করে নের, কাজেই "আলা"র আর খতন্ত অভিত্ব বাকে না। তাহার নাম রূপ সমন্তই লোগ পেরে বার। "বৈত" বেকে "অ-বৈত"তে আসা গেল। একেই বলছিলাম "বৈত" ও অর্থাতের বেলা"।

এই জন্তা-জান্য, বৈত-জবৈত খেলা সমস্ত জনতে চলছে
ব্যক্তি ও সমক্তি উভয়ত্ত। যে শক্তিমান্ আৰ্থাং বৃদ্ধিবল বা
পাশবিক বল বা উভয়তঃ শ্ৰেষ্ঠ, সে-ই জন্তা। যে মুৰ্বল, সে-ই
আদ্য। এই বলের সাময়িক ভারতহা হেছু আজ বা এই কবে
বৈ জন্তা, কাল বা পরক্ষণে সে-ই আদ্য। একজ্ঞণের কাছে
বৈ জন্তা, অপর জনের কাছে সে আদ্য। এই কবাটি রাজভর্মিরী ৫,৩০৫-এ জুলাইভাবে দেওয়া আছে—

তীৰ্ণহিতঃ বহুলভাংভিনিবভি
তুদ্ধ্ৰে নৌনী বঞ্ছিনিবুশেতা বনাভবাসী।

### ব্যাৰো বিহন্তি ভূ বৰুং প্ৰভৰতি তে তে পালাগ্যপৰ্গুপৱি

বক্ষুকুভাৱা: ১

পূৰ্বে বাছ বাছকে বাছ। ( প্ৰথম বাছ অভা, দ্বিতীর আন্য )-আবার সেই "অভা" বাছকে বক বায়। আবার সেই "অভা" বককে ব্যাব বাবে। বক্ষাশক্তিতে বে শ্রেষ্ঠ,পে নিজ্ঞাকে বায়:

এই কৰাই ভাগবত ১.৮.১-এ আছে, সংগার সহছে বন্ধ মৃত্যুঃ পরস্থাম ।

"অভা"র কার্য্য-প্রধালী সহতে আছে, বহাভারত ১, ১, ১১২তে "পাঙুজিতা বছুন্ বেশান্ বুড়াা বিক্রমণেন চ।" পাঙু বছ দেশ জয় কয়লেন কোবাও বা বৃত্তি (diplomacy) ভারা, কোবাও বা বিক্রমণ (বলপ্ররোগ, brute force) ভারা। প্রবানেও ম ভৃতীরমন্তি। ভিপ্লোমেসিতে হ'ল ত ভাল, নয় ত শেষে বলপ্রয়োগ।

এটাই প্রাকৃতিক, আদিন, চিরন্ধন নিরম। মাত্র বড়ই তথাক্ষিত 'সভা' হোক না কেন, বুলে, ভিত্তিতে এই নিরহ থেকে বায় এবং সর্বকালে সর্বপ্রানে থত যান থেকে উপযুক্ত সময়ে আল্প্রকাশ করে।

এই নিয়মট যে প্রাকৃতিক, আদিম ও চির্ম্বন, তা একটু
ক্রেপেই বুবা যায়। বেশী কথা নয়—সামাত একটু নড়েচড়ে বসা মানে কত পোকা-মাকডের মৃত্যুর কারণ হওৱা।
তার উপর যদি নিজ প্রাণরক্ষা আবন্তক হর, তা হলে
কত "জীবে"র সপ্তাও প্রাণনাশ না করণে হয় না। ("জীব"
আর্থে ত্যা-ত্যা, কোঁ-কোঁ বা বছক্ড করণে তবে সে "জীব" তা
নয়; আলু, পটল, পুইলাক, সাউশাক, জীব। অভঃসংজ্যা
তবজ্যেতে স্থবছাবদমন্বিতাঃ, মহু, ১, ৪৯) এইরপে স্থবি
করতে গেলে কত "জীবে"র প্রাণনাশ হয় বলে কৃষি মিন্তিত।
(ম, তা, ১২, ২৬২, ৪৫-৪৬) নিজের বৃত্তি অর্থাৎ সামাত
জীবনোপায়ের ব্যব্ধা করতে হ'লে হিংসা (অর্থাৎ পরের
প্রাণ অন্ত) করা হাড়া গতি নেই।

শভত রাজন্ বিংসারা বৃত্তির্বিহাতি কডচিং। শুপারবাসমূবত একত চরতো বুনে: 8

म. चा ३२, ३७०, २৮ ( कि ).

নেহাৎ "প্রাণ রাখিতে প্রাণাড"। নিজের প্রাণ রাখতে হলে পরের প্রাণ আন্ধ করতে হবেই। তা না করতে নিজের প্রাণ থাকবে না। আর আনার প্রাণটা যদি না রইল ত সাহা ভাইতে কি রইল, না রইল বরে লেল। "আপ চুবা তো কল চুবা।"

তৰু প্ৰাণটা হাৰতেই এই অবহা, struggle for existence নাম। প্ৰতি জীবই বত দিন না মৃত হয়, তত দিন আফ্লাছভাবে অবিহত নিজ প্ৰাণ বাঁচাবার চেটা করে। স্পটই দেবা বায় বে, এটাই প্ৰাকৃতিক আদিন নিয়ম ও চিয়জন: নিয়ম।

ब नर्वाच र'न ७६ बान्डी (कान्ड क्रांस बाना ।

কিছ তবু প্রাণটা রেবেই ত লোকে ভাত হয় না, হতে পারে মা। "প্রাণটা ত রক্ষা হরেছে, এই বার অবহার একট্ উন্নতির চেটা দেখা যাক। ধরণ এই ভাব আসে, তবন ব্যাপার আরও গলীন হরে টাছার। তবন পরের উপর চোট তীপ্রতর ও ব্যাপকতর ভাবে আসতে বাব্য। এই কারণেই মৃ ভা ১২, ১৫, ১৪ (চি) তে----

"नाव्यक्षा भवसर्वावि नाक्ष्या कर्व बाक्ष्यम् ।

নাৰ্থা মংক্ৰাতীৰ প্ৰাপ্তোতি মহতীং প্ৰিৱৰ্ ॥"
বিদি কেছ মহতী ন্ত্ৰী পেতে ইচ্ছা করে, অৰ্থাং জীবনে ব্ব উন্নতি করতে চায়, তা হলে তাকে প্রমর্ম ছিন্ন করতে ছবে। অৰ্থাং প্রকে যংপ্রোমাভি ক্লেশ দিতে হবে। অত্যন্ত ক্লুৱ কর্ম করতে ছবে, মংক্রমাতী বেরপ জাল, ক্যাচা প্রাকৃতি সংহায়ো নির্মিষ্টাবে মণ্ডছত্তা করে, সেইরপ ভাবে শ্রকে হত্যা করতে ছবে। তা না হলে সে মহতী ন্ত্ৰী পেতে প্রবেশ।

পরকে গাবাতে না পারলে, পরের সন্তা, এমন কি প্রাণনাশ করতে না পারলে, বৃদ্ধি বা বিক্রম বা উভয়বারা পরকে
"আগা"তে পরিণত করতে না পারলে, তৃমি "অভা" বা প্রেট
হতে পারবে না। ঐরপে পরের এ প্রাণ না করলে
তোমার এ বৃদ্ধি হতে পারে না।

এট ব্যাপার চার্নিকে দেখা বার, কান্সেই বোকা শক্ত মহ।

এখন দাঁভাগ ছই জনের মধ্যে "পীয় হার।"। এ বলে "কামি অতাহব, তুমি আমার আগে হও।" ও বলে "না, আমি অতঃহব, তুমি আমার আগে হও।"

ज्ञवंश आंद्रश्च इत्र, भव्रण्यदिव अणि ह्यं, विक्रम ना देण्यदिव अर्थात । अर्थाय "मृद्ध्र्य्य", ज्ञाय "नृद्ध्य्य"। त्यम्म, विज्ञोव बहाब्राय होन अर्थाय Phoney War, वृष्टे परम्म देश्वेव वहाब्राय होन अर्थाय Phoney War, वृष्टे परम्म देशांव, जिल्ह्य भाव कार्य होन विक्रम, जाव किङ्क्ष भाव क्र्यू होन जा। भाव ज्ञाव हा स्थाप विक्रम, जाव किङ्क्ष भाव क्र्यू होन अर्थाय Warfare Division, याव मात्म ज्ञाव निर्माण मित्रा क्रया विवाद वि

বলা বাহল্য, এ সৰ ব্যাপারে অনেক নৈতিক ভাওতা প্রতো প্রভৃতির আবিষ্ঠান ও ব্যবহার হয়। কিছ হ'পক্ষই বোকে ভার মূল্য বা বৌড় কত। আসলে মুছ্ অংশটুকু একেবারে অ-নীভিনির্দ্রিত (non-moral), কেবল মার প্রাকৃতিক আদিম নির্বাজ্নারে একে অপরের উপর আবিপত্যের চেষ্ট্রা করছে।

এখানে প্রাকৃতিক নিরবে বৃদ্ধিবিজ্ঞানের বরণান্ত বৃদ্ধই বে
সভ্যা, এ কথা ভূগলে মহা বিপদ। যদি কেউ এই সভ্যাকে
উপেন্দা বা দাবীকার ক'রে এই ছব্দের দান কোনও কালনিক
রূপ কলনা করে এবং ভাতে নীভিবৃদ্ধক ভাবের আরোপ করে
ব্যামান দাপর পকের প্রতি প্রেম প্রভৃতি প্ররোদের দাবভারণা
করে, ভা হলে দাবরা কি হর, বোঝা বোব হর শক্ত বর।
বাস্তবকে বারীকার ক'রে কালনিক একটা কিছুকে "সভ্যা"
বলে হাঁভ করিরে দেই কালনিক দাবল্যনে চলতে উপরেশ
লাবে বাবে পাওয়া যায়। দে উপদেশ দাব্যামী বে চলে,
ভার শ্রের: হওয়া কর্যনও সম্ভব নর। ভার শীরই
"লাদ্যত্ব" প্রাপ্তি ঘটে। এইরপ উপদেশকে দাবাদের বাংলার
বলে "বাধকে কুঁড়োলালি দেবানো" ও ইংরেক্টাতে বলে
"Singing psalms to lions."

বতঃই সন্দেহ হয়, এইরূপ পরামর্শনাভার। সাধু সরল বৃত্তিপ্রবাদিত কিলা ? অনেক সময়ই প্রাপর ও পারিপার্থিক
সমস্ত অবহা পর্বালেচনা করলে সন্দেহ থাকে লাবে এইরূপ
উপদেশ (Junius-এর ভাষার) "Coined by knaves to
be made current among fools." এটা বৃত্তে
রহশতির বৃত্তির আবশুক হয় লাবে, বেখানে এক জন অপরক্তে
প্রাদ করবার চেটা করছে, দেখানে এ হুই পন্দের মব্যে
কাকেও প্রেম দেখাবার উপদেশ দেওয়া তাকে আছ্বাতী
হ্বার প্রামর্শ দেওয়ার তৃল্য । উপ্রিট্ট ব্যক্তি যাতে সংব
কট হয়, এই যেন উপদেশের উদ্বেশ।

সমগ্র "ভ্তপ্রকৃতি"র এইই মৌলিক অংশ—নিক সঙারক্ষা ও তার উরতি সাধন। "মৌলিক", কারণ এ হচ্ছে সব
কিছুর বুলে। যদি সভা নাণ হর বা তার উরতি নিরোধ
হয়, তা হলে আর কিছুই হতে পারে না। যেন তেন
প্রকারেণ এই মৌলিক অংশের সাধন করা চাই। এখানে
নর প্রাকৃতিক নিয়নই বলবং। এখানে তথাক্থিত "নীতিক্থা"
"তত্ত্বভা"র স্থান নাই। সুবামান হই পক্ষের মধ্যে বায়
শ্রেয়ঃ চাও, তাকে বলবে "বুছি ও বিক্রমের পূর্ণ প্ররোগ
কর। তোমার প্রতিপক্ষ যে পরিমানে প্রতিদ্বিভা করবে,
তুমি প্রচ্নতত্ত্বভাবে সেই প্রতিদ্বিভার উত্তর দিবে। না বিভে
পারলে তোমার আল্যন্থ প্রান্তি, সভানাশ, সর্বনাশ অবভ্রতারী।
"নাঃ; পছা বিল্যতেহ্বনার"।"

জতীত ও ঘটনান মানবেভিছান যথাসন্তব পর্যালোচন। করে "ভূভপ্রকৃতি"র মূলগভ অংশ সহতে উপরোক্ত সিহাতে উপনীত হওরা শেল।



### ঐকুমারলাল দাশগুপ্ত

( ध्रवम भक्त )

বিহারের একটা ছোট শহরে সেদিন খনবটা করিয়া ধ্ব
বৃদ্ধী হইতেছিল, আমার বলিবার বরে গুটকারেক বর্ আসিরা
ক্টরাছেন। মেবের ডাকের বোব করি একটা মোহ আছে—
ভাই আসরে পরনিক্ষা ক্ষমিতেছিল না। অনাধ সিগার টানিতে
টানিতে লছনীমারারণকে কহিল, 'ইরার, একটা গান গাও।'
লছনিনারারণ কৌনপুরের লোক, ভাই পাছে সে আবহাওরার
খণে সভ্য সভাই গান বরিয়া দের এই ভরে নিলীধ ভাভাভাভি
কহিল, 'গানের ঘরকার নাই, কেউ একটা গল বল।' সোকার
কোনে কাত হইরা দেবেন সিগারেট টানিতেছিল, সে হক্ষমলাভি বাভাইবার কন্য কলিকাভা হইতে সম্প্রতি আমার এবানে
আসিরাছে। দেবেন হঠাৎ উঠিয়া বসিরা বর্ষণরত মেবের
ছিকে চাহিরা কহিল, 'ভবে শোনো…

বছর চারেক আপে কেপটাউনে একটা চাকরি পাইরা সাউব আফ্রিকার বাইতেছিলার। মাদাগাকার বীপের কাছা-কাছি আসিরাছি এমন সমর কোন এক অঞ্জাত বছতে আবাত লাগিরা আমাদের কাছাক ভূবিতে আরগু করিল এবং বানিক পরেই ভূবিরা পেল, আমি এক লাইক-বেন্ট বুকে করিয়! ভারত মহাসাদরের মাবামাঝি ভাসিতে লাগিলাম। ভাসিতে ভাসিতে ভাবিতে লাগিলাম পূর্বমূবে ভারতের দিকেই সাঁভার দিব—না—দক্ষিণে মাদাগাগ্ধার বীপের দিকে অগ্রসর হুইব, কিন্ত একটু পরে ভ্র্মাত ভাসিরা চলিলাম।

ষ্থন জান হইল তথন বুবিলাষ আমি কলে নাই, হলভাগের কোন অংশে চিং হইর। তইয়া আছি। চোৰ খেলিরা
চাহিলাম, ধেবিলাম মেখলুনা নীল আকাল, ৪টি ছই সামুদ্রিক
পক্ষী বছ উপরে পাক খাইতেছে, নারিকেল গাছের ভালে
রৌদ্র বিক্ষিক করিতেছে—বছ ভাল লাগিল। আশা করিরাছিলায়—এতক্বে সমুদ্রের তলার অত্যন্ত অসংযত বেশে কোন
এক বিশালকার মাছের পেটে অর্জনীর্ণ অবস্থার বিরাজ করিব।
ভালা যে হর নাই, আমি বে এখনও বাঁচিয়া আছি—সে
ক্ষা ভাগবানের চয়বে শতকোটি প্রণাম আনাইলায়। মন
ভক্তিরলে আগ্লুভ হইল। পরর বিশ্বিভ ভাবে যাল বীকাইরা

একপাশে তাকাইলাম, মনের সেই অপাধিব অবস্থাটা নিমেহে অন্তহিত হইল। যাহা দেবিলাম তাহাতে শরীর করে রোমাঞ্চিত হইরা উঠিল। তাকাতাভি খাড় ফিরাইরা অন্য দিকে তাকাইলাম, সেদিকেও সেই দৃত, আমি আবার চোব বুজিলাম। কি দেবিলাম? আমি দেবিলাম বোর ক্রফবর্গ, বিলালদেহ, পরিপুইঅবর, বিকলিতদন্ত উলদ্প্রায় কভিপর মান্ত্রম আমাকে দিরিয়া বসিরা আছে। ইহার। কারা? ইহাদের উক্তে কি, আমি কোধার ইত্যাদি অনেক গুলি সমীচীন ও সমরোপ্রাম্ম প্রের যাহা আমার মনের মব্যে তথন উদর হওয়া উচিত ছিল, তাহা না হইরা কেন যে হঠাই উঠিয়া দৌড় মারিবার একটা প্রবল ইছো আমার হইল তাহা মনভাত্ত্বিলগই বলিতে পারিবেন।

ইতিমব্যে সেই মন্ত্রাসমাকে একটা মহাকলরব উঠিয়াছে । আনাকে চোব মেলিতে ও বাড় নাড়িতে দেখিয়া ইছারা যে বৃত্তিলোছিত হইরা উঠিয়াছে তাহা চিংকারের মানা হউতে অন্থান করিলাম। হঠাং ওটকরেক সবল ও কঠিন হাত আমার ঘেহের কোন কোন অন চাশিরা বরিল, আমি পুন্যে উঠিলাম এবং অন্থতব করিলাম যে গতিবিশিষ্ট হইরাছি। চোব বৃলিরা দেখিলাম কন 'হুই অগতোর কাঁবে চড়িরা আমি চলিরাছি, সামনে ও পিছনে সারি বাবিরা অন্যান্য অসভাগন চলিরাছে।

নিবিভ নারিকেল-ব্যের মধ্যে একটা বোলা ভারপা, লেইবামে একথানা কুঁছেওব । সেই কুঁছেওবের সামনে একটা
নারিকেল গাছের ভাঁভিতে ঠেল বিয়া আমাকে বসানো হইল ।
বেবিতে বেবিতে ভিড় ভ্যিরা গেল, বিকটাকার পুরুষেরা,
ভারো বিকটাকার মেরেরা এবং ভাহাদের ভ্রুত্ত সংগ্রমণগুলি
আমাকে বিরিলা হাঁভাইরা সেল । কলরবের বিরাম নাই ।
তত্তকে আমার শ্রীর কিঞিং পুরু হইরাছে, ভর অনেকটা
ক্রিয়াছে । ঘাড় না ক্রিরাইরা চোব বুরাইরা এই জনভাকে
একবার বেবিরা লইলাম । বেবিলাম কেছ হাত বাহির ভ্রিরা
হাসিতেছে, কেছ অনুট ক্রিতেছে, কেছ আঙুল বিরা
বেবাইতেছে, আর বেন বেরেরা হাঁ ক্রিরা ভাকাইরা আছে ।
কেছ একটা বভু ক্রই বাছ ব্রিরা হুঠাং উঠানের মার্ববাদে



নারিকেল গাছের শুড়িতে ঠেন দিয়া আমাকে স্পান হইল

আনিয়া কোললে ধেমন চারিলিক ছইতে সকলে চুট্টরা আসিয়া ভিড় করিয়া দাঁছায় ও বহুবিৰ মন্তবা প্রকাশ করিতে থাকে এ নেন কড়কটা সেই রক্ষা মনের কোণে একটা সন্দেহের উদর ছইল, ইহারা মরবাদক নম জো ? দেহের কোন অংশ মাংগল, কোন অংশ বাইতে খুগাছ, কে জানে হয়ত ভাহাই বিচার ফ্রিভেছে।

ক্রমে বেলা বাভিতে পানিল, বোদের ভাওও বাভিতে লাগিল, আমি আমার হকীদের দিকে আড়চোবে একবার ডাকাইয় এট এট কুটরের ভিতর চুকিয়া পড়িলাম। আড়ালে আসিয়া প্রাণ বাঁচিল, ভাড়া বুড়েখরের ভিতরটাও বেন অভাঙ নিরংপন মনে হইল।

ক্ৰমে সভা খনাইয়া আসিল। একজন বক্ষী আসিয়া আমার হাত-পাদড়ি দিয়া বাবিধা ঘাহাতে সারাবাত শুইখাই থাকি স্বস্থে তাহার বাবস্থা করিয়া চলিয়া গেল।

নিথ্ম রাভ, মাধে মাধে বাভাগে নারিকেল গাছের ভক্ষো পাভা করকর করিয়া উঠিভেছে—সামাভ করেনট কারণে আমি তথমও জানিয়া আছি। প্রথম কারণ হইল মুভ্য ছান, ছিতীয় কারণ শব্যার কাঠিভ, ভৃতীয় কারণ হাত-পা বাঁবা বাকায় মশা ভাড়াইভে না পারা, চতুর্ব —চিভা। চিভা করিতেছিলার আমার এ অবস্থাটা মিরাপদ কিনা। এ একটা দীপ, দ্বীপের অবিধানীরা অসত্য, হয়ত নরবাদক। এমন ভানে আসিয়া এবং এহেন পাঞ্জরে হাতে পড়িরা আমি বিশেষ বিপদএন্ত হইরাছি কিনা ভাষাই বিচার করিতেছিলাম। ভাবিতে ভাবিতে বাকি রাতটুকু শেষ হইয়া গেল।

সকাল হইতে আবার সেই অসভ্য স্থাপন, সেই ছুরিরা-ক্ষিত্রো চাতি দিক চিত্র' কাছাইতা ইত্ হইত বেশ করিয়া দেখা, কেই আভাপ ও আলোচনা। বিশু আৰু ইহাদের বেশভ্যার একটু পারিপাটা সক্ষা ক্ষিতান। "বেশভ্যা সক্ষে ইহাদের ওুআধুনিকভয় হুরোপীয় নেরেদের মতের একটা আশ্রুবা মিল দেখিলায়— অথাৎ সাম্ভ্য আবরণ।

क्रीर बाहिएक ७ छान्यम कीशाहेश अक्षे प्रमुख मार्थामा বাজিয়া উঠিল। দেবিতে দেবিতে সেই বোলা জায়গায় জীপুরুষ. (बाहिरक वह अभका आभियां क्या इहेन, अक्टी देर्टेट शक्ति (शम । । ए ए। द्रभद्र छ। हाद्र। जादि आदि वित्रश्च (शम । वृतिनाय আল একটা কিছু বিশেষ ব্যাপার আছে, উৎস্থক হইয়া গ্রিকাম ব্যক্ষিক অপেকা করিছে ব্রল না, ষঠাং চিংকারের মাজা বাভিয়া পেল, দামামা ছোৱে বাজিতে লাগিল, দেবিলাম ক্ষেক্ষ্ম অসভ্য পুরুষ ছাই ভিনেক হাত-পা-বাধা মাছুখকে টানিয়া আনিয়া দেইখানে কেণিল। ভারপরে মাঠের মাৰবানে এৰাও আভন ছলিল, দামামা ফ্ৰভালে বাৰিভে লাগিল, বনী ভিনটকে পিটাইয়া আৰম্বা কৰিবঃ আৰমে (क्शिक (हरूक कृष्टेल, देनकृष्ट कार्य (माकारमा बहेरम अनक) পাচকেরা নিপুৰ হতে ভাছা কাটরা ছি'ভিয়া বাদ্য ভৈয়ার করিল, তারপর ভাষা পরিবেশন করা হইল। কর্তাগোছের অসভ্যেরা ভতাবধান করিলেন, একটু আবটু কলহ ও মন-क्यांक्षि इटेश वाहै, किन्ह (अ कि हूं है नम् ; अमन अब प्रक्र বলপাতে অমন হটয়াই বাকে ৷

দেখিরা ভূনিয়া ইছার। যে নরখাদক সে বিধরে আমার সক্ষেত্র করিবার আর কিছুমাত্র অবকাশ রছিল না।

বাওবার হালামা প্রায় বিচিয়া আলিয়াছে এবন স্বর আমার রক্ষী অসভাট একবানা কল্পই আনিয়া আমার সামনে রাবিল। বাইতেছি না দেবিয়া সে হয়ত বনে করিল পরিমাণ কম হইয়াছে, তাই একটা ব্রাল্টেও কেলিয়া দিল। আমি তেকুর তুলিয়া তাহাদের ব্বাইতে চেটা করিলার বে, আমার কিছুমাঞ ক্বা নাই উপরোবে পভিয়া অতিরিক্ত বাইলে বদস্কম হইতে পারে। তব্ও তাহারা হাছে না, বল্পমের হ্-একটা বোঁচা দিয়া বছই পীড়াপাঁড়ি করিতে লালিল। এককন দর্শক প্রায় পনর মিনিট বরিয়া ভোজন সহছে আমাকে একটানা উপরেশ দিলেন, তাহার ভাষা যদিও ব্বিভে পারিলাম না, ভাবার্থ মাহা ব্রিলাম তাহা সংক্ষেপে এই—ওহে বাপু, না বাইয়া রোগা হওয়াটা কি উচিত হইতেছে গুভাল করিয়া বাইয়া বাইয়া ভাছাতাছি নোটা হও, তবেই মা

আর এক দিন আমাধের বছতক্য একটা তোক হইবে ! এ ক্ষেম সার্থান উপদেশ সংখ্য সজার বিষয় এই বে, আমি সেই ক্ষণক স্থান্থ নরবাংস থাইতে পারিলান না । ব্যাপার দেখির: আমার উপদেশ্রা হোঁ মারিরা কল্ইবানা উঠাইরা লইরা কৌড মারিলেন এবং আমার রক্ষীমহাশর ভাষার পিছনে পিছনে অনুষ্ঠ হইরা সেলেন ।

কুঁড়েখনের দরভার বলির। ভাবিতেছিলাম নরবাদকের পেটে বাওরাটা অপালীর হইবে কিমা, এমন সময় দেবিলাম একট অসভ্য ভরুবী এক টুকরা হাড় চুখিতে চুখিতে আমার অভ্রে আলিরা বনিল। মাবে মাবে গে আমার দিকে ভাকার আর হাড়ের টুকরা চোবে, হাড়ের টুকরা চোবে আর আমার দিকে ভাকার। ভাহার ভাকাইবার ভালিটা আমার ভাল লাগিল না, কুঁড়েখনের ভিতর চুকিরা পড়িতে প্রবল ইচ্ছা হইল, কিছ পালে নারীলাভির প্রতি কোমরূপ অসমান দেবানো হর এই ভবে চুকিতেও পারিলাম না। অসহার ভাবে বলিরা বসিরা ভরুবীর উর্বন্ধি লেহন ও দৃটির বিহাংক্তরণ দেবিতে লাগিলাম। তরুবীদিসের মনের কথা নাকি দেবভারাও জানিতে পারেন না, আমি কিছ এর মনের ভাব পরিকার আঁচ করিতে পারিলাম, ভাবটা এই বে, আহা, ভোমার অভি এই ভাবে কবে লেখন করিব।'

আনেককণ চাটনা চুটনা তর্মণ হাছখানা এক অসভ্যবালকের হাতে দিরং বীরে থীরে প্রথম করিল, আমিও হাঁফ
হাছিরা বাঁচিলাম। কিও সে অরক্ষণের কয়, তরুমী কিরিয়ং
আসিল, আমার কুঁছেঘরের চারি দিকে করেকবার পাক দিয়ঃ
পূর্ববং সামনে আসিয়া বসিল। বাঘ যেমন শিকারের চারিদিকে চক্রাকারে কয়েকবার ছরিয়া সামনে আদিয়া থাবা
পাতিয়া বসে এ যেন কতক্টা সেই রকম। নধরকান্তি পাঁঠা
দেখিলে মালুযের মনে যে অনির্কাচনীয় আনক্ষের উদয়
ছর হয়ত আমাকে দেখিয়া ঐ তরুমীর মনেও সেই রকম
একটা পর্যামক্ষের উদয় হইয়াছে, ভাই এত আনাগোনা।
নিময়ণ-বাছীর উঠানে বাঁবা পাঁঠার মনের কথা কেউ কি
কথনো কল্পনা করিতে পারিয়াছে ? আক আমি কিছু কিছু
পারিতেছি, সে অকবিলাপ লইয়া একটা কয়ণ কাব্য লেখা
যাইতে পারে।

সভ্যা ঘনাইরা আসিতে তরুণী এক পা এক পা করিয়া চলিরা নেল। কিছুক্তণ পরে আমার বক্ষীমহাশর আসিলেন এবং রজ্ব বেষ্টনী দিয়া রাজের মত আমাকে নিরাপদ করিরা চলিরা গেলেন।

সকাগবেলা কুঁড়েখর হইতে আর বাহির হইলাম মা।
আনাহারে শরীর হুর্জন হইরা পভিরাহে। রকীমহাশবের
কুপার বিষে গুট-হুই করিরা নারিকেল বাইতে পাইতেহি,
কিছু ভাহাতে কুবা নির্ভি হর না। ভাবিরা বেধিলার
আকু বালে কাল আবণোচা হইরা অসত্য স্বাক্রের



um gunten date infinct ubmin

পাতে পভিব, অভত্র এ শরীরকৈ ভোষাক করিয়া লাভট বা কি ? শুইয়া শুইয়া বেড়ার দাক দিয়া আকাশ দেখিতেছি এমন সময় সেই কাঁকে চুইট গোলাকার চোল উ কি মারিল। দেখিরাই চিনিলায় এ কাছার চোল। আমি পাল কিরিছা শুইলাম, সেই চোল ঘুরিয়া আবার সামনে আসিল; আমি চোল বুজিলাম, অনেকক্ষণ বাদে যথন আবার ভাকাইলাম ভ্রমণ্ড দেখি সেই চোল আমাকে নিরীক্ষণ ক্রিভেছে। আমি অধ্য শুছ পাইলাম না, কেবল একটু বিহ্বলের মৃত হুইয়া গেলাম।

বিকালের থিকে আমার কুটরের সামনে গোকসমাগম বেন অন্ধ দিনের চেরে একটু বেশী 'হইল, ভদ্রভার থাতিরে বাছিরে আসিরা বসিলাম ( বরমের খোঁচা ছই-একটা থাইলাছিলাম বটে কিন্তু ভাছাভেই যে বাছিরে আসিরা বসিয়াছিলার সে কথা আমি বীকার করি না।) ধেবিলাম অনেকেই মরা করিয়া আন্ধ আমাকে ধেবিতে আসিরাছেন, সবার চোবেই একটা গ্রীভির ভাব। আমি সভ্য বসিরা আমার প্রতি ইছাদের মুধা নাই, ভারভবাদী বসিরা উপোনা নাই, হিন্দু বসিরা বিবেষ নাই, কিন্তু কিন্তু রোগা হইবাছি বসিরা কভই না আন্দশেষ।

প্রাণী মাত্রই ইয়াদের প্রির। আমার নব-বৌধনকে ইয়ারা অভিনদিত করিল।

ভাবিতেছি ইহারা একটা ভাতি বটে, এবন সময় আমার পূর্ব্বপরিচিতা অসভ্য ভরুষী আসিরা সামনে বসিল ও একটা কাটি দিয়া বাত বোঁচাইতে লাগিল। ইাতের কাঁকে বোধ হয় গভক্ষগ্যের বালা কিছু কিছু সঞ্চিত ছিল, তাহাই সে পুনরভার করিরা ছাইচিডে চিবাইতে লাগিল।

সেদিন সভ্যায় রকীনহাশয়কে আমার প্রতি একটু বেকী সদয় দেবিগাম। আটেপুঠে বাঁবিয়া সনির্বাহ অভ্রোধ ভামাইলেন যে আমি বেন ভাল করিয়া বুমাই।

রাত্রি গভীর হইল, চারি দিক নিবুম। ভালা বেভার কাক দিয়া আকাশের তারা দেখিতেছিলাম। জ্ঞামে রাজি গভীরতর হইল, আকাশে খও চাদ উঠিল, একটা অচেনা পাৰ্ব-নারিকেল গাছের ভালে বলিরা মাবে মাবে ভাকিভেছে, এমন সময় বাহিত্রে কাহার পারের আওয়াক ভ্রমিতে পাইলাম। ক্রমে সেই পদশব্দ আমার কুঁড়েবরের দরভায় चानिका वाक्षित, भवबृहुर्छ अक शाबाबुर्छ किलदा खरवन कविन। আমি ভাবিসাম চিত্রগুরের আদালতে হাজির হইতে হইবে, ভাই কোন পেয়াদা যমদূত সমন জারি করিতে উপস্থিত হইয়াছে ৷ বুষ চলিবে কিনা ভাবিতেছি এমন সময় ছারাবৃতি আমার পাষের বাঁধন খুলিতে লাগিল, বুবিলাম, এ ঘমদূত নর, शक्य। এই अध्य जायात शास्त्र वीवन बुनिश्च दिन, किन হাতের বাধন পুলিল না, বাধ বরিয়া টানিয়া আমাকে উঠিতে ইছিত করিল আমি উঠিলাথ: সে আমাকে বাহিরে লইয়া আসিল। বাহিরে আবছার। চালের আলো, সেই আলোর बाबायुखिव यूर्वित फिरक हारिया पिरिनाम, श्विय: हिमिनाम, চিনিয়া ভয়ে কাঁপিয়া উঠিলাম। খগতোক্তি করিলাম-ভার শারী, তুমি লোভ সামলাইতে পারিলে না, যাহাতে আর

কাৰ্যকেও ভাগ দিতে না হয় সেইকড রাত্রির অভ্চাত্তে আনাকে চুরি করিয়া নইরা যাইতে আসিরাছ !

তক্ষৰী আমাকে নারিকেল-বনের ভিতর বিরা টানিরা লইরা চলিল, ব্রিলাম একটা নিরাপদ হানে লইরা নিরা বীরে-হয়ে আমাকে ভোজন করিবে। ভাবিরাহিলাম অসভ্যেরা আবণোড়া করিরা ভবুও কিছু মান রাধিবে, এখন দেখিতেছি ভাষাও কইল না, একেবারে কাঁচা অবহার শেটে বাইতে হইবে। গুঃবের অবধি বহিল না।

নারিকেল-বন শেষ হইরা গেল, বালুকাষর সর্জ্বতট চোকে পঞ্চল, তরুদী আমাকে টানিরা তটভূনি অভিজ্ঞন করিবা একেবারে সমুদ্রের তীরে লইরা দেল। সেইবানে সে আমার হাতের বাঁধন বুলিরা দিল, বুনিলাম আর দেরী নাই, এবনই ভ্নিতা বাখিনীর মত আমার উপর লাকাইবা পঞ্চিবে, বাড় মটকাইরা প্রথমে রক্তপান করিবে, তারপর মাৎস ঘাইবে, তারপর হাড় চিবাইবে, তারপর সমুদ্রের জলে হাত্মধ্ব বুইরা সকালবেলা চেকুর ভূগিতে ভূলিতে বাড়ী কিরিরা যাইবে:

তক্ষা এক পা আমার দিকে আগাইরা আসিল, ভারপথে হঠাং বসিরা পভিরা বাহু বিরা আমার হই পা অভাইরা বরিরা উর্মুখী হইরা আমার দিকে চাহিল, নির্দ্দন সন্ত্রভটে আবহারা জ্যোৎসার আলোর ভক্ষণীর হই চোবে কি বেবিলার ? একলা সভ্যবান সাধিনীর চোবে বাহা দেবিলাহিলেন, হ্বর শক্ষণার চোবে বাহা দেবিলাহিলেন, ভ্রার ক্রিনার ভ্রাবে আমাকে ভালবাসিরাহে।

সেইবানে সমুদ্রে একবানা ভোঙা বাঁবা ছিল, তরুৰী সেই ভোঙায় উঠিল ও আবাকে উঠিতে ইলিত করিল। আমি ভোঙায় উঠিলাম, তরুঝী ভোলার বাঁবন গুলিয়া দিল। প্রেমের কল এক নরবাদক তরুঝী কুল ছাড়িয়া অকুলে ভোঙা আসাইল।

# হাই স্কুল ও শিশ্পশিকা

এস. এম. ছদুরুদ্দিন

শিল্পশিকার সুধোগ-সুবিধার অভাবে হাই তুলে ক্ষেত্রে আগভব রক্ষের ভিছ । চাক্রীর ধর্গে শৌহবার এই হ'ল বৈভরগণারের এক্ষাত্র ধেরাতরী। কলে পার বত হচ্ছে ভার চেয়ে অনেক বেশী হচ্ছে ভরাডুবি।

নার্জেণ্ট-পরিকল্পনার এর প্রতিকারের কিছু চেটা হরেছে। বনিয়ালী শিক্ষার ছুলের শেবে বে বাছাই পরীক্ষা হবে, তার কলে ছাত্রসম্ভালার ছু'ভাগে ভাগ হরে বাবে—এক কল শিল্পবিদ্যা-ভবনে প্রবেশ করবে এবং অভ কল হাই ছুলে সাধারণ শিক্ষা লাভ করবে। অভাভ শিল্প-

প্রধান দেশের মত ভারতে নামা রকমের শিল্প-প্রতিঠান গড়ে তুলতে পারলে শিল্পশিলার দিড়েই ভিন-চত্থাংশ হাল বুঁতে প্রথব। এতে দেশেরও বেমন শ্রীবৃদ্ধি হবে, হাই হুল ও কলেকের শিক্ষাও তেমনি সুঠু হবে।

সার্জেণ্ট-পরিকল্পনার শিল্প-শিক্ষার বে ব্যবহা আছে ভার কভকটা রহবলস করে প্ররোগ করলে ভাল কল পাওরা বাবে বলে আশা করা বার। হাই ও ঠেকনিক্যাল উভয় প্রভার মূলেই বদি বাড়ভাষা, ইংরেজী, ইভিহাস, ভূগোল, অল প্রভৃতি সরান ভাবে শিক্ষা বেওৱা হয়, ভা হলে বর্তনাম বি কোর্সের মত সার্কেন্ট-পরিকলনার আমলেও টেকনিক্যাল শিক্ষা মাঠে মারা বাবে। পুথিণত বিদ্যার প্রতি সহজাত বিভ্রুল অথবা অক্ষমতার কটেই হাজের। হাই হলে এত পরিমাণে কেল করছে এবং অর্থের প্রাথ ও সমরের অপবার হছে। এই অবদ্বার প্রতিকারের কটেই যদি শিল্পিক্ষার ব্যবদ্বা হর, তবে টেকনিক্যাল হলে পুথিণত বিদ্যার প্রতি অতথানি জার না দেওরাই বাহ্ননীর। শিল্পটকে আল্লভ করার কট ছাজের ও বিবরে যতাইকু পুথিণত বিদ্যার প্রয়োজন, তথু ততাইকুই শিক্ষা দেওরা উচিত। অভবার বর্তমান বি কোর্সের মত পুথির চোরা-বালিতেই শিল্পিক্ষার সমাধি রচিত হবে।

পৃথিপত বিদ্যার সামাম্য একটু কম্তি হলে বিশেষ ক্ষতি হবে না, বরং পৃথির চাপে যে মেরুলঙ বেঁকে গেছে তা পোলা হবে ! আমেরিকার ফদি "অবিকাংশ নাগরিক প্রাইমারী ছুলের আটট বাপও না ভিভিরেই" বর্তমান নাগরিক জীবন বাপনে সমর্থ হর, তবে এ দেশের সাত বংসরের বাব্যতামূলক প্রাথমিক সাবারণ শিক্ষার পর» টেকনিক্যাল ছুলে পৃথিগত বিদ্যার কম্তির জন্য অন্থবিবা হবে কেন ? বন্তত, পৃথির বেডাজাল হিরে শিল্পান্ধান্তবন বিরে রাখলে হাই ছুলের মত সেবানেও সাবারণ ছাত্রের অবিকাংশই চিরতরে আটকা প্রবং : শিল্পান্ধার উদ্বেধ্ন বার্থ হবে।

ে টেকনিক্যাল মূলে প্রকৃষ্ট রূপে লিল্লবিদ্যা লিকা বেবার ব্যবহা থাকলে হাই মূলের শিল্পবিদ্যা হবে কতক্টা চাঞ্কলা আতীর। টেকনিক্যাল মূলে শিল্পনিকা মুখ্যতঃ বৃত্তিমূলক, রুক্তি-বোজগারের পহা; হাই মূলে তা হবে কতক্টা সংস্কৃতি-মূলক, অবসর-বিনোধনের পহা। অবসর-বিনোধনকে আহরং বভথানি ভূম্ম মনে করি তা স্তিয় ভতথানি নর। কর্বের পর আলস্য ও অকর্ষণ্ডা এর উদ্দেশ্ত নর। এর উদ্দেশ্ত হ'ল বিভিন্ন কর্মের হারা শ্রাভি দূর ও শান্তিতে হাদর পূর্ণ করা——
জীবনকে পূর্ণরূপে উপভোগ করা। সুক্তর জীবন যাগনের

এ বিষয়ট "বাধ্যভাষ্তক শিক্ষা" নামক প্রবছে বিশন্ত রূপে আলোচিত হয়েছে। মাসিক মোহাল্মণী, আছিন, ১৩৫৩ ক্রাইবা।

শত ক্ষি-রোজগার ও অবগর-বিনোদন উভয়ই ভূল্যরপে প্রয়োজন। একটর শত অভটকে বলি দিলে জীবন হয়ে পড়ে কলুর বানিটানা ও গাবার খাটুনি। এডাম সভ্যই বলেছেন, উপার্জনের শত বেমন বিশেষ শিকার প্রয়োজন, জীবন যাপনের শংও ঠিক ভেমনি; সুক্ষর জীবন যাপনও একট পেশা।

এর বস্তু চাই টেক্নিক্যাল স্থানর সলে স্থীত, চিত্রবিদ্যা প্রভৃতি চারুকলা এবং হাই বলের সলে কিছু ছুভোরের কাৰ, কামায়ের কাৰ, কৃষিবিদ্যা প্ৰভৃতি শিক্ষার বাবছা। হাই ছুলের সঙ্গে ছোটবাট কারবানা ও টেক্মি-ক্যাল ক্লের সলে কলাভবন ছাপন করে এ কাজ সম্পন্ন করা **थिए गाउँ। अहे फेरफ्क लागांकिल करहरू वास्नारमान्य** ছু-চারট স্থলের সঙ্গে বি কোস অথবা হন্তশিল্প শিক্ষার ব্যবস্থা করা হয়েছে। কিন্তু এর হারা প্রকৃত উদ্দেশ্য সিদ হচ্ছে না। সুকল পেতে হলে প্রত্যেকট হাই ক্লের जरक चित्रक्षां चरमदात्य अक अकि किंक्निकां म मून यूनरण रूत :- श्र-थ दिश्व निकामात्म अध्ना रूत क्छ , जक এक्ष इत अक्षेत्र श्विश्वक । शह धूलत (हानदा निक নিক অভিকৃতি অভ্যায়ী টেক্নিক্যাল ছুলের বিভিন্ন শিববিভায় বেমন অমুরাম হতে পারবে, টেক্নিক্যাল স্থলের ছেলেরাও ভেমনি যে-কোন কলাবিদ্যা শিক্ষা করার সুযোগ পাবে:

শিল্পশিকাকে সাৰ্থক করতে হলে আরো একটি বিষরের প্রতি দৃটি রাৰতে হবে-- সেট হ'ল শিল্পশিক্ষার সহিত দেশের শিল্প ও বাণিজ্যের সংযোগ সাধন। শিল্পভিদের সহাত্রপৃতি ও সহযোগিতা ব্যতীত শিল্পশিকে প্রচালকণে পরিচালন করা সম্ভবপর নর। মিঃ এবটের ক্ষার, "শিল্প-বাণিজ্য, শিল্পা ও শাসন বিভাগের প্রতিমিনিদের দারা স্তি্যকার পরামর্শ-সভা গঠিত হবে। শিল্প ও বাণিজ্যে কোন্ শিল্পার কতটা প্রভালন সে সম্পর্কে ব্যবসাধীগণ তাঁদের ব্যক্তিগত অভিক্রতা কাজে লাগাবেন, শিল্পাবিদ্পণ ছ্লের অভাব-অভিযোগ পূরণ করবেন, এবং শাসনকর্তারা পরিচালন ও অর্থ সম্ভ্রামের উপার উল্লোবন করবেন।" এই ভাবে শিল্প-বাণিজ্যের সহিত্ত শিল্পশিক্ষার সম্বন্ধ সাধন করতে পারলে অন্ধ ও বেকার-সম্ভার কিঞ্চিৎ সমাধান হতে পারে।

#### खब-मःर्माशन

# কুলপঞ্জীতে সেকালের সামাজিক চিত্র

और्गीतमहत्त्व छद्वीहार्या

বাচীর কুলীন ভাত্মধন্তবের পারিবারিক ও লাবাজিক বিবরণ ৰে সকল ব্ৰলিখিত বিপুলকার বটকএছে লিপিবৰ পাওৱা বাৰ, বিজ্ঞানসন্থত প্ৰণাশীতে এবাবং কেন্ট ভানাদের মূল্য নিৰ্বর করিতে অঞ্চলর হন নাই। বর্গত লালযোহন বিভানিবি बर्गमत ७ मानक्षमाच यक् मर्गमत क्षत्रामरकारत वर कृतकर সংগ্রহ করিছা রাজীয় ত্রাহ্মণগণের বিংরণাত্মক মূল্যবান্ গ্রহ निविद्यारहर रहे. किन्द्र रेक्टानिक गत्ववना कतात श्राप्ती. বোগাতা ও অবসর তাঁহাদের ছিল কি না সম্পেছ এবং উভরেই কুলএত্তে ঐতিহাসিক তব্যের সন্ধান করিতে গিরা জাতসারে অৰবা অভাতসাথে কৃত্ৰিম রচনার আশ্রর গ্রহণ করিয়াছিলেন। কলে ভাঁহাদের পুভকের প্রামাণ্য ব্যাহত হইরাছে এবং ভখব্যে বহু ভ্রান্ত ও কল্পিত বন্ধ স্থান লাভ করিয়াছে। রাচীয় কুলীন ত্রাক্ষণপ্রের মামমালা ও বিবরণ পুথকু ঘটক-সম্প্রদায়ের হডেই চিবকাল নাম্ভ ছিল, কুলীনেৱা হবং তাহা ভানিতেন না এবং লিবিয়া রাধার প্ররোজনও বোধ করিতেন না। এক শভ বংসর बाबर बहैक-मच्छमात्र विमुख स्टेबा वाखबाब किक्रम विभवाब সাধিত হইয়াছে ভাহার অভি বিশয়কর নিমর্শন এই বে, বর্গত ভূদেৰ বুৰোপাৰ্যায়, ৰহিষ্চজ্ৰ ও আশুড়োষ মুৰোপাৰ্যায় মহালঃপৰ বৰক্ষিতি হইয়াও নিজ নিজ অনতিগুৱবতী পূৰ্ব-পুরুষের নামমালা বিষয়ে ভ্রান্ত বারণা খোষণ করিয়া গিয়াছেন এবং অভাপি তাহা বিভঃ ভাবে যুদ্রিত হয় নাই ৷ গত এক नंक दरअब महा (य अकल दरनावजी कुनश्रास्त्र जाराया-ব্যভিৱেকে মঞ্জিত ও প্ৰকাশিত হইয়াছে ভাষা প্ৰায় সমন্তই অভবিভার জম-প্রমাদ্ধান্ত হটরাছে। এই সকল জম-প্রমাদ ধারা ভন্তং পরিবারে সভ্যের অপলাপক্ষমিত কিঞ্চিং কলম উপকাত হয় সন্দেহ নাই এবং ভাহার সংশোধন আবশুক। কিছ ৰাৱাবাছিক মামমালা ৱাটীর কুলপঞ্জীর মূল প্রতিপাদ্য বিষয়ের অতি সামাত অংশ মাত্র, কুলীনদের আহানপ্রদামাদির অতি नुबाक्षनुब दर्गनावाजा जामाजिक मधामा विष्ठावर देशव खबाम ৰংশ বটে। ভৰুৰো কিন্তুপ বিচিত্ৰ সামাৰিক ও ঐতিহাসিক উপায়াৰ ৰিছিত আছে তাহার কিঞিং আডাস আমরা মৰ-দৌরান্ত্রের বিবরণে দিরাছি প্রবাসী, চৈত্র ১৩৫৩, পৃ ৬০৪-৭)। বৰ্ডনাৰ প্ৰবদ্ধে আৱও কভিপন্ন বিসম্ভনক সামাজিক চিত্ৰেয় পরিচয় মূল কুলপঞ্জী হইতে সংগৃহীত হইল।

বংগাত্র বিবাহ :— ১ । মুখবংশীর স্থবেশ পঞ্জিত বিখ্যাত কুলীন ছিলেন । গ্রুবানন্দ মিশ্র উচ্চার পুত্রদের পর্যাত্র নাম উল্লেখ করিয়াছেন (মহাবংশাবনী, পু. ১৩৪)— হিতীর পুত্র ভবানীগোবিদ্দ রামের অভত্যর পুত্রের নাম "রতিনাধ সুবৃদ্ধি-রাম।" ইহার কুলবিবরণে পাওয়া বার :

"পশ্চাং ৰুং লোকনাৰ বসভৱাৰত গ্ৰিয়ানায়ীকভাবিবাহ, সা বসভিত্বাং প্রিরানগরী প্রাহব্যাতি:। অন্ত হুগোল সর্ক্রাণা-ছাৰি:।" (সাঞ্চা ৩৮১।১ পত্ৰ) অপৱ একট পুৰিতে (কাৰাল, সুল্যাপ্রকরণ, ২৬৷২ পত্র) উক্ত ঘটনা রভিনাধের পুত্র গভর্ম-রাবের বিষয়ে লিবিভ হইরাছে---"বলাং মুং কাঁচনা বসম্বরায়ভ কলা বিবাহ: **অত হলোত্রবিবাহছোয়:।" কিছ পূর্ব্বোভ** মতই প্রামাণিক, কারণ গভর্মরায় সংসৰভাগি করিয়া পিড়-দোষের মার্ক্ষনা করিয়াছিলেন ঘটক-সম্প্রদায়ে এইরূপ প্রসিদ্ধি चार्ट ( मानस्यास्य विद्यानियि: सम्बद्धकत्रम मृ. २८-४ )। अष्याक अरह नाहे निविष्ठ चारह:-- "नवर्सवारव--- अरको क्रवनार अवर मानविनदार निज्ञासमार्कनर निक्रनारम मधर्क-ৱামীভাব: কুড: (৩৮১।২৭৪)।" রতিনাবের অভ্যাদরকাল প্রায় Seeo बेडोच अवर छरपूज शबर्यदारवव "मानविनव" (पविवा পিতার বগোত্রবিবাহদোষও বৰন মার্কিত হইরাহিল তবন বোৰ হয় নবহীপে আৰ্ড ভটাচাৰ্য্য বন্ধনন্দৰ জীবিত ছিলেন। শাস্ত্ৰমতে স্বলোত্ৰবিবাহ ভংকালে একান্তভাবে স্বসিদ্ধ ছিল, কিন্তু সামাজিকগণ দায়ভাগকার শীমুডবাহমের সুপ্রসিদ উজ্জি "বচনশতেনাপি বস্তনোহ্য্যবাকরণাশক্তে:" অবলম্ব করিয়া ভাষারও মার্ক্তনা করিয়াছিলেন। ইহাতে ভংকালীন রাচীর ৱাহ্মণসমাজের উদার দৃষ্টিভদী খচিত হয়। উলিবিভ "প্রিরনগরী" গ্রাম রাচদেশে এবনও বিদ্যমান আছে কিনা অফুলছানযোগ্য। রতিনাপ ও ভাঁছার খন্তর লোকনাথের উপাৰি ( সুবুদিরার ও বসভ্যায় ) হইতে অসুমান হয় উভয়েই প্রভাবশালী রাজপুরুষ ছিলেন। রতিনাবের বংশ দীর্ঘকাল বাঁচিয়া ছিল এবং বোৰ হয় এবনও আছে।

২। বড়দহমেদের প্রবর্তক ভর্মাক্রণোত্র ব্রবংশীর স্বিব্যাভ বোদেশর পভিভের এক পুত্র ভানকীনাব ১০০ সনীকরণের কুলীন ছিলেন এবং প্রবানন্দ (মহাবংশাবলী পু. ১২৭) তাঁহার কুলকারিকার তাঁহার পুত্রদের নাবোরের করিয়াহেন। ভরব্যে এক পুত্র রামভন্ত। রামভন্তের এক প্রপোত্র ক্রপ্রবিহারীর কুল-বিবরণে পাওরা বার, তিনি এক কভা স্বর্গোত্রে বিবাহ ছিল্লা-ছিলেন।

"ভভ: কণ্ডা ধণোত্ৰ দিঙী রখুনাৰ হাজরাকার প্রদানাং সর্কানাশ:" (সাকা ৪৯৬)২, কানাল মুখপ্রকরণ ৮২/২, হগলী ২৭২/১ প্রভৃতি )।

কুঞ্বিহারী ১৭শ শতাখীর প্রথমভাগে বিহ্যমান ছিলেন। ভর্মাকগোত্র ভ্রম্মাত্রির বংশের গাঁঞি দিঙী অধুনা ভিংসাই নামে পরিচিত।

বৰুণাবিবাহ :—বংগাল বিবাহের ভার পিতৃবৰু, নাতৃবৰু এভুতি ভিয়গোত্তীয় ব্যিত আত্মীয়ের সহিত বিবাহও পালমতে অসিদ হয়। কিছ এইছপ নিষিদ বিবাহেরও বহ বিবরণ কুলএছে পাওরা বাইতেছে। আনরা একট সমাভ পরিবার নব্যে বছলাবিবাহের দুটাভ উল্লেখ করিলান। বভদব্দেশের বিব্যাত কুলীন চৈতল-চটবংশীর চল্লপের বিব্যালভারের এক পুত্র রামনাব ভটাচার্য্য চল্লকর্তী। রামনাবের পুত্র গোপাল হুই বারই হজনা বোর করিয়াছিলেন। যথা,

"গোপালস্য উচিত মুং মৰুরেশঞ্চণাং ফজেখরকঃ অত বৰ্ষাবোৰ: —কাঞ্যাড়ী কুমুদভাৱবাৰীশগেহিত্ৰ ভটাচাৰ্য্যচক্ষৰভাঁ ভগ্য পুত্ৰ চং গোপাল। কুমুখভাৱবাগীপপুত্ৰ निवास्त्रात्रियं क्षेष्ठ क्ष्मा -- इर वर्षुत्रयं क्षेप्र क्या हर त्रीपाल অভএব চং গোপাল মুং মধুরেশকং বছনাছোব:। 🔹 🗢 তত: श्रुव्यभवीत दूर दुर्गादात्व श्रामार विभवीत प्रकारणायः विर बाबनाबाबनवः--- हर हल्यानचेव विकानचावना सोविव बूर ৱামনাৱারণ ভদ্য পুত্র ছুপারাম, চং চক্রশেবরদ্য পৌত্র গোপাল चछ्यव चचनारमायः यदर नगमीरमायः।" ( माका ७८६। ১ ) অধাং গোপাল প্রথম বিবাহ করেন পিতার সাক্ষাং মাছুল-ভথীর ক্টাকে এবং পরে কটা দান করেন পিসভূত ভাইয়ের পুরের হতে। গোপালের অভ্যানরকাল ১৭শ শভাকীর শেষভার, ভাঁহার পিতার মাতৃল রঘুনাথ সিহাভবারীশ नवदीशाविष्ठि वाका अञ्चवाराव अक विराग । देश निष्ठा हरे আক্রব্যের বিষয় যে এইরপ বিশিষ্ট পরিবারেও ঐ রক্ষণীল ৰূপে ছুইট অশাস্ত্ৰীয় বিবাহ সংঘটত হইয়াছিল। গোণালের ৰংশ নানাত্মনে বিভয়ান আছে এবং তাঁহার এক পুত্র চুর্গাচরণ विजानकावन উপाविवादी পভিত दिएम ।

গৰ্কবিবাহ: সমাজ্পাসন নর-নারীর বাভাবিক প্রবৃত্তিকে দ্বাইয়া রাখিতে চেষ্টা ক্রিয়া সাধারণের কল্যাণ সাধন ক্রিভে अवर्ष स्टेबादिल। किन्न वाानकचारत ना स्टेरल्थ निव्यनीय গভৰ্কবিবাহ রাচীর সমাজে বহুছলে সংঘটত হওয়ার প্রমাণ পাওরা বার। অধিকাংশ হলেই অভিভাবকণণ জোর করিরা ভাছা ৰটভে দেন নাই এবং গোপনীয় পারিবারিক কৰা সামা-ভিক এছে ত্বান লাভের অবসর পার নাই। যেওলির উল্লেখ আম্বল কুলপঞ্জীতে পাইবাছি তৰ্বের একট সরস বটনার বিবরণ উদ্ৰভ ক্রিভেছি। সুলিয়ার মুধবংশীর শিবাচার্ব্যের সভান গোপীখবের এক পৌত্র মহাবেব। তাঁহার "ক্ষেম্য" ( অর্থাৎ জামাভা ) ছিলেন অবস্থী চটবংশীয় কুফপ্রসাদের পুত্র ব্যঞ্জয় ( সাঞা ৩৭৭। ১)। ইনি "গালকাটা" বনঞ্জ নামে পরিচিত, ৰ্ভ্ৰুত মেলের রজনীকরীভাগের কুলীন-ইহার কুলবিবরণে আছে "ধনপ্ৰস্বাৰ্ভী মুং মহাদেব ছুঠাকভাঞ্চণাং"। এই विवार्द्य दर्छ अक्षे अर्द (कांगान, क्नांशिकदर ১०।२ পঞ্জ ) মনোহরকারিকা উদ্বত করিরা উদ্বাটিত হইরাছে:

> "বহাদেবের কচা লে কেবা তার বাব। গভর্ম বিতা করে বন্দ্য দেবীরাব । কর্মের পূজ লে ভাষের হর বাতি। গরম্ভিবলে ছিভি হিচা বৈদ্যবাধি ।

রামনাথ বলে ভন অরে ভাই কেয়া।
রাহির হইলে এবার রক্ষা নাই আমা।
ক্ষেপ্রবাদ পুত্র বনপ্রর নাম।
"রাজা হামচক্র" করে কেয়া ভরী হাম।
পাটলি সমাক্রের লোক করে কানাকানি।
এক নেরের হুই বিভা কোবার না ভনি।

প্ৰবাসা

রাষদাপ মহাবেবের পুত্র। রাজা রাষ্ট্রক নবন্ধীপাবিপতি ক্ষম্রবারের পুত্র। তিনি অতি বলিঠ ছিলেন এবং আতা রাষজীবনের বিক্লছে বিজ্ঞোহ করিয়া ত বংসর (১৬৮৭-১০) রাজত্ব করেন। তাঁহার রাজত্বকালে পাটুলিসমাজে ঐ রহুডজনক বিবাহ বটীরাছিল বুবা যার।

শিশুবিবাহ: -- প্রধ্ববিবাহের উল্লেখ দেখিয়া বুবা বার, ডংকালে অবিকাংশ বিবাহ অবিক ব্রুসে সাবিত হইত। কিছ ইহার ব্যতিক্রমণ্ড দৃষ্ট হয়। তরব্যে একট অতি বিশ্বরকর বিবাহের বিবরণ উদ্ধৃত হইল। কুলিয়া মেলের বিব্যাত কুলীন বিক্ঠাকুরের পৌত্র সীতারামের কুলবিবরণে পাওরা বার: -- "সীতারামত—উচিত বং রামানক্রপ্রহণাং। অত্র প্রবহন করেছেল দিবসীয়া কভা পণত মুলা সহিত দদে, সীতারাম বলাংকারভয়েন স্বীকৃতং।" (সাকা ৩২০০১ পত্র) অর্থাং সীতারাম ভয়ে বক্ষাবংশীয় রামানক্রের তের দিনের মেয়েকে বিবাহ করিতে বাব্য হইরাছিলেন! শুনা বার, কোন কোন সমাকে গর্ভত্ব সন্তানের বিবাহ-প্রথা প্রচলিত ছিল, কিছ তের দিনের লিভ-বিবাহের হিতীয় নিদর্শন সম্লাভ সমাকে পাওরা যার কি না সক্ষেহ। সমসাব্যিক ঘটক সীতারামের সহক্ষে কারিকা রচমাপুর্যক ঘটনাটকে চির্মারণীয় করিরা বিরাহেন। মধা, ক্ল্যাপ্রক্রণ, ৩৬০২ পত্র)

সমানে সমাধ কুল বরাবরি ভার।
লোকে বলে সীভারাম ভিন শ টাকা পার।
দিবলে আঁবার হ'ল পথ বেরাল চেরে।
সীভারাম বিহা করেন ভেরো দিনের মেরে।

ইহা প্ৰায় ১৭০০ সনের ঘটনা এবং দেবীবরকৃত বেল বছনের কুম্প তথন ফলিতে আরম্ভ হইরাছে।

ভাৰত কৰি কৰিছ লৈ ক্লপঞ্চীতে বহু অভপূৰ্বা বিবাহের উল্লেখ পাথবা বাব। দৃষ্টাভাষত্রপ, একটার বিশাদ বিবরণ উল্লেখ ক্লীন নীলকঠ ঠাকুরের পুত্র রামেধর ঠাকুরের কুলবিবরণে পাথবা বাব:—

"বাবেশর ঠাকুরভ লভ্য বং রাষচন্দ্র—রাষচন্দ্রভ দৌছিন্ত্রী
নির্নারী কভা আর্ছিপর্নারেন শ্রীমন্ডচটেন (চং অং ফুক্রন্তক্
গলানদর্শোন শ্রীমন্ত্র:) দল্লাভরা গলাভীরসনীপাদ্ধিকারাবাহ বলাংকারেন নীভা, রাচ্চেশে নলাই পরগণারাং বচ্চন্দ্রপ্রাবে শুভাপসনীপে শীরবাট্যাং খাপিভা। অভো বলাং রক্ষনীকরী ভবানক্ষিত্রীলোবাণাং সন্তবঃ। পশ্চাং রাবেশর ঠাকুরো বর্জনাবং গখা রাজাবং নিবেশ্য নানাচেট্টরা ভাং ক্টানানীয় সাগরধিরা পৌরপর্ব্যার রাজরামচক্রবর্তিত্বত গোবিকরামার দক্ষে। অভপূর্কারাং কভারাং প্ররাই বেল সন্পর্কীরদোবোণি।" (পরিষদের ১৮১৫-ব পূথির : ২৬।২ পত্র: সাঞ্চা ৩৯৪।১ পত্রে ইহার সারসংক্ষেপ আছে)

দহার্ডিখারা ধনরড়ান্তি কিলা সুকরী রমণী অর্জিত হইর।

শৈকে। কিন্তু সামাজিক প্রতিষ্ঠালাভের কম্প দহার্ডির
উদাহরণ অত্যন্ত হুর্নু ত। যেলবন্ধনের শোচনীর পরিণতিকালে
উক্তরণ ঘটনা বহু ঘটরাহিল। উরিধিত ঘটনাও প্রায় ১৭০০
লনে হইরাহিল।

বিৰবাৰিবাছ :---বিৰবাৰিবাছের ষ্ঠান্ত রাচীরসমাজে
অভ্যন্ত বিরস। আমরা একটর উল্লেখ পাইরাছি। গরবছ
বন্দ্যবংশীর সুলিরা মেলের কুগীন মধুরেশের একপুত্র রাজারামের সম্বন্ধে গিখিত আছে----"রাজারামস্য বিৰবাবিবাহঃ
চং রামজীবন রারস্য কছা" (পরিষং ১৫।১ পত্র)। ইহাও
প্রার ১৭০০ সনের ঘটনা।

মৃতকভাবিবাহ :—এই শতি বিশ্বরকর ঘটনা ১৭০০ সনের কিছু পূর্ব্বে একট সন্ত্রান্ত পরিবারে ঘটনাছিল। ভূলিরা মেলের কুলীন শিবাচার্ব্যের পুত্র রমেশ্র গোষ্ঠতে রাজবর্রত ঠাকুরের পুত্র রাষচন্দ্রের কুলবিবরণে পাওয়া যার :—

"বামচন্দ্রস্যাদে পিতৃবরেণ বং কামদেবস্য বৃতাকন্যাঞ্ছণং ইত্যাশ্চর্যাং" (পরিষং, ৩০০।২ পত্র)। "রামচন্দ্রে---বং কামদেবস্য থৃতাকন্যাবিবাহঃ" (সাঞ্চা ৩৭০।২ পত্র)। এই রামচন্দ্রের এক পৌত্র নবদ্বীপাবিপতি রাজা কুফচন্দ্রের জামাতা ছিলেন। কোন দেশের সামাজিক ইতিহাসে ইহার দিতীর হুঠাত পাওরা যাইবে না। মেলবড্ডনের ২০০ বংসর পরে রাচীর কুলীন সমাজে কিরুপ অবাতাবিক এবং অধ্নুত অবহার স্পৃষ্টি হইরাছিল ইহা তাহার উৎকৃত্ত নিদর্শন। সামাজিক মর্য্যাদার জভ কুলীনদের কিছুই অকরণীর ছিল না। ইহার অপর এক নিদর্শনপ্ত আক্রয়ন্ত্রনক।

বিমাতা-বিবাৰ: "ঘটনাট রাচীর কুলীন সমাকে প্রসিধিলাভ করিরাছে। কুলিরা নেলের প্রবর্তক গলানশ ভটাচার্ব্যের
ভাঠ পুত্র রামাচার্ব্যের সর্ব্যক্তির পুত্র পার্বাভীদাস ঠাতুর
বীরক্তর গোরামীর ভাষাতা ছিলেন। তাঁছার কন্যাবিবাহ
কুলপ্রছে এই ভাবে বর্ণিত ছইরাছে: ""পশ্চাং বং ছরিতে
বলাংকারে কন্যাবিবাহং দন্তবার্, তংক্তে রাম্যাসে বাসীবিবাহং দন্তবানিত্যাশর্ব্যং। শতএব 'হরিত্ত রাম্যাস
বিমাতার পতি" ইতি ঘটকা:।" (পরিষং, ৩৪১।২ পত্র)
অর্থাং পার্বাভী বলপূর্বক বন্যবংশীর ছরির হত্তে কন্যা
সম্প্রদান করেন এবং সম্প্রদানের পর হরি পলায়ন করিলে
বলপূর্বাক হরির পুত্র রাম্যানকে বরিরা আদিরা বলেন
"ভূষিই আনার কন্যাকে বিবাহ করিরাছ" এবং তহারা

কুণভিকাদি করাইয়া লম ৷ বটকদের রসাল কারিকাট সম্পূর্ণ আকারে পূথিতে পাওরা সিয়াহে:—

'ছরি-বন্দ্যে বলে কন্যা হিল পার্ক্কতী।
ছরিত্বত রান্দাস বিনাভার পতি।
বরের নাভা কন্যার নাভা ছই সংহাদরা।
ভাগনী, বিনাভা, লী কোণা আছে কারা।
তুম্মশ্রন কালে রদ্ধতী রাণা।
অদপর্শনে বলে ''ইকি, দালা। দালা।''
পতিবনে সতী হর তবে দে রভিকা।
বাবে বাপে বিভা করে পুত্তে কুশভিকা।"
(কানাল, বল্যবংশ, ৮।১ পত্র)

हेश ১৯০০ সমের किছ পুর্বের ঘটনা হইবে।

অসবৰ্ণবিবাহ :—ত্ৰাহ্মণসমাজে অসবণিবিবাহের বৃঠাছ তংকালে অত্যন্ত চূৰ্লভ হিল। আমরা একটির উল্লেখ করিতেছি। কুলিরা মেলের বিধ্যাত কুলীন সাগরবিদ্ধা বক্ষ্যবংশীর রামকেশব চক্রবর্তীর এক পুত্রের নাম বুনিরাম বা মনিরাম। ভাঁছার সধ্যন্ত লিখিত আছে:—

"মূৰিরাবে···অর্কাচীন শ্রোত্তির জরক্ণচৌধুরিণঃ কচাবিবাছ হেভূ :—জন্য পিতা পরভ্যাবে ক্ষত্তিরক্ষাবিবাহঃ ক্রভ ইতি লোকাপবাদ বোরালিরাবাসী।" ( সাকা ৮১।১ পত্র )

বিদেশিকভাবিবাহ :—ইহার একট উৎস্ট হাইভ আছে, যাহার ঐতিহাসিক শুক্ত কম নহে। প্রপ্রসিদ বাস্থ্যকে সার্বভৌমের জাঠ পূত্র অলেখর বাহিনীপতি ভটাচার্ব্য অভাতি (অর্থাং বছর) চং হরিদের পরমানকলঃ, পশ্চাং কলিপে পশান্তরে জাতিক্ষতি:।" (সাঞ্চা ১২১।১ পত্র) বাস্থ্যবে উভিভা যাওয়ার পর ভাষার পূত্র অলেখর ঐ হেশের কভা বিবাহ করেন। ঘটকদের মতে ভদারা ভাষার 'জাতিক্ষতি' হইরাছিল। বাহিনীপতির বহু কভা হিল, আমরা এযাবং দশ কভার উল্লেখ পাইরাছি। প্রত্যেকট কুলীনের হতে সমর্শিত হইরাকুল-ভলের কারণ হইরাছিল। বাহিনীপতির এই সকল কুলজিরার কলে রাচীর সমাজে ভাষার এতত্ব ব্যাতি হইরাছিল বি, কুল-প্রত্যে এই প্রসিদ্ধ বংশটি ভাষার মাথেই পরিচিত হইরাছিল।

বিধাহবিষয়ে উদ্লিখিত হল প্রকারের বৈচিত্র্যপূর্ণ ঘটনা মতই বিশ্বরক্ষক হউক না কেন, ইহামারা বিশাল রাচীর রাজ্যপলমান্দের শিষ্টাচার ও সামান্দিকভার তংকালীন আহর্শ ক্রুর হৈতে পারে নাই। সহত্র সহত্র আচারপূত ঘটনার মধ্যে সমুদ্রে বারিবিন্দুর ভার সামান্য ভরত্ব ভূলিরাই ইহারা বিলীম হইয়াহিল, ছারিছ লাভ করিতে পারে নাই। পজান্তরে, ইহাড লক্ষ্য করিবার বিষর যে, এই সকল বাত্তব ঘটনার সম্পাা বেভাবে তংকালীন সামান্দিক্ষণ বীরাংসা করিবা-ছিলেন ভাহাতে উদারভা ও ভূরণ্টীর পরিচর পাওরা বার।

# কলিকাতায় স্বতন্ত্ৰ মুস্লিম বিশ্ববিদ্যালয় স্থাপন সম্বন্ধে কয়েকটি কণা

## करेनक পূर्ववक्रोग्न हिन्सू

সম্রতি কলিকাভার মুসলমান হাত্রদের ক্ষ্য আলাহা अक्षे विश्वविद्यालय ज्ञानम कविवाद कथा विवेदार । निवक्तमा नाकि ब्याद विक-रेशद शूर्वाच्छमा विज्ञाद क्लिकाणां रेज-লাবিয়া কলেজের সন্তাসারণের জন্য এক কোট তের লক हैकि नवार स्वेदार्थ। जाज यपि बाळगरना वृद्धित जना অসাভানাত্রিক নতন বিশ্ববিভালর বোলা হইত অববা বসন্ত-ছাবের উরভির জন) মুসলমান বনীপণ মুক্তক্তে বন দান করিয়া নিজৰ সংস্থৃতির প্রচার বা প্রসারের জন্য বুস্লিম শিক্ষা-কেন্দ্র স্থাপন করিতে উদ্যুত হইতেন তবে কিছু বলিবার ছিল না। খতত্র বিধবিদ্যালয় ছাপনের প্রয়োজন আছে কিনা বিচার **ভ্**ষতি হইলে পোট-প্রাভুরেট ক্লানে প্রবেশার্থ ছাত্রের महाविक भरका कामा अरहाकम अवर मिट भरका सहै एक्ट আভার-প্রাকৃষ্টে ক্লানের হাত্রসংখ্যা সহছেও আভাস পাওয়া वारेटन । निरम्न जानिकाय ১৯৪৫, ১৯৪७ ब्रेडोट्स वि-अ. वि-अगृति छेडीर्नटक्य भरवा। अवर छबट्या युमलयात्मव मरवा। अवर শতকরা অরুপাত দেওরা হইল।

বি-এ	ৰোট সংখ্যা	ৰুগণধান হালহাতী	শতকর
<b>2&gt;8</b> €	3,934	. ७४३	40.42
7584	<b>২,০</b> 08	ં૭૯৮	24.4
বি-এসসি	ৰোট সংখ্যা	ৰ্সল্যাশ হাতহাতী	শতকরা
7584	٠ <b>٠</b> ٧	4.	6.14
7984	>>0	<b>1</b> 9	<b>₽</b> '9 <b>&gt;</b>

এই সংখ্যা হইতে সরকারী চাকুরিতে ( যাহার নিয়তর বোগ্যতা বি-এ ও বি-এসসি পাস)---পভৰুৱা ৫০% হিসাবে সাম্প্রদারিক হিন্দা বাদ দিয়া যে সংখ্যা থাকিবে ভাছাদের चना चानामा विविविधानस्व अस्ताचन एव मा--- छैहा वृतिर्छ क्मान कहे नारे। जन्छ धरे बरमद महकादी हाकृतिक हिक কতকৰ প্ৰাঞ্ৱেট মুসলমান নিৰুক্ত হইবেৰ---ভাহার কভ অংশ **हाका विश्वविद्यालय वाशाहरवन अववा वाश्नाय वाहिरदा**य विचविद्यानद निक्छ बाढानी दुननवान चववा चवाढानी মুসলমান কভৰৰ চুকিবেন টিক জানা না ৰাকার আনাদের छना चमलार्व, श्रीकाद कविनाम अर्थर चानाना विश्वविद्यानद्वत ছাবিও না হর মানিলাম। ভনিভেছি কলিকাভা ও চাকা विचविषानिक छाराजा वर्जन क्षिट्यन मा--छारे विच-বিদ্যালয়ের স্থান নির্বাচন। কলিকাতার উহা স্থাপনের বৌজিকতা বিচার করিবার কন্য ১৯৪৬ এইাকের ক্লিকাতা विश्वविद्यागरात वि- ७ वि- अन्ति छेडी व हाजरहा अरबा আলোচনা করিডা দেবা বাক---

ক্ৰিকাডা	বি-এ	বি-এসসি
ইস্লাবিয়া কলেক	68	×
<u>বেনিভেনী</u>	•0	>

114.8			
বিপণ	<b>&gt;</b> •	•	
<b>ৰটশচাৰ্চ</b>	e	>	
নেউভেডার্ন	•	>	
লেডী ভ্ৰাবোৰ	8	×	
ৰাণ্ডভোৰ	•	×	
বলবাসী	2	8	
সেউপলস্	>	×	
ৰন্ <b>কলেকিবেট</b>	>	>	
नि <b>डि</b>	×	ર	
	223	>>	
গ্রেসিডেনী বিভাগ		-	
বহরষপুর কলেজ	ь	8	
বাণের হাট	8	<b>.</b> ×	
কৃষ্ণগর	<b>સ</b>	2	
দৌলংপুর	3	2	
যশেহর	ŧ	×	
		9	
	२०	י	
বৰ্জমান বিভাগ	_	_	
হগলী কলেক	•	<b>3</b>	
বৰ্জমান	9	×	
বাঁকুছা	۹ .	×	
বিশ্বভারভূী	,	×	
ষেদিনীপুর	8	<b>&gt;</b>	
<b>হেতৰপু</b> র	3	×	
चनार	3	X	
बौद्ध्य (मन्-खरन.)	2	×	
	30	•	
রাজসাহী বিভাগ			
হাৰণাধী কলেক	90	•	
বদপুর	2.0	٠	
<b>भा</b> वना	۲	•	
<b>খিশা<b>জ</b>পুর</b>	1	×	
4491	e	×	
<b>কুচবিহার</b>	2	×	
	<u></u>	٠.	
A 6	~*	~	
ঢাকা বিভাগ		_	
यद्मयगिरस्	9.9	1	
<b>ৰবিশাল</b>	20	<b>b</b> .	
<b>महादिश</b>	22	. X	

~~~~~~~~~~~		
कविवर्ष	r	×
মুখীগঞ্	1	×
চাৰাৰ	•	×
_	40	>e
চট্টবাৰ বিভাগ-	_	
<b>ক্ৰিলা</b>	>	1
চট্টপ্রাশ	1	8
কেব	1	×
কাহ্মগো পাড়া		×
	*****	
	<b>२७</b>	>>
খাসাৰ		
<b>ी एडे</b>	৩২	>
গৌহাট	•	ø
<b>ভবিগঞ্</b>	2	×
निनर	>	×
	8 •	75

উপরের তালিকা লক্ষ্য করিলেই বুবা বাইবে বিজ্ঞান শিক্ষার জন্য আলাদা বিশ্ববিদ্যালর স্থাপনে প্রয়োজন ত নাই-ই—ইছা ব্যরবর্ধপও,বটে। সেইজ্ঞাই বোধ করি, তাঁছারা কলিকাতা ও ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয় বর্জন করিবেন না—অবস্থ বর্জন করিতে আমরা বলি না। কলিকাতা হইতে যে পরিমাণ ছাত্র বি-এস্সিপাস করিরাছে তাছাদের জ্ঞাইস্লামিরাণ কলেজেও বি-এস্সিলাস পুলিবার আপাততঃ কোন প্রয়োজন নাই—কলিকাতার বিভিন্ন কলেজে জনারাসেই তাছাদের স্থান হইতে পারে। স্থতরাং বিশ্ববিদ্যালর স্থাপনের বৌজ্ঞিকতা বদি কিছু বাক্ষেত্র সে বি-এ ও এম্-এ ক্লাসের জন্য। মক্ষণ কলেজেবি-এ ক্লাসগুলিতে বর্পেই ছাত্র ভাইতে পারিবে।

উপরের ভালিকা হইতে খারও দেবা বাইবে, কলিকাভার

প্রার অর্থেক বুস্পরান ছাত্র ইস্পারিলা কলেক হুইতে পাস করিলাকে—অভাভ কলেক হুইতে পাস করিলাকে অর্থেকের সারাব্য বেন্টি । ভবিষ্যতে ঐ সব কলেকে বুস্পরান ছাত্রদের পভিতে কোন বাবা নিক্তরই হুইবে না । তবে বর্ডনানের পরি-বৃত্তিত পরিবেশে বিধি তাঁহালা বনে করেন, তাঁহালা তবু ইস্-লামিলা কলেকেই পভিবেন এবং কলিকাতা বিশ্ববিভালর বর্জন করিবেন তবেই তথু আলালা বিশ্ববিভালর ছাপনের কথা উঠে । অবভ কলিকাতা হুইতেই বেন্টি বুস্পরান ছাত্র পাস করিলাকে, (বি-এ ১১৪) কিছ ঢাকা, চইনার ৩ রাজসাহী বিভাগ এবং শ্রীহট হুইতে পাস করিলাকে (বি-এ ১৯১ জন)। ক্লি-কাতা হুইতে বাহালা পাস করিলাকে তাহাদের বব্যে পূর্মবিদীর ছাত্র কম হুইবে না।

স্তবাং ক্লিকাতার কলেক্ষের সন্তারার জন্য অতিরিক্ত টাকা বরাছ করিরা তবিবাং বিশ্ববিদ্যালয়-স্কৃত্রির আরোজন না করিরা ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয় সন্তারার অববা পূর্কবন্দের কোন হানে দৃতন বিশ্ববিদ্যালয় ছাপনের পরিকল্পা করিলে বৃত্তিবৃত্ত হুইবে বলিরা আমাদের মনে হর। আরও মনে হর, বিশ্ববিদ্যালয়ের হাত্রসংখ্যা রুছি শুরু আলাদা বিশ্ববিদ্যালয় ছাপন করিলেই হর না—একেবারে গোড়ার হাত দিতে হয়। তাই বাহারা আলাদা বিশ্ববিদ্যালয়ের জন্য আন্দোলন করিতেছেন তাহারা প্রাথমিক শিক্ষা বিভারের দিকে মন দিলে ভাল করিতেন। তাহা হুইলে ভবিষ্যতে শ্বাভাবিক প্রয়োজনেই দৃতন দৃতন বিশ্ববিদ্যাপর গড়িয়া উঠা সভবপর হুইবে।

জবত আমরা ইহা তুলি নাই বে, বর্তনান গবর্ণ বৈঠ বে রাজনীতিক দলবারা চালিত হইতেতে তাঁহারা কোন বৃত্তিই নানিবেন না—কাজেই ইহা জরণো রোজন।

শংখাগুল India-To-morrow প্রিকা হইতে
লগুরা হইরাছে—ভুল্ঞান্তি কিছু পাকিলেও বৃল বক্তব্যের
পরিবর্তন সামান্যই হইবে।

# বাংলার খাত্যশস্ত্র উৎপাদন ও ম্যালেরিয়া

শ্রীহরগোপাল বিশ্বাস, এম-এসসি.

প্রাইমারী মূল বেকে পড়ে আসহি মীজাতীর এমোকেলিদ মুলা কর্তৃক ম্যালেরিয়া বিভার লাভ করে। কলিকাতার উপকৃষ্ঠস্থ বেলেঘাটার মুলা বরে এই তথ্য সঞ্চমান করার সার রোমান্ড রুল ১৯০২ সালে মোবেল প্রাইক পেলেন ইত্যাধি। কুইনিন ম্যালেরিয়ার ওবং আনা থাকলেও বাংলাদেশে যে বার্মিক সাড়ে তিন লক পাউও কুইনিন ব্যক্ষার তা আর্গে আনা হিল মা। তারশার মুক্তের আর্গেও অর্থাৎ ১৯০৭-৩৮ সালেও যে বাংলাদেশের চাহিলা সাড়ে তিন লক্ষ্ পাউতের হলে মার এক লক্ষ যার হাজার পাইও কুইনিন পাঙরা গেছে লে ব্যর্ড হয়ত সকলে অবগত নন । ম্যালেরিয়া গরিবের রোগ, কিছ
তার চিকিংসার বনীকেও হিনসিন বেতে হয় বলে একট
কবা আছে। বুবের আগেই বাংলাদেশের চাহিয়ার একতৃতীরাংশ নাত্র কুইনিন পাওরা বেত। বুবের করেক বংসরে
কুইনিনের বে কিরপ শোচনীর অভাব বটেছে এবং পঞ্চালের
ববভরের লোককর বে এর জভ অনেকাংশে হারী তা বুবে
উঠাও শক্ত নর। এবন ন্যালেরিয়ার সঙ্গে বাভশত উংপাদনের
কি সহত সে বিবরে কিকিং আলোচনা করতে চাই।

হেলেৰেলা বেকে বেৰে আসহি পাছার চরেব নেব,

রবজান সর্বার, মহেশ বঙ্গ ও রাষ্চরণ বাসের বাড়ির **ला**क्यां अंक् अरक म्हारनविद्यां चरव यदा छैश्यव हरव । शंन । থাৰে আৰও অনেক ক্লবক-পরিবারের এইরূপ প'ছো ভিটা পড়ে ব্যৱহে। আগে যে সৰ বাছিতে হল-পনৱ জন লোড় হিল, চার-পাঁচধানা হাল বের হ'ত সে বাড়িতে বরতে বরতে ছ্-এক জুন নাম লোক অবশিষ্ঠ আছে। বারা বেঁচে আছে ভারাও শীবৰ্ভ। কৰ্বাড়ি, খেলেবাড়ি প্রভৃতিরও এই একই দৰ্শা। কলনা নয়, কঠোর সভ্য। এবনও আখিন বেকে অএহায়ণ পৰ্যান্ত ভৱে না পড়ে এমন লোক প্ৰানে নাই বললেই চলে। খৰচ এই সৰ প্ৰাম কলিকাভা বেকে বেশী দূৱে নয়, ফলিকাভার বিশ-ত্রিশ মাইলের মধ্যেই এরপ এাম অনেক আছে। আগে মনে করভান কলিম্ছির পরিবার উৎসর গেল এতে ভবু ভাষেরই গেল, অপরের কভি কি ? পশীদাসের উপ-মুক্ত হেলে ও ভাষেরা মধে গেল তাতে বুড়োবুড়ী ও বিধবাদের আজীবন কঠ, অপরের কি ভাতি ভাতে ? কিন্তু এখন বুৰতে পারছি, এদের সদে ভবু আমবাসীরই মর, পরত সমগ্র দেশের সুৰহঃৰই নিবিভভাবে ভড়িত। ৰে সৰ কৃষক-পরিবার নিশ্চিক रुद्ध भिन, कीविष्ठकारन अद्र! निरुक्षक भविज्ञास छैरभन्न हान, षान, चानाच छत्रकाति ७५ (व नित्यतारे (वछ छ। नत्र, नत्रः উৰুত্ব শহাদি ঝামের কেলে, ডাভি, কলু প্রভৃতি ভূমিহীন লোক বেরে বাঁচত, ভদ্রশ্রের ত কবাই নাই। পাবনা জেলার মালিগাছা বেকে উভরে চাটম্বর ও পশ্চিমে ইবর্দি পর্যাত্ত বিভূত অঞ্লের ধারা ববর রাবেন, রাণাঘাট-লালগোলা লাইন ও রাণাঘাট-বশোর লাইনের পার্থবর্তী অঞ্চ সহছে বাদের অভিন্তভা আছে ভাষা এ কৰা ভাল ভাবেই ভাষেন। হুগলী ও বৰ্ডবান জেলায় কথা ভো অনেকেবই সুবিধিত। পাবনায় যে অঞ্চের উরেধ করলাম এ অঞ্চের কভ বর্তিফু হিন্দু-ৰুসলমান পরিবার বে উৎসম্ন হরে গেছে তার ইরভা নাই। চাৰীর অভাবে মাঠের পর মাঠ অমাবাদী পড়ে আছে, পভিত খৰি ক্ষম: বেডবোপ, আসঙাওড়া, ভাট নাটা ইত্যাদির জঙ্গলে পরিবত হচ্ছে। যে সব প্রায়ে ছ-চার বর ক্রয়ক-পরিবার আছে ভারাও বছর বছর ব্যালেরিবার আক্রমণে প্রীহা-বঞ্চতের ব্যাৰিতে প্ৰশীভিত : নিজেদের প্রাসাহ্যদনের উপযুক্ত সামাত ক্ষেক্ বিখা কমি কোনৱপে চাব ক্ষে, শালীরিক নামর্ব্যের অভাবে বেশী ভবি চাৰ করা বা চাবের ভবির উপযুক্ত বহু मध्या ভাষের পক্ষে সভবপর হর मा । এই ভাবে বাংলাদেশে অনেক উর্বার কমি চাবের অভাবে পভিত পড়ে থাকে, কলে ৰাহ্যশদ্যের বাটভি ও ছুর্ভিক চিরস্কর হরে পড়েছে। **१भाष्ट्रां इत पक्षां — त्ववाद्य वार्णिवतात वार्णिश क्य.** নেৰানে লোকের এড খন বসভি যে ছানীয় আবাদী ক্ষমিডে लाटकत चत्राचार पृत एत मा। छेगाएवय-एकम, कूछिता, भाक्षे, भावमा, भारमा **ब**हे ह्यू:नीयानाव म्यावर्की चकरनव चयुष्टा, द्वत्रद्वरे च कथा पूर्वा सार 💵

বাৰবাৰের নিকট সিঁহরিতে লাভে হল কোট টাকা ব্যৱে ৰাধিক সাজে ভিন সক্ষ ইন জ্যাৰোনিয়াৰ সালকেই নামক वामवाधिक माव श्रवाणव गुवदा स्टब्स् । अ मरवाटर राजनामी, विरम्बन: कृषक-मध्यमारात छेन्नमिन स्वाबर कथा। छर्द অনেকে অবগত আছেন বে, শুধু সালকেটে কসলের ফলন ভাল হর না। সভোৰত্বৰ কসল পেতে হলে আাৰৰ পালকেটের সঙ্গে ক্সক্টে পারেরও ব্যবস্থা করা দ্বকার। ভার-পর বে সব অঞ্লে প্লাবন বা বৃষ্টপাতের পরিমাণ অপেকারত **जब (नरे नर जक्रांकर इविम नांत (वणी कनश्रप्र राह्म पारक)।** বারিণাভের পরিমাণ বেশী হলে ঐ সার কলে দ্রবীভূত হরে পুৰে বাৰ অথবা জলের সংখ চু ইয়ে বেশী মাটর নীচে প্রবেশ कदल करल त्रहे मादबद छैनकांद लिए भारद ना । अक्रम ছলে 'হিউমাস' জাতীয় সায় অৰ্থাং পচা খাস পাতা বা গোবরের সার বাকলে সেওলির মধ্যে আবন্ধ হয়ে রাসারনিক সার সঞ্জির বাক্তে পারে, ফলে শস্যে চারাওলি ভন্ধারা পুঠ হবার স্থােগ পার। সুভরাং দেবা বাচ্ছে নিয় বাংলার ধানচাষারা রাসারনিক সারের ভারা পুর বেশী উপকৃত হবে বলে আশা করা যায় না। একমাত্র রবিধন্দের বেলাতেই রাসায়নিক সারের সুব্যবহার ও ভঙ্কনিত ত্মকল আলা করা যার। কিন্ত এই রবিবলৈর চাষেই ম্যালেরিয়া বাঙালী চাষীর প্রধান প্রভিবছকভা করছে। चार्तिक कारमम, छेखब, मदा ७ शक्तिम बारमात छे ह ক্ষমিগুলি রবিধক চাবের সবিশেষ উপযোগী। আর এই সৰ ছাৰেই ম্যালেরিয়ার প্রকোপও সর্বাপেকা বেটী। বাংলার ম্যালেরিয়া-প্রবান করেকট অঞ্চলর কথা ইভিপুর্বে উল্লেখ করা হরেছে। স্বালেরিয়া প্রসঙ্গে প্রায়্য কবি লিখেছেন —"কাঠিকে ঘরে পড়ি চৈতালী বোনা হ'ল না, ক্লেত্র রহিল পভিত পঢ়ি।" এই কৰাই বিশ্লেষৰ করলে কি **দাভা**য় দেবা বাকৃ--বর্ণার শেবে ম্যালেরিরার আক্রান্ত ব্ওরার কৃষক চৈভালী—অৰ্থাং ৱবিৰন্দের চাব করতে পারল না—এতে ভাল কলাই এবং সরিষার তেলের সংস্থান করা থেকে সে বঞ্চিত হ'ল। ধান বিজ্ঞী করে তার ভাল ও ভেলের সংস্থান করতে হবে। অবচ বামও হয়ত সে সংবংসয়ের জন্ত পর্যাও পার নি। সুভরাং বংসরের শেষে ভাকে মহাক্ষের হারত্ হতে रूटन बोला बड़े किश्तो क्या बचक द्वार्य बोम किटन बीबोड ক্ষ্য। ব্ৰবিধন্দ দা পাওৱাৰ ভাৱ গল্পৱ ৰোৱাকও ভূটল দা। ৰটন মহুন হোলা খেসানী প্ৰভৃতিত্ব ভূষি গক্তব পুষ্টকৰ খাদ্য। এষিকে ছুৰ্মান গল দিয়ে কৰিব চাষও সে স্থাৰিবামত কয়তে পারবে না, পঞ্চান্তরে চৈভালী বোনা হলে আবিদ কার্তিক মাসে ক্ষির 'ৰো' বাক্তে বাক্তে চাষ করতে পারত, কলে জৰি অনেকটা 'পাট' হয়ে বাকত ভার পর রবিবন্ধের শিক্ত-সংসধ ব্যাটেবিবার কিবাতে ভূমির টর্মরতা-শক্তিও অনেকটা বুদ্ধি পেড। ুঞ্জুদ যাৎ বালে বৃষ্টি হলে এই, চাষী ভার ক্ষিত্

চাৰের স্থাের পাবে, বছুবা শক্ত বাটভে চৈত্রের বৃটির আরে चाव 'नाकन बवाम' जन्दर्शव हरद वा । अनिरक अहे करवक बाज ৰ্ষি পভিত ৰাকাতে কাৰ, দুৰ্জা প্ৰভৃতি বাদ এত 'ৰোৱ বৱে' উঠবে বে লেণ্ডলি বেরে কেলবার আর সে সময় পাবে না. কারণ আউদ বা আমন বান বোনার সময় এসে পভবে। ুত্তরাং ক্ষরি ভালমত 'পাট' না হওয়াতে বানের সভাষ-क्षमक क्षम भाषदां अब होतीत भाक्त क्षम क्षम । इरे अक वाब अरे व्याभाव पहेला के हायीब 'लाइक' क्यि पाकरमञ्ज त्म ज्ञान छ त्मनात छूटन वाटन धन्य जनमन-অৰ্জাননে অকালে ভাৱ ভবলীলা সাদ হবে। অভএব ''বেৰী ক্সল কলাও" বলে কভোৱা দেবার আগে দেশের *নে*ভ্রন্দকে ৰ্যালেৱিয়া নিবারণের ব্যবস্থাই বে সর্বাঞে করতে হবে তা বেশ বোৰা যাছে। মালেরিয়া নিবারণ করা যে অগভব নয়---ইটালী দেশের ও পানামা অঞ্লের ধবরে তার পাই আভাস পাওরা যায়। ঐ সব ছাদের গবর্ণমেন্ট প্রচুর পরিমাণ কুইনিবের ব্যবহা করার, বাহ্য-বিজ্ঞানসম্বত গৃহাদি নির্দ্ধাণ করে দেওয়ার, বাসছানের সন্নিক্টয় বোপবাড় ও কলা কারণা নির্ম্লিভ করার এবং পাইবেশাম প্রভৃতি প্রয়োগে মশার বংশরুদ্ধি রহিত করার সাক্ষ্য লাভ করেছেন। আমাদের চোবের সামনেই मार्जित्रश-धनान भागानक, काँक्राभागात रेमक-चिनिद्द ম্যাদেরিয়ার আক্রমণ হতে দেখা বার নি। পত বুদ্ধের মধ্যে আগায় এবং অগ্নধেশের জন্মণেও যথোচিত সতর্কতা অবল্যন कदाश वित्नव करव छिछि श्री शामित करन मिनान रेमक्रावत ম্যালেরিয়া হয় নি বলে প্রকাশ। সুতরাং ফেশবাসী সত্য-সত্যই অবহিত হলে, বাংলার অবক্ষাত, নিরক্ষর দরিত্র কৃষক-দের বাঁচাভে চাইলে ম্যালেরিয়া নিবারণের ব্যবস্থাও তারা নিচ্চরই করতে পারবেন। আক্কাল কুইনিন ভাতা ৰেকেও পাওয়া যাবে। ভার পর কুইনাক্রিন, পেলাড়িন প্রভৃতি मार्जितवा-निरातक मूज्य मूज्य श्रेयरथ इच्छाणा नव। তবে প্রাথের কৃষ্কগণের অঞ্জতা ও দরিক্রতা অপরিসীয এবং স্থাচিকিংসারও শোচনীর অভাব বিদ্যমান। আবের जाक वादवत स्थान चादह छाटबत व कवा वृत्रित वनवात ছব্রকার নেই। ১৯২২ সালে উত্তর বলের প্লাবনে আচার্য প্রভাৱত ও পুভারচজের নেড়ড়ে উর্ভ বেছাগেবক-বুলের সাহায্যে হুর্দশা যোচনে বেরুণ সাফল্য লাভ হয়েছিল---ম্যালেরিরা নিবারণেও অকুরণ প্রবাস আবর্তক। প্লাবন-পুঁড়িত একট কেন্দ্ৰে কৰেক বিদ কাৰ কৱবার সোঁভাগ্য আয়ার হরেছিল। সকালে সামার ক্লবোগান্তে আমরা ভিদ-চার খন এক একট প্রানে বেভাম। সেবানে প্রভাক ৰাভিতে ক্ষৰানি চাণাখন ছিল, তথবো ক'ৰানা সম্পূৰ্ণ পড়ে থেছে, ক্ষৰামিল লাওয়া ধ্বনে পড়েছে বা বেড়া बरन मिट, भविवादाव (बांडे (लांकनरबा), छेभर्कनकंत्र गूक्य ক্ত ক্ৰ, আৰিক সংখ্যান প্ৰভৃতি টুকে নিৰে আনহা বেলা

আডাইটা ভিনটার কেন্তে কিরে এনে রিপোর্ট হাবিল করতান এবং সেই রিপোর্ট অহবারী ঐ প্রান্ধনানীকের নাহার্য প্রহান করা হ'ত। ব্যালেরিরা-বহুল অঞ্চলেও বহি অহরণ ভাবে কাজ আরম্ভ হয়—প্রত্যেকট প্রাব্যের প্রত্যেক পরিবারের নোর্ট লোকসংখ্যা, ন্যালেরিরাপ্রভের সংখ্যা, আর্থিক সংহান, বসতবাসীর কড গজ হুরে ঐরো ভোষা, বাঁশঝাড় বা পার্ট পর্চানোর ভোবা বিভ্নান, বাভিত্র বা পার্ছার জল নিকাশের বন্দোবন্ত, পান্ধীর জলের অবহা প্রভৃতি সুস্পাই ভাবে লিপিবভ হর এবং তর্ভস্পারে চিকিৎসা ও হাস্ত্যো-রতি-বিবারক অভাত ব্যবহা ব্যব্যাধ অবলম্বিত হয়, তবে বাংলার প্রান্থলির ম্যালেরিরা হুর করে ভক্তর লোক্ষেকের ব্যবহাও সহজ্পাব্য হবে ভবিষরে সন্দেহ নেই।

এবন বেবা বাক ম্যালেবিয়ার কারা মরে বেশী গ পরিব না ৰনী ? চিকিংসার স্থবোদ সমান ভাবে পেলেও ৰনীর চেষে পৰিব বেশী মৰে। যাৱা সভ্য সভ্য মাৱা পেল, ভাৰা ভ গেলই, কিছ ভূগে ময়ে গরিবরাই বেশী। স্যালেরিয়ার জীবাৰ্ভলি বক্তক্ৰিকা নই করে দেৱ কলে জর সেরে গেলেও রোগীর ছর্ম্মলভা কাটভে সমর লাগে। এ সময় যদি পুটকর বাদ্য উপযুক্ত পরিমাণে বেভে পায় ভবে রোগী শীত্র সুত্ব হরে উঠতে পারে। কিব্র প্রায়ের দরিদ্র ক্রমকরের পক্ষে पृष्टिकत बीगा मध्यम् कता चानक क्यायमे कृष्टिम । चाक्कान कृषकरण्य मर्था । वार्रायव राष्ट्रीय । विवासन প্ৰবাৰ বিলোপ হেতু অধিকাংশ বাঙালী কুষকের পক্ষেই হালের বলদ ছাড়া অভিরিক্ত গাই গরু পোষা সম্ভব হরে ওঠে না---ভারণর পরিবারে একা থাকার ছর্মান পরীরেই মাঠের কাছে তাকে ৰাটতে হয়, কলে শ্ৰীয় চালা করে ভোলার আর সে সমর পার না। অনেক ক্ষেত্রেই এরণ লোক লীতের লেবে ভাৰাশ্ব বা পেটের অসুধে হঠাং প্রাণ্ড্যার করে। বাংলার কুষক-পল্লীতে ভাই আঞ্চলাল চল্লিল বংসৱের উর্দ্বের লোক বছ একটা চোৰে পড়ে না। অৰচ ম্যানেৱিয়া-প্ৰবাদ অঞ্লেও সঞ্জ অবস্থার লোকেদের প্রতিবংসর ম্যালেরিরা হলেও কাছ্যের বৈলক্ষণ্য বুঝা বার না। আমি নিকে একপ ছু একজন লোকের সঙ্গে বিশেষ পরিচিত। ম্যালেরিয়া বিচুরিত হলে চাষের কিরণ ১রাহা হবে তার কিঞিং আভাগ ইভিপূৰ্কেই দেওৱা হয়েছে। শস্যপ্তাৰলা বাংলাকেও য়ধন আম্বানী ধাৰ্যপঞ্জের উপর নির্ভন্ন করতে হচ্ছে ভবন উপৰ্ক্ত সাৰ প্ৰয়োগে ক্ষমান্ত্যের উন্নতি করে বাংলার ধানের আবাদ ও ফলন বাড়ানো হাড়া ব্যাপকভাবে আনুর চাবের প্রবর্জন করাও অপরিবার্ন্য হরে পড়েছে। উভর-পশ্চিম ও মৰ্য-বাংলার যে সৰ অঞ্চল রবিবন্দের চাষ্ট্র সেই সৰ ভাষণা ব্যালেরিয়াপুত করতে পারলে, ভাতাবাদ ভূষকবের ভাল আনুহ বীক ও উপযুক্ত লার লয়বরাহ ক্রলে বাংলার অরাভাব অনেকটা প্রশন্তি হতে পারে। ভারব ব্যালেরিরাপত মুর্বল চাবী এবন বেবানে লার লোব বেওরার বত করে হোলা মটর বা রুস্থরী বোনে এবং বিবা প্রতি বচলোর চার-পাঁচ নধ নাত্র কলল পার সেবানে সে উপরুক্ত ভাবে চার করে বিবা প্রতি ৫০।৬০ বধ পোল আলু কলাতে পারে। পুটর বিক থেকে পোল আলু ভাত বা রুটরই সমকক। চাবীরা পর্যাপ্ত আলু করালে এক বেলা ভাত ও অপর বেলা আলু ও নাহ ভাল বেরে অনায়াসে অটুট রাখ্যের অবিকারী হতে পারে। ওনতে পাই আরল্যাতে আলুই প্রবান কলল। ভার্বানীতেও রুটর চেরে আলুর প্রচলনই বেলী। সেবানে পোকে বত আটা মরলা ব্যবহার করে পোল আলু ও আটা-মরলা প্রার সমপরিয়াবে ব্যবহৃত হরে থাকে। বিলাতের লোকেরাও > আলা আটা-মরলা ও ৭ আলা আলু

दिस पेटक। के नव स्तान शांन चान्य छायछ प्र स्वनी एवं। जांनीय साष्ठे जांचांने कवित गठकवा २० जरम छ विनारक छारव जिवन गठकवा २० जरम छ विनारक छारव जिवन गठकवा २० जरम शांन-जान्य छाय रत, जांव जांवठवर्स्य जांचांने जिवन राजावकवा वांच जिन जांन कवित जांच्य छाय रत पेरक। प्रकार जांवरिय स्वान स्वान हिंदि जांचरिय स्वान स्वान हिंदि जांचरिय साम्य हिंदि जांचरिय प्राप्त स्वान विचार जांचरिय वांचर्य हिंदि स्वान प्राप्त कवित कवित कवित कवित कवित कवित कवित स्वान कवित कवित स्वान स्वान

# আলোকে-আধারে

### গ্রীদেবেশচন্দ্র দাশ

#### [ withite ]

আলো-রূপে চিত্ত পুড়ি ছিলে এক দিন।
আজিকার উজ্বাসবিহীন
সন্ধার দ্রানিমা
ভাবে বেরি দিভে চার অকারণ সীমা,
চানি' দিভে সোনার বিশ্বভি,
দে দিনের শীভ
ভরেছিল বে পূর্ণ আকালে
পুত-রূপে দেবাইতে ভাবে অবিধাসে।

ভূমি ভাই আসর আঁবারে
পাতো নি আসন তব বৰ্ণফ্টাহারে,
বিকলে করণ ক'বে ভোলো নি প্রধান,
করো নাই রোব ;
নিঃশব্দে এভাবে তব ক্লাভ কোলাহল
শোভিভেছ হীও বলমল
প্রসর পুলকে
অঞ্চর কালিয়া হতে বহু উর্লোকে।

### [चौषादा]

আছিকার এই তব উচ্ছ্যুস্বিহীন
নিশাল চাহিরা থাকা তিমিরের পানে
মুক্ত বাতারন-পথে, আঁথারেতে দীন
অসীমের অকুতব উদার আহ্বানে-—
এই শাভ পথটির বুসর প্রসারে
লক্ষ্যহীন ধেরালেতে উদাস নিমেধে
চকিতে চমকি' ওঠা, মনে হয় কারে

এই প্ৰ্যা কক্ষকোণে মতমুৰে বীৱে

অধরে মিলায়ে বার একথানি নাম,
নীরবে মিনীলি' জাবি স্বতিটুত্ বিরে

অতীত জীবনতীর্বে চরন প্রধাম—

নিক্ল আবার বত অঞ্চর সঞ্চল ভার বাবে পাই তব পূর্ণ পরিচয়।

ষেদ দূরে হেরিলাম পরিচিভ বেশে---

# এশিয়ার ঐক্য

### ই স্থাপ্রসন্ধ বাজপেয়ী চৌধুরী

এশিয়ার সভ্যতা ও সংস্কৃতি একদা সম্ম বিশ্বের প্রাভা ও সমাদর লাভ করেছিল। কিছ ইউরোপ ও আমেরিকার ক্রুত উন্নয়ন আৰু এত ব্যাপক ও স্বদ্বপ্রসারী হয়েছে যে প্রায় এক শভাকী বরে ইউরোপ ও আমেরিকা এশিরার বিভিন্ন অংশের উপর নানা ভাবেই কর্তুত্ব করে আসছে। অষ্টাদশ শতাকীতে ভ্রুত্তের অবংপতনের স্বচনা দেখা যায় এবং প্রায় সেই সময় বেকেই ইউরোপের শভ্তিত্বাহ ও উন্নয়নের প্রবল্গ পরিস্কৃতিত হয়। আমেরিকার অভ্যাদয় ভার বহু পরে, কিছ ভার অপ্রগৃতি বিশ্বয়কর এবং সে দেশ আৰু এত শভ্তিত্বালী হয়েছে যে সম্ম বিশ্ব ভার প্রভাগে সম্বত হয়ে উঠেছে।

যে এশিয়া এক দিন সমগ্র ইউরোপ তথা অভ বহু ভূতাগের উপর সীয় আধিপতঃ প্রতিষ্ঠা করে অগতের সর্ক্রপ্রেষ্ঠ শক্তি ক্রপে পরিগণিত হয়েছিল তার বর্তমান অবনতি ও মুর্থশার মৃদ্ কারণটি কি আক্রেন্স দিনে সে কথা তেবে দেখা একান্ড আবক্তক।

ইউরোপের ঐকোর প্রশাভ হয় ভবন বেকে, সেউ পিটারের উত্তরাধিকারিগণ যথম সীজারের উত্তরাধিকারী-বর্গ থেকে বেশী শক্তিশালী হয়ে উঠে : যদিও সে মুগ ছিল ভ্রমসাজ্যা: ইউরোপের সেই নবোধিত সভাতা ও উন্নয়ন রোম বা: ইউনানের প্রভাবে প্রভাবাহিত নয়, বরং শেশনবিজ্ঞো মুরদের হার; এই উন্নভির ক্লেজ রচিত হয়:

ইউরোপের ঐক্যের বৃলে আরো একটা বিশেষ কারণ নিহিত রয়েছে। ইস্লাম ধর্ম-প্রচার-প্রচেষ্টাকে ব্যাহত করবার ক্রেই বিভিন্ন ইউরোপীর ছাতি একদা একভাস্ত্রে আবহু হয়েছিল।

অবদ একবাও মেনে নিতে হবে যে, বর্ষণত ঐক্যও ইউরোপের বিভিন্ন বঙ বঙ দেল এবং জাতিসমূহকে একস্বরে ব্বৈধ রেবেছে।

ভূরত্বের স্থলতান সোলেমানের পরাক্তম ও ক্ষাত্রপঞ্জির প্রভাব এক সমঙে সমগ্র ইউরোপে পরিবাাপ্ত ও অস্তৃত্ত সংম্বিদান ব্যবহোগার অবিমায়কত্বে তার মৌ-শক্তিও প্রভূত পরিমাণে বৃদ্ধি পেরেছিল: এ সব অবঞ্চ অষ্টাদল শতালীর পূর্ব্বেকার কর্বঃ।

বোষ ও কাৰেছ গ্লাজ্যৱ ইতিহাসও বিচিত্ৰ। কাৰ্থেছ প্ৰাচ্য রাজ্য ও রোম পাশ্চান্ত্য রাজ্য। এ কথা সতং বে, রোম কার্থেজকে পরান্ত করেছিল, কিছ কার্থেছ ভার জমিত পরাক্ষমের যে দৃষ্টান্ত দেখিমেছিল ডা. আৰও সকলের প্রভার উক্তেক করে। ভবনকার দিনে হানিবলের ভার এমন সব সেনানারক জন্মেছিলেন বাঁদের বিক্রম সর্বাদেশে অস্তুত হরেছিল।

এশিবার পূর্বাসেরবের কথা বাদ দিয়ে এখন তার বর্তমান
অবস্থা নিরে আলোচনা করা যাক। কেমন করে এশিবা ক্রমণঃ
অবনতির পথে নেমে গিরে চরম চুর্বশার ভরে উপনীত হয় তা
বিভাবিত ভাবে বলবার স্থান এটা নর—কিছ আদ এশিবার
দিকে তাকালে ঐক্যবোবের অভাবটা বিশেষ করে চোথে
পছে। যেমন বরা যাক চীনের কথা—চীনের গৃহষুছ তাকে
সর্বায়া করতে উদাত। বিরাট দেশ, বিপুল তার জনসংখ্যা
কিছ হলে কি হয়, কুল কুল স্থাব নিয়ে ঘলালি, মারামারি
হানাহানির আর অভ ছিল না, এমনি সময়ে ভাগানের সলে
তার বাবল খোর সংঘর্ষ যা চলতে লাগা বহু বংসর বরে।
চিরাডের নেড্ড দশ আনা চীনারা মানে, দেশের বাকী
জনসত্ম রাজনৈতিক দিক দিয়ে ভিরপহী এবং এইটেই
হচ্ছে চীনের গৃহবিবাদের স্থা কারণ।

বিতীয় বিশ্বস্থাতের যবনিকা পছল হিরোসীয়ার আগবিক বোমানিকেশের পর। এই প্রচন্ত আঘাতে ভাপান পয়ু দিন্ত হয়ে মিত্রশক্তির নিকট আত্মসমর্পন করতে বাব্য হ'ল এবং পরাধীনতার নাগপালে আঠেপুঠে আবদ্ধ হ'ল।

বিদেশের কথা ছেড়ে দিয়ে এবার আমানের মাড়ভূমি ভারতবর্ধের দিকে দৃষ্টপাত করলেও দেবি, আমাদের গৃহবিবাদের সুযোগ নিমে বিদেশী বণিকরাজ পরাধীনভার শুখানকে কালেম করতে বছপরিকর।

আশকা দেখা গিয়েছিল যে যদি এমনিবারা অবছা চলতে থাকে তা হলে প্রাচীর উথানের আশা হবে সুদূর-পরাহত, পরবক্ষতার নাগপাশ থেকে এশিরার মুক্তিলাভ কমিন কালেও ঘটে উঠবে না। মহতী বিনষ্টির হাত থেকে কেট তাকে রক্ষা করতে পারবে না। এশিরার এই মর্ম্মন্থদ দশা দেখে রবীজনাধ বলেছিলেন—

> ''কাগো হে প্রাচীন প্রাচী।
>
> টেকেছে ভোমারে নিবিছ ভিমির
>
> মূল মূল ব্যাণী জ্মা রক্ষনীর,
>
> মিপেছে ভোমার স্থার ভার পৃথ্যির কাছাকাছি
>
> কাগো হে প্রাচীন প্রাচী।''

কৈছ সুবের বিষয় বিংশ শতাকীর গোড়ার দিক বেকেট এলিয়ার বিভিন্ন দেশে জাগরণের লক্ষণ দেখা দেয়। এলিয়ার নেই গণচেতনা আৰু ব্যাপকতর রূপ পরিপ্রছ করেছে। এ প্রসঙ্গে মনে পড়ে ভারতে মহাত্মা গাড়ী-প্রবর্ত্তিত অসহযোগ আন্দোলনের কথা। দক্ষিণ-আফ্রিকার সত্যাগ্রহ সংগ্রাবে তথ্য হরে ভারতবর্বে এসে মহাত্মাত্মী কি অভাবিতপূর্বে রাষ্ট্র-চেতনার সঞ্চারই না এলেশে করেছিলেন। আটাশ বংসর বরে অক্লান্ত সাধনার কলে তিনি রাজনৈতিক আন্দোলনকে যে অব্ধায় এনে গাঁড় করিয়েছেন তাতে মনে হয় ভারতের, তথা সমগ্র এশিবার মৃষ্টি আসহপ্রার।

প্রায় সব দেশেই দেখা গেছে, যে জাতির জীবনে এরপ সর্বাচী-সময় জাসে, যখন এমন একজন যুগ-প্রবর্তকের জাবির্ভাব ছাই, বার প্রভাব দেশকে সর্বাচীণ উন্নভির পথে পরিচালিভ করে। জাতি এমনি এক মহামানবের জাবির্ভাবের প্রতীক্ষার থাকে, বার বিরাচী ব্যক্তিগ, প্রভিজা ও সাধনা তাকে বর্তমান জবনত জবস্থা থেকে উন্নভির উচ্চতম সোপানে উন্নীত করে। মহামাজীকেও ভারতবর্ষ তার বড় প্রয়োজনের সমরেই পেরেছিল। জাজও সেই মহামানব জাতির সর্বাচীণ যুক্তিকলে জন্মান্তভাবে সাধনা করে চলেছেন। জাজও তার কর্ম্বের বিরাম নেই। নোহাধান্ত জার বিরাম নেই। নোহাধান্ত জার জিনুবার পালী প্রামের পথে পথে আছিলো জার মৈত্রীর জাদর্শ প্রচাব করে এখন তিনি বিহারের পালী জন্মককে তার কর্ম্বক্ষেত্রপে নির্বাচন করেছেন। জারও জনেক বাধা-বিশ্ব তাকে অভিক্রম করতে হবে। এখনও হিন্দু-মুস্লমানের বিয়োবকে জীইরে থেকে সাম্রাজ্যবাদ ভার বিনিয়াল স্বল্য করতে চার তার ভূল জারতে হবে।

ভারতের জাতীয় মহাসমিতির কর্চে বিটলের উদ্দেশ উদাভ সুরে ধানিত হয়ে উঠেছে 'কুইট এলিয়া'—এলিয় ছাড়। সমার প্রাচ্য ভূখগুকে এই একই আদর্শে উদ্দুদ্ধ করতে হবে, সংখ্যত করতে হবে, এলিয়াকে পরিণত করতে হবে এক অমিত শক্তিশালী মহাদেশে। এলিয়ার মধার্মণ ভারতবর্ষে আছু যে এলিয়ান রিলেজন্স কন্ফারেল হয়ে গেল তাকে অত্যন্ত ভুভ লক্ষণ বলতে হবে।

আছকের দিনে প্রাচীন সভ্যতার অন্তথ্য প্রধান সীল'নিক্তেন ও বিকাশক্ষেত্র এই ভারতবর্ধে অন্তটিত নিবিল এশিধাবাসীর এই মহাসম্মেলনের একটা বিশেষ সূক্ষ্য আছে। পাশ্চান্ড্যের মুবাপেন্দী না হয়ে সমগ্র এশিধাবাসীকে আছ সাবস্ধী হতে হবে, নিজের পায়ে ভর দিয়ে ইাছাতে হবে— নতুবা তার ধ্বংস যে অনিবাধ্য এ কথা আৰু এশিধার প্রতিষ্ঠি দেশের অবিবাসীদিগকে মর্শ্বে ইপ্লেভি করতে হবে।

ষোভ্য শতাকীতে যার। বণিগ বৃত্তির অহিলায় এশিরাবঙে সামাজ্যের ভিত্তিপথন করেছিল, এই বিংশ শতাকীতে তাদের শোষণ-প্রবৃত্তি উত্তরোত্তর প্রবর্তমান হবে উঠছে। ব্রিটিশ, করাসী, ওলন্দাক প্রভৃতির সক্ষে আকু আমেরিকার বাণিজ্যিক সামাজ্যবাদও (Commercial Imperialism) হাত বিলিয়েছে; রাশিরার ক্যুনিক্ষের আসল ব্রুপ কি তাই IMIII

নিবে আৰু অনেকে ছকিভাৰত। সমৰ এশিয়া মহাদেশ ক্তেই চলতে সাম্রাজ্যবাদী জাতিসমূহের ফুট চঞাত আর তাওব-শীলা।

কিছ সাত্রাজ্যবাদীদের এই শুভ্যাচারের বিরুদ্ধে এশিরার বিভিন্ন দেশ আৰু রুদে দাছিরেছে। ইন্দোচীনের মূখেও একই বুলি—"করাসী সাত্রাজ্যবাদ ধ্বংস হউক।"

ইন্দোনেশিয়ার মৃক্তিসাধক ডাক্তার স্থকণিও পরিছার বলে দিয়েছেন—'We want a complete break with Holland'— হল্যাণ্ডের সফে সম্পূর্ণ কম্পর্কক্ষেদ্ধ আমাদের কাম্য। সমগ্র এশিয়ার সহামুপ্তিও সহযোগিতা যে ইন্দোনেশিয়ার মৃক্তি—আন্দোলনকে অদূর ভবিশ্বতে পরিপূর্ণ ভাবে সাকল্যমণ্ডিত করে ভূলবে তাতে সন্দেহ নেই। বন্ধতঃ দক্ষিণ-পূর্বা এশিয়ার মৃক্তি—আন্দোলন আদ্ধ ব্রিটশ ও মার্কিন সাম্রাজ্যালীদের বিশেষ চিন্ধার কারণ হরে ইাভিয়েছে। ওদিকে আরব, মিশর, ইরাণ প্রপৃতি এশিয়ার অহাদ ছোটবাটো দেশ-সমুহত্ব মধ্যেও রাষ্ট্রীয় ভাগরণের সাভা পতে গেছে!

র্টিশ স্বতন্ত্র শ্রমিকদণের নেতা মি: ত্রকওয়ে রটশ প্রবান মন্ত্রীকে পরিদ্ধার স্থানিয়ে দিয়েছেন যে, এশিয়ার পরাবীন দেশগুলির স্থানীনতার দাবি আর বিলম্ব না করে মেনে নেওয়া শোক।

এশিয়ার বর্তমান রাজনৈতিক পরিছিতি সম্বন্ধ আলোচনা করলে দেখা যাবে যে, এশিয়ার জাতীয় জীবনের এই সন্ধিলনে সদাগত নিধিল-এশিয়াবাসীর সংশ্বলনের অধিবেশনের শুরুত্ব অভাবিক। সমগ্র এশিয়ার স্বাধীমতা অর্জন ও সংরক্ষণ করতে হলে এশিয়ার বিপুল জনসভকে আজ সভ্পবদ্ধ এবং একই আদর্শে অভ্নতাশিত হতেই হবে। যুমোভর পুনর্গঠন ব্যাপারেও সমগ্র এশিয়ার সমবেত চেষ্টার প্রোজন।

সূতরাং এশিরাবাসীর এই সম্ফোলন যে খুবই সম্যোচিত হয়েছে তাতে সংশহ নেই। গারা এই মহদফুটানের আরোজন করেছিলেন তাঁদের আদর্শ জয়রুফ্ত হোক—প্রতোক ভারতবাসী একান্ত মনে এই কামনাই করছে:

# वक्रमञ्जा वृन्जिध्रवञ

—লিমিটেড—

৯এ, ক্লাইভ খ্লীট, কলিকাতা

চেয়ারম্যান—সি. সি. দত্ত এছোয়ার আই, সি. এস ( বিটায়ার্ড)

# খাদ্য ও টানক

আমরা প্রভাবেই কোন-না-কোন সময়ে একটা উৎকৃষ্ট টনিকের প্রয়োজন বোধ করি: অম্বর্ধেই হউক বা কৃষ্ণ অবস্থাক্তিই হউক, দখনি কোনো কারণে আমাদেব জীবনীশক্তির ক্ষীণতা ঘটে তপনি অভিজ্ঞ চিকিৎসকপণ সাধারণতঃ একটা টনিক নিয়মিত ব্যবহার করিতে বলেন। ইংগর প্রধান একটা কারণ এই বে আমাদের দৈনন্দিন আহাধ্য অধিকাংশ ক্ষেত্রেই শরীবের পক্ষে যথেষ্ট পৃষ্টিকর নয়। দেহের পরিপূর্ণ পৃষ্টিসাধনে দৈনিক আহার্য্যের এই অক্ষমতা টনিকের ধারা প্রণ হয়।

কিছ্ক টনিক হত উৎক্লইই হউক না কেন তাহার একটা দোষ এই যে উহাষারা কোন স্থায়ী ফল লাভ হয় না। দাময়িক কোনো প্যয়েজন সাধনে উহা বিশেষ কার্য্যকরী হইলেও উহাব প্রভাব অল্পকালেই নিঃশেষিত হয়। একমাত্র স্থানিকাচিত কোনো খাজ্যারাই দৈহিক পরিপৃষ্টির সর্কালীন উল্লিভ দীর্য্যায়ী করা সম্ভবপর।

জানা-ভিটা এই সকল কারণেই একটা আদর্শ পানীয়-রূপে পরির্গণিত। ইহা একাগারে একটা শ্রেষ্ঠ খাছ ও টনিক। ইহাকে টনিকের শ্রেষ্ঠ গুণশুলি একটা উৎক্রষ্ট গাছকে আশ্রয় করিয়া পরিবেশিত হইয়াছে। ভাই ইহার নিয়ামত ব্যবহারে নেহের প্রাভাহিক ক্ষম ও ক্ষতি পূরণ হইয়াও শক্তি ও উদামের এক অফ্রস্থ ভাতার গড়িয়া উঠে।

লানা-ভিটা স্থনির্বাচিত ও ম্লাবান উপাদনসমূহের সুষম সময়য়ে প্রস্তুত। ইহাতে থাটি হয়, কোকো, লেসিখিন, ভিটামিন "বি" কমপ্লেক্স, মন্ট্যুক্ত স্থাসীম ও অভিপ্রয়োজনীয় গনিজ পদার্থসকল যথাযথরপে বিদ্যমান। ইহা ক্সন্তু কি অস্তুত্ব যে কোনো অবস্থাতেই সমান উপকারী। বিশেষ করিয়া বোগান্তে, প্রস্বের পূর্কে ও পরে, বার্দ্ধকো এবং বদ্ধিফ্ শিশু ও মন্তিভ্জীবীর পক্ষে ইহা বিশেষ ফলপ্রদ।

ভিটামিন 'বি' গমপ্লেছে সমুদ্ধ বলিয়া স্থানা-ভিটা বোগান্তে ও বিজ্ঞু শিশুদের পক্ষে একটি আদর্শ থাদ্য ও টনিক। রোগবিধাত শরীরের ফ্রুভ সংস্কার ও পুষ্টিবিধান করিছে ও শিশুদের বুদ্ধির সহায়তা করিতে এই গাদ্য-গুণটির তুগনা নাই। এই অভি প্রয়োজনীয় ভিটামিন দেহের মধ্যে প্রতিনিয়তই নিংশেষিত হইয়া যায়, তাই প্রাত্যহিক গাদ্যের মধ্যে ইহা প্রচুর পরিমার্লে থাকা প্রয়োজন। নিয়মিত স্থানা-ভিটা ব্যবহার করিলে অভি সহজেই আমরা এই ভিটামিন য্থায্থক্রণে পাইতে পারি। অধিকয়া থাটি লগ্ধ ও কোকো থাকাতে স্থানা-ভিটা মন্তিত, ্পলা ৬ শক্ষ গ্রন্থ ও দৃঢ় করিতে সবিশেষ সাহায্য করে

স্থানা-ভিটার লেসিখিন সম্পদ মন্তিককীবীদের পকে বশেষঞ্জদের মতে অভিজের পৃষ্টি ও শক্তি বন্ধনে লেসিথিনের জুড়ি নাই। মন্ট্রক সম্বাসীম স্থানা-িটার আর একটি অপুর সম্পদ। বস্তুতঃপক্ষে স্থানীম খাদাভত্ত্বের এক বিশায়কর অবদান। উদ্ভিক্ত জাতীয় হইলেও ইহা গ্রাম্ধ প্রোটিনে স্বিশেষ সমুদ্ধ। স্থানা-িটাতে এই দ্যাসীমের সঙ্গে যখেষ্ট পরিমাণে গাঁটি তথ্য ও উৎক্ট কোকোর সারাংশ থাকাতে এপ্রাটন-সম্পদে ইভাকে **অত্লনী**য় বলা চলে। ইহা স্কান্তনবিদিত যে প্রোটিন ব্যভীত যথাৰ্থ কেল্ডন ও স্বায়ুমণ্ডলীর স্বষ্ঠ পোষণ ও সংস্থার কিছুনেই সম্বর নরে। অভিজ্ঞ চিকিৎসকগণের স্থানিদিট খভিমত এই যে বয়স্থদের দৈহিক ওজনের সের প্রতি দৈনিক ১ গ্রাম প্রোটনের প্রয়োজন হয় ও দেই অন্তপাতে শিল্পদের দৈনিক প্রয়োভন হ'ব গ্রাম প্রোটন। প্রোটনের এই অপ্রিয়াধ্য দৈনিক ব্রাদ্ধের মধ্যে শতকরা অন্তত: ১৫ ভাগ আমিষ প্রোটন প্রকা একান্ধ প্রয়োজন। গ্রতি কাপ স্থানা ভিটাতে অক্সান্ত নান। মূল্যবান্ উপাদান ছাড়াও তুইটা ডিমেব সমান প্রোটন পাকে। প্রভাহ তুই কাপ জ্ঞানা-: ৬টা পংন করিলে শরীরের পঞ্চে প্রয়োজনীয় যাবভীয় আমিষ-প্রোটন সম্পূর্ণরূপে পাঞ্চা যায়। উপরস্ক মণ্ট ও স্থাসীম থাকাতে স্থানা-ভিটা কেবল যে স্থস্বাত ও াহছপাচ্য ইইয়াছে াহাই নহে, অক্সান বাদ্য পরিপাক করিতে 4 এই অপর্ব্ধ খান্ত পানীয়টি সবিশেষ সাহায্য করে।

প্রসাবের পূর্বেও পরে জননীদের স্বাদ্যের প্রতি বিশেষ
দৃষ্টি রাখা প্রয়োজন। ঐ সময়ে নিয়মিং স্থানা ভিটা ব্যবহার
করিতে দিলে ধাবতীয় অশুং উপদর্গ হইতে সহজ্ঞেই
অব্যাহতি পাওয়া যাঃ স্থানা ভিটাতে প্রচুর পরিমাণে
থাটি হয়, কোকে। ও অঞ্চান্ত মূল্যবান ওপাদান থাকাতে
ইহা জত মাতৃদেহের সংস্কার ও পুষ্টিবিধান করে। চর্বি, প্রোটন, লৌহ, শর্করা, ক্যালসিয়াম ইত্যাদি দেইগঠনোপ্রোগী ও শক্তিবদ্ধ ক যাবতীয় সংগ্রগুই নিভান্ত
সহজ্ঞপাচ্য অবস্থায় স্থানা-ভিটা হইতে পাওয়া যায়।

স্থানা-ভিটা কি স্কম কি অক্স সকলের পক্ষেই সমান উপকারী। যে কোনো বয়সে ও যে কোনো সময়ে ইহা নির্ভয়ে ব্যবহার করা চলে। স্থানা-ভিটার মধুর গছ ও স্থমিট স্থান সকলের পক্ষেই পরম ভূপিনায়ক। ইহা প্রম বা ঠাঙা যে কোনো ভাবেই খাঙার চলে।

# রাসায়নিক কার্বোহাইডেটস্

অধ্যাপক শ্রীসুবর্ণকমল রায়

সুবের বিষয় আবা এ বেশের সাধারণ সাত্রও অঞ্জেসারে বহু রাসারনিক শব্দ ব্যবহার করেন, বাধার প্রকৃত অর্থ তাহাদের বোধসম্য কিনা সন্দেহ। থাডের বিক বিরা প্রোটন, কার্কোহাউড়েটস্ ও ক্যাট বা চর্জির নাম আবা সর্প্রেপ্রচারিত। এওলি কোন কোন্ থাডে আহে তাহারও সভান অনেকে রাবেন । কিছু রাসায়নিক দৃষ্টতে এ সমস্ত পদার্বের কি পরিচর ও শরীরের সকে কি বোগাবোগ তাহার একট জান বাকা বন্ধ নয়।

আনাদের থাভের নব্যে কার্কোহাইডেটস্ট সাধারণতঃ বেশী থাকে। প্রোচন, চর্কি ও কার্কোহাইডেট্সের মব্যে লেষাভ পদার্শটই সন্তবভঃ দেহে শক্তি সরবরাহের প্রধান উপাদান। প্রকৃতপক্ষে থাভের ভিনট প্রধান উপকরণই অকৈব রাসারনিক পদার্থের সহযোগে উভিদরাজ্যে প্রকাশ পার এবং ক্রমশঃ জীব-শরীরের শক্তি-উৎপের কারণ হইয়া থাকে।

খৰ্ব্যালি ও কলবাৰু এবৰ কৰিব। সবুক বৃক্ষণত্ৰ, চিনি ইাৰ্চ বা বেভসাৱ ও দেশুলোক প্ৰভৃতি কাৰ্কোহাইডুেট্ন প্ৰস্তত কৰে। এভাবে সৌৱশন্তি ক্ৰমণ: উছিদাদিতে সংমিশ্ৰিত হইৱা মন্থ্ৰ্যেৱ বাজন্ত্ৰণ কাৰ্কোহাইড্ৰেট্স্ ৰূপ পৰিপ্ৰহ ক্ৰতঃ কীবনীশক্তিৰ প্ৰধান উপক্ৰণ হিসাবে প্ৰকাশিত হয়।

कार्त्वाहाहरकुडेम् नयुष्टै विक्षायन कतिरम वृका यात्र, हेश् अन्तव ७ क्लब बानाविक मश्यान-कन। हेश्ए७ আহে অলার, হাইড়োজেন ও অক্সিকেন নামক যৌগিক তিনট পদার্ব। প্রদুতপক্ষে ইছাতে জল যোঠেই নাই, আছে জনের আতুপাতিক হাইড্রোজেন ও অক্সিকেন। আবার হুই একট কাৰ্কোহাইডুেটসে ভাহাও নাই। আৰু পৰ্যন্ত সুগার, গ্রার্চ ও **म्पर्राक बरे बिविय कार्स्साराहेफ्डेम बाबारमद मुद्देरशाहत** হইয়াছে। উহারা উত্তিদ-শরীরের প্রধান উপাদান। কার্কো-হাইডে্টস্কে আবার অপর নামেও ত্রিধা বিভক্ত করা হয়, যথা মৰোভাকাৱাইছ স (Monosaccharides), ছাইভাকাৱাইছ স (Disaccharides) ও প্ৰিভাকাৱাইড স (Polysaccharides)। সাৰাৱণত: আমৱা শৰ্কৱা বলিতে চিনিকেই वृदि । किन्न तमायन-भारत भर्कता वहविव । कार्माम तामायनिक এবিল কিসার কৃত্রিম উপায়ে উহাদের প্রশুত করার প্রভি আবিকার করিবা যশবী হইরাছেন। কিসারের আবিকার রসায়নে ইহা নৃতন অধ্যায়ের স্ট্র করিয়াছে। তিনি কভাব काविशव ७ क्विम काविश्वव मर्गा अक्षे प्रभव यात्रभूक ভাগৰ করিয়াছেব।

আমরা বে শর্করা বা চিনি সর্ক্ষা এবণ করি তাহার বুংকেনী নান ছকোন বা কেন্-খুগার। এইটা বাদ দিলেও আমরা আরও করেকট পুগারের সলে মাবে মাবে পরিটি হই। প্রুকোন, মন্টোন, ল্যান্ডোন ইহাদের নাম।

ৰনোভাকারাইভূসদের মধ্যে গ্রুকোক, কুত্টো গ্যালাক্টোক ও ম্যানোক আমাদের ফেছে জিয়ালল হয় रेराएक मत्या प्र. काक एएएक आवश्यात । हेरा वस मा পরিচিত,-ঘণা ত্রেণ সুগার, টার্চ স্থগার, ভায়াবেটক সুগা ইত্যাদি। ইহা বহুল প্রিয়াণে বুক্লাদির ফল এবং রসে भाषात्र शतियात्व कौरक्कत राक्ष वर्षमान । आधृत करण वेश পরিমাণ শতকরা ২০ ভাগ। এতথ্যতীত অঞ্চার কার্মে হাইড্রেটস্থলিও এসিভের সংস্পর্নে গ্রেকাকে পরিণত হয় अक क्षकांत्र अभक्षादेवस्य अ शतिवर्धन जारन किटिए शास्त्र कार्ट्य श्रवम विविध कार्ट्याशाहर एउँ महे एए इस अनवाहरम সংস্পাদে আদিয়া ক্ষমশঃ গ্ৰেকাক রূপ এছর। করে। গ্রেকা তথ্য রক্ষের সলে যিশ্রিত হুইয়া দেহের পর্বার সঞ্চারিত ছ এবং মধান্তানে দল্লীভুত ছইড়া দেছের ভাপ বা শক্তি রুপ করে। জীয় ও গ্লেক প্লাইকোকেন নামক এক প্রকার খেড मारत পরিণত হয়। এই हाইকোনেন্ট শরীরের হাকেন রিজার্ড ফণ্ড বা সংরক্ষিত ভাণ্ডার: ভবিষাতে প্রয়োজনমা ভয় হইয়া ইহা গ্লুকোজ সৃষ্টি করে :

মৃক্টেকের কথা বলিতে গেলে সঙ্গে সঙ্গে ইছার লোস ক্রুকটোকের কথা মনে হয়। ইছার অপর নাম কট স্বা বা লিভিউপোক্ষ, প্রাঞ্জিক রাজ্যে ইছা মুকোকের অবরং বছু। কল ও মর্ উভয়েই রক্ষানির রস বর্তমান। আমাদে-প্রির স্ক্রোক বা চিনিকে এসিড সংযোগে ভল করিলে সফ পরিমাণ মুকোক ও ক্রুক্টোক পাওরা যার। ক্রুক্টোহ ক্রেক্টোকও পরিশেষে লেহের মুকোক সরবরাহের কারং ক্রুক্টোকও পরিশেষে লেহের মুকোক সরবরাহের কারণ ক্রুক্টোকও পরিশানে লিহের মুক্টাক উভয়ের মধ্যে বহুল পরিমানে নাল্র আহে। উভরে সমসংব্যক অলার, হাইড্রোকেন হ অলিকেন পরবাণু বহুন করে। আভ্যন্তরীন গঠন-প্রণালীর সামাত ব্যতিক্রম থাকাতে ছুইটির গুণাবলী সব সমর এক হয় মা।

গ্যালাক্টোজ নামক জণর একট মনোভাকারাইড দেছে জিরাশীল হয়। ইছা ছ্র-শর্করার একট পরিণভিবিশেষ। ছ্র-শর্করা এসিড বা দেহছ এন্জাইনের সংস্পর্শে জাসিলে গ্যালাক্টোজে পরিণভ হয়। ইহাও ফুকটোজের ভার জনশঃ রাইকোজেন রূপে দেহে জমিরা যার। দেহের মুকোজ বুভির জচ ইহাও একট জারোজন। গ্যালাক্টোজ ও মুকোজের রাসারনিক সংখিশ্রণে জীবদেহে ছ্র-শর্করা প্রভাত হয়।

ভাইভাকারাইডসের মধ্যে পুজোব, ল্যাকটোব ও মঞ্চোব

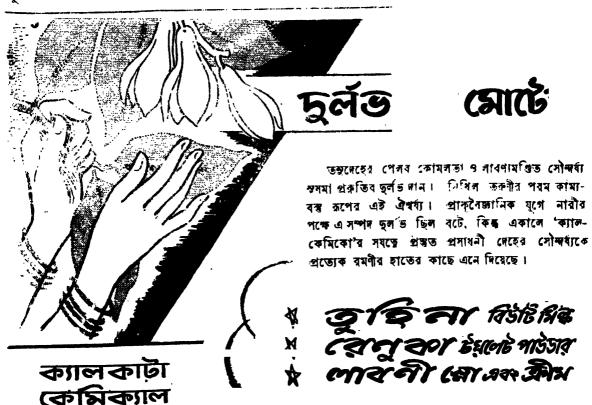
বিখ্যাত। ইহাদের প্রভ্যেকের মধ্যে একই সংখ্যক অসার, হাইছোকেন ও অল্পিকেন পরমাণু বিদ্যমান। ইহারা খাতের প্রধান উপাদান। কিন্তু রাসাহনিক পরিপাক-ক্রিয়ার আওতার আসিলে সকলেই জ্যমশঃ মধোঞ্চাকারাইডসে পরিণত হয়।

প্রকৃতির উরিদরাজ্যে প্রক্রোক্ষ বিভর পাথবা যার।
সেবানে উহা সমর সমর রুক্ষোক ও কুকটোক্ষের সলে পাশাপাশি বাস করে। গাছের কল ও রসে সাবারণতঃ ইহা
বিল্যমান বাকে। ইক্ল, বিট, বেক্র-বৃক্ষ প্রভৃতি হইতে চিনি
বিপুল পরিমাণে সংগৃহীত হয়। ইহা হইতে রুক্ষেক্ষ ও
কুকটোক্ষ নামক মনোস্থাকারাইডস হইট পাওৱা যায়। এনকাইম প্রক্রোক্ষ বা ইনভারটেক ও পরিবর্তন সাবন করে। এই
এন্জাইম সাবারণতঃ করে অবস্থান করে, মুখে বা পাকরণীতে
উহারা বাকে না। পাকস্থলীর পাচনম্বদে হাইড়োক্রোরিক
এসিত বাকার কলে এবানেও উক্ল রাসায়নিক পরিবর্তন সাবিভ
হইতে পারে। চিনি আমরা যতই গ্রহণ করি না কেন ইহা
পাকরণী বা প্রেম্ব যাইমা গ্রুকোকে পরিবর্তিত হয়। মোট
কর্ম সাবারণ চিনি অপরিবর্তিত অবস্থার হক্ষমের উপস্কুল নর।

সাধারণতঃ মন্থ্য-ছকে শতকরা ৬-৭ ভাগ এবং গরুর ছঙ্গে শতকরা মাব-৫ ভাগ দ্ধ-শর্করা বা লাকেটোক পাওয়া যায়। বিশেষজ্ঞানের মতে এটা শর্করা শৃষ্ট কর ভন-এছি ঘারা---মুক্তাক ও গালোকটোকের যোগাযোগে। সংধারণ চিনির ভূলনার ল্যাকটোকের বিঠছ ও ব্রাব্যতা কম। ইছা থাছের সলে অন্তে পৌছিলে ল্যাকটোক, নামক এনজাইন হারা রুকোক ও গ্যালাকটোকে বিভক্ত হয়। কাকেই এবানেও সেই রুকোকই আনাদের লাভ। কোন কোন বৈজ্ঞানিক বলেন বে, ল্যাকটোক স্থকোকের চেরে পাকহলীর পক্ষে বেশী উপযোগী। তাঁহারা ইছাও বলেন যে—ল্যাকটোক আহারের কলে অন্তে এক প্রকার জীবাপু স্ট হয়, বাহা অন্তকে স্থাও সবল রাবে।

মলটোক নামক চিনি টার্চ হইতে গৃহীত হয়। ইহার প্রস্তাততেও এনকাইমের বাহাররি আছে। এ ফাতীয় এনকাইম-গুলিকে বলে এনাইলেক। ইহা অব্বরিত শন্ত বা মন্টে পাওয়া যার। আমরা যে টার্চ গ্রহণ করি তাহা দেহমব্যে টারালিন ( Payalin ) বা এনাইলোপেন্সীন ( Amylopeptin ) নামক হুইট এনাইলেক ধারা ক্রমশঃ মন্টোকে পরিপত হুইয়া সর্বাশেষে গ্লুকোক রূপ গ্রহণ করে। টার্চকে এসিড-যোগেও মন্টোকে পরিবর্তিত করা হার। মন্টোক সোকাহাকি দেহের পক্ষে গ্রহণযোগ্য কিনা বলা করিন। তবে সক্রোক্ষ বা আইটোকের চেমে যে বেনী গ্রহণযোগ্য তাহা প্রমাণিত হুইয়াছে। কারণ, দেখা গিরাছে রক্তে ইহা অনুপ্রবিষ্ট করিলে উক্ত হুইট লর্করা হুইতে বেনী কার্যাকরী হয়।

প্রিস্থাকারাইড্সের মধ্যে প্রাচ, গ্লাইকোকেন, সেলুগোক



প্রকৃতি উল্লেখোগ্য। এই কার্কোহাইডুেটস্ সাধারণতঃ কল বা ম্পিরিটে স্তবশীর নয়। কোন কোনট কলের সক্ষে মিপ্রিত হইয়া বোলাটে ভাব বারণ করিয়া বাকে। ইহাদের মব্যে টার্চ ও প্লাইকোকেন দেহ-পুট্টকারক। টার্চ উদ্ভিদ-ক্ষপতের ও প্লাইকোকেন প্রাণিক্সতের সঞ্জিত বাছ।

ষ্টার্চ উপ্লিদ-শরীরে প্রায়শঃ গছিত থাকে এবং উছা বছবিৰ প্রারুতিক বাজের প্রাণধন্তপ। ইং! ছইতে ডেক্সচ্রীন, মন্টোজ, মুকোজ পাওরা যায়। সাবারণতঃ বীজ, মৃগ, কল প্রভৃতিতে ইছা বর্জমান থাকে। বীজের প্রায় অর্জেক হইতে তিনচ্ছুর্বাংশই ষ্টার্চ বা প্রতসার। অপরিপক আপেণ বা কলায় প্রচ্ন ষ্টার্চ আছে। ইছাই পাকিবার মূবে ক্রমশঃ চিনিতে পরিবর্ত্তিত হয়। ইহার রেপুর্ভাল ঠাঙা জলে অপরিবর্ত্তিত বাকিপেও উফ কলে ক্ষাত হইয়া উঠে এবং অর্জতরলাবস্থা প্রাপ্ত হয়।

ডেমাট্রন টার্চেরই একট পরিণতি। ইহা টার্চের উপর এসিড বা তাপের কল। ইহা অনুরিত বীজে প্রচুর পাওরা যায়। ভারাট্রেল নামক এনজাইম টার্চকে আক্রমণ করিলে চারি ভাগ মপ্টোজের সলে একভাগ ডেমাট্রন হয়। কিছ ব্যবসায়-ক্লেনে ডেমাট্রন প্রস্তুতিতে এসিড বা তাপের সাহায্য নেওরা হয়। ইহা টার্চের চেয়ে জনায়াসে প্রবন্ধীর ভাতেই মনে হয় ইহার অণুধলি টার্চের চেয়ে ক্ষুদ্র। স্যাকটোজের ভায় ডেমাট্রনকেও অনুধুলির উপযোগী মনে করা হয়।

বৃক্ষ-শরীরে যেরপ প্র:চ কীব-শরীরে দেরপ প্রাইকোকেন।
একল প্রাইকোকেনের অপর নাম কীব-শ্রতগার। প্রাচের দায়
ইহাও বেতবর্গ চূর্ণ। ইহারও পরিবতি রুকোকে। দেহের প্রায়
সর্বায় ইহা অবস্থান করে কিন্তু যকুতই ইহার বিরাম-স্থপ।
প্রচুর আহার ও বিপ্রায় ইহার বৃদ্ধির কারণ। কিন্তু পরিপ্রয়ে
ইহা ক্ষরপ্রাপ্ত হয়:

দেলুলোক বা হেমিদেলুলোক নামক ছুইট পলিখা-

ভাষাইতস্ অলে মোটেই প্রবশ্ব নয়। রাসারনিক প্রক্রিরাধ্ব ইহাদের বিভক্ত করাও কঠিন। ইহাদের বারা সোভাস্থলি ধেহ-পুটর সহারতা হর কম। কিছ উহাদের বিভমানভার হজমের সাহায্য হয়। পাচক-এনজাইন বারা ইহারা আক্রাপ্ত হর না বলিরা ইহাদের বলা হয় রাক্ষেত্র। রাক্ষেত্রের প্রবান গুণ এই যে, উহারা কোঠ পরিভারে সহায়তা করে। একচ প্রত্যেক বাজে রাক্ষেরণে কতকটা সেলুগোল বাকা উচিত। কিছ রাক্ষে কাহার পক্ষে কতকটা প্ররাজন তাহা ব্যক্তিবিশেষের পরীক্ষার। বিভিন্ন বাজি তাহার নিজম শারীরিক অবহার প্রয়েক্তনায়সারে রাক্ষেত্রের মান্তা নিজম করিবেন।

পশিস্তাকারাইডস অসার হাইড়োকেন ও অক্সিভেনের মিলনক্ষেত্র হইলেও ইহা অভীব অটেল রাসায়নিক পদার্থ। **টার্চ ও দেশুলোক্ষের মৌলিক উপাদানগুলি অবগতির ক্ষ** রাসায়নিকগণ সর্বাদা তংপর আছেন। গ্রাচের যোটামুট রাসায়নিক কাঠামোটা উহাদের বোৰগম্য হইয়াছে ৷ কুত্রিয প্রকৃতির বাবস্থাও কতকটা অবল্যিত হট্যাছে: এমন কি শতীৰ শটল সেপুলোকের কাঠাবোভ উহাদের বৃষ্ট-শীমার মধ্যে আসিয়া পৌছিয়াছে। গাছের আঁশ, তুলা, ছোবভা ইভ্যাদি সেলুলোকের সাবারণ রূপ: বেমন টার্চ হইতে গ্লুকোক তৈয়ারের পদ্ধতি সহক্ষাধ্য হইয়াছে ভদ্ৰণ সে**ললোক হ**ইতে উহা প্রস্তুত কর। যায় কিনা সে বিষয়ে প্রথম মহারুছের সময় হইতে চেঠা চলিয়া আসিতেছে। তথনই বৈজ্ঞানিকৰণ কভক্টা সম্প্ৰাম হইয়াছিলেন, কিন্ধু প্ৰণাশীটা ভভদুর আর্থিক লাভজ্মক নয় বলিয়া সে চেষ্টা ক্রমশঃ পরিত্যক্ত रव। এবার ভাবার ধিতীয় মহাযুদ্ধ পূর্বে প্রচেষ্টাকে पूनक्रकौविष क्रिडाट्ड बर भटन एव ब वाबा उरादा राजभाव-ক্ষে সকলকাৰ হইবেন। সাথাত কাঠখও ঘাঁটিয়া প্লকেজ পাওয়ার সম্বাবনা আৰু অভি নিক্টবর্জী।



#### ঠিকালাটা লিখিয়া রাখুন

Mr. P. C. SOR(Ah Post Box 7878 Calcutts

ভারতবর্ধের সক্ষপ্রেষ্ঠ
যাত্বকর শ্রীযুক্ত পি. সি. |
সরকারকে engage
করিতে হইলে এখানেই
পত্র দিবেন :
টেডমার্ক 'SORCAR'
বানান লিখিতে ফুল
করিবেন না :

# Benares Sarees.

(5½ yds. × 44")

Most artistically designed, quite up-to-date, real Zari worked, on pure silk can be had for

# Rs. 35 only

Packing and Postage extra, cut samples not possible. (For superior sarees and other real Zari-worked Benares weaving novelties enquire.)

THE BENARESI GOODS SUPPLYING AGENCY, 2-39, Sidheshwari Street, Benares City,

# शुक्क - भारावय

রবীজ্ঞতীবনী, ১ম খণ্ড (১৮৬১-১৯০১), পরিবর্দ্ধিত সংকরণ—জীপ্রভাতকুমার মুখোপাধ্যায়। বিশ্বভারতী প্রস্থানর ২ বক্সিম চাটুজ্জ্যে ফ্লীট, কলিকাজা। বৈশাধ ১৩৫৩। পৃ. ৩৯২। মূল্য ৮। ।

১৩৪০ সালে 'ববীজ্ঞজীৰনী' যখন প্ৰথম প্ৰকাশিত হয়, তখন ় বধোপযুক্ত উপকরণের অভাবে ইহাতে অনেক ক্রটি-বিচ্যুতি ছিল। কিন্তু বৰ্ত্তমান "পরিবর্কিত সংকরণ" সম্বন্ধে সে-কথা বলা চলে না প্রস্কার ভূমিকার লিখিতেছেন:—"ববীক্রজীবনী ও '**এ**ভাত কুমার মুগোপাধ্যার' এই ছুইটি কথা ছাড়া পুরাতন ক্রছের কিছুই বোধ কর ছাপা চইতেছে না, কারণ বটবানি পনেরো জানাট নুজন কৰিয়া লেখা। ভা ছাড়া ছিতীয় সংখ্যণে বইখানি আকারেও প্রায় বিশুণ চইয়াড়ে: চৌক বংসর পূর্বে ষথন বরীক্রজীবনী লিখিতে আয়ন্ত করি ভখন কবি সম্বন্ধে কিইবা ভখ্য জানা ছিল : সেই সামাক উপকরণ অবলম্বন কবিয়া রবীক্সরীবনী রচনায় প্রবৃত্ত ভট। ভারণত গান কাষেক বংসারের মধ্যে সাভিজ্যিক, সাংবাদিক ও বিশ্বভারভার কর্তৃপক্ষায়ের। কবিব ভাষনী সম্বন্ধে প্রচুর তথা ও উপকরণ লোকচক্ষুর গোচর করিয়াছেন :···এই জীবনচরিভের বহু ত্থা বৰীন্মভবন ভটতে সংগৃঠীত চইবাছে :---বিশ্বভাৰতীৰ বিশাল প্রস্থাগাবের প্রধাক্ষতা করিবার সৌভাগ্য লাভ করার আমি ববীক্স-নাথের বিধাট সাখিতা ও তৎসংক্রায় গ্রন্থ ও সাময়িক পতিকাল বদৃচ্ছাক্রমে ব্যবহার করিবার ক্ষরোগ পাইরাছি। নবাবিছত এই সকল উপকরণ প্রভাতবাবৃ তাঁহার প্রস্থেব বিত্তীয় সংস্কাণে কালে লাগাইরাছেন, ক্ষতরাং কল বে প্র্যোপকা ভালই হইবাছে তাহা না বলিলেও চলে। ববীক্রনাথের ছার মনীবীর একথানি গুটু ভীবনচবিতের অভাব আমরা অনেক দিন হইতেই অফুভব কারতেছিলাম; আলোচ্য প্রস্থ সে-অভাব বহুলাংশে পূর্ণ করিরাছে: ভবিষ্যতে যিনিই বিশাল ববীক্র-সাহিত্যের আলোচনায় প্রস্তুত হইবেন, প্রভাত বাবৃর গ্রন্থ তাঁহার যে বিশেষ সহায়ক হইবে, একথা আমরা অকৃতিত চিত্তে বলিতে পারি।

ভূমিকার প্রকার লিনিরাছেন, "সত্য প্রকাশিত তর, ইনাই আমাদের কাম্য, এখানে ব্যক্তিগত মান অভিমানের স্থান নাই।" এই ভরসার আলোচা প্রস্তু বে সকল তথ্যগত কটি আমার নভরে প্রিচাছে, ভাচার করেকটি সংক্রেপে নিবেদন করিছেটি; স্থানাভাবে সকল কথা বলা সম্ভাগ স্টবেনা :—(১) পু. ২৬, আদি ব্রাজ্মনাজের গাহক বৈক্রেল চক্রবর্তীর ভ্রম্মনুষ্টা তারিপ—"১৮১৯-১৯-১ ?" কিন নচে। ৪ মে ১৯০০ তারিপে, ৯৬ বৎসর বরুসে, তারার মৃত্যু হয় —'ভত্বোধিনা প্রিকা', জৈরি ১৮২২ শক্তিই । (২) পু. ২৮, এরিছেটাল সোমনারির প্রতিষ্ঠাতা প্রবিমাণন আহিত্য মৃত্যু-সন "১৮৫ম" নচে,—১৮৪৬ ৷—'ফ্রণ্ড অব ইভিয়া', ও মাচ ১৮৪৬ স্করব্য (৩) পু. ৩২, মধুপুদন মুখোপাধ্যারের

## না ট ক!

যোগেশচন্দ্র চৌধুরীর
পতিব্রতা ১॥০
বাংলার মেয়ে ১॥০
পরিণীতা ১॥০
মাকড়সার জাল ১॥০
পথের সাধী ১॥০

আ**গু**তোষ ভট্টাচাৰ্যা সামাজিক নাটক

আপামীকাল ১৯০ আপ্ততোৰ সাকাল

বন্দিনী ১॥০ শিবপ্রসাদ কর

পোরাণিক নাটক স্বর্গলক্ষা ১৮০ জলধর চট্টোপাধ্যায় ন্যাজিক নাটক

রীতিমত নাটক ২১ সত্যের সন্ধান ১॥ রাঙারাখী ১॥০

ভূপেক্সনাথ বন্দ্যোপাথায় সামাজিক নাটক

বাঙ্গালী

পৌৱাণিক নাটক

ক্ষুব্র \ ১১০ ব্রহ্মতেজ ১১০০

নগেন্দ্ৰনাথ ভট্টাচাৰ্যা পৌনাণিক নাটক

অভিষেক ১॥৭

কবি সত্যেশ্রনাথ দত্তের

স্ত্যপ্রক। শত অভিনৰ সংগ্রহণ শ্রেষ্ঠ কাবা-এম্ব

বেণু ও বীণা

সাড়ে জিন টাকা

তীর্থরেণু ৬

কুছ ও কেকা ৩০০ অদ্র-আবীর ৩০০ বেলাশেষের পান ৩২ বিদায় আরতি ৩ র লিপন ১৫০

মোহিতলাল মন্ত্র্মদারের শ্রেট কান্য-গ্রন্থ (হমন্ত্র-(গাধূলি ২॥০ চরণদাস ঘোষের নুতন শ্রেট উপক্রাস

## তেপান্তর ২১

দীনে**স্ত্রকুমার রায়ের** শ্রেষ্ঠ উপভাষ

## নায়েব মহাশয় ২৫-

গতমু গুপ্তের

নাজ ঘটনামূলক এডভেঞ্চারের বই

ভয়কর সুন্তর্বন ১,
আবুন্তি-পার। ১৫০

চমৎকার বে'দর্টেদনের বই

দিলীপকুমার রায়ের ্রের উপস্থান

নানারপী ১১

वात, बरेठ, शीमानी ब्रष्ट जन ३२०८न९ कर्नडशालिज द्वीर्वे, कलिकाछा ।

'স্থালার উপাধ্যান' পুস্ককের ৩ বণ্ডের প্রকাশকাল "১৮৬১-৬৫" नरह ; हेहात २म-२व छात्र २৮४२ मरन अवः ध्व छात्र २৮७० मरन **প্রকাশিত হয়। (৪) পৃ. ৪২, রবীজনাথের মাতা সাবদা দেবীর** মৃত্যু-ভাৰিৰ "১০ মাৰ্চ ১৮৭৫" না হইয়া ১১ মাৰ্চ হওৱা উচিত ছিল; "ব্ৰাক্ষ্যুৰ্ডে" মৃত্যু বলিয়া ইংবেজী ভাবিধ এক দিন বাড়িবে। (৫) পু. ৪৪। প্রভাত বাবু লিথিবাছেন, "১৮৬১ অব্দেশ ৰাজনাৰাৰণ বস্তৰ Prospectus of a Society for the Promotion of national feeling among the educated natives of Bengal প্ৰকাশিত হয়। এখানে ভিনি 'রাজ-নারায়ণ বস্থুর আন্ধ-চরিত' পুস্তকের একট মূল্রাকর-প্রথাদের পুনকজি কবিরাছেন বলিরা মনে ১ইতেছে। 'আস্ব-চরিজে' (পৃ. ১১০) রাজনারারণ কালাছক্রমিক ভাবে কর্মস্থলন মেদিনীপুরে কুত করেকটি কর্মের এইরপ হিসাব দিরাছেন :—১৮৬১ সনে স্থরা-পান-নিবারিণী সভা সংস্থাপন, ১৮৬৪ সনে ব্রাক্ষমক্ষে ক্রোঠা করার বিবাহ, "১৮৬০ সালে ধর্মভবলীপিকা ও Prospectus of a Society---Bengal প্ৰকাশিত হয় ," কালাছক্ৰমিক বিবৰণে ১৮৬৪ সনের পর ১৮৬১ সন আসে কেমন করিয়া ? প্রকৃতপক্ষে "১৮৬১ সাল" মূভাকর-প্রমাল; উচা যে ১৮৬৬ চইবে ভাগার প্রমাণ রাজনাবারণের উজ্জির মধ্যেই বহিরাছে,—'ধর্মভন্মণীপিকা' ও Prospectus... একট বংস্বে প্রকাশিত হয়। 'বর্গভন্ধ-দীপিকা'র প্রকাশকাল ইং ১৮৬৬, স্বতরাং Prospectus…ও ঐ বংসরেট প্রকাশিত চয়: ১৮৬৬ স্নের প্রথম ভাগে আলোচা ইংবেজী অফুঠানপত্রটি সর্বাপ্রথম নবপোপাল মিত্র-সম্পাদিত National Paper- व पूजिल ও ভালা हरेल ১१৮१ न(क्य हिन्न (वार्ट २৮৮৬) मरबा। 'खपरवाधिनी भविका'य भूनम् क्रिल हव।

পৃ. ৪৪-৪৫, প্রভাত ববুর মতে রাজনারায়ণ ইংরেজী অফুর্চান-পত্ৰ প্ৰকাশের "কয়েক বংসর পরে (১৮৬৫) কলিকাভার আসির৷ বিকেজনাথ, গণেজনাথ, জ্যোতিরিজনাথ ও নবগোপাল মিজের স্হিত যুক্ত হইয়া 'ৰাদেশিকদের সভা' স্থাপন করেন। অভ:পর ঠাকুৰবাড়িৰ আধিক ও আছবিক সাহায্যে ও বাজনাৰাৰণ বন্ধৰ প্রেরণার এবং নবগোপালের প্রচেষ্টার 'চিন্দুমেল।' স্থাপিত হয় ." প্রভাত বাবুর 'বাদেশিকদের সভা' নিশ্চরই 'ভাশনাল সোসাই**ট**' বা ভাতীর সভা: এই সভা হিন্দু মেলা প্রতিষ্ঠার "পূর্বে ১৮৬৫ জীটাকে" ছাপিত হয় নাই: ১৮৬৭ সনে হিন্দু মেল। প্ৰতিটাৰ অব্যবহিত পরে, ষেলার কাষ্যনির্বাচক-সভা হিসাবে, উহার উত্তব হয়। বাজনাবারণও 'আত্ম-চরিডে' লিখিরাছেন :—"হিন্দু মেলা সংস্থাপনের পর উচার অধ্যক্ষত। করিবার জন্ত [ নবপোপাল ] মিত্র মহাশর জাতীয় সভা স্থাপন করেন: উচা আমার প্রস্তাবিত 'লাভীয় পৌৰবেচ্ছা সঞ্চাৰিণী সভা'ৰ আদৰ্শে গঠিত হয় 🚏 প্ৰায় প্রতি মাসেই 'ন্যাশনাল সোদাইটি'ও অধিবেশন চইড : ১৮৬১ সপ্টেম্বর ১টাছে ১৮৭৯ ০ প্টেম্বর পরাস্থা কলিকাডার অবস্থানকালে রাজনারাহণ জাতীয়, সভায় একাধিক বক্তঃ দিয়াছিলেন।

পৃ. ৪৫, প্রভাত বাব লিখিয়ারেন, মেলার "১ম অধিবেশন চয় ১৮৬৭ এপ্রিল ১২: এই মেলার সম্পাদক চইলেন গণেজনাথ, সহকারী-সম্পাদক নবগোপাল মিত্র। মেলার অধ্যক্ষেণ হদেশীয় শিলের উন্নতি, সাহিত্যের বিকাশ, সংগীতের চচা, হদেশী কুল্ডি

# নেতাজীর অনুসরণে

বাংলার বিখ্যাত স্থত ব্যবসায়ী শ্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "শ্রী" মার্কা স্থতের নূতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিস্প্রাাজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'শ্রী' স্থতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল স্থতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে শ্রীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ স্থত যে খ্যাতি অর্জ্জন করিয়াছে, তাহা স্থত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অনুকরণীয়।

ষাঃ শ্রীসুভাষচন্দ্র বস্থ

প্ৰস্তিৰ প্ৰবিকাশে উৎসাহ দান কৰিবাৰ কৰা প্ৰতিজ্ঞানচ व्वेद्यान । ' अरे भूगीक परम्मीकार क्षष्ठारास्य क्षाना स्मरक्षात्रस्य व्यविष्टक्ला नवरमानां के वश्मन 'नामनान लनान' नार्व कर-थानि है:(बिक गांखा क्रिकेड क्षेत्राम कवित्वन ।" क्षेत्रुक कारमह শেব পংক্তিভে প্রভাত বাবু ওজতর ভূগ করিয়াছেন। "ঐ বংসর" ( অর্থাৎ, ১৮৬৭ সনে হিন্দু যেলা-প্রতিষ্ঠার বংসর ) 'ন্যাশনাল পেপাৰ' প্ৰকাশিত হয় নাই,—হইবাছিল উহার ছই বংগর পূৰ্বে, ৭ আগষ্ট ১৮৬৫ ভাবিখে।—এবোগেশচক ৰাগল-লিখিত 'আভীয়ভার নৰমন্ত্ৰ। ঙিন্দুখেলাৰ ইভিবৃত্ত' দুটবা। (৬) পু. ৫৩, 'ভূবনমোহনা প্রভিত্তা'-রচ'রত'র কিঞিৎ পরিচর দিজে পিয়া প্রভাতবাবু লিখিখছেন, "নবীনচক্র মুখোপাধ্যার ভিলেন वोवकृष किनाव कोर्गाशास्त्रव व्यवितात्रो।" व्यवह, नवीनहव्य चयः লিখির। গিরাছেন, "আম'র জন্মভূমি বুড়ার প্রামে।" বুড়ার প্রাম---বৰ্ষমানের প্রায় ১০মাইল উত্তর-পূ:র্ব্ব অবস্থিত।—সাহিত্য-সাধক। मकार्त, कवि व्यक्तिक निष्यात्रीय 'विस्तानमाना'व भ्रम मःस्वर्णय **टाकानकान "**১२৮**३" मृ**ष्टित इडेश'रइ, खेड्। ३२৮¢ इडेरेर ।---সাহিত্য-সাধক চরিভ্যালা নং ৫০ এইবা। (৮) পৃ- ৫৭, প্রভাত বাবু লিখিয়াছেন, চেমচক্রের ভারত সঙ্গীত" "১৮৭০ আগই ১, ১২৭৭ প্রাবণ ১৭ ভারিবের এড়ুকেশন গেকেটে প্রকাশিভ হয়।" আমাদের কিছ*্* কানা আছে, 'এডুকেশন গে<del>ৰেটে'</del> ক্বিতাটীর প্রকাশকাল---১৮৭০ জুলাই ২২, ১২৭৭ শ্রাবণ ৭। —সাহিত্য-সাৰক-চরিতমালা মং ৩০ ডাইবা। (১) পু. ৬২,

এভাতবাৰুর বতে, ১২৮০ পৌৰ-সংখ্যা 'বল্লবৰ্ণনে' ৰছিল-চল্ল কৰ্তৃক সমালোচিত 'মানস বিকাশ' কান্যধানিয় য়চরিতা---রাজকুক বুবোপাব্যার। এবিশ্ববনার বোবের বিনীবী হাৰক্ষ বুৰোপাব্যাহ' পৃতকেও অহরণ উচ্চি আহে। একত পক্ষে 'যানস বিকাশ' পূৰ্ব্বব্যের কবি দীনেশচরণ ৰহৰ বচনা। বেদল লাইত্রেরি-সঙ্গিত পুৰক্-ভালিকাতেও এছকার-হিনাবে ভাঁহার নাম আছে।—সাহি**ভ্য-সা**ৰক্ **इतिक्यांना मर ४२ छ्रहेरा। (७०) वर्रीक्यगाः पद 'रेन्यर** নদীতে'র অভত্তি "দুলবালা" গাবা স**ৰ্বে ৭৬ পুঠার** পাণনীকার "ভারতী ১২৮৫ কালিক" এই নতীর যুৱিত হইরাছে। প্রকৃতপক্ষে 'ভারতী'তে প্রকাশিভ "ভূলবালা" थे मामीत नावातरे (नवार्क बाज , छेरात क्षवार्क ১२৮० नाटनव टेक्ब-नश्या 'चार्यावर्गत्व' 'खेव' चाक्टव 'क्कबन्ध वकां " बर्ग व्यवस्य मुखिल एवं -- बरे मरदावष्ठे बल विव আমাৰের জানা হিল না। সমগ্ৰ গাৰাট 'লৈশৰ সঙ্গীতে' অন্তথন পরিবর্ত্তিত আকারে স্থান পাইরাছে। (১১) পু. ৮৬, বিহারিলালের 'সারদামলল' কাব্যের প্রকাশকাল "১২৮৭" मटर--- )२৮७ मान । ( )२ ) ७३२ पृढीव ववीक्षवाटवव 'বালোচনা' ও 'চিটিপত্ৰে'র প্রকাশকাল যথাক্রমে ১২৯১ ও ১২৯০ মুঞ্জি হইরাছে। প্রকৃতপক্ষে উহা ১২৯২ ও ১২৯৪। গ্ৰহ্বানির হাণা ও বাবাই ভাল, তবে হানে হানে রুলাকর-

আমাদের গ্যারান্টিড প্রফিট স্কীমে টাকা খাটানো সবচেয়ে নিরাপদ ও লাভজনক।

নিয়লিখিত হুদের হারে স্থায়ী আমানত গ্রহণ করা হইয়া থাকে:---

- ১ বংস্তের জন্ম শভকরা বাবিক ৪৫০ টাকা
- ২ বৎস্তের জন্ম শতকরা বার্ষিক গেও টাকা
- ৩ বৎসদের জন্ম শতকরা বাবিক ৬৫০ টাকা

নাধারণত: ৫০০ টাকা বা ততোধিক পরিমাণ টাকা আমাদের গ্যারান্টিভ প্রক্রিট ছীমে বিনিরোগ করিলে উপরোক্ত হারে স্থদ ও তত্ত্বরি ঐ টাকা শেরারে থাটাইরা অভিবিক্ত লাভ হইলে উক্ত লাভের শতকরা ৫০০ টাকা পাওরা ধার।

১৯৪০ সাল হইতে আমরা জনসাধারণের নিকট হইতে হাজার হাজার টাকা আমানত গ্রহণ করিয়া ভাহা স্থদ ও লাভসহ আদার দিয়া আসিরাছি। সর্বপ্রকার শেরার ও সিকিউরিটি ক্রয়-বিক্রয় সম্পর্কে আমরা কাজকারবার করিয়া থাকি। অন্তগ্রহপূর্কক আবেদন ককন।

# रेश्वे रेष्टिया श्रेक এए শেয়ाब जिनाम मिष्टिक है

লিসিটেড

৫।১নং রয়াল এক্সচেঞ্চ প্লেস্, কলিকাতা।

টেলিপ্রাম "ছনিকর"

কোৰ্ কাান ৬০৮১

প্রমাণ আছে। ত্রিকার, তাঁহার উদ্বেশ "তাঁহার উদ্বেশত লগ বারণ করিবাছে। করি বিহারিলাল সর্বান্ত (পু. ৫১০০০) "বিহারীলাল" হইরাছেন। ক্যানিং লাইবেরির প্রতিভাতা বােদেশচন্দ্র বন্দ্যোপাব্যার "র্বোপাব্যারে" (পু. ৪৯) এবং দিরিশচন্দ্র বােষ্ব "দিরিশচন্দ্র বস্তু"তে (পু. ২৬১) পরিণত হইরাছেন, ইত্যানি।

লকল অন্ত-বিচ্যুতি নিকালিত হবরা যাহাতে 'রবীক্র-জীবনী'র পরবর্তী সংক্ষরণট সর্বাদস্কর হর, এই সহিচ্ছা লইরাই বর্ত্তরান আলোচনা লিবিত হইরাহে;—নতুবা এইকারের বহুপ্রবদ্ধসাব্য রচনার ভণাপকর্বণ করা আনাদের উদ্বেভ নহে। 'আলা করি শীমই আমরা আলোচ্য প্রছের ২য় বঙ দেবিতে পাইব।

**ঞ্জীত্রজেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়** 

আমাদের অপরিচিত প্রতিবেশী—এর্জ নিনী কুমার ভর। ১১৮ পৃঠা, সচিত্র, বুলা ছুই টাকা। মভার্ণ পাবলিশাস, • নং বছিম চাটুলো ট্রাট, কলিকাতা।

এই বাভিদীর্ঘ বইখানি বিশেষ আনন্দের সহিত পঢ়িরাছি। লেওক আসার ও সিংভূষের আদিবাসীদের মধ্যে প্রমণ করিরাছেন, আদিবাসীদের জীবন সম্বন্ধে তাহাদের স্থা হংগ ও তাহাদের প্রাণ উপাধানে আদি সম্বন্ধে নানা তথ্য দরশ্বর সলে এই বইরে বালালী পাঠকের সমকে ধরিরা দিয়াছেন। বাংলা-সাহিত্যে লেওক অপরিচিত নহেন—মণিপুরের কথা লইরা ইইরে একখানি স্থপাঠ্য পুরুকের ছুইটি সংগ্রন্থ ছইরা নিবাছে। বরবের সলে আধিব জাতির জীবনের কথা বাংলা ভাষার বোধ হর প্রথম লেখেন বভিষ্পলের অপ্রজ সন্ত্রীবচলে উচার প্রবিধ্যাত "পালানো" প্রছে। ভাষার পরে উচার পরাক বিরা অনেকেই আমানের প্রভিবেশী ও লাভা বাংলার ও বাংলার প্রভাত দেশের আনিবাসীদের কথা আমানের ওনাইরাছেন। প্রভুত পুত্তকের লেখক বে সহামুভূতিপূর্ণ পরিচরের কৃষ্টির সহিত এই সমত্ত অখ্যাত এবং বহুণঃ অবজ্ঞাত জাতির জীবনের ভিতরে নিহিত সারল্য ও সৌল্বর্গ প্রকাশ করিবার প্রহাস করিরাছেন, ভাষা বাত্তবিক্ই উপভোর্য। নলিবারাবুর বইবানি বাংলা ভাষার লেখী প্রস্থাবিষয়ক সাহিত্যে একখানি বিশেষ প্রথান্য পুত্তক হইরাছে। আশা করি অক্ত বহু পাঠকও আমার ভার এই বই পড়িয়া আমাক লাভ করিবেন।

শ্রীস্নীভিকুমার চট্টোপাধ্যার

মৃত্তিব্ৰ—শ্ৰীতারাপদ রাহা। ভারতী-ভবন, ১১ নং বছিন চাটুলো ষ্টাট, কলিকাতা। পু. সংখ্যা ১৪২। বুলা ছুই টাকা চারি জানা।

গলের বই। বাটার; বানবিক-পাশবিক ও বাতবিক; ক্ষির্দি; দক্ষিণ কাঁকুলিরা নারী স্থিতি; বিজ্ঞান্ত্রী, আছিক; তুবি ও নেলী—এই সাতটি গল আছে। লেখক বাঙালী পাঠকস্বালে অপ্রিচিত; অনাড়ম্বর কাহিনীর বধ্যে দিরা নানারক্ষ চরিত্র কুটাইরা তুলিবার চমংকার একটি ক্ষতা আছে ওাঁহার বাহাতে পরিচিতকেই একটি নৃত্র রসের মধ্যে পাইরা পাঠকের মন সহল কৌতৃহলে গলের সজে বার বিশিষ্টতা বলার আছে, ওধু 'বিজ্ঞান্তেও প্রায় সব গলেই লেখকের এই বিশিষ্টতা বলার আছে, ওধু 'বিজ্ঞান্ত্রী'তে—বেখানে খানিকটা বহুত্তের অবভারণা ক্রিরাছেন, সেখানে একটু অবাভাবিক ঠেকিল। গলগুলির মধ্যে মাটার, প্রাছিক, তুবি ও নেলী বিশেষ করিয়া ভাল লাগিল। মাটারি জীবনের

## নিরাপদ নির্ভরযোগ্য ও লাভজনক ভাবে টাকা খাটাইতে চাহেন ?

# ল্যাণ্ড ট্রাষ্ট অব ইণ্ডিস্বার

**"স্থান্ধা আমানতে" জমা রাখুন।** 

স্তুদের হার						
৩ মাদের জন্ত	• • •	₹./.	( 4 +	বৎসবের	母梦	··· •'/.
• " "	•••	o·/.	1		•	··· e}/.
·	•••	૭ <del>ફ</del> ∙/.	b	•		··· •\/.
১ ও ২ বৎসবের	•••	8 <del>}</del> '/.	>		20	··· €₹'/.
° 89°	•••	8 <del>1</del> '/.	۶.			••• ••′/.

'নিৱাপত্তা !'

কাৰী, কৰিকাতা ও উহার উপকঠে বুলাবান কৰি হাড়াও সম্প্রতিকাশরা কলিকাতা কর্পোরেশন এলাকার এবং হিন্দুহানের নিউ আলিপুর কলোনির কেবল পার্বে ও সংগ্য আরও বছ কমি থুবিছ করিয়াহি। এই কমি কুম কুম মটে ভাগ করিয়া বিক্রম করা হইডেছে।

# ল্যাণ্ড ট্রাষ্ট অব ইণ্ডিয়া লিমিটেড

স্থাপিতঃ ১৯৪১

—নিয়মিত লডাংশপ্রদানকারী একটা কমোরতিশীল আতীয় প্রতিষ্ঠান—

হেড অফিস: ১২, চৌরলী কোরার, কলিকাভা

কোন্স :--ক্যান : ১৯৬৪--৬৫ টেনিপ্রান :-- "Aryoplants"

বা ট্টাজেডি এবং ঝাছের অনুষ্ঠানের মধ্যে গভীর লোকের পরিবেশে দর্বা, সূত্র বা কাছনির অন্ত বা বিভ্ৰমা, স্ত্র বা কিনাটন মধ্য দিরা লেখক ভাহাকে চমংকার মুটাইরাছেন। 'তুমি ও নেলি' গলটতে চুইট মুমুরকে মাবে রাখিয়া চুইট কিলোর-কিলোরীর মনের বিল্লেখন করা হইরাছে—ভাহানের ভালবাসা একই কেন্দ্রে সন্ধিত হইরা নিজেদের মধ্যে আবার কি অটিলভার সৃষ্টি করিভেছে, লেখক বেশ কৌশলের সহিত দেখাইরাছেন।

### **জ্রী**বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

ভারতীয় সংস্কৃতি—ৰামী অভেদানক। বেদার মঠ, ১৯ বি, বাজা বাজকুফ ট্রাট, ক্লিকাভা। ৪০০ গৃষ্ঠা, মূল্য চাবি টাকা মাত্র।

ইহা প্রত্বকারেরই একধানা ইংরেজী বইরের বাংলা অন্থবাদ। ভারতের বিভিন্ন দর্শন, সামাজিক প্রথা, রাজনৈতিক উক্তম ও আকাজ্জা এবং প্রাচ্য ও প্রভীচ্য সভ্যভার সম্পর্ক ইড্যাদি বিষয় করেকটি অধ্যারে বোগ্যভার সচিত আলোচিত হইরাছে। ভবে, বইয়ের তুই-একটি ক্রটির উল্লেখণ্ড আমরা না করিরা পারিতেছি না।

'প্রসাবতা' (৩০৯ পূ:) শব্দটি অওছ। সমেশচন্দ্র দত্তের নামের ক্ষাপে (১৭ পূ: ইত্যাদি) 'শুর' উপাধি অপ্রযোজ্য, এই থেতার ছিনি পান নাই। ভারতবর্ষ বে কড বড় দেশ তাহা ভারতের বাহিবে শুর কম কোকেই জানে, এই ধরণের উদ্ধি (৬৭ পূ:) অনেকটা বালকের উদ্ধির মত চনার।

ভারতের হ্র শত বংসর মুসলমান রাজস্বকে 'জ্ঞানে সমাজ্র

ভিমিন বৃণ'( ৩৫৫ পৃ: ) বলা বাব কোন্ আৰ্ব ? এই সম্বে শিখ, মহাবাই ও বাজপুত জাভিব উভব, লাহু, ক্ৰীন, হৈছত শ্ৰেছ্টিৰ পূৰ্ম সম্প্ৰদায় ও বিভিন্ন বেলাভ ভাব্যের আবিৰ্ভাব এবং ভাজমহল প্ৰভৃতি ছাপত্য নিৰ্মাণ ঘটিনাছিল, ইহা মনে ক্ৰিলে কি সভাই এই বৃণ্টাকে 'ভিমিন বৃণ' বলা বাব ?

বে সকল হাত্র আইন পড়ে তাহারা আর সমস্ত আইন পড়িয়া পরে হিন্দু আইন পড়ে ( ২৪০ পৃ: ), ইরা সন্তা নর। বাংলাদেশে অন্ততঃ হিন্দু আইন হাজেরা প্রথম বংসরেট পড়ে—এই সকল উক্তিতে প্রস্কারের একটু অসতর্কতা প্রকাশ পাইবাছে।

#### প্ৰীউমেশচন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ্য্য

বিশেষ রক্ষনী—শ্রীবভৃতিভ্যণ মুখোণাখ্যার। জেনাবেল থ্রিন্টাস ব্যাপ্ত পাবলিশাস লিমিটেড। ১১২ ধর্মজনা ফ্লিট, কলিকাতা। মূল্য হুই টাকা।

সমালোচ্য পুস্তকটিতে বিশেষ বন্ধনী, চৌদ্ধ মার্ক এবং প্রজা এপ্রিল এই ভিনটি ছোট একাছিকা ছান পাইবাছে। ছোট গজে লব্ধ প্রতিষ্ঠ লেখক একদা 'নীলাঙ্গুরিং' নামক উপশাস্থানি বচনা কবিরা ভাঁচার প্রতিভাব একটা নৃতন দিকের সহিত পাঠক-সাধারণের পবিচর সাধন করাইরাছিলেন। 'বিশেষ রক্ষনী' পদ্ধিয়া বুবিলাম, নাটক-রচনায়ও ভিনি অনধিকারী নচেন। বর্জুমান পুস্তকের চৌদ্ধ মার্ক একটি রূপক-নাট্য এবং বিশেষ বন্ধনী ও প্রলা এপ্রিল এই ছুইটিই কোঁডুক-নাট্য। হাস্তবসের প্রাচর্ষ্য

# উৎক্ষণ্ডভন উপাত্ত্বে টাকা খাটাইতে চাহেন?

# আমাদের "স্থান্ধী আসানতে" জমা রাধুন

স্থুদের হার							
>	বৎসবের	জন্ম শতকরা	oj.	৭ ব	ংসরের	ব্দুর শতকরা	8 <b>M</b> •
ર	M		8、	۲		т #	<b>(</b> \
9.6	8 "	*	81•	۵		٠ ,	el-
6.64			810	>•		,,	6110

# रेश निवालन, निर्जबर्याभा । लाज्जनक

বেদল শেরার ডিলাস সিণ্ডিকেট লিঃ

**"শেরার দ্বিলাস**িহাউস",—কলিকাভা।

সংখ্য এখনি প্রচলিভ বাংলা প্রহসনের সংগাল নহে। এই নাটিকা কুইটিতে অভিনর সিচ্ছেতন স্পৃষ্টি করিব। যে অনাবিদ হাজরস পরিবেশন করা কুইরাফ্ডোহা গুল, সংবত এবং পরম উপভোগা।

'বিশেব বজনী' নাটকাটি আযাদেব সবচেরে ভাল লাগিবাছে।
ইহার চন্ত্রিগুলি এড সন্ধীব ও সংলাপ এড বাভাবিক হইবাছে
বে, মনে হর ললিভ থাকোহরি শক্ষর প্রভৃতিকে লইবা আয়বাও
বেন মক্ষলের সথেব থিকেটারে অভিনয় করিবাছি। বিশেবতঃ
দ্বী-চবিত্র অভিনেতা, নাইীভাবাপর থাকোহরি ভো টাইপ চবিত্র
হিসাবে একেবারে বোল আনা সার্থক হইরাছে। পরলা এপ্রিল নাটকাটি কৌচুক-মধুর। অভি সারারণ ঘটনার মধ্যে বে প্র বরণের নাটকীর উপকরণ নিহিত ছিল ভাষা লেখক না দেখাইবা দিলে আয়বা ভানিতেও পারিভায় না। বালো সাহিত্যে মেরেদের অভিনরোপবারী নাটক নাই বলিলেই চলে। বোভিডের মেরেদের লইবা লিখিত 'পরলা এপ্রিল' সেই অভাব পুরণ করিবে।

ঞ্জীনলিনীকুমার ভঙ্গ

রবীন্দ্রনামা। রবি-প্রশস্তি সংগ্রহ—জ্রীপ্রভাত বস্থু সম্পাদিত। দি বুকম্যান, কলিকাতা, ১৩। দান দেড় টাকা। নাব, ১০০০

আনাদের দেশের কবিরা অর্চ্চ শতালীরও অধিকলাল রবীক্রনাধের মনীবার প্রতি বে প্রাঞ্জলি অর্পন করেছেন, এই বইবানিতে ডারই থেকে সঞ্চরন করা হরেছে। সেই দিক দিয়ে এখানি পাঠকদের খুবই ভাল লাগবে। আনাদের বর্ত্তনান মুগের কাব্যরসিকেরা কত নতুন আলিকের স্টে করেছেন, ডারও পরিচর এর সধ্যে পাওরা বাবে। সম্পার্থিক বাংলা সাহিত্যে কবি-রচনার নরুনা হিসাবেও এর মুল্য কম নর।

কিন্ত দিরিলাবাবু, উমা দেবী, অপরাক্রিতা দেবী প্রস্থুত রবীপ্রকাব্যে বীরা অসুপ্রাণিত হিলেন, তাঁদের অর্থ্য কই ? বল্যনেবকদের থেকেও আরও কিছু সংগ্রহ পেলে ভাল হ'ত।

আর একটা কথা, সংগ্রহকার কবিদের বরসের অনুক্রমে প্রশক্তিওলি সাজিলেছেন। কিন্তু কোন্ কবিঙা কথন দেখা, ভারও একটা ক্রম থাকলে ভাল হ'ত—অর্থাৎ সভব হলে কালাপুক্রমে সাজালে রবিপ্রতিভার কথন দেশে কোন্ পথে ছড়িয়ে পড়ছে ভা দেখা বেড।

আৰকের দিনে রবীজনাবা সকলেরই ভাল লাগবে বলে আলা করা বার। কবিরা ডো বুগবাবী উচ্চারণ করেন। অনগবের বনের কবা কেড়ে নিরে মুখে বলেন। স্তরাং কবিবের মুখে কবিস্ফাট-প্রশন্তি সম্রা দেশের মুর্থবাবীর প্রতিধানি।

ঞ্জীপ্রিয়র্থন সেন

চৈনিক ঋষি লাউৎজে—বামী লগদীধরানল। বিবেকানল সংঘ, বৰবজ, ২০ প্রস্থা। মূল্য দেড় টাকা মাত্র।

চৈনিক কৰি লাউংক্লে প্ৰণীত 'ভাও তে কিং' চানে প্ৰচলিত ভাও ধৰ্মের मून अप । देशव प्रकोबार्वभूप मदन छेक्किकिन हीत्मव वाहित्वक मनीवि-বুন্দের সপ্রছ দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে। কলে নানা সময়ে পৃথিবীর বিভিন্ন ভাৰ'র ইহা অনুদিত হইরাছে। সংস্কৃত ভাৰারও ইহার এক প্রাচীন অমুবাদের সন্ধান পাওলা বার। জুংখের বিষয়, আধুনিক ভারতীয় ভাবায় ইছার কোনও অমুবাদ হর নাই। অবচ ভারতীর দার্শনিক চিন্তার সহিত লাটংলের উক্তির একা ও সাণুক্ত বিশাহকর। স্বামী জগুণীবরানন্দ আলোচা পুতকে এই যুগাবান এছের বঙ্গামুবাদ করিচা শিক্ষিত বাঙালীর कृटखाडाकाक्य इरेबारक्य। यूग्रस्क ७ गविनिष्टि यामीकी, नाएरस्क ७ ভাঁৱার ভাষাকার চুরাংজুব জীবনী ও উপদেশের সারমর্ম বিবৃত করিয়াছেন, প্ৰসম্ভ্ৰে ৰতপ্ৰভাবে চৈনিক সাধনাৰ বৈশিষ্টা ও চৈনিক বোগ বেচনা স্বৰে নাট্টিবিস্থত আলোচনা করা হইবাছে। অমুবাদের সঙ্গে সঙ্গে ষাবে যাবে চুরাজুর বাগে। উদ্ধ ত হইয়াছে। আশা করি, চীনের আর এক স্থাপুত্ৰ কন্তুদিংস্ স্থাৰ ৰামীলী অভিরকাল মধ্যে ভাঁৱার প্রতিশ্রতি অনুরূপ আর একথানি পুস্তক অকাশ করিয়া বাংলা সাহিছ্যের देविक्रेज ७ ममुक्ति वृक्ति कतिरवन।

শ্রীচিন্তাহরণ চক্রবর্ত্তী

শীৰই প্ৰকাশিত হইতেছে

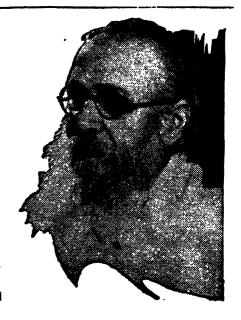
প্ৰথিভয়শা লেখিকা শ্ৰীশান্তা দেবীর

# রামানন্দ ও অর্ধ-

বালোর সাংস্কৃতিক আব্যোলনের পটভূষিকার বর্তনান বুলের অভতম শ্রেষ্ঠ বনীনীর ভীবনায়র্শের স্থানিপুন বর্ণন ও বিরোধন।

প্রবাসীর আকারে বহু পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ, বহু চিত্রশোভিত, বাংলা-সাহিত্যে অভিনৰ লীবনচরিত। ইহা একাধারে ননীবী রাষানক চট্টোপাধারের লীবনী এবং সমসাময়িক বাংলার সাংস্কৃতিক প্রথতির ইতিহাস। বিগত পঞ্চাপ বংসরের বাংলার সাহিত্যিক, রাজনৈতিক ও সামাজিক ইন্ডাবি বাবভীর আন্দোলনের প্রকৃত বর্লা উপলব্ধি করিতে হইলে এই পৃত্তকবানি অসমিহার্যা।

প্রবাসী কার্য্যালর, ১২০।২, খাণার সার্ভার রোভ, কলিকাডা।



ক্রোডের টেউ—- এইবিহর পেঠ। কবা-ভারতী, ৬০ বং, অবিদ বিপ্লী দেব, কলিকাতা। সুদ্য ১.।

বইখানি কভক্জনি উপদেশ বা নীতিকখার সমষ্টি বলিলে জুল করা ইইবে। ইবা গ্রন্থভারের শীন্ন ভীবনে প্রভাক্ষ অভিজ্ঞভাকর, সমান্ত সংসার, ধর্ম ও ইবর সথক্ষে কভক্জনি সারগর্ভ মত ও চিন্তার স্থ্যোকারে প্রথিত লেখনালা, বালা পাঠকের সমস্তানকুল জীবনে পথনির্দ্ধেশ করিবে ও শাবিলাভের উপারথরণ হইবে। সামান্ত অবহা হইতে প্রহ্নার অর্থ ও বলের শিধারদেশে উপনীত হইরণ্ডেন, স্বভরাং ভাষার এই পুত্তকের প্রভোক্টি বাদী পাঠকের চিন্তাশন্তিকে উর্ক্ করিবে। প্রধানি বিভীয় সংকরণ।

#### **बै**विषयान कुक भीत

বাংলা সাহিত্যের কাহিনী—এনীরেল খণ্ড। আক্তোষ লাইরেনী, এনং কলেল ভোৱার, কলিকাতা। সুলা দশ'আনা।

আটট পরিচ্ছেদে সহল ভঙাতে রচিত বাংলা সাহিত্যের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস। সন ভারিবের অরণা অথবা তারিক শ্রুটিনতার এবেল না করে, লেপক অরবর্গ্রনের ক্ষর বাংলা সাহিত্যের কথা ও কাহিনী বর্থনা করতে চেরেছেন। উদ্দেশ্ত সাধু এবং প্রশ্নকার আংশিক সাফল্য লাভও করেছেন, কিন্তু সব সমরে ছোট ছেলেমেরেদের ক্ষরি ও প্রয়োজনের দিকে লক্ষ্য রাধতে পারেন নি। প্রীকৃষ্ণকীভানের অর্মালতা সম্বন্ধে আলোচানা ভালের পকে অনাবন্ধক। আধুনিক সাহিত্যিকদের মধ্যে উল্লেখবোর্গ্যালেক কেউ কেউ বাল পড়েছেন, অলেক্ষাকুত অর্মাণাত কোনো কোনো লেখক বড়ামান প্রশ্নে আলোচনার অন্তত্ন্ত ক্ষরণাত কোনো কোনো লেখক বড়ামান প্রশ্নে আলোচনার অন্তত্ন্ত ক্ষরণাত কোলোচনার, ওধু এখানিতে নয়, সম্প্রতি-প্রকাশিত করেকথানি প্রশ্নেই কক্ষা করেছি, প্রস্কারেরা কুলে যান, মধ্যের হাতিহা এবং সাহিত্যিক প্রতিভা এক ভিনিব নয়।

আগামী কালের কবিতা—গ্রীরমাণতি বহু । এইর্থ পুত্তক বিভাগ। ৫৭, হারিসন রোড, কলিকাতা। নাম দেচ টাকা। সমসাময়িক ভাবধারা বা ঘটনা নিরে বিজ্ঞাপর ভলীতে লেখা করেকটি কবিতা। উজ্জ্ঞানতা অ'চে—প্রদীপের নর, ধারালো ছুরির। ছু' একটি কবিতার সহজ্ঞ কবি-দৃষ্টির পরিচয় সেলে, বেমন, 'কাঠবিড়ালী!।

আলোছায়া— শুএকুলঃপ্লন সেনগুও। কাইন জাট প্ৰেস, কুমিলা। বাম জাট জানা।

পণ্ডিভ দ্বনানাথ চক্রবর্তী সন্থলিভ এবং ভক্তিতীর্থ ঐউবেশ চক্রবর্তী সম্পাদিভ ও প্রকাশিভ (সচিত্র ও ষ্টুম্ব) প্রিক্রিভিডৌ ১৪০

বৰ্গলা, কীলক, কৰচ, বৃলচন্তী, শুকাদি এবং সহক্ৰমেনৰ সমল বলাগুবাদ ও ব্যাখ্যা, পূঞ্জাহিদি এবং সম্পাদকীয় নিবকে 'চান্তী' বিবয়ক বছল আত্ৰয় বিষয়াদিতে ও বৰ্ণাভূক্তমিক মোকশুচীতে স্থসম্পূৰ্ণ ।

শ্রীসভ্যমারারণপুজা ও কথা · · · · /১০
শ্রীশ্রীলক্ষীপুজা ও কথা /১০ বিসন্ধ্যা ।•
শ্রাভিয়ান—ইভদ নাইরেরী প্রভৃতি বইরের দোকান এবং প্রকাশকের
নিকট—১২০২ খাপার সারকুলার রোচ, কলিকারা।

পরহারারপুর করেকটি কবিতা। প্রকর্মে এবং হলোবিভারে বালিতা এবং কোরৰ অনুভূতির পর্য বাছে।

অভ্যাধুনিক--- এবনোলনোহন বাব। চিত্রসেবপুর, হাওড়া।
মূল্য চারি আনা।

বলাটে লেখা আছে, "ছেলেবেরেরের অভিনয়-উপবোদী বাল নাটকা।" বাল কিন্দিৎ আছে, কিন্তু বইবানি 'নাটক' নয় এবং ছেলে-বেরেনের 'অভিনয়-উপবোদী' বলেও বনে হয় না। ছেলেবেরেরা শিকা-সংখ্যার সম্বাদ্ধ এগোরেলো ভাবে কভকওলো লাবি উপাপন করছে, এটাই নাটকের বর্ণনীয় বিষয়। প্রভাবকলের নাম স্কৃত্যার, নাজিম, সরোজনী প্রভৃতি। বেরেনের প্রভাবে 'পিউবাটি' ক্ষারী-মাতৃত্ব এবং ক্রণহত্যা সম্বাদ্ধি আলোচনাও আছে।

#### শ্রীধীরেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়

জাতীয়তার বাণীমূর্ত্তি হার্ডার—গ্রীননীপকুষার মালাকার; ভূমিকা—ডক্টর বিনয় সরকার। **জ্রীওক লাইরেরী,** ২০৪ কর্ণওয়ালিশ খ্লীট, কলিকাতা। পৃষ্ঠা দ০+১০+৪৮, মূল্য এক টাকা।

আর্থান লোক-দার্শনিক হার্ডারের জীবন ও বচনাদর্শের সংক্রিপ্ত আলোচনা। অষ্টাদল শতাক্ষার লেবভাগে আর্থান চিন্তানারকগণও জাতীর ভাবে উব্দুহ চইরা উঠেন নাই, জনসাধারণের কথা ভ বলাই বাহল্য। ক্যাসী ভাব, ক্যাসী ভাবা, ক্যাসী আচার-ব্যবহার ভখনকার জার্থানদের মুদ্ধ করিবাছিল। ভাগারা আতীরত। অপেক্ষা আন্তর্জানিদের মুদ্ধ করিবাছিল। ভাগারা আতীরত। অপেক্ষা আন্তর্জানিকের মুদ্ধকরবাহির প্রভিরোধ করিবা মনে করিত। বিদেশীর এই অন্ত্র্করণ-প্রস্তুত্তির প্রভিরোধ করিবা আর্থানিদিগের নিজম্ব সংস্কৃতির প্রভিরের জীবন-সাধনা হইরা দাঁড়াইরাছিল। ইহাতে সাক্ষ্য লাভ করিবা ভিনি আর্থানিকে আত্মস্প্রত্ব লাভ করিতে সাহাব্য করিবাছিলেন। ভারভবর্ষে ভাতীর জীবনের বর্ডমান সম্কট-ক্ষণে হার্ভাবের রচনার সমাদর হওরা উচিত।

লেখকের ভাষা উচ্ছ্।সপূর্ব। আলোচনা এড সংক্ষিপ্ত বে

#### প্ৰথিত্যশা লেখিকা শাস্তা দেবী প্ৰণীত

১। বলধ-বোরা ( উ	পঞ্চাস )	•••	म्मा ७५
২।ছহিতা (উ	াক্তান )	•••	>
৩। সিঁথির সিঁছর	•••	•••	>10
<ul><li>। वश्वव</li></ul>	•••	•••	34.
	ধিকা শ্ৰীগীত	ा त्वी खनीप	5
১। ক্ষণিকের স্বডিধি	( উপস্থাস )	•••	રા•
২। নিরেট গুরুর কার্যি	নৌ ( ছোটনে	নর পল্ল )	h.
গ্ৰান্তিছান-	—শ্ৰীশাস্থা নে	বৌর নিকট	
পি-২৬, রাজা ক	ণ্ড রাব বে	i <mark>e, কলিকা</mark> র	5 <b>'9</b>
. সমস্ত বিখ্য	াভ পুতকাল	ৰে প্ৰাপ্তব্য।	

পাঠকের পূর্ব ভৃত্তি হয় না। হার্ডাবের ক্ষক্তলি মূল্যবান ও চিন্তা-উল্লেক্ষারী বাধী সংগৃহীত হুইরাছে।

**अ**नातायुग्हस्य हन्य

জাতীয় প্রাকা—- এন্ধেন্দ্শেখন দাসগুর। এছকার কর্ত্ব ১৯৮, পড়িরাহাট রোড হইতে প্রকাশিত। মূল্য দশ আনা।

পৃথিবীর সকল কাতির নিকট জাতীর পাঠাকার মর্বাদা কতথানি, আজিকার দিনে সেই অমুকৃতি আমাদের জারত হইরাছে। এখকার এই কুমে পৃত্তিকার পৃথিবীর করেকটি লক্তিশালী জাতির জাতীর পতাকার ইতিহাসটিও কুন্দর ভাবার বাক্ত করিয়াছেন। পোবে করেকটি জাতীর সজীতও দেওরা হইরাছে। বইথানির আদের হওরা বাক্তনীয়।

অন্তর্গোরব---- জ্ঞানিক ভটাচার্যা। কদমকুরা, পাটনা হইতে জ্রীবৃদ্ধদেব ভটাচার্যা কর্ত্ব প্রকাশিত। মূল্য এক টাকা। শীকৃক, নেপোলিয়ন, টলষ্টয়, শীংগারাজনের ও শীমগুস্থনের সংক্ষিপ্ত লীবনী লইয়া লিখিত এই কুত্র পৃত্তিকাটি বাত্তনিকই ক্ষুত্র ক্ইয়াছে। লেখকের রচনাজ্ঞাী বনোজ্ঞ এবং বিরোধণ ক্ষরগ্রাহী।

व्यकासनी मूर्याभागात्र

শ্রী শ্রীসভানারায়ণ পুজা ও কথা—ভক্তিঠার্ব শ্রীউমেদ চক্রবর্তী প্রণীত এবং কলিকাচা ১২০.২, জাপার সাবকুলার রোড হইডে গ্রন্থকার কর্তৃক প্রকাশিত। ১৬ পৃষ্ঠা, মূল্য দশ প্রদা।

আলে:চ্য পুঞ্জিবার জীলীসত্যনাবারণের স্তব, পৃঞ্জার মন্ত্রাদি এবং ক্ষমপুরাণের রেবাথণ্ডে বর্ণিত ব্রতক্থা অবলম্বনে সহজ সরল ভাবার প্রার ছন্দে পাঁচালীকথা স্থান পাইরাছে। পুস্তিকাথানি ধর্মপ্রাণ হিন্দু নর্নারীর কাজে লাগিবে।

# **५**स-शिस्**ल**स् स्था

"অন্ধজনে দেহ আলো"

ভারভবর্বে দৃষ্টিংনীনদের সংখ্যা পূথিবীর প্রায় সব দেশ
হৃইতেই বেশী। ১৯০১ সনে যে লোকগণনা হৃইয়হিল
ভাহাতে দেখা যার, এদেশে এদের সংখ্যা হর লক্ষের উপর।
নিবিল-ভারভ অন্ধ-আলোক-নিকেভন (All-India Lighthouse for the Blind) গভ হর বংসর ব্যিয়া লোভাগাও
হাতের কান্ধ শিকাদান করিয়া লাভিবর্মবর্ণ-নিবিশেষে প্রাপ্তবরক অন্ধ নরনারীকে (এদের সংখ্যাই সাড়ে পাঁচ লক্ষের বেশী)
খাবলখী করিবার ব্রভ গ্রহণ করিয়াছেন। প্রাথমিক
লেখাপড়া ভির তাঁত-বোনা, বই-বাঁবান, কণ্ঠ ও যন্ত্র-সদীভ
শিখাইবার ব্যবস্থা এখানে করা হইয়াছে। মেধাবী হাত্রহাত্রীদের কন্ত উচ্চ শিকার বন্ধোবন্তও আছে। আলোকনিকেতনের নিক্ষর একট হাত্রীনিবাস ইহার সন্ধে যুক্ত আছে।

এই প্ৰতিঠানের সভাপতি হইতেহেন মাননীয় লর্ড সিংহ ও সহ-সভাপতি ডাঃ ভামাপ্রসাদ রুখোপাব্যার।

সাহাব্যাদি নীচের ঠিকানার প্রেরিভব্য। নিবিদভারত অন্ধ-আলোক-নিকেতন। ২১, রসা রোভ, কলিকাতা।

#### বাঁকুড়া সন্মিলনী হাসপাতাল সপ্তাহ

বাঁকুছা সন্মিলনী বাঁকুছা শহরে একট যেডিক্যাল ছুল ও হাসপাভাল পরিচালনা করিভেছেন। হাসপাভালে দেছ শত বেড আছে। প্রতি বংসর এবানে হাজার হাজার রোমীর চিকিৎসা হইলা বাঁকে। গ্রব্বেক্ট ও জন্যান্য আধা সরকারী প্রতিষ্ঠান হইতে নাম মাত্রই সাহায্য পাওয়ং যার। প্রধানতঃ বদান্ধ দেশবাসীদের অর্থেই ইহার যাবতীয় কার্য্য নির্কাহিত হইরা আগিতেছে। সাপ্রতিক অবস্থার ইহার কার্য্য সম্প্রসারশের জন্য প্রচুর পরিমাণ অর্থের বিশেষ প্রয়েজন হইরা পড়িয়াছে। বাঁহুড়া সন্মিগনী এই উদ্বেধ প্রয়েজন হইরা পড়িয়াছে। বাঁহুড়া সন্মিগনী এই উদ্বেধ প্রয়েজ করিতে মনস্থ করিয়াছেন। এই সম্ভব্যেজ বিনি যাহা দিবেন সাদরে গুছীত হইবে। সন্মিলনীর জনারারী কোষাধ্যক শ্রীষ্ক্ত কাগিদাস রাহ, ৩, আভ বিশ্বাস রোভ, ভবানীপুর, কলিকাতা—ঠিকানার অর্থাদি প্রেরিভব্য।

TWO IMPORTANT BOOKS OF Prof. Dr. KALIDAS NAG, M.A. (Cal.), D.Litt. (Paris) Hony. Secy., Royal Asiatic Society of Bengal

(1) Art and Archaeology Abroad (with 30 rare illustrations)

Price: Rs. 5/- only.

(2) India and The Pacific World
The only up-to-date survey of the History
and Culture of Pacific Nations.

Price: Inland Rs. 12, Foreign £1 or 5 Dollars.

The Book Company Ltd., College Square, Calcutta
THE MODERN REVIEW OFFICE,
120-2, Upper Circular Road, Calcutta.

প্রবাসীর পুস্তকবিলী	BOOKS AVAILABLE			
	_ 1	Chatterjee's Picture Albums—Nos. 1 to 17		A3.
মহাভারত ( সচিত্র ) ৺রামানস্ব চট্টোপাধার	- 3 1	( No. 1, 4, 5, 8 & 9 out of Stock)		
শচিত্র বর্ণপরিচয় ১ম ভাগ্—		each No. at	4	0
বামানন্দ চট্টোপাধ্যায়	<b>√</b> •	History of Orissa Vols. I & II		_
সচিত্ৰ বৰ্ণপরিচয় ২য় ভাগ—এ	J•	-R. D. Banerji each Vol. Canons of Orissan Architecture—N. K. Basu		0
চাটাব্দির পিক্চার এল্বাম		Dynasties of Mediæval Orissa—	14	0
(১, ৪, ৫, ৮ ও > বালে ) প্রত্তো	<b>*</b> 0	Pt. Binayak Misra	5	0
( ), 0, 0, 0 0 0 1 (104 )	4 8/	Eminent Americans: Whom Indians Should		_
চিরন্তনী ( শ্রেষ্ঠ উপগ্রাস )—শ্রীশাস্থা দেবী	81•	Know— Rev. Dr. J. T. Sunderland Emerson & His Friends— ditto	4	8
<b>छेवनो ( মনো</b> গল্পসমৃষ্টি ) औ	٤,	Evolution & Religion— ditto	4 3	0
·	·	Origin and Character of the Bible ditto	3	0
সোনার খাচা— শ্রীসীডা দেবী	२ •	Rajmohan's Wife—Bankim Ch. Chatterjee	2	0
শাশ্ব দেশ (ছেলেমেয়েদের সচিত্র) ঐ	١,	Prayag or Allahabad—(Illustrated)	3	0
বছ্ৰমণি (শ্ৰেষ্ঠ গ্ৰহ্মসমষ্টি ) ঐ		The Knight Errant (Novel)—Sita Devi	8	8
,	8-	The Garden Creeper (Illust. Novel)—	_	
উন্থানৰতা ( উপত্থাস )—জ্ৰীশাস্থা ও দীতা দেবী	٠1٠	Santa Devi & Sita Devi	3	_
কালিদাসের গল্প ( সচিত্র )—- শ্রীরঘুনাথ মলিক	8.	Tales of Bengal—Santa Devi & Sita Devi Plantation Labour in India—Dr. R. K. Das	3 3	0 8
•	•	India And A New Civilization— ditto		0
গীত উপক্রমণিকা—(১ম ও ২য় ভাগ) প্রত্যেক	>1•	Mussolini and the Cult of Italian Youth	_	Ĭ
জাতিগঠনে ববীক্ষনাথ—ভারতচক্ষ মন্ত্রদার	71.	(Illust.)—P. N. Roy	4	8
কেশোরদের মন—শ্রীদক্ষিণারগুন মিজ মন্ধ্রমার	1-	Story of Satara (Illust. History)		
	•	-Major B. D. Basu	10	
১ <b>ও</b> ীদাস চরিভ—( ৺ক্লফপ্রসাদ সেন )		My Sojourn in England— ditto	2	0
শ্রীধোপেশচন্দ্র রায় বিশ্বানিধি সংস্কৃত	श•	History of the British Occupation in India		
মেঘদুত ( সচিত্র )—শ্রীধামিনীভূবণ সাহিত্যাচার্ঘ্য	81•	— An epitome of Major Basu's first book in the list.]—N. Kasturi	3	0
হিমালয় পারে কৈলাস ও মানস সরোবর (সচিত্র)—		History of the Reigr. of Shah Alum— W. Franklin	3	0
শ্রপ্রমোদকুমার চট্টোপাধ্যায়	8,	The History of Medieval Vaishnavism in		
` <u>-</u>		Orissa-With introduction by Sir		
পাৰ্বে বাদৰ বামদাস ( সচিত্ৰ )—		Jadunath Sarkar.—Prabhat Mukherjee	6	0
<b>ঐত্যাত্র হাল</b> দার	>11 •	The First Point of Aswini—Jogesh Ch. Roy	0	8
<b>দরনা—শ্রীহেমল</b> তা দেবী	21•	Protection of Minorities— Radha Kumud Mukherji	0	4
শেলাধূলা ( সচিত্র )—শ্রীবিজয়চন্দ্র মজুমদার	>1•	Indian Medicinal Plants—Major B. D. Basu		
বিলাপিকা	30/1	& LtCol. K. R. Kirtikar—Complete in 8 Vols.   Authoritative Work with		
ল্যাপল্যাও ( সচিত্র )— <b>জ্র</b> লন্দ্রীবর সিংহ	>1-		320	0
ভাক্ষাওৰ বভাষ।		Postage Extra.		
প্রবাসী কার্য্যালয়		The Modern Review Office	æ	
১২০।২, ভাগার সার্কু নার বোড, কনিকাতা।		120-2, UPPER CIRCULAR ROAD, CALCU	JTT	'A
-				

#### ঝাড়গ্রাম দেবায়তন

বিগভ ১০০১ সালের ১ই পৌব বেদিনীপুর জেলার বাড়প্রাম টেশনের ছই নাইল উদ্ধরে রাধানগর নামক পরা প্রান্ধে শ্রীবং বামী সভ্যানন্দ গিরিজী বহারাগের পৌরোহিত্যে বাড়প্রাম সেবারতন আশ্রমের কিন্তি ছাপন করা হয়। অনকল্যানকরে ইহাতে চিকিৎসা, কৃবি ও রো-পালন ইডাাদি বিভাগত থোলা হইরাছে; সাধারণ বিভাগর ও নৈশবিভাগর ইডাাদিও প্রতিষ্ঠিত হইরাছে। আধ্যান্মিক সাধদার কল এবানে একটি বোগমন্দির নির্দ্ধণের আরোজনও কল হইরাছে। অর্থনাহার্যার্দি ৬ বি, রভ ট্রাট, বালিগঞ্জ, কলিকাতা, এই ঠিকানার সেবারতনের কলিকাতা কেন্দ্রের সন্পাধক শ্রীবৃদ্ধ গৈলেশ্যাহন মন্ত্র্যদারের নিকট পাঠাইতে হইবে।

#### সিংহগড় পল্লী-প্রতিষ্ঠান

পরী-সংস্কার ও পঠনবুলক কার্য্যের আগবর্শ অনুপ্রাণিত হটায় ইচটের কুতী সন্তান জীবুল লক্ষ্মীখন সিংহ সম্প্রতি খীর লক্ষ্মপুল্লী রাচিনালের निक्टि এ कि नक्षी-अपिक्षान महिना जुलिहारकन । देशव अपर्न इटेएक्टक : (>) चाचिर्विक्षीत ७ मञ्चवह इहेवा श्लीवामीतः याहाटक निरक्षणत অবস্থার উন্নতি করিতে পাবে, ভাছার কার্যাকরা পথা উদ্ভাবন, (২) পলীর অনশক্তিকে সমাজের ও থেশের কলাাণকর্শ্বে নিরে।জিড করা। উক্ত व्यक्तिके: रवद नायकवन इडेबारक निश्वनक भन्नो-श्राटिकान । याहि नखब ৰংগর পূর্বে এই স্থানটি পৃতিত অবস্থায় ছিল। পরে ১২৯৪ সালে চন্দ্রীবর গাবুর পিতা বিখ্যাত কবি তছবিদ জীবুক্ত বাণেবর সিংহ মহাশর এই बादमा क्रव कविदा अवारन इंग्रें ७ है। जित्र कादबाना प्राणन करतन । ১৩২২ সালে ভিনি এই ছান পরিত্যার করেন। তারপর প্রায় ২৮:২৯ बरम्ब हेश পরিভাক্ত ও अन्यानवम्ब व्यवस्त्र हिल। ১৩৫১ সালের **भ्यामार्थित कार्योश्वर वायू अभागकात अञ्चलकि भविकात कविना ठाव कार्यान.** ৰাস-পৃহ নিৰ্মাণ, ইউ পোড়ানেও, পুন্ধবিশী সংখ্যার ইত্যাদি কাজে হাত (एन। शबी-मित्र सम्मिका हें आहि विवरत लग्नीयत वांव्य श्रांत्र छ বাপিক অভিয়েতা আছে। ভিনি চুই বাবে সাত বংসর কাল স্বইডেনে ধাকিয়া সেধানকার লায়ডপছতি,—গৃহজাত শিল্পশিক্ষা বাহার এধান অঙ্গ -সম্বন্ধে প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতা অর্জন করেন। দেশে ফিরিয়া ডিনি মহাস্থা शःषीत मःभार्म जारमन अवः छ।हात्रहे निर्फटन स्मराश्रास 'नत्री छ।निय' ভৰনে প্ৰী-শিলাদি সংক্ৰাম্ভ গৰেষণামূলক কৰ্ম্মে বংগরাধিককাল বাাপুত बारकन । अवारन कांक कविवास ममन्न बाहारी विरनावा वारहत स्मीलिक পদ্মান্ত্রন-পদ্ধতি পর্বালোচনার ক্ষমেণ্ডও উচ্চার হয়।

বছদশিতা, প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতা এবং আয়বিধাস সম্বল করিয়া লক্ষ্মীয়বাবু পল্লীর পূন্দঠন ও পল্লী-শিল্পারমনের ছুল্লছ কার্ব্যে এটা ষ্ট্রাছেন। থাগমিক কাল হিদাবে তিনি পল্লীয় গৃহা'দর ছাউনি-সম্বল্গ নিরাক্ষরণার্থ টালি তৈরির কাকে হাত দিখাছেন এবং নেবারামের ধরনে, সিংছ্মছে এবং নিকটবন্ত্রী পল্লী অঞ্চলসমূহে 'চলঙ' পারধানা চালু করিবার প্রস্থান পাইতেছেন। এই পল্লীপ্রতিষ্ঠানের কার্যক্রম নিম্নলিখিতরূপঃ (২) প্রস্তিশীল আবর্ণ পল্লীগঠন, (২) বিজ্ঞানসম্বল্গ শিল্পশিক্ষানের ব্যবস্থা (৩) অভিজ্ঞতা ও গ্রেবরণার ভিন্তিতে উপবৃক্ষ সাহিত্য ছচনা ও প্রচার, (৪) গ্রেবরণাথারা পল্লীবারীক্ষের জীবনে সম্ভ্লতা ও ক্বব-

সমৃদ্ধি আনমনকাৰী শিলসমূহের মান স্থিনীকরণ। এই পলী-টরনে কার্যাকে সাংকাষভিত করিয়া তুলিতে হইলে এচুর অর্থের এছোলন। টা কাকড়ি নিম্নলিখিত টকানার এেরিতবা—

> শ্বীলন্মীনঃ সিংছ সিংহগড় পোঃ—রাঢ়িশাল ( জিলা শ্বীহট )

ডক্টর প্রবোধ চট্টোপাধ্যায়, এম-এ, পিএইচ-ডি

ষেজর অবেধাধ্বর চট্টোপাধাার, এম এ, পিএইচ ডি, বিগত ১৮ই ফেব্রুরারী ভারিখে মাত্র ৩৪ বংসর ব্যবস পরলোকগমন করিরাছেন। ভিনি Industrial Psychology (বাণিজা-পিল্ল-বিষয়ক মনগুড়া) সম্বায়ে গবেষণা করিয়া ডক্টারট ডিগ্রি লাভ করিয়াছিলেন। অন্তাংগর্ড

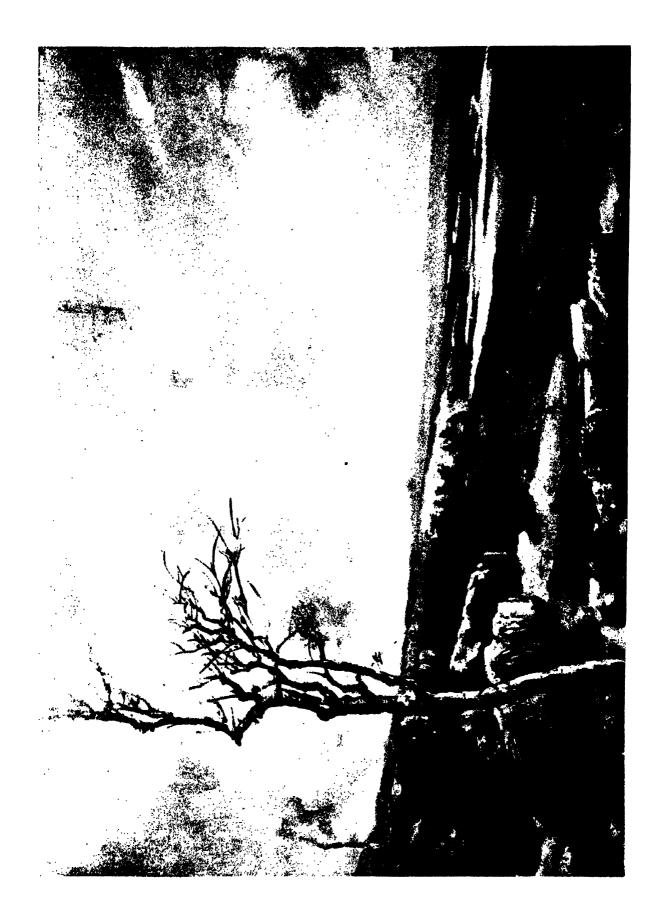


व्यत्नाव क्रिशावाच

বিষবিভালরের বাংলা পুত্তক নির্কাচনের ভার ভাঁহার উপর ছিল। ভাঁহারই প্রযত্নে অন্তঃকার্ড বিববিভালরে বাংলা ভাষার পাঠারুপে শরংচন্দ্রের পুত্তক নির্কাচিত হয়।

#### নিৰ্মলচন্দ্ৰ সিংহ

স্প্রতি বিহার মেডিফ্যাল সাভিসের নির্মাচন্ত্র সিংহ,
এম-বি, ডি, এম, আর, ই, মহাশন্ত পরলোকগমন করিয়াছেন।
তিনি মকাকরপুরে সিভিল সার্জনের পদে নির্ক্ত ছিলেন।
আম-চিকিংসা (Surgery) ও ভেষকবিভা (Medicine)
এই উভর বিষয়েই উচ্চার বিশেষ দক্ষতা ছিল। উচ্চার
কর্তব্যনিষ্ঠার কল্প তিনি সকলেরই শ্রহাভাক্তম ছিলেন।











"সভাষ্ শিবষ্ সুক্ষর্ ৰাষ্যাত্মা বলহীৰেন লভঃ"

১ম **মহ** ৪৭শ ভাগ

## **ৈজ্য**ন্ত, ১৩৫৪

২শ্ব সংখ্যা

#### বিবিধ প্রসঙ্গ

#### জ্যু-পরাজ্যু

'প্রবাদী'র এই সংখ্যা অত্যন্ত দেরিতে প্রকাশিত হইল।
ইহা আরও এক সন্ধাহ পূর্বে প্রকাশিত হইতে পারিত, কিন্ধ
বড়লাটের ও বিটিশ সরকারের খোষণা আসরপ্রায় দেবিয়া
আমরা তাখার প্রতীক্ষার আরও অন্ন দেরি করিলাম, কেন্দা
পরের সংখ্যায় এ বিধয়ে সিবিতে হইলে অনেক দেবিতে
সে বিষয়ের প্নরবতারণা হইত। বর্তমান দাশাখামার
অবশ্বার কারণে ও এই ব্যাপারে আ্যাদের যে দেবি হইল,
আশা করি আমাদের পাঠকবর্গ ফেট লইবেন না।

বঙ্গাটের ও ব্রিটিশ সরকারের খোষণা এবন সর্বজনবিনিত। এই খোষণায় অবিমিএ শোক বা আনন্দ, কোনটারই
কারণ নাই। অবও ভারত, অবও বাংলা ও অবও
পঞ্জাব ইং কাতীয়জাবাদী মাত্রেরই কারা। ভারত বিভাগ
হইল কাহার দোনে পে বিসরে আলোচনা করা এখন বৃধা।
বিদেশীর চকান্তে ভূলিয়া ভাই ভাইয়ের সঙ্গেষে কলহ
ধার্যিয়াছে তাহার ফলে দেশ এখন কর্ত্তরিত, এমন কি
বাধীনভার দিনও পিছাইয়া ঘাইবার উপক্রম করিয়াছে—এমত
অবস্থায় এই ঘোষণা আসিল। আর সামান্ত কয় দিনের মরোই
ইং। প্রির হুইয়া ঘাইবে যে ভারতবর্ষ খনিত হুইবে না অবভিত
থাকিবে। ভারতবর্ষ খনিত হুইলে বাংলা ও পঞ্জাবের
বিভাগ প্রায় অবগ্রহাবী। যদি এই ছুই প্রেদেশের সংখ্যাগরিষ্ঠ
সম্প্রদায়ের মনে সুবৃদ্ধির উদয় হয় তবে হয়ত দেশ ও প্রন্ধেশ
বিভাগ না হুইতেও পারে, তবে দে আশা অতি ক্ষীণ।

দেশের ও প্রধেশের বিভাগে নিদারণ মনঃকট অহতব করিবে না এমন কোন কাজীরভাবাদী আছে ? ভারতের উজ্লে পৌরবমর ভবিষাকালের কলনা কাহার মনে উদিত হয় নাই ? দেশ বিভাগে ও প্রদেশ বিভাগে দেশের কনসাবারণের,—বিশেষতঃ বিভক্ত প্রদেশগুলির কনসাবারণর—হংবকট লাখবের দিন শিলাইরা বাইবে ইহা চিভাশীল বাক্তি মাত্রেই বুলিবেন। এই বিভাগের কার্বে লে হংবকটের সামরিক বুলির আশকাও রহিরাছে যথেট। বিভাগ হইরা গেলে অনেক বাধীনভাকামী বার্বভাগি বোহার মনস্কারনা প্রবের দিন শিলাইরা বাইবে

ইহাও সভা। সুভৱাং হু:বের কারণ রহিরাহে অক্স। কিন্ত উপায় কি যথন ব্রের ভাই বার্থান্ত প্রবৃদ্ধ হওয়ার কলে গৃহ विवाम कारबंदे वाकिया हिमाला बार विदास दिन श्रह विवास मन অনলে ট্ৰন যোগাইয়া ভাষাকে সাৱা দেশে ছড়াইয়া দিবার চেষ্টা করিতেছে। বিগত দশ বংগরে এ দেশ যেকণ অবস্থার ভিতর দিয়া যে পথে চলিতেছিল, ভাহাতে ভারভের ভবিশ্বং ক্ৰয়েই মেখাচ্ছর ছইয়া পড়িতেছিল। সে পৰে আৰ কিছু দিন চলিলে দেশে রাষ্ট্রবিপ্লব নিশ্চিত আদিত, কেননা "ভৃতীয় পক্ষ" তাহার জন্তই চেষ্টা করিতেছিল এবং দীগ ঘল তাহা-(भवरे की एमक प्रशिकां बार्ण कार्या निक कविट जिला। देश নিশ্চিত যে যত দিন ইংরেক শাসকের ছাতে দেশ-প্রদেশের কলকাঠি নাভিবার ক্মতা থাকিত ভতদিন এ খেলে কাতীয়তা-বাদের বিক্রছে পাগকসম্প্রদায়ের সমস্ত শক্তি অভি অভার এবং কুংসিত ভাবে প্ৰয়ক্ত হুইত। কোৰাও---বেমন সীমাও প্ৰদেশে --- भवर्वद अवर भिक्रिकाम छिभाव्यके अवस श्राप्तान वर्ष इहे ছুৱাচার্দিলের প্রধান সহায়ক হইত, কোণাও বা পঞ্চাবের মত অভ্যাচারীদের দমন না করিয়া অভ্যাচারিতদের দমন চালাইতে গবৰর ও ইংরেজ ম্যাজিপ্তেট উৎস্ক বাকিত, অবৰা কোৰাও, বাংলাদেশের মত, অকর্মণা গ্রণর রাষ্ট্রপ্রতির भाषांट पित्रा हवाठात यद्वीयक्षो **७ है**९लाइक मानटकत एटड দেশ ছাভিয়া নিজের উদরপৃষ্টি এবং ভবিশ্বং সক্তির চেটায় বাস্ত পাকিত।

এইরপ অবহার এই বিভাগ অন্ততঃ পক্ষে দেশের উন্নতির তুইট প্রধান অন্তরায় চুর করার পথ গোলা করিরা আলিরাছে। ইংরেক্স শাসক ভারতের তিন-চতুর্বাংশ হইতে বিগার লইতে বাধ্য হইবে এবং সীগ অবিকৃত দেশেও তাহাদের ক্ষমতা সীমাবদ হইরা থাকিবে! বিতীরত, যে সকল অঞ্চলে ভারতের লাতীরতাবাদের বারার মুখে জমেই ক্ষাদের বাঁব ক্ষমিয়া যাইতেছিল সেই সকল দেশের হুই হুলে বারার মুখন মুখ কাটরা পরিভার করার পথ পাওয়া যাইবে। আশা আছে বাধীনতা-আলোকের প্রভাবে সেই হুই মুখ জনে ক্ষমে প্রশন্ত করিবার উপার দেখা যাইবে। বাঙালী এত বিন অভ্যন্তরের মধ্যে চলিবার পর অভ্যঃ এক বিকে আলো দেখিতে পাইবে এবং সেই অলোভে ব্যাহুরের বিভীষিকার ভীষণ অভ্যার

হইতে আংশিকভাবে পরিজাণ লাভ করিয়া পূর্ণ বাভরোর আবাদ পাইবে। এত দিন সকল বাঙালীই নিজের পরিজাণ চেষ্টার কুল পাইতেছিল না। অদূর ভবিগ্যতে অস্ততঃ পক্ষে এক অংশ শাভিতে শক্তি সক্ষর করিয়া অন্য ভাইবোনের কথা ভাবিবার অবদর পাইবে। বাঙালী বার্থপর, অদূরদর্শী এবং পর প্রকাতর এবং, অন্ন পরাধীন ভাতির ভাষ, নিজের উরতির চেষ্টার ব্যর্থমনোরথ হওয়ার পরের অনিষ্টের চেষ্টার সদা ভারতে এই অপবাদ আছে। খাবীনভার অন্যতমর স্পর্শে সকল কন্ম বিদ্রিত হইরা আতি ন্তুন জীবন পাক করিবে ইহাই আনাদের আপার কথা।

বস্ততপক্ষে এই নৃত্য বোষণায় কাছারও লাভ যোল আমা ছইল না। লীগ যে পাকিস্থান পাইবে আশা করিয়াছিল, বোষণা অনুসারে ভাছার সংক্ষিপ্ত অংশ মাত্র ভাছার পাইতে পারে। ইছাতে লীগণলের লাভ এইটুরু মাত্র ছইবে যে, অবও ভারত বঙিত ছওয়ায় সমস্ত দেশের অপকার ছইবে। লীগবিজি ভারত লাভি পাইল, উন্নতির পব পাইল কস্তিদামর্থ্য বর্ষ হওয়ার মুল্যে, এবং ভবিষ্যতে ছুই অংশেরই বিপদের সন্তাবনা রছিয়া গেল। ইংরেজের ক্ষতি ছইল এইজভ যে বাংলা, গঞ্জাব, নিজু প্রদেশ ও সীমান্ত প্রদেশে ইংরেজ শালক ও শোষকবর্গের ক্যতিকলাপ ভারতবাসীর মনে যত দিন বাছিবে তত দিন এ দেশবাসী ভালমদেইংরেজের সলে কারবার ক্রিতে পারিবে না।

কিন্ত দোষণ্ডণ যাহাই হউক এখন আনাণের এই খোষণা অধ্যারী কর্মণায় অধ্যার হইতেই হইবে। সাধীনতার দিন আবো শিহাইয়া দেওৱা কোনমতেই চলে না। আনাদের মধ্যে বাহারা এই পূর্ব সাধীনতা হইতে বঞ্চিত ইইলেম উাহাদেরও শরিক্ষাণের দিন তত শীম্র আসিবে যত শীম্র আমরঃ স্বাধীনতা ও সাতপ্রোর পথে অগ্রসর হইয়। বল সঞ্চর করিতে পারিব। দাসত্ব ও ক্লীব্য হইতে মুক্তির এক্যাত্র শব্দ সাতপ্রোর সে যতই ছক্কহ বা ছংগকর হউক।

এবন আমাদের সভাগ থাকিতে হইবে যাহাতে কুলে আসিরা বিখাসবাতকের চফান্তে তরাড়বি না হয়। বোষণার ৭ বারার সেই তর ববেট আছে। দেশবাসীর পক্ষে নিজেদের প্রতিনিবিবর্গের উপর তীক্ষ দৃষ্টি রাধা নিতাছই প্রযোজন।

ব্রিটিশ সরকারের ঘোষণার পূর্ণ বিববরণ

ভারতীরদের হতে ক্ষতা হতাতর তথা ভারতের রাজ-নৈতিক সম্ভার সমাধানকলে বিচ্চীপ সরকার গত তরা তুন অপরাছে: যে পরিকল্পনা প্রচার করিয়াছেন, নিয়ে ভাষা প্রকাশিত হইল:—

১। গভ ২০শে কেব্রারী (১১৪৭) বিটশ গবর্ষে ক বোষণা করেন যে, ১৯৪৮ সালের জুন মাসের মধ্যে ভারভীর-বের হাভে ফুটশ ভারভের শাসনভার ভূলিরা থিবেন। ১৯৪৬ সালের ১৬ই বে নথী (কেবিনেট) বিশম বে পরিকল্পনা প্রথভ ক্ষান্ত ভারভীন প্রধান বাক্তিক্সিক্স সম্প্রভাবন স্থান্ত ভাষা কার্যকরী করা যাইবে এবং ভারতবর্ষের বছ একট সর্বব্যক্ষাপ্রায় শাসনভন্ন গঠন করা সন্তব্পর হইবে, এরপ আশা বুটশ গবরে টি করিয়াছিলেন। ভাষাদের সে আশা পূর্ণ হয় নাই।

২। মাঞ্জাৰ, বোগাই, মুক্তপ্ৰদেশ, বিহার, মৰাপ্রধেশ ও বেরার, আসাম, উভিগ্না, উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত প্রদেশের অবিকাংশ প্রতিনিধি এবং দিল্লী, আক্ষীর-মান্তবার ও কুর্গের প্রতিনিধিরক ইতিমধ্যেই একট সূত্য শাসনভন্ত গঠনের কার্থে কিছুটা অঞ্জসর হইরাছেন। অপরপক্ষে বাংলা, পঞ্জার সিল্প্ প্রদেশের অবিকাংশ প্রতিনিধি এবং বৃট্টশ বেশ্রিখানের প্রতিনিধিসহ মুস্লিম সীগ দল গণ-পরিখদে যোগ না দিবার সিল্লিভ করিছাছেন।

৩। ভারতীয় জনগণের অভিপ্রায় অধ্যায়ী ক্ষমতা হস্তাম্বর क्याहे दृष्टिम भवत्य क्वित हेका । खादणीय दाकरेनिक सम-সমুহ একমত হইতে পারিলে এই কারু অনেক সহল হইতে পারিত। ঐক্যের অভাবে ভারতীয় ভ্রমাধারণের ইচ্ছা ষাহাতে জানা যাইতে পারে, দে উপায় নির্বারণের ভার রটন প্ৰৰেতিক উপৰেই পঞ্চিয়াছে। সেই উদ্বেক্ত ভাৱতায় নেত-রন্ধের সঙ্গে বিশেষ আলোচনা ও পরামর্শ করিয়া রটিশ গৰবেণ্ট নিম্নলিবিত পরিকল্পনাটি অনুসরণ করিতে মন্ত कविशाबिरमम्। अक्षा दृष्टम भवत्व के म्लहेकरण कानादका প্রাথিতেছেন যে, ভারতবর্ষের চরম শাসমতঃ গঠন সম্পর্কে কোনও ব্যবস্থা ক্রিবার অভিপ্রায় তাঁহাখের নাই; ভারতীয়ের: নিজেরাই ভাষা করিবেন। এই পরিকল্পনায় এমন কিছুই নাই যাহাছারা ভারতকে অবিভক্ত রাখিবার ৰঙ বিভিন্ন अन्त्रभारश्च मत्या जामाश-जात्माहनांत शव वह एहेएछ आर्थ । ভারতীয় বিভিন্ন সম্প্রদায়ের মধ্যে আলোচনা ধারা ঐক্য স্থাপন এবং ভারতবর্ষকে অবিভক্ত রাধার পদও এই পরিকল্পনাতে (बानाई जाबा इहेन।

৪। বর্তমান গণ-পরিখদের কার্যে বাবা দেওয়ার কোন ইক্সা ব্রিটিশ গবরে ক্টের নাই। ব্রিটশ গবরে ক্টের বিখাস, নিয়ের রিশিত কয়েকট প্রদেশ সম্পর্কে যথন বিশেষ ব্যবহা করা-হইতেছে, তথন এই বোষণার পরে যে সকল প্রদেশের অবিকাংশ প্রতিনিধি বর্তমান গণ-পরিখদে ইতিমধ্যেই বোগদান করিয়াছেন সেই সকল প্রদেশের মুগলিম লীগ প্রতিনিধিরাও উহাতে বোগ দিয়া উহার কান্ধে যথায়থ অংশ প্রহণ করিবেন। সেই সম্পেই যে, এই গণ-পরিষদকর্তৃক রচিত কোন শাসনতন্ত্র দেশের যে সকল অংশ প্রহণ করিতে অনিচ্ছুক ভাহাদের প্রতি প্রযুক্ত হুইতে পারে না।

ঐ সকল অঞ্চের জনসাবারণ তাহাদের লাগনতম্ব (ক)
বর্তমান গণ-পরিষদ কর্তৃক রচনা করিবার পঞ্চপাতী কিছা
(ব) বর্তমান গণ-পরিষদে যোগদানে অনিজ্ঞুক অঞ্চলগুলির

মারকতে তাঁহাদের শাসন্তর প্রণায়ন করিতে চাহেন, তাহা নির্বারণের সর্বাপেকা কার্যকরী উপার হইল নিয়ে বর্ণিত পদাট, এ বিষয়ে বৃটন স্বত্রেন্ট সম্পূর্ণ নিঃসংশর।

এই বিষয়ট দ্বির হইছা গেলে পরে কোন এক কিছা একাবিক কর্তৃপক্ষের হাতে ক্ষমতা হতাছর করা হইবে, তাহা দ্বির করা সম্ভব হইবে।

৫। বাংলা ও পঞ্চাবের প্রাদেশিক আইন পরিষদকে (ইউরোপীর্ম সদস্তদের বাদ দিরা) হুই ভাগে বিভক্ত হুইয়া অবিবেশন করিতে বলা হুইবে; এক অংশে থাকিবে মুসলমান সংখ্যাগরিষ্ঠ কেলাগুলির প্রভিনিবিগণ, অল অংশে থাকিবে প্রদেশের অবশিষ্ট অংশের প্রভিনিবিগণ। কেলাগ্র লোকসংখ্যা নির্বাগ্রবেশ্ব কল ১৯৪১ সালের আদমস্মারিকেই প্রামাণ্য বলিরা বরা হুইবে।

এই খোষণার পরিশিষ্টে থাংলা ও পঞ্চাবের মুসলমান-প্রধান কোগুলির উল্লেখ করা হইয়াছে।

৬। প্রমেশ বিভক্ত হইবে কিনা সে সথকে মতামত দিবার ক্ষতা উভয় প্রদেশের ব্যবস্থা-পরিষ্ণের প্রকৃতাবে মিলিত প্রতিনিধিদের দেওয়া হইবে।

বিভক্ত ব্যবস্থা-পরিষ্টের কোন একটি অংশ সাধারণ ভোটাধিক্যে প্রদেশ বিভাগের অন্তর্গুলে মত প্রকাশ করিলেই প্রদেশ বিভক্ত হুইবে এবং সেই অনুষায়ী ব্যবস্থাদি অবলম্বন করা হুইবে।

৭। পরিণামে যদি প্রদেশ অবিভক্ত রাধার সিখাছই গৃহীত
হয়, তবে ঐ অবিভক্ত প্রদেশ কোন্ গণ-পরিষদের অন্তর্ভূ
হউবে তাহা প্রদেশ বিভক্ত হওরার পূর্বে প্রাদেশিক আইন
সভার মুন্গমান-গণান ও অলাভ জেলার প্রতিনিবিদের জানা
দরকার। স্তরাং উভর আইন-পরিষদের কোনও প্রতিনিধি
যদি দাবি করেন, তাহা হইলে ইউরোশীর সদভ্যণ বাদে
আইন সভার সমুদ্ধ সদভকে লইয়া এক পূর্ব অধিবেশন
বসিবে এবং দেখানে ভোটের হারা ছির হইবে প্রদেশ অবিভক্ত
রাধার সিখাছ গৃহীত হইলে সম্প্র প্রদেশট কোন্ গণ-পরিষদে
বোগদান করিবে।

৮। প্রদেশ বিভাগের সিদার গৃহীত হইলে প্রদেশের নিক নিক অংশের প্রতিমিধিগণ হির করিবেন, উপরে লিখিত ৪ব অপুজেদে ববিত (ক) ও (ব) এই ব্যবস্থার মধ্যে কোন্ট ভাঁহারা প্রহণ করিবেন।

১। প্রদেশ বিভাগ সম্বাচ্চ সিদান্ত করার স্থানিবার অভ বাংলা ও পঞ্চাবের আইন সভার সম্ভাগন নুসলমান-প্রধান (পরিলিট্টে বাছা বর্ণনা করা ছইরাছে) ও অবলিট্ট জেলার প্রতিনিধি হিসাবে মভরভাবে আইন সভার বসিবেন। ইহা প্রাথমিক ব্যবহা এবং নিছক সামরিক ব্যবহা মার। উভয় প্রদেশকে পাকাপাকি বিভাগ করিতে গেলে ভৌগোলিক সীমা মির্বারণের কাকে অনেক বুঁটনাট বিচারের প্রয়োজন হইবে। প্রমেশ হুইটর বে কোন একটি বিভাগের সিঙাত গৃহীত হুইলেই
নাননীয় বছলাট একটি নীনা-নিধারক ক্ষিশন বুসাইবেন।
এই ক্ষিশনের বিচার্য বিষর্গুলি এবং সদত নির্বাচীন প্রভৃতি
সংশ্লিট পক্ষসমূহের সহিত পরামর্শ করিলা ছির করা হুইবে।
এই ক্ষিশমকে পঞ্চাবের ছুইটি অংশের সীমানা নির্দেশ
ক্ষিতে হুইবে, বাহাতে যে সকল অঞ্চল অনসংখ্যার মুসলমানপ্রধান ও গারে গারে আছে সেগুলি এক অংশে এবং
অমুসলমান প্রধান ও গারে গারে সংযুক্ত অঞ্চলগুলি অভ অংশে
পতে। ইহা হাড়া অভাত বিষয় সহছে বিবেচনা করিতেও
ক্ষিশমকে নির্দেশ দেওরা হুইবে। "বাংলার সীনা নির্দারণ
সম্পর্কেও সীম: নির্দারক ক্ষিশমকে অভ্যুক্ত না হুওরা পর্যন্ত সক্ষতি
যেরণ (পরিশিত্তে উরিবিত) ভৌগোলিক সীমা নির্দেশ করা
হুইবাছে, তাহাই মানিয়া চলা হুইবে।

সিদ্ধ প্রাদেশিক বাবছা-পরিষদের সদস্তগণ (ইউরোশীয় সদস্তগণ বাদে) এক বিশেষ বৈঠক করিয়া পূর্বোদ্ধিভি ৪বং অহুছেদের (ক) ও (ব) বিকল্প প্রভাব ছুইট সম্পর্কে ভাষাদের সিদ্ধান্ধ প্রহণ করিবেন:

১১। উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত প্রদেশের অবস্থা হতন্ত বরপের।
এই প্রদেশের নির্বাচিত তিন কম প্রতিনিধির মধ্যে ছই কমই
বর্তমান গণ-পরিষদে যোগদান করিবাছেন। কিছ এই
প্রদেশের ভৌগোলিক অবস্থান ও অভাভ বিষয় বিচার করিবা
দেবিলে ইছা স্পাইট বুবা ষাইবে যে, সমস্ত পঞ্জাব কিছা
পঞ্জাবের কোনও অংশ যদি বর্তমান গণপরিষদে যোগদানে
অনিচ্ছুক হব তাহা হইপে উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত প্রদেশকে আর
কবার পুনবিবেচনার প্রযোগ দেওয়া প্রযোজন। সেই
অথ্যায়ী অবাৎ পঞ্জাব কিছা পঞ্জাবের অংশবিশেষ বর্তমান
গণ-পরিষদে যোগ না দিলে পুর্বোলিবিত এবং অভ্চেদে বর্ণিত
বিকল প্রভাব হুটট সম্বন্ধে উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত প্রদেশের
বর্তমান আইন সভার নির্বাচনে ভোটদাভানের মতামত
আনিবার ব্যবস্থা করা হইবে। প্রাদেশিক গ্রন্থটের
সহিত পরামর্শক্রমে মাননীর বছলাটের ফর্ড্রাইনে এই গণভোট গ্রহণের ব্যবস্থা করা হুইবে।

১২। বর্ত সাম গণ-পরিষদে বৃষ্টশ বেপ্টিয়ানের নিবাঁচিত প্রতিনিধি এক জন থাকিলেও তিনি উহাতে যোগ দেন নাই। ভৌগোলিক অবছান বিবেচনা করিয়া এই প্রদেশকেও তাহায় অবছা পুনবিবেচনা এবং পুর্বোদ্ধিতি চনং অম্প্রেলের বিকল্প প্রভাব সহতে গিছাভ এছণের মুবোগ দেওয়া বাইবে। কি উপায়ে ইছা সর্বাগেক্ট মুকুভাবে সম্পন্ন হইতে পারে তাহায়াননীয় বড়লাট বিবেচনা করিয়া দেখিতেছেন।

১৩। আসাম বহুসরপে অ-মুস্পমান প্রবাম প্রচ্ছেল ছইলেও ইখার অন্তর্গত বাংলা দেশের সংলগ্ন গ্রীষ্ট জেলাটতে মুস্লবামেরা সংখ্যার বেনী। বাংলাদেশ বিভক্ত হুইলে গ্রীষ্টকে বাংলার মুস্লিম অংশের সহিত মুক্ত করিতে হইবে বলিরা দাবি উটিয়াছে। সুতরাং বাংলা বিভাগের লিরাভ গৃহীত হইলে প্রীহট জেলাট আসামের পহিতই থাকিয়া মাইবে অথবা নবগঠিত পূর্বক প্রদেশের সম্বতিজ্ঞানে ঐ প্রদেশের সহিত সংমুক্ত হইবে এ বিষয়ে শ্রীহটের জনসাবারণের মতামত গ্রহণের ব্যবস্থা করা হইবে। প্রাদেশিক গবর্ণমেন্টের সহিত পরামর্শক্রমে বভুলাটের কর্জ্যানীনে ইহা করা হইবে। জনমত যদি শ্রীহটকে পূর্বক প্রদেশের সহিত মুক্ত করার অস্ত্রক দেবা যায় তাহা হইলে পঞ্জাব ও বাংলার সীমানির্যারণের জন্ত নিযুক্ত ক্রিমানের লার শ্রীহট জেলার মুসলমান-প্রধান অঞ্চল ও উহার সংলগ্র মুসলমান সংব্যাগরিঠ অলাভ অঞ্চল সীমা নির্যারণের জন্ত ক্রিমান নিযুক্ত করা হইবে। তাহার পর ঐ অঞ্চলওলিকে আসাম প্রদেশ হইতে বিদ্ধির করিয়া পূর্ববন্ধের সহিত মুক্ত করা হইবে।

সকল অবস্থাতেই আসামের অবশিষ্ট অংশ বর্ত নানে গণ-শরিষদের কাজে যেরূপ যোগ দিতেছেন দেরূপেই যোগ দিতে বাকিবেন।

১৪। বাংলা ও পঞ্চাব বিভাগের ব্যবস্থাই যদি সাব্যস্ত इब. जाक् इटेटन मञ्जी मिन्यत्मत ३७६ (म (১৯৪৬) পরিকল্পার নীতি অমুবায়ী বিভক্ত অংশের জনসংখ্যার প্রতি দশ লক্ষের জ্ঞ এক জন করিয়া প্রভিনিবি পুনরায় নির্বাচন করিতে খইবে : শ্ৰীংট জেলাকে পূৰ্ববলের অন্তর্ভু করার সিদ্ধান্ত গুণীত হইলে (मर्गाम्थ **चमुक्रमणा**त श्रीकिमिबि भिर्वाहन कतिए हरेत्य। এলাকা হিলাবে নিম্নলিবিত হারে প্রতিনিবি নির্বাচন হইবে---भिव श्राप সাধারণ ৰুসলমান শ্ৰীখট জেলা ą ١ পশ্চিম বঙ্গ 75 পূৰ্ববদ 38 २३ 83 পশ্চিম পঞ্চাব 25 ą. 39 नर्व नक्षाव 75

- ১৫। বিভিন্ন এলাকার প্রতিনিবিগণ প্রাপ্ত নির্দেশ অস্সারে হয় বর্জমানের গণ-পরিষদে যোগদান করিবেন অথবা গুণকভাবে সূত্র গণ-পরিষদ গঠন করিবেন।
- ১৬। বিভক্তকরণ ধির হইলে যথাসন্তব সম্বর বিভক্ত অংশগুলির শাসন পরিচালনা সম্পর্কে নিঃলিবিভ পক্ষপুলির মধ্যে আলাপ-আলোচনা সুরু করা দরকার হইবে:—
- ক। দেশয়কা, অৰ্ব, চলাচল ও কেন্দ্ৰীয় গৰ্মে তেঁয় পরিচালিভ অভাভ বিষয়ে কেন্দ্ৰীয় সৰকারের উভৱাবিকারী বিভিন্ন শাসম কর্তৃপক্ষের প্রতিমিধিদের মধ্যে;
- ব। ক্ষমতা হভাতর সম্পর্কিত বিষয়গুলি সমতে চ্ক্তির ক্ষ কেন্দ্রীয় সরকারের উত্তরাধিকারী বিভিন্ন শাসনকর্তৃপক্ষ ও বৃষ্টিশ প্রব্যে ক্ষিয় রব্যে ;
  - न। य श्रारमधनि विषक्त एरेव मधनित विनात

প্রাদেশিক কর্তৃথাধীন বিষয়গুলি যথা দেনাপাওনার অংশ বিভাগ, পুলিল, হাইকোর্ট, প্রাদেশিক প্রভিষ্ঠান প্রভৃতির পরি-চালনা ইত্যাদি সম্পূর্কে আলাপ-আলোচনা করিতে হইবে।

১৭। উত্তর-পশ্চিম সীমান্তের উপজাতিদের সহিত কোন প্রকার চুক্তি সম্পর্কে বর্তমান কেন্দ্রীয় সরকারের উত্তরাধিকারী ধর্বাযোগ্য শাসনকর্তৃপক্ষের মারফত্তে জালাপ-জালোচনা করিতে হউবে।

১৮। বিটিশ গবর্থেন্টি প্রতি ক্ষিয়া কানাইয়া দিতেছেন যে, উপরোক্ত সিধান্তপুলি শুরু বিটিশ কারত সম্পর্কেই প্রযোক্য। দেশীয় রাজ্যগুলির সম্বন্ধে ১৯৪৬ সালের ১২ই মে তারিশের মনী মিশনের খারকলিপিতে যে নীতি নির্দেশ করা হইয়াছে ভাহার কোনও ব্যক্তিক্স হইবে না।

১৯ ! ষাহাতে পরবর্তী শাসন কর্তৃপক্ষেরা ক্ষমতা প্রহণের ক্ষ থবেষ্ট সময় পাইতে পারেন, সেজ্য উপরোক্ত ব্যবহা-সমূহ থবাসন্তব সহর কার্থে পরিগত করা প্রযোজন । সময় সংক্ষেপ করিবার ক্ষল এই পরিকল্পনার সর্ত্তপমূহের বাতায় না করিয়া বিভিন্ন প্রদেশ বা উহাদের বিভক্ত ক্ষণেশ্বলি ঘর্ষাসন্তব পাবীনভাবে এই পরিকল্পনার কাল স্থান করিছে পারিবে। বর্তমান গণ-পরিষদ এবং দ্তান গণপরিষ্ণও ( যদি গঠিত হয় ) নিজ নিক এলাকার ক্য শাসনভাব প্রচনা করিছে পারিবেন। নিক্ষেন্ত ক্য নিয়মকাছ্ন প্রণয়নের অধিকারও ভালাবের বাকিবে।

२०। ध्वरान ध्वरान द्वाकर्तनिक्य प्रमाश्रीम स्विनाय ভারতে ক্যতা হতাভ্তরের দাবি বারংবার অত্যন্ত কোরের সঙ্গে জানাইয়াছেন। এই দাবির প্রতি বিটিশ প্রথেতিই পূর্ব সহামুভুতি আছে ৷ তাহার! আগামী ১৯৪৮ সালের জুন মালে অথবা সম্ভব ছইলে তাছার আরও পূর্বেই ভারতবর্ষে এক বা একাৰিক বাৰীন ৱাষ্ট্ৰ পঠন কৱিয়া শাসনক্ষমতা হভান্তর করিয়া দিতে ইচ্ছুক আছেন। তদস্থায়ী ধবাস্তব সত্তর ক্ষমত! হতাছারের সর্বাপেকা ক্রত এবং প্রকৃতপক্ষে একমাত্র কার্যকরী উপায় হিসাবে তাঁছারা এক বা একারিক কর্তৃ পক্ষের হাতে ( এই যোষণার পর ভারতীয় নেতৃবর্গ যেরূপ -প্রির করিবেন ) প্রপনিবেশিক স্বায়ন্ত শাগনাবিকারের ভিত্তিতে क्रमण श्कासदात कमा हमांच वरभदाहे बाहेम बहुमांद शाखाव করিরাছেন। ভারতের কোন খংশ বিট্রীশ কমনওয়েলধের **শুভূতি** রহিবে কি না ভাহা হির করিবার যে **শ**ধিকার সেই অংশের গণ-পরিষদের আছে এই আইনের ধারা তাহা কুর क्ट्रेंट ना ।

২১। উপরোক্ত ব্যবস্থা কার্যকরী করিবার কর অধবা অরুদায় বিষয় সম্পর্কে মহামান্য বছগাট প্রয়োক্ষনমত মাবে মাবে এইক্রপ ঘোষণা প্রচায় করিবেন।

১৯৪১ সালের আত্মক্ষারী অস্সারে বাংগা ও পঞ্চাব প্রবেশের মুসলমান-প্রধান জেলাওলির নাম ঃ—

#### পঞ্চাব

লাংকার বিকাপ :--- শুক্রানগুরালা, গুরুদাসপুর, লাংহার, শেশপুরা ও শিয়ালকোট।

ে রাওয়ালপিণ্ডি বিভাগ: এটক, গুজহাট ও বেলায়, মিয়ানওয়ালি, রাওয়ালপিণ্ডি ও শাহ পুর।

মুলতান বিভাগ:—ডেরাগালিখান, ঝাং, লারালগুর, নউগোমারি, মুলতান ও হলফেরগড়।

#### বাংগা

চট্ট থাম বিভাগ :--- চট্থাম, নোয়াখালি ও জিপুৱা।

চাকা বিভাগ :-- বাধ্রগঞ্জ, ঢাকা, ফরিদগুর, ও মর্মন্সিংহ।

প্রেসিডেলি বিভাগ :--- বগুলাহর, মূশিদাবাদ ও নদীয়া।

রাজ্যাহী বিভাগ :--- বগুলা, দিনাজ্পুর, মালদহ, পাবনা,
রাজ্যাহী ও রংপুর।

বভলাট মাউণ্টবাটেনের বেতার লোমণা

লিটিশ গবর্ষেণ্টি-কর্তৃক জারতীয়দের হাতে ক্ষমতা অর্থা-পদ্ধতির চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত সম্পর্কে একটি বিবৃতি আন্ধ আপনাধের কাছে পদ্ধিয়া গুনান ক্টবে। কিন্তু ভাষার আগে ভারতীয় জনসাধারণের কাছে ব্যক্তিগভভাবে আন্নি কিছু বলিতে চাই। ভারতীয় রামনৈতিক নেতাদের সহিত আমার যে সকল আলোচনা হইয়াছে এবং যাহার কলে আন্নি সম্প্রতি লওনে নিয়া বিটিশ গবরেন্টিকে পরামর্শ দিয়াছি ভাষারও একটু সংক্ষিপ্ত বিবরণ হিতে চাই।

গত মাঠ মাদের শেষে এদেশে অভিয়া পৌছিবার পর আমি প্রায় প্রত্যুহই নানা সম্প্রদায় ও দুজের ব্যল্পোক প্রতি-নিধির সহিত্য সাক্ষাং ও আলোচনা করিয়াছি: তাহারা আহাকে যে প্রকল তথ্য এবং প্রয়ন্দি দিয়া সাহায্য করিয়া-ছেন তাহার শ্বন্থ আমি বিশেষ সূত্রা।

পরশ্বের প্রতি উপযুক্ত পরিষাণে সঙ্গার সংকারে বিভিন্ন সংশ্রদায় যদি একট অবিভক্ত ভারতীয় সাই বজায় রাখিতেন তবে ভাছাই হুইত সমস্ভার সর্বোৎকৃষ্ট সমাবান—ইছাই আনার দৃচ্ বিশ্বাস। প্রত কর সপ্তাহে আমি যাখা কিছু দেখিয়াছি বা ভনিয়াছি ভাছাতে আমার এই বিশ্বাস কিছুমাত্র শিধিশ হয় নাই।

গত এক শত বংগরের অধিক আণনারা ৪০ কোটি লোক একসলে বসবাস করিতেছেন এবং ভারতবর্ব একটি গোটা দেশ ছিলাবেই শাসিত হুইতেছে! ইহার কলে এই দেশের বছ একই চলাচল বাবছা, একই দেশরক্ষা, ডাক ও মুদ্রানীতির ব্যবহার কাক চলিতেছে! ইহার কলে ইহার বিভিন্ন অঞ্চলের মধ্যে শুক্ত- ও বাধিকা-ঘটত কোন বাধার স্কট্ট হুর নাই; ইহার কলই একটি অবিচ্ছিত্র অবনৈতিক বাবহাও গড়িয়া উঠিয়াছে! সাম্প্রদায়িক কলহের কলে এই সমন্ত নাই হুইবা ঘাইবে না বলিরা আমার মনে প্রবল্প আশা ছিল!

(म**देवक वे जा**यांत क्षेत्रम क्षेत्रको विम मन्नी-विमस्मत ১৯৪৬

সালের ১৬ই মে ভারিবের প্রভাবট পুরাপুরিঃশে প্রহণের অফ রাজনৈতিক নেভাদের বিশেষভাবে অহুরোধ করা। ঐ প্রভাবটকে অধিকাংশ প্রদেশের প্রতিনিধিরাই মানিয়া সইয়ালেন এবং আমার মনে হয় ভারতবর্ণের সমুদর সম্প্রদারের সার্থের পক্ষে ইহা অপেক্ষা উৎকৃষ্টভর ব্যবহা আর কিছুই হইতে পারে না। অভ্যন্ত হংবের বিষয় যে, মন্ত্রী-মিশনের কিয়া ভারতের সামপ্রিক ঐকা রক্ষার অহুকৃতে অঞ্চ কোনও পরিক্রেন। সকলের নিকট গ্রহণযোগ্য হইল না। কিছা কোন একট রহণ অঞ্চল যেগানে এক সম্প্রদারের লোকেরা সংখ্যাস্থরিই, সে অঞ্চল ভারতির অধীনে বাস করিয়ে অক্স সম্প্রদারের প্রায়ভ বিশিষ্ট সব্যাধ্যের হা। বলপ্রহারে কান প্রতিত পারে হা। বলপ্রহারে বায় করিবার কোন প্রস্তুই উঠিতে পারে হা। বলপ্রহারের বায় করিবার কোন প্রস্তুই উঠিতে পারে হা। হইল অঞ্চল বিভক্তকরণ।

কিছ সুগলিম লাগ বৰণ ভাগত বিভালের দাবি ভূলিল ভখন কংগ্রেদের ভাফ ছইভেও ঠিক একই মুক্তির হারা কয়েকটি বিশেষ বিশেষ প্রদেশ বিভাগের হুছ দাবি উঠিল—আমার মতে এই মুক্তি কলক্ষনীয়। বস্তুতঃ কোন শক্ষই নিকেন্দের সম্প্রদায়ের সংখ্যাসরিই একটা রহুং অক্লকে জনা সম্প্রদায়ের গবর্ষে কের অধীনে রাখিতে সম্প্রভালন নাই। অবশা আমি নিক্তে ভারভ বিভাগেরও যেমন পক্ষপাজী নই, প্রদেশ বিভাগেও ভেমনি সম্বন করি না; বলা বাহুলা যে, উভয় কেরেই আশিন্তি করিবার কারণ এক।

সাপ্রদায়িক মত-বিরোধের উধের থেমন ভারতীয় মনোভাব ভাছে বলিয়া আমার ধারণা, তেমনি বালালী ও পঞ্চাবী মান-দিকতা দলিয়া একটা বস্তু আছে এবং ইছাই এনেলের এতি জনগণের আন্পতাবোধ জাগাইয়াছে। এই জ্বস্থায় জানার মনে হয় ভারতবাসীদের নিজেদেরই ভাগাভানি-সম্প্রিত সম্পার সমাধান করা উচ্ছিত।

ত্রিউশ পর্বেণ উ কাইক শাসনক্ষয়ত। এক বা একাৰিক গবর্তোন্টের হাতে দেওরা উচিত - সে প্রেক ওাহার: যাহাতে সহক সিহাতে উপনীত হইতে পারেন গোহার উপার এই বির্তিতে নির্দেশ করা হইরাছে। তাহা আপনাদিপ্রকে পড়িয়া শুদান হইবে। কিন্তু সে সম্পর্কে হই-একট বিষয়ে একটু বার্ণা করা প্রয়োক্ষ।

পঞ্জাব, বাংলা ও আংশিক ভাবে আসাথের পোকের মনোভাব জানিয়া সইবার জনা ঐ সকল প্রদেশের মূললমান-প্রধান অঞ্চল ও বাকী অংশের মব্যে সীমারেশা নির্ভাৱন করার প্রয়োজন ছিল। কিন্তু জামি পরিধার ভাবে জানাইতে চাই যে সীমা-নির্দারণ কমিশনই উভয় এলাকার মব্যে চুড়ান্ডভাবে সীমা নির্দেশ করিয়া দিবেন। সাময়িক ভাবে নির্দারিত এই সাম্রাভিক সীমারেশা এবং চুড়ান্ত ভাবে হিনীকৃত সীমারেশা এবং চুড়ান্ত ভাবে হিনীকৃত সীমারেশা এবং চুড়ান্ত ভাবে বিশীকৃত সীমারেশা একই হইবে না ইছা প্রায় নিশ্চিতক্ষণেই বলা যায়।

निवास्त चरहा जानजात भर्यात्नाचना कविया अर्था

হইরাছে। এই বীর জাতির জনসংখ্যা সমগ্র পঞ্চাবের জনসংখ্যার প্রার এক-জাইমাংশ। কিন্তু ভাহারা এমন ছড়াইরা
আছে বে, পঞ্চাবকে যেমন ভাবেই ভাগ করা হউক না কেন,
সকল জংশেই কিছু-না-কিছু শিব বাকিরা যাইবেই '
আমরা বাহারা অভগ্রের সহিত শিব সম্প্রদারের মঙ্গলই কামনা
করি, ভাহারা ইহা ভাবিরা ছ:বিভ যে, শিব সম্প্রদারের
নিজেনেরই অভীপ্রিত পঞ্চাব বিভাগের কলে ভাহারা
নিজেরাই অলাবিক পরিমাণে বিজ্ঞির হুইয়া পভিবেন।
ভাহারা কত কম বাবেশী বিজ্ঞির হুইয়া পভিবেন সীমা-নির্বারশ
কমিশনের সিভান্তের উপরই ভাহা নির্ভর করিবে। অবশ্য
এই প্রতিনিধি কমিশনে শিবদের প্রতিনিধি বাকিবে।

আলোচা পরিকলনার সবটাই একেবারে নির্ভ নাও इटेटल शादा, धनामा मकल शक्तिकश्चमाद नाम बटे शतिकल्यात সাক্ষাও ইছার পরিচালনার দ্বিছার উপর নির্ভর করিতেছে: শাসন-ক্ষতা হতাদ্বরিত করিবার প্রতি স্থির হইয়া পেলে ভাহা যত ভাভাভাভি সম্ভব করা উচিত ইহাই আধার মত। কিন্তু মুদ্দিল এই যে, যদি সমগ্র ভারতের ব্যাপারে সর্বদশ্রত শাসনভার পঠনের জন্ত অপেকঃ করিতে হয় ভাষা হইলে যথেষ্ট বিলয় হইয়া ঘাইবে, বিলেয়তঃ যদি প্রদেশ বিভাগেরও সিধায় হয়। পকাছরে প্র-পরিষদগুলি শাসনতর রচনার কাজ শেষ क्रिवाद भर्दिहें यकि नाभन-क्रमण एखाखन कर्ना हत छर्द দেখা যাইবে যে, দেশে কোনও শাসনতন্ত্ৰই নাই। এই সংচ্পূৰ্ণ সমস্ভাৱ সমাধানের ক্ষা আমি এটকণ প্রস্তাব করিয়াছি যে, चावनाक वारशामि करा रहेश (शर्म विक्रेम भवत्व के अवसह এক বা একাধিক ওপনিধেশিক সাম্ভ্রশাসনশীল গবংশ নিের হাতে ত্রিটিল ভারতের শংসনভার হন্তান্তর করিবেন। আশা कहा यात्र जानाभी काशक भारतत भारत है है है भस्त एहें रा স্থাধর বিষয়, প্রিটিশ গবংগট এই প্রস্থাব অন্নয়োদন করিয়াছেন ब्रवर भार्नाक्षरकृत वर्षमान अविदिन्धन छेपष्टिक कहात स्था এই সম্পর্কে আইন প্রণয়ম করিতেছেন। এই সিহাত্তর काल हे किया खिकरात जाव विश्व कि का का विवाद मा। ভবিষাতে ত্রিষ্টপ গবৰেণ্ট ও ভারত গব্যেণ্ট সম্পর্কিত কাজ-কর্বের ভার কোনও নুতন দপ্তরের উপরে দেওরা হইবে।

সমগ্র ভারতের কিম্বা বিভক্ত হইলে বিভক্ত রাষ্ট্রগুলির পরস্পরের মধ্যে এবং ত্রিটশ ক্মনওয়েলথের অন্তর্ভুক্ত রাষ্ট্র-গুলির মধ্যে যোগাঘোগ রক্ষার ব্যাপারে ত্রিটশ পার্লামেন্টের প্রথাবিত আইনে কোনও প্রকার বাবা-নিষেধ আরোপ করা ধইবে না। ইহা আমি বিশেষ কোরের সহিত বলিতে চাই।

আমাদের মধ্যে চরম আশাবাদীদের প্রত্যাশার চেরেও
অনেক ভাড়াভাড়ি কমভা হভাতরের ব্যবহা করিবার পধ
এবন পরিভার হইহাছে। অবচ ভারতবাসিগণের উপরেই
ভাছাদের ভবিষ্যং নির্দারণের ভার রহিল। ইহাই ব্রিটশ
গবর্গেন্টের ঘোষিভ নীতি।

বিটিশ গৰ্থে ভিঁর বর্তমান সিধান্ত বিটিশ ভারতেরই ভূমতা হতাত্তর সম্পর্কিত বলিয়া আমি দেশীর রাজ্যগুলির সম্পর্কে কোনও কিছু বলি নাই। শান্তি ও শৃথলার মধ্যে ক্ষতা হতান্তরের কাক শেষ করিতে হইলে আমাদের প্রত্যেককেই এ বিষয়ে ষড়শীল হইতে হইবে। গত করেক মাস যাবং বেজাবে বিশৃথলা ও বেজাইনী ব্যাপার চলিই। আসিরাছে তাহা আর চলিতে দেওরা ত দুরের কথা, এ সময় কোন প্রকার ছন্তের বা মনোমালিকের প্রশ্রম দেওরাও উচিত হইবে না। আমরি: কিরুপ খাদ্যসমটের মধ্য দিয়া চলিতেছি তাহা ভূলিয়া যাওয়। কাহারও উচিত নয়। হিংলার প্রশ্রম দেওয়া চলিতে পারে না—এ বিষয়ে আমরা সকলেই এক্ষত।

ভারতবাদীদের সিদ্ধান্ত যে প্রকার হউক না কেন, আমার স্থির বিশ্বাস, ব্রিটিশ অকিসারদিগকে আরও কিছুদিন এদেশে অবধান করিতে বলিলে তাঁহারা এদেশে থাকিয়া ভারতীয়দের সিদ্ধান্তগুলিকে কার্যে পরিণত করিতে তাঁহাদের যথাশক্তি সাহায্য করিবেন। মহামান্ত সমাট্ ও ব্রিটিশ প্রক্ষেত্র ভাহাদের পক্ষ হউতে আমাকে ভারতীয়দের প্রতি ভভেছে: ভানাইতে ব্রিয়দেন।

ভারতবর্ষের ভবিষাৎ সম্পর্কে আমার বিখাস আছে ৷
বত্যান ঐতিহাসিক সঙ্জিক পে আমি ভারতীয়দের মধ্যে আছি
বলিয়া সর্ববাব করি ৷ ভারতবাসিগণ বিশেষ বৃদ্ধিবিষ্টেশ্য
সহকারে দ্বির সিদ্ধান্তে উপনীত ছউন এবং মি: গাড়ী ও জিয়ার
মিলিত আবদনের পূর্ব সন্মান রক্ষা করিয়া ঐ সিচান্ত আছিপূর্ব
আবহাওয়ার কার্যকরী করিয়া গুলুন আমি এইকামনা করি ৷

ব্রিটিশ পরিকল্পনা সম্পর্কে পণ্ডিত নেহরু

পভিত নেহর বলেন, নয় মাদ অভিঞান্ত হইরাছে। এই নয় মাদ বরির আমাদিগকে দারণ ক্রেকট ও উৎচগ জোগ করিতে হইরাছে। কোন কোন সময় আমাদের হুদম ভাডিয়া পঢ়িবার উপক্রম হইয়াছে। তবুও জনগণের এই অশেষ হুংব- চুর্গলা সম্বেও আশার আলোও যথেট রহিয়াছে। জাভিগতভাবে এবং আওজাভিক ক্ষেত্রে ভারতবর্ষ অনেক দূর অপ্রসর হইয়াছে; আক বিশ্বসভোর নিকট ভারতবর্ষ মর্বাদালাভ করিয়াছে।

বরাদ্রীর ব্যাণারে কিছু সাববছ লাভ করা গিরাছে, যদিও
সাবারণ মাত্ম এবনও দারণ ওকভার-প্রশীভিত রহিয়াছে,
আকও লক্ষ্ লাক অন্ন-বম্ন ও অভাভ একাছ প্রয়োজনীয়
দ্রব্যের অভাবে কট পাইভেছে। উন্নতি সাবনের বহু বছু পরিকল্পনা রচিত হুইরাছে কিছু তবুও একথা সভ্য বে,
আলাদের বিরাট পরিকল্পনার অধিকাংশই এবনও বাভবে
রূপায়িত হুইরা উঠে লাই।

অৰ্থনৈতিক, রাজনৈতিক এবং সান্দ্রদায়িক ক্ষেত্রে দেশকে আৰু বে সব গুরু সমস্তার সন্মুখীন হইতে হইতেছে তাহা আপনারা সকলেই জানেন। বিগত করেক মাস যাবং লক্ষ কলেকে লাককে লাকক হাকৰ হুংখ-ছুবিপাকের খালা ভোগ করিতে হইয়াছে

এবং বাহাদের হতে দেখের শাসনক্ষমতা পরিচালনার দায়িত্ব अस दिन जाशामिनात्कथ माजन श्रक्रकात दहन कतिए स्टेशार । উপক্রত অঞ্চলর বালিকাদের ছঃব-ছর্লশার চিত্তার আমার কদর ভারাক্রান্ত, সহস্র সহস্র লোকের প্রাণহানি ঘটগাছে, বিশেষভঃ আমাদের শ্রীকাভিকে মুড়া অপেকাও দারুণ যন্ত্রণা ভোগ করিতে হুইয়াছে। এই সব বেদনাক্লিট্ট পরিবার ও বাহারা নিজেদের বাসভূমি হইতে বিভাঞ্চিত হইয়: আৰু নিঃব হইয়া পঢ়িয়াছেন ভাষাদের প্রতি আমি আমার গভীর সহাস্থ্তি कामाहरण्डि । जाभदा यथानकि छाहारमद माहाया कवित । এইক্লপ গুরুতর বিপর্বয় ভবিয়তে আর বাহাতে না ঘটে তক্তর (b) क्यां बाधारम्य चयत कर्जवा स्टेटवः मण वारा छ লাঞ্নার মধ্যেও ভারতের যে বিরা**ট** ভবিয়ৎ গঠিত ছইতে যাইভেমে ভাৰাকে আমলা ভূলি নাই। আমার পকে ইংগ অত্যম ছ:বের বিষয় যে, এই সময়ের মধ্যে আমি পূর্বের অভ্যাদমত ভারতের অসংখ্য শহর ও গ্রামবাসীদের স্ভিত মিলিত হটতে পারি নাই অববা ভাষাদের ছঃবের ইভিহাস ব্যক্তিগভভাবে জানিতে পারি নাই।

আৰু আমি পুনরায় ভারতের ভবিষাৎ সম্পর্কে বিরাট এক পরিবর্তনের ঐতিহাসিক মুহুতে আপনাদের নিকট উপনীত হইয়াছি।

এই মাত আপনারা ত্রিটিশ গবর্ষে টের খোষণা শুনিষা-থেন। এই ধোষণায় এক দিকে ভারতের ক্ষেক্টি অধ্যক্ত আয়নিয়ন্ত্রণাবিকারের ব্যবস্থা ও এই অঞ্চলগুলি ভারতের সহিত আলাদা হইবার সন্তাবলা আছে এবং অন্ধ দিকে এই ধোষণার পূর্ব স্বাধীনভার পথ অনেক দূর অঞ্চলর হইবাছে। এই বিরাট পরিবর্জন ঘটবার পূর্বে ক্ষনসাধারণের সম্বতি অব্যক্তই সইতে হইবে এবং এই ক্যা মারণ রাধিতে হইবে যে, ভারতের ভবিষ্যুৎ ভারতবাসী দ্বির ক্রিবেন,—বাহিরের ক্ষত্র সেই কৃত্ত্ব যুত্তই ব্যুভাবাপর হউক লা কেন ভাহার ধারা নহে।

এই প্রভাবত্তি শীন্তই ক্ষনগাৰারণের নির্বাচিত প্রতিনিবিদের সন্মুবে উপস্থিত কর: ছইবে। ইতিমবো সময় চলিয়া বাইতেছে—সিভাত্তের ক্ষত্র সাতাবিক অবহাকে বাহত করা চলে না। স্পতরাং ক্ষনগাৰারণ যাহা খির করিবেন তাহাই চরম খীকার করিয়া আমাদের নিক্ষেদের মধ্যে কতকঙালি সিভাত্ত প্রহায় উক্ত সিভাত্তভাবিক ক্ষনগাৰারণের সন্মুবে স্থারিক করিয়ে ভইবে।

আনরা এই প্রভাবগুলি গ্রহণ করিবার সিঙান্ত করিবা আনাদের বৃহত্তর কমিটগুলির নিকট সুপারিশ করিতেছি যে উাহারাও ইহা গ্রহণ করিবেন। হৃদরে আনম্ম লইরা এই প্রভাবগুলি আনি আগনাদের নিকট সুপারিশ করিতেছি না যদিও ভাহাই বে উপর্ক্ত পথ সে সম্পর্কে আনার সন্দেহ নাই। বুদ বুদ বুদ ধরিরা আমরা খাবীন প্রকারণ্ড ভারতের স্বপ্ন ধেৰিবাছি— সংগ্ৰাম করিবাছি। কতকতা অংশকে তারত হইতে পূথক করিবার প্রভাব আমাদের কাছে বেদনাদায়ক। তাহা সংস্কৃত্র আমাদের বর্ত মান সিখাছ যে প্রমনকি বৃহত্তর মার্থের পক্ষেও আমাদের বর্ত মান সিখাছ যে প্রমনকি বৃহত্তর মার্থের পক্ষেও উপযুক্ত সে বিষয়ে আমার সন্দেহ নাই। যে প্রকাবত ভারতের কম আমারা পরিশ্রম করিয়াছি সেই ভারত বাব্যতাস্পক অথবা ক্ররদ্ধির উপর পঠিত হইবে তাহা নহে বরং ইচ্ছুক স্বাধীন ক্রমাধারণ লইহা গঠিত হইবে তাহাই আমাদের আদর্শ। ইহাও হইতে পারে যে এই উপায়ে আমরা অপেকাত্বত শীরই সেই প্রকাবত ভারত গঠন করিতে পারিব এবং তথন আমাদের ভিত্তি আরও শক্তির উপর হালিত হইবে।

আমরা ক্ষু ব্যক্তিরা মহান্ আদর্শের সেবঃ করিতেছি
কিন্ত বেব্ছে আদর্শ মহান্ সেইজল সেই মহত্ত্বে কিছু অংশ
আমাদের উপরও পতে।

আৰু সমগ্ৰ পৃথিবীতে এবং ভারতে এক বিরাট শক্তি সক্রিয় হইয়া উঠিয়াছে এবং ভারতে যে এক মহানৃ মূলের খচনা হইতেছে তাহাতে কোনও সন্দেহ নাই। ভারতের ভৌগোলিক সমগ্রতা, ইতিহাস ও ঐতিহের বারা এবং ভারতবাসীদের যানসিক ও অভ্য:-এঞ্জির পরিবর্তন ঘটতে পারে না। এই ঐতিহাসিক মুহুতে আমাদের সকলেই যাহাতে মাতৃত্যির ও সর্প্র মানবন্দাভির সেবা করার অধিকারী হইতে পারেন সেইল্ল প্রার্থনা করা উচিত।

কামরা আরু অতীত ও ভবিষাতের মার্কানে আসিয়া দিছাইয়াছি। অতীতের যাহা কিছু হাঁন আৰু আমরা ভাহাকে সমাধি দিব এবং সমস্ত দোষ ক্রাটি ও ধেম-হিংলা ভূলিয়া যাইব। আমরা যাহা কিছু লিখিব এবং বলিব ভাহার ভিতর দিয়া যেন আমাদের সহস্কৃতাই পরিস্কৃতি হয়। আমাদের সদরে যে আদর্শ প্রতিষ্ঠিত ভাহার ক্রম্ভ আমাদের মনে আমুক্ত ও অনিবাণ উদ্যায়। সহস্ক নৈরাক্রবাদ সংখ্যার কিংবা ক্রোন্ড কুর্বপ্রভারত ভিতর দিয়া নহে—বরং ভারতের প্রতি দৃচ বিশাস ও নিটা রাধিয়াই ধেন আমরা ভবিষাতের সম্মুবীন হই।

দেশের বিভিন্ন স্থানে গজাকর ও অতি কথা হিংসাযুগক কার্য অস্ত্রিত হুইয়াছে। ইহাদের অবদান নিশ্চরই চাই। আমরা ইহা বছ করিতে গুচু সংক্রেবছ। আমাদের সুস্পষ্ট অভিমত এই যে, বভামানে কিংবা ভবিষ্যতে কোনও কালেই রাজনৈতিক উদ্দেশ্য সিধির জন্ত হিংসাযুগক কার্য প্রছণ করা চলিবেনা।

ভারতের এই বিরাট পরিবর্ত নের প্রাঞালে, খন্ধ দৃষ্টি, দৃচ সংকল্প, পরমতসহিম্ভা ও সবল হাদর লইবা আবরা নৃতন পথে যাত্রা করিব। আবরা কাহারও প্রতি বিহেষ বোধ করিব না, প্রত্যেক ভারতবাদীকে আযাধের প্রাভা ও ভগ্নী বলিয়াই মনে করিব। ৪০ কোটি ভারতবাদীর কল্যাণ সাধনই হুইবে আযাধের চরম লক্ষ্য। ভতীতে বিটাশের বে

আচরণ আমাদের হুদয়কে আৰও ভারাকাছ করিয়া রাবিরাছে আমরা ভাহা বিশ্বত হুইয়াভাহার সঙ্গে দৌহাক ও সহ-যার্সিভার ভিত্তিতে নুতন সম্পর্ক স্থাপন করিব।

আমাদের ইভিহাসের ধর্বাপেক। সফটপূর্ণ মুহুতেই বড়গাট এবানে আসিয়াছেন এবং তবন হইতে আৰু পর্যন্ত ভিনিয়ে এম ধীকার করিয়াছেন ভাহা সভাই প্রশংসনীয়।

ভাষাদের যথমই বিপদ ও বিছ সমুপস্থিত হইসাছে তথমই মহাপ্না পানী আদিরা অন্ধলারের ভিতর দিয়া আমাদের পথ দেবাইসা আমিরা পান্ধ মুক্তির সিংহ্ছারে পৌহাইরা দিয়াছেন। আমারা আন্ধানই মহান নেতাকে অরণ করিতেছি এবং তাঁহার প্রতি আমাদের অকুঠ প্রথা পুনরায় নিবেদন করিতেছি। যে করণও তাঁহার আলীবাদ ও সত্থদেশ হইতে ব্যিত না হই। তবিষ্যাতের প্রতি দৃচ বিশ্বাস রাখিরা আনি আপনাদের নিকটে এই আবেদন জানাইতেছি যে, আমাদের সম্মুখে যে বিপুল কর্তব্যভার রহিয়াছে তাহার সম্পাদনে আপনারা সাহায্যদান করণ এবং সমস্ভ ভারতবাদীর মুক্তির তীবে একসংশে যাত্রা করণৰ ।—ছয় হিন্দু

#### मक्तात वनारमव मिः रहत वक्तृ छ।

चक्रवर्ती भवकारतव रामवक्रा महित महात दलाहर भिरह यान आपनाता अहेगाव रक्षणां देवर आमार्गित हुटे कन বিশিষ্ট নেতা পণ্ডিত ছওছবলাল নেছের ও মিং শিলার বেতার-বঞ্জা শুনিয়াছেন। যে রাজনৈতিক অচল অবস্থা এতাবংকাল আমাদের দক্ষা প্রচেষ্টাকে বার্থ করিয়াছে ভাষার অবসানের 🕶 রুটিশ গ্রুমেণ্ট দুভন করিয়া যে পরিকল্পন। প্রণয়ন ক্রিয়াছেন ভাহাও আপনার: বেতার মার্ক্ড জানিতে পারিয়াছেন : আজিকার এই মৃত্র্র ভারতের ইতিহাসে চিরশ্রণীয় হইয়া পাকিবে। কাতীয় জীবনের ছাম্বর ও ছুৰোগপূৰ্ব অধ্যায় সমাপ্ত করিয়া আৰু একটি নুতন অধ্যায় রচিত হইতে চলিয়াছে। পতকালও যাহা পথের মত মুদুরপরাহত ভিল আৰু তাহাই পূর্ণ হইতে চলিয়াছে বলিয়া মনে হইতেছে। আৰু আমরা আমাদের স্বকীয় ঐতিহ্যের রাজ্পণে পুনরায় যাত্রা সূত্র করিতে চলিয়াছি, আমাদের এই খাৰীনভার ঐতিহকেই আমরা এতকাল আমাদের জ্বপত অধিকার বলিয়া দাবি করিয়া আসিয়াছি তবু আজিকার দিনকে উন্ধাও আনন্দনয় বলিয়া অভিনন্দিত করিলে সভোর অপলাণই कता इहेरत । 'बामना भर्गाराम चुनी इहेसाबि अकवा बनिटन छ विधा रला इकेटन। अमनिज्य श्रिम्जिएक अमन काटन द्यमना-मिन इरेट कर्नाहिर दन्ना त्रियास । सामादवर प्रश्राम चुपीर ७ ७ १ छा । इरेल ७ या बीमजात कर बामाराय अकरनत সন্মিলিত আন্থোৎসর্গ এমনি করিয়া আমাদের বিভক্ত এবং পরস্পরকে পরস্পরের নিকট হইতে বিচ্ছিন্ন করিতে পারিত না। কিন্তু বছত: ভাহাই হইয়াছে। দালার ক্রালছায়া

আমাদের সকলের মনে বেদনার ছারা সঞ্চার করিয়াছে। ভারতের বহু সানে আৰুও আমরা পারুপরিক বিরোধ ও বীঙ্গপভার দৃষ্ঠ প্রত্যক্ষ করিতেছি। প্রতিবেশী আৰু প্রতি-বেশীর বিঞ্ছে ক্ষিপ্ত হইয়া উঠিয়াছে সহস্র সহস্র নিরপরাধ जारात्मत लाग रातारेशात्य। नव-नाती-मिक गृर्शीन, जाल्य-খীন অবস্থায় এক স্থান ছইতে অপর স্থানে নিরুদ্ধেশ যাত্রা করিতে বাবা হটয়াছে। বহ অঞ্চে অক্তর আর্থিক, সাংস্কৃতিক এবং আধ্যান্ত্ৰিক ক্ষতি দাবিত ছইয়াছে। আৰু আমৱা নিকেৱা পরম্পর পরম্পরকে শত্রুর দৃষ্টি সইয়া প্রত্যক্ষ করি। কেন করি তাহার কারণ নির্ণয়ে প্রবৃত্ত হওয়ার প্রয়োজন আছে বলিয়া মনে করি না। আয়াদের সকলেরই দোয় আছে---পে ধোষ অকপটে খীকার করিয়া লওয়াই উচিত। ত্রিটীশ গ্ৰুখে তেঁৱ ন্ৰভ্য প্ৰিক্লন! স্থুছে মন্ত্ৰা প্ৰস্তে ভিনি বলেন যে এই পরিকল্প। মীয়াংসা নছে- আমার মতে ইছাকে সমাধান বলাই উচিত ৷ ইহা সকলকে সম্ভাই করে নাই শিবদের জে: নয়ই।

ভথাপি আমাদের পরিশ্রম কলকটা দার্গক হইংছে বঞা বার। আমাদের সাত্ত্রি আৰু যে হতালার বিপাকে পতিরাছে, এই দিক দিয়া বিচাব করিলে আমরা এই পরিকল্পনার মধ্যে আশার আপোক দেগিতে পাইব। আমাদের কাতীয় জীবনে যে কল কাৰু অদমান্ত রহিয়াছে তাছ। সমান্ত করিবার পথ খুঁজিয়া পাইব। আমরা নিজেদের যে ক্লিত করিয়াছি তাছা প্রবের জন্মই নহে, বিশ্বের চক্ষে আমাদের মধাদা পুন: প্রতিষ্ঠার জন এ সকল কাৰু আমাদের করিতে হইবে। পাছ-কলহ ও আত্যক্ষিক অস্বিধা দুরীকরনের জন তিক্ত অতীজনে ভূলিয়া আমাদের মহান্ ভবিহাত গছিয়া ভূলিতে হইবে।

আমার বিধাস অর্থনৈতিক, ভৌগোঞ্চিক ও আন্যান্থিক বিষয়ে আমাদের ঐক্যাবিদ্যমান, তাহারই কলে আৰু আমর। বিভিন্ন হইয়া পভিলেও আমাদের মধ্যে এই ক্লন্তিম বিভেগ বেশী দিন স্থায়ী হইবে না।

সদার বলদেব সিংছ আরও বলেন, গত করেক স্থাহে দেশের বিভিন্ন জংশে বিশ্বত গৈছদল প্রেরিত হইয়াছে। লাভি ও শৃথলা রক্ষার জন্ত অসামরিক বিভাগগুলিকে তাহারা সাহায়। করিবে। দেশবাসী এই সৈতদের ব্যুতাবে গ্রহণ করেন ইহাই আমার কামনা।

নাবিক, গৈত ও বৈমানিকদের উদ্দেক্ত তিনি বলেন— ধেশে যে গুরুত্বপূর্ণ পরিবর্তান হইতেছে তাহা আগনাদেরও প্রভাবাহিত করিবে। রাজনৈতিক ও শাসনতান্ত্রিক বহু পরি-বর্তানের সহিত আপনাদেরও স্বার্থ ভড়িত আহে। আপনাদের অথবা উধিগ্র হইবার কারণ নাই।

আমি আপনাদের পরিপূর্ণ আখাস দিতেছি যে, কোনক্রমেই আপনাদের খার্থ ক্ষ হইতে দেওয়া হইবে না। দক্ষতা হারা আপনারা ক্ষাম অর্জন করিয়াহেন। আত্যন্তরীণ সুথলা রক্ষার ক্ষা আৰু আপনাৱা অবিদ্ধ কাৰ্বে গিপ্ত বহিবাছেন। বনে বাৰিতে হইবে, আনাদের মাড়ছুনি আৰু সহটের মধ্য দিয়া ঘাইতেছে। আমার দৃঢ় বিধাস আপনাদের বদেশপ্রীতি ও একনিঠতা বর্তমান সকট মুহুতে আপনাদের ঠিক পথে চালিত করিবে। মনে রানিবেন, মাড়ছুনির স্থানের সহিত আপনাদের প্রনাম ক্ষতিত আছে। মাড়ছুনির আপংকালে নিক নিক কর্তব্য পালন ক্রন। অতীতের ন্যায় ভবিহতেও আমরা আপনাদের স্বপ্রকার সহায়তা করিব সে বিষয়ে নিশ্চিত্র ব্যাক্তিবেন।

#### সীমানা নিধারণ কমিশন

বল-বিভাগের দাবি শীকুত ছইরাছে। যে সব জেলার বিশ্বরা সংখ্যাগরিষ্ঠ সেইগুলি সইরা নব বল প্রদেশ অর্লাদরের মধ্যেই সাইত ছইবে। কিন্তু নৃতন বাংলার এই আয়তন ও দীমানা সাময়িক মাত্র। একট সীমানা-নির্দ্ধারণ কমিশন পূর্ব ও পশ্চিম বাংলার দীমারেখা কি ছইবে ভাছা গৈর করিবেন। প্রভাগে এই কমিশনের উপর প্রভাগ গুরুত্ব আরোণ করিছে ভ্রতিবে এবং কমিশনের সমক্ষে যাহাতে ছিম্মুখ্যান বাংলার দীমানা স্থায়ৰ ভাবে নির্দ্ধারণ করিবার উপর্ক্ত ভ্রত-প্রমাণাদি উপরাধিত হয় তংগ্রভি বিশেষভাবে প্রক্রাবিতে ছইবে।

ক্লপাইগুড়ি ও দাকিলিডের সন্থিত বর্দ্ধান বিভাগের भर्द्यान श्रापन कविट्छ श्रृहेट्य। निशासपूर, बानगर अवर মুশিদাবাদ জেলার হিন্দুপ্রধান অঞ্সগুলি নৃতন গংলার অগুভু জ করিলেই এই সহযোগ সাধিত হইবে। আপাততঃ সাময়িক कार्य क्ला विभारत भीवामा निर्मिष्ठ क्रवेटलक क्लाक्शिक হিন্দু ও মুগলমান প্রধান খংলে বিভক্ত করিবার পথে কোন विधानकि। वर्धमान अध्यान । उत्तरात भौभानः देश्यक नागरनत नोक्यारन हेश्रतक निक्तिशाममन कर्डक निर्मिष्ठे स्बेधाधिल, উसा एकाम भविष्य खर्यर व्यभविष्यंनीय वश्च नरसः। প্রতরা: বর্ডমানে কেলঃ মহত্যা, খানা প্রভৃতির সীমায় আবদ্ধ থাকিবার কোন আবশুকতা নাই। হিন্দুপ্রবান কোণাণ্ডলিকে কেন্দ্র করিয়া উহার সহিত সংলগ্ন হিন্দু-প্ৰধান অঞ্চলগুলিকে প্ৰায় হিসাবে সংযুক্ত করিয়া নৃতন नारमात भौभाना शिव कवा धाहेए पावित्व। हिन्तम পর্বণা ও বুলনা জেলা ছিলাবে হিনু প্রধান ইইলেও উহার কয়েকটা **परा**न यूजनमान अरद्या दिन। উপরোক্ত মুক্তি অপুলারে নৃতন পূর্ব বাংলার সহিত উহাণের সংযোগ থাকিলে সেওলিকে উহার সহিত হক্ত করা ঘাইবে। বাংলার পাচট ভিভিগনের মাে বর্জমান ও প্রেসিডেনি ভিভিসনক भिक्तम-बारलाय अवर हाका ७ हहेआम छिक्तिमारक भूर-वारलाय দিয়া এবং থাজগালী ভিভিসনের হিন্দু গরিষ্ঠ অংশ পশ্চিম বলে ও পৃথাংশ পূৰ্ববাদ সংখ্যুক্ত করিলে সহকে সীলানা নির্দারণ করা যায় এবং ইহাতে উভয় প্রদেশই প্রাঞ্তিক সীমারেশা नाक करत देश कामता পূर्व वनित्रादिनाम। अहे वस्नावस्त

পূর্ববেদর হিন্দু এবং পশ্চিনবদের মুসলনাম সংখ্যা প্রায় সমান হয়। সীমানা নির্দারণ কমিশন এই সমাবান যদি এইণ না করেন ভাষা হলৈ বিকল হিলাবে আমাধের পক্ষে contiguous area পছতিভেও হিলাব লইয়া প্রছত থাকা আবশ্যক। ভদস্পারে দিনাকপুর, মালদহ, রাজদাহী, মুর্শিহাবাদ, নদীয়া, মনোহর, করিদপুর, ববিশাল, গুলনা ও চবিন্দা পরগণা কেলা ভাঙিবার প্রয়োজন হইবে।

এই ছিগাবে মালদছ ও মুশিদাবাদ কেলা বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য এবং ইছাদের আগুনিক ইভিছাস একটু আনা আবশ্যক। এই ইইট কেলাভেই "১৮৮১ সালের সেলাসেও মালদছে ছিলু সংখ্যা মুসলমানের চেয়ে বেশী ছিল। ঐ সাল হইতে বাছিরের মুসলমানের চেয়ে বেশী ছিল। ঐ সাল হইতে বাছিরের মুসলমান ঐ কেলায় আসিয়া বসবাস আরম্ভ করায় ভাছাদের দংখ্যা ক্রভ বাছিড়ে বাকে এবং ১৯৪১ সালের সেলালে দেখা যায় মালদছে মুসলমানের অভুপাভ শতকরা ৫৬'৭-এ গাছাইয়া নিয়াছে। মুশিদাবাদের ও ই অবছা। ১৮৯১ সালের এই কেলায় ছিন্দুর দংখ্যা মুসলমানের ভেয়ে বেশী ছিল। ১৯১১ সাল হইতে মুশিদাবাদে মুসলমানের অনুপাভ ক্রের ভাবে বাভিতে বাকে এবং অবশেষে ১৯৪১ সালে এই অনুপাভ শতকরা ৫৬'৭-এ পরিণ্ড ছইয়াছে।

দিনাকপুর ও মালদহের হিন্দু মুসলমান অঞ্চল পৃথকভাবে বিচার করলে দেবা যায় ছটট জেলাভেই বিভীণ ছিল্প এলাকার পালিমে ছোট ছোট ছাট ভিনেক বিভিন্ন মুসলমান এলাকা (pocket) রহিয়াছে। এই ক্ষুদ্র এলাকার মুসলমান অবিবাদীরা নৃত্যন বাংলার অঞ্চল্প কইতে না চাহিলে নৃত্যন পূর্ববন্ধ চাকা প্রভৃতি যে সব অঞ্চলে অভ্যুক্ত হিন্দু 'পকেট' রহিয়াছে তাহার সহিত উহাদের অবিবাদী বিনিময়ের বাবহা হইতে পারে। অঞ্চল্ড এই কয়ট মুসলমান পকেটের কনা ঐ সব কেলায় বিভাগ ছিল্প এলাকাকে কিছুতেই পাকিছানে ঠেলিয়া দেওয়া যাইতে পারে না।

সীমালা নিৰ্বাৱণ ক্ষিশ্ন শ্ৰিষ্ঠ গঠিত ক্টবে এবং সংক সংগ্ৰহণ আৱন্ত হুইবে । বিপাধের অবস্ব নাই।

#### বাংলার জনসংখ্যার মানচিত্র

কলিকাত। বিশ্ববিভালয়ের ভূগোল বিভাগের অব্যক্ষ তাঃ
চটোপাব্যায় বাংলার ছিন্দু-বুশল্যান ক্ষনসংব্যার ক্ষকটি
মানচিক্র প্রস্তুত্ত করেন ক্রথং সার্ভে অব ইভিয়া কর্তৃক মানচিক্রটি
প্রকাশিত হয়। উহাতে দেবা যার যে বাংলার ছিন্দু ও
মুসল্যান গংখাত্তর অফলগুলি ভাগ করিলে গাজিলিং ও
অল্পাইগুলি কোন, দিনাজপুর, মালদং, মুলিবাবাদ, নগীয়া,
যশোহর, করিমপুর ও বরিলালের কভকগুলি অংশ ক্রথং বুলনা,
কলিকাতাসহ চন্দিল পরগণা ও বর্ষান বিভাগে সইয়া ক্রকটি
ইন্দুসংব্যাগুলু প্রদেশ অনায়াসে গঠিত হইতে পারে। ক্রই
মানচিক্র অনুসারে ঘাজিলিং ও ক্ষলপাইগুভির সহিত বর্ষান
বিভাগের পরিভার বোগাবোগ রহিষাত্তে।

মান্চিত্রট প্রকাশের পর উহার কিছু কিছু বিরূপ সমালো-हमा एरेबाट्य। जमालाहमात्र वना एरेबाट्य (व. मानवर ७ वृर्तिवायांव (क्वांव वदा विवा व्यव्यवसायाः जीवानिर्वतंक ষে করিভোর অভিত হইরাছে তাহা ত্রমাত্মক। এই সমালো-চনার উত্তরে ডা: চটোপাধ্যার জানাইতেখেন যে, লোকগণনা সম্পর্কিত সর্বশেষ তথ্যের উপর নির্ভর করিয়াই মানচিত্রট ব্দুসভ্কারে প্রস্তুত করা ভ্ররাছে: তাঁহার দুচ বিখাস কোন नीयांना निर्वादक क्षित्रम निष्क **क्ष्रिल काशां**दा प्रविष्क भारेरिक रा **डे**डव वर्णको अरुडि चिन्तृश्रवाम चक्रण डेडव वरूरक शिक्त राम्य महिल भरमुक क्रिएलाए। পूर्व भूर्व बरभावत লোকগণনার হিলাব দিয়া ডাঃ চটোপাব্যায় দেবাইতেছেন य यानप्रक अ कुर्निवास (कना कुरे के अवस्य विश्व भरवा। त्रिके हिन , भारत अर्थकार क्षिप भरनागितिहै याना स्टेटि क्रिक्क चक्रांक विक्रित क्रित्र प्रतिश प्रमास नश्यागित्र यानानम्ह क्षक्र क्या एक । अहेबन वावश कविवाद कादन कि छाश कर्डभक्ट विकास भारतमा प्रशासन्त्रभ साः कार्याभागाव ইংৱেছবাছার থানার একট অঞ্চকে গ্রহা ভোগাহাট থানা গঠনের উল্লেখ করিয়াছেন। তিনি খেবাইয়াছেন শাসন-লৌকৰ্ষের জনত এই প্ৰকার বামৰেয়ালী সীমাপরিবর্তন कुर्त्भान-विकास अधर्यन करत या। सारहिल बासात हिन्स অবিবাসীরা সংখ্যাসরিষ্ঠ হওয়া সত্তেও বিশ্ববিদ্যাসমের ভূগোল विचारनव मानहिटक छैश के चारत रमनाता एव नारे। देश ছইভেই প্রতিপর হইতেছে যে বাংলা বিভাগের কান্দোলনে সহায়তা করিবার উদ্দেশ্ত প্রথা মানচিত্রট প্রস্তুত করা হয় बाहै। मन्त्र्व विकासमयुष्ठ উপায়ে উदः व्यक्षित्र स्वेशासः। मानवर (क्यांव एकिन-पूर्व धार्या छिम्छ क्यांक मनाम ভাবে বিভন্ন কৰা হইছাৰে ৷ ১৯৪১ সালের শেলাগ অনুযায়ী এট অঞ্জের জনসংখ্যার ছিলাব বিয়ে প্রছত হইল :---

<b>अवस खू</b> ण इत्दिवशृह	আংতন বৰ্গমাইল	মোট ক্ষসংখ্যা	মুসলমান
গোমভাপুর হিভীয় কুপ	२१७	3,33, <b>%</b> 02	४६,७३४
মাবদৰ ইংৱেশ্বাজা জোলাখাট ভূতীয় গ্ৰুপ	; २७ <b>७</b>	2,8∩, <b>e</b> ⊱e	৬৫,৯১৩
नवादम <b>ञ्</b> मार्किन	265	১,৫৭,২৮৩	3,33,098

এইজ্ছই পোঃভাপুর ও ভোলাহাটকে হিন্দু বাংলার অন্তর্ভুক্ত করা হইয়াছে এবং নাচেলি মুগলমান বাংলার অংশ হিসাবে পণা হইয়াছে। নবাংগঞ্চ থানার হিন্দু ও মুসলমান অবিবালীধের সংখ্যা সমান নহে। এইজ্ছ মহাবন্ধা নধীকেই সীমারেখা হিসাবে ধরা হইরাছে।

মুর্লিদাবাদ কেলার উভরের যে অংশ হইতে
অভিজ্ঞা করিরা মালগছে পদার্পণ করা যায় সেই অংশ সবছে
ভাঃ চটোপাধ্যার বলিতেছেন যে, ভাগীরবীর পশ্চিম ভীয়ে
অবস্থিত রধুমাবগঞ্জ ধানা হিন্দুপ্রবাদ। এইকচ ভাগীরবীকে
সীমারেধা স্থাপে বরা হইয়াছে।

বাংলায় মুসলমান গরিষ্ঠত। প্রকৃতির বিধান নয় প্ৰধান মন্ত্ৰী মি: সহীদ সুৱাবদীৰ মুৰণত্ৰ 'ইভেহাদ' লিবিহাছেন, "বাংলা যুসলিম প্রধান দেশ। ইয়া প্রকৃতির বিবান। কিছ প্রকৃতির বিবান হইলেও বেহেড় ইহা মুসল-माम क्षराम (मण, (मरे (स्टू देशांक दिन्छिल कर्तात यहरू চলিতেছে। বাংলাদেশ সম্ভ এই অপুর্ব গ্রেম্বার স্থিত ঐতিহাসিক সভোর লেশমাত্র সম্পর্ক নাই ৷ বাংকাদেশে भूजनिम आबाध अञ्चलिद विशास सम्। दाहेम कि व अधार धार বঙ্গপুৰ্বকৈ বৰ্ষাঞ্চলকৰণ এবং নাৰ্কীক্ৰণের প্ৰভাৱ দান ইহাত প্রধান কারণ। খুসলমান ঐতিহাসিকের: ইহা অনেকটা চাপিবার টেষ্টা করিয়াছেন, ভবাপি কিছু কিছু সতা উংহ'দের द्राप्ता क्षेट्राक्ष भावतः याद्य । वेश्ट्यक भिनिकशेन(पर द्राप्ति ) রিপোর্ট এবং প্রবন্ধ প্রকৃতিভেত্ত এরপ কর্ম। অনেক আছে। विष्कृतात्मीय खांच बांचना विव्रम्भ कदिवाद केत्मत्म। देशी-क 'खांबाज'-क बाक्की खरम अकामिक करेशांबिक्त, फ्रेकांब भारास्म अश्रुत्त देशक व्हेल । हेंद्रा प्रहेलि विकास रूपला से अति। दृष्टित श्रक्षक कात्रम करमक्ती वृत्ता यावेटन अन्य प्रमान वर्ष्ट्रा পাকিথানের অভযুক্তি হটলে কি ঘটকে জাহারও জাহাস भिनित्य। ४९६म ७ १४४म मध्येकी १६७ यावाली छहे चाक्रमान्त्र काष्ठकते। अङ्गत्रय भिरूष भाविशास्त्र किन्न क्रिकाकः व ब्याहायाभीत प्रदेशाः देश विः भरणहा अवाविक

বিজ্ঞালি এবং সেইট ছুই জনেই দেখাইয়াছেন যে বাংহাদেশের মৃপলমানদের মধ্যে পাঠান-মোগলদের বংশবর সামাদ কিছু আছে বটে, তবে অধিকাংশই নিম্প্রেটর হিন্দু হইতে গর্মান্তরিত হইয়াছে; বহিরাগত মুগলমানদের মধ্যে আর্থীয়ের সংখ্যা অভিশয় নগণা। মৌগলী আরু গজনবী সম্মনসিংহের মুসলমানদের ইতিহাস লিখিয়াছেন। "বাংলার মুসলমানদের অধিকাংশই পাঠান-মোগদের বংশবর" খোদকার ফল্লে মবিরর ম্যায় গজনবী সাহেবও এই মতে বিবাসী কিছু উল্লেষ্ট বিবরইতে ইহা প্রমাণ করিতে না পারিয়া তিনি বীকার করিয়া কেলিয়াছেন যে, মধ্যনসিংহের অধিকাংশ মুসলমানই ধ্যান্তরিত ছানীয় হিন্দু।

হুইয়াছে যে, ভবিষাতে ভাছার উপায় ভার থাকিবে না।

ভাষান হক্ষ্যন, বুকানন হাষিগটন, ডাঃ ওয়াইক প্রমুব বিশিপ্ত মনীহীয়া বাংগার বিভিন্ন গ্রান পর্যটন ও পর্যবেক্ষণ করিয়া একবাকো এই কথাই বলিলাহেন বে, অবিকাংশ মুগলমান ধর্মাছনিত খানীয় লোক। বিশ্বলি, সেইট প্রভৃতি বিশিপ্ত সুভত্তিক ঐতিহালিকেরাছ এই মত লম্বন ক্রিয়াছেন। ডাঃ ওয়াইক এশিয়াইক সোলাইটিয় ছার্মালে প্রকাশিত উচ্ছান্ত

প্রবাদ্ধ দেখাইয়াছেন যে, বাহির হইতে বহুসংখ্যক মুসলমান বাংলায় বলবাস করিবার কন্য আসিরাছে এবন কথা কোন মুসলমান ঐতিহাসিকও লিবিলা বান নাই। বাংলায় মুসলমান আনলের একটি প্রামাণ্য ইতিহাস রিয়াল-উল-সালাতিনেও এমন কোন কথা নাই। বরং মুসলমানের লেখা ইতিহাসে আমরা এই কথাই দেখিতে পাই যে, ভারত স্বাটেরা বাংলায় কোন মুসলমান স্বাপতি বা সেনাললকে পাঠাইতে চাহিলে ওংহারা ঐ আন্দেশকে মুত্যুদগুল্য মনে করিত। তাহাদিগকে বাংলায় ব্যবসা করাইবার আলায় ন্যাবেরা নিকর ভূমি দেওয়ার গোত দেখাইয়াও তাহাদের আক্রই করিতে গাবেন নাই।

भूभणशास्त्रव अध्यादिषय भर्यक्षणमा कावन र**म**्यक वर्षास्त्र-कतनः वारभाव वाभिक्छार्य वस्पूर्वक पुत्रभवान कृतिवाद অনেক গুলি প্রবাসের বিবরণ পাওয়া যায়-- ভরুছে ভিনট সর্ব-ধাৰান: প্ৰথম, প্ৰভান কালালুকীন, ডিডীয় হলোচ্যের কা कारान काल जवर एठीय श्रीमक्की थे। उहे जिस क्रमहे च्याराच वर्षाश्रीवण हिन्तु-काशाश्रुकीन वाका नरशरणद शूख यह এবং অপত্র এই জন ভাগ্রণ সন্তান। জালালুছীনের ১৭ বংসত্ত্রের माभनकारल थण दिस युगलबान श्रेशास, श्वराणी जिल्ला वरभारत एक इस भार्ट । मामाहात था काहान आणि खानक হিন্তে স্বল্যান করিয়াখিলেন। ই হারই দেওয়ান ছিলেন পাব আলি বিলি গোমানস রালার পদ শুকাইয়া ভাগাণদের মুসলম্বান কারেভেন ! পরান্ধিত বাঙালী রাজাদের ধার্যা मुनगमान कदा रुवेछ । व्यक्तिद्वत आक्रमरन वेकापूरवत बाका পরান্তিত হইয়া মুসলমান কইতে স্বার্ত চহতে জীহার স্বার্থা दका लाह । अहर व अके अकेटल यूजलशाम भएका वाहिएएअ षारकः। हर्षेश्रारमद प्यामान प्राणि येश भावनार स्माकाभाषाव बाइटकोवरी पविषाद्य वर्षमञ्जा खेक्टके बावर भूरेवराम ज्याराम भारतीय छ काद्रमहामा भारत्वत प्रकास হিন্দুকে হুসলহাৰ করেন নাই: মুশিদকুলি বাব আমলে নিয়ম ছিল যে কোন লোক ঘণাদময়ে গাৰুনা দিতে অপারগ ২ইলে ভাষাকে সপরিবারে মুসলমান ধর্ম গ্রহণ করিতে হইভ। विदिनात्म भनत्मव केन्यत् वह लाक भूजनभाम व्हेबारक। আরামবাগের মাকারণ ধানায় ইসমাইল শাহ গাফী ভানীয় বাভাকে পরাভিত করিয়া সম্ভ লোককে ফুসল্যান করে।

বলপ্রবেগি ছাঞ্ আর কোন কোন্ কারণে পোকে
মুসলমান হইরাছে লে সম্বেশ্ধ আনেক গবেশণা হইরাছে।
ছিন্দুর জাতিকেল প্রধার কঠোরতা ইছার জনা অনেকটা দারী
এ কথা আনেকেট পলিরাছেন। ছিম্মুসরাক বর্জনট করিরা
আসিয়াছে, গ্রছণের চেঙা বড় একটা করে নাই: একমাত্র
শ্রীচৈতন্য সমাজ্যক্তর এবং মুসলমান বর্গানিত ছিম্মুকে মবর্মে
জিরাইবার চেঙা করিরাছিলেন। ইছা ছাড়া আনাানা কারণও
আনেক আছে। বাণিয়ার লিগিতেছেন যে, মুসলমান শাসনকালে মরহত্যা অথবা নারীবিটত অপরাবের শান্তি হইতে
অব্যাহতি লাভের একট উপার ছিল মুসলমান বর্ম প্রহণ এবং
এই কারণে বছ ছিলু মুসলমান হইয়াছে। সেইট লিগিতেছেন

বে, কৰ্ষণ কৰ্মণ বোলাবা বুৰাইনা-সুবাইনা হুই-একট লোককে বুসলবান ধৰ্মে দীকিত করিতে সক্ষম হয় বটে, কিছ অধিকাংশই মুসলবান হয় পার্ধিন লোভেয় বলে, বিশেষত: মানীঘটিত কারণে। কেলার কেলার পুথায়পুথ অহুসভানের হারা সংগৃহীত তথ্যের উপর নির্ভন করিয়া গেইট উজ্জ সিছাতে উপনীত হুইয়াছেন। চক্ষিণ প্রস্থা কেলার ধর্মান্তরকরণের ৪০ট ধৃষ্টান্ত প্রস্থা তিনি দেবাইয়াছেন উভাদের মধ্যে ২৬টি প্রেম্মন্থকিত, তথ্যব্যে ২০টি হিন্দু স্লীলোক এবং ৯টির কারণ অর্থাতার।

নিমুক্তেইর মুস্পমাধ প্রস্থ হয় ক্ষেম্ম করিয়া ভাষারও কিছু কিছু নিদর্শন পাওয়া যায়। গেইট সাহেব লিখিভেছেন থে, ধর্মান্তরকরণের পর হয়ত একজনের নাম হইল মেহের উলা। কিছুদিন বাদে লে বেহেরউলিন বলিয়া পরিচর দিতে ক্ষর্ম করিল। তারপর সে হইল বেহেরউলীন মহম্মদ। আরও কিছুদিন পর নিজের নাম রাখিল মহম্মদ মেহেরউলীন। যথাকালে আর্গে যৌলবী ও পাছে আহ্মদ্ লাগাইয়া বনিয়া গেল রৌলবী মহ্মদ মেহেরউলীন আহ্মদ। এ বিবরে একট প্রবাদবাক্যও গেইট সাহেব তুলিয়া দিয়াছেম—

আপে থাকে উরা ভূরা শেষে হয় উদীন। ভলের মানুদ্র উপরে থার কপাল কেরে যদিন।

একট কাৰ্সী প্ৰবাদধাকাও এখানে উল্লেখ কয়। যাইতে পারে শেব বুদান শাল-এ-আওয়াল

ৰ'। শুদাম সাল-এ-দিগর।

<क्षां भव चार्यकान भवशाप

ইমসাল সৈয়দ মি শওয়ান।

অভার্থ-- এবন বছরে ছিঞ্ আনি শেব, পর বংসর ছইছ্
বাঁ, সঙা কলল পাইলে এবার সৈয়ল না হয়ে ছাভিব না।

বঙ্গ-বিভাগ সমর্থনে হরিজন আন্দোলন

অন্তরত সমাক্ষের লোকেরা বল-বিভাগের বিরোধী এই বারণা প্রচার করিবার ক্ষা প্রীয়ক্ত যোগেশনার্থ মঞ্চল প্রচুর চেটা করিয়াছেন কিন্তু সকলকাম হইতে পার্থেন নাই। কোন কোন খানে তিনি সভা করিতে চাহিয়াছেন কিন্তু লোক আনে নাই। বিরণ বিকোত প্রধান প্রায় সকল কেন্তেই হুইয়াছে। অপরপক্ষে এই সমাজের লোকেরা বহু সভা-সামতিতে প্রভাব পাস করিয়া ইহাই প্রমাণ করিয়াছেন যে, মুট্টমের কভিপয় বাজি ছালা সকলেই বছ-বিভাগ কামনা করেন এবং ইহার ক্ষা সর্বপ্রকার ত্যাগ ছীকারেও ভাষারা প্রস্তুত । গত ১২ই ক্যেট কলিকাভার ইউনিভার্গিট ইন্টিটেট হুলে অনুনত জাতি সম্মেলনের একট বিরাট অনুটান হয়। সম্মেলনের উল্লেখন করেন ভাং রাজের প্রশাদ, প্রধান অভিথির আলন প্রথণ করেন জীয়ুক্ত কর্পনীবন রাম এবং সভাপতিত্ব

করেন এই জ্ঞাবানাথ দাস। এই সংখ্যানে সর্বসন্তিক্ষরে ধৃথীত একট প্রভাবে বদ-বিভাগ দাবি করা হর এবং এই দাবির পিছনে অভ্যত সমাজের সমর্থন নাই বলিরা এইজ্ঞাবোসের মঙল বে প্রচার করিতেছেন ভাষার তীব্র নিন্দা করা হয়।

সভাপতির অভিভাষণে ঞীযুক্ত রাধানাথ দাস বলেন "ৰাংশাকে সাম্ভালাৰিকভার ছাত হইতে বাঁচাইবার জন্ম ৰাভীৱভাবাদকে বৃদ্ধা কবিৰার জল এবং যাছাতে বাংলাদেশ ভারতীয় মুক্তরাষ্ট্র মইজে বিক্লিয় মইয়ানা যায় ভাছার জন্ত এবং সকলের ধনপ্রাণ সাম্প্রদারিক দালা-হালারা হইতে রক্ষা করিবার অন্ত আৰু ভাতীয়ভাবাদী বাঙালীরা বর্তমান বাংগা-**(मन्दर विकल कविशा अक्डे मूल्य श्वक वांश्नारम रहे** করিতে চাহিতেছেন। বাংলার পুধক প্রদেশ স্ট হইলে পুতন প্রদেশের শাসন্যন্ত কাতীয়তাবাধিগণের ছাতে জাসিবে এবং দেশের প্রসৃতিশীল অপ্রশী প্রতিষ্ঠান ছিলাবে কংগ্রেসের প্রভাব নৃত্য প্রদেশের শাসনকার্যে পূর্বভাবে বর্ড মান থাকিবে। কংগ্ৰেস মুক্তকটে গীকার করে যে, হিন্দু-মুসলমান তথাক্ষিত উন্নত, অধুনত সম্প্ৰদায়, গুৱান, শিব প্ৰভৃতি সকলেবই সমান মৰ্যাদা পাইবার অধিকার রহিয়াছে। প্রভাবিত নৃত্য প্রদেশে विनि वान कडिराय छिनि स मध्यमात्रकृक वे व्हेन ना रक्त. তিনি খির বিশাস রাখিতে পারেম যে তাঁছার রাখনৈতিক, আৰিক এবং ধৰ্ম সৰ্থীয় সৰ্বপ্ৰকার সাধীনভাই অব্যাহত পাকিবে। মুসলিম লীগের শাগনাবীনে অমুত্রত সম্প্রদায়ের বার্থ শ্রিমাণে ফুর ছইবার সম্ভাবনা রহিয়াছে, সেই তুলদায় কংগ্রেসের নিক্ট অনুত্রপ আশহা করিবার কোনও কারণ নাই। এভখাতীত অভুয়ত সম্প্রদারের প্রতি কংগ্রেস কিব্ৰণ মৰোভাব পোষণ করে তাছার প্রকাশ গণ-পরিষদে গৃহীত মৌলিক অধিকার বিষয়ক প্রভাবে দেখা গিয়াছে। উহাতে বলা হইয়াছে সাধীন ভারতবর্ষে অস্প্রতা আইনতঃ प्रकाशिक व्यवस्था विकास के स्वार्थ के स পুৰক ভাতীয়ভাবাধী প্ৰদেশ স্ক্ৰী করিয়া নিৰিদ-ভারতীয় মুক্তরাষ্ট্রের অন্বভূতি থাকিতে পারিলেই তথাকবিত অনুগ্রত সপ্রদারের অধিকভর প্রবিধা হইবে।" অভ:পর বিরুদ্ধ क्षांबकाबीरम्ब मका कविया मकाशिक वरमभ् "अश्वक कालिब মব্যেও কয়েকজন বিভীষণ আছেন। মুসলিম লীগের পক্ষাবলম্বন করিয়া ভাষারা অম্বরত জাতির ক্ষতিসাধন করিতে-ছেন। খীয় ব্যক্তিগত বাৰ্থশেই উছোৱা এরণ দেশদ্রোছিতা ক্রিভেছেন। তাঁখাদের ইচ্ছা বাংলাদেশ নিবিপ-ভারভীর রাষ্ট্র হুইতে পুথক হুইয়া থাকুক। জীযুক্ত বোগেলনাথ মঙল এই দলের অপ্রবী। ইঁহারা মুসলিম দীপের পুঠপোষকভার সমূদ হইতেছেন এবং সভাবতঃই মুসলিম লীগের পঞ্চে প্রচার-কাৰ্য চালাইভেছেন। সঙল মহাশন্ত মুসলির লীগের ফল্যানে णात्रज-नतकारतत चारेन नित परेतारवन बनर बरे कात्रति

বুগলীয় লীগের প্রশংসার তিনি পক্র্ব। অহরত আতির প্রতি বুগলির লীগের হরদ কিরপ তাহা আর কাহারও অবিবিত না বাকিলেও ইংারা কিরপে লীগের হুইরা ওকালতি করিতে-বেন তাহা চিছা করিলে আক্রর্বাহিত হুইতে হয়। পুরক্ আতীরতাবাদী বাংলা স্কট্রর সপক্ষে অনরভ প্রবল হুইতে বেবিরা মুসলির লীগ কর্তৃপক্ষ আত্রিত হুইরা পড়িয়াহেন এবং মঙল মহাশ্রকে অপুরত হিন্দুদের মধ্যে বিভ্রান্তিকর প্রচার কার্গে লিপ্ত হুইবার জন্ধ নিযুক্ত করিবাহেন।"

গ্ৰীৰভা বোৰেজনাৰ মধল বিভাবে সভা করিভেছেন ভাষার বিবরণ দিয়া সভাপতি বলিভেছেন, "বোগেন বাবুকে षिया मण कदारेया भीनश्वयानातः विनया (दशारेएएसन स्य. चयुवल हिन्दा (कहरे वार्णाव शृथक अर्पन हारहम मा, कारावा यूनांनम जीरमद मांर्ड अवस्थारम जीरमद माममाधीरमहे থাকিতে চান। আমরা কানি কিভাবে যোগেনবারু গভা क्विया (वड़ाइंटड्रम् । अखाद शृर्व लहात्र क्वा इड्टड्रम् स्थ, সভাক্ষেত্র বিশাষ্ধে। কাপ্ড বিভরণ করা হউবে, অগুলাচ ৰাভির যে সৰ লোক সভায় উপস্থিত হইবেন তাঁহারা বিনা-ৰুল্যে একবালি করিয়া কাপড় পাইবেন। জানি না, অধুগ্রত সমাজের লোকেরা এরণ সভায় যোগদান করিয়া বিনা-ষুল্যে কাপড় পান কি না। তবে এই য়ক্ষ ভাবেই গভা আহ্বান করা হয়। তাহা সংখ্য এগব সভায় জগুনুত জাতির ভাইয়েরা খোগদান করেন না: সভায় বেশীর ভাগ नौननमर्यक मून्नभान अवर मून्निम शामभाग नाएए ते (भारकता चारमभ।"

**जिल्लायत्वत् (न्याय औयुक्त भाग भागत्त्रे (यायवा क्राज्य.** "অভুন্নত জাতির ভাইবেরা মে বাংলা ভাগ চাহেন না ভাষা সবৈব মিখা। আৰু যদি নোয়াখালীর নমপ্রেক ভাইদিগকে বলাহয় যে ভাহারা পশ্চিমবজে চলিয়া আত্মক ভাহাজের क्क शिक्तम ७ देखर बर्मद शुक्क श्राद्धानंद अवकाद क्रेट्ड বাসভান ও জনাত আৰিক সুবিধা করিয়া দেওয়া হইবে, ভাষা ষ্টলে আমি অভিশয় দৃচকণ্ঠে বলিভে পারি যে, যোগেন বাৰু তাহার ভাতি-ভাতাদিগের মধ্যে একটকেও নোয়াৰালীতে আটকাইয়া থাৰিতে অৰাং মুগলিম লংগের শাসনাৰীমে বা লীপের বঞ্চণাবেক্ষণে রাখিতে পারিবেন না। আৰু ধনি বাংলা বিভাগ দৰকাৰ ছইয়া থাকে তবে বিলেধ ভাবে অভ্যন্ত विश्विपात्र बार वे वेश प्रतकात । अत्वरक वालन त्य. वेशाल অমুন্ত হিন্দুদেরই বেশী অসুবিধা হঠবে। তাহারা বর্ষান্তর এহণ করিবে , ভাষারা অশিক্তিও গরিন্ত। একাছই যদি পূৰ্ববদ পরিভ্যাপ অপরিহার্য হইয়া উঠে ভবে ভাহারা ভাছা-তাভি দেশ ছাড়িয়া আদিতে পারিবে না, তাহাদিগভে **পূर্ববঢ়ে অবাং পাকিছানে বাকিয়া ধাইতে হইবে এবং তাহা** হইলে ভাহাদের আর কঙের সীমা থাকিবে মা। এই কথা ৰলিয়া অভ্যাত ভাইদিগকে পুৰক প্ৰদেশ গঠমের বিরুচ

ক্ষোইরা তুলিবার চেটা হইতেছে। কিছু আমি বলি যে, পূর্বক প্রদেশ হইলে বলি দেবা বার যে, হিছুরা কোন উপায়ে পূর্বকে বলবাস করিতে পারিতেছে না, তাহা হইলে অপ্রত হিছুরা সকলের আর্গেই পূর্বক পরিত্যাগ করিয়া অভন্ত চলিরা আলিতে পারিবে। পূর্বক কাতীরতাবাদী বাংলা বাকিলে তবেই ইহা সভব হইবে। তাহাদের ঘরবাঢ়ী বলিতে আছে ছোট ছোট কুঁডেমর, তাহা পরিত্যাগ করিয়া আসিতে তাহাদের বিশেষ মারা বা অপ্রবিধা হইবে না ষতটা হইবে অভাভ পোক-দিপের। সকল দিক বিবেচনা করিলে ইহাই মনে হর যে পূর্বক প্রদেশ স্ক্রীর ঘারা অপ্রয়ত ভাতিদ্বের স্ববিধ মধ্য হুইবে।

অলপাইথভি উত্তর বঙ্গ সংখ্যলনের অভার্থনা সমিভিত্র म्हानिकद्रित श्रीप्रक है। नमनाय वर्षने व वयवन बस्त्रा अकान করিয়াছেন ৷ সম্রতি তীয়ক প্রমণরপ্রন ঠাকুর গানীকীর সহিত দাকাং করিলে ভিনি এই মর্মে প্রতিশ্রুতি দেন যে বাংলা বিভাগের চড়ান্ত সিদ্ধান্ত গৃহীত হঠালেও ছরিজনধের স্বার্থ কোন মতেই উপেক্ষিত হইবে ন।। এইড ঠাকুর বাংলার মানচিত্র ও দেলাস বিপোটের সাহায্যে গানীকীকে ইহাই বুবান যে প্রভাবিত হিন্দু বাংলার করিদপুর জেলার হরিশ্বন সংখ্যাগরিষ্ঠ এলাকা বোপালগঞ্জ মহকুষা ও যাদারীপুর মহকুষার রাজধর बामां अवर पविभाग (कलांद भीतमधी ख चां फिदान वे भरेख ভংগংলিট এলাকা যুক্ত করিবার দাবি কানান। স্থাইমচত্ত্রে इविवनत्वत (च इपंचा इवेशाटक लाकाटल छेपदांक जनाका-भग्रदेश एतिकन्त्रण पाकिशानी वारणात व्यक्त के एउसा वारणका मुखायबन्छ (अह मान कविरय खेबूक है। कुछ बाबीकीय निक्र हेशा वाक करवन। वारलात श्विकानदः वाश्वदकः ७ वादः-প্রতিষ্ঠার জন্ম ট্রিক পথাই বাছিয়া লইয়াছেন বস বিভাগের প্রশ্নের সহিত ভাষাদেরও ভবিষাং যে অবিচ্ছেষ্য ভাবে ওড়িত देश डाशाहा देखस्यत्भवे देशमध्य कदियात्मन । কাতীয়ভাবাদী তপশীলী এপোসিয়েশনের যুগ্ন-সম্পাদক ঞীয়ুক বিভয়ক্ত সরকার এম-এল-এ এবং গ্রীয়ক্ত রাক্টে সরকার এম-এল-এ এক বিবৃত্তিতে কানাইয়া দিয়াখেন যে বদীয় বাবছা পরিষদ, ব্যবস্থাপক সভা এবং গণপরিষ্ধের তপশীলভুক্ত স্থস্ত-एक लाब भक्राकृष्ट अक्ट्रांटन उल्लाहित निकृष्ट रह रिकान দাবি ক্রিয়াছেন এবং সমগ্র বাংলাকে পাকিস্থানে পরিণ্ড ভৱার চেষ্টাকে উচ্চারা পর্বতোভাবে বাধা দিবেন।

আসামের জমি বে দখলের ৫৮টা

আসামের বহিরাগত সমস্ত। ক্রমণ: পাকিয়ানী অভিযানে 
রূপান্তরিত হইরাছে। মর্মন্সিংহ, রংপুর প্রভৃতি ক্রেগা হইতে 
প্রতি বংসর সহস্র সহস্র মুসলমান আগামে প্রবেশ করিয়া 
সরকারী বাস ক্ষমি গারের কোরে অবিকার করিয়া উহাতে 
চাম্বাস করিতে আরগু করিয়াছিল। এই সম্ভ ক্ষির মধ্যে বছ 
গোচারণ-ভূমিও ছিল। বহিরাগত সোক্ষেরা ক্ষের করিয়া ক্ষি
হবল করিলে এক হিকে বেষ্ট আইন তক হইত, অপর দিকে

এই কাৰ্বের দারা স্থানীর লোকদের প্রচুর অসুবিধাও স্ষ্ট করা হইত। আইনভঙ্গকারী বহিরাপত লোকেরা অন্ধিকার-প্রবেশ ও সরকারী সম্পত্তি বে-মধলের অপরাধে শান্তি পাইড मा विनया छेरावा क्यम: (यशवादा रुवेदा छैट्ट अवर श्रामीय লোকদের উপত্রবের কারণ হইরা টাভার। এই উৎপাত হইতে মুক্তিলাভের ২৬ আসামবাসীখের প্রার্থনা ব্যর্থ হইলে छेरा करम चार्यामटनत चाकात बातन करत अवर वतप्रगरे মনীমঙল গঠিত হওয়ার পর উছোৱা অন্ধিকার-প্রবেশকারি-প্ৰকে সরকারী ক্ষমি হউতে উচ্ছেল করিতে দুচ্সকল হন। অন্বিকার-প্রেশকারীদের প্রতি আইনসঙ্গত প্রস্থা অধলগ্রনের পর লীগ ইহাকে নানাবিধ অভ্যাচার ও অবিচারষলক বিশেষণে ভূষিভ কহিয়া সরকারী জমি বলপূর্বক অধিকার করিবার ক্ষম বাহরাগতগণকে উদ্বেশ্বিত করিতে বাকে। ইহা হইডেই লীগের আসাম অভিযান আরম্ভ হয় এবং পূর্ব পাকিছান কিয়া হইতে এই অভিযান পরিচালনার আয়োজন হয়। সার আক্রর হারদারী আসামের প্রব্রপদে নিযুক্ত হওয়ার পর আসাম অভিযান সম্পর্কে সানীয় লোকেয়া শহাগিত হঠয়াছিল ইহ! অধীকার করিয়: লাভ নাই। ইহার কারণত আছে। পাকিন্তানী প্রভান্ধ সংগ্রাম করু হওয়ার পর হইতে নিরপেক ও উদার মনোভাব সইয়া দলের ও দেশের প্ৰতিক্তৰিং পালন ক্ৰেন একপ মুগলমান ক্ৰচাৱী প্ৰায় (४४। गांध भाई विलाल हे हाल । नामन ७ विहास विखासे हैं छे-তম পদে অবিহিত মুসলমান কৰ্মচাৱীদেৱ মণেও সাপ্ৰাণায়িক-ভার বিষ যে কিবল ভয়াবছভাবে সঞ্চারিত হইয়াছে ভাষার প্রচর মিদর্শন পদে পদে মিলিয়াছে। ক্ষমতাপুর্ণ পদে অবিদিত মুগলমান কর্মচারীরা অনুদলমান্দের বিশাস অর্জন ও রক্ষা क्षियांत काम ८७%। एए। करतमर भारे, बदर छ।शाम्ब कार्य-কলালে উহা লিখিল হউতে লিখিলতর হটয়া ক্রমণ: সম্প্রতেশ বিলীয়মান হইতে দেবিয়াও তাঁছারা সংযত হন নাই। এই অবসাম সার আকবর হায়দারী সম্পর্কে আবে হইতেই লোকের মনে বিরূপ দারণা সধার হওয়া আক্ষা নহে। কুৰের বিষয় সার আক্ষর স্থতে এই ধারণা ভূল প্রমাণিত क्षेत्राहरू ।

পৌহাইতে এক সাংবাদিক দক্ষেপনে সাব আকবর হারদারী আসঃমের ভূমি সমদ্যা আলোচনা করিয়া বলেন যে, প্রধেশের সমন্ত ক্ষমিত পব্ধেন্টের বাংগে। কাকেই কোন বাজি বা দলবিলেম পবর্ত্তের বিনাম্মতিতে সরকারী ক্ষমি দর্যা করিয়া উহাতে ভাহাদের অবিকার প্রভিন্ন করিতে পারে লা। এরপ কোন নাারসক্ত দাবি ভাহাদের নাই। বরদলই সব্ধেন্টের পূচ্তার কলে আসামের লাগ অভিযান মন্দীসূত হট্যা আসিভেছে। পর্বর্ষর বহিরাগত সমন্তার সক্ষপ উপলব্ধি এবং প্রকাতে উহা বীকার করায় মন্দিয়ভগের কাক আরও সহক্ষ হট্যা আসিবে।

#### শিক্ষকের বেতন

শিক্ষকদের বেজনের ব্যক্তা আহাদের জাতীর কীবনের একটি নিদারণ কলত হইবা টাড়াট্যাতে: নিধিনবদ-শিক্ষক সমিতি কড়ক আছুত এক সাংবাদিক সন্মোগনে উপ্ত সমিতির কার্যকরী সন্ডাপতি প্রীযুক্ত হরিদাস পোলামী যুদ্ধের কয় বংসরে বাংলাদেশের শিক্ষকদের যে ভয়াবছ ছুর্দশা হট্যাছে বিশেষ-ভাবে ভাহা বিবৃত করেন: তিনি বলেন যে শিক্ষাবিধানে দীস স্বর্গে টেল অভ্যুপ্ত সাংপ্রদারিকভার অভ্যাচার,বিশ্ববিভালয় কর্তৃপক্ষেত্র উদ্বাসীনতা ও স্থাকের অবক্যাসমূত অবিচারের ফলে বাংলায় শিক্ষা ও নিক্ষকতা আজ প্রহ্মনে পর্যবসিত্ত হইবাছে।

তিনি বলেন যে ইলামীং প্রালিখোগভাষ্ণক প্রীক্ষায় वाक्षांनीद (सरमतः चामाधुक्तम कम (भवारः ल भादिरक्रास ना । देशांत कांत्रण अक्षणकाम कवित्रण (मच: याहेट्ट (य. वार्शाश निकरान्त व्यवसीय व्यवस्थिक स्वत्यार निकाविषय अहे অধ্যেপতির প্রধানতম কারণ অধিকাংশ উচ্চ ইংয়েকী বিভাগতে প্রধান শিক্ষকের মাসিক বেতন সভর টাকা এবং সাধারণ গ্রাঞ্থেট লিক্ষ্টের মাসিক বেতন ভিল টাকা। বর্তমান মুখ্রাফীভির দিনে এই দামানা বেতনে সংসার প্রতি-পালনের ছুর্জোণ সহজেই অথ্যেয়। আৰু একজন পিয়মকে ষাৰ্গ জাতা সমেত পঞ্চল টাকা বেতন গিতে হয়। কিছ বাহারা জাতির শ্রষ্ট। বলিয়া অভিহিত হটরা বাকেন, শংলা-সরকার, বিশ্ববিদ্যালয়ক চপত্ম কিলা বাংলার সামার্থ কেইই সেই শিক্ষকদিলের প্রক্রি অবিচারের প্রতিধিবানের ক্ষমা व्यामोहेशा व्याटनम नाहे । क्रेक हेर्ट्सकी विकासभाषाएउ গৰ্মে ন্টের অর্থপাহ।যোৱ প্রজন্ধ বর্ণনালাসভো তিনি বলেন (य वारलाय लाय २ शकाद विशालाक्षव गांव अवि विषालिश्व नवस्व के क्षेत्र च वर्षभाक्ष्य। भावेश भारक . चार्षायी বংগৱের বাজেটে মুগলমানদের শিক্ষার জন্য পাঁচ পক্ষ টাকা ৰাম করিবার ব্যবসার উল্লেখ করিয়া ভিনি গবর্থেণ্টের এই পঞ্চপাতিত্বস্তুক ব্যবস্থার তীব্র নিশা করেন। বিধ্ববিদ্যালয় क्रुंश्यक्त विकारियद विक्रियणात्र हैत्सर्थ क्रिया औष्ट পোষামী বলেন যে, গত দল বংসরের মধ্যে বাংলার শিক্ষা ষধন সমটের অভদ ললে ভূপিয়া যাইভেছে, কড়পক শুৰু নীরব দর্শকের লার হাত ১টাইয়া বুসিধা আছেন। শিক্ষকদের পক इदेख अध्यक अभ्ययम-निरम्भावत कर्म ग्रंड वर्गत वर्णमान ভাইস চ্যালেলর শিক্ষকদের সর্বনিয় ্বতন নিধারণের অভ তথ্য সংগ্রহের প্রতিশ্রুতি দিয়াছিলেন। এই সম্পর্কে বিশ্ব-বিদ্যালয় কর্তক যে থিপেটি প্রকাশিত হইয়াছে, ভাছাতে বলা হইয়াছে যে, সকলেলে একজন সাধারণ শিক্ষক ও ট্রেনিংপ্রাপ্ত শিক্ষকের সর্বশিম মাসিক বেতন ঘৰাক্ষমে যাই টাকা ও সম্ভৱ ট্টাকা হইবে। কলিকাভার একজন শিক্ষকের সর্বনিয় বেজন হইবে আশী টাক:। কলিকাভায় যে সকল ছলে ছাত্রের সংখ্যা हुई मंख शकारमञ्ज कम, हुई भंख शकाम अवदा हुई भंख পঞ্চালের অধিক হউবে, সেই হিসাবে প্রধান শিক্ষকদেয়

ষধাক্তমে এক শত, এক শত গঢ়িশ ও দেড় শত হাকা মাসিক বেতন ছইবে।

শাকিছানী বাংলায় শিক্ষকদের এই ন্যায়ণকত অসুবোধ রক্ষিত হওচার কোন সন্তাবনা ছিল না। বাঙালীর বাংলায় সে সুযোগ আসিবে।

#### পে কমিশনের রিপেটি

শে ক্ষিশ্নের রিপোট প্রকাশিক হইহাছে এবং রিপোটে উল্লিখত মুগ্রিলগুলি ভারত-সরকার কর্তৃক সৃষ্টিত হুইয়াছে: বিপোট আশাল্লগুল ন ক্ষিপেকত ইকার কলে নিয় ও মন্ত্রা ক্রেনি ক্যীলাই যে তেন্দ্র ক্রিপেকত হুইবে ভাকাতে সংক্ষেত্র নাই: ক্ষিশ্রেলির প্রশালিক। ক্রেনি ভাকার উল্লেখ হুইতেছে প্রায় তেন্ত্রাপ্ত ক্ষেত্র ক্রিল্লেলির ক্রেনির নাখন রুদ্ধি করা এবং ক্রেলির মনে ক্রেনির হিন্তু ভাকা ক্রেনির মনে ক্রেলির প্রায় ক্রিলির ভাকা ক্রেনির ক্রিনির ক্রিনির ক্রেনির ক্রেনির ক্রেনির ক্রিনির ক্রেনির ক্রেনির ক্রেনির ক্রিনির ক্রেনির ক্রিনির ক্রেনির ক্রিনির ক্রেনির ক্রিনির ক্রিনির ক্রেনির ক্রিনির ক্রিনির ক্রিনির ক্রিনির ক্রিনির ক্রেনির ক্রিনির ক্রিনির

ক্ষিশ্নের রিপোট সধকে একটি বেতার-লকুডার ভারত-সরকারের অবস্থান হৈ লিয়াকং আল বঁ; বলেম :

আপ্নারঃ বেতন-ক্ষিপ্রের অপারিশ গ্লিছাছেন। যুগের সন্ধ জীবন্যাক্রাব থান বুলির ফলে সরকারী কর্মচারীদের থপেষ্ঠ অসুবিধা ছইয়াছে। সরকার ভাছে সামন্ত্রিকভাবে গুল্লারও অবস্থা গরিবজন হয় নাই এবং আশক্ষা কর যায় যে, এই অবস্থা আরও অনেক দিন আকিবে। পুতরাং সরকার এবং বিষয়ে একটি পাকাপোঞ্জাবিতা করিয়া সরকারী কর্মচারীদের করেছি। জবিধা করিয়া প্রকারী কর্মচারীদের করেছি। জবিধা করিয়া করেছিনাকে তীকার করিয়া লগে বাক্রার করেছিনাকে তীকার করিছিল। মুখ্যারা প্রাক্রার বালের স্বাক্রার প্রাক্রার সর্বাক্রার বালের স্বাক্রার বালের স্বাক্রার বালের স্বাক্রার বালের স্বাক্রার বালির বালের স্বাক্রার বালির স্বাক্রার বালির স্বাক্রার বালির স্বাক্রার বালির বালির স্বাক্রার স্বাক্রার স্বাক্রার বালির স্বাক্রার বালির স্বাক্রার বালির স্বাক্রার স্বাক্রার বালির স্বাক্রার স্বাক্রার স্বাক্রার বালির স্বাক্রার স্বাক্রার বালির স্বাক্রার স্বাক্রার স্বাক্রার স্বাক্রার বালির স্বাক্রার স্বাক্রার

কমিশন এক বংস্থেরও উপর ধরিয়া বিভিন্ন শ্রেণীর ক্ষীর कौरमधाकाद अवानी अकृषि दिश्या एषा मध्यक कविदादिन। ক্ষিপ্নের স্মন্ত্রণ ভগজের পর একটি বিষয়ে কৃত্যভয় হট্যা-(इन त्या (प्राप्ति वर्षमान अशाकाविक अवशाद ग्राट्या कमीरमद (बज्ज वृद्धि कविद्यार (कवल मयकाद मधाबान कता यानेटन ना। শে সৰ ছানে অৰ্থনৈভিক চাপ বেশী, সে সৰ ছানে প্রয়েজনাথুরণ ভাভার ব্যবস্থা ক্রিভে হটবে। সুভরাং বেভন-কমিল্ম এইভাবে তাহাদের মুপারিশ পেল করিয়াছেন :-- (১) অভি স্বাভাবিক অবস্থায় অধ্য সাঞ্জ্যের মণ্ডে বাস করিতে হইলে বর্তমান অবস্থায় কোন কমীর ভাতাল্য বেজন ৫৫১ টাকার কম হওয়া উচিত নর। সেই কারণেই ম্যাট কুলেট ও সমশ্রেণীর কর্মীদের মুঃনক্ষম বেডন ছওয়া উচিত ১০ টাকা। (২) কেন্দ্রীয় সরকারের অধীন কর্মচারীদের শ্রেইবিভাগ-ছিলাবে একই বেড্ৰ ছণ্ডয়া উচিত। বর্তমানে বিভিন্ন প্রদেশে যে বিভিন্ন ফারের বেতন দেওয়ার ব্যবস্থা আছে তাংগ বাভিল করা দরকার। যে সব শহরে ধরচধরচা বেশী, সেই

সব শহরের কর্মচারীদের প্রয়োজনীয় ভাতা ও গাড়ীভাড়া ভাতা দেওছার বাবছা থাকা প্রয়োজন। (৩) বর্জমানে বৃদ্ধ বেতন ও ভাতার বৃদ্ধি করিলে ছইবে। জীবনগারণের মান বৃদ্ধির সহিত সামঞ্জ রাখিয়া ভাতার পরিষাণ বৃদ্ধি করিতে ছইবে। (৪) উচ্চ বেতনভোগদের ভাতা ও জলাভ আবিক স্থবিবাঞ্জনি বীরে ধীরে ক্যাইয়া একেবারে উঠাইয়া দিতে ছইবে, কারণ ভাঁছারা যে বেতন পান তাহাতেই ভাঁছাদের কুলাইয়া যাওয়ার ক্যা। (৫) কেন্দ্রীয় সরকারের ক্র্মচারীদের মধ্যে ইনজিরিয়ার, মিনিরেল ও সাব্যভিনেট হিসাবে শ্রেণী বিভাগ প্রথা ড্লিয়া দিয়া প্রথম, দ্বিতীয়, তৃতীয় ও চতুর্ব শ্রেণী হিসাবে ভাতা করিতে ছইবে।

সরকার এই খুণারিশপ্রতি মানিয়া শ্রীরাজন এবং ছুট, পেনসন, প্রভিডেও ফান্ড গুড়াতি বাপোরে সরকার বিবেচনা ক্রিতেছেন ও এসন্পর্কে একটা কমিট নিয়োগ করিয়াজন। সরকারী নিয়াজের ফলাফল চইডে আপনারা জানিতে ও বুরিতে পারিবেন যে, ইছা প্রচারপক্ষে নিয় ও মধান শ্রেমীর ক্রীয়ের পক্ষে বিশেষ লাভন্তনক স্ট্রাছে। কমিশনের ক্যারিশ প্রথণ ক্রিছ, স্বকার নিয়াজেন্দুক্তনের বেভন রুছি ও ক্রিয়াজের দ্বিয়া লিয়াছে ভাষা ক্যাইয়া আনার চেঙা ক্রিয়াছেন।

এর বাবছা কাহকটা কলিতে ভারত-সংকারের অভিবিক্ত ৩৪ (৩ টি টাক। বাংগবিক বায় ছইবে। এই বায় প্রথিত व्याचारत देनद त्य हाल निस्त्य करवकि वह नुवं कवा शहरनह फाइता खाद्या एका करिएख जायम एवेदा अर्थ्यू मेर् नर्वलयान करेटलट्स अर्थाहोटाय माधित कल्पाल भाषाविक्ला, आखाक करो रहि लाझात खाला (सरस्यत वशाला विश्वा আন্তরিকভার শহিত কলে করিয়া যায় তরেই চাহার সন্ধান ख्या (प्रत्ये प्रश्नाच क क्यांत क्यांत पारकः **व्य**र्गाखित अध्य भारे अहे । , , , , , अर्थ क्षांबंध, , तर्भंदे (मर्भंद संदृष्टि एक ना । উर्भावन बाबेद अभवन इत्याद ेद ७ ७ मध्ये निजय करव । क्षरकाश्चमाञ्चल व्यवेद लामिकरमद देः लावन दृष्टिय अणि चाव है कवित्व द्वर शहातः काशास्त्र छेपदक दिक्त वित्वन, ভাছাৱা নিশ্চহই ভাহাদের নিক্ট হুইভে উপস্ক কাজ আশ: कविद्यम । हेश् ४७३ किया अभाग असीम दार्थंत पुरानाय ভারতের শ্রমিকদের উৎপাদন-ক্ষমতা অনেক কম ৷ আমরা প্রমাণ করিব যে, ভারতীয় প্রমিকেরাও জন্যান। দেশের স্ক্র উৎপাদনক্ষেত্রে প্রতিযোগিতা করিতে পারে।

ক্ষিপনের রিপোর্ট স্বজোজাবে প্রশংসার যোগ্য হয় নাই সত্য, তবে উহার স্থাবিশ গুল গৃহীত হওয়ায় স্থা বেজনংজাই কর্মচারীদের জনেকটা ক্ষিণ্ড ইউবে। ক্ষিণ্ডনের বিশোর্ট প্রধানতঃ যে বেল ও জাক বিভাগের ক্ষ্মচারীদের পার্থের প্রতি লক্ষ্ম বাধিয়া বিচিত ভাছারা উহাতে সপ্তই হন নাই ইং। ছঃখের বিষয়। ছেল ও জাক বিভাগের ক্ষ্মচারীদের কার্যে ও স্থাচরণে দেশের গোকের অভিখোল ক্ষিবার যথেষ্ট কারণ ইহিয়াছে। ইহারা আপনাধিলকে একট বভগ্ন বিশেষ প্রেমিভ্রু এবং জন-

সাংবারণের বহিত্তি একট সম্প্রদায়বিশেষক্রপে বর্তমানে যে ভাবে ভাবিরা বাকেন তাহা দুর হওৱা উাহাদের এবং জাতির উভরের পক্ষেই কল্যাপজনক হইবে। সরকারী চাক্রীকে জাতির প্রতি কর্তব্য পালনের ক্ষেত্র বলিয়া ভাবিতে শিবিলে এবং সেই ভাবে আচরণ করিলে জাতিও কর্মচারীদের প্রতি দায়িও পালনে অবছেলা করিবে না। বিটিশ পথছেক্টের নিজস প্রয়োজনে ভারতবর্ষে উচ্চ নীচ এবং ইংরেছ ও ভারতীরদের বেতন নির্ধারণে যে বৈষ্থা অমুসত হইমাছিল ধারীন ভারতে ভাহা হইবার সন্ধাবনা নাই। প্রাক্রিকদের বছ আলাদা সাম্রাকারিক গঙী এবং পৃথক নির্বাচনের যে ব্যবহা বিলাভী ভারতশাসন আইনে করা হইমাছিল ভাহার ক্ষ্মে সঙ্গী হইতে আপনাকে মুক্ত করিবা প্রতিক ও কর্মচারীরা আপনাধিগকে বুছন্তর ক্ষমপানের সংগ্র এক করিয়া দেবিতে না শিবিলে উংহাদেরও উর্জি ব্যাহত হইতে বাকিবে।

ভারতবর্ষে পুনরায় গাল্ডদকটের সম্ভাবনা

ডাঃ হাজেন্দ্রপ্রসাদ এক বিবৃতিতে বলিয়াছেন যে, এ বংসর ভারতবর্ষে মোট ৪৫ লক্ষ টন খাদ্যশস ঘাটুভি পড়ার সম্ভাবনা দেবং দিয়াছে: তবে তিনি আখাগ দিয়াছেন যে এই বাটতি পুরুবের ক্ষা প্রচলিত বরাছের পরিমাণ হ্রাস করা হইবে মা। ভারত সরকার আশা করেন যে, যে পরিমাণ খাদ্যশস্ত দেশ ছটতে পাওয়া ঘাইতে পাবে তাহ। সংগ্রহ ও বর্তমের प्रवासन्त्रकः व्यवस्य निवादन ध्वतः विषय स्टेट्ड क्रमण जाभणानीत हाद' अहे अहहे छेहीन इन्द्रा घाँटर । छा: बारकक-প্রদাদ বলেন যে ১৯৪০-৮৬ সালের ডুলনায় বর্ডমান বংস্বে **कांग्रेटलंब प्रेर्शामन मांभामा किए दिनी एडेशाट्य! अल दरभट्ड** र्ड्ड्रह् oor हैन ख वर्ड्यान वरमदर २,१२,५६,००० हैन हाउँन **छेर** पत्र इहेश्वार । यिष्ठ ठाउँ एमंत्र छेर पाष्ट्र विश्व विश्व इहेश्या ७ वानि ठाउँला वदावत्रहे चामारम्य कलकी। चाहेलि इहेशास्त्र अवर हैरलावन शास्त्र विक एट्टलंड बहे पार्टिश बाकिश যাধ্বে। ধুদ্ধের পূর্বে ত্রন্ধ হইতে চাউদ আমদানী করিয়া এই ষ্ট্রতি পুরণ করা হইত। কিন্তু মুছের পর হইতে এ যাবং পার আমদানী আরম্ভ হয় নাই। প্রের বেলায় বভ্যান বংগ্রে গভ বংগ্রের উংশন্ন গথের তুল্নার ১ লক্ষ চন ও গভ नीह ज्रात्वत १६ हेर्गावत्वत कुलभाव २० लक्क हैन क्य शास्त्रता সিধাছে। গম ও কোৱারে মিলিয়া দোটার্ট ৩০ পক্ষ টন কম প্রিবে। বহার সহিত দাধারণত: চাউপে আমাদের বে ১৫ লক্ষ টন দাটুভি হয়, ভাষা বোপ করিলে বাদ্যশক্তের বাটুভি (बाहे Sa अफ हैटनब यह शिकास ।

ভা: বাজেলপ্ৰসাদ বলেন যে, এই ছিলাবের সময় ব্যিরা লঙ্কা হইমান্ত যে, মূদ্রের পূর্বে যে পরিনাণ বাদ্য**লভ ব্যক্ত** ছইত, এখনও ভাছাই হইবে, গোকসংখা বৃ**ত্তির দরণ ইত্যি** পরিমাণ বাছিবে না।

১৯৪৫-৪৬ সালে বৰার পূর্বে, বৰার সময় ও শীভকালে বারিপাতের অভাবে প্রচুয় শভকাশির আশকা দেখা দের। এজন্য স্বর্থেন্ট ও জনগাধারণ প্রচুয় ঘাট্ভিয় আশকা করিয়া-ছিল, এজন কি ঘাট্ভি যে হইবে ওাহা ভাকারা একএশ ধরিয়াই পইয়াছিল, কিছ ১৯৪৬-৪৭ সালে বর্ষায় ও শীতকালে বারিশাভ নেটার্ট বাভাবিক হইরাছে। দেশের সর্বস্থানেই চাউলের কলন আলাত্যারী ভাল হইরাছে। রবিশস্তও বেশ ভালই হটবে আশা হইরাছিল। কিছ হঠাং একটা রোগ দেখা দেওরায় বিত্তীর্ণ ভূমিখতে গম নাই হটরা যায়। মবাপ্রদেশ হইতে এই বরণের রোগের প্রথম সংবাদ পাওয়া যায়। মুক্ত প্রদেশের কোন কোন কোনা প্রথম সংবাদ পাওয়া যায়। মুক্ত প্রদেশের কোন কোন কোনা এই বরণের ব্যাণারের সংবাদ পাওয়া যায় মার্চ মাসের প্রথম ভাগে। কোন বে সংবাদ দিতে দের করিয়াছিল ভাহা নছে। রোগটাই ইহার পূর্বে দেখা দের নাই। 'রোগ ফ্রুত বৃদ্ধি পাইরা শন্তের প্রত্ব কৃতি হয়। চাউলের উংপাদন ভালই হইরাছিল, মুন্তিও ভালই হইবে আলা করা যাইতেছিল। যথন ক্রিকং সুরাহা হইবে যবলিয়া মনে হইতেছিল, তবনই হঠাং এই ক্রতি হইল।

खरे विश्रं पार्हे शिक्षा के बाद का अवदा के कि कविदवन ভাষা বুৰাইবার নিমিত ডা: রাজেজপ্রসাদ বলেন যে উচ্চত অঞ্চ হুইতে খাদান্তব্য সংগ্ৰহ কৰিয়া ঘটোত অঞ্চল উচা পাঠাইবার বন্ধোবন্ধ করা হইয়াছে। তাহ ছাভা যতটা পারা যায় ততটা খাঁমদানীর চেষ্টাও করা হটবে। ভবে আন্তর্জাতিক বাদ্যবন্ধন পরিষদের ভাবগতিক দেবিলে মনে হয় আম্লানীর ভর্গায় বৰিষা না থাকিয়া দশ্যৰ ঘাট্ডিট দেশ হইতে মিটাইবার আয়োজন করা ভাল: বিপদের মূবে ভংপর হওয়ার পরিবভে একবার একাদিক্রমে বংসর ছয়েক কোরের সৃষ্টিত অধিক ফলন উৎপত্ন কৰিয়া একট বড় ৱক্ষের কেন্দ্রীয় বিশার্ড গঠনের চেঠা হওয়া উচিত। কংপ্ৰেদ গৰুৰেণ্ট আন্তবিক চেটা কবিলে ইছা भक्षव क्रेट्य । সভট্টিতাণের ক্ষম আত্মর্কাতিক পরিষদ-সমূহের প্রত্যাশায় বসিয়া থাকার অভ্যাস এবার সূর ছওয়া উচিত। ১৯৪৩ দালের ছডিক্ষ, ১৯৪৬ সালের এবং এবারকার বাসসমটে ভারতবর্ষের প্রতিনিধিবন্দ আন্তর্জাতিক বাড-বন্টন প্রিথদের শিক্ট যে উদাপীন ব্যবহার পাইয়াছেন ভাছা ভাৰতবাদী সহজে ভলিতে পাৱেনা। প্ৰদা দিয়া ৰাভ किनिए शिक्षा कार्य अर्था में दिन के विकास भारत नार्के अपर প্রতিক্রত বাছফবোরও সবটা আনিতে পারে নাই।

ময়মনসিংহ দরবরাহ বিভাগের অকর্মণ্যতা

বার্ষিক হয় কোট টাকা ব্যয়ে পৃষ্ট বাংলার নিবিল সাপ্লাই বিভাবের অকর্মণাতা ও ছুনীতি সর্বন্ধনিনিত। ইন্দের অধারণাতার হুল বেশন-ব্যবস্থা কোনদিনই প্রামাক্ষণে সাক্ষণ্য-মভিত হুইতে পারে নাই, কলিকাতায় সামান্ত যে পরিমাণে উন্থা সকল হুইয়াছিল ভানাও শেষ হুইয়া গিয়াছে। চিনি, আটা ও কাপণ্ড বেশনের পোকানে ছুপ্রাণা হুইয়া উঠিয়াছে। সম্প্রতি দৈনিক ভারতাত্র মহমনসিংহ ক্ষেণার সিবিল সাপ্লাই বিভাবের ভারহান্ত কর্মচারীদের অকর্মণ্যতার যে দৃষ্টান্ত প্রকাশিত হুইয়াছে তাহা বিসম্বন্ধর। ঘটনার বিবরণে প্রকাশ, বাস্থ নদীতে একটি পাহারাদার দল ধানবোকাই করেকট নৌকা আসিতে দেবিরা মাকিদিগকে নৌকাগুলি তীরে ভিড়াইতে বলে। প্রথমে ভাহারা এই কথার কর্মণাভ করে মা। পাহারাদার দল ভবন শৃত্তে গুলি ছোকে, মাকিরা ভবন নৌক। তীরে আমিরা গাগার। জ্বনে ক্রমে

পেবানে বছ নৌকা আসিয়া বছ হয় এবং বক্ষের ভয় দেবাইয়া তাহাদিগকে বাহিতে বাব্য করা হয়। এই ভাবে ৬০০০ নৌকা পেবানে ব্যাহয়। তারবার্তা প্রেরণ করিয়া আরও প্রহুৱী আনাইয়া গওয়া হয় এবং দশল পূলিদ বোকাই একটি প্রমণক পেবানে আসে। বোকার সংগ্রহ বিভাগের কর্তারা দকলে দেবানে আসিয়া উপপ্রিত হন। প্রত্যেকটি নৌকার ৫০০ মণ হিসাবে অল্যুন তিন গক্ষ মণ বান সেবানে ছিল। এই সমন্ত বান আটক করিয়া উপযুক্ত স্থানে লইয়া যাওয়ার ব্যবস্থা করা হয়। আবশেষে ভিট্টিই কণ্ডনিং অফিসার যি: পার্কারও আসিয়া উপন্থিত হন।

মিঃ পাকার না আসা পর্যন্ত প্রান্ত হক হাজার মাবিমাল্লাকে পান্তনিষ্টই মনে হইতেছিল কিন্তু পাকার সাহেবের
আগমনের পরেই তাহাদের মধ্যে চাকল্য লক্ষিত হইল। পরের
দিন সকালবেলায় ৬ হাজার নৌকা প্রহরীদের বেষ্টনী প্রেদ
করিয়া মদীপথ বাহিমা বেপরোরা ভাবে চলিয়া রেল; নিঃ
পার্কার বাবা দিবার কোন চেষ্টা করিলেন না, তাহায় অধীনম্ব
আকিসারস্থল খাবুবং দভাষ্যান রহিলেন না, তাহায় বিলাল হয়
আকিসারস্থল হালাব কিন্তান্তর্বান্তর্বান করিয়া
আকি করিয়া হব হাজার লোকের দ্বার্হা চালিত হয় হাজার
নৌকার এক বিরাট বহুর ভিন লক্ষ্য প্রভাষ্যান করিয়া
কালাবেশ্ব প্রেপ্তার করিবার চেষ্টার্ব করা হইল না।

শরৎ চন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ের স্মৃতিরক্ষা

खानवारसञ्च कथा निक्षी नवर हत्य हरहे। नाथारश्च मार्थ ক্রজিকাজা ভিত্ত বঞ্জালয়ে বাংস্থিক ব্যক্তাদানের বাবয়া এবং প্রতিত বংগর অস্তর বাংলার শ্রেষ্ঠ উপন্যাস অবধা সম (अर्थक) क नुबकात स भएक मार्थित श्रेष्ठांग क वस्। संबर-पृष्ठि ক্ষিত্রী কলিকাড়া বিশ্ববিভালয়কে ৩০ হাজার টাকা দিয়াছেন। বিশ্ববিদ্যালয়ের দিনেটে উক্ত প্রমাব গৃহীত ছইয়াছে। শরৎ শ্বতি কমিটর অভিলায় অনুযায়ী প্রতি বংসর ৩১লে ভানুষারীয় मरदा तका जनर कि भूतकात भारेरक छ। ए वित कतिनात ক্ষু একট ক্ষিট গঠিত হইবে। এই ক্ষিটতে ডা: শ্রামা-প্রসাদ মুবোপাব্যায় শরং-খুভি কমিটর সহ-সভাপতি জীয়ক चढुमध्य छछ, विद्यविभागस्य दायण्य गार्ट्णे च्यानक, বলীয়-সাহিত্য-পরিষদ প্রবাসী বদ-সাহিত্য সংখলনের ছই ক্ষম প্ৰতিনিধি এবং বিশ্ববিদ্যালয়ের সিভিকেট কর্তক মধ্যেমীত এক জন বন্ধ ভাষার পভিত থাকিবেন। মনোনীত বঞ্চা এই ক্ষিটির ভুগারিশ অভুযায়ী অনু।ন ভিনটি বক্তভা দিবেন এবং জাহাকে পাঁচ শত চাঁকা পাবিশ্রমিক দেওয়া হইবে। পুরস্কারের ক্ৰম্য খিনি মনোনাত হইবেন তিনি এক সহল নগদ টাকা बार क्षाप्त बक् नल है।का मूरमात बक्कि नमक नाहरवम। वारमांव (अर्थ देशनाम अवना गत्र (अवकरक अरे शूबकांव পুরস্বারপ্রাপ্ত ব্যক্তিদের নাম কলিকাভা (ए७वा स्टेरव। বিশ্ববিদ্যালয় ক্যালেখার ও ক্লিকাডা গেলেটে যুক্তিত ব্ইবে।

## বৈদিক আৰ্য ও ইরাণীয় আ্য

#### শ্রীননীমাধব চৌধুরী

পূর্বের প্রবন্ধে (প্রবাসী, হৈত্র ১৩৫৩) যতদ্র সম্ভব বৃদ্ধিপ্রমাণের সাহায়ে দেপাইবার চেষ্টা করা হইয়াছে যে আবেন্ডার আইরিয়ানা (Airyana) যাহার অর্থ করা হইয়াছে আর্বদিগের দেশ তাহা মোটামুটি ইরাণ, আফগানিস্থান ও ভারতবর্গের পরস্পার সংলগ্ন কয়েকটি অঞ্চল লইয়া গঠিত। এই আইরিয়ানার উত্তর অংশ বোবারা-মার্ভ ও দক্ষিণ অংশ সিদ্ধু-পাব্দেয় উপত্যকা। ভেন্দিদাদের তালিকা হইতে সাধারণভাবে এই সামানা নির্দেশ করা যায়। এই মতের সপক্ষে ও বিপক্ষে যে সকল যুক্তি আছে তাহার অনেক-শুনির আলোচনা করা হইয়াছে। বর্তমান প্রবন্ধে তৃই পক্ষের যুক্তি-প্রমাণের আরও কিছু আলোচনা করা হইবে এবং জারোম্বিয়ান ধর্মের পশ্চিমমুখী গতি হইতে আর্থনিপের দেশের এইরূপ অবন্ধান সম্বন্ধ কত্রধানি সমর্থন পাওলা বাহা দেশা হাইবে।

ইভিপ্রে বলা ইইয়াডে যে আবেন্ডার হারোয় (হিরাট)
প্রীক ঐভিহাদিকগণের নিকট আরিয়া এবং ইহার
অধিবাসা আরিয়ান বলিয়া পরিচিত ছিল। প্লিনি প্রমুধ
অনেক লেগক আরিয়ান ও আরিয়ানা বা আইরিয়ানা অভিন্ন
বলিয়া মনে করেন। Strubo, Eratusthenes প্রমুধ
লেগকগণ পূর্ব-ইরাণকে আরিয়ানা বলিয়া মনে করিতেন।

আবেশার স্টিক্রে দেবধাম হারো-বোরভাইতি (Alborz) পর্বতে । মৃত্যুর পরে পুণাবানের আত্মা ('hinvat সেতু অভিক্রম করিয়া এই পর্বতে আরোহণ করে। মিখু ও অক্স দেবগণ সেধানে বাস করেন। 'মছরা মাজনা সেধানে বাদ করেন। এই দেবধানে গ্রাত, অন্ধকার, কুল্লাটিকা, বুম, শীত, গ্রীম প্রভৃতির অধিকার নাই। আইরিয়ানা বেজো বা Aryan homeকে গাহারা অগ্রার উত্তরে অবস্থিত বলিয়া মত প্রকাশ কড়েন প্রাচীন ইবাণীয় স্বর্গের এই বর্ণনা তাহাদের ম:তর বিরুদ্ধে যায়! (layomarathan कि देवानीय नुवार्यव मञ्च वना इदेवार । ठीडाव দেহ হইতে অভ্যা মাজদা আর্দেশের মধাতাগু বা প্রধান ভাগ সৃষ্টি কবিয়াছেন। Behram yasht-এ দেখা যায় ধরাথুই একদা অভর৷ মাজদাকে ভিজ্ঞাসা করিলেন, কি ভাবে বেহর:খের উপাসনা করিন্তে হইবে ? উত্তরে অভবা মাজদা বলিলেন যে আর্থদেশসমূহে (airyao danhavo) বেহণামের তৃষ্টির জন্ত পশুবলিসহ বগসোম (Barsom) মুক্ত कविष्ट इटेरर । द्रेयर लाज वा शीख वर्णत পশু विज पिया উহার মাংস পাক করিতে হইবে। বেহরামের ছক্ত প্রস্তুত এই মাংস কোন পাপাচারী বাজি, বেখা বা জোরোষ্ট্রিয়ান বর্মের শক্ত বিধ্যার দারা ভূজ হইবে না। হইলে আর্ব দেশসমূহ মহামারী ও শক্তদৈত্যের বারা বিধ্বন্ত হইবে। এই মাবদেশগুলির নাম উরেধ না থাকিলেও ব্যাখা-কারগণ ব্যাক্টিয়া, পারখ্য ও মিডিয়ার নাম করিয়াছেন।

ব্যাকটিয়া বভামনে আঞ্চানবাজ্যের অন্তর্ভুক্ত আঞ্চানত্কীস্থান, বাদাকসানকে ব্যাকটি যা হইতে বিচ্ছিন্ন করিয়া পৃথক প্রদেশ করা হইয়াছে । পারশা প্রাচীন ফার্শ বা পারশিস, বর্তমান ফার্মিস্থান । মিডিয়া বর্তমান পারশ্র রাজ্যের পশ্চিম, উত্তর-পশ্চিম ও উত্তরের ক্ষেকটি অঞ্চা লাইতেছে, ভেন্দিদাদের আয় বসভিগুলির ভালিকার সহিত ব্যাব্যাকারগণের প্রদন্ত ভালিকা মিলে না। সমগ্র পশ্চিম ও পূব আঞ্চানিস্থান, কির্মান, শক্ষান, বেল্টীছান, সিদ্ধু উপত্যকা এবং উত্তরে প্রস্বা, মাত প্রভৃতি অঞ্চ বাদ পভিষ্য বাইতেছে:

ভৌগোলিক পত্তিস্প কুদীখান হুংতে আফ্গানিস্থান পর্যন্ত সমগ্র উচ্চভূমিকে ইরানের মালভূমি আগ্যা দিয়া থাকেন: তাঁংাদের মতে প্রাচীনকালে এক জাতি (race) ভক্ত বিভিন্ন গোষ্ঠার লোক এই মালভমিতে বাস কবিত। এই সকল গোষ্ঠা এবং ভারতবর্ষে উপনিবিষ্ট ভাহাদের সগোষ্ঠায় জাতিগুলি আপনাদিগকে থাব নামে পরিচয় দিত। প্রভরাং ভৌগোলিক পণ্ডিতগণের এই মভাছদারে ব্যাকটিয়া, ফার্ল ন মিডিয়ার মধ্যে আর্যদেশের সীমানা আবিদ্ধ কথা এটো:ক্রক। সে যাহা হউক, কুদীস্থান হইতে আফগানিস্থান প্ৰস্থ বিস্তুত উচ্চভূমিকে ইরাণ আখ্যা দেওয়া হট্যাতে। এক জাতির--- এই জাতির নাম উাহাদের ৯তে ইরাণ্য--:লাক এই মঞ্চলে বাস কবিত বলিয়া। প্রাচীনকার এর উত্তভূমির দক্ষিণ-পশ্চিম ঝালে ও তাহার নিম্নে পার্বা উপ্সাগর ৬ আরব সাগ্রের উপকৃষ অঞ্লের অনিবাসিগ্ৰ সে জাতিতে ও ভাষ্যে হলাবাঁছ ছিল না তাহা ললাভ্যুনা: স্পানীর আমল ইইটে সম্প্র **প্রেল** ইরাণ বলিয়া প্রিচিত, হরাণের গ্রমান রাজনৈতিক সংজ্ঞার উত্পত্তি দেই সময়ে ইইডাতিল। ইয়ার সাধানীর রপ Eran : রেছা গা বংলাণা সেপের প্রচলিত পার্যন্ত নাম পরিবর্তন করিয়া উংহার বাজোর নাম ইরাণ বিয়াছিলেন धनिस आधुनिक देवार्यय-वादव, दिइनी, आर्यनीयान, ত্রুক্ষান প্রভৃতির মোর সংখ্য প্রাচীন ইবাণীয় গোষ্টার (जाकम्रशाः चर्यकः) (वने मिष्ठाईदोव मुधावन) ,

ইভিপ্রে হেরেভোটানের সংক্ষে বলা হইয়াছে থে একটি প্রাচীন কিম্বদন্তীর উল্লে: করিয়া ভিনি বলিয়াছেন যে মীডদিগের একটি নাম চিল Ario: এই আবি এইক আয় বলিয়া ব্যাখা। করা হইয়াছে । মীডদিগের স্থয়ে পূবে কিছু বলা হইয়াছে, এখানে আরও কিছু বলা আবক্সক।

ইভিয়েসিক আমলে ইরাণীয় গোষ্টাভুক আভিগুলির মধ্যে মীজনিপের অভানর প্রথমে ঘটে। মীজনিপের অভা-দয়ের ফলে পান্চম-এশিহার রাজনৈতিক শক্তির যুক্তেটিদ টাইগীর উপভাতার সেমিটিক পশ্চিমে মিডিচার ইবাণীয় অঞ্জে সুব্য যায় সপ্তম শতাকীর মনাভালের ঘটন 🕛 ভারপর ভৃষ্টা স্থাম শতাকীর মধাভাগে অলেনেভি এই দেমিটিক অঞ্চলে স্থাইছা লইয়া হাছ। । এই অন্তমান বাব শত বংগর ইরাণীয় সাম্রাজ্য পশ্চিম ৬ মধ্য এশিবারে বুলুর্ম বাজনৈতিক সংগ্ঠন হিচাবে বছমিলে থাকিয়া উপাইয জাতির শক্তি ও প্রতিভার দাঞ্চা বহন করে। মধ্যে একবার চক্ষ বাল্সাইয়া দিয়া ভীব, উজ্জন উত্তার মত তীকণ্ঠিক হেলেদপটের ওপারের আকাশ কটাতে ছুটিয়া পূর্বে দিয়া-উপত্যকার আকাশে বিলীন হটছা পেল। উচার প্রচন্ত অগ্নি উদ্যারণে হাকামনী সূত্রাজ্ঞ ভূম্মীজ্ঞ হট্য পেল ( ভারপথ আয়সিকিভান বংশের প্রতিষ্ঠিত নূত্র ইরাণীয় সামাজোর প্রতিথন্ধ হট্যা গ্রীদের স্থান এদিকার করিল বোম : পাঃ ভয় শতাকী ধবিল ছই সংস্থাভোৱ মধ্যে প্রতিম্বিত্য চলিল : ওর্ম পাখিয়ান অধারোটী বাহিনীর আক্রমণে বার বার রোমের বাহিনী এশিয়া-মাইনরের উপরুব পর্যন্ত ইটিয়া গিয়াতে। সাদানীয় বংশের আমলে প্ৰিত বে ম্যামাজ্যে চুড়াও লাজনা ঘটিয়াছে। প্ৰথম স। পুরের হচ্ছে পরাজিত, বন্দী রোমের সমাট্রনদীশালায় মৃত্যমূপে পতিত ইইয়াছেন। প্রাঞ্জিত, বিপ্রাঞ রোম সাদানীয় স্মাটকে কর দিয়াতে ককেশাবের ছার একং কবিবার জল: ভারপর একই শক্তা হান্ত জই সামুদ্রোর প্রমুঘটিল : এই নব-অভ্লেড শতে ইস্লাম ধ্যে দীক্ষিত বিজয়ী আর্থবংছিনী। সাধানীয় সাম্রাজ্য ধ্বংগ করিয়া বিজ্ঞী আরববাছিনী পুর্বনিকে তিরাই পর্যন্ত অগ্রসঃ চইয়া খাটি প্রতিষ্ঠিত কবিল :

মিডিয়ার রাজনৈতিক ইতিহাসের সংক্রিপ্সার পূর্বের এক প্রবন্ধে (প্রবাসী, কাতিক, ১০৫৬) দেওয়া ইইয়াছে। মধা ও উত্তঃ পাথছোর কিংদংশ, আফারবাইছান ও কুদী-ছানের অংশ লইখা মিডিল গঠিত ছিল। ইরাণীয় উচ্চ-ভূমির পশ্চিম প্রান্থে ইহা অবন্ধিত। ইহার উত্তর-পশ্চিম আর্মেনিয়া, পশ্চিমে মুফ্রেটিস ওটাইগ্রিসের উপত্যকা, দক্ষিণে সদীয়ানা, পূর্বে কাম্পিলান এবং প্রাচীন হিরকানিয়া ও পাথিয়া। ইহার মধ্যে স্থসীয়ানা বাদ দিলে এক আর্থেনীয়াই ভাষায় ও জাতিতে ইরাণীয় গোষ্ঠার সহিত সম্প্রিকত অধিবাসী ছিল। মেসোপটেমিয়ায়, ককেশাস অঞ্চল, কাম্পিয়ান সাগরের পুব-উপকুল, হিরবানিয়া, পাথিয়া প্রভৃতি অঞ্চলের অধিবাসী ইরাণীয় গোষ্ঠাভুক্ত ছিল না। আমেনীয়া, মেসোপটেমিয়া, কাম্পিয়ান সাগর ও দক্ষিণ-পূর্বের মরু অঞ্চলের মধ্যে আবন্ধ এই দেশের ইরাণী গোষ্ঠায় অধিবাসী কোষা হইতে আসিল গু সংখ্যায়, কারাজের ছাম্বিছে, ধর্ম ও কৃতিব্যুক্ত অবদানে, সংক্ষেপে ভাষাদের প্রাচীন ইতিহাসে মীজগণের এমন কোন বিশেষত্ব দেখা হাছ না মাছা হইতে অসমান করা যায় যে, সিয়ু উপভাকা পর্যন্ত ইরাণীয় গোষ্ঠার মায়্রয় মিডিয়, হইতে প্রাচিকে উপনিবেশ কিন্তার করিয়া হল। জোরারের বিশ্বের করার মার্যার কিন্তার করিয়া হল। জোরেরিয়ান মেরার সম্বর্ধন করে না, ল

মিডিয়ার প্রকৃত ভাজতৈ ভিক অভানত হয় আনির্ভাষ সামাজ্য কামের পরে: স্থান্তেন্ (Phinotes B. C 647-625 ) MINE ্যালীকার বিশ্বনি W : 413 সামাজের প্রম করেন । তারার পুত্র দিখাঝারেদ ( Cyaxares B. (\*, 625-585 ) fatate 空中 李代明: দিখাকারেদের বাঞ্জকালে মিডিয়া দিবিয়ান বাহিনী কড় কি আক্রান্ত হয় ৷ তেরোডেটালের মতে এই সিনিয়ান বাহনী ককেশাৰ ও কাম্পিয়ান সাগৱেল মধ্যে সার্থেত্ গিরিবছটের পথে মিডিয়ার মধ্যে প্রবেশ করে 🕝 সিজ্ঞাক্তাল রেসের সঙ্গে বিভিয়ার ভাঙার যুদ্ধ হয়। এই যুদ্ধের ফরে আনাতোলিয়ার হালিস ( Halvs ) নদীর উত্তরের সমস্ত ভূভাগ মিডিয়ার দপলে আসে। এই ভূভাগ প্রাচীন হিটাইট জাতির আদি বাসভূমি বলা হয়। হালিস ন্দীর দ্কিণের ভভাগ ফ্রিকিয়া নামে পরিচিত ছিল: ঠিক এই সময়ে কিমেরীগানগণ ( Cimmerians ) ক্রিজিয়া আক্রমণ করিয়া প্রাভিত ফ্রিভিয়ারাজ মিডাস আত্তর্যা করেন। িমেরীয়ানদিগের উল্লেখ করিবার কারণ নতত বৈজ্ঞানিক মতে কিমেরীধান, ম্যান্ডাস, মীড এক জ্ঞাতি-ভক্ত এবং পার্যভাষাভাষী । ডাঃ হেডন বলিভেডেন,

"It has been suggested that Kimmerians. Mandas, Medes with their modern Kurd and Bakhtiari representatives were all one people and who were almost certainly of Aryan speech."

One people অর্থ ইংরো সকলেই ইরাণীয় গোষ্ঠীর জাতি। ইরাণীয় কৃষ্টির ইতিহাসে মীড ছাড়া অক্ত জাতি-গুলির বিশিষ্ট কোন স্থান নাই।

সে যাহ। হউক, এইরপ অন্তমান করা হয় যে সিআক্সা-রেসের রাজত্কালে জ্বাপুষ্টের প্রচারিত ধর্ম মিডিয়ার রাষ্ট্রের ধর্ম বিলিয়া গৃহীত হয়। মিডিয়ায় জোরোষ্ট্রিয়ান

ধর্মের এই প্রাধান্তের সহিত মাজি (Magi) সম্প্রদায বিশেষভাবে ছডিত। হেরেডেটোবের মতে মাজিপণ মিডিয়ার ্রকটি সম্প্রকার বা গোদ্ধী (tribe). 📆ধ মিডিয়ায় নহে, হাকামনী আমলে ও ভাহার পরবভীকালেও মাজিগণ জোবোষ্টিয়ান গমের পুরোহিত সম্প্রদায় তিসাবে প্রভাব ও প্রতিপত্তির অধিকারী ছিলেন। মাজিগণের স্থাতিত জোরোম্বিরান প্রেরি এই ঘনিষ্ঠ সম্পর্কের দক্ত কেত কেহু এইরূপ মত প্রকাশ করিয়াকেন যে কোরোপ্রিয়ান প্রেরি উৎপত্তি-স্থান মিছিয়া! "But the fact that its sacred books know nothing of the Magi tells partienlarly against this view," স্বাং সোমেষ্টিগ্ৰ ব্যেতি প্রাচীন গুরুগুলি মাজিগুণের সহজে নীর্ব: নীরবভাই বড় প্রযাণ বে এই ধর্মের উৎপত্তি মিডিয়ায় হয় নাই। প্রশ্ন উঠে, মিডিয়া যুপন এই ধুমের উৎপত্তি-স্থান নহে জ্পন মিডিয়া ইহার বিশিষ্ট স্বভাদ্যের এবং মিডিয়ার একটি সম্প্রদায়ের এই প্রেব্ পুরোহিতের স্থান অধিকার কবিবার মূলে কি কাবৰ পাছে গুলু মালি নতে, মিডিয়ার নাম পূৰ্বত ভেলিদানের আলিকায় স্থান পায় নাই ৷ একপ জেতে এই কারণটি গুরুত্ব বলিজ মনে করু ঘাইতে পাবে। এই স্বৰেত্সপ্তের পরে বলা হইতেছে। মিভিয়ায় মাজি প্রব্যক্তির সম্প্রস্থারের প্রার্থানের পরিচর পাওয়া যায় একটি খ্যুমা এইতে - সাইবাদের প্রবর্তা সমাট কামবিদেদের বাজভ্লালে মিশ্র মভিায়নে স্যাটের অঞ্পত্তিকৈ স্থাপ্র স্ট্রা প্রেছিড ( (harmata ) নামক একজন মূর্যের প্রধান ষ্ট্রাটের ভাতে৷ বলিয়া পরিচ্ছ দিয়া আপুনাকে পুরিক্তের প্রয়াউ বলিগা পোষণা করেন। কেনোভোটাকের মতে এই বিপ্রবের মধ্যে ভিড পার্গা স্থানে প্রক্রি মাজি সম্প্রদায়ের বিরোধিকা। গৌমতকে নিহত করিল প্রথম লাবিষদ দিংচাদন অধিকার করেন .

মৈডিয়া হাকামনী সামাজ্যের অন্তর্ভুক্ত ইইবার পরেও মাডিগণের আবিশিতোর কোন হান হয় নাই। আর্মিকি-ভান সামাজ্যের আমলে মাজি ও অন্তান্ত জ্ঞানী বাজিদের লইয়া খিজীয় সভা (Senahe) প্রতিষ্ঠিত ছিল। এই সভা সমাট নির্বাচনে মত প্রকাশ কবিত। ইহা হইতে মাজিদিগের প্রতিপত্তির পরিচয় পাওয়া যায়। কথিত আছে যে আর্মিকিভান সমাট টিরিভেটেদ যখন বোম সমাট নীরোর দলে সাক্ষাং করিবার জন্ত রোমে যান তখন তাঁহার মাজি গুক্লণ (Spiritual advisers) তাঁহার সঙ্গে রোমে গিয়াছিলেন। আর্মিকিভান স্মাট ভলসাভেদের (Volsages, ৭০ খুরার) উনামে আবেস্তার বিভিন্ন অংশ-সমূহ একত্র করিয়া সহলিত করা হয়। সাসানীয় আমলে মাজি পুরোহিত সম্প্রদাবের প্রভাব-প্রতিপত্তির দীমা ভিল

না। সাসানীয় বংশের নাম হইয়াছে সাসান (Sasan) হইতে। ইতাকিরের আনাহেদ বা আনাহিতা দেবীর প্রসিদ্ধ মন্দিরের প্রধান পুরোহিত ছিলেন সাসান। বছরঞ্জী বংশের গান্ধকল্পা রামবেহিতকে বিবাহ করিয়া তিনি আপনার পরিবারের প্রতিষ্ঠার স্ক্রপাত করেন। এই প্রতিষ্ঠার মূপে ছিল পুরোহিত সম্প্রদারের সমর্থন ও সাহায্য। সাসানের পুর পাবক। পাবকের পুর বিধ্যাত আর্দশের সাসনীয়-সামাজের প্রতিষ্ঠা করেন শেষ আর্সিকিভান সমাই আর্তাবান্থসকে: Artabanus) পরান্ধিত ও নিহত করিয়া। স্যোনীয় সামাজ্য প্রতিষ্ঠার এই ইতিহাস হইতে সাসানীয় আমলে পুরোহিত সম্প্রদারের প্রতিপত্তির কথা অনুমান করা যাইতে পারে।

বাইবেলে তেবেগিয়ার উদ্ধি (Jeremiah xxx ix,3) হইতে জানা যায় বাবিলোনের সমাটু নেবুকাড-নেজ্জার যথন জেকজালেয়ে প্রবেশ করেন ভথন ভাঁচাত অফুগ্মীদিপের মধ্যে মাজি প্রধান (the chief of the Magi ) ভিলেন , উহার রাজ্য কাল খু: পু: ৬০৪-৫৬১। উহার পরবর্তী নাবুদাই(দের এম্যে (খুঃ পুঃ ৫৩৯ ) দাইবাদ বাবিলোন সম করেন। ছত। বিজয়ী বাবিলোন সম্রাট নেবকাডনেজ্ঞার মিডিয়ার দিখাকারেদের পত্র স্বাষ্টিয়-জেদের সম্ধান্তিক। ভাতবাং অভ্যান করা হায় যে, भिडियात भाषाद्यात अञ्चान्द्रत्व भट्ट मट्ट भाजिम्स्यनाद्यत् অর্থাৎ কোরোষ্ট্রয়ান ধর্মের প্রভাব নিডিয়া হউতে বাবিলোন भग छ विकास इंडाबिकाः इंडा भोजन्य वाद्योगिक শিস্থাদায়র প্রেয় ব্যাপারও এইতে পারে। তবে বালি-লোনের সমাটের অভুগানা মাজি প্রান্ত জোরে: ছিবান ব্যেতি পুলোটিভ নাটিইয়া বাবিলোনীয় ধর্মের পুলোইডও ইইভে পারেন: কারণ, পারশু, ব্যাবিলোম প্রভৃতি দেশের প্রোহিত দম্প্রদায় প্রাচীনকালে পশ্চিমদেশের নিকট মাজি নামে পারিচিত ভিলা New Testamentals মাজি कारभद উरहात अपुत्रक शांच (St. Mathew fi, I ) : **इट**तारकाहारमञ् भा किमिरनव नाम र अने भाष कड़े कि खेरलथ-যোগা বিষয় পান্যা যাত্র মাজিগণের সাহায় বাভাভ स्विकात पुका १६८२ पातिक म<sup>ा</sup> जाहाता अधि, सूर्य, চন্দ্ৰ, পৃথিবী প্ৰভৃতিৰ উদ্দেশ্যে বলি প্ৰদান কৰিত, কিছু আসিতীয় ও খারবণণের নিকলে ভাষারা স্ত্রী-দেবতা প্রা-পদ্ধতি ক্রিয়াডিল: আফোদাইতের গুহুৰ হেবেরভোটাদের এই আফোদাইতি আনাহিতা বা आनाई छिन । होत्वा माजिल्लित अधि छेशाननात विकुछ দিয়াছেন। কথিত আছে, সালেকছা গ্রারের অমুচরদিগের মধ্যে ওসস্থানেশ নামে এককন মাজি ছিল: हीरनव झानवःरभव স্থানলে ব্যাকটিয়ার তথার্ডাতির

নিকট হুণদিগের বিরুদ্ধে সাহায্য পাইবার আশার চ্যাংকিরেন নামক রাজদৃত প্রেরিত হন। তিনি মিভিয়ার ( Tiaochi ) মাজদিগের প্রসিদ্ধির উল্লেখ করিয়াছেন।

মাজি পুরোহিত সম্প্রদায়ের এই প্রতিষ্ঠার কারণ সংক্রেরমাপ্রসাদ চন্দ মহাশয় উাহার নিজম্ব অস্থমান ব্যক্ত করিয়াছেন :—

"The Magis were one of the ten tribes of the Medes who had possessed through centuries a whole mass of very ancient traditions and beliefs dating from pre-historic period when the ancestors of the Indo-Aryans and Iranians had not separated."

অধাৎ, ভারতীয় আর্য ও ইরাণীয় আর্য জাতির পূর্বপুক্ষ-গণ ষধন একত্র বাস করিত সেই প্রাগৈতিহাসিক যুগ ছইতে প্রবাহিত কৃষ্টি ও বিশাসের ধারা মিডিয়ার মাজি গোষ্ঠা রক্ষা করিয়াছিল। তারপর আরও অগ্রসর হইয়া তিনি বলিতেছেন,—

"The position of the Magi in the Achamenid and of the Mobeds ( Nife Acetatian fafe) of the Sassanian period indicates that the establishment of a hereditary priesthood in Persia is due to the circumstance that the King and people of Persia adopted a form of ritual practice which was either originally not their own or had ceased to be so and which had been zealously guarded as the heritage of the Median tribe of the Magi."—(Survival of the Prehistoric Civilisation of the Indus Valley.)

অর্থাৎ পারপ্তের অধিপতি ও দেশবাসী যে ক্রিয়াকাপ্ত গ্রহণ করিয়াছিল তাহা গোড়ায় তাহাদের নিজস্ব ছিল না অথবা থাকিলে লুপু হুইয়াছিল। এই ক্রিয়াকাপ্ত মিডিয়ার মাজিগোটা উত্তরাধিকারস্থত্তে পাইয়াছিল এবং নিষ্ঠাল সহকারে রক্ষা করিয়াছিল। পারশ্যে পুক্ষাস্থ্রুমিক পৌরোহিড্যের প্রতিষ্ঠার মূলে রহিয়াছে এই ক্রিয়াকাণ্ডের প্রচলন। চন্দ্-মহাশ্যের এই সকল উক্তির বিস্তৃত সমালো-চনা করিবার স্থান এ প্রবন্ধে নাই, সংক্ষেপে তুই একটি কথা বলা প্রয়োজন।

প্রাহিত, ভাহারা বে সকল ক্রিয়াকাণ্ড অন্থসরণ করিত ভাহা প্রধানতঃ ঐ ধর্মের ক্রিয়াকাণ্ড। এই ধর্মের উৎপত্তি বিদ্যানতঃ ঐ ধর্মের ক্রিয়াকাণ্ড। এই ধর্মের উৎপত্তি বিদ্যান পূর্বাঞ্চলে ব্যাক টিয়ার, ইহাই প্রচলিত মত। প্রাচীন ক্রোরান্তির মাজির আবির্ভাব খং পাজের মাজির উল্লেখ মিলে না। ইতিহাসে মাজির আবির্ভাব খং পাজ ৬ই লভান্তির ঘটনা। স্থতরাং প্রাকৈতিহাসিক যুগে হখন ভারতীয় আর্য ও ইরালীয় আর্য বিচ্ছির হয় নাই তখনকার ক্রিয়াকর্ম ও ঐতিক্রের ধারা মাজিগণ আপনাদিগের মধ্যে রক্ষা করে এবং এই ভাবে রক্ষিত কৃষ্টিমূলক সম্পদ ভাহাদের প্রতিষ্ঠার হেতু, এই উক্তির মর্ম গ্রহণ করা কঠিন। এ বিষয়ে সক্ষেহ নাই বে, মাজিদিগের কোন না কোন বৈশিষ্ট্য ছিল বাহার দক্ষণ ভাহারা আপনাদিগের এই অসাধারণ প্রতিশ্বি প্রতিষ্ঠা

করিতে সমর্থ এর কিন্তু একর ভারতীয় আর্য ও ইরাণীয়গণ বিচ্ছির হইবার পূর্বের প্রাগৈতিহাসিক বুর্গের নিকট ঋণ-শীকারের প্রশ্ন উঠাইয়া যে সমস্রা ভিনি সমাধান করিতে চাহিয়াছেন ভাহা সমাধান করা সম্ভব হয় না।

ছিভীয় কথা এই বে, ছাকামনী ও সাসনীয় যুগে পারশোর-वाका ও माधावन लाक माकिमित्भव मध्य উखवाधिकाव-সুত্তে প্রাপ্ত ও স্বড়ে বৃক্ষিত যে ক্রিয়াক্স গ্রহণ করেন তাহা তাঁহাদের নিকট নৃতন জিনিষ ছিল অথবা পূর্বে উচা প্রচলিত থাকিলেও লুগু হইয়া গিয়াছিল। জোরোট্রিয়ান ধর্মাবলম্বী আর্সিকিডান রাজ্পণ তালিকা হইতে বাদ পডিয়াছেন। মীভ ও পাবনীকগণ একই গোষ্ঠাব লোক, পাশাপাশিই বাস করিত, রাষ্ট্রীয় ও সামাজিক ব্যবস্থায় ভাছাদের মধ্যে ঘনিষ্ঠ সংযোগ ও আদানপ্রদান চিল ইভিহাসের মত এইরপ। মীডদিগের ধর্ম পারশীকদিগের নিকট অপরিচিত থাকিবার কথা নহে। যে কোরোষ্ট্রিয়ান ধম মিডিয়ার রাষ্টের ধম ছিল ভাছাই ছাকামনী, আরসিকিডান ও সাসানীয় আমলে পারশেরে রাষ্টের ধর্ম ছিল। ইন্দো-এরিধান ও ইবাণীয় জাতি বিক্রিয় হইবার পূর্বেকার ঐতিহ্য মাজি নামে মিডিয়ার একটি গোষ্ঠীকর্তৃক বক্ষিত হইয়াছিল এই মত মানিয়া লইতে হইলে প্রশ্ন উঠে. কোথায় এই বিচ্ছেদ ঘটিয়াছিল ৷ প্রচলিত আযবাদ অফুণারে উত্তর হইবে মিডিয়ার আর্থ্র উত্তরে, ককেশাশ অঞ্জে! আরও অনুমান করিতে হয় যে মীডগণ সকলের শেষে আর্যক্রাতির আদি বাসভূমি হইতে বওনা হইয়াছিল : অক্তথায় মীডগণের মধ্যে মাত্র একটি গোষ্ঠার প্রাচীন ঐতিহ্যের একমাত্র উত্তরাধিকারী হওয়া সম্ভব হয় না। বলা বাছল্য, এই ধরণের অফুমানের পশ্চান্ডে কোন প্রকার যুক্তি নাই, ইহার পশ্চাতে রহিগাছে প্রধানত: আর্থবাদের সমর্থনে নৃতন যুক্তি বা ব্যাখ্যা উদ্ভাবনেক প্রয়াস। প্রচলিত আধ্বাদের প্রভাবে কোরোষ্ট্রিয়ান ধর্মের ইতিহাসের সাক্ষ্য উপেকা করা হইয়াছে। প্রার্গৈতিহাসিক যুগের আর্থ-ঐতিহ্নের কথা উঠাগ্রার অর্থ জম্পষ্ট অনুমান ও কল্পনার আশ্রয় গ্রহণ করা। তাহা ছাড়া জার এক টা কথা উপেক্ষা করা হুইয়াছে। মিডিয়ার মাঞ্চি-প্রচারিত ক্রিয়াকাণ্ডের মধ্যে বাবিলোনীয় ও আসিরীয় প্রভাব কিছুট। আদিয়া পড়া আশ্চর্য নহে। হেরোভোটাস এইরপ ইন্সিড করিয়াছেন। দক্ষিণে কিন্ধিল উন্ধাইন বা সফিদরদ নদী প্রাচীন মিডিয়া ও মেসোপটেমিয়ার সীমা নির্দেশ করিভেছে ইহা মনে রাধা ধাইভে পারে।

প্রসিদ্ধ পণ্ডিত ডা: হপ ঋরেনের উল্লিখিত "মঘৰা" পদের সহিত মাজি শব্দের সম্পর্ক আছে অসুমান করিয়াছেন। এ সম্বন্ধে তিনি বে মত প্রকাশ করিয়াছেন ভাহার সহিত হেরোভোটাসের প্রবন্ধ মাজিদিগের বিবরণ

32.02

মিলেনা। তাঁহার মতে Maga হইতে Magava পদ ব্যাসিয়াছে। Maga শব্দের ব্যর্থ Spiritual Power বা আত্মিক শক্তি। এই শক্তির অধিকারী যে ভাহাকে Magava বলা হইত। এই অর্থে জরাণুট্রের প্রথম শিষ্যগণকে মগবা বলা হইত। তাঁহারা মাজদীয় ধর্ম প্রচার ও ক্রিয়াকমের অমুষ্ঠানে নেতৃত্ব কবিতেন। গাণায় ইহাদিগকে পবিত্র ক্রিয়াকাণ্ডের অনুষ্ঠানকারী (Performer of sacred rites) বলা হইয়াছে। এইরূপ মত প্রকাশ করা হইয়াছে যে এই মগবা পরবর্তী কালের মাজি। মাজি বলিতে পরবর্তী কালের পারশীক পুরোহিত বুঝাইত। মাজি শব্দের প্রাচীন রূপ Magush (Cuneiform inscriptions)। দেখা যাইতেছে, মান্দি পদের উৎপত্তি সম্বন্ধে এই মত গ্রহণ করিলে মাজিদিগকে মিডিয়ার একটি গোষ্ঠা বলিয়া স্বীকার করা চলে না, জোরোষ্ট্রিয়ান ধর্মের পুরোহিত বলিয়া একটি সম্প্রদায় মাজি নামে পরিচিত হইয়াছিল এইরূপ মনে কবিতে হয়।

আবেন্ডার এই মগবা ঝনেদের মঘবা হইতে অভিন বলিয়া ডাঃ হগ মনে করেন। এই সম্পর্কে তাঁহার মডের পুনরায় উল্লেখ করা যাইতে পারে। তিনি বলেন, ইরাণীয় ও বৈদিক আর্যদিগের মধ্যে ধর্ম সংক্রাস্ক ও রাজনৈতিক কারণে বিবাদ উপস্থিত হুইলে প্রাচীন কবি শ্রুটি, যাহা পূর্বে ছুই দলের মধ্যেই প্রধানগণের সম্বন্ধে প্রযুক্ত হইড, ইবাণীয়গণের অপ্রীতিকর হইয়া উঠে। কিন্তু প্রাচীন ইতিহাসের প্রসিদ্ধ ব্যক্তিগণের নামের সঙ্গে কবি পদ যুক্ত থাকায়, (ষণা Kavi Vishtaspa ) ভাঁহার৷ ইহা বছ'ন করিতে নংপারিয়া রূপ পরিবর্জন করিয়া হটাকে কবা করেন। এইভাবে कवि स्ववस्तात अञ्जाभी अ कवा स्ववस्ताति विद्वार्थी-দিগের সম্বন্ধে ব্যবজ্ঞ হইতে থাকে। দেবগমের বা ইন্দ্রে বিরোধীদিগের সম্বন্ধে ঋর্থেদে কবারি প্রভৃতি পদ প্রয়োগ করা ১ইয়াছে। কবাসধ পদের অর্থ কবা বা কবের অভুগামী, ইক্রের শত্রু ও গোমের বিরোধী। তার পর ডিনি বলিডেচেন:—

"In one passage (Rigueda, V. 34, 3) Kavasakha is even called a Maghava by which name the disciples and earliest followers of Zarathustra are denoted in the Gathias. Indra is there said to turn out the Maghava, who follows the Kava party from his possession which refers to the settlements of the Iranians."

দেখা ষাইভেচে, এই মভাফুদারে ঋষেদের ওচনাকাল জরাথুট্রের পরে বা তাঁহার সমসাময়িক। যে ঋক্টির উল্লেখ করা হইয়াতে ভাষা এইরূপ:—

বো **অবৈ জংগ উভ** বা ষ উধনি সোমং স্বনোভি ভবভি ছাুমা অহ।

অপাপ শক্তব্যভম্বাটীমূহতি তন্ত্ৰত্বং মঘবা যঃ কবাসথঃ।

(বে বজমান অহোরাজ সেই ইন্সকে সোম বর্ষণ করেন, তিনি দীপ্রিশালী হন। যে বক্স না করিয়া নিজ সম্ভতি ও রপের গর্ব করে ও ধনবান হইয়া নীচ ব্যক্তিগণের স্হায়তা করে ইন্দ্র দেই ব্যক্তিকে অগ্রাছ করেন।) এখানে কবাসথ পদ ও মঘবা পদ ইল্লের সম্বন্ধে প্রয়োগ করা হইয়াছে। ইহার পূর্বের ঋকে দেখা যায় যে মঘবা সোমবদে জঠর পূর্ণ ক্রিয়া উল্লসিত হইয়াছিলেন ( জঠরমপি প্রভামন্ত্রত মঘ্বা মধ্বী অন্ধ্য: )। অপ্তত্ত দেখা যায় মঘবা (ইন্দ্র ) ভিন্ন ভিন্ন রূপ ধারণ করেন (রূপং রূপং মঘবা বোভবীতি ইত্যাদি ( ७) ६। ८৮ )। अर्थित मध्या भव हेट्यंत मध्य अयुक्त, মঘবন বলিয়া তাঁহাকে সম্বোধন করা হইতেছে। হলের উলিখিত ঋকের ব্যাখ্যার দারা ঋগ্রেদে মদবা পদের অর্থসম্পর্কে জাঁহার মত প্রমাণিত হয় না এবং মধবা ও মগবাকে অভিন্ন বলিয়া মনে করিবার কারণ দেখা যায় না। কবাসথ পদের অর্থ কবির সথা। উপনার পুত্র কবি ইচ্ছের স্থা ছিলেন। কবি পদ অনেক দেবতা ও ঋষির স্পর্কেও প্রয়োগ হইয়াছে।

সে যাহ। ইউক, গাধার মগ হইতে মগবা ও মগবা ইইতে মাজি পদ আসিয়াছে এই মৃত মানিয়া লইবে মাজিকে মিডিয়ার একটি গোগ্গী বলিয়া মানিয়া লইবার প্রয়োজন দেখা যায় না একথা, উপরে বলা ইইয়াছে। এখন একটি বিশেষ অর্থপূর্ণ ব্যাপারের প্রতি দৃষ্টি আকর্ষণ করা যাইতেছে।

ভেন্দিদাদের আধ্বসতিগুলির তালিকা হইতে দেখা গিয়াছে যে উহার অধিকাংশ পূর্বাঞ্চলে অবস্থিত। জরাথুট্টের জনস্থান বাধধি বা ব্যাকট্রিয়া। ব্যাকট্রিয়ায় জরাথুট্টের ধর্ম প্রচার করিয়াছিলেন তাঁহার শিশু ফ্রাসোট্রা।

"Frashoshtra the noble wished to see my highlands (berckhda kehrpra), to propagate there the good religion. May Ahuramazda bless the undertaking. Cry aloud that they may aspire after truth."—Yasna k.

কিন্তু বাধধি জোরোষ্ট্রায়ন ধর্মের পবিত্র ভূমি হইলেও
জরাথুট্রের ধর্ম এই অঞ্চলে পরবভীকালে যথেষ্ট পরিবভিত হইয়াছিল। এ কথা মনে করিবার কারণও
আছে যে এই ধর্ম বাথধিতে স্থায়ী হইতে পারে নাই।
ভেন্দিলাদের ভালিকার বর্ণনা হইতে এই ধারণা কভকটা
সমর্থিত হয়। সে যাহা হউক, পরবতী কালে জোরোষ্ট্রিয়ান
ধর্মাবলন্থীদিপের মধ্যে তুই দলের উত্তব হয়, Mog ও
Zendik, এই তুই দলের সম্বন্ধে বলা হয় যে, প্রথম
দল আদি আবেন্ধা মাত্র স্বীকার করিত, বিভীয় দল
ক্রেন্দের ব্যাথাা অন্তুসরণ করিত। প্রথম দলের মতে
বিভীয় দল ছিল heretical. Mog দলের অভ্যুদয় হয়
পারশ্রেও মিডিয়ায়, Zendik দলের উত্তব হয় প্রাঞ্চলের
ব্যাকটিয়ায়। এই Mog পদের রূপান্তর Magi, যে অঞ্চলের
ব্যাকটিয়ায়। এই Mog পদের রূপান্তর Magi, যে অঞ্চলের
ব্যাকটিয়ায়। এই Mog পদের রূপান্তর Magi, যে অঞ্চলে

জোরোষ্ট্রিখান ধর্মের উৎপত্তি ইইয়াছিল সেই অঞ্চলেই উহা আপনার প্রাধান্ত হারাইল ইহা অর্থপূর্ণ ব্যাপার। মাজি পুরোহিত সম্প্রদায়ের প্রতিষ্ঠা ইহার কারণ মনে করা বাইতে পারে। এই প্রতিষ্ঠার মূলে ছিল দেশের রাজ-শক্তির সহায়তা। ব্যাকট্রিয়ায় রাজশক্তি জোরোষ্ট্রিয়ান ধর্মের অস্কুল ছিল না আবেন্তা হইতে তাহা ফানিডে পারা বায়। পরে এ সম্বন্ধে বলা হইতেচে।

জোরোঞ্জিয়ান ধর্মের ইভিহাসে ব্যাকট্রিয়ার এই বিশেষত্বের প্রতি লক্ষ্য কাষিয়া পশ্চিম অঞ্চলের সহিত ইহার রাজনৈতিক সম্পর্কের ইভিহাসের সাক্ষ্য কিরূপ দেখা বাইতে পারে।

হাকামনী সমাট সাইবাস ও প্রথম দারিয়ুসের আমলে ব্যাকট্রিয়া পারশ্ব সামাঞ্জের অন্তর্ভুক্ত ছিল। তাহাব পর হইতে ব্যাকট্রিয়া নামে পারশ্ব সামাঞ্জের অন্তর্ভুক্ত থাকিলেও ব্যাকট্রিয়ার শাসনকর্তা কার্যাতঃ খাধীন হইয়া দাঁড়ান। স্থাধা তাঁহার অধীন ছিল। আরিয়ার শাসনকর্তা কার্যতঃ খাধীন ছিলেন। ব্যাকট্রিয়ার শাসনকর্তা বেহুস ও আলেকক্ষাপ্তারের যুদ্ধ, ক্ষাধায় গ্রীকগণকর্ত্ব বীভৎস হত্যাকাপ্ত, ও আরিহায় তাহাদের কঠোর শাসনের কথা ইতিপ্রে বলা হইয়াছে। গ্রীক আমলে বালথ, স্থাধা, ছিরাট, কাল্লাহার, সিষ্টান প্রভৃতি (ইহার সরপ্তলি ভেল্লিলাদের আইবস্তির তালিকাভ্ক) পুনংপুনং বিজ্ঞাহ ঘোষণা করে। ঐতিহাসিকগণ বলেন ইহাদের এই আচরণ পারশ্ব ও মিডিয়ার আচরণের বিশ্বীত ছিল, এই তুই অঞ্চল বিনা প্রতিবাদে গ্রীকদিগের যোয়াল বহন করিতে থাকে।

আলেকজাণ্ডারের মৃত্যু হইতে না হইতে সিদ্ধু উপত্যক: হইতে গ্রীকগণ বিতাড়িত হইল ৷ ভারপর ভারতীয় বাহিনী মৌর্যনৈত্ত্বে কাবুৰ ও কান্দাহার অতিক্রম করিয়া আরিয়ায় আপনাদিগকে প্রতিষ্ঠিত করিল। উত্তরে হিন্দুশের পশ্চিম কোহ-ই-বাবা ও পশ্চিমে খোরাদানের সীমানা পর্যস্ত ভারতবর্ষের রাজনৈতিক সীমানা বিস্তৃত হইল। ব্যাকটিয়া 😘 স্থাধা সেলুসিড সম্রাটগণের অধীনে বহিন। সেলুসিড রাজশক্তি ছুর্বল হইয়া পড়িলে ব্যাকটি য়া স্বাধীনতা ঘোষণা কবিদ গ্রীক দিওদোভাদের নেতৃত্বে (খু: পু: ২৪৬)। ইহার পরের অধ্যায়ে দেখা যায় যে শকগণ কাবুল উপভাকা অধিকার করিয়াছে আর ব্যাকট্রিয়া অধিকার করিয়াছে ইরুচি বা তৃথার নামে পরিচিত যাযাবর গোষ্ঠা। আর-সিকিডান আমলে ব্যাকট্যা, মুগধা প্রভৃতি পার্ছ সাম্রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত হয় নাই, বরং দেখা য়ায় বে পূর্বাঞ্লে বে সকল সিধিয়ান নামে পরিচিত গোষীসমূহ আপনা-দিগকে প্রতিষ্ঠিত কবিয়াছিল ভাহারা পুন: পুন: স্বাব-

সিকিভান বাজাদিগের গৃহযুদ্ধে শক্ষ লইয়া শক্তিম-ইরাণ আক্রমণ করে। সাসানীয় আমলে দেখা বায় যে বাকিট্রা হাইতাল বা হেপথালাইট ছুনদিগের অধিকারে। সাসানীয় স্মাটদিগ্রকে ইহাদের সহিত যুদ্ধে ব্যতিব্যস্ত থাকিতে হইত। সিংহাসন লইয়া সাসানীয় বাজাদিগের মধ্যে গৃহযুদ্ধে ইহারাও পক্ষ লইত এবং বেমন আরসিকিভান আমলের শেষের দিকে তেমনি সাসানীয় আমলের মধ্যভাগে পারস্তোর স্মাটগণকে পূর্বের এই প্রতিবেশীদিগকে কর দিয়া বাভোর শান্তিরকা করিতে হইত।

সে যাহা হউক, দেখা যাইতেছে যে হাকামনী আমলের শেষের দিক হইতে ব্যাকটিয়ার সহিত এবং কার্যতঃ পূর্ব-ইরাণের অন্তান্ত অঞ্চলের সহিত ইরাণীয় মালভূমির পশ্চিম অংশের রাজনৈতিক বন্ধন তুর্বল হইনা পড়ে এবং ব্যাক-টিয়ায় গ্রীকঞাধান্ত প্রতিষ্ঠিত হইনার সময় হইতে এই বন্ধন ছিন্ন হইয়া যায়।

ইহা লক্ষ্য করা যাইতে পাবে যে, যে তিনটি পাবশ্য সামাজ্যের কথা উপরে বলা হইয়াছে পেই ভিনটিরই দৃষ্টি আবদ্ধ ছিল পশ্চিমে। প্রথমটির আমলে এশিয়ামাইনর ও গ্রীস ছিল লক্ষাস্থল, বিভীয় ও তৃতীয়টির আমলে এই লক্ষ্যমল হইল রোম। প্রদিকে হরিকদের ওপারে বিশেষ দৃষ্টি দেওয়া হইত না। বছ শভাক্ষী পরে স্কাভী স্মাট-গণের আমলে কান্দাহার পর্যন্ত পারশ্র সামাজ্যের সীনানা বিস্তৃত হয়, তাঁহাদের বিরোধী ছিল দিলার মুখল বা চাঘতাই স্মাট্গণ। ব্যাক্টিয়া তথন উৎবেক্দিগের দগলে। ইহার পরে অইটাল্য শভাকীতে নাদির শাহ্ একবার ব্যাকটিয়া দগল করেন।

রাজনৈতিক ইতিহাদ হইতে পূর্ব 🕏 পশ্চিম ইবাণের মধ্যে যে পাৰ্থক্য দেখা যায় ভাহার সহিত অক্সান্ত বিষয়ে পার্থক্যের প্রমাণ যোগ করা যাইতে পারে। পূর্বের এক প্রবন্ধে দেখা গিয়াছে যে গাথা ও আবেভার ভাষা পশ্চিম-ইরাণের ভাষা হইতে পুথক ছিল। পণ্ডিতগণের মতে পশ্চিম-ইরালের ভাষার যে পরিচয় দারিয়ুসের লেখনসমূহে পাওয়া যায় তাহা হইতে দেখা যায় যে, এই ভাষা চ্যান্ডিক ভাষার সহিত মিশ্রিত। রাজনৈতিক ইতিহাসের সং**ক্ষিপ্ত** আলোচনা হইতে দেখা যাইতেছে যে, পূৰ্ব-ইরাণ অতি প্রাচীন কাল হইতে পশ্চিম-ইবাণ হইতে বিচ্ছিন। জোরোষ্টিয়ান ধর্মের ইতিহাস হইতে দেখা যাইতেছে বে. এই ধর্মের কেন্দ্র ভাহার উৎপত্তিস্থান হুইতে ইরাণীয় মালভূমির পশ্চিম প্রান্তে মিডিয়ায় সরিয়া গিয়াছে অন্তুমান খ্ব: পৃ: ছয় বা সাভ শভ বংসর পূর্বে এবং পরবর্তীকালে পূর্ব-ইরাণের অধিবাসিগণ আর নিষ্ঠাবান কেরোট্টিয়ানরূপে পরিগণিত নছে। সাসানীয় আমল পর্যন্ত পারক্ষের প্রাচীন

ইভিহাসের প্রতি দৃষ্টি রাখিয়া এই ডিনটি তথ্য হইতে এই ইন্সিত পাওয়া যাঃ যে, জোরোপ্রিয়ান ধমের পূর্ব হুইতে পশ্চিমমুখী গতি হুটভে হে স্ত্র পাওয়া যায় সেই স্ত্র ইরাণীয় জাতির সম্বন্ধেও প্রযুক্ত হইতে পারে; অর্থাৎ ইরাণীয় গোষ্ঠীর বিভিন্ন দল পূর্ব-ইরাণ হইতে ক্রমে অগ্রসর হট্যামিডিয়া পর্যন্ত পৌছে: উত্তরে ও পশ্চিমে ট্টাদের মধ্যে কতকগুলি দল আর্মেনিয়া, কুদীস্থান, মেধ্যেপটেমিয়া ও এশিলামাইনর অঞ্চলে ছড়াইলা পড়ে। অবশ্য ইং: অনুমান মাত্র, কিন্তু একেবারে ভিত্তিশূল অনুমান নহে। প্রচলিত আর্যবাদ অনুসারে আর্যগেঞীর ইরাণ ও ভারত-বর্ষের দিকে অগ্রগতি সম্বন্ধে যে সকল মত প্রকাশ কর। চইয়া পাকে ভাষাও অনুমান মাত্র এবং এই অনুমান উপরের আলোচন। ইইডে যে সকল ভগ্য পান্যা যাইডেছে **खाहात्र विकटक याग्र**। विकटक श्राल व्यक्तन मरस्रायक्रमक ব্যাখ্যা উপস্থিত কর: প্রয়োজন দেইরূপ ব্যাখ্যা পাওয়া शंग्र ना ।

ধ্যসাক্রাপ্ত রাজনৈতিক বিধানের ফলে ইরানীয় বা ব্যাকটি মার আয়গণের সহিত ৈদিক আর্যগণের বিচ্ছেদ घटि এवः अवाशुरहेत প্রচারিত ধমের উৎপত্তি ইয় এই বিবাদের ফলে, ভা: হপের এই ব্যাখ্যাসম্পর্কে আপত্তির कारन উল্লেখ কর' इहेशाছে। এই ব্যাপ্যা বৈদিক আর্থ-গোষ্ঠীর লোককে যায়াবর অভাবের, ক্লবিকার্বে অনাসক্ত, ইবাণীয় বস্তিসমূহের আক্রমণ ও লুগুনকারীরূপে চিত্রিত করা ১ইয়াছে। ডা: ২গের মত কভকটা এইরপ যে, ঋষেদে भक्तांमर्भात्र भूतौ स्व धन मूर्धन कतिवात खन्न एवं एक मकन व्य छ-যানের উল্লেখ পাওয়া যায় এবং যে প্রকল অভিযানের স্ফলভার জ্ঞা ইক্সের সহায়তা প্রাথনা করা হইয়াছে তাহা ইয়াণীয় বস্তির (gaethau) বিরুদ্ধে অভিযান গোষ্ঠীসমূহ যাঘাবর বুংও অনুসরণ করিয়া আমু দরিয়া ও সির দ্বিধার মধাবভী অঞ্লে এবং ব্যাক্টি, হায় উপস্থিত ২ইলে ভাহাদের মধ্যে যাহাদিগকে ইরাণীয় বলা হইড ভাহারা ঘরবাটী নিমাণ করিয়া বসবাস করিতে আরম্ভ করিল এবং কৃষিকার অবসমন করিল।

"In consequence of this change the Iranians estranged themselves from the other Aryan tribes, which still clung to their ancestral occupation, and assured by the hope of booty, regarded the settlements as the most suitable objects of their incursions and skirmishes."

এই ব্যাখ্যাকে tendentions ব্যাখা। বলা যায় এবং খাখেদের প্রমাণ ইহার বিক্লে। সে যাহা তেক, ভা: হগের মতে এই রাজনৈতিক বিবেষ হইতে লুগুনকারীদিগের দেব ধর্মের প্রতিও বিবেষ ক্ষন্মিল। দেবগর্মের প্রতি বিবেষ হুইতে অহ্বা ধর্মের অভ্যাদ্য হইল। কিন্তু এই অহ্বা ধর্ম ক্ষরাধুষ্ট্রের প্রচারিত মাজ-

দাইয়াসনীয় ধর্ম এই প্রাচীন অহরা ধর্মের ভিত্তির উপর প্রভিতিত: অর্থাৎ অহরা ধর্মের মালমসলা লইয়া অরাধু-ট্রের ধ্যের স্পষ্ট হইয়াছে। অহুরা ধর্মের প্রকৃত প্রচারক সাওস্থান্তে। (Swoshyuntos) বা অগ্নি-উপাসনার পুরোহিত। ইহারা জ্বাধুট্রের পূর্ববর্তী। ইহাদিগকে অথবন ও আঙ্গিরস হইতে অভিন্ন মনে করা হয়। সম্ভবতঃ ইরাণীঃ আয় ও ভারতীয় আর্যদিগের বিবাদ আরম্ভ হইবার ক্ষেক শতাকী পরে জ্বাধুট্রের আ্বিভাব হয়।

"The struggle between the two parties may have lasted for several centuries before Zarathustra appeared."

প্রাচীন ইরাণীয় ধমেরি বিকাশের বিভিন্ন পর্যায়ের ইতিহাসের সহিত ভাঁহার নিজের মহবাদের সামঞ্জা সাধন করা ডাং হগের পক্ষে স্কুব হয় নাই। প্রাচীন ইরাণীয় ধর্মের প্রথম প্রয়ি অভ্রাধ্য বিইরপ মনে করা যাইতে পারে: কিন্তু গাণাগুলি হইতে এই ধ্যের সম্বন্ধে এমন কোন বিংরণ পাওয়া যায় না যাহা জরাগুষ্টের আবির্ভাবের পূর্বের বা ঘাহা হইতে ইহাকে দেবধর্ম বিরোধী মনে করা যায়। দিতীয় পথায়ে পড়ে জবাথষ্টের প্রচারিত মান্দদাইয়াস নীয়ান ধর্মত। দেবধ্ম, সোম যাগ, দেবধর্ম ও সোম। যাগের প্রোহিভগণের প্রতি আক্রমণ তাঁহার প্রচারিভ ধর্ম-মতের অন্যতম বৈশিষ্টা। তার পর আবার একটা পরি-বতুনি আসিল। সোমধাপুসংস্কৃত হইয়া পুহীত হইল, কয়েক জন দেবের অবস্থার উন্নতি হইল. বৈদিক ক্রিয়ার স্থিত অভিন্ন এরপ কতকগুলি ক্রিয়াক্মের প্রচলন হইল. কিন্ধ দেবধন ও দেবধমের পুরোহিতের প্রতি বৈরভাব অপবিবভিত বহিল।

দেখা যাইতেছে যে ইরাণীয় ধর্মের ইতিহাসের প্রথম ও দিতীয় পর্যায়ের কথা মনে রাখিয়া জরাণুট্রের প্রচারিত ধর্মের যে ঐতিহাসিক পটভূমি রচনা করা হুইয়াছে তাহা খীকার করিয়া লঙ্কা যায় না। খীকার না করিতে পারিবার আরও প্রবল কারণ আছে।

ইভিপূর্বে এক প্রবন্ধে এইরপ ইঞ্চিত করা হইয়াছে থে জরাণুট্রের ও তাহার শিষাগণের আক্রমণের বিষয় বৈদিক আধাগণের ধর্ম নহে, তাহাদের আক্রমণের লক্ষ্য ব্রাহ্মণ্য ও বৌদ্ধ ধর্ম । উপরে জরাধ্ষ্ট্রের প্রচারিত বর্মের পশ্চিমমুখী গভির কথা বিহারিত বলা হইয়াছে । এখন এই পশ্চিম-মুখী গভির ক্রক্ত হেতুর উল্লেখ করা যাইতেছে।

জোরোপ্রয়ান ধর্ম জ্বাভূমি হইতে বিভাড়িত হইয়াছিল।
এ কথা আবেন্ডা হইতে জানিতে পারা যায়। রাজনৈতিক
ও ধর্ম সংক্রান্ত কলহের ফলে ইরাণীয় ও বৈদিক আর্থি
বিচ্ছিন্ন হইয়াছিল, এই মতবাদের বিক্রথে আবেন্ডার এই
সাক্ষ্য মারাত্মক প্রমাণ।

পরবর্তী আবেন্ডা ও জোরোষ্ট্রিয়ান ধর্ম শাস্ত্রের অক্সান্ত অংশের কথা ছাড়িয়া ওধু গাথাগুলির সান্দী বিশ্লেষণ করিলে দেখা যায় যে যাহাদিগকে আক্রমণ করা হটয়াছে ভাহাদিগকে ভিন শ্ৰেণীতে ভাগ করা যায়। এই ভিনটি শ্রেণী—( ১ ) অপদেবতা (Spirit of evil), দেব ও দেবপুদ্ধক এবং (৩) প্রতিমা, প্রতিমাপুদ্ধক ও প্রতিমা পূজার পুরোহিত। Spirit of evil অহবা মাজ-দার প্রতিপক্ষ আহরীমান বা আকো হৈমুষ। দেবগণের বিক্লছে আক্রমণকালে কোন দেবের নাম করা হয় নাই। ভাহাদের উৎপত্তি সম্বন্ধে বলা হইয়াছে ভাহারা Evil spirit হইতে অনিয়াছে। (পাখা উষ্টাবৈতি ও অভ্না-বৈভি )। দেব ও দেব ধর্ম বলিতে যে বৈদিক দেবভা ও বৈদিক ধর্ম ব্রায় এক্লপ বলিবার কোন যুক্তি নাই। তার পর প্রতিমা বা idols সহছে। প্রথম গাধা, গাধা অভ্না-বৈতিতে প্রতিমাপুদ্ধা ও তাহার অনিষ্টকর প্রভাবের উল্লেখ ৰেখা যায়। গাখা উটাবৈতিতে প্ৰতিমাও প্ৰতিমাপুত্ৰক এবং সতাধর্মীদিগের মধ্যে পার্থকোর উল্লেখ দেখা যায়। ঐ গাখাতেই প্রতিমাপুদার ও পুরোহিতদিগের প্রাধান্ত-मार्डिय कथा यमा इंडेशार्ड ।

"The sway is given into the hands of the priests and prophets of idols, who by their actions endeavour to destroy human life."—(Yas xlvi, 11).

প্রতিমাপৃন্তার সমর্থনকারীদিগের প্রাধান্যের ফলে করাপুট্টের (বা ভাছার শিষ্যদিগের) অবস্থা যে শোচনীয় হইয়াছিল ভাষার প্রমাণ ঐ গাধাতেই পাওয়া যায়।

"To what land shall I turn? Whither shall I go in turning? Owing to the desertion of the Master and his companions? None of the servants pay reverance to me, nor do the wicked rulers of the country. How shall I worship Thee further, O Ahuramazda? I know that I am helpless. Look at me being amongst few men, for I have few men; I implore Thee weeping. O Ahura?"—(Yasna xlvi, 1, 2.).

অর্থাৎ, নৃতন ধর্ম প্রচাবকের অক্সচরপণ টাহাকে ত্যাগ করিয়াছেন, দেশের ছাই শাসকগণ তাঁহার বিক্তমে, কেহই ভাহাকে মানা করে না। এই অবস্থায় কোথায়, কোন্ দেশে তিনি যাইবেন, কি ভাবে অহুবা মান্তদার উপাসনা চালাইবেন পূ

এখন প্রস্ন উঠে, এই প্রতিমাপুরুক ও প্রতিমাপুরুবে পুরোহিত যাহাদিগকে দেশের তুট শাসকগণ সাহায্য क्रिशाष्ट्रिक ও याशास्त्र श्राधानामार हेव करन करूराव **অন্নরক্ত** ৬কের এই ডম<sup>্ন</sup> ঘটিয়াছিল ভাহারা কাহারা ? ব্যাধেনের ধ্যা প্রতিবাপুদার ধ্যা নতে, ক্ষিপ্র প্রতিমাপুকার পুরোহিত নচেন। স্থরাং অনুমান করিতে হয় যে প্রভিমাপুজার Priests and Prophets বৈদিকযুগের প্রবর্তী কালের। ভারপর দেশের গুষ্ট শাসকগণের विद्यास्थित 40.1 বলা হট মাচে। এই দেশ স্বব্দা ভরাপুট্টে। নিজের ্দেশ, অথাৎ ব্যাক্টিয়া। শাসকগণের বিবোধিভায় ধ্যবিচারে বাধা না জলিলে অন্ত CWC म याहेवात कथा छे है ना। CHRI যাইতে চে ব্যাকটি য়াভেও প্রতিমাপজার Priest and Prophet-দিলের প্রাধার প্রতিষ্ঠিত চইয়াছিল এবং দেশের জনসাধারণ

**हैहार**मद ও বাজা পক্তৃক্ত হইয়াছিল। স্তবাং অরাথুট্রের রচনা বলিয়া পরিচিত প্রাচীন গাখা অংশে জোবোট্টিয়ান ধর্মের ব্যাকটিয়া হইতে নির্বাসনের প্রমাণ বাাকটি যা इ हे एक নিৰ্বাসিত হুইয়া ঞাবোট্টিয়ান ধর্মের একমাত্র আশ্রয়ন্থল ছিল ইরাণীয় মালভূমির পশ্চিম অঞ্চল, কারণ, যে প্রতিমাপুলার ধর্ম ব্যাকটিয়া পৰম্ভ প্ৰভাবিত কৰিয়াছিল ভাহা দক্ষিণ অঞ্চল হইতে সিদ্ধ উপভ্যকার মধা দিয়া অগ্রসর হুইয়া আফগানিস্থানের হিন্দুকুশের দক্ষিণভাগ প্লাবিভ করিয়া ভবে ব্যাকটি যায় প্ৰবেশ করিয়াছিল। এই অবস্থায় ইরাণীয় মালভূষির পশ্চিম অঞ্চল ব্যতীত জোবোট্টিয়ান ধর্মের প্রচাবকগণের নিরাপদ হইবার আর কোন সহজ আশ্রয় ছিল না।

জোবোষ্টিয়ান ধমের পশ্চিমমুখী গতির কারণ ব্রা গেল। পশ্চিম অঞ্চলে ইহা প্রাচীন হুমেরো-বাবিলোনীয় ধমের সংস্পর্শে আসিয়াছিল, মীড, পারশীক ও বাবিলোনী-য়ানগণের রাজনৈতিক সংযোগ হইতে একথা সহজে অহুমান করা চলে। সেমিটিক ধমের সংস্পর্শে মিখু-আনাহিতঃ উপাসনার রুপান্তর ঘটিয়াছিল, মা (Ma, Mah), নানা প্রভৃতি খ্রীদেবতার উপাসনা হুমেরো-বাবিলোনীয় ধর্ম হইতে আসিয়াছিল এইরুপ অহুমান করা হয়। সেখানে এ সহজে বিত্তারিত আলোচনা করিবার স্থান নাই।

এখন খোরে ব্রিয়ান ধর্মের পশ্চিম্মুখী গতির সহছে বাহা জানা গেল ডাহার সহিত ভেন্দিদারের তালিকার আইরিয়ানার অন্তর্ভুক্ত দেশগুলির অধিকাংশ যে পুর্ব দিকে অবস্থিত এই তথ্য মিলাইতে ইইবে।

ষ্দি প্রাচীন আব বস্তিওলির অধিকাংশ ব্যাকট্রিয়া ও দিন্ধ উপত্যকার মধ্যে অবস্থিত হইবেও ইরাণীয় মালভূমির পশ্চিম সীমানা পর্যস্ত আৰু নামে পরিচিত গোঞ্জিসমূহকে উপনিবিষ্ট দেখিতে পাওয়া যায়; গদি জোবোট্টিয়ান ধ্য ষাহা সমগ্র ইরাণীয় মাগভূমির খধিবাসীদিগকে প্রভাবিত কবে তাহার উৎপত্তি পূর্বাঞ্চল হইয়াছিল এবং যে অবস্থায় উহা পশ্চিমে বিস্তৃত হয় ভাহা বিবেচনা করা যায়; যদি পার্ষের বা ফার্সের হাকামনী সম্রাট ও প্রধানদিগের পক্ষে আইরিয়ানার সঙ্গে সম্পর্ক স্বীকার করা গৌরুবের কথা ও প্রয়োজনীয় বলিয়া মনে কবিবার ষ্ণার্থ কারণ কিছু ছিল অস্থমান করিতে হয় ভাহা হইলে এই সিদ্ধান্তে আসিতে হয় যে আৰু কৃষ্টির ও আৰু জা'তর প্রাচীনতম কেন্দ্র উল্লেবে স্থাধা ও দক্ষিণে সিদ্ধু গালেষ উপত্যকার মধ্যে অবস্থিত আইরিয়ানা বা আরিয়ানা। বাাক্টিয়ার প্রাগৈডিছাসিক সভাতা যাহা এলান, হুমের ও হুগধাকে প্রভাবিত করিয়াছিল বলিয়া পণ্ডিভগণ মনে করেন এবং সিদ্ধ উপভ্যকার প্রাপৈতিহাসিক সভ্যতা বাহা সমগ্র ভারতবর্ষকে প্রভাবিত করিয়াছে ভাহার উদ্ভব হয় এই আইরিয়ানার ় মধ্যে, এই তথ্য স্মরণ রাখা ঘাইতে পারে।



#### দিভীর পর্ব

शान-मादिदक्ककृद्धव मर्या अक्यानि कृष्टिवत मधूर जार्र, কাল-অপরাত্র, পারপাত্রী---নারিকেল গাছের হারার বসিয়া আহি কলা বাইভেছি এবং কুটারের সামনে বসিয়া নরবাদক জকুৰী প্ৰসাৰৰ করিছেছে। বভাষান পরিছিতির সম্যক্ হুলবোৰ ক্ৰিভে হইলে ক্ষেক্ ঘটা আগের ইভিহাস আনা হরকার। সম্ভ রাত আমাধের ভোলা সহত্তে ভাসিয়া স্কালের দিকে এই দ্বীপে আসিয়া লাগিল, আমরা হুর্গানার শ্বৰ ক্রিয়া নামিয়া পঞ্চিনাম। প্রিয়া ক্রিয়া দেবিলাম बीनहि (बार्ड), हाजिक्टिक माजिएक छ जुनाजि-यम बाज मांब्रेशात्म अक दृष्ट कथणीक्षः। पृत विरम्पन वश्कान भरत হঠাৎ বেশের কাহাকেও ধেবিলে মনের যে ভাবাভার হয় ক্রভাগার দেবিয়া আয়ার মনেও সেইত্রণ ভাবান্তর উপস্থিত ষ্টল। আহা, এ যে আমাদের অভি অভরদ কলা। গাছে গাছে পাকা কণার কাঁদি, আমি ভাহাদিগকে সার্থক করিতে नातिया तनाय। देखिमत्या एकपी निक्टेवर्णी नावित्कन-बरन লভাপাভা দিয়া একথানি কুটীর বানাইয়া কেলিল-খরের कारक मिरतनो अर्थभारे शहे। क्षेत्र वाश त्यस्टरंश छक्ष श्रमाध्य वित्रन, चाबि छथम् कना बाहर्राहि ।

ভক্ৰ প্ৰসাৰন কৰিতেছে, এক ৰঙ পাৰ্যৱের সাহায্যে হাতের দীৰ্ব নৰঙলি অব্যবসাহের সহিত ব্যৱহা ব্যৱহা বারালো ক্ষিতেছে। এ প্রসাৰনের এই দিকটা অতি আবৃনিক সভ্য নারীয়া অসভ্যয়ের নিকট হইতে বার করিয়াছে— না অসভ্যেরা সভ্যদের নিকট হইতে বার করিয়াছে— বলিতে পারি না, ভবে একবা বলিতে পারি বে নবর বিনা নারী অসম্পূর্ণ।

আমার কলার কাঁদি সুরাইরা বেল, হাতে কাক না বাকার বনিরা বনিরা প্রসাবনরতা তরুণীকে বুরুবেত্রে দেবিতে লাসিলার। ইতিপূর্বে ইহাকে তাল করিরা দেবিবার স্থবাগ পাইলেও সাহল পাই নাই। এবন নির্ভৱে লিল্লীর চোব বিরা, সমবহারের চোব দিরা বেবিতে লাসিলান, বেবিলাম রূপ বটে! বোবনের কালিকী কূলে কূলে ভরিরা উঠিরাতে, অঞ্চর কৃষ্টিত কেল টানিরা নাধার উপরে মুঁট বাবা, ভ্ৰহীন গোলাকার চোধ চুইতে চলচ্চ লোল্প চাহনি, উন্নত চিৰুক, অংরোঠ বেন অভিযানে ফুলিভে সুলিভে



আনি তৰ্বও কলা বাইছেই

অভিনিক্ত কুলিয়া গিয়াছে। দেখিলান, দেখিয়া মন্তিলান।
আমি কোন কালেই নিখো আটের ভেমন পঞ্চপাতী ছিলান
না, আৰু বুবিলান জুমিনক কি দেখিয়া বুই হইরাছিলেন,
বর্মী কি ধেখিয়া নাচিয়াছিলেন আন কি দেখিয়া বেচারা
পিকালো একেবারে কেপিয়া গিয়াছিলেন। আন কোন
সংশন্ত বহিল লা, এই বৃহত্তে সৰ্বাভঃক্তনে বীকার ক্রিলান
নিলোর ভেনালের চেয়ে হটেনটিট ভেনাস বড়।



মিলোর ভেনালের চেয়ে হটেনটট ভেনাল বভ

বেলা পড়িয়া আসিল, মানিকেল-খন ভূড়িয়া ছায়া মামিল, আকাশে বাতাসে একটা 'জলকে চল'র প্রর বাজিয়া উঠিল, প্রসাবনের সরস্থান কেলিয়া রাবিয়া আমার তরুণী প্রিয়া উঠিয়া পড়িল। আমি বেবিলাম নাবার উপর আঁচল টানিয়া কাঁবে কললী লইয়া প্রেয়নী নরুজের ঘাটে জল আনিতে চলিল, ভরা বট ছলংকার ক্রিতে করিতে নারিকেলতলায় পথ বরিয়া ঘরে কিরিল, নিপুণ হজে সভ্যাপ্রাণীণ আলিল, তার পরে ভূলনীতলায় গড় হইয়া প্রণান করিল। না—এসব আমি বেবিলাম না, কলনা করিলাম, কেননা গোড়াতেই প্রেরনীর লাঁচল না বাকার শেবের বিকের কিছুই বটতে পারে বাই।

সে রাজি এক্ মুখে শেব হইল । কভিপর রাজির অনিক্রা শোষাইয়া লইলাম।

সভালবেলা আবার কলাবনে প্রবেশ করিলান, ভাঙিলায হি'ড়িলান, বাইলান, ভারপরে এক বোঝা কাঁবে করিয়া কুরীরে কিরিলায়।

কিন্নিয়া দেখি কুটানের ব্যক্তার প্রেরণী গালে হাত দিয়া বনিরা আছে। গতক্তা হইতে একটা সাংলারিক সকট বনাইতেহিল, বুবিলান আদু তাহা ভক্তর হইবাছে। বাজারে বাভরব্য হুর্ল্য হইলে প্রত্যেক সংলারেই বে সকট বেবা বের এও সেই ব্যবের সকট। বীপট হোট, বাজার বাই বে ইচ্ছা ক্রিলে হুই-একটা ভাজা বাহুব বা পার্জাত ব্যবংগ কিনিতে পারা বাইবে, অদলে প্রেরণীর ক্রচিকর কর জানোরারেরও অভ্যত অভাব, আছে প্রচুর বি বি শোকা, কৃতিং এবং কাঠ-বিভালি। আঁচ করিলার গালে হাত বিরাপ্রেরণী আজ কি রারা হইবে ভাহাই ভাবিতেতে।

আহা, বেচারা সারাধিন উপোস করিরা আছে, করেকট কলা বাইতে অহুরোধ করিলাম। প্রেরসী গোলাকার চত্ত্ ছট ভূলিরা বিপুল বিশ্বরে আবার হিকে ভালাইল। সে দৃষ্টতে হুগণং হুগা, অবজা ও বিদ্রুপ কৃটরা উঠিল। আবি লক্ষার (ভরে নর)—এভটুকু কইরা গেলার, বুবিলাম প্রাই আভার কাক করিরা কেলিরাহি, নরবাধকবংশীরা রমণী কলা বাইবে কি? আভিজাভ্যের একটা মর্বাধা বোধ আছে ভো! মাক চাহিরা বিশেব চিভিতভাবে আবি অনুবে বসিলাম।

বেগা বোধ হয় তথ্য হুপুর, মারিকেল গাছে ঠেস দিয়া বিদিয়া থাকিতে থাজিতে চোধে তলা আসিরাছিল, হঠাং এক বিকট আওয়াকে চমকিরা ভাগিরা উঠিলান, দেখিলান প্রেরসী একটা কাঠবিড়ালিকে তাড়া করিরা ছুটয়াছে। কাঠবিড়ালি তিম লাকে একটা গাছে নিয়া উঠিল, প্রেরসী হুতাল ভাবে কিরিরা আসিরা আবার গালে হাত দিয়া বসিল। প্রেরসী অভ্তত আছে ইহা আয়ার পক্ষে খুবই লক্ষার কথা। পৌরুষে আখাত সাগিল, কাঠবিড়ালি শিকারে বাহির হইরা পভিলাম।

বিক্ত হতে ধৰ্ম কুটাৱে কিবিপাম তৰ্ম সন্থা ধনাইয়া আসিয়াছে। প্রেরসী বোধ হয় এডকণ আমার বছ বর-বাহির कविया अदेवाय कुमैरवय भागत्म हुन कविया विभया चारह । इदे হাভ উণ্টাইয়া বাছিয়া কিছই বে আনিতে পারি নাই তাহা ব্ৰাইয়া দিয়া এক পালে বসিয়া পড়িলাম। ছই কন মুৰোহুৰী विश्वा जावि. जवह काशादा बूद नच मारे. अक्ही व्यवद्य ভাব। এখন সময় নারিকেল গাছের উপর দিয়া মন্ত বভ চাঁচ উটিল, কুটারের প্রাদণ জ্যোৎসার প্লাবিত হইরা পেল, সেই প্লাবনে আৰৱা স্নান করিয়া উঠিলাম। ইহার পরেও কি ছুল খগভের ক্ত অভাব-অন্টমের ক্বা মনে উঠিতে পারে ! बाबाद छेनदर अक्षा भाषे मना शाक्रिया मारिया छेनि, बारा কিছু অপুদার হিল সুদার হইয়া গেল, বাহা কিছু গছ ছিল ক্ৰিভাৰ ৰূপান্তৱিভ হইল। এমন সৰৱ ছুইট বুধ আখা মুৰোমুৰী বসিয়া বিরলে কি প্রেমালাপ করিল ভাষা যভটুরু প্রকাশ করিতে পারা বার করিতেছি। আমি কবিলার, 'প্রিরা, জ্যোংখালোকে ভোষাকে বা ক্ষমত্ত বেধাইভেছে ভা ভাত্ত কি বলিব।' প্রিরা ভাতার অপূর্ব অসভ্য ভাতার অনেক কর্বা करिन, जावा ना जानाव वर्ष वृतिष्ठ शाविनाव ना । त्रजा হুগতের প্রেমালাপের বে সামাত অভিক্রতা হিল ভাষাই কাছে नानादेश विभाव, बाँठ पविभाव विदा नवनाद क्या वनिरुद्ध। क्रिनाय--- (म बाब बनिष्ठ इरेरव वा, शर्वा वा श्रीक्र (काबाब क्रम बुनिरंद रक्षत ? विदा बाष्ट्राक्टर त्वाद क्रिक

গ্ৰনা, কোন্ বর্ণের হুইবে সবিভারে ভাহাই বর্ণনা করিল, শেষাশেষি পুতে অবহিত কোন এক অন্ত বছকে ছুই হাতে বিরা আছা করিয়া কালানি দিল। কহিলান—'বাঁকানি লা দিলে বে আনাবের ট'্যাক হুইতে টাকা বাহির হর না সেটা ভোনরা অসভ্য নারীরাও কান দেবিতেহি!' ভনিরা প্রিরা হাসিল, লে বধুর হাসির শব্দে গাছের ভালে পাইটা সত্রবে বানিরা গেল। হাসিরা হাসিরা প্রিরা অনেক বিঠ কথা কহিল ও একবার একট কাল্লনিক বাভ নটকাইবার ভলী করিল। আনি পুলক্তি হুইরা কর্তব্রে সমভ হাবর ঢালিয়া দিয়া কহিলাম, 'ভাহার প্ররোজন হুইবে না, শীনই ভোষার জভ গহনার ব্যবহা করিতেহি, অভতঃ একছড়া মুওমালা ভো গড়াইরা দিবই'। এইভাবে অনেক রাভ পর্বন্ত আনাদের আত্মার আত্মনিবেদন চলিল।

সকালবেলা ঘুম ভাঙিতে দেরি হইল, উঠিয়া দেবি প্রিরা ফ্রীরে নাই। বাহিরে আসিরা এদিক ওদিক তাকাইলার, বেবিতে পাইলাম না; পূবে, পশ্চিমে, উত্তরে, দক্ষিণে কোম দিকেই মরনের আনক্ষ সেই বুর্তি দেবিতে পাইলাম না। তবন উপরের দিকে তাকাইলাম, দেবিলাম গাছের উঁচু ডালে বিসরা প্রেরলী আবো উঁচুতে উপবিষ্ট একটা কাঠবিকালিকে লোভ দেবাইরা কাছে আমিবার চেঙা করিতেছে। বাহিরের বছ্তাবের অন্তর্নালে মনের আসল ভাবট বোব হর চালাক কাঠবিকালি টের পাইরাছিল তাই কিছুতেই কাছে আসিতেছিল না। অনেকক্ষণ অপেকা করিরা শেবে প্রিরা রাগ করিরা নামিরা আসিল, কিছু গাছতলা পরিত্যাগ করিল না, পরর ওঁহাসীতের ভান করিরা বসিরা রহিল।

বেপা বাছিয়া চলিপ, ক্ষমে বার্টা বাছিল (খবন্ত অনুমাম)
প্রিরা দেইবানে বলিয়াই রহিল। চুগুর গড়াইরা বিকাল হইল,
বিকাল গিয়া সভ্যা লাগিল, প্রিয়া ভবুও অচল। অবশেষে রাভ
হবৈ প্রিয়া নিঃশব্দে কুটারে কিপ্রিয়া আসিল, অভকারে গেই
অভকার রুব ভাল করিয়া বেবিভে পাইলাম না, একটা আলোর
অভাব ধুবই অনুভব করিলাম, মুন্টা বারাপ হইয়া গেল।

রামে আমার ভাল করিরা ব্য হইল না, প্রেরসীরও সেই অবহা। সারায়াত অনেক কথা ভাবিলান। যদিও কথা নিভাতই বরের তব্ও পেটে রাবিতে পারিলান না, আদ লইয়া চার বিন, প্রেরসী অতুভা! লক্ষার কথা আর কি বলিব, বরে একটা নেটে ইছ্রও নাই বাহা বুবে দিরা প্রেরসী একটু ফল থাইতে পারে!

আৰি কিছ কলা বাইরা বাইরা এ করদিনে বেশ তাকা হইরা উঠিরাছি। বনে করিরাছিলার ব্যাপারটা প্রেরগীর নকরে পড়ে নাই, কিছ তা কি কবনো হয় ? তাহার সভর্ক বৃষ্টি এডাইরা আমি নোটা হইব এও কি সভব ? একটু আডালে আডালে বাকিতে চেঠা করিলায় কিছ তা কি পারা রাব ? মনের অবছাটা আর আপের বত সহক রহিল না। ভগবাদের রাজ্যে বাহাদের বরে অর বাই ভাহাদেরও
দিন কাটরা বাব, আমাবেরও দিন কাটতে লাগিল। শ্রেরগী
আজকাল কৃষ্টির হাভিয়া বেনী দূর বার না; কাহেই বোরাকেরা
করে। কথনো কথনো গালে হাভ দিরা প্রহর কাটাইরা দের।
ভাহার মনের আকাশে বে চিন্তার বেন ক্ষিরা উটিরাহে
আমার বভ আনাভী মাহ্রটিও ভাহা বুবিতে পারে। বারিকেল
গাহের আভালে বসিরা অনেক সরর ভাহার মনের ক্ষাটা
বুবিতে চেপ্টা করি, বুবি-বুবি ক্ষিরাও বেন বুবিতে পারি না।
আলক্ষিতে একটা হীর্ষনিংখাল পড়িরা যার, মনটা হাল্কা
ক্ষিতে কলাবনের দিকে চলি। কিন্তু কিন্তুন গিরা থানিরা
যাই, আমার দেকের উর্ভি দেবিরা প্রেরসীর লেই ভাবপূর্ব
চাহনিটা মনে পড়িরা বার। হার, কে বলিরা দিবে লে
ভাবের জন্মহান হালর না উদর ?

বিকালবেলার ছায়া যথম নারিকেলকুরে ঘনতর ছইরা আনে, একটা সিন্ধ বাভাস বারে বীরে বহিতে স্থান করে, পাবীর। কলরব করিরা বালার কিরিতে থাকে, জলেছলে একটা ঘরে কেরার স্থান বাজিরা ওঠে তথম হঠাং আনার উপ্টারিকে দৌচ দিবার ইচ্ছা হয়। বসিরা বসিরা ভাবি আনার নবীন যৌবন অবচ সংসারে এত বীতরাগ হইল কেন ? এমন সময় বনের পথে দীর্ঘ ছারা কেলিয়া কে আসিয়া পিছনে ইছারার। কিরিয়া চাহিতেই চারিচক্ষে মিলন হয়, কল্পালের কাঁটার মত মনের কাঁটা ছুরিয়া আবার সংসারর্বো হয়।

দিন কোন রক্ষে কাইরা যার কিছ রাভ বেদ কাইতে চার না। সংশহ হয় প্রেরনীর প্রেষে ভাটা পঢ়িল নাকি? অতি কুছে পেটের চিছা কি শেষে এত বড় একটা বর্গীর প্রেমকে নাট করিয়া দিবে? ঘরজার সামনে উব্ হইরা বসিরা প্রেমনী আমার দিকে ভাকাইরা থাকে, আমার দেহে একে একে অঞ্জ, পুলক, কুমা, বেদ ইত্যাধি প্রেমের যাবতীয় লক্ষণ প্রকাশ পার।

সেদিন ভোর হইতে সভ্যা পর্বন্ধ প্রেরদী আমাকে চোবে চোবে রাবিল। গা ঢাকা দিবার চেটা ছ্-একবার করিলার বটে, তবে সে নিভাত্তই বেলাছলে। এতটা আমার অভ্যন্ত বাড়াবাড়ি বলিরা বনে হইল, এতকাল একসকে ঘর করিলাম অবচ এবনও চোবের আড়াল করিতে এত কট কেন বে বাপু।

দিনের শেষে রাত আসিল, প্রেরসী কুটিরে পর্বন্যা বিহাইরা দিল, আমি ভইলাম। বোৰ হর বিহানার ছই-একটা কাঁচা হিল ভাই ঘূর হইভেছিল না। অবকার রাভ, অক্রে একটা পোঁচা ভাকিতেহে, আমরা ছইট আলা পরস্পরের সামিশ্য নিবিভভাবে অক্তন করিভেছি। প্রেরসীর চোব ছট আল কভ উল্লেন। প্রহরের পর প্রহর কাটরা বার, অবকার পভীরভর হর, পোঁচাটা ভাকিতে থাকে। কবন বেন একট্ ঘূর্যাইরা পভি, হঠাং ভাগিরা উটি, যনে হর মুবের উপর কাহার বেন উক্ত নিবাস পভিতেহে, কে যেন বুঁকিরা পভিরা আনাকে দেবিভেহে। ভাকিলান "প্রা, প্রিরভবা,"—প্রিরা উভর বিল না,

সাধ্যা বিষার কর একবানা হাত আনার বৃক্তের উপর রাখিল। হাসিবার চেটা করিলান, অবরের সমত দরদ দিরা অতি মব্র আবে হাসিবার চেটা করিলান, তাবিলান একবার বে অবরকে কর করিব। পৌচাটা তাকিতেতে, গভীর অবকার। হঠাং সেই অবকারে প্রেরসীর হুই পাট হাত বিহাতের মত চমকাইরা উঠিল, তার পরে রুহুতেরি মব্যে প্রিরা কেই হাত আনার কঠনালীতে

বসাইরা দিল। আবি বোধ হব আপতি ক্রিডে গিরাহিলাব কিরু পারিলাব না। ইঁচুরের টু'ট বরিয়া বিকাল বেমন ক্রিয়া বাঁকানি দের তেথনি ক্রিয়া প্রেয়মী কোরে গোটা হুই বাঁকানি দিল, ভাহাতেই আবার প্রাণবার্ আচমকা বাহির হুইয়া গেল।

বাহিরে তথনও বৃষ্টি পড়িতেহিল, নিভিন্ন বাওৱা নিগারেটটা কেলিয়া বিবা একটু বলা গলার দেবেন কহিল, 'পরে কি বটল তাহা আর আবি বলিতে পারি না।'

# রবীন্দ্র-সঙ্গীতসার

(২য় শন্তক) জ্রীইন্দিরা দেবী

গত বংসরের মৃত এ বংসরও সেই একই সময়ে 'প্রবাসী' পত্রিকার সময় মাধ্যমে রবীল্ল-সদীতসারের ২র শতক স্বীতজ্ঞ পাঠকসমক্ষে উপহাগিত করতে ত্রতী হয়েছি। এ বেন তার ভতর্মাদিনে নিবেদিত এক একট স্বীতাঞ্চলি।

এবারকার সকর্ম করতে আর নভুন করে বাইরের লোকের বারহ হই বি। সুপুরিবীর মত সঞ্চিত তহবিল থেকেই কাৰ চালাবার চেটা করেছি। কারণ গত বাবে লামার चारबक्क नवकै। छ नाब एवं नि , किहू शांख क्या दिन । छरव चड अक्डे (बंदक भाराया (शदबि, दर्वे। উল্লেখযোগ্য। क्षवंबल: "नक्षिण"इ (नव मश्कद्भव मेलाइनि, मेलियांना छ দীতালি খেকে কবি নিজে যে সংকলন করে গেছেন এবং এছ-প্রকাশকরা বা করেছেন তা দেববার প্রযোগ আমার হরেছে। যদিও গেওলি কাব্য হিলেবেই সম্ভবতঃ নির্বাচিত, তবু তার ৰূল্য কম নয়। বিভীয়ভঃ, একটা গানের ভালিকা রবীক্রভবনের मोक्ट प्रवट्ड (श्राह, राष्ट्री कवि निर्देश निर्द्धावन कर्त-হেম বলে প্ৰসিদ্ধি আছে, ভবে সে কৰা কভ দুৱ প্ৰামাণ্য ভা বলতে পারি নে। প্রামোকোন কোম্পানী তার গানের রেকর্ড क्रवात देशनाका नाकि वह निर्वाहन क्रता श्राहिन। चाहेन-সদত প্রামাণিকতা লাভ করা এবনই সম্ভব না হলেও 'তা' বেকে 'হ' পৰ্যন্ত এই বৰুষ অনিৰ্কাচিত প্ৰায় ৪০০ বৰীক্ৰ-দলীতের একট ভালিকা আমার বর্তমান সাধনার সিহিলাভের পদ্দেৰে অভাবনীয়ন্ত্ৰণে সাহাব্যপ্ৰদ, সে বিষয়ে কি কোন जल्मर चाटर १—त्वर्थ बूनी रुन्द त्य चामात्वद करे कर्स बहा প্ৰায় সম্ভ পানই তাতে সমৰ্থন লাভ করেছে। ভাছাভা আর এক নহা সৌভাগ্যের কারণ ঘটেছে। ভবিষ্যতে ৩য় শতকের গানও হাতের কাবে প্রভঙ্গ রইল, আর হাত ভে र्वणार्क स्टब मा । कावन हैक 800 शारमत मर्वा बहे हरे क्लि >eoB शास्त्रक्ष कम निरहरू, शिरान करत स्वयूत्र । का राम बाद अरू वरमद बारम्या मा काद रहक आवाद बीह বাৰ্ষিকীয় মধ্যেই আয়ও এক শভ গান প্ৰকাশ কয়ভে পায়ৰ,

যদি ভাগ্য প্রসায় থাকে। গত বংসার একট উংসাহী পাললেখক বে আমাকে বলেছিলেন তাঁর ১০০ গানে কি হবে,
অহত: ৫০০ট গান চরন করে তার বরলিশি প্রকাশ করতে
পারলে তবে তাঁর স্বেহ্ধণ কতক পরিশোধ হতে পারে, তাঁর
সেই প্রভাবও কার্যে পরিণত করবার আশা নিভাভ ছ্বাশা
বলে এখন মনে হচ্ছে না। যদিও এখনকার ছবিনে যেরকম
প্রাণ নিয়ে চানাটানি পড়েছে ভাতে গান নিয়ে মাধা খামাবার
লোক কমই পাবার সভাবনা; তব্ও ভবী জনের মভামত ভ সহবোগিতা প্রার্থনা ক্রি। শাভিনিকেতন, ২৫লে বৈশাধ,

## औरेन्बारक्ती (ठोवुबाने

7=1

- )। जास्त्व भद्रमम्ब
- ২। আৰু প্ৰণমি তোমারে
- ৩। আহার প্রাণে গভীর গোপন
- ৪। এই স্ভিত্ন সদ তব
- e । এবলো গেল मा चाँवाव
- ७। एक चवानाद
- १। क्यात और इवाबहुक्
- ৮। কে বার অহতবাম বাত্রী
- >। কোন আলোতে প্রাণের
- ১०। भीरम-मद्दर्शन नीमामा
- ১১। জীবন ধৰন জভাৱে
- ১২। জীবনে যত পূজা
- ১৩। ভূমি বে এলেছ বোর ভবমে
- ১৪। গ্ৰন্থ আছি ভোষার
- ১৫। বলে ভোষার বাবে বাঁপি
- **३७। यम माछ त्यांदर**
- ১৭। বিপজে যোৱে বকা কর
- ১৮। তেকেছ হবাম এলেছ ভ্যোতির্বর

२। बळवानिक निद्य गाँवा

~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
১৯। যোর সদ্যার ভূষি	৩। আৰু প্ৰাবৰের পূর্বিয়াতে
২০। অপসাগৱে ভূব দিয়েছি	৪। পূব সাগৱের পার হতে
২১। জানি গো দিন যাবে	ে। কেন পাছ এ চক্সভা
২৭। সবার মাঝারে ভোমারে বীকার	৬। আষৱা চাষ কৰি আৰক্ষে
২৩। শীৰাৰ যাবে অগীৰ তৃষি হে	ণ। স্বাস্থি পথভোলা এক পৰিক
২৪। আৰি ভোষার সঙ্গে বেঁৰেছি আয়ার	৮। এভদিন যে বসেছিলেম
২৫। না চাহিলে বারে পাওৱা বার	<ul> <li>। বসভে বসভে ভোষার ক্বিরে হাও ভাক</li> </ul>
২৬। কালা হাসির ফোল ফোলাশো	<b>১० । यथम महिका र</b> टम
২৭। আমি ভারেই বুঁজে বেছাই	১১। <b>ম</b> রুবি <b>শ্বের কেন্ডন উ</b> চাও
২৮। বে ক্ৰৰণৰ দিয়েছ বাঁৰি	১২। একটুৰু ছোঁয়া লাগে 🕠
২>। প্রভাতে বিষল আমন্দে	১৩। হে ক্ষণিকের অভিবি
৩০। খাৰে হুঃৰ খাৰে বৃত্যু	১৪। আবার রাভ গোহাল শারদ প্রাতে
৩১। মৱণ-সাগৱ-পাৰে ভোমৱা অমৱ	১৫। আজি ক্ষল মুকুলগল খুলিল
৩২। স্বামি ভোষার ষভ	১৬। পুৰ যাওয়াতে ধেয় বোলা
ত <b>্। মন্দিরে মন কে</b>	<b>১৭। রোদনভরা এ বসস্থ</b>
৩৪। বেধার বাকে সবার অবম	১৮। ধিষে গেছ বসজের এই
৩৫। ভোৱা শুনিস নি কি	১৯। আজি দক্ষিৰ দোৱার ধোলা
৩৬। মোরে ছাকি লয়ে যাও	২০। ভদৰ আমার ঐ বৃবি ভোৱ
৩৭। নাগোএই যে ধুলা	২১। এস এস ছে তৃকার জন
৩৮। বার বেন যোর সকল ভালবাগা	২২। ঐ আসে ঐ অভি ভৈয়ব
৩>। আমার মা-বলা বাদীর	२७। भीन नवचटन चांचाह ननटन
৪০। অদম বেদশা বহিলা	<b>২৪। বাদল দিনের প্রথম কদম স্থল</b>
৪১। ভূষি একটু কেবল বসভে দিছো	২৫। এবার অবস্থঠন বোলো বোলো
৪২। ভোষার হার শুনারে	২৬। তুৰি কিছু দিরে বাও
৪৩। ভোর ভিতরে ভাগিরা কে	২৭। বেদনা কি ভাষার
বেষ	<b>चरम</b>
১। মনে কি দ্বিধা রেখে গেলে	১। শামার বোলো না গাহিতে বোলো না
২। বঁধু কোনু যায়া লাগল চোৰে	২। যাত্যন্তির পুণ্য অঞ্ন
৩। কোৰা বাইৱে দূৱে	७। नारे नारे जन
৪। হে নিরুপমা	৪। শুভকর্ম পথে বর নির্ভন্ন গান
৫। কৃষ্কলি আমি ভারেই বলি	। খৰ হোক খৰ হোক নৰ অক্ৰোদৰ
৬। কেন বাজাও কাঁকন কন কন	विविव
৭। একলা ভূমি প্রিয়ে	১। প্ৰলম্ভ নাচন নাচলে বৰ্ণন
৮। ভূষি সভ্যার বেব শাভ সূত্র	২। কী পাইনি ভারি হিসাব মিলাভে
»। चोभाव मदम छद मदत्मद	७। चन्न बाज्ञ् वरक् व्यवस
১০। ৰূপুর বেচ্ছে যার	৪। ভণু যাওৱা আসা
১১। <b>छमि करन करन मरन मरन</b>	৫। আৰৱা সন্মীহাড়ার দল
<b>১२। बरे फ्वांडे बटन दार्खा</b>	७। ज्वाद्य कति चास्तान
১৩। আমি চিনি গো চিনি ভোনারে	৭। ঐ বহামানব আলে
১৪। जानात मन मारम ना	৮। ৰূভ্যের তালে তালে
১৫। कांत्र त्यम अरे मत्मन्न त्यमम	যোট পূজা— ৪৩
১৬। জানি হল বাবাহ আবোজন	के त्थम— >१
১१। नाटक कन्नन ग्रहा	र्थ श्राप्त २१
. প্ৰকৃতি	वे चरणं— ।
্ অৰ। ১ ৷ নীল অঞ্চ বন অঞ্চারার	के विविषं— ৮
र्म्याम् प्रमुप्त प्रमुप्त स्थापन । १८०८ - अस्त्रा	مدد فاستر کست

দৰ্ম ৰোট---

300

# সুরেশচন্দ্র সমাব্রপতি

3240-3263

## **এ**বজ্ঞেনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

## ৰংশ-পরিচয় : শৈশৰ শিক্ষা

৩০ ৰাৰ্চ ১৮৭০ (১৮ চৈত্ৰ ১২৭৬) ভাৱিৰে ক্লিকাভাৱ द्रविषठिक कर रह । छाराह निष्ठा--- त्रानानहक र्यादान সহাৰণতি; নাতা-বিদ্যাদাগর বহাশরের ভার্তা কভা বেষলভা বেৰী। স্থৱেশচাক্ৰয় অঞ্চপ্ৰভিষ্ পাঁচকৃতি বন্যো-পাৰ্যাৰ লিবিবাহেন, "ক্ষেণচজেৰ পৈভাৰত বাসছান নদীয়া কৃষ্ণবর জেলার আংশ্যালী প্রামেছিল। উহারা বাংস্য গোত্তের বোষাল, শ্রোত্রির; সমাত্রণতি উপাবি---। স্থরেশ-চল্লের জনক 🗸 গোপালচন্ত্র সমাজপতি কলিকাভা বংখুভ কলেকে লেৰাপড়া করিভেন: সেই সময়ে বিদ্যাসাগর মহাপর গোপালচক্ৰফে দেখিৱা পছৰু কৱেন এবং জ্যেষ্ঠা কভাকে धरे भाष्ट्रिके मान करवम । जनम विश्वा-विवारस्य (साव स्थम চলিভেছিল, গোণালচক্ৰ বিভাগাগৱের ভাষাভা হইরা সামাজিক হিগাবে একটু গোলে পড়িয়া ছিলেন। ভাই ভাঁছাকে অবিকাংশ সময়ে বশুৱগৃছে বাস করিতে হইত। ... অতি অন্ত বয়সে গোপালচজ কানী বাইরা ওলাউঠা হোগে মুড়ামুখে পভিত হন। সুৱেশ-যতীশ হুই ভাই, মাভামহের গুড়েই माञ्च हरेबाहित्वन ।... प्रदेश चाकाद्व चनवृद्ध छांश्व খনকের অহরণই হিলেন। নির্ভীক তেজ্বী পুরুষ গোপাল-চল্ডের মতন পুর কর মুবকই ভবনকার সংস্ত কলেছে হিলেন। হারেশ ভাহার জনকের এই ঋণ পাইরাছিল।" ( 'নাহিত্য', পৌৰ-মাৰ ১০২৭, পু. ৬৫৪-৫৫)

সুবেশচক্রের শৈশব-শিক্ষা হর গৃহে মাতারহের নিকট।
বিদ্যানাগর নহাশর দৌহিত্রকে সংস্কৃত কাব্য, হল, অসভারাহি
শিক্ষা হিরাহিলেন। এই প্রসক্ষে স্বরেশচক্র, ১৮৯০
সনে বভিনচক্রের সহিত সাক্ষাংকারের স্থতিক্ষার, এইরুপ
লিবিলা বিরাহেন :----

"আমি এক বিদ মুন্নীকে [ ভাবেজনাৰ ৩৫, আই. াদ. এস ] ৰলিলাম, "চল, বহিম বাবুর কাছে যাই।"…

'সাহিত্য-কঞ্চন' ও 'নাহিত্যে'র করেক সংখ্যা দইরা আন্তর্যা পরিত্তিতে বহিন-দর্শনে যাত্রা করিলান।…

বৃদ্ধিৰ বাৰু 'গাহিত্য' সহছে ছুই চারিট প্রশ্ন করিলেন। দুলী বুলিল, "প্রশ্নেশকে আমরা সম্পাদক করিবাছি।"

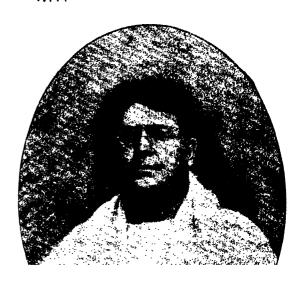
বহিষ বাৰু আমাকে বলিলেন, "ভোষার দাদা-ম'শার আনেন ?"

আমি বড় বিপদে পড়িলাম । বাধা-ব'লার জানেন কি না, ভাষা আমিও টক জানিভার না ।···ব্রী বলিল, "বোধ হর, ভিনি জানেন।" বভিন বাবু আমাকে বলিলেন, "সে ভি ? দেশের লোক ভার পরাবর্ণ নিরে ভাজ করে, আর ভূবি তাঁকে বা ব'লে কাগক বার ক'রে কেজে। তিবি ভুষ্কে রাগ করবেদ বা ?"

আৰি বলিদাৰ, "বোৰ হয় ভাষেত্ৰ। কিছু আৰি বিজ্ঞানা কৰি নি।"

বৃদ্ধির বাবু বলিলেন, "ধেব, লেবা টেবা দল নর। কিছ ভোষাদের এবন প্রধার সময়—এতে অনেক সময় নই হয়।…"

ৰুৱী আমাকে উদাৱ করিল। সে বলিল, "বিদ্যাসাগর মহাশর ওলের ছু'ভাইকে খুলে দেম মি। বাড়ীতে প্রভাষ:।"





স্থরেশচন্দ্র সমান্ত্রপতি [ সমান্ত্রপতি-স্থতি-সমিতির সৌবজে ]

বহিন বাবু বলিলেন, "কেন ? তান নিজের মূল কলেজ ববেৰে, নাডীকের মূলে পঞ্চান না ? এব নানে কি ?"

বুহী বলিল, "ভিনি ওবের লংকত পঞ্চিরেছেন। ভার নত, আনে সংক্ত প'ছে, প'রে ইংরেজী পঞ্চল শীল শেবা বার। ওরা বাজীতে পকে। ভিনি বলেন, ভাল ক'রে পছাঙ্গা করে ওরা বাজলা লিব্বে। ভিনি নিজে সময় পান নি, বা সাব হিল, লিব্ভে পারেন নি। ওবের নিরে লেখাবেন।" 'বভিন-প্রসহ', পৃ. ৬১২, ৬১৮-১১।

### বিবাহ

২৬ কেব্রাহি ১৮৯৪ (১৫ কান্তব ১৬০০) ভারিবে বিবির বুর্বোপাধ্যারের কভা নলিনী দেবীর সহিত গ্রেলচন্দ্রের বিবাহ হয়। নিত্যকৃষ্ণ বস্থ ভাষার "সাহিত্য-লেবকের ভারেরি"তে ('সাহিত্য', প্রাবধ ১৬১০) এই বিবাহের বিশ্বব উল্লেখ করিবাহেন।

### সাময়িক-পত্ৰ সম্পাদ্ধ

স্বেশচল ১৪-১৫ বংসর বরস হইতেই বাংলা রচনার হতকেপ করেন। 'পভাকা', 'সমাচার চল্লিকা' ও 'স্বভি ও পভাকা'র পৃঠাওলিতে ভাঁহার অনেক প্রাথমিক রচনার সভান মিলিবে। তিনি ক্বিভাও লিবিভেন। কৃতি বংসর বরসে তিনি মালিকপন্ন সংপাদনে এতী হন।

'সাহিত্য-কল্পক্রম' :—১২১৬ সালের প্রাবণ ( জুলাই ১৮৮৯ ) নাসে নিবাপ্রসন্ন ভটাচার্ব্যের সম্পাদনার 'সাহিত্য-কল্পম্ম' নামে একবানি মাসিকপত্র ও সমালোচন প্রকাশিত হয়। ইহা ৩ নং বীতন ভোরার, বৃতন কলিকাতা যন্ত্রে বৃত্তিত ও উপেঞ্জনাথ মুখোগান্যার (পরে 'বহুমতী'র স্থাবিকারী ) কর্ত্তুক প্রকাশিত হইত। প্রকাশক কর্ত্তুক অক্সম্ভ হইবা হ্মেলচন্ত্র ইহার ৭ম সংব্যা ( বাব ১২৯৬ ) হইতে সম্পাদন-ভার প্রহণ করেন। বলা বাহল্য, পত্রিকার সহিত তাহার কোন আর্থিক সম্বন্ধ হিল না। ১ম সংব্যার ( চৈত্র ) 'লাহিত্য-কল্পক্রমে'র বর্ব শেষ হইলে "সম্পাহকের নিবেদনে" স্থারেশচন্ত্র লিবিবাহিলেন :—

"এই পত্ৰ বৰ্ণৰ প্ৰথম প্ৰকাশিত হয়, তৰ্ণ আছ ব্যক্তি ইছার সন্পাদক ছিলেন। বিগত নাম নাসে, আমি প্ৰকাশক কৰ্তৃক অভ্যন্ত হইয়া, 'সাহিত্য-কলফ্ৰে'র সন্পাদন-ভার প্ৰহণ করি।…

পূৰ্বভন সন্পাদক মহাশব যে পথে গিরাছিলেন, আমি, নানা কারণে একেবারে লে পথ পরিভ্যাগ করিতে পারি নাই। অবচ, সকল বিবরে, উাহার অসুস্ত পথেও চলিতে পারি নাই। এই উভর-সকট হইতে অব্যাহতি পাইবার অভ, নবন সংখ্যার 'সাহিত্য-করক্রমে'র প্রথম বংসর শেব করিতে হইল।…

বহুবিদ হইতে আমাদের ইছা হিল, একথানি মালিকপত্র সাহিত্যসেবার নিযুক্ত করিব। --- ববন আবরা মানিকপত্র প্রকাশিত করিব, সভন্ন করি, তবন তাহার উদ্ভেত ও
সন্পাহন প্রধানী অবধারিত, এবং নাম পর্যন্ত নির্কারিত
হুইরাহিল। এ-ছলে উল্লেখ করা আবর্ডক, বধুর বাব্
[ মধুরামাথ সিংহ, বি. এ. ] এই বিব্যরের অঞ্জনী হিলেন।
আবরা, আবাদের সভ্রিত মালিকশ্রের, 'সাহিত্য' এই
নাম নির্কাচিত করি।

जानावी देवनाव स्ट्रेंट 'जारिका' अनाविक स्ट्रेंटि,

অধবারিত হিল। কিছ, ইতিপুর্বেই, আরি 'সাহিত্য-করক্রমে'র তার এছণ করিবাহিলান, এবং মধুর বাব্ প্রভৃতিকে, পূর্বাসম্প্রত 'নাহিত্যে'র পরিবর্তে, 'নাহিত্য-করক্রমে'র লাহান্য করিতে অস্থরোধ করিতেহিলাম।

সৌভাগ্যক্রমে, উছায়া এ প্রভাবে সম্বত হইয়াছেন।
কিছ, এ বছ একট পরিবর্ত্তন অপরিহার্য্য হইয়া উঠিতেছে।
পূর্ব্বে বিনি ইহার সম্পাদক ছিলেন, তিনি ইহাকে
'সাহিত্য-করক্রম'—নামে পরিচিত করিয়াছিলেন। আমাবেয় অতদ্র উচ্চ আশা নাই। অগতে সাহিত্যের অভর্গত
নয় কি ? অতএব 'করক্রমে'য় ভার, বিনি বাহা চাহিবেন,
উাহাকে নেইরপ 'লাহিত্য' দিয়া ভ্রা করিব, আমাদের
এমন হয়াশা নাই। বিলেমতঃ, "সাহিত্য-করক্রমে"য়
পূর্ব্ব উদ্বেশ্ত এবন ভিল্ল ভাব বারণ করিতেছে। অভএব,
নির্ভারিত হইল যে, অতঃপর, 'সাহিত্য' ট্রক প্রচারের
মত আকারে, প্রতি মাসে ৫ পাঁচ কর্মা হিসাবে প্রকাশিত
হইবে। কি ভাবে, কি উদ্দেশ্তে ও কি প্রপাণীতে, এই
অভিনব 'সাহিত্যু' সম্পাধিত হইবে, তাহা ছিতীয়
কল্লের প্রথম সংখ্যায় নিবেকিত হইবে।"

'সাহিত্য' :— ১২৯৭ সালের বৈশাব (এপ্রিল ১৮৯০)
মাস হইতে সুরেশচন্দ্রের সম্পাদনার 'ক্যুক্রম'-কাটা 'সাহিত্য'
প্রকাশিত হইল। উপেজমাথ ধুবোগাব্যার ইহার প্রকাশক ও
কার্য্যাব্যক্ষ রহিলেন। পত্রিকা-প্রচারের উদ্দেশ সংব্য প্রবন্ধ সংব্যার "হুচনা"র সম্পাদক লিবিলেন :—

"বাল্লা-সাহিত্যের সেবার অভ, 'সাহিত্যের' কর

হইল। আতীর সাহিত্যের ঐর্ডিসাবন, আমাদের এক
বাত্র উদ্বেশ্ন। যাহা কিছু সভা ও সুক্ষর, সাহিত্যে আমরা
ভাহারই আলোচনা ক্রিব।

এদেশে, ইংরাজী শিক্ষার প্রভাব, দিন দিন অবিক্তররূপে বিভারিত হইতেছে। এই শিক্ষার কলে, আমাদের
শিক্ষিত মুবকগণ, নানাবিধ সূতন ভাব ও অভিনব চিন্তার
সহিত পরিচিত হইতেহেন। কিন্ত, অত্যন্ত হংবের বিষর
এই, আয়াদের বাললা-সাহিত্য, তাঁখাদের সেই চিন্তাশন্তি
ও ভাবুকভার কললাতে বকিত হইরা রহিয়াছে। এবন
বাহারা ইংরাজী শেবেন, তাঁহারা প্রার বাললা পড়েন না;
বাললা পেবেন না। বালপা-সাহিত্যের শৈক্ষর-ম্পার,
বাহারা বাললা-সাহিত্যের উন্নতির কল প্রাণপাত করিয়াহিলেন, এবনও প্রার ভাহারাই বাললা-লেবক। তাহারা
সাহিত্যক্তরে বে বীক বপন করিয়াহিলেন, ভাহা অমুরিত
হইরাছে সভ্য, কিন্ত কে ভাহাতে কল সেচন করিবে?
তাহারা বে কার্ব্যের অ্রপাত করিয়াছেন, কে ভাহাকে
পূর্ণ পরিবৃত্তির পবে লইরা বাইবে? কারণ, তাহাকের পরে
বাহারা বাললা লিবিতে আরত করিয়াছেন, উাহাবের

বের সংব্যা অভি অর। কৃতকার্য্য লেবকের সংব্যা, जावात करराका जातक जन।

700

चर्क, त्र कालद चर्लको, बकाल, रहर्ल क्रिक्री-শীলের সংখ্যা বাভিয়াহে, ভাবের জ্যোভিঃ অধিকভয় বিকীৰ্ণ হইডেছে। তথাপি, শিক্ষার অভূপাত অভূসারে বহিতে গেলে, লেকালের ভুলনার, একালের বাদলা-সাহিত্যকে অনেক দল্লিক বলিলা বোধ হয়। শিক্ষিত ৰুৰক্পণের বাদলা-সাহিত্যে দেরূপ মনোবোগ ও অভুরাগ নাই, এইক্তই সাহিত্যের এমন চুর্বশা ঘটভেছে।

এখন চিন্তার শ্রোভ পরিবর্ত্তিত ভ্ইরাছে। প্রাচীন মুগের লেধকগণের মভের সহিত, প্রায়ই বর্ডমান নবীন বুৰেন্ন শিক্ষিত বুৰকগৰেন্ন মন্তবিন্নোৰ উপস্থিত হয় , কিছ ছঃবের বিষয় এই, সাহিত্যের প্রশন্ত ক্ষেত্রে ভাষার ৰীমাংসা হয় না। সুভরাং, প্রাচীন ও নবীন মডের বিরোধে যে ৬৬কল প্রভ্যাশা করা বার, আবাদের সাহিত্যে, সে ওভফলের সম্ভাবনা নাই।

এইজভ, আময়া শিক্ষিত মুবকগণজে এই মুভন 'সাহিত্যের' আগরে আহ্বান করিতেছি। नुर्वाचन चाहार्वात्रात्वत भएवीय चक्ष्मय क्रम्य, चाननात्वय শিক্ষার কল, বাহাতে আয়াদের জাতীয়-জীবনে অনু-बाविष्ठ एवं, ष्टाराव (घडी एक्स)

ভাতীয়-ভীবনের উন্নতি, সাহিত্য-সাপেক, बक्बा मर्क्यविभव्यक । (१८ मत मिक्कि ब्रूब्क्श्य विश त्नरे बाजीयबीवनर्ग्यस्य बच बानगांच मा करवम, छर्प আর কে করিবে ?

আহরা থেশের অনেক গণ্য ও যাত ব্যক্তির নিকট ইংসাহ পাইবাহি, সাহিভ্য-সংসারে খুপরিচিভ, খনেক প্ৰৱে লেখকের সাহায্য পাইরাছি। একণে, শিকিভ ব্ৰক্পণ 'সাহিত্যের' আসরে অবভীর্ণ হইলে, আমাদের আলা ও উল্যোগ সফল হয়। আমাৰের সে আলা কি विकल स्ट्रेंट्र ?"

প্রথম বর্ষের 'সাহিত্য' বাহাদের রচনা-সভারে সমুদ্ व्हेबाहिन छांशास्त्र करबक करबब नाम :--शैरबक्षमाय क्ष ( ক্ৰিডা ও "ৱৈৰতক কাৰ্য" স্বালোচনা ), নবীনচন্ত্ৰ সেব (क्विका ७ "धारारमञ्ज नव"), शेनामहत्व रत्यानामान, হেবেজনাথ নেন, নগেজনাথ ৩৫, বলেজনাথ ঠাকুর (কবিভা), প্ৰিয়নাৰ সেম (কৰিতা), নিত্যকৃষ্ণ বস্থু (কৰিতা ও গল), লোবিলচল দাস, চল্লেবের বুবোপাব্যার, ঠাকুরদাস বুবো-शाशाब, (बाराक्षकक्ष (बाव, बचनीकाच चढ, कारमक्रमाय चढ ( धनवान ), बनिबीकाच बूर्यानावाच (शबरमब Reisbilder इर्ड ), नितीलस्वारियी शानी, बीराजिका-वन्तियी-- अनववती (वर्वी ( क्विका, अवन-कारियो ७ जवालाक्या ), जरवाक्य्यावी (बरी, काविनी (जन, धरीना नान ( रह )।

'বাহিড্য' বিভীয় বৰ্ণ হইতে 'সাহিড্য-ক্ষক্ৰবে'য় আশ্ৰয় ভ্যাপ করিবা বভর হইল। প্রবেশচন্ত্র 'লাহিভ্যে'র বহাবিকারী

ररेलन। मरक मरक डेरनक्षनांबंध ১२৯৮ मारलह देवनांब मान रहेए १४ वर्षद 'नाहिका-कश्रक्षव' (वाग्रदक्ष ३७कीड नन्नावकरक बांगांव कविराममः, "नववर्स नृक्षम कवा"स निविक्त रदेन :- "चानारवन 'नाश्चिक् क्रक्रायतक' अक्षेत्र वरनत पूर्व হইতে না হইতে, 'নাহিত্য' আণিয়া, ইহার হারার আশ্রর व्यार्थना कवित्र । वहेबुक, (यवम (इषक्टक्थ द्वादा वाम कट्य, ज्यमरे 'क्यम्य'अ, निक कीनत्यत्र विकीश वर्षक्र देवपानय ক্রিরাছে। পভ ১২১৭ সালে 'নাহিত্য', 'করফ্রের' হারার প্ৰতিপালিত হইয়া, এ বংসৱে বেশ শক্ত সমৰ্থ হইয়াছে, মিছে চলিতে কিরিতে পারে, ছু কবা বলিভে কহিতে ও পব চিনিয়া হাঁটতে শিৰিয়াহে ; ভাই এবার আর "আওভার" না বাকিয়া, উপৰ্ক্ত যাণীধারা সাহিত্য-উদ্যানের অপর এক পরিভ্রত হানে ত্বাৰাভৱিত হইয়াছে।"

'সাহিত্য'-সম্পাদক মবোদ্যযে পৱিকা-সম্পাদমে ৱডী र्देलन। छिनि २४ वर्षद ১२ সংখ্যার (বৈশার ১২৯৮) সম্পাৰৰ-প্ৰণালী সৰছে বাহা লিবিয়াছিলেন, ভাহা উদ্ধুভ করা প্রবোজন। ভিনি লেখেন:---

"আমাদের আর একট উদেড,---প্রাচীন ও নবীন মভের সন্মিলন। এ সহছে, করেকট কথা বলিয়া আমহা বিদার হইব। কর্তব্য কার্ব্যের অপুরোধে আমাদিগকে चारम नगरा चाराका विक्य यह शहात कृतिए एत । সামাজিক বা আচ কোনও বিষয়ের আলোচনা ছলে বলি কেহ ৰ ৰ ৰভেৱ বিক্লম্ব ৰভবাৰ দেখিতে পান, আলা क्ति, (म क्ष बामार्यंत बन्दानी क्तिरंग मा। मिहर्यक-ভাবে সকলের মতামত প্রকাশ করাই সন্পাধকের কর্তব্য। এ বিষয়ে কোনও সম্পাদকই সম্প্রদায় বা শ্রেণী-বিশেষের সমীর্ণ গঙীর মধ্যে আবদ্ধ থাকিতে পারেন না। বলা বাৰল্য যে, সম্পাৰ্কের মডের বিরুদ্ধ ছইলেও, যে কোনও আবর্ডকীয় বিষয়ের আলোচনা, 'সাহিত্যে' প্রকাশিত হইবে। যাহাতে সভ্যের উল্লেখ বা বিকাশ হইতে পাৰে, বাহাতে সমাজের বা সাহিত্যের উপকার আশা করা বার, সাধারণের অঞীভিকর বা আয়াবের ৰভের বিরুদ্ধ হইলেও, ভাহার প্রচার করিভে আবরা क्षमक कृष्ठित स्टेर मा। अ वह यहि बाबदा कारादक অঞ্জীতিকর প্রসঙ্গের অবভারণা করি, আমাধের প্রার্থনা এই, তাঁহারা বেদ বিষয়ের ভক্ত বুরিয়া, আমাদের ক্যা क्रबंब ।

বালালার প্রভিভাশালী প্রবীণ আচার্য্যগণের পদ্ধীর অহুসরণ করিয়া, আবলা সাহিত্যদেবারত করিতেছি। সেকালের লেবক মহাশরগণের অন্ধ্রহৈ ও अकारणव नवीन *(नवकशरवव वे*रजारक, 'जाविका' जाबारक ভাতীর তাব-প্রবাহের সদম হউক। আমাদের পুর্কাচার্য-গণের অহকাশার, একালের নবীন ভাব ও বড, দেকালের ভাব ও বভের কিছবে বিক্লিভ হুইভে বাহুক, সকলের

সৰবেত চেপ্তার, আবাদের স্বাতীর সাহিত্য, সভ্য ও সৌন্দর্ব্যের প্রভার পূর্ব ও প্রদীপ্ত হুইরা উঠুক ৷"

'সাহিত্য' কত উন্নতির পৰে অঞ্জন হইনা অচিনাং প্রথম শ্রেণীর সাহিত্য-পঞ্জিলার সৌরও অর্জন করিল। বাংলা-সাহিত্যে সম্বর্গতির এমন অন্ধ লেওকই আছেন বাংলার কোন-না-কোন রচনা 'সাহিত্যে'র পূর্চার স্থানলাভ না করিরাছিল। 'সাহিত্যে' রচনা প্রকাশ করিতে পান্তিলে অনেক লেওকই নিজকে সৌভাগাবান্ মনে করিতেন,—'গাহিত্যে'র এমনই স্থাম ছিল।

সৰাৰপতি সভাই সাহিত্য-সৰাজের সমাজপতি ছিলে। ভাঁহার হারা সমালোচনা-সাহিত্য বহুল পরিমাণে পুঠ হইরাছে। প্রকৃতপক্ষে 'সাহিত্যে'র মাসিক সাহিত্য সমালোচনা পাঠ করিবার হুত সকলেই উদ্প্রীব হইয়া বাক্তিতম।

সংবাদপত্ৰ সম্পাদন :—স্বেশচন্ত 'ক্ৰঞ্ম' ও 'সাহিত্য' হাড়া অনেক্তিনি সংবাদপত্ৰও সম্পাদন করিয়া বিবাহেন, ভ্ৰন্যে 'বহুৰভী', 'গৰ্চা' 'নাহক', 'বালালী' প্রস্তুতির নামোরেব করা যাইতে পারে।

### গ্ৰন্থাৰলী

স্বেশচন্দ্রের রচিত ও সম্পাদিত গ্রন্থগোর একট কালাগ্র-ক্ষমিক তালিকা দিতেছি :---

১। ক্ষিপুরাণ (জম্বাদ)। কার্ত্তিক ১২৯০ ( ইং ১৮৮৬)। পু. ১২৬।

"ৰূপ সংস্কৃত চ্ইতে অমুবাধিত"। অমুবাধকের বিঞাপনে প্রকাশ:--"ক্লিকাত। সংস্কৃত ক্লেকে ক্ষিণুৱাবের যে হওলিণি আছে, প্রধানতঃ তদবলখনে এই অমুবাধ সম্পন্ন চ্ইরাছে এবং পাঠকগণের বোৰসৌক্ট্যাবে হানে খানে জীকা স্কৃতিত চুইরাছে।"

২। সাজি (পল)। আবাচ ১০০৭ (১৫ জুন ১৯০০)। পু. ১৫৬।

'গাহিত্য' হইতে পুনরু ফ্রিত আটট গলের সমষ্টি। গলগুলি
—প্রাইডেট টউটার (লোঠ ১২৯১), প্রভা (আয়াচ ১২৯১),
বাবের নব (প্রাবৰ ১৩০১), কমলা (ল্যেট ১৩০৬), প্রতিলোধ
(আবিন ১৩০৬), তীর্ধের পথে (মাধ ১৩০৬), লোকবিক্স, ও
লালসা ও সংব্য (কার্ডিক ১২৯৮)।

শ্রহণারের বিভাগন:—"গরগুলি ইতঃপূর্বে সাহিত্যে প্রকাশিত হইলালি। এক্সনে এক্স সংগৃহীত হইল। 'লোক-বিজয়'ও 'লালসা ও সংবয়' বাগ্যকালে রচিত। নবীনবার্ 'ক্ষিতাতে' 'লোকবিজ্বে'র আব্যান লিপিবছ করিরাহেন; এবং রবীক্ষ বার্ 'ক্ষা'র 'লালসা ও সংব্যে'র কাহিনী বিরাহেন। ইহাঁথের রচনা প্রকাশিত হইবার পর পূর্বোজ্পর কৃষির পুনংপ্রকাশের আবস্তকত। হিল না; তবু বাগ্য-রচনার বারা অভিক্রয় করিতে পারিলায় না।"

ভৃতীয় সংখ্যাণের পুডকে (ভাজ ১৩২২) (hive Schreiner-র ম্বণকের অধ্বাদ—'শিকারী' ('সাহিত্য', ভাজ ১৩০০) ও 'বঙ মবুশের স্বপ্ন' ('সাহিত্য', কার্ডিক ১৩০০) বাবে ভার ছুইট রচনা সরিবিট হইরাছে। 'সাদি' "এব্জ নলিনীকাছ বুবোপাব্যার প্রিরথহের্"কে উৎসর্গীকত। এই সংক্ষণে এহকার প্রলোকগত বন্ধুর রুত্যুতে লিখিত একট রচনা ১৩১৮ সালের ১৩ই প্রাবশের 'বপুষতী' হইতে পুনর্ক্তিত করিয়াহেন।

৩। রণ-(ভরী। ইং ১৯১৪ (২০ জাজুরারি ১৯১৫)। পু.৩০।

সার্ ঝার্থার কোনান্ডরেলের To Arms-এর বদাস্থাদ। সুরেশচন্দ্র সমাজপতি ও পাঁচকড়ি বন্দ্যোপাব্যার কর্তৃক সম্পাধিত ও অক্সকোর্ড ইউনিভারসিট, প্রেস কর্তৃক বোখাই এবং মালাভ হুইতে প্রকাশিত।

৪। ইউরোপের মহাসমর (ইভিহাস)। ইং ১৯১৫। পু. ৭১১।

ইহা ভবলিউ, এল, কোটনি ও কে, এম, কেনেভি প্রশীত
How the War Began-এর অনুবাদ। "ত্রীব্রেশচল
সমারপতি কর্তুক সম্পাদিত" ও "হজ্ঞার এও টাটটন
কোম্পানার পক্ষ হইতে অরকোর্ড ইউনিভারনিট প্রেস কর্তুক
বোধাই এবং মালাক হইতে প্রকাশিত।

e। বিশ্ববন্ধ (ভিটেকটক উপভাগ)। কার্ত্তিক ১৩২৭ (ইং ১৯১৫)। গু. ৩৭৫।

সুরেশচক্র কর্তৃক "সম্পাধিত" এই উপভাসবানি প্রথমে ১ম-২য় বর্ষের 'ভারতববে' ( ১৬২০-২১ ) বায়াবাহিক ভাবে প্রকাশিত হয়, পরে বৃদ্ধিতাকারে পুথকে ছান পাইয়াছে।

७। আগমনী (সম্পাধিত)। মহালয়া ১৩২৬ (ইং ১৯১৯)। পু. ২০৩।

বপ্ৰতী-সাহিতা-মন্দির হুইতে প্রকাশিত এই পৃষ্ণবাধিকীতে বিজেলনাথ ঠাকুর, অপকুষারী দেবী, রবীজনাথ
ঠাকুর, আঁশবনীজনাথ ঠাকুর, প্রথণ চৌধুরী, হরপ্রসাধ শালী,
শরৎ চক্র চটোপাব্যায়, ধীনেজকুমার রাম, প্রেলনাথ মন্দ্রধার
প্রভৃতির রচনা স্থান পাইরাছে। ইত্যতে স্বেশচজ্যের "পেভার
বর্কী" নামে একট গল মুদ্রিত হুইয়াছে।

৭। ক্ৰিডাপাঠ ( সহলিত পাঠ্য পুত্ৰ )

# [ মৃত্যুর পরে প্রকাশিত ]

৮। व[क्य-ध्रमण (भक्षणिष्ठ)। १ (दे९ ४३२४)। भू. ७८৮ 🕂 २१।

এই এছে ব্যিষ্ঠল সথদে ববীজনাথ ঠাকুব, হরপ্রসাধ লামী, অক্ষচল সরকার, ঐশচল মক্ষণার, হারেজনাথ ঘড়, চজনাথ বস্থ, পূর্ণঠল চটোপাব্যার, কালীনাথ ঘড় প্রভৃতির ক্তক্তিপি পুরাজন রচনা একত্র সংগৃহীত হইরাছে। প্রস্থানিধে ব্যিক্ত সথকে স্বরেশ্চপ্রের স্থাতিক্বা চারিট প্রবৃদ্ধে বিরুত হইরাছে; এছলি ১৩২১ সালের মাথ-ট্রের ও ১৩২২ সালের বিশাব সংখ্যা 'নারায়ণে' প্রকাশিত হইরাছিল।

হবেশচন্ত্ৰ কোন কোন এছের ভূমিকা লিখিরা হিন্ন-বিলেম। ভন্তব্য ১২৯৯ সালে প্রকাশিত নবীনচন্ত্র সেনের 'প্রবালের পত্রে'র ও ১৩০৫ সালে প্রকাশিত হলিভন্ত নিরোমীর ২র সংস্করণ 'বিনোহনালা'র "বিজ্ঞাপন" এবং ১৩১৯ সালে প্রকাশিত অক্তর্নার বড়ালের ৩র সংস্করণ 'প্রাধীপে'র 'প্রবৃত্তি' অংশ উল্লেখবারা।

### পুত্তকাকারে অপ্রকাশিত রচনা

পুৰেশচজের অনেক বচনা সাম্বিক-পঞ্জের পুঠার আছ-গোপন করিবা রহিবাহে। এওসি সংগ্রহ করিবা পুভকাকারে প্ৰকাশ কৰিলে ভাষার স্বতির প্রতি ব্যার্থ সন্মান প্রদর্শন করা হইবে। আমরা পুতকাকারে অপ্রকাশিত ভারার কতকওলি গভ-রচনার নির্ভেল দিভেছি :---ক্ষা (বৌদ কাহিনী)…'দাহিত্য-ক্ষক্ৰম', ১২১৬, ভাত্ৰ-আধিন वक (क (नंब)… 'সাহিত্য', ১২৯৮, देवार्ड (यवपृष्ठ (नवांटनां क्यां)... 414 উপাৰি-উৎপাতে ৰম্বিৰ বাৰু... 145b. ভার ब भारमञ्ज वि :-- मशीवनी चुवा (अभारमाहना) ১७००. ৰা ব ⊌**ष्ट्रक बूट्यांभावााव** ·· 2007 **ৰো**ঠ শিশুপাঠা সাহিত্য (স্বালোচনা)… 7004 ভান নাহিত্য-পরিষদ · · · ১७১৫. चटाइव मरीमहस्य ... 1016 বৈশাৰ मनिमेण पूर्वाशायाः 7075 ভাত গিবিশচন্ত · · · বৈশাৰ 2075 महामणि (ईण ... বৈশাৰ বৰ্গীৰ ষ্টেড্ৰয়… মাৰ बाका विवयक्रक (वय वांशाहब... যাৰ 'শিপল্কা পেড়' (গল)… 2057 खांचन ভাগা (গৰ)… 3080 বৈশাৰ बहाकवि बद्धवन... বাধাচ 'ক্লৈব্যং মাত্ৰ পৰঃ পাৰ্ব ৷'… खावन ७ पश्चि ।… खारन बच्च विकाम-मन्दितत क्षेष्ठित है रुप्तय ... পৌষ *\$99€* **७८**नळमाच बूर्यानामादः . . ১৩২৬, বৈশাৰ আধিন द्वारबद्धक्य द ... 'লে কাল এ কাল' (গৰালোচনা)… 205 g TIE

## বলীয়-সাভিত্য পরিষদ্ধের সেবা

সুরেশচল সাহিত্য-পরিবদের অক্তমিন বন্ধু ছিলেন। তিনি দীর্থকাল এই প্রতিষ্ঠানের সহিত মুক্ত থাকিবা ইবার পরিচালন-কার্ব্যে সহারতা করিবা সিরাহেন। ১৩০৫-১৮ ও ১৩২৪-২৭ লালে তাহাকে আনরা পরিবদের কার্গ্যনির্কাহ-সভার সভ্য-১০৭ বেবিতে পাই। পরিবদের নিজর দশির নির্দিত হইলে তাহার আনক্ষের পরিশীনা ছিল না। ১৩১৫ সালের ২১এ অগ্রহারণ (৬ ভিলেমর ১৯০৮) গৃহপ্রবেশ-উংলয় অনুষ্ঠিত

বর। উৎসব-সভার ছরেশচন্দ্র বে অবরঞারী রচনাট পাঠ করিবাহিলেন, ভাহার কিঞ্চিং উত্তভ করিভেছি:---

"আৰু ২১শে অঞ্চায়ণ বালালীয় স্থানীয় দিন :---বালালীয় काकीर कीरामद रेकिसारम, कामग्रामद रेक्स शक्किरन, ১৬১৫ সালের ২১শে অগ্নহারণ পুৰণাক্ষরে কেরীপ্যবাদ বাকিবে। বালালীর এই মাড়মন্সিরে,—নবনিন্মিত সারবভ-নিকেতন,--নার পবিত্র দেউল আবাদের জাতীর তীর্ণ, কে ভাষা অধীকার করিবে ? বালালীর উত্তরপুরুষ এই মহাতীর্বে সাহিত্য-সাৰদার অকর সিদ্ধি ও কাষ্য কল লাভ করিবে। আৰু বাদালী যে কল্যাণক্ষতক্ষৰ প্ৰতিঠা কৰিলেন, ভবিষ্যভের জোনও মদলমর বৃহর্তে ভাতার ফল ফলিবে। নৰভাবে অনুপ্ৰাণিত,---নৃতন আপাৰ উদীপিত,---ননুষাৰে প্রভাবিত,--বিভাব-কর্মের ও হলেশ-বর্মের পুণ্যবহিষায় সহুত্তাসিত ভবিষ্যতের বাদালী সেই অহুত ফলের অধিকারী হইরা বর-জগতে অবরতা লাভ করিবে। আজ সাধনার ভণোৰৰে বৰ্তমান ধুৰের সাহিত্যসাৰক্ষণ বে 'ছয়িশৱৰে'র প্রতিষ্ঠা করিলেন,--এক দিন পেই পবিত্র সারস্বত আশ্রবে ভারতের ভারতী ভাবিভূতি হইয়া ব্যাভয়ে বালাগীকে বছ ও ক্লভার্ব করিবেন। বালালী এই সারস্বত মন্দিরে সেই ভভদিনের প্রতীকা করুন,---সার্থত সাধ্যার বচ ও কুতার্থ পরিবত হউক। এই পবিত্র মন্দিরে ভারতবাসীর পবপ্রদর্শক वामानी (महे बहाजारवत जावना कत्रन,---कशक्रांती हहेएछ ত্যারকিরীল হিষাচল পর্যাত সম্প্র ভারত সেই মহাভাবে चन्द्रधानिक, केर्द्रानिक ७ केन्न निक स्टेश केर्रेक ।

বালালা সাহিত্য নব-ভারতের ভাবপদার পবিএ উৎস—
গোর্থীর অমর নির্বর। মাতৃমন্তের থবি অমর বহিনচন্দ্রের
বে 'বন্দে যাভরু' মহানত্তে আজ ভারতভূমি র্বরিভ
প্রতিথ্যনিত হইতেছে, বালালার সাহিত্য, বালালীর
'আনক্ষর্ঠ' তাহার বৃল প্রত্রেবণ , বালালী লে অভ আত্মপ্রসাদ,
গর্ম ও গৌরব অভ্যুত্তর করিতে পারে।—হে বঙ্গের লাবক !
বানীর উপাপক। সেই গৌরব অভ্যুত্র রাবিবার বিপুল লারিছও
ভোমার। ভূমি যদি এই সাবনমন্দিরে সাবনার সিছিলাভ
করিতে পার,—ভাহা হইলে, বালালীর এই গৌরব যাবভ্রত্র—
ধিবাকর আত্মসান বাজিবে। আর্ব্যাবর্ত আবার নব-পৌরবে
উদ্বাসিত, নিকাম কর্মবোলে প্রভাবিত্ব, সভ্যুত্ত প্রত্রের
বহিষার অভ্যাণিত হইয়া অগতের কর্মক্রের প্রতির্বা ও
বিশ্ববাসীর প্রভা লাভ করিবে। কর্মহান, বর্মহার রভিত হইয়া
ভারতবাসী ভানের, বর্ম্বের ও সভ্যের মহিনার ব্যক্তির করিবে।

উবিশ বংগর পূর্ব্ধে বৌষদের প্রারম্ভে 'সাহিচ্ছ্যে'র হচনার লিবিরাহিলান, —"বা'তীয় জীবনের উর্ভি সাহিচ্ছ্য-সাপেক।" বাহা সভ্য ও স্থার, ভাহাই সাহিচ্ছ্যের প্রাব। আজ বৌশদের শেষে সৰ্ভারতের হবেশী রুগে প্রভ্যক্ষ প্রান্থ বৃত্তির দেইতে পারে না ।—রাজনীতির রপক্ষেক্তে জাতীরতা প্রতিষ্টিত হবৈতে পারে না ।—রাজনীতির রপক্ষেক্তে জাতীরতার হাম নাই। বার্থের সংবর্ধ ও বিজ্বেতা ও বিভিত্তের বিবন হবও জাতীরতার উৎস নহে। বিশাল ও বিপূল, উহার ও পবিজ্ঞ নাহিত্যই বানবকে উদ্ধৃদ, উহাত ও জাতীরতার স্প্রতিষ্ঠিত করিতে পারে। সাহিত্যই বানবের উন্নতির সোপান, রুক্তির পর্য ,—-'নাভঃ পহা বিহাতে জরনার ।'

যাহা সভ্য ও সুকর, নাহিত্য ভাহার রম্বাকর। সাহিত্য সভা ও সুৰুৱের উপাসক। সাহিত্য সভা ও সুৰুৱের একনিষ্ঠ সাৰক। সাহিত্যের সাৰনা, স্ক্টি ও পুট ছাতীরতার, মানবভার ও মত্যাদের কামবেছ। বাহা সভ্য ও সুন্দর নহে, ভাহা কৰমও 'নিব' হইতে পাবে না। আমরা সভ্য ও স্থাবের উপাসনার বিরত হইয়া, সভ্য ও স্থাবের মহিমা विच्छ रहेश, चर्शाएछ चदकूर गिष्ठ रहेशहि,--वनगरि ৰুৰুৰু হইৱাছি। যাহা সত্য নহে, ভাহা কুলৱ হইতে পাৱে था। यादा प्रकात गरू, जादां ज ज्ञा इटेस्ड शास गा। বাহা একাবারে সত্য ও সুন্দর,---তাহাই 'শিব'। সেই 'সভ্যং ৰিবং সুন্দরং' ভারতের বরেণ্য দেবতা ;—এবং সাহিত্যই সেই ধেৰতার হুবৰ-ধেউল, আমহা বেন কৰনও ভাষা বিশ্বত না হই। বালালী। আবার সাহিত্যের ভপোবনে সভ্য ও সুন্দরের উপাসনায়, সাধনায় প্রবৃত্ত হও,---সাহিত্যকে 'সভাং শিবং সুন্দরং' বলিয়া বরণ কর, অসভ্যের কুছেলিকা ভেদ করিয়া, ভারতে সভ্যের মহিষা প্রভিষ্টিত হউক,—কুংসিভের চিভারিশিধার উদ্দল প্রভার স্থলবের স্বর্গীর সৌন্ধর্য উদ্বাসিত स्रेवा देश ।...

এই সাহিত্য-মন্দিরে আপনাদের প্রসাদে আমরা অতীত ইতিহাসের জীপ সমাধি হইতে আতীর গৌরবের কমাল সংগ্রহ করি।—তবিস্ততে কোনও প্রায়ান্—মার প্রসাদে র্ডসঞ্জীবন বল লাভ করিরা, বহীয়ান্ ও গরীয়ান্ হইরা, সেই করালে স্বল্পর দেহের স্থান্টিও প্রাণপ্রতিষ্ঠা করিবেন।—তথন সেই নবপ্রাণ-বলে বলীয়ান্, মহীয়ান্ ও গরীয়ান্ আতীর পৌরবের উলোবনে ও আহানে আগরক হইয়া স্তল বাদালী বাদালার কর্মক্রের অবতীর্থ হইয়া সম্প্র আহতবালীকে রুক্তির পরে পরিচালিত করিবে, তথন ভাহারা কোরী কঠে এই প্রায় মন্দিরের প্রতিষ্ঠাতা ও কমলার বরপ্রগণের গৌরব-গাবা গান করিবে। সেই শুভবিন পরণ করিরা, হে বাদালী, হে পভিত বিহরত আদ্বিস্থভ, স্বোবিত বাদালী। তুরি আল অগতের আহি আন্সিত্র ব্রেদের ভাষার গাও—

সধানী ৰ আকৃতিঃ সধানি ক্ষরানি বঃ। সধানক্ত বো মনো ধবা বঃ সুসহাসতি ।"

## ৰাখিতা

श्रुरवण्डल वांची विरमन । यरम्पे जारमामस्वत मनव

আনেকেই তাঁহার বক্তা ভবিরাছেন। বক্তার তিনি কবনও ইংরেজী শব্দ ব্যবহার করিতেন না, বরং এরণ করাকে অপরাধ বলিরাই বনে করিতেন। সাধু ভাষার, বল নবরে বক্তব্য পরিস্কৃট করিরা তিনি শ্রোভার বনে গভীর রেধাণাভ করিতে পারিতেম।

### न्य

ক্ষেশ্চল অপুত্রক ছিলেন। তাঁহার পারিবাহিক জীবন ক্ষেত্র ছিল না। তিনি ১ জাহুরারি ১৯২১ (১৭ পৌব ১৩২৭) তারিবে, ৫১ বংসর বরলে, পরলোক্সমন করেন।

বদীর-সাহিত্য-পরিষং ১৬ আবাচ ১৩৪১ তারিবে পরিষদ্-বন্দিরে হ্রেশচন্তের তৈলচিত্র প্রতিষ্ঠা করিয়া জাহার স্থতি-রক্ষার ব্যবহা করিয়াহেন।

### স্থুরেশচন্ত্র ও বাংলা-সাহিত্য

অপেকাঞ্চ সামাত আমোকন দইরা বাংলা-সাহিত্যে বাহারা প্রভূত ব্যাতি ও প্রভাব বিভার করিরাখেন, স্বরেশচন্ত সমাৰণতি ভাঁহাদের অভতম। বাংলা-সাহিত্যের প্রতি অকৃত্ৰিৰ অনুৱাগই প্ৰধানতঃ এই ব্যাতির কারণ। তীকু বাদ ও সরস বাক্যবাৰের সহিত হুক্ত হইরা তাঁহার সাহিত্য-नमारमाञ्चा अकृष्टे। विनिष्टे कृष्टी वर्कन कविदादिन अवर देख्य কালে তাঁহার অভ সকলবিৰ বচনার স্থতি বিলুপ্ত হুইলেও এই সমালোচনার বভ বসিক-সমাব্দ ভাঁহাকে বিভ্রত হন নাই। সাহিত্যিক-গোষ্ঠাকে একত কবিয়া প্রত্যেকের স্ব স্ব প্রতিভা অভ্যারী স্টকার্য্যে উদ্বন্ধ করিবার অসাধারণ শক্তি ভাঁছার ছিল, ভিনি নিজে বভটুকু সাহিত্যস্টই কৰিয়া পাকুন, সাহিত্যিক স্ক্রীর কাকে যথেই প্রতিভার পরিচয় দিয়া সিয়া-ছেন। মোটের উপর এই কারণে আমরা সমাক্ষপতিকে ভর এক জন সাহিত্যিক ত্রপে প্রধানা করিয়া হল-হিলাবে প্রধা কবিয়া থাকি। ভাঁছার সম্পাধিত 'সাহিত্যে' এই বুগের পরিচয় অক্স হইয়া আছে। ঐতিহাসিক অক্সকুষার দৈলের "প্রবেশ-স্বতি" প্ৰসংক বাহা লিবিয়া নিৱাৰেন, ভাহার কিকিং উদ্ভূত করিয়া বর্তমান প্রসঙ্গের পরিসমান্তি করিতেছি :---

'লাহিভা'র একটা আসর ছিল। সুধ ছিল বলিবাই আসর ছিল। অব ছিল না, প্রভুছ ছিল না, বিরমিত সমরে প্রকাশিত হইবার সামর্থ্য ছিল না। তবালি 'লাহিত্যে'র আদর ছিল, ক্ষর ছিল, সমস্থার ছিল। তাহার কারণ ঐ সুর। তাহা দেশের সুর, হশের সুধ, ঐকতান বাদ্যের সন্মিলিত পুর। তাহাতে অপূর্ণতা ছিল না, অবসাদ ছিল না, 'হা হতোহনি' ছিল না, প্রাণপূর্ণতা ছিল।

কি হিল, এক কথাৰ ভাহা ব্যক্ত করা বার না। কি হিল না, ভাহা এক কথার ব্যক্ত করা বার, হিল না— ভণাৰি। তাহা খণেৰ বৃষ্ঠিতে আৰ্প্ৰকাশ কৰিয়া বহু-নাহিত্যের অপেৰ কল্যাণ সাধন করিত।

প্রবিদ্যাচনের ক্টাক্টি 'সাহিত্য'কে এই
অসাবারণ গৌরব হাম করিরাহিল। এবন লেবকের
সংখ্যা অসংখ্য, বৃঝি বা পাঠকের সংখ্যা অপেকা অবিক।
এমন দিনে যে কেছ লিবিতেছেন, যাহা ইচ্ছা লিবিতেছেন,
বিষয়-বিভালে ও বচনবিচালে সেচ্ছাচার সমান ভাবে
প্রশ্র লাভ করিতেছে। এমন দিনে প্রবদ্ধ নির্বাচন করা
যে কভ কঠিন, তাহা 'সাহিত্য'-সম্পাদককে সর্বাদা
বীকার করিতে হইত। তথাপি দৃচতা উচ্চার ব্যাক্বচ
ভিল।

এই দৃচতা কেবল প্রথম্ব করেনই ব্যক্ত ছইত না, প্রবদ্ধস্ক্রীতেও ইহ। আর এক আকারে আত্মপ্রকাশ করিত, তাহা আকার। সম্পাদক অনেক সমরে নিক্রেই বিষয় নির্বাচন করিতেন, লেখক নির্বাচন করিতেন এবং লেখার ক্ষয় ব্যতিবান্ত করিরা তুলিতেন! এই দৃচতা 'সাহিত্যে'র আসরে হাহাদিগকে টানিয়া আনিয়াছিল, উাহাদের মধ্যে অনেকেই হয়ত টানাটানিতে না পদিলে লেখনী বারণ করিতেন না। ইহাতে অনেক বৃত্তন পুরাতন লেখক ক্ষতঃ ত্যাল করিতে বাব্য হইরাছেন। ইহার ক্ষয় যে ভাছনা ছিল, সে বড় মধ্য স্নেহের ভাছনা, ভাহা ক্ষেন করিয়া প্রবােগ করিতে হয়, সমাক্ষণতিই ভাহা ভানিতেন।

'পাহিত্যে' তথানি ছিল না বলিরাই গোঁড়ানি ভাষাকে সঙীর্ণ নীভিতে গঙীবছ করিতে পারে নাই। এই উদারতা না বাকিলে প্রকৃত সাহিত্য গড়িরা উঠিতে পারে না। বিদেশের সাহিত্যে বাহা কিছু ভাল বাহির হইড, বিদেশী বর্জনের ভূর্ল আন্দোলনের বিনেও, ভাহা সাবরে সাহিত্যে হান লাভ করিত।

সাহিত্যের সমালোচনা 'সাহিত্যে'র বিশিষ্ট দৌরব বলিরা ব্যাতিলাক করিরাছিল। তাহাতে অক্টিতভাবে তিরভার পুরস্থার বিভরিত হইত। সাহিত্যকে অনাবিল বনের আধার করিবার আগুরিক আকুলভাই 'নাহিত্য'-সম্পাদককে সমালোচনার সীমাশুন্য, ক্ষাশুন্য ক্যাথাত প্রকাশ করিতে অভ্যত ক'ররা ভূলিরাছিল। নম্মবোধ যত আগুরিক হর, অমবিকার চর্চাকে স্থাসিত করিবার ইছো ততই প্রবল হইরা থাকে। আমার দেশ, আমার ভাষা, আমার সাহিত্য, এই সমন্থবোৰ প্রবল হইলে, ভাহার প্রতি উৎপীয়ন অভ্যাচার নিবারবের বন্ধ স্থতই সীমাশুন্য ক্যাখুন্য ক্যাথাত প্ররোগ করিবার প্রয়োজন অহুভূত হইরা থাকে। ইহাতে ব্যুসাহিত্য ক্তিপ্রভ হয় নাই,—লাভবান হইরাছে।

ত্বেশ শক্তিবর ছিল। বক্তার ও রচনার তাহার আনেক পরিচর প্রকাশিত হইরা রহিরাছে। তাহার বৃদ্ধান্তরিকতা। এই শুণ তাহার আনেক ধোর চাকিরা কেলিরাছিল, এই শুণে অনেক সমরে তাহাকে তিরভার করিতে নিরা ক্ষা করিরা করিরা আসিতে হইত। ত্রেল চলিরা বাইবে, আমাকে তাহার কথা লিখিতে হইবে, এবন কথা এক দিনও যদে হয় নাই। ইহাই আয়ার প্রবার লোক।"…'সাহিত্য," কাল্পন-চৈত্র ১৩২৭।

# প্রতীক্ষা

# ঞ্জীপ্রশান্তকুমার মিত্র

রাভের আঁবার ঘনার বীরে আবার ঘরে,
দিনের আলো বিলার বে দ্র বনাভরে।
ভার আসার আশার সারাবেলা
সকল কাম্মে অবহেলা,
অকারবে হালির মেলা
প্রাথবানি বেরে;
দ্রের হারা নীল আকাম্মে—
ভাবি বৃধি ঐ সে আসে
অলস-মবুর প্ব-যাভাসে
ভরীট ভার বেরে।

ওরে, বাঁধার হ'ল কই সে এল আছ তবে কি যোর বুধাই হ'ল লাজ ? ষ্ঠিরে দিছ্ দিকে বিকে
আমার আকুল আবেগটকে,
বারের পানে নির্মিমিধে
রইছ্ নরন দেলি;
পথের 'পরে আভাস কারে,
কি ছার বে ভার চেনার আরে
অবোধ হিরার কাঁপন লাগে
সকল শাসন ঠেলি।

পাষের ধ্বনি নিলিমে গেল, লগন নেল বরে, "র্বাই কাঁহ" পৰিক, বাতাল আনার গেল করে

# নৰ-সন্ন্যাস

# ঐবিভৃতিভ্ৰণ মুখোপাধ্যায়

( 60 )

इन चांद्रछ रहेन।

চম্পার বৃক্তির উপর শ্রহাট। আরও বাজিছাছে টুলুর, সেই
আন্ত গোড়া থেকেই বেশ ভাবিরা-ডিভিরাই আরও করিল।
সভিই ড, একটা প্রতিঠান গড়িতে নিরা গোড়াতেই ভাহার
যদি ক্ষংশের বাবহা করিয়া রাধা হয়—নিজের হাতেই, ভ
এবন অভিশাপ-বাধায়-করা প্রতিঠানের প্রয়োজনই বা
কি ? নিবারণের চেটা সভ্তেও সংঘর্ব যদি নিজে হইভেই
আসিয়া উপস্থিত হয়, উচ্চিত্রত ভাহার বাবহা করার মানে
হয়; সংঘর্বকে নিরম্ভণ করিয়া আনিয়া ভাহার সামনে বুক
কুলাইয়া ইডিনো বাহাছরির একটা বিলাস মাত্র নয় কি ?

আরও একট্ থিবেচনা করিয়া দেখিল—হড়ছড় করিয়া একেবারে একপাল ছেলেমেরে আনিয়া কেলা মুক্তিললত ছইবে না। বিকালে বেলার কচ যে করচি ছেলেমেরে আলে তাছাছের লইয়াই আরম্ভ করিল, তাও খেলাছেলেই; তুল আরম্ভ ছইল বলিয়া কোন রক্ষ আছবর না করিয়াই। ঐ কেল্প থেকেই বীরে বীরে আপনার প্রেরণা আর প্রয়োজনে যেমন বাছিয়ার বাছিয়া চলিবে তাছার ছুল।…টুল্র মনটা বছ বেশী করিয়া নাছা ছিয়া উঠিতে লালিল এ পরিকলনার, তাছার ছুলের ছেলেরাই এক সমর ছইয়া উঠিবে নিজেয় অধিকায়, নিজেয় কল্যাণ লছছে লচ্চতন, তাছার ছুলের মেয়েয়াই য়ানিয়্ফ ছইয়া বীয়ে বীয়ে বিকশিত ছইয়া উঠিবে। মায়ায়মশাই বিয়ব লিয়া বে শুতন অগতের গুট করিতেছেন—তাছার জভ মাছব চাই না ?—এয়াই ছইবে লে কগতের বুতন মাহুম।

অমান্ত্যর তাবে আরম্ভ করার আর একটা সুবিধা এই বে তাহাতে বৈরিতার সভাবনা আরম্ভ গেল কমিরা। মনটা কর্মেক দিন অতিয়ার উঠা হইরা উঠিয়া এই সূত্য পপ্পে এত স্থিত ইইয়া গেছে বে এমন কিছুই খুঁং রাখিতে ইছো করিতেছে না বাহাতে সংঘর্ব হুরের কথা, সামাত একটু উত্তাপেরও স্থাই হয়। চম্পাকে নিকের বনের কথাটা বলিল। চম্পা আছপ্ত বেন বাঁচিল, এমন লোকের এত সুমতি হইবে এ ভাহার ক্রনার্থ অতীত। ভাহা তির আর একটা কথা ৰিল, তথন কথাপ্ৰসদে উৎসাহ বেথাইল ঘটে, কিছ টুল্য ছলের জন্য বাভি বাভি গিরা হেলেবেরে বোগাড় করা ভাষার পক্ষে কতটা ঠিক হইবে চলা পরে ভাবিরা বেথিরা বেশ ভালরকম বৃথিয়া উঠিতে পারিভেছিল না। বহিতে বা জন্য বেথানে বেথানে ভাষার বাওরা-জালা আছে, সবাই জানে ভাষার ঠাকুরদাদা বুড়া হইরাছে। জন্নতেই জন্ম হইরা পড়ে, ভাই ভাষার ভদারকের জন্য সে এথানে উঠিয়া জানিরাছে। টুল্র সবছে যদি কোন জালোচনা হয়— আজ্মন কান ক্রেমেই বেশী করিয়া হইভেছে প্রশংসায় আকারে— সে এমন ভাবটা দেখার যেন নাম্বটার সম্বন্ধে ভাষারও কিছু কিছু জানা আছে— বনমালীর মারম্বাই হোক, চরণ্যালের মারম্বাই হোক, বা এদিকেই জন্য কোৰাও গল্প ভনিরাই হোক।

ছুল বীরে বীরে ক্ষিয়া উঠিতে লাগিল। এবমে এক-আৰ্ট করিয়া বভিত্ন হেলেষেয়েই বাছিল, ভাষার পর আছে चाट्ड वंश्वडी हावादेश पहिला चाट्यपाट्य (ब्रह्मदावर्थ জুটতে লাগিল। বভিত্র পঞ্রারা বই পার, সেট পায়, বাহির হইভেও বাহার) পড়িতে আলে ভাহাদের মধ্যেও যাহাদের ভেমন অবহা নর, চাহিলেই পায়। বাহিমা कारावर मार्ग मा। चिकायकरम्ब मिक (बंदक बरे चूर्विश) পভুষাদের সুবিধা চারি দিক দিয়াই। লেৰাপভাটা বে तक बदाराद त्वनाहे व चिक्काहिक छाहारमद माया स्टेट यस वस अकी इन्तिका मांबादेश (बह्यन अटक्यादा शानका कतिया पिछ। अभिरक्ष शामका.-- अक्रवानि कवित्रा वरें, अक्ष মেট , যাহাত্ৰা প্ৰাৰ্থিক ছই ভিন্নাৰি বই শেষ কৰিছা বাছি হইতে আসিরাছে, পঢ়ায়া হিসাবে যাভকার, তাহাদেরও ছই-ধানির বেট বই নর। সাভট লইরা আরম্ভ কৃতিয়াছিল। भिन्छ। दिन दुवराब, शरबब दुवरात शर्ब एटामाराहरू হাভাইল প্ৰেব্ৰট । চন্দা বলিল---"এক কাম কৰেন ভ चात्रथ ६-६ करत (वर्ष्ट्र यात्र। (मरत्रस्य यपि वार सम् चार्यनात कृत्वत वर्ष एरत्राह-- छन्ट शाहे छ : छर्द (हर्त-ब्यास अक जाल- क्षेत्रांत अकट्टे बुर्ब कृति चारक चानरकत ।"

টুলু বলে-—"ঘণের আসল দিকটাই গুলি বাদ দিতে বলহু—অবশু আমার নিজের বারণার দিক দিয়ে ধলছি; বরং ছেলেদের বাদ দিয়ে থেৱে যদি বাহে ত রাজী আছি;— এদেরই দরকার বেশী।"

ভূলট এবন টুল্ব সমত চিড!, সমত সভাটকে দ্বল করিয়া লইবাছে। ভূপুরের করেক ঘণ্টা বাদ বিরা সমত দিনই জাহণাট এবন কচি মুখের কলকাকলিতে বাকে ভহিনা। আনক্ষের বাবে বিরা কচি যদের বীরে বীরে উলোবন একটা আনক্ষমিন্তিত বিশ্বর জাগার। কি করিয়া আরও তালতাবে, আরও বাবুর্বির বব্য দিরা এবের স্টাইরা তোলা বার ? পভার চেরে বেহ্বদের স্থৃতির বিকেই বিরাহে বেশী বোঁক। বেরাল-দিরা-বেরা অনিটার অনেকবানি লইরাহে কোপাইরা। বন্ধালী, চরণ, প্রকাল তিন অনেই লাংখ্য করে, তাহাদের মব্যেও একটা উবাদনা আনিরা গেহে; ছুলের জভ বাচিরা কাল চাহে। এখন বাগানটা হইরাহে আরও অনেক বড়। পনেরট হাজহাত্রীর বব্যে ভাগ করা অনুরের হালকা সবুকে গেছে ঢাকিরা—ওদের সলেই, ওদের ছুলের সকেই সমভটার কেমন একটা নিল আহে। টুলু বলিরাহে কসল বাহা হর ওরা স্বাই ভাগ করিবা লইবে; কাহাদের বাগান কভ পরিছের, কাহারা কভ কলল ভূলিবে ভাহা লইরা একটা রেবাবেবির বেলা পড়িরা

ওর ছুলের একটা বিশিষ্টভা ছেলেখেয়েদের নিজেদের পরিছয়ভা। নিজের ধেহ থেকে ভারত করিবা কাপড়, পিৱাৰ--বাহার পিৱাৰ আছে---নিজেকেই পরিফার রাখিতে रत । हेन् वर्ण बरेडे वानू चामात प्रत्य बक नवत निवय । হেঁড়া পড়ার লক্ষা নেই, বরং যধন বাপ-মা কোটাড়ে পাছে না. হাসিয়ুৰে হেঁড়া পঢ়াভেই বেশ্ব বাহবা, মোংরামি কিছ একটা ভুত, ভাকে খুল বেকে ভাছিরে রাবভেই হবে সবাই মিলে। प्रमु (पर्वत्वत अवस अस्ति वितारे छैराता अवारे ঠেनिया बार्य। हेन्द्र भूरवत अक्डी कवा वृत इनिक स्टेबा निवास. সবাই ভীকু দৃষ্টিভে নোংৱামি অসুসভান করে। কাহারও (पट्ट वा वट्ट मार्याण अक्टे विविध्य मार्टातम्यविद्यतः कवा লইৱা চাপা হাসি, কিসকিলানি পড়িৱা যাৱ---"ভূতকে যাড়ে करब अरमरम् के। अवरवारिक मरश मिछवा शनि व्यास्थ বেশী, ছামেও বেশী। কথাটা ওবার মন্ত্রের কাল করে। चार्यक अकडी जिनित नका कतिन हेनू, दिश राध-चर्गार একেবারে জীব, তালি দেওরা লোপই পাইরাছে, সবাই আজ-काम क्षात्र अक्षांनि कवित्रां नुष्ठनरे गर्तत, अक्षे कवित्रां गिवांनध সৰাৱই আছে। প্ৰথম দিনের সেই "ভিক্ষে ভিক্ষে" খেলার ब्रुष्ठ अक्षेत्र (ब्राह्मक अन्ने क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र अन्य क्षेत्र अन्य क्षेत्र अन्य क्षेत्र क्षेत्र इंखान जिम विम वाक्रके (बालक मारे - कार्यूक किरम विरमकः, -🕏 হপ্তা ৰে ছেছে দিবেক 🗗

একেবারে অভটা হয়তো আশা করিল না টুলু, ভরু এই ভাবিরা পুলজিভই হইরা উটিল বে, ভাহার মূলের আলোর এভটুকুও বভির অধকাবের মধ্যে গিরা পভিয়াতে।

সংখ্যাটা প্ৰেরম্ব আসিরা ক্ষেক্ দিন হঠাং ইাড়াইরা পঢ়িয়াছিল, আবার গভিশীল হইল, আঠার—বিশ— বাইণ; টুল্ চন্পাকে বলিল—"ছেলেয়েছেকে একসলে পড়ভে বেওয়ার ভর্টাও ওবা কাটবে উঠল এবার।"

আরও খর বেখে, নিজের পরিকলনার আরও রং কলার।
এত অল্পতে বন উঠিতেছে না, তবে আনার কথা এই বে, অল

करवर शृंकाव विरक जागारेवा छनिएछए, विरक्षव जकरवव कंपरवरे विरक्षव करू वक प्रवि नहेरन—एवछ एवछ प्रविद प्रविद्या जालव-विष्णागव बहना कविरव ; जाव, कविरक्षर छा एरेरन— माडीव्यमारेखव नषक करे स्राव्य नरम व विषित्य नय कडी छा वाकारे याव। छनन केवान निवा छिन्दिन स्थानरे। माडीव्यमारेस्क हुन् जाव छनन कारक विरव मा कि वारेरक ? करे वकान छैंबारक वीविरव।

শ্ৰোভ ওৰু উণ্টাইলই না, উণ্টা দিকে প্ৰবল বেগেই বহিভে লগিল।

এই সমর বিশচারেকের মধ্যে হঠাং করেকট ঘটনা টপটপ করিয়া ঘটয়া গেল।

বস্তিতে টুলুর হাতে একটা রোমী ছিল। বেশ ছোরান বরদ, বছর সাতাশ-আটাশ বরস। এবানকার পোক নর। বাহার বাসার ছিল সে কুলিদের সর্থার গোছের। রুড, কিছ ব্য সবল— সমভ শরীর তুপুই শিরা-উপশিরার ভরা। গোকটা আপে অভ কোবার কাজ করিত, এবানে মাসকরেক আসিরাছে, তাহার পর কাজকর্মে দক্ষতার কভ একটা বিশিষ্ট জারগা পাইয়াছে। একটু গভীর, কবাও কর অল । মনে হইল যেন বভিতে বেশ একটু বাতির আছে। চরপদাসের মারকত ববর দিয়াছিল, টুলু চিকিৎসার কভ উপস্থিত হকতে রোমীর পরিচর দিল—"আমার কেউ নর, এক ভাভাতের পোলা এসে পড়েছে বাড়ে, কি করি গ পেটের নিচে একটা ব্যবাহ্ব

টুলুর মনে হইল যেন ওদের ওদিককার লোক— ন্যশুদ্ধ কি ঐ রক্ষ কোন শ্রেণীর। পরীকা করিতে ভিতরে হাইতে-ছিল, লোকটা বলিল—"কিছ একটা কথা বাবু, ওর্বের দাষ্টা নিতি হবে, বিভিট নাই নেন।"

টুলু একটু হাসিয়া বলিল—"আমি নিই না।" "নিভি হবে বারু।"

মিনভিত্র সলে বেশ একটা বৃচ্ডা আছে, যেন না লইলে অভ লোক ভাকিবে। ন্তন ঠেকিল টুল্র, আবার হানিয়া বলিল— "তা দিও—বোরাক পিছু হু' প্রসা করে; হোমিও-প্যাবিই ভো।"

ব্ৰাট হঠাৎ যাবা গেল। আজকাল হুল-পৰ্ব শেষ করিরা একেবারে সন্থার সময় টুলু একবার বন্ধিতে যার, পৰেই ব্রুটা তলিল। গিরা দেবে হৈ হৈ কাও। বালার সামমে প্রাচণে বাটটা মামানো, তাহারই উপর রুতের নিয়রের কাছে লোকা হইরা ইণ্ডাইরা বৃদ্ধ বক্ততা বেওয়ার মতই বলিরা বাইতেছে—"নোবই আমরা—আমি আমার এই মহা পুতের নিয়রে ইণ্ডিরে লপথ করছি আমরা হাত্য বা—আমানের সব সূটে ওরা আমানের তকলো হাত্যে রাভা বানিরে তার ওপর বিয়ে ওবের বোটর ইণ্ডাবে—আমহা সইব বা আয়-আমরা বেতে চাই, প্রতে চাই, মাছবের বতৰ বাকতে

চাই, ৰাজ্যের মতন ধর চাই---আমার ছেলে এই চাইতে গিরে
নরেছে---একটা জান বিরেছে; কিছ ছুটো জান নিয়ে তবে
নিরেছে--আমার বাছাত্র ছেলের শিবরে ইাভিয়ে পপধ
করছি---ভোমরাও বারা বাঁচতে চাও মাল্যের মতন এই
বাহাত্রের গা ছুঁরে শপধ করো..."

চূল্ ভভিত হইবা ইাডাইবা পভিল ; নেই গভীর শান্ত বৃধি একেবারে উপ্র হইবা উঠিবাছে, মূবে বানিকটা বিহাতের আলো আসিরা পভার আরও দেবাইডেছে ভরহর বভটুক্ ভানিল ভাহাতে মনে হইল এ বরণের বক্তৃতা শোনা আছে, নিজেবও রও আছে কিছু কিছু। শ্রোভাদের মব্যে নানা রকম প্রান্তব্যে একটা বিশ্র কলবব হইডেছে। মনে হর আনেক-ক্ষাই স্থান হইবাছে পোকটার বক্তৃতা, বেশ গরম হইবা উঠিবাছে; শপবের ক্বার বাটটা স্পর্ল ক্রিবার ক্ষম একটা কাভাকাভি পভিরা গেল।

লবার এই সামনে নিচু ছটয়া অগ্রসথ হওরার পোকটার দৃষ্টি হঠাৎ টুল্ব উপর পড়িয়া গেগ। উৎকট ভাবে চীংকার করিয়া উঠিল —"ডুমি কে ? ঐ পোলাকে এবানে ?"

দলটা গোজা হইয়া ফিগ্লিয়া চাহিল । টুলু বেশ বানিকটা দুৱে ছিল, গলের মধ্য দিয়া বানিকটা ভেতত্তে গিয়া লোজা হইয়া গাঁড়াইয়া বলিল—"আমিও তো তোমাধেয়ই মধ্যে।"

আগাইয়া একেবারে বাটের মাধার বিরা টাড়াইল।
কওকটা আলো-আবারির জল, কডকটা বোব হয় মান্দিক
অবস্থার কল চিনিডে সামাল একটু সময় গেল, ডাছার পরই
লোকটা এক রক্ম উপর বেকেই টুলুর বুকে বাপাইয়া পভিয়া
কালিয়া উঠিল—"ও ডাক্তার বাবু, রইল না, বাকল না, জোরান
পোলা আমার ।…"

গোলমালটা একেবারে বামিয়া গেছে টুলু বৃংখর পিঠে হাত চাশিয়া চাশিয়া ভাহাকে শান্ত করিবার চেটা করিল, ভাহার পর কাছের কয়েক্জনকে শব উঠাইবার ব্যবস্থা করিভে বলিয়া, ভাহাকে লইয়া ফাকার দিকে চলিয়া গেল।

শব উঠিপে কিরিবার সময় দেবে চন্দা কাছেই একটা বাসার বারান্দার বুঁটি ধরিয়া দাড়াইয়া আছে—ভাহাকেই দেবিভেছিল, চোবে ভীত্র উৎকঠা ও ভয়।

ভাষার পর্যাধি কি ধনে হবল, বভিতে আর গেল না টুলু চরণ আর প্রকাধের মুখে শুনিল রঙ আবার আকও বিকালে উন্তেশ্বিত করিয়াছে লবাইকে। ভাষার পর্যাধিও এই ব্যাপার চলিল; প্রজ্ঞাদ গেল কাব্দে; চরণ দাস গেল না, ভবে অন্য একটা ছুভা করিয়া বসিয়া রহিল—কি আমি টুলু কি ভাবে কইবে। ভয়লোক ভয়লোক একই ভো সব।

ঘটনাটর তৃতীর দিন চম্পা ধবর দিল ম্যানেজার আসিরাছে। বাজারে একটা কাজ ছিল বলিয়া টুলু বৈকালে আর ছুল করে নাই। কাজ সারিরা কিরিতেছিল, বাজারের শেবের দিকের একটা চালাবর ক্ষতে একজন লোক বাহির হইতে দিরাই ভাহাকে বেশিরা একটু শতমত শাইছ। দেল।
তাহার পর আবার ভাডাভাড়ি কিরিয়াই ভিতরে চলিরা দেল।
এর আবে এর চেয়েও অল বেশা, তবু টুলু চিনিল—
ম্যানেকারের সেই হাতদাফাইরের লোকট, অর্থাৎ নিবারণ।
চন্পাকে কথাটা বলিল।

প্ৰদিন ৰভিত্ৰ স্বাই উঠিছা দেখিল বুছের বালার ভালা লাগানো, বেন যাভারাভি কোথার চলিরা গিরাছে। বৈকালে চম্পাই ব্যৱহী দিল টুল্কে। ভাহার পর নির্বাক্ত হইয়া ছুজনে প্রস্পারের মুবের পানে বানিকক্ষণ চাহিলা রহিল।—হাজরাটা ব্যেন হঠাং বঞ্চামর হইয়া উঠিয়াছিল, একেবারে ঠাঙা হইয়া গেল।

এর পরেই আরও একটু ব্যাপার হইল। বৈকালেই ব্যানেকারের এক জন চর আগিয়া ববর দিল, পরবিদ স্কালে চন্দাকে গিয়া ব্যানেকারের সহিত একবার দেবা করিতে হইবে, বিশেষ জ্ঞার কার । টুলু ছুলের ফ্লাল লেব করিয়া হোলেধেয়েদের লইনা বাগানের দিকে বাইতেছিল, চন্দা বিদ্বাবলিল—"একটা কবা আহে আপনার সলে—ন্যানেজার আধার তেকে পাঠিয়েছে।"

কথাটা বলিয়া—একেবারে যেন মর্বহলে নৃষ্ট প্রথেশ করাইয়া থিও তাবে চাহিরা রহিল। টুপু বেশ থেন বতম্ভ থাইয়া গেল, তাহার পর বীরে বীরে বলিল—"তেকে পাটিরেছে ?…তা যাবে…ভার মানে এবার তা হলে এবার বেকেই ছেড়ে যাবার কবা তোমায় বলে আগতে হবে ভো ?—বেমন এক এক করে সম্বধ কাটালে…"

"চাৰ ৰা ডঃ আপৰি ?"

"চাওয়া-না-চাওয়ার কথা নয়। এ কথা ভিন্ন তো উপায় নেই আর।"

তাহার পর নিজের মনের হুবলতা সংলাচ কাটাইরা যেন একটু সোজা হইরা বলিল—"চম্পা, পুমি নিজেকে— বিজেয় চরিত্রকে আতে আতে গড়ে ভূলক; আমার হার্বের কাষে তাকে বলিধান হিতে বলব ?"

একবার হেলেমেখেওগার থিকে গৃট্টশাত করিয়া একটু মহুর ধরে বলিল—"বনেক কাজ হাতে বিয়ে বসেহি এই যা…"

পর্বিদ যথাগন্ধে চম্পা নিরা ন্যানেকারের বাসার উপ্থিত হইল। রাজে থোব হর বাভাবাভি হইরাহিল, ন্যানেকারের চোব হুইটা এবারে একটু বেশী লাল, একটু বিষ ব্যিরা আহে এবনও। বৃটি নিচু করিবা কি একটা বোটা বই পভিতেহিল, চম্পা বীবে বীবে বাবে ঠেল বিরা ইাভাইরা প্রের ক্রিল—'আমার তেকে পার্টিহেকেন ?'

ন্যাৰেকাৰ ষ্ঠি ছলিতে ছলিতে বলিল—'কে, চন্দাৰতী ? প্ৰাতঃপ্ৰধাৰ: তোনাৰ উপৰ কিছ অভ্যত চটেছি এবাৰ— শত্যৰ—ছুট্টর মধ্যেই তাই শাবার শাপতে হ'ল ছবিনের শতে।'

**S**82

'হাগও অ পনায় দহা ; কিঙ কি অপহাৰ আমার ?'

'অপরাব ?···একটা অপরাব ?···আসলে তুই ছোঁড়াটার বিকে চলেছিস···'

চেপ্তা সংৰ্প্ত চম্পায় মুখটা একটু কুকিত হইয়া উঠিগ, বেন নিভাৱ নিৰুপায় হইয়াই একটা ভিজ্ঞ উন্নধ গলায় নিচে নামাইয়া বিল ।---ভাষার পর, আৰু এই রক্ম কথ্য ক্ষায় ৰাভাষাভি হইবে জানিয়াই নিজে হইতে সুক্ত করিয়া ভিল— 'অপরাধ---কাৰ ছেডেছি, হীরার ভাতা ছেডেছি—এই ভো ? ভা, আৰু বেকেই ধাব কাজে, টাকাটাও আসব নিয়ে, কিছ মূল বেকে আমায় চলে আসতে হবে, অগুত বেকে কোন ক্ষ্য হবে না ভার।'

ম্যানেকার রক্তাক চকু ছুইট। তুলিয়া একটু ভিগকভাবেই বানিককণ চাহিয়া বহিল, ভাহার পর বলিল—-'দীকা না করে বিলে ভোর ভাষার মধ্যে যাবা পাল্যে ভাবে পৌহানো বভিকাত্তের বাবার সাধ্যি নর চম্পা; একটু ভেতে বল্।'

চলা একটু চুপ করিবা রহিল, যাহা বলিতে যাইতেছে তাহার তাবাটাই বেন মুব দিয়া বাহির করিতে পারি-তেছে না; তাহার পর বলিল—'আমার কাক দিরেছেন মাত্রটাকে হাতে রাবা কোন রক্ষে; সব মাত্রেরই একটা প্রথ—অপর্থ আছে—এর আবার তত্ত একটু বেশী এদিকে—চার না সে আর বনিতে কাক করি, কিথা ছেপেটার ক্ষেত্র আপনাধের কাছে হাত পাতি। …ছেপেটা তো ওরই—এটা তো মানতেই হবে ?'

ম্যানেকার মাধা নিচু ক্ষিয়া গুনিতেহিল, আবার একটু
খুষ্ট ভূলিয়া প্রশ্ন ক্ষিপ—'ভা ভূই রেবেছিস হাতে ?'

'খনে ভোহয়। না—কি করে বসুম।'

'ছ'--স্যাধে বেশছিস চপা ? স্বামার ছুলের সঞ্চে টেক। দিয়ে সুল বুলেছে ও।'

'কোৰাৰ আগনার মূল আৰ কোৰাৰ ওর মন-ভোগানো মূটো বেলে নিৰে একটা পাঠশালা। ভাও বে কংগ্ৰহে, আমাৰই মতলবে।'

'নভদৰটা কি এ গরিব একটু গুনতে পায় না ?'

'পাগলাখি নিবে ভূলে বাকবে; আপনার কুলিমজুরদের ক্লোভে যাবে না।'

ব্যানেকার বেন যোক্ষম অন্ত হাতে প্রথা সোকা ক্রথা বিনিল,বলিল—'চম্পা, পাগল তুই আমাকেই ঠাউরেছিস, নইলে এবন করে ভূলোতে চাইতিস বা।—'ক্পোধে না'—না ? তবে আমার কাছেই শোন্—তরস্থান বিকেলে রবনী বোবের ছেলেটা যায়া বেতে বোহ বর্ণন কড়া কড়া বঞ্জিনে বাছছিল, ও নিজের মুখে সবার মার্থবানে ইাডিরে বলেছে—আমি ভোষাবেরই সলে। কড় ভাঙেছা ছিবি আর বলু?'

চন্দা একটু খকচকিরা নিয়াছিল, কিন্ত ন্যানেজায়ের দীর্থ বজব্যে সময় পাইয়া নিজেকে সামলাইয়া লইয়াছে, উত্তরও টিক ব্টয়া নিয়াছে ভাষার। এর ক্রিল—'সেই জ্বেই কি আরও ওকে সামলে রাবা উচ্চিত হনে ক্রেম না ?'

'चर्चार ?'

'অর্থাৎ—প্রভাব কারও এক বিনে বার না। আরিও ছিলাম সেবানে, ত্রিল নথর বাসার; আপনি বলবেন কি, নিজের কানে সব তাশেছি আমি। আপনাকে বে লোক ববর দিবেছে সে আমাকেও ধেবেছে নিজয়।···ব্যাপারটা নিমে আমার সঙ্গে একচোট হয়ে গেছে ওর।'

भारतकात अक्ट्रे प्रतप्त श्रापिक्षा विश्वन—'खबब-क्वर ?'

'ধাই নাম দিন, গেছে হয়ে। এগবের মধ্যে আর থাকৰে না। মানে, আমায় খদি ওবানে থাকতে বলেন ওর জিদ বরণাত করেও: আর হবে না, ও একটা ভূগ করে বসেছিল রম্বী খোষের কবার ভোডের মধ্যে পড়ে।…আর রন্ধী খোষও ভোনেই বে আর…'

ম্যানেকার চাকত হইয়া মূখটা তুলিল, প্রর করিল--'কোষায় সেছে গ্

মন-বোকাব্যির যেন লড়াই চলিল একটু। চন্দা ইচ্ছা করিয়াই মাধাটা একটু নত করিল, তাছার পর একটু টানিয়া টানিয়াই বলিল 'গৈছে মানে, ডয়ে পালিরেছে ছয়তো----আপনি চটলেয়ে পালায় সেতো কেরে না আর।'

চোৰ তুলিয়া দেবিল ম্যানেকার বিরণ্টতে তাহার পানে চাহিয়া আছে; তপু একটু টানিয়া বলিল---'ছ' বোক রাবিল তো [...'

ভাষার পর ইঞ্চিতেই দে আর একটা নৃত্য গোপন রহুছের মধ্যে চম্পাকে টানিয়া গগল এইভাবে ও ক্বাটার উপর আর কোন মন্তব্য না ক'রয়া বাসল—'ভা হলে দাগাবাছি কর্মিন না ভো চম্পা ? যেমন বসসি ভাভে ভোমনে হর বাট আছিস। ভবে কি জানিস দেবভাভেও ভোগের চরিত্রের হৃদিস পার না তেবেশ, বা ভা হলে।

় চন্দা সিঁছে দিয়া নামলে বলিল- 'তবে কি কানিস ?— আমি গোয়েন্দার ওপর গোয়েন্দা বসাই।'

চন্দা খ্রিয়া বলিল- 'আপনি গোডেন। দিয়ে খিরে রাবুন না আমায়। ভাভেও নিশ্চিনি না হন, রেহাই দিন না, বছ স্থেত কাজ দিয়েছেন।'

ম্যানেকার **অন্ন হা**সিয়া আত্ত ল কয়টা হেলাইয়া বলিল---

ক্রিয়া আসিয়া চন্দা টুসুকে বলিল---'কোনমতেই হাজনে বা, আয়ত বিষক্তক জোগাই মন, খুণট: ডভ বিশ আপনায় করে উঠুক আয় একটু।" টুৰ্ একটু বিশিতভাবে প্ৰশ্ন করিল—"ভোঁমার কাজ শীৰকেম চীকা ?···"

"ও নিমে কোৱ করলে ছেক্টে আসতায।"

#### ( 92 )

চরিত্রের বে মর্থাদার চম্পা নিজেকে টানিরা ভূলিরাছিল—
বনির চাকরি ছাভিরা, ধীরকের ধোরপোষের টাকাটা ছাভিরা
সেবান বেকে আবার একটু নাহিরা পভিল। তাহা না হইপে
ন্যানেজারের কাছে বে অভিনয়টা করিরা আসিল তাহা
পারিত না। ন্যানেজার যদি তাহাকে কাক করিতে বাব্য
করিত, টাকাটাও আবার সইবার বভ জোর করিত, চম্পার
রাজী না হইরা উপার ছিল না, তাহার বভ তৈরার হইরাই
গিরাছিল। টুলুকে সে বলিল—"ও নিয়ে জোর করলে ছেকেই
আসতাম।"—সেটা একেবারে বিব্যা করা।

আসল কৰা টুলুকে কেন্দ্র করিবাই এবন ওর বা ভিছ্ন সব। বভক্ষণ এইবানে হিল ততক্ষণ ও নির্বিবাদে নিকেকে গছিলা ভূলিবার চেটা করিবাছে—পরেশের হালা এছাইবা প্রেছ, কাল হাছিরাছে, হীরকের ভাতা হাছিরাছে—এক কথার বনির সলে কোন সম্পর্কেই বালাই সে রাবে নাই আর। এবন কিছ চম্পার সেইবানেই হইয়াছে ভর, অর্থাং টুলুকে হারাইবার ভর। ভর্মচা প্রথম পাল যেমিন গুড়নিরার আগুম লাগে। তাহার পর আবার টুলু বীরে বীরে মুলের কালে মাজিলা উঠিল, চম্পা আবার নিশ্চিত্ত হইরা হীরককে লইরা পভিল, গোকানে লামা-পিরান জোগাইরা উপার্জনে মন হিল। তাহার পর আগিল রন্ধী বোষের ছেলের বৃত্তার সেই মুক্ত—চম্পা অন্তরাল হইতে সবঁচা দেবিলা গেল। বুরিল সব হ্লাশা যাত্র, অন্তর দিলা কোন বছনকেই বীকার করিবার যাত্ম্য নার ও।

তীত্র আতকে চন্দার বনটা গেল ভরিরা, আর তাহা হইলে উপার কি ? এ প্ররের উত্তর চন্দা একদিনেই পাইল না। তথু ভাহাই নর—একেবারে চরম উত্তরউতে পৌছিতে অনেক প্রশ্ন, অবেক উত্তরের রাশি ঠেলিরা আগিতে হইল ভাহাকে, সময় লাগিল। কিছু পাইল উত্তরটা; চন্দা একটুবানি নামিরাছিল, আরঙ নামিল, আবার একেবারে প্রার নীচুতে।

উদাসীনের সংসর্গে চল্পা উদাসীন হইরা পিরাছিল, আবার নিজের দিকে গৃষ্টি কিরাইল। সন্ধার সঙ্গে রং মিলাইরা যে শান্তীট পড়িত সেট আবার পড়িল। বুব হালকা আর মিহি করিরা আলভার টান দিল। ভার্গরাপে হাসিটকে রাঙাইরা আরও করিরা ভূলিল মদির। ভ্রন্তে বরেরের টপ দিরা হোট কপালট করিরা দিল আরও সঙ্গীর্ণ। এক দিনেই সব নর, আরে বরে, গৃষ্টি সহাইরা অবচ অনিবার্যভাবেই গৃষ্টকে আকর্ষণ করিরা—হৈশোর বেকে যৌবনের সাব্দার যে ক্ষম ক্ষতাট অবিগত হইরাতে ওর । তাহার পর এই জ্যাকে বিরিয়া উটিল ব্ৰ হালকা একট গল—একট অম্পট্ট বধের মত বেছিছা বহিল। এত হালকা বেল সবার লাকেও বার না। এ বেল বাহাকে বৃশ্ব করিছে হইবে কিছা মুগ্ধ হইবার লালসাতেই বে বাচিলা কাছে আসিবে তাহারই জ্ঞা। তেকী করিলা নজর গেল মিতিনের। বনমালীকে হাসিলা বলিল—"উর বর দিবো গো বুড়া; তু সবার লকোরট ক্বার বাকে ? বরেস হইটে না নাতনীর ? আলতার ঘটা, কোঁপার ঘটা দিবেও বৃক্বেক না তো উ মুব কুটে বুলবেক নাকি লো ?—দিবো। তে

বনমালী মাধা চূলকাইয়া বলিল—"দিধছি সব, দিধবে।
নাই ক্যানে १···বে মাফুষট কথা ক'য়ে গেলোক, আর আসে
নাই ক্যানে বুকি না। তা নিচ্চি ভল্লাস, তুর মিতিনকে বৈঃয়
বরতে বলু, বয়েদ যাবার আগেই আমি গেঁগে দিবো বটে।"

চম্পা আবার বোহকাল বিভার করিভেচে, কি করে সে ? নিপ্রপায়ের এই শেষ সহল।

কাক্ষতদায় আৰু বংগ না সন্ধান, কাষের অহিলা দেবার। টুল্র বর পরিকার করিতে কিন্তু এবন সময়টিতে আসে যাহাতে নামিবার পর টুল্র সকে বামিকটা কবাবাত। হয়। আক্রাণ যত কবাবাত। সবই প্রায় ছল লইরা, যদি অভ কবাই পাড়ে টুল্, চম্পা ছলের প্রসক্ষ আনিয়া কেলে, তাহাতে সময় পার। সময়ই ধরকার এবন, আন্তে আন্তে নিক্ষের সাহিধ্য দিয়া ভোট বরটি পূর্ব করিরা তোলা, তাহার পর মনের হুর্গে আবাত, ছন্তা কোলগের সক্ষে অটুট বৈর্বের ধরকার, সবচেয়ে বেলী প্রোক্র সময়ের।

এতটুকু কি সচেতন হইয়াছে টুপু? শাছী, কৰৱী ভো ধুবই চোৰে পভিবার কৰা, পছে নাই? বেগুলা হক্ষ---কপালের ট্লপ, মুৰ্বের হালি ?···বোকা বায় না, গুণুই হুল আর হুল--- স্থানর দৃটি কাছে থাকিয়াও বেন থাকে কোন্ স্থারে, কি তাহার গক্ষ্য ঠিক বোকা বায় না। একদিন হঠাৎ বলিয়া উট্টল--- "বরটাতে চমংকার একটা মিট্ট গদ্ধ পাই চন্দা, মারে মারে, কবনও---কিসের বল তো।"

চম্পা রাভিয়া উটিল, যদিও হারিকেনের আলোয় টুল্র দেটা নৰবে পঞ্চিল না—হর তো বিছ্যতের আলোয়ও পঞ্চিত না; বলিল---"গৰ ?-- ও! বোৰ হয় হীরাকে ষেটা মাবাই মাবে মাবে, সেইটে বিছানায় লেগে গিয়ে বাকবে।"

কৈ, হীরকের গারে ছিল থাকি কোন গৰ ? ভাহাকে সইরা তো অভ নাডাচাড়া করে টুলু, পাইরাছে নাকি কবনও ? •••কিছ গভের ছল লইরা মাধা বাষাইবে—এত সময় নাই টুলুর।

মূল থাড়িরা চলিরাছে । আটাশ জন ছেলেমেরে এবন, টুলু বেন সামলাইতে পারে না । কাজ করিরা না সামলাইতে পারার মধ্যে এক বরণের উলাগনা আছে, যথন কাজটা হয় আনক্ষের, এ যেন আনক্ষেই বুকে ভরিরা কুলাইতে না পারা। তবুও চিভার বিষয় হইরা পড়িরাছে বৈজি। এটা ভো টিক যে এ বাসায় কুলাইবে না বেশী দিন। টুলু ভংগর হুইরা

উটিবাছে। ব্রিরা ব্রিরা ভারণা দেবিরা কেলিরাছে অনেক, শেষ পর্যান্ত একটা টিকও করিরাছে। কেই বটভালটা ক্ল্ব প্রার বিধাবানেক ভারগা, একটা দিক অলে অলে বোরাইরের মধ্যে নামিরা নিরাছে, সামনে প্রার পোরাটাক দূরে বভি। এই স্থলের সৌর্পর্য বেষন সব চেরে উঁচু ভারগার বলিরা ওর স্থলের সৌর্পর্য বেষন সব চেরে উঁচু ভারগার বলিরা ওর স্থলের নৌর্পর্য বেষন সব চেরে নীচু ভবিতে হওরার ভভ—হক্ষিণ পশ্চিম আর পূর্ব দিকে বাক্রের, ভাহার পর কর্তাপাভার রংচঙে পরিজ্ঞর বাভিওলা রাজে বিজ্ঞলী বাভিতে বলকাইতে বাকে। পূর্ব দিকে বালিরাভির টেট-বেলানো রাভা ক্রেরাজ, ভাহার বির্বে ভ্ল, বালা। টিক উন্টা বিকে চভাই ছলিরা ছলিরা একটা বন্ধুর রেধার সিরা শেষ হইরাছে—অনেক দূরে নামটা ভালতরন্যের পাহান্ড—কবি-দৃষ্ট ছিল—এমন কেহ্ নামটা ভিরাছে কোন সমর।

ভারগাটার মালিকের সলে গরণগুর ঠিক ছইরা গেছে। টাকার ভঙ মারের কাছে লিখিরাছে, ভাবে পাইবে, সংসার মা করুক, সংসারের চৌহছির মধ্যে আটকাইরা রাখিবার ভঙ্গ মারের কাছে এ প্রশ্র পারই।

প্ৰবল উৎসাহে লাগিয়া গেছে।

এই সময় হঠাং একটা ব্যাপার হইল বাহাতে উৎসাহের ছোরারটা ভারও প্রবল হইরা উঠিল।

बवादा गरामी पश्चिमार पूर त्यी, बजी स स्थानार बूर्य करनद चांत्रक शत्मत हिम हुकै वाक्षवित स्वका स्वेतारह। ছুই দিন বেকে আবার ৩খট হুইরা এত বেশী গরন পঢ়িয়াছে ৰে টুলু বিকালের ক্লাসচা ঠেলিয়া সংগ্রার কাছাকাছি লইয়া গেছে। পঢ়াইতেছিল, এমন সময় হঠাং একটা ঠাতা এলো-বেলো হাওয়া বরে, উঠানে চুকিরা পড়িয়া একটু বিশুখলা ভট্ট क्विया वार्वित स्टेबा (गम। हेन् वृतिया शन्तिय जाकात्मव পাৰে চাহিয়া বেৰে বুলায় বাঙা হইয়া উঠিয়াছে। প্ৰায় সঙ্গে সলেই বেখ ভাকিয়া উঠিল। ক্লাল হয় বাহিরের ছইট বারান্দার, वक्तक जानिकार प्रविश हेन् (स्टन्स्यास्य इर्डे प्रदेश মধ্যে আৰিয়া কেলিয়া আৰালাওলা বন্ধ করিভেছে, ভভক্ৰ बक्छ। जानिया पछिन, छाराय अक्ट्रेबानि पदारे युद्रेश। বাভির বাহিরের দিকে বুড়ীর বর, শেটারও ভানালা বছ क्विता, परवत मरना बूकीत माध्यितक विन वांक्रेता विगर्छ ৰলিৱা নিজের গরে যথম আলিল তথম বড়বৃষ্টি ভূমুল বেরে चावक रहेवा त्रारत । केंग्रामहेकू भाव सहेरक त्यम अक्ट्रे किविया গেল। বরটার সব এলোমেলো হইরা গেছে, রাভার দিকে ভাষালা দিয়া বৃষ্ট চুকিয়া বিহামাটা ভিজাইয়া দিয়াছে। ভাড়াভাড়ি সেটা বন্ধ করিভে গিয়া কিন্তু টুলুকে বানিয়া বাইতে ব্ইল-বালিয়াভিত্ত দিক বেকে একটা ঘই-বেওয়া গোলার গাড়ি এই বিকে আসিতেবে। প্রতী চালু, কিছ হাওৱা আৰু বৃষ্টৰ এড জোৰ বে বলৰ চুইটা বেল আগাইডে

পারিতেকে দী। শুবু ভাষাই নর, বলবওলা ভড়কাইরা চালু বিরা নামিরা পড়িতেও পারে, গাড়োরান বেন সামলাইতে পারিতেকে না। টুলু রুরুর্ওবানেক ভাবিরাই বড়বুটির মধ্যে বাহির হইরা পড়িল এবং চালুর বিকের বলগটাকে আটকাইরা কেলিল। গাড়োরামও নামিরা পড়িল এবং হুই কনে ঠেলিরা-ঠুলিরা গাড়িটাকে বানার সামনে আনিরা কেলিল।

এতক্ষণ গাড়ি সামলাইবার বিকেই সমন্ত মনটা হিল, টুল্ হিলও হইরের পালটাতে, লক্ষ্য করিতে পারে নাই—গাড়ি থেকে আরোহীরা বধন নামিল তথন বেশ আক্ষর্য হইরা গেল —সাক্রেলের সেই হেলে ছুট আর ভাহাদের সঙ্গে একট আক্ষাক আঠারো-উনিশ বংসরের বেরে।

টুলু একবার দেবিরা লইরা বড় ছেলেটকে বলিল—
"ভোমরা আমার ধরে চলে যাও—যাও ভাডাভাড়ি, ভিজে
যাঞ্জ, আমি আগছি বলন ছ্টোকে ছুলে ভূলে দিয়ে, একগা
সামগাতে পারবে মাও।"

ষধন কিরিল, দেখে ভিন কনে যরের দরকার বাইরেটতে ইাড়াইরা আছে; এইটুকু আগিতে দেরালের আড়াল সংহও বেশ ভিক্সিরা গেছে—বোৰ হয় সেইজভেই। বড় খুব প্রবাদ, টুলু ষেরেটকেই বলিল—"ভেডরে চলুন।" তাহার পর কারণটা ধুবিতে পারিরা বলিল—"ভিকে গেছেন তো কি হরেছে? ঘর মুছে নিশেই হবে; আহ্মন।"

নিকে আপাদ্যতক ভিজিয়া একশা হইয়া গেছে, পধ দেখাইবার অভই ভাড়াভাড়ি ভিভরে চলিয়া গিয়া বলিগ--'আফুম, আর ভো বর ভক্ষ রৈল মা।'

তিন জনে ভিতরে গিরা ইাড়াইল। টুলু একটু যে এ বিপর্বন্ধ হইরা কি ভাবিল, তাহার পর বলিল—'আপনারা ঐ কোণটার গিরে ইাড়ান। কি হ্রোগ। এলো তো একেবারে···'

কোণের দিকে বান্ধ, টেবিগ, বই ; বড় ছেলেট বলিগ—-'ভার চেয়ে দোরটা বন্ধ করে দিই।' পুরিয়া দরভাটার হড়কা লাগাইয়া দিগ।

টুলু এইবার ধুবই ব্যতিব্যাভ হইয়া পড়িল, ছেলে ছইটর পানে চাহিরা বলিল—'এবার কি উপায় করি ? ভিজে কোছ ভোষরা, অবচ আমার বাসার ভো সব দল হাতের কাপড় ।···আর শাড়ি ভো একেবারেই নেই ।'—বলিরা বেরেটর পানে চাহিল।

বেষেট বলিল---'আপনি ব্যস্ত হবেষ যা। ভিজেছেয ভো আসলে আপনি।'

আর কোন কথা ছইল না, বাহিবের মুর্গোরের বিকে কান পাতিরা চার কনেই নিজের নিজের চিজা লইরা হাঁচাইরা রহিল।

প্ৰায় আৰম্ভী। পৰে বছবুট বেষৰ হঠাৎ আসিয়াছিল, তেৰ্দি হঠাৎ থানিয়া গেল, এবং প্ৰায় তেধ্নি হঠাৎ ভবিক্কার হুই ব্রের হ্রার পুলিরা ছেলেবেরেরা একেবারে হৈ-হৈ করিরা বাহির হুইরা পঢ়িল। তিন ভবেই চকিডভাবে বাড় উঠাইরা টুলুর পানে চাহিল, টুলু একটু হাসিরা নেরেটকেই বলিল—'আযার ভুলের ছাত্র-ছাত্রী সব, চলুন, বেধবেন ?'

বাহিরে আসিতে সবার অসক্ষতট্র একেবারেই কাটর। গেল, তথু ভাহাই লয়, দেয়েটির বুবে চোবে বেল একটা নৃত্য আলো আসিরা পঢ়িল। কৌত্বলপূর্ণ ঘৃটিতে টুলুর মুবের উপর দৃটিপাত করিরা প্রশ্ন করিল—'আপনার মুল আছে নাকি ? কই রতম তো আয়ার বলে দি।'

বছ ছেলেটার মূখের পালে চাহিয়া বলিল—'বলো নি তো তুমি আমার রতন !'

রতন টুলুর পানে চাহিরা বলিল—'আগে ছিল না তো।' ভাহার পর এতকণ ধেন কথাটা বলিবার কচ পেট কুলিভেছিল এই রকম অপ্রাসন্ধিক ভাবেই বলিল—'আমার দিদি, আপনাকে বলেছিলাম না ? এঁবই কথা।'

মেষেট অল হাসিয়া বলিল— 'আপনার কথাও বলেছে আমায় এরা ১ছনেই। সুল তথনও তা হলে করেন নি, কিছ এর মবো—বাক, আপনি আলে কাণড় ছেড়ে আমুন, অসুবে পড়ে বাবেন নইলে।'

—বিনাধা সমন্ত প্রস্তু বন্ধ করিয়া এমন চুপ করিয়া ছাড়াইল যেন কৰাটা না শুনিলে আর একট শব্দ মুব দিয়া বাহির করিবে না। অন্ধরোব, অবচ ভাহার সঙ্গে জিদ আর আদেশ এমন অন্ধৃতভাবে জড়ানো যে টুপু কোনমতেই এড়াইতে পারিল না। বরের চৌকাঠ পার হইয়া শুবু একবার বলিল—'আপনারা কিন্ধ ভিন্দে কাপতেই রইলেন।' গা হাত মুহিরা কাপড় ছাড়িয়া বাহিরে আগিতে যেটুকু বিলম্ব হইল ভাহার মধ্যে এরা স্বাই বাসানের দিকে চলিয়া গেছে। টুলু উপস্থিত হইলে মেয়েট বলিল—'এরা বলছে এ বাগান এরাই করেছে, সভ্যি নাকি গ'

টুলু হাসিরা বলিল—"আর আমাকে একেবারে বাদ দিরেছে ?"

বেরেট হাসিরা উত্তর করিল—'বাদ দিলেও, আপনি যে আছেনই এটা বরে নিভাম আমি ।···বড় চমংকার লাগছে আমার—হুলের সকে বাগান—ছেলেরা নিজেই করে আবার ।
···ছেলেনেরেরাও পব চমংকার দেবছি···কিন্ত বসছে মাইনে
নেম না আপনি, কি করে চলে ?'

আসল উপ্তর্কী এড়াইরা বাইবার ক্ষ টুলু হাসিরা বলিল— 'বাইবে নিলেও তো অনেক কুল চলে না ···'

বেরেট বুবের পানে চাহিরা কি বেন একটু ভাবিল, বোধ হর কথাটার অর্থঞ্জন করিবার চেঠা করিল, ভাহার পর হঠাং সচকিত হইরা বলিল—"ভূলেই গেহলাম। রতন আর ভাবন—এই বে আয়ার হোট ভাইর্ট, হৃদ্নেই আয়ার গ্রহের মূলের কথাটা বলেহিল…" ৰ্ণটা হঠাং গভীৱ আৰু বিষয় হইবা উঠিল, টুৰু প্ৰশ্ন কৰিল "কি কথা ?"

রতন একটু সরিরা সিরা কতকণ্ডলা গাঁহের চারা লক্য করিতে লাগিল, বেরেট বলিল—"সেই বে ওরা এবের ছ্লমকে আপনার কাছে আসতে বারণ করেছিল।…এ রক্ষ ছূল থাকার চেয়ে না থাকা ভালো তো। কি করব আবরা, আর ছূলও নেই এ ভরাটে।

'जाननाव पूरण निन ना अरफ्द इक्नरक।'

রতনের এই দিকেই কান ছিল নিশ্চর, একবার বাদ বাঁকাইয়া দেবিরা লইরা তথনই আবার চারাগাছে মদোনিবেশ করিল।

চূলু বলিল—বোৰ হয় ঠিক হবে মা, ভাৰবে ছেলে ভাঙাছে ।

রতম উঠিরা আসিল, দিধির দিকেই চাছিরা বলিল—এ মুল কিছ রোক এই রকম বিকেল বেলাতেও হয় দিদি, এরা বলহিল।

মেরেট একবার টুল্র ধিকে চাহিরা লইবা ভাইদের ধিকে একটু হাসিরা বলিগ—"কিছ আমার হাতে তো ময় ভাঁড করা ভোষাকের।"

আবার টুলুর মুখের পানে চাহিল। টুলুর বনের মধ্যে লোভ-সংখনে হোটখাটো একটু হখ চলিয়াহে, থানিকৃত্ব একটু চিছিত রহিল, তাহার পর বলিল—"আমি মোব ওবের; কিছ দিনকৃতক যাক। মানে এ বাভিটার ওপর তো আমাদের কোন অধিকার নেই।"

"निरमद वाणि कंदरवन ?"

--- খুব উৎস্থক দৃষ্টিভে মূৰের পানে চাহিরা রহিল।

"এবনও আকাশ-কুন্দ বগতে পারেন, তবে ইচ্ছে আছে।"
ভাহার পর নিজের ক্রনাটা আতে আতে শোনাইরা গেল। ছুল সইরা এই প্রথম মনের দোসর পাইরাছে, বছ আনল বোধ হইতে লাগিল এই ভাবে নিজের আশার ক্বা ভুনাইরা বাইতে। গাভোরান গাভি সইরা আসিরাছে, বাছিরে সিরা টুলু বটবুক্সগংলর ভারগাটাও দেখাইরা দিল, দরদশুর বে হইরা গেছে সে ক্বাও বলিল।

মেরেট আর কোন কথাই বলিগ না, তবু অভরে কিসের পূর্ণতার বেন সমন্ত সুবটা রাঙা হইরা গেছে। ছইবের মধ্যে প্রেশ করিরা বলিল—"গঞ্জির বাজারে আমাদের একটু কাজ ছিল ভাই এসেছিলাম, বাড়ি যাজিলাম, বড় দেবে আবার কিরতে হ'ল।"

হাত ভূলিরা নমন্তার করিল, ছেলে হুটও করিল।

কিরিরা আসিরা বাগানে হাত দিরাছে, রভন হাঁপাইতে হাঁপাইতে আসিরা উপস্থিত হইল। বলিল—একবার উঠনেন? টুলু ভাহাকে লইরা উঠানে আসিলে বলিল—"দিদি বিদ্যোস করগেন, আপনার ছুলে তাঁকে পড়াতে দেবেন, ছুল ছলে ? আপনার ফুলে তো নেবেও আছে।"

টুৰু বিশ্বিভভাবে বলিল—ভোষার দিদি পড়াবেন ?
"দিদি ম্যাটুক পর্যন্ত পড়েছেন—বাবা পড়াভেন।
পরীকাও দেবেন—আরও পড়বেন।"

"ভোষার ষা এবানে এসে পঞ্চাতে দেবেন ?" "বা ভো দিদিকে কিছুতে বারণ করেন না, বাবা যারা

যাবার সময় মানা করে সিরেছিলেন কিনা, তা ভির…"
হেলেট থামিরা গেল। টুলু প্রশ্ন করিল—তা ভিন্ন ?…
হেলেট প্রকটু সকোচের সঙ্গে উপ্তর দিল—"তা ভিন্ন দিদি তো পড়াবেনই, নিক্ষে আরও প'ড়ে। বিশ্বে করবেন না কিনা।" "(平平 ?"

"হুট তাই আমরা হেলেমাছ্য, আর মা—তার শরীরও ভাল থাকে না. কে দেখবে ?"

টুলু ভব হইবা কাড়াইবা বহিল একটু, ভাহার পর হঠাং উংকুল হইবা বলিল—"সভি্য ভোষার দিদি পড়াবেন ? চলো আমি নিজে বাই ভার কাছে, কোবার ভিনি ?"

"চ্চাইরের মাধার গাভি কাড় করিরে রয়েছেন।"

হ্যার পর্যন্ত আসিল টুলু ভাহার পর কি ভাবিরা বলিল—
আছো এখন থাক, এর পর এক দিন পারি ভো সাঁকরেনেই
বাব। ভোমার ধিদিকে ব'লো, তিনি যদি আমার স্থলে
পড়ান, সে ভো আমার ধূদের মন্ত বছ ভাগিয়। বভ
ভাগাভাভি হয় আমি চেটা করহি এদিকে। বাও জ্লটা
দেখছি ভোমাদের গারেই ভকিয়ে পেল।

# তীর্থপথিক

## 🕮 স্থবোধ রায়

বাবে বাবে স্থা সমে কিবে আসে

মৃত্য বিহার-হলে,

হন্দের যতি, ক্ষণিক বিরতি

গতিরে পাইবে ব'লে।

বে-রাসিই বাকে জীবনের স্বরে,
রণিত হ'ল কি হন্দ-মূপ্রে ?

গানের পাবী কি সন্যা-প্রেলাবে

কুগার আসিল কিরে,
পাবা বেলি' পুন উভরিতে কোন্

নব প্রভাতের ভীরে ?

শভবার ক'বে ভবাবে নিজেবে
উভর নাহি পাই,
তবু সে গহন গোপনচারিদী
অবরারে আমি চাই।
আলো-ছারা-মাবে চকিত চমকে
ধেবা দিরে সে বে লুকার পদকে,—
ক্রিক-হরশ-পরশ-আলোকে
পুলকাঞ্চিত প্রাবে
নিজকেশের সর্দী বাহিয়া
চলি ভারি সহাদে।

চলিতে চলিতে খনমেখছার
দিবসেই নামে নিশা,
ভীর্বপরের ইলিভহারা,—
বুঁজিয়া না পাই দিশা।
সহসা সে-মেখ-বন্ধ বিদারি'
বন্ধ হাঁকে যে আলোক বিধারি',
সচকিত চোঝে, ক্ষণিক আলোকে
পাই পথ-সন্ধান,
ভবি আবারের মর্মবানীট,—
আলোকের বীবাভান।

পাইরা হারাই, হারাইরা পাই,
কিরে কিরে আনে স্বর,
জীবনের দিগ্বলয়ে যে হেরি
নামে হারা র্চ্যুর।
সে হারার পারে ভানি আহে থালা
সবিভাগীরি, তারকার মালা—
সেই বিশ্বাসে চলিরাহি পথে
ভীর্বের পানে চেরে,
স্থে-ছুবে আর আবারে-আলোকে
আনক-গান গেরে।

# অরণ্যপথের ডায়ারি

## শ্রীপরিমল গোস্বামী

৪ ডিলেশর ১৯৪৬। আৰু সকালে করেক মিনিট মাত্র রোদ হরেছিল, তার পরেই পাহাডের চূড়া থেকে আবার গাঢ় মীল অন্ধকার নেমে এল। হাওরা ভিজে এবং ঠাঙা। মনে হচ্ছিল লে হাওরা জামার নিচে প্রবেশ ক'রে গা ভিজিরে দিছে। সে এক অন্থত রকমের অন্থত্তি। ভিজে ঠাঙার এ রক্ষ অভিপ্রতা এক্ষাত্র দার্শিলিঙে হ্-এক বার পেরেছি। এক্টু একটু বৃষ্টিও হ'ল, কিছে সমন্ত দিন মেল কাটণ মা।

কইতীতে প্ৰথমে এগেই মন ভিকেছিল—আৰু গা ভেছা ক্ষুত্ৰ হ'ল।

আশোক সভ্যার বেরিয়ে গেগ জলগে বন্দুক নিয়ে। সলে গেল স্থাংগুপ্রকাশ। উদ্দেশ, বাধ মারার জলে জলগে কোণার মাচা বাঁবা স্ববিধাজনক তাই দেখা। ঘন্টা ছই বাদে ওরা কিরে এল এক রোমাঞ্চর খবর নিয়ে। ওরা যেখানে গিরেছিল তার বুব কাছেই নাকি বাঘের ডাক গুনতে শাগুরা গেছে।

অশোকের মুবের চোবের ভাব সম্পূর্ণ পরিবর্তিত।
মাহাবের সাহচর্ব আর তার ভাল লাগছে না, মন ছুটে গেছে
বাবের দেশে। ওবানে মাচা বাঁবা থাকলে রাজ্রে আর তার
ক্রেরা হ'ত না, তা ভার চালচলন দেবেই বোঝা যাছে।
কান সর্বদা শেতে রেবেছে কললের দিকে, কোনো ইন্দিতপূর্ণ
শব্দ যদি শোমা যায়। জলল থেকে কথন কি শব্দ উঠছে
আমরা তা ভনতে পাই না, কিছু জনোকের কাছে তা অত্যত্ত
শাই এবং বিবিধ অর্থপূর্ণ। পশুপাধীদের ভাষার 'কোড'
তার জানা। "ঐ বে বার্কিং-ভিরার ভাকছে।"—হঠাং বলে
উঠল জনোক। প্রবশ্বরকে বত্বের সলে নির্ব্রিত করে
সভ্যই শুনতে পেলাম সেই ভাক। "ওর অর্থ কি জান ?"
আর্ব ভ্রের কথা, শব্দের সলেই কথনও পরিচয় ছিল না।
আশোক বলল, "ও ছচ্ছে বেঁ।লা—ওর বেকে বুবতে হবে
পর্বত ব্রিনান।"—বুবলাম এ বিহি ওর অন্তরেও লেগেছে।

শীতদাবার আমাকে ক'দিন একট এদের কথা বদ-ছিলেন। একট না কি বেশি দুরে ময়—এবং পাহাড়ের মধ্যে। ঠিক হ'ল পরদিন স্কালেই আমরা রগুনা হব সে দিকে। তবে অলোককে বে কাল পাগুরা বাবে না সে এক রক্ষ ব্রেই নিগান।

ভিদেশর। আকু বেলা দশটার হ্রদ দেশতে রঙনা
হলায়। বলা বাহলা, শীতদাবারু আবাদের নেতৃত্ব করলেন।
বাংলো থেকে বেরিয়ে পশ্চিম দিকে চপেছি। প্রথমেই
পেলায় নেপালা-হিন্দুছানীদের এক পরী। একট নেপালী

বেরে বারাক্ষার বসে গেস বুনছে। পালের বাভিতে এক রঙা কাঠের ভোঙার বসে শাক বাহছে, সামনে ক্যানেরা নিরে বাভাবোতেও তাদের কোনো চাকল্য দেবলায় না।

শীওপাবাৰু ইভিপূৰ্বে আৱও ছু-এক বার সেই হুদে গেছেন, কিছ তা সভেও সেই অৱশ্রকাতে প্রচিত্তীন পুরনো প্র মনে রাবা সহক নয়। তাই তিনি এক ভূটিয়া কুলিকে পৰের কৰা দিলাসা করলেন। সে একটা ভাল পৰের নির্দেশ দিল, কিছ প্ৰলাবাবুর তা মন:পুত হ'ল না ভার ইছো ভার পূর্বপরিচিত সোজা পরে যাবেন। নিমে নিভ পর কেনে তিনি এক নদীর ঢালু বুকে নেমে বললেন, "আত্মৰ এই भर्य ।" जामना (महे भर्यहे अरम नामनाम नमीन 'मर्क'-अ। সেবানে প্রকাভ এক একটা পাধর। ছবারে পাছাছ, মার-বানের পৰ অতি সঙ্গীর্ণ এবং তার গতি অভ্যন্ত কুটল। এক পাৰর বেকে আর এক পাৰরে অতি সাববানে পা কেলে কেলে চলেছি। এ পৰ এমনই বারাণ যে আয়াদের ছুজনেরই রীতিমতো কঠ হলেও বীতধাবাবু কিছ তার অভ্যন্ত পা বেশ ক্রত চালাছিলেন: খলা বাহল্য আমার পা অরক্ষের মধ্যেই প্ৰায় অবসগ্ন হয়ে এল। গোজা পৰ হলেই যে সহক পৰ হয় না. এ কথাটা শীতদাবাবুকে বোঝাতে বোঝাতে চলেছি, কিন্ত তিনি সপ্ৰতি নিৰেই পাৰর হয়ে গেছেন, কৰা কানে कुलरहर ना ।

পনেরো মিনিট এই তাবে চলাগ্ন পর নদী-পশ ছেড়ে খন কলনে প্রবেশ করলায়। ইতিমধ্যে কলনে কিছু চলাকেরা ক'রে সাহস অনেকটা বেড়ে গিরেছিল। এ দিকের বাঘ মাছ্যকে আক্রমণ করে না এ কথা স্বাই বলেছে, তবু বাবেলের এলাকাগ্র মধ্য দিরে পরম নিশ্চিতে চলা সপ্তব মর। অবশ্ববিশেবে কত ভ্রমলোক ছোটলোক হতে বার, এক্যাত্র বাবই তার রীতি স্ব স্মর বজার রেশে চল্পে এ কথা বিশ্বাস করা যায় না। তা খাভা গোপুরো সাপ্ত এখানে আছে।

তবে আপাতত একটা ভরগা ছিল এই যে, আমাদের সদে
শীতগাবাবুর একট পোধা ভূটিয়া কুকুর ছিল। মিশমিশে
কালো, নাক ব্যাবড়া। উঁচু ছবে বোধ হয় আট-দল ই क।
পে যতক্ষণ নীরব আছে ততক্ষণ আমরাও নিরাপদ। এদের
ভাগণন্তি বুব তীব্র। আশেপাশে কোষায়ও বাম বাকলে
ভাকবেই। সেটা অবঙ বুব ভরসার কবা নয়, তবে সে
যতক্ষণ না ভাকছে ততক্ষণ অকারণ ভয় পেয়ে লাভ মেই।—
কুকুরটির নাম ভিমি।

মভুষাপদ্দিক্ষীন সেই অপ্পণ্য ছোট ছোট গাছের এমন বোপ বে তা ঠেলে ঠেলে চলতে বুবই অপুবিধা বচ্ছে। ভা হাঙা শীতগাবাৰ্য পক্ষে হিক টিক ক'ৰে চলাও বুব লহক হতে লা। ,একটা দিক বাবে কিছু দূরে দিয়ে আবার দেখান বেকে অভ হিকে বুবছি—এইভাবে অলগ তেদ ক'রে অনেক বার আবার নেই বহীর বুকে এলে নামছি—এবং নহীর পথ বারে অনেক দূর এগিরে গিরে আবার বন অললে প্রবেশ করছি। বভাবানেক চলে এক মাইলও এগিরেছি কি না সক্ষেই। পাহাড-পবের গেডিরেট বা জ্বোছতা যে বুব বেশি তা বর, কির পাবর-পবের, হুর্ভোগে আমার হুবানা পা সম্পূর্ণ অবসর হুরে এল।

হঠাং কিনি অভ্যন্ত চৰক হয়ে উঠেছে। ভার এ রক্ষ
বৃতি এর আপে দেবি নি। কি হ'ল হঠাং ? সে ছোঁক ছোঁক
ক'রে নাট ভঁকছে আর চুটছে। চুটছে চুটতে হঠাং নক্জবেপে বা বারের কললে চুকে অনুক হয়ে গেল। পরক্ষপেই
কলল ভেল ক'রে দল-বার হাত আপে (আমরা তভক্ষ
বল-বার হাত এসিরেছি)—আমাদের সমূবে বেরিরে এসেই
হৃ-তিন পাক ঘুরে আবার চুকে গেল ভান বারের কললে।
সেবান থেকে বেরিরে আবার বারের দিকে চুকল। আমরা
ভো অবাক গেলাম ওর এই ব্যবহারে। কিও কোনোমতেই
ভার গতি নিয়ন্ত্রণ করা লেল না। লীতলাবাবু কিমি কিনি
করে ভাকতে লাগলেন। বাভাবিক অবহা হলে কিমি সে
ভাক অঞাল করতে পারত না, কিও এবন ভার মনোভাব
অনেকটা এই বে, "মশার, এবন আমাকে বিরক্ত করবেন না,
এবন আনি নিজের একট বিশেষ ভালে আহি।"

জিমির এই রক্ষ ছুটে বেড়ানোর চেহারা দেবে ডাঁত চলার সমরকার যাওর কবা মনে হচ্ছিল। কিছ তার এই ছুটে বেড়ানো ইফিতপূর্ণ হলেও আমাদের পঞ্চে যে সেট। ভ্রের ইফিত নয় তা বোঝা যাচ্ছিল তার নীরবতার। হিংফ্র ক্ষর পর পেলে জিমির ব্যবহার অভ রক্ষ হ'ত। চার-পাঁচ মিনিটের মব্যেই সব পরিফার হরে গেল। এবারে লে অর্ডারিতে আমাদের বা বিক বেকে ভান বিকের অফলে ছুটে বেতেই আমাদের অলজ্যে ক্যা ক্যা শব্দ করতে করতে করেকট বভ মুরবী প্রাণভরে ছুটে পালিরে গেল, জিমিও কিছু-ক্ষরের মব্যেই কিরে এল বিষধ মুবে। সমন্তটা ঘটনা নাটকের মধ্যবর্তী একটা হাফা গুড়ের অভিনরের মতো মনে হ'ল যদিও গুড়াট বিরোগাত হতেও আটক ছিল না।

আমরা ক্রমেই গভীরতর অরণ্যে প্রবেশ করছি। পারের শক্তি সূত্র, তবু জোর করে চলেছি। কত পরিচিত-অপরিচিত গাছের বোণ। কত বাসকের গাছ, ণিপুল-সতা, গাঁদাল, শতস্ব, এই বিশাল অরণ্যে আশ্রম্ভ পেরেছে। আরও বে কত রক্ষ গাছ আছে তার নাম জানি না।

শীতলাবাবুকে বললাম, "আমার পক্ষে আর ইটো সভব নর।" ভিনি বললেন, "আর বেশী চুর নর—এতবানি এসে কিরে বাওরা কি উচিত হবে ?" খ্ৰাংডকে এর করদাম, "ভূমি কি বল ?" লে বলল, "আমি পারব।"

আমার পক্ষে সেধান থেকে কিরে আসার প্রভাব আমার পক্ষেই বেশি ছঃবের, কারণ হ্রদ্ধ বেধার উৎসাহ আমারই বেশী ছিল, এবং আমার অনুরোধেই আক্ষেকর এই অভিযান। উৎসাহের আরও কারণ ছিল এই বে, পাহাছিলা হ্রদে আমার ছবির বৈচিত্র্য বাছবে; অর্লিনের ফ্রন্তে বাইরে এসে সেই উপলক্ষ্যে বতগুলো অভিনব বন্ধ দেখা যায় ভারও একটা ভাগিদ ছিল। কিও প্রভি মুন্থতে অমুভব করছি শক্তি কুরিরে আসহে, এর পর জাের ক'রে হাঁটভে চাইলে হরভা কিরে আসাই শক্ত হবে।

শীভদাবাৰু বার বার আমার অস্তে ছঃখ প্রকাশ ক'রে আমাকে লকা দিভে দাগলেন, বার বার বলভে দাগদেন অভ্যন্ত কামে এসে কিরে বাওয়াটা কেমন হবে ?

আমি আরও একবার সাহস এবং শক্তি সক্ষ ক'রে প্রশ্ন করলাম, "ঠিক ক'রে বলুন ভো আর ঠিক কত দূর আছে ?"

শীতলাবাৰু বগলেন, "এই যে পাছাছে এখন উঠছি—তথম একটা পাছাছে উঠতে খুঞ্জ করেছি আই রক্স আরও যাত্র তিনট পাছাছ পার হলেই ব্রণ। তবে সে তিনট পাছাছ এর চেরে একটু বেশী বাছা।"

মুহুতে আমার মন বেকে নবসঞ্চিত সাংস, এবং পা এক অবশিষ্ট শক্তি অভাহিত হ'ল। আমি বললাম, "বাক।"

তখন পাহাড়টর পিঠে উঠে বসেছি।

শীতলাবাৰু বললেন, "এইবানে কিছু বিল্লাম ক'ৱে চল্ন।" কিন্তু তৰন আমার পা কাঁপছে।

এ বক্ষ ক্লান্তি যে হতে পারে তা কল্পনা করি নি। এক দিন পূর্বে হাতী-বেদার মাচার সমস্ত দিন দাঁভিয়ে যে ক্লান্তি অক্সত করেছি, তার পর অক্সত তিন দিন বিশ্রাম নিপে তবে হরতো সব ঠিক হরে বেত, কিন্তু মাত্র এক দিনের বিশ্রামে সেক্লান্তি কাটারে উঠতে পারি নি। তহুপরি আক্সের পথের বড় বড় পাবরবার একটা ক'রে তন ধেওরার পরিশ্রম হয়েছে। উর্
হরে একটা পাবর বরে আর একটা পাবরে এগিয়ে যাওরার সমর সেই রক্সই মনে হচ্ছিল। মনে মনে প্রতিজ্ঞা ক্রলাম বাড়ি কিরে দৈনিক হ'লো তন ধেওরা অভ্যাস ক'রে তবিশ্রতে আবার আসব এবানে। 'ইরারো' এবারে অদেবাই রইল।

বে পাহাছটার বর্সেছ সেটাকে মনে হচ্ছে বেন প্রকাণ একটা রোঁরাগুরালা আদির অভিকার জানোরার, ভার কত-বিক্ত দেহ নিরে জনলে পড়ে আছে।

ইভিপূর্বে খন জনলের ভিতর বিরে হেঁটেছি, কিছ এ রক্ষ ভরাবহ ভারগার এতকণ বলে কাটানোর অভিন্ততা এই প্রথম। বলে আহি লোকালর থেকে বছ—বহু চুরে—প্রাচীন ভরগ্যের রাধধানে। চারদিক নিজর। চারদিক নীরদ্ধ—অর্থের আলো প্রবেশের পথ নেই। চ্রে কোথাও উঁচু গাছের ভালে যে এক টুকরো রোধ বেথা যাছে ভা অভকারকে আরও ভরাবহ ক'রে চ্লেছে, সেই আলোটুক্তেও বেন একটা ভৌভিক অবাভবভা। কি ভীরণ নিজরভা। সমভ বনভূমি থেকে বেন একটা অপার্থিব উরাধ সুর ধ্বনিত হছে। এক অরুভ অকুভি। মালুবের আবির্ভাবের বহু পূর্বে প্রকৃতি হভে এই বাটির বুকে আবির্ভাব ঘটেছে এই অরণ্য অগভের। এবানে কত বিচিত্র প্রাই বুগ্র্গান্তর বরে বাস ক'রে গেছে। আক ভাবের চিক্ত বেই, কিন্তু ভাবের স্পর্ণ এসে লাগছে গারে।

এক একটা গাছ কি দীর্ঘ। একটুবানি বৌজালোক, একটুবানি হাওয়া, আর আকাশের একটুবানি নীলিয়ার জঙে পরস্বরের উর্বের্থী প্রতিবোগিতা। এক দল লাবা দেবা দিতে তার উপরের ভরে আর এক দল লাবা বেরিরেছে। নীচের বক্ষিত লাবাদল ভকিবে গেছে আলোর অভাবে। সেই উপরের লাবাদলও প্রচুর রোদ পেরে পৃষ্ট হবার আগে, তাদের উপরে আর এক দল নতুন লাবা বেরিরে এনে তাদের বক্ষিত করেছে। এইভাবে লাবার পর লাবার প্রতিযোগিতা চালিরে গাছ ধ-ছ ক'রে বেছে গেছে বভুদ্ব বাড়তে পারে। এবন কেবল উপরের লাবাভলোই তার সহার, নীচের লাবারা কোন মর্গাদা পেল মা। তারা মরে বরে গেছে। গাছেরা প্রত্যেকেই বাঁচবার অবিকার দাবী করেছে পরস্বরের কাছে। তারা স্বাই মাবা ভূলেছে বঙ্দ্র আঁকালে—সেইবানে ভাদের ছুটে চলার প্রান্থসীয়ার আর কোনো প্রতিবিশ্বতা নেই।

নীচের বাশের হোট গাছওলো আলো থেকে বঞ্চিত বটে, কিছু মাটর রগ থেকে নর। বনম্পতিরাই পুর্যকে আড়াল ক'রে রেবে মাটকে একেবারে ভকিয়ে বেতে দের নি, ছোট গাছেরা ভবু এই টুকুতেই বৃষী হয়ে নিজ নিজ ভাগোর সদে একটা রকা করে নিয়েছে। অরণ্য-সমাজে স্বারই ছান আছে, অবচ কেট কারও উপর নির্ভরশীল নয়—একমাত্র পর-গাছা ছাড়া। কিন্তু ভাগের অবহা দেবলৈ বোধের নিতেবলা মুলার মতোই মনে হয়।

আর অরণ্য আশ্রের দিরেছে অগণিত কীবক্রকে। মাগ্রয়ও এক দিন অরণ্যেই ছিল, কিছু সেবান বেকে সরে এগেছে বীরে বীরে। অলগ কেটে বোলা আরগার ধর বাবতে শিবেছে, কিছু ছিংশ্র শণ্ড অলগেই ররে গেছে। ভালের রক্তপোতী ছিংশ্রভা সংখ্য ভারা মাগ্রয়কে ভর করে যেনন মাগ্রয় ভর করে ভালের। যে মাগ্রয়কে মধ্যে আজ্ঞ ক্তবের সলে লভাইরের মুংলাহ্সিক প্রবৃদ্ধি ররে গেছে ভালের পঞ্জে অরণ্য এক মহা আকর্ষণ। অরণ্যের মারার ভারা আছ্রে।

অশোকও তাদেরই দলে। সে সভ্যা-সকাল কীবনের মারা ভুক্ত ক'রে বন্দুক নিবে একা বেরিরে বাচ্ছে বচ্চ ভাতী বাবের দীলাভূবিতে। সভ্যা হলে তাকে কোনো বতেই বরে রাবা বার না। তবন তার বিতীর আন একট সভা থেনে থঠে। ধুব-চোবের চেহারা আত রক্ষ হরে বার। স্থাৎত ঠাটা ক'রে বলে, বাব না পেলে হয় তো আমানেরই গানে ভোৱা কেটে প্রলি চালাবে।

—এই বাবের রাজতে বসে এই কথাওলোই বেশী ক'রে মনে পড়ল।

আমাদের সদে কিছু কমলালের হিল—কোণায়ও বেরতে হলে লেরু সব সময়েই সদে পাঞ্চে—সেওলো বলে বলে সবাই মিলে পেলাম। আলেপালে কডকওলো ভাঙা ভকবো ভাল পড়ে আছে আর সেই সব ভালে একটার পর একটা ব্যাভের হাভা লাইন করে সাকানো। সেওলোও ভকিষে পেছে। তার মধ্যে একটা হিল বেশ বড়, বাচা হাভীর কানের মভো বেপভে—সেই আমরা কেটে নিলাম ব্যাভের হাভা-বিশারত গোপাল ভটাচার্থের হভে।

আমরা বে পাহারটার বসে আহি তার বিচে বিরে সঙীর্ণ একট নহীর চিহ্ন। এবন সে তত্র উপলবতের বেড পতাকা বুকে নিয়ে অরণ্যের সদে মুছবিরতি হাক্ষর করে পড়ে আছে। তার বুক এবন করা-পাতার আমর। বর্ণার আরগ্ধে তার সছিকাল কুরিয়ে বাবে। তবন নেমে আগবে উল্লভ মোতের অতি প্রবাধ বারা। তবন সে পাহার্ভ বেকে গাহপালা তেঙে প্রকাত এক একটা পাবরবতকে ঠেলে তেত্বের সর্কন করতে করতে নিচে মুটতে বাক্ষে। মৌতের সদে অভ বেগে মুটে চলবে গাহপালা আর পাবর। মুই তীরের সমন্ত গাহ্ ভরে কাঁপতে বাক্ষে। নিহরণ আগবে মাট-পাবরের অভরে।

গভীর অরণ্যে এই সব গুকুনো ছোট ছোট পাহাডিয়া
নগীর একট অবর্ণনীয় রূপ আছে। অওকারের ভিতর দিয়ে
ত্বু পাধা পথ। হুল নেই, প্রোভ নেই, ত্বু পাদা পাদা
পাণর। অপরিচিত হুর্পম অরণ্যের সধীর্ণ নদী লোকচকুর অভরালে সুকিরে আছে, তবু এর বোগাবোগ মহাসমুলের সদে।
ভাই এবানে বলে এর দিকে চাইলে এর সদে মন ছুটে যার
এর আকারীকা পথ বেরে বহিবিধের আলোকিত উর্ক্ত
আকালের নিচে। বর্ধায় অরণ্যের অভরে এসে এর মৃত্যুহুশ দেখবার উপায় নেই। তথন আকাশ থেকে অধিরায় বর্ধ।
মাধ্যের সাধ্য নেই ভবন এইবানে প্রবেশ করে। তথন
এবানে ছোঁকের রাজ্য।

পাহাছে এ রকম কত নদী। বর্ণার এবা **বাহ্যের** পৰে বে কি রকম বাধা স্ট করে ত। বোকা বার এ অঞ্জের যাবতীর পথে। পেবানে এই সব নদীর **আপাত পাত বুকের** উপর অগণিত সুষ্চ সেতু বাঁবতে হরেছে।

আমরা প্রায় আবদকী বিশ্রায় কয়দায় এবানে। মুখ অনেকটা প্রিয় হ'ল কিন্তু পাষের ব্যবা আরও বেড়েছে। কিছ শীতলাবাৰুর উংলাহ অল্যা। তন্তলোক আমানের বৃদ্ধী করতে অলান্ত পরিপ্রম করছেন। বলেন, "আমি বহি এবানে নুতন-আলা বাঙালী তন্তলোকদের একটু লাহার্য না করে তা হলে উরিঃ বে নিরুপার।" আকর্ষ মাহার। বলেন, "এবানে কোনো বাঙালী বহি আলেন আমার লাহায্য সর সমরেই পাবেন। কোনো ব্যবলা উপলক্ষে এলেও তাকে ম্বাসহর সাহায্য করন।" আমি ওবানকার প্রাকৃতিক চুত্ত বেবে একবার কবার কবার বলেছিলান এমন চনংকার প্রত্তিতি সিনেরাওয়ালার। এলে তালের কাহিনী নহতেই কমিরে ভূলতে পারেন। শীতলাবার্ তৎক্ষাং বললেন, "আপনি প্রভাব করন কোনো সিনেরা কোন্তানীর কাছে—আনি সব রক্ষে তালের সাহায্য করতে প্রস্তুত্ত আছিও আহি।"

কিছ এত সহাদরতা সংখ্য তিনি আমার অবস্থা টিক বুকতে পারছেন না, আমাকে এগে বিস্কৃতি তিনি হোবনই।
তিনি বারবার আমাকে বোকাতে চেষ্টা করণেন যে এত দূরে একে কিরে বাওরা উচিত হচ্ছে না। কিছ বিশ্রাম নেবার পরেও বর্ধন স্থানার মতিগতি কিরল না তর্ধন অগত্যা তিনি চুপ করলেন।

গুৰান খেকে রগুনা ছবে কিছু দূরে এগে চনংকার একটা পথ পাগুরা কোল। এটা সভাই পথ এবং সম্পূর্ণ সহচল। বীয়ে বীরে নীচের দিকে নেবে এসেছে। প্রথম থেকেই যদি এই পথের সভাম পেভাম ভা হলে আৰু রুদ দেখা কেট বছ করতে পায়ত না। আসবার বুবে ভূটরা হলি এই পথের কথাই বলেছিল, কিছ তথন শীতলাবাবু ভা গ্রাহ করেন নি।

কোনো কটই হচ্ছে না এ পথে কিবতে। অবর এ পথচূত্ ব্রুপথের আরম্ভ নার। এ পথে এগেও চারট পাহাডে ওঠার হার থেকে নিছতি পাওরা যেত না।

জকল পার হরে পথ অনেকথানি কাঁকা। একটা পাশে আসাম লভার খন কোশ। বছ গাছ এ দিকে বেশি নেই। মিনিট পঁচিশ এ পথে চলেই নদীর কলজনি শোনা পেল। পুরলাম কইবী নদীর কাছাকাছি এসে পড়েছি। সন্দেহ রইল মা যে আককের মভো ছর্জোগের সীমাররেখা ভেদ করে বেছিরে এসেটি।

আৰহা অলল-পৰ পার হবে নদীর বাবে বেল-লাইনের কাহাকাহি একটা বজীতে আগতেই আট-দলটা দেশী কুতুর বিভিন্ন বাজি খেকে আচমকা হুটে বেরিরে এল ই:-ইা ক'রে। তারা জিমির বাজে বাঁপিরে গড়ে আর কি। ব্যাপার বুবে অমেকগুলো লোক লাটি মিরে হুটে এগে জিমিকে ওদের মিবিদ্ন নীবা পার করিবে জিল। জিমি কিছু এমন ভাবে চলতে লাগল খেন কিছুই হয় নি।

৬ই ভিগেশ্য। আনৱা এগানে ক'লিনেই প্রায় কংলী হয়ে উঠেছি---কারণ আনাদের স্বার কানের পিঠে এবং নাগার আঁটুলি বরে গেছে। স্কালে বলে বলে আছু নাশিতের সাহায্যে সেওলো হাড়ামো গেল। কাল টক হছেছিল
আমবা সৰাই মিলে ভূটাৰ বাট দেবতে বাব এবং বাট পার
হয়ে ভূটানের কমিতে পরার্থন করব। জি ভাবে লেবানে
বাওরা বার ভাই আলোচনা কয়ছিলার।

আমরা বে টাকে এসেছিলার সেবানা ভিন তারিবে কিরে পেছে— সুনীল পোধার এবং লাল্ড নেই—এবন আমাদের ললে আহে কেবল বাছাগুর নামক নেপালী পাচক। ট্রাকের ললে বিচ্ছেদ হওয়াতে দ্বে যাওরা কটিন হরে উঠেছে, কিন্তু ভূটান-বাটে না গেপে এমণ-বৈচিত্রের একটা বড় অভাব বেকে যাবে এটা বড়ই ছুংবের বিষয়। রেডিও-সেট চপে যাওরায় বাইরের হুগতের সলে আখাদের বোগস্থ ছিন্ন, এমন অবস্থান চুপচাশ বপে থাকা অব্যতিকর। তাই কি করে ভূটান-খাটে যাওয়া যার পে এক সমস্যা হরে উঠল। কিন্তু ব্যবস্থা একটা হরে গেল। কইপ্রতিত একট বড় চ্বের কারবানা আছে। এই কারবানার মালিক বি, কে, রায় মহাশ্রের ট্রাক্থানা এক দিমের অলে পাওয়া যাবে— হঠাৎ এই ব্বেট শুনে আমাদের মানসিক বিমর্থতা ভূর হয়ে গেল সেই মুন্থতে ই।

আকই রঙনা হবার দিন—বেলা ঘশটার, কিছ রখনা হতে বেলা সাভে বারটা পার হয়ে গেল। আয়াদের সদে চ্ট ক্যামেরা ও চ্ট বন্ক—ও যুক্ত-খাত-ও-পানীর কমলা নেরু। ব্রলবোরার যে পরে নিরেছিলাম সেই পরেই চলেছি। রাষ্চাক নথী পর্যন্ত হৈতে হ'ল না, তার কিছু আবে মহান।পাছা নামক ছারলা থেকে ভূটান-খাটের পথ গোজা উত্তর দিকে চলে গেছে। লে পথ বৃবই ধারাণ। চ্যা ছানির মার্থাম দিরে উচ্নিচু এবভো-বেবছো পথ। পাছালারে বর্বার পোর্রর গাছির চাকা ক্রমানত কাদার মব্যে দিরে বাভারাতের কলে যে রক্ম গর্ত হরে বার এবং বর্বার পরে ভক্তিরে শশু মার্নির ছাত বেরিয়ে থাকে তেমনি। তার মব্যেও আবার পাহা ছিরা ছামির চড়াই-উত্রাই।

পথের ছ্বারে সর্থে কেত। হলদে হুলে নাঠের পর নাঠ
হাওরা। স্থাই উত্ত গছ। এই গছে একটা নাদকতা আছে।
বাল্যকালে এই গছের সদে হনিঠ পরিচয় হিল—হঠাৎ
আজ সেই প্রধাে পরিচিত গছে কি আনল যে হ'ল।
হুচোৰ তরে নাঠের চুক্ত দেবতে লাগলান। পিছনে হন নীল
পর্বতন্তেই, ত্রাসায় অব বিলীন। নীল আকালের গারে বঙ
বঙ বালা মেদ। তারই প্রভূমিতে এই স্থবিতীর্ণ হলুদ সর্ত্ত।
হুই বিপরীত বর্ণ পাশাপালি, তাতে হুটী রঙই উজ্লেভন হুমে
উঠেছে। সর্যে সুলের উপ্রস্তুর গছে মন অবলর হুমে এল।

মাঠের মাবে মাবে ক্ষাণদের ছ্-একধানা ক'রে চালাবর। পথের থেকে অপেকারত কারে, তিনধানা চালাবরের
একট উপনিবেশ। বরওলো অত্যন্ত জী--সব দিকে বেড়া
বিরে বেরাও নর। শীতকালেও এই খরে পোক বাস করে,
আকর্ব।





রারভাক নদীর অপর পাবে ভূটান পাহাড়ের দৃষ্ঠ



ভূচীৰ সীমানায় বাইবার বেয়।

আৰৱা এই বকৰ নেঠো পৰ প্ৰায় পাঁচ বাইল অভিকৰ্ম ক'বে ছটাৰ-বাটের বাংলোর কাছে বিশ্বে বাবলার। বাংলোট বেবলে ধুব চনংকার। কিছু বোলা জারগার নর। তার জিন বিকেই অরণ্য-একটা বিক নাম নদীর বিকে বোলা—কিছু তবু বাংলোর উপরতলার না উঠলে নদী দেবা বার না। এবানে বে পালবন দেবলার তার অবিকাংশই নৃত্য গাছের। করেন্ট বিভাগ বেকে অরণ্য-রক্ষার বিজ্ঞানসম্বত ব্যবহা করা হয়। কোন্ অনিতে কোন্ বছরে নৃত্য গাছ লাগানো হ'ল তা লেবা বাকে ক্ষির সকেই।

বাংলোর পৌছনোর কিছু আগে ট্রাকে বাবার সময় কললের মধ্যে কাশসূলের একট চমংকার দৃশ্য থেপে মুখ্য হরেছিলান। কলল ভেদ ক'রে বত দৃর চোব বার, কেবল শাদা আর শাদা গু আর তার উপর রোদ লেগে এমন উজ্ল হয়ে উঠেছে বে চোব বলসে বার। বাংলোর পৌছে যবন বুবলান দৃশ্যটি বেশি দৃরে নর, তবনই মনে হ'ল কেরবার পথে অরণ্য ভেদ ক'রে ঐ বেড ছবে একবার ভূষতে হবে। ক্যামেরার পঞ্চে এ এক অভিনব দৃশ্য।

আমরা টাক বেকে নেষেই উঁচুনিচু পথ পার হরে মধীর বারে গিরে পৌছলাম। বুরুপবোরার পথে বেবামে এই নদী বেরা-নৌকোর পার হরেছিলাম ভার ভুলনায় এবামকার প্রশন্ততা কিছু কম। ভবে এবানে নদীর মাববামে কোনো চর নেই। জলের হ্বারে অনেকবানি ক'রে বাস্কাপূর্ব ভীর-ভূমি। কলভাগের প্রশন্ততা পঞ্চাশ গরু হবে। ভান দিকে কিছু দূরে নদীবক্ষ বানিকটা ঢাপু, ভাতে স্রোভ সেইবানে গিরে নীতের দিকে সশবে ভেঙে পড়ছে। ওপারে ভূটামের করি।

নদীতীরের বালি আর পাধর পার হরে হবে আমরা বেরা-বাটে বিরে উপস্থিত হলার। নৌকো ওপারে ছিল, দেবে মনে হ'ল এপারে আসতে দেরি হবে। নদীর উঁচু পাড়ে বেবামে কলল পের হরে নীচু ক্ষিতে বালির চর আরম্ভ হরেছে লেই নীমান্ত-রেবা বরাবর কালের কোপ। আমরা ভার ভিতর হিরে গুরে হরে সব হেবাতে লাগলাম।

বাঁ দিকে ছুট বড় পাহাছের ভিতর দিবে নদী বেরিরে এনেছে। পাহাড়গুলার উপরিভাগ অনেক দূর পর্বত প্রায় একটানা সরান। কাবেই একনার নদীর অভেই এ দুঠ বেটুকু ভাগ লাগে। নদীপবে উদান বেরে মোকোর যাওগ সভব হলে হর তো এই আবহাওরা বেলী উপভোগ করা বেত।

আৰক্টা পৰে বেৱা-নোকো ওপার বেকে রওনা হ'ল।
ভার আগে এপার থেকেই দেখতে পাছিলাম মাঝি ভার
ভিতর থেকে জন হেঁচছে। অর্থাং সুটো নৌকো। ভার পর
নোকো ব্যন এ পারে এলে গেল ভার ভার চেহারা দেবে
বিভিত্ত হলার, ভয়ও হ'ল বেল। সে এক অত্ত নোকো,
আভ একটা শালকাঠ কুরে হুরে ভৈরি। বাংলাদেশে কোনো

কোনো ভারণার ভালগার ভূরে বেবন ভোঙা ভৈরি হর, ভেষনি। ভার বব্যে 'কিউ' ক'বে গাবে গাবে গানিবে ভন বনেক লোক হাভাতে পারে। একটু কাভ হলেই ভূবে বাবে।

সামস ক'বে উঠে পছলান এতেই। এত হলো লোকের চাপে নোকোর ক্যাগত অল উঠতে লাগল, আনাবের ভূতো তিকে গেল। নভাচভা নিবেব, তা হলেই নৌকোছুনি—সতর্ক করহিলান স্বাইকে—চূপচাপ হাভিত্রে থাক স্বাই নাথা ঠিক ক'বে, কিব তর্ নোকো তীবণ হলতে লাগল। বেবি আনিই কাঁণহি বেবী।

যা হোক, কোনো রক্ষে নিরে তো ভূটানের সীমানার পদার্পন করা গেল। একটা নত বহু হুংলাহনিক কাল করার উত্তেকনা কাগল স্বার খনে। কারণ মৌকো বদি ওবানে ভূবত, তা হলে প্রোতের টানে আমরা কোণার বে তেনে বেভান তার ঠিক নেই। একটু দুরেই কলপ্রণাভের ক্লত চালু প্রোভ বাভা নিচে নিরে ভেঙে পদহে—সে বিকে ভাকিরে ভাগাকে বন্যবাদ দিলান।

তীরভূমিতে আমাদের প্রবাদ কাল হ'ল নাবা রঙের পাধর-সংগ্রহ। তা দেশলে দিছে ইচ্ছা হবেই, বহন করা নাব্য হবে কিলা সে কথা তথন মনে আগবে না। প্রভ্যাকেই এত পাধর সংগ্রহ করণার বে একমান্ত সেওলোভেই ঐ নোকোধানা ভূবতে পারে। কেলে আগতে কট ইচ্ছিল ধ্বই, কারণ এমন চমংকার সব রং আর আকার যে সেওলো যেন কেট যত্ন ক'বে যথে ঘষে তৈরি ক'বে বেংগছে। শেষ পর্বছ পক্টেট বে ক'বত বরে, তাই নিয়েই বুলি থাক্তে হ'ল।

ধবি নেওয়ার দিক দিয়ে এবানে বিশেষ কিছুই বিল মা, তাই বাংলোর কিরে এসেই সুবাংত ও আমি দেই কাশবদের উদ্বেশ্ত রঙনা হলাম। ইটি পথে প্রায় আব মাইল আসতে হ'ল। কাছে এলে দেবি পেবানে প্রবেশের কোম পব নেই। বন কলন ভেদ ক'রে না গেলে কোনো দিক দিয়েই সেবানে বাওয়া বার মা। আমরা পর পর তিনট জারগার চেটা করলাম। সমস্ত পথে চুর্ভেড কাঁটা—আর মাক্ডসার কটন জাল। কাঁটা এবং জালে আটকা পড়ে তা থেকে যুক্তি পাওয়াই হ'ল এক বিষম দার। জাল এবন লক্ড বে সমস্ত গারে নাপের মত জড়িয়ে গেল। যত টানি, রবারের মতো বেড়ে বার এবং আঠার মতো এঁটে বরে। উপরন্ধ মাবা বেকে পা পর্যন্ধ শোরা-কলে ভাতি হয়ে গেছে।

এই কলগুলোর গাবে কাঁচী বাকার উদ্বেভ রাতে এরা আন্যের আশ্রেবে নানা আরণার বাহিত হরে বংশ বিভার করতে পারে। প্রকৃতি বেকে থরা এই বিবান পেরেছে বটে, কিছ প্রকৃতি বেকে নিয়মিত শশুপাবী বা নাছ্য ওদের্য কাছে সরবরাহ হয় বা। বলে হ'ল বছকাল গুয়া নিজেকের বিভার করবার স্থবার পার বি—ভাই হুট নিরীহ বাঙালী সভানকে পেরে ওয়া অতি উৎসাহে হাজারবাবেক বাঁপিরে প্রদ আবাবের গারে। এবন অবছাতেও আবি ঠেলেঠুলে নেই কাল্বনের প্রায় পদর হাতের মধ্যে বেতে পেরেছিলাম, কিছ প্রভাৱিত হলাব। প্রথমত, যত চুর সিরেছিলাম তার পরেও



শুইন্টাভে বুৱা মেশালী কাঠের ভোৱায় বসিয়া শাক ব'হিতেহে

কদল হিল, বিভীয়ত কালসুল হলো এত উচুতে মাধা ভূলেছে বে দূর বেকে ছবি না নিলে তার একটাও ক্যামেরায় বরা পদ্ধে না। ভূতীয়ত, কালবন আর এদিকের এই কদলের সার্থানে ভকনো নদীর অতি গভীর এক 'গর্জ'। কাকেই কোনো দিক দিরেই কোনো স্বিধা হ'ল না। বাধা হূল্জ্য— অভিযান বার্থ হ'ল।

আমরা পরতিনই কলকাভার কিরে বাব এই বকম কথা, ভাই অল বিনের অভে প্রবাসে এলে বা-কিছু বেথছি চারবিকে, ভাই সমস্ত মনপ্রাণ বিরে উপভোগ করছি। এত অভিনবর, এমন সঞ্জীব প্রথম সিন্ধ চুগুরাজি বাংলার মধ্যেই আছে, অথচ বাংলাধেশে বাস ক'রে এসব কোনো দিন দেখার প্রযোগ হর মা! থাস বাংলা থেকে এদেশের চুগু কত তকাং তা বোঝা বাবে এখানকার একট নারকেল গাছের ব্যাপারে। আমরা এবিকে এসে শালবন দেখে মুন্ধ হছি, কিছ এখানকার লোকেরা শীতলাবার্র বাভির অতি বত্বে রোণিত এবং পালিত একট নারকেল গাছ দেখে মুন্ধ হয়। কি ভ'রে পাহাত

অঞ্চল নামকেল গাহ জনালো বার সে কথা অনেকেই জানতে আলে।

আম্বা লাভে পাঁচটার লমর কিরে চলেছি। বাবার লমর বিত্তীর্থ লয়বে-ক্ষেত্রে বারে দেবলাম এক ক্রমক ইাভিত্রে আহে আমাদের দিকে চেরে। লায়িন্সের চরমতম মৃতি। লাবে বহু প্রনাে হেঁলা নােংরা একট কোট-প্রনে তেমনি নােংরা হেঁলা এক টুকরাে কাপড়। এই স্থার পটভূমিতে লেই দরিন্ত্র ক্রমকের বিষয় ধ্রথানি বছই করণ হয়ে ভ্টে উঠল। এই আমাদের বাংলাদেশের প্রকৃত রূপ। এই সমভ ভারত-বর্ষের রূপ। এবানে কোট কোট নিরক্ষর নিরীহ চাবী এমনি ছ্রবভার ভাঙা দরে ভাঙা হাছো বাল ক'রে লমভ দেশকে এবং বিজ্ঞানেক আর বােগাবার ভার প্রহণ করেছে।

লোকট বিশিতবৃষ্টতে চেরে রইল আমাধের দিকে। ভার চোবে আমরা কত আগ্যবান। আমরা গাড়িতে চড়ে মাটর ব্যব্দর বেকে সধত্বে নিক্ষের রক্ষা ক'বে চলেছি ওদের বুকের উপর দিয়ে। ভাই ওরা অবাক হয়ে ভব্ আমাদের দেবে, কাছে আগতে সাহস করে না।

কিছ ঐ যে দীনহীন মাছ্যট বৃচ্চের যত আমাদের দিকে চেরে আছে, ও কি কানে যে ও বাদের কৌললে জীবন-বারবের শ্যেতম প্ররোজন থেকেও বঞ্চিত হরে জীবনটা প্রায় শেষ ক'রে এনেছে আমরা তাদেরই স্বগোত্র ? হরতো জামে না। হরতো আরও কানে না যে ওর ঐ হতভাগা জীবনের বাইরেও বোলা আকাশের নীচে ঐ দিগন্তবিভূত ক্ষেত্রইকে বিরে ওর যেটুকু আনন্দ অবশিষ্ট আছে তাকেও আমরা ইর্ষা করি।

ও কত বঢ় শিল্পী—-সে কৰা স্বরণ ক'রে ওর প্রতি প্রভাব মাধা নত হ'ল।

সমত বিশ্বপ্রকৃতিকে আড়াল ক'বে ইছিবে রইল ঐ করণ বিষয় বৃতিটি। কিছুক্দবের কন্যে মনটা একটু ছয়ে গেল, ভারপর তুলে পেলায় ওকে। মনের মধ্যে কোনো কিছু ব্য়ে রাধবার সময় নেই। গাড়ী উচ্-নিচ্ প্রের উপর বেন লাকাতে লাকাতে চলেছে। সমন্ত সৌক্ষের তুর মনের মধ্যে হিছভির হয়ে বাচ্ছে। গাড়ীর এই অধির গভির সলে আনাবের জীবনের গতি একক্ষে বাবা, ভাই হয়তো কোন ছবিই মনের মধ্যে সম্পূর্ণ ছবি হয়ে ওঠে না।

--किंड वाक (म कवा।

সভ্যার আমরা কইডী বাংলোর পৌছে গেলাম। একটু পরেই অপোক একট সাহসী ছেলেকে সলে নিরে পাহাছে চলে গেল বাধের সন্থান নিতে। স্থবিত পাষাণের ভাক— সন্থা হলে ভাকে ঠেকানো হুংলাব্য।

ওয়া কিয়ে এল বন্ধা হুই পথে, এবং এসেই এক উডেকক ববর বিল। এক ভারণার একটা ব্রিণকে ক্রভ ব্রুটে বেভে বেবে গুৱা হাঁভিয়েছে, এমন সময় গুলের পাশ দিয়ে গাঁ গাঁ করতে করতে একটা বাদ বেরিয়ে গেল। সে ঐ হরিপকে অভ্নরণ করহিল, মাহুষের মধ্যহতা তার তাল লাগে নি, তাই একটু প্রতিবাদ জানিয়ে গেল। ছেলেট মহা উদ্ভেশিতভাবে তাদের এই রোমহুর্বক অভিজ্ঞতার কথা বর্ণনা করহিল এবং এমন চমংকারভাবে বলহিল যেন আমরা সেই বাষ্টকে লমুবে দেখহি।

৭ ডিলেছর। আকই আবাদের কেরবার কবা, কিছ আনোকের অপ্রোবে যাওরা ছবিত রাবতে হ'ল। অশোক এবং স্বাংড আক প্রার শেষরাত্রে জকলে বেরিরে গেছে, এবন সকাল আটিটা, এবনও কেরে নি। আমি বসে বসে এবানকার দৃষ্ঠ উপভোগ করিছে। মেবের লকে পর্বভচ্চার বেলা চলছে। নিশ্চল পর্বত মেবের শর্লে বিন কীবল্ত হরে উঠেছে। এই সময় এবানকার আবহাওয়া অভ্যন্ত আরামপ্রদ। আমি ছবল দেহ নিরে এসেহিলাম, কিছ করেক দিনের মব্যেই অনেকবানি পরিবর্তন লক্ষ্য করিছ। তবু তো এবানে বিপ্রামের অবকাল পাই নি বললেই হয়। এ রক্ষ প্রাকৃতিক দৃশ্ব মনের উপরেও ফ্রন্ত জিরা করে। আমার মতে বাংলাদেশের বাইরে না বিয়ে যদি কেউ স্বায়্যনের ক্রন্ত উন্নতি কামনা করেন ভাছলে তাঁর এই অঞ্চলে একবার আসা উচিত।

অশোক ও সুবাংও একটা হরিণ শিকার করে কিরে এপ সাড়ে আটটার। এবারে আরও একট অঙুভ ববর ওনলাম ওদের মুনে। বহুদ্র অল্পের একটা আরগার এক ভোড়া ভূতো পড়ে আছে, আর ভার পাশে এক বাঙিগ দভি। মাহুবের কোনো চিহ্ন বেই। ভূতো ভোড়া কোনো পাহাড়ীর পারের, সদ্য পরিভ্যক্ত নর। ওরা অক্সান করল অস্তত প্রর-হোল দিনের, কারণ ভূতোর নিচে উই ব্রেছে।

ধূৰই সন্দেশ্যনক ব্যাপার। আমরা সবাই মিলে শারদক হোমস্-এর রীভিতে একটা সিধান্তে পৌহনোর চেটা করতে লাগলাম ।—

কোনো লোক আক্ষেত্র দিনের দানী ভূতো ইছে ক'রে কেলে যার নি। ভূল ক'রে কেলে যাওরা আরও অসপ্তব, কারণ ভূতোর-অভ্যন্ত লোক ভূতো কেলে পাহাছিরা পথে থালি পারে হাঁইতে যাবে কেন ? নিশ্চর তাকে বাবে ধরেছে। কিছ প্রশ্ন এই যে তা হলে ভূতো ভোভা পালাপালি সাজান অবস্থার পড়ে থাকরে কেন ? বাবে বরলে ভূতো ওভাবে থাকতে পারে না। হরতো সে বাবের সাভা পেরে ভূতো খূলে আল্বরক্ষার অভে গারেই পালিয়ে বেভ। গাছে ওঠা বিলি টিক হয়, তা হলে সে সেবান থেকে গেল কোথার ? বাব গাছে উঠে তাকে থরে নি, কারণ বাবের পক্ষে গাছে ওঠা সম্বর্ধ নর। কিছ লোকট গাছে উঠে থাকলে গাছ থেকে যে নামে নি প্রবং বেমে থবে কিরে বার নি তার প্রমাণ



হগ ভিৱার

তার ক্তো। তা হলে এক এই হতে পারে বে লে গাছে থঠবার ব্বেই ধরা পড়েছে, আর না হর বধনই লে গাছ বেকে নীচে নারা নিয়াপদ বনে করেছে তথনই দেয়ে প্রাণভরে মুটে পালিয়ে গেছে ভ্তোর হারা ত্যাগ ক'রে। আর এক হতে পারে গাছে ওঠা সন্তেও গে আল্বকা করতে পারে নি, কোনো বছ হাতী ওঁড় দিরে তাকে নামিরে নিরে কোধারও মুঁড়ে কেলেছে। এ রক্ষম ঘটনা যে অগপ্তব নর তার প্রমাণ হরা ভিলেখরের সেই হুবটনা—হাতীর হাতে কুলির বৃত্য।

আমাদের চিন্তাবারা বে সব খ্রে অবলম্বন ক'রে এই সব সিহান্ত করছিল, তার সমস্তই এব একটা কিংবা অভটার অলুকুলে। তার কারণ কুতোর পাশে ক'দিন পূর্বেকার হাতীর পারের, এবং কাল কিংবা আলকের বাবের পারের চিহ্ন দেবতে পাথরা গেছে। কিন্তু বাই হোক এট বে একট ছ্বটনা সে বিষরে কোনো সম্বেচ্ট রইল না, এবং জুতোর মালিকের ছ্ভাগ্য শ্রণ ক'রে মনে আত্তর এবং ছংগ হ'ল।

এবানকার আকাশ বাতাদে এই কাতীর সব উত্তেশনা। হরতো এবানে আরও কিছু দিন বাস করণে আয়িও বাব ভিন্ন অভ কিছু ব্যাস করতে পারব না, কেননা এ ক'দিনে একট বাব না দেখেও বাব সবতে আমার কৌত্বল বেকে সিয়েছিল। আমরা বাকতে আলোক একাঞ্জমনে অফলের ভিতর সিরে বাসা বাঁবতে পারতে মা, মইলে এ দিকে



বাৰভাক নদীপারে ভূটান সীমানার যাইবার অন্তুত ধেয়া নৌকা বাবের উপস্থবের কথা বা ভনছি তাতে শিকারীর পক্ষে এত দিন লোকালরে থাকা প্রায় অসভব। আনরা থাকতেই ভিনার দূর অকলে ক্যান্স করার একটা প্রভাব উঠেছিল, কিছু তেবে ধেথা গেল তাতে আমাদের অকল-বালের অভিনব অভিক্রতা লাভ হলেও শিকারীর কোনো লাভ নেই। এ রক্ষ অবহার লাভ যদি কারও হয় তবে সে বাব-স্বাব্দের। হতরাং আনরা চলে যাবার পরই অললে নাচা বাবা হবে সেই রক্ষ বন্দোবভ হ'ল। অশোক একট বাব না বেরে এবার কিরবে না এই প্রতিক্রা এবং লে প্রতিক্রা নে রক্ষাও করেছে, পরে ভ্রেছি। (শিকারী ক্লাবের সভ্যাবের একটি করে বাব নারার অন্তর্যাত আছে)।

জনলে বলে বাবের ছবি ভোলা সম্পর্কে বোৰা দেল এই

বে উপর্ক্ত আহোজন বাকলে এবং তাগ্যে বাকলে কালট কটিন নৱ। উপরক্ত কানেরাবারীর বাহাট একটু তাল হওৱা বরকার। শীতকালে রাত কাটাতে হবে বাচার বলে, বিনা নিজ্ঞার, বিনা শকে। একাবিক রাত এই তাবে কাটানোর বতো উংলাহ বাকা চাই। কারব কবন যে বাবের ধেবা নিলবে তার হিরতা নেই। এতবারি সাহল, বৈর্গ, উংলাহ এবং নিঠা বাকলে তবে লাকল্য লাভের সন্তাবনা। তবে আমার পক্ষে বে এই লব সতে রাজি হওৱা সন্তব নয় তা আমি নিশ্চিত বুরতে পেরেছি।

কিছ বাবের সন্মূবে ক্যামেরা বোলার স্থবোর মা পেলেও অরণ্য প্রচ্পেকে উপজোর করেছি সমন্ত সন্তা দিরে। শহরের একবেরে পাকবাওয়া মনের সমন্ত পাক এবানে বুলে গেছে। এই ক'দিনের খৃতি আজীবন মনে বাকবে। অশোক আমাদের এবানে টেনে আনতে যে ভাবে প্রপুর করেছিল সেককে ভার প্রতি কৃতজ্ঞতা আমাই।

এই উপলক্ষ্যে এবানকার জীবনযাঞ্জাও দেখলাম। খন বসতি কোবায়ও নেই। প্রত্যেকেই এবানে কোনো না কোনো কাছ উপলক্ষ্যে এসে বর বেঁবেছে, কিছ বাব্য হছেই সবাইকে লুৱে পুরে বাকতে হয়। করেই আশিসের লোকদের ভো প্রার নির্বাসন বলসেই হয়। এবানে সমাজ্ঞহীবন বলে কিছু নেই, ছোট ছেলেছেরেদের ছড়ে খূলও নেই, খাকা সম্ভব বলের মনে হ'ল না। তরু এই অরণ্যছীবন এক দিক দিয়ে ভাল। চাকরি বা ব্যবসা উপলক্ষ্যে ভিটের মাহা ছেছে বাইরে যাওয়ার শিক্ষা সাধারণভাবে বাঙালীর নেই। সেই শিক্ষা বাঙালী পাছে এই অরণ্যপ্রবাসে।

৮ ডিসেম্বর। আকই বিকেলে আমরা কইডী ছেড়ে বাজি:। ছেড়ে বেতে ছঃব হচ্ছে কিছ উপায় নেই। অশোক একা ররে গেল, এবং ভার প্রতি মমত্ব বশভই ভাকে বাবের মুবে রেবে আমরা হৃদ্ধনে পূর্বধিনের ভূক্তাবশিষ্ট বলসানো ছরিণমাংলের প্রকাভ এক বোঝা নিমে কইছী বেকে বিদার নিলাম।

# हिरी

# **জী**রাণী চট্টোপাধ্যায়

আনার নশির পৃত ; আবর্জনা তরেছে প্রানণ ।— নেবানে বর্বণ এলো ; অতীতের বিস্থৃতির নিতা । নাবে তার এলোনেলো একবানি অর্থনি চিটি, পাঠারেছে ক্লাভ বড়ে প্লাভক বিনের সবিতা । হুৰ্ব্য পাঠারেছে লিপি। স্বষ্টতেকা ভাৱের হুপুরে অক্য নিরেছে ধুরে; অবাস্তর অগত্যা মনন। তবু পুত মন্দিরের আভিনার আমি প্রকারী চেরে চেরে সুট্টবীনা;—কি ছিল লেবানে নিমন্ত্রণ?

# প্রাচীন অমৃত বাজার পত্রিকা ও ভারতবর্ষের স্বাধীনতা

### वियारभम्ब वागम

٠

বাঙালী তথা ভারতবাসী পূর্ব্বে প্রচুর শক্তির অধিকারী ছিল। দৈহিক শক্তির চর্চা বাবা ইবা অব্যাহত রাধা হইত। ইংরেজ আমলে এই শক্তিনাধনার কেন্দ্রুলি লোপ পাইয়াছে। ফুশাসনের ফলে আমরা নিবীর্ব্য হইয়া পড়িয়াছি। বীর্ব্যান ভেনীয়ান জাতির পক্ষেই স্বাধীনভার গুরু দায়িজভার বহন করা সম্ভব। এই ছেতু পজিকা ক্রমশঃ জনগণকে শক্তি সাধনার উঘুদ্ধ করিয়া ভাহাদের আস্কুন্দ্রভার ফিরাইয়া আনিভে তৎপর হইলেন।

মৃণগমানসমাজ সম্পর্কিত করেকটি নিবছে এক দিকে বেমন সরকারী ও বেলরকারী ইংরেজ ছারা হিন্দু-মৃদলমানে ভেদফ্টির ক্র মিলিভেছে অন্ত দিকে তেমনি মৃদলমান-সমাজের বৈশিষ্টোর প্রতিও আমাদের দৃটি আকৃষ্ট করা হইয়াছে। মৃদলমানের ঐক্যবোধ অসাধারণ। এই ঐক্যবোধ সকল ভারতীরের মধ্যে অন্তপ্রবিষ্ট হইয়া ভাহাদের অধাগতির অবদান ঘটাইতে পারে। মৃদলমানের তেজ হিন্দুর বৃদ্ধি ছারা পরিচালিত হইলে এ অগতে উভয়ের পক্ষে অসাধ্য কিছুই থাকিবে না। ইহা বৃঝিয়াই বোধ হয় শাসক-জাতি ঐ সময় হইভেই তৃইয়ের মধ্যে ভেদবৈষম্য উজেক করিতে লাগিয়া য়য়। প্রায় শতাকী ব্যাপী এইরপ হীন প্রথাসের বিষময় পরিণতি আমাদের স্বাধীনতা লাভের প্রায়ালে আল ফ্লাই হইয়া দেখা দিয়াছে। প্রিকা মৃলেই উহা নই করিবার অন্ত মিলিত প্রচেটার প্রভাব করেন।

আমরা রাজনৈতিক দিক দিয়া পরাধীন হওয়য় শাসকজাতির অবাধ শোষণের ফলে আর্থিক হিসাবেও অস্কঃসারশৃত্য হইয়া পড়িয়াছি। কুয়ি, শিল্প, বাণিজ্য—আধুনিক
বিজ্ঞানসম্মত উপায়ে এই ডিনের উৎকর্ষ সাধন দারা আমরা
বুটিশের শোষণ-কাষ্য কিয়ৎ পরিমাণেও ব্যাহত করিতে
পারি। বাণিজ্য ব্যাপদেশে স্বাধীন জাতি ও দেশসমূহের
সংস্পর্শে আসিয়া স্বাধীনত। লাভের পথও কতকটা উন্মৃক্ত
করিয়া লওয়া যাইতে পারে। একারণ ভারতবাসীর পক্ষে
অবিয়ত রাজ্বারে চাক্রির জন্ত না খ্রিয়া স্বাধীন বৃত্তি
অবলম্বন করারও বিশেষ আবশ্যক হয়। ইহা আমাদের
উদ্ধারের অন্তত্ম প্রধান উপায়—পত্রিকা এই মর্মেও প্রস্তাব
লিখিয়াছিলেন।

কর্তৃপক্ষ রাজ্যশাসনের নামে ধে সব নীতি অবলঘন করিয়া ভারতবাসীদের দাবাইবা রাখিতে চান, শেষ পর্যন্ত হয় তাঁহারা বিক্লম জনমতের নিকট, নতুবা নিজেবের কর্মলালে জড়াইনা পড়িয়া প্রায় প্রত্যেকটিই বাভিল করিয়া দিতে বা উহার প্রয়োগজনিত ফলভোগ করিতে বাধ্য হন। পত্রিকা এরপ কয়েকটি ব্যাপারের উল্লেখ করিয়া জনমতের জয় খোবণা করেন।

#### ৰাভীৰ বেলা

আৰ কৰেক দিবৰ পৱে আমাদেৱ কাতীৰ বেলা উপস্থিত रहेरव । भूर्व वरमब रव इरण एव, अवावश्र महेवारमः स्वना रदेरव थिव रदेवारक। अ स्थानित केरमध्य भारतात यह, देशव উদেও টবর বেওরা নত, ইংার উবেও একট সম্প্রদার করা मत्र, देशांव हेटस्क चिंछ मस्र । अञ्चल अकड़े हेरनव कविवांव নিমিও যশোহরের একট পরিবার উবাদ হন, কিছু অর্থায় करवम अवर परमक करण अभग करवम, जनामगरबाध के जन्मर्स ভৰ্কবিভৰ্ক হয়, ক্ষমেক্ৰানি সাপ্তাহিক পঞ্জিলায় এবিষয় বিজ্ঞতি করা হয়, কিছ হয়ত ব্যাপারট যত বৃহৎ, ইহার উদ্যোগকারীরা ভত যোগ্য ছিলেন না, অথবা ভাঁহারা অসময়ে উল্যোগ করেন বলিয়া ইহাতে করেকজন বছ বছ লোককে ত্ৰতী করা ব্যতীত আর কোন বিষয়ে হুতকার্য হন না। वाश एडेक वर्धमान (मलात डेल्गान नुक्रमनत्नमू धनामार আবাবের এই অভিলাষ পূর্ণ হইয়াতে এবং ইছাতে ভাঁছাদের যেরণ বাছরিক বত্ন ও উৎসাহ, ভাছাতে ইহার উদ্বেপ্ত বে একদিন সৰুলভাৱ পরিণভ হইবে ভাহার কোন সবেহ নাই। কল এরণ গুরুতর বাহার উদ্দেশ্য, সেরণ উৎসাহে দেশ সবেত সকলের বোগ বেওরা নিভাভ কর্ডব্য ও প্রয়োজনীয়। বেলার এই তৃতীয় বংসৱ, কিন্তু একণ পৰ্যাত্ত কলিকাভাৱ কয়েকলম প্ৰধান ব্যক্তি ভিন্ন আৰু কেহ ইহাতে ভাবুক উৎসাহ কি বছ দেবার নাই। আমরা যেলার পিরা কোবার এভ লোকের সমাগম দেখিব যে গম্মাগমনের পথ পাইব না আর একণ কলিকাভায় একট সামাত ভাসাবে চিংপুরের রাভার যভ লোকের ভিড় হয়, ইহাতে ভাহাও হয় না।

ধেশে মৃত্য গব্ধর জেনারেল আইলে কমিয়ারণৰ ব্যত্তসমত হইরা কাজকর্ম পরিত্যাগ করিরা কলিকাতার বাবিত হন, ভিউকের † উপন্থিতকালে দেশসমেত বনী নির্মন বুর্থ পঞ্জিলকলে নগর পরিপূর্ণ করিলেন, কিছ কাতীর মেলা বে মেলার উদ্দেশ্য আয়াদের মৃত্যু দেশে পুনর্জীংন সঞ্চার করা, তাহা লইরা আবোদ আহলাদ করিতে কাছার শ্রুহা হর না। দেশীরগণ কি এটও মনে করেন নাবে, বেলাট আয়াদের নিজের ? এবানে আমরা কর্তৃত্ব করি, এবানে আমাদের সমাদর, আয়ারাই উচ্চ ও প্রধান আসনে উপবেশন করি। আর এবানে উপন্থিত, ইহাতে বোগ দিতে উাহাত্বের ওলাত। গ্রন্থর কেনারেলের আগ্রন্থনকালে কি সে ছিব্স ভিউক যবন

বাশুভোৰ দেবের বেলগেছিরা উদ্যানে ১৮৭০ সনের
১২ ও ১০ই কেজরারি ছাতীর বা হিন্দু মেলা অমুষ্ঠিত হয়।

<sup>†</sup> ভিটোরিয়া-পুত্র ডিউক অফ এভিনবরা ১৮৬৯, ২১এ ভিসেহর কলিকাভার পদার্গণ করেন।

আইসেন তবন রাজনুক্রবর্গণ কর্তৃক জাতি পঞ্চপাতিতা নিবছন আনাদের বেরূপ অপনানিত হইতে হয় তংকালে বেরূপ পদেং আপনারদিশের হ্রবহার কথা মনে উদয় করিয়া দের, সেরূপ এবানে হইবার কোন কারণই নাই।

বিনি কৰ্মণ্ড ভারভবর্ষে হীনাবছার ক্ৰা মনে করিয়া বেহনা পাইরাহেন, বিনি কৰন আপনারদিনের পূর্বপুরুষগণের বীর্বা পৌর্বের বিষর মনে করিয়া আপনারিগকে ভদ্বংপোর্ভ বলিতে লক্ষাবোৰ করিয়াছেন, বিনি কৰন বাবীন অবছার মব্রভা চিন্তা করিয়াছেন, বিনি কৰন বীররস পান করিয়াছেন, যিনি কৰন বীররস পান করিয়াছেন, যিনি কৰন বেছার ক্ষাভা দেবিরা চন্দ্র কল কেনিয়াছেন, অথবা যিনি আপনার সন্তান সন্তাভ পূথিবীতে উচ্চপরাক্ত হয় বাসনা করেম, বিনি আপনার বে কোন অহংকার, আশা ও বার্ধ চান ভাষার কর্ত্ব্য ইছাতে যোগ দেবলা। এ মেলাটতে বর্ম, অর্ধ, কাম, মোক আছে। বিনি যে উদ্দেশ্যেই ইছাতে বোগ দিবেন, ভাছারই মনসাম সিদ্ধ হইবার সপ্তাবনা। এ ( ১০ কেকেয়ারি ১৮৭০ )

### প্ৰক্ৰীস কিয়ার ও বাদালী

मञ्जादक इकर्ष स्टेए विवय कविया नर कर्ष्य वस कवा. স্মাৰ্কে কুংসিভ আচার ব্যবহার হইতে সংস্থার করিছা पर्यामक पवित्र ७ देवल प्राचीतल देखानम कहा, प्राचन নিৰ্মীৰ উভয়পুত মহুখ্যেৱে আন্মোৎসৰ্গ নিষিত উত্তেজনা করার ছুইট পূৰক পৰ আছে। এক ভাৰার দোৰ সমুদর ও তং-সভাবিত অনিষ্ঠ সমুদর ভীষণ ও কুংনিতরূপে ভাহার সমূৰে চিত্রিত করিয়। ছকর্ষের উপর ভাষার গাচ ও অবিচলিত রুণা উৎপাদন করা অধবা ভাষার অন্তবিহিত মহৎ গুণ সর্হরের পৌৰৰ করিয়া করিয়া ভাষাকে মহৎ বলিয়া বৰ্ণৰ করিয়া এবং ভাহা কর্তৃক কভ মহং কর্ম হইয়াহে ও হইবার সম্ভব ভংসমুদ্ধ তাহার জনদম বারা হুড়র্শ্বের প্রতি তাহার স্থুণা ও মহদিছার বলবতী করা। প্রায় সমাক সংকারক মাত্রেই ইহার এক না এক উপায় অবলম্বন করিয়া সমাজ হইতে ছকুর্ম সমুদ্র ভিরোধান করিবার ষত্ন পাইরাছেন। চৈভভের ও বীওর প্রতিষ্ঠিত বর্ষে এই হুইট লক্ষ্য লাইরপে লক্ষিত হয়। হৈতত বেল্প লোককে বলেন বে, বুবে "হরিনাম" বলিলে তাহাকে আর পাপের স্পর্শ করার সাধ্য থাকে না, যীগুও ভেষনি বলেন যে, মহুয় এরণ পাৰী যে ইখর অভুত্রহ ভিন্ন ভাহাথের পাপ হইতে নিভারের আর উপায়াভর নাই। এই চুট প্রতির দোৰ ৩৭ উত্তর আছে। চৈততের শিকাতে বহুয়কে পর্বিত করিরা ভূলে এবং বীশুর উপবেশে বহুত্তকে আর উঠিতে দের मा। তবে সমাজ সংখারের এই চুই পছতি অতি উৎক্র ও প্ৰহোগ করিতে জানিলে অপের বদলবারক। একণ আবাবের

 এই প্রদলে "ভাতীরভার নবয়য় বা হিন্দু য়েলার ইভিরভ" পুভকে ভাতীর য়েলার আছপুর্কিক বিবয়ঀ য়য়য়য়।

স্বাজ্যে ইহার কোন্ট উপবোষ ? আবাহের স্বাজ্যে প্রকৃতি বিচিত্র ও অভ্যন্ত **ঘটন। ইহা বও বঙ করিয়া হে**বন করিলেও ইহার সমুদ্ধ নিগুচ় ভত্ব বাহির করা কঠিন। ভবে একট আমরা অনারাদে বুকিতে পারি। আমাদের অনসমাজ শীবনপুত হুইৱা পভিষাহে। ধীৰ্কাল বিবেশীৰ ৱাজার পদ-তলে ছলিত হইৱা ইহার না আহে আছুগোঁৱৰ না আহে चारीमका मा चार्ट चररकांत्र। देशांत्र चात्र विवेशांत मिक ৰাই ও সে পাছাও ক্ৰমে নিৰ্মাণ হইৱা পঢ়িৱাছে, পুতরাং বিভাৱ দিয়া, কি হীনভাৱ চিত্ৰ সন্থুবে অভিত করিয়া আমাদেয় খুণার উত্তেক, কি আখুগোরবকে আখাত করিবার সময় আর ৰাই। বিনি এইরপে বদসমান্তকে ভুলিতে চান, ভিনি লাভের মধ্যে উহার শরীরে যে শোণিভটুকু আছে, ভাহা শোষণ করেন এবং উঠাইতে গিয়া বদসমাজ আরও হীনভার পভীর সমুস্তে নিক্ষেপ করেন। বৃষ্টিস কিরার এই ভ্রমে পভিষাদেন। ভাষার উদ্দেশ বহুং। আমাদের মুদ্দ করেন সেটও ভাঁহার আছরিক ইছা, তবে ভিনি বে পৰ অবলয়ন করিয়াহেন তাহা এমবুলক। বালালীকে গালি দেওৱা, ভাষার ধোষ ভিন্ন খণের প্রসদ না করা আক্কালি একরূপ ধ্রণা হইরা পভিরাতে, প্রভরাৎ আমাদের আর উহা ভনিবার প্ৰবৃত্তি নাই। বিশেষতঃ কৰন কৰন নীচাশহ ব্যক্তিগৰ ভঙ আমাদিগকে মনোবেদনা দেওয়ার নিমিত আমাদের দোষকীর্ত্তন করার তিরস্তার শুনিতে একণ কিছু বস্ত্রণাও বোব হয়, স্মতরাং কিয়ার সাহেবের উদ্দেশ্ত এত নিঃস্থার্থ ও মহৎ হইলেও তিনি বে আমাদের সকলের প্রির হইতে পারেন নাই সে আকর্যোর বিষয় নয়। কিয়ার সাহেব বেরুণ বোগ্য ব্যক্তি, তাঁছার এদেশের মদল করিবার যেরণ ক্ষমতা ও প্রযোগ আছে এবং দে বিষয়ে তাঁহার যতু বেরণ অকুত্রিয়, তাহাতে তাঁহার কোন উদ্বেচ্ছ সকল না হওৱার কারণ এই। ভিনি বলি প্রকৃতই আমাৰের মদল চাম, ভবে বালালী বুবকগণের অন্তৰ্নিহিত মহং श्रद्धि महम्दार केटलका करूम, जाशास्त्र अत्यद्ध श्रम्भा कृतिका छैरनार वृद्धि करून ७ क्छ मर्र काक छाराएव कर्डक সম্পাদিত হইয়াছে ও হইবার সভব, তংসমুদর বর্ণন করিয়া ভাষাৰের মুখ্যিকা বলবভী করুন। ভাষা হইলে ৰেখিবেন বাদালীরা কোন বিষয়ে অকম নন, ইংগারা ভূতজ্ঞতা ভানেন अवर वक कमनमांक कर्यां क्या (क्या नरह le ( e रव ১৮१० )

 বিচারণতি কিরার 'লোসাবেল সারাল এসোসিবেশবে'
একটি বক্ততার বর্তনান নিকা ব্যবহার নিকা করিতে নিরা
তংসকে নিকিত বাঙালীবেরও তং নিনা করেন। 'বিভূ পেট্রার্ট' ইহার সর্চিত উত্তর দেন। বীটন সোসাইটর
১৮৭০ সনের বার্চ বাসের অবিবেশনে কিরার সাহেব বক্ততা প্রসকে হিন্দু পেট্রারটের তীর নিকা করিবা পূর্ব্ব বতই
সমর্থন ভরিলেন। এই অবিবেশনে সভাপতি পারী
ক্ষমোহন বন্দ্যোপাব্যারও ভাঁহার মতের পোরক্তা করেন। बुजनमानविदर्गद विज्ञानिका ७ देश्निनमाम जन्नाकक

ৰে অৰথি নৱাৰম আৰহুলা বিচারপতি নৱন্যানের প্রাণনাপ করিবাবে, ত কেই হুইডেই বুসলমানগণের উপর আমানের কর্তু পক্ষের বিশেষ গৃষ্টি পতিবাছে। বোৰ হয়, ইহারারা ভাহারের উপলারও বাণিতে পারে। সকলেই ববে করিভেছেন, বুসলমানেরা তো বিভার অনানর করে না, বরং সালীনামা বিব্যাত পারত কবি কহিরাছেন, "বিদ্যোপার্জন ব্যতিরেকে ক্ষরতে জানা বার না" তবে কেন ভাহারা আপন আপন সভানগণকে বিদ্যালয়ে প্রেরণ করিতে এত আপত্তি করে ? এই প্ররের উভরে অনেকে অনেক কথা কহিতেছেন, ...।

ইংলিশম্যান পত্ৰিকার সম্পাদক বুসলমানদিসের ইংরেজী শিক্ষার প্রতি ঔষাস্য ভাষিতে পারিয়া বিগত ২৩বে অক্টোবরের পত্রিকাতে একট সুলীর্ঘ প্রভাব নিবিরা সে ওঁদান্তের নিরাকরণ চেষ্টা করিয়াছেন। তিনি কৰেন, আমরা বিশেষরণ দেবিলাম বুসলমানেরা আপনা হইতে এ পর্যন্ত উভ্যৱণ শিক্ষায়ত্র পাইল না। ভবিত্ততে পাইবে এমনও বোৰ হয় না। এয়ভাবয়ায় যাহাতে ভাহাছের মধ্যে বচল পরিমাণে বিভার প্রচার ক্ইভে পারে প্রপ্রেণ্ট ক্ইভে ভাষার বিহিত উপার করা অত্যাবঙ্ক। তিনি আরও বলেন, হিন্দু বা খন্তীৰান সম্পৰ্কীৰ বিভালৱেতে তাহাৱা আপন্ধি করে ভাহাদের সে আপতি নিভাত বুক্তিবিক্তম্ভ নহে: ইংলভেও গুটবর্শ্বের এক সম্প্রদারভুক্ত বালকেরা অভ সম্প্রদাক্তের বিভালরে বাইতে পারে না : অভিভাবকরণ ভাষাতে সম্মত নহেন। এমত স্থানে মুদ্দমানের। তঞ্জপ আপত্তি করিতে পারে। অভএব ভিনি প্রভাব করিয়াহেন যে, গবর্ণনেন্ট হুইতে এমত কভকওলি বিধ্যালয় খাপন করা হউক যাহাতে কেবল মুসলমান ভিয় क्षिण वा किविकि निक्षक कि बाज क्षेत्रिक व्हें एक शावित ना। সহযোগ বিবেচনা করেন, ভাষা হইলে বুসলমাদিগের সে আপত্তি থাকিবে না।

একণ বিবেচনা করা যাউক, সংযোগীর প্রভাব কতচ্ব কার্ব্যে পরিণত হইতে পারে। প্রথমতঃ কেবল মুসলমান নিক্ক থারা বিদ্যালরে কার্য্য সমানা করা যাইতে পারে এমন দিন এবনও উপস্থিত হয় নাই। ভালরপ ইংরেজী নিকা করিয়াছেন এমন মুসলমানের সংখ্যা নিভাভ আর; বে কর জন আহেন, ভাঁহারা উচ্চ উচ্চ পলে অভিবিক্ত আছেন, ভাঁহাদিগকে আমিরা এই কন নিক্কতা থার্ব্যে নির্ক্ত করিতে হইলে অবিক বেতন দিতে হইবে, মূর্তাগ্যবশতঃ আমাদের গবর্ণমেন্টের এই কন বিষয় অর্থকুলু উপস্থিত, এমন সমরে এই কার্য্যে এত

হিন্দু পেট বট ২ বে, ১৮৭০ ভারিবে একট দীর্ঘ প্রভাব লিখির।
বক্তা এবং সভাপতি উভরেরই যত বঙৰ করেব। কিবার
সাহেবের বভূতা ও এই সব আলোচনা উপলক্ষ্য করিবা
পঞ্জিবার এই নিবন্ধ লিখিত হয়।

আৰিক অৰ ব্যৱিত হইতে পাত্ৰিৰে কি মা, আমৱা বলিতে পাত্ৰি না। বিতীয়তঃ 'বলি অৰ্থের অন্তন্তন নপতঃ মহন্দ্ৰণীয় বৰ্ষের গোঁড়া বুলি নৌলবীনিগের হতে প্রভাবিত বিদ্যালয়- অলিঃ ভাৱাৰ্থন করা বার, তাহাতে ব্রিষ্টশ শাসনের বা পাক্তাত্য বিদ্যার প্রতি মুসলমানহিগের ভক্তি বৃত্তির সভাবনা নাই। তৃতীয়তঃ মুসলমানেরা এই ক্ল বাহা চাহিবে, গ্রন্থিত বহি বাব্য হইয়া তাহাই দিতে প্রস্তুত হন, ভবিয়তে তাহাদের দাবি আরও বাড়িতে বাড়িবে।…

গবর্ণমেন্ট কোন শ্রেণীয় প্রকার ঐতি বিশেষ অভ্যাহ প্রহর্ণন করিতে বাধ্য নহেন, বিশেষতঃ বুসলযান্দিরের শিক্ষার কোন রূপ প্রবিশ করিরা দিলে হিন্দুদিরের মনকট হইতে পারে; অপক্পাতিতাই গবর্ণমেন্টের সর্ব্যপ্রধান ৩৭ অত্যাব আবাদের বিবেচনার এই বিষয়ের তার গবর্ণমেন্টের উপর চাপাইয়া দেওরা অনাবক্তক এবং অভ্চিত। (১৯ ভিসেহর ১৮৭১)

### ওহাৰী ও বিট্ৰণ রাজ্য

---ওহাবী দল অনুষ্ঠ। কোৰায় ভাহাৱা আছে ও কোৰায় ৰে নাই ভাৰা কাছার জাশিবার সাধা নাই। যদি ভাজার হাতীর সাহেবের কথা সভ্য হর, ভবে ওহাবীরা ভারভবর্ষের প্রতি লোমকূপে প্রবেশ করিয়াছে ie এ দেশের জনসংখ্যার আট ভাবের এক ভাব মুসলমান, স্তরাং ভাহাদের নিগুল করাও সম্পূর্ণ অসম্ভব। আবার আর কাহার না হটক, देश्रावक्षिरात्र मुभगमान वाषील अक मृहुई हरन ना : अमन कि. প্ৰকৃত বদি তাহাৱা এক্য হইয়া সকলে সাহেবদিনের কাক-कर्ष बाकिश (पत्र, छटन देश्टबक्मिटमंत्र क (मट्न व्यवश्विक करा কটিন হইবা পছে। তাঁহাদের দেশ হইতে ভতা আনিয়া সাংসারিক কার্য্য নির্কাষ করা অসম্ভব। মুস্প্যানেরা থেখে बहेबन क्षरम् विरम्प्यणः देश्यत्राख्या जाशास्त्र बण विशेष আবার অনেক বিজ্ঞ লোকে অনুমান করেন যে, ভাহার৷ ক্রমে कद्य अक्षे च्यानक वृक्षात्रत रहे कविशाद । शिलाना बूद्धत नमन् अपम देश्याद्या अस्वीतित्रत विश्व अकाम नाहरमम्, কিছ ইহার অবেক পূর্ব্য হইতে ভাহারা থেলে আবিপত্য সংখাপন করিতে আরম্ভ করে। বর্বন সিভানার হয় হয় তর্বন ভাছারা এভ প্রবল হইরা উঠে যে, ইংরেইদিগের সংখ অস্ত ৰুদ্ধ ক্রিভেও সাহণী হয়। সিতানা বুদ্ধে তাহারা পরাত্ত হইল। ভাহারা দেবিল যে সপুর মুছে ইংরেজনিসের সঞ্চ পারা কটিন সুভরাং বুবে কান্ত দিয়া, গোপনে আবার বছবয় আর্ভ ক্রিল এবং আমীর বার মক্ষমারঃ সমুধর বিষয়গুলি

<sup>🌎 🔸</sup> ১৮৭১,২০লে লেক্টেম্ব ।

<sup>•</sup> ভাজার উইলিরম হান্টার প্রণিত Indian Musalmans পূত্রক প্রথম 'ওহাবী' আন্দোলনের ইতিবৃত্ত ক্রইব্য।

<sup>+ 3666</sup> 過算項 1

১৮৭০ সৰে কলিকাতা হাইকোর্টে এই যোক্ষমার
চূড়ান্ত বিচার হয়।

ৰবি সভ্য হয়, হাকীর সাহেব বাহা লিবিরাহেন ববি সভ্য হয়, তবে তাহারা নিঃশব্দে ক্রমে ক্রমে বেরপ থেশে বিভূত ও বর-ৰুল ব্টৱাতে ভাষা অনুস্ভাবনীয়। গ্ৰপ্ষেণ্ট ইয়া অবগভ হইয়া বে ইহাদিগকে শাসন করিবারও উভোগ করিলেন, আর বেশের इरेडे थ्याम राष्ट्रिक थान श्वारेश्यम । शृनिरीय मर्गा वाष-নৈতিক বছবল্ল ধৰণ বেৰানে ক্ইয়াছে, এক ছল্লে না এক ছল্লে প্রকাশ হইরা পভিয়াছে, কিছ ওছাবী বছবল্লের অভিছের প্ৰমাণ আমৱা পৰে পৰে পাইতেছি অৰচ উহা ধরিবার বো मारे। अरे यक्ष्यद्वत अक्षे विषय एपिया चामवा चवाक सरे। দৃচ প্ৰতিজ্ঞ সৰল গাহসী ধৰ্মোমত, অকাতৱে প্ৰাণ দিবে অৰচ किहू बेकान कविरव मा अवन लाक अक रकाहेव मर्या अक হুদ পাওয়া কঠিব। এয়প গোক অহুসভান করিয়া বাহিয় क्वा (क्थन बनाया नरर, किंद बन्ननदास अवर्ष रहेरन छारा धकाम ना रहेवा याव ना । आयारमव वायनुक्रविशत सम्बठा বিশ্বর সংখ্য ইহার মিগুচ কারণ ভাহারা বাহির করিতে गांबिलम मा। (व वक्वज अक्षण लाक वांबा एडे वांचा क्षमा इटक्ट बहुई, याशव श्रद्धि अक्षण बट्डा, अवर याश मस्रवण: ভারতবর্বের প্রতি লোমকূপে প্রবেশ করিয়াছে, তাহা শাসন हाता एवम करा मण्पूर्व अमस्य । कारश्चन बात्रहेम वरमम स्थ ৰাইন সহতে কিছু পরিবর্ত ন করিলে উহারা অহুগত হইতে गात्व, किन काले (१) जारहर यूजनवामिनरक कित्वम ना। তাহারা এরণ সামাভ সুবিধার সভ্যা করে না, ইহাতে হিন্দু প্ৰভাৱা সম্বষ্ট হইতে পাৱে। কোন পাৰিব সূব যে ওহাবী-দিবের বড়যন্তের উদ্বেশ্ত, ভাহা আমরা বিখাস করি না। মুসল-নালেরা ভারি ইঞ্জিমপরায়ণ, বর্গ কুব ভাষাধের ইঞ্জিয়ক্তবের শ্রাকার্চা, ভারারা ইংরেজী অভ্যাস করে না। কোরানে চাহাদের অবচ্চিত বিশাস এবং শুদ্ধ কাফের হত্যা করিলে বৈশেষতঃ উচ্চ পদত্ব কাকেরকে যাহারা হত্যা করিবে তাহারা হর্ন পুৰ ভত অধিক ভোগ করিবে এই তাহাদের বিধান। চাহারা এক একট হত্যাকে অবস্ত প্রথের হার বিবেচনা করে হুভরাং কোনরূপ শাসন ভাহারা লক্ষ্য করে না। প্রভ্যুত বস্থাহের ভার শাসনেও ভাহাদিগকে আরও অধিক প্রতিজ্ঞা-ষ্ক্র ও উৎসাহী করিতে পারে। (২৫ এপ্রিল ১৮৭২)

### বিজ্ঞান চৰ্চা

আমরা কলিকাতা গেকেটে বেবিলাম ক্যাবেল সাহেব ইংলও কৃইতে চুইজন পভিত আনরন করিতেবেন। ইংবারা বিজ্ঞান পালে শিক্ষা প্রধান করিবেন। — ক্যাবেল সাহেব এ বিকে আমাবের পারীরিক ব্যারাম শিক্ষা দিরা আমাবিগকে মন্ত্রপ বলিঠ বৃদ্ধি ও কর্মঠ করিবার উভোগ করিতেবেন, নাবার ওবিকে বহি বিজ্ঞান পালের শিক্ষা বারা অগতের নিহিত রম্বরাশি আমানের আরম্ভ করিরা বেদ তবে বে একনিদ ইংগও, আনেরিকা, ক্রান প্রভৃতির কর পতাকার সকে ভারতবর্বের পতাকা উচ্চীন হইবে ভাহা অনারানে আশা করা বাইতে পারে।

০০ বংসর পূর্ব্বে বাদালীয়া এত মুর্ব্বল ছিল না, য়ভপাত বেবিলে ভাষাদের মূর্ক্স হইত না, শত্রুর নাম ভনিলে আভর উপছিত হইত না, প্রারে ২ ব্যায়ার চর্চার ছান ছিল, প্রারে ২ এক একলন বিব্যাত সর্বার ছিল, ভত্রনোকেরা পালোরাম আব্যা প্রহণ করিতে লক্ষিত হইতেন না। কথার কথার লাঠালাট্ট হইত ও মাবা ভালাভালি এবং হতপদ অস্তারাত বারা কত বিক্ষত হওরা লোকের নিক্ট তত হক্ষতর বিষয় বলিয়া বাবে হইত না। প্রতিরাত্রে তক্ষ অভ্যান সকলে একত্রিত হইরা লাট্টি, তরবার, বল্লম প্রভৃতি বেলা নিবিত। দশ কম একত্রিত হইলা লাটি, তরবার, বল্লম প্রভৃতি বেলা নিবিত। দশ কম একত্রিত হইলা লাটি তরবার, বল্লম প্রভৃতি বেলা বির্মান বাক্ষম বাক্ষিত, বালীয় একজন না একজন লাটি তলোয়ার বা বল্লম বেলিতে আনিতেন। ইংরেজদিলের কঠোর শাসনে এদেশের সে ভার অর্থিত হইরাছে কিছ তর্ধন সমালে যে কাবনীশক্তি ছিল সেটা সেই সঙ্গে সঙ্গে সিরাছে।

ৰহুদ্ৰের মন নিৰুৰ্দ্ধে থাকিন্তে পারে না। এট পিয়া ভাষার ছলে যিব্যা, জাল, যকর্ষযা, অবর্দ্ম প্রভৃতি ছুঙ্গ্ম সমাজে व्यदन कविवाद । क्वांवाव देश्यकी निकाब छछ। क्राय (श्राम -প্ৰাছ্ৰ্ভাৰ হইৱাছে। ইহাতে দেশের বিশুর মঙ্গল সম্পাদিত হইয়াছে কিন্ত ইহার সঙ্গে আবার বিষ উৎপত্তিও হইয়াছে। বালালীয় মুবকেরা অসীয় বুদ্ধি শক্তি সম্পন্ন। ইংবেজী শিক্ষা এ পৰ্যন্ত যে প্ৰশাসীতে প্ৰদৰ্শিত হইয়াছে তাহাতে ভাহাদের मत्म माना ভাবের चहुबक्या द्वाशिष्ठ स्वेशारम्, चयह किवार উহা কাৰ্ব্যে পরিণত করা যায় ভাষার কোন উপদেশ ভাষারা প্রাপ্ত হর নাই। তাহারা এইরণে ভাব আকাশে ক্রমণঃ উচ্চীদ হইয়া শেষে অকৃল ৱাজ্যে প্ৰবিষ্ট হইছেছে। ভাষাদের ৰভিক বুরিয়া বাইভেছে। চারিদিকে নিরাশ र्एबिरफरक, एकाम एरेरफरक बनर बरेकरण मरमारत करम माखिक्छ। धारम कविराधा । कार्यम नार्य यपि विकास চৰ্চা কাৰ্ব্যে পৱিণত কৱিতে পাৱেন, বদি ইহাতে ডিনি আমাদের রস উৎীপন করিতে পারেন তবে একট বিশেষ यक्ष स्टेर्स । ( ६ डिटमस्य ১৮१२ )

#### আৰাবের হুবর শাই

াহা দীবর । আনরা এই করেক সহত্র বংসর পর্যন্ত পুরুষ পুরুষাত্মকরে রিপু করন করিরা আসিতেরি, এবন আনাদের ভাষার কল ভোগ করিতে হইতেহে। ভূমি রূপা করিরা আনাদের লে অপরাধ নার্কনা কর, করিরা আনাদের রিপুখলি আনাদের প্রভাপন কর। আনাদের ভাষ, ক্রোব, লোভ, নোহ, নব, নাংসর্ব্য প্রবল করিরা দেও বে আবরা প্রকট্ট সভীব হই।

বছলাট লর্ড বেও ও ক্লিকাভা হাইকোর্টের প্রধান বিচারপতি বর্ত্যান।

আৰৱা বৃতপ্ৰাৱ, আনাদের কিছুতেই লাব নাই, আনাদের নাৰগুলি একটু উড়েজিত করিরাবেও। একটু বেশী কান, একটু বেশী কোব, একটু বেশী লোভ ইত্যাদি হইলেই আনাদের তন্ত্র, নতুবা আনাদের তন্ত্র নাই। (৫ ডিসেম্বর ১৮৭২)

### ইংরেছদিগের কীর্ছি

रेश्टबक्बा चावित्रिमीत बूटक श्रदेश एकामाव बाका ছারধার করিরা আইসেন। আবিসিনিরার রাজা বিওভার অভি সুণুথলপূর্বাক রাজ্য সংস্থাপন করেন। পূর্বো সেধানে যে সৰুদ্ধ আত্মকলহ বিবাদ বিসভাদ ছিল ভাহা সমুদ্ধ দুর করিয়া সমুদর রাজ্যে ভিনি শান্তি সংস্থাপন করেন। দেশে বাণিজ্য ও ব্যবসায়ের আবিভাব হয়। সকলেই ভাবে ৰচ্ছকে ছিল এমন সময় ইংরেকেরা সেধানে গিয়া সমুদর উচ্ছিন্ন দিয়া আইপেন। আবিসিনিরা ইংরেকেরা এহণ করিলেন না, সেধানে যে অনিষ্ট করিলেন ভাহার কিছুমাত্র ভতিপুরণ করিলেন না, যে অর্থবায় পঞ্চিল ভাহার কভক আমাদের খতে অপিত হইল, এবং বুছাএগণ্য ইংৱেজজাতির বীরত্ প্রকাশ পাইল। আবার সুসাই মুদ্ধে ইংরেজেরা আর এক চিরশ্রবীর কীর্ত্তি সংস্থাপন করিলেন। এই বৃহট করা কর্তব্য ছিল কিনা সে বিষয় লইয়া ভৰ্ক করার সময় সিয়াছে, কিছ সেখানে বে অভ্যাচার হইরাছে, ভাষাতে ইংরেছ ছাভিকে চিরকগভিত ক্রিবে। আমরা প্রথমেন্টের প্রকাশিত কাগকপত্তে দেবিভেছি যে সৈৰগণের নিঠুৱাচরণে শত শত এাম উচ্ছিন্ন সিরাছে, শত শত গৃহ সমভূষ হইরাছে। ধলেন নামক একবানি প্রায়ে এক সহত্র-লোকের বস্তি ছিল, সেধানে এক শত লোকের অধিক এবন আর নাই, সর্দয় নিপাত হইয়াছে। কোৰায় ৰুতদেহ বাশি বাশি পভিয়া ৱহিবাহে, তাহাদের সমাৰি জিয়াও হয় নাই। অনেক গ্রাহে এখন অল্লাভাবে লোক ম্রিভেছে। ঢাকার কমিশনার ভাহাদের হরবস্থার কথা ওনিয়া সেধানে ২০ হাজার মণ বাভ পাঠাইবার অভুমতি করিরাছেন। দুসাইরা বছ পঞ্জ সমান এবং ভাহাদের সঙ্গে ইংরেছের ভার উন্নত ভাতিই বুড করা গ্লানির বিষয়। তাহার উপর আবার এইরূপ নির্বাচরণ। আবার ইংরেজেরা যে প্রামে বৰন প্ৰবেশ করিয়াছে, তথন হয় ভাহারা পরবাগত হইয়াছে, নয় দেশ হাছিয়া পলায়ন করিয়াহে এবং ভাছাদের উপর অভ্যাচার করা কিন্তুপ নিঠ,রভার কাজ। কেবল ইছাও নর याशावा देश्टबक्षिरंगव मिळ जाशारमव छैनवं मिर्वृदाहतन कवा হইরাছে, ইংরেজেরা এইরূপ কার্য্য করিরা ভাষাদের ভার পদাৰত কাতির বিকটই বেন লক্ষিত না হইতে পারেন, কিছ অভাত উচ্চ শ্ৰেণীয় ভাতিরা ভাহাদের বিষয় কি মনে করিবেন। তাঁহারা আমেলিকান, করাসীস, প্রসিরান ও প্রসিরানদিগের नरिए बूद कविया यदि नवाकिए एन छवू छाराए यन चाहि. কিছ কাহাড়বাদী বছ কাভির সদে বুছ করিয়া সহস্রবায় क्रमाक क्रिलिश क्रमप्रशास जारदवेश रहेएक शास्त्रम ना ।... ( ७ (क्यांति ১৮१७ )

### अन्य विदेशिय और मूच एक।

#### MINICON BUILDE BOILS

··· উচ্চ বেডবের রাজকার্ব্যে ইংরেজের। নির্ভ হইরা আমাৰের দেশ হইতে অভি সামাত চাকা লইরা বান। গ্ৰণ্যেন্ট হোষচাৰ্জ বলিৱাও বিভৱ চীকা খেলে গ্ৰেৱণ কৱেন না। ইংলও কেবল আমাদের দেশে বাণিজ্য ব্যবসায় ছারা অসীৰ বনশালী ভইৱাছেন। আৰৱা ইচ্ছা ও বছ করিলে বাণিক্য ব্যবসায় দারা ইংলভে যে বনম্রোভ প্রবাহিত হইতেছে ভাছার বেগ কমাইভে পারি। এ দেশে যদি চিনি, সোরা প্ৰভৃতি পৰিষ্ণুত হয়, এ দেশে বদি বছাদি প্ৰভুত হয় ভাহা ষ্ইলে আমাধের দেশের বিশুর চীকা আমাদের থাকে। আবার আমরা ভুলা, পাট প্রভৃতি ভিন্ন থেশে রপ্তামি করিয়া লাভ করিতে পারি। তাহা হইলে কৃষি ব্যবদায়ীগণ ক্ষেত্রে কাজ করিয়া যেক্সপ অর্থোপার্জন করিতে পারে কেইল্লপ মৰাবৰ্ডী লোকে কাৱৰানা ও ব্যবসায় বাণিছা ছালা অৰ্থোপাৰ্জন করিতে পারেন, ভাষা ক্রণে আমাদের বিভাগ व्यक्तांक्मीय अत्याव निविध चाव देश्टबक्वित्रय बुवार्ट्यकी रहेट रव ना, जानारमत हेश्टबक्मिरनेत राउँटिंग कर्यकाक कवित्रा क्याद क्याद क्याव क्यावलक विवाद प्रिटल हर ना, देश्टबर्ट्स সংখ্যা দিন দিন এ দেশ হইতে কমিয়া যায় ও সেই সঙ্গে সলে দেশের অভ্যাচারও কমে এবং আমরা একটু স্কৃতির সহিত বেড়াইতে পারি। ইংরেন্দেরা ভারতবর্ব কঠোর শাসন হারা আর দাসভুশুখনে চিয়কাল আবন্ধ রাধিবার বন্ধ करवय ना । देशरवक्षिरमञ्ज निर्द्धव चार्च क्यिवा (भरत अवर ভাবের উদর হয় এবং তাহা হইলে আমাদের প্রকৃত উর্লিডর প্রতি ভাঁহাদের বছ হয়। আমাদের বন র্ছি হইলে ভাঁহাদের নিকট আমাদের সন্থানও বৃদ্ধি হয়। আমরা তাঁহাদের নিকট চাক্ষির প্রার্থনা না ক্ষিলে আমাধিগকে তাঁখারা আর চাক্র ভাবেন না। আবার যদি ঈশ্বর ইচ্ছায় আমাদের কারবারের গ্ৰীবৃদ্ধি হয়, ভাহা হইলে আমৱা ইংৱেক চাকৱও ৱাৰিভে পারি। আমরা ইংলভে যাইয়া কাগক, চামড়া, চিনি, সোরা প্রভৃতি চালান দিতে পারি এবং সর্দয় বা হউক আবার দেশের অর্থ কিরং পরিমাণ দেশে আনিতে পারি। ইংরেন্ডেরা দুঠণাট অভ্যাচার প্রভৃতি দারা দেশে বিভর টাকা লইরা গিয়াছেন এবং ভাছাত্র সহস্রাংশের একাংশ যদি আমরা আবার দেশে আনিতে পারি ভাছা হইলে আমাধের সকল হঃব দুর इष्ट। वाजाजीता कादबाना बुजित्म देश्टात्का मस्रवरणः এবানে আসিহা আবার কারবানা আরম্ভ করিবেন। তাহাতেও स्मान विश्वत केतिक क्रेरिय .-- देश्माकत विश्वत यम अवारम चानितः चात्र अकड़े উপकात रहेरात भक्षावना, रावनात বাণিজ্যের নিমিন্ত ইউরোপের ও আধেরিকার অনেক সভ্য কাভির সঙ্গে আমাদের আগ্নীরতা হইলে আমরা ইংরেক ও অভাত উন্নত জাতির সহায়ে ক্রমে উদার পাইতে পারিব। ( 8 (नर्टिश्व ১৮१७ )

#### মুসলমান ও বালালী

গত জনসংখ্যার ধারা প্রকাশিত ক্রীয়াছে বে, বালাগার বুললহান অবিবাসীর সংখ্যা হিন্দু অপেকা বিভয় অবিক :

और बूजनवारनदा जिद्य-रामनाजी नन, दैशांचा देशस्य विक কি কৰ্মচানীদিগের ভার কিছু দিন এবানে অবহিতি ক্ষিত্ৰা অভন্ত প্ৰথম ক্ষেত্ৰ বা। ইতাৰের পুত্, সম্পতি, जहात, जाजीत, वजु, वाकव, जबूबत अरहरण। देशांवा अवारम व्यवश्य कृतिया अवारमहे यामवनीना जरवत्रय कृत्यमः। अव ইছা নতে। ইছারা হিন্দু স্মাজের মুজাগত হইরাছেন। এদেশীর বভ শ্রেণীর লোক আছে সকল শ্রেণীভেই সুসলযান প্ৰবিষ্ট হইৱাছেন, এ বেশে মহামাত্ৰী উপস্থিত হইলে, ভাঁহাৱা আমাদের ভার ক্তিএভ হ্ম, বিপ্লব হইলে আমাদের ভার বিপদে পড়েন। এদেশের উন্নতি হইলে সেই সঙ্গে ইহারাও উন্নত হন, পুতরাং সংখ্যা অসুসারে যদি গণনা করা যায় তবে বাছালা হিন্দু কি বুসলবাদদিশের দেশ সে বিষয় সাব্যস্ত করা क्रीम । जार ब राम रा प्रेजाइत्तरे बरा प्रेजाइत्रे ब रामन উন্নতি অবনতির সঙ্গে কৃতি বৃদ্ধি হয় ভাষার কোন সংক্ষ ৰাই। এই নিষিত্ব বেশের উর্ভি করিতে বইলে বে উভয় মুললমান ও বালালীয় ঐক্য হওয়া কর্ডব্য লে বিষয় বলা राष्ट्रण ।

পূৰ্বে মুসলমান ও বালালীয় অবহায় যত ভারতম্য বাকুক, এক্ষণ আমহা সকলেই পহাধীন, সকলেই সমাম ভূৱবছাপর। বৰন বুণল্যান্দিণের সুবের সময় ছিল, তবন ভাছারা আমা-দিগকে স্থা ও ভাছিল্য করিতেন, আহরাও তাঁহাদিগকে ইবা ও বেৰ করিতান, কিন্তু এবন তাঁহারাও দাস আমরাও দাস. বে পৃথলে ভাঁহাদের হন্ত আবদ্ধ আছে আমাদের হন্ত সেই পুথলে আৰম্ভ বহিরাহে, বে বেজের আঘাত বারা আমাদের পুঠের চর্ম থও থও করা হয়, তাহারাও সেই বেত্রাঘাতে রক্তাক কলেবর হন, আমরাও বে ইংরেছদের নিকট কল্পিড क्रानव बहेबा क्रावार्क प्रशासभाव महे. छारारवार रामारव দেই অবহাণর হইতে হয়, স্তরাং পূর্বে অনৈক্যের যে কারণ हिन अक् बाद छाए। नारे. मुशनमारमदा बामाधिनरक पुना करबन, काशायब अवन रम प्रविद्य पिन चाद गारे, अष्ट्राष्ट्र विष्टा বুছির উন্নতির বারা বিশু বালালীর। অনেক উন্নত স্ইয়াছেন। একৰ মুসলমানেৱা আমাধিগকৈ ছুৰা করেন না, আমাধিগকৈ বছু ও আহর করেন, আহরা উাহাদের সঙ্গে খিশিতে গেলে ভাছারা আদরপূর্বক আমাদিগকে গ্রহণ করেন।

বাদালীরা দীর্ঘকাল হইতে দাস, হুসলয়ানেরা এক শত বংসরের কিছু অধিক পরাধীন হইরাছেন। বাদালীরা নিরীছ, সহিষ্ঠু, তেজহীন, আবার হুসলমানেরা উঞ্জ, অহংকারী, অতিয়ানী এবং তেজীয়ান। স্থতরাং অবস্থা অবস্তির নিমিন্ত আমরা যত কট পাই, ইহারা সভবতঃ তাহার সহস্র গুণ কট সন্থ করেন। যুসলমানদিশের একট বিশেষ গুণ আছে এবং কেবল এই গুণটি না থাকার আমাদের হুর্জনা। ইহারা ঐক্য হইতে জানেন, ইহাদের অধ্যবসার, উংসাহ, জীবন আছে, ইহারা বে কোন কাজে আগ্রহের সলে প্রবেশ ক্রিতে পারেন

এবং এবিট হইবা নিঃবার্থ ভাবে এবং কভি বীকার করিবা ভাষা সমাধা কৰিবার বহু করেব। নীল বিজ্ঞোকের প্রধান व्यवर्षक वृत्रज्ञान व्यक्षाता । चट्टक व्यक्तिक्षेत्र कार्याक्षरक श्यम कश्चित्रा मील बुनारेबात्र निविष्ठ कांडेरक विद्या जनाशास्त ৱাৰিৱাছিলেন। অনেক কৃটিৱালগৰ ভাহাছিগকে বংপৱোমাছি कडे विदाहित्वम, किन्न छाहाचा मीम व्निटर मा त्व वृष्ट প্রতিজ্ঞা করে ভাষা কোন মডেই পরিভ্যাপ করিয়াছিল ना । अहे नमह अकविन लिक्टिनिक नेवन्द्रक स्वीकारवारन গোড়ই নদী দিয়া গ্ৰন ক্রিভেছিলেন। বাবে অসংব্য প্রজা উচ্চৈ:ববে মীলের অভ্যাচার হইতে রক্ষা পাইবার নিষিত্ত ভাঁহার নিকট প্রার্থনা করে। ভিনি ইহাতে কর্ণণাভ না করিবা গখন করিতে বাকেন। প্রভাৱা গবর্ণৱের ভাছিল্য দেবিয়া ভলে বস্প প্রচান করিল। গোড়ই নদী ভয়ানক, ভাহার প্রোভের বেগে ষ্টাৰার দ্বির ভাবে পর্য করিতে পারে না, আবার কুডীরে পরিপূর্ণ। কুল এত উচ্চ এবং অসমান যে যদ্পূর্বক কেছ मही रहेए छे थर इडिटिंड शास्त्र ना । अवाहा हरा मका मा ক্রিয়া প্রাণের আশতা কিছুমাত্র না ক্রিয়া এই ভয়ানক নগীতে ৰুপ প্ৰদান কবিল। গ্ৰণ্ড নৌকা হইতে দেখিলেন শভং প্ৰজাঃ জলে ৰুপা বিল্লা ভাষার মৌকাভিযুৰে গমন করিতেছে এবং দেবিয়া অবাক ছইলেন। তিনি আর পমন ক্রিভে পারিলেন না, ভিনি কুলে নৌকা লাগাইলেন, প্রভারা আসিরা তাঁহাকে খিরিয়া হাড়াইল, আপনাদিদের ছঃবের काहियी र्राजन, छिमि अबूबद छनिएमम अवर श्रवाद श्रावनः প্ৰাহ্ম করিলেন।

পাৰদার গোলবোগঙা মুসলমান প্রজারা আরম্ভ করিরাছে এবং বেগানে অবিক মুসলমান সেই জেলার প্রজারা এইরপ ঐক্য কইরা ক্ষমিদারের সর্দে বিবাদ করিতেছে। সে দিন ক্লিকাভার গাড়োরানগণের কোট কি অভুত বিষর। হয়ত এক দিনে এবং একজন মুসলমানের যতে ইহারা সমূদর ঐক্য করেন না, সৌভাগ্য ভাহাদিগকে পরিভ্যাগ করেন না, সৌভাগ্য ভাহাদিগকে বিশ্বত হন না। মুসলমান-দিগের এই ওপের সলে যদি আয়াদিগের বৃদ্ধি কৌশল একপ্রিভ করা যার, ভাহাদের উপ্রভা বদি বালালীদিগের বিষেচনা, বৃদ্ধি ও শান্ত কভাবের সলে একপ্রিভ করা যার তবে আয়রা যাহা প্রার্থনা করিব কর্মর সেই প্রার্থনা প্রান্থ করিবেন। ছানীর যে সমুদ্ধর সভা ক্রতেছে ভাহারা বেন অভাত বিষয়ের ব্যাহার যাহ করেন, তাহা ক্রতে বেশের বিশেষ মন্ত্র ভাহার যত্ন করেন, তাহা ক্রতে বেশের বিশেষ মন্ত্র করিবেন। (২৩ অট্টোবর ১৮৭৬)

<sup>•</sup> পাৰ খন পিটাৰ একি

<sup>+</sup> विवाध-अवाद विद्याप

#### ইংরেজ শাসনের প্রায়তে বালালী

---বে বেশে ১৩০ বংসর পূর্ব্বে এইরূপ ডাকাইভের ভর ছিল, व पार्म देश्याक्षितिय ७ वक्ष्यक श्री लाक् खर्मन कविष्ठ मा, त्म (सम बहै। भामता (महे एएन बहेक्स नाम क्विएडि बर तारे शान बक्न बक्क रेश्वक खरिए कि একট বন্ধকের শব্দ ভূনিলে লক লক লোক ভয়ে পলায়ন করে। देश्रावक्षितित बहेबन चुनामन, छाहापित्रित बहेबन चारिनछा। এই সমুদ্র ভাকাইত আমাদের সমাকের কওঁক ছিল, আমরা ইহাদিগের ভরে অহরহ কলিতকলেবর থাকিতাম। ইহা-দিপের নিপাতে দেশে যে কড মঙ্গল হইয়াছে বলিভে পারি ন। কিছ ভবাচ আমাদের দেশের ভাকাইভের পরওলি শুনিতে আমাদের কত উৎসাহ ও আনন্দ হয়। ইংরেজনিরের পূর্বাপুরুষেরা এইল্লপ ভাকাইত ছিলেন, করাসিস্থিপের পূর্বা-পুরুষেরা ভাকাইত ছিলেন, রোমান রাজ্যের ভিত্তিভূমিও এই-क्रम डाकारेटिया भएन करत. यूजनमानमिर्गत वावजात विन ভাকাইতি। আমেরিকার মহাদেশ ভাকাইতদের ছারা বিভিত इतः वैदादा जकलावे श्रद्धावा मुर्छन बादा अकवन बीवन বাপন করিতেন ও নররত্তে দেশ কল্যিত হইত। ইঁহারা কোন বান্ধ নির্মের বাধ্য ছিলেন না, দুশংস বভাবের পরিভৃত্তির নিমিত্ব কোন বাধাকেই লক্ষ্য করিতেন না, আমরা পূর্বাকালের কৰা পরিত্যাগ করিয়া যে সময় স্পেনীয়, করাসিস, ইংরেজ প্রভৃতি ভাতি ভামেরিকায় প্রবেশ করেন সে সমরের কথাও যদি শ্বৰণ কবি তাহা হইলেও আমাদের জংকশ হয়, আমাদের লোমাঞ্চ হয়। কিছ ডাকাইতেরা যে শক্তি প্রভাবে সমাজের কণ্টকস্বরূপ হয় সে শক্তি পরিশোষিত হইলে তাহা ছারা আবার সমাজ পরিশোবিত ও উংকৃষ্টিত হয়। কাল সহকারে क्या ७ देव वृद्धित महा महा वृद्धित मुन्दम स्कार. वे वाटभन्न भन्नावा मुर्थन-प्या, वैवाटमन व्यवधानन, वैवामिटमन রঞ্জ পিপাদা পরিবর্তিত হইয়া ক্রমে ই হারা বাছবলে বীরাএগণ্য हन, तम विराम क्य करान, जमका (मन्दर मका करान, हहे स्यम करतम ७ वर्ष्यत श्राहात करतन । (व देश्याक, करानिन, আমেরিকাবাসী প্রভৃতির নাম ভনিলে জনসমাজ চমকাইর উঠিত তাহারা আৰু পুৰিবীর রাজা, সভ্যতার আবার, জানের ভাভার, ভাহারা সকলের প্রদীর, আমর্শবরণ ও বল ভরদা। আমাদের দেশীর ডাকাইতেরা বদি অপ্রতিহত ভাবে ৰাকিতে পারিত, যদি ইংরেছদিগের কঠোর শাসনে শাসিত ও নিৰ্দুল দা হইড, কাৱাগাৱে বাৰজীবন অভিবাহিত না कतिल अवर देवदान आनलान मा कतिल लाद, (क कार्स, बाबबाध अक्षिम बाबारम्ब शृक्षशृक्षश्रापत बनवीर्द्या, जारुरा, রণদক্ষতার দিবিক্রী হইতাম, আমরাও রাজান্থাপন করিতাম এবং আৰু হয়ত অভান্ত রাজ্যের ভার বালালীরা খদেশীর রাভার অনুরাগ ও গৌরব সর্ব্বন্ত প্রচার করিতেন। ইংরেকেরা বহি এ সৰুহৰ ভাকাইভদিগকে নিপাত না করিয়া ভাহাদিগকে

এবং ভাকাইত তিয় এবেশে আরো অনেক লোক বিল বাহারা বীরতে, সাহলে, পূলিবীর কোন জাতিকে লক্য করিত না, তাহাবিগকে সৈভদলে নির্ক করিরা আশ্রর ও উংলাহ বিভেন তাহা হইলে আনরা একন বেরপ বিভা বুদি লইরা বালালী জাতির গৌরব করি, সেইরপ বালালীর বুদ নিপুবভা, বীরছ, সাহল, বলবীর্যা প্রভৃতি লইরা গৌরব করিতে পারিভাষ। (২৫ ভিসেবর ১৮৭৩)

#### क्ष मा श्वाक्य १

কোম্পানি বাহাছর ভারতবর্বে ভারি অভ্যাচার ভারত করেন। বাধীন রাজাবিগের রাজ্য কলে বলে কৌশলে অবিকার করিতে থাকেন। ইংরেজবিগের চির বিত্র অবোধ্যার নবাবকে পরচ্যুত করেন। নিপাহী বৃছ ভারত হয়। নররতে দেশ প্লাবিত হয়। কোম্পানি বাহাছর রাজ্যচ্যুত হন। হাধীন রাজাধিগের রাজ্যে ইংরেজেরা হতকেশ করিবেন না প্রতিভা করেন। ইহাতে কোম্পানি বাহাছরের জিত হয় না আমাধের জিত হয় ?

নীলক্টিয়ালগণ ক্রমে ক্রমে বেশের মধ্যে বোর অভ্যাচার আরম্ভ করেন। প্রকারা উদ্দির বার, অমিদার অন্তলোক অহির হইরা পড়ে। লোকের মান গল্পম বাঁচান হুছর হয়। শেবে অসহ হইরা বালালার মূর্মু প্রভারাও কেশিরা উটল। নীলক্টিয়ালের কুল হংগে প্রায় হইল। ইংরেজেরা অপনামিভ হইলেন। দেশের লোক আপনার বত্ত রক্ষার নিমিত্ত বত্ত্বীল হইল এবং ইহাতে নীলকুটিয়ালগণের না আমাদের ভিত হয় ?

লর্ড মেও উচ্চলিক্ষা উঠাইরা দেওবার নিমিত্ব কুতসংক্ষা হন : বেল্লল গবর্ণমেন্ট ইহার প্রতিবাদ করিলেন। তিনি তাহা প্রান্থ করিলেন না। দেলের লোক সমুদর ক্লেণিরা উঠিল। নগরে নগরে প্রামে হামে ইহার নিমিত্ত সভার অবিবেশন হইল। লক্ষ্য লোক একমিত হইরা তাঁহার প্রবর্ত্তিত নিরমের প্রতিবাদ করিল। টেট সেক্টোরি আমাদের প্রান্থ করিলেন। গবর্ণর ক্ষেনারেল পরাত্ত হইলেন। আমাদের ক্ষমতা বৃদ্ধি হইল। গবর্ণর ক্ষেনারেলের ক্ষমতা বর্ম্ম হইল। প্রবর্ণর ক্ষানারেলের সমতা বর্ম্ম হইল। প্রকার ক্ষানিতে পারিল বে কারমনোবাকের সংক্ষা করিলে গবর্ণর ক্ষেনারেলের ক্ষমতা বর্ম হইল। ক্ষমণার ক্ষেনারেলকেও পরাত্ত করা বার, স্তেরাং লও বেও ক্ষনাবারণের মতের বিপরীত কাক্ষ করিয়া হারেন না ক্ষিতেন ?

সার কর্জ ক্যাবেল সাহেব যবন নিউনিলিশ্যাল বিলের প্রবর্জনা করেন, তবন ব্যবস্থাপক সভার বেশীর সভ্যেরা ইহার প্রতিবাদ করিলেন। তিনি তাহা প্রায় করিলেন না। দেশের লোক কেপিরা গেল। নানা স্থান হইতে ইহার প্রতিবাদ হইল। বিল আর পাল হইল না। সেই দিন অবনি ক্যাবেল লাহেবের কুরাহ আরম্ভ হর। এই নিমিন্ত তাঁহার প্রত্যেক কান্ধ আরম্ভা নির্ভিত্যের ক্রিন্তে লাগিলান। তিনি পরা বেবাইতে লাগিলেন। ন্যানিট্রেটিগিগকে অসীম ক্ষতা অর্পন করিলেন। নানারপ অভ্যাচার করিতে লাগিলেন। কিছ আনরা তাঁহাকে এছ করিলান না। তিনি একবার পরাছ হওৱার আনরা তাঁহার উপর অবিকার প্রাপ্ত হই, ভাহা হইতে তিনি আমানিগকে বিচ্চুত করিতে পারিলেন না। লেবে পদ পরিত্যাগ করিবা বদেশ বাজা করিলেন। পুতরাং ক্যাহেল নাহেব বেজাচারিভার সদে কর্ম করিবা ভিতিলেন নাহারিলেন ?

হুরেজনাথ বন্দ্যোগাব্যারকে ইংরেজেরা পথচ্যুত করিলেন।
ইহাতে আনাধের বিশেক কতি হইরাছে। কিছ ইহাতে পেবে
কে হারে কে কিতে বলা বার না। এখন পুরেজের প্রতি
অবিচার হর নাই ইহা সপ্রবাণ করিবার নিমিন্ত গবর্ণমেক্টের
কত নিবিলিরামকে কর্মচ্যুত করিতে হইবে? সুরেজে বিদ কর্মচ্যুত না হইতেন তাহা হইলে রংপ্রের জন সন্তবতঃ প্ররণ বিপদে পড়িতেন না। লেবিন সাহেব আন্দ ১৪।১৫ বংসর কর্ম করিতেহেন এবং চিরকাল এইরণে কান্ধ করিরা থাকেন। রংপুরেরও আন্দ করেক বংসর কান্ধ করিতেহেন। এত কাল দেশীর লোকে কিছু বলে নাই প্রবং প্রেজ্ঞ যদি অবিচারে কর্মচ্যুত না হইতেন তাহা হইলেও বোধ হর লেবিন সাহেবের বিজকে কেহ কোন কথা বলিতে সাহস করিত না। গবর্ণমেক্টে আমাদের কোন ক্ষতা নাই প্রতরাং তাহারা ইংরেজনিগর সমর অভরণ বিচার করিতেও পারেন। যে অপরাধ প্রেজ্ঞ ক্রিরাছেন সেই অপরাধ কোন ইংরেজ ক্রিলে হয়ত গবৰ্ণষেষ্ঠ ভাহাতে কোন বোৰ বেধিতেন না। কিছ ভাহাতেও আবাদের বিভ। ইংরেকেয়া ৩৪ বাছ বলে ও বুদ্ধি বলে আমাদিগকে শাসন করেন না। আমাদের দেশীর লোকের षात्मरकत विचान चारह रव देश्रवरकता बाह्यभवादन, निवर्णक, প্ৰবিচারক এবং ভাছাদের উপর লোকের এই বিখাল ও 🗢 🗢 আছে বলিবা ভাঁহারা আবাদের উপর এত আবিপত্য করেন, কিন্ত যে দিন আনৱা দেখিব যে ভাঁহারা পক্ষপাতী, ভাঁহাদের (कामक्रण वर्षकाम बारे, डीहांडा छाड चछाड बाल् करवन मा, সেই দিন অৰ্থি ইংৱেছদিনের প্রতি আহাছের ভক্তি ক্ষিত্রা वाहेरव अवर प्रवास छेरसक स्टेरव अवर रव प्रिम अववि जासाहे स्टेर्ट (म पिन चर्यन अस्पर्ट देश्ट्राक्ट गठन चात्रस स्टेर्ट । रेश्टब्राका कावकवर्ष कविषा कविषा वाकित्वम, कामदा म বিষয় সন্দেহ করি না, তাঁহারা আমাদের প্রতি আবিপত্য ক্রিবেন ভাষাও আমরা সন্দেহ করি না, কিন্ত ইংরেক र्विटिंग चांत चांत्रारमत ना कॅलिय ना, सम्ब इत इत করিবে না, ইংরেকের সমূবে আসন এহণ করিতে আপকা स्टेटर ना, रे:ट्वटक्बा जनमान कविया कि जजाहार कविया আর বাঁচিয়া যাইভে পারিবেদ না, স্বভরাং সুরেক্তকে কৰ্মচ্যুত করিয়া ইংরেজেরা ছারিলেন কি কিতিলেন গ ( ৪ জুম, ১৮৭৪ )

# পুনর্বসতি কার্যে আমাদের গলদ কোপায়?

### 🕮রঞ্চনকুমার দত্ত

দাদাবিজ্ঞত বোৱাবালী ও ত্রিপুরা সম্পর্কে বছ বিবরণ সংবাদ-পত্রে ও মাসিক, সাঞ্চাহিকে নানা লোকে নানাভাবে লিখেছেন—কেউবা সংবাদপত্তের কাইল খেঁটে, কেউবা বিজ্ঞত এলাকার ওপর দিরে বিমানযোগে গমনকালে অন্নিশিবা ও ব্রজাল দেখে, কেউবা বিজ্ঞত অঞ্চলের ছাম-বিশেষের ওপর বানিকটা নোটর ত্রমণজনিত অভিজ্ঞতা খেকে।

নোরাধালী এবং তিপুরাবালী কেবল বে বনেপ্রাণে বিনষ্ট হরেছে তা নর, নীতি ও ধর্ষের দিক দিরে দেবতে গেলেও তাদের এক প্রকার অপর্ভূচ্ট বটেছে। তাতেও বে লোকের ভিছু শিকা হরেছে এবন নজির আবাদের চোবে পড়ে না।

নোরাধালীর ব্যাপারে বাংল কংগ্রেলের মান রক্ষা করে-রেন গাড়ীজী। এ বিষয়ে রাইপতি আচার্য ফুগালনী ও তথীর পত্নী অবুক্তা স্কুচেতা বেবীয় লেবাকার্য্যও কম ময়। রাইপতি কুপালনীকে অবস্থ ধীর্য দিন আমরা পাই নি—নিখিল ভারতীয় ব্যাপারের ক্ষতে ভার পক্ষে পূর্বকে ধীর্যকাল থাকা সভব হর নি, স্তেতা ধেবীর সেবাপরারণতার কথা মোরাধালীবাসী বে চিরকাল ফুডজ্ঞতার সহিত শ্বরণ করবে এ বিষয়ে কোনে। সংশব্ধ যেই।

মহামানবের পেছনে পেছনে এক দল নামপাগল বা ঘলপাগল ছুরে বেড়ার , তারা সংবাদপত্তে নিজের বা নিজ দলের ছবি ও নাম প্রচারে ব্যস্ত। তারা বিস্থৃতি দিরে নাম ভাছিরে ওতাদ।

আছকালকার নেতানিরি কাগকে কলবে, কাজের বেলার কিছু বোক বা না কোক। বিশাদের কালে এবং পরেও বাবের শিকা হর না, অন্থলার বার্থণরতা বারা আকৃতে পারে না, নিলনের পথ বারা বেড়খের ক্টাকে ক্টাল্ডর করে ভূলতে বেলনা অন্তত্ব করে না, সেই সব অবোগ্য বার্থণর নেতাদের কাহে বেশ কি আশা করতে পারে ?

বারা নারণাগল নর, কাজ-পাগল, বারা নেডা নর— বিবারাত্রি বাবের বিশ্রার নেই, বাবের প্রতি কৃতজভা বীড়ার কেট করে না, করে নি, ভাবের একজনের কথা এথানে আমি উল্লেখ করব। এঁর সেবা ও কর্মপরিচালনা-শভিত্র উল্লেখ দা করলে ৰোৱাখালীতে গাড়ীছীর আগমনের ও গ্রাম-পরিক্ষমার ইতিহাসে কাক থেকে বাবে।

ইনি নেভা নন, কর্মী ও কর্মপরিচালক। নেভা নন नलहे डीटक बनरदद कान्यक्त गुडीह त्वर् भारे ता। ইনি ত্ৰীযুক্ত চাকুত্বৰ চৌধুৱী—সোদপুর বাদি প্রতিষ্ঠানের जाबादव वावद्यांतक । अयन चारदा वह क्यीं चारदम दौरमद সেবার কথা আমরা প্রধার সহিত শরণ করব। আছকের मित्न कार्यय मात्र अवार्य केंद्राव कहाक होहे ता। त्रका मन বলে তাঁদের সেবা ও কাজের প্রকৃত কদর হয় থি, কিছু তাঁদের সেবা যে অপরিহার্য। ভাদের কর্মণক্তির ওপরই নেড্-রব্বের নেতাগিরি নির্ভর করছে। যাই ছোকু প্রক্রত সেবক বারা খাদের নিকট দেশবাসী প্রকৃতপক্ষে ধরী, বারা ৰাৰ-যশের প্রত্যাশী নন তাদের নাম আৰু প্রকাশ করব ৰা, কেননা সে সময় এখনো আলেনি, কবে জেশে শান্তির বাতাস বইবে তা অন্তর্হামীই কানেম। নেতাদের দৃষ্টি কিন্তু যথাস্থানে পড়েনি। যে পথে গাড়ীজী এাম পরিক্রমণ সুরু করেছেন তারই সহারক কর্মসুচী প্রত্যেকেরই প্রহণ করা দরকার। ভারতের সভ্যিকার কল্যাণ ভাতেই নিহিত আছে: নেতাদের দৃষ্টবিভ্রম খটেছে: তাই তারা **१९७७ स्टाइ**न ।

গাছীলীর অহিংস-কর্মকে আমরা অবিধানীর বিঞ্চ দৃষ্টিতে দেখি, তাই জীরুতার প্রকাশকেই অহিংসা আখ্যা দিরে হিংসার চির-অশান্তিমর কর্মপ্রধানীকে সমর্থন করতে চেঙা করি; কিছ হিংসার পথেই বা দেশ কত দুর প্রগিরেছে? গাছীলী বলেন, বাংলা সন্ত্রাসনবাদের প্রষ্টা হলেও জনসাধারণের মধ্যে সাহস সংক্রামিত করতে পারে নি; বরং অহিংস প্রচেটার ফলে যত অসম্পূর্ভাবেই হোক না কেন, ভারতের ভাতীর চরিত্র অনেক পরিমাণে উল্লভ হরেছে—একথা আন্ধ একাছ ভাবেই সত্য।

গানীকী প্রচণ্ড শীতে নগ্ন পদে প্রামের পথে বানক্ষত আর পাইক্ষেতের মনা দিয়ে বুরে বুরে পোকের সঞ্চেপরিচর করেছেন, প্রাণের কবা ভনিরেছেন। কিছ তার প্রকার কবা করচ পরীপুত্ব সিরে পৌহবে ? সেবাুনে প্রয়োজন ছিল সংকারস্কুজ্ঞ সেবাপরারণ বহু লোকের।

গাঙীকী একাবারে নেভাও কর্মী, তাঁর পক্ষে অসাব্য সাধন করাও অসভব নর। কেননা তিনি পূর্বাপর কর্বাও কাক্ষে এক। কাক্ষ সেবার ভেতর বিরে তাঁর ব্যক্তিখের বর্বার্থ প্রকাশ।

বছ নেবা-প্রতিষ্ঠান ও রাজনৈতিক সংখা আলাভ ভাবে নোরাধালীর সেবা করে চলেছেন—কোনো সংখা রাজনৈতিক উদ্বেশ্তনিদ্বির জন্তে, কোনোট বা বিপরের ব্যবার ব্যবিত হবে, ক্রন্তব্য জানে। ভবব্যে নিম্নলিবিত প্রতিষ্ঠানভলির নাম উল্লেখ করা বেতে পারে।

১। বাবি প্রতিষ্ঠান, ২। অল্-ইভিয়া উইবেল কনকারেল,

৩। বিলিক এও ওবেলকোর এলোলিবেশন, ৪। ইতিরাধ বেড ক্রস সোগাইট, ৫। ক্রেডস্ এ্যাপুলেল ইউনিট, ৬। আই. এম. এ., १। ভারত সেবাজ্রর সংখ, ৮। রারক্রফ বিশন, ১। প্রবর্তক সংখ, ১০। বারওয়াতী বিলিক সোগাইট ১১। হিন্দু বহাসভা, ১২। বোরাধালী বিলিক বেসকিট এয়াও বিহাধিলিটেশন ক্রিট, ১৩। ভাশনাল সাভিস ইনস্টিটশন, ১৪। আর্থ সমাজ।

আৰু যে পৃথবসতি ও হিন্দু-রুসলনাম উভর সম্ভাগারের মব্যে প্রতিপূর্ণ সম্পর্ক স্কটর প্রবাস চুলছে এই প্রবাদে সেই সম্পর্কে ছু-একট কথা বলতে চাই।

পূম্বসভির সম্ভা এক মণ্ড বড় কটল সম্ভা। তাকে ম্বাব তাবে রপ দিতে গেলে চাই বিরাট আরোজন। এই আরোজনের ভার একষাত্র গবর্গমেন্টই নিতে পারেন। কিছ বর্ত বান গবর্গমেন্টের বা হাপচাল তাতে গবর্গমেন্টই সব করবেন ব'লে নিশ্চিত্ত থাকলে ও সরকারী ব্যবহার ওপর সম্পূর্ণ রূপে নির্ভিত্ত কালে বিপদের সন্ভাবনা আছে। তাই গাঙীজী নোরাধালীতে উপছিত থেকে হানীর অবিবাসীকের পূম্বসভিকার্ব্যে অথাং বাড়ী-বর আস্বাবপত্রাদির পূম্মির্বাণ বারা গৃহহারা সর্বহারাদের স্বহানে পূল্ঃপ্রতিষ্ঠিত করার কাজে বাংলা-সরকারকে বাব্য করতে, তথা বাংলা সরকারের সহিত সহবাসিতা করতে চেষ্টা করেছেন। তার কর্মপ্তি বাইরে অনেক সময় অঞ্চব করা বায় না, কিছ তা যে অভূত কলপ্রণ সে পরিচয় অনেকেরই অবিদিত নেই।

নোয়াৰাগীতে কান্ধের অভ নেই; কর্মীর অভাব। নোয়া-ৰালীতে এসে গাখীকা সৰ্বাঞে পানীয় কলের সুব্যবস্থার অভাব বোৰ করেন। ভিমি বলেন গ্রামবাসী কেমন করে পুরুরের অপরিশ্রত অন পান করে আর এমেশের শিক্ষিত বাস্থ্যতত্ববিদ্ চিকিংসকরণ কেমন করে এ বিষয়ে উদাসীন বাকেন তা ভিনি বুৰতে অক্ষ। কয়েক দিনের মধ্যেই পানীয় কল সক্ষে তিনি খুবই চিভিড হয়ে পড়লেন। এামের দরিল কনসাবারণের পরিক্রত বল প্রাধির কোন সহত উপায় আহে কি না তা চিছা করে দেখবার বঙে তিনি প্রধেষ সতীপচক্র দাসওও মহালরকে তার আঞ্জ কানান। সভীশবাবু করেক বিনের চেটার একট অভি সাধারণ অবচ বুবই উপবোধ উপায় উত্তাবন করেছেন। গাড়ীজীরও তা পছক হয়েছে। একে "কিলটার কুণ" বলা বেভে পারে। সভীশবাবুকে "পুকুষ কুপ" বগতে শোনা গেছে। পুকুরের কল পরিক্রত হরে বাতে প্রয়েক্ষামুদ্ধণ কল কভক পরিমাণেও সঞ্চিত হতে পারে এছতে পুকুরের মধ্যেই কিলটার কুপের সহিত একট সঞ্র-কুপত সংযোজিত করা হয়েছে। এাহের অতি সাধারণ লোকেরাও এই নর্মা দৃষ্টে মিক মিক পুকুরের ভিভরে এই 'কিলচার কূপ' ভৈরি করে বসাতে পারেন, সম্ভবত ধন-পনর চাড়ার বেলী ধরচ এতে হবে না।

প্রানের লোকের পূর্বলতির সলে সলে প্রানের অবনৈতিক ও সামাজিক পূর্বর্গনের আবভকতাও ব্ব বেশী। প্রাম্নরাসীবের যদি প্রার সধ বিষয়ে আর্মিউরশীল করে ভূসতে হয় তবে হালীর করেকট কুর্মীরশিরের ক্রয়োয়তি সাবনের ওপরে জার বিতে হয়। বেরন বল্পনিল—চরকা ও তাঁত। চইপ্রার বিতারে পাহালী দিশী ভূলোর অতাব নেই। কেই মহকুষার বাদি প্রতিষ্ঠানের চেইার, কুরিলার চরকা সজের চেইার শীচিশ বংসর পূর্বেই চরকার প্রচলন হরেছিল। বােরাখালীর প্রায় সর্বন্ধই নাধ-সভাবা্রের বাস, বরে বরেই তাঁত। বছালিরের সব রক্ষ আরােজনই হিল, অটোবর হালামার সবই মই হরেছে তাকে আবার পূনঃপ্রতিষ্ঠিত করতে হবে।

বিগত ছুৰ্ভিক্ষে বহু লক্ষ্ণ টাকার বাদি কলিকাভার বাদারে ও অভন্ত এই নোরাবালী ও ত্রিপুরা কেলা সরবরাহ করেছে।

এ ছাড়া নাবিকেল এ কেলার কুরীর-শিল্পের উপবােরী একটি
বড় লশ্দা। নারিকেলের তেল ও উপালের বাডাংশ বাদ দিলেও
হাবড়া বেকে দড়ি, নার্র পাপাের ইত্যাদি, নারিকেলের
বালা ও গাহ হতে অভ বহুবিধ ক্রব্যাদি প্রস্তুত করা
সম্ভব। এর বেকে বিস্তর অর্থাগনের আশাও লােকে করতে
পারে। মাক্রাঞ্চ ও সিংহলের নারিকেল-শিল্পভাত বহু পণ্যরুষ্য আমরা কিনে ব্যবহার করি, বিদেশ বেকেও আমদানী
করি। এ বিষরে মনােবােরী হলে নােরাবালীই আমাদের
সে অভাব পুরণ করতে পারে।

সুণারি এ জেলার আর একট বড় সম্পদ। তা ছাড়া এ জেলার মাট এমন উর্বারা বে চেঠা করলে লোনা কলানো মার। সরকারী এবং বেসরকারী অনেক লোকই আহেন, এদিকে বাঁদের মাধাও বেলে, সরকার ইচ্ছা করলে এই জেলাকে বাবলখী আদর্শ জেলা হিসাবে গড়ে ভোলার কাজে ভাঁদের নিয়োগ করতে পারেন।

পূৰ্বসতি কমিশনার মিঃ টি, আই, এব্ গ্রন্থবী আই, সি, এল মহোদর থবং কৃষির-শিলের উন্নধনের অগ্রাট, তিনি বিভিন্ন সন্ধানরের মধ্যে প্রতিপূর্ণ সম্পর্ক হাপনেরও পক্ষণাতী। বছত এইবাপ ওবি ব্যক্তি থাকলেও বর্তমান সরকার যে উাদের শক্তিকে কাব্দে লাগাতে আগ্রহণীল নম সে কথা সকলেরই জানা আহে।

গাখীখীর ভাগবনে ও বাহি প্রতিষ্ঠানের চেটার ঝাবে থাবে ঝাব-সেবাদল সংগঠিত হরেছে। বহিও সেওলো দর্বন্ধ ছারী প্রতিষ্ঠানের রূপ বের দি। তবুও করেকট কেন্দ্রে ইভিনব্যেই আশাপ্রদ কর্বশক্তির পরিচর পাওয়া গেছে। চঙীপুর নাসিবপুর, ভাতাবোড়া, রাম্বেবপুর, করণাড়া প্রভৃতির নাম প্রপ্রদেশ উর্বেব্যাস্য। গাখীজীর প্রাম-পরিক্রমণকে লাক্ল্য-রভিত করবার উদ্বেশ্বেই এই প্রাম-বেচ্ছাসেবক্রল সংগঠিত হয়। বর্ত্যাবে এই সেবক্রলভানিই বিঠা ও সিবার হাল্য 'প্রাৰ-পথারেত' সংগঠনের রূপ পরিপ্রত্ করতে পারে।
কোষাও কোষাও মুসলনান বেচ্ছানেবকরাও বোগনান
করেছেন। এইরূপ সংকারত্ত হিন্দু ও মুসলনান মুবকরুক্ত
বলে বলে বোগনান করলে বেশের হুঃববৈচ ও পারুলারিক
হানাহানি অনেক পূর্বেই বিচ্রিত হ'ত। পরিতাপের বিষয়
আনাবের মুসলনান আতাগন অনেকে অপপ্রচারের হারা
প্রভাবিত হরে মানবিক্তার পথকে বিসর্জন দিরেছেন।
তাই মহতর কর্যাস্থ্রানে তাদের অধিকাংশকেই পাই না।

গাঙীকী প্রায়-পরিক্রমণের সঙ্গে সঙ্গে সর্বন্ধ গঠনবৃদ্ধক কার্ব্যের প্রতি কোর দিক্ষেন। অপ্যক্তা দূর করতে, স্ত্রীলোক-বের সীতা ও প্রৌপদীর আদর্শ প্রহণ করতে ও নির্ভাক্তিতে, বাবদারী হতে উপরেশ বিচ্ছেন। শিকা ও সমাজাচার—উভরের মধ্যে পরিবর্তন ও শুভি নিরে আসার করে হিন্দু মুস্লমান উভর সন্তর্গারের কারে হিল্ জার সংগ্রহ ও ব্যাকুল আবেদন। সে আবেদনে সাচা কোণার ?

যে প্ৰামের সৰ কর্ট ৰাজীর প্ৰায় সমন্ত গৃহই আগুনে পুড়ে ছাই হরে গেছে, যে বাড়ীতে চুট-ভিনট প্রাণী নিচুরভাবে নিহত হরেছে, সে আমের সে বাছীর হিন্দু বাসিন্দাদের মধ্যে আছও শ্ৰেণকৌলিত নিৰে লাঠালাট চলেছে। আৰকার দিনে মোহা-ৰালীর প্রায়ে এমন আত্মতিমান বড় অভত লাগে। কে কারছ, কে নাৰ, কে ৰোপা, কে নমঃখুঞ धरे टापे-रियमा বোৰ বভাষান মুৰুত্ব অবহাতেও ভারা হাছতে পারে নি, পারছে মা। এরা বাঁচবে কেমন করে ? অবচ কোন কোন ব্রামে মুসলমান চাষীরা হিন্দুদের 'বয়কট' করেছে। ভাষের জমি তারা চাষ করবে না, হিন্দু বাছীতে মজুরীও করবে না ইভ্যাদি। এই সংকল বৃদ্ধিমানের নম। এভে বিশদ কেবল হিন্দু-क्ति वस, यूगमयानक्तिकः, वदः (भरयाकः एव तनिहे तनव। যাই হোক, এমনই যদি ঘটে তা হলে হিন্দুৱা পরস্বা যৌথ-ব্যবস্থার শ্রমবিনিময় বারা পরস্পারের কমি চাথের ব্যবস্থা করতে পারে। কিছ হিন্দুরাই বদি পরন্পরে হাভ বিলিছে, মন মিলিয়ে চলতে না পারে ভবে এদের বাঁচোরা কিলে ?

ভাই অভি হু:ধে বলতে হয় এ বোষ ভো আক্ষরে নয়।
সমাক্ষিবির মধ্যে বোষফ্রট অনেক আছে, থাকলেও এর
মধ্যে বেটুকু বৈজ্ঞানিক বৃষ্টিবিচার হিল—বার-বার। সমাজের
হিত আলা করা বেড, ভার বিলোপ ঘটেছে। লোক অভিরিক্ত
হার্ধপ্রবণ হয়ে আপন আপন আরাম অহুসহানে অহুলার হয়ে
পড়েছে সমষ্টির প্রভি। এবন এ থেকে বৃক্তি পেতে হলে চাই
উপরুক্ত ও ব্যাপক লোকশিক্ষার ব্যবহা। প্রানে প্রায়ে বরে
বরে শিশু বালক বৃহ—স্ত্রীপুরুষনিবিশেষে সকলকেই সব
রক্তে উপরুক্ত করে ভুলতে হবে।

আন-বল্পন্থীন হবে বাছৰ এননই বিশেষারা হবে গেছে বে বিব্যা বলা ও অসহাচন্ত্রণ করা বেল কিছুই নয়। অভাবে বভাৰতই বে পতন হয় আবলা সব্ভিই এবন ডা বৈশতে পাছি। গাড়ীজী বা বলছেন তা সাধারণের পক্ষে
উপলবি করা কঠিন। বারা লীবঁকাল ববে অহিংসার পবে
বিচরণ করছেন তাঁরাও অনেক সমর তাঁকে বুবে উঠতে পারেন
না। কাজেই সাধারণের পক্ষে বাপুজীর মহা মুল্যবান উপলেশ বহন করা ও প্রতিদিনকার জীবনে তদক্ষারী চলা অসন্তব না হলেও ধুবই কঠিন। বুবতে না পেরে লোকে তীক্রতার আত্রর নের ও মনে করে সে অহিংসার পথেই চলছে। বছত অহিংস তারা নর। তগবানে বার পরিপূর্ণ বিবাস আছে তিনিই কেবল অহিংস আচরণে সক্ষম। সংশহীর পক্ষে অহিংসু— আচরণ তীক্রতার নামান্তর, ত্বলিতা ঢাকবার বৃক্তিয়াত্র।

কেবল কথার থারা, বক্তৃতার থারা লোককে সংখ্যারমুক্ত করা বাবে না, তাবের বথোচিত শিক্ষাও হবে না, প্রতিধিনকার জীবনের দোষক্রটি সংশোধনের জলে প্রামবাসীদের সহিত্ কর্মীদের দীর্ঘকাল বাস করা ধরকার। কিও বাংলা দেশের কংপ্রেস-নেতারা কি লে পথ নিরেছেন? ধরিক্র প্রাম্য হিন্দু-রুসলমান জনসাধারণের সভ্যিকার কি কল্যাণ তাঁরা করেছেন, প্রামের লোকে তা আজও প্রশ্ন করে জানতে চার ! নেতাবের এ থেকেও দৃষ্টি বুলে বাওয়া উচিত।

গাখীলী নোৱাধালীতে তাঁর দীবনের সর্বল্লেষ্ঠ কর্মসাবনের করে আত্মনিরোগ করেছিলেন—পূহে গৃহে পুরে পুরে
ব্যাকুল আঞ্জনে হিন্দু ও বুসলমান কনসাবারণের ভবরহারে সেবার অর্থ্য নিরে অঞ্জনর হরেছিলেন। তাঁর সেবা,
অত্তর থেকে উৎসারিত কিনা, সংশরী বুললমান বছুগণ
তিলে তিলে পরীক্ষা করে দেখেছে। কিন্তু এই পরীক্ষা তাঁর
কাছে নূতন নর। সারা দীবনই তিনি পরীক্ষার তেতর
বিরে অঞ্জনর হরেছেন। তাঁর সাবনা একই বারার একই
পথে চলেছে, আক নর বীর্ষ অর্থ শতাকীরও অধিক কাল
বরে।

গাৰীকীর নোরাবালীতে অবহান, বাংলা-সর্কার তথা রসলীয় লীগ মহল পছক করেন নি। গাৰীকী তার উচ্ছে সাধনে অবিচল ও অকণট, তাই বাংলা-সরকার ও মুসলীর
লীনের বিরাগভাজন হওরাকে তিনি উপেকা করে পরর প্রবা,
আলা ও নিঠা নিরে হিন্দু মুসলমান উভর সম্প্রদারের মধ্যে
ছারী সম্প্রীতি প্রতিষ্ঠার করে লাভ ননে আগন কর্ত ব্য করে
সেবেন। তার দীর্থকাল অবহান ও প্রান্ধ-পরিক্রমপের কলে
উভর সম্প্রদারের মধ্যে প্রীতি ও প্রভারের ভাব বীরে
বীরে কিরেও আসহিল। কোন কোন প্রান্ধে কিছু লোক
বে হুকার্বের কন্দিতে থাকরে তা তো আন্দর্ধ নর। রাজনৈতিক স্বার্থকার ও ছুই বিচারবৃত্তির কলে তারা বিজ্ঞাত।
নানবিক্তার দিকে তাদের প্রক্রেণ নেই। সভ্যতা বরাপৃষ্ঠ
থেকে বিস্তু হোক বা নাই হোক, তা তাকের বেশবার
নয়। তাই তারা বেপরোরা ও প্রস্তির শক্ষ।

মুসলমান এবানে হিন্দুদের বর্ষাচরণ সন্থ করতে পারে না। একদিন গাড়ীজীর প্রার্থনাকালে ববন "রামধুন" ভজন দীত কৃষ্ণিল তবন মুসলমানদের অনেকেই প্রার্থনা-সভা পরিত্যাগ করে উঠে বার। গাড়ীজী জানতে পারেন রামধুনে তাদের আগন্তি। পর দিবস বর্ষ সম্পর্কে পারস্পরিক উদারতা ও সহিষ্কৃতার বিষয়ে তিনি সমবেত জনতাকে জানান। তিনি বলেন বর্ষাচরণ সম্পর্কে প্রত্যেকেরই বাবীনতা বাকা দরকার। এ বিষয়ে গায়ের জোরে প্রতিবছকতা স্কট্ট করা টিক নর। প্রকৃত বার্ষিকর কোনো বর্ষের প্রতিই বিষয়ে বাক্তে পারে না। সকল বর্ষই ভার কাছে প্রভার বন্ধ। সেই বেকে রামধুন সম্পর্কে আর কোনো বুসলমান কোনো আপতি উবাপন করেন নি।

এই বয়পের প্রতিদিনের ছোটবাটো ঘটনার ভিতর দিরে লোকশিকাও সমাক-সংখারের কাক করা ঘরকার। তবেই কোনো না কোনো দিন আমরা সত্যই একটা ছারী বিসমের ক্ষেত্র গড়ে তুলতে পারব। মেতাদের কাছে তাই আমাদের অসুরোব তারা অকপট সেবার তার মাধার নিবে প্রামের ঘরিত্র অশিকিত হিন্দু বুসলমানের প্রত্যক্ষ সেবার ভেতর দিয়ে উত্তরকে একই উচ্চেক্তে উদ্বুদ্ধ করে তুলুন।

## সাঁওতাল আইনে নারীর স্থান

**জ্রীচারুলাল:মুখোপাধ্যায়, এম-এ,** বি-এল

গাঁওভালদের ধব্যে নারীর স্থান ও সম্পত্তিতে ভাষার উত্তরাধিকার সধ্যে আলোচনা করিতে গেলে এই বিষরটাই প্রথমে নজরে গড়ে বে, কি করিরা একাড অধিকারহীন, আধিম সমাজের শ্রী-আভি ধীরে ধীরে, পরোক্ষভাবে, নামাজিক আইলের ক্রনার বলে (by indirect legal fictions) সম্পত্তিতে বহু লাভ করিতেহে। এই প্রবদ্ধে আমরা গাঁওতাল পরগণার গাঁওতালদের নারী-ভাতি সহজীর সামাজিক আইনের ক্রমণরিণতি সহতে আলোচনা করিব।

সাঁওতালী উপকৰা ও কাহিনীর পাঠক বাতেই আনেন বে, ইহাদের মতে প্রায় সব নারীই ভূক্তাকৃ ও ইপ্রজাল বিভার পারকর্মী। দ্বাদির সাঁওতালকের মতে নারীদের এত ক্ষতা আহে বে, তাহারা "বোলা"হেরও ঠেকাইতে পারে। এটানরা বেরন বিবাস করেন বে আদি রাজা ইতের দেহ বারী আদ্বের বা পালের পাঁকরার হাড়ে গঠিত হওরাতে, নারীর বভাব হইরাছে বাঁকা, সাঁওতালদের বিবাসও বৃলতঃ প্রার সেই বরপের। "নারীকে বিবাস করিও না," এ ক্বাট গানের বৃরার বত তাহাদের লোক-নাহিত্যে দেবা বার।

আজকাল অবস্তু সাঁওতাল নারী আইনবাটত কতকভালি বিশেষ অধিকার লাভ করিবাছে, কিছু গোড়ার কেন বে সাঁওতালী আইনে নারীর ছান এত নীচে ছিল তাহা বুবিতে হইগে তাহার সামাজিক বুল্য কি তাহা জানা দরকার। বী হিসাবে তাহাকে ক্লর করা হর বুল্য হিরা ( গণং -- bride-price ), উদ্ভেগ্য বিবাহ ও বংলরজা। কাকেই, সাঁওতালরা মনে করে, নারী বিধাতার এক বামবেরালী, দারিত্জানহীন স্ক্রী। সে মানবের পারিবারিক ও সামাজিক জীবনে অতি প্ররোজনীর, কিছু বঙ্ই বুলুটে সজিনী। তাই সম্পত্তিতে অধিকার ও দ্বের কথা, সাঁওতালকের সমাজ-ব্যবহার নারীর ব্যোপস্ক্র কোন ছানই ছীত্রত হর নাই। উদাহরণ-স্বরূপ বদা বাইতে পারে বে, নারী প্রাবের পঞ্চারতে বসিতে পারে না, অবশ্ব সেই বিচার-সভার তাহার সাজ্য প্রহার হয়।

নানা কারণে এই অবছার স্ট্র হুইরাছে। প্রধান কারণ এই বে, আদি সাঁওভাগেরা ছিল যাবাবরণর্মী, প্রধানতঃ রগরা করিরা চলিত ভাহাদের প্রাসাঞ্চাদন। বৌধ বাবছার কুংগিণাসার সান্ত্রী উংপাদন ও বন্টন করিরা ভাহারা দ্বীবনবাত্রা নির্মাহ করিত। যাবাবর দ্বীবন অভিক্রম করিরা, বর্ত্রমান ক্রমি-র্সের প্রভা হিসাবে সাঁওভাগরা সমাজে ভাহাদের প্রকৃত ছান প্রহণ করিরাছে অনেক পরে। কাজেই অহাবর স্পাতিই বর্ধন ছিল না, সেই প্রাচীন কালে নারীর উভরাবিকার সইরা কাহারও মাধা বাবাইবার কোন দরকার হর নাই। ভাহাদের সে প্ররোজন আসিরাছে কালের বিবর্তনে, নৃত্রম সামাজিক পরিবেশে, গাইট্য দীবন প্রহণ করিরা।

আৰকাল সাঁওতাল সৰাক-ব্যবহার অনেক পরিবর্তন লক্ষ্য করা বাব। আদিম কালে বাহাই পাক্ক না কেন, গার্হহা জীবনে গৃহিনীর আসনে নারী আছ বেশ কুপ্রতিষ্ঠিত। বিশেষতঃ, হিন্দু-সমাজের আদর্শ ও এটান মিশনরীকের প্রতাব সাঁওতাল-সমাজে নারীর অধিকায় সহতে পূর্ববতন আদর্শের রূপান্তর হটাইতেতে।

সমভাট ভাল করিয়া বিচার করিতে গেলে বনে রাখা গরকার বে, গাঁওভালরা বনে করে নারীর স্টেই হইরাছে বিবাহের জন্ত। জীবনসলিনী হিসাবে ভালাকে পাইতে হইলে, বুল্য বিরা কিনিতে হর এক টুকরা সম্পত্তির মত। আবাহের বেনন সওপনী গনন, রুজ্বেশীর বৌদ্দের বেনন বর-হনের এক ধালাতে আহার, গাঁওভালনের কলা-পন ( গনং ) ভেমনি বিবাহের অপরিহার্য অল। ইহার অভাবে বিবাহই অসিছ, কালেই সামাজিক আইনের চোবে গাওতাল হামী ভার 'কচি হিরা কেমা' ত্রীর হামী, ব্যুংপভিগত অর্থে বোল আদা প্রভা

আধানতে গাঁওতালদের বিবাহছেদের নামলার অনেক চিন্তাকর্যক ঘটনা দেবা বার; কনে'-পণ ছির করা ও কেরত বেওরাই এ কেরে সবচেরে বছ কাছ। দাম্পত্য জীবনে স্ত্রী নোবী প্রনাণিত হইলে, কুল হানী কলা-পণের চাকা কেরত পার। স্ত্রীর বিক্লভে ব্যতিচারের অভিযোগ প্রনাণিত হইলে বিবাদী উপপতিকে দ্বিশুণ কনে'-পণ (গণং) দাবিল করিতে হয়, বেসারত পার সেই নারীয় স্থানী। তবে বদি হামীই দোবী সাব্যন্ত হয়, তাহার দেওয়া 'গণং' বাজেরাও হয়।

সাঁওতাল নারী নাবালিকা অবস্থার সম্পত্তি হিসাবে থাকে
পিতামাতার আপ্রায়, এই ভাবেই বুল্য দিয়া বৌবনে তাকে
ক্ষর করে তার স্থামী এবং যদি সেই খামীর স্বত্যু হয়, তার
উপর অবিকার বর্তার তাহার পূর্বতেন মালিক পিতামাতার।
ছর্তাগ্যক্রমে যদি তাঁহারাও জীবিত না থাকেন, আস্তীয়স্বজ্ঞমরাও যদি এই অসহায় বিববাকে না দেবে তাহা হইলে
নোভর-ক্ষ্যে নৌকার মত আপ্রয় হইতে আপ্রয়ান্তরে সে
ঘূরিয়া বেছায়। সমাক-ব্যবস্থার তাহার স্থান স্ব্যূচ ভাবে
বীকৃত না হওয়ার—স্থারণের কুপাই হইয়া উঠে তাহার
এক্ষাত্র সংগত্তিবিশেষ বলিয়াই সমাক্ষে গণ্য হয়, তো
সেক্ষেত্রে তাহার উত্তরাবিকারের প্রশ্নটাই যে অবাস্থর।

আধ্নিক কালের দৃষ্টতে সাঁওতাল নারীর এ অবস্থা অত্যক্ত করণ ঠেকিলেও ভাষার উর্ভির আভাস যে বর্তমান পরি-বৰ্তিত সমাজ-ব্যবহায় দেখা বাহু সে ইন্সিত আহরা পূৰ্বে বিবাহি। মনে হর আভে আভে যেন সপ্তিভে নারীর অধিকার সহত্তে সাঁওভাল-সমাজের মনোভাব বহলাইভেছে। **ঘটত: মন্থা**বর সম্পত্তির সাম্প্রতিক **উ**ভরাবিকার-প্রবার ইকা বেদ উপদৃদ্ধি করা যার। আক্ষান ভাষারা আইনভঃ টাকাক্তি, গবাদি পশু ও ভৈত্ৰপঞ্জের বালিক হইভে 'পারে। এই সকল বিজ্ঞান বা হস্তান্তর করিবার দাবি সমাজে খীঞ্জ। সে বে কেবল এই সম্পত্তির অছি বা জিলাদার (trustee) ভাষা নহে, সম্পূৰ্ণভাবে মালিকও বটে। ইয়ানীং প্ৰাৱই দেখা যায় যে, সম্পত্তি বন্টনের সময় কোনও কোনও স্বেহ্মর পিতা কভাকে একেবারে ভূলিরা বান না, খার কিছ না হইলেও অভত: করেকট গুহপালিত পশু ও কিছু চীকাকড়ি দেন। গহনাপত্ৰও নারীর ব্যক্তিগত সম্পত্নি। সে উহা বাছাকে ইছা দান বা বিজ্ঞা করিতে পারে। ভবে বহি বেরেরা পরিবারের টাড়াড়ড়ি রক্ষার ভার নের, ভবে আইন-ৰতে ভাহার অবস্থা (status) ক্যাশিয়ারের বভ: এই সঞ্চিত অর্থের উপর ভাষার কোন দাবি থাটে না। কেই স্তাকে বিনা

र्वाख छानाक विरन, नाबाजिक विवाद तनहें बोरनाक किह বান, ভৈক্ষপত্র ও পরবাছর পাওয়ার ভারিধার। ভাইনের চোৰে এসৰ ভাষাৰ ৰাজ্ঞিগত সন্দল্জি বলিৱা গণা হয়। পৌৰ-শৰ্কিবের (বাৰুনা বা সোহরাই) সমর সাওভাল মেরেরা সামাজিক প্ৰধামত যে বান তোগে, স্বকীয় সম্পদ্ধি হিসাবে ভাৰারা ভাষা আলাদা করিয়া রাবিরা দের। উহার বিজয়লক অর্থের উপরও ভাহাদের অধিকার সম্পূর্ণভাবে খীকৃত। আৰকাল এমনও দেখা যায় যে, খানীর মৃত্যুর পর যদি কোন বিৰবা পিড়গুহে চলিৱা যায়, তবে তাহাকে কিছু স্থাবর সম্পত্তি ধেওয়া হয়। কিছ সমস্তা দীছার, যদি কোন গ্রীলোক वाहित्व बाह्रिया वा मस्त्रमीय काल कतिया अर्जाभार्कन कत्य। এইরণে অভিত অর্থ কি ভাষার ব্যক্তিগত সম্পণ্ডি, না পরি-বারের প্রাণ্য ৭ এই সম্ভার সমাধান-কালে পঞ্চায়েত निरभाक इन्हें विषय विज्ञात कविया (भर्चन :-- (क) नाबी य টাকা বোৰণার করিল ভাহাতে কি ৩৭ ভাহার ব্যক্তিগভ ভরণপোষণ কুলায়, না, কিকিং উদ্ব ও হয় ? (ব) সে যে কাজ করে তাহা কি এত সাধারণ যে, বাচীর অঞাজ মেয়েদের কান্তের ওলনার তাহাতে বেশী বাটতে হয় না ? প্রথম কেত্রে, নারীকে ভাষার বোরপোষের অভিবিক্ত অর্থ সক্ষ করিভে দেওৱা হয়, ধিতীয় কেতে অভাভ মেষেদের মতই বাটনি হইলে সেই টাকা যায় পারিবারিক তছবিলে।

এ পর্যান্ত আমরা অস্থাবর সম্পত্তিতে নারীর অধিকার সম্বদ্ধে আলোচনা কৰিয়াছি, কিছ ভমিত্ৰাৰ মালিকানা ও উত্তৰাৰি-কার বিষয়েও সাঁওভালদের সামাজিক প্রধা নারীদের পক্ষে বছই কঠোর মনে হয়। অস্থাবর সম্পত্তিতে দারাবিকার ত দুরের কথা, সাঁওভাল নারী ভাষা ভোগদখল করিবারও অধিকারিণী নয়। ইহার কারণ বেশ সহজ, সরল। সাধারণ গাঁওতাল প্ৰভাৱ বৰ্ষ ও সমাক সংক্ৰাছ কণ্ডকছলি কৰ্ডব্য আছে, কিছ নারীরা দে সব অধিকার হইতে বঞ্চিত। তবে আইনের শৃথলের বাহিরেও মামুধের হৃদয় বলিয়া একটা বস্ত আছে। গেইকঃ কোনো কোনো ক্ষেত্ৰে ইহার ব্যতিক্রম দেখা যাত্ৰ। অনেক সময় দেখা বায় স্নেহপ্ৰবৰ পিডা কোন কোন কগাকে স্থাবর সম্পদ্ধিতে অবিকার দিতে চাহেন। আবার काराब काराब श्वरे नारे. चाट्य मात क्या। এ क्टब গুৰুত্ব দেৰে তাহার ভূসম্পত্তি চলিয়া যাইতেছে জ্ঞাতির ভোগে, ভাহার প্রিয়ভমা কভা সম্বল চোখে ভাহা দেবিভেছে। সাঁওতাপ সাৰাজিক আইন এক অভিনৰ উপাৱে এই মৰ্দ্রাভিক অবধা হইতে বুঞির পথ বুজিয়া বাহির করিবাছে। প্রতিট बहेबन :---निछा बक पत्रकामाहै त्वत नतन करात विवास দিল। ভাষাই হইল ৰাখীর ছেলের মত। ভাষাকে কনে-পণ ( প্ৰং ) দিয়া শ্ৰী ক্ষম ক্ৰিছে হইল না। সে বভৱবাড়ীছে প্ৰায় পাঁচ বছর অৰ ৰাষ্ট্ৰয় এই ছাকা শোৰ কবিবে। ভাষার भव (ज यवा देखा खवा हिनदा गरिया।

এই বরকামাইরের অবিকার একমাত্র তাহার স্ত্রীর উপর, বঙরশাঙ্গীর রুচ্যুর পর তাহাবের সম্পত্তিতে তাহার নিজের কোন উভরাবিকারের লাবি নাই। বিবাহের কলে তাহার নিজের কোন বন্ধ হর না। তবে বিধি তাহার বন্ধরের এমন ইচ্ছা থাকে যে বরকামাই অবিরুৎ উভরাবিকারী হইবে, তাহা হইগে বিবাহের সময় সমবেত কম্পন্নের সমক্ষে এ বিষয় তাহাকে (গাঙ্গরকে) সুম্পট্টভাবে বোষণা করিতে হয়। এই তাবে, সাবারণ সমক্ষে প্রকাশিত ইচ্ছা সামাজিক আইনের দৃষ্টতে যৌবিক 'উইলে'র সামিল।

वश्रजः शक्त वर्षामारे वाबित्न छेखदाबिकाद चार्च कर्णाए । ঘদের চোবে ভাষাতা একভন সামাভিক জীবমাত্র। সে ভাষার খীর মালিক: কিন্ত ইহার বেশী কিছু অধিকার ভার মাই। সে যদি আৰু খণ্ডবালর হাড়ে, কাল সেবানে ভার কোন হাবি-দাওয়া টকিবে না। তথাক্ষিত কোন আত্মীয়ের সম্পদ্ধিতে তাহার বন্ধ নাই! এইরূপ বিবাহের কলে জাত সভানরাই একমাত্র ভবিয়তের কপভোগ। ভবে বদি ধরকামাইবের জীবখণাৰ ভাহাৰ জীৱ মৃত্য ঘটে, সেক্ষেত্ৰে সাঁওভাল-সমাজ সম্পত্তিতে ভাহার শীবন-গড় খীকার করে-- শবন্ত সে বদি भुमताश विवाह भा करता। अवेतरण अक चारेमण कन्नमात (legal fiction) আশ্ৰয় নিয়া সাঁওভাল चाण्डासतीन विधात-वृद्धि कशांत धेसवाविकांत भरवाच्छारन যানিয়া লইয়াছে। আইনজ্ঞাৰ জানেন জনমন শার্ণাতীত কাল ২ইভে আইনের চোখে গুলা দেওরার জভ কত না কৃষ্-কিকির আবিভার কবিয়াছে। গাঁওভাল নারীর অবহার উন্নতিতে হিন্দু সমাজ ও এটান বিশ্বরীধের প্রভাব ত আছেই আদাপতের বিচারকগণও সুবিধা পাইলেই ভাছাদের স্বার্থের ধিকে গক্য রাবিরা চলেন। ভাই আমরা দেবি, সাঁওভাল পরগণার অনেক সেট্দবেণ্ট কোর্ট ধানী ক্ষরিতে সাঁওভাল কন্যা-সভানের জীবন-স্বস্থ সাব্যস্ত করিয়াছেন এবং অনেক শিক্তি সাওতাল বিবাহিতা কলার উপ্রাবিকারের দাবি শীতি হিলাবে স্বীকার করেন।

কিছ আৰও বিষযার অবহার বিশেষ উরতি হয় নাই।

যারীগৃহে সে অহাবর সম্পত্তি পাইতে পারে বটে, কিছ

যাবর সম্পত্তিতে তাহার কোন দাবি নাই। সন্তানেরা

যারা-মরতা বা কৃতঞ্জতার বলে বিষবা মাকে আশ্রম দিতে
পারে; নিঃসপ্তান জীলোকের সমল পিত্রালয় অথবা শতরালরের আগ্রীয়-সন্তনের আশ্রম। সেবানেও ঠাই না মিলিলে এ

বাড়ী ও বাড়ী, বৃক্তভাত আছেই। সাঁওতাল বিষযার এই

মর্ম্মন্থদ অবহার প্রতিকারের ক্ষ্যু শিক্ষিত সমাকে চেটা

চলিতেহে; অনেক সভা-সমিতিও হইরাহে। তাহাদের
উক্ষে, বে সমভবিষয়া পুম্বিবাহ করে না, মৃত স্বামীর সম্পত্তি

হইতে তাহাদের বোরপোষের দাবি খীকার করা। কিছ

এই সব আহিন সমাক্ষের রীতিনীতি বৃহুই অচল, অমৃত।

7.068

গাঁওতাল-সরাব্দে সংকারের চেটা অতি আব্দিক ও বৃষ্টিয়ের লোকের মধ্যে সীমাবদ। এই কল্যাণ-প্রচেটার আব্দ পর্যন্ত কি কল ক্ইরাছে তাকা দেবা বার ১৯০৮ সালের "সাঁওতাল দরণণা এন্ফোরারি কমিট বিপোর্টে"র ৪৯ পৃঠার। "দাম অববা উইলে হভাতর" সবতে আলোচনা কালে কমিটর সভ্যপণ বলিরাছেন, "অনেক বংসর বরিরা বারে বারে এমনি একটা মত শিক্ত গাড়িরা বসিতেছে যে, সাঁওতাল নারীর অবহার পরিবর্তনহচক আইন প্রধান করা হউক। কিছ এ দরছে সব সাঁওতাল একমত নর। এ বিষয়ে কমিট অনেকের সাক্ষ্য লইরাছে, ভাকাদের মধ্যে সাঁওতাল 'মালকো (টো?) সভা'র সভাপতিও ছিলেন। কিছ এই প্রস্থিতপথী প্রতিঠানও খোগাজিত সম্পত্তি হাড়া উইল করিরা সাঁওতালদের অন্য

কোন সম্পত্তি হন্তাছর করিবার অবিকার দেওবার পক্ষণাতী নতে। আবার বোপান্ধিত সম্পত্তি বলিতে আইনতঃ বোঝা বাইবে সেই অনি বাহা সেই একঃ নিজে আবাদ করিবাছে। কারণ সাঁওতাল পরগণার অনি হন্তাভবের বিক্তে আইন আহে। কালেই আইন পরিবর্তনেও বিশেষ কল হইবে না।" এই সব বিবেচনা করিবা কমিট এই মত প্রকাশ করিবাছেন যে আইন করিবা এ অবছার পরিবর্তন সাবন করা মৃত্তিসমূত নর; সামাজিক প্রধা খীরে বীরে, খাভাবিক নিরমে প্রপতিন্তুক আদর্শের দিকে বাইবে। পরিপেশের, কমিট প্রপারিশ করিবাছেন যে, উত্তরাবিকার আইন্দটিত মানলাগুলি যেন ঘর্ষামন্তব সাঙ্গভাগদের কাছে সালিশের মত দেওবা হয়। এইরপ কর্ষাক্রমৰ মৃত্য সূত্র সামাজিক নজির স্করিব প্রেম বিশেষ অমৃক্ল হইবে।

### শেষ অধ্যায়

#### শ্রীতারাপদ রাহা

শ্রীকোলের পাঁচু কুঞু দেশে কিরল—একেবারে পাক। দশ
বহর পর। দেশে হয়ত লে কিরতই না, কিছা দেশের ভাগ্য
চাল—রেসুনে বোমা পর্যা। ভাই দেশের মাটি এবার পাঁচুর
চরবর্গি পেল।

পঁথজিশ বছর আপে—বিশ বছর বরসে বর্ধন সে প্রথম চলকাভার যার তথন তার গৈতৃক ভিটের ছ্থানি শণ বাসে ছাওরা বর ছিল—সে বর ভেডে চ্রে পচে করে মাট হয়ে পেছে—তবে আরগাটা এখনও একটু উঁচু আছে। সেখানে ভার ভাগ্নে রসমর বেগুন চার করতে স্থাপ করে দিরেছিল। মানার ছ'চার বিঘে বানের অমিও লে-ই ভোগ করত।

পাঁচু এসে প্ৰথমে ভাগ্মের বাভিতেই উঠল—কিছ এ
পোড়া মুছ কবে ধামবে কে ভাবে ? ভীবনের বাভি ক'টা
দিন হয়ত দেশেই কাটাতে হতে পারে। অনেক ভেবে চিছে
পাঁচু ঠিক করলে—বাপের ভিটেডেই আবার চালা তোগা
ৰাক।

প্রভাবটা ঘণাসমরে ভাগ্নের কানে গেল। মানা দীর্ঘ কালের কর আর হবংস করতে এসেছে বুবে রসমরের মনটা ভেমন ভাল ছিল না—ভার পর বেওনের কেতটাও হাতছালা হয়ে যার দেবে সে রীভিন্নত থাপা হয়ে উঠল। মনের ভাওন মনের ভাওন মনের ভাবন হেপে সে মানাকে ভানেক বোঝালে, ভার্বের জানালে, ভার্বার করলে, কিছা পাঁচু অটল। ভাগ্নের অভটুক্ বরে—অভওলো কাভাবাভার মাবে পোরা ভার থাতে সম মা। ছাজার হোক এতদিন সে কলকাভার—

क्वक चर्ड (म बन्न किहू मन-किवि-- छ्यू चन्रीन चार

वारिका (अ अरक्वारत विशेष कहरण भारत मा-- कारन (अ विरत्न करन नि।

স্তরাং পাঁচু নিজের ভিটের হর তুলবে এতে আর কেউ বাবা দিতে পারদে না। ভাগ্নে-বৌ বিরক্ত হয়ে স্বামীর কাছে বললে, তুমিও যেমন—বনের পানী কি কখনও পোধ মানে—এতকাল কলকাতার কি করে কাটিয়েছে কানি ত সব।

এ সব কথা অবস্থ পাঁচুর কামে আর গেল না—পে নিবিকার চিতে ল'বানেক টাকা বরচ করে লপের ছোট এক বানা পোবার বর ও একবানা রাহাধর ভূলে নিলে। সেখানে ছবেলা ছট নিজের জন কৃটিয়ে নেওয়া—বাস—ভার পরই ছট। মাবে মাবে সে কালও করতে হ'ত না ভার— রসময়ের বছ মেরে রাবা এসে ছট রেঁবে দিয়ে নিজেও বেছে বেভ—পাঁচুর কেবল ভাগ, পালা, গল আর পাছা বেছানো।

পাঁচুর প্রাণের বন্ধু ছয়ে উঠেছে বিহারী। বন্ধুত্ব আবঞ্চ তাদের আগেও ছিল; ছেলেবেলার বেলার সাধী— দীর্ঘ আদর্শনে পেটা কোধার গিয়ে গাঁড়িয়েছিল, সে কথা ছ্জুনাই জানে, তবু দেখা যথন হ'ল—

বিহারীরও করবার কিছু ছিল মা। বউ কবে মরে গিরেছে, একট মাত্র থেরে। প্রাথেই বিরে হরেছে তার। বিহারী নিজের অমিক্যা মেরেকামাইকে দিয়ে তাদের বাড়ীতেই থাকে, থাওয়া-দাওয়া করে। কাকেই পাঁচুর বাড়ীতে আঞ্চা দিতে ভার সমরের অভাব নেই।

ভাস, পাশা আর ভাষাক---এই ভিনটই প্রধান। বেগার সাবী না ষ্টুলে মাবে মাবে ভারা প্রাণ বুলে পরনিকা পর-চর্চা করে---নিকেণের জীবনের অভীভকে টেনে আবে। অগতে এই তিনট জিনিসের অভাব বড় কবনও হর না—
বিশেষ করে এবন। রেলুনে বোমা গভার ভবু পাঁচু কুড়ু
দেশে কেরে নি—কিরেছেন অনেক মহা মহা রবী, বাদের
ছেলেপিলে কীবনে প্রথম এই তাদের পিড়পুরুষের ভিটে
দেশলে। একেবারে ছোট বেকে আরম্ভ করে বিশ-বাইশ
বছরের ছেলেমেরে, প্রথমে এসে এদিকে ওমিকে পুর ফুটাষ্টুটি
করলে, নৌকো চাপলে, সাভার কাইলে, গাছে চড়ল—
লক্ষিণের মাঠে হাওয়া বেতে গিয়ে মইরের শাক ভূলে
আনলে। বরস্বা মেয়েরা সব হাটে গিয়ে টাইকা সঞ্জী কলমূল
সব কিনে আনলে। তাদের হাবভাব দেবে মনে হয়
জারগাটা বুবই মনে লেগে গেছে তাদের, এভদিন এবানে
আনে নি কেন ভারই ছড়ে যেন আপ্রশাব।

পাঁচু আর বিহারী এদের কাও দেবে আর হাসে, এত ভুচ্ছ জিনিসজলোকে কত বছ করেই না দেবছে এরা । পাঁচুর না হলেও বিহারীর মনে একটু রোমাঞ্চও লাগে। কলকাতা থেকে এসে গ্রামকে ভাল লাগা সে কি সোজা কথা ? হবে না—ভাগের গ্রাম কি কম। এ গ্রামের ফল মিঠে, জপ মিঠে, থিঠে গরুর ছব। এমন টাটকা মাছই বা কোথার পাবেন ?

ভাগ আর পাশা শেষ হলে অঞ্চ বেলোয়াড় সব চলে গেলে এট সব গল্পই চলে ভালের। কোন কোন দিন শহর বেকে আগত ভরণতরুণীদের প্রসঙ্গ।

বিহারী বলে, আর দেখেছিস পাঁচু চক্কোণ্ডি বাড়িতে যে ছটে: বিহা নেরে একেচা প্রিন-ছাবিল বছরের ছেলের সঙ্গে—

তাতে কি । কলকাতায় মেরেরা ত আজকাল হর্দম বাজার করতে যায়—চাকর সকে করে সিরে নিজের বুলি মত বাজার করে নিয়ে আলে।

ৰা, ৰা---ভাই বলছি ৰা কি আমি ?

ভবে ?

বলছি---শোন না কেনে---

বল ।

বদহি---বাকার করতে যাবি যা---ভা বাপু অধনি বেছায়া-

কেন কি করলে ?

আবে ভাই—সজী বাজারে কিনছে সজী, আমি দেখলাম, তথম বেশুন কিনছিল গুৱা—সঙ্গে কলকাতা থেকে আনা চাকরটা। সঙ্গের ঐ থেড়ে ছেলেটা হেলে হেসে কি যেন কিস্ কিস্ করে বললে ঐ বড় মেরেটার কানে কানে—অমনি মেরেটা কিক্ করে ছেলে বসিরে দিলে ছেলেটার দিঠে আছা করে এক কিল। অভগুলো মানুষের সামনে। দেখে আমার মনটা এমন বারাণ হরে পেল—

পাঁচু ভাষে বললে, হ —ভাষণর একটু থেমে বিজ্ঞাস। করলে—ভা ভোৱ ষম এভে ধারাপ হতে গেল কেন গ

विश्वी क्रम्बान किहरे बनान मा, जावनब कि क्या

বললে, না ভোর কাছে বলৰ ভাতে আর কি—সরলার বা বেঁচে বাক্তে— বানে বিদ কোন দিন কোন রহজের কবা বলতান ভা'লে দেও অমনি করে,…কি হানহিল তুই…তুই এর কি বুববি বল—বিবে ভ করলি নে কোন দিন ?

পাঁচু তবুও হাসৰে: বিষে বা করলেই বুবি কিছু বোবে না কেউ—না ?

বিহারী এবার মাধা ছ্লিরে নিকেও হাসল: ভাই ভ আমি যে ভূলেই গেছলাম—ভূই ভ এভদিন কলকাভা কাটরে এলি।…হারে—এখনও কেট ভোর…

পাচুর একটা দাত পড়ে গেছে—তবুও বাকিওলো বের করে—চোব মিট মিট করে কেমন এক অভূত হাসি হেসে সে বললে—আর কি বৌবন আছে, দালা। তারপরই বিহারীর বিকে চেবে চোব টপলে—বিহারী কি বুবলে সে-ই কানে।

এখনি করে সুযোগ পেলেই ছুই বছু মনের কথা খুলে বলতে চেটা করে। কলকাতা বেকে আগত তরুণতরুণীই তাখের আলোচনার রসদ কোগায় বেই।

এদিকে কলকাতার ছেলেমেরেদের পদ্ধীবাসের উৎসাহ ক্রেটে নিভে আসছে যেন। বাদ বাসে অবঙ তারা আড়ধর করে ঠাকুর গড়িরে সরস্বতী পূকা করলে— চৈত্রে নদীতে বাঁপা-বাঁপি। কিন্তু সে তাদের কভক্ষণ ? ছ-দিন বেতে না বেতেই তাদের সুর পাগটে গেল। একক্ষন বললে— বাপুস্। কি প্রার —আর পারহি না—ধ্যটা পর্যন্ত যেন আটকে আসছে।

अक्**डी চা**रिश्न (भाकान **भर्वष (मरे** !

সিনেমা বে কবে লাই দেৰেছি, তা ভূলেই গেছি বলতে হয়। সভিয় কি সুৰে যে লোকে এবানে বাস করে বুৰি না। একটা ক্লাব প্ৰভ নেই।

রান্তার আলো আহে ?

বই-টই পড়ে বে হ'দও কাটাবো---তা কি কোন লাইবেরি আছে ?

লাইব্রেরি ড দূরের কথা— গ্রামে ক'বানা ববরের কা<del>গক</del> আসে বল ড ?

সংক্রামক ব্যাধিও মত আলোচনা চাওদিকে ছভিৱে পড়ল। শহর থেকে আগত প্রভ্যেক নোকের মুবে শোন, প্রাম একেবারে বাসের অযোগ্য: আনন্দের লেশমাত্র নেই প্রামে— এ প্রামে থেকে লোকের সময় কাটে কি করে ?

ষ্ণাসময়ে বিহারী ও গাঁচুর কাণে ওঠে আপোচনা।
ওনে গাঁচুর কি মনে হয় ঠিক বুবা বায় না, বিহায়ী কিছ
একেবারে মর্যাহত হয়ে পড়ে। সারা দীবন সে এ প্রামে
বাস করে এল—এ প্রামকে সে ভালবাসে। প্রামে আনন্দের
এত রসদ থাকতে এরা কিছু বুঁজে পার না।

চৈত্ৰ, বৈশাৰ, জৈঠ কেটে গেছে, খাবাচও বাৰ বাধ।
নদীতে নৃতদ খল এসেছে, খীত হবে উঠেছে কুবাবের বুক।
প্রামের মাঠ বাট বেকে গুলো-বালি কবে উথাও হবেছে—পব
সিঞ্জ, বাবে বাবে কর্গবান্ত। ভাই নিবে শহরে লোকের
নাক সিটকানির ক্বা ভবে বিহারী হংব পাচ্ছে করেক দিন

থেকে। এই কল-কাছার বাবেই ত কত আদশ করে কাটবেহে তারা হেলেবেলা।

বক্লবার, বামারণাভার হাটের দিন। পাভার লোক সব বেলাভি নিরে হাটে লিয়েছে, কিরতে রাভ হবে। 'লঙ্যা উভীণ হরে পেছে, ভ'ভি ভ'ভি রাষ্ট্র পড়ছে, আজ রাত্রে বে বামবে ভার কোন লক্ষণ দেবা যার না। বিহারী পাঁচুর বাভিতে এসে ভামাক সেজে বাঁলের মাচার উপরে পাভা বিহামার লিয়ে বসলঃ পাঁচু, আর পোন্--

পাঁচু বারাশার উন্নে একটা বটতে করে একটু কল গরম করছিল, চা বাবে। কলকাতা বেকে এই বদ অভ্যানট সে অর্তন করেছে। নিজের এক কাপ এবং বিহারীর অভ আর এক কাপ চা নিরে সে বরে চুকল। নাও —একটু চালা হরে নাও।

বিহারী হঁকোটা রেখে চায়ের বাট হাতে করে বগলে— ভনলে গা ভালা করে রে ভাই---এদের সব নাক সিটকানি দেখে।

পাঁচু একটু হাসল। কলকাতার লোক সব—ওদের কথা আলাহা—

হোক, কিছ আমাদের প্রাথের নিশা কেন ? ও বরসে আমাদের দিন হলো এখানে কি বারাণ কেটেছে ভনি ?

পাঁচ বিহারীর কথার অভ্যোদন করে বললে— হঁ....

হঁ—ৰা—ভেবেই ভাৰ না—চৈত্ৰ বাসে অংশ বাঁপাকাপি
—হুন আৱ লছার ওঁছো নিৱে আংমের ওট হুড়োবার ২৮ কি
রক্ষ ছুটভাষ সব।

नीष्ट्र कटन सृद् सृद् साटन।

ভার পর বৈশাব থেকে কেমন বুড়ি উড়োবার বুম পড়ে যেভ !

পাঁচু এবার মুধ ধোলে, বলে—আর ঘুড়িই ছিল কড রকম। কোঁড়ে পতং চিলে—মাম্থ—ঢোল—ছিল আরও কত কি। কলকাতার লোকে এ সব ঘুড়ির নামই আনে না —চোধে দেখা ত ধুরের কখা। ঘুড়ি বললে খোকে—ওরা কেবল পতং—

**७८वर्ट (वाव**्।

শীচ্ চা শেষ করে এবার আবার তামাক সেকে বসগ। নামা কথা চলতে লাগল। তরুণ বয়সের স্বৃতি উবলে উঠেছে মুক্ষনের।

পাঁচু ভাষাক টানতে টানতে বলে শীতের মাঠে সে মটরের লাক ভোলা মনে আছে—মাধের লেখে পাকা মটরের পোঢ়া বাওরা ?

বুশিতে উত্তাসিত হবে উঠেছে বিহারীর রুখ। মাধা হুলিরে হাসতে হাসতে গে বলে—আছে না ?—আর শীতের কবা কেব—এই বে বর্বা এল—এতে কত আমক করেছি না ? বিলের কলে ভোঙা তাসিরে শাণনা তোলা—কলমি ভোলা !

इरे वक्रे अस्त्रवास तारे चलील विस्त किस्त तारह।

শাচু উৎসাহিত হরে বলে—গুরু বিল কেন—আমানের এই গাঙ ?—এই গাঙেই কি কম কাও করেছি আমরা; কম নাছ বরেছি ?

আর যন্ত্রই বা বিল কত। দোরাড়ি—শাগড়া—বিভি— এক নালা, ভূং—

কেন, বছলি—?

হাঁ, বছশি---ভা ছাড়া বাঁশের চোঙা পেভে পেভে---সেই এক হাভ দেড় হাভ বান মাহ বরা---মনে নেই ?

আছে—বিশ্ব ধোরাড়িতেই বাছ পড়ত বেশী না ? একবার মধে আছে, দোরাড়িতে আমি এক বামা ডিমগুরালা চিংছী পেরেছিলাম।

বিহারী কোকলা দ্বাভ বের করে ছেসে বললে—বাছীতে ত বসে বসে অন্নথ্যে করছি, এবার আবার মাহ বরার চেষ্টা করে দেখা যাক—কি বলিস ?

পাঁচু হঁকোটা বিহারীয় হাতে এগিয়ে দিয়ে বলগে—কিছ অত সব হালামা কে কয়বে বল্ ? সেই বাঁশ কাটো—বেতি টাচো—শাগড়া কেনো—দোয়াড়ি বানাও—মরা হাড়ে কি ওসব পোষাবে ভাই—

আবে ও সব কেন---বছলি -বছলিতে ভ বাটুনি কয়। হাট বেকে ভক্তন হুখেক বনেবালির বছলি কেন, স্থতো বাব ---করেকটা ছিপ বানাও---বাস্।

বিহারীর যুক্তিটা পাঁচুর মন্দ লাগল না। এই কর। বাবে

—হালালা নেই—অবচ বরলে বরবে বড় বড় নাছ—এই,
কাতলা, বোরাল, আড়—

পাঁচুর চোৰের সামনে বেন বড়লিতে বরা ভাঙায় ভোলা বড় বড় বোরাল, আড় সব আছাড় বাছে।

সে দিন অনেক রাত্রি বরে ছই বলুতে মাছ বরার আরও আনেক গল হ'ল—অনেক সলা-পরামর্শ। বছলি পাততে হলে কোবার পাতা যাব ?

পাঁচ্ বললে—কাছারির বাটে—গুৰানে মাছ একট্ গুঠেও বেশী—ভা ছাড়া কাছেও হয়।

বিহারী বলে, পাগল হয়েছ—ওবানে বছলি পেতে সারা রাভ বাবলা গাছের নীচে ঘূপট মেরে বদে বাক্তে হবে।

**(**₹ ?

কেন—নেকা! ওবানে বছলিতে মাছ বরলে— দেই মাছ
পাবে তুমি মনে করেছ? কত লোক আনাগোনা করে।
কেলেরা, বাগদীরা নোকো নিরে ঘোরাকেরা করে—চোবে
পছলেই—অমনি—

ভবে ?

বছলি পাতৰ আমন্ত্ৰা আঙাকৃঠির আট--জানগাটা আল ---মাছ ববে পুৰ---তা ছাড়া---লোকের আনাগোনা কম ৷

ঠিক বলেছিল—মাছ থাবানে বয়বেই। আগে কভ মাছ ধরেছি থাবানে। রাভ জেগে বটগাছের নীচে বলে বাকভার —ভার পর মাহের ভড়াং ভড়াং ভবে—আছা বড়লি পেভে রাভ বেবে বসে বাক্তে হবে ত আমাহের ?

অগহারের মত চোধ ছট করে কেমন একটু হাগলে বিহারী। সে কি আর হবে—তবে বেতে হবে ধুব সকাল সকাল। ধুব ভোৱে—রাত চারটের সময়—বুবলি না।

মাধা ছলিয়ে পাঁচু জামালে—বুবেছে গে। পুলিতে তার ছই চোব তরে উঠেছে। মাছগুলি যেন এবনই তাদের হাতের সুঠোর এসে গেছে।

পরের দিনই উকোলের হাটবার। পাঁচুও বিহারী ছু'লনাই হাটে এসে বেছে বেছে ছু'ডলন বনেবালির বড়নি কিনলে, আর সুভো কিনগে ছু'কেট।

পরের দিন ছুপুরের তাসবেলা কামাই করে—ছুতো গাকিয়ে বছলি বাঁবলে অন্তত বিশটা। তার পর বাঁশবাড় বেংক ছিপ কাটা আছে—বাঁশ কাটা আছে। একটা লম্বা দভি বোনা আছে—কাঞ্চ কি কম।

বাল কেটে ছিপ তৈরি আর সাক্ষ্যরপ্রাম করতে বিহারী আর পাঁচু হাঁপিরে উঠল। বিহারী বৃহ হেসে বলে - আপেকার মত আর পেরে উঠি না বেন রে।

পাঁচু বঙ্গে—বড় বড় মাছ বরে যথম ছড়াং ছড়াং করবে তথন দেখিস—পারিস কি না।

ছই-ভিন দিন বেটে আবোজন এক বক্ষ শেষ হ'ল। এবার চাই 'জিয়ালা'। ভাজাভোজা ছোট মাছ বড়লিতে গেঁথে বড় মাছের জ্ঞাটোপ কেলা হয়— প্রামের লোকে ভাকে বলে 'জিয়ালা'।

সকালে বাজীর। যধন বিভি তোলে তথন চ্ই বন্ধু একটা ধটিতে করে তাজা জিয়ালা কিনে আনলে। পথে আনবার সমর তাজা পুঁটি, চাাং, আর ধররা মাছের ধলবদানি দেখে—
আর চ্ই বন্ধু পরস্পর মুখ চাওরাচাওয়ি করে হাসে। আজ রাজে।

ছপুরে থাওয়াদাওরার পর তাস থেলা আর সে দিন তেমন কমল না—ছই বন্ধুর চোখে সেদিন বিরাটকার, বোয়াল, চিতলের পুছে-আন্দোলন।

বেলা পড়ে এল। সন্ধার কাহাকাছি ছই বছু বেশ করে ভাষাক বেনে—মনে মনে মা হুর্গাকে বানিকক্ষণ ভেকে সাক্ষ সরঞ্জাম নিয়ে রওনা হ'ল ভাঙা কুঠির ঘাটে।

ভারণ। বাহতে বেশ থানিককণ কেটে গেল,—ভারণর গামহা পরে নামল হ'কনা কলে। প্রায় বিল হাত ভকাং করে হটো লগি পোভা হ'ল, ভাতে বাঁবা হ'ল একটা দভি—ভাত এক ভক্তন বঁড়লি জিরালা বেঁবে এই দভিতে বোলাতে হবে, বাকি বছলি হিপে।

জিয়ালার মাছ ক্রেক্টা মরে গিরেছিল, তা বাক, এবনও বা আহে তাতে তাদের বেশ কুলিরে বাবে। কুড়িটা মাছ কুড়িটা বঁড়শিতে গেঁকে ববাছানে বুলিরে, ছিপে লাগিরে ববন তারা কাজ শেষ করলে, তবন সভ্যা উভীর্ণ হরে গেছে। ভার পক্ষের তৃতীরার চাঁহ আকাশে অভ যাছিল, ভারই আব হা আলোতে হই বহু দেবছিল গাঙের বুকে ভাষের টোপের মাছের বলবলানি, দেবে চোবে হার ঘনিরে আগছিল। কৃত কৃত বছর আগে ভারা এমনি করে বঁছলি পেতে বংস্যালিকারের আলার বঙ্গে বাক্ত। শহরে ছেলেরা এলে বলে কিমা এনে আমল নেই।

তৃতীয়ার চাঁদ অন্ত পেল। বিহারী বলে, চল গাঁচু বাজি চল-কাল আবার স্কাল স্কাল ওঠা আছে।

희, 5에---

হঠাং একটা বড় মাছের আক্ষাগনের শব্দ শোমা গেল, পাঁচু বলে---আছো গাঁড়া আর একটু দেবে ঘাই, বরে বলি---

আরে ওরাত পারা রাতই এমনি করতে **বাকবে**— ও দেবতে গেলে আর বাড়ী বাওরা হর না।

গাঁচু এক রকম নিনতির স্থরেই বলে--একটুবানি হাঁছা ভাই--এইটে দেবে ঘাই।

কেমন একটা দীৰ্ঘ নিখাসের মন্ত যেন শোধাপ বিহারীর উপ্তরটা: আমি আবার রাজে আপেকার মন্ত চোৰে দেশতে পাই মে কি না।

পাচু নদীর দিকে চোৰ রেবেই উত্তর দিলে---প্রভাতে আলো আনতে ভূলিস্ নে যেন !

भाजन ।

নদীতে আর নাছের সাধা নেই। ছই বছু এবার বাছী রঙনা হ'ল। বিহারী সম্ভাবে পা টলে টলে পাচুর শিহনে শিহনে চলেছে: এফটু আন্তে আন্তে চলিস্, ভাই।

है।--- पूरे जाय।

আৰু আৱ ভোৱ ওধানে আজ্ঞা দেব না, একেবারে বাষী নিয়ে ধেরেই ভবে পছব।

হাঁ, কাল আবার সকাল সকাল উঠতে হবে।

একটু সন্ধাগ বাকবি,---উঠতে দেরী হয়ে না যায়।

ভূই আগে উঠলে আলো এেলে আমার ওবানে চলে আগবি---সময় বাকণে একটু চা বেমে যাওয়া বাবে।

ভূই যদি আদে উঠিগ ভবে আমার ওবানে এবে বিছারী দা বলে ডাকিস---বুবলি :

এমনি করে কথা বলতে বলতে ভারা দিয়েত্ণাতা ছাতিরে বাতীর কাছে এগে গেল। হারাণের মা'র গাবতলার এলে উভরের ছাডাছাতির শালা।

পাঁচু বলে-ভবে ঐ কৰা ৱইল--চাৱটে--ক্ষেম ?

হাঁ—চারটে, বড় কোর লাড়ে চারটে—ভার চেবে দেরী হবে না।

আবার সাড়ে চার কেন—চারটেয় আসভেই চেটা কহিস, কেমন গ

ৰাছা---

বাহা---

ছই মংস্য-শিকারী রাভের মত পরস্পরের কাছ খেকে বিয়ায় নিলে।

ধ্রুবকে উভরে প্রহরী রেবে আকালের ভারারা মিট্ মিট্
করে সরে বাজে—বর্ষার গাঙে নাবে মারে বভু মাছের
পুঞ্ছ আন্দোলনের শব্দ শোনা যায়। ভাঙাক্সীর ঘাটে ঢাং
বোরালের চলাকেরা।

আকাশের ভার: অপস্ত হড়ে। ত্রুভারা উঠেছে আকাশে। ভাঙাকৃমীর খাটের উপরে দুর্বাদল—শিবি-সিক্ত--পূব আকাশ রাঙা হরে উঠেছে— দুর্বায় পদচিহ্ন পড়েনি কারও। --- আরও করসা হ'ল। নিতাই আর ছিদান কেলে বেশলা আল নিরে আঙাক্সীর ঘাট দিরে বেতে, বঁড়লিতে হুটোবড় মাহ দেবে ভাড়াভাড়ি নৌকো কাহে ভিড়ালে।

ওরে, ও নিভাই---দা-চা দে ত শীগ্সির--- স্তোটা কেটে নিই---

নিতাই দা এগিয়ে দিতে দিতে বললে, সুমিন্দির ভাই— বঁড়লি পেতেছেন—বঁড়লি পাতলেই অমনি মাছ খাওৱা বার।

--- জারও ফরসা হরে গেল— হব উঠে উঠে— ভাঙা কুঠির ঘাটের উপর শিশিরভিকা দুর্নাদলে ভবনও কারও পদ্চিহ্ন পড়ে নি ।

## অশ্বঘোষের বজ্রসূচী

শ্রীমুজিতকুমার মুখোপাধাায়

ভাগৰোধ ইঠার প্রথম শতাকীর প্রারম্ভে বর্তমান ছিলেন।
তিনি লাকেতের এক রাজ্যপবংশে ভ্রম্প্রহণ করেন। বেদাদি
লাজে ভাগারার পাভিত্য লাভ করিরা পরে তিনি বৌহনত
গ্রহণ করেন। তিনি একজন প্রসিদ্ধ করি ও দার্শনিক ছিলেন।
ভাঁছার রচিত সৌল্বনন্দ ও বৃহচরিত অপূর্ব কাব্য। পৃথিবীর
বিভিন্ন ভাষার বৃহচরিতের একাদিক অপুরাদ হইরাছে। কিছু
দিন হইল নীর্ত রক্ত্রিকাণ ঠাকুরকৃত বৃহচরিতের বলাগ্রাদ
বিবভারতী হইতে প্রকাশিত হইরাছে।

অবংশাষের বার্শনিক ও অভাভ নিবংগির মণ্যে "নেরাখ্যা-পরিপুঞ্ছা" ও ব্যুব্দীর মূল (সংস্কৃত) পাওয়া সিয়াছে। নৈরাখ্যাপরিপূঞ্চা ১৯৩১ ইউাজে বিশ্বভারতী দ্বতে প্রকাশিত হয়। ব্যুব্দীও ছাপা দ্বতেছে। এই ব্যুব্দী সহতে পূর্বে প্রবাসীতে (আধিন, ১৩৫২) আলোচনা করিরাছি। এবন ইহার সম্পূর্ব কলাজ্বাদ প্রকাশ করিলায়।

### বজ্রসূচী

ওঁ মঞ্নাপকে প্রণাম করি।

কাৰধনোবাক্যে ক্সদ্গুল বঞ্গোষকে প্ৰণাম করিয়া আমি ক্ষাবোৰ বন্ধকটী গ্ৰন্থ প্ৰথম করিতেছি।

বেদসমূহ প্রমাণ। স্থৃতিসমূহ প্রমাণ এবং বর্ণাবযুক্ত বচনসমূহও প্রমাণ। প্রমাণ বাহার নিকট প্রমাণ নহে, ভাহার বাক্যকে কে প্রমাণ মনে করিবে ?

আপনাদের মত হইতেছে এই বে সর্ববর্ণের মব্যে রাক্ষণ বর্ণ প্রধান। এবানে আনাদের প্রশ্ন এই বে—কে এই রাক্ষণ? আছা রাক্ষণ না ভাতি রাক্ষণ? পরীর রাক্ষণ না জান রাক্ষণ? আচার রাক্ষণ না কর্ম রাক্ষণ—না বেহু রাক্ষণ? কে এই রাক্ষণ? আহা বা শীব ভো আহ্মণ নয়। যদি বলেন কেন ? তাহার উত্তরত এই যে এ বিষয়ে বৈদিক প্রমান বহিয়াছে। বেদে ক্ষিত্ত আছে—ওঁ হর্ষ পশু ছিলেন। সোম পশু ছিলেন। ইন্দ্র পশু ছিলেন। পশুগন দেব হুইলেন। আদিতে এবং অন্তে তাহারাই দেবতা এবং তাহারাই পশু। খপাকও ব্যাহ্মণ হন।

আত্তর বেদের প্রামাণ্য হেতু আমরা মনে করি আরা প্রাথণ নয়। (মহা)-ভারতের প্রমাণ হউতেও ইহা জানা যায়। ভারতে উক্ত হইয়াছে:—

দশার্ণের সথা ব্যাব, কালঞ্চর সিরির মুগগণ, শর (বা সরিৎ) ঘীণের চক্রবাক্গণ, মানস সরোবরের হৎসগণ, ক্রক্ষেত্তে বেদ পারণ ত্রান্ধণরূপে জন্মগ্রহণ করে।০

অতএব তারতের প্রামাণ্য হেতু ব্যাধর্গহংসচক্রবাকে বাহ্মণ্য দর্শন হওয়ার আমরা মনে করি জীব ব্রাহ্মণ নয়। মানববর্ষের প্রামাণ্য হেতুও ইছা সিদ্ধ হয়। মানববর্ষে উষ্ণ হইয়াছে:—

সালোপাল চারি বেদ অর্থসহ অধ্যয়ন করিয়াও পুরু হইতে প্রতিপ্রহ প্রহণ করিলে ত্রাগ্রণ গর্মভারণে অধ্যয়হণ করেন।

১। বান্ধসনেরসংগ্রিতা, ২০৷১৭; শক্তপথ ১০৷২!৭৷১৩-১৫; তৈছিরীয় , e৷৭৷২৬ কাঠ, অধ, e৷৪ ৷

২। তুসনীয়:—বে-নীব শুদ্রবোনিতে, চণ্ডালবোনিতে এবং তির্বক-বোনিতেও জন্ম গ্রহণ করে, কুম কৃমি প্রভৃতির ক্লণও প্রহণ করে, সেই নীব বান্ধণ হয় কিন্ধণে ? ভবিবা পুরাণ, ব্রাক্ষ, ৪-।২৬-২৯।

শতীতে, বর্তমানে ও ভবিষ্যতে জনেক প্রকারের দেহ গ্রহণ করা সংবেও জাস্তা সবসময় একরূপই থাকে। ভাহার মরূপ পরিবর্তন হয় না। একই জাস্তা কম'বলে নানা দেহ (শুক্ত চন্ডাল ও পশুদেহও) গ্রহণ করে। জতএব আন্ধা প্রাক্ষণ নহে !—বক্সফুটী-উপনিবদ।

७। इत्रिवरण, २८।२०-२১; खविवा, ८०।२७-२०।

যাদশ কর গর্মত, যাই কর শৃক্র এবং সপ্ততি কর তিনি কুক্র ব্রীয়া থাকেন। মহু এইরপ বলিরাছেন।৪

শতএব যানবৰৰ্ষে প্ৰামাণ্য হেতৃ শীব ব্ৰাহ্মণ নয়। শাতিও ব্ৰাহ্মণ নয়। স্বতির প্ৰামাণ্য হেতৃও ভাষা সিদ্ধ সয়। স্বতিতে উক্ত হইয়াছে :----

হতি অচল জন্মহণ করিরাছিলেন। উল্কী হইতে কেশপিল্ল (কণাদ), অগণ্ডি পুল্ল হইতে অগন্ত্য, হুল হইতে কেশপিল্ল (কণাদ), অগণ্ডি পুল্ল হইতে অগন্ত্য, হুল হইতে কৌলিক, কপিলা হইতে কপিল, লরগুল হইতে লগিতম (কুণাচার্য) এবং জোণাচার্য কল্প হইতে ক্ষপ্রহণ করিয়া-ছিলেন। তিন্তিরি তিন্তিরীর (পক্ষীর) সপ্তান। রেপুকা (ক্ষিমা) রামকে ক্ম দিয়াছিলেন। হরিটা প্রগ্রন্থ মূনিকে, কৈবর্তিনী ব্যাসকে, শুক্তিকা কুলিককে, চঙালী বিভানিত্রকে (পরালরকে?) এবং উর্বলী বলিঠকে ক্ম দিয়াছিলেন। উছিলের মাতা লাগ্যনী নহেন, কিছে লোকাচারে তাঁছারা লাগ্যন।

ষ্ঠ এব খৃতি-প্রমাণ হইতে স্বামরা মনে করি স্বাতি ত্রাপ্রণ নম । যদি স্বাপনারা মনে করেন মাজা ত্রাপ্রণী না হইলেও পিতা ত্রাপ্রণ হইলেই ত্রাপ্রণ হয়, তাহা হইছে ত্রাপ্রণের উন্নস্ভাত দাসীপুত্রগণত ত্রাপ্রণ হয়। কিন্তু ইহা স্বাপনাদের (ত্রাপ্রণাল্য) স্বাচীই নম ।

আর কেবলমাত্র আমনপুত্রই যদি ব্রাশ্বণ হয়, ভাছা হইলে ব্রাশ্বণাভাব ঘটে। আজ্কালকার ব্রাশ্বণস্বের পিতৃবিধ্য়ে সন্দেহ আছে। কেন না, গোত্রবাশ্বণ হইতে আরম্ভ করিয়া ব্রাশ্বীগণের বৃদ্ধ সহ্বাস দেখা গিয়াছে।৬ অভন্রব ছাতি ব্রাশ্বণ নয়।

মানবৰ্মের প্রামাণ্যবশতত তাহা সিদ্ধ হইতেছে। মানব-হমে কৰিত আছে:—মাংস ভক্ষণের হারা আফাণগণের সভ-সভই পতন হয়। সাক্ষা ও সবল বিক্রয়ের হারাও পতন হয়। মুদ্ধবিজ্ঞী আফাণ তিন ধিনের মধ্যে শুদ্ধ হয়।

हिन्दान, २१।२१, ८२; ७२।२८-२०, १२-१४। विक्लूनान, ८वं आत्म, ११०-७, २०।२२।२०, २१। वागुनुतान, উভ्डात्म, २२।৮७-৮१, ১२२। खानवड, २।२२।७५ निवनूतान, वर्षमहिन्छा, २२।१५। खविया नुतान, ४२।२२-२८। আকাশচারী (পড়িসম্পন্ন) রাজ্বগর্ণও বাংসভক্ষবশৃথ পতিত হয়। বিপ্রগবের পতন দেখিরা মাংস বর্জন কর উচিত।

শভএব মানববর্ষের প্রামাণ্যছেত্ থাতি ত্রাক্ষণ নর কারণ যদি লাতি ত্রাক্ষণ হয় তাহা হইলে পভবে শুত্রত সঙ্গনর। অব দোমমুক্ত হইগে কি শুকর হইরা যার ? শভএব কাতি ত্রাক্ষণ ময়।

শরীরও প্রাঞ্চণ নর ।৮ কেন ? যদি শরীর প্রাঞ্চণ হং তাহা হইলে অগ্নি প্রস্থাহন । এবং প্রাঞ্চল-শরীর দাহকারী আগ্নীয়পাত ক্ষমিয়া হৈ ক্ষমিন বিশ্ব প্রাঞ্চল ক্ষমিয়া হৈ ক্ষমিন বিশ্ব প্রাঞ্চল ক্ষমিয়া বিশ্ব প্রাঞ্চল ক্ষমিয়া বিশ্ব প্রাঞ্চল ক্ষমিয়া বিশ্ব প্রাঞ্চল বিশ্ব প্রাঞ্চল ক্ষমিয়া বিশ্ব প্রাঞ্চল ক্ষমিয়া বিশ্ব প্রাঞ্চল বিশ্ব কর্মিয়া বিশ্ব বিশ

ক্ষানত ত্রাগ্যণ নয়। কেন ? ক্ষান বাহুল্যাংকু। যাহার।
ক্ষানবান বৃদ্ধ ভাহারাও ভাহা হইলে ত্রাগ্যণ হইগ্রাযান। বৃদ্ধ
কৰনো কৰনো বেদ-ব্যাকরণ-মীমাংসা-সাংব্যবৈশেষিক-লগ্ন
আন্তীবকাদি সর্বনাম্বার্থনিদ্ ইহাও ভো দেবা বার। কিছ
ভাহার। ভো ত্রাগ্যণ (বলিরা গণ্য) হন না। অভ্যাব
আ্বাদের মত এই যে জ্ঞানত ত্রাগ্যণ ময়।

আচারও প্রাঞ্জ নর। কেন ? খণি আচার প্রাক্ষণ হব । তবে বাধারা আচারবান শুদ্র তাঁধারা সকলেই প্রাক্ষণ হব । মনি ন নিউট কৈবর্ত ওও প্রভৃতি প্রচণ্ডর নানায়ণ আচারবান বহু শুদ্র দেখা যায়—কিছ তাঁধারা প্রাঞ্জ হন না। অভ্যান আচারও প্রাক্ষণ নয়।

কর্মণ্ড ত্রাগ্রণ নয়। কেন না, দেখা যায় ক্ষমিত্র বৈশ্ব ক্ষ যক্ষনখাকন-অব্যাধন-অব্যাপন-দান প্রতিপ্রহসপ্পর্কীয় বিবিদ্ধ ক্ষ করিসেও তাঁহারা আপনাদের মতে ত্রাগ্রণ হন না। অতএব কর্ম ত্রাগ্রণ নয়।

বেদের ছারাও আক্ষণ হয় না। কেন ? রাবণ নামে এক রাক্ষপ ছিলেন তিনি থবেদ, যজুবেদ, সামবেদ, অবর্ধবেদ এই চারি বেদ অব্যয়ন করিরাছিলেন। রাক্ষপগণের গৃহে গৃহে বেদ বাবহার বর্তমান ছিল। কিছ তাহারা রাগ্যণ নন। অভএব আমরা হনে করি বেদের ছারাও আক্ষণ হর না।>

ভাহা হইলে এাশ্বণ্য কি ভাবে হয় ?

শান্তের ধারা, সংস্কারের ধারা, কাভির ধারা, বংশের ধারা বেলের ধারা এবং কর্মের ধারাও আফাণ্য হর না ৷১০ সর্বপাণ-

কাতির হারা বা বংশের হারা বে বাহ্মণাদি হর না তাহার উদাহরণ : হরিবংশ ২০৮ ; বিফুপুরাণ, ৪র্ছ, ৮া১ বায়ু, উদ্ভরাংশ, ৩০।৪। হরিবংশ ২১ ;

৪। মহাভারত, অকু ১১১।৪৫-৪৬। মধুতে ইচা নাই, তবে ১৬।১৯৯-১০ লেকে এইরুপ ভাব আছে।

<sup>া</sup> এইকপ কোন সুতি দেখি নাই। সহাভারতে ও পুরাণে ইং। পাওয়া যার। সহাভারত, ললাপকা, তনাতব, এলাচের, অমুশাসন বারচ। বন, ১১৬।>, লান্তি, ২নভা১৪-১৬। মধাভারত (ভাঞোর সং)জমু, ২১ অধ্যার।

৬। মহাভারত ষাত্রোপাখান প্রট্র। অমুশাসন ২৭ অধার।
খাতির মড়ে "রাহ্মনীর গর্ভে শ্রের ঘারা উৎপর সন্থান চভাল।" ইহা
হুইতেও রাহ্মনীগণের শ্রুসহ্বাস অমাণিত হয়। বলা বাহলা এইকণ গোপন সহ্বাসে উৎপর সন্থানসমূহের অবেকেই সমালপতিস্থার অভাত
রহিত। এইরপ শ্রুকাত অভাত সন্থানগণ রাহ্মণ বলিরাই সমালে
চলিরা ঘাইত।

ๆ । प्रसू ३०। व्यास्त्रवस्त्रा, ७।६०। विनिष्ठं, २। व्यक्ति, २० क्यांकः।

৮। छविया, ब्राक्त, ह्याहरू ६७। अहेवा।

<sup>1 4-</sup>c|cs & 1 4

३०। वहांकावल, असूनांत्रन-->8०।६०।

কর্মের নিরাকরণই হইতেহে ত্রাহ্মণ্য। এই ত্রাহ্মণ্য কুল ও ইন্মুর ভার শুল্ল।

ক্ষিত আছে—ত্ৰত তপ: নিয়ৰ উপৰাগ দান দৰ শৰ সংযৰ আচৰণ হইতেও ত্ৰান্ধণ্য হয়। বেদেও তাহা উচ্চ হইবাছে :---

ৰিনি নিৰ্বন নিৱহংকার নিঃসক নিজারিএই রাগহেখ-বিনিযুক্ত ভাছাকেই দেবগণ প্রাহ্মণ বলিরা ভানেন।

जक्न भाषादे देश क्षिष्ठ चारव :---

সভ্য ব্ৰহ্ম, তপঃ ব্ৰহ্ম, ১১ ব্ৰহ্ম ইক্সিয় নিবাছ। সৰ্বজীবে দলা ব্ৰহ্ম, ইছাই ব্ৰহ্মনলকণ। সভ্য নাই, তপঃ নাই, ইক্সিয়-নিবাছ নাই, সৰ্বজীবে দলা নাই—ইছা চভালের সক্ষণ।১২

দেবখোনিতে নৱবোনিতে এমন কি তির্গবোনিতে ক্থা লইরাও বাহারা ইঞ্জিয়াসক্ত হন না, তাঁহারাই বিঞা, তাঁহারাই আক্ষণ।

ভক্ত বলিরাছেন :---

কাতি দেবা বার না—গুণই কল্যাণকর। চঙালও যদি শুণবান হন, তাঁহাকে দেবগণ বাঞ্চল আন করেন।১৩

অতএব ছাতি, জীব, শরীর, জান, আচার, কর্ম, বা বেদ ব্রান্ধন ময়।

আপনি আর এক কথা বলিয়াছেন:—-শ্রের প্রক্যার বিবান নাই। রাগ্রণভ্রূবাই তাহার বর্ষ। চারিবর্ণের সকলের শেষে শৃক্ষ শক উচ্চারিত হইরাছে বলিয়া তাহারা নীচ।

ভাছা হইলে তো ইন্নপ্ত নীচ! কেন না খন্তে আছে—
খনুব মধোনামভিছিতে 158 খা অৰ্থাং কুকুর। ধুবা—মুবাপুক্ষ।
মববা অর্থাং ইন্দ্র। ভাছা হইলে এই খন্তের উক্তি হইতে ধেবা
যার কুকুর ও পুরুষ (মানুষ) এর অপেকা ইন্দ্রই নীচ।
(যেহেতু ইন্দ্র শব্দ সকলের শেষে উচ্চারিত হইরাছে)। কিছ
ইলা ভো সংসারে দেবা যার না। বচনমাত্রে অর্থাং আগে
পিছে বলাতেই কি ধোষ হর ? "উমামহেশ্র" 'দছোঁঠ'—
এইন্ধপ প্রয়োগ দেবা যার। ইলা হইতে দছা বা উমা (আগে
আছে বলিরা) আগে উংপদ্র হইরাছে (বা দছের চেরে
ওঠা বা উমার চেরে মহেশ্র নিকুট) এইন্ধশ বলা যার না।
ন্তথ্য ক্ষুত্র বিনুষ্যাঃ—এবানে প্রাথ্যবাদি বর্ণের কেবলমাত্র

৩২।৪০-৪১। বিশু--৪র্খ ৮।৯। বিশু, ৪র্খ, ১।৫-১৫। হরিবংশ, ১২।৯-১০। বিশু, ৪র্খ, ১৯। ভাগবত---৯।২১।১৯। বিশু, ৪র্খ, ১৯।১৬। ভাগবত, ৯।২১।৩০। বিশু, ৪র্খ, ১৯।২-১০। স্থাস করা হইবাছে। অভএৰ আপনাদের বাহা 'প্রভিজ্ঞা'— "ব্রাহ্মণঞ্জাবাই ভাষাদের ( শুদ্রদের ) বর্গ," ইহা টিক নর।

এই রাজ্ব-প্রসদ অনিভিত। মানববর্গে আছে:— বে রাজ্ব শুরীকে চূঘন করে, শুরীর নিঃবাস বাহার ধেহে পারে ( শুরীর সহিত বে এক শব্যার শরন করে ), শুরীতে বে সন্তান উৎপাদন করে, তাহার ভঙ্কি হয় না।

বে ত্রাহ্মণ শূত্রীহন্তে এক মাস একাধিক্রমে ভোক্ষম করে সে ক্ষীবিভাবহায় শূত্র হয় এবং মৃত্যুর পর কুত্র হয়।

বে আগন শৃঞীপরিয়ত, শৃঞী বাহার গৃহিণ, সে পিত্রা ও দৈব্য কার্য-বর্ত্তিত : সে প্রৌরব নরকে গ্রম করে ।১৫

শতএব এই প্রানাণ্য বচনের হারা, ত্রাহ্মণছের অধিরছই প্রমাণিত হইতেছে। পূদ্ধ ত্রাহ্মণ হয়। কেননা, মানবংর্মে শভিহিত১৬ হইরাছে:—

জরদীপর্ভসভূত মহামূমি কঠ তপস্থার থারা আগ্রণ হইয়া-ছিলেম, অতএব জাতি আগ্রণগ্রে কারণ নহে।

কৈবর্তীগর্ভসম্ভূত মহার্নি ব্যাস ভপস্থার হারা প্রাথ্য হইরাছিলেন, অভএব ছাতি প্রাক্ষণদের কারণ নহে।

উৰ্বীপৰ্তসভূত মহামুনি বলিঠ তপভাৱ দার। আগংশ হইয়াহিলেন, অতএব জাতি আগ্নণছের কারণ নছে।

হরিণীগর্ভসম্ভূত মহামুনি ঝধ্যপুদ তপস্থার ধার। ত্রাগ্রণ হইরাহিলেন,১৭ অভএব কাতি ত্রাগ্রণদের কারণ নহে।

চঙালীপর্ভসঙ্ত মহামুনি বিধামিত (পরাশর?) তপভার ঘারা আক্ষণ হইয়াছিলেন, অভএব জাভি আঞ্পত্থের কারণ নতে।

তাতুলীগর্ভসমূত মহামুনি নারদ তপঞার হারা ত্রাঞ্চ হইরাছিলেন,১৮ অভএব জাতি ত্রাঞ্চংগ্র কারণ নহে।

শক্ষোনিতে যিনি জিতেজিয় শেই জিতাখা ব্যক্তি যতি বলিয়া গণ্য হন। মানব তপজার হারা তাপস ও এফচর্ষের হারা আফাল হন। ঐ পূর্বোঞ্জ মহান্মাগণ আক্ষমীর সভান নহেন—ক্ষ তাহারা ইহলোকে আক্ষাল হইয়ছিলেন।

ব্ৰহ্ম (বা ৰাহ্মণ) ছইতেছেন শীলশোচপূৰ। স্বভৱাং কুল বা কাতি ৰাহ্মণছেয় কাৱণ নহে।

শীপেরই প্রাধান। কুলের নহে। শীগবিবলিও কুলে হইবে কি । বহু ব্যক্তি মীচকুলে ক্ষরত্ব করিয়াও শীগলাভ করতঃ আনী হইরা ধর্গে গ্রম করিয়াছিলেন।

আর এই কঠ-খ্যাস-বশিঠ-খ্যাস্ত-বিশামিতাদি রক্ষরিগণই বা কে? নীচকুলে ক্ষর্ঞহণ করিয়াও উচ্চারা লোকের নিকট রাক্ষণ ক্রনেম। অভএব ঐ পূর্বোক্ত শাস্ত্রবচনের প্রামাণ্য-

<sup>&</sup>gt;> । यहां, मांचि, >>∙।>

১२। चित्र, ७०८ (श्रीकः)

১৩। "বভিগর্মসংগ্রহ" পুথকে ইহা বাাসবচন বলিরা উচ্ছ ত ইইরাছে। বভিগর্ম, পু ৩৭। শুক্রনীভিডে এইরূপ আছে: লাভির বারা রাজ্য হর না, করির হর না, বৈশু হর না, শুরু হর না। এবন কি মেদ্ধ পর্বত্ত লাভির বারা হর না। গুণকর্মের বারাই ইহা নির্ণয় হর। গুণ ও কর্মগত এই জেদ। লাভ বাত্ত ও দরাপু ব্যক্তি রাজ্যণ। গুণের বারাই রাজ্যণ করা ইইরাছে। শুক্রনীভি, ১।৭৫-৮০ (পর্যক্তি)

১৪। পাণিনি হত্ত -- ৬/৪/১৩০

১৫ | অক্সিরা, ১)৪৮ : আগতেশ, ৮১৭ ; বাগে, ৪)৩৭-৬৮ ; রমু, ৩)১৭, ১৮, ১৯ : মহা, অমু, ৪৭)১ |

<sup>&</sup>gt;७। वहां, ज्यू, ১১२।>२। म्यूमःहिछात्र हेहा शाख्ता यात्र ना ।

<sup>&</sup>gt;१। **७**विया, अभि, ४२|२२-२४|

১৮। নারৰ-সাসীপুত্র, ভাগবত ১।০।০-৭।

বেচ্ এই ত্রাহ্মণত্ব বিষয় অনিক্ষিত, অছিন, ( অর্থাৎ ইহার অনবয়ত পরিবর্তন হয়; আদ বে ত্রাহ্মণ, কাল সে শৃত্র। শেইরুণ আদ বে শৃত্র, কাল সে ত্রাহ্মণ)।

আপনাদের অভ আর এক বভ আছে বে—( রহার ) বৃধ হইতে রাহ্মণ, বাহু হইতে করিব, উরু হইতে বৈশু এবং চরণ হইতে পুরু করিবাছে। এই বিবরে আমাদের বক্তব্য এই বে, রাহ্মণ তো বহু (বা বছপ্রকারের ) রহিরাছেন। ইহাদের মধ্যে কাহারা মুধ হইতে জরিলেন, তাহা তো জানা বাইতেছে না। কৈবর্তরক্ষক ও চভালতুলেও তো দেখিতেহি রাহ্মণ করিতেহেন। তাহাদেরও তো দেখিতেহি চুকাকরণ এবং মুধ্যু-মঙলাঠাদির হারা (উপনর্মাদি) সংস্কার হইতেছে এবং রাহ্মণসংক্রা হইতেহে। এইরূপে রাহ্মণের ভার ক্রিরাদিও (নানা হাতি হইতে) হইতেহে। অভএব আমরা দেখিতেহি, চতুর্বর্ণ নাই—বর্ণ এক।

আর একই ব্যক্তি ( অর্থাং ব্রহ্মা ) হইতে উংশন্ন সন্থানদের চতুর্বর্ব বা চারি জাতি হয় কিরণে १১৯

দেবদন্ত নামে কোনো পুরুষের এক মী হবঁতে চারি পুরু জন্মএহণ করিল। তাহাদের মব্যে তো 'জাতিভেদ' হর না। তাহাদের মব্যে তো কেহ রাজণ, কেহ ক্ষির, কেহ বৈঞ্ কেহ পুরুষর না। কেননা তাহাদের একই পিতা। তাহা হবলে রাজণাদিরই বা চারি জাতি হর কিরপে? (ভাহাদেরও তো একই পিতা—ত্রজা)।

আরো দেব্ন, গোলবহন্তিসিংহব্যমন্ত্রাদির পদচিক্তে বৈশিষ্ট্য দেবা বার। ইহা সোপদচিক্ত, ইহা অবপদচিক্ত, ইহা হতিপদচিক্ত, ইহা সংহপদচিক্ত, ইহা ব্যামপদচিক্ত, ইহা হুগ-পদচিক্ত—সমত বেশ স্পষ্ট বোকা বার। কিন্তু বাহ্মপাদি কাতির পদচিক্তে এইরূপ বৈশিষ্ট্য বাই। ইহা বাহ্মপপদচিক্ত, ইহা স্ক্রপনচিক্ত এইরূপ জানা বার না। অভএব পদচিক্তের অক্তমণ বৈশিষ্ট্যের অভাববশতও আনরা দেবিতেহি বর্ণ এক—চান্তি নহে।

গো মহিব অব কৃষ্ণর গর্গত বনের হাগ-বেবাধির তগলিকবর্ণ-বলবুত্ত-গত-বর্নিতে বৈশিষ্ট্য বৃষ্ট হর। কিছ ত্রাহ্মণক্ষিত্রাধির সেইরূপ বৈশিষ্ট্য বৃষ্ট হর না। এইরূপ বৈশিষ্ট্য না
বাকার বর্ণ একই।

বংস পারাবত শুক কোকিল বর্ব প্রভৃতি পক্ষিপণের বেষন রূপ বর্ণ লোম চকুতে বৈশিষ্ট্য কেবা বার, রাজণাধির সেইরূপ কেনো বৈশিষ্ট্য গৃষ্ট হয় না। এইরূপ বৈশিষ্ট্যের অভাববশতও বর্ণ এক।

বেশুন বট বকুল পলাল অপোক ভয়াল নাগকেশর নিরীয় চল্পক প্রকৃতি যুক্তের হতে, পজে, পুলে, কলে এবং হগছি বীজ রলগতেও বৈশিষ্ট্য দুষ্ট হয়। কিন্তু প্রাক্ষণ ক্ষায়ত বৈজ নুৱের অকপ্রভাবে অথবা ছক্রশোণিত অহি চর্ব মাংস মস বা বর্ণে অথবা প্রসন বিষয়ে কোনো বৈশিষ্ট্য বৃষ্ট হয় সা ।২০ এই সন বিষয়ে বৈশিষ্ট্যের অভাবনশতঃ বর্ণ বা ভাতি এক ।

হে ত্রাহ্মণ, সূর্য-ছঃখ-জন্ম নয়ণ, জীবন-বৃদ্ধি-ব্যাপার-ব্যবহার জন-নৈপুনাধির ক্ষমতা বশত ত্রাহ্মণাদি চারি বর্ণের কোনো বৈশিষ্ট্য নাই ১২১

আর এক কথা আনিয়া রাধুন। এক ত্রম হুইতে উৎপদ্ধ কলসমূহের বর্ণজেন বা ভাতিজেন হর না। উত্তরর ও প্রসর্করে উদাহরণ দেশুন। উত্তরর ও প্রসর্করে উদাহরণ দেশুন। উত্তরর ও প্রসের কোনো কল লাখাতে হর, কোনো কল হতে হর। কিছ তাই বলিয়া ইহা ত্রাম্মণ কল, ইহা ক্তির কল, ইহা বৈশু কল, ইহা বুল কল, এইরূপ কেহ বলে না। কেননা, তাহারা একই রুম্মে উৎপন্ন হইরাছে। সেইরূপ এক প্রস্থ হইতে উৎপন্ন হওয়ার ( তাহা চরণ হইতে হউক অথবা মন্তক হইতেই হউক) মন্ত্রাগণেরও ভাতিজ্ঞেদ সন্তব্নহে।২২

এইরপ মতবাদে আরও দোর আছে। প্রশ্ন করি, ত্রান্থণ যদি বৃধ হইতে জনপ্রহণ করিলেন, ত্রান্থনীর জন কোবা হইতে হইল ? নিক্তর বৃধ হইতেই। তাহা হইলে তো আপনাদের ত্রান্থণ-ত্রান্থনীর ত্রাতা-ভানিনী সম্পর্ক হইল। দেখা বাইতেছে, আপনাদের বধ্যে আর গ্রামা অগ্যার প্রশ্ন নাই। ইহা তো অভ্যন্ত লোকবিক্তর ব্যাপার।

পুনরার বলি, ভাষাণ্য অনিশ্চিত। জিয়া-বিশেষের হার। চতুর্বপ ব্যবহা কৃত হয়।

ব্ৰিষ্টির নাৰে পাঙুর প্রসিদ্ধ পূল বৈশন্দারনের নিকট আগষন করিয়া ফুডাঞ্চলি ক্টরা প্রশ্ন করিলেন২০: ত্রান্ধন কাহারা ? ত্রান্ধণের লক্ষণ কি ? ইহা আমি ফানিভে চাই, আপনি দরা করিয়া ইহা বলুন।

বৈশন্দারন বলিলেমং৪: 'বিনি ক্যানি অণসন্দার, বিনি হিংসা পরিত্যাগ করিরাছেন, বিনি নিরামিবাহারী—কোনো জীবকেই বিনি আঘাত করেন না, তিনিই ত্রাহ্মণ।' ইহা ত্রাহ্মণের প্রথম সঞ্চণ।

'বিনি অলভ পরন্তব্য--ভাছা গৃহে বাহুক, অববা পথে বাহুক--কবনো এছণ করেন না, ২৫ তিনিই লাকণ।' ইছা লাকবের ভিতীয় সঞ্চণ।

২০। ঐ,৪১/৩১—৪০। মহাভারত, শাভি, ১৮৮/৭-৮, বন ১৮০/৩২ ইহা সিভাচার্ব অববোধ কড। ইতি ওভব্।

२) । महा, वन, ३४०।७२ ; माखि, ३४४।०-४।

२२। ভবিষা, आक्र, ३১।३०।

২৩। বৃদ্ভিরের সহিত বৈশম্পারনের এইরপ বার্তালাপ কোন্ এছ হুইতে উদ্ধৃত হুইরাছে বলিতে পারি লা। তবে বৈশম্পারন বচনের অনুরূপ বচন মহাভারতাদি শাল্পছে পাওয়া বার।

२८। वहां, स्व, २०६१०२-००। माडि, ३४३१०४

<sup>&</sup>gt;> । खनिया, खांक, बऽ।८८ ।

'বিনি জুবতা বৰ্ষন করিরা নির্মন (ব্যবহতান বর্ষিত)
নিজারিশ্রর ও মুক্ত হবৈরা বিহার করেন, তিনিই আছাণ।'
বৈহা আছাণের ভতীর লক্ষণ।

বেৰ ও বছড-বোনিতে এবন কি তিৰ্বন্-বোনিতে কর এবন কৰিবাও বিনি ইজিবোণভোগ সভত পরিভ্যাগ করেন, তিনিই আছন।' ইয়া আছনের চচুর্ব সক্ষন। (বিনি ওচিতা সম্পন্ন তিনিই আছন। ওচিতা কি ?) সভাই ওচিতা, বরাই ওচিতা, ইজিবনিএক্ই ওচিতা, সর্ব জীবে করুনাই ওচিতা এবং তণভাই ওচিতা২৬। ইয়া আছনের পঞ্চন সক্ষন।

বে বিক্ষ এইরূপ পঞ্চক্ষণসম্পন্ন, উহাকেই আরি ত্রাক্ষণ বলি, হে বুবিটির, বাকি সক্ষলেই পুত্র।

হে ব্ৰিটিৰ, কুলেৰ বাবা, আভিন্ন বাবা এবং কিবাৰ বাবাও আক্ষণ বৰ না, চরিকবান্ চঙালও (আভি-উংপন্ন পুরুষ) আক্ষণ ২৭

বাঁহার বব্যে অহিংলাও একচর্য রহিরাছে, বিনি কেবলনার বিভব ব্যক্তি হইতেই প্রতিপ্রহ লইরা বাকেন---হে রুবিটির ! তিনিই প্রাক্ষণ।

বৈশন্দায়ৰ পুৰৱায় এইৱাপ বলিলেন :

ং ব্ৰিটিৰ পূৰ্বে পৰভই এক বৰ্ণ ছিল। কৰ্ম ও ক্ৰিয়া বিশেষের যাবা চতুৰ্ব প্ৰতিষ্ঠিত ভ্টল।

সমত নানবই বোনিজ এবং নয়প্বনী। সকলেই বৃত্ত-পুনীবৰ্জ। সকলেয়ই ইজিয় ও ইজিয়ের বিবর্গত এক এবং অভিয়। অভএৰ শীল ও ভবের বারা ভিজ্ঞান।

भूतक मैननलाइ अरः क्ष्याम् एरेल जान्य एव अरः जान्यक क्रिवारीन एरेल मृत एरेल्क शीम एम ।२৮ रेशक रेगन्नावत्वरे नहन :---

এই পঞ্ ইলিবল্প বোর অর্থন, বলি পুরুপ্ত উত্তীর্ণ ক্ইরা থাকেন, বে মুবিটির, ভাকা ক্ইলে উাহাকেই অপরিনিভ বান প্রধান করিবে।

হে রাজন, জাতি দৃষ্ট হর না, গুণই কল্যাণ্ডর। জীবন বাঁহার বর্ষের জত, জীবন বাহার পরের জত, বিনি বিবারাজ করা করিতেবেন, উচ্চাকেই কেবগণ ত্রাজন বলিয়া জানেন।

বাহার। গৃহবাস পরিভ্যাস করিবা বোক্ষাকালী রূপে অবহান করেন, বাহারা ভোগে অবাস্ত, হে রুবিটির ! ভাহারাই রাজণ।

অহিংসা, মনত্ব ত্যাগ (লোভহীনতা) অবিবের কর্ম বর্জ ন, রাগ-বেষের নিয়ন্তি, ইহাই হইল ভ্রাক্ষণের লক্ষণ।

ক্ষা, হয়, হয়, হান, সভ্য, শৌচ (শুচিকা) স্থতি, করুণা, বিহ্যা ও বিজ্ঞানাধিক্য হইল আন্দেশন সক্ষণ ৷২১

চ্চুৰে দি অধ্যৱন না করিরাও সর্বভন্দী, সর্ববিক্ষরী হইরাও, গায়নীয়ান অবলয়ন করিরা হনিরন্তি, ভিতেজিয় হইলেই বিঞাহন।৩০

বিনি এক বাজিও একচর্য পালন করিবাছেন—ভাঁহার বাহা গভি, ভাহা অভেরা ( একচর্য-বিহীনেরা ) সহস্র যজের বারাও প্রাপ্ত হন না ।৩১

বিনি সর্ববেদে পারদম, সর্বতীর্বে অভিবিক্ত, বিনি আস্ক্রিক্ত হইরা বর্ব আচরণ করিতেহেন, তিনিই ভ্রাম্বন।

ভিনি ৰখন কারমনোবাক্যে কোনো জীবেরই প্রভি জুর কর্ম করেন না—ভবনই ত্রন্ধকে প্রাপ্ত হন ।৩২

হতবুদ্ধি ব্রাহ্মণগণের বোর ধ্বংগ করিবার হুত আমরা বাহা বলিলাম—বহি তাহা বুক্তিযুক্ত হর তবে সক্ষনগণ এহণ করুন, আর বহি তাহা অবৌক্তিক হয়—তবে পরিত্যাগ করুন।

ইহা সিৱাচার্য অথবোষকত। ইভি ওতর।

## সেদিন মিলায়ে গেছে

ঐকরুণাময় বস্থ

বরণে এবে। বা আর সে বিদের বীর্ণ শলিলেবা উদেহিল বনপ্রান্তে, তরুজারে তুরি হিলে একা বুরা বিরহিন্দী সম। কহিলাম বুর্ণপানে চেরে, চিনিতে পারো কি নোরে ? আজ আর চিনিবে না নেরে। সে বিম পূর্ণিয়া হিল, রাজি হিল বিজ্ঞাল মধির, কুম্বে বন্ধরী প্রান্তে চৈত্র বারু আহিল অধীর, বৌবাহি গুরুব লাভ সেই লড্ডা, তর বীলাকাশ, করুব জনোর রেবা, নব বীল বেবের আভান, ভূরের অরবা,—হারা, ছু'একটি পূর্ব-বীণ আলা, কর্মতে হিল বা কেউ, ভূবি আবি আহিছ নিরালা। ভাষার হিল না কথা, কথা হিল শান্ত হুট চোথে, পূথিবী চিনেহি ভাষি উৎসারিত প্রেবের ভালোকে। নাহ্যের প্রেম বোঁজে নাহ্যের হুদরের পথ, বেখানে হুদর বেশে যিশিরাহে ভাষত ভুগং।

সে বিন বিলাহে গেছে, ভূমি সবি লয়েছ বিলার, ভোষার আঁবির আভা আভাসিরা ওঠে পিরালার, আভাসিরা ওঠে বোর জীবনের বিঃশত্ত অভলে, বে পথ চিনেছি আমি সেই পথে চুরে যাব চলে।

२६ | वहां, जुनु, 388100 |

२७ । श्राश्याप, क्रिय, २७१।३२-३८ ।

२१। वहां, बन, ७३७।३-४।

২৮। বহা, শান্তি, ১৮৮।১০ ; ভাগবত, না১৪।৪৮। বহা, অনু, ১৪৩।৪৬-৪৭, ৫১। বহা, বন, ২১৫।১৩ : ৩১৩।১১১। বহা, বন, ১৮-।২৫।২৬। শান্তি ১৮১।৮।

२२। महा, मांडि, २८०१२७। वन, ১৮०१२३। मांडि, ১৮२१८, २८८१२६, २७२१००, २८०१२६।

७०। बहु २१३३४।

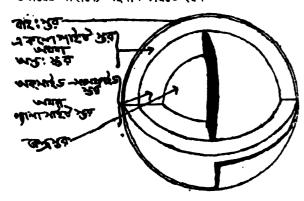
৩১। "বভিষশ্বনংগ্ৰহ" গ্ৰন্থে উদ্ভ বিকৃষ্টন, ৰভিষশ্ব, পৃ ২০।

७२ । महा, मासि, ३१८,६८ ; २६३१७ ; २७३१:१ ।

## পৃথিবীর অভ্যন্তর

### 🛢 অমিয়কুমার দত্ত, এম্-এস্সি

পৃথিবীর অভ্যন্তর ভূপুঠের অবিবাসী নামবের পক্ষে প্রভ্যক্ষণর নহে। ক্ষুপতি বানব ধনন করিবা বাত্র কেল বাইল পর্যন্ত পৃথিবীর অভ্যন্তরে প্রবেশ করিতে পারিরাছে। ধনিজ তৈলের অবেরণে বে সকল নলকুপ ধনন করা ক্ইরাছে ভাষাও ভিন নাইলের অবিক বাইতে পারে নাই। ইবা পৃথিবীর ব্যাসার্ছের (প্রায় ৪০০০ নাইল) ভূলনার এত নগণ্য বে এই সকল ক্ইতে পৃথিবীর অভ্যন্তর ভাগের কোন ধবর পাওরা অসন্তব। পৃথিবীর অভ্যন্তরে কথা ভানিতে ক্ইলে ভাই অভ উপারের সাহায্যে অভ্যান করিতে হয়।

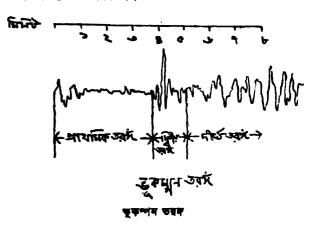


পুৰিবীর আভ্যন্তরীণ তর বিভাস

পৃথিবীর অভ্যন্তরটা বে অভিশর উষ্ণ সে বিষরে কোন মিনিটি সংক্ষেই নাই । বতই বনির ভিতর নামা যার ততই আররা এই ক্ষেবর্ডবান উত্তাপের পরিচর পাইরা থাকি । ভর্যতীত পৃথিবীর নানা ছানে উষ্ণ প্রস্থাবৰ ও আরেরসিরি আছে । এই-ওলি হইতে যে উভগ্ত ক্ষরারা বাহির হয় ও অর্মুংপাভ হইরা থাকে ভাহা হইতেও আররা আনিতে পারি যে, পৃথিবীর অভ্যন্তর অভিশর উভগ্ত । পরীকা বারা কানা সিরাহে বে প্রতি ৬০ কূট নিরে গমন করিলে ১ ভিঞ্জি কারেন হাইট ভাপ রন্ধি পাইরা থাকে । উহা হইতে গণনাবারা পাওরা বার বে, পৃথিবীর কেন্দ্রে ভাপ হইবে ৩৫০,০০০ ভিঞ্জি কারেন-হাইট । অবঞ্চ ভাপ বহু নিত্রে ভ্রপ্তের নিকটবর্জী হানের ভার রন্ধি পাইবে না ।

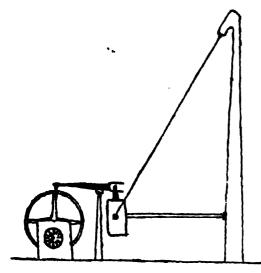
পৃথিবীর অভ্যন্তরে বেষন তাপ অত্যবিক তেষনই চাপও পুর বেশী। হিসাব করিরা জানা বার বে ১ বাইল নিয়ে প্রতি বর্গ কুটে চাপ হর ৪৫০ টন। তাহা হইতে জানিতে পারি বে পৃথিবীর কেন্দ্রে চাপ হইবে ২০ লক্ষ টন। তাপের বর্গ বেষন ধার্ব বাজেই আয়তন বুভি করা, চাপের বর্গ তেষনই পরার্থ বাজেই আয়তন বুজি করা। পৃথিবীর অভ্যন্তরে এই হুই বিপরীতবর্গী শক্তি সর্জ্ঞাই কাল করিতেহে। প্রবল চাপের ক্ষত পৃথিবীর অভ্যন্তরটা নমনীর পরার্থের হারা গঠিত হওরা দত্তব্, তবে উহার তরল হইবার কথা নহে। পৃথিবীর উপরিভাগে বছ ছানে পলি ছারা গঠিত পিলা বেবিতে পাওরা বার। উহার নিমে আছে আরের শিলা (igneous rock)। এই সকল প্রভারের ঘনত হুইতেছে ২'৭৫ হুইতে ৩'১ পর্বাত্ত, অর্থাৎ ইহারা সন আরতন জলের তুলনার ২'৭৫ হুইতে ৩'১ ওব ভারী। সন্তর পৃথিবীর ঘনত হুইতেছে ৫'৫। উহা হুইতে প্রবাণ হয়, পৃথিবীর আভ্যন্তরীণ পরার্থের ঘনত পুর বেবী—প্রার ৭ কিলা ৮। ওপু চাপের ছারা পরার্থের ঘনত প্রভার বৃথিবীর আভ্যন্তরী কোল ওক্ত বাত্তর বৃথিবীর আভ্যন্তর লাইতে। উহারাও সৌরক্তরতের অলীকৃত। বৃথিবীর আভ্যন্তর ভাগ কোল ওক্ত নিক্তেল ছারা বিশ্বিত।

গ্যাসীর অবহা হইতে ভরল ও ভরল অবহা হইতে কট্টন
অবহা পৃথিবী পাইরাবে। অনেকের মতে পৃথিবীর উপরিভাগটাই তথু কটিন হইরাবে—কিছ ভিভরটা রহিরাবে ভরল।
এই বারণা ভূল; কারণ পৃথিবীর অভ্যন্তর প্রদেশ যদি ভরল
হইত ভবে স্থাঁ ও চল্লের আকর্ষণে বেষন সর্জে ভোরারভাটা দেশা বার, ভেষনই ভূপ্ঠেরও বিক্ষীতি দেশা বাইত।
সেইরণ কিছু দেশা বার না বলিরা পৃথিবীর অভ্যন্তর ভরল মনে
করিবার কোন কারণ নাই।



আধুনিক কালে ভ্ৰুপন পৰীকা কৰিবা পৃথিবীৰ অভ্যন্তৰেৰ অবহা জানিবাৰ চেঠা হইবাহে এবং তাহা হইতেই এ বিষয়ে কতক পৰিমাণে জান আনৱা লাভ কৰিতে পাৰিবাহি। আবেহ-নিবিৰ অধ্যংপাত অথবা ভূগৰ্ডে কোন হাবেৰ অপসৱণেৰ কলে ভ্ৰুপন হইবা থাকে। কোন হাবে আৰম্ভ হইবা উহা ভৱলাকাৰে চছুদিকে হড়াইবা পড়ে। সিসবোধাক (Seismograph) নামক বত্তে উহা বিৰিবাৰ ব্যবহা কৰা হইবাহে।

ভূকতান-ভরদের ভিনট বিভাগ আছে—প্রাথমিক ভরদ, মাধ্যমিক ভরদ ও বীর্ব ভরদ। বীর্ব ভরদগুলিই প্রধান। অপর হুই প্রকার ভরদ দীর্থ তরদের অথ্যে উত্ত হইরা থাকে।
প্রধান ভরদের পরও অনেক দিন পর্যাত বৃহ্ কম্পন অভ্যুত
হইরা থাকে। শেবে একেবারে উহা থানিরা বার। প্রাথমিক
ও নাব্যমিক ভরদত্তিনি কৃষ্টিন পরার্থের মধ্য দিরা বাইতে
পারে। দীর্থ ভরদত্তিনি ভব্ কৃষ্টিন পরার্থের বহির্তাস মিরাই
মন করিবা থাকে।



निन्दाबाक (Seismograph)

বিভিন্ন ছানের ভূকশান পর্যবেক্ষণ করিব। প্রাথমিক ও বাধ্যমিক ভরুত্তলির ভিনষ্ট প্রকারভেদ পাওবা সিরাছে। এইখলি এই রক্ষের হইলেও ইহাদের সভিবেগ বিভিন্ন। প্রাথমিক ও বাধ্যমিক ভরুত্তলির এই প্রকারভেদের কারণ বিশ্ব করিতে বাইবা বৈজ্ঞানিকেরা পৃথিবীর বহিরাবরণে ভিনষ্ট ভরের কর্মনা করিবারেন।

নিরের প্রভরগুলি বর্ত্বনীল চাপের প্রভাবে উপরের প্রভর অপেকা বন ক্রম থাকে। ক্রম্পানের পর্যালোচনা বারা বে ক্রেকট ভরের স্থান পাওয়া বার, উহা কিরপ প্রভরে গঠিত ক্রতে পারে ভাষা নির্ণরের ক্রচ বৈজ্ঞানিকেরা চেটা করিবা-কেন। অসুমান করা সিরাহে বে, পৃথিবীর বহিরাবরণের প্রথম । ভর প্রাণাইট কাতীর (Granite) প্রভরে বিভীয় ভর ব্যাসপ্ট (Basalt) কাতীর প্রভরে ও ভূতীর বা স্ক্রনির অর ভিউনাইট (Dunite) অথবা পেরিভোটাইট কাতীর আর্রের শিলার রুঠিত। ইহাকের বেব (thickness) সহতে বভ্রমান করা হয়।

ৰীৰ্ব ভৱদণ্ডলি ছুল্ভাগ অপেকা ফল্ভাগের নিকট দিয়া বাইবার সময় অধিক গভিবেগ প্রাপ্ত হয়। ইহা হইতে অহুবান করা হয় যে হুল্ভাগের প্র্যাণাইট ফাজীয় প্রভয় সনুজ্যে ভল্গেশে নাই। প্রাথমিক ও বাব্যমিক তরকওলির গভিবেগ ভূপুঠ হইতে ১৮০০ বাইল পর্যান্ত বৃদ্ধি পার। চাপের প্রভাবই ইবার কারণ। ১৮০০ বাইলের মিরে গভিবেগের বৃদ্ধি কমিছে বাছে। এই গভিবৃদ্ধির ব্রাস ৬০০ মাইলের মির হইতেই বরা পড়ে। ১৮০০ বাইলের মিরে এই তরকওলির গভিবৃদ্ধির পরিবর্তন হইতে অভ্যান করা হব বে, ১৮০০ বাইলের মিরের পথার্থ ভূপুঠের সাবারণ প্রভাৱ-ভাতীর মহে। উকাভলির গঠন হইতে প্রতীতি হয় বে, পৃথিবীর কেল্লাকল বাতব এবং উহা লোহ ও মিকেল বারা গঠিত। পৃথিবীর অভ্যন্তরের তরগুলি সাকাইলে এইরূপ গাড়ার:—

শ্বক অধবা বহিজ্ঞ বেৰ ৩৬ মাইল প্ৰথম ভয়---গ্ৰ্যাণাইট জাতীয় প্ৰভৱে গঠিত। খনত ২'৭৫। বেৰ ১৮ মাইল।

বিভীর ভর—ব্যসণ্ট জাভীর প্রভৱে গঠিত। খনস্থ ২'১। বেব ৬ মাইল।

ভূতীর তর—ভিটনাইট অধবা পেরিভোটাইট জাতীর প্রস্তরে গঠিত। বনত ৩'১। বেধ ১২ মাইল।

অভভর—বনত্ব ৩'১ হইতে ৪'৭৫ পর্যন্ত। বেধ প্রায় ৭০০ বাইল।

প্যালাসাইট ( $P_{allasxite}$ ) ভৱ—খনদ ৪'৭৫ হইতে ৫'০ পৰ্যাভ। (লোহ ও নিকেল নিৰ্দ্বিত বোগিক পদাৰ্থ) বেৰ প্ৰায় ১১০০ মাইল।

ক্ষেন্তর—লোহ ও নিকেল নির্দ্রিত। খনড় ১১'০। বেৰ প্রায় ২২০০ মাইল।

ভি. এব, গোন্ডবিধ (V. M. Goldsmidt) ভাত্র-নিকাশণ প্রক্রিয়ার সহিত ভূলনা করিয়া অন্যরূপ ভরবিন্যাস করিয়াছেন। লৌহ নিকাশনের সময় বেমন লৌহের উপর একট অকুসাইত ও সালকাইভের (Oxide and sulphide) ভর পড়ে গোল্ডবিধও ভেষনই পৃথিবীর কেন্দ্রের লৌহ-নিকেল ভরের উপর একট অকুসাইত ও সালকাইত ভরের ক্রমণ করিয়াছেন। ভাঁহার মতে পৃথিবীর আভ্যন্তরীণ ভরবিন্যাস এইরূপ:—

বহি:ভর---বনত ২'৮। বেব প্রায় ৭৫ নাইল। একলো-গাইট ( Kelogite ) ভয়

্ এক প্ৰকার আহের শিলা)—বনত্ব ৩'৬ হইতে ৪'০ বেৰ প্ৰায় ৬৫০ নাইল। অকুসাইভ-সালকাইভ ভর—বনত্ব— ৫'০ হইতে ৬'০। বেৰ প্ৰায় ১১০০ নাইল।

ক্ষেত্ৰর--ৰণৰ ৮'০ হইতে ১১'৫। বেৰ প্ৰায় ২২০০ বাইল।

এবন বেবা বাইতেহে বে, পৃথিবীর অভ্যন্তরে বনদ্ব অস্থারী নাজান করেকট ভর পর পর বহিরাহে। পৃথিবীর ভরন অবহা হইতে কটন অবহার আনিতে এইরপ হইরা বাকিবে ইহাতে আক্রর্যের কিছুই নাই।

### সস্থান

#### अकीवनमञ्ज ताय

बी बाबा (मन---- अक्डि ज्ञान दार्व।

শেৰোনিৱে বিৱে করলে না আর। বিরের পর বৌকে সে ভালবাসতে লাগল প্রাণ দিরে। বড় মধুর সে প্রেম; বেন সে স্ত্রীর প্রেমের পূজারী। জীবনে ভার পদখলন হয় নি।
নিভান্ত সরল সহজ বাঁট মাত্র—মনে হিংলা নেই, আর সকলের উপরই বিধাস।

পাছার একট গরীব বেরেকে সে ভালবেসে বিরে করে-হিল। বেশ হৃ'পরসা আর হিল ওর--পাইকারী কাপছের কারবারে। ভাই বলে এক মৃত্তুর্ভির করেও একথা ভার মনে হর নি বে, ভার স্ত্রী, ভার নিক্ষের করে হাড়া, অভ কারবে ভাকে বিরে করতে পারে।

মীও স্থা করেছিল ভাকে। সেই ছিল ওর সর্বাধ;
আলার চোণে মীর দিকে চেরে থাকভ ও—ওর সেই পৃথার
বৃষ্টি বিরে: বৌরের মুখের থেকে চোথ সরাভে পারভ না
বলে কভ সময় কভ রকম ভূল যে করে বসভ! বোভলের মদ
প্রেটে, আর স্থানর মালার জল চেলে কেলে ছোট ছেলের মভ
হেসে উঠভ, বলভ "দেখেছ, ভালবাসার চোটে মাধার আর
ঠিক দেই।"

শাভ অলগ চোৰে চেবে হাসত মেবেট। তারপর
অভবিকে মুব কিরিবে নিত—বড় অপ্রতিভ লাগত যনে মনে
খানীর এই অর্চনার। তাকে দিরে অভ কর্ব: পাড়াবার চেই!
করত। বানী কিও টেবিখের তলা দিরে নিজের হাতে ওর
হাত নিরে বরে রেখে, কানে কানে বলত "জীন আযার,
বাণিক আযার, বুকের বন আযার।"

বৈর্ঘা হারিছে কেগত এক এক সময় মেরেট : বলত, "হাড় ত ! হাড়, পাগলামি করো না । নাও, বাও এবন ; আর আমাকেও বেতে দাও।"

দীৰ্থনিয়াস কেলে লোকট একগাল ক্লট ছিছে বৃথে নিরে আনমনে চিবোভে থাকত।

পাঁচ বছর ওলের ছেলেপিলে কিছুই হয় নি। তারপর হঠাং একদিন বেরেট ওকে বললে যে ওর ছেলেপিলে হবে। আর বেশী দিন নেই। আনন্দে পাগল হরে ওঠে ও। এরপর থেকে একমিনিটও বৌকে ও আর চোথের আড় করে ন!। শেবে, ওকে রাজ্য করেছে বে বুড়ী বাই, সে ওঁতিরে বাড়ীর বার করে দের ওকে—একটু হাওরা থেরে আসবার ছভে।

সহরের থিকেক্টের সেক্রেটারী এক নথকারান হোকরার সঙ্গে থর ভারী ভাব হ'ল। হেলেবেলা থেকেই থর বৌরের সঙ্গে আনাগুনো ছিল হেলেটার। লেবোনিরেদের সঙ্গে হপ্তার ভিন বিন ভিনার থেড লে; থর বৌরের বড় কুল বিবের আসত; আবার কথনও বা বিরেটারে বল্প ভালা নিত ওবেরই ছভে। স্ত্রীর দিকে চেরে প্রাণ পুলেই বলত লেবোনিরে "সংসারে ভোষার বভ স্ত্রী আর ওর বভ বস্থু পেলে ছনিয়ার বাস্থ্যের স্থবের আর সীনা থাকে না।"

সভান হতে নেরেট বারা গেল। সে বাভার ও প্রার নরবার বাবিল হরেছিল, কিছ ছেলেটার বুব চেরে ও বুক বাবলে—রোগা ছিঁচকাছনে ছেলেটা।

বেলেটাকে ও ভালবাসল। তীত্র সে ভালবাসা, আর
গভীর শোকে ভার কর। সে ভালবাসা মরণের স্থাভিতে
বিশ্ব বিষ্চু আভূর। সে ভালবাসার, বরা মারের উপর ওর বে
পূজার ভাব ছিল ভা কুটে উঠত। ভার লীর রক্তে-বাংসে-গড়া,
সে-ই বেল ররে গেছে ওর বব্যে। পত্নীর সভার সার অংশ বেল
এক রকম। পত্নীর প্রাণই বেল আচ একটা দেকে সঞ্চারিত
করা হরেছে, এই নাজ। ভার ভিরোবাল হরেছে—এ বেল
বেঁচে বর্জে বাকে, এইক্তেই। চুমার চুমার নাকাল
করে দের ওকে ওর বাপ। কিছ—এই বাচ্চাটাই ভ বেরে
কেললে ভাকে। ওই চুরি করেছে ভাকে। ভার প্রাণের
মূল্যেই ওর প্রাণ। ভারতে ভারতে দোলার শুইরে দিরে
বাচ্চাটার দিকে পে চেরে বাকে এক বৃষ্টে। ঘন্টার পর বন্টা
এমনি করে ওর দিকে ভাকিরে বসে সে হাজার রক্ষের স্থব
ছ্:বের বপ্র দেবে। ভারপর বৃষ্কু শিশুর উপর বৃঁকে পড়ে
ওর চোবের কল আর বাবা মানে না।

শিশু বছ হতে থাকে। এক বণীর অভেও ওকে হেড়ে ওর বাপ আর বাইরে থাকতে পারে মা। সারাক্ষণ ওর কাছে কাছে থাকরে, ওকে বেছাতে নিরে বাবে; নাওরান থারান, সাকান গোজান, থাওরান লাওরান সব নিক্ষে করবে। বছু ছ্রেছুও ছেলেটাকে ভালবাসত। বাপনারে রেহের উচ্ছ্যালে যেয়ম আকুল হরে ওঠে তেমনি করে সেও ওকে নিরে পাগলের মত চুমু থেতে থাকত এক এক দিন। ওকে কোলে নিরে প্রকত, হাঁটুর উপর বসিরে ঘোছা ঘোছা থেলাত। এমনিতর ঘণ্টার পর ঘণ্টা। আর ধুনীতে ভরপুর হরে লেমোনিরে নিক্ষে নিক্ষেই বলতে থাকত—চমংকার, না ? ভারি চমংকার মাহুম। আর হ্রেছু থোকাকে বুকে চেপে থরে, গোঁক দিরে ওর বাকে সুসৃস্তি বিভ।

শুৰু বুড়ী বাই সেলেন্ডে বাচ্চাটাকে দেবতে পাৰভ মা।
কেশে উঠত বোকার নটাবি দেবে ও, আর ঐ ছই বুড়ো
বহকে অননি করে আক্লাদ দিতে দেবে। টেচিরে বিচিরে
বলে উঠত, "অননি করে হেলেচাকে বাছ্য করবে ভি করে?
একেবারে বাঁদর বানিরে ভুলবে ওকে।"

वद्दात भन्न वहत यात्र। (द्दानकीत न'वहत वन्न ए'न।

পড়তে শিবল না। লাই বিরে এত বাবা বাওৱা হরেছিল তার, বে, বা তার বুলী তাই লে করত। বেচ্ছাচারী, একওঁরে আর বহরার হরে উঠেছিল ছেলেচা। সব সমর তার ভেবের কাকে তার বাপকে হার মানতে হ'ত; আর তার বা বুলী তাই তাকে করতে হিত।

হয়েতু তার আবহার মত বেলনা কিনে বিত তাকে, কেক লক্ষ্ম বাওয়াত, আর লেলেভে চটেনটে গিরে ট্যাচামেচি কয়ত—বলত, লজা হওয়া উচিত নশার আপনার, লজা হওয়া উচিত। হেলেটাকে একেবারে গোলার বিতে বলেছেন। কিছ চলবে না এলব বেশী বিন, ইয়া, চলবে না বলহি; বেশী বিন আর নর, তা বলে রাবলুব।"

লেৰোনিয়ে একটু হেসে বলত, "কি আন করব, বল, বচ্চ বে ভালবাসি ওকে, সামলাতে পারি দে। অভ্যেস করে মাও এ সব সরে নিতে।"

কেনন একটু কাহিল মত ছিল জীন। ডাঞার বলত ওর গারে রঞ্জ কন। ব্যবহা দিত, লৌহবটিত ওর্থ আর কচি নাংলের ছণ। ছেলেটা কিছ কেন হাড়া আর কিছে, বেতে চাইত না; কেন্টাই তার গহন। হাল হেড়ে দিরে, বাণ তাকে কেবল জীনপান আর চকোলেট ঠোলাত।

একবিন রাজে সকলে থেতে বসেছে। সেলেন্ডে হণ এনে হাজির করলে—বুবের ভাবচা বেশ একটু ভীবণ ভার— পাসন আর জেবের এননতর কড়া একটা ভাব সাবারণত সে দেবার না। চাজনা বুলে, পাজে চানচ ছুবিরে সে বললে, "এনন হণ কবনো আর রাঁবি নি। এবার এর থেকে বোড়াকে একটু থেতেই হবে কিছ।"

ভদ্ম পেরে লেলোবিরে মাথাটা নিচু করলে। বুরুতে পারলে একটা বড় ঘনিরে উঠছে।

বাপের প্লেট নিজের হাতে ভরে সেলেভে ভার সামমে রেখে ছিলে। ছণটা একটু চেকে বাপ বললে "বাঃ। সভিয় ভ:চমংকার।"

ৰাই ভগন হেলেটার শ্লেট নিবে এক চামচ খণ ভাভে । চালল ; ভারণর একটু চ্রে সরে ইাভিয়ে বেগভে লাগল খীম কি করে।

কীন, বাবারটা ওঁকে, রুব বেঁকা করে প্লেটটাকে ঠেলে দিলে। হঠাং লেলেভের রুব রাগে বিবর্ণ হরে গেল। বাঁ করে এগিরে এসে, কেলেটার ইাকরা রুবের মধ্যে এক চাবচ বোল চেলে দিল।

দৰ আটকে, কেশে, হেঁচে, বৰি কয়ে, টেচিয়ে, গেলাসটা ভূলে নিয়ে নামলে ভূডে বাইয়ের গায়। লাগল গিয়ে বন কয়ে নোজা ভার পেটে। ভারপয় একেবারে ক্ষেপে নিয়ে বগলের ভলে ছেলেটার বাবাটা চেপে বরে, চাবচের পর চাবচ বোল সে খর গলায় চালতে ত্বরু করলে। টকটকে বাঙা হরে উঠল হেলেটার রূব। বিষয় বেবে, হাত পা হুড়ে, বোচোড় বেরে একুলা করতে লাগল লে।

বাণ, প্রথমটার, এত হক্চকিরে গিরেছিল বে তার হাত পা লব বেন আড়ট হরে গেছে। তারপর, হঠাং পাগলের বত মুটে গিরে, বাইরের বাড় ধরে বেয়ালের গার ঠেশে বরল; আর তোংলাতে তোংলাতে বলতে লাগল, বেরোও। বেরোও। ভানোরার কোবাকার! বেরিরে বাও!"

ৰাই ভাকে এক ৰাজা বিবে ঠেলে কেলে বিল। পিঠের উপর চুল ভার এলাবো, চোব হুটো ঠিকরে বেরছে বেন। গলা কাটরে বলভে লাগল, "ভূতে পেরেছে নাকি ভোষার? আহাকে বারতে এলে ভূষি ছেলেটাকে ছুপ বাওয়াছি ভাই। আরু বেঠাই ঠোশাছ্য নিজে ভোষয়া ওকে।"

বাপ—পা বেকে মাধা পর্যন্ত ধর ধর করে কাঁপতে তার, আর বারবার ৩৭ বলতে, "বেরোও, বেরোও ৷ জানোরার কোবাকার ৷ বেরিরে বাও ৷"

তথন পাগলের যত ৩র দিকে কিরে, ৩র র্বের দিকে
ব্বটা নোজা করে ভূলে—গলা কাঁপছে ওর—সেলেন্ড বললে
"ও, তেবেছ অননি বাচ্ছেতাই করার অধিকার আহে তোনার
আমার উপর, এঁচা হুঁ, তা কিছুতেই নর। আর কার বাতিরে
ভূমি ? ঐ হোঁডাটার ? তাও তোনার হেলে ও নর। মা,
তোমার নর। ও হেলে তোনার নর। সবাই জানে লে কথা—
ভগু ভূমি ছাড়া। বুগী কবাই ক্রম্ভরালা বাকে গুলী কিজেস
করগে।"

গৰ্জাচ্ছে ও, রাগে গরগর করছে, গলা বছ হরে আসছে ওর; হঠাং এক সময় থেমে সিরে ও চেরে ফেবলে লোকটার বুবের দিকে।

নিধর হরে গেছে ওর শরীর; নীল হরে গেছে ওর বুধ; হাত হুটো শিবিল হরে কুলে পড়েছে হু'পাশ বিরে। একট্-থানি অপেকা করে থেকে—গভীর ব্যবার কাঁপতে ওর বর; লোকটা বলতে লাগল "ভূমি বলছ ? ভূমি। এলব কি বলছ ভূমি ?"

ওর বৃতি বেবে বাই চূপ করে রইল ভর পেরে। আর, ও আর এক পা এরিয়ে এসে বার বার বলভে লাগল "ভূষি বলছ ? কি বলছ এ সব ভূষি ?"

হির শাভ কঠে বাই বললে "বা জানি, সকলেই যা জানে, তাই বলছি।" জ্যাপা জানোরারের যত পাসল হরে, বাইকে চেপে বরে ও আছতে কেলে বেবার চেঠা করলে। কিছ বুছো হলে কি হর, বুড়ীর করতা কর না, আর চটপটেও বুব। পিছ লে বগলের তলা বিরে গলে বেরিরে সিরে, ও টেবিলের ওবারে সিরে বাঁডাল ; আর আবার কেপে উঠে টেচাতে লাগল "বেব, বেব! একবার চেরে বেব লোকটার বিকে! ইবাবার কোধাকার! হোঁডাটা হ্রেছ্র একেবারে অলভাভ প্রতিষ্ঠি, তা চোবেও পতে না? চেরে বেবত ওব চোবের বিকে? বেবত,

ওর নাকটা ? ভোনার কি ঐ রকম ? আর ওর চূল ? ওর নারের মত নাকি ? ভবে রাব, সকাই কানে এ কথা। ভূমি হাডা আর সকলে। শহরে একটা ঠাটাই গাড়িবে গেছে এ নিয়ে। কেই একবার চেয়ে লোকটাকে—।"

দরকার দিকে এগিরে গিরে দরকা গুলে বাই বেরিয়ে চলে গেল। অপের মেট সামনে নিরে চুপট করে বলে আছে কীন, তরে বভনত বেরে।

ৰকীথানেক পৰে শাভ হবে চুপি চুপি ধাই কিবে এল দেখতে, বে ব্যাপাৱটা গছাল কতদুৱ। দেখে বে, হোঁড়াটা সমভ কেকু খেরে কেলেছে, এক বাঈ সর শেব করেছে, ভারণর এক বোভল সিরাণ সবাড় করে খণের চামচ দিরে জাবের বোভল উজাড় করতে লেগেছে।

ৰাপ চলে সেছে বেরিয়ে।

সেলেন্ডে ছেলেটাকে চুরু থেরে কোলে করে নিরে তার খরে সিরে ভাইরে দিলে; দিরে থাবার খরে কিরে এল আবার। টেবিলটা সাক করলে, সব জিনিব গোহগাহ করে রাবল। সর্বাঞ্চণ মনে তারি একটা অহতি।

একট শব্দ নেই, বাজী একেবারে চুণচাপ। মনিবের গরের গরজার সিরে কান পেতে শুনলে। কোনো সাজাশব্দ নেই ভার। গরজার ক্টোর চোধ দিয়ে গেখলে, দেশল লোকটা লিখছে—বুব শাখ, স্বাহিত লাগ্যহে দেখে।

ভারণর রারাখরে সিরে প্রশ্নত হবে বসে রইল—বিধি কোনো ধরকারে ভাক পড়ে। চেরারে ভরেই ব্রল আর সভাল হতেই উঠে পড়ল। রোজকার বতই বরহােরের কাজ নে করলে, বাঁট বিলে, গুলো বাছলে। আটটা নাগাৰ লেনোনিয়ের প্রাভরাশ প্রছড করে রাখন।

কিছ মনিবের কাছে তা নিরে বেতে তরসা শেল না— কানে অত্যর্গনাচী কেবন জুটবে। বন্ধী বাজিরে ভাকবে 'বন, বলে অপেকা করতে লাগল। কিছ বন্ধী আর বাজন না। ১টা ১০টা বেজে দেল।

কী ব্যাপার, কিছু ব্ৰতে না পেরে, সেলেভে বালার করে বাবার নাজিরে নিরে চলল—বুক ছরছর করছে ভার।

নরভার পাপে ইাভিরে ভবতে লাগল কোন আওরাজ পাওরা বার কিনা। সব চুপচাপ। দরজার বা দিলে, কোন জবাব নেই। ভবন সাহস করে দরজা বুলে লে চুকে পচল। চুকেই পাগলের বভ টেচিরে উঠল, বনাং করে পড়ে গেল বাবারের বালা হাত বেকে।

হাবের একটা আংটার যকি লাগিরে লেনোনিরে গলার কাঁসি দিরে বুলহে বরের বব্যেবানে। তার বিভটা বেরিরে পক্তেহে বীভংগ তাবে। তান পারের চটটা বেক্সের উপর পক্তে আহে, বাঁ পারেরটা তবনও পারে লটকে র্যেছে। একটা চেহার উপ্টে গভিবে সিরে পক্তেহে বিহানার।

সেলেভের আর আনহুদ কিছু নেই—চ্যাচাভে চ্যাচাভে ছুটে পালিরে সেল সে। পড়বীরা সব ভীড় করে এল। ভাভার এলে বললে মার্ব রাভের ভাছাকাছি ও বারা গেছে।

আম্বাতীয় টেবিলের উপর হ্রেচ্কে নেবা একটা চিট্ট পাওরা নেল। এই কটা কবা তাতে নেবা হিল:

"বোকাকে আমি ভোষার জিলায় রেবে গেলায়।"

[ যোপাৰীয় 'দি চাইক্ড' গলের অসুবাদ ]

# বিহারের লোক-সঙ্গীত

শ্রীমায়া গুপ্ত

রোগঞ্জ হলে নামত রাধার রীতি ভারতের সর্করই আছে।
বর্তনান প্রবাদে বিহারের বে সমত লোকসদীত দেখবা হ'ল
ভাতে আছে বড়ার সভান কামনার প্রকাশ। সভানের রোগবৃত্তিকরে বে নামত করা হর ভাতেও এ গামগুলি গাওরা হরে
থাকে। একলোতে বিভিন্ন প্রকারে দেববেশীকের ভূষ্ট করা
হচ্ছে সভানলাতের আশার এবং ভার বীর্বভীবন কামনার।
গামগুলির মধ্যে নারীস্থলত নমনীরতা আছে—বেনন করেই
বোক, বেবভার আশ্বির্জান ভিতাই বেধানে একমার কাম্য
সেধানে অভ কোন বিবরে মনোবোগ বেবার প্ররোজন উপলভি
করার প্রার্থ ওঠি না।

নিয়ে প্রবন্ধ করুণ গাল্টতে অনুষ্ঠের বিরুদ্ধে একট ব্যান নারীর বড় নিবারুণ অভিযোগের অভিযাতি বেবতে পাই। দেবীৰতপে পূজা দিতে বাবার সময় গাওৱা হয় গানট"কিবর বাঁশ বাঁশরীয়া

কিবর কংলীকে বন্ধবা,
আর কিবর হে বাতাকে বঙ্পথরা
রতন দীপথরা অরে।
কৈসন হে বাশ বাশরীরা
কৈসন বে বাতাকে বঙ্গথরা
কৈসন দীপথরা অরে।
লহ্ লহ্ লহ্ বাশ্বীরা
চুক্র চুক্র কংলী বন্ধরা

বহু বহু বহু করে বাভাকে বঙপওয়া বভৰ বীপওয়া আরে। উভর বাহে বাশ বাশরীবা পূরব কলনী বনওরা বিচয়ে শীতলাকে বঙপওরা রভন দীপওরা করে।

অবল প্ৰৈতে যাইৱা পাৰৱ ন পৰিজলো হে অহে তৈৱো না হোড়াওলে যাইৱা বাহিনিৱা কে নাম হে।

হোৰিৱা বৈতে ৰাইৱা ছৱল চুটকীৱা ভৈৱো লা হোডাগ্ডলে ৰাইৱা গৰীৰকে ৰীভগুৱা হে।"

"কোন ছিকে বাঁশবন, কোন ছিকে ক্লনীর বন আর কোন দিকেই বা মারের ষঙ্গ বেধানে রুদ্দীণ অলে ? সেই বাঁশবাড় কেমন, কল্লীর বনই বা কেমন, মারের মন্দির কেমন, আর বে দীপ অলছে তাই বা কেমন ?

লক্ লক্ করছে প্রকার বাঁশবাড়, কচলীর বন হাওরার দোল বাজে, রড়দীপ উন্ধল, মারের মন্দির প্রকাত ভরা। উত্তর ছিকে বাঁশবাড়, পূর্বা দিকে কচলীর বন এবং ভার মারে আছে মারের মঙ্গ।"

ভারণর পৃথারিশ অভ্যোগ করছেন---

"কৃত পূজাই করলান, কিছ পাণর গল্ল না, আনার বছ্যা নাম আর বুচল না। হোম করতে করতে কেশ পর্যাত্ত পূক্তে গেল, কিছ দারিত্র আর দূর হ'ল না।"

শ্ৰেই বিৰ শীভলা ৰাই
শ্ৰেটৱী পদরী হে
লীতি উঠি ৰাজু ৰাই
লহঠি বৈদাহি
নীতি উঠি ৰাজু ৰাই

निचूब देवनारि ।

প্রবি ওছবি বীতলা

ভেলো অহুক্ল

লপকি ছলারী লাল চন্নণ বটোর

বকস দেহ মাভা বালক হ্নয়।

ৰূপে ৰূপে বৈবে যাভা

তনে তনে বৈৰু হৰ

লোচন কৰুতত্ব বনকে

**इत्तर वादेगर बाद ।**"

"বিভলার কুণা ভিকা করে নিভ্য লাজী (গালার চুড়ী) ও সিন্তু কিনে বিভলাকে চড়াই। সেই সৰ এক্ণ করে বিভলা কুণা করে সভাব দিলেন, কিছু আমার আদরের পুত্র বিভলার চন্ত্রণ কুঁরে দিলে। ভাকে ক্যা কর, ভার ভঙ্গ ক্যা ভিকা করে আমি শীতলার অস্করী হব, বেবানে দেবী বাবেদ আমিও দেবানে বাব, পারবার বৃষ্টির মত বৃষ্টি বিরে সর্বান্ত আমি তাঁর করণে লক্ষ্য রাধব।"

বে সন্থানের কর্ত নামত রাধা হর, পূজা বেবার সময় তাকে
মঙ্গ বা মন্দিরে দেবীবৃত্তির কাছে নামিরে কেওরার রীতি
আছে। অবোধ শিশু বৃত্তি ভার্ল করে উাকে অপবিত্র করে
কেলেছে। তাই জননী তার হরে দেবীর কাছে মার্ক্তমা ভিজা
করছেন।

ভেলো হে সন্ব হৈ বেরিয়া
সন্বৌতি দেহো ভগত।
ববে নাহি বরণী হে নাই
ভাতারে নাহি বিরাধা।
কৈনে হে সন্বা দেধাইও
সম্বইত কে বেরিয়া।

দেবী বলছেন "ভক্ত সন্ধ্যা হ'ল, সন্ধ্যা দাও।" ভক্ত উত্তর দিছে—"আমার বরে নেই বরণী, আমার ভাঙারে নেই বি— কে সন্ধা: দেবে এবং কি দিয়েই বা প্রদীপ ভালবে ?"

উত্তর হ'ল :---

বরে তোর বরণ ভাঙারে তোর বিরারা, সোনেকে দীরারা ভগত রেশম কে বাভিয়া।"

় বোরই গাইরা বিয়ারা অরৈবে৷ সারি রাভিয়া।

দেবী প্রায়িত হয়ে আশীর্কাদ করলেন—"তোষার গৃছে বরনী আসবে, তোষার তাভারে আস্বেনি, সোণার প্রদীপে রেশমের বাতি অসবে। বোলনী গরুর ( হুম্বজাত ) মৃতের প্রদীপ সম্ভ রাত্রি বরে গৃহ ভোষার আলোকিত করে রাববে।"

> খৱ গেলো দীয়া যাভা সম্প্রন ভেলো বাভিয়া বেল লাগৈলো যাভা

চৌপহর রাভিরা।

"বীণ বলন, বেবীর আশ্বিকাছ সকল হ'ল, আলোভিভ ঘরে সমস্ত রাত্রি বরে দেবী বেলা করতে বাকেন।"

বেলৈতে কুনৈতে বজি' গেলা

নিজিয়া বলৈলে হে বাতা।

কিয়া ভূঁহি নিজ বলৈলে নায়
কোচিয়া কলোচীয়া হুযায়াহি ঠাচ।

জন্ম কে আঁবি বিহা কোচিয়া কে কাম

নিয়খন কে বনগুয়া
বাহি ভিত্তিয়া কে বাতা বিহো হে লাল
হালৈতে বেলৈতে বয় বায়।

বীপোজ্য ববে বেলা করতে করতে দেবী পরিপ্রাভ হবে বিদ্রিত হবে পড়লেন। তবন ভাঁকে বলা হচ্ছে—"কি গাঢ় নিজা তোষার দেবী ! তোষার হ্বাবে কুর্ত্তব্যাবিপ্রভেব। পড়ে আছে ! অথকে গৃষ্ট দান কর, কুর্ত্তিকে কেছ দাও, দরিপ্রকেব বন লাও এবং বঙ্যা নারাকে সভান লাও, সকলে প্রসন্ন হবে ববে কিবে বাক্।" এবানে দেবীকে একট ছোট মেরে রূপে করনা করা হবেছে, বিনি সমন্ত রাজি আলোকিত বরে বেলা করে, প্রাভ হবে নিজিত হবে পড়েন। উপরন্ধ কর্ত্তব্য পালনের কর উাকে সচ্চতন করা হচ্ছে মুহ্ তর্ৎ সনার হারা—"এত কিসের নিজা গ্র

"মাইরা দরারাহি হরিরর শিপর
নীল ক্ষকা পহরাণী মাতা
নোহনী ভবানী।
ক্ষপত চরণ ভোর পুকৈ মাতা
সবহি ভোহার হে লাগ
হমর বাহিরা নাম হোড়াহ মাতা
ক্ষমর হবিরা বহি হাব।"

"দেবীর মন্দির ছারে প্রবেশপথে আছে সমুজ পিপুল গাছ; মন্দির নীল পভাকার শোভিত, দেবী হচ্ছেন রোহিনী ভবানী আর্বাং হুর্গা। জনং ভোষার চরণ পুজা করে, সজলেই ভোষার সভাম। হে দেবি। আমি আজন হ:বিনী, আমার বভ্যা নাম পুর করে লাও।"

"গবকে নজৰিবা নিনিবা কল স্লহি,
নাই হনৱ ভেলৈ পাভবরু
হোৱেদে বিহান নিনিবা পদরত হাট
টালিবা বৈদাবো হে নিনিবা কাটেবা।
কচনে কাটবৈ নিনিবা খোরবৈ বোরান
তাক পর লাগৈবো নাই পান ভাটার।
পানগুৱা বৈবে নাই পিরকী কেঁকিহো
লাল আলনে ধেলত বালক হবার।"

আমার কল-সুলে ভরা নিষ গাবারীর ওপর সকলের বজর ভাই
আমি হরেছি কলহীনা বছ্যা। ভোর হোক, বাজার বসলে
হুজুল কিবব। নিরগাহাট শিক্ত সমেত কেটে ভাই থিয়ে
বেড়া দেব। সেই বেড়ার লাগাব পানের গাহ। বেবী
শান বেয়ে আমার অল্নে পিক কেলবেন, আর আমার বাছা
সেই পিক্ রাঙা অল্নে বেলা করবে—অর্থাং পান বেয়ে
বেবী ভুই হবেন ভা হলে আর্মি সভানবভী হব।

নিম গাছেও শীতলাদেবী ভূঠ হন, কিছ ছুঠ লোকদেৱ নক্ষম পড়েছে বলে তাতে দেবীর ভূটীগাবন হচ্ছে না, ভাই এবার পান দিয়ে দেবীকে পরিত্ত করা ছাড়া উপায় কি। পানও দেবী বাবেন এত প্রচুর পরিষাণে যে সম্ভ অন্নম ভাঁর চাৰ্কত ভাতুলরাগে রঞ্জিত হয়ে যাবে।

দেবীর প্রতি সুগভার আছার পরিচর আছে এ সঙ্গীতে। নিয়োদ্ভত সঙ্গীতে আছে দেবতাকে ভূঠ করাও বিবি:

"ভেলোই বিহান পারাতে কে, বেরিরা আহে পদরতি হার্মরা বোডীরা বৈসাহি ভৈরেঁ। ভাই ভোহার চরণে দৈবো বুগুরা বোজিয়ে ভাই ভোহার চরণে দৈবো। সিম্মুর পিরারীয়ে হোইহো স্থাপন

প্রাতে যথন ৰাজার বসবে কিনৰ গুড়ী, আনব গুড়ুরার সূপ, নিবের মন্দিরে পূজা দেব। নিব সভঃ হরে আশীর্মাদ করবেন—"সিন্তুর আর হরিপ্রারম্ভিত কাপড়ে প্রসঞ্চণা হও, তোমার বালক দীর্ঘায় হোক, প্রশী হোক।"

বালক তোহার জীয়ো স্থী ভন্মন।"

সামাত বৃতি ও বৃত্যায় দেবতাকে তৃষ্ঠ করে বে আশীর্কার লাভ করা হচ্ছে তাই বলে দিছেন পুলারিশী। তবে কি বা শিব ঠাকুর অতি অলেই তৃষ্ঠ, তথু বৃত্যা হলেই চলে, বৃতিধানি উপরি পাওনা তাঁর।

## ভারতে দিয়াশলাই শিশ্প

### **একুঃ**বিহারী পাল

ালেই আছিন মুগে বৰ্ণন বৰ্ণনাম মুগের সভ্য ও উন্নত নাছবের পূর্বাপুরুষগণ বনে জললে গুরিরা বেড়াইত তবনও ভাহারা আর কিছু না জানিলেও, ক্রিরভির জড় বে বাভের প্রবাজন তা জানিত। এটাও তাহাবের অজানা হিল না যে, অন্তির সাহাবেয় কাচা বাংস অনেক পরিবাশে স্থায় হইবা ওঠে, কারণ মুগের যাব প্রাণীনাজেরই বভাবজাত। কাজেই ভাহারা পাধরে পাবরে ব্রিরা অন্তি প্রবাজিত করিত। ভারণর

লক লক বংগর অভিবাহিত হইরাছে—ন্যাপ্তর আৰু ক্রাহে-বিজ্ঞানে উন্নভিত্ত চরম শিবতে আরোহৰ করিরাছে।

প্রথম মহারুছের পূর্ব্ধ পর্বাছ ভারতে যে সামান্ত পরিবাণে বিরাশলাই উংপাদম হইত ভাষা হইত কৃষ্টিরশিল্প বিসাধে এবং জিনিবও তত উৎকৃষ্ট হিল না। ইহায়ারা ভারতের চাহিদার (বহরে প্রায় ১৫০ লক্ষ্য প্রোম ) একাংশও মেটানো সন্তব্পর হয় নাই। সুইতেম ও জাপানই তথ্য ভারতে

সমপরিবাণে বিরাশলাই রঙানী করিত। জাপানী বিরাশলাই হিল বানে সভা, কাজেই উহার প্রচলন হিল বিশেষ-ভাবে ভারতের প্রানাঞ্চলে; সুইভেনের বিরাশলাইরের বাম অবিক বলিরা সহরেই বেশী চলিত। কিন্তু ১৯১৪-১৮ সালের মহার্ভের সবরে জাপান ও সুইভেনের বব্যে বে প্রতিম্বিতা চলিতেহিল তাহার পরিসমান্তি ঘটে। জাপানী বিরাশলাইরের সভা ভাম ও ইউরোগ হইতে ভারতে বাল রঙানীর বেশী ভাভার জভ ১৯১৭ সালের মব্যে ভারতের বিরাশলাইরের বাজার ভাপানের কর্ত্তস্তিত্ব।

প্রথম মহাসমরের পরিসমান্তির সঙ্গে সঙ্গে সুইছেন ও ভাগানের মধ্যে প্রতিযোগিতা পুনরার ভারত হর। কিছ এই जबर जावज-जबकार विराम स्टेटि जायमानी मिरामनाहैरहर উপর শুদ্ধ বর্ত্তিত করার ভারতে দিয়াশলাই-শিল্প-উংপাদম क्षांक्रेश चायकाराने मस्त्रमाविक एवं। काम ১৯২১ मान পৰ্যাত ভারতে বিরাশলাই উৎপাদ্দের পরিমাণ্গত ছাসর্ছি বিশেষ ভাবে পরিস্ভিত হয়। ১৯২২ সালই হইল ভারতীয় ভিত্রাপলাই পিজের একট খরণীর বংসর। এই সময় হইতেই ভারতের নিজর শির পুঞ্জিটিত হওরার বিদেশী আমদানী ছালপ্ৰাপ্ত ভুইন্ডে বাকে। ১৯২১-২২ সালে প্ৰায় ১৩৭ লক ৰোগ বিৱানলাই ভারতে **ভার**বানী হইয়াছিল: ১৯২৬-২৭ লালে এই সংখ্যা ভবিষা ৬১ লক্ষ গ্রোলে হাড়ার। ১৯৩০ লালে ভারতে বে পরিবাধ দিয়াপলাই উৎপদ্ন হইবাছিল ভাষাবাদ্রা ভারত ও ব্রহ্মদেশর সম্ভ চাহিদাই মেটানো হইরাহিল। बिट्ड करतकड़ जायलीय विदाननाई-कारबामाय मार्थ ध প্রতিষ্ঠাকাল বেওরা হইল :---

প্ৰতি ঠাকাল

ইগাৰী ব্যাচ ব্যালুক্যাক্চারিং কোং, কলিকাভা, ১৯২৩ चारवरी राजी राष्ट्र ब्रांच (कार, विक्न, 3386 बरानची बाह् काडेबी, नाटरांब, 3324-26 विविभि गांह अवार्यम्, विविभि ब क्षत्र के देव देवां है। १३० वार्ष के विश्वामनारे मिल प्रवर्श्य दिन मा । कार्डिश्वन ७ राज कार्याम হইতে প্রচর পরিষাণে আমদানী করিয়া ভাটির অঞ্চাণে বে বাসাহনিক প্লাৰ্ট বাকে ভাষা সংযোগিত করাই ভারতীয় कारबामाक्षणित क्षवाम कादा हिल । ১৯২६ माल्डे मर्वाक्षयम কাঠি ও বাল এলত করিবার কল ছাপিত হয়। সুইভিস ব্যাচ কোলানী ১৯২৪ ৬ ২৫ সালে অধ্যনাথ, কলিকাডা, বোখাই, प्रकृत, मानाजव अकृष्टि चारम निरमस्य कावनामा चानम করে। পরে অবর্ড কোম্পানী ভাষাদের ব্যবসার সামাভ পরিবর্তন করিরা 'ব্যানেজিং একেজি' প্রতিতে কার্য্য চালার , छेरारका बारमिक अरक्के रहेन अरबड़ीर्न हेक्सि बाड কোলানী। ইহারা বর্তমানে ভারতীর চাহিদার শতকরা ৮০ ভাগ মাল উংশঃ করিতেছে।

নাম

১৯২৬ সালে ভারত-সরকার ভারতে বিরাশলাইরের चावनायी-वर्तायी श्रम्भि नवर्ष चन्नवाय कविवाद श्रास्थ्य বোৰ কল্পেন। সেই বিলাবমতে বেখা বার বে. ১৯২৮ সালে ভারতে সর্কান্তে ২৭ট বিশ্বাপদাইদ্বের কামধানা ছিল : ভাছারা দৈনিক প্রার ৫০০ প্রোস দিরাশলাই উৎপদ্ধ ভরিত। वरनात छरभावम-मरबा। हिम ১৮० मक त्वान । छन्दारा সুইডেনের ভারবানাওলিই প্রার এক-ডভীরাংশ সাল উংপর ক্রিত। ১৯২২-২৩ সালে আর্ল'নী মালের উপর স্থান্তরত পাওৱা সিৱাহিল ১,৫৪,০০,০০০ টাকা: ১৯২৫-২৬ সালে পাওরা বার ১.১৮.০০.০০। চাকা। দেবা হার ক্রেই যাল আষদানীর পরিমাণ কমিতেছে। ১৯২৯ সালের পরবর্জী করেক বংসরে ভারতীয় দিয়াপলাই-পিরীদের মধ্যে ভীত্র প্ৰতিযোগিতা দেখা বাৰু, কলে প্ৰৱোজনাতিৱিক দিয়াললাই উৎপর হইতে বাকে। এযাবংকাল দিয়ালগাইরের দাম ছিল ৰুব সন্তা। কিন্তু ১৯৩৯ লালে ধিভীয় মহাসময় আয়ন্ত হইবার সদে সদে বুছের চাহিদা মিটাইবার ক্ষত কাঁচামালের বিশেষ প্রয়োজন হইখা পড়ার বিরাশলাইরের মূল্য বিশেষভাবে বৰ্ছিত হয় এবং সৰ্বাসাধারণের ব্যবহারের নিমিত মালের ৰাটভি পঢ়াৰ চোৱাকাৱবার, কালোবাকার প্রভৃতি বিশেষভাবে চলিতে থাকে। কলে সরকার ১৯৪২ সালের মার্চ বাসে দিবাশলাইবের সর্ব্বোচ্চ মূল্য নির্বিষ্ট করিবা দেন। ৪০ কার্ট-ৰক্ত দিয়াললাইয়ের দাব লাড়ে চার পরনা ও ৫০ কাটিওয়ালা দিবাশলাইবের ছয় প্রসা করা হইল। তারপর ১৯৪২ সালের এপ্রিল ও আগঠ বালে বিয়াশলাইরের বুল্যের কিঞিং পরিবর্তন कता एत । ১৯६७ शास्त्रत बार्क बार्स ६० कार्ड विद्यानमाहेरहत দাৰ ভিন প্ৰসা হাৰ্য হয়।

 त्य अवक कांड्यात्मव जारात्य पित्रामनारे देखताती रव ভন্তব্য কঠি, কাগৰ ও ৱাসারনিক ত্রব্যাদি প্রবান। কঠি দিয়া কাঠি ও বান্ধ তৈয়ারী হয় বলিয়া কঠিই এই শিলের প্রধান উপাধান। ভারতীয় দিয়াপলাইরের সমভ কাঞ্চিই 'এলসংপন' (aspen) নামক বিবেশের আনদানী ভাঠ হইছে विर्विष्ठ रुदेछ। देश वित्यवणात्व नारेत्वविदा, वानिक দেশসমূহ ও ভ্যাভিমেভিয়া হইতেই আসিয়া বাকে। কিছ ঐ সহত দেশ হইতে কাঠ আমদানীর ভাড়া অভ্যন্ত বেলী পভাত বিলেমজ্ঞাৰ বাভাতে ভারতীয় কাঠ দিয়া দিয়ালটাই ভৈয়ার করা সম্ভব হয় ভজ্জ চেপ্তা করিতে থাকেন। পরীকায় रहवा श्रम, निवृत वा मध्यात (sawar) नावक प्रकार कार्ड रहेट कार्ड ७ वास रेज्याद क्या वाहेट शारत। बारमा उद्यादम, चात्राव, बूक्टबर्ट्स, बदाबर्ट्सन, क्यबार्ट, बानावाद এড়ভি এবেদগুলিভে শিবুল প্রচুর পরিবাবে করে। ভা হাড়া আকাষাৰ বীপপুঞ্জে যে পিৰুসসমূপ একপ্ৰকাৰ নৱৰ কাঠ কৰে ভাষা বাহাও ভানভাবে বিহাশনাই ভৈয়ার কয়া চলিভে পারে। बाब १७ किवेदिक कुछै ज्ञानरभन रहेरछ बाद ३०० ब्लान

বিবাশলাইবের কাঠি নির্নিত হইতে পারে, উক্ত পরিমাণ কাঠির অল প্রার ১০'৫ কিউবিক কুট শির্ল কাঠের প্রবাহন হয়।
কিছ আাসপেন কাঠের আহরণ-ভালা সমেত বাহা বরচ পড়ে
ভাহা শির্ল কাঠের তিনগুণ; কাজেই শির্লকাঠ ব্যবহার
অনেকাংশে প্রবিধান্তন ৷ এ হালা বিদেশের মালের
অনিকরভার উপরও নির্ভির করিতে হয় না ৷ হিমালরের অললে
শির্ল অপেকাও ভাল কাঠ পাওরা বার, কিছ ভাহা আনরম
করা বিশেষ কঠসাব্য ৷ কল্মকাঠও এ কাজে ব্যবহার
করা বাইতে পারে ৷ এ প্রশক্ত উর্লেখবাগ্য বে, শির্লকাঠ
বিশেষভাবে ব্যবহৃত হয় বাজের ক্ষণ্ড ক্ষর বা এই কাতীর
কাঠ ব্যবহৃত হয় কাঠির নিষ্যিত ৷

ৰিভীয় মহাৰ্থের প্রায়ন্তেই আন্দামান দ্বীপপৃঞ্জ আপানীদের অবিভারতুক্ত হওয়ার নেবান হইতে কোন কাঠ পাওয়া সন্তব হইল না। কাল্ডেই ভবন ভারতীর দিরানগাই নিরের উন্নভিত্র ক্ষম ভারতীয় কাঠের উপরই নির্ভয় করিতে হয়। একটি বছ কারবানায় মাসে প্রায় ১০০০ টন কাঠের প্রয়োকন হয়। ওরেষ্টাণ ইণ্ডিয়া মাচে কোম্পানী মাসে প্রায় ৫০০০টন কাঠ ব্যবহায় করে। স্ভরাং এই সময় শিমূল কাঠের লাম বিশেষ ভাবে বৃদ্ধিপ্রার্থ হয়।

কাঠের পবেই অতি প্ররোজনীয় বন্ধ ছইল রাসায়নিক ক্রব্যালি। এর মব্যে আবার পটাসিয়াম ক্লোরেট ও রেড ক্রক্রাস প্রবান। তা ছাড়া গছক; ম্যালানীক ভারজাইড (Manganese dioxide), ক্রিছ অল্লাইড, বাতির কালি (Dampblack), রুঁ (Clue), এন্টমনি সালকাইড, কাচচূর্ব প্যারাকিন প্রকৃতি কম বেলী প্ররোজন হয়। এন্টমনি সালকাইড, বাইক্রমেট অব পটাস ম্যালানীক ভারজাইড, বিজ অল্লাইড, বাইক্রমেট অব পটাস ম্যালানীক ভারজাইড, বিজ অল্লাইড প্রতিক্রমেট অব পটাস ম্যালানীক ভারজাইড, বিজ অল্লাইড প্রতিক্রমেট অব পটাস ম্যালানীক ভারজাইড, বিজ অল্লাইড প্রত্তি প্রার্থ ভালিকে বলা হয় 'কিলার্ন' (Fillers); সাবারণ অবহার বাহাতে আঞ্জন বরিয়া না বার তল্কাই এগুলির ব্যবহার। বর্ষণের নিমিন্ত ব্যবহার হয় কাচচ্ছুর্ব। রুঁ সকল রাসায়নিক প্রব্যাহারিক ভালির প্রবোজন ওর্ রং করিবার নিমিন্ত। অভাচ বাসায়নিকভালিরও বিশেষ প্রয়োজন আছে।

নিরাপলাইরের বাস্ত্রপ্তি আঞ্চাদিত করিবার ধার কাসক্ষেত্র ববেষ্ট্র প্ররোধন আহে। তবে এ নিষিত্ব অতি সভা বাবের কাসকেই কাজ চলে। তারণর প্ররোধনীর জব্য হইল 'লেবেল'। ভারতের মত বেশে, বেবানে অবিকাংশ লোকই বিরক্তর—লেবানে লেবেলের বিভিন্নতার উপর কারবারের ভবিষ্যং নির্ভিন্ন করে, কারণ নানা রঙের হবি দেখিরাই ইহারা ক্রিয়াপলাইরের ভালনক বিচার করিয়া থাকে। তা হাড়া হিন্দু ও বুণলয়ান, এই ছই সন্তাহারের বর্ষাত পার্থক্য হেছুও ভিন্ন ভিন্ন লেবেলের প্রয়োজন হয়। উল্লেখ করা বাইতে পারে বে, পৃথিবীর অভ কোন কেলেই এত বিভিন্ন রঙের লেবেলের প্রচলন নাই।

প্রতি বিনিটে বেবানে করেক ভবন দিয়ালনাই তৈয়ার হয় সেবানে কারবানার সাকল্য বিশেষভাবে নির্ভন্ন করে ছবক কারিগরের উপর। দেবা সিরাহে, ভারতীর কারিগরগণ অভিপন্ন দক্ষতার সহিত বিরাপলাই-কারবানার সকলপ্রকার কার্য্যাধি সম্পন্ন করিরা বাকে। ভা,' ছাড়া ইউরোপ প্রভৃতি দেশ অপেকা এদেশীর কারিগরগণের রজুরী অনেক কর।

কারবানার সকল কার্যাধিই বল্লের সাহাব্যে সম্পন্ন হইরা থাতে। বে-তোন আৰতনের কাঠের অভিথলি ছাল ছাভাইর। निनिং वब-नाराया (Peeling machine) काउँकिनिरक ৰুব পাতলা অংশে বিভক্ত করিয়া উপযুক্ত আকারে কাঠা इब । ভারণর এওলিকে দেওবা হর 'চলিং' বল্লে (Chopping machine) ৷ এবাৰে বাজের ভিতরকার বিভিন্ন সংশ ও বহিরংশ নিৰ্কিট আয়তনে কঠিত হটয়া বাল-নিৰ্দাণ যত্তে বিভিন্ন অংশ সংযোজিত হইরা বাজগুলি পূর্ণবিষৰ প্রাপ্ত হর। কাঠিওলিও বিভিন্ন বন্ত্ৰ-সাহাৰ্যে ভৈৱাৰ হয়: তংশৰ সেওলিকে কৰাইয়া ভরুল প্যারাক্তিবে নিমজ্জিত করিয়া অঞ্চাপে রাসায়নিক क्षवाजित विज्ञन नामात्मा एव । ७९भव काविकनिटक छारे९ চেবাৰে শুকাইতে দেওৱা হয়। ভারণর বন্ধের সাহাব্যে বাছ कर्छ बाद्यद केक्ट्रबिटक दानादनिक खवा नानात्मा, रनदन चाडी जरून कांचरे जलात एवं। जाबादन चवडांव खेवानणः इरे चाइड(नद विदाननारेदाद वाच पाटक: (১) १৮×७५×১৮ मिलिमिकेश थ (२) ৪৬× ००× ১৫ मिलिमिकेश । कार्टिक रेमर्पा পাকে সাধারণত: ৫০ ও ৪০ মিলিমিটার। প্রতি বাল্পে কাঠি बादक ৮০ট । ४ १०ট कविया । बुद्धव नवय चवक छैनवाक ছই আকারের যথেই পরিবর্তন সাধিত হইরাছে।

ভারতের লোক-সংখ্যা চল্লিশ কোট। কিছ ভারতবাসীর
অপরিসীম দারিত্রা হেতু অভাভ দেশের ভূলনার দেরাশলাইরের
ব্যবহার এবানে অনেকাংশে কম। র্ছের অভ বে সমভ
দেশে ভারত হইতে দিরাশলাই রগ্রামী হইত সে সব দেশ
হরত র্লোভর কালে ইউরোপ প্রভৃতি মহাদেশ হইতে যাল
আমদানী করিবে; কলে ভারতীর দিরাশলাই শিলের বথেও
বাইতি হইতে পারে। কিছ আশা করা যার, ভারতে বে
সমভ উংকৃট বরণের মরম কাঠ আছে ভাহা আহ্রণের
হুবলোবত করা হইলে ভারতীয় দিরাশলাই শিলের তবিষ্যং
অধিকতর উজ্লে হইবে।

## "সুখে আছি"

কৰ্মীবনে একবার নাটকীর ভ্তাবিট হইরাছিলাম-প্রতিবেশ প্রভাবে। নাটকে রুডসৈনিকের ভূমিকা এহন করিরাই রুদমকে করেকবার অবতীর্শ হইরাছি-প্রমোপন আর পাই নাই। বে বারের কথা উল্লেখ করিডেছি সেবার কর্মসচিবের অরু বারিত্ব অপ্রত্যালিত ভাবে আমার উপর রুভ হইরাছিল। "নাজাহান" নাটক অভিনীত হইবে হিরীকৃত হইল, কিছ ভূমিকা-নির্কাচনের সময়ই সব বামচাল হইরা সেল। প্রত্যেকেই নাম-ভূমিকার, দচেং গুরুল্ডেবের ভূমিকার অবতীর্ণ হইতে আগ্রহশীল। কিছ সকলকেই তো আর এই ছুই ভূমিকা রেগরা সভব নর, কাজেই আমার সচিবত্বও আকালম্বৃত্য বরণ করিল।

আমাদের এই হতভাগ্য দেশে বর্ণনেটর বান ভাকিরাছে। কর্মসচিবের ভূমিকা লইবাই বত গওগোল। কেভারেশ্রন অব পোন্ট এও টেলিপ্রাফ ইউনিয়ন্তের জেলারেল সেকেটারী Dr. George Noronha সাহেবের সঙ্গে বেছল ট্রাইক এফল্যন কমিটর সভাপতি জীর্জ মুগালকাভি বন্ন মহাশরের বে 'হল কি বোভীর' (Don Quixotic) ধরণের মসী-মুদ্ধ পুরু হইরাছিল—তাহা সকলেরই জানা আছে।

এই মসীয়ত কিছকাল চলিতে বাকার পরে আমরা অকথাং कामिनाम काक-लाइ विकासित वर्षप्रित व्यवनाम क्वेबारक अवर সৰ সমস্তার "সভোষ্ট্রনক সমাবান" হইয়াছে-এই প্রথবরে আমরা উৎকৃত হইলাম। কিছ ইপ্রসিদ্ধির পর ধর্মস্টাদের কর্মতং-পরতা তদমুপাতে বৃদ্ধিলাভ করিরাছে কি না ভাছাই বিবেচনা-যোগ্য। ২১শে প্রাবণ বিশাধা মক্ষত্রে বারবেলার ভাঁছারা নিজেবের কর্মে পুনরার বোগদান করিরা আমাদের পূর্বজনার্জিত পাপৰতৰে লাগিৱা নিৱাছেন। পূৰ্ব্বে পিওন বছাপৱেরা বাড়ীতে বাড়ীতে আসিয়া চিট্ট-পত্ৰ বিলি করিতেন, এবন ভাঁছাবের কেহ কেহ ততীর ব্যক্তির জিলার চিটবানি ছাভিরা দিরাই কর্মব্য সম্পাধন করিতেছেন। ফলে চিঠিপতাদি রীভিন্নত বিলি হইভেৰে না। অভঃপর ভারারা সভাবত হইয়া যদি ৰাছানা ধরেন বে. চিট্টপত্র মণিজভার পার্শেল বিলি করিবার নিষিত প্ৰভোককেই এক একবানি খীপ গাড়ী দিতে হইবে, না বিলে ভাছারা মি: দালভী, মি: বসু প্রমুধ বর্ষাট-विभावम्या त्मकृत्व चाराव वर्षकी चुक कविवा मिरनम, ভবে আমাধিগড়েই তো ভাল দামলাইতে হইবে? প্রাছ বেষদ পঢ়াইতেছে, তাহাতে মনে হয়, ভাক-ভার বিভাগের কৰ্মচাৰীয়া সৰৱে এক একট 'ৱবট' Robot বইৱা সিংহাসনে সমাসীন থাকিবেন, আর উাহাথের প্রভ্যেকেরই সম্বর্ধে আবে-विका स्टेट जना जामनानी अक अकड़ नवाविक्रण कन থাকিবে। গোটকার্ড, টকেট, বাম প্রভৃতি বিজয় করিবে রবট-ভলি , বণিম্বর্তার, নেভিংস ব্যাহ, রেজিট্রেসান, পার্শেল প্রভৃতি লইয়া ভাক-বিভাগের আর কোন কর্মচারীর সঙ্গে বাক্যালাপের

প্ররোজন হইবে ন।—কলটডে প্ররোজনাছবারী বণিঅর্ভারের করমবানা, লেভিংস ব্যাভের বহিবানা, রেজিট্রেসানের জিনিব-খালি ও পার্লেজনি টুক্ করিরা কেলিরা বিলেই রবট ছালকরণে সরুছর কার্ব্য নির্কাহ করিবে—অবভ ভাক-বিভাগের কর্মচারীদের পঞ্চেট থাকিবে কলের চাবি আর টেবিলে থাকিবে কার্সা ট্রিল্য ব্রেইট ভার্জিনিরা নিগারেট।

বাঁহার। বাজ-ক্রব্য এবং বছাদির বর্তমান সমতা
নিরাক্রণের চেটা না করিরা সামাজিক ও ব্যবহারিক জীবনে
কেবলই বিশ্বালা আনরন করিরা দেশের ও দশের নেড্ছের
দাবি করেন, তাঁহারা বাহার্র বটেন। এ দেশে বুছ হর নাই,
অবচ অর বছ চিনি তৈল প্রভৃতি নিত্য-ব্যবহার্ব্য সামগ্রীর
হৃতিক লাসিরাই আছে। ইহার অন্তর্নিহিত গুচু তব্যের সভান
প্রক্র প্রকৃত হেন্তু নির্ণর করিতে এ-সব নেতাদের না আছে
আগ্রহ, না আছে পারব্লিতা—শ্বতরাং এদের হারা প্রতিকার
হওরা তো দূরের কর্ষা।

ৰুছের পরিস্থিতিতে এখন হয়ত বাজন্তব্য, বস্ত্র এবং জীবিকা-নিৰ্মাহের পঞ্চে অপরিহার্যা বহু সামগ্রী প্রপত হইয়াছে এবং অৱিবৃল্যে বিজয় হইতেছে, কিছ এই অবস্থা সাময়িক—চিরদিন अक्रम बाकिएल भारत ना। मटेन: मटेन: खवाणित मृत्राध হ্রাসপ্রাপ্ত হুইবে এবং ব্যবহারিক জীবনও পূর্ব্বাবহার কিরিয়া আসিবে। এব্যাদির বর্জনান ছুমুন্সিভাই যদি বর্মবটীদের द्वोहेरकत अक्षांक किछ एव छरन (न जानमात तक्किछ एंदेरन, সামাজিক জীবনে বিপর্যায় অবস্থাবী। ধর্মধর্টের প্রতীক্ষার चानक्र चार्य--चाच (तन-कर्यकारी, कान गार्कर, ভারণর কেন্দ্রীর সরকার ও প্রাদেশিক সরকারের মতাত विভারের ক্রমে হোকানের, ছাপাবানার-একে একে সকলেই আবদার করিয়া বেতনর্থির দাবি করিবেন, কিছ बहै नव करतक नक ठाकुरका अवसाव छ। सामन कम-नमाक मरह ? हाकृतित मधीत विरुक्ति वाहाता चारहन. নেই পেলনভোগী রাজকর্মচারী প্রভৃতির কি দশা হইবে ? ভারণর ৰাড়ীর চাকর, পাচক, বোপা, নাপিড, ছাইভার, ৰত্ব প্ৰভৃতি একে একে সকলেই বেভন-বুৰির দাবি পেশ করিবে। বাহারা নির্দিষ্ট হারে মাসহারা পাইরা ৰাসিতেহেন, মুদ্ধের বাকারে রাভারাভি "বড় বাছ্যও" হব मारे किश्वा वर्ष्ट्रके कविवावध छेपाव वीशायव गारे, धारायव জীবনবাত্রা নির্বাহের কি ব্যবহা হইবে 🤊 স্বতরাং বর্ষবট-সময়-ৰায়কগৰ হল পাকাইয়া ও অসভোবের আওনে ইবন জোগাইয়া সাবাজিক জীবনে কেবল বিপর্যারসাবনই করিতেত্তন। রেলভাড়া, ভাকের মাঞ্চল বৃদ্ধি পাইলে, ব্যাকের স্থাবের হায়-হ্লাস পাইলে বা সুভৰ ব্ৰক্ষেব টেক্স বাৰ্য্য হইলে পৰ্যুদৰ হইছে বেশের কোট কোট বরবারী, ফলে সমাধ্যেত এফেবারে: ভাবিহা পভিবে।

## বাঙালীর হিন্দী শিক্ষা

### बिलिटब्सनाथ हरिहाभाशाय

**धेकनिक्कि वाक्षामीत्वत्र मत्या वर्षामावित् अक्षरे आस्यः** যদে হয় ইহার কারণ ভাষাশিকা সহতে আয়াদের সভাবগভ র্ভদাসীত। হয়ত অনেকে ভাবিয়া থাকেন, ইংরেজী ভানিলে সভ্যক্রতের সমস্ত জানই তাঁহাদের আরত হয়; আর বাংলা ভানিলে ভারভের ভাল ভাষা না ভানিলেও চলে---সেইকট আমরা অভ ভাষা বা সাহিত্য সহতে ভভটা সভাগ নই। স্বাসী, ভাষান, ল্যাটন, এক, কুলীয়, নরওয়েন্দীয়ান ভাষার সঙ্গে আমাদের পরিচয় না বাকিলেও ইংরেকী ভাষার সাহায়ে ঐ সকল ভাষার কিছু না কিছু ৰই বহ শিক্ষিত বাঙালী পাঠক নিশ্চয়ই পঞ্চিয়াছেন কিছ শতকরা একবনেরও ইংরেজী হাড়া অভ ভাষা ভাষা আহে বলিয়া মনে হয় না। কেন এমন হয় ? আমার এক এছেয় করাগী বন্ধু আমার বলিয়াছিলেন, কলিকাতার ভিনি করাসী ভাষা শিৰাইবার বল ক্লাস বুলিভে চাহিরাছিলেন। প্রথম তাঁহার ক্লাসে আসিলেন নক্ষই হুন ছাত্র, কিছু একমাস ঘাইতে না বাইতে সংখ্যা কমিরা দাভাইল মাত্র পাঁচট ভরটতে। ইছা নিভাম্ব হুংখের বিষয় সন্দেহ নাই। আমি এই প্রসদে ভাঁছাকে বলিয়াহিলাম, 'মসিরে, করাগী বিধিলে যদি কিছু পরসা আসিত তাহা হইলে ব্যাপারটা টাডাইত এর রক্ষ। বিভঙ ক্টির বচ ম্বাবিত বাঙালী সন্থান প্রসা বর্চ করিছা করাসী শিবিতে আসিবে না।' এতো গেল বিৰে**ট** ভাষার **441** I

ভারতের ভাষাঞ্জির উপর আবার আমাদের একটা তাহ্মিল্য বা অবজ্ঞার ভাব আছে। 'হিন্দী বা তাহিল প্রভৃতি ভাষার পাঠের বোগ্য কিই বা আছে' এ কথা অনেকেই বলেন। যদি হিন্দী বা তাহিল জানিরা আমরা এ বরণের উক্তি করিভাম তাহা হইলে কতকটা লোভন হইত। কিছ ঐ সমন্ত ভাষার আ আ ক ব না জানিরাই অবিকাংশ শিক্ষিত বাঙালী এই অনুদার মন্তব্য করিরা বাকেন। ইহা কোন মতেই সুস্থ মনের পরিচারক মর।

হিলী ভাষা শেখা শিক্ষিত বাঙালীদের পক্ষে দরকার।
ইহার প্রথম কারণ ভারতীর ভাষাগুলির মধ্যে হিলী ভাষাভাষীরা সংখ্যার দিক দিরা সর্বপ্রথম। প্রায় মর কোটি
লোক হিলী ভাষা ব্যবহার করে। ভাষাচার্য্য স্থনীতিমুমার
বলিরাছেন, পূর্ব্য হিলী ও পশ্চিনী হিলী ভাগ করিলে অবপ্র
হিলীর এ গৌরব বাকে মা; তবন বাংলাকেই ভারতীর
ভাষাগুলির মধ্যে প্রাবাভ হিতে হয়; ভারণ বাংলা গাঁচ হইতে
ছয় ভোটি সরনারীর কথ্য ভাষা। মর কোটি সরনারীর কথ্য
ভাষা হিলীকে ভারতের সাবারণ ভাষা বলিরা চালাইতে বাওলা

অসমত দাবি বলিরা মনে করা চলে না । এই সংখ্যাগরির্কার কারবেই কংগ্রেস হিন্দীকে ভারতের রাষ্ট্রীর ভাষা বলিরা চালাইতে চাহেন। এবন যে ইংরেজী চলিতেছে ভাহার কারব দেশের রাজা ইংরেজ; ইংরেজী সাহিত্যের গৌরব ইছার র্খ্য বা একমাত্র কারব নর। ভারত বাবীন হইলে ইংরেজের এবং সঙ্গে সঙ্গে ইংরেজী ভাষার রাজনৈতিক প্রাণাভ বাইবে; ভবন সভাকারের কৃত্রিবৃদ্ধক কাল ইংরেজী ভাষার সাহাব্যে করিবার প্রশন্ত সময় আসিবে। একজন ইংরেজ লেবক বলিতেছেন

"That English, even in an Indian form, can ever be more than a second language to the future educated classes of India, it is quite impossible to believe."

এই লেখক হিন্দী-উৰ্ছ্হিনুছানীকেই ইংৱেন্দীর ছামে বসাইতে চাহিরাছেন।

হিন্দীলিকার বিভীয় কারণ রাক্নৈভিক। ভারতের একটা সাধারণ রাষ্ট্রার ভাষা থাকা দরকার। এ প্রয়োজন বিদেশী ইংরেকী ভাষা মিটাইতে পারিবে না। পণভৱের যদি কোন অৰ্থ থাকে ভাষা ঘটলে সংখ্যাগৱিষ্ঠভাৱ দিক দিলা क्लिके शामरे क्षया। जवक छाराद शहरे जाएन वारमा। বাইভাষা হিন্দী না হইৱা বাংলা হইবে ইহা বাঙালী চাহিতে পারে। নিজ ভাষার প্রতি বাঙালীর এই মম্ভবোধকে क्रिक्माब महीर्व श्राप्तिक म्याचार वना महीहन नव। ভবু সংখ্যাপ্তরত্ব একটা আক্ষিক ব্যাপার ভাষার উপর নির্ভৱ করিয়া একটা বিহাট যানবগোষ্ঠার ভাষা চিত্রদিনের ভৰ ঠিক কৰিয়া দেওয়া বত সহজ্ব কথা নয়। হিসাৰ কৰিয়া এই কান্ধ করা দরকার। কিন্তু যুধন সমগ্র ভারতের বৃত্ত একট সাধারণ ভাষা খির করিতে ঘইবেই ও ইংরেকী হাড়িতে ছইবেই ভৰন বিশেষ বিবেচনাপুৰ্বক বে-কোনও একটা ভাষা লওয়া চাই। যাহাই লই না কেন, অভাত ভাষাভাষীতা বহা ভূলিবেন---'আমাদের ভাষা কম কিলে ?' ভাতীয় चार्ट्य कांद्रर्थ मरबााद विक ठाविया यति बांगारवद वाश्ना ভাষার রাইভাষা হইবার আশা ভ্যাগ করিতে হয় সে ভ্যাগ বীকার মহতের পরিচারক। আমরা বিন্দী শিকার বভ বাংলার চৰ্চা তো ছাড়িয়া দিতেছি না। প্ৰাদেশিক ভাষা বিনাবে ও সাহিত্যের ভাষা হিসাবে বাংলা থাকিবেই।

এইবানে আর একট কথা বিচার্য্য। অবেকে বলিতে-পারেন ভাষা লইরা ধবন এত গোল ও বিন্দী চলিতেও ববন কৃষ্টির তাদিলে আনাবের এক আবটা ইউরোপীর ভাষা নিবিতেই কৃষ্টবে তবন ইংরেজী আছিল। লাভ কি ? ইংরেজী নিবিরা লাভ নিশ্চরই আরে, কিও ইংরেজী আছও ভাতির বর্ষে প্রবেশ করে নাই ও করিতে পারে না। ভাষার বিক্
বিরা ইংরেজী সম্পূর্ব বিদেশী; সে বিক বিরা হিন্দী অভি
সক্ষেই শিবিতে পারা বার ও ইকার গঠন-প্রণাসী অভভঃ
ভারতের হুই-ভৃতীরাংশ লোক অভি সক্ষেই আরম্ভ করিতে
পারিবে। আর কৃষ্টির জভ সকলেরই ইংরেজী, করাসী, রূপীর,
ভার্ষান প্রভৃতি ভাষার একট বা হুইট বা সভব ক্ইলে সব
ক'টিই আরম্ভ করিবার অবিকার বাহ্নিবে। উপরোক্ত ইংরেজী
লেবক বলিয়াহেন—

"Every cultured man needs a second and perhaps a third foreign language—but he need not be bilingual. The unilingual have the advantage, and the bigger the cultural community in that language the bigger the language. As a first principle, pin your faith to the mother-tongue.

অৰ্থাং প্ৰতি কৃষ্টিসম্পন্ন লোকেরই ছুইট বা ভিন্ট ভাষা ভাৰ। প্ৰৱোজন। অবশ্ব হুইট বা ভিনট ভাষা বে সমভাবে শিৰিতে হইবে এমন বাধ্যবাৰকতা থাকা উচিত নয়। বাছার। এক ভাষা ব্যবহার করেন তাহাদের পুবিধা অনেক: বিশেষত: নেই বিশেষ ভাষাভাষীদের সংখ্যা যদি বেশী হয় তাহা হইলে তাহাছের স্থবিধাও হইবে বেশী। প্রাথমিক নীতি হিলাবে বৰেণী ভাষাকেই চালাইতে হইবে। আভভাল कामविकान काम जलामान-विर्मारक अकराजीका मर्ट, अक्ष ৰেণ্ড ভাষাকেই জনসাধারণের শিক্ষার যাধ্যম হিসাবে ব্যবহার করাই উচিত। আক্কাল চুইট গুরা **উठिवादच**--selfdetermination বা আছকর্মত ও জানবিজ্ঞানের উপর সকল মান্তবেরই সমান দাবি। এই উভর কারণেও বিদেশী ভাষার नाशास्त्र निकाशास्त्र कथा देवित्वहे शास्त्र मा। देकिविश्वात **क्ट्य-वर्श वर्शाय दशायनिका देखाविद दिलाएक-**--বিধেশী ভাষার প্রয়োজন নাই।

ভূতীরতঃ, বে ভাষা সর্ব্বভাষতীয় হইতে চলিরাহে তাহার সাহিত্য কতবানি সম্বন্ধ তাহা বেবা দম্বন্ধর। বাঙালীর হিন্দী গ্রহণ ও ব্যবহারে এইবানেই ঘারতয় আগত্তি। আমি হিন্দী সাহিত্য সহতে অনভিজ্ঞ, তবুও এ কবা বলিলে বোব হয় দুববীর হইবে না যে বর্ত্তমান মুর্দের কবা অবপ্ত হতন্ত্র—কিন্ধ প্রাচীন হিন্দী ও বাংলা সাহিত্যের সম্বন্ধিক বিশেষ পার্বক্য হইবে না। আবৃন্দিক বাংলা সাহিত্যের মুর্দ্ধন, বভিষ্ঠিজ, গিরিশচ্জ্ঞ, রবীক্রনার্থ ও শরংচজ্জের আবির্ভাব বিশারকর ব্যাপার। মাত্র এক শভালীর মধ্যে একট প্রবেশে এতগুলি বিনাট সাহিত্য-প্রটার ক্ষম অপ্রভাগিত ব্যাপার। ইহাদের ভূলনার আবৃন্দিক হিন্দীভাষার সাহিত্য-প্রটার। নিশ্চরই মলিন হইরা বাইবেন, কিন্ধ প্রবন্ধ শ্রেবীর সাহিত্য-প্রটার ক্ষম বিশেষ কোনো কোনো নীমাবর নহে। বাহা আকু বাংলাহেশে বটিতেছে তাহা বে কাল বিহার বা মুক্ত

আহেশে বটবে না তাহা কোৱ করিবা বলা বার না। বর্জবানে অবস্তই বাংলা তাবা তারতের শ্রেষ্ঠ তাবা; কিছ তাই বলিবা হিন্দী সাহিত্যের শ্রুতিহ কম সৌরবরর নর; ইহার ভবিব্যংও হর ত চূদ্ধে নর। সুতরাং বাঙালী বিধি রাজ্যনৈতিক তাবা হিলাবে হিন্দীকে গ্রহণ করে তাহা হইলে বাংলা তাবার কতি নাই; অবস্ত সর্ব্বভারতীর তাবার গোঁরব লে পাইবে না—ইহাই হইবে তাহার হংবের কারণ। কিছ হিন্দী হালা সকল তাবারই গ্রই হংব বাক্তিবে। আমরা বে আরু ইংরেজী তাবা লিবিরাছি তাহা রাজনৈতিক কারণে; তাহার হলে করাসী তাবা লিবিরাছি তাহা রাজনৈতিক কারণে; তাহার হলে করাসী তাবা লিবিলেও আমানের বে বিলেব ক্তি হইত তাহা মনে হর না। আমানের ইংরেজী লেবাটা আক্ষিক। স্তরাং হিন্দীও আক্ষিক তাবেই সর্ব্বভারতীর তাবা হইতে চলিবাহে, গ্র সহতে হংব করা চলে না।

চতুৰ কাৰণ, প্ৰত্যেক সম্বৰিশালী ভাষার মত হিনীয় একটা निक्य क्षेत्री चाट्य। क्रष्टेव किक विद्या वा liberal education বা স্বয়ংসম্পূৰ্ণ শিক্ষা-ব্যবস্থার দিক দিলা সকল ভাষাই শিবিবার মত বছ। এই ছিলাবেও ছিন্দী সাহিত্য শিবিবার মড জিনিব। ভারতীয় সভাতার বিকাশ হিন্দী সাহিত্যের মধ্য विश्वा बामिकका प्रदेशाया । जात्मक प्रबंध: (बंद कारिमी এই ভাষায় মধ্য দিয়া আত্মপ্রকাশ করিয়াছে। হিসাবে এই ভাষার একটা মর্ব্যাদা আছে। ভারতীয় কোৰও একট ভাষা যদি আমৱা নিৰিতে চাই ভো আমাদের পক্ষে বিন্দী লেবাই ভাগ। ইহার বেমন একটা ব্যবহারিক দিক আছে তেমনি ইহার बाक्टेमिक विक्थ चाट्य। चवक्र देशव वया विद्या वादानी বে সাহিত্য-স্টের প্রচেষ্টা করিবে এখন বাধাবাৰকতা নাই। কেমনা, বে ভাষার আমরা হাসি-কাঁদি, ভালবাসি, পুৰ-হুংবের কথা বলি সচরাচর সেই ভাষাতেই সাহিত্য পৃষ্টি করিয়া पाकि। बनीवी जानार्ভान कांत्र विल्लिम-Esperanto क्षनरे नारिष्णात जाना स्टेर्स मा। हिन्ती वाक्षानीत भरमाचारवत अकाम मा स्टेरमक पाँछ बाहे. ইংরেজীতেও আমাদের মনের বর্ণাবধ প্রকাশ হর না। ভবুও আময়া ইংরেকী শিবিভেছি প্রয়োজনের ভারিতে। ভবর इरे अक जन मनीयी वा छो। त्यम जावजीव एरेवां व रेरवंजी দিবিরা বশ্বী হইরাছেন ভের্মি ভবিষ্যতে কোন কোন বাঙালীও হৰত হিন্দী নিবিৱা যশৰী হইবেন। না হইলেও আমাৰের কৃতি নাই । হিন্দী শিবিলে বছ দিক বিৱা আমাৰের नाकरे परेरव। जान वांधानीय मरम बाबी कर्पवा विचीरक সর্বভারতীর ভাষার পরিণত করিবার বে আংশিক হায়িত্ব ভাষার করে এক ভাষা ভাষাকে বহন করিছে श्रदेश ।

## গৈরী দেলে এশেরীজনাথ ভটাচার্য্য

আমি ভোষার মাটর বচ অভিব লহ বৰ্ষা যোৱ বীৱভূষি, **क्र**बि বাংলা-বারের লন্ধীর ভাসন আছ অভৱ নদের ভীর চুমি'। ওলো, দেশহ কি আৰু মৃতি তব ৰোহ সাহপদ নহচোৰ **লহ্মভানমপহতলে** আৰু আমার বীবন বছ হোক। শিষে শীল গগনের চল্রাভণ ঐ সাদা বেৰের কালোর চুলিয়েছে, কোন শিলী ভোমার প্রামন্তলিভে নাশা বঙের তুলি বুলিয়েছে। হেবা হোট কুটীর শাভিতরা बुदक जा'न रावा धरे बार्ववानि. যেন লাল সৰুক্ষেত্ৰ ওৰ্ণা চীনা দেছে হলদে স্থভোর হক টানি'। নীল পাহাড়ের চেইতোলা ঐ पुरच বুকে ভালবদেরা অচঞ্ল, যভ কললোকের গলপরীর সেবা ভুকরেরি বাসমহল। হন্দ এবং সদীতেরি मप ওবে মর্ভেরি এই দেব-নিবাস, कवि या गाँछ मात्रु विवि বেশা পদ রচেছেন চতীদাস। क्ष्मदीवां भूगा खरव বধু बार्क बच्चीलन बीचित्र चन. নিভি বৈশাদেভে বৃত্তকাঁৰে ভাকে कुनवानादा सनक हन। ETS. क्षरपरविष्य क्ष्यपुर अरे সায়া বাংলা দেশের ভরকেতম ভাষে স্পতিরা বাসতে ভালো এ যে বামীর প্রেমের বৃন্ধাবম। আছো কেন্দুলিতে হন্দ তনি পল্লবেরি বল্লভের, ওলো ভোমার বুকে বছ ভারাই (भ'क न्यर्थ भवनव्यव्य । হেশা বজেশব ক্ষম্বরিব (यन कुछ क्रांश्व निष्र्न्न, ভার প্রভাবণের উক্থার ঐ ৰেন চক্ৰ বোৱাৰ স্থৰ্পন। ওবে মন্দিরেরি চৌদিকে ভার আর করবি অবাধ রৌজে সাম, শ্বশান যাবে পাড়িগভীর 🕆 ৰোলা উৰ্ছে বিহাট পরিজাণ।

কোৰ শিলীৰনের আলভাতে ভোর हैक्डेट्स मान नववानि সাঁওতালেরি ফল চলেছে পিঠে প্রহল্পালীর হর টানি'। ধুকে নেইক কোষো চিন্তাভীভি তারা অলে বুলী হাকা বন. হাবে প্ৰাণ বুলে' কি সাঁওভালীয়া সাবে বাছতে বাৰী অভুক্ৰ। বাঁশের বাঁশীর হল দিয়া আৰু ক্রল স্বার প্র রঙীন ভবে যাজাপথে যার বারী নাই 42 জীবন তামের হক্ষীন। ভোৱা আহু হে সব আছু পদ্মীছলাক इ:य-त्यम जिल्हा (प. **धरत अरहत वचन वैनित नीटन** হন্দহারার ভাগিরে দে। ভূবনভাঙার বাঠবানি আৰু ৰোৱে হাভহানি দের অবিশ্রাহ সেধা পাভিনিকেতনের বুকে ৰলে বিভাজানের শাভিবার। ওবে জগৎ-রবি এরই বুকে ভার খাটট বহর কাটবেহে, ওরে হেবার বেকেই বিবসভার সে বে করের লিপি পাটরেবে। बक कोडी भाषभवद्यन वांच बड ए'न कवित पन ৰেবে বার ক্ষমের ছোঁরাচ লেগে WTE. ₹'ল বাংলা দেশ আৰু লাল ক্ষল। JŽ. শাটর বুকেই করেছে রে কভ সিদ্ধ তাপস বীর তময়, সারা ভারতভূষির গর্ম সে ভাষ ø₹. দ্ৰাচু বাটি ভাই ধৰ্ম বয়। দাহকা কোপাই হোট হ'ভাই **W**T ভীরে ধুসর বাসুর আভরণ, वस् भहुवाकी दूरकत \$e श्का कल कर शह्य। 59 ভার পধে চল শালবনে বাই **B38** লেখাৰ সিৱে প্ৰাণ শীতল, वू नानिक हैवा সেধা ভা পাতা কোন উহানীর শব্যাভন। আৰু এই জীবনের বৈকালী বোর ওই গৈৱী বিয়ার পাতবে কোল, গলভীৱের অভিব কেবার যালে। পদ্মীৰালা ছয়ায় ৰোল।

## প্রবাসী ভারতীয় সমস্থা ঃ জ্যামেকা, ত্রিনিদাদ, ত্রিটিশ গায়েনা

অধ্যাপক স্বাহতবিমল মুখোপাধ্যায়

অতীত গৌরবের দিনে ভারতবর্থ ছিল বিখ-সভ্যভার একটি প্রবান কেন্দ্র। পূণ্যভূমি ভারতবর্থ ক্টতে বিচ্চু রিভ জান এবং সভ্যভার আলোকরশ্বি বিবের ভ্যসাক্ষর দেশসমূহে সভ্যভার দ্বীপশিবা মালিরাছিল। স্থান্তর সিরিছরী অভিক্রম করিব। ভারতীয় প্রচারকরণ দূরদূরান্তে অবহিত জনপ্রসমূহে সভ্যভার হোমানলশিবা প্রজ্ঞালিত করিবাছিলেন। সেই মূরে প্রবাসী ভারতীয়ের মর্ব্যাদার আনুন ছিল সর্ব্যকরীকৃত।

ভারণর কালচক্ষের আবর্জনের দকে সক্ষে ইভিহাসের পট পরিবর্জিভ ক্ইল। ভারতবর্ধ পরপদানত ক্ইল। দাসদ্পুথলে বছ আতির প্রতিভা স্থেমর ক্ইরা পছিল। বিধের কৃষ্টতে সে মর্য্যাদা এই ক্ইল। পৃথিবীর বিভিন্ন অঞ্চলে আবিও বছ প্রবাসী ভারতীর রহিরাহেন। কিছ তে হি নো দিবসা গভাঃ। প্রবাসী ভারতীরগণ আবু সর্ব্বেরই উংপীছিত, উপেন্দিত এবং পদে পদে লাছিত ও অপরামিত ক্ইরা বাকেন। ভারত-মাতার পৃথল মোচনের পূর্ব্বে এই অবছার পরিবর্তম বৃষ্টিবে না।

ত্রিষ্টপ সাত্রান্ত্যের অন্তর্ভু জ্যাবেকা, গ্রেনাভা, ত্রিনিদাদ এবং ব্রিষ্টপ গাবেনাতে প্রবাসী ভারতীরের সংখ্যা ১৪০,০০০-এরও অবিক (১৯৩২ এবং ১৯৩৬)৩৭ সালের আদমস্যাত্রি অহুসাত্রে)। এই সমস্ত উপনিবেশের প্রভ্যেকটতেই প্রবাসী ভারতীরগণ তরুত্য অ-শ্বেতকার ভাতিওলি বে সমস্ত রাজ্যরিভিক অবিকার ভোগ করে, দে সমুদ্ধর অবিকার ভোগ করেন। কিন্তু ত্রিনিদাদ, জ্যানেকা এবং ব্রিষ্টপ গাবেনা প্রবাসী ভারতীরগণের ব্যবহা-পরিষদ এবং নিউনিসিপ্যালিটির নির্মাচনে ভোট দেওরার অবিকার বাক্তিনেও ব্য অন্তর্গাক ভারতীরই সেই সেই দেশের অভাভ অবিবাসীর সহিত্য সমান সামাজিক এবং অবনৈতিক অবিকার ভোগ করেন। প্রবাসী ভারতীরগণের মধ্যে ছই-চারি জন সম্পন্ন ভূ-সানী, চিকিৎসক্, আইন-ব্যবসারী ইত্যাদি না আছেন এবন নতে। কিন্তু এই সম্প্রদারের মুহত্তর অংশই একাভ ছরিত্র্যা, মুর্ম্বল এবং বিক্রপার।

ভারতবর্ষ হইতে বছ দূরে অবহিত বলিরা এই সমত উপনিবেশের প্রবাদী ভারতীর সন্তাগারের অভাব-অভিবোগ
ইত্যাহির প্রতি অনেক থিন পর্যন্ত ভারতীর কননাবারণ বা
ভারত-সরভারের দৃষ্টি আক্রই হব নাই। বদেশ এবং বজন
হইতে বিভিন্ন এই ভারতীরনিগের নব্যে অনেকেই ভারতীর
ভারা-ইভিন্না এবং সংকৃতি সহছে একেবারেই অন্ত আচারব্যবহার এবং চালচলনেও উন্না সন্পূর্ণভাবে পাভাত্য
ভাবাপর। এেনাভা এবং ত্রিনিনার প্রবাদী ভারতীরগণের
মধ্যে সর্ব্যঞ্জার সাজ্যবান্তিক এবং সারাজিক ব্যবহান বিল্প্ত
হুইরাতে। ইন্তার সক্রেই ভারতীর বা পূর্বভারতীর (East

Indian) विजय विष्यास्य शिवा शिवा शिक्स । कुलबीय---

"The Hindu is an East Indian as much as the Moslem. Inter-racial marriages are but narriages between Hindus and Moslems are quite common. In fact, if one were to be picked out by name and traced to his ancestor's community and told that he was either a Hindu or a Moslem, he might worder at the distinction. Even the names do not matter, for instance, my parents are Hindus and one of my brothers is named Yusuf. Until I came to India I never knew that Yusuf was a Moslem name!"—Mrs. Narissa P. Singh (a Trinidad-born Indian) in The Modern Review. March, 1932.

একাৰিক গৰ্মপ্ৰচায়ক এবং বৰ্ষবাক্ষ অভিযোগ করিয়াছেন বে, উল্লিখিত উপনিবেশগন্ধ প্ৰবাসী ভারতীয়-গণের নৈতিক আদর্শের যান বছই অবনত। ত্রিনিয়াদ, জ্যানেকা এবং ত্রিনিশ গারেনা প্রবাসী সহস্র সহস্র ভারতীয় শ্রমিক প্রকৃতপ্রভাবে সম্অবহাপর অভাভ কাতীর শ্রমিকের চুসনার নোটেই অসং বা চরিগ্রহীন নহে। হারিগ্রা, অজভা, কর্মবীনভা এবং বাসহানের অপ্রাচুর্ঘাই ইহাদের প্রকৃত সমভা। এই সমস্ত সমভার সভোষক্ষক সমাবান হইলে ভাহাদের নৈতিক আদর্শের যান হতঃই উন্নত হইনা বাইবে।

১৯৩৮ সালে ইংলওের উপনিবেশ-সচিব জিনিদাদ,
জ্যাবেকা এবং বিটিশ গাবেনার সাবাজিক এবং আর্থিক অবহা
সহতে তরন্ত করিবার কর্ত 'গুরেই ইণ্ডিক রর্যাল ক্ষিশন'
নির্ক্ত করেব। ভারত-সরকারের পক্ষ হইতে সাজ্য কেওরা
এবং প্রবাসী ভারতীরহিপকে সাজ্যদান বিষয়ে প্রবাজনীর
সাহাব্য ও উপন্দেশ কেওরার কর্ত কে, ভি. টাইসন সাহেবকে
পাঠান হয়। ১৯৩৯ সালে টাইসন সাহেব ভারতসরকারের নিক্ট এক রিপোর্ট দাবিল করেন। এই রিপোর্টে
জিনিদাদ, জ্যাবেকা এবং বিটেশ গারেনা প্রবাসী ভারতীরগবের
অবহা ব্যাবধ বর্ণিত হইরাহে। বর্তনান প্রবাদ্ধে স্থিবিই তথ্য
প্রবাদতঃ এই রিপোর্ট হইতেই আহ্রণ করা হইরাহে।

জ্যানেকার অধিবাসী সংখ্যা ৮৫৮,১১৮। ইহার রব্যে
ভারতীর এবং ইউরোপীরের সংখ্যা বিধাক্তবে ১৮, ৬৬১ এবং
১৪,৪৭৬ জন (১৯০৬ সালের আবন স্থারি অস্থারী)।
১৮৪৫ সালের প্রথম বিকে ৪০০০-এরও কিছু বেশী ভারতীর
প্রমিক সর্বপ্রথম জ্যানেকার বাব। ইহাবের বব্যে কোন
চুক্তিবত প্রমিক (Indentured Labourer) হিল বা।
ভারেক বংগর পর ইতেকার'-প্রথা প্রবৃত্তিত হয়।

বে সমত ভারতীর অন্যন হল বংসর কাল জ্যানেকাতে বাস করিবাবে, ভাষারা হানীর অধিবালীকের রভই রাজনৈতিক অধিকার ভোগ করিবেও ত্রিবিহার এবং ত্রিষ্টশ গারেনা-এবালী ভারতীরহিসের ভূলনার জ্যানেকা-এবালী ভারতীরগণের অবস্থা শোচনীর। এই বীশের অধিবালী অভাভ জাতি ভারতীরগণকে ঘহিনাগত এবং অবধিকার প্রবেশকারী বলিরা বলে করে।
আইন সভা, জনসাবারণ কর্তুত নির্মাচিত বাবতীর প্রতিচান
এবং বেবানে বেবানে জ্যানেকাবাসিগণ কর্তুত্ব পরিচালনা করে
সর্মান্তই ভারতীরসপরে প্রতি বৈষ্যান্ত্রক ব্যবহার করা হইরা
বাকে। মিঃ টাইসন বলেন বে, জ্যানেকাতে ১২ জন
ভারতীর বণিক এবং অভবিধ সম্রাভ রভি অবলবনকারী
ব্যক্তি আছেন কিনা সন্তেহ। প্রবাসী ভারতীরসপরে মধ্যে
কোন শিক্ষক এবং সরকারী কর্মচারী নাই বলিলেও চলে।
স্থ্যানেকার রাজবানী কিংউনের বাহিরে কোন ভারতীর নেতা
বা প্রতিচান নাই।

জ্যাবেকা প্রবাসী ভারতীয়পণ প্রবানত: প্রবজীবী এবং ক্ষমিতী। স্থানেকার সর্বতেই বেকার সমভা উৎকট স্থাকার ৰাৱণ করিয়াছে। কৃষিক্ষেত্ৰসমূহের প্রবানগণ (headmen) সাধারণত: অ-ভারতীর। কাল দিবার সমর ইহারা সভাবত:ই ৰজাতীর শ্রমিকবিগের প্রতি পক্ষণাত দেবাইয়া বাকে। ইহার ফলে অনেক ইন্দু এবং কদলী ক্ষেত্রই ভারতীর প্রমিকের चबुरडे नद्यार इरे पिरमद (यभी काक कार्डि वा। अविरक चाराद किरहेन मिडेसिनिशानिक कर्क चन-मद्यद्यां सिद्य-নের ফলে এবং করেড় বংগর পূর্বে বাড়ী বাড়ী ঘূরিয়া শাক-সঞ্জী বিক্ৰম্ব করা নিষিত্ব মৃত্যার যে সমস্ত ভারভীয় সজী धैश्मामम अवर विकाद कतिया कीविकार्कम कविछ, छाहाबा ৰভিহীৰ হইয়া পভিয়াছে। জ্যামেকার সৰ্ব্বত্ত প্ৰাথমিক শিকা चरिक्तिक धरा राग्यानुमक स्टेशिक चानकी वानक-ৰালিকাদিগের মধ্যে শভকরা প্রায় ৬০জন লেবাপভার বার ৰাৱে না। পুন্ধক এবং বিদ্যালয়ে যাইবার উপযোগী পরিচ্ছল करबद जनावर्गरे देशद कादन । जनवीत :---

"Inability to provide books and suitable clothings was a reason commonly given to me by poor Indian parents for not sending their children to school . . . I do not doubt its validity in many cases."—Tyson Report.

আইনের চুইতে জ্যানেকা প্রবাসী ভারতীরগণের কোন বিশেব অক্ষরতা না থাকিলেও ১৯৩২ সালের হিসাবে কোন বার বে ১৮০০০ প্রবাসী ভারতীরের নব্যে ৬০০ কনের নারও ব্যবহা-পরিষদের নির্কাচকরঙলীর তালিকার ছান পার নাই; কলে একট নির্কাচন কেন্দ্র হান পার নাই; কলে একট নির্কাচন কেন্দ্র হাতও কোন ভারতীর অববা ভারতীরহিপের প্রভি সহাত্ত্তিসম্পন্ন কোন নির্কাচনপ্রাব্যির নির্কাচিত হওরার সভাবনা নাই। জ্যানেকা প্রবাসী প্রার সকল ভারতীরেরই আর্বিক অবহা অভ্যত পোচনীর। ইহাদের মব্যে আবার প্রমন কতকওলি পরিবার আহে (১৯৪০ সালের হিসাবে ইহাদের সংব্যা ছিল ৭৫০ট) বাহারা একেবারে নিঃব। ইহালা একই দ্বিস্ক বে পরিবের বন্ধ প্রবং বৈন্দিন আহার্য্য ইহারা সব সবর ভূটাইতে পারে না। নাবা

ভঁলিবার জচ নাটর বর হাড়া আর কিছুই ইহাবের অচুটে ভোটে না।

নিবিশাদ একট জাউদ কলোনি। ইহাম বোট ৪১২,৭৮৩
অবিবাসীর বব্যে ১৫৪,০৮৫ জন ভারতীর। ১৮৪৫ এটাকে
সর্বাধনৰ ভারতীরগণ চুক্তিনত প্রমিকরণে নিবিশাকে আলে।
নিবিশাদ প্রবাসী ভারতীরগণের আইন-পরিষদ এবং নিউনিসিপ্যালিটর নির্বাচনে ভোট কেওবার অবিভায় আহে। হিন্দী
বলিতে এবং লিবিতে পারিলেই ভাহাকের ভোটাবিকার
বীক্রত হয়।

ভিনিদাৰ চিনি ব্যবসাধী সমিতির পক্ষ হৈছে 'গুৱেট ইভিক্
রন্থাল ক্ষিপনে'র্থ নিকট সাক্ষ্য প্রদান কালে বিঃ এক্, এ,
রবিন্সন বলেন —

"If an extension of franchise were granted in Trinidad, Indians would rule the country. Trinidad is not fit for any extension of franchise at present. There is solidarity only among Indians. The Indian supports and Indian for election and the Negro likewise a Negro, not because of his particular qualifications for a seat but just because he happens to be Indian or Negro."

অর্থাৎ ভোটাবিকারের ক্ষেত্র বিশ্বত করা হইলে ভারতীয়গণ ত্রিনিষাদের ভাগাবিবাতা হইরা ইাছাইবে। বর্তনানে
ত্রিনিষাদে ভোটাবিকারের ক্ষেত্র বিশ্বত করা স্বীচীন হইবে
না। কেবলমাত্র ভারতীরগণের মধ্যেই একতা এবং সলবছতা
আহে। নির্মাচনকালে প্রাবীর বোগ্যতার প্রতি সন্মা না
রাবিহাই ভারতীর ভোটদাভাগণ ভারতীর নির্মাচনপ্রাবীকে
এবং নিপ্রো ভোটদাভাগণ নিপ্রো নির্মাচনপ্রাবীকে ভোট
দিরা বাকেন। ত্রিনিয়াদের বেতাল ক্ষেত্রঘানিগণ প্রবাসী
ভারতীর এবং অবেতকার ভাতিসমূহকে কি চ্টতে বেবিরা
বাকেন বিঃ রবিন্সনের উত্তি হইতে ভাহা পরিকার ব্রা
হার।

নিমিদাদের মোট অবিবাসীর প্রায় এক-ছতীরাংশ ভারতীয়। গবর্ণরকে বাদ দিরা ইহার ব্যবহা-পরিষধে ২৫ জন সমস্য আছেন। ইহাদের মধ্যে ১২ জন সরকারী কর্মচারী এবং ৬ জন সরকার-কর্তুক মনোনীত। সরকারী এবং মনোনীত সদস্যদের মধ্যে একজনও ভারতীর নাই। অবলিষ্ট ৭ জন নির্বাচিত সদত। ই হাদের মধ্যে ৩ জন ভারতীর, গবর্ণরের কার্যনির্বাহক পরিষদের (executive council) ৪ জন সদস্যের মধ্যে কেহই ভারতীর নহেন। ভারতীরগব জোন বিশেব প্রধান বা অবিকার দাবি করিতে পারেন না। ফ্রাটন কলোনি সরকার ভাহাদের ভারস্কত অবিকার বীকার করিলেই ভাহারা সহাই থাকিবেন। ভুলনীর:—

"Indians neither desire nor demand preferential treatment. All they ask for is to be treated by Government with that consideration which their numbers and the important part they have played and continue to play in the colony's history, entitle them to expect."—Memorandum of the United Body of Indians in Trinidad before the Royal Commission.

কিছ সৰকার বরাবরই প্রবাসী ভারতীর সন্তাহারের ভাষ্য দাবি উপেকা করিরা আসিতেছেন। ভারতীর প্রবিক্ষিণের বাসহাবের ব্যবহা বোটেই সভাষক্ষক নহে। ব্যারাক-প্রবার বিরুদ্ধে বার বার প্রতিবাদ জাপন করা ক্রৈছে। সরকারী চারুছিতে নিরোগকালে বোস্যতা সম্পর নী এবং পুরুষ ভারতীর প্রার্থির দাবি বার বার উপেক্ষিত ক্রয়াছে। শ্রিনিদানের আভাত ভাতীর অবিবাসী অপেকা প্রবাসী ভারতীরগণের প্রবত্ত করের পরিবাণ অবিক এবং সংখ্যার ভাষারা ক্ষমংখ্যার এক-ভূতীরাংশ ক্রতেও সরকারী কর্ম্বচারীদিপের বব্যে প্রতি ২০ ক্ষেও ভারতীর আহেন কিনা সন্দেহ। শ্রিনিদানের শাসকসন্তারার ভারতীরগণের উন্নতিকে উর্যা এবং ভীতির ভূতিতে ক্রিয়া বাকেন। উপরে বে মিঃ ববিন্সনের কর্মা করা ক্রাছে, একট বির্তি প্রসঙ্গে তিনি বলেন,

"Thirty-five years ago there was not an Indian solicitor or Barrister. There was not one representative in the Legislative Council, there was not a doctor; in fact, the Indian was a drawer of wood. But now to the great surprise and dismay of his people, the Indian is met in every single profession."

অৰ্থাং ৩৫ বংসর পূৰ্ব্যে ভারতীয়দিপেত্র মধ্যে এক্ডমণ্ড উলিল, ব্যারিষ্টার, চিকিংসক, অথবা ব্যবহা-পরিষ্ণের সহত বিলেন না। কিন্তু আৰু ভাহাদিপের মধ্যে ছুই-চারি জন আইন ও চিকিংলা-ব্যবদারী এবং ব্যবহা-পরিষ্ণের সহত বেশা বার।

ত্ৰিষ্টশ গাৰেনা আয়তনে প্ৰায় ইংলভের সমান হইলেও ১৯০৭ সালের আধ্ব প্রয়ারি অনুসারে ইহার গোকসংখ্যা हिल बाज ७६९,०४>। देशंत मर्दा मछक्ता श्रीय ४२ वन चर्वार ১৪२,৯१৮ व्यव चात्रखन्दं स्ट्रेट्ड चान्छ। ১৮৩० नाटन ৱিটিশ সাত্রান্দ্যের সর্ব্বর দাসত্ব প্রধার বিলোপ সাধ্য করা হয়। প্ৰায় সঙ্গে সংগ্ৰহ ১৮৩৫ সাল হুইতে প্ৰিটিশ গায়েনা চক্তিবছ ভারতীর প্রবিক ভাষধানী করিতে ভারত করে। কিঞ্চিধনিক শভাৰী কাল মধ্যে অৱসংব্যক ভারতীয় বিভিন্ন ব্যবসায়কেত্রে এবং খডাত বৃদ্ধিনাৰ্য বৃত্তিতে সক্ষতা লাভ করিলেও প্রবাসী ভারতীয়ান এবন পর্যন্ত প্রধানতঃ ইংরেজ মালিকের ইকুক্তেরে क्षत्रिक्त कार्या करता मात्रिक्ल, क्कि, बाब अवर देकू बिक्रैन शास्त्रमात्र धाराम क्रवि-जन्मपः। देशास्त्र मार्या देकूरे আবার সর্বপ্রধান। করেক বংসর হইতে বিটেশ গারেনার ইক্স-ক্ষেত্ৰে নিয়ক্ত শ্ৰমিকদিগের মধ্যে তীত্ৰ অসব্যোষ দেখা দিয়াছে। পারিশ্রমিকের ব্রভার কনা এবং কাক কোটানো চরত ত্ইরা गणिवात्व विवादे क्षेत्रांचकः अहे चरावात्वः ए**हे** द्देशात्वः। অনভোবের আর একট কারণ এই বে, প্রবিকরণ ভাষ্য অভি-বোগের প্রতিকার প্রার্থনা করিলেও ভাষাদের বিরুদ্ধে শাভি-মুলক ব্যবস্থা অবলয়ন করা হয়। অভিবোদকারী প্রমিক্ষিপকে काकृषिक्ष विद्या कारारवत शास्त्र मुख्य अधिक निरदान करा एव। बिक्रेम गारबमात्र अवियानी ३३२,३१৮ वन ध्ववानी

ভারতীরের বব্যে ৫৩,০০০-এর বেনী ইক্লেন্তে অবিকেষ
কার্ব্যে বির্ক্ত ভাছে। সভারত বহু বলিরা ইবারা একাছই
কুর্মল এবং সন্পূর্ণভাবে ক্ষেত্রখানীদিগের র্বাণেশী। কর্ম
কৃষ্টতে বিভাজিত ক্ষরার ভরে ইবারা সর্মার্থী সম্ভ্রভাবে কাল
কাটার। ১৯১৭ সালে 'ইভেকার' এবার বিলোপ সাববের
পর বহুরাগভবের ভল্লাববানের ভভ বে সর্মারী বিভাগ
(Immigration Department) ছিল ভালা ভূলিরা কেওবা
হর। শ্রমিক এবং বালিকের সন্পর্ক বিরম্ভিত করিবার কোল
সর্মারী ব্যবহা ত্রিষ্টিশ গারেবাভে নাই। শ্রমিক্রণ সর্মা
বিষ্কেই অল্প্রভ এবং সভ্যবহুভার অভাবে একাছই পজিনীন।
ত্রিষ্টিশ গারেবার 'টেড ইউনিয়ন' আন্যোলন আল পর্যন্ত নৈশব
অভিক্রম করে নাই। ১৯৩৬ সালের ভিসেবর যালে প্রকাশিত
'লেবার ভিস্পুট্স্ ক্ষিণ্ন'-এর রিপোর্টে বলা হর,

"During our investigation, no resident estate labourers came forward voluntarily to give evidence. We believe the cause of this to be the fear of retaliatory action and possible eviction from house and subsistence plot, with but 3 days' notice, as provided under the Employers' and Servants' Ordinance, and the knowledge that no alternative means of earning a livelihood is readily available."

অৰ্থাং আমাৰের তবন্ধকালে কৃষিক্ষেত্রে নিযুক্ত শ্রমিকদিবের মধ্যে বাহারা ক্ষেত্রে বাস করে, তাহারা কেইই বেক্ষার
আবাবের নিকট সাক্ষ্য বিতে আসে নাই। প্রতিলোবহৃত্যক
ব্যবহার তীতি, বান্ধ এবং জীবিকার উপার বরণ কনি হইতে
উংগাত হওরার সভাবনাই এইকচ বারী। "এইপ্লার্স এও
সার্ভেন্টস্ অভিন্যান্দের" (Employers & Servants Ordinance) বলে বাত্র ও দিনের নোটণ বিরাই বে কোন
প্রমিক্ত ভাষার অধিকৃত কনি হইতে উঠাইরা বেওরা চলে।
শ্রমিক ভাল করিরাই আনে যে জীবিকার্জনের অন্য কোন
সহক্ষ্যতা উপার ভাষার আরভের বব্যে বাই।

খুসভ্য (।) বিংশ শতাখীতে তভোবিক খুসভ্য (।) ইংরেজ শাসনাবীন কোন দেশে নাম তিন দিনের নোটলে কাহাকেও বাও এবং অবিকৃত কমি হইতে উজ্জেদ কমিবার আইন প্রচলিত আছে ভাবিলে বিশ্বরের অববি থাকে না। বিষ্টপ গারেনা ইঙ ইতিয়ান এলোনিরেশন বহু দিন হইতেই বিষ্টপ গারেনাতে ভারত-সরকার কর্তৃক একজন প্রতিনিধি ( Resident Agent-General ) নিরোধের করা বলিরা আনিতেন্দ্রন। আজু পর্যন্ত এই করার কর্ণপাত করা হয় নাই।

নানা প্রকার বিবিন্ধবেশ্বর মধ্যেও ব্রিটপ গারেনা প্রবাসী ভারতীর সম্প্রকার নিজেদের ন্যান্য অবিকার প্রতিষ্ঠার ক্ষয় আন্দোলন চালাইরা আনিতেবেন। কর্ক টাউনের ইট ইভিয়ান এসোনিরেশন নিজেকে রাজ-নৈতিক, সামাজিক এবং অবনৈতিক ক্ষেত্রে সম্প্র ভারতীয় সম্প্রান্তর এক্যান্ত প্রতিনিধি স্থানীর প্রতিষ্ঠান বলিরা বনে করেন। এলোসিরেশন কর্তৃক একবানা রাসিক পত্রিকা পরিচালিত হয়। ইক্তেনে নির্ভ ভারতীয় মন্ব্যবিদের অবহার উরতি সাধনের প্রভি এই প্রভিঠান বিশেষ বস্বান।

আইনের ঘৃষ্টিতে প্রবাদী ভারতীরগণের ভারতীর বলিয়াই কোন অক্ষতা নাই এবং ওঁছোরা আইন-পরিবদেও বিউ-নিসিপালিটসমূহের নির্মাচনে ভোট দিবার অধিকারী। কিন্ত নির্মাচিত প্রতিঠানসমূহের ফনসংখ্যার অনুপাতে ভারতীর প্রতিনিধির সংখ্যা একান্তই অপ্রচুর। ব্রিটিশ গারেনার ব্যবস্থা-পরিবদের ১৪ অন প্রতিনিধির মধ্যে তিন কন বাজ ভারতীর। ইহাবের মধ্যে এক ক্ষম স্বর্ণ রের ভার্যবিব্বাহক পরিবলের সরত বিহুক্ত হইবাবেন। সভ্যের
বাভিরে বীকার না করিয়া উপার নাই বে, অন্যান্য
বিষ্টিশ উপনিবেশবাসী ভারতীরগণের তুলনার বিষ্টিশ গাবেনা
প্রবাসী ভারতীর সন্তাদারের অবহা সভোষকনক। কিছ
একবাও মনে রাবা প্ররোজন বে, বিষ্টিশ গাবেনাতে ভারতীরগণের প্রতি কোম প্রকার বৈষ্যার্লক এবং উহাবের বিরুদ্দে
বর্ণ বৈষ্যার্লক কোম আইম বিবিদ্দ না হইলেও বিষ্টিশ
গারেনার রাজনৈতিক এবং অন্যান্য ক্ষেত্রে ভারতীরগণের
বভারতের কোন বুল্যই নাই।

# কাব্য ও জীবন

গ্রীমান্ত্রেষ সান্যাল

ভূগ ক'ৰে ভেবেছিত্ব কাব্য বড়ো জীবনের চেৰে إ---খলস কলমান্ত্ৰোভে সাৱাদিন ভাই ভৱী বেৱে চলেছিত্ব অবিপ্রাম। অপরণ বপন-কুছেলী বিবারিকা চারিপাশে— সংসাবের সব অবদেলি' গেৰেছিত্ব ৰটা ক'ৰে ছটা-ভৱা ছন্দেৱ বালিকা **শুন্যগর্ভ যশোলোভে—লভিবারে দীও ভয়টিকা** হুভূা দেবভার ৷ আজি একা এই ধুসর সভ্যায়--এই বিল্লী-কলতানে কি গভীর বিধান খনার ण्डि' **डिक्टन ! राज, जीवरनटड ७**५ कंकि निष्ठा ভাবের তুবনে বসি' ভেবেছিছ দিব ভাটাইয়া নিৱালার দিনওলি ৷ অকমাং রঞ্জ-আঁবি নিৱা শিৰৱে আজিকে যোৱ ভীম ববে উঠে গৱজিয়া বান্তব ভীৰণ! ওপো নাহি দয়া---নাহি মারা ভার---কল্পার কুঞ্বন যুহুর্ভেই করে হারবার অনল-নিঃখাস ভাপে ৷ এ বোহন বপ্ৰকাল হি চি' ভাই ভাবি একবার বংসারের মাবে বাই কিরি'---

উদাৰ দীবনশ্ৰোতে তীত্ৰ বেগে পদি বাপাইয়া ; ক্ৰোফ প্ৰাণের সুৱা আকণ্ঠ ভূষিভসম পিরা रक कवि मामव क्यम ! अवि क्रिक्ट्किनि, নিবিলের কবিচিত্ত-রক্ত-কোকনদ-বিহারিণি, এ অক্স অসহায় মৃত্যুবর্ষী মাছবের বুকে যশোলিআ-বাছৰায়ি নিশিদিন ছালি' সকৌচুকে। এ কি ডুপ্তি ভোৱ ৷ বসি' মরবের সাগর-বেলার অন্ত-পিরাসা বাগো, মোর কডু বাহি শোভা পার এ কৰতে ৷ ভাৰ চেৰে লক কোট মাৰ্বের প্ৰায় কুম্ৰ আশা-ভূষা নিষে এক প্ৰান্তে এ জীবন হাৰ, যদি বেড কেটে কোনো সিধ শান্ত পলীবাট 'পরে भौय-वर्ष भागि' ७४ हामिशीय धनव चडरव চিবদিন! হে ইবর, ক্ষা কর যোর অপরাব---कीवम-(कोवम-वर्--- भूरण वात गरे वारे चार---বারেক আমারে লাও। খার, কল্পনার হারালোক হ'তে ৰুক্তি দাও--কিৰে মাও আজি মোৱে বৰুর কগতে।

জাতীয় বাংলার



অ গ্র দূ ত



মাসিক পত্ৰ

বাংলা-সরকার কর্তৃক বাজেয়াপ্ত India in Revolt, আগষ্ট বিশ্বব প্রভৃতিশ গ্রন্থকার **জ্রিভারিনীশন্ধর চক্রন্থর্তী** এই পঞ্জিকার সম্পাদনার ভার গ্রহণ করিয়াছেন।

প্রাৰণ মাস হইতে বাংলার যশখী লেখক ও সাংবাদিকগণের রচমায় . সমুদ্ধ হইয়া প্রথম আত্মপ্রকাশ করিবে।

শন্তই আপনার নাম গ্রাহকশ্রেণীভূক করন। পত্র লিখিলে এফেলীও নির্মাবলী পাঠান হয়। টালার হার—বাংসরিক ৪॥০ আতি সংখ্যা ৮০ প্রতি সংখ্যা ৮০

কার্য্যালয় 🕴 ৬৪নং হারিসন রোড, কলিকাতা

# খুলনার ইতিহাসে রণবিজ্ঞগুর

### ঞীবিজয়গোপাল বস্থ

বাদেরহাট শহরের অনভিত্রত্ব বর্ণবিজ্ঞপুর পারী ইটার চতুর্দশ পভালীর ছর্ভর্ব বসজাভির বিহারক্তের। বসংদের অত্যাচার-ভরে এ অঞ্চল এক প্রকার অনপ্ত হইরা পকে। তাহাবের দলন করিবার জভ এবং দক্ষিণ প্রদেশে প্রকার ইবিত উল্লেখ্য কর্ম দৈরুলানভূসক বানজাহান আলি বিল্লী হইতে এ বেশে উপত্তিত হন। ছর্ক্তরো নানাহানে উল্লেখ্য পভিরোধের চেটা করে। পিলক্ত (পিল-হাতী, কল-ত্রত), কভেপুর (কভে-বিজ্ঞা, পুর-গৃহ) বিজ্ঞাপুর প্রভৃতি অনপ্রের নামহিক উপাধি এ উক্তির সমর্বত।

বানবাহান আলি অধিকৃত হানের যে অংশে আধিপত্য প্রতিষ্ঠার নিদর্শনগৃহ নিম্মিত করেন উত্তরকালে ভাহাই রণবিজ্যপুর নাবে আব্যাত হইতেহে। প্রানধানির পরিমাণ কল হয় বর্গ বাইল। প্রাচীন গওপ্রামের পূর্বা ও পশ্চির প্রান্ত বাঁঠাল ও গীবির পাড় নামে বর্ডবানে পরিচিত। এই প্রামের প্রতি বভাই প্রতিহাসিক তথ্যপূর্ব। কাঁঠাল প্রান্থ বানবাহানের অবাত্য কাবাল বাঁর কীর্তিকলাণে পরিপূর্ব। এবানকার শ্রোভবিনীসমূহের গভিপথ ক্রম করিরা তিনি নাছবের বছল বাসোপবাদী ক্রের তৈরার করেন। ইবারের চিল্ল পদ্ধীবন্দে অভাপি বিভবান। বীর্ধ বঞ্জপতি বিভঙ্গকরে পরিবা, গাছি নাবে পরিচিত জলাশর, গোগরণে নদীকরাল অভীত জলপ্রবাহের স্থি জাগঞ্জ করে। চল্লিশ বংসর পূর্বেও আরব্য খাপত্যের আদর্শে নির্দিত গর্জমূক্ত কামাল বাঁর বাস্ত্রন এবং প্রাচীর-বেপ্টনীর অভিত্ব ছিল। বনিজের আঘাতে সেই প্রাচীন কীর্তি আন্ধ বিহরত। আভ্যন্তর ও বহিঃপ্রানেশস্থ জীর্ণকলেবর জলাশর মুইট গতবৈভবের সাক্ষ্যপ্রপ বিভ্নান। বসজিদ বাজীর পূত্র নাবে ইবারের এবন পরিচয়। মসজিদ বাজীর প্রান্ধনে একাবিক করে আবিহৃত হইয়াছিল। বড়েয় অভাবে, সেগুলিও এবন বিপর্যন্ত।

সাত পুকুরিরা চিহ্নিত নাতিবৃহং জ্বনমর গভীর স্থান কাষাল বাঁর বাণী-শিরচাতুর্ব্যের পরিচারক। একই ভূমিবতে বতরভাবে প্রস্তুত সাতট জ্বলাশর সাত প্রকার জ্বনের আধার হিল। ভূববেশ্বরে এই জাতীর 'তিন পুকুরিয়া' বৃষ্ট হয়।



কাঁঠাল আবের শেষসীনার কর্ষণযোগ্য ক্লেরে শেলোর পুকুর, কেলোর পুকুর, পাইকে বনের পুকুরগুলির জীণ রেখা উাহার জলদান-কীর্তি বিখোষিত করে। মাধের পুকুর, ঠাক্রণ তলার পুকুর, রবাই মাধের পুকুর, কার্তিকের পুকুর, যুধুজ্যের পুকুর প্রভৃতি কামাল বাঁর সমসামহিক হিল্-বস্তি নির্বেশক।

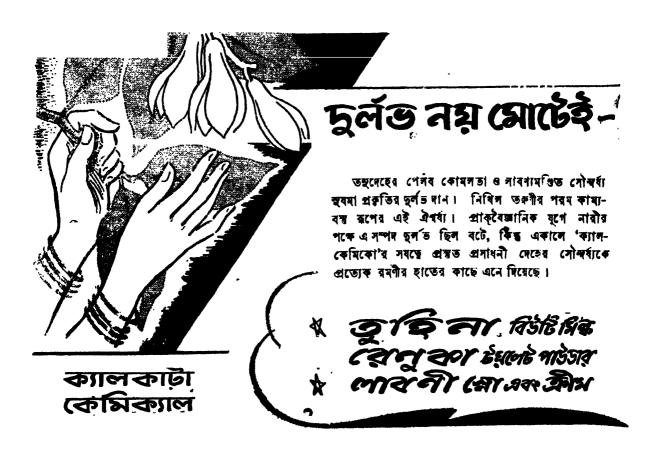
কামাল বাঁর বৃহৎ দীবিকা এ প্রামের অভতর প্রবান প্রটব্য।
ইহার পরিমাণ আট দল বর্গ বিবা। প্রামবাসীদের উদ্যোগে
এট এবন সংগ্রুত হইতেছে। কাটানি ভারাণীর মসন্ধিদের
নিক্টবর্তী ছান কোন পরিচারিকার বাগভূমির সারক।
ইতভত: বিকিপ্ত ইটকরালি বিগত এবর্গের প্রমাণ। ইহার
পার্শ্বর কণ্টকলতাপূর্ণ ইটকনিন্দ্রিত পুরাতম রাভার করাল,
হভাবাদি রাজোটিত বানবাহনাদির গ্রুনাগ্যনের বিষয় স্চিত
করে।

দীবিষ্ণ পাড়ে খানকাহান আলি সাহেবের নিকট-আগ্নীর-গণের বাস ছিল। গভীর শাস্ত্রজানের কল তিনি পার উপাবিতে বিভূষিত হইয়াছিলেন। খানজাহানের খনিঠ বজনগণও প্রায় সকলেই পার বিশেষণে বিশেষিত। কেন্দাপারের সহিত খান-ভাহানের খনিঠতা ছিল। ক্ষিত আছে, খানজাহানের ব্রুতাত-প্রাতার জীবিতাবস্থার কবর হয়। এ কারণ ভাহার প্রকৃত নাম সুধ্ধ হইরা ক্রেণ্টার হইয়াছে। বর্ষকামী ব্যক্তিগণ জভীট নিছির আশার এই পৰিত্র ক্ষেত্রে আছনিবেশন করেন, বোগর্ভিত্র কচ মানত করেন, পাত্তির আশার বর্ণা বিরা বাকেন। পূলা, ধূপ, দীপ বিষ্ট্রেরের আছার পরিভৃতির উদ্দেশ্তে কবরে পূলা দেওরা হয়। স্বাধি-স্বিত্রে প্রতি শুক্রবারে ন্যালাদি হইরা বাকে।

ন'ওবৰ নগৰিদ, দীবির পাছ প্রাবের অভতন প্রধান গৌরব। এই সুরব্য হর্ষাতলে বাদজাহান-সম্পর্টারেরা সুখে বাস করিতেন। সুদ্র অতীতের ভার্ব্য, কালের কঠোর হঙে এখনও সম্পূর্ণ বিনষ্ট হয় নাই। বিবিধ ফ্লাক্রকার্য্যবিচত প্রানাধ-গাত্র তংকালের ক্রচিপ্রিরতা ও নির্মিণ্যপ্রার পরিচারক।

থভাবজাত ব্ৰদসৰ্শ স্থ-উচ্চ পাহাড়সংগিত ঠাকুর দীবি একট শ্রেট প্রা-গৌরব। মগদের উপাত দেবভা বৃহ-বিএছ এইপ্রানে আবিকৃত হয়। পুণ্যতোরা ভাহনীর ভার ঠাকুরদীবির কল কাতিবর্শনির্বিশেষে সকলেরই নিকট পবিত্র। স্থ-সভান-কামনার বড়া ও বৃতবংসা নারীগণ ঠাকুরদীবির কলে অবগাহন সাম করেন—ভঙ্চিতে পূজা ভোগ যামত করেন।

উত্তর তীরের পশ্চিম পার্ধে বানজাহান আলি-প্রতিষ্ঠিত জন্মালয়। আদিনার তাহার পাচকের প্রভরমর পরাবার। একটর গালে বৌহ সরাই অপোকের অক্তরণে প্রাচীন আরবী অক্তরে কোরাণের পবিত্র বাদী লোকশিকার্ধ উৎকীর্ণ।



বানকাহানের সরাবিভবন সংবক্ষিত পুরাকীর্তিতালিকাতৃক্ত পুষ্ট ইপ্তক ও ক্লফ-প্রভর সংবোগে নির্দিত। এই সরাবির উপরেও আরবী ভাষার বর্ষনীতি বোবিত। পূর্বেপ্তনী কার-কার্যপূর্ণ। চুইট নিংহ্ছার অভিজ্ঞনশের পর বন্ধির-প্রবেশহার। প্রতি চৈত্রী পূর্ণিমার এবানে একট বিরাট বেলা হইরা বাক্ষে।

ক্ষেক শত বংসরেরও অধিককালের বেইনীর কভকাংশ এবনও অধিকৃত, অপরাংশ চিহ্ননাত্তে পর্যবসিত। ইহার নারিব্যে অপরাশর গৃহত্য ভরাবশের অনেক গৃহত্যাদীর আশ্রৱ-ছল। সর্বাপ্রবাদ সিংহ্লার জীর্ণনেহে হভারমান। এবানকার অভাত কীর্ত্তিকলাপ কালের ক্রমিগত।

রণবিজরপুরের উত্তর সীনানার তৈরবের পরিত্যক্ত গহনর এবন বাচক্ষেত্রে পরিণত। পদ্ম পুকুরিরা নামক একট বৃহৎ কলাশর ইহাতে এক সময় স্ট হয়। বর্তমানে দিন দিন ইহার আয়তন ক্ষুত্র হুইতে কুপ্রতার হুইরা আসিতেছে। থাবের থাবেই বালীর বাগ—বানখাবাবের থির উভাব-বাটকার স্বভি বহন করিতেরে। অধুবা এই হান সজী উৎ-পারবের ক্ষেত্র। ইহারই অধুবে জলান্ত্রস্বলিত হলওবজ বসজিব। কিকিৎ ব্যববাবে আহম্মদ বার বীবি। থাসাভ্যন্তরে কাজি পরিবারের বাটর সারিব্যে সমাবি-ক্ষেত্র।

অহরণ সাত পুক্রিরা এবানেও বিভবান ছিল। সাভট কুত্র কুত্র জলাশর এবন একট অনতিবৃহৎ জলাশরে পরিণত। ঠাঙা শীরের কবর প্রাবের অভতম ত্রঙ্গ্য বর।

ইভিহাসজগণের মতে রণবিকরপুর বানকাহানের রাজ-বানীর অভত্ জ হিল। ছানে ছানে কলাশর ও বাসগৃহ্চিক ক্ষরসতি ছচিত করে। প্রবান প্রবান রাজপুরুষ অধ্যুষিত অংশের ক্লাশরগুলি ভাঁহাদের নাবে পরিচিত।

বাৰভাহানের ছণতিগণ গর্জমুক্ত গৃহরচনার সিহহত হিলেন। একারণ ভাহার প্রতিষ্ঠিত জনপদে এই জাতীর হর্ম্যের বাহলা।

আমাদের গ্যারান্টিড প্রফিট স্কীমে টাকা থাটানো সবচেয়ে নিরাপদ ও লাভজনক।

নিয়লিখিত স্থানের হারে খারী আমানত গ্রহণ করা হইরা থাকে :---

- ১ ৰৎসৱের জন্ম শতকরা বাবিক ৪০০ টাকা
- ২ ৰৎসদেৱৰ জন্ম শতকৰা বাৰ্ষিক গেও টাকা
- ৩ বৎসৱের ভ্রম্ম শভকরা বার্ষিক ৬৫০ টাকা

সাধারণতঃ ৫০০ টাকা বা ততোধিক পরিমাণ টাকা আমাদের গ্যারান্টিভ প্রকিট ছীমে বিনিরোগ করিলে উপরোক্ত হারে স্থদ ও ভছ্পরি ঐ টাকা শেরারে খাটাইরা অভিবিক্ত লাভ হইলে উক্ত লাভের শতকরা ৫০০ টাকা পাওরা বার।

১৯৪০ সাল হইতে আমরা জনসাধারণের নিকট হইতে হাজার হাজার টাকা আমানত এহণ করিয়া তাহা হল ও লাভসহ আদায় দিয়া আসিরাছি। সর্বপ্রকার শেরার ও সিকিউরিট ক্রয়-বিক্রয় সম্পর্কে আমরা কাজকারবার করিয়া থাকি। অন্তগ্রহপূর্কক আবেদন করুন।

# रेश्वे रेश्विया श्रेक এश्व শেষाর ডিলাস সিश्विरको

## লিসিটেড

৫।১নং রয়াল এক্সচেঞ্চ প্লেন্, কলিকাভা।

টেলিপ্রাম "হ্নিক্"

কোন্ ক্যাল ৩৩৮১

# পুশুক - পার্চয়

'নেভাজীর বাণী'—এন. সি সবকার এও সল লিঃ, ১ সি কলেজ কোয়ার। পৃঃ ১৯২ + ১৯৩ ডবল কাউন। মূল্য সাড়ে পাঁচ টাকা।

সংকলন-প্রম্থ। ১৯৪২ ছইতে ১৯৪৫ পর্যন্ত নেতাজীর বেডারবক্তা, বিবৃতি এবং ভারতের বাহিবের বিভিন্ন সংবাদপ্তে তাঁহার
কার্যকলাপ সম্বর্ধন মন্তব্য বইথানিতে সন্নিধেশিত ছইরাছে।
সংকলন একেবারে সম্পূর্ণ কিনা বলা কঠিন, ভবে সংগ্রাহকের।
এ বিবরে যথাসাধ্য চেটা করিরাছেন একথা মছম্মেই বলা
চলে। বইটি ছই থণ্ডে বিভক্ত। এথেম থণ্ডে মাছে নেতাজীর
বক্ত চা, বিতীয় থণ্ডে সংবাদপত্রের বিবৃতি ও মন্তব্য। সব প্রেরে
ছয়ট প্রিমিটে আই-এন্-এ, অস্থায়ী প্রথ্যেট প্রস্তৃতি সম্বর্ধ
ক্ষত্রক্ত লি বিবৃত্তি আহে।

বইখানি বে একটি মূল্যবান সম্পদ চইরাছে একখা বলাই বাংল্য। নেভালী জাতীরতাবাদী ভারতবাদীদের আদর্শপুঞ্ধ, বিশেষ করিয়া তাঁহাদেবই দৃষ্টিতে—বাঁচারা তাঁহারই মত আল্ল-প্রতিষ্ঠার বাছবলে বিশাসী এবং খাধীনতা বিষয়ে কোনরকম আপোবেরই বিরোধী। ১৯৪২ ১ইতে ১৯৪৫ পর্যন্ত সময়টা ভারতের ইভিছাসে ওক্সপূর্ণ; এই সময়েব ঘটনাবলী সম্বদ্ধে নেভাষীর অভিষত অভিশর মৃদ্যবান, আর ভারতের বাহিরে পূর্ব-এশিরার ভাঁহার বা কীতি, আধুনিক ভারতের জাতীর আগরণের ইভিহানে ভাহার তুলনা আছে কিনা সন্দেহ। এই সব বিবরের একটি সমরাফুক্তমিক ইভিবৃত্ত বইথানিতে পাওরা বার। ভবিব্যতে এই জাতীর প্রস্থের ভিভিন্ন উপর আরও পূর্ণতর ইভিহান বচিত হইবে। বইথানি বাহির করিয়া সংপ্রাহকের। সকলের কৃতক্ষতাভাষন হইরাছেন।

'ফামুস'— ঐবাষপদ মুৰোপাধ্যার। মডার্শ পাবলিশাস'; ৬ কলেজ খোৱার পৃ: ১৩৬। মূল্য ছুই টাকা চারি আনা।

একটি ছুটিৰ দিনের অভিজ্ঞতার "কণদীপ্তিমর কাছুদের বাভি"র মত বাহারা থানিকটা আলো বিকীরণ করিলা আবার বিস্বৃতিতে মিলাইরা গেল, ডাঞাদের খণ্ড-কাহিনী গাঁথিবা এই উপন্যাস। ঠিক উপন্যাস বলাও চলে না; কতকণ্ডলি চরিজ্ঞ,— ছমিলা, বেথা, সীতা, সমীর, স্থবল প্রভৃতি, ডাহাদের কেন্দ্র করিলা কিছু সাধারণ, দিনপত-ঘটনা, ডাহাদের জীবনদর্শন, আব এই স্বের উপর এই একটি দিনের নায়ক অছুপ্রের মনের প্রতিক্রিয়া—এরই ইতিহাসকে বতটুকু উপন্যাস বলা বার, ডতটুকু।

# निष्कीत वनुमत्रत् :---

বাংলার বিখ্যাত মৃত ব্যবসায়ী প্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "প্রী" মার্কা মতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিস্প্রয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'প্রী' মতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল মতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে প্রীযুক্ত অলোকবাব্র বিশুদ্ধ মৃত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা মৃত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অসুকরণীয়।

CONTRACTOR DE LA C

## ষাঃ শ্রীস্থভাষচন্দ্র বসু

দিনটি ডেবল' পঞ্চালের একটি ববিবার। ছাউক, বৃদ্ধ, ভাহার পালেই বৃদ্ধুত অর্থনীতির জন্য আবেল বিলানিভা—
এক দিকে হাহাকার, বাবে বাবে "একটু কেন লাও বা।" ভাহারই
পালে বনে-ঘাঁটা-পড়া জসংস্কৃত সমাজের লযুক্তের জীবনবারা—
পাটি, সিনেমা, নৃভ্যবীবি, সাহিত্য, সলাত—"টেউরের মাধার
কেনার" স্কুলের মডই ভাতিরা বাওরা—তেরল পঞ্চালের বাংলার
এই ছবি। বাংলার সমস্ত ইতিহাসে বাঙালী মৃত্যুকে বোর হর
এমনভাবে আর কবনও বাজ কবিতে পারে নাই, এমন হালকাভাবে, এমন কুংসিভভাবে, এমন ভীবণভাবে মৃত্যুক্তর হইরা উঠিতে
পারে নাই।

ভবুও এ একটা অবস্থার, একটা দৈবছর্বিপাকের পরিণতি মাত্র। তাই পেথক যেন একটা মার্জনার দৃষ্টিতে সব দেখিরা পেছেন, একটা দরদের সঙ্গে সমস্ত কাছিনীটা বলিরা পেছেন।

লেখাটি খুব বববারে, পরিজ্য়, সকাল থেকে সজ্যা পর্যন্ত ছোট বড় আনেক কিছুই ঘটিল, কিছু কোথাও ঘটনার ঘটনার ঠোকাঠ্কি নাই; মন্তব্যগুলি বেমন বলিঠা, তেমনি সন্থান্য, কড়ি-কোমলে স্কর: বইবানি ব্য-মহামারীর বাংলার একটি চম্বকার, অনাজ্যর আলেখ্য।

বইবেৰ ছাপাৰ কৰেক স্থানে বিপ্ৰীৰক্ষ ভূপ থাকিয়া গেছে, পাঠে বিশ্ব ঘটায় ; কাগল, বাঁধাই ভাল।

**জী**বিভৃতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

আমার পৃথিবী—শ্রীবরাজ বন্যোপাধ্যার। দি বুক দিখিকেট, ১৩, শিবনারারণ দান দোন, কলি হাত!। দাম—১৬০।

দ্বিত্ৰ ব্ৰেৰ ছেলেদের জীবনের ক্ষেত্ৰ সন্তীৰ্ণ, উপাৰ্জনের জঞ বিদ্যাশিকা ও কোনমতে বাঁচিয়া থাকা এই ভারাদের জীবনের **केरमञ्जा । अहे धरावद कादकों हिता कहेवा मानाव श्रीवरी श्राह्या** উঠিয়াছে। লেখক ন্যাপ্ত, কাঞ্চেই সামাত পরিসৰে নৃতন কিছু বলিভে পারিবেন সে আশা লইয়া উপভাগ পড়িতে বসি নাই। পড়িতে পড়িতে কৌতুহল উদ্বাপ্ত হইয়া উঠিল। প্রথম আকর্ষণ-করববে ভাষা। পদ বলিবার বিশিষ্ট ভঙ্গীটুকুও ভাগ লাগিল। সামার কথার মধ্যে প্রচুর ইন্সিত এবং সঙ্কীর্ণ. 'আমার পৃথিৱী'তে বহিৰ্জগতেৰ বশ্বি আসিয়া পড়াতে কাহিনী উচ্ছপ হইরাছে এবং পড়িতে কৌতুহল জাগে। পরাধীন দেশের ছেলেদের মনে বে সব প্রশ্ন ভাগে, বে অভুভূতি প্রবল হইরা উঠে—মুক্ত তুলিকাপাতে লেখক ভাষা অবিকল প্ৰতিফলিভ कविवाह्म । कननाव छेक्कार्य छाव। काथा अभिन हव नाहै, न्डन म्बर्के शक्त विक्र क्षार्यात कथा नरह। काहिनीब পরিসমাত্তি ভালই হইয়াছে, তবে প্রের প্রারম্ভে নায়কের পরিপত্তি ना एक्याइरम-इंश भार्ककारन श्रृष्ठीय द्वशा है।निया मिट्ड পারিত। আর একটি বিষবে লেখকের অনবধানতা দেখা যায়। বানানে কলিকাড়া বিশ্ববিদ্যালয় প্রবর্ডিড নিয়ম অফুসরণ করা माच अ-- वच वच विवि वक्ष्यान छेत्र कि क क्रेबारक ।

# বাঁকুড়া সন্মিলনী মেডিকেল স্কুল হাসপাতাল সাহায্যার্থে সহাদয় ব্যক্তিগণের নিকট বাঁকুড়া সন্মিলনীর আবেদন

বাক্ডা দলিনী বাকনা দন ১৩১৮ ইংবাকী ১৯১১ সালে কলিকাতার স্থাপিত চইয়া এবং বাকলা দন ১৩২৯ ইংবাকী দন ১৯২২ সালে বাক্ডার ইহার মেডিকেল মূল ও হাসপাতাল স্থাপন করিয়া দেশের ও বাঁকুড়া জেলার নানা প্রকার দেশহিতকর কার্য ও কনসেবা করিডেছেন। ইহা একটা রেজেন্ত্রীকৃত সমিতি। দলিলনীর হাসপাতালটার আয়তন কেমল বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইয়া দেড় শভটী ইন্ডোর বোগীর সংখ্যা প্রায় শভাধিক। বর্ত্তমান সাক্লার অন্তপারে মেডিকেল স্থলটিকে কলেকে পরিণত করিবার এবং দেশের বিশেষ চাহিলার হাসপাতালটার আর্ডন বৃদ্ধির বিশেষ প্রয়োকন হইয়াছে। কে কারণ উপস্থিত দেড় শত ইন্ডোর বেডের স্থলে চারি শত বেড করিবার প্রত্যাব হইয়াছে এবং তহুদ্ধেশ্রে ইটু তৈয়ার কার্য্যও আরম্ভ হইয়াছে। এই প্রতিষ্ঠানটির বর্ত্তমান বাংসবিক ব্যয় প্রায় এক লক্ষ্ক টাকা পত্রন্থেটের বিনা সাহার্য্যে নির্কাহিত হইডেছে। ইহার হিসাব বাকুড়া ব্যাহ ও অন্তান্ত বর্ত্তমান কর্যাক ব্যাহ প্রায় প্রয়োকন হইয়াছে। কে কারণ শহাসপাতাল দিবসা নাম দিয়া এবং সাধারণ ভাবে ভিন্ন ভিন্ন হ্যানে সন্থলর ব্যক্তিগণের নিকট সাহাত্য ভিক্সা করা ইউডেছে। প্রাহেশিক বহা মাল দিয়া এবং সাধারণ ভাবে ভিন্ন ভিন্ন হার্য প্রত্যান কর্যা স্থেটি বেশ্বর বিশিষ্ট স্থামান্ত মহাত্য ভিন্ন করা ইউডেছে। প্রাহেশিক বহা মাল দিয়া এবং সাধারণ ভাবে ক্রি ভিন্ন হার্য প্রত্যা সান্ধী, ভাব প্রক্রেচন্ত্র, কবিন্তক রবীন্তনাথ, ডক্টর ভামাপ্রসাদ মূণোপাণ্যায় প্রভৃতি বেশ্বরকারী নেতৃকৃত্তর এই প্রতিষ্ঠান পরিহার্শন করিয়া এই প্রতিষ্ঠানটী আমাদের দেশের আ্বলচনের একটা ক্রপন্থ দৃইছে এবং ইহার পরিচালনাকার্যও প্রশংসাবোগ্য বলিয়া মন্ধব্য প্রকাশ করিয়াছেন।

বিনীত প্রার্থনা যথাসাধ্য সাহায্য প্রদানে এই হাসপাতাল আশ্রমটার শ্রীবৃদ্ধি করিয়া বাধিত করুন। প্রভ্যেক দান সাদবে ও ক্তভ্জতার সহিত বসিদ বিনিম্বে সৃহীত হইবে। নিবেদন ইতি—সন ১৩৫৪ সাল ৫ই বৈশাধ, ইংরাজী ১৯৪৭ সাল ২০শে এপ্রিল।

বিনীত—

মেলুর পাঁচালী—এনিশ্বল ভাই। ১৬ এ, ডফ ইাই, কলিকাডা। মূল্য দেড় টাকা।

তো মাদেরই একজন—এখনেজনাধ দিত্র। ইতিহান এসোসিয়েটেড পাবলিশিং কোং লিঃ। ৮ সি সমানাথ বজ্যদার ক্লীট, কলিকাডা। দাব এক টাকা।

ছোট ছোট ছেলেখেয়ের। গল ওমিতে ভালবাসে বলিয়াই ভাহাদের পর শোনানে। ব্যাপারটি ধুব সহজ নর। আর বে সব श्रेष यामिश क्षांकाव यानावधन कवा गर्म-लाबाव स्वर् **मिक्री क्रिया क्रिया** निक्वका नाहे। दनिवाद अक्षि विभिन्ने छन्नीहे (आफू-मन्नादश्यनद শঞ্ভম উপাদান। প্রশ্ন হইতেছে—ছোট ছোট ছেলেমেরের। কি ধরণের পদ ওনিতে ভালবাসে ? রাক্ষ্স দৈত্য ভূত প্রেড হইতে আৰম্ভ কৰিয়া চৰি-ডাকাভি ধুন-কথম এডভেঞাৰ প্ৰভৃতিৰ কাহিনী ভাহাদেৰ অভ্যস্ত প্ৰিৰ। হাসি-কৌভূকেৰ প্ৰেও ভাহাৰা প্ৰাণ ধুলিয়া হাবে। নিভাস্ত ঘৰোয়া কথা---বেওলি প্ৰতিদিন ঘটিতেছে—বাহাতে রঙের উপ্ৰচা নাই—ঘটনার (बाबाक नाइ—कविचात्र) किलात्नद त्नवात वनक व्हेता আহাবনিত্ৰা ভূলিৱা যাওৱাৰ বাাপাৰ নাই—তেমন সালাদিধা घटेनाक्ष्मिक-श्राम्य चाकार्य मिल-चागरव পरिवर्गनियः (हरी দেখা বাইভেছে। ইহা প্রশংসনীয় সন্দেহ নাই। ভবে এইওলি ব্ধাসভব অবিকৃতভাবে প্রিবেশিত হইলে গর এবং সেই সঙ্গে শিক্ষা—ছুইটি উল্লেক্ট সিদ্ধ হয়। এইকল খবোৱা क्षिनिगदक दिशायत चागदि পविदिश्यालय शृद्धि वर्षा मध्ये इस्त्री প্রয়েজন। ছেলে-ঠকানো কভ ছঙলি সন্তা ঘটনাকে হাস্তবস विन्या हालाहेबा फिल्म एक्टमबा इव्ह मामब्रिक छाटा व्यानक পায়-ভাসে, কিন্তু ক্ষৃতি ভাহাদের বিকুত ইইয়া যায়।

আলোচ্য বই ছ্থানি এই ধর্ণের সাদাসিধা ঘ্রোয়া কাহিনী।
মেলুর গাঁচালীর গ্রন্থল বেডারে পরিবেশন-কালে ছেলেম্বরেদের
ভাল লাগিরাছে বলিয়াই পুস্তকাকারে প্রকাশের আরোজন।
প্রস্তুলি হাজা কৌতুকরস মিপ্রিত। বিভ কোন কোন গলে
কৌতুকরসই নাই, অবধা বাপাড়ধর প্রকাশ পাইরাছে। ভা
ছাড়া গলাংশ কম থাকার কাহিনীকে টানিয়া টানিয়া ঘাড়াইবার
চেষ্টার কৌতুকও কেমন কিলা হইয়া পিয়ছে। হাত্ররস পরিবেশনের প্রধান উদ্দেশ্য—কৌতুককর ঘটনার সল্লিবেশ, রঙ চড়া

रक्लच्छी हैन्जिएदाज

**–লিমিটেড**–

৯এ, ক্লাইভ ফ্লীট, কলিকাতা

চেরারন্যান—সি, সি, দক্ত একোরার আই, নি, এন (রিটারার্ড) হইলেও কতি নাই—কিছ কোন আংশে সে কাহিনী বেন আবাজৰ ও বাক্চাডুৱী-জনা না হয়। ছেলেরা কথার মারপ্যাচ ভালবাসে না—ভালবাসে পল। সেই দিকে লক্য বাবিরা— প্রতিদিনকার সাবাবপ ঘটনাঙলিকে একটু সাজাইরা ওছাইরা শিশু-আসবে পরিবেশন করিতে পারিলেই উক্তেক্ত সিছ হইল বলা বার।

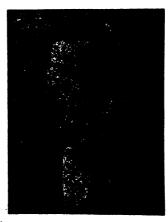
ষিতীয় বইখানি ছেলেদের জন্ত লিখিত একথানি উপভাস।
মান্ত্ৰ হইবার জন্ত এ চটি সহায়-সৰ্লহীন ছেলের জন্য জন্যবদায়
ভাষ বিচিত্র জীবন-প্রবাহের মধ্যে ওকপ্রোভভাবে জড়িত।
সরল জনাভ্যর কাহিনী—ভালমক করেকটি চলিত্রের সংবিধ্রণে
ও ঘটনার সংখাতে বিচিত্র ও মধুর হইরা উঠিবাছে। ছোট ছোট ছেলেমেরেদের জন্ত এই ধরণের স্কন্ত্রও ছাভাবিক কাহিনী শিশুসাহিত্যের সম্পদ বলিরা গণ্য হইবে।

শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

মৃত্যুর পরপারে—এবাজেক্রনাল আচার। ই,ভেইন্ লাইবেরী, ১৯, হারিনন রোড, কলিকাডা। ৫৭৪ পৃঠা, মূল্য পাঁচ টাকা।

প্রেড ছড সংক্ষে একথানি নৃতন ধরণের বই। প্রেডের দেহের ওজন, ভাহার যাথার থুলি ও গাঁত, হুগ ও চা থাওরা, গাঁছের ছালের কাপড় পরা, কাঠের বাড়ীতে বাস, প্রথান্ধরে জ্বন, জওরাহরলালের বড় ভা শোনা ইত্যাদি জনেক রোমাক্ষর বিবর ইহাতে বর্ণিত হইরাছে। বরীপ্রনাথ একটি বাংলো-ধরণের বাড়ীতে আছেন, হিটলার ইংরেজী শিখিরাছেন, ক্ষডেণ্ট রেড্ ক্রসের কাজ করিতেছেন, বিবেকানন্ধ ভলাকীরার ভৈরায় করেন এবং অভেদানন্ধ ছুট প্রেতিনিগকে লাসন করেন,—এ সর কথাও আমাদিগকে জানান হইরাছে। আরও জানান হইরাছে বে, প্রেতলোকে সিনেমা আছে কিছ ইংরেজী ছবি নাই, খেলার মাঠ আছে, দ্রীপৃক্ষের পৃথক বাস হয় এবং নরকে বড় শীত ও জ্কার। এই সর পড়িতে পড়িতে মনে হুটবে ইহা কি প্রেডভ্রনা প্রাত্ত, গলিভাবের ভ্রমণ-বৃদ্ধান্ধ-না জভিনর জারব্য উপলাস ?

विदिकानम गांवाकीयन चर्षक दिशास क्षांत्र कविता अथनक



#### ঠিকানাটা নিখিয়া রাখুন

Mr. P. C. SORCAR Post Box 7878 Calcutta.

ভারতবর্ণের সর্বাঞ্চন বাত্তবর্ণের সর্বাঞ্চন শ্রীবৃক্ত পি. সি. সরকারকে engage করিতে ছইলে এখানেই পত্র দিবেন। ইেডমার্ক 'SORCAR' বানান সিধিতে তুল করিবেন:না।

অন্দ্ৰেলীন হল নাই, ইহা অধৈত সিমান্তের পরিপোবক নহে। আৰু প্ৰেভেৰা এখানকাৰ নামপোত্ৰ ৰক্ষা কৰিলে দেহাভৰ প্ৰাণ্ডি অস্বীকৃত হয়। তাঁথানেয় তই প্রত্যক্ষনর বলিয়াই বোধ হয় প্রেত-ভাভিকেরা তাঁহাদের সিদ্ধান্ত দর্শন-বিজ্ঞানের সিণাভের সঙ্গে विनाहेट एकी करवन क्यांकि । त्यांना वा त्यांकी मण्डा वहेताहे আৰু শ্ৰু বা দুঠ বন্ধ সভ্য হয় না ; এই সোজা কথাটা প্ৰেড-छाष्ट्रिकता प्रव प्रमुख मान बार्चन ना। चप्र मान स्वाहेवा मिर्लिश व्यमुब्दे हत । ब्लिए वियोग ब्लिक माचना ब्लिस निकार . কিছ বৈজ্ঞানিক প্ৰযাণে প্ৰযাণিত সত্য না-ও হইতে পাৰে। আমাদের এই সম্পেংর নির্মন কোন প্রেডডবের পুস্তকেই এখন প্ৰস্তু পাই নাই।

#### औदिरमनहस्य छहे। हार्था

প্রাচীন বাংলার গৌরব—হরপ্রসাদ শান্ত্রী। বিশ-ভাৰতী এছালয়, ২ বহিষ চাটুজো হীট, কলিকাডা।

৩২৷৩৩ বংসর পূর্বে বর্গমানে বন্ধীয় সাহিত্য-সম্মিলনের বে অধিবেশন হয় ভাচার সভাপতি হিসাবে মুর্গত হরপ্রসাদ শাল্লী মুকাশর বে অভিভাবণ পাঠ করেন, ভাহাতে বাংলা ও বাঙালীর बाबा कीर्कि ও গৌরবের বিবরণ পাওয় বাষ । দীর্ঘকাল পরে বিশ্বভারতীয় কর্তৃপক্ষ বিশ্ববিদ্যাদ্যঞ্জ প্রশ্বদালায় এই শভিভারণটি পুনমু ল্রিড কবিয়া অনভিপরিচিত ও অন্তল্ভ একটি মূল্যবান বস্তু পাঠকসমাজকে উপহাৰ দিয়াছেন: শান্ত্ৰী মহাশবেৰ পাতিত্যপূর্ণ, সরল ও অনমুক্রণীয় রচনার সহিত পরিচিত হইয়া আধুনিক পাঠকসমাজ যথেষ্ট ভৃত্তি ও উপকার লাভ করিবেন সংক্র নাই।

#### শ্রীচিন্তাহরণ চক্রবন্তী

অজানা দেহেশর যাত্রী--- এছর্গায়েহন ब्र्सिशीयात्र । चाल्राच गरियती, ६ विषय ठाउँ कि द्वीठे, क्लिकाला। मुना २१०।

वेष्ठेरबारभव (व हुन्साव व्याननिक ७ व्यनिन्सान व्यानिभागा वर्षमान স্ত্রপ্রতের প্রত্যেক গ্রহন্তম ও ছুর্গম প্রদেশ আবিধার করিয়া সম্প্র পুৰিবীর অকুরত ঐবর্ধা ও অববল আয়ত করিবা পুৰিবীর এক এতি হুইতে আর এক প্রান্তে আপনাকে খীর মহিমার ক্রমডিটিড ও করসৌরবে ৰভিত করিয়া বিগলনের বিশারোজেক করিভেছে, ভাহার পুর্বি মহত कांनिए इट्टेन 'बर्टे बर्टेशनि थएडाक ছाट्यत व्यवकार्धाः। व्यक्तिकां, चाड्रेनिया, ठीन, ভाরতবর্ষ, উদ্ভর ও हक्ति बाम्बिका, कानांडा, पूर्व ও পশ্চিম বীপপুঞ্জ, ইহাবের মুর্গম ও গভীরভম এবেশও আরু ইউরোপারগণের অজ্ञানা নহে। মধাৰুগের মার্কো পোলো হইতে আরম্ভ করিয়া ভাকো छ। श्राया, कनवत, बार्रशनन, बांगरवांबा, कार्छन, शिकारबा, बांछ्नन, লা সালে, মলোপার্ক, লিভিটেরান, ক্যাপ্টেন কুকী প্রভৃতি বর্ণীয় ও শুরুণীর বাজিবের আবিধার-কাহিনী পর ও উপস্থাস হইতে রোমাঞ্কর ও চনকপ্রদ। এই লাভীয় পুস্তকের বছল প্রচার বাহনীয়।

শ্ৰীবিজয়েশক্ষ শীল

হিন্দুর বাংলা—ভা: এগভোষকুমার মুৰোপাধ্যার প্রথড এবং ৪৪নং বাছ্ড বাগান খ্লীট, কলিকাভা হইভে প্রকাশিত। बुना ३० चाना ।

বদ্ভদ আব্যোগন ধৰন সবেমাত আৱস্ত হইৱাছে লেখক সেই সময়ে এই পৃত্তিকা প্ৰণয়ন করিয়া বল্ভানের আবশুক্তা চোৰে আজুল দিয়া দেখাইয়া দিয়াছেন। বৰ্জমান বুলিয দীগ মন্ত্রী-সভার কু-শাসন যে সাময়িক ব্যাপার নয়, ইছা বে মুসলমানদের মনোবৃত্তির একট সাভাবিত অভিব্যক্তি শেৰক তাহা এক বকৰ নিঃসন্দেহে প্ৰধান কবিয়া দিয়াছেন। Trilton: The Caliphs and the Non-Muslim Sulvicels পুম্বক হইতে নিম্নলিখিত বৰ্ণনা উদ্বত করিয়াছেন---

"মিশবের ইভিহাসে দেখি--ইসলামের শাসন ছিল ভার ৰক্ষণ। --- বিভীয় ওমরের সময় বিশ্বিদের সান্ধ পোধাকের উপর বাৰানিষেৰ আৱোপিত হইল। সৱকারী চাকরী হইতে ভাষাদের বিভাগন আরম্ভ ষ্টল ; জনভা গির্জা ও মঠ লুঠনের ৰত সৰ্বাদাই উশ্বৰ ছিল। শাসনকণ্ঠান্ত বেয়াল ও মৰ্কি এবং মুস্পমান ক্ষভাৱ উৰ্ভ ব্যবহার সহ ক্রিয়া ভাহাদের দ্বার উপর বিশিদের জীবন যাপন করিতে ছইত। বলিতে

### প্ৰথিতয়শা লেখিকা শাস্তা দেবী প্ৰণীত

- मुना ० ১। অনথ-বোরা ( উপন্তাস ) ২। ছহিতা ( উপক্রাস )
- >10 ৩। সিঁথির সিঁছর ١4.
- । वश्वव्र

#### স্থপ্ৰসিদ্ধ লেখিকা শ্ৰীসীতা দেবী প্ৰণীড

১। ক্পিকের অভিথি ( উপস্থাস ) 110 ২। নিবেট গুৰুৰ কাহিনী (ছোটদের পর)

প্রাপ্তিভান---শ্রশান্তা দেবীর নিকট

পি-২৬, বাজা বসন্ত বায় বোড, কলিকাড়া ও সমন্ত বিখ্যাত পুন্তকালয়ে প্রাপ্তব্য।

পণ্ডিত ৺রমানাথ চক্রবর্তী সন্তলিত এবং ভবিতীর্থ খ্রীউমেন চক্রবর্তী সম্পাদিত ও প্রকামিত

## (সচিত্ৰ ৪ বড়ৰ) প্ৰীক্ৰীচন্ডী ১৫০

वर्गना, कीनक, करा, मूनक्की, श्वकांति अवर ब्रह्मखावाब अवन क्वांस्त्रांत e गांचा, श्रुकाविधि এवः मन्नाप्तकीय निवरक 'क्रका' विवयक वहन আতব্য বিষয়াহিতে ও বর্ণাপ্তজমিক লোকস্চীতে প্রসম্পূর্ণ।

> **6 ⊉61** ··· ەد/ ---

·( ) 中中中 ( ) विज्ञा ।

आखिश्रान---विश्वत गारेरवती <del>अकृष</del>ि गरेरतत लांकान अगः अकानस्कत নিকট—১২০।২ আপার সার্মুলার রোভ, কলিকাতা।

কি, লোকের মনোভাব ছিল এই বে মুসলমানদের অপ্রয়োজনীর উচ্ছিইই বিদ্যিকের পক্ষে যথেই।" কলিকাভা ও নোরাবালীর বটনার সঙ্গে এই বর্ণনার মিল নাই কি ?

আমরা সকল হিন্দুকে এই পুতিকাবামি পাঠ করিয়া দেখিতে অস্থ্যোধ করি।

গ্রীয়ভীক্রমোহন দর

ইহাই সভ্য--- এপ্রনাদ ভটাচার্য। ক্ষলা পাবলিশিং হাউস, কলিকাভা। পুঠা সংখ্যা ২৫১। গুলা ভিন টাকা।

উপভাগ। ইভিপূর্বেও লেখক বহু উপভাগ রচনা ভরিষাছেন কিছ, আলোচ্য উপভাগবানি পড়িরা হুভাল হুইবাছি। কতকওলি অনাবন্ধক বটনা টানিরা আনিরা অধবা প্রের কলেবর হৃতি না করিলেই লেখক ভাল করিভেন। বুপ্লা, বরেন প্রভুতিকে 'টাইপ' চরিত্ররূপে স্ট্রই করিভে বিরা বহুছানে তিনি যে অবাভাবিক ও নগ্ন চিত্র আঁকিরাছেন তাহা টিক স্ফুচির পরিচর দের না। বরুণা এবং লেখা এই হুইট চরিত্র চমংকার কুটরাছে বহিও ভাদের সঙ্গে আমাদের পরিচর অভ্যক্ত অপথারী। প্রসাদবার্র লেখার গতি বেগবান, বলার ভঙ্গীটও ভাল কিছ ভূক্ত কতকওলি ঘটনাকে বাদ দিবার লোভ সম্বরণ করিতে না পারার উপন্যাসের গতি অভ্যক্ত প্রথ হুইয়া পড়িরাছে। ছাপার সামাত দোহক্রট আছে। প্রজ্বদেশট মনোরম।

অক্রের সংবাদ—জীবিভৃতিভূষণ বুবোপাধ্যার। ১৪ নং হারিসন বোড, কলিকাতা হইতে জীখবনী বুবোপাধ্যার কর্তৃক প্রকাশিত। প্রাপ্তিহান—কাত্যারন, বুক্টল, ২০৩, কর্ণগুরালিশ ব্লীট, কলিকাতা। বুল্য ১৮০ খানা।

গছের বই। বিভ বিজীর ইঞ্নি ডিপাট, দক্ষিণাবর্ত্ত শব্দ, গৃহিণীর নিঠা, ছিট বছর, প্রুষ্ম ভাগাং, হাজিবের ইয়াণা, পুশাঞ্চলি, বিমান আক্রমণ বিভীমিকা এই আটট গল্প আছে। গলগুলিতে অনাভ্যর কাহিনীর মধ্য দিয়া নানাপ্রকার চরিত্র সূচীইরা ভূলিবার প্রয়াস আছে। প্রথম, ভূতীর, বঠ ও সর্বম এই চারিট গল্প ভাল লাগিগ। কিছু অবশিষ্ট গলগুলির মধ্যে দামা বাঁবিলা উটিবার ব্যেষ্ট অবকাশ রহিলেও কার্যাভঃ ভাহা হয় নাই বলিয়া ব্যে কোন ছারী রেবাণাত করে না। লেবক

TWO IMPORTANT BOOKS OF Prof. Dr. KALIDAS NAG, M.A. (Cal.), D.Litt. (Paris) Hony. Sooy., Royal Asiatic Society of Bengal

(1) Art and Archaeology Abroad
(with 30 rare illustrations)
Price: Rs. 5/- only.

(2) India and The Pacific World
The only up-to-date survey of the History
and Culture of Pacific Nations.

Price: Island Rs. 12 Foreign £ 1 or 5 Bell

Price: Inland Rs. 12, Foreign £1 or 5 Dollars.
The Book Company Ltd., College Square, Calcutta
THE MODERN REVIEW OFFICE,
120-9, Upper Circular Road, Calcutta.

সাহিত্যের আসরে নবাগত হইলেও তার তাবা এবং বলার তলী সহক ও সাবলীল। বিষয় নির্মাচন প্রশংসনীয়।

🛢 বিভূতিভূষণ গুৱ

সাতিনরী—সম্পাদক শ্রীরাধাক্তিকর রায়চৌধুরী। প্রাপ্তিহান: বরেন্দ্র কাইরেরী। ২০৪ কর্ণগুরালিন ব্রীট, কলিকাতা, মূল্য ১৪০ টাকা।

শাবংচন্দ্র, উপোন্ধনাথ গলোপাথার, প্রবোধকুরার সাঞ্চাল, অরথাশকর রার, বৃদ্ধনের বহু, রমেল সেন এবং সম্পাধক বার: — এই সাজ্যন লেগকের সাভটি গল্পারা এই সপ্তানরী থার প্রবিত হইরাছে। অরথ শক্ষরের ১৭১ ছেনরিরেটা রোভ এই গলসংগ্রহের প্রেট পাল। বে সংব্য এবং সাঝাবোথ ছোট গলকে প্রেট রস্পার্টির পর্যারে উরীত করে এই বিভবাক গলটিতে তাহার সার্থক পরিচর রহিরাছে। প্রবোধকুরারের দেবভার প্রান গলটিও ভাবার নাধুবাে এবং বর্ণনা-চাতুর্বো পার্ম উপভোগা। কিন্তু লেগক শরহতক্রের প্রতি ক্রিটার করেন নাই। তাহার বে গলটি এই প্রকে ছান পাইরাছে, সেটি তাহার প্রেট গলসমূহের পর্যারক্ত করে। নিজের গলটি বাদ বিবার প্রলোভন লেগক সম্বরণ করিতে পারিলে ভাল করিতেন, কেননা গলটিতে রস দানা বাধিতে পারে নাই। বাই হোক, লেগক নানা আরগা৷ হইতে পুশা চরন করিয়া বাংলা-সাহিত্যের একট সাজি পূর্ণ করিয়া গলাবােণী পাঠকপাটিকাদের কৃতক্রতাভালন হইরাছেন।

রক্তের লেখা---গ্রাবিনাদ্বিহারী চক্রবর্তা। মডার্প বুদ্ ডিপো, জীহট। মূল্য জাট স্থানা।

ইহা একথানি একাক নাটকা। এয়ারতে 'নিজের কথা'র লেখক জানাইরাছেন, "১৯৪৬ ইংরেজীর ১১ই থেকে ১০ই ফেব্রেরারীর কলকাতাকে চোথ দিরে অনুভূতি দিরে আমি প্রত্যক্ষ করেঁছিলাম।

ভারতের মৃক্তি-সংগ্রামের গৌরবমম ইতিহাস!
বণক্ষেরে নেভাফী স্থভাষচক্রের সহচর, ভারতের
স্বাধীনতা-যুদ্ধের অক্তমে কর্ণধার

নেজর জেনারেল শাহনওয়াক খান রচিড

# আজাদহিন্দ ফৌজ ও নেতাজী

সমগ্র অভিযানের পুন্ধাসূপুন্ধ বিবরণসত সরল বাংলার লিখিত একমাত প্রামাণ্য গ্রন্থ

উৎকৃষ্ট সাদা এ্যান্টিক কাগজে ছাপা ও উৎকৃষ্ট কাপড়ে স্থাক্ষিরে বাঁধাই। ৪১খানি এ পর্যান্ত স্পপ্রকাশিত ফটো এবং ৪গানি মানচিত্র সংগিত। ৫৪৪ পূর্গার সম্পূর্ণ স্থকল্লিত কুলর প্রাক্ষণণটে স্থাবৃত।

মুল্য ৭, টাকা, ডাকব্যন্ন খডল্ল।

ी, ठाठीर्कि अध कार लिभिक्टेंड

পুভকবিক্রেতা ও প্রকাশক ১৫নং কলের ছোৱার, বলিকাডা ৷

210

210

যাকুবের প্রতি বে ধরণ

ভারই হবি এই সভের লেখা।" "অসুকৃতি দিরে প্রভাক করা" কি বছ ভাষা বুকিতে পারিলার না। বে বিষয়বন্ধ লইয়া ক্ষমর একটি ছোট গল রচিত হইতে পারিত ভাষাকে নাটারূপ দিতে দিরা লেখক যুলেই ভূল করিয়াহেন, তর্নপরি আড়েই সলোপ নাটকের গতিকে পানে পানে বাছত করিয়াহে। যাত্র ৩০ পৃষ্ঠার পৃতকে হাপার ভূল, বানান এবং ইভিরনের ভূল ৩০টিরও অবিক। তর্মবো করেনটি বর্ণাগুডিয়াত্র নির্দেশ উক্ত করিতেছি:—অসুভৃতি, তরুল, নির্বাভীত, অভ্ত, পৃঞ্জিত্ত —ইভ্যাদি। বালোর প্রভাত প্রকেশে বাকিরাও বে লেখক বাংলা-সাহিত্যের চর্চা করিতেছেন সেকল তিনি বল্পবাদের পাত্র, কিন্তু নাটক-রচনায় ভার আরও একটু সাবধানী ইওয়া উচিত ছিল।

বাঁথ ভেডে দাঁও—জীমন্ত্ৰণর চৌধুনী। প্রাণ্ডিছান—ডি, এম লাইরেরি। ১২ কর্ণভালিস ট্টট, কলিকাতা। মূল্য এক টাকা। ইডিপুর্ব্বে 'হে বীর পূর্ব করো' এবং 'লব ও বর' নামক মুইথানি পুক্ত লিখিরা শীল্মধকুমার চৌধুনী নাট্যকাররূপে বাংলা সাহিত্যে পরি-চিতি লাভ করিরাকেন। 'বাধ ভেডে লাও' বাত্র ভিনটি লুভে সমাও একটি একাক নাটকা। মন্ত্রক্ষার সমাজ-সচেতন লেখক। বুজোভর বাংলার গৈপাঁত সমাজ-জীবন হইতেই তিনি বর্ত্তবান নাটকের উপকরণ আহরণ করিরাকেন। ইহার পাত্রপাত্রীকের প্রান্ত সকলেই বাক্সর্ব্বর্থ। ইহাদের বুজোভর পৃথিবীর প্নর্গঠনের লখা-চঙ্চা বুলি, কিছ আসলে ব্যক্তিগত থার্থের নিকট দেশের ও দলের বার্থকে বলিতে ইহারা বিন্দুর্ব্বেও কুটিত নহে। নাট্যকার ইহাদের মুখোস খুলিরা পিরাকেন এবং ইহাদের ভঙানিকে ভীরভাবে কশাখাত করিরাকেন। অতুলানক, চিভব্রির, ভবোনাণ প্রভৃতি এই নাটকার

শ্রিক্তবাল সেনের বানটিও বিশেষ উপভোগা হইবাছে।

শ্রিক প্রিক্ষর মেয়ে — শ্রীননান্ধ বসু। বেলল পাবলিবি—ডি,
লার্ল, ১৪ বছিন চাটুজে ইটি। কলিকাতা। বৃল্য তিন টাকা
ইথানি
ভাগীন লাই জানা।
ভাগীন লেখকের পরিক্ষিত বুগারর পর্যায়ের প্রথম
বিকটি উপভাগ। এই উপভাগে তিনি উনবিংশ শতাখীর বাংলার
বাংলার ভ্রিলারখাসিত প্রভার প্রদেশের একট নিপুন আলেখ্য
পাঠকের চোখের সামনে ভূলিরা বরিবাছেম। সে বুগের
সর্ম্বন। বাঞালীর সভ্যে এ ব্যারে বাঙালীর আভাশপাতাল পার্থকা

ক্ষিদারশাসিত প্রতাত প্রদেশের একট নিপুৰ আলেব্য পাঠকের চোবের সামনে ভূলিরা বরিষাছেন। সে রুপের বাঙালীর সঙ্গে এ রুপের বাঙালীর আকাশশাতাল পার্বক্য ইাড়াইরা সিরাছে। উম্বিংশ শতাকীর বাঙালীর বাহতে শক্তি ছিল, সেকালের নীতি ছিল 'বার লাঠি তার মাট।' সে রুপের আক অবস্থন ক্ইরাছে, সেকালের যাত্যগুলি আর মাই, ভগু

ভাহাদের কীর্ত্তি-কাহিনী লোকণাণার আর অনাবিষ্ণুত ইভি-

অধিকাংশ পাত্ৰই টাইগ চরিত্র, কিন্তু নাট্যকারের চরিত্রচিত্রণ-

বৈপুণ্যে এবং বিশেষভাবে সংলাপ-রচনার কৌশলে, সেগুলি বেন

রক্তবাংসের জীবে পরিণত হইরাছে। ইহা ক্তরতার পরিচারক।

'অনত' এই বিব্যাচারী বার্বপর পাত্রপাত্রীবের ব্যতিক্রব। ইহাবের

ভঞাষির প্রতি ভারার তীর বাজোভি বেন ছানে ছানে শাণিত

সকল রচনাকে সাহিত্য-শৃষ্টি হিসাবে সার্থক করিয়া ভোলে নাটকার

উপসংহারে অনভের জবানীতে ভাহার আবেগনর অবচ সংবত

প্রকাশ পাঠকের মনকে গঙীর ভাবে নাড়া দের। প্রছে সংযোজিত

ভাৰাত্তি মত বৰ্ষক করিতেছে।

কয়িকে বত্ৰের এটা, আঞাৰ হিন্দ গতনিকটের সর্বাধিনারক, ভারতের বাধীনতার অঞ্চুত নেতালীকে বানিতে হইলে শ্রীবৃক্ত দীনেশচক্র মুখোগাখ্যারের বহু তথাপুর্ণ পুত্তক

নেভালী স্বভাৰচক্ৰ ৪১

অবৃত্ত পৰিত্ৰকুষাৰ চক্ৰবড়ীৰ-ব্ৰালিয়াত্ৰ ক্ৰপ 210 বীৰুকা শাখা দেবীয়—পতিথার দেখা >10 অধাপক মৰীক্ৰমোহন বহু বাংলা সাহিত্য (১ম) ৪্ বাংলা সাহিত্য (২ম) ব্রুম্ব **बिक्रक कीर्स**म >10 চৰ্ষ্যাপত (বৌৰ গাৰ ও দোহা ) বাংলা ভাষার প্রাচীনতর প্রস্থ 🐛 क्वि काष्ट्रिक्ट र्वाद्व ওমর খৈরাম ১া-রোবাইয়াৎ-ই-হাফিজ > বুমকৈডু (বহ প্রশংসিত গল্প-সমষ্টি ) शं• **এ**ণ্ড বিৰয় ব্যানাৰীয়—**লুডন পৰে বিজ্ঞান** 210

সংগ্ৰাৰ ও সংৰ্মায়ক

ভারতের পারবভাত্তিক ক্রমবিকাশের ধারাবাহিক ইতিহাস সক্ষে স্থ-প্রকাশিত অধ্যাপক শ্রীবৃদ্ধ স্বত্রার মুখোপাধ্যার প্রীত

গণপারিষদ ও কংতগ্রস ৩ বাংলা শাসন পরি-বনের কংগ্রেসী দলের নেভা জ্রিবুজ কিরণশব্দর রার ভূমিকা নিধিরাছেন।

विवृङ विविद्यनाथ यत्काशियांत्रव

त्र• ७ त्राष्ट्रे (२३ गः) ६ महायूद्ध जाणिदा हे २॥• — कालदार स्टब्स्ट स्टब्स्

নিশীপ রাভের ভীরন্দাত

মারণ ভোমরা ১া॰ মৃত্যুদ্ভ ১া॰ স্বাণ্ড স্বত

ঘর ছাড়া দিক ছারা ১। দর্পন শা'র বাড়ী ।• বিরুল প্রভাবতী দেবী সর্বতীয়—স্ক্র্যাইলান্টিকের তীরে ১১

बर्ग बनाय पराय नाम्य ग्रेस

क्षेत्र द्रावसम्बात बाद्यव

ভারভের বিভীয় প্রভাতে

THE ART OF HINDU DANCE—by Manjulika Bhadury and Santosh Kumar Chatterjee M.A.
(with copious illustrations)
Rs. 6.

۴,

8

এই বুৰের শ্রেটন্তন সারক—সরিস হিবভাস রচিত তে আ সো ক্রা ক্রা স্পি ক্রা ?? অসুবাহক—শ্রীভবানী মুখোগায়ার ( ব্যাহ )

রার বীবলেক্রনাথ নিত্র বাহাছরের—ট্রেম্বর ব্লস-সাহিত্য

সহামানৰ নেতালী হভাৰচজ্ৰের আলাহ হিন্দ সংগঠনে অপূর্ব চিত্র শ্বিক বিজ্ঞানত মনুনহারের আক্রোকে ক্রিন্দ সাক্রকান্ত্র ( ফ্রন্থ )

বাবসা-বাণিজ্যের এই অভাবনীর সমটে ক্ষত্মজ্যা কুক্ত ভিত্রপা আগনার সহাত্ত্তি প্রার্থনা করে।
১০নং বছিন চাটার্কিট্রিট, কলিকাভা

হালের পাভার আত্তোপন করিরা আছে। মলোকবাবু পুশরবদের প্রভাভ অঞ্লের বালক নদীকে আর ভার ভট-ভূষিকে পটভূষিকা কৰিবা বে বোষাটিক কাহিনীট বচনা করিরাহেন ভাষা এভই সভ্য ও জীবত হইরাহে বে, মনে হয় বেন বাংলার সেই সকল বীর সভানরা আবার প্রাণ পাইয়া বাঁচিয়া উঠিয়াহে—সেই বিশ্বত বিগত বুগ বেন ভার সকল সৌশ্ব্য মাৰ্ব্য নিষ্কুৰতা বীতংগতা স্নেত্ প্ৰেৰ আনন্দ বেচনা विश्ना द्व नव किह नहेवा चावायव हमक नानाहेवा विद्वाद । (नकारमद भिरमादावन, मदस्वि, कीविमादावन, त्रोशामिमी, তুৰ্ণলভার সঙ্গে বর্ডমানের বাঙালী মীপুরুষের যেন মিল मारे, ब्रांखरव कीवननवरक मृष्टिकीरे कामारवर वननारेवा দিলাছে। মালুবের প্রকৃতি এ বুগে বদলাইরাছে পত্য কিছ বাংলার প্রাকৃতিক সৌশর্ব্যের তো পরিবর্ত্তন হয় নাই, হুগে হুগে এক এক দল মাতুষ সেই প্রকৃতির প্রভূষিকার এক এক বরপের জীবনলীগার অভিনয় করিয়া বাইভেছে माळ । वारलाव मार्ठ वम मधी देखाधित वर्गनात मरमाच वावून इंक्टि दक्ष मिथून। दर्शमाम शृक्षरकत मानक मधी, किल्लमानि ও নাক্কাটর বাল, বউভাগির চক, ভাকাতের বিল

ইভ্যাদির বর্ণনা পঞ্চিরা বহু কাল পরে আবার নিসর্গ-চিত্রণে নিপুণ বনোক বস্থুর নিঠা হাতের পরিচয় পাইলার।

জীনলিনীকুমার ভত্ত

বৃদ্ধলীলামৃত (প্রথম ও দিতীয় খণ্ড)— ইবোগানন বন্ধনায়। বহরনপুর হইতে ইক্তিক্তেনাথ বা কর্তৃক প্রকাশিত। ১ম থা (১৮০ + ২০২) পৃঃ এবং ২য় থা (১৮৮ ৬০৩ + ০৪) পৃঃ—স্লা উল্লেখ নাই।

এছের প্রথমখনে বৃদ্ধান্ত হইতে তংপুত্র রাহ্যলের সন্ন্যাস প্রকৃষ্
এবং বিতীয়বাতে পিতৃষ্টমন্ত আনন্দের বৈরাস্য হইতে তাজিমতী
ক্ষাতার প্রতি উপাদেশ পর্যন্ত তথাগতের পুণালীখনকথা এবং তংগ্রহতিত
ধর্ম প্রচারের বিবরণ সন্ধিবেশিত ইইরাছে। উত্যুখনের মুখপত্রে এবং
বিতীয় বাতের পরিশিষ্টে নবম অবতার প্রশ্নীক্ষাবান মুক্ষেদের ও তথীর
বৌত ধর্ম তব্দ সবাকে আনেক জাতব্য বিবরের আলোচনা করা হইরাছে।
ছন্দের লোবক্রাটি ছানে ছানে থাকিলেও ভাবা বেশ সহল এবং ধর্ম পিপাক্ষরের আলে আনন্দ পরিবেশনের উপবোগ্যা বহুল তথ্যে প্রস্থানি
পরিপূর্ব।

শ্রীউমেশচন্দ্র চক্রবর্ত্তী

প্ৰতি সংখ্যা—॥• ৰাগাসিক—৩॥• বাৰ্ষিক—৬১



মাসিক প**ত্রিকা** অফিস—তএ, ডাফ লেন, কলিকাডা—৬ কোন—বি. বি. ৬৮১৪ প্রাপ্তিস্থান :
বুক **এমপোরিজ্ঞম**লিমিটেড

২২০০, কর্মপ্রজিলেন ট্রাট,
ক্লিকাতা

————-অভিকাড মাসিক-পত্তিকা চলস্থিকার প্রথম সংখ্যা আগামী রথবাত্রায় প্রকাশিত হবে।

প্রথম সংখ্যায় লিখছেন :

মাজলিক--ভারাশ্বর বন্দোপাধ্যায়

গল্প :--মাণিক বন্দ্যোপাধ্যায়, প্ৰমণ বিশী, নবেন্দু ঘোষ, ঋষি দাস, আচন্দ্ৰ সেনভথ

উপকাস:—ভবানী ম্ৰোপাধ্যাহ—অন্ধি-রবের সার্থী

অভ্যাদ উপস্থাস :—হাইনবিধমান রচিত রু-এঞেদ অভ্যাদক—শৈলবিহারী ঘোষ

नांदिका:--विशिक्षत्व वस्मानाधाव

প্ৰবন্ধ:--ভা: কালিদাস নাগ, গিয়ান চক্ৰবৰ্তী, অধ্যাপক সংবাদ ভঞ্চ, মূল্কবাদ আনন্দ

লেবক-পরিচিতি: -- সমারসেট মম-- মধ্যাপক সৌরেজ্ঞলাল মিজ

কবিতা: -- সঞ্চনীকান্ত দাস, শিবগাম চক্রবর্তী।

সম্পাদনা করছেন প্রাসাদ সিংহ এবং শক্তি দত্ত

প্রবাসীর পুত্তকাবলী	
মহাভারত ( সচিত্র ) ৺রামীনন্দ চট্টোপাধ্যায়	
শচিত্র বর্ণপরিচয় ১ম ভাগ—	,
বামানৰ চট্টোপাধ্যায়	⊌•
সচিত্ৰ বৰ্ণপথিচয় ২য় ভাগ—এ	J•
চাটার্জিব পিক্চার এল্বাম	
( ১, ৪, ৫, ৮ ও ফ বালে )	প্ৰত্যেক ৪১
<b>७</b> वनो ( मत्नाक शहनभष्टि ) व	٤,
সোনার গাঁচা— শ্রীনীভা দেবী	<b>*!</b> •
चांकर तम् (रुर्गरभरयरमय महित्र) औ	<b>ک</b> ر
বছমণি (শ্ৰেষ্ঠ গল্পসমৃষ্টি )	٤,
উন্থানৰতা ( উপন্তাস )—ইশান্তা ও দীড়া ৰেবী	स•
কালিদাসের গল ( সচিত্র )—ইরঘুনাথ মলিক	8~
দীত উপক্রমণিকা—(১ম ও ২য় ভাগ) প্রত্যেক	>10
বাভিগঠনে ববীক্রনা <del>থ—</del> ভারতচক্র মকুমদার	21•
क्लाद्रकत मन-शिक्षिणात्रधन मिख मसूमनात	1•
চণ্ডীদান চবিক্ত—( ৺ঞ্কপ্রশাদ সেন )	
শ্রীবোপেশচন্দ্র রায় বিদ্যানিধি সংস্কৃত	<b>\$1</b> •
মেঘণ্ড ( সচিত্ৰ )—শ্ৰীবামিনীভূবণ সাহিত্যাচাধ্য	31•
হিমালয় পাবে কৈলাস ও মানস স্বোব্য (সচিত্র	)
শ্রীপ্রযোদকুমার চট্টোপাধ্যার	8,
পাৰ্বে বাদর বামলাস ( সচিত্র )—	
<b>ঐঅ</b> সিভকুমার হালদার	<b>&gt;L•</b>
দ্বরনা—এহেমদতা দেবী	21•
খেলাধূলা ( সচিত্র )—জীবিজয়চক্র মন্ত্রদার	>1•
বিলাপিকা—এবামিনীভূষণ দাহিত্যাচাৰ্য্য	٠/ود
ন্যাপল্যাণ্ড ( সচিত্র )—শ্রীলন্ধীশ্বর সিংহ	21-
ভাক্ষান্তৰ খতঃ ৷	
अवाजी काजासस	

১২-।২, আপার সাতু লাব বোড, কলিকাতা।

#### BOOKS AVAILABLE Chatteriee's Picture Albums—Nos. 1 to 17 (No. 1, 4, 5, 8 dt 9 out of Stock) each No. at 0 History of Orissa Vols. I & II -R. D. Banerji each Vol. 25 Canons of Orissan Architecture—N. K. Basu 12 Dynasties of Mediæval Orissa-Pt. Binayak Misra 0 **Eminent Americans: Whom Indians Should** Rev. Dr. J. T. Sunderland Know--Emerson & His Friendsditto 3 0 ditto Evolution & Religion— Origin and Character of the Bible ditto 0 0 Rajmohan's Wife—Bankim Ch. Chatterjee O Prayag or Allahabad--(Illustrated) The Knight Errant (Novel)—Sita Devi 8 The Garden Creener (Rlust. Novel)-Santa Devi & Sita Devi 8 Tales of Bengal—Santa Devi & Sita Devi 0 Plantation Labour in India-Dr. R. K. Das 8 India And A New Civilization-0 Mussolini and the Cult of Italian Youth 8 (Illust.)—P. N. Roy Story of Satara (Illust. Ilistory) -Major B. D. Basu ditto 2 0 My Sojourn in England-History of the British Occupation in India - An epitome of Major Basu's first 3 0 book in the list. |-N. Kasturi History of the Reign of Shah Alum-W. Franklin 8 0 The History of Medieval Vaishnavism in Orissa-With introduction by Sir Jadunath Sarkar.—Prabhat Mukherjee 0 The First Point of Aswini-Jogesh Ch. Roy Protection of Minorities-Radha Kumud Mukherji Postage Extra. The Modern Review Office 120-2. Upper Circular Road. CALCUTTA

# ल्य-शिल्लास सथा

#### ভারত সেবাশ্রম সজাঃ বাঁকুড়ায় হিন্দু-সন্মেলন

গত অক্ষ তৃতীয়া উপলক্ষে ভারত সেবাশ্রম সজের উভোগে বাঁকুলা সহরে ৭, ৮ ও ১ই বৈশার ভাভার শ্রীশ্রীশ্রমার বন্যোপার্যায়ের সভাপতিত্বে একট বিরাট হিন্দু-সন্মেলন হইরা সিরাছে। ভটার রাবাকুর্ফ মুবোপার্যার মহাশার সন্মেলনের উবোরন করেন। উৎসবের প্রথম দিবস ক্ষাবেদিরা, ভিলা- বেদিয়া, সোমার্থী, কেন্দুরাদিহি, বাঁকুড়া প্রভৃতি ছানের মিলন-মন্দিরের সমবেত রক্ষীদলের এক সংখেপনে ডাঃ শ্যামা-প্রসাদ রুবোপাধ্যার মহাশর বক্তৃতা প্রধান করেন। তিনি সমবেত ক্ষমগুলীকে হিন্দুর আশ্বরক্ষার উপায়বরূপ বহু-বিভাগ আন্দোলন চালাইরা বাইতে আব্দেদন ক্রেন। ভারত সেবাপ্রম সংক্ষের হানী অবৈতানক্ষীও সভার বক্তৃতা করেন। সজ্বের সহু সম্পাদক প্রমং হানী বিক্যানান্দ্রশী সংশোদন



ভারত সেবাশ্রম সঞ্চ পরিচাসিত বাঁকুড়া মিলন-মন্দিরে রক্ষীদল পরিহত ডাঃ ভামাপ্রসাদ মুখোপাব্যায়, তাঁখার বাবে মিলন-মন্দিরের সভাপতি ঐসত্যকিঙ্কর সাধানা, বিভাবিনোদ মহাশয়কে দেখা ঘাইতেছে।

কটো--- পি, দালাগ

শীৰই প্ৰকাশিত হইতেছে

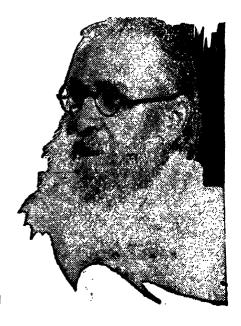
প্ৰথিত্বদা লেখিকা শ্ৰীশান্তা দেবীর

# রামানন্দ ও অর্দ্ধ-

বাংলার সাংস্কৃতিক আন্দোলনের পটভূমিকার বর্তমান যুগের অক্সতম শ্রেষ্ঠ মনীবার জীবনায়র্শের স্থানিপুল কবি ও বিজেবণ।

প্রবাসীর আকারে বহু পৃঠার সম্পূর্ণ, বহু চিত্রশোভিত, বাংলা-সাহিত্যে অভিনৰ জীবনচরিত। ইহা একাধারে মনীবী রামানক চটোপাধারের জীবনী এবং সমসাময়িক বাংলার সাংস্কৃতিক প্রগতির ইতিহাস। বিগত পঞ্চাশ বংসরের বাংলার সাহিত্যিক, রাজবৈতিক ও সামানিক ইত্যাদি বাবতীর আকোলনের প্রকৃত শরুপ উপলব্ধি করিতে হইলে এই পুত্তকথানি অপরিহার্য।

**প্রবাসী কার্য্যালয়,** ১২০।২, **খাণার দার্গার রোভ,** কলিকাতা।



উপছিত হিলেন। এখচারী যাক্ত্য স্বাস্ত বিভিন্ন ইঞ্চীবন্দের লাষ্ট্র তারাবেলা প্রভূতি আছরকাব্দক জীলারি পরিচালনা করেন। সম্বেদনে প্রায় দশ হাজার নরনারী উপছিত ক্ইরা-হিল। সম্বেদ্ধিকাবে সভার বদ বিভাগের প্রভাব পুরীত কর

#### মিঃ আর. জি. মুথার্ভিজ

বিঃ আর. জি. র্বার্জি এব-এলসি; এ, এম, আই, ই, ই, (সঙল) সহা আবেরিকান ইন্টিটিট অব ইলেকটু ভাল এক্টানিরার্ল নামক বিব্যাত প্রতিষ্ঠানের সভ্য নির্বাচিত হইরাহেন। সভাতি তিনি বাংলা সরকারের অবীনে 'ওরার্কন এক বিজিং তিপার্টমেন্টে' ইলেকটু ক্যাল এজিকিটিড এক্টানিরারের পদে নির্ভু আহেন। বিঃ র্বার্জি লওমে বিব্যাত অব্যাপক সিলিল এল. করটেনকুর নিকট ইলেকটু ক্যাল এক্টানিরারিং বিহ্যা শিকা করেন। অভঃপর তিনি বার্লিনে এবং হ্রেমবার্লে পোই প্রাক্রেট শিকালাত করেন। 'বেনার্ল ব্যাব্কক এও ইইলক্স নির্বিট কোলানি'র টেন্টিং তিপার্টমেন্টেও তিনি শিকাপ্রাপ্ত হন। দেশে কিরিয়া কিছুকাল তিনি কলিকাতা হাইকোর্টের ত্যালুরারের কাক করিয়াহিলেন।

মিঃ মুবার্জি ১৯৩৫ ইটাকে ওয়ার্কস এও বিভিংস ভিপার্টবেক্টে বোগদান করেন। অবিকত্তর প্রত্যক্ত অভিজ্ঞতা অর্জনানলে ভিত্নকাল পরে তিনি প্রবায় রুরোপে গমন করেন এবং 'গাউব-ইট ইংলও ভিত্নীক্ত অব বি নেন্ট্রাল ইলেকট্র ক-সিট বোর্ডে'র সহিত সংগ্লিট হল। 'বিবসভাউন পাওয়ার টেশনে' তিনি আব্নিক্তর প্লাক্তন্ত্ব পরিচালনা সবছে হাতে-কলমে বিক্ষালাভ করেন। বহু বৈছেশিক প্রতিঠানের সহিত লংগ্লিট বাক্তিরা বিঃ মুবার্জি ইলেকট্রক্যাল এক্ট্রীনিয়ারিং সহছে বিভ্তুত অভিজ্ঞতা অর্জন করিয়াহেন।

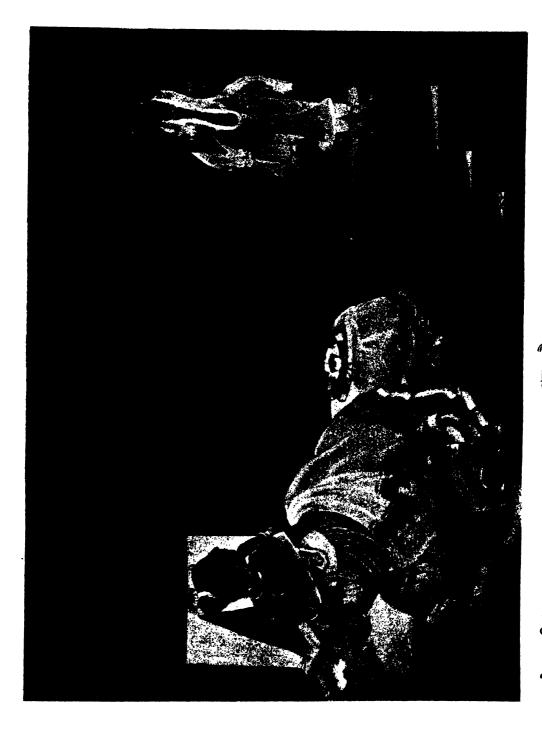
#### এটৰ চরকা

বিগত কান্তৰ বাসের প্রবাসীতে এটন চরকা সহতে নত্ত্য প্রকাশিত হইরাহিল। এই চরকা ইভিনংগ্যই বিশেষ ক্ষাপ্রির হইরা উটিরাছে। এটন চরকার আবিকারক, নেম্বিশীপুরের হশপান উচ্চ ইংরেজী বিভালরের প্রভিঠাতা. ও প্রবাদ শিক্ষক জীবুক্ত ক্ষরচন্দ্র প্রাথমিক গাড়ীতবনের (ক্ষমনর, হৈত্যা, বেলিমীপুর) রচনাত্মক কার্ব্যের লক্ষে এই চরকার সমুখ্যর বন্ধ ত্যাগ করিবাছেন। ইহাতে গাঙ্গীতবনের কার্ব্য স্কুতাবে পরিচালিত হওরার পক্ষে ববেই সাহায্য হববে বলিরা আশা করা যার। ক্ষেনাসী এই চরকা ব্যবহার করিলে নিজেরা উপত্বত হইবেন এবং গাঙ্গীতবনেরও সক্ষ্মলতা রভি পাইবে। বুনিরাদি শিক্ষার অভত্য অন্ধ হিসাবে চরকা ব্যবহাত হবলে এটন চরকা বে বিশেষ উপবােগী হইবে তাহাতে কোন সন্দেহ নাই।

#### প্যারীমোহন সেনগুপ্ত

কলিকাতা বদবাসী কলেকের অধ্যাপক, বিশিষ্ট কবি ও সাহিত্যিক প্যারীয়োহন লেনওও সম্প্রতি একট ট্রার মুর্বটনার নিহত হইরাহেন। প্যারীয়োহন হললী বিলার অন্তর্গত নোপীনাবপুরে অব্যহন করেন। তিনি করেক বংলর প্রবালী ও বভার্গ রিভিত্তর সহকারী সন্পাদকের কাক করিবালিলেন। প্রবালীতে ভাষার বহু কবিতা এবং অভাত রচনা প্রকাশিত হইরাহিল। 'কাফ্রিদের দেশ আফ্রিকার' নামক ভাষার মনোরম শিভগাঠ্য পুত্তকবানিও বারাবাহিক ভাষে প্রবালীর 'হেলেদের পাততাভি' বিভাগে প্রকাশিত হয়। ১৯২৮ লাল হইতে প্রবালীর কাক হাভিত্রা প্যারীয়োহন বলবাসী কলেকে বাংলা লাহিত্যের অব্যাপকের কাক প্রহণ করেন। ভিনি আয়ুছ্যু এ পদে নিযুক্ত হিলেন।

অব্যাপক সেমগুর্থ বছ এছ রচনা করিরা গিরাছেন।
তাঁহার মৌলিক কাব্যএছ 'অপ্লেশিন' এবং মেঘট্ডের অন্থ্যাদ
এক সময় বাংলা লাহিড্যে বিশেষ ক্রমাম অর্জন করিরাছিল।
তিনি কিছুকাল উদয়ন নামক বাসিক পঞ্জিকা সম্পাদমগু
করিবাছিলেন। তিনি অবিপ্রাক্তাবে লেখনী পরিচালনা
করিজেন। বাসিক পঞ্জিকার নিয়মিত্তাবে তাঁহার কবিতা
প্রকাশিত হইত। সম্প্রতি তিনি শিশুদের পাঠ্যপুতক রচনার
বিশেষতাবে মনোবোগী হইরাছিলেন। বাল কুড়ি দিন পূর্ব্বে
তাঁহার শ্রীবিরোগ হয়।



श्रवात्री त्थत्र, क्लिक्स



**উ**পে<del>ছি</del> চা



ৰছের যাত্রী



"সভাষ্ শিৰষ্ সুন্ধরষ্
নারষাত্মা বলছীদেন লভাঃ"

৪৭শ ভাগ ১ম খণ্ড

## আষাতৃ, ১৩৫৪

**্ব** সংখ্যা

#### বিবিধ প্রসঙ্গ

বাংলার অবস্থা ও ব্যবস্থা

বাঙালার ভাগ্যপরীকার এক অব্যার শেষ হইরাছে।

অনেকের মনে এই বারণা যে, এই অব্যারের সঙ্গে বাংলার ও
বাঙালীর সকল "কাঁড়া" কাটিরা নিয়াঙে, আমাদের ভবিস্তং
এবন এনমেই উন্থল হইতে উচ্ছলতর হইবে, প্রতরাং অভ সকল

চিষা বাছিরা প্রত্যেকের নিক্রের প্রাণা অব্যা অপ্রাণ্য পরা
অ'ধারের চেষ্টা করিই ধ্বাষণ কাজ। বলা বাছলা, এরুপ
বারণার অভি মারাত্মক কল কলিতে পারে। আমাদের
নিকট ভবিষাং বাের অভকার, এতদিনে পথ প্রদর্শনের
ক্রা একটি কীণ আলোকরেবা মাত্র পেবা দিয়াছে।
আমাদের চতুর্দিকে বিপদ, সন্মুখে অভি কঠোর ও ছরছ পথ,
সহায়ভা বা সাহায্যের আলা নাই বলিলেও চলে। উপরভ্
আমাদের ভাইবােন, আজীরধকন বাহারা বিষয় বিপদের মধ্যে
পূর্বে পাকিস্থানে গছিরা যাইবেন তাঁছাদের সাহায় করার বিষর,
তাঁহাদের উভারের পথ আবিদার করার বিষয় আমাদের
ভাবিতেই হইবে, কেননা তুইটিই আয়াদের অব্রু কভবা।।

এইরপ সন্ধিকণে উচিত বিল যে দলালনির কথা ভূলিরা দেশের বোগ্যতম ব্যক্তিদের হাতে পথপ্রদর্শকের ও কার্ব্যোদারের ভার দেওয়া। বাংলার কংপ্রেদ তাহার বদলে ছেলেধেলা করিরা "কালনেমীর লমাতাগ" করিরাছে এবং কংপ্রেদের
উদ্বতম পরিষদ তাহাদের এই অপরপ কীর্ত্তির সমর্থন করিরা
এই অতাগা দেশের বিপদ বাড়াইরাছে ইহা আমরা বলিতেই
বাব্য। সম্প্রতি গণপরিষদ এবং মন্ত্রিসভা গঠনে কংপ্রেদ যে
কর্ত্ত পেঝাইরাছে তাহাতে আমরা ভত্তিত হইরাছি। বাংলার
এমনই অবঃপতম হইরাছে বে, যে সকল ব্যক্তি নির্বাচিত
হইরাছেন উচ্চাদের অবিকাংশের অপেকা শতগুণে মা হউক
দশতণ বোগ্যতর ব্যক্তি যে বাংলার পাথরা বাইত না একথা
আমরা এক মুহুর্ভের অম্যও বীকার করিতে প্রভত নহি।
প্রস্করাব্র উচিত ছিল যে দেশের দারুণ সকট ও হুরবছার কথা
ভাবিয়া, উহার চেলাচাযুভা ও চাটুকারবর্গের ভোকবাক্যে
মা ভূলিরা চতুর্ভিকে বোগ্য লোকের সভান করা। তিনি

ভাছা না করিবা যে পাপের পরে আছ চকিবে বংসর চলিয়া বাংলার কংগ্রেস দেশকে ভুবাইয়াছে, সেই পথে চলাই শ্রেম: মনে ক্রিয়াছেন। দেলের মন ও দেলের হুদয় এবনও ঠিক আছে, তাই শত কুকীৰ্ডি ও শত নীচ কাৰ করা সম্ভেও দেশের লোক কংগ্রেসের ছাপ দেবিয়াই সকল কথা ভূলিয়াছে। কিন্তু আরু কয় দিন পরে দেশের লোকে বুঝিবে যে অনেক মহাপ্রভূই 'ভ্যাগ' ও 'কারা-বরণে'র নামে দেশের নিকট হুইতে কেবল গ্রহণই করিয়াছেন, यवार्थ मान विस्थावक करवन माहे। जात्रव मान यमि কামনা থাকে, তপস্যার পিছনে যদি লালসা থাকে তবে সেই ত্যাগ বা তপ্স্যার মূল্য এক কপ্দকও নছে,এ তো সহক কৰা। দেশের লোক এ কথা কখনও বুবিবে না একণ বারণা মুর্থতার পরিচায়ক। এতদিন এ দেশের বত হুংব-কট্ট, যত বিপদ-আপদ ভাছার দায়িত ব্রিট্রশ প্রয়েত্তির উপর চাপাইরা বাঁহারা निक्त कर्छर्या माजन व्यवस्था कविद्यादन, स्ट्रांत इःचकडे মোচনের কোনই চেঙা না করিয়া কেবলমাত্র বিচীপ সরকারকে উচ্চকটে গালি দিয়া এবং ব্যবস্থা-পরিষদে পুড়গ-নাচের মত ভোট নাচাইয়া নিজের বা নিজের ঘলের খার্ব किश्वाय भिन कांकेवियारबन, छांबाबा ১०वे बानरक्षेत्र भन्न स्मर्थनन লোকের চোখে খুলা দিবার কি আর শুতন কণী বাহিত্র করিবেন ? প্রকুলবাবুর মত লোকের জ্বলপ বাঞ্চিদের ক্ৰায় ভূদিয়া ভাহাদের সঙ্গে যাওয়া কি উচিত হইয়াছে ?

প্রকৃষ্ণবাবৃত্ত এবং তাঁহার প্রকৃত সহকর্মীদের উচিত ছিল প্রান্ধে, নগরে ও পত্নীতে পত্নীতে ছবিয়া দেশের লোকের মনে চেতনা-জাগৃতি জানিরা দেওরা। তাঁহাদের সন্মানের ছান ছিল গবের গ্লার, প্রানের কারার ভরা বাংগার জ্বনের। মজিছের জালেরার শিহ্নে তাঁহারা ছুটলেন কেন? "বার কর্ম ভারে সালে আরু গোকে লাঠি বাজে" এ প্রবাদবাক্য কি তাঁহারা ক্ষনও শোনেন নাই? এই জালেরার মারার পড়িয়া তাঁহারা ক্ষনও শোনেন নাই? এই জালেরার মারার পড়িয়া তাঁহারা ক্ষনও শোনেন হইবে এ ক্যা বদি ভাহারা ভাবিরা থাকেন ভবে ভাহা রুবা। তাঁহাদের গঠিত মহিসভার ক্ষতা কি আহে সে ক্যা ব্লাই বাহল্য।

বাহা হউক, বৰ্ডমানে যাহা বটবাছে ভাহা বটবাছে,ভাহার क्ष बहुर्गाहमा क्या दुवा। क्षेत्रुवावृद एम (व बामरमद লোভে পভিরাহিলেন, দেশের লোক তাঁহাদের ভিলক-টকা পরাইয়া সেই আগনে হয় সপ্তাহের জভ বসাইয়াছে। আশা করা বার, হয় সপ্তাহ পরে কিছু অভিজ্ঞতা লাভের পর সেই মোহবারা কাটাইরা ভাঁহারা ঐ আসম হাড়িয়া ভাঁহাদের উপযুক্ত কান্ধে মন দিয়া কর্ত্তর পালন করিতে পারিবেন। দেশের এবন সমুহ বিপদ, ষধাস্থানে ষোগ্যভম ব্যক্তি না বাকিলে বিপদ খনীভুত হইবে ৷ বাংলার ব্যবস্থা-পরিষদে, কেন্দ্রীয় ব্যবস্থা-পরিষদে, গণ-পরিষদে ও মন্ত্রিগভায় অযোগ্য, অকর্মণ্য এমন कि जनर लाक् जिंदा वाख्या एवं मित्र बरे हवन हर्षमा। স্বাধীনভার আলো আসিবার পরও যদি ঐকপ অবস্থাই পাকে **ভবে বাংলার ধ্বংস ও সর্ক্ষনাশ অ**ধিবার্য। বাঙবিক বাংলা-দেশের সর্বাদা তিন শক্রতে করিতেছিল—বিটাশরাক ও লীগ ঘল প্রকাশভাবে ও বলীয় প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিটর সকল ক্ষমতা দৰল করিবা বাহার। আছে ভাহারা প্রচ্ছরভাবে। अफरिटन बारमात अक चरन हुई क्षकां नक्षत्र हाल हुई छ উদার পাইতে চলিয়াছে। এখন খরের শত্রু বিভাগন করিতে পারিলে, পরে দেশের উন্নতির পর পরিষ্কার হইবে।

#### গণপরিষদে বাংলার প্রতিনিধি

ভারতীয় গণপরিষদে পশ্চিম-বাংলা হইতে নিমুলিখিত প্রতিনিধিগণ কংগ্রেসকর্ত্তক নির্বাচিত হইয়াছেন:

প্রীপ্রকৃত্তর সেন

শ্রীবিহিরলাল চটোপাব্যার

শ্রীবাজীকাল থৈজ

শ্রীবাজীকাল থৈজ

শ্রীবাজকুষার দাস

শ্রীপুরেলচন্দ্র মন্ত্র্বার দাস

শ্রীপুরেলমোহন ঘোর

শ্রীপুরুকবিহারী মন্ত্রিক

শ্রীবাজকুষার বুবোপাব্যার

শ্রীপুরুকারের্কুরার মুবোপাব্যার

শ্রীপুরুকারের্কুরার মুবোপাব্যার

শ্রীপুরুকারের্কুরার মুবোপাব্যার

শ্রীপুরুকারের্কুরার মুবোপাব্যার

শ্রীপুরুকারের্কুরার মুবোপাব্যার

निः चात र प्रार्टिण।

নিম্নিৰিভ প্ৰভিনিৰিগণ পাকিহান গণপরিষদে নির্বাচিত

स्रेशास्त्र :

শ্রীকরণশহর রার শ্রীধীরেজনাথ দও শ্রীধীরেজনাথ দও শ্রীধীরজনাথ দও শ্রীধীরজনাথ দও শ্রীক্ষার শ্রীক্ষার শ্রীক্ষার শ্রীক্ষার ক্ষার শ্রীক্ষার ক্ষার শ্রীক্ষার ক্ষার ক্ষার

শ্ৰীশচীন্দ্ৰবাহায়ৰ সাহ্যাল।

পূৰ্ব্যক্ত হৈতে মৃত্য গৰপৱিষ্ণের হোট ১২ট আগনের মধ্যে ১১টতে কংগ্রেগ প্রতিদ্ধিতা করিরাছেন।

প্ৰণাৱিষ্যতে প্ৰতিনিধি নিৰ্কাচনে আগের বাবের ছার এবারও আমরা সম্ভই হইতে পারি নাই। এবার আমাতের আগভিত্র আরও বেই কারণ আছে এইজভ যে গ্রণারিষ্যতের সহত্তের হারিত্ব ভারতীর ভোরিনিয়ন প্রতিষ্ঠার পর অভ্যবিক্রণে বাড়িয়া বাইবে। বর্তমান গণপরিষ্টই ভোরিনিয়ন পার্লামেন্টে রপান্তরিত হইবে এবং নবরচিত গ্রাপ্তবিধি অফুসারে পূতন নির্কাচন না হওরা পর্বান্ত এই পার্লামেন্টই বহাল বাকিবে। ভারতীর ভোমিনিয়ন পার্লামেন্টে বাহালা প্রতিমিরি নির্কাচিত হইরাছেন তাঁহাদের সব্যে পার্লামেন্টারি কার্ব্যে অভ্যক্তর বা ভান হুই কম ব্যতীত কাহারও নাই এবং তাঁহাদের মব্যে একজনের বিশ্বভাগ নোটেই সন্দেহের অতীত নহে। পূর্ব্যে একাবিক্রার দেবা গিরাছে এই ব্যক্তি অভি ভরুতর সম্কর্টপূর্ব ভোটাভূটির সময় কেন্দ্রীর পরিষ্টে রহ্মজন্মক ভাবে অমুপঞ্চিত বহিরাছেন। এই ব্যক্তিকে বলীয় কংগ্রেস প্রতিমিরি নির্কাচন করিলেন কিরণে এবং কংগ্রেসের উচ্চতর কর্ত্বপক্ষই বা তাঁহাকে সমর্থন করিলেন কোন্ যুক্তিতে আম্বরা ভাহা ব্রিতে অসমর্থ।

वारमात व्यवहा वर्षमात्म नामा भिक भिन्नः विक्रियः। वारमा-দেশ ভারতবর্ষের পূর্মে সীমাত্তে পরিণত হইরাছে ৷ ভাছার পাৰ্থেই একট শক্তখাবাপর ভিত্ন রাজ। গঠিত হইয়াছে। হিন্দ-মুসলমান এপ্রিমেণ্টের ফলে ভারত বিভক্ত ভ্ইয়াছে প্রভরাং चात्र विद्वाद्यत कार्य नार विवास शकात विकास करिए চাহিতেছেন ভাঁছারা বাশুবভাবনের উল্বেখুরলোকে বিরাজ क्तिएएटबन। कांत्रल विकक्त स्टेशास्य अवर कर्ट्सन छेवाएल লশ্বতি দিয়াছে লভ্য, কিন্তু মুসলিম লীগ যাহা লাভ ক্রিয়াছে ভাষা প্ৰসন্ন চিছে গ্ৰহণ কৰে নাই। গভ চল্লিল বংসৱকাল ইংরেছের এছেউরূপে ভারতীয় স্বাধীনভার পথে কাঁচা দিয়া দেশদ্রোহিতার পুরস্কারস্কাশ ভাষারা ভারভবর্ষের হয়ট সম্পূর্ণ প্রদেশ ধাবি করিয়াছিল। ১৬ই মে ভারিবের মন্ত্রীমিশন-ৰোষণায় ভাষা প্ৰত্যাৰ্গাভ ছওৱার দীন দেশবালি ভয়াবছ অতামির শ্লপ্ট করে এবং ভারভত্তিত ইংরেক রাজকর্মচারীদের পরোক সমর্থনে উহা ভীষণাকার বারণ করে। অভঃপর এই थला मह वास्ट्रेनिक बार्यामन बहन श्रीकार करिया हैश्रास ভারত বিভাগের করমুলা উপস্থিত করে এবং কংগ্রেম অনংলাপার হইরা ভাষা এহণ করে। মুসলিম লীগ ৩রা জুনের প্রভাবে আপাতত: যাহা পাওয়া রিয়াছে ভাছা এহন করিয়াছে কিছ কোন এগ্রিষেণ্টে আলে নাই। বাংলা ও नक्षां विकाश जीत-अधारत चौक्छ एव नावे अवर भीत-(नक्षा ও পত্ৰিকাদির পরবর্তী বাক্যে ও লেবার স্পষ্টই দেবা বিয়াছে যে পাকিস্বানের আয়সন যুদ্ধির অভিপ্রায় ভারাদের হছিল বিয়াছে। তথা জুনের প্রভাব লীগ সমঞ্জাবে প্রছণ করে নাই कराजम देश भका कविवादम कि छैश भविकाद कविवा লইবার কোন চেষ্টা ভাষারা করেন নাই। ইয়াভে ভবিশ্বভে শীপের শব্দ হইতে গোল বাবাইবার পথ থোলা রাখা ছইল।

লীপের বনোয়ন্তি বেখানে এই প্রকার দেখানে ভবিভ্ততে বাংলার সীনান্তে গোলখোগ এবং তংগহ সমগ্র বাংলার অপাত্তির

मखादना क्षरणकारवरे दक्षि रमण। बारमात वार्य अवस बात ভাষার একার নর, ভারতের পূর্বে দীয়াত রকার ভত ভারত-সরকারের সহিত বাংলাকে সর্ববিষয়ে ঘনিষ্ঠ যোগাযোগ রক্ষা ক্ষিয়া চলিতে হইবে। এই কাৰ্ব্যে বাংলা ছক্ষ্মলভা প্ৰকাশ कविरम भागाम्ब कंखि धनिवादी । धवाहामी भिषादी वारमारक সাহাযা কারবার ভাল বভ:প্রবন্ধ হইরা কিছু ক্রিরাছেন কি শা স্বামরা ভাষা স্বামি না, ভবে এটকু সকলেই লক্ষ্য করিয়াছেন যে বাংলার যে সব নেতা মেরুদঙ্বিহীন ভাহাদিগকেই ওয়াকিং क्षिण्ड जमारेबः श्राकृष्ठीभाष्यत (हडी काश्या क्षिप्राह्म. শশু লোককে ধরে বাবিরাছেন এবং যে সব লোক দলগত চকান্তের সাহায্যে বলীয় কংগ্রেল মুষ্টগত করিয়া রাবিয়াছেন তাঁহাদেরই কুপরামর্শ তাঁহারা এছণ করিয়া আসিয়াছেন। छाभिनिधन पार्नास्यके अवन आध हुई बरमद काक कदित्व अवर বাংলার ভাগ্য অনেক বিষয়ে এই পার্লামেটে নির্দ্ধারিত ছইবে। বাঙালীর জীবনের এই পরম সভিক্ষণে যেখানে সামাল ছই-এক জন ছাড়া এমন একদল লোক পাঠান হইৱাছে গাঁচারা ভীবনে हरका काहै। अवर मार्च मार्च क्लबाहै। हान्न चार्च किन्न করিয়াখেন অথবা পৃথিবীর কোন সংবাদ রাবিয়াছেন বলিয়া ष्यायादमञ्जूषामा नाहे।

#### দাক্ষীগোপাল মন্ত্ৰাসভা

গবৰ্ণরের বন্ধতার প্রধিন পশ্চিম-বাংলার হুল একটি শাশ্বাংশাল মন্ত্রীসভা গঠিত হয় এবং মন্ত্রীদের নাম প্রকাশিত হয়। উহা এইকাশঃ—

ভা: প্রস্কৃতক্র বোষ---বরাই--ভা: বিবানচক্র রায়---ভার, বাছ্য ও সাহায্য
শ্রীষাদবেজনার শাজা---ভা: রায়ের অমুপছিভিত্ত

ভা: স্বেশ্চন্ত বন্দ্যোপাব্যায়—শিল, বাণিজ্য ও শ্রমিক শ্রমিপুঞ্ববিধারী মাইভি—শিক্ষা, সেচ ও জলের কল শ্রীরাধানাথ থাস—সিভিল সাপ্লাই শ্রীরোধিনীমোহন বর্ষণ—আইন ও বিচার শ্রীবেষ্চন্ত নম্বর-—হুষি, মংস্কচায় ও বন

ঞীকালীপদ মুৰোপাধ্যায়---রাজ্য ও কারাগার।

মন্ত্ৰীদের মাবের তালিকার ডাঃ বিবানচন্দ্র রাবের নাম আহে কিছ তিনি বর্ত্তরানে আবেরিকার। বে সকল সর্ত্তে এই মন্ত্রীসভা গঠিত হইরাছে তাহা জানিবার পর ডাঃ রার সাজী-গোপাল রূপে বারোক্ত ও সুরাবর্দীর তাবেদারী করিতে রাজী হইবেন কি না সে সক্তে দেশবাসীর ববেট সক্ষেহ রহিরাছে। ডাঃ ডারাপ্রসাদের নার বাদ যাওরার দেশের লোক গভীর বিশ্বর অভ্তত্তর করিরাছে। ব্রত্তীসভা গঠনের দারিত প্রহণ করিরা ডাঃ প্রস্কৃতক্ত বোষ বে বির্তি দেন ভাহাতে তিনি

বংগন, "এই সন্ধিক্ষণে আমি ডাঃ মুখোপাধ্যারকে আমাদের সহকর্মী হইতে অন্ধ্রোধ করিরাহিলাম। কিছ ছুংখের বিষর আমি রাষ্ট্রপভির সন্ধতিতে যে সকল সর্ভে মন্ত্রীসভা গঠন করিতে সন্মত ছইরাহি সেই সকল সর্ভ তিনি গ্রহণ করিতে রাষ্ট্রী হন নাই।" ডাঃ খোষের এই উক্তির পরে ডাঃ শ্যামা-প্রশাধ কেন মন্ত্রীসভার যোগ দান করিতে পারিলেন না তাহা জানাইরা নিম্নলিখিত বিরতি দেন:—

"প্রদেশের শাসন ব্যাপারে সরাসরি কর্ত্ব না বাকিলে
পূড়ন মরিমঙ্গ জনসাবারণের ওকান কল্যাণই করিডে
পারিবেন না। বিভিন্ন সরকারী বিভাগের কর্ত্বত সীগ
মন্ত্রীদের হাতেই বাকিবেন শাসন ব্যাপারে পশ্চিমবন্দের
মন্ত্রিপ শুরু স্থারিশ করিতে পারিবেন। কোন বিষয়ে
মতানৈকা হইলে উভর মন্ত্রিসভার বৃক্ত বৈঠকে মীমাংসার
চেষ্টা করা হইবে। এইলেপ ক্ষেত্রে উভর মন্ত্রিসভাই দলগভ
ভিত্তিতে ভোট গিবেন। কলে গ্রণ্রই কার্যভঃ সকল
ব্যাপারে সিদ্ধান্ত করিবেন।

নীতি নির্ছারণ সম্পর্কীয় ব্যাপারে পশ্চিমবলের মন্ত্রি-সভা যে সিদ্ধান্থই কর্মন না কেন,ভাছা কার্য্যকরী করিবার ভার লীগ গবর্মেন্টের উপর পভিবে।

শাসনভাত্ত্বিক বাাপারে দীস বল্লিমঙ্গী এবানে সম্বর্ত্ত বাংলার উপর কর্ত্ত্ব করিবেন, কিছ পূর্ববন্ধের শাসন সম্পর্কীর ব্যাপারে নৃতন মন্ত্রিসভার কোনই কর্ত্ত্ব থাকিবে নাঃ এই ব্যবস্থা শুধু অমুভ নহে, ক্ষতিকরও বটে।

কি ভাবে সাজ্ঞদায়িক শক্ষণাভছ্ট ও ছুনীভিন্নক লাসনযন্তের কবল হইতে অব্যাহতি পাওয়া যায় বাংলার কনসাবারণ বিশেষ করিয়া কলিকাভার অবিবাসীদের সম্পূর্বে ইছাই প্রধান সমস্যা। সপ্তাসরি ক্ষভার বারক না হইয়া কোন নৃতন মন্ত্রীই এই সমস্যায় সমাবান করিয়া বর্তমান সক্ষমর পরিছিভিন্ন অবসান করিছে পারিবেন না।

বর্তমান পরিস্থিতিতে জনসাবারণকে চুইট দাবী উথাপন করিতে চ্ইবে। পশ্চিমবঙ্গ সম্পর্কীর কোন ব্যাপারে বিধি উত্তর মন্ত্রিসভার মধ্যে মভানৈক্যের স্কৃটি হয় ভাগে চ্ইন্সে এই ব্যাপারে পশ্চিমবঙ্গের মন্ত্রিসভার সহিত পরামর্শ করিয়াই গবর্ণরকে সিঙাভ গ্রহণ করিতে চ্ইবে। সরকারী কর্মচারীদের নিয়োগ ও বছলীর ব্যাপারে পশ্চিমবঙ্গের মন্ত্রীসভাকে পূর্ণ ক্ষমভা দিতে চ্ইবে। প্রভ্যেক আত্ম-মন্ত্র্যাদাসম্পন্ন মন্ত্রী এবং নাগরিক বিনা বিধার এই বরণের লাসনভান্তিক অবিকার দাবি করিবেন। গবর্ণর স্বয়ং এই প্রায়ের উত্তর প্রদান করিয়া বিষয়াইকে পরিভার করিতে পারেন, অববা ভাঃ ঘোষ ভাছাকে এই ব্যাপারে অন্থ্রোর করিতে পারেন।

ৰত দিন পৰ্যন্ত বৰ্ডধান ৰৌৰ শাসন-ব্যবহা চালু থাকে তত দিন পূৰ্কবদেৱ শাসন-ব্যাপাৱে পশ্চিমৰদেৱ নহিনতা পরামর্শ দিতে পারিবেন। এইরূপ ব্যবহা করিলে পূর্ব-বলের হিন্দুদের প্রতি সুবিচার করা হইবে এবং হুই মঙ্গী-সভার মধ্যে যে পার্থক্য আছে ভাহাও ভিরোহিত হটবে।

ক্ষতাহীন যে দায়িত্ব, তাহা অৰহীন এবং ইহাতে তবিষ্যং বিশদের সপ্তাবনা থাকে। কাহায়ও নিকট আমরা বাবীনতা ভিক্ষা করিতেহি মা। বাংলার ক্ষমত আমাদের পিছনে রহিয়াছে, কাকেই কাহায়ও সাধ্য নাই আমাদের দাবির প্রতি অবজা প্রদর্শন করে। মধ্যবর্তী সময়ের ক্ষম যে ব্যবহা করা হইরাছে তাহা নির্ভ হইবে এমন আশা কেইই করে না; তবে আমাদের দাবি, বাংলার উভর অংশের প্রতিই ভারবিচার করিতে হইবে এবং উভর অঞ্চলের হুই মন্ত্রিসভাকে সমন্ত্রীদাসম্পন্ন করিতে হইবে।

বাংলার বহু শোচনীয় ঘটনাবলীর নারক মিঃ প্রা-বলীকে এবনও বাংলার প্রধান মন্ত্রী পদে রাখা হইরাছে; প্রকাজে ইহার প্রতিবাদ হওয়া উচিত। বাংলার যে অংশ প্রাবদী ও তাঁহার মন্ত্রিসভার উপর প্রকাশ্যে সম্পূর্ণ অনাহা প্রকাশ করিরাছেন, সেই অংশের শাসন ব্যাপারে ভাহাদের কর্তৃত্বের কোনই অধিকার নাই। পশ্চিমবদের শাসনভার এই অঞ্চের ক্রসাবারণের প্রতিনিধিদের হাতেই ভূলিরা দেওয়া উচিত।

গবৰ্ণর, ভাঃ প্রকৃত্ত যোষ এবং ভাঃ ভাষাপ্রসাদ মুখোপাব্যায় এই তিন জনের কথা হইতে দেবা যাইতেছে ভাঃ খোষ নিয়-লিখিত সৰ্ভত্তি জানিয়া ভনিয়া মন্ত্রীসভা গঠন করিয়াছেন এবং রাষ্ট্রপতি আচার্য্য ক্রপালনী তাহাই অধুযোদন করিয়াছেন ঃ

- (১) পশ্চিমবন্ধ মন্ত্রিসভা খতন্ত্র ক্যাবিনেটরপে থীকত হইবে না, মিঃ প্রবাবদীকে প্রধান মন্ত্রী থীকার করিয়া সহয়া ভাহার ক্যাবিনেটের বৈঠকে বোগদানের এবং ভগু শশ্চিম বন্ধ সংক্রাপ্ত বিষয়ের আলোচনার অধিকার মাত্র ভাহারা পাইবেন।
- (২) দীগমগ্রীদের পশ্চিমবদের উপর পূর্ণ একভিয়ার থাকিবে কিছ কংগ্রেসী মন্ত্রীদের পূর্ব্ব-বাংগার হিন্দুদের , সম্পর্কে একট কথাও বলিবার অধিকার থাকিবে না।
- (৩) দীগ ও কংশ্রেণী মন্ত্রীখের মিলিভ বৈঠকে পশ্চিমবন্ধ সংক্ষান্ত কোন বিষয়ে মতবৈর হুইলে ডাঃ বোষ উহা গ্রবণ্রকে জানাইতে পারিবেন, গ্রব্ধ উহাতে সাদিশী করিবেন। অর্থাং ডাঃ বোষকে কাইল লইয়া মিঃ জুরাবর্দীর মিকট দাভাইতে হুইবে, তিমি উহা গ্রহণমোগ্য নহে বলিয়া ক্ষেরত দিলে কংগ্রেস প্রতিনিধি ডাঃ বোষকে তৃতীয় শ্রেণীর মনোর্ভিসম্পর একজন ইংরেজের নিকট পিরা ভারবিচার ভিক্ষা করিতে হুইবে।
- (৪) নিক দারিজে কোন কাক করা প্রথর বারোক ভাহার প্রকৃতিবিক্ত এবং 'আন্-কন্টটিউশনাল' বলিয়া মনে করেন, বিশেষতঃ ক্ষতা হড়াভারের সমরে, এই যুক্তিতে তিনি

৯৩ বারা প্রবর্তন করিতে পারিলেন না কিছ যিঃ সুরাবর্তীর সহিত ডাঃ বোষের মততেদ হইলে ডাঃ ধোষের এলাকা সংক্রান্ত বাণারে গণতান্ত্রিক নীতি অপুলারে উচ্চার পরামর্শ প্রহণ করিবেন বলিয়া তিনি প্রতিশ্রুতি দিতে পারিলেন না। মিঃ সুরাবর্তী এবং অভাভ লীগ মন্ত্রীদের পরামর্শ প্রহণ করিবেন কিছ ডাঃ ধোষ বা কংগ্রেগী মন্ত্রীদের পরামর্শ প্রহণ করিতে পারিবেন না। ডাঃ ঘোষ এই সর্ভে সন্মত হইয়া মন্ত্রীসতা গঠন করিয়াছেন এবং আচার্য্য কুপালনী ইহা অপুনোদন করিয়াছেন।

- (৫) ডা: খোষ এবং তাঁহার সহক্ষীর দল নীতিগত প্রভাবমাত্র করিতে পারিবেন, শাসন্মন্ত পরিচালনার তাঁহাদের হাত বাকিবে না। তাঁহাদের প্রভাব কাথ্যে পরিণত করিবেন মি: সুরাবর্ষীর দল। 'প্রভাব বিবেচনাবীন' বলিয়া উহা দেড় মাস ফাইল চাপা দিয়া রাখিয়া দিলে ডা: ঘোষ কি করিবেন ভাহা উল্লেখ করা হয় নাই।
- (৬) পশ্চিমবদের কোন সরকারা কর্মচারীর নিয়োগ এবং বদগীর উপর ডাঃ খোষের কোন হাত খানিবে না। কলিকাভার পুলিন কমিলনার পরিবভন অথবা পাঞ্চাবী পুলিন অপনারবের ভার বভ কাজ ত পুরের কবা, একট খানা অফিসার পরিবর্জন সম্পর্কেও তাঁহাদের হাত থাকিবে না ইহা মানিরা সইরাই ডাঃ খোষ মান্ত্রসভা গঠন করিয়াখেন এবং রাষ্ট্রপতি কুপালনী উহাই অগ্নোদন করিয়াছেন।

छा: (बार्यंत्र मरमंत्र धारान जाकारे खरे ह्यू. छ।श्राता भौत यऔर वर शासाकरण रमत्किकी विरयर है स्थानवान ना कदिएन अह (एक मार्ट्स चारल चिंक हरेल। पूक्किका औरशब निकर्ष बाब कवा, छाशास्त्र निकथ नव। शकारमंत्र मयस्रदेव मयस्र भौग মন্ত্ৰীরা সদর্শে খোষণা করিয়াছিলেন যে ভাঁহারা মন্ত্ৰীর আসনে প্রতিষ্ঠিত না বাকিলে চাউলের মৰ একলো চাকা হইত। বাংলার ছতিকে অর্কটোট লোকের মুত্যুর কর যে ব্যক্তি দায়ী, পত আগষ্ট মাস হইতে যাখাদের অভ্যাচারে হাজার হাজার লোক আভতায়ীয় হাতে নিহত ও আহত হইয়াহে, সৰ্বায় দ্ইয়াছে, শভ শভ নারীর সভীত নাশ দ্ইয়াছে, সেই দলের অধীনে ডাঃ খোষ মন্ত্ৰিত এছৰ করিতে গেলেন কেন ইছা জানিতে **চাৰিবার অধিকার দেশবাসীর অবএই আছে। আমরা না পেলে** আরও ক্তি হইত এ কথা কেহ ভনিবে না। দীগ অসংব্য क्यती नतकाती कारेन नतारेट भारत. रूत ७ नतारेट ए. ভাহাদের তুকীর্ত্তির সকল সাক্ষ্যপ্রমাণ লোপ করিবার ভঙ। ইহা বছ করিবার ক্ষতা ডাঃ বোষের নাই। কলিকাভার মুসলমান षारवामा अवर **भाक्षावी भूमिरभद च**न्नाठाड रवसन क्रमिरल्डिन ভেমনি এবনও চলিভেছে, ইহা বন্ধ করিবার ক্ষমতা ভাঁহাদের নাই। পূর্ববদের হিন্দুরা আবার বে ভরাবহ ছভিচ্ছের সন্থান হইয়াহে ভাহা হইডে ভাহাদিগকে রক্ষা করা ভো বছ দুৱের কথা, ভাহাহের সম্পর্কে কোন কথাট পর্যন্ত বলিবার

অবিকার তাঁহাদের নাই। তাঁহারা উপরোক্ত বোর অপনান-কনক সর্গগুলি মানিরা লইরা মন্ত্রিত গ্রহণ না করিলেও ইহাই চলিত, বড় জোর কলিকাভার আর দেড় মাস গোলখোণ থাকিত।

#### যন্ত্রী-নির্বাচন পদ্ধতি

পশ্চিমবদের মন্ত্রীদের নাম দেবিয়া আশকা হইতেতে যে কংগ্রেস-,নতারা বোৰ হয় মন্ত্রী-সভা দর্বলকেও কংগ্রেস কমিট দর্বলের সমর্পর্বায়ে ক্লেলিভে চাহিতেত্তেন। তালিকায় ভাঃবিধান রাবের নাম দেবিয়া 'দৈনিক বস্থমতী' উহাকে 'লোবরের নৈবেত্বের উপর ভীমনাগের সন্দেশে'র সহিত ভূলনা করিয়া—তেন। আমরা অবঞ্চ এতটা করিতে চাহি না।

মন্ত্ৰীদেৱ নাম দেবিরা দেশের লোকে প্রভাবত:ই ভানিতে চাহিবে যে যোগ্ডার কোন মাপকাটি অভূসারে এই নয় कनटक वाषाहे कता रहेल ? देशांबा करदश्यात्मवक खबर शाधी-বাদী কংগ্রেসের আদেশে আইন আরীত আন্দোলনে যোগ-দান করিয়াছেন এবং গাড়ীজীর নেডঃ অসুসরণ করিয়াছেন। ভাষার কাবে ইহারা সামানা দক্ষতা দেবাইয়াছেন কিছু গভার কালে দেখাইতে পারেন নাই ৷ ডাঃ প্রফুল্ল খোষ নিবিল-ভারত আম-উত্যোগ সংখ্যে অভতম অধিনায়ক। উক্ত সংখ্যে অর্থ-বলের অভাব নাই। ভাঁছার পরিচালনার এই সম্বের সাছায়ে। বাংলার কয়ট গ্রামের ছ:ব ও ছর্মলা আংশিক ভাবেও যোচন করা হইয়াছে ভাহা ভিনি বলিবেন কি ? আর গাছারা মন্ত্রী निधुक एटेशाएएन डीकालिय मृत्या अक्कमन त्रीननुष्य कार्या প্রতিভার পরিচয় দিতে পারেন নাই। চরকার নাম করিলে চলিবে না। খদৰ তাঁহারা পরেন কিছ চরকা তাঁহারা निक्ता अरुप कदिए पादान भारे. २० वरमदाद जाना सकत ce । ए काहि काहि है। का अर्थवादश्व क्षमवानीरक हत्वन। এছণ করাইতে পারেন নাই।

গঠনৰূপক কাৰ্ব্যে প্ৰতিভাৱ বিকাশ যদি ইংলান বিবাদিন চিনের কারণ না হয় তবে কি ত্যাগ ও হংব বরণের দাবিতে ইংলার নানী ইংলাছেন ? যদি তাই হয়, তবে উংলাই বা মাপকাঠি কি ? জেল বাটার সময়কে ত্যাগ ও হংব বরণের পরিমাপ-স্করণ বরা হইলে কি একমাত্র উঁহারাই তাহাতে উত্তীর্ণ হন ? এমন তো বহু পোক রহিরাছেন গাহারা যাবজাবন দ্বীপান্তরে দভিত হইরা আলামানে সিয়াছিলেন এবং ২৫ বংসর সেবানে কঠোরতম বন্দীজীবন কাটাইয়া কিরিয়া আসিয়াছেন। তাহারা তবে মন্ত্রীপদে গৃহীত হইলেন না কেন ? ব্যক্তিগত কারাবরণের মাপকাঠিতে মাপিলে দেবা বাইবে মন্ত্রী বাহারা হইরাছেন তাহাদের চেয়ে বেশী জেল বাটারা সর্ব্যান্ত হইরাছেন এমন বহু লোকই বাদ পছিয়া সিরাছেন।

তবে কিসের মাণকাঠিতে এই মন্ত্রিনির্বাচন হইরাছে, দল—না উপদল ? কেজে কংগ্রেস অন্তর্বার্তী গবর্ষে ঠে যোগদান করিরাছেন, উহাতে কংগ্রেসের বাহির হইতে উপযুক্ত লোক

এইৰ কৱিয়াছেন। বাংলায়ও কি এক্সপ হইতে পাৱিত না। कर्धित निष्कृत चाएल ध्रवान मधीत भेष अवर कावित्नही মেক্তিট ত্রাবিয়া বাহিত্র ছইতে তিন-চাত্র কন উপর্ক্ত লোক কি লইতে পারিতেন নঃ ? মন্ত্রিসভার প্রধান কর্তব্য শান্তি-वका जवर १५८मव (मारक्ष इ:बर्माहन) अहे कर्षवाशामन বে পছতিতে ক্ষিতে হৰবে ভাষার সহিত কংবেসের এভাবং কালের কার্যপথতির কোন থিল নাই। বাংলার মন্ত্রী-সভার থয়াট্ট স্চিবরূপে ডা: ভাষাপ্রদাদ মুবোপাব্যায়, विकामितिकरण छाः रुरबक्षतस्य भूरबाभावात्र अववा अवानक সভ্যেমনাৰ বসু, অৰ্থ প্ৰচিবক্ৰণে ডাঃ বিধানচম বায় প্ৰভৃতিকে পাইলে দেশবাসী সম্ভ্র চিত্তে মলিসভাকে নিজম প্রশ্নেত বলিরা গ্রহণ করিতে পারিত। বলীয় কংগ্রেসের নেডরন্দ ভাহা করিভে পারেন নাই, দেশের ৩৬ আজীবন ভ্যাপ ও ছ:चबद्रापद त्त्रोत्रव वाश्वादा प्राप्ति कविया बाटकन. ব্যবস্থা-পরিষদের সামার সদ্তপদ অববা মন্ত্রীপদ দবলের লোভ ভাছারা সথবৰ ক্রিতে পারেন না বাঙালীর পক্ষে ইছা বভুই ছর্তাল্যের বিষয়। ব্যবস্থা-পরিষদের সদস্যরূপে বাঁছার। भन्मूर्ग व्यवागाणात अतिहत विश्वाद्यन, अग-अतिवर्धन प्रवना হইয়া গিয়া বাহার: বাংলাকে ভিত্র প্রদেশের নিকট হাস্যাম্পদ কবিয়াছেন নিজেদের যোগাতা ও অযোগাতা বিচার বা কবিয়া লোভের বলে মি: পুরাবছার অধীনে মন্ত্রিপদ এছণ করিয়া ভাহারা আবারও বানালীকে লীপ ও ইংরেন্ডের নিক্ট হাস্যাম্পদ ক্রিয়া ওলিলেন। মন্ত্রিয়ে সাকল্য অব্দের আশা তাঁহাদের বুদুরপরাহত কিও তাঁহাদের এট অভার লোভের ব্দ বাহালীর ছুন্ম ও ক্তি অবশ্যপ্রাবী।

#### বন্দ-বিভাগের সিদ্ধান্ত

২০শে ভূম বল-বিভাগের সিদ্ধান্ত গৃহীত হইরাছে। এই সিদ্ধান্ত গৃহীত হইবার পর প্রধানমন্ত্রী মিঃ সুরাবর্দী নিয়লিংতি বিরতি দেনঃ

"ধন্ত্ৰণার অবসান হইয়াছে। বাবীন সার্বভৌষ বাংলার পরিকল্পনাকে পশ্চাং হুইন্ডে ছুরিকাখাত করা হুইয়াছে এবং বাংলা নীপ্রই দিবলিত হুইবে। বাংলার মুসলমানদের ইহাতে অন্থলোচনার কিছু নাই। আমরা যদি একএ থাকিতে পারিতাম তাহা হুইলে বিবের মধ্যে এক প্রগতিশীল ও সমুদ্ধিশীল আভিতে পরিপত হুইবার সৌভাগ্য আমাদের নাই। মুসলিম বঙ্গকে এবন নিজের পারে হাড়াইতে হুইবে এবং উন্নতির চন্তম সীমার উঠিতে হুইবে। পাকিস্থানের অংশরূপে মুসলিম বঙ্গের বাড় সরবরাহ হুইবে প্রচুর। পাটের জন্মান রূপে সমগ্র বিশ্বকে মুসলিম বঞ্চ ভাহার প্রপ্রাক্তর পাইবে এবং ইহার শিল্পান্নতির সন্তাবনাও অনুরস্ত। পাকিস্থান আইনসভার মুসলিমবঙ্গে

প্রভাষ থাকিবে এবং পাকিছানের শাসনভন্ত প্রবান ও নীতি নির্দানের ভাষার যথেই ছাত থাকিবে। পাকিহানের সর্বাহ্ব কন্য প্রতি ব্সলমানকে বিশেষ ভ্যাস বীকার করিতে হইবে। এখন আর আমর। সংখ্যাগরিষ্ঠ হিন্দুছানের অবিংনিশীদের উপর নির্ভরশীল নহি। আমাধ্যের রাষ্ট্র-ভিক্ত গুরুত্ব ও শিরসম্পদ আমাধিসকে বিশ্ব-সভাষ একটা বিশিষ্ট গ্রাম দান করিবে।

যাহা হউক, এই বিভাগ আমার পক্ষে সর্কাণেকা इःवंशाधक (थ, (य वक्-विकालित शांवि दिन् महाअका कर्ड्क ভীৱভাবে উবাপিত হয় এবং কংপ্ৰেস ছাইক্যাও বাঙালী লাভিকে যাহা গলাৰঃকরণে বাধ্য করেন তাহা প্রতিশোধ-স্থা, গুণা ও নৈরাশ্ব হুইতে উত্ত । আশা করি, উদ্ধেশ मक्ल एउदाब अर्थ भरभाषाय पृत्रीपृष्ठ एरेरव । हे जिम्रादाहे আমি দেখিতেছি যে, পশ্চিমবঙ্গের সংব্যালয় মুসলমানদের কিভাবে চূর্ব করা যায় সপ্তাবিত হিন্দু মান্ত্রসভাকে তং সম্পর্কে আভাষ দানের অন্য প্রতিযোগিতা ভুরু হইয়! সিরাছে। আমি তাঁহাদিগকে সংঘত ছইতে অপুরোধ क्विए हि। शक्तिया एवं श्वित्रक। क्यम्पाद क्याप्तिव ভার এখন করিবেন তাঁখারা উদার দৃষ্টভঙ্গি লইয়া চলি-त्वम खर अर्थान्यूरभव न्यार्थ छेर्थका कविर्वन ना। ঘটনাচক্ৰে বাংলা ধিবভিত হওয়ায় কেচই প্ৰথী হইতে পারে নাই। ভারতের সর্বাত্র সংখ্যালয়দের মনে বৈষ্ণা ও প্রভিলোদের যে আতত্ত করি হইরাছে এখন আমা-भिन्न कारा पूर क'त्रवात क्या भटा प्रदेख स्ट्रेट । ভারত বিভক্ত হইলেও হিন্দু ও যুসলমানদিশকে পূর্বের মভই পাশাপাশি বাস করিতে হইবে। কালেই ধুসলমান ७ हिन्दु नरवाानपूरवद शार्वद्रकाद क्या आभारवद छेपाव নির্দারণ করিতে হইবে এবং চুঞি করিতে হইবে।"

উপসংহারে ভিনি বলেন যে, বাংলার ছুইট অংশের পুনবিলনও অসম্ভব নছে।

ডাঃ প্ৰানাপ্ৰপাদ মুৰোপাৰ্যায় নিম্নলিবিত বিবৃতি দেন :

যাহা অবগুড়াবী ছিল ভাছাই ঘটরাছে। বল্ড্লুই ছিল হিন্দুর সংস্কৃতি, বর্ধ, বন ও মান রক্ষার একমাত্র উপার এবং ইহাতে হিন্দুর ভারতীয় রুক্তরাব্রের সহিত রুক্ত থাকিতে পারিবে। বাংলার উত্তর থকের পূন্দঠিন এক ছ্রুছ কাক। রাক্টনিভিক মতবাদ ও অন্যান্য সকল প্রকার বিভেদ নির্মিশেরে প্রত্যেক দল ও সভ্যদারের প্রভিভা ও সহযোগিভার ইহা সভব। এক ভুলনাহীম সাপ্রেদারিক নিশীন্তনে বাঙালী হিন্দুর অভিত্ব ধ্বংস হইতে চলিরাজিল। ভাহারা এবন স্বভির নিবাস কেলিরা বাঁচিবে। ২০শে জুন হিন্দুদের পক্ষে এক রুক্তির দিন। সাধারব মাল্বের উন্নতির বিক্তে, লক্ষ্য রাবিরা এক প্রীরবন্ধ ভবিত্বং ব্রচনাই বর্ত্তনানে ভাহাদের কাক্ষ।

णात्रणीय मुख्यारद्वेत वास्तित करतक काहि स्थि তাঁহাদের ইচ্ছার বিরুদ্ধে পাকিস্থান অঞ্চল পড়িতে বাব্য হইয়াছে, এই দক্ত হিন্দুর রক্ষাব্যবস্থার দায়িত্ব দুভন পশ্চিম্বন সরকার ও কেন্দ্রীয় সরকারের উপর পভিয়াছে। পাকিছানে এবং ভারতীয় যুক্তরাট্রে পূর্ববদেয় হিন্দুরা অর্থনীতি, রাষ্ট্রনীতি ও সংস্কৃতির ক্ষেত্রে কি অধিকার পাইবে তাহা নিৰ্বহাৰ পূৰ্ববঙ্গবাসী হিন্দুদের অবিস্থে এক সম্বেলনে মি<sup>লি</sup>ত ছাওয়া কর্ত্তব্য। এই সম্বেলনে ভাবিত্র যে ৰসভা প্ৰস্তুত হইবে ভাষা গণ-পরিষদ ও দেশবাসীর সমক্ষে উপধাপিত করা প্রয়োজন। পশ্চিমবঙ্গের হিন্দুরা যদি বদভদকে নিজেদের নিরাপভার উপায় হিসাবেই এহণ করেন এবং পূর্ববদের হিন্দু প্রাতা ও ভয়ীদের ভবিশ্বতের প্রতি ঔদাসীন্য প্রদর্শন করেন, ভবে ভাষা আত্মপ্রতারণারই সাহিল হইবে। ইহা আশা করা যায় যে, বদের উভয় বঙাই সংখ্যালগুদের রক্ষার দারিও এহবে সম্মত হইবেন এবং এইভাবে ভবিয়তে যাহাতে কোন অশান্তির উত্তব না হয় তংপ্রতি লক্ষ্য রাবিলে সর্বভারতীয় সমস্তার প্রতি নক্ষর কা দিয়া বলের ছই বডের মধ্যে যাহাতে সন্ধানৰনক মীমাংসায় উপনীত হওয়া যায় আময়া সক্ষপ্রয়তে ভাষার জন্য চেঠা করিব।

মি: স্থৱাবদীর বিবৃতিতে ভাঁহার চিব্রস্থন দাভিক্তা ও चन्द्रित क्षष्ठि भाषाद्रारभव चार कुम्महै। मक्तियरक्त स्व यूजनमार्भका दिन्द्रथव बच्चारवच्दन निवानरम वाज विवादम् পূৰ্ববেশ্ব প্ৰতিক্ৰিয়া যাহাদিগকে স্পৰ্ন কৰে নাই, তাহাৱাও বল-বিভাগের প্রভাবে দীপ পক্ষে একযোগে ভোট দিভে কুঠিত হয় নাই। পশ্চিমবলের হিন্দুরা মুসলমানদের চুর্ণ করিবার চেষ্টা এবনই আরম্ভ করিষ। দিয়াছেন বলিয়া নাকি भिः भूबावधी वृतिया (किंगशास्त्र अवर छैनएम विश्वास्त्र द পশ্চিমৰক্ষের হিন্দুরা বেন উদার দৃষ্টিভদী লইয়া চলেন এবং भरबाज्यालय पार्व छर्गका ना करवन। व्यक्त यूननमान সংখ্যাপ্তর পূর্ববেদে বিক্রের উপর যে অভ্যাচার চলিভেছে ভাহার অবসাণের কোন চিহ্নাত্র দেবা মাইভেছে না এবং মি: পুরাবর্ষীও সে সম্বাদ্ধে নীরব। বদ-বিভাগের निहास क्षकाणिक रहेवात गत गूर्ववक रहेक व-भव भरवाक আসিতেছে তাহা বছতই উদ্বেশনক। চট্টপ্রান, ত্রিপুরা প্রভৃতি ছানে ট্রেনের হিন্দু বাত্রীবের নিকট হইতে জিজিরা কর আদার করা হইভেছে:মর্মসিংহের প্রাবে ঢোল পিটাইরা হিন্দুবের প্রায়ভ্যাগের আছেল বেওয়া হইরাছে; পাবদার হিন্দুর শবদাহে আগতি করিয়া কবর বেওয়ার কত হবকী দেওয়া হইতেত্তে—ইত্যাদি সংবাদ সংখ্যালঘুৰের প্রতি প্ৰবিচাৱের নিম্পন বলিরা প্রবাবার্থী সাহেবও আশা করি ব্যাৰ্থা ভৱিতে চাহিবেৰ বা।

#### দীমানা কমিশন

বিভক্ত বাংলা ও পঞ্চাব প্রচেশের উভর অংশের সীমামা
নির্চারণের অভ চুইট সীমানা কমিশন নিরোগ করা হইডাছে
এবং ভাছার সমস্তদের নাম ঘোষণা করা ছইয়ছে। চেয়ারনানের নাম তার সাইরিল রাভিক্লিফ, ইনি ইংলও ছইডে
আসিরা এক সঙ্গে বাংলা ও পঞ্চাব উভর সীমানা কমিশনের
চেরারমানের পদে নির্ভ্জ ছইবেন। এই বোষণা অফ্যারী মিঃ
আটিস বিজনকুমার মুবোপাব্যার, বিঃ আটিস চার্লচন্দ্র বিষাস,
বিঃ আটিস আবু সালে মহম্মদ আকরম ও মিঃ আটিস এস এ
রহ্মানকে বাংলার সীমানা কমিশনের সদভ্গদে নিরোগ করা
ছইয়াছে।

এক সরকারী বিজ্ঞপ্তিতে বলা হইবাছে, বাংগার গ্রণর ক্ষিপনের সদস্তচ্চুইরতে আগামী ৭ই জ্লাই, সোমবার অথবা বত শীল্ল সম্ভব উহার পরবর্তী কোমও তারিবে প্রথম বৈঠক অমুঠানের কম্ম অমুবোধ আনাইয়াছেন।

ক্ষিশনের বিচার্ব্য বিষয়াবলীর মধ্যে সংলগ্ধ মুসলমান ও অধুসলমান প্রধান এগাকাসমূহের ভিত্তিতে পঞ্জাব ও বাংলার উভর অংশের সীমান! নির্দ্ধারণ এবং উহা করিবার কালে "অঞাজ বিষয়ের প্রতি লক্ষ্য রাবার" ক্ষণ্ড নির্দেশ দেওয়া হইয়াছে।

এতং সম্পর্কে বিকর্ষস ক্ষিশনারের আপিস ছইতে এক সরকারী ঘোষণায় বলা ছইয়াছে বে, ব্রিটিশ সবর্দ্ধের ১৯৪৭ সালের ৩বা জুনের ধোষণার ৫ম ছইতে ৮ম অফুচ্ছেদের ব্যবহা অধ্যায়ী বাংলা ও পঞ্চাব প্রদেশ বিভাগের সিঙাও ঘোষিত হওয়ার প্রবর্গন-ক্রোরেল উজ্ঞ ঘোষণার ২১শ অফুচ্ছেদ অধ্যারে উহার ১ম ও ১৩শ অফুচ্ছেদ সম্পর্কে নিয়োক্ত ঘোষণা করিয়াছেন :

(১) বাংলা ও পঞ্চাবের কর নিয়োক্ত সমগুদের পইরা ছইট সীযামা কমিশন গঠিত ছইবে---

বাংগার ছাত :—চেয়ারমানের নাম পরে ঘোষিত ছাইবে। সরস্থার নাম বিঃ আষ্ট্রি বিজনকুমার মুখোপাধ্যার, মিঃ আষ্ট্রিস সি, সি, বিখাস, সিঃ আষ্ট্রিস আরু সালে মহস্রদ আকরম ও মিঃ আষ্ট্রিস এস, এ, রছমান।

পঞ্চাবের ক্ষয়—চেষারম্যানের নাম পরে ধোষিত হইবে।
সংস্থানের নাম: মিঃ কাষ্ট্রিস দীন মহন্দ্রন, মিঃ কাষ্ট্রিস বহন্দ্রদ্রনির, মিঃ কাষ্ট্রিপ থেছের চাল মহাক্ষম ও মিঃ কাষ্ট্রিপ ভেক্সিং।
(উত্তর ক্ষিণনের চেষারম্যানের পলে একই ব্যক্তিকে নিয়ো-ধের সকল করা হইবাছে)

- (২) সংশ্লিষ্ট প্ৰেদেশসমূহের প্ৰণ্রেরা ব্যাশীত্র সম্ভব উভয় ক্ষিশনের বৈঠক আহ্বান ক্রিবেন এবং ক্ষিশন যভ ভাড়া-ভাড়ি সম্ভব ভাছাদের বিবরণ দাখিল ক্রিবে।
  - (৩) উভর ক্ষিণমের বিচার্য্য বিষয়াবলী এইরূপ ফ্টবে:
    বাংলার সংগর সুসল্যান ও অনুসল্যান প্রবাদ এলাকা-

সমূহের ভিভিতে বাংলার বিভক্ত অংশব্রের সীমামা নির্ভারণ করিতে হইবে এবং উহা করিবার কালে অভাত বিষয়ের প্রতিও পক্ষা রাখিতে হইবে।

গণভোট এছণের ফলে শ্রিছটের যদি পৃথ্যবন্ধের সহিত সংমুক্ত হওয়ার সিছান্ত হিনীকৃত হর, তাহা হইলে সীমান। কমিশন শ্রীহট জেলার মুগলমান প্রধান এলাকাগমূহ এবং উহার সংলগ্ন আগামের অহান্ত জেলার মুগলমান প্রধান এলাকারও সীমানা নির্দারণ করিবে।

পঞ্চাবের সংগ্রা হসগমান ও অনুস্থানান প্রবাদ এলাকা-সত্ত্বে ভিডিতে পঞ্চাবের উভর অংশের সীমানা নির্দারণ করিতে হইবে এবং এতংগঙ্গে অভাত বিষয়ের প্রতিও লক্ষ্য দিতে হইবে।

১৫ই আগঠের পূর্বে যাহাতে কমিশনের সিদান্ত কার্যাকরী করা সম্ভব হয় তংগ্রতি লক্ষ্য রাধিরা উহার সদস্যবৃদ্ধকে কার্য্য সমাবা এবং রিপোট দাখিল করিতে বলা হইয়াছে।

দীমানা নির্দ্ধারণ সম্পর্কে বাংলার কর্ত্তব্য

বাংলার সীমানা কি ংইবে সে সম্বন্ধ মন থিয় করিবার আন বেশী সময় অবশিষ্ট নাই। অবচ এবনও এ সম্বন্ধ সকলে একমত হইতে পারেন নাই ইছা ছুঃবের বিষয়। এক বংসবের গুলমির জোরে যাট বংসবের সাবনা বার্ব করিয়া দিয়া বাছারা রাজ্যলাভ করিয়াছে, আক্রমণাত্মক মনোভাব ভাহাদের বিন্দাত্র করে নাই, বরং অপ্রভ্যাশিত সাক্লা লাভের পর আরও লোভ বাভিয়াছে। ইংরেজের সাহায় এবং সহাত্ত্তি উভয়ই ভাহাদের পক্ষে। অপর পক্ষে হিশু নেতাদের অনেকের মধ্যেই পরাজিতের রনোভাব সুস্পাই।

বাংলার সীয়া নির্দ্ধেশ একট গুরুতর সমস্যা। বাংলা হইবে ভারতের পূর্ব সীমাভ, ভাষার পার্বে থাকিবে পাকিয়ানের এক ৰও। ছইট ভিন্ন সাৰ্ব্ধভৌম রাজ্য একট গাধারণ সীমা-द्वबाद अभाद अभाद चवशन कतित्व। शाकिशन बाबा-विशादात चाकाकः! शांभम करत नाहे। कुम्रजम शांक-ভানকে বাঁটি কবিয়া সম্ভ ভারতবর্ধ কয় করিয়া উহাকে 'দ্বীনিয়া'তে পরিবত করিবার স্বপ্ন পাকিধানীরা দেবিয়াতে, প্রকাশ এবং প্রচারত করিয়াছে। বর্ষাণে কলিকাতা না পাইলে ভাছারা উছার উপর ছাবি ছাছিবে না এবং ভবিশ্বতে শহরট ভবিকার করিবার চেটা ভাহারা করিবে ইতাও শাসাইয়া রাখিয়াছে। ভারতবর্বের চুইট অংশ অভার ভাবে কাভিয়া গইয়া পাকিছানীদের দেওৱা হইয়াছে ইছা বেমন ভারতবাসী ভূপিতে পারিবে না, তেমনি ছোৱা নাচাইয়া যাতারা ইংরেকের সহায়তার রাজ্যলাভ করিয়াছে ভবিভ্রতে অৱবলে এবং ইংরেজের সাহায়ো তাহারা আবারও ভারতের बाबीनजा विश्वन कवियात (5%) कतिएव मा देवां व वंशा यात मा । স্বভরাং উপযুক্তভাবে বাংলার সীমা নির্ভারণ বেষণ বাঙালার নিকট একট সুস্থাং ও কটল প্রার্থ, ভারতের ভাল প্রথেশও

ভেষ্মি উহা উপেক্ষা করিতে পারে মা। বাংলার সীমানা কার্জ্মী বন্ধ বিভাগের রক্ষকের অথবা চন্দননগর হগলীর অপর সংগ্রেব বলিয়া বাহারা ভাবিতেছেন বাভবের কঠোর অংথাতে ভাহাদের মিদ্রাভঙ্গ হইবেই। কিন্তু আন্ত বারণাবলে আন্ত বিভি ভূগ পরে শা দেওয়া হর তবে ভবিগতে সংশোবনের পর্য বাকিবে মা। বাঙালীর ভবিষাং বংশীরেরা বাহাতে আন্তিকার সীমানা মির্ছারকদের উদ্দেশে অভিশাপ বর্ষণ না করে তংপ্রতি ভীন্ধ দৃষ্টি রাখা কর্ত্তবা।

नाकिश्रानीया त्रशांनशीरक नीभारतथा कविरण हाहिरण्टह । देशांक जाशांत्रत इरेडि गांक चाट्य - श्रथम, चानकक्षणि दिन् এলাকা পাকিছানে পড়িয়া যায়; দিভীয়, কলিকাভা শহর शांकिशात्न याथ । किन्न देश राहां नीत शार्वत अम्मृत विरवादी। अकवा जुलिल इलिय मा य, वाक्षानी जार्जिंड অভিঃ এবং সংগতি রক্ষা করিবার কর অন্ধোণায় ছইয়া বল-विकारित दांकी व्हेंबार्छ। यम-विकात चारमामार्गत अक्याद উদেও ছিল বাঙালী ভাতিকে অবপ্রস্তাবী ধ্বংস হইতে বীচানো। বাংদার উপর দাবি বাঙালীর স্কাঞে। সুস্দ-मान्तवा वाश्माय क्षर्यम कविशास इस मछाकी शृद्ध बदर সংবাধি বাভিয়াখে তিন শতাখীর মবো। তার পূর্বের তিম ছাব্দার বংগরের বাঙালীর পূর্বাল ইতিহাগ লিপিবছ রহিয়াছে। বাংলা বাঙালী স্বাতির দেশ। এক দল বিষয়ী ও বিদেশকৈ উদাৱতাৰশে খান দিয়া এবং বাভিতে দিয়া বাঙালী যে পাপ করিরাছিল ক্লেনের অফেকের বেশী ভূমিখন ভাছাদিগকে ছান্টিতে বাধা হইষা বাঙাদী তাহার প্রায়শ্চিত করিতেছে। चाद द्यान कृर्यमञ् वाडामीत मत्न (यम ना काता।

বাংলার উভয় অংশের মাববানে প্রাকৃতিক সীমারেব: बाका केठिल बदर केरा बकड़े दक नवी रखदार काल. जुलशील शिनारत नौत देश शौकांत कतिशास । वस नशीरक भीशारत थ ক্ষিতে গেলে ভিন্ন সম্প্রদায় অধ্যুষিত বৃহৎ অঞ্চলও শৃতন ব্রাজ্যের অন্তৰ্গত হৰতে পাৱে ইহাও লীগ নীতি হিসাবে মানিয়া मरेबाट्य। अरे इरेष्ठे बृशभीिक अवलश्रत मौरमद स्वावसी দলের মুখপত বাংগার একটি পূর্ব পূঠা মানচিত্রও প্রকাশ ক্ৰিয়াহেন। উহাতে গদানগীকে সীমা হিসাবে দেবাম रहेबाटक, करन कलिकाला महत अबर महीता, सर्माहत, बूनना, हित्यभवत्रभा, कविष्मूत अवर विवास्त्र भवन्त्र मरनश विवाह হিন্দু এদাকা পাকিহানে পড়িয়া সিহাছে। এই দ্বিখ্যা হুঞ্জি ভাঙিয়া সহৰ সভ্য কি ভাহা দেবা যাক। ভায়তবৰ্ষ ও পাকিছানের সীমানা গলা হইতে পারে না। মনকে চোর না ঠারিয়া সহক সরগ সভ্য খীকার করিলে আমরা বলিতে वादा रहेत दा कावकवर्ष अवर करमह बारमा ७ शक्काव बर्द्धव चिक्रिटच चात्र क्**रे**शारक। यत्रक्रियत त्रांक्रमा वक् कविवाद अवर अकारक त्यां (कांद्रवामीद वादि नदेश हुनन-बार्यका (व त्रीनरवारश्व एक्कै क्विदाविल, कावक-विकान

ভাষারই পরিণতি। গলা উত্তর রাজ্যের সীমানা হইলে ভবিষ্যতে অত আকারে এবং আরও সাংঘাতিকভাবে ট্রক এই ব্যাপার চলিতে থাকিবে। ভারতে সাত শত বংগরের মুগলমান রাজ্যে ধেবা যার হিন্দুর মন্দির ভাঙা এবং বিগ্রহ কইয়া বিয়া উহার ধারা ঘরের সিঁছি তৈরি করা তাহালের অভতম মৃগানীতি ছিল। ইহার একমাত্র কারণ পৌওলিকভাবাদী হিন্দুবর্শ্বের প্রতি ইগলামের আভারিক বিষেধ ও ধুণা। ভারতে বিট্রন্দ মন্ত্রীমিশনের আগবনের পর ১৯৪৬ সালের ১ই এপ্রিল দিয়ীতে মুসলিম লীগের যে ক্লভেনশন বসে ভাহাতে গৃহীত প্রভাবে হিন্দু ধর্শ্ব ও ধর্শনের প্রতি যে অনায়ক্তর বিষেধ আয়াচিত ভাবে বিষিত হয় ভাহা এই মনোরভিরই পরিচারক। প্রভাবের উক্ত অংশ নিয়ে প্রথম্ভ ছবল :

"Whereas in this vast sub-continent of India a hundred million Muslims are the adherents of a faith which regulates every department of their life (educational, social, economic and political), whose code is not confined merely to spiritual doctrines and tenets or rituals and ceremonies which stands in sharp contrast to the exclusive nature of Hindu Dharma and Philosophy which has fostered and maintained for thousands of years rigid caste system resulting in the degradation of 60 million human beings to the position of untouchables creation of unnatural barriers between man and man, and super imposition of social and economic inequalities on a large body of the people of this country, and which threatens to reduce Muslims, Christians and other minorities to the status of irredeemable helots, socially and economically;

"Wheras the Hindu caste system is a direct negation of nationalism, equality, democracy and all the noble ideals that Islam stands for;

Whereas different historical backgrounds, traditions cultures, social and economic orders of the Hindus and the Muslims have made impossible the evolution of a single Indian nation inspired by comnaen a tractic; s and ideals and whereas after centuries they still remain two distinct major nations;

ইভাদি। সম্পূৰ্ণ প্ৰস্তাৰ উদ্বত করিবার প্রয়োজন নাই, হিন্দু বৰ্ম দৰ্শন ও আদৰ্শ সম্পৰ্কে পাকিখামীদের মনোভাব কতবানি বিষ্ণ্ৰই এবং ঐতিহাপিক মিৰ্যাবালা কলুবিত ভাহা দেৰাইবাল भक्त अर्हे कृष्टे यापके। अरेकम मानावृत्ति नहेवा (यथारम हरे পক্ষ পূৰ্বক হইভেছে সেবানে গদানদী সীমানা হইলে নিত্য विद्यान अवर पह पिरमञ्ज मरनारे अरवर्ष प्रवक्तावी । शृत्राम्माना পদার এক তীরে পুণার্বিরা পদাস্থান করিবে, অপর ভীরে পঞ काडिया नकारक दक्षिण स्टेटिंग, देशा क्लीक कहाना दलिए: देशदेश पित्न हमित्व ना । चावचीत दुननशास्त्रता अ शावर বে মনোরভির পরিচয় দিরা আসিয়াছে ভারাতে এই আদহ: সবুলক তো বটেই, সামানা নিৰ্দিষ্ট হইবার সঙ্গে সঙ্গে একপ ষ্টবে মনে করিলে অন্যায় হইবে না। এই সব ষ্টনা উপলক্ষ্য করিরা উভর পক্ষে গুলিগোলা চালনা এবং প্রকাশ্য সংঘর্ব বিচিত্র मत्र। अरे जामका एव स्टेट्ड शांदा अकृष्ट बांब छैशांदा, छात्र। ररेट्टर, भन्ना नमीरक छण्य वारभाव जीवाबर्ग निर्दर्भ कता। বেষদাকে দীমানা না করিয়া বহুং আছিবদ বা'কে করা ঘাইতে

পাৰে। এই সম নদীয় গদে বৰ্ষণত কোন স্বৃতি কৃতিত নাই, হত্যাং পথা, বেমনা বা আভিয়ল বঁ লইয়া গোলবালের হ্যাপাত না হুইতে পারে। বড় প্রাকৃতিক নদীকে নীবারেবা ক্ষিতে গেলে পাকিছানে বুহং হিন্দু অঞ্চল পভিলে বহি বোম না হয়, তবে ঠিত ঐ বৃত্তি অসুসারে পথা এবং বেমনা বা আভিয়ল বঁ নীবানা ভবিতে গেলে বাংলার বব্যে ভতভতিল হুসলবান অঞ্চল পভিবে, লীগের পক্তে আপতি ভবিবার হুব থাকিবে না। বাঙালী গলা নদী হাভিতে পারে না প্রাচীন, মধ্য ও আবুনিক হুনে পৌড, নম্বাপ, রুপিলাবার ও কলিভাতা গলাতীরেই গভিয়া উটিয়াছে। গলার অলবারা অব্যাহত রামিবার কত জললী ও নাধাভাতা বাংলার মধ্যে রাধা গরকার। নদীয়া, বশোহর, বুলনা, করিবপুর, বরিশাল এবং চকিবে পরগণার সামাজিক ও বৈম্বিক প্রাণক্ষের এবং শিক্ষাক্ষে কলিভাতা বলিয়া এই হয়ট কেলা বাংলার অন্তর্ভূতিই বাকা উচিত।

পরশ্বর-সংগর হিন্দু ও রুসগরান অঞ্চ পুরক হইবে
সীরানা কবিশনের বিকট ইহাই সর্ব্যেশন বির্দেশ। এ সহতেও
একট ওলতর বিচার্য্য বিবর রহিরাছে। এগনেই বুল নীতি
হিসাবে হির করিরা লওরা হরকার বে হুইট রুহং পরশ্বরসংলগ্ন অঞ্চলর নার্যানে ভির সভায়ারের একট ক্র পকেট
পড়িরা যদি উভয়টির সংবােগ বিভিন্ন হর, তাহা হইলে উভপকেট রুহং অঞ্চলর অভতু ভ হইবে। বড় পকেট কাটিরা
ভাহার ভিতর হিরা করিভার হুট রুহং অংশের সংবােগ-পথে
বাবা-বরশ ইড়াইরা গেলে ভাহা অপসাহিত হইতে পারিবে,
ইহা ভির করিরা লওরা উচিত। এই প্রকার পকেটের আরভ্ব
২০, ৩০ বা ৫০ বর্গনাইলের বেন্দী হইবে না এবন একটা
পারনাপ আনে হইতে হির করিরা লওরা ঘাইতে পারে।

উত্তর বাংলার রেলপথের অবছিতি বিবরে তীক্ত বৃষ্টি রাবিতে হইবে। একই রেল-লাইন উত্তর অঞ্চলের ভিতর বিরা বাহাতে লা বার তাহা বিলেব সতর্কতার নহিত বেধা ব্যৱকার। ক্রেন্সাহার-পার্বতীপুর লাইন পাকিছানে পেলে লালগোলা-গোলাগারী লাইন বাংলার রাবিতে হইবে। বাংলার উত্তর ও বৃত্তিবে বোরাবোর রকার কত বে রেল-লাইন থাকিবে তাহার কোল অংশ বাহাতে পাকিছানের রবের না পড়ে তংগ্রতি লক্ষ্য রাবিতে হইবে। তবিরাতে শক্রতা করিরা পাকিছান বাহাতে লাইন আইকাইরা নটানি করিবার স্থবোগ না পার তাহা এবনই বেবিতে হইবে। তির রাজ্যের লীরা বির্দ্ধেশর নবর তবিব্যুতে উহার শক্রতা করিবার কি কি পথ বাহ্নিতে পারে তাহা আনেই বেবিরা লওবা ব্যৱকার এবং তৃষ্ট্রসারে সতর্ক হওৱা আবশ্যক। বাংলার রাজবাদী করিবার স্থবিত পালিছাবের নীরানা বাহাতে কর পঞ্চে তও বাইল গ্রে বাংলে তাহাও বেবা ব্যৱকার।

্ৰত্নীৰ দীৰ্গ সৰ্বা বাংগা বাস কৰিছে চাহিয়াইল। বাংগাকে বাকিয়াৰে পহিণত কৰিবাহ ক্ষম ভাষায়া সভাদী বিশ্বতে শিভূপুকৰেৰ বন্ধবাতী হাছিবা ভারতের অভাত প্রবেশে হান নংগ্রহের কত নোষ্টণত বিবাহিল। বহু-বিভাগের হারা বাভালী পাকিছানীবের এই উদ্বেশ্য ব্যর্থ করিবা বিবাহে, বাংলার সর্বাশেকা সর্বভিশালী অঞ্চল লীগের কবল হইতে উবার করিবা পাকিছানীবের শক্তি হাল করিবাহে। পাকিছান বাঁট করিবা লীগ ভারত করের ধর কেবিলে বাংলাকে বাঁট করিবা বাহাতে ভাহা ব্যবের কত আন্দোলন করা লভব হয় —লীবানা নির্ভারণের সময় ভাহার ব্যবহা করিতে বেদ আমরা বৃহত্তের ভরেও ভূলিবা না বাই।

#### পাকিস্থানের সংখ্যালঘুদের রক্ষার দায়িত্ব

পূর্ববদের বহু হিন্দু পরিবার সর্বাহ বিক্রম করিরা চলিরা আসিতে আরভ করিরাহেন ইহা অত্যন্ত উর্বোধনক সংবাদ। এইছ সভীন লেন প্রবৃধ পূর্ববদের নেতৃত্বক হানীর হিন্দুন্ধনকে হানভ্যানে নিবেন করিরা আবেদন প্রচার করিরাহেন। পূর্ববদের হিন্দুনের নিরাপভার ননস্যার প্রতি পশ্চিম-বাংগা এবং ভারত-সরকার উভরেরই এবন হুইতে অবহিত থাকা এবং কোনরূপ নিপদ বটলে ভাহার প্রতিকারে অপ্রসর হুইবার বছ প্রভঙ্গ বাকা আবর্তক। এ বিব্যরে পাকিহান প্রতিবাদ বিশ্ব উপলক্ষে আরুত কননভার ভাঃ ভারাপ্রসাদ রুবোপাব্যার বাহা বলিরাহেন ভাহা উল্লেখবোর্যাঃ

"নবগঠিত ভারতীর সরকার ও পাকিছানের বাবিরে অবহিত অভাত অঞ্চলনৈর অলতর কর্তন্য মুইতেতে পাকিছানের হিন্দু ও পিবরের রক্ষা করা। আনাবের বুলনীতিতে তুল করিলে চলিবে না। পাকিছান হাপিত হবার পরেও সমন্যার সমাবান মুইবে না। পাকিছানের বর্ধ বাহারা বেবিতেতেন ভাঁহারা ইসলাবের পভাকা উভাইবার উত্তেও সম্প্র হিন্দুহানের বিকে সভ্য করিরা আহেন। স্করোধ পাকিছানের বাহিরের অঞ্চলভাতিত বিধি বিধ্যা রুস্লির ভোবপের আভ ভাতীরভাবোধে আমরা পরিচালিত হুই তবে আমরা আনাবের ভবিষ্যং উর্ভি ব্যাহত ভবিষ।

অনুষ্ঠের পরিহাসে বে পাকিহান ভারতীর স্বাভীরভা-বোবকে চুড়ান্ত আবাত করিবাহে ভাবার প্রতিবাদ আবদ বিক্সভা বাহাকে সভীর্ণ সাজবারিক আব্যা বেওরা হইছা বাকে নেই প্রতিষ্ঠানকে আহ্বান করিতে হইরাছে। আবহা প্রভ্যেক হিন্দু ও নিবের নিকট অবহার ওক্তম্ব উপান্তি করিবা সহবোসিভার আবেহন করিবাহিলার। নিরোবনি আকালী বল আবারের সহিত সহবোনিভার সম্বত হইরাজেন ভাবারের বভবার স্বাবাই।

পাকিছাৰ ৰাজ্যবাহিক নমন্যায় নমাথাৰ কৰিবে না। বিবেৰ পূজীভূত বইয়া বোলবালের একায় ইইবে। নন্দৃৰ ইন্লাবিক নীভিতে পাকিছাৰ যাই পৰিজ্ঞানিত বুইবৈ একং একাই কংবালবিক্তয়ে উপত্ন বীকে বীকে ভাইনালাভ করিবার বে বীতি আবাদের বিকট একট হুইভেছে ভাহাতে পাকিহানের ভবিবাং বরুপ বুঝ বার। আক পরিভারভাবে বোষণা করিতে হুইবে বে কোর ভাতীর চুক্তি সইরা পাকিহান আসিতেছে না—ভাতির প্রতিবাদ নড়েও পাকিহান হাপিত হুইতে বাইতেতে, ইক-মুসসির বছবর জোর করিরা ইহা আবাদের উপর চাপাইরা দিতেছে এবং ইহা সভব হুইরাছে এইবছ বে, কংপ্রেমের আছ্বাতী ভোষণ নাভিত্র জালে কংপ্রেম বিজেই বরা পভিত্রা পরাজিত'হুইরাছে। সর্প্র হিন্দুস্বাজ্ এই বিবরে এক হুইতে পারে নাই।

পাকিছানকে আনৱা নিশ্চিত বঁটনা বসিরা নানিরা লইব না। আনৱা আশা করিব নে, পাকিছানের সুবৃদ্ধির উদর হইবে এবং অর্থনৈতিক, ভৌগোলিক ইত্যাদি অবছার চাপে বিভক্ত ভারত পুনরার ঐক্যবদ হইবে। ভারতবর্ষ অবগ্রই ঐক্যবদ হইবে। কোন অবহাতেই পঞ্ববাহিনী-ধের ভাহাদের মুরভিস্থি কার্ব্যে পরিপ্ত করিতে ধেওরা হইবে না।

পূৰ্ববদের বিশ্বের সন্পর্কে তিনি বলেন বে, পূর্ববদ্ধ হইতে তরে চলিরা আসিবার কোন প্ররোজন নাই, বিশেষ বাহারা সেইয়ানে থাকিতে পারেন। পূর্ববদের সংখ্যা-লিডিবের বার্থ বাহাতে রক্ষা পার তক্ষ্য এক সম্মেলন আহ্বান করা হইতেছে। ভারতীর গণ-পরিষণ পাকিছানের হিশু ও শিবদের বিবেশী বলিরা কোনবতেই গণ্য করিতে পারিবে না। আনি আশা করি বাহারা ভারতের নাগরিক অবিকার চ্ডাক্তাবে হিন্ন করিবেন তাঁহারা অবিলব্ধে এই বিবরে বিবেচনা করিবেন।

আবাদের চুগ করিবা থাকিলে চলিবে বা। বলি বিটিশ কুটনীতি ও ব্যলমানদের হুবলি ভারতে সাত্ত-ভারিক নীতি জাগাইরা চুলিরা থাকে, ভাষা হুইলে আমরা আমাদের শক্তি ও সংহতির ঘারা সেই বিভেগ দূর করিব।

ভারত ও পাকিস্থান ডে:মিনিয়ন বিন

চরিল কোট ভারতবাদীর হাতে করতা অর্গণের কচ বে ভারত ঘারীনতা বিল প্রণরন করা হইবাহে তাহা পার্লামেন্টে পেল করা হইবাহে। এই বিল অস্থলারে ১৯৪৭ সালের ১৫ই বান্ধট্ট ভারিবে ইভিয়া ও পাকিবান বাবে সুইট ঘারীন ভোমিনিয়ন গঠিত হইবে।

১৫ই আগষ্ট ভারিবে বে গমত অঞ্চল পূর্ববন্ধ ও পশ্চিম-শঞ্চাবের অভতুক্তি হইবে সেই সমত অঞ্চলকেই পাকিছান ভোনিনিয়ান বলা হইবে। ১৯৩৫ বালেয় ভারত শাসন আইন অঞ্চারে বে বাংলা গঠিত হইরাছিল ভাহার কোন অভিছ থাকিবে বা। পূর্ববন্ধ ও পশ্চিমবন্ধ বাবে মুইট দূতন প্রবেশ গঠিত হইবে।

ৰভ্যেক ভোৰিনিবনের আইব নতা ধবি ছিব না ভবেদ

বে একই ব্যক্তি উত্তর ভোনিনিরনের গতর্ণর-ক্রেনারেল হইতে পারিবেল ভাষা হইলে প্রভ্যেক ভোনিনিরনের বত আলাকা একক্স করিরা গতর্ণর-ক্রেনারেল বিরোগ করা হইবে।

আভ্যন্তনীণ ও বৈদেশিক ব্যাপার সন্পর্কে আইন প্রথমন করার পূর্ব করতা প্রভ্যেক সূত্র ভোনিনিরনের আইন সভাকে বেওরা হুইনে। বিক্রীণ আইনের বিরোধী হুইলেও ক্যোন আইনকে বাভিস করা হুইবে না। ১০ই আগঠ ভারিবে বিক্রীণ পরবর্ধিক বিক্রীণ ভারতের পাসনকার্য্য পরিচালনার সমস্থ হারিক ভাগ করিবেন।

কোন বাবেশিক পরিবাদে গুরীত আইন ১৯৩৫ সালের তারতবাসন আইন অহুসারে রাজার অহুবোরনের বত রাবা চলিবে না। রাজা কোন প্রাবেশিক আইনকে অঞার করিতে পারিবেন না। আইনের বিভিন্ন বারাকে কার্যুকরী করার বত ববোপর্ক্ত ব্যবহা অবলবনের ক্ষনতা বক্তনাইকে দেওরা হইবে। বক্তনাই হই ভোষিনিরনের মব্যে সৈতবাহিনী তাগ করিয়া দেওরার নির্বেশ দিবেন। সৈতবাহিনী বিভাগ সম্পূর্ণ বিভাগ পর্যন্ত বক্তনাই সৈতবাহিনীর শৃথলা রক্ষার ব্যবহা করিবেন। ক্ষনতা হভাতরিত হওরার পরও ভোষিনিরনে বে সম্বন্ধ বিটিশ গৈল বাজিবে ভাহাদের উপর বিটিশ গবর্ষে কর্মুক্ত অকুর্ধ বাজিবে।

বর্তমানে ভারতসচিব বে কান্ধ করিতেহিলেন কিছু সমরের ক্ষা মন্ত্রিসভার বে কোন সম্প্রকে ঐ কান্ধ চালাইবার ভার কেওবা হইবে।

বাংলার ভার বর্তমান পঞ্চাব প্রবেশেরও কোন অভিছ বাকিবে না। পশ্চিমপঞ্জাব ও পূর্ব্যপঞ্জাব নাবে ছইট দূতন প্রবেশ গঠিত হইবে। বছলাট কর্তৃক নিযুক্ত বাউথারী ক্ষিশন দূতন প্রবেশের লবভা নির্ভারণ ক্ষিবেন।

এইটাৰ অধিবালিগণ যদি পাকিছান ভোমিনিয়নে বোগ বেওয়ার নিয়াভ এহণ করে তাহা হইলে আনানের এইটকে পূর্ববেদর সহিত রুক্ত করা হইবে।

ভারত-বিভাগের পর পার্লাবেন্টের জোন আইন দুভব ভোগিনিরনে কার্যকরী করা ক্টবে না।

এক সাংবাধিক বৈঠকে ভাৰত-সরকারের স্বাইন্চিব সর্বার ব্যৱভাই প্যাটেন ভারতীর স্বাধীনতা বিদের ভাংপর্য বিশ্লেষণ ভরিষা বলেন, এই বিদের উক্তেও স্ইতেহে বত ক্রত সভব ভাৰতা স্বাভার করা। ইয়ার প্রভ্যেকটি বিধানই সভোব্যক্তক নয়। ইয়ার প্রভ্যেকটি বিধানই সভোব্যক্তক নয়। ইয়ার বব্যে অনেক গল্প বাক্তিত পারে, কিছ সম্বভ্যাপনভারেই কিছু-না-কিছু গল্প বাক্তিয়া বার। অবহার চাপেই কোন শাসনভার সংশোবন করা স্ট্রা বাকে। ভারতের অনেক স্ট্রনাই ইয়াতে অট্টলতা স্ট্র ক্রিবে। এই সম্বভ্যাপনভার স্বা কোন শাসনভারের প্রভেই নভব বর।

ক্ষিত্ৰ একটা কথা ঠিক বে, ১৫ই আগষ্ট আয়ভবৰ্ষ পূৰ্ব বাৰীন বইবে। ভাষতে ইবাই বহুতৰ ব্যবহা। একবাও বলা বায় বে, জোন হাষ্ট্ৰের গড়ক পুৰিবীয় ইভিহানে ইবা অন্যতম ৰেট ভাৰ্য। বিটপ পাণিবাবেটের ইভিহালে এইভাবে (कांग विन बांब डेवांशिंड इस नारे। विनडि ब्रुव नवंब नृशींड रदेएर रजिला जाना करा बाद ।

वक्रमार्टिक बाक्सारम मारवाविक रेवर्डक एक। किमि দৰ্বার প্যাটেলকে ইহাতে সভাপতির করিতে অনুরোধ কৰেব। বিকৰ্ষণ কৰিপনৰ বিঃ ভি. পি. বেনন ভাষতীয় चाबीवका विरामक काश्मर्या वर्णावा करवन ।

विः विनव विनक्षेत्र छारभेग् न्यान्या कवित्रा वर्णन, अरे বিলের স্ক্রাণেক্ষা উল্লেখবোগ্য বিষয় স্ইতেছে সূত্র ভোষি-নির্ম চুইটর আইন সভার পূর্ব কর্ম্মত বীকার করিয়া লওয়া হইবাৰে। ইহা বাবা বিটপ পালিবানেটের সম্ভ কর্তৃত্ব হইতে ভারতবর্ণ বুক্ত হইয়াছে। পুলার ভাষার এই বিলে ভারতের সার্বভৌরত্ব খীকার করা হইরাছে। এবন প্রভ্যেকট ट्यांबिनियरम्ब ११-शिव्य चनावारम बुक्या । १६ क्विए शाबित्य । १४-शिवयत्क कामिनियत्यव शामिबात्यके बार्श काक করার স্বাধীনতা দেওরা হইরাছে।

विः (वसम मर्लन, (काभिनियमस्ययः (व माभ (क्थवा स्ट-बार्ट, ভारा क्रत्यम ७ बूमनिय मौरमब रेम्हाकरम ।

विल (व गावश क्वा स्टेबार्ट, काशब करन विक्रैम পাৰিয়ামেন্টের পক্তে আর কোন ভোবিনিয়নকৈ স্বীকার ভরিয়া লওয়া নিখিছ কিনা কিলাসা করা হইলে সর্বার প্যাটেল বলেন, मुख्य देश किंक बुका यात्र मा। खर्च ४०३ चानरहेल पर ভারতের উপর ত্রিষ্টদ পালিয়াবেকের কোন কর্মত বাকিবে না।

अर्थ--- वस्त्र , वायवधानाव यकि (कामिनियमिव मर्याकाव অন্য বরবাত করে, তবে অবহাটা কি হাড়াইবে গ

वि: व्यवन-रावधवायाम बरेखन प्रवर्गण कविएल नाव । কিছ বিটাশ গবৰে কি ভাষা মন্ত্ৰ কৰিবে কিনা ভাষা খডৱ

बार-बिष्टेन नराव के बहेबन कान बिक्किक रिवादिन कि ৰে, জাৰাৱা আৰু কোন ভোষিনিৱনকৈ খীকাৰ কৰিবেন না ?

विः (यनय-इरेडे (छाविनियम् अछावन) क्या, जाव अक्टेंटक ভোষিনিয়নের মর্ব্যাদা দেওয়া বুব কটিন स्टेटर বৰ্ডবাদ বিলে বেয়াছকে বলিয়াই আমি মনে করি। ভারতীর ভোনিনিরনের অঞ্চু ভ করা হর নাই।

क्षत्र--रेशाय वर्ष कि अरे (व. निकाय यशि वर्ष वान वावश बीकार ना करवन करन त्वतार बारमदानात्वर मरना गरिए १

बि: (यनन-मा, वाहेरन मा, काबन कोरनानिक विक **रहेटच दिवाय मध्यादात्मात चचलू छ : चाहेटनव मिक हरेटच** विद्यास्त्र अधिविविद्यत श्व-शतियाम वादेवाव व्यविकाद नारे । কিছ বাজৰ বিক ক্ইডে অবস্থা বতর। বেরারের সবএ अप्रके जानान-जारनाहबाद कानाद, काकाद कानाद वद । বিভাব এ ব্যাপারে অবৈভিক মনোভাব অবলয়ন করিবেন ৰজিৱা আবার বৰে হয় বা। পাসবভারিক বিক হইছে विश्वां क्षिएंग राया वाया ३०६ चानरहेव शूर्व्य यपि विचाय

ও ভারতীয় হুজয়াষ্ট্রেয় বব্যে কোন নীনাংলা না হয় ভবে বেয়ার একটা অচল অবস্থার পভিবে।

गर्नात गाडिन धरे गरत राजन, विचार पारारे पर्क ৰা কেন, ত্ৰিষ্টপ সহকাৰের সহিত বিভাবের যে সকল স্বিস্ত হিল, ১০ই আগটের পর ভাহা আর বাড়িবে না।

প্ৰশ্ন—ভাষা বুইলে বেৱারের ভাগ্য কে নিৰ্ছাৰণ করিবে গ मर्पाव भारतेम--- (वहारहरू क्षमभ्य । नार्या ना रक्ता भरीक वर्षमान वावधावै हनिएक वाकिएन।

বিঃ মেনন বলেন, আকামান দীপপুঞ্চ ভারতীয় ভোষি-বিষদের অভর্ত কইবে। চুইট ভোরিনিয়নের আভর্জাভক সভা সম্পর্কে প্রশ্ন করা হইলে ভিনি বলেন পার্লিরাবেক্টের আইনের বারা ইহা চড়াডভাবে দ্বির করা বাইবে সা। 🔞 नन्नार्क विषयण अवर जन्माना बांडेरे वाश जनाब जनित्य। ভারতের বহু প্রতিনিধি এবন প্রথিবীর নানা ছানে ছহিছাছে। এইৰণ অহ্বান অনাবাদেই ক্যা বাইতে পাৰে বে, ভারতীয় ভোমিনিরমই ভারতের বর্তমান আন্তর্জাতিক মর্ব্যালা ভোগ क्तिए पाकित्व बदर पाकिशन रहेत्व मूख्य बक्कै (इन।

সভবে ইতিহা আশিসে এক সাংবাধিক বৈঠকে ভারতগচিত লৰ্ড লিটোৰেল ৰেশীৰ বাজ্য সহত্তে বলেন.

"रावनवानाम अन्र विनाइत-नाव अरे प्रेष्टे (प्राप्त बाका আৰু পৰ্যন্ত নিৰেদের সাবীন বলিরা বোৰণা করিবাছে। আরবা আশা করি বে, ভাহারা বে কোন একট গণপরিষদে বোগ দিৰে। ইতিমধ্যে অনেকণ্ডলি রাজ্য যোগ দিয়াছে, অভান্য রাজ্যওলি শীরই বোগদান করিবে। ৬০০ট বেশীর রাজ্যের মধ্যে মাল ছুইট রাজ্য পূর্ব খাবীমভা বোষণা করিয়াতে। আমরা অন্যান্য রাজ্যভানিকে প্রভাবিত করিতে চাছি না ৰলিৱাই ঐ চুইট বাই সহছে আম্বা এবনও কিছু ছিত্ৰ কৰি ৰাই ৰে কোন এক ভোষিনিয়নের সলে বেশীর রাজ্যওলি ৰোগদাৰ কক্ষক ইহাই আমাদের ইছা।"

মান চুইট দেশীৰ হাজ্য খাৰীনতা খোষণা কৰিয়াছে ইয়া क्रिक, क्रिक बूलगीकि रिजारन हरे अपनत और कार्या नरेशारे बिक्रैन नवर्ष के कारारक कानक कानम कविरक नाविरकन, विक जैक्शास्त्र अ विवयत यस शतिकात बाक्कि । कारकावास्त्रक খাৰীৰভা খোষণাৱ পিছৰে ইংৱেজের গুড় সমৰ্থন আছে ইখা बाब कहा खबाद स्टेटर वा । जाद श्वानीद मुक्केन विचादह শাসনভান্তিক প্রানর্শদাভা এবং খন খন দিলী বাভারাভ कविका बाक्शामीब देश्यक क्ष्म्भारक महिल भवामर्ग कविकादे ভিৰি বিভাষকে উক্ত পৱাৰ্থ দিৱাহেন ইহাতে সম্বেহৰাত্ৰ बारे। ब्रिकेन नवर्ष के विदाद सार्क दाविदारस्य रेसा कमा ক্ষিবার বিষয়। ভারতবর্ষকে ভাঙিরা হিন্দুখান ও পাকিছানে পরিণত করা হইরাছে।

গ্ৰণন্ত্ৰের বক্তৃতা

ৰাংলাৰ গৰণৰ লাভ ক্লেভাত্তিক বাংলাৰ পশ্চিৰ-বাংলাৰ **ৰত ক্ষমতাবিহীণ একট সাকী গোপাল বন্তিসভার গঠন বোৰণা** ক্ষিয়া বেভায় বোগে বিয়লিবিভ বভভা বেন:

আৰু হইতে এক বালের কিছু পূর্বে আবি আপনাংকর নিকট বেভার-বভুডা করিরাহিলাব। কিছ এই বর नवरवन वरवारे परवक परैवा परैवा निवारत। किसान ভারতবাসীর বৃত্তে চুড়াড়ভাবে এবং ক্রত ক্রতা বৃত্তাভরিত क्या प्रेटन, जरमन्त्रदर्ग गढ ज्या क्य जावित्य गर्ड माडेके-ব্যাটেন ত্রিটন পরিকলনা বোষণা করেন। ভারতীর বেভরবের ডভেনার সেই পরিকলনা সইরা অবেক দুর অঞ্জনত্ত হওয়া নিয়াছে। ২০শে ভূব ভারিবে বদ-বিভাবের সিহাত করা হয়। বুতৰ ভোবিনিয়ৰ এবং এবেশখলি প্রতিষ্ঠিত হইবার পূর্বা পর্যন্ত কি ভাবে বাংলার শাসন-কাৰ্য্য পৰিচালনা কৰা হইবে, ভাছা সংক্ৰেপে বিৰুভ কৰাই খাৰার বেড়ার-বড়ভার প্রবাব উড়েছ। বিভাবৈষিত্তিক কাৰ্ব্য পৰিচালনাৰ অভ সৰকাৰী হবৰপ্ৰলিকে বে নিৰ্কেশ বেওরা হইরাতে, আপনারা সংবাহণতেই ভাতার বিবরণ व्यविवाद्यम । विः अदेष्ठ, अत्र, श्रवावकी, वाका माकिव्कीम, निः अन, चात्र, नतकात ७ निः छि, अन, जूबार्कीरक नदेश বে বউন-পরিষয় গঠন করা হইরাতে, ভাহাও আপনারা क्षमित्राद्यम अवर देकियत्त्रादे हैक श्रीव्यक्त क्रिके देवर्क হইরা গিরাছে। বহ-বিভাগ দলর্কে প্রত্যেক ওরতর वियासके कांकारक जिल्लाक जनका कहेरत । क्रमानरक ভিভিতে বৰ্তমানে শাসনভাৱ্য পরিচালনা ভরা ভইলেও এবং বউন-পরিষ্টের হলে অক্লচারিত অপিত ভইলেও ্ প্রাহেশিক সরকারের প্রকৃত ক্ষমতা ব্যৱস্থিতির উপর ভত বাভিবে।

বেশ ভিছুদিন হইল আমি কোবালিশন মন্ত্ৰিসভা গঠনের জভ তেটা করিলা আসিরানি, ভিড কোন পক্ট ইবা চাহে নাই। বৰ্ণন বল-বিভাগ অবগুৱাবী বলিলা জানা গেল, ভবন আমি বিকল প্রভাব হিলাবে, আঞ্চলিক মন্ত্রিসভা গঠনের কথা ভূলিয়ানি, কিড এক পঞ্ ইহাতে লাজী হল নাই।

ভারতশাসন আইবের ১৩ বারা প্ররোগের প্রভাবও অনেক নহল হইতে করা হইরাছে। ১৩ বারা কেন প্রবাস করিব না, ভাহার হইট প্রবান করেব রহিরাছে। প্রথমট ব্যক্তিগত, আরার বে রাজনৈতিক শিক্ষা প্রবং নতবান রহিরাছে ভাহা আরাকে কোন এক ব্যক্তি-বিশেবের হতে প্রভূত করতা অর্গণের বিরোধী করিরা ভূলিরাছে। বিতীর ভারবট নাবারণ, ভারতবানীর হতে করতা হাভিরের সময় আরাকে ব'ল ভাহাবের হাভ হইতেই করতা ফাভিরা লইতে হর, তবে ভাহা শোচনীর নীতি-বিরুক্তার ভাক হইবে। ভিত্ত গত ২০শে ভূল ভারিবে বাংলাকে হুইট প্রবেশে ভাগ করিবার প্রভাব রূহীত হইবার পর হইতেই বর্জনান ব্যর্জনার প্রারিভের অসলতি আরি পরিপুর্বভাবেই উপলব্ধি করিতে পারিবাছি।

বৰ্তনাৰ ব্যৱস্থা বিভক্ত বাংলার একাংশের ক্ষরণের প্রতিবিধিক করে বা ।

আবাবের সরভা হইল এবন একটা সরাবাবের উত্তাবন করা, বাহা হুইট বলই বানিরা নইবে এবং তবহু-নারে কাক করিতে রাজী হুইবে। এক্শে এই সরভার একটা সরাবাদ করা দিরাতে।

বাংলা বিভাগ হইবার পূর্বা পর্যন্ত বাংলার পালনকার্য্য পরিচালনার ভঙ এবানে এবং নরানিরীতে

চুইট প্রধান রাজনৈতিক হলের নেতৃত্বভের লয়তি

অস্থাবে নিরলিবিত ব্যবহা করা হইরাছে। পালিবানেকারী হলের নেতা ডাঃ পি. সি. বোবকে

বাংলার অনুসলির অঞ্জের ভঙ একট ব্রিল্ডা বনোনরন
ক্রিতে অসুরোধ করিরাছি।

এই মন্ত্ৰিসভাৱ ভয় বাঁচাদিগকে মনোনীত কয়া रहेर्य, डांशांबा बढी रिजार्य मंग्य अस्य कविर्यय अवर বদ্রি-ভার সৰুল বৈঠকেই বোগ দিতে পারিবেদ কিছ বৰ্মপ্ৰায় মন্ত্ৰিপ্ৰেৰ চন্দ্ৰেই বিভিন্ন চন্দ্ৰৰ পৰিচালনাৰ ভাৰ ৬ছ থাভিবে। ভাহারা যে সকল নীতির উহাবন कवित्वन, छाक्। क्वनमात शूर्वनक श्राताका क्रेट बर পশ্চিমবদের মন্ত্রিসভার সম্বতি হইলে ভবে এই সকল মীতি পশ্চিমবন্ধে প্ৰয়োগ করা বাইবে। যে সকল প্ৰয়ের সহিত পশ্চিম্বন ভড়িত থাকিবে, সেই সকল প্রশ্ন সম্পর্কে পশ্চিমবদের মন্ত্রীদের সহিত আলোচনা করিতে হইবে। কোৰ বিষয়ে বভাবৈকা উপত্তিত ভইলে ভাষা বন্ধি-সভার বৈঠকের নিজ্ঞ অপভিত্ত করিতে ভাবে। পশ্চিম-ৰজের বছিপৰ প্রবোজনীয় কাগকণত চাহিয়া পাঠাইতে পাৰেন, ভোন বিষয়ে যথনা করিতে পারেন এবং ডাঁহারা ৰভ:প্ৰণোষ্টিত হইয়াই বে কোন প্ৰভাব সম্পৰ্কে বিবেচনা করিবার বত হর্তাকে অভুরোধ করিতে পারেন। কেবল যাত্ৰ পশ্চিত্ৰৰক্ষে দক্তি ভাৰ্বসংগ্লিষ্ট বিষয়ে বে ভোৰ बीकि बादना कविवाद व्यविकाद कार्वादक वाकित्व अवर ভাহাত্ৰা ৰে নিভাভ করিবেন, সরকার ভাহাই কার্ব্যে नविनक कविद्यम ।

বর্ত্তবাদের এই অভাভাবিক অবভার ইকাই থেওঁ।
সভাব্য সরাবাদ বলিরা আবার বিবাস। ইকা কার্যকরী
করিরা ভূলিতে ক্ইলে সকলেরই সদিক্ষার প্ররোজন। গভ
করেক নাস বরিরা সকলের বে স্থিকার পরিচর পাইবাহি, আবার গৃঢ় বিবাস বে, বাংলার মুইট বভর সরকার
চুড়াভভাবে প্রতিষ্ঠিত না ক্ররা পর্যন্ত এই অল সরবেও
ভাকা অরাব বাকিবে।

#### কলিকাতায় অশাস্তি

গভ ২৬শে বার্ভ হইডে কলিকাভার আবার বে গোলবোর স্থক হইরাহে ভাষা আর ভিন্নভেই শেব হইডেহে বা। এবন বিৰ প্ৰায় যাত্ৰ বা বেবিৰ কোৰ বা কোন বঁটনা বা ঘটে।
অভকিতে প্ৰচাৰীয় উপৰ ছবিকাৰাত, টাৰ চড়াও হইবা বালী
টাৰিবা নাবাইবা তাহাবের উপৰ আক্ষৰণ, বাসের উপর
আক্ষৰণ প্রায়ই চলিতেতে। এরপ কোন কোন আক্ষৰণ
প্ৰিস পিকেটের চোবের উপর বটরাতে ত্বাণি তাহারা
আভ্যারীয়ের প্রেথার করিতে ত্বাণা আক্ষান্ত ব্যক্তিবের বজা
করিতে ত্বান্তর হয় নাই প্রন্থ অভিবান প্রায়ই শোনা
বাইতেতে। বলুকহাতে পাভিরকার বোতারেন হইবাও
কর্তবাপান্তর এইরপ ত্বাহেলা সহতে পাঞ্যাবী পুলিস এবং
গোৱা সৈত্তের নাবই বেনী উটিতেতে।

শান্তিরকার জড় কলিকাতা শহর এত দিন চুইট পুলিস জেলার বিভক্ত ছিল এবং প্রভাকে জেলার ভার ছিল এক अक सम (७१६ कमिनमादाद छेनद । सून मान स्टेर्फ मानम-ৰৌকৰ্ব্যের ভব কলিকাতা তিনট পুলিস ভেলার বিভক্ত क्टेबाटक। देखरविकाश्रद चबीटन चाटक निक्रमिविक बाना-चनि :-- भारपूर्व, (बाकारानान, वहेलना, चारहार्ट होहै, कार्येश्व, होरश्व, वानिकल्ला अवर (वनिवावाहै।। विकालंद (क्यूड़े क्यिनमांद वि: शक्किकीन बव: बाइड़े बामांद चार शांध चिक्रमांत्रस्य वृत्या नीष्ठक्षय युग्नमाम । यक्ष्याचात्र ৰোভাগাকো, বছৰাবার, হেরার খ্লাট, বুটিপাভা, ভালতলা ও ইকালি এই সাভট বানা লইৱা বব্য কলিকাতা কেলা গঠিত হুইয়াছে। উহার ভেপুট ক্ষিণ্নার মি: গড়র এবং লাভট बाबाइ बट्या नीइडेटलरे चकिनाइ देव-हार्क दुननवान । प्रक्रिय क्लाव चाटक चाडेके बाना :-- गार्क होते, एक्टिश्न, श्रवाडेनक्, আলিপুর, বেনিয়াপুরুর, বালিগঞ্ টালিগঞ্ ও ভবানীপুর। এই क्लाइ (क्लड़ कविम्माद मि: मुदेशम अर: देशांसद हातिहैद ভারপ্রাপ্ত অভিসার বুসলবান। বে শহরে হিন্দু অবিবাসীর সংখ্যা ভিন-চতুৰ্বাংশ এবং মোট সম্পত্তির ৯০ ভারের বালিক হিত সেই শহরের শান্তিরকা কার্ব্যে হিন্দুদের কোন ছান নাই।

হিন্দ্ৰের বাব বিরা লাগ ববি সদরে শান্তি রক্ষা করিছে পারিতেন ভবে আনাদের বলিবার বিশেষ কিছু বাকিত না। সহরের লোক নির্কিন্তে সর্ব্বের বাভারাত করিতে পারিবে, দৈনন্দিন জীবিকানির্কাহে কাহাকেও বাবাপ্রাপ্ত হইতে হইবে না; আভভারীর অভকিত প্রবিকানাদের কর্মকভার কলে একণ অবহা কিরিরা আসিলে আনরা কিছু বলিভান না। কিছু প্রকাশ করিয়া আসিলে আনরা কিছু বলিভান না। কিছু প্রকাশ ভারার ঠিক বিপরীত। শহরের উপক্রভ এলাকাওলি বেবিলেই কাহারা উপক্রবকারী ভাহা বৃর্বিতে কঠ হর না, উহা প্রকাশ করিবার উপায় বা বাকিলেও শহরবাসী-ক্রে ববের বাহারা ববর রাবেন ভাবাকের আনিবার ও বৃত্তিবার পক্ষে বাবা নাই। আক্রমণের হান প্রকাশ বন্ধ করার আক্রমণ করে বাই, ওবু কভকওলি নিরীহ অভ লোক না ভানিরা ঐ সম্বাক্ত নিরাই আক্রমণ বিরাই আক্রমণ বিরাই বারারা পরিতেতে।

ব্যা-ক্লিকাভার তেপ্ট ক্রিপ্নার বিঃ গর্ব আর ক্রেক্নান হবল ঐ পরে প্রবোশন পাইরাছেন। তিনি ন্বাপেকা
অবচ বহু অভিজ্ঞর ও তাঁহা অপেকা বক্ত লোককে নার বিরা
এই ব্যক্তিকে নার্য্যারিক কারনে বব্য-ক্লিকাভার ভার বেওরা
হইরাছে। ইনি বব্য-ক্লিকাভার ভার প্রহণের পরবিন
হইতেই ন্তন করিরা নোলবোন এই জেলার স্থান ক্রিরাছে।
উভর ও বব্য-ক্লিকাভার লাভিরক্ষাকার্য রুই কন রুসন্মান
ভেপ্ট ক্রিপনারের অধীনে কি ভাবে চলিক্তেছে নিমে প্রক্ত
ক্ষ নানের হিলাব হইতে ভাহা প্রতীহনান হইবে। এই
হইটিয় বব্যে আবার বব্য-ক্লিকাভার অবহা অবেক বারাণ।
১লা ক্র হুইতে বে নব বানার প্রনাকার লোক আকাভ হুইরা
আতভারী কর্ত্বক আহত বা নিহ্ন হুইয়াছে ভাহাকের
নাম:

>লা ভূম : উভর—দীরব। মধ্য—বভবাজার, জোভানীকো। হচ্চিব—পার্ক ট্রাট।

ংরা জুন ঃ উভর---আনহার্ক বিট । ব্যা---আসতলা । ব্যাক----নীরব ।

তরা জ্ব: উভর---নীরব। মধ্য---বছৰাজার, বছৰাজার। ভজিগ--- বেনিয়াপুকুর।

ঠা কুব: উভর—বাণিকওলা।
 মধ্য—বভবাভার।
 বিভিন—বীরব।

e ই জুৰ ঃ উত্তৰ---(বলিবাঘাটা। মন্য----------------। দক্ষিণ------------।

৭ই জুৰ: উত্তৱ-নীয়ৰ। মধ্য-জোডাৰ্নাকো। ছজিব-নীয়ৰ।

⇒ই জুন: উভর—নীরব। মধ্য—বহুবাজার। দক্তিৰ—পার্ক ট্রীট।

১০ই ज्य : উख्त-मीवय । यदा--वश्याचात्र, दृष्टिणाणा, खानखना, देखीली । विज्य-नीवय ।

>>दे जून : डेस्ड---जानसंड द्वीडे । मन्य---चरनांकांत्र । क्ष्मिन---नीवन ।

**५०२ एव : छेडव---(विवाबार्डा** । वरा---वक्षाकाव, ब्राह्मीका, कालका। ्रचित--जीवन् । ১৩ই ভূগ ३ উভয—বেলিয়াবাটা। र्माण्य-वीवर । >०रे पूष: ७७४—(वांगवांवांका । वश--- वद्याकाव विषय--- है। जिन्न । 30र **जून : क्वन---नी**यन । ষধ্য—হুচিপাড়া, ভালভলা, ইন্টালী। शंक्य-- मीवर । ১१र चून : उल्ड-- जानशार्ट होते। वर)---वीवर । प्रक्रिय-धराष्ट्रेतश्च । ১৮२ पून: ७७३—(वनिवापार्छ) । वरा---(काकामीटका । क्ष्मिन-नीवव । ১৯শে जून : डेस्ट --बानशर्ट द्वीडे । मन्।---(रमान होते। विषय-नीवय । २०८७ पून : ७७४--मीतन । ৰণ্য---ৰড়বাজার, হেরার হীট, ভালভলা। र्षाभ्य-नीत्रव । २)८म जून: डेडब---वानराहे क्षेत्रे। वरा---वक्रवाकाव,(रवाक दीके,द्विभाका, कालकना। र्माप्य-भीवव । २२८म जून : डेक्स--जामरार्ड क्षेत्रे। নশ্য---বহুৰাজাৱ, জোড়ালাকো, বৃদ্ভিপাড়া, ভালভলা ৷ विक्य-नीवर । २०८म जून : डेलब--म्यामपूर्व, (विवासीते। ৰণ্য--হেরার ট্রাট, বুচিপাড়া, ভালভলা,ইভালী। विक्-मीत्रव । २८८म जूम: डेखब-जावराई द्वीहे, (बनिवाबाही। वरा-- वहराचात्र, वृष्टिभाषा, वानचना, देखानी । एक्नि--मीहर । २०८५ जून: छेक्त---(विवासकिं, जानसके क्रिके। ষণ্য---বছৰাভার, ভোডাগাঁকো; যুচিপাড়া। प्रक्रि---(विद्यानुक्ष । २७८म जून : উखन--- चानरार्ड द्वीर्ड । বৰ্য-বহুৰাজার, জোড়ালীজো, বুচিপাড়া, ভাৰতলা, ইকালী।

श्विम-नीवन ।

२१८म सून : डेखरं--वानिक्चनां, (विश्वाचारी, पावचार्ट होते। ৰবা—বহুবাজায়, জোডাৰ কো, ইউালী। एक्नि--नीवय । २৮८म जून : डेक्ड--(विश्वाचार्ती, जावस्व की है। मना---नीवन । पश्चिम---वाणिशश्च । २>८म जूम : উভद--कामीनूब, हीरनूब, बानिक्छणा, বেলিয়াবাটা। ্ষব্য—বহুবাজান, জোড়াসাঁকো, বুচিপাড়া, ভাৰতৰা। एक्नि--नीवन । ৩০শে জুন: উত্তর-চীংপুর, মাণিকভলা, বেলিয়াগাটা, चावराडे डीहे। वग---रेकानी । पचिन--- ७वाडेनकः **জীহটের গণভো**ট

এই বৰভোষ্ট সহছে ভাষাবেদ পৰিভ্যাদ পূৰ্বাক ধীৰে-প্ৰয়ে চিত্ৰা কৰিবা শ্ৰীষ্টবাসীকে কৰ্মব্য নিৰ্মান্তৰে অঞ্চলত ररेट ररेटचर । १२ ७ ४३ चूमारे ननटमा अरटन ভারিব, পুভরাং সময় নোটেই নাই। এই আসাম হইভে বিহিন্ন হইবা পূৰ্বা পাকিছানে হুক্ত হইলে ঐ কেলার অধি-ৰাসীৰের ডভ হইবে ভি অভত হইবে গণভোটের প্রাভাগে ইহাই একমান্ত বিচাৰ্য্য বিষয়। সীপ পক্ষ হুইতে যে প্ৰচাৰ-ভাষ্য চলিভেছে ভালাভে পাকিলাৰে ৰোগলৰ করিলে ইন-नाविक पर्वदास्का वार्यमनाक प्रकृति अपर विक्र्यात पाकित्न গোলামী করিতে হইবে এই কাঁকা বুলি ভিন্ন লারগর্ড জোন बुक्ति नारे। शाकिशानी पर्व वा रिक्शानी महक विवासहा প্রবল কোলাহল ভষ্ট করিলেই এইবালীরা আলিয়া পাকি-ছাবের পক্ষে ভোট বিবে ইহা আমরা বিবাস করিছে পারিভেছি না। পূর্ব পাকিছান ভাষার ভিডিভে গঠত এবেদ बार पर्ड स्टेरकार मा, जांबरका अकारम काम्बा नरेवा विरम्पी बाबाबर्टन देश वर्षन क्या स्टेस्टर । अस्तेनानी देशस्य ৰোগৰাৰ কৰিলে পৰে বৰৰ অভুতাপ কৰিবাৰ বৰৰ আনিবে ভবন ভাহাকে ব্ৰহ্ম কৰিবাৰ কেহ বাহ্মিৰে না। এইইবাসীয় প্ৰতি হয়ৰ পাকিছানীবের বনের কথা নয়, জীহটের প্ৰাছতিক ও ধনিত্ব সম্পধের উপর লোভ লীগকে ঞ্রীষ্ট কুলিগত করিতে প্ৰসুদ্ধ কৰিবাহে।

বাবি প্রতিষ্ঠানের বিশিষ্ট কর্মী জীবৃক্ত অপূর্বাক্ষর বালগুও একটি বিবৃতিতে জীব্টবালীর কর্তব্য লবকে বে আলোচনা করিরাকেন তাকা বিশেষতাকে উল্লেখবোগ্য। জীব্ট ও পূর্বা-বলের নাধারণ চাবী গৃহক্তের অবহা ফুলনা করিয়া তিনি কেবাইরাকেন বে জীব্টের চাবী গৃহত্ব অরাতাকে না ধাইরা কলে বলে বরে না, কাপকের অভাবে গলার বৃত্তি বেলা না। বাংলার পঞ্চালের বয়ন্তরে পরিপ্রিশ লক্ষ লোক অনশনে বরিরাছে। প্রভ্যেক বংগরই কিছু-না-কিছু লোক পূর্ববাদে বা
পাইরা অথবা অনশনক্ষরিত রোগে বরে, এইবারও বরিতেছে।
পূর্ববাদের প্রবান উপার্ক্সনহান হিল আসার। প্রতি বংসর
হাজারে-লাবে আসারে নিরা কন বাটরা অর্থোপার্ক্রন করিত।
এবার লীগ নেতাবের আসার অভিযানের ভাঁওভার পড়িরা
ভাহারা সরপ্র আসারবাসীকে এবন ভাবে চটাইরাছে বে আর
ভাহারের আসারে হান হইবে কিলা সক্ষেত্ত। বর্ষনাসিংহ,
রিপুরা, নোরাধানী প্রভৃতির বস্ত্রেরা এত অভাবপ্রত বে
ভাহারা অভি অল বস্ত্রীতে কাক করে। প্রহুটেও ইহারা কাক
করিতে আলে এবং বহু হলে অল বস্ত্রীতে কাক লইবা প্রহুটবাসীব্রের ক্ষতি করে। প্রহুট পাকিছানে বোগ হিলে আসার
প্রবনে বাবারাপ্র এই সব বল প্রহুটবাসীর বাক্ষিকে বাবারাণানের শভি প্রহুটবাসীর বাক্ষিকে বাবারানের বাক্ষিকে বাবারানের লভি প্রহুটবাসীর বাক্ষিকে বাব

পূर्कारद्वत क्रमभरका। क्रमित क्रममात्र क्रकारिक। क्रका কল্যারণানা নাই, অভিবিক্ত লোকের উপার্কনের কোন भवक (बाना बाहे। जवन क्षणबाद भार्ड। करे भार्ड नरेवा দীগ নেভাৱা স্বপ্নদৌধ পভিভেছেন। বাছৰ জীবৰে উচা भीर स्टेटर मा. स्टेटर छात्मद श्रीमाप। जीन स्वछा ज्वारकी লাহেব বলিৱাছেন ৰে পাকিছানের পাঠের ভত সম্প্র বিধ ভাহার পারে আদিরা দুটাইর। পড়িবে। কিন্তু বুদ্ধের সাভ वरमब ममम बारमात मार्ड छाषाबर पाछत पूर्वाव बिन अवर সম্ভ্ৰ বিৰক্ষে পাট ক্ৰম্ব ব্যাপাৱে ভিনি সভাই স্থাতের বুঠায় পুরিবার প্রবোগও পাইরাছিলেন। কিন্তু ভাহার সভাবহার ভিনি করেন নাই। পাঠের খণ্ড বাহার। ভাহার পারে দুটাইতে বাব্য হইত, ভোটের বত ভিনিই ভারাদের বুটের किछा वैविद्या विद्याद्यम । शाकिशास देशास्त्र देशच विष्यान বাজিবে এবং এই গৈঃসাহাব্যের মত ভবিভতেও তিনি ভাভাবের বিকট হইতে পাটের ভাব্য দাব আদার ক্রিতে পারিবের কিনা সন্দেহ। তা ছাড়া বিন্দুহান এলাকাতে পাটের ক্ষি বে পরিবাণ থাকিবা যাইবে তাহাতে ত্রিপ লক नार्डेड लाडे क्विट्ड लादिया । लाटेड यार्ड वार्षिक हारियाव পরিয়ার পঞাপ লক গাঁইট।

পূর্বাবের জনসাধারণের অসহ দারিক্রের কারণ অত্যবিক্
জনসংখ্যা এবং ভবহুপাতে চাবের করির অভাব, কলভারবানারও অভাব। সে কারণ উপার্জনের বাভ তাহাদিগকে
বিবেশে বাইতে হয়। এইট পূর্বাবদের সহিত বিলিত হইলে
পূর্বাবদের অভিরিক্ত অধিবাসী এইটে আসিবেই। উহা বছ
ভারিবার কোনই পথ থাতিবে না এবং এইজীবাসীবের বাঙরার
কোন হান থাকিবে না। অবচ এইট আসাবে থাকিনে
আসাবের বহু কাঁকা ভারগায় গিরা বসবানের আইনসকত পথ
ভাষ্যে সাম্বনে বোলা থাকিবে। পাকিহানে ভিডিলে এইটবাসীর অবহাত নোরাধানীর বভ ইভাইবে। ভবন নোরা

বালীর ভূমিবীৰ, উপার্জনের পহাবিধীৰ হতিত বুসলমানের বভ **बैर्टिंड वर्ष्यान विम्-बुननबाद्या वर्ष्यवदिवदक्थ द्यावान** টুকরী বাধার করিবা পেটের বাধার বাহির হুইডে হইবে। কিছ বাহির হইরা বাওরার পণ এইহাসীর আর বাকিবে না। আনাবের বরজা একবার নিজ হাতে रक कविया विवास शय आवाद हैना बुलियान समा प्रस्थात করা চলিবে না। বেলুচিছানের বল্লছবিভে গিরা বল্লছার निकाद-नामती रुखा हाका चना नवक वाकित्व मा। শিলচর বাইভে হইলে পানপোর্ট লাগিবে। ছিম্মান সর-কারের বাট-কাটার লোকের প্রয়োজন ক্রলে ভবেই এংটের হিন্দু-মুসলমান বিবেশীকে চুকিতে বিবে, না থাঞ্চিলে ৰিবে না। চুকিতে না দিলে অবছাটা কি ছইবে সেটা উপলব্ধি করা ঘরকার। চাবের অমি থাকিবে না, উপার্জনের भव वाकित्व मां, वाडेवांत हाम वाकित्व मां। कन विक्रिष्ठ ৰুতা। সাধারণ লোকে অনেকে ভাবিতে পারেন বে হিন্দুছান शक्तिहान बारमाद खबावर्षी नवकात वा चानारवत ववकारे সভ্ৰকাত্তের মৃত্যু একটা কিছু ঘটবে। অনুসাধাত্ত অবাবে এক ভান হইতে খনাত্ৰ বাভাৱাত কৰিতে পাৰিবে। প্ৰক্লড ব্যাপার কিছ ভাহার টক উণ্টা। পাকিয়ান হইতে হিনুহানে বিদা অনুষ্ঠিতে যাভাৱাত করা অসভব হইবে। বাঁইতে पंडिए बाबाच्यांनी स्टेर्स, ७६ जानांत स्टेर्स, भाकिशास्त्र টাকা বিজুহাৰে চলিবে মা, প্ৰভৱাৎ ৰাটা দিহা টাকা वक्नादेटण स्टेटन । जाना-वाध्या मरकनाना ट्या स्टेटनरे ना. चविक्य बंद्रा अवर बाद्यमाद अकृत्यव स्ट्रेटर ।

#### আবার চুভিক্ষের আশঙ্কা

কেন্দ্রীয় বাভ বিভাগের কনৈক সরকারী র্বপান সংবাহপত্র প্রতিনিবির নিকট বলিরাহেন, "আনরা বর্তমানে যে বাভসভটের সম্বীন হইভেছি গত তিন বংসরের মধ্যে ভারতবর্ষে
এত বড় সরুট আর বেবা বের নাই। নেপ্টেগর মাস
পর্যন্ত এই সরুট চলিবে বলিরা আপতা করা বাইভেছে।
এই সমর্টা উত্তীর্ণ হইলে বিবেশ হইভে বার্যশন্ত ভারতে
পৌহিতে আরম্ভ করিবে। উত্তর-ভারতে গম সংগ্রহের
হিসাবে দেবা বার যে সেবানে অবহা আরও বারাণ হইরাহে।
মব্য-ভারতে এবং পঞ্জাবে আপান্তরূপ কসল করে নাই।
ভারত-সরকার নির্মানিত তিনট উপারে বর্তমান সম্ভট
অতিক্রম করিবার চেটা করিভেছেন: (১) কেশের আভ্যন্তরীণ
বার্য সংগ্রহের পরিষাণ রৃত্তি, (২) বর্তমান রুভু বার্যশন্ত
সংগ্রহক, (৩) বিবেশ হইতে বার্য আন্ন্র্যানী।"

সরকারী প্রতিনিধি অভঃপর বলেন বে, প্রভ্যেক থান্য নাট্ডি অকলের শাসনকর্তৃপক্ষকে থান্যপাতের অরস্থা সন্দর্কে সম্বর্ক করিয়া বিবার প্রত প্রত্যেক অকলের আগারী ভিন রানের বিবাধ প্রত করা ক্ষাতে এবং আহাতে বর্ত্তবাদ যতুত বাহ্যপতের পরিবাশ, আভ্যন্তরীণ বাহ্যসংএতের পভাব্য পরিবাণ ও প্রভ্যাশিত বাহ্যপত আম্বানীর পরিবাণ বেবান দ্বরাহে। প্রভ্যেক অঞ্চকে আত্যন্তরীণ বাদ্যশন্ত-সংগ্রহ-कार्राव वर्षाम्बर देविक कविनाव क्षेत्र वना स्टेबार्ट ।

148

গত বংগর যাত্রাজে বাল্যশন্ত-সংগ্রহ-কার্য হইরাহিল हबरकार । अ वरमर (म हमनार मिनीटम्छ जानाहरू न वाह-पंच गरबर क्या याव गारे। शक्षाद्य राजामाव वक्ष्य चानीव ধাৰ্যপঞ্জ সংএছ-কাৰ্য্য আশাস্থাপ হয় নাই, বাংলাদেশে ৰোটাৰ্টভাবে সংগ্ৰহকাৰ্য চলিভেছে, সিমুগ্ৰহেশে চমংকার কাৰ ব্ৰভেৰে, এবং মুক্তপ্ৰবেশেও সংগ্ৰহের কাৰ চলিভেৰে।

श्राक वाहे कि चक्कारक बरे छैनरबनेक रवका व्हेबारक ৰে, বিৰেশ হইতে বাদ্যশন্ত ভাৱতে পৌছিবার পূৰ্বেই যাহাতে ভাহাৰের মৃত্ত বাহ্যপত্ত নিংশের হইয়া না বার নেই উদেভে ৰুছত বাল ব্ইতেই আরও কিছুকাল বালপত সরবরাহের ব্যবস্থা ক্ষিতে হইবে। এই উপৰেশ অপ্নয়ী কোন কোনও অঞ্চের ক্রপক সাময়িক ব্যবহা হিসাবে ভাঁহাদের বাদ্য ব্যাক্তে পরিবাণ ইতিবধ্যেই হ্রাস করিবা দিয়াছেন; অভেরাও শীরই बहेब्रम् कविट्यम् विन्धा याम्। कवा यादः। वर्षवाटनव देशमिक >६ बाउन स्टेट (द श्रीवान ववाक क्यारेश (प्रवश स्टेट्र ভাষা ক্তক্ষা পূৰণ কৰিবাৰ বাত বাট্ডি অঞ্লগৰূহে ছোলা **भाजीदेवाच वावचा क्या व्हेबाट्ट** ।

**এই चलारवर नमर जामारवर मारन नारक जिन नक हैन** ৰাহ্যপত আহহানীর প্রয়োজন। কিন্তু আহরা ভূন যালে এক লক চৌৰট হাজাৰ টৰ , খুলাই বালে এক লক উনালি হাজার ষ্ট্ৰৰ এবং আগ**ই যা**গে যাত্ৰ এক লক্ষ এগাৰ হাকাৰ টন *বাহা*-भक्ष विरक्षम स्टेरक चारकारी कहिएक शाहिर रजिसा चाना ক্রিতে পারি। আবাবের বত নির্ছারিত বরাক হাড়াও चानायी जिन बारनव चन चन्नती बतारकत चारनव चाछ-कांचिक खब्बी बारामविष्टास्य निकृष्ठे क्या स्टेशायिम अवर পরিবদ অধুরণ একট বরাভ করিবাছেনও বটে, কিছ উহা े जानारण्य जन्मी व्यवाज्यस्य जूनमार ज्यम ज्य ।

পুৰিবীৰ অভান্য অংশেও ভাৰতের কন্য বাহ্য সংগ্ৰহের (इंडी इनिटक्टर । जाराव क्नाक्न नरस्कर निद्व कानान रहेन :

चार्किनेना :---बक्डे हुक्तिय कर क्वावाकी हनिरहर । কিছ কোনও অবহাতেই আগঠ নাসের শেব ভাগের পূর্বে সৰবৰাৰ ভাৰতে পৌৰিতে পাৰে না।

चट्डेनिया :---चिनार चित्रिक श्रेय शांडीरेगांव शांत्रश कविवाद कर बानानं-बारनाहना हानाहरू अक वन कैक्शनद **पर्यकाबीरक पर्देशिका गाउँगि परेबारक।** 

चार्मिका :--- नव महरवार्ट्ड क्यांनाकी हालाहरू अक 'अधिनिरि रण अधारमंत्र अस् अधार निरन्तमा सन्ना स्टेटणस् धंदर बरे दिवार पानात्वर बिचिनिनिन पुरुषाई ७ कानाण नवकारबर नरक पनिष्ठ नररवीन बका कविदा अनिवारबन। আৰও মৰণা পাইবাৰ খ্যাপাৰে কাৰাভা আৰাবিগকে পূৰ্ব সৰ্বনের প্রতিশ্রুতি দিরাছে।

**कृतक :---कृतरकत जनावृद्धित एक्टन जानारएत नताक ৮**८ হাজার টনের ছলে যাত্র ৭৪ হাজার টন পন পাইব বলিয়া **छुतक नवकात जानावित्र क् जानाविदादक ।** 

এডহাতীত শভ সংগ্রহের বল আবিসিনিয়া ও ইয়াকে चामवा बरक्ड निर्क कविवादि बनः পূर्य-चाक्रिकाव ভावजीव প্ৰতিনিবিক ক্ষতা বেওৱা হইয়াহে বে, সেধানে হাবে খাবে বে অৱ ৰাজ্যত পাওৱা হাৰ ভাহা ভিনি ক্ষয় কৰিছে পাছিবেৰ।

ওবাশিংট্ৰছিত ভারতীর দূভাবাদের বাদ্যসংক্রান্ত উপদেঠা মিঃ অভবদৰ জানাইবাছেন বে আমেরিকান জাহাজের ংর্মটের মত ভারতে বাহাশত রঙানীতে হারণ বাধা পভিয়াহে। ইহা হাড়া জন্যান্য অনুবিধা ভো আহেই। ভিনি वर्णन (व. ১৯৪१-৪৮ সালের প্রথম ভিন মাসে বাহির হইতে প্ৰেরণবোগ্য যোট বরাদ খাদ্যশন্ত ৬ লক্ষ টন না করিয়া ১ লক ট্রব করা হউক বলিয়া আন্তর্জাতিক কুড কাউলিলে দাবি করা হইরাহিল। কিও কমিট ইহাতে অগলত হইরাহে। তবে এটুকু আখান দিয়াছে বে আর্চ্ছেটিনা, ভুৱন্ধ প্রভৃতি দেশ হইতে অভিৱিক্ত কৰল পাওৱা গেলে ভারতের দাবি সহায়-ভূতির সহিত বিবেচিত হইবে। বি: কে এল পাঞ্চাবী দেশে কিরিরা বে রিপোট দিরাহেন ভাহাতে বেবা বার আন্তর্জাতিক সুভ কাউলিলে বৌৰিক সহাপ্ৰভৃতি বে পরিমাণ মিলিভেছে ৰাষ্য ভদপ্ৰণাতে পাওৱা ঘাইভেছে না। কাউলিল মারকং ভারতের বাধ্যাভাবের প্রবোগ লইরা 🥫 😮 ধনিক পৰাৰ্থ প্ৰভৃতি সভা দৱে আদাৰ কৰিবাৰ ক্ৰম সমুক্তৰা-ক্ষিত্ৰ মনোত্বভিও বেন জমণ: পৰিস্কৃট হুইয়া উটিয়াছে।

ভাপানী বুৰের সময় হইতে ভারতে বাহ্যাভাব বেদ চির-সাৰী ব্ৰয়া হাড়াইয়াৰে। ১৯৪২ সালে প্ৰেগৰী কৰিট বাধ্যা-ভাব দুৱীকরণের উপায়দ্রণ বে-সব পছা নির্দেশ করিয়া -বিবাহিলেৰ ভাষার প্রার কোনটই কার্ব্যে প্রয়ক্ত হর নাই। ক্ষণ বৃদ্ধি আন্দোলন প্রভৃতির ভার করেকট বরচের বকা বাহিরা দইরা কোট কোট চাঁকা অপচর দ্ইরাহে বার, কাক किहरे एव गारे। जबव शांकिए वन जक है त्वव अकड़े विकार्य গড়িবার প্ররোজনীরভার উপর প্রেগরী করিট বুব বেশী বৌক विदाबिरामम । १৯৪८ मारमद आहर्राह वरमरह जावज-जबकाब अवर वारमाब महाब इक्किनिक बादमीक नव-কাৰেৱা উহা কৰিতে পান্ধিতেন । কিন্তু কৰেন নাই। ছাৰ্ডক থাড়ের উপর আদিরা পড়িলে ওাঁহারা হাহাকার ক্ষিতে बारकन किन जनत बाकिएक मन्यान विज्ञा कर्मन केश्नावन বাড়াইবা হতিক্ষের হারী ও প্রকৃত প্রতিকারের কেটা ভাঁহারী **क्रांचन ना । प्रक्रिंक्य जानकाश्व कारे क्रांचनितरे प्राप्त ना ।** 

## গণশিকাঃ ইহার উদ্দেশ্য ও আয়োজন

#### শ্রীনারাম্বণচন্দ্র চন্দ

শিকা শক্তির উৎস, একথা মামুষের পক্ষে ব্যক্তিগত জীবনে বেমন সভা, সমষ্টিগত জাতীয় জীবনে ভ্রেমনই সমভাবে সতা। দেহের এবং মনের অন্তনিচিত থপ্ত শক্তিসমূহের বিকাশ ঘটাইয়া পূর্বভালান করিতে পাতিলে অর্থাৎ সক্ষম বিশিষ্ঠ দেহ ও সবল সক্ৰিয় উন্নত মন একত্ৰে গড়িয়া তুলিতে পারিলে ভবে শিক্ষার সার্থকতা। এইভাবে পূর্ণশিক্ষাপ্রাপ্ত মাহুষ শক্তির আধার : এইরপ মাপুষের শক্তিগ্ৰন্থ । বর্তমানের শিকিত म डारम्भ বুঝিয়াছে যে, জাতির শক্তি বৃদ্ধি করিতে হইলে ভুধু মারণাল্কের ধ্বংস্কারী ক্ষমতা বাড়াইলেই চলিবে না. দেশের জনগণকে বিভাবলৈ বলীয়ান করিয়া তুলিতে হইবে। কেননা বিভার আলোকপাতে মাহুযের মধ্যে যে শক্তি-সঞ্চার করা যায় মারণান্ত ভাহার তুলনায় ভুচ্ছ। এ শক্তি শুধু যে শক্রুর দানবীয় দম্ভ চুর্ণ করিতে সমর্থ ভাষা নয়, रेहात अधान रिविष्ठा वह स्य. हेश स्ट्रेष्टियमा । निकाध শক্তিমান জনগণ বাহিম্বের আঘাত প্রতিবোধ করিতে যেমন শব্দম, মানুষের মত বাঁচিতে এবং নিজেদের সংস্কৃতি, সভ্যতা বচনা দারা বিশ্বসভ্যতাকে সমুদ্ধ করিতেও ইহারাই অগ্রনী। বিশ্বা মাতুষকে হুন্দর, হুরুচিসম্পন্ন করে; বিশ্ব-হীনের মধ্যে পশুবলের প্রাধান্ত, কিন্ধ জ্ঞানের দৈবা শক্তির কাছে পশুবল চিবদিনই পরাভৃত ইইয়াছে। প্রধানত: দৈহিক বলের ধারা যে কাজ সম্পন্ন করিতে হয় সেখানেও শেশীর শক্তির সহিত জ্ঞানের শক্তি, বৃদ্ধি ও স্থকচি যোগ করিলে কাঞ্টি অধিক শোভনভাবে নিষ্পন্ন হয়। মান্থবের জীবনকে স্বন্ধর সার্থক ও মহান করিতে দৈহিক এবং মানসিক উভয় শক্তির সামগ্রস্ত প্রয়োজন।

বছু ভাবে জীবন ধারণ হইতে জীবনের উচ্চতম আদর্শ লাভ পর্যন্ত বে-কোনও কাজে সাফল্য অর্জনের জন্ত জ্ঞান বৃদ্ধি অধ্যবসায় নৈতিক বল ও আত্মিক শক্তির আবশ্রক। বিছাই মাহ্মকে এ সকলের অধিকারী করে। বর্তমানের গণভাষিক রাষ্ট্রসমূহ ভাই দেশের প্রতিটি লোককে শিক্ষিত করিয়া ভাহার অন্তনিহিত শক্তিকে দেশের এবং সমাজের কল্যাণে প্রয়োগ করিবার আয়োজন করিতেছে। বে সকল ব্যক্তি বাল্যে প্রতিকূল অবস্থার চন্ত বিদ্যার্জন করিছে পারে নাই সেরপ বয়ন্ত লোকদের শিক্ষার জন্ত স্থাপিত হইয়াছে গণশিক্ষা প্রতিষ্ঠান। ইহার উদ্দেশ্ত প্রভ্যেক লোকের সামর্থ্য অন্ত্র্যায়ী জীবনব্যাপী ধারাবাহিক শিক্ষাদানের ব্যবস্থা করা যাহাতে সকলেই উপকৃত হুইছে। পারে। বগাহটয়াছে যে—

possible member of a state an effective and efficient citizen and thus to give reality to the ideal of democracy."

অর্থাৎ—প্রত্যেক বাজিকে কার্যক্ষম ও উপযুক্ত নাগরিক রূপে গড়িয়া তুলিয়া গণতন্ত্রের আদর্শকে বাস্তব রূপ দেওয়াই গণশিক্ষার উদ্দেশ্য। নাগরিকগণ যদি তাহাদের রাদ্ধীয় অধিকার এবং রাষ্ট্রের প্রতি নিক্ষেদের কর্তন্য সম্বন্ধে সজাগ ও সচেতন না হয়, তাহারা যদি স্বাধীন মতামত প্রকাশের ঘরো রাষ্ট্রের পরিচালন-নীতি নিয়ন্ত্রণ করিতে না পারে তাহা হইলে গণতদ্বের আদর্শই বার্থ হইয়া যায়; রাজ-নৈতিক চেতনাহীন কতক লোকের অন্ধ সমর্থনের সহায়তায় রাষ্ট্রের ক্ষমতা হস্তগত করিয়া অল্পসংগ্যক লোক কর্তৃক গণতন্ত্রের মুখোসে চত্র-লোকতন্ত্র স্থাপিত হয়। যত দিন না জনসাধারণ নাগরিকের মধিকার ভোগ এবং দায়িত্ব-পালনের যোগা হইয়া উঠে তত দিন পর্যন্ত গণতন্ত্র পূর্ণান্ধ হইতে পারে না।

যাহারা গণতর প্রতিষ্ঠা করিয়াছে গণশিক্ষা বিস্তার দ্বারা আহারা এখন রাষ্টনৈতিক স্বপ্রকে স্কল করিবার চেষ্টার ব্রজী হইয়াছে। আমাদের অবস্থা স্বতন্ত্র হইলেও গণশিক্ষার প্রয়োজন অন্ত কাহারও অপেকা কম নয়। পরাধীনতার শৃত্রাল মোচন করিতে যে দেশ প্রস্তুত হইতেছে ভাহার জনগণকে অসীন থৈয়, ভ্যাগ, সাহস, একা ও সংঘ-শক্তির পরিচয় দিতে হইবে। চরম ছংখদাহনকে অমানবদনে বরণ করিয়া লইবার যে শক্তি ভাহা পশুণক্তি নহে, ভাহা আদশাস্থরাগ, স্বদেশ-প্রীতি ও নিষ্ঠাসম্বাত নৈতিক বল। শিক্ষা মাস্থ্যের মনে এই অপরাজেয় শক্তি স্কার করে।

অবস্থা-বিপথয়ে আমাদের দেশে শিক্ষার সঙ্গে, পরাধীন জাতির পক্ষে বাহা পরমকাম্য সাধনা তাহার—অর্থাৎ দাসন্থবন্ধন মোচন-প্রয়াসের সাক্ষাৎ সংযোগ স্থাপিত হয় নাই, বরং ইংার বিপরীত ১৯ই: চলিয়াছে। ছাত্রসমান্ধ ও বিভায়তনকে সর্বপ্রকার রাজনীতির সংস্রব হইতে দ্বে রাঝিয়া দেশের বান্তব সমস্তার সলে সম্পর্কচ্যত নাগরিক গড়িয়া তোলার উল্ভোগ চলিয়াছে শিক্ষাবিভাগের নিয়ম্বণাধীনে। প্রায় ছই শতাকীব্যাপী ইংরেজ শাসনকালের শিক্ষার ফল কিরপ শোচনীয় হইয়াছে প্রত ১৯৪১ সালের আদমন্ত্মাবির বিবরণীতেই তাহার পরিচয় মিলিবে।

আমাদের অনসংখ্যার শতকরা প্রায় ৮৫ জন অশিক্ষিত,
অকরজ্ঞানবর্জিত। অশিক্ষা এবং তৎসহ মানসিক্
অভতা, উচ্চ আদর্শের অহুসরণে নিষ্ঠার অভাব, অনৈক্য ও
অহুদারতা কাতীয় জীবনে খাসরোধকারী পাবাণের মত
চাপিয়া বহিয়াছে। জাতির সর্বহুরে শিক্ষার আলোকসম্পাত
এবং সেই সন্দে বাজনৈতিক চেতনা ও মানবভাবোধ সঞ্চার
করিতে না পাবিলে বহু সমস্তার কন্টকজালে সমাচ্ছর দেশে
প্রকৃত কল্যাণের স্ভাবনা কোথায় ? 'লোকশিক্ষা গ্রহুমালা'র ভূমিকায় ববীক্সনাথ বলিয়াছেন:

"••• তুর্গম ত্রুক পছতির অস্থসরণ করে বছ ব্যয়সাধ্য ও সময়সাধ্য শিক্ষার স্থ্যোগ অধিকাংশ লোকের ভাগ্যেই ঘটে না, ভাই বিভার আলোক পড়ে দেশের অভি সংকীর্ণ অংশেই। এমন বিরাট মৃঢ্ভার ভার বহন করে দেশ কথনই মৃক্তির পথে অগ্রসর হতে পারে না।…"

এই মৃচতার ভার হইতে মৃক্ত করিয়া দেশকে জ্ঞান কলাাণ ও বীর্বের পথে চালিত করার দায়িত্ব প্রধানত: রাষ্ট্রের; মৃক্তিপথের অগ্রদ্ত ঘাঁছারা তাঁহাদিগকেও এই শক্তির উলোধন করিতে হইবে, কেননা জ্ঞানের ভিডর দিয়াই দেশমাতকার বোধন হয়।

সার্জেন্ট শিক্ষা-পরিকল্পনায় ব্যক্তদের শিক্ষাকে সমগ্র শিক্ষাব্যবহার এক অপবিহার্য অল বলিয়া গণ্য করা হইয়াছে। কারণ শিক্ষাকে জীবনের সহিত যুক্ত করিয়া ইহার প্রতি জনসাধারণের অসুরাগ জাগাইতে না পারিলে জাতীয় শিক্ষার আন্দোলন, শিক্ষাবিত্তাবের প্রচেষ্টা সফল হইবার সঞ্জাবনা কম। ব্যক্ত গোকদিগের ওধু অকর পরিচয় করানোই নয়; তাহাদের দৈহিক মানসিক নৈতিক শক্তির ও বৃদ্ধির্ভির পূর্ণ বিকাশের স্বযোগ দিয়া তাহাদিগকে বোগ্য ও দাহিত্জানসম্পন্ন নাগরিকরণে গড়িয়া তোলা এ শিক্ষার উদ্বেক্ত। ভারতের যুজোত্তর শিক্ষা-পরিকল্পনায় এ সহক্ষে বলা হইয়াছে:

"Literacy is a means and not an end in itself. The end is that whole education of the individual's personality which will develop to the highest degree his physical, intellectual and moral faculties, raise him to the full stature of a man and transform him into a conscious and useful member of society.

কোনও বক্ষে বর্ণপরিচয় শিক্ষা করিয়া টিপসছি দেওয়ার পরিবর্তে নাম খাক্ষর করার কৌশল আয়ন্ত করিলেই বয়ন্তদের শিক্ষা সার্থক হইয়াছে ইহা কথনই বলা চলে না। শিক্ষার আদর্শ ও উদ্দেশ্ত মহুয়াজের বিকাশ সাধন, জ্ঞানের দীপ্তিতে মনের কুসংস্কার দূর করা, মানসিক সংকীর্ণতা ঘুচাইয়া মাছুবকে উদার করা, স্কুম্পোতন জীবন্যাপনে সমর্থ করা। এই উদ্দেশ্তে গণশিক্ষাকে স্থানিটিট প্রণালীতে এবং গভীর আভবিক্তা ও নিঠার সহিত

কার্যাক্ষে প্রয়োগ করিতে হইবে। ত্থাবের বিষয় এই বে, বাংলাদেশে এ সহত্তে জনমত এখনও আগ্রত হয় নাই, সরকারী কর্মপ্রচেটাও আলাছ্রপ সাফল্যলাভ করে নাই। পঞ্জাব, বোঘাই, বিবাছুর, কোচিন প্রভৃতি অঞ্জে বয়হত্তের শিক্ষার জন্ত ব্যাপক চেটা স্থক হইয়াছে এবং তাহার স্থকত ফলিতে আরম্ভ করিয়াছে। বিবাছুর সরকারের এক বিপোর্টে প্রকাশ:

শিক্ষার দিক দিয়া ত্রিবান্থ্র ভারতবর্ষে সর্বাণেক। অগ্রসর। এখানে শিক্ষিতের হার শতকরা ৪৭'৪৪ জন, কোচিনে ৩৫'৪৩ জন, দিলীতে ২৫'৭ জন এবং বরোদায় ২৩'০১ জন।

প্রদেশগুলির মধ্যে মাস্রাজ, বোখাই ও বাংলার শিক্ষিত জনসংখ্যার হার ব্যাক্রমে শতকরা ১৬০১, ১৯৫ এবং ১৬০১ জন।

১৯৩৯-৪০ সনে পঞ্চাবে বয়স্কদের শিক্ষার প্রসার দেখা याय। এই আন্দোলনের আদর্শস্চক বাণী হটল—Each one teach one, 'পড় আৰু পড়াও' এই উৎসাহবাণী करण जे वरमध्य ক্ষনগণকে উদ্ধ করিয়া ভোলে। ৫০.৭৯৯ জন নিবক্ষর বয়স্থ-পুরুষ জেধাপড়া অভ্যাস বিহারেও 'ডোমার গৃহ (Make your home literate) এই খাৰণ বাণীৰ প্রচারক ষেচ্চাকমিগণ গণশিক্ষাকে অনেকথানি আগাইয়া লইয়া গিয়াছেন। ইছাদের চেষ্টায় ১৯৪১-৪২ ২৪.২৮৯ জন নিরক্ষর লোক সাক্ষর জানের প্রথম আলোক লাভ করে। পণশিকাকে দেশের এবং সমাজের পকে কল্যাণকং ব্যবস্থায় পরিণত করিতে হইলে ইহার উদ্দেশ্র ও क्षं श्रेषानी मध्य सम्बद्धि धार्या थाका व्यावस्त । व्याभवा সংক্ষেপে ভাহারই আলোচনা করিব।

ক্ষনশিকার পরিচাদকদের প্রধান প্রয়াস হইবে ক্ষন-পণকে এমন শিক্ষা দান করা বাহাতে তাহারা স্বাস্থ্য-নীতি পালন, পৌও শাসন ও রাজনীতি, দৈনন্দিন কীবনে স্ফুচি অভ্যাস প্রভৃতি বিষয়ে ক্ষানলাভের স্থােগ পায়। তাই নিরক্ষরদিগকে এই সকল থিষয়ের সহিত পরিচিত করাইলা তাহাদের জীবনের পক্ষে অপরিহার্য জ্ঞান দান করিতে হইবে।

প্রথমতঃ, খান্থ্যের সংক জীবনের সংগ্ধ ঘনিষ্ঠ। খাখ্যবন্ধা, সংক্রামক ব্যাধির কবল হইতে বন্ধা পাওয়ার উপায়
নির্ধারণ স্থক্ষচির পরিচায়ক ও খাখ্যকর গৃহাদির নির্মাণপ্রতি প্রভৃতির জ্ঞান বয়স্ক লোকদের কাছে আকর্ষণের
বস্তু। এই খাভাবিক কৌতৃহলের পথ অবলম্বন করিয়া
ভাহাদিগকে দেশের বাত্তব অবস্থা বুবাইতে হইবে।

বাত্তবের ব্লচ্ন সভাই ভারাদের জ্ঞানচক্ উন্নীলিভ করিয়া দিবে। আমাদের দেশের জনকান্ত্যের শোচনীয়ভার মূলে বহিয়াছে দেশব্যাপী অশিকা ও দারিন্ত্য। জাভীর জীবনের এই ছই প্রধান শক্রর বিরুদ্ধে সফল অভিবান ব্যতীভ স্থারী মকল আশা করা বায় না। ভাজ্ঞার জে. বি. গ্রাণ্টের 'ভারতের স্বাস্থা' (Health of India) নামক প্রিকার প্রথমেই ভারতবাদীদের স্বাস্থ্যের অবস্থা সম্বন্ধ যে বিবরণ দেওয়া ইইয়াছে ভায়াতে নিভান্ত জড়বুদ্ধি অবসাদগ্রন্থ ছাড়া আর কেইই চিন্তাকুল না ইইয়া পারিবে না। ভাজ্ঞার গ্রাণ্ট লিখিয়াছেন:

ভারতবর্ধের স্বাস্থ্য নিমন্তবের। বসস্ক, টাইফ্রেড,
আমাশম, কলেরা প্রভৃতি প্রতিবেধ্য রোগ এধানে বছবিস্তৃত। ব্রিটিশ ভারতে ১৯৩৯ সালে ৬১,৬৫,২৩৪ জনের
মৃত্যু হয়। ইহাদের মধ্যে মালেরিয়ায় মারা হার
১৪,১১,৬১৪ জন, বসস্ক রোগে ৪৮,১০০ জন, কলেরায়
৯৭,৫৬১ জন এবং উদ্বাম্য ও আমাশ্রে ২,৬০,৩০০ জন।
ধন্মা প্রতি বংসরই বিস্তার লাভ করিতেছে এবং ক্রমেই
নিদাকণ ভীতিপ্রদ সমসা হইয়া উঠিতেছে।

চাট, ছবি, মডেল প্রভৃতির সহায়তায় জনসাধারণকে হস্থ সবল হইতে উদ্বুদ্ধ করিতে হইবে। ম্যাজিক লগ্ন ও বেভার যন্ত্র একাজে বিশেষ উপকারে আসিবে।

ছিতীয়তঃ, প্রত্যেক বয়য় ব্যক্তির মনে রাজনৈতিক চেতনা সঞ্চার—এবং তাহাকে নাগরিক জাবনের দায়িত্ব ও কর্ত্তব্য সম্বন্ধে সচেতন করিয়া গণতান্ত্রিক শাসনের আদর্শকে দার্থক করার প্রয়াস হইবে গণশিক্ষার অক্সতম উদ্দেশ্য। দেশশাসনের মূলনীতি, রাজন্তের প্রধান উৎসপ্তলি অর্থাৎ কিভাবে বিভিন্ন কর সংগৃহীত হইরা রাজস্বভাপ্তার পূর্ণ হয় ভৎসংক্রাম্ভ মোটামূটি জান, কিভাবে রাজস্ব ব্যরিত হয় সে সম্বন্ধে সাধারণ ধারণ। প্রত্যেক বয়য় নাগরিকেরই থাকা উচিত। প্রত্যেকেই বে কোন-না-কোন প্রকারে সরকারের রাজকোবে কর দিতেছে এবং গবর্ণমেন্ট কর্তৃক ভাহাদের হিভার্থে সে অর্থের ব্যবহার হইভেছে ইহা জানিলে ভাহারা সরকারের সহিত্ব ভাহাদের সম্বন্ধ ও নিজ নিজ কর্তব্য এবং অধিকার সম্বন্ধ সচেতন হইবে।

ভৃতীয়তঃ, বে বিদ্যা সাকাৎ ভাবে অর্থ উপার্জনের সহায় চা করে না ভাহার উপর জনসাধারণের আকর্ষণ না থাকাই খাভাবিক। নিছক বিদ্যার জন্ত বিদ্যার্জন ভাহাদের কাছে অর্থহীন। কাজেই বয়ন্ত বাজিদের এমন শিকার ব্যবস্থা থাকা চাই বাহা ভাহাদের উপার্জনক্ষতা বাড়াইয়া শিক্ষার সাকাৎ উপকারিতা কডকটা সপ্রমাণ করিছে পারে। দেখা গিয়াছে, নিরক্ষর চারীর মধ্যে সার-প্রস্তুত-প্রণাণী বর্ণনা করিয়া ফদল বাড়াইবার উপায় নির্দেশক প্রচার-পৃত্তিকা বিভবণের ঘারা হুফল ফলে নাই। বাত্তব-সমস্তা লইয়া বয়স্থানের প্রাত্তক প্রমাণ ভাহাদের সন্মুখে তুলিয়া ধরিয়াই ভাহাদিগকে শিক্ষা দিতে হইবে।

চতুর্বজ্ঞা, দেশ-বিদেশের ইছিহাস-ভূপোলের কথা,
মানব-সভাতার ক্রমবিকাশের কাহিনী, বিভিন্ন প্রাকৃতিক
ও ভৌগোলিক পরিবেশে মাছবের বছবিচিত্র কর্মজীবন,
রীতিনীতি, জাচার-ব্যবহার প্রভৃতির কথা বয়ক্ষদের মনে
বিশ্বয়বোধের কৃষ্টি করিবে। তাহারা বুবিবে বে, এই
বিচিত্র পৃথিবীতে বিরাট মছস্তসমাক ভিন্ন ভিন্ন দেশে
আপাতদৃষ্টিতে পৃথক পৃথক কাতি সড়িয়া তুলিয়াছে বটে,
কিন্তু তাহাদের মধ্যে এক সর্বমানবীয় ঐক্যবোধ বিভ্রমান।
এই ঐক্যবোধ কাগত হইলে মাহ্মবের মনের সমীর্শতার
প্রাচীর ভাঙিয়া ধার; দে হয় উনার, অক্স সকলের প্রতি
প্রীতিসম্পন্ন। আমাদের বছ-ধর্মের দেশে মনের উদারতা
ও পরম্পরের প্রতি প্রীতির জভাবে সাংস্কৃতিক ও কাতীয়
সীবনের জগগতি বথন ব্যাহত হইয়া উঠিতেছে তথন
এইরপ শিক্ষারই একান্ত প্রযোজন।

পঞ্চমত:, সমাজের সর্বস্তবে শিকার আলোক ছড়াইয়া দিতে হইলে ছাত্ৰ, শিক্ষক, সাধারণ শিক্ষিত লোক, বিশেষ ভারপ্রাপ্ত সরকারী কর্মচারিগণ সকলকেই অন্তরাগের সহিত তৎপর হইতে হইবে। এই প্রচেষ্টা হইবে অশিকার বিশ্বত ব্যাপক সংগ্রাম। বয়স্কলের জন্ম সরল ভাষায় রচিত নানা বিষয়ক পুশুক জনসাধারণের সহজ্বভা করিতে ছইবে। लायायान शार्राताच शत्री अकरन निका विद्याद यर्थडे সহায়তা করিবে। ইহার মারফতে পুঞ্চক পাঠের স্থবোগ দান করিয়া, বয়ন্ধ-শিকা-কেন্দ্রে বছ জ্ঞাতব্য বিষয় শিকা-দানের ব্যবস্থা করিয়া মার্কিন যুক্তরাই গণশিকার কেত্রে নুভন উদ্যুষের স্টনা করিয়াছে। শিক্ষার সাহায্যে সমাজের मकन खर्बद लात्कद कीवनरकरे ममुद्राख्य, मार्चकछत्र, শোভনভার করিবার ব্যাপক আয়োজন জগতের সকল ব্লাভির দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে। দেশের আর্থিক, সামাজিক, বাইনৈতিক ও ভৌগোলিক অবস্থা বিবেচনা করিয়া আমাদের দেশের পক্ষে উপযোগী ব্যবস্থা প্রবর্তন করার বিষয় কর্তৃপক্ষকে বিশেষ ভাবিয়া দেখিডে इट्टेंदि ।

#### নব-সন্ত্যাস

#### **এ**বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

VOV

বছ অভূত লাগিল বেরেটকে। প্রথমটা মনে হইরাছিল গভীর, বীছানরী; তাহার পর মনে হইল চপল যদি লাও বলা যার ত মুক্ত প্রকৃতির ত বটেই। প্রথম হয়ত একটা আক্ষিক বিপ্রের মব্যে নুতন পরিচরে, তাহার পর বে অবহার কাটাইতে হইল প্রথমটা তাহার সভোচে ওরক্ষ ক্রিরা দিরাছিল, তাহার পর মুক্ত ভারগার আলিরা একেবারেই মনের মৃত ভিনিব সাবনে পাইরা প্রকৃত ক্রপট কুটীয়া বাহির হইল।

যাই হোক, যেন জোৱারের গলে বান ডাকিল, এই রকম
শিক্ষিত্রী পাওরার সভাবনার টুলু যেন উদাম হইরা ছুপের
নেশার বাভিরা উঠিল। এবন যে, ওর প্রকৃতিচাঁও হঠাং যেন
বছ লবু হইরা পছিল— ঠিকমত মন বসাইতে পারিতেহে মা
কোন জিনিয়ে, কেমন একটা চঞ্চল হ'ল না হ'ল না ভাব।
নারের টাকাটা আসিতে দেরি হইভেহে; আসিবেই ছই—
এক দিনে, কিছ তর সহিতেহে না।

ছই দিন পরের কথা। কি হইরাছে, ব্রিকাবে বসিরা পঢ়াইভে পারে না। ছেলেনেরেরা পঢ়িকতছে, টুলু বুকে হাত হ'টা জড়াইরা পারচারি করিতেছে, হঠাৎ বুদ্ধীর নাভনীকে বলিল—"চম্পাকে একবার ডেকে জান ত বিস্থা"

মেরেট ভাকিরা আনিলে উঠানে নামিরা আসিল, বলিল---"চম্পা, ভারণাটা বোধ হয় হাডহাড়া হরে বাবে।"

চম্পা একটু বিশিত হইরাই বলিল—"কোন নতুন জরি দেবলেন নাজি জাবার ?"

"मा, के वडेलनावडीव क्वारे वनसि।"

চন্দা একটু হাসিয়াই বলিল—"আপনি নিশ্চিকি পাতৃন, হাজার বছরেও বোব হয় ও জনি হাতকের হয় নি। এবানে ভেতরে কয়লা থাকলে দাব, ও জনিকে কে পোছে ?"

"তা বটে, তা ঠিক বলেছ…" বলিরা টুগু একটু অপ্রতিভ তাবেই চুগ করিরা রহিল। কিছ এ তাবটা টকিল না। বোৰ হর মনে মনে তর্কের পথ পুঁজিতেছিল, একটা পাইরা বলিল—"তুমি বলেছ ঠিক, তবে কি জান? একটা জমি পড়ে আছে ত পড়েই আছে, বেই একজনের নেবার কথা উঠল, অমনি পাঁচ জনের নজর গিরে তার উপর পড়ে। হরত তেবেই বসবে ওর মধ্যে করলার সভান পেরেছি আমি…"

"এধানকার সব ক্ষি ভালরক্ষ ক্ষরিপ হরে গেছে, কাছা-কাছি আর কোগাও কয়লা নেই।"

টুলু বেদ একটু বিশ্বক হইল, কডকটা নিলিওভাবে বলিল, "ভা বৰি হয় ভ থাকু…" —চম্পা একটু কি ভাবিরা বলিল—"নৈলে করতেই বা কি পারের ভাগনি ? মার চাঁকা ত ভাসেনি।"

টুন্থ বলিল—"নেই ত ভাবনা, কৰে আসৰে কিছু ঠিক আছে ? অমি বিকিন্নে না বাক সময় ত চলে বাছে । তাই মনে করছিলাম অমিটা কিনে নি, কিন্তু টাকা ত অত নেই । ল' আভাইয়েক চাইছে, কুভিয়ে বাভিয়ে আমার কাছে হ'ল হতে পারে, বাজি পঞ্চাল টাকা—অবচ ঐ বে বলে নেল—— দেরি হরে বাজে—"

বেন তর্কের ভরে গড় গড় করিয়া সবটা বলিয়া গিয়া চূপ করিল ৷ চম্পাপ্ত একটু চূপ করিয়া রহিল, ভাহার পর বলিল, "আমি বোগাড় করে দিলে হয়ত দেখতে পারি ন! হয় ৷"

"পুৰি চেষ্টা করবে ?"

—এই আশাভেই ভাকাইরা আমিলেও টুল্ প্রাচী করিল বেশ একটু বিশারের ভাব দেবাইরাই। এটা ইচ্ছা করিরাই করিল, কিছ এর পরের প্রাচী কেমন যেন আপনা হইভেই বুব দিয়া বাহির হইয়া সেল —"ন্যানেজার কিংবা পরেশের কাছে হাত পাতবে না ত ?"

চন্দার মুবটা রাভা হইরা উঠিল, বিষয়কঠে বলিল— "ম্যানেজার অবস্থ নেই এবানে, ভবুও বিশাস করেন যে ওথের কাছে টাকা চেয়ে সুলের কাজে লাগাতে দেব ?"

সকে সকেই আবার বলিল—"তা নর বার ধানকতক গরনা আছে রূপোর, আমারও ধানকতক দিরেছিলেন, ঠাকুর-দাদা আর বাবাই মিলে—-চিরকালটা ত আর এ রক্ষ ছিলেন না বাবা—ভাই থেকে কিছু কারো কাছে রেখে এনে দিতে পারি টাকা, বোব হর আপনার সবন্তলো নাও বের করতে হতে পারে; কাছ কি হাত একেবারে বালি করে ?"

চাপা উদাৰণার টুপুর ভিতরটা চঞ্চ ক্ররা উঠিতেছিল। তব্ও ঠাট বজার রাধিবার জ্ঞ বলিল—"নেহাং গরনা বছক দিরে আনবে টাড়া ?···তা বেল, তাল কাজে···ড়িছ একটা সতে রাজি হতে হবে—সুত্ব নিতে হবে···"

চন্দা হাসিরা বলিল—''ভা ভো নেবেই, সে বৰণ আবার হাড়বে না…"

"সেটা ত নিতেই হবে, তা ভিন্ন তুমি বে আনার বিচ্ছ তার কচও সুধ নেবে।"

চন্দা এবার বেশ ভালভাবেই হাসিরা কেলিল, বলিল—
"বেশ, কিছ আগনি টাকা এলেই ত দিরে দিছেদ—ছু-চার
দিনের বব্যেই ক্ষতে আর পারছে কোবার আযার এত
বচীর স্থা ?"

টুৰু ভাডাভাড়ি বুৰ পভীৱভাবে বলিল—"ভা সংক সংক

বিবে বোৰ, ছবি নিভিন্দি থেক, টাকা ভোষাত্ৰ আটকে ৱাৰৰ না—সঙ্গে সঙ্গেই পেত্ৰে বাৰে।"

শর দিনই চলা টাকাটা আনিরা হাতে দিল। টুলু বুবিল আচার হইল, তা যতই প্রদ দেওরার ঘটা দেবাইরা ব্যাপার-টাকে মহাজনী লেনদেনের আকার দিক না কেন। কিছ এ সব চিন্তা ঘারী হইতে পারিতেছে না, ঐ একটা সইপ্রাসী চিন্তা—হুল বসাইতে হউবে, আর সমর নাই, এবন আর সব বৃহিরা একট মাত্র নেশা জীবনে গুকে এর আসে এমন করিরা পাইরা বদে নাই। প্রদিন রৌল মাধার করিরা পাঁচ মাইল দ্বে রেজেটারি অভিনে গিরা রেজেটারি করাইরা আসিল।

কিরিবার সমর মনে হইগ একবার কাকার বাসাটা হইরা যার। অনেক দিন আপে নাই এদিকে, দিন তিমেক আপে কাকীমার বাপের বাছি বেকে আসিবার কবা ছিল। ওদিকে কাকার সঙ্গে দেব! করিতে বানিকটা সক্ষোচও হইত, মানে-কারের সঙ্গে লাকাও করিয়া তাঁহার ব্যবসার কতকটা বিপন্ন করিতেছে বলিরা। আর ত সে ভাবটা যাইতে বসিয়াছে; ছমি কিনিরাছে, নিকের ঘর বাঁহিয়া খুল গছিবে, যত শীম পারে ছাইয়া দিবে ও বাসা, ম্যানেকারের সঙ্গে কোন সংঘই বাকিবে না। ওর জীবনটা যে এই ভাবেরই সেটা ওঁরা কানেনই, ওদিক দিরা ওঁদের মন ভাল করিয়া প্রছত হইরা আছে—বাছির স্বারই; আছু কানাইরা দিবে, ভাছারই পাক্রপাক্তর ব্যবহা করিয়া আসিল। বেশ প্রকৃত্ব ভাবেই বাসায় প্রবেশ করিল।

কাকীয়া আসিরাছেন; একট বোন, বড় হুইরাছে, তাহার নিচে একট ভাই। টুবু কাকীয়ার আসার ব্যর্টা বাহিরেই চাকরের কাছে পাইরা বেশ হৈ হৈ করিয়া প্রবেশ করিল—"এই দেব! তোমরা এসে পেছ কাকীয়া, অবচ আমার বলে পাঠাও মি। বসবে—কেন, তোর ত জানা উচিত ছিল।…উচিত ছিল আর জানতামও, কিছ কি হালাম নিবে বে পড়েছি!… লিনি, তুই বেবছক বোটা হরে পেছিস মামার বাছির ভাত আর আছর বেরে—বলবি দাদা এসেই বুঁড়লে—তা বীকার করছি, কিছ বুঁড়ে বুঁড়ে তোকে সাবেক চেহারার আনতে অনে—ক দিন লাগবে, কি বল কাকীয়া ?…ও কি, মুধ্ ভার করলে বে সো!—ভূমি ছ্লে-পড়া মেরে হরেও এসব বোঁড়া নজর দেওরা এবনও মানো না কি কাকীয়া ?"

কাকীমা মেরের চূল বাঁবিভেছিলেন; মৃথটা বেন কাঠ হুইরা আছে। একবার চারি দিকে চাহিয়া বলিলেন—"কে রে কে আছিস, টুলুকে একটা আদন দে। ঐ মোডাটা না হয় টেনে নিয়ে বোস টুলু।"

কণা দাঁতে কিতা কাৰ্ডাইরা আছে, কথা কহিবার বালাই নাই; কিরিরা চাহিরাই ভারিল, তাহার পর বিশ্ববিতে চাঁদ বরাইবার ভত বাণাচা মিচু করিরা বহিল। টুপু ৰোভার বসিলে কাকীবা প্রশ্ন করিলেন—"ভারণর, আহিস ক্ষেত্র বলু।

বাকা বাইরাও টুলু প্রসন্নতাটুকু কিরাইরা আনিবার আর একবার চেঙা করিল, হাসিরা বলিল—"এই আব মিনিট আলে পর্বস্ত তো বেশ আলই হিলাম, কি ব্যাপার বলো দিকিন, একি ভাব া লিলিরই বা এ কি অভার্থনা।"

লিলি কিভার খুঁট ছুইটা ছাতে লইখা হাসিয়া বলিল— "আমার অভাবনার ধাট্তি পাবেন না। মামার বাজি বেকে কি সব মেওয়া জিনিস এনেছি দেখো, সঞ্জোষের নজর বেকে— বাঁচিয়েও রেবেছি এখনও, ভূমি মাডাবেই মা এদিক ভো ?…"

"তাই রাগ ? তা যা নিষে আর শীগ্রির; আর্গে ওঠ্, বিদেও লেগেছে বুব—গাঁচ মাইল গাঁচ মাইল দশ মাইল পবের হিসেব নিয়ে আসহি।…বা ওঠ্, তোল্ল বেণী দেবলে আমার পেট করবে না; ছেড়ে দাও বুড়ীয়া ওকে।"

লিলি হানিতে হানিতে উঠিয়া গেল। কাকীয়া একটু চুপ করিয়া রহিলেন, এদিক ওদিক চাহিয়া অধভিটা মিটাইবার চেষ্টা করিয়া ৩৬ কঠে বলিলেন-"ভূই বাভি চলে যা টুলু।"

এবার টুল্র কণ্ঠখনে একটু পরিবর্তন হইল, প্রশ্ন করিল- "কেন ?"

কাকীমা আবার একটু চূপ করিয়া রহিলেন, ভাষার পয় বলিলেন—"কেন আবার : - অনেক দিন বাইরে আছিল। চিরকালটা এইভাবে কাটাভে হবে ?"

---টানিয়া টানিয়া এমন ভাবে বলিলেন কৰাওলা যে ভাই বোৰা গেল, আদল কৰাটা এব অভিবিক্ত আয়ও কিছু। টুলুও গঞ্জীয় হইয়া গেছে, মাৰাটা নিচু করিয়া প্রশ্ন করিল— "কেন আমি বলব কাকীমা? উত্তরের অপেকা না করিয়া বলিল—কারণ আমি ছোট লোকদের ছেলেমেয়ে নিয়ে রয়েছি। বলো ভা ময়। ভাদের পঢ়াছি, ভাদের যাস্থ করবায় চেটা করছি…"

কাকীমা বানিকক্ষণ নিজ্ঞরই রহিপেন, ভাষার পর বীরে বীরে কহিলেন--"বর্ যদি সেইটু হুই, ভার কভেই বা এভ মাধাবাধা কেন ভোর ?

"সেইটুক্ট" কৰাটার উপএ বেশ একটু লোর দিলেন। কিছ এই সময় নিজি বাবার দইয়া আসিরা পঢ়ার ছড়ই থোক বা যে ছড়ই হোক, টুলুর নেটা কানে সাগিল না; অপ্রীতিকর প্রসক্টা বেন চাপা দেওয়ার ছড়ই বলিল—বাক্, ও রোগ যবম আমার বুচবেই না; নিয়ে আর লিলি, কি এনেছিস।

আহারের সময় যে একটু আবটু কথা হইল সে নিভাছ নিভহভাটা বুচাইবার জল। আহার শেষ করিরা টুলু প্রশ্ন করিল---কাকা কোধার ?

কাকীয়া একটু চূপ করিয়া বহিলেন, ভাষার পর আবার বলিলেন—ছুম্ছিলেন ওপরে বোকাকে নিরে…বোর হয় ওঠেব নি এবনও।

বলিবার ভলিতেই টুলু বেশ স্পষ্টভাবে বুবিল একটা অঞ্জীতিকর সাক্ষাংকার মিবারণ করিবার ক্ষাই একটা মিধ্যা ভাষণ করিলেন। বলিল—ভা হলে বাই আর ওঠাব না।

লিলির হাত হইতে পান লইর: ছ্রারের দিকে পা বাড়াইতে বলিলেন—যা বলগাম মনে রাববি। আর, আসবি মাবে মাবে টুলু।

এই অভিজ্ঞতার আধানটুকু কিন্তু মনে বেশীক্ষণ লাগিয়া विक्निना। वाक्रित भाषिएकहे भटन भक्षिया मिन स्थापकी কৰা,--ভাৰার মুধে পড়াইভে আদিবে বাগয়াছে, নিজে হইতে বলিধা পাঠ।ইয়াছে। ভাহার নিজের ছুল, ভাহার ব্দুই ক্ষি কিনিয়া কিগ্ৰিভেছে। ক্ষিটা একবার দেখিভে वक देखा प्रेन---(प्रामाश्रवत मण्ये रेक्न अक्टी,---নিব্যের ক্ষি, একবার খুরিয়া কিরিয়া বেশ ভাগো করিয়া মাড়াইর। বাইতে ইচ্ছা করিতেছে। বভিত্র মধ্যে দিয়া বাওয়াই ছিল্ল কলিল, আৰু আন সংগ্ৰান সময় আসিতে भावित्व मा । . . . विष्ठा जीक भर्यक्ष बाहा करव नाहे ভাহাই আরম্ভ করিয়া দিল--ক্যান্ভালিং---ভোমার এ মেষেটকে তো কৈ দেবি না আমার ছুলে; পাঠিয়ে দেবে---নিক্ষম দেৰে---এট ভোমার নাতি ? ছুলে পাঠাও বাপু; ভোষাদের ৰুছে ছুল বুললাম অবচ---আর ছুল ভোষাদের ভো খারের কাছেই এনে কেলেছি, মাহভোর কাছ খেকে বটতলার জ্মিটা কিনে নিলাম।…ওলে। বাহা, ভোষার ছেলেটকে ছুলে দাও আমার ধূলে। ভোমার মতন ভোমার হেপেও বভিতে মুখ **খ**াৰাড় পড়ে থাকে এইটই চাও **?**··· একটা ছেপের মধ্যে কড় কি হবার সম্ভাবনা রয়েছে ডা জান গ —कारन **बरे (धरम रह एका क्यार क्यार क्यार** कामरक **भारव ··"** 

একটা নবতর উপাদনার মধ্যে শরীরমন বেন পালকের মত হালকা বোৰ হইতেছে, এক পাল ছেলেমেয়ে পরিয়ত হইরাই বাসার কিরিল, সম্ভ প্রটাই যেন সভ্য হইরা বাভাইয়াছে ।

ৰেগেনেতে হ হ করিয়া এক কোঁকে বাভিয়া গেছে, এখন বিরাদ্ধিন । সামলানো বার না, তবুও প্রবিগা পাইলেই ক্যানভাগিং করে টুলু। সামলাইতে না পারার কথাটা মনে বাকে না। ভাষণ হইয়াছে এই আনজেই স্বাইকে ভাকিরা আনে। ভাষা ভিত্র আরও একটা ব্যাপার আছে। কাকীয়ার কথাটা প্রায় মনে পছে—সেই বোঁটাটুকুর প্রতিভিয়াক্ষণট আরও বেই করিয়া, আরও নিবিছ করিয়া এদের কাছে টানিতে ইছা করে। তেন, মর্য় পিষ্ট বুভুক্তিত বলিয়া ওরা আর মাহুর মর যেন ?

এইজঃই আজ্লাল হীরক আর প্রজাবের হেলেটকে বেশী করিরা আনাইরা লর---কর্থনও একটকে, ক্থনও বা এক সলে মুইটকেই। চনংকার মুইরাহেও হীরক; বুব স্থানে--- এক এক সময় হাসাইয়া বাঁটীয়া বেলাই করে টুলু। এক এক সময় ওর হাসিটা বছ করেণ বলিয়া বনে হয়-—হীরকের মুবেও হাসি !—বোৰো না ভাই ভো—এক বরবের মুচ আত্মপ্রবঞ্চনা; বোৰার সংল সংল কি মিলাইয়া বাইবে না এ হাসিটুকু?

তৃতীৰ দিনের কথা—শ্রতান্তিশট ছেলেবেরের হটগোলের মধ্যে একটু চিভাষিত হবঁরা বসিরা আছে। কাজ আরও অঞ্জর হইরাছে, বনমালী বাশখণ্ডের ব্যবহা করিতে সিমাছে পাহাডের নীচে। কিন্তু এদিকে সভাই সামলাইতে পারা যাইতেছে মা। আর একজনের দরকার। বেশ ছিমছাম হবঁরা কাজ করা অভ্যাস, এ হটগোলটা মাবে মাবে কামে বড্ড বাজে। পঢ়াও ঠিক হইতেছে না।

একটু অভ্যনত হইবার জন ধৃতীর নাতনীকে বলিগ—— ''হীরাকে নিয়ে আয় তো বিন্দু।"

চিন্তার বারাটা মনে মনে বহিয়া চলিয়াছে—সাঁকরোপের মেয়েট পড়াইতে আলিবে। কিন্তু সে তো এবন দেরি আছে। টুলুর জ হুইট হঠাৎ কুঞ্চিত হুইয়া উঠিল— একটা নুতন ধিকে চিন্তার মোড় কিহিয়াছে—

ভাষাকেই ভাকির। পাঠাইলে কেমন হয় ?—পদানোর সম্বন্ধ ছেলেমেরের সলে—ছেলেমেরে বাভিয়াছে—ওই ধুলেই পভাইবে এমন লগৰ করে নাই ভো—চিল্লা হঠাং আর একটা মোড় কিরিল—কেন, চম্পা—সে ভো ধুলে পভিয়াছে—সে-ই পড়াক না ভত দিন —তত দিন কেন ? বরাবরই ভো পড়াইতে পারে।

এত বড় আবিকার টুপু জীবনে করে নাই --বিন্মিত হইরা উঠিগ এই তাবিয়া বে, এত সহজ্ব কবাটা এতদিন একেবারে মনে পড়ে নাই। আর, চম্পার জীবনের ওপরেও যে এর একটা যন্ত বড় প্রভাব আছে।

একট ছেলেকে বলিল—"বা চম্পাকেও ভেকে আনবি— ভাকেই নিয়ে আগতে বলবি হীয়াকে।"

পাঠাইবার প্রবোজন ছিল না। আজকাল চম্পা চারই একটা চুতানাতা ক্রিয়া কাজে আসিতে—উহারই ষব্যে সাজ্বগোজের একটু ভারতহা করিয়া গইয়া। হীরককে কোলে করিয়া উঠানে হাঁচাইয়া বলিল—"একে তেকেছেন ?"

গাল ছুইটা টীপিয়া বলিল--"হীয়া বাৰুকে ?"

শৃতৰ আবিফাৰের আৰকে টুপুর শরীরটা বেন ভিভৱে ভিভৱে কাঁপিভেছে। ব্ৰটা দীও হইলা উটিয়াছে, বলিল—
"তেকেছি আসলে ভোষার।"

**"আমার ?---কেন** !"

---প্রশ্নট। করিয়া বিশিষ্ঠ ভাবে রুবের পানে চাহিয়া বহিল।

"ভোষার একটু ছুলের কাব্দে নাবতে হবে।"

চম্পার রূপের সব রক্ত বেল নামিরা গেল, কভক্টা ভীত এবং বিরক্ত ভাবেই অনুরোধের ক্সমে বলিল—"না, আনার মাণ করুন, আমি পারব না—ও বাজি বাজি খুরে···লে আমার ভারা হবে না···"

টুৰ্ একটু হাসিরা বলিল—"ভোষার ক্যানভাসিঙে পাঠান্ত্না, ভর শেই , আমার একলার ক্যানভাসিঙেই এত হরেছে বে সামলাতে পাবছি না– সেইজঙেই ভাকা। ভোষার পঢ়াতে হবে।"

চন্দার ভবের ভাবটা বারে বারে চলিয়া গেল, ভাহার কারগার আদিরা পড়িল গভীর চিতার ভাব, মত বড় একটা অনিভয়ভার মধ্যে পড়িয়া গেছে যেন--কি করিবে বুবিতে পারিভেছে মা। একটু পরে মুব তুলিয়া অন্ন হালিয়া বীরে বারে বলিল---"বুব মাঠারনি ধরেছেন ভো।"

"কেন, ভূমি ভো মিশন মূলে পড়েছিলে ছু'বছর।"

আবার একটু ভাবিল চপা, ভাষার পর নেই ভাবেই দৃষ্টি ভূলিরা একটু হা;গিরা বলিল—"বস্ত বড় বিহুবী করে ছেড়ে দিয়েছে ওরা। ভাবেশ, যদি মনে করেন পারব পড়াভে, পড়ানো যাবে।"

৩৭

পর দিন সকাল হইতেই আরম্ভ করিয়া দিল।

মিশনারিদের পছতিটা কতক কতক জানা আছে, তাদার উপর বেটা করে সমন্ত মনপ্রাণ দিয়াই করে; বেশ চমংকার করিয়াই পছাইল। ধুল ভাতিয়া গেলে টুল্ বলিল -"আমার ইচ্ছে নিজে তুমি আরও পড় চপা।"

চন্দা ভয়ের ভান করিয়া বলিল—"কেন, পারলায় না বুকি পড়াতে ?"

"এত ভাগ পেরেছ যে আমার ইচ্ছে ভূমি এই নিয়ে থাক। আৰু ভোমার একটা মুখ্য দিক আমার চোবে পড়গ, নতুন একটা সভাবনার দিক।"

রহজের হাসিটুকু চম্পার মিলাইরা গেল, বেন গভীর একটঃ বেদ্যার উপর স্পর্ন দিরাছে টুকু, বাধার আভিতেই মুধ দিয়া আপনি বেন বাহির হইরা গেল—"কিছ কে পড়বে আমার কাছে ?"

টুপু বিশিত হইয়া প্রশ্ন করিণ- -"ভার সানে ?" "দেশভেই পাবেন···"

সংক্ল সংক্ষ এ ভাবটা মন হইতে বাছিয়া কেলিয়া ভাবার হাসিয়া বলিল—"বাঃ, মাঠারি করবার লোভ দেবিরে ভেকে এনে ভাপনি ভাষার ছলে পোছো করে নিতে চান, ষতলব ভাল নয় ত ?"

ক্ৰাটা এখন ৰাজাইতে গেলেই চন্দা এই ভাবে হালক।
কৰিবা কেলিবে বুবিৱা টুক্ত আপাতত হানিবা চুপ কৰিবা গেল, তথে সংকলটা ভাষার ভিতৰে ভিতৰে টিকই বহিল।
চন্দার ভবিষ্যতে একটা বুতৰ আলোকসন্দাত কৰিবাহে
'আহিজার এই আবিভারটা; সেই আলোকে ওর ভাবনের একট পরিপূর্ণ চিত্র আকিবা কেলিল টুলু। তথু চরিত্রে নর— গোদক বিধা চন্দা ত নির্তুত ক্ইবাই গাড়বা উটিয়াছে—আন-বিধার দিক বিবাধ টুলু নিজের শিষ্যাকে অনবদা করিয়া ভূলিবে। পাকের চন্দা শতদলে বিকশিত একট পরের বতই ক্ইবা উটিবে সধার বিশাস, তবে ত ···।

माक्टबरणव त्यरष्टि पूरव पश्चिवा राजा । हुन् इ-अक्वांव खब কৰা তুলিতে নিয়াহল, কিছ প্ৰত্যেকবাৰেই খঙ একটা কৰা चानिश वावा पश्चिम त्रिमारक, ठिक कविन चाव छुनिरवरे ना ভাষার কৰা। প্রবন্ধ, গোড়ার ট্রগাহিত হইরা উটিলেও ভাবিষা দেবিদ অভ ধূব বেকে আসিয়া পড়ানোয় অপ্রবিধা, वाया इर्थ-र जारव विश्वत । विशोदण, वावशाही भाजनक स्टेटन किना क्रिक तूवा घारेटण्टर था। এ अवश्रव, वर्ग क्लाट्सरे হাতের কাৰে পাওয়া ঘাইতেছে ভবন ও সঙল ভ্যান করাই যেন ভাল: ভা ভিন্ন পুরিবাজনক ভার শোভন ষ্ইলেও অনিশ্চিত ত বটেই, তাহার চেম্বে স্নিশ্চিতকে ধরিয়। ৰাকিয়া গোড়া বেকেই একটা পাকা ব্যবহা ক্রিয়া যাওয়া श्वित्वहनात काक। ज़ीलल ना क्षत्रमहो। छत्व हन्लाहे ভূলিল : সুলের কাবনে যথ বছ একটা ঘটনা, বিশু আর ভাছার ভাই জীবনের কাছে সবিভাৱে ভনিয়াছে, প্রর করিয়া ক্রিয়া **(यदाध्य ८७ दावाय ११७ अक्टी क्रिक कृषिया लहेबाटक मान** ; विकारण नहारेरछ चानिया क्षत्र कविन--"नवस द्य अक्ष (यदा गांक **बर्म शर्काहेल क्युड़ित मन्न** ?"

টুৰু বলিদ—"বাঁা, গাঁকরেলে বাঙি। তার ছট ভাই ছলে পড়ে এবানে।"

চণ্ণা অনাসভাভাবে বলিল— ''গুঃ ।···বিণু ভাই বলছিল।'' একটু চূপ বাকিয়া হঠাৎ দৃষ্টি ভূলিয়া বলিল— 'আয় আসবে নাকি ?"

টুলু হাসিয়া বসিল——"কি করে বলব ?…এমন যদি হয় আবার কবনও সে এই ধুলের সামনে এসেই বছর্টির সাবে পড়ে যার ? নামতেও পারে।"

চন্দা যেন একটু অঞ্জিত হইয়া পাছল, বলিল—"না সেক্তে নয়, বলাছগান —বলছিগান এবার যদি আনে আনায় তেকে পাঠাবেন কাউকে ধিয়ে, পরিচয় করে নোব।"

টুলু আবার হাগিয়া বলিল "তা ধোৰ, কিছ ঐ বে বললায়—অভ বড়ের হিসেব করে সে বা'ল বেকে বেরোয় তবে ত ?"

এক একট দিন যেন সক্ষণতার ভাগি সাক্ষাইরা আনে।
বননালীর দেরি হউতেছিল, সভাার সময় বাঁল, বড় প্রভৃতি
গৃহনির্মাণের সরস্থান সাইরা উপস্থিত হইল। পাহাভতলী
হুইতে নিজের বাড়ি সিরাহিল, সেবানে নিজের বাগান বেজেও
এক গাঁড় বাঁল কাইয়া আনিরাহে, তাই বিলম্ব হইরা গেল।
বনবালীর মনেও উংগাহের টোরাচ লাগিয়া নিরাহে,

বলিল—আমারও এক গাভি বাঁশ রইল ছোটবারু, সাগর বান্তে কাঠবেভালির পিঠে করে একটু বুলা বেড়ে আসা আর কি।

পরদিন থানিককণ তুল করিরা টুগু বটতলা চলিরা সিরাছিল, কি রকম কুলি থাটতেতে বেখিবার কচ, কিছুকণ পরে কিবিরা আলিরা বলিল—"চম্পা, একবার বেধ্বে চলো ব্যাপারটা।"

চন্দা একটু হাসিরা সহক কঠেই বলিল—"এবন কেববার খতন এমন কি হয়েছে ? মোটে তো বাঁদ, বড় এসে পড়ল।"

"ৰভির লোক একেবারে তেঙে পড়েছে, যে বেমন জানে কাকে হাত লাগিরে দিয়েছে—জমি বোঁড়া, বাঁল কাটা, বাতা চেরা, বড়ের আঁটি বাঁবা, দড়ি পাকামো—বে যেমনট পারে।" গুরু যে বুলি-বরচের দিক দিয়ে স্থসার তাই নয়—সেটা তো সামাত কবা—ন্যামেজারের ওপর আমার জিতটা বচকে দেববে চল চন্দা, এ যেন প্রত্যেকটি লোক নিজের নিজের কাক বলে বরে নিরেছে; চল দেববে, ওঠো।"

"এদের পড়া রয়েছে বে, আপনিও নেই…"

"ৰাক না একটু···ভার ঐক তো, মনে গড়ে গেছে—ছুলের বুনের দেওবা হচ্ছে, আৰু চুট বাক্ষে না ওবের ?"

চন্দা হাসিয়া বলিগ---"মূলের বুনেদ পঞ্বার দিনই পঞা বন্ধ ?"

টুলু বেন একটু উত্যক্ত হইয়াই হাসিয়া বলিল—"লাবার সেই কথা কাটাকাট। —না চন্দা, আমি বে অমন একটা গ্যাচোৱা লোককে কিভাবে হারিয়ে চলেছি দেখতে ইচ্ছে হয় না তোষার ? জামই তো গোড়া বেকে সব কথা।"

চন্দা এবার একটু বিষয় ভাবে হাসিয়া বলিল—"হারটা বন্ধায় থাকতে দেওরাই ভাল নয় ?"

সলে সজে টুলু আবার বিরঞ্জ হইখা উঠিবার পূর্বেই উঠিয়া পভিষা বলিল---"বেশ, চলুন।"

ছেলেনেরেদের বলিল—"আজ ভোলের ছট, নভূন ছুল ক্ষেত্র ভোলের।"

বাহিবে রাভার উপর আশিষা বেন একবার শেষ চেটা করিল। গুঁটনাটগুলা বুবা না গেলেগু বহু লোকের চঞ্চ কর্মব্যক্তভার একটা অস্পষ্ট ছবি চোবে পড়ে, চম্পা একটুবানি দাভাইরা পভিয়া বলিল—"হাঁন, ভাই ভে। দেবহি; ছ্-পাঁচ ছিমের মধ্যে বরগুলো গাঁড় করিবে দেবে।"

টুৰু ওভক্ষে চালু দিবা নাৰিয়া পঢ়িয়াছে। খাড় কিবাইয়া বলিল—"নেষে এগ, থামলে যে আবার ?"

"এই যে, চপুন না।"---বলিয়া চন্দা নামিয়া পছিল।

সভাই গৰার উৎসাহট। দেখিবার কিনিসই বটে। কিছু রোকে-বাটা মধুরও আছে, তবে বেশীর ভাগই বভির লোক। কাজের সময় প্রায় সকলেরই কালা চন্দার, দেখিল সকালের দিকে বাহার বাহার ছুট সবাই আসিরাতে, করেকক্স কালাই কৰিখাও বোগদান কৰিবাছে। বননালী বেন নাতিবা উটিবাছে, চাৰি দিকে খুৰিবা, তদানক কৰিবা, উৎসাহ দিবা ক্ৰম্বৰ কানগাটাকে বেন আৰও সৱগ্ৰম কৰিবা তুলিবাছে। নাবে নাবে কি যে বলিতে হইবে বা কৰিতে হইবে বেন হঠাৎ তুলিবা দিবা দাভাইনা পভিতেছে, নাবা চুলকাইতেছে, আবার মৃতন একটা কিছু টক কৰিবা এক দিকে আগাইনা বাইতেছে। খব হবল মডিছ এত প্রথণ উৎসাহের সঙ্গে বেন পালা দিতে পারিতেছে না।

চম্পা টুপুর শিহনে শিহনে আসিম্ব; এক আরগার ছাড়াইল, বতটা গন্তব দূরও রক্ষা করিয়া। কেহ লক্ষ্য করিলে দেবিত দুটতে একটা অভিনধ্য আছে।

চন্দার বাহিবটা প্রশাস, কিছ অন্তরে যে কি বিক্ষোভ তাহার সভান কে রাবিবে ? নিজেই কি সে বিক্ষোভের স্বরুপ উপলবি কারতে পারিতেছে ?--- টুলু জানে কিছুদিন পর্যন্ত আপেকার চন্দাকে, নিন্দিন্ত আছে—চরিজের দিক দিয়া চন্দানিপ্ত হথা গভিরা উঠিরাছে। কিছ চরিত্র কি এতই সোজা ? যন কি হাঁচে-চালা পোহার মত একটা নির্দিন্ত আকার সইয়া থাকিবার জিনিস ?---এর মধ্যে চন্দার জীবনে যে আনেক কিছুই ঘটরা গিয়াছে , শুর্ভানিরার আগুনের আগের দিন প্রশ্ন এক চন্দা, আলকের যে চন্দা সে সন্দ্র্ণ পূথক ।--- হরতো টুলু পারিত পরিবর্তনিটুকু বরিতে—বেশ-ভূষার, হানিতে, চাহনিতে চন্দা এর অনেক্যানি পরিচর দিয়া গিয়াছে এক ক'টা দিন; কিছ নিতান্তই উথাদের মত এক সক্ষ্যে দৃষ্টি রাবিষা ছুটিয়াছে বসিরা টুলুর নজর পতে নাই এদিকে; সে জানে চন্দা নির্দ্ত হইবাই গড়িয়া উঠিয়াকে, নির্ভুতই আছে।

তৰ্ও, আঞ্চকের বে চন্দা সে তো সেই প্রথম দিনে দেখা বজির চন্দাও নয়; তাই ভাগর-মন্দর অন্তর তাহার বিক্ষুর। তাহার মূলে আসার পরিধাম সে জামে। সবার দৃষ্টির অন্তরালে বগিলা তব্ও একটু ভরসা করিলা রাজী হইরাছিল, কিছু আজু টুলুর সলে এখানে আসার বে কি পরিধাম সে বিষয়ে দে একোরে নিঃসন্দেহ। তবুও বার করেক এচাইবার চেঙ্টা করিল; শেষ পর্যন্ত আসিল,—টুলুর বিরঞ্জিকে আজকাল ওর বড় ভরু হর।

টুপ্ নিজের মধের উল্লাগে প্রবল উৎসাহে বকিবা বাইতেতে, চন্দা মুবে একটা নিবিকার হাসি টানিয়া বাধিবাছে—টুল্কে প্রবিকার কর, কিও মন ভাহার অভ্যন্তিক—দেবিতেতে —এক জন হুই জন করিবা সবার দৃষ্টি ভাহাদের দিকে আসিয়া পভিতেতে—পালাগালি সে আর টুল্—হু'এক জন ছুরিয়া ঘূরিয়া দেবিল—দুরে কাতে—প্রথা ইবং কৃতিত হুইরা উঠিয়াতে, দৃষ্টিতে বিশ্বর। টুল্ বকিরা বাইতেতে—বেশীর ভাগই চন্দার বিকে চাহিয়া—নিকের নিজন্ব মনের আবন্দে এসবের বিকে দৃষ্টি নাই, এ সবের অব্ বুবিবারও ক্ষতা নাই।

চন্দার মনের ভিডরটা বাবে বাবে অসহ যোচড় দিয়া :

উটিভেছে। আবার ভাহার বাবে বাবে আছে একটা হ্রম্থ উরাল—জীলোক বৰন নাবে তবন নিজের কলকেই পার আবন্ধ—বেশ তো, বেবুক না নবাই—এক নলে নে আর টুলু —সবাই তো চার বিজয়ই—ল্যানেজার চার, টুলু চার, চলা চাহিলেই কেন বোর হইবে ?…পরিণান ?—ভাহার তো একট বার পরিণান—টুলুকে পাওরা; আর সবই তো এর পরের কবা।

তৰ্থ অবহু বেষৰা, একেবারেই অবহু---কড উঁচুডেই বা উট্টবাছিল চম্পা ! হর না হ'বিক রক্ষা কোন রক্ষরে ? টুলুকেও পার আর টুলুর রুডও থাকে অটুট । পর্যিন টুলু সকালবেলাই বাহির হইরা গেল, চম্পার হাতে ছুল হাডিরা । বর্ণন কিরিল, চম্পা বেন ব্বাইরা ছিল, প্রশ্ন করিল—"কড লোক এসেছিল আজ ?"

টুলু উৎসাহের নাধার বলিল—"অত লক্ষ্য করি নি, তবে এনেছিল বইকি। হঠাং এ কথা ছিল্যেস করলে বে ?"

চন্দা একটু ব্লান হাসিরা বলিল—"বচ্চ অভ্যনত আহেন আপনি, বাকে বলে নেভে:আহেন, স্বাই আসে নি। ভাল বালের দেবেছিলার ভালের অনেকেই নেই আছা।"

--- मण-पादा करमद मात्र कविदा त्रम ।

हेमू श्रप्त कविन-"अन ना (कन ?"

চন্দা ভিষ**ট ছেলেকে একৰে গ**ইয়া প**ড়াইভেছিল, উটা**য়া পড়িল, বলিল—"এমিকে আকুম।"

উঠানের সদর দিকের বে দরকা, ছই কনে সেই দিকে চলিরা নেল, চন্দা চৌকাঠে ঠেল দিরা দাঁডাইবা একবার ছুলের দিকে চাহিরা সইরা বলিল—"লভ্যিই আপনি নেতে ররেছেন, ছুলের অবস্থা দেখেও বুক্তেন না ?"

টুলু এডকণে বেদ খড বৃষ্টিতে বেখিল, একটু বিশিতভাবে বলিল—"ভাই ভো, প্ৰায় আদেক হেলেবেয়ে আনে দি; কেন, আকু বিষটা ভো বেশ ঠাঙা, কাল রাভিয়ে বডবৃষ্টিটা করে…"

"দিন ঠাভা থাকলেই বে মাহুবের মেজাজ গরন হবে না ভার কি নামে আহে ?"

"বুৰলাৰ বা।"

"মৰে আছে আপনায় ?—বেদিন প্ৰথম এবাৰে এসে বাক্ষায় কৰা ওঠে আনায়, যাজী হই নি , কালও আপনি মধন আনায় আপনায় সদে বটজনায় বেতে বললেন ন্যানে-ভাৱে হালটা বেববাৰ জতে, আনি বলেহিলান—বজায় বাক্তেই দিন হালটা। আপনি ভনলেন না। হাল বজায় মইল না, ওই শেব পৰ্যন্ত জিতল, ওল্ল কুট চালটাই কলল শেব প্ৰত—আনায় বে উল্লেখ্য ওল পাঠাবো এবানে…"

টুলু খুড়ে একবিকে বৃষ্টি নিবৰ কৰিবা চূপ কৰিবা ভাবিতে-বিল, বৃষ্টিটা কিবাইবা আবিবা বলিল—"বলৰ কলল,—এভবিন কলে বি কেন ?"

শ্ৰেই হ'চাত্ৰ বিবেৰ বংগ্য ৰে ভূলটা হ'ল ভা এভবিদ হয়

নি বলে। আমি এবাৰে আমি বটে কিছ বাইরের স্বাই আমত আমাদের মধ্যে পরিচর নেই তেমন, এত নাবামাধি তো চ্রের কথা। এর ওপর আপনিই আর একটা বড় চাল নিরে রেবেছিলেন নিতিনকে আনিরে—লোকে আমত হ'কন নেরেছেলে এবানে ররেছি আমরা, আমি রয়েছি বুলো ঠাকুর-হালার কেলাকতে, নিতিন ররেছে হীয়ার কেলাকতে। এবান কুলটা হ'ল আমার ভূলে পড়াতে তেকে এবে। আপমি লক্ষ্য করে বাকবেন আমি বুলী মনে রাজী হই নি; তবুও একটা আমা হিল যে স্বার চোবের আড়ালে, ততটা ক্ষতি হবে না; কাল কিছ আমার সলে করে বউতলার বিরে বাওরার মত বড় তুল হরে গেল। আমি টের পেরেছিলাম—আমি বুলে আসতেই বেলেমেরেকের বুবে কথাটা তবে, বভিতে একটা ডানামুরা উঠেছিল, বউতলার আপনার পালে আমার বেবে ডাকুর আম সন্দেহ রইল না বেন্দে"

हे**णू अन्न कविन--"शार्यकान अर**गरह ?"

"শা, শুশহি চারবিকে বে হালার চলতে তা বিরে
কলকাতার নাকি বড় বড় কোলাগানীর নাতক্ষরদের নিটং হল্পে
ক'বিন বরে। হরতো হ্-একবিনের নব্যেই কিরবে, তবে
আনাবের ব্যানেকার তো অনেকটা নিভিন্তই আহে বলে বনে
হর, আনে একবিন ওর কুট চাল সকল হবেই। আরি এই
অতেই আসতে চাই নি, বড় হল্ল চাল ওর, কর্বনও বাভিল
হতে বেবি নি। আনে একটু এবিক ওবিক হলেই বাজি নাং
হবে, আর একসলে বাক্তে বাক্তে একটু এবিক ওবিক
হরেই পড়বে কোন-না-কোন সম্বর—কত সাববানে বাক্তে
পারে মান্তবে গ্

টুণ্ চিন্তার বেল ডুবিয়া যাইভেছে, চন্দা থানিলে বলিল— "লবটা বেল বয়ে বেওয়া হচ্ছে, বভিতে নিয়ে একবার বলো না লবাইকে কত বড় কাকটা হচ্ছে আমাদের।"

এত বড় একটা অবিবেচকের মত কথা বলিবে চম্পা-বেল বিশ্বাস করিতে পারিল না, বিষ্মিতভাবে মূবের পানে চাহিলা বলিল—"এর ওপর আবার এডটা ভূল করবের ?"

টুপুর বৃথ্টা বীরে থীরে কুঞ্চিত ঘইরা উটিল, বৃথই অভ্যন্ত 
ছইরা সিবাতে, ছ্লিডাটা চন্দার উপর বিরাজ ধিয়া চাপা 
বিবার চেপ্তা করিয়াই বেশ বাবিরা বলিল—"ভোষাবের মেরেছেলেবের একটা বভাব বেবেছি চন্দা, বারাপ হিকটা 
বেবভেই ভালবাস; বেশ, ভূমি না বাও, আমি নিজেই বাব 
—আমানের ছ'লনকে একগলে বেবলে বহি ওবের স্বার মন 
উল্টে বাহ, বুরিরে বলতে হবে, উপার কি ?"

O£

সাঁকরেলের কথাটা চন্দা হঠাং আসিরা পঢ়ার চাণা পড়িরা সিরাহিল, আবার বলে পড়িরা পেল। হবু হবু করিয়া চড়াইরের পথ ধরিরা চলিল। চন্দা হাত রুইটা সরাইরা থানিকক্ষৰ অৱভাবে হাঁভাইরা বেখিল, ভাহার পর বীরে বীরে বাসার দিকে চলিয়া পেল।

সাঁকরেল টুলুর আরও অপরিহার্থ ভাবে বরকার হইরা পভিরাহে। চন্পাকে ভ্যাগ করিতে হইল না, চন্পা নিজেই পেল। এ বে কত বড় নৈরাও টুলু বেল হিলাব করিরা উঠিতে পারিতেহে না, এ নৈরাওের অতলভার নব্যে বৃষ্টির বেল পথ হারাইবা বার। ভূলের গবে এই আরভ হিল। আশাই হিল না হর প্রচুর। কিছ ভবু ভো অনিভিডই; কিছ চন্পা যে হিল ভালার ভপভার সিরির্ভি একেবারে; ভবু ভাবাই নর, নিজের ভপভার চন্পা বে টুলুর বারণাকেও সিরাহিল হাড়াইরা, ভাহার চারি বিকের ভচিভা বিরা টুলুকেও পরিভঙ্ক করিরা লইভেহিল বলিরা মনে করিতেহিল টুলু । · · · লব ভূরা; ভিল ভিল করিরা এই লালনাই সঞ্চিত হইভেহিল এও বিন—বার্থ বৌবনের এই হা-হভাল ?

টুলু বেল জোর করিরাই বলটাকে এই চিডা হইতে বিভিন্ন করিরা লইল। তেলার করিরাই বলটাকে এই বেরেটকে সিরা বলিবে, কতত্ব অঞ্জনর হইরাছে জানাইবে, তাহার বাকে অলুরোব করিরা উাহারও সম্বতি লইবে। তেবেল একট আনন্দ ছাইরা আসিতেছে বলে—সমন্ত ব্যাপারট তল্প, পরিজ্ব, বিবালোকের মৃত্য কুলা না রাজী হল ওর মা, টুলু সাঁকরেলে সিরাই বিজ্বের মূল বসাইবে। পর পর হুইটা আবাতে মনটা একেবারে অবলাকপ্রত হইরা পভিয়াছিল, আবার বেল জোর পাইতেছে। ওবু এইটুকুই মর, মনের উপর হইতে বেল মন্ত্য প্রকটা বোকা নামিরা সিরাছে। তেনি কাল করিল বালির বিভাবে কিলা বিভাবে বিভাব করিল করিব করিল করিব ভালির উটিরা আসিরাকে, আবার সেই পর্বে নামিরা মাইতেছে মা তো ?

গুৰু চন্দা নয়, আৱও যত কিছু সম্ভা লইবা সাৱা গঞ্চ-ভিহিটাই সূত্ৰ হইবা যাইতেছে প্ৰতি প্ৰকেণেই ;—মন্দ্ৰ-লোকেল নীচে তথা ৰখনীৰ এই আন্দ্ৰস্থাহিত বুক ৰণ্ট ৰীৱে বীৰে টুল্ব ননের মধ্যে প্ৰবেশ ক্ষিভেছে। যাকু, গঞ্চ-ভিহি বাকু, ও শুভন জালগাৰ নৃতন ক্ষিৰা সৰ গভিবে।

চুনুপা চালাইরা বিল। আচ বুঝ আঘাতের পরেই এই
নূভন আলোকের সধান পাইরা দেহে বনে উৎসাহের জোরার
আলিরাতে, এই নূভন আলোর সামনাসামনি হইরা ইাছাইতে
বেন বিলম্ব সহিতেতে না; বনটা হইরা উটিরাতে একেবারে
উদ্ধা।

এর পরই একটা ব্যাপার হইল যাহাতে জীবনের সম্ভ বারাটাই একেবারে বদলাইরা দেল।

সামৰে, প্ৰায় গল পঞ্চালেক দূরে একটা ছইওলা বলবের গাড়ি বাইতেতে, চড়াই-উংরাইরের বুবে করেকবার চোবে পড়িয়াতে, বির্থন পথে একটা সলী হিসাবে বল লাগিতেতিল না, তবে বাছবের অভি-সারিব্য এতকৰ তাল লাগিতেহিল না বলিয়া এই ব্যববানটুক ক্যাইবার কোন চেটা করে নাই টুলু; বন থেকে বেবটা কাট্যা বাইতে এই জনহান আহগার ঐ একট নায়্বকে (হয়তো একাবিক্ই) কেমন বেদ বছ আত্মীয় বলিয়া নমে হইল। গতিবেগ বাড়াইয়া বিয়া গাড়িয় শিহনে আগিয়া প্রশ্ন করিল—"কোবায় বাবে গো কর্তা ?"

একা গাড়োৱানই, চকিত হইৱা হঠাং বলদ ছইটার রাশ টানিরা বিল, ছইবের পাশ দিরা বাড় বাজাইরা দেখিরা একটু ভীত কঠেই সাহস আনিরা প্রশ্ন করিল—"কে বটে ?"

"চলো, তর নেই, আনি রাহী একজন। কোণার বাওয়া হবে ?"

"है। भाषाका । --- यभव १"

"সাঁকরেল।"

"সাঁকরেল বাবেন?—ভাবনেন ক্যানে ছইরের ভেতরকে, আনিও উন্ন কাছ দিরেই বাব বটে, শিবতলার ভেনাথা থেকে ভাইনে গুরব, আপুনি বাঁরে বাবেন।"

মন্দ নৰ, পা ছট ভাৱিৰা আণিৱাছে, গাড়ি দেখিবা বোধ হয় আৰও। টুপু পকেটে হাত দিল, একটা মনিব্যাগ থাকে কৰ্মনা, ঠিক আছে। বলিল—"তা আপড়ি নেই, তবে কিছু প্ৰসামিতে হবে বাপু; নয় তো হেঁটেই বাই গল ক্ষতে ক্যতে। তোৱার নামটি কি ?"

প্ৰদা কাছাৰ ভাষণাৰ দেওৱাৰ কৰাৰ আৰও একটু ত্রদা হইল বোৰ হয়, গাড়োৱাৰ বলিল—"নামট আবার নটবর আজে, নটাই হাস বলে ভাকে স্বাই, তা প্রদা ক্যানে গো ?—পাড়ি ভো আবার উই প্রেই বাবেক।"

"ভা খোক, পরসা নিভে ছবে; ভোষার খলদের একটু বেছবং ছবে ভ ?"

"ই, ভানী মেহনং বলদের। আপুনি উঠেন।"

পিছৰ দিক দিৱা উঠিতে উঠিতে টুলু বলিল-- ''উঠিছি, প্ৰসা কিছ নিতে হবে।'

"ভ: দিবেদ গো, বিলে কেলে দিবোক নাকি ?"

খাভ কিরাইরা দেখির। লইল, টুলু উঠিরা বসিলে এড়টা বলবের লেজ যলিরা অপরটার পিঠে চাপড দিরা বলিল--"চল্, বাব্যশরকে পৌছিরে দিখি ববে।…পরসা দিবেন ত ধরেই নামারে দিয়ে আলি গো, চলেন। কার বাভি বাবেন ?"

টুৰু একটু সৰভাৱ পছিল, একটা প্ৰশ্ন করিয়া উভৱটা এভাইয়া গেল---"ভূবি গাঁকরেলেয় স্বাইকে চেৰ ়্"

"গ্ৰাইকে কি কৰে চিঘৰোক নদায় ?—আবার বর ক্থার, আর ক্থার গাঁকরেল !—বার্থানে হুকোশ পথ। তথে চিনি বৈকি, পানেকের চিনি, বিনোদ পান বদর, রাইগঞ্জ করলা আপিলে বড় চাকুরি করতোক তিনি। আবি তার বাছিতে চাকর থাক্লার কি না, চিনি, তা তিনি ভ নাই এবন, বারা থেলোক, নেই নাগার আবিও এই বলর হট। লইবে ফাটান্তি বশর।---ছাট বে হাট্ । আপুনি না চললে, লেকট বলে বলে কবনও চালান বাহ বশর ? কভ নলবেন আপুনি—ছাবে ব্যাব'টি বলে বাবেক নাই ?---ছাট্ !---"

লেকে হাত বিরা বলব হুইটাকে আর এক চোট তাড়া বিল।

টুৰু উৎকৰ্ণ হইৱা উটিয়াছিল, প্ৰশ্ন করিল---"ভা হলে চেদ ভাষের ভূমি ?"

"ই, চিনি না ?—ভাঁর পরিবারট আছেন—গিরিবা, বছ অহুব হুইছে, কাল ধেবাট করতোক এনে—ছুইট ছাওরাল, একট নাইরা; তা আপুনি নাই ত পরিবারই কি, ছাওরালই কি, নাইরা কি ?"

"আৰি ওদের বাড়িতেই বাব।"

"কে বটে আপুনি উদের ?"—ছইছের মধ্যে ঘূরিষা দেবিল।
নিজের পরিচরটা দিতে বাইতেখিল, হঠাং কি ভাবিরা
একটু বামিরা গেল, বলিল—"এমনি জানালোনা আছে।
ভূমি তা হলে এবন এই কাজ কর ? বাড়ি টাপাডালা বললে
না ? —সেবানেই বাক ?"

"উবানে কি ধোজগার হবেক মদার ? বাকি গঞ্ছিছির বাজারে, ই গাড়িট বাটাই···"

টুপুর বৃক্টা বক করিরা উঠিল, আপনা হইতেই ছইবের গা বেঁ সিরা একটু গুটাইরা বদিল। গাভোরান নিজের মনেই কাহিনী বদিরা বাইতেছে,—বরে তিনট ছাগুরাল - আছে—পরিবার আছে—ছইট মাইরা—কভ শক্ত বে সবার বুবে একর্টা জর খেগুরা—টুপুর কিন্ত কান নাই সেহিকে বিশেব, বনে লৃত্য চিন্তার চেন্ট উঠিরাছে, ত্র ছুইটা কুকিভ হুইরা উঠিরাছে। মুখটা বাহিরের দিকে একটু বুরাইরা সইরা বদিল—"ভিনট ছেলে ছুট বেরে বললে না ? বেশ—ভা এবের দেখাপঢ়া শেখাবার কি ব্যবহা করছ ?—অন্ত ছেলে ভিনটার ভ বরকার ?—

"গঞ্ছিহিতে ত স্থবিৰেও আছে বেশ…"

ৰ্থটা কিবাইবাই বহিল উণ্টা বিকে, কি উভৱ দেৱ ভনিবার কল কাম হুইট বাজা করিবা।

ৰটাই দাস একটু ভেৱছা হইৱা বসিল—"ৰেকাপড়া ? হ, বুলেহেৰ বটে j···বিভি দিবেৰ একটা ? আহেঁ ?"

"चानि गारे मा विकि।"

"দিক্তেটি গু"

"না, ७ পাটই নেই।"

"একটু খৰ ক্যানে, ভার্কটা বহারে" নি १---নেকাপভা। ই।---

গাড়িটা বাৰাইরা ছইরের গারে বোলাবো এড়টা ছ'কা থেকে কলিকাটা বাৰাইরা লইরা ভারাক গাড়িতে লাগিল। টুলু বঠাং এই ভাব-পরিবর্তবে এক্টু বিশিত হইল, তবে নাজার মধ্যে আপন মধেই বার ছ্রেক—"বেকাপড়া ই।···বেকাপড়া—ই।···' বলার ব্রিল প্রশ্নটা ওর পক্ষে অক্সপূর্ণ হইরাছে। ব্যাপারটা কিভাবে বিভারলাভ করে চুপ করিরা লক্ষ্য করিতে লাসিল।

তাৰাক লাজা হইলে নিজেই গোটাকতক টাৰ বিবা নটাইবাস গাড়িতে উঠিয়া বসিল ৷ বাঁ হাতে হ'কাটা বুবে সংলয় করিয়া বসহ হুইটাকে চাপু করিয়া বেশ একটু উভেজনায় সঙ্গেই বসিল—"নেকাপড়া ৷ ই ৷···বেকাপড়ায় কথা আয় বুলবেন না বাবু হলয় ৷"

"কেন গো ? আক্কাল নবাই ত পঢ়াছে ছেলেমেরেনের— নেরেনেরও—-

—উত্তরটা বেদ বাদা-ই, ৩৭ কিলের সম্মোধ্যে ওর রূপ দিরা বেদ বাহির করিবা সইতেহে টুলু; বুকটা চিপ চিপ করিতেহে, কঠ হইরা উঠিবাহে ও৯।

নটাইলাল ভিন-চারটা বুব খন খন টান দিয়া লইয়া বলিল
—"ই, পঢ়াইছেঁ। আনিও ভো দিভান শিবতে—কুড়ানের
নারেরে বুললান—পরনা কুবার পাব ইছুলের—পেট চলাটই
ভার, তা নাটার মশর বাসাঁর এক বাবুট ইছুল বুললেক,
পরনা লাগে নাই, নিলেট দিইছে, বই দিইছে, ভূর কুড়ানকে
আর হারানকে দে, জিলা করে দিই ভেনাকে, উদের বাপের
মতন বলন ঠেলতে হবেক নাই—উদের যা বুললেক—ভা নিরে
বাও ক্যানে, পেটে হুটো কেভাবের হরক চুকুক, ছুটো ইন্জিরী গাল শিবলেও মাহুর বনে' বাবে।—এই-ই বেপে নিরে
আসব মশর, ভেভরের কেজা বেইরে এলোক আজে—পাপ
ভো ঢাকা থাকে নাই মশর—আগুনটি ভো ঢাপা বাক্বেক
নাই।—"

টুপ্ৰ কণালে বাম কৰিয়া উঠিয়াছে, সমন্ত শরীরটা বেদ আসাড় ব্টয়া আসিতেছে, নিকের বৃত্যুর রায় ভনিতেছে টুল্। তবু শোনার একটা আঞ্জহ—আরও স্পষ্ট ক্রিয়া শোনার; বলিল—"ঠিক বুকলায় না—কেছাটা কিসের ?"

প্ৰে আপুনি বুৰবেদ দাই; আপুনি কুলবণু ভগৱ লোক, উসৰ কোছা আপুনি বুৰবেদ কেমদট কৱে দশৱ ?"

ইহার পর চন্দা-বটভ সমত ব্যাপারটা খাথাঞ্চণাথার, নালভারে এবং 'কুলবণু ভড়র দোক'-এর বুলিতে বেগ পাইতে না হয় এই রক্ষ উপবোধী ভাষায় বর্ণনা করিবা গেল, চন্দার পূর্বকাহিনী নহতে যথোপযুক্ত সিকাটগুনী সমেত।

টুলুর এতকণে আর একটা সন্দেহ হইল, আগেই হওরা উচিত হিল, বনটা নিতাভই উদ্আভ বলিরা হর নাই , ছইরের ভিতরকার অধকারেই বতটা পারিল দেখিল ছইটা, বাহিবে বলল মুইটকে এবং গালোৱানকেও বেশ ঠাহর করিবা কেখিল, সন্দেহের ভাবটা কাটরা গিরা বাহা আলাক করিবাহিল দেটা আরও শাই হইরা উট্টল, তবু সব শাই করিবা শোনার বোহেই প্রশ্ন করিল—"ভূবি বেবেহ বাবুটকে নটাই ? বরো যদি ৰুছো ৰাছ্যই হয়, নিৰ্ব্যে হওৱাই ভো গভৰ এ গৰ অপৰাৰ— বলো লা ৰো ?···

বটাই লাল হঁ ভার টান বিভে বিভে একটু বাড় রাঁড়াইরা ভনিভেছিল, ব্বটা হিনাইরা লইরা আবার বানিকটা ভেরছা হইরা বলিরা বলিল—"দেবি নাই !—কি বুল্ছেন আপুনি বশর ? পান বশর ছেলে নাইরারে আনতে আনতে সিধিন বড় বিহারে উই ইছুলে নিরা উঠলাম নাই গাড়িস্ল্যু ?—উ গাড়িট ভূলে ভূলে বিলেক নাই ?…পান বশর ছেলে নাইরা উর বাঁসাটতে সিরা উঠলোক নাই ?…বুড়া মাছ্য আছে !—আপুনির চেরেও লোড়্ন জোৱান—বিধি নাই আমি ! বুড়া মাছ্য—ই !…"

উভেজনার খ্রিরা ধুব ক্ষিয়া বলব ছুইটার লেজ বলিয়া এক বৌকে গৌজ ক্ষাইয়া বিল, ভাহার পর ঘ্রিয়া বসিয়াই আবার হঁজার মনোনিবেশ করিল।

বে-কোন কারনেই হোক, টুবুকে চিনিতে পারে নাই; সে বিন প্রবল বক্ষাটির নথ্যে বেখা, আৰু হুৰ্বল জ্যোৎসার— হয়তো নেইজ্ঞাই। টুবু নিজেকে আরও বতটা সভব প্রজ্ঞার করিরা বলিল। প্রশ্ন করিল—"পানেকের বাভিতেও জানে নাকি ?"

"কাৰে না ?---বুলেন কি মণর ৷ সাভবানা গেরামে চি চি পাড় পোলোক ; ঘটা করে বাভি করছিলোক, এবন ভাবেন দিরা ভত্তি পড়াইক ;---জানে না কি গো :---কি বুবছেন আপুনি ?---"

এর পর আর কোন প্রশ্ন করিল বা টুলু। মনটা এমন আবা হইরা গেছে, বেশ ভাল করিয়া কিছু বেন ভাবিতে পারিতেছে না। নটাই হাল বকিয়া হাইতেছে, কবনও একটু ভিনিত, কবনও উত্তেজিত, এক একটা কবা কানে আলিয়া বাহিতেছে। বাকিওলা হাওরার ভালিরা বাইতেছে। এক লমর গাভিটা একটা তেনাধার বুবে আলিয়া পভিতে টুলুর চনক ভাঙিল, নিবা হইবা প্রশ্ন করিল—"শিবৎপার বোড় ?"

"বালে হা।"

টুলু ৰভিষাত্ৰ চৰুল হইবা উঠিল, বাধার কোন বৃদ্ধি আলিভেছে না। কালিটা বাঁ দিকের রাভার চুকিরা পছিল। টুলু একটু হাবাঞ্চি দিয়া হইবের পিছন দিকে হঠাং বানিকটা আনাইরা লেল-একটা বিপদ হইতে বেল ফুটরা পলাইভে চার। ভাষার পর প্রাণপণে নিজের ননটাকে গুলাইরা লইরা একটু ভাবিরা বলিল—"নটাইলাস নার বুললে না ? কালেট্ বাবো ভোকে"

গাড়ি থানাইবা নটাই খুরিবা চাহিল। টুলু বলিল—"ইরে নাথাটা একটু ধরেছে ছইরের গরবে—ভাবতি হেঁটে বাব— ভূষি বিষে যাও গাড়ি—"

"ৰাণা বৰদ তো একটু ভাষে পাড়েৰ ক্যানে, এবৰও ভিন পোৰা যাভা বটে•••" টুলু বেৰ ভৰ্কের ভৱেই ভাড়াভাড়ি গাড়ির শিহৰ বিবা নাবিবা পড়িল, বলিল—"না, বানিকটা হেঁটে গেলেই টিফ হবে বাবে—নাবার হাওৱা লেগে; আমি নাবলাব।"

"তা সদে চলি, টিক হরে গেলেই আবার উঠবেন গো… তিন শোরা রাডা…"

"না, তৃষি যাও , ভিন পো আবার রাভা, আমি হেঁটেই বাব—গুরিয়ে যাও গাড়িটা।"

নাধা বরক না বরক, নাধার গোলনাল আছে, নটাইবাস হইবের মধ্য দিয়াই একটু অকুনিত করিরা চাহিরা থাকিরা ভানদিকের বলদের রাখ টানিরা গাড়িটা বুরাইরা লইল। থানিকটা গেছে, টুলুর বনে হইল পরসাটা বেওরা হর নাই। একবার পকেটে হাত বিল, তাহার পর কি ভাবিরা আর ভাকিল না।

টুপুর মনে আর এভটুকুও সাধুর্ব অবশিষ্ট নাই, উদারতা তো দুরে থাক।

**S** 

বিতীর বিষের কথা। অনেকথানি রাজি ক্ইরাছে, বট-ভলার থোরাইরের বারে একটা লিলাখঙের উপর টুলু বলিরা-ছিল। ফুলা সর্বারীর টাল উঠিবে, প্থাকাল অনেকটা বছ্ছ ক্ইরা আলিরাছে। ইবভরল অঞ্চলরে বভদূর পর্যন্ত কথা বার বৃষ্ট প্রগারিত করিরা বিরাছে টুলু। বাঁল, বাতা চারি বিকে হড়ানো, কভকগুলা গুঁট এখানে-ওখানে আব-ক্লোক্টরা ভাছে। আদু বৈকালে একটা ক্ষকা হাওরা উঠিরাছিল, বড়ের আঁটগুলা লইরা বেন লোকালুকি করিরা বিরাছে; গোটা ভিন বড় আঁট গড়াইরা বোরাইরের গর্ভে পভিরাছে।

কাল বিকালে আৰও কৰ লোক আলিরাহিল, আক লকালে আলিরাহিল নাম রোধে-গাঁচী যকুররা , বিকালে কে আলিরাহিল, না আলিরাহিল টুন্ কাং না, সে বিজে আলে নাই এথিকে।

বনৰালী এক প্ৰস্থ বোগান দিয়া আবার সরঞ্জার আনিতে নিয়াহে; কবে বে কিরিবে লেই জানে, অথবা হয়তো বিবাতা-পুরুষও জানেন না। কাজের উল্লেখনার সময়ের গোলনাল হইরা বাইতেহে; গাঁচ দিন পরে কিরিরা ভিন বিনের হিলাব দিল, বাকি ছই দিন হজন করিয়া কেলিয়াহে।

বিকালে টুলু বৰৰ বাহির হয়, চন্দা বিলু জীবন আর ৩ট চারেক অভ হেলে নইয়া বনিয়াহিল—বভিন্ন বন্ধ, বাজারের ওবিকের ; টুলুর বিকে একবার বিষ্চু ঘৃটি ভূলিরা চাহিল, কিছু এর করিবার সাহস জোগাইল লা।

চন্দাৰ কথাওলা টুৰ্ প্ৰথমটা অঞ্জাহ কৰিকেই চাহিবাহিল, ভাহাৰ পৰ বেমৰ নমৰ সেহে, অৱ অৱ শক্তি সকৰ কৰিব। সেওলা ভাহাকে আভভুত কৰিবা কেনিবাহে। সভাই সে পৰাখিত, বিভালে ছুল, বটতলা—ছুই জাৱনাৱই এই লচ্
বাল্লপ নত্যটুত্ব আই বইবা উঠিল, আজ সকালে আলও বেলী
কৰিবা; তাহাল বল্প প্ৰশানে পৰিণত হুইবা গেছে, কাল বেকে
আজ পৰ্যত হুইটা দিন খেন একটা গুলির মধ্যে কাটাইরা লাভ
শৰীলে, অবসন নমে টুলু নেই খাশানের নাকবানে আলিলা
বিনাহে। তাহালই হাল, ধুব ছুল ছিলা ন্যানেজান
লভিকাভ তাহাল ললাটে কলভবেবা অভিত কৰিবা দিল, এত
ছুলা বে টুলুকে একবাল টেব পাইতেও দিল না।

कान (बटक हेन्द्र चाहाद नारे, निका नारे, काबाद কোপার পুরিরা বেড়াইরাছে, কি কি করিরা, ভাল ভাবে মনে **१८७ मां। ७९ अक्डी थाना,---बाट्काटन, द्वराव मन्डी एक्ट** হুইবা নিবাহে, বতই সময় নিবাহে সে বাহ নিবাহে বাছিবা। ···একবার ম্যানেজারের বাভির দিকে পা বাভাইরাছিল, পিরা किছ अकी क्या प्रकार मा प्रेटल बांधा बाद मा : बांध्य वार्षित इरेवात चार्त्रहे मरन शक्ति मार्ग्यात माहे : वार्ष चाटकान्ही विटक्टकरे विश्वन कृदिश वर्ष कृदिक नाजिन।... ভাহার পর বভ আফোশ, যত ছুণা একসঙ্গে গিরা পড়িল বন্ধির উপর-এই ইহালেন্ট্রড নে প্রাণপাত করিতে বসিরা-हिन-अक्रवाद कारिया (मॉर्न्स मा. (बीक्र महेदा (प्रवित्र मा. চন্দা ভবু তাহার পাশে আহে বলিয়া এচন একটা কুংসিত সিহাত করিয়া লইয়া ভাষাকে এক কথাতেই পরিয়ার করিয়া বসিল !---ছই দিন আবে বেষন না বৌজ লইয়াই ভাছাকে ষেবলোকে তুলিবা ধরিবাহিল। টুলু চম্পাকে বলিবাহিল সে नित्वरे विख्छ बारेबा जवारेक वृकारेता। श्रेष्ठावरी त কভটা হের, কভটা লক্ষাকর গেটা নিজের কাছেই প্রতীয়বান হুইভে দেরি হুইল না। যাওয়া ধূরের কথা, বভির পানে চাহিতেও বেদ গা বিদ্যাল করিতেছে।

ছুইটা খিন এইভাবেই সিয়াছে—ছুণা, আঞ্চোণ, লজা, অভিনান, সবার উপর লাক্রণ আলা-ভল, তাও আলা-উন্নাহনা বৰন একেবাছে চরবে আসিয়া ঠেকিয়াছিল,—সব নিলিয়া একটা ছুপির পৃষ্টি করিয়া গুড় প্রের নতই উড়াইয়া লইয়া কিয়াছিছে চুলুকে।—তাহার পর, এই একটু আপে এইবানে আসিয়া বনিল।

এই প্রথম এক ভাষণার বনিয়া সমস্ত ব্যাপারটা একট্ট্ ছির মনে ভাবিরা দেবিবার চেটা করিল। প্রথমে কলকের বিভীবিকাটাই দেন হঠাং বাভিয়া, ভবু ভ বজি পর্বন্ধ মর, আরও চের কাহে, লজাকে আরও গভীরভর করিরা কলক পভিরাতে হভাইরা,—দেবিনে কাজীবার কথাওলা, উাহার ব্যবহার গুভন অর্বৃক্ত হইরা উঠিল। ভক, বিষস কঠমব, এভটুকু মহাভা নাই কথার বব্যে।…"ভূই বাভি চলে যা টুল্লু…"কেন দুল্লা ক্রান্ধ বনের নির্বিকারতে টুলু বলিতেতে আটাতে হবে দুল্লানিক্রের ব্যবর ব্যাক্তির ক্রান্ধ ক্রান্ধ

বেলেনেরে নিরে ররেছি, ভাবের পড়ানির, ভাবের বাহ্ব করবার চেঠা করতি।"---"বহু বছি সেইটুকুই, ভার কডেই বা ভোর এত রাধাব্যধা কেন ?"

কত লজাই বা জ্বা হইরাছিল জ্বাঞ্চার বব্য ।
তগবানকে বচবাব, বে বিজের ববের ভ্রতার প্লাবির ক্যাথাত
সহা সদ্য লাগে নাই তাহার ববে , ক্তি এবার ত কাকার
বাতি চিরতরেই তাহার নিকট বর হইরা গেল। তবু তাহাই ক্নে ? সম্ভ ব্যাপারটা এই বলীকেই লিও হইরা কি বাতি
পর্বন্ধ পৌহাইরা বার নাই ? আর এ করে কি বাতিতেই
বুব বেবাইবার অবহা রহিল টুলুর ?

**शृ**र्वाकात्म कांच न्यंडे एदेश छेवेल : अक्की विद्यविद्य হাওৱাও উটিল। খুলামটাও বেন একট স্থিত ত্ৰপ বাহৰ ক্ষিত। টুলু আৰু একবাৰ শেষ চেঙা ক্ৰিল, ঘনটাকে ব্ৰাস্থৰ পাছ ক্ৰিয়া দইয়া, একট ভছাইয়া ভাবিতে লাগিল কি বোৰ ৰভিত্ৰ এব্যের ?—নিজেয়া এত নিচে পড়িয়া বাকিলেও চল্লিএকে সবার উপর এতটা মর্বাধা বেওয়াটাই একটা মত বড় আশার क्या मत कि अरमत शरक ? यखका के विदानहें इ. हिन, हेन्ट्रक বেৰভাৱ আসন দিয়াছে, বেই সেটা গেছে, সঙ্গে স্থে কিবাইবা দইবাছে--বিধানটা বে গেল নেটা ও ওবের ছোব मद । अस्वत छात्र कवित्व (क्य हेन् ? अवा (बीक त्यव मारे, ভাষার কারণ সব ব্যাপারকেই একটু খুলযুষ্ঠিতে ধেবা অভ্যাস **धरम्ब-- भारेरवरे वा (काबाद्य मृद्धित व्यक्त प्रथा ? वा, काव** कवा हरण मा अरम्ब, अञ्चलक मितान रुप्ता हरण मा : अक्डी ও ড---উদযাপনের মূবে যদি এত অলে ছাড়িয়া দের তাহা হইলে এ পৰে নামিয়াছিলই বা কেন ?…ওছের মনের মত হইছা ওধের সাহমে আবার হাড়ান বাছ না ?

অনেককণ ভাবিল টুলু, কিছ একটা উভাই পাওৱা গেল—বোৰ হব বাব না ইড়ান আব। নেই এক কামণ— ওয়া খুল গৃষ্টতে কেনে, এব পব বেডাবেই টুলু ওলের নামনে ইড়াক, বাচাই কয়ার নামকওট ওলের ববলাইকে না, ওয়া ভূলিবে না, চলা এক্ষিন ওর পালে বসিরা ওর ছুলে গড়াইরা-হিল, এক্ষিন ওর পালে ইড়াইয়া ওলের কাম্ম ভবারক ক্রিয়াহিল। কেন ?—এই প্রস্কটা আর ভাগার অভি লহ্ম উভারটা ওলের বন বেকে কবনই চুল ক্ইবে না।

ভবু একবার চেষ্টা করিবা দেখা চলে, কিছ ভাবার বাবে ভ চলাকে ভাগ করা ? কেব ভাগ করিবে ? বভির জরা, সে বিজে আর চলা—এই ভিনের ববেয় সব চেরে বিরপরাধ ভ চলাই। টুলু বরং এত বড় একটা তুল করিবা বলিরাছে—ভূল এক বরণের অপরাধই—চলা ত এবিক বিরাও বৃদ্ধু, বিরভাবে একটা কথা ভাবিবা বেবিবার ক্ষরতা রাবে, এ বৃচ্চার পরিশাব আলাক করিবাছিল, নাবিতে চাক্তে বাই একব ব্যাপারে।

অর্কের কের বরিয়া আয়ত একটা কথা ববে হইল,---বহি

করেই জ্যাস চন্দাকে, এবান থেকে বেরই সহাইরা, ওবের সন্দেহই জ্যান করিয়া পুঠ কয়া হইবে বা কি ?

ষিরভাবে ভাবিতে গিরা নিরাশার অভকার বেন আরও নিবিক ক্টরা উঠিল। এই সময় সাঁকরেলের কথা ক্ঠাং ব্যবে পাট্ডরা গেল, এবং প্রায় সলে সলেই পিছনে কাঁকরের উপর কাহার পারের দক্ষ গুলা গেল, টুলু কিরিয়া দেবিল চন্দা।

চন্দা বিশ্বিত হবল না, আগাইয়া আসিতে আসিতে বলিল—''আনি শেষ পৰ্বত এইবানেই পাব আপনাকে, তিন বায় বুঁজে গেছি এয় ভালে। এ কি ছেলেনাছবি হছে ? বাসায় বাবেন না ? রাভ কত হ'ল কিছু আকাভ আছে ?"

টুপু সামনের দিকে হাভটা সঞ্চারিত করিরা বলিল—
"নিবের চোবেই দেবো চন্দা—কার করে করছিলায় এসব ?
আফ একট লোক আসে মি, অবচ হৈ-চৈ করে এসে আয়ার
ফিনিয়ণজন্তলো ভচনচ করে দিয়ে নেল।"

চন্দা একবার গৃষ্টিটা বুলাইয়া আনিরা বলিল—'এ আছেলটা আপনার হওয়া দরকার ছিল,— কাদের অভে করছিলেন ভাল করে বুরুন এবার।"

চন্দা সন্দিত হবল আসিবাছে, ক্বলীতে একটা ছুইবের নালা পর্যক,—একদিন লে নালাকে এই ধোরাইবের নব্য হই পারে নালাইরা দিরাহিল কেলিরা, আবার লেব পরীকার বচ ছুলিরা লইরাছে। ছুইরের গবের সঙ্গে সেই হালকা এনেলের গবঁটা আহে, পরপের শাছিটা রং করা, রাজিতে একটু বলিন ননে হওবার ওর গাবের নালা নালা রংটাকে আরও উক্ল বোব হবৈতেহে।…পালে ইালাইরাহিল, কবাটা বলিরা একটু লীলারিত ভলিতে সারবে একটা বড় বছের গালার বিরা বলিতে বাইতেহিল, টুলু বারব করিল, বলিল— পরসকাল বেবানে সেবানে বোল বা।

চন্দা একটু চুণ করিবা বহিল, তাহার পর একটা চুড়াড় নাহদের ফাড় করিবা বলিল, কাহাকাহি চারি বিকটা একবার বেখিরা লইবা আর একটু হাসিরা ক্স করিবা বলিরা বসিল—এবানে বনবার ভারগা ও ভাবলে বেখহি একট—বে পাধরটার ওপর আগনি বনে আহেন।

—বেশ লখা সমতল গোছের পাধরটা, জনভিষেত বেশ বসিতে পারে। তবনই ভিড ইাড়াইরা উঠিরা কথাটা ছুরাইরা লইল, বলিল—নিন্, বাজে কথা রেবে উঠুন তো; হরা করে বহি একথানা বন বেঁবে বিরেও হাড়ত ওরা তো ভাইতে না হর রাভ ডাটাতেন।

একটু আড্ডোবে চাহিরা বেবিল—অভি দাহদের কথাটা টুলুর কালে পৌহিরা থাকিলেও বনে পৌহার নাই বোটেই— দেটা বহু চুলে কোবাও পড়িরা আহে। ইাড়াইরা উট্টরা বলিল—বেশ চল।

পৰে কৰা হইল বুৰ আন। টুলু একবাৰ প্ৰশ্ন কৰিল---"কোৰাও নিবেছিলে ভূমি ?"

"ना, (कम बसून (का 9"

"না, এবনি, খীৱার গারের গড়টা পান্দি, ভাবলার নিরে বেলা করছিলে বৃধি।"

আবার নিজের চিত্তার বহিল ছুবিরা।

বাসার প্রায় কারাকারি আসিরা হঠাং ব্যাকুল কঠে বলিল,

"আরি সন্থ করতে পারতি মা চলা, এই গঞ্জতিতিতে এসে
আমার মনের ওপর বিরে অনেক বড় গেছে, গরে গেতি, ওরু
সরে বাওরা মর, দেবেতি লেব পর্যন্ত বরেই ইাভিরেছে সেওবো।
আমার মনে কিছ কেনন একটা তর হচ্ছে এটা একটা অভিলাপ; আরি এননভাবে তেঙে পড়ি নি কবনও। ঠিক বরতে
পারতি না, কিছ সভিটেই আমার মনে কোবার যেন মন্ত বড়
একটা বস্ নেবে গেছে, একটা যেন সর্বনাশের সামনে এসে
ইাভিরেতি আমি। আর সবই দিরে এরাই লেম পর্যন্ত
আমার ভীবন এননভাবে ব্যব করলে।"

চন্দা ৰাথা নিচু করিরা শুনিতেছিল, উভর দিল করেক পা বাওরার পর; বাধা নিচু করিরাই বলিল—"বার্ধ বে হরেছেই এমদ ভাবছেন কেন ? সার্ধক করা ভো নিজের হাতে।"

"কি কৰে ?"

"আনেক রকম পথ আছে; বেটা বরেছিলেন সেইটেই কি লাপক করবার পথ জীবনকে? বরং ঠিক উল্টানয় কি? ভেবে বেশ্বন বা ভাল করে।"

বে ভাৰনায় অভঃশীলা প্ৰবাহ চলিয়াছে ভাহারই জ্বে বহিরা টুলু বলিল—"কিছ আমি ভো ওলের জভে নিজের বলে কিছু রাখি মি চন্দা, লবই বিরেছি বিলিয়ে—দিফিলামও…"

চন্দা হাড়াইয়া পড়িল, চোৰ হুইটা দীও হুইয়া উটিয়াহে, জোৰে মন্ত, টুলুর পরিচিত কোন কিছুতেই নত্ত বেন, বলিল— "কিছ এইভাবে বিলিয়ে দেওরা, নিজেকে এইভাবে বকিত করাই কি সার্বক করা জীবনকে? জীবনের নিজের দাবি নেই মনে করছেন নাকি? আপনি আপনায় বেরাল নিয়ে রয়েছেন মন্ত, বারা চাইছে না আপনাকে, বারা উপকারের বছলে করছে অপনান, তাবের পেছনেই পাগলের বতন হুটে চল্লের আপনি—নিজেয় সর্বনাশের লকে আরও কারত সর্বনাশ করছেন কিনা একবার চোৰ কিরিয়ে দেববার কুরলত নেই আপনার—কিছ একদিন জীবন কি এর জ্বাবিহি চাইবে না জেবছেন ? নিজে কাঁকি পড়ার সঙ্গে—এই রক্ষ করে কাঁকি বিয়ে বাবার…"

টুৰু আতৰে একেবাৰে হাণ্ড হত নিজন হইৱা ইাড়াইৱা আহে, চোৰ হুইটা চন্দান চোৰেন্ত উপন্ন কিনাইতে পানিতেহে না; পুন্দীৰ্য একটা লভা বেন হঠাং নৰ্গ হইৱা চক্ষ বহিনা নামনে ইাড়াইৱা আহে। ভোষা বিভা কি হুইল, শেবের ক্ষাঞ্চলা বলিতে বলিতে হুই হাতের অঞ্জিতে হুবটা চাকিনা চন্দা এক্ষেবারে হ'হ ক্ষিয়া কীবিনা উঠিল।

টুবুল ভবনও সবিং কিবিয়া আনে নাই; চলা হুই খাভে

ৰুব চাকিবা সাৰৰে হাভাইবা, কালা কৰ কৰিবাৰ ভেটাৰ পৰাৰটা ছলিবা উটভেছে। পাছিব আঁচজের বানিকটা বাটভে স্টাইভেছে, নাৰাটা নীচু কলা, টাদের আলো পছিয়া বৌপাল নালাটা আৰও উজ্জ হুইলা উটিবাছে।

স্থিৎ হওরার পরও থানিকক্ষণ চূপ করিরা ইাড়াইরা রহিল , সর্বস্ত দৃওটার—আগাগোড়া লয়ত ব্যাপার্টার্য ট্যাক্টেডি ওর ব্যটাকে মধিত করিয়া দিয়াছে । ছির্ভাবে বেশ আৰেককৰ বাঁড়াইবা বহিল, তাহার পর এক পা আনাইবা নিবা ক্ষেত্তরে পিঠে হাত বিবা বলিল—"আমি কাউকে কাকে পড়তে বোৰ মা, কৰা বিদ্ধি তোৰার, আমার ভূল তেঙেছে। ভূমি বানার বাঙ, আমি এক আমনার বাদ্ধি এবন, ——কোৰার তা জিগ্যেল কর মা, সম্পু মিঙ বা আমার, সন্মীট। কাল সকালেই কিয়ে এলে বিজেই তোধার তেকে পাঠাব। বকিত হতে হবে মা কাউকে চলা, আমি কৰা বিদ্ধি।" ক্ষমণ:

# পৃথিবীর বৃহত্তম দূরবীন

অধ্যাপক শ্ৰীজিতেন্দ্ৰচন্দ্ৰ মুখোপাধ্যায়

শ্বৰ্শক্ত-শীহারিকাদি-স্থালিত বিখের রূপ মাসুষের কাছে বছটা উমুক্ত হইমাছে তাহা সবই দ্রবীনের দৌলতে। বপ্রের মলে চোপ রাধিরা মাসুষ থানিরাছে অদৃশ্য বহিবিধের রক্ষারি ধবর, সুস্বের সীমাছে দৃষ্টি নিবছ করিয়া উপস্থাভি করিয়াছে স্ক্টের মহান ও পরিষামর স্বরূপ। সেই বিরাটের মেলার পৃথিবী ভূবিরা নিরাছে নিতাছ নগণ্যের মলে। কিছ দ্রবীন বত রহক্তবন তথ্যের স্থানই দিয়া থাকুক না কেন, ব্যুট নিজে একাছ ভাবে ছাইগতাবালিত, লান ভাহার যত বছট হউক দেহোগালান নিতাছ সামাধ।

नवा अकडी नम वा हाड, जाशांत इरें खाट्य हरेंडे (नम-ইহাই দুরণীদের সর্বর। পুলিপাটা যভ কমই ছোক না কেন, দুরবীনের কমতা অভাবনীয়, মাসুষের দৃষ্টর পরিবি পে অনতে প্ৰসাৱিত কৰিয়া দিয়াছে। আমাদের দৃষ্টির বাছিরেও বে সমস্ত আকাশচারী নক্ষাদি বছকাল বরিয়া রহিয়াছে, ष्ट्रवरीत्व भवानी मृद्धित काल जाशास्त्र वास्तरू बता পভিরাছে। থালি চোথে আকাশের গার আমরা যে ভারার শোভা দেখি এক এক করিয়া গণনা করিয়া গেলে ভাহাদের সংখ্যা হাজার ছয়েক হইতে পারে। পৃথিধীর এক জারগার शिक्षादेश व्यवना व्याकात्मय भवहेकू त्रवी वाश मा। भारत निवी निव्ययन कविया जाकानरक स्विति कार्राय स्वाय বছ জোর হাজার বলেক ভারার স্থান পাওয়া যার। কিছ আঞ্চাশের ভারার বল সংখ্যার হাজার হাজার নহে, কোট (कांडि । सक्कारनांक्षेत्र अहे मरना नदा प्रक्रिशास मृत्रवीत्मव বেড়াজালে। ক্লৰে সে বেড়াজালের পরিবি বৃদ্ধি করার সীবাস্ত দুর ভ্ইতে দুরান্তরে সরিবা সিরাছে।

বালি চোবের ক্ষতা বার কচ্টুরু। কাবে রাবিলে বে প্রবীপকে বাষরা চোবে বেবিতে পাই, ছই-ভিন বাইল দ্রে লইরা সেলেই সে চলিরা বার দৃষ্টির বাহিরে। প্রবীপ হইতে বালোর চেট বানে, চোবের পর্বার সে বে উভেম্বা স্কট করে ভারাই দর্শবার্জ্ভির ক্ছে। প্রবীপ বত দ্বে বার সেবান হইতে চেট আসে তত বহুতর তাবে, অবশেষে চোধকে উত্তেখনা বিবার ক্ষরতা আর তাহার থাকে বা। এবনই অবস্থা বটলেই ক্যোতিয়ান বস্তও অহুশ্যের হলে পড়িয়া বার। গুরবীনের সহায়তা কিন্ত এই রক্ষ আপাত-অহুশ্যকে ভুগ্যরান করিবা তুলিতে পারে।

দূরবীবের সাধ্যের দিকে বে লেলবানা **থাকে ভা**হার কার্বকারিভার এই ব্যাপার সম্ভব হুইরা থাকে। এই লেলের



२००-रेकि मृत्रवीत्वत्र प्रमनाश्म वर्डम

উপরে বেবানে বত আলোর রবি পতিত হয় ভাহারের সংবলি লেল তের করিরা আদিবার পর একই বিশুতে কেন্ত্রীভূত বা রিলিভ হয়। লেশের বিভিন্ন অংশে রুদ্



চালাই কৰিবাৰ পৰ কাচেৰ চাক্তিৰ বুশৰিকাট। প্ৰচাৰতাৰ পালিশ কৰা হইতেহে

আলোকরারি পণ্ডিত হইলেও সব রারি এক বিবৃতে আসিরা ক্ষাট বাঁবে। বে ক্ষীণ রারি একক তাবে চোবের ভিতরে প্রবেশ ক্ষিয়া সাঞ্চা কাগাইতে, অক্ষম, তাহায়াই অনেকে বর্ণম গেলের কুপার এক্সিড হুইবার প্রবোগ পার, তবন শক্তি-

বৃত্তির ক্ষত দৃশ্যবাদ ক্ষতে পারে।

হর্বের রশ্মিরারা সাবারণত আওন

আলানো সভব না ক্ষণেও এক

বঙ আডলী কাচ হর্বের দিকে
বরিলে ভাষার নীচে যে আলোকবিন্দু ক্ষাট বাবে ভাষারই প্রভাবে
আওন অলিভে পারে। অনেকভলি রশ্মির স্থিলিভ শক্তিই এই
প্রকার উভাপ ও অরির প্রটা।

হুরখীনের কাজ বিলেখণ করিলে বেবা বাইবে বে ইছার সমূধ্য লেলবালা হুরের জিনিসের একটা সমূবিদকে চোবের কাছে আনিরা উপস্থিত করে বেটা মূলবন্ধ হুইতে আকারে ছোট ফুইলেও আলো-সম্বৃত্তিতে উদ্দলকর। হুরবীনের শিক্ষবের বিকে বে লেল বাকে সে এই সম্বৃত্তিকে আকারে বড় পতিত হইবে এবং সন্ধিত্ব তত বেশী উজ্ল হৈছিব। এই লেজবানা বেন আলো বিভিন্ন কান, কানের পরিবি যত বত হইবে উহার কার্ককনতা তত বেশী হইবে। তাই আকালের অনুত নক্ষলোকের সভানকার্বে বিজ্ঞানীর সক্ষ্য হইরাহে চুরবীনের লেজের আকার বাড়ানো।

এবানে একবাও উল্লেখ করা কর্তব্য বে ব্যবীন হুই আতীয়। আলো বহিবার কাঁব বিসাবে লেখ ব্যবহার না করিয়া রভাকতি বর্গন (spherical mirror) ব্যবহার করিলেও প্রতিক্লিভ আলোকে ক্ষেত্রীভূভ করা সম্ভব। বহু বৃহবীনে লেখের পরিবর্তে বর্গন ব্যবহার করা স্ববিধাননক হইরা থাকে।

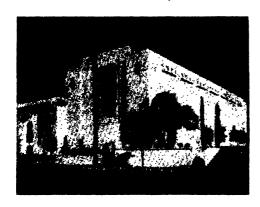
বর্তনানে সর্বাণেকা বন্ধ চ্রবীন আছে আনেরিকার ক্যালিকার্থিরা অঞ্চল হিত উইলসন পাহাছে। ইহার বর্ণবের ব্যাস এক শত ইকি। প্রথম মহাসমরের পরে এই চ্রবীন নির্মিত হইরাছিল। ইহারই অবপনার ক্যোতির্বিজ্ঞানের অনেক সূত্রন ভব্য আবিষ্কৃত হইরাছে। এই চ্রবীন মান্তবের চোবের চেরে আভাই লক্ষ্ক অব বেলী শক্তিশালী। ইহার মধ্যবর্তিতার ক্ষীবভ্যর বে আলোর উৎসকে সৃষ্ট্রনোচর করা সন্তব, ভাহাকে বালি চোবে ধেবিতে হইলে ঐ উৎসের জ্যোতি অন্ততঃ আভাই লক্ষ্ক অব বাভাইতে হইবে। উইলসন পাহাছের চ্রবীনে ১৫০ কোট বক্ষত্রের সন্থান জানা নিরাছে। ত্তুলীকৃত নীহারিকার অভ্যন্তরে নক্ষত্রের অভিত্ব ও দীপবিধের অভিত্ব এই চ্রবীনে প্রাপ্ত সভ্যকে অবলম্বন করিরাই ক্রিভ হইরাছে। এই বল্লের সাকল্যে উৎসাহিত হইরা জ্যোতির্বিজ্ঞানীরা সূত্র আক্যানের অভ্যন্ত রাজ্যে হালা



বছৰুছে কাচেছ চাক্তির উপবিভাগ বহিবা বুডাকুতি করা হইতেছে

করিলা ভোলে। নদুবের দেলবানার আকার যত বঢ় হইবে কোন বঙ হইতে নির্গত যদি উহার উপরে তত বেলী সংখ্যার

হিবার উদ্দেশ্যে আয়ও বড গ্রবীন নির্বাধের জড আঞ্চারিত হইয়াছিলেন। া উইলসৰ আনৰ্নিৱের তৃতপূর্ব অব্যক্ষ ডাঃ অর্ক হেল অভিকার দূরবীবের সার্বকতা বিষয়ে সুবীধনের দৃষ্ট আকর্বণ করিবার অভ 'বারণার স্যাগাজিনে' এক প্রবদ্ধ লেবেন (১৯২৩)। এই প্রবদ্ধে ভিনি ২০০ বা ৩০০ ইঞ্চি দূরবীন পাওরা গেলে কি



यश्रद्ध व वृष्

করিরা উহা আমারের জানভাঙারকে সমূহ করিতে পারে তাহার উল্লেখ করেন এবং এতহিবরে বিজ্ঞানীদের জ্ঞানপিশাসা চরিতার্থ করিবার ক্ষন্ত ধনকুবেরদিগকে উংলাহী হইতে অহুরোর জানান। অনভিকাল মব্যেই এই অহুরোবে কাম্ব হইল। উক্ত প্রবদ্ধের যৌজ্ঞিকতা উপলব্ধি করিরা আন্তর্জাতিক রককেলার শিক্ষা-সমিতির সভাপতি ভাঃ উইক্লিকরোক সমিতির পক্ষ হুইতে ২০০ ইফি একট দুরবীন নির্মাণকরে ধাট লক্ষ্ ভলার (প্রার হুই কোট টাকা) দান করিবার অভিনত জাপন করেন।

১৯২৮-২৯ ইটাপে এডছ্ছেকে প্রাথমিক পরিকলনা হিরীকরণার্থ ডাঃ হেলের নেতৃত্বে আমেরিকান, জার্মান ও বিটিল বিশেষজনের লইয়া এক স্থিতি গঠিত হইল। প্যাসাডেনার ক্যালিকোর্নিরা ইন্টিটিট অব টেকনোগজিতে এতহিষ্বের উভোগ-আরোজন আরম্ভ হইল। বিভিন্ন মন্ত্রাংশ নির্মাণ করিবার জন্ধ মন্ত্রপ্র (Machine shop) ছাপিত হইল (১৯০০, অটোবর) এবং এই কাজের জন্ধ বিশেষ প্রেম্বাগার্থ প্রতিন্তিত হইল। অনেক প্রীক্ষা ও আলোচনার পর প্যাসাডেনা হইত ১০ মাইল দূরবর্তী প্যালোমার পাছাকে (৫৫০০ কুট) এই দূরবীন বসানো হইবে যদিরা দিরীকত হইল।

মূল্বের কর বে সুরুৎ কাচবঙ প্রয়েজন হুইবে তাহা
মির্রাণ করিবার ভার বেওরা হুইল নিউ ইরর্কের কমিং প্লাস
ক্যোলানীকে। এই অতিকার কাচের চাকতির উপাধানের কর
কূতন বর্বের পাইরেজ কাচ উভাবিত হুইরাহিল। এই সব
প্রাথমিক পরীকা ও পরিক্রনা করিতে লাগিরা গেল হুই
বংসর। পরীকার্লক ব্যাপার হিলাবে ৩০, ৬০ ও ১২০ ইফি
ব্যাসের কাচবঙ চালাই করিবা দেবাহুইল। ১৯৩৪ লনের প্রবন্ধ
ভাবে পৃথিবীর বুহুত্ব ভাচবুতের (২০০ ইফি) চালাই করি
ভাবে হুইল। বেবৰ অভিকার কাচ ভার নির্বাবের পরঞ্জাবও

(जननरे विवाहे। एम हिम बविवा ७० कृष्टे वारमब अक ন্যানের চুন্ধীকে উত্তপ্ত করা হইল। উহাতে হাজার বার শত মণ মালমণ্লা ব্রিতে পারে। ভিন স্থাহ্কাল ক্রমাণ্ড উভাপ পাইরা ২৮০০ ডিগ্রী (কারেনহাইট) ভাপনাত্রার সব জিনিস পলিৱা পেল। এইবার ঢালাই করিবার পালা। ১৯৩৪ এইাব্যের २०८म मार्ठ बविवास भूषिवीस विकित्र तम्म स्टेटक सम सामास লোক এই বিবাট ব্যাপার দেখিতে সমবেত হইয়াছিল। ঢালাই করিবার ছাঁচ আবে হইভেই ভৈরি ছিল এবং ইছাকেও গরম করা হইরাছিল। বীরে বীরে সেই ভাচে দশ দকা বরিয়া প্ৰতি কাচ ঢালাই হইতে লাগিল। ইহার মধ্যে এক অঘটন ঘটল। প্ৰচণ্ড ভাগে ছাঁচের গা হইতে বানিকটা অংশ পুলিরা তরল কাচের উপরে পড়িল। ইঞ্জিনিয়ারগণ ব্যস্ত হইয়া ভাড়াভাড়ি ভাঙা অংশগুলি ছুলিরা নইলেন। কিছ ভবুও সংশর ঘৃচিল না। আবর্জনার সংখিত্রণে কাচের কোন কভি स्टेर्स किमा (न विश्वत विराधकामत मान दिना विश्व । স্তরাং পাছে সকল শ্রম ও অর্থ্যর পও হর সেক্ত আরও একটা চাকতি ঢালাই করিবার প্রস্তাব হইল।

ঘীৰ্ষ বিষ বহিষা কাচৰভকে ঠাঙা কহিতে হইবে। প্ৰথম হই নাস অপহিবৰ্তনীয় উভাপে রাধিবার পর আট নাস ব্যাপির। প্রভাহ দেক ডিগ্রী হিসাবে ইহাকে একটু একটু করিয়া ঠাঙা না করিলে কাচে দোর বাকিয়া বাইবে এবং উহা বারা দ্রবীনের নির্ভূপ ও ছক্ষ কাক্ষ চলিবে না। বিশেষ ভাষে ভাগ-নিয়ন্ত্রণ ব্যবহার ভিতর দিয়া কাচৰভকে ভরল অবহা হইতে ক্ষাট অবহার আনার প্রয়োক্ষ আছে।



কাচের চাকতির অস্থরণ সিমেউ-চাক্তি

প্ৰথম যে কাচৰানা ঢালাই করা হইবাছিল উহাকে পরি-ক্ষিত সময়ের পূর্বেই ( সাত মাস পরে ) বাহিন্ন করিবা সইবা ১৯৩৪ ইটাক্ষের ২রা ভিসেম্ম বিজীয় আর একথানা কাচ আবার ঢালাই করা হইল। এবালা দশ মাস ব্যিরা বীরে ৰীৱে নিয়ন্ত্ৰিত ব্যবহার ঠাওা করিবার কথা ছিল। কিছ সাত ৰাস পরে অপ্রত্যাশিত এক বিপত্তি বেবা দিন। কারবানার পাৰ্থবৰ্তী মহীতে বভা আসিল এবং ইহারই কলে কারবামা-ब्राट्ट क्ल अरवन कतात क्ल किन दिन देखान दिनात गानहां वद



২০০-ইকি দুৱৰীদেৱ পরিকল্পিড রূপ

রাবিতে হইল। তার পর আবার আসিল ভূমিকম্প। কিছ সোভাগ্যক্ষমে নিৰ্দিষ্ট সময় উত্তীৰ্ণ হইবার পর চুলী হইতে বাহির করিয়া দেবা গেল কাচের কোন ক্ষতি হর নাই। এই कार्ट्य क्षित्रियाय मुग्र चष्ट्य भयव-विभ नक है।का ।

धक्न क्यादेवात कर काठवाना अक्वाद्य निद्युष्ठे ना कृतिया উহার পিছনের দিক্টার বোচাকের মত বোপ বোপ পর্ত রাধা ररेबारकः एक राज भूक ररेरमध काज्यामात मिरवर्ड जरम नीह देकि माळ। देशांत असम श्रीत ११० वर अवर गांग २०० ইকি অৰ্থাৎ ১১ হাজের সামাত বেশী।

ঠাতা ঘটবার পর এই অভিকার কাচের চাকভিক্তে পাঠানো হইরাছে নিউ ইর্ক হইতে প্যাসাভেনার, তিন হাজার মাইল দরে। রেলগাড়ী অপেকাঞ্চত মছর গতিতে (ব্টার ২৫ ৰাইল ) চালাইয়া এবং বাবার-প্যাত সম্বলিত লোহার ক্রেমে আঁটবা অভি সভৰ্বভাৱ সহিভ ইহাকে আনিভে হইৱাহে। ১৯৩६ ब्रेडीस्वर ১०वे ब्रियन वेका भागास्त्रमार भौतिराधिन। সেধানকার আলোবিজানের বস্তাগারে ইহাকে প্রয়োজনীয় बन विरोध क्ष यहारि नूर्व श्रेट्डिंट छित्र विन । काठ-চাকভিত্ৰ মাৰধানটাত্ৰ নীচু কবিত্ৰা উহাকে বুৱাভাসে পরিণত করিতে হইবে। নির্ভ ও ছক্ষ বল্লের সাহব্যে বুৰই ধীর গভিতে এই কাজ ক্রিতে হইরাছে। জড়ি খন্দ্ৰ পরিমাপ করিবা জ্বন কাচের কর করিতে বইবে, ইন্ডা ভবিলেও এ কাক ক্ৰম্ম কৰিবে বা ৷ ইহাতে অভত ভিন - বিবাস কৰি কাহাৰ সৰ কিছই বহলাইয়া বাইবে ।

বংসর সময় লাসিবার কথা। কিন্তু ইভিমণ্যে বিভীয় মহা-সমর্বের করু সকল কার্ব চাপা পড়িয়া সেল। ছুড়াভে আবার काक बादक रहेबाटि । अक्ट्रे अक्ट्रे कवित्रा काट्डिय छैन्द হইতে শ' বেড়েক মণ ওজনের জিনিস বাহিন করিয়া কেলিভে হইরাছে। বভাকৃতি করিরা পালিস ক্রিবার পর কারের উপরে এদুবিনিরবের পাতলা আতর লাগাইরা দিলে দর্পণ ভৈৱাৰী হইবে।

প্যাসাডেনার পাহাড়ে আবঞ্চ গৃহাদি ও দুরবীনের **च्छाड मदक्षाय ७ वद्यापि निर्मिछ इटेएछिल। कार्यद मूनिवाद** বভ প্রকানের এক-দশমাংশ আঞ্ভির একট অবিক্ল ৰভেল আসে ভৈৱাতী করা হইরাছে। বে ক্রেনে দর্পণ আট-কানো হইবে কিলাভেলকিয়ার ওয়েষ্টং-হাউলে সেট নির্মিত হইবার পর ভাষাভে করিয়া প্যাসাডেনার আনা হইবারে। चात्रन पर्राथामा वर्षाचात्म वत्राहेवाद शूर्व कार्वात्वाद अरम দর্শবের অক্তরণ আকৃতি ও ওজনের একটা সিবেণ্ট-নিবিত চাকতি ভাটকাইয়া ৰয়ের ভংশাদি ঘণাছানে বসানো হইভেছে। কাঠানোত্ৰৰ গোটা যন্ত্ৰের ওক্ষ হইবে প্রায় भगव राजाव मन । कि**च** वाञ्चिक वावश्वाब अहे विवाह वश्राक অবাহানে অর্ছ-অর্থান্ডির এঞ্জিনের সাহায্যে পুরুতারে হবাইতা चानम कवा बाहरन। पृत्रवीत्मत काठीरमात रेएवा १० कृष्ठे छ ইছার ব্যাস ২২ ফুট। সুল মল বা কাঠামোর ভলদেশে वांकित्व वर्गववामा अवर अवे नत्वत्र छेनतिकात्त्र नर्वत्वक्वार्व আৰ্ভক বন্ত্ৰাদি সহ পৰ্ববেক্ষকের আগ্ৰেমর ক্ল ৬ কুট ব্যালের একট সংয়ক্ষিত স্থান বা প্রকোর্য যে গুছে এই দুর্যীন রাবা रहेरव (नहे मानम्मिरतय नेपूर्णय वानि ১७१ कृष्टे। अहे मान-যদিরের হত পাহাড়ের উপরে আধুনিক সকল রক্ষ ব্যবস্থা সংলিত বিরাট এক ভবন নির্মিত হটয়াতে।

খাশা করা বাইতেছে পরিকল্পনা অনুবায়ী কাল চলিলে বৰ্ড ৰান বংসৱের (১৯৪৭) শেষভাগে এই দুৱবীন কার্যকরী सरेटन ।

এই বিশাল ও অনিত শক্তিধর বারিক চকুরারা দশ হাৰার মাইল দূরে রাধিলেও ছোট এক প্রদীপশিবাকে দেবা সম্ভব হইবে। যাতুষের দৃষ্টি আকাশে এক শভ কোট আলোক-वरमञ् ( ) चारमांक वरमञ् = ১৮६०००×६०×६०×२८× ৩৬৫ মাইল ) দূরত্ব পর্যন্ত প্রসারিত হইবে। বর্ত নানে বিত্ব-গোলকের যে আছভি আমাদের কাছে উত্ত হইয়া বহিষাছে ভাষার আঞ্জি আরও ৮ ৫৭ বর্ষিত হইবে। বিভানীরা আলা করিকেবেন বিশ্বস্টীতে এবন<sup>্</sup>পর্যন্ত যে ব্যাপার**ওলি** রহুভন্ন হইঃা বহিৰাহে এই সুৰবীদেৱ ভূপাৰ হয়ত ভাহার সমাবাদ হইবে। সক্ষরাজ্যের প্রসার কি সভ্যই অসীম १---বিশ্ব কি সভাই প্ৰসৰ্থশীল-এবছিৰ প্ৰশ্নের উত্তর পাথকা বাইছে পারে। এই অভিকার বছের দারা বিধের কোন্ত্রপ क्रकेड स्टेर क् बार्म ? अनम्ड स्टेर्ड शास व नश्विप সম্বৰে আৰ্যা এইৰ প্ৰান্থ বাহা কিছু আৰি ও ৰজা বলিয়া

## ত্রিবেণীর জগন্নাথ তর্কপঞ্চানন

## अमीतमध्य ভট्টाচार्यः

বাঙালী হিন্দু আৰু যে বহাসফটের সন্থান হইরা প্রার ৰুৰুৰ্ অবস্থাৰ গৌছিয়াছে তাহা অনেকাংশে আত্মকৃত অপরাধের কল সলেহ নাই। বে নেলে প্রভিতা এবং পাতিতোর সর্ভিত স্বাধর লোপ পাইতে বসিয়াহে সে দেশের क्रहेगरवक्रानंत सोविक बाज्यव बायक भगव अक् धकांक छैपहान वनिशा मन्त इत । ১৫० वरनत शृद्ध विनि वारनात बाक्त-१७७ नवारकत नैर्वशास दिलम, बिरनी मिरानी পেই জনতাৰ ভৰ্কপঞ্চাৰ্থেত্ব নাম সম্প্ৰতি বিশিষ্ট সমাজেও উল্লেখ করিয়া আমরা কেবল বাঙালীর আত্মবিশ্বভির বিচিত্র 4প দেবিয়াই বিশ্বিত হইরাছি। আৰু পর্যন্ত নাহেবের সাৰ্টিকিকেট সমল করিয়া যে সকল বাঙালী কাৰ্বান্দেতে উন্নতি লাভ করিতেবেন ভাঁহারা গুনিয়া বিশিত হইবেন বে. স্থীন কোটের প্রধান বিচারপতি সার উইলিয়াম কোল সম্রীক ত্রিবেণতে বিহা ক্বরাধের সহিত সাক্ষাং করিতেন এবং Lভাল-পত্নী "আবাং ক্লেছোঁ" বলিয়া ভুগরাবের চতীমতুপে প্রবেশ করিতে সাহস পান নাই। আৰু আমরা তংকালীন সরকারী দলিল হইতে জগরাবের কীর্ত্তি ব্যাপন করিতে বিরভ থাকিলাম। বাঙালী নিজে ভাঁহাকে কি চোৰে দেবিভেন একবার ভানা বাক।

্ৰাভাবাজাৱের রাজা নবকৃষ্ণ অত্যন্ত বিবং-সেবী ছিলেন।
তিনি বিক্ষমান্তিটোর অনুকরণে "নবরত্ব" সভা ছাপন করিরা
বলবী ক্ইয়াছিলেন। রাজা কালীক্ষকের লভাপতিত রামচক্র
তর্কালভার রচিত "নাবব-নাগতী" এছে নবকৃষ্ণের "নবরত্ব"
সভার বর্ণনা এই :—

তার ছিল মবরেশ ইহার সে রূপ।
সভাহের কিবা কব নিজে বিভাক্প ।
সাক্ষাং বরধাপুত্র নাবে জগরাধ।
ভর্কপঞ্চাননরপে ভূবন বিব্যাত ।
মহাকবি বাপেশ্বর নদের শকর।
বলরাম কামদেব আর গদাবর ।
শিশুরে বাস গোসাই ভটাচার্য্য নাম।
আই নবরত্ব লবে সর্বাহা আধোধ।
আপনি আছেন লক্ষ্মী কি কব সম্পদ্ধ। (পু. ৪)

সাকাং সর্থতীপুত্র ক্পরিব্যাত ক্সরাথ বে সভার শ্রেষ্ঠ রম্ব ক্রেণে ব্যাতিলাক ক্রেন, অভাত রম্বনের কিকিং পরিচর না বিলে ভাষার সত্ত্বকা চিত্র এবন পরিস্কৃষ্ট হইবে না। বিভীয় রম্ব ক্রাক্তি বাণেগ্র বিভালভার—চিত্রচন্দ্র, রহতায়ত নহাকাব্য, চল্লাভিষ্টেক নাটক ও বহু বঙ্কাব্যের রচ্মিতা। ভাঁহার বিষয়ণ আময়। প্রবন্ধান্তরে লিখিয়াছি (সা-শ-শ, ১৩৪৯, পূ. ৪৬-৪৪)। চিত্রচন্দ্র রিত ছইরাছে। বাঙালীর কীর্ত্তি-রক্ষার বাঙালী চিরকালই পরামুধ, নতুবা বাঁটি বাঙালীর উংকৃষ্ট সংকৃত রচনার নিদর্শনবন্ধণ চিত্রচন্দ্র অংশবিশেষ আমরা বাংলার বিবিধ সংকৃত পরীক্ষার পাঠ্যবুদ্যে দেখিতে পাইভাষ। ভূতীর রস্থ 'নবের শকর' অর্থাং নব্ধীপের প্রবান নৈরায়িক শকর ভর্কবার্গণ। ১২২৩ সনে প্রায় ৯০ বংগর ব্রুগে ই হার বৃহুগ হয়। এক সমরে ই হার চ্চুলারিতে প্রায় ৩০০ ছাত্র



জগহাব তর্কপঞানন

শব্যবাদ করিত, অবচ ইথি বিরবজিয় নৈরামিক ছিলেন।
নব্যবাদের চর্চা বাংলা হুইতে এখন লোপ পাইয়াছে, ছাঞাভাবে স্থাবলিষ্ট নৈরামিকগণ এখন কাব্যপাস কিলা আয়ুর্ফের
চর্চার রত হুইরাছেন। কালে হয়ত কাশী কিলা নারাজে
বিরা বাঙালীকে নব্যভার পছিতে হুইবে। "নবন্ধীপের
প্রধান নৈরামিক" পাদের ঐতিহাসিক গুরুত্ব পরিপ্রহ করিতে
শিক্তিত বাঙালী আদ একাছ ভাবে অসমর্ব। চতুর্ব ও পঞ্চর
রম্ম বলরাম তর্কভূবণ ও তারীর জ্যের্ড আতা ভামদেব বিভাবাচম্পতি কামালপুরের ভটাচার্ব্য বংশীর এবং চিয়বিল্প্ত কুমারহুট নেরামিক সমাজের নেতা ছিলেন। এক সমরে সমপ্র
বাংলাদেশে কুমারহটের শিবের গলির নৈরামিকগণের ব্যাতি
ছভাইরা পভিরাছিল, কথাটা হয়ত গতীর পরিহাস বলিরা
অনেকে এখন যনে ক্রিবেন। শিবের গলি এখন প্রালাকীর্ণ

একট অবণ্যমাত্র। বর্চ বন্ধ পাধাবের পরিচয় অভাত। সধ্য রম্ব শিগুরান তর্কপঞ্চানন প্রেণিক বলরানের আছুপ্ত এবং নৈরারিক। কারাধ হইতে শিগুরান পর্যন্ত সকলেই প্রধানতঃ নৈরারিক ছিলেন। অঠন রম্ব হুগলী কোর পসপুর নিবালী মার্চ কুপারান তর্কবানীল। ১২১০ সনে ১১০ বংসর বরুগে তিনি মর্গী হন। নবন রম্ব শান্তিপুর নিবালী নানাশান্তীর প্রস্থকার রাবানোহন বিদ্যাবাচম্পতি গোষানী ভটাচার্য। নব রম্বের মধ্যে তিনিই বরুগে সর্ব্বকৃনিঠ ছিলেন। ১২৩০ সনেও তিনি ক্রীবিত ছিলেন বলিরা, প্রমাণ পাওয়া বার, ব্যথি তিনি তথন অতিহয়।

রাজা বামবোহন রার জ্বলাবের পাণ্ডিভা সহতে বিশিরাহেন,

Jagannath was universally acknowledged to be the first literary character of his day, and his authority has nearly as much weight as that of Raghunandana. (সংবাদপত্তে সেকালের কবা, ২য় বঙ, ২য় সংখ্যৰ, পু. ২০১ পাদ্যিকা।)

শ্বাং—ক্ষরাথ উাহার সমরে সর্বশ্রেষ্ঠ পণ্ডিত হিলেন
বিলয় সকলেই খীকার করেন এবং উাহার প্রামাণ্যপৌরব
প্রার ভার্ত ভটাচার্য্য রত্মকবের সমান ছিল।

খগনাথের খনৈক ছাত্র একট ব্যাকরণ রাছের প্রতিলিশিতে খগনাথের গুতি করিবাছেন,—"বিদ্যাবিভবর:কুলাদিবিভবৈ: ব্যাতো হিতীর: বরং"। আর্বাং জগনাথ বিদ্যার, বিত্তার্জনে, বরসে এবং কুলমর্ব্যাদাদিতে "অহিতীর" ছিলেন। অগনাথ পিতৃপ্রান্থের পর একট "অয়তী" বাত্র সমল করিবা সংসার আরম্ভ করেন এবং রৃত্যুকালে নগদ লক্ষাবিক টাকা এবং বধ সহত্র টাকা আরের সম্পত্তি রাখিরা যান। কুলাংশে তিনি বরং "সিহপ্রোত্রির" হিলেন এবং তিন কভাই কুলীনে সম্প্রদাম করিবা যাবী হইরাছিলেন। উচ্চার এক জানাতার নাম রামনোপাল মুবোপাব্যার, তাঁহার সম্ভে একট কারিকা পাওৱা বার:—

আধুনিক ক্গৱাৰ ভৰ্কপঞ্চামন। ভাৱ সুভা দুইৱাচিলেন গোপাল ভাকন।

ভগরাধের ছবি: বর্জনাস প্রবন্ধে ভগরাধের প্রতিকৃতি
বৃদ্ধিত হবল। এই চুর্লুভ বন্ধর প্রান্তির বিবরণ এই। লর্ড
কর্ণভরালিস ১৮০৫ সালে বুক্তপ্রবেশের অন্তর্গত গাজীপুরে
পরলোকগমন করেন। কলিজাভার সাহেবেরা সভা করিবা
চাঁলা ভূলিরা তাঁহার স্বভিরকার ব্যবহা করেন। তরহুসারে
গাজীপুরে তাঁহার সমাধি-মন্দির নির্দ্ধিত হয়। মন্দিরমধ্যে কর্ণভরালিসের প্রভরক্ষোধিত দক্ষিণাভিমূলী ব্যাকৃতির
( Medallion bust ) সন্থাব এক ভাক্ষণের ও পশ্চাতে এক
ব্যালাবের দক্ষরান অবোধ্ধ পূর্ণপ্রতিকৃতি উৎকীর্ণরহিরাহে।
চিরন্ধন প্রবাদ অন্তর্গরে এই ভাক্ষণই বাঙালী শ্রুক্তিবর ভ্রমাণ

ভৰ্বণঞ্চাৰন। কোষিত লিপিতে কিছা সৱকারী কাগৰপত্তে बाचन ७ बोननाव भविष्य निभिन्छ नारे नही. किन्दु माय-वकारम अक शबरमध्य मिःमनिश्व वारका छेवा प्रमहारबद्ध पृष्टि বলিরাই লিবিরাহেন (সংবাদপত্তে সেকালের কথা, ২ম বঙ, ২য় সং, পু. ৭৩৫)। বৃত্তিওলিয় কোৰিভায় নাৰ Flaxman (Fisher: N. W. P. Gazetteer, Gazipur, 1883, pp. 122-3 ল্বাট্ডা ) ৷> জনলাবের চরিতকার প্রত্যক্ষণীর নিকট कानियां क्रमार्थिय पंत्रीरयय वर्षमा कृषियारहरू--- "क्रमार्थ कर्क-প্ৰামন গৌৱাদ ছিলেন না---উজ্জল ভাষ্বৰ্ণ প্ৰিয়দৰ্শন ছিলেন। ভাঁহার দেহ সুগঠিত ও লোহশ, বাহ দীর্ঘ, নাসিকা উন্নত, ললাট প্ৰশন্ত এবং চকু উচ্ছল ছিল।" (উমাচরণ च्डां हार्चा-विष्ठ कीवनी, शु. ১৫ )। वर्षमान ছবির সহিত এই বৰ্ণ নার মিল রহিয়াছে। আমরা বৃহমূবে ভনিয়াছি তংকালীন পণ্ডিতগৰাৰ তাঁহাকে "লোমশ যুনি" আব্যা দিয়াছিলেন। ব্দরাবের বিশ্বরকর জীবনাধ্যানের মূলকথা আমরা সংক্ষেপে লিবিভেছি।২

বাল্যজীবন: ১১০১ সালের আধিনী শুক্লা পঞ্চীতে (১৬১৪ এটাজে) ভাষার জন্ম হয় ।৩ ভাষার পিড়পুরুষের

<sup>&</sup>gt;। বনামণক ভূদেৰ মুখোপাধারের গ্রন্থান ই মান্বদ্ধ আমাদের অনুরোধে গাঞ্জীপুর গিরা অংশ্য কট বীকার করিয়া মন্দির মধ্যে অবস্থিত মৃত্তির ছবি কৌশলে তুলিয়া আনিয়া আমাদের কৃত্তত্তা অর্জন করিয়াছে।

২। অগরাথের জীবনী কালীমর ঘটকের প্রথম চরিতাষ্টকে, উমাচরণ ভট্টাচার্যা রচিভ প্রস্থে (১৮৮০, পৃ. ৬০), রজনীগুপ্তের চরিত-কথার, বিষজীবন পাত্রিকার, সংবাদপত্তে সেকালের কথার ২র পণ্ডে (পৃ. ৭২৯---৫) এবং সাহিত্য-পরিবং পাত্রিকার (১৬৪৯, পৃ. ১-১৪) অষ্টব্য।

৩। ১৭৮২ সালে সার উইলিরাম জোল শকুরগা নাটকের অফুবাদ "Fatal Ring" नारम ध्यकांण करतन । जुनिकांत ध्यमकृत्य निविष्ठ আছে বে নাটকধানা ৰগন্নাধের কণ্ঠছ ছিল—"The venerable ('ompiler of the Hindu Digest, who is now in the eightysixth year has the whole play of Sacontala by heart as he proved when I last conversed with him to my entire satisfaction." এতদমুগীরে বগরাবের কম হয় ১৭-৪ গ্রীষ্টাবে এবং সূত্যকালে বরস হয় ১০৩ সাত্র—ইহা সমস্ত বিবরণের বিরোধী। (कांक >७ प्रत्न अमक्टम ४७ निविद्यार्ट्य । कांबन, ১१०8 मारन व्यक्ति ওক্লা পঞ্চনীর সহিত তুলারাশির সংযোগ ছিল না—লগরাণের রাক্তাভ্রিত নাস 'রাম রাম' তুলারাশি সূচনা করে। বিভীরতঃ, কররাথের কনিষ্ঠ-পুত্রের মধ্যম পুত্র পঞ্চাধ্রের এব সন ১১৬३ সালের পরে নছে, কিকিৎ পূর্বে—ঐ সনে, সভবতঃ অর্থাপন উপলব্দে, পলাধর নবছাপরাজ कुफ्राटका निक्रे कृषिमान भारेबाहित्सन ( नमीतांत २२४०२) मः छात्रमान এইবা )। জনৱাবের প্রথম পৌত্রের জন্মকালে ফুডরাং ভাঁহার বয়স হয় ষাত্র ৪০-- দরিত্র ভটাচার্ব্য বংশে ইহা প্রায় অসভব। ভূতীয়তঃ, জগন্নাথের वृद्धक्षरभोज बामगारमय सम् >१३३ मत्न कि कि पूर्व्स अवर अक्पूक्तरय পদ্ৰপদ্ধতা হয় ২০ বংসায়েরও কম-ইহাও প্ৰায় অসভব। ক্তরাং আম-সংশোধন পূৰ্বাক ১৬৯ : সনেই (১৬৯৫ নতে) ভাঁহার জন্ম-সন নিশীত हहेन ( मा-भ·भ, 5085, भ. २-७ )।

পৰিচৰাদি ধ্ৰবৰাত্তৰ জষ্টব্য ( সা-প-প. ১৩৪১, পৃ. ৪-১৪ )। इर-अकडे भूकन जवार निविद्धित । अरे दश्य बिदवन-जवाद्य सोनिक्दरन गरह । क्षत्रद्वारवद चाविशूक्य "शैवनाव ठीकृत" বলোহর হইতে এবানে আসেন। "জ্বিবেণ্যাং রছরাঘবে।" व्यवान-वादका बिदवनेत हुई कन व्यक्तिन शक्तिक नाम चाद्द, ইহারা জগলাবের বংশ নহেন। রখুনার সার্বভৌম ও রাখব সার্বভৌষ উভয়েই জগন্নাথের পূর্ববর্তী ছিলেন- রাখবের বংশ এবনও বিদ্যমান। ক্ষয়াবের অলৌকিক প্রতিভায় ত্রিবেশীর প্রাচীন বংশগুলি অনেকটা নিভাত হইরা যায়। জগরাবের বংশে একট বিশ্বরকর প্রবাদ প্রচলিত আছে---এক পুরুষ অন্তর এই বংশে প্রতিভার বিকাশ হইরাছে। স্বপন্নাথের পিতা ও কেঠা অপেকা শিতামৰ ও কোঠ শিতামৰ চেল্লবেশ্বর বাচন্দতি) ভবিক প্রতিভাশালী ছিলেন এবং চন্দ্রশেধরের পিতা অপেকা পিতামহ প্রসিদ্ধ ছিলেন। অপর্যাদকে কর্ণরাধের পুত্রাপেকা পৌত্র ঘন্তান এবং ঘন্তামেরও পৌত্র বামদাস প্রতিভার অবভার ছিলেন।

বাল্যে ক্পন্নাথের মাত্বিরোপ হয় এবং তিনি চুর্বমনীয় হইয়া পড়েন। ভাঁহার পঠদশার ছুইট প্রভিভাগ্রচক ঘটনা উল্লেখযোগ্য। তিনি পিতার নিকট পছিবা ছেঠা ভবদেব ভাষালংকারের বাঁপবেভিয়াছিত টোলে মৃতিশাল্প পড়েন। "একদিন ভবদেব তাঁছার পিতা ছরিছর ভর্কালভারের জ্যেষ্ঠ সংখ্যার স্থবিধ্যাত পভিত চক্রশেধর বিদ্যাবাচস্পতি-প্ৰণত প্ৰসিদ্ধ বৈভনিপদ্ধ নামক স্মৃতিগ্ৰন্থ কনৈক কুভবিদ্য ছাত্ৰকে পড়াইভেছিলেন ় বহু চিস্তাতেও আৰিক-আপত্তির উপপত্তি করিতে না পারিরা বলিলেন "এই ছানট জেঠা মহাশয় ভাল বুৰিতে পাৱেন নাই।" অপুরবর্তী অগলাধ ঈষং হাসিরা কহিলেন, "মহাশয়ের কেঠা উত্তৰ ব্ৰিরাছিলেন, আমার কেঠা ব্ৰিভে পারিভেছেন না।" ( উমাচরণ, পূ. ১-১০। ) বৈভনিপ র স্বভিশাল্পের কৃষ্টবিষরের মীনাংসাঞ্জ এবং ভাহার ছুত্তহ পঙ্জি বিশেবের অর্থসঙ্গি করা সহক নতে। ক্রমাধের ভারতক ছিলেন রবুদের বাচম্পতি, ইনি কাষালপুরের ভটাচার্ঘ্য বংশের তংকালীন প্রধান বৈষায়িক এবং ত্রিবেণীতে ভাষার টোল ছিল। ভাষণাল ভারত कवाब अक वरमब भरत कमनाय सबबीरभव बमावक विमा-वात्रेनक विवाद भवाक्षिण ७ मध्डे कदान ( धैनावन, शू. ১২-১৫)। রমাবন্ধত দীবিভির দ্বীকাকার অগদীশ ভর্কালছারের বুদ্পণোত্র (পোত্র নহে)।

অব্যাপনাঃ ২৪ বংসর বরসে পিতৃবিরোগের পর অতি
নিঃব অবহার তিনি টোল করিরা অব্যাপনা আরম্ভ করেন
এবং বৃত্যুর এক বাস পূর্ব্বে তাহা হইতে বিরম্ভ হন। অর্থাং
পূর্ব ১০ বংসর (১৭১৮-১৮০৭ সন) তিনি অবাবে অব্যাপনা
করিরাছিলেন। অগতের সার্বত ইতিহাসে এই বিশ্বরকর
ব্যাপার হিতীর ব্যক্তির জীবনে বটে নাই বনিরা আনাবের

ৰাৱণা। ভাঁহাৰ অব্যাপনাৱ বিষয় ছিল "ভার, স্বভি, পুৱাণ, ভর, সাহিত্য, অলহার ও আরুর্কের" ( উনাচরণ, পৃ. ১৭ )। **७वर्रिं शास्त्र शक्षरे मर्कार्यका (वन विम । ७दिन राम.** त्रशंख, नार्या, भाजश्रनावि भारतक लिमि क्रव्यविश विरागन, क्रिड वहरात्म ७१कारम बरे भक्त मारबन्न पृथक पद्मानमा बाइनिक दिन ना। कानकार्य वर्द्याम-बाक् मवक्ष, क्रकास প্রভৃতির শোষকভাষ ভিনি বাংলাদেশের সর্বশ্রেষ্ঠ পশ্চিতরূপে পরিগণিত হন এবং পূর্ণ অভ্যুদরকালেও নবধীপক্ষে নিভাভ कतिया (सम । मनवीरभद आवामा क्रुत कतिरू वामरविका, কুমারহট প্রভৃতি সমাজ চেঠা করিয়ার্ছন, কিন্তু এক্ষাত্র ব্দবন্নাথই ভাষা করিতে সমর্থ হইরাছিলেন। এই উচ্চিত্র মধ্যে কভটা কৃতিও খুচিত হইয়াহে শিক্ষিত বাঙালী আৰু ভাষা ব্ৰিতে অসমৰ্থ। বাংলার ও নবদীপের সারস্থত ইতিহাস সম্বন্ধে বাঙালী ভাষার বিরাট অঞ্চভা দূর ক্রিভে সমুংসুক নহে। নবধীপকে কেন্দ্র করিয়া বাংলাদেশে ৫০০ বংসরে ( ১৪০০-১৯০০ সাল ) যত শাল্ল-ব্যবদায়ী পণ্ডিত আবিভূতি হইয়াছেন তাঁহাদের সংখ্যা ভারতের অভাভ প্রদেশের সম্ঞ্র-गरका **रहे**एक भाग कि-ना गरमह । वारणाव माबक्कांव अहे বিশ্বকর প্রদার ক্রতের ইভিহাসে অন্তলনীর। অপৌকিক প্ৰতিভা, অন্তত নেৰা ও সুধীৰ্ঘলীবনবলে অগলাৰই প্ৰতিষ্ঠা ও সন্মানের পরাকাঠা লাভ করিয়া লভাবিক পভিভের শীর্বস্থানে পৌৰিয়াছিলেন বলিলে অভ্যক্তি হয় না। তাঁহায় তেছবিভার নিঘৰ্শন-স্বৰূপ নবধীপাৰিপতি বাজা কুফচজের সহিত তাঁহার चहुछ विद्याद्यत कथा উল্লেখ कता यात्र ( हेमाहत्व, शू. २७-७८) । कृष्कारक्षत्र च्यात रुख्यम् । देशमः कविदा चन्त्राप সমাৰতঃ এক দৱিত ভাষাৰে শাষীৰ প্ৰায়শ্চিত করাইয়া সমাব্দে তুলিয়াছিলেন। কুঞ্চজ ক্ৰুছ হইয়া "বাৰণেয়" যজেয় ১৫ पिन ब्राणी विवास अञ्चलंतकातन अनुसायक वाप पिता নানাধেশীর বছতর পভিতকে আমন্ত্রণ করেন। সুরহং পভিত-সভার উপস্থিত হইতে উদত্রীর হইয়া অগলাধ অনিম্ভ্রিত অবস্থায়ই যজের পঞ্চ দিবলে এক শত ছাত্র সহ রাজবাদীতে গমন করেন এবং কুফচজের আভিব্য প্রভ্যাব্যাদ করিয়া খব্যয়ে चवश्रम करवम । यस्त्रप्रति क्रिकेट्स चनश्रीपरिक श्रेष्ट्र कविरमम "যম্ভ ক্রিপ ত্ইল ?" জগনাৰ উত্তর করিলেন "বাহাতে জগনাৰ ব্ৰাহত, সে ঘজের মহিমার সীমা কি ?" পরে, জগনাবের সাহায্যে বিপন্ত হইরা ক্লচক্রকে "গলহেশে খৰ্-कृतीत वहन शृक्षक" संग्रतात्वत निक्रे समा धार्यमा स्वित्स হইয়াছিল।

প্রস্থান বেবিনে শগরাধ "রামচরিত" নাইকাদি রচনা করিবাছিলেন, তাহা লোপ পাইরাছে। আঁহার নব্যন্যারের উপরি পশ্লিকাও এবন ছ্তাপ্য। কলতঃ প্রস্থাচনার তিনি করই কালকেশ করিবাছেন। কিছ শীবনসন্থ্যার সার্ উইলিরন জোলের অন্ত্রোবে হিন্দুর ব্যবহারশাস্ত্র "বিবাহতকার্বন" স্বচনা করিষা চিষ্ণপাধী ক্ষরাবেল। এই বিরাটএছ রচনা করিতে 

৪ বংসর (১৭৮৮-৯২ সাল) লাগিয়াছিল এবং ইংরেছী 
অত্বাদ বৃঠে ভারতবর্ধের বিভিন্ন প্রবেশে দীর্থকাল বরিষা হিন্দু 
আইববটিভ বিবাদের নিশাভি ক্ষরাবে। এছসরাভিকালে 
ক্ষরাবের বরস হিল ৯৮ । রাজা রাবাকাছদেবের এছাগারে 
ইংগর বে প্রতিলিশি আহে ভাহার পৃঠাসংব্যা ১৭০। বাঙালী 
প্রতিভার সমুজ্বল নিষ্প্রন্ত্রণে এই গ্রন্থ কুরিভ ক্ষরা প্রকিভ 
ক্রেষা কর্তব্য।

बृक्ता:-->२>৪ সংশৃ (১৮০१) बी: विकासनमी पिन বিসৰ্জন দেখিবা অগহাধ আৰু গৃহে গ্ৰন করেন নাই। ১ ধিন গলাবাস করিয়া আখিনী কৃষ্ণা তৃতীয়ার গলালাভ করেন, (৪ কাতিক—১৯ অক্টোবর) তথন তাহার বরস সৌর-बाटन ১১७ वरमद मन्पूर्व इदेश किकिविक अक बाम হইবাহিল। তাঁহার পারিবাহিক শীবনের চিত্র শতি বিশয়কর। তিনি অন্যুন ৫০ বংসর বিপদ্বীক ছিলেন। কথায় वरण, "बाणिय बाणि कर्म वाणि"-- वन्नवाब वश्वाबरे कर्म বাতি বালিবার সৌভাগ্য লাভ করিরাহিলেন। ১২০১ সালের ৬ চৈত্ৰ (১৮০৩ খ্ৰী:) ভিনি ভূপপত্তির যে বিবরণ প্রধান करबन चत्ररा प्रवेशकात प्रत्य ७० वरमत बाम चारह-- चिमि বৰং, এক পুত্ৰ বাদনিধি বিদ্যাবাচশতি (বুৰা বাদ জ্যেষ্ঠপুত্ৰ কৃষ্ণচন্দ্ৰ ভৰণ ধৰ্গী হইয়াছেন ), ১০ পৌত্ৰ, ১৫ প্ৰপৌত্ৰ ও ৩ বুৰপ্ৰপৌত্ৰ। ভাঁহার ভীৰনের বাকী চারি-গাঁচ বংসরে প্রপৌত্র ও বুৰপ্ৰপৌত্তের সংখ্যা আরও বাভিয়াছিল। ইহাদের পত্নী ও ক্তা সভাৰ সহ টোলের ছাত্র ও ভূত্যাদি প্রক্ষের সমষ্টি ৩০০ ব্যক্তি প্রতিদিন একালে আহার করিত। ছই যাসে হয় দিন ক্রিয়া এক এক নাভবোষের রাহার পালা ছিল: বছ-প্রপৌরদের অরপ্রাশনাদি সংকারকার্ব্যে আত্যুদরিক প্রাদ্ধের আৰঞ্জ হইত না, তিন পুক্ষ একত বসিয়া আহার করিতেন। ধুৰপ্ৰপৌত্ৰ বাৰ্যাস ভৰ্কবাচন্সভিব উপন্তৰ সংখ্যাৰ ভাগবাৰ चयर चन्।म ১১० वरमब वबतम "बाहार्गा" भए व्छ - स्टेश-ছিলেন। আৰু বাৰীনতা ও প্ৰগতির বুগে একারভুক্ত পরি-বাবের এই উজ্ল চিত্র বপ্লের অপোচর হইরাছে। ১৯ কিখা ২০ নভাৰীতে জ্বএহণ করিলে জগরাধ শতবর্ণদীবী হইতে পারিতেন না, সাংসারিক চিভারই ভাঁহার আরুকর হইত। ১১০ বংগর বর্ষেও শ্রাভারের কৃটপ্রার স্থাবান ক্লার শক্তি ক্ষুপন্নাথের হিল। বর্তমানে এতার্শ অভুত শক্তির আবিৰ্ভাব স্বপ্নেরও অগোচর হইরাছে কেন, ভাবিবার বিষয়।

প্রসদ-ক্ষা :—ক্ষরাধের সহতে বহু গল প্রচলিত আছে প্রবং চরিভকারগণ ভাষা লিশিবছ করিরাহেন। আমরা ছই-প্রকট অপেকান্থত অপ্রচলিত গল প্রধানে সম্পন করিরা বিলাব।

(১) রাজা নবকুকের বাড্ঞাতে নিবরণপথ লাভের জড জনৈক পণ্ডিত উপস্থিত কবি কবিচল্লকে জবরাবের নিকট ত্বণারিশ করিতে বলেন। কবিচন্দ্র নয়ভূকের সভাপভিত (নহাকবি বাপের্বের পৌন) চচ্চুর্ক ভাররহকে বরিতে উপবেশ করেন। পভিতট বলিলেন এ ব্যাপারে চড়ুর্ভুক্রের হাত নাই। কবিচন্দ্র উত্তর করিলেন:—

"চচ্ছু ছে ভূজে। ৰাভি নিছু জঃ কিং কৱিব্যতি।" ( পুৰীৰ কগৱাধ নিছু জ ) (ৱাষ্ণতি ভাৱৰড়ের গোজকণা, ৫৬ গৱ )

- (২) নবদীপে প্রবাদ আছে, দিবারাত্রির মধ্যে অভভঃ একক্ষণের ক্ষণ্ড নবদীপে সরস্থতী অবিষ্ঠান করেন। শুনিরা ক্পরাধ বলিলেন, ত্রিবেশতে সরস্থতী দিবারাত্র প্রভাজ। প্লেষ ক্লকারদারা সরস্থতীপদে নদীকে বুবাইতেছে। (এ, ১৬ কথা)
- (০) অগনাধের কৃপণতার ব্যাতি ছিল। ভাকাত-সর্ধার ভাব বলিক এক প্রাতে রীতিমত দক্ষিণা দিরা অগনাধের নিকট ব্যবহা চাহিলেন, "লুঠের প্রব্যে ভাকাতের বধ আছে কি না ?" অগনাধ বদ আছে বলিনা গিবিত ব্যবহা দিরাছিলেন এবং ঐ নামিতেই তাঁহার বাড়ীতে ভাকাতি হন। আমরা "বিবাদতলার্থব" হইতে এই অতি বিসর্কর অবচ শাস্ত্রসম্মত ব্যবহার প্রমাণ উদ্ব্ ত করিতেছি।

"বিষ্ণুৰৰ্শোন্তৰ,

পা।বক্যুতচৌব্যাদিগ্রতিরপক্সাহসৈঃ। ব্যাকেশোপার্কিতং বচ্চ তংকুংসং সমুদার্কতম্॥

ইতি বচনেন চৌৰ্যাস্য সম্বন্ধকত্ব। অভএব ভদ্বাস্থ ধণলানেহণি চৌরস্থ বৃদ্ধিলাভঃ এবং ভদনেন পূণ্যকর্বাস্থঠানেন ভিকিৎ কলং ভবতি। শিতামহচরণাক্ষ চৌরিভন্তব্যে চৌরস্থ বহুং সীকুর্বভি।" (পু. ৭৬)

১২০১ সনের ভারদাদে ক্রমাণ ডাকাভির কথা উদ্বেধ করিরাছেন "আনারদিগের বাসীতে ডাকাভি হইবাতে এবং কোটা পঢ়িরা কাগকপন্নাদি ও পৃত্তক অনেক ভছরূপ হইরাছে।"

বংশধর:—উপসংহারে আমরা জগরাবের অবন্ধন বংশের শ্রের্নপুরুষগণের নামতীর্ত্তন করিলাম। তাঁহার হই পুজের বব্যে জ্যের্ন করিলাম। তাঁহার হই পুজের বব্যে জ্যের্ন করিলাম এবং কনির্ন্ত রামনিবির নারার স্থতিশাল্ল পূর্ব্বাপর প্রাবাভ লাভ করিরাহিল। ক্ষক্রেরে জ্যের্নপুর বনভান সার্ব্বভৌন বুহির তীক্ষভার বরং জগরাবক্তেও পরাভ করিরাহিলেন। তিনি ভারশাল্লে ও ব্যবহারশাল্লে অসাবারণ পাভিত্যলাভ করেন এবং বিবাহ-জ্যাবির রচনার অগরাবের অভতন সহকারী হিলেন। ১৮০১ সনে সহর বেওরানী আহালভ প্রতিষ্ঠা হইলে প্রবন্ধ বাঙালী পভিত নিযুক্ত হন রাবাক্ষাভ তর্কবার্থীশ। রাবাক্ষাভের র্ভ্যুর্য পর ১৮০২ সনে কোলক্ষক সাহেবের অস্থ্রাবে বনভান উচ্চ পদ এহণ ভ্রেন। ১৮০৬ সনে বনভাবের পরলোভগরনের পর উচ্চ পদে এহণ ভ্রেন। ১৮০৬ সনে বনভাবের পরলোভগরনের পর উচ্চ পদে রহণ্ড ভাররক্র হীর্ষ্কাল প্রভিন্তিত হিলেন। অনেকে অবগত নর্বেন, সন্তীরাহের বিক্সভে সর্ব্রেশ্বর বনভারই

ব্যবস্থা দিবাছিলেন যে ইহা পাল ও সলাচার বিরুদ্ধ।
৪।৭/১৮০৫ তারিবে প্রেরিত নিজামত জালাসতের প্ররের
উত্তরে তিনি কোর্ট-পণ্ডিতরূপে ঐ ব্যবহা দিরাছিলেন (জনপুনি,
কান্তন ১০০০, পৃ. ১৬৯-৭০)। ঘনভামের পৌত্র রামলাস তর্কবাচম্পতি (রুচ্য ১২৭৫ সন) তাঁহার সমরে বাংলার সর্ব্বশ্রের্চ
নৈরারিক ছিলেন। ক্রিবেনীর শেষ নৈরারিক রামলাসের পুত্র
জ্বিকাচরণ বিদ্যারত্ব ১০১৯ সন্বের চৈত্রমানে স্বর্গী হন।

রামনিবির মধ্যম পুত্র স্মার্ড সঙ্গাবর ভর্কভূষণত বিবাধ-ভদার্ণব রচনার সহকারী ছিলেন। ১৭৯০ সনের (ডিসেম্বর মাসে) তিনি নধীরার অঞ্চ R. Rocke সাহেব কর্তৃক নদীরার ভঞ্পতিত পদে নিযুক্ত হুইয়াছিলেন। ১৮০৭ সনে ভাগরাবের পূর্বেই তিনি বর্গী হন। তিনিও অভ্যন্ত প্রতিভা-শালী হিলেন। সর্ব্বোপর্ক্ত পৌত্র বনভান ও সদাবরের অকালর্ভ্য ভাগরাবের পরন হংবের কারণ হইরাহিল, নভুবা হরত তিনি শাল্লোক্ত ১২০ বংসরই পরনার লাভ করিতে পারিতেন।

স্তির্ভা:--আখিনের শুক্লা প্রকাশী (অর্থাং বোধনের প্রবিদ্ধ) জনগ্রাবের জ্যতিবি উপলক্ষে, কিবা আখিনের জ্যা তৃতীয়া তাঁহার প্রাভিবিতে প্রিবেশীতে তাঁহার স্থতি-রক্ষার্থ একট বার্ষিক অবৃত্তান প্রবৃত্তিত । আশা করি আমাদের এই প্রভাব কার্ব্যে পরিপত করিছে খানীয় লোকের উৎসাহ ও প্রবৃত্তির অভাব হইবে না।

## **শেতু**

## ঞ্জীবিভূতিভূষণ গুপ্ত

আনীয় সেনের পারিবারিক জীবনে সহসা এক প্রবল বড় উঠিল। ইহার প্রচণতা ভাষাকে একেবারে বিশ্বান্ত করিরা কেলিল। এই আক্ষিকভার জগ্ন সে বোটেই প্রন্ত ছিল না। বড় উঠিল। বুলা-বালি উড়াইরা আনিরা ভার চোবে-রুবে সবেপে বাণ্টা মারিল। বিহলেভা কাটাইরা চোব চাহিতে সে দেবিল ভার চতুর্দিকে আবর্জনার ভূপ জমিরা উঠিরাছে। হুই হাতে আবর্জনা সরাইতে সিরা সে সবিশ্বরে আবিদ্যার করিল যে মরলার সহিত সলোপনে জড়াইরা আছে তীর হলাহল। আশিষ সজ্যোবে হাত গুটাইরা লইল। এ অসহ। চেটা করিরা নিজেকে সে দমন করিল। আলমহ। চেটা করিরা নিজেকে সে দমন করিল। আলমহ। তেটা করিরা কহিল, এত ছোট ভিছা যে ভোরার মনে হান শেতে পারে এ কথা ভারতেও আমি মরনে মরে যাই। দিন দিন কি হুছে ভূমি সুবিভা।

সুমিতা ছলিয়া উঠিল। বাঁকা সুরে কহিল, তা ব'লে নিজের চোৰ কানকে কেট ছবিবাল করতে পারে না।

আশীৰ দ্বীৰ এই অকাৰণ অভিবােগে বুগণং বিখিত এবং আহত হইল। ইবং উক কঠে কহিল, অবিধাস কৰ্মত ভোষাৰ আমি বলহিও না। গাৰের ভোৱে ওকাজ ভ্রাবো বাৰ না, সে আন আমাৰ আছে। কিছ ভোষাৰ চোৰ কানকে অসংব্য বছবাছ।

প্রকিতা অগহিন্দু কঠে কহিল, পুলিস সাহেবকে সাধুবাদ—
আশীৰ পঞ্জিষা উটল, খুবিতা—গরমুমুর্ভেই নিজেকে
সংবত করিবা কইবা ভূড শাভ কঠে সে কহিল, নিজেকে
অনেক হোট করেহ কিছু আর বাড়িও না এ আবার অভ্রোব।

সুবিভা এভটুৰু না ধৰিয়া ভীৱ কঠে কহিল, ভোনার কথা আহার বনে গাকনে। আশীষ বিনিত চোৰে শ্বীর মুবের থিকে চাছিল।
স্মিতাকে এত স্থানিত ভার কাছে কোন দিন মনে হর নাই।
মিব্যা বাদাস্থান করিবার স্পৃথা ভার নাই। আশীষ বাহিরে
পা বাভাইগ। ববের আবহাওরা বেন ভার খাসরোধ করিবা
বরিবাহে।

হ্মতি আর একবার বলিরা উঠিল, আপিলের কাল বৃধি আরও কিছু বাকী রবে পেছে ? আর কারুর আসবার কথা লাহে বৃধি ?

আশীব তীর কঠে প্রভ্যুত্তর করিল, হঁয় আরও ছুট বার্থিক বেরের আসবার কথা আছে। সে আর ইাড়াইল না। এমনি এক নোংরা ব্যাপার লইরা স্থবিতার সহিত বচসা করিতে লে মুণা বোধ করে। কিছুদিন হইতেই স্থবিতার একটা পরিবর্জন আশীব লক্ষ্য করিয়া আনিতেছে। কিছু লে হিকে গুট হিবার মত কোন সকত কারণ সে পুঁজিরা পার নাই। বন্ধতঃ এমনই একটা অকারণ সন্দেহ বে স্থবিতার মনে কথনও বেধা হিতে পারে ইহা তার বপ্থের অতীত। অধচ এই হুরাতীত ব্যাপার আশীবের জীবনে সভ্যরণে আত্মগ্রাকাশ করিবাছে। স্থবিতার এই চিডবিকারের স্থা ব্রিরা বৃত্তই সে তাবিরা ঘেবিতে চার, মন তার বিভ্নার ভরিষা উঠে। আত্মগ্রামবোধ বিজ্ঞাহ বোধণা করিতে চার।

অভ্ত এই বেরে ভাতটা। এবের এডটুরু বণি বুবিবার উপার বাকে। বিবাহের পূর্বে এবের বিবাসের চেট ছুক্ত ছাণাইরা পদে এক ছ্নিবার বেগে। রূপে, রুসে, মাধুর্ব্যে তারা অনুস্মীর। চলার, বলার, উবার্ব্যে প্রকটার। অবচ বিবাহের পরে কেবন করিরা এরাই বে নিজেবের চ্ছুর্বিকে এক সতীর্ণ গভী টানিরা বিতে পারে ইহা পুরুবের ভাতে নিভাতই

অবোৰ্য। ভৰাপি ভাৰিয়া দেখিতে হয়। সংসায়কে আশীয ্ ভালবালে। এর শোভন একট রূপের ছবি ভার মনে গভীর ভাবে আঁকা। সহত্র এবং সুত্রর পরিবেশ ভার একান্ত কাম্য: ভাই সংসাৱের এই বিহুত রূপ দেবিরা আশীষ বিশ্বিত হুইল। ভার মন বিভূষ্যর পূর্ব হইরা উঠিল, সে ক্রম হইরা উঠিল স্থমিভার উপর। কত বঢ় মানসিক অব:পতন আৰু ভার **ঘট**রাছে। এতটুকু উদারতা নাই। হিংল্র কুটল আত্মসর্বাহ এক নারী। নিব্যের কথা ছাঙা কোন যুক্তি মনে হান পায় নাই। অবচ এমন এক দিন হিল যথন সুনিতার নির্ভরপরারণভার অন্ত হিল না। সহ নির্মাণ ভাগবাসার মৃতিমতী কল্যাণীরণে ভার জীবনের প্রতিট বুঁটনাটর সহিত সে ছিল অভিন। সেবানে কোন জনাবপ্ৰক প্ৰপ্ৰের প্ৰবেদ-পৰ ছিল না। জানীয সাহা দেহে ও মনে চঞ্চ হইহা উঠিল। সেই আশীয সেই খুমিতা বাহিরের দিক দিয়া আৰও তেমনি রহিয়াছে। ৰৱং বিবাহের সামাজিক বছন ভাগের আরও নিকটভয क्टेंबा छेठियांत प्रत्यांत कविद्या विद्याद्य । चवह दन विद्याद দে উদার মনোভাব স্বাধীন চিস্তার প্রশ**ন্থ প**ৰ যেন আজিকার বৰনের আবেইনীতে সম্ভচিত হইয়া পঢ়িয়াছে। নেহান হইতে পলাইরা বক্ষা পাইবার উপার নাই নিঃশব্দে উপেকা করাও অগতব। শব্দ কথা কহিছেও ভার ভন্ন মন ছিবার পড়ে। কিঙ মনকে যে সে আরম্ভে আনিতে পারিল ৰা ভার ছাপ ভাষার চোবে-রবে প্রকাশ পাইল।

ইভিনব্যে এক সময় কিরিরা আসিরা নামমাত্র হুইটা নাকে-মুবে অ'জিরা পুমরার আশীষ বাহির হুইরা গেল। সুমিভার সহিত্য দেবা হুইল । ব্যবহারটা কভকটা বেন ভার চোরের মত। সুমিভার মিখ্যা অভিযোগের বোঝা ভাকে যেন চের বেশী ছোট করিরা কেলিয়াছে। এ বেন ভাবের দাশভা জীবনের চুড়াছ অপ্যান। চরর সঞা।

অন্তর্গাল হইতে পুমিতা সবই লক্ষ্য করিল। কিও কাছে
আলিল না। তাহাকে ত একবারও কেহ ডাকে নাই।
তাহার বাওরা হইরাছে কিনা সে ববহটা নেওরা পর্যান্ত কেহ
আবঞ্চক বোব করিল না। বে কাজটা খামীর একটা মিরমিত
অভ্যাসে ইাড়াইরাছে আজ এই প্রথম তার ব্যতিক্রম ঘটন।
না হয় তার বলার ভগী একটু বাঁকা এবং রচ হইরাছে। কিও
সে একেবারে মিধ্যা বলে নাই ত। ও বিদেশী মেরেওলোর
আসা-যাওরা---ওলের নিরে খামীর অমন মাতামাতি --।
সুমিতা ইহার অবিক ভাবিতে পারে না --। চারও না।

স্মিতার প্রতিবিধ রণসভার দীর্থ আরশিতে প্রতিফলিত হুইরাছে। স্মিতা সহসা আরশির সমূর্থে নিবিদ্ধ হুইরা ইাড়াইল। নিজের রূপ, আর বৌবদকে সে বেন তর তর করিরা দেখিতে সাসিল। কোবাও কি এতটুকু নরিচা বরিরাছে? স্মিতা অবাদ্ধ হুইরা পেল। এ কেনন তার ভিত্তিক্তির। এই বিভিক্তিন স্বশোতার তার কেন হুইল। নিক্ষেকে নিক্ষে সে সক্ষে ব্ৰক্ষে জিজাসা করে। নিক্ষেকে সে শাসন করে। খন বিকারে পূর্ব ক্টরা উঠে। কিছ মনের কথা সব সময় প্রকাশ করা যায় না। জীবনের বিক্সতা সেইবানেই।

আপিদের কাজকর্ম শেষ করিতে আপীবের আজ্
আপেজারত বিলব বটল। অবচ সোমনাবের সহিত আজ্
বেবা হওরা তার নিতান্ত আবস্তক। আশীব লোমনাবের
বাড়ীতে আপিরা উপহিত হইল। একলা মাহুর সোমনাব।
বিবাহ করে নাই। গৃহিনী বলিতে, সহচর বলিতে আছে
বুধ কুকচন্দ্র। বাহিরের ঘরেই লোমনাবের সাজাং মিলিল।
একাঞ্রতাবে সে একবানা নাসিক পত্রিকার বিভাগনের
পাতাগুলি উপ্টাইরা-পাপ্টাইরা ধেবিতেছিল। আশীবের
আগমনে পত্রিকাবানি একপাশে সরাইরা রাবিয়া সোমনাব্দ তাহাকে সাদরে আহ্বান করিল,—এদ। এত বাত্রে যে ?

আশীৰ হাসিবার চেটা করিয়া কহিল, রে'ছে বেরিয়েছি। সারারাভ ভিউট পড়েছে। ভাবলাম ভিউটটা তোর এবানেই আক্রেক মত দিরে যাই।

সোমনাথ কিছুক্থ আশীষের মুখের প্রতি চাছিয়া থাকিয়া ছাসিমুখে কৃছিল, পুলিস সাছেবের কর্ত্তব্যক্তানকে অভিনন্ধন কানাচ্ছি। কিন্তু আসল ব্যাপার কি বল ত। তোমাকে টিক বিশাস করে উঠতে পারছি মা।

আশীষ হাসিয়া কৃহিল, ওটা ভোষার একলার দোষ বয় সোমবাধ।

সোমবাৰও হাগিল।

আশীৰ অভ প্ৰসক্তে আসিল, বাওয়াদাওয়া শেষ করে কেপেছ নাকি ? ক্ষ্ণচক্ত কোবার ?

সোষনাথ কহিল, তিনি রহনশাগার আহার্য প্রছত করতে ব্যস্ত। কিন্তু ব্যাপার কি আলীয় ? সত্যিই রেঁছে বেরিয়েছ, না অভ কোন গরকার আছে ? রাভের কাক তৃষি বরাবর এছিয়ে চল বলেই জানি।

আশীষ কহিল, বলহি কিও তার আলে কেইকে আর এক-ক্ষার ব্যবস্থা করতে বলে এল।

সোমদাৰ একটু বিশিত কঠে কহিল, তা না হয় কয়ছি কিছ এত বঢ় অনিয়ম তোনায় সহু হবে ত ? তা ছাড়া এ কৰা ভূমলে ১মিতা আনায় কোন দিন কমা কয়ৰে না।

আশীবের কঠবর তার অনিচ্ছাসড়েও বেন একটু কঠিন হইরা উঠিল, ছমিতার বান-অতিবাদকে ভূমি বে ভাবে ধুলি দেখতে পার, কিছ নিজের ইচ্ছাই আমার কাছে যথেষ্ঠ।

সোৰণাথ হঠাৎ হানিরা উঠিল, কহিল, ভোষার অনেক উন্নতি হরেছে দেখছি। একটু থানিরা পরিহাস-ভরত-কঠে সোৰণাথ প্ৰয়ায় কহিল, আহারাদির পর শরনের ব্যবহাও কি এথানেই করতে হবে বছু।

আশীৰ লোমনাথের পরিহালের বার বিরাও থেল লা।

ক্ষিল, তোষার অহ্যান বিধ্যে ধর। ও হুটোরই আযার নিভাত প্রয়োজন।

সোৰণাৰ এতকৰে গভীৱ হইবা উটল, কহিল, অহুযান করে নিলাম বে তোমাদের মধ্যে মান-অভিযানের পালা বেশ ক্ষে উঠেছে কিন্তু তার ক্ষতে বিবাদী হয়ে গৃহত্যাগের ভাংপর্য্য আমি টিক বুকে উঠতে পার্যন্তি না।

আশীষ কৃষ্ণি, সংগার যথন কর নি তথন ও প্রার করে কোন লাভ নেই ভোষার।

সোষনাথ কহিল, সংসার না করণেও সংসারীদের আমি আনি। তোষাদের বৈরাণ্য যে সামরিক চিগুবিকোভকে কেন্দ্র করে দেখা দের সে বিবরে আমার লেশমান্ত সক্ষেত্র নেই। তোমাদের জীবনের বহু ঘটনার সলে আমার পরিচর আছে বলেই এ কথা বলতে ভরসা পাছি। বড় কোন্ পর্বে এসেছে ভারতত আমার বাকী নেই।

একটু থামিরা সোমনাথ পুনচ্চ কহিল, ভার-জগারের কথাই যদি বরা বার তবে স্মিতার জভারকে ছাপিরে ভোমার অশোভন কার্য্যবলী চের বেলী উঠা হয়ে উঠেছে।

আশীৰ খলিরা উঠিল। তীত্র কঠে কহিল, বা জান না তা নিরে মিধ্যে ওকালতি করো না। ক্ষতা যে আমার কতবানি সে ভূমি জান। বিষেত্র পূর্বের কথাও তোমার অভানা নয়।

সোমদাপ পাত হাসিমুথে কহিল, তা নয় বলেই ভোষার আঞ্চকের ব্যবহারে আমি বিশ্বিত হয়েছি।

আশীষ কবিল, সেইধানেই ভূমি মন্ত বড় ভূল করেছ। আক্ষেত্র স্থাতিত আগাগোড়াই দূতন বৃত্তিতে দেধা দিরেছে। পূর্ব্যের সঙ্গে তার এতটুকু মিল নেই।

সোষনাথ জিজাত্ম গৃষ্টিতে আশীবের বুখের প্রতি চাহিরা রহিল। আশীব পুনরার কহিল, ত্মমিতা আমার আজকাল সন্দেহের চোবে দেখতে ত্মক করেছে। আমার চলাকেরা থেকে কথা বলার উপর পর্যন্ত তার সজাগ প্রহরা।

সোৰনাৰ সহজ কঠে কহিল, ভোমার অপৱাৰ?

শাশীর কবিদ, সেইটেই ত শাশুও বুবে উঠতে পারছি নে। গোল বেবেছে সেইবানেই।

· সোমবাৰ কৃষ্ণি, গোল কি নিছক অকারণেই বেবেছে আশীৰ ?

আশীৰ কবিল, অকারণে না হলেও তাকে কারণ বলা চলে বা। দিন করেক বরেই আমার আলিকে ওটকরেক বর্ষী বেবের আনাগোমা সুদ্ধ হরেছে। ওবের উপর সরকারের স্থকর পড়েছে। তাইতেই নিত্য তিরিপ দিন হাজিরার ব্যবহা। স্থচনাটা এই পথ ধরেই বেণা দিরেছে। কিছ পরিণতিটা হরেছে আমার নিরুপত্তব কারণে এক হুইএবের মৃত। স্মিতার সহক বৃদ্ধি আক বোহাক্রার, বৃষ্টি সন্দেহ-কুটল। তার অহুবোগ আর আক্রমণ আমাকে অতিউ করে সুলেছে।

সোৰণাথ একটুথানি হালিছা কহিল, আৰু ভূমি লেই অভিযোগ নিঃশংক ৰেলে নিয়ে চোলের মত পালিরে এসেছ। তাকে তার ভূলটা বুঝিরে যাও নি কেম ?

আশীষ উঞ্চ কঠে কহিল, কাৰণ লে ভাৰ নিকেৰ ভূগটা বীকান কৰতে চাৰ মা। ভাৰ ভাষা আৰও বঢ় হবে ওঠে। বিৰে কৰেছি বলে কি হাপি-ঠাটাকে ভূলে বেভে হবে !

সোমনাৰ হালিয়া কেলিল।

খাশীয় কৃষ্ণি, ভূমি হাগছ কেন ?

সোমনাৰ কহিল, ভাবহিলাম হাজিম বছ কছা। লওয়াল জুতসই না হলে উভাৱেয় উপায় নেই।

ইবার পরে ছই বজুতে কিছুক্ব বরিরা পরিষর্শ চলিল এবং এক সময় আশীব প্রাণবোলা হালি হাসিরা কহিল, সোমমার, সংসায়ী না হলেও আমার চেয়ে সংসারকে ছুরি চের বেশী চিনেছ এ কথা আমায় বীকার করতেই হবে। কিছ এর পরে ছুরি সিয়ে আর স্থমিতার সামনে সোজা হয়ে ইাড়াতে পারবে ত ?

সোমনাৰ হাসিয়া কহিল, না পাৱার হেতু ?

আশীষ কহিল, সৰ সময় কাৰ্য্য এবং কারণের সংস্থ বোগাযোগ বাংক মা বলেই এ কথা বলছি।

সোমনাথ কহিল, কিছ এ কেবে ও কথা থাটে না। ব্যক্তিগত ভাবে কারু কাছেই আনার দোষী হবে থাকতে হবে না। না ভোষার কাছে না স্থবিতার কাছে। কিছ আর না, এবারে ভূমি বাও। সাক্ষান, বেষনট বলেছি ভার এতটুত্ব ব্যতিক্রম করো না। কাল ষ্থাসমর আমার দেখা পাবে।

আশীষ বাসার কিরিরা আসিল। দুর হইতে সে লক্ষ্য করিল সুমিভার অংশক্ষাণ বৃত্তি। বারাকার নিঃশতে হাড়াইরা আছে। আশীয় কাছে আসিতেই সুবিতা অনুষ্ঠ হইরা গেল। শ্বন্ধ্বে আসিয়া দেখিল সুমিতা বুনাইভেছে। একটু शृद्धिरे (न वांबामांब राजारेबार्डिन। चानैय क्या करिन मा। द्यम निःभट्य चानिश्चादिन कामा कार्यक्र वस्म कतिश एविन निः नत्य वारिय स्रेशं त्रन । मत्य मत्म त्र अकृ ছুৰ্বাণ দুইৱা পঞ্চিলেও ব্যবহারে ভার লেশমাত্র প্রকাশ পাইগ না। বরং প্রকাতে দে খুনিভাকে উপেকা করিল। ভার নিব্ৰবিত জীবনবানার কোণাও এতটুকু ব্যতিক্ৰম বটবাছে এমন ভার ভাবে বোরা গেল মা। কিন্ত ভিভরে ভিভরে সে কেমন একটা অংখি বোগ করিতেছিল। যত বছ আবাতই সুমিতা ভাহাকে দিক না কেন তার একাম নির্ভরশীল ভাল-ৰাসার আশীবের বিশুমাত্র সব্দেহ ছিল না। আশীব ভার এই ছুৰ্ম্মলভাকে মনে মনে শাসন করিল। বে ক্ষত আৰু সুমিভার ব্যবহারে দেবা দিরাছে ভার চিকিংগা প্রবোজন। পোমনাধ ঠিক্ই ব্ৰিয়াহে ভার অভাবিক প্রশ্রম হয়ত স্থবিভাকে এই পৰে টানিৱা আনিৱাছে। কথাটা খুনিভাৱ জানা বৰকার।

ভাবের হাম্পত্য জীবনে অবিধানের বে বেবাপার্ড হইরাছে
আহুবেই তার নির্মন আবশ্যক। তালের উভরের অভই
আশীবকে শক্ত হইতে হইরাছে। আশীব বনকে বুবাইল।
একবার আভচোবে প্রনিতার বুবের প্রতি সে চাহিরা বেবিল।
প্রকিতা নিংশকে পছিরা বাকিলেও সে বে নির্মিত নর এ কবা
আশীবের বুবিতে বাকি নাই। ঠাকুরকে জিজাসা করিরা সে
লানিয়াহে বে, শরীবের দোহাই বিরা সভাল বেলা প্রনিতা কিছু
বার নাই এবং এবন পর্যন্ত সে অভূক্ত। আশীর অভবে
বেহনা বোর করিল। একবার প্রবিতাকে বাইতে বাইবার
আহুরোর করিতে সিরাও নিজেকে সবরণ করিল। অভারবে বে
আার্থনিশীকন করিতে চার তাকে বাবা বিরা কি হইবে। কিছ
বিচারকের গৃষ্টকনী ভগরের কোনলবৃত্তির মুবে ভাসিরা
স্বেল।

ৰ্ছ কঠে আশীষ ভাকিল, সুমিতা— সুষিতা লাড়া দিল মা।

চেটা করিবাও আশীয় তার কঠবর সহক এবং স্বাভাবিক করিতে পারিল না। আবেদের পরিবর্তে কঠবরে কতকটা বেন বিরক্তি প্রকাশ পাইল। আশীয় প্নরায় ভাকিল, ঠাকুর ভোষার করে বলে ররেছে।

স্থৰিতা তথাপি নিক্লৱ।

আশীৰ বৰিৱা চৰিল, সকালবেলা বাও নি। শুনলাৰ শৰীৰ বাহাণ। শৰীৰ বে ভোষাৰ বাহাণ নম্ব সে আমি কামি। যাত না ক'ৰে বৈছে এগ। বিধ্যে লোক হাসিও না।

স্মিতার এতক্ষণের সুম নিমেৰে টুটরা দেল। তীক্ষ কটু কঠে দে বকার বিরা উঠিল, আবার বাওরা নিরে কাউকে বাবা বাবাতে আমি ভাকি নি। আমার বাওরা না-বাওরাটা আমার ব্যক্তিগত ব্যাপার। তোরার ত হরেছে !

ক্ষতা এক মৃহুর্ভে উঠিরা কাছাইল। কোনদিকে দৃক্ণাত না করিরা বাহির ক্ষর পেল, এবং ইকারই কিছুক্ল পরে ঠাকুরের ক্ষিত কঠবর তাহার কানে আলিল, ভূমি বে বললে বছবাবু এলে বাবে। তবন শরীর বারাণ বললে ত বানক্ষেক লুচি ক'রে দিতে পারতুষ মা।

স্বিতা তাহাকে থাবাইরা বিরা বলিতেছিল, তথন কি কানভূব নরীরটা আবার থারাণ হবে। ভূমি থেরে নাও, আমার কচ তাবতে হবে না।

সুমিতা পুনরার শরনককে কিরিরা আসিল। তার পদক্ষেপ হইতে আরক্ত করিরা দরকার অর্গল রুছ করা বিজলি কাতির 'পুইচ-অক' করিরা দেওরা পর্যান্ত বেল এক কটিন স্পর্শে আর্ছনাদ করিরা উটিল। কোবাও এতটুত্ব হুল নাই, বেতালা এবং বেলুরো। আলীব তার সমন্ত ইলিবকে সজার রাখিরা সুমিতার প্রতিষ্ঠ কার্য্যকে অসুত্ব করিল। কিছু একট ক্বাও আর সে কহিল বা। বনের কোবে বীরে বীরে বে কোমলতা বেবা বিরাহিল তার আরু ক্বারাক্ত অবশিষ্ট রহিল বা। বরং ভার মনোভাব কটিনভর ক্ররা উটিল। কিলের এত ভেজ-এতবালি হত।

হুই খনে পাদাপাদি ভইরা আছে। কাহারও চোবে বুম নাই। ভুগু বাবে বাবে হুই ভরক হুইভেই এক একটা গভীর হীবনিঃবাসের দক্ষ রাভের নিজ্ঞভাকে আরও ভারী করিরা ভূলিল। অভিযোগ হু'জনারই আছে। বারা ভার ভির ভির প্র বরিরা চলিরাছে।

পরদিন সুমিভার বুম ভাঙিল বিলক্ষণ দেরিতে। সারাবাভ কুৰাতৃঞ্চা এবং আৰুপ্লানিতে সে বুৱাইতে পাৱে নাই। শেবরাত্তে কথন এক সময় সে বুমাইরা পড়িয়াছিল। বুম ভাঙিয়া দেৰে আশীৰ ভাৱ বহু পূৰ্কেই বাহিত্ব হুইয়া পিৱাছে। সুষিভার মন বলে সে সামীর প্রতি অসমত এবং অশোভন ইদিত করিরাহে। সে ভার অর্ভপ্ত মন দইরা খামীর অপেকায় বারাকার হাড়াইয়া ছিল। একট সহক সেহপূর্ণ ভাকের প্রভ্যাশার সে পর চাহিরা ছিল কিছ কার্যান্ডেরে ট্রক ভার বিপরীভ বটন। সামী আসিন, নি:শব্দে কাণড় জামা পরিবর্ত্তন করিয়া আহার করিল অবচ একবার ডাকিয়া বলিল না বাইতে চল, অবচ ইহা ভাছার বিবাহিত জীবনের রোককার অভ্যান। ইহাতে ভার বৈর্যচ্যতি বটাই বাভাবিক। द्रविष्ठा निष्करक निष्क बुवारेट होता। किंद्र यन नर्ग, কাষ্টা ভাল হয় নাই। খানীর বৈর্য হারানোর ব্ৰেট कांदन चार्च यांद देवन (न निर्व्यं र्यानादेशार्व। नरेरन কি এমৰ বটয়াছিল যাহায় ভঙ বামীকে সে অমন নিৰ্ভঃভাবে আখাত করিরাহিল। ভার আভরিক ভালবাসার উপর শিৰ্মৰ ভাবে লে আবাত করিরাছে। এ বেন কেমন এক প্ৰকার নেলা ভার। এর মধ্যে কেমন একটা জনাখাদিত পুর্বা আনক্ষের মধুর খাল পাওরা ধার। নিভিন্ন ওজনে চুলচেরা रिनाव मध्या---वावरात्व क्ष्यथाख रहेबाट्य किना ।

স্থমিতা ধৰ্ষৰ এমনি ভাবে নিজেকে বিশ্লেমৰ কৃষিয়া দেবিতে ব্যস্ত, গোমনাৰ বীৱে বীৱে আসিয়া ব্যৱে প্ৰবেশ কৃষ্টিল।

স্মৃতিতা অকারণে চনকাইরা উঠিল। হাসিবার চেটা ক্ষিরা কহিল, ও--সোমলা ভূমি ?

তার বিজ্ঞাপার বরণে সোমনাথ হাসিরা উট্টল, কহিল, তুমি কি আর কাউকে আলা করছিলে নাকি? কিছ লে বাক---তোমার শরীর কি ভাল না ? চেহারাটা তেরন ভাল ঠেকছে না বেন ?

স্মিতা বহু প্রতিবাদ কানাইরা কহিল, তাল আহি ত।
পত চেটা করিষাও নে তার কঠবরের পরিবর্তন চাপা বিতে
পারিল না। ইহার উপর ঠাকুর আসিরা আর এক গোল
বাবাইল। কাল স্মিতার কিছুই বাওরা হব নাই, বুড়ো
ঠাকুর তাই স্মিতার কর বানক্রেক বৃত্তি ভাজিরা লইরা
আসিরাহে। ক্বাটা তার বনে হিল। বছবাব্র অভয়দ
বৃদ্ধে বেশিরা নে উচ্চ, সিত হইরা উঠিল। স্মিতা বয়ক বিতে

সে চূপ করিল এবং আহার্ব্য ট-পরের উপর রাখিরা ভীতভাবে প্রস্থান করিল। বদিও সে বুবিল না অভারতী ভার কোধার।

সোৰণাৰ কহিল, ৰূব দেবেই সন্দেহ হরেছিল কোবাও একটা গোল বেবেছে। পরীর যবন অস্থ নয় তবন তাতেয় উপর এ রাগ-অভিযান কেন। বগড়া করেছ বুঝি ?

হমিতা বহু একটুবানি হানিল, কহিল, অত কথার ভোনার দরকার কি সোমধা !

নোমনাথ হাসির্বে কহিল, তা বটে ... কিছ নোমনাথ তোলের অনেক ব্যাপারে অভিত কিনা তাই এ বিভ্রন।। আনি বলে, অভার তোর, চুই হরত বলবি ট্রক তার উপ্টো। আমি কিছ বলি, দোষ কাকর নর। দোষ দাশত্য জীবনের, যার গতি মোটেই নহজ এবং ফল্ফ নর। নইলে এ সহজ্ কথাটা ভোলের কেউই বুরতে চাইবি না কেন ? অবিধাস কর-বার প্রবৃত্তি মান্ত্রকে তবু শীড়া দিভেই সক্ষম; তার গতি কেউ রোব করতে পারে না, যদি সত্যিই সে অবিধাসী হয়। তবু মিধাা কেন এ মন ক্যাক্রি একপাটা আমি কিছুতেই খুবি না।।

স্মিতা সহসা অলিরা উঠিল, ব্যর্টা তোষার কাছেও গিরে পৌছেছে তা হলে। তাই বৃধি দরা করে তোষার এত সকালে এবানে আসা হরেছে। সোমদা এমনি করেই তোষরা মেরেদের বিচার কর। তারা যা ফানতে চার তার এমনি বিশ্বত বাস্থাই তোষরা করে থাক।

সোৰনাথ সহসা উঠিবা ইাছাইল। সম্বেছে ছুইথানি হাত স্মিতার ছুই কাঁথের উপর ছাপম করিবা মুখোরুখি হুইরা ইাছাইল। দৃচকঠে কহিল, কথার জাল বুনে আবার বিভ্রান্ত করতে পারবে না স্মিতা। আবার চোথের দিকে তাকিরে বল তো ভোষার যনে একটুও বরলা ছিল না ? আমি হাসি-মুধে হার বীকার করে কিরে বাছি।

স্থমিতা মন্তক অবনত করিল।

ে সোষণাৰ পুনরায় কহিল, আবি অবিবাহিত—হয়ত ভোরাদের জীবনবারার কোন বারণাই আযার নেই, ভব্ও আযার বনে হর বৈত জীবনে প্রধান এবং প্রেট সম্পদ হ'ল বিধান। যার অভাব জীবনে অভিশাশ---

পশ্চাতে পদশন্ধ হইল। আশীৰ ববে প্ৰবেশ কৰিতে
গিলা বৃহুৰ্ভেল ভভ বামিল। সোমনাবেল হাত ছ্বামি তবনও
স্মিতাল কাবেল উপল। আশীবেল বুবেল চেহালাল বেন
একটু পলিবৰ্ডন বেবা নেল। এই ভাবপলিবৰ্ডনটুকু কাহালও
দৃষ্টি এড়াইল না। সোমনাথ বীলে বীলে হাত ছ্বামি
নালাইলা লইল। আশীব ততকৰে অভহিত হইলাহে।

সুষিতার রুধ বিবর্ণ হইরা সিরাহে। কঠবরে প্রকাশ পাইল চাঞ্চা। কহিল, ভোষার বন্ধু অমন রুধ কালো করে চলে গেল কেন লোমহা ?

নোমনাথ গভীর হইরা উঠিল,কবিল,আশীবের র্থ কাল করে চলে বাবার কি কোন কারণ বটেছে প্রবিভা ? বিধ্যের আভকে অভ সহুচিত হয়ে উঠেছ কেন ? ওকে বা ধুলী ভাবতে হাও।

প্রবিতা কিও আখত হইতে পারিল না। বার বার তথু এতই ক্যার পুনরারতি করিতে লাগিল। সোননাথ বেল একট্ ত্ৰ কঠেই কহিল, সভিটে এ ভাৰলে আমি এ বাজীয় হায়া মাজাভাষ মা। ভোষয়া দিন দিন সম হছে কি।

সোনদাৰ্থ বেন অভ্যন্ত রাগ করিরাই বর হইতে বাহির হইরা গেল। বছডঃ, সুবিভার কথা বলার বরণ, ভার বুবের পাংগুবর্ণ চেহারা বেবিরা লোহনার আর বেবীলুর অঞ্জনর হইল না। নিজে সে পলাইরা বাঁচিল। কিন্ত সুবিভার চড়ুর্দিকে বেন ছল্ডিভার বেড়াজালের স্কর্ট হইরাছে। এইর্জন বভিছে নে বেন আর ভাবিতে পারিভেছে না।

স্থাৰিতা বাৰালার একট বিলেষ স্থানে আসিয়া হাডাইল বেৰান হইতে স্বামীর আপিস-ঘরের সব কিছুই ভার দুষ্টপুৰে পড়ে। নিম্নবিভভাবে আশীৰ কাজ করিরা চলিয়াছে। বড় স্মাণার সাসিরা গোটাকরেক কাইল তার টেবিলের উপর রাখিরা গেল। এর পরে ভার সহকারীদের আগরণ হইবে। তাবের সদে কাম শেষ হইলে ম্বালারের পুনরার আবির্তাব ৰটবে। ভার পরে আশীবকে ভেপুট ক্ষিণনারের কাছে বাইতে হইবে গভ দিনের কাজের কিরিছি দাবিল করিতে। তার পরে এ বেলার যত হট। কিছ আৰু উহারের ভি হইবাছে। এবন পৰ্বাস্ত আৰীবের সহক্ষীবের দেবা নাই। বৃদ্ধির কাঁটা আৰু সুষিতার ক্রত চিম্বাধারার সৃহিত ভাল রাধিরা চলিতেহে না। পুষিতা পুনরার তার শরনকৃত্তে কিবিরা আসিল। প্রচিথালি সব ভকাইরা সিরাছে। ঐ বিকে বৃষ্ট পড়িতে তার গা বনি বনি করিতে লাগিল। নিজেকে राम राष्ट्र जगहार राष्ट्र हर्सन मर्स्स हरेल हिन । प्रमित्रा नामार আশ্ৰয় দইল। ক্লাভ দেহ এবং ভাৱাক্ৰাভ মন দইয়া নিঃশত্তে পভিষা রহিল এবং হয়তো এক সময় বুমাইয়া পভিল।

আশীৰ ভাকিল, স্থৰিতা…

স্বিভা বড়ক্ত করিয়া উঠিয়া বসিল। বিশিত বিজ্ঞান চোবে সামীর মুবের প্রতি চাহিয়া রহিল।

আশীৰ একট্ৰানি হাসিবার চেটা করিবা কহিল, আৰও কি বাবে না টক করেছ ?

স্থাবিতার বিশ্বর দীনা ছাড়াইল। কি ছুলিভার না তার এত-কণ কাট্যাছে। অথচ দামী ত তাকে একটা প্রশ্নও করিল না। সুয়িতা নিকের কাছে নিকেই বেন অত্যন্ত হোট হইরা গেল।

আশীষ পুনৱার কহিল, টেবিলের উপর সূচির বালা দেবে ভাবলুর আমার অসমাপ্ত কাজ হয়তো গোননাথ শেব করবে ভাই আর ইাড়াগাম না। কিছ কিরে এসে দেবি বালার বাবার তেরনি পড়ে আছে। সভ্যিই এমনি পাগলামি আর কত হিন করবে। হিঃ প্রবিভা।

আশীৰ স্মিতার একবানি হাত নিজের হাতের মধ্যে চূলিয়া লইয়া ধেলা করিতে করিতে কহিল, ওঠ---লোহ-নাধের এতকণ হরতো অর্থেক বাওয়াই হয়ে গেছে।

সুমিতা আর একবার বাবীর ব্বের প্রতি চাহিরা দেখির। হঠাং বেন আবেগের আভিনব্যে তার হাতবানি সবলে চাপিরা বরিল।

আশীবের চোধ-যুধ সিধ হাসিতে ভরিরা উঠিল।

## অক্ষরকুমার মৈত্রেয়

>>+6>--->>00

#### **এত্রভেন্ত্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যা**য়

#### আমকৰা

"কেলা নদীরা থানা নওয়াপাড়ার অধীন সিমলা এাবে ইংরাজী ১৮৬১ সালের ১লা নাবক [ বার্চ ] শুক্রবার অপরাক্তে আমি জন্মহণ করি। প্রস্বান্তে আনার নাতা আমাকে বৃত বলিয়া ত্যাল করেন। পোড়াদহর সন্নিক্ট মীরপুর বেলওয়ে



चक्रक्रमात्र रेमख्य

ষ্টেশনের মিকট একটা পুরাতন কৃষ্টি দেখিতে পাওয়া যার। এই কৃষ্টির সাংক্ষেত্রের এক বিলাতী বাত্রী ছিলেন। তিনি নানারশ প্রজিরাবারা আমাকে সঞ্চীবিত করেন।

আমার পিতার নাম মধুরানাথ বৈজের। মাতার নাম সৌগামিনী দেবী। আমহা বারেজ শ্রেণীর হোহিলা পটর কুলীন। রাজসাহীর বৈজ্যনাথ বাগচী নামে একজন প্রধান লোক ছিলেন ৷ সংছত এবং পারসী ভাষার ভাষার সবিলেয পাৰিত। তিল। আমার যাতা ভাঁচারই করা। আমরা রাজসাহীর অন্তর্গত অভনই এানের বৈত্তের বংশ। আয়াছের यर्ग कांगरभव रेशरखंद कदिषश्व स्कार निकर्वे स्थान आयाब क्रियाब वर्षा विवाद करवन। त्रहे दहेएछ बाक-সাহীর বাসহলী পরিতাক্ত হয়। স্বরিষপুর কেলায় ক্রমিন্ট প্রামে কামছেবের বংশধরগণ বাস করিতে আরম্ভ করেন। পিতামহ গোপীঞ্চ চট্টপ্রামে ওকালতী করিতেন। পিতামহ উমাকান্ত কোন বিষয়কর্ম করিতেন ন। । তিনি তিন বিবাহ করেন। মধুরানাথ তাঁহার প্রথম পক্ষের সন্তাম। শীপকর-দিগের দৌরান্মে কুমিনী প্রাম হইতে পিতামহী পুত্র-কলা লইয়া তাঁহার পিতালর কুমারবালি প্রামে পলায়ন করেন। সেই হইতে আমরা কুমারখালিতে আসি। কুমারখালির হরিনাপ মজুমদার ও আমার পিতা মধুরানাধ বাল্য-স্থভ্দ এবং কুমার-वानित अविकारन देवित बून। नीन-विद्यादित अवस्य बहे इरे बानत निक्रे इरेड 'हिन्दू (श्रृतित्रहे'-अन्त्राधक ⊌हिक्तस पूर्वाणावाच बदर 'खणाकव'-मन्नावक अकेवत्रकता **चड-- वक्दरमंद्र जात्मक अर्वाप शाहिर्छन ।** 

এই সময় মধ্বানাৰ, কুমাৱৰালি ইংৱালী বিদ্যালয়ে শিক্ষকতা ক্রিতেন। তথন হরিনাৰ, মধ্বানাৰ এবং ওাঁহাদের সমবয়ক্ষ কুমারবালির মুবকাণ অক্ষর্কুমার মডের বচনা পাঠ ক্রিতেম এবং ওাঁহাকে আদর্শ ক্রিয়া বদসাহিত্যের উন্নতির চেষ্টা ক্রিতেন। তক্ষণ ওাঁহারা একট বদবিদ্যালয় এবং একট বালিকা-বিদ্যালয় কুমারবালিতে ছাপিত করেন। হরিনাবের 'বিক্ষরস্ত' এছ প্রকাশিত হইবার পর, 'প্রামবার্ডাপ্রকাশিকা' নামক সাঙাহিক প্রের হচনা হয়।

এই সকল বন্ধু-বাছবের মধ্যে মধুরানাথের প্রথম সভাধ আমি । আমি ইইাদের সকলের সেবের পাল হই। "এই বাসক বালালা সাহিত্যের বাহাতে উন্নতি করে, এইরুপ শিক্ষাই ইহাকে থিতে হইবে," এই উদ্দেশ্যে অক্ষরভূষার ধণ্ডের নাম শারবে আমার নামও অক্ষরভূষার রাধা হর। হরিনাথই আমার এই নামকরণ করেন এবং তিনিই আমার সাহিত্য-প্রের করে।

আমার করের পর পিতা ওকালতী পরীকা দিবার কর রাজসাহী গনন করেন। সে বংসর পরীকা গৃহীত হয় না। পিতা রাজসাহীতে গবর্থেটের কর্ম প্রাপ্ত হইরা রাজসাহীরাসী হন। গত অর্জোহরের পূর্ব্ব অর্জোহর বোসের সময় আমি রাজসাহীতে নীত হই।

বাল্যকালে বপ বংগর বরণ পর্যন্ত আমি কর্বন কুরার-

 <sup>&</sup>quot;বাঘ" ব্রাকরপ্রবাদ—"বার্চ" হইবে। ১৯২৭ সালে প্রকাশিত নলেক্রবাথ বন্ধ-সকলিত 'বলের কাতীর ইতিহাস (বারেক্র-রাদ্ধণ-বিবরণ)' পুত্তকে অক্সর্ক্রারের লিখিত নিজ বংশ-পরিচয় এটবা। 'বিবকোব', 'বহাকোব' প্রভৃতিতে ভুলক্রবে অক্সর্কারের ক্রভারিথ "১লা বাঘ ১২০৮" (ইং ১৮০২) বলা হইরাছে।

বালিতে ক্ৰম বা মাজসাহীতে বাকিভাম। হরিনাবের বল-বিদ্যালরের পণ্ডিত ত্রীমুক্ত শিবচক্ত বিদ্যার্থন, ত্রীমুক্ত ক্লমর সেন এবং আমি এক সলে বিদ্যারত করি। আমরা ভিন ক্লেই হরিনাবের নিক্ট বিদ্যা ও মচনা শিক্ষার উপবেশ পাইবাছি।

১৮৭১ সালে বোরালিয়া-গবর্ণনেন্ট-ছুলে আমার ইংরাজী শিক্ষা আরম্ভ। ১৮৭৪ সাল হইতে সংগ্রুত শিক্ষার ক্ষুপ্রণাত। বিদ্যাগরের শিক্ষকগণের নিক্ট, পভিত শিবচন্দ্রের পিতা চল্ফ-কুমার তর্কবাইশের নিক্ট, আর রামকুমার বিদ্যারম্ভের (বামী রামানক্ষ ভারতী) নিক্ট এবং বিক্তর্কুক্ষ গোরামীর নিক্ট সংগ্রুত অব্যাশক্ষিরের মংগ্রুত অব্যাশক্ষিরের বব্যে পভিত হরিক্তন্ত্র গোরামী এবং পভিত ভারাকুমার ক্ষি-রম্ভ,—ইইারাই এক্সলে জীবিত আছেম।

১৮৭৮ সালে चामि क्षर्यनिका भरीकार क्षत्रम विकास উত্তীৰ্ণ হইবা, বাজ্যাহী বিভাগের মধ্যে সৰ্ব্যঞ্জন হই এবং প্ৰৰ্থমেষ্ট হইতে প্ৰৱ চাকার বৃদ্ধি পাই। তৰ্ম বোহালিয়া প্ৰৱ্মেষ্ট ভুল ৱাজ্যাহী কলেজে প্ৰিণ্ড হইৱাছে। ঐ কলেখে এফ-এ পরীক্ষার রাজ্যালী বিভাগে সর্বভাঠ হইয়া, প্ৰৱমেণ্ট ছইতে কৃতি চাকা বৃত্তি পাই। এই সময় পাৰনা জেলার অন্তর্গত তাঁতিবন্দর-নিবাসী প্রসিদ্ধ ভূমিদার বর্গীয় অৱণাগোবিশ চৌধুৱীর ভতীর কভা ছদকমল দেবীর সহিত আমার বিবাহ হয়। কলিকাতা প্রেসিডেপী কলেক হইভে वि-अ भवीकाव छेक्षेन स्ट. कल्लक वनावन ७ विकास नाट्य এম-এ পরীকা দিবার বভ পাঠ সমাপ্ত করি। অব্যর্থশ্রমে ক্ৰমে অন্তৰ হইতেছি বলিয়া, পিতা আমাকে এম-এ পরীকা হইতে নিরম্ভ করিয়া, ওকালতী পরীকা দিবার কর পাঠার্ব ব্ৰাৰণাৰীতে দইৱা যান। ব্ৰাৰণাৰী কলেক ঘটতে বি-এল প্ৰীকাৰ উত্তীৰ্ণ হইবা. ১৮৮৫ সাল হইতে ৱাৰুসাহীতে ওকালতী করিভেছি। শৈশবে যে পাঠাত্ররাগ ও বলসাহিত্যা-হুৱাগ লাভ করিরাহিলায়, ভাগা ক্রমে বাল্যকাল হইভেই বিকশিত হইয়াছে।

প্রথম আমি কবিতা লিখি; বভিষার বিলিজির বদ-বিজ্বের প্রচলিত বিবরণ যে সর্কাণা কালনিক, এই ধারণার 'বদবিজ্ব' নামে আমি প্রথম কাব্য লিখি। ঐ প্রছ্ বর্তমান নাই। গৃহদাহে অপ্রকাশিত বাল্য-রচনা পুভিষা সিরাছে। বাল্যকালের অনেকগুলি রচনা রাজসাহীর 'হিন্দুরঞ্জিকা' ও ক্ষারবালির 'প্রামবার্ডা'র প্রকাশিত হইরাছিল। লর্ড লিটন প্রেস প্রক্ট পাস করার বৃদ্ধ হরিমার্থকে অবসর দিয়া, আমি, क्षमदद्व ७ क्षमद्वक्रक वर्त्वाभावादि मानक रविमार्थद करेनक হাত্র 'প্রামবার্ডা' সম্পাদ্ধের ভার প্রহণ করি। এই কালের মব্যে হচ্চেলের নানা ঐতিহাসিক বিবরণ ঐতিহাসিক চিত্র নামক কুত্ৰ কুত্ৰ প্ৰছে লিপিবছ ক্রিবার ক্রবা করি। বলাক ১২৯০ সনে 'भगत भिरष्' मामक अष्ट खकाण कति। अरे अष्ट বিদ্যালবের বালকগণের মধ্যে অতি অল্প লমবেই বিক্রীত হইরা যার। ইহার লভ্য ভাতীর বনভাতারে উৎস্পত্তিত হর। এক-এ পড়িবার সময়ে বেকলের ক্লাইব এবং ছেটিংলের এছ আমাদের পাঠ্য ছিল। ঐ এচ অধ্যান উপলক্ষে রাজনাতী কলেজের অব্যক্ষ ও অব্যাপক ভাউভিং সাহেবের সহিত প্রত্যহ আমার বচদা হইত: মেকলের বর্ণনা বে প্রকৃত নহে, ভাষা সাংহৰকে বুবাইবার ভঙ আদি নানা প্রমাণের অনুসভাব করিতাম। এই অনুস্থানকার্য্য দীর্ঘাল হয়। তহুপদক্ষে বাদ্পার ইতিহাসের আমি বহু বিবরণ সংগ্ৰহ করি তদবলখনে বাদপার ইভিহাস দিবিবার করু বহুগৰ আমাকে উপদেশ দান করেন। ইতিহাস লিখিবার সময় আর্সে নাই বলিয়া, রাণ ভবানীর জীবনচয়িত উপলক্ষ করিয়া, ঐ সমরের ঐতিহাসিক বিবরণ প্রকাশ করিবার সভয় করি। কভকভানি বিলেষ ঘটনার "রাই ভবানী" প্রকাশে বিগম্ব ঘটার, "সিরাক-উদৌলার" ঐতিহালিক চিত্র কবি রবীজ্র-নাৰ ঠাকুর সন্পাদিত 'সাধনা' নামক মাসিক পঞ্জিকার প্রেরিড হয়। কিয়দংল প্রকাশিত হইবার পর 'সাধনা' বছ হইয়া বায়: "সিবাছ-উদ্বোলার" অবশিশ্রাংশ 'ভারতী'তে প্রকাশিত হর। এই সমরে 'লাহিভ্যে' সীভারাষের ঐতিহাসিক চিত্র প্রভাশিত হুইয়াছিল। পরে 'সাহিত্যে' রাণী ভ্রানীর প্রথমাংশ ও 'ভারতী'তে "মীরকালিম" সম্পূর্ণ প্রকালিত হয়। মীর-কাশিষের কিয়দংশ মীরভাকর নামে 'দাহিত্যে' প্রকাশিত হইরাছিল। রবীক্রমাণ ভারতী প্রের সন্দাদনভার এহণ ক্রিলে, ভাঁহার সহারভার এবং ভাঁহার প্রভাবে, 'ঐভিহাসিক চিত্র' নামক ত্রৈমাসিক পত্রের সম্পাদনভার প্রহণ করি। औ भव अक दश्मादात **चरिक চ**ल नाहै।

বঢ়লট লর্ড কর্জন হবন গোড় বেবিতে যান, তথন তিনি ছিন্দ্ৰের সময়ে গৌড় কিরপ ছিল, তাহা জানিবার জড় ইজা প্রকাশ করেন। মহারাজ স্থ্যকান্ত জাচার্য্য চৌগুরীর জন্মরোধে পর্ড কর্জনের পাঠের জন্য জানি Gauda, under the Hindus [Rajshahi, 20 Feb., 1902, pp. 24) নামক এক ইংরাজী প্রবন্ধ রচমা করি। এ প্রস্থ কেবল বিতরণার্থ রুক্রিত হয়। জানি এশিরাটক সোসাইটীর মেশ্বর এবং এশিরাটক সোসাইটীর জনালে আনি কল্প সেনের তাত্রসিপি প্রকাশ করিবাছি।

বাল্যকাল হইতে ব্ৰেণ-হিতের অন্য নাৰায়ণ সভা-স্মিতির সহিত আমার যোগ হিল ৷ 
আমি রাজসাহী হার-

<sup>্</sup>ৰ বিশ্ববিদ্যালয়ের ক্যালেণ্ডার হইতে জানা বার, অক্সরুমার ১৮৭৮ সনে বোরালিরা কুল হইতে প্রথম বিভাগে এনট্রাল, ১৮৮০ সনে রাজলাহী কলেল হইতে দ্বিতীয় বিভাগে এক-এ, ১৮৮০ সনে প্রেসিডেলি
কলেল হইতে ভৃতীয় বিভাগে বি-এ, এবং ১৮৮৫ সনে রাজনাহী কলেল
হইতে দ্বিতীয় বিভাগে বি-এল পাস করেন।

১৮১০ সনে অক্ষরকুরার 'শিকা-পরিচর-সবিতি'র সম্পাদকের পদ অলম্বত করিয়াছিলেন। এই সবিতি "শিকা-পরিচর্যা এবং কাতীয়

নতা, কনিকাতা ইতেইস্ এনোনিরেশন নামক হাজসতা, ইতিয়ান এনোসিরেশন এবং রাজসাবী এনোসিরেশনের সত্য । সাত বংগর কাল রাজসাবী এনোসিরেশনের সম্পাদক হিলাম। রাজসাবীর মিউনিসিগ্যালিট, লোকাল বোর্ড, ভিট্নীট বোর্ডের সভ্যরণে বীর্ষকাল কার্য্য করিরাহি। আমি কবন নির্মাচক হইবার জন্য প্রার্থী হই নাই। প্রতিবারই গবর্ষেক আমার রনোমীত করিরাহেল।"

'বদবাসী'-কার্যালর হইতে ১৩১১ সালে (ইং ১৯০৪) প্রকাশিত 'বদ-ভাষার লৈবক' পুতকে এই আত্মকবা হান পাইরাহে। ইহার সহিত 'বদ-ভাষার লেবক'-সম্পাদক অক্সর্বার সহতে আরও কিছু সংবাদ সরিবিট করিবাহেন, ভাহা এই:—

"ভাষৰ জুবিলিয় সময়ে [ ১৩০৪ সাল ] বজুভায় বঞ্জি হাজায় টাকা উঠে। এই টাকায় ছেশন-শিল-বিভালয় প্রতিষ্ঠায় হচনা হয়। ইনি পাঁচ বংসর কাল এই বিদ্যালয়ে অব্যাপনা করেন। কলিকাভায় বে-বার কংপ্রেসের অবিবেশন হয় [ইং ১৯০১], সে-বার ইনি বরং বহু লোকের সমক্ষে প্রদর্শনীতে রেশন-শিল্পের নানা অলের প্রদর্শন করেন।

রাজসাহীতে সংস্কৃত নাটক—বথা শক্তলা, বেনীসংহার প্রভৃতির অভিনরের ইনি ক্ষণাত করেন। ইহাঁর উল্যোপে রাজসাহীতে বে সংস্কৃত নাটকের অভিনর হয়, তাহা দেবিরা পরলোকগত হোটলাট বাহাছর পরম প্রীতি লাভ করেন। বহু সংস্কৃতক্র পতিত,—বথা মদনগোপাল গোরামী, বাদবেশর তর্কয়য়ৢ, বর্জমান-রাজ সংস্কৃত কলেজের অব্যাপক হরিনাথ বেদাভবানীশ, —এই অভিনর দেবিরা সংস্কৃত প্লোক-নিব্র অভিনরদেশক্র প্রধান করেন।

জিকেট-বেলা এবং চিন্নাছনে ইনি ছুপটু। বেশন-শিলের
সকল বিবরেই ইনি অভিজ্ঞ। প্রভাহ সানের পর ইনি মাতৃপ্রধান লা করিরা জল প্রহণ করেন লা। প্রবর্গেট ছুইট বিবরে ইইার প্রতি ছুবিবেচনা করিরাছেন। বে-সরকারী বছ লোকে প্রবর্গের জন্য বাটরা বাজেন, গ্রবেটি প্রারই সরকারী রিপোর্টে ভাঁহাদের ছুপ্পট্ট নামোরের করেন লা। কিছ ইনি রেশন-শিল্প সক্ষেবে বে কার্ব্য করিরাছেন, গ্র-র্বেট ছানীর রিপোর্টে ভাঁহার নামোরের করিরাছেন।

नरक्ष, देश्वाकी अवर वालाला जावात देनि जुलाकन ब्रार्णव ।"

নাহিত্য-বিভার প্রভৃতি বহুং উদ্দেশ্তে হাপিত" হয়। ১২৯৭ সালের পৌর সংবাা 'শিক্ষা-পরিচর' পরে প্রকাশ:—"পাঠকণণ শুনিরা ক্রবী হইবেন, শিক্ষা-পরিচরের পরিচাগন এবং উর্ল্ডি-বিধানে সম্পাদককে শিরচেজ্র চৌধুরী, বি-এ ] সাহাব্য করিবার ক্রন্ত এবন হইতে করেক কর কুমবিহা হিতৈবী বন্ধু সমবেশু হইরা শিক্ষা-পরিচর-সমিতি নাবে একটি সমিতি হাপন করিলেন।--শিক্ষা-পরিচর-সমিতির অধিবেশন-হান বোরালিরা, রাজসাহী; বর্ত্তবান সম্পাদক শ্রীপুরু বাবু ক্ষরকুমার বৈজ্ঞের, বি-এল।"

### 'ঐতিহাসিক চিত্ৰ' সম্পাদন

১৩০৫ নালে রাজণাতী ত্ইতে 'ঐতিতানিক চিত্র' নাবে একথানি বৈনানিক পত্র প্রকাশের সকল অকরত্বারের যনে উনিত ত্র। এই উদেশ্তে একট প্রভাবনাপত্র বৃত্রিত ও প্রচায়িত ত্র। রবীজনাথ তংসন্পানিত 'ভারতী' পত্রে ("প্রসদ কথা," ভার ১৩০৫) এই প্রভাবনাপত্র সহত্বে বিভূত আলোচনা করিরাহিলেন। প্রকৃতপক্ষে ভাহারই "সহারভার এবং ভাহারই প্রভাবে" 'ঐতিতানিক চিত্রে'র কর ত্র। ইতার ১ম সংখ্যার প্রকাশকাল—"কাত্রারি ১৮৯৯" (পৌর ১৩০৫)। রবীজ্ঞাপাকার প্রত্রের "হচনা" লিখিরা দিরাহিলেন ('পনিবারের চিটি', চৈত্র ১৩৫০ ক্রইব্য)। "সম্পাদকের নিবেধনে" অকরত্বার পত্রিকা—প্রচারের উদ্বেশ্য সহত্বে বাহা লেখেন, নিরে ভাহা উন্নত করিতেছি:—

### "বর্দ্মার্থকামমোক্ষাণার্পদেশসমধিতং পূর্বান্তক্ষাযুক্তমিতিহাসং প্রচক্ষতে।

বর্দ্ধ অর্থ কাষ এবং মোক্ষবিষয়ক উপদেশযুক্ত পূর্বায়ত কৰার নাম ইতিহাস,—ইহাই অন্মন্ধের প্রাচীন সংস্কার। তদহুসারে রামারণ মহাভারত কাব্য হইলেও ইতিহাস-মব্যে পরিপণিত। তদ্ধুপা—সর্গ প্রতিসর্গ বংশ মহন্তর এবং বংশাস্থ—চরিত কীর্ত্তনের কন্ত বে সকল পূরাণ প্রচলিত হইরাছিল, তাহাও ইতিহাস। কিছু এই সকল প্রবেধ যে কেবল বিশুছ ঐতিহাসিক বুলাছই বর্ণিত হইরাছে তাহা নহে;—পূরাণ-বক্তাকে স্ক্রীপ্রকরণ হইতে কথা আরম্ভ করিতে হইরাছে; যে বুগের সংবাদ মানবজ্ঞানের অনবিগমা, তাহা লিপিবছ করিতে পিরা পরে পদ্ধ কল্পনার আপ্রর প্রহণ করিতে হইরাছে।

পরবর্জী পণ্ডিতমণ্ডলী মানা সমরে নানারপ প্রক্রিও প্রোকাদি সংবোগ করার এই সকল প্রছের রচনাকাল নির্ণর করা কৃট্টন হইরা উটিয়াছে। তথাপি ইহাতে বে আমাদের ইতিহাসের উপকরণ ইতভতঃ বিক্লিপ্ত হইরা রহিরাছে, তাহা কেইই অধীকার ক্রিতে পারেন না।

সকল দেশেই আধিষ্ণের ইতিহাস বেরণ নিরতিশর অভতমসাক্ষর, আনাবের দেশেও তাহাই। আনাদের ইতিহাসের
আধির্ণ 'বৈধিক র্ন' এবং 'পৌরাধিক র্ণ' নাবে অধুবাতন
পভিতসমাক্ষে পরিচিত। তাহার ধারাবাহিক রাজনৈতিক
ইতিহাস সংকলন করিবার উপর্ক যথেপ্ট উপকরণ সংএহ
করিবার উপায় না থাকিলেও, তংসামরিক আর্থ্যসভ্যভার
ইতিহাস সংকলন করা একেবারে অসভব মহে। তজ্জভ বেদাবি প্রাচীন আর্থানার এবং প্রাণাধি অপেকাক্ত পরবর্তী
পুত্রবাবনীর কালনির্পর করা আব্যক্ত।

অন্যদেশীর পভিতৰঙলীর বব্যে বাঁহার। এ বিবরে ব্যালাব্য বত্ব করিরাহেন, তরব্যে লাহিত্যগুরু বর্গীর অক্যর্কার বন্ধ মহাশর সকলের শীর্বহানীর। তিনি শীর্ণনরীরে জীর্ণহান্ত্যে বন্ধ বিবনের অধ্যবসারবলে পাশ্চাত্য পভিত সরাক্ষের যুক্তি ভর্কের স্বালোচনা করিয়া বে অভ্যুংকৃত্ত এছ রচনা করিরা সিরাহেন, ভাষা ভাষার ইভিছাসাল্লাসের অবিনধর কীর্দ্ধি-ভঙ্ক। ভিনি বেরণ স্বাধীন চিত্তাপ্রস্থত অভ্যুসভান-প্রভিন্ন অবভারণা করিয়াছিলেন,—বালালী না হইলে অববা উপেন্দিভ বদভাবার প্রস্থাচনা বা করিলে,—ভাষাতেই ভাষার নাম পাশ্চাভ্যুসমাকে চির্ম্বরীয় হইভ ।

আৰ্য্যসভ্যভা কভ পুৱাভন নিঃসংশৱে ভাহার কালনির্দেশ করা বার না। আর্ব্যসাহিত্যের অংশাবশিষ্ঠ পুত্রকাবলী বে বহ পুরাতন তাহা অনুযান করিবার বধেষ্ট কারণ আছে। किंद शाहीय रहेरमध बहे भवन बार्ड जकन बार्च जुनाबन थांठीय नरह :--कानप्रकारव चरनक श्रीकंद (ज्ञांकावनी जबारा श्रामकाल स्टेशारह । अटे क्षितानवाप चनुमा मुखन আবিত্বত হয় নাই। গ্রামাসুক্তত রামায়ণের দীকায় দেখিতে পাওৱা যাব যে, ভাঁছার এবং ভাঁছার পর্ব্বাচার্ব্যপরে সময়েও बामाश्रम्ब वह स्नाक श्रीकथानवारम चनाक्छ रहेछ। अरे भक्न बर्द्ध कान कान जरन अकिछ साव इहे जबर कान काम जरम यवार्थ है **आठीन**, ভाहाद निर्मद कदिए मा शादिल देखिशास्त्र देशकदार्वद मधान माच कदिरमक देशकादमाच ক্তিবার সম্ভাবনা নাই। তক্তর বর্গীর হত মহাশর এ বিষয়ে जवानिर्वादव देशके शहा श्रम्भन कविद्याद्यालन । किन्द जिन উशाहबनक्टल दर हुई शाबिक क्यांब केटब्र क्विया त्रियादन. जारावे जामारमब गर्सन वरेवा बरिवारक, जामवा अ नरीक এই সকল এতের সমগ্র প্রক্রিপ্তাংশের নির্ণর করিবার আহোত্তন कति बाहे। देखिशामात छेलकतन अध्यक्त कतिए स्टेरन वर्दे কার্য্যে হন্তক্ষেপ করিতে হইবে।

আর্থাবিকৃত ভারত সাত্রাজ্যে বে বৌদর্গের অভ্যানর হারাছিল, তাহা পাশ্চাত্য পভিতসধাকে ভারতেতিহাসের গৌরবের রুগ বলিরা পরিচিত। তাহার আদ্যন্তের ইতিহাস বছভাবার সকলিত হইতেছে। এই রুগে এলিরা বন্ধের অবিকাশে সভাকনপদ ভারতবর্গের পানরুলে লিয়রূপে ইইনম্ন এইন করিরা ভারতবর্গান্ত সংকলন করিরাছিল। এই রুগে এটার ক্রাভার্যাপন কলে হলে বীপে উপধীপে নানালিকেলে বর্দ্রভারার্গ বহির্গত; এই রুগে ভ্রন্থানার তীরহ সিরিরারাল্য হইতে প্রেলিসাগরমবার বীপপৃত্ব পর্যান্ত বীন্ধমন্ত বিঘোরিত; এই রুগে ভিন্নং এক শান সিংহল মহাচীন এক্তি অনার্যাক্ষরপদের বর্দ্রাচার্যাপন লিকার্থ ভারতবর্ষে স্বান্ত বিহুলে গুরুরা প্রান্ত আন্ত্রাক্ষরপদের বর্দ্রাচার্যাপন লিকার্থ ভারতবর্ষে স্বান্ত প্রেলিসা প্রবান্ত বিশ্বের অব্যান্ত সংস্থালিত ও অহিংসা প্রবান্তর্মের বিশ্বের্মবিদ্যা অন্তর্গান্তে সংস্থালিত ও অহিংসা প্রযোগদের বিশ্বের্মবিদ্যা অন্তর্গান্তে সংস্থানিত ও অহিংসা প্রযোগদের বিশ্বের্মবিদ্যা অন্তর্গান্তে সংস্থানিত ও অহিংসা প্রযোগদের বিশ্বের্মবিদ্যা অন্তর্গান্তে সংস্থানিত ও অহিংসা প্রযোগদের বিশ্বের্মবিদ্যা অন্তর্গান্তে স্বন্ধে উৎকীর্থ হুইরাছিল।

ইহার অবসাবে ভারতবর্ণের ঐতিহাসিক ক্ষেত্রে পুনরার অবকাবের আবির্ভাব হইরাহিল। কিছ ভংকালেক আরব্য ব্রির্গ ভারতবৃত্তান্ত সংক্লন করিতে বছলীল হিলেন ;—

নবোদ্গত বোসলবাৰ-সাত্ৰাজ্যেত্ব বোগলালবিপতির আঞ্চে তারতবর্ষীয় বহুশাল অসুবাধিত ক্ষরা এশিরা ক্ষতে আফিক। এবং তথা ক্ষতে ইউলোপে নীত ক্ষরাছিল।

পরাক্রান্ত মোসসমানসের। ভারভসীরাত্তে সমুপছিত হইলে হিন্দু মোসসমানের মধ্যে বছবংসর বাহবলের পরীক্রা হইরাহিল। সে পরীক্ষার কভ বীরসভার অকাভরে আবোংসর্গ করিবার পর মোসসমান-সেরা ভারভবর্বে সারাদ্য সংহাপন করিতে সক্ষম হইরাহিল, মোসসমানের ইভিহাসে এবং টার্কবির অপূর্ব্ধ সমর কবিভার ভাহার ভিছু কিছু পরিচয় প্রাপ্ত হওরা বার।

ৰোসদমানেরা বেধানে গিরাছেন, সহত্বে সে হেশের ইতিহাস সংকলন করিরাছেন। তাঁহাছের বত্নে ভারতবর্ণের প্রাতত্বেরও কিছু কিছু স্টোছার সাধিত হইরাছিল। এই সকল এই জনপ্রমাদপরিশৃত না হইলেও আমাহের ইতিহাসের বিশিষ্ট উপক্ষণ। অভঃপর ইউরোপীর এইরানগণ এলেশে উপনীত হইরা নানা ভাষার বে সকল ভারতবৃত্তাভ সংকলন করিতেছেন, তাহার স্রোভ অধ্যাণি ক্লছ হর নাই।

আমাদের ইভিহাস নাই। কিন্তু ভাবিরা কেবিলে আমাদের ইভিহাস সংক্লমের উপকরণেরও অভাব নাই। ববেশীর এহাদির ইভিহাসাংশের নির্মাচন ক্রিয়া লইডে পারিলে, বিবেশীর লেবকবর্গের ভারভবিবরণীর সর্চিত সমালোচনা করিয়া ভাহা হইডে সভ্যোত্তার ক্রিভে পারিলে, এবনও আমাদের ইভিহাস সংক্লিভ হইতে পারে।

তাহা বহৰদসাপেক বহব্যস্ত্ৰসাৰ্য কৃঠিন ব্যাপার। কিছ বাহারা ললাউকলক অপসারিত ক্রিয়া সভ্যস্তাকে বানব পদবীতে দথায়বান হইবার ক্ত ব্যাকুল, ভাঁহাদের ব্যাকুলতা বধি আন্তরিক হয়, তবে এই কঠিন ব্যাপার একেবারে অলন্তর ব্যাপার বলিয়া বীকার ক্রিডে পারি না।

বৈদিক এবং পৌরাণিক বুগের কথা ছাভিয়া বিয়া, বৌদ্ধুপ হইতে ইভিহান সংকলনের চেটা করিলে ভাহাও সামাভ হইবে মা। ভাহাও বিসহ্মানিক বংসরের কথা। এভ দিনের কথাই বা কভ দেশের ইভিহাসে দেবিতে পাওয়া বায় ?

নীইপূর্ব চতুর্ব পভাষী হইতে নীইাব্দের সধ্যর পভাষী পর্যন্ত সহস্রাধিক বংগর নানা বিজেশের পভিতরওলী ভারতবর্ধে উপনীত হইরাহিলেন। পাশ্চাত্য পভিতরর্গের সংক্ষাতি ভারত-বিবরণীর অবিকাংশই বিস্তৃত হইরা সিয়াহে, কিন্তু বেগাছিনীপ্, এরিয়ান এবং উলেনীর এছাবির কির্যুংশ এবনও প্রাপ্ত হওরা বার। বহাচীন সাত্রাব্রের বৌদ্ধেনগণের সংক্ষাত ভারত-বিবরণী এবনও বিস্তৃত্ত হয় নাই। ই হাবের মধ্যে ক্ষেত্র হা হিরান্ এবং হিরল বস্কের নাই সাবারব্যে প্রপরিচিত ; ক্ষিত্র ভারত কত পভিত এই ভার্য্যে লিপ্ত হইরাহিলেন, ত্রিবরণ অপ্রাপ্ত বহু নাই।

বাণিজ্যোপলকে পূর্ব্বোণসাগরে বৰদীপ, বালিদীপ প্রস্থৃতি অবার্থানিবাসে বে সকল আর্ব্যোপনিবেশ সংঘাণিত হুইয়াহিল, তঙ্কংহানে অভাশি কত এছে ভারতবিবরণী সমিবিঠ রহিয়াছে, বঞ্চাহিত্যে তাহার সামাংশ্যাজ্ঞ হাব লাভ করে বাই !

কত পুরাতন ভাত্রকলক্লিপি, প্রভরকলক্লিপি এবং ভভনিপি আবিহৃত হইতেহে; তাহাতে হিন্দুর কবা, অহিন্দুর কবা, বৌহবর্দ্ম প্রচারের কবা, বৌহবর্দ্ম বিদাশের কবা,—কত ঐতিহাস্কি কবাই প্রকাশিত হইতেহে; কিছ তাহা বদ্সাহিত্যে সরাহর লাভ ক্লমে নাই।

ভারতবর্ণের প্রামে নগরে তীর্ণক্ষেরে পর্যন্তগারে এখনও বে সকল বেবন্দির তীর্ণকলেবরে ধ্বংসকালের প্রতীকার নীরবে দণ্ডারনান রহিরাছে, কে তাহার সংখ্যা নির্ণর করিরাছেন, কেবা ভাহার কলকলিশি সংগ্রহ করিরা বলভাষার পুরীসাবনার্ণ গ্রহর্ননা করিরাছেন ? অবচ আমালের ইভিছাস নাই বলিরা গতে পতে ভবিভার উপভাসে সংবাপত্রে সামরিক সাহিত্যে কে বা আক্ষেণাক্তি করিরা বাকেন ?

পুরাতন রাজবংশের এবং কমিণারবংশের কভ পুরাতন কাগজপন নীরবে কীটণট হইতেহে, কবন বা ছানাভাবে আবর্জনারাশির সহিত অনাগরে অনলসাং হইতেহে, কে ভাহার প্রতিনিধি রক্ষার জভ বধাবোগ্য আরোজন করিতেহেন ?

ইতিহাসের উপক্ষণ এখনও সংক্লিত হয় নাই, তয়র্থে
বথাবোগ্য আরোজনও আরক হয় নাই;—অবচ লিগুপাঠ্য
ইতিহাস রচনার বিরাম নাই। বলা বাহল্য বে, তাহাতে
একলেব্র প্রছ বিশেবের হায়ামান্তই পুন:পুন: অভিত হইতেছে।
ভাহাতে কত ঐতিহাসিক অমপ্রমাধ অম্বন্ধের বালকবালিকার রক্ষে রক্ষে প্রবেশ লাভ করিতেহে । ভাহারা বাহা
বহুবত্বে বহুক্লেশে কণ্ঠত্ব করিয়া পরীক্ষোত্তীর্থ হইয়া বির্থবিদ্যালরের উপাধি অর্জন করিতেহে, ভাহার চরন কল—
আত্মাবনাদনা । বাদলার ইতিহাসেই ইহা অবিকতররূপে
পরিক্টে হইতেহে ।

এই ছুৰ্জা লক্ষ্য কৰিব। 'বল্লন্থে'ৰ সুবোগ্য লাপাদক বৰ্ণীৰ বাব বহিবচন্দ্ৰ চটোপাব্যাৰ বাহাছৰ এক সময়ে ছুংৰ কৰিব। লিবিবাহিলেন :—"লাহেবরা যদি পাই মারিতে বান, ভাহারও ইভিহান লিবিভ হব , কিছু বালালার ইভিহান নাই। এবলতের ইভিহান লিবিভ হইবাছে, মাওরি ছাভির ইভিহানও আছে, কিছু বে দেশে গৌচু ভাত্রলিপ্তি সপ্তথাবাদি নগর হিল, বেবানে নৈব্যক্তরিভ ও ইভাগেবিক লিবিভ হইবাছে, বে দেশ উদ্ধনাচার্য্য, রল্পাপ শিবোমণি ও চৈভছ-দেশের ক্ষম্ভূমি, সে দেশের ইভিহান নাই।"

অধিক উহাহয়পের উল্লেখ না করিয়া বলা হাইতে পারে,— বে বেশের শিলগোঁরবে ঝীস, রোম, নিশর, তার্বেজ বিদ্যালয় হইত, বাহাবের বাণিত্যগোত বীশে উপবীশে নিকটে এবং বহুরে আব্যিনীয়ৰ প্রতিষ্ঠিত করিত; বাহাবের বাহবল এক সমরে কালী, কান্যকুলে, উংকলে সর্ক্রনৈকতে বিজয়পতাকা প্রোধিত করিবাছিল, যাহাবের সহিত বহু বংসর রণপ্রমে গলন্দর্ম হইরাও বাহবলোরত পাঠানলেনা সম্প্র বেশ পদানত করিতে পারে নাই, বরং প্রোগ পাইবামান্ত কংশ রাজা যোসলমানের সিংহালনে আরোহণ করিতে ইতভত: করেন নাই; বাহারা অদ্যাপি জানগোরবে কাহারও নিকট হীন বলিরা হীকার করিতে চাহে না; ভাহাবের ইভিহাস নাই ইহা অপেকা বারালীর লক্ষার কবা আর কোবার ?

পঁচিল বংসর পূর্বে এই লক্ষা দুর কবিবার জন্ম বদসাহিত্য-সমাজে কিরংপরিমাণে বংশক্ষন অসুভূত হইরাছিল। ভাহার পরিচয় 'বল্বপ্রথা এইরপ লিখিত আছে, "এক্সবে বালালীয় ইভিহানের উষার কি অসম্ভব ? নিভাল অসম্ভব নহে। কিছ সে কাৰ্য্যে ক্ষমতাবান বালাগী অভি অন্ত। কি বালাগী কি ইংরেছ সকলের অপেকা বিনি এই ছবাৎ কার্বোর বোণ্য, তিনি ইহাতে প্রবন্ধ হইলেন না। বাবু রাজেজলাল বিজ মনে করিলে বদেশের পুরারভের উদার করিতে পারিতেন। কিছ একংগ তিনি বে এ পরিশ্রম স্বীকার করিবেন, আমরা এত ভরসা করিতে পারি না। বাবু রাজকৃষ্ণ মুৰোপাব্যায়ের নিকট আহ্বা অভত: এমন একবানি ইতিহাসের প্রত্যাপা করিতে পারি বে ভদারার আমাদের মনোচঃর অনেক নির্ভি পাইবে। बाबद्ध वावृत्र अक्वांनि वामानाव देखिहाम भिविद्याद्यन रहि, কিছ ভাৰাতে আমাদের ছঃব মিটল মা। রাজকৃষ্ণ বাবু মনে করিলে বাদলার সম্পূর্ণ ইতিহাস লিবিতে পারিতেন; তাহা না নিৰিয়া তিনি বাসক্ৰিকাৰ একবানি কুন্ত পুত্ৰক লিখিরাছেন। বে দাতা মনে ক্রিলে অর্থেক রাজ্য ও এক রাজকভা দান করিভে পারে, সে বুট্টভিকা দিরা ভিক্ককে विशास कविशास ।"

ভাক্তার রাক্ষেলাগ মিত্র, বাবু রাক্ষ্ণ রুবোপাব্যার এবং রার বহিষ্ঠক চটোপাব্যার বাহার্ত্তর একে একে ইংলোক হইতে অবগর এহণ করিয়াছেন। বহিষ্যাবু যুভার পূর্বেলিবিরা গিরাছেন—"এক সমরে ইছে! করিয়াছিলাম বাদলার ইতিহাস করিয়া। অবসরের অভাবে এবং অভের সাহায্যের অভাবে সে অভিপ্রার পরিত্যার করিতে বাব্য হইয়াছিলার।"

পূর্বাচার্যাগণের এই সকল কথার শান্তই বুবিতে পারা বাইতেছে বে, এককনের চেষ্টার এ অভাব কলাচ দূর হইতে পারে না। বতই প্রতিভাশালী হটন, কেহ বে উপজ্বল সংগ্রহ না করিলা ইতিহাস সংকলন করিবেন, তাহার সভাবনা কোথার? বে দেশের ইতিহাসের উপজ্বল বহুভাষার লিখিত, ইতভতঃ বিশ্বিও কালকনে বিল্প্তথার হইতেছে, সে দেশের কোনও গ্রহন বাভি সম্ভ বিষয়ের বিশেষক হইতে পারেন না। পারেন না বলিরাই প্রিটিশ বংসর পূর্বের ভূপা উট্টরাও,

অন্যাশি ইভিহাস সংকৃতিত হব নাই; এত বিবের সাহিত্যপ্রব বিষয়ায়রেই সম্বিক্ষণে বিন্যত হুইয়াছে। অনুযানের অতাব হিল না, প্রতিভাষ্ত অভাব হিল না; কেবল উপক্ষপ্তলি অনায়াসপত্য হিল না বলিয়াই পূর্বাচার্য্যপথ ইহাতে হুতক্ষেপ ক্রিতে পারেন নাই। উপক্ষণ সংগ্রহের চেঠা না ক্রিলে অতীতে য'হা হুইয়াছে, ত্বিস্তত্তে ভাহাই হুইবে,—কথন কথন ইতিহাস রচনার কর উদ্বেশ অনুকৃত হুইবে, এবং প্রতিভাশালী লেখকবর্গ হয় সে চেঠা প্রিভ্যাগ ক্রিবেন, না হয় "র্ট্টভিকা দিয়া ভিক্তকে বিদায় ক্রিভে" বাব্য হুইবেন ! •••

বলা বাহল্য, ঐতিহাসিক চিত্র কোন ব্যক্তি, বংশ বা সম্প্রদার বিশেবের মুবপত্র হইবে না। ইহা সাবারণতঃ ভারতবর্বর, এবং বিশেষতঃ বলদেশের, পুরাতদ্বের উপক্ষণ সংকলনের ক্ষই বর্ধাগাব্য বন্ধ করিবে। সে উপক্ষপের কিরলংশ যে সকল পুরাতন রাজবংশে ও অনিহারবংশেই প্রাপ্ত হওরা সন্তব, ওাহাদের সহিত এবেশের ইভিহাসের বনির্ভ সংশ্রেব স্তরাং প্রসক্ষনে ভাঁহাদের কথারও আলোচনা করিতে হইবে। বাহারা আধুনিক রাজা বা অনিহার, ওাহাদের কথা নামা কারবে ভবিষ্যতের ইভিহাসে হামপ্রাপ্ত হইবে। গৈ ভার ভবিষ্যতের ইভিহাসে হামপ্রাপ্ত হইবে। প্রভিহাসিক চিত্রের সহিত ভাহার কিছুবার সংশ্রেব নাই,—পুরাতত্ব সংক্ষপন করাই ইহার একরার উব্লেখ ।…

### গ্রন্থাবলী – রচিত ও সম্পাদিত

অক্যকুষার মাতৃতাবার বে-সকল এছ বচনা ও সম্পাদন করিরা সিয়াবেন, ভাষার একট কালাগুক্তবিক ভালিকা বিতেছি। বছনী-মধ্যে প্রবস্ত ইংরেকী প্রকাশকাল বেদল লাইব্রেরি-সঙ্গিত বৃত্তিত-পুত্তকভালিকা হইতে গৃহীত।

১। সময়সিংছ (ঐতিহাসিক চিত্র)। ১২৯০ কাল (ইং ১৮৮৩ १)।

২। সিরাক্থোলা (ঐতিহাসিক চিত্র)। ১৩০৪ সাল (২১ জাহুরারি ১৮৯৮)। পু. ৪১৯।

'দাৰনা' (১৩০২) ও 'ভাৰতী'তে ( ১৩০২-০৩ ) প্ৰকাশিত ভ্ৰাৰতভাগি সংশোধিত ও পরিবাৰ্তত কলেবৰে এই পুতকে স্থান পাইবাছে।

ভূতীর সংকরণের পুরুকে (১৩১৫) "ক্লাইব-কীর্মিছর" নামে একট বচনা পরিশিটে বুক্তিত হইবাছে; ইহা এবনে ১৩১৫ সালের জৈটে সংখ্যা 'বছবর্গনে' প্রকাশিত হয়।

২৪ বার্চ ১৯১৬ ভারিবে ক্লিকাভার এশিরাইক সোনাইটর হলে, ক্যালকাটা হিপ্তরিক্যাল লোনাইট কর্তৃক আরুত নভার অনুকৃপহত্যা-কাহিনীর সভ্যতা সহতে পশ্চিত-বঙলীর মধ্যে বে বিভর্ক হয়, ভাহাতে অকরকুমার একট নার-গর্ভ বক্তৃতা করেন। এই বক্তৃতা ১৯১৬ সনের আহ্বারি-লার্চ সংখ্যা (পু. ১৫৬-১৭১) Bengal: Past and Present পরে বৃত্তিত, এবং 'নিয়াক্ষ্টেনা'র পরবর্তী একট সংকরণে পরিশিষ্টক্রণে পুনযুক্তিত হয়।

ত। সীভাৱাৰ হায় (ঐভিহাসিক চিত্ৰ)। বৈশাৰ ১৩০৫ (১০ বে ১৮৯৮)। পু. ৮০।

ইহা প্ৰথমে ১৩০২ সালের কার্চিক-চৈত্র সংখ্যা 'সাহিত্যে' বারাবাহিক ভাবে প্রকাশিত হয়। এই প্রসকে ১৩৩৩ সালের জ্যৈতি ও প্রাবণ সংখ্যা 'ভারতবর্বে' প্রকাশিত সীভারাম-প্রশন্তি গঠিতব্য।

৪। বীৰকাগিৰ (ঐতিহাগিক চিত্ৰ)। ১৩১২ সাল (২৫ কেব্ৰাৱি ১৯০৬)। পূ. ২৩৬।

'সাহিত্যে' (১৩০৩) প্রকাশিত "বীর্বাক্র" ও 'ভারতী'ডে (১৩০৪) প্রকাশিত "বীর্কাসিন্ন" প্রবন্ধ সংশোধিত ও পরিবর্ধিত ক্লেবরে এই পুতকে দ্বান পাইরাছে।

ই। কিরিদি বণিক। আবন ১৩২৯ (২০ জুলাই ১৯২২)
 শু. ১৮৮।

'গাৰিভ্যে' (১৩১১-১২ ) প্ৰকাশিত "কিব্ৰিছি-বৰিভ্" শীৰ্ষক শ্ৰষ্ট সংশোধিত কলেবৱে এই পুৰকে ছান পাইয়াছে।

७। व्यक्तप्र-चांव (जनारनावना)। १ (दे१ ১৯२৮)। वृ. १४।

১২১৮ সালের 'ধর্ষবন্ধু' পঞ্জিকার ইহার কির্মণণ এবং পরে রাজশাহী হইতে প্রকাশিত 'উৎসাহে' (বৈশাব-চৈত্র ১৩০৪) পরিবর্তিত আকারে আছন্ত, মুদ্রিত হর। এই পুন্তকের দীর্ষ 'অবতরশিকা'' ক্ষধর সেন গিনিত।

৭। গৌড়লেখবালা, ১ৰ ভবক। ১৩১৯ দাল (১ দেক্টেবর ১৯১২)। পূ.১৫৯।

্ শ্রথম ভবকে পাল-মরপালগণের ভাষশাসম ও ওাঁহা-দিগের শাসম-সমমের কভিপম শিলালিপি প্রকাশিত ত্ইল।"

আকরক্ষার লিখিত দীর্থ ক্ষিকা সংলিত হুইবানি এছের নাম উল্লেখযোগ্য। ইয়ার প্রথমবানি রহাপ্রসাধ চল-প্রশীত 'গৌডরাজমালা' (১৩১৯ সাল, ১ জুন ১৯১২), দ্বিতীয়বানি অক্ষরক্ষার বড়াল-রচিত শীতিকাব্য 'ক্ষডাঞ্চি' (৩২ সং. ১৯২৪ সাল)।

## পুস্তকাকারে অপ্রকাশিত রচনা

অকর্বারের প্রাথনিক রচনাথনি রাকণাথীর 'বিশ্-রিকা'ও ব্যারণালীর 'রামবার্ডাপ্রকাশিকা'র প্রকাশিত হয়।
১৩০২ লাল (ইং ১৮৯৫) হইতে তিনি মানিকপরের পুঠার রীতিরতভাবে আরপ্রকাশ করেন। ১৩০২ লালে উাহার লিবিত "নিরাক্রেলা"র প্রথমাংশ রখীপ্রনাধ-লপানিত 'লাবনা'র (ভাত্র-কার্তিক) ও "লীভারান" 'নাহিছ্যে' (মাব-হৈল্ল) প্রকাশিত হয়। অভংশর উাহার রচনার লভান প্রধানতঃ 'লাহিছ্য', 'ভারতী', 'প্রহীণ', উংলাহ', 'প্রভিহানিক চিল্ল', 'বদ্বর্শন' (বন্ধ পর্যার), 'প্রবাসী', 'বদ্বান', 'বাবসী',

'বানসী ও বৰ্ষনাই' ও 'ভারতবর্ষে'র পূঠার বিলিবে। এই সকল রচনার অভি অরমান্তই পূতকাকারে প্রকাশিত ক্টরাছে; অবিকাশেই ইতত্তত: বিভিপ্ত রহিরাছে। পূতকাকারে অপ্রকাশিত রচনাওগিও একন করিরা একট সংগ্রহ-প্রম্থ প্রকাশ করিতে পারিলে ভাঁহার স্বভির প্রভি যথার্থ সন্মান প্রকশি করা ক্টবে।

#### পত্ৰাবলী

গোঁচনিধের উংপতি ও ইতিহাস প্রসাদে এবর্ডেক্সার বিলোপার্যারকে লিখিত অক্ষর্যারের হয়খানি প্র ১৩৩৭ সালের আয়াচ সংখ্যা 'প্রবাদী'তে ব্রিত হইয়াহে ৷

#### বরেন্দ্র অনুসন্ধান সমিতি

বংরক্ত অন্ন্যভাগ সমিতি অক্ষর্মারের অক্ষর কীঠি। 
তাঁহাকে সারবি করিরা, দীঘাপতিয়ার কুমার শরংকুমার রার 
১৯১০ সালে এই সমিতির প্রতিঠা করেম। সমিতির চিত্রদালা (মিউলির্ম) অক্ষর্মারের বছ আহরের সামগ্রী ছিল; 
তিনি বঙল পরিষাণে ইহার উৎকর্ব সাধন করিবা সিরাছেন। 
প্রক্রিটান্তর সরকার লিবিরাছেন:—

বাজসাহীর কভিপর ব্বক প্রাচীন ভারত ইভিহাস অস্শীল্লের অবলাশ লাভ করিবাছে জানিরা শেব জীবনে তিনি
এক দিন আনাকে বলিবাছিলেন, "I am now ebbing
away, বরেল অক্সভান সমিতির ভবিশ্বং সহতে কৰ্কিং
আলা পোৰণ করিবা নিশ্ভিত্তনে এবন মরিভে পারিব।"
তিনি বলিবাছিলেন, "বরেল অস্সভান সমিতির প্রতিঠাকালে
ভাবিভে পারি নাই বে বিশ্ববিদ্যালরে প্রাচীন ভারত সহতে
আলোচনা হইবে ও রাজসাহীর কোন সভান এ সহতে চর্চা
করিবে।" এই বলিরা Martin Lather-এর সমাবিভয়ে
উংকীর্ণ পংক্তির্গল উদ্ভুত করিবা বরেল অন্থপ্রধান সমিতির
ভাবিত্ব স্বত্তে বলিবাছিলেন,

"Is it man's? It shall fade away Is it God's? It shall ever stay."

( 'প্ৰবাসী', চৈত্ৰ ১৩৩৬ )

#### প্রতিভার সন্মান

বদীর-সাহিত্য-পরিবং অক্ষরকুষারকে ১৩১১ সালে অভতম সহকারী সভাপতি ও ১৩১৮ সালে 'বিশিষ্ট সর্থত' নির্বাচিত করিলা ওপঞাহিতার পরিচর বিরাহেল। রাজ-সরকারও তাঁহাকে 'কৈসর-ই-ছিল্ সুবর্ণ-পদক' ও সি. আই. ই. উপাধি দান করিলা তাঁহার প্রভিতার প্রতি সন্থান প্রধর্শন করিলাহিলেন।

#### बुकुर

১০ কেবছারি ১৯৩০ (২৭ মাব ১৩৩৬) ভারিবে অকর-ক্যার পরলোকগনন করেন। মৃত্যুকালে তাঁহার বয়স ৭০ বংসর ক্ষরাহিল।

অক্ষরকুমার একাবারে সাহিত্যিক, ঐতিহাসিক, প্রস্থতাত্ত্বিক ও বারী হিলেম। ঐকিতীশচন্দ্র সরকার তাঁহার সহতে সভাই বিধিয়াকে:—

"ৰক্ষকুষাৱের মৌলিক পবেষণার বারা হিগ অভিনৰ, প্রপাচ বিদ্যাবভা ও প্রাক্তন প্রতিভার সংযোগই সম্ভবত: ভাঁহাকে সর্বভার্থী গতি ধান করিয়াছিল। কি সাহিত্যে কি কলাবিদ্যাৰ, কি ৰাগ্মিতায় সৰ্ব্ব বিষয়েই তাহার অসাৰারণ প্রতিভার পরিচয় পাওরা যায়। খদেন-মুগে রাজনীতিক্তেরে তাঁহার বছনিৰ্বোষ বঞ্জা বছবাসীর জনতে নুজন উনাদ্যার স্ট কৰিবাহিল। তাহার শেষধীবন রাজোপাধি ঘারা অলহত হইলেও বাহারা তাহাকে প্রভাকভাবে কানিবার সুযোগ পাইয়াছেন তাঁখাৱাই জানেন স্বদেশের প্রতি অসুরাগ তাঁখার কত প্রসাচ ছিল, ভারতবাসীর উন্নতি সাধ্যের ভভ তাঁছাক আগ্রহ কভ ঐকাভিক ছিল। বার্থপ্রণোদিত হইরা একবার কোন বিব্যাভ পুতক্পকাশক এক লক টাকার বিনিম্বে শিকাৰীকৈ কুত্ৰিয় পণ্যে পরিবত করিয়া দিবার ক্ষম্য দেশের ইতিহাসের মধ্যাদা অপেকা কাহারও স্বার্থের মধ্যাদা রকা কৰিবা একখানি খুলপাঠ্য ভারত-ইতিহাস প্রণৱন করিতে অহুরোৰ ভানাইলে, ভচ্তুরে হরিত্র অভ্যুক্তমার ভেজবিভার সহিত জানাইরাহিলেন,—"আছবিজয় করিরা ব্যেশের অসভ্য .ইভিহাসের উপাদান সংগ্রহ করা তাঁহার অসাব্য। ঐভিহাসিক त्रका देखाईम कवारे छाराव कीवटमव अक्साब शका ।"----'बराजी', देवब २००७।



এই শ্রেপীর রচনার একটি ডালিকা আমি ১০৫০ সালের ওর-৪র্থ সংখ্যা 'সাহিত্য-পরিবং-পরিকা'র প্রকাশ করিরাছি।

## উচ্চশিক্ষার সমস্থা

## ৰীবিমলচন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ্য্য

আনাদের উচ্চলিকা-ব্যবহার সমাগোচনা আজিকার দিনে অপ্রাসদিক বা অবাত্তব নহে। ইংরেজেরা যথন প্রথম আমাদের দেশে তথাকথিত উচ্চলিকার ব্যবহা করিয়াহিলেন, তথন উাহাদের প্রকৃত উদ্বেপ্ত কি ছিল তাহা অনুস্থান করিবার প্ররোজন নাই। কল বাহা হইরাছিল তাহা প্রত্যুক্ত । ইউরোপে যথন নব নব প্রেষণারারা আতীর কল্যাণ, আতীর সম্পাদ, আতীর সম্পান উত্তরোভর বৃদ্ধি পাইতেছিল, তথন আমরা সরকারী চাতুরী করিয়া ইংরেজের শাসনকার্য্যে সহারতা করিতেছিলার। শাসনকার্য্যের উপযুক্ত করিয়া তুলিবার বে শিক্ষা তাহা অবহেলার বিষয়, এরপ ইলিত করা আমার উদ্বেপ্ত করা কর্বনই বার না; এবং উচ্চলিকার স্ব্যালেচিকা বিলার এই শিক্ষার সমালোচনার প্রবৃদ্ধ হওরা একেবারেই অপ্রাসদিক।

देशांत भत्र कृत्य चार्यात्वत त्यत्यत्र माभनवार्यश् मार्था-প্ৰশাৰা বিস্তাৱ করিয়া চলিয়াছে। সঙ্গে সঙ্গে তৰাক্ষিত উচ্চশিক্ষাও প্রসার লাভ করিয়াতে। সরকারী চাকুরীর লোভে আম্বরা মৃতন মৃতন কলেজ স্থাপন করিরা দলে দলে বিশ্ববিভালয়ের প্রাল্পে উপথিত হইরাছি। ভলিকাতা বিশ্ব-বিভালয়ের কলেবর ইছারই কলে বিপুল হইতে বিপুলতর स्टेबा हिन्दारह । यस स्त्र बटे शायरनद खावरक मात्र जाल-ভোষের যোগ্য হতে ভলিকাভা বিশ্ববিভালয়ের ভার আসিয়া পভে। বাঙালীর পভে ইহা পর্য সোভাগ্য। এই সময় বে উপায় অবলঘন করিলে, ভবনকার প্রতিকৃল অবহার মধ্যেও প্রকৃত ইচ্চশিকার গোডাগতন করা সত্তব হিল, আওডোব---আর্থ बाबा हानिक रहेबा नटर. वांवा रहेबा--जाराहे व्यवनयन ক্রিয়াছিলেন। উচ্চলিকার ব্যবহা উপযুক্ত অর্থ ব্যতিয়েকে হর না ৷ আমাদের শাসনকর্তাগণ আজিও বিশ্ববিভালরের क्ष मुख्यक्ष इन मारे , त्र नमत्र अस्त्रनातारे विस्तान मा। ভাই আভভোষ এই উপাৰিলোভের প্রাবল্যের স্থবোর লইরা ক্লিড়াডা বিশ্ববিভালবের অর্থভাগার পুট করেন এবং भारतकांचर ( Post-graduate ) निका ७ शत्ववनांच वानश विश्वविद्यालस्य मिक रूट शालन करवन। देश वावादे প্রকৃত প্রভাবে বাংলাদেশে প্রকৃত উচ্চতম শিকার ও नर्ववर्गाव राष्ट्रम स्व ।

আন্তেতাবের পংখারের আগেকার উচ্চশিকার প্রকৃতি
বাহাই হউক না কেন, ইহার বিভাবের একট স্থকন হইরাহিন
এই বে পাঠ্যপৃতকের আবেটনী অভিক্রন করিয়া বহির্কগতের
আলোক শিকাবীদিনের বব্যে প্রবেশ করিভেছিল এবং
উচ্চশিকার একটা রূপ ভাহারের ববে গড়িরা উট্টবাহিল।

ইহারাই পরবর্জীকালে শিকাসংখারের কন্য একটা স্থাপট ক্ষমত শুট্ট করিবাছিলেন।

विषविकानदात मरकादात कना कनमरकत ममर्थभरे यटबंडे নহে , দেশের শাসকবর্গের সমর্থনও প্রয়োজন। ভংকালীন नवर्गायके त्व केळिनिका नवर्ष वित्नव केश्नाकी वित्नन अवन नक्त वृक्षित्रा नाथ्या कठिम । क्यक्नान वा काजीत केत्रवरमञ দিক তথন গবৰ্ণমেন্ট প্ৰত্যক্ষভাবে নিজ কৰ্তব্যেত্ব মৰ্য্যে গৰ্য करवम मारे। स्मानव चनिक ७ क्रांक मन्नरमय मध्याम वाचिवात पर इरे-हावि क्षकांत "मार्डित" वावश पर्छ -ছিল। কিছ এই সকল সীয়াবছ প্ৰেৰণা প্রিচালনার ক্ষ বিলাভ হইতে লোক আমদানী করা হইত। অবতন কর্মচারী বিশ্ববিভালবের উপাবিপ্রাপ্ত বেশীরেরাই হইতেন। এই ব্যবস্থার পক্ষে, বিশ্ববিভালবের তথাক্ষিত উচ্চশিক্ষা অনুপ-বোদী ছিল না। প্রহোজনামুরণ লোকের অভাব না হওরার, তংকালীন গবর্ণমেন্টের উচ্চশিকা সংস্থারের কোন প্রেরণী ছিল না। কনমভের অভুসরণ করিবা আগুডোবের সংখারের অনুমোদন করিলেও উপযুক্ত অর্থের ব্যবস্থা প্রণ্মেন্ট করেন নাই। এই বর উচ্চলিকার গোডাপতন আহর্শের বছরণ হইতে পারে নাই। আওডোবের সংস্থার উচ্চলিকা-ব্যবহার খচনা মাত্র এবং অবস্থান্ত্রণ ব্যবস্থা বলিয়া মনে করিতে एक्ट्र ।

यत्य इतः, वर्षमान अमरतः अहे चवशात शतिवर्षम बहैवारस । नवर्गमके ७ कनभाषात्र देखार देखा किला व अकुछ क्रम क्रमा করিতে পারিয়াছেন। জনজল্যাণ ও জাতীয় উন্নয়নের ক্ষেত্র যে ব্যাপকতর করিতে হইবে ইহা উভরেই ব্যিভে পারিয়াছেন। ভুগর্ভে কোবায় কোন বিভব পুকারিভ আছে, কোৰাত কলবাতাত মৰো বিভিত ঐপৰ্যা আমাধেত অক্ষমতাত্ত नहे रहेश गारेखाद वा श्रावतनत विकीविका एक कविटकार. কোবার কোন শিল উন্নয়নের প্রকৃত্ত পর্ব বুলিয়া না পাইয়া বিষয় ভইতেছে, অৰ্থের ৰ্ণ্টন-ব্যবস্থা কোৰায় স্থানিবল্লের অভাবে সমাভদেহকে ক্লিষ্ট করিতেছে, কোন ব্যাধির क्षरकारण राम क्रम्मा श्रेता बारेख्य-नक्म विक विदा আয়াদের দেশের প্রকৃত রূপ কি. প্রকৃত সম্পদ কি-এই সব অভুসভাৰ ক্রিবার ইক্ষা আৰু ভাত্তত হইয়াছে। বিদেশী वाबा देश कता प्रखये नर्स, प्रमीहीमध नर्स । स्मान्य छेपबुक লোক গঢ়িয়া ভূলিতে হইবে। সর্বান্ত বেষদ, আমাদের व्यापा (महेक्य । देशारे छेक्रमिका-गावश्रात व्यवस ७ व्यवस BCF# 1

এই উচ্ছত কি পৰিমাণে নিৰ ছইতে পাৱে তাছা বারা বে-কোন শিক্ষা-ব্যবহার অগাত্তব বিচার্য। বাংলাবেশে

হুইট বিশ্ববিভালর আছে। বাত্তবক্তের কোন্টর কার্যকারিতা किञ्चन, ভाराव चारनाव्याव श्रवेष प्रदेख व्यक्ति मा । नकन হাণেই সকল সৰহেই এমন ছই-চাত্তি জন অসাধান্তৰ ব্যক্তি বাকেন বাহারা অনেক প্রতিকৃত অবস্থার মধ্যেও অগাব্যসাবন कविटल शादन । छोड़ारभव मुडेाखबाबा रकाम बिकिडारमब কাৰ্যকাৱিতা বিচাৰ্য নহে। শিক্ষা-ব্যবস্থার দিক দিরা---मामन-वावशाब किक विशा मरद--- छैनरबाक्क हुरे है विश-বিদ্যালয়ের কোন্টর কর্মপছা উল্লিবিভ শহুকুল কেবলমাত্র ভাহারই আলোচনা করিব। ঢাকা বিশ্ববিভালয়ের একট বিলেষ্ড এই যে প্লাভকপুর্বা (undergraduate) ও স্বাতকোত্তর ভবের বব্যে কোন অবাভাবিক ्रयायमान नारे। अकृषे चन्तानकम्थनी देखा स्टबरे चन्तानना ক্রিয়া থাকেন এবং প্রয়েজনাতুর্গ পাঠাবিষয় নির্বাচন বিভীৱত:, খাতকপূর্ব ভবের পরীকার্ববের भरना चछानिक एव ना निवा भदीकाळगानी चापर्म षश्याती शर्रिकानमा कता अख्य एक। अव विरामस्यूत কল কি ভাহার সমাক আলোচনা কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের সমালোচনা প্ৰসঙ্গে কৰিব। একণে এই মাত্ৰ বলিতে চাই যে প্রধানতঃ এই কারণেই ঢাকা বিশ্ববিভালর প্রকৃত উচ্চলিকা **ग**तिहानमा कतियात माक चामकाराम देशायात । छवानि विव আলাহুৱণ কল পাওছা না যায়, তাহা হইলে শিকাব্যবছার নহে, শাসনব্যবস্থার ফটর অতুসভান করিতে হইবে। ভবে हरा वर धरदश विषयीकृष्ठ मरह।

কলিকাতা বিশ্ববিভালরের কলা ও বিজ্ঞান বিভাগে নানা বিষয়ে যে বৃল্যবান গবেষণা চলিতেছে তাহা বলাই বাহল্য তবে আগুতোর হুচনার যে ব্যবস্থা করিয়া সিরাছেন তাহাকেই চরম বলিরা মনে করিলে তুল হইবে।

সর্ব্যাই উচ্চ শিকার হুইট তর বরিরা লওরা হব :—(>)
সাতকপূর্ব্য ও (২) সাতকোত্তর। শতাব্দীর প্রার চতুর্বাংশ
ব্যাপিরা প্রথম তরে কর্মলীবন নিরোগ করিয়াহি। এই তরের
সকল দোমকটি, ব্যর্থতা আমাদের নিকট বত প্রত্যেক,
অন্য কাহারও নিকট ততদূর প্রতিভাত হওরা সভব নহে।
আমরা জানি, এই তরে শিকার উদ্দেশ আশাহরণ সাকল্য
লাভ করে নাই। অবিভূসংখ্যক শিকার্থীই অবীত বিষয়
অন্তর্ভ্যাক করে না; তাহা অপেকাও হুংখের বিষয় এই বে
সম্ভূরণে বৃবিতে চাহে না। তাহারা অবীত বিষয়
ওলির জান বাভবক্ষেরে প্ররোগ করিতে পারে না বা করিবার
ইক্ষা ভাহাদের মধ্যে কর্মণ ভারত হর না।

এই ব্যৰ্থতার জন্য দানী কে ? সনালোচক ভাবিরা চিভিন্ন উত্তর করেন, "বিধবিদ্যালনের প্রস্নক্তা।" সাভকপূর্ক ভরের প্রস্নক্তা ক্রমণ্ড ধরং সেই ভবে শিক্ষকতা করেব না। ক্রেন্সনাত্র পাঠ্যবিধরের ভালিকার সহিত তিনি পরিচিত। কিছু এক্লপ ভালিকারারা ক্রমন্ট স্থাপ্টরণে অধীত

বিষ্যের হবিদ পাওয়া বার বা। পাঠ্য-ভালিকার বহি क्यमात रेडेकिएक करवक्के चल:निक्टक चान क्या ৰাৰ, ভাহা হইলে বে-কোন উপপাদ্য প্ৰবাধ কৰিছে বলিলে ভোৰ আপতি বাকিতে পাৱে না। অপর পক্ষে भाके प्रश्वक विभिन्ने कृषिया विश्वा भाके विश्व निर्मा किया দেওৱা বাইভে পাৱে। নিম্নশিক্ষার ভবে এইব্রেশ পাঠ্যবিষয় সীবাবত করিলে ক্তির কাব্র নাই। কিন্ত উচ্চশিক্ষায় পাঠ্যপুত্তকে ভাহা করা সদত নর। পাঠ্যপুত্তকের লেবক যে वृष्ठेक्ती नदेश (व कश्रे विवस (वक्षणकार निर्दिश्यक ক্রিরাছেন ভাষ্টি সকল সময় অধুসরণ ক্রিরা চলিলে উজ-শিকার ব্যাঘাত করে। জান হিভিশ্বল নহে, পভিশ্বল। পাঠাবিবরে পরিবর্তনের সুযোগ না বাকিলে সময়ের সহিত लान हाबिहा प्रमिवाद मधावमा बाटक मा। प्रलहार मस्बार পাঠ্যপুত্তক ছার্রা পাঠ্যবিষয় নির্দিষ্ট করিবার প্রবা পাকা সমীচীশ মহে। আপাভদুষ্টতে কলিকাভা বিশ্ববিদ্যালয়ও সাধারণ বিষয়ই মানিয়া চলে। এমন অবসায় প্রার্ক্তা প্রশ্নত বচনা করিতে গিয়া পূর্ববর্তী প্রশ্নতালির অভ্সরণ कविदा बाटकम । याँबानरबंद किल्लाख वाख्यिक स्टेरन. **श्राप्तित काम मा काम चक्न एटेए विश्व कनदेव हैं है।** अबन परेवाद कवाक वर्ति। कादन नकन निक्करे अकरे वृष्टिक्यी नरेश खर्गायना कतित्वन अञ्चय खामा क्या खर्गाय । ভাই প্রশ্নের বাদ সর্ক্ষিয় ভরে আসিরা গড়ার এবং বাঁধাৰৱা কভকণ্ডলি প্ৰশ্ন ছবিৱা কিবিৱা আগে। শিকাৰী, এবং বাৰ্য হইৱা শিক্ষক ইছার স্থযোগ লইভে বিবা বোৰ করেন না। কলে, বিষয়বন্ধ কিছু না বুবিয়াও কেবল শরণশক্তি চালনা কৰিয়া উপাৰি লাভ করা সভব হয়।

अञ्चलक, अरे चरहात चना अन्नक्षा मात्री मरहम। ইহা কলিকাভা বিশ্ববিভালয়ের পরীকা-প্রণালীর হোষ। निक्काकार्या धनिकंषात अर्जिक्षे मा स्टेबा, केकनिकाब ন্তৰে বাৰীনভাবে প্ৰশ্নপত্ৰ বচনা ক্ষিতে বাওৱা বিক্ৰনা। অৰচ কৰিকাভা বিশ্ববিদানৰের বিভূত পরিবির ক্ষা, সাভক-পূৰ্ব্য ভৱের কোন একজন শিক্ষকের সহকারিভার প্রশ্ন রচনা করিলেও সকল সমভার সমাবান হয় না। প্রভ্যেক निकरकारे निक निक राक्तिक चारह: अवश्य बरे ব্যক্তিত প্ৰকাশ পাওৱাতে, তীৰ বিভালৰের ছাঞ্চৰের পক্ষে ক্তক্টা পুৰিবা ও অন্যান্য বিভালবের হাত্রবের পক্ষে किकिर चन्नविश एडे स्टेशव नकावमा । नवकाव बीबारना ক্ষিতে হইলে, ভিঃ ভিঃ কলেজের ক্ন্য ভিঃ ভিঃ প্রথপত্ত बहुमा कवियाद बावजा अहमन कविए एतः। अक्कश्रीक जाननिविद्या प्राचान बारक, जान करवकी करणक अकत ভবিষাৰ এক প্ৰশ্নপদ্ধ বচৰা কৰা বাইতে পাৰে।

नरीका-त्रवानीर चार अपने क्रमेर क्या देखर परिच।

আৰু কাহারও অবিধিত মাই বে, ক্লিকাতা বিব্ৰিভালয়ের नवीका-धनानी वाहिक किवाद वछ । देशास विज्ञादव अव-काम गाँह । गिर्फिट सरसंब विकिट प्रश्यन विकास क्या निर्फिट मचन मिर्छ स्टेरन । अक व्यक्तित मिर्फ चना व्यक्ति, अनम কি একাংশের সহিত অপবাংশের উভবের কোন সংযোগ মাই। পরীকার্থীর উল্লয়ণত সম্মুক্তাবে ভাষার কানের जिल्ली विश्वा विश्वा क्या विविद्य । छारे द्यान विवृद्ध नम् व स्रेशं क्रिक प्रिक्ष भविष्ठां भविष्ठां महारा हरे-চারিট প্রশ্ন বা প্রশ্নাংশের উত্তর করিতে পারিলেই ভিঞী नाफ करा थात्र। এই वावशास शतिवर्शन कराज अञ्चलाना নং । বিশ্ববিভালধের কলেবর বিপুল। একই পরীকা-कार्र्या माना चनाहारवत कवा लारकत बूरव बूरव खड़तिछ হবরা বাবে। ভাষার উপর পরীক্তকে স্বাধীনভাবে বিচারের নির্দেশ দিলে জ্বল হওয়া দূরে পাতৃক, ভ্রকল হওয়াও আক্র্য্য নহে। এই উভয় সমুভার সমাধান করিতে হইলে বিশ্ববিদ্যালয়ের কর্মপঙ্জিত্ব পরিবর্জম আৰম্ভক। পৰীকাব্যবহা কেন্দ্ৰীভূত থাকিলে সমভাৰ মীমাংসা হইতে পারে না। বিভিন্ন কেন্দ্রে বিভক্ত হইতে প্রশ্নকর্মা ও भवीक्क डेक्टर शाबीनकाटन कर्डना कविनान <u>प्रशा</u>श भाग এবং পরীকার্থর প্রকৃত ভানের পরীকা সম্ভব হয়: অবচ প্রত্যেক কেন্দ্রে সকল পরীক্ষার্থিরই পরীক্ষা সময়প হওয়ার, भक्षणाल्य मधानमाथ सारक मा। देश **चनकर बीका**र्या रव बहे वावशाय मकन कारतहे विश्वविद्यानस्तर अशानक वा **करशानीय वाक्रिविश्वय उद्यानवाम ७ नरकाविका ७**६ बाराक्नीयरे नार, जारकिक रही।

अवत्वर भवीका-अवाजीव क्षेत्र केत्रव कविवा विवविका-महात कर्मभ्यात भविवर्षस्य चायकका स्वादेशात हारी করিয়াছি। কারণ পরীকা-প্রণালীর ফটই প্রথবে চোবে भटि । किस केकिनिकाद वावश जावर्ग जक्षां**दी क**दिएक क्ट्रेरल चार अक्ट्रे विश्वतित मश्चातक श्रादाकन । वर्चनारन ক্লিকাতা বিশ্বিদ্যালয়ের স্নাতক-পূর্ব ও স্নাতকোত্তর এই इह चारत माना नाहे अकड़ी नावशान चारह। अहे नावशास्त्र অপকারিতা হরত তত প্রত্যক্ষ নহে: তথাপি ইহার প্রভাব বিভন্ন। স্নাতক-পূর্ব্ধ ভারে শিকার্থিকে নির্বাচিত কডকঙলি विश्वतिक काम जायक कृतिएक एवं। अरे जातत जरूकन ध्रशाम हैर्द्र मिक्स दिन भवन्त्री करवत कर अन्य निरम्ब कविश्व क्यांन अक विवासन शास्त्रवान निर्द स्ट्रेनान कर अध्य ভবিরা ভোলা। বিভিন্ন বিষয়ে ভগতের যত আন-ভাতার আহে ভাতার বোঝা শিক্ষার্থর বাড়ে চাপাইরা এই উচ্চেড নিছ হইতে পারে না। এই অএগতির বুরে কাহারও আন-विकास चार्वप कृतियांत चाकाका जवाक पविकृत सरेवात মতে। কোন কোন বিষয়ের জান পরবর্তী ভরে কোন একটা विरान विवरत जापुनिक्कन मरनदर्गात का बाराक्न, जारादे विरवता। विवविद्यानराव अक अक क्ष्म क्षांत्रक अक अक विवास मारवान जिल्ला चारवन । अहे भारवस्थान कालारक সাহাত্য করিবার ৩০ এক হল প্রেরক পৃষ্ট করিবা লইতে হইবে। এই কাৰ্য্যের এক অংশ স্নাভক-পূর্ব্ব ভৱে ण्य । देण्य प्रतय वाववारमय क्ष्म वादे (व. नित्रप्रतय निक्रमन डेक्करवर महिक विराध करिया बरागक-গণের সহিত, সংযোগের অভাবে, পরবর্তী ভরের প্ররোজন উপদ্ৰি ক্রিভে পাৰেন মা। পাঠ্য-ভালিকার এবোক্নীর সংখার করিলে, ভাষার উদ্বেজ-প্রিম ভয়ের শিক্ষকের ৰিকট অবোধ্য বহিষা বাব। নিৰ্বিকাৰ ভাবে ভাহাকে क्षक्रकृति क्षक विषय निकार्षेत्र जनाव:क्यूरनेत द्वारीय विज्ञक বাকিতে হয়। উদ্ভেগ্ন বা বুৰিলে কোন কাৰ্ব্যেই অপুয়াগ ক্ষে না এবং অব্যাপনার প্রাণের স্পক্ষের অভাব হইরা बारक। त्कान नरवयनाकार्या निश्व घटेनाव वा नरिप्रक्रे হইবার পুষোগ না বাকার, নিরভারের শিক্ষের আনের পরিবি ক্রমণ: সহীর্ণ হইরা আলে। ক্লামের আবৃনিক প্রপতির সহিত পরিচিত না হওৱার ভাহার সমুভ্র-বোৰ विनर्गेष रव . छाराव निवर्धिष (perspective) नहे ষ্ট্রা যার। ভাষের প্রয়োগ করিবার প্রয়োগের অভাবে আনের আবভক্তা নহতে উপদত্তি দ্বীভূত হইরা বার। निकरकत और क्ष्मण, क्षण्यकारत मरू, शरदाक कारव শিকাৰ্যৰ মধ্যেও সঞাৱিত হয়। ইহার অপকারিতা সামাত मरहा जाक रव रविष्ठ भारे बाढानी पूरक जनून। अवस ও অভিভাবকের কঠাজিত অর্থের বিনিময়ে যে শিকার ক্ত কলেকে প্ৰবেশ কৰে, ভাৰ্যতঃ ভাৰার প্ৰতি ভাৰার चवरएमा मिःमस्मरह क्षकाम भाव--हेराव कावन कि ? बहे শিক্ষা উদ্বেজ্ঞীৰ ও অবাভব এই ধারণা তাহার অবচেত্রদার ব্যবুল হইবা যাওৱাই কি এই বিপরীত আচরবের কারণ नरर ? बाद वर्ड पंचाची भूटर्स (व डेवीनवा नरेवा वाववा উচ্চলিকার হিকে অঞ্জনত ত্ইরাছিলার, উপেকার অবিধাসে ভাহা ভ ব্যৰ্থভাৱ পৰ্যবসিভ হইবে না ? এখনও শিক্তিভ সমাভ উচ্চ শিক্ষার সমর্থক। কিন্তু সে সমর্থনে যেন উপলব্ধি-ভাত ভাতপ্রভাবের ভভাব। উচ্চশিকার সমর্থন করা বেন अक्की खानशैन नरभादमात्व नर्श्वतिक स्टेशारः। यदि ইহা সভ্য হয়, ভবে উচ্চশিকাকে অনাবন্ধক বলিয়া মিকা क्विए. डेक्निका स्टेट विवृत स्टेट, बाब क्र किम ৰাকী ভাষা কে বলিবে ? অবিধালের কুরাশা দুর করিছে इट्रे**ल, डेक्किनकात अङ्ग्ल चार्न, अङ्ग्ल डे**र्डना बरन वाविवा बारवाक्मीय गरकाय कवा बारवाक्य । देशाव भविक्समा विद्वा कवा और धारावा केरमध मरह : मरकाव (व जावना)क (क्रमनाव देशदे बिल्गामा।

স্বাভকোতৰ করের সক্ষরেও হুই একট বিষয় উল্লেখ ক্রিয় । এই করের সহিত আবার প্রত্যক্ষ সংযোগ নাই। অহুবান ও পারিপার্বিক অবহার উপর নির্ভন্ন করিবাই স্বালোচনা করিতে হইবে। ইহাতে ফুটর সভাবনা অনেক। স্তরাং মন্তব্যপ্তলি বিচ্ছিল্পতাবে ও অকরে অকরে-বিচার না করিবা সম্প্রভাবে ও সাধারণভাবে প্রহণ করিতে পাঠকবের অহুরোধ করি। বাহা যক্তব্য ভাষা প্রমাণিত না হইলেও প্রবাশবোগ্য কিনা ভাষা ভাবিরা দেখিতে অহুরোধ করি।

এই তর সহতে প্রধান বক্তব্য এই বে, অব্যাপনা কোন একট বিশিষ্ট বারার গবেষণার সহিত সংর্ক্ত হর না। বে সকল বিষর অবীত হর তাহার কোন অংশই কোন একট বারার গবেষণার প্রতি লক্ষ্য করিয়া নির্কাচিত হর না—ভাহার প্রসায় অবিক হইলেও কোন একট লক্ষ্যের ধিকে চালিত করে না। অব্যাপকও হরত আঁহার স্বকীর গবেষণা ও অব্যাপনা মনের বিভিন্ন প্রকোঠে আবহু করিয়া রাবেন।

এই ভৱের শিক্ষার্থীয় পক্ষে কোন এক বারার গবেষণার সহিত পরিচিত হওরা একাছ বাহ্নীর : মৌলিক প্রবৃত্তের ৰব্যে ৰে উপক্ৰণ বাকে, ভাহা পাঠ্যপুত্ৰের মধ্যে কেহ পাইতে পারেন না। কি অবস্থার কোন বিষয়ের অপুসভানের স্থা কৰিবা কোন কড়ল সম্পদ উদ্যাইত হইৱাছে ভাষা না জানিতে পারিলে এই ভরের শিকা নিক্ষই অসম্পূর্ণ বহিনা বাধ। কেবলমাত্ৰ বিষয়বন্ধই চরম কথা নছে। কেমৰ করিরা নুত্ন দুত্ন তথা আবিহৃত হইল, তাহার সহিত পরিচিত না হইলে উচ্চলিকা অসম্পূর্ণ বাকে। সকল জ্ঞানের **छैरा**नं मर्याप दाविष्ठ यनि माः, छाङ्। मञ्चय नाहः। কিছ সাভকপূর্ব ভর হইতে ক্রমে ক্রমে বিষয় নির্বাচন করিব! শিক্ষার্থী যে বারার দিকে অঞ্চলর হইতেছেন তাহার উৎসের সহিত পরিচয় অবশাকর্তবা। ইহা না হইলে কেছ গবেৰণাকাৰ্য্যের জঙ উপযুক্ত হইতে পারেন না। बमीवित्रत्व प्रमाप्त चल्नावन मा कविद्या-नाबावन निकार्यी वर्षर প্ৰকৃত গবেৰণাকাৰ্য্যে অধিকানী হইতে পাৱেন না। ভাই আৰৱা দেখিতে পাই, বিতীয় ভৱের উপাৰি লাভ করিয়াও শিকাৰী গৰেষণার ভঙ আঞ্চারিত হন না এবং গ্ৰেষণা-কাৰ্ব্যে নিৰ্ভ হইবার ৰত সাৰ্ব্য ও আত্মবিশ্বাস অৰ্জন করেন मा ।

অব্যাপকের অব্যাপনা ও বকীর গবেষণা এই উত্তরের
নব্যে সংযোগ না বাকার এক এক বারার গবেষণার কচ এক
একট সন্তানার (school) স্টে হর না। এরপ সন্তানারের
উত্তর না হইলে কোন উচ্চন্ডরের গবেষণা হওরা প্রার অসভ্তব।
ক্ষপতের বিভিন্ন কাতির মধ্যে আন-বিজ্ঞানের ক্ষেত্রে বে
নুক্তন ক্ষপতির রাজ্যের তীর প্রতিযোগিতা চলিতেহে,
তাহার সহিত সনান তালে চলিবার বত ক্ষরতা এই গবেষকবঙ্গী স্টের উপরই নির্তর করে। আবিকার বিনের উল্লেখবোগ্য গবেষণা সাবারণতঃ সনবেত চেটার কলে হয়। এরপ

গোষী শক্তী করিতে লা পারিগে জাতীর কল্যাবলাবনে আমা-বের অবহান উরেববোধ্য কইতে পারে লা।

अक अक बाबाद नरवर्गाद कर रव अक अक नर्श्वाद গৰিবা উটাতেছে না এবং বিভীয় ভৱের উপাৰি লাভ করিয়াও শিকাৰী যে গৰেষণাকাৰ্য্যের সহারতা করিতে পারের না ইয়ারার বিশ্ববিদ্যালয়ে গবেষণার ব্রোপযুক্ত পরিবেশের चणार च्रक्ति रहा। बक्लभाक देश विश्वविशानाह चक्रमाह কলিকাভা বিশ্ববিদ্যালয়ের কলেবর কৰ্মবারার কল। শিশ্বরে বিপুল হইলেও, সর্ব্বোচ্চ ভরে অত্যন্ত অপরিসর। **ঘৰ)াপক এবং তাহার ছই-এক খন সহকারী বে মৌলিক** গবেষণা করেন, তাহার ভাংপর্য উপলব্ধি করিবার, ভাহার नवामाधना कवियात. (न नवस्य नामा विक स्टेट्ड क्षत्र উখাপন করিবার মত লোক এই অভিকার বিশ্ববিভালতে विश्वन । कनिकाणा विश्वविद्यानद्वत्र भीद्यं अक्षेत्राळ अदवश्यात ক্ষে বাৰায় সন্দূৰ্ণ অপ্ৰত্যাদিত প্ৰতিক্ৰিয়াও প্ৰকাশ পাইতে পারে। অব্যাপকের পক্ষে এমন একট গোর ভট্ট করা সম্ভব যে তাঁহার অনভিপ্রেত কোন স্বালোচনা বা সাধীন গবেষণা অসম্ভব হইয়া উঠিতে পারে। তিনি গবেষণার সহায়ক না হইয়া প্রতিরোধক ব্রূপে বিরাজ করিতে পারেম। এই অভিযোগ ব্যক্তিগত বলিহা বেন কেছ মনে না करवन ।

কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের বিশ্বীর্ণ পরিবির মধ্যে একট মাত্র কেন্দ্র স্নাতকোত্তর শিক্ষা ও গবেষণার ভঙ নির্দিষ্ট করা এই সকল কারণে অনিষ্টকর। একাবিক প্রতিষ্ঠান না বাকিলে গবেষণার বিভিন্ন পরে বিভিন্ন দৃষ্টভদী লইয়া গবেষণাকার্য্য চালিত হইতে পারে না। এবন অবছার মৃতন মৃতন উৎসের অভাবে প্রেষণার বারা ফীব ও নগণ্য হইরা পছে। কেবলমাত্র গবেষণা পরিচালনার ২০ ভিন্ন ভিন্ন কেবল ত্বাপন করা অসমত নহে। কিছু স্নাতকোন্তর ভরের শিক্ষাও ইহার সহিত হইলে এমণ প্রতিষ্ঠানের কার্যকারিতা বৃদ্ধি পাইবে। স্থভধাং বিশ্ববিভালরের অন্তর্গত কোন কোন কলেকে এইরণ ক্ষের তাপন করা বর্তমান অবতার প্রয়োজনীর। বে দকল কলেজ কলিকাভার নিক্টবর্ত্তী দেওলির পক্ষে বিশ্ববিদ্যালয়ের কেন্দ্রের সহিত সংস্থতিগত সংযোগ রক্ষা করিয়া চলা সত্তব। এরণ সংবোগ বাহাতে প্রভিষ্ঠিত হর ও অব্যাহত থাকে, শিক্ষার সৌকর্ব্যার্থে ভাহার ব্যবস্থা করা বিশ্ববিভালর ও কলেক কর্মণক উভরেরই কর্তব্য। কিন্তু দূরবর্তী কলেন্দের পক্ষে সংযোগ রক্ষা করা ज्ञान वरह । प्रश्रदार वृष्टव क्या द्वापन कविएक स्टेरन, দূরবর্তী কলেকওলির প্ররোজনই অপ্রগণ্য। কোন কোন বিষয়ে উচ্চতর গবেষণার পরিবেদ পূর্বা হইতেই কোন কোন ছাৰে বহিরাছে। কোন কোন বিষয়ে দর্কোচ্চ শিক্ষার বাৰতা ভত বাহসাৰাও মতে। এই সকল কৰা মৰে

রাখির। ছ্ই-একট নির্মাচিত কলেকে করেকট পরস্পরসম্বর্ধ বিষয়ের সর্কোচ্চ শিক্ষা ও গ্রেমণার নৃত্য ক্ষেক্স স্থাপন করিলে তাহা প্রকৃত উচ্চশিক্ষার সহায়ক হুইবে এবং বে ব্যর্থতা আরু প্রবেধন করিরা হাডাইরাছে ভাহা কৃতক পরিমাণে দুরীভূত হুইবে। আওতোবের সংখ্যারের পূর্ব্ধে ভির্মির কলেকে বিভিন্ন ভাবে হুই-একট বিধরের স্থাতকোত্য ভবের শিক্ষা প্রধান করিবার ব্যবহা ছিল। আওতোধ

সকল বিষয়েৰ শিক্ষা, স্বাভকপূৰ্ব্য অন্ন হুইতে বিজিন্ন করিরাও এক ছালে কেন্দ্রীভূত করিবার প্রয়োজন বোৰ করিরা-ছিলেন। কিন্তু আজিকার পরিছিতিতে, সম্পূর্ণ নূতন কারণে, বিকেন্দ্রীকরণের সময় উপছিত হুইরাছে। ইহা অতীতের পুমরার্ভি মাত্র নহে। উচ্চশিক্ষাকে স্থানির্ভিত করিবার জভ আজ কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের সংখারের প্রয়োজন।

## ধনতান্ত্রিক উৎপাদনে আর্থিক সম্পদের বিনাশ

## 🎒 অনাথবন্ধু দত্ত

শিলের কাঁচা মাণ হিসাবে কতকণাল ৰাভ্যন্তর গুরুত্ব বিশ্বি । ৰাভ্রুব্যের বিশেষত্ব এই বে, পৃথিবীর নানা থেশে ভূগতে ইহারা হড়াইয়া বাকিলেও একবার বিশি হইতে উভোলন করিলে সে হান আর পূর্ব হয় না। প্রভাব বিনিকে সম্পূর্ব ভাবে রিজ্ঞ করিরাই এইগুলির ব্যবহার চলে। একচ ইংরেকীতে এই সকল শিলকে robber আরাং দপ্তা-শিল বলা হয়। করলা, বনিজ তৈল (petrolium) বাহা হইতে শিলে শক্তি (power) সরব্যাহ হয়, বাড়-প্রভ্র (metallic ores) এবং কতকগুলি রাসার্মিক বৌলিক প্রার্ব, মুবা লব্ব এবং ক্ষির সার প্রভৃতি এই পর্যারে পড়ে।

প্রথমেই আসিরা পচে করলার কথা। কারধানার বরলারে ও চুনীতে এবং গৃহত্বের উননে সর্ব্যঞ্জই ইহার ব্যবহার। করলার ধনির মালিকামার উপরই বর্তমান অপভের পূঁজিপতি-দের শিল-প্রতিবোগিতার জর-পরাজ্যর আনকটা মির্জর করে। অবঙ্গ শক্তি সরবরাহের আবার হিসাবে হাইছো-ইলেকট্রক যন্ত্রাদি ও ধনিত তৈলের ছানও গৃবই উচ্চে এবং প্রতিদিনই ইহারের জন্মন্থ বাভিন্ন চলিরাছে। বিশেষতঃ আকাশ-বানের আধিক্যের রুলে ধনিত্র তৈল শিল-কগতে এক বিশিষ্ট হাম অবিকার করিরাছে। বর্তমান কালের রুজের মূল কারণ অন্থ-সভান করিলে অনেক সময় এই সকল সম্পদ্ধ অবিকারের চেটা বেবিতে পাওয়া যায়।

ক্ষণা বেধিন আলানি কাঠের ছান দ্বল ক্ষিল গে দিন-দ্বৈতে বে সকল ধেশ ক্ষলা-সম্পাদে সমূদ্র ভাবাদের ভাগ্য দিরিল। ইংলও ও র্জ্যাট্রের শিল্পানাত উবাদের ক্ষণা-সম্পদ হুইতে সভব দুইয়াছে।

অবঙ পূর্বের বে সকল দেশ বাহির হইতে করলা আমহানী করিত এবন তাহারা নিজ নিজ দেশেই তাহা উভোলনের ব্যবহা করিবাতে। ইহাও আবার অনেক সমর বিজেশের আমহানী করলার উপর অভিরিক্ত কর বসাইরা সভব হইরাতে। এইরূপে ফাল ও বেলজিবন নিজেবের ক্ষলা-শিরের উয়তি করিবাতে। ইটালী, হাজেরী ও অভাত বেশও এই পদ্বাই

অবলখন করিবাহিল। ব্রিটেন ও আর্থানীর মধ্যে ইউরোপের
করলার বাজার দধল লইবা বধকাল ব্যবদার-প্রভিয়েগিতা
চলিরাহে। রঙানী করলার কল ব্রিটেশ সরকার অর্থনাহায্য
করিত এবং এইকপে সরকারী সাহায্যপৃষ্ট করলা ধাল
আর্থানীতেও বিক্রর হইরাছে। আর্থানরাও পাণ্টা ভাবে হেল
ও অভাত বানবাহনের বরচ কমাইরা দিরা দেশের করলাশিল্পকে সাহায্য করিরাছে। কোম কোন রঙামীকারক দেশ
— মধা ইংলত, নরওরে, সুইডেন প্রভৃতি, আরদানীকারক
দেশের সহিত কতকওলি বাবিভাক প্রবিধার বিনিম্নরে করলা
সরবরাহ নিয়ন্ত্রণ করিবাছে। কিছু স্বস্থলি দেশের সদে
আপোর বা চুক্তি-ব্যবহা সন্তব হর নাই। কে কাহাকে ব্যবসাক্রের হটাইবে ইহাই হইতেছে প্রতিধন্ধী দেশসমূহের একমান
চেটা। সকল চেটার মূলেই রহিরাছে প্রশিত্তিধ্বে অতিরিঞ্জ
লাতের অধ্যনীর আকাকলা।

যখন পরস্বারের মধ্যে রকানিস্ভি সম্ভব হইল না ভবন বিটিশ ও ভার্মান করলাবনির নালিকগণ প্রমিকদের মন্ত্রি প্রাপ ও বাটুনির সময় যুদ্ধির প্রভিবোসিতায় প্রযুক্ত হইল। আমেরিকার করলার ধনিওলির মালিকদের মধ্যে ছিল দেশের বাজার মধ্লের প্রভিবোসিতা, লেবানেও কম মন্ত্রির ও বেশী বাটাইবার প্রয়াস চলিল। কিছু এত ক্রিয়াও কোম দেশেই করলা-শিজের লাভের মাত্রা বজার রহিল না।

বেপরোয়া প্রতিযোগিতা এবং কাতীয় অর্থনীতি কেবল উংপাদনে অপচয়েরই প্রশ্রের বিল না, কয়লা ব্যবসায়ে বছ রক্ষের মলা আনিয়া দিল। ১৯২৫ হইতে ১৯৩৫ সন্তের মধ্যে প্রেট ব্রিটেনে কয়লাখনির শ্রমিকের সংখ্যা ১১ লক্ষ্ হৈতে কমিরা ৪ লক্ষ ২০ হাজারে হাঁছাইরাছিল। ঐ সময়ের মধ্যে ব্রুজরাট্রে প্রায় ৭ লক্ষ ৫০ হাজার কয়লা-মজুর সামরিক বা পাকাগাকি ভাবে বেকার হইবা পভিয়াছিল। অর্থাং প্রতি চারি জনে একজন কর্মহীন হইরাছিল। বংসারে মান্ত্র ২০০ দিন কর্মার বনিস্কালর কার্য্য চলিত।

বিটেনে ক্ষলাৰ্থিক বালিকাৰা ব্যক্তিগত হওৱাৰ বত অধৰ

বাছিতেছিল। যে সক্ল কৰিব অভ্যাহে ক্বলাৰ জৱ বিভবাৰ সেই সকল কৰিব বালিকেবা বংগৱে ৪০ লক্ষ্য পাইতেবঙ বেৰী ব্যৱসদী পাইত। কেছ কেছ একাই বছ বছ বলিৱ ব্যৱসদী উপভোগ ক্ষিত। এই সকল বালিকানাৰ ক্ষই ভাহাদের বাজি অহ্বারী ধনিব কার্য্য চালাইতে হয়। অনাবশাক হাবে গল্পৰ বুঁভিতে বছ অর্থ অপব্যৱ হয় এবং বনি-প্রবিক্তকে ধনির বব্যে অনেকটা পথ ইটিয়া কর্ম্মধানে বাইতে হয়। বালিকপথকে ক্ষরিব সীবা-নির্দেশক হাব হিসাবে বিভব ক্ষরণা বা ভাটমা কেলিবা বাবিতে হয়। ভাহা বাছা এই সকল বালিকের ধানবেবালীর ক্ষ অবেক সময় ক্ষরণার বনির ব্যোক্ষার পর্যপ্রধালীর ক্ষনিংসরণ-কার্য্যও ব্যাহত হয়। ১৯২৫ স্থের ক্ষরণা-ক্ষিণ্য অভিষ্যত প্রকাশ করেন বে, ব্যক্তিগত বালিকানার ক্ষা ক্ষলা-নিষ্কের অন্তঃ চৌদ বক্ষা অপ্রবিধা ভোগ করিতে হয়।

বহুজনের বার্ণরক্ষা করিরা আবেরিকার কর্মনার বনির কাক চলে। ইহাদের বব্যে এক বিকে আছে হোট হোট নালিক। অভ বিকে, বুকুরাই জল ক্রপোরেশনের বভ বিরাট প্রতিঠান নিজের নালিকানার এবং হোট হোট প্রতিঠানগুলির ব্যাধিকারী হিসাবে সমস্ত বেশের ক্রনার ক্রির উপর অধিকারী হইরা আছে।

কর্মণার ক্ষর-বিক্ষর কেবলবার আর ক্ষেত্রক্তন স্থানালের ব্যৱস্থাত হয় বনিয়া ভাষারা প্রচুর লাভ করে। একচ বাদের বুবের ক্ষপায় বিক্ষর-মূল্য ও সর্বাশেষে ইয়া বে করে কেলা হয় ভ্রব্যে ব্যবহান বুবই বেশী।

चार अक्षे विषय नका करा धाराक्त त. करनावित्र विकार है । जोर विकासना के केला कावनाना कि पाकारिक কারণে প্রতিষ্ঠিত হয়। ইহাতে এই সকল ধনি-এলাকা চিত্র-वित्वत वर्ष च-व्यत ७ चनविष्टत रहेश वात । वहुना-पत्रन ইংলভের ব্লাক-কান্ট্র ও আর্থানীর কচ বেলার উরেব করা वारेट्ड शादा । कामात विट्ड मतमाक्कत रूछ किहरे दावा বার না---ক্তবিক্ত ভূবত, ইততত: প্রসারিত রেলগব ও সারি ় সারি ধনি-প্রনিক্ষের কুটীর ইহার বৈশিষ্ট্য। বেধানে প্রভুভ मन्नारकत एक व्हेटकरक रमनामकात अविकारतत प्राप ७ रेक्स ৰেখিলে কাহার না বনে আখাত লাগে। করলা করিশন ৭০০ आदि अविकृत्य जनविष्य नामग्र छैनवक जनमबन्तारस অভাব ও ৰাভাবানিকর অভাত বনোৰত ধেৰিয়া অভি কঠোৱ बचना क्षणांन कविवादिन। चन्छ और मुक्त नामग्रह छ বাৰতীয় কুষ্যবৃদ্ধায় হৃত হাত্ৰী কুষ্পাৰ্থনিত বালিক কোম্পানী-খলি। এড অপুৰিধাৰ উপৰে আবাৰ নিভাগ্ৰয়োজনীয় প্ৰব্যাহি क्षविक्रात्व विक्र वाकाय-वय जलका विनी वाद विक्रम ক্ষিয়া কোম্পাৰীওলি প্ৰচর লাভ ক্ষিয়া থাকে।

কৰলাশিলে ক্লনাৰ পৰেই বনিত্ব হৈল বা শেকৌ-লিলবেল ছাল। ৰোটৰ ও এবোলেৰ চালাইবাল ভালী খালানী ভৈদ, এীক, কেবোদিন প্রভৃতি উংপাদনের কচ ইহা দবকার।
বনিক ভৈদ্ধা করনার বত পৃথিবীর বহুবেশে অভাইরা নাই।
ভূগর্ভের নিচেকার ভরের সঞ্চিত ভৈদকে নিভাগন করিরা
সংগ্রহ করিতে হয়। একা বুজরাইই পৃথিবীর হুই-ভূতীরাংশ
বনিক ভৈদের বালিক।

১৮৫৯ সনে বৰ্ণ জ্যাপেলিচিয়ান ভৈলের বনিতে কার্ব্য আরম্ভ হয় তথ্য এই একই এলাকার শত শত ভৈল-কূপ বন্দ করা হয়। জ্গর্ভহ সঞ্চিত ভৈলের উপরকার জরিতে মালিকের কোন বই ছিল না বলিরা প্রত্যেকেই বতগুলি পারা বার গর্ভ বুঁছিয়া যত বেই সজব ভৈল নিকাশনের চেঠা করিত এবং নাহাতে অপর কেহ পান্দা করিয়া বেশী তৈল না লইতে পারে সেকত চুভাজভাবে তৈলসংগ্রহ কার্ব্য চালাইত। ইহাতে তৈল-জরের উর্দ্ধে সঞ্চিত গ্যাস প্রচ্ন পরিমাণে নই হইয়া ঘাইত, অবচ আলানী হিসাবে এই গ্যাস প্রই স্ল্যবান ছিল। বেপরোয়া প্রতিবালিতার তৈল-বনির কাজ চালানো হইত বলিয়া অসজব রক্ষ উৎপাদন-মুছিয় সঙ্গে অতি বিরাট অপচরও চলিয়াছিল। ক্যালিকোশিরা ও জ্যাপেলিচিয়ান এই উত্তর ছানের তৈলের বনিতে কিছুকালের অত প্র সাভ হইবার পর তৈলের ব্যবসারে মুলা বেণা থিল এবং গাম করিয়া নিয়া শৃতে ঠেকিল।

প্রায় অর্থনাতারী বরিরা তৈলের ভারবার একট মাত্র প্রতিষ্ঠানের হত্বে চলিরাছে। অবচ এই কোন্দানী উংগালনের উরতির ঘারিত্ব বহু রোট প্রতিষ্ঠানের হাতে ছাটিয়া দিরা কেবল কর-বিক্রের কলভাটি নাজিয়া ব্নালার কজি গণিরাছে। এই বিরাট প্রতিষ্ঠান সকল ছোট কোন্দানীকে ইহার নিকট তৈল বিক্রর করিতে বাব্য করিরাছে, বেল-বালিককে হাত করিবাছে, তৈলের পাইপ-লাইন জিনিয়া লইরাছে এবং যে কেই ইয়ার সহিত প্রতিবাদিতা করিতে সিয়াছে তাহাকেই ঘেউলিয়া হইতে হইরাছে। ১৯০৬ সনেই এই কোন্দানী রোট 'ক্ত' (অনোবিত) তৈলের শতকরা আলী তার কিরিয়া লইরাছিল। এই প্রতিষ্ঠানের কর্ত্বপক্ত উংগাদক্ষণকে বিজেদের বুলীরত বাম বিরা তৈল করে করিত ভারব তৈলের আর কোন করেতা হিল বা এবং যে বাবে তৈল বিক্রর হইত তাহা অপেকা ই হইতে ই বেলী যাবে সাবারবের নিকট বিক্রয় করিত।

পরে এই প্রতিষ্ঠানকে তাভিয়া করেনট ছোট ছোট কোম্পানী তৈয়ার করা হর। এথলি অর্ডেকের উপর তৈলের বনি ধর্মল করিরা আছে। পরে কান্সাস্ হুইতে পশ্চিমে টেকুসাস্ ও দক্ষিণে আরকান্সাস্ পর্যাও পুরিবীর রহং তৈলের বনিওলি আবিত্বত হুইলে ব্যাপক তাবে তৈল নিভাগন স্থান্ধ হর; অনেক মৃতন কোম্পানীও গটিত হয়। অবপ্র ইহালের মধ্যে অনেক কুরা এবং ধেউলিরা কোম্পানীও ছিল। এত বেশী পরিবাণে কৃত তৈল ভোলা হুইত বে সমন্ত কারবানার মারতীয় মন্ত্রপাতি রায়াও তাহা পরিভার করা সভব হুইত না। আবার বেবা দিল অভিরক্ত উৎপার্থের ধ্যেব্রুকি—অসভব রক্ম মূল্যরাল, স্থারণ অর্কট্ট ও প্রাকৃতিক সম্পাদের অসুরস্থ অপচয়।

এই রখ উৎপাদনের দ্লাসর্ভি, বুল্যের উথানপভন ব্যবসারের বাজাবিক নিরম হইরা দাঁছাইরাছে । কেট কোট গ্যাপন বাছ তি তৈল বাজার প্লাবিত ক্ষিতেছে। এই সকল নির্মণ ক্রিবার পকল চেটাই বিকল হটবাছে।

বর্তমান তৈলের ব্যবসা খাল করেকট অভিকার প্রভিঠানের হাতে গিলা পভিরাছে। এই প্রভিঠানগুলিই সর্ক্তে-ভাবে তৈলের উংপাদন, পরিক্রভক্রন, সরবরাহ, জ্বর-বিজ্ঞর প্রভৃতি নিরপ্রণ করে। ইহারা পৃথিবীর সমন্ত তৈলের বনি, পাইপ-লাইন, পরিক্রবণকারী কারবানা, ভৈলরকা ক্রেপ্রভৃতি দবল করিরা আছে। যে-কোন দেলের ভৈলের বনিতেই ইহারা হাত বাভার এবং সুবিবাজনক সর্ভ আদার করিরা লার। ক্রনিরা তৈলের ব্যাপারে পৃথিবীতে থিতীর হান অধিকার করিলা আছে। ক্রনিরাকে বাল দিলা পৃথিবীর সমন্ত ধনিক্ষ তৈলে আরেরিকা ও ইংগাডের বুলবন ঘারা বিয়ন্তিত।

ভিনিজ্ইলা ও মেল্লিফোর তৈলের ধনিতেও অপচয়ের বিরাম নাই। প্রথম মহার্ছের পর হইতেই বৃষ্টশ প্রীক্ষণিত গণের চেষ্টা চলিতেছিল কিরপে অপর ধেলের তৈলের ধনি দবল করা যায়। প্রিষ্টশ সামাজ্যের আভ্যন্তরীপ ব্যাপারে বাহিরের কেছ হন্তকেশ করিতে না পারে গে ব্যবহা পাকাশাকি রক্ষ আছে। ইরাণের তৈগের ধনিতেও বিষ্টিশ প্রভূষই ছিল, সম্প্রতি রুশ ভাহাতে ভাগ বলাইরাছে। ইরাকের বনিতেও বিষ্টিশের বিপ্ল হার বহিষাছে। তৈলের ধনির ক্ষেক্ষন মালিকের মধ্যে কডকটা প্রতিবাদিতা এবম বাকিলেও, শেষ পর্যন্ত পারশারিক চ্ক্তির বলে ইহাদের সকলের মিলিত স্থার্থ এক অবিরাষ্ট একচেটীয়া প্রতিষ্ঠান স্পষ্ট করিবে সন্দেহ নাই।

আবেরিকার লৌহ ও তংসংশ্লিষ্ট করেকটি লিলও বিশেষ ভাবে একটা প্রতিষ্ঠানের ঘণলে সিরাছে। এই প্রতিষ্ঠান পৌহ-প্রভাৱ, করলার বনি, ভাহাক, রেলপণ, রাই কার্নেস্ ও জাল প্লান্টের নালিক। ফ্রান্ডের লোবেন প্রদেশ পৌহের ক্ষণ্ড বিব্যাত। মুক্তে ক্ষেক্রার এই প্রদেশের ভাগ্য পরিবর্তিত ছইরাছে। লোবেনের লোহদন্সধের ক্ষণ্ডই করানীদেশ সমূহ। ভারতে লোহদন্সদত্ত কম নহে, কিন্তু সবই বহুদেশ ও বিহারের মব্যেই প্রায় সীমাবছ। বর্ত্তমানে মাত্র ভিন্নটি ইংলাভ উংপাদম করিতেছে। পৃথিবীর উন্নত দেশ-সমূহের মব্যে এক্যান্ত ভাগানই লোহদন্সদে হীন। চীনের লোহদন্সদ্বর মব্যে এক্যান্ত ভাগানই লোহদন্সদে হীন। চীনের লোহদন্সদ্বর মব্যে আনার ভাগান ছালান ভাগান চীনে সামান্ড্রান্টি- বুছ ক্ষণ্ড করিবাছিল, কিন্তু চুড়ান্ত পরান্তরে ভাহার সকল আশা বিন্তি হুইরা গিরাছে।

অধুর ভবিব্যতে পূথিবীর লোহসম্পদ হ্রাস পাইবার

সভাবদা পুৰই কম। এক বেশের লৌহসন্দদ করিবার পূর্বেই পুঁজিপতিরা অপর দেশের উপর লোজ্প দৃষ্টি দিতে বাকেন। বুক্তরাই ইতিববোই চিলি ও ব্রেজিলের উপর মক্তর দিরাছে।

সৌহের পরে ভাত্র। ইহা বিহাৎসংক্রান্ত কাকে প্রচুর পরিমাণে লাগে। বৈহাতিক কারবানা প্রভৃতির সংখ্যা প্রভৃত্ত পরিমাণ বৃদ্ধি পাওরার ভাত্রের ব্যবহারও পুবই বাজিয়া চলিরাহে। এক রুজরাইই পৃথিবীর হুই-ভৃতীরাংশ ভাত্র জোগাইয়া থাকে। আরিজানা টেট হইভেই বেশী ভাষা পাওয়া যায়। মাত্র একট ব্যবসার-প্রতিষ্ঠানই খনির প্রস্তর হুইতে বাচুপোবমের কাকে পৃথিবীর এক শভ ভাগের নক্ষই ভাগ রপ্তানী-বাণিক্যা হুখন করিয়াছিল। এই একচেটয়া কারবারে ক্রান্তই ইহা ভাত্রের মূল্য বহু উচ্চে ভূলিতে সক্ষম হইয়াছিল। একভ কাক্ষের লোকসানের দল্লন বে সকল খনির বহু পূর্ব্বেবহু হুইয়া মাইবার সন্তাবনা ছিল সেভগিও লাভে চলিতে লাগিল। কিন্তু বর্ষন মন্ত্রত মালের পরিমাণ অসম্ভব রক্ষম বাজিয়া গেল এবং আজিকার মূভন ভাত্রধনি আবিদ্ধত হুইল ভবন প্রচুর পরিমাণে ভাত্র বাল্যর বাল্যর কারবারও ভাত্রিয়া বেল এবং ব্যবহারের মহাহুর্দ্ধির উপস্থিত হুইল।

কিছ এবন পর্যন্ত আমেরিকার বুলবন তাত্তের ব্যবসা নির্ম্লিত করিতেছে। চিলিতে বুক্তরাষ্ট্রের বুলবন বাটতেছে, চিলি তাত্র উংশাদনে পুবিবীতে বিতীয় হান অধিকার করিয়া আছে। সম্প্রতি বেলজিয়ান কলোর অন্তর্গত ফাটালা এবং উত্তর-রোডেসিয়ার, বেলজিয়ান ও বিটিশ বুলবন বারা পরি-চালিত তাত্র-ব্যবসায়ের প্রতিযোগিতা চলিতেছে; কিছ সেবানেও আমেরিকার বুলবন কিছু কিছু প্রবেশ লাভ করিয়াছে।

भौमा, पश्चा ও अनुविनियस्य **देश्याप्रताक चार्या**वका প্রবান। সমগ্র পুৰিবীতে এওলির উৎপাদনের শতকরা ২৫ व्हेटल 80 जान बुक्क बार्टिश कारण। किन्न बार्टिश (tin) ष्ठेरभाष्ट्रम खिट्टिन चारमञ्जिकारक अरकवारत रहीहेवा प्रियास । যদিও শিলের (Industry) কেতে রাভ বুব বেশী মাঞার বাবজত হয় না তব টনপ্লেট প্ৰভৃতি নিম্ম ইহা হাড়া সম্ভব নতে। এক ত্রিটিশ মালত্বে প্ৰিবীর এক-তৃতীয়াংশ রাভ উৎপর হয়। ছুইট ব্রিটন কোপানী এই যোট উৎপাদনের ভিন-চত্রবাংশ ধরণ ক্ষিয়া আছে। যুর্ণ যুক্তরাষ্ট্রে বার প্রস্তুত্ত क्ष कावनाना नगाम रहेल छन्न ब्रिटिंग ब्रिटेन नाबार्कार्डी বাছিরে চাগানী হাঙের (tin-ore) উপর অসম্ভব চড়া ব্রুডানী-কর বসাইরা দিয়াহিল। রাভ বলিভিয়ার যথেই পাওয়া বার\_ কিছ ইহাও ব্রিটন পুঁলিপভিগণের অধিকারে। রাঙের খিতীয় সর্বরাছ ছান পূর্ব্ব ভারতীয় দ্বীপপুঞ্জ-ইবা ওল্পাঞ্চিদের चविकारत । वर्षमारम मन-श्रिष्टिण रमन्त्र मानात्रनणस्त्र । সহিত ওলকাজের সংঘর্ব চলিতেছে।

ब्रास्टिव छैरनायम कांज छैरनायस्य यञ अकरे नुव बर्विवा

চলিবাছে। ইংরেজ পুঁজিপভিন্ন প্রথমে নিজেরা, পরে ওললাজ প্রের সহিত সহবাদিতার, রাঙের হার অদন্তব রক্ষ চড়াইরা বাহাতে নিভাভ অভিকিংকর বনিওলিভেও লাভজনক ভাবে কাজ করা যার সে বাবছা করিবাছে। বলিভিন্ন ও নাইজিরিবার বনিওলি এইজ্ছই গোকদান এড়াইরা চলিবাছে। এক সুদ্র প্রাচ্যই অর্কেক দাবে রাঙ বিজ্ঞয় করিবা পৃথিবীর সম্ভ চাহিলা বিটাইতে পারে।

অভংগর লবণের কথা বলা ঘরকার। সর্ত্তের নোনাখদ, নোনাহ্রদ ও কুপের কল কইতে লবণ প্রথত হয়। নাছবের এই নিত্যপ্রয়োজনীয় এবংটি ব্রিটশ প্রথমেন্ট একচেটিয়া করিয়া রাখিরা এবং কর বলাইবা ভারতের দ্বিত্র জ্বপান্তর বিপুল ছুংবের কারণ ক্ইরাছে। লবণ-সম্পাদে ভারতবর্ষ পৃথিবীর প্রধান ছয়টি দেশের অভতন কইলেও (উংপাদন ২০ সক্ষীন) ইংরেকের প্রথমনীতির কলে ভাষ্তিক চাহিদার এক-তৃতীরাংশ বিদেশ কইতে আনদানী করিতে হয়।

এবন বাণিজ্যিক সাবের (Commercial fertilisers)
কথা আপোচনা করা যাক। বহু বংসবের ক্রমাণত চাবে
ক্ষির উর্জ্বলতা ক্ষিরা যার, স্তরাং সাবের ব্যবহার ধারা
উর্জ্বলতা ক্ষিরাইরা আনিতে হয়। কিন্তু বনতরের আওতার,
বিশেষ ভাবে ভারতবর্ষ ও চীনে প্রক্রের এরণ অবস্থা দাভাইরাহে বে ভারার পক্ষে ক্ষিতে উপর্ক্ত সার দেওরা সভব নয়।

সারকে ভিন ভাগে ভাগ করা হয়, যথা ফস্ফেট্, পটাশ এবং নাইটেট : মুজ্বাষ্ট্রের ফ্লোরিভার এবং উত্তর-ভাঞ্জিকায় করালী অবিহৃত অঞ্চল বিপুল পরিবালে ফস্ফেট লার মঙ্ত আছে। ভার্মানীর টাস্কুট (Stassfurt) বনি ফ্লান্সের আল্লাস্ হইতে মোট সরবরাছের ্ট অংশ পটাল পাওরা যায়। নাইটেট পূর্ব্বোক্ত হইট সার হইতে উৎকৃট, কিছ ইছার সরবরাহ পূথিবীর একট দেশের একচেটয়। উত্তর চিলিতে প্রায় ৪৫০ বাইল দীর্থ এক উচ্চ মরুভ্মিতে (Pumpa) এই নাইটেট পূর্বীকৃত। এক সময় চিলির মোট রপ্তানীক্রব্যেয় অর্জেক ছিল নাইটেট। চিলির নাইটেট ব্যবসারে মুক্তরাপ্টের বিপুল মূল্যম বাটিতেছে। কিছ ভাছা সভ্পেত চিলি-সরকার নাইটেটের রপ্তানী-কর হইতে যথেই আয় করিয়া থাকেন।

এক সৰৱ আলঙা হইৱাছিল, এই বিবাট নাইটেট্ ভূপ থিলেৰ হইৱা বাইবে। কিছু আৰ্থানী ও মুক্তরাষ্ট্রে রাসায়নিক উপায়ে নাইটেট্ তৈরি হইতে আরম্ভ হওৱার সে আলঙা দ্র হইৱাছে। বাভাবিক নাইটেটির সহিত প্রতিষোগিতার রাসায়নিক নাইটেট্ই ক্ষী হইৱাছে। কলে চিলির বে সকল কৃষ্ণ নাইটেট্ট ব্যবসায়ের মন্ত্রগণকে বাভ সরবরাহ করিত—ভাহারা এবং যে সকল রেগপণ এই ব্যবসায়ের উপল্লাহারা এবং যে সকল রেগপণ এই ব্যবসায়ের উপল্লাহার কিছুদিন পূর্বে এই কার্যায়ে মুলা প্রভাৱ ৪৪,০০০ কন প্রাক্তি ও ভাহাদের পরিবার্ষর্গ একেবারে নিংব হুইরা পঞ্চিয়াছিল।

সাইবোতীন একটা বুলাবান ওবৰ । পুঁৰ অন্ন ববচেই ইবা সমস্ত পুৰিবীতে সৱবৱাহ হইতে পাৱে । কিন্তু একচেটয়া ব্যব-সাবের তেইহার ববেঁঃ অপচয় হয় এবং বেন্দ্রী মুল্যে বিকাম হয় ।

चात्र अक अकात जारबद नाम चत्रारमा ( guano )। देश অবঙ কোন বাড় নহে--নানা প্ৰকাৰ পাৰীৰ বিঠা হইডে ইবার শৃষ্ট। চিলির মাইটেটের মতই ইহাতেও বুব মাই-ट्रोटकन चाटर अवर अवन्ये कवित्र जात विजादन देशी किन चन বেশী উপকারী। রেক্সর উপকূলের অগুরে চিন্চা এবং সোবো **बीटन माना पाछीत प्रभरना नानी जिम्न छ। बिट्ड प्यानिहा स्य** পুরীয় ভ্যাপ করে ভাষা ঘইতে সেবানে অরানোর বৃহৎ পাৰাত স্ট্র হইয়াতে। যে প্রতিতে এই সার প্রস্ত হয় ভাহাতে চির্দিনের মত ইহার সর্বরাত্ অকুর বাকিবার কৰা। কিছ উদ্বিংশ শভাষীর ম্ব্যভাবে ইংরেছ ছাভি ও অহাত দেশের পুঁলিপভিদের প্রতিষ্ঠানসমূহ ঘর্ম এই সভা সার বোগাড় করিতে **ভারত করিল তবন প্রতিযোগিতার দ**রুন সংগ্রহের নামে চলিল লুঠন। কুড়ি বংসরে যাত্র ছোট করেকট धील स्टेटिंट अक काडि हैन स्वाध्मा अर्ब्हील स्टेशियन। क्ष्वात्ना भवादेवा महेवाव क्ष अकृष्टि श्रीत्मव क्षेत्रका अक मक কুট ক্ষিত্ৰা পিয়াছিল। খাডের ছভ ভিন সংগ্রহকারীরা পাৰভাগিকে ভাড়াইয়া দিত বা অভ্ৰূপে উদ্বাস্ত করিত এবং ধরকার হইলে হভাগে করিত।

শ্বানো-শুর কাটবার শুরু চুজিবছ চীনা কুলী আমদানী করা হইরাছিল। চাবুক হাতে নিজো সর্গারগণ এই কুলীদের কালে বাটাইত। একজন প্রত্যক্ষদলী বলিরাছেন, এই কুলীদের বাগ্রা-পরার ব্যবহা ছিল কুরুরের মত। ইহাদের মব্যে আগ্রহত্যা লাগিয়াই ছিল। একজন অন্যকারী বর্ণনা করিয়াছেন বে, যাহারা কারক্লেশে বাঁচিরা বাকিত ভাহারা সকলে শীর্ণদেহ, ভাহাদের পরণে ছিল্ল যাস এবং সক্লেরই হুট্ট ছিল উচাস-করণ, অর্থাৎ ইহারা ছিল মাহুষের প্রতি মাধুষের নিচুন্নতন্ত্র বারহারের প্রস্তু হুটাছ।

উনবিংশ শতাধী শেষ মা হইতেই পেরবাগীরা দেখিল ধয়ানোর বোগান অভ্যন্ত কমিয়া গিরাছে। সারের অভাবে নিজ দেশের ক্ষরিও ক্ষতি হইবার সঞ্চাবনা। সমস্ত ধ্যানো তবন বিদেশী পুঁজিপতিগণের ক্রতলগত। পেরুর গবর্গমেন্ট উহাদের হাত হইতে সম্পত্তি ক্রয় ক্রিয়া ভবে ধ্যানোর ব্যবসায়কে রক্ষা ক্রিল। কিন্তু গত অর্থনভাষীর অপচ্য পুরণ ক্রিতে বহু বংসর লাগিবে।

ছক্ষিণ পূর্ব্ব আফ্রিকার ইচাবো (Ichabo) খীপে এক সময় ২০০০ থাল গোক ৬০০ গাল গীর্ব এবং ২০০ গাল প্রাপ্ত এক জীপের গুয়ানো দবলের বাল বিবাদ করিরাধিল। অবলেরে এখানে বিষ্টিশ অবিকার কারের করা হয় এবং বিদেশীরদের গুয়ানো সংগ্রহ বহু করিয়া দেওয়া হয়। বর্ধন পুর গুয়ানো সংগ্রহ বহু করিয়া দেওয়া হয়। বর্ধন পুর গুয়ানো সংগ্রহ বহু করিয়া দেওয়া হয়। বর্ধন পুর গুয়ানো সংগ্রহ বহু করিয়া দেওয়া কর্ইত। এক সংগ্রেই ইচাবো বাণ জীয়র প্রগ্রনা বোকাই করা হইত। এক সংগ্রেই ইচাবো বাণ জীয়র প্রগ্রনা বোকাই করা হইত। এক সংগ্রেই ইচাবো বাণ জীয়র প্রগ্রেই এবন এই বীণগুলি বাস করিয়া লইয়াহে এবং গুয়ানো রগ্ধানী বহু করিয়া বিরাহে।

# সরস্বতীর কুলের কথা

## শ্রীমুরজিং শান্তী

কুৰে কু-চুয়ার-হার-ববলা, গুল্র-বরারতা, বীণাবর-মণ্ড-মণ্ডিকরা, বেড-প্রাদমা, সর্ব দেব-বন্দিতা ভগবতী দর্মতীকে লাভ্য অপহরণ কভ এই যে বর্ষে বর্ষে আমরা অচনা করি, ইনি কে ?

সরহতী শশ্চ বিশ্লেষণ করিলে সরস্-বতী হয়। সরস্ শব্দের আভিবানিক অর্থ কণ। সরস্বং অর্থ প্রভূত কন-বিশিষ্ট। ভাহার খ্রীজিকে সরহতী। এই অর্থে সরহতী নদী ব্রায়।

সৱস্ শব্দের আর একট আর্থ জ্যোতি। এই আর্থে সরস্বত মানে জ্যোতির্বর। স্থর্বের একট নাম সরস্বত। এই অর্থে সরস্বতী মানে—ক্যোতির্বরী।

আৰকাল যে সমস্ত মী-দেৰতা আমাদের নিকট পূকা পান ভাছাদের মধ্যে সরস্বতীই বৈধিক দেবী।

বৈদিক মুগের দেব-সমাজ আগুনিক বিশু সমাজের মত ছিল। ভাষাতে নারীর প্রাধান্য ছিল না। আক্কাল অবজ্ঞাত নারী-সমাজের মধ্যেও বেহন ক্যাচিং ছুই-এক জন প্রকাশ পাইয়। উঠেন, বৈদিক দেব-সমাজেও সেইয়প প্রা পাইয়ছিলেন—উমা ও সরস্থী।

বেদে সরবভীর চারিট নাম দেবিভে পাই, সরবভী, ভারতী, বীষণা ও বাগ্দেবী। বৈদিক সরবভীর কোনো বুভি নাই, তিনি জ্যোতিষাত্র।

সর্বভীকে অর্থার কথা বলা চ্ইরাছে। অর্থালোকের ভার জানালোক বারণ করেন বলিরা কি ?

আর এক সরস্তী নদী। এই সরস্তীকে ভব করিছা অধ্বেদের ভিন**ট** সম্পূর্ণতে আরও ভিরুভিনুময়ে তাঁহার উল্লেখ আছে।

বৰ ভিজে ভৰতে রাগি বাজান। ( ৭ম, ৯৫ছ ৬ ম ) ভদ্ৰবৰ্ণে দেবী, ভূমি বৰ্জিত হও। তোমার ভবকারীকে অৱ দান কর। (রমেশচন্ত দত্ত ক্ষুত অসুবাদ)

> উতে যতে মহিলা শুল্লে অহসী অধিকিয়ংতি পুরবঃ সা লো বোবাবিত্রী।

> > ( 14, 364, 14 )

হে শুন্তবৰ্ণ (সৱৰতী) ভোষার বহিষা হারা মহুব্যগৰ উভৱবিৰ আৰু প্রাপ্ত হয়। ভূমি রকাকারিণ হইরা আমাদিগকে অবগত হও। (সভকুত অসুবাদ)

नवरणी वार्षाकः वाकिनीवणी विवादयः।

()4. 07. 504)

আঃর্ভ-বজ-বিশিষ্টা বজ কলরণ বনদারী সর্বতী আরাবিশের অরবিশিষ্ট বজ কাননা করন। (বস্তত্বত অগুবার) চোব্যিত্রী পুরুষ্ঠানাং চেডংগ্রী সুর্যীনার।

( )적, 생각, 53적, )

সূৰ্ত বাক্যের উৎপাদনিত্রী, স্থবতি লোকদিপের উৎ-পাদনিত্রী সর্থতী আমাদিপের যঞ্জ এখন করিয়াছেন।

( ধ্তাক অহুবাধ )

— ধিয়ো বিখা বিদ্বাব্দতি।

( )4. 0 %, )44 )

अवर भक्ष कान छैरभाषन कविदार्थम ।

( १४३७ चन्नाम )

ভচিদে বৈদাপিতা হোতা মক্লংম্ব ভারতী। ইপা সরস্বতী মহী বহি সীদন্তি হক্তিয়া: a

(304, 334, 54)

এই মন্ত্রে সরম্বতীকে ইলা এবং ভারতী এই হুই স্ত্রী-দেবতার সহিত মুক্ত দেবিতেছি।

ভারতী দেবী শীম আমাদিপের যতে আগমন করন। ইলা দেবী এই ফজের বিষয় শরণপূর্ব মনুষ্যোর ভায় আগমন করুন। তাহারা চুই কম এবং সরস্থতী এই ভিম চমংকারিশী দেবী পুরোবর্তী সুধকর কুশাসনে আসিয়া উপবেশন করুন।

( বছকুত অপুৰাধ )

এই সরস্থীকে ধ্বিগণ কেবলমাত্র খল-প্রবাহ মনে করেন নাই। ইহার মধ্যে এক অভীক্রির দেবভার সাক্ষাং পাই। বৈদিক মুগে ইহার অধিক আর সরগ্যতীকে দেখিতে পাই না। ব্রাহ্মণ্য মুগে ইনি বাক্ষের অধিষ্ঠাত্রী বাগ্ দেবীতে পরিণভ হইরাছেন। কিন্তু ভবনও ভিনি বিশেষ ভাবে পৃঞ্জিভা হন নাই।

ত্ত্ব-মুরে অভাভ দেবদেবীর উল্লেখ থাকিলেও সরস্বতীর উল্লেখ নাই। বর্ডমানের আমাধের এই বীণাপুত্তকরঞ্জিত-হতা সরস্বতীর কম পৌরানিক মুরে।

ত্রাহ্মণ, আরণ্যক ও উপনিষদ মুগের পর হইতেই ভারতবর্বে আর্থ-আনার্থের সংমিশ্রণ আরম্ভ হইরাছিল। তাহাতে দেখ-মান্থ-সমাজে বর্ণ সার্থই আসিয়াছিল। তাহাতে দেখ-সমাজও বাদ যার নাই। এই মিশ্রণের কলে বৈদিক আর্থ রুশ্র, আনার্থ পিবের সহিত মিলিত হইরা পিরাছেন। ক্লফ ও বিক্লুর বৈক্লব বর্ষের সহিত অনায় আভির ভাতির দেবলীলা প্রবাহ মিলিত হইরাছিল।

ক্ৰাটা কাহারও কাহারও অপ্তির হবতে পারে। শিব বে অনার্বের দেবতা তাহার তুরি ভুরি প্রমাণ আছে। দক্ষের যজে সর্বাদেবতার সহিত শিবের নিমন্ত্রণ না হওৱা তাহার একট ইনিত। অপানে বাস, ব্রক্তবাহন, তম্মের অন্তরাগ, নাগভূষণ, ব্যালচব্বসন ইত্যাদি হারা অনার্বের চিক্ত্ ভৃতিত হইতেছে।

"भन्नो निव अवद्र क्रि विकृष्ठ नवीरम् दिविक रववण नरहव।

दैशिषितं भारे भववर्णी वृत्तं। क्यिक्व वृत्वाव, नवक् खाख निर्माण, भार्षिवाय ययपितं वृत्वाव, खवक्, मीठि गांधादव खक्वछ श्राव्ववित्ववित्व । दिष्टिक त्यवणा खर्वत्क् धिवन्वित्व । दिष्टिक त्यवणा खर्वत्क् वित्यं चाद्य भारे । वृत्व चाद्य । वृत्व व्याप्त भारे नारे । वृत्व वृत्व दिष्टिक मवक्षो भववर्णो वृत्व दिष्टिक वित्यं चामम भाग नारे, यक प्रिय ना त्यांवािक वृत्व कांचाव खक्रमण्य किवियां चामिवािक । वित्य व्याप्त वित्य वृत्व व्याप्त वित्य व्याप्त व्याप्त वित्य व्याप्त व्

ৰ তত্তান্তি প্ৰতিমা।

201

গাণিনিতে প্রতিকৃতি সহতে উরেব দেবিরা এক সম্প্রধার বলেন, বৌর রূপের আর্গেও প্রতিমা-নির্বাণ-প্রথা হিল। কিন্তু প্রবাণিত হইরাহে পাণিনির আবির্তাব-কাল প্রঃ পৃঃ ৪র্ণ শতাবীতে। পাতঞ্বলে কোনো কোনো দেবতার উরেব দেবিতে পাওরা বার। ইহাতে বনে হর, বৌর রূপের পূর্বে প্রতিমা-নির্মাণ-প্রথা থাকিলেও ভারর-শিরের চরম উরতি বৌর রূপেই হইরাহিল। বৌরপ নির্মিত ভূপ, হৈত্য ও বুরের মানা-রূপ রূতিতে ভারতবর্ষ হাইরা কেলিরাহিল। চক্রপ্রের রাজখনকাল প্রতিমান বির্মাণ পাওরা বার। তংকালীন থোনিত আনেক রূতি এবনও পাওরা বার। তাহার পূর্বের কোনো পারাণ-রূতির পরিচর এবনও পাওরা বার নাই। ইহা রারা বলা বাইতে পারে বৌরস্বর্গে প্রথর-শিরের আবির্তাবের সক্রে বিশেষ করিরা রূতি-শিল্প ও প্রতিমা নির্বাপের স্বরণাত হয়।

বৌহনর্যে রাজণ্য মুগের অনেক দেববেণী ছান পাইরাছেন—কেহ নাজাং নথছে, কেহ বা বিঞ্চল্পনে, বেনন লক্ষা ইঞ্চ ছর্য লক্ষী ইডাাদি। কিছ বৌহনুদে সরস্বতীর অভিছেন কোন প্রমাণ পাওয়া যার না। কেবলরাল্ল গাঙার হইতে একট বীণাবালনরতা স্তি পাওয়া গিরাছে। কিছ তিনি সিংহবাছিনী। প্রটার নবন শতাবীতে নির্মিত আর একট স্তি পাওয়া যার, ক্ষল চরপ্তজা, চত্ত্লা, ইনি সিংহবাছিনী নহেন। উপবিষ্ট অবছার আছেন। কিছ নিয়ে একট সিংহ। ইহারা বার্মধনী মুর্তির বলিরা খ্যাত। আধুনিক হংসবাছিনী মুর্তির সহিত ইহাদের সায়ুক্ত নাই।

বোচণাত্তে বাস্থবী বৌচ বেবতা মঞ্জীর পদ্মী। ভান্ধণ্য বুগের ভ্রন্থাই পরিবতিত ক্টরা বৌচ বুগে মঞ্জী ক্টরাছেন।

বৌদ্ধর্মের প্রাহ্রভাবে হিন্দুবিগের এক সম্মানার বেন্দ্র নিজয় বৈশিষ্ট্য হারাইয়া বৌদ্ধ হইলেন, তেন্নই অভ সম্মানার হিন্দুই রহিয়া গেলেন; রাজ্ঞণ্য রূপের দেবতাগণের নথ্যেও এক সম্মানার বৌদ্ধ দেবতার পরিবর্তিত হইলেন। ইহানিগের নব্যে ইক্স হইলেন বক্ষণানি, বিক্স অবলোক্তিত্বর, রক্ষা বোবিস্ক বঞ্জী বা মঞ্চোর। আবার অনেক অনেক দেবতা পূৰ্ববংই হুহিয়া গেলেব। কোনো কোনো বৃহঃৰ্টিতে ধেৰা বাহ ব্ৰহ্মাদি হিন্দু দেবগৰ বৃহত্তৰ তব কুহিতেহেন।

বৌষধর্মের বভার যে সমভ হিন্দু দেবতা প্রাক্তর ভাবে অভিত্ব রক্ষা করিরা ছিলেন, তাঁহাদিনের নথ্যে রক্ষার রূপান্তরিত বৃতি নঞ্জীর পত্নী হইতেছেন বাইবরী। বৈদিক রূপের রক্ষার বৃথ হইতে বেদ নিঃস্টত হইরাছিল, স্তরাং রক্ষার সহিত বাগ দেবীর সম্বন্ধ করো অশোভন হর নাই।

একৰে শৌৱাণিক বুগে আদা যাক। পুৱাণের নব্যে বিফুপ্রাণ সর্বাণেকা প্রাচীন বলিরা বীকৃত হইরাছে। লেবানে সরস্বতী দেবীর কোনো প্রাবাভ নাই। বিফুপ্রাণে বিদ্যার অবিভানী দেবতা হবঁ। যাজবদ্য অফলাপে প্রইজান হইরা হর্ষের তব করিয়া তক্ল বক্রেণ প্রাপ্ত হইরাছিলেন।

ষংভপুরাণে উপ্ত হইবাছে, ব্রহ্মার দশ কন মানসপ্তা।
নর কন শারীর পুত্র ও একটি কভা। এই কন্যার নাম সরবভী,
গারত্রী, সাবিত্রী ও শভরণা। সরবভী ক্রলাভের পর বর্ধন
পিতাকে প্রথক্ষিণ করিত তর্ধন ক্রম্প ঠাত্রট একট বিসর্প
কাও করিরা কেলিলেন। কন্যার রূপে মুখ্র ব্রহ্মার তিন দিকে
তিনটি এবং উধ্বে আরও একটি—এই চারিটি মুব গলাইরা উঠিল।
তিনি পঞ্চ মুবে—আহো রূপং আহো রূপং ইতি গ্রাহ পুনঃ পুনঃ।
(মংভপুরাণ তর অব্যার)

ব্ৰন্ধবৈত পুৱাৰে ধেৰিতে পাই, আন্যাপ্ত কৃতির পঞ্চী বৃষ্ঠি---সরস্তী।

त्रत्य स्थमी - इर्गा वावा शक्षी जवश्यो । जाविकी ह एक दिर्दा श्रक्त भक्षी पृण । वावाविकाल्यवी वा गांवकानश्रम जमा । कृक कर्शाह्या या ह जा ह स्वयो अवस्थी ।

বৈদিক সরহতী বৌদ্ধ প্রভাবে শত শত বংসরের আছু-প্রজ্ঞ্মতার পর পৌরাধিক মুগে আবার আত্মপ্রকাশ করিলেন। ব্রহ্মবৈষত প্রাধেই আয়াদের সরহতীর প্রভাব পূর্ণরূপে দেখিতে পাই।

সরস্থতী জ্রীকৃষ্ণকে পভিরপে পাইবার অভিপ্রার প্রকাশ করিলেন। জ্রিক বছবন্ধত স্ইলেও সে সমর রাবাগত প্রাণ ছিলেন। তিনি পানিপ্রাধিনী সরস্থতীকে সহুপরেশ ছিলেন। তিনি ভাহার অভতর হ-রপ বিকৃত্বে বরণ করিতে বলিলেন। এবং সরস্থতী পৃশ্বা----

"যাৰভ শুক্লপঞ্চয়াং বিভাৱত বিষেহণি চ।"— বিবাস করিলা বিলেম।

এদিকে আবার নারদীর পুরাণ, বর্ষপুরাণ ও কুর্যপুরাণে দালী ও সরবাতীকে শিবের কভা বলা হইরাছে। বেদে মুরুংগণ রুক্তের সভাদ। মুরুংগণ সরবাতীর সদী এই খুত্তে হর ত শিবকভা বলা হইরাছে।

সরবতী বে শিবকতা তাহা অতলও বর্ণিত হইরাহে শিব

ষশঞ্জিতে শৃষ্ট করিরাছিলেন বলিরা তাঁহার প্রতি স্বেহ্ সঞ্চাত হইরাছিল।

কা পূন: অঠু: সুক্ষেহা সদাভিপ্ৰভিপক কিং।
ততা: শক্তিং বিভীয়াক স্কামি অপরাশিতার।
দেবীপুরাব।

ব্ৰহ্মাণপুৱাৰে আছে—অৰ মাৱীশ্বর বৃতির মারীভাগ বিভক্ত হইয়া লক্ষী সরবতী উমা হৈমবতী বটা প্রভৃতি উৎপন্ন হন।

আবার ব্রহ্মাণ্ডপুরাবে ফেবিভে পাই---

তবাজায়া মহালন্মীরহং বৈক্ঠবালিণী। সরহতী চ তবৈৰ বামপাৰ্যে হরেরপি।

বরাহপুরাণ বলেন, এজা বিষ্ণু মহেবরের সন্মিলিত দৃষ্টি হইতে একী বৈফ্বী ও মাহেণ্ডী এই ভিন শক্তির স্কটি হইল। এক্সি শক্তির নাম স্কটি। এই স্কটি সর্বাক্ষরা বাগেণ্ডী বিভাবিষ্ঠানী দেবী সর্বভী। তাঁহার বর্ণ বেভ, ভিনি সর্বাদ-স্থন্দ্রী।

আবার শিবপুরাণে আছে— সরস্থী চ বলীকে স্মৃতি বৈপারণে তথা, "বিফোর্কিহা৷ সরস্থী।"

( বামনপুৱাৰ ৩২ জঃ )

শিবপুৱাণ বলেন---

দক্ষক ধ্বংসকালে বাগ্দেবী দক্তিত। হইরাছিলেন, শিব উহোকে অঙ্গান করেন।

प्रवीत्वार्य प्रवश्वी मृष्टि-

ততো ল্যোতিতবান শভুঃ স্বশক্তিং কিরণোজ্গাম্। হংস ভক্ষম আরচা স্বকীয়ায়ববারিটা॥

এই হংসবাহম সৱস্বতী দান্দিণাত্যে প্রচলিত। ববিষর্বার ছবিতে অনেকে এই বৃতি দেবিয়া বাকিবেম।

নগ্ৰেবত প্ৰাৰে এক ফেব মুৰ ২ইতে বীণাপ্তকহণ্ডা ভক্লবৰ্ণা এক ফেবী আবিভূতি। হন। তিনি ত্ৰিগুণাত্মকা প্ৰকৃতি। তিনি বাকাৰ্ছি ও মনের অবিচানী দেবী। তিনি পুতক বচনাকারিদী এবং সঙ্গীতের কার্ব-হর্মণ। সেক্ত তিনি বীণাপুতক্বারিদী। ভাঁহার বৰ্ণ খেতপলাত।

বৈদিক সরবতী নদীর সামগ্রত রক্ষার বর্ত গৌরাণিক একট কিংবদলী আছে:

ৰিফ্র বছ-বিবাহ ছিল। লক্ষী সরবতী ও গলা তাঁহার এই পত্নীত্তর ছিল। স্বর্গেও সপত্নীবিধের আছে। একলা গলার সহিত কলহ হওরার গলা সরবতীকে অভিদাপ দেন। সেই শাপের কলে সরবতী মহীরপ বারণ করেন।

বংজপুরাণ মতে সাবিত্রী ও সরবতী বাদার পদ্মী। কিছ বাদ্ধবৈবত কার বলেন—সরবতী বিক্র পদ্মীই ছিলেন। বিক্ ছিলেন উদার। পঞ্চ পাওবের মত পদ্মীর অংশ বাদ্ধাকে অকৃষ্ঠিত ভাবে ছাভিয়া দিলেন।

এ সথকে এবৃত নীহাররঞ্ন রার সরবতীর কুলপরিচরে লিবিরাহেন--- "এই বে সর্বভীর পদ্মীত সইয়া একা বিক্র মব্যে ভাগ-বাঁটোরারা এ সক্তমে আমি একট বিশিষ্ট মত পোষণ করিয়া থাকি। আনহা ভানি বৈদিক বুলের অপরাত্নে আক্ষণে ও ক্ষত্রিরে একটা প্রচণ্ড বিরোধ বাবিরাহিল। এবং সেই বিরোধ বহুকাল হারী হুইয়াহিল।

ইহাদের মধ্যে আদর্শেরও ভেদ ছিল। সেই আদর্শ-ভেদের বৃত্তি পরিকল্পনা রূপে ছুই দেবতাকে দেবিতে পাই। প্রাচীম তন্ত্রমন্ত্র ক্রিয়াকাণ্ডের দেবতা ছিলেন রক্ষা, এবং মব্যদলের দেবতা বিষ্ণু। এই ছুই দেবতাকে সইয়া লামাজিক বিপ্লব ক্ষ হয় নাই।

এই বিপ্লবের অবসানে বৈক্ষণ বর্ষকে রান্ধণেরা আপদ করিবা লইবাছেন। কিছ পোঢ়ার বে ভালা করেন নাই ভালার কিছু কিছু প্রমাণ এখনও অবশিষ্ট আছে। বিফ্লর বন্দে রান্ধণ ভূঙ পদাবাত করিবাছিলেন, এই কাহিনীর মধ্যে একটা বিরোধের ইভিহাস সংহত হইবা আছে।

দেখা ৰাইতেছে ভারতবর্ষে পূজার আসনে বৈদিক ত্রন্ধার খানকে সংকীৰ্ণ করিয়া বিষ্কৃই জনে তাঁহার খানকে অবিকার করিবেন।

ৱন্ধার ও বিষ্ণুর বিভেদটুকু কোৰার দেবিলাম। দেবিব এই বিভেদের মধ্যেই সরস্বভীর পত্নীয় লইয়া এছা বিফুর মধ্যে ভাগ-বাটোৱারার ভত্টুকুও বিশ্বত হইরা আছে। আবার মনে रव मदश्की क्षपाय बन्धाय पश्ची विनवार वीकृष्ठ रहेवादिन। সে কৰার প্রমাণ আছে। এদা বেদগুরু বলিয়া কৰিত। তাঁহার মুধ হইভেই বেদ শিঃস্ত হইয়াছিল বলিৱা শাস্ত্র বলে। সরহতী দেবী বাগুদেবী ক্রণে ক্ষিত বলিয়া ব্রহ্মার সংগ ভাঁহার যুক্ত হওৱা বাভাবিক। ভাহা হাকা মংসপুরাণে সরবভীকে ব্রহ্মাপত্নী বলিয়া উল্লেখ করা হইয়াতে। সংভ-পুরাণ যে সর্বপ্রাচীন পুরাণগুলির অঞ্চল সে কথা সর্বজন-मञ्जल । अवस्था मान एवं दिविक अभाव मान दिविक সৱশ্বতীর মিলন ইভিহাস হিসাবে সভ্য। কিন্তু ব্রহ্মা-বিষ্ণুতে श्राप्त विद्याय वाविवादिन । अहे विद्यादिक चानत्म विकृ ব্ৰাহ্মণ্যৰ কৰ্তৃক স্বীকৃত হুইয়াছিলেন। বিষ্ণু বৰ্ণন ক্ৰমে ব্ৰহ্মার সমন্ত সন্মান ও প্ৰতিপত্তি কাড়িয়া সইলেন তথ্য ডিনি যে ব্ৰহ্মার পড়ীর উপরও ভাগ বসাইতে সচেট হইবেদ ভাহার আর আভ্র্যা কি ? আমার মনে হর প্রস্তুত পক্ষে হইরাও ছিল ভাহাই। কারণ এক ভ্রন্ধবৈবত পুরাণ ছাড়া প্রার সমস্ত প্রাচীন পুরাবভলিতেই দেবিভে পাই বিফুর পদ্মী হইতেছেন পুষ্ট ও লখা। ভয়ের মতে ইন্দিরা অর্থাৎ লখা ও বস্তমতী : কোৰাও সরহতী নহেন। সরহতীকে পদ্মী করিবার লোভ দেখা দিয়াছিল পরে, খণন বিষ্ণু ক্রমে ত্রন্ধার অনেক প্রাচীন কীতি নিকে আৰুগাং করিলেন। সেইজ্ডই আনার এ কবা সভ্য ৰদিৱা যদে হয় যে অপেকাকত প্ৰবৰ্তীকালে বন্ধায় প্রতিপতি বিকুর সভ্যাচারে ভবিরা আসিল, ভবনই সর্বভী

বিক্র পদ্ধী বলির। হিন্দুর বৃতিবলিরে গুরীত ও স্বাকৃত হইলেন। ত্রন্ধার আর তবন ইত্রের সরবারে বিক্র বিকরে পদ্দীহরণের মানলা করিবার শক্তি ও সাহল ছিল না।

আমরা বে আক্কাল লক্ষী সরবতীর বিবাদের কথা বলিরা থাকি তাহা পুলগর্ভ নহে। লক্ষী হিলেন বিকুর আদি পদ্মী। সেই হিসাবে লক্ষীর সকে এক্ষার এবং উহার পদ্মী সরবতীর বিবাদের কারণ নিক্ষাই ছিল। কিছু পরে যথন বিকুসরবতীর উপর প্রপুদ্ধ হইলেন, তাঁহাকে পদ্মীয়ণে এহণ করিলেন তথন লক্ষী বে সর্বতীর উপর বিরপ হইবেন তাহাতে আর আক্রা কি ?"

একণে তত্ত্বে সরস্থতীর সপকে কি আছে দেখা যাক। বুংশীলতন্ত্র, কুলার্থকন্ত্র ও সারদাতিলকতন্ত্র মতে সরস্থতী বিশেষ কলা।

ভয়মতে চঙীপুৰাধ চঙীর বিভাবে খ্যান করিতে হর, তাঁহার ভাষসী বৃতি ধহাকালী। রাজসী বৃতি মহাপদ্মী, সান্তিকী বৃতি সরস্থী।

কাভ্যারনী ভঞ্জে সরস্থতীর সৃতি---

পৌরীদেহ সর্ংগলা, একনাত্র সভ্তবাশ্রমা ওভাসুর-বিনাশিনী। ভিনি আই-হভা, তাঁহার প্রহরণ বাব মুখল দুল চক্র শথা ঘটা হল ও বস্থ।

ভাৱে বাশ্বরী দেবীর মৃতি কলনা করা হইরাছে, ললাটে ভারৰ শনিকলা, খেভবণা খেভপালোপবিটা, হভে লেবনী ও পুত্তক—এই মৃতির সহিভ আব্দিক সর্যভীর সাদৃত আছে :

ভৱে পারিকাত সরস্কতীর উরেব আছে। ইনি হংসাকচা ভত্তবর্ণা। বিভতরমূবী এবং মৌলীবর্দ্ধেশু লেবা। ইহার হভে পুত্তক বীণা অন্তময় ঘট ও অক্ষালা।

তল্পে মাতৃভাদেবীকেও বাগ্দেবতা বলা হইবাছে। মাতৃভা বেবীর পরীর অভারাদি বর্ণমালাময়। ইঁহার ললাটে চল্ল, চারি হতে বুলা অক্যালা, প্রাপূর্ণ কলম ও পুতক।

একটু অধ্বাবন করিলেই বুঝা যার বাগীখনী পারিজাত গরবতী ও মাড়কাদেনী সরস্থীরই বিভিন্ন বৃত্যন্তর যাত্র।

নীলভাৱে ভারাদেবীকে শীল সরবভী বলা হইয়াছে।
বাভর্নীল সরবভী প্রথমভাং সৌভাগ্য সম্পদ্ধকে
প্রভাারীচ পদহিতে শিবছদি ধেরাননাভরতে।
কুরেন্দীবর লোচনত্রয়তে ক্র্মীং কপালোংপলে
বড়ালদবভী ভ্যেব শরবং ভারীবরীবাস্তার।
ভিত্রি—

"ৰাচামীখনী ভক্তকলভিকে সৰ্বজনিবিধ্ৰদে গছপছপ্ৰাক্ত-পদ্মজাত বচনা সৰ্বাৰ্থ নিবিধ্ৰদে।" ভাষার অর্চনা করিলে—
"—ক্রাণি বাচলভি।"
এই ব্যার কলঞ্চতিতে আছে—
লততে কবিভাং দিব্যাং সর্বলামার্থবিদ তবেং।
আক্কান আমরা বে সর্বভীর অর্চনা করি তিমি—
ব্যেতগ্রাসমা দেবী ব্যেতগ্রোগনোভিভা
ব্যেতাব্যধরা নিত্যা ব্যেতগ্রাহ্বলেশনা।
ব্যেত্ত্বী শুন্তব্য চ প্রেত্তশন্চর্চিভা

এই সৰ্বওক্লা সরস্বতীর পূজা আমরা প্রথমে দেখিতে পাই ক্রন্ধবৈষত পুরাণের প্রকৃতি-বভের ৪র্থ অব্যারে।

খেতবীশাৰরা কলা খেতালয়ায়শোভিতা ।

এই বৃতিপরিকল্পনার একট উদ্দেশ্ত আছে, সরস্থতী নদীকে বেদে সর্বল্পট ভল্লে বলা হইরাছে। "যদসি ববলভা বর্ণতে হাস কীর্ত্তোব"—বদ হাজ ও কীর্তিকে গুলু বলিরা কল্পনা করা হই-রাছে। ভাই বদ ও কীর্তির বৃলীভূত দেবী সরস্থতীকে গুলুবর্ণা বলা হইরাছে। হত্তপুত লেবনী ও পুত্তকের দারা সাহিত্যের চিহ্ন হচিত হইতেছে। বীণাদারা হ্যস্থান্ত পথের হচনা ক্রিভেছে। পদ্ধারা শিলের আপন ক্রিভেছে। পদ্ধ ক্রিভিদের অতি প্রির বস্তু। আধার হৃৎপদ্বেরই প্রতিক্রপক বেতিপদ্ধ।

শক্ষান্তরে পদ্ধ হংস কচ্চপের জলের সহিত সমন। বীণার নামান্তর কচ্চপীয়ন। এইরূপে বৈদিক নদী সরস্থীর সহিত সামগ্রন্থ পরণ করাইয়া দের। ১৩২> সালের বৈশাবের প্রবাসীতেও দুষ্ট হয়:—

"হার্ষিস দেবদূত বাগিতার অধিঠাত দেবতা। তিনি বৃদ্ধিদেবতা, বাবা বংকী সদীত কবিতা ক্যোতির ও অক্ষরের স্টেকতা। সর্ধতীর সহিত এীক দেবতা হার্ষিসের অনেক সাদৃত্র আছে। কিন্তু হার্ষিস পুরুষ, সর্ধতী মী। এীকদের আন ও শিলের অধিঠানী দেবী এবেনা বা মিনার্ভা দেবরাক কিটসের কলা তাঁহার মুক্তক হইতে উত্তা। সর্ধতীও শির্মান্তার ব্বোভ্তা। গ্রীক দেবতা আর্টিমিনের সহিত সর্ধতীর সাদৃত্র আছে।"

এই সৰ্বভক্লা সরস্বভী বাংলার বাহিরে বিশেষ সনাধৃতা নহেন।

# ব্ৰন্ধপ্ৰবাসী বাঙালী হিন্দুদের বৰ্তমান সমস্থা

#### জীমনোরপ্পন চক্রবর্ত্তী

, বর্তমান প্রবদ্ধে বিশেষ করিয়া এন্ধ্রপ্রবাসী বারালী হিন্দুদের লগতে বলিতে চাই এইজও যে, এন্ধ্রে অবুনা বে সমন্ত প্রবাসী বারালী মুসলমান আছে ভাষাদের মব্যে শভকরা আশী জনই এদেশীর রমনীদের পাণিএহণ করিয়া "বার্ছা মুস্লিম" নামক এক বভন্ন প্রশীভে পরিণত ছইবাছে। সাবারণের নিকট ভাষারা "কেরবাদী" নামে পরিচিত। বাংলা দেশের সম্পেতাহারা প্রায় সম্পর্কবিহীন। নিজেপেরও ভাষারা বারালী বলিয়া পরিচর ধের না। ভাষারা ভাষাদের সন্তানসন্ততিপণের বর্ষী সামকরণ করিয়া থাকে।

বাঙালী হিন্দুৱা কিছ বছ দিন যাবং এদেশে বাস করিয়াও
নিব্দের দেশকৈ ভূলিতে পারে নাই। কেবল দেশই নহে,
আচার বাবহার ও পোশাক-পরিজ্ঞেও তাহারা বাদী
বাঙালীই রহিয়া গিয়াছে। বাংলাদেশের কি সামাজিক কি
রাজনৈতিক সমন্ত রকম পরিবর্তন ও আন্দোলন তাহার:
আগ্রহের সহিত লক্ষ্য করিয়া থাকে। বাংলাদেশের দৌভাগ্যে
তাহারা উন্নসিত হয়—ছর্তাগ্যে ব্যথিত হয়। ভারতীয়
একানিক নেতা এদেশ ভ্রমনে আসিয়া বস্কৃতা-প্রসদে মছব্য
করিয়াছেন, ভারতীয়দের এদেশে থাকিতে হইলে সম্পূর্ণ রূপে
এদেশীয়দের সদে নিশিয়া বাইতে হইবে। কিছ প্রবাসী
হিন্দুরা নেতাদের এই উপদেশবাধী অক্ষরে অক্ষরে পালন
করিতে পারে নাই।

বাঙালী হিন্দুরা অবক বর্মীদের পুকা-পার্কাণ, আমোদ-উৎসবে প্রাণ পুলিষাই যোগ দিয়া থাকে, ভাছাদের আমা-আকাজ্ঞার প্রভিত্ত ভাছারা সহাঞ্ছভিশীল, ভবু বাঙালী বাঙালীই রহিয়া দিয়াকে—বাঙালীও বিসর্জন দিয়া বা বর্মী-রমনীর পাণিগ্রহণ করিয়া বর্মী বা কেরবাদী হইয়া যায় নাই। প্রবাদী বাঙালী হিন্দুরা যদি ব্রহ্মদেশকেই নিকেদের দেশ বিদিয়া মানিয়া লইতে পারিত ভবে হয়ত ভাছারা বর্ডমানে যে হর্জোগ ভূগিভেছে ভাছা হইতে বেছাই পাইভ কিছ উঞ্জ প্রাহীরভাবোদ ও ব্যল্পপ্রীভিই ভাছাদিগকে চুর্জ্পাঞ্জ করিয়াছে—ভবু বিদেশেই নয়, ব্যহদেশত।

প্রধানতঃ চাকুরীর উক্তেওই শিক্ষিত বাঙালীরা এই দেশে আগমন করিরাছিলেন। উচ্চাদের দেখাদেখি বহু অশিক্ষিত বা আমনির্কিত বাঙালী বিশ্বাপ্ত জীবিকার অবেবণে এপেশে আগিরা উপস্থিত হয়। জাপানী আক্রমণের পূর্বের বাঙালী বিশ্ব সভানগণ কত বিভিন্ন প্রকার কর্মধারা যে অর্থোপার্জ্ঞন করিত ভাষা অবগত হইলে বিশিক্ত ইতে হয়। বাংলা-বেশের বাহিরে অভ কোন প্রবেশে এত অবিক সংবাক ক্ষাভালী এত বিভিন্ন প্রকার কার্যাবারা জীবিকা আর্জন করিত না, বর্জবানেও করে কিয়া সন্দেহ। চাকুরীরা-

দের মধ্যে হাইকোটের ক্ষ হইতে আরম্ভ করিয়া পোঠ व्याभित्यत हाकभित्रम भर्ताह वाहानीत्यत मत्या त्यवा वाहेछ। অ-চাকুরীয়া বাঙালীদের মধ্যে বেষম ছিল ব্যবসায়ী, ডাক্তার, **डेकोन, एवर्गि दिन क्रिकामात, इवश्वताना, मानिल এवर** আরও কত কি। ত্রন্ধদেশের গত লোক-গণমার দেখা বার ব্ৰন্ধে ভারতীৰ্দের সংখ্যা ছিল হব লক্ষ্য সভর হালার আট শ' পঁচিশ। তথ্যে তিম লক আটাখন হাজার বাঙালী। সরকারী যতে যোট তিন লক ভিরামকট ছাভার সাভ দ' প্রত্রিপ অন ভারতীয় জাপানী আক্রমণের ফলে ভারতে পলাইয়া যায়। ইহাদের মধ্যে ৩০০২৮৫ জন পুরুষ এবং ৯৩৪৫० चन औ। भर्द लान हातात भन हासात लाक। माखादक कालावतार्थिव मरवा। ১८०८४०, वारमादवदम ১५১५०५। মাজাক ও বাংলাদেশের আশ্রয়গ্রার্থিরা ববাক্রয়ে সকলেই रुष्ठ मालाको ना नाटाको हिल मा। यहि बतिया अध्या साम বাংলাদে ৰ যাহারা পিয়াহিল ভাষারা সকলেই বাঙালী ভবে দেখা যায় আভাই লক্ষের উপর বাঙালী ব্রহ্মদেশেই রহিয়া গিয়াছিল। আমাদের কিও মনে হয় গবর্ণ যেক্টের পক্ষে তংকালীন পরিহিতিতে যথামৰ হিসাধ বাধা সম্ভব্যর হয় নাই। গ্ৰহ মেন্টের হিসাবের বাহিরেও আরও বহু লোক ভারতে পদাইয়া গিয়াছিল। যাহারা বৃহিয়া গিয়াছিল, ভাপানী मांत्रस्य थ्रायायहात छाश्रास्य हर्षमा हत्य छेविशक्ति। अह পমবে বৰ্মী শুভাদের ধায়ের আবাতে বহু লোককে প্রাণ হারাইতে হইরাছে। থানের মুধ হইতে যাহার। বাঁচিয়াছিল ভাষাধের কভককে মরিভে ছইরাছে হোগে শোকে ও খাগ্যাভাবে, আর কভককে বোষা ও মেদিনগানের ওলিতে। কাকেই পূর্বেষ যেবানে প্রক্ষদেশের অভি কুদ্র শহরেও ছই-চারিট বাঙালী পরিবার দেখা ঘাইত বর্তমানে সেখানে অপেকারত বছ শহরেও কদাচিং বাঙাগীর ধুব চোবে পছে।

যে সমস্ত বাঙালী সরকারী কর্মচারী বাংলাবেশে চলিয়া
সিরাছিলেন এক পুনরবিকারের পর একে একে তাহারা
কিরিয়া আসিতেছেন । উকীপ, ডাঙার, ট্রকালার অনেকেই
কিরিয়া আসেন নাই। একবেশের প্রায় সমস্ত সহরেই এই
সকল ব্যক্তির নিজয় বাড়ীবর ছিল। এই সব বাড়ীবর বোমা
বর্ষনে নিশ্চিক হইরা সিরাছে, কাকেই এই দেশের উপর আর
ভাহাদের কোন আকর্ষণ নাই। ইহাদের মধ্যে যে ছুই-এক
কন কিরিয়া আসিয়াছে ভাহারা রেছুনেই রহিয়া সিরাছে।
রেছুন বড় শহর—অপেকারুত নিরাপন। কিছ অবহা
বিপর্বারে পভিয়া পূর্ক হইভেই বাহাধিগকে বিজ্ঞির ভাবে
রেছুনের বাহিরে বাকিতে হইভেছে, অথবা বর্ডরানে সরকারী
ভার্নোগলকে রেছুনের বাহিরে বাইতে হইভেছে ভাহাদের

শবধা এবন বড়ই শোচনীয়। ভারত-প্রত্যাগত রেলওয়ে कर्षवादौष्टिनंदक वार्चा दबनश्रद विभावेदक वाशासब दक्षा-পাওনা বিচাইয়া ছাভিয়া দিয়াছিল। এই লোভদের বেশীর णांगरकरे, विर्मय कविश्वा बांशायात वस्त्रम कम--श्रद्धत नश्य चावजीय दानवाय किनावेंत्यके काकृती विशा निकास्त कृतिया শইরাছে। কিছ ইন্পিরিয়াল সাভিসের লোকদিগতে বার্দ্রা **গবর্ণবেন্ট ছাড়ে নাই. ভিন-চার বছর ভাছাদিগকে অর্চ্চ** বেভন ধিয়া হাতের বুঠোর ভিতর রাধিয়া ধিরাছে। ইহারাই অনিছা সত্ত্বে বন্ধদেশে কিবিবা আসিতে বাৰা ছইৱাছে। সৰ্বাণেকা ৰুশকিল হইরাবে ভাক-কর্মচারীদের। তাহাদের কাহাকেও कारादक्थ अपन शादन वारेट्ड एरेट्डिस स्वरादन लीबिट्ड सङ्ग ছইতে তিন চার দিন সময় লাগে। মুপপথে কোন কোন স্থানে ষাইতে হয়, মাইলের পর মাইল পদএকে, পরুর গাড়ীতে বা মোটর বাসে, জলপথে নৌকার। এই সমত ছানের অর্ছ সভ্য व्यविवाभीक्षारे क्षवानणः जाराज्य क्षणित्व । वाहानीय मुबदर्भन দূরে ৰাকুক, দিভীয় কোনো ভারতীয়ের মূব দেবাও এই সমস্ত ভাবে আশা করা যায় না একট বিশেষ কারণে এই जकन दान वर्षवादन विभरप्रदूष । भनावनभव काभानीया दय সমস্ত মারাদ্রক অপ্রশস্ত কেলিয়া নিয়াহিল ভাষার বেশীর ভাগই ছানীর গুঙাগ্রকৃতি লোকদের হাতে পভিয়াছে। এই অল-नाब गाराया जारावा यानम गर्रजवान कविवा किविट्डा । পুলিদ ইহাদের সলে আইয়া উঠিতে পারিতেছে না। এন্দ্র-দেশের বড় বড় শহরে অবভ এখনও প্রচুর মিলিটারী যোতাবেন আছে, কিন্তু ভাষাদের নিক্ষেইভা দেখিয়া মনে হয় ত্তাধ্বন বিশিটারী কর্তব্যের বাহিরে। সুমূর গ্রামাকণ ও অৱণ্যসমূল পাৰ্ব্বত্যপ্ৰদেশের ত কৰাই নাই--ছোট ছোট পাছাভৰলিতেও এবন প্ৰাণ ছাতে করিয়া বাকিতে হইভেছে। অ-চাকুরীরা অশিক্তি বা অরশিক্তি বাঙালী হিশুদের আর बक्के कारार्थक अरहान किया बाका बनवर व्हेंबा कांकादेवारक। शर्क्स अवास्त स्थ अवस विक् करवद वायभा. কৌরকারের কাল অধবা অভাত হোটবাটো কারবার করিয়া ভীবিভা বিৰ্ব্বাহ কবিভ ভাষাৱাও আছে আছে যাত ওচাইভে বাৰ্য হইতেছে। পূৰ্ব্বে নাশিতের ব্যবদা বাঙালী হিন্দুদের এক-চেটবা ছিল। কিছ বিগত হুত ব্ৰহ্মদেশে একটা চমকপ্ৰদ পৰি-বর্ত্তন আনিরাছে। পূর্ব্বে বর্ত্ত্বীরা বোপা-মাপিভের কাল করিত ৰা, বৰ্ডবাৰে ভাহাৱা ৰাভুদার বেৰৱের কাল করিভেও विवादबाद करव ना । शृद्ध इंद लाइन कविटक छाहांवा कानिक ना, वर्धमारन परे कीय करेरक जायक कविया निर्शिष ৰঙা পৰ্যান্ত তৈরি করিতে শিবিরাছে। এই ভাতীর চেতনা चन्छ एक नक्न, किस कार्राच्य निवयरे और अर करनव शरक বাহা 'ডাড আর এক জনের পক্ষে তাহা অভাতের ভারণ হইয়া হাভার। ভাষার উপর বর্ত্তাবের এই ভাতীরভাবোর অনেকটা ৰেৰ বিভাতীয় বিৰেৰ বা ভারতীয় বিৰেৰের নামাভয় মাত্র।

ভাষালা নিৰেল ছোট ছোট কাৰ কৰিভেছে ইয়াতে কাহালও चानश्चित कात्रन पाकिएल भारत मा, किस मनला स्टेएलट्ट बरे বে ভাহাত্বা বে-ভাইনীভাবে ভাত্বভীত্বদিগকে এই ছোট ছোট কাৰ্ডলি করিভেও বাবা দিভেতে। কোন কোন ছলে ভাহা-দের এই ভারতীর বিবেষ মারাশ্বক রূপে আশ্বপ্রকাশ করি-ভেছে। সমস্ত জানিয়া শুনিয়াও প্রপ্রেট এছিকে বট্টবেওয়া প্রয়োজন মনে করে না। কারেই বে অলগংখ্যক বাঙালী বিন্দু বর্তমানে এই ধেনে আছে ভাষারাও সরিয়া পভিবার সুযোগ বুঁজিতেতে। অবস্থা এমন গাড়াইয়াছে, আৰু যদি বৰ্মা প্রব্যেক্ট ভারতীয় সরকারী কর্মচারীধিপকে অর্চ্চ পেলন দিয়াও বিধায় করিতে রাজী হয় তবে ভাহারা পুশীমনেই ভারতে ফিরিয়া যাইতে প্রস্তত। বাঙালী হিন্দু কর্ম্বচারীয়া চলিয়া ষাইবার কম যে বারে ইছা নিশ্চয় করিয়া বলিতে পারি। এক-रवारन मकरण छनिवा रनरन भवर्गधर्क च्रष्ठण क्वेरन विभवादे इञ्चल भवर्गमा देश कविटल हाट्य मा. चयह धरे लाकस्य ষ্ণোপযুক্ত নিরাপতার ব্যবস্থাও ব্রহ্ম-সরকার করিয়া উঠিতে পারিভেছেন না।

বাঙালী সরকারী কর্মচারীদের শশুকরা নিধানকাই কন বর্জমানে এখাদেশে জী-পুত্রাদি ক্ইন্ডে বিভিন্ন ক্ইয়া একক জীবন যাপন ক্রিডে বাব্য ক্ইডেছে। বাসগৃংকর জভাব, চুরি-ভাকাভির ভয় এবং কিনিম্পত্রের মুর্ল্যতা ইভ্যাদির ক্বা ছাছিয়া দিলেও যে কারণে স্থী-পুত্রাদিসক এবানে বাকা অসপ্তর ভাকার মব্যে প্রধান ক্ইল পুত্র-কন্যাদের শিক্ষা-সমস্তা।

এ দেশে ভবিষ্যং চাকুরীর পথ যথন বছ তথন এবেশের বিকাশ্রহণও নিক্ষণ। পরিবার হইতে বিচ্ছির হইয়া এহেন ধূর প্রবাসে নানা প্রতিকৃত্য অবহার মধ্যে জীবনবাপন বাঙালী হিন্দুর পক্ষে একটা অভিশাপের মত। রেছুবের বাহিরে কোন প্রবাসী বাঙালী অহবে ভূসিরা নরিয়া পেলেও বাংলাদেশে তাহার পরিবারবর্গের নিকট খবর পৌছিতে পদর বিশ দিন সমর লাগিবে—অবও ববর দিবার যদি লোক থাকে। বর্তমানে বেছুম ও মান্দালরের মধ্যে গোটা দিনরান্তিতে মাত্র হুইবানা বাত্রী গাড়ী চলাচল করিয়া থাকে—একথানা বার মান্দালরের হিকে, আর একথানা বায় রেজুনের দিকে। রেল-লাইনের অবহা এতই থারাণ ধে গাড়ী লাইনচ্যুত হুইয়া প্রায়ই হুর্বটনা ঘটে, তথ্য হ্রত সপ্তাহ্বানেকের মত গাড়ী চলাচল বর হুইয়া বায়।

সমগ্র রখাদেশে মার চারিট বড় শহর হাড়া আর কোবাও এ পর্যান্ত টেলিপ্রাক ও টেলিকোনের কাল আরভ হর নাই। রেজুন হইতে কলিকাভাগানী ভাহাল হাড়িবার কোন নির্দিট বিল নাই। রক্ষদেশ হইতে বাংলালেশে একবানা সাবারণ চিটি গৌহিতে ভিল সপ্তাহের মড় সমর লাগে—উড়ো ভাহাকে লাগে হল-বার বিন। উড়ো ভাহাকে মণি অর্ভার পাঠাইলেও বাংলাহেশে ভিন-চারি সপ্তাহের পূর্ব্বে ভাহা বিলি হর না। এই সৰত হৰ্তোগের কটই বাঙালী হিন্দু ভল্লীভলা ভটাইলা বাংলা-বেশে কিবিলা বাইভে চার। নাসিকপঞ্জিকার পূঠার প্রবন্ধ দিবিলা বাঙালীদের এই প্রবাস জীবনের প্লানি হইভে যুক্ত করা বাইবে বা ভানি ভবে বাহালা এককালে অভাবেশে হিলেন, বর্তবাদে বাংলাদেশে আছেন এবং আবার ব্রহানেশে কিরিয়া আলিবেন বলিয়া হাতপত্তের কন্য দুটাট্রট করিতেত্তেন তাঁহারা হয়ত ইহা পঢ়িরা কর্তব্য নির্বাহন করিতে পারিবেন।

### অলস অঞ্

#### 🗬 কুমুদরঞ্চন মল্লিক

কত অভাষা ও অচেমার লাগি

ক্ষিত্রি অঞ্চশাত,
বুকে লাগিরাহে কোন্ সুলুরের

শত বাত-প্রতিবাত।
কেঁদেহি 'ক্ষুনী' বুবেরার লাগি,
বীর 'বোয়ারে'র এত অপুরারী
প্রাথীন দেশে পদ্ধীবাগক

কেন্দে কাটারেহি রাত।

এখনও জীবন-সভ্যার দেখি
বদল হয় নি কিছু।
আঁথি—জার্দানী, জাপানের হথে
জলভারে হয় নীচু।
সমরনায়কগণের ব্যথায়—
খাস রোধ হয়, বুক কেটে যার,
ভাবের কঠোর দওদাভারে
বার বার ভাকি পিছু।

ভাবের শোভন সন্ধিভ হবি

নন আলো করি কাগে,
গুরু অপরাব স্থান কর না

অকারণ ভাল লাগে।
শোভার 'থাকা'র অপ্তর কেশরী,
ভা বিকেও বোরা নবি' পূজা করি,
ভালিতে বিবেধ—নিরঞ্জন বে

ভারও করি' অভ্যাগে।

ভেলঃপুঞ্জ বারা বহারবী হোক না প্রবল করি, দরণ ভা'বিকে সকল সময় গৌরবে লবে বর্ষি'। গত্য বলিরা করি বোরা কাঁক— আদিন বুগের, লে আদিন রাগ, নর তীবণ সেই আক্রোপ— বেহনারু সাবে 'দরি।

আৰিও বা বিহু তাই ববে গেছি
কেন্দুকাৰি নাহি আনি ?
কোৰাৱ বিপুল বিষৱাট্টে
কোৰা এ ক্ষ প্ৰাৰ ?
আবিম বুলের নিশুর বতদ—
করি অকারণ অলস রোমন,
চাঁহ ভূবে বার—নিশু কেঁচে কেঁচে—
ভাকে বিরা হাতহানি।

### মেঘমলার

#### আশ্রাফ সিদ্দিকী

কৰ্মো বাহল রাতে ব্যৱহার বাতারনে হ'বও আহর লবে বলেছ কি কেউ ?
কাজল বেবের সনে অহর ভাসারে বিরে বলে বলে
অহরের গণেছ কি চেউ ?
ব্যৱহার ব্যৱহার বাহলের বারা সমে ভিক্তে চলে অবিয়ান
নিশীবের বন—
ব্যৱহার বাহাসনে নিয়জন বাতারনে ভিক্তে ভিক্তে

তথম হাবর নিবে একি ব্যথা, একি খালা,
একি বে সর্বা-চেউ হাবর-বেলার,
ভবন নিরালা খনে সাগর-ভরদাবাতে হার বে হাবর লবে
থাকা বুবি হার !
কলসী ভাসারে খলে সে কোন রাজার নেরে সে কবে
আসিরাহিল প্রাণ-বর্নার—
বহুদ্র বহুদ্র সে বুব ত ভেঙে চুর ! ভবে ওঠে তবু খাবি
বোবা-বের্নার !
বে চাল ভূবিরা গেছে পাঙ্গ-বেব্রের ভলে,
বে নালা ভকারে গেছে মুক্র সাহারার
ভবু ভারি কারা কাঁবে ! কেন কাঁবে ? কেন কাঁবে ?

উভয় নেলে না কোন বাংল-হাওৱার 🛚

# লবণ-ব্যবসায়ের ইতিকথা

#### **জ্বিসুধীরকু**মার মিত্র

শ্বৰণতীত কাল হইতে ভাৱতবাসী ভাষার প্রবেশনীর লবণ नित्वरे देखाति कविया नरेख: बाक्यवकारत रिकृ बाक्यकारन জোনত্রণ কর সেইজন দিতে হইত না। 'ছন-ভাতে'র জন कान कालाई जावज्यांनी भवव्याराकी दिन मा, मकरनर খাবলখী ছিল। বুসল্থান রাজ্যকালে সভ্রাট্ট পুলার রাজ্য ৰলোৰভে দৰ্বাপ্তৰ 'নিষক-মহালে'র উল্লেখ বেৰিভে পাওৱা बाब अवर के जबदब कांबरण्य बावजीय नवरनय कांद्रवाय क्षत्रिवासित्रिय वाक्षा नवात्वय कर्जुवाबीत्वर शक्षित्रानिष्ठ सरेष्ठ ( Firminger's Fifth Report, vol II )। ভারতের वरना वक्रावर्णव विक्रणी मावक शास अर्वार्थका छैरकृष्टे जनन প্ৰৱন্ত হইত এবং মুসলমান ৱাজছেম পূৰ্ব্বেও হিজ্ঞী লবণ প্রস্কৃতির খন্ন বিশেষ ব্যাতিলাভ করিরাছিল। বে সকল খানে ভাল লবৰ উৎপন্ন হইত না সেই সকল খানে ভাল পৰৰ প্ৰেৱৰের জন্ত কাখীৱী, শিৰ, ভাটৱা প্ৰভৃতি ব্যবসায়ী-রক বছাদেশে আগমন করিতেন এবং এই প্রাদেশের লোকেরা काशिक्षित निकृष्टे जन्म विकास करिया नश वर्ष देशार्कन कृतिक। मानुडी ( हार्ड (नोका ) कृतिहा नहेता वारेनात कर विक्रणी स्टेटल गांकबाटेटलब सिक्डे नवरणी नशी पर्वास छ९-काल अक्षे बाल बनन कहा स्टेशियल : छेरा "निमकीत बाल" বলিয়া অহ্যাণি ব্যাত।

रिक्नी >14 रिक्ति वा >461 मेटीच नवाब दिक्ती-ৱাজ্যের অন্তর্ভ ছিল বলিয়া 'আকবর-নামার' লিখিত আছে। ১৫৯२ बेट्राट्स मामित्रस छेडिया चाक्रमन कटवन : वस्राम দিলীর সম্রাটের অধীন হয়। সেকালের প্রাচীন কাগজপত্তে "হিল্লটী প্ৰবেশ ধৰ্ণদী কালেইবীর অন্তৰ্গত ছিল" বলিয়া দেবিতে পাওয়া যায় (মেদিনীপুরের ইভিহাস)। ১৭৬০ बैद्देश्य नम्ब विविधीन्त देश्यक्षित्व अविकास आरम अवर देश्याक्षम् भीवकानिमाक नारमात स्रायमात निवृक्त करतम । মীরকাশিষ গৈচব্যর নির্বাহের ছত ইট ইভিয়া কোম্পানীকে বৰ্ডনাৰ, বেদিনীপুর ও চইএাম কেলা প্রদান করেন। আধুনিক धननी थ शासना करकारन वर्षमास्य चर्च्य हिन ; ১৭৭৩ ইটাব্যের ১৬ই যার্চ তারিবে রাজ্য কমিটর নির্দ্ধেশাসুসারে হিৰুদী প্রবেশকে হগদী হইতে বিচ্ছিত্ত করিয়া अकड़ मुख्य कारनहेंदी गर्ठम कहा एवं अदर देखांव नांखान वरमब भव ১৮०० बैडोट्स भूनर्काव विक्रमीटक कारमञ्जीत स्थीम कवा एवं। शुरु ३৮७६ ब्रेडीएस श्रमवाद ইহাকে হণলী হইতে বিচ্ছিত্ৰ কৱিয়া নেবিনীপুত্ৰ কালেইৱীয় चक्क क्वा स्व, जनवि देश विविधीशूरवत वरवारे चारह।

সমূত্রকুলবর্তী স্থানগুলিতেই বে কেবলমাত্র লবণ উংশয় কৃষ্টত ভাকা নকে, লবণাক্ত ভূমি কৃষ্টতেও ভংকালে এচুয় পরিষাদে লবণ উৎপন্ন হাইত। ১৮১৯ বিটাক্সের ২১শে আগট ভারিবের 'লমাচার-দর্শনে' এই সহতে একটি সংবাদ প্রকাশিত হুইরাছিল, নিয়ে উক্ত সংবাদটি উদ্ভূত হুইল:

"কাৰী প্ৰবেশে অনেক লবণ উংপত্ন হয় বেহেছুক লে বেশে লবণৰুক্ত বৃত্তিকা আছে লে বৃত্তিকাও কুপ হইতে যে অল উঠান বার সে অল অত বৃত্তিকার উপরে ছিটান বার তাহাতে লে বৃত্তিকাও লবণৰুক্ত হয় ও তাহার উপরে এক অভূলি পরিমিত লবণ অনে সে বেশের অনেক অনিয়ার যে ভূমিতে লভ না করে বৃত্তেন সে ভূমিতে এইয়ণে লবণ উংপত্ন ভরান ও তাহাতে লাভ হয়। হিন্দুহানের লবণের লাভ লোকসান কোশানী বাহাত্ত্রের অবীন। অতএব এইরূপে লবণ উংপত্তি বিষয়ে ইংগ্রতীর এক সাহেব সমাচার পত্রে হাপাইরা এই বিষয়ের জিকর্তার আনিতে চাহিরাছেন বেহেছুক ইহাতে কোম্পানির লোকসান হয়।"

বৰ্ণেশে সাধারণতঃ কাতিক বাস ছইতে চৈত্র যাস পর্যন্ত লবণের উৎপাদন-কার্যা চলিত এবং যে সমুস্ত ক্ষমি কোরারের জলে বেতি হইরা বাইত, সেই সকল ভ্রিভেই ভাল লবণ প্ৰৰত হইত। উক্ত **দ্**ষিগুলিকে 'চহ' বলিত : 'চহ'গুলি খাবার ক্র ক্র খংশে বিভক্ত ছিল, উহাকে 'বালাছী' বলিত। যাহারা 'ধালাড়ী'তে লবণের কার্য করিত, ভাহা-দিগকে জনগাৰারণ 'বলদী' বলিরা অভিহিত করিত। ঐীযুক্ত বোগেশচন্দ্ৰ বসু লিবিৱাছেন যে হিজ্ঞলীয় প্ৰভ্যেক 'বালাছী'তে সাভ খন করিবা লোক নিযুক্ত থাকিবা, গড়ে হুই শভ ভেত্ৰিশ মৰ কবিহা সৰৰ উৎপন্ন কবিত। সৰৰ ইভাৱাদাৱগৰ बरे 'बनने'एव कि है है कि बायन विदा, शदा ভाराविश्यक বেগার বাটাইয়া লইভ। নীলকরদিগের বাঁভ্যাচারের ভার, এই লবণ ইকারাদারদের অভ্যাচারে উৎপীতিত বল্লাগণ ১৭১৩ बैडेास्य मर्छ कर्नश्रवानिश्यव निक्के चारवस्य करवः छिनि नवर्गव कृष्टिय मृत्रा वृष्टि क'तव (यम, करन 'विश्वजी ७ चमनूरकद निमकमहारल ১७,७৮৮ क्य मनश्री वाहादा किम नक वर्षे बिवा बहेबन क्रम नारेएएए, जारावा वीकिया यात ।"

হরপ্রসাদ শালী মহাশর পঞ্চল শভাষীতে রচিত এক-বানি সংস্কৃত পূঁবি ভাবিকার করেন, উক্ত পূঁবিভেও লবন ব্যবসার এবং 'মলছী' নামটার উল্লেখ আছে দেখিতে পাওৱা বার। নিয়ে ভাহা হইতে করেক পঙ্জি উদ্ভূত হইল:

> "কৌচ্যানসকে দেশং গায়ভি দেশবাসিনঃ। সৰ্বানামাক্ষক বন্ধ তিঠুভি ছুৱিলঃ । ৪৮ প্ৰণালী বি নকা ভন্ন সহা বহুতি ছুবিপ। মালংগণা নহুয়াগাং নিবাসং বৃহ্ভি কিল । ৫০\*

ৰুসলমান রাজ্যকালে লবণের ব্যবলার জমিলারবের ছারা পরিচালিত হইত এবং সরকার হইতে বলগী'নণের বেতন- বরণ প্রতি এক শত বব উৎপন্ন সববের উপর ২২ টাকা হিসাবে পারিপ্রমিক বার্ব্য হিল। অনিদারগর্প উক্ত "নলকী"দের হর নাসের বেতন বিতেন এবং বাকী হরনাসের বেতন উচ্ছারা নিজেরা প্রহণ করিজেন ও ভাহাদিনকে কিছু আবাকী ক্ষমি বিনা বাজনার ভোগ করিতে দিতেন। বলা বাহল্য উক্ত আবাকী ক্ষমি অবিন আক্রম কোল করিতে দিতেন। এক শত বন লবণ দেই সমর মাট টাকা মূল্যে নহাজনিদিককৈ বিক্রম করা হইত এবং বরচ বাদে বাহা উদ্ভ থাকিত, ভাহা ক্ষমিলার ও নবাবের উক্তপন্ত কর্মচারিপন প্রহণ করিতেন; 'বলকী'গন ক্ষেত্র বাইত (Fifth Report—Firminger vol II)। সেই সমর প্রধান লবণ ব্যবসারীপন "নালীক-উল্ভক্ষক" অর্থাং ব্যবসারীদের রাজা উপাধিতে ভূবিত হুইতেন।

ষ্ট ইভিয়া কোম্পাণী বিনা ছকে বহুছেলে বাৰিছোৱ क्वबाम शांखं रहेवा क्रबक्षे कृति भाषम क्रांतम । क्वान्नामीव কৰ্মচারীদের বেতম সেই সমর খুবই আন হিল বলিয়া, ভাঁদারা প্রভাবে ব্যক্তিগত লাভার্বে ব্যবদা ক্রিভেন। ভরিদারগণ লবৰ্ণের ব্যবসারে বিলেষ লাভবান হন দেখিয়া কোন্সামীর रेश्टबम कर्षातित्रन जरकाशीम मनायटक वाबा कविता अहे দেশের লবন, তামাক ও সুপারির সহত্তে করেক্ট বিশেষ নিষ্ম প্রচার করেন এবং ক্লাইড ও কাউলিলের অভাত সভারণ ষ্ট ইভিয়া কোম্পানীর বিলাভের ভিরেইরগণের নিষেব সভেও 3964 वृंडोट्स "(हेंडिर अट्रम्भिट्यम्ब" नाटम अक्के वृश्विक-म्राह्म কলিকাভার স্থাপন করেন। কোম্পানীর সমুদ্র ইংরেজ कर्षांवी छेक ज्ञांव ज्ञा इरेलम बदर निश्व इरेन व बरे ৰেশে যত লবৰ উংশৱ হইবে, তাহা প্ৰতি শভ মৰ পঁচাছত্ব টাকা হিদাবে ইংৱেজ বৰিকগণকে বিজ্ঞয় করিতে ছইবে, পরে বৰিক-সভা উহা পাঁচ পত চাকা মূল্যে দেশীয় মহাক্ষমের বিক্রর করিবেন: তাঁহারা উহার উপর লাভ রাবিরা বেশ-ৰাসীকে বিজৰ করিবেন। বহাজনগণ বণিক-সভা ব্যতীত অভ कारावध विकर्त रहेए और जनन जना कर कविएक शाहित्वन मा निवाध निर्देश रहता रहा।

এই নৰতে William Bolts-এই Consideration on Indian Affairs" নামক পুডক হইতে এবানে কিকিং উদ্ভূত হইল:

"The first was the private monopoly in partnership which commenced in the beginning of June, 1765, between Lord Clive, Messieurs Summers, Sykes and Verelst, each one quarter part for purchasing large quantities of salt that was in the hands of private merchants and in August, 1765, the monopoly of inland trade in salt, betelnut and tobacco was established."

বন-বিহাৰ-ইডিভাৰ ক্ৰিণাৰগণের বিকট নবাৰ এক পৰোৱাৰা বাহিৰ ক্ৰিয়া হক্ত কেন বে, বত লবণ প্ৰছত হুইবে ভাহা ইংৰেক ব্ৰিক-স্ভাকে (The English Society of Merchants for buying and selling all the salts, Betel-nut and Tobacco in the Provinces of Bengal, Behar and Orissa) विकार कविएक स्टेरन विज्ञा ब्रुटलको विष्क स्टेरन । नवारना नरतावानाच अरन-विर्मालक देरदाकी अञ्चान निरम्न क्षक स्टेन :

"Until the contracts for salt are settled, no salt shall be made, or got ready in any District; . . . having given a bond, he may then proceed to his business and make salt; but till the bond be given to the Governor and the gentlemen of the Committee and Council, they should make none. Therefore, give your bond and settle your business; and then proceed to the making of salt."—(Bolts' on Indian Affairs).

চণীচন্ত্ৰণ সেন লিখিরাছেন, ইংরেঁজ বণিকাণ এই নিরবাছ-সারে ব্যবসা করার দেশের সর্জনাশ আরম্ভ হয়; চমুর্জিক হইতে প্রজাদের হাহাকার উবিত হয় এবং দেশীর প্রজাসপের কটের লাখন করিবার আর কোন উপার ছিল না। ( বহাছাজা নক্ষুমার )।

#### বোণ্ট সাহেব লিবিয়াছেন:

"We now come to consider a monopoly the mest cruch of its nature, and most destructive in its consequences, to the Company's affairs in Bengal, of all that have of late been established here. Perhaps it stands unparalleled in the history of any government, that ever existed on earth, considered as a public act. . . ."

মবাবের পরোরামা অন্তরারী দেশের কমিবারগণ, কলিকাভার ইংরেক বণিক-সভার লবণ প্রভতের কর্ম ববারীতি ব্চলেকা কেন , উক্ত ব্চলেকার লিখিত হিল যে বণিক-সভা ভিন্ন আমি কাহাকেও লবণ বিক্রর করিব না, বদি প্রমাণ পাওরা যার যে ইংরেক বণিক-সভা বাতীত অভ কাহাকেও লবণ বিক্রর করিবাহি, তাহা হইলে প্রতি রণে পাঁচ চাঁকা হিসাবে করিবানা দিব। থিয়ে উক্ত সুচলেকার ইংরেকী কন্থবাদ উদ্ধুত হইল।

"I will on no account trade with any person for the salt to be made; and without their order I will not otherwise make away with, or dispose of a single grain of salt; but whatever salt shall be made within the dependencies of my samindary. I will faithfully deliver it all, without delay, to the said society and I will receive the money according to the agreement which I shall make in writing and I will deliver the whole and entire quantity of salt produced and without the leave of the said Committee, I will not carry to any other place, nor sell to any other person a single measure of salt. If such a thing should be proved against me, I will pay to the Sarcar of the said society a penalty of five rupees per every maund."

—(Bolts on Indian Affairs)

লাইতের প্রতিষ্ঠিত বণিক-সভার কার্যপ্রশাসী ও সবণের প্রকচেটনা অধিকার বিলাতে কোন্দানির ভিরেটনাপ অস্থ্যোরদ করিলেন না, বরং বিরক্ত ক্রিরা তাঁহারা কোন্দানীর কর্মচারিগণকে উক্ত কার্য্যে এতী হইতে নিবেব করিলেন। ক্রিড এই ব্যবসার বারা লক্ষ্য লক্ষ্য উপার্জন হইতেহে বেবিরা, কলিকাভার ইট ইভিরা কোন্দানীর গর্ভার এবং কাউলিলের সভার্ক্য কিছুতেই সবধ-ব্যবসার পরিভ্যান করিলেন না। বিলাভ হইতে বারংবার লেবা লক্ষ্যে, বর্ষন ভাঁহারা এই লাক্ষ্যক ব্যবসা পরিভ্যান

করাইতে পারিলের না, তথন উচ্চারা প্রতি বণ লবণ পাঁচ টাক। হিসাবে বিক্রের পুরিবর্তে হুই টাকা করির। বিক্রের নির্কেশ বেন। কলিজাতার বনিক-সভা অধিক্রে বিল্যান্তের কর্তাবের সভঃ করিবার জন্য, যত লবন বিক্রের হুইবে, তাহার উপর শতকরা পরিমিশ টাকা হিসাবে রাজল বেওরা হুইবে বলিরাও নিয়ন করেন। ১৭৬৬ প্রীপ্তাকে একমার লবনের মান্তল হুইতে ১৩ লক্ষ টাকা কোম্পানীর আর হুইরা-ছিল। ১৭৮৯ প্রীপ্তাকের ওরা ক্ল আইমবারা বেশের ক্লম্যাবারনের পক্ষে লবন প্রস্তুত করা নিষিদ্ধ হয়। নিরে কোন্ বংসরে কোম্পানীর কত রাজ্য একমার লবন হুইতেই পাওরা গিরাছিল, ভাহার একট তালিকা প্রস্তুত্বন।

১१৮० वै: 80 नक डीका।

১৮১० वै: ১ (कांडे ১१ नक २८ शंकांत १ मेछ डीका ।

১৮১६ बै: ১ (कांडे ६० नक डीका।

১৮২১ वै: ১ (कांडे २৮ लक ८० शंकाद ৮ मेल डीका।

১৮२६ वै: ১ (कांडे ४৮ नक ৮६ शकांव डीका ।

১৮২৯ बै: २ কোট ৫৮ লক ২০ হাৰার চীকা।

रिक (James Augustus Hickey) मामक अक नारहर ১৭৮০ ইটাবে ভারতের প্রথম সংবাদপত্র, "বেদল গেছেট" ভলিকাভা হইতে বাহিত্র করেন। তিনি সাবারণ শ্রেণীর লোভ হইলেও নিৰ্ভীক ভাবে প্ৰভ্যেকের বিক্লছে লেখনী ৰাৱৰ করিতেন এবং লবৰ ব্যবসায়ীকের বিক্লছেও দলিক প্ৰভাৱের হইয়া লিখিতে কৰ্মও কৃষ্ঠিত হইতেম না। উক্ত ভাগভের প্রথম পৃঠার লেখা থাড়িভ 'A weekly political and commercial paper open to parties but influenced by none.' (रहिश्च जनर्बन বাৰনাৱে কোট কোট টাকা অৰ্জন করেন: তিনি **एडिश्नरकथ जाकाव कतिरछ दिवारवाय करवन मार्ट ।** এভিদ্বনী হিসাবে 'ইভিয়া হিকিয় 'বেচল গেছেটেয়' পরিচালক বিঃ পিটার গেকেট' বাহিত্ব হয়। **छेरांच** রীভব্নে হেটিংস সহারতা করিতেন এবং রীভ সাহেবও ছেটংসের সহিত লবপের ব্যবসা করিতেন, বলিরা **হিকি** সাহেব ভাছাকে 'বেদল গেছেটে' শিচার রীভের পরিবর্ছে ( Peters Nimuk ) जानेग (क्य । वर्षात्रांका नक्ष्याद्वव জাল বোক্তবার প্রধান লাক্ষী ক্রলট্টবীন বিজ্ঞলীয় লবণের ইভারাদার হিলেন। হিকি এবং নক্তরারের ভালার ভাতি र्देश. रहिरम्ब यक्यदारे त यान वाक्यमा मनक्यादार বিক্ৰছে আনীত হয় এবং বাহার খত ভাহার দাঁসি হয়, ইভিহাস পাঠকাণ ভাহার ইভিন্নত সবিশেষ অবগত আছেন। হিকি সাহেৰ নক্ষ্মায়েছ কাসীয় পর 'বেচল গেছেটে' লেখেৰ বে খাল করিবার খত ক্লাইতকে 'লর্ড' উপাবি বেওরা হর, किंद चरडेठाक वर्णांद्राच वन्यवर्गात्वत्र मंत्री रव । निष्ट रिकिट ক্ৰাওলি 'বেদল গেজেট' হইতে উদ্ৰভ হইল :

"Clive was made a peer in England though he

committed in Bengal the same crime for which we hanged Maharaja Nanda Coomer."

ই ইছিলা কোম্পানীর গবর্ণর হইতে আলভ করিলা কাইলিলের প্রত্যেক সভ্যকে আক্রমণ ও ভাহারের কার্ব্যাহি সমালোচনা করিবার কত হেষ্টাংস হিকি সাংহ্বকে হাছিলেন না; তিনি ভাহাকে কারাক্রম করিলেন। কলিকাভাল ক্রেনর মধ্যেই সভ্যমিষ্ট হিকি সাংহ্ব পরলোক্সমন করেন। ১৭৮২ প্রীটাকে ভাহার কারণ বহু হইলা বার। হিকির প্রতি হেষ্টাংসের নিপ্রহের কারণ সহতে Original Inquiry নামক প্রহে বাহা লিপিবছ আছে, নিদ্ধে ভাহার হন্ত উদ্ধত হইল:

"It cannot be doubted that the files of Hickey's Bengal Gazette must throw singular light on the nature of the contentions which then agitated the public mind and the character of the men who then held the highest stations; not without access to such can a just view of that period ever be obtained."

১৭৮০ बेटांच भरास वाकत स्विमात्रभव विवक-अस्तादक बुहालका क्रिया जरन श्रेष्ठण करिएलम अन्य अक्षे निर्मिट्ट चारत ভাহার। কোন্দানীর কর্মচারীদিগকে লবণ সরবরাহ করিভেম। প্রকতপক্ষে সেই সময় ভমিদারগণই লবণের ইঞারাদার ছিলেন। মাই ইভিয়া কোম্পানী বিক্ৰীত লববের উপর শতকরা প্ৰজ্ঞিশ ছাকা হিসাবে কমিশন পাইড। উক্ত বংসৱ লববের কবিশন হইভেই কোম্পানী চল্লিণ লক্ষ টাকা পাইরাছিল। লবণ ব্যবসারের এইরূপ লাভ দেবিয়া ১৭৮১ बेडोट्स मेडे देखिया काम्मामी अकड़े जवन-विचान (Salt-Department ) बिर्णिश करवन अन्य कनियांत्रियिक जनन প্রস্তাভাষ্ট করিল করিল নিজ হতে ইংরেজ কৰ্মচানীকের ভত্বাবধানে লবণ-প্রস্তুতের কার্য্য আরম্ভ করেন। इननी, जमनूक, रिक्नो ७ इडेबार्ट क्लेन्नानीय नवर्पय अरक्षे विंग अवर कार्क्य शांत गवन-अरक्के (Salt-Agent) উপাৰিবারী ইংরেজ কর্মচারী নিযুক্ত হন এবং ভাঁছারা কোম্পানীয় লবৰ ব্যধসায়ের ভড়াববান ব্যতীত উচ্চ ছানেছ কৌৰ্যাৱী ৰোক্ত্ৰা বিচাৰ ও বাজ্যবিষয়ক কাৰ্যাহিও নিৰ্কাহ কৰিতেন। একেটগৰ কোন্দানীয় লাভের উপর শভকরা দশ টাকা করিবা করিশন পাইতেন, পরে ভাতা করিবা তিন টাকা, শেবে আড়াই টাড়া করিয়া নির্ছায়িত হয়। লবণ-अक्टिनिरनंद स्थीत क्य क्विया छरकाल वह निक्छि ৰাঙালী প্ৰভুত অৰ্থ উপাৰ্জন কৰেন; উচ্চালা সাধাৰণতঃ (महाकारो, दरवानी, द्वाने अकृष्टित कार्य) कतिएक। এই সহতে বাজনাবাৰণ বস্থ লিখিবাছেন-"ইনি চুঁচুড়া নিবালী প্রসিদ বাবু শীলমণি হালদার মহাশরের পুর। ভংকালে তাঁহার পিতার ভার কেহ বাবু ছিলেন না। বাবু বারকানাব ঠাকুরের পর টরেল সাহেবের আমলে নীলরত্ব বাবু লণ্ট-বোর্ডের বেওয়ান হইয়াছিলেন।" ( সেকাল আর এড়ান, g. 60 )

অবিধানগণকে লবণ প্রস্তুত করিতে বঞ্চিত করা হর বলিরা, কোম্পানী কতিপূরণ-ধর্মণ উংপন্ন লবণের পরিমাণ অহুসারে তাহাদের একট মাসহারা হিবার ব্যবহা করেন। প্রতি বংসর উক্ত মাসহারার টাকা পরিবর্তিত হইতে থাকার, ১৭৯৪ ইটাকে ইট ইতিয়া কোম্পানী একট নির্দিষ্ট করা বার্ব্য করিরা সমত 'গালাড়ী' করি বন্দোবত করিরা লন। কোম্পানীর দের 'গালাড়ী' বাক্ষনা ক্ষিদার্যদ্বের রাজ্য হইতে বাদ বেওরা হইত।

এই সমতে ১৮২> বীটামের ১৯শে সেপ্টেণর ভারিবের সমাচার দর্শণ পত্রে যাহা লিখিত হইরাছিল, ভাহার কিরদাংশ উল্লভ হইল:

"১৭১৩ সালে লৰ্ড কৰ্বন্তৰালিস সাহেব ৰোক্ত্ৰত্নী বন্দোবন্ত ক্ষিলে নিম্ক দপ্তবের কার্ব্য বোর্ড তেতের সাক্ষেত্র জাবে रदेन कि वेषेत्रां में बादक मार्क्तिया वाता नियाकत সরবরাছকারী কর্ম্ব বন্ধার পাকিল। বোর্ড জ্রেডের সাম্বেরা য়খন লবপের সরবরাহের বিষয়ের তথারক কবিতে লাগিলেন ভৰন তাঁহাৱা দেবিলেন যে নিমকপোঞানীর কার্য্য ছই প্রকারে চলিভেছিল। প্ৰথমতঃ আজোৱা নামক(১) মলদীদের ধার। ৰব্যদন্তিতে নিম্বক প্ৰস্তুত করা যাইতেছিল বিভীয়ত: ঠিকা মলপীরদের ছারা ইচ্ছাপুর্বাক বন্দোবন্ডের ছারা নিমকের সরবরাহ হইতেছিল। তাঁহারা আরও দেবিলেন যে ঠিকা মলনীরা লবণের নিষিত্তে যে মূল্য পাইতেতে ভাতার কেবল অর্থেক মূল্য আজোৱারা পাইতেছিল, এবং এই অন্ন বেত্তমে ভাহাদের অভিশয় কঠে প্রাণবারণ হইভেছিল: ঐ সাহেব-দিপের কর্ণগোচর হইল বে হিক্লী ও ত্যোলুকের নিমক মহালে ১৩৩৮৮ পরিজনসমেত আন্দোরা মললীরা আহে এবং ভাহার। হই ভিন শত বংসরাববি এইরুণ ক্লেশ পাইভেছে। विरावक्षाकृत्रवावस्त्र त्वार्षित्र नार्करवृत्ता हेका विकालेशन रह ইছার পূর্ব্বে অন্ধ মূল্যে নিষ্কের সরবরাহকরণের নিয়নে 🗳 আন্ধোৱারা দকীর ভূমি নিভ্ররণে অধবা অভিশয় সূম ৰাজনাৰ ভোগ করিল কিন্ত কালজ্ঞমে ভনিগারেরা নানা ছলে লবণের মূল্যের কিছু বৃদ্ধি না করিয়া সেই সেই ভূমির পাক্ষা मन्पूर्वस्य के द्वारा मननीत्वत्र शास नरेख नामिलन।

বোর্ড জেভের সাহেবর। ইহা অবগত হইবামাত্র আক্রোরার-বের লবপের মৃল্য টিকা মললীদের লবপের ভূল্য করিতে পবর্থ-মেউকে পরামর্শ দিলেন এবং অবিলয়ে পবর্গমেউ ভাষাতে সম্মত হইলেম। মিমজের একেউ সাহেবর। পর্বশ্যেউকে আরও এই বিবেদম করিলেম যে টিকা মললীরদের ছানে যে হারে লবণ লওরা ঘাইতেছে ভাষাতে ভাষারদের উপযুক্তরণে ভক্ষাণ হয় বা। ঐ সাহেবেরদের পরামর্শক্রমে মিরকের চুক্তির বৃদ্য শতকরা ৫৫ টাকা অবধি ৭৭ টাকা পর্যন্ত বৃদ্ধি করা গেল। নিমকের বৃদ্য এইরপে বৃদ্ধি হইলে একেট সাহেবেরা অধিক লবণ প্রস্তুত করাইটিত লাগিলেন এবং এইরপে নলদীর-দের উপকার এবং সরকারেরও লাভ হইল।"

( जरवावनात्व (जकारणव कर्षा--- )य ४७ )

১৮০৬ এটাজে সরকারের 'পার্লামেন্টারী-ক্ষিত্রী' ভারতে লবণ এছতের কারবারগুলি ভূলিয়া দিয়া লিভারপুল হইতে বিলাতী লবণ আহদানী করিবার প্রভাব প্রহণ কল্পেন (ultimate displacement of the Government manufacture by imported salt)। ইহাৰ সাভাপ বংসৰ পর, ১৮৬২-৬৩ এটাবে বলের ছোটলাট ভার সিলিল বিভাষের সমরে ইংরেজ সরকার এই দেশে লবণের একচেটরা ব্যবসায় পরিত্যাপ করিয়া, বিলাভী লবণ ভারতের সর্বন্ধে বিক্রম্ব করিছে चावस करवन । देश्रतकामत नवर्गत अकातकीया वावमा विविध গেলে কভিপর দেশীর ব্যক্তি সরকারকে লবণ-তর ছিলা किश्वमिन अहे राजभाव हानादेशदिरम्भ, किश्व द्वार्यस विश्व সরকার এই দেশে প্রস্তুত লবপের উপর অধিক কর এছৰ করার বিগাতী লবণের সহিত প্রতিযোগিতার কেইই শেষ পর্যন্ত ইকিয়া থাকিতে পারেন নাই। পরিশেষে আইন কবিষা লবণ প্ৰস্তুত বহিত কবিষা দেওৱা হয়। হান্টার লাহেৰ তাহাৰ Statistical Account of Bengal (vol. III) নামক গ্ৰছে লিবিয়াছেন যে লবণের ব্যবসায়, এই দেশ হইতে উঠিয়া যাওয়ার এই প্রদেশের অধিবাসীদের 🖳 সৌভাগ্য, সুর্ব ७ वाक्ष्मा चानकाराम विवृद्ध व्हेशाविन ।

এই সমতে বাকল্যাও সাহেব যাহা লিবিয়াহেন, নিয়ে ভাহা উদ্ভ হইল:

"One of the most important administrative changes of the year 1862-63 was the abandonment by Government of its salt manufacture and its final disconnection with the so-called monopoly. . object in view, in deciding upon the course to be adopted in the manufacturing season of 1862-63, it was determined that the Chittagong salt agency should be closed; the Hooghly and Tamluk agencies were united under one officer: the manufacture of karkach solar evaporated salt was stopped; and of boiled salt, the manufacture was limited to 9.00,000 maunds. The manufacture of the season was ordered to be closed as speedily as possible, and it was announced that it would not be respected in the current year.

Government thus definitely abandoned a system which, from its first establishment by Lord Clive, in the shape of a pure monopoly, had lasted various modifications almost a century . . ."—(Bengal Under the Lieutenant Governors).

মহাত্মা গাড়ী ১৯৩০ এটাকে লবণ-কর রহিতকরে ভারত-বর্ষে সভ্যাঞ্ড আরম্ভ করিরা কারাবরণ করেন ; সবল ভারত-বর্ষে ইহা লইরা ভূষুল আন্দোলন হয় এবং আইন অবাত পূর্বাক লবণ প্রভাত করিরা সহস্র সহস্র ব্যক্তি কারাবরণ করেন । লবণ প্রভাত-করিতে বরত কিছুই লাই বলিলে চলে, অবত ইংরেজ

<sup>(</sup>১) 'আন্দোৱা' অৰ্থাং বে সৰ তুলীকে বিনা পাৰিপ্ৰনিক্তে লবণেত্ব কাৰ্ব্যে বেগাৰ্ত্ব বাটাইৱা লওবা বইত।—লেপক

সরকার ভারতবাসীকে আইন করিরা লবণ প্রস্তুত বা লবণের কারবার নিবিদ্ধ করিরা দেন। লবণের পাইকারী হর প্রতি নণ পাঁচ টাকা প্রবং প্রথমেন্ট প্রতি মণে দেক টাকা হিসাবে ট্যাল্ল আলার করিয়া সম্প্র ভারতবর্ব হুইতে প্রায় আট কোট টাকা রাজ্য লাভ করিতেন।

বর্ত্তনাদ ১৯৪৭ সন হইতে কংগ্রেসের নির্বেশালুয়ারী প্রাচীন

বিশু রাজ্যকালের যত লবণ-তর ভারতবর্থ হইতে বহিত হইবাছে। লবণ-তর বহিত হইলেও লবণ-লির পূর্বেশ বেরণ সমূহ ও উন্নতিশীল ছিল, লেইরণ এই শিরকে সমূহিশালী করিতে ভারতবাগীকে সচেট হইতে হইবে, তবেই ভারতের আবিক উরতি হইবে এবং বেশের প্রকৃত কল্যাণ সাবন করা হইবে।

### অন্ধকারের মানুষ

#### ब्रे धर्मानाम मूर्यालाधाय

নানী চলতে চলতে পৰে থেমে ইছিল। পৰের ছ্-বারে লব্জ-বন লতা থাত্তবে কাকে কাকে ই-টুনি পানীর কিচির-বিচির শব্দ, হারা-বন বনপথে কলনী কাঁথে কুলবগুর জীর ভাতর চাহনি, অভারমান হর্ষোর শেষ তির্বাক রন্মির লোনালী আভার লারা নাঠিছ করণ, অরথ গাছের নীচে দিরে কিরছে লারা হিমের ক্লান্ডি আর অবলাছ নিমে উর্বাবী বেল্ল—সঙ্গেরাণালহেলে আর ভার আছ বাঁশীর মিঠে আওয়াছ। নানীকে বেন কোন এক স্বপ্নের হুগতে নিমে বার। মন বেন পানা মেলে অপ্রাভ বেলে হ্রছ বোড়ার মত বর্ষাহাছা হরে চলে। উঃ—আছ কভারিন এ পথ মাড়ার নি সে—সেই মা নারা বাওরার পর বেকেন্দ্র নানীর হুঠাং বাক্ষে মনে পড়ে বার।

সেই ভার মা—। টুকটুকে রঙ —হোটবাটো বাজ্যট।
বক্ত ভাল মাজ্য হিল মানীর মা। ঠাকুরমা ভাকে বক্ত মা
ধানন দিন বুব কমই হিল। মারের হিল বক্ত শাভ বভাব
—বার সব সময়ই এক মুব হাসি।

ঠাকুলমা বলত—বেৰেলাকুৰেল আবার অত বি বি করে বাসি কি গো—অনন বাসির বুবে আগুল। তিন-চার ছেলেল না ব্রে আবার বাসতে ইচ্ছে বুর, সজা করে না।

সভি মানীর মারের ওটা হিল বভাব—না হেলে সে এক বিনিটও বাকতে পারত না। তারপর এক বিন সহ্যার অবকার হবে এল। পাবীরা তর পেরে কিচিরনিচির করতে করতে আপন আপন বাসার কিরল—হ্-একটা বিঁ বিঁ পোকা ভাকতে আরম্ভ করলে, তুলসীতলার মাটর প্রদীগটা হ্-এক বার নিট নিট করে নিবে গেল, তর্ মানী মারের সাড়া পেলে না। তরে মানীর মুব শুকিরে গেল—নানী ভাকল—
হা—হা—

ঠাকুৰৰা বললে—আঃ মন, বেৰেন্ন চং ধেৰ না—সভ্যেন্ন নমন অমন বলা বেকে ঠেচাছিল কেন লা—না কি বৰেন্ন বাচী নিৰেহে নাকি—না আঁচুক বলে—

७--- जारे (जा, नानीत मतन दिन मा--- जानात जात जारे

হবে। রাজি জনশং বাছল। আঁত্ত ব্রের আশেপাশে বানী ছ-চারবার বোরাকেরা করে নিরে ভরে পড়ল। ভরে তরে মানী কেবলই ভাবতে লাগল মারের কথা— মা ভার বর্ষার ছটকট করছে। মারের এই কটটা মানীর মনে ভরানক লাগল — কিছ উপায় কি।

রাত্রি অনেক। হঠাৎ মাণীর ঘুম তেঙে পেল গোলবাল আর কারার চাংকারে। কি ব্যাপার—হঠাৎ মানী ঠাওর করে উঠতে পারল না। তাদের বাজীতে এমন কি বিপদ হতে পারে—যার জন্য চাংকার আর কারা আরম্ভ হরেছে। তবে কি তার ভাই হরে মারা পেল—হবেই বা—কিছ ঠাকুরবার চাংকারে তো সে রক্ম মনে হর না—ও মা তুমি কোবার পেলে না—এ কারা তো সাধারণ নর। মানী চোব বৃহে বাইরে সিরে ইাড়াল।

ভার পর বানী বা দেবল তা আর দে জীবনে কোন দিন
ছুলবে না। বাইলির ওপরবাকে ভার ভইরে রেবে বাবা
বাবার হাত দিরে পালে বলে। সিঁবিতে সিলুরের রেবা
ভবনও লাল আওনের নত স্পষ্ট—বুবে সেই প্রশাভ হানি।
ননে হর নরবার আবে হেলেছিল, নিটোল গোল বুবের
দিকে চাইলে মনে হর —কবা বুবি ভার ভবনও বহু হয়
নি, নিপ্তাভ হুটো লাল টুক্টুকে ঠোঁট, নাবার একরাশ এলো
কালো চুল—পরনে লালণাভ শাভী—পারে আলভার রেবা।।

মানী এক মিনিট চুপ করে হাছিবে ছিল। তার পর বা—বাপো—বলে বাবের বুকের ওপর বাঁপিরে পকে কড কারাই কেঁদেছিল—কিছ তবু তো তার বা—ওর এত কারাতেও সাভা বের মি, তবু ঠারুররা ওকে বারের বুকের ওপর থেকে তুলে নিরে গিরেছিল। তারপর কারা বেন তার বাকে কোবার মিরে পেল—কোবার তারা রেবে এল আর জীবনে কোন বিন নে বাকে বেবতে পেল বা—বা আর তার তাকে কোন হিনই সাভা বিলে বা। বে বা তাকে এত তালবাসত সে বা তার কোবার সেল—কেব পেল—এ প্ররের কোন উল্লেই কেউ কোন হিন বিলে বা।

বানীর লে নব কথা ববে পড়লে আৰু আবার নৃত্য করে কাঁবতে ইআ হয়। নেই যে যা তার বারা পেল—তারপর বেকে বানী আর কোন দিন একলা এই রক্ষ তাবে গাঁরের পথে বার হর নি। বা বারা যাওরার পর থেকে ঠাকুরমা নব নমরে বাতনীকে চোবে চোবে রেবেছেন, কোনবানে বাইরে বিনা কাকে বেড়াতে বেতে দেন নি। তারপর এক দিন সে আগলও ত তাওল—বানী তবন বেন পড়ল আরও অতল নমুত্রে। বা বারা যাওরার পর বেকেই বাবা তার নেই বে বিহানার গিরে ওল, আবও সে তাল করে নেবান বেকে আর উঠতে পারল বা।

ভাই আছ বানীকে অনেত বিন পরে বাইরে বেঞ্চতে হ'ল। বাপ তার প্রাণারী করেক যান বরে। আছীর বছু বা পাছাগছলী কেউ একবার ভূলেও এদিকের হারা নাছার না। তথু প্রানের বুড়ো কবিরাছ দরা করে রোজই একবার মানীর বাবাকে কেবে বান। তই একট নাম লোকের কাছে যানী কই, চিরক্তজ্ঞ। বাবার সলে কবিরাছ-কাকার ছেলেবেলার বছুছ। তাই আছও সেই বছুছকে জটুট রেবে কবিরাছমণায় কোন কোন দিন দিনে হ্বারও আসেন, তাল করে দেবে বান, ওয়ুব দেন—পথ্য দেন। তথু কি তাই ? যানী দিনরাছ বর্ণন একা একা বাইরের আলো আর বাতাসের সলে কথা করে আর হাত নেকে আদর করে লাভ হরে পড়ে তব্দ তাকে একটু সল্ল দিরেও ত কবিরাজ-কাকা কম আনক্ষ দান করেব না ? সারা দিন একা একা একটা পথ্যাশারী পল্প লোককে নিয়ে মানী কোন্ আশার আর কোন সাহসে বাঁচবে।

মানী কবিরাজ-কাকাকে ভাকতে গিয়েছিল। এক একদিন বৰন কবিরাজনপার বাইরে কোৰাও বান তবন মানী ভাবি একা আরু অসহার বোব করে। তা ছালা বাবা আজ্ কেমন বেন বেদী রকম ইাপিরে উঠেছিলেন, বোব হয় অসুবটা বেভেছিল। একটানা একদেরে এভাবে বাবা ভার বাঁচবে না। বাইরে অক্স আলো এবং মুক্তির হাওয়া আরু ভারই সলে জীবনের উপভোগ্য সব কিছুকে পিছনে কেলে একটা রাজ্য কভ দিন এ ভাবে বাঁচতে পাবে ?

বেলা পড়ে আসতেই ৰামী ওবুধ বাইরে বিবেছিল বাবাকে। ভারপর ওবুধ বাওরা শেষ হলে বুবটা যামী সম্নেহে যাবের যত করে আঁচল বিরে যুদ্ধিরে বিরে বলেছিল—এবারে তুমি একটু বুমোবার চেটা কর বাবা, আমি ততক্ষে তোমার বালিটা আল বিরে নিরে আসি । মানী কেবল বাইরে বাবার করু পা বাভিরেছিল—উ ই মাল, তুই বাস নে, আমার কেলে তুই কোবাও বাস দে বাল্—হেলেনাছবের মত বাবা ভার আঁচলটা টেনে বরেছিল। মাল্ল ভানে বাবা এ ছক্ষ-ছেলেনাছবের মত আবলার সময় করে।

ষানী পিছৰ কিবে হাঁড়িছেছিল। এ কি, বাবা বেদ ইাণাছে, কি হ'ল। চোৰ হুটো বেদ তথ্য পেৰে বড় হয়ে উঠেছে— ৰূপ দিয়ে ভাল কৰে কথা বেলছে না। 'কি হ'ল বাবা' বলে নাছ কিলে ভালাল। বাবা ভাল হ'বাতে নাছকে আঁকড়ে বলে—নাছল একটা হাত বাতে নিলে বুকে চেশে বৰল। বাছ দেবেছিল বাবার বুকটা সন্ত্রের মত ভোলপাড় করতে—ভিভবে বেল কিলের একটা প্রচণ্ড বছতে।

'শ্ৰীষ্টা বাৰাণ লাগছে, ক্ৰৱেজ-কাকাকে ভাকৰ বাৰা ? ভূষি একটু বাক আমি উাকে ভেকে আমি।' আছে বাছ বাৰায় বুকে হাভ বুলিয়ে কবিৱাক কাকাকে ভাকতে নিৰেছিল—

কৰিবাদ কাকা বাড়ী নেই।—নাস্থ বাড়ী আসতে নিজেকে বাডার বাবে বেন হারিরে কেললে। বাইরে মুক্তির এত কোলাংল, এত আনন্দ নানীর কাছে অনেক দিন পরে মূতনের বাদ এনে দিলে। ভূলে গেল কবিকের কচ বাবা ভার বিহানার পড়ে, ভূলে গেল ভাকে এগুনি বাড়ীতে কিবতে হবে। বাঁচাছাড়া পাবীর বভ আনন্দে ভার করনাকে অবভ আকাশের মাবে হেডে দিলে। অবাব বুজ্ঞ হাওবার বানিকটা হাঁপ হেডে বাঁচল বেন।

কোণার গিরেছিলে মাস্থ ? মানী চকিতে কিরে হাঁড়াল।

"ওঃ! আগনি। কবরেজ-ডাকা, আনি এক্নি আগনার বাডিতে সিরেছিলান—হঠাং বাবার অন্ত্রতী বেন বেডে উঠেছে। উন্ধ্ থাইরে বেওরার পর হঠাং কেনন যে হরে সেলেন, চোথ বুব লাল হরে একেবারে আড়াই হরে গেলেন। আমার কাপড়টা টেনে বরে বললেন—'আমাকে ভূই একলা কেলে কোথাও বাল নে বাছ।' ভারপরে আমার হাভটা নিরে বুকে চেপে বরলেন। দেখলাম বাবার বুক্টা বেন বছকড় করছে, কি হবে কবরেজ-কাকা, বাবা কি ভবে বাঁচবে না"—মাস্থ ছোই বেবের বভ হাউ হাউ করে কেদে

আবে না না—কিছ ছু তর নেই মাগুমা—তোমার বাবা ছ্যিনেই সেরে যাবে, তর পাছ কেন। হিঃ, কাঁধবার কি হরেছে—তুমি কিছু তেবনা মাগুনা, সব ঠিক হরে যাবে। বুজো মাগুম কিনা তাই অপুবটা চটু করে সারছে না—মইলে অমন অপুব ত আমাধের ছবেলা হর, কিছু তেব না তুমি। এড অলে তর পেলে কি চলে—তুমি বাভি বাও মাগুমা, আমি এবনই বাছি। অনেক চুর বেকে এলাথ কিনা, তাই বাভি বা সিরে ত ভোমার ওবানে বেতে পারি না—কিছু তর নেই, তুমি যাও—কবিরাজ-মণার আজে পিঠে হাত বুলিরে বিলেন।

আপনি ত জানেন কৰৱেজ-কাকা---আমার আর কেট নেই বাবা হাড়া। আজ বহি বাবা নারা বান তাহলে আমি কোবার বাব---আমার বে আর কেটই নেই, আমি বে একা।

কিছু তথ নেই বা---সৰ টিক ব্যে বাবে, তগবান আছেন, তাঁকে তাক, তিনিই লব ব্যবহা কথবেন। আপনি ভা হলে ভাছাতাছি আহুন কাকা—আমি বাই দেবি বে বাবা হয়ত এডক্বে—নানী ভয় ভয় কয়ে পা চালিয়ে বিল বাভিয় দিকে।

বালীর বাছি পৌছতে পৌছতে সন্থা থনিরে এল। সারা আকাল আর বাতাস ভূতে রঙের বেলা, নিগন্তপ্রসারী বাঠ শুরু সবুজের থতার উলয়ল করছে—বাকথান বিরে নিরে বেঠো পথ আর আল। নীল আকাশের বুকে শারা পাথা বেলে রাজ্বালের বাক—বুজো অথপ গাছে পাইবের কিচিরনিচির, চারধিক থেকে থনিরে আসা আলোর বারা মানীকে বেল আনেক দুরে টেনে নিরে বার—হংগ পুর্থের বাইরে। বানীর রনে হর এগুনি নামবে আকাল শুকে অনকার, এত হাসি আর এত আনক-কল্লোল সব বাবে বুছে। এখনি এক অনুকারে তার যা গিয়েছিল পালিরে চিরক্তরের মত কাঁকি বিরে। তারপরে চলবে এই এক্তবের আর একটানা রাজি।

নানীর চমক ভাঙল। বাবা হোট বেণের মত হামাওছি বিরে চৌজির নীচের বিকে চলেছে—নাত্ময নর, বেন বিশীর্ণ ক্যাল। মানী একরকর কৌডেই বাজিল—কেন কিলের ক্ষত বাবার এত ছঃব এত কট্ট—কিছ কি বেন ভেবে নানী ব্ঠাং বেবে গেল। বে মাত্মটা আপনা বেকে পাল কিরে ভতে পারে না—সে মাত্মর কেমন করে হামাওছি বিরে চলেছে।

ৰানী বেদ নিকের চোধকে বিধান করতে পারল না—বাবা ভার চৌকির নীচে গিলে বানীর ভাতের ধালার চাকা ধূলে সর্ব্ধালী বৃত্তা নিরে হ্হাতে থেতে আরম্ভ করেছে। একর্ঠো ভাভ পাওয়ায় ভার বাবা বেন অর্ভ পেরেছে। পরন উল্লাসে থেবে চলেছে হুঠোর পর মুঠো। ভাভ নর, এ বেদ অয়ত—হুভিন্তের ক্থা নিরে সে থেতে ক্লক করেছে, বানী ভয় পেরে গেল।

বাবা! ভূবি ভাত খেলো না বাবা—ভা হলে ভোমার অনুধ সারবে না বাবা—। মাছকে থেখে ভাল বাবা হঠাং বেন চমকে উঠল। মুখের ভেতরে ভাভ, বললে—ভূই চুপ কর্ মাছ—আৰু আন ভূই কোন কথা বলিগ নে—উ:, আন কভ বিন এই ভাবে না খেলে থাকৰ বল্ভ মাছ,—আমান ভূবা কি বিল্লে থেটে। তথু একটু বার্লির জল—ওতে বে একটা ছোট নিভরই পেট ভারে না।

ভৰ্নো ভাত ভূমি খেতে পাৰবে না বাবা---ভোমার পলার

আটকে বাবে—তোষার অহব আবার বাড়বে—মাছ ভাডাতাড়ি বিবে ভাতের থালাটা সরিবে বিলে। তার বাবা অসহার
বিশুর বভ ক্যাল ক্যাল করে তার বুবের বিকে ভাকিরে
বেকে শুরু বগলে—'বভ্চ ক্লিকে মাছ—ছুই আবাকে আরও
চাটি ভাভ দে।' বেবে ভাভ না পেরে হাউ হাউ করে কেঁকে
কেলল বুড়ো।

ৰাছও বাবার বুকের ওপর বাঁপিরে পড়ল। ভার পর ভাকে কল থাইরে আবার বিহানার ওইরে দিরে বাইরে অবকারে এসে হাভাল।

আবার সেই অহকার—আবার সেই একাকিছ। এই তাবে একা একা—গুরু একটা পজু, চিররণ ক্লানকে নিয়ে তার সারা জীবন কাটাতে হবে—বাইরে এই আলো আর এই বাতান কোন দিন মাছকে তাকবে না খেলা করতে। এই আনন্দমর পৃথিবী থেকে মাছর চিরনির্ম্বাসন। রাত্রির পর দিন আগবে—গাছে আবার কুল কুটবে, আবার পাবীরা গান গাইবে—কিছ মাছর জীবনে কোন দিন আর আলো আগবে না। চির অহকারের মাছ্য মালু, অহকারেই চির-দিনের মত তার সকল আনন্দের সমাধি ঘটবে।

ৰানীর হঠাং কেন বেন যদে পঞ্চে গেল—কই এখন ভো হিল না। পাড়ার আর পাঁচ জন, হেলেমেরের সজে দেও এক ধিন বনে বনে, আর বাগানে বাগানে বৈঁচির নালা গেঁবে বেভিরেছে, মনের আনন্দে দেও বেলা করেছে। পুঞ্রের বারে আনগাছের হারার তলে শুলাক লভার কোলে বলে কত ধিন ঘোল বেরেছে। কোবার গেল সে ববিন, কারা কেন্ডে নিলে সে ববিনকে, সে কি শুরু বরের মন্ত্রু ?

বীরে বীরে আকাশের কোলে চাঁল উঠল— চিরদিনের যত হংগ আর অরকারকে মুহে কেলে আলোর বতা বেন তেনে এল। দুরে কোন্ রুক্লাগার তেকে উঠল পাণিরা—নানী ব্যাকুল হরে উঠল। জীবনের এই মধুর খাদ থেকে কেন তাকে বঞ্চিত করলে পৃথিবী—কেন তার আনন্দ আর প্লকের বার্থানে এবন ব্যনিকা চানলে।

হঠাং মাণী ধরের মধ্যে বাবার কাসির শব্দ পেল। বিরাম-হীন কাসি---একবার উঠলে আর বাবে না। কাসতে কাসতে হঠাং একটা অস্পষ্ট চাপা আওয়াক এল। মানী ছুটে সিম্বে ব্যব্দ চুকল। দমকা হাওয়ায় হঠাং ধরের প্রদীপ নিতে গেল।



# পশ্চিম ঘাটের প্রাঞ্জে

#### ঞ্জিঅমিভাকুমারী বস্থ

বছদিৰ আগের কথা, তথন সবে মহারাট্রে এলেছি। মহারাট্রের চালচপন, বেশভ্যা, বীভিনীতি সথছে অন্তেক পড়েছিলান, কিছ তথনই প্রথম পচছে দেখবার পুরোগ হ'ল। দক্ষিন্দরাট্রে কোলাপুর একটি ২৬ দেশীয় রাজ্য, সেবানকার রাজা ছত্রপতি লিবালীয় বংশবর। আমি তথন সেই রাজ্যের রাজবানী কোলাপুর শহরে দিলান। কোলাপুর বেকে ৪০ নাইল পশ্চিমে দালীপুর বলে একটি পার্মত্য প্রাম আছে; সেবানে পশ্চিম ঘাট পর্মত শেষ হয়ে, প্রামের শেষপ্রান্ধ বেকে সম্বত্যন্ত্রি আরম্ভ হয়েছে এবং ভা সর্জ্যে গিরে মিশেছে। সেবানকার প্রাকৃতিক গুল্প অভি মনোরম।

এক দিন লেখানে বেড়াতে যাওৱা স্থিয় হল! আমাদের
সব বিষয়ের ভার নিলেন একট মহারাইার রাজ্য-পরিবার।
সেখানে ভালে ষ্টেটের একট কারখানা আছে, তাতে কার্
থেকে লিরিট, আলকাতরা এসব তৈরি করখার ব্যথহা ছিল!
সে পরিবারের কর্ডা ছিলেন তার পরিচালক। বনের মধ্যে
একট সরকারা বাংলাতে তিনি বাস করতেন। তার সেই
পার্কাত্য গৃছে তিনি আমাদিনকে নিমন্ত্রণ করলেন। একট
বড় সরী ঠিক করা হ'ল, আমাদের সঙ্গে তিনি সত্রীক চললেন,
আর চললেন আমাদের অপর একট বিশিষ্ট মারাঠা বছু।
বাত্রার প্রথমেই আমাদের সম্ভা ইছালা মহিলাটির সঙ্গে কথা
বলা। তিনি মারাঠা তির অভ কোন তারা আনতেন না।
আমারও মারাঠা ভাষার সঙ্গে পরিচর ছিল অতি সামাত,
কিঙ্ক বলে বাংলা, তাতে আমাদের কথাবার্তা আইকার নি।
ধেখানে ভাষার অভাব, সেখানে হাত মুখ্য নেডে বৃক্ববিরের
মত মনের ভাবের আদান-প্রধান হতে লাগাল।

গাড়ী কোলাপুর শহর ছাড়িয়ে বোলা মাঠের ভিডর দিয়ে চল্ভে লাগল। **অধিকাংশই ও**ণু বাসে ঢাকা পাণুৱে **অ**মি. मार्च भार्च (कांहे बंदन)। यावित हकारे-छैरवारे करत हनएक आजाः पक्षांचात्वत्कत् यत्वारे शांचात्कत्र नौत्रकात्र प्रशत बाबायनदी (ज्वा (नन ) (क्षांके काश्रमा, भावत्वव पदवाकी, मार्क মাৰে লাল টালি। সেই লহর পালে রেবে আমরা পশ্চিমের पिट्य अभित्य क्लामा। किक्रूपन भवरे भाषीभूद्वय सम्म আরম্ভ হ'ল। এ জনল বুব গভীর, এতে বাব ভাস্তক প্রভৃতি दिश्य वह बाटक। अवाटम चून दृष्टे एत, छारे नायभानाव প্রাচর্ব্য। গাড়ী ক্রমে যাঠ ছেড়ে ক্সপের রাজা বরল। সে রাজা ক্রমণ: পাছাত বেরে উপরের দিকে চলতে লাগল। এই পাহাছের চুড়ার উপর দাবীপুর, ভার পরেই রাভা, ভার পরেই ব্বান্তা পাহাত বেবে নীচের দিকে চলেছে। পাহাত থেকে নীচে নামবার সিরিসকটের নাম কোভাবাট। অকলের পরে किंद्रपुर करन नदी अकड़े (बांडे डेना (बरक किकिर बादबारम বামল। লে টলার উপর ভরগোকের বাড়ী। গাড়ী হেড়ে পাৰে হেঁটে চলগায়। হ'বিকে বোণ-বৰ্গ, ভারি ভিডর

বিরে পারে চলার পর। সে পরের কোনবিকে অক্স গোলাপ কুটে আছে। কুলগুলি বেবতে সুক্ষর, কিছ তাতে কোন গর নেই। চারদিকে হোট বড় মানারক্ষ গাছ—শাল আর বাবলা হাড়া অভগুলোকে চিনিই না। এক আতের গাছের মধ্যে কালো কালো এক রক্ষ ফল ধরেছিল। গুহুবামিনী বললেন বে সেই কলের নাম 'করবক্ষ'। আমাদের পেড়ে থেডে বিজেন—বেশ সুসাহ, অনেক্টা করমচার মত থেডে। কোবাও অক্স রুক্চ্ছা গাছ কুলে ঢেকে আছে, কোবাও নাম-মা-জানা কোন কুল চারদিক আলো করে রেবেছে। মারে মারে পাবীর মধুর কাকলি শুনা বাছে। থাছিবাভ্যের পাহাড়ের উপর নিজক মধ্যাতে এই অপরণ সৌকর্ষ্যে মন মুগ্ধ হয়ে গেল।

বেশ থানিকটা সিরে তাঁথের বাড়ী পৌছলাম। বাড়ীটা অভুত ঠেকল। অগণের নাবে একটা মন্ত লখা বর, তার হাউনি থাপরার। হ্বারের বেওরাল কাল পাথরের, হ'পাল মাটর। এই নাটর বেওরাল এত সুষ্চ বে তা পাথরের থেওরাল থেকে বুব বেশী নিজ্ঞ নর। বাড়ীতে জানালা নেই বলগেই চলে। সমুদ্র থুব কাছে, তাই পশ্চিম থেকে বৃচ্চির তোড় আসে, সেই বৃচ্চির জভেই বাড়ীর হুটো দেওরাল পাথরের তৈরি। বৃচ্চি আর ঠাভার হাত থেকে বুজা পাবার জভ এরা ঘরে বেশী জানালা রাথবার পক্ষপাতী নর। ঘরের সামনে লক্ষা বারান্দা—আমরা স্বাই শভর্কি পেডেবস্লাম।

ভ্রমবিলা সলে করে কোলাপুর থেকে জিনিষপঞ্জ, সাধ্ব-সরস্থান নিরে এসেছিলেন। এখানে অললের যথ্যে কিছুই পাওয়া বার না। তিনি চা করে হিলেম, আর হিলেন একটা অনুত জিনিস—লোলাপের পাপজির বোরকা। আনবার সময় বি অলপ থেকে ভাজা গোলাপ পেছে এনেছিল। ভ্রমবিলা গোলাপের পাপজিগুলো গজার মত চিনিতে পাক করে থেতে বিলেন। বেশ গাগল থেতে।

মহিলাট বাহা কয়তে বসলেন। বি কুটনা কুটে বিলে। তরকারি সব আগাদা আলাদা বাহা হ'ল; আমাদের হড় পাঁচনিশালী তরকারি একটাও হ'ল না। আও বেখনের ভিতর মসলা পুরে তা দিরে "ওরালী ভাত" (এক রক্ম পোলাও) বাহা করলেন। মারারী রাজ্যবা মাহমাংস বান না। নানারক্ম ভরিকারী বাহা করে বেলা ভিনটে নাগাদ বেতে ভাকলেন।

মাবাঠা ত্রাক্র-পরিবারে প্রথম নিমন্ত্রণ থাছি, ভাই উাদের সমস্ত রীভিনীতি কৌতৃহলের সলে লক্ষ্য করতে লাগলায়। থাবার ভাষগার ভোচা ভোচা শিচি পাতা হল। একটভে বসলাম, অচটার উপর বচ থালা রেখে গেল। ভলের প্লানেছ

यराज बार्क्स वार्षा अक यह कन, यह ब्राप्त मार्ग्य আকাৰে বাট। বড় থালার মাবধাৰে অৱ ভাত বাটর হাঁচে কেলে ট্রক বাটর খত করে সাখালো। চার পাশে ভাল, ভরকারি, শশা আর দইরের রারভা, একটু আচার, ছোট अक राष्ट्रि वि, अक राष्ट्र वह । अव विभिन्न अक नत्त्र नावित्व দিলে, বে যায় ফুচিৰভ বেভে পাৱে, বেভে বসে কি ৱারা হরেৰে ভাববার কল নাবা বামাতে হব না। আমি ত বেশুন, শুলা, চিচিলা এসৰ বাব্দে ভরকারী কৃটতে দেখে ৰাভগৰতে একটু নিৱাল.হবে গেহলাৰ, কিছ সেই সাৰাৱণ ভৱিক্রকারীখনো ও খগৰি মসলা আর রাগ্রার কৌশলে বে কি ভুৰাছু **হ্**রেছিল তা বলবার ময়। পরিভৃত্তির সকে ৰহাৱাত্ৰীৰ আহার সমাও করে আমরা বানিকটা বিশ্রাম করলাম। ভারণর দাজীপুরের ভদলের ভিতর দিরে কোণ্ডা-ষাটের থিকে চল্পান। সে পাহাছের উপর আমাদের বিশেষ দৰ্শনীয় খিল "লক্ষাতলাখ" বলে বিশাল ব্ৰদ। একট পাহাড়ের চুড়ার উপর এই রাধানগরী, ছ্ধারে জলল, মধ্যে অলপবিসর ট্ৰুটকে লাল রাভা। ধুৰ সম্ভব মাটতে লোহা বেশানো আছে ভাই রাভা এত লাল। পাহাছের উপর সোজা যোটর চলতে পারে না, ভাই ৰোটর চলাচলের রাভাট পাহাত ঘুরে ঘুরে উপরে উঠছে। আমাদের গাড়ি সাপের মত এঁকে বেঁকে নেই রাভার চলতে লাগল। রাভা বছুর আর বিপক্ষনক क्लाबां वा अक्षिरक विविध वनन, वाधिरक शंकीय बीम। हानक अक्ट्रे चमचर्क रतनहै विशयम मधानमा । **च**रब चरब সৰভ ৱাভা কাটল। ধাৰাৱক্ম প্ৰাকৃতিক সৌশ্ৰী দেবতে বেৰভে ছবের পাশে এসে পৌৰলাম। সে হ্রদ প্রাচীন নর। ভার ইভিহাস এই---কোলাপুর রাজ্যে ভাল কমি আছে, কিছ কল সরবরাত্তর বন্ধোবস্ত ভাল নেই । ইঞ্জিনীয়ারের পরামর্শে রাজা विश्व क्वरणन **भाषारक्व वर्षाः वाँव विरव इरम्ब ए**डि क्वर्यन । वर्षात्र क्ल भाराकित मा (नरब वर्षाकारण द्वन करत क्लार्व, সেই জল সারা বংসর কোলাপুর রাজ্যের নানাধিকে সরবরাহ করা যাবে। রাজা তার পরামর্শ অনুসারে করেক লক ষ্টাকা বরচ করে হল বাঁবিষে দিলেন। রাণীর নাবে হুদের নাম হল "লখীতলাও", আৰ বাদকভাৰ নামে পাহাছের নীচের শহরের মাম হল "রাধানগরী"। রাজার সকল অপূর্ণ রয়ে নেল, কারণ বাঁধ বহু উঁচু করে বাঁধবার দরকার, আর তাভে विश्व वर्षग्र, किंद कन रहे छछ कार्यक्रों नाथ राष्ट পারে। ভাই সমন্ত পরিত্যাগ করা হ'ল, কিন্ত বে বাঁব বাঁবা হ'ল, ভার হলে বিশাল হুদের স্কট হ'ল।

হুৰট ভাষি স্থলন। পাৰ্কাত্য পৰিবেশের মধ্যে হুছের দৃঙ অতি উপভোগ্য। কালো পাহাড়ের সারি বৈভ্যের রভ নাবা ভূলে ইাড়িরে আছে। পাহাড়ের পাহতেশে নিবিড় জনন, নারি নারি অলংখ্য বনপারণ, আরণ্য বৃক্ষ ভাষের অক্তর পুলা ও পর-সভাষে এক নিবিড় নাবা স্বাই করেছে। আৰ তাৰি মধ্যে বিভূত প্ৰশন্ত বিৰ্দ্যগৰীল লক্ষ্মীতলাও বৃহ্
বাতালে তবলাবিত হবে পাহাডের গাবে আহতে পভহে।
অপবাছের অভগামী হব্যের রঞ্জিন আতা তার উপর হাডিবে
পড়ে এক অপরপ গৌতর্ব্যের হুটি করেছে। আনরা বহুত্দর
লে রুদের পাশে কাটালাম। রুদের পাশে সবৃত্দ মাঠে বোষ
চরহে। আশেপাশের লোকেরা রুদ্ধ বেকে জল নিরে
বাছে। আনরা লেবান বেকে পেবপ্রান্তে কোভাবাটে গেলাম।
শেবানে হঠাং পাহাড শেষ হবে গেছে, বহু নীতে সমতল
ভূমি সুস্থরে স্থুজের কুরালায় চেকে আছে।

সেই ব্রাহ্মণ-দশ্ভির কথা ভূসব না: ভারা ছভি সাদা-সিবে আর অমায়িক প্রকৃতির লোক ছিলেন। আমরা বিদেশী, আমাধের বাতে কিছুমাত্র কট না হয় তার কঞ্চ তাদের বংশুর আলভ হিল না। তাদের হুট হোট হেলে হিল। এই পরিবারের সব জিনিসই আমার চোবে মৃতন। মহিলাটর মাৰ্থার খোষটা নেই, পরনে কাছা দেওয়া শাড়ী, কপালে বড় গিন্দুরের কোঁটা, সহত্ব স্থভার গভিবিধি। সামা শ্রীকে "ভারু"। ( ভারাবাইর সংক্ষিপ্ত রূপ ) নাম ধরে ভাকছেন, ছেলে ছুটও মাকে "ভাক্ল গো" বলে ভাকছে। ছেলেবা দেবলাম বাবাকে 'কাকা' বলে ভাকে। একান্নবর্তী পরিবারে অভেরা যা ভাকে ৰেলেরাও তাই ভাকতে শেখে, তাই ওলেশে মা বাবাকে ৰানাভাবে ভাকা হয়। নাকে হেলেমেরেরা কাকী, দিছি, त्वीपि, भव किन्नू फाल्क। वावादक जाबाबनकः काका वा দালা তাকে। সামার কাছে এই তাকবার প্রধা বড় অভুত পরি কৌতৃককর মনে হ'ল। পার একট বিষয়ও লক্ষ্য করলাম, যে সেধানে 'আপনি' সংলাধনের ব্যবহার অভি বিরল। তবু বিশেষ সন্ধানিতখের আপনি বলে। সাধারণ-ভাবে সম্বানিভদের 'ভূষি' বলে, বাকী সব 'ভূই'। খ্রী খামীকে 'ছুমি' বলে, ছেলেবেরেরা বাবাকে 'ছুমি' বলে। কিছ মাকে 'ছুই' বলে, স্বামীও স্লীকে 'ছুই' বলে।

সবাই ক্লান্ত। তাই সন্মান্ত পরই শোবান্ত বন্দোবন্ত হতে লাগন। মানান্ত বেশে লোকে সাবান্তবন্তঃ বাট-পালকে শোনা বিশেষ প্রথম করে মা। মাট্র উপর মাহ্র ও তার উপর মোটা গদি বিছিরে বিছানা পাতে। আমানেরও দেই বন্দোরত হ'ল। মেরেরা এক বরে ভরেছিলান, পুরুবেরা পাশের বরে। মহিলাট নানা গল করতে করতে বললেন বে, সেবানকার করণে বাব আছে। করেক নান আগে ভাবের একটা বাছুরকে বাবে নিরে গিরেছিল। বরে অবপ্র বক্তৃক আছে, ভরের কোন কারণ নেই। বাবের কথা ভনেই ত আমার ভর লেগে পেল। এ অংলী বাজীটা বাবের আক্রমণ থেকে রক্ষা পাওরার পক্ষে কি পরিমাণে নিরাপদ তা ভাবতে ভাবতে ভ্রিরে

শেষ রাতে হঠাং কি রক্ষ একটা চাপা গোলমালে গুম **(७८७ / जन। जा**भाव (भावाव ववडी जवकाव, किन्र भारनव बरव मर्श्वटनव बारमा, बाद मारकद भारतद बाधवान। पदकाव কাঁক দিয়ে এককনের হাতে লাঠিও দেখতে পেলাম। ভবে কি বাৰ এলেছে ? আধার সমস্ত শরীর হিম হয়ে গেল। শেষ্টায় কি মহারাষ্ট্রের পার্বভা সৌন্দর্যা দেবতে এসে বেগোরে বাখের কৰলে প্ৰাণট। বাবে। পাশের বিছানার হাত দিরে দেবি महिलाहिक (नरे। चामि निम्लक रुख शक्त बरेलाम। शास्त्र ববে হঠাৎ লাঠির বণাবণ আওয়াক শোনা গেল, ভারণর ছুৰ্বোৰ্য খাৰাস ভাষাৰ কৰাবাৰ্ছা। আমি চুপ কৰে পড়ে রইলাম। চার-পাঁচ মিনিট পরে মহিলাট কিরে এলেন। আমি (क्रां चाहि प्रापं रनामम, 'याक मात्राक (भारताहा,' चामि লাকিখে উঠে বললাম, "বাব মেরেছে ?" মহিলা ভো ছেলে क्ष-कृष्ठि । राजराजन, "राथ क्याचार ? हराजा दश्य जानराय कि (मरबार ।" भारमंत परव भिरम रापि माहित रमध्याम प्राप्त প্ৰকাৰ মত হৰেছে, সেই প্ৰকাৰৰ মুখে বঞাক্ত হয়ে পড়ে

আহে বেউলের মত একটা প্রাথী। চেহারটো বেবতে একটি
অতিকার ইঁহুরের মত। বহিলাট বললেন এই প্রাণীটার নাম
'ব্ল'। এথলির উংগাতে বরের বেকে ও বেওরাল টিক রাধা
বার না, নীচ বেকে মাট বুঁডতে বুঁডতে এসে মাট ভূলে সম্
নট করে বের ও লোককে কামভার। এই স্বভীর অভই
আমি এত তর পেরেছিলাম ভেবে আমার নিজেরই হালি পেল।

ততক্ষণে তোরের আলোর আকাশ রাঙা হরে উঠেছে।
আমরা যাত্রার কচ প্রকৃত হলার। বােটর লগ্নী এল। আমরা
বাইরে এলে বর্ধন ইংডালার তবন প্রক্রির বাটের পাভিবের
শেব প্রান্তের পাহাতের চ্ছার রােদের আভা পতেতে, বেবা
পোল লে চ্ছার উপর একট নিজর।—ভিতেস করলার, 'লে
কোন দেবতা ?' গৃহধারী বলগেন "এ উনারা বেবীর মন্তির।"
প্রভাতে বর্ধন হর্বের "উপর" বা উহর হৃত্ব, তর্ধন স্বান্ত আরে
পাহাত বর্ধন হর্বের উপরে চড়ে গিয়ে গে দেবতার পূলা হিতে হয়।

কল্লনার দেবপাম, পেই ভোৱে স্বর্গোদরেং সময়ে থে উচ্চতম পর্বতলিববৈ ইাড়াবে, সে পৃর্বে দেববৈ অনভ মীল আকাল, আর তার নীচে স্পূর্বিভূত তরসারিত পর্বতমালা; উত্তর স্কিনে দেববে নিবিভ পার্বত্য অরণ্য, আর বহি পশ্চিবে তাকার তবে দেবতে পাবে যে পাহাড় শেব হরে, অমি হঠাং মাইল হুই নীচু হবে গেছে, আর তার প্রাভে কুরাসাক্ষয় সন্ত্রবেলা দিগতে সিরে মিশেছে।

আমাদের গতি পূর্বাদিকে। আবার আঁকাবাঁকা পাছাতের রাভা বেরে নীচে নামলান। ভারপর প্রভাতের নির্মল রৌজের মধ্যে মেঠো রাভার উপর দিরে নাইলের পর মাইল ক্ষাবিরল পথ অভিক্রম করে কোলাপুরে কিরে এলাম।

### বসস্তের গান

#### ঐশৈলেজ বিশাস

ভক্তর বাজ্যে জানে শিহরণ ক্ষিণা বাহুর আলিদনে, এত কাল পরে এল কি সভ্য বহ-চাওয়া সেই দছুন দিন— নব বালভী হাওয়ার হাওয়ার এল কি জ্যের পাব্না মেলে— উজান ঠেলে' ?

এল কি শাস্তি—এল কি ভৃতি—এল কি মৃতি বাণবিধীন, এল কি প্রথম কাব্য-চেডনা বুমে অচেডন বনের মনে ? গত্তে গত্তে বকুল আকুল, বর্ণে আমুল গোলাণ-বাগ, আন্ত্রশাধার বরেছে মুকুল, রক্তনেশার শির্ল জাণে, হঠাং অকানা আবেগে ব্যাকুল হরেছে শীভের গডরাক অকালে আকু,

বাধবীলভার অলে অলে বছুব রূপের ভলী লাগে,— ভল্লর রাজ্যে ববজীববের ববচেভলার বরেছে বাগ ! ভৰু ভূমি কেন প্ৰতিহীন, ধৰ্হীন ছে বনস্তি ? এবনো ঘুমাও শতরূপা এই কুমুমের মাসে নিয়ুকুল, ভূৱের আকাশে চেয়ে চেয়ে আকো ভূতের হতন কেন বিমাও ? সূল কোটাও,—

রামধন্থ রঙে বেঙে বাক্ আজ বসীকাননের মনোত্ত্ত,
মুছে বাক্ সব কটিন মাবের অতি অকরণ বা কিছু কতি।
নতুন আলোর চুবনে আর মধু বাতালের অর্গ লেগে
রয় না ক' বেন বাকী আর কোনো অতীত কভির অসহ আলা;
বনশতি গো, মুম তেঙে আজ কেগে ওঠো ভাম আভ্যরে,

আদা-বিহদ মৰু রাগিণতৈ বিশ্বর গানের বরুক পালা, নব বসজে বনের সভার বনস্পতি গো, ওঠো দা কেগে।

# হিটলার ও চার্চিলের পতন

#### 🗃 সত্যকিষর চট্টোপাধ্যায়

বর্তমান বিশ্বমাঞ্জনীতি পর্ন্যালোচনা করিলে বুবা মার বে, ছুইটি বিশেষ উল্লেখযোগ্য ঘটনা পাশাপাশি থাকিয়৷ ইভিছানের গতি নির্দ্ধারিত করিতেছে। উহাকে বিশ্বয়াণী বিপ্রবের হুইটি দিক বলা বার: একটি হিটলারের এবং অপরটি চার্চিলের পতন। হিটলারের পতনে স্বাধীনতা-সংগ্রামের অর্চ সাক্ষণ্যে নাংসী সাত্রাজ্যের বিপর্বায় এবং চার্চিলের পতনে মার্কী সাত্রাজ্যের বিপর্বায় এবং চার্চিলের পতনে মার্কী সাত্রাজ্যের বিশাশ স্থাচিত হুইতেছে। এই সাত্রাজ্যবাদী নীতি অভ শক্তিওলিকে বর্ম করিয়া রাখিতেছে এবং একাবিপত্য-হাপন হারা অভাত ক্ষুম্পক্তিওলির পক্ষে বিপক্ষনক হইয়া ইাছাইয়াছে। বাহারা এবন বিশ্বয়াজ্যীতির কর্পবার উহায়া যদি এবনও ঐ ছুই পত্নাই অভ্নরণ করিতে বাবেন, তবে বিশ্বসানের হিমুঝি গতি বে ব্যাহত হুইবে সেরপ লক্ষণও কতকটা দেখা যাইতেছে।

বিখ্যাত ব্যক্তিদের কার্যাবলীর উপরুক্ত বৃল্য দিতে গেলে বর্তমান বৃগবর্গের সহিত সমধ্য রাবিরা আমাদের দেশের ব্যক্তিগণের চরিত্রবৈশিষ্ট্য বিচার করা ঘরকার। রক্ষণশীল সাত্রাজ্ঞালী চার্চিল ১৯৩৯ হইতে ১৯৪৫ সন পর্যন্ত ইংলঙের প্রবান মন্ত্রী হিলেন। বৃধ-পরিচালনে সকলকাম নেতা হইলেও তিনি উছার চিরাত্যন্ত সাত্রাজ্ঞালন নীতি পরিভ্যাগে অনমনীর। ইহার বিরোধিভার বভ আবৃল পরিবর্তমাকাক্রী হিটলারের আবির্তাব হইল। বলপূর্বকে চাপানো হেমপিই সন্ধির চৃক্তিওলির বিলোপ সাধ্য করিরা আর্থানীকে ভাষার পূর্বে গৌরবে পূনঃপ্রতিষ্ঠিত করিবার বভ আর্থান ক্ষণণ হিটলারকে উছাব্যের নেতৃত্বে বরণ করিরাছিলেন।

হিট্টার ও চার্কিলের পভনের বিষর আলোচনা করিতে গেলে আমানের মনে সর্ক্ষণ্ডন যে প্রশ্নপতির উদর হয় ভাষা এই: সামাজ্যবাধী মুদ্, বিষয়্দ্র বা জনমুদ্রের মুগ শেব হইরাছে কি? সমিলিভ জাতিপুঞ্জের সমন্ধ ভাষাবিগকে বাবা দিছে পারিবে কি? আগবিক বোমার আবিভার এবং বিশ্বনিয়াপভাণীরিবে উষ্টাভে বাবা জ্যাইতে পারিবে কি? যদি শক্তিশালী রহং রাইওলির নৈতিক শিক্ষা ও উচ্চাকাকা পরিবর্তিত না হয়, বদি রহং জাতির জ্মগণের ভীতি ও নৈরার্ত্ত বিদ্বিভ না হয়, বদি এমন একট বিশ্বন্যক্রমানী জ্ম্মা শক্তির আবির্তাবে পূর্ব্ব নীতিজ্ঞান ও উচ্চাভিলার সংব্ত না হয় ভাষা হইলে আমরা পূর্বিবী হইতে মুদ্ববিন্তরির আশা করিতে পারি না।

হিটলার ও চার্চিল উভরেই প্রথমে লাধারণ সৈনিক হিলেন। উভরেই সূত্য অগতের সাম্য ও আতৃত্বের আবর্শ আছিলা দিরা মাধাভার আমলের শাসন ও দ্বন্দীতি প্রয়োগে সভলকে লাবাইলা রাখিতে ইচ্ছুক; উভরেই ব্রপ্তির এবং জীবনের ক্ষর ক্ইভেই হর্মলকে গুণা ভ্রিতে শিবিরাহিলেন।

**एक्टाइर है। इ. त्वाबावर्यी विश्वाम, काश्वाम ७ त्वाबाटक मरत्वाय-**বিষয় ও ক্ষাতারকার অন্ত বলিয়া বিশ্বাস করিতেন। নিজ নিক বেশে তাঁহার৷ অভাতীয়দের মললসাধন ও নিরাপভা-রকাই প্রবাদ লক্ষ্য বলিয়া মনে করিতেন , পররাষ্ট্রের প্রতি মাধুলী শাগন ও কমতা-প্রাধান্য স্থাপনই ভাষাদের উদ্বেজ ছিল। সংগণে তাঁহারা আভিজাত্যপূর্ণ রক্ষণশীল একনায়কত্ব এবং বিদেশে রাজনীতি ও অর্থনীতিতে জাতীয়তাবাদসমর্থক সাত্রাজাবাদী শাসন চাহিতেন। স্ক্রিয়য়ে সংগ্রাম বিজয় ও **ष्मराज्य परिकात-१४१-औ**. छ। छ। ४१ कर्षा किरमन । অগতের কৃষ্টাই ও অনুহত জাতিভাগর মধ্যে বেভাল্যের ভাব এহবে সক্ষম কয়েকট বাছাই-করা ছাতি ও কতকওলি শ্রেষ্ঠ পরিবার বাকিবে- এইরপ কতকগুলি নীভিতে আয়া যাপন कतिया उाहावा उाहारम्ब पूर्वापुक्षमरम्ब महिमाकीश्वन अवर পরদেশ আক্রমণাত্মক ছঃদাছগিক কাহোর গৌরব করিভেন। বংশগভ ভাতীয়ভাবাদ ও খেতাদ সামাল্যবাদের স্বঠ কার্যা-বলীতে তাঁহাদের পরিপূর্ণ বিশাস ছিল। তাঁহারা সর্বাদক্তিমান ভগৰানে মধেই বিশ্বাস রাখিতেন এবং আরও বিশ্বাস রাখিতেন (व कीवाडा केवरडड विस्थ दक्षनाशीत चार्कन । दंखेरडारण কর্ত্বও বিশ্বে শ্রেষ্ঠত্ব লাভেচ্ছার দিবিক্ষীর প্রোগ-সুবিধার দাবি বলবং রাখিতে চাহিতেন। অঞ্চের ক্রভ রাজনৈতিক ও অৰ্থনৈতিক অনের উপর তাহারা জীবিকানিকাহ করিতে ইচ্ছুক ছিলেন। উপনিবেশ খাপনের ইচ্ছার তাঁছারা নিকটবর্তী ७ मूबवर्की ছात्म,--- वणदाव तम् ७ दीनमपूर, मराभागदाव উপকৃত্য বিশেষ গুরুত্বপূর্ব সীমান্ত দেশ, বাঁট, রাখ্য ও অবস্থান-इन अक्षमदान कविशा त्यकाहराजन अवर जायक्रक स्ट्रान 'बनर ছেছি' ভাব প্রকাশ করিতেন। জাঁছারা স্বদেশে সামাবাদ এবং বিদেশে আভীয়ভাবাদবিয়োধী। ভাঁছারা নিজেদের ভাগ্যবান ७ ७१वर व्यक्तिक विनवा मान करवन । छात्रावा छेकरवर ८व इरे अकांत्र भौषिवारम्य नमर्गक खाशाय अक्षे स्टेरकरम---ম্ব্ৰাতির মহল্যাবন ও নিরাপতাবিবান এবং অপরট বিভিত ও খ-বেভজাভির শাসন-সংরক্ষণ এবং কল্যাণ বিধান। কিছ তাঁহাদের রাজনৈতিক সীমাবন্ধন ও লক্ষ্যবন্ধভূলির মধ্যে পাৰ্থক্য ছিল: স্বভন্নাং ভাষাদের কর্মপ্রশালীও বিভিন্নমূখী। চার্চিলের সম্পাত বিষয় ত্রিষ্টপ সাত্রাজ্যের রক্ষা-ব্যবস্থা আর विवेगारवा नका विन वार्षानगरनव विक ७ केकामायन। बार्क्टरिक कीराम देकरवरे श्रुशतिकित । देकरवरे कि পরিষাণ সাফল্যলাভ করিয়াহেন, কভক পরিষাণে ব্যর্থ-यत्नावष्य प्रेवारयमः। हार्कित्मव भीवनवर्गत्नव मुना केरमध হইতেহে খেতাদ সাত্রাজ্যবাদ আর হিট্টলারের আকাঞ্চা হইতেতে **উ**য়ত বরণের বংশপরপারাগত জাতীরভাবার।

विकेशात देख्यीवित्रत विक्रास अधिविश्मावृत्रक-वाने अवादत তংগর হিলেন এবং অপরাপর অনুয়ত ভাতিওলির প্রতি সভর্ক দৃষ্ট রাধিরাহিলেন। তিনি সমত্র জার্দ্রান জাতিকে একই ব্যক্তির ও একই রাইবের খবীনে একত্রিভ করিতে ইচ্চুক ছিলেন। ভিনি আৰ্থান উপনিবেশখলি পুনক্ষার করিয়া পুর্ব্ধ-ইউরোপে বৰবালের উপত্ত খান করিয়া লইতে এবং সমগ্র ইউরোপকে শার্ষানীর কর্ত্তথাবীনে আনিতে চাহিয়াছিলেন। হিটলারের দুষ্টিতে প্ৰথম বিধয়ুছের পরেকার ভার্মানী বহির্কিখের উপনিবেশ-বরূপে প্রতিভাত হইয়াছিল: কোসনিই চ্জিতে খকীর রাইঞ্লির উপর আধিপতা, ঔপনিবেশিক অধিকার केवर्ग, मानभर्गामा, निवापछ। ७ पारीनछ। शावादेश विन । আৰ্থানী বহবাবিতঞ, নিৱস্ৰাকৃত, অধংপতিত ও চড়জিকে শক্তিশালী শত্রুপথ্রিবেষ্টত হইয়াছিল। এঞ্চপ অবস্থায় কোর্সাই চ্চির বিস্তি, ভার্থানজনগণকে একঞীকরণ, শ্রেণ্ডিও ও দলপত বৈষম্য দুৱীকল্প, লাইবের অধীনপ্ত লাক্তাল ও গিওঁ:-অলির উচ্ছেদ্পাবন, বিধেশী ও অকেছো লোকদের বিভাগন বাগান্তবা ও কাঁচামাল সম্বদ্ধে শ্বরংসংপূর্ণ ব্যবস্থা যথোপমুক্ত বশোবত অধনৈতিক ইরতিবিধান ভাতির পাৰান্তিক ও শৈক্ষিক জীবনের উৎক্রণগ্রনট ভাঁছার প্রবান লকা ছিল। দেশের নিরাপতা ও স্বাধীনতারকার প্রতিশ্রুতিতে লৈভদপের শক্তি বৃত্তি করিবার ইচ্ছা এবং উভাকে কার্যাকরী করিয়া ভোলাই তাঁহার বিপ্লবের আদর্শ ছিল। বর্তমানে কোন ৰাভ্যবাধী ঐতিহাসিক্ট এট ২ত পোষণ ক্রিবে না যে, ভাগানী সম্ভ বিখে কর্ত্তত ছাপনের ২০ ১৯১৪ अत्म अकृष्टि विववाशि मध्यास्य नित्य श्रवण द्वेशिक अवर चनवरक्थ धरवाहिण कविशाहिल। चुणवार विहेनाट (य वन-শীতি যুক্তিযুক্ত বলিয়া এহণ ক্রিয়াছিলেন তাহা বিচার করিয়া **ৰেবিলে বুবা যায় যে, জোস**িই সৰি আৰ্থানীর পক্ষে নিভান্ত ष्मभावत् ७ षमक् एरेशहिल।

যাহ। হউক, চার্চিল বরাবরই ইউরোপে শন্তিশানানীতি রক্ষার বাত আর্থানীকে বিভন্ত, শন্তপরিবেট্টত ও শন্তিহীন করিয়া রাখিতে চাহিরাহিলেন। তিনি ইল-করাদীর অন্তর্গুল লার্কভৌর প্রয়োজনীরতা বজার রাখিতে বছপরিকর হিলেন। জ্বের্সাই চুক্তির ফলে ইউরোপের অবহা যেরপ গাঁভাইরাহিল ভাহাতে তিনি আর্থানীর হংবহর্জনা কভকটা লাবব করিবার পক্ষে হিলেন। ব্রিটশসান্তাজ্যকে পূর্বাপর একট অবস্থার রাখিতে চাহিরাহিলেন। আর্থানক একজন হুর্ব্যোধনের মত তিনি আর্থান উপনিবেশগুলি কোনক্রমেই কিরাইয়া দিবার পক্ষপাতী হিলেন না। তাহার রক্ষণশীল অবনৈতিক আর্মাণ ও পরিক্লনার ক্ষ তিনি রাশিরা, আর্থানী, তুরত্ব ও জাপানের প্রতি শক্ষভাবাপর ইইরাহিলেন। ভারতবর্ষ এবং অভাত পদামত রেশগুলিকে স্বারন্থশাসন হানের বিরোধী হিলেন। ভ্রাকৃথিত হীন ও অনুষত্ব ভাতিগুলিকে চিরতরে ব্রিটেনের

অভিভাৰকভাৱ ও শাসনাধীৰে ৱাধাই হিল তাঁথার ঐকাভিক ইছো।

বাহা হউক, হিউলার একট বুতন সমাক্তরী ঘল গঠন করিবার পর ক্ষমতা হাতে পাইরা অপরাপর সমস্ত হল তাদিরা দিরাহিগেন। হিউলারের এই নাংসী সমাক্তরবাদ চার্চিনীর টোরী গণভরবাদেরই অভ্যমণ ছিল। চার্চিনের রাজনৈতিক হন্দের কৌশল সর্ক্রোমী মুছের সমস্থলা। তিনি কোন নির্দিষ্ট মীতি অবসহন করিবাং থাকিতেন না এবং কাহাকেও আক্রমন করিতে নিরস্ত হইতেন না।

বিষ্টলারের পতন কোন আভান্তরিক বিপ্লবের বরুষ বটে নাই; জাহার পতনে ইউরোপীর ঐক্যের বুলোক্ষেক্ হইরাছে, ইহার কেন্দ্রীভূত থাবিকার এবং পরিকলনাবৃদ্ধর অবংশীতি বিনপ্ত হইরাছে। ইউরোপে আবার সংখীর্প উচ্চাজিলায় ও পৃথক আদেশবাদবৃদ্ধক আতিগত দলালি বেবা দিয়াছে। ইয়া পুনরার প্রাচীন প্রীস ও আধুনিক বলকান রাপ্রশান মত ভৌগোলিক সমন্তার পরিণত হইরাছে। কিছ হিটলারের পতনের ভিতর দিয়া বিশ্বের অপরাপর অংশে প্রভূততা-সমাজের বংলগত শাদনপথতির বারা বেমাল্য অব্ভূত হইরাছে। আভান্তরীণ নির্বাচনধন্দে চার্চিলের পতন হইরাছে। বহিন্দ্রগতের সহিত কুটনৈতিক সম্পর্কেও ব্যৱ পরিচালদার ভিনি সকলকার হইরাছেন বটে, কিছ বনেশে তিনি প্রমিক-বদ্দ কর্ত্ত্ব পরাজিত হইরাছেন। আশ্বানীর পরাক্ষেরে পর ওাছার সামরিক একনার্কতের প্রয়োজনীরতার অবসান বটবাছে।

চার্চিগ যুখলির, শাভিকারী নহেন। মন্ত্রী ও রাজনীতিক রূপে তাঁহার সুণীর্ব জাবনে সামাজিক সংকারে তিনি প্রশংসা-ভাজন হন নাই। বিটিশসারাজ্য রক্ষার এবং তাহার অফুকুলে যুদ্ধ পরিচালনার সাজসর্ক্ষার সংকাহে ও ফলাঠনে তাঁহার সমস্ত উদায় ও কর্ম্মান্ত নিরোজিত হইরাছিল। হিটলার ও চার্চিল,—তথা জার্মানী ও বিটেনের বব্যে পার্বক্য এই বে, জার্মানীতে জার্মানজাতির সারাজ্যশাসন-শক্তি ও প্রেঠত পরিকারভাবে আলোচিত, যুক্তিতর্কারা প্রতিষ্ঠিত, প্রচারিত এবং সর্কাশেষে রণক্ষেত্রে শক্তিপারীক্ষার নিরোজিত হইরাছিল। কিন্তু ইংসঙ্গে ঐ একই সভ্য অভীত ইতিহাসে সপ্রমাণিত ও বভঃসিদ্ধ বলির: জনগণের বব্যে বিনা আলোচনার নীরবে বৃহীত হইরাছে। জার্মানী উহা ন্তন রণকৌললবারা প্রমাণ করিতে চাহিষাছিল আর ইংলও ইতিপূর্কে যুদ্ধ-বিশ্রন্থ, প্রবাজ্য কর, উপনিবেশ খাপন ও দেশ অবিকারবারা উহা প্রমাণিত করিরাছিল।

ইছা সকলের বোৰগন্য নহে যে, কোপাই সভি যেরপ ভার্মানীর ভীবন-রুত্যর প্রবের, এমন কি উহার নিরাপতা ও মর্থাদার পক্ষেও বিপক্ষনক হইরাছিল, আগাদির সফ্টও ইংলভের পক্ষে পরিণামে সেইরপ হইরাছিল। আগাদিরও বিটিশ-সারাজ্যের অভতুক্ত বহে, উহা ভার্মানীরই অভতুক্ত

ছিল। ভার্থানীকে ছর্মান ও বের প্রতিপদ্ধ করিবার ভঙ ইংলও ভাষাকে ভাষার সমন্ত উপনিবেশ হইতে বঞ্চিত করিয়াছিল। এ তুলনা হাড়িয়া দিয়া মানবভার দিক দিয়া ধরিলেও হিচলাৱের পভন আবএক হইয়াছিল। তাঁহার কার্য্যক্রম প্রবল অভ্যাচারবুলক ছিল। ইত্থী, অ-নাংগী, সাহ্যবাদী ও অপরাপর সম্প্রদারের বিক্রছে তাঁহার যে অপরাধ তাহা সমগ্র ইউলোপের মানবভা এবং মানবোচিত নীভিজ্ঞানবিরোধী: বিটিশ সাত্রাজ্যের মধ্যে অখেত ও বিভিত মানবগোলীর দিক দিরা বরিলে চার্চিলের পতনও তুল্য অর্থবোধক। ১৯৪২ गत्न, ७११८र्स ७ भवरणी भवर कार्किलंब ध्रवान विवय कारन বিটিশ কর্মচারীদের দুশংসভা বিটলারের বিভিত দেশসমূহে ভাষার কর্মচারীদের অভ্যাচারের তুলনার ন্যুন নছে। ঐ সমত উৎপ্রভূনের কাহিনী ইতিহাসেও ছান পাইয়াছে। সামাজ্যের মধ্যে চার্চিলকে কোনও মুদ্ধবিপ্রহে ব্যাপুত হইতে হর নাই বটে, কিন্তু নশিপত্রে ভাঁছার কোন উপারনৈতিক দৃষ্টিভদীও প্রকাশ পায় নাই।

হিটলারের অভ্যাদরে ও শাসনে রাজনৈতিক, অর্থনৈতিক এবং পৃথিবীর নৈতিক বানচিত্র তথা বিখ-ইতিহাসের বারাই वनगरेका निवारक। वर्षधारम हेका विस्मवकरण वर्षिक स অকুতুত হইতে পারে না বটে, কিছু এমন এক সময় আসিবে यथम देश देखिशात व्यव्पूर्व ७ शांतावादिक पर्वेनाव पतिनछ হইবে। মিত্রপক্ষের সাফল্যের ফলে জার্মানী সম্পূর্ণরূপে ধ্বংসের মূখে পতিভ হইয়াছে। কিন্তু চার্চিলের অভ্যুথান ও শাসন-পরিচালনার ভাষার দেশে সামাজিক মলল বা সংস্থারের বংশাপ্রক্রমিক উপার বিধান করা হয় নাই। হুছের পটভূমিকায় তিনি যে সঞ্জিয় অংশ এহণ করিয়াছেন তাহাই ভাঁহার একমাত্র দান। বাহা হোক, ভার্মান ঐক্য, ভবনৈতিক সংগঠন, শিকা-সংকার, নৰ নৰ সামরিক অল্পলাহি আবিকার ও সংগঠনের বে বারা হিটলার রাবিয়া সিরাছেন ভাষা অপুৰাবন কৰিতে গভীৱ অসুসন্থিংগার প্রৱোজন। অবিকারচ্যত জাশ্বাৰ উপনিবেশগুলির পুন:প্রতিষ্ঠা এবং জাশ্বান জনগণের মন হইতে নৈৱাশ্যব্যঞ্জ ভীতি বিগৱিত করাই ছিল ভাঁছার কৰ্মপ্ৰতির মধ্যে প্রধান : কিন্তু জাহার বিজ্ঞ পক্ষ জাহার के इ:नारुनिक कार्या ध्यवन वाबा एवेडा क्षेत्राहिन। স্থভরাং বিৰম্পণ্ডের বিরোধিভার তাঁহার পড়ন ঘটরাছিল।

ভার্মানীর ভংকাণীন প্রবোজন, পারিপার্থিক এবং লক্ষ্যের অন্ধ্রেরণার কেবলমাত্র সময়ের স্থােশ প্রবৃণ করার হিটলার কি এক জন হুংসাহসিক বীর ও অভ্যাচারী মস্যারণে পরিণত হইরাহিঙেন, না বাভবিকই তিনি ভার্মানীর একজন কল্যাণকামী ব্যক্তি হিলেন ? যদি আনরা এই বৃক্তি বরিরা কই বে ক্রের্মাই সভি, রুপবিপ্লব এবং রাজনীতি ভার্মানীকে "একভাবছ হইব অববা ধ্বংসবছন করিব" এই নীতি প্রহণে প্রৱোচিত ক্রিরাহিন ভাহা হইলে ভার্মানীর উপর বে প্রচ্ন চাণ

শভিরাহিল, হিটলারের অভ্যুখান ও শাসনাবিভার তাহারই বৃত্তিসকত কল। উচ্ছার কার্যাবলীর ববো জাতীর ঐক্য সাবন, জাতির পুনরভাষান, শিকা, দৈতদলগঠন ও শিরবিতান-চর্চা বিশেষ উরেধযোগ্য। উচ্ছার মন কেবল মুক্তরবন ছিল না, তাহা জাতিগত স্বরেশহিতৈষণার পূর্ব ছিল। স্প্তরাং জার্মানীর জাতীর ইতিহাসে হিটলারের বিপ্লবান্ধক নীতি উহার জনগবের জীবনে নৃত্য শক্তি ও সম্পদ্ধ আনরন করিরাছিল। এইরপে উহার রাজনৈতিক ও সামাজিক অবস্থার মহ্যে একট পূত্রম পন্থার উত্তব হইয়াছিল। তিনি বিজয়ী হইলে ইউরোপে রাজনৈতিক ও অর্থনৈতিক ঐক্য খাপনে সমর্থ হইতেন; কিছ মাননিকভার আদর্শ প্রতিষ্ঠার এবং আছরিক মিলনসাধনে সমর্থ হইতেন কিনা সজ্লেহ। ঐ ভিভিন্ন উপর পরবর্তী মূপে হয়ত ইউরোপে নব নেতৃত্ব ও উচ্চ আদর্শবাদ, সাম্যা, সাম্যা, বাধীনতা ও ভাতত্বের সমুস্কর হইত। এ সধ্যে কর্জ বার্গার্ড শ বলেন,

"১৯১৮ সন্দে আর্থান বিজ্ঞান পর আর্থানীর মুদ্দেশীধিগকে থেরণ সমতে বাতপ্ত করা হইরাছিল আর্থান জাতির প্রতিও বিদ্ধির সাধ্যা করিতেন এবং বিজ্ঞান জাতির প্রতিও বিদ্ধির তাবে এডপ্ক হিটলারের জন্মুখান জ্ঞান্তব হইত। আনরা এবং আনাধ্যে মিত্রশক্তিবর্গ আর্থানীকৈ ধ্বংগের পরে টামিরা আনিমা এবং হিটলারকে এরণ শক্তি সক্ষের স্থোগ দিয়া নির্ভিতা ও কাপুরুষোচিত কার্য্য করিয়াছি। সেই স্থোগ এহণ করিয়াই হিটলার উচ্চার দেশের জনগণের পূর্ণ সহাপ্রতিত লাভে সমর্থ হইরাছিলেন।"

ভার্মানীর ধ্বংস বিশ্ব-পটভূমিতে একট বিরোগান্ত ব্যাপার।
পে আন-বিজ্ঞান-শিলে গরীরান্, স্বদেশ-প্রেমাভীপ্ত ঐক্যবছ
ভাট কোট নরনারী অন্যায়িত বিরাট দেশ। এই ভাট কোট
লোককে স্থারীভাবে নিপ্তিভিত বা পদামত করিরা চতুঃশক্তি কি
ইউরোপে গণতথ্র প্রতিষ্ঠা এবং নিরাপত্তা, শান্তি ও মদল বিধান
করিতে পারে ? সমন্ত ইউরোপকে সমষ্ট্রসতভাবে বরিরা ভাষার
রাজনৈতিক, অর্থনৈতিক এবং সাংস্কৃতিক সমভাত্তিন বানিরা
লইতে হইবে ও উহার সমাবান করিতে হইবে। অতীতে
বছবিব কারণে আর্মানী নানা হর্তোগ ভূসিরাছে। ভাষার
ভৌগোলিক অবস্থান ইউরোপের কেলে হওরার এবং কোন
প্রাকৃতিক সীমারেবা না বাকার বৈদেশিক আক্রমণকারিগণও
ভাষার ভিতরকার রাজনৈতিক ব্যাপারে এবং গৃহবিবাবে
হতকেপ করিবার প্রযোগ পার। বিভিন্ন বর্ম্মসন্তর্গারে বিভক্ত
এবং রোম সামাজ্যের সহিত দীর্মকাল নানাবিষ্যরে বিজ্ঞিত
বাকার ভাষার ভাবি এবং নেতৃত্বও ভক্র হইরা পভিয়াছে।

গণতন্ত্ৰ ও ভাতীরতাবাদের বুগে বাজনৈতিক একতা ও অৰ্থনৈতিক নিৱাগড়া একান্ত প্ৰব্যোজন। উনবিংশ শতাব্দীর প্রশানা তাহার প্রকৃষ্ট প্রমান। তাহার প্রগতিশীল বিজ্ঞান ও শিল্পের সাহাব্যে সে যে গভীর জ্ঞান, দক্ষভা ও হুঃলাহনিক কার্যের অবিভারী হইরাহিল ভাহা ভাহার দৌরবের বিবর। ভাহার শক্তি ক্লাল ও ইংলভের ইর্ষা ও ভরের ভাষণ হওৱার

১৯১৯ দৰে উহাৱা প্ৰশিষাৰ ভৱাবছাৰ ভঞ্চ হাৰী হইৱা-হিল। শান্তিকালে ভাহার উপর বে সর্ভ আরোপিভ হইরাছিল ভাহাতে ভাহার দেশের কোন কোন অংশকে পর-রাক্যভুক্ত, পরপ্রান্ত, নির্মীঞ্চ ও ক্তিপুরণে বাব্য করা হইল। অধিকত ভাহার উপনিবেশসমূহও কাছিরা লওবা হইরাহিল। বিশ্বরাজনীভিক্ষেত্রে নেড্ছ করিরা করালী ও ইংলঙ প্রাক্তিত ভার্মানীর প্রতি এমন বাবহার করিয়াহিল যে পরিণামে ভাৰান-ভাতি প্ৰতিহিংগাণৱাৰণ হইয়া উটিয়াছিল। কাৰ্ণেভেনীয় भाषित कन वह रहेतादिन त्य, जमच देखेरवार्य जीलि, जत्कर, श्वाक्त ७ वार्षिक देवस्तात ए**डे स्ट्रां**दिल। यदि वार्षि-সৰুহের মধ্যে আভক্ষাভিক সহযোগিতা ও শাভির মৃতন बाबबा स्ट्री कहा स्वेदाहिम छवानि मुख्कि खरवाद जान महेरछ. ক্ষকতি পূৰণ ও কাৰ্যানীৰ অক্তেম্ব কৰিতে ত্ৰিপঞ্জিৰ বল-হণিত নীতি প্ৰস্তুত হইৱাই হিল। বহুং শক্তিপ্ৰাল লাতীয় বার্ব অব্যাহত রাখিতে এবং তাহাদের উচ্চাভিলায় চরিভার্ব कविट् देश क्वन बब्दनब्दन अब्द स्टेबाबिन, प्रख्यार ইহার অপুযোদন নির্থক হইবাছিল। শাভি বৈঠকের সদভেৱা ইছার আধর্ণ ও মুলনীভিকে বিভ্রান্ত করিয়া ভূলিয়া-ছিল। এই সন্মিচ্জি এবং জাভিসলের নির্দেশ্যকী নিয়মামূল হচতে পারে নাই ৷ আত্তর্জাতিক-সল জাতীয় বিবেধ-দন্দের कार्ष भाषा मछ कविशाष्ट्रिण। मक्तिमारमाव मुननीजि াবভেদ, জাতীয় প্রতিখান্তা, সর্বায় শক্তি পূর্ববং বিদ্যমান ছিল। বিটেন ও জাল প্রার সমন্ত উপনিবেশ প্রাস করিয়া क्ष्माप्त वेसेट्राम ७ अनिवास **ए**वा एका एक काणित यत्या भौधा विकादत्यव त्मादत्याम पश्चिम विकासिम ।

১৯৪৫ সনের পটস্ভাষ চৃষ্ণিট কার্বেলেনীয় স্থিপত্র।
ইহা কোন প্রণালীবছ সঙ্গিত্র নহে, ইহা জার্মানীর মৃত্যুবাধযঞ্জা। ইহাতে ভাহার দেশগুলি বৈজ্ঞ ও পদানত করা হইরাছে। ভাহার স্বায়ন্ত শাসন, কেন্দ্রীয় শাসন, জার্থিক সংখান
বিনত্ত হইরাছে। ভাহার বৈঞানিক সাজসন্ত্রাম, সবেষণাগার
ও বন্ধশাতি হস্তচ্যত হইরাছে। ভাহার বৈঞানিকদিগকে
কুসলাইয়া লইরা যাওরা হইরাছে। ভাহার বৈঞানিকদিগকে
নির্ম্নীকৃত ও পদানত করা হইরাছে। এইরূপে ভাহাকে জনশৃত ও বনৈধর্ব্যে বঞ্জিত ক্রিরা একটি ক্রির্থান দেশে পরিণত
করা হইতেছে। ইহা প্রতিহিংসা চরিতার্থ ক্রিবার প্রয়াস
ছাত্যা আর কিন্তুই নর।

১৮১৫ সনের ভিরেনা চৃঞ্জি, ১৮৭৮ সনের বার্গিন চৃঞ্জি এবং ১৯১৯ সনের ক্ষেপনিই চৃঞ্জি কোন স্থানী শান্তির নিকে ত পরিচালিত হরই নাই, এগুলি কেবলমাত্র বিশ্ববাদী বিশ্বধল অবহা বটাইরাহিল । পান্তি সংস্থাপনে হলি এলারেল, আঞ এলারেল, মহাদেশিক সংযোগ, আন্তর্জাতিক সামাবাদ এবং আ্তিসভা ব্যর্কাষ হইরাছে। এবন এই ১৯৪৫ সনের মৃতন বিশ্বর-চৃক্তি এবং স্থানীনতা-সনন্ধ উপযুক্ত স্থানাত্তি আনিতে

পারিবে বলিয়া বনে হয় বা। কোন শাতিচ্চিত ও আহবলিক चाप्रत्यंत भवनायु (बाडीवृष्टि विभ वरमद्वत दवी मत । यक विम मा अकड़ केकायद मानमाकि ७ जूमिकिड जावर्गवाव वार्वा विदय ভভ দিন মূহ বটবেই। কাৰ্য্যকরী পাতিচুক্তি ও আদর্শ শাতিpकिश्र मर्या चार्षिक वांबाविश्र इंडे स्थ । देश भागविक चांब-সাম্যনীতি বনার রাবিরা চলিতে পারে না। এইরূপ নীতি-বাদের বশবর্ডী হইয়া চলিলে প্রাচীন জার্নামীর সংকার লাবিভ হইবে না। হয়ত এখন সে অধোগানী হইয়া থাকিতে পারে। কিছ ইছা সাময়িক। ভাছার দৈহিক, বানসিক ও আব্যাছিক প্রাচুর্য এবনও রহিরাছে। ভাহার অবনৈতিক নির্ভরশীলভা তাহার নৈতিক শঞ্জিকে ধ্বংস করিতে পারিবে না। ভার্শ্বানীর ও ক্ষপণের প্রতি আছুর্জি গেখানে প্রক্রভাবে বিভয়ান রহিরাছে। কেবলমাত্র জাতি ও দেশ লইখা কোনমতে টিকিয়া ৰাকা ভাহার উদ্ভে নহে। সে অধন্য ভেন্ধ, জাবগ্রবণতা ও বিশ্ববোৰের উপর নির্ভৱ করিয়া রহিয়াতে। ভাশানয়া এখনও ब्रुवक्षपुत्र देख्यत्रेल, इत्भार्ती, देखावनक्ष, ७ विद्यानिक প্রতিভাগপর। ভাষাদের এই বৈশিষ্ট্য সক্ষে ধ্বংস করিতে भारा यादेश्य मा । अभन अकड मूखन भरतर्थन-गावश्य-साबीमछा ও সাম্য, নিরাপতা ও ভ্রাভৃত্ব রক্ষার প্রতিশ্রুতি বহি ভূল্যভাবে রাক্ত না হয় তবে উধার-দৃষ্টভদীসপায় নৃতন এক কার্বানীয় আশা করা রখা।

বৰ্ডমানে রাক্টনতিক ক্ষেত্রে যে কিনিষ্ট একাছভাবে সভা হুইয়া উটিয়াছে তাহা এই যে বিশ্ববাদী মুদ্ধের পরিসমান্তি ব্রচ-য়াছে এবং আগল চারিট বুবং শক্তি ছলিয়ার শাসনভার এহণ প্রকৃতপক্ষে ভারসাব্যশক্তি অক্ষণ্ডির হাত হইতে নিত্ৰপঞ্জির হাতে চলিয়া নিয়াছে। কেবলমাত্র জার্মানী, ভাগান ও হটালী বহুং শক্তির পর্যায় হইতে বাতিল হটয়াছে। ঞাল দিতীয় শ্ৰেণীয় শাঞ্জে পরিণত হইয়াছে: চীন প্রবন্ধ ख्याँद मांक दानदा जान करता। क्रानिया अमिता ७ दे**णे**रवान, আমেরিকা প্রশাস্ত ও অতলান্তিক মহাসাগরীয় অঞ্চ, ব্রিটেন ভ্ৰম্য-ও-ভারত মহাসাগরীর অঞ্চ শাসন করিতেছে। এই প্রকারে বুহুং শক্তিখনির রাজনৈতিক পরিখিতি এবং कृष्टेनिक भन्नार्क मूनम्छ भविष्यंत्व प्रेष्ट्र स्रेशास्। আন্তর্জাতিক আইনের অচল অবহা এবং বানবিক নীতিভাবের দ্বৰ দেবা দিয়াছে। কুন্ত ও চুৰ্বাণ রাইওগির অবিকাংশই भद्रवाङ्केष्ट्रक स्ट्रेसार्ट वा कौछ मञ्जूष स्ट्रेसा **উ**ठिवार्ट । अ**र्ज्ञ**क्ट পারভারিক সন্দেহ ও অবিধাসের ভাব কাগিরাছে। গোভ-লালগা ও বলপূৰ্বক শোষণেন্দার ব্যাপকতা বটরাছে। ক্লশিরা ব্রিটেন ও আবেরিকা প্রধান পাভারণে এই পটভূমিকার অবতীৰ্ণ হইয়াছে। সমুভ দেশে প্ৰাচীন হলওলির বৰো বেষাবেষি চলিতেছে।

যদিও বিটিলার ও চার্চিলের পতবে সমাক্তল্লের প্রভাব বাছিরা নিরা সম্প্র ইউরোপে হড়াইরা পড়িয়ায়ে ভবুও সন্ধিলিত ভাতিপুঞ্জের মধ্যে বে আত্যন্তরীণ আহর্শবাদ ও আবনৈতিক হল বহিরাছে তাহাতে মনে হর বে উহার প্রবির্গণ সমাক্রণে উজ্জ হইবে না। ইহা কার্য্যতঃ ভাতীরতারাধী দলের প্রভাব। নৃত্য পথতি অনুসারে সক্ষা দিক বিবেচনা করিরা দেখিলে মনে হর ইহা ভাতীরতারাধী সমাজতরের হুগ। ভাতীর সমাজতরের হুগ। ভাতীর সমাজতরের বানাইহার আহর্শাস্থারী সকলেই সমাজতরের কর্মী। সমাজতর হলতুক ভাতি ও তাহার গঠনবৃদক উছেপ্রের বব্যে সকলকেই এক গোজতুক কর্মী বলিরা মনে হর। ইহাতে ভাতির মধ্যে আহুর্জাতিক বিধি মানিরা সঙ্বার কোন প্রশ্নই উঠিতে পারে না।

আন্তর্জাতিক চুক্তি ও বিধান ধণন কোন আতির মদল ও বিরাণভার বিশ্বস্থাপ হয় তথন সেই আতীয় সরকার আর উহা বাদিবা চলে বা---চলিতে পাৰেও বা। উহাহরণ-স্বরণ,
ব্যক্তানে এবং উহার পূর্বে, পরে ক্লিবা ও আর্থানীর নীতি
লক্ষ্য করা যাক। বনেশ হইতে লোক বিভারণ, অর্থনৈতিক
শিল্প ও লন্দদ অংস, দেশের বৈলানিক আবিদ্ধিরা ও
বরণাতি বিমন্তাকরণ, শিক্ষা ও সংস্কৃতির উপর হতকেশ
---এই সকল ভাতীর সমাজভ্রবাদী আহর্ণের বৈশিষ্ট্য।
উহা বিশ্বরী সমাজভ্রবাদী ভাতিগুলির মধ্যে উত্ত
হইতেহে। মহর্ষি ব্যাসদেব মহার্ভের পরিশাম সক্ষে
ভাই এই মর্শ্বে বলিয়াহেন: জরই পরাজরে পর্যবিভিত্
হর:

•

 ১৯৪৬ সালের যার্চের 'ম্ভার্ণ রিভিয়ু' পরিকার প্রকাশিত অব্যাপক এস, ভি. পুভাবেকর-লিখিত প্রবদ্ধ অবলধ্যে।

### চোখ

#### 🛢 কিরণশঙ্কর সেনগুগু

বলতে পারো পলাতক, পলাতক-ই বুবি।
পারব প্রজার ছট চোবের গভীরে
ছারাপ্রদ নীড়টারে খুঁজি।
আধিন অরণ্য-যাদ ছনিবার আজো মনে হর,
ছদর-কলরে বেন থাক কন্ত নদীটার নতো
ভাও হরে রর;
আকাশের নীলমাবা ছট চোব আবেগনিবিভ,
ছারাপ্রদ নীড়টার সেইবানে খুঁজি।

ষক্ষত্ব ষষ্ট্ৰান্ত পার হবে আসি।
বাক্লের ক্ষালের শোণিতের বাবে
হীর্ষহারী অধীরতা প্রাবে;
হারর অধীর হয় অক'হাং গছবহ কুলের আহ্যানে,
ভাই তো নীলিব চোধ আজো ভালোবাসি।
হ-চোধের ঘনদীল নিবিভ গহারে
বিক্ষারে সিছু বেন কাঁণে;
হাঙলা বর শীত আগে ভারি প্রতীকার
অরণ্য অবেক রাত হঙিহীন বাপে।

বৰে হয় কত খগ্ন আলাদীন মানার প্রদীপ ভোষার চোধের দীলে আলে শত দীপ। কত রাজ্য ভরপ্রার ছয়তক কত বে বাহিনী, ক্লিরোপেটা হেলেবের চোধের কাহিনী।

### ছলনা

শ্রীধীরেন্দ্রকৃষ্ণ চন্দ্র

চলতি পথের থারে বালাথানি নিয়ে

একদা ডাকিলে ভূমি । আনত আঁথিতে

পে ডাক ছিল যে আঁকা । পা থানি রাখিতে

পথের বুলার দিলে আঁচল বিছিরে ।

নুতন দিনের গান মোর বমনীতে

রহিরা রহিরা রবিরা উঠল প্রিমে;

চিনি নি ভবুও । ভূমি না দিলে চিনিয়ে

পারিতাম আমি কভু ভোমারে চিনিতে ?

উড়িল অলক তব সোহাল-লীলার,

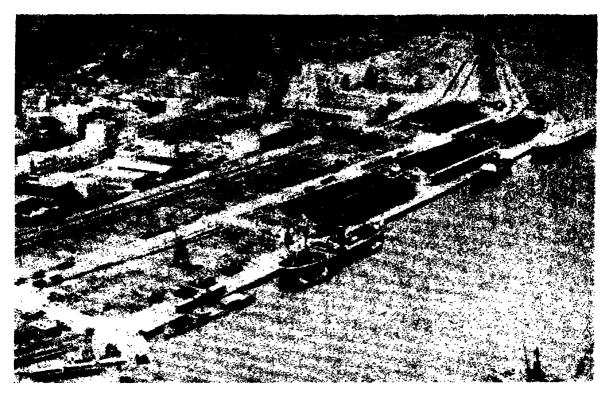
অবরে সুটল হাসি কি জানি কি বুকি,
বাছটি ছলিল যত আগন থেলার,

চল্ল চাহনি কিয়ে কি জানি কি বুজি ।

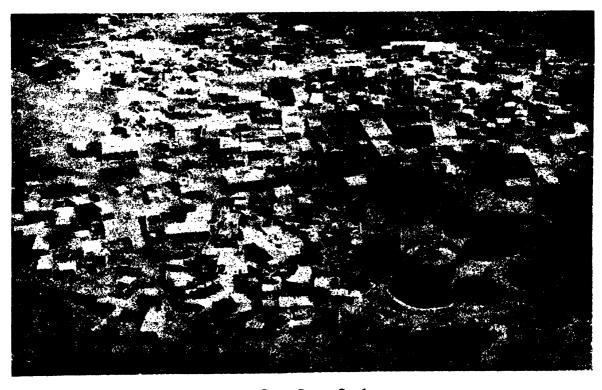
পারি নি ভবাতে আমি—কোন ছলনার
ছলিতে এসের ভূমি আঁথি ছুটী বুছি ?



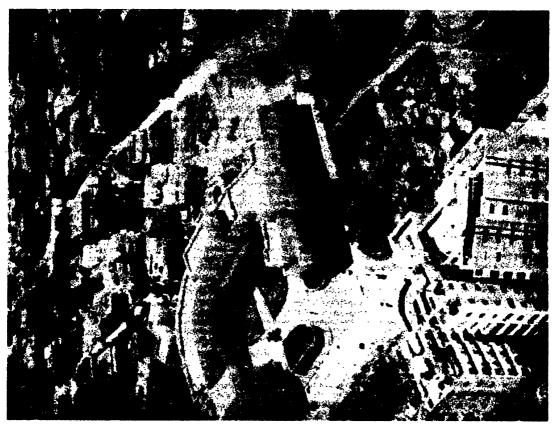
### আধুনিক প্যালেষ্টাইন -ইছ্দী ও আরব অঞ্চলর ভারভ্যা



शहेका नगरी। ১২৫০০০ गाउँ७ वादा मदनिर्विक देशाक टिलन-गाईरमद बूद



আত্তৰ পত্নী—দাবিক্যের নিবৰ্ণন





# আধুনিক প্যালেষ্টাইন ও ইছদী-আরব সমস্থা

विरयाशिमहत्र वाशन

বর্তমানে প্যালেঞ্চাইন নামা কারনে সাধারণের বৃষ্টি আকর্বন করিরাছে। এই অঞ্চাট লইরা অতীতেও এবন সব বটনা বটনা বিটনা সিরাছে বাহার কচ ইহা চিরশ্বরণীয় হইরা রহিরাছে। বীওমীটের লীলাক্ষেত্র বলিয়া এই প্রদেশট মীপ্রাম কর্মতের নিকট অতি পবিত্র। ইস্লাম বর্মাবলগীদের হত হইতে উদার করিবার কচ মীপ্রাম সমাক্ষের পক্ষে রূপে রূপে এবানে ক্লেড বা বর্মান্ত পরিচালনা করা হইরাছে। ইউরোপের বছ ভাষায় এই হানটির নানা কাহিনী লইরা বছ পুতকাদিও লেখা হইরাছে। গত জিলা বংসারের মধ্যে ইহা আবার বিশ্ববাদীর কৌতৃহল বিশেষভাবে উপ্রেক্ত ক্ষিয়াছে।

আরবের মান্চিত্রে দেখা বাইবে, প্যালেপ্তাইন বা কিলিভিন ইহার পশ্চিম প্রান্তে মাত্র এক ফালি কাহপা। এ অঞ্চাষ্ট ইহুলীদের আদি বাসপুনি। পরে এবানে ইস্লাম ধর্মাবলমীদের আবিপত্য হাপিত হইলে ভাহাদের অবিকাংশই ইইুরোপের বিভিন্ন দেশে ছড়াইরা পড়ে। যীত্রীপ্তকে জুশবিদ্ধ করার দক্ষন সমত্র প্রীপ্তান সমাজই ইহুদীদিগকে ঘুণার চক্ষে দেখিত। পঞ্চমশ শতালীভেও ভাহারা কিরপ ঘুণার্হ হিল, সেল্পণীররের মাট্যান্ট অক ভেনিসে ইহুদী দাইলকের প্রতি প্রীপ্তানদের বিশ্বিন নিক্ষেপ হইতে ভাহা বুবা যায়। নাংসী আর্মানি, পোলাও অভাল দেশের ইহুদীদের উপর অমাপ্রথিক অভালার সাম্রের আবলে কশিরারও ইহারা উংপীদ্দন সম্প্রকরে। আবচ কগতের বহু প্রধাতনামা বৈজ্ঞানিক, সাহিভ্যিক, বনী, ব্যবসাদার এই ইহুদী জাভির মব্যে পাওয়া যাইবে।

উনবিংশ শতাধীর অধ্ব দশকেও কিছু কিছু ইন্ধী প্যালে-দ্রাইনে বদ্বাদ করিত। বর্ত্যান শতাকীর অচনা হইতে ইচদীরা প্যালেষ্টাইনে অল অল করিবা আসিতে থাকে। কিছ ৰিগত প্ৰথম মহাৰুখেৱ মব্যেকার বাগসূত্র চুক্তির বারা ভাহারা প্যালেটাইনে একট বতম ইহণী-খাবাস প্রতিষ্ঠার ভরসা পার। हेस्बी-(नण चडेद सारम्यान अवर चादवरवद शरक चाबीद কৈছলের মধ্যে বে চুক্তি হয় ভাহাতেও বিদেশাগত ইত্দীরা পালেটাইনে বিয়া বসভি ছাপনের মুযোগ লাভ করে। ইহার नव बाब विभ वरतव यादर देवधी त्रशाक वन कन विज्ञा नगातन-<u>ইাইনের মুকুপ্রায় অঞ্চাকে শন্তভাবল প্রান্তরে পরিণত</u> कृत्त, विश्वत পतिकृत बृजन बृजन नगरी गठिल एत अवर कृषि. লিল ও বাণিজ্যের উন্নতি কইতে থাকে। কিন্ত ইং। ভার चात्रवरणत मञ्च स्टेल ना । देखिशुट्स य चात्रवता देखशैरणत चलार्यमा कृतिया नहेबाहिन, यासायत मिक्के छला पारम चमा-বাদী ভমি বিক্রে ক্রিয়া ক্রমণ: লাভবান হইভেছিল, এভারণ সম্ভব্ধি এবং প্রতিপত্তি দেখিয়া ভাষাদের উপর একেবারে ভাষারা ৰাপ্লা হইৱা উঠিল। ভদব্ৰি উভৱের নব্যে মারামানি, হানাহাবি जवात्व इजिद्वाद्य । উভরের বব্যে বিবাদ-বিস্থাদ প্রভু ইংরেজ- বের ঘাড়াইরা এবন দলিলিভ র্জনাঞ্জে (U,N.O.) পর্যাত্ত পৌহিরাছে।

এই বিষয়ট পরিষ্ণার ভাবে বুবিতে হুইলে পুর্বোদ্রিবিত বাসস্থ বোষণা এবং প্যালেষ্টাইন সম্পর্কে ত্রিটিশ নীতির কিঞ্চিং আলোচনা প্রবোষন। বিগত প্রথম মহাযুহে ইহুদীগণ মিত্র শক্তিবর্গকে বিশেষ সাহায্য করে। ইহার প্রতিহান ও পুরস্কার-ধরণ উক্ত মহাসমরের মবেটি ১৯১৭ সাঁলের ২রা নবেধর ধে বাসস্থা বোষণা প্রচারিত হয় ভাষাতে এইকপ লিবিত বাকে-

"His Majesty's Government view with favour the establishment in Palestine of a national home for the Jewish people, and will use their best endeavours to facilitate the achievement of that object, it being clearly understood that nothing shall be done which may prejudice the civil and religious rights of existing non-Jewish communities in Palestine, or the rights and political status enjoyed by Jews in any other country."

অর্থাৎ, ব্রিট্টশ গবর্গনেন্ট প্যাক্টেইনে ইণ্ডাীদের একটি ভাতীয় আবাস প্রতিষ্ঠাকতে সর্ব্যপ্রকার সাহায্য করিবেন, কিন্তু বর্ত্তবানে ইণ্ডাই ছাড়া বে-সব অবিবাদী দেখানে আছে তাহাদের নাগরিক বা বর্ত্তবান্ধনীয় অবিকারের উপর কোন প্রকার হওকেশ করা হইবে না। ইণ্ডাইনা অভাভ দেশে বে-সব অবিকার ভোগ করে প্যাপেটাইনে আসার দক্ষন তাহারও কোন ব্যত্যয় ঘটবে না। মিত্রশক্তিবর্গ কর্ত্তক ১৯২০ সমের ১০ই আগঠ তারিবে বিধিবন্ধ সেভার্স সভিতে এই খোষণাটী অগ্নযানিত হইরা যার।

**अवय यहामयत कारण भारतक्षेत्रिय प्रतस्य व्यक्ति ।** বিট্রীশ সেনাপভি পর্ড এলেনবি ইছা উধার করেন। ভদববি किह्नकाल देश बिक्टैत्यव शामविक माभरनव अवज्ञीक बारक। ইম্বাকে 'মাতেট' (Mandate) লাগনও বলে। রাষ্ট্রসংখ भारमहोहेत्य बिकिट्यंत कर्जुच ১৯২२ भरमत २६८म खूनाहे बाबिया नम । अब दरमब २०८म (अर्थिय एहेएछ देए। अक्षे পুরাপুরি ব্রিষ্টশ ম্যাভেটে পরিণত হইল। এই সময় ইড্দীরা কিব্রণে অধিক সংখ্যায় প্যাদেষ্টাইনে দিয়া ভাতীয় আবাদ প্রতিষ্ঠা করিতে থাকে তাহার আভাগ ইভিপুর্কো पिश्वाचि अवर अक्ट्रे भटबंख विमध्कारव भाखकः याहेरव । एटब विषयी भागरकत कर्छन स्ववादन क्षेत्रम (अवादन क्ष्य-নীভিত্র পূর্ণ সুযোগ সওয়া খাভাবিক। ইন্দী ও আরং-দের মধ্যে বিবাদে ইংরেক এই নীতির সুযোগ লইতে গভাগুগভিক ইভন্ত: করে নাই। নিয়ন অঞ্সারে विक्रेन महकात अक्रे द्वाम क्थिमन मर्दन कृतिया छेण्डित ब्र(व) विवासिक कावन ७ बीमारमांव छेनाव निर्वासकाव एन। क्षिणानव विर्णार्धे येषात्रवस्य योचित स्टेल अवर ब्बाबीकि विवयमान डेक्ट नक्क्षणात्वत छेन्द्रवे द्यावक्रके ज्ञानात्ना হইল। এই রিপোটের সিদান্ত এবং প্যালেটাইন সন্দর্কে বিটিলের নীতি ১৯৩৯ সনে একটি White Paper বা বেত-পত্রে বোষিত হয়। এই বোষণার কলে ইহুদীরা ত্রিটাণ সরকারের উপর ভরানক চটরা যান, কারণ ভাছারা মনে করিতে বাকে বে, ইহাঘারা পূর্ক্ষেকার বালসূর বোষণার ব্রেটা হানি করা হইরাছে।

কিও ইভিমধ্যেই আবার বিভীয় মহাসমর আরম্ভ হইল। मारभी बार्चानी छवा शिक्षेतात कर्तक देवशीरभन्न धेनत चकवा অভ্যাচারের কথা ভাহান্ন কিছুভেই ভূলিভে পারিল না। মাৎসী আৰ্থানীয় বিষোধী ত্ৰিটাৰ তথা মিত্ৰশক্তিপুঞ্কেই ভাষায়া বন ক্ষম দিয়া যথাসাথ্য সাহায্য কৰিল। কিন্তু এবারেও বুড়ান্তে দেখা গেল, ব্রিটাশ সরকার ১৯৩৯ সমের নীভিকেই আঁকড়াইয়া ৰৱিয়া আছে, ইছার কোন পরিবর্ত্তন পরিবৃষ্ট হইভেছে না। ভৰন ভাহাৱা বেপৱোৱা হইয়া ত্রিটাশ প্রথমেণ্টের বিরুদ্ধেই জোর चाट्यानन हानाइ। चाट्यानम (बाटिहे चहिश्म नव बुहाटड গোলাগুণী, বসুক প্রভৃতি যে-সৰ সময়-সরঞ্জাম ইঙ্গীরা হত্তপত করিতে পারিয়াছিল সবই একে একে ভাষায়া বিট্রণ কর্মণক্ষের विकास क्षात्रात्र कविएक मात्रिम । जश्यामनब-भार्र कव अ महस्य মিশ্চরট শ্বরণ আছে। ত্রিটিশ সরকার বেগতিক দেবিয়া चादव ७ देवनी विधिनिविषय भाग क्षेत्र चालाठन:-देवर्रकद আহোত্ৰৰ কৰেন, কিন্তু উহাৱা যোগ না দেওয়ায় ভাহা ব্যৰ্থ क्वेद्या (मन । ब्रिक्टिम मदकाद चर्गणा भारमहोदेन अधुमाद মীমাংসার জন্ত সন্মিলিত জাতিসক্ষের উপর ভার দিয়াছেন।

সন্মিলিত জাতিসকা প্যাদেষ্টাইন সমন্তা আধােচনা ও মীরাংসার কর একট বিশেষ কমিট গঠন করিয়াছেন। মার্কিন ক্রয়াট্রের ভারত-সরকারের প্রতিনিধি মি: আসক আলি এই বিশেষ কমিটর সভাপতিছ করিবেন বলিয়া সংবাধ আসিয়াাছিল। এই বিশেষ কমিটর কর্মপ্রতী নির্ছারণের পুর্মের জাতিসালের আময়পঞ্জমে ইহলী ও আরব মুবপাঞ্জন নিজ নিজ বক্তব্য ইহার সন্মুবে উপস্থিত মতে পেশ করিয়াছেন। ইহণীদের পক্ষের হলেন মি: শেরটক ও মি: বেন-গারিয়ন এবং আরবদের পক্ষে হিলেন মি: লােরটিক ও মি: বেন-গারিয়ন এবং আরবদের পক্ষে হিলেন মি: লােরটিক ও মি: বেন-গারিয়ন এবং আরবদের পক্ষে হিলেন মি: লােরি। উভয়ের উক্তি হইতে প্যালেষ্টাইম সমস্রার মূল কারবন্ধলি স্থানা আমাদের পক্ষে কতকটা সভব হইয়াছে। ইহণী ও আরবন্ধন প্যালেষ্টাইমকে কি চক্ষে দেবিতেছে এবং প্রত্যেকের দিক হইতে এই সমস্রার সমাধান কিরপে হওয়া গভব তাহার আঁচ আনর। ইহা হইতে পাই। এ কারব উভাদের মূল বক্তব্য এবানে দেওয়া আব্ভক।

ইন্দী-নেতা মিঃ শেষ্টক প্রথমেই ছুইস্ একেণীর (Jewish Agency) উদ্দেশ্ত ও কর্মণছতির ব্যাব্যা করেন। প্যালেপ্তাইনে ইন্দাদের জাতীর জাবাসভূমি প্রতিষ্ঠা এই একেন্দার প্রবান উদ্দেশ। এ উদ্দেশ্যে ভিরু দেশবাসী ইন্দাদের প্রবান আমরনাদি ব্যাপার নিরন্ত্রণ করেন। বিশ্বীর সরকার উত্তেই ইন্থাকে যানিরা সইবাবেন। বিতীর

মহাসমর কালে এই একেনী আছকাটর কার্যা করিবাছে বিটিশ বাহিনীকে তেজিশ হাজার সৈনিক কোগাইরাতে প্যালেটাইন রক্ষা করিবাছে এবং এবানকার জব্যসন্তা: সামরিক প্রভালনে লাগাইরাছে। ইছমী স্বেচ্ছা-গৈনিকগান্যপ্রাচ্য, আজিকা ও ইউরোপের রপক্ষেত্রে সমানে লভিরাছে

ইঙ্গীধের কোনও জাতীয় আবাসভূষি ছিল না, অধ আদিভূষি প্যালেষ্টাইনের প্রতি তাহাদের গভীর টান ব पाकर्रव हिम । এই पाकर्रवे चाक देशांक अके: আমর্জাতিক ব্যাপারে পরিবত করিয়াছে। প্যালেটাইনে আৰু হয় লক ইওমী বদবাস করিতেছে। ভাষারা এক সংখ্যালৰু সম্প্ৰদায় হিসাবে আৱবদের প্ৰভুত্ব মানিয়া লইছে मातांक। अरे कांतर्थ अपर शांछा ७ भाग्नारकात पृष्णां নিপ্তিত লক লক ইহদীর কাতীয় আবাসভূমি প্রতিঠার প্রবং পুৰার দরণই <mark>আৰু তা</mark>ৰারা স্থিপিত <del>কা</del>তিস্কোর স্মুখে चुनिहादित अल्यानात छेशहिल स्टेबाट्स । श्राटनकी हेटन ১৯०८ गत्न देवशीरवद मरना हिन ६०,०००, ३३०० भट्न ३६६,००० ১৯৩৯ সলে ৪१৫,००० खरा वर्डमान खरे भाषा श्रेष्ठा है। इसि ७००,०००। व्यर्गर अवम महानमद्वत (मृद्य नार्मकोहेट-আরবদের সংখ্যা যাহা ছিল আৰু ইন্ধদীদের সংখ্যা তাহাত্ চেয়ে चिक् । ১৮% भरनद शब इवेटलवे क्रिया, क्रमाभिया मत्रका. प्रक्रिय-चात्रव स्टेटल देश्मीता चापिकृषिटल क्षणादुर হইয়া বলগংখ্যক ইণ্ডী সমাজকে পূঠ করিতে থাকে: ইহার পর হইতে পালেটাইনে ইছদী আপমন অবিরাম চলিয়াছে। ইচ্দীদের আদিভূমি প্যালেষ্টাইনে বসতি ভাপদে ভাহাদের যে সম্পূর্ণ অধিকার আছে ইছা ভাছারা যেমন বিশ্বাস করে, আন্তর্জাতিক ক্ষেত্রেও তেমনি ইহা স্বীকৃত। ম্যাভেট मा पाकित्मक देवशीत्मत अ व्यक्तिकात वामवर पाकिछ। ভাষারা বহিরাগত মোটেই নহে, ভাষারাই এবানকার সভ্যি-कांत वानिका। अहे विक श्हेट्ड विरवहमा कृतिहा, चात्रवता (य मन्न कृद्ध जाहाबा विषये हैं है। अटकवादबरे निवर्षक ।

সুমহান অতীত ইহুণীদের রক্ষা করিতে পারে নাই।
ইহুণী আভির তিন-চতুর্বাংশ অর্থাং বাট সক্ষকে অকালে মৃত্যুবরণ করিতে হইরাছে। কিছু অতীতের কথা বলিরা লাভ
নাই; এই যাত্র ১৯৪২ সনে, সুনীর্ব সহস্র বংসর বসবালের
পর স্পেন হইতে ভাহার। বিভাছিত হইরাছে, যাত্র
যাহারা উইবর্ষ এহণ করিরাছে ভাহাদের সেবানে থাকিতে
অস্থাতি দেওরা হইরাছে। পোলাতে প্রার পাঁচ-হর শত বংসর
বসবালের পর সপ্তদশ শভাকীতে ভাহাদের উপর অবাছ্যিক
অত্যাচার করা হয়। উনবিংশ ও বিংশ শভাকীতে রুশিরারও
অস্থান অত্যাচার চলে, এবং শেবে গত মহাসমরে ভাহাদের
চরম মুর্গতি ঘটে—প্রায় ত্রিশ লক্ষ্ ইহুণী নাংসীদের অত্যাচারে
আরাহতি দের। আর্থানীতে চতুর্ব শভাকী হইতেই ইহুণীদের
বাস, কিছু পঞ্চল শভাকীতে ইউরোণের ইহুণী-সন্দের ছিছিকে

ধানকার ইছদীদেরও নিপাত সাবন হয়। পুনরার বিংশ
শতানী নাগাদ জার্দ্রান ইছদীরা বর্ধন সকলরক্ম সাধীনতাই
ভোগ করিতেছিল ভাষারই মধ্যে জাসিল নাংগী-উংপীরুন।
ইহার কল কি জয়াবহ হইয়াছিল ভাষা সকলেই জামেন।
ইইবর্দ্রাবলসী ইছদীরাও এই উংপীরুন হইতে রেহাই পার নাই।
ছুছের পরেও বে ইছদী নির্বাতনের অবগান হইয়াছে ভাষা
বনে করিবার কোন কারণ নাই।

उर्श्वा. সর্বহারা ইত্থীদের একমাত্র আবাসহল ভাষাদের আদিভূমি প্যালেপ্তাইন, এই অঞ্চাটর ধার রুদ্ধ স্ওয়া তাহাদের পক্ষে মুচারই সামিল। আরুবেরা এখন বহিরাগত देश्मीरमञ्ज भारमहे।देरन चानमन এक्कारत वह कतिन দিতে চাত্ৰ, কিন্তু ভাহাদের এই দাবি আছে প্রায়ুস্পত বা बुक्तिमन्छ नरह। ১৯১৯ भान्त माखि माध्यमान क्रिक्स-स्वारेनमान पृक्ति अवनश वनवर चार्य। चात्रवदा (व अवन দাবি করিতেছে সার হেন্ত্রি ম্যাক্ষাহ্নের চুক্তিতে न्गारभद्दीरेन चावरापव प्रश्वाव क्या हिम छाहा कि नह । বালসুর ঘোষণার টাজ-করভানকেও প্যালেষ্টাইনের সংখ হুক্ত कविशा बक्क रेल्मी-निवास कवाब कवा विम् किन वेदशीरमध चाथिएमि भगामक्षेत्रिनरक वाबीन अकडे वेदशी-बाहे করারও কথা ছিল। মাত্র ছই বংসর পুর্বের বর্তমান ত্রিটাপ চ্যান্দেলার অধ্ এমচেকার সার হিউ ভালটন বলিরাছিলেন रेष्ट्रगीरम्ब एक गारमक्षेरित अक्टि चुने, अदर नारीन महिनामान মাই গঠন করার নীতি অবনখন করিতে হইবে ("ior a policy which will give us a happy, free and prosperous Jewish state in Palestine") : Witcet আছে ইত্দীদিপকে এইরূপ ধাৰীন বাষ্ট্রপছিতে দিতে ছইবে। খাৰীৰ খাত্তে সংখ্যালত আহবদের ভয়ের কোন কারণ নাই। ভাষাদের সর্বাধকার সংরক্ষণের ব্যবধা করা ঘটবে। ইচ্ছীরা একপ করিতে বাধ্য, কেননা পার্যবর্তী এবং ধূরের সকল রাষ্ট্রেই रेरावा नरवानव वाकित्व। भवक नरवानव रेरुवीत्वव আশহার ববেষ্ট কারণ আছে। পার্থবর্ডী আরবরাষ্ট্রগরুছে ইহণীদের উপর বে স্থবিচার ছইবে এমন কোন বাবাবাৰততা ভাষাদের নাই। প্রভরাং একট বিষয়ে অব্ভিত না ছইলে भारमहारेन चाबीनण भारेरमध जारा देखबीएम भरक निवर्षक হইবে। আৰু বাঞ্জে বাহাতে ভাহাৱা নাগরিকের পূর্ব অবিকার পাত করে ভংগ্রভি সচেট হইতে হইবে। আরবদের সদে সংস্থৃতিগত বিশবের চেটাও ইখণী সমাক করিভেছে। পমন্ত মাধ্যমিক বিভালয়ে আরবী পড়ান হইতেছে। একচরিপ বংসরের অভিজ্ঞতা হইতে মি: শেরটক বলেব যে, আরব ও देख्बीएव मत् मूनगण अमन त्यान वित्यम नार याशात्य ভাষাদের মিলন হওয়া অসম্ভব।

মিঃ খোরি 'আরব হারার কমিট অব প্যালেটাইন'-এর পক্ষে

ছাভিসব্যের সম্বর্ধে নিজ বক্তব্য পেশ করেন এবং প্রকারান্তরে ইহণী মুৰণাত্তের উভিত্র জবাব দেন। তিনি বলেন ছে, আরবরা বালসুর খোষণা কথনও মানিলা লয় নাই, কাজেই ইছাছারা एहे भारतहाहरतद माजवजाद भित्रानवाद पर पूरेन अरमजी वा चन्न कि ए एकावा शीकाव कविटल चारशे वाकी नव। পূৰ্বে আহব ও ইংমীয়া একযোগে সম্প্ৰীভিতে বসবাস করিত। কিছ বাদকুর ঘোষণার পর হইতেই বে নীভিতে দেশ শাসন ও আঞ্বিৰ কাৰ্যা চলিয়াখে ভাগাতে এই সম্প্ৰীতি ন**ঃ** হইতে চলি-রাছে। ইহদীরা ভাষাধের রাজনৈতিক মতলব বা আকাক্রা পরিত্যার করিলেই ইছা গুনরায় প্রতিষ্ঠার পর উন্তুক্ত হইবে। ইহার ৰূপ প্যাপেষ্টাইনে এমন একটি সাধীন রাঠ প্রতিষ্ঠা করা আবন্ধক যে সংখ্যাগরিষ্ঠদের বিশ্বছে বহিরাগত সংখ্যালঘদের काम सकात चित्राय वा केए छ कार्याकरी कहा परेटर मा। प्रशासकोहेन चावर प्रम अवादन चावरपद चिकाव रहान থাকিবে। ভবু ইছদী কেন, বহিরাগত যে কোন ছাতির আবিপভাই ইহার; অধীকার করিতে বাব্য।

भिः वाबि चलः भव वर्णम (य. भारमहे। देवन वाकाशामाय मासि-मुख्या । विदाशका विनश्चे एहेशाए। ১৯০१-७৯ मन যথন দালা হয় সে সময় ত্রিটাশ কর্ত্তপক্ষ বেল্পপ আচরণ করিয়া-ছেন এবারে ভাষার বিপরীত লক্ষ্য করা বাইভেছে। এবারে चावरमंग मामास मिख स्टेशा भएए नार्डे. তবে তাशामित धरे নিলিপ্ততা কেছ যেন ছক্ষণতা বলিয়া মনে না করেন। ইতি-পুর্বেটি তিনি বলিয়াছেন যে, বালফুর ঘোষণা আরবগণ সম্পূর্ণ অগ্রান্থ করিয়াছে, ভবাপি ভাহাকে ধবন ইভ্গীদের প্যালে-**টাইনে বতন্ত্ৰ ভাতীয় আবাস এবং সাধীন ভাতীয় খাওঁ ছাপন** সম্পর্কে বিজ্ঞাসা করা হইয়াছে ভবন নিষ্টাচার পালন করিতে ছটলে তিনি উত্তর দিতে বাবা। খোরি বলেন এ ছইট সম্পূৰ্ণ খণ্ডন্ত কিনিষ। কাভীয় আবাস স্থাপন আর স্বভন্ত बाह्रे श्रक्तिं। बक कवा महा। ১৯২२ ও ১৯৩৯ मन्द्र विकिन अबकारबब रवायनाथ পविकाब वना श्रेशास रव. भारनद्वीवेरन ইংদীদের একট স্বাভীয় স্বাবাস প্রতিষ্ঠিত হইবে, স্বাভীর রাই ৰছে। ভিনি বলেন ভিনি যাহ। বুৰিয়াছেন সেইঞ্পই বলিতেছেন। ইহাহারা তিনি এ সম্পর্কে পুর্ফোকার মত ছাড়া অভ কোন মত প্ৰকাশ কৱিতেছেন এয়ণ খেন ব্যৱহা না লওয়া ₹**₹** |

প্যাপেটাইনে বিভিন্ন সময়ের ইণ্ডদী বাসিক্ষাদের কথা পুর্বেজ্ঞ কানা সিয়াছে। ১৯২০-৩০ সনের মধ্যে, খোরি বজেন, ১০৫,০০০ ইণ্ডদী বিদেশ হইতে প্যালেটাইনে আসিয়াছে, ১৯৩১-৩৯ সনে আসিয়াছে ২১৮,০০০; এই বিশ বংসরে মোট আসিয়াছে ৩২০,০০০ জন। ১৯০৯ সনের বেভ-শত্রে ঘোষণা করা হয় যে, সেবানে ইণ্ডদী ভাতীয় আবাস প্রভিন্নিত হইয়াছে, ইৼায় প্রেপ্ত এক গক্ষ ইণ্ডদী সেবানে চুক্ষিছে। এই সক্ষ বহিয়াগত ইণ্ডদীয় অলসংখ্যকই হিক্ত ভাষা ভাষে, ভাষারা

ইছিস (Yiddish) বা অহুত্রপ নিত্র কোন ভাষার কথা বলে। ইহা ভাহাদের অত্যহিন ভাষা। প্যালেপ্তাইনকে ইহারা কোন মতেই হদেশ বলিয়া পণ্য করিতে পারে না।

वर्षमान ममञ् ममानात्मव क्या एकि भारतक्षेत्रिय विकासिव প্রভাব হয় তবে আরবরা ভাষা কোনজমেই মানিয়া লইবে ৰা। ভাৰাবা প্যালেপ্লাইনে একট বাৰীন সাৰ্বভৌষ বাটই প্রতিষ্ঠা করিবার পক্ষপাতী। ইহার করে কিছতেই ভাহারা রাজী হইতে পারে না। স্থিতিত জাতিপুঞ্জের সনদ অভ্যায়ী भारतक्षेत्रित अ**न्यस्मृत्येक मामन अ**चिष्ठिच **र्**ष्ठेक देशादे ভাষাদের সভ্যিকার অভিপ্রার। এবন প্যাদেষ্টাইন সমস্তা স্মিলিত ছাতি-সন্ধের বিচারাধীন। এই সময় ইएमी श्राम भाग अदक्रशादार অসমত হটবে। এ সহতে ভাভি-সভের বিশেষ অবহিত হওয়া কর্তব্য। देश्योपित नर्दर य महे स्टेबाए अवना बादवता मात्री नव। ইহাদের আশ্রয়প্তল হিগাবে অন্য কোম দেশ বাভিরেকে একমাত্র প্যালেপ্তাইনকেই কেন বাছাই করিয়া লওয়া হইবে তাহা তাহাদের বারণার অতীত। এ ব্যাপারেও আরবর্গণ সম্বতি দিতে পারে না। অনুসন্ধান-কার্য্য সাফল্য-मिक कविएक स्टेरन भारतके हैं न न न न न स्वी-अरवन এবনই বন্ধ করিয়া দিতে হইবে। এ সম্পর্কে বিটন কর্তুণক্ষকে ছাভি-সজের পদ হইতে যথোচিত ব্যবস্থা অবলয়ন করিবার ক্ষম অবিলয়ে নির্কেশ দেওরা কর্তব্য। ধোরি বলেন, আরবগণ भर्कश्रकारत देख्यी जानकरायत न्यातनक्षेदिन-श्रवरण वावा षिट्य ।

সন্মিলিত কাতি-সম্বের সন্মুখে ইহণীদের পক্ষে মিঃ বেন-গাঁৱিয়ান যে-সব কৰা বলেন ভাষাও এ প্ৰসঙ্গে উল্লেখযোগ্য। বিটিশ প্রতিনিধি বলিয়াছেন যে, প্যাপেষ্টাইন-সমস্থা সমাধানে অপারগ হইরা ব্রিটেন জাতি-সজের নিক্ট ইছা উপস্থাপিত কবিয়াছে। এ সহছে সভ্যদের কিঞিং ভূল বারণা ভ্রিভে পারে, এ হেতু বেন-গারিষণ ভাহাদের এই বলিয়া সভর্ক করিয়া দেন যে, প্যালেটাইন যে ইহলী আবাসভূমি ইহা পূৰ্ব্বেই ব্রিটেন, যিত্রশক্তিবর্গ, আমীর কৈলগের মাধ্যমে আরব ভাতি এবং সিরিয়ার ভারব কমিট মানিয়া লন। রাষ্ট্রক্ত बर्ट्स भारमधीरेम्टक मार्ट्स हिमार्ट्स भागत्मद समा ব্রিটেনের উপর ভার দেশ, কোন সমস্তা মীমাংসার জন্য ভার (सम नारे। ১৯৩৯ मध्यत (४७-१८व और व्यवहा (४ ७० करा) হইরাছে রাষ্ট্রপন্থের স্যাতেট কমিশন ভাষা ঘীকার করিরা-ছেন। ব্রিটেনের বহু রাজনৈতিক নেতাও তথ্য এইরূপ মত **लकान करवन। अर्कादा देवशीया बाल्यकारम वार्वाफ** पिंगरेवात पश्च धर (पंज-शव पार्श्व)। धरे कात्र(वर्षे जांक প্যালেঞ্চাইনে পুলিন-রাজ প্রভিটিত হইয়াছে। পুভরাং জাভি-সব্দের পক্ষে প্রথমেই আবঙ্গক, বিভিন্ন আভিন্ন পক্ষ হইভে প্যালেটাইনে ইণ্দীদের বসবাসের স্বাভাবিক অবিকার মামিলা मश्चा ।

विकीत क्या स्टेन, गालिक्षेदिन देख्यी चाक्ति अक्षे

वज्य एमं। चनामा (माम देवनी एम चारण) वर्षमकाय देवनी एम भरद प्रज्य वावना (भाषन कवित्व व्हेरन। निष्कृतिय महत्व प्रज्य वावना (भाषन कवित्व व्हेरन। निष्कृतिय महत्व महत्व व्हेस प्रकृतिय प्रत्य व्यव व्हेस कृति
काल्य देविवान देवाय महत्व विक्षित्व। दृशं पृशं वर्ष कृति
हमि नवन्यानक व्हेशाय वहि, कि देवनी काणि व्याययदे
देवाय वहित कृतिया नेना नेना कि विवाय है नाय न्यायवित क्षित्व क्षित्व क्षित्व क्षित्व क्षित्व क्षित्व क्षित्व हिना है नाय व्यायव क्षित्व व्हित्व क्षित्व व्हित्व क्षित्व व्हित्व क्षित्व क्षित्व व्हित्व क्षित्व विवाद व्हित्व क्षित्व विवाद विवाद

আৱবরা আর একটা কথা বলে বে, বিদেশে বে-সব ইহণী অত্যাচরিত নিপীড়িত হইরাছে তাহার কন্য তাহারা তো হারী নহে। ইহার উভরে তিনি বলেন, ইহণীরা আরব রাজ্যে সিরা তো আশ্রর সইতে চাহিতেছে না, তাহারা ইহুণী-নিবাস প্যালেপ্টাইনেরই বাসিকা হইতে ইফুক। আরব-অধ্যবিত শহর ও প্রানে বহিরাগত একটি ইহুণীও আশ্রর সর নাই, তাহারা সকলেই সিধাছে ইহুণী-অধ্যুষিত তেল-আভিড, হাইকা, কেক্সালেম, নেপেভ প্রভৃতি শহর ও প্রান্সন্থে। এ-বিক দিয়াও আরবদের কিছুই বলিবার নাই।

বেন-গারিরন উপদংখারে বলেন আরব জাভির সঙ্গে ইহদীদের কোনৱপ বিবাদ নাই। ইতিহাসের দিক হইতে मिबिए शिल केण्डिये शार्व चामं:-चाकाका वदावद अक রূপই রহিয়াছে। ইখদীরা প্যালেপ্তাইনের উর্ভিক্তে কৃষি ও শিলের দিক দিয়া যাহা করিতেছে তাহাতে তাহারাও ষেমন উপঞ্জ, আৱবৱাও জেমনি উপঞ্জ। ইৎমী ও আৱব জাভি বদি বাৰীন ভাবে মিলিত হয় ভাহা হইলে সমঞ মধ্যপ্রাচ্যেরই আগু নবজীবন লাভ ঘটবে। বিধে ইহুদীদের হুছেশ বলিয়া কোন খান নাই। ভাহায়া আৰু পুৰ্ব্বেকায় বে বদেশের সভান পাইয়াছে ভাষাতে প্রভিবত্তক হওয়া আরবদের পক্ষে আলে ব্ৰক্তিয়ক নছে। পাৰীৰ বাট হিসাবে ভাষাৱা সন্মিলিত জাভি-সন্দের সভ্য হইবার ধাবি রাবে। ভাহারা নিবেরা খাবীন হইরা খাবীন আরবদের সহযোগে মব্যগ্রাচ্যের অৰ্থনৈভিক, সামাজিক ও ৱাৰ্থনৈভিক উন্নতি সাধনে ভংগৱ रहेरत । अक्षे चारीन हेरूमी बाह्रे अवर हेरूमी-चाइर विक्रण প্ৰতিঠাৰাত্ৰাই সভল সমুখ্যত সমাৰাম ছইবে বলিয়া বেশ-গারিয়নের বিখাপ।

প্যালেটাইন-সমভা নীমাংসার খণ ছাতি-সন্দের বিশেষ কমিট গঠিত ত্ইবাছে। কমিট প্যালেটাইনের অবস্থা সাক্ষাং ভাবে অবগত ত্ইবার জন্য বিশেষজ্ঞদের সেবানে পাঠাইরা-ত্মে। প্যালেটাইনের ইত্দী-জারুব সমভার সভ্য সরাবান তুটক ইত্তাই কাব্য।

## হে আবাঢ়, ভোমারে প্রণাম

#### শ্রীমহাদেব রায়

বরার আলে তো বারো মাল,
মিলম-লাবনে অবকাশ
নাহি হেন ছুনি বিনা কারো—
হে আবাচ, ছুনি ভবু পারো
বিরহীর বাত বিহবারে,
বেবা প্রিরা মানসের পারে
প্রতীকার বাগিভেছে দিন,
কীণ ভকু বিরহে মলিন।

মিলনের সাধনা ভোষার. প্ৰিয় তুমি ভাই ভো হিৱার। বসভের মধুর সলয় लपुणांच मान्य भवास्य. বল-প্ৰাণ্--- শক্তি কোৰা তার গ একা ভূমি পার এ বরার भूग जान भून कविवादि, কৰি ভাই ৰবিল ভোষাৱে: **८६ जा**याह, कृषि वदवेश. ভাপ ধর্ম পরাবের প্রিয়। সহবেদনার বাপভার (यव राक्त वर अविवाद, বিস্তিয়া সেই বাপভাৱে ৰাৱাসাহে বিক্ত এ ৰৱাহে দাও ভূমি বিপুল গৌরব রস-রূপে ভরি উঠে সব----পূৰ্ণ ভাৱ মনোহর রাগে, क्षरय-क्षपत्र छारे कार्य ব্যবধান দূর করিবার প্ৰেমে-পূৰ্ণ বাদনা অপার।

এ বিশ্ব-বিরহ্-মাবে ভূমি
এপে যদি স্থেহে বরা চুমি'
কঠে জামি' মহামিলনের
মহাগীত মহং প্রেমের,
অগতেরে বাঁব' একছরে,
বঞ্চিতের হুংব বাক দূরে—
সে বিলমে বিজেবের ভার
কঠ হ'তে নামুক বরার।
আমো শান্তি-বারা অবিশ্রাম,
হে আয'চ, তোমারে প্রণাম।

# আবাঢ়ের প্রথম দিবসে

এ এন এম বজ্বপুর রশীদ

হে বিষয়ী ভাষণ স্থান, ভোষার ভণের ভগ্ত আবরণবাসি উৰোচিয়া দিলে আৰি। দেবিলাম অনত বিৱহী ভূমি अकाष अरक्ता। चाराह्य क्षर्य वर्षत বেদনা-সৰল তব এই দীলা এই পুকোচুৱি আৰার বিবহী মনে বাজাইল বাদলের একভারাইরে স্থপতীর শিশীৰ বেলায়। আয়াচের প্রথম দিবসে বিরহী কবির বুকে বাবে ভার বাবে শ্বর অভীতের অকারণ বেদনা-বিধুর। বাভায়ন-প্ৰাত্তে নেৰদুভ---ভৃষ্ণাহরা বর্ষণের অবিশ্রাম্ব স্থরে অশান্ত মৰ্মনে কছে কৰা। আয়াচের প্রথম দিবলে---রেবা শিপ্রা বেএবতী নিবিদ্যার তীরে ক্ষেয়পুল-গৰবালে ভাগে বিৱহিণী ঘনপত্ম ক্ষ নেত্ৰ ভার—প্ৰাগায়িত পুসুরের মেছে चरडी विभिन्न विद्या डेक्टबिनी शास्त-কৈলালের ভুষার চুড়ার। আবাচের প্রথম দিবস---স্ট করে মর্মবুকে খনত বিরহ্গোক--অপার বেদনা আর নিঃসদ জীবন পৰে পৰে চলে অভিসাৱ---बाल ठी-बक्रिका-राम बादरीय कुथ-वीविकाय কদৰ নিৰুশ্বতলে। বারে পড়ে ভূণবুকে সুগন্ধি কেশর আয়াচের হোমাক পুলক। আষচের প্রথম দিবস---পুঞ্জীকুত নীলাঞ্চন মেৰ দলে দলে নীলাভ আকাশ কেলে ছেরে। কে বেন মধুর কোন্ সুদ্রের পাছ কাছে এল প্রাদণে আমার ভৰি ভার চরণের ধর্নি। শাল ভাল আমলকীর ব্যাকুল পরব শিহরিল আনস্থ উচ্চাবে— (बोरान कार्निण नवी जक्यार विश्व विज्ञादन ब्रक्मीनकांब मधुनाटन । বিরহের বাধা আবি সর্বাতীত কৃষ্ণি অভিসারিকার বুকে উঠিল বঞ্চার বাজিল গভীর রবে আমন্দের স্থমক্ত মরার।

### বাংলার অনুসমস্তা

#### শ্রীকালীচরণ ঘোষ

গত ২০শে কুনের পূর্ম পর্যান্ত 'বাংলা' বলিতে সমগ্র বাংলা विश्वशानी वारमा, शाकिश्वामी वारमा, मध्या सम (कांडे वाक्षांनीय रमन विनदा कार्विदाधि: आधात निरकत, श्रविवाद-वर्शव अधिवनीत (जनवाभीत कवा मन इटेबाए । तम्हे হিগাবে চিন্তা করিয়াহি, প্রবন্ধ লিবিয়াছি। আৰু আমরা কেবল ভিন্ন প্রদেশের লোক নই, ছই বভন্ন রাষ্ট্রের অবি-বাদী। আমরা ভির স্বার্থে চলি, বিভিন্ন প্রাক। অভি-বাদন করি। হিন্দু ও হুসলমানের বিবাদ, এক দিন পূর্ব্ব ও পশ্চিম বাংলার ছুই সম্প্রদারের বিক্রছে ছুই সম্প্রদারের श्राष्ट्री विष्णाम भविष्ठ २हेट्ड भारत। अरमान अरमान य भेर्वा-क्ष बादक, शार्वश्रामिण इट बारहेब विवाप-বিসম্বাদ তদপেকা হয়ত অধিক হুইয়া দীভাইবে। এ ভাবে हिशा कतिए इटेरन, छाड़ा कथन कत्रनां कति नारे। আৰু বান্তবের কট্টপাশরে খযিলা দেবিতেছি, আমরা এক वाडानी छ नहेंहे। जामदा এक वाडानी, कडक वान कति বিহার প্রদেশে, কতক বাস করি ভারতীয় যুক্তরাষ্ট্র বাংলা ও শাসায়ে খার বাকি বাস করি পাকিস্থানে। এক শাতি এত ভিত্ৰ অংশে পভিত্ৰা আমহা বাঙালীখের পরিচয় ছারাইতে विश्वादि । विश्वाद वारमा चामाद्य विश्वके त्वमाञ्च विश्वक वाक्षाणी नाना अरमानद विकिन्न दार्द्धेद यज्ज्ञ नारम পরিচয় লাভ ক্রিবে। আম্রা বাঙালী বলিয়া যে গৌরবলাভ ক্রিভাম, ভাষা অংশত: কুর হইবে। ভারতীয় যুক্তরাট্রে অংবা পাকিলাৰে ধিবাৰিভক্ত বাঙাগীর পঞ্চে যোগ্য আগন লাভ করা সম্ভব হইবে কিনা তাহা ভবিতবাতাই বলিতে भारत ।

আৰু বাঙালীর অন্নয়ন্তার অর্থ, হয় পশ্চিম বদের এগারোট আর মা হয় পূর্ববদের বেলা কয়টির কথা ইাড়াইতেহে। এ চিড়া করিতেও ক্লেশ আহে, কিও তাহা দূর করিবার উপায় নাই।

পুর্ব্বে আমাদের কভকটা আনা থাকিলেও, ১৯৪০ সালের ছুর্ভিক্ষ কিন্তু আমাদের অর্থাং সারা বাংলার, অভাবটা পরিক্ষ্ট করিয়া ভূলে। আমরা বুর্তিভে পারি, পরের সাহায্য না পাইলে বাংলার পেট ভরে না, অর্থাং মাহ্বের সর্ব্ব প্রাথমিক অভাবের জ্বল আমরা পরনির্ভর্তীল। সারা বাংলার বাজে বাঙালীর চলিত না, এবন পুর্বাঞ্চলের ধান পক্তিমে আসিবার পথে বহু বিঘু; বহু অভ্যার ঘটবে। আসুচিপ্রান হুইতে আরম্ভ করিয়া সম্ভ উত্তর-পশ্চিমাঞ্চলের

পাকিভানী রাষ্ট্রবিভাগে জন্নভান্তর প্রয়োজন থাকিলে, বর্তমানের এক কেলা ছই রাষ্ট্রে বিভক্ত ছইরা পঞ্চিলে, এ জকলের লোক পালের জকলকে সাহায্য করিতে পারিবে না। পাকিভানী রাজবানী করাচী হইতে পরোধানা বাহ্রি ছইলে তবে পূর্ব্বনাহর পশ্চিম মলোহরে চাউল দিতে পারিবে! মালদহ, দিনাজপুর, মুর্নিদাবাদ, মলোহর, বাবরগঞ্চ প্রভৃতি করেকটি জেলার জবহু! শুরুতর হইতে চলিয়াছে। সভপ্র ছই রাষ্ট্রের মধ্যে হচ্ছের কোনও সন্থাবনা থাকিলে, পূর্ব্ব মালদহের প্রাভা, পশ্চিম মালদহের প্রাভাকে এক দের চাউল দিয়া সাহায্য করিতে পারিবে না, কারণ ভাহারা ভিন্ন রাষ্ট্রের লোক। পূর্ব্বাঞ্চলের জভিরক্ত বাদ্য পশ্চিমে আদিবে না, এই কবা জ্বন করিয়া আজু বাংলার বিভিন্ন জংলের জন্তসমস্থার কবা ভাবিবার সমন্ত্র উপস্থিত ছইয়াছে।

সাবারণত: সারা বাংলার জ্ঞ বাংলার বাহির হইতে ১,७२,००० हैन हाउँल अवर २,४५,००० हैन गम आध्यानी কবিতে হয়। তাহা ছাড়া আগাম ও আরাকান হইতে যে চাউল আলে তাহা হিপাবের মধ্যে বরা হয় না। আমাদের ৰাৱণা বিহার হইতে, অৰবা যুক্ত প্ৰদেশ হইতে আমুৱা বহু খাভ্ৰম্ভ পাইরা থাকি। হয়ত ক্ৰন্ত কোন্ত সময় नारमाध थाय चाउ। का चाकित्म, अस चवना ठाउँम किह আদে, কিন্তু ভাষা মোটেই নির্ভরযোগ্য নত, কারণ বিহার अरम इरे भक्ष हैन हाउँम, १४,००० हैन श्रम आयशनि करत । তাহা হাড়া ভাহাকে নেপাল হইতে ৭৪,০০০ টন চাউল আমদানি করিতে হয়। যুক্তপ্রদেশ সরিষা, চিনি প্রভৃতি দিলেও ৰাভ দিবার সামৰ্থ্য ভাষার নাই। কারণ সে বিষয়ে ভাষার নিকের প্রায় ৫০,০০০ টন বাট্ডি আছে। ভারতের মধ্যে नक्ष्मक, म्या अराम ७ (वजाज, त्रिक्, देशिया) ७ जानात्म किष्ट बाह्य प्रमुख एवं । ज्यादा भिक् ७ श्रक्तम क्षराम । श्रक्तरमञ् অবিকাংশ এবং সিছুর সমন্তটাই পাকিন্তানে রহিরাছে। নিভাল বিপাকে পভিলে উভিষ্যা কিছু চাউল দিতে পারে। আলাম হইতে যাহা পাওৱা বার, তাহা ছাড়াও আমাদের ষৰেই অভাব বহিয়াছে।

বাংলাদেশের ২৮ট জেলার মধ্যে গুলমা, মুশিবাবাদ, বীরপুম, বাঁকুড়া, মেদিনীপুর, রাজসামী, দিনাজপুর, জলপাইভড়ি, বাধরপঞ্জ নোরাবালি এই ঘণট জেলার (১৯৩১-এর বিগাবে) চাউল উদ্ভ হয়। বাকি ১৮ট জেলার (কলিকাভার কিছুই জ্বার নাঁ) ক্য বেশী ঘাইভি আছে।

উষ্ভ শস্য উৎপাদমকারী জেলাঞ্চলর মধ্যে চারট ভারতীর रेडिनियान, हाबके शाकिकारम अवर बुममा ७ धुनिमायाम ভাঙিরা দিলে চুই ভোমিনির্মে চলিরা ঘাইবে। সুভরাং ভারতীর ইউনিয়নই হোক ভার পাকিভানই হোক, এই বাংলা বিভাগে ৰাজ্যজ্ঞের হিসাবে কাহারও পক্ষে বিশেষ সুবিবা হইল না। কিছ পাকিলানী বাংলার সুবিধা এই যে ভাষার পক্ষে সিফুও প্ৰনদ রহিয়াছে। সিজুর উদ্ভ, উংপর শভের শতকরা ত্রিশ ভাগেরও বেশী। পঞ্চনদের যে অংশে অধিক গম উংপদ্ন হয় ভাষা পাকিন্তানী অঞ্চ। ছয় লক্ষ্য একবের অধিক পরিষাণ ক্ষতিতে পম চাষ হর, ফিরোজপুরে; ভাষ্ট ভেষল ভারতীয় ইটনিয়নে। ভাষার পর পাঁচ লক্ষ একবের উপর চাষ হয় আটক ও মৃলভানের প্রভ্যেক কেলার; চার লক্ষ্য একবের উপর ক্ষিতে চাষ্ট্র, সাহাপুর ও মতোপেযারী क्लाइ बर क्रांड व क्रांड क्लाइ पूर दानी हार एक. यवा — ७३ मानपूर, ७ वरा ४ ७ हाना, वन, नार्यात अपृष्ठि, ইছাদের প্রভ্যেকটই পাকিভানে; সুভরাং ভারভীয় পঞ্চদে বাদ্যশন্তের অভাব ঘটিতে পারে: তাহাধের পক্ষে বাংলাকে সাহায্য করা সম্ভব হইবে না।

यया अरम्भ ७ (४४/१४ (यम्भ छेष् ७ व्याटक (महेक्स বোখাই, মাদ্রাক এমন কি যুক্তপ্রদেশে বাট্ডি আছে। তাহা ছাড়া সারা ভারতে খাভাভাব আছে। তাহার মধ্যে ভারতীয় ইউনিয়ন ও পাকিভান সমতে হতপ্র আলোচনা করিবার প্রয়োজন বোৰ করি না। যোট ভারতের ৬ কোট ১০ লক্ষ টন वाषामाध्य धाराका एवावा ठाउँग २ कार्ष ३० मक हैन. পম ১ কোট টন, কোৱাৰ বাৰুৱা প্ৰভৃতি ১ কোট ১৪ লক हैन यद २७ लक हैन (शांशा 88 लक हैन, क्लारे ७० लक টন প্রতি বংগর উংপাদিত হওয়ার সম্ভাবনা। তমব্যে বীক मछक्ता ১० जान ७ जनहरू मेरुक्ता २'४ जान वाप पितन त्यांहै e (कांहि 30 नक हैन भर्शक भावश मार्टेट भारत। किछ वर्षमात्म १ कोडि ४० लक्ष हैत्मद अधिक बीमान्य পাওয়া যায় না: ১৯৪৪-৪৬ সালে ৪ কোটি ৮৫ লক টন প্রয়ত ক্লিয়াছে। পুভরাং সারা ভারভের ঘাট্ডির পরিমাণ ७० जक हैन वा श्रेट्रिक बन्न : ८० जक हैरन श्रेष्ठारेट्ड । সুভরাং ভারতবর্ধের অপরাপর অঞ্চ হইতে কত কগণ পাওয়া ষাইবে ভাছা ভাবিবার কথা।

ভারতের বাহির হইতে বাদ্যলত আমদানি করিয়া প্রয়োজন মিটতেছে কিছ ভারতে সর্বাদ্য আশহা আছে। হরুত ঠিক প্রয়োজনের সময় বাদ্যলত পাথয়া বাইবে না। অপরে ভারতের পুরিবামত দিবে। আমরা সম্প্রতেশ অবস্থার দাস হইরা বাহ্নিতে বাব্য হইব।

বহু কোট অৰ্ব্যয়ে শশুর পরিমাণবৃদ্ধি আন্দোলন চলিভেছে। ভাহাতে বিশেষ কোনও কল হর নাই। কুবি-প্রের মূল্য বেরপ বৃদ্ধি পাইয়াছে, ভাহাতে কুমক নিজ

চেষ্টাৰ চাৰ ৰাজাইৰাছে, সৱকাৰী প্ৰচাৰণত্ত-পত্তিকাৰ পৰিমাণ বাজিয়াছে, কসল বাড়ে নাই। বত বংসর বাবং ভারতে ৰাজ্যভেৱ অভাব পরিলক্ষিত হইরাছে, তাহার মধ্যে অমির উন্নতি, কসলের পরিমাণ বৃদ্ধি প্রভৃতি বিষয়ে ব্যাপক এবং হামী পরিক্রনার কবা হয়ত আলোচনা করা হইয়াতে, কিছ তাহা কার্য্যে পরিশত কবিবার চেষ্টা হয় নাই।

কিছ এই ক্ষ ক্ষ হই অংশে বিভক্ত থাংলাদেশ্য পক্ষে আর কালহবণ করা মুক্তিমুক্ত নয়। কৃষির উপযুক্ত আমর পরিনাণ রন্ধি করিবার চেইংচলিতে পারে, কিছ কোনও কোনও কোনও কোনও কোন কাল সমাকের ক্তিকর হওয়া সপ্তব। বন, পতিত ক্ষম মাধ্যের পক্ষে অতীব প্রয়োজনীয়। তাহায় কতটা কোবার বাকা দরকার, তাহা নিবল্প করা মুক্তিমুক্ত। চাথের উন্নতির ক্য সার সরবরাহ করিবার পরিবল্পনা আছে, কিছ তাহা কল প্রস্থান কাল । ইয়ত কৃষির পরিবল্পনা আছে, কিছ বল্পনি এবং বল্পনি চালাইবার ক্রানের আলাব। তাহা ছাড়া ক্ষি এত বিভক্ত হইলা প্রিয়াছে যে তাহাতে বৈত্যতিক প্রিকালিত যথানি হারা চাল করিবার আম্বিবা হইলা প্রিয়াছে।

বাংলার চাষের জমির শতকরা প্রায় ৭০ ভাগ রায়তের অবিকারে, এবং ভাছারা যে ধ্যে খড়বান ভাছার মধ্যে দত্তকুট করিবার ক্ষমতা নাই। रक कशियाब পত্ৰীদার কোভদার মিলিয়া বাকী ২০ ভাগ ক্মির মালিক। চিবছাৰী বশোবত-প্ৰথা রদ করিয়া বাংলার ক্ষরির উন্নতি ও সরকারী আর বৃদ্ধি করিবার প্রভাব যাবে মাবে গুনিতে পাওয়া যায়। তাহা সত্য সভাই উভঃ উদ্ভেৱে পক্ষে কত উপধোরী একবার ভাবিষা দেখা গরকার। চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত রদ ক্রিভে হইলে অমিদারের সহিভ রারভের গড় লোপ করা দরকার, কারণ সমস্ত চাধের উপধোপ ক্ষির ছই-তৃতীয়াংশের প্রকৃত মালিক তাঁহারাই। কেবল ক্ষিদারী প্রধা লোপ कविटम चवष्टा किक्रम कैकारित, छात्रा वृतिछ भावा যার মা। বছ অবিদার এক হিসাবে চাধী, সুভরাং ভারাদের চাবের ক্ষি প্রয়োজন। বাঁহারা মব্যথগুড়োপা, ক্ষির চাবের সহিত সংঅধবিহীন, তাঁহারা এক হিসাবে সেই স্বত্ন বা সম্পত্তির বালিক, পুতরাং কাহারও সম্পত্তি লইতে গেলে, ভাহাকে ছাবা ৰূপ্য দিতে হয়। সাধারণতঃ প্রকা হইতে বোদ গবৰ্ণমেন্টের মধ্যে আন্দান ১৬ কোট টাকার হাত-কের হইয়া বাতে। কিছ চিত্রভাষী বন্দোবত হদ ঘটলেই এই টাকা जबकारी चात्र किनांदर दक्षि शार्वेदर ना । देश दक्षशादकद्वत अर्शिक्षे वाष्ट्र, वर्षमात्म गवर्गस्यक्ति चामात्री चाममा, त्मम ট্যাক্স প্রভতি বাদ দিয়া ব্রিলে পরিমাণ ক্ষিয়া বায়। ভাষা ছাড়া আদায়ের ব্যৱ আছে ; শতকরা দশ টাকা ছারে ধরিলে লে পরিমাণ আরও ক্ষে। মোটের উপর কেবলমাত্র চির্ছারী थ्या विरमाण कविवाद कवमा कविवा विनवा पाकिरम, हारबद

উন্নতি হওৱা দত্তৰ নহে। তাহা হাড়া বাত্ৰিকই কাহার চাব্য অধিকারে হতকেপ করা হইতেহে, তাহাও তলাইরা ধেবা বরকার। আবার বনে হর চিরহারী বন্দোবত প্রবা আবৃল পরিবর্তম করিবার প্ররোজন আহে এবং সে বিষয়ে কি করা বাইতে পারে, তাহার পরিকল্পনা এবনই ঠিক করিরা কেলা ধরকার। সকে সকে অচাচ বৃহৎ পিল বাহাতে গবর্পমেন্টের হাতে আসে, সে ব্যবহাও করিরা কেলিতে হবৈ। অবিধারীর ব্যাপারে বরচ বাবে বাংস্থিক আফার্ক পাঁচ কোটি টাকা লাভের অভ লইরা আবরা ভাবিরা আকুল হইতেহি; কিঙ্ক তাহা বহু লক্ষ্ণ লোকের বব্যে হড়াইরা আহে। তদপেকা ক্য লোকের উহা অপেকা বেশী লাভের অক বেবানে আহে, তাহাও সাধারণের ঘর্ষলে আনা প্রয়োজন।

কিছ ক্ৰভ কাৰ্য্য পৱিচালনার কৰা ভাবিতে গেলে, খত পছা আবিভার করা ভরকার। ফলগী ক্ষির পরিমাণ অভাবিক সভীৰ হওৱাৰ চাষেৱ উন্নতি ও কলনবুদিৱ পৰে বহু অভবাৰ ছেবা হিরাছে। তাহার উপর চাষীর দারিত্রা, অঞ্চতা চাবের উপৰুক্ত সৰঞ্চাৰ প্ৰভৃতির অভাব চাবের উন্নতির পরিপন্থী। क्रक्रवाद्य क्यानिहे अवर्त्यक स्ट्रेल, अवस स्थि वारक्यां ভরিতা সাধারণের ভর্জ বিরাট ক্রমিক্সের তৈরি করা সম্বব। কিছ সে কত দিনের কথা পাহা ছাড়া একটা শ্বক্রতর বিপ্রব সা হইলে রায়তদের নিকট হইতে রণ্ড কাছিরা লওৱায় অনেক গোলখোগ উপস্থিত ছইতে পারে। বহ ভ্ষিতার কংগ্রেসের সভা এবং কংগ্রেসের আচেশ মানিয়া চলেন। তাঁছাদিগকে একেবারে উপেকা করিয়া কোনও निटर्मन फिएल क्टेंटन, लाकांत श्रीवर्ट्स कि एक्थवा बांब, কংগ্ৰেস ভাষাৰ ভাবিয়া দেখিবে। কংগ্ৰেস পশ্চিম বাংলার শাসমভার হাতে সইতেহে, সুতরাং কমিদার রারত ও कुत्रक्त कवि नरेता कि कतित्व, जाशात अकी निर्देश हितन ভবে ভবিত্র মালিক বা স্বভাবিকারীর নিক্ট হইতে ভবিত্র चविकात नहें एक चन्नविवा वहें देव ना ।

ক্ষির উন্নতি বা কলন বৃদ্ধি করিতে বে সকল উপার অবলবন করা দরকার, তাহার বৃদ্ধে অর্থ ও উৎসাহ প্রয়োজন। অনেক হলে গংগনৈত নিজে অনিহার, উক্ত ক্ষমিদারীর নাম বাসনহল। এই সকল ক্ষির মধ্যে বৃহদারতন অংশ লইরা ব্যরণাতি অববা সবল পশুর সাহায্যে প্রভৃত উন্নত ধ্রণের চাৰ ক্রিতে পারিলে পার্ববর্তী ক্ষেত্রের চাষীরা উৎসাহিত ক্ষরা নিকেরা দেইক্সপ চাবে মদ দিবে।

কিছ ক্ষির আরতনের ব্রুতা উর্তির পথে অপর একটি বাবা। ইহা হ্র করিতে না পারিলে, ফ্রুত ক্ললাভের ক্ষেম্থ আশা নাই। সোভিরেট প্রপ্রেকের মিক্ষ্য তলাবানে ক্ষি চাষ হয়, প্রকার। স্বিলিভভাবে চাষ করে, ক্ষমি সমন্তই প্রপ্রেকের। কিছ ইটালী,বেলজিয়ম, সুইজারল্যাও, ক্লাল, আর্থানী প্রভৃতি কেশে বিভিন্ন প্রকার এক্ষীভূত জ্মিতে ব্যাপক ভাবে চাষ করিবার চেটা হইরাছে, এবং ভাহার। সে বিষয়ে সকলকাম হইরাছে। কিছ ইহা কেবলমাত্র প্রকাষের চেটার হয় নাই। প্রকারা চাহিরাছে, ক্ষিত্র পারে নাই। সেবানে প্রপ্রেক আইন্যারা ভাহাদের সহারভা করিয়াছে। বহু বঙ্গিত ক্ষমিলিত হইরা আরভনে বৃধ্বি পাইরাছে; লোকের স্থিলিত চেটার চার হুইরাছে, ভাহারা আশাভীত ক্ষপণাত করিবাছে।

वारमाव अवन श्रद्धांकरमव कश्मारक बाक्र हेर्भागरम মনোবোৰ হওৱা উচিত। পূৰ্ববন্ধের পাট আছে ভাহার পরিবর্তে ভাছারা খাভ ক্রন্ত করিতে পারে: পশ্চিম বলের ভাষাও নাই। উপরত্ত পাটের ভরও এখন ভাষাকে পরম্বাণেকী হইয়া বাকিতে হইবে। শিল্পাত এব্য বিক্ৰম কৰিয়া যদি ৰাভ ক্ৰম কৰা যায় তাহা হইলে খতভ কৰা, কিছ প্ৰকৃতপক্ষে আময়া সে অবস্থায় উপনীত হইতে পারিরাছি বলিরা মনে করিতে পারি না। আমরা তৈলবীক অৰবা তৈল, চিনি, তুলা, কাণ্ড ও লোহা প্ৰভৃতি নিভা व्यक्तिक्रीय क्षरवाय कर चन्द्र अध्यक्तिय केविया আহি. কিন্তু এ সকল না হইলেও বিগত মুন্তের আমগ হইতে चणारअख स्टेशां यदि नारे. किंद्र गाउँम भावता ना त्रता कि ररेए गांद, जारांत नर्ना जामता ১৯৪० प्रांत्मत इंडिएक হাতে হাতে বুবিরাছি। যাহারা জর দিতে সন্মত হইবে, ভাহারা নিজের নির্মারিত দামে আমাদের নিয়ন্ত্রা ক্রম করিতে চাহিবে, তাহাতে গরুহ ক্তি হইবার সন্তাবনা। বাহাতে আমরা অর বিষয়ে অন্ততঃ কতকটা বাবলগী হইতে পারি ভাষাই আমাদের একমাত্র চেটা হওয়া উচিত। অভবা বাংলা বিভক্ত হইয়া ৰদি-বা মুস্লিম লীবের অভ্যাচার হইতে বাঁচিয়া বাকি, আমাদের অলসভা এবং অদূরদর্শিভার কর প্রকৃতির মার হইতে বাঁচিতে পারিব না। সময় থাকিতে नावनाम एउता टार्साकन।



### কোরানে 'আলা' বা ভগবানের স্বরূপ

অধ্যাপক শ্রীহরেন্দ্রচন্দ্র পাল, এম. এ

কোরানের 'সুরৎ-অল্-কভিছ্' নামক প্রথম অব্যানে ভগবানের প্রশংসা সম্পর্কে বণিত হুইয়াছে, ''অগ্ল-ছুমুছুলিগ্রাছি ব্রক্ষিল-'चानविद्यन , चत्-बर्गानि, चत्-बरीमि , गानिकि ह्यि-धीनि , म'बबूड त देशक मर्ड'देवूयू: देह विन! अग्-বিরাখাল-মুভকিম : বিরাখাক কৌন অন্-'অস্ত 'অসম্বির : ব্ধরিল্-খব্জুবি 'অলমহিষ্ র লা অক্-আলিয়ন।"----भक्न विश-कर्गाण्य क्षिणिमक छगवानटक ( जाभारमञ्ज) সকল প্রশংসা অপিত হটক। (তিনি) পর্ম দ্যালীল ও অপরিদীম দয়ালু; (এবং) শেধ-বিচারের দিনের সর্পায়র প্রভাগ (হে ভগবান) আমর। সকল সময় আপনাকেই উপাসনা করিতেছি, এবং আপনার নিকটই সাহায্য প্রার্থনা করিভেছি,--- জাপনি অন্তপ্রহ করিয়া (বর্ণ্ডের) সরল পর ্দেৰান, যে পৰে আপনি অঞাল (মহাঝাদের) উপর দ্যাবান হইয়াছেন, (এবং) যাহাদের উপর জাপনার অভিসন্পাৎ পতিত হইয়াছে, অৰবা হাহায়া বিপৰ্যামী श्रदेशास्त्र, अवेक्रण भाष जाभारतं जानिज कदित्वम मा।"-- अवे আর্থে (বালোক)সমূহ মুসলমানপণ ভাহাদের সকল উপাসনার ভঞ্জিভরে প্রার্থনা করিয়া বংকেন। এই প্রথম च्यात्र चटनक भग्ध 'छेगूज़-cकांबान' ( वा cकांबाटनब मात्र ) বলিয়া অভিহিত হইয়া খাকে: এবং প্রস্তুপকে আমরা দেবিতেও পাইব যে, সমস্ত কোরাণে যাহা বিষ্ণুভ হুইয়াছে. ভাষার সারমর্থ এই সাভট লোকে সংক্ষেপে বণিত হট্যাছে।

তিনি বিশ্ব-জগৎ বা তাহার স্কটির প্রতিপাদক (র্কিল-'आमिश्रम् )- এবানে 'आमिश्रम्, 'आमभ् मरगत विवध्न, ইহা হইভে বুঝা যাইভেছে, তিনি ইহকগং ও পরকাং, এই উভয় ৰগতের সংব্যয় প্রভু 😮 পালনকর্তা এবং 'আলম্' ('ইল্ম হইতে) এর শ্বগত অব্ যাহার সাহায্যে ভানা যায় चर्वार बहे नृविवीहे अक्सांत श्रान त्यवात्म क्यानाच कविश्रा **गानुश्रक ७१४९-छेनम्बि क्रिट्ड इटे**र्ट । अटे मन्नर्क स्क्रदर মহশ্বদের একট উভি (বা হদীস) প্রসিদ্ধ আছে, "কুন্তু কন্দান मर्किशान् कार्याष्ट्र चन्-च अक् करणक पू चन्-चन्क---" আমি (ভগবান) একট অভাত রপু হিলাম: আমি ইছা ক্রিলাম বে প্রকাশিত হই . সেই হেডু এই স্ট্রি স্ক্র क्विनाम।" अनेवानत्क क्षेत्रहेणात्व छेनन्कि कविवाद कर्ष्ट चायारमत अरे कथा। कारक कारकरे, चायारमत जनम आर्थना ক্ষেবল তাহার প্রভিই হওয়া উচিত। এই প্রার্থনা আমাদের চিরসহায়, কারণ ইহার সাহায়েট ক্রমে ক্রমে তাঁহার সেই প্রকৃষ্ট রূপ সম্যক্ উপলব্ধি করিতে পারিব। তগবাদের নিবের कान अन्दर्भाव प्रवृक्षात माहे। त्यहे भवत्यश्वतक अस्टेक्स জানিরা, আমাদের জমোরভির পবে অঞ্চসর হইবার কচ বার बाब डीहारकरे शार्थमा कविएड रहेरन। 'बक्त्'-अब वर्ष প্রতিপালক মা বলিঃ। সর্কায়র প্রতু বা পরমেশ্রর বলিলেই আনেকটা শম্পত অর্থের প্রকাশ পার , তিনি চির্মীন ও চিরন্তন, বাঁহার চির্মায়ী অভিত্যের মধ্যেই আমাধ্যের অর্থনিহিত অভিত্য ওতঃপ্রোত ভাবে মিশিয়া রহিয়াছে।

'ভিনি পরম দয়াশীল ও অপরিদীম দয়ালু।'---এবং ভাঁহার **अरेक्न अन्तर्भन्न २७३। वाजित्वरक छेनाय बार्ट : कायन, किनि** य भक्त कीरवद পোষণकादी ७ भागवक्रा। कारकरे, त्मरे भद्रसम्बद ७ छाशांत रहे बोरवंद मर्या अक অকৃত্রিম ভালবাদা ও প্রেম অবিজ্ঞির ভাবে ভভাইয়া রহিয়াছে। এই সম্পর্কে অন্ত একটি হুলীসের ( ধা হুজুরং মহন্দ্রধের উল্লিম্ব ) উল্লেখ খাছে, 'কেবল ভোষার ( হক্তবং মহপ্রদ ) করুই খাষি ( ভগবান ) এই অভিভ্সমূহের স্**ট** করিয়াছি' ( স্টলক···)। बदर श्रीतंत्र कादनी कवि ७ मार्ननिक योगामा क्रमी कादनी কোৱাৰ ৰামে প্ৰসিদ্ধ তাঁছার বিখ্যাত মস্মবীতে এই উচ্চিত্র विदल्लभग नवरक नाश्चितारकन, 'शविज द्यान स्कतर महत्वरकत সহিত সংযুক্ত হইয়া বিয়াছিল; ভালবাদার ভত্ত ভগবান ওাহাকে বলিয়াছিলেন, 'কেবল তোমার **ভট**্'···যদি ইহা পবিত্র প্রেমের জন্মই না হইতে, তাহা হইলে আমি (জনবান) কি করিয়া এই অভিহুসমূহের প্রকাশ করিতে পারিভাম। আমি এইকটে ধর্গের ভাষ মনোরম স্থান নির্দ্ধান করিয়াছি. থাছাতে ভূমি প্রেমের মহত্ব অধ্যক্ষম করিতে পার। --- আমি পুৰিবীকে এত নিকৃষ্ট করিছা স্বষ্ট করিয়াছি, যাহাতে ভূমি প্ৰেমিকদের নীচতা সথৰে কতকটা ধারণা করিতে পার। আমি পুৰিবীতেই ( আবার ) সজীবতা ও সতেজ্ঞা দান করিয়াছি, যাহাতে ভূমি সাধুদের ( আবাজিক) উন্নতির কতকটা আভাস পাইতে পার। (এবং)প্রশাভ পর্বতের ভার উল্লভ্রন্তর সাধুগণ প্রেমিকদের মনের অবিচলিত অবস্থা বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন, যদিও পেই অবস্থাই প্রকৃত সভা এবং বর্ণনা (क्वल क्रथकमाळ ; (किंक अरे दर्गना अरेक्ट कडा एस) যাহ।তে (প্রকৃত সভার) কতকটা ভোমার গুদমক্ষ হয়। ( मननती, वम चं छ ) । (काशारन 'बह-बर्मान्' ७ 'बह-बर्गेम्' পরম ধরাশীল ও অপরিসীধ ধরাপু, ভগবানের প্রতি আরোপ্য बह इहि खिल्वाका बहेक्य चार्य वावधल स्हेशारम, माशारल श्राम इस (य फनवान अहे इन्हें श्राप्त मना विश्वाद (यन আমাধের নিকট বিশেষভাবে প্রকাশিত হইরাছেন।

সেই পরম দয়াশীল ও অপরিসীম দয়ালু অসবান, তাছার প্রের ও দয়া দারা তাঁহার স্ট জীবকে এইরপভাবে প্রতিপালন করিতেছেন যে সকল ধর্ম-বিবাসী'ই শেষ বিচারের দিনে তাহার নিকট হইতে পুরস্বত হইবে, এবং তিনিই এই বিচারের সর্কাবর কর্তা। 'র্নি-দীন (বিচারের দিনের) রুব্(দিন বা ক্ষব) সম্বাদে কোরানে এইরপে ব্রিত হইরাছে যে এই বিদক্তে ব্য আর বৃহত্ত বলিরাও বরা বাইতে পারে, আবার
আতি বিভূত কালেরও অত্তুত করা বাইতে পারে।
এবং কোরানের ইংরেজী অত্বাক্ত মহন্দ আলী
এইলপ অর্থ করিরাই 'বিচারের দিন' নদতে বলিরাত্তন বে
আমানের এবন বারণা করিবার নাই বে এই শেব বিচারের
দিন কোন নির্দিষ্ট সম্বরের পূর্কে আসিবে না। প্রকৃতপক্তে
এই বিচার সকল সম্বের ভতই আরাদের উপর প্ররোগ
হইতেত্বে এবং তিনি সকল স্বরই আরাদের কার্য্যকলাপ লক্তা
করিতেত্বেন এবং বে পর্যান্ত না আম্রা ভাঁলার প্রতি হির
বিশ্বাস রাখিরা এই বর্দ্যপথে চলিতে পারিব, সেই পর্যান্ত
আমানের জীবন প্রকৃতপক্তে সকলকান বলিরা গণ্য হইবে না,
এবং আম্রা ভাঁলাকে উপলব্ধি করিতে না পারিবা ভাঁলার
নিক্ট হইতে দুরে রহিরা বাইব, অথবা বিশ্বপানী হইব।

বৰন আমন। উচ্চার সহিত আমাদের এই নিকট সহত আনিতে পারিরাছি ও দেবিতে পাইতেছি বে তিনি সকল সমরই আমাদের প্রতি করণানর ও দরাবান, তবন সকল সমরই উচ্চার নিকট আমাদের মাধা নত করা দরকার এবং তাঁহারই ছতি করা অবঞ্চর্জব্য, যাহাতে আমাদের অঞানতা ও পাপসমূহ হইতে মৃক্ত হইতে পারি, এবং সেই সহজ, সরল ও সত্যপবে চালিত হইরা উচ্চাকে প্রক্রন্ত্রপে অদরকম করিতে পারি।

কোরানের বিভার অব্যারের 'আরাং-উপ্-কুর্সী' নামক স্নোকে ভগবান সকলে বণিত হইরারে; আরা (বা ভগবান)—
ভিনি হাড়া আর কোন শক্তিমান নাই। তিনি চিরজন ও
চিরহারী, কোন নিলো বা জড়তা তাঁহাকে অভিভূত করিতে
পারে না। তিনি এই পৃথিবী ও স্বর্গের সকল জিনিষের
অবীণর, এবং এমন কে আছে যে তাঁহার আদেশ হাড়া
তাঁহার হইরা নধাহতা করিতে পারে? তিনি ভাহাদের ভূত
ও ভবিয়তের সকল বিষর জাত আছেন। সেই প্রমালা
সক্ষের জান লাভ করা নাজ্যের বারণাতীত; কেবল তিনি
ইছা করিরা হত্তুকু প্রকাশ করেন, (ভত্তুকুই ভাহারা বারণা
করিতে পারে)। তাঁহার রাজত্ব স্বর্গ ও মর্ডো বিভার লাভ
করিবাহে, এবং তিনি ইহাদের উভরের রক্ষণাবেক্ষণ করিতে
কর্মণ ভাত্তি বোর করেন না।

বাছবিক ভগবাদের কোন বর্ণনা হইতে পারে না; তিনি কেবল উহাদের হারাই বোবগন্য, বাহারা সেই প্রন্যভাকে উপলন্ধি করিতে পারিরাছেন বা উপলন্ধির পথে অনেকটা বাবিত হইরাছেন। সেই প্রব্যন্তাকে কোরানে 'আলা' শব্দ হারা বুবাইতে চেটা করা হইরাছে। কিছ আলার শব্দগত অর্থ 'প্রব্যক্তিশালী' (বা ভগবান) এই অর্থে বছতঃ প্রন্য-সভার বারবাকে অনেকটা সভীর্ণ করা হয়। সেইক্ত এবানে উহাকে 'ছু' (বে বা ভিনি) এই সর্ক্রান্যারা বর্ণনা করা হইয়াহে এবং 'ভিনি' অর্থে সকলগুণবিশিষ্ট সেই এক ज्यवाय वा जाहार एकरे वाक कहा परेहारक। जिसि विवदावी ७ विवस्त, (गरे भवनम्स जानस्त्रान कान स्टेट विवास्थान। ভিনি চিয়ঞ্জীব, ভাঁহার কোন ধ্বংস নাই। ভিনি স্বয়ন্ত (कर्य),-- चिनि डांशांव भवयमता व्हेटच निर्म निरम्हे উত্ত : তাহার অভিছের জন্ম জন্ম কা কাহারও উপর নির্ভন্ন করিভে হয় না। ভিনি কাল বা পাত্রের গভীর সম্পূর্ণ উর্বে। এবং ভাষার হইতেই সকল স্ট্রনীব বা বন্ধ অভিছ লাভ করিভেছে। ভিনি পূর্ব, কালে কালেই পূর্ব ভাঁহার কাৰ্যকলাপও পূৰ্ব; সেইজ্ডই তিনি নিজা বা জ্বতা ছাৱা क्षम् अधिकृष्ठ एम मा। এই সকল দেহসম্পর্কিত খণ-বিলেব পঠ জীবের পক্ষেই কেবল প্রবোজ্য হইতে পারে। সকল জীব ও জাগং তাহার মধ্যেই বর্তমান, কারণ তিনি ছাড়া আর কেহই নাই। ভিনিই কেবল একমাত্র বিচারক.---এবং ভিনি আমাদের সকল দোষগুণ বা অবোগতি ও উর্বগতি विरम्ध कविशा भवीक। कविष्ठाहम अवर छप्रश्रमहो सामार्भक अब्देक्टल विष्ठां कविटलट्डन । এই व्यालाट्ड काशाव काशाव काम আপত্তি করিবার নাই। তবে তিনি যদি ইছে। করেন, তাহা रुवेटन काराट्मक छाराब मधाच कदिया भागिवेटल भारतन : **এবং আমাদের পর্যম্বরু ( ভগবংবাণী-বাহক ) হ্রুরং মহম্ম**ধ মামুদকে সংপ্ৰে চালিত ক্রিবার বছ ভগবান কণ্ডক আদিই र्देशियान अर जिनि क्रावराखिक (काशानश्र कार्यनाय-সমুহ ছারা ভগবছিয়াসী বা ভক্তদের (মুসলমান) সংপ্রে চালিত করিয়া বিশ্বাহেন। তগবান সর্বান্ধ : তিনি আমাদের ভূত ও ভবিষ্যতের স্কল বিষয়ই জ্ঞাত আছেন। কারণ ठाँचा घटेट कामबा के कुछ. जबर बाराब छावाब निक्र हे কিরিয়া বাইভেছি। তাঁদার সহতে সাধারণ মানুষের সঠিক বারণা করা অভি কটিন ব্যাপার। যথন ভগবানের ইচ্ছা বা অমুগ্ৰহাত্বসাৱে আব্যান্ত্ৰিক পৰে জ্বহণ: উন্নতি লাভ করিতে বাকিবে, তৰ্নই কেবল তাহার সহতে মালুব কভক্টা সঠক বারণা করিতে পারিবে। তাঁহার প্রভুত্ব সকল বিরম্বরতে হড়াইরা রহিয়াহে: কিছ উচ্চার এই প্রভুত্ব মাতৃষ্টের প্ৰভূথের ভার নৰে। তিনি সকল সময়ের **ভ**াই সকল শীৰকে আৰ্যান্থিক পৰে জ্বলঃ বাবিত কৱিতে সাহায্য ক্রিতেখেন, এবং ইহাতে ভিনি ক্রমণ্ড ক্লান্তি বোধ ক্রেম না। কারণ ভিনি যে সকল চুক্লিভা ও অপুর্ণভার বহু छे(ई।

কোৱানের ৩য় অব্যারের একছানে (২৫বং আরাভে) ববিত হইরাজে, "(হে পর্যম্বর্, ছুমি) এই প্রার্থনা কর, হে ভগবান, ছুমি সকল রাজ্যের অবিপতি ; ছুমি বাহাকে ইছো রাজ্য প্রদান করিভেছ ; আবার বাহার নিকট হইতে ইছো কর রাজ্য কাভিয়া লইভেছ ; এবং বাহাকে ইছো কর সন্মান দিরা বাক, আবার বাহাকে ইছো অপদত্ত করিরা বাক । ভোবার হাতেই সকল কল্যাণ ভড , কাল্যণ, ছুমিই সকল ভিনিবের উপর ক্ষরভাশালী ।"—ভগবান সকল ভিনিবের

অধীবর, এবং নিজের ইছাছ্যারী সকল জিনিবের উপর
প্রভুগ করিরা গাকেন। কিন্তু এইজ্ঞ আমানের কথনই বনে
করা উচিত নর বে তিনি থাববোরানী ও বেচ্ছাচারী। তিনি
বাহা ইছা তাহাই করেন সভা, কিন্তু তিনি সকল
সমরই যাহা কিছু করিতেহেন, আমানের প্রকৃত মদলের
ক্ষাই করিতেহেন; কারণ উাহার হাতেই বে সকল কল্যাণ
ও বলল নিহিত রহিরাছে। তিনি বে পরম সং এবং উাহার
ইছাই প্রকৃতপক্ষে কেবল প্রকাশমান এবং আমানের
সকলেরই সেই ভগবং ইছোর সন্মুবে মাধা নত করা দরকার।
ইহাই প্রকৃত ইসলান, যাহার হারা মাত্ম সেই পরম সন্তাকে
উপলব্ধি করিতে পারে।

क्लांबारमञ्ज्ञ वर्ड चनारंब चनवान मद्दन विक स्टेबारब "তাহার শিকটই জ্ঞাত বিষরের (খরিব\_) চাবি রহিরাছে; ভিনি ছাড়া আর কেই এই সকলের প্রকৃত ববর রাবেন না। चान थ चान यांचा चार्च जानां मकनरे जिनि चारान : তাঁহার ইছা ছাড়া একটি পত্রও ( বুক্দ হুইতে ) পভিত হয় না। माहित मौटहत चहकारत अमन अक्षेत्र माहे, चहता रकाम সঞ্জীব বা শুক্ত জিনিষ নাই (যাহার খবর ভিনি জাভ নহেন)।---এই সক্পই সুস্পষ্ট ৰাভাৱ (লিৰিড) ৱহিয়াছে।" এই বিৰ ও ইহার एक्टेर गुरु त्रहञ्च जनवान हांका (कहरे अद्विक कारन ना . **ज्य जिनि यनि वेक्चा करवन, वृज बर्क याशव निकष्ठ ब्यौ** উদ্যাটত কৱিয়া দিতে পাৰেন ৷ তাহার ইঞালুযারীই পুৰিবীয় সকল খুঁটমাট ব্যাপার পর্যন্ত সংঘটত হইতেছে। ইয়ার গুচু রখন্ত গাঁহারা ভগবং ইচ্ছোত্রবারীই কেবল চালিত হইভেৰেন তাহাদের নিকট সুপ্টভাবে প্রকাশিত হইভেছে, बदर जनदर-देखांत जन्मानिक भक्त मरक रहे जीव छ ভাছার বিপশ্পামী সকল জীবেরই খবর ভিনি রাখেন।

কোৱাৰের ১১তম অব্যাহে বৰ্ণিত হইৱাছে তিনি আলা ("অৰ্বাং পরৰ শক্তিমান) (এবং) তিনি হাড়া ভার কেছ শক্তিমান নাই। তিনি দুৱা ও অদুৱা সকল বিষয়ই জাত আছেন। তিনি পর্য দ্বাশীন ও অপরিনীয় দ্বালু।...ভিনি পরম অধিপতি (বা পরমেশর ) পরম পবিত্র, পরম আছিলাতা, পর্য বিখাত, পর্ম নির্ভরশীল, পর্ম ঐত্বর্যাশালী এবং অভিশয় প্রবল, পরাক্রান্ত এবং অসীম শক্তিশালী। সেই আল্লাকে সপ্রহ निर्दर्भ: विनि क्लाम क्षकात चर्लिक स्टेर्फ वह छैर्छ। (नरे भवम मक्किमान चगवान स्क्रीकर्डा, बुक्किमान। ७ ( स्क्री-ভীবের) রূপ প্রদানকারী। তাঁহার প্রভিই কেবল প্রশার प्रवाद ( अनिविधि ) मात्र क्षरवात्र स्ट्रेटि शादा । এই निध-ভাগতের সকলই ভাঁহারই প্রশংসা গাহিতেছে। বছত: তিনি भववज्ञानी ७ वदानिक्रमानी।" जनवानरे द्वरत मक्रियान : बावर बाहेक्सभ बादन मा क्यांच क्यांन कावन नाहे। कावन. কোৰাও হুই ক্ব শক্তিবর একসদে বসবাস ক্ষতিতে পারে ৰা। এই বিশ্বসংসায়ে আৰৱা দেবিতেও পাই যে এক মহান बिह्नबाह्नवर्षिक। ७ जुनका जनन जनन विशास स्विटकट्ट।

বৰনই কোন বিশ্বলা ও অসমতা দুই হব, তৰ্মই বৰে করিতে হুইবে বে ছুইট পরস্বার্থিক্ষর শক্তি এক সঙ্গে কাক করিছে চাহিতেছে; এবং এই বিক্লম্ব শক্তির সমাবেশমুক্ত শুই জীব সেই পরম শক্তিশালী সভার নিকট সর্বতোভাবে নাথা নও করিতে পারিতেছে না। ভগনান সকল বিষয় জাত আছেন; তিনি দুশ্য, অনুশ্য প্রভৃতি সকল কাং বা লোক সহছে জাত আছেন—এই সকল লোক বা কাং বলিতে ভূলোক ( 'আসমন্ত্রাহুং), তপোলোক (জ্বরং), জ্বলোক ( লাহুং) প্রভৃতির উল্লেখ করা বাইতে পারে, এবং ইহালের সকল লোক সহছে ভগবান সকল ব্যরই রাবেন, 'কিছ সুই জীব ভূলোক ছাড়া আর কোন লোক বা কাং সহছেই সাধারণতঃ বিশেষ কোন ব্যর রাবে না।

चनवान नक्न विषद्वत चिनिछ अवर हेशाएक छैनक नर्क-ৰৰ প্ৰভুত্ব করিবা থাকেন : কিছ এই প্ৰভূষের মৰ্যে স্ঞ্চ-कीरवंद अकुरवंद कांब कांम (गांव वा क्रके मिक्क व्य मा : কারণ, ভিনি বে পরম পবিত্র। তিনি পরম লাভিদাতা, অর্থাৎ তাঁহার মধ্যেই সকল শান্তি নিহিত রহিয়াছে, এবং যে তাঁহার প্ৰতি থিয় বিধান বাবে এবং তাঁছাকেই একাল ভাবে নিৰ্ভন্ন করিতে পারে, সে পরম শান্তি ও স্থব প্রাপ্ত হয়। সেই পরম শাভির একমাত্র পথ তাঁহার নিকট নিজকে সম্পূর্ণ ভাবে উৎসর্গ कवा, बदर विनि बहेब्रथ कविष्ठ शांतिबाएम, छिनिहे बाँहै মুসল্মান ( ७७ বা উৎস্মীকৃত )। এই ইসলামের ( বা বলি-দানের ) পথে বে ষভটুকু নিজেকে উৎসর্গ করিতে পারিবে, সে ততটুকু শান্তি বা মুৰ পাইবে। সকল ঐবর্ব্যের ভিনিই এক মাত্র প্রত্য এবং সে ভাছাকেই কেবল এইরূপ ঐখর্যালালী विनयः अक्टेक्टम समयम्य कविष्ठ भावित्व, छाहाद अहे अकन क्षेत्री जानना स्टेटल्डे करायक स्टेट्ट । (प्रटेक्ना क्रीसाटकडे কেবল আমাদের ভক্তি বা শ্রহা করা দরকার। ভাঁদার এই শ্ৰেঠছের মধ্যে কোন অংশীদার নাই এবং যিনি এইল্লপ সটিক ভাবে ইহা উপলব্ধি করিভে পারিয়াখেন, ভিনিই কেবল ভগ-বানকে একাছভাবে প্রভা ও ভক্তি করিতে পারেন, এবং তাহার মন আর কোন কিছতেই বাবিত হয় না।

ভগৰান আমাদের শৃষ্টি করিরাছেন, তিনিই আবার আমাদের এই শৃষ্টির বোহ হইতে ঐক সমরে উভার করিবেন, এবং আহরা যাহা কিছু রূপ বা আকৃতি দেখিতে পাইতেছি, ভাষার কোন কিছুরই নিজ্ব অভিন্ন নাই, ভগবানের ইছারই এই সকল আমাদের সন্মুবে প্রকাশিত হইতেছে। সকল ভণের তিনিই একমার আবার, এবং তাহার ভণেই পৃথিবীর স্ট্রজীব বা বন্ধ ওপান্বিত; এবং সকল ভিনির বা জীব উাহাদের জনোরতির পথে কেবল তাহাকেই প্রশংসা করিতেছে, কারণ, পৃথিবীর সকল গৌল্ব্য ও রূপ বে তাহারই বাছিক প্রকাশ নার। ভিনিই একমার আনী এবং আমাদের এই ভাষও ভাহার সেই পরব আন হইতেই উত্তাসিত।

কোলাৰের 'ইব্লাব' নামক অব্যাহে বৰিত হইলাহে, "( হে মহবাদ, ছবি ) বল বে সেই আলা একক , তিনি নিজেই পূৰ্ব (অনু-বনহু )। তিনি কৰদান কলেন না, আবাল কল প্রহণও করেন না এবং তাঁহার ছুল্য কেছ নাই।"—কেই পরম পরিম ও অভি নহং একক ভগবানের বর্ণনা আমানের নাগ্রের সীমাবদ ধারণার অভীভ। আমানের এই সময়, ছান ও কালের সীমাবদ ধারণার গভীদারা দেই পূর্ণ, ময়ংসিদ, একক ভগবানের বরূপ বর্ণনা করা হছর। 'অস্-সমদেব' প্রহৃত অর্থ অসীম, অনম্ভ ও সাধীন, এবং সেই পরম সম্ভা, বাহার কোন ভুলনা হয় না, চিরহামীভাবে বিরাজমান। কীব, বৃক্ষপতা ও পার্বিব অভাভ সকল কিনিধ স্কটির অভতুভি এবং কালে ভাহানের মুক্তাও স্থিনিতিত, কিছ দেই ভগবান ক্রম্বভারহিত।

এইরপে কোরানের অনেক আয়াং বা শ্লোকেই ভগবানের বর্ণনা করা ছইয়াছে। এই আয় পরিসর ছানের মধ্যে সকল আয়াতের উল্লেখ করা সভ্তব নয়, যদিও ইহাদের মধ্যে একই বর্ণনার মধ্যেই প্নরুল্লেখও আছে। সাধারণভাবে বলা যাইতে পারে যে তিনি সকল ভগপপায়; কিছ এই সকল ভগরানা তাঁহাকে বিশেষিত করিলেই তাঁহার প্রকৃত প্রস্প বুবা যাইবেনা। তাঁহাকে প্রকৃতিক বিলেষিত করিলেই তাঁহার প্রকৃত প্রস্প বুবা যাইবেনা। তাঁহাকে প্রকৃতিক বিল্লেখিত করিলেই তাঁহার প্রকৃত প্রশা তাঁহার আহেশায়্যায়ী পরিজভাবে ক্রীবন্যাপনদারা জ্বনা তাঁহার বারণা করিতে পারা যাইবে। বস্ততঃ ভগবান বুবাইবার বস্তুম্বেন, সাধনদারা জ্বনা তাঁহাকে হুববে। প্রস্থিত প্রমা বারণাই ভব্বতে ও সীরবাছ, কিছ ভগবান প্রস্তুত নহেন, তিনি 'লম্রুলন্' (ক্রর্বিভিত্ত )।"

#### রহর্ কারিদ ক অটবাক, র হয়ও ; হফ নকারিদত উ গর্ গুলদত।

ভগবানকে সকল গুৰ্সম্পন্ন বলিতে সিয়া, এক্সপ কতক-শুলি শুণে ভূষিত করা হয়, যাহা সাধারণ দৃষ্টিতে পরস্পর-विक्षं विनेश भारत एश । लाक्ष्राक अर्थ भक्त अर्थ शहरूपान-বিক্লম্ব বলিয়া মনে হইলেও সেই পরম্প্রণশালীর নিকট কোন অগামাই নাই। ভিনি স্ট্রকর্ডা, আবার ভিনিই মুক্তিবাতা। ভিনি পালমকর্তা, আবার তিনিই ধ্বংসকারী। এই সকল ध्य चामारमत भिक्त वश्रुष्ठः विक्रष्णावानत व्हेरम् (भहे नतम कार्जनिक जनवादमञ्ज निकृष्ठे देशाया द्यामहीरे विकृष्णावाशः নম। ইহা বিশেষভাবে আলোচনা করিতে হইলে কোরানের স্টেড্র বা ক্রবহুল্য বিবৃত করা দরকার : কিছ এবানে স্থানাভাব। ক্ষী এক ক্ষায় ক্ষরহন্ত সম্বৰে विनेदारहर्य, 'बापम প্রবৃত্তির পথে একপদ অঞ্জনর হইলেন, এবং পশুপ্রবৃত্তির শাভিবরূপ বর্গবাম হইতে ভাহার বিচ্যুতি **क्टेन।' ज्यार नानरे जागारमंत्र ज्यात जून कांत्रन अवर** বভন্দৰ আমহা পাশহয় কৰ্ষিত শীৰন বাপন করিতেছি ভাষার পর্যসভা হইতে বিচ্যুভিন্নপ শাভি ভোগ করিতেই स्टेरन । (कांबान '( 8, 1> ) **এ**ই সৰতে বলিৱাছে, "বাহা কিছু ভাল, ভাহার সকলই ভগবান হইতে উত্ত, বাহা কিছু यम, जाराह नक्षर श्रद्धक चारियज्ञ-क्षिछ।"

ভাহা হইলে এই প্ৰবৃত্তিক্ষিত স্ক্ৰীয় সাৰ্থকভা কোৰায় ? এই चनर एक्टिन तर्छ नवटक क्रमी नाविवाद्यन, 'देशक कानिवा ৱাৰ যে অসংও তাহা হইছেই উছত।' (আনু বদীয়া দান্ কমাল্-ই-উ অভ ্ৰন্)। এবং ইহা তিমি একট প্ৰৱ বৃঠাত ঘারা বুবাইতে চেটা ক্রিয়াছেন, "একজন চিত্রকর ভাঁহার নিপুণভাষারা ইউহক ও অভাত সুন্দর আঞ্ভিবিশিষ্টামের এবং শহতান ও অভাগ কুংসিত আফ্তিবিশিষ্টদের অখন করিলেন্ যাখাতে তাঁহার নৈপুণা পুণভাবে প্রকাশিত হয়। ইহাতে চিত্রকরের অপূর্ণতা হচিত হয় নাই, বরং তাঁহার জানের পূর্বতাই প্রকৃষ্টভাবে প্রকাশিত হইয়াছে। এইছঙই তিনি (চিত্রকর, শ্লপকভাবে ভগবান) বিখাসী (ভাল) ও व्यविधानी (अन्य ) देखांश्वर शृक्षेत्रक्षा ।" क्यातात्मल करे नवर्ष উদ্লিখিত হইয়ালে, 'যদি ভাছাদের উপর কোন ভাল বর্ষিত হয়, ভাহারা বলিয়া থাকে, 'ইহা ভগবান হইতে প্রাপ্ত হইয়াছি ) এবং যদি ভাহাদের উপর কোন মঞ্বর্মিত হয়, তাছারা বলিয়া থাকে, 'তোমার ( অর্থাং হকরং মহশ্রদ ) হুইতে :' জানিও যে সকলই তাহার (ভগবানের) হুইতেই উদ্ভত (কুলুৰ মিনু 'ইন্সি আলাহি )।" কবি তাহার আবােনে আরও বলিয়াছেন, "ভাছারা (বিশাসী ও অবিশাসী) উভয়েই ভাহার মহানু শক্তির নিকট মাধা নত করিমা রহিয়াছে : কিছ জানিবে যে প্রকৃত বিশ্বাসী প্রতঃপ্রবৃত্ত হইয়া তাঁছার উপাসনা ক্রিভেছে কারণ ভাহার উদ্বেশ্ত কেবল ভগবান প্রীভ্যর্থে অবিধাসীও তাহারই উপাসনা করিতেহে, কিছ উদ্দেশ নিজ স্বার্থসিদ্বির জয়।" এবং কোরামে (৩,৭৮) এই সম্বন্ধে বৰিত হইৱাছে, 'পুৰিবী ও অর্গের সকলই ইচ্ছা ক্রিয়াবা जिम्हान ए के हात्र निकृष्टि याचा जनमक कविया दिशाहर ।"

মুভরাং আমরা দেখিতে পাইভেছি, আমরা তাঁহা হইভেই উদ্ভূত হইয়াছি, আবার ভাষার সহিতই মিশিয়া হাইব। কোৱানে (১, ২৬-২৭) বৰিত হইয়াছে, "ভোষৱা নিৰ্দ্ধীৰ बिल, भरत कर्गरान कांगारिक क्षान भान कविरामन , आवाब ভোমাদের ভিনিই মৃত্যু দান করিলেন। পুনরার ভোমাদের পুনৰ্জীবিভ ক্রিলেন, অবশেষে তাহার নিকটই কিরিয়া যাইতে ছইবে।" কোৱানের সকল আদেশ ও নিষমাবলী তাঁছার निकड (वीहिवात कडरे, चर्वार छीशांकरे अव्हेंणांत श्रवत्रम ক্রিবার জ্ঞ এবং 'অগবান আমাদের জ্ঞুই পুথিবীর সক্ত বন্ত প্রষ্ঠি করিয়াছেন।' কাব্দে কান্দেই আমাদের একমাত্র কৰ্মব্য কোৱাননিষ্ঠি পৰে চালিভ হইয়া ভগৰং উপলব্ধি कता धवर काताम धरे मद्दाद विवाद, "जनवाम ভাষাদেৱই ভালবাসেন, বাহারা সংপ্রে চালিত হম ( ফাইর बाह्मा-तृहिक्य, बन्-मृष्ठकष्टम )। अङ्ग्रंष्ठभाष्क, बनवानहे (कवन বিরাজমাণ, আমরা ভাষার ছারামাত্র, ভাষার সভাতেই অভিত্ লাভ করিয়া আপাভয়ুষ্টতে প্রকাশলাভ করিয়াছি बाब । अयो शारिशायम, "रनरे जानवाजाश शाबरे ( जनवान ) কেবল বিৱাজনাৰ, প্ৰেমিক তো ভাঁছার ছারা মাম , ভিনিই কেবল জীবিভ, প্ৰেৰিক ভো হতের ভার ।"

# শ্রীহট্ট ও সংস্কৃত সাহিত্য

অধ্যাপক জ্রীদীনেশচন্দ্র দাস, এম. এ

বৃগাবভার এী এটিচডছদেশের শিভৃত্বি এইটের দান সাহিত্যের কেন্তে নোটেই নগণা নয়। বাংলা-সাহিত্যের কেন্তে ইউবর দত, গৌরীশহর ( ৩৬ ৬৫৬ ) ভটাচার্যা, বিশিনচঞ্চ পাল, শরচঞ্চ চৌবুরী, ইশান নাগর, হৌগভী আক্ল করিন, অচ্যুভচরণ ভারনিধি প্রভৃতি সাহিত্যরখীরা এইদিকে গৌরবানিভ করিয়াছেন। সংস্কৃতসাহিত্যের ক্ষেত্রেও এইটের দান কয় নয়।

নব্যভাৱের প্রথপ্তক পভিতপ্রবর রঘুনাধ শিরোমণি ঐহুটেরই অঞ্জম কৃতী সন্ধান। দাসপ্রাম ও ভূমিউড়াজে অভাপি তাঁহার বংশবররা বর্ণমান আছেন - রলনার শিরোমণির এক জাতা ইটার রাজবাদীতে বিবাহ করিয়া সেবানেই বসবাস করিতে আরম্ভ করেন। পঞ্চততের 'রঘুনাধ মহেখর চড়ুম্পাঠী' তাহার এবং মহেশন ভাষালভারের খতি বহন করিতেছে। মহেরর ভাষালকারের 'কাব্যপ্রকাল', 'ভাবার্থচিন্তামণি', 'সিখান্ত শ্রদীপ', 'অষ্টাবিংশতি প্রদীপ' প্রভৃতি গ্রন্থ পরিত সমাকে সমাদর লাভ করিয়াছে। রঘুনার শিরোমণির 'দীধিভি' টীকা নৈয়ায়িক পৰিত সমাকে বিলেষ প্রসিদ্ধিপাত করিয়া-ছিল। তাহার নিম্লিখিত দকাওলি বুব প্রসিধ-- 'অথুমান-वक्षोविकि, 'अध्यानिकार्यानिकोरिकि', 'शिकाक्षशक्रमेवैदिकि', 'বৌষসুলপ্ৰস্থব্যাৰ্যা', 'প্ৰামাণ্যদীবিতি', পরামর্শদীবিভি', 'আচার্য্যাঞ্মান', 'বিশেষব্যাপ্তি', 'অগুমিভি-भौविष्टि', 'खराद्धमक्ष्विनक्षक्षिभौविष्टि,' 'अर#खिनक्षीविष्टि', 'সামাঞ্জাবদীৰিতি', 'সামাঞ্লিক্ৰজিদীৰিতি' 'সাধারণদীৰিতি', 'ব্যাপ্তিরহুদীবিভি', 'অভএবচতুষ্টমীদীবিভি', 'ব্যাপ্তিপঞ্জ-भीविष्ठि', 'भूक्षभक्षभीविष्ठि' देखामि । अदेखनित दखनिविष्ठ পুঁৰি 'গ্ৰীষ্ট সাহিত্য-পরিষদ' গ্রন্থাগারে সংগ্রীত আছে। 'ত্রন্মত্রন্তি' তাহার অঞ্চম এছ।

ষ্ণাধ্যার যাদবেশর তর্বরত্ব মহালয়ও পুপ্রসিদ্ধ লাগদীনী দীকার রচয়িতা জগদীন তর্কালয়ারকে ঐহটের লোক বলিয়া প্রকাশ করিয়াছেন। অচ্যুত্তরণ তত্ত্বনিধি মহালয় ভাহার 'ঐহটের ইতিরত' নামক প্রছে জগদীল তর্কালয়ার সম্বছে বিশেষ জাতব্য বিষয় লিশিবছ করিয়াছেন। ইনি 'লবলজি প্রকাশিকা' ও 'তর্কায়ত' নামে ক্ইবানা মৃত্তপ্রছ রচনা করেন। তা হাজা শিরোমণিকত দীবিতি টাকার টগনী গলেলোগাব্যায়ত 'অহ্মানময়্বের ভাষা', 'প্রব্যভাষ্যেয় ও লীলাবতীর দীকা', 'গিছাজলকণ', 'অবজ্ঞেদকত্বনিম্নজিলাগাবী দীকা', 'ব্যাজ্যজ্গরজাগদীলী দীকা', 'সব্যজ্ঞিলাগাবীলী দীকা' 'বিশেষব্যাজি জাগদীলী দীকা' প্রভৃতি প্রবিদ্ধক করিয়াছেন। 'ঐহটেছ ইতিমুক্তকারে'র মতে ন্যাজ্যজ্ব প্রবর্তক শার্ভ রম্বন্ধক হবিগঞ্জ মহকুরার নালার-

কান্দির অধিবাণী ছিলেন। তবে তাঁহার সঠক বাস্থান কোবার ছিল তাহা নিঃসন্দিগুলাবে বলা শব্দ। হ্ৰিগঞ্জের থকিব থিকে অবস্থিত রহুনন্দন পাহাছের নামের সলে আর্ছ রহুনন্দনের নামের কোন সম্পর্ক বাকা অসম্ভব নয়। ভিনি 'প্রনিষ্ঠাতত্বং' 'ভড়িতত্বং' 'রক্পপ্রতিঠাতত্বং' 'রক্সানতত্বং' 'জড়িকতত্বং' 'রহুযোগুলানাতত্বং' 'রুলাহাতত্বং' 'রাজ্যাগপ্রযোগঃ' 'র্ছোপ্রতত্ত্বং' 'র্জিটার্ডাতত্বং' 'র্জিটার্ডাতত্বং' 'র্জিটার্ডাতত্বং' 'র্জিটার্ডাত্বং' গ্রামান্ত্র বহু মুল্যান রহু লিবিরাহেন। 'অইটাবিংশতিত্তত্বং' উচ্চার অহুত্ব এছ টিবিত রহুত্তলির র্জিটার্ডাত্বং' গ্রাহার অহুত্ব এছ লিবিরাহেন। বহুলিবিত রহুত্তলির প্রতিলিপি 'শ্রাহট্ট সাহিত্য-পরিষদ' রহুলিবিত রহুত্তলির প্রতিলিপি 'শ্রাহট্ট সাহিত্য-পরিষদ' রহুলিবিত রহুত্তলির আতিলিপি 'শ্রাহট্ট সাহিত্য-পরিষদ' রহুলিবিত রহুত্তলির আতিলিপি

দেবীপুর নিবাসী কাশীচল বিভাসাপর নিম্নলিবিত এছগুলি লিবিয়াছেন।—'উছ্টসাম্প্রদায়িকনিবর' 'প্রেত্সাছবিবিঃ' 'উদ্ভটকবিতাকুক্স' 'তীবরত্ব' 'মেবিলদীপিকা' বৈদিক-সংবাদিনী'র 'বৈদিকমিব'রং' নামক জ্বিকা ইত্যাদি।

এমন্ মহাপ্রস্থা সম্পাম্মিক ও পার্যচর হুলালীমিবাসী মুরারি ওও 'একুফ্টেডভচরিভায়ভ্য' নামে চৈভছনেবের কীবনীসংবলিত এছ রচনা করেন। উহা 'মুরারি ওওের কড়চা' নামে প্রসিদ্ধ। এছবানা ১৪৩৫ শকাকাতে পেন।

কৰি কৰ্ণপুৱের জন্মধান কাঞ্চনপঞ্জী হইলেও পরে ভিনি
জ্ঞীহটের অন্তর্গত আদপাশা প্রামে আসিয়া বসবাস করেন।
উক্ত প্রামে বর্তমানে উচ্ছার বংশের ইস্তসেন অধিকারী
মহাশন্ত বসবাস করিতেছেন। সাত বংসর বন্ধ বালক পর্যান
নক্ষ দাস যখন ব্রজাক্ষনাদের কর্ণভূষণের বর্ণনা দিয়া প্লোক
পাঠ করিলেন তবন চৈতন্যদেব তাহার নাম দিলেন কর্ণপুর।
ভাহাকে পুরীঘাস বলিয়াও মহাপ্রভূ সংহাবন করিতেন।
"প্রভূব শক্তিতে শক্তিমান কর্ণপুর সংস্কৃত কাব্য প্রশ্বনে প্রভূত
হইলেন।" ইনি প্রথমে 'চৈতনাচ্ছিত মহাকাব্য' রচনা করেন।
পরে ক্রমে 'অলক্ষার কৌপ্তক', 'আর্হ্যাশতক', 'আনক্ষ বুক্ষাবন
চন্দ্র্য' 'চৈতন্য চক্ষোদ্র নাটক' রচনা করেন।

মহাদেবী বড়কাপন নিবাসী শ্রামস্থ্র ভটাচার্য কর্তৃক ত্রেপুর রাজের ভূমিদান ব্যাপার সংবলিত 'বৈদ্বিক সংবাদিনী' ভক্তেপুর ও বাণেপুর কৃত 'রাজমালা' ঐতিহাসিক এছ হিসাবে অত্যন্ত বৃল্যবাম। গ্রীহটের ইতির্ভকার লিখিয়াছেম— "বিব্যাত 'অষ্টাবিংশতি প্রদীপ'-প্রণেতা পঞ্চবভবাসী মহেশ্বর ভারালয়ার, ত্রেপুর রাজবংশের ইতিহাস 'রাজমালা'-কার ভক্তের ও বাণেপুর প্রভৃতি এই সমরেই আবিভূতি হইয়া গ্রীহটের মুখোজ্ব ক্রিরাছিলেন।"

বালাগঞ্জ কাদিপুর নিবাসী হয়ালকুফ ভর্কতীর্থ 'অভ্যান

চিভাষণি', 'পোভিলগৃহত্ত্ত্ব' ও 'প্রত্যক্ষ চিভাষণি'র দ্বীকা লিবিয়াছেন। গোভিলগৃহত্ত্ত্ত্বের দ্বীকা সমালোচক্ত্রের প্রশংসা আর্কন করিতে সমর্থ হইয়াছে। বিনশনা নিবাসী রসমর কাব্যতীর্থ কৌশক নামক প্রাক্ত্রের প্রচলিত গল্প অবলহনে 'প্রবৃত্ত কৌশকং' নামে একবানা নাটক রচনা করিয়াছেন। ১।১।৪৩ ইংরেকী তারিবে শ্রীহুট্ট সংস্কৃত কলেকের ছাত্রগণ কর্তৃক এই নাটকবানি অভিনীত হয়। নাটকবানা ৬টি অয় ও ১৩টি বৃত্তে বিভক্ত। ইহাতে পতিব্রতা লী কল্যাপি ও তাহার পিতৃতক্ত খানী 'দেবরাতের চরিত্র অত্যক্ত স্কর তাবে পরিক্ষৃতি হইয়া উটিয়াছে। পাত্রপাত্রীর মুবে বে সম্ভ ক্ষর ক্ষর প্রোক সন্ধিবেশিত করা হইয়াছে তাহা নাটককে অপ্রক্র পৌঠন ও মাবুর্ব্য লান ক্ষিরাছে।

একণে করেকজন প্রসিদ্ধ লেবকের রচিত প্রস্থসমূহের একটা সংক্ষিপ্ত ভালিকা দিয়া প্রবন্ধট শেষ করিব।

ত্দেশন নিবাসী অন্তমার তর্বক্দর্শনতীর্ণের 'ব্রহ্মজগংকারণম্', বামা নিবাসী মহামহোপাব্যার রামনাথ বিভারত্বের
'স্তিসকর্তঃ', লাউভের রাজা লিব্যসিংহ-রচিত অবৈভাচার্ব্যের
জীবনী সংবলিত 'বাল্যলীলাল্ড্রম্,' বানিরাচুক্ত নিবাসী মহামহোপাব্যার পলনাথ সরবতী এম-এ, বিভাক্ত্যণের 'ইভাভান্তঃ',
আবালিরার রাজ্ঞেক্মার সাংব্যতীর্ণের 'প্রকৃতিক্দংকারণম্'
'বিববাবিবাহ্ন্য কর্ত্ ব্যতা', ভুক্বলের গোবিক্ষর্ভত গোলামীকৃত কাষ্যব্যাক্রণতীর্ণের "দীক্ষাবিবিঃ", "হুর্গাপ্রাপদ্ধতিঃ",
"বৈদিক্ষত্যিক্রপদ্ধতিঃ", "সর্বতীপ্রাপদ্ধতিঃ", বেওপাড়া
নিবাসী নরেজ্ঞ্জ ভ্রাচাধ্য এম-এ, সাংব্যবেদান্তনীর্ণের
"বলিদান্যবন্ধা"; মহাসহজ্ঞ নিবাসী মহেজ্ঞ্জ কাবাতীর্ণের "পঞ্চন্ধ্যাক্ত"; দাসপাড়ার রামনক্ষম দর্শনরপ্রের

"त्रपूरवादः", "बायवकीवयञ्चर", वाधेत्रकाशस्यत्र वावारमानिक পোখামীর "স্ট্রিক্ডাপ্রভূষ্" ও রাধাচরণ গোখামীর "স্ট্রিক্ মহাভারতম্" "সঞ্জি পুরভরীভন্তং", ডলা বিবাসী কৈলাস ভর্ক-मिवित "लावश्रेणे", "किनवाविवि"; नक्षरकत नामक्षात ভারত্যধের "বভুর্বেদীর অভ্যেষ্টণভতিঃ" ; বাঙ্টরার প্রতাপস্থতি त्रश्रामत "वावशावर्णनम्", "क्वित्वत्रीत्र अटकाविक्षेत्रिविः", "क्र्र्णारमय-णक्षिः", केनावशृत्वव ऋत्वण्डळ कावाणीरवव "विकृ-वर्षभरक्षिण" : सम्बद्धमान कविनाटकन "नाववशाखवीन" ; हाका-দক্ষিণের কালীচরণ ভক্রাসীশের "দারাদর্শ," "ভজিবাদ"; **१५वट्य वन्छम्बर्धेद "न्यामनवर्षार्श्वस्य" ; क्रीक्रिक्ट्य** विव्यक्तानाय काववात्रीत्यव "नर्व्वामकथकाम"; वानिवाक्टकव ব্ৰহ্মানন্দ্ৰীৱ" মোহচণ্টম্"; লাউভার মধুৱামাণ ভৰ্কবাৰীশের "আব্যাভের দীকা", মহলালের মহেরর খোষের "বঞ্চিতচরিত্রম"; वानिबाहरण्य यहाराव शकामरावद "जारवाकायाव"; वेहीत রাজগোবিক সাক্ষভৌমের "একপদার্থনিরপণম্" "বেদবাদ-নিবারিকা" "ভট্টিকা" প্রভৃতি ২০ বানা এছ, লক্ষীপুরের दायत्थाभाग काद्रभकानत्तद "काननिर्वदः", "खरणोहनिर्वदः", "প্রায়ভিত্তনিপ র:" "প্রেতাবিকারীনিপ র:", "সম্বর্তনিপ র:"; कुक्ष्य एक्वानिया "बृद्धिभविषाया"; कानारेयाव स्मानहस्र विकावित्मारम्ब "इनीकिकक्विकिवी"; भीषिव भारम्ब प्रदा-কুষার ভক্সরস্ভীর "সম্ভচিত্তামণিট্রকা", "ভাভিপুরার্ড:"; অন্তেহরির দীনেশচরণ দাসের "সদীক শ্রীকৃষ্ণকবার্তম্" ইভাগি। এভটির বহু বৃদ্ধিত ও অবুক্তিত দীকা, সংকলম-এছ প্ৰভৃতির খবর পাওয়া গিয়াছে। বিশেষ চেঠা করিলে আরও এছাদি সংগ্রহ করা বাইতে পারিবে।

## একান্থে

#### ঞ্জীদেবেশচন্দ্র দাশ

আজো বে পছিছে বনে । এমনি আবার আরো কোন সভ্যাবেলা কবি' গৃহহার একান্তে বনিহা ভোমা' ভাবা, চূপে চূপে নান লবে বেলা, সাজাইরা দীপে ধূপে দুভিতে কেউল করা, সহলা ব্যাহল চকিতে চককি' ওঠা, নামলের ভূল ভাও ভাল লাগা , গুৰু অকারণ সুবে ভবে বার বন। আজো বীরে নত বৃথে
কাঁচি' ভিবে গোগুলির আলো। লিভ বার
বেবের অলকে বেলি' কারে বৃথি চার
বানির বছর; অভ বলে থাকি' থাকি'
উলালিরা বেরা তাকে; বলিরা একাকী
অপ্তব করি সবি। ভগু সংগোপনে
ভোরার প্রতিষ্ট কথা রবে কৃতি বলে।

# মারাঠী সম্ভ-সাহিত্য

#### অপ্র্যাপ্রসন্ন বাজপেয়ী চৌধুরী

ভারতবর্বের সকল প্রাদেশিক ভাষার সাহিত্য অস্থাবন করলে
লাইই প্রতীরমান হয় যে মাহায়ি সাহিত্যে সভ-প্রভাব এক
সময় অত্যবিক পরিমাণে বিভূতি লাভ করেছিল। সে
প্রভাব এক দিকে বেমন স্বৃদ্ধ ও ব্যাপক ভিডিতে প্রতিষ্ঠিত
হরেছিল, অভদিকে তেমনি কনসাবারণ তাকে পরর সমাদরে
ও অসীর প্রভার প্রহণ করেছিল। এই সভবান-প্রভাবাহিত
সাহিত্যকে বলা হর সভ-সাহিত্য। কিই প্রভাব হিত্য
পড়ে না, তাকে বলা হর অ-সভসাহিত্য। কিই সভসাহিত্যের প্রভাব এত সুব্রপ্রসারী ও তার গতিবেগ এমন
অপ্রতিহত হয়ে দাভিরেছিল বে কালক্রমে অ-সভ্-সাহিত্য
সভ-সাহিত্যের অস্তর্গত হরে যায় এবং তার স্বভন্ন অভিষ্টুকু
পর্যান্ত প্রত হয়ে যায়।

মারাসি সন্ত-লাছিত্যে প্রধানতঃ কর্ম, আন ও ভজ্জির বিলেখণ থারা মানব-মনে সং-প্রস্থতি জাপ্রত রাখবার প্রধাস করা হয়েছে। আর একটা বিশেষ সক্ষীয় বিষয় হচ্ছে এই বে এইসব সাধ্-সন্ত স্ব স্থ স্ক্তিবিচার ও পুচ তত্ত্বে মীমাংসার কলে নিজেদের আদর্শে, ভাবে ও ভাষার প্রচার করেছেন, পুরাত্নের পুনরায়ন্তি তারা করেন নি, কিংবা পরাক্করণের প্রয়াসও পান নি।

এই সপ্ত-সাহিত্যের অভ্যুদ্ধ হয় সন্ত্রাট্ পৃথীবাজের তিরো-বানের সময়। দেশের আব্যাপ্তিক আবহাওরা তবন মোটেই বিশুক্ব ছিল না এবং বৌদ্ধ কৈনবর্ষের দার্শনিক মতবাদ দেশে মাজিকতা প্রচারে সহায়তা করেছিল। যদিও জগদ্ভরু শহরাচার্য্য নবম শতাখীতেই বৌদ্ধর্যাদির প্রভাবকে বর্ম করে দিয়েছিলেন, কিব তার মূলোংপাটন করতে পারেন মি।

পৃথিবিক্ষের প্রধানক প্রয়াবের কিছু প্রেই সারা ভারতে ইসলাম বর্মপানের প্রবল্প প্রচেষ্টার স্ক্রপাত হয়। বর্মান্ত মুসলমান সম্প্রদার ভরবারির জোরে ইসলামবর্ম প্রচারে রভী হয়ে পরে। এই সমর ভারতের ধাের ছুর্দিন উপস্থিত হয়েছিল। এক্সিকে নান্তিকভাবাদ, শঙ্কাচার্বাের অবৈভবাদ, অপর্যািকে মুসলমানের এক্সেরবাদ থেশের সভ্তক্ষনক অবস্থাকে আরও ভয়াবহু করে ভূলেছিল।

দেশের এই খোর ছ্র্কিনে ধর্মের প্রকৃত বরণ উপপ্রি করতে কনগণ সম্পূর্ণ অক্ষম হরে পাক্তিন। আধ্যান্ত্রিকতার কোনু যার্গ আতির অক্সরণ করা উচিত দেশবাসী সে বিষয়ে বোটেই অবহিত হিল না।

এই সময় গোটা ভাতটা একেবালে নির্বাধ্য ও শভিংশীন হলে পড়েছিল। ভাবের চৈতত সকারের সকল চেটাই ব্যবভার পর্যাবসিত হরেছিল। বেশের কবিগণ প্রবাদতঃ বীয়ত্ব- বাঞ্চক উদীপদাপূর্ণ কবিভা রচনা করে ক্ষমণবের চিত্তকে নব প্রেরণার অন্প্রাণিত করে ভূলবার ক্ষতে প্রাণপণ চেষ্টা করে-ছিলেন, কিছ ভারাও সকলকাম হন নি। দেশ ভবন অজ্ঞান-ভার অক্কারে আয়ত হরে পড়েছিল।

এবনি অবকার-বুগে রামাখ্যাচার্য্য, যথাচার্য্য, বল্লভাচার্য্য, বল্লভাচার্য্য, বল্লভাচার্য্য, বল্লভাচার্য্য, বল্লভাচার্য্য, বল্লভাষ্য, প্রবেশবাদ, প্রানেশর প্রভৃতি বহার্প্রপ্রকাষ করি করে কনসাবারণকে শোচনীয় ভ্রবভার করল থেকে উদার করেন, তারা দেশের অঞ্জানতা দূর করতে সক্ষম হন।

এই যুগকে ভভিৰৰ্গের যুগও বলা হয়ে বাকে। এ কৰা অবগুৰীকাৰ্য্য যে, এই ভভিৰৰ্গের যুগের পূর্ব্বেও এদেশবাসিগণের অন্তরে আব্যাদ্মিক ভাবের অভাব ছিল না, কিন্ত দে বর্গ্য-ভাবনার বারা এত ক্ষীণ ও কাতীয় কীবন থেকে তা এতদূর বিশিষ্ণ হয়ে পড়েছিল বে তার অভিন্তের ক্যাইছিল অবিকাংশের অগোচর। যে আব্যাদ্মিক ভাবপ্রবাহ বৈদিক যুগ বেকে আরও করে মহাভারতের কাল পর্যান্ত ভারতবর্ধের বুকের উপর দিয়ে প্রবহমান ছিল, কালক্রমে তা ক্রমেই ক্ষীণতর হয়ে আসতে বাকে। সেই সমাতম আব্যাদ্মিক ভাববারাকেই নৃতন্তরণে ব্যাব্যা করে এই সাধুন্দভাগ করেছি আকর্ষণ করেম। ভারতের বিভিন্ন প্রদেশে একই সমরে ভিন্ন ভিন্ন সভক্তৃক বর্গবিষয়ক প্রচারকার্য্য হয়, কলে সমগ্র দেশব্যাণী বিরাই আব্যাদ্মিক আন্দোলন বিভৃতিলাভ করে। বীরে বীরে এই আন্দোলন ব্যাণকভর রূপ পরিপ্রহ করে।

এই সাৰু-সম্বৰ্গণের মধ্য থেকে কয়েককন কবিরও আবির্ভাধ হয়েছিল। এ রাই সম্ব-সাহিত্যে মব প্রাণ-চেডনার সঞ্চার করেন। তাঁলের বাণী কনগণের চিত্তে অপূর্ব্ধ প্রভাব বিভারে সমর্থ হয়।

উত্তর-ভারতে রামাত্মচার্য্য আর তার শিষ্যমওলী গুল-রাতে মধ্যচার্য্য ও তাঁর অভ্চরবর্গ, বাংলার জয়দেব ও পদাবলী সাহিত্যে তাঁর অভ্লামীগণ এবং দাক্ষিণাত্যে মৃত্যু-রাম, জানেখর, চক্রধর প্রভৃতি মহাত্মগণের সাবমার এই সন্ত-সাহিত্যের অপ্রতিহত প্রবাহ সন্ত্রপ্রসারী হবে উঠে।

এ সময় ভারতে এমন সব মহাপুরুষ ক্ষেছিলেন বারা বনী-দরিস্ত, উচ্চ-নীচ ও হিন্দু-মুসলমান নির্কিশেষে সক্লক্ষেই এক্তাহ্মে আব্দ করবার ক্ষ্মে সর্ক্ষাক্ত প্রয়োগ করে সক্লকাম হ্রেছিলেন। বাংলার চৈত্ত মহাপ্রতু এই মর্ ভারবারার প্রথম প্রবর্তক।

এই नवर प्रकार पहलागर्दात नद्यान चार वस्तागर्दात

ভক্তিমার্গের সময়র সাধন করেন। তিনি 'মহার্ভাব পছ' নামক এক বর্ত্মগজ বেরার প্রথেশে প্রতিষ্ঠিত করেন।

বে সময় আনেধর, নামদেব ইত্যাদি দক্ষিণ ও পশ্চিম তারতে ভক্তিবর্গ প্রচার করতে থাকেন তবন 'মহাস্থাব পহ' অনুচ ভিত্তির উপরে হাপিত হয়। কিও 'মহাস্থাব পহ' প্রতিষ্ঠার পূর্বেই খানী মুকুখরান, শহরাচার্যোর, অবৈত্যাদ অবসম্ব করে মারাঠি সন্ত-সাহিত্যের বনিয়াদ গড়ে তোলেন।

বামী বৃত্তবামই হলেন মারাঠা সন্ত-সাহিত্যের ক্রদাতা। পরেজ্ঞানেশ্বর ও তার অভ্বর্তিগণ একে আরও উন্নততর ক্রেম। মহারাষ্ট্রের এই সজ্ঞেব নাম কেওয়া হয় 'ভাবপহ'।

এই পছের গোড়াপরন হয় আছিনাথের সময় থেকে।
কিছ গোচ়ধনাথই (গোরক্ষনাথ) এই পছের শ্রেষ্ঠ পূরুষ
বলে গণ্য। এঁর কম হয় অযোগ্য নগরীর নিকটথর্ডী ক্ষরশ্রী
রোমে। মংস্থেক্ষনাথ নামক এক মহাজ্ঞানী সম্যাদী এঁর
ক্ষুদ্র।

শোরধনাথ নৃতন কোন 'পছ' প্রতিষ্ঠিত করেন নাই বা দৃতন কোন 'মতে'রও প্রবর্তন করেন নাই। শছরাচার্যোর 'অধৈতবাদে' তাঁর অসীম শ্রহা ছিল। তিনি আজীবন প্রচার-কার্বোই ব্রতী ছিলেন। ভারতে এবং ভারতের বাইরে, বিশেষ করে গছার—তাঁর প্রতিষ্ঠিত মঠ-মন্দির্যমূহ আজও সকলের দৃষ্ঠি আকর্ষন করে। নেপাল গোরধনাথের প্রচার-কার্বোর প্রধান কেন্দ্র ছিল। নেপালের প্রার সকল অবিবাদাঁ এ বিশিয় হওয়ার ভালের 'গোরধা' (বাংলার গুরধা) বলে অভিহিত করা হয়। বৌধবর্ষের প্রভাবকে গোরধনাথ নেপাল থেকে প্রার সমূলে উংপাইত করতে সক্ষয় হরেছিলেন।

শারারী সপ্ত-কবি জানেশর এর প্রধান শিষ্য ছিলেন। তিনি মহারাষ্ট্রের ধর্মান্দোলনে নৃতন প্রেরণ। সকার করেন। তিনি সর্বসাধারণের সহক্ষবোধ্য করে মংখ্যেন্দ্রনাথ ও পোরখ-মাধের বাদীসমূহ মহারাষ্ট্র-দেশে প্রচার করেন।

বৈনীৰাধ ছিলেন গোৱধনাথের আর একজন প্রথম লিয়া। তিনিও সন্ত-কবি। ইনি এবং এঁর শিখা নির্তিনাধ মহারাষ্ট্রে সন্ত-সাহিত্যের মাধ্যমে ধর্ম প্রচারকার্য্যে অএটা ছিলেন। প্রসিধ সন্ত-কবি জানেশ্বর গৈনীনাথের প্রিয়তম শিষ্য ছিলেন।

শকরাচার্ব্যের অবৈভবাধ নিষেই এরা ধর্মপ্রচারে রত হুনু পরিপামে তাঁদের সাধনা কয়র্ভ হয়।

নামদেব প্রমুখ সন্তগণধার। প্রচারিত 'অবৈতবাদ' ক্রেব পশুরপুরে 'ভাগবত বর্দ্ধ' ও শেষে কিঞ্চিং পরিবর্তিত আকারে 'বারক্ষী পছ' নামে অভিহিত হয়। গোরখনাথের শিখ্যদের অলাবরণ ও আভয়ণস্ক্রপ নিম্নলিবিত জিনিয়প্রলি বারণ কয়তে হ'ত—মেধলা, শুলী, পুংগি, কঠা, কর্ণ মুলা, কৌশীন ও ব্যামহাল আর বোলা। সভ জানেশ্বর ও নামদেবের সময় এই সমভ নিদর্শন-চিছের অফলবফল হর, কারণ তথন এই সভ-সজ্যের সহিত 'ভাগবতবর্ম' ও 'বারকরী পছে'র মিলন সাবিত হয়। ফলে উক্ত 'আভরণ'-সমূহের সংখ্যা কমে বার এবং বৃদল, করভাল, বীণা ও পভাকা এই কয়ট মাত্রে পর্যবসিত হয়।

পোৱৰনাথ বেমন ছিলেন মহাপুক্তৰ তেমনি একজন মহাকৰিও ছিলেন। তিনি ৬০বানি গ্ৰন্থ রচনা করেন। তত্ত্বো
গোৱক্ষকীয় সংবাদ, গোৱক্ষচিন্তামণি, জ্ঞানসিদ্ধান্তবোৰ,
বিবেকমাৰ্ডও অতি বিব্যাত ও প্রামাণ্য গ্রন্থ। অধিকাংশ
পুন্তকই হিন্দী ও সংস্কৃত ভাষায় সিধিত। কেবলমাত্র 'অম্বরনাব সংবাদ' মারাঠী ভাষায় বচিত।

গোরধনাথের প্রধান শিষ্য গৈনীনাথ ক্রক্জি প্রচারমূসক সাহিত্য-রচনায় বিশেষ সকলতা লাভ করেন। ভংপরে
নির্বিনাথ, জানদেব ও নামদেব এই ভিন জনের সাগনার ক্রফ্
ভক্তিপ্রচারষ্পক সন্ত্যাহিত্যের ধারা দূরদুরান্তরে পরিব্যাপ্ত
হয়। এরা সকলেই মারাট্য ভাষার বহুমানাম্পদ অভুল প্রতিভাশালী করি: নির্বিনাথের 'ভাষার্থ দীলিকা' অভি প্রসিদ্ধ
ভক্তির্বায়ক্ত কারা। সামী একনাথ ও শ্রীসমর্গ রামদাগও
মারাট্য ভাষার অভত্য প্রেষ্ট সন্ত-কবি ছিলেন। এদের মূলকে
বাভবিকই মারাট্য সাহিত্যে আব্যাগ্রিক সাহিত্য-রচনার স্বপূর্গ
বলা চলে। এই সন্ত সাহিত্যের বিপুল প্রভাব দেশের শীমা
অভিক্রম করে প্রথমে উন্তর-ভারতে ও পরে প্রায় সারা দেশকে
প্রভাবিত করেছিল। এমন কি ইংরেশী শিক্ষা এবং সভ্যাগ্যও
মহারাট্রে সন্ত-সাহিত্যপ্রচারে কোন লপ বিশ্ব স্কট্ট করতে
পারে নি।ক

্ পণ্ডিত √রমানাথ চক্রবর্তী সন্থানিত এংং ভব্তিতীর্থ প্রিউমেল চক্রবর্তী সম্পাদিত ও প্রকাশিত (সচিত্র ও বিচ্ছা) প্রিক্রিচিক্রী ১৪০ বর্গনা, বানক, ববচ, মূলচন্ত্রী, হন্ডাদি এবং রহত্তরেরে সরল বলামুবাদ ও ব্যাখ্যা, পূলাবিধি এবং সম্পাদকীর নিবকে 'চন্ডা' বিষয়ক বক্ত

প্রীপ্রিসভ্যনারায়ণপূজা ও কথা · · · · · /১০
প্রীপ্রীলঙ্গুরীপূজা ও কথা /১০ জিসন্ধ্যা ।
প্রাতিহান—ইওই গাইরের প্রভৃতি বইরের হোকান এবং প্রকাশকের
বিকট—১২-৷২ আপার সারবুলার হোচ, কলিকাতা।

জাতথ্য বিষয়াদিতে ও বর্ণাপুঞ্জমিক প্লোকস্টীতে প্রসম্পূর্ণ।

প্রবাদ উলিপিত মহায়৸পের অধ্নমূহ ও মারাঠা ভাগার বিখ-কোব অভিযান পেকে এই অবশ্বের:বহু তথ্য সংস্কৃতি হয়েছে।

# পুশুক - পার্চয়

শাসনতম্ভ্রে আদিম অধিবাসী ও উপজাতির স্থান
—জ্বংকণবচন্দ্র চন্দ্রবন্ধী। প্রাপ্তিশ্বন-শংকতি কার্যালয়, ২০০২ বি.
কর্ণভরাদিস ট্রাট, ক্লিকাডা। পুটা ৪৪, সুলা বার আনা।

व्यापित व्यविदानित्रन छोत्रज्यस्य श्रास्त्रक श्रास्त्रकः, विराम्बद्धः भाक्ष्यः অকলে, বিকিপ্তভাবে ছড়াইরা রহিরাছে। শিক্ষার অনপ্রগর ও আর্থিক इत्रवर्ग मत्या मौद्धिता चाट्ड विन्ता देशता चात्रात्मत पृष्टि अकृदिता वात । এই ৰক্সই ১৯৩৫ সাৰের ভারত-আইনে বধন বিভিন্ন সম্প্রাধারের জন্ম चारेन मनाव चामन क्ठेन कहा हरेन. उथन এই विवारे बनमब्रेड निरम-দের সংবাামুপাতে বুব সামাল আসনই লাভ করিয়াছিল। ইহাদের बक्तांत्र मात्रिक आदमिक शवर्षत्र ७ शवर्षत्र-(कवादवरमत्र हाए७ छछ বহিলাছে। এই দায়িত্ব পালবের অকৃত খরণ ভারতবানীয় বৃবিতে কট হয় না। আমাদের অভিবেশী আহোম, আও, কাছাট্টা, কোন্তাক, লালুং, জালামী, গালো, থাসিলা, কুকি, লোটা নাগা, লুলাই, বিরি, রাভা, বিকির, রেজ্বা, সিনভেক্ষ, চাক্ষা, অহর, মুখা, ওঁরাও, লোহরা, খালার, भवटेरबा, मंख्जिल, महित्रबा, भारास्त्रिबा, भारत, भवला भरतासा, मास्या, (6क्. छोन, (कान, कबकू श्राकृति अधिवामीत्वत मध्यक आमना अस्ता। অথচ এদের সম্বন্ধে আমাদের শুক্তর দারিত্ব আছে। সেথক ভাছা শ্বরণ করাইরা দিবার ১৯ই এই পুশুক লিবিয়াছেন। অপুর ভবিয়তে বাবীন ভারতবর্বে বাহাতে এই বিরাট জাভিস্বটির রক্ষণাবেক্ষণ ও উন্নতির উপৰুক্ত বাৰতা হয় ভাহাই কাম। উক্ত বিবন্ধে অনুসন্ধান করিবার জন্ত গণ শরিষদের একটি বিশেষক কমিট কার্ব্য করিতেছেন।

এরপ তথ্যবহন পৃত্তকের বছন প্রচার হইবে, আশা করি। ভবিসং সংকরণে ভারতবর্ধের একথানি মানচিত্রে আদিবাসীবের অধ্যুবিত অঞ্জ-সমূহ দেখাইলে পৃত্তকথানি অধিকতর উপবোধী হইবে।

ঞ্জিবনাথবদ্ধ দত্ত

ক লেশ রাজ--- এভবানী মুখোলাগার। বুক এলোরিরম লিমিটেড, কনিকাতা। দাম চুই টাকা।

ষিতীয় মহাযুদ্ধ এবং পঞ্চাদের মন্তর্বের পটভূমিকার বহু পর ও উপভাস বাংলা সাহিতে। রচিত ছইরাছে। সবগুলিই বে রংশান্তার্ণ বা মবে রাথিবার মত এ কথা বলা চলে না। আলোচা উপভাসধানি পরিসরে কুত্র হইলেও কাহিনী-গ্রন্থনে লেথকের বরুদ পরিস্কৃট এবং সেই কারণেই করুপ একটি ছবি মনের মাঝে দাস কাটিয়া বসে। মহাযুদ্ধের আঘাত বাহাদের জীবনকে নানা দিক বিলা পঙ্গু ও নৈতিক চরিত্রকে কল্বিত করিয়াছে সেই নিম-স্থাবিজের তার হইতে লেখক কতকগুলি পাত্রপাত্রী বাহিলা কইরাছেন। গল্পের নায়ক ভাতিতে রাহ্মণ। এখন-পূর্ববের পোলা ছিল সরকারী চাকুরী, বিতীয়-পূরুষ ছাপাথানার কম্পোলিটর—বর্ত্তবান পূরুষ আর্থাৎ নায়ক আর্হির অমিক পর্যায়ে অবনীত। উব্লাস্ত থাটিয়া কোন রক্ষেরে সে নাহিবৃহৎ পরিবার প্রতিপালন করে। ওক্ষের ভাহানিছি ভারা তভাও পুরাতন টনের ছাউনিতে মাথা ভালিয়া থাকিবার বাবছাও আছে। মাঝে মাঝে এই আপ্রের ছাড়িবার নোটিশও আনে। গালেই

## আমাদের গ্যারাটিড প্রফিট স্কীমে টাকা থাটানো সবচেয়ে নিরাপদ ও লাভজনক।

নিয়লিখিত হুদের হারে স্থারী স্বামানত গ্রহণ করা হইরা থাকে :--

- ১ বৎসৱের জন্ম শতকরা বাবিক ৪৪০ টাকা
- ২ বৎসবের জন্ম শতকরা বার্ষিক গাও টাকা
- ৩ বৎসদের জন্ম শতকরা বার্বিক ৬৯০ টাকা

সাধারণত: ৫০০ টাকা বা ততোধিক পরিমাণ টাকা আমাদের গ্যারান্টিত প্রকিট তাঁমে বিনিরোগ করিলে উপরোক্ত হারে স্থদ ও ভত্তপরি ঐ টাকা শেরারে থাটাইরা অভিবিক্ত লাভ হইলে উক্ত লাভের শভকরা ৫০ টাকা পাওরা ধার।

১৯৪০ সাল হইতে আমরা জনসাধারণের নিকট হইতে হাজার হাজার টাকা আমানত গ্রহণ করিবা তাহা হব ও লাভসহ আদার দিয়া আসিবাছি। সর্বপ্রকার শেরার ও সিকিউরিটি কয়-বিকর সম্পর্কে আমরা কাজকার্বার করিবা থাকি। অন্তগ্রহপূর্কক আবেদন করুন।

# रेश्वे रेष्टिया श्रेक এ। শেষার ডিলাস সিঙ্কিকেট

# লিসিটেড

ু ধা১নং রব্নাল এক্সচেঞ্চ প্লেস্, কলিকাভা।

টেলিঞাৰ "হনিকৰ"

<u>কোনু ক্যাল ৩০০১</u>

۲

আছে ররেণ হোটেগ—নানা কাতীর শ্রন্থিকর সন্থা পান-ভোকনের আগার। কোনটই হুছভাবে বাঁচিরা থাকিবার উপবাসী নহে। এবনই আবহাওরা ও পারিপার্থিকে একটি হুর্জনার্রও পরিবারের জীবনবাতাঃ ধারাট্রু 'কালো রাডে'র আকাশে লেখক কুটাইরা তুলিরাছেন। ানবিভিন্ন চরিত্রের বিকাশ বেথাইতে উপভাস্থানিকে বীর্থাচর করা চলিত – লেখক সে চেটা করেন নাই, অবচ সংক্ষেপে মূল রসকে অব্যাহত রাধিরা কাহিনীটকে গাঁধিরাছেন। ললিভা চরিত্রটি এই কাহিনীর স্বায়স্থি। হুত্রে আঘাতে অবিচলিত ধরিত্রীনাভার মত স্ক্রিন্টা এই চরিত্রটি সার্থক স্ক্রীবলা বার। হাপা ও প্রভ্রণট প্রশাননার।

बीतामलम मूर्यालाधाय

চতুরিক — শ্রীরবি বন্দ্যোপাধ্যার। ইণ্ডিরান পাবলিশিং হাউন। ২২।১ কণ্ডিরালিন ফ্লীট, কলিকাডা। বুল্য আড়াই টাকা।

রহ:খ্রাপদাস। আলোচ্য উপভাসথানি এড্পার ওবালেসের "দোব ছোরার ছেইন" অবলখনে লিখিড। বাঁহারা বহুপ্রোপদাস পড়িছে ডালবাসেন "চতুরিকা" উহিাদের আনন্দের থোরাক কুটাইবে। কাহিনীটি আরম্ভ হইছে শেব পর্যন্ত বিসম্ভব্য ভাবে মনকে টানিয়া লইয়া বার। সাধারণ রহুপ্রোপদাসের ভার কোথাও অসম্ভব ও অখাভাবিক ঘটনার এডটুকু রেখাপাত হর নাই, অথচ ঘটনাপ্রবাহ মনকে সর্বাধা একটা উত্তেজনার মধ্যে সন্ধাপ করিয়া রাথে।

মৃক্তির ডাক — শ্রীবেশর ভটাচার্য। শ্রীকালী প্রকাশালর, ১৪-বি, শঙ্কর ঘোর লেন, ক্রিকাতা। স্ব্যু দেড় টাকা। উপভাস। দেশকে ভালবাসার কলে শিবনাথ রাজশন্তির কোপানলে পড়িরা জীবনে বছ লাজনা ভোগ করা সম্বেও সূত্যুর পূর্ব সূত্র পর্যন্ত আদর্শচ্যুত হর নাই। সংসাবে প্রিরতমা স্ত্রী এবং তভোধিক প্রির একমাত্র শিশুপুত্রের আকর্ষণও ভাকে সঙ্করাই করিতে সক্ষম হয় নাই। এই সংক্ষিপ্ত ঘটনাটিকে কেন্দ্র করিতে সক্ষম হয় নাই। এই সংক্ষিপ্ত ঘটনাটিকে কেন্দ্র করিব। নানা সংঘাতের ভিতর দিরা শিবনাথের কুন্তু, নগণ্য পরিবারটিকে পূথিবী হইতে মৃছিরা কেলা হইরাছে। সবলের বিক্লমে ছর্বলের মাথা তুলিরা দাঁভাইবার শেব পরিপত্তি হইরাছে হর্বলের ধ্বংসের মধ্যে। শিবনাথের মৃত্যেহ বধন ভার স্ত্রীর চিতাভন্মের পাশে পড়িয়া আছে ভখন সাঁরের প্রেসিডেন্ট কুখ্যাত স্থলিতকুমার রারচৌর্বীর বার সাহের" খেতাব প্রাপ্তি উপলক্ষে ঢাক ঢোক আর শানাইবের বাদ্য, এই শ্রেণীর ধনীসম্প্রানারের বথার্থ স্বরপ্ত সম্বন্ধ মনকে সচেতন করিবা ভোলে।

🗃 বিভৃতিভূষণ গুপ্ত

প্ৰতিষ্ঠার পথে—খবিৰ উদ্ধীন আচমদ। নূব লাইজেরী, ১২।১ সাংবল্পী লেন, কলিকাতা।

উত্তৰ-বলের পদ্ধীজীবন অবলম্বনে লিখিত মনোল্ড উপস্থাস।
ভাবা সহল, অফ্ল এবং লেখকের মৃষ্টিভঙ্গী উদার। আমাদের
বিশাস, মুসলমান সমাজের ছবি ভালো করে আঁকা শক্তিশাসী
মুসলমান লেখকদের পক্ষেই সন্তব। তাঁরা বদি সে বিবরে অবহিত
হন তবে বাংলা সাহিত্যের একটি দিক ক্রমশঃ সমুক হরে উঠবে।

সাইবেন—প্ৰীম্বাংগুকুমাৰ রার। প্রবর্ত্তক পাবলিশার্স, ৬১, বহুবাজাৰ স্থাট, কলিকাভা। দাম এক টাকা।

# নেতাজীর অনুসরণে

বাংলার বিখ্যাত স্থত ব্যবসায়ী প্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "প্রী" মার্কা স্থতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিস্প্রয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'প্রী' স্থতের ব্যবহার অত্যাবশুক হইয়া পঞ্চিয়াছে, বাজারে ভেজাল স্থতের ব্যরহাপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে প্রীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ স্থত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা স্থত ব্যবসায়ী মাজেরই অনুকরণীয়।

# বাঃ শ্রীসুভাবচন্দ্র বসু

ক্লিকাডার বধন বিষান আক্রমণ চলছিল, তথনকার সঙ্ট-পূশ কীবনের কথা নিয়ে তিন-দৃজ্ঞের একথানি নাটকা। নাট্য-মস ভালো ক্রমে নি। প্রথম গানের "কম্পিড তব মধ্ব দেংলী, বিষম ছাদে নামিল বক্ষে"—এ অংশে 'দেহলী' অর্থ কি ?

হে সূর্য্য--- প্রস্তারনাধ সাঁতবা। শ্রীপাবলিনিং কোলানী, কলিকাডা। দাম। ৮/০।

ক্ৰিভার বই। মলাটের ভিডর-পিঠে পরিচর দেওরা ংরেছে, ভেরোশো পঞ্চালের আর্দ্তনাদ। পড়ে মনে প্রশ্ন জাগল, 'আর্দ্তনাদ' —ছভিক্পীড়িত দেশবাসীর, না, বঙ্গভাবার অধিষ্ঠাত্তী দেবীর ?

"কুটনীতি দাবা খেলে,

नार्थ (क्टिंड् ? काव नाथ ?

माञ्चर,--- कु:।"

দেশের মন্মান্তিক বেদনা নিয়ে এ কি পরিহাস ?

বীর পূজা—জ্রমতী জ্রলা দেবী। পরাগ পাবলিশাস।
১৬২, কর্ণ ওরালিস খ্লীট, কলিকাতা। মূল্য দেড় টাকা।

পার্থসারথি, জীরাষ্ট্রজ, রাম্মোগন, বিদ্যাসাপর প্রভৃতি কর্মনীর ও চিস্তাবীরগণের উদ্ধেশ কবিভার প্রছা নিবেদন। বচনা মন্দ নর, কিন্তু স্থানে স্থানে ছন্দোলকের ফলে কবিভার সৌন্দর্য্যভানি হরেছে।

মর্ত্তের রবীজ্ঞনাথ—এবাইচরণ চক্তবর্তী। মৃশ্য ১১। করেকটি প্রথক্ষে লেখক ববীজনাথের মন্তর্গ্রীতি ও মানবর্গ্রীতির পরিচর দিতে চেরেছেন।

কথা-প্রসঙ্গ--- জ্রীবাবেজকুষার মুখোপাধ্যার। দি বৃক্ কোম্পানী, ৪/৪ এ, কলেজ ধ্যোরার, কলিকাত। লেখকের কোঁতৃহল ও অনুসন্ধিনার ক্ষেত্র ব্যাপক। তাবা ও সাহিত্যের মালমশলা, চিকিৎসাত্তর, আইনের প্রভাব ও পতি, পরিচিত পাহ্পালা—প্রভৃতি নানা বিবর নিরে তিনি আলোচনা করেছেন। প্রবন্ধতি সংক্ষিপ্ত হলেও তথ্যপূর্ণ।

#### শ্রীধীরেন্দ্রনাথ সুখোপাধ্যায়

আজাদ হিন্দ ফৌজ ও নেতাজী—মেজৰ জেনাৰেল শাও নওবান্ধ থান। চক্তবৰ্ত্তী চাটাৰ্ল্জি এও কোম্পানী নিমিটেড, ১৫, ৰলেন্ধ হোৱাৰ, কলিকাডা। পু. ৫৩০, মূল্য সাভ টাকা।

ভাৰত-ত্ৰন্ধ সীমান্তে, আজাৰ হিন্দ কৌজ বা ভাৰতীয় জাতীয়-বাহিনীর স্বাধীনভা-সংগ্রাম ভারতবর্ধের মুক্তি-আন্দোলনের ইতিহাসের একটি গৌরবমর অধ্যার। বর্তমান পুস্তকের ( মুল প্ৰস্থ ইংবেজীতে লিখিতে) লেখক মেজৱ জেনাৱেল শাও নওয়াল ধান ভারত-ত্রন্ম ধ্রণাঙ্গনে বিশেষ কৃতিছের সৃহিত সংগ্রাম কৃথিয়া-ছিলেন। দীর্ঘ চার বৎগরকাল মালবে, সিঙ্গাপুরে ত্রন্ধদেশ আর আবাকানের ভঙ্গলে এবং মণিপুরের উপত্যকার ভিনি বে প্রভাক অভিক্রতা অব্জন করিয়াছিলেন, ভাচাবই পুথায়ুপথ বিবহণ বর্জমান পুস্তকে লিপিবম হুইরাছে। লেথকের তথানিঠা ও সংবত প্রকাশভঙ্গী প্রশংসনীয়: ভাবোচ্ছাসের আভিশব্যে ভিনি ইতিহাসকে উপভাসে পরিণত করেন নাই। সেইজভই আজাদ हिम कोब ଓ निकामी मश्यक हेड़ा व्य अविह खंड खामानिक बन् হইবাঙ্কে 'মুখথজে' পশুত অওবাহবলাল নেহ কও ভাষা খীকার कविदारधन । प्रक्रकथानि পড়িয়া বুঝা बाब, আঞ্চাল हिन्स कोर्बाव এই ওস্তাদ যোগা লেখনী পরিচালনারও কম দক নহেন। হাকা ফালমের যুদ্ধ,পালেল বিমানঘুঁটি আক্রমণ, ইক্ষল অভিযান প্রভৃতির

# आरश्रास सर्वेश

শিশুপালনের সম্যক জ্ঞানের শ্বভাবে এদেশে।শশু-মৃত্যুর হার এত ভ্যাবহ। বিবটন শিশুদের দৈহিক সর্বাদীণ পৃষ্টিবিধান করিতে শ্বিভায়। ভিটামিন ভি, বি১, বি১র সহিত মৃল্যবান উদ্ভিক্ষ ও রাসায়নিক উপাদানের সংমিশুলে প্রস্তুত এই পূর্ণাক্ষ টনিকটি প্রত্যেক শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দক্ষোদ্যমের সময়, সেবন করান উচিত। বিবটন নিয়াশ্বিত রোগে বিশেষ উপকারী:—শিশুদের বৃহত্তের শীদ্ধা, নাল্যবিতা, রুধ তোলা, গেচ কালা, কোটকাটিল, রুজপুত্তা, ক্যান্তা, ব্রুক্টেম, রিকেট্স ইত্যাদি।



निष्टोत अधिरमभिकम् • कनिकां



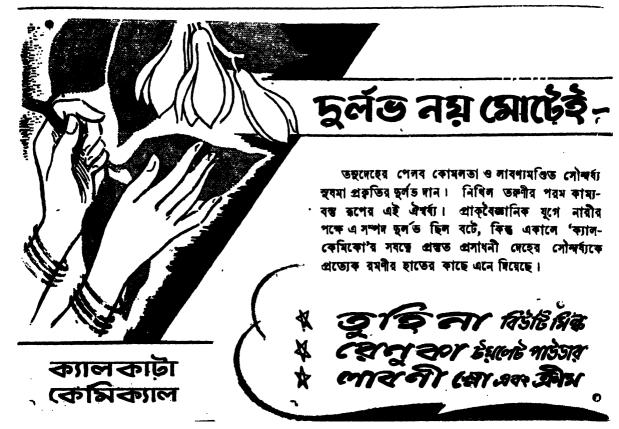
উদীপনাপৰ্ণ বিবৰণ পড়িতে পড়িতে শ্রীর বোমাঞ্চিত হটবা উঠে **এবং বে বেশাস্থবোধ আজার হিন্দ কৌজের সৈতবিপকে 'করেছে** रेख मरबल' এই महा छेद द कविवाहिन छाहा दान शार्करकद महन नकाविक रहेवा म्हान्य मृक्ति-नायनाय कृतीय भाषाय व्यक्तियाजी ইইবাৰ অভ ভাহাকে অভুপ্ৰাণিত কৰিব। ভোলে। বিনি ছিলেন আমাদ হিম্মের প্রাণম্বরণ সেই রেডাকী প্রভাবচন্তকে মাত্রহ वाष्ट्रनीकिविन ও দেনাধিনায়ক এই ত্রিবিধরণে দেখিবার এবং ঘানঠ ভাবে স্থানিবার ছব্ল ভ সৌভাপ্য লেখকের হইরাছিল। একাস্ত অভুৰাগ ও দৰদেৰ সহিত নেতালীৰ বে লিপিচিত্ৰ ভিনি ভাঁকিয়া-**ছেन ভাহা সার্থক ও সর্কাদ্রক্ষর হইয়াছে। পুরুক্থানিতে ( ৪**४২ হইতে ৪৯১ পঠা পৰ্যন্ত ) দক্ষিণপূৰ্ব্ব এশিয়ায় বেভিও বােপে প্ৰাদন্ত নেড়াৰীৰ বে সমস্ত বক্তভা উদ্ধৃত করা হইরাছে সেওলি পড়িলে ভাঁহাৰ পভীৰ ৰাখনৈতিক জ্ঞান, দ্ৰদৰ্শিতা এবং ভবিষ্যদৃষ্টিৰ পরিচর পাওরা যায়। ১১৪৫ সালের ১১শে জুন ভারিখে বেভার-वक्क ठाव (बकाको वरमन-"विक्रिन शदर्गयके धकवाव वर्ष कोनल কংগ্রেদের সহবেলিতা লাভ করতে সক্ষ হয় ভা হলে পাকিস্থান অভিঠাক ভাৰত বিভাগেও কংগ্ৰেগ্ৰে বাজী করাজে চেঠা করবে ৷…'' ছুই বৎসর পূর্কে এক জুনে যা ভিনি অফুযান করিয়া-ছিলেন, বিপত ৩য়া জুন ভারিৰে ভাষা বাস্তব সভ্যে পরিণভ হই-রাছে। নেডাজীর বহুমুখী ব্যক্তিখের প্রকৃত সমুপ এবং আজাদ হিন্দ কৌবেৰ মৰ্মকথা জানিতে হইলে এই পুত্তকথানি জপ্ৰিহাই।। वारमा अञ्चान (वन ववकाव इहेबाह्य। 88 बाना हिंव এवर फिनथान। मानिक इशाब त्रीष्ठेव वृश्व कविदारक्।

উনিশে আবাঢ়--- এ ৰপুৰ্বকৃষ্ণ ভটাচাৰ্য। বিভাগানৰ বৃষ্ ইল। ১১ নং শহর বোষ দেন, কলিকানা। লাম আভাই টাকা।

এই উপভানের 'নিবেশন' লেখক বনিরাছেন, বে, পশাশের সম্বস্তরের পউভূমিকার বে সকল নরনারীর সঞ্চে উছিয় পরিচর ছইরাছিল ভ্যাব্যে করেকটকে এই প্রকে তিনি আঁকিবার প্ররাস পাইরাছেন। কিন্তু বইবানি পঢ়িয়া বনে হর, বাহাবের তিনি আঁকিতে চাহিরাছেন তাহাবের তিনি ভাল করিয়া চেনেন না—পারেপারীদের সঙ্গে পরিচরটা ভাষার ভাসাভাগা রক্ষের। উপভানের উপসংহারটা কতকটা সিনেমাগন্ধী হইয়া সিয়াহে। বইরের ছানে ছানে প্রকৃতি-বর্ণনার কবি অপুর্ককৃষ্ণের নিপুণ হাতের পরিচর পাওয়া বায়। কোন কোন জারামার ভারলগও বেল উপভোগ্য, সংলাপের ভিতর দিয়া লেখক প্রচুব ভাবিবার গোয়াক পরিবেশন করিয়াছেন।

পরিমায়ু—- শ্রীপ্রপতি ভট্টাচার্য্য, ডি, টি, এম ৷ ডি এম, লাইব্রেরী, ৪২, কর্ণপ্রয়ালিস খ্লীট, কলিকাতা, মূল্য সাড়ে তিন টাকা ৷

ইংবেজি সাহিত্যের তুলনার বাংলা ভাষার বৈজ্ঞানিক প্রয়ের বৈজ্ঞানিক প্রয়ের বৈজ্ঞানিক প্রায়ের বিবল বলিলেই চলে। পরিভাষাকে বথাসন্তর পরিহার করিয়া সর্বজ্ঞানবাধ্য সহজ্ঞ সরল ভাষার কেমন স্থল্পর বৈজ্ঞানিক প্রদ্ধ লিখিতে পারা বার, পতপতি বাবুর 'পরমায়ু' ভাষার প্রমাণ। বে সমস্ত নিরম মানিয়া চলিলে মামুর স্থপ্ত দেচ-মনের অধিকারী মুইয়া দীর্ঘকাল বাঁচিয়া থাকিতে পারে, ভাগার পুরাপুরি হদিস এ পুঞ্জে পারেয় বাইবে। 'মনের রোগ' আর 'মনের স্থস্থতা' নামক



ছইটি অব্যাহে আধুনিক মনোবিকলন ডক্ষের (Psycho-Analysis) সার কথাগুলি লেখক এমন প্রাঞ্জলাবে বুরাইরা দিরাছেন বে নিভান্ত আনাড়ীর পক্ষেও বিষয়ট বোটামুটি অব্যক্ষণ করা কঠিন হইবে না। প্রসক্ষমে পৃথিবীর মধ্যে আছের দিক দিরে সকলের পেরা হিমালরের অপর পিঠের তুনজাদের কাহিনী, প্রোট বররণ ইত্যাদি কতকওলি বিষয় সন্থিতি করিয়া বইটিকে সাধারণ পাঠকের পক্ষেবিশেব লোভনীয় করিয়া তুলিয়াছেন। পশুণতি বাবু নিপুণ কথাশিলী, তাঁর লেখনীর বাহুছে আছ্যু-বিজ্ঞানের মত একটা তথ্যবহুল, নীরদ বিষয়ও সাহিত্যে কপান্তবিত হইরাছে। ভূমিকায় ভান্তার বিধানচন্দ্র বার বে সকল স্থাভিত্যিত মন্তব্য করিয়াছেন, আন্থাচার্চার উদাসীন সাধারণ বাঙালী নরনারীর পক্ষে তাহা বিশেষ ভাবে প্রশিন্নবাগ্য।

্যাং বাং—ঐকার্ষকচন্দ্র দাগওও। আওতোর লাইবেরী ৫, কলেম কোরার, কলিকাতা। মূল্য ১৪০ টাকা

লেখক সত্ত্বপ্রতিষ্ঠ শিল্ডসাহিত্যিক। প্রজে-পথে অক্স বচনা-সম্ভাবে দীর্ঘকাল বাবং তিনি শিল্ড-সাহিত্যকে সমৃত্ব করিরা আসিতেছেন। বর্জমান পুস্তকথানিও তাঁহার খ্যাতিকে অকুর বাখিবে। ইহার ছত্ত্বে ছেত্রে লেখকের পাকা হাত্রের পরিচর পাওরা ধার। ইহাতে বে করটি আমগুরি কাহিনী ও ছড়া আছে তাহা পড়িরা শিল্ডবা বেশ মন্ধা পাইবে। প্রাচ্ছদপটের ংজীন ছবিটি এক স্থান হইরাছে বে তাহা লইবা শিক্তমহলে বীভিমত কাড়াকাড়ি পড়িরা বাইবে।

কে কোথায়—এলাবণ্যকুষার বৈত্তের। এতারভী পাবলিনার্স, ২০৯, কর্ণওয়ালিশ ব্লীট, কলিকাডা। মূল্য ২্।

এই উপভাসের পাত্রপাত্রীয়া বেন অনুষ্ঠের হাতে ক্রীড়নক মাত্র। নিষ্ঠির নির্ম্ম বিধানে ইরারা পরস্পারের নিকট হইতে বিচ্ছির হইরা পেল, কে কোখার ভিটকাইরা পড়িল ভারার হবিনই পাওয়া পেল না। উপসংহারে জীবার ভারাকের মধ্যে কেহ কেহ পুন্মিলিত হইল। লেখকের ভাষার বেপ আছে, কিছ সংলাপ বস্তুভাভারাক্রান্ত। পর জ্যাইবার ক্ষমভা লেখকের আছে, কিছ হানে হানে মাত্রাজ্ঞানহীনভার পরিচর পাওরা বার। প্রচুর বর্ণাভাছ নক্ষরে পড়িল।

# এম্ব্রস্থারী মেশিন

ন্তন আবিষ্কৃত। কাপড়ের উপর স্তা দিয়া অতি সহজেই নানাপ্রকার মনোরম ডিজাইনের ফুল ও দৃখ্যাদি ভোলা যায়। মহিলা ও বালিকাদের পুব উপবোগী। চারিটি স্ট্রসহ পূর্ণাঙ্গ মেশিন—মূলা ৩, ডাক শ্রচা॥১০।

ডীন বাদাস´; খালীগড়, নং 28



প্রতিরের গান---- এবংল্ খোষ। মডার্ণ পাবলিশান'।

•, কলের খোরার কলিকাডা। পুঃ ৪২৪, মুল্য-৪১ টাকা।

১৯০৯ হইতে ১৯৪২ প্রত্ত এই চার বংশরের বালা তথা ভারতবর্বের রালবৈতিক ঘটনাবলীকে পটকুমিকা করিয়া এই বৃহৎ উপস্থাস্থানি রচিয়। কাহিনীর ব্রনিকা উড়েলিত হইবার সজে সম্পেই দেখি, পূর্ববলের ধলেগরী নদীতীরছ কুজ কলাতিয়া আমের ধানের কারধারী ছরিচরণ দাসের ছেলে নলা, কারণলভার সলে-পূর্বেরাসের পালা উদ্বাপনে ব্যাপৃত। ওদিকে কম্নিট প্রবার আবের হিন্দু-মূসলমান অমিক ও মঞ্জুমদের সক্ষরত্ব করিবার কালে আগ্রনিরোজিত। নলার বোন মাধবী ভাহার প্রতি প্রধাসক। কিন্তু দেশের মৃক্তি-সাধনার একাগ্রচিন্ত প্রবীর ভাহার প্রতি উদাসীন। অক মাৎ প্রবিদ্যাকে দেখা দিল খটিকার পূর্বোভাস। ঘিতীয় বিষয়ুজের পরোক্ষ প্রভাবে কুজ কলাতিয়া আমের সমাজ-মুখুলা উল্ট-পালট হইরা গেল, ভারপর সেই বিপ্রান্ত পালীর বৃক্তে হইল আগ্রী-আনোনের তাওবলীলা। ক্লাতিয়ার পরী-পথ পুলিসের ওলিতে নিহত আম্বাসীদের রক্তে রঞ্জিত ইইয়া উঠিল। প্রবীর এ আন্দোলনের সমর্থক হিল না, কিন্তু জমিদারের বড়বন্তে বলীকৃত হইগা ভাহানে ভাহার কঞ্জনার ধর্ম চন্ত্রপালী ইতে বিচাত হইতে হইল।

উপভাসধানি বিরোগান্ত। তপসংহারে বিচ্ছেদের হুবে, অ-কুত-কার্যের মর্ম্মবেদমা, অকথিত বাণীর নীরব আকুলতা ইত্যাদি সধ কিছুতে বিলিয়া বড় একটি ভাবব্যাকুলতাপুর্গ মিন্ধ-করণ পরিবেশের পৃষ্ট করিয়াছে। দেশের মৃক্তিসাধনার গান্ধীপথী হবত এবং কম্নিই প্রবার উভরেরই বিক্লতা হুলংকে পীড়া দেয়। কিন্তু লেণক আনাবাদী এবং ভবিন্ততের অপ্নে বিভোর। তাই তিনি আবাস দিয়াছেন—"অলিবন্ধ দেশের ভত্মাশি থেকেই নবজীবনের অপুরোলার হবে। মিখ্যা আখাস নর, মুলকথা আর বন্ধ নর, তাদের সাধনা সার্থক হবেই।"—ক্সন্তীর দেশ-শ্রীতিই বে লেণককে এই উপভাস-রচনার প্রশোধিত করিয়াছে, ইহার ছব্রে হত্রে প্রসাপ আছে। লেণকের ভাবার একটা বিলিপ্ত রূপ আছে, আমালে বে তিনি রোম্যান্তিক-ধন্মী কবি তা ভার প্রকৃতি-বর্ণনা পদ্ধিকেই বুবা বার। উপনাঞ্জি হানে যানে বান্তবিকই চমক সালাইয়া সের।

জ্ঞীনলিনীকুমার ভদ্র

ছুটির ঘণ্টা — প্রন্থাংগুকুষার তথ্য, এব্ এ, বি-ট। পাইও-নীয়ার বৃক কোং, :৮ জাষাচরণ দে ট্রাট, কলিকাতা। বৃল্য ১। । বইধানি টেড়াটুবুক কমিট কর্তৃকি সেকেগুরি ক্লসবৃত্তে অতিরিক্ত পাঠাপুত্তকরণে নিজিট হইয়াছে। বইটি বে প্রনিবিত্ত ও কিশোরদের

> চীনে কংগ্রেগ খেডিক্যাল মিশনের বিববণ ভাঃ কোটনিসের অমর কাছিনী

# हारत सरे जुन अकरत

চীনে কংগ্ৰেস মেডিক্যাল মিশনের অভিক্রতার বিবরণ ও ডা: কোট্নিনের মহানু আপ্রোৎসর্গের কাহিনী নিয়ে লেপ। এই বইবানি উপজ্ঞানের চেরেও মনোঞ্জ ও চমক্র্যাল।

অধুবাদক - প্রীনেপালশস্কর সরকার। দাম ৩ টাকা আমাদের প্রকাশিত ও এজেনির অক্যান্স বই

• ক্ৰোধ বন্ধ •
পদ্মা-প্ৰমন্তা নদী (২ সং) ৩।
রাজধানী (২র সং) ২।
সহচরী
নামবের শক্ত নারী(৩সং)১৮

শ্বদ্ধ শক্ত নারী(৩সং)১৮-• ডা: নগেন্দ্রনাথ চটোপাাধারের « নিজ্ঞান মন \* মানবেস্থনাথ রারের \*
দর্শন ও বিপ্লব সামার্কসবাদ সা-

\* অধাপক উমেশ্চন্ত শুট্টাচায়ের\* চারুশ' বছরের পাশ্চান্তা দর্শক্ষ ২০

পুস্তক-প্রকাশক ও বিজেতা ১৩০এ, রাগবিহারী এভিনিউ, কলিকাডা—২১

শীৰই প্ৰকাশিত হুইতেছে

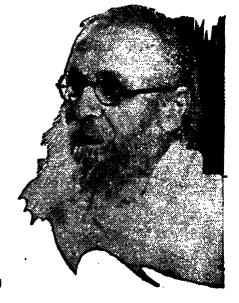
প্রথিত্যশা লেখিকা শ্রীশান্তা দেবীর

# রামানন্দ ও অর্ধ-শতাব্দীর বাংলা

বাংলার সাংস্কৃতিক আন্দোলনের পটভূমিকার বর্তমান বুলের অভতস প্রেট মনীবীর জীবনালনের স্থানিপুন বর্ণন ও বিজেবন।

প্রবাসীর আকারে বহু পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ, বহু চিত্রশোভিত, বাংলা-সাহিত্যে অভিনব জাবনচরিত। ইহা একাধারে মনীবা রামানক চটোপাধারের জাবনী এবং সমসামনিক বাংলার সাক্ষেতিক একভিন ইভিহাস। বিশ্বত পঞ্চাল বংসরের বাংলার সাহিত্যিক, রাজবৈতিক ও সামাজিক ইত্যাধি বাবভীর আন্দোলনের প্রকৃত বরুপ উপলব্ধি করিছে হইলে এই পুত্তকথানি অপরিহার্থা।

প্রবাসী কার্যালর, ১২-۱২, খাণার সার্গার রোভ, কনিকাডা।



#### প্রবাসীর পুস্তকাবলী BOOKS AVAILABLE Chatterjee's Picture Albums-Nos. 1 to 17 শহাভারত ( সচিত্র ) পরামানক চটোপাধার (No. 1, 4, 5, 8 & 9 out of Stock) সচিত্ৰ বৰ্ণপরিচয় ১ম জাগ--each No. at রামানক চটোপাধার History of Orissa Vols. I & II each Vol. 25 -R. D. Banerji সচিত্র বর্ণপরিচর ২র ভাপ—ঐ Canons of Orissan Architecture—N. K. Basu 12 চাটার্জির পিকচার এলবাম Dynasties of Mediæval Orissa-Pt. Binayak Misra ( ), 8, e, b 9 a attr ) প্ৰত্যেক ৪১ Eminent Americans: Whom Indians Should উবসী ( মনোক্ত প্রসমষ্টি )---Know--Rev. Dr. J. T. Sunderland ₹~ সোনার খাঁচা---শ্ৰীগীতা দেবী Emerson & His Friendsditto **21**0 Evolution & Religionditto আজব দেশ (ছেলেমেয়েদের সচিত্র) 🗳 ١, Origin and Character of the Bible ditto বছ্ৰমণি (ভাঠ গলসম্টি) ₹~ Raimohan's Wife-Bankim Ch. Chatterjee উভানলভা ( উপভাস )—-শ্ৰীশাস্থা ও সীভা দেবী Prayag or Allahabad—(Illustrated) **२1**• The Knight Errant (Novel)—Sita Devi কালিগাসের গ্র্ম ( সচিত্র )—গ্রীরঘুনাথ মঞ্জিক 8. The Garden Creeper (Illust. Novel)— পীড উপক্ৰমণিকা---(১ম ও ২ম্ব ভাগ) প্ৰত্যেক >10 Santa Devi & Sita Devi Tales of Bengal—Santa Devi & Sita Devi ব্যতিগঠনে রবীক্রনাথ—ভারতচক্র মন্ধ্রমদার 210 Plantation Labour in India-Dr. R. K. Das কেশোরদের মন-প্রীদক্ষিণার্থন মিজ মজমদার India And A New Civilization-চণ্ডীদাস চবিত---( পক্লকপ্রসাদ সেন ) Mussolini and the Cult of Italian Youth (Illust.)—P. N. Roy শ্রীবোপেশচন্দ্র রায় বিস্থানিধি সংস্কৃত 115 Story of Satara (Illust. History) মেঘণুড ( সচিত্র )—- বীবামিনীভূবণ সাহিত্যাচার্য্য 31. -Major B. D. Basu হিমালর পারে কৈলাস ও মানস সরোবর (সচিত্র)-My Sojourn in England-শ্রীপ্রমোদকুমার চট্টোপাখ্যায় History of the British Occupation in India — An epitome of Major Basu's first পাপুৰে বাঁদৰ বামদাস ( সচিত্ৰ )--book in the list. ]-N. Kasturi **বিদ**সিভকুমার হালদার 71 • History of the Reign of Shah Alum-W. Franklin বন্ধনা-শ্ৰীহেমলতা দেবী >10 The History of Medieval Vaishnavism in Orissa-With introduction by Sir থেলাগুলা ( সচিত্র )---শ্রীবিজয়চন্দ্র মজুমদার ٠١٥ Jadunath Sarkar.—Prabhat Mukherjee বিলাপিকা---শ্ৰীবামিনীভূষণ সাহিত্যাচাৰ্য্য The First Point of Aswini-Jogesh Ch. Roy ল্যাপল্যাও ( সচিত্র )—ঐলম্বীশর সিংহ >10 Protection of Minorities-

প্রবাসী ভার্যালয় ১২০।২, আপার সারু লার রোভ, কলিকাভা।

ভাক্ষান্তৰ বভৰ।

The Modern Review Office 120-2. UPPER CIRCULAR ROAD, CALCUTTA

Postage Extra.

Radha Kumud Mukherji

0

3 0

8

R

0

8

Ω

-8

2

3

R

0

0

8

উপৰোধী হইরাছে তৃতীয় সংখ্যাই ভাছা সপ্রমাণ করিভেছে। ইভিহাসের পৃঠা হইতে কয়েকটি মহাপ্রবের জীবনী এবং কৌতৃহলোকীপক ও জাতবা তথামূলক করেকটি ঘটনা অবলখনে রচিত সচিত্র গরগুলি: স্থপাঠা হইরাছে।

জয়ন্তী শিশুসাধী ( ১৩৫৩ )—সম্পাদক এ লাত-ভোব বব । আতভোব লাইবেৰী, ৫ কলেক কোৱাৰ, কলিকাভা। ২২৯ পূচা, মূল্য ৪১।

অভাত বংসাবের বার্ষিক শিশুসাখীর ন্যার এবারওটত। প্রসিদ্ধ সাহিত্যিক ও শিল্পিগণের প্রন্ধ, কবিতা, প্রবন্ধ ও ছবির উৎকর্ষভার পূর্বপৌরব অক্সর রাথিয়াছে, কিছু বর্জমান বার্ষিকীর বিশেষক এই বে, শিশুকাঞ্জির মাসিক শিশুসাখী এই বংসারে ২৫ বংসার পূর্ণ করিলা অরক্তী সংখ্যার বৈশিষ্ট্য অর্জন করিলাছে। স্থুভারা প্রকাশকপণ ইলাকে চিত্র ও রচনাসভাবে স্থাসমূহ ও সোঠবপূর্ণ করিছে চেষ্টার ক্রেট্ট করেন নাই। মুখবন্ধে প্রস্তামাপ্রশান মুখোলালার ও প্রকাশেকপান বোব ইলার লীর্ষজীবন কামনা করিলা আবীর্ষাক করিলাছেন। আম্বাও বলি—ভবাছ।

অজানা দেশে মঙ্গোপার্ক--- শ্রীনারারণচন্দ্র চন্দ। আত-ভোব লাইরেরী, কলিকাডা। মূল্য ১।•

পোনে হই শত বৰ্ণ পূৰ্বে আফ্রিকার অভ্যন্তবভাগ ইউবোপীর-পণের নিকট সম্পূর্ণ অভ্যাত ছিল। বে সকল আবিদারক আফ্রিকার সহর্গর ও সহটসস্থল প্রদেশগুলির অভানাতব্য সকল সভাসয়াকে

প্ৰথিতয়শা লেখিকা শাস্তা দেবী প্ৰণীত ১। অলথ-বোরা ( উপভাস ) मृग्र ७ ২। ছুহিতা ( উপক্রাস ) > ৩। সিঁখির সিঁছর 11. । वध्वत्र 34. স্থাসিত্ব লেখিকা শ্ৰীসীতা দেবী প্ৰণীত ১। ব্দণিকের অভিধি (উপক্রাস) **21**• ২। নিবেট গুৰুর কাহিনী (ছোটদের পদ্ধ) প্রাপ্তিমান-শ্রীশাম্বা দেবীর নিকট পি-২৬, রাজা বসম্ভ রায় রোড, কলিকাভা ও সমন্ত বিখ্যাত পুত্তকালয়ে প্রাপ্তব্য।

#### **BOUNDARY PROBLEM**

— OF NEW BENGAL —

ক্প্রিনিছ জননেতা তাঃ সভোবকুষার মুখোপাধ্যার প্রবিভ

Boundary Commission আসিতেছে—বাংলার সীমাভ

সমতা বাঙালী হিন্দ্র জীবন-মহণের প্রস্থা। বর্ছমান ও
প্রেসিডেলি বিভাগ (সমগ্র), লাজিলিং, জলণাইওড়ি,

দিনালপুর (পশ্চিমাংশ), মালনহ (পশ্চিমাংশ) ও গোপালগঞ্জ

হিন্দু-বলে আনিবার বাবী যুক্তি ও ভব্যের বারা সমর্থিত।
ভাওরাল মোক্র্মার বিধ্যাত জল শ্রীণারালাল বহুর ভূমিকা
স্বলিত। মূল্য লশ আনা।

es, বাহুড়বাগাৰ **ই**ট, কনিকাতা—১

স্প্ৰিচিত কৰিবাহেন, বজোপাৰ্ক ভাহাৰের মধ্যে সৰ্বপ্ৰথম ও সৰ্বপ্ৰধান অভিবানকারী। নাইপার নদীর উৎদের সন্ধানে আফিকার অভ্যন্তরে ভাঁহার কয়েক হাজার বাইল অভিবানার কাহিনী বোমাককর ঘটনার পূর্ব, তিনি ভাঁহার স্বাচিত প্রস্থে এই সকল ঘটনা মনোজ্ঞ ভাবে বর্ণ না করিবাছেন। বহুপার অসভ্য আফিকাবাসী সন্ধারগণের হজে বলী হুইরা তিনি কি ভীবণভাবে নির্বাতিত ও নিশীড়িত কইরাছিলেন ও কি অমামুধিক অভ্যাচার ও শারীধিক বছুপা সহু করিবা তিনি কি অভূলনীর সাহস ও মনোবলের পরিচয় দিয়াছিলেন ভাগা পড়িলে অভিত কইডে হয়। নাবাহ্যপ্রাব্র বচনার সভেজ ও বলিঠ ভঙ্গী পাঠকের চিত্ত সহজেই আকর্ষণ করিবে।

আবৃত্তি, গান, অভিনয়—গ্রন্থন বহু। বাওভোষ লাইবেরী, কলিকাডা। সুল্য ২্।

স্থানিক বাবুৰ পাক। হাতের বচিত আবুন্তি ও গানের স্থবদাল ছড়াওলি সভার আসরে প্রচুর হাস্যকৌতুকের স্পষ্ট করিবে। করেকটি কবিভার হন্দের বাছকর স্কুমার বার চৌধুরী বচিত কবিভার বিষয়বন্ধ, ছক ও স্থায়ের আভাস পাওরা বার। অভি-নায়ের অংশগুলিও স্থবিতি ক্ইরাছে। কয়েকটি বিষম রক্ষের প্রাক্ষেকিতাজুই লক্ষের সংশোধন বাঞ্জনীয়, যথা, ব্যাংবার স্থলে ব্যাংড়া, নোংবার স্থালে নোংড়া ইত্যালি।

बैविकरम्ब कुक नीन

## রামকৃষ্ণ মিশন ফুডেন্টস্ হোম

২০ নং ক্রিনাথ দে বোডছ জীবামকৃক মিশন ই ডেট্টস্ কোথে বেধাবী দক্তি ছাত্রদিগকে বিনা ববচে বাখিয়া কলেজে পড়ান হয়। সম্পূর্ণ বা আংশিকভাবে ব্যব বহন করিবাও কতক ছাত্র এখানে থাকিতে পারে। এ বংসর বাহাবা কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রবেশিকা পরীক্ষা দিরাছে, তথু ভাহাদেরই আবেদন বিবেচিড ক্টবে। সেক্টোবীর নিকট টেই পরীক্ষার নম্মর ও তিন পর্যার ভাক টিকিট সহ আবেদন করিতে হইবে।

TWO IMPORTANT BOOKS OF Prof. Dr. KALIDAS NAG, M.A. (Gal.), D.Litt. (Paris) Hony. Sooy., Royal Asiatic Society of Bongal

(1) Art and Archaeology Abroad
(with 30 rare illustrations)
Price: Rs. 5/- only.

(2) India and The Pacific World
The only up-to-date survey of the History
and Oulture of Pacific Nations.

Price: Inland Rs. 12, Foreign & 1 or 5 Dollars.
The Book Company Ltd., College Square, Calcutta
THE MODERN REVIEW OFFICE,
180-9, Upper Circular Road, Calcutta.

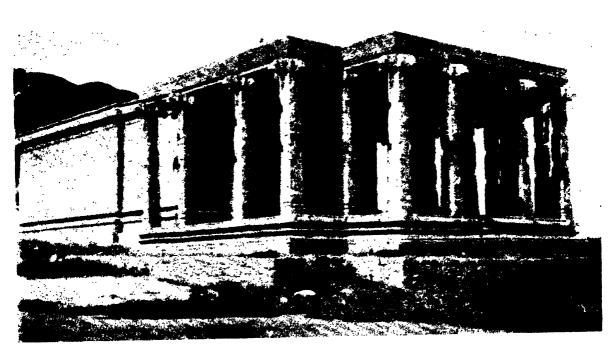


প্রকৃতি ও আনন্দ (চড়ানিকা) শ্রীনীহারংজন সেনগুগ

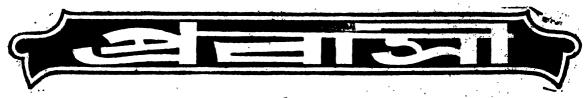
## বিজয়নগরের স্থাপত্য-শিল্প



বিঠল মন্দির



কাদালাইকল গৰেল মন্দির



"সভ্যৰ শিৰৰ সুসৰৰ বাহৰাৰা বলহীৰেৰ সভাঃ"

৪৭শ ভাগ ১ম খণ্ড

# প্রাবণ, ১৩৫৪

8र्थ मध्या

## বিবিধ প্রসঙ্গ

ভারত ও বাংলার ভবিষ্যং

देश्टबरेट अकड़े धरावराका चाटर. "The road to Hell is paved with good intentions." "नवटक्व पर जङ्ख्य वेश्वाम ।" वर्षमादन वेश्वाच चात्रक वृक्कताद्वेत कर्यात र्देशाह्य डाशाहर के क्षार्याका के क्षार्थ करा क्षरबाजन। अञ्चलन यावर कर्द्रशास्त्रव स्व्यूवर्त वश्च वाव कर्द्र बार्क के किल्का कि बार किला कर्म कर्म कर्म करिया है । च्छ वाबहे छाहाबा (क्वाटक अहे विशव) श्रादाव विशादम (व, ভাঁহাদের ভূল হইবা বাকিতে পারে কিব ভাঁহাদের উদ্দেশ दिन जान। जीत क्षत्रन स्टेन क्राव्यानत नविकात करन, वि-मृ-व्भावात्य विद्वाद वाक्रित वृत्रत्यावदक काराव वाद्याव चांदक वात्न, त्वनत्क बुद्धद नीह वरनत्वद वक काजीवणानाव-বিৰোধী প্ৰতিভিয়াবাদীদিগের ছাতে তলিয়া বেওৱা হইল कर्रा अपने विकास कर व ভারতে যে অরাজকভা, অনাচার ও ছুর্নীভির বংগ বহিষা ষাইভেছে ভাছার উংপত্তি ইংবেদের সারাজ্যবাদ হইছে এ বিষয়ে সক্ষেত্ৰ নাই, কিন্তু ভাষার বৃদ্ধি ও ভাষার বাবভাগনে क्राद्रशास्त्र (मक्रुवार्यत साविष्यीम ७ काश्वामरीम कार्याक्राम चारमहाराम हाती तम विवासक मानाएत चारमान मारे। वास विशेष स्वेदात्व काशाद क्ष क्षत्रानामा द्वा देश कामना द्वि, किस बाक बाबादक अहे जनम बक्षित क्या निमार स्टेरकर णाराव कावन जामवा द्विराज्यि (व अक हर्षना, अक विवाद-বিস্থাৰ ও বিপাৰে সন্থান হওৱা সভেও কংবেসের নেতৃ-মর্মের অধিভাংশের মধ্যে আছও কোন চেডনার লক্ষ্ণ বেবা বাইভেতে বা। আৰও গুনিভেতি ভাষাবের উবেট कान, किहू नवब भारतन काराबा कुनळाडि करवारेबा नरेत्वन । किंद्र विविधिष्टि वि कीशायत जुनमाधित वर मारे, मि नव অক্টিনাই চলিতেতে, অবচ ভবরাইবার চেটা করা তো দূরের क्या, काशाता निरक्रत्व गर्य प्रनिवा स्थारक करवर मधीव व्हेट्ड बंडीवड्ड क्टन नहेवा वाहेटच्टवन ।

আহ্বরা কংগ্রেদের বুলবীতি ও আর্থবাদ অস্থাতী কাতীত-ভাষাতে বৃঢ় আহা পোষণ করি, এবং ইহাও আহ্বা বিষাদ কৃষ্টি বে ঐ মীতিগত কঠোর পহা অবলয়দ কৃষ্টিলে ভাষভার্য

গৌরবনর প্রবিভালে অধিকারী হইবে। কিছ ইয়া আনরা বিশ্বাস করিতে অসমর্থ বে কংগ্রেস কোনও ব্যক্তিবিলেবের বা ব্যক্তিসমষ্ট্ৰর নিজয় সম্পত্তি। কংশ্রেমের আর্কু জুবুলমুরে বেশের বা দশের বিভগাবনের ভঙ প্রভ্যেকেরই চেটভ বঙরা উচিত, নে আঘৰ্ণ সাধ্যের নিষিত প্রত্যেক্ষর স্বার্থভ্যার ও হংব-बहर्तद कर क्षेत्रक रुपता देशिय क्षेत्रन चावता चाकीत्व क्षित्रन আসিয়াহি ও সম্বৰ্ধ করিয়াহি। কিছু ১৯৭৪ লাল হইতে আমরা বেবিভেহি যে, "ভ্যাপ" ও "কারাময়ণ" মূল্যমান পণ্য-বিশেষ। ইহার বিনিষ্ধে অভি অবোগ্য লোকও উচ্চ প্র লাভে সৰ্ব হয় এবং অনেক ক্ষেত্ৰে নেই সঙ্গে বিভূটভয় লোকেয় महायुक्तार केवन बहुहबर्गाव बहाब मार्क्ड नव नविकाद ভৱিতে সমৰ্ব। এইরূপ অবোগ্য লোক এবং ভাতাবের <u>এই</u> व्यक्तवर्गत राज क्यका वर्गानत कान व्यानत क्रमा अवर কংগ্ৰেসের অবঃপতন কভটা হইতে পারে ভালা নেতৃবর্ক আক विभ वरमञ्ज्ञ बावर काविश हिविवाश क्षत्रकाम शाहरमेन ना, বাধার কলে ভারতের বর্ডমান ছরবত্বা শোবনের আলা ক্রমেই পুদুরপরাহত হইতেহে। এতদিন ভারতের বাধীনতা ও भौत्रवयत चाल्रद्धात व्यवाम चष्ठतात दिन विकेन नावाकानार. নে অভয়ার দুর হওয়ার দিন আগর। শেবে কি কংবোগ-নেতৃবৰ্গের অমূরমণিভা, করভাবিরভা ও অবিরুষ্কারিভার কলে আবার ভারতের ভবিবাং বেবাছর হইরা উটিবে ?

দেশের প্রভ্যেক লোকের এ বিবরে গভীর চিন্তার বিশ্ব
আৰু আনিরাছে। কেবল পভাকা-উভোলবেই বাবীনভা আনিবে
বা। অনেক হাবে আবাদের এই সকল অপ্রির কবা বলিকে
হইভেছে। বাংলাবেশে আবরা কংগ্রেল-নেভ্বর্গের ভাতজারহীন ব্যবহা ও বিভারের বে বিবরর কন ভোগ করিভেছি ভারভের অভ কোনও প্রদেশের এওটা হুর্জান্য হর কাইন। এই
বাংলাবেশ পঁচিন বংগর পূর্বেও সবত ভারভের পথ নির্কেশ
করিত, চরিশ বংগর পূর্বে এই বাংলাবেশের করা প্রশ্নকেই এককর অবাধালী বলিরাহেন, "What Bengal thinks to-day,
the rest of India will think to-morrow." আব্দ নেই
বাংলার কংগ্রেলের "নেভ্বর্গ" বিভিন্ন প্রবেশের বেভাগবের
চাইকারে পরিবত, বাংলার প্রারেশিক কংগ্রেল ক্রিট্ডে

বুটাৰের কর্মা তির অভ সকলেই কতিপর বলাবলি ও চকাতে
নিপুন "পালের গোবা"র প্রনাবভিত্ব অবচন, বা নিজির
অবভঙ্গ। কলে বাংলার কংপ্রেসের বে অবংশতন ক্ষরতে
ভাকা বাভবিকই শোচনীয়। বাংলার কংপ্রেস-প্রভিনিধি আজ
এই কারণেই সমন্ত ভারতে উপেকা, বিজ্ঞা ও অবভার পার।

#### বাংলার ভবিষ্যৎ

বাংলার এক অংশে বাধীনতা ও বাতরোর পূর্ণ আলোক পঢ়িবে ইহা আনপের কবা। কিছু আর এক অংশে জাতীরতা-নাম আরও গতীরতার অছকারে পঢ়িবার আশতা, এ ক্যা আনাবের প্রতিমিনই অরণ করা উচিত। পশ্চিমবদের সৌতারোর দিন বদি আলে তবে প্রত্যেক পশ্চিমবদের বাঙালীর একট প্রধান কর্তব্য হইবে পূর্কবদের তাইবোনবের নাহায্য ও হুঃব-প্রতিকারে চেটিত বাকা।

चारतकर विवास या, शिक्षतक वर्ग कराजात प्रवास चारितार जन "लोजालां विस्त विस्त विष्त चारित" अक्षा वर्गा क्रिक नार । चारता त्यां त्यां विस्त विस्त या शिक्षतक वर्गीय आंदिलिक क्रिकेंग्न अक परलंद शास्त्र चार्ण चार्गितार मान, यि तारे प्रव क्रिकेंग्न अक्षा क्रिकेंग्न क्रिकेंग्न व्याप्त स्वास क्रिकेंग्न क्रिकेंग्न व्याप्त क्रिकेंग्न क्रिकेंग्न व्याप्त क्रिकेंग्न क्रिकेंग्न क्रिकेंग्न क्रिकेंग्न क्रिकेंग्न व्याप्त क्रिकेंग्न व्याप्त विस्त क्रिकेंग्न व्याप्त क्रिकेंग्न क्रिकेंग्न व्याप्त क्रिकेंग्न व्याप्त क्रिकेंग्न क्रिक

"কলিকাতা করণোরেশন" দেশবন্ধু দাশের কর্তুছে কংগ্রেগললের অবিকারে আলে প্রায় ২৫ বংগর পূর্বে। যে গনর
কংগ্রেগ-হল ঐ নাগরিক প্রতিঠানট আহতে আনিল তবন
কলিকাতার প্রত্যেক ভাতীরভাবাদী আনন্দে উংকুর কইবা
ভাবিরাহিল এই বার কংগ্রেগের অধিকারে এই নহানগরী সকল
বিক্তে উন্নত কইবা কংগ্রেগের আধকারে সৌরতে দেশকে
পূল্জিত করিবে। সেই হলগত অবিকার আছত আহে,
প্রতেখের মধ্যে কলিকাতা করণোরেশন "কলিকাতা চোরপোরেশনে" পরিবত হওরার ভাহার হুর্গত প্রতই তীর কইবা
উট্টরাত্রে যে বলীর প্রাতেশিক কংগ্রেগ ক্রিটিও বলিতে বাব্য
ক্রিরাত্রে যে উহার চাল্যার কংগ্রেগের হাত বাই।

বৰাহাৰে ৰোগ্য ৩ব ব্যক্তি নিৰোগ ইহাই বেশের রক্ষণা-বেক্ষণ ও উয়তির একমার পব। বৈ বেশে ও বে কাতিতে —বে কোন কারণ বা অনুহাতে—এই নিরবের ব্যক্তিক মুইরাহে নে হলে নে বেশের ও কাতির অবনতি দলে দলে হইবাছে। কংগ্ৰেসের বেছবর্গ এবন কিছু বাহুবর জানেন না বে এই সর্বালোকবিধিত নিরম উচ্চারা বার্থসিছির কর্ম এতি-পাবে সক্ষম করিবেন অবচ বেশের অপকার হইবে না।

বর্তবাদে পশ্চিমবদে বাঁহালা কর্ত্তর এহণ করিলাহের জাহালা প্রারতেই চছ্চিকে বছহলে অবোদ্য লোক নিরোধ করিতে আরত করিলাহের, ব্যবহাপক ও রাই-পরিবর্থ অবোদ্য—এবন কি অকর্ত্তবাদেই পূর্ব হুইরাহে, হুই-একট উপরুক্ত প্রতিমিবি বাংলার ভাগ্যক্তরে ভাহাবের মব্যে হান পাইরাহে। বাংলার হুভিক্ষের হালা গাচ হুইতে চলিরাহে, এই অবহার পশ্চিমবদের মন্ত্রীমওলে নাবারণের বাহ্য ও নিভ্য প্ররোজনীর ক্রব্যাহির (লিভিল সাপ্লাই) বিষয়ে ভার দেওরা হুইরাহে অভি অবোদ্য লোকের হাতে, উপরস্ক ভাহার সেকেটারী ও গিভিল সাপ্লাই করিশনারের পবে বাঁহারা নির্ভা হুইরাহেন ভাহাতে চুরির পথ পরিকাল করা ভিন্ন অভ কোন ব্যবহা হুইল মনে হুর না। ক্রমি বিভাগের ভারপ্রান্ত রুটা অভ অকর্ত্তবার স্থান অবোদ্য। বাংলার, বিশেষতা পশ্চিম বাংলার, কপালে কি আহে ভগবান স্থানের।

পুলিন বিভাবে নিরোগেও ঐরপ গোলমাল ক্ইয়াছে। প্রস্কাব্র নরীসভা দেশের শাভিরক্ষা এভাবে করিতে পারি-বেন না লে বিবার সক্ষেত্র নাই। যে সক্ষল ধূর্ত কমিবাক ভাষাকের কানে বরিরা এইরূপ ব্যবস্থা করাইতেহে ভাষারা ধূর না ক্রিলে দেশের অপকার ও প্রকুলবাবুর কুর্নার অনিবার্থ্য।

#### পশ্চিম-বাংলার শাসনযন্ত্র

১৫ই আগই হইতে পশ্চিম বাংলার শাসমবন্ধ পরিচালনার বত বে সব কর্মভাইকে ক্ষতা ও দারিম্পূর্ণ পদওলিতে প্রতিষ্ঠিত করা হইবে তাঁহাছের নাম প্রকাশিত ক্ইরাছে। ই হাবের নাম মোটায়্ট এইরপ:—

চীপ সেক্ষেটারী স্ত্ৰাৰ সেৰ বেভিনিট বোডের সম্বন্ধ লভোঞ্জবোহন ব্যা**নার্জি** প্ৰৰ্যন্তৰ সেঞ্চোনী नोद्यक इक्नवर्धी ध्याम महीव করণাতুষার হাজরা 44 স্থীল বুধার্ক্তি হোম দেকেটারী त्रविष् चढ শিকা रेनवान ७७ সিভিল সালাই **সভোষ চ্যাটার্ল্জি** ভূপালনী -চৰ্দিশ পৰগণাৰ কেলা ব্যাক্তিট্ৰেট জীৱৰীক্ষ বিজ **बीबक्टब**ब এনিভ্যবোপাল সাহ লাৰ্জন-জেনায়েল ও স্বাস্থ্যবিভাগের

ভিবেটৰ কৃষি বিভাগের ভিবেটর নিভিল নাপ্লাই ক্ষমিশনাত্র ইবঞ্জেনেট্ ঠাটের চেয়ার্ল্যান ভাঃ অধিল চ্যাটার্জি অহুশীল হৈ বিঃ এ ভি গাঁ অব্যোগ হার এই ভালিকা অসম্পূর্ব। সমন্ত নাম কেবিলেই বুঝা নাইবে

যে অবিকাংশ পরেই বিচার বিভাগ কৃইতে লোক আনিরা
শাসন বিভাগে বদান ক্ষরাছে। ইকাতে অভিজ্ঞভার দিক
বিরা ভারতন্য কৃইবে, কিন্তু মন্ত্রী বোগ্য লোক ক্ষরে কৃতি
কৃইবে না। চীক সেকেটারী, গবর্গরের সেকেটারী, প্রধান মন্ত্রীর
সেকেটারী এবং কিনাল সেকেটারী নিবোগ ভালই ক্ষরাছে।
ভাঃ এ সি চ্যাটার্জির নিরোগেও বেশবাসী সন্তঃ ক্ষরাছে।
কিন্তু ক্রেকটি নিরোগই চ্ছা কার্যে উপযুক্ত ক্য থাই।
ক্রেক্ত্রন বোগ্য লোককে অর দারিত্বপূর্ণ পরে বদান ক্ষরাছে
এবং ক্রেক্ত্রন ভাতীরভাবিরোধী ও অনুপর্ক্ত লোককে
ক্রিক্তাব বেশবা ভাইরাছে।

অশৈবাল গণ্ডের কর্মনীবনের ইতিহাস নিজ্লয় । তাহার চরিত্রবল, কর্মকলতা এবং বলেশপ্রীতি প্রবিধিত। দেশবাসী ইহাকে হোম সেকেটারীয়ণে দেখিতে চাহিরাছিল। এই পরে ভিনি যোগ্যতা দেবাইতে পারিভেন বলিরা আমরা বিশাস করি এবং ইহাতে দেশের প্রকৃত উপন্থার হইত। কিছ বোগ্যহানে তাহাকে না দিরা শিক্ষাবিভাগের সেকেটারীয় পরে বসাইবা এমন একটা ভাব দেবান হইরাছে বে তাহাকে বুলিবা প্রস্থার বেওয়া হইয়াছে। প্রশিবাল গণ্ডের কর্মনীবনে এই বিষরটি সুস্পাইভাবে দেবা গিরাছে বে তিনি অন্প্রহ্ বা পুরস্থারের প্রত্যাশী নহেন। হোম সেকেটারী বাহাকে করা হইরাছে তাহার উপন্ন দেবালীর আহা মাই। নোরাবালীর ঘটনার অধ্সধানে ইহার আচরণ ও রিপোর্ট লোকে সহক্ষেত্রিব না।

সিভিল সাপ্লাই বিভাগের ক্ষিণ্ণব্যের পদ হইতে জ্রীসভাস রামকে সরাইরা উাহাকে ইবঞ্জেমেন্ট টাটের চেরারর্যান করা হইথাছে। ছ্ভিজের সমর এবং পরবর্জীকালে চৌর্ব্য
ও লুর্চ্ব নিবারবে ইহার কৃতিত্ব স্থবিছিত। বে সমরে উল্কল
কর্মচারীদের রাজনৈতিক অভিসন্ধি-প্রবাহিত বাবার্ক্ত
হয়া ইনি ভাল ভাবে কাল করিতে পারিভেন সেই
সমরে ইহাকে সরাইরা দেওরা হইল। ভংছলে বাহাকে
বলাব্যে হইরাকে উাহার কর্মজীবনে কল্লার কোন পরিচর
পাওরা বার নাই। ইহারই আনলে ২০ লক্ষ্ক পেটোল-কুপন
চুরি সিরাহিল।

সিভিল সালাই বিভাগের সেকেটরী করা হইরাছে জীসজোষ
লাটাজিকে। ভাতীরভাবিরোধী বলিরা ইহার ভ্রাতি
ববেট, বেহিনীপুর জেলার বহনুরা হাকিব মণে ইহার জালরক
নৌরবজনক নহে। পোলার্ডের বানলার এই ব্যক্তি উপরভরালাকের ভূট করিবার জন্য বাহা করিবারেন তংগলকে হাইকোর্ট ভীর ভিরভার করিরা বলিরাহিনেন বে ইনি নিজের
বিবেককে বে কোর মণ বিভে পারেন ( Plastic conscience) এবং বিচারবৃত্তি টানিরা লখা করিতেও পারেন।
বোর হর আন্ত পর্যন্ত কোন নিভিনিরান জন্ম এক ভীর
ভাবে হাইকোর্ট কর্ম্বক ভিরহুত হন বাই।

চন্দিশ প্রপণার জেলা ব্যাজিট্রেট হইরাজেন জীরবীজ্ঞ নিজ। দীন শাসনকালে গভ ক্রেক বংগর প্রেন অফিসার রূপে ইনি উৎসাহের সহিভ সংবারপজ্ঞের কঠারোবের চেটার আমনিবোগ করিরাজেন। এই ব্যক্তির উন্নতি বিশ্বস্থানক।

বীরভ্বের জেলা ন্যাজিট্রেটের পদে শ্রীনিভ্যগোপাল রারকে বহাল রাবা হইরাছে। তেপুট র্যাজিট্রেট হইতে যুক্তর লবর ইবি ভাইস-কট্রোলার হন। ইহার আমলে চিনির চোমা-কারবার চরনে ওঠে এবং ইহারও বর্ণেট বহুলার রটে। বোমা-বালীর কেলা ন্যাজিট্রেটরণে এই ব্যক্তি বে শোচনীর অচ্বত্রনিভা, অক্তরভা ও অপরার্বভা দেবাইরা আসিরাহেন ভাষার পর ইহাকে বরবাভ করাই এক্তরার পত্না হিল। কংগ্রেস-লাসনে বাবীন ভারতে এইরূপ ব্যক্তিকে উচ্চপত্রে বহাল রাবা আমরা বোর কল্যনে বিষয় বলিয়া বনে করি।

कृषि-विचारनत (जरक्कीती कर्वा स्वेशास औदगाननीरक । ছুডিন্দের সময় ইহার হাতে বিনামপুরে চাউল থাকিতেও অনা-হারে লোক মরাল্ল যে হুঠাত রহিরাহে এবং ইহার ব্যক্তিগত মতিগতি সম্বন্ধে যে সংবাদ জানা আছে তাহাতে কৃষি বিভাগের ন্যায় একট অভিনয় শুকুত্পুণ বিভাগে ইন্ডাকে বসানে! অভাত অন্যায় হইয়াছে। বাংলার কৃষির উন্নতি করিতে না পারিলে এক দিকে বেমন বাদ্যাভাব ঘুচিবে না, আগ্ন এক দিকে ভেষনি গ্রামবাসীর আর্থিক অবস্থার উন্নতিও হইবে না। অবচ ভাতি গঠনের জন্য একান্ধ প্রয়োজনীয় এই বিভাগটর মন্ত্রী, সেজে-होती अवर फिल्केंद्र निर्द्यान एपिया यस एव रवन कर अनी ৰশ্বীরা উহা ভূলিয়া বিবার সিদ্ধান্ত ক্রিয়াছেন। ক্লিকাভার বৰ্জমানে বে মংভ-বাৰদাৱী ঘদট টাকার ভোৱে কোট পাকাইয়া হালের দর সাভে ভিন টাভার চভাইরা রাবিয়াছে ম্মীবর এত্যুচন্দ্র বন্ধর ভাষাদের এক কন। পরকারী ক্ষভার কোরে এবার বাছের দর হয় চীকার ভুলিবার চেটা বরত ভিনি क्विए शाविरवम, किन कृषि वा बर्थकीवीरवद वैविधिविवारवद সামৰ্থ ইহার আহে আশা করি ভাঁহার পর্য শক্ত এই অপবাদ দিবেন না। কৃষিবিভাগের ভিরেটর সাংহবেরও অকর্মণ্যভার ব্যাভি আছে।

এই করেকট পদে উপরক্ত লোক নির্ক্ত ধ্ইলে ডাঃ বোবের শাসনবরের ভারপ্রাপ্ত কর্মচারীকের ভালিকা যোটা-বুট প্রধ্যবাগ্য ধ্ইভ। ভবে এবনও সময় আছে, ইক্ষা করিলে এবনও এইটুকু সংশোবন ভিনি করিতে পারেন।

#### श्रीलंटम तहत्वहल

পুলিল বিভাগের দুখন ব্যবস্থার লগত অভ্যন্ত বেশী ক্টরাছে এবং ইহাতে বেবা বাইভেছে বে চক্রান্ত একাইভে নিরা ভাঃবোর অভি মুঠ কলীবাক্তনের হাতে পদিয়াহেন।

বেলল পুলিলের ইলপেটর-জেনারেল পদে নির্ভ হইরা-তেন অস্কুনার এও। ইনি উপযুক্ত লোক, অভিজ এবং কর্মকা। উপরওয়ালাকে ছুট করিবার কচ ইনি ক্বনও

निर्देश निर्देश विकास करतन गाँदे। जानता जाना करि दैशाव शतिकामनाबीदम दक्क श्रीमात्रव बदवे देवचि स्टेटन । अशेरवय ७६ अदायाय याच्यामायाच अवर अशेरवय गवकावरक कि-**कारे-कि कवा वरेवारव। अदीवानान** गारारक ভ্ৰনীয় পুলিন সুণায়িকেঁতেক কয়া হইয়াছে। কলিকাভায় পুলিস ক্ষিল্মার পলে নিযুক্ত করা হইরাছে চাক্সিল পরগণার पुणिम चुणावित्केरके औरत्वत्रवाद क्रहोणावावरक। अरे निर्दार्ग लाएक जान इएक. एएए मारे। दैशव निर्ण रम्स চটোপাৰ্যাৰ টেগাৰ্ট সাহেংৰের যক্তিৰ হস্তৰূপে বৰেণী আন্দোলন मन्द्रम खानन्य (हड़े। क्षित्र विद्वरी प्रकर्मत धनित्र जानाट विएए एम । शिकांत कार्यात शृक्षकात कम देश्यक नगर्य के ইহাদের ভিন আভাবেই পুলিদে চাকুরি বেন। কলিকাভার গভ বংসর আগই মাসের হালাবার আরতের কর বিদ পরে व्यक्तिवायक्राक वैद्यांच अलाकांच देक्तियांच कल विद्या देव। दानीव অবস্থা জানিরাও ইনি ইহালিগকে রক্ষা করিবার কোম চেটা করেন নাই। ভতিত অথবা নিনিঃরিট কোন যিক বিরাই ইঁহার পুলিস কবিশবার হওয়ার বাবি ট'কে বা। সিভিল निरहे निविवतिष्ठे दिनात्व क्षयं करवक्षय वांधानीय मान वरेक्य :

**बिर्द्शांव ७८---**কাৰ্য্যকাল প্ৰায় ২৪ বংগৱ **अ**क्टिक्सार बार---७० वर्गञ्च **ब्रिवायटबळ्याच यटकाामानाय--**৩০ বংসর क्रेशेरवसमाय चय-২২ বংসর अशैवामाम गारा---२२ वरमङ **अञ्चलकाय हट्टोणायाय---**২২ বংগৰ এ-বিলাস ভটাচার্য ---२० वरमञ् औरीदब्बनाय महकात---১৯ বংগর

ভি-ভাই-ভিত্ৰ পদ অপেকা কলিকাভার পুলিস কৰি-नेवादित पन केल. केश चार-चित्र अवक्षाः त्म विभारत **अट्टारक नाय काहोगावाय काहार देगरबर कार्य कारक पछ-**জ্ঞৰ কবিয়া গিৱাছেন। ৰক্তা হিসাবেও তাঁহার উপবেব চার ভবের ইভিহাস ভাষা অপেকা ভাল হাড়া কোন দিক দিয়াই बाबान महा प्रख्यार अ क्लाब निमिन्नविके रहना एव नारे। ক্লিকাভার পুলিস ক্ষিণ্নার ক্লিকাভা সহতে অভিচ হইলে काक जान रहेरत, रिराम्बल: वर्षमान मानरवारमंत मरना कनि-কাতা সহতে অনভিক্ল মূচন লোকের চেরে শহরের পুলিশ ও শারিরকার আন ও অভিজন্তাগশার লোক বানা প্রয়োজন ইং। बलनरी लाफ जिन्न नकरनरे चौकाद कतिरवन । त्यविक विदा <u>जैल्द्रक्रमाय इत्होभागात्वव नवकक व्यक्तिगव हरे व्यव गाँगे</u> সর্ব্বাঞ্জবদ্য। এবর্শ্বদাস ভটাচার্ব্য কলিকাভা পুলিসে বর্ণ ভিন্নাট্ট, ভিটেকটভ ভিপাটবেক্ট এবং পোর্ট এই ভিন ছাবেছ **(७१८ कविनवाद शदर क्का ७ प्रवादय मंदिर रीर्वकान** 

पाणिका पर्राप्ते। अशीरबात महकांत बाद वह परमह क्लिकाचा पुलित्वत विद्विन्द्रेण विभावेदार्क वक्ष्णात मस्चि ভাল ভবিষাহেন। ভলিকাভার লাভিঃকা বাহারা অভারের महिल कावना कट्टन कारांता श्रेश्यांन क्षेत्रार्वाटक कविननाव এবং ঞ্ৰীবীয়েন সম্বাধকে ব্ৰেডকোমাটালেমি ভেপ্ৰট ক্ষিলমায় ল্পে ধেৰিতে চাহিবেৰ ইহাতে সন্দেহ নাই।

ক্লিকাতা পুলিসের নিরোগতলি বেবিরা শহরের শান্তি-वकाव जायर जारका रामन श्रीनामत विराय अमेड यन कर्क क्रिकाचा पूर्विम-पर पर्याम पांच्यावर त्यन त्यन क्रिका बाक स्टेट्ड । भीट्य माथ ७ कर्बबोवरमध प्रविद्य स्टेट्ड देश च्ये श्रेट्व :

- এইবিসাৰৰ খোষ চৌধুৰী—্বভ কোৱাটাৰ্সের ভেপুট কৰি-भमाव । कार्याकाल खाद ১৮ वरमत । कलिकाणाव (भाष्टे न्जिम अवर (बाहेद (क्रिक्न्याभव ८७१हे क्रिन्यादसार्य काक कविदारबन, बामा श्वितानमात्र वा त्रारबक्षा विकारमञ् অভিজ্ঞতা তাহার নাই।
- ঞ্জিরপজিং গুরু--হেড কোমাটার্সের অভিবিক্ত ভেপুট কবি-ব্যার। বোট কার্যকালই ৫ বংসর। অভিক্রতার উল্লেখ বিভাছোৰন।
- ঞ্জীপ্রসাধকুষার বস্থ—শেলাল ত্রাকের ভেপুট কমিলমার। कार्यकाम > वरमञ् ।
- এছগাগতি চটোপাব্যার-শাস্কিউরিট কটোলার, তেপুট कविषयात । कार्यकान ३३ वरनत ।
- ঞ্জিপ্রকৃষার সেদ-ভিটেক্টভ ডিপার্টবেক্টের ডেপ্ট কবি-नगर। कार्यकान > वरमर चवारा श्राप्त चार्कक अ-चार-পিতে কাটখাতে। লীগ মনোমীত কল চারীরূপে ইঁহাকে এট পথে আনা হইয়াছিল। ইঁহায় বর্তবান কাব্যকালে ডাঃ এতিব বোষ, অব্যাপক অবিভ সাহা, গদাবৰ মন্ত্ৰিক क्षांक विकास सब अवर है सात अविद्यालया बीटन आदिका বিভাগ ভাছার কোন কিনারা করিতে পারে নাই।

নীর শাসনকালে ক্লিকাডা পুলিবের যক্ষ ও অভিক क्रवाबीएव बानाव जात एटेए नवादेवा भूनिन हिनिर, এনকোৰ্স নেউ ত্ৰাঞ্, স্পোশাল ত্ৰাঞ্চ প্ৰভৃতিতে স্বাৰ্থা হইবাছিল ৷ পত বংগর আগঠ নাস হইতে কলিকাতা পুলিসে উন্নতি দ্বরাছে এক বল বুসলবাদের ও লীবের ভাবেরার क्षक्षकि रिप् क्षकाबीतः शीरनेत बावरेनिक केरकक-নিহিতে নহারতা করিবার জন্ত বাহারা পঞ্চপাতিত করিতে পারিরাছে ভাহাবিগকেই ওবু বানার ও অভাত বারিষপূর্ব পরে রাবা হইরাছে। বাদা হইতে অপনারিত ভাল কর্মনারীয়া। काक कविवाद श्रावांत्र भाव बादे चर्चा नकत्वव नाम अकारादि ব্দলাবের ভাগ হইরাখেন। এবার ইঁহারিখের সাহায্যে কর্ত্রণক শাভি রক্ষার প্রবৃত্ত হইলে প্রকৃত পাইতের বলিরাই কাজ করিবাবেন , প্রভরাং কলিকাভা পুলিন সহবে তাঁহার ঁলোকে বিবাস করে কিছু তাঁহারা-ভাহা বা করিবা বেকল

পুলিন হইতে উচ্চ ও নীচ সর্ক্ষণিং পদে সম্পূর্ণ অবভিক্ষ কর্মচারী আনহামী করিরা পহরের পান্তিরক্ষাকার্য আরও অটল করিরা ভূলিভেহেন। কলিকাতা পুলিনের সর্ক্ষাপেকা কক্ষ কর্মচারীদের মধ্যে শ্রীলভোক্ষমান মুখোপাথারকে কোন কোনর বা হেড কোরাটার্সের ভার মা দিয়া নোটত ভেহি-কেলসের ভার বেওরা হইয়াছে। ইহার কর্মচক্ষতা এবং পততা সম্বদ্ধে ব্যাতি সুবিধিত। ইহাকে চোরাকারবার বনন ও নারিক্ষাকার্য্য হইতে কেরাণীসিরিতে সরাইরা দেওরার এক-মাত্র অর্থ এই হইতে পারে যে বুব ও চুলির রাভা এবনও বোলা গ্রাবিবার ইহা কাহারও কাহারও আছে:

কলিকাতা পুলিনের নিম্নোগ প্রস্কৃতি প্রীপ্রয়েজনার চ্যাটার্ছি, প্রীপ্রনারন বোর চৌধুরী, প্রীপ্রথম্মার সেন এবং প্রীপ্রণানক ব্রাজির লাগ্রা ক্টকেরে এইরপ সংবাদ চচুর্নিকে রটিয়াছে। শেবোক্ত ব্যক্তি এলিইনেট ইন্স্পেট্র কোনরেল, কার্যাকাল ১০ বংগর এবং কলিকাতার আলিরাহেন বংগরবানেক আলে। কলিকাতা পুলিস সহছে অন্বিকার চর্চ্চা করিবার কোন কার্যার কিবাল নাই কিন্তু তিনি উল্লাকরিকেলেন। এ বিষয়ে প্রথমেই আমালের একটি প্রশ্ন আছে। প্রীপ্রয়েন চ্যাটার্জির সহিত কোন মন্ত্রীর এবং প্রীষ্টপানক মুবার্জির বিবাদ-বটিত সম্পর্ক আছে কিবা গ

কলিকাতা প্লিসের দক্ষতা বৃত্তির নামে ইহারা বৈ সব নিরোগ করিতেছেন জাহাতে দেবা বাইজেছে তেপুট কমিলনারের পরে অত্যন্ত জুনিয়র এবং কলিকাতা সম্বন্ধে আনভিক্ষ আই পি বসানো হইতেছে। এবানে কলিকাতা পুলিসের মুক্ষ কর্মচারীদের নির্ক্ত করা উচিত ছিল। বানাগুলিতে দেবা বাইতেছে অত্যন্ত বেশী সংব্যার আই বি-র লোক নির্ক্ত করা হইরাছে। কলিকাতার এবন বানার কাক্ষে এবং প্রের অবস্থা সম্বন্ধে দক্ষ লোকের প্রয়োকনই বেশী, গুরুচরের প্রয়োকন এবন নাই। নীচের নাম গলি দেবিলেই বুবা বাইবে কি অশোক্ষন ব্যক্তার সহিত্য বেলল পুলিল হইতে গোরেকা আনিরা বানাগুলি তাই করা হইতেছে।

এসিঠাক ক্ষিণনার---

শ্রীক্ষণিসমূলার মুধার্ক্জি—আই বি হইতে স্পেশাস রাঞ্চের প্রসিষ্টান্ট ক্ষিণ্যার।

শ্ৰীৰভিন সৰকার---আই বি হইতে আৰ্থস এটাটের এসিটাট ক্ষিণনায়।

শ্ৰীভাষাণৰ কৰিয়াক—বেষণ সি আই ভি ক্ইভে যক্তিৰ বিভাগের এলিষ্টাকী কৰিশবার। কলিকাভার থানার কোব ভাব বাই।

ইন্স্পেট্টর জীকগবিজনাথ বজুবলার—আই বি হইতে ডিটেকটভ ডিগার্টবেউ। থানার কাক বা কলিকাভার কিবিবাসবের সম্বন্ধে কোন অভিজ্ঞতা নাই।

এনভোৰ চ্যাটাৰ্জি--আই বি হইতে শেশান বাঞ।

জ্ৰীৰোগেশ মুৰাৰ্কি—আই বি হুইছে স্পেশাল আঞ্চ। ধাৰা অভিনান—

এব্রবোণচন্দ্র নাগ—অহাতী ইন্স্পেট্ড, কার্যাকাল ৭ বংলর,
মাণিকভলা থামা। বেলল পুলিলে ২৪ পরগণায় ছিলেন।

এটাপেন গ্ৰাভাৱী ইন্স্পেট্র। আই বি হইতে আবহার্ট ইটি থানা। এই থানাটর এলাকার সীনের বছ বছ আজ্ঞা আছে। থানার ভাল সহতে এই ব্যক্তির অভিজ্ঞা নাই।

এএবিৰ বন্ধ—অহাৰী ইন্স্পেটর। আই বি হইতে উভর বিভাগ কোট পুলিস। বাবার অভিজ্ঞতা বাই।

শ্ৰীসন্তোৰ চক্ৰবৰ্তী---পাই বি হইতে বছৰাধার ধানা। ধানার প্ৰভিক্ততা নাই।

এপুৰ্ণচল বস্থ--- সাব ইন্স্পেট্ড, গৰাট্যার গালা। বেট্ডাব্রুক হত্যাকাণ্ডের সময় তথাকার গালা অকিসার ছিলেন।

জ্ঞীলৈলেন সেন—দাব ইন্স্পেটর, পার্ক ট্রাট থানা। ১৭ বংসর
কাক করিলাছেন, কিছ থানার ভারপ্রাপ্ত অফিসার কর্বনত্ত
হন নাই।

শ্ৰীকালীণদ দে—সাব ইন্স্পেটন, হেবার ট্রাট থানা। ইনি
ক্বনও এ এদ আট তপেও থানার কাছ করেন নাই।
হ্বোর ট্রাট এলাকার লীদের বড় বড় ঘাঁট আছে। ইনি
লিটারেট কন্দেইবল হিসাবে কাছে চুকিরা অভিক্রভভাবে
প্রবোশন পাইরাহেন কিছ কোন দিন থানার কাছ
করিতে হয় নাই।

শ্ৰীবিষলেন্ ৰজুখনাৰ—সাৰ ইন্সপেটার। আই বি হইতে লাউৰ ভিটট শোচ পুলিস। বানার অভিজ্ঞতা নাই।

জীত্রবারর র্থার্জি—সাব ইন্সণেটর। আই বি হইতে শোর্ট পুলিসের শোশাল টাক। এই প্রচীর ওরত্ব বর্ণেট। ইনি অভ্যন্ত ভুনিরর এবং ধালার অভিজ্ঞতা নাই।

ঐনীহাররপ্রন ভৌবিক—সাব ইন্সণেটার। আই বি হইছে কাশীপুর।

প্রশন্ত চ্যাটার্জি-সাব ইনসপেটর। আই বি হইতে বাবিজতলার বিতীয় অফিসার। ভারপ্রাপ্ত অফিসার প্রবোধ
নাগ ইহার ভূমিয়ার।

প্রসভ্যের বন্ধ-- সাব ইমসপেটার। আই বি হইতে পার্চেন বীচ।

গ্রীবেশন্ত অধিকারী—সাধ ইনসপেটর । আই বি ছইতে শেশাল রাক।

প্রতায়ানক বুবার্কি—নাব ইনসপেটর। ব্যাটরা থানাছ
ভারপ্রাপ্ত অভিসায় পদ হইতে বালিগঞ্ব। ইবি হাজা
আছত হওয়ার সরর হাজভা থানার ভারপ্রাপ্ত অভিসায়
হিলেন। নেবানে অবোদ্য প্রতিপন্ন হওয়ার ব্যাটরার
বর্গী হব। নেবানেও লোলবোদ থানাইতে অসমর্থ
হন। তংপত্রে এই প্রয়োলন। ইহাতে ইহার ব্যেতন

বিশুপ বাহিরাতে। ইনি বর্তমান রহবহনের অন্যতম কর্মকর্তা এ-আই-জি এইপানক হথার্কির লাভা।

এই তালিকার উপরউক্ত কর্তাব্যক্তি চতুইরের আত্মীর, পোত এবং প্রির্গান্ত ক্তর্থন আছেন তার অভ্সন্থান অবিদ্যান্ত ব্যৱহার ব্যবহার।

ম্যুমনসিংহ ও কলিকাতা সম্মেলন

পূর্কবদের বিশ্ববের কর্তব্য নির্ভারণ সম্পর্কে ছইট সন্মেলন ছইরা গিরাছে। একট ছইরাছে ব্যবসাসিংহে কংগ্রেগের উভোগে, বিভীরট হইরাছে কলিকাভার হিন্দু বহাসভার উভোগে। এই সম্মেলনট হওবার কথা ছিল নারারণগঞ্জে। কিছু হানীর কর্তৃপক্ষের নির্বেধানার কলে হান পরিবর্তন করিরা লখেলন কলিকাভার করিতে হয়।

ব্যবন্দিংক্ সম্মেদনে অবেকগুলি প্রভাব গৃহীত ক্ইয়াছে। মূল প্রভাবট এইয়াপ :

"পাকিভান ভোনিনিরনে সংখ্যাসবুরের রকা করা হইবে বলিরা সম্রতি নরাহিনীতে নিঃ জিলা বে মনোভাব প্রকাশ করিবাহেন এবং পাকিস্থান ও ভারত-সরকারের প্রতিনিবিগণ বুক্তভাবে বে প্রতিশ্রুতি ধিরাহেন এই সন্মেলন ভাষাতে সভাব প্রকাশ করিতেহে। সন্মেলন এই আশা পোষণ করে বে বাংলার বুললির লীগের নেভারা ঐ সকল প্রতিশ্রুতি সম্পর্কে আন্তরিকভার সহিত অবহিত হইবেন এবং শাসন ব্যাপারের নীতি সম্পর্কে নিঃ জিলা বে বিবৃত্তি জিলাহেন ভাষা ভাষারা কথার ও কালে পূর্ণ করিবেন।"

"পূর্ব্ব ও উওর বাংলার বিভিন্ন জেলার এবং ঐত্টের এক শ্রেমীর বুললমানের কার্যাবলীর সংবাদে সম্মেলন অভ্যন্ত আলভা প্রকাশ করিভেছে এবং বিঃ জিলার প্রতিশ্রুতি সন্তেও বে সকল অবভিপ্রেত ঘটনা ঘটতেছে ভাষা বন্ধ করিবার কম্ব অবিলবে উপর্ক্ত ব্যবহা অবলয়ন করিতে লাগ নেড্রুম্বের বিকট আবেষন করা হইতেছে। সম্মেলন বিধাস করে বে, বে-কোন পণভান্তিক রাট্রের মত মুসলিন লাগ বন্ধি নীতিগত ও কার্যাকরীভাবে সংবালস্থান্ত স্বার্থ ও প্রবোগ-প্রবিধা রক্ষার প্রতিশ্রুতি বের ভাষা হইলে অনুসলমান্যেরাও বিধাস ও লহুবোসিভার রনোভাব লইরা উভ্যর-বন্ধ, পূর্ব্য-বন্ধ ও প্রহান্ত লইরা গঠিত পূত্রন রাট্রের নাগরিকের দারিত্ব ও কর্তবাভার প্রহণ করিবে।"

শ্রহুক কিরণপথর রার উহা উবাপন করিবা বলেন বে বল-ব্যবজেন ভারত-বিভাগের অবঞ্চাবী পরিপতি। বাংলার কন্মণের সমূবে হুইট নাত পথ বোলা ছিল—হন্ন সম্প্র বাংলা পাকিছানের নিকট সমর্পন করা, অথবা উহা বিভক্ত করা। পাকিছানে সংখ্যালয়ুরের নিরাপভার কথা উল্লেখ করিবা শ্রহুক রার বলেন, ইহার সমাধান রূপের কথার হর না। সকলকে সম্ব্রেকভাবে এই সমভার সমাধানের ক্ষ্যা চেটা করিকে হুইবে। যে সকল হিন্দু পূর্কবন্ধ হুইতে শ্রীক্ষরবন্ধে উঠিবা বাধবাৰ চেঠা ক্ষিতেখেন তিনি তাহাবের কার্ব্যের স্নালোচনা করেন। তিনি বলেন, পূর্ববলের লোকদের পূর্ববলেই বাস ক্ষিতে হইবে, কারণ পশ্চিমবলে কোন উচ্ ভ ক্ষি নাই এবং সকলের কর্ম-সংস্থানের উপায়ও নাই।

একট প্ৰভাবে বিন্দু সমাজের জাতিজের লোপ করিবার वड नक्नाक चन्नदान क्या रह । चार अक्ट्रेस्ट नमा रह (व পূৰ্ব্য ও উভর বাদের করেট খানের এবং এছটের বিশ্বরা ধর-ৰাজী ছাভিয়া বাইতেছে ধেৰিয়া সম্মেলন বিলেষ ভাৰ বোৰ कविष्ठाद्यमः भिन्नाभक्ष:-शावशात्र चनात्वहे (य देश स्टेप्डाट ভাগা সম্বেলন উপলভি করিভেছে। তথাপি ভনগণের নিকট অনুৱোৰ করা হইয়াছে যে শত আপদ-বিপদ সম্ভেও তাঁহারা ষেৰ মন্তবাভী ভ্যাপ না করেন। পূর্ব্ধ ও উত্তর বঙ্গের হিন্দু সহকারী কর্মচারীগণকে পূর্ববন্ধ হাছিল চলিয়া না বাওয়ার জভ অপুরোধ করা হইবাছে। ত্রীরুক্ত প্রবেজ্ঞমোহন বোধ তাঁহার ৰকুভার বলেন, "আৰু বাভি এক খোর বটনভার সম্বান ছইরাছে। এই সময় বাংলার জনগণ ভাষাধের নেভবর্গের নিকট ছইতে পৰের নির্দেশ চার। কংগ্রেসের বাধীনতা অর্জনের সংগ্রাম সাক্ল্যমভিত হইয়াছে কিন্তু বিভিন্ন मक्तवारमञ्ज्ञ भरवा अवमध केका अधिक्रिक वस नावे। कारकवे कर्त्यामध्य जात्माणम् अधमक्ष त्यम् सम्मार्गः अरे जाम्म् ৰভ বিন না সাক্লালাভ করে ওভ বিন আন্দোলন চলিতেই থাভিবে। সাক্ষণাত্তিক সমস্তার সামত্তিক সমাধান ছিলাবে কংশ্রেস ওরা জুনের পরিকল্পনা মানিরা সইয়াছে। ভারতীয় ইউনিয়ন সাক্ষণাত্রিক সমস্যা চিত্রভত্তে সমাধান করিবার জন্য বছপরিকর।" পাকিয়ান ভোষিনিয়মও একই পথে চলিবেন বলিয়া ভিনি আশা করেন।

কলিকাতা সংৰেলনে তাঃ স্তামাপ্ৰসাৰ মুখোপানায় অবিলয়ে পূৰ্ববেলয় হিন্দুকের সভাৰত হইনা বাস করার ব্যবহা এবং লংখ্যাগুরু সভারার পরিবেট্টত বিক্লিপ্ত হিন্দুকের পশ্চিম বলে আনিবার কন্য বাবি করেন। বাংলার হিন্দু মুখক বিশেষ তাবে হাজালের নিক্ট আবেহন আনাইরা তিনি বলেন বে তাহারা যেন অনতিবিলবে অন্তঃ এক বাসের কন্য পূর্ববলের হিন্দু সভারারকে আখাস বিধার নিমিন্ত প্রাবে প্রাবে হড়াইরা প্রেম। এই সংবেলনে নিম্নান্ত প্রভাবট গুরীত হয়:

"এই সংখ্যাল সম্প্র হিন্দুহানকে পাকিছানের সংখ্যালঘুকের প্রতি ভাষার হারিছ উপলবি করিতে এবং হিন্দুহান ও পাকিছানের সংখ্যালঘুকের সম্প্রানিত নাগরিক হিসাবে এহন করিবার হুড লাবি করিতে এবং হিন্দুহানকে পূর্বক্রের সংখ্যালঘুকের সর্প্রপ্রায় সাহায্য ও সহায়তা করিতে অভ্যার করিতেছে। এই সংখ্যাল পাকিছান গণপরিষ্ক্রের নিকট পূর্বক্রের সংখ্যালঘুকের রাজনৈতিক, অব্বৈভিক, বর্ষসম্পর্কিত, ভাষাগত ও সাংভৃতিক অধিকার রক্ষার ব্যবহা লাবি করিতেছে। এই সংখ্যালঘুকের বাতি ব্যবহার অহ্বারীই হিন্দুহানের সংখ্যালঘুকের প্রতি ব্যবহার অহ্বারীই হিন্দুহানের সংখ্যালঘুকের প্রতি ব্যবহার অহ্বারীই হিন্দুহানের সংখ্যালঘুকের প্রতি ব্যবহার

কয়া উচিত এবং এইরপ পারস্বরিক ব্যবহারের প্রথা অবলবন করিলে করমভি ও চ্ক্যবহারের সভাবনা চুর হইবে।

বে সকল হুর্জ্ ছ সংখ্যাগদ্ধরে প্রতি ভীতি প্রদর্শন ও জুল্ম করিতেহে তাহাদের কঠোর শাভি দিরা সংখ্যালদুদের মনে বিশ্বাসের সঞার করিবার ক্ষম এই সন্মেলন পূর্ববদের মুসলিন লীগ সরকার ও পাকিছান ভোবিনিরন সরকারের নিকট লাবি করিতেহে।

প্তিথবদ ব্যিসভা ও ভারতীয় ইউনিয়নকে পাকিছান-সরভারের উপর পাকিছানের সংব্যালঘুদের প্রতি প্রবাহছার করিবার ক্ষা চাপ দিতে অপ্নরোধ করিতেছে। পাকিছান-গণপরিষদের উপলব্ধি করা উচিত যে মুসলিম লীগ পতাকা একটি বিশেষ সম্প্রদারের বর্ষের প্রতীক। স্বতরাং পাকিছানের লাতীর পতাকা এখন হওৱা উচিত বাহা অ-মুসলমানদের পক্ষে এইবাছ হয়। মিঃ লিয়াকং আলির বিশ্বতি অপুবারী মুসলিম গাসকে ভাহার নিক্ষ পতাকা ব্যবহার করার অধিকার দেওৱা হইয়াছে, হিন্দুদেরও অপ্নরণ ভাবে হিন্দু মহাসভার পভাকা উত্তোপন করিবার অধিকার দেওৱা উচিত।

পাকিস্থান রাষ্ট্রে বে সকল সংব্যালয় সন্তাহায় সন্তাহিত নাগরিকরণে বাস করা অসম্ভব বলিয়া মনে করেন ভাঁবাদের বাসগ্রান ও আর্থিক উর্গতির কন্য পশ্চিমবৃদ্ধ ও ইউনিয়ন সংকারের ব্যবস্থা করা উচিত।

বাপ্ত চ্যাধিগণকে, বিশেষ করিয়া যে সকল শ্রীলোক এবং শিশু পশ্চিমবল আশ্রম লইতে বাবা ক্ইরাছে ভাকাদের কন্য পশ্চিমবল সরকারেও অবিলয়ে বন্দোবন্ড করা উচিত।

পাকিছানের সংব্যাগবুদের অপ্থবিশ। বুবিরাও এই সন্মেলন ভাহাদের বাস্বভ্যার করিছা দেশের সহিত সম্পর্ক ছেদ করিতে নিষেব করিতেরে।

পশ্চিমবদের হিন্দুদের পূর্মবদের হিন্দুদের প্রতি তাহাবের শুরু লাখিছ উপলব্ধি করা উচিত এবং পূর্মবদের হিন্দুদের সর্মপ্রকারে সাহায্য করা উচিত। পশ্চিমবদ সরকারের পূর্মবদের হিন্দুদের পূর্মের চার শিক্ষা এবং ব্যবসা-বাণিজ্যের সর্মপ্রকার স্থিব। লাবি করা উচিত।

পশ্চিম ও পূর্ববল সরকারের অধসংখ্যার অস্থাতে উভয় সম্প্রদারের লোককে সরকারী চাকুরীতে এহন করা উচিত। বে সকল হিন্দু অকিসাবের বাড়ী পাকিহান এলাড়ার উচিত। পূর্ববলে থাকিয়া বদেশ ও সম্প্রদারের দেবা করা উচিত।

ইতভত: বিভিত্ত সংখ্যাপদুবের সইয়া এক একট হিন্দু
আক্র গঠন করিবার জন্য পরিকল্পনা এহণ করা হরকার এবং
আব সংগ্রহ ও উপর্ক্ত এলাকার হিন্দুবের বসতি রাশন করিবার
জন্য প্রতি জেলার সংখ্যাপদু রক্ষা করিটি গঠন করা হরকার।
আত্যন্ত হুংবের বিষর বে, পশ্চিমবদের করিব বালিকদণ
পাকিহান হুইতে আগত ব্যক্তিদের নিকট হুইতে অভিরিক্ত
লাকু এহণ করিভেত্রেন। পশ্চিমবদ-সরকারের আইন করিবা
উহা বন্ধ করা উচিত।

পূর্ববদের ব্যাক ও ব্যবদা হইতে অর্থ উঠাইরা লওবা হইতেরে এবং উহা বত করিবার জন্য পূর্ববদ্ধ সরকারের অবিসাবে বোবণা করা দরকার বে, কাহারও অর্থ বাজেরাও করিবার উক্তেও উাহালের নাই ও উাহারা সকলকে বাণিছ্যে সমান অবিকার হাম করিবেন। পূর্ববদ্ধ-সরকারকে অন্থরোর করা বাইতেরে বে, উাহারা বেন পঞ্চাবী বুসলবানদের পূলিল বিভাগে নিরোগ না করেন এবং এরোজন হইলে ভাহাদের হলে বাঙালী বুসলবানদের এহণ করেন।

এই দক্ষেণন পূর্ব্বকের ব্রক ও হারদের অন্ততঃ চুই
নাগের ক্ষা ভাষাদের হ-ব এগাকার বাইরা বাস করিতে
ক্ষরেন করিতেহে এবং বাভাবিক ক্ষর্যা করিরা না আলা
পর্যান্ত এবং সব্যালবুকের প্রতি নিঃ ক্ষিয়ার প্রতিক্রতি কার্ব্যে
পরিবত না হওয়া পর্যান্ত কিরিয়া আসিতে নিবেশ করিতেছে।

#### এীযুক্ত কিরণশঙ্কর রাম্বের বিবৃতি

পূर्वारक करावाम-পश्चिम कराव (मणा **विकृ** किवनमध्य রার বিরুতি প্রসঙ্গে বলেন যে, বছবিভাগ ভইরা গিয়াছে এবং কংজেদ মন্ত্ৰিদভা পশ্চিমবদ স্থাসনের ভার এছণ করিয়াছেল। এখন পূর্ব্য ও উত্তরবদের ছিম্মুখের ভরতের সমস্যায় প্রতি ব্দনসাধারণের দৃষ্টি দেওয়া কর্তব্য। বর্তমানে পূর্বাবদের ভবিত্তং অভকারাছের দেবা যাইভেছে: এবানকার সমস্যা-ध्निक हुक्छ। अधिवक्षरमव कथा वाप पिरमक अकथा आक কেই সমীকার করিবে না যে বিভিন্ন কেলার সাঞ্চালতিক হালাৰা বটতেতে, এখন কি বঙ্গা কেলায় শবসংকারেও বাবা দেওৰা হইয়াতে বলিয়া সংবাদ পাওয়া নিয়াতে: আৰাইভার पर्वनाव क्यांच नकानरे बात्नन । चाक तक मिटक चन्नरवा क्यावार्का ७ जाना स्वकी, यह विटक व्यानक बालक नुसंबदक হড়াইরা পড়িরাহে। বুলিব দীগ নেতাদের উদ্বেভ বতই পাভি-पूर्व रहेक ना रकत. भीरतंत्र कार्यप्रकी याशांवे रहेक मा रकत. नाबाबन बुननबानरम्ब बरना बाबना कविज्ञारक स्थ ३४वे जानरहेब পর পাকিস্থানের হিন্দুদের বাড়ী-সপতি প্রকৃতি মুগলমানছের प्रवास चात्रित्य अवर शुक्त ७ देखन वरमन विक्रा भूमनमामरपन দাস ভাতিতে পরিবত হইবে। ধর্মোখন্ত রুসলমানেরা ভাতা-দের পাকিছানের এই আদর্শ কার্ব্যে পরিণত করিবার কচ চেঠা করিবে বলিরা সর্বান্ধ আলভার সঞ্চার হইসাছে এবং বুলিয় লীগ এবন হইতেই এই উন্বতা ব্রাসের ব্যবস্থা বা করিলে ভবিত্ৰতে ইহাকে সংবত করা ভাষাদের পক্ষে সম্ভবপর হইবে वा। भिः विज्ञात विद्विष्ठ (तम अरक्षाथक्षक मरक्षक नारे, किन्न (क्वन विद्विचादा विस्पद (कान काक स्टेट्स मा। जीव-নেভারা যদি সভ্য সভাই বুলিন জনভার উচ্চ থলভা বছ-क्षिए जान करन काशास्त्र भूकी क केक्सनक भवित्रन क्षित्र সকলকে শান্তিপূৰ্ব ভাবে চলিতে অনুবোৰ কলা উচিত ৷ এই কাম এবনই আৰম্ভ করা উচিত, কারণ ১৫ই আগঠের আভ (वन विमय वारे। वनीत बारायिक वृक्षित जीराप म्हायिक.

বিঃ এইচ এন ছবাবৰ্ষি ও বাজা বাজিবৃতিবের এই সম্পর্কে আবেহন এচার করা উচিত এবং এই আবেহনওলি বৃত্তিত ভবিষা পূর্বা ও উভয়বাদের সর্বান্ত এচার করিতে হইবে।

হিন্দু কৰ্মচাৱীদেৱ পূৰ্কাবদ ত্যাগ কৰিবা পশ্চিমবদে बांत्रशास्त्र नवका नन्नार्क जीवक बाद बर्जन (व. बरे नवन्ताद विकि विकारकर पृष्टि (रक्षा केविक। वारमा-मनकारवर সম্ভ হিন্দু কর্মচারী পশ্চিমবদে কাল করিবার ইচ্ছা প্রকাশ कविदास्त । देशव पर जाशायिमक स्थाप विश्व वाद ষা। ভবিত্তং সম্পর্কে অবিক্ষয়তা ও আশহা এবং সাম্ভালায়িক ব্ৰত্নিসভাৱ অধীৰে কাক করিবাধ অপুৰিবাৰ কৰা চিতা করিবা अरेवन निवास असन कवारे बाकानिक। किथ रेशांव करन शाकिशाबी जबकाब जन्मूर्वस्य पुत्रम्याय कर्षकाबीरम्ब मात्रा পরিচালিত হইবে এবং কলে হিন্দুবের যদোভাব বে কিরুপ **इटेरव छाडा जमाबारमटे बूबा बाब। युख्यार रम्मरश्रस्य** बाद्य चात्रि पूर्ववायत विष्यु कर्यकादौरवद निक्के चारववन ক্ৰিডেছি ৰে, ভাহাৱা বেদ পূৰ্ববদ সৱকাৰের অধীনে কাছ क्विएक बाको एन, कावन छैशाब करण दिन् क्नजानाबर्यव वास क्षक्षे। चावनियान वाकित्व । नाम नाम पृत्रिय नीन-নেভাষের নিকট আমি আবেষন করিভেছি বে বিন্দু ও ৰুসলযান কৰ্মচানীদের মধ্যে কোনৱপ বৈষমানুলক আচরণ ভৱা হইবে না বলিয়া ভাষারা যেন আখাস দেন।

পাভিছানের নীতি সম্পর্কে জীবুক্ত বার বলেন বে. ৰুনলনানেরা সহবোগিভার ভাব বেবাইলে হিন্দুরাও সহ-ৰোগিভার নীভি অহুসরণ করিবে। অধুর ভবিষ্যতে আমাদের অৰও বাংলা বা অৰও ভাৰতের আহুৰ্ণ সাৰ্থক চ্টৱা **উট্টভেছে** বা এবং এই কারণে আহর্শ ভ্যাস না করিরাও আহল বাৰৰ বৰণ শীকার করিবা সইতে এবত - বাষরা ৰে ৱাষ্ট্ৰের নাগরিক ব্টব সেবানকার স্বার্থ আমাধের নিজেদের वार्व विवादे चावडा अर्व क्षिए अवट । अरे डाडेरक प्रवे ও সম্ভিদালী করিয়া ভোলাই আমাদের কর্তব্য এবং এই कारत जायतः जायात्मत ववारवाना शाम ७ वासिव वदरन ताजी আছি। কিছ পাকিত্বান শাসনভৱে সংখ্যালয়দের খার্ব ও व्यविकास मश्चकर्यक छेपक्क चावश वाकिमारे देश मध्यपक ভটতে পাতে: আবাদের অবিকার, বর্ষ, সংস্থৃতি, ঐতিহ এছতি সন্দর্কে কোমভাবে হতকেণ করা চলিবে মা। সীর্মের বেভাল এই সম্পর্কে ববেট রাজনীতিভাবের পরিচয় বিবে विन्या चावि चाना कवि । किन्न चावारवत्र वत्रवाही, चावारवत्र ৰৰ্ব ৬ সংঘতি কোমবলে বই কৰিবাৰ চেঠা কৰা বইলে উহাৰ क्षचिटवार कहारे चार्यास्य क्षेत्रा स्टेटर । अरे मन्मार्क ভাহায়ও বেদ কোনৱপ তুল বারণা না বাকে। আবরা সংখ্যালয়ু হইলেও সংখ্যত এক কোট হিন্দুর প্রতিবোধ-আন্দোলৰ ধৰৰ কথা সহক নয়। তবে আমাধের গোলবালের আপভা কথা উচিত বয় :

পশ্চিমবাংলার নেজ্যুখকে লক্ষা করিবা ত্রীযুক্ত রায় বলেব নের, পূর্ব্ধ ও উত্তর বলের বিজ্ঞুধিগকে পশ্চিমবলে বিবেশী বলিরা গণ্য করা হইবে না বলিরা তিনি আশা করেন। এই সম্পর্কে তাহাবের প্রতি কোনজপ বৈষ্কায়ুগক আচর্যন করা হইবে না বলিরা সরকারী ভাবে বেন বোষণা করা হয়। পরিশেষে তিনি বলেন যে পূর্ব্ধবলের লীগ-নেতাবের নীতির উপরই হিজু-বের বনোভাব নির্ভিত্ত করিতেতে।

এই বিশ্বতি প্রকাশের পর পূর্কবন্ধের লীগ-বেভান্থের কেছ কেছ হিপুনের বৌধিক আখাস বিরাহেন কিছ কার্য্যঃ বাহ। ঘটতেছে ভাহাথারা উাহাবের আশালা দূর হইতেছে লা। পূর্ক-ঘকে নৃতন প্রপ্রেক্ত ও সৈওদলের স্থান সম্ভূলানের ক্ষণ অভিনাপ আনী করিরা বে সব বাজীখন ধরণ করা হইতেছে ভার প্রায় সমস্তই হিপুনের। চাকা, ক্ষিলা, চট্টরাম প্রভৃতি সর্ক্ষেই এই পছতি অস্ত্রুত হইতেছে। বাহাদিগকে আইনের বলে গৃহচ্যুত করা হইতেছে ভাহাদের বাসধানের কোন ব্যবহা করিয়া দেওয়: হয় নাই। প্রথম দুটাভ হিসাবে ইছা ভাল নয়

বিতীয়ত:, পূৰ্ব্যদেৱ হিন্দু সরকারী কর্মচারীদের পরিভাত শৃত পদ পূবৰ। জীহুক্ত ৱাৰ ইহাদের চলিয়া আসার কথ: উল্লেখ করিয়াছেন। সীগ-নেতাদের এবং সীগ-পঞ্জিকাসমূহের উক্তি ও লেখা হইতে ইহাই বুৱা যায় যে এই সৰ পদে रिक कर्षधावी बस्टलब करा छात्रावा क्रिका कविटलटबन मा। बाका माकिश्चीरमद घरमद प्रविध निविद्यादम रव পূৰ্ববেদ ২৫০ গেছেটেড অফিসার এবং করের সহস্র কেরাবী প্রভৃতি অবিলয়ে নিযুক্ত করিতে ভ্রবে। তালারা চাহেন य वरे जकन पर प्रापंत भवन पूर्वपालत कृतन्यायालत ছাৰি সৰ্বাত্ৰপৰা হইবে, এবান হইতে সৰ লোক না পাওৱা গেলে পশ্চিমবদের মুসলমানদের ভুষোগ দেওয়া হইবে এবং ভাষাভেও না কুলাইলে হিন্দুয়ানের বুসলবানকেয় আনিতে হইবে। সংখ্যার অহুপাতেও হিন্দু নিরোগের কোন কৰা ইহার: উচ্চারণ পর্বাত্ত ক্রিভেছেন না। অবচ कर बाग थारममानूद्य क्यारशाहि क्ष्माए ज्ञानवाय कर्य-हाती निर्क क्वा स्टेख्ट अवर क्विवारक छेश **क्वा**क्क বাৰিবার প্রতিশ্রুতিও দেওৱা হইবাছে।

#### পাকিস্থানের সংখ্যালঘুদের জন্ম গান্ধাজার উদ্বেগ

নরাধিনীতে এক প্রার্থনাতিক সভার বহালা সাতী বলেন, পাকিহান এলাকার অবিবাসী আবার অনৈক অনুসলবার বছু পলা প্রকাশ করিরা আবাকে চিট লিবিরাছেল। বর্ষাভরিত হওলা ছালা আর কোন উপার নাই এরপ কথাও তিনি উল্লেখ করিরাছেন, কিছ জিলা সাংহব এই আখাস বিরাছেন বে পাকিহানে অনুসলবাদরের প্রতি টক বুসলবাদরের বতই ব্যবহার করা হইবে। আবি সকলকেই জিলা লাহেবেল্ছ ক্যান্ত আহা ছাপন করিতে বলি। আকু বর্বন আন্তর্ভর্বে

হুইট রাই প্রতিষ্ঠিত হুইরাছে, তথন উভর রাষ্ট্রেরই কর্তব্য সংখ্যালগুলের বার্থ বাহাতে বজার থাকে দেবিকে দৃষ্টি রাখা। আষার বন্ধু আষাকে লিবিরাহেন,

"১०ই जानहे वाबीमका विवन भागत्वत कवा जाभवाता সাভয়তে খোষণা ভবিষাতেন ভিত্ত আপনারা ভি একবারও ভাবিত্রা দেবিত্রাছেন বে পাকিত্রানের অনুসল্মান ভবিবাসীরা **এই दिम्हें कि ভাবে পালন করিবে ? আমাদের মনে কি** উৎসব করিবার মত এক বিশু আমন্ত আছে ? আপনারা यथम जामत्म मध स्टेर्टिम, जामहा ज्यम निरम्रापद निर्दाणकात কৰা দইৱা যাবা খাষাইব। আম্বা কি ক্রিভে পারি সে বিষয়ে আপনি কোনও নিৰ্দেশ দিবেন কি ? একমাত্ৰ শোক প্রকাশ ছাভা এই দিনটাতে করিবার মত আমাদের আর কি আছে ? আমাদের বসল্যান প্রভিবেশীরা ত ইভিমব্যেই আবাদের তর দেবাইতে সুকু করিরাছে। তারতীর বুক্ত-बार्डिय बुनम्मानरमय मरमय चवश्रहे वा किवन ? जाशास्त्र মনেও কি আমাদের মতই পরা আগে নাই ? আমরা এত ধূর সম্ভ্রন্থ প্রত্নীছি বে. মনে হইভেছে আমাদিগকে বলপূর্বাক বর্বাভারিত করা হইবে। আপনি ত আমাদের সাহস অবলম্বনের পরামর্শ দিতেছেন ও বলিতেছেন বে. প্রত্যেকের ধর্মই ভাষার নিজের ছাতে। একবা হয় ভ সন্ন্যাসীদের পক্ষে সভ্য হইতে পারে কিন্তু পুত্র-পরিবারসহলিভ बृह्दस्त भएक भएह।"

শাষি উক্ত প্রের উন্তরে কেবল ইছাই বলিতে পারি বে, পাকিথানের গবর্ণর-কেনারেল কিরা সাহেব বলিরাছেন যে, পাকিথানে অনুসলমানদের প্রতি ঠিক বুসলমানদের মতই ব্যবহার করা ছইবে। আমি সকলকে এই পরামর্শই দিব বে, আমরা বেন উক্ত কথার বিধাস করি। আমার এই আহা আছে যে, ভারতীয় মুক্তরাষ্ট্রে যেনন মুসলমানদের প্রতিকোশ অভার করা ছইবে না, তেননি পাকিহানেও অ-মুসলমানদের অভারিত ছইবে না। বর্ত্তমানে ভারতবর্বে ছইট রাই প্রতিষ্ঠিত। প্রতরাং উক্তর রাইকেই সংখ্যালঘুদের বার্থ-রক্ষার থারিত্ব প্রহণ করিতে ছইবে।

"আমি অবস্থই মনে করি বে, সংখ্যাসন্থরা যথন ভারাক্রান্ত হছরে দিন বাপন করিবে, তথন ১৫ই আগটে কিছুতেই আনশোংসব হওরা উচিত নর। এই দিন প্রার্থনা ও গভীর আত্মান্ত্রনানের নব্য দিরা অতিবাহিত হওরা উচিত। তবে এই দিনটকে সকলের পক্ষেই আনক্ষারক করিবার একটনাত্র উপার আছে। উভর রাইই বদি এখন হইতে প্ররাগ করিবা ১৫ই আগটের মধ্যে বদুদ হাপন করিতে পারেন, ভাছা হইলেই উহা সভব। ইহা অবস্থ বিভাতই আনার ব্যক্তিগত হত।

"পূৰ্ব্বোক্ত বছু আমাকে এ প্ৰস্নও কৰিবাছেন বে, বাঁহাৱা প্ৰাণ্ডৱে পাকিছান ছাড়িয়া চলিয়া আনিবেন ডাঁহাৱা ভারতীয় বুজরাট্রে আশ্রর পাইবেন কি না। আমি অবঙ ইহার উভরে বিশেষ জোরের সক্ষেই বলিতে পারি বে, এইরপ আশ্রর-প্রার্থিণ বুজরাট্রে সর্ক্ষরিব সাহায্যই পাইবেন। অবঙ যুজরাট্র কাহারও অভ প্রাসাদোপর অটালিকার বন্ধোরত করিতে পারিবে না। এইরপ কোবাও করা সভব হুইয়াহে বলিরাও আমার জানা নাই, আমি অবঙ ইহাও বলিতে চাই বে, আশ্রর-প্রার্থিদের যে আহার দেওয়া হুইবে তাহার অভ তাহার। শ্রম করিবেন।

"বিনা পরিপ্রদে বেতন মেলা সন্তব ময়। আরি এবনও এই বিহাস পোষণ করি বে, মুসলয়ান অবহা অ-মুসলয়ান কাহাকেও পাকিয়ান অবহা ভারতীয় মুক্তরাই ছাড়িয়া বাইডে হইবে না।

"উচ্চ বছু আমাকে আরও কিজানা করিয়াছেন যে, পাকি-স্থানে কেলিয়া-আনা গৃহ-সম্পদ্ধিরই বা কি ক্টবে।

"আমি ত বরাবরই বলিরাছি যে, গৃহ এবং ক্ষমির ক্ষম্প প্রত্যেক রাষ্ট্রেরই বর্তমান মূল্য কেওরা উচিত। আমি বছ দূর কানি প্রত্যেক রাষ্ট্রেই এরপ বিবান আছে। তবে ব্যাপায় এত দূর গড়াইবে, এরপ ক্ষমা না করাই কর্তব্য।

"সর্বাশেষে আমার উদ্ধিবিত বছু বলিরাছেন বে, আমি
নাকি একজন বাঁট আদর্শবাদী। বর্ত্তমানে চতুর্দিকে বাহা
বট্টতেছে ভাহা আমাপ্রিক; স্তরাং কোন্ বাত্তবসন্মত উপারে
ছয়তকারীদের বিরুদ্ধে অহিংসা কার্য্যকরী হইতে পারে ভাহা
ভিনি আনিতে চাহিরাছেন।

"আমাকে বাঁট আহর্শবাদী বলার আমার আপতি করার কিছ নাই: কারণ আমি যাহা প্রচার করি ভাষাকে কার্যো প্রয়োগ করিবারও চেটা করিয়া থাকি, তবে উহাতে হয়ত चारम क्रिकेटिका विश्वा वार । चाराश वहूटक विकास করিতে চাই তিনি বাহাদের হয়তকারী বলিয়া উল্লেখ করিয়া-ছেন ভাছাৱা কাৰা ? ভাছাৱা কি মহবৰ্ণিত ব্যক্তি ? কিছ চুদুভকারী হইলেই ভ সব সময় ভাষার মুন্তার বিবান দেওৱা एक मा। चाक्कान वक्षर क्षुप्रकाळा पुनिष्ठा निवास कारे चाट्यामन हनिट्छट्ट । जान यपि कार्यात वना ৰাকিয়া ৰাকে, ভাষা ষ্ইভেছে বনীশালাকে হালপাভাল ७ मरकात विद्यानक পतिबंध करा। अहे ममक चारम इक्नफ-কারীদের রোপর মত মনে করিবা চিকিৎসা করিতে ঘইবে। আমি ইহাই বলিতে চাহি বে, বিধানমাত্রকেই কার্যাকরী विज्ञा बटन कविवाद रुष्ट्र बारे। छ। हाका विश्वासक्थ विकानमध्य प्रेटक प्रेटम भगदात महन महन क्रांच प्रविच्छन প্ৰৱোজন। সামূৰের প্ৰযোজনে লাগাইতে হইলে বিধানকেও गर्वातागरवात्रे कविवा गरेए एटेरव । **अग**विवर्धनीय विच-বিধান বুৰ কৃষ্ট আছে। এই সকলের ক্বত কোনও পালীয় गांगाव धारावम रव मा। ७० विश्व श्रीम वामव-नवात्वव ভিভিন্নের উপর প্রতিষ্ঠিত। ত। হাড়া হুড়তকারীবের শাভি বিবার অধিকারও সকলের নাই। বে কোনও ভাল সমাধ-ব্যবস্থার এই অধিকার রাষ্ট্রের হাতেই বাকে। রাষ্ট্রের বিগান অস্থারী বিচারকর্প উহাদের বিচার করিরা বাকেন। এইরূপ ব্যবস্থা না বাকিলে আমাদের মধ্যে অনেকেই হ্রুডকারীতে পরিশত হইত।"

#### হিন্দুদের প্রতি পাকিস্থান কর্তৃপক্ষের আখাস—কথায় ও কাজে

পাকিত্বান-কৰ্ত্তপক হিন্দুদের উছেশে অনেক মৌৰিক প্রতিশ্রুতি দিয়াহেন, কোন কোন ছলে সীগনেতার। প্রকারে বক্ততা করিয়াছেন ও বিরুতিও দিয়াছেন কিও সাধারণ ৰুসলমানদের ব্যবহার ইহাতে পরিবর্ত্তিত হয় নাই। এত দিন नित्र ७ ७ । त्यापेर मुजनमाननित्र भाकिशास्त्र मधारेर আকর্ষণ করিবার ভাল এই বলিয়া লোভ দেখানো চ্ইয়াছে যে, পাকিছান প্রতিষ্ঠার পর বিক্লের ঘর-বাড়ী, জমি-জমা, ষ্টাকা-পরসা এবং সুক্ষরী ভরুণীরা ভাষাদের সন্পণ্ডিতে পরিণভ रहेर्प । अहे लाक छारापित मन अपन छार्प प्रवृत्त हरेश দিয়াছে বে আৰু ইচ্ছা থাকিলেও পাকিয়ানের কঠানের পক্ষে এই মনোভাব পরিবর্ত্তন করা সহক্ষ নয়। কিন্তু সবচেয়ে বেদনার বিষয় এই যে, এই মনোভাব পরিধর্তন করিবার জভ ৰে হচচিত্ততার প্রয়োধন তাঁহারা তাহা দেখাইতে পারিতে-ছেন না এবং ভাঁছাদেৱ এই নিজিম্বভা এবং অসহায়তাকে লোকে অসং কার্য্যের পরোক সমর্থন খলিয়া মনে করিভেছে। এই গলে তাঁহাথের কোন কোন কাৰও লোকে সন্দেহের চক্ষে দেবিভেছে। যে পঞ্চাৰী পুলিস দল কলিকাভায় চুছাও খেলাচার করিয়াছে ও পেশাদার চুর্ব্ব ভের ভার আচরণ ক্ষিয়া ক্ষিয়াহে ভাগাৰিগকে পূৰ্ববলে সইয়া যাওয়ায় পাকিছান-কর্তুপক্ষের উপর বিশ্বদের বিরূপ বারণা ক্ষিতে ৰাব্য। বহৰাল ভাঁহালা খোষণা কলিলাছেন যে খুসল্মান दिबादि महिमति रनवादि नम्स भवकाती कर्वहाती मूनममान করা উচিত এবং সশল্প পুলিসও মুসলমান হওয়া দরকার। বিহারে তাঁহারা এই দাবি করিয়াছেন এবং কলিকাভায় बुजनमान मरबाानवू चकरन बहे मीछि कार्या भदिनछ किरेश-ছিলেন। কলিকাভার মুগলমান মাইনরিটর মনে পাত্স সঞা-রের জন্যই ভারারা পঞ্চাবী পুলিস আনিয়াহিলেন। এই শীতি অহুলারে পূর্ববংশর অধিকসংখ্যক সরকারী চাকুরীতে रिन्दू निवृक्त करा अवर रिन्द्रपद दकार एड अथा वा दिन्द्र अन्य পুলিস অবিলয়ে প্রেরণ করা উচিত ছিল। কিছ তাঁহারা উহার বিশরীত আচরণই করিতেহেন। ঢাকা কুমিরা চটপ্ৰাৰ প্ৰভৃতি শহরে বরবাড়ী ঘৰলের সমধ্যেও এই এক্তরকা পক্ষপাতিত্ব বেৰা হাইতেতে। ৫ই আগঠ ঢাকা কেলা বুসলিব লীগের দভাপতি সংখ্যালর সম্প্রহারকে ভাততবন্ত मा स्रेवाद क्या चारवस्य कामान अवर वि: किवाद अधिकारि

অক্ষরে আক্ষরে পালনের জন্য মুসলবানকের পরামর্শ কেন।
মাড্ডুবির উর্ভির জন্য উভর সন্ধারকে হাতে হাত বিলাইর।
অঞ্জনর হইবার জন্য এবং হিন্দুকের বদে আবাত না বিবার
জন্য তিনি আবেষন জানান। অন্য বিকে ঐ বিনই নিরোক্ষত
সংবাধটি 'মুসাভ্তরে' প্রকাশিত হইরাতে:

"পাকিছান কাষের ছঙরার কলে ঢাকার অবিবাসীদের মব্যে যে আতত্তের সকার হইয়াছিল, শহরের বিভিন্ন অংশে বহু বাগভবন রিতুইজিশনের জন্ত কর্তুপক্ষ কঠোর ব্যবস্থা অবলয়ন করার উহা আরও প্রবল হইরা উটিয়াছে। প্রকাশ, সরকার বাহাতে অবিলয়ে বাড়ীওলি দংল করিতে পারেন ভাহার জন্ত সেঙ্গি অভি শীত্র এবং কোন কোন ছলে ২৪ ঘটার মধ্যে বালি করিয়া দিবার উদ্বেশ্তে মনোহর বা বাজার ও ঠাঠারি বাকারের কৃতিপন্ন বাড়ীর মালিক ও বাসিন্দাগণকে ৰোটিশ দেওয়া হইয়াছে। কিছু শহরে বালি বাড়ীর অভাব হেতু উক্ত বাছীর মালিক ও বাসিন্দারণ সরকারের আদেশ পালনে অসমৰ্থ ধ্ইয়াছেন। কলে কভিপন্ন পূলিস পেৰানে পিয়া বাড়ীয় বাসিন্দাপণকৈ ৰাড়ী থালি করিয়া দিতে বাধ্য করে। প্রকাশ, ভাষাদের কিনিগপত্র রাভায় ভূপাকারে পড়িয়া चार्छ। देशायत व्यक्तिश्य महत्त्वत शाबी ग्रेन्शाबी। अह সকল কারণে কনসাধারণের মধে এই আভাগের স্ট্রী হইয়াছে বে, তাহাণের বাজীও যে কোন মৃহুর্ছে রিকুইজিশন করা হইতে পারে। উপরোক্ত বাড়ীগুলির বাসিকারণ অঞ্জ ছাম না পাইয়া স্ত্ৰীপুত্ৰ বালক্ৰালিকাস্ছ বিভিন্ন ধৰ্মনিধিয়ে আত্ৰৰ এছণ क्रिवारमः। जावश्र क्षणान् वश्रीवाकाव, हारकवंदी मनिव जरून, (भवादिशा, शृद्दान) भन्तेन, (भधनवाशान, मास्तिनगत ও आधार्थ-টোলার কভিপর ভালা বাদীও রিকুইজিশম করা হইয়াছে এবং অবিগ্রে বাড়ীওলি থালি করিয়া দিবার দত কর্ত্তপক शांवि क्वाबाहेबाटकन । क्छुंशटक्व अरे कर्कांच वावशांव विकट्य প্রতিবাদ ভানাইয়া পুরমো প্রটন, সেওনবাগান ও শাভি নগরের অধিবাসীরক অভ সকালে এক সভার এই সকল কাৰ্য্যকে সৱকারী আখাগ সভেও জুলুম হ্ৰপে বৰ্ণনা করিয়া এক প্রস্তাব এছৰ করে। কর্ম্পক্ষ যদি বাছী রিকুইজিশন চালাইতে बादकन ভবে সভ্যাঞ্ছ জারভ কর। ছইবে বলিয়া করেক দিন পুৰ্বে যে প্ৰভাব গুহীত হইয়াছিল বৰ্ডমান প্ৰভাবে ভাষাত্ৰ भूनशरक्ष**य क**र्या एवं।"

ক্ৰায় ও কাজে দীগ-নেতাদের এই স্ব গ্রমিল দেবিলে হিনুদের মনে সন্দেহ হইবে ইহা সাভাবিত।

পূর্ব্য ও পশ্চিম বাংলায় শান্তিরকার আবেদন

ক্ষমতা হভাতরের অব্যবহিত পরে বা দীমানির্ভারণ ক্ষিশনের রার বাহির হইবার কলে তাহার প্রতিক্রিয়াগরূপ বাহাতে কোন সাজ্ঞারিক অপাত্তির ক্ষ্টি না হর তাহার ক্ষ ভাঃ প্রকুল্প বোব, বাজা নাজিয়ুকীৰ এবং বিঃ স্থাবর্কী সম্প্র বাংলার অবিবাসীদের উদ্দেশ্তে এক বিবৃতি প্রচার করিয়াছেন। পূর্ণ বিবৃতিট নিয়ে প্রদন্ত ছুইল:

আৰু হইতে প্ৰায় এক স্থাহকাল পয় ভারতের লাসমক্ষমতা ব্রিটেনের হাত হইতে ভারতীয়দের হতে অপিত হইবে। ইহা বে একটা বিরাট ইতিহাস-প্রনিধ ঘটনা তিসাবে পরিচিত হইবে ভাহাতে কোন সন্দেহ নাই। আৰু কংগ্রেস ও লাগের মধ্যে বুরাপ্ছার ফলে থির হইরামে বে, এই ক্ষমতা আগামী ১০ই আগঠ তারিবে হউট ডোমনিরমের নিকট হভাত্তরিত হইবে। কিছ এক ডোমিনিরম হইটির সীমা এবন পর্যন্ত নির্দারিত হয় নাই। ইহা থির হইবে সীমানির্দারণ ক্ষিপ্রেষ রাম্বের ধারা!

करत्यन ७ मूमणीय जीन डेक्टबरे योकाव कविवादयन যে, সীথানিষ্ঠারণ ক্ষিপনের রার ভাষারা উভয়েই মানিরা नर्दिया। এका चामता राश्नात क्रमगानातर्गत प्रकृत (अवैत लाटकत निक्छे अहे विनता चाटवपन कामाहरणिं। বে ক্ষিশনের রায় কোনও সম্প্রদার-বিশেষের নিক্ট थण्डे चन्राचाथक्वक विद्या बात एक मा (क्या काशावा राम गर्जनारे जारा मानिया हरनन । अ विवस्य जागास्य काम मान्य मारे या प्राप्त अविकारण अविशामी. গাহার। কংরোদ ও লীগের প্রতি অথুগত, তাঁহারা নিক্তর कर इरे अधिकारनत निटर्मन अञ्चात्री काक कतिरवन। কিন্তু ক্ষমতা হতান্তৱের এই সময়ে নিকেন্দের স্বার্থের শ্বদ্ধ গোলখোৰ **ভট্ট** করিতে পারে এবন অবাঞ্চিত লোকও দেশে আছে। ভবে ভাছার। সভাই যদি কোন গোলখোগ স্থাই করিবার চেই! করে তাহা হইলে भवार्य के जाशास्त्र विकास कार्जीत वावशा व्यवस्थ कतिर्दश ।

গণ-পরিষদ ভারতের জাতীয় পভাকা সম্পর্কে গিছাছ
করিয়া কেলিয়াছে। আনহা আনা করি পশ্চিমবদের
সমস্ত অবিবাসীই এই পভাকা উদ্ভোলন করিবেন এবং
অন্তর্মপ ভাবে পাকিছান গণ-পরিষদ পাকিছানের জন্ত বে
পভাকাই নির্কাচিত করম না কেন প্রবিদের সকলেরই
সেই পভাকা উদ্ভোলন করা উচিত।

পূর্ববন্ধ ও শশ্চিমবদের গবর্ষে ত পরন্ধরের প্রতি
অভিদার বন্ধুত্পূর্ণ সমোভাব লইরা পরন্ধরের সহযোগিতার
শাসনকার্য্য চালাইতে ইচ্ছুক। এই চুই গবর্ষে তেঁর মধ্যে
বৈ কোনরূপ মতভেবের স্কৃষ্টি ইউক না কেন তাহা সমাবানের কণ্ড আমরা সর্বাহা পাতিপূর্ণ উপারে চেঠা করিব।
একত ক্ষমানারপের নিকটও আমাদের আবেষন এই বে,
উচ্চারা যেন ক্ষমও নিক্ষেত্র ইচ্ছানত নিক্ষ হতে
অভারের প্রতিকার করিবার চেঠা না করিরা পাতি ও
শৃথলাপূর্ণ উপারে অভিবোসের প্রতিকার করিতে চেঠা

করেন। আমরা বাংলার উভর অংশেরই সংখ্যালয্থের প্রতি সম্পূর্ণ ভার বিচার করিতে চাই, তবে ইছার অভ সংখ্যালযুদেরও কর্তব্য হইবে ভাষাদের রাষ্ট্রকে স্থা ও সমূদ্দিশালী করিবার জন্য প্রত্তেক্তির সহিত সহবোণিভা করা।

আৰু আৰৱা আৰাদের নিজেদের ভবিতং গঠন
করিতে চলিয়াছি। এ কাৰ্য্য আৰৱা সাকল্যের সহিত
সম্পন্ন করিতে সমর্থ ছইব কিনা সে প্রশ্নের উত্তর
ভবিত্যতের গর্ভে নিহিত রহিয়াছে। তবে আমাদের আশা,
বেশের অগণিত হংবী ও নিবন্ন জনসাবারণের বার্ণের ভত্ত
দেশের ভবিত্যং গড়িয়া ভূলিবার মত সাহস ও সুবৃদ্ধি ভগবান
আমাদিগকে অবশ্রই দিবেন।

যৌলানা আক্রাম বা একট বতর বিবৃতি দিয়াছেন। উহাতে ডিনি বলিভেছেন, "ভারভের রাজনৈভিক আজাদীর পরিকলনা কংগ্রেগ ও দীগ উভর প্রভিষ্ঠান-কর্তৃক পুরীভ হইরাছে। এতদমুদারে উত্তর প্রতিঠানের হাই ক্ষাত নিজ ·शिक मध्यमारवत अणि चारवनम कामहिवारवम अवर वाष्ट्रवादी ক্ষিণ্য ও অভাত সকল নিছাত বিনা ওকরে যানিয়া লইতে বীকার করিবাথেন। পাকিস্থান ও ভারত উভয় রাষ্ট্রের সংখ্যা-লবু সম্প্রদায়ের জানবাল রক্ষার প্রতিশ্রুতি নেতাগৰ স্পষ্ট क्षांत कानाहेशास्त्र । यूमनमानभेष अहे चार्यपरम मर्द्धाच:-করণে নাড়া দিয়াছেন। পূর্ববেদে যে কোনমুপ অপ্রীভিক্র ঘটনা ঘটে নাই, ইহাই ভাহার প্রমাণ। কিন্ত হুর্ভাগ্যবশভঃ কলিকাতা, হাওড়া ও পশ্চিমবদে এরপ মনোভাব দেবা মাইতেছে না i" মৌলানা দাছেব যথারীতি লীগ-পছতি অপুসারে পরের ঘাতে দোব চাপাইরা সাকাই গাহিবার চেঠা ক্ষিয়াহেন এবং বালয়াছেন, "অভ্যন্ত পরিভাপের বিষয় বে মোসদেম লীগ-মেতাগণের ভরক হইতে পুন: পুন: অফুরোব করা সভেও পশ্চিম বাংলার মন্ত্রীমওলী কলিকাতা ও ছাওড়ার লালা-লগ্নমে কোনই কাৰ্যাক্ত্ৰী পদা অবলয়ন করেন নাই।"

মি: স্বাবর্ণীর মুবণার "ইভেছাদ" এবং বালা নাজিমুদীন ও মৌলানা আক্রাম বাঁর মুবণার "আক্রাদ" অন্ন করেক দিন আগেও সাজানারিক বিদেষ প্রচার করিতে ছাকেন নাই এবং একজনও মুসলমান জীবিত থাকিতে তাঁছারা কলিকাতার উপর কর্তুছের লাবি ছাভিবেন না এইরপ মনোভাব প্রচার করিরাছেন। বাউভারী ক্ষিণনের বৈঠক আরম্ভ হওয়ার অনেক পর পর্যান্ত এই প্রেমীর প্রচারকার্য্য অবাবে উাহালের ভাগজে চলিরাছে, তাঁহারা কেছই উহা বন্ধ করান নাই, প্রকাপ্ত বির্তি দিরা উহার নিজাও করেন নাই।

প্রভাক জিরার প্রতিজিরা আছে। ইহা বভাবের বিধান। প্রতিজিরা বভ অবাহনীরই হউক বা কেন, উহা এরপ অবহার বেধা বিবেই। গড় বংগর ১৬ই আগঠ হইতে বুলনির নীগ প্রভাক সংগ্রাম আরভ করিরাহিলেন। সংগ্রামের উচ্চেড

हिन द्वाबरेनिक शांकिशान चर्चन । किंद्र और गर्श्वारम्ब क्र বে পছতি অনুস্ত হইয়াছিল, কোন সভ্য বানুহ ভাহা সমৰ্থন করিতে পারে না। পাকিসান অর্জনের নাবে লাবারণ ও নিঃ (अधिव प्रजनशासका प्रथम दिन्तु निषय, दिन्द्व जन्निक नुर्शम, হিন্দুর পুৰ্লাহ এবং হিন্দু নারীর সভীত নাশ আরম্ভ করিল, মি: ভিন্না হইতে ভারভ করিয়া কোন মুসল্যান নেভা ভাছার প্রভিবাদ ক্রিলেন না। সাধারণ মুসলমান ব্রিরা नरेन य रिम् स्वन माळ रिम् वनिशारे ভारात वया, विश्व मन्नि मुर्कटन जाद काम खनदान एक मा विन मातीत मर्गाणामात्म काम भागक एव मार्च। এই छवछत শিক্ষার পরিণাম কর্বনও ভাল হইতে পারে না। ইহার প্ৰতিজ্ঞিৱা দেবা দিতে বাব্য কোন কোন ছানে দেবা দিয়া-हिन्छ: किं कर्रातम-(यणाया क्षांनन क्षांत करन প্রতিক্রিয়া বভাবত: বে ভয়াবহ রূপ পরিএই করিত ভাষা ভৱিতে পারিল লা। লীগ-নেভারা কিছ সংযত হইলেন না, অক্তরবৃদ্ধকে সংযক্ত করিবার কোন চেঠা করিলেনও मा, यदर छेराट्य मामवजाविद्यांवी अनदाय अञ्कीत्म नवर्य-(मक्टिंड मक्टिंड परिकाडी भीत-(मछाडा क्षेकाडास्टर मामा ভাবে সাহাধ্যই করিলেন। হিন্দুর মনে ভাঁহারাই প্রতিহিংসা-व्यवृष्टि काशरिया कृणिरमम । किया यह मा स्टर्म व्यक्तिया ৰৰ হইতে পাৱে মা. এই সভ্য তাঁহাৱা আৰও অনুভৰ ক্রিভে পাৱেৰ ৰাই। দেখিৰ ৱাষ্ট্ৰপতি কুপালনী এই সভৰ্ববাৰী উচ্চারণ করার পরেও লীগ-বেভাবের চৈভন্যোদর হইরাছে এবৰ পরিচয় আৰও পাওৱা বায় নাই।

वाका माकिवकीय. यिः च्रवावकी अवर दोलाना जाकाय वी ক্লিকাভা এবং হাওচার আক্রমণ বন্ধ করিবার ক্রম অপুরোধ क्रिकार्टिम । जाः त्याय छेरा वार्यादेख भारितंत्र्यम मा विज्ञा ভারাকে বোরারোপও করিতেবেন। কিছ প্রকৃত অবস্থা কি ? কলিকাভার বে সব ছলে আছও গোলবোগ চলিভেছে সেওলির প্রতি লক্ষ্য করিলেই কেবা বাইবে বে ঐ লব ছামের হিন্দু অবিবাসীরা দীর্ণ এক বংগর বাবং অহোরাত্র সপঞ্চিত চিত্তে বাস করিবাছে। সকাল বেলার পরিবারের উপার্ক্তব-ৰীল ব্যক্তিয়া কালে বাহিত্ব হইবা গিলাছেব, ভাৰাত্ম কিরিয়া না আসা পর্যান্ত বাজীর বেরেয়া একরপ রুদ্ধ-খানে তাঁহারের আগবন-প্রতীকার সপতিত চিত্তে কাল কাটাইরাবেন। ইহারই মধ্যে হয়ত পাকিয়ানী নৈনিকেরা পুরুষদের অসুপদ্বিভিত্র সুবোগে পাড়া আক্রমণ করিয়াছে. ছেলেৱা বাৰা দিতে পিৱা কেহ বা প্ৰাণ হাৱাইৱাছে. কেং আহত ধ্ইয়াহে, অনেককে পুলিগে ধরিয়া লইয়া গিয়া দাহুনার চরুর করিবাছে। সন্থ্যার হয়ত কোন গুড়ে দংবাছ শৌহিয়াহে বে আশিন-কেবত ভাঁহাহের প্রিবছন ছবিকাণাতে অববা পঞ্চাবী পুলিলের ওলিতে বিবত হইরাহেন। ভবাৰত অবহা হয় কৰিবায় বভ পুলিন কোন চেঠা কৰে

নাই বহং ভভাবেত্বই পক্ষ সম্বৰ্ধ করিবাছে। দীৰ্থ এক বংগর কাল বে সব পাড়ার লোক এই অসহনীর অবহার বব্যে কাল কাটাইরাছেন, বে সব ভভাকে চক্ষের উপর আক্ষালন করিছে দেখিরা, এবন কি নরহত্যা করিতে বেবিরাও বাহারা তাহার কোন প্রতিকারের কচ কোনজপ সরকারী সাহার্য দীপ প্রকেটের নিকট পার নাই, বাহারা স্বিচারের পরিবর্ধে লাঞ্ছনা ও অত্যাচারই পাইরাছে, তাহারাই শেষ পর্যাভ প্রতিহিংসার পথ অবলহন করিবাছে। এই পান্টার ব্যাপার আরম্ভ হইরাছে আক্ষ প্রার আট-লশ মাস কুতরাং ঐরপ প্রতিক্রিয়ার দারিত্ব বাংলার দীপ প্রবর্ধেতার। পান্টা আক্রমণ বা নির্ভূর নরহত্যা হিন্দুরা কর্বনও সমর্থন করেন না, উহা বহু করিবার কচ নেতারা সর্বপ্রকারে চেটা করিতেছেন।

ডাঃ ৰোষ আক্ৰমণ বছ কৰিবাৰ ভয় চেইা কৰিতেছেন না विश्वा स्मेनामा चाकाम वें। छांशास्क त्याय विश्वास्थ्य। বুলিসের অভ্যাচারের কথাও ভাঁহারা আত্ম বলিভেছেন। क्डि नड अक बरमज्ञकान बूमनबान पूनिम अवर पक्षांनी পুলিসের নামে সাক্ষ্য-প্রমাণ সবেত অভিযোগ করিয়া হিন্দুরা কি প্ৰতিকার পাইয়াছে তাহা কি তাঁহারা ভাবিয়া খেৰিবেন ? নাহীর সভীগুনাশ, গৃহকর্পরভা নাহীকে শুলির আবাতে হত্যা, विमा कादान विमा चेटलक्माद शक्तात निशीक मानविकासद শুলি করিরা হত্যার যে সব মারাত্মক অভিযোগ পঞাবী পুলিসের বিরুদ্ধে করা হইয়াছে ভাষার প্রভিকার কি ভাষারা করিরাহিদেন, না ঐসব নরপশুকে আরও উৎসাহ দিরাছিলেন। ইহাদিগকে পূৰ্ব্যবহদ পাঠাইয়া কি ভাহারা সেধানকার হিন্দুছের মনে আরও আছের বাছান নাই ? কলিকাডা ছাছির। অভ্য যাওয়ার সলে সলে ইহালের অভ্যাচারের সংবাদ আসিতে আরম্ভ করিরাছে। 'বিশ্বান ট্যাভার্ড' সংবাদ দিতেহেন যে ৬ই আগষ্ট পঞ্চাবী পুলিলেরা দিনাকপুর পৌছিৱাছে এবং ছই দিনের যথ্যে ভাষারা সেবানে উপত্রৰ স্কল করিছা দিয়াছে। ইছাদের মধ্যে একজন প্রামীর কোভোৱালীর দারোগার বাড়ীতে গভীর রাজে অন্বিকার প্রবেশ করে এবং বাজীর মেরেদের চীংকারে থানার পুলিসেরা আসিরা উহাকে শ্ৰেপ্তার করে। এই বর্ষরগুলি কলিকাভার যাতা করিবা দিবাৰে তাহা হইতে অনাবাদে বনে কৰা যাব বে পূৰ্ববদে আরও বেশী করির। ইহারা এইরপ করিবে। এই অবহার প্ৰতিকারের একবাত উপার এই নরপভন্তনাকে বেশে পাঠাইরা বেওয়া। লীগ-বেডায়া ভাষা করিবেন কি ?

লীগ-নেভ্ৰম ভা: খোৰের মন্ত্রিসভাকে বোধ বিয়া বলিয়াছেন বে উচ্চায়া মুসল্মান্তের মুজার ছভ চেটা করেন নাই। ইহা সর্কৈব নিখ্যা। বেলিয়াঘাটার গোয়া নৈনিক-বের আচরণে হানীর অধিবালীরা ভূম হইরা ভাহাবের অপনারণ যাবি করিয়াছিলেন এবং ইহাবের মধ্যে কেহ কেহ নারীয় উপর অভ্যাচারের চেটা করিতে নিয়া বরাও পঢ়িয়া- ৰিল। ডা: বোৰ স্থানীয় অধিবাসীদের দাবি মানিতে বাব্য দ্বৰা ইহাদিগকে সৱাইয়া দিয়াছিলেন। কিন্তু পঞাৰী পুলিস কলিকাভা হাড়িয়া চলিয়া যাওয়ার পর লীগ-ৰেভাবের অনুযোৱে গোলবোগের স্থানগুলিতে আবার গোলা লৈভ যোভারেন করা বইরাবে। ডাঃ বোষ এত আছরিকভার সহিত গোলযোগ শানাইবার চেটা করিতেছেন বে ভাঁবাকে নিক সম্প্রবারের অবেকের নিকট অপ্রির হটরাও উঠিতে হটতেতে। কিছ बाका माक्षित्रकीन, मि: चुतावकी अवर बोलामा चाकाम बा তাঁহাদের অসুচরবন্দের আঞ্চরণ ও অভ্যাচার বছ না করিলে গোলবোগ গামানো ডা: গোষের কেন, মাত্র্যমান্তেরই সাব্যের অভীত। তাঁহাদের অসুচরবুক এবনও টেন হইতে যাত্রী টানিয়া নামাইয়া ছবিকাখাত কবিতেছে, ত্রেণ গাম চালাইয়া বালের আরোষীধের হত্যা করিতেছে, বোরা ও এসিড ছ'ভিয়া মাতুৰকে হতাহত করিতেছে। এবমও পার্ক नार्कान, विनिवानुकृत, क्यां कितिया क्षेष्ठे देखानि वह चक्रम হিন্দুর কোট কোট টাকার সম্পত্তি লীগ-পোবিত হওাদিগের भवरम चारह ।

পর্ববদে রক্তারভিত্র বদলে যাহা চলিতেছে ভাষা আরও ৰাৱাপ, ইহাকে চোৱা মাৱ বলিয়া অভিহিত করাই ভাল। মিঃ সুৱাবৰ্কী লে দিন পূৰ্ব্যক বৃথিৱা আসিয়াছেন। ক্লিছ কোন ছানে হিদ্দদের মনে আছা ছাপনের জন্য তিনি মৌৰিক প্রতিশ্রুতির অভিরিক্ত কার্য্যতঃ কিছু করিয়াছেন কি ? বলীয় लापिनक कर्रात्रम क्षिक्रैय अक्क्रै लिखियन मुर्सराम्ब অনেক ভান ভ্ৰমণ করিব! আসিয়াছেন। ইঁছারা কিরিবা আসিয়া যে বিৰুতি দিৱাছেন তাছাতে দেখা বায় যে ছিল্পদেৱ ভীতিপ্রদর্শন পর্যোদ্যমে চলিতেছে। ক্ষেতের পাকা বান ভোর कविका कांग्रेश मध्याध अवादके हमिएएए। किन कांशास्त्र বিশ্বতিতে এমন কৰা দেবিলাম না যে কোন এক ছামেও হাৰীয় বুসলমান সহকারী কর্মচারীরা আভয়ঞ্জ হিমুদের সাহাব্যার্থ অঞ্জন্ত হইরাছেন। সীগ-নেতারা এতদিন নোরা-বালী-ত্রিপুরার ওভা বৃসলমানদের বেভাবে আতার ও প্রতার विश्वाद्यम, ভारायित विकृत्य जामील जिल्लामत विष्ठात बुज्जूनि वानिवा छेरारवव निया नानिर्म रिम् कर्यावीरवव अ হিন্দুৰের বিক্লছে পাণ্টা মামলার বিচারে বে উৎসাহ বেবাইরা-ছেব, বেভাবে হাৰতে আৰম্ভ ওভাষের পরিবারবর্গকে অন্তক্ষপা ৰেবাইয়াছেন ভাষাতে ভবিত্ততেও বে এৱপ ঘটবে না হিন্দ্রা ভাজা বিশ্বাস করিবে কিরুপে গু সেই বিশ্বাস করাইবার ভঙ विकारका अनाकार जबकारी कर्यकारीएक जरनर 😮 कर्यन-প্রায়ণ করিয়া ছলিয়া পথ প্রবর্ণন করিলে তবেই লীগ-বেভায়া ভাঃ ৰোবের মন্ত্রীগভার বিক্লছে নিক্ষিয়ভার অভিযোগ আনিভে পারিতেন। সীন-দেভারা আছও ববি ভাঁহাবের ভরকে বে একাও ও চোহা আক্ষৰ হিন্দুদের প্রতি চলিতেতে ভাহা বৰ ৰা করেৰ, তবে প্রতিক্রিয়া কিরণে গানিবে আবলা ভাষা

বৃতিতে অসমর্থ। নিজেবের লোম সম্পূর্ণ চাকিয়া পরের বোম বেবাইলে প্রতিকার হওরা ছয়হ এই কথা সীগ-নেড্বর্গের বৃত্তিবার সময় কি আজও হয় নাই ?

#### শ্রীষ্ট্রবাসী সরকারী কর্মচারীদের প্রতি স্থাসামের মনোভাব

আসামে বাঙালী এবং ইছাবালীর প্রতি বিরূপ সনোভাব কিছুদিন বাবং বুব ভাগ ভাবেই প্রকাশ,পাইতেছে। শ্রীহুটে প্রতাতির কলাকল প্রকাশিত হইবার পর আসার সরকার শ্রীহুটি পরতাতির কলাকল প্রকাশিত হইবার পর আসার সরকার শ্রীহুটিবাসী সরকারী কর্মচারীদের অপসারিত করিবার চেটা করিতেহেন বলিয়া দৈনিক 'মুগান্তর' পঞ্জিলার এক সংবাদ প্রকাশিত হইরাছে। ভারতীর ইউনিরনের অন্তর্ভুক্ত কোন প্রকাশিত হইরাছে। ভারতীর ইউনিরনের অন্তর্ভুক্ত কোন প্রকাশিত হইরাছে। ভারতীর ইউনিরনের অন্তর্ভুক্ত কোন প্রকাশিত হইরাছে। ভারতীর ইউনিরনের সহারতার বিষয় । বিশেষতঃ পাকিছানের মধ্যে বে সব ভারত-বাসী পঢ়িরা সিরাহেন গ্রাহাদিপকে ভারতীর ইউনিরনের সহারতার বক্ষিত করা আমরা অভিনর অন্যায় বলিরা মনে করি। নিরের সংবাদটির প্রতি উর্ভুজন কংপ্রেস-নেভাদের বৃদ্ধী আরুই হওরা একাছ বাহুনীর এবং ইহার প্রতিকাশ্য অবিলাদে হওরা উচিত।

শ্রীষ্টে গণভোটের কল প্রকাশিত ছইবার পর ছইতে নানারূপ অটল সহভার উত্তব হইবাছে; এই গুতন পরিছিতির ক্রোপ লইবা শ্রীষ্ট্রাসী সরকারী কর্মচারীদের বিদার করিবার কর্ম আনান-সরকার উভোপ হইবাছেন। সম্প্রতি প্রচারিত এক সরকারী সার্ক্লারে বলা হইবাছে বে, শ্রীষ্ট জেলার কিংবা শ্রীষ্ট্রাসীদের নব্য হইতে কোন গুতন কর্মচারী নিরোগ কিংবা একান্থ প্রবাদনীর ক্ষেত্র ব্যতীত অভ কোধারও পূতন ব্যর করা হইবে না। শ্রীষ্ট্র জেলার বাসিন্দা কাহাকেও কোন অহারী বা পাকা সরকারী চাকরীতে নিরোগ করা হইবে না এবং ক্ষমতা হভান্তর না হওরা পর্যন্ত অহারী কর্মচারীদের চাকরী পাকা করার বিষয়ও ছলিত রাবা হইবে। ইহা ছাড়া ভারত সরকার হয়ত আলামকে সাহাব্য দান সম্পর্কে পূর্ব-বিভাগ ও শ্রীষ্ট্র সংক্রান্ত পরিক্রনা আপাততঃ ব্লভ্বী রাবিতে পারেন।

উক্ত লাকুলার হইতে শাইই বুবা বার বে, ঐহইবালী সরকারী কর্মচারীবিগকে বিভাগনের কচ কর্মণক ক্মিডিট পরিকলনাক্রারী এক অভিবান আরক্ত করিবারেন। অহারী কর্মচারীকের বরবাতের নোটপ বিবার ব্যবহা করা হইতেতে। সম্প্র সরকারী বর্ধরবানা ক্রমেই সমীর্ণ প্রাক্রেশিকভা হারা আহর হইরা পভিতেতে বলিরা মনে হইতেতে। অভ বিকে কক্ত অভিক্র কর্মচারীবিগকে পাকিছান ভোনিনিরনের অবীনে ভাল করিকে অভ্যোব করিবার করা লীগ-নেভাবের নিক্টক এক সাকুলার আনিবারে।

''वराणव,

এইবাসী কর্মচারীদের বত অবস্থা ভারতের অন্য काबाद्य एको बाद मा । अनुशैदारमद बर्ग बादना अनिहास ৰে এইট পূৰ্ববদের অভৰ্ত ভ হইলে আসামে সৰকাৰী চাতুৰীৰ ছভাছভি দেব। দিবে এবং কলে আসামের বর্ণহিন্দদের বরাত ৰ্ণালয় বাইবে। কিছ ভাষাদের উপদৃত্তি করা উচিত বে. ভাষারা বিবাধর বেবিভেছে, কারণ এইট চলিয়া গেলে আসাদের দপ্তরবাদার কাল অর্জেক কমিরা যাইবে , কলে বহু দত্তরই বহু ক্টরা বাইবে এবং কর্মচারীদের সংব্যাও ছাস পাইবে। প্ৰতরাং চাকুরীর নুভন ক্ষেত্র স্ট না হওরা পর্যান্ত আগামের বিন্দুদিগকে অপেকা করিতে হইবে। ভবে দুতন অবস্থার মৃত্তন কর্মচারীদের সইরা কাক করা বে কিরুপ অপ্ৰবিধা হইবে ভাষা ব্ৰদলৈ মন্ত্ৰিসভাৱ গ্ৰীষ্ট-বিহোৰী সলভোৱা উপলব্ধি করিতে পারিয়াছেন বলিয়া মনে হইতেছে, কারণ তাঁহার) ব্যক্তিগতভাবে বহু অভিক্র কর্মচারীকে আসামে বাকিতে অনুৱোৰ করিয়াছেন। আপাত: স্বাৰ্থনিছির কন্য এই অপুরোধ করা হইভেছে ব্লিরা উহার কোন মুল্য নাই।

#### উড়িষ্যায় বাঙালী-বিদেষ

ভারতবংশ্ব কথেকট প্রদেশ হইতে বাঙালী-বিংশ্বর সংবাদ আসিতেছে। তথ্য বিহার, উচ্চিত্রা এবং আসাম উল্লেখযোগ্য ইহাদের মধ্যে উচ্চিত্রা সকলকে ছাড়াইয়া বিয়াছে। ১৯৩৮ সাল হইতে উচ্চিত্রার বাঙালীদের প্রতি হর্ত্যবহার চলিতেছে। বাঙালী অবিবাসীরা উচ্চিত্রা গবর্ত্বে নিকট মেযোরাগ্রাম দাখিল করিয়া এবং নামাভাবে ইহার প্রতিকার প্রাথনা করিয়াছেন কিছ কোন কল হয় নাই। কিছু দিন আসে দৈনিক বস্থনতীতে নিয়োছত পঞ্চানি প্রকাশিত হয়:

পুরীতে বর্ডনামে বাঙালী-বিষেষ কিল্পণ তীর হইরাছে, তাহাই করেকট বটনার থারা জানাইতেছি। তারত ববদ বাধীন হইতে চলিয়াছে, তবন একট প্রবেশের লোক জন্য প্রদেশে জত্যাচারিত হইতেছে, তাহা সত্যই হংবের বিষয়। তথু বে নিরভরের উভিয়ারাই বিষেত্রবাধ তীবদ বাঙালী-বিষেত্রবাধ কাষ করে এবং ছুল ও কলেজের হাজরা সকলেই সম্লাভবংশীর। আরও আন্চর্ব্যের বিষয় এই বে, ঘটনাছলে বে সমভ পুলিস কার্ব্যে নির্ভ থাকে, তাহারা ইহাতে কোনম্লশ বাধার কঠি করে না এবং হুভত্যারীকের পরোক্ষতাবেই নাহার্য করে। অভ্যাচারিত ব্যক্তিরা নেই বব প্রিক্তাবেই নাহার্য করে। অভ্যাচারিত ব্যক্তিরা নেই বব প্রাক্তাবেই নাহার্য করে। অভ্যাচারিত ব্যক্তিরা নেই বব প্রাক্তাবেই হুট্তে কোন রক্তর সাহার্য্য পার না, তহুপরি ভাহারিগকে পুলিস বলে, "কেন তোমরা এলেশে আসিরাহ ?" এই বিষেত্রভাবের কলে পুরী বর্ডমানে বাঙালীবের, বিশেষতঃ বাঙালী বেরেদের, পক্তে বিপজ্যক হান হইরা ইড়াইতেরে। প্রতি

বংসরই তীর্ণের কল অথবা যাত্য পরিবর্তনের ক্ষা বহু বাঙালী তথার বার। ইহা ব্যতীত বাংলাদেশের দাদার পরও বহু বাঙালী তথার গিয়াহে। কিছ সেখানকার লোক বোটেই চার না বে, বাঙালীরা সেখানে হার। সমাভবংশীর খুল ও কলেকের হাজরা বেভাবে বাঙালী বেরেদের প্রতি ব্যবহার আমত করিরাহে, তাহা অভ্যক্ত করচ পর্যারে আসিরা শৌহিরাহে।

'রেশনে'র ক্ৰাও উল্লেখযোগ্য। মৃত্যন বাঙালী, বাহারা সেৰাদে যাত্ৰ ভাছাত্ৰা ভ ration পাৰই না, ভাছা ছাড়া বে সমস্ত বাঙালী আট-দশ মাস সেবানে আছে, ভাহাদেরও ration card সংগ্ৰহ করিতে বিশেষ বেগ পাইতে হয় ৷ ration office-এ কাছাকে কাছাকেও ছই-ভিন নাস বোৱা-বুরির পর card দেওরা হয়--ইহা ছাড়া বচ লোককে একে-বাৱেই দেওয়া হয় না। বৰ্তমানে পুৰীতে কোন বাঙালী ভবি অৰবা বাড়ী ক্ৰয় কৰিছে পাৱে না। যদি কোন বাঙালী ভৰি वा वाकी विकास कडिएक हाएक खरव छान्। domiciled Bengali অথবা উভিয়াদের বাতীত অভ কাহারও নিক্ট বিক্রম করিতে পারিবে না। বৰ্তমানে গেখানে বাঙালী দেবিতেই ভাষারা বলে "মুসলমানের মার বাইয়া পলাইয়া আসিয়াছে।" রাভায় অধবা বাজারে যদি কোন বাঙালীয় সংশ সেধানকার কাহারও একটু খগড়া হইল, তথনি সকলে এক ঘটরা বাঙালী ভগ্রলোককে প্রহার করিতে আরম্ভ করে। 'শভা বঙালী' সংবাধন ছাড়া ভাষারা কথাই বলে না।"

এত দিন আমাদের জাতীর গবর্থেন্ট ছিল না, এজড় ভারতের অনেক খানেই বাঙালীরা অভ্যাচারিত হইয়াছে; কারণ প্রতিকারের কোন উপার ছিল না। কিন্তু এখনও যদি বাঙালীদের প্রতি অভ্যাচার ভারতের কোন প্রদেশে চলিতে বাকে এবং এ বিষয়ে যদি কোন প্রতিকারের উপার অবলহম করা না হর, তাহা হইলে ভাহা অভ্যন্ত হুংবের কারণ হইবে।

এই পত্রধানি প্রকাশিত হওয়ার পর কলিকাতার উহার প্রতিজ্ঞিয়:-য়য়প কোন কোন উছিলা প্রবাত হর কিছ তংক্ষণাং বাঙালী নেতাহের হডকেপের কলে এই প্রতিজ্ঞিয়া ব্যাপক হইতে পারে নাই। ইহার পর উছিয়ার প্রবান মন্ত্রী প্রীয়ুক্ত হরেয়ফ বহুতাব আখাল দেন বে উছিয়ার বাঙালীকের প্রতি র্ব্ব্যবহার বাহাতে বছ হর তার ব্যবহা তিনি অবলয়ন করিবেন প্রবং পূলিসকে তরমুলারে নির্কেশ দিবেন। এই কাম কেন তিনি এত দিন করেন নাই প্রধানে সে প্রার্থ কহু তোলেন নাই এই কারণে বে এই অপ্রীতিক্য অবহার আন্ত অবলান সকলেই কারণা করিয়াছিলেন। কিছ প্রবাত হৈ সব চিটিপত্র কটক, পূরী প্রভৃতি হান হইতে আসিতেহে তাহাতে কো বার উছিয়াদের র্ব্য্যহার ত ক্রেই নাই বয়ং বাঙালী-দের বারী চড়াও হইয়া উপত্রব ক্রাও প্রবার ছফ্ল হইয়াছে।

প্ৰত্যেক ক্ৰিয়ায় একটা বাভাবিক প্ৰতিক্ৰিয়া থাকিবেই। এভবিৰে হাঠণতি কুপালবীকেও এই বভাব-সভ্য বীকায় করিয়া বলিতে হইয়াছে যে এক ছাবে উপত্তব চলিলে অপর যানে প্রতিক্রিয়া দেখা দিবেই, ক্রিয়া বছ না করিয়া প্রতিক্রিয়া নংবত করা একরূপ অসপ্তব । সাম্প্রদারিক হানাহানির সদে এবার বলি প্রাদেশিক নারামারিও পুরু হইয়া বায় তবে তার চেয়ে কলম আর কিছু হইডে পারে না। কিছ ইহা প্রব সত্য বে অভ্যাচার বেখানে প্রথমে আরম্ভ হইবে, প্রতিক্রিয়ার বারিছও সেখানকার কর্তৃপক্ষকেই বহন ক্রিতে হইবে।

বাংলার উভিরাদের কোন কিছু হইলেই উভিত। গব-থেঁকের প্রতিনিধি এবানে আসেন। কিছু বাঙালীদের উপর উভিতার কি ঘটতেছে তাহার তগভের জন্য বাংলা-সরকারের কোন প্রতিনিধি সেধানে বান নাই। আরাদের বনে হর অবিলকে বাংলা-সরকারের একজন দক্ষ প্রতিনিধি উভিতার পাঠাইরা সেধানকার বাঙালীদের প্রতি উৎপীভনের পূর্ণ পরিচর অবলত হওয়া উচিত এবং তদগুসারে কাক্ষ বাহাতে হর তাহাও সরকার পক্ষ হইতেই দেখা অবঞ্জ কর্তব্য।

#### শ্বাধীন ভারতের জাতীয় পতাকা

ভারভীয় গণপরিষদে সিছাত্ত করা ছইয়াছে যে ভারতের কাতীয় পভাকা গৈরিক, খেত ও সবুক এই তিবৰ্ণ রঞ্জিত ছইবে। পভাকার মধায়লে অর্থাং খেত অংশের মধায়লে থাকিবে নীলবৰ্ণ অংশাক্ষক্ত।

প্ৰিত নেহর প্তাকাট গ্ৰপ্ৰিষ্টে উপস্থিত ক্ষেন।
প্তাকাট উপস্থিত ক্ষার সময় পরিষ্টের সংস্থান প্রবল উংসাহতরে ''মহালা গাড়ী কি ক্ষ'' ধ্বনি করিতে বাকেন। হিন্দু, মুসলমান, কৈন, বৌদ্ধ, উট্টান নির্কিলেহে গ্ৰপ্রিষ্টের সমস্থ সদ্ধ অন্ধ মিনিটকাল হাজাইয়া বাকিয়া এই প্তাকাকে ভারতের জাতীয় প্রাকারণে গ্রহণ ক্যার সম্বতি জানান।

পরিধনককে ছুইট পতাকা উত্তোপন করা হয়। তাহার একট জাতীর মিউজিরনে রাধার জন্য পশ্চিত নেহরু প্রজাব করিলে তাহা ধুহীত হয়। গণপরিষদ-গৃহে জাতীর পতাকা উপস্থিত করিয়া পণ্ডিত নেহরু জাবেগপূর্ণ স্বরে বলেন:

"আমি এই পভাকা আপনাদের নিকট উপন্থিত করিতে গৌরববোৰ করিতেছি। আমি আশা করি এবং বিযাস করি বে, এই পভাকা কোনত সামাজ্যের পভাকা হইবে না, কোনত সামাজ্যবাদের প্রতীক হইবে না, একের উপর অপরের প্রভুত্তর নিশান হইবে না—এই পভাকা হইবে খানীনভার প্রতীক, তর্ আমাদের খানীনভা নহে, পরস্থ খাহারা এই পভাকা দেবিবে ভাহাদের সকলের খানীনভার প্রতীক। আমি আশা করি এই পভাকা দ্ব দ্ব দেশে বাইবে—বেধানে ভারতীররা থাকিবে, বেধানে ভারতের দ্ভরা থাকিবে সেধানেই এই পভাকা বাইবে; তর্ ভাহাই নহে ভারতীর আহাজসমূহ এই পভাকা উচ্চাইরা দ্বদ্বান্থ মহাসাগর অভিক্রম করিবা বেধানেই বাইবে সেধানেই এই পভাকা দেই সরস্থ ছানের লোকের জন্য

খাৰীনভার বানী, সংব্যার বানী, ভারতবর্ধ বে পৃথিবীর সকল খেশের মিত্র ক্ষতে চাকে এই বানী, বাহারা খাৰীনভা হইতে বঞ্চিত ভারতবর্ধ ভাহাদিগকে গাহার্য করিতে প্রস্তুত এই আশার বানী বহন করিয়া লইবা যাইবে।

ৰুস্পিম পীগ ধপের বেভা চৌধুরী থালিকুজনান বলেন, "ভারতের প্রত্যেক মুস্পমানই এই পভাকার সন্ধান করিবে এবং পভাকা উত্তোপন করিবা গর্কবোধ করিবে। ভারতের অহুগত নাগরিক হিসাবে সক্লেরই এই পভাকার বর্ব্যাদা রহি করা কর্তব্য।" মুস্পিম পীগদপের সন্ধৃতিক্রমে গৃহীত এই পভাকাকে জাতীয় পভাকা বলিয়া খীকার করিবার ক্ষ বিঃ ক্যান্ত মুস্পমান সপ্রবায়কে নির্দেশ ধিরাত্বন।

পাকিভানের রাব্রীর পভাকা কি হইবে ভাছা এবনও
হির হয় নাই। যত দ্র সংবাদ পাওরা বাইভেত্তে ভাছাতে
মনে হয় ধে ভাহাদের পভাক। মুসলিম লীন পভাকারই অল্পরপ
হইবে এবং উহাতে ইসলামের প্রভীক্ বিভীরার চাঁদ বাকিবে।
ভারতীর পভাকা গণপরিষদের মুসলমান প্রভিনিবিদের সন্মৃতিক্রবে
কাভীর পভাকারপেই গৃহীত হইরাছে। পাকিছান গণপরিষদের
হিন্দু ও শিব প্রভিনিবিদের বিনা সন্মৃতিতে পাকিছান পভাকা
গৃহীত হইলে ভাহা অভার হইবে এবং হিন্দু ও শিবদের উপর
ইহা লইয়া ক্রবহন্তি চালাইতে গেলে বুসলিম লীন বিশ্ববাদীর
সহায়ভূতি পাইবেন না।

#### শীমান্তে গণভোটের ফলাফল

শীমান্তে গণভোটের ফলাকল প্রকাশিত হইরাছে। ভোটদাতাদের শতকরা ৫০'৪১ জন পাকিছানে বোগদানের পক্ষে
ভোট দিয়াছে। ভোটদাতাদের মধ্যে ২,৮১,২৪৪ জন পাকিছামের পক্ষে এবং ২,৮৭৪ জন ভারতবর্ধের পক্ষে ভোট
দিয়াছে। মোট ভোটদাতাদের মধ্যে ২,৬০,৬৮০ জন ভোটদানে বিরত ধিল।

গীমান্তের পণভোট সম্পর্কে বঙ্গাট ভবন হইতে নিরোক্ত বিজ্ঞান্তি প্রকাশিত হইয়াছে :—

- ()) शांकिशात्नत शांक देवन (कांके--- २,४०,२४४
- (२) जात्रज्यस्य भएक देव (जार्डे- २,४१४
- (৩) ক্লাক্ল:--পাকিছানের পক্ষে ভোটাবিক্য---২,৮৬,৩৭০
- ( ৪ ) মোট ভোটদাভাদের মব্যে বৈধ ভোট--- শতকর। ৫০°৯৯
  - (৫) পত নির্বাচনের সময়কার বৈধ ভোট---৩,৭৫,৯৮৯
  - (৬) প্ৰভোটে যোট ভোটদাভাৱ সংখ্যা--- ৫,৭২,৭১৮

এই হিসাবে দেখা যার যে ভোটনাভাদের শতকরা ৫০'৪৯ কন পাকিছানের পক্ষে ভোট দিয়াছে। মোট ভোটনাভাদের মধ্যে ২,৬০,৫৫৪ কন ভোটনানে বিরভ ছিল। অর্সল্যান ভোটনাভাদের সংখ্যা হইভেছে ৮৪৭৮১।

তরা ভূবের বোৰণা অহুবারী সীবান্ত প্রবেশ ভারতীয় যুক্ত-বাষ্ট্রেৰ অভভু 🕶 বাঞ্চিবে, না পাকিছানে বোগ দিবে, সেই সম্পর্কে সিহাভের কর গণভোষ্ঠ সধর। হয়। ৬ই জুলাই হইতে ১৭ই জুলাই পৰ্যন্ত প্ৰবেশের বিভিন্ন জেলার এই ভোট লওয়া হয়। কংগ্ৰেস গণভোট বৰ্জন করে। সীমান্ত কংগ্ৰেসের দাবী ছিল 'পাঠানীয়ান' বনাম 'পাকিয়ান' প্ৰয়েৱ প্ৰভোট লওৱা কিছ 'হিন্দুছান' বৰাম 'পাকিছান' এনে ভোটের সিছাত হওয়াতেই কংগ্রেস উহাতে বোগদান করে নাই। সীনের পক ঘটতেই এক ভৱকা ভোটের প্রচারকার্যা চলিতে থাকে। ভোটের কলাকল পাকিখানের পক্ষে কইলেও সীরাছের কংবেদ-দেভারা এই গণভোটকে একটা প্রহুদ্ধ বলিয়াই আব্যা দিয়াছেন। এই ভোটের ব্যাপারে স্থানীর কর্ত্তপক ৰোলাবুলি ভাবেই ৰুগলিম লীগের সহিত সহযোগিতা করিয়া-ছেন বলিয়াও কংবোদ-নেভারা অভিবোদ আনিয়াছেন এবং ইহাও ৰলিয়াহেন যে ভোটদান ব্যাপায়ে অনেক চালাকি চলিয়াছিল।

#### অস্বাভাবিক মূল্য বৃদ্ধি

विकार्स बार्टिक वारमिक मार्वावन मधाव केन बार्टिक পৰৰ্ণৱ সাৱ চিভামন দেশমুৰ বলেন যে, ভারতীয় মুক্তৱাই ও **लाकिशास्त्र वर्षा गर्कालय वीवारमा वा एक्श ल्वा वर्ष** ज्ञानक: यक विम नवास देखा (कामिनियम चर्गमिक विक হইতে ধরং-সম্পূর্ণ না হইরা উঠে তত দিন ভাছারা পরস্থারের সহিত একটা সাময়িক চুক্তিতে আবহ স্ইতে পারে। এই इक्टिन करन वर्षमार्थ देखन जनकारन बर्गा रव वर्गमिकिक সৰ্ভ আছে, ভোষিনিৰ্ম প্ৰভিটিভ হইবার পরও মৃতন সরকার ছুইটর মধ্যে জন্মরণ সম্পর্ক বহাল থাকিবে। ভবে একবা ভুলিলে চলিবে না যে, ভবু অৰ্নৈভিক পুনৰ্গঠনের সমভাই নহে, ছুইট ভোষিনিবনের মধ্যে আর্থিক পরস্বরাপেকিভার **७७७ वह बृज्य प्रयाद मधुषेन स्टेट्ड स्टेट्व । अवश्र (ब्राय्ट्र** छैर्शास्य ७ विभिन्न-बावस् अवस्थादि क्या स्ट्रेशिस्य (व. १७ अक मण वरमद यावर देश्यावत्वद चिम्डे देशकत्व पृष्टि, अब क ভূমিকে একট মাত্র অবও রাষ্ট্রের অভভূতি মনে করা বইরাখিল। वर्षमान (वयविकारमत भव अमन्मर्क वर्म भविमार्ग भूमर्गर्डरमव প্রয়োজন হইবে। কিছ ইহার ফলে আমরা সম্রান্ত বে ব্যাপক অৰ্থনৈতিত পৰিকল্প। স্থয়া অঞ্জন্ত ভ্ৰয়াহিলাৰ ভাষাতে অভ্যন্ত বিশ্ব শ্বটবে।

নার চিতানন দেশর্থ অতঃশর বলেন, রাবনৈতিক বিক হুইতে দেশ-বিভাগ হুইলেও উভর রাট্রেরই কর্তব্য হওরা উচিত ভারতবর্ষ ও পাকিছানের অর্থনৈতিক অর্থন্য বজার রাবা এবং ইহা পারস্থানিক চুক্তির সাহাব্যেই করা বাইতে পারে। সার বেশর্থ বলেন যে, গত এক বংসত্তে নিভাব্যবহার্য পণাঞ্চনির মূল্য বৃদ্ধি পাইরাছে।

ৰ্ল্য-মানের তালিকা লক্য করিলে ধেবা বাইবে ব্রের বছরগুলিতে বে ব্ল্য বৃত্তি হইরাছে তদপেকা অনেক বেশী বৃত্তি হইরাছে গত একট বংসরে। অনসাবারণের বলসার্থে ব্ল্য-মান হির রাবার করু ব্যালয়র উপরুক্ত ব্যবস্থা অবলবন করিতে হইবে। বর্ত্তরানের বৃত্যা এত অবিক যে, ইহা অপেকা কোনও অব্যের বৃত্যাই সাবাত পরিবাপও বৃত্তি পাইতে না পারে তাহা ধেখিতে হইবে। নিরন্ত্রণ-ব্যবস্থা সম্পর্কে সার ধেশর্ব বলেন বে, বনিও কভকগুলি অব্যার উপর নিরন্ত্রণ-ব্যবহা বহাল থাকার অনসাবারণ ও সরকার উতরেই বিরক্ত হইতেছেন, তব্ধ নিরন্ত্রণ একেবারে ভূলিয়া বেওবা বৃত্তিব্রুক্ত হইবে না। করেকট অভিপ্রয়োজনীর অব্যার উপর অবক্তই নিরন্ত্রণ চাল্ রাখিতে হইবে যাহাতে এই নিয়ন্ত্রণকে কেছ কাকি না দিতে পারে সেক্ত লাদন্যর্বকে অভ্যন্ত কঠোরভাবে কাক চালাইতে হইবে। দেশ-বিভাগের ক্ষেও ইহা অভ্যন্ত কর্মরী হইরাছে।

ৰুদ্ধের পর খাল্য, বঞ্চ এবং নিত্যপ্রবোজনীয় স্বব্যাদির মুল্য বৃদ্ধির কোন অর্থনৈতিক কারণ আছে বলিয়া আমরা বিশ্বাস করি না। যে গৈছদলের প্রয়োজন মিটাইভে পিয়া দেশবাদীর বভ বরাদ বাভ ও বথের টানাটানি হইত ভাছাদের অধিকাংশই চলির। বিয়াছে। ইছার পর মাছ মাংস ভিৰ ভৱকাৰি প্ৰভতিৰ বাম বাভিবাৰ কোন কাৰণ নাই অৰচ গভ এক বংগারে ইয়াদের প্রভাকটির দান আনেক বাভিয়া বিরাছে। ভালের দাম প্রার বিঙ্গ হইরাছে। কাপড় কুটপাথে बन्द क्विश्वानात्व निक्के दन्ते वाद्य क्वि क्वित श्विमात्व পাওয়া যাইভেছে অবচ রেশনের লোকানে সহকে পাওয়া যার না। লবৰ, সরিবার ডেল, নারিকেল তেল প্রভৃতির কর্ট্রোল তুলিরা দেওবার পর ঐগলি সহক্ষতা হইরাছে, রেশনের আমলে উহাদের যে দান হিল কণ্টোল উঠিয়া যাওয়ার পর ভগপেকা অনেক কমিয়াছে। আমরা পূর্বেও বলিয়াহি যে, কট্টোল বিভাগ বেৰানে হুৰ্মীভিতে অৰ্কন্নিভ সেৰানে সহল কড়াকড়ি ক্রিলেও উক্তের সিদ্ধ হইবে না। কড়াকড়ি যত ধাড়িৰে চোৱাকাৱবারীদের লাভ এবং দেশবাসীর লাগুনা क्षत्रनः त्नरे प्रशास्त्ररे वाणिष्ठ वानित्व। त्रानव वानित्व बर्धानी बदक्वादव वय कविश क्रमणः करकृति पूलिश দেওৱা এবং চোৱাকারবারীদের আদর্শ শান্তিবিধান ৰুল্যহ্রাদের সর্কোংক্ট উপায়। কঞ্চোল বর্তবাদ আকারে ৰভাৱ ৰাকিলে চোৱাকায়বার কিছুতেই বৰ হইতে शांदर या ।

# আইরিয়ানা ও আর্য

## ঞ্জীননীমাধব চৌধুরী

আবেন্ডিক ও ইরাণীয় আর্য এবং বৈদিক আর্থ সম্বন্ধে পূর্বের করেকটি প্রবন্ধে বিস্তৃতভাবে বে সকল আলোচনা করা হইয়াছে বর্তমান প্রবন্ধে ভাহার মধ্যে অধিকতর গুরুত্বপূর্ণ কয়েকটি বিষয় সম্বন্ধ আরও কিছু বলিয়া এই প্রসন্ধ শেষ করা হইবে। আলা করা যায়, এই আলোচনার ফলে বৈদিক আর্য ও আবেন্ডার আরিয়াও পদের প্রকৃত অর্থ সম্বন্ধে বে সকল তথ্য উদ্যাটিত হইবে তাহা আর্য বনাম অনার্য বিতর্কের একট। মীমাংসায় আসিবার সহায়তা করিবে।

এই প্রসঙ্গে ইউরোপীয় 'মার্যবাদের উৎপত্তির পটভূমি मश्रद्ध এकটा পরিষ্কার ধারণা করিয়া লওয়া প্রয়োজন। কোন সময়ে ও কি ভাবে ভাষা-বিজ্ঞানীদিগের গবেষণার দলে প্ৰাপ্ত কতকগুলি তথা লইয়া একটি আমৰ্শ. সম্ভাবিত আৰ্য জাতির সৃষ্টি হইল, এই সম্ভাবিত আৰ্য জাতি ইন্দো-इंडेरवाशीय ७ वेटमा-এवियान नार्य इंडे डार्ल जान इंडेया গেল সে কথা পূর্বে বলা হইয়াছে। ভাষা-বিজ্ঞানীর সহায়তা করিবার জন্ম নুতত্ত্ব-বিজ্ঞানী কথন আস্বে নামিলেন তাহাও বলা হইয়াছে। পণ্ডিতসমান্ত্রের এই সকল গবেষণার ছুইটি দিক আছে, একটি বৈজ্ঞানিক দিক ও ষ্টাট বাবহারিক দিক। বৈজ্ঞানিক দিক সম্বন্ধে বলা ষায় যে নৃজন নৃতন ডধ্যের আবিকার বৈজ্ঞানিক গবেষণায় ন্তন প্রাণ সঞ্চার করিবে এবং লোকের ঔৎস্থক্য নই না হওয়া পর্যন্ত এই জাভীয় গবেষণা চলিবে। আপত্তি এই গবেষণায় নহে, ভাহাদের আপত্তি অসমাপ্ত গবেষণার অভিসন্ধিমূলক প্রয়োগ সম্বন্ধে। বৈজ্ঞানিক গবেষণার এই প্রকার বাবহারিক প্রয়োগের নেশায় অন্তের কথা দুৱে খাকুক সভ্যান্সন্থিংখ প্রকৃত বৈজ্ঞানিকও ব্দভিক্ত হইয়াছেন, এ দশ্য বিৱল নহে। বিষয়টি একট খুলিয়া বলা আবশ্রক।

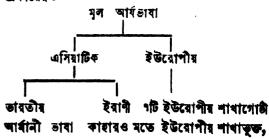
সংস্কৃত ভাষা ও সাহিত্যের সঙ্গে পরিচয়ের ফরে ইউরোপে ভাষা-বিজ্ঞানের (Comparative philology) গ্রেষণার স্ক্রপাত হংগ অষ্টাদশ শতাব্দীর শেষভাগে। প্রাসিক্ষ ইংরেক পণ্ডিত সার উইলিয়ম জ্ঞান্স আবিদার কবি-লেন যে সংস্কৃতের স'ইত গ্রীক ও লাটন ভাষার যে ঘনিষ্ঠ সাদৃত্য বর্তনান ভাষা আকস্মিক ব্যাপার হইতে পারে না। ("....-bearing to both of them a stronger affinity, both in the roots of verbs and in the forms of grammar which could not have been produced by accident....")

তিনি এই সিদ্ধান্তে উপনীত হইলেন বে, সংস্কৃত, গ্রীক

ও লাটিন এক মূল ভাষা হইতে উদ্ভূত। (',·····no philologer could examine all the three without believing them to have sprung from some common source which, perhaps, no longer exists.") তাঁহার আরও ধারণা হইল, বে মুলভাষা হইভে সংস্কৃত উদ্ভুত হইৰাছে দেই মূলভাষা হইতে পথিক এবং কেণ্টিকও উদ্ভুত হইয়াছে। ইহার পরে common source বা মূলভাষা সম্বন্ধ অমুসন্ধান আরম্ভ হইল। ভাষ;-বি**জ্ঞানের** প্রতিষ্ঠাতা বপ (Bopp) এবং Historical Grammar-এব ম্রষ্ট। গ্রিম এ সমন্দ্রে গবেষণার বৈজ্ঞানিক ভিত্তি স্বপ্রতিষ্ঠিত ক্রিলেন। অনুমিত মূলভাষা পটের (Pott) হাতে ইন্দো– জারমেনিক নাম পাইয়া পল্লবিত হুইয়া উঠিল। পটের গ্রন্থ প্রকাশিত হইবার পরে ( ১৮৩৩-৩৬) জার্মেনীতে বৈদিক ও আবেন্ডিক ভাষাতত্ত্বে গবেষণার ঞায়ায় আদিল। জার্মেনী ও ক্লান্সে এবং অৱতা বহু খ্যাতনামা পণ্ডিত আপনাদিগের গবেষণার কল প্রকাশ করিতে আরম্ভ করিলেন। বৈদিক গ্ৰেব্ৰা ন্যকে Rosen, Roth, Bensey, Kuhn, Aufrecht-এর নাম পণ্ডিভসমাব্দে স্বপ্রসিদ্ধ। ভারপর প্রকাশিত হইল অগাষ্ট শ্লেইদারের (August Schleicher) বিখ্যাত গ্রন্থ (১৮৬১)। শ্লেইসার গবেষণা করিয়া মূল ভাষার একটা কাঠামে৷ (reconstruction of prehistoric parent speech) খাড়া করিয়া দিলেন।

এই মূলভাষা এবং তাহা হইতে যে দকল ইউরোপীয় ও এশিয়াটিক ভাষার উদ্ভব হইয়াছে বলিয়া দাবি করা হইয়াছে ভাহাদের নামকরণ হইয়াছে আর্ম বা ইন্দো-ইউরোপীয়ান বা ইন্দো-আর্মেনিক ভাষাগোঞ্জী। Aryan নামটি ইংলকে বেশী প্রচলিত, বিভীয় নামটি ফরাসী ও আমেরিকার পণ্ডিত মহলে ও তৃতীয় নামটি জার্মেনীতে প্রচলিত।

বপ্ এবং তাঁহার অহুগামীদিগের গবেষণার ফলে পণ্ডিতসমাজে এই মত স্প্রতিষ্টিত হইয়াছে যে একটি আদি আর্থ মুগভাষা ছিল, তাহা ২ইতে প্রবর্তীকালে কতকগুলি ভাষাগোটীর উৎপত্তি ইইয়াছে। ইংগার ঠিকুলি এই প্রকারের:—



কাহারও মতে ইহার উৎপত্তি এশিরাটিক ও ইউরোপীর শাধার মিশ্রণে। মূলভাবা হইতে উন্তুত ভাবাগোঞ্জীর সংখ্যা দশটি বলিয়া নির্ণীত হইয়াছে। কি ভাবে, কথন এই গোঞ্জীপ্তলি মূলভাবা হইতে বিচ্ছিন্ন চর তাহা জানিবার উপায় নাই। কিন্তু এই বাধা অলক্ষ্য বলিয়া মনে হইলেও কেহ কেহ নিক্রংগাহ হন নাই।

মুলভাষ। বধন একটি ছিল তখন এই ভাষা ভাষী ভাতিও একটি অবস্ত ছিল (the great original Aryan tribe)। মূল ভাষাকে বাঁহারা আর্থ নাম দিয়াছেন ভাঁহাদেও মত এই বে উহা হইতে উদ্ভূত সবঙলি ভাষা যাহারা ব্যবহার করে ভাহারা সকলে আর্যবংশধর। ইহার পর আমাদের আর্ব পর্ব-পুরুষপূপের ( "Our Aryan forefathers") আদি বাসভূমি কোথায় ছিল, কি ভাবে, কখন তাঁহারা বিভিন্ন দলে বিভক্ত হটয়া ছডাটয়া পড়েন সে সহত্তে গবেষণা আরম্ভ হটল। Philology কেমন করিয়া Ethnologyৰ পৰে পা বাড়াইল ভাছা মনোধোপ সহকারে नका করিছে হইবে। এই ভাবে ভাষা-বিজ্ঞানের গবেষণা হইতে জাতি সৃষ্টি হইল। বে সকল বাধাবিদ্ধ যথাৰ্থ বৈজ্ঞানিক্মনা ভাষা-বিজ্ঞানীকে নিবন্ধ কবিয়া বাখিত, উৎসাহী, একাধারে ফিলোলজিট व এখনোनिक्रहेमिशक जाहा ঠেकाই क भारत नाहै। আৰ্বভাৰাগোটী হইতে আৰ্ব পূৰ্বপুক্ষ, ক্ৰমে Aryan race, Aryan nationality ("Europe may boast of being the mother of Aryan nationality"-Schrader-44 মত ত্ৰষ্টব্য ), Aryan brotherhood প্ৰভৃতিৰ উৎপত্তি হইয়াছে। আর্বপূর্বপুরুষপূণের ধর্ম, সমাজব্যবস্থা ও অক্তাক্ত रेविनिष्ठाममूह व्याविकात कतिवात छोडा इरेशाह्य छ इहेर्डिह

পশ্তিত Schrader-এর কথা উল্লেখ করা হইরাছে।
আর্বপূর্বদ্বের আদি বাসভূমি আর্ববাদী রুরোপীর
গ্রেবকগণ হুই হাতে টানিরা উত্তর-পশ্চিম এশিরা হুইতে
কশিরার সীমানার মধ্যে কেলিয়াছেন, কেহ কেছ বিশ্টিক
আঞ্চলে লইরা গিয়াছেন। এক দল পশ্তিতের এই প্রকার
উদ্যম হইতে রাজনৈতিক আর্থবাদের উৎপত্তি হইয়াছে।
উপরে বৈজ্ঞানিক প্রেবণার অভিগত্তিস্থাল আর্থবাদ ইহার
প্রাধ্যের কথা বলা হইয়াছে। পলিটিক্যাল আর্থবাদ ইহার
দৃষ্টান্ত। ইহার চরম বিকাশ শ্রটয়াছে আর্থেনীতে। এই
ইতিহাস স্থারিচিত।

দেখা বাইডেছে বে উনবিংশ শতাঝার মধ্যভাগে ভাষা-বিজ্ঞানের প্রেবণা হইডে মূল ভাষাভাষী একটি জাভির অভিত্ব কল্পনা করা হইয়ছে। এই কল্পিভ জাভির সহিড অভ্যন্ত ব্য সম্পর্কিড বলিয়া বাহাদিগকে মনে করা হয় ( Indians and Iranians ) ভাষারা একটি বিশিষ্ট নামে আপনাদিগের পরিচয় দিত। এ সম্বন্ধে ভাহারের দ্বিলদন্তাবেক আছে, আর কাহারও ভাহা নাই। এই নামটি
ইইভেছে আর্ম। এই বিশিষ্ট নামের উৎপত্তির একটা
ইভিচান পাওয়া বায়. ইহার জৌগোলিক একটা অর্থ আছে।
এই ভৌগোলিক অর্থদ্যোতক নামটি ভাহারাই বহন >রিবার
আধ্বারী বায়ারা এই নাম ব্যবহারের সময়ে নির্দিষ্ট
ভৌগোলিক অঞ্চলটিভে বাস করিভ, অথবা বায়ারা ভাহাদের
বংশধর। কিন্তু এ সকল কথা বিবেচনা করিবার অবকাশ
কোখার ৮ ভাই দেখা বায় যে একটি নিদিষ্ট ভৌগোলিক
আঞ্চলে উপনিবিট ভাভির ও সেই ভৌগোলিক অঞ্চলের
সহিভ সম্বন্ধবাচক আর্ম নামটি ঐ করিভ আভির সম্বন্ধে
প্রযুক্ত হইল। ভার পরের ব্যাপার উল্লেখ করা হইয়াছে।
ইউরোপীর আর্মবাদের উৎপত্তির পটভূমি সংক্ষেপে এইরপ।

দেখা ষাইতেছে যে ভাষা-বিজ্ঞানের গবেষণা হইছে একটি আভির স্পষ্ট হইছাছে, এই জাভিকে আবার এমন একটি নাম দেওয়া হইয়াছে বাহা এই অমুমিত জাভিক বাসভূমি ইত্যাদি সহছে ইউরোপীয় গবেষণা অমুসারে কোন মতে ভাহাকে দেওয়া চলে না। এই ব্যাপারটি ইদি আপত্তিকর মনে করা যায় ভাহা হইলে ইউরোপীয় আর্যবাদের যে ব্যবহারিক প্রয়োগ, আর্থাৎ রাজনৈতিক প্তন নৃতন মতবাদের ভিত্তি হিসাবে আর্মবাদের যে প্রয়োগ দেখা যায় ভাহা আরও আপত্তিকর মনে হইবে।

ভাষা-বিজ্ঞানের গবেষণা হইতে জাতি স্টির ইহাই
একমাত্র নমুনা নহে। ভারতবর্বের মধ্য হইতে জার একটি
নমুনা দেওয়া বায়। ভাষা-বিজ্ঞানী এই ভাবে প্রাবিদিয়ান
(Dravidian) জাতির স্টি করিয়াছেন, ভায়ার সহিত বোগ
দিয়াছেন নৃতত্ব-বিজ্ঞানী। ভায়াদের উদ্যম এখানে নিরস্ত
হয় নাই। এই ভাবে স্ট প্রাবিড় জাতিকে ভারতবর্বের আর্ব
আক্রমণকারীদিগের প্রতিপক রূপে দাড় করাইয়া ভায়ভানের
নিক্তির মতবাদের নীরস অন্থিত গইয়া ভারতীয় আর্ম
জাতি ও প্রাবিড় জাতির উৎসাহা সমর্থকদিগকে ভায়ারা
আপনাদিগের বাক্চাতুর্ব প্রকাশ করিবার অবাধ স্থবোগ
স্তিই করিয়া দিয়াছেন।

উনবিংশ শতাধীর শেবভাগে ভারতবর্ধে রপ্তানীর বস্তু বিশেবভাবে প্রস্তুত ইউরোপীর আর্ববাদ বধন একেশে প্রথম প্রচারিত হইন, কৃষ্ণকার ভারতার হিন্দুগণ সবিশ্বর পূলকে আবিদার করিল বে ভাহারা ভাহাদের বিভেত'। আভিব সগোজীর। অটাদশ শভাবীতে বেচ্ছার ভাঁহাশেরা গোইশুখল ধারণ করিরাছিলেন; উনবিংশ শভাবীর Aryan brotherhood-এর বভবার এই শৃখক্ষের কভের উপর স্থিও প্রদেশ লেপন করিল। ভার শক্ষ হইছে

ভারতীয় নৃতত্ত্ব-বিজ্ঞানী, বৈদেশিক নৃতত্ত্ব-বিজ্ঞানীর পূৰ্চ-পোষকভার প্রচার করিভেছেন ভারতীয় হিন্দুর নাক, মুধ, মাধা, সবই ইউরোপীয় আর্বের, ওরু ছকের রুঞ্ছটুকু আসি-ষাছে climatic conditions হইতে। ইহা বাদ বা শভিবন্ধন নহে, প্রকৃত ঘটনা। এই উদ্দেশ্তসাধনের জন্ত একটি পূর্ণান্ধ মন্তবাদ প্রচারিত হইয়াছে, ভাহার নাম প্রোটো-নর্ডিক থিওরী। বর্তমানে আর্থবাদের রাজনৈতিক দিক কাছারও কাছারও দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে এবং এ সম্বন্ধে সামান্ত আলোচনা ক্লাচিৎ দেখা যায়। এখানে একটি পুরাতন কাহিনীর উল্লেখ করা হাইতে পারে। এই কাহিনী হইতে বর্তমান বক্তব্যের প্রকৃত ভাৎপর্ব বুরা ষাইবে। জাবিদিয়ান জাতির শ্রষ্টা বিশপ ক্যাল্ডওয়েলের প্রাস্থিত প্রস্থ (Comparative Grammar of the Dravidian or South Indian Family of Languages) প্রকাশিত হইলে মি: গোভার নামক এক বাস্ক্রি জাবিড় জাতির উৎপত্তি সম্বন্ধে বিশপের মতের সমালোচনা এই সমালোচনার মর্ম বিশপের নিজের কথায় উদ্বত করা হইডেচে:

"He (Mr. Gover) considers it of great moral and political importance to prove that the Dravidians were Aryan and not of a Scythian race. The Scythian theory, he says, shuts up the door of sympathy and fellow-feeling between the Dravidian peoples and their English conquerors." (Comparative Grammar 2nd Ed. 1875).

এই ইন্সিতে তীক্ষ্মী বিশপ ক্যান্ডওয়েল কর্ণপাত করেন নাই। সম্ভবতঃ তাঁহার ধারণা এইরপ ছিল বে দক্ষিণ-ভারত্যীগণ উত্তর-ভারতীয়গণ হইতে সম্পূর্ণ পৃথক জাতি, এই মতবাদই ইংরেজ বিজেতাগণের পক্ষে ভবিশ্বতে বেশী স্থবিধান্তনক হইবে।

সে বাহা ছউক উপরে এই ইজিত করা হইরাছে বে ইউরোপীর পণ্ডিতগণের আর্যপদের ব্যবহার অসকত ও অর্যোক্তিক এবং ইউরোপীয় আর্যবাদের প্রকৃত কোন ভিন্তি নাই। নৃতত্ত-বিজ্ঞানের গবেষণা বর্তমান প্রবন্ধের আলোচা বিষয় নহে। এ সম্বন্ধে কোন কথা না বলিয়া উপরের এই ইজিত করিবার মত বে সকল প্রমাণের আলোচনা বিভিন্ন প্রবন্ধে করা হইয়াছে সংক্ষেপে ভাহার পুনরাবৃত্তি করা হইবে এবং প্রয়োজন মতে অভিরিক্ত ছই-একটি প্রমাণের উল্লেখ করা হইবে।

প্রথম কথা এই বে পূর্বের করেকটি প্রবন্ধের আলোচনা হইতে এই পূল পাওরা গিরাছে বে আর্গদের একটি নির্দিষ্ট ভৌগোলিক অঞ্চলের সহিত সম্বন্ধ বহিবাছে। এই ভৌগোলিক অঞ্চল আইরিয়ানা বা আরিয়ানা। এই আইরিয়ানা বা আরিয়ানা হইতে ধরেকের আর্থদের আর্গিন

রাছে, এবং আবেন্ডার আইবিরাও বা আবির পদ আসি-রাছে। পরবর্তীকালে এই আইরিয়ানা হইতে আইরাণ বা ইবাণ নামের উৎপদ্ধি হইয়াছে। এখানে একট সভর্ক হইতে হইবে। আধুনিক পার্ক্ত বা ইরাণের বে ভৌগোলিক সীমানা নির্ধারিত হয়, অর্থাৎ পশ্চিমে কুষীস্থান হইতে পূর্বে আফগানিস্থান পর্যন্ত বিভ্বত যে মালভূমির নাম ইরাণ দেওয়া হয়, তাহা প্রাচীন আইরিয়ানার সীমানা নছে। ইরাণীয় গোষ্ঠীর ভাষার ইভিহাস, প্রাচীন ইরাণীয় ধর্মের ইভিহাস এবং আবেন্তার সাক্ষ্য ইহার প্রমাণ। পূর্বের কষেকটি প্রবন্ধে এ সম্বন্ধে বিস্তাবিত আলোচনা করা হইয়াছে। যে আইবিয়ানা হইতে আৰ্থ নাষ্টি আসি-য়াছে ভাহা ভৌগোলিকগণের পূর্ব-ইরাণও নহে। এই আই-বিয়ানার কেন্দ্রখন হিন্দুকুশ—ইহার একটি নাম Indian Caucasus,—পশ্চিমে খোরাশান, দক্ষিণে শতুন্তি, উত্তর-পূর্বে পামীর উপভাকা ও উত্তর-পশ্চিমে স্থপধা ও মৌক. ইহার এইব্রপ সীমানা নির্দেশ করা ঘাইতে পারে। এই সীমানা সম্বন্ধে আপত্তি উঠিতে পারে কিন্ধু স্থরণ রাখিতে হইবে যে আবেন্তার আইবিয়ানার অন্তর্ভু অঞ্বগুলির ভালিকা হইতে মোটামুটিভাবে এই সীমানা নির্দেশ করা হইডেছে। সংক্ষেপে বলা যাইতে পারে যে হিন্দকুশের উন্তরে অক্সাস উপত্যকা, দক্ষিণে সিদ্ধ উপত্যকা ও পশ্চিমে হরিত্বদের অববাহিকা লইয়া এই প্রাচীন আইরিয়ানা সংগঠিত ছিল। আবেন্ডায় কয়েকবার আবিয়াবো ডাঙ হাবো (aryavo danhavo) পদের প্রয়োগ আছে। ইছার অর্থ কেই Aryan countries,কেই Aryan races কবিষাছেন। বাঁহারা আর্ব দেশ অর্থ করিয়াছেন জাঁহারা ব্যাকটিয়া, পারশ্র ও মিডিয়া লইয়া এই দেশ গঠিত ছিল বলেন। কিছ প্রাচীন পারশ্র বা ফার্স ও মিডিয়া আইবিয়ানার অস্তর্ভ ছিল ইহা যে সকল সাক্ষ্য-প্রমাণের কথা বলা হইয়াছে সেই সকল সাক্ষ্য-প্ৰমাণ হইতে বলা ধায় না। পূর্বে উরিধিত প্রথম দারিষুসের উক্তিও স্মরণ করিতে হইবে। বাহারা ইহার অর্থ Aryan races বলেন ভাঁহাদের কথা-

"The followers of the Zoroastrian religion in their earliest records never give themselves any other title but Airyavo danhavo, that is to say, Arian races."

কিন্ত কোরোষ্ট্রীয়ান ধর্বের প্রাচীনতম দলিলে দেখা বায় বে এই ধর্ম তাহার জন্মভূমি হইডে নির্বাসিত হইয়াছিল এবং জহুরা মাজদার স্টে আইরিয়ানায় এমন কতক্তলি গোটা বাস করিত বাহারা জোরোষ্ট্রীয়ান ধর্ম গ্রহণ করে নাই। আইরিয়াবোর সহজ অর্থ আইরিয়ানায় অধিবাসী গোটা। সে বাহা হউক, এইক্লপ অনুষান করা বায় বে পশ্চিম-ইরাণের আক্লণগুলিতে ইরাশীর বা আর্ব গোষ্টার লোক অথবা আইবিয়ানার অধিবালীরা পরবর্তীকালে উপনিবিট হইয়াছিল।
হেরোডোটাস বে সময়ে মীজগুণ আরিওয়া বলিয়া পরিচিত
ছিল বলিয়াছেন (খৃঃ পৃঃ ৪র্ব শতক) তাহার বছ পূর্বে আর্য
গোষ্টার লোক ঐ অঞ্চলে প্রবেশ করিয়াছিল ইহা সহজে
অক্লমান করা যায়।

শাবেতায় আই বিয়াও লাতির বাসভূমি আইবিয়ানা। আইবিয়ানা পংলবী অস্থাদে আইবান হইয়াছে। চ্যান্ডিক-পংলবীতে লিখিত সাসানীয় লেখনে Aryan রূপ দেখা বায়।

হাজিবাদ গ্রামে (Istakhr) সাসানীয় সম্রাট্ প্রথম সাহ পুরের একটি শিলালেখনের বিটিশ মূাজিয়ামে রক্ষিত অন্থলিপির নকল এশিয়াটিক সোসাইটির জার্নালে (New Series, Vol. iii) প্রকাশিত হইয়াছিল। ডাঃ হল উাহার গ্রেছে এই লেখন উদ্ধৃত ক্রিয়াছেন। ইহার আরম্ভ এইরল:—

#### সাসানীয় পহলবী-

Tagalahi Zenman li mazdayan bagi shahpupari, malkan malka Airan va Aniran minochitri min yaztan barman mazdayasn bagi Artakh-shatar malkan malka Airan.....

#### চ্যান্ডিক পহলবী---

Karzavani zenman li mazdayazn alaha Shahipuhari malkin malka Aryan va Anaryan minoshihar min Yaztam, bari mazdayazn alaha Arta khshatar, malkin malka Aryan……

#### ইহার ইংরেজী অস্থবাদ করা হইয়াছে,

"This is an edict of me, the Mazda-worshipping divine being shahpuhar, king of the kings of Iran and non-Iran, of spiritual origin from God; son of the Mazda-worshipping divine being Ardashir, king of the kings of Iran.....

এখানে চ্যাক্তিক-গজ্জবীতে Aryan va Anaryancক Airan va Aniran পড়া বাইতে পাবে। Aryan ও Airan ছুইটি রূপ Iran পদ বুঝাইতে ব্যবস্থত হুইবাছে এবং Anaryan ও Aniran un-Iran বা non-Iran বুঝাইতেছে। ইবাণ কথাটি এখানে আধুনিক অর্থে ব্যবস্থত হুইবাছে, ইবাণ দেশ বা ইবাণ গোটীর ভাষাভাষী আভি সম্বদ্ধে। Aniran বা Anaryan কথাটির বে অর্থ করা হুইয়াছে ভাহার সম্বন্ধে পবে বলা হুইডেছে। শ্বরণ রাখিতে হুইবে বে প্রথম বে সাহ্ পুরের রাজত্বালে (খ্রীষ্টার ২৪২—২৭২) ব্যাকটি, রা, স্থগধা, আবিষা প্রভৃতি অঞ্চলের সহিত পশ্চিমইরাণের রাজনৈভিক সংযোগ বিজ্ঞির হুইয়া পিয়াছিল, বেম স্মাই ভ্যালেরিনকে বিনি পরাজিত ও বন্দী করিমাছিলেন ভিনি ব্যাকৃটি, রা অধিকার করেন নাই। ব্যাকৃটি, রা

তথন তুথার রাজগণের অধিকারে। তাঁহাদিগের হাত হইতে উহা হেপথালাইট হুপ্দিগের দ্ধণে চলিয়া যায়।

পহলবীর এই আইরান এরানে রূপান্তরিত হয়। স্বতরাং আইরিরানা হইতে আইরান এবং ক্রমে এরান, ইরুণ এবং আধুনিক ইরাণ কি ভাবে আসিয়াছে তাহার ইতিহাস পাওয়া যাইতেছে। ঐতিহাসিকেরা বলেন ইরাণ রূপটি গত পাঁচ শত বংসরকাল প্রচলিত আছে। আবেফার আইরিয়ানা দেশ যে পহলবীর আইরান দেশ নহে তাহা পরিকার ব্যা যাইতেছে। চ্যাল্ডিক-পহলবীর আরিয়ান দেশের সম্বন্ধে অর্থাৎ আইরানের পরিবর্তে ব্যবহৃত হুইয়াছে। দারিয়্সের কেথন হইতে অমুমান করা যায় যে আরিয় (ariva, cunciform inscription) আইরিয়ানার প্রাচীন জাতি হইতে উদ্ভূত লোক ব্যাইবার করা বারহত হুইত। অর্থাৎ আবেহার আইরিয়াও old Persian এ আরিয় হুইয়াছে। শ্বরণ করা যাইতে পারে যে গ্রাক আমসে আরিয় হুইয়াছে। শ্বরণ করা যাইতে পারে যে গ্রাক আমসে আরিয় হুইয়াছে। শ্বরণ করা যাইতে পারে যে গ্রাক

ঋষেদের আর্য, আবেন্তার আবিয়াও, প্রাচীন পার্বানক আরিয় এই পদশুলি অভিন্ন এবং এই পদশুলি আইরিয়ানা বা আরিয়ানা নামক নিদিষ্ট ভৌগোলিক অঞ্চলের অধিবানী আর্থে ব্যবহৃত। হতরাং আর্যপদ যে একটা বিশিষ্ট ভৌগোলিক অর্থবাচক ভাহা স্থীকার করিতে হইবে। বৈদিক ও আবেন্তিক গবেষণায় কেহ কেহ এই মত প্রকাশ করিয়াছন যে আর্য কাতি ইরাণীয় মালভ্মির প্রাঞ্চল। ("They came from the eastern part of the Iranian pluteau near the Hindukush mountains.") এখানে ও প্র্রের কয়েকটি প্রবদ্ধে প্রমাণ প্রয়োগের সাহাযো এই মত প্রতিষ্ঠিত করিবার চেষ্টা করা হইতেছে। বলা আবশ্রক যে ইউরোপীয় গবেষণার প্রথম আমলে, অর্থাৎ পোলিটিকাল আর্বাদের জয়ের পূর্বে, এইরূপ মত প্রকাশ করা হইয়াছিল।

ইহার পরে ভৌগোলিক অর্থবাচক আর্থপদের ক্লাষ্ট-বাচক অর্থের কথা আসে। ঝবেদে আর্থবাদের ক্লাষ্ট-বাচক অর্থ সম্বন্ধে পূর্বের এক প্রবন্ধে (প্রবাসী পৌর, ১৩৫২) বিস্তারিত বলা হইয়াছে। আর্থ বর্ণ, আর্থ ব্রত, আর্থ ভাব, আর্থকে পৃথিবী দান, আর্থের কন্ত ক্যোতিরূপে অগ্নির উৎপত্তি, আর্থের কন্ত যব বপন ইত্যাদি নানাভাবে করেদে আর্থপদের উল্লেখ আছে। অনেক বার আর্থ শক্রুর উল্লেখন্ড দেখা বায়। কিন্তু সমগ্র ধ্বেদে এক বার মাত্র পরিকার করিয়া বলা হইয়াছে বে কুশর্কে ক্যাব্যার করে তাহারা আর্থ। আর্থপদের ব্যবহার হুইডে এ বিষয়ে সক্ষেহ থাকে না বে স্কুক্তার ক্ষরিগণ

আৰ্বৰণ বলিতে আপনাদিগকে বুঝাইতেছেন। স্থভরাং খাখেদের আর্যক্রষ্টি সহস্কে কোন ধারণা করিতে হইলে আপনাদের সম্ভে ভাঁহারা বাহা বলিভেছেন ভাহা হইতে এই ধারণা করিতে হইবে। এ সম্বন্ধে এখানে অধিক কিছু বলিবার স্থানাভাব। সংক্ষেপে এইমাত বলা ষাইতে পারে যে গাথা ও আবেন্ডার অন্ত অংশে "আর্যড়" সম্বন্ধে সচেতন মনোভাবের পরিচয় অপেকারত কম পাওয়া যায়। কিছ প্রাচীন জোবোট্টিয়ান ধর্ম শান্তের সামাত অংশ মাত্র বৃক্তিত হইয়াছে এবং গাথা অংশ বাদে অক্সাত্ত অংশ খু: পু: ৪র্থ বা ৫ম শতকের রচনা পণ্ডিতগণ এইরূপ মনে করেন। গাথা অংশেও প্রতিমা পূজা, প্রতিমা পূজার পুরোহিত প্রভৃতির প্রতি আক্রমণ যে পরিমাণে দেখা খায় ভাহাতে ঋরেদের তলনায় উহার প্রাচীনত সম্বন্ধে সন্দেহ ক্ষমে। ধে ফ্রাবার্ডিন ইয়াটে বলা হইয়াছে যে গাগে মারাথনের দেহ হইতে অত্রা মাজদা আর্য দেশের মধ্যস্থল স্ষ্টি করিয়াছেন ভাহাতে গৌতমের ও ধর্মচক্রের উল্লেখ দেখা যায়। সে যাহা হউক, স্বোরোষ্ট্রয়ান ধর্ম আইরি-যানার প্রাচীন ও প্রচলিত ধর্মের বিরুদ্ধে বিজ্ঞোহীর ধর্ম: ইছা স্বীকার করিয়া লইয়া বিৰুদ্ধ ভাবের যে সকল পরিচয় পাভয়া স্বাভাবিক তাহা বাদ দিলে দেখা যায় যে বৈদিক আর্যকৃষ্টি ও আবেস্তার আর্যকৃষ্টির মধ্যে ধনিষ্ঠ সংযোগ ও ঐকা বর্তমান।

প্রথম সাহ পুরের শিলা লেখনের যে অংশ উপরে উদ্ধৃত করা হইয়াছে ভাহাতে আইবান এবং অনআইবান, আরিয়ান অনারিয়ান পদগুলি পাওয়া যাইছেচে। অনুআইবান ও অনাবিয়ানকৈ অনাধ ধলিয়া মনে হইতে পারে কিন্তু ইহার ইংরেজী অন্তবাদ Non-Iran, ঠিক। সাসানীয় আমলে পাবভোৱ নাম ইরাণ হইয়া দাঁডায়। পারশ্র নামটি একটি প্রদেশের নাম, সমগ্র দেশের সম্বন্ধে ইহার প্রয়োগ বৈদেশিকগণের হাতে হইয়াছে। আইরিয়ানা ও তাহার অধিবাসী আরিও বা আর্য জাতির স্থৃতি তথন লুগু হইয়াছে। হাকামণি ও দাদানীয় ছই -রাজবংশের জন্মভূমি ফার্স বা পারখা। কিছু যে প্রাচীন গৌরবের কথা স্থরণ করিয়া প্রথম দারিয়দ "আমি পারশী-কের পুত্র পারশীক, আবিষর পুত্র আবিষ্ণ বলিয়া ঘোষণা করিয়াছিলেন সে প্রাচীন গৌরবের কথা স্থরণ করা ঋতক্ষতের ( আদশীর ) পুত্র সাহ পুর আবস্তুক মনে করেন নাই। যাহা হউক, সাসানীয় কেখনের এই Non-Iran বলিতে কোন অঞ্ল বুঝায় ভাষা পরিষার নহে। এইরপ মত প্রকাশ করা হইয়াছে ইহা অদূর পূর্বাঞ্ল হইতে शास्त्र अथवा आरम् नीवा रहेटा शास्त्र । शृवीकन वनिएछ খোৱাশানের পূর্বে ব্যাকটি বা, হিরাট প্রভৃতি ব্রায়। এই

অঞ্চলকে অনাইবান বলা চলে সাসানীয় আমলে ইবাণের রাজনৈতিক সীমানা বিবেচনা কবিলে। আমেনীয়ার অধিবাসী ইবাণের অধিবাসীর সপোঞ্জীয় বলা হয়। সাহ্পুর মেশোপটেমিয়া অধিকার করিয়াছিলেন, স্তরাং অনাইবান বলিতে এই অঞ্চলও ব্রাইতে পারে। সাহ্পুরের পিডা ওধু ইবাণের সমাট ছিলেন, পুত্রের সাম্রাঞ্জা ইরাণের বাহিরেও বিস্তৃত হইগছিল।

সাসানীয় আমলের ইরাণ বা ইবাণীয় গোষ্ঠার ভাষা-সমূহ যে অঞ্লে ব্যবহৃত হইত তাহাঁর চতুঃসীমার প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে দেখা যায় পশ্চিমে উহার সীমা ছিল শেমিটিক ভাষাগোদীর অঞ্চল, উত্তর-পূর্বে উর্গ-আনটাইক (ural-altaic) ভাষাগোদীৰ অঞ্চ ও পুৰে ভারতবর্ষের আর্য ভাষাগোষ্ঠীর অঞ্চন। পূর্বে ইরাণীয় ভাষাগোষ্ঠী ও ভারতীয় আধ ভাষাগোদীর দীমারেখা অনিদিষ্ট এবং ছই গোদীর ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক বিবেচনা করিলে এই অবস্থা স্বাভাবিক মনে করা যায়। যাহা হউক, ইরাণীয় গোদীর ভাষার চার দিকের দীমানার প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে দেখা যায় যে পশ্চিমে ও উত্তরে ছুইটি ভিন্ন ভাষাগোটা বর্তমান, কেবল দক্ষিণ-পূর্বে ও পূর্বে ইহার সম্পৃকিত ভাষাগ্যেষ্ঠা বভূমান। ইরাণীয় ভাষাগোষ্ঠা ভাহার উত্তর-পূর্ব ও পশ্চিম সীমারেখা যে কোন দিন অভি-ক্রম করিয়াছিল ভাষা জানা বায় না। স্বভরাং এই ভাষা-গোদীর উৎপত্তিস্থান পশ্চিম, উত্তর-পশ্চিম বা উত্তর-পূর্ব অঞ্চল হইতে পাবে না, উহার অগ্রগতিও পশ্চিম, উদ্ভৱ-পশ্চিম বা উত্তর পূর্ব-দিক হইতে পূর্ব দিকে হইতে পারে না। জর্জিয়ার ওপেটিক ভাষাকে ইরাণীয় ভাষাগোষ্ঠীর সহিত সম্পর্কিত বলা হয়, ইহা একটি কৃত্র উপন্ধাতির ভাষা। প্রাচীন কাল হইতে পারশ্র সাম্রাজ্যের সহিত কর্জিয়ার রাজনৈতিক সম্বন্ধের কথা বিবেচনাকরিলে এই সম্পর্কের কারণ বুঁজিয়া পাওয়া কঠিন নহে। আমেনীয়ার ভাষা সম্বন্ধে ভাষা-বিজ্ঞানীদিগের মত ইভিপূর্বে উল্লেখ করা হইয়াছে।

ইরাণী ভাষাগোটা ও ভারতীয় আব ভাষাগোটার ঘনিট সম্পর্ক বিবেচনা করিয়া বদি অহুমান করা বায় যে এই ছই গোটা এক মূল ভাষা হইতে উভূত তাহা হইলে দেখা বায় যে কাম্পিয়ান হইতে পূর্ব দিকে হিন্দুকুশ ও হিমালয় অভিক্রম করিয়া দক্ষিণাপথ পর্যস্ত—বদি তামিল, তেলেগু, ক্যানাড়ী ও মলয়ালীকে ভিন্ন গোটার ভাষা মনে করা হয়,—এক মূল ভাষাগোটার বিভিন্ন শাখা-প্রশাখা বিস্তুত। কিন্তু ইরাণী গোটার বে সকল শাখা বর্তমান তাহারা এই গোটার একটি শাখা, পশ্চিম শাখা (Western Iranian) হইতে উত্ত। এই শাখাটি বরাবর সেমিটিক

বেঁসা। পূর্ব শাধা—বাহার সঞ্জি ভার হীর আর্বগোঞ্জির সম্পর্ক বনিষ্ঠতর,—ভাহা সম্প্রতঃ গ্রীক আক্রমণের বহু পূ:র্ব লুপ্ত হইরাছিল। ক্ষোরোষ্ট্রিরান ধর্ম গ্রন্থ বে ভাবায় লিখিও সেই ভাষা হাকামণি সাম্রাজ্যের অভ্যাদয়কালে লুপ্ত হইরা বাওয়া একটা আম্বর্ধ আছে।

গাখার ভাষা ও বৈদিক ভাষা সম্বন্ধে বলা হইয়াছে যে ইহারা two dialects of the same tongue. স্বার্থ বলা হইয়াছে যে গাথার ভাষা হইতে ঐ ভাষার অ্বনতির ব্ৰবা বায়। ইহা যথাৰ্থ হইলে বলিতে হয় যে ব্যামত মুলভাষা হইতে পাথার ভাষার তুলনায় বে ভাষা অপেকা-ক্ষত অবিকৃত সেই ভাষা অবশ্য বেশী প্রাচীন। ইহা সূতন কথা নহে। অধিকাংশ পণ্ডিত ঝথেমকে গাথা হইতে প্রাচীন মনে করেন। স্থরাখুট্রের প্রচারিভ ধর্ম সংক্ষ যাহা বলা হইয়াছে, অৰ্থাৎ ভাৰতীয় আৰ্থ ও ইরাণীয় বা ব্যাকৃটি হার আর্বদিপের মধ্যে মতান্তর আরম্ভ হইবার ক্ষেক শভাৰী পৰে জ্বাখুট্ট আবিভূতি হইয়া প্ৰচলিত অভ্রাধ্যের নীতি ও অভূষান আপনার ধ্যের মধ্যে গ্রহণ করিয়া অভরা মাজদার উপাসনা প্রচলিত করেন, ভাহাও এই মত সমর্থন করে। ভার পর আবার দেখা বায় যে জরাপট্র যে সকল অনুষ্ঠান ও দেবদেবী বর্জন করিয়াছিলেন ভাঁহার প্রচারিত ধর্মের মধ্যে সেইগুলি আংশিক পরিবর্ডিড ক্লপে পুনৱায় গৃহীত হয়। এই তথ্যগুলি মিলাইলে যে সিভাত্তে আসা সম্ভব, কি কাবণে বলা যায় না, পণ্ডিতগণ সে সিদ্ধান্তে আসেন নাই বা আসিতে চাহেন নাই।

ককেশাস হইতে আসিয়া ইয়াণে উপনিবিষ্ট আৰ্য ভাতির তুই দলের মধ্যে মভাস্কর, এক দলের মধ্যে ইস্রাদি দেবভার পূজা-পদ্ধতি ও বাগবজ্বের অনুষ্ঠানের উৎপত্তি, ইবাণের বাসভূষি হইতে এই দলের বিভাড়ন এবং ভারত-বৰ্ব মুখে প্ৰস্থান, এই কাহিনী ইউবোপীৰ আৰ্ববাদের সমৰ্থক-ৰিপের দারা প্রচারিত হইয়া বিপুল প্রতিষ্ঠালাভ করিয়াছে। এ দেশে প্রথম প্রচারিভ হইবার সময়ে ইহা ভারভীয় পণ্ডিতের মনকে কি ভাবে নাড়া দিয়াছিল ভাহা লক্ষ্য করিলে একটু কৌতুক বোধ হয়। একথা পূর্বে বলা হইয়াছে, এখানে একটা দুটাস্ত দেওয়া বাইতে পারে। কৃষিকার্বে অন্তবক্ত ও নিৱামিষাশী ইরাণীয় আর্বগোটী (এখানে উল্লেখ কৰা ৰাইভে পাৰে যে যক্ষে পশু বলি দিবাৰ প্ৰথা জোবে প্রিয়ান ধর্বে প্রচলিত ছিল এবং এই মাংস ভোজন বেচবাম ইয়াই তাইবা ) ও করিবার ব্যবস্থা ভিল। পশুলালক, আমিষাশী ঘাষাবর বৈদিক আর্যগোঞ্জীর মধ্যে धर्व मरका स विवास, मुस्विशह ও करन এक मिरक स्मादी-ক্লিয়ান ধর্মের অভ্যুদ্ধ ও অন্ত দিকে বৈদিক আর্বগোঞ্জীর বিভাডনের কাহিনী গলাধ:করণ করিয়া একজন এদেশীর প্রাসিত্ব পরিস্ত লিখিডেছেন, এই বিভাড়িড বল Brahmanic Aryansहिरश्व शृर्वश्रूक्य ।

"In India they found a peaceful congenial home......It may offend the self love of the Brahmans to be told that the celestial wars resulted in the final overthrow of Indra, or., in other words, that their ancestors were expelled from their ancient home by the followers of the Asuras."

Asuras বলিতে অহরা মানদা ও তাঁহার অফ্চরবৃন্দ বুঝাইতেছে। বে ভারতীর পণ্ডিত এইরূপ লিখিয়াছেন তাঁহার আন্তর্জাতিক ব্যাতি ছিল। উদ্ধৃত অংশ সহছে কোন মন্তব্য না করিয়া এইমাত্র বলা বায় বে লেখক ব্রাহ্মণ নহেন।

আবেন্তার আমলে ইরাণ বলিয়া কোন ভৌগোলিক অঞ্চল বা ইরাণীয় বলিয়া কোন জাতি ছিল না। আবেন্ডার আইরিয়ানা সাসানীয় আমলের ইরাণ নছে। আইরিয়ানার অধিবাসীর জাতীয় নাম ছিল আইরিয়াও বা আরিয় বা আৰ্য। এই মাইবিয়ানার ভাষার ছইটি শাখা দেখা যায়, বৈদিক ভাষা এবং গাখা ও আবেন্ডার ভাষা। গাখা ও আবেন্ডার ভাষাকে এক দিকে বেমন মূল ভাষা হইতে অধিকতর বিক্লভ এবং বৈদিক ভাষার ভুলনায় আধুনিক দেখা যায় অন্ত দিকে সেইব্লপ দেখা যায় যে গ্রীক আক্রমণের সময়ে অৰ্থাৎ হাকামণি যুগে উহা লুগু হইয়া গিয়াছিল। **ক্সরাপুট্রের আবির্ভাবের সময়, ( কোন কোন মতে খৃঃ পৃঃ** ৭ম শতক) ও গাথা ও আবেন্ডার ভাষা লুপ্ত হইবার সময় বিবেচনা করিলে অস্থমান হয় জরাখুট্রের পরে এই ভাষা তিন চার শত বৎসর প্রচলিত ছিল। প্রাচীনতর বৈদিক ভাষার ইতিহাসের সঙ্গে এই ইতিহাসের তুলনা করিতে হইবে। ভাষার এই ইডিহাসের সঙ্গে জোরোষ্ট্রিয়ান ধর্মের ইতিহাস,—ছরাথুট্টের আবির্ভাবের পূর্বেকার ধর্ম, পাথা উটাবৈভিতে দেশের লোকের ও দেশের হুট শাসকপণের বিরোধিতা, অনুপামীপণ কর্তৃক ধর্ম প্রচারককে পরিত্যাপ, এখন কোন দেশে পিয়া ভিনি অহবা মাজদার ধর্ম প্রচার করিবেন ইভ্যাদি বলিয়া আব্দেণ, জোরোট্রিয়ান ধর্মে প্রাচীন ধর্মের কোন কোন অক্টের পুনঃ প্রচলন এবং মিভিয়ায় মাজি পুরোহিত সম্প্রদায়ের অভ্যাদয় ইত্যাদি মিলাইতে হইবে।

কলে বে সিছান্তে বাসিতে হয় তাহা এইরপ: আইবিযানার অস্থমিত মৃল তাবা ও ধর্মের অবিকৃত রূপ বাহাই
হউক প্রাচীন আর্থ আতির মধ্যে বৈদিক তাবা ও ধর্ম
প্রচলিত ছিল। ইতিমধ্যে আর্থগোল্পীর লোক এক দিকে
মালভূমির পশ্চিম মুখে অগ্রসর হইতে আরম্ভ করিরাছিল
এবং অক্ত দিকে পঞ্জার অভিক্রম করিরা সাল্ফের উপভ্যকা
পর্যন্ত অগ্রসর হইয়া পিরাছিল। সম্ভবতঃ এই সমরে
রাষ্ণ্য ধর্ম ও প্রভিষা পূজার অভ্যুদ্ধ হইয়াছিল এবং
কিন্দুর্শের উত্তরাংশে এই নৃতন ধর্ম ও ক্রিরাকাণ্ডের প্রচার
হইরাছিল। অহ্বা ধর্মের অভ্যুদ্ধ সহক্ষে বাহা বলা হয়
এবানে ভাহা অপ্রাসন্থিক। এইমান্ত বলা বার বে হিন্দু-

কুশের উন্তরে বৈদিক ধর্মের অগ্নি উপাদনার উপর জোর स्विता इस, सकि र्व शामव्'रावेद खेनद स्वाद स्विता हय। স্পিত্ম জরাণুট্ট আবিভূতি হইয়া ব্রাহ্মণ্য ধর্ম ও প্রতিমা প্ৰজাব বিক্তমে বিজ্ঞান ঘোষণা করিংলন। কিন্তু আইরিয়া-नाय अडे विष्मार वित्यव मध्य हहेर्ड भारत नाहे। वाम्रव বৈদিক ভাষা হইতে শেই সময়ে যে পরিবর্তন ঘটিয়াছিল পাথার ভাষায় ভাষা দানা বাধিয়াছে। আইবিয়ানায় বিৰোধিভার ফলে জোবোট্টিখান ধর্মত পশ্চিম মূৰে পতি भारेन, वान्त्य बाक्ष्मा धर्म ७ भटा दोक धर्म अवन श्रेन। কোবোটিয়ান ধর্ম বধন পশ্চিমে অগ্রসর হইতেভিল আর্থ ব্যাভির সভ্যতার কেন্দ্র হিসাবে ব্যাক্টিয়া ও সিদ্ধ উপত্যকা ভধন হৃতগৌৰব। মাজি সম্প্রদায়ের বারা গৃহীত হইয়া **क्षारवाद्वियान धर्य अन्य भक्तिय नव कोवन ना**ख कविन, গাব্দেষ উপত্যকার উত্তর-পূর্ব প্রান্তে এই রকম সময়ে ব্রাহ্মণ্য ধর্মের বিরুদ্ধে দ্বিতীয় বিজ্ঞাহ আরম্ভ হইল শাক্য-বংশীয় রাজকুমারের খারা।

এই সিদ্ধান্ত সূহীত হইবার পক্ষে বাধা প্রচলিত আব-বাদ। কিছু আর্যবাদের সমর্থকগণ সম্ভবতঃ অস্থবিধাজনক মনে করিয়া জ্বাপুষ্টের নিজের হচিত বলিয়া প্রচারিত গাখা অঙ্নাবৈত্তি ও গাথা উষ্টানৈতির সাক্ষ্যের প্রতি দৃষ্টিপাত করেন নাই। প্রাচীন পারশীক কিম্বন্থী মতে করাখুট্রের আবিভাব কাল বে প্রথম দাবিষ্দের পিডা হিটাপেগের সনসাময়িক (খু: পু: ee• ) বা গ্রীক আক্রমণের তুই শত বংসর পূর্বে ইহা স্থরণ রাখা যাইতে পারে। আর্ববাদের সহিত সম্বতি রক্ষা করিবার জম্ম জরাপুষ্টের আবির্ভাবের কাল পাঁচ হইতে সাভ শভ বৎসর পিছাইয়া দিবার পক্ষে ভাষা-বিজ্ঞানীর অনুমান ছাড়া আর কি প্রমাণ আছে তাহা यन। इब नारे। कवाश्रुष्टेव कान मश्रुक नाना श्रकाव चाउँ छ মত প্রচলিত আছে। বাবিলোনীয় বেরোসসের (Berosos) মতে জরাণুষ্টু খু: পু: ২২০০ শতান্ধীতে বাবিলোনের রাজা ছিলেন। আরিষ্টটন ও মুডোকসাদের মতে খৃঃ পু: ৬০০০ বৎসর পূর্বে ডিনি আবিভূতি হইয়াছিলেন।

এখন দেখা বাইডেছে বে আইরিয়ানা হইতে পরবর্তী কালে ইরাণ পদের উৎপত্তি হইলেও ঐতিহাসিক আমলের পূর্ব-ইরাণের একাংশ মাত্র আইরিয়ানার সীমানার মধ্যে পড়ে। প্রাচীন ইতিহাসের কথা ছাড়িয়া দিলেও দেখা গায় বে ইরাণের প্রাণকেন্দ্র বিস্তৃত মালজ্মির পূর্বণংশে আবছিত ছিল, পশ্চিম অংশ আনেকথানি সেমিটিক প্রভাবাহিত হইয়াছিল। হাকামিনি, গ্রীস, আরসিকিডান ও সা সানীয় আমলে পূর্ব-ইরাণের রাজনৈতিক ইতিহাসের মর্ম পুর্বের ছুইটি প্রবঙ্গে (প্রবাসী, আবণ ও কার্তিক, ১৩৫৩) বেওয়া হইয়াছে। আরব জাতি পারশ্র অধিকার করিয়া সাম্ম দেশকে ইসলামে দীক্ষিত করিল, ইরাণের

প্রাচীন ধর্ম ও পুরেছিড সম্প্রদারের কেন্দ্র ইন্তাকার (Ishtakar) বারবার বিদ্রোহ ঘোষণা করিয়া রক্ত যোকণে অবসঃ হইয়া পড়িস। ছুই শক্ত বংসর আরব শাসনের পরে আভীয় খাধীনতা ও ছাভীয় সাহিত্য স্কটির আন্দোলন আরম্ভ হইল খোরাশানে। ভাহিরিদ ও সামানিদ রাজ্বংশের অভাদয় হইয়াভিল খোরাশানে। সাফারিদ বংশের অভাদয় জাবুলিয়ান বা সিষ্টানে। নৃত্তন ভাতীয় ভাবধারা অংশয় করিয়া বে সাহিত্য স্কটি হইল ভাগর জয়ভূমি. বংশয়, বোখারা (স্বগধা), হিরাট, মার্ভ (মেইক) ইত্যাদি।

উপবের আলোচনা হইতে আর্য কাতির দেশ আইরি-আনার ভৌগোলিক অবস্থান এবং আইরিয়াও, আরিয় ও আর্বানের উৎপত্তির ইতিহাস ও অর্থ সমুদ্ধে একটা মোটা-মৃটি ধারণা করা সম্ভব হইবে, আইরিয়ানা হইতে আরগোঞ্জীর পশ্চিম ও দক্ষিণ-পূর্বে প্রসারণ সম্বন্ধে একটা ধারণা করা ষাইবে। একটা প্রশ্ন উঠে, আইবিয়ানার এই আর্ব জ্বাভির প্রাচীন ইতিহাগে এমন কি ছিল যাহাতে ঋরেদের ঋষি-কুলের আর্য বলিয়া গৌরৰ বোধ করিবার, আবেন্ডায় বার বার আইরিয়াও জাভির উল্লেখ করিবার, পার্দিশে বা कार्मि विनि विज्ञिशोहित्वन स्मृहे श्रेथम माहिशूस्मद व्यादिश বলিয়া আপনাকে ঘোষণা করিবার, অধুনালুপ্ত মীড জ্বাডির আবিওয়া বলিয়া খাত হইবার, সংক্ষেপে আর্থ নামের একটা বিশিষ্ট সন্মানজ্ঞাপক অর্থ আসিবার কি কারণ ঘটিয়াছিল ৷ ব্যবেদ অপেকা প্রাচীন কোন্ কীভির অন্ত এই অংকার ও আজুসচেতন ভাব আসিল? এই প্রাচীন কীতি আমাদের অজ্ঞাত হইতে পাবে কিছ ইহা নি:সম্বেহ ষে একটা জাতির মনে এই ভাব অকারণে আসে নাই।

এখন এটি জন্মের পর উনবিংশ শতাকীর মধাভাগে যাঁহারা নিজেদের আর্ধ বলিয়া চিনিডে পারিয়াচেন ভাঁহাদের ৰুধায় আসা যাউক। একজন লেখক মনের অভিলাৰ ব্যক্ত করিয়া বিশয়াছেন, "Europe may boast of being the mother of Aryan nationality." 977-বিজ্ঞানের অতি সৃত্ম সূত্র অবলম্বন করিয়া কল্পনা-প্রবৃত্তির এই প্রকার উদ্ধাম বিলাস স্থা ব্যক্তিগণের হাস উল্লেক করে নাই। যে নাম একটা নির্দিষ্ট ভৌগোলিক অঞ্চলের স্থিত সংস্কৃতাচক, যে নাম একটা নিৰ্দিষ্ট কৃষ্টিবাচক, যে নাম বহন কৰিবাৰ অধিকাৰীৰ৷ ইভিহাদেৰ অভি প্ৰাচীন যুগ হইতে পরিচিত সেই নামের দাবিদার দাড়াইয়াছে ইউবোপের জাভিসমূহ (Ugro-Finns গোঞ্জবাদে), বিশেষ করিয়া টিউটন জাভির বর্ড মান বংশধরগণ! বৈজ্ঞানিক ঠাটবাট সমেত একটা প্রকাপ্ত মতবাদের স্বাষ্ট হইয়াছে এই দাবি প্রমাণ ও প্রচার করিবার জন্ত। রাজনৈতিক নেতা-দিপের উদেশ্ত সিদ্ধ করিবার বস্তু পণ্ডিভগণ অকাভৱে পরিশ্রম করিয়াছেন।

## গ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

ষ্ঠাৎ ৱেশন চালু হওয়াতে বিপিন বিপর বোৰ করলে। বেশ চলছিল চালের কারবায়-- টাকার টাকা লাভ -- কি ভার চেয়েও বেশী। কোম্পানীর আইনকে কাঁকি দেওয়ার কৌশন সবে चार्र करत निरस्ट -- अमन भवत करत-कि-करत-ना अवे সম্পেহ-দোলায় হলতৈ হলতে--হবে ধবর পৌছে গেল---मर्दा दामन हामू स्टारक कामूबादिव (मध मश्रीस (बटक। খবঙ শহর বেকে বাট মাইল গুরের এই আমধানিতে মাধা-निष्टु बदारकद बाागावडी चानावक हान् १८व मः, किस चारवद খার বেটা ক্রমশই স্কীত বেকে স্কীততর ছচ্ছিল সেটার এক ल्यां स्थान विकास क्षेत्र के कि के अपने विकास करें त्रात मन्त्र निराष्ट्र **बरे का**त्रवात क्लां क्लिक- नरेरम বিশিনের মন্ত চুনোপুঁটিরা কই-মুলেলে পরিণত হবার আশা করবে কোন্ পুনাকলে ৷ ছোটবত একটা দোকান-তার বাপের আমল থেকে বসভবাভির বাইরের ধরে চলে আসছে। ভাতে চাল ডাল মৰলাণাভি বেকে হাঁভি কল্মী পেৱেক क् विभि निनारवर्धे भयास भाषात्मा शाक्छ। नीध दक्रमद किनिया गांव रूव (वर्गों ना श्लब भरमांत हमल कासकारण। कि ७७ ए । वे विशेष महामूद वायम--- (मन मूद्द याता यनी হ্ৰেছিল—ভাগের দৃষ্টাত ছোট বড় মাঝারি সকল বমাভিলাযী-দের চোৰের সধুৰে হল ছল করে উঠল, কিন্ত এ পোড়া মুছে হঠাৎ কোন কিনিসের দর যেন উঠতেই চায় না। ভারপর জাপান মুদ্ধে নামগ—ভারপর এল মহা মধ্যর। এক দিকে त्राच-माक्ष-िक्ष-अभाह-सूर्युदि-क्**रे**निय--- चण भिटक हान चाहाद बाबाब एठार चाठन एस डेठेंग। यूक्त एम बननकरसद প্রভিষোগিতা। তা বলতে নেই-মাত্র ছ'ট মাদের মব্যে विभित्नत (भाडे बाभिरमत बाजाबानित माजा क्षात्र कर्छ रह উঠল, ৰাইবের চালাবানি ঘুচে একটা পাকা বারাকাসমেত ধর মাথা ভূদলে—চারধিকে উঁচু করে পাঁচিল খিরে বাড়ীটাকে चक्र:श्रुद्धव वर्षामा (पश्चा र्'म ।

একতপা দরের অপবিধা নিয়ে আক্কাপ থানী-জীতে প্রারই তর্ক হয়। উঁচুতে ওঠার কোন মানেই হর না—সব দিক বিরে বদি পেটা প্রমাণিত না হয়। প্রতিবেশীদের ইবাস্ক না করতে পারলে মানবন্ধরের সার্বকতা কি করে যে প্রতিপন্ন করা যার এ আগ্রাকালী কিছুতেই পুরতে পারে না। করেকট উপারে মাত্র এটা হওয়া সন্তব। তা শাভীতে ও গহনার সন্তাভ ঘরের মর্ব্যালা প্রায় আরত হরেছে—বাভীটর বুঁতই বা বাকবে কেন—এ আগ্রা কিছুতেই বুবতে পারে না। বি-চাকর ? এ কবাটা আগ্র ভালরতেই আনে—নিজের গতর না বাটাতে হলেই ববেই। তর্ম তবু পরসা উভিবে জাকক্ষতের কোন বানেই হর না। বিববা বড় জা সংসার নাবার

করে থেবেছে---সংসারের ভারি ভারি কাক্তলো ভার দারাই স্পশ্লাধিত হয়। আগ্লাযে গতগ্ৰ নাড়েনা ভানয়---কিন্ত अक्ष मा मध्या पदा (लाक्साय वाहित्य व्यर्गर (माना ना कृत्य যার---এখন ভাবে তাকে চলাকেরা করতে হয়। আত্কাল পোনার ধামটাও কি ছ-ছ করে বেড়ে বাছে না। একটা ভারী ব্ৰক্ষের গছনা তৈরির ক্থা ক'দিন থেকে মনে ভোদাপাড়া क्दर्र किंद भाजभाव (एखरम्ख ना कर्दा जाना मानाव (पर् ষুত্তে রাজী নয়। খোতলার বারাজায় বা ছাদে চুল শুকোবার কালে বা কাপড় মেলে দিতে গিয়ে—কিংব: অকারণেই বানিকটা খুৱে বেড়াবার সময়-অপহারসমূদ দেহ-লাবণ্য যদি পালের বাড়ীর বা পথের কারও দৃষ্ট আক্ষণ না কৰণ তো কি ফল এ ছার জীবনে। যে উ'চু পাঁচিল ভোগা হ্রেছে বাভির চারদিকে—অভের ছাদ খেকে উকি খেরেও কেট গহনা কাপড় ভ দূৰের কৰা –মাগুষ্টাকেই ভাল করে ঠাহর করতে পারে না। পোছা কপাল, একডলা ধরের বাসিন্ধা বহুপোক্ষের :

বোজ বোজ বিকার ভনে অভ্যাগ হয়ে গেছে বিপিনের। বে কট ভাত বাবার গে পরিতৃত্তি সহকারে বার, মাধ বা হবের শেষাংশ কারও ভঙ গে পাতে কেলে রাবে না। বাওয়ার শেষে কচ কচ করে গোটাকতক পান চিবোয়— ওছুক ভড়ুক করে বানিকটা খুয়োর— এ সবের সঙ্গে আলার অনুযোগভালো একতান বাধ্যের মত আভ্যা রক্য মিশে বায়—কোৰাও একটু অখভি কারায় না।

আছ যথা বৈতি বছ কা এসে ভাতের বালা দিলে। ইতকাল—মাছি নেই—তবু আলা পাবা হাতে করে বসলে
সাননে। বসেই আলপ্ত করণে, নিভিন্নদের মেক বউ আল বেড়াতে এসেছিল। বললে, 'ওমা-…এত টালা হরেছে ভনি, ভোদের ধরণোরের এমন ভোকলা ভোকলা ভাব কেন।' লক্ষার বেল্লায় মাটর সঙ্গে মিশে রইলাম—একট কবা বলতে পারি নি। বিধেস না হয় দিদিকে তেকে ক্রিঞ্চ কর।

রেশন চাপু হবার ববরটা বিশিনের সর্ব্বাঞ্চে আলা ধরিয়ে দিরেছিল—দে আলা বার হবার পথ না পেথে মাধার মব্যে পাক দিরে উঠছিল এতকণ। এই কথার সে ধণ করে খলে উঠে বললে, আর ধোতলার উঠে সুধ ভোগ করতে হবে না—বা আছে গারে তা বজার থাকলে ভাগ্যি বলে থেনো।

বিশিবের অলে-ওঠা আঞ্চলিক বলেই— আছা মিনিটবানেক বিশ্বরে তার হবে রইল। ভারপর পাবা আহতে সেও চীংকার করে উঠল, উঃ পুরুবের রুরোহ কভ। বলে ভাত থেবার কেট নর—নাক কাটবার গোঁলাই! সজা করে না রুধ নাভতে!

ब्हारन त्वरव वक्र का त्व त्ववात्व विम हुट्डे अम । भारमव

যাতীয় ভাষানাগলো বুলে গেল, উঁচু পাঁচিলের বাধার করেকটা ভূঃনাহনী ছেলেকেও ধেবা গেল। এ বক্ষ ব্যাপার এ বাতীতে অভূতপূর্ব। এক তরকা বা চলে আসহে এতকাল বরে তা পাঁচিলের ওপিঠে পাঁহর বি। ব্যবসাহারের প্রধান গুব বৈর্য্য—তা বিশিলের প্রচুত্তই ছিল।

ৰাই হোক—খনের ছ্যার বৰ করে বড় জা ব্যাপারটাকে বেশীধুর গড়াভে দিলে না—ভবে বিশিনের বাঙ্যাটা নই হরে গেল।

আৰ বাওৱা করে উঠলেও রাণের কেরটা সে টেনেই চলল। পান মুখে দিলে না, তামাক টানলে না কিংবা বিহানার চিং হয়ে ভয়ে নাকও ভাকালে না। আঁচিয়ে ভাল করে মুখের কল না মুছেই সে বাড়ী বেকে বেরিয়ে গেল।

শভু সাহা বড় দোকানদার। ভার দোকান-ঘরের পিছনে একটা বুপরিমত ঘরে বসে এই ছুপুর বেলার প্রায়ই পুর-ছু:বের কৰা হয়। সমব্যবসাধীদের সলাপরামর্শের নিভুত কারগা এট। নিভাত প্ৰয়োজন না হলে বিপিন এবানে আসে না। ভবুগর হলে কথা ছিল না--করেক মান বেকে দাবার ছকও একটা পরছে। চুপচাপ বদে আকাশ-পাভাল ভেবে এক একটা ঘুটি এগিয়ে দেওয়ার মধ্যে কি যে আনক ভা বিশিষ ভেবে পায় না। ছ-চাহটে চাল দেবলেই ভার বাবা বরে ওঠে-জালভ বোৰ হয় এবং দেয়াল ঠেস দিয়ে বাড়ীয় অভ্যন্ত विवानिकाडीएक व्याव भूबिएव त्यव। अ वरत (व स्ववृद्धारवत আলোচনা হয় তা কোন গঞ্জের চাল কি দরে বিকোছে--কোন ৰোকাৰ বেকে সহৰে তিনি চালান আনিহে বহচবহচা বাদ কত চাকা গড়পড়তা লাভ বাড়াছে-কোন হাটে মুগ কলাই প্রচুর আমদানি হওয়াতে বাজার-দর বেকে মণগ্রতি আট चान। प्रविवा स्टब्स्ट देखानि। छ। এर नव ब्रद्धाहक 🕰 লাভবনক আলোচনা আক্কাল উঠে গেছে বললেই হয়। সালা বাজাৱের জন্ত কারই বা মাবাব্যবা। মবগ্রতি চার আমা আট আনা লাভ—এ কি লাভ মাকি ৷ মারি ত গঙার भारत मा एक गायमा करत प्रवरे वा कि !

ছপুরে কেনাবেচা চলছে চিলে তালে। দোকানকৰ্বচাৰীরা
অবিকাংশই সান আহারের তথ বাঙী বাবে, ছ-এক জনকে
বেলা হণ্টার ছেডে বেওরা হরেছিল তারা পান চিবোতে
চিবোতে এনে বসবে পারার সামনে। ছপুরবেলার অর
বাকে বাকে বলে বেশী লোকের হয়কার হয় না। শস্তু সাহা
বেলা হণ্টার আহারাধি সেরে তহ্বিল নিরে একটা উচ্নত
ভজাপোবে বলে। পালে বলে লাল বেরা বানা বোটা বোটা
বাতা নিরে ছ'বন হ্বরি। পাইকারি ও বুচরা ছ' রক্ষ্
বাতেরের হিসাব আছে। বে সব মাল কলকাতা বেকে
আসছে তার জ্যাবিরচ আছে—বে সব মাল ছোট গাঁরের
বোকানীরা বিচ্ছে তার চালান লেবা, টাকা বুবে বেওরা
আছে। বোকাবের ক্যোবেচার টাকা এসে জ্বছে

ভহবিলে। বাজের ভালাট বৃহুর্তে বৃহুর্তে উঠকে আর নাবছে—
কিনিসের বাম বাদে পুচরো রেককি প্রের্ডে বৃথিরে বিজে
হছে। প্রকাণ বাজের এক একটা পোণে বিভিন্ন বক্ষরের
রেককি, টাকা, নোট প্রকৃতি আলাদা করা আছে। কাজ
হছে কলের মত। হুপুরে বোকানের লাগাও প্র পুশ্রি
ঘরটাতে গিয়ে শতু বঙী। হুই কিরিয়ে নের। বড় ক্যাশ-বাজের
চাবিটা তার কোমরের বুন্সিতে বাবা থাকে—হুপুরে হু-এক
জন ব্রের্ডি এক বাজ ব্যালবার দরকার হয় না। বারা
ভাল বিক্রী করে তারাই পরসা বুরে নের। নিজেদের বসবার
ভক্তার গায়ে ছেটিয়ত যে খোপ আছে তাতেই পর্যা কেলে —
ভাঙানি দেয়। এটুই বিবাস না করলে ব্যবসা চলে না।

বিশিম এনে দেবলে বুশরিতে আৰু লোক বোধাই—অবচ দাবার হক তাকের ওপর তোধা রয়েছে। গমও বেশ ক্ষম নি।

বিশিন আগতেই শুঞ্ গাহা তাকিয়াটার ওপর একটু নড়েবনে বললে, এল বিশিন।

বিশিন বলগে, আর এগ ! ববর শুনে তো হাতণা ঠাতা বেরে আসহে মশার।

শধু সাহা ঈবং হেলে বললে, ভ:বনা কিনের, বলে মা:
শরীরের নাম মহাশর—
যা সভয়াও ভাই সধ।

বুদ্ধের আর্গের অবস্থা আর আঞ্জের অবস্থা ভাব ভ।

বিশিন বদলে, কিও একটা পাকাপাকি ব্যবহা হয়ে গেলে

— ব্যবসায় কথো কিলিয়ায় হবে না কি ?

রভন গড়াই বললে, ভারণর আইনের নানান রক্ষ ক্যাচাৎ ----হালার হজুং----

শমূ ভাকিরাটা কোলের ওপর ভূলে বরে মিটি করে হাসলে। বললে, আইন—হালামা। আরে ভাই—পদ্যপাঠে পছ বিঃ কাঁটা হৈরি কার কেন কমল ভূলিতে,

হুংৰ বিমা কৰা লাভ হয় কি মহীতে ?

প্ৰদা তো গাছের ফল নৱ বে কোঁচড় পাতগেই টুণটাপ করে। পড়বে।

বিশিন দীবং উভেজিত হতে বললে, কিন্তু কথা আইন—
শত্তু বললে, আইন আত্ত কোনকালে নতম হয় তে আই।
কথা আইনে না বাঁবলে চড়া লাভটা কি মাগ্না আলে। কাঁটা
হৈতি কান্ত কেন—

বিপিন রাগ করে বললে, ক্লা আইনকে বাগ মানাতে ভোষার বত লাবপতিরা পারে—আমার মত চুনোপুঁ ইরা—

শস্তু বললে, প্ৰায় বংসহাৰৰি কালো কাহবার চালিছে কোন লোকটা চুনোপুঁট আছে বলতে পার। ইে হেঁ বাবা— সন্থাই এবন বাকে বলে রাখৰ বোহাল।

পভুর উচ্চ হাসিতে হোট বর্মী গর গর করে উঠল। কেট লে হাসিতে বোপ দিলে—কেট বা কারো গা টপে ইসারা করলে। স্বাই বুগলে, আইনকে পাপ কাটাবার দিবা, অস্ত শকুর আরভাবীন। বছুবা আসর বিপক্ষের রূপে অবন বে-পরোয়া ভাবে কেট হাসতে পারে।

এবার থবার চেবে প্রতী নির্মান দেবে বিশিন বাঁতে বাঁও চেপে বিহুত কঠে উচ্চারণ করলে, চাবার—নম্পি-চোব—

(क १ वचन जिल्लास क्षेत्र कवरण।

(क ? णाका---कारनन ना किहू !

নিবের ফ্রাট ব্বতে পেরে রতন অপ্রতিত স্থরে বললে, বুবেই বা করহি কি ভাই—বাদের টাকা আহে তাদের রীতই আলালা। বিশিন বললে, টাকা আকলে বা বুনী তাই করা বার—বর্ষকে ঠকাবো বার না।

বৰ্ম ! আর একধার বিমিতভাবে ক্বাঁটা উচ্চারণ করেই রচন সামলে নিলে। কলিকালে আধার বর্ম ! চারণোরা পাপ পূর্ব না হয়ে হুছ বাবে দেশে ? অরাক্ত হয় ?

বিশিন বিভিন্ন উঠল, বেশ বতন—ভাকা ভাকা কথা কয়— এক কাহন বিল্লে তিন কাহন নের তোর হ'ল সিল্লে সেই গোন্তর। বৃদ্ধ বাবাটা পাশের কল কিলে? বাস্থ্যের অভাব মৃচ্বে না ? আঙ্কা কুলে কলাগাহ হয় নি কেট ?

ন্নতন সভেকে উত্তর দিলে, যে যার হরেছে—ভার হরেছে —আযার কি !

বিশিন বললে, ঘটে বৃদ্ধি না থাকলে কিছুই হয় না। ওই চানার শস্তুটা জোঁকের নত সাহুবের রক্ত চুবে নোটা হচ্ছে ছিনকের দিন—এটা বৃদ্ধি নক্ষের পড়ে না ?

রতন বললে, ওর মত টাকার আঞ্চিল হলে আমিও বেখাতে পারতাম----

ৰাক—বাক আৰু কুট্নি মাৰিস নে—ভোদের হিল্মভ কাৰা আছে।

রতন হাগ করে বললে, ভোর হিশ্বতও জানতে বাকি নেই জারো। চালে হিল বছ—শাঁচিলে হিল বা ইট—হুছ বা বাবলে—

বিৰ্জন পথ প্ৰায় শেষ হয়ে এল—মোড় কিবলেই বাজাবের মধ্যে এলে যাবে ভারা। এখন খগড়া করে লোড় হাসিরে লাড্টা জি। বিপিন ওয় ভান হাডধানা চেপে বরে বললে, আছু।

হাতে হাঁচিকা টান বিবে রতন রাগ প্রকাশ করলে। ছাড়-লাগে বাইরি। আবার টানে।

ভোর ভালর অভেই টানছি। ওই যে স্থীরবাবু—সেদিন ছাটের ন্বির্বাদে বক্তৃতা হিলে না, ভাই সব—র্নাকাবোর শহুভানবের চিনে রাব—ওরা ভোঁকের বভ ভোনাদের রক্ত চুবে বাজে।

রতন বললে, সে ভো আনাদেরই বললে।

আনাদের নর—বারা সভিচ্ই সকলকার রক্ত চুবে থাকে ভালের বললে। ওই পতুর রক্ত লোকেদের। বারা আইবকে টাকার কোরে কলা ধেথাকে পারে—ভালের অনাধ্য ভূ-ভারতে কি আহে। তা আছে তো আছে—ইছিকে টানিস কেন ?

এই বাবুদের ভাছে বাব। শভুর অপের কবাটা বুলে
বলব সকলকে।

ভাতে আয়াদের লাভ ?

७ (छ। यस रदा।

না ভাই, নিজের গলগ বেরিরে পড়বে তাতে। ওদের টাকা আছে। না পুলিস—না ববেশী মিঞাই কিছু করতে পারবে। লাভে হবে পুঁটমাছের প্রাণ—হাড় হাড় লাগে না ? কি বে ইয়ার্কি করিগ—মাইরি।

সকোৰে হাত ছিনিছে নিছে ব্ৰভন বিপৰীত দিকে পা চালাণে :

বিশিনের ফোবের বেগটা সহণা মন্দীভূত হ'ল। ও ব্রুলে

শরের সম্পদ বৃদ্ধিতে—অক্ষম হিংসা পূষে ক্ষতবিক্ষত হওরা
হাছা কোন প্রতিকারই তার হারা সন্তব নয়। ইছোর বে
পথে সে পা বাছিরেছে—সে পথ থেকে পিছু হটা বিপক্ষনক। পরুকে ক্য করবার উপার কেবে চিন্তে বার করতে
হবে।

থানের একটেরে বারোয়ারিত্যশায় ক'বন গোককে কারা বেন কি উপদেশ দিছে। পূর বেকে যুবা যায় বস্তৃতার উল্লেখনা লোকদের মনেও সঞ্চারিত হয়েছে। মাবে মাবে ভারা হছার দিয়ে উঠছে, কগতের ধনিক নিপাত হোক।

আনকে বিশিনের বুক্ধানা নেচে উঠল। এ গাঁরের অনেক লোকই তাকে কানে। যুদ্ধের বাকারে অবস্থা কোরার সে যে অনেকের ক্ষরির পাত্র তা পে বুক্তে পারে, কিও এই যুহুর্তে শহরে রেশন চালু হবার পর বেকে সে কি বনিকপ্রেণীর তালিকা বেকে নেমে পড়ে নি । হ্বানা গছনা গছালে কিংবা একবানা একতলা খর তুললে অবহা সজ্ঞল হয়েছে এই কবা নাত্র বলা চলে—বনিক্রেণীর সংজ্ঞা আলালা। দশ বছর আমিনী চালে পারের ওপর পা দিরে বলে বেলেও বার টাকা সুরোর না সেই ব্যক্তিই তো—

বিষ্টান্তের লোক ভলি বিপিনের পানে চেরে কেয়ন বেন বিইরে গেল। বিপিনের কাছে ওরা ধনী না হলেও কৃতজ্ঞ বটে। টাকা বিরেও যে-বাজারে চাল পাওয়ার আশা ছিল না—লে বাজারে বিপিন জাতা এবং অয়দাতা ছই-ই। জীবন-বাজা নির্কাহের কর্তই অর্থ। লে অর্থের বিনিমরে, হোক তা প্রচুর, বে জীবনরক্ষার জিনিস সরবরাহ করেছে—মহামরভর-কর্বান্ত বিপরেরা তাকে কেনই বা কৃতজ্ঞতা না জানাবে। মুভের পরবারু যেনন করে পের হবে কেউ বলতে পারে না—ভত্তননি মরভরও বে বংসরাতে কিরে আলবে না তারই বা নিক্ষরতা কি। বিপিনকে ওয়া তীতির পাল মনে করলে কেন।

হকের উপর হাড়িরে হ'জন বজা ভাবে ভাবে ভি বললে 'বুর্জোরা' এই শহুটা ভাবে দেল—হাবে বুখলে বা বিপিন। লে ভার একটু এদিরে রক্ষে বারে এনে ইড়াল—এজবার ইভৰতঃ করলে। ভান হাতে বাধাটা চুলকে বললে, আপনাদের সলে একট পরাবর্শ আছে বাবু।

ৰক্তাদের একজন ব্যক্তের হালি হেসে বললেন, আমাদের লক্তে পরামর্শ। আমহা ত বাবু ক্ল্যাক মার্কেটের ব্যৱ রাবি না।

এই ব্যক্তেভিতে বিশিন রাগ করলে না, বললে বেলাক বার্কেটের মুবে বাঁটা নারি বাবু—সে বা হরেছে হরেছে। এই নাকে বত দিছি, কান বলরি, ও পথ আমার নর।

ৰঞাদের একজন বললেন, পেট ভাই থাকলে রভে ভানেছি বাবেরও অফচি হয়।

বিশিন বললে, যা খুলী বলুন বাবু রাগ করব না। আভায় করেছি সে কথা একবার নয়, একশো বার খীকায় করছি। কিন্তু বাবু শাপ করণে প্রাচিতিরের বিধান নেই, এমন কোম লাভর আছে কি ?

বক্তারা এবার সভাই বিশ্বিত হলেন। পোকটা বলে কি।
বুবের বাজারে শোষণজিরাদক ব্যক্তির হৃদরের এই পরিবর্তন
অভাবনীর ২লতে হবে। এ ক্ষণিক উচ্ছাস, না স্থারিকলিভ
কোন কিছু রয়েছে ওর মধ্যে ৪

একজন বলগে, ভোষার ধা **আছে, সব ত্যাগ করতে** পারণে ?

দেৱন বাবু পরীক্ষে করে। একটু হেসে বললে, বাইরে থেকে মনে ২য় জনেক কিছু জমিয়েছি হয়ত বা লাবপতিই হব, কিছু বাবু—

ওঁরা হেসে বগলেন, আঞ্চা চুপ করে বসে আমাদের লেকচার লোন, ভারপর উচিত মনে কর—

বক্তাশেষে বিপিন বক্তাদের অভ্সরণ কংলে।

নিৰেকে নৃত্যন মনে হচ্ছে। মনে হচ্ছে পৃথিবী ভূচে যে অনাচার চলচে সে অনাচার দমন করা তার পক্ষে অসম্ভব নয়। ছুছুতদমনের উল্লাগ আছে একথা অধীকার করা চলে না।

পথ চলতে চলতে সম্বাবনামী যার সলে দেবা হ'ল— তাকেই সগৌরতে নিজ সহজের কর্বা সে ব্যক্ত করলে।

ভেবে দেবলাম—পাপ যা তা মানুষকে বাটো করে।
পুঁজিবাররা হ'ল পুৰিবীর শক্ত, তাবের ধ্বংস করবার জন্তই
এই যুদ্ধ। যুদ্ধ শেব হলে এরা একজনও পুৰিবীতে বাকবে না।

আনাদি তাকে একাতে তেকে বললে, তোর কি নাধা বারাণ হরে গেল বিশিন, ইংরেজ বাক্তে প্র্য্য অভ বার না জানিস। ওরা পুঁলিশতি না হলে—

ৰিশিন বললে, পুঁজিবার কেউ পাক্ষে না পৃথিবীতে— বাৰুৱা বলেছে।

ভোৱ বাবুরা ভো পুঁজির বর্ষ ব্বলে না। বলে থেসে গলার বর বাটো করে আমলে, এক ভারণার বুগের সভাব পোলাম—ছ'শো বণ।

বিশিৰ অভ্যাসৰণত বললে, বাইছি ? না বালা লাগাছিল ?

ৰাঞ্জা লাগাই ত আমি—মধুর সক্ষেত্র বারা পূপ্য নিরে বিশিষকে লে আরম্ভ করলে।

'বিশিন সন্দিপ্ধ ব্যৱে বললে, তা ভূইও ভ কিনতে পারতিস, আমাকে বললি যে বছ ?

ভবে—শোণ—টাড়া নেই হাতে। আৰু বৰিবাৰ পোট আগিলের পাল বই থেকে ভোলাও বাবে না। অৰচ শভু বৰর পোলে আৰুই কুটোটা পর্যন্ত কিলে নেবে। একটা ঢোক নিলে বললে, ভবে ভোকেও বে বৰ্ষটা দিছি বিনি বার্বে তা মনে ক্ষিল নে। বভাপ্রতি এক নিকি ছাডতে পার—সন্ধান বলে দেব, না হলে বাবা কেটে পড়।

বিশিন ভার হাত বরে বলগে. আছা, সভ্যেবেলা ব্যয় বেব—মানে আমারও তে: চীকার অন্ট্রন যাছে। আর এই মালর প্রিভিত্তে করে এলাব—

ধুৱোণি প্রিভিজে । বছ বছ লোকেরা আৰু দিবি।-বিলেসা করছে— কাল তা ভালছে। ভণ্চাজি নশাই কালই তো বলছিলেন— রূপের সঙ্গে আর্থানী দশ বছর বুছ করবে না বলে বভ লিবে ইটাপ্যর সই করে দিরেছিল—আজ আছেক রূপ ভার পেটের মব্যে।

বিপিন ভার হাতে চাপ ধিরে বললে, আহণ, মা-কালীর দিব্যি এইল, সভ্যে পর্যন্ত অপেকা করবি।

पाम्।।

বিশিন ভাবলে, কাল তো সে গুটরেই নিচ্ছে, শেষবারের মত একটা টান দিতে কতি কি। এই কাভলার আলা সে করে না— অন্তত চুনোপুঁটিও যদি এই টানে আগে আগুক না।

বাছী আগতেই আগ্লা বলগে, নকুল বিভিন্ন এলে কড ভাকাডাকি করছিল—বললে, ভূমি নাকি ইটের বারনা দেবে—

শক্ত শক্ত কথাওলোকে ঠোটের প্রান্ত বেকে গলার মধ্যে চাগান করে দিয়ে বিপিন একটু খাসলে। বগলে, হাঁ ভেবে দেবলায় গোভলাটা ভূলে কেলাই ভাল—ভোমারও সাব মর্বন এত দিনের—

আল্লা বললে, ভবু ভাল যে ভগমান ভোমার স্বভি দিরেছেন।

বিশিন বললে, একটা পরাষর্শ আছে—ইদিকে এন। বলে শোবার ঘরে বিল লাগিরে বহুক্দণ বরে তার সঙ্গে কিস-কাস করলে।

স্বহী ভ্ৰে আলা বললে, আমার কাঁকি দেবার বভলৰ ময় তো?

এই ভোষার ছুঁরে বলছি। বিপিন হাত বাড়ালে।

আলা ভার হাভধানা ঠেলে দিয়ে বললে, বদি লাভ না হর—ভা হলে আনার গহনাখলো গেল ভো !

লাভ না হয় তো আবার নাক কান কেটে কুকুরের গলার বুলিয়ে বিও।

এত বড় আবাসেও আহা আবত হ'ল না। পোই আলিসের পাল বইবানা আর লোহার লিকুকের চাবিটা নিকের বাজে ভূলে তবে সে তোলা গহনার বাজটা বিশিনের হাতে এবে ছিলে।—দেবার সময় করুণ ছবে বললে, বা-কালীর ছিবিয় বইল—আমার বধাসর্জার তোমার হাতে ভূলে দিলার। বদি বিশ্ববাহুকি হও এর প্রিতিকল তগমান তোমার দেবেন।

বিশিষ বগলে, এই কাৰটা হয়ে যাক আৰে—নিক্ষের বলে কিছুই রাধৰ না—সব ভোষার নামে লেখাপড়া করে বেব।

চট পাৰে বাইরে যাবার উদ্যোগ করছে বড় ভাড় ডাকলে, ঠাতুরপো—একট কবা আছে।

অগ্রসঃ চিতে বিশিন বদলে, বাহ্ছি এক জারগায়---শিচু ভাক্দে ভো ? যত সং----

বেচারী বুব কাঁচ্যাচ্ করে বললে, আমি তো পিছু বেকে ভাকি নি---

चान्-चान् वा वनवाव--वान (कन।

কল্পা বগহিল--কাল বই মানিরে ইছুল গেলে মাটার মারবে।

ইন্—মারণেই হ'ল । আছো আমার কি কুবেরের সম্পত্তি থেকেছ ভোমরা মারে ব্যাচীয়ে ? মহুন বই না হলে পড়া হর না ? কেন বারা ওপর কেলাপে উঠেছে—ভালের ঠেরে চেরে চিছে মিরে পড়া হর না ? আমরা ভো এক বই উপরি উপরি ভিন বছর বরে পড়েছি। সে রাগের মাধার বেরিরে পেল।

ক্ৰাটা বিশিনের নিব্যা নর। তিন বছর একই ক্লাসে বিতিশীলতার লক্ষণ দেবে—অভিবান-বহিত্তি কভক্তলো বাহা বাহা শব্দ প্ররোগ করে বাবা ওকে দোকানবরে এনে বিগরেছিল। বিশিন এ ক্যা নিরে প্রারই আলার কাছে গর্ম করে বলে, নিকের বাবা বলে বড়াই ক্রাই নে—ওমার দিব্যবিষ্টি ছিল। লেবগণড়া শিবে সত্তর-আশী টাকা মাইনের চাকরি করে এই রুভের কলকাটি কোণার নড়ছে বুবতে পারতাম ? তোমার ছেলেরাও ছুটো তিনটে পাল বিরে বোড়ার বাস কাটবে এ আমি বলে রাথছি।

বভ কার বিষয় মূব দেবে আরা প্রবোধ দিলে, ভেব মা দিনি—আৰু রাভিরে চাকা বদি আদার না করি তো ছিদার হাজরার মেরে নই আমি। শুনের ভো ? এন্ড দিন ক্যা-ক্যা করে মরলাম কি বেরধাই। বলে গেল ইট পোড়ামো হচ্ছে—ঘোডলা হবে।

বছ বা ওবু বললে, তগৰান ঠাকুরপোর স্থাতি দিন—মা রক্ষোলী বুব ভূলে চান।

বিশিন আগতেই অনাধি বললে, বাপ কর ভাই-এই বাজর যাল গড হরে গেল।

যানে। টাকা পেলে কোৰায় ?

ভোনার বউদি আনই ভো চাপ। নেবেলোক। বললে, ভাবান করক ঠাকুরপোর বাল-বালভ হোক—এ সুবোগটা ভূবি বেল না। আনার গংলাখলো নিরে আক্ষেক টাকা বিরে নাল বারবা করে রাধ—চাবার বালী বাক না—লেবাপলাট ভবু পাক। বোক। ব্রিবাদী বেবেছেলে—কি বল ভাই চ বিশিষের মুখের বিকে চেরে অভ্যন্ত ভৃতির সক্ষে সে হাসির একট। উল্লার ঠোটের উপর ভূলে বললে, অবিভি মিনি খার্বে সে গহনাগুলো ছেড়ে দের মি। বললে, লাভের থেকে পাঁচ ভবি সোমা আয়ার হিও। ভিনা—

বিশিন হন হন করে চলতে স্ক্র করেছে। ওর কেবলই বাবে হচ্ছে—সুবাগ পেরে বৃহিহীন অনাধিও ভাকে এক হাত নিলে।—আহা, সব্র কর্। বাব্রা বলেছে, এ বুছে সব বড়লোকরা শেব হরে বাবে। জোর গলাতেই লেংগণ্ডা জানা বাহ্বোর বে কবা বলছে ভা কি কলবে না? কেব কলবে না? বারেও ভো বলেছে—বেধিন কলির চার পোরা পাণ পূর্ব হবে—সেইধিন—

গহনার পূঁচুলিটা অলভ অগারের মত গারের কাপছের মধ্যে অলছে। আগুন--না আগ্রাকালীকে বকনা করার---বাবুদের কাছে প্রতিজ্ঞাভদের পাপগুলো এর মধ্যে আশ্রের নিরেছে। এ তারই পাপ---তারই পাপের কল। এমনি করেই পুৰিবীর সঞ্চিত সোনায় আগুন বরে বাবে এক দিন। সে দিন বেলী দূরে নয়-- এই মুছটা শেষ হওরা পর্যাভ---

এত বুৰেও সোনার তালগুলো সে বাবুদের হাতে তুলে দিলে না। পৃথিবীতে যে সাম্যবাদের চেউ উঠেছে তা থেকে কারও পরিত্রাণ নেই; সোনার মূল্য তবন হয়ত সোনাই বাক্ষে না। কিছু সে তো মুছের পরের কথা। আগাততঃ মুছু শেব না হওয়া পর্যন্ত এটা এমন জারণায় সন্ধিত রাবতে হবে—বেবানে ব্যক্তিগত সম্পত্তি বলে গণ্য হবে না—কিংবা সাম্যবাদের ভিত্তিতে তা বংশগত লাবিকে হাভিয়ে গোষ্ঠীগত সম্পত্তিতে অর্শাবে না। তার একমাত্র উপায়—

বাড়ী এনে বিশিন গহনার পুঁটুলিটা আয়াকে কিরিবে দিরে বলগে, ভেবে দেবলায়—তোনার গহনার হাত না দেওয়াই উচিত। ব্যবদার কবা তো বলা যায় না—বর বহি একটা ভালয়ক হয় তবন আয়াকেই হ্ববে। তুমিও কবা বলতে হাড়বে না—পাড়ার পাঁচ কমও হি-হাড়ার করবে।

্ আগ্রাকালী প্রসন্নচিত্তে সহনার পুঁটুলি হাতে নিয়ে বললে, ভা হলে লোভলা হবে না ?

কেন হবে না। বাজি বর ছরোর ব্যবসা ইটেটপভর সব ভোষার নামে লেবাপজা করে দেব কাল।

আলাকাণী সামীর অধিকৃত্ত মুবের পাবে অবাক হরে চেয়ে রইল বহুক্তর , পরে বললে, তা বা ভোষার বৃষ্টি। কিছ ভোষার ব্যবদা আমি চালাতে পারব কেন ?

আছা—দৈ সৰ শিৰিৰে পঢ়িবে দেব—না হুর ব্যাদেছার বেশো আবার।

খানীর রসিক্তার আরাকালী পর্য সন্তই মনে প্রনাতলো বাজ্ঞাত করলে। তারপর কাছে এনে বললে, এল—জল-বাবার বাবে। বানক্তক সূচি তেকে রাবলার, তাবলার সকালে তো বাবা পর্য করে হাতে তাতে করে উঠে গেলে— স্টির বালাটা সারবে বারিরে বিবে বললে, বিবি বলছিল
---করার বই ক'বাবা কিবে বা বিজে---

বিশিন বললে, লেখাগছা শিথে কি হবে বলতে পার ? একজন মকুর বা উপার্জন করবে—পাঁচটা পাল দিরে ভোমার ছেলে-ভাইপোরা—উকিল, দারোগা—অত বছ ব্যবসাদার শস্ত্ লা সবাই ভাই রোজগার করবে। টাকা আর কারো ভ্রমিয়ে য়াৰতে হবে না । বৰে ক্ষতি—কালই সৰ ক'টাকে ইছুল বেকে যাড়িয়ে নেব। বটকি যাজী না হয়—বেশ ভ, কাছো যাৰীনতায় বাবা দিতে চাই বে—বা বুৰী ক্ষক গে।

ক্ষেক্ৰামা দ্চি উপল্ল ক্ষে বললে, ৰাবুলা কি বলছিল আম ? এই মুছ শেষ হলে —

আৱাকাণী হাঁ করে বিশিশের বক্তভা ভ্রমতে লাগল।

## নবীন আয়ার্লগু

## 🛢 নলিনীকুমার ভত্ত

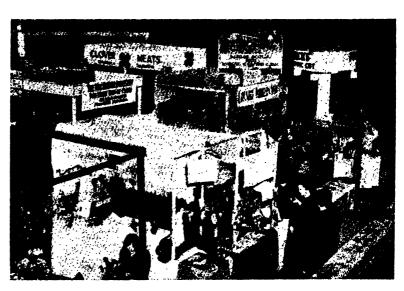
পঁচিশ বংগর হইল আইরিশ ক্রি টেই—বর্তমানে যাহা
আরার বা আরার্গও নামে পরিচিত—প্রতিষ্ঠিত হইরাছে।
আরার্গওবাদীদের রাক্টনতিক সামাজিক ও অর্থনৈতিক
জীবনের উপর ইহার প্রভাব কডটা কার্যাকরী হইরাছে ভাহা
মিরপেক ভাবে বিচার ক্রিরা দেবিবার সমর আক্র

বর্তমান ভারতবর্ষের রাজনৈতিক পরিভিতি যেত্রপ ছাভাইয়াতে ভাষা चारतको। ১৯২১-२२ मानव चार्यः-ৰ্ণভের অনুত্রপ। ইংরেছের ভেদনীভি সেদিন আয়ার্লভকে উত্তর ও দক্ষিণ এই ছুই অঞ্লে বিভক্ত করিতে সমূর্ব হইরাছিল। ইংরেজের সঙ্গে আয়:-ৰ্ণতের ভাতীরভাবাদী দেভারা দেছিদ ষেভাবে আপোষ করিতে বাধা হইরাহিলেন আৰু ভারতবর্ষ বিভঞ্জ रख्यात (पर अकर कृष्टे बाह्रे-মীতির পুনরাবৃত্তি ঘটরাছে। বর্ত্ত-মান আধাৰ্গতের কৰবার ইমন ভি ভ্যালেরা ভারতবর্ষের পক্ষে এই বিভেদের শোচনীর কুষণ আশহা ক্ৰিৰা বাহা ৰলিৱাছেন ভাষা বিলেষ ভাবে প্ৰণিবানবোদা। ভবন ভিনি बरे मार्च वनिवाधितम-

"ইহা অত্যন্ত পোচনীত ব্যাপার বে, আরার্লভে আমরা বাহা পরিহার করিতে চাহিরাহিলার ভারতবাসী ভাহাই এহণ করিতে চলিয়াছে। ১৯২১ এইাজে আরার্লভের ভাতীরভাবাদী নেভারা কেমন করিরা বে দেশবিভাগকৈ মানিরা সইরাহিলেন ভাহা আইরিশ ক্ষণপের নিক্ট এক বিষয় সমস্যা হইরা হাঁভাইরাহিল।"

আইরিশ শেভারা একদিন ভাবিয়াহিলেন বে বিভক্ত আরার্গ্ পুনর্বিলিভ হইবে। কিছ আফ ২৫ বংসর পরে ভাহা-দের সে আশা আকাশ-রুমুরের বতই অলীক রহিরা সেল, যরং আইরিশ পত্রিকাওলির সাত্রভিক সরব্যে দেবি হুইটি অঞ্চের সব্যে ঐক্যবেংব আৰু বিঃশেষে লোপ পাইতে বলিয়াছে।

. স্থতরাং ভারতবাসীকে বর্তবান আবার্লভের ইতিহাস আবু গভীর ভাবে আলোচনা করিয়া দেখিতে হইবে। উভয় এবং দক্ষিণ আয়ার্লভের মধ্যে কি সম্পর্ক ছাড়াইয়াছে ভাছাও ভাবিয়া দেখা উচিত।



আইরিল মেলার প্রাম্য কুটারলিরের প্রবর্ণনী

বর্তনান আর'র্গত যে রাজনৈতিক পরিছিতির ভিতর বিরা চলিরাছে তাতার স্ত্রপাত ১৯২২ মীটাক হইতে বর্ধন সেধান-কার একটি রাজনৈতিক দল উক্ত বংসরে ইংরেজদের সঙ্গে সহিস্তরে আবহু হইরা চুক্তির সর্ত্তগোকে কার্ব্যে পরিবভ করিবার করু তংপর হইরা উঠে। আর একটি দল কিন্তু চরম নিশান্তি বলিয়া ইংকে এহন করিতে রাজী না হইরা প্রত্যা-ব্যান করে। কলে হুই দলের মধ্যে বিরোধ উপস্থিত হয় এবং আরও পর্যান্ত তাহার কের চলিতেছে।

১৯২২ বিটাবের পর হইতে প্রায় হল বংগর কাল প্রব্যোক্ত



সমবার সমিতির লোকেরা মাধন ইড্যাদি বাস্ত্রজাত করিভেছে

ঘলই আইরিশ রাষ্ট্রে নারকর করিরা আনিতেছিলেন। সভিত্র
ন্যাপারে উচ্চারাই জিতিরাছিলেন, বে সংখ্যাল্যির্চ দল সন্ধির
প্রভাব প্রহুবে আপতি জানাইরাছিলেন উচ্চানের বিরুদ্ধে প্রচণ্ড
গৃহযুদ্ধ ঘোষণা করিরা উচ্চারা উচ্চানিগকে হঠাইরা দিরাভিলেন, প্রতিরুদ্ধীদিগকে ভাহারা সম্পূর্ণ রূপে নিজির এবং
বহুবা বিভক্ত করিরা ভাহাদের সংহতিকে বিনত্ত কর্তম
হইরাছিলেন। প্রথমি ভাবে রাষ্ট্র-কর্ত্ত্ব লাভ করিরা ভাহারা
প্রচণ্ড উৎসাহে স্ভন আরার্গণ প্রভিত্তার মনোনিবেশ করিরাভিলেন।

আর কোনও বৈপ্লবিক পরিবর্তন সাধন বা কাতীর আন্দোলন পরিচালনার দিকে ভাহাদের বোঁক ছিল না এবং এটা বিশেষ লক্ষীর বিষয় বে, ১৯২২ থেকে ১৯৩২ এটাক পর্যন্ত এই দশ বংগরের আরার্গতে ভিভরের দিক দিরা ভেষন পরিবর্তন কিছুই হর নাই—অবগু বাহিরের দিক দিরা কিছু কিছু অল্লবন্দ যে না ক্ষরাছিল ভেষন নর।

সংক্রেপে বলিতে সেলে, ১৯২২-এর পর হইতে বছ বংসর
পর্যন্ত আরার্গতের রাজনৈতিক বিবর্তন তাহার সামাজিক
জীবনের বিশেষ কোন পরিবর্তন সাবন করিতে পারে নাই।
বর্ধানবত্ত আরার্গত লীগ অব নেশন্স বা জাতিসজে তাহার
বোগ্য আসন এহণ করিল। সিবিল সার্ভিন, প্রধান বিচারকের
পদ, সামাজিক জীবনের সাধারণ আইনকান্থন ইত্যাভি আধ্নিক
শাসবত্তর অনুবারীই গঠিত হইল।

এই বছৰ্মতী কালে আৱাৰ্গতে এখন সৰ ঘটনা ঘটতেছিল বাহার প্ৰভাব বৰানৰত্বে পরিলন্ধিত হইবাছিল। বীরে বীরে অপেকাঞ্চ দরিক পরিবারের লোকেরা জীবিকা অর্জনের বাবতীর ক্ষেত্র আনিয়া ধবল করিতেছিল। চাবী, লোকানী, গেঁরো চাকার প্রভৃতি সাবারণ লোকেদের ছেলেশিলেরা চাকা

রোক্সারের ক্ত নানা পেশা অবসংশ করিতে লাগিল। ক্রমে **कीरमहाळा**ड কৰে ভাহাদের बागरे वरनारेश (शन। छाराएक অবহার অবনতি হইরাছিল একবা ৰেমৰ বলা চলে মা ভেমনি তাহাদের ধুব যে উন্নতি হইরাছিল ভাহাও বলা ঘাইতে পারে না। ৰোট কথা এই যে, ভাহাছের গভাগুগভিক জীবনে আসিয়াছিল বিরাট পরিবর্ডন, নৃতন পারি-পাৰ্থিক সম্পূৰ্ণ ভিন্ন ভাৰত্বায় ভাহাদিগকে উপনীত করিয়াছিল। ভাষাদের শীবনযাত্রার প্রবালী ছিল সহজ সরল এবং গণতান্ত্রিক-ভার আদর্শ ভাহাদের উপরেই অধিকতর কার্যকরী হইরাছিল।

১৯৩২ মিটান্থের ভোটরুছে মি: ভি ভ্যালেরার বিজয়লাভের পর গণভয়ের পবে আরর্লভের এই গভিবেগ বেন দশ শুন বাভিয়া গেল। এই বংগর হইতে ভাঁহার নেভৃত্বে কিয়ানা কেল' নামক রাজনৈভিক ধলটিই আইরিশ রাষ্ট্রে কর্ত্ত্বই করিবা আসিভেছেম। আরালের বর্ত্তমান শাসনব্যবহা ভি ভ্যালেরা কর্ত্তক প্রশীভ ১৯৩৭ এর শাসনভন্ত হারা নিম্বন্তিত। এই বিশান অহ্যারী আয়ার খাশীন এবং সার্ক্তভোষ রাষ্ট্র বলিরা খীকত।

আইরিশ জীবনের বান্তব সমস্তা সধকে ডি ভ্যালেরা সোড়া (बरकरे विराम अम्मूर्व जवान, व्यन्तर्वत नाकीयक्त छिमि চিনিতেন। ভিনি এমন কভকওলি ব্ৰীভি ও আদৰ্শ প্ৰবৰ্ত্তন क्वित्वन वाश अहे क्विवर्षमाम भग्नाञ्चिक चामर्ग्य छेन्द्र সরাসরি ক্রিয়ারীল হইল। এদিকে প্রতন্ত্রের প্রবর্তক-গণ কিছ ধীরে ধীরে আদর্শচাত হইরা পড়িতেছিলেন। 'ভাইগ-রিগ্যাল লব্ধ'কে পোষণ ক্রিবার জ্ঞু যে বিপুল অৰ্থায় হইভ ভাষা ভি জ্যাগেৱা জনসাধারণের চোৰে আঙুল দিয়া দেখাইয়া দিলেন। স্বাৰ্থাবেষীদের নিক্ট হইতে ক্ষতা হডাভৱিত হইবার পর রাইনৈতিক কেন্তে र्व देवप्रविक পतिवर्षम एव छाराव करण चारेतिन क्मनन **अगन्यत्वत जायर्थ छेव, व स्टेश छैट्छ। अगनि जयशा**त ि **णारन**तात अरकातमूनक ताकरेनिक कार्यावनी अवर তাবীর আবেষণ ক্ষমাধারণের বলে অপূর্ব্ব সাড়া ভাগাইতে সক্ষ হয়। এক্দিকে তিনি বেৰন আয়াৰ্লতকে ৱিটান **अवकाब क्र्इंक चाबीन ब्राड्डे विजया चीकाब क्यादेश** লইবার চেঠার সাকল্য লাভ করিরাছিলেন, অভদিকে ভেষদি দৰ্শাঞ্জত আইরিশ গণভন্তকে আত্মসচেতন করিয়াও कृणिशाहिरणम् ।

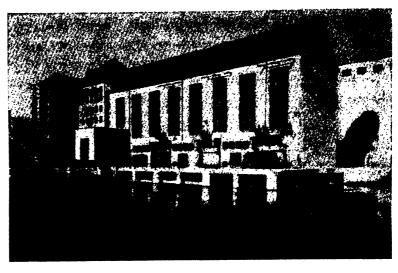
১৯৩২ বিটাৰ হুইতে আৱাৰ্গথের
চচুলার্শে হুর্তেত গুকুপ্রাচীর বাড়া
করিরা ভাষার আগুড়ার অনেক-গুলি ছোটবাটো লিজের উরবন
ও প্রসারের ব্যবস্থা করা
হুইয়াছে। তরব্যে ক্তকগুলো
পুরনো—আর ক্তকগুলি একেবাবে আনকোরা।

ক্র রেড হইতে আরম্ভ করিরা ইলেট্রক বালব, বিটের চিনি, মটর টারার ও টউব, কেণ্ট ছাট, ভার, প্রাচীর মুড়িবার কাগজ (wall-paper)। নিকের মোজা, অন্তর্বাস (underwear) ঘরের ছাদ নির্দাণের টালি, অলরাগ, প্রাহার বালন-কোসন, এল্মনিবাম এবং অভাভ বাড়-

নিশিত পাত্ৰ, ইপেকটুক ব্যাটারি, টনজাত বাত ইত্যাদি কত বক্ষাবি জিনিব যে এই সময় হইতে আরার্গতে প্রস্তুত হইতে লাগিল তাহার আর অন্ত নাই। পূর্বে এই সকল জিনিব বিদেশ হইতে আমদানী হইত।

আন্তাল তের অর্থ নৈতিক ব্যবস্থার কৃষিই মুব্যস্থান অধি কার করিয়া আছে। ১৯৩৬ সনের সরকারী হিলাব মতে আয়াল তের জনসংব্যার মব্যে হাজারকরা ৪৮০জন কৃষিজীবী। বন্ধলি প্রভৃতি বিভিন্ন শিল্পে নির্ভ্ত লোকেদের সংব্যা হাজার-করা ১৪৬, ব্যবসার-প্রতিক্তানাহিতে কর্মীর সংব্যা হাজার-করা ৭০, যানবাহনের কর্মচারীদের সংব্যা ৫১, বিভিন্ন পেশা অবলম্বকারীদের (অধিকাংশেরই পেশা 'বর্ম') সংব্যা সবচেরে ক্য—হাজারকরা ৪৬ যাত্র।

আইরিশ জীবনের বে-কোনো দিক সম্বন্ধে আলোচনা-এসতে সকল সময়েই একবা মনে রাবিতে হইবে বে. আর্বতে ভ্ৰমানের প্ৰপর সব চেরে বেশী প্রভাব ক্যাপলিক চার্ফের। লয়াভের উপর আইবিশ চার্কের এভাব ব্যাপক ও উহা প্রচর প্রাক্তবৈভিত ক্ষমভার কবিকারী। আরার্গতে ত্রমণ কবিভে পিলা যিনি বহিবার ভিল্ল সপ্তাহের যে-কোন দিন সকাল-বেলা ভাবলিবের সিট চার্চগুলিতে উপস্থিত হইরা কর্মব্যস্ত ভৰভাৱ ভিভ অবলোকৰ ভৱেৰ ৰাই, পৰিপাৰ্যন্ত ছোট ছোট क्रमंश्रीत अवर अकृत्मन द्वीरकेंद्र बावनात्न प्रशासनाम निर्वाहे त्व অষণকারীর নজর এড়াইরা গিরাহে তিনি বলিতে গেলে আহর্লভের কিছুই দেবেন নাই। অধবা প্রভ্যেক লেভের ( बाबाय कार्यानिकत्वत हिन विव वानी देववान ) नमत দংবাহণত্ৰভলিতে পুৱা হুই বা ভিন পুঠাব্যাপী লেউ-দংক্ৰাভ বে ক্ৰিতাৰি প্ৰকাশিত হয় সেঙ্গিও বাহায় গৃষ্টপৰে পভিত হয় ৰাই বৰ্ডনাৰ আৱাৰ্গভের আসল চেহারার সহিত তিনি चनविक्रिके विदेश (नरम ।



मानव नही छी तथ वार्कन:कूमात ১৯१৯ ब्रीहोस्स निर्मिख हाहे । छा हेरलक्ष्ट्रिक भावतात हिमन

बक्बा वानिष्डि २३(१ (य. मूख्य चर्यमिक वारदा গালুতিক আয়া*ৰ্ব*তের ক্লগণের কীবিকানির্কাহের প্রক পুগৰ কৱিলা ভূলিয়াছে। সৰ্কাসাধাৰণ বাহাতে ৰাছুৰের ৰঙ ৰাইলা বাঁচিলা থাকিতে পালে সে ব্যবস্থা সেধানকাল খাৰীৰ ৰাষ্ট্ৰ ক্ৰিয়াছে এবং ক্ৰিতেছে। ইহা বৃত্তৰ গৃত্তৰ চাকুৰি ও (भगाद रुष्टे कविदार्थ अवर शाबीम वायगारहत मूखम मूखम नव बुलिश विवाद । वीनविद्यात नर्क्ष क्रवेत नरकान करा অনেকটা সহজ্যাব্য হইরা উটিরাছে। সামাজিকতা ইত্যাদির পরিবর্তে অরবজের সংঘান এবং निकाश्रदाक्तीय खवाषिय हारिषा विहासिय अवन चारार्गरक्य जनाक-कोरत्न मुनाहान चरिकात कतितारः, कारकर चारतकात कुननात अवनकात लाटकता चटनकी चनानाचिक स्टेबा উট্টভেছে। অৰ্থকে সমাজের সকল ভারে বতই হড়াইরা দিবার বাবহা করা বার, তভই বে শ্রেণীর লোকেরা চাকা লইরা ছিনিবিনি বেলে ভাহাবের সংব্যা করিরা আসে। वानकार वह बावहा जवनस्यत कन कि शेषां वर्षमान ৱাশিৱার দিকে ভাকাইলেই ভাহা বুবা যাইবে। ইহা কিছ এমন একট ব্যবস্থা বাহা পরী অঞ্চের পুরবো বনেবী পরিবারের লোকদের ধুনী করিতে পারে নাই। ভাষার এই প্রধার বিরুদ্ধে ভীর অসভোষ প্রকাশ করিয়া থাকে। কিছ ইহা সভেও নিরশেকভাবে দেখিতে গেলে আরার্গণ্ডের পল্লী-বাসীদেরই অধিকতর সৌভাগ্যবাদ বলিতে হয়। ভাছাদের জীবন বাছবিক্ই আনন্দমন। বাবতীর বেলাবুলার প্রতি সেবান-কার হেলেবুড়া সকলেরই অপুরাগ আছে, বে-কোন অবছার সহিত নিজেদের বাপ বাওরাইরা লইবার অসাবারণ ক্ষতা পদ্মীৰাসীৰের আছে, আৰু সেৰাম্কাৰ কৃষিদ্দীৰীৰেছ হভভার ভ ভুলনাই নাই। অবলৈভিক ব্যবহার বেবন পুলি जन्मवर्ग रदेख शास. किंद देश पूबरे मध्य द्व. जाश्रामीका ল্যাত্য জীবনবারা আগামী বহুকাল লেই প্রণো বাতেই বহিরা চলিবে। শিকামীয়ল চিমকালই শিকামের সভাবে প্রেয়াভারে ঘূরিয়া বেড়াইবে, আর ভাষাহিলের প্রভিআতিবেয়ভা প্রণি করিবার জড় সকল সম্ভই কোন না কোন নলভিপর পরিবারের গৃহ্বার উন্তুভ বাভিবে, এরো ক্লাবে বার্ষিক ব্লনাচঙ্ড ব্র্থারীতি নিয়নিভভাবেই চলিতে



जानमित्वर अकि शामभाराम

বাজিবে। আধুনিক অধনৈতিক ব্যবস্থার একটা বিশেষ
কুলগও কিও দেবা বাইতেছে। ইবার ফলে পরীর বহ
লোক নাগরিক জীবনের অন্থরারী হইরা পহরে চলিরা
আসিতেছে। আশহা হয় বে, পরিবামে পরীওলির অবনতি
হইরা পহরগুলিই বনে-কুনে সমূর হইরা উঠিবে, ইতিমব্যেই
ভাষার স্থচনা দেবা দিরাছে। বিগত সেলাসে ইহা স্থারিস্কৃট
হইরা উঠিরাছে। তাহাতে দেবা বার, আরার্গতে এমন
একটও পহর ক্লাই বেবানকার লোকসংব্যা বৃদ্ধি পার
নাই। পরী অঞ্চলের লোকদের শহরে সিরা বসভিত্বাপর
ইহার ভাগ অংশতঃ হারী।

বর্তমান আয়ার্গতের শহরপ্ততির এই সর্বিধ পদ্ধীয় পক্ষে বার্থাকিই বিশেষ কভিকর হইরা ইন্ডাইতেছে। কারবামাসর্বকে বিকেলীকরণ (decentralization) পূর্বক পদ্ধীর
সম্পান্থ ছিব বে বৃল আতীর পরিকলনা হিল ইহারারা ভাহা
বানচাল হইতে চলিরাছে। ইহার দক্ষন প্রীকীবনের
সংহতিও বিনঠ হইরা যাইতেছে। এবনি ভাবে পদ্ধীজীবনের বৈশিষ্ট্য যদি লোপ পাইরা বার, ভাহা হইলে
পরিবানে আইরিশ আতীরভার ভিভিত্তেই ভাঙন বরিবে। এই
বিষয় লইরা আরার্গতের সমত আতীরভবাষী নেভারা এক উভর
সভটে পঢ়িলা নিরাছেন। 'কঃ পদ্ধা' ইহাই হইল ভাহাবের
সমস্ভা। উন্নভ বর্নের জীবন বাপন করিতে হইলে
এবং পূর্ণাক শিক্ষালাভ করিতে হইলে সর্ব্বাহীণ আর্থিক
উন্নভিন্ন ব্যবহা করা অপরিহার্ব্য। কিছু বেবা বার বে বেশ
আর্থিক সর্বিধ লাভ করে লেই বেশই বহির্দ্যতের বিকট
বিজ্ঞের প্রহার উন্নভ করিলা করে। ছনিরার চিভাবারা,

बीचिनीचि, विनान-नावधी बीद्ध बीद्ध छात्र खांकी बीद्य আসিরা প্রভাব বিভার করে। সিনেরা, রেভিরো, সাঞ্চতিক সাহিত্য, দৰ কিছুৱই আম্লামী হয়। সাম্প্ৰতিক আহাৰ্লকেও देशांत राज्यिक एव मारे। अपर अ वदार्गत गतासकत्त्व-अवृति শাতীৰ বৈশিষ্ট্যকে বন্দা করিয়া চলার পরিপদ্ধী হইয়া ইাডাই-क्टि। क्ल कौवनवाडाखनाशीबरे चानुश পরিবর্তন एह-ভেষে। অতি সামার কারণেই ভাষারা দেশ ছাছিয়া প্রামান্তর ৰপৰাস ক্ৰিতে চলিয়া যাইতেছে। নিয়োক্ত বিবরণ ছইতে ব্যাপার**ট আরও ভুণরিস্কৃট হ**ইবে। বিগত দেলাদের প্ৰাৰ্থিক বিপোৰ্ট হইতে হিসাব কবিয়া দেবা গিৱাছে বে रेश्माखन वार्षिक विदेशांभणायन मान्। ১৮,००० वन व्हेटलाव আইরিশ রুবক। ইল্রা সকলেই বে জীবিকার ভঙ সেধানে वात छात्रा नरह : वेदारमञ अधिकार अतह है स्वश्च अवह न्चनरपद चारामनाच। चादार्गर७ পরিচারিকা-সমসা দিন-দিন **অধিকতর কটল হইরা উঠিতেছে। উত্ত**মক্রণে শিক্ষাপ্রা**ও** পরিচারিকার অভাবই নাকি অধিকাংশ রুবকের দেশ চাভিবার ৰল কারণ।

আরার্গন্ধনাসীদের জাতীরতা-বিরোধী এই মনোভাবকে কি
তাবে দূর করা বার সেক্ত চার্চের কর্তৃপক্ষ এবং জাতীরতাবাধী
নেতাগণ সমিলিতভাবে কাক করিবার জন্ত বিশেষ উংস্ক্
হইরাছেন। কিছু কিছু কাল স্থান্থ ইইরাও গিখাছে। বৈদেশিক
ন্ধবাদি আমদানীর বিস্তুত্তে বিবি-নিবেবের বিশেষ কড়াকড়ি
আরপ্ত হইরাছে। এই উন্দেশ্তে একট শক্তিশালী সেলংগিশ বোর্ড ইইরাছে। এই উন্দেশ্তে একট শক্তিশালী সেলংগিশ বোর্ড প্রতিষ্ঠিত হইরাছে। তাহারা আখার্গতে এমন শত শত পূক্তক আমদানীর বিশ্বছে নিষেধান্তা জারি করিতেছেন যেওলি
এক্ত্রম ওঁচা এবং যাহা পঠিত না হইলে কাহারও কোন
ক্রিক্তিত) হইরা তবে আয়ার্গতে আসিতেছে এবং ইছাতে
পুক্তলাভই হইতেছে।

অভিদিকে লোক-শিলের উন্ননের ক্ষ ক্রমাণত উৎসাহ বেওরা হইতেছে। দেশের বে সকল অংশে বিশেষ কর্মান্ত লোকেরা বাস করে, ছোট ছোট কারধানাগুলি বাহাতে সেই সকল অঞ্চল হারীভাবে গভিরা উঠিতে পারে সে বিষয়েও জোর চেটা চলিতেছে। দেলিক ভাষা ও সাহিত্য শিকা দিবার ক্ষ বিপুল অব্যাহ করা হইতেছে। হুল ছাভিয়ার বরস নির্দায়িত করা হইরাছে বোল। প্রাথমিক বিদ্যালয় পরিভ্যান করিবার পর আরও পড়াওনা চালাইবার বত অবহা যাহালের আছে, র্থিশিকাবৃলক বিদ্যালয়গুলি প্রভিন্নত হইরাছে ভাহাদের ক্ষত্র । সম্রাতি একট ছাভীয় আই কলেক প্রভিন্তিত হইরাছে এবং বিদেশের বাবে মড়েল-নর্হের ব্যর্থ অহকরণের হারা বাহাতে ছাভীর পিল বিক্রত না হর লেইক্রত শীরই প্রিক্রনা-বিশাহর অব্যাপভ্যের বিশ্বক্ত করা হইবে। সারা পুর্থিবিতে বুট্রেরর বে ক্ষত্রী



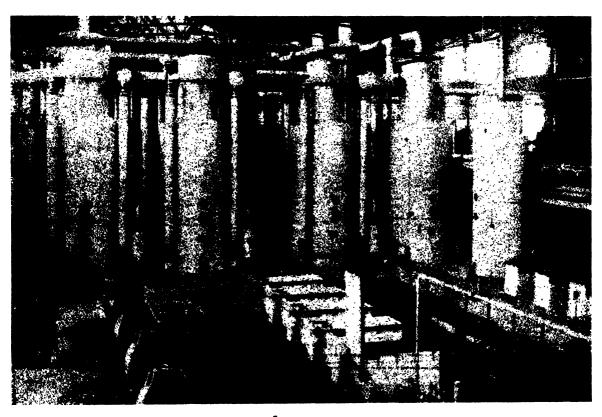
লিগো অকলের শতকেত্র



গলতাহের 'ভারমত মাউটেন'-- এবাবে আইরিশগ্য ক্রমওরেলের নিকট পরাজিত হর



'কৰ্ক' নগৰে ৰোটং-ভাৰেৰ একট ক্যাইছী--এবানে কাৱধানাৰ প্ৰথভ নোটংকাৰসমূহ কৰু কৰিছা বাধা হয়



দায়াৰ্লভেয় এড়ট বীট-চিনিয় কামবানা

ভাতীর রক্ষক ঠেটের অর্থসাহাব্যে পৃষ্ট হুইতেকে আরার্গতের 'এবে বিরেটার' ভাহাবের অভতন এবং একট গেলিক বিরেটারও এ বরপের সরকারী সাহাব্য পাইরা বাকে। একট বিশেষ সরকারী পৃত্তক-প্রকাশ-বিভাগ গেলিক ভারার লিখিত অক্ষম পৃত্তক প্রকাশ করিরা বাকে। এই সক্ষল এবং অতবিব নানা ব্যবহা অবলয়ন করিরা আইরিশ চিভানারকাশ "ইলীকরণে"র (Anglicization) লোভকে প্রভিয়োধ করিবার প্রবাস পাইতেকেন।

কিছ উপরোক্ত সমস্তাসমূহ অপেকাও বেটর ভাবী ৩ক্লছ সম্বিক ভাষা হইভেছে উভ্যাঞ্লের সমস্তা। হয়ট বিভিন্ন অঞ্স महेश बारामीका त बारमहे देखर बारामीक माटर शरितिक ভাছা দক্ষিৰ আৱাৰ্বভেৱ 'আলসাস'-হরণ। সিকি শতাকী পূর্ব্বে আহার্লও বিভাগের কলে আলহার সমস্তার উত্তব হয়। छवन एक्पिव क्षकरलंब २७० कांग्रेलि लहेबा काहेबिम कि एडेर्ड গঠিত হয় আৰু বাকী হয়ট অঞ্চ লইয়া স্ট হয় কুন্ত আলটার (हेडे । এই मीर्चकारमद वायवारन नाना कड़ेमणांद रुडि ए**ध्वा**द উত্তর এবং एकिन এই চুইট অঞ্চের ঐক্যবোধ আৰু বিষ্ঠ হইতে চ'লয়াছে। উত্তর আরার্গতে এখনও আর্থেকার মত প্রতিনি<sup>4</sup>বংবলক ব্রিটিশ শাসনবাবস্থা চালু রহিয়াছে ৷ ইল-আইরিশ চ্ক্তির ফলে আয়ার্গ থের ছাব্দিশট কাউটি হইতে পরবশ্যতার যে সমস্ত নিদর্শন বিদ্যুত্ত হইয়াছে এবানে কিছ সেগুলিই বিশেষভাবে নক্তরে পড়ে। বেমন--রাজকীয় আইরিশ ব্ৰক্ষীদল , ইয়া সাধারণতঃ 'ব্ৰয়েল আলটার কনটেবুলারী' বলিয়া অভিহিত হয়, যদিও আলঙাবের নয়ট কাউটির মধ্যে মাত্র ছয়টর শাসন-ব্যবস্থা উত্তর অঞ্চলের পার্লামেণ্ট কর্ম্বক নির্মিত। हरटबक्टबर केडेनियन काक भणकां धर्मात मर्सकर भवि-मक्ति क्या प्रक्रित देश प्रविद्धि प्रियम छैएमानम छैपमान्स ৰাত্ৰ উচ্চীৰ হয়--ভাহাও আবার কালেভত্তে ছ'একবার। আয়ার্গ ও আৰু সেই হয়ট কাউন্টিকে কিরিয়া পাইতে চার এবং এছন বে-কোন বৃণ্য দিতে সে পরাধুধ নহে। আরার্গতে বে-সম্বন্ধ ৰোটবাটো রাজনৈতিক দল আছে ভরব্যে আই. चात्र अ (वि चारेतिन तिशत्रिकाम चार्चि) अक्षे श्रवाम। আগলে কিন্ত ইহা একট বে-আইনী ৱালনৈতিক প্ৰতিঠান ইহা ৰপ্ত ভাবে দ্বাইনৈভিক আন্দোলন পরিচালনা করিয়া আসি-তেছে। প্ৰবোদন হইলে গৃহৰুছ চালাইয়াও বিভক্ত অঞ্চ ছটকে नुवर्त्विमिछ कवा देशामधं मका। देशमधेव वर्षार्थ भागीरवरकेव ভাৰ্বা বাহাতে কেডারেল পছতি অসুসারে পরিচালিত হয় जाहाई शाबीन चातारवद कांगा। अरे कत्रमा पनि वास्तर প্রিণত হর ভাহা হইলে বাহিত্তের সকল রক্ষ প্রভিবছকভার বিক্লতে ইতার বিরাণভার বাব্ডীর ব্যবহা ভাবাকে করিতে क्टेंट्य । अवर त्य नमच नचा अवन धरवडेनिन्डोरत क्वडे 'কাউটি ভিভিননে'র প্রতিনিবিদ্ব করেন তবিব্যতে উাহাদিগকে कावज्ञित वारेष्ठ स्टेप्स ।

এ কৰা অবভাষীকাৰ্য যে ভবিষ্যুতে বিভক্ত আহাল ও বাৰ্চি পুনৰ্শিলিত হয় তবে উহার সাবাজিক এবং অব্ধিনতিক জীবনের উপর উত্তর অঞ্চল গভীর প্রভাব বিভার করিবে। কি ভাবে করিবে ভালা এবল বুঁটনাটির সহিত বলা লভবপর নহে, তবে বৃষ্টাভবরণ একট বিবরের উল্লেখ করা বাইতে পারে। বর্তমান ভক্ত-প্রাচীয় উভর এবং দক্ষিণ অঞ্চলের মধ্যে ব্যবসারের বিক বিরা যে হুর্জা্য ব্যববানের প্রট করিবাছে ভবন ভালা অপসারিত হইবে। কলে ব্যক্তিন অঞ্চলের অনেক-শ্রানি ক্যান্টরীর নিজেনের একচেটরা অবিকার হারাইবে এবং হার্থনাল যাবং প্রতিষ্ঠিত, উভর অঞ্চলের ক্যান্টরীন্তলির সহিত ইহারিগের প্রতিরোগিতা শ্রন্থ হাইবে।

উত্তর ও দক্ষিণের বিসন্দের কচ, ককিণ আরাক্ষিত্রক ভাষার উৎকট আদর্শবাদ সভীর কাভীরভাবাদ এবং কেবলরার নিজক সাংস্থৃতিক গঙীর মধ্যে গুটাইরা বাক্ষিবার প্রস্থৃতি কভকটা বর্জন করিতে হইবে। শিল্পবান উত্তয় অঞ্চল বই কিল্প ইত্যাদি সেলর করা অথবা রোমান ক্যাথলিক চার্কের রক্ষণশীলভা সমর্থন করে না।

অনেকেই বলেন বে, স্বাধীৰ আমার্ল ও বর্তমান মুগৎর্মের বিক্লছে চলিয়া মাখাভার আমলের আমর্শগুলিকে আকভাইয়া बबिया रक्टे कडिन व्यवसात रही कतिबारसः। वासारक वर्षमान जावान (७व जिवार-विक्षे विच वना वाहरू नाटक ति चारेतिम कवि **ब. रे ( धर्म तारमम ) बरे छैरक**ई জাতীরতাবাদের বিরুদ্ধে সভর্কবাদী উচ্চারণ করিয়াছিলেন। ভি ভেলেরা অবঙ প্রগতিবৃদক আদর্শ এবং চিরাগভ সংস্কার और इरेंकेंद्र वर्षा नवबद नांबरमद क्रक (bå) क्रिक्टिक्य । জাতীৰ ঐতিহের বারা, জাতীৰ জাচার ব্যবহার, বীভিনীতি ইভ্যাদি বজার রাধিবার জভ ভিনি আরাদ ভের অধিবাসী-বিগকে ব্যবেশর অভীভ গৌরৰ স্বত্তে সচেভন করিয়া ভুলিরাহেন। ওবিকে আবার ভাষার ক্যাইরীওলির সংক্রা জ্বাগত বাড়িৱাই চলিৱাহে, জ্বগণের নিকট শহরের আকার্ণ চৰিবার ব্টরা উটভেবে—আরার্গতের ভাতীর জীববে লাগিতেতে আধুনিকভার হোঁৱাচ। আরার্গতে স্বাভ্য আহর্শ ও আধুনিকভার এই বে সংবোগ ও সংখাত এর পরিবভি কি এ এর আৰু সক্ষের বনেই ভাগিভেছে।

খাৰীন আৱাল তৈর জাতীর জীবনকে নিজের হাতে গছিল।
ভূলিরাহেন বিনি নেই রাইপতি ভি ত্যালেরা আজ অনেক প্রতিকৃত অবহার সন্থান। কডকগুলি প্রাচীন আবর্ণ বাছবিকই
আরাল তের রাইনৈতিক এবং অভবিব প্রগতির পথে বিলেব
প্রতিবহুকতার স্কট্ট করিতেহে। শিক্ষা-ক্ষেপ্রে চার্চ বে নীতি
অবলঘন করিরাহে তাহা একেবারে নেকেলে। চার্চপরিচালিত প্রাথমিক বিদ্যালহসমূহে কোন শিল্পবিদ্যা
( crafts ) শেবানো হর না। এই সম্ভ ভূলের জভ কোন
গাঠ্যপুত্তক প্রশ্বনের অধিকার সহজারের নাই। উত্তর্-

स्रोबधिक वृक्षिकावृज्ञक विद्यालवस्त्रित्यः (Post Primary Vocational Schools) चाराव वेक्ष्टित निका द्वस्त्रवाव वालाहे नाहे। अहेक्ष्रिहे अक्षां चाहित्य विद्यालव वालाहे नाहे। जा बाजा चाराकी विद्यालव विद्यालव वालाहे नाहे। जा बाजा चाराकी विद्यालव वाला वाला वालाहे व

উপরে বর্ত্তমান আরাল তের জাতীর জীবনের কতকণ্ডলি ক্ষষ্ট দেবালো হবল বটে, কিছ তাই বলিরা একথা তুলিলে চলিবে না বে, তাহার তবিষ্যাৎ গৌরবমর; কেন না তুলক্ষট নংশোধনের এবনও তাহার যথেষ্ট সময় রহিরাছে। আরার (১৯৩৭ ছইতে এই নাবে পরিচিত) স্বারন্ত্রশাসন্দীল রাষ্ট্রে পরিণত হববার পর সম্প্র পৃথিবীর বৃষ্টি আকর্ষণ করিতে সমর্থ হবাছে এবং তাঁহার বৃষ্টাছ হবৈতে পরাধীন জাতিসমূহ নবীন প্রের্ণা লাভ করিতেছে।

ভারভবর্ষের, বিশেষতঃ বাংলাদেশের সদে আরার্লভের আত্মিক বোগ গভীর। রবীক্রমাধের নোবেল পুরস্কার প্রান্তির বুলে রুখ্যতঃ রহিরাহে আইরিশ কবি ইরেট্সের ঐকাভিক চেটা। ইংরেজী বীভারলিতে ভাঁহার স্থাকা এই কুই আভির সাংস্কৃতিক বিলনের নির্দর্শনবরণ কালজরী হইরা বাকিবে। মেতাজী পুভারচক্র ও বর্ত্তবান আরল্ভের কর্ণবার ভিত্যালেরার সৌরহারে কর্বা এই উত্তর দেশেরই অবিবাসীরা চিরকাল কুভভচিতে শরণ করিবে। ভারতবর্ষ ও আরার্ল ও, বিষ্টিশ সারাজ্যবাদের বেভালালে বিজ্ঞিত এই কুইট বেশের মধ্যে বাহাতে গভীর সাংস্কৃতিক ও আত্মিক বোগ স্থাপিত হয় ভাহাই ছিল বেভাজীর একার ইফা, আর্ছ ভিত্রের ভারতব্রিতির কর্বা তো সর্ব্ধেনবিদিত।

# বিদায়-আরতি

(বৃষ্টপের ভারত-ভ্যাগ উপলক্ষে)

শ্রীকুমুদরঞ্জন মল্লিক

۵

বহু ধোৰ আছে— আছে বহু পাপ—সৱদ ভোষৱা মঙ, আহ্যারীও বট-- বহু বহু দণ্ডের কথা কও।
তবু ভোষাদের কাতির নিকটে সকল কাতির হার,
শত ক্রাট থাক, তবুও ভোষরা বরার অলম্বার।
ভারত ছাভিয়া চলিরা যেতেছ—পথ গৌরবমর,
বিবের ইতিহালে রেখে গেলে সব সেরা পরিচয়।

এই যে বিশাল প্রাচীন ভারত মর-দেবতার ভূষি—
বাধীন করিরা মহা পূপ্যের ভাগী বে হইলে ভূমি।
কালে মুছে বাবে হর ত ভোষার রাজ্য শৌর্য সব,
অটুট তবুও চিরদিন রবে—এ কাঁডি গৌরব।
ভগী এ ভাবনে অভ্যান কাছি, ভারিল ভোষার ভাতি,
ভাবিল বশ্বের আলো-পরিবেশে অবর্যের ভাতি।

এই বরণীর লব চকল, মহেক কিছুই খারী,
আধিকে উঠিলে অনুতের সরে আমন্দে অবগাহি।
সকল হীনভা---রুগের বুগের সব প্লানি হ'ল দূর,
খাগিলে ভোমরা চির অরণের গাবি বে অুগ্রুর।
বন্ধ লইরা এসেছিলে ভাতে কেবলি ছিল বে খালা,
বিদার ভিকু অভিধি আঞ্চিকে করে মধার মালা।

ভাসের মতম ছিল এ ভারত করি প্রত্যার্থন— ভানাইরা দিলে ভোমরা বট যে সত্যই মহাজন। হয়ে বিভাড়িত লাছিত হত অনেক কেতাই যায়, কুলার বাতাসে ভূষের বেঁারায়—দৌরব বাহি ভার। ভোমরা যেতেহ জযোরাসেই করিয়া সমর্পন— যোগ্য হত্তে বৃহৎ ভারত—ভাগ্য অসাবারব।

ভোষধা বেতেছ ঘৰ গৌৰবে, উচ্চল মহিষাৰ,
বাঘ বাস ঘণা মধু বসভে আহ্বামি চ'লে বাছ।
ভোষধা বেতেছ বিনীত বেশেতে ভক্তি ও অনুহালে,
সৰাৰ করি ঘেউল ঘেষন শিলী বিদাৰ মালে।
শত্ত, ঘক্তী, হলু ধ্বনিতে পূৰ্ব ভোষার পৰ—
গলাবে পৰ দেখাইয়া হিয়া চলে বার ভাইবৰ।

# রবীন্দ্রসংলাপকণিকা

## ঞ্জীবিধুশেশর ভট্টাচার্য

স্বৰ্গীয় বামানন্দবাবুর ইচ্ছায় এই নাম দিয়া ববীক্সনাথের কতকগুলি ছোট-ছোট কথা 'প্রবাসী'তে প্রকাশ করিয়াছিলাম, সে আৰু অনেক দিন হইল। বামানন্দবাবুর ডিবোধানের পর আর ভাগা বাহির হয় নি। দেখিভেছি, ইনার মধ্যে অনেক কথা ভূলিয়া গিয়াটি। যাহা মনে আছে ভাগাই তাড়াভাড়ি লিখিয়া ফেলিতে চেটাকরিব।

### "আমিই কেনে কলম কিনি!"

একবার ইউরোপের কোন এক শক্তি নিজের শক্তব প্রতি অতি নিম ম ভাবে বোমা ফেলে। ইংরেজ প্রভুরা ইহার অভ্যস্ত নিন্দা করিতে আরম্ভ করেন। কিছু দিন পরে দেখা গেল সীমান্ত প্রদেশে ইংরেজেরা প্রচুর বোমা ফেলিয়া বিষম ক্ষতি সাধন করিয়া ফেলিয়াছেন। এক দিন বৈকালে গুরুদেবের সঙ্গে এই বিষয়েই কথা হইডেছিল। কাছে আর কে ছিলেন মনে নাই, তবে আমার বন্ধু ক্ষিতিমোহন সেন ঠিক ছিলেন। কথা হইডেছিল, সকলেই এইরুপ অপকার্য করেন, নামটা রটে বিশেষ কোন ব্যক্তির। ক্ষিতিমোহন বলিয়া উঠিলেন

"সর্বপক্ষী মংক্র একী মংক্ররকা কলন্ধিনী" অর্থাৎ সব পাধীই মাছ খায়, মাছ খাওয়ার কলন্ধটা হয় কেবল মাছরভার। এর মূলে একটা সংস্কৃত ল্লোক আছে। সেটি এই—

> "সর্বট-কুর্র-করা: কাক-কাদখ-হংসা আহি-নুক্ল-সম্প্রা: কে ন থাদন্তি মংস্থান্। আহমতিভক্তনীবী শীণমংস্যোপভোত্নী অগতি বিদিতমেভন্মং-সুরুষ: কলবী।"

অর্থাৎ কুকলাস, কুবল পকী, কাঁক, কাক, বালিহাঁস, রাজহাঁস, সাপ, নেউল, মামুষ, কে না মাছ বায় ? আমি অতি কুক্তনীবী এবং অতি কীণ মংশু ভোজন করিয়া থাকি, কিন্তু মাছবঙা মাছ ধায়, এই কলভটাই প্রসিদ্ধ।

ক্ষিতিমোহন বলিয়াছিলেন "মংশ্রহণা কলঙ্কিনী" শুরুদের শেবের "কলঙ্কিনী" শব্দটা শুনিয়াই বলিয়া উঠিলেন "রস্থন, বস্থন, একটা সমস্যা পূরণ করি। তিনি বলিলেন

> "গৰাই কলম ধার করে নেয়, আমিই কেনে কলম কিনি !" নেপালবাবর দণ্ড

একটা ঘরে অধ্যাপকেরা অনেকেই আছেন। <del>গুরু-</del> লেবের আসিবার সময় হইয়াছে, সকলেই ভাঁহার কর অপেকা করিতেছেন। স্কলেই বেশ প্রাফ্রন। কিন্তু শুরুদের ঘবে চুকিয়াই সহসা এমন এক গভীর ভাব দেখাইলেন বাহাতে সকলেই মন শহিত হইয়া উঠিল, সকলেই মনে করিতে লাগিলেন ধে, আদ্ধ কি বেন একটা কিছু হইয়াছে। কেহ কিছু সাহদ করিয়া বলিতে পারিতেছেন না। শুরুদেব গভীর ভাবে বলিলেন—

'নেপান বাবু, আপনি অভ্যন্ত গহিত কাজ করিয়াছেন, অভ্যন্ত গহিত। আপনাকে দণ্ড গ্রহণ করিতে হইবে !'

অধ্যাপকেরা আরো চিন্তিত, লভিত ও উদ্বির হইরা
উঠিলেন। একে মন্তের মুখের দিকে ভাকাইতে লাগিলেন। একটি কথা বলিবার সাহস কাহারো নাই। কেছ
কিছুই বুঝিতে পারিভেছেন না। ওদিকে গুরুদের নেপাল
বার্কে বারবার ভংশনা করিয়া দও গ্রহণ করিবার কথা
বলিতে লাগিলেন। অধ্যাপকেরা যথন এইরপ উদ্বেগ,
আশকা ও ভ্রের চরম সীমায় সিয়া উঠিয়াছেন, তথন
গুরুদের পালের ঘর হইতে একথানি লাঠি বাহির করিয়া
নেপাল বাব্র হাতে দিয়া বলিলেন, 'নেশাল বাব্, কাল
আপনি সন্ধ্যার সময় ভূলিয়া এই লাঠিখানি এথানে ফেলিয়া
গিয়াছিলেন, এই নিন, আপনার লাঠি নিন।'

বলাই বাহুল্য, এই কথায় সকলেই আশস্ত হইয়া আনন্দে উৎস্কুল হইয়া উঠিলেন।

## এখনো হিংসা গেল না!

এক দিন আমরা কেহ্-কেহ শুরুদেবের সাদে সন্ধার পরে পুরাতন কলাভবনে বসিয়া আছি। শান্ধিনিকেডনের বর্তমান অধিবাসীদের মধ্যে অনেকেই এখন পুরাতন কলাভবনে চিনেন না। ইহা হইতেছে এখনকার কলেকের ছাত্রদের হোস্টেল। ইহার নীচের ভালায় কিছু দিন এও জ্ব পিয়াস্নি সাহেব ছিলেন। এই কলাভবনে বসিয়া আচি এমন সময়ে প্রক্রদেব আমাকে লক্ষ্য করিয়া হঠাৎ বলিয়া উঠিলেন—

'শাস্ত্রী মহাশয়, আপনি এত দিন বৌদ্ধশাস্ত্র অধ্যয়ন করিতেছেন, কিছ এখনো আপনার হিংসা প্রবৃত্তি গেল না!'

আমি তো অবাক। হঠাৎ তিনি এ কথা বলিতেছেন কেন? কিছু ব্ৰিতে পারিলাম না। তখন তিনি আমার দাড়ি-গোঁফ দেখাইয়া বলিলেন 'এদের ছাড়িয়া দিন, বাড়িতে দিন। আর হিংসা করিবেন না!'

আমার দাড়ি-গোঁফ সৰ সমর কার্মানই থাকে। আমিও ভাঁহার মত লখা-লখা দাড়ি-গোঁফ রাখি ইহাই তিনি চাহিতেছিলেন।

## সরস্বতীর শাপ

হ্বগতিত আছে, হ্বাদা মূলি কোন সময়ে সরস্থতীকে শাপ দিয়াছিলেন। একবার শান্তিনিকেজনে আমাকেও এই কাজ করিতে হটযাছিল।

ভধন বিশ্টারনিটৎস সাহেব এক বৎসরের জন্ত অভাগিত অধ্যাপক-রূপে নিমন্ত্রিত চুইটা আপ্রমে বাস কবিতেছিলেন। ভাঁচার কিবিয়া ষ্টেবার সময় হইলে বিদায়সভায় সংষ্কৃত অভিনয় করিবার ব্যবস্থা করা হইগাভিল। মৃদ্রাবাক্ষ্মের এক আছে ও শকুকুলার এক चह चडिन । করা হইয়াছিল। বাসকেরা মেয়েদের পাঠ কবিবে, সেট সময়ে কেহ কেহ ইহা পছন্দ করেন নাই। গুলদেবের এই মতই চিল। ভাই স্বভাবতই অনেকেই ইহা গ্রহণ করিয়াছিলেন। কিন্তু তথাপি অভিনয় বর্জন করা হয় নি। যথারীতি ইচা চইয়াছিল। চিত্রকলার ৰিক দিয়া ৰঙটা যা সম্ভব নন্দলালণাৰু ভাগাতে সাগায়া ক্রিয়াছিলেন। মোটের উপর অভিনয়টা এমন কিছু হয় নি **বাহাতে তাহাকে "অথান্ত" বলিতে পারা হায়**৷ কিন্তু **धकः** मरवद निक्छि चिन्दार दिक्क विवदन े औडिन। ভিনি নিজে অভিনয় দেখিভেট আংসেন নি। পরের মধে য় ভনিলেন ভাই বিশাস করিলেন। আমি ইহাতে তঃথিত চুট্ট্যাছিলাম। রাগও হইয়াচিল কম নয়। উত্তরায়ণে তাঁহার নিকটে উপস্থিত হইয়া ধানিকটা। গায়ের ছালা ঝাড়িয়া বলিলাম—'গুল্দেব আপনি আপনার ননী-ভূজীদের মূপে যা ভূমিলেন তাই বিশাস করিলেন। ভাল, **সংস্থা**তের উপর যদি আপনার এইরপই **শ্রদা থাকে**, তবে এই আশ্রমে সংস্কৃতবিকার উপরে আমার এই শাপ থাকিল ৰে কখনো ইহাতে শিক্ষিলাভ চইবে না।

অচিরেই অথমি শাস্ত ইইয়া গেলাম, কিছ আশ্রমে আমার পরবর্তী অনেক সংস্কৃত শিক্ষক বলেন দেখানে এই শাপোদারটি হয় নি। তুর্বাসার শাপদানে সরস্বতীর অপরাধ ছিল, কিছু আমার শাপদানে সংস্কৃত সরস্বতীর কোন অপরাধ ছিল না। আমি নিরপরাধের দণ্ড বিধান করিয়া ভাল কাভ করি নি।

গুরুদের এ বিষয়ে আর কোন উচ্চবাচ্যু করেন নি। পর্বটি আপনা আপনিই শেষ হইয়া গেল।

## বাক সিদ্ধি

৩১শে আখিন ৩৪৪ শুরুদের বরাহনগরে কামার-হাটিব পথে বালি বেলের পুলের নীচেই "গুপ্তনিবাস" নামে এক বাগানবাড়ীকে আছেন। তাঁহার শরীর খুব ক্লান্ত ও তুর্বল অল্ল কিছুদিন হইল সাভ্যান্তিক ব্যারাম (বিদর্প) হইতে উঠিগছেন। লখা চুল কাটিয়া ফেলিতে ইইয়াছে দাড়িও চুই পাশে উপরে কাটিতে হইরাছে। ইহাতে ঐ সমযে তাঁহাকে অনেকটা মহামতি বিজেশ্তন

मित्र चात्रक कथा इहेन। हामित्छ-हामित्छ वनितन्त्र, শরীর বধন চলে না তখন অঞ্চের উপর ভব করিয়া থাকা আর ঠিক নহে। তিনি বলিলেন, ঐ গুরুতর ব্যারামের মধ্যে ভিনি কোন কষ্ট অভুভব করেন নি। ঐ সময়ে তাঁহার এলোপ্যাথি চিকিৎসা চলিতেছিল। এই ভাক্তার-দের অগ্রণী ছিলেন নীলরতন বাবু। এই সমধে তিনি निष्करे वारेश्वरक्षिक अयुध शारेरा हारियाहित्वन, यनि নীলরতন বাবু প্রভৃতি ভাক্তারগণের অমত না হয়। ভাকারেরা ইহাতে মত দিয়াছিলেন, কেননা তাহাদের মতে अठी এक छै। स्युग्डे नय। अक्र तमन निल्लन, कल छै। त्य বাইওকেমিক ওয়ুধেরই হইয়াছিল ইহা বলা চলে না। ভাক্তাররা যথেষ্ট দেখিয়া-ভূনিয়া চিকিৎদা করিয়াছিলেন। 'আনন্দবাজার পত্মিকা'য় দে সময়ে তাংগর বাারাম সম্বন্ধে चार्क कथा वाहित इहेश'इन. शुक्रान्व विनिशाहित्नन, ইচার প্রতিবেদক (reporter) বন্ধুত্ব বা প্রিচয়ের শ্বনিগ লইয়া ডান্ডারদের পরামর্শের স্থানে প্রবেশ করিয়া কাজটা ভাল করেন নি।

শুরুদেবের বাইওকেমিকে খুব শ্রদ্ধা ছিল। হোমিওশ্যাপির প্রায় তিনি ইংাডেও নিজে চিকিৎসা করিতেন।
তাঁহার কাছে সর্বলাই বাইওকেমিক এমুধ প্রচুর প্রিমাণে
থাকিত নিজেরই কথায় তিন ছিলেন আমার "ক্যামিলী
ফিজেশিয়ান।" তিনি আমাকে প্রয়োজনের সময় এই প্রুণই
দিতেন এবং আমার ধাতু প্রকৃতি পরীক্ষা করিয়া ক্যালিফ্স
নামে ওমুণ্টিকে বরাবর ব্যবহার করিবার ব্যবস্থা দিনাছিলেন,
আর নিজেও এইরপ করিতেন। আমি বছ দিন ইংা
অন্তুস্বণ করিয়াছিলাম। এবং ফ্লও পাইয়াছিলাম।

এই প্রদক্তে আর একটি কথা বলিতে পারি। আমার শরীবটা কিছু দিন বড় হুবল হুইয়াছিল। বেড়াইতে বাহির হুইলে একটু পিয়াই বসিয়া পড়িভান। গুরুদেব ইুহা জানিয়া প্রতিদিন নিয়ম মত 'সেনাটোলেন' সেবন করিতে বাবস্থা করিলেন। কিছু আমার আলস্তে ভাহা ঘটিয়া উঠিত না। একদিন দেখি বিকালে আমার পড়ার ঘরে অবাৎ তথনকার প্রাচীন একতালা পুন্তকালয়ের পশ্চিম দিকের কুঠরীতে, আমার কাছে বসিয়া ঐ 'সেনানোজেন' খাইবার কথা তুলিলেন। আমি ব্যান বিলোম যে, তথনো আমি ভাহা করি নি, তথন ভি ন নিজেই একটি চাকরকে দিয়া দোশন হুইতে এক শিলি 'সেনাটোজেন' আনাইয়া নিজেই শিশিটার আবরণ খুলিয়া কেমন করিয়া এবং ক্টা খাইতে হুইবে আমাকে দেখাইয়া দিলেন। আমি ইুহাতে কিছুদিনের মধ্যে যথেই উপকার পাইঞ্চিলাম। গুরুদের নিজেও ইুহা প্রচুর সেবন করিতেন।

সেই "গুপ্তনিবাদে" আমাদের কথা হটতেছে। গুরুদেব হাসিতে হাসিতে বলিলেন, সকলে তাঁহাকে এখন হটতে কথাবাত যি খ্ব সংযত হটতে বলেন, কেননা তিনি এখন যা বলেন ভাই ফলিয়া বায়। এখন দৃটাভ তাঁহাব এই সাজ্বাভিক বিস্প। বেদিন বাত্রে শাস্তিনিকেতনে ইহার প্রথম স্চনা হয় তাহারই একটু আগে সন্ধার সময় সকলের সন্ধে হাসি-ঠাট্রা করিতে করিতে বলিতেছিলেন, তাঁহার তো তেমন রোগ-বাারাম হয়ই না। এমন রোগ-বাারাম হয় হৈ প্রে সেবাগুল্লবা করিবার জক্ত সকলে চাবিদিকে ব্যক্তসমন্ত হুইয়া ছুটাছুটি করিতেছে, লোক-জন ডাকাডাকি করিতেছে, ডাক্তার কবিবাদে বাড়ী-ঘর ভরিয়া গিয়াছে, তাঁহারা মাথার কাছে বসিয়া আছেন, অনেকেই গাভ জাগিয়া কাটাইতেছেন, ইত্যাদি ইত্যাদি, তবে তো বুঝা ব্যয়, ই। ব্যারাম, নতুবা কিছুই নয়। ইহা সঙ্গে সংক্রই ফলিয়া ধায়।

খি শীয় দৃষ্টাও। এই কিছুদিন আগে একটা খুবই বড় বড় হইয়া গিয়াছে। শান্তিনিকেডনের অনেক গাছ-পলো পড়িল গিয়াছে। ইহার দিন ছুই আগে গুরুদেব বলিতেছিলেন, এখন আব আগেকার মত বড় হয় না। সে সব বড় গেল কোথায় দু মনে আছে, কলিকাভায় ভীষণ বড় আরম্ভ হইরাছে। আনরা ছিলাম তেতালার। তরে লোতালার নামিলাম। মাবের ঘরের একধানা কপাট খুলিয়া পড়িল। চারিদিকে ভীষণ কাগু। সেই সব ছিল বড়। এখন আর তেমন হয় না। এই কধার তুই দিন পরে তুম্ল বড়ে হইয়া গেল।

ত্তীয় দৃষ্যাত্ব। শুক্লেব সেদিন শ্রীযুক্ত প্রশাস্কান্তর বরাহনগবে বাগানবাড়ীর বাসায় ছিলেন। তিনি নিজের বাভাবিক কৌতুক ভাবে প্রশাস্কবার প্রান্ততির সহিত গল্প করিতেছিলেন বে, আর্ক্লাল আর ভাকাতি হয় না, যদি হয় ত বেশ মঞ্জাকাতি হইয়াছিল। শুক্লেবের পালেরই ঘরে প্রশাস্ত বাবু ভিলেন। তাহাকে বেশ বিশল্প হইতে হইয়াছিল। শুক্লেবের ইহা বর্গনা করিলেন ভাকাত প্রশাস্ত বাবুর কগবোধ কারবার উপক্রম করিয়াছিল। তাহাকে বিশেষ চেটা করিয়া উদ্ধার পাইতে ইইয়াছিল।

# ভালবেসেছির

### 🗐 শক্তিপদ রাজগুরু

- আদিগলার বুকে জোরারের কর্মবাক্ত ক্লবারা বেন প্রাণ পেরেছে, মাঝির: বড় বোলাই নৌকান্তলো বেরে চলেছে নালার মাঝ দিয়ে---ভোর হতে আরু দেরি নাই।

বাতীর চোধে ঘ্র আসে না, বতীন নাইট-ভিউটতে বেরি-রেছে। পুলিসের চাকরি—দিন নাই, রাত নাই। বড় খোকনের বরে আলে। ঘলছে, বোধ হর পঙ্তে উঠেছে। পরীকার আর দেরি নাই। সবকিছু নিরে আফ তার সংসার, কুলে কলে ছেরে সেছে। কিছু ধবী সে রয়ে গেল সর্ক্তাারী নীলকঠের শির্দোনীর কাছে যারা বুগ বুগ বরে কেবল হুঃখ-ছুর্বোগই সরে এল, জীবনের জরবাজার গান বারা ভনিয়ে এল—বার ছেশ বিলীন হ'ল না কাঁগির মুক্তে। তাদেরই একজন চাপিরে গেল তার উপর সারা জীবনে খণের বোকা।

সে আৰু অবেক্ৰিন আগের ক্ৰা । হাতীর এ দীবন হিল তবন হয় । ক্লেণ্ডিল দীবনঘানার মাথে এসেহিল লে। প্রথম বেহিন চোর বেলল মাহুষের ক্রণ্ডে, নিজের চারিবিকে—ভাতিউই হরে উঠল । শিউরে উঠল মনে বনে। প্রথম দীবনেই তার পৃথিবী কালো হরে দেখা দিল তার কিশোর চোবের সামনে, সারা মনটা কেনে উঠেছিল দুগায়—
সন্ধার ৷ চোবের সামনে বেশত দিবিরা ক্ষেম করে বাপে যাপে দীবনের সর্ক্রিয়ভবের দিকে এসিবে চলেছে।

कानाः अरेहेक्रे चात्र मान पृत्रम्ण पात वैर्वेण, जीवानव

প্রবোজনের তালিদে ওপথে পা বাভানোর চেরে জীবনের বর্বানকা টানাই সহজ এবং সরল পছ।।

এমনি দিনে প্রাইভেট উউটর রূপে দেবা দিল পার্ব ।
বীর্ব বন্ধু দেহ, বছরের পাঞ্চাবীও অভরাকে পেলীবহন দেহটা
বেন বার হরে আসতে চার । উভবৃত চেহারার বার্ধে
চোর হটো কি একটা অহাতাবিক জ্যোভিতে নীবিবর ।
অবাক হরে চেরে বাকে হাতী, নম্ভার করতে ভূলে বার ।

পাৰ্থও চেবে থাকে নতুন ছাত্রীর দিকে । টাকার বর্ষার, না হলে কলকাতার থাকা চলবে না, পড়া ত দুরের কথা । বাড়ী থেকে তার কোন সাহায্যই আনবে না । বুর পিতা ছিলেন—কোন রক্ষে চলত তার পেলনের টাকার, তিনিও আর নাই । একা পার্থ আছু অনুল পাধারে । আলই হরেছে, বাঁহবারও কেউ নাই, দেখবারও কেউ নাই !

ভত্ৰভাৱ বুৰোগটা টিক্ষত লাগিয়ে ৱাৰা লড়েও বেধিন আবিদ্ধান করে বঙ্গে পাৰ্ব এই পন্নিবানের প্রকৃত সর্বশ—সারা মন বিবিধে ওঠে মুধার।

প্রকাশ পেরে যেতে আৰু বাতী যেন প্রকৃত একজন দর্মীকে বুঁকে পার। এত দিনের সঞ্চিত ব্যর্থ অঞ্চ আৰু বাবদহারা হরে করে পড়ে। কুঁপিরে কুপিরে কাঁলে সে। এ পথে সে বাবে না—এ পথে বাবার আরে বেদ কীবনের শেব দিনই বনিরে আনে এই তার স্বচেরে বহু কাববা।

পাৰ্থের সারা বন বেন নাড়া দিরে ওঠে। চূপ করে লোনে হাতীর জীবনের ইতিছাস—এত দিন বাকে কেবেছে—
চিনেছে আজ সভাার বেন তাকে আরও নিবিচ করে চেনে,
আপন করে নের।

ভবু জীবনের একটুবানি আত্রর, কিছ ভার বদলে চিয়-বিনের জন্য নিজে যাবে জীবনের সাংলার দীন্তি, বৃহত্তর জীবনের প্রবাস। কোবার যাবে ভার জীবনের ব্রত কিছ-না, না এ হয় না। ভার কঠিন কঠোর জীবনের পবে জন্য কেট সলী হতে পারবৈ না। ভাকে চলতে হবে একা।…

সারাটা দিন মেসের জীর্ণ বর্রানার পার্ব কাটরেছে, শত চিন্তার মার্বে বার বার মনে পঞ্চে স্বাভীর করুণ চাহনি-পূর্ণ মুববানা, জীবন সে উৎসর্গ করেছে দেশের জ্বর্গনিত জনসংগ্রে কল্যানে, আৰু একজন একাপ্তভাবে ভারই সাহায্য কামনা করে—কিন্ত-ভার ভারতে পারে না । মাধাটা যেন পুরতে বাকে।

সভ্যাবেলার হ্বার আকর্ষণে মানিকতলার দিকে রওনা হয়। সনিভিত্র জন্মরী বৈঠক আছে। নীচতলার অভকার ঘরশানা প্রায় ভরে গেছে। সকলেই নীরবে ভনে যায় পার্ণের কথা। টাকার ভাগের দরকার। হুরে গড়া কঢ়িকাঠ থেকে কোলানো কাঁচভালা সঠনের আলোয় ঘরখানি সালাভ হয়ে ওঠে। সমিভিত্র বর্গা-শাখার কথাটা পার্থ ভনিয়ে বায়।

রাত্রি কত হরেছে জানে না । একে একে সকলেই চলে যার। ক্রমশ: খরটা গালি হরে আলে । করুরী বৈঠকেও কোন স্বাধান হয় না । পার্থের সারা বন ভরে রয়েছে কোন ছচ্ছিছার হায়া, আজ ধেন নিজেকেই সে গুঁজে পায় না ।

ক্তক্ৰণ বংগছিল ভানে না, হঠাং ইলাদির ভাকে চৰকে উঠে। সমিতির বৈঠক হবার একবার হান ইলাদির এই এইো বাছীয় নিচের তলার বরধানা। তার সহানী চোধে পার্বের এ পরিবর্ত ন এভার না। যে পার্ব বৈঠকে নিজেই সর্কেলর্কা। হবে থাকত, আক তাকে এভাবে নির্দিণ্ড দেশে ইলাদি বেশ একটু আকর্ব্যই হয়েছিলেন।

সে রাজে ঘণন পার্ব রাভার পা বাড়াল—রাজি ভবন প্রার বারটা, রাডা, নির্জন হয়ে বেছে, জনমানব নাই। একটা কথা বার বার মনে আসে। ইলাদিকে আজ খাতীর কথা বলে থানিকটা যেন খডি পেরেছে।

এমনি রাজির নিধর নীরবতা স্বাতীর সারা মনে বড় বইরে থের ! বড়লির প্রস্কৃতি—মারের নীরব সমর্থন তার সারা মনকে বিজ্ঞানী করে তোলে। সভ্যা থেকেই আন্ধ্র সে বেন বিশেষ কিছুর আরোজনই দেখে এসেছে।

গৃচ কঠে লে প্রতিবাদ জানার। কটিন প্ররে জানিরে দের জীবিকা অর্জনের জড়ে ওপথে সে পা বাভাবে না। হঠাং দরজার জড়াটা অনবরত নড়তে লাসল। নীচে সিরে দরজাটা গুলেই অবাজ হরে বার !—"বাঠার মলাই।" অক্রমন কঠবর ভেলে পরে। উপরের বরে তবন চলেছে উন্নত কোলাহল, আক্ষকের মত বিশল বাতীর জীবনে আসেনি।

পার্থ অপাঠ আলোতে স্থাতীর মুবের দিকে চেয়ে থাকে; চোথ ছাপিরে তার জলবারা । প্রাণপণে নিজেকে সামলাবার চেটা করেও পারে না স্থাতী। পার্থ অবাক হরে পোনে আজকের কাহিনী। বৃহুর্ত্ত মব্যেই কি যেন জেবেই শক্ত হয়ে ওঠে । ইটা দে পারবে । যেমন করে হোক তাকে পারতেই হবে । রাতী বিশ্বরে হতবাক হয়ে চেয়ে থাকে । একি সভ্য । সামনে ভার হটো পথ খোলা- ভালভাবে বাঁচবে, পরিআণ পাবে এই নরকর্ত্ত হতে । বাহুষের জলতে মাহুষের পরিচয়ে বাঁচবে । হু'হাত দিরে কিরে পাবে প্রকৃতির হারামো সম্পদ—বাইরের জগতের মুক্ত আলো-বাতাস । আক পার্থের এ ভাকে সাড়া সে দেবেই ।

বাত্তি হয়ে গেছে অনেক । ভাড়াটে কিটনখানা মাণিক-ভগার এঁদো গলির বাড়ীর সামনে ইড়াডেই ইপানি শশব্যেও নেমে আসেন । দরজাটা প্রতেই অবাক হয়ে যান। পার্থ এরিয়ে আসে, পিছু পিছু সাভী।

---'ভোষার ক'ছেই নিয়ে এলাম ইলাদি, একটু ঠাই একে দিও!'

খাতী ইলাধির দিকে চেয়ে থাকে। হাত বরে তাকে , অজ্যর্থনা কানান ইলাদি---"এসো তাই।"

ক্ষেকটা দিন কেটে গেল খাতীর মনের এলোখেলো অবস্থায়। বাতস্থ হয়ে যে দিন এ বাড়ীর প্রতিট অন্ধিনি-বসা এত দেবতে লাগল ততই আক্র্যাহ হয়ে গেল। চূণ-বালি-বসা এতে সাঁতেগতৈ বরবানায় অজ্ঞানা অচেনা লোক সব আসে বায়। চাপা করে কি আলোচনা করে, পার্ব সর্কাই যেন ব্যন্ত। তালভাবে একদিন ক্যা বলবার সময়ও পারনি খাতী! আল আবার ক্ষেক্ষিন তার দেবাই নাই। ইলানিকে। অজ্ঞানা ক্যুতেও পারে না- কি রক্ষ বেন মনে হয়।

দে দিন রাজে নীচেকার ঘরে উভেজিত কঠে কি সব আলোচনা গুনে বমকে হাভার খাতী, এ বাভীর সকলেই বেন কি একটা জন্তরি,কাজের কথা নিরেই আলোচনা করে। মাবে যাবে হ' একটা আন-শন্তও দেখেছে কারুর কারুর সঙ্গে—-, কিছুই তেবে উঠতে পারে না, ইলাদিকে জিলানা করলে তেসেই উভিরে বেন।

সিঁভির পাশে ইাভিরে ররেছে থাতী, হঠাং ভার গলা-বাঁকারির শব্দে নীচের দিকে চাইল, পাতলা সেই ছোকর। যতীন নাকি তার নাম। ইতিমধ্যে বারকরেকই লে এমনি করে এগিরে আসবার চেষ্টা করেছে, কিছু খাতী সরেই এসেছে তার কাছ বেকে!

সকলেই চলে গেছে, ব্যৱর বাভিটা তথনও অলছে ! ছ্লার আকর্ষণে লে মীচেকার ব্যটার দিকে পা বাভার ! মনে ভন্ত-সংশৱ-সন্দেহের দোলা । ধনকে ইাভার । কডকঞ্চনা টুল ভালা চেরার হাজিরে রবেছে টেবিলটার চারদিকে। বাভিটা উপর থেকে বোলানো, গুলিকে দেরাল ভূভে একটা হবি, বীরে বীরে এপিরে বার সেই দিকে। ভারত্যাভার হাস্তমরী মুর্ত্তি—নীচে লাল অক্তরে কি বেম লেখা ররেছে।

ৰীৱে বীৱে এগিৰে বাৰ স্বাভী, নিজের জ্ঞাভেই বেন সালা দেহে-ননে কাঁচা বিল্লে উঠে! এক বিচিত্ৰ জ্মুজুভি। আজ এদের স্বাইকে সে নতুন করে দেবে। ইলাদি বাঠার মুশার—এঁবা দেশবাজ্কার জ্ঞা সন্তান।

আজাৰা আৰু নেন্দ্ৰী তার তরে ওঠে। আজ হিসাব করে দেখে, পিছনের জীবন কেলে এসে কে কি বেন অপূর্ব্ব সন্দানের সভান পেরেছে, যাবে যাবে বনটা কেমন করে ওঠে। কডদিন মান্টার মুলারের দেখা নাই।—কোধার আছেন, কি তাবে আছেন কে জানে। তার প্রতিভাষীও মুবধানা কেন জানি না বার বার মনে পজে। হ'হাত ভূলে সে প্রণাম কানার —তৃমিই আমার পথ দেখিরেছ, আলোর নিশানা দিরেছ।

মন্যথাতে হঠাং দরকা ঠেলার শব্দে ঘুন কেলে যার !
বড়মড় করে উঠে বনে বাতী ! দরকা বুল্ডেই এগিরে
আনে পার্ব । একি ৷ বাঁ হাতটা রক্তে ভিক্তে গেছে ! কামার
এখানে ওবানে রক্ত ! বুলেটের আধাতই হবে ! তাডাতাড়ি
করে শাড়ীর বুঁটিটা বানিকটা হিঁছে কেলে থাতী ! ইবং হেগে
পার্ব বলে, "ও কিছু মর । এবন প্রচুর রক্তের প্ররোজন—তবে
যদি পথ পরিকার হয় বাতী ৷ বাক—ত বাঁবতে হবে না ৷ রক্ত
বন্ধ দরে গেছে !"

— "না এমনি বোগাই বাক্ কি বলেন।" বাতী কিপ্রহতে বাঁবতে বাকে। হঠাং পার্বের কথা ভনে অবাক হয়ে বার। তাকে চলে বেতে হচ্ছে আকই, এব্নিই। আপাততঃ বাবে বর্গায়— পরে কোবার ভানে না!।

'আছই ৷' খাতীর কঠে বিশ্বরের প্রব ৷ - 'এতদিন পর এলেন, চেছারাধানাও অর্কেক করে এনেছেন—"

এগৰ পাৰ্থ হয়ত ভাৰেছে অনেক, কিংবা শুনল এই প্ৰথম ৷
কিছ তাকে বেতে হবে ৷ পৰের দেবতা তাকে ভাক দিয়েছে
আৰুত হাতহানি দিরে—পথের সীমানা তার ছদিয়ে পড়েছে চুরচুরাভরে ৷ অক্রসজন নরনে চেয়ে থাকে সাতী ৷ ইলাদির
চোৰে আজ জন ৷ রাজিশেষে আহাজ ছাড়বে সময় তো
তার নাই ৷

"আসি ইপাদি—বেঁচে থাকি তো আবার দেখা হবে।"
বোজের রাথার অনুত হয়ে পেল পার্ণের শেষ চিছু। স্বাতী
আক্ত আবার একা—প্রাণপণে সামলাবার চেষ্টা করে নিজেকে,
পারে না। ছ'দিনের পরিচর—তবু ভোলা তাকে বার না।
সারা বন বেন উজাভ করে ধিয়েছে এই সর্বাত্যাই প্রভারীকে।
ক্ত নৈশ উপাধান সিক্ত হবে, কত বিরা—কত জননীর

অঞ্জন বিনিজ বজনীর অভকারে ভনরে কিরবে—তরু ভরা কিরবে না ৷ এগিরে বেতে হবে ওবের ৷ সাবনার পবে বপ্র নাই, আছে ভবু রচ বাতব—সুণা আর লাছনা-⊸ অসহ হংব আর কঠ ৷ দেশকে ভালবাঁসার বলি কিছু পুরভার পাকে—তবে এইটুকুই ভবু আছে ৷

ভার হতে না হতেই পাছার চারন্ধিক একটা কোলাহল পতে বার বাড়ীটাকে কেন্দ্র করে । অগনিত পুলিশবাহিনী বাড়ীটাকে বিরে পাছার। দিছে । নিউরে উঠে বাড়ী । ইলাদি হির গড়ীর ভাবে ইাড়িরে ররেছেন । বাড়ীর প্রতিটি অভি-সন্ধি পুলিশ তর তর করে বুঁজে চলেছে । কি সব কাগজ-পত্র, আরও কড ফি নিমে টানাটানি হত্ন করে । সরিতির আনল কাগজপত্র কিছ পার না । করেকজনকে দেখে প্রতিশার সিহিত্র সেই গলাখাকারি দেওরা বুবক্টও ররেছে পুলিশের সঙ্গে।

পুলিশ অফিসারের সামনে কেমন বেন সব খুলিরে বার:
পার্ব কোবার আছে, কবে লেছে—এই সব নানা প্রর!
বাতী নির্মিকার চিত্তে বাছিরে বাকে। কোন ক্থাই বার
হর না তার মুব বেকে। বগবে না—কিছুতেই বগবে না লে।

সারা বাড়ীটার একটা বনধনে নীরবভা, খাড়ীর সারা মনে আৰু হাহাকারের সুর। কোবার ভারা সব কেট লানে না। তাবের সমিভির কবা সমন্তই পুলিশের গোচরে এসে গেছে। তাবের গোগন কার্যকলাপ গভিবিধি প্রভিট্ট ভব্য পুলিশের নবনপ্রে। আৰু বাংলার ছাত্র সুবক দলে চলেছে কারাপ্রাচীরের অন্তরালে। সারা ভারতের মর্শ্বে আৰু গেলেছে কিসের অন্তরালে। সারা ভারতের বছদ্রের যাত্রী পার্থের উদ্বেক্ত বুক্তকরে নমধার কানার, বাড়ী।

যভীনের আসা বাধরা ধেন বেছে গেছে; থাতী অবাক হরে বার তার কথার ৷ পার্বের প্রার সমস্ত ববরই সে আনে ৷ গেছিম বতীন তার ব্যাপের মব্যে পার্বের একথানা ফটোও দেখালে ৷ পুলিশের হাতে পছলে পার্বের আর অক্যাতবাস চলবে না ৷ বেথানে থাকুক, বেভাবে থাকুক তাকে আগতেই হবে বন্দী হরে, দিন ওন্বে কারাপ্রাচীরের রুম্বার কক্ষে—মহামুল্য জীবনের প্রতিটি মুহুর্ছের হবে শোচনীর অপচর !

স্বাতীকে পাৰার জন্তে ষতীনের ব্যাক্সভার আর জন্ত নেই। সে তার কাথে বার বার বিরের প্রভাব উবাপন করে। শেব পরাত্ত সাতী মত দের। পার্বকে বাঁচাবার জন্তে বে-কোনো ত্যাগস্বীকারেও সে কৃষ্টিত নর। যে তার জীবনে এনে দিল বৃহত্তর নহতর পর্বের সন্ধান তার কর এটুকু সে করবেই। বতীনও বিশ্বিত বৃষ্টিতে চেরে বাক্তে যাতীর বিকে, এত সহক্ষে বে স্বাতী মত বেবে তা নে ভাবতেই পারে নি।

পাৰ্বের দিন কাটে নৰ নৰ বৈচিজ্যের ভিডর দিবে ৷ বৰ্ণার

উত্তরে সুগ্র লাশিও থেকে চরিশ মাইল দ্রবর্তী নির্জন জুলো জ্যালির প্রাছের বন্তিতে দ্রপ্রদারিত পর্বজনীয়া। পারে থারে নেমে পেছে নোম্যাসন্ ল্যাভের নীমারেখা, প্রতী একেবেঁকে চলেছে বিগল্পনীয়া পার হরে সুদ্র মহাচীমের বিজে। প্রকারণের সুপ্রভাতে পাঞ্জল শব্দানি বারা দেখি ভনিবেছিল আজও ভারা আছে। ওই পর্বত্লাসূর কোল বেঁবে প্রতিট নগরে জনপদে, প্রে প্রাছরে, এ বুছের শেষ নাই।

ৰচ্চরের পিঠে আহেন পশন-রেশন নীল-গৰণত বুগনাভি— আরও কড কি। ভাদেরই সচে আলে অগণিভ জনগণের ধাৰীনভা সংগ্রামের রস্তপত্র।•••

সন্থা নেৰে আনে ছুংগা ভাগির পর্যাভনীরে। ভারতের দীমারেখা পারে মহাচীনের গীমান্তনীর্বে বরে পড়ে অভ-ছর্ব্যের শেষ গালিমা। হোরাংহো বীরইন নদীর জলে পড়ে ভার হারা।

পার্থ ভাবে ট্রন্থ এমনি করেই হরতো সভ্যা নামে ভার আবের বৃক্তে, ভাণজোভা নদীর হ'পাশের শ্যামল ইক্বনশীর্বে, বানের ক্ষেতে । বহাকালের প্রহার মত দ্বারমান পর্যাতশীর্ব বেকে পার্থ আৰু অভারতি দেখে। শিহরণ কালে প্রতিটি শির্থ উপশিরার, বহুদ্বে মহাচীনের গিরিশিখরে ইাভিরে আৰু ভার মনে ভাগে এক বিচিত্র অকুভূতি। যে কুদুর বাংলার বাটির বৃক্তে সে ক্ষেত্রে, বার স্নেহ্জোড়ে সে লালিত পালিত হরেছে সে ক্ষেপ্ত ভারই মাতৃত্বি। রক্তকশিকার সঙ্গে সম্বর্ধ-বিক্তিত মুভিকার ভার ক্ষরত অধিকার।

আৰু বার বার কলকাভার কথা ভাবতে ভাগ লাগে, चाद अक्षानद कथा -शत्यद मनिरकाशिय याद हिन रकाम ছিনই মুখৰে না। সেখিন কলকাতা থেকে একবানা চিট্ট পেৰে-ছিল ইলা দর। বাতী থাকি বতীনকে বিবে করছে। বতীনের কৰা মনে করতে ছবা হয়। স্থিতির স্ব ব্বর ওই দিরেছিল পুলিপকে, রাজগান্দী হয়ে বেঁচে গেল-ভাল চাকরীও নাকি পেখেছে। কে কানে, পুলিশের কর্তাদের নেকনকরে পঞ্চেছ --- इत्रष्ठ अकिनातरे इदय याद्य । किन्न आकर्ष। इदय यात्र भार्य, वजीय जाब नव बंदबर बायज--याब करते। बदिव राज करव-হিল, লেওলো পুলিশের হাতে পড়লে এতদিৰে আহি-ৰ্দ্ৰের উপাসক পার্বসারবিকে শান্ টেটের সীবাভে বসে এহানিগন খাগল করতে হত না। প্রবে থাক ভারা--প্রবে ৰাক সবাই। পৰের বৃত্তিকাভিদক পরিয়ে তাকে ভাক দিরেছে ৰে পৰের দেবতা ভারই বাঁশীর হার সব ভূলিয়ে দেয়। कारम भा कण्डिम-कण्डिम भन्न मानमा जान भक्त हरत, माना कें इ करब बाबाब राट्यब बुक्किया भा राट्य विक्यी गीरबब यक मरशोद्धर ।

নীচে বাশবদে সভ্যা বেবে এসেতে, শোনা বার হারনার অটহাসি—বস্ বস্ শব্ । কে ভাবে হরত সম্বর্থ হুটে শালাকে প্রাণ্ডরে। দরকার কাবে বোড়ার গুরের শব্দ কাবে- আগতেই সচকিত হরে ওঠে। আত্বত কোন বালশন্ত আগবার কবা নর, সবে গুরুহ্বাবেক আরে একটা চালান পাটিরেছে বর্ত্বার দিকে। সতর্ক হরে বেল্লিরে আনে—বরকে ইাড়ার লামনেই অন্তর 'সাং পো'কে দেবে।

খবনটা ধেন বিদাসই করতে পারে না। রেজুনে রাঞ্পণে রাজ্যনি হয়ে পেছে। চার্ডিকে পুলিশের সভানী সতর্ক দৃষ্ট। তারা অস্থান করেছে, চীন সীমাভ হতে হয়ত কোনরকম সাহায্য আগছে। আকই শান্ ঠেটুনের হেড কোরাটার থেকে পুলিশ আগছে, বোৰ হয় আগতে আর দেরি হয় নাই।

যাত্রা কর বাত্রীদশ। স্থাভারসেকটা ভৈরিই থাকে সদ সমন্ত্র রঙনা হতে ছবিনিটঙ লাগে না। সদর রাভা হেছে বনপথে মুরান গাঙের পাশ দিরে রেল লাইন পার হরে ভাষোর পথ অপেফারুত নিরাপদ। দেরী করা চলে না। সেই রাত্রেই খাপদগর্ল বনপথে বেরিরে পড়ল। এ জীবন জীবন মর—মুত্যুর সঙ্গে পুকোচুরি করে যে কটা দিন কাটানো বার।

আকাশের তারা ওঠে শিউরে, যাটর বুকে তাগে শিহরণ, কানাকানি সারা আকাশ-বাতাসে। পথ চলেছে পার্থ। পথের আর শেষ নাই। বিনিত্র রক্ষনীর সক্ষয় পথের প্রাঞ্জেছানি দের সবহারাকে। কটা দিনই বাঁপকোড়ার কাঁচা লাস—আর ছুরিরানের কাঁচা কোয়া চিবিংই কেটেছে। পলাতক চোরের মত বেদিন বনপথের বাইরে এল চেনা যার না তাকে, পা-টা ছিছে গেছে। কংপড়-বানাও ছিছে গেছে, সারা গারে ছুরিরানের আঁগটে গর। রাভার মারে হঠাং একদানা মোটর বানতে ঘেবেই চমকে ওঠে পার্থ—কারা বেন এই দিকেই এগিরে আসছে। শশবান্তে বনের দিকে ছুটে বাবে হঠাং একটা শক্ষে বনভূমি সচকিত হরে ওঠে। পারে অসম্ভ বরণা। ক্লাভ শরীর বেন ভারিরে আসে—চোবের সাননে একটা কালো ববনিকা, কেমন বেন বুমে ছেরে আলে চোবের গাতা।

ক'টা দিন কি ভাবে কেটে বার কানে না পার্ব।···হালপাতালের ফ্লোবেলরমের গদ্ধ , নার্সের কুতোর শদ্ধ
-- ভাজারের সতর্কবাদী সব কিছু মিলে যে পরিষ্ঠান স্মী
করেছিল তা ভালতে দেরী হ'ল না পুলিশের জেরার । এতদিন
পর পার্বপারবির এরেই, গুরু বর্দ্ধার নর, সুক্র বাঙলা
রুল্কেও বেশ আলোচন জানিরে ভূলল । ইরাষ্টী
নেভিগেশন কোম্পানীর ছোট জনারে আরাকানের দিক্ষে
পাড়ি জনাল পার্ব সন্থানিত রাজ-অতিধি রূপে ।

বেছুন নবীৰ হু'পাপে অঁচু পাহাছের কাঁকে কাঁকে উকি নাবে বানকল—করাত-কলের চিননীওলো বিব্যাত সন্ত্রাসরাধী নেতা পার্বসার্থির দিকে চেবে বাকে। স্থ্রনারপ্তর লোকের বৃষ্টি নিবত কেবলনার একট লোকের উপরথ। বাংলাবেশের বাউতে আব পা বিলে পার্থ, আর্থেকার বড় লোবালী রোহ কি আব্দ আর ইডেন গার্ডেনের প্যাবল ভক্তেশীর নাথার পরন বিহার না। আউটরান বাটের কাছে গলার বুকে গাং চিলের ফলও কি হোঁ নারতে ভুলে গেছে। যে চোর্থ নিরে আগে পার্থ দেবেছিল নেরিনের ফলকাভাকে—লে চোর্থ আর নাই। আব্দ ভার চলার পর্যে বাজে শিকলের বন্ধনা, চারবিকে ভার সপ্তর প্রহারী। কোর্থার বা নর্থার্থ পান্ ষ্টেইনের বিগভবিভ্ত নোব্যাবস্ ল্যাভের বুকে বিউল ইাক্টের অভিযাব—কোর্থার বা চিক্ইন-ইরাবভীর বুকে পার্যভের বাছির নীচু বিরে ভাম্পানে বাজা—কর্ত্রান্ধালা। আলো স্ব নিতে গেছে। আইনের চক্তে আব্দ সেবলী—অপরাবী।

'প্রিক্স ভাান'টা হাকরা রোভ বরে আলিপুর বিক পার হরে বিশাল ক্ষেত্র-কটকের সামনে এলে বামল, পার্বসায়বির জয়-বাজার পরে ক্ষেত্র প্রভাগ ।

(४वटण (ववटण (काडे (४व) बीच गरनव ववत । गार्वत মনে দাগ কেটে বলেছে বন্দীকীবনের ভিক্ত অভিক্রতা। অতীত স্বৃতির রোমহন চলে। মনে পড়ে বেউলির মর-बाधरतत बूटक वानुवक, ध्वाबरमत भाग विरव चातावती পর্বাভগীয়া সুঁজে চলে গেছে বি-বি এও দি-আই রেলের ক্ষীণভদ যোগহুত্র। হিক্সীর ববভূষির মাবে বনী-- নিবাস। দৃষ্টি বেলে যাও দূর ধিগতে—কালো আকাশ-ছোঁৱা খলরাশি বেন কেঁপে কুলে উঠেছে। ভান পাভ-বাভানে क्षमरम कांत्र करून क्षम्पन।... दम विमनाजि क्षमरम কাৰছে। বছ ভৱাইৰের পীৰাছে ভাৰতের শেব সীৰাবেৰার ৰবভূমি পাল হলে বন্ধালের নির্ক্তন বন্ধীনিবাস। কড এল-কড গেল। এই বলীজীবনের বাবে সে হারিরে কেলেনি নিকেক। ভার অপরাব সে বাস্থকে ভালবেদেছিল। ভালবেদেছিল ৰাট্ড পুথিবীকে--ধুলিধুসর ধরণীর ভাষলিমা আর ভার বুকে বিন্যাত্রির আলোহায়ার বারাকালকে-এই ভার অপরাব।

বৃত্তিলাত করতে বল চার লা : কি হবে বাইবে গিরে ; তিরিত বীপলিবা বৃত্ত বাতাসের রাবে নির্মাণিতই হবে । আক্রেকর রাক্টনতিক আন্দোলনে বিক্র তারতে তাবের প্রয়োজন নাই । রক্ত বিরে পথ তৈরি করে বিরেহে তারা, কিছু আজু আরু তাবের প্রয়োজন নাই । বেশ অভ পরে এগিরে বাজে । তাবের রক্তালা সাবনার বেদীবৃত্তে আজু প্রাথএতিটা হরে গেছে । তারা আজু করাপাতার বলে—বৃত্তিল তবু তরিরেই রাবে, নবক্শিলই আবার নাজিরে তোলে শাবারত ।

ক্লান্ত বেহনৰ নিবে কেলের বাইবে আগতেই লচকিড হবে বার সামৰে এককমকে বেবে! এ কি!—বাতী এগিরে এনে পাৰের বুলো বেল। সংগ তার বেলে। সেও এবান করে।

'আহন'—গাড়ীতে নিয়ে নিয়ে ভূলল ভাকে। এতদিনের সঞ্চিত কথা বেন মুধর হয়ে ওঠে। অবাঞ্চ হয়ে বার বাতীর চোবে কল দেবে। বাতীর সংনার কেবে ভৃতি অহতন করে পার্ব। তবু ভার চোবে কল কেন ?

"কীবৰে সাধনাত্ৰ পথে কি পোনাত্ৰ জানি বা—ভাবে ভোষাত্ৰ সংসাত্ৰ দেখে আৰু আৰক্ষ পোনাত্ৰ বাজী।"

কথা কৰ না বাজী । নীয়ৰে বলে থাকে পাৰ্থকে থেছে বিৰে । গোঞালে সিলে চলেছে সে । বছৰিব এমন থাড ভোটেনি ।

ৰতীন। সেই ৰতীন আৰু সন্তিট পাৰ্বের সামৰে আসতে পাৰে মা। বাইরে বাইরেই কাটার।

কোণার বাবে জানে বা পার্ব। সমন্ত কেলে চলছে

সূত্ৰ কেন্দ্ৰীয় সরকার গঠন সম্পর্কিত বাবা জ্বালাক্ষরা।

এতিনিবের পরিপ্রাব—এতিনিবের সাবনা আজ সকল হতে

চলেছে। জাতীর সরকারের কর্তুত্ব সাত। এরই জ্বতু

বারিত হরেছে কত ভারতীরের রক্তবিস্থ—রচিত হরেছে

কারাপ্রাচীরের অভ্যালের কর্মণ ইতিহান। হরেছে ক্বতু

পর্ব-আন্দোলন, রাজ্পবে ক্বতু রক্তের লোভ বরে পেছে।

কৃত বারের ক্বতু প্রের্থীর বিনিন্ধ র্জনীয় অঞ্চনারা করে

পাক্তেছে। স্বকিন্তুর বিনিন্ধরে এরা বহু হোক্ক—। এরা সকল

হোক্য কেউ না চিত্তক—কেউ না জাত্বক ভাষের, ক্ষুত্রর

তপভার বহিত্বরে, তবু জ্বলণ স্থবী হোক, সাবনার
বেলীবুল বোক্সপচারে তবে উঠুক।

ৰাভী অবাক হৰে বাৰ—'বাবেন কোণাৰ ?' বলিন ভাবে হালে পাৰ্ব—'পৰে !'

বাতী বোবে তাকে বরে রাধা বাবে না, সে বাবেই !
তথু চোবের জল বাবা বাবে না ! হঠাং রাভার কালের
কোলাংল শোনা বার, নানা ক্ষমিতে তরে ওঠে চতুর্বিক ।
উংকর্ণ হরে শোনে, রাভার ধেবা বার লোকের চাকল্য !
বোকামণাট বছ হরে গেল নিমেষের মব্যে ! গাড়ীগুলোও
কমে আলে । হ্র বিগতে ধেবা বার আগুনের নিবা ; রাধা
হরে গেছে আকালের কোল ! কালের আর্থনার তেনে
আনে আকালে-বাভালে !

ক্যালেণ্ডারের পাতার স্থাই হরে সুটে ররেছে ১৬ই আগষ্ট ---৪৬ সাল।

রক্তরাতা আগই—এবনি এক আগতে বর্ষার বুক্তে তাকে বন্দী করা হরেছিল, এবনি এক আগতের বিবে লারা ভারতের বুকে কেপেছিল বাবন-বেঁড়ার প্রবাস। রক্তে রাঙা হরেছিল কলকাভার রাজপথ। এইত দেখিন। পার্ব ভবনও কেলে। চিরুসরবীর দেই আগঠ। কিছু আক। নেই সরবীর আগতেরই বিন আক কলতের কালো হারাছ

শীবার হরে দেল। কেন এই রক্তপাত, কিনের মচ এই ভাওবলীলা।

890

এত বিষেধ্য সাধনা আছু ব্যূৰ্থ হতে চলেছে। বতের বিনিধ্যে, এত বিষেধ কারাবাসের হুংসহ কট বিষে অর্ক্র ন করা বহার্থ রাণিক আছু তারা হারাতে বসেছে। ওরা কি ভুনবে না আছু বেশরাভুকার আহ্বান। আছু তাই আবার তাক পড়েছে অধিবন্ধের উপাসক্ষের—বারা জীব্দ বিষে ভুনিরে এসেছে ভাগরণের বাই। সম্বন্ধনাই, সারা বেশ ভাকে ভাকে। অনুত্ব করে পার্থ হারাবো বিষেধ্য সেই উন্নাদনা—তেমনি এক অভ্তপুর্ব্ধ চাকলা।

পাৰ্থ কিপ্ৰপদে ৰাভাৱ নেমে পড়ে, খাতীও নেমে বায় ৷
আৰু সৰ লক্ষা-সমূহ ভূলে বায় সে ৷ সামধ্যে ইাভায় পথবোৰ কয়ে ৷

আৰু ভোষাকে কিছুতেই যেতে দেব বা--!

হালে পাৰ্ব সেই মলিন মধুম হাসি; 'ছিঃ ৷ ছেলেধান্ধি কৰো না হাতী ৷' হাতটা সৰিছে দিয়ে পথে নেমে প্ৰুণ ৷ বাতীর হু'চোৰে নামে অঞ্চর বভা ৷

পাৰ্থ চলেতে পৰে •• নামৰে কাৰা চলেতে বিক্রোলানে; তবিকের বভিতে আওবের লেলিভাব শিখা, কাণের আর্ডনানে তরা হাসতে। পার্থের হাসতে। পার্থের বৃক্টা কেষৰ করে তঠে! বেটুকু এসিরে এগেছিল কেম

এতবিবের সাবনার নেই আগতপ্রার ব্যব্ধকে ভারা বেন অরিকৃতে পুড়িরে বারতে। এ বেন ভার নিজেরই রুড়া।

না |---না | ওবের বানাতে হবে | বোরাতে হবে কত বঢ় সর্বানা ওয়া কয়তে চলেহে |

बनिद्य हरण भार्य।...

সহসা পিছৰ বিক বেকে ভাবের চীংভার ভবে কিরে চাইবার চেটা করে—পারে না। বাবার একটা আবাত পেরেই বনে পতে পার্ব। হাতটা রক্তে রাভা হরে বার বেবতে দেখতে। ওঠবার ক্ষমতা নাই। চোবের সামনে ক্ষেম বেন ক্ষমট অন্ধভার—ভেনে ওঠে কাদের পৈশাচিক হাসির ক্রমবিদীরমান শক।

রাভার কটিন পাধরটা রাভা ক্রে যায়। অধ্যে শোনা যায় কালের অট্টাসির পদ, সামনে আঞ্নের সালাভ শিবা সারা আঞাশ প্রাস করে চলেছে।

ছ'বাত গিরে প্রাণপণে নাট আঁকছে বরে পার্ব। কঠিন
মৃত্যির বেবানে সে করেছে, পরিপৃষ্ট হরেছে বেবানে—
মৃত্যুর শেষ মৃত্তর্ভিও সর্বাক্ষে অঞ্জব করে সেই বিমন্তিল
বরনীয় আলিকন। এ অংগলীলার অবসান বোক্! স্থাবে
বাক্ক গুরা গ্রাই—ছুন মুন্ন বরে ভোগ করুক তাবেরই পের
যক্ত কণিকায় আঁজিত শীবনের মহা সম্পদ। পার্বগারধির
শেষ চিহু গুরু পড়ে বাক এই প্রেরই প্রান্তে। পারে পারে
উঠুক চলার হল—এগিরে বাবার গান।

## সভ্যতার আদর্শ ও শিক্ষার রূপ

## ঐলন্মীশ্বর সিংহ

আমাদের জীবছণার পর পর হুইট মহাসময় সংঘটত হুইরাহে। এই অংসলীলার হুঃও জুপুঠের সকল দেশের অবি-বাসীকেই কমবেশী ভোগ করিছে হুইরাহে। পাশ্চান্তা দেশ ও পাশ্চান্তা সভ্যভার প্রভাবাধিত দেশসমূহ এই অংসলীলার ক্রের। মাহ্য বাহ্যকে হিংসা করিবে, ইহা কর্বনও মানব-সভ্যভার আদর্শ হুইতে পারে মা। প্রের ও প্রভিত্ন ভিত্তিত পূর্ণভর বাব্যসমান্ত গভিত্ন ভিত্তিত পূর্ণভর বাব্যসমান্ত গভিত্ন হুইবে। পূর্ণভর বাব্যসমান্ত গভিত্র প্রভাবসমূহ শিক্ষার ক্রের হুইতে হুর ক্রিতে হুইবে।

সভ্যভার উবাভালে প্রকৃতিই বাহুবের বাভ বোগাইত।
কর্বন করিবা শভ-উংপাদন সভ্যভার ক্রমবিভাশের পবে বাহুব বেরন আবিভার করিবাহে, তেমনি কুবিভার্য্য করিতে সিরাই ক্রমেলাদির উত্তাবন ও উংকর্ম নাবন করিবাহে। কেংক্রেলের প্রয়োজনে বাহুব কর্ম, বক্স ও অবশেবে ভার্মান-ভন্ত বারা বৃদ্ধ বির্বাধের পহা উত্তাবন করিবাহে। শভ ও বাংসাধিকে বাভোগবোধী করিবার থক আরি ও পারের ব্যবহার করিতে শিবিয়াহে। আত্রহণ গভিতে বিরা গৃহাদিনির্দাণ-কৌশল আবিভান করিবাহে। বাভরব্য উৎপাধনের কত কবি ও গৃহপালিত প্রকারহে। বাভরব্য উৎপাধনের কত কবি ও গৃহপালিত প্রকারহে তান, ধেহাবরণের কত বর্লারবিতা, আত্রহণ তৈরির কত হাপত্যবিত্রান, ধেহকে কুছ রাবিবার কত গারীর-বিত্রান প্রকৃতি বহুবিধ আন-বিত্রানের চর্চা যাহ্ব কুছ অতীতকাল হইতে করিরা আসিতেহে। কুছ শরীহে ক্রেম্পে বাঁচিরা বাক্বিরার কত উপরোক্ত বিষয়াদি সক্ষয়ে অন্তর্গকে ন্যাক্তর তাবে বাক্তারের কুবলুংবে সহাক্তৃতিশীল হইতে গেলে অন্তর্গক তাবে স্বাক্তিতান বা পৌরবিতারও বৃলনীতি শিকার অনীকৃত হওরা প্রয়োজন।

বাইবা-পরিরা বন্ধনে বাঁচিরা বাকিবার বত বত সর্বাীর আনবিজ্ঞানের চর্জার বাস্থ্য বহুবিধ ব্যৱের আবিজ্ঞার করিবারে। এক একট করিরা বিভিন্ন বত্তর পরিচরলাত ও বত্তকে বিজের প্রয়োজনে লাগাইবার বত বহুপাতির ক্রোংকর্ম লাবন বারাই বাস্থ্য সভ্যতার ক্ষেত্রে বাংশ বাংশ আগাইরা চলিরারে।

আধিৰ ৰাজ্য কট্টৰ পৰাৰ্থসমূহের মধ্যে একমাত্র পাণরকেই निष्ण व्यवासनीय बना निष्ठा सानिष्ठः छ्वन भाववदाहारे গুৰাদি ও বলগাতি তৈত্ৰি হুইত। সেই মুগতে আৰলা প্ৰভন্ন-মুগ বলি। এই কৰোছভিত্ৰ প্ৰক্ৰিয়াৰ ৰাজ্য বঞ্চ, লৌহ প্ৰভৃতিত্ৰ সহিত পরিচিত হইরা ইহাছের ব্যবহার-পর্বতি আবিভার করিবাছে। বিভিন্ন তর অভিন্তের ভরিবা বর্তমানে মাল্য বর-ৰূপে আদিলা গৌহিলাতে। এই বল্লবুগের দলে পূর্ববর্তী মূপের ভকাং, এই বে পূৰ্বে মাছৰ হতনিবিত বহাদিবাহা হাতের जारारारे मिल्ब बरबाबनीय बनावि छिवि कविक, लोनवी-স্থাকেও চরিভার্থ করিত : আর ব্রবুপে বাছব কুটীরশিলের হাতিবাৰকে কলে পৰিণত কৰিবা তাহাবাৰা প্ৰবোদনীৰ ক্ৰয়াছি তৈরি করিবা লইভেছে। কলের প্রভাবের প্রভিক্ষির বর্তমান যানব-স্বাজের উপর ক্তথানি চাপিরা বসিরাতে ভালা আছ শিকাৰীভিবিদদের ভলাইরা বেবা প্রৱোজন। কুরিবলিজের বল্ত-চালনা चारा निरम्द श्राराक्ष्मीय क्ष्याकि श्रमण करा अवर प्रश्नाक करन शविषक कविषा वहकरमद ब्राख्यम श्रद्धाव गुवहाद অনুকৃলে ও প্রতিকৃলে বে দকল বৃক্তি আছে তংগর্থহই বিচার कविदा विविद्ध स्टेरन । यक्ष (tools) विवन बाब्रस्व प्रक्री, कन्छ ( machine ) एकमिन मानूरवद एडे. किन्ह देखादद वृत छेरक्छ कि अक ? यश्चरक्रीय बूरन चार्ट नक्क्छत छेनारन व्यव्याक्रमीय व्यवाधिय हारिया विहास्ता ७ निववनाधिय छैरकर्य-गारतिय पांकांका पांत कनशहैत यून छेएक ७ नका वस-- বিশেষের উৎপাদনের ছার বাড়ালো। এই বস্তু-বিশেষের উংপাদন-ছার বুভির বুলে ছিল যাস্থবের প্রচত লোভ। रेजिरांत्र पर्यात्माहमा स्वित्न बरे मण्डे नश्रद त्यांन मर्नद बारक मा । बारकत मन्द्रे मानुरस्त अकाव श्रास्त्रीय प्रस **एरेन नम्र। अरे नम्र (७विव कन प्रदारम, रेशाव दिन्छ ७** প্রসারের ইতিহাস একাত ভাবে বাছবের চর্কনদীর লোভেরই ইভিহাগ।

অতি প্রাকালে ভারতবর্ণে বছলিছের বিশেষ উরতি হইরাছিল। কিড কল আবিদ্ধুত হইবার বহু পূর্ব্যে বছলিছ এবেশবালীর কচি, কল্পয়া ও স্বাধীশক্তির অভতর প্রেষ্ঠ নিয়র্শন কপে বিকাশ লাভ করিরাছিল। সহস্র সহস্র বংসর এই নিয় প্রবাদ্ধন প্রবেশ্ব সলে এবেশবালীর ফচিবোবেরও ক্রারোছিত নাবন করিরা চলিরাছিল। এবেশবালীর অপূর্ব্য বছলিছ তিন্দ্রী নহাবেশের অবিবালীবের বিশরের কারণ হইরাছিল, কিড ভারতের এই ক্রাবিভ্লানার বিজয় লিছ বিন্ধ হইল কেন প্রহারিত কাপতের কল। কলের সহিত প্রতিবালিতার এবং অভার রাজনৈতিক ও অব্বৈতিক কারণে ভারতীর বছলিছ বাভার হারাইরা কলের ব্যাপেকী হইরা পভিরাহে। আজ প্রবাদ্ধনীর ব্যাহর অপ্রান্ধুর্য্য এবং পরস্থ্যাপেকিভাই ইহার একরাল কুকল নহে, ইহার আল্বাহিক অভার ব্যাতিক আল

চড়াত ভাবে বেবা বিবাহে। বাহুবের প্রবোদনীয় বহ লাৰত্ৰী-বাহা তৈত্তিত্ব ভঙ্গ পূৰ্বে লব্ব-লাধাৰণ নানা হুলীয়-শিৰেৰ চৰ্চা কৰিত, ভাহা লোপ পাইতে বসিবাহে : বাছৰ আৰু একান্ত ভাবে কলেৱই ছুবাপেকী ব্ইয়া পভিয়াছে। পরিণাবে মাছৰ বাভাবিক উপারে বভজান লাভে বকিভ উপরত বিভিন্ন বিভন্নবা উৎপায়নে বিষয় ভাক্তবিল্ল-বিবর্জ সর্বাগারণের বাভাবিত रक्नीमकि-विकास्मद नवक क्रव क्षेत्रारक। निकारकरक ক্লবিৰ উপাৰে বছজাৰ লাভ করিতে হইতেছে। কলে পিল-ত্রব্য তৈরি করিতে গিরা অভূলি ও অভাভ অবপ্রভাক কুলিব ভাবে পরিচালনা করিতে বাব্য হওৱার শিল্পশির বারা আৰু হাভাবিক বাতে প্ৰবাহিত হইতে পারিভেছে বা. এক ক্ষার चार्णावक वैभारत निकानिकाकीत भव नडिक व्हेबारत। निकारकत्व वरे नवन्ता चाक नक्न (क्रानंतरे नवन्ता । चहित्र কলে ইংপাদিত প্রবোজনাতিরিক ক্রব্যের প্রাচর্য্য এবং একলি বিজ্ঞানত কৰু বাজাৰ জন্মবাৰ---এক কৰাৰ ইহাবের বিজ্ঞানত ছত বে প্ৰতিৰোগিতা বিভিন্ন ৰেশবাসীদের মধ্যে ৰেণা বিরাহে, ভাৰার কলে সমুএ মানবসমাজের শান্তি ও প্রবহাক্ত্যের পৰকে—এক কৰাৰ বানবভাবিকাশের বারাকেই ব্যাহত করিয়া ভূলিয়াছে। সেক্ত সর্ব্ধ মানবের স্বার্থ আৰু বিশয়। बहेबन इवर्षा प्रेट छेवाद नारेट प्रेटन, चारांत मानव-সভাভাকে কল্যাণ্ডীয়ভিত হেবিতে হইলে, শিক্ষা ও সংস্থৃতিয় আসল লক্ষ্য ভিত্ৰ করা এবং ভাষাকে সর্বাবাদের পক্ষে বছল-প্ৰদ করিয়া ভোলা প্ৰয়োজন। সাধায়ৰ ভাবে বলিভে গেলে পুৰিবীয় সৰুল হাট্ৰের পক্ষেই আৰু এ সংৰে অবহিত হইবার ছিৰ স্বাগত।

ভারতীয় সভ্যভায় সংগ পাশ্চান্ত্য সভ্যভায় একট যুলগভ প্রভেদ এই যে পান্চাভ্যের চার পরবেশ কর ও পরবেশ-বাসীর উপর খাসনভর্তত ভাপবের উংকট প্ররাস এবেশে কৰনও বেৰা বেয় নাই। উপয়ত কছ বিজ্ঞান ও অব্যাহ-বিজ্ঞানেয় म्या नामक्षक ज्ञानत्वत्र क्षत्रान क्षात्रीय पूर्व करवर्ष स्वय ভাবে প্রকৃষ্টত হইরাছিল, তেখনট পাশ্চাত্য সভ্যতার বিরল। এক দিকে অভ, গণনাগছভি, জানিভি প্রভৃতি গণিভবিজ্ঞান ও चकार चक्रविकात्मत एक्टे त्यम अत्यत्म प्रदेशविम चक्रवित्म ভেষৰি এই পুণাভূষি ভারতবর্ষে বর্ণনশায় বে ভাবে আলোচিত ও আচ্বিত ধ্ইৱাৰে তেবনট বত বেটৰ সভাতাৰ বভ বেধা বার না। শিক্ষাক্ষেত্রে 4 (प्रत्येष কোনু আহর্ণে অনুবাণিত হইরা বিষয়-সজোগকে ভ্যাগ করিরাছিলেন ভালা এই বঙ্গারিক বুরে পুনরার প্রভার সহিত আলোচনা করিতে হইবে। বিভাগ্রহণকালে বন্দচর্য্য পালনের প্রয়োজনীতা ছাত্রবের পক্ষে যে কিন্তুপ জল্যাপড়র जावनिक कारनव निकामीजिविन्द्रस्य तम विवदस विद्यास जादर चर्नारक स्टेटक स्टेटन ।

আব্ৰিক বুণের কোন কোন সভ্যৱত্তী বহাপুরুষ ভারতের

প্রাচীন শিকানীতির বৃদ্ধবন্ধে অভ্যরণ করিবাই নিবিত, বোহাছর বেশবাসীকে জানলোকের পথ প্রবর্গন করিছে বছনান হইরাছেন। বানী প্রধানক প্রতিষ্ঠিত অনুক্র, কবিভন্ন ববীক্ষনাবের শাভিনিক্তেল ব্রহ্মপ্রাপ্রব,নহাত্মা গাড়ী প্রতিষ্ঠিত সব্যর্কী (পরে সেবাঞান) ইহার মুঠাভহল। বভ্তঃ বর্তনান-বুলে এব্রেশের প্রাচীন আহশাস্থ্যারী অভিনব শিকানীতির প্রবর্তনের পরীক্ষাকের হুইতেত্বে এই প্রতিষ্ঠানসমূহ।

রবীজনাথ তবু পাতিনিক্তেন প্রতিষ্ঠা করিবাই ভাত হন
নাই, "নিজানত" হাপন করিবা এবেশের পরীবানী জননাধারণের নিজাকে সার্থক রপ বিবার প্রবানত তিনি
পাইরাছেন। সম্প্র সামবজাতির কল্যাণকরে একবিকে বেষন
বিধ্বেবের বাবী প্রচার করিবাছেন, অচবিকে তেমনি এবেশের
নীনবছির নিশীভিত জ্মগর্থের বব্যে বাহাতে নিজার আলো
বিজীর্ণ হর, বাহাতে ভাহারা প্রকৃত কল্যাবের পরে
পরিচালিত হইতে পারে নেজত জীবনব্যাণী চেষ্টা তিনি
করিবা নিরাছেন। বর্তনান বাহিক সভ্যভার পোচনীর কুকল
নথতে জ্বনের নির্মিতিত বর্ণে বলিবাছেন—

"বর্তবাদ বুলে কেবল বে বল্লের উৎপাদন-ক্ষরতাই বৃদ্ধি পাইরাছে তাহা দর, ইছার কলে বাজ্বের লাভের বাতা এবং লক্ষরের লোভও বাভিরাছে। ইছার করন ব্যক্তিয়ার্থ এবং লক্ষরিপত বার্থের বন্যে বিরোধের পৃষ্টি ক্ইরাছে এবং বাবানলের মত বুলের আগুল সর্বান্ধ রভাইরা পভিতেছে। এই লোভই এাম এবং সহরের আভ্যন্তবিক্ত সম্পর্কের মৃদক্ষের করিরাছে এবং এই কারণেই প্রায়কে লোখন করিয়া শহর পৃষ্ট ক্ইতেছে। প্রায়ক্তিত শহর যা বের, তার প্রভিতাবে কিছুই লে বের লা।"

লোভসৰ্বাৰ বাত্ৰিক সভ্যভাৱ বোহ বানংস্বাজের হুঃব, ও প্লানির বেড়ু হইরা হাভাইরাহে এবং বিপুল ক্ষকভির পথ এপত ক্রিভেছে। এ সহতে রবীক্ষবাৰ ইংরেজীতে বাহা বলিরাহেন, ভাহার ভংগব্য এই—

"নাহ্বের ভিতর্কার অভাত শক্তর ভার লোভও একটি
সারাজিক বার্থবিরোধী প্রস্তি। এই কটই ভারতবর্ধে ইংকে
নিপু বলা ক্ষনহে। বহু বেনন বাহির ক্ষতে অপক্রব
করে গোভও ভেননি ভিতরের দিক ক্ষতে সরাক্ষেক সর্ববাভ
করে। বে পর্যান্ত ইকাকে ক্ষন করিবা রাখা বার, সেই পর্যান্ত
নাহ্বের ক্ষপ্ত শক্তিসমূহকে উর্ভ করিবার ক্ষরতা ইহার
নাহে। সেই শক্তি সাবাজিক কল্যাণকে বিনত্ত করে বা। কিছ
বিশেষ কার্বে লোভ বৃদি সীবা অভিক্রম করে, ইহা চরিভার্থ
করিবার উপায়নসূত্ত বৃদি অসাধারণরক্ষম প্রবান কর্যান্ত
ক্ষিত্র স্বাক্ষ-কল্যাণের সীবার বব্যে আর ইহাকে আব্দ
করিবা রাখা বার বা।"

এই ব্যবেদ বহু সভৰ্কদাৰ প্ৰবীক্ষদাৰ উচ্চায়ণ কৰিবা দিয়াহেন : আনাহেন পদ্মীঞানের পোচনীয় ভূমবহা এবং নাগরিক সভ্যভার সর্বানী বুতুকার কবিবা বরুব পরীয় কব-वर्षनाय राविका भूटर्सरे एवित बटन दानमा सामारेवारिन। कांदात 'बरम्बे नवांक' ७ पश्चित तहना अन्य तक्कात देशात প্ৰহাণ আছে। পাকাত্য বেশের লোভগর্মন বারিক সভ্যতার অবক্তভাৰী শোচনীয় পরিণতি সহতে তিনি বারবায় বিশ্ববাদীকে সভেতন ভৱিবার ভেটা ভথিয়া সিরাত্তের। অভিকেন সেবনে ঘতাত ব্যক্তিকে ইয়ার অপকারিতা সধ্যে সভর্ক করিবা বেওয়ার যত অর্থায়, লোভাতুর বারিক গভ্যভার বারক ও পোৰকৰেৰ লোভেৰ বিষয়ৰ পৰিণতি বা অবিষ্টকারিতা সহতে সভাগ ভরিষা ভোলার প্রবাসও পঞ্চাবে পরিণভ হইতে পাৱে: কিছ ভারতবাদী আবরা নিজেবের ভাতীর শিকা ও বংছতি কাংস্কারী যান্ত্রিক সভাভার করল হইতে নিচ্চতি লাভ করিবার হত এবনও কি বছবান হইব না ? পাল্ডাত্য সভাভা---ভর্বাং ইউরোপ ও আমেরিভার বাছিক সভাভা বাহার সম্ভ শক্তি হুর্বনদীর লোভপরবদে গটভ , যে সভ্যভার পরশোষণনীতির পরাকাঠা পরিলক্ষিত হইরাছে এবং विकास त्यसारम स्वरमनीमात महातक हरेता है विदास स्वर বেশের ও সমাজের শিকা-বাবলার ব্যাপকতা ও বিশালতার বাহিক চাকচিকা আকৰ্ষণীয় হইতে পাৱে কিছ নিক্ষই বিনা विष्ठारक अध्वीय स्थ ।

আৰু বিশ্বজ্বোভা বিপ্লবের মধ্যে আমরা বাস করিতেছি। লোভগঞ্জাভ ৰে প্ৰশোষণ্থীতি এই বিপ্লবের দূলে ভাষা ভ্যাগ না করা পর্বাস্থ বাছৰ সভাভার বাবে এথনিভাবে वर्व्यक्रणात्र चल्रकीम कविद्या प्रतिद्य विश्वादे बार्य एवं । अल्या-সমাজে বিংলারভি চরম ছুর্নীভি। এই প্রবৃত্তির উৎস মালুবের লোভ। ব্যক্তি, হাট্র ও সমগ্র মানব-সমাক বৃহ,ভামূলক শোৰণৰীতি ত্যাগ না করিলে উচ্চতর মানবভার আঘর্ণ কৰ্বনই জন্তক হইবে না। সভ্যের সাবক মহালা গাড়ী অহিংসা ও প্রেবের বাদীকে প্রপ্রতিষ্ঠিত করিবার কচ প্রবল প্রতিকৃত্তা সভেও সারাজীবন সংগ্রাম করিব। চলিবাছেন। वरीक्षनात्वत विवयामरणाव चायर्ग ७ शाबीकीत चरिरमायात्वत ৰুলন্দ্য একই। বাত্ৰিক সভাভাৱ বিভূত আৰৰ্ণে বিভাভ বাৰবণাতিকে শ্ৰেৰ ও বৈশীৰ বৰণে আৰম্ভ করাই ভারতের बरे हरे वरावावटवड नवब कीवटवड नाववा । रेराटवड चावर्नटक বাতৰক্ষেত্ৰে স্থপায়িত কৰিতে বইলে বছতাছিক ও বাছিক भीवत्वत अधि भावात्वत गृष्टिक्षीत भावूनगरकात अत्ताकतः। ইহাবের বহান আনিন্দে বাত্তবে পরিণত করিতে হইলে শিকাণভতির আবৃদ পরিবর্তন, অভিনব শিকানীভিত্র প্রবর্তন ও বিষয়ণ একাড আৰক্তক এবং নেই শিক্ষানীভিয়ারাই ভবিষ্যতে পূৰ্বভৰ বাদৰ-স্বাদ্ধ পভিষ্য ভোলা সভৰ। এই बीजिबरे चारमारक पनिवासी चाजीब निका-शक्षिकसमा बहिक रहेबांटब ।

# দারকানাথ ঠাকুর

(১৭৯৪—১৮৪৬) **এ**যোগেশচন্দ্র বাগল

•

ইংরেজ আমলের প্রথম মুগে পরাধীন ভারতবাসীরা বাঁহালের প্রতিভাবলে বিভিন্ন বিবরে আত্মপ্রত্যর কিরিরা পার বারকানার্থ ঠাকুর জাঁহালের মধ্যে একজন। তিনি রাজা রামবোহন রারের সহযোগে হিন্দুসরাজকে পরিশুভ করিতে তংগর হন।

ইবার উরতিকলে তাবার প্রচেটা বিল অপরিদীম। ছাভিগঠনবুলক কার্ব্যে प्रविदय मर्या काराव श्राम पछि छैट्छ । चावकामान धनम चौन्दन किएकान বাবহারভীবীর কার্যা করেন। পরে সরকারী কর্ম এহণ করিয়া নিরক মহলের (४७३१न स्टेरनन । जर्म जर्म निक क्यि मादि পরিচালবার করিতেন। ভিত্ত সর-कारो ७ देवदिक कर्य निक वाकिरमध. বে-সব উপারে খেলের বনসপদ বাছিতে পারে সেদিকে ভাঁছার ভেনদুট ছিল। তিনি সরকারী কর্ম করিতে করিতেই क्यानियान साथ ७ देवेनियम साथ প্ৰতিষ্ঠাৰ উভোগ খন। বাৰকানাৰ ১৮৩৪ সনে সরকারী কর্ম পরিভ্যাগ করিয়া হয়ং ক্ষেক ক্ষম ইংয়েক অংশীদার সইলা কার-ঠাকুর কোম্পানী প্রতিষ্ঠা করেন। বলা বাহলা, কোম্পানীর রহত্তৰ অংশ कांशबर दिन। अ यावर वर वाक्षानी ইংরেজদের হোদে টাকা বাটাইভেন बर निरम्बा ब्रक्षी नारम পরিচিত च्टेट्डन । विद्यालय भारत शाबीन**ा**टन ব্যবসা-পরিচালনার খারকানাবই বাঙালী-দের মধ্যে পথপ্রমর্থক হইলেন। ভংকালীন रक्षणाठे वर्ष देदेनियम (विषय अकादन ভারতে পর বারা অভিবন্দর ভারাইয়া-चिर्व ।

সরকারী কর্ম করিতে করিতেই হারকানাথ ব্যাক প্রতিষ্ঠার উল্যোপ হইরাহিলেন বলিরাহি। তিনি সরাজের আর্থিক উহতির কর্ম অভার বিকেও বনোবোর হইলেন। জীবনবীনা কোন্দানী হাপন ও প্রনার ইহার বব্যে একটা। তিনি নীল-কুরী, রেশন কুরী হাপন করিলেন, রাইগঞ্জের করলার থনিও ক্রম করেন। হারকানাথ ব্যবনা-কর্ম হারা প্রচুর বন-সম্পত্তির অবিকারী হন। কলিকাতার বেশী বিবেশী উভয় স্বাজেই ভাহার প্রতিপত্তি আনাতীত রূপে বাভিয়া রেল। প্রচুর কু-সম্পত্তির অবিকারী হুইলেও তিনি হরির ব্যবনানী- বের তুলিরা যান নাই। বিবিধ ক্ষমিতকর কার্ব্যে তাঁহার যান হিল প্রচুর। যারকানাথ ভিক্কিট চেরিটেশল লোলাইটর্ব সভ্যরণে ইহার পরিচালমার সময়ক্ষেপ করিয়াই কাভ হন নাই, হংর্থেয় সাহায্যক্ষে ভিনি ইহার হতে এক লক্ষ্ টাকা অর্থি করেন। এই অর্থ হইতে ধীন ইংকি আর বঞ্চলের সাহায্য



বারকানাথ ঠাকুর

করিবার ব্যবহা হয়। তংকালীন বিবিধ শিক্ষা-প্রচেষ্টার সক্ষেত্ত বারকানাথ খনিওভাবে সংগ্লিষ্ট হিলেন। এবাবে এই সম্পর্কেই বংকিটিং আলোচনা করা বাক।

3

কলিকাভার বিন্দু কলেজের প্রতিঠাকাল ( ১৮১৭, ২০শে আহ্বারি ) হইতেই ভারতবর্ধে নবর্গের হচনা বলা চলে। এই কলেজ প্রতিঠার রাববোহন রার কি বারকানাথ ঠাকুর কাহারও প্রত্যক্ষ বোগ বিল না। রাববোহন বার প্রত্যো-হিন্দু মূর্ল নাবে কলিকাভার প্রকটি বতর বিভাগর প্রতিঠা করেন। এই

বিভাগরট হিল অবৈভনিক। রামবোহন শীবনে কবনও
বিন্দু কলেকের লকে বুক্ত হন নাই। কিছ বারকানার ঠাকুর
নহতে একথা রোটেই টক নহে। কেহ কেহ বলেন, ভিনি বিন্দু
কলেকের প্রতিষ্ঠার লবর হইতেই ইহার লকে বুক্ত হইরাবিলেন, একথাও অহুরল আভিন্দক। বিন্দু কলেকের প্রথম
বিক্তে তিনি ইহার সংপ্রবে আলেন নাই। তিনি রামবোহন
রারের হুলেই অর্থনাহার্য করিতেন। খীর জ্যের্ত পুরু
কেবেজনার ঠাকুরকে এই বিভালরেই তর্তি করিরা কেন।
কেবেজনার্থের হারজীবনের প্রথম তাল এইবানে কাটে। ১৮৩০
নবের নবেরর রালে রামবোহন বিলাত বারা করেন। ইহার
পরেও কিছুকাল তিনি এবানে অধ্যরন করেন।

হিল্ কলেজের শিকার উপকারিতা দেবিরা বারকানাথ ইহার বিকে এই সময় বিশেষ আঞ্চাই হইলেন। ১৮৩০ সনের নার্ক নাসে হিল্ম কলেজের অভতন অব্যক্ষ ল্যাড় নিবাহন ঠাকুরের রুত্যু হব। তাঁহার পুত পবে বারকানাথ কলেজের অভতন অব্যক্ষ ননোনীত হইলেন।০ তবধনি মৃত্যুকাল পর্যাড় তিনি এই পবে অবিষ্ঠিত হিলেন। দেবেজনাথকে উহার পূর্ব্বেই তিনি হিল্ম কলেকে ভটি করিয়া বিয়াহিলেন। এই তের-টোক বংসর (১৮০০-৪৬) বারকানাথ হিল্ম কলেজের উন্নতিকরে সবিশেষ তংগর হইরাহিলেন। কলেকে বিভান-শিকার প্রবর্ত্তনের অভিন্ন তথা ও'নাগনেসির প্রভাব তিনি সমর্থন করেন। কলেজের আর্থিক সক্ষতির সক্ষে সামগ্রুত রাধিরা ইহা আংশিক ভাবে গুরীত হব।

বাঙালী ছাঞ্জবের স্মষ্ট্রাবে রাজ্তারা শিক্ষার্থরের কড় ১৮০১ সনে হিন্দু কলেকের অবীনে আর একট শাবা-বিভালর প্রতিষ্টিত হয়। বাংলা পাঠশালা নামে ইহা পরিচিত হইতে বাকে। ইহার কার্য্য আরম্ভ হয় ১৮৪০ লনের ১৮ই জাত্ত্বারি। পাঠশালার উচ্চেও হিল—অরবরত হাজ্বের বাংলার রাব্যুরে বিভিন্ন বিভা শিক্ষা দেওরা। হার্জানার ঠাকুর ইহার প্রতিষ্ঠার বিশেব উল্যোপী ছিলেন। ইতিহাস, ভূগোল, পাটার্থনিত, ল্যারিতি, সাবারণ বিজ্ঞান প্রভূতি নানা বিবরক পূক্তক বাংলা ভারার রচনার প্রভ কলেক-কর্ত্থপত একট সাব-ক্ষিটিও গঠন ক্ষিরাছিলেন। প্রতিকে কতকটা ভাতত হইরাছিল। কিছ এই সমন্ত্র সরকার হিন্দু কলেকের ব্যর্ভার অভ্যবিক বহন ক্ষিতে আকার পূন্ধটিত শিক্ষা ক্ষিটি (Council of Education) ইহার উপর কর্ত্ত্বত ক্ষারত আরম্ভ করে। ইহারা উৎলাহ না দেওবার উক্ত ভার্য্য বহু হইরা বার। প্রবাধে বলা আবর্ত্তক

বাৰকাৰাবের পুত্র বেবেজনাথ বাংলা পাঠশালার আবর্ণে ১৮৪০ সবের কুন বালে ভছুবোধিনী পাঠশালা প্রভিচ্চা করিরাছিলেন।

হিন্দু কলেকের সঙ্গে হারকানাথের বনিষ্ঠ বোগ চিরস্থনীর করিবার কচ উহার বৃহ্যর পর বে ব্যবস্থা হয় এবানে ভাষাও বিলেব উল্লেখযোগ্য। ১৮৪৮-৪৯ সনের শিক্তা-ক্ষিত্রীর বিশোর্ট হইতে জানা বার, হারকানাথ ঠাকুর স্থতি-জহবিদের টালাবাড়গণ ১৮৪৯ সনের ১০ই জুলাই একট সভার সমবেজ হইরা হির করেন বে, 'হারকানাথ ঠাকুর কলারশিপ' নামে হিন্দু কলেকে একট রভিন্ন ব্যবহা করা হইবে। এই উল্লেখ শিক্তা-ক্ষিত্র হতে জহবিদট ভক্ত থাকিবে এবং ক্ষিট এই প্রভাব কার্গ্যে পরিণত ক্ষিবেন। শিক্তা-ক্ষিট এই সম্পর্কে বিররণ সিহাভ ক্ষিত্রেশ,—

"By a new distribution of the Government funds appropriated to the foundation of scholarships in the Hindu College, in connection with the change of system already alluded to, a first-class scholarship of 40 rupees was instituted and designated the Dwarkanath Tagore Scholarship; the difference between the interest yielded by the amount of the subscriptions, 25 rupees monthly, and the full value of the scholarship, being made up from the funds assigned by Government for the endowment scholarships in that College."\*

ইবা হইতে কামা বাইতেছে, হারকামাণ ঠাকুর-ভহ্বিলের ফুল হইতে মাসিক আর হিল পঁচিল চাকা। বক্ষা পমর টাকা সরকার-প্রকত রভিকও হইতে প্রতি মাসে দিরা চলিল টাকা পূরণ করা হয়। নাসিক চলিল টাকা মূল্যের 'হারকামাণ ঠাকুর ভলারশিপ' মামে একট প্রথম শ্রেণীয় বৃতি এইরূপে হাশিত হইল। কলেক্ষের উৎকৃত্ত ছাত্রদিগকে এবনও এই বৃত্তি দেওরা হইরা বাকে।

বারকানার ঠাকুর ১৮৩> সনে জেনারেল ক্ষিট অব পাবলিক ইন্ট্রাকশম-এর (বাহা পরে কাউলিল অব এডুকেশ্যে পরিণত হয় ) সরভ নির্ভ হইয়াহিলেন।

8

ক্লিকাতা বেভিক্যাপ কলেক্ষের প্রায় প্রতিষ্ঠা অববিই বাষকাশাথ ইহার সংশ্রবে আলেন। বর্তনান প্রবাধ ব্যব্ধে বেভিক্যাল কলেক প্রতিষ্ঠার ইভিহাল আলোচনার প্রবাধন বোৰ করি না। এবানে এইটুকু বলিলে ববেট ক্ইবে বে, ১৮০০ সনে গঠিত করিটির বিশোর্ট অহ্বারী বভলাই পর্ত ইনিরর বেভিক বেটিত বেভিক্যাল ইন্টেটিউনন প্রবং কলিকাতা বাজানা ও সংহত কলেক্ষের বৈব্যক প্রেম্বিভিন্নি ভূলিরা বিবা ইউরোলীর আবর্ণে প্রকটি বেভিক্যাল কলেক প্রতিষ্ঠার বিবর ১৮০৫ সন্বের ২৮শে ভাহুরারির বোরণার ব্যক্ত

রাবাকাত দেব বিলাতে ভটর হোরেল হেব্যান
উইল্লবকে ১৮৩০ সনের ১৪ই বে ভারিবে এক পত্তে প্রসক্তঃ
লেবেন :---

<sup>&</sup>quot;Prosunnocoomer Takore was elected in the room of his deceased brother and Dwarkanath Takore in that of the late Ladlymohun Takore."

<sup>\*</sup> General Report of Public Instruction, etc. from 1st May, 1848 to 1st October, 1849, p. xi.

করেব। তাঃ বাউণ্টেল্ড জোনেক ত্রাবলির উপর ক্ষেত্র পঠনের তার অণিত হইল। তিনি এই গনের ১লা জুন হইতে বক্তা হিছে আরম্ভ করেব। ক্ষেত্রের কার্যের প্রকৃত প্রভাবে এই দিন হইতেই স্থলণাত হর। প্রথম বাবে অহি-বিজ্ঞান নবতে বক্তা প্রবন্ধ হইলে। চুটির পর ১লা আটোবর হইতে ৩১শে মার্চ পর্যান্ত প্রকৃত্রে বিজ্ঞান বিভা নহতে বক্তা বেওরা হয়। তারকানাথ ঠাকুর ক্ষেত্রের হিতক্তরে বিশেষ বস্থপর হইলেব। হাজ্ঞানের পাঠে উৎলাহ হানের অভ তিনি বার্থিক বোক টাকা পারিভোষিক দিবার প্রভাব করিরা অধ্যক্ষ আম্বালকে ১৮৩৬ সনের ২৪শে মার্চ এই প্রধানি লেবেন্দ্র—

"I am unwilling to offer you my congratulations upon the success which has attended your undertakings in the Medical College, without showing that my feelings towards the Institution are more substantial than those which words only can express.

"Should all your expectations be realised, and there is every reason to believe they with, the Medical College cannot fail to produce the happiest results amongst my countrymen. No man, I assure you, is more sensible than I am, of the benefits which such an Institution is calculated to dispense, but I know also that we have many very grave difficulties before you, and the greater part of these you will have to contend with at the outset. My own experience enables me to tell you that no inducement to Native exertion is so strong as that of pecuniary reward, and I am convinced you will find difficulties disappear in proportion to the encouragement offered to the students in this particular.

"As an individual member of the Native community, I feel it belongs to us to aid, as far as lies in our power, the promotion of your good cause. At present this can hardly be expected on any very great scale, but as example may be of service to you, I for one will not be backward to accept your invitation to my countrymen to support the College.

"I beg therefore as an inducement to the Native pupils now studying in the Institution, and to those who may hereafter, to offer the annual sum of 2,000 Rupees for the ensuing three years, to be distributed in the form of Prizes. In order that these may be of substantial value to the candidates, I propose that the prizes should not exceed 8 or 10 in number, and that they should be available to foundation students only and natives bona fide pupils of the College. All other arrangements in regard to their distribution I leave to your discretion."

প্রবাদির সারম্প এই বে, নানা অসুবিণার বংগ্য কাজ করিতে হইলেও অর বিনের ভিডরেই কলেজ করেই উর্ভির বিকে অঞ্চর হইতেত্ব। বারকানার অথ্যক রাম্নিকে ৬৫ মারুলি বছবার দিয়াই কাজ বাক্তিতে পারেন নাই। তিনি ভারার বংগ্যবাসীবের প্রকৃতি সক্তে বেরপ ভাষেন ভারতে ভাষার মতে আর্থিক নাহাব্য সাতের আশা থাকিলে হারেরা কলেকে চিকিংলাবিতা অব্যয়ন করিতে বেনী উংস্ক হইবে। এ কারণ তিনি প্রভাব করেব, বার্থিক হই হাজার চীকা হিলাবে পর পর তিন বংনর তিনি বোগ্য হারুগণকে পুরকার বিবেন। বাহাতে চাকার অব কর না হর লেকত তিনি এই চাকা রারা আটট কি বলট পুরকারের অধিক বিবার পঞ্চশাতী নন্। কলেকের ভারতীর হারমুক্তই এই পুরকার পাইবার অধিকারী হইবে। পুরকার সংক্রান্ত অভাত বিষয় হিব করিবার ভার তিনি বার্যনির উপর বেন।

বাৰলি প্ৰধানি ঘণাৱীতি শিক্ষা-ক্ষিষ্টকে ধ্যেরণ ক্ষিলেন। ক্ষিট্র সেক্ষেটারী কে. সি. সি. সাধারল্যাও পরবর্তী ১২ই এবিল এক পত্রে এই হানের ক্ষা হারকানাগকে অভিনক্ষিত্ত করেন এবং ইহা এহণে সম্বতি জানান। শিক্ষা-ক্ষিষ্ট পুরস্কার বিভরণের নিয়রপ সাম্বিক বাবহা ক্ষিপ্রেন্তন্ত---

नंद-वादरक्ष (टावै (Anatomical Classes)		বৰাষন শ্ৰেষ (Chemical Classes)	
२व "	<b></b>	<b>२व</b> ,,	<b>100</b>
<b>⊘</b> ₹ ,,	<b>360</b> "	ত <b>ৰ</b> ,,	256 "
8 <b>€</b> "	2 <b>5</b> 0 "	8₹ "	<b>4</b> 0 ,,
e#   ,,	>50 "		
v <b>š</b> "	¢0 ,,		৬৫০ টাকা

1काई 096¢ ৰোট ২০০০ টাকাঞ এই পুরস্কারগুলি ১৮৩৭ সনের ২৯শে জুল ভারিখে যেতিক্যাল কলেকের উৎকট হাত্রকের প্রথম কেনো হইল। ইহাবের নাম এবানে উল্লেখ করা অপ্রাসাদিক হটবে লা। শ্ব-ব্যবচ্ছেদ শ্ৰেণ্ডতে 'বাৰকাশাধ-পুৰস্কার' পান রাজুকুক দে २१० डीको, पेरबड्स भरमाभाराहि २१०, श्रामाडहर एक ১२०, वायमावायम पात्र ১२०, शकायम जिमानी ১२०, वायमध्य माज eo, मरीमहत्र मिस eo, पायकामान चर्ड eo, प्रामक्तात प्रक eo, कानियांत्र कृर्याभावाद्य eo, शहमानम (नर्ड eo) ह्याद्यव শ্ৰেণতে পুৰন্ধায় পাইলেন ইবয়চন্ত্ৰ প্ৰোপাধ্যায় ১৫০ টাকা, मरीमहस्य निव्य ১৫०, बानमाबात्रम राग ১००, बानस्थात एक ১০০, উৰাচয়ৰ শেঠ ১০০, গোবিক্চল পাল ১০০ টাকা বুলোৱ '(क्विक्रान (ठडे', रवडळ गांग ४०, नाउक्कि वेच ४० ।† পুরস্কারের পরিবাণ বোট ২১২০ টাকা দেবিভেন্নি, পুরে এই চাকা বাড়িয়া থাড়িবে। পারিভোবিকের সংখ্যা এবং অভেও অনেক ভারতমা দেবা বাইডেছে। ছারকানার এছণ বন্ধনের পক্ষপাতী না হইলেও শিক্ষা-ক্ষিটি বোৰ হয় এইল্লপই পরে সাবাধ কৰেন।

<sup>•</sup> Report of the General Committee of l'ublic Instruction of the Presidency of Fort William in Bengal, for the year 1836, pp. 34, 49-51.

<sup>†</sup> Report of the General Committee of Public Instruction, etc., for 1835, pp. 12, 18.

<sup>•</sup> Ibid, p. 14.

<sup>†</sup> Ibid., for 1837, pp. 58-9.



Ly Low Mich Co Blicant Bose . Flowish Rich Die Com.

ভোলাৰাৰ বস্থ

ভিন্ন বংসর পরেও বারকানাও পারিভোবিক দানে বিরত হন নাই। ১৮৪৫-৪৬ সন পর্যন্ত প্রার প্রতি বংসরই 'বারকানাও ঠাকুর প্রাইজ কও' হইতে উংকৃষ্ট হাজ্রেরের প্রভার বেওরা হুইভেছিল। ইহা হুইভে বুঝা বার বারকানাও পরে একট কও করিরা বিরাহিলেন। নিজা-করিটর বিভিন্ন রিপোটে এরপ প্রভার দানের উরেও আছে। বিলাভ গর্মজের প্রথম হাজচ্ছুইরের অভতম ভোলানাও বস্তুও ১৮৪৪ সনে এই কও হুইভে পঞ্চাল টাজা পারিভোবিক প্রার্থ হন। ও বারকানাথের ভারক্তমন্তী কাওরাসন্তী, রামক্ষন সেন, রাম্যোপাল বোর প্রার্থ সে-মুদের নেতৃর্কও বোলা হাজ্যের নানারণ পারিভোবিক প্রধান করিভেন। কিন্ত ১৮৪৬-৪৭ সন হুইভে ক্মিটি এইলপ প্রভারহান-প্রধা রহিভ করিরা বিরা অভবিধ প্রভারের ব্যবহা করিতে সরকারকে অভ্যাের করেন। ঐ সন্মের নিজা-বিষয়ক রিপোটে "The Medical College of Bengal" অব্যাহে (পু. ৬৮) এই প্রস্কে লিবিভ হুইরাছে,—

"Prizes. During the past year the Council brought to the notice of the Government the subject of prizes to the Medical College, which were previously chiefly obtained from private sources, and liable to an amount of fluctuation tending to defeat the object for which such rewards are bestowed, great encouragement being occasionally held out of proficiency in one department, while others equally important were entirely neglected."

নৱকার শিকা-ক্রিটর স্থণারিশ এবং করিবা ব্যক্তিবিশেষ কর্ত্তুক পুরকারবাদ-এবা রহিত করিরা বিলেব। সভঃশর উৎস্ট হাজদের হর্ণ ও রৌণ্যগদক, আরোপচারের বরপাতি এবং চিকিৎনা-বিবরক পুতকাদি পুরস্কার বেওরাই সরকার কর্তৃক হির হইল। <sup>©</sup>কোন-রণ তেলাতেদ না করিরা, হিন্দু ব্ললমান ইটান নির্কিলোকে উৎস্ট হাজ নাকেই পুরস্কার পাইবার অবিকারী হইল। ইহা হাজা পাঠোৎকর্বের অভ কাহাকেও কাহাকেও ব্যবহা হয়।

ষারকানাথ ১৮৪৪ সনে শিক্ষাক্ষিট্র নিকট এক নৃত্য প্রভাব
করিলেন। তিনি ১৮৪২ সনে প্রথম বার
ইউরোপ যান। সেবানকার উন্নত শিক্ষাপ্রণালীও তিনি সক্ষ্য করেন। তবন
পালাভ্যে চিকিংলাবিদ্যার বুবই উন্নতি
লাবিত হুইতেহিল। তিনি ক্ষিট্র নিকট
প্রভাব করিলেন বে, বেভিক্যাল কলেক্ষের

হুই জন ভারতীর ছাত্রের সভনে চিকিংলাবিদ্যা অব্যয়নের বাবতীর ব্যরভার বহন করিতে তিনি প্রস্তুত আছেন। লিকাক্ষিট্রর তংকালীন সেক্টোরি ভাঃ এক, এ, মৌএট কলেজের ছাত্রগণের নিকট হারকানাথের এই অভিপ্রার ব্যক্ত করিলেন। এই প্রভাবে ভোলানাথ বহু, হুর্তুত্মার চক্রবর্তী এবং হারকানাথ বহু নামক তিন জন ছাত্র উপস্থিতরতে বিলাভ গরনের অভিপ্রার জাপন করেন। ইহার পর মেভিক্যাল কলেজের অব্যাপক ভাঃ এইচ, এইচ, গুভিভ হরং একট ছাত্রের ব্যর বহন করিবার ইছা প্রকাশ করেন। আর একট ছাত্রের ব্যর বাবকেও গুভিভের চেটা-বড়ে সাড়ে সাভ হাজার টাকা সংগৃহীত হুইল। এই টাকার মধ্যে মুর্শিদাবাদের ন্বাধ-নাজিন চারি হাজার টাকা দিরাছিলেন।

লভনে চারি কন ছাত্রের অব্যর্থনের কচ অর্থ জোগান্চ হইল।
ভাঃ গুভিত করেকট সর্ভে তাঁহাবের ভদ্বাববানার্থ সলে বাইবার
প্রভাব করিলেন। তিনি করিটকে লেখেন বে, লঙনে
অবস্থান-সমরকে তাঁহার কর্মকালের অংশ বলিরা গণ্য করিতে
হইবে, এই সময়ে তাঁহাকে অর্ড বেভন বিভে হইবে এবং পরে
কলিকাভার প্রভাৱন্ত হইলে পূর্মপানে বহাল করিতে হইবে।
হারকানার ও ওভিভের প্রভাব সম্পর্কে শিক্ষা-করিট সরকারকে
বে পত্র লেখেন ভাহাতে এসব করা উল্লিখিত হইরাহে।
প্রয়োজনবাবে পত্রবানির ক্রিয়ংশ এবাবে উদ্ধুত হইল—

"The offer (of Dwarkanath Tagore) is an extremely liberal and munificent one, as it has been calculated that each pupil will cost at least Co's Rs. 7,000, including the passage to and from England.

As it will be necessary to send them home in charge of some competent person, who will likewise have to take care of them in England, and superintend their studies, the Council of Education beg most strongly to recommend that Dr. Goodeve may be ordered upon this duty, upon the terms mentioned in his letter, viz., the retention of half his staff allowance—his time of service to count while in Europe—and to be entitled to his appointment in the Medical College upon his return.

From Dr. Goodeve's long connection with the Medical College—his popularity among the students—his having been the first person in British India to introduce the important practice of human dissection, and also the first to found a Female Hospital—his munificent offer of taking one pupil at his own expense and his endowment of a midwifery scholarship, the Council are induced to hope, that his application will meet with favourable consideration from Government. His also having lost his health from a dissection would in the service, of Government, will be an additional recommendation.

The best thanks of the Council have been returned to Dwarkanath Tagore for his munificence, in addition to the large sums bestowed by him for the purposes of education, and the benefit of his fellow countrymen."

এই পত্ত হঠতে জানা ঘাইতেতে, ধারকানাৰ এই জন ছাত্রের প্রত্যেকের মাধা পিছু লক্তন যাভারতে ও অবায়নের বায় বাবদ শপ্তত: গাভ হালার টাকা করিয়া বায় করিয়াছিলেন। ভা: গুডিভের প্রভাবও শিক্ষা-ক্ষিটির স্পারিশে সরকার প্রকৃত্তরন।

ভোলানাথ বস্, গোপালচক শীল, ধারকামাথ বস্তু,
হুৰ্যান্থাৰে চক্তবৰ্তী —বেভিকালে কলেজের এই চারি জন ছাত্র
লগুনে অব্যয়নার্থ মনোনীত ছুইলেন। ভাঁছার' ভাঃ গুভিভের
ভারাবদ্বানে ১৮৪৫ সনের ৮ই মার্চ্চ 'বেভির' আহাতে কলিকাভা
ছুইতে বিলাভ যাত্র' করেন। সনামবছ রামগোপাল ঘোষ
ভাঁছালিগতে উৎসাহ দিবার জন্ধ আহাতে কিছু দূর পর্যান্ত সিরাছিলেন। এই কাহাতে ধারকানার ঠাত্রাও ধিভীর বার
বিলাভ গমন করিলেন। ভিনি আর হুদেশে কেরেন মাই;
১৮৪৬ সনের ১লা আগাই বিলাভেই ইছ্লীলা সম্বরণ করেন।

**উक्त हादि क्न क्: (ब्रद किक्नि९ श**विहत ১৮৪৪-৪৫ সনের

নিকা-বিষয়ক রিপোর্টে (পূ. ১১৯ ) এইরূপ পাওরা যাইজে.ছ.—

"The four pupils who accompanied the Professor and started in the steamer Bentinek on the 8th March, were Bholanath Bose, a pupil of Lord Aukland's School at Barracpore, who was supported at the Medical College by His Lordship for five years, and was considered by the late Mr. Griffith, the most promising botanical pupil in the school—Gopal Chunder Seal—Dwarkanath Bose, a Native Christian, educated in the General Assembly's Institution, and employed for some time as assistant in the Museum—together with Surjec Coomer Chuckerbutty, a Brahmin, native of Commillah, a junior pupil and a lad of much spirit and promise."

ভোলানাৰ লভ অকলাভের বারাকপুর স্থার ছাত্র এবং অকলাভেরই অর্থনাছারো পাঁচ বংগর কাল মেডিকাল কলেকে অবারন করেন। গোপালচক্র শীলের কোন পরিচয় দেওখা হর নাই। ঘারকানার বসু দেশীয় এইান। তিনি কেনাখেল একেন্ত্র ইন্টিইউলনের ছাত্র, এবং কিছুকাল বাহুবতে চাক্তি করিয়াভিলেন। ত্র্যাকুখার চক্রবর্ত্তী ইহাদের সকলেরই বরংকনিই, কাভিতে রাজ্মণ এবং কৃমিরানিবাসী। তিনি কলেকের এক কন উদীখনান ছাত্র। ত্র্যাকুমার পরে প্রীটাম হইয়া ত্র্যাকুমার থাকে চহুবর্ত্তী নামে পরিচিত হন।

বিদেশের বাহা কিছু উৎক্রই সকলই এহন করিয়া অন্ধেপ ও বদেশবাসীকে উন্নত করা হারকানাথ ঠাকুরের ঐকান্তিক বাসনা বিজ্ঞান বহন করিতে বীকৃত হওরায় তিনি এই বাসনা নিজ্ঞাবনেই ক্ষার্থ্যে ক চকটা পরিপত করিতে সমর্থ হইরাহিলেন। বারকানাথের মৃত্যুর পর এক শতাক্ষী জতীত হইরা পেন। আৰু ভারতবর্ষ আয়ুকর্তৃত্ব সাজের পথে। বর্তমানে এক জ্ঞাবিনিই বাচাদী ইউরোপ ও বানেরিকার বিশ্ববিভালয়সমূহে চিকিংসা-বিজ্ঞান ও জ্ঞার ব্যবহারিক বিভা আহন্ত করিবার ক্ষান্ত ভারতীর হাতদের জ্ঞাকুত্ব ভারতহর্বের পাত্রের ভারতের জ্ঞাকুত্ব ভারতবর্ষর পাত্রা বাইতে পারে ভারতীর হাতদের জ্ঞাকুত্ব ভারতবর্ষর পাত্রা বাইতে পারে ভারতীর হাতদের জ্ঞাকুত্ব ভারতবর্ষর পাত্রা বাইতে পারে ভারতীর হাতদের জ্ঞাকুত্ব ভারতবর্ষর পাত্রা ক্ষান্ত করিবার ভারতবের সাক্ষান্ত বার্কার বিশ্ববিদ্যালয় বাইতে পারে ভারতীর হাতদের জ্ঞাকুত্ব ভারতবর্ষর পাত্রা ক্ষান্ত বার্কার বার্কার বার্কার ক্ষান্ত বার্কার বার্কার

## জাটিকা

শ্রীনীহারকান্তি ঘোষদস্ভিদার

খনেক প্রাবৰ এলে 'ফাটলা' নদীর খলে স্থান করে গেছে—
উর্নিপ্রির খলে ভার চেবে গেছে বননীল বৌবনের বাদ।
ভারি ভীরে এলে ভূমি ভাই খাজো মধুমর স্থৃতি বেছে বেছে
নিয়ে যাও ভূলে নিয়ে পৃথিবীর নিশীভিত কঠিন খাখাত।
ভোমারো বিলাসী মনে ভত বার কভ মেখ দিয়ে গেছে দেবা
বে মেবের বুকে বুকে বিশ্বভিত কত শত প্রাবশের প্রাব:
সে সকল প্রাবশের খাছে শুর্ ভাবোর ইভিহাস লেখা।
ভারা এলে 'ফাটলা'র নিরিবিলি করে যার বৌবনের গাম।

পাধর-ধোয়ানো কত বেদনীর অসুরস্থ রূপ গ'লে গ'লে

যিশে গেছে কলে তার বেন কোনো তল্লাখীন টাদের খতন:

সব্ক-গোনালী টাদ---যার তরে উন্নন হও কত হলে,

'জাটক:' তারেও চূপে লক্ষ্যখীন ব্যম তার দেবে বে ঘণন।

তাই ভূনি বুঁকে পাও ভোষার বুনীর টাদ এই তীরে তার--বে নদীতে সান করে তোষারো প্রাবণ আবো কত পত বার।

# नवौनहत्स्त्र '७७-निर्मामा'

## **এ**সনংকুমার গুপ্ত

[ 'सरीमहळ (मरमद अहारमी' ( 'क्षरामी' देवभार ১७६७ ) वैर्क धन्त श्रीवाक्ष्मनाम नत्न्याभागाम कविनत्त्रत अक्ष मूखन माहेकांत्र प्रधान (तम । वेदांत मात-'खब-मिर्चामा'; नुक्रीनरका ३७। देशान्यात नुमद् क्रिक एत मारे। धरे नुक्रिका-ৰাৰি সম্ভতি দেবিবার প্ৰবোগ হইবাছে। তবিব্ৰতে নবীন-চল্লের এরাবলীতে সনিবিষ্ট ছইতে পারে এই ভরসার 'প্রবাসী'র वर्षवाय मरवारित देश पूर्व्य खिल वरेन । चारनाम मानेका-वाबि नवीनहत्व शुर्वाद विवाद-छेननरक बहमा कविदाबिरमन। क्रिवि चाच्चक्या---'चावाव चीवरम'व ४व चार्त्त (पू. ७३०-३४ ) निविद्यास्य- "১৯০० बैडोस्यत ७३ स्क्लबाति २२८न माप এ এসরবভী পুকার দিবলৈ বিবাহ ছির হইল। আমার ম্বেদালৰ ভাই ভাৱাচয়ৰ ধরিয়া বসিল---কিছু একট। মৃতন ছেৰাইডে ছইবে। আৰি ভগলুসাৱে ভিনট মাত্ৰ দুভৰিশিঙ अकडे कृत 'अनदारे।' ( Operatta ) निविनाम ।" (वश्न লাইবেরি-সঙ্গিত বুক্তিত পুতকভালিকা মতে ইহার প্রকাশ-कान---२१ काल्यावि ১৯००।]

শুভ-নির্মাল্য।

ভারতের হবিখাত কবি শ্রীনবীনচক্র দেন প্রশীত প্রশীত

#### क्षा अ

( वद ७ भूदान्ति ७ व थरवन )

পুরোহিত। বংগ । আমি কুশধ্যকের সভান। ভোষার মর পুরুষের আমরা পুরোহিত। ভোষার আজ ৩০ বিবাহ। ভূমি মর বৌবনে উতীর্থ হইরা আজ সহবর্ষিনী লাভ করিয়া বর্ষ্ম-সাবমের উপযোগী হইবে। ভোষাকে এ ৩০ দিনে আম্মান করিভেছি ভোষাদের উরাহ জীবন স্থার্থ সুবাসিত স্থা-কুম্ম-হারে পরিণভ হউল, এবং উহা বর্ষের বিমল আলোকে প্রোধাসিত হইরা ভোমার প্রাচীন বংশ সমুজ্ল করক।

वद । अक्टरर । वर्ष कि १

পু। বংল । দীৰ ৰাত্ৰই এ সংসাৱে পুৰাঘেৰৰ করে। এক কৰার, বৰ্ম সেই পুৰাঘেৰৰ। তৃত্তি ভাল দেহ, মৰ ও আত্মা লইৱাই ৰাজ্য। এই ভিষেত্ৰই কৃতক্তলিৰ প্ৰবৃত্তি আহে। এ সকল প্ৰবৃত্তিৰ চলিতাৰ্থই পুৰা। তাহাদেৰ চলয চরিতার্থতা ঐতগবানে। বালক সুকর অকর সমূবে রাবিরা যেনন অকর লেব। অভ্যাস করে ঐতগবানকে সমূবে রাবিরা নাছ্য এই চরিতার্থতার অর্থীনন করিবে। বে বভচ্ছ অঞ্জনর হুইবে সে তত স্থী। সে তত বার্গ্রিক। এই অন্থীননের, এই স্থাবেষণের, নাম বর্গ। বাহাতে এই অন্থীননের শিকা বেষ.ভাহার নাম বর্গালা। বে কার্যের দারা এই অন্থীনন সাবিত হয় ভাহার নাম কর্ম।

ৰয়: শুলুদেব ৷ উন্নাহের বারা কিন্তুপে এ বর্ত্ত সাবিত হইবে ?

न्। वरम । भर्मकात चन्नीमायत मृत्म क्ष्य-क्षत्रि । জানের প্রতি ভোষার প্রেম না বাকিলে ভূমি জানের অভূমিলন ক্রিবে কেন ? ভদ্রণ দীন ছ:বীকে প্রের না করিলে ভাষাকে দ্বা করিবে কেন গু মাপুষের কর হইতেই লগতে এই প্রেম্বারা বহিতে আরম্ভ করে। মানুষ প্রবনে মাভাকে, ভাষার পর **निर्जारक, जाहात पत्र (बनात अमी-अमिनीरक, (धन करत)** किंछ विवार ना स्टेरण भन्नीत्वय, अवर मधान ना स्टेरण वारमण्डासम्, जासाव श्रमदा छैरविक स्व ना ; जासाव (अम প্ৰবৃত্তির পূর্ণ চরিতার্থতা হইতে পারে না। পিতৃ-মাতৃ-প্রেম ও সৰ্য প্ৰেম ছইতে পত্নী ও বাংসল্য প্ৰেম গাঢ়ভৱ। এরণে ৰাহুষে শিভা, মাভা, দৰা, পত্নী ও সভানকে প্ৰেম করিতে শিবে। তাহার পর সর্বাদীবভূত এতগবাদকে পিতা, মাতা, পৰা, পদ্মী ও সন্তান অপেকার অধিক প্রের করিতে শিৰে। बरे मध्य कारवरे ध्यासम प्रमिकारका। अकबर वृत्तिक कि এই বৰ্ষ-সাংবাৰ পৰে পদ্মী প্ৰবান সহায়, এ ছতে তিনি সহ-वर्षि ? अवारम कावजीय चार्वा विवारस्त भरम चक विवारस्त भार्यका । **च**ा विवास भन्नी प्रद-मश्माविषे मात्र, चार्यः विवास পদ্মী সহবর্দ্ধি। এই বিবাহে প্রতিক্রা করিতে হয়।

ওঁ মৰ ব্ৰতে তে অধ্যং দ্বামি।

মন চিৰ্ডমণ্ড চিড্ডেড খ্ড।

মন বাচনেক মনা ক্ষণ
প্ৰণাশতি তা নিৰুমক্ত্যু মহন।
ওঁ প্ৰাণৈতে প্ৰাণানু সন্ধ্ৰাভাছি ভিন্নখীনিঃ
মাংগৈ মাংসানি ছচা ছচন্।

এই বিবাহে পতি পদ্ধী বৰ্ষ সাবনের ক্ষতে এক বজে, এক বাংলে, এক আন্নার পরিণত হয়। কীবনের সক্ষে এ সন্থিপন বিচ্ছিত্র হয় বা। বংস। চুবি এই ৩০ বিবাহ দিনে প্রকাশতি প্রতিগ্রামকে প্রধান কর। সহস্র সহস্র বার প্রধান কর এবং তাহার চরণে ভোষাবের মুগল ক্ষর অর্থ কর। বর। (ভাছ পাভিয়া)

"নবো নযভেতৃ সহস্র কৃষা প্ৰক্ত ভূরোহণি নবো নমভে। নমঃ প্রভাদণ পৃষ্ঠতভে নবোভেতৃ সর্বাচ এব সর্বা।"

ীভ

(3)

ভূমি প্ৰজাপতি বিধেশন, ভূমি নাথ ৷ বিৰ জীবন । ভোষাতে এখিত, বিশ্ব অগণিত, হলে মণি অগণন ।

( )

সেই প্ৰেম-ছতে ছট ক্ল কুল গাঁথি প্ৰেমে, নাবাৰণ। ছইট শিশুর বৃগল অগর চরণে কর এছণ

(७)

দিও খেহে শক্তি, দিও ছদে ভক্তি, জানে আলোকিত মন। তব প্ৰেন রখে, নিও তব পথে সন্দিলিত এ জীবন।

পু। বংস। এবন ঐতগবাদের অবভার ভগবাদ ঐকক, ঐবৃদ্ধ ঐঐই, ঐমহম্মদ এবং ঐকুকচৈভভকে ভূমি নমকার কয়। ইহারা মূপে মূপে এ পৃথিবীতে অবভীর্ণ হইয়া ধর্ম সংখাপন করিয়া গিয়াছেম।

वत्र। (सम्बद्धात्र)

পু। বংস ! পিড্লোকছ তোষার প্ণ্যবাধ প্র্-পুরুষ ও রমনীগণকে নমস্কার কর। তাঁহাদের পুণ্যে ৩০০ ব:সর বাবত ধনে, গৌরবে, বিভার, সাহিত্যে, নিজে, সদীতে ভোষার এই বংশ চটনারে সর্বাত্তেই। এবন বে ইহার এরপ অবঃপত্ম হইতেছে ভাহা হইতে রক্ষা করিবার করে তাঁহাদের কাছে এই ভ্রুছ হিনে প্রার্থনা কর এবং নমস্কার কর।

वत्र। (मनकात्र)

পু। বংস ! বিনি পরোপকার এতে সর্জ্বরাত করিবা জিনিবে চলিরা নিরাছেন, বাঁছার হরা-হান্দিনের গাবা এবনো চইঞালের সীবা হইতে সীবাছরে উপক্ষার মত প্রচলিত, বিনি বজের ভূল্য তেজবী ও বৃঢ় এবং ভূপ্যের ভূল্য প্রকোষণ অবর ভিলেন, বাঁহার প্রের ও করণা ভাল্যীর মত অবত বারার বহিত, দেই—

> "সমাজের শিরোধনি সক্ষাপু ভাতার, বিপলে প্রসম্ভ মুখ বোহন আকার সমল ভাবর প্রম্যুখে বির্বাণ প্রভিত্তনে নের্ময় সহা ভাসমান।"

বছকের উপর চাহিরা দেব, ভোষার সেই প্রায়োক পিতাবহ ও ভোষার ব্রপিভাষহ —রপে প্রকৃত গোপীযোহন ও বদনবোহন—ও ভোষার শিশুবং সরলা পিতাবহী—না আমার প্রকৃত রাজরাজেশ্বী—কি প্রসর সম্প্রেহ হুবে অভয়ীকে বসে ভোষার এই ভভ বিবাহ দেব হুবন। ভূষি ভাষাকেরে প্রবাম কর।

> মন্ত্ৰি বৰি কিবা ৰূপ ৷ কি জ্যোভি বিষদ षाकान कविश भूर्व मण हळारलारक । কি সৌৰভ বহিতেহে, অব্যবিভ দার ষেন নক্ষনের | কিবা কোমল মধুর বহিছে সদীভ শ্ৰোভ, খুধ শ্ৰোভ ধেন পুণ্যের নির্বাহে বংখ পবিত্র শীভল। অনাৰ শিশুৰ মুখ্ত এ প্ৰেট্ট বৰলে কাঁদেশ ক্ষম মুখ বাহাদের ভৱে श्वक्राप्तर । देशांबा कि कर तारे वय পিতামৰ পিতামৰী খুলপিভামৰ 🤊 যিনি নিভা গুছে গোপীযোহন বন্ধণে, भिव ब्राट्य विमि मिछ। वरवैश भ्रमारम, —হুপৰিত কুল ভীৰ্থে- সভক্তি পুজিভ, ইনি কি আযার কহ সেই পিভাবহ ? আমার জীবন আজি হইল সার্বক। দেব দেবি ৷ ভোষাদের অধোগ্য শিশুর প্ৰাণ পূৰ্ব, ভঞ্চি পূৰ্ব, অবোগ্য প্ৰবাহ লও পাদ-পরে প্রেমে, লও দল্লা করি 🖠 বেই পিতৃ যাতৃ প্ৰেমে চির আত্মহারা শিভা মম ; দেব দেবি ৷ কর সঞ্চারিভ সেই পিড় ৰাড় প্ৰেম হাদৰে আমার। আমি শিশু শিভা মাভা দেবভা আমার, ৰা জানি দেবতা জভ ; পিড় মাড় গেবা यव दर्ज, मारि कानि चक्र दर्ज कानि। (नवकात)

পু। বংল। এবার পুরোহিত ও এাজ্বগর্গকে, ভোষার বিভাষাতাকে, ভোষার বিভাষ, শিত্বানীকে, ভোষার বংশীর-প্রকে, ভোষার বিশ্ব বংশের প্রভাগর্গকে এবং ভোষার বংশের প্রভাগর্গকে এবং ভোষার বংশেবাসিগর্গকে প্রধাম কর। (শ্রোভ্বর্গের প্রতি) আগনার। সকলে আলীর্কান্ত করন, এই বিবাহ বেন এই বংশের ও এই বেশের একট মদল গর্ভ ঐতিহাসিক ঘটনা বলিরা পরিগ্রিত হর, এবং দশতি মুগল সুবী ও বীর্ণান্ত্র, হইরা স্ববংশের ও বংশেশের মুবোজ্বল করে।

বর। (শনভার)

(কোন পভিত এইবানে সভার হাড়াইরা একট আশ্রির্মাদ প্লোক পাঠ করিবেন)

পু। নিৰ্মাণ । এবার ভোষার অকর সৌক্র্যা ও পুণ্যবায় বাড্ছবিকে নৰভার কর। বাতা কর দিয়া থাকেব, বাড্ছবি অহ, কণ, স্থ, সহতি এবান করেব। বাড্ছবি দক্ষ বদলা, স্কার্থ সাবিকা। वद्य। ( नवकात )

(3)

ষা | ষা | ষা | ভ্ৰিত অন্তৰে
ভাকিতেছি মাগো | পরাণ ভ'রে।
শৈল-কিরীটনী সাগর কুখলা
সরিং-মালিমী ভাকি মাগো | ভোৱে।
(২)

জীবন প্রথমে ছবি রক্তে, জানা !
পূজিব চরণ অধ্যয় বাসনা ।
শিশু অধ্যের কাতর কামনা
পূরাও পার্বতি ! পরম জাদরে ।

( .)

ভাগরের রক্ত, ময়মের ক্ল, প্রেম বিগলিত পবিত্র শীতল, বর্ষবি চরণে মাগো। অবিরগ মুড়াইব প্রাণ চির্দিশ তরে।

পু। বংস । বিনি প্রকাপতি আভগবানের শক্তি-প্রতিমা, বিনি নাড্রাণে, দপতুকে বিপদ-বিদ্নাদিনী দপতুকা কপে, নর পুরুষ বাবত ভোষাদের গৃছে বিহাক কচ্চেন, এবার পেই ক্পত-ক্ষনী কুল-যাতাকে দর্শন ও নমন্তার কর। (পটোডোলম এবং দশভুকার সমুক্ষে এক মিনিট আরতি ও হল্পন্নি)

বর। ( নমজার ) মা । মা ।—

"মিরবি তোমারি পানে, তোমারি সন্তান হকনে
প্রবেশে সংসারে আজি দেব মা । কুপানরমে ।

যথা নীরবিন্দু ধর

পল্ল পত্র এক হর,
তেমতি হে লরামার । মিলাইও ছই জনে ।

সংসার মোহ মায়ায়

যদি পথ ভূলে মায়,
কুপা করি কুপামরি । কিরাইও লেইক্বে

রেব মাগো । মনে রেব,

মাতা হরে কাছে বেক,

সরমে সরমে রেব বিও হান জীচরবে ।

### ৰি এীয় অভ।

( পূলাবালা করে ছিচ্ছা ভগবতীর ও গৃহলন্দীর প্রবেশ )
লন্ধী। যা ভগত-ভননী । যা সর্ব্যক্ষণে ।
ভগবতী। ভূষি বাছা ৷ কেন আমাকে ভেকেছ। আমি
বাবে বাকি ভড়ের আহ্বাবে আমার ছদর পূল্কিত, শরীর

বেধানে থাকি তক্তের আহ্বানে আমার হুদর পুলকিত, শরীর বোরাঞ্চিত, প্রাণ আহুলিত হর। আমি আনন্দে অধীরা হই। তোরার আহ্বানে এবং তোরার পুত্র নির্মানের অবে আক্ষিত হয়ে কৈলাল বেকে এনেছি।

লখী। ষ'়ভূমি বেষম আমশ্ৰমনী, তেমনই স্বাম্মী। ৰা ৷ আৰু ভোষাৰ হুই ভক্ত পরিবারের পুত্র-কভার ভঙ ৰিবাহ। ভূষি ভাহাদের শিশুশিরে ভোষার পৰিত্র নির্মাল্য দিয়া ৩৩ পরিণয়-মালা ভাষাদের কঠে প্রদান কর। মা । चामि এই भोन পরিবারের পর্ণবৃদ্ধে भोना वृश्वची। चामि ट्यामात कशास्त्र मृद्या भन्तृस्वामिमी स्टेलिश स्थामात सम्दर नाचि, त्रशास कोवि चाट्य। चायात प्रत्य पूर्वाचक्यिक भवण । वेशारभव सभरव ८ धव बारब, ८५व नावे । मास्ति बारब লোভ নাই। প্রহিটেডয়িতা আছে, প্রঞ্জীকাতরতা নাই, ব্য়ের প্রপিতামত্ একক্ম বিব্যাত প্রতিভাগপার বভাবভাত শিলী ছিলেন। ভাষার শিভাষকের ভেক্ষতিতা, ধানশীলতা ও পর্বিতি যিতা এদেশে প্রবাদের মত প্রচলিত। কঞাও এদেশের একটি প্রাচীন বিখ্যাত পরিত্র বংশের ছহিতা,-- পরিত্রা পারি-জাত হালা। তাহার পিতাও স্থলিক্ষিত সদালয় সভদঃ বাঞি। मा। इरेडि अवान महर कुन, इरेडि महर दक्त, बर्वे एक निर्देशक সন্মিলিত হচ্ছে। এই সন্মিলিত পুল্প-চন্দন তেখ্যার চরণে অৰ্পণ করলায়।

গভ

( > )

দেও ম! ৷ আনক্ষরি ৷ দেও মা চরণাশ্রম
ধূপল সন্তানে ভোমার এ ওড বিবাহ দিনে !
ত্মি মা ৷ সক্ষেল্লা, ওভ পরিণর মালা,
বাঁৰিয়া মুল্ল করে দেও গলে ভড্ডাৰে ৷

(31

সংসার বিদ্ব সাগরে, রাবিত্ত অভয় করে, বরষি বরণ করে তুব-লাভি থ্রেছ মনে। ধেন কর্ণকূলী মত বহে তুব-ল্রোভ শভ দীনা ক্ষত্তি বক্ষে এই শুভ সন্মিগনে।

(0)

গলা বয়নার মত হয় যেন পরিণত এ মিলন মহাতীর্বে এই ভিকাও চরণে। রোগ, লোক, ছঃবভার হরি পার্বতী মাচার, বহে যেন মা। তোমার প্রেম সাগর-সল্মে।

ভগবভী। বাছা । আমি জানি ছইট পরিবার আমার পুরুষাপ্রক্রমিক ভক্ত, ছই গৃহই আমার ভক্তি-ভীর্ব। আমি এই গৃহে দশভুজারূপে নিভা বিরাজিতা। এই ভক্ত বিবাহ আমারই অভিপ্রায়ে প্রকাশতি সংঘটত করেছেন। আমি নিজ করে এই মলসালা পেঁবে এনেছি। লও বাছা । উহা প্রহণ কয় (মালা অর্পণ )। এই মালার হল প্রেম, ইহার অনত ভূল অনত হব, ইহার স্বন্ধিতন পৌরভ কীর্তি। এই মালা পুত্র-কলার গলার পরাইরা দিবা ভাহাদের নিয়ে এই পারিজাত ভূত্য-রাশি (পুল্লপাত্র অর্পণ ) বর্ষণ করিও। আশীর্কাণ করি ছই মহং রক্তের স্থিলন চটল ইতিহালে মহাতীর্ব বলিরা পৃত্রিত হউক।

ীভ

( 2 )

লও মা ! মললভালা, লও মা ! মললমালা, বাৰিয়াহি পা<sup>ৰ</sup>িয়লতে লিভ মকাকিনী কলে। (২)

প্রেথ-ছত্ত এ মালার, ত্ব-শান্তি পূল্য তার, গেঁবেছি অনন্ত হুত্তে, গেঁবেছি অনন্ত ফুলে। কীন্তি তার হুসোরভ, পূণ্য তার ত্বনা সব চাঁক্তিত চক্ষনে —মন্ত্র ক্রপা--হে সরলে।

এই মালা গরাইরা, পারিকাত বর্ষিরা, বাঁবি চির প্রেম-ছারে বসাইও মম কোলে। অভয় বরদ ভর রাখি লিরে নিরম্বর রাখিব মায়ের মত চোখে চোখে পলে। (ভর্ষতীয় বিকট মুর্ত্তি অস্চরের প্রধ্যে )

( 0 )

অস্ত। ইারে বেট । তুই এত্না দেয়ি কর্তে আছিস, আর তোর বাণ ইয়া বটুকে বটুকে কাদতে আছে।

ভগৰতী: দূর পোছারমূৰো ৷ আমার বাপ কি রে, ভোর বাপ বল গ

. অসু। আছো আছো হামার বাণ ত আছেই। ছে ছলকের বাণ, তবে ভোর বাণ হইল মাণু তুই ছলকের মাণু ভূট তবে ভার মা হইলি নাণু হামার বুদ্দি আছে, বুদ্ধি আছে, কেমন মাই ঠিক পুহা। হাণু হাণু (হাড়)

ভগৰতী। বৃদ্ধি তোর যাধা খার তোর মৃত। যেমন রূপ-বামি তেমন বৃদ্ধিবানি। গোড়ারমূখে: আমাকে এবানে হালাতে এলো (লগ্নীর প্রতি) মা । এটা বালালা দেশের বিন্দুধানী দরওয়ানের ভূত।

আহ। আমি পোভারত্বো নহি, কেমন ছুকর-মুবো।
হা ৷ হা ৷ হা ৷ ( হাড ) হামি আহিবার হমে ভোলা কহিল
কি হামি হিনি ছুট্ভে বহলাম, তুই ভগবতীকে শীগ্রির নিরে
আহবি ৷ তুই ভ মাই এত না দেভি কর্লি, ভোলা হিনি
বোটার ভাভা দিরা আমার হির তুলিরা দিবে ৷ হামার বুদ্ধি
আহে, হা ৷ হা ৷ ( হাড )

ভগৰতী। নাৰে, আমি পুত্ৰ-কলার বিবাহ উৎসৰ ছাভিয়া<sub>।</sub> ঘাইতে পাহৰ না। ভূই বা।

শহ। টিক কৰা। ছই এবানে পূজা বা, আর হাবি হেবানে ভাঙা বাই। সাবি ৰাজীতে আহিরা হামি কৃচ বাইতেজি পাইলাম না, ক্বার হামার পেটটা অলিরা অলিরা ঘাইতে আছে। ভার হিংহ বেটা ক্বার ( ব্ব জলি করিরা ) হ্বহাম কর্তে আছে। হেত হামার বুঙটা বাইরা কেলিতে চাহে। হামারে বুঙ ছাজা বেবলে তোর অপ্রাপ্ত সাবি ক্রেগা কি ? হামার বুদ্বি আছে, বুদ্বি আছে। হা । হা । হা । (হাজ)

ভগৰতী। অভ্যাগৰের ভ আর মরবার হান নাই, তাই এমন ওপরতে বিবাহ করবে। বটে ভোর ক্বা পেরেছে? (গহলতীয় প্রভি) মা! এটাকে কিছু বাবার লাও ভ! (গৃহ-লত্মীর একলোমা সন্দেশ প্রদাম) ভূই সব বাস না। সিংহকে নিয়ে আছেক দে।

> এক মহুবা সিয়াধা মহুব কি বাড়ী এক মহুৱা সিয়াধা মহুৱ কি বাড়ী এক মহুৱা সিয়াধা মহুৱ কি বাড়ী

এত্নাৰভাপেট আউর এত্নালকালাভী। ভগৰতী। পোড়ারহুখো এবনোগেলিনে। (লন্দীর প্রতি) মা । ডিম্লটানিতে আয় ত ।

অয় । পোহাই মাই ভোৱ । তুই পাটি বার, ভাঙা মার, ভোর ওই ভিন শুল্টা মাহিস্ না । তার এক খোটার ভিন খোচা লালে হাযার পেইটা ফাটিয়া যাবে । হামি চলনাম ।

中写

এক মন্ত্ৰা গিৰাৰা মন্ত্ৰ কি বাড়ী ( ইন্ড্যালি পুৰ্ববং শীড গাইতে গাইতে শেষ্ট চুলাইয়: প্ৰশ্বান )

ভগৰতী। দেব'ল ষা ) এ সৰ ভূত নিম্নে আমার সংসার। লক্ষ্মী : তা ত ঠিক মা । পঞ্চুত নিম্নেই ভোষাদের সংসার।

তৃতীয় অহ

( খর আসীম। অপারাগণের গাইতে গাইতে প্রবেশ )

9 ত

শুৰের রাতি, আল হে থাতি, মন্দির কর আলা। কুমুষ তুলিরে, বোঁটা কেলি দিয়ে, বাধাহে চিক্র মালা।

অঙক চলম, কুত্ম খাসম,

সুপূপা গবন ভাল।
ভঙ আলিপনা, কুমুম বিছামা,
যাধ্যে ক্যান্তের নাগ ঃ

সুৰাসিত ৰান্তি, পুনি হেম খানি, নাৰহ শীতস কনি। পিক ভক সানি, তাক ঘনা কনি, নিক্স ৰম্মক খেনি।"

১য় ড় । ড়ায়্য়ান । জায়য়া বিবিবের জ্পরা । আপনা-বের সর্ব্যাহলা ত্ল-মাতা দশতুলা দেবী আপনার শিশু ছলয়ের প্রার্থনা শুনিরা শুল নির্মান্ত দরতা দশতুলা দেবী আপনার শিশু ছলয়ের প্রার্থনা শুলিরা শুল পরিপারের জ্বন্ধে আপনার গৃহপত্মীমাতার করে অর্পন করেছেন । জননী কৈলালে বলে যীয় পবিত্র করে নক্ষমজাত ক্রমে এই যালা পেঁথেছেন । জননী আশীর্বাদ ক'রে প্রীয়ুবে বলেছেন এ যালার আনগু-পূল্প অনজ-ত্ব-পান্তির নিয়ান হবে এবং এই পরিপরের ঘারা এই কূল-পৌরব ও কূলপ্রী বৃহত্তি হবে । জননী ও আপনার গৃহত্ত্বী অভবীক্ষে বেকে আপনার শুল্পনী অভবীক্ষে বেকে আপনার শুল্পনী । (মালা প্রহান )

বর। কুলমাভাও পৃহত্তী মাতার শ্রীচরণে আহার সাষ্টাদ প্রণাম। (মালা গলার বারণ)

১ন আ। অন্ধীর আকু আনক্ষের সীমা নাই। জগভ-জননীর আনক্ষে আৰু জগত আনক্ষে পরিপূর্ণ হয়েছে।

#### র ত

আনক উছলি বার নিশামণি কিবণে,
আনক উছলি বার নীলিয়ার গগনে।
নব বসভের বার
আনকে বহিরে যার,
চুবি যমোরম শোতা কুহুবিত কামমে,
আনকে দেবতাগণ করে পূল্য বরিষণ,
নব দল্গতির শিরে প্রীতিকুল্প বহুমে।
১ব আ। চল্ সবি চল্, ধেণকি নির্মাণ
নব বসভের টাধিনী হালি।
গাইতে গাইতে নাচিতে নাচিতে
ভূলি কুঞ্জে কুঞ্জে বুল্ল বালি।

व्यवस्य नगण्य वयर पूरेप সুলের বহিরা প্রথম বাণ। क्षपंत्र वनव कि मनुद्रम वस গাইছে কোকিল প্ৰথম গাম। বসত পঞ্চয়ী বভিষ চাথৰি বিশ্বল চল্লের বিশ্বল হাসি। বছ ভছ নিশি ভভ ভিবি বিশি কিবা পুৰাক্ষৰ উঠিছে ভাসি BJE 835 MG তুলি পুঞ্চে পুঞ্ নৰ বসভের কুলের রাণী। চপলা সঞ্চারি **४** भग क्याबी এ ভত-বিবাহে সাজায়ে আনি। ন্বীন আকাশে এীভির স্বাবাসে কি শোভা হইবে এ মধুমাসে, धर्वन चार्डमा नियंगा हनना শেভিবে নির্মণ চল্লের পাশে। 하여 선택의 중단환 ভূলি পুঞ্চে পুঞ भव वमरश्चय कुरमञ्ज वाचै । চপলা সঞ্চাত্রি চপলা কুষারী এ ৬৩-বিবাহে সাক্ষারে তানি।

#### ীভ

"কুঞ্জে ক্রে প্রে প্রে চললো বলিনি
আরলো সন্ধনি!

১কুল ভবিরে কুম্ম ভূলিরে সাঞার কামিনী—

চললো বলিনি! আরলো সন্ধনি!

একুভি হাসিরে চার,

স্থমা করিছে ভার।
বীর মলর বর, আকুল করে হলর,

কুলের বাবে, কুলের সালে, কুলের কামিনী—

সাঞাব বমনী,

চললো বলিনি! আরলো মন্দানি!"

ববনিকা প্রন।

## তটিনী

### बीशी दिखकुष हस

নিচ্ছ পাষাণ-বক্দ বিদায়িত্বা কৰে হে ভটনি উচ্চায়িলে আগৰনী-গান ? শৃদ হ'তে পৃদ চুনি তব অতিবান বৰক্ষীৰ বুকে নামে। বৌধন-উৎসবে মেতে ভঠে বৰক্ষীৰ বিশুক্ষ পৰাৰ; বিকে বিকে সবুক্ষের গৌহব-গরবে তবী ভাষা বৰক্ষীৰ বেত্বানি লোভে; নাভাইরা নাজি গাছি কৃত্ কৃত্ গান
চলের নটনী বেন। বিবন শর্কারী
করোলিত অনবক্ষে তরল-নীলার
বোঁত্রে বেবে নিত্য নব পরি নীলাররী
বর্গের নীনার হ'তে বরার নীনার
বেলিতের অবিরত ক্ষুর রপ বরি
অনীবের ধেলাটুকু শ্বীপ্রেধলার।

# অন্নং বহু কুৰীত

শ্রীরেণু দাসগুপ্তা, এম. এ.

বে মুদে ভারতের প্রতি গুলিকণার বর্ণকণা সুকারিত হিল, বে ভারতের নোনার অর সারা বিধে বিভরিত হইত, ভারতের সেই গৌরবোজ্ল মুদেরও বছপূর্বে উপনিধ্বের ব্যবি উলাভ কঠে ধ্বনিত হইরাছিল "আরং বহু কুবাঁত"। ইংা "Grow more food" এর ভার নির্ধান নির্দেশ নহে। ইংা বিয়াজান-সম্পর ভারতীর ব্যবিগণের ভবিশুদ্ধীর পরিচারক। এদেশে একদিন অরসম্ভা বে প্রবন্ধ হইরা ইাডাইবে তাহা বেন ভাহারা বিয়াজান সহারে উপলব্ধি করিতে পারিরাছিলেন। ভবু ভাহাই নহে "বরা করা চ বিবরা বহুবং প্রাপ্ন রাং" বে-কোন উপার অবলবন করিরা হোক প্রভুত অর অর্জন করিতে হইবে ইহাও আরব্যক ব্যবির অভুজা।

আনের সংখ্যান—ব্যক্তিগত ভাবেই হোক, কিংবা ভাতিগত ভাবেই ছোক কর্ম্মগড়ত হওয়াই বাহ্মীয়, ইহারই ইঞ্চিত যেন বভার নিমোক্ত প্লোকে রহিয়াছে।

> "অৱান্তৰন্ধি প্তানি পৰ্কলান্ত্ৰসন্তৰ:। যজান্তৰ্ভি পৰ্কতো যজঃ কৰ্মসমূহৰ: ॥" মৃতা ৩।১৪

অর্থাং "প্রাইনেছের উপ্তব আর হুইতে, বৃদ্ধী হুইতে আরের উংপতি; বৃদ্ধীর স্পন্ধী বজ হুইতে আর দেই বজ কর্মধারা সম্পাধিত হয়।" আর আর্জন করিতে হুইলে কর্ম্বের প্রয়োজন, প্রবাদের প্রয়োজন—উহারই আভাগ প্রতিফলিত হুইরাছে "বরা-করা চ বিবরা বহুবেং প্রাপ্তুরাং।"—এই উভিতে।

বে অন্নকে প্রভ্তরণে অর্জন করিতে হইবে, বছণা অর্জন করিতে হইবে নেই অন্নের উংপতি, তথা অন্নপ্রভি উপনিষদ-সমূহে বেভাবে বণিত ও ব্যাখ্যাত হইরাছে ভাষা বাত্তবিকই চিতাকর্থক।

আছের উংপত্তি সধচ্ছেই প্রথমে আলোচনা করা বাইতেছে:
ঐতরেরোপনিষদে উক্ত হইরাছে "আত্মা বা ইন্ধ্রেক
এবার আসীং"—অবাং সর্বাধ্রে বাত্র আত্মারই অভিত্ব ছিল।
অবংশ্রেটা তাবনা করিলেন অবংস্টি করিবেন কিনা। বধা----

"স ইক্ড লোকান্ হ হজা ইতি।"
অতঃপর পরবাথা কগং হজনের সকর করিবা এবনে অভ্যু,
বরীচী, বর ও আপ প্টে করিলেন। অভ্যু লোকাশ্ররী
হর্গোপরি, অভ্যীক বা মধ্যদেশ মরীচী; পৃথিবী মর এবং
সর্ক্রিয় আপু।(১)

अञ्चलकार्मानियर गगर

ক্ষাব্যে তিনি কল হইতে পুঞ্য অৰ্থাং ৰাজ্য স্ট্ৰী করিবার উপালান এছন করিয়া ইহার আঞ্জি প্রহান করিলেন। অতঃপর স্ট্রপুঞ্চরে অঙবং বিদীর্গ মুখের উৎপত্তি হইল ("রুখং নিরভিদ্যত ঘণাত্য")। এই বুধ হইতে গান্তু, বাকু হইতে অগ্নি— এইবনে নিরাস-বারু হইতে মুদ্যু পর্যান্ত স্বন্ধ করিয়া স্ট্রী করিলেন। যথা:—

"ভষশনারা পিপাসাভ্যামরবার্জং"

"কুৰা এবং ড্কা" এই চ্ইট প্ৰবৃত্তি জগংশ্ৰষ্টার নিকট আশ্রমণ ৰাজ্য করিলে পরমান্তা আত্মস্ট দেবগণের মধ্যে উহাদের অংশভাক রূপে ইহাদের আশ্রমণানের ব্যবস্থা করিলেন। কলে দেবগণকে হবিঃ প্রদান করিলে কুৰা এবং ড্কাও ইহার অংশভার ক্রলেন।(২)

শতঃশর শ্বগংশ্রপ্ত! চিত্তা করিলেন সকল লোকপালের নিমিত শ্বর শৃষ্টি করিবেন। তিনি শ্বলকে উদ্দেশ্য করিবা ব্যাম করিলে শ্বর যে মৃত্তির উংশত্তি ক্ইল ইক্টে "আর"। বধা

"নোংশংভ্যতশং তাভ্যোহভি তপ্তাভ্যো বৃত্তি বজায়ত। বা বৈ সা বৃত্তি বজায়তালং বৈ ভং।"

ঐভৱেৰোপনিষ্ ১।৩।২

পট হইবার পর অর পশ্চাদভিত্বী হইরা পলারনপর হইলে প্রথম স্টে প্রথম বাক্যের হারা ভাহার পভিরোধ করিছে চেটা করিলেন; কিছ বাক্যের হারা ইহাকে আবহু করিছে সমর্থ হইলেন না। যদি বাক্যের খারাই অরকে আবহু করিছে পারিতেন ভবে লোকে অর সহছে কেবলমান্ত বাক্য উচ্চারণ করিয়াই পরিস্তর্ভ হউতে পারিভ।

অভঃপর তিনি অরকে থাণের ধারা আবছ করিতে চেটা করিলেন কিছ ইহাতেও অপারণ হইলেন। মাণের বারা বাদ্যকে আবছ করিতে পারিলে পোকে কেবলমাত্র বাদ্যর আন লইরাই পরিতৃপ্ত হইত। এই রূপে চক্ষু, কর্ণ, যুক্, রম গ্রুতি বিভিন্ন ইন্দ্রিরের ধারা অরকে আবছ করিতে চেটা অফুতকার্বা করিয়া হইলেন। তপু ঐ সকল ইন্দ্রিধধারাই বিদ্বাদ্যকে আবছ করিতে সমর্থ ইতেন তবে লোকে বাদ্যকে, চক্ষারা ফর্মন করিয়া, কর্মনারা প্রবন্ধ করিয়া, কর্মনারা প্রবন্ধ করিয়া, ক্ষারা প্রবন্ধ করিয়া করিথে

<sup>(</sup>২) \* \* \* তথ্যাদ্ বলৈ। কলৈ চ দেবতারৈ হবিপৃঞ্জে ভাগিজাবেকভাষশনরা পিপানে ভবভ:।

ঐতবেদ্ধোপনিষৎ ১,২।

<sup>(</sup>৩) "ডংগ্রাণেন," "ডচ্চকুবা"," "ডড্গ্রেনেব," "ডব্চা" "ডব্দবদা" ইড্যাদি ঐডবেরোপনিব্ধ ১।৩০ঃ——

অতঃপর প্রথম জাত পুরুষ অপান অর্থাং ব্যবিষয়বারা নিরগানী নিরাস-বার্ব সাহাব্যে অহতে গ্রহণ করিতে চেটা করিয়া অবশেষে সকলকাম হইলেন। এই নিঃবাস-বার্ট অরপুক; এই বার্ট অরবারা জীবন বারণ করে অর্থাং এই বার্ট অরারু ব্যা:---

◆ ◆ শ এবোহ্যত এছো
 ব্রার্রার্থা এস ব্রার্:।
 ঐতরেবোশনিষ্
 ১'০।১০

এইয়াণে বে অন্নের উংপজিজিয়া অগংশ্রই। কর্তৃক সম্পন্ন হইল সেই অর হইতে বীর্বা, তগঃ, মর, কর্ম, অগং এবং অগতে সংজ্ঞার উত্তব হইল। এই সম্বন্ধে প্রান্থাণিনিবদে বাহা উজ্জ্ঞ হইলাহে তাহা এইরূপ:—

কণং তথা কীবদেহের উংশন্তির কারণ-সরুপ এবং মন্ত্র, কর্ম, বীর্বা ইত্যাদি সর্কাবিষয়ের উত্তবের হেতু যে আর, ক্ষিকঠে উচ্চারিত সেই আর-প্রশন্তি প্রশিবানবোগ্য। তৈতিরীয়োণনিয়-চ্চারতির একটি আরম্ভতি নিরে প্রদন্ত হইল :----

আনাদৈ প্রকাঃ প্রকারতে।
বাঃ কাক্ত পৃথিবীং প্রিভাঃ।
অংথা অন্নেটনৰ জীবন্তি!
অবৈনদিনি সম্ভান্ততঃ।
আনং কি ভূভানাং ক্যেষ্টম্ন।
তত্মাং সর্কোবৰমুচাতে।
সর্কাং লৈ তেইনমাপ্র বন্তি।
বেংলং প্রক্ষোপাসতে।
আনং কি ভূভানাং ক্যেষ্টম।
তত্মাং সর্কোবনমুচাতে।
আনাভূভানি জান্তে।
আনাভূভানি জান্তে।
আনাভূভানি জান্তে।
আনাভূভানি জান্তে।
আনাভূভানি ভূভানি।
তত্মাংলং তহুচাত ইভি।
(তৈভিনীরোপনিষং ২ন্ন বন্ধী। ২)

ভাংপর্বা :—-পৃথিবাাশ্রিত সর্ব্যারী অনুসভ্ত ; অন্ন
অর্থাং বাভ বারাই জীবকুল জীবন বারণ করে এবং পরিণামে
অন্নেই অর্থাং বাভেই প্রভাবর্তম করে । সর্ব্যবন্তর মধ্যে অনুই
সর্ব্যপ্রথম জাত । অতএব অনুই বিশ্বের উথব হরণ । বাহারা
অন্নকে প্রজ্ঞানে উপাসনা করে ভাহারাই অন্ন প্রাপ্ত হইবা
বাকে; কারণ অনুই প্রথম স্ট পদার্থ এবং বাবভীর প্রাণীগর্বের
ভ বিশ্বের ওম্বি-সরূপ । সকল প্রাণীই অন্ন অর্থাং বাভ হইতে
উংপর এবং বাভ্যারাই বৃথিত হুইরা বাকে । জীবের হারা
ইহা ভক্তিত হয় এবং ইহারারা ভাহারা ভক্তিত হয় । অতএব
ইহা অন্ন নামে অভিবিত হুইরা বাকে ।

এই ছলে "ৰে আং ব্ৰেছোপাদতে"—এই উক্তি বারা আহকে ব্ৰহ্মান করিবার অসুজা প্রাপ্ত হওৱা বার। আর বে ব্ৰহ্মবন্ধপ উপনিবদেনে সকলে বাহা ব্যক্তি হইরাছে এখন ভাহা আলোচনা করা বাক।

তৈতিবীবোগনিবদের ভূকবন্ধী নামক তৃতীয় অবাদের বিশ্বত হইরাছে, বক্লব-পুত্র ভূক ব্রহ্মজিঞাত্ হইরা পিতা বক্লবের বিকট উপস্থিত হইলেম এবং ঘরাবোগা সন্মান পুরংসর নিবেদন করিলেম —"ভগবন্! আমাকে ব্রহ্ম বিষয়ে উপদেশ দান করুন" ("অবীহি ভগবো ব্রহ্মেতি")। করি বরুন উদায়র নিকট ব্রহ্মতন্ত ব্যাবা-প্রসকে বলিলেম—"অরং প্রাবং চত্তুঃ প্রোবং মনো বাচমিতি।" অর্থাৎ অর, জীবন, চত্তু, প্রবেশাদি ইন্সিয় এবং বাক্ ইহাই ব্রহ্ম।" পিতার উপদেশে ভূগ খ্যানে রভ হইলেন এবং অবশেষে "অরং ব্রহ্মেতি ব্যক্ষানাং"—অর্থাৎ অরকেই ব্রহ্ম বলিয়া ভ্রাত হইলেন। অন্তের গ্রহ্ম বলিয়া ভাত হইলেন। অন্তের গ্রহ্ম বলিয়া ভ্রাত হইলাছিল ভাহানিয়ান্ত প্লোক্সয়ে প্রগ্রেক্স্ট।—

আহং ব্ৰজেভি ব্যক্তানাং ।
আহাব্যের খবিমানি ভূতানি আহাঙ্কে ।
আহেন জাতানি জীংজি ।
আহং প্রয়ন্তাতি সংবিশন্তীতি ।
টেডডিনীয়োপনিষং ৩:>

ভাংপর্ব্য:—ভিনি অরকেই বন্ধ বলিয়া কানিঃ।ছিলেন।
অর হইতেই সর্ব্ব কীবের উংপত্তি; অরকাত কীব অন্তেই বাস
করে ও অন্তেই প্রভাবর্তন এবং প্রবেশ করে।

ভৃত্ব বাহাকে এক বলিয়া ঞাত হটয়াহিলেন ভাহা হইভেছে—আছ, প্রাণ, মন, বিজ্ঞান ও আনক। ববাঃ—

---- "বাহং প্রক্ষেতি ব্যক্ষানাং"
"প্রাণে ব্রক্ষেতি ব্যক্ষানাং"
"বিজ্ঞানং ব্রক্ষেতি ব্যক্ষানাং"
"বানন্দো ব্রক্ষেতি ব্যক্ষানাং"
---

ইহাই পৰির গ্যানসর আন। সেই সর্বাভূতের উৎপত্তির হেড়, প্রাণমর, বিজ্ঞানমর, আনক্ষমর অরকে ভূচ্ছ আন না করিবার অস্ত্রাও আমরা পবিবাক্য হউতে প্রাপ্ত হই, মধাঃ—

শ্বং ন নিন্দাং।
তদ্ রতথ্।
প্রাণো বা শ্বর্।
পারীর ব্রাদন্।
পারীর ব্রাদন্।
পাবে শারীরং প্রতিষ্ঠিতম্।
শারীরে প্রাণঃ প্রতিষ্ঠিতঃ।
তদেকদ্বন্যে প্রতিষ্ঠিতম্।
সাম একদ্বন্যরে প্রতিষ্ঠিতঃ।

## শ্বরণম্বাদে। তবতি। বহান্ তবতি প্রকরা পশুভিত্র দ্ববর্জনেন। বহান্ কীর্যা।

( रिज्विवीरवाननिवर ७।१ )

ভাংপর্য:—আরকে অনাহর বা নিকা করিবে না এবং ইহাকে জীবনের এভ-বরপ জানিবে। জীবনই আর, শরীর আরকুক, জীবনে শরীর প্রতিষ্ঠিত; জীবন শরীরে প্রতিষ্ঠিত; আর আরেই প্রতিষ্ঠিত। বিনি এই তত্ত্ব আত আহেন তিনি রুদ্ধে প্রতিষ্ঠিত। তিনি আরবান্ ও আরাহ; সভান, সম্পাহ ও রজ-হীতির অবিকারী এবং কীর্ষিয়ান।

জন্নকে পরিহার না করিবার, ভাহাকে ব্রভ বলিয়া বরণ করিবার বিধান এবং জন্ন-মাহাদ্মস্থচক আরো বহু স্নোক উপনিবদে আছে। বধা---

আনং ন পরিচনীত।
তদ্ ব্রতম্।
আশো বা আরম্,
ক্যোতিরয়াদম্,
অপ্সু ক্যোতিঃ প্রতিষ্টিতম্।
ক্যোতিষ্যাপঃ প্রতিষ্টিতাঃ।
তদেতদর্মরে প্রতিষ্টিতম্।
স্য এতদর্মরে প্রতিষ্টিতং বেদ প্রতিতিষ্ঠিত।
আরবানরাদো ভবতি।
মহান্ ভবতি প্রকরা প্রতিতিশ্বিধানা

( टिक्कीरबानियर शाम )

এই লোকসমূহের তাংপর্য 'জন্নং ন নিদ্যাং' প্রভৃতি পূর্ব্বোদ্ধত রোকাবলীরই অধ্রপ। নবন অধ্বাকে জন্ন-সম্পর্কিত বে উপদেশ পাওয়া বার তাহা বহা মুল্যবান।

আছেং বহু কুৰ্মীত।

তদ্ ব্ৰতম্।
পূৰিবী বা আহম্।
আকাশোহয়ালঃ।
পূৰিব্যামাকাশঃ প্ৰভিষ্টিতঃ।
আকাশে পূৰিবী প্ৰভিষ্টিতা।
তদেভদয়বহে প্ৰভিষ্টিতম্।
সাম্ব প্ৰভাৱয়বা প্ৰভিষ্টিতং বেদ প্ৰভিতিষ্ঠিত।

অধানমালে। অবতি । . . .

( ইত্যাদি ) ৩'১।

প্রভূতরণে অর অর্জন করিবার অস্কা এই অস্বাকে প্রাপ্ত

হওরা বার। অন্ন সহতে "ভদ্ এডব্" গুবু একবা বলিরাই ববি কাভ বাকেব বাই, তিনি আনাধের সভর্ক করিরা বিভাবের :

> "অহং ৰ নিক্যাং" "অহং ৰ পরিচকীত"

আরও বলিরাহেন—"অরং বহ কুর্মীত"।

কি কি কারণে অরকে উপাসনা করিতে হইবে, এহণ করিতে হইবে, অর্জন করিতে হইবে ভাহাও বিশ্বরূপে ব্যাখ্যাত হইরাছে। বধা, "প্রাণো বা অর্থন"

"আপো বা অন্নৰ্" "পুৰিবী বা অন্নৰ"।

কেবল ভাষাই নহে—আরই আনন্দ, অরই জান, অর এক, অর জীবনের হেড়ু, জীবের উংগতির হেড়ু—আঞান, পৃথিবী, জ্যোতি সৰ কিছুই অরমর। স্বভরাং "বরা করা চ বিবরা বহুবাং প্রার্থাং।"

সারা পৃথিবীতেই আদ অন্নাভাব দেখা দিরাছে। ভরব্যে আবার এই অন্নগ্রাচ্ব্যের দেশ ভারভবর্বেরই অংশবিশেষে অরহীনতা আফ চূডাভভাবে দেখা দিরাছে। এই ভারভবর্বের ধবিদের অন্নপ্রশান্ত পর্ব্যালোচনা করিরা আফ হুংবের সহিত এই কথাই মনে জাগিতেছে, বে দেশের ধবিসব অন্নকে আনক্ষমে, প্রাণময় ও রক্ষয়রূপ বলিরা জান করিরাছিলেন সেই বিরাই দেশেরই অংশ-বিশেষ আফ মহাময়ন্তরের আঘাতে ভর্জারিত হইরা অর্থিজভার শেব সীমার আসিরা হাঁডাইরাছে। অরকে বহুবা অর্জাজভার শেব সীমার আসিরা হাঁডাইরাছে। অরকে বহুবা অর্জাজভার শেব সীমার আসিরা হাঁডাইরাছে। অরকে বহুবা অর্জার ভর্মার অনুজা প্রাচীনকালে অবহুলিত হ্য মাই। রাজ্যি ক্ষমক ও হলবর বলরানের হলকর্যন প্রেট ব্যক্তিগণ কর্তৃক কি ভাবে "আগনি আচরি বর্ম্ব জীবেরে শিখার" এইনীতি অনুস্ত হর ভাহার প্রকৃত্ত উদাহরণ্যরূপ হুইরা আছে।

বদ্ বলাচরতি শ্রে**ঠভড্ডবে**বেভরো **জন:**। স বং প্রবাশং কুরুতে লোকডদ**র্গর্ড**ভে a

( বৈভা ৩/২১ )

শ্ৰেষ্ঠ ব্যক্তি কৰ্তৃক আচৰিত কাৰ্য্য ইতঃ ধন কৰ্তৃক অসুহত হইয়া থাকে; তিনি বাহা প্ৰবাণ করেন অপৱে ভাহারই অহুসরণ করিয়া থাকে।

সোণার বাংল। অরাহারা হইবা প্রকৃতই নিরামক দেশে পরিণত হইরাছে। অরহীন দেশের পক্ষে সর্কাদীণ উরতির আলা স্থান্যথয়াহত। সেইজচই সম্প্র বাঙালী জাতির, তথা ভারতবালীর কঠে আজ এই বাইই সর্কাপ্রে সমস্বরে ক্ষমিত হইরা উঠুক—"অরং বহু কুর্মাত"।

# এ যুগের তীর্থক্কর

#### অস্থিতকুমার মুখোপাখ্যার

খনাবারণ বাস্থ্রের সাঞ্চাৎ-সাভ আমানের মণ্ড সাবারণ বাস্থ্রের বিশেব সৌভাগ্য। ভাঁহানের সভিত থমিচভাবে মিলিবার প্রবোগলাভের ভ আর ক্বাই নাই।

কীবনে করেকজন অসাধারণ বাছবের সহিত এই তাবে বিশিবার প্রবাস আবার হইরাছে। এইরপ হই-এক জনের কথা আবা বলিব। 'ইহাটের এক জন হইলেন আচার্ব প্রকৃষ্ণ চল্ল। ইহার সহিত এক দিন সকাল সাতটা হইতে সভ্যা সাতটা পর্বত একাদিকবে বার ঘটা একাভ বনির্বতাবে কাটাইবার প্রমানেশিতার আবার হইরাছিল।

লে আৰু বছর পদর আপেকার কথা। আমি তথ্য
আর্থসমাজের কর্মীরূপে বাংলাদেশে নানাখানে ত্রমণ
করিতেছি। বুলনার জানিতে পারিলাম। করিদপুরে গোপালগঞ্জ
মহকুমার অধীন উলপুরে নরঃখুত্র ও রুসলমান ক্রমকদের এক
বিবাট সংগ্রমন হইবে। আচার্য প্রকৃত্রক ঐ সংগ্রমনে সভাপতিত্ব করিবেন।

উলপুরে উপস্থিত হইলাম। আচার্বের সহিত সাকাংপরিচর হইল। পাভিনিকেজনে অব্যরম করিরা সমাজসংকারের কালে বাহির হইরাহি জানিরা তিনি অত্যন্ত আনক্ষ
প্রকাশ করিলেন। বলিলেন, "পাভিনিকেজনের হারদের
মব্য থেকে কিছুদিন পূর্বে একট ভাল কর্মী বের হরেছে। সে
হল্পে প্রভাত (প্রভাতবোহন বন্দ্যোপাব্যার—কবি ও
পেশক্ষী। অবুনা বিশ্বভারতী লোকশিক্ষা-সংসদের সম্পাদক)।
যাত্ব, ভোনরা কেবল সাহিত্যচর্চাই কর না। সমাজনেবাও
করছ, এ বছ ভাল কবা।"

বৈকালে সংখ্যনে বহু কুষ্কের স্থাস্য হইল। আচার্য্য-ধেব বলিলেন, "ভোষরা সমবেত চেপ্তার বাঁধবন্দী করে এবং নানাহানে লখা নালা বা বাল (ক্যানেল) কেটে করেক হাজার বিদা জমি জলগঠ বেকে উভার করেছ কলকাভার বলে এ কথা গুনলাম। গবর্জেইর সাহায্য বিদা আমানের এই হুর্ভাগা লেশের উৎসাহহীন জনগণ নিজের চেপ্তার যে এমন আসাধ্য সাধন করতে পারে, তা আমার বিধাস হয় নি। বচকে দেখবার জন্ধ ভাই আমি এবানে ছুটে এসেছি।"

বে অসাধারণ বাছ্যটয় চেঠার এই অসাধ্যসাধন সভব হয়, এবানে তাঁহার কিছু পরিচর দিই। তাঁহার নাম উচজনাথ বহু। সে অঞ্চলে ভিনি গোপালগঞ্জের গাড়ী বলিয়া পরিচিত। কিছ দেশে ভবনও ভিনি অজ্ঞাত, অব্যাত ( এবনই বা ধেশে তাঁহাকে করকন কানে )।

নহাত্বা গাড়ীর আহমের অহপ্রেরণার তিনি কেলসেবার আহ্বোংসর্গ করেন। কটনাসপরিহিত, শীর্ণকের, বরভানী, সুমতীর বৃতি । বেন আশনাতে আশনি স্বাহিত। লোকর্বে শুনিলান বহুকাল বরিরা হাজার হাজার বিবা কবি কলে ছুবিরা হিল। ভাহাদের উভারের কোনো আশাই হিল না। গবর্ষে উভার করিবে না, কোনো ক্ষিয়ার করিবে না, ভাহা হইলে কাহার নাব্যে ইহা সম্ভব হুইবে ?

এবন সময় ঐ কটবাসপরিহিত কবির আসিরা বলিলেন,
—"ভোষাদের সাধ্যেই এ সভব হবে। সকলে মিলে চেটা
কর।" সকলে অবাক! এ বলে কি! পাগল মাকি?
পাগল ভাহাতে সন্দেহ নাই। পাগল মা হইলে অলাব্যসাবনের চেটা করে কে?

ভিনি আর কিছু বলিলেন না। নিজেই এক বিন কোলাল লইয়া কাজে লাগিয়া গেলেন। কেছ হাসিল। কেছ বিভাগ করিল। অকেশ নাই। কোলাল দিয়া বাট কাটকো বন!

ক্ষমে দেখা গেল একট একট করিয়া তাঁহার সদী বাড়িতেরে। অবশেষে অনেকেই এই কাজে যোগ দিল।

ইহার পর আর এক গওগোল বাবিল। কল নিকাপের ধ্রুত নালা বা বাল (ক্যানেল) কাইতে হইলে অনেকের কা৯গা নট হয়। আহুগা ভাহারা বিভে নারাজ। এক খাত কাহগার ক্য ভাই ভাইরের বাবা কাটার। আর নিজের ক্ষিতে প্রের ব্যু বাল কাইতে ধিবে কে?

নম:শুদ্র ও মুসলমান চাষীর কমি। উভরেই হুর্গান্ত। কথার কথার বুন করিরা বলে। কমির উপর কোগাল বলাইতেই গাটিগোঁটা সভকি লইরা ভাতারা উপস্থিত— "ব্যবহার । মাধা কাটাবো !"

—"কাটাও !" নির্ভীক অবিকৃত রূবে উভর বিলেন গোপালগজের গাড়ী।

সে মুৰ্বের দিকে চাহিরা আর মাধা কাটানো সম্ভব হইল মা। লাটিগোটা কেলিরা যাহার ক্ষমি সেও বাল কাটতে লাগিরা সেল।

্ এইয়ণে এক বিন নয়, বিনেয় পর বিন, প্রতি বিন, প্রতি-মূহতে আবাতকারী, হত্যাকারীর অল্পের নীচে শির পাতিয়া বিরা (নিক্ষের) অক্ষোবের বারা (পরের) কোবকে ক্ষ করিয়া গোপালগঞ্জের গাড়ী জাহার কার্য করিয়া বান।

ক্ষোশব্যাণী একাৰিক ধীৰ্ষ প্ৰণালিকা (ক্যানেল) বনন করিয়া ও বিরাট বাঁৰ বঙ্গের ছারা চন্দ্রনাণ বস্থ নমঃপুত্র ও স্সলমান চাৰীর সাহায্যে হাজার হাজার বিদা ক্ষি উছার করিলেন। সরবেভ চেঠার অগতব সভব হইল।

লে অঞ্চলের কৃষক্ষেশীর নিকট তিনি বেবতা। তাঁহার কবা সকলে ধৈববাদীর তার এহণ করে। তুনিলার বারলা-বোক্তরা আহালতে বার না। উত্তর পক্ষ তাঁহার বিচারই নিয়োবার্থ করে। হত্যাকারী তাঁহার সংশর্শে আনিরা আন্ত- পাপ প্রকাশ করে। পুরশোকাছুরা জননী ভাঁহাকে বেবিরা শান্তি পার।

ুষ্পভাষী পুরুষ। তিন বিনের মধ্যে উহার অতি অন্ধ কৰাই ভনিবাহিলাম। এক দিন ভিনি বলিলেন, "এই কর্মের মধ্য দিরে কৃষকগণের অপ্পৃতভাষি বাহবিচার বিনা চেপ্তার আপনি অন্ধৃতি হয়তে। বিনের পর বিন বর্ম ঐ বাধ বহুম ও বাল কাটার কাক চলতে বাকে তবন হিন্দু মুসলমান কৃষকগণ একরে এক পঙ্ভিতে সকলের প্রতী আর ভোক্ষ করেছে। রাজে উন্কু হানে একরে পাশাসালি বরুম করেছে।"

উলপুরে আচার্ব প্রকৃত্তক্র তিন দিন অবস্থান করিয়াহিলেন। বিতীয় দিন রাজে লেবানকার অবিবাসিগ 'প্রকৃত্তকরতী'র আহোজন করেন। পূর্ববদের নমঃপুর সমাজের বিশিষ্ট নেতাগণ আচার্বের এই সম্বর্ধা-সভার উপস্থিত হিলেন।

পরদিন প্রস্কৃতক চন্দ্রনাধ বসুর ক্যানেলসমূহ পরিদর্শন করিতে বাহির হুইলেন। একটি নৌকার আচার্ব, তাহার হুই হাত্র ও আনি এবং অভ আর একটি নৌকার বলোহর জেলার নভাগের কমিদার-আভ্রুর আপ্রর লইলেন। চন্দ্রনাধ কর্বনো আমাদের খৌকার ক্বলো বা নভালের নৌকার ক্বলো বা প্রাম্বাসিগণের সঙ্গে ক্যানেলের বাবে বাবে চলিতে থাকেন। ক্যানাহ্য এক ভারগার বলিয়া থাকিতে পারেন না।

আমবাসিগণের সেছিন কি উৎসাহ! কি আনন্দ! দলে
দলে হাজারে হাজারে ত্রী-পুরুষ, বালক-বালিকা, শিশু
আচার্য-সন্দর্শনে আসমন করিতেহে। এক দিকে চক্রমার্য
অভ দিকে প্রস্কুলচক্র। আজ ভাহারা ব্রন্থাবিস্কুকে বেন একরে
পাইরাছে।

গরীব তাহারা । আচার্বের বত বডলোককে তাহারা তি হিবে । আকুলভাবে সকলে এই প্রশ্ন করিতে লাসিল। আচার্ব্য তাহার বভাবনিত তদিতে বনিতে পাসিলেন, "কিছু না । কিছু না । বৃঢ়ি আছে তো ? বৃতি হাও । আমি বৃতি বেতে বড় ভালবাসি ।"

ভাৰাৰা অবাক ! প্ৰস্কুচন্ত বৃদ্ধি বাইবেন ! বাৰা বাৰা বুড়ি আলিতে লাগিল ! অভ বাইবে কে ? ভবু প্ৰভ্যেক বাৰা ক্ষতেই কিছু কিছু বৃদ্ধি লইতে হইল । ভাহা বা হইলে ভাহাৱা কুল হইবে ।

শ্ৰন্থক পালাৰ পছিলা নভালের রাজাকেও বৃত্তি বাইতে ব্টল। আচাৰ্য চাৰীবের বিকে চাহিরা বলিলেন "বেব বেব ! ভোষাদের রাজা বৃত্তি বাজে।"

বাতৰিক বৃতি বাইরা এত আনক আর কোনো বিন পাই নাই। আচার্বের সেনিন কি অপূর্ব রূপই না কেবিরাহি। এক এক বৃঠা বৃতি বৃবে প্রিতেহেন, আর সমত বৃবে আনক্ষের উল্লোন বহিতেহে। বাবে বাবে বলিতেহেন, "কেব কেবি। এনন বিটি জিনিব। আর ভোনরা কিনা এ সম কেলে বিশ্বট বাও । বৃতি বিষে নারকেল, এবন বাং বিশ্বটে পাবে ?"

বলা বাহল্য সে ছাবে নারকেলের অভাব হিল থা। বুছির সহিত নারকেলও বথেই জুটরাহিল।

ভব্ কি ভাই। তাহার উপর আবার ঘই। তাহাও
আবার বে-সে হই নর—নভালের রাজবাভীর ঘই। হুওড়ে
ভীর করিরা ঘই পাতা হইরাছিল। বেরন তাহার বং তেরনি
ভাহার গড়। বাবের ভো কবাই নাই। স্ভরাং আনাবের আহারের আরোজন সেবিন ভালই হইরাছিল। সমস্ভ
বিন আবাবের শ্রুবণ আহার চলিল।

ইহা শুনিরা কেহ বেন বনে না করেন আনরা কেবল আহারই করিভেছিলান।

সারাহিব নানা প্রসঙ্গে নানারণ আলাপ চলিভেছিল। প্রথম হইভেই বলি,—

নৌকার আচার্বের হও একট হোট কুঠরি ছিল। তাঁহার হুই ছাত্র ও আমি সকালে সেই কুঠরিতে ওাঁহার পদ্ধান্তে বসিরাছিলার। কিছুক্ষণ পর তিমি বলিলেন, "যাও এবারে ভোষরা সব বাইরে যাও। এবন আমি কাক করবো।"

আমরা বাহিরের বড় কুঠরিতে বসিলার। ছাত্র চুইট আমাকে বরিধা বসিলেন—"রবীজনাবের কবা বলুন।"

আমি ভিজাসা করিলাব—"ভার কোন্ কথা গুন্তে চান —একটা কিছু নির্দিষ্ট করে বনুব 1"

ভবন এক জন বলিলেন, "ভার দৈদদিন জীবনখাঞার কথা বলুন।"

আর এক কব বলিলেন, "হাজধের সংক তাঁর সম্পর্কা কিরণ—বে সম্বাদ্ধ কান্তে চাই। আছা, তিনি কি হাজধের সংক্রেশেন ?"

প্রশ্ন ভাষির অবাক হইলায়। হাজদের লইরাই তো
ভাহার জীবন কাটল। বিজের হাজাবহার কথা আরম্ভ
করিলায়:—আরি ভবন দশ বংসরের বাককরাজ। একেবারে
অক্সাভাগাঁরের পাঠলালা হইতে আসিরাজি। হাপার
অক্সের কাহারও নাম দেখিলেই ভাহাকে বেবভা মনে করি।
লাভিনিকেতনে আসিবার পূর্বেই হাপার অক্সের ববীজনাথের
নাম বেশিরাজিলার। ভাহার কবিভাও পড়িরা মুখন্ত করিরাহিলার। হাপার অক্সরে নাম বাধির হয়—পভ রচনা করিতে
পারেম, এমন লোকের কাহে আসিরা পড়িরাজি। কয় ত শীরই
ভাহাকে বেশিভেও পাইব।

ভাষকে দেখিতে পাইৰ—ইছাই ৩খন খাষাও নিকট আশাতিবিক। ভাষার সহিত আলাপ হইবে—একদ্র তথনও কল্পনা কবিতে পারি নাই। আনার স্কুত্র বন্ধুস্থতে তথে তরে বিক্রাসা কবিলাব—তোবরা তাঁকে দেখের ?

ভাহারা ভনিরা বলিল—ধেবি নাই ! রোজ লব সময় বেবহি। ভিনি আমাবের ফ্লাল বেন। বিকেলে বেভাভে নিয়ে বান। রাজে নাটক করান, গল বলেন। আৰি ভ আৰাক ৷ ইহাৰা বলে কি ৷ বোকাৰ বভ আৰাৰ প্ৰশ্ন কৰিবা বসিলাৰ—হবিবাৰু ভোষাকের ক্লান নেব ?

ভাহালা বলিরা উটিল-নবিবারু বলে নাম ধর কেন ? । ভাহদেব বল।

এক ক্ষম বলিল, ক্লাস বেন কিলা কালই বেবতে পাবে। আমাদের কথা বুবি বিবাস হচ্ছে না !

বীরে বীরে নিজেই সব প্রভ্যক্ষ করিলান। সকালে ভাষার সারা সকাল ফ্লাস।, ছুপুরে নেই ফ্লাসের ক্ষচ তৈরি হওয়া। সন্ধ্যার তেলেকের ঘরে নিরা নাটকের মহড়া। ভইবার আর্সে এক এক ঘরে পালাক্রমে গর।

কাস লগুৱা অপেক। কাসের পাঠ্যবিষয় প্রছণ করিতেই জানার বেশী সময় বাইত। পাঠ বাহাতে হাজদের নিকট সমস, সহকবোধ্য এবং চিভাকর্বক হয়, তাহার কচ তাহার কিটার চেটার আর অভ হিল না। তাহার কচও অভূত হইরাহিল। বে সম হাজ অভ শিক্কদের ক্লাস কাঁকি বিভ, র্ববীরানাথের ক্লাসে তাহাদের নির্মিতভাবে কেবা বাইত। অভ শিক্কারা বাহাদের বুর্ব বলিতেন, বাহাদের কিছু হইবে না বলিরা আশা হাছিরা বিভেন; তাহার ক্লাসে সিরা ভাহাদের আকর্ব উরভি লক্ষিত হইত।

আনি এই পর্যন্ত বলিরাছি, এবন সময় আচার্য প্রস্কৃতক ভাষার কৃত্রীর হইতে বাহির হইরা আমানের পাশে বলিরা পঢ়িলেন। আমাকে থামিতে দেখিরা বলিলেন, বল বল। আমিও শুনতে এলার।

আৰি পুনৱার বলিতে লাগিলাৰ—সভ্যাবেলার তিনি আরাদের অভিনর শিকা বিভেন। তাঁহার রচিত 'হাত-কৌচুকারি' পুতক হইতে আররা আরাদের অভিনরে বিবর নির্বাচন করিতার। তিনি বলিতেন কেবল তাঁহার নাটক অভিনর করিলে চলিবে না। আরাদিনকে নাটক রচনা করিতে হইবে। আররা ত অবাক। তিনি কিছ হাড়িবার পাত্র হিলেন না। আরাদের বিরা নাটক রচনা করাইরা হাড়িলেন। শেবে বেশীর ভাগ আরাদের রচিত নাটকই আর্বা অভিনর করিতার।

ভাৰ্য হায়া এইভাবে আয়াদের বচনাশভিয়ও উহোবন হইল। ব্যিয়া-যাজিয়া আয়াদের অনেককেই তিনি লেখক, কবি, নাট্যকায় করিয়া ভুলিলেন।

হাত্রে শরনের পূর্বে তিনি আসিরা গল বলিতেন। বে দিন বে বরের ছেলেবের গল গুনিবার পালা, নে দিন টিক নিরবিত সময়ে তিনি সেই বরে আসিতেন। এক জন তাঁহার বিছানা বিছাইরা দিও। তিনি তাহার উপর বসিরা, আনাবের সইরা গল বলিতেন।

ভাৰাৰ পৰ, সকলে ঐকষত বিহানা পাতিয়া গুইয়াহে কিনা, নণাৱি বাটাইয়াহে কিনা, বলে বলে ব্ৰিয়া বৃত্তিয়া ভাষা বেৰিয়া বেড়াইভেন। শীতকালেও ভাষালা বহ করিবার উপার হিল বা । বন্ধ বাভারবের কপাটে করাবাত হইত। কপাট বুলিতেই হইত।

7.068

এবানে আচার্ব প্রকৃষ্ণভল্প আনন্দে উল্পৃতিত কইবা বলিব। উঠিলেন—"কি আশ্বর্ধ । এইভাবে তিনি ভার অবৃদ্য সময় হাজবের অভ বিরেহেন। বল কি বে। ছুনি বে আনার অবাক কয়লে।"

সভাই অবাক হইবার কথা। তথ্য পর্যন্ত বেশের অনেকেই ইহা জানিতেম না। তাই আচার্ববেরের সেই হারট আমাকে জ্বিরণ অভুত প্রশ্ন করিরাছিলেন।

ইছার পর আচার্যদেব আমাদের কাছে বসিরা বসিরা গল
করিতে লাগিলেন।

বালের মধ্য দিয়া মহরগতিতে নৌকা চলিতেছে। ছই
পালে জনতার অভিনন্ধন ও অভ্যবনা। প্রামের পর প্রাম
আলিতেছে। কবনো বাহিরের দৃশ্য দেরিতেছি। কবনো বা
ভিতরে আচার্বের আনক্ষোজ্বল বুবের দিকে চাহিরা আছি।
সহজ, সরল সমানক বুর্তি।

পোষাকে, পরিজ্ঞাদে, আহারে, বিহারে, সর্ববিষয়ে সহক আমাভ্যর পুরুষ। মনে আছে, প্রথম দিন প্রাতে যথন উপপুরে উহাকে কিজাসা করা হয়—"আগনার আহারের কি ব্যবস্থা হবে ?" তিনি বলিলেন, "কিছু না মাণ্ডর মাছের বোল ও ভাত।" ভাল না, অভ কোন ভরকারি না, অভিধিসংকারের কোন কঠ নাই, পূর্ববেদ অভি স্থলত মাণ্ডর মাছের বোল হইলেই ভাঁছার চলিরা বাইবে। বাসপ্থানের জ্ঞাণ্ড কোন হালামা নাই। আদিরা অববি এই একবানা সামাভ নৌকাতেই বাল করিতেছেন।

ভাষার বৈদ্যক্ষিম জীবনবালার বিষয় প্রের করিরা জানিতে পারিলার—নিজের কাপড় জারা তিনি নিজেই কাচিরা থাকেন। বলিলেন, "বোপার বাড়ী হতে যত রোগ হড়ার। সারাভ হ্বানা কাপড় জারা তা আবার বোপার বাড়ী বিষেরোগ সকর করি কেন ? নিজেই কেচে নিই।"

ক্ৰাৰ ক্ৰাৰ আমাৰেৰ সমাজেৰ অপুঞ্চাৰি চুনীতিৰ ক্ৰা উঠিল। তিনি বলিলেন, "জাতিকে ও তংসংশিষ্ট অপুঞ্চাৰি বিব আমাৰেৰ সমাজেৰ তবে তবে প্ৰবেশ কৰে আমাৰেৰ ৰে কি সৰ্বনাশ কৰেছে তা বলে শেব বাৰ না। এব ক্ৰম আজ নাড়ে লাভ শ' বছৰ বানীনতা হাবিৰে আমবা বিবেশীৰ কুতাৰ নীচে পড়ে আছি। কত নাৰ, কত নাঞ্চা তোগ ক্ৰমি। এই পাপ বুৰ না হলে জাতিগঠন সভব হবে না। আমি এই ত্ৰাক্ষিত 'বৰ্ণাশ্ৰম' বিবাস কৰি না। হিন্দু—তাৰত হাড়া পুৰিবীৰ আৰু কোৰাও এই অভিশাপ নাই। ভাৰতেৰ পাশেই ব্যৱহে চীনকেন, বেধাৰে ৪৫ কোট লোকেৰ বাস, সেধাৰে গত তিল হাজাৰ ব্যৱহৰ মধ্যে অপুঞ্চাৰ কোৰ চিক্ই কেট বেধতে পাৰ নি। জাতিকেৰ ও অপুঞ্চাৰ বিলবে এখন প্ৰকাঠে ছড় বোৰণা ক্ৰমা ব্যৱহাৰ।"

এই ভাবে লাবারণ বেশবারী সেই অসাবারণ পুরুবের বহিমানর গংসর্গ ও বিচিত্র বাভালাপের মধ্য দিরা আমাদের সময় অভি আমন্দে অভিবাহিত হইল।

আৰু ৱাত্ৰেই আচাৰ্যদেবকে কলিকাতা কিৱিতে হুইবে। নৌকা কিৱাইবা সন্ধ্যা সাত্ৰীয় সময় লকলে বীমায়-ঘাটে উপবিত হুইলাম। বিধায়েয় পূৰ্বের দুঞ্চ আবিও তুলিতে পারি নাই। প্রকুলকেয়ে প্রতি চন্দ্রমাধের অপূর্ব ভক্তি এবং চন্দ্র- নাবের প্রতি প্রসূত্রকার অপরিসীন ক্ষেত্ ভাষাবের পরস্পরের সেই বিহার-অভিনন্দরের সময় স্পষ্টরূপে প্রকটিত হইল।

পরৰ প্রবাভরে প্রণত ক্ইরা আচাবলেবের প্রধৃতি প্রক্ করিলান। তিনি আনাকে প্রাণ ভরিরা আপীর্বাদ করিলেন। জনার হাছিরা দিল।

আচাৰ্য প্ৰসূত্ৰচলের সহিত সেই আনার প্ৰথম ও শেষ বেখা।

#### নব-সন্ত্যাস

#### দ বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

গাঁকরেলের দিকে অঞ্জর হইল—করেক পদ বার । তাহার পর একটা বোপের আড়াল পাইরা গাঁভাইরা পড়িল । তীক্ষ দৃষ্টিতে অপ্প্রেরমান গাড়িটার দিকে চাহিলা রহিল—চোরের বত ; গাড়িটা অদৃত হওরার পরও অনেকক্ষণ রহিল গাঁড়াইরা, তাহার পর বাহির হইরা বীরে বীরে গঞ্জিহির পানে অঞ্জর হইল।

গা বিন্দিন করিতেছে, সারা অবদ কলকের মনীবন প্রলেশটাকে বেন অমুক্তব করা বার—বেন গড়াইরা পড়িরা চলার পথটুকু পর্যন্ত চিন্তিত করিবা দিতেছে।···ভাগ্যে বৈব-বোগে ঠিক সেই গাড়োরামটার সহিত দেখা হটরা গেল, ভাগ্যে ওব তিমট ছেলে আছে—পড়ার কথাটা উঠিল, নরতো এই কলভলিও পরীরেই তো সাকরেলে সিরা উঠিল। সেই ছইট ছেলের সাবনে—সেই বেরেটর—বাহিরের অন্তভা ভাহারের অভরের মুণাকে বেন চাপা দিতে পারিতেছে না।···পা চালাইরা দিল; সাকরেল বেন বহু ভাছে, হর—হর—আরও চ্র হটরা বাওরা—করকার, বত শীর হয়।··-কিছ দিজের ভাছ বেকে নিজেকে কি করিরা সুকার ? নিজের বেকে নিজেকে কি করিরা করে মুদ্ধ ? এই কলভিত কেলকে বহুন ভরিরাই ভো ভীবনের সমস্ত পর্যাই অভিক্রম করিতে হইবে ?

অবচ তাহার অপরাব ? অপরাব—তাল হইতে চাহিরাহে, ফলাাপকে আশ্রর করিরাহে, বিশ্বাস করিরাহে। কিজ কোধার তাল ? কোধার কলাাপ ? কোধারই বা রহিল বিধাস ? কোধার কলাাপ ? কোধারই বা রহিল বিধাস ? কেমে হইরাহিল পৃথিবীতে যেন স্তন আলো আসিরা পড়িরাহে, কিজ আলো, না, আলোর প্রবক্ষা নাত্র ? সে তো ভাবে সে এবনও ঠিক নেই সভ্যেই প্রতিষ্ঠিত, সেই বিধাসেই তো এই নের আপাটুকু অবলযন করিরা আসিরাহিল, তবে এই বিধারে হাপ ললাটে বহন করিরা কিলিতেহে কেম ? কানাবেলারেই হইল জয়ক্ষাক্রীর-রশাই তাহাকে তাহার নিজের জীবন হইতে হিনাইরা লইতে গেলের কেম ? কানার বিজের জীবন হইতে হিনাইরা লইতে গেলের কেম ? কানার তো ব্যাবেলারই সহক্ষাক্রী স্বার হিনাইরা উঠিরাহে—মাটারবপাই, ব্যাবেলার, চপা.

ভিণারিক বুড়ী, বিন্দু, জীবন, ভরা—ছুলের বত ছেলেবেরে আজকের এই রামিট আনিরা কেলিবার জন্ত একটা চক্ষাত করিরাই ওরা স্বাই বেন আসিরা জুটরাছে টুস্ব জীবনে—ভিন্ন ভিন্ন পথ বিরা—কেহ প্রকাঠে কেহ হয়রপে, কিছ ঐ একট মান্ত উচ্চের সইরা।…

একটা পরিবর্ত ব অহতব করিতেছে টুল্—এ-একটা বৃত্তৰ অহত্তি—লাবাত হইলেও বেদ এক বরণের বভি অহতত করিতেছে—নির্বিচারে আক্রোপটা একবার থেকে সবার উপর পিরা পভার বর্তী বেদ হালকা বোব হইতেছে; বন্ধ হইতে একটা বেদ হৃতি।…কেট ভাল, কেট বন্দ, কেট আপন কেট পর—ভাহাতে বনটা বেদ আরও বিভূত্ব হুইরা ওঠে।

—ভালনভ ভিনিসটা আলো-বাবারি,—গৃষ্টকে দের
বাবাইরা, যনকে করে বিজাত; তার চেরে একেবারে অভভার,
পরিপূর্ব বন্দটা ভালো—খনকে একটা বিজ্ঞায় দের।…
হর্ষোবনের মৃত্যু বিবাদে হর বাই, হুইরাহিল ক্রিবে-বিবাদে।

যাঠার বশাইছর সমভ জগতটা বলিন হইরা গিরা টুস্ বেন বাঁচিল একট্, গতি একট্ ফ্রত হইল। সে একলা, কাহারও কাহে তাহার আলা নাই; কলভিড, কিন্ত নিং নিংসপার্কিড—এই বেশ হইরাছে। তাহার হাওরা উট্টরাছে, হয়তো বরাবরই ছিল, ভবু তাহার পক্ষে ছিল না। জ্যোংসাটাও অক্সতম করিল টুস্। এতক্ষণ এটাকে তর করিতেছিল, হইরের ভিতর চুকিরা পড়িরা বুবি নটাই বাসের কাহে বরাইরা বিল টুস্কে। তাবন বেশ লাগিতেছে—হাওরা, জ্যোংসা, ভব রাজি, নির্কম পব-তেই রক্ষই বাওরা বার না—সমভ জীবম বিরিরা গত

কিছ কোৰাৰ বাইতেছে লে १০০-টুলু হঠাং ইডিইছা লেল, এ চিছাটা এবনও ভঠে নাই নাৰাৰ, সভাই ভো কোৰাৰ বাইতেছে १—গঞ্চতিহতে আৱ কে আছে १০০-কি আছে १—ভবুই ভো কলভ, এক কোৰে একটু নৰ, সমভ গঞ্চ-ভিহি ব্যাণিয়া—ভাষাৰ বে গঞ্চতিহ—বভাৰ মত কেলিয়াছে হাইলা, চেউবেল উপৰ চেউ উঠিলা ভাষাকে বিপৰ্বত কৰিলা ভাভাইরাহে—কিন্ত ভবু গঞ্জিহি কেন ? সাঁকরেলেও ভো সেই চেট---আবার সেই বিভীহিতা—বুভি নাই—বুভি নাই।

জনুগৰ কৃষ্ণিত হইবা উট্টল—আলোৱ আভাস বেণা বিবাহে আবার—অৱকারই, তবে আলোর বোহন রূপে— টেউ বেকে পরিবাবেরও তো আহে একটা উপার—আহে— আহে—চেউরে গা ভাগাইরা বেওরা !—সমুক্ত-মানের একটা অভিজ্ঞতা—বিক বা সেও গা ভাগাইরা—।

বিবাট আবিভার একটা—নম্ভ জীবনের গতি এক বৃহর্তে পরিবৃতিত ভরিরা ভিল।

সাহা বেহনদ পূর্ব করিয়া একটা আমকের জোরারে—
প্রবন্ধ উর্লালে—পৃথলে পৃথলে বে হানবকে এতবিদ রাবিরাহিল বাবিরা সে বৃজির আদলে সব হিরভিন্ন করিরা বভ
উল্লালে আসিরা উটিরাছে।—এই টিক— টুল্ চম্পার কাছে কবা
বিরা আসিরাছে—"কাউকে কাঁকি পড়তে বোব না।" এক
অর্বে হিরাহিল কবাটা— চম্পাকে বৃজি বিবে, এবার টুল্ অভ
অর্বে কবাটাকে করিবে সার্বক—চম্পাকেও কাঁকি বিবে না,
নিজেকেও নর। গঞ্জতিবির পানে চলিল—অভুত লয়ু গতি—
নাটির ম্পর্ন বেন অন্তব্দ করিতেছে না।—ব্রু পরিচিত একটা
আরগা—সামনে একটা বাজা উলা—এই পথ, এই জ্যোৎসা,
এই হাওরা—রবে পড়িরাছে—এর সলে সেবিন হিল পুশ্লনারের ব্যাহৃল গছ—চম্পার সেই অভিসারের বাঞ্জিট হঠাৎ
আসিরা পড়িরাছে—ক্ষমে ন্বন্ধী। পূর্ব করিরা ভূলিতেছে চম্পা—

আন্তর্ধ—এত জনের কাছে এত তত্ত্বপা গুনিল জীবনে
—কিছ চন্দার কথাই বেন সবার উপরে— "বেটা বরেছিলেন
সেইটেই কি সার্থক করবার পথ জীবনেক—টিক উঠেটা নর
কি ?" এত বছ তত্ত্বপা তো শোনে নাই, জীবনের সকে
এবন করিরা কোন সত্য তো নিশিরা বার নাই—বেশ চবংভার ব্যাপার—একট বেন বুছ পূর্ব ইল—এক দিন এইবান
বেকে চন্দাকে লইরা নিরাছিল কিরাইরা—কেই বিনও চন্দা
ছিল এক্টরার সাবী, আছও ভাই—সেই অভিসারিকা চন্দা—
সে বিন ছিল বাছিরে, আছ অছরে—কোন্ বিনেরটা বেশী
সত্য টুল্র জীবনে ?—

স্লে বৰন শৌছিল টাদ বলিন ব্টবাছে, প্ৰাকাশে উবার আভা কোন বিবাছে। টুলু একেবারেই স্লে বিবা চন্দার বরের বাহিবে বিবা হাঁড়াইল; ভাকিবে, স্লের দিক বেকে প্রকাদ ইাকিল—"কে বটে ?"

আগাইরা আসিরা বলিল---"ও, ছোটবাবু ?"

টুলু বেশ সঞ্জভিত অনুষ্ঠ যত্তে বলিল—"চন্দাকে ভাকতে হবে একটু।"

বনধালীর বালার হই বিভিনেই পোর—এরা ভিন কনে পোর কুলে। বরজার বাকা দিতে প্রজ্ঞানের স্থী আদিরা বুলিরা দিল। টুমুকে দেবিরা হক্তজিরা বাইতে প্রজ্ঞান বলিল —"ভূর বিভিন্নতে তেকে বিভে হবেক।" ষী চলিয়া গেল, একটু পরে আলিয়া বেশ বানিকটা বিশ্বিত ভাবে বলিল—"ষিভিব ভো নাই, হীয়াটও নাই বটে।"

"সে কি ।"—বলিরা টুলু ভিতরে প্রবেশ করিল, শিহনে প্রকাষ ভার ভাষার বই।—

সভাই চন্দা আর হীরক নাই। আরও বিশেব ভাবে বাহা লক্ষণীর, চন্দার উনের বাল্ডী, ভাহার শাভি নিভা, ব্যবহার্থ্য হ্-একটা টুকিটাকি আর হীরকের কাঁবা বালিদ আর পরিবের বা-কিছু হিল সেওলা পর্যন্ত বেবিতে পাওরা বাইভেছে না।

ভিন জনেই ভৱ হুইৱা হাড়াইৱা বহিল, প্ৰথমে কথা কৃথিপ প্ৰকাশের বউ, একটু বুধবাষটা দিয়া বাষীকে বলিল—"উর বাপকে, ঠাকুরলাকে ভাকো দিয়া , হাঁ করে হাড়ায়ে বৈল।"

বৰষাণী আৰ চৰণ আসিল, মুম হইতে উঠিয়াই এই অপ্ৰত্যালিত ব্যাণাৱে একেবাৰে বিষ্চু হইয়া গেল। বনমালী সে ৱকৰ মন মন মাধা চুলকাইতেহে, মনে হইতেহে বাছবে মধ-ভ্ৰান্তি হইবাৰ মত অবহা বুৰি আসিয়া পদিল এব।

টুলু চরণধাসকে বলিল—"কুলি ৰাওড়ায় গিরে না হয় ধেৰবে একবার ?"

এমন ভাবে বলিল যেন ভাষার জানাই যে বাওদাটা রুণ! স্টবে। ভাষার পর কিছু না বলিয়া মন্ত্রগভিতে বাসার দিকে কিরিল।

বাসার হরকা ভিতর হইতে অর্থনিত, ডাকাডাকি করিতে বিদ্দু আসিরা পুলিরা বিল: বারে তথনও অভকার। রাভার থিকের জানাগাটা বছ হিল, বুলিতেই এক টুকরা কাগল উডিরা পারের কাহে আসিরা পড়িল। একটু বটকা লাগার টুলু সেটা মুডাইরা লইরা আলো আলিল। বাহা সন্দেহ করিবাহে তাহাই—চম্পার একটা চিটি; লেখা আছে—

নাধার লক্ষার বোঝা নিবে বাচ্ছি; কিন্ত বিধাস করণ শেব পরিচর বা দিরে গেল্র আপনাকে আনি তা নর। ইচ্ছে হিল থেকেই বরং সেটা দেখিরে দিই, কিন্ত নিজেকে আর বিবাস করতে পারলুর না। কি থেকে কি হরে পড়ল বেশ ভাল করে বৃক্তে পারছি না, তবে বাঠার বশাইরের চিটি পেরে আপনি এত চঞ্চল হরে উঠলেন, তর হ'ল আপনাকে বৃধি হারালুর। সভ্যিতর পেরে গেল্র, আমার লক্ষ্য জীবন-টাই বে আপনার হাতে গড়া, আপনাকে হারালে কি করে চলবে? এখন বৃক্তি এই তরই আমার বৃত্তিনাশ করেছিল —আঁচল থিয়ে আঞ্চনকে বেঁধে রাখন তেবেছিলুর।

সভ্যিই আঙ্ক আপনি। শুশনে পাহাছের আগ্তনের কথা নিরে আপনাকে বে উপবেশ বিভে সিরেছির্ম ভার লক্ষাও আনার জীবনে বাওরার নর; সেই নমর থেকেই ভো ১ ভরের পাশও চুকল আনার মনে। আপনি আগুনই, কথন্ শাভ হরে আলো বেবেন, কবন খনে থঠে হাই করে কেনবার ব্যক্তার হবে দে তো অওনই বুধবে, ভোষার ফলের তা নিরে উপবেশ বেওরা চলে কি ? একভেই বাচ্ছি, বুবহিলার পারের শেকল হবে উঠিছিলার আপনার, অনুষ্টের লোবেই, ভারপর এ-দিকে নিজের বোবেও।

আমার কথা আপনি ভাববেন মা, আপনার আইবাদ আমার সলে থাড়বেই। হীরাও আপনার হীরা হরেই ভোরের হবে, এই কথা বিরে বাচ্ছি।

আৰাহ শত কোট প্ৰণাৰ নেবেন।

ইভি মেহের চপা।

তণ

কিছুক্ৰ পৰে বনবালী 'কবিয়া আসিরা জানাইল চন্দা বভিতে নাই। কোন লাভা না পাইয়া নাৰা চুলকাইতে চুলকাইতে বার হুৱেক আড় চোৰে চাহিয়া সংবাদটা আবার জানাইয়া দিল। টুলু জনালক্তভাবে বলিল—"গুললায়।"

বনৰালী একটু বাঁৰের সহিতই বলিল—"তা তো ভনলেন, ভনবেক নাই ক্যানে ? আরও বা ববর সিট ভনেছেন ? বভির উরা আছ সকালে কাকে বাবেক নাই।"

টুৰু দৃষ্টি ভূলিয়া প্ৰশ্ন করিল—"কেন ?"

"ক্যানে তা আমার বুলবেক উরা ? মাহ্মট তাবে আমার ? আমার নিজেল লাতনি আমার মাহ্মট তাবে বটে ? উর বিয়ার বোগাড় তো করহিলাম, বুরলেক লে কথা ?···তা আমি জানল্য—উরা না বলুক, জানল্য আমি—রমণী বোষ তাগে নাই, ম্যানেজার উক্তে পুনট করালে—উরা সব টের পেইছেঁ—মানবেক নাই উরা—আগুনি বিধ্বেন, উরা মানবেক নাই ···কে পুন করলে উরা ধ্বর পেইছেঁ…"

একটা বড় বিরতির মূবে জীবনের গতিটা হঠাং উঐ হইয়া ওঠে; ঘটনাওলার বব্যে যেন একটা ভাভাহতা পভিষা যার, একটার জের বিউতে দা বিউতে আর একটা পড়ে আসিয়া।

সেই দিন গভীয় রাজে সদর দরকার বছ বছ করাবাত হইল। টুলু জাসিয়া ছিল, গুলিয়া দিতে দেবে নাঠার বশাইরের গেই চর, এর আগে বে চিটি দিয়া অনুভ হইরাছিল।

वनिश-"वाश्मादक (डटक शांविदशस्त ।"

**"(**कावाब ?"

"আমার সদে চন্ধ।···কাপক কামা একটু ববলে নিভে হবে , এটুকুরই সময়।"

গলে একটা হোট পুঁটুলি ছিল, হাতে ভূলিরা দিল। মিনিট পাঁচেকের মধ্যে টুলু থমির কুলির পিরাম-কাপতে আলিরা ইাড়াইল। হাতে একট ভালা ছিল, সেটা দরকার লাগাইরা বলিল—"চলুন।"

এক একটা ভাষনায় সদে ৰাজ্বের ভীবনের কেন্দ- একটু গুচু সংযোগ থাকে, টক যুক্তিভর্কে বাবা বাব বা, তবু অভুত বৰে হয় বটে। সেই টলায় নীচেট, বেণাৰে চলাকে ভাছায় অভিনাৱ থেকে একদিন কিয়াইয়া দইয়া নিয়াছিল, কাল বেণান থেকে ভায় নিজের অভিনার হইয়াছিল সুক্ল-টক এই সমর। নাটার নশাই লাঁকোটার উপর বলিয়াছিলেন, পাশে নাভ দিয়া বভাবনিদ্ধ অন্তন্ত্র্যাস্থ্য কঠে বলিলেন—''বোল টুলু, অনেক দিন পরে দেবলান ভোষায়।'

টুলু পারে হাত বিষা প্রধান করিতে গিরা হঠাং হাতটা টানিবা গইল, গোলা হইবা গাড়াইরা নাঠার নপাইরের বুবের ফিকে চাহিতেই তাহার হই গঙ বিলা, গর্গর বালার অঞ্চ নাবিল।

মাঠার নশাই উঠিরা হাভাইলেন, শিঠে হাভ বিস্তা একটু নিজের বিকে টানিয়া প্রশ্ন করিলেন—"কি হ'ল।"

"আমি আর আপনাকে প্রধান করবার রুগ্যি বেই ভার।"
"বেশ তো, আমি বেনন অভিপূলা বিবে প্রধানের অধ্য
চাই না টুলু, টিক তেননি চোখের অনের পাভও ভো চাই
না"—একটু হাসিরা পিঠে সেহতবে আর একটু চাপ বিরা
বলিলেন—"না, এক বিন ভোষার বানা করেছিলাম প্রধান
করতে টুলু, আবার ভোষার আবেশ করছি—ভোষার প্রধানে
আক আমার পোভ হক্ষে।"

একটু দিবা হইরা ইাড়াইলেন, টুলু প্রণান করিলে ভাতাকে পালে সইরা আবার সাঁকোর উপর উপবেশন করিলেন।

ভান বিকের রাভাট। সোজা চলিরা গিরাছে, অনেক চুর পথত ধেবা বার; বাঁথিকে করেক হাত পরেই টলাটা, রাভাটা ভাহার কোল বিরা ছ্রিরা অবুত হইরা সিরাছে, বাঁকটা প্রার ল'বানেক হাত তলাতে। টলাটা একট হোটবাট পাহাত, একেবারে বাভা পঞ্চাশ-বাট কুট উঁচু পাবরের একটা টাই, গারে রাবার ভিছু বোপবাপ। লোকট টুলুকে পৌরাইরা বিরা রাভার বাঁকে অবুত হইরা সেল।

হুই জনেই থানিককণ চুণ কৰিব। বহিলেন, ভাছার পর বাটার নশাই কথা কহিলেন, বলিলেন—"আৰি ভোষার আছথানির ভেতরকার কথা বোব হয় আলাক করেছি টুলু। এতসিম্বিটা পুবই ভাল—বাকে বলা বার চরন ভাল; কিছু বদি
না-ই হয় পূর্ণ সিম্বি, তবু এতটাকে, চেটাটুর্কেও ভো থানিকটা
নহালা দিতে হবে ? অভত আনি ভো বিই।"

একট্ট থানিয়া বলিগেন—এতটা হিল হ্রছ, এ এতে পূর্ব নিছি লাভ করেছেন পুরাণ, ইভিহাস বিলিয়েও এবন লোভ বৃষ্ব বেলি পাই না। লৈ দিক বিরে আনার তেবন ক্ষোভ নেই; একটা অভিন্তা তো হ'ল, অভ জারনার কাজ হবে। ক্ষোভ তথু এই বে চন্দা নেরেটা সহতে আনার বড় একটা আলা হিল,—ও বে ভরের সেবানে ওর রতন একটা বেরে ভরতে উঠলে নেই উচাহ্রনেই বভ একটা ভাজ হ'ত।"

টুবু ৰাখাটা একটু নীচু কৰিবাই বলিল—"আদা ভো আপনাৰ লে নট কৰে নি ভাব।" "ৰুৱলাৰ না।" বাঠাৰ বশাই একটু বিষ্ণু বৃটিতে চাহিলেন।

"ভাই ; আগনার আশা সে এত বেশী করে সফল করেছেঁ বে ভভটা বোৰ হয় ভাবেদনিও আগনি···"

ষাঠার মণাই আবেগভরেই টুল্ব হাভট। চাপিরা বলিলেন
—"আমার সমস্তী বলো টুল্, সভোচ করবার দমকার নেই,
আমার সময় অর, কেন ভা ব্রভেই পারবে—ভবু সবট। বল,
আমি ভনব।"

বলার টুল্র আনন্দ আছে। বাদ দিল ওবু বভিতে চলাকে প্রথম দিন কেবার কথাটা—মাষ্টার মলাই সেটা জানেদ—তাহার পর বালিরাভির পথের কাহিনী হইতে একটু একটু করিরা সবটা বলিরা গেল—ন্যানেজারের সদে কথাবার্তার ওর তীক্র বুদ্ধির পরিচর, বভি হাছিরা ছলে আসার ইভিহাস—বীরে বীরে ওর বর্বালাজানের উত্তর—ধনির কাল হাছা, পরেশের সাহচর্ম হাছা, ভাহার পর হীরার ধোরপোবের টালাটা পর্যন্ত হাছিরা বেওরা—এর পরে ওর হুঠাং পরিক্রিনর কথাটাও বলিল—আসের প্রাত্তেই বছ আলাভদের কথা; ভাহার পর সাকরেলের পথের সম্ভ কাহিনীটুক্—পরাজ্বের ব্লানি লইয়া কেরা, সবলেবে চল্পার চিটি।

শেষ ঘটলে যাঠার মুলাই আবার কিছুক্তর ভব হইরা বুগিরা ছহিলেন, বেন সমত কাহিনীটাকে সাজাইয়া-ভহাইয়া ভাষায় ৰব্যে থেকে কি একটা উদার করিবার চেঠা করিতেছেন। এক নমর টুলুর পিঠে সল্লেহ স্পর্ণ দিরা বলিলেন-"টুলু, আমাদের পাত্রে হ'টা রিপুর কথা বলেছে; কিন্তু আমি নিজের जीवानत पांचकांत (गरंबि पण्ड पांत कृति। (छ। पार्वि, विभिन्न कथा बनाक शांति मा-त इत्है। स्टब्स कर बार বিল্লালা, বেৰেছি বছ-বিপুর বে কোনটার নতনই এ ছটোভেও चावारम्ब कीवरमद शांका वमरण कीवनरक अरकवारक विवयस কৰে বিভে পাৰে। -- ভোষার শিব্যাকে আমি ভারিক করি, সে নিজের বনের গভিচা টিক বুবেছে, ভাই ওর বুর্বলভাটুকু ৰে ভৱের বিভার ভিন্ন আন কিছু দন সেটা বুবে নিরে ও সাষলে উঠেছে: কিছ আমার শিব্যকে আমি সেই পরিমাণ ভারিক করতে পারলাব বা ; ভূমি বুকতে পার বি বে ভূমিও ৰে নামতে বাজিলে সেটা ভীত্ৰ নিৱাশারই বিকার একটা : ক'ছিলের বব্যে একটার পর একটা কতকওলো বাকা থেলে ्रवर्थ मा : जीवरमञ्ज अक्ठी श्रीक ठारे का १-- ठाविएकरे বিল্লালার বেরাল বেবে ভোনার মন এই বোলা প্রতীয় जीवत्वतः देविक (भरवित । तम भवते त्व कक कवर्व का ভেবে বেৰবার বৈৰ্ব ভার হ'ল না। চিভার কিছু নেই টুলু; আবার ভবু এইটুকু আপলোৰ হবে গেল বে আবার পিব্য ভার শিব্যার কাতে বুভির কোঁতে হার বানলে।---আবারই হার ্ৰো ?—ভা এবৰ আপ্ৰােবই বা কিসের ? পালকারেরা

'পুৰাং শিব্যাং পৰাজৰ'টা গোঁৱবেছ বলে গেছেৰ, তা বলে লজিক্যালি প্ৰশিব্যা বেকে পৰাজৰটা তো আৰও কাষ্যই হওৱা উচিত তো !···নিজের পছতি বত বেশ জোৱেই হাসিরা উঠিলেন, বেন একেবারে হালতা করিয়া দিলেন ওবিকভার সমত ব্যাপারটা; ভাহার পর পিঠে হাতের একটা বহু টান দিরা বলিগেন—এবার আমার এ দিকটা শোন, জীবনে আর বলবার প্রবোগ হবে কিনা ভানি না।

টুলু বিশ্বিভভাবে মুখের থিকে চাহিছে বলিলেন—"ইা ভাই; বঞ্চিহিতে কেৱার কথা আর আলে না আমার টুলু, बहुकू दूव प्लंडे, वाकिकी बदकवादबरे प्रप्लंडे। धवा पानाव निष्टु निरब्ध, ७वा नार्य नार्यका विकालक लारकका ... না, ব্রিয়া-কাতরসগড় অঞ্চে বে কাজ করছিলার ভার অভে মহ, তার মধ্যে তো তেম্ম কিছু পুকোচুরি হিল মা, অনেকটা বোলাবুলি কুলি কেণাজিলাম—বগড়াটা কুলি আর মালিকদের माम ; भवर्गमा कृतिएमा मावि चशीकात कत्रात भारत ना. ভাষের হরে কেট স্পষ্টভাবে ওকালভি করতে গেলে গবর্ণমেন্ট चड्ड प्यंडेडारव वनएड भारत ना किहा .... व शां निह निरहाड --- খদের এক পদাভক শত্রু ভাবে করেছে সন্দেছ। সন্দেছটা र्व क्रिक (भड़े। निकास अरमस कारक चीकास कराव ना : किन्न ভোৰার কাৰে ভো দোৰ নেই। আমার বিভীয় চিট্ট ভোমায় त्म नश्रद्ध थानिकडी चाँक शिराह हेमू । छेनिम-म' कुछि (शर्क উনিশ-শ' ব্দ্রিশ পর্যন্ত সে সমস্ত বড় বড় পলিটক্যাল ভাকাড়ি ভার বছবল হয়ে গেছে ভার গোটাচারেভের মধ্যে ভামি विनाय। कार्य पूर्णा पिरव पिरव चाक भर्वत हामिरव वाह्नि: ভবু চোৰে বুলো নয়, বুকে ওলি বসানো পৰ্যন্ত আছে তার यदा । **७१ (व म) जाका जिटा भागिता भागितारे (विज्ञाह** তা নর, বৰ্ণন বেরকম ক্রোগ হরেছে একটু আবটু কাল পর্যন্ত করে পেছি—বেষন বরো গঞ্জভিতিতে ভোষাকে বিষে করাবার প্লান কৰেছিলাৰ, ভারপর আর একটু সুবোর পেরে বরিয়া-কাভরাসগড়ের ধিকে তাভাভাভি একটু ভালভাবেই করে কেল্লাম। কিন্ত ঐ হয়, বেশি দিন কোন এক জায়গায় উপায় बार्क मा है क्वाब, मक्ब भरू बाब। अरह अरहरे क्वांबह वहरण ने (क्लरण हरण ना । चांक भर्वेष्ठ भावरण ना शास হাত দিতে, তার কারণ আমাধের চোবও আঞ্চ আছে, ট্রক ওদের চোবের পাশেই—আপিনের একেবারে ৩ও কাষ্ট্র। বেকে, বছ সাহেবের একেবারে পাশ বেকে সে চোবের ইসাভা পাই আময়। অবভ পাইও না বে এমন নৰ, না হলে ৰৱা পড়ছে কি করে १—কিছ আমি এবন পর্বন্ত জেলের বাইৱেই আহি , কণ্ডকটা চাল্ও বলভে পার।

এই রক্ষ একট সকেত পেরেছি সন্তাতি, তুল হরেছিল, নিজেকে বচ্চ বেশি প্রকাশ করে কেলেছিলার; তবে ববে হচ্ছে সকেতটা পেরেছি সমরেই, এবারেও সামলে বেতে পারি। তবে সবচেরে রুশকিল কি হরেছে জান ?—আবারের লোক- বল দিন দিনই বাচ্ছে কৰে, কেন, সে ছ:বের কথা আগের
চিটিতে লিবেছি ভোনার টুল্। এক দিন কংগ্রেস আবেদননিবেদন করে বাধীনতা নিতে চার বলে আনবা ঠাটা করতার
—তাই বেকেই আমাদের উত্তরও—আদ ক্রীড্ হরেছে পড়ে
নার বেবে ওদের হরার উদ্রেক করো, বলে তাইতেই পাবে;
আমরা নতুন লোক তো পাক্ষিই না এক রক্ষ, প্রামোরাও
ঐদিকেই চলছে,—ভাতির বননীতে কি বরণের রক্ত তা তো
আনই, সে রক্ত দিন দিন বরসেও তো নিতেক হবে আগছে।

বাক্, হংগ করে আর হবে কি ? যত দিন বেঁচে আছি, বে ক'কন বেঁচে আছি, চেটা করব বেঁচে থেকে এবং বাইরে থেকে কাল করবার। ইয়া, বাইরে থেকে; কেল ভাঁত করা আমাধের জীত্ নর টুল্, ধেবছি গুটা ক্রমে ক্রমে একটা বিলালে ইাভিয়ে বাজে। জ্যান্ত আমাধের জেলে পুরবে, পারভগকে আমরা তা গুটতে হিই মা। হরতো তোমার-আমার এই শেব সাক্ষাং, লক্ষ্য রেবো যদি ববর ক্ষমণ্ড পাও আমার, তো এমন থবর পাবে না যে আমি গলার মালা দিয়ে শান্তশিষ্টি হয়ে পুলিগের পেছনে পেছনে জেলে চুকলাম।"

মাষ্টার মণাই চুপ করিলেন, ভাহার পর একটু হাসির।
টুবুর পানে চাহিরা বলিলেন----"ক্যাগুলোর আক্রোলের ভাব বেরিরে পড়ছে, এভটা ঠিক নর, মা ?---বুবি, কিছ কি করব।
ভূলতে পারহি মা বাংলার আ্রেশক্তিকে কি ভাবে এরা নই
করে দিলে।

"বাজে কথা যাছে বেছে। আমার ভবিষ্যাভের কথা বলতে এসেই ভোমার টুল্। সেই সলে ভোমার ভবিদ্যাভেরও। আমি টিক একটা সন্ধিত্ব বিশ্বতি রয়েছি—আমার পেছনে একটা ভীষণ ছর্বোপ, তাজা করে নিবে চলেছে আমার; আমার সামনে একটা বিষাট সুযোগ হাভছানি দিরে আমার ভাকছে। কথাটা এই যে মুভ ছুর বুবতে পারা যাছে, পৃথিবীর আন্তর্ভাতিক অবছা এমন ইাজাছে শীপ্ সির আবার একটা লভাই বাধবে এবারে আরও ব্যাপকভাবে। এই সুবোপে আর একবার যদি দেশকে জাসিরে ভূপতে পারি—অন্তিমধ্যে, ভো সিদ্ধি বোধ হয় আমাদের মুঠোর মধ্যে। যদি এদের চোবে গুলো দিভে পারি, এক বার চেঙা করব—কোধার, কি ভাবে, ভোমার বলতে পারলাম না, আর বদি আমারই চোব মুলতে হয় তো সেইখানেই এ জীবন নাট্যের ব্যনিকা।"

টুলু থানিকটা ব্যাকুলভার সদে বলিল—"আয়ার সদে বিষ।"

"নেই সম্পর্কেই বলতে এসেহি তোমার। এক সময় হয় তো তোমার নেব সদে, কিছ তার এবন দেরি আছে। এবন বা অবহা বাহে তাতে তোমার সদে নেওরা চলে না, মিলে ওবের সুবিধে করে বেওরা হবে। এবন আনার সদে বে ক'কন আছে তারানার্ক্তির ব্যাপারে বাহু লোক, প্রাণ বেওরা-নেওরার বেলার পাকা, বরকার হলে হাওরার সদে মিলে সিরে আছ- গোপৰ করতে পারে। এবের এত বিৰ বাংলা বিহারের বিনিচকে রেবেছিলার ছড়িবে, হাতে ছিল বোগছর, এই ছুলেও সেই ব্যবহা থেকে আমার অনেকবানি কোর ছিল, ব্যানেলার যে তোমার বুব বেলিপ বাঁটাতে পারে নি ভার কারণ সে সেকেটারি হলেও প্রেলিভেন্ট—ছেলাবোর্ডের চেরারহ্যান আমার লোক। এবন অন্ত ভারগার চলেছি, আতে আতে হতো নেব ওটাবে, ভারপর ছিচ্ছ হয়ে বলে ভোমার নেব ডেকে, অবন্ধ পাকা কবা হিচ্ছি না, যদি ঘরকার মনে করি। আপাতত ভোমার রাজ্পাহীতেই চলে বেতে হবে।"

"রাজশাহী ?"—প্রশ্নটা করিব। টুলু বিশিক্তাবে রুবের পানে চাহিলা বহিল।

"ৱাৰণাহীতে। বুৰতে পাৱহ না ?—আমার সঙ্গে বোগ ৰাকাৰ ভোষাৰ ওপৰ পুলিদের ৰজৰ পছৰে, হয়ভো পছেছে ; ভোষার এবন ভোষার বাবার নিরাপদ আশ্রামে গিরে থাকভে হৰে। বিপদ সেধানেও ধাওয়া করবে, ভবে ভিনি বিচক্ষণ উকিল, কাটান্যল্ল ভানেন অনেক। কাল পৰ্যন্ত ভোষাল সহছে या विर्त्पार्वे छ। এই या छूमि अक कन कमिक, कारक्षरप दूरक, খাষার প্রভাবে এসে ক্তিকর কিছু করবার খাগেই बीलात्कव (बाट्ट शक् नडे स्टब लंब---स्थावकी) स्टब्स--- े A sentimental inexperienced youth who succumbed to a woman's charm before he was ripe for any mischief। Bo এই সমৰ সৰ হেডেছড়ে বাড়িভে গিয়ে বসলে ওদের এই বারণাটা পাক। হয়ে যাবে। এর সঙ্গে আর একটা চাল ছিমে রাধ্য আমি, ভার ব্যবস্থা করছি। চন্দার বোঁক বেওরাচ্চি, তাকে রাকণাহীর কাহা-কাছি কোন ভাষগাৰ বসিৰে আসৰ ভাল ভাবে, খাৰীৰ ভাবে ৰাতে সে কাম্ব করে যেতে পারে। ভূষি ববর পাবে; ভার जरक वांगरम वांग खरबा, पूनिम निन्छि बाकरन, ब्नी থাকৰে। একটু সেটিখেন্টে লাগছে, না ? তা কি করবে ? বে পৰের বে পাৰের। ভোমরা ছ'ক্ষে বাক্ষে টিক-এ আমার পূর্ণ বিখাস আর অন্তরের আশীর্বাদ।

গঞ্চিহিতে কিরে গিরে ছ্লখোলা পর্বস্ত ভোষার থাকতে হবে। বুলতে আরু তিন দিন-আছে, না १০০-বুবতে পারছ না १—আমি ছল খোলার পরও ধর্বন এলাম না তর্বন করিট আমার তিসমিগ করবে, আরু তর্বনই, যেন নিরুপার হবে বাসা হেতে বাছ এই ভাবে ভোষার বেরিবে আসতে হবে। এর আবে ছাড়লেই আমার গোপন ব্যর জান মনে করে পুলিল ভোষার সহতে সতর্ক হরে উঠবে।০০তারপর বৃদ্ধির একটা ব্যবহা করে বিও—পার ভো চরপ্রাস আরু ব্যবহা করে বিও—পার ভো চরপ্রাস আরু ব্যবহা করে বিরু—পার ভা চরপ্রাস আরু ব্যবহা করে বিরো—এর পর আমার জিনিসপ্রের থানিকটা ব্যানেজারের কাছে জ্বা বিরেশত

"ন্যানেজারের কাহে ?"—এবার একটু উএভাবেই কিরিয়া টুবু মাঠার নশাইরের পানে চাহিল।

ৰাষ্টাৰ মুণাই আবার পিঠে হাত বিষা প্ৰশান্ত দৃষ্টতে চাহিত্বা বলিলেন---"বুৰেছি, এও বাধছে এক ধৰণের সেটিষেক্টে মা १---বড় হেরেছ ভার ভাছে। কিন্তু ঐ পুলিদের সংস বাজি বেলার এটুকু ধরকার টুলু। ব্যানেজারের ওপর ভোষার আজোন আমি কি বুৰি মা ? গঞ্ছিহিতে সে জিতে বইল, আক্রোশ মেটাবার অবসর পেলে না, উল্টে আমার বিনিস जब (शीरक रमध्या । कि कदारव १--कोबरम अ दक्य स्थ, नूटर स्कृत्छ रहे इ'राष्ठ विटर । एक्टर स्वर्था, म्राट्सकात 'ভ আসল শত্ৰু নৱ--ক্ৰেৱ'পৰে এগ্ৰক্ষ ছোটৰড শত্ৰু অনেক এসে পড়ে, সাময়িক ভাবে, আক্রোপে প্রতিহিংসায় ভাদের নিয়ে পড়ে বাকলে আসল শত্ৰু বেকে বৃষ্টি সরে বার টুলু, এগৰ একটু ক্ষা-বেলা করে আসল কারণায় নকর রাবতে হবে। আরও একটা কবা--যাবেকে ভূমি সাধ্যা পেতে পার---আমি যে আঞ্চন জেলে গেলাম, তা সহজে নিভবে না, সুত্রাং ম্যানে**ভার ভার ভার বলোত্রীখের। ভার ম**ধ্যে नकृत्वहे अक नमय। चानि (न वदानव ध्वरम ठावे मा हेन्, লে কৰা ভ ভোষায় এক সময় বলেছিই; এখন লোভে ধাৰ্বপরতার ওরা পণ্ড, অভাবে অশিকায় এরা পশু , মুগ कावन अवा .-- अव्हे अवा व्यालवे आयात विनय भक्त वर्ष, हूरे शक्र बब्रुग्रद्वत स्टब अटन केलिटन। जनन, नक्षिक्रिक छुबि दि कार्याद शिए। शक्ष करते शिल (मेडी ७ एर्ट मक्न । कांबरे छ जानम, विचादवरे छ। (राक।...चावस अवही क्या चारव हुन् ब भरवत अगरत ।"

"**\*** 7"

"চল্পার বতন একটা বেরে বদি তোষের হয়ে থাকে—-ভোষার সম্পর্কে এসে—স্থার ব্যানেকারের অভ ফুট-চফ্রান্ত সন্ত্রেও ত সেই বিক্ষরের কাছে ওর ক্ষরটা কি মান হয়ে যায় না ?"

টুপুর মুখটা একটু উল্ল হইয়া উঠিল, অবশ্য কোন উত্তর দিল না।

বাইার মণাই বলিলেন—"এবার বে কথা বলছিলাম। বরো, ভোষার আমি আনাদের কাজে টাগতে পারলাম না, কিছা অগবরেই ববনিকাটা নেমে পছল আয়ার জীবননাটো, তুরি বে কাজ আয়ন্ত করেছিলে তাই করে বেও। আয়ার মনের কথাটা আরো বুলে বলি—আয়ার অন্তরের ইজে তুরি এই কাজই নিমে থাক; আমি ভোষার মতটুকু জানি তাতে আয়ার বিখাল পঠনের হিক বিরে ভোষার মনটা বিরবী নয়; তুরি আলার চিটি পাওরার পর বে অপান্ডিটা ভোগ করেছ মনে মনে, তা বিরবে বাঁপিরে পছবার আগ্রহ নয়; বিরবে মনটা ভোষার বে লাভা দিতে চাইছিল না তারই একটা অভিব্যক্তি, তা না হলে তুরি চন্দার একটা সাবাভ তর্কেই এয়ম করে ঠাভা হরে বেতে না। এতে ছংব করবার কিছু নেই,

এই পৰেই ভোষাৰ কাক; এবঙ তো বৰকাৰ আছে,—বোৰ হয় বেলি দশ্বকাৰ। আৰ এও তো বিপ্লব—প্ৰতিবিশেষ অভাবের বিক্লৱে তৃষি হাঁভাবে—ভাতে বে তৃষি নিজের প্রাবকে হু'হাতে আগলে থাকবে না এ বিশ্বাস আমান্ত যোল আনাই আহে টুয়ু।…এবার ওঠ, আর সমন্ত নেই আমান্ত।"

টুলু বলিল—"গঞ্জিখিতে আমার কিরতে বলছেন, সেবানে ভ সলে সঙ্গেই পুলিসের ভয়---অবশ্য ভয়েই বলছি না আমি।"

মান্তারমশাই আবার সম্প্রেছে পিঠে হাত বিলেন, হাসিয়া বলিলেন—"না, কেন বলছ আনি বুবেছি টুলু—আমার সদ্ধা হাড়বার একটা লাগসই ছুতো বের করেছ—এই তো ?… না, যাও, ওরা এখন গঞ্চতিহির বাসার আসবে না। আমি যে ওদের ববর টের পেরেছি দান না তো; আমি ঐবানেই কিরব এই আশার দূরে দূরেই ওৎ পেতে থাকবে, তোমাদের ভিস্টার্থ করবে না। এত বড় ভূল ওরা করলে বিটিশ গবর্গনেন্ট কোন্ দিন কেটলিয়া হয়ে যেত টুলু।"

উঠিয়া দাঁভাইলেন, ভাদার পর একটু গল; উচাইয়া বলিলেন—"এসো গো···আর ছুমিও নেমে এসো।"

টুপুর সাধীট রাভার বাঁকের দিক হইতে চলিয়া আদিল।
টুপু বিশিত হইয়া দেবিল, টলার বাঁ দিক দিরাও একট লোক উপর হইতে নামিয়া আসিতেতে, ছ্'কনেই কাছে
আসিয়া বাঁড়াইল।

মাধীর বশাই টুপুর দিকে চাহিত্র। হাসিত্র। বলিলেশ-"একটু নাটুকে হয়ে গেল, না ?—যেন ফেলের এক একটা দীন।"

ওদের বলিলেন– "ভোমর। তা হলে জার একটু আখু-প্রকাশ করে।"

ছুই কনের দক্ষিণ হল্প পকেটেই ছিল, ছুইট শিল্পল বাছির করিল, মাঠার মলাই নিকের পকেট বেকেই বাছির করিলেন, বলিলেন—"এই কথাই তোমার বলহিলাম টুলু, দাভিয়ে মার বাওয়ার আমাদের শ্রহা নেই, প্রত্যেকটিতে ছট করে ভলি আহে।"…

বালাসোরের দিকে পুলিসের সদে জনকতক বিপ্লবীর সেই বঙ যুভটার কৰা মনে আছে তো ভোষার গ্"

টুপু অভিত্ত হইরা একটু গাঁড়াইরা রহিল, ভাহার পর বাাকুল বিনতির সহিত চাহিরা রহিল—"সঙ্গে যদি না-ই নেবেন, যাবার আগে আমার এই দিরে অভিযেক করে যান।"

মাটার মশাই সত্যই শিহরির উটিলেন, বলিলেন---"লব্নাশ ৷ ভা কি হয় ়"

"द्भम स्टम ना ?"

"নামা কারণেই; একটা কারণ বলি—ভোষার ওপর এবন পুলিদের নক্ষর বাক্ষে।"

हेन् विव णारव अकहे वाया विह कविवा शेकादेवा विह्न,

ভাষার পর वृष्टै ভূলিয়া বলিল--- "আর একটা কারণ আদি বলব ण्य ? णांवरवम बाारन्यास्यद ७**१द क्ष**िर्णाव स्वाय । তারপর নেবে প্রুব বিপ্রবে..."

বলিল--- "বদি সভাই নিজেকে মনে করি কথনও বিপ্লবের উপর্ক, ভা হলেই নামব---আপনি বেঁচে বাকলে আপনার चारम्य निरंत-चाष्ट्रव्यवक्षा कत्रव मा ; चात्र विक क्षमध मानिरे ७। एत कत्रव अत्र वावशात, औ कार्कर, अरे कथा मिनाम चामि। पुनित्मत क्या (ध वनत्नम---(चादात मत्न সদে এটাকে কেলব সন্ধিয়ে, মিশ্চিন্দি পাঞ্ৰ আপমি।"

মাষ্টার মণাই অনেকৃষণ ভর হইছা সামনের দিকে চাছিছা বহিলেন; ৰুৰটা একটু বিষয় : তাহার পর টুলুর মাৰায় হাত দিয়া বলিলেন—"ওঠ টুলু, ঠিক বুবতে পার্ছ না—ভোষার দেওৱাটা বেশি অন্যার হবে, কি ভোষার এই শেষ প্রার্থনাটক खबार करा। मन्छ। अक्ट्रे कि तकम एता तरेनरे जामात। তবু নাও, ওবু মনে ৱেব ভোষার প্রতিক্রায় আমার আইল বিখাস चार्च रामहे विमाय।"

টুলু যখন গঞ্জিহিতে কিৱিল তথনও বানিকটা রাজি। আছে। বাসার সাষ্ট্রে আসিরা রাভার বানিকটা নিচ্চল कारत ने कारेका करिन । अधम अक्टी नृगाका स निरम्ब चिक्रक (यन चक्रकरहे कहा याह मा। भा छेविरक्र मा এ भूगाण नरेश शृद्ध यादेश कि स्टेटर ? कि जांत कतियात রহিল জীবনে ?

হঠাং একটা ভুষুল শব্দ । হ'শ ভিন'শ লোক একসলে কি बक्छ। विजय दाँकिया छेठिन-- (नायब "चय"की तम (नाना । अक्रे वाका भावितात भरतह हेन्द्र मरन भक्ति वनमानीत कथा— বভিত্ৰ স্বাই কেপিয়াছে--টের পাইয়াছে, রম্ব বোষ পলার नाहे. वृत इदेशांदा। वृतीत महानक शादेशांदा देशांता---কলিকাভার সেই লোকটা--হরভ পাইরাছে হাভের মধ্যে। টুপুর পারে বেন বিহাৎ প্রবাহ বেলিয়া গেল-এই সুবোগ প্রতিশোধের, মাধার একমুমুর্তে বেন প্রলয়ের ঘূর্ণি ছারিয়া উটিল-এই আবদটা আগের প্রতিজ্ঞা-জরুর পা ছুইয়া-সে ঘূৰিতে ঘূলিকণার মতই গেল অবল্প হইরা। টুলুর মুঠাটা পিভাৰে বাঁটে চাণিয়া বসিল, আপনাআপনি হাতে হাত চাণিরা দিয়া সমস্ত শরীর ছাপিরা বেন একটা অবাক্ত উল্লাস্থ্রনি

**केंकि**—"विकास । अदेशांत ।।..." चाव अक्डी मण, विवत चात्रक कारक , क्या किविरक्षक, क्यक व्यवन वांश शहेश ; धारव किवारेट सरेट-"(छावा हम, चामि वाकि, चाव बरे जरक जरक वित्रा पश्चिम माहेरा मनावेरात पर न्यून कतिया 'स्वर जामात वास्त्र अ कि--- नाकार यस मास्यकारक हाराज বেদ সভাই প্ৰভাক হট্যা কৰা বলিভেছে এই ভাবে পিৰুলটা পকেট থেকে বাহিত্ব করিত্বা নিজের বক্তপুত্র হৃষ্টির নিচে ধরিল। চালু দিয়া হই পা নামিল---আর একটা প্র---বভিত্র আরও कार्य, हेन् वाबिष्ठ यादेष्ठिन, एठार पाबिबा शन।

> সমন্ত আক্রোল জিবাংসাকে গুইরা গুহিরা নাবিল গুণার नहां। छत्रम अवकारत त्रुवहां विकृष्ठ कृतिका विख्त विदक রহিল চাহিয়া---আবার এদের সংস্রব। মর্থমার কীট---পঞ্জিহির শেষ অভিশাপ কি এরাই হইয়া রহিল না গ

> উঠিহা ভাসিল। প্রবল বিভাতীর মুণার করেকবারই কিবিয়া কিবিয়া চাহিল খভির দিকে, বিভারে অনিতে মুখ হইয়া উটিল আরও কৃষ্ণিত, ভাহার পর পিওলটা বা হাতে ধরিষা ভালার চাবিটা দিয়া বুরাইয়াছে, পারের শব্দে ঘূরিয়া দেবিল পিছনে ছই পালে ছই জন লোক, পুলিসেরই উর্দি গাবে, ভবু পারে জুভা ভার মাধার পাগড়ি নাই। ছই জনে চুইট হাত চাপিয়া ব্রিদ। ব্রের দেরালের পাশ থেকে আরও তিন জন আসিয়া হাভাইল। একজন সাব-ইনস্পেটার গোছের। প্রশ্ন হইল—"এড রাজে ঘরে ভালা দিরে কোণার গিয়েছিলেন গ"

> প্রশ্নেষ্ঠরের প্রয়েক্তনও ছিল না। বা হাতের পিছল জ্যোৎমার আলোর চিক্চিক্ করিতেহে, সাকী ক্বানবব্দিতে ৰুপর হইয়া উঠিয়াছে বেন।

> अत जरक बूक्ष स्टेम--- नगरत शाका स्टेबारक, अटे बारकटे একটু আবে দালাকারীয়া এক জনকে বুন করিয়াছে, ভাষার পর ম্যানেজারের বাভির ওপরও চড়াই করে। আসামীর ললে ছালাকারীদের সখৰও যে পুর ঘনিঠ-নেভা-জনভার-সেটা প্রমাণ করিতে সরকারী উকিলের একটুও বেগ পাইতে रुदेश ना।

बारियकात किछिन क्रमाछील भारत । हेन्द कर्वकीयरम এডটা বভ বিরতি নামিল।

উলিল'ল পঁড়জিল সালের ঘটনা সবচুকু।

শেষ



## বাংলা ভাষায় অ-বাংলা শব্দ

#### প্রিকগদীশচন্ত্র দে

গত আখিৰ বাসের প্রবাসীতে, খরবর্ণ আদিতে আহে এবন				
শতাৰিক অ-বাংলা শব্দের একটা তালিকা প্রকাশিত হইরাছে।				
		এমন প্রায় আছা		
		<b>ৰেই কোন-না-</b> বে		
		শেৰে আ, কা, উ,	ह वनाकरन	
	<b>डेइ</b> ७ रिमी द्			
च-वारना पर		অ-বাংলা শব্দ	ৰাংলা ৰূপ	
কংগাল—হি		ক্রামতবা	(করামভ	
	কাক্ই (চিক্ৰী)		করাভ	
₹ठ—िर		ক্ষেলা—হি	ক্রপ	
करभूग रि		<del>वर्ष, वर्ष।</del> —रि	कर्प	
क्केवि		কলইৰা	কলাই	
<del>कारबी</del> रि	काषांबी	কলকআ	কলপ	
<del>ক</del> ভা—হি	<b>কা</b> চা	ক্লয়জা	ক্সম্	
क्कू, क्र—रि	_	কলিয়া—শা	কালিবা	
	কাৰিৱা(বিবাদ)			
<b>৵৳তী</b> —হি	কাইভি	क्राचीरि क	नेका, कनदक	
কটানী—হি	<b>কাটারী</b>	कनमा, कनपा	र क्या	
ক্টঠা—িব্		ক্সরতহি	<b>ক্</b> সরভ	
ক্তৃক্চব্		ক্লাইখা	কৃসাই	
কচুৱা—হি	44	কথর, কুথর—ৰা	क्रूब	
ক্তল—ট	কোডন	ক্হার—হি	কাহার	
ক্তারখা	কাভার	क्राबीरि	কাহিনী	
ক্ষর,ক্সবা	क्यव	কাক্কা—হি	কাকা	
क्रारे,		কাৰে—হি	कारब	
ক্ষৈয়া—বি	কাৰাই	কান্ডা—-হি	কাভা	
কণভা—হি	কাপড়	কাষা—হি	কাৰা	
ক্তী, কডু,		কানাসুসী—হি	কাৰাবুৰা	
क्रवर्षं — रि	কৰে, কছ	কার্যজা	কাছৰ	
क्रकी—हि	<b>কণারী</b>	কাকিয়স্থা	কাকের	
क्रब, क्बह	क्रव	কাৰু—ভূকী	কাৰু	
ক্ৰাৰখা	कांबाब	কারদা—শা	কারদা	
কৰ্তন-ক	<b>কৰ্ভা</b>	কারনসা	কাৰেৰ	
কৰ্ল-জা	<b>ক্ৰুল</b>	কারধানাখা	কাৰবাৰা	
কৰুলিবংআ	<b>কৰুণ</b> তি	कांबावब,		
<del>क्वक</del>	<b>4</b> 4	কাৰোবাথ-কা	কারবার	
क्वब्रा—िर	কাৰৱা	কারদান্দীকা	কারসাখী	
क्वाकेवि	কাৰাই ( আৰ )	কারীগরকা	কারিগর	
क्वाभरि	কাষাৰ (আৰ)	कानाभावेरि	কালাপাৰি	

**কাৰী**ৰ

তে, খরবর্ণ আদিতে আহে এবন	ঁ অ-বাংলা শব	ৰাংলা ৰূপ	অ-বাংলা শব্দ	ৰাংলা স্থপ
চী ভালিকা প্ৰকাশিত হইৱাহে।	काइ—िर	কেব	কেওবড়া,	(48A)
ह, अवन श्राव चाहारे मछ मय	কিংবাব—ভা	কিংধাৰ	কেওৱাড়া—হি	
শতেই কোৰ-না-কোন বক্ষের	কিতক, কিতমা,		কৈ (ক্যায়)হি	44 (B)
(नंदर चा, का, है, हि रशाक्तर	কেতো, কেতা,		• •	स्वर (दर्ग)
वृत्तिक स्टेरव ।	কেতী—হি	<b>₹</b> ₩	(ক্যাৱেড)হি	
অ-বাংলা শব্দ বাংলা রূপ	কিতা—খা	কেতা	देकम (क्रांचम)	ां करत्रक
ক্রান্তৰ) ক্রান্ত	কিভাবখা	কেন্ডাৰ	কৈকিবংশা	কৈকিছৎ
) কৰোত—হি কৰাভ	क्रिक रि	কোণার	কোভবাল,	
क्रावना—दि कदना स्टब्स	किन, कौन,	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	(কোভয়াল)—হি	কোটাল
<b>वर्ष, वर्षा—हि वर्ष</b>	কো—িহ	কে, কোন্	কোঠনী—হি	कृत्रंबी
कन्न कन्न	किन्या,	ur, uri	কোঠা—হি	<u>কোঠা</u>
क्रकवा क्रा	कीन्या—हि	কেৰা	কোঠা—হি	কুঠা
क्रमव। क्रम	किनाव,	किनाबा,	কো <b>ডা—</b> -হি	<u>কো</u> ড়া
	क्याय, क्यादा—हि	क्यामा,	কোবী—হি	∓পি
	किं	14414	(कांबा—िह	<b>কো</b> ৱা
क) करनकां,	क्विक	<b>কিন্ত্ৰী</b> চ	কোহ্ণুর—ভা	কোহিশ্ব
करनबीरि कनिका, कनरक	किशाने,	1.4.0	কোষী—হি	क्रि
क्नमा, क्मबा—हि क्या	কেয়াৰী—হি,	কেয়াৰ	काबी(किबाबी) रि	কেৰারী
ক্সরতহি ক্সরত	कियाया,		কোঁ (কোওঁ)—হি	কেন
ক্লাই—ৰা ক্লাই	(क्याबारि,	কেৱাৰ	বচড়া—-হি	45 <b>\$</b>
কথয়, কুথয়—ৰা কথয়	কিলাৰা	<b>(</b> ₹51	ৰচৱহি	रंकर
ক্ছার—হি কাহার	কিপমিশকা	<b>কি সমি</b> স	ৰকাকীকা	नामामी
क्रामीरि कारिमी	কিন্ত-—বা	<b>কিভি</b>	ৰজানাকা	ৰাজনা
কাক্কা—হি কাকা	কিশখা	ক্সম (ব্ৰক্ষ)	बंडेका—िर	<b>ৰটকা</b>
कारब—रि कारब	কীচক—হি	কিচৰ (কাদা)		<b>গটা (ব্য</b> র)
কাভা—হি কাভা	क्कूक्न रि	কোঁকড়ান	वजी, विश्वा—रि	4(♥
কাষা—হি কাষা	কুটনা—হি	কোটশা	<del>বভ—আ</del>	48
কানাকুনী—হি কানার্বা	<b>ब्रुवाब,क्वान</b> —रि	কোবাল	বভষ, বন্ধ—আ	- পভষ
কার্নজা কার্ন	তুপ্পা,	_G,	<del>पंकाक</del> ा	ৰাণ্ণা
কাকিরস্বা কাকের	क् <b>न्ने</b> —हि	<b>কৃপি</b>	444—4	441
কাৰ্ভ্ৰী কাৰ্	क्ववानि <b>-प</b> ा	কোৰবা <b>ৰ</b> কোৰবাৰ	ব্যৱসায়—আ কল্ম	ववद्यवाद (वद्यान
কাৰণা—ৰা কাৰণ	ভূৱাণ—আ ভূগ্ড, ভূগ্ড—হি	<b>কোৱাৰ</b>	বহালকা বহুগোশকা	<b>पंचरती</b> न
কারৰজা কারেৰ	रून्, रून्—ार जूनी—पूर्वी	হয়্ণ কুলী	45-41 485-	
কাৰধানা— আ কাৰধানা	হুণ[—হুণ হুণ[ভী—হা	र <sup>ा।</sup> <b>रू</b> चि	पंत्रांरि	481
कांबायब,	रूप््।—र। क्राना—रि	হ।ত ভুৱাসা	वंद्यावव्या	ধালাপ
কাৰোবাৰ-কা কাৰবাৰ	<del>रू</del> रागा—।र <del>ट्रॅंड</del> —रि	रूपाणा <b>क्ष</b>	वहीयम	ব্যাদ
কারদান্দী—কা কারদানী	কুচা (গলি)—পা	কুচা -	वनागवा	ধালাস
) ভাৱীগরভা ভারিগর	(शंनिव नदम राज	-	बनानी—रि	বালাসী
) ভালাণাৰী—হি ভালাণাৰি	व्रा-रि	न्दा( <del>न्</del> दाना)	विशायरि	र्वनिद्यान
कारिकचा कारिक	(क्ट्र, (कार्करि		<b>4मी</b> रि	टेबन
		- · · · · · ·	*	

ष-राश्ना भव	यारमा सम	অ-বাংলা পৰ	ৰাংলা ভণ	খ-বাংলা শব	ৰাংলা স্থপ	च-वारमा नंद	বাংলা <b>ল</b> ণ
শলীকাআ	ৰলিকা	ৰ্দাকা	বোষা	গছৰাহি	গছান	चमार्,	
ৰসী <u>,</u>		ধ্বণীআ	प्रनी	1 <b>4</b> —	গব্দ	ভঢ়াৰুবি	ভাৰ
<del>ৰস্বী—হি</del>	খাসী	ৰ্যাক—কা	বোৱাক	পঠনীবি	পাঠৰী	<b>খণী, ড</b> ঞ্চী—ি	रे पूर्णि
ৰাঁচা—িবি	বাঁচা	খ্লাসা—কা	বোলসা	<b>গড</b> ড — হি	পাদা	₩4	44
ৰাড—হি	বাঁড	ৰূশীকা	યુગી	গঢ়ছি	神	₩मब ि	<b>च्या</b>
ৰাক (ছাই)কা	ৰাক	খুঁ চাঁ—িহ	ৰু ছী	পঢ়াৰাহি	পড়ান	খবাশ্ভাভা	গোৰভা
ধাকী—কা	ৰাকী	পুৰ কা	<b>प्</b> न	গদী—হি	नवी	ঙলজার কা	
ৰাটহি	419	ধ্ৰকা	प्र	গক্ততী আ	গাহিলভি	গোলভার	ওলভার,
ৰাতিয়-—খা	<b>ৰাভি</b> র	ধ্বস্ত্ত — কা	ৰূপস্ত্ৰত,	গৰছাছি	গাৰহা	<b>e</b> nta	গোলাপ
বাদী—হি	বাদি		ৰাণহয়ভ	গৰণা—হি	পাষলা	ওলামজা	<u>লোলাৰ</u>
रामनेक	ধানকী	ৰেদশাছি	ধেষাম	গরমীকা	পর্য	ধ্যুসাখা,	
र्गनगर्याका	বাদসালা	લ્વન—િષ્	<b>(4</b> 1	গন্ধীৰআ	গরীব	<b>%স</b> া <b>হি</b>	গোসা
ধামধাহ ্—হি	বাষাবা	বেষটাবি	বেষটা	গলভখা	গলত		
াণীৰা	ৰালি	ধেল—হি	বেলা	গলহৈয়া—হি	গলুই ়	গরু•াছি	গেরশা
বাসআ	ৰাস	বৈরবাহ—কা	ৰছেন্ন বা	গলী— হি	গলি	শেহু,	
াসাখা	ৰাস:	বৈৱাত—ৰা	ব্যহাত	শলীচ'কা	গালিচা	গোহু — হি	প্ৰ
बेडकीरि	বিচ্ছী	ৰোঁপাছি	ৰোপা	গবৈয়া— হি	नावटव	देशव (ग्राचव)	<b>ৰা</b>
वेक्की—हि	বিভকি	ধোত্দাছি	ৰোমা	গহ্মাহি	গ্ৰুণ, গ্ৰুষ	n 9	ৰ (গৰ্মাৰ্ক)
ৰিভাৰৰা	ৰেভাৰ	ৰোক—-হি	ৰৌষ	গাড়ী—হি	नाची, नारि	খালছি	গোৱালা
ৰদমতকা	<b>ৰে</b> দমভ	ৰোৰচা—হি	<b>ब्</b> की	গায়ৰ— আ	পাছেৰ	গৌইদাকা	বোষেশা
ৰলবাড়হি	বেলোয়াড	ৰোহপোশ—ৰি	ৰোৱণোৰ	পারখ হি	পারদ	গোড়—হি	গোড
ৰলাকখা	খেলাণ	ধোলহি	বোগ	গালীহি	পালি	গোৰৱ—-ছি	গোৰৰ
ৰলোনা—হি	ৰেশশা	খ্যাল(খেৱাল)–	- আ খেৱাল	গাণী-গণ <del>োজ</del> বি	হ গালিগালাৰ	গোৱাহি	গোষা
ৰিদারাকা	খেসারত	ৰ,ছা কা	4141	গিণতী—হি	ভণতি	গোলকাজ কা	গোলকাক
चेत्राती,		<b>नश</b> का	<b>গ</b> ঞ	গিৱক ভারকা	ৰেন্তাৰ	গোলীহি	<b>খ</b> ণী
খেগায়ী—হি	<u>ৰেসাত্ৰী</u>	र्गठकडे।	গাঁচকাটা	গিরহ —কা		ল গোণ্ডকা	গোড
ধীরা—হি	'বিয়াই	গ্ৰামাহি	গৌয়ান	<b>थरडा, ७७।—रि</b>	•	•	
<b>টলাহি</b>	খিল	গ্ৰাৱ(প্ৰৱাৱ)	_	ভৰৱাণ, ওজৱাণা-		St. colpress	
<u>₹</u> च	ৰোখ	<b>ทุทธ์</b> ] ทุเทธ์]		ওভারণা কা	ভজারণ		

## সৰ্বহারা

#### ঐতবৰু গঙ্গোপাধ্যায়

বহিরা চলেরি জীবনের বত রামি,
পাইনি কবনো বরণের ৩৩-বালা—
কহে নাই কেহ সোহাগের আব-বাই।
জনেরে বক্ষে শত অপবান-খালা।
গোলাশ ছুলিতে পেরেরি কাঁটার কত।
আলো বিলারেহে কবন আলেরা হরে।
অভাবের সাবে করোনি অবিরত

সহলহীৰ, শক্তির অপচরে।

ৰোদের চক্ষে সংসার বরুত্বি,
নাবি হারা-বেরা শ্যামল কুঞ্জ-বীবি।
মরণ কেবল টেমে মের মুধ চুমি।
শামত ব্যধা বোদের হচির নাবী।

আবাবের তরে নাহি স্নেহ-প্রের-বারা, সংগার বারের আবরা সর্বহারা।

## তন্ত্ৰাচাৰ্য্য কৃষ্ণানন্দ আগমবাগীশ

অধ্যাপক শ্রীদীনেশচন্দ্র সরকার, এম-এ, পিএইচ-ডি

ত্ববিশ্যাত তন্ত্ৰসার এত্বের সহলবিতা কৃষ্ণানক আগমবাদীশের নাম নিকিত বাঙালীর নিকট অপরিচিত নহে। কৃষ্ণানক বাংলার অভত্য শ্রেষ্ঠ তন্ত্রশান্তবিং ছিলেন: ভন্তসারের পরিছেদ সমান্তিক্ষক পূলিকার গ্রহকার আগনাকে "মহা-মহোপাধ্যার জ্রীকৃষ্ণানক বাদীশ ভটাচার্য্য" নামে পরিচিত করিবাছেন। এহলে তাঁহার উপাবি দেখা বার "বাদীশ"; কিছ পরবর্তীকালে অনেকেই তাঁহাকে "আগমবাদীশ" উপাবির সংক্রির আকার।

ৰদেক্ৰৰাথ বস্থ হচাশৰ ভটীৰ বদেৱ কাঙীৰ ইভিহাসের "বাবেজনাক্ষৰ-বিবৰণ" ৰতে তন্ত্ৰসাৱ-বচয়িতা ক্ষানন্দের वर्गणविष्ठत संगत्न निविद्याद्यन. "बरे वर्ग वादास बाध्यन-সমাজে কাঞ্চপগোত্ৰীর মঙলকানীর বৈত্র নামে ব্যাত। ই হাদের পূর্ব্ধ বাসস্থান ত্রীবাম নবদীপে আগবেশরী তলাতে ছিল। পরে বংশবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে বঙ্গের নানাছানে বসভি-দ্বাপন করিয়াছেন। এক বংশ অধ্যাপি এবামে বাদ করিয়া √আগ্ৰেষৱী দেবীকে বধারীতি অর্চনাদি করিয়া আসিতে-(चन I" (न. ১৫৭) वर महामदात अटह क्कानत्मत मस्मिमावर् ৰন্দৰিভ কতকণ্ডলি কাহিনী খেৰিতে পাওৱা যায়। আগম-ৰাপ্ৰদেৱ আৰিৰ্ভাৰকাল-নিৰ্ণয় প্ৰসক্তে তিনি লিখিৱাছেন "कुकामण, बाँटिहरू धरर तत्नाथ निर्ताशिव भवशीरण धकरे গুৰুৱ চড়ুপাঠিতে অধ্যয়ন করিভেন। কুফানন্দের সহিত औरेडलाका क्षत्राय एविएवाचा थिन। यरकारन औरेडला সর্বভাবে **উত্তরভন্তে আরু** হন, ভদ্ধবি ছুই খ্লের মনে।-হাজিত ভারত হয়। ক্লামন পৌরকে স্বভাবে ভ্রম ক্রিভে নিষেৰ ক্রিয়া অপ্রানিত হন এবং সেই সময় হইতে इहे क्रांस शुबक्कारन भाक ७ दिक्य वर्ष श्राहत ४६१विकत হব। কুফানৰ শক্তিময়ে নিহিলাত করিয়া কালীবৃতির বরণ क्षकान करवन। छरशर्स्य पढि कानिकासनीत चातानमा এবনও আগবেধরী মন্দিরে (নবধীপে) কুফানন্দ श्वाणिक पर्छ वर्षमान चाटक बावर वर्ष नाक क्यांत महामात्रात चर्कमा कविशा वह स्वेटल्ट्स ।"

বস্থ মহালয় যে কাহিনী লিপিবছ করিয়াছেন, সে সহছে অৱত: ছুইট কথা না বলিলে চলে না। প্রথম কথা এই যে, তন্ত্রসায় এছের খচনায় ভগবান ক্লকের বন্ধনা দেবিতে পাওয়া বার।

"নদা কুকপদ ধৰং ব্ৰহ্মানিসুৱপ্ৰিতন্।
ভক্ত আনদাতাবং কুকানশেন বীনতা ।" ইত্যাদি।
ইহা হইতে মনে হয় বে, কুকানশ বৈক্ষমত্বে দীক্তিত
ভাষ্কি ছিলেন। ভন্নাবের ভাষা বা কালী প্ৰক্ষাণে তিনি

নানা তত্ৰ হইতে মতামত উদ্ভূত ক্রিয়াছেন; স্কীয় কোন বিশিষ্ট মতবাদের প্রাবাভ প্রচার করেন নাই। (বঙ্গবাসী সংভ্রব, পূ. ৪৭২ ইত্যাদি প্রষ্টব্য ।)

ষিতীর কথা এই বে, ভ্রমার রচরিত। ক্রনামন্তক চৈত্র এবং রত্নাথ শিরোমণির সহপাঠি জান করা সন্তব নতে। চৈত্রত ১৪০৭ শকাব্যের কান্তনী পূর্ণিমাতে অর্থাং ১৪৮৬ এটাব্যের ১৮ই কেব্রুরারী আবিভূতি হন এবং ১৪৫৫ শকাব্যের অর্থাং ১৫০০ এটাব্যের আয়াচী ভ্রমা সপ্তমীতে আটচরিশ বংসর বর্ষের নর্জীলা সংবরণ করেন।

ভারভীর ভারশান্তের ইভিছাস রচরিতা ধর্গীর সভীশচন্ত্র বিভাত্বণ মহাশবের মতে নৈয়ারিক রবুনাথ শিরোমণির আবির্ভাবকাল ১৪৭৭ এবং ১৫৪৭ এটান্তের মধ্যে।† কৃষ্ণানন্দের সহিত চৈতভ এবং রবুমাধের বাল্যবন্ধৃতাসুলক কিংবদন্তী সভ্য হইলে শীকার করিতে হর বে, আগমবাগীশ ১৪৮০ এটান্তের নিকটবর্তী কোন ভারিবে ক্ষর্থহণ করেন এবং ঘোষণ শতাশীর মধ্যবর্তী কোন স্ময়ে মুত্যুমুবে শভিত হন। কিন্তু ফ্রামন্দের তরগার প্রস্থানি ১৫৭৭ প্রিটান্টেরও কিছু পরবর্তীকালে রচিত হইয়াছিল, ভাহার অকাট্য প্রমাণ আছে।

বৈষদসিংহ জেলার অবিবাসী প্রপ্রসিদ্ধ তন্তাচার্য্য পূর্ণানন্দ পরমহংস ১৪৯৯ শকাবে অর্থাৎ ১৫৭৭ এটাকে ঐতত্ত্ব চিতামণি সংক্রক বিখ্যাত ভপ্তরন্থ রচনা করেন। ঐ এখে দিবিত আছে "শ্ৰীমং পরমহংস পরিত্রাক্ষক শ্রীগুরু ত্রন্ধানন্দ মুখারবিন্দ নিভন্দ-মান পর্য রহস্তাতিরহস্ত নিগ্নয়করক সন্দোহত্থিলানকঃ ত্রীপূর্ণামল পরসহংসঃ ত্রীভত্ব চিম্বামণিং চতুর্বপশভাবিক নব-নবতিশকাৰে বিভনোভি।" (কলিকাভা সংস্থৃত সিৱি<del>খ</del> সংস্করণ, পৃ: ১৪ জইবা।) ক্রফানন্দ আগমবাগান ভাষীর ভন্ত-সারে (বঙ্গবাসী সংস্করণ, পু. ১০৫) এই জ্রীতভৃচিভামণি হইতে কয়েক শঙ ক্তি উদ্ধুত করিয়াছেন। যদি পূর্ণানন্দ এবং ক্লানন্দ পরন্দর সমসামন্ত্রিক প্রতিপর হন, ভাষা ছইলেও সে-ৰূপে ( অৰ্থাৎ যথম চলাচলের আধুনিক সুবিবার অভাব হিল ) नवधीनवाजी क्रकानत्त्रज्ञ नत्त्र देवमनिश्स्वाजी नूर्वामत्त्रज्ञ এছের অতি শ্বর বৌদ পাওরা এবং উহার কোন প্রতিনিপি রচনা অনতিবিলয়ে সংগ্রহ করা সম্ভব্পর ছিল বলিয়া মধ্যে रव मा। प्रच्यार जन्नमायव बहुमानान ১৯०० ब्रेडीएक्ट

<sup>•</sup> বীনেশচন গেন হত বদভাবা ও সাহিত্য, ধন সংভৱৰ, পু. ২০৬ ও ২৬৬ , R. G. Bhandarkar's Vaishnavism, Saivism and Minor Religious Systems, collected works, vol. IV, pp. 118,19, অভৃতি অইবা।

<sup>†</sup> History of Indian Logic, pp. 463-64) |

অধিক্কাল পূর্বে নির্দেশ করা বার না। অবঞ্চ বদি এরপ কলনা করা বার বে, কুফানক শতাবিক বর্ব বরসে ভন্নদার রচনা করিরাহিলেন, তবে ভাঁচাকে চৈতত এবং রলুনার্থ শিরোমণির বাল্যবন্ধ দির করা নিভাত অসভব না হইলেও শারে। কিন্তু এইরপ অভ্যান সম্পূর্ণ অসভব না হইলেও নিভাত অবাভাবিক ভাঁচাতে সন্দেহ নাই। সুভরাং উপযুক্ত প্রধাণাভাবে এই নিভাত প্রচ্ব করা কঠিন।

গায় কৰাড় ওরিয়েন্টাল সিরিকে প্রকাশিত কালীবঙ ববাং मिक्किनक्ष्मण्डला अध्यारम अभ्यापन-कारन प्रक्रेत जीवूख्य विनय-ভোষ ভটাচার্য্য মহাশয় ঐ এছের কালনির্বয়প্রদে ভর্ত্তপারের वहमाकाल मिक्रशत्पद (हड़े। कविद्यार्थमः) छिनि पर्यम स्थ. ভদ্ৰসার রচরিতা কৃষ্ণামন্দ শ্রীভত্তিস্তামণি রচরিতা পূর্ণামন্দের শিষ্য ছিলেন। ভাষার মতে গুরু অবাং পুর্ণানন্দ যদি ভাষার **बैक्किकामिन बह्बानि ১৫११ बैक्काल वहना कविया पाटकन**, তবে শিশ্ৰ অৰ্থাৎ ক্লফানন্দ ঐ সমধ্যের প্ৰায় ত্রিশ বংসর পরে আফুমানিক ১৬০৭ ইটাজে তদীয় ভদ্ৰসার রচনা ক্রিয়া वाकित्वन । इःरवंत विषय, इकानम পूर्वानत्मत्र विश्व हिरमन. এই কাহিনী ভটাচাৰ্য মহাশধের ধকশোলকলিত বলিয়া মনে হয়: প্রভেপকে পূর্ণানককে কৃষ্ণানকের ঋর ছির করা সম্পূৰ্ণ অসম্ভৱ। অনেকেই জানেন যে, ভান্নিক সাধকপৰ श्वकृत्क प्रस्तिद्वाद्व भ्रमकृष्ण व्यवता छप्तिक क्षाम क्रिक्टिन। ুফান্দ প্ৰথ জানাৰ্থ ভন্ত হুইভে নিম্নলিখিভ লোকট ভন্ত-সারে (পু. ২) উদ্ধৃত করিয়াছেন।---

> "অরু: পিতা অরুশ্বাতা অরুশেবো অরুপতি: শিবে কুটে অরুস্লাতা অরৌ রুটে ন ককন।"

এই প্রস্কে গুরুতভার----

"ন ওরোরবিকং শাস্তং ন ওরোরবিকং তপ: । ন ওরোরবিকং নদ্রো ন ওরোরবিকং কলন্। ন ওরোরবিকা দেবী ন ওরোরবিকঃ শিব: ন ওরোরবিকা মৃতিন ওরোরবিকো কপ: ।"

এবং ওপ্ত সাধনতন্ত্রেই----

"শুরু ক্ষা শুরু কিব্যু ও রুকেবো মহেংরঃ। শুরু শুবিং ওরু ব্রুলো গুরুকানং গুরুক্সা। ওরুরার প্রক্রিং পুরা: সর্বং ওরুমরং শুরুং।"

ইত্যাদি শ্লোক (প্ৰাণতোষ্ণীতথ্ৰ, বসুষতী সংস্কৰণ, পূ. ১৪-১৫) গক্ষীয় । উপৰে আমৱা আঁতভূচিভামনি হইতে এখ্-কাৱের আত্মপরিচয়জাপক বে অংশ উদ্ধৃত করিয়াহি, উহাতে ধেবা যায়, শিশু পূর্ণানন্দ কিঞ্চপ স্থাতীয় প্রভায় সহিত খীয় গুরু প্রখানন্দের নামোল্লেব করিয়াহেন। গুরুর নামোল্লেব সর্বত্ব কুলার্ব তথ্রে পাই বলা হইয়াহে—

> "এওরং কুলণালানি প্জাছাপানি বানি চ। ভজ্ঞা এপুর্কাকং দেবি প্রণম্য চ প্রকীর্তারে।

শুরং নামা ন ভাষেত কপকালামূতে প্রিরে। শ্রীনাবদেববারীতি বিবাদে সাবমে ববেং।" ( প্রাণভোষণী তম্ম, পূ. ১০৩ প্রষ্টব্য।)

এই প্রসাদে লক্ষ্মীয় বিবর এই বে, ক্কানন্দের ভদ্রসারের এক্ছলে (পৃ. ৪৮৯) পূর্ণানন্দের এক্ট রভ বঙ্ধন করা হইরাছে। এবানে বলা হইরাছে, "পূর্ণানন্দ্র রভেদ লক্ষ্মণে প্রক্রবণ, তং সন্ধির্মতং; নানাভারে লক্ষ্ময়দর্শনাং লক্ষ্মণে নিব প্রক্রবণং সিঙ্গিভি।" যদি পূর্ণানন্দ ভদ্রসার রচয়িভার ওক হইতেন, তাহা হইলে এয়তে উহ্বাহে কেবলমাত্র "পূর্ণানন্দ" বলিয়া উল্লেখ করা হইতে না, অভতঃশক্ষে "ইলপুর্ণানন্দ" বলা হইত। তল্পসারে পূর্ণানন্দের এইরপ প্রকাশ ইনি উল্লেখ হইতে আই বুবা যায় যে, পূর্ণানন্দ ক্ষমানন্দের ভক্ষ ছিলেন না।

বস্মতী সংস্কাণ প্রাণডোধনীত প্রের আব্যাণতে লিখিত আছে যে, এই এছবানি ক্ষানন্দ আগমবাগীলের মুদ্ধপৌত্র রামতোষণ বিভালভার কর্তৃক রচিত। বইবানি পাঠ করিলে কিছা উক্তিট সম্পূর্ণ প্রান্ত বলিরা জানা থার। জনেকেই অবগত আছেন যে, কলিকাভার নিকটবর্তী বভাগছের পৃষ্ঠ-পোষকতার রামতোষণের এই প্রস্থানি রচিত হয়। এই প্রস্থানি রচিত হয়। এই প্রস্থানের প্রাণক্ষ এবং রামতোষণ উত্তরের নামাংশ সংবোজিত ইয়াছে। প্রস্থের নামান্দ প্রস্থের নামান্দ সংবোজিত ইয়াছে। প্রস্থের নামান্দ প্রস্থানের জ্বাবলী ও বংশপরিচরাদি সরিবেশিত করিরাছেন। জনেক ক্ষেত্রে আন্থপরিচয়ও তিনি দিয়াছেন। এক স্থানে (পৃ. ১৪৭) প্রস্থার নিজের ক্ষত্রে লিখিয়াছেন। এক স্থানে (পৃ. ১৪৭) প্রস্থার নিজের ক্যতে লিখিয়াছেন।

"শ্ৰীপ্ৰাণকৃষ্ণকৃতিৱন্ত নিদেশবন্তী যৈত্ৰেয়বংশককুলাশ্ৰিভচক্ৰবৰ্তী।"

ইং। ংইতে জানা যার যে, রামতোষণ বারেজরাগ্ধণ সমাজের অকুলীন মৈত্রের বংশীর ছিলেন। অভ্ন (পূ. ৭৭) তিনি নিজের পারিচর দিয়াছেন—-

> "কৃষ্ণমূলপৰিভাৰাগীশসূত্ৰ; সভাংমুদে। প্ৰসাদেৰীসূভোকাৰীঙৰ্ম্বলঙং বিভীয়ক্ষ্ a"

অর্থাং কৃষ্ণমূলল বিদ্যাবাদীশ এবং গ্লাদেবী রামভোষণ বিদ্যালকারের ক্ষণক-ক্ষণনী ছিলেন। অপর একছানে (পৃ. ১০৫) প্রস্থার লিখিরাছেন, "মদপ্রক্রামলোচন বিদ্যাভ্যণকৃত বাস্তবাগপ্রদীপিকা হত হয় শীর্ষপঞ্চরাজে" ইত্যাদি। স্কুরাং রামলোচন বিদ্যাভ্যণ দামে রামভোষণের এক অপ্রক্ষ ছিলেন এবং তিনি বাস্থাগপ্রদীপিকা-সংক্ষক দিলাপ্রস্থা করিরাছিলেন। প্রস্থেব ক্ষেক ছলে দেবা বার, "অম্বন্ধ গেনি গরিষ্ঠ কৃষ্ণানক্ষাগমবাদীশেন স্কুত্তপ্রসারে সর্কাং লিখিত্ব" (পৃ. ১০৪), "অম্বন্ধ গেনি ক্ষানক্ষাগমবাদীশেন স্কুত্তপ্রসারপ্রছে লিখিতা" (পৃ. ১৪৩), ইত্যাদি। ইত্য

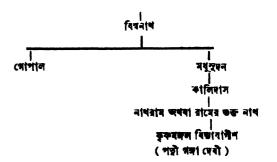
হইতে জানা যাব বে, তল্লগার-রচরিতা ক্লানন্দ প্রাণতোষ্ণীকার রারতোষণের কনৈত পূর্বাপুরুষ । কিছ কোন কোন কেরে উত্তরের সন্দর্ক লাই করিলা বলা হইরাছে, "জনদতাতিবৃদ্ধ প্রণিতান্নহ কুনানন্দাগরবাদীশেন তল্লগারে লিবিতে" (পৃ. ১১৬) "তন্মহতাতিবৃদ্ধ প্রণিতান্নহ সন্ধ্যরগোধী গরিত্ত কুনানন্দাগরবাদীল ভটাচার্ট্যেঃ হকুতভন্তলারে লিবিতন্ত্" (পৃ. ৭৫), ইত্যাদি । স্ক্তরাং কুনানন্দ রামতোষণকে কুনানন্দের "অতি-ল্বভ-রুক্রেণিতান্ত" বিলেন, অর্থাং রামতোষণকে কুনানন্দের "অতি-ল্বভ-রুক্রেণােল" বলিতে হইবে, কেবল্লাল "বৃদ্ধেণােল" নহে । হরং, পিতা, পিতান্নর, প্রণিতান্নর, বৃদ্ধ্যপিতান্নহ, অত্যতিবৃদ্ধাণিতান্নই, প্রদ্ধাণিতান্নই, প্রত্যতিবৃদ্ধাণিতান্নই, প্রত্যতিবৃদ্ধাণিতান্নই, প্রদ্ধাণিতান্নই, প্রত্যতিবৃদ্ধাণিতান্নই, প্রনাধানার ক্লানন্দ রামতোব্যবাদ উর্ভ্রুতন সন্ধ্যপুরুষ হিলেন । প্রাণতোন্নীর একস্থলে (পৃ. ১৪৬) একটি বিভ্রুত বংশগতিকার উভরের সন্দর্ক আরও পরিদ্যানরশ্রণে দেখাল হইরাছে ।

"বীৰাৰ্ গ্ৰীৰাৰ্ ভূবৰ বিধিত ভৱসায়ত কৰা।
কলানকোজনি ভূবি নবৰীপ্ৰেশগ্ৰহীপ: ।
কালীনাধো ভবদিহ স্তভত সাৱাৰলীকং।
বিবান্ নাভ্যোক্ষনি ভদক্ৰো বিশ্বনাধান্তবাভ: ।
গোপালো নিৰ্ণৱন্ধতি বলৰী মধ্যে: স্বলাভা ( স্বনশ্বা )
ভূতাং পূলো নব্স্ত ইত: কালিলাল: প্ৰসিদ্ধ: ।
তং পূলোভূত্ৰব্যপয়ে! নাৰ একাভবৃদ্ধি—
ভংস্কৃতাভব্যিক সুধীৰ্ম্বল: কৃষ্ণ পূৰ্মা: ।
গ্ৰীকৃত্ৰন্বলহতা নববন্ধিকাৰা:
গ্ৰীয়ানভোৱৰ ইকং কৃতবান্ বিভীয়ন্।" ইত্যাদি ।
ত বংশলভা এবং পূৰ্বোন্ধিতি বিশ্ববাদি ক্ইতে কৃষ্ণান্ত

আরাবভোষণ হবং ফুডবান বিভারন্।" হত্যাদ।
উদ্ধৃত বংশসভা এবং পূর্বোদ্লিবিত বিবরণাদি হইতে কুফানন্দ আগনবাসীশ এবং রাবভোষণ বিভাসভাবের নিরোদ্ধৃত বংশ-সভিকা প্রভৃত হইতে পারে।

তত্ৰদাৰ বচৰিতা নৰ্বীপ্ৰাসী কুকানক আগমবাদীল

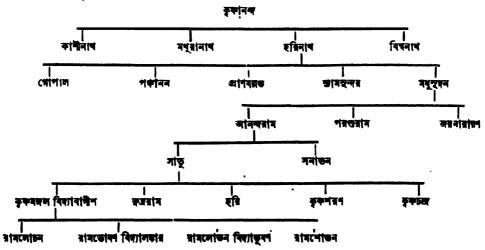




ৰাখবাগপ্ৰদীপিকা রচরিতা রামলোচন বিভাতৃৰণ

প্রাণতোব**ণী** রচরিতা রামতোবণ বিদ্যাল**ভা**র

নগেজনাৰ বহু ভণীয় এছে (পৃ. ১৬১) মঙলজানীয় বৈজ্ঞখংশের বে লভিন্দা প্রকাশ করিয়াছেন, উহার সহিত প্রাণভোষণী হইতে উদ্ধভ বংশলভার কিছু কিছু পার্থক্য আছে। এ বিষয়ে প্রাণভোষণীয় প্রারাণ্য অবিক হইলেও ভূলনার অভ আমরা বহু মহাশরের প্রকাশিত বংশলভিকার কির্দংশ উদ্ধভ করিলার। পাঠকেরা লক্ষ্য করিবেদ বে, নামঙলি অবিকাংশই বৈক্ষৰ এবং সম্পূৰ্ণরূপে শাক্ত প্রভাববৃদ্ধিত।



যাহা হক, ভল্লসাররচরিতা কুফানক প্রাণভোষণীকার ৱাৰভোৰণের উৰ্ব্ভন সপ্তম পুরুষ ছিলেন, ভাছাভে সন্দেহের অবকাশ নাই। এইৱণ ক্ষেত্ৰে ঐতিহাসিকগণ পঁচিশ বংসৱে এক পুরুষ গণনা করিয়া থাকেন। স্বভরাং কুঞানব্দের আবির্ভাব কাল ৱাৰভোষণের প্রায় দেছ শত বংগর পূর্ববর্তী। রাম-ভোষণের প্রাণভোষণী (পৃ: ৩) "শাকে নেত্রগুগান্তিকাঞ্চণিমিতে खौरक क्याबाखिर्या" वर्षार ১৭৪२ मकारश्व (১৮२० वैडेस्क्व) অক্ষা ( সম্ভবতঃ অক্ষ তৃতীয়া ) ভিৰিতে সমাপ্ত হইয়াহিল। अञ्चामि ১৮२৪ देशेएसव ১७३ नरवश्व चर्चार वारमा ১२०১ সালের ২১লে কার্ত্তিক ভারিবের কিরংকাল পূর্ব্বে বৃদ্রিভ ও প্ৰকাশিত হয়। ( এইজ ব্ৰক্ষেমাৰ বন্যোপাৰ্যায় কৃত সংবাদপত্তে সেকালের কৰা, প্রবন্ধ বত, ৬০ পূঠার ঐতারিবের সমাচার দর্গণের মন্তব্য এইব্য । ) রামভোষণের প্রাণভোষণ ১৮২০ উটোকে বচিত হইলে, ভদীয় উৰ্ত্তন সপ্তন পুরুষ ক্ষা-নম্পের ভব্রসার ঐ সময়ের দেছ শত বংসর পুর্বের অর্থাৎ ১৬৭০ ইটান্বের নিকটবর্তী কোন সময়ে রচিত হইরাছিল।

বঙ্গবাসী সংস্করণ ভরসারের ভূমিকার ধর্মীর পঞ্চানন ভর্ক-রত্ব মহালয় সিধিয়াছেন যে, ঐ সংস্করণের পাঠ নিরূপণের কচ

বুলাকোড় সংস্কৃত কলেকের অধ্যাপক পণ্ডিত হরিপদ স্বৃতিতীর্ণ ষ্ট্ৰাশ্যের নিকট হইতে ভন্তসায়ের একধানি প্রাচীন পুরি गरश्रीण **एरेबाहिल , উरांव अञ्**लिबंटमंब छातिबं ১৫৮० मकाय वर्गार २७१४ बेडीय। এই উक्ति गडा स्ट्रेल, यस कता यात्र (य. कुकानत्मत (योवत्म मखन्म मखासीत मगुणादन তথ্যার এছবানি রচিত হইয়াছিল এবং স্কৃতিতীর্ণ মহাশ্রের পুৰিধানি এছকারের জীবভগাতেই অনুলিধিত হইয়াছিল। কিছ পুৰিবানির অনুসিশির ভারিব প্রকৃতপক্ষে ১৫৮০ প্রকাশ किनां, त्म विश्वतः मिःमत्मर रखता औताकन। के श्रवित সহিত সংশ্লিষ্ট কেছ যদি আমাকে উহা পত্ৰীকা করিবার প্রযোগ দেন ভবে অত্যন্ত উপকৃত হইব। কৃষ্ণানন্দ আগমবাদীশের আবিষ্ঠাৰকাল নিৰ্ণয়সম্পৰ্কে যদি কাহায়ও কিছু ৰলিবায় থাকে তবে উহা আমাকে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের ট্রকানার জানাইবেন, এই অমুরোধ করি। উল্লিখিত পুবি-ৰানির ভারিবের পাঠে বা ব্যাখ্যার ত্রুট থাকা অসম্ভব না হইতে পারে: কিন্তু পুনানব্দের ভন্তপার এছবানি বে সপ্তদশ শতাখীর দিতীয়ার্কে রচিত হইয়াছিল, সে বিধরে কোন जिल्ला चार्य विज्ञा मान रह ना।

## মুক্তি-ঘোষণার দিনে অঞ্চ ঝরে

#### প্রীঅপূর্বকৃষ্ণ ভট্টাচার্য্য

নেখসুক্ত মহে আৰু ভারতের ভাগ্যাকাশ

নব বোষণার।
উদয়াচন্দের পথে খাবান ছর্ব্যের শিবা বৌন রান হেরি
বিখণ্ডিত বদেশের বাত্রীদল ভেবেছ কি ?

চলেছ কোবার!
সাবীনভা এলো বটে: তারি সাবে ইতিহাস
দীর্ঘান লয়ে
অতীতের বিভীবিদা দক্ষ্যভার নিষ্টুরভা-ম্বৃতি আনে বরে।

অসত্যের পৃঞ্জীপ্ত জন্ধাদের পৃতিগৰ

হরেছে হংসহ।
বৈরজরী সভ্যতার দলকেন্দ্রী-পথাচার এ বোর প্রান্তরে!
জীবনের নহীরুহ জনার হরেছে বন্ধু,
পূল্পগুৰহ
নাহি আন। ওঠে বড়, মুক্তি-বোষণার দিনে জল্ল বারে।
আসরুক্র হিমাচল ভাল করে দেখিবারে
দৃষ্টিদীপ খালো,
শেষ আলিদন করি এন বেধে বেধে চেকে—

যাৰ মুক্তি আলো।

হুশে। বছরের পরে ভেবেছিল্পাবে। কিরে গভ বর্ণ রূগ।

নিরাশার নদীকৃলে চিভাবহ্নি—হম্ম দ্বেধ সমান্দ সংগারে ; এবনো সীভার অঞ্চ অশোক কামনে বতে

ভেঙে যাৰ বুক।

এবনো পাঞ্চালী কাঁদে, অন্তর কাঁপিখা ওঠে অন্তর বহারে। যে আন্তিবিলাগ নেতৃত্বের দেবে গেলু মোর গোধ্লি লগনে, ভারি পরিণাম কহি যদি, মোরে কি করিবে ক্ষমা মুক্ত মনে ?

ছ্র দীমান্তের পারে একবার চেয়ে থেকে।
বন ক্বফ মেব,
বিব্যাচন মতে ওঠে গৃক্টির তপে।তকে
কে রোবিবে বেগ !
কে ভাবে কবন এই অর্ডভর মাতৃত্যি রবক্ষেত্র হবে,
লাভি নাই সাম্রভিক হে বাবীন বন্ধু মোর মুক্তির উৎসবে।

## পাকিস্থানে হিন্দুদের মানুষের মত বাঁচিবার উপায়

#### 🗃 রঞ্জনকুমার দত্ত

নোরাবালিতে গভ ১৯৪৬-এর **অক্টোবর-দাদার পর বেকে** विकास अनाकात रिकृत्वत मत्या कांच कता राष्ट्र--- ध्रधानणः পুনর্বসভির কাজ। এই কাজ করতে সিরে দেখা যায় বে, াহস্বের মনোবল এমনভাবে ভেঙে পড়েছে বে সরকার ভাগের ৰাড়ীবর, আসবাবপত্র প্রভৃতির করে অর্থসাহার্য করলেও প্রামে বাস করার মৃদ্দ সাইস তাছের মেই। মুসলমানাভয় ব্দলাতক্ষের ভার প্রত্যেক হিন্দুর মনে ব্যাধির রূপ নিরেছে। भन्नीरभवकरमञ्ज कारक अहे व्यवशा व्यक्तिमञ्ज त्रवनामाञ्चक मरन হয়। তারা চিভিত ও শহিত হয়ে পড়েম। পুনর্বসভির সকল চেষ্টাই ব্যৰ্বভাষ পৰ্ববসিভ হওৱার সম্ভাবনা দেখা দেৱ। লোকে বৃহনির্বাণের অভে টাকা পার, আসবাবপত্র বা ব্যবসারের **মতেও পার. কিন্তু শেষ পর্যন্ত তারা বাছভিটা হেড়ে শহর বা শভত চলে যায়: দেশের বাড়ীতে বে বসবাস করবে বা কর্মন** वनवान कराज भारत अ जाएक मत्म शान भार मा. भरवर्जी-কালেও ভি: সপ্রাধারে ব্যবহারে এমন আখাস ভারা পারনি ৰাতে তাৰের উপর তারা আরা স্থাপন করতে পারে। बरे चरशाय आभवागीत्क आस्मरे किवित्य चाना ७ वाकीयव তৈত্রি করে বাস করতে বলা পরিছাসের বিষয় হতে ছাভার।

তাই বহিরাগত ও হানীর লেবকণল হিন্দুদের মধ্যে বাতে সাহদের সঞ্চার হর এবং হিন্দু-মুসলমানের মধ্যে প্রীতির সম্পর্ক মাতে পুনঃপ্রতিষ্টিত হর সেই উদ্দেশ্তে একাঞ্রচিতে কর্মে প্রয়ন্ত হন। বিশ্বের সাহস ও মনোবল কিরিয়ে আনার দিকেই বেশী জোর দেওরা হর। বিশেষ করে গাড়ী-ক্যাম্পের অবীনে যতগুলি কেন্দ্র বিশ্বের আলার বিভিন্ন হানে আছে সেওলোর মারকতে এই সম্বন্ধকে কার্মে পরিশত করবার ছবে ব্যাপক কর্মপ্রচেষ্টা ত্বক হয়। কিন্তু প্রতিক্ষেত্রই কর্মীদের নানা প্রতিবন্ধকতার সম্বনীন হতে হয়।

এতকাল অবও বাংলার অবিবাসী ছিলাবে গণ্য ছিল পূর্ব-বন্ধের হিন্দুরা। সংব্যার লয় হলেও হিন্দুরানের অবিবাসী বলে ভারা নিজেমের ভতটা অলহার বলে মনে করে নি। কিছ আজ ত পূর্বক পাকিভানের অভতু জ। প্রত্যেক হিন্দুর মনে আজ প্রশ্ন পোকিভানের অভতু জ। প্রত্যেক হিন্দুর মনে আজ প্রশ্ন কেপেছে ভারা কি এবানেই বাকবে, না আর কোবাও বাবে ? ভালের মাহবের মত বাঁচবার উপার কি ? ভালের উপার ভবিয়তে যদি পাকিভান-সরকার পীক্ষাও ছ্র্বব্যহার করে ভবে প্রতিবিধানের উপারই বা কি ?

এ সকল প্রয়ের ক্ষাবও লোকা। কিছ বে পথ কংগ্রেস এতকাল বেবিরে এসেছে লে পথে চলতে আক অনেকের বনে হিথা কাগছে। যুসলিব লীগের সর্বাধিনারক বিঃ ক্ষিয়ার উক্তিতে এই বারণা আমাবের বনে বছর্ল হয় যে পাকিভানের লাসন, সংস্কৃতি ও শিক্ষানীতি ইস্লামিক ধর্মের ভিত্তিতেই প্রিচালিত হবে। সংব্যালযুক্তের কার্যক্ষার বে আবাল দেওবা হরেছে, সে নিষক ভুৱা হয়ত নর। তবে এর আসল উদ্বেভ হ'ল রাজনৈতিক স্বার্থাদার এবং মনে হর নিঃ জিরা সেই উদ্বেভই সম্রতি উচ্চরোগে একবা বোষণা করেছেন। নিজ সম্রাধার স্বার্থকে অন্ত্যুপ্রভাবে না দেবলে ভারত বিভালের জন্তে এবন ব্যৱহা হয়ে উঠার আবভকতা ছিল কি ?

সাম্ভাদারিক ভিত্তিতে পুথক নির্বাচন-বাবধার এবং অৰও হিমুদ্ধাতিকে ৰভিত করে বৰ্ণহিন্দু এবং তপদীলী ছিলদের মবো রাখনৈতিক বিভেদ স্ট করার কলে ভায়তবৰ্ষে যে কটল ৱাজনৈতিক পথিছিতির উত্তৰ হয়ে-দ্বিল ভারই পরিবভি পাকিতান। ভারতীয় ইউনিয়ন হতে বিদিয়ে হওয়ার ছুর্ডাগ্য পাকিস্তানের হিন্দুরা মদি এড়াতে ইচ্ছা করে ওবে অন্তিবিগ্রে উদার হিন্দু-বর্মের ছায়াতলে সকল ছিলুকে ঐক্যবদ্ধ হতে ছবে। আছও ঘৰন দেৰি বিশেষ স্থবিধা পাওয়ার কলে আট বছবের পড়ায়া ছেলে আবেদনপত্রে কাভির পরিচয় দিডে "ছিম্মু" ছলে তপদীলী ছিম্মু বা "schedule caste" লিখে নিম্নে আদে, তথ্য বিষ্টাশের ভেদনীতি যে কতদুর কাষ্ক্রী ए सार्ष छ। एक मन (बहनाय करत खर्फ । अरे वसरभन्न (करम --- हिन्दू कि बूजनवान खन्न कदरन वनए जारत न! रव रा बिष्य । यनि यनि, कृषि मुजनमान क नक । केवद २६--- ना । ভবে হিন্দু ত ? না আমৱা "সিভিউপ কাই"। "সিভিউপ काहे" वल काभ वर्ष चार्ष कि ? "ना"। जरव कि (खाशांत वर्ष ? नशांक नक्षां, विकास देवा। দেবদেবীর পূজা কর ত ? ভোমাদের বাড়ীতে মনলাপুলা হর না? হর। হরিসভার নামকীত্ন কর না? করি। ভবে ভ হিন্দু ভোমৱা—হিন্দু ভ ? "হাঁ"।

**এই यে एक्ट्रिय वीम वानक-माम छेंड स्टबार जाए**ड আভে তাই একদিন নহীক্ষতে পরিণত হরে উঠবার সভাবনা चार्छ। छवम "जिक्किन काडे "रे वर्ष रुख रोषार्व। छारे আৰু সৰ্বশ্ৰেণীয়, বিশেষ করে বৰ্ণছিন্দুদের বলব,---বদি মান্তবের মভ বাচতে হয় এবং পাকিভানে হিন্দুবেল বাবভীয় জ্বগত অবিকার বজার রেবে টকে বাক্তে হয় তবে সমীর্ণতা পরিহার करत छेगात ७ अङ्घ रिन्रू २७। अक नार्यक्रमीय रिन्रू गर्यक्र **गणाकाण्या प्रकृत विश्वास प्रमादिक कडा। अक वर्ष, अक वन,** बक बान, बक बाछि बरे चामर्ट चष्ट्रवानिङ एछ। चर्छ ভারভবর্ষকে বভিভ করে বিটিশ প্রব্যেণ্ট বেষ্ট ভারভবাগীর মহা অনিষ্ঠ সাধন করেছে তেমনি হিন্দু সম্প্রধারের শ্রেণী বিভাগ বা ভাতিভেধের প্রযোগ নিয়ে বিশ্বভাতিকে শতধা বিভক্ত করা **शाकिकाय अदकारदाद शरफ अरुक्शाया एरव । हिम्मूकाकि वरि** এঘনিভাবে বছৰা বিভক্ত হয় তবে বীয়ে বীয়ে অনুয়ত সম্ভাৱতে প্ৰাণ করে কেলা ইসলাম ধর্বের পক্ষে অগন্তৰ হবে ৰা। মদে পূৰ্ব-পাকিভাবে বিস্ফাভির অভিত্ব ও বিসূত্ব

বিস্ত হবে। এই বচ বাতবের সমূবীন হওরা আনাদের পক্তে অনিবার্ব হরে ইচচাবে যদি না হিন্দু সমাজকে অচিয়ে অস্প্রতার অভিনাপ থেকে যুক্ত করা বার।

মনে হরেছিল নোরাবালির হিন্দুরা আবাতের ভেতর দিরে এবন একটা শক্তি লাভ করবে বে বাংলার অপরাপর জেলার হিন্দুবের কাছে তা আদর্শ-বরপ হরে ইাড়াবে। কিছু সো
আশা আছু ব্যর্থ হতে চলেছে। নোরাবালির হিন্দু আছু
সকল দিক বিরেই রিচ্ছ হতে চলেছে। দালার বা হবার
তা ভ হরেছে; নে অপ্রথম ছতির পরিমাশ করা সম্ভব নর।
ওলিকে আবার ভারতীর ইউনিরন হতেও তারা বিছিন্ন
হরে পর্কল। ভারতের জাতীর আন্দোলনে প্র্ব-বাংলার
অবদান নেহাং কম নর। কিছু তা সম্ভেও অনুষ্ঠচক্রে আছু
তারা বাবীন ভারতবর্ষের অবিবাসী হবার অবিকার বেকে
বিক্তিত্ব গুনু কিছু ভবু এতেই ত শেষ নর।

আৰও প্ৰাক্ষণ, কায়ৰ ইত্যাদি বৰ্ণহিন্দুৱা তথাকৰিত অনুযুত হিন্দুদের প্রতি যে অবজা ও তাহ্হিল্যের ভাব পোষণ করে তা चलाच निवासायक ७ चांचांत्रमामधाकतः। करत्वरमत ब्रोटहोत ভারতের এবং সকল ভারতবাসীর মধ্যে আত্মর্যাদাবোর আৰু ৰাঞ্জত হয়ে উঠেছে। আৰও যদি এক শ্ৰেণী ৰূপর শ্ৰেণকৈ ছোট মনে ক'রে দাবিরে রাণতে চেটা করে তবে লে সুচভার তুলদা হয় না। স্বাধীনতা লাভের ভঙে এত যে আন্দোলন, এত যে ছঃব্যরণ অনেক বেদনার মধ্য দিয়ে আৰু ভা সাৰ্থক হতে চলেছে। সেই বাৰীনভাকে যদি স্বানী-ভাবে রকা করতে হর তবে উচ্চ বর্ণছের অভিযান পরি-ত্যার করে এক-ছাতীরভার আদর্শে উচ্ছ হতে হবে। সাম্যের ভিত্তিতে ভেদবৈব্যাহীন সমাজতপ্রবাদের প্রতিষ্ঠা ও প্রসারের ভক্ত সকলকে উড়োর হতে হবে। প্রথম সেই দিকেই বুঁকছে। আৰু যদি বৰ্ণকৌলিন্যের যোকে সমাৰের যারা মেরুদও ভাদেরই অবজা করা হয়, মাসুষের মর্বাদা ৰেকে ভাষেত্ৰই ৰঞ্চিত করা হয় ভবে এর পরিণাম এক দিন বিষয়ত্ব হবে উঠবে। সম্প্ৰ পুৰিবীতে আৰু ৰদভগ্ৰবাদের नवारि-बह्मात चार्याच्य हन्दर । এই বিবর্ত स्कारन বিভ্ৰণালী ও অভিভাত-সম্প্ৰদাৰের আৰু বুগবৰ্ষকে খীকার করে নিভে হবে। ভারতের দারিল্রা অপরিসীন। যার। সমাৰ ও বেশের বেরুদওখরণ সেই ভবাকবিত নীচশ্রেণীর অবিভাংশই দারিপ্রাপীড়িত। কিছ ওরাই পেট ভরে বেডে भाव मां, भवरन अस्पवरे नव स्मार्ट मां, अवारे माना त्रीक्याव আভানা পার না। এর চেবে শোচনীর অবস্থা আর কি হতে পারে। বে মালী-চুলী, বে কর্মকার, বে মাপিত, বে हर्चकार, य याना, य छाछि ना राम नवाय-कीवन आकराद चहन, छारात चन-चहन वा चण्यं करत तांचात रकान बारन হয় লা। ভাষের সেবা নিভে কুঠা নেই অবচ মান্তবের যোগ্য वर्षाण जाएक एव मा. अ मानावृद्धि नर्पण निक्रमीय।

ইতিমধ্যেই ভবাক্ষিত অনুমত সম্প্রদারের মধ্যে ভাগরণের আভাস পরিলক্ষিত হচ্ছে। বিভ্নালী এবং বর্ণভিনানীবের অত্যাচার আর সহু করতে বে তারা রাজী নর তার প্রমাণ পাওরা বাছে। তাদের পুরু আরসন্মানবোধ আৰু ভারত হয়ে উঠেছে এখন করেকট দৃষ্টান্ত নোরাধালীতে দেবলাম। এবানে অনুমত শ্রেষীর লোকেরা বর্ণহিন্দুদের আচরণে ক্ষ বরে বর্ষকট নীতি' অবলয়ন করেছে। এর ফল ধ্ব রারান্মন। একে তো এবানে মুসলমানেরা হিন্দুদের সলে সক্ষ প্রভার সহবোগিতা বর্জন করেছে, তার উপর অবজ্ঞাত ও উপেন্দিত—ভবাক্ষিত নীচপ্রেরীর হিন্দুরাও বদি আখাত পেরে বর্জন-নীতি প্রহণ করে তথন বর্ণহিন্দদের বর্ণভিনান কোবার বাকে ?

গাঙীলী প্রেমের পথ দেখিবেছেন। তিনি বিভলালী ও অভিনাত-সম্প্রদারকে অন্তরত অল্পৃত দীন দরিয়ের সেবার অরসর হতে বলেছেন, কিছ গাঙীলীর নির্দেশিত পথে বনাচ্য থা বণহিন্দুরা বন ও বণাভিষান ত্যাগ করে দরিস্ত এবং অল্পৃত্ত-দের সদ্দে হাত মিলিরেছেন এবন উদাহরণ আনাদের সামনে কম। এর্গ নিশীভিত, শোষিত ও লাছিতদের আগরণের বুগ। আৰু যদি অভিনাত-সম্প্রদার গাঙীলীর নির্দেশিত প্রেমের বাণী অন্তর্গর না করেন তবে তাদের পরিণতি কি হবে তাকেই বলতে পারে না।

वर्गाक ७ वनवर्षेमदेवध्या वर्णाच्ये नमारक छक्तनश्रुष्टव বিভেদ আৰু শিক্ত গেড়ে ৰসেছে। বিভেদ দুৱীকরণের পথে প্ৰধাৰ বাবা আগতে বিভাগালীদের কাভ খেকেই। এক বর্ণেরই মধ্যে বিভগ্রাবাত বশত একে অপথকে ছেব জান করে আসছে এমন দুটাভ বিয়ল নয়। কাজেই বন-বৈষ্ণ্যবুলক সমাজ ব্যবস্থা य विकास अक अवाम रहतू तम विवास मान्य तारे। এই বৈষম্য দৃর করতে হবে। অভবা দেশ ও জাভির সর্বাদীণ কলাণ নেই। সমাজভানিক বিপ্লবের স্থচনার আর বিলয় নেই। তাই সময় বাকতে বিব্যা বিস্তাভিমান বিসর্জন দিয়ে শ্রেপ্রীন হিন্দুসমাজ গঠন করতে, পাকিভানের হিন্দুদের বিশেষ ভাবে অগুরোধ খানাই। নোরাধালীর হিন্দুরা ভীতিএত হয়ে ভাতে ভাতে পাকিভান-বহিত্তি এলাকার চলে বাছে। ভয় ভো অবৃণক নয়। শাকিখান আয়তে এসেছে ভবুও সম্প্রদারবিশেষের সম্ভোষ নেই। হিন্দুর হিন্দুয়ানী ভাষের আবালবুদ্বনিতা সকলেবই চকুশুল ৷ চুরি, রাহাথানি, ভীতি-क्षप्रमीन त्वाद क्य कार्यम हत्य त्मन । अरहम शांकिन्तारम হিন্দ হাভার কোবার ? প্রত্যেকট বুসলমানের মনোভাব এই বে, হিন্দুরা তাদের স্বাপ্রিত ও কুপাপ্রার্ণী, ভবিষ্যতে ভাদের গোলামি করেই হিন্দুদের পাকিস্তানে পাক্তে হবে এই অবস্থায় খাৰীন ৰাসুষ্টের মুর্বালা নিয়ে বাস করতে ছলে अक्न विकृत्करे जब बक्राब एक्टेव्यमः विजर्कन विद्य अक् হতে হবে। হিন্দুসমান্তকে বৰ্ণবিদীন সম্প্ৰদাৱে পৱিৰত হতে হবে। যে বরণের বর্ণবৈষম্য এবন প্রচলিভ ভা করমই

শাস্ত্ৰসম্পত্ৰ বৰ এবং তা অনকল্যাগৰ্গকও বয়। পাকিতানের হিন্দুরাও সম্বাদে জীবনযাপন কয়তে পারবে কিনা লে সহতে সন্দেহের অবকাশ আহে। এ অবহার হিন্দু-সন্দেশরের মবোকার সকল রক্ষের শ্রেণীভের ও শ্রেণীবৈষরা দুর করে বিশুশক্তিকে সংহত ও সজবদ করতে হবে। নাতঃ পহাঃ বিভতেংহনার।

#### আলোচনা

#### "প্রীহট্ট ও সংস্কৃত সাহিত্য" "প্রস্কৃত্য"

উত্তিখিত ক্ষ প্ৰবাদ (প্ৰবাদী, আবাচ ১৩৫৪, পূ. ৩০১-২) বহ অবৃদক ও অব-প্ৰমাদপূৰ্ণ উচ্চি হানলাভ কৰিছাছে। এণ্ডলিয় সংশোধন আবশুক।

- ( ) त्रवृताच निरवामनि अन्हिनिवामी कि ना. अ विश्रय বিগত অৰ্ক শভাৰী যথে বহু আলোচনা হইরাছে। সাল্রভিক बक्षे संबद्ध ( माहिका-शिव्यन्-शिक्षा, ১७१० वृ. ७-১० ) প্রমাণিত করা হইরাছে বে, শিরোমণি রাচীর শ্রেণী, শুলপাণির হোহিত্ৰ ও ৱাটীৰ বোষাল বংশীৰ মৰ্ছীপ্ৰেটিৰৰ প্ৰৱৰ ভৰ্কবাৰী-শের পূর্বপুরুষ ছিলেন। ঞ্রীষ্টের কতিপর বাঞ্চির চক্রান্তে ১৩১০ সম হইতে শিরোমণির উপর ঞীহটের দাবি প্রচারিত হয়। বর্ডবানে এই অবুলক দাবি সম্পূর্ণ রূপে পরিভ্যাগ করা উচিভ। অব্যাপক দাস মহাশয় পূৰ্বোঞ্চ প্ৰবৰোদ্ধিতি প্ৰমাণাৰসীয় বিশ্লতে নুভন কোন তথ্য আবিদার করিয়া থাকিলে ভাষা क्षमा करूम । क्षवरक निर्वावनिव 35B मैकाव मारमारहर আহে, ভৰব্যে অধুবানৰভগীবিভি ও অগুবানচিভাৰণি দীবিভি অভিন্ন। বৌৰষূপ ব্যাব্যা ও প্ৰামাণ্য ( বাদ ) দীৰিভি ব্যতীভ বাকী সব কমটই অনুমানদীবিভিত্র অন্তর্ভূত পরিছেদ বাত্র, পুৰক দীকাঞ্জ নহে। বৌদসূদ ব্যাৰ্যা অৰ্থৎ অভিহুৰ্নত चाष्ठकृतित्वक शैविणिय পृषि वश्वण्ये औरहे जारिका-পরিখদে সংগ্ৰীত ঘটৱাৰে কি ?
- (২) কাব্যপ্রকাশ (ও সাহিত্যদর্গবের) স্থাসিও
  দীকাকার বহেশর ভারালভার ঐহইনিবাসী নহেন। উভর
  দীকাই বাংলার দর্মক্র এবং বাংলার বাহিরেও প্রচারলাভ করিবাহিল। ঐহই অকলে প্রচলিত "প্রদীশ" নামক কতিগর
  শুতি প্রহের রচরিতা বহেশর সম্পূর্ণ পৃথক ব্যক্তি। তাঁহার
  "প্রদীশ"-প্রহের কোন নির্ভর্যোগ্য বিবরণ এখন পর্যাত্ত প্রকাশিত হর নাই। "অটাবিংশতি প্রদীশ" প্রভৃতি অমূলক উভি না করিরা একট্রমাত্র "প্রদীশে"র প্রকৃত বিবরণ পাইলে
  আরাধের কৌতুহল নির্ভ হর।
- (৩) দীবিভিন্ন দীকাকার স্থানিক কগদীপ তর্কালভারের অবস্থান বংশবরণৰ অদ্যাপি নবদীপে সসন্থানে বাস করিতে-হেন এবং তাঁহাদের কুলপরিচরাদি সর্বাজনবিদিত। ইঁহারা "নৈদিল"—নহাপ্রভুল বস্তুল সন্থাতন বিশ্র হুইতেই ইঁহারা

নবৰীপবালী। জগদীশ সমাভনের প্রপৌত্র ছিলেন---তাঁহাকে প্রীহটের লোক বলা আছোঁ সমভ নহে। জগদীশের রচিত প্রহোরেধ-মধ্যেও অনেক তুল আছে।

- (৪) রছুমক্ষন শ্রীষ্ট্টনিবাসী ছিলেন না এবং তাঁহার মৃতও ব্যাপক ভাবে শ্রীষ্ট্টে প্রচলিত নাই। প্রবাদমাত্রেই বিনা বিচারে গ্রহণীয় নহে। 'অঠাবিংশভিভত্তং' তাঁহার অভ-তম প্রস্থ বলায় অপ্রে উদ্লিখিত শুভিতত্বাদি হইতে ভাহা পুরু হুইয়া পড়ে। ভাহা একেবারেই ভূল।
- (৫) ৪০০ বংসর যাবং বাংলার সকলে কানিবা আসিরাহে বে কাঞ্চলজী নিবাসী চৈতভগার্যদ কবিকর্ণপূরের বংশ লোপ পাইরাছে। হঠাং অভ জানিতেরি বে, তাঁহার বংশ এবনও শ্রীহটে বিল্যান। অব্যাপক দাস মহাশর অবিলয়ে এই বংশের ইতিবৃত্ত সংগ্রহ পূর্বক প্রচার করিলে ভাল হয়। "কবিকর্ণপূর" একট উপাবিষাত্র, এই উপাবিসময়িত বছতর ব্যক্তি বাংলার নানাছানে ক্ষপ্রহণ করিরাহেন, সকলেই চৈতভপার্বদ মহেন।

প্ৰবৰ্ণেৰে যে সংক্ৰিও প্ৰথভালিকা প্ৰদত্ত স্ইয়াছে ভাষ্ কি জ্বাস্থ্যারে লিখিত আমরা বুবিলাম না। দিব্যসিংখের বাল্যলীলাহ্ত্রের পরই পর্যাধ সরহতীর বিভাজায়। এই ভালিকামব্যেও কয়েকট অভি উৎকট গাবি করা হইরাছে। क्षविद्यात कविदारकत "वाषवणाक्ष्वीत" ज्ञाहीम स्नवकारा. ইছা দান্দিণাত্যের কাদখরাজবংশীর রাজা কামদেবের সভার লিখিত হইরাছিল বলিয়া প্রসিদ্ধি আছে। ঞ্জীহটের সংলগ্ন ক্ষভিয়ার দাবি এছলে বুণাক্ষভায়দারাও সমর্থন করা বার না। খার্ভ ভটাচার্ব্য রব্নক্ষের খলকালপরবর্তী গোপাল (কুলাপি রাষগোপাল বলিরা লেবা নাই) ভারপঞ্চান্দের "নির্বর" এছসমূহ বিশিলাদিদেশেও প্রচারলাভ করিরাহিল। তিনি এইটের এক অধ্যাত পদ্ধীতে অবিহাহিলেন, ইহা নিভাতই निष्यमान छेकि । वानिशाहरकत बहारक नकानरमत "नारना-ভাষ্য" বিভান্তই এক অভিনৰ আবিদান, বিনা আলোচনার ইহার অভিত খীকার করা যার না। উক্ত পঞ্চাননের नवरत नारवापर्नरमय पर्वनेपार्वम , वकरवरन लाभ भारेबादिन । ত্রীহটে বহ পভিতৰংশ হিল এবং এবনও আছে। ভাঁহাবের রচিত সংস্থতগ্রহারির বিষয়ণ কটসাধ্য বিজ্ঞানসম্বত গবেষণা वावा गंरवर कवा जारकक।

# বিশ্লেষণী মনোবিজ্ঞানের মূলসূত্র

#### **ব্রিঅনিলকু**মার বন্দ্যোপাধ্যায়

विद्मवन प्रमाविकाम यमाण भाराविकारमञ्ज व वित्नव মতবাষ্ট বোৰাত ভার প্রবর্ত্তক হলেন সুইস চিকিংসক त्रि. चि. देश् ( C. (7. Jung )। ১৮१৫ नारनव २७७ क्नारे पूरेकारनार्थ अँद क्य एत। अध्य देनि भनः नशैकार (Psycho-analysis) व्यवक् निनमूच क्रायक-अब नाम একবোগে কাজ করতে থাকেন, কিছ অল কিছুদিনের মবোই তিনি নিজেকে ক্লয়েডের বেকে বিচ্ছিত্ব করে নিরে আলেন ও ক্রয়েডের মন:সমীকা বেকে নিজের মতবাদের পাৰ্ক্য নিৰ্দেশ কথাৰ ক্ষ ভাৱ নাম দেন 'বিশ্লেষৰী মনো-বিজ্ঞান' (Analytical Psychology ) ৷ জ্ৰুৰেড তাঁৱ মতবাদে মাহুষের যৌন প্রবৃত্তির উপর ধুব বেশী গুরুত্ব আরোপ करबहिलम। अभन कि, वना याए भारत या, मानव-कीवरमत मूरन जिनि अरे अक रवीन-धवृष्टि जिन्न जात किहूरे দেৰতে পান নি। মাফুষের যা কিছু আচরণ-ব্যবহার, আশা-चाकाका-- छ। नवरे अरे श्रद्धित वशास्त्र माता। क्रिक ইয়ং এ মতবাদকে মনে করেন নিভাপ একাদেশদর্শী, তাই প্রয়েছের সদে তিনি একমত হতে পারলেন না। কলে বাৰীনভাবে গবেষণা ও পরীকা করে তিনি তার বিপ্লেষণী ৰনোবিজ্ঞান গড়ে তুললেন।

বিশ্লেষ্ট মনোধিজানের সর্বপ্রথম খীকৃতি হ'ল আছ निवारिक शाबीन ७ क्षण्य अक मानव चित्र । সমগ্र छैनविश्य শভাৰীটাকে বলা বেতে পারে বিজ্ঞানের হব। প্রাঞ্জিক विकास ७ क्विविकासित सर्व सर्व सर्वश्री ७ व्यक्तिकारत त्रहे যুগের মন বিশ্বিত ও মুখ হয়ে গিমেছিল এবং মাগুৰের किया अछ रवनी পরিষাণে এই বিজ্ঞানের হারা প্রভাবাহিত হরে প'ছেছিল বে, বা কিছুই তার পরীক্ষাগার ও ইলিবার-ভূতির বাইরে ভাকেই সে অধীকার করল। এই আভীর এক অখীকৃতি হিল মন সম্বন্ধে। কলে সে-মুগের মনোবিজ্ঞান अक्रुष्टभाष्ट्र (वर्ष) पिरविष्ट्रम 'नरमारीन मरमाविष्टाम' (Psychology without psyche ) মণে। অৰ্থাং বলা হৱেছিল ষে মনের কোনো বাবীন ও বছন্ত অভিত বেই। মন বা ८०७मा--- कर नवार्यद क्वविक्रिण बनावद बाब । क्वि ইয়ুং একখা মানলেন না। ভিনি বললেন বে. এ খতাছ कन क्या। (कनमा चक्कः बरमारिकारमद क्याब बरमद बख्ड बख्डिय ना (बार छेनांत स्परे। बात खारे विक इत् चर्नार वन वित्र चड निवर्णक चानीम ७ चछत्र रव छर এটাও মান্তে হবে বে অভবেহের নলে ভার বে সখন ভা व्यविद्यास वह । वर्गार वन देवर्गाकिक (impersonal). अ (व-कारमा जांजा वित्मत्वत्र जांबर्डिंव (objective)।

चार्यात्मव मत्या बार्य भारत अयम चाकुछि एस्या एव वारक क्लामा क्रेकारत प्रथम करावे चार्बाएक शक्क नव्यव व्यव থঠে না। যম বারাপ হলে ইল্লেখ্ড ভাকে আম্রা ভাল করে কেলভে পারি না ; বা খপ্রের মধ্যে কি দেবভে চাই আর কি চাই না, ভার ধারা প্রকৃত স্থকে আমরা নির্দ্ধিত করতে পারি না। অভিশর বৃদ্ধিমান এবং জানী ব্যক্তির মধ্যেও भवास भवास अवन अरू जानिहै जान ( obsessed thought ) ৰেবা বাব বাকে বৃক্তিতৰ্ক বিচার- কোনো **কিছ**ৰ বাবাই দূর করা তার পক্ষে সম্ভব হয়ে ওঠে না। এই সমস্ভ থেকে বুৰা যাবে যে, ৰবের উপর প্রকৃতপক্ষে আমানের কোনো হাত নেই। এ কৰাটা আরও বিলেষ করে সভা এইকছ যে আমাদের কীবন অচেতনার ধারা এভ বে**নী** পরিষাণে পরিচালিত হরে বাকে বা আমরা সাবারণতঃ বারণা করতে পারি না। আদিম খাহুষ এই সভ্যট জান্ত। আলু ভার কাছে ছিল নিজের বাইরে বঙ্গত কোনো অভিত্ব, যার দলে দে কথা বলতে পারত। এই দুঠাত উল্লেখ করে हेबुर वलटबन, निक चिट्टिय नाहेट्य चायाय वाचय অভিত্রের যে বারণা আদিম মাসুষ করেছিল ভার বিরুদ্ধে সমর্থনযোগ্য কোনো হস্তি নেই। আত্মার বদি অন্যনিরপেক বাভব অভিত থাকে, এবং আমাধের সচেতন কাভকর্ম যদি ভারই দ্বারা পরিচাপিত হয়, তবে আর একটা সিদ্বান্ত नक्षके अरम शक्ष (व. (म-रे आवारकत कीवरमत पून केश्म । প্ৰহুত পক্ষে ইয়ুং সেই কৰাই বলেন। অভিজ্ঞতা বেকে দেবা যায় যে, 'আমি' ভাব বা আছু-চেডমা কৰ নেয় অচেতনার ভিতর থিরে। ছোট শিশুর জীবনে কোনো আলুচেতনার সদান পাওয়া যায় না : এবং সেইজন্যই হোট (वनाव पुष्टि बार्क मा। छा इरन क्षत्र अहे रव, चामारस्व বৃদ্ধি ইত্যাদি আসে কোৰা বেকে ? আমাধের উৎসাহ, (बार्गा, केरकमा रेकापित मूनरे ना कि ? जापि नामरनता चाचात मरवारे चीवरवत मम्ह देश बूँक शिवादिन, अवर अवेषकरे छाएक कार्य जाना ७ कीवन अक । अब त्यरक विक बर्ग कर्ता एवं रेंग आया अवद ७ मार्चल, छ। एक छवा-कविक जावृतिक जगरक रवरका नामात्रका राजकव वर्ग रहत । किन्न देशूर-अब मारा अ कन्नमारा प्र तिभी कृत एरव मा। (क्नमा चाचा मार्टिव छैनव धमन धक्छा किहू वा नावावरनव वाहेरव । अन्ताना बाद भवहे किह शतियां प्रधान प्रविकात করে ব্যাপুত থাকে। কিছ আছাকে কোনো হাবেই পাওৱা বাবে বা। সে বেশাতীত। ববের জিরাসমূহকে বেহের কোনো कारमा चारम नीमानक गरन निर्मिष्ठ क्यांच (localisation of psychic functions) চেটা করা হবেছে: কিছ তা প্রতিবারেই ব্যূপ হরেছে। তা বাদে মনের সহছে কোন্ বিশেষণ প্ররোগ করা বেতে পারে ? সে কি ক্ষ, রুহং, ক্ষ, ভুল, ভারী, ভরল, সরল, রুডাকার অথবা অভ কিছু ?

অবশ্য মনের অভিত্ব তীকার করলেই সমন্ত সমস্রাট সহত হয়ে বেতে পারে। কিছ তা আবাদের পঞ্চে সম্ভব নর। কিছু একটা যে আছে এ কথা অধীকার করা চলে না। মন বদি দেশাভীভ হয় ভাহলে ভার অবহব ৰাকাও সম্ভব নৱ এবং যাৱ কোনো অবরব নেই যে দেশাতীত ও নিৱাকার তার বৃত্যু নেই। আর যা অবস্থ ভা অনাদি। অনাদি না হলে অনত নিজেই যুক্তির দিক বেকে সীমাৰত হয়ে পড়ে। তা হলে বলা অসমত হবে না বে, ৰাশ্য ভার নিজ 'আমি' সথৰে সচেভন হ্বার জনেক चार्त्र (बरकरे---(भरे 'मन' वर्जभाग बार्क। अवर (य ममद সাম্বিক ভাবে আমাদের সচেত্রতা দুগু হয় তথনও সেই মন সম্পূৰ্ণ সক্ৰিয় থাকে। বেষন সপ্ত। এর থেকে আমরা আর একটা কথা বুরভে পারি। আগের কালে 'মন'কে অতি উচ্চত্তান দেওৱা হয়েছিল, এবং সেই সময়কার সভ্যভার 'वक्ष' ७ 'मृष्टे' ( vision )-एक ब्यादनंत छिरम वटन मटन करा হ'ত। তার কারণ সেই সমরে লোকে মনের এই সভা**ট** উপলব্ধি কৰেছিল। এই জাভীয় যুক্তি খেকে ইয়ুং মনো-विकारन मध्य चित्र श्रीकाद करत निर्मन । वम्मन रा यानिकात्मत चालाहमा कदन चपह मामत क्या कार्या অভিত্ব ও ক্রিয়াগছতি অসীকার করব, এ অতি হাস্তকর প্রভাব। কলে মনের অনগাঁকার খাবীন বভন্ত অভিভের ভিভিতে ইয়ুং তার বিলেষ্ট্র মনোবিজ্ঞান গড়ে ভুললেন: ও ভার ভার এক নাম দিলেন 'মনোমর মনোবিজ্ঞান' (psychology with psyche)। हेब्र-बद मरनाविकान छाहे बहे मरमबरे चारणांच्या ।

'যন' কথাট ইছং এক বিলেষ অর্থে ব্যবহার করেছেন।
প্রচলিত অর্থে, 'যন' বলতে আমরা 'চেতন'-যনকে বুবে থাকি।
কিছ ইছং নন কথাট ব্যবহার করলেন চেতন ও অচেতন
এই ছরের সমষ্টকে নিরে। অর্থাং তার মতে মনের ছট অংশ
— চেতন ও অচেতন। অচেতন অংশের আবার ছট বিভাগ
বা তর আছে: (১) ব্যক্তিগত অচেতন, (২) সমষ্টিগত
অচেতন। সমগ্র অচেতন মনকে যতদূর পর্যন্ত চেটা হারা—
চেতনার ভরে নিরে আসা বেতে পারে, ততদূর পর্যন্ত হ'ল
প্রবম্ম ভরের সীমানা। হিতীর তর আরম্ভ হ'ল ঠিক তার
পর বেকেই। মনের এ অংশের বে-সমত বিষর তা আবারের
ব্যক্তিগত জীবনের নর। আধিকাল বেকে প্রেবাস্করের সঞ্চিত
হরে হরে এরা আবারের ব্রের সঞ্চারিত হরে থাকে। এই
পুরুষাত্রকবিতা পৃথিবীর সর্বজীবের ব্রেরই বেণা বার, ও
সেই-ই প্রত্যেক ব্যক্তিগত সনোজীবনের তিতি। অচেতনার

ক্ষ হরেছে চেডনার অনেক আসে এবং এই প্রাথমিক ভয় বেকে জন্ম নেয় নৰ নৰ চেডনা। মানুষের মানসিক জীবন (च क्षशमण: रे महत्त्वमः देशूर-अब महत्व अ शबना छुन। विषयक्रीक शतिकाव करव वृत्राच करण देवूर-अव यरगाविकारम চেতনা ও অচেতনার গঠন ও প্রকৃতি, ও ভাদের পারলারিক সম্বৰ বিষয়ে কিছু আলোচনা করা আবস্তক। ইয়ুং বলেন বে, প্রত্যেক ব্যক্তিত্বীবনের চেতনার মধ্যে বিশেষ চামট বৃত্তি দেৰভে পাওয়া বায়। ভাৱা বৰাক্তমে, চিন্তা, অমুভূভি, সংবেদন ও বোৰি। পরিবর্ত নদীল ও বৃহুত গত বিভিন্ন মান্সিক বৃত্তির অভরালে এরা এছের মূল সরণে সব সময়েই বর্ডমান বাকে বলে এই বৃত্তিগুলি যৌলিক। যে মানসিক বৃত্তির যারা ব্লগৎ সম্বন্ধে আমানের বারণা ক্ষরে ও সেই বারণা বা জ্ঞানের সাহায্যে পারিপার্থিকের সঙ্গে আমরা নিজেদের খাপ থাইরে নিই, সেই হ'ল চিতা। বুভি ও ভার বুজিন হ'ল এর প্রধান যামদও : অমুভূতি হ'ল ঠিক এর বিপরীত। এর মানদত হ'ল বাজি-পভ সুৰ-ছঃৰ বোৰ। চিন্তার মতো অত্মভূতিও বিচার করে ৰগতের। কিছ কোন্ ভিনিস কি পরিমাণে সুধকর অধবা ছঃখকর, এরই ভিভিতে সে কগতের মূল্য নির্ধারণ করে। তবু চিন্তা ও অনুভৃতির মধ্যে একট যিল আছে এই যে, এরা ছু'লনেই লগংকে বুৰভে চার বিশেষ এক মূল্যের দিক থেকে। চিছার পক্ষে নেই মূল্য হ'ল 'সজ্য', ও ভার মানদও হ'ল বৃদ্ধি ও ভার বৃক্তি; আর অর্ভ্তির পক্ষে সে হ'ল সুধকর ও ছংৰকর। মানুষের আচরণে এরা পরশার বিপরীত ধর্মী। चम त्य इंडे वृष्टि-- अश्रवस्य छ त्वावि-- देवुश छारस्य वरमय ব্যব্যক্তিক (irrational) বৃত্তি। কেনশা ভাষের মধ্যে विहादब अवभव (नहें। जावा विहाब करव ना, विस्त्रंश करव না, বা কোনো প্রকার মূল্য নিরুপপের চেষ্টা করে না। ভাষের ক্রিরা শুধু মাত্র প্রভারের মধ্যে সীমাবছ। উপস্থিত বস্তকে क्रिक श्वाश्यकार्य क्षणारवद मांहरद जाना र'न नश्रवस्थाद কাছ। বিষয়ের বাভব সভ্যের পরিচয় আমরা এর কাছ বেকে পাই। বোধিও বিষয়কে প্রভারের গোচরে আনে; किन जांत राष्ट्रिक चरवर-वर्णत वांता भव। अक खेकांत সহত আত্যন্তরীণ বৃটির বারা সে বিবরবত্তর অভবের সর্রপট क्षज्ञक करत । अरे पृष्ठि जश्रवस्थान वरण जरहरून वय-कि পরিবাবে অচেতন। দৃহাত্ত-সর্ব্ধ যে-কোনো একট ঐতিহাসিক वहेमाटक मध्या (यटण शादा। मश्रवमम रम्बर वहेमाहित बुँहिमाहि विभय विवदन । किन्छ वानि के बुँहिमाहि विभय विवस्तर्भक महिरस दार्थ मृत्र पर्डमान्नेस विरम्भ अक्रे पर्य ४ ভাংপৰ্ব অভি সহজেই বুৰে মেৰে। এর থেকে বোৰা বাবে বে, এরাও চিন্তা ও অমৃভূতির মতো পরস্বর বিপরীত ধরী।

বাসুবের বব্যে এই চারট বৃতিই বর্তমান। কিছ ব্যব- । হারিক ক্ষাতে এরা সকলেই একসজে কার্বকরী হর না। ব্যক্তিতেকে এবের বে-কোনো একট অভ তিনট অংশকা

পৰিক প্ৰাধাত লাভ করে বাকে। এবং ৰাজ্য ভার মধ্যের প্রধান বৃত্তিটকে অবলখন করে বহির্জগতের দলে নিৰেকে বাপ বাইরে নের। এইটই ক্ষমে ক্ষমে অধিকতর শক্তিশালী হরে ওঠে ও জীবনের গতিগণ নির্দেশ করে। ইয়ং এর নাম দিলেন উন্নতত্ত্ব ব্লডি (superior function) ও বললেন বে. মান্থবের জীবনে ব্যক্তিগত স্বাভন্ত্যের ভিত্তি হ'ল এই উন্নতভর বৃদ্ধি। যে সমন্ত মাধুষের মধ্যে এই বৃত্তি এক ও অভিন্ন, ভাদের আচরণ, ব্যবহার ও প্রকৃতির মধ্যে ৰিশেষ এক পায়ন্ত দেবা যায়। সামাজিক, মানসিক ও নৈতিক ভৱভেদে অবঙ ভাধের প্রকৃতিতে কডকটা পার্বক্য দেবা বাবে সভ্যু, কিন্তু মুলগভ বভাবে ভারা এক। বে বুভিট উন্নভভর ত্ৰণে দেবা দেৱ ভাৱ ভোড়ের অচট দেবা যায় টক ভাৱ বিপরীত অবস্থায়। এর নাম হ'ল নিয়তর রভি (inferior function )। উন্নতত্ত্ব বৃত্তি বাস করে মনের সতেচন অংশে : ভার নিমতর রভি বাস করে ভচেতন ভংলে। মনে করা বাক কোন লোকের মধ্যে উগ্রভতর বৃত্তি হ'ল চিন্তা: অর্বাৎ লোকট भन्पूर्व वृद्धिकारी . बुक्कि विधात ७ विटायरावत भाषास्या त्म अन-ভের মূল্য নির্ণয় করে। তা হলে তার মধ্যে নিয়তর বৃত্তি ছবে অনুভূতি। অনুভূতি এবানে অচেতন মনের অধিবাসী। কাজেই লোকটর সম্পূর্ণ আয়ণ্ডের বাইরে। আত ছট বৃত্তি-বোৰি ও भरत्यम-- बदा बाकत्व बायद इ'ब्रायद मावबारन । बदा অংশত সচেতন ও অংশত অচেতন। সচেতন উন্নত বৃত্তি वार्ष बवाध किष्ट पवियार भानवकीवरन भागाया करव बारक। ভাই এদের নাম হ'ল সাহায্যকারী রঙি (auxiliary functions ) +

थार्टिव देशव बनारम चामवा मरनव ठावके वृद्धि रमनरण পাছি: (১) উরভ বৃত্তি—এ সম্পূর্ণ সচেতন, (২) সাহায্য-কারী বুড়ির সচেতন অংশ ও (৩) অচেতন অংশ---একে চেত্ৰার খবে সচরাচর পাওরা যায় না। কিন্ত চেটাঘারা সম্ভব হতে পারে। (৪) নিমুগুর বৃদ্ধি-এ সম্পূর্ণ অচেতন ও মান্থখের আরভের বাইরে। যদি এই চারট রভিকেই চেডনার স্তারে নিয়ে আসা যায় ভবে মানুষের মধ্যে সম্পূর্ণতা আসবে। अक निर्देश भीशा भर्यक्ष अ महार । यति कान मान अकरे भवात के हांबंधे द्वित्वरे चक्र किए श्रीमार्थं निर्वद আৰ্ভের মধ্যে আন্তে সমর্থ হতে পারে, ভা হলে সে অসাবারণ জান লাভ করে। সংবেদন্যারা পাওয়া যায় বিষয়-বস্তুর বাইক্সের অবয়ব সহতে প্রভার; বোবিদারা করে ভার আভরিক বরণের জান , ও বুক্তি ও অহুভূতি বারা পাওয়া যায় ভার বিভিন্ন মূল্য। এই ভাবে সেই ব্যক্তি বে আৰু লাভ করবে छ। त्यस मन्पूर्वाष, एक्सबरे बच्चेत । चवछ अक्सा क्रिक रव, এই ছাতীর জান ও ব্যক্তিখের জিরাগত শ্রেণীবিভাগ সভ্য ৬৭ ৰাৱ দীতি ও যুক্তির কেৱে। প্রকৃত বাত্তব দীবনে ভাব প্রায় ক্ৰাৰ্ট সম্পূৰ্ণতা লাভ করে না, ও ব্যক্তিত্ব ক্ৰাৰ্ট অবিবিজ্ঞ

এক বৃত্তিগত নয়। সে লাবায়ণত:ই নিল্ল। কিছ সর্বক্ষেত্রই বিল্ল বর্ষ বিশিষ্ট ছুইট গোমিই—চিতা ও অন্নত্তি; লংবেদন ও বােৰি পরস্পরের পরিপ্রক ছিসেবে দেবা বার। বে সমস্ত ক্ষেত্রে কোম একট বৃত্তি, বেমন বৃত্তি, বৃত্ত বেশী প্রভাবাথিত, সেবানে তার বিপরীত বৃত্তি, অম্নত্তি, তার পরিপ্রক ছিসাবে, প্রবল্গতাবে নিজের কাতপ্রবের চেটা করতে বাকে। ফলে এক দিন দেবা বার বে, ঐ বৃত্তি-প্রধান লাকট ক্ষানা ও ক্রমনীয় ভাবাবেশের ধারা ও আদিমানব-স্লভ্তবর্গ ধারা আক্রান্ত হতে পড়েছে এবং এদের কাছে লে সম্পূর্ণ অসহায়। স্বৃত্তির মধ্যে এই পরিপ্রব বর্ষ ইর্থ এর মনোবিজ্ঞানে মবের প্রস্থৃতির এক অন্তর্শিহিত নীতি।

ব্দপতের সমন্ত লোকের প্রকৃতি ঠিক এক রক্ষের মর। ৰ্যক্তিগত ঐচি, আধৰ্শ ও আচরণের ধিক বেকে মানুষকে ৰোটাৰুট কতকভাল শ্ৰেণতে ভাগ করা যেতে পারে। খনো-বিজ্ঞানও মাধুষের এক প্রকার শ্রেণী বিভাগ করেছে। ভার ভিঙি ए'न माननिक दक्षि। चामदा अक्ट्रे चारावे स्टब्स् ইয়ুং-এর মতে মাছুষের মধ্যে চারট প্রাথমিক রুভি আছে। এই দিক থেকে সকল মান্ত্ৰের মূল প্রকৃতি এক। কিন্তু এই বৃত্তি-श्रेम अकरनव यद्या अक व्यवधात (भरे। काद्या भर्या विद्या-दक्षिके क्षरान ७ रननानी . जाराद जब कारदा भरता क्षरान ७ বলশালী হ'ল অমুভূতি। সুভৱাং দেখা যাছে যে, বুডির দিক ৰেকে শ্ৰেণীবিভাগ নেহাৎ অসমত নয়। মনের প্রকৃতি নির্ণয়ে এই রখি দর্শন-সরূপ। কিছ মনে রাখতে হবে যে, একমাত্র এই বৃত্তি-দুৰ্পণ থেকে আমহা ঐ লোকটন সম্পূৰ্ণ পৰিচয় পেডে পারি না। তা হলে আমাদের আর একট বিষয়ের প্রতি নৃষ্টি রাখতে হবে। বাইরের ক্পং ও মনোক্সতের প্রতি সে কি ভাবে সাছা বের, ভার প্রতিক্রিয়ার সেই বৈশিষ্ট্যকে ভাল করে বুবতে হবে। ইরুৎ সেই বৈশিষ্ট্যকে প্রধানত: ছুট শ্ৰেণীতে ভাগ করেছেন। বহিৰুখীন (extravert) । অন্তৰ্মীন (introvert)। বহিমুখীন চরিত্র অভিযাত্রায় সমাজ-কেন্দ্ৰক। ভাৱ কৰাবাৰ্ছা, চলাকেৱা সমন্তই নিয়ন্ত্ৰিত হয় তার ব্যক্তিগত মানদঙে। কলে সমাক্ষীধনের সলে তার আচরণ অসমত হরে পড়ে। বহিরু বিনের চিন্তা, অকুভূতি ও काक भवकि हरे वर्ष विश्व करता। जाद श्रियना क উৎসাহকে নিজের উপর থেকে সধিয়ে নিছে সে বাইরের বছর উপর আবোপ করে। কিছ অভযুখিন চরিত্রে দেবা বার এর ট্ৰিক বিপরীত। তার কাছে সমর্ভ কিছব বুল কৰা হ'ল সে নিজে। ভার বাইরে যে বিষয়বন্ধ সে ভার কাছে সৌণ। এ শ্রেশীর বিশেষও এই যে, কোন নিৰ্দিষ্ট পরিস্থিতির মধ্যে পভলে প্রথমে সে নি**ভেকে** যেন **ভটারে** নিরে অপসারণ করে। ভার সমস্ত ব্যক্তিৰ তৰন বেন এক অনুভাৱিত অধীকৃতি ভানাতে বাভে এবং ভার পরে ভাতে ভাতে বেবা বের ভার নিজন প্রভিক্ষির। হঠাং লে বাইছের জগতের উত্তেজনার বরা দেব না। এবতে লে নিজেকে সামলে নের; ভারণর সাভা দের। বিভিন্ন
লোকের লাবনে একই পরিবৃত্তমান করং বিভ্নত ররেছে।
ভিন্ন সকলেই নেই করণকে টিক এক ভাবে দেবে না, বা এহণ
করে মা। কে ভাকে কোন্ ভাবে এহণ করবে, কর্বাং করণ
ভার মন্ত্রের কোন্ বিশেষ রূপ ও অর্থ নিরে প্রতিবিধিত হয়—
ভাই কানা যার ভার মধ্যে কোন্ বৃত্তি প্রধান ভার থেকে।
অর্থাং, বৃত্তিমূলক শ্রেইবিভাগ থেকে আমরা এ বিষয়ে অহমান
করতে পারি। আর আচরণ-বৈশিষ্ট্রের ভিত্তিতে বে শ্রেইন
বিভাগ--বহিমূপীন ও অন্তর্গীন—ভার থেকে কানা যার
ভার করণ কর্বাং করণ বে রূপ নিরে ভার মধ্যে দেবা দিরেছে,
সেই কর্গতের প্রতি ভার প্রতিক্রিরার বিশিষ্ট্র প্রকৃতিটিকে।

প্রত্যেক মান্তবই কোন না কোন বৃদ্ধিগত শ্রেণ ও আচরণ বৈশিষ্ট্যসূপক শ্ৰেণ্টর অন্তর্গত। কিন্তু অধিকাংশ ক্ষেত্রেই দেখা यात्र (म निष्क्रे व विश्वास बाहिरे महत्त्वम नह । जनवा বহিও সে সচেতন হয় তথু তার বারণা টিক নয়---নিজের भवत्वरे (म कुन बूरवरक। अवत्र व्यानावर्ध। विस्मय महक यह। विरम्भणः चर्ठाणमात्र अर्थ छात्र अथक विषे वृत्र एत. ভবে সমস্তাই অধিকভৱ কঠিন হয়ে ওঠে। শিল্পীদিগের সম্বৰে এ খতি সত্য কৰা। প্ৰকৃতপক্ষে নিলী, খববা বে কোন স্ক্র-প্রতিভাসপর ব্যক্তিকে সহসা একট নির্দিষ্ট শ্রেণীর অভতুক্ত করা বার না। কেননা অচেতনার সকে তাদের যোগাযোগ অভি খনিষ্ঠ ও প্রভাক। শিলীর বিষয়ে আর अक्ष दे दे विश्व क्षा अहे ति निश्ची-राक्षित्क निश्च है व माम मबीकृतन करा अस्किवादार हरन मा । आहरे दाना यात रा. ব্যক্তিশীৰনে শিলীমন হয় তো বহিয় বীন, অৰচ পট ব্যাপাৱে সম্পূৰ্ণ বিপৱীত। কেন এমন হয় বুৰতে হলে মনের পদ্বিপুরকতা-নীতিকে শ্বরণ করতে হবে। কেননা বহিরু বীনতা ও অভর্বীনতা---এরা পরন্দার পরিপুরক। চেতনা যদি হয় विष्यु बीम : चाइकमा शत्य चक्क्यू बीम । अक त्यावेद निजी আছেন বারা নিজের মধ্যে যে বিশেষ ৩৭ বা আদর্শের অভাব লেইওলিকেই ভাঁদের শিলের ভেতর দিবে সুটবে ভোলেন। ৰনের পরিপূরণ-থীতির সবচেমে পরিভার ও নিঃসন্দেহ প্রকাশ ছেবা বাহ এইবানে। অবস্ত আবার এমন অনেক শিলী चारक्य वारमद निव भगरब अ कवा बार्क मा। धारमद निरम জাঁছের নিজ চরিজের বিপরীত কোন ওব বা আদর্শই মিলবে না। পিছ দেখাৰে পিছীর প্রতিরূপ। এই শ্রেণীর পিছ দেখা वाद चक्रवीत्वत स्क्रीए । द्यम एक म्हारिकावमूनक छेन्छात्र। कान कान विद्वारीयद नवद्व । कवा প্রবোদ্য। ভাষের শুষ্ট উপভাগ ইত্যাদিতে বুব আবেদপ্রবণ कर्चनक्त नौर्वपूर्व नारकनाविकावा खानाव श्राटन । বাইবের খগতের সদে খতি নেলাবেশার ফলে বহিত্রবীন শিলীর বে অভিজ্ঞতা, উপদৰি ও প্রত্যক্ষ দর্শন তাই তার नित्त क्षम (नव । जानाव जन्द्र नीम निन्नीव (क्राव पर्छ अव

বিপহীত। যে কোন ভাব বা আঘর্ণ বেধান থেকেই আনুক না কেন, তা তার অভৱের খাবীন ও বতর আহর্ণের ভিতর ধিবে এগে ভারই আলোকে বাইরে রূপারিত হয়। স্ট-ক্ৰিৱা, অচেত্ৰার গর্ভে নিহিত বানবভার সীমাহীন অবাধি বে প্রতীক, উরভতর ও বার্কিডড়পে তারই বহিঃপ্রকাশ বাত্র। কাব্য, উপভাস, নাচক, চিত্ৰ, সঞ্চীত ইত্যাদি সমন্ত চাকুলিজের গোভার কথা এই। আধিকাল থেকে বুগে ঘুগে অনম্ব প্রবাহের ভিতর দিরে যে চির্তুণ মানব রূপাভবিত হতে হতে আৰু আমাদের অচেতনার মধ্যে আশ্রহ এছণ করে দকিছে রয়েছে, শিল্প হ'ল মুলোপবোগী রূপসক্ষা ও আবারে সেই আদি যানবের উন্নততর প্রকাশ। যে লোক ভার মনোভাবকে প্ৰকাশ করতে এই আদিম চিত্ৰের (primordial image) সাহায্য নেয় পে প্ৰকৃতপক্ষে সমুগ্ৰ মানবছাতিয় প্ৰতিনিধি। সমত্র মানবন্ধাভির বাণী তার ভিতর দিয়ে বঙ্গুত হরে ওঠে। সম্ভ্র মানবজাতির পটভূমিকার সেই শিল্প ভবন সার্বজনীন ও সার্বকালিক।

আমরা আগেই লেখেছি খে. অচেডনার মধ্যে চুট ভর আছে---ব্যক্তিগত ও সমষ্টিগত। ব্যক্তিগত অচেতনা হ'ল ব্যক্তিগত ৰাজুৰের বিশ্বত অবদমিত চিন্তা ভাবনা ইত্যাদির আবাস। কিছ সমষ্ট্ৰপত অচেতনার এক ঐতিহাসিক রণ আছে। ভা বাদে এর মধ্যেও আছে ছুট ভর। ব্যক্তিগভ অচেতনার ঠিক পরেই হ'ল এর প্রথম ভর। এবানে আছে আবেগ আকৃতিভাতীয় আদিষ প্রেয়ণা। যদি এয়া কৰমও কোন প্রকারে আত্মকাশ করে, তবে ওনের আরতে আনা क्रमण जामार्यस्य भाक्त जनसर मह । अह भारतस्य **स**र्वे श्रीकृष-পক্তে অচেতনার শ্বর। কেননা এখানকার কোন কিছ কৰমই আৰপ্ৰকাশ কৱে না ও সব সময়েই আমাদের ক্ষতার বাইরে। ভাবের গতিবিধি ধাবীন ও বতন্ত এবং ভাবের বেকেই ভৰ বেহ নামাপ্ৰকাৰের মামসিক বিকার। অবর মনের যে ন্তৱ বিভাগ এবানে কথা হ'ল তা একাছ নৱ। কোৰায় বে একটা শেষ হয়ে আর একটা স্থক হরেছে তা বলাপ্রায় चन्नस्त । ভবে বিষয়টর মোটায়ট একটা বারণা করার चन देवर এই ब्रक्म जान करवरहरू।

এতক্ব পর্বন্ধ আহবা বনের সাবারণ গঠন সহছে আগোচনা করেছি। বনের ছট বিভাগ এবং সেই বিভাগের ববোই বিভিন্ন তর সকৰে ইর্ং-এর বভ নোটার্ট আহবা কেনেছি। এবন প্রশ্ন হ'ল এই বে, অচেতনা বদি এবনই কিছু হর বা সম্প্রণে চেতনার বাইরে, তবে ভার সকৰে আনাদের আন কি করে সভব? এবং অচেতনা বদি কবনও চেতনার তবে প্রভাগিত হব, তবে ভা কি ভাবে হব?—এর উভরে ইর্ং বলের বে, চেতনার তরে অচেতনার আবির্ভাবের প্রবান উপার হ'ল হব ও গুট্চবণা (complex)। সম্প্র ব্যক্তির বিবর বিভ্রির

रुख चटक्रमात मरना चाला अस्य करत करन तमेर पहेनाक्रिक वना एव प्रदेशवर्गा। अ अवदाव के विक्रिय विवयक्रीन नन्पूर्व चानीम ७ पण्ड : मरन माइरवह चाडरण्ड नाहेरत । अ चनदाव ৰাত্মৰ ভাৱ সঞ্জিৱতা হাৱিৰে সম্পূৰ্ণ নিক্ৰিৱ অবছার ভুতঞ্জেৰ यत श्राह भाषा । अल्डारकत मर्वाहे गुरेहरमा चारह । देशमिन भौवत्य जामात्वव नामावय कृत्रजात्विक करे प्रदेश्यमात करा। का एटनर दावा योटक १४ शेटियनः बाकटनर दा मास्य शैन एत अमन त्कान कथा (नह । श्रुट्विशः त्यक्त अधू मास अव्टूक् বোৰা যায় যে, মাগুষের মধ্যে এমন কিছু আছে যা অসংহত, বিসর্গ ও পরস্পর্বিরোধী। কলে ভারা মনের অঞ্চরভির भक्त अक अकार पार्श-त्रवंश । किश्या क्षरणा **चामक क्ला**ख নবতর সফলতার পক্ষে অধিক ভর সঞ্জিপপার প্রেরণা। এই षिक (बदक (जबरण शूरे)। धना विद्यास मृत्रा चारक; अवर আমাদের পক্ষে তাকে বাদ দেওয়া তাই প্রায় অসম্ভব। ইরং ट्रिकेक वटलम (य. शूटेह्यनाटक वाप पिटल आमारपद मकल यान जिंक किहा-अवाइ (बाब गाव । (य-कान मान्यव माना কোন গুঢ়ৈবণার প্রত্ত হল, গভীরতা ইত্যাদি স্থানার স্কুল ইবং এক বিশেষ উপায় উদ্ৰাধন করেছেন। তার নাম হ'ল ভাব-मार6र-পছতি। বিশেষভাবে নিৰ্বাচিত একদ'ট কথার একট ভালিকা তৈরি করা হয়। ভারণর পরীক্ষক একে একে ভালিকা খেকে কথাওলি উচ্চারণ করে যান। যাকে নিয়ে এই পরাকা করা হড়ে, অর্থাৎ যার গুঢ়ৈষণার বিচার করা म्टब्स्, जादक चारम्य संबद्धा बारक त्व. शबीकरकत फेकाबिज बक बक्रे करा स्थान भारत जात मान एक क्यांके एका আলে লে যেন তাই বিনা বিবাধ বলে যায়। পরীক্ষরের উচ্চারিত সম্বেদ বলা হয় 'উদীপন শহ' ( stimulus word ) এবং ভার উপ্তরে ঐ লোকট যে কথা বলে ভার নাম 'প্রভিক্রিয়া भव ( reaction word )। এই इट्राव मरना क्छी। जनव লেলেছে ভার বেকেই পুচেষণার পরিচর পাওরা যার। এ विश्वत्य चांकर्य तक्य कल शांख्या शिष्ट । विशे शिष्ट (व. ৰে উদীপন শব্দের সঙ্গে ভার অভনিহিত গুট্টেবণার কোনপ্রকার ৰোগ আছে, তার প্রতিক্রিয়া শব্দ আসতে অপেকারত থেরি स्टब बाटक। अकडे छेशास्त्रव निर्म विषये शिवकांत स्टब। अक्षम (वानेव कार (बंदक देवूर अरे छेशास रव क्रम शास-हिल्म छ। वरे :---

উদীপন শব্দ		প্ৰতিক্ৰিয়া শস্ব	এভিক্রিয়া কাল	
<b>3</b> I	মাৰা	<b>p</b> er	১'৪ সেকেও	
<b>ર</b>	সৰুজ	ভূণভূষি	7.0	
91	चन	গভীর	e'o ",	
8 1	<b>T</b>	<b>里</b> 信	۶. <b>،</b> ۱	
4 1	<b>ল</b> ৰা	<b>টে</b> বিল	2,5 "	
• 1	<b>कारा</b> च	ভূবে বার	A.8 ***	
11	বিভাগা	<b>रे</b> चर	2.e "	

<b>V</b> 1	<b>लम्ब</b>	<u>ৰো</u> ৰা	2.0	**
<b>&gt;</b> 1	বিবেৰকারী	বৰুতাব	7.8	19
30 1	<b>E</b> V	<b>শ</b> ল	8.0	99
22.1	<b>শ</b> ড়িড	<b>ম</b> হ	7.5	11
186	ক্সি	कारना	2,5	19
701	<b>গাঁতা</b> র	শাভার ভাশি	<b>⊘.</b> ⊁	29

বে বোপীর কাছ থেকে ভালিকাট পাওয়া গিয়েছিল, জানা গিয়েছিল থে, সে কলে ভূবে আন্মহত্যা করবে ব'লে দ্বির করেছিল। এই গুট্চমণার চমংকার প্রকাশ এবানে পাওয়া যাছে। ৩, ৬, ১০ ও ১০ সংবের প্রতিক্রিয়া-কাল সম্ম্যু করবেই তা স্পষ্ট হয়ে পড়ে।

ৰপ্ন-সাহায়েও গুটুচ্ছণা সমূহে আমতা অনেক কিছু ভানতে পারি। যে সমন্ত বিষয়কে অবলগন করে পথ আছপ্রকাশ करत जा रामनि विक्रित (अमन्दे अमुल । रेमन की रामन ছোট বছ নানা ঘটনা বেকে নিয়ে অন্তেলনর প্রভারতম ভাব ইভাদিকে অবলম্বন করে সে ধেবা দেয়। তাদের মবো কোন কাৰ্যকারণ সক্ষতি খুঁকে পাওৱা যাবে খা: ভারা দেশ-কাল-বহিত্তি এবং তাদের ভাষা পৌলালক ও সাংক্তেক। সুভরাং তাদের অর্থ বুবতে হলে বিশেষ উপায় आवश्रकः। स्थ (बटक व्य आयदा अनु आवश्रक महनद क्षकांण পাই, তা নৱ: তার কর্মনীতিও এবানে দেবতে পাওয়া যার। তার কারণ ধর্ম প্রধানত:ই অচেওনার প্রকাশ। এই অচেত্ৰা ভূগমাত ব্যক্তিগভ ব্যাপার নয়---সম্প্র মান্ত--জাতির আদিম প্রকৃতি এবং এর নাম হ'ল 'বিষয়গত মম' (objective psyche) । কি ভাবে বাইরের ভবভের সঙ্গে ধাপ ৰাইরে চলা যেতে পারে সেই হ'ল চেতনার লক্ষা। কিছ অচেভনা সে বিষয়ে সম্পূৰ্ণ উদাসীন। ব্যক্তিকে অভিক্ৰম করে ভার মধ্যে ব্যক্তির অভীত যে প্রকৃতি তাইই সঙ্গে ভার বোগাহোগ। কেননা ভার লক্ষ্য হ'ল মানসিক ক্রিয়া-क्षेत्राच् चन्द्रते दोनो । प्रख्यार वर्षे भिन्न (बद्रक निर्धाद क्यान অচেতনা ছচ্ছে মনের একবেশিতার বিরুদ্ধে সতর্কতা। এই সভৰ্কভা ৰূপ নেত্ৰ ৰপ্লে। কিন্তু লচেত্ৰনাৱ আবেছ ও ভার অৰ্থ এত ব্যাপক ও বিচিত্ৰ যে, সংগ্ৰহ ভিতৰ দিয়ে একাশিত হবার বলে তাদের নির্দিষ্ট কোন প্রতীক নেই। স্থানটার আভাষ্ট্রীৰ ও বাহ্নিক পরিস্থিতি ইত্যাদি অসুসারে चारश्च चर्च क्रवर छारभर्वश्च विकित्त । चारमक प्रमास क्रवा क्रव বে, স্বপ্নের সঙ্গে স্বপ্নমন্ত্রীর ব্যক্তিগত সমস্তা ও অভিক্রতার কোন সম্ভৱ বুঁজে পাওয়া বার না। সেই বপ্ন ব্যক্তিগীয়া অভিক্রম করে ৰ'লে সমুগ্ৰ মানবভাতির চিরন্তনী কোন সম্ভাৱ পুনরাবৃদ্ধি নাত্র। অনেক সনরে আধার ধর থেকে ভবিষ্যভেরও আভাস भारता यात । मनः एके (phantasy) अ पृक्ते (vision) (नरक्ष चटक्रवात क्षेत्राम मका करा त्वर्ष्ठ शादा। वयःवर्षेत्र चात्र এক বাব বিবাহধ। করিত চিত্রের সাহাব্যে কডকওলি বটনাকে বনের নারবে উপস্থিত করে অচেতনা ভার মধ্যে আপন নার্থকতা বুঁকে পাবার চেটা করে। বে অচেতনা থেকে ববঃস্ট্রর আবির্তাব হয় তা ব্যক্তিগত অচেতনা।

चन्न, ननःच्छि ७ वृष्टित विवत्तवस्य विकास करान स्वर्ग বাবে বে, ভগু,মাত্র ব্যক্তিগত অচেতনা নমু, সমষ্ট্রণত অচেতনাও मिवादन स्वाह भदियादन विद्यासन । त्य अयस विद्यावस्त चनम्ब करव चर्ठाचना अरमद चिक्रत, विरमञ्जूष्ट चरश्चत चिक्रत, আত্মপ্রকাশ করে, তার মধ্যে পৌরাণিক চিত্র ও প্রতিরূপ সব क्टार केट्स बरवाना । भरमद चि नकीद चक्कन व्यक्त क्र बरन छेश 'बाहिन क्षकीक' वा Archolype । बाहिकान त्राक মাছবের সমন্ত অভিজ্ঞতা-জানের মূল এই আধিন প্রতীক। रम्मानभाव (कर्ष विकित्त पूर्ण अब क्रभ वम्राम्ह , विक অন্তৰিভিত প্ৰকৃতিই দেই একই হয়ে গেছে। অচেতন মনে এর আবাস এবং সমস্ত ভাবের ভিডি ব'লে এ আমাদের আহতের বাইরে। একটা অতি সাধারণ উপধা নিষ্কে এ বিবৰে বোৰা বেভে পারে। বে-কোন ভাষার একই বুল বর্ণমালাকে ভিভি করে বেমন গড়ে ওঠে বিভিন্ন সাহিত্য কাব্য ইত্যাদি, তেমনই একই প্রতীককে অবলম্বন করে গড়ে থঠে আয়াবের বিভিন্ন অভিজ্ঞতা, অহুভূতি। বুলে বর্ণমালা এক, বিভিন্ন ব্যক্তিবিশেষের ছাতে ভারই সাহারে। পড়ে উঠে বিভিন্ন সাহিত্য। তেমনই মূল প্ৰতীক্ত এক। এই चरनारे देश अरक वरनरधन, "a priori determining constituent of all experience" चाद बरेकार, चर्नार আমাৰের প্রাথমিক অভিজ্ঞতার মূল ভিডি বলেই ঘোটার্ট

करवक्ती निविधे मध्याचि अरक जाने कवा त्यरक शारव। ক্ষেমা যে সম্ভ প্রাথমিক অভিভাগার সলে এর অনসক नक्ष चार्य छारवत मरवा याडीवड निविट । 'कनवी' वरे बक्ब वक काकि-बन । यक बकाद्वव 'बाक्काव' चाट्ड ভার সবই এই এক ভাতি-মণের বিভিন্ন বিকাশ। মুগ মুগ বেড়ে পুরুষাভূক্রমে সঞ্চিত যে ধননী ভাব, ব্যক্তিবাতায় यर्वा त्त्रदे नार्व्यवनीय बाजा. चापिय चाजि-अभ चननी ("The collective image of the mother, not of the particular mother, but of mother in her universal aspect.")। অভএৰ দেখা যাছে যে, এই আদিন কাভীয় রপত্তিই মানুষের সমত জান, অভিনতার উৎপ। আর এ যদি মানতে হয় তবে সলে সলে আরু একট সিহান্ত আপনা (बर्क्ड अरम श्रष्ट् । चर्वार देशूर-अब भरनाविष्याम अधुमाळ बरमाविकाम मह, भौरम-१६७। अधिककाद मूल छेगाभाम-ভলি অচেতদ মুদের পভীরে মিহিত অবধার থেকে আমা-एव भौवामव छेनव विराम क्षणांव विश्वाद करव बारक। অচেতশার সীমা থেকে উত্তীর্ণ করে চেতনার মধ্যে তাথের ৰিৱে আগা মাদুষের অঞ্চয় কর্ডব্য। অধ্বা, অঞ্চ ভাবে বলভে গেলে আমাণের চেতনার বর্তমান সীমাকে আরও প্রসারিত করতে হবে। রবীক্র্নাবের ভাষার একে বলা **(बर्फ नारव, कीव-रेडफ (बर्फ विश्व-रेडफरक क्याबर्ग)** कि करव और नवक्ष अध्य एर्ड भारत देश्र छात्र हैभात निर्देश करवर्षम । देवर-अब मरनाविद्यारनव ৰোটাৰ্ট গোড়ার কৰা।

## স্বাধীন ভারতে কৃষি-পরিকপ্পনার একটি দিক

#### **अ**क्खत्रहाम लान्यानी

অতীতে আমাদের আর্থিক পরিন্থিতি বতই সহল সক্ষল থাকুক না কেম, বর্তমানে ক্ষরিই এদেশে অবিকাংশ লোকের জীবিকা অর্জনের প্রধান উপার। প্রত্যক্ষ বা পরোক্তাবে শতকরা প্রায় ৮০ জ্যেরও অবিক লোক এদেশে কৃষির উপর নির্ভন্ত করে। বংলাবার্ত লিল্ল বা এদেশে গড়ে উঠেছে, বেনন বল্ল-বরন, পাটলিল্ল, চিনির কারবানা প্রভৃতি, তাও প্রধানত কৃষির উপর নির্ভন্তন। অর্থাৎ, শিলের উপর নির্ভন্তন লোকেয়াও অবিকাংশ ক্ষেত্রেই কৃষির উপর নির্ভন্তন লোকেয়াও অবিকাংশ ক্ষেত্রেই কৃষির উপর নির্ভন্তন বাবা বামাতে হবে, এর লবওলো লবতা বুঁলে বের করতে হবে এবং তার সমা-বাবের উপারও উত্তাবন করতে হবে। আর্থিক উন্নতিবিধান বা জীবন বাঞার মান উন্নত্তর করা অর্থনা জনসাধারবের ক্ষরশক্তি বৃদ্ধি করা ইত্যালি বে-কোন বিক বেকেই বরা বাক না কেন কৃষি আ্যাবের আর্থিক ব্যবহার একটা বড় অংশ কুড়ে ছবেছে। ধেশীর রাজ্য বাবে ভারতের নোট বা আরতন তার মব্যে লভকরা প্রায় ৩৫ ভাগ অবিই আবাদী এবং প্রতি বংসর তাতে চাব হয়। লভকরা ১২ বা ১৩ ভাগ অবল ; লভকরা ২২ ৮ ভাগ পতিত অবি হলেও চাবের উপর্ক্ত এবং লভকরা ৭ ভাগ অবির উর্ম্বাতা বাজাবার অভ প্রতি বংসর পতিত রাবা হয়। অবাং এলেশে প্রায় লভকরা ৭৭ ভাগ অবিই কোন না কোন কান্তে ব্যবহৃত হলে। নাত্র ২২ ভি ২৩ ভাগ অবি অকেলো। একি বেকে প্রিবীর অভাভ অনেক দেশের চেরে আবাহের অবহা বে অনেক ভাল ভাতে কোন সন্দেহ নাই। কারব, জাশান প্রভৃতি বেশে শভকরা ১৫ ভানের বেশী অবি কালে লাগানো বার না। আবাহের ক্রবিভাভ সার্থীকে হ'ভাবে ভাগ করা বার—বাহ্যশভ এবং কাঁচা নাল। বাহ্যশভের মধ্যে চাল, গন, জোরার, বাজরা, বিভিন্ন প্রকাবের ভাল উল্লেক্-বোগ্য। প্রহাণ বার্গি, তুইা প্রভৃতি বাহ্যশভ্য ভিন্ন পরি-

বাবে উংপর হয়। বাধ্যপত হাড়া ভারতে আরও অনেক क्षकाव कृतिकाल गांवशी छैरभव एव। क्षवरवरे रेक्टव कथा वना वाकः। वेक्त हाव अ (मर्ट्स भूखन महः। क्रिक ১৯২৯ লৰ পৰ্যান্ত চিনিত্ৰ কাত্ৰখালা এদেশে স্থাপিত লা হওৱাত ইকুত্ৰ আবাদ কম ছিল। প্ৰত প্ৰত বছতেত মধ্যে একেশে এত চিনির কারবানা গতে উঠেছে যে, চিনির সরবরাহ বিবরে আছ चामदा चा (सत्पद मूर्वात्भको छ महे-हे. यहर चा दानात्म সর্বরাহ করতে পারি। এই শিল্পের অপ্রগতির সঙ্গে সংক বিগত প্ৰৱ বছৰে ইক্ষুৱ চাৰ ত বৃদ্ধি পেৰেছেই সেই সঙ্গে मामा छेशारब रेक्ट्र छेरक्ट्रेजब कबवाब, अस्य हिमिब श्रीवमान बाकाबात अवर विवाधिक रेक् डेर्शमरनत पत्रियांबद्दविव करण्य नानाक्ष्म देवलानिक श्रक्तिका चरण्यम करा रहा । हेक्त भक्त ज्ञात हायल अस्ति वह विन त्यत्व स्त सामत्य। কিৰ গত শতাকীয় মাৰামাৰি বেকে বৈজ্ঞানিক যানবাহনের वाालक श्रम्भन क्षत्राय अवर अरमान वस्त्रवस्थित नेर्क प्रशेष তুলার চাষও গভ থেড় ল বছরে বাছতে কুরু করেছে। ধর্ত্তবানে প্রায় ১৬০ লক্ষ একর ক্ষিতে তুলার চাব হরে থাকে। গত শতাখীর শেষ পর্যন্ত আমাদের কার্থানার তৈরি ছতঃ চীন থেলে রপ্তানী হ'ত। বর্তমান শতাব্দীর প্রায়ম্ভ ८९८क अटमरण वस्तवसम चाइस एक्शांस अवर माना कांतरम প্ৰভোৱ বস্তানী বন্ধ হয়ে যাওৱাৰ এখেলে ভাত তলোৱ প্ৰায় भविष्टे अप्यापन कांत्रवामात वावश्रक राष्ट्र। तक शमन वहात जुलात है कर्व गायानत कह विकाशिक है गात किह किह অবল্পন করা হরেছে এবং বড় আঁশের তুলোর আলাহ ও সরবরাহ বাড়াবার চেষ্টা হচ্ছে। পার্টের চাষও এদেশে মুক্তম মর। ভবে বর্তমানে পাট বেষন আভ্যন্তরীৰ ব্যাপক ব্যবহার ও রপ্তানীর ভঙ উংপর হয় আবে তা হ'ত না। আবে বাংলার हामवित्नत्यहे भारहेत हाय र'छ। धेनविश्म मछाश्रीत याया-মাৰি সময় বেকে এদেশে পাট-কলের আবিভাব হয় এবং ভার পর বেকে পাটের চাষ বাছতে থাকে। বর্ত্তমানে পাট वारणात अवर भवत कांद्राज्य कृषिकांक सरवात वरवा वर्का व ভারতে প্রতি বংসর প্রচুর পরিমাণে বিভিন্ন তৈলবীক উৎপন্ন एत । किन्न अरमान रेजन-निर्मात विरामन अमात ना एथनात बारे भव देणमधीक श्राप्त वरमदारे द्वारामी कदाल एवं। बक-कारण अरमान अपूर्व (बनम छेरनव ए'छ। अनम कृतिन विनास ছনিবার বাকার ছেবে কেলেবে। ভাই প্রকৃত বেশবের कथव विन विनवे करम चानरहा। भानीरबंद मरना छो. কৃষ্ণি ও কোকো প্রভুত পরিমাণে এদেশে উৎপন্ন হয়। এ হাড়া এদেশে নামা প্রকার মণলা, আর্ণ্য পরার্থ প্রভার यहरिय भाषती देशभन्न एव ।

ভারতীর কৃষিভাত সামগ্রীর বিশেষণ ছিল এই বে, এগবের অধিকাংশই রপ্তানীর উদ্দেশ্তে উংপর করা হ'ত না। এবন কি গভ শভাবীর মধ্যভাগ পর্যন্ত কৃষিভাত প্রার বাবভার

माम्बीत पारशाहरे जात्मत्र विराम विराम वर्गम मीमायक ভিদ। খবচ একবা সর্বভ্যবিভিড বে ভারত প্রতি বংসরই वह भगामना विवास बढामी करत चामरह---(म बाद पार्काणिक कर-विकास देखिशातम श्रीप्रक कान (बाक । ब বেকে এ কথা বেশ বোৰা যায় বে, ভারতের ভবসাবারণ কোৰ कारनरे अविव हैनव नरवानवि विश्वयोग दिल या । अब वर्ष এই বৰ বে, ভারত অৱব্যের কাঙাল ছিল বা এবের সরবস্থাত विवदा शत्रवाराकी विन । जानन कवा र'न, जावल और नव विवरत जानन চारिया मिक्टिस अवर अटबर व्यवसाद करत अवन দৰ শিল্পৰা উংপদ্ন করত যা ইউলোপের বাজারে জোপ-विमारमञ्ज मामञ्जी विभारत क्या पारव विकास ए'छ। सार्वार ভারতের আর্থিক ব্যবস্থা ত্রিষ্টল শাসনের প্রারম্ভ-কাল পর্যায় সাৰম্পত্ৰীল হিল। ভাৰতে বিটেশ সাত্ৰাজ্যের অভারবের भव (बंदक अवर भाकारका निव्यविद्यय क्याब अस्ट्रान निव्य একেবাবে ধংগ হ'ল। কৃষিই হ'ল একমাত্র উপভীবিজা। ভাই नक (क्षम वहाद अवन जन कृषिक्षन) छैर नावन क्षाक हात्स. विश्वतांव हारियां अवस्था बाक वा ना बाक विवस्था ब्रुखानीब कांक इनलाई र'न । कृषिकांछ मामबी निष्ट वायमाह हानात्मा. **এই উদেও** সামনে রেথেই পার্চ, তুলো প্রভৃতির চায বর্তমানে করতে হয়। কিছ অভাত অনেক বিষয়ে আমাদের কৃষি বে নিজৰ স্থাতন পৃষ্ঠি ছাছিৱে উঠতে পাৱে বি ভা স্বায়ই ভানা ভাছে। ক্রমণঃ ভার্বিত ভ্রমণতির কলে এবং লোকেয় অভাৰ ও চাৰিদা বৃদ্ধি পাওৱার কম বা বেশী প্রায় প্রভ্যেক क्वकरकरे विकास के उपा के बारा कि बार के किया है। अ व अर् जावन वाकिनज धाराकानरे स्टार जा नव : नवक ৰেশের স্বাৰ্থেও, বিশেষ যথন কৃষিভান্ত সামঞীই আমাদের প্রার একমাত্র বঙানীর বঙ্ক-এ অবহা নিভাত অপরিহার্য হরেছে।

দে বাই হোক, **আমহা যে পরিমাণে বাচনত ও নিরে** প্রবোধনীয় কৃষিকাত সামগ্রী পাই ভার স্বটাই যদি দেশে बाक्क छार्टन और नव नामश्रीय नवनवार नामछ। स्वाय कवा ৰৱ। প্ৰথমত, শিলে প্ৰবোজনীয় কৃষিভাত সামগ্ৰীয় কৰাই ৰৱা বাক। এ বিৰয়ে আমি ইভিয়ান ভারনল অব ইক্ষমিছে আলোচনা করে দেবিয়েছি বে, কবিকাত সাধনীর সরবরাছের विक त्वरक चार्यात्वर चवश त्वारहेर छैनर माखायक्वक । चाबारकत वर्षमान चवशात अरे महबदान किरत छन चाकासहीन काक्शि (बक्रीतिक क्लाद मा : अबे मत्त्र विसम (बंदक निष-ভাত সামত্ৰী বা উংপাহন-উপকরণ আমতে হলেও আমাদের ভার বিনিময়ে কিছু দিভে হবে। সেই বেওয়ার মব্যেও ভাসৰে বাজাপসা এবং পিছে প্ৰবোহনীয় ক্ষিকাত নাৰ্থী। **এ विश्वतंत्र जार्राण गर्लारक्यक्यार्य काळ करत जागर्छ।** প্ৰতি বছর এবেশ বেকে তুলা, পাই, তৈলবীক এবং চা প্ৰভৃতি विरम्भ वद्यानी रख भागरह । अस्मान व्यवस्थान नामजीव हेरनावय-कार्राह धनाव क्षत्राव अब बरहा काय कायह বহুলাংশে এবেশের শিরেই ব্যবহৃত হতে পারছে। ফলে, লেই
সব প্রব্যে সরবরাহ বিবরে এককালে আমরা পর্যুবাপেন্টা
হলেও আৰু প্রায় বরংসম্পূর্ণ হতে পেরেছি। কেবলমার তৈল-নিকাশন ও এর বর্জন ব্যবহারকারী শিল্প একেশে প্রতিষ্ঠিত বা
হওরার আমাদের তৈলবীকের অবিকাংশ পরিমাণই বিবেশে
পাঠাতে হচ্ছে। তবে কালে তৈলনিকাশন-শিল্প একেশে ব্যাপক
ভাবে প্রতিষ্ঠিত হলে এ বিবরেও আমাদের প্রনির্ভরশীলভা
হুচবে।

कृषित चिवार विराहमा कृता हा विवास केरान সারণীল শিল্পের ক্রমবর্তমান চাছিলা খেটাভে সক্রম কিনা এবং षिठीशक चपु भविभारतत मिक (परकर मह, द्यां धराव मिक বেকেও বুধিকাত সামগ্রীর উৎকর্ব সাধন সম্ভবপর কিনা। क्षप्रत्य क्षत्रके निरम क्ष्रीर विहाद करा मध्यप्रद नम् का এট শিল্প বিস্তাবের পরিয়াণ বা মাত্রার দলে ওত্তপ্রাত ভাবে ছভিত। কোন শিলের কভবানি প্রদার আমরা চাই সেইটই হবে শিল্পে প্রয়েক্ষমীয় কৃষিকাত সামগ্রীর পরিমাণের নির্দারক। निष्यद क्षत्राव बाराव निर्धत कदरव किम्के विषया देशह---क्षया, प्राप्तव समामावादागव वर्षभाग कवनकि । विजीव, जाएक क्रवणि कविवारक या क्रक भारत, अवना कारमत कीवमवाबात মান উল্লভতর করা বিষয়ে সরকারী নীতি: এবং ভৃতীয় ভারতের বাহিরে ভারতীয় শিল্পভাত সামত্রী এবং শিল্পে প্ররো-জনীয় কৃষিকাত সাম্প্রীর বর্তমান বাজার ও ভার ভবিষ্যং। তবে এদেশের শিরের এবং আন্তর্জাতিক বাজারের বর্তমান অবস্থার সরবরাত্তর দিক বেকে আমাধ্যের কমিলাভ সামঞ্জীর পরিমাণ মোটামুট সভোষজনক। কিছ গুণাখণের দিক বেকে अरमञ्ज अवमञ्ज घरवडे छैरकर्वभावम प्रदेकात । जुलात कवार बता ৰাক ৷ বৰ্তমানে আমাদের দেশে যে তুলা উংপর হয় ভার चाट्या देवरा अक वेक्टिश कर । अटल छैर कर बहरनर कालक তৈরি করা চলভে পারে না। ভাই উৎকুট কাপড়ের কর আমাদের পদা আশওরালা তুলা বিদেশ বেকে আম্দানী করতে হয়। কিছু দিন খেকে অবরু এদেশেও সভা আঁশওয়ালা তুলার চাষ হচ্ছে। ভবে ভার পরিমাণ এবনও এলেশের কার-বানার চাহিদা মেটাতে সক্ষম নয়। পাটের বিষয়েও একবা বলা চলে। একথা সৰ্ব্যৱস্থিতিত যে, পাট একমাত্ৰ বাংলা দেশেই উৎপর হয়। ভাই কিছকাল বেকে পার্টের পরিবর্জে चना विभिन्न बारशांत कहा बाद कि मा ता विवाद देवलाभिक नरविष्या हमस्य अवः किष्ट किष्ट नक्नणामाण्य वृदेशास्य। এ অবছাৰ পাটের যদি উৎকর্ব না হর অথবা পাট চাবে या प्रक जा मा करव जा'रत जिवार भारे जानम अकटारीया অধিকার বজার রাবতে পারবে কিনা সন্দেহ। ইকুর বেলারও अन्दे क्या वना वाद । अवन्छ अर्थरण (व कार्क्ड देसू छैर्वड হচ্ছে ডাতে বরচ পড়ার বেশী অবচ বিবা প্রতি অভাভ বেশের

চাইতে ইকু জ্বারও ক্য এবং তার হসে চিনির পরিবাণও ক্য। এই সব হিক থেকে ক্যার উহতি ক্যবার একটা সাধায়ণ প্ররোজনীয়তা বে সবাই শীকার ক্যবেদ তাতে কোন সক্ষেত্র নাই।

ৰাভণভেদ্ন সৱবৱাহের দিক বেকেও আহাদের অবস্থা चहन नद्र। अरवर्ष त्वांडे श्रांद २९० नक हैन हारनद श्राक्षिय ; कांच मर्या २७० लक हैन होल अस्पर्यादे छैरनंच रव। बाख ३० लक हैन हात्मद करण जानात्मद बजरमन, श्राप्त ७ हेत्याडीत्वर देशत विर्वत कराय रह । अर्पाण श्राप ১০০ जफ हैम अब फेरंशह एत। शाकादिक नमरद जामारमब প্রধার্তনের চেত্রে উৎপর গবের পরিমাণ কিছু বেশী। ভাই केश्माम्यावत श्रीष्ठ माठकता माँह काम विस्मान दक्षांनी स्त्रं। খাভাবিক সময়েও অষ্ট্ৰেপিয়া খেকে কিছু গম এদেশে আসত গভা , কিছ এই আম্থানীর পরিমাণত ছিল সামাভ এবং এর উদ্বেশ্ত হিল বাজার দরকে খ্বাসন্থব খ্রি রাবা। জোহার এবং বাজহার এডেখে হা উংপর হয় ভাতে এদেশের চাহিলা মিটাবার পরও কিছু উষ্ত বাকে এবং দেই পরিমাণ সিংহল এবং প্রভিবেশী দেশসমূহে রপ্তানী হয়। মোটের উপর একবা वना बाद्य (व. कौवनथाकात वर्षमान भारम बामानरखत भन्यताह विषदः चार्च कार्यः वृथारमको नयः। अशास अकते वर्षा উঠবে। ভারতের জনসাধারণের জীবনযাতার মান এত নীচু त्व व विवास वारमण वार्यन्त वारमक निकास नाए बारक। व সম্ভৱে বারা গবেষণা করেছেন জারা জাদের প্রতিপাম বিষয়ে একম্ভ না হলেও এ কথা স্বীকার করেছেন যে, ভারতবাসীরা ভাষের প্রয়োক্ষের অসুপাতে অনেক ক্য বাবার পার। এ वियास्त मृद्वस्कृतन श्राष्ट्राक है (भारकत बारसत श्रासन श्रास महीरत जारमत क्षरशासभीश्रजा अधुभारत निर्दादन करदरधन । এ বিষয়ে অবর মধেষ্ট অপ্লবিধাও আছে। কেমনা, বিভিন্ন लाएमा वा विकित सक्तात लाएका सीरमगायात मान स्थम পুৰুক ভাষেত্ৰ ভাগের প্রয়োজনীয়ভাও ভেমনি বিভিন্ন। যদি ২৮০০ সংখ্যক ভাপের কৃষ্টি করতে পারে এই পরিষাণ খাছ প্রত্যেক্ট লোকের পক্ষে অবঙ্গ্রয়োজনীয় বলে বরা হয় ভা মলে ভটুর রাধাক্ষল ব্ৰোপাধ্যাহের সিদ্বান্ত অনুসারে ৪১'১ ষ্টাপর ( লক্ষ্য কোট - এক বিলিয়ন ) সংখ্যক ভাপের স্ট্র কঃতে পাৱে এই পরিমাণ খাজের কম্ভি, অর্থাৎ প্রায় ৫ কোট লোকের বাভের অভাব রয়েছে ৷ স্বাধীন ভারতে এই ৫ কোট লোকের বাভের সংখ্যান হওরা চাই। ছীবনবাজার মান উন্নতত্ত্ব করাই হবে আমাধের লক্ষ্য। কিছ এই বাজনস্য আসবে কোৰা বেকে ? এই ৰাদ্যালয় হয় দেলে উপায়ন করতে रूरव, मन्न विरम्भ (बर्क जाममामी कन्नर्छ रूरव । विरम्भ (बर्क ৰাভণভ আমহানী করার**িপৰে নানা অন্তবি**না ররেছে। অভাতাবিক অবস্থায় কৰা বাদ দিলেঞ্ডাতাবিক অবস্থায় विरम (बरक किए जानगानी कहरक रामरे काह पहिनाई

কিছু বঙানী কৰতে হবে। তা ছাড়া পৃথিবীতে ধ্বংসম্পূৰ্ণ হবাৰ বে হিছিক পড়েছে তাতে আৰাদেৱও প্ৰনিৰ্ভৱনীল হয়ে বাকলে চলবে না। অভএব এই ৫ কোট লোকের বাড়-শন্ত ছোটাতে হবে এলেশেই। এলেশের অনিতে বর্ডনানে একর-প্রতি বেটুত্ব বাড়শন্ত উংপন্ন হচ্ছে অন্ত লেশের অন্থণাতে তা নগব্য এ কবা নীচের ত্লনাব্লক সংব্যা বেকেই বেশ বুবা বার :—

( প্ৰতি একৱে উৎপাদন-পরিষাণ )					
८वर्ष	প্ৰ	চাল	देणू	ভূপা	
<b>শিশর</b>	7972	9351	90002	101	
<b>ভাগা</b> ন	7170	8880	89698	756	
মার্কিন	250	2364	80210	২৬৮	
চীৰ	212	२ 8 ७ ७		208	
ভারত	*60	2580	88480	45	
<b></b>				-	

উপরের সংখ্যা হইতে লেখা যাইতেছে ধে, ভারতের ভ্যিতে ष(नकाकृष षर्यक क्य बांधनछ देश्नय एय । ष्यक्ष এकव्; प्रख्र যে, মিশর, লাপান বা খাকিন দেশের তুলনার ভারতের জমির वाानाद व्यापक लाहीन। छाडे अपार कवित हैर्वदछा वा Benाशिक!-मध्कि काम श्राह्म। किन्न प्राप्त यान रहिन চীন পুরমো দেশ হলেও ভার ক্ষি ভারতের ক্ষিত্র চেত্রে বেশী क्रमण पेरणावन कराए। क्यां देखेंद्रका प्राक्ती मक्तित देणत নির্ভৱ করে -- প্রকৃতিদর শক্তি এবং মনুষাকত শক্তি। প্রকৃতি-मध मंकि दा विन-विनद्दे कदा चारम अवदा (कडेंदे चश्रीकांत्र कबर्ड शास ना । किंद वर्सबारन विकारनद वा देविक एरबरक ভাতে মাহুৰ ভ্ৰির উৰ্ব্বতা বৈজ্ঞানিক উপায়ে বাভিতে নিতে পারে এমন কি মকুছমিতেও মর্ম্মান রচনা করতে পারে। আমাণের দেশে যে তা হয়ে উঠছে নং তার এক বিলেখ কারণ चार्थ क्षर क्षर क्ष को को हार्य कि काल किया किया किया किया किया करें कतः एव भि। এই विश्वकि अर्द्भारण वृत्रावात (हर्ड) करर ।

আমাদের দেশে প্রির সমতা বহছবী। মাধাতার আমল বেকে যে প্রণালতে চাম-আবাদ হরে আগছে আজও তার পরিবর্তন সমধ হর নি। বেড়া দিরে কমি বিরে দেওরার বে প্রথা বিলেতে বর্ধনি আগে আরও হরেছিল তা এদেশে আহও প্রায় অনান। কমি সব অরক্তি অবহার এমনি পড়ে ররেছে। ত্রিত ক্ষেত্রে হাঁড়ালে ভব্ই দেখা যার ছোট ছোট টুকরো ক্ষরি চাম করা হরেছে, আর এদের আয়তন পুরুষাম্প্রতমে ছোটই হরে আগছে। তাই সেকেলে উপারে কমির উৎপাদিকা-শক্তি আর বাছবে না। কিছু কিছু ক্ষমণ পরিভার ও ক্ল-সেচনের ব্যবহা ছাড়া কমির হারী উৎকর্বের কোন ব্যবহা এ পর্যান্ত হয় নি। তাই কমির উৎপাদিকা-শক্তি হিন দিনই ক্ষয়ে। ইউরোপের বে-কোন দেশের ক্ষাই বরা যাক না কেন, প্রত্যেক বেশেই বৈজানিক প্রক্রিয়ার ক্ষরি উৎপাদিকা-

শক্তি ৰাভাৰো হয়েছে। এৱা যদি শুধু প্ৰাঞ্চিদত শক্তির উপর নির্ভর করে বাক্ত তা হলে আৰু এদের ক্ষির অনেক কমে বেড। মোট কৰা আমাজের দেশের ক্ষিত্র প্রারী উন্নতির কোন বিশেষ ব্যবস্থা আৰু পৰ্যান্ত হয়নি। সেই সংক ভূষিকৰ্বণগছতি এবং প্ৰৱোজনীয় বছাধিয়ও জোন পৰি-वर्षन रहनि। ७९ व क्षित्रहे और व्यवहा का नते, त्रहे গলে কুৰকের কর্ম্বাঞ্জিও অহুদেশের কুরকের পুল্যার অনেক কৰ। এই কৰ্মলক্তি কয় হবার অমেকভাগ কারণ আছে। কিছ ভা সন্তেও এনের কর্মকথতা যে বাড়ানো যার মা ভা মর। কিটং বলেন যে, আমেরিকায় কারু করে একজন খ্রীশ্রমিক গড়ে ১০০ পাউও তুলা কুছিবে আনে, বিশরে সেই ছলে ৬০ পাউও এবং ভারতে মাত্র ৩০ বেকে ৪০ পাউও। কিছ সব চেয়ে মুখার কথা হ'ল, ভারতে ভারতীর প্রমিকের কর্মনজ্ঞির চেমে টি নিদাধ, জামাইকা, কিজি প্রভৃতি দেশে ভারতীয় প্রমিকের কর্ম্মণক্তি অধেক বেশী। তা হলে ভারতীয় শ্রমিকের কর্মান্ডির ন্যান্ডা হোল আনাই প্রকৃতিগত নয়। বোখাই প্রদেশের বারওয়ার অঞ্লে থেঁকে নিয়ে জানা যায় হে. अक्षम औञ्जीक दिनिक नीह चाना मञ्जीत हाति मास ७० পাটত তলা সংগ্ৰহ কৰত। সেই ছলে কাত্ৰের হিসাবে পারি-শ্ৰমিকের ছার নির্দারণ করে দেওয়ায় সেই খ্রীপোকই প্রায় ১৫০ পাউও তুলা সংগ্রহ করেছিল। এছাড়: শ্রমিকদের আর একট সমসা হ'ল এই যে, কুবিতে এরা সারা বছর কাৰও পার না এবং এ ধেকে তাদের আয়ও প্রয়োভনাসকণ হর না। ভাই আবাদের সময় বাদে এদের কি করে অল কাজে লাগানো যায় সেও এক সমস্তা। এ নিষেও এ পর্যান্ত বিশেষ কোন চেপ্তাই হয় নি। কেউ কেউ হয়ত বলবেন যে, কুটর শিলের প্রঃপ্রতিষ্ঠাই এই সম্ভার সমাধান করতে পারে। কৰাট আংশিক ভাবেই মাত্ৰ সভা। কেননা আমাকলে যেসব শ্রমশিল্পী রয়েছে ভাদের খনেকেই ক্রয়ির সঙ্গে বিশেষ যোগ ৱাৰে না : আপন আপন পেলা মিয়েই তারা বাত। তাই ক্ষক যেসৰ শিল্পে লেগে ৰাকতে পাৱে তাদের সংখ্যা বুধ বেশী मञ्ज अवर कारमञ्जू करण वाकादन भौभारक । अ व्यवसाय स्थवरमञ् সাম্বরিক বেকারত প্রার প্রতি বংসরই দেব। দের। ক্ষির পরি-মাৰ ও উক্তরভার ভূগনায় কমির উপর ক্রমবর্ছমান গোকসংখ্যায় চাপ পঢ়াভেও কৃষিধণ, কাজের অভাব, কমি বিভাগ ও বঙ্ক প্ৰভতি মানা সমস্তা দেবা দিয়েছে। কতক্তলি সামাজিক विविविद्यव यव!---काण्टिकव, त्योवनविवादश्यवा, केलवाविकाव বিষয়ক আইন-একদিকে বেমন অনেকের কর্মপুতা ছমিয়ে विद्याद. यह विदय चाराह एवमनि छैनति हेक नम्या कालादक নানাদিক বেকে বাড়িয়ে ভূলেছে। এতে এক দিৰে ভয়িত্ব যবোপহুক্ত ব্যবহার হতে পারছে না, আর দিকে বৈজ্ঞানিক छेशास क्षर कर्य । नाम नाम क्षर मा । जामान क्षर कार न কুৰকেন্ত্ৰই পুলির অভাব। ভাই ভাৱা ভ্ৰিত্ৰ স্থায়ী উন্ভিক্তে

টাকা লাগাবার কথা ভাবতেই পারে লা। পর্বাপ্ত জলদেচন এবং জল নিকাশনের ব্যবহা না থাকার এদেশের কৃষিকে অনিন্দিত নৌপুরী বার্র উপর নির্ভর করে থাকতে হয়। তাই প্রতি বংসরই বে একটা নির্দিষ্ট পরিমাণ শশু উংপর হবে এমন কোন ধিরতা থাকে লা। বৈজ্ঞানিক গবেষণার কলাকলপ্ত নিরক্ষর কৃষকদের কাছে পৌছে বেগুৱা যাব লা।

কুৰির যে সৰ সম্ভাৱ কৰা উপৱে বলা হ'ল তা अप्रत्मेत शक्ष्म (व अप्करारवर्षे मूजन का मद्य। कृषिविश्वरवद्य আগে এই সৰ সমভাৱ অধিকাংশই পাল্ডাভোৱ প্ৰায় দেশে দেবা গিখেছে। কুষিবিপ্লবের অব্যবহিত পূর্বে এই সব দেশে এই সৰল সমস্তার সমাধান হরেছিল,—সে আপনা বেকেই হোক, পৰবা বুছবিএত্বের কলেই হোক পৰবা আভান্তরীৰ मरकारवर करकेर (शक । छाडे कृषि-दिश्चव वर्षम चुक क्'न. তৰন ইউরোপে সামাজিক প্রতিষ্ঠান বা আইন কামুনের দিক (परक चात्र कान वावाहे हिम ना। द्रश्विविश्वविद्य चत्र-ষাত্রা অবাবে চলল। যে সব কৃষক অমিলারদের অবীনে অর্থবাধীন অবস্থার হিল ভারা পেল মুক্তি। ভাষি এবং ৰাজনা সংক্ৰান্ত আৰুল পরিবর্ত্তন হ'ল। ছোট ছোট জমিতে চাষের পরিবর্ত্তে এখন বড় বড় কেত তৈরি হয়ে উঠল बावर क्यि विद्य दाववाद वाववाछ रू'न। हाय-वावादम्य প্রণালীতেও বিশেষ পরিবর্ত্তন দেখা দিল। নৃতন নৃতন ব্য-পাতির ব্যবহার এবং বৈজ্ঞানিক প্রক্রিয়া ও রাসায়নিক শ্রব্যের · প্রবাবে কৃষির সর্ব্বাদীণ উন্নতিতে কৃষি-দগতে স্বৰ্ণব্রের আবিৰ্ভাব হ'ল। প্ৰাচীন ব্যবহা থাকাকালেই বদি কুষিভে বৈজ্ঞানিক উপায়ের ব্যবহার করা হ'ত তাহলে পাশ্চান্ত্যে কুষিবিপ্লৰ কোনদিনই আগত কিনা সন্দেহ। মাকিন দেশে ব্দর্য প্রাচীন ব্যবস্থা নিয়ে কোন সমস্তাই দেবা দের নি। নৃত্য দেশে মুডন জাতি স্বাধীনভার আশ্বাদ পেয়ে একেবারে অভিনয উপারে কাবনযাত্র। ক্লক করতে পেরেছিল। আমাদের দেশের অবস্থা অভয়কর। আৰও প্রাচীন ব্যবস্থা বোরার রড আমাদের উপর চেপে বদে রছেছে। সমাক-বিজ্ঞানবিদ্ধের একবা স্বৰ্ভ ঠিক যে, কোন সমাৰ ভাৱ ঐতিহ্য বা ভাৱ সভ্যভাৱ

ৰাৱা বেকে একেবাৰে বিচ্ছিত্ব হয়ে বাঁচতে পাৱে না। কিৰ ভার অর্থ এই ময় যে প্রাচীন ব্যবস্থার সবচুকুই ভাল। বেমন बता बाक, जाबारवत डेखवाबिकात विश्वतक जाहरमद क्या। এতে পুরুষাভুক্তযে সম্পত্তি ভাগাভাগি হয়ে হ্রাস পেতে বাবে । এইভাবে আৰু এক-এক ক্ষম কৃষকের ভাগে বেটুকু ক্ষি পংক্ষে ভাতে একবানা সাবারণ সালগও পুরোপুরি ব্যবহৃত হতে পাৱে বা, আধুনিক প্রবাদীতে তৈরি লাবল ত দ্বের ক্থা। जाशावन क्षरकव कथा ना एव वापरे विनाय। क्विविषवक व ছু-চাবট শিক্ষাপ্রতিষ্ঠান এদেশে রয়েছে ভাদের ক্ষেত্র-বামারেও क्षेत्रिक वावश्व प्रस्तवश्व मद। अहे क्षप्रक मार्किन रम अ दानियाद कवा जामारमद मरम शक् । अहे अव रमरम হাজার হাজার বিবা জমি বৈজ্ঞানিক প্রণাগীতে চাব হয়: विभाग (बटक वीक इहाटना ७ वर्षाटक्करवंड कांक करा হয়। সামুলি বিৰিব্যবস্থার হাত বেকে যদি আমরা অব্যাহতি পেতে পারি ভা হলেই মাত্র আমাধের দেশে কৃষিবিপ্লব ৰা আধুনিক কৃষি-পৱিকল্পনা সম্ভবপর হবে। ভান-ব্যবস্থার আৰুল পরিবর্তন করতে হবে এবং সেই সঞ্চে বুষক ও ক্ষিকর্শ্বে নিযুক্ত অভাত গোকের গৃষ্টিতদীরও প্রসারণ করতে হবে। ভবেই আমাদের কৃষি প্রাচীন সংস্কার খেকে ১৩৮ ছবে। এ কেবল স্বাধীন ভারতের লাসনব্যবস্থার ঋষীনেই সম্ভবপর। গভ দেভল বছরের ত্রিটল শাসনে কৃষি বিষয়ে সরকারী নীতি বিকল হয়েছে। তার কারণই হ'ল, যে সমস্তার সমাধান আৰ্গে ঘরকার ভার কথা বাদ দিয়ে ষঠাং আংশিক **चार्य कृषिविद्राव क्षर्वाहरू का व करण** আইন প্ৰণয়ৰ হয়েছে, বিদেশ বেকে অভিজ্ঞ লোক আমদানী कवा श्रवास, व्यर्वेश्य व्यवनाव श्रवास व्यवहै। किन्न श्रष्ट দেছণ' বছরের ইতিহাস যদি বভিত্রে দেবা যার ভাহলে এ কবা वनाष्ट्रे स्टव (ब. कृषित छेरकर्व बाहिस चानोस्वन स्त्राम । পাশ্চাছ্যের কৃষিবিপ্লব এবং ভার অব্যবহিত পূর্ব্বেকার কৃষির অবস্থার এত বড় শিক্ষা এবেশে আমরা আৰও কাৰে লাগাতে পারি নি : ভাই ভার পরবর্তী ভয়ওলো নিয়ে বতই পবেষণা করি না কেন, কাজ ভাতে কিছুই এওছে না।

# দিন আগত ঐ

ভোষার কটন পণ সত্য হয়ে বৃত হোক, গ্লানি বৃছে বাক প্রতীকার্থর প্রাতে থংগ হোক রাজি যোর, উছত আহ্বানে; প্রমরাজির সেই জীয়ানত কণঙলি তুগু সজা পাক। কুমুমপেলব বাছ তরবারি নিতে চাক অন্তরীক গানে। ভোষায় সাগর হতে তরকের লালাথনি বৈশাবের তেকে বাশলিকে ভূলে গিরে আলায়রী ক্ষিবীণা বাজাক অন্তরে। বোহিনীপ্রবৃত্ত রূপ ধূর করে হাডাইও বিশ্বপিতা সেকে; পুছবো পৃথিধী বেদ শতবর্ষ পরে ভোষা মতনিরে ক্ষেত্ত।

এবন টাবের বারা খ্র্য হরে বেঁচে থাক; পদতলে বেদ প্রবের ব্ল্যেরে দিয়ে কালপুঞ্বের ভালে অনৃষ্ট বাহক। শতনাম ভূলে যাক, প্রভামত হরে সবে ভূলি ভেগাভেদ ভোমার প্রেরে বেঁবে ললাটের বহিংসনে বিশ্বেরে ভাছক।

আমরা বাঁচিরা আহি ভূত্রের বুকে আজো; নাবার আকাশ— ভূবত বড়ের বাবে ব্যবাহত বুকে তাই হাঁড়ে বীববাস।

## বাংলা শিশু-সাহিত্য সম্বন্ধে কয়েকটি কথা

ঞ্জিউষা বিশাস

ষ্বীক্রনাথ তার "কাবনস্থাতি"র এক জারগার বলেছেন—
"এবনজার দিনে শিশুদের জন নাহিত্যরনে প্রকৃত পরিনাপে
জন মিশাইরা বে সকল ছেলেতুলান বই লেবা হয় ভাহাতে
শিশুদিরক নিভাছই শিশু বলিয়া মনে করা হয়। ভাহাদিরকে মাথ্য বলিয়া গণ্য কয়া হয় মা।" বাভবিকই বাংলা
শিশু-সাহিত্যের জনেক লেবক-লেবিকাই এইয়শ একটা মভ
বছ ভূগ করেন। ভাই বিশেষ করে শিশুদের জঙেই লিবিত
জনেক বই-ই নানা জনগুর আজভুবি গল্পে পূর্ব। আময়া
শিশুদের বে এমনই করে ভগু শিশু বলেই মনে করি; ভারা
শিশুদের বে এমনই করে ভগু শিশু বলেই মনে করি; ভারা
কিছু মোটেই ভা চার মা। শিশুর মনের একাছ কামনা করে
সে ভার দাদার মত, বাবার মত বড় হবে—ভাষের মভ কভ
বছ বড় সর্ব কাল করে সকলকে জবাক করে দেবে।

"এবনও ত বড় ধই নি আমি ছোট আছি, ছেলেমাসুধ বলে। লাগার চেয়ে অনেক মত হব বড় হয়ে বাবার মত হলে।"

এইটেই যেন ভার শৈশবের খগ্ন। আমাধের বাদ্যকালে শিওসাহিত্য বলে বিশেষ কিছু হিল না বললেই হয়। তথ্যও "শিশুদের প্রতি মাতা সরপ্রতীর মাড্ডাবে"র ভেষ্ম কোমঙ লক্ষণ দেখা যায় নি। যো**ইজনাথ সরকারের "হা**সিপুসি" देखापि करवक्षानि वहे. एकिनावश्रम विकास्प्रभारवद "ठाकुदमात जुलि", "ठाकुदमानात जुलि", "ठामिनित परल" ইত্যাদি, উপেল্লকিশোর রাষ্চৌধুরীর "চুন্টুনির বই", "ছোট बाबाबन", "(ध्रामायन बाबाबन", "(ध्रामायन व्याचावण" हेजापि, पूर्वनका वाल-अव "श्राह्य वह", 'चाद्या श्रह्म" हेजापि क्रोड बद्धावत अक्षमध्याक वहें छाछा विस्मय करत निकापत क्ट निविष्ठ वह ब्वहे कम दिन। जामात तम मत्न भए, একট বছ হয়েই আমি ইংরেজী বাংলা এমন অনেক বই পড়তে (हरे। करकाम (व क्षेत्र चार्यक अवीन विक्रमनायत मार्फ स्मारिके ভোটারের পভবার উপবোদী ময়। সেই বই থলো পড়ে লব বে ব্ৰভাষ ভা নৰ---অনেক কিনিবই হয়ত তৰ্ণ বুৰতে পাৱতায মা। কিছ ভাভে আমার পঢ়ার কোনও বাবা হ'ত না। बाखिवकर बरोजनाय त्य बामायन-"(बामबा त्य वरे भिक्रत ভাरার কিছু ব্বিবে এবং কিছু ব্বিবে না এইল্লপ বিধান পাকা हारे।"--- अप्रे चूव क्रिक कथा । निक्रमाहित्छात्र अवर व्यक्तपत्र লাহিত্যের বাবধানে কোণার যে সীমারেণা চালা বার ভাও वना करिन। जाबाद बरन एवं (सरमायदावा अक्ट्रे वर्ष राजरे এবন অনেক বই-ই পছতে পারে বেওলি টিক পিওগাহিত্য भ्याब्राक्त मह । द्वरीलमात्यत "काक्यत", "बुक्डे", "मात्रत्वार-वन" "क्य", "रिजर्कन", "बाक्षि", "नवक्ष", "राज्यकोष्ट्रक", "ব্যবক্ষেত্ৰক" ইভ্যাবি অনেক নাটক, গল, প্ৰব্যব, প্ৰংচলেয়

"बारबद्र प्रविण", "विष्य (दर्मण", "दिक्षिति", विष्कृषि", "देवकुर्द्धत धेरेन" रेजापि : विवाहत्त्वत "बावकपर्द", "क्लान-কুৎলা" ইত্যাদি: ছিলেজলাল বাবের ঐতিহাসিক নাটক- अणि , वरमण्डल गट्छत "त्राक्ष्युक कौरम-जक्ता". "महाताङ्के भीवन श्रणाण" देणापि चानक वहे-हे (बालद्यस्या अकट्टे वक হলে অনায়ানে পছতে পারে। রবীঞ্জনাবের "শিশু" ও "শিশু ভোলানাৰে"র অনেক কবিভা, ভার 'কবা ও কাহিনী" বেষন শিশুদের তেম্বি বয়স্তদেরও উপজোগা। অবনীক্রমাধের "ৱাৰকাহিনী" ও "নালক" আমি ছোটবেলায় খবন পঢ়েছি তৰ্ন এই বই ছুট যেমন ভাগ গাগত আছও ভেমনই ভাল नार्त्र। चात्राव (वन यदन चार्ष्य, "वाक्कारिनी") व श्रश्रक्षा পড়তে পড়তে চোবের সামনে তেসে উঠত একটর পর একট **एवि--क्यांटिका विद्या मात्राव श्वरण कीवस स्टार देवेल अहे** সুদুর অভীতের বিশ্বত ঘটনাঙলি—পুরনো দিনের হারানো त्त्रीवटरतः भ्रवेद्दृःटवेद भागम-(रामगामः भागतः काविनीत्रवृष् । সেই ছবিঙলিতে যে একট স্লিগ্ধ নবীনতা ছিল ভা আছও क्षित्रनरे चन्नान चलव एरव व्रश्वरक वरण मरन एव।

चार्निक कारन (स्थासमान बारश्व "श्राक्षव माथानुवी" "शरकत कराना" "शरकत जानमना" ; प्रतिर्मन वश्व "(वाहेएस नव-नक्षम", "(वाष्ट्रियत क्ष्मिका", "वनमन" देखानि ; द्रामक क्यांत तार्थत "किर कर" देखानि वदरनद वहंशनि चामात এবনও পড়তে বুব ভাল লাগে। আমার তাই মনে হয় निख-সাহিত্যের পরীনির্দেশ করে দিয়ে শিশুদের ভার বাইরে মনের ৰোৱাক বঁকতে না দেওৱা সমীচীন নয়। ভাভে ভাষেত্ৰ विकारमाध्य मन महिन्छ रुख यावाद भक्षारमा । वहरमद वह পড়ে শিওৱা বদি সৰ না-ই বোৰে ভাতেই বা এয়ন ক্ষতি কি 🤊 রবীজনাৰ "জীবনস্থতি"তে নিজের ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতা বেকে এ সমতে করেকট খুব বাঁট কৰা লিবে লিখেছেন। ভিনি লিবে-ছেন--- 'নিজের বাল্যকালের কথা যিনি ভাল করিয়া বরণ করিবেন ভিনিই ইহা বুকিবেন বে আগাগোড়া গমন্তই সুলাই ब्बिए शाबार नकरनद (४१४ शब्द नाम मरह।...चाचारन **পাওৱার মূল্য অন্ন নহে। বাহারা শিক্ষার হিলাবে অমাধর্চ** ৰভাইৰা বিচাৰ কৰেন ভাহাৱা অভ্যম্ভ ক্ষাক্ষি কৰিয়া म्पर्यन, याहा (पढ्या (भन छाहा युवा (भन कि मा । वानारकता এবং বাহারা অভ্যন্ত শিক্ষিত নহে ভাষারা আনের যে প্রথম খৰ্মলোকে বাস করে সেবানে মাথুষ না ব্ৰিয়াই পাছ--- লেই पर्न स्टेटल यवन भारत स्थ एवन धूविया भारताब हु: एवब जिन আদে। কিছ একবাও সম্পূর্ণ সভ্য নহে। ক্সভে না ব্রিয়া भारेबाद दाखारे जनन नमस्बरे जनमाद (btg वक दाखा। त्मरे बांचा अटकवादा वय रहेश शिटन मश्मादात भाषात काहे-বাজার বর হর না বটে, কিন্ত সমুদ্রের বাবে বাইবার উপাত্ত

আর বাকে না, পর্বভের নিবরে চড়াও অসভব হুইরা উঠে।"
পাঠে তেলেমেরেরের বাবীমভা বর্ব করা আমার রভে রোটেই রুক্তিবুক্ত নর । এ কেলে বিবিনিবেরের অচলারতন গড়ে তারের
ইক্ষামত বই পড়তে না বেওরা বুবই তুল । বে জিনিস ভারা
হয়ত সহল সরল ভাবে বুববে তারের কড়া শাসমের যড়িতে
বাবতে পেলে ভারা সেওলি ক্রিরের ক্রিরে পড়তে তেটা
করবে এবং ভাদের কয়র্ব বুঁজবে; একবা প্রভ্যেক শিক্ষক
এবং অভিভাবকেরই মনে রাবা মরকার । তেলেমেরেরা একট্
বছ হলেই এমন বইও ভাদের পড়তে দিতে হবে বার সব কবা
ভারা হয়ত ঠিক বুবতে পারবে না । শিগুর যখন প্রথম
ধজ্যেদাম হয় তবন বেমম ভাকে অর অর করে কঠিন জিনিগও
কিছু কিছু চিবোতে দিতে হয় ভেমনই ভার পাঠে।জমের
আরভেও ভাকে কিছু কিছু কঠিন বিধ্যের আহাদ নিতে দিলে
ভাল হয় । নৈলে ভার মন উপযুক্ত প্রসারভা লাভ করবে
কি করে ?

এখন বিশেষ্ট্য, কি রক্ষ বই দিয়ে আমরা শিশুদের প্রথম পদতে শেখাব ? এটাই আমাদের বিশেষ করে ভাববার কবা, কারণ শিশুদের প্রথম পদতে শেখানোটাই হচ্ছে সব চেয়ে কঠিন। কিছ ছংখের বিষয়, বাংলা শিশুসাহিত্যের পেবক-লেখিকাদের এদিকে তেমন পদ্য নেই। আগুনিক শিশাবিজ্ঞান-প্রণালীসম্মত শিশুদের প্রথম পঠন শিশা দেবার উপযোধী কতক্তপি চিত্রবহণ বই বাংলা গদ্যে এবং পদ্যে লেখা বিশেষ দরকার। যোধীক্রনাথ সরকারের "হাসিখুসি" ইত্যাদি ধরণের বইগুলি আমার মতে শিশুদের প্রথম পদতে শেখাবার শক্ষে মন্দ মর। রবীপ্রনাধের "সহক পাঠ"ও এই প্রথমে বিশেষ উল্লেখ-যোগ্য। শিশুরা এই বইগুলি বাশুবিকই ধুব উপভোগ করে।

चावारच्य चर्नरक्षे वारणा चावाय जरू क्षयम श्विष्ट करबिक क्षेत्रहरू विकामानव मनारवत "वर्गविकरव"त बरना দিরে। এই বইবানি আমাদের সকলের কাছেই সুপরিচিত। चामदा अक्टनरे वानि वरेडे कि दक्ष इत्साया मत्य ७ कठिन ষ্ট্রীন বানানে পূর্ব। এতে করে শিশুদের পাঠে অহুরাগ না कवित्य विदान कवावादर तभी मधावना। अरे वरे धवत्यरे ভাষের হাতে দিলে ভাদের মধে কেবল বানান-বিভীষিকাই ভাগিতে দেবার আগতা আছে। নিডাদের প্রথম পড়া শেবাবার ভতে পরবর্তী যে বইওলি লেখা হয়েছে ভার বেশীর ভাগই विमात्रानंत वसामायत "वर्गविकाद"दरे कछकी अञ्चलवा । बहे धनिएछ (यन शर्रब-निका दश्यांत्र सूरवार्श कीकि पिरव वानाव শিকা দেবার প্রয়াসই সক্ষিত হয়। পুরাতনপদী আমার (कामध कामध वह धरे मिर्द कामात जर्म कर्न करवरहर । कारिय मर्क बामारमत पिरक टावम (बरकर ममूहिक पृष्टि मा पिएल (करलायरबरा शरब वांभारन कांका व्यक्त वारव। अरे विकास चार्यि त्यार्टिये नयर्थन कवि मा । निकास नवास त्यवाबाह महत्व छात्वत्र महत्क त्यवात्वारे व्यक्तात्र । वाबाव

नरव चयना नरक नरकरे चक्र माना डेनारव निका रवक्श रहरू शास्त्र । अरे महारे भईन-निका रच्यात शक्त वाका-नर्दव প্ৰণালীই (Sentence Method) সৰ চেয়ে যুক্তি সম্ভ প্ৰণালী वर्ण वर्ष एवं । अर्फ निफरवर क्षेत्ररहे वाबाव (नवार्फ क्रिक्टी না ক'বে প্ৰতে শেখানোর নির্দেশ দেওবা হয়। বাছবিক্ট আমরা বৰন কোনও কিছু পড়ি তবন প্রভোকট বর্ণ বিল্লেখন করে বানান করে করে শব্দগুলি পড়ি না। বার বার দেবভে দেৰতে শক্ষপাৰ এক একট ছবি আমানের মনে ভুমিত হয়ে যায় যাতে ক'ৱে আম্বর কোনও একট বিলেষ শব্দ দেশলেই বুৰতে পারি সেটা কি--বানান করবার আর দরহারট হয় ৰা। এই রক্ষ করে এবং "Look and say method"-ब भेर्रन-निका पिरम--- थर्शर इवि स्वविद्य निकारकत भक्षरक भारत छात्र। भए।त अश्व जासक (श्राक विकेश कर ना। কিন্তু বাংলা ভাষায় এই প্রণালী অংলখনে ভুচিত পঠন-শিকা দেবার উপযোগী বই বুব কমই দেবতে পাওয়া বার। এট আমাদের বাংলা লিওসাহিত্যের একট মণ্ড বঙ चकार व'ल मान एश । देशदिकाल अविके करा चारक---well began is half done-- আৰাং কোৰও কিছুৱ আৰুভট ভাল হলেই সেট প্রায় অর্ডেক সম্পন্ন হয়ে যায়। ভাই প্রথম পাঠা বইপ্রলি যথাগন্তব শিক্তদের পক্ষে চিতাক্ষক এবং चानक्षांत्रक एउवा प्रकात । (एएए।एएवा एवन क्षत्र (परके পঢ়তে ভালবাসে শিক্ত-শিক্ষয়িতীর ও পিডামাভার ভাই লক্ষ্য হওয়া উচিত। পুতরাং যে বইঞ্লি দিয়ে লিওদের প্রভায় "হাতেৰভি" হয়-- যা দিয়ে ভাদের ভবিষ্ণং পাঠাওৱাগের গোড়াপথন করতে হবে-সঙলি যদি নিভান্তই নীগ্রস হুর্কোন্য नर्स पूर्व ७ कड़े। इक बानानवर्ग एम जार्र जार्र जार्र খভাবভ:ই পাঠের প্রতি বিরক্তি ও বিভ্রণ করে। বলা বাছন্য এই প্ৰথম পাঠ্য বইন্ডলিতে যথেষ্ট পরিমাণে সর্বাঞ্চ চিত্র বাকা एतकात, कावन वढीम चनिव नाशास्त्रा निश्रद्व मन नार्ट्ड আৰুষ্ট করা সহজ হয়। এই বিষয়টার প্রতি আমি লেখক-লেবিকাদের গৃষ্ট বিশেষ ভাবে আকর্ষণ করভে চাই। লিছ-দেৱ বইবে বেশী ছবি বাকা দহতেও কোনও কোনও প্রাচীন-পদ্মী আপত্তি করেন। জারা বলেন ভাতে নাকি নিজ্ঞের ৰলোবোগ বিক্তিত হবার বিশেষ আশভা এবং সভাষমা TICE I

শিশুরা অনেক সমরে পাঠ্য বিষয়ের প্রতি মনোযোগী না হরে ছবিওলির প্রতিই নাকি বেশী আরুই হয়। এ কথা অংশতঃ সভ্য হতে পারে। কিছ ভাতেই বা ফতি কি ? বিভ্যালয়ে শিশুরা কি ভবু প্রবংশক্রিয়ের সাহায়েই শিশুনাত করবে ? চোব দিয়ে দেবেও ভো ভাবের অনেক শেববার আছে। ভাবের একাবিক ইক্সির পরিচালনা করে শেববার হবোব বেওরা কি মুক্তিসকত বর ? শিশুরা কান বিত্রে বা ভব্বে চোব বিরেও যদি ভা বেবতে পার ভা ব্যে ভাবের মনের

ৰারণাওলি চের বেশী স্পষ্টভর, বৃচ্ভর ও অবিক্তর স্থায়ী হয় না कि ? जा बाजा, जायदा जानि निश्वत्वद वन वजावजः है इकन । बरेण्ड बकरे क्षकांत्र कार्क वा किनिटन छारबंद बरनारवान বেশীকৰ বিবন্ধ বাকতে পাৱে বা ৷ ভাই আহ্বা পাঠাবিষয়ের প্ৰতিও ভাষের অবও মনোযোগ কৰনই আলা করতে পারি ৰা। আমৱা ভানি কোনও সম্পূৰ্ণ অঞাভ বিষয়ে বিভালের মন चारिं। चारुडे एव मा- वर्ज्यन ना चायता मिहेर महि जारित পূৰ্বপরিচিত কোনও বিষয়ের সম্বন্ধ স্থাপন করতে পারি---विवर्ध हिन देशांभित भाशाया लापद कार्ड कलकी नदम. ইজির-এাহ করে ভগতে পারি। তুতরাং পাঠ্য বিষরের প্রতি কৃত্রিম উপায়ে শিশুদের আগ্রহ ও ঠাংসকা জাগানো पदकाद---भरेटन जारबद मरनार्यात्र चाकरन कहा चलाच कठिन হয়। পাঠে প্রবমেই শিক্তদের স্বেচ্ছাপ্রশোদিত (voluntary) बर्गार्थात्र भस्यवेशव नयः। ভাষের মন प्रकारण: व प्रकार सहीत ছবির প্রতি আকৃষ্ট হয়। ভাই ছবির সাহাব্যে ভাষের হবে শাঠের প্রতি অহবাণ করাতে ও পাঠা বিষয়ের প্রতি ভালের मनारवान चाकर्यन कहाल एठडे। कहाल करता । अहे वहेचनिह মলাট এবং প্রাছদপট্ও পুর্ভিত চিত্রের সাহাযো ঘ্রাসম্ভব **डिखाक्र्यक कदाल (इंडा कदा) पदकाव--- घाटल निकायद बारम** ষভঃই পঠনস্থা ভাগে, ভাগের কৌতুহল উনীপিভ হয়।

বাংল: ভাষার শিশুদের উপযোগী হভা ও কবিভার বইরেরও বিশেষ অভাব লক্ষিত হয়। ইংৱেশীতে যাকে nursery rhymes বলে নে কাভীয় ম্ভা ও কৰিতা লিখবার প্রয়াস এবনও তেম্ব করে বাংলা শিক্সাছিত্যের লেবক-লেবিকাদের मर्दा (प्रदी यात्र ना । भिक्रता चार-चार करत करिका ७ छ। मुबंध रमण्ड कार्ति कार्याम नाव । अहे इक्षाक्रमि निविद्य कर বে তাদের স্মৃতি ও কল্পনাল জির অগুলীপন হয় তা ময়, এই অলির সাহাযো ভাদের স্বাভাবিক ছন্দোবোরকেও জাগিরে ভোলা হয়। শিশুর অকোমল পেলব মনট ছলতে থাকে ছব্দের তালে তালে। "কল পড়ে পাতা নড়ে"---এই সামান্য क्यां क'हित एम निक दवीखनात्यत यमत्क कि दक्य त्यांना দিহেছিল কৰি তাঁৱ "জীবনশ্বতিতে" অমৰ ভাষাৰ তা লিখে निरवर्षन । अरेटिर माकि छात कौरत "चापि कवित अध्य কবিভা।" এই কথা ক'টির বাহার তাঁর কানে গিছে বাজতে তার মনে বে অপুর্ব আমন্দের সঞ্চার হরেছিল ভাই বৰ্ণনা করে ভিনি বলেছেন—"গেদিনের আনক আকও খৰন মনে পড়ে ভৰন বুৰিভে পাত্ৰি কৰিভাৱ মৰ্যে মিল ভিনিস্টার এতো প্রবোজন কেন। মিল আছে বলিয়াই কবাটা শেষ হইৱাও শেষ হয় না---তাহার বঞ্চব্য বৰ্ণন সুরার তৰ্ণও वश्कावकी कृवाव मा. मिनकारक नहेवा कारमब नरक मरमब नरक (बना इनिएड वाइक । अवनि कृतिवा किविया किविया (मिष्य) আমার সমস্ত চৈততের মধ্যে কল পড়িতে ও পাতা বড়িতে नातिन ।"

ক্ৰিভাৱ মিলের মধ্য দিয়েই শিশুর বাভাবিক হল-অন্থান চরিভার্ব হয়। ক্ৰিভার হলের বভারট অবেককণ ব্যু ভার কালে অন্থ্যশিক হতে বাকে—ক্ৰা সুরিয়ে গেলেও। निक्रा छारे रहा ७ कविछ। दूरह क्राट अछ जानक शाह । কিছ আৰুভিৰ উপৰোধী ভাল ভাল হড়া ও কবিতা আৰও শিশুৰেৰ পাঠ্য পুতৰগুলিতে তেখন বেৰতে পাওৱা বাৰ ना । निक्रमारिएक बरीक्षमार्थक चक्रममीक चनवान, "निक" "শিশু ভোলানাৰে"র কৰা আগেই উল্লেখ করেছি। এই কবিতাখলির মণ্যে বে অপুর্ব শিশুসমন্তর কুটে উঠেছে ভার ভার তুলনা হর না। এইওলি নিওদের রুবছ করিবে তাবের দেওলি উপর্ক্ত অক্তর্জী সহকারে আর্ভি করতে শেবালে কভ ভাল হয়। বাংলা ভাষার লিওছের উপযোগ হড়া ও কবিতা লিৰতে আৱ বে গব লৈৰক-লেৰিকা প্রবাস পেরেছেন তাঁদের মধ্যে বোদীক্রনাথ সরকার ও प्रमिर्देश रक्ष माम विरम्बन्धार है जिब्दानामा । स्वामेक्समान সরকারের "বুকুমবির হড়া", "হড়া ও পড়া" ইত্যাদি, পুনির্মুল वद्भव "बन व्यव्या " "बान्य हैरहार" वेलापि बरावद वहें बान मिछत्वत भएक पूर्व छेभरवात्र । वाश्मात बहे बत्रत्वत হড়ার বই আরও লেখা দরকার। আমাদের দেশে ছেলে जुनारांत चर्ड चरमक स्वरंति चड़ा ७ पूर्यशाहां में शाम चरमक निन बरव लाटकव बूर्च बूर्च करन चानरह । किंग्र इ:रवंब विषय अरे बरार्वत एका क्षेत्र कामा विषय विषय कार्य वाटक বোৰ হয় আধুনিককালে আলোকপ্ৰাপ্ত। ভননীয়া এই ব্ৰহম "ছভা কাটা"কে সভ্য সমাজের মীভিবিক্লছ বলে মনে করেন। যা হোক, পিওশিকার এই হড়াওলিরও বে একট বিশিষ্ট ছান আছে দে কথা আৰু আমাদের ভুললে চলবে না। পুভরাং बहे बढ़ां छ नि मर बह करत वहेरवत चाकारत श्रकां करता जर निकार निकार (भक्षेत्र कार्क भागात श्रवे कात एस। दवीक्षनाथ अरे एकाधनितक, "मान्तिक स्ववदारकाद नीना" > বলে অভিহিত করেছেন। বাগুবিকই অংশুত এই হড়াগুলিতে कान जारवा महिल वा बहेनाव बाबावाहिक जा नहे। পরস্বর সামগ্রস্থবিদীন, অসংবদ্ধ অসংলয় কতক চলি ছবি বেন नामां अक्षे धनक्त यानच्य नाया। करन क य अधन বচনা করেছিল কেউ তা জানে না। কিঙ এওলির উপরে এমন একট চিরনবীনতা ও সহক সকীবতার হাপ আহে বে হাজার বছর আগেও যদি এওলি রচিত হবে থাকে ভবুও এওলি কিছতেই পুরনো হবে মা। শিওমনকৈ তুলাবার चट वरे एकाक्ष्मित मर्गा (यन वक्षे चपूर्व सार्ममञ्ज मिर्क चारह ।

"বৃষ্টি পড়ে টাপুর টুপুর, নদের এল বান।
লিব ঠাকুরের বিহে হ'ল, তিন কঞে দান।
এক কলে রাবেন বাড়েন, এক কলে বান।
এক কলে না বেরে, বাপের বাড়ী যান।

রবীক্রনাথ বলেছেন, এই ছড়াট ডার নৈশবের "নেবদুডে"র বড় ছিল। এই ছড়াট ভনলেই আবাদের অনেজেরই নিজেবের শৈশবের স্থতি বনে জেগে ডঠে। ববে গড়ে, হোটবেলার রুট

পড়তে আরম্ভ করেছে বেবলেই হড়াট বলে কত আহোদ শেতাম। এই হড়াওলি আমাদের বাংলাদেশের একেবারে নিজৰ সম্পত্নি-প্ৰায় প্ৰভ্যেকট হড়ার পাষাত সামাত কৰাৰ क्रांडे क्रेट्ट बादबर अरु अरुडे दिन ना नाम-न्याबादबर बदबर अक अकड़े जार या जामारमतरे अकाच मर्स्य कथा। अधनि বেন একট আন্ত ক্পভের ভালা টুকুরা কালের প্রোভে ভাসভে चाभए अत्मरह--अधनित मर्या वहना विक्रिप्त स्टब स्प्रिय রবেছে বিচিত্র কভ বিশ্বত আদন্ধ-বেগনার স্থাতি, কভ ছারানো बित्यत फूल बालवा शांत्र-कातात, खूब-इ:त्वत काश्बी। कवि বারিবারার নাবিরা আসিরা শিশুশভকে প্রাণদান করিতেছে এবং হড়াওলি স্নেহরদে বিগলিত হইরা কল্পার্টিতে শিশু শ্বৰকে উৰ্ব্যৱ কৰিয়া ভূলিতেছে। সনুকাৰ বছনহীন যেৰ चानन नवुष बदर दहमशैनछ। खत्नहे चनहानि विख्नादान च्छावछ:रे छेन्यात्र सरेवा छेठिवाट अवर स्कालनित जाव-হীৰভা, অৰ্বৰ্ণপূন্তা এবং চিত্ৰবৈচিত্ৰ্যবশভঃই চিত্ৰকাল ব্যৱস্থা বিশুবের মনোরঞ্জন করিয়া আগিতেছে--বিশু মনো-বিজ্ঞানের কোনও খুত্র সন্থুখে রাখিরা রচিত হর সাই।" এই হড়াওলির অপরাণ বিশেষত্ব কবির ভাষার বেমন স্করভাবে क्षक हरत हर्दिए बाबाद जाना त्महे बाबाद नक्षता बाबाद চমংকার করে প্রকাশ করা। ভাই কবির ক্থাওলিই উছত করবার লোভ সংবরণ করতে পারলাম না। বাংলা শিশু-माहिन्यु-लक्षेत्रिय कार्य भाषात वित्यय नित्यम जाता त्यम এই ছেলে-ভুলানো ছড়াগুলিকে নিতান্তই ছেলে-ভুলানো কিনিস वर्ज प्रम्म वा करवम । वारमा निष्ठ-माहिर्छ। এইश्रमित बृमा (द क्छ (वर्षे छ। चदर द्ववीक्षमापरे वर्ण तिरहस्य।

चामदा सामि निकदा बचावकः रे शह समस्य चामवात्म । क्षि भक्न व्यत्पद निश्चत्यद अक दक्ष पद कान नात्र मा। ছোট ছোট ছেলেনেরেরা সাধারণতঃ জীবজন্তর কথা ভনতে ৰুব ভালবালে। "বিহলমা বিহলমী"র গল, "শিয়াল পভিডে"র পল্ল, "সিদিবামা"র পল্ল তাদের কত প্রির। তারপর তাদের क्रमानकित উष्ट्रित जरम जरम सनक्षा उनक्षात विवित কাহিনী ভাবের শিগু-মনকে অভিভূত করে। কর্মার পশীরাক ৰোভাৱ চৰে শিশুৱ মন কৰনও 'সাত সমুদ্ৰ ভেৱো নদী পাৱে'. ভেণাছৱের মাঠে, কৰনও সাগরভলে রাক্সপুরীভে বে রাজ-কভা বুমিয়ে আছে সোনার কাঠির পর্ণে বে কেনে উঠবে---ভার কাছে চলে বার। ছরোরাবীর ছাবে কর্মত ভার কুল बुक्के बाबाब केरवन शरब केर्क-केशनक अञ्चलारब टाव क्रके তার হল হল করতে বাকে--- हरे গও বেরে মৃক্তোর মত অঞ্--বিশ্ব বৰে পড়ে। পাতালপুৱীতে বাৰকভাকে উদাৱ করবার ছতে বা সাভৱাজার বন মাণিক আহরণ করবার ছতে বাজ-পুরের বিশংসভুল হঃসাহসিক অভিযানের কাহিনী ভনতে ভৰতে তরে বিশবে তার হোট বুকট হল হল কাঁপতে থাকে। গল ভৰতে ভৰতে সে কলবার বলা হেকে চলে বার পরীদের অপল্প লাজ্যে, বিহুদ্ধা বিহুদ্ধীয় বেশে, বৈভ্যপুরীতে বা রাক্সপুরীতে। মরবুর হরে শিও গর শোলে-ভার চোথের সামৰে ভেনে ওঠে ছবির বালা—সেওলি বাভবে সভব কি অগভৰ ভার মন সে বিচার করে মা---সে এখনও এ ভগতের "সভাবাতার শেষ সীবা"র প্রাচীরে মাধা ঠকে কিরে আদেনি। ভার কাহে ভাই অন্তত কিছু যেই---অগন্তবন্ধ কিছু নেই। শিশুর কল্পনাশভিত্র পরিস্করণের করে निक्ताहित्या सन्दर्भ अवर देनक्यात अक्षे विनिष्टे याम আছে। ত্ৰণকৰা ও উপক্ৰায় মায়ায় ব্ৰহ্ণদেৱ মনও খাবিষ্ট না হয়ে বাক্তে পারে না। এই গল্পপির মধ্যে ভোর খেলাকার শিশিরধোরা সুলের মত এমন একট অনবদ্য সৌৰ্শ্য ও সৱসভা আছে যার মাবুরী আমাদের वबकरण्ड भरनद भरनाथ रव अकड़े विद्यापन मिल धनिरद मार्ट छाटक बुध ना करत शारत ना। तन्तक-तन्तिकारमय गरम बाबेट एरव कारने कथात भग मिरारे कृष्टित कुमरे एर ছবিওলি, গল ভাষতে ভাষতে বা পড়তে পড়তে শিশুর চোৰের সামনে আঁকা হয়ে যাবে ছবির পর ছবি – তার মন চলে যাবে কোন সুত্রের এক খপনপুরীতে যেবানে অসম্ভব বা শত্ত কিছু নেই। বাংগা রপকথা বগতেই মনে পড়ে লপক্ৰাৰ যাছকর দক্ষিণারঞ্নের "ঠাকুরমার বুলি" ও "ঠাকুর-मामाद थूनि" चाद निवाहाया चनमैळनाच ठाकूरदद "भीरदद পুড়লে"র কথা। অবনীজনাবের মত গল বলিরে ধুব কমই আছেন—কলমই যেন ভার ভুলি। তাই তার কলমে সুটে ওঠে ছবির পর ছবি। যেমনি অভিন্য তার কল্পনা ভেমনি যাছ ভার ভাষার। "কীরের পুড়ল" ভবু রপকবা নর-একে क्रिय-यगक्षां वना करन ।

শিশুরা একটু বড় হলেই যুক্তি প্রয়োগ করে বিচার করতে চার গল্পলি বাত্তবে সম্ভব কি না। তথন আর নেহাত ভর্ জীবজন্তর গলে, রূপক্ষার, উপক্ষার ভাগের যনের খোরাক জোগানো বার না। ভাই পিওবের মনোবৃত্তিভলির ক্ষম-বিকাশের বারা অহুবায়ী তাদের বিকাশোহুর মনের বিবিধ ৰোৱাক কোগাভে চেষ্টা করতে হবে। ভা ছাড়া, লিঙ্কন বৈচিত্ৰ্যপ্ৰির। একই রক্ষ গল তাদের ভাল লাগে না---সাবারণত: নয় বেকে এগার-বার अक्टब्रस मार्थ। বছবের ছেলেখেরেরা ছঃসাহসিকভার গল, শিকারকাছিনী ইভ্যাদি ভালবাসে। এই বয়সে ভাদের মন বুব কল্পনাঞ্চৰণ পাকে। ভাই অসম্ভব হুঃসাহসিকভার কাহিনী, বিশংসমূল इत्र पियानिय भव धरे वर्तामव (धामायायाय मनाक चाकृष्टे करत । अकृष्टे वर्ष (बर्लाश्वरापत्र चरमा चान **ঐতিহাসিক গল এবং উপন্যাসও বচিত হওলা হর্কার----**ভাবের উপবোদী সহজ সরল ভাবার। এই প্রসঙ্গে অঘনীত্র-শাৰের "বাদকাহিনী"র নাব বিলেহতাতে উল্লেখযোগ্য। এই

বরবের বই বাংলার আরও লেবা ধরকার। আগেই বৃলেছি ছেলেবেরেরা ববন সভব-অসন্তব বিচার করতে নেবে তবন আর তাদের মন তবু রূপকবা, উপক্ষার গরেই তৃও হতে পারে না। তবন তারা গরের মধ্যে কেবতে চার তাদের বৈনন্দিন জীবনের প্রতিক্ষবি, সংসারের প্রতিদিনকার বটনার বাতরতিবাত—তাদের প্রাতৃহিক জীবনের প্রবৃহ্ব আনক্ষের্যার প্রকাশ । প্রবের বিষয় এই বরবের কিছু কিছু গল বাংলার লেবা হরেছে এবং হচ্ছে। আলা করি বাংলা শিশুসাহিত্যে রবীক্ষনাবের অপূর্ব্য অবদান—তার শালা শিশুসাহিত্যে রবীক্ষনাবের অপূর্ব্য অবদান—তার শালা শিশুসাহিত্যে রবীক্ষনাবের অপূর্ব্য অবদান—তার শালা প্রত্যাকটি গল্পর পর্বানি। বইবানি কৃতক্ষতি হোট গল্প ও কবিতার সমৃত্র বিষয়বন্ধ নিয়ে লেবা। গল্প ও কবিতাপ্রতি অপরশ হাস্যরের সমৃত্রন। বাংলার শিশুরা এই বইবানির মধ্যে নুভ্যারের সমৃত্রকা। বাংলার শিশুরা এই বইবানির মধ্যে নুভ্যারের আরাধ পারে।

শিশুদের পঠন যদি শুবু পল্লের মধ্যেই সীমাবৰ বাকে ভাহতে তাদের মন অতিবিক্ত পরিষাণে কলনাবিলাসী হয়ে উঠবার चानका चारह । वन-अभाव वहत वहम (वस्कृष्टे छारवत चनामा माशायन स्वाय-विश्वयक वहेश्व नवटक केश्मादिक कदारक करन । ভাষা দেশবিদেশের বভ বভ লোকদের ভীবনী পভবে-- নানা-রক্ষ ভ্রমণ-কাহিনী প্রত্বে--ভাবিছারকদের বিচিত্র ভঞ্জ-যানের কথা পছবে। এইখনি গলের চেরে কোনও খংখে कम ठिखाकर्यक नव । प्रत्येव विषय, (बाईएमव देशदामि कछक-ঙলি ভাল ভাল জীবনী সম্প্ৰতি বাংলা ভাষার লিবিত হরেছে बबर एट्ट। दिमन त्याय बिठ्ड "मिछबरि," "मनीयीरनब (छाडेरिका" रेज्यापि वरेकिंग विस्मय जारव वैस्त्रवर्शाता । বলাইটাদ মুৰোপাব্যারের নাষ্ট্রকাকারে লিখিত বিদ্যালাগর ও বাইকেদ মধুখনৰ দভের জীবনীও অপেকাকুত বড় ছেলে-যেরো পড়তে পারে। এমণ-রভাত ও আবিভার কাহিনী-क्रिक (स्थाप्यादावा गरबाद १६एव क्य देशकांत्र करद मा। এর মধ্যে দিরে ভারা কানভে পারে কেল-বিদেশের কৰা-জানতে পারে নানা ভৌগোলিক তথা। বাংলার ছোটদের ক্ষাে লিখিত ভ্রমণ-কাহিনীর মধ্যে অবনীক্ষমাধের "ৰুছো আংগা"র নাম বিলেষভাবে উল্লেখযোগ্য। বাংলা निस्त्राहित्या अहे वदावत वहे चात तावा हताह कि मा चानि ना। বাংলা শিশুসাহিত্যে "বুড়ো আংলা" বে একট বিশিষ্ট ছান অবিকার করে বাকৰে সে বিষয়ে কোনও সন্দেহ নেই। হোটদের খতে আরও কিছু কিছু ভ্রমণ-কাহিনী বাংলার লেখা হরেছে এবং হচ্ছে। তার মধ্যে বোহনলাল গলোপাধ্যারের "हबनिक", चत्रशामकत बारबत" रेक्टिवारणत हिकि", शरकसक्यात बिरबद "रमन-विरम्" देणापि करशक्यामा वहेरवव मात्र कवा বেতে পারে। অপেকাকত বড় ছেলেবেরেরা বিভূতিভূষণ বন্যোপাধ্যাম লিখিত "অভিযাত্তিক", প্ৰবোৰকুষার সাল্লালের

"বহাপ্রহানের পথে" ইভ্যাদি অবণ-কাহিনীগুলি বেশ পদতে পারে।

বাংলা শিলসাহিত্যে এমৰ ভতত্ত্বলি বই লেখাও ধরকার बाट्ड (स्ट्लिट्बट्बट्बट्ड नाबाइन स्नाम बाट्ड। जाडा विश्य-में जायीत (बरनायरब--करबाद देवजानिक इत्रे । विज्ञान नवरब তাবের সম্পূর্ণ অঞ্চ রাধনে চলবে কি করে ? আক্কালকার শহরের শিশুরা তো যাড়জোড়ে বেকেই বেবতে পার রেডিও, টেলিফোন, টান, টেন, বোটন, বৈছ্যতিক আলো ও পাবা, নিনেমা ইভ্যাদি। এওনি কি বুক্ম বৈজ্ঞানিক প্রণালীভে চলহে তা ভাৰতে অনেক শিশুর মনেই হয়ত কৌতুহল ভাগে। चारतक मनम जाता रक्षानत नामा विवास चारतक खानक खान करव --- কিছ অনেক সময়েই তারা তাদের প্রান্তনির সম্ভর পার মা। শিশুবের বাভাবিক আনশিশাসা ও কৌতুব্দ নিযুত করা নোটেই স্থীচীন ময়। শিশু-সাহিত্যের মধ্যে থিরে ভাষের এই জানার্জনস্থাকে নানা উপায়ে চরিভার্থ করতে চেটা করতে হবে। किह्यिन चार्त्र विक्रमकृशांत करें। চার্ব্যের लवा "भूबाब प्रके" वरण अकवामा वह शक्किलाम । वहेवाबि আমার বেশ ভাল লেগেছিল। ভাতে ভভক্তলি সাধারণ বৈজ্ঞানিক তথ্য বেশ সহক সরল প্রাঞ্জল ভাষার গলছলে (स्टार्मास्टापन दोनावान क्षेत्र) करा स्टार्स । अरे नक्ष वर्षे वारमात चात्रक (भर्ता प्रत्कातः। चम्पामक तारस्य বিজ্ঞান ও প্রকৃতি-বিজ্ঞান বিষয়ক বইওলি পড়েও ছেলে-মেরেরা অনেক বিষয়ে জানগাত করতে পারে। শিশু ভার নবীন চোৰ দিয়ে প্রকৃতির দিকে বৰন ভাকার গভীর वियाद जात कि मनडे जात अर्थ-क्छ अन्तर, कछ नमजारे ভবন ভার মনে কেনে ওঠে। ভার সেই নবোদেষিত কৌতুবন ও অনুস্থিংসাকে সর্বাচাই স্থাগ হাবতে চেঠা করতে হবে---ভাষের প্রশ্নের সঠিক উত্তর দিতে হবে। কিছ বা বাবা প্রভৃতি ভরত্বদের পক্ষে তাদের প্রশ্নগুলির সহত্তর দেওবা অনৈক সময়েই সম্ভব হয়ে ওঠে না---অনেক সময় তাঁৱা বিরক্ত ছবে ভিরন্থার করে শিশুদের প্রশ্ন করতে নিরম্ভ করেন।

 নাধারণ আন বাড়াতে চেঙা করতে হবে—ভাবের বাভাবিক আনস্থা ও কৌতৃহল উদীশিত করতে হবে।

কেবল কতক ওলি ভক্লগড়ীর শিক্ষাপ্রদ বই লিবেই বেন বাংলা শিশু-সাহিত্যের লেবকলেবিকারা শিশুদের মনের বারাক কোনাতে চেষ্টা না করেন। শিশুদের মানসিক লাখ্যের দিক দিরে তাদের কিছু কিছু লগুতর বিষরও পড়তে দেওরা সমীচীন। তাই ভাদের কচে লিবতে হবে. নির্কোষ কৌতুকপূর্ণ হাত্রনারক কতকওলি বই বা পড়ে শিশুরা ধুব আমোদ অভ্যুত্তর করহব আর বুব প্রাণভরে হালবে। বাংলার এই বরণের বই লিবে অমর হ্রেছেন স্কুমার রার চৌবুরী। তার "ব-ব-র-ল", "আবোল তাবোল" ও "বছরপী" ছোট বছ সকলেরই উপভোগ্য। তিনি বাংলার শিশুদের "কল্টানা জীবনের বাতার নিয়ে প্রকেন লাইনভালার আনক।" তার সহছে প্রকলন বলেছেন—"তার হালিটা ভবু হালি নর—লাহিত্য।" বাতবিকই তাই। এই বরণের বই বাংলা শিশুনাহিত্যে ব্রুব বেশ্ব প্রধান পর্যান্ত লেবা হয়ন।

বাংলা ভাষার ছেলেমেরেদের উপবোদী করেকবানি বেশ ভাল মাসিক পত্রিকাও বাকা দরকার। আবাদের ছোটবেলার ভটপেঞ্জিশোর রার চৌধুরী সম্পাদিত "সজ্ঞেশ" মাসিক

পত্ৰিকা বেকুত। মনে আছে কি ব্ৰক্ষ স্থীর আগ্ৰহে বাসের क्षर्य शिक्ष "नर्भर"य पर परम्पा क्याना । अपन्छ "মৌচাক", ''রংম্পাল", ''শিক্সাৰী'' ইভ্যাদি ক্ষেক্ৰামি ছোটদের উপযোগ ভাল মাসিক পত্রিকা বেরর। বিভালর-नवृद्द बहे वानिक পविकाशनिव वहन बाहाब रखवा जाराउक এবং ছাত্ৰছাত্ৰীৱা যেন এইওলি নিয়মিত পড়ে শিক্ষক-निकविद्योगन (म विश्वत विद्यार निका द्यांबदम । अरे मन নাসিক পত্রিকার ভবু বে ছোটদের উপযোগী প্রবছ, গল, ক্ৰিভা, জ্ৰমণ-কাহিনী ইভ্যাদি বেক্লবে ভা নয়, এওলি পভে ছেলেমেরের খেন নিজেদের দেশের ও জগভের অভাভ বেশের ধবর জানতে পারে। এওলির মধ্য দিরে ভাদের খাৰীনভাবে চিড়া করবার শক্তিকেও ভাগিছে তুলভে হবে। ভারপর, অনেক ছেলেমেয়েরই হয়ভো লিববার বা আঁকৰার শক্তি আছে। কিছু উপযুক্ত উৎসাহ ও আত্মকুলোর चकारत चरनक मगरबंदे जारमत त्मदे श्रष्टत मंकि कूटि हैर्रवात প্ৰবোগ পায় না। ভাই ছেলেখেয়েদের এই সব পঞ্জিকার লিখতে এবং আকতেও উংসাহিত করা উচিত। এই উদেতে মাৰে মাৰে গল্পৰৰ, কবিতা ও শিল্পতিযোগিতাৰ ব্যবস্থা করা বেভে পারে।

# যুক্ত প্রদেশের প্রান্তিক লোক-সঙ্গীত

গ্রীমায়া গুপ্ত

বিবাহ

বুক্ত প্রদেশের লোক-সকীতের ভাষার এবং বিহারের গানথলির ভাষার বে পার্বকা বিধ্যমান তা বুক্ত প্রদেশের পূর্বন
ও পশ্চিম প্রাণ্ডের কবিত ভাষার পার্বক্রেরই প্রান্ত সমস্থল্য।
বিহারী ভাষা বাঁরা বুকেন বুক্ত প্রদেশের কবিত ভাষা বুবা
উাবের পক্ষে বৃব ক্রিন নর। কৌনপুর বেকে ভাষার করে
পশ্চিম দীরা পর্বান্ত অববী ভাষা এবং পূর্বন অংশে ভাঙ্গপুরীর
সংনিশ্রণ আহে। অববী ও রক্ষ ভাষা চলে বে অংশগুলিতে
সেবানেও চুইরের সংমিশ্রণ দেখা যার। এর কারণ বুবা
ক্রিন নর। হয়ত কোবাও প্রদেশের পূর্বা প্রান্ত বেকে বয়
পশ্চিম প্রান্তে এসেছেম, এসে শৈশবের শেবা গামগুলির সক্ষে
বৌবনের বন্তবালরে শেবা গামগুলির এক সম্বন্ধ সাবন করেহেব—নাববানে চুই-চার কলি ভুড়ে অববা বিশেষ বিশেষ
পক্ষের সরিবেশ করে। যাবে বাবে বেবা যার সেই একই
কারবে পূর্বাংশে পশ্চিষের গাম প্রচলিত হবে গেছে এবং
পশ্চিম অংশে পূর্বাঞ্চলের গাম প্রচলিত হবে গেছে এবং

প্রথমে বৃক্ত প্রদেশের বিবাহ-সদীতের পরিচর বেওরা বাচ্ছে। বিবাহের ওতনিব অববারিত হওরার পর বেকেই প্রতি সন্থ্যার বেরেরা সমবেত হরে বাহুলিক গাম করেন। নাম ভ'ল শৃলার রসাত্মক এবং বছক্ষেত্রেই রামচন্দ্র বা শিবের বিবাহ হচ্ছে এওলোর বিষয়বস্ত। বিবাহ যাতে নিবিছে সম্পন্ন হর সেক্ষা প্রার্থনা করা হয়—

> "আওছ ৰ ভবানী মাইলা বৈঠ বোলে অগনে, লেনো সভল্লিলা বিছাল ভোহতে সলৰ মাইলা বৈ ভগ লোগোঁ ভগিলা পূৰণ মোল হোল।"

"হে ভবানী আনার অগনে এস—শতরঞ্জি বিহিত্তে দেবো। আনার ভভকার্য যেন সকল হত্ত—আনি ভোনার শত্রণাগত।"

ৰঙণের ভভ বাঁপ কাটার সমর গাওয়া হয়—
আরে লে বাঁপ কাটারেন রাজা দশরণ
পড়ি গরে অচুরিয়া নে কাঁস।
অচুয়ীকে বেদন মরৈ রাজা দশরণ
কেকই কে পরল ছঁকার,
অইলী কেকই পলল চচি বৈঠি
ঘয়ঁলী অচুরিয়া কে শীর
অচুয়ীকে বয়ত বেদন হরি লেইলী
রাজা দশরণ সোরৈঁ হব নাইল।

ब शास्त्र चान्न क्यांडे। स्टब्स्, ( बच लाक् पाक्टक् ) द्वाका

দশংশ বহুতে বীশ কাটতে গেলেন কেন ? মূল রামারণে এই অরম্পূর্ণ ( ? ) ব্যাপারট উরেধ করতে মহাক্ষি হরতো তুলেই নিয়েছিলেন।

তার পরে মঞ্পে তৈল-ছরিজা চড়ানে! হর, এরোজীরা হড় ছরিলার জিত করে কলার পারে হপ্দ মাধিরে দেন। তেল চড়াবার পর প্রতিধিন বরবধূকে তৈল-ছরিজা বাধানো হর। সেই সমর বামী-সৌভাগ্যবতীরা প্রত্যহ কড়াকে আনীর্কাদ করেন।

সাঠি ক চাউর হাপরি দ্ব চুমৈ চঁপী কণ্ডন লাল বীয়রে মধণ্ডরা চুমির চুম দিংঁলী আসীস্ ক্রিয়াই কণ্ডন লাল লাখ বরিষ। ক্রুস রে বড় হিঁ জস্বরতী কে বান বে জসুরে বেগসি ক্রুস হৈইনি ক চাল বে।"

"চাগ-দূর্বা নিয়ে স্পরী কনাকে আশীর্বাদ করতে চল।
মন্তক চুখন করে তাকে আশীর্বাদ করতে হবে—তার পুত্র লক্ষ
বংসর পর্যায় প্রাপ্ত হোক। পৃথিবীর বানসন্দদ বৃদ্ধিপ্রাপ্ত
হোক এবং বাজির চাল চিব শোভাষয় হোক।

প্রতি সভ্যায় কলসীর উপর প্রদীপ ভালাবার সময় গাওয়া হয়---

> "ধুরংখতে লছমী পুকারৈ ত কেহি ঘর মৈ জাউ জিন মোছি সাথ লেসৈ

পুচৰা কটেই থৈ ত কেকৱৰি জাট কেন মোঁহি পুত গোহৱাৰৈ ছবৰা কটেই যৈ ত কেকৱৰি জাট কে মোঁহি ওটি জ্যাবৈ বহজা কটে যে ত কেকৱৰি জাট কে যোহি

**इणावी शास्त्रादे**व।"

শুক্রক্তে গণ্ডী বলছেন আমি কার গৃহে বাস করব—না , যে নিত্য আয়ায় সন্ধ্যায় প্রদীপ দেবে। পুত্র বলছে আমি তার অবে যাব যে আমার পুত্র বলে সমাদর করবে—ছবও চার বোগ্য আথারে যেতে। তেমনি বধু বলছেন, আমি তার ব্যৱধান যে আমার আগরিণী করে রাখবে।

এই বরণের গানকে বলে 'বৌর'। এই যৌর গান ভোর-বেলাভেও গাওরা হয়। বিবাহের কিছুক্দ পূর্বের কভাকে সোহার (হরিদ্রা) দেওয়া হর, রীভি আহে প্রথমে সেই সোহার দেবে কোনও বোবানী। এর মূলে আহে এক কাহিনী। কবিভ আহে সোনা নারী এক বোবানী নিজের ভেক্ক ও সভীত্বের বলে বামীকে পুনর্জাবিভ করেছিল। এই আমাদের সাবিত্রী-উপাধ্যানেরই অন্তর্জন সংক্ষের নেই।

ঠাকুৰমা নাভনীকে গোহাগ-আশীৰ্কাদ দিছেন—
"নচিন্নহি বৈঠল হৈ নান বছিন লট আন
লেছ চুলৱৈতী বেটা অঞ্চনা পদান ।
অঞ্চনাকে জোগবা হে নান বনি বুনি বান
নাজিয়াকে জোগিনা হে নান সদা অছিবাত ।"
ঠাকুৰমা প্ৰথমে অঞ্চলে গোহাগ ভাষ ক্ষান্তেন—কচা

বলতেন, অঞ্লের সোহাগ, হরিত্রা লিপুর অঞ্চর হর না—বরে পড়ে বার । সিবিতে সোহাগ দান করলেই তা অঞ্চর হরে বাকে । কভার প্রবান সৌভাগ্যহচক চিচ্চ নিঁবির সিঁহুর । কভার বিবাহে আছে 'ভুকভাকে'র গান, ক্ষেম্ব করে কন্যা বরকে বল করবেন তার হবিসু।

"ৰাবাকে অনুষা বৈগৰকের গাঁছির।
সূল সুলৈলে ভিন কোণা বে বেরো টোনা (ভূক)
নেই সুলকে তথীক বনারা
বাববৈ সুলারী পুত বাজুরে বেরো টোনা।
বাবি হালি কব বেঁচবা বানারা
লাভো কে আগে বরা ভূমবই রে মেরো টোনা"

"পিভার অগনে বেগুনের গাছ লাগিরে স্থ স্টলো জিকোণ। সেই স্থের মাহুলী করে বরের বাহতে বেঁবে দেব।" ভারপর আর কি ? বশ মেনে বর কন্যার পিছে শিছে মূর মূর করবেন।

ক্যা যাতে সামী-সৌভাগা লাভ কয়তে পারে স্নেহাতুরা ভ্ৰমীর সে ভঙে চেইরে আর অন্ত নেই। জামাইরের বছাদির উপরেও তৃক্তাক চালানো হছে। ক্যা চলে বার পরের বরে, মারের সাস্থ্যা কোগার। তাঁর ক্যাটির সেবানে আপন আর কে আছে! ক্যা যদি বরকে বল করতে পারে তবেই মা সে স্বী হবে।

ৰলা বাহগ্য, ভূকভাকের গানগুলি কেবল কন্যাপক্ষ গেরে থাকেন।

বরণক্ষ বরষাত্রীদের নিরে যথন বিবাহ করতে যাত্রা করে তথন এমন সব গান গাওরা হর যেগুলোতে বরের ওপর অপর পক্ষের তরমন্ত্রাদি যাতে কার্যুকরী না হর তার ইদিত থাকে !

"বনে পর টোনবা না কোই ভারে সিম্ব মাতৃ কহৈ রাই স্থাননা বনে পর রাই নোম উভারো।"

রাই এবং সুন নামাবার প্রথা আছে বিবাহের যাত্রার পূর্বো। "ছেলের ওপর বেন কেট যাত্র না প্ররোগ করে। রাই স্বরনা বলছেন —যাতে কোন তৃকতাক সকল না হয় সেইজন্য রাই আর স্থন দিরে বাভা হবে ছেলেকে।"

বর যথন বিবাহ করতে চলে তথন তাকে 'পরিছন' করা হয়-পরিছন শব্দের অর্থ বরণ করা।

পরিছম করৈ জব চগগী কামিনি
চুমেলি তিলক লিলার
অইসনে ছুলুফয়া ক হোগ বল ভাবৈ
সগরী অজোবিয়া উজোর।

"বরণ করা হচ্ছে বরকে। তার কপালের তিলক চুখন করে আইর্রাদ করা হচ্ছে—এখন পরম স্নেহের ছলাল বে সমন্ত অবোধাার আলোক, তার প্রকল রোগধালাই দূর হরে যাক।" পুত্র যথন বিবাহ করতে রওনা হয় তথন তাঁর স্নেহের তাইগার আর একজন হতে চলেহে এই তেবে নারের

ৰণে জাৰ্গে নেই চিয়ন্তৰ হ'ল, ভাৱই ইলিভ আছে নিয়োছভ নানটজে—

ছু তো চললে পুতা দৌৱী বিআহন
ছুধবা ক বিধ দৈ দেউ,
গইবা ক ছুধবা ৱে ছটুৱা বিকালা
মাইবা ক ছুধ অনুবোল।
ছুধবা ক বিধ মাইবা কাউ যেঁ টেউ
টেউ ধনি হোইটে দানী ভোহার।

বিবাহ-বাত্রী পুত্রকে জননী বলছেব, "এবার তো চললে গৌরীকে বিবাহ করতে, এতদিন তোবার বুকের হব বিরে শোষণ করেছি তার বৃদ্য হিরে বাও।" থেলে বলছেন, "গাইরের হব বাজারে পাওরা বার, যারের হব অবৃদ্য। তোবার হবের দান কেবন করে পরিলোব করবো—আমি তোবার দাসী আনতে বাজি।"

প্ৰৰা আছে, পুৱের বিবাহ-যাত্রাকালে হুমনী কৃপের উপর পা বুলিয়ে বসে ৰাক্বেন যভহন না পুত্র এলে তাকে দাসী আনার আযাল দেয়।

> বাজন বাজত হব সুনল বাবা কৈ লাব আবৈ বাবা হাবী সে বোজা কৈ লাব ভাবুজা জানাত। কৈ লাব আবৈ বাবা হাবী লে বোজা ছই লাব আবৈ বাবা হাবী লে বোজা তিনি লাব আবৈ হুক বুলানী এতবা বচন স্থান বেটা কে বাবা হ্বনি লিকৈ বজনা কিবার কিন বোলী বেটাৰে সঞ্জন সমহরি হৈ কিন বে রিবৈ জন-ভাত।

বরবাঞীবল আসহে, বাজনা শোনা বাছে। আস্তে ছ্-লফ্
হাতী বোড়া তিন লক্ষ্ কুক বুরারী (বরবাঞী)। শুনে
ফ্ডার পিতার চক্ চড়কগাছ—তিনি উদ্আভ্থার হয়ে
হার বহু করতে বলহেন। হে ক্ডা, কেই বা এত কুটুমকে
সামলাবে এবং কেই বা এত জনের ভাত রাব্বে ?

ক্তাধানের সময় গাওয়া হয়----

"চন্দ গরহণবা বেট গাঁবে লাগৈ,
পুরন্ধ গরহনবা ভিত্নার।
বেরিরা গরহনবা বেট ওবট লাগৈ
কবডো উগরহ হোর।
কাঁপই হাবীরে কাঁপই বোডা
কাঁপৈ নগরা কে লোগ
হাব মেঁ কুল লিহে কাঁপৈ বাবা,
কবঙো উগরহ হোর।"

হে কভা । চন্দ্ৰএছণ সভ্যার, স্থাএছণ ভোৱে হয়, ভার শেষও আছে। কিছ পিভার কভা-সম্প্রদানের চিছা বেদ অনিষ্ঠি কালের লভ 'এছণ' লাগার বত। এছণ লাগলে সমস্ত অভকার, বাবভীর প্রাণী হয় ভীত সম্রম্ভ ও লারা শরীয় ভবে কাণে। আবার বধন কভা সম্প্রদান করা হয় ভবন কুল হাতে পিভা কাণছেন হুবে। চিরনিবের লভ কভাকে বিদার বিভে ভার প্রাণ ব্যাকুল হচ্ছে। বিবাহ-বেদী সাভ বার প্রকৃতিণ করতের করা, নারীরা গাইতে সাগলের বিহারের গান। কেননা এই প্রচলিশের পর করা পর হরে বার।

> বন্ধর ভাঁড়িরা কনাও বোরে বাবা বিহবা করাও হবার সাত পরগ সদ চলিকে হো বাবা অব বৈঁ তর্মী পরাই। সাতই তবহিরা কে কিরত বাবা অব বহি বালী ভোহার।

"লঙপৰী হয়ে গেল, হে পিতা এবার আনার বিবারের ব্যবহা কর। হামীর সন্দে লাভ পা চলে আমি ভোষার পর হয়ে সেঁছি, আর আমি ভোষার নই।"

न्द्रभगीय शब एवं निकृत मान ।

হটবে সেম্বরা মহল ভয়ে বাবা চুন্দরী ভই অনুযোগ ৰেছি শেছবাকে করেন হো বাবা হোকেউ মেঁ দেশ ভোহার। বাৰা কহৈ বেটা দশ কোস বিআহৰ ভইয়া কটেই কোস পাচ মার কছে বেটা নগর অভোব্যা নিত উঠ প্রাত নহাট। বাবা যে দীছেন অন্থন সোন্ধা ৰায় যে লহৱা পটোৱ ভইৱা যে দীহেন চচনেকো বোডবা, ভৌৰি যে অপনা সোহাগ। वावा क लामवा मदेव थिम बादेव कि करेटिं नरवा शकीव ভইরা ক খোড়বারে নঞ্জ কুদহবৈ ভৌত্তি ক বাঢ়ৈ অহিবাত। বাৰা কৰৈ বেটা নিত উটি আয়েউ. মাম কৰে হঠমাল ভৈৱা কৰৈ বহিনী কাল বিভাহে ভৌত্বি কৰৈ কস ৰাত।

'বাবা বাজারে সিন্দ্রের বৃদ্য বেজেছে, চুনরী হর্ষুদ্য হরেছে, সেই সিন্দ্রের জন্ধ তোমার দেশ ছেড়ে চলছি।' বাবা বলছেন, 'কভা তোমার বিবাহ দেব দশ জোলের মধ্যে, ভাই বলছেন পাঁচ জোলের মধ্যে, বা বলছেন জবোণ্যা নগরে ভোমার বিবাহ দেব—নিত্য প্রাতে স্নান করবে। বাবা দিলেন ধন, বান, সোনা; মা দিলেন লোহিত পঠবল্প; ভাই দিলেন চহুবার জন্ম বোহা এবং আছ্বরু দিলেন নিজের কোটা বেকে সিন্দ্র। অবশেবে যথন বিবাহের পর কিছুকাল কাটল, যথন পিছুদ্ত বনবান্য বরচ হ'ল, মারের দেওরা পটবল্প ছি'ছে সেল—অর্থাং কন্যা ববন আর্ম্মতী হলেন তবন পিতা বলেন, 'নিত্য আমার গৃহে এল', বা বলেন, 'কন্যা, হর মাস অন্তর এস', ভাই বলেন, 'বোন নিজের কাজকর্ম শেষ করে এস', আত্বধু কিছ উচ্চারণ করলেন কঠোর বাক্য।

পিতা ৰাভা আতা ও আত্বধুর বনোভাবের বড় নিপুণ বর্ণনা আহে এই পাবটিতে। প্রথম যথম কন্যা যভয়গুড়ে বালা করেন তবন সত বিরহে বে ব্যাক্সতা বাকে, বীর্বকালের অহপত্তিতে তার গতীরতা রাগপ্রাপ্ত হয়। কিন্তু শিতা নাতা লাতার সেক নিংশেন কর না। লাভ্যপুর আচরণের উপল কঠোর সভ্যা করা করেছে।

কোন কোন গানে বিবাহ বিষয়ে কন্যাকে মভানত প্ৰকাশ করতে দেখা যায় ।

> বাবা জো চলেন মোর বর হেবনে
> গাট শিভাছর ডারি
> ছোট দেবি বাবা করবৈন করিটে বড় নহি নজর সমাই।
> জারে জারে বাবা স্থক্ষর বর হেরেট হম বেটী ভোহারি হলারী ভীন গোক মাঁ হম বড়ি স্থক্ষর
> ইপী ন করার্যট মোরি।

কভার কভ বর পুঁকতে পিতা পটবছাদি বারণ করে বাবার কভ প্রস্তুত হচ্ছেন। কঙা কানিরে দিক্ষেন বর বেন বেশী হোট বরের বা বেশী বছ বরের না হর, অর্থাং সমান বরের হর। পিতা! ক্ষর বরের বোঁক করো, আমি ভোষার আদরিশী কডা। তিন ক্লে আমি ভোষার প্রেট ক্ষরী কডা, আমার বেন বিদ্রুপভাকন হতে না হর কুরুপ বরের কড়।

বেশ স্পষ্টোক্তি। পিতা কিছ নিমন্তর। সুক্তর চিত্রথানি। ক্লাদারএছ পিতা গলার চাদর দিয়ে চিন্তিভর্বে বাজা করছেন এবং আদরিশী কলা করমাস দিক্ষেন বরট কেনন হওৱা চাই। নিকে তিনি প্রমাস্ক্রমী এই কারণেই সুক্ষর এবং উপযুক্ত বর চাই তার। পছক্ষত বর না হলে লোকে বে হাসবে এইটাই যেন স্বচেরে মারাছক ব্যাপার।

বাগ্য-বিবাহের প্রচলন ক্রমশঃ কমে আগছে সন্দেহ নেই, কিন্তু সম্পূর্ণ গোপ পার নি। বালিকা-বধুর বিবাহে যে সব গান গাওরা হ'ত তারই কিছু কিছু এবনও বিত হয়ে থাকে। ভা ছাড়া আছে অসমবয়সী বরকভার বিবাহ।

> "পাঁচ বরিসর। ক যোরী রক্তরেলী, অসিরা বরস ক ফয়ার নিকরি ব আবট চুঁ মোরী রক্তরেলী অক্সর ঠাচি ছুআরি।"

"গাঁচ বছরের কভা ভার ভাশী বছরের বর । ভাহা ভাষার ভাষরিশী কভা খবের বাইরে এস না। বাইরে ভাষগর সাপ ভোষার শিকার করবার কভ অপেকা করছে।" কভা ভিজাসা করছেন— কে করে ছয়ারে মাইরা বাজন বাজৈ

কেকর বচা হৈ বিভাহ।
ক্ষমনী উত্তর দিক্ষেন—
ভূঁহি বেটা আউরি ভূঁহি বেটা বাউরি

ভূঁ বি বেট চতুৰ সৰানি তোহতে হ্ৰাতে বেট বাজন বাজৈ ভূমহত্ত বচা হৈ বিজ্ঞাহ।

গাৰট বিভিন্ন থেশের সাবাজিক তথ্যাত্মবিংগুদের নিকট বিশেষ চিন্তাকর্মক। গান্টীয় অর্থ এইয়াপ--ক্ষতা বসত্তব,--শুলা কাছ বাবে বাজনা বাজতে--কার বিবাহ ?" জননী শিভকভাকে আহর করে উভর বিজেন—"ভূবি আবার আহরিণ কভা, ভূবি বেবৰ কচি তেবৰি বুছিবতী। ভোষার বুহুহারে বাজনা বাজতে এবং ভোষারই বিবাহ হচ্ছে।"

বিষারের সমর কভা জননীকে অন্নরোধ করহেন—
"বান মনোইয়া হৈ ভড়িয়ারে
ভূলী ধরৈ পেউরিয়া কে খীচ্।"

হাররে, আমার পৃত্ন নিতে তুলে গেছি—নেট আমার বাজে বিয়ে বাও।

এক সংসারের পুতৃত বেঁলা শেষ না, হতেই অভ সংসারে এসে বেঁলাঘর সাজিরে বসতে হয় এখনও বহু বালিকাকে। কভার বিবাহে বরচের বোঁটা অভ সরণ করে গাওয়া হয়—

গলা বৈটি বাৰা ছম্মজ লে বিনাই বাবে বুজে বেলিফা জিনি হোর। বেলিফা জনম তব হোই বিবাতা জব বন সম্পতি হোর।

গলার তীরে বাঁজিরে শিতা প্রার্থনা করছেন স্বর্থের নিক্ট, বেন কন্যা-সভানের জন্ম না হয়। হে বিবাভা, বরে বনসম্পদ্ বাক্ষেত তবেই বেন কন্যা ভাত হয়।

হোইগা বিআহ পড়া দির সেবৃর
নব লাব দায়ত্ব বোড়।
ভিতরী ক জাঁড় বহর ধই মারী
সতর কে বিধা তিনি÷ হোর।

"কন্যার বিবাহে সিঁপুর দান হ'ল তারই সদে যতই দাব-'দাহেক' হ'ল কিছুই বংগঠ নয়। বংরর মধ্যে যা ছিল সব সেল—হে ভগবান, শক্ররও যেন কন্যা মা হয়।" কন্যার দরন অর্থনাশ তো আছেই, তার ওপর—

"গিরি নবৈ পর্কাত নবৈ হম ভো না নইলো

বেট ভোহরে কারণ হয় ধর্গ যে যাব নবারে
সিরি-পর্মত নত হয় কিছ আমি কারো কাছে রছক অবনত করি মি। হে কম্যা, ভোমার জন্যই সংসারে আমায় রাধা নোরাভে হ'ল।"

विशेषकारण क्या नगर्धम---

"বিষমা কলেউবা এ অন্মা ইগীধুনী যে বেব হয়য়া কলেউবা এ অন্মা দিহিউ রিসি আই।" কন্যার কটন অভিযোগে জননী বলছেন----

বৰুৱা ক ছতিয়া বেটি বিহুৱিউ ন স্বায়
চলতী কী ঘটরা রে বেটি দিই সমুবার।
বিদাহকালে কন্যা অভিযানভয়ে স্বানীকে শোনাচ্ছেন—
ছেলেকে বৰন ৰাওয়াও ভবন ভো বেশ হাসিবুসী, কিছ আয়ায় ঘৰন বাবায় দিতে ভবন বিয়ক্তি প্রকাশ করতে।

ক্ষণী সংখ্যে উত্তর দিচ্ছেম---বজের অভৱে কি আছে বোকা বাব মা। বিদায়কালে হে কভা, বুকিয়ে দিলে কি ছিল ভোষার মধ্যে !

জিনি শক্টর আর্থ 'বেন না'—। রজবুলির পরাবলীতে
জিনি শক্তের আর্থ ভির,—হট আর্থ ভার ব্যবহার দেবা বারপরাবলীতে—জিনি — অপেকা, এবং জিনি — বেন।

## আফগানিস্থানের বর্ত্তমান শাসননীতি

শ্রীস্থবাস রায় চৌধুরা

আক্সানিছানের প্তন শাসনগছতি প্রথম প্রবর্তিত হয় ১৯২২
নীটাকে। এই শাসনতত্ত্বের পরিবর্তন ও পরিবর্তন হয় হুই বার—
১৯২৮ এবং ১৯৩০ সনে। প্রত্যেক সংশোধনের সকে এই পছতি দেশের মব্যে আযুল পরিবর্তন আনিয়া দের, দেশকে উন্নত ও ভাগ্রত করিয়া তোলে। ১৯২৯ সনে গৃহ-বিবাদ ঘটে। তার কলে দেশের মব্যে বিপ্লব ধেবা দের। এই বিপ্লবের সদে সামগ্রত রাখিয়া এবং শাসনবিভাগে ব্যাপক ক্ষমতা হতাত্তর করিবার অভিপ্রায়ে ১৯৩০ সনে ক্তক্তপাল আইম, কাম্মন, নীতি ও পছতির বস্তা তৈরারী করা হয়। বর্তমান শাসনপরিচালনা এই ভিত্তির উপর ছাপিত। মহম্মদ নাদির শা ইহার প্রবর্তক। তিনি তবন দেশের রাজা ছিলেন। তিনি নেশঙাল এসেমরিতে মৃতন নীতি ও পছতি প্রবর্তনের ভ্রত প্রভাব উবাপন করেন। সম্বত্ত সংল সমর্থন করেন।

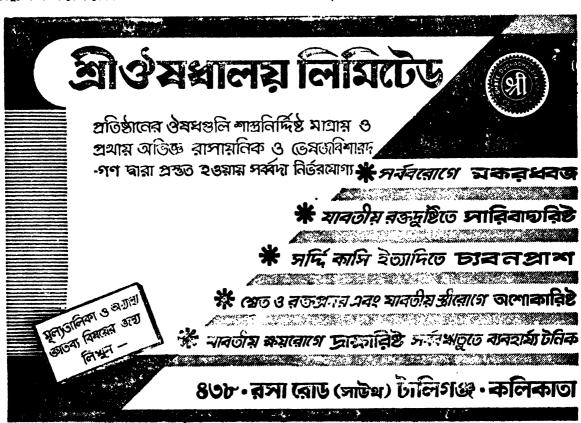
নৰপ্ৰবৰ্তিত এই প্ৰতি ইসলাম বৰ্ষাহ্যোদিত। ইহাতে ভাতীয়তাবোৰের উপর অরুত্ব আরোপ করা হয়। দেশের অব্বৈতিক, রাক্নৈতিক এবং সামান্ত্ৰিক উন্নতির ও প্রসারের ব্যাপক পরিকল্পনা করা হয়। ইহার বুব্য উচ্চেপ্ত প্রবভাষের দাবি ও অবিকার প্রতিশ্রা। ১৯০০ সলে আক্সানিহানে ব্বর্পের হচনা দেবা দেব।

বর্তনার প্রথমেন্ট কতক্ত্রিল নিরম কাল্পনের উপর প্রতিষ্ঠিত। দেশের সর্কমের কর্তা হইতেছেন রাজা। দেশের ভারিতিই রাজকীর প্রধার দেশকে শংসন করিতে হইবে। রাজার ক্ষরতা কতক অংশে সীমাবত।

উপরোক্ত প্রথম্বামী নাদিরশার বংশবর হইতে রাজা
নির্বাচিত হইবেন। তাঁহার নামে মুলা প্রচলিত বাজিবে।
উপাধি বা সম্মান তিনিই প্রদান করিবেন। মগ্রীদের
নিরোপ বা অপসারশের অবিকার তাঁহার হাতে বাজিবে।
দেশের সৈভাবাক্ত নির্বাচনে তাঁহার অপুরতি পইতে
হইবে। মুছ বোষণা করা, সজি খাপন করা এবং বিজোহীকে
শান্তি দেওয়া রাজার অভতম কর্তব্য। রাজা সিংহাসমে
বসিবার পূর্বে তাঁহাকে রাজ্যের নায়কদের সমূবে শপথ
এহণ করিতে হইবে যে, তিনি ইসলাম বর্ষামুখারী দেশকে
শাসন ও পরিচালনা করিবেন।

বেশীর পালিয়াথেক :---নিয়োক্ত সদস্তপণ লইরা পালিয়া-থেক পঠিত হয়.---

- Pets 12
- ২। মুদ্রালামী মুবা অববা দেশের প্রতিনিধি সদত।
- ৩। ম**ৰ্জাগী আ**খান অধ্বা সিনেট (প্ৰবীণ দেশ-নায়ক্সণ)



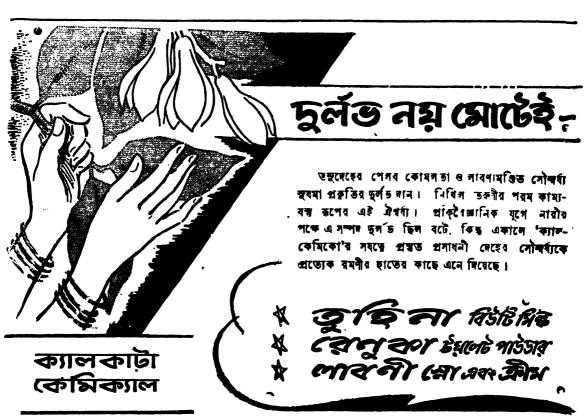
বুখন আইন প্রবর্তন ও প্রচলিত আইন সংশোধন করিবার ক্ষমতা প্রক্রমার পালিরাবেটের আছে:। ইহার বিরুলাচরণ আচ কোন চল করিতে পারিবে না। সিনেট এবং প্রতিনিধিন্তনের মধ্যে কোন বিষয়ে মতানৈক্য উপস্থিত হইলে উভর হল হইতে ২০ জন সম্ভ ক্ষমা একট ক্ষমিট গঠন করা হইবে। তাহারা বলি কোন নিভিত সিহাছে না আসিতে পারে, তবে যাআর নিভট বিষয়ট পেল করিতে হবৈ। রাজার সিহাছ সকলেই মানিরা লইতে বাব্য। ব্যাহ্রসভার সহতেরা ব্যক্তিসভ ও স্বাহ্রসভ ভাবে পালিরাবেটের কাছে লাবী।

নির্বাচন-প্রথা অহ্যারী প্রত্যেক কেন্দ্র হুইতে ও বংসরের কর্ত প্রতিনিধি নির্বাচিত করা হয়। তাহাদের কর্ত্তব্য ও ক্ষতা সীমাবর। সক্রদের মধ্য হুইতেই প্রেসিডেন্ট নির্বাচন করা হয়। পরিবদের কার্য্য পরিচালনার তার তাহার হাতে হন্ত। বাকেট পর্যালোচনা, আইন-প্রণয়ন বিষয়ে মতামত লখরা, বাণিক্য ও অর্থনৈতিক বিষয়ের চূড়াভ শীমাংসা প্রতৃতি ইহার কর্ণীর। প্রেসিডেন্টের অনুমতি সইরা মন্ত্রীরা এই পরিষদে উপহিত বাণিতে-পারেন এবং নিকম্মতামত প্রকাশ করিতে পারেন। কোন বিষয়ের আলোচনার সময় ক্ষমাবারন ও প্রেস-কর্ম্যচারীরা উপস্থিত বাক্তিতে পারে।

সিনেট : — ি নেটের সবসা রাজা নির্বাচিত করিবা ধেন। আভিজ ও প্রবীণ বেশনারকর্সপের মধ্য ক্ষতে সবস্য নির্বাচন করা হয়। আইন ও বুজন বিধি প্রধাননে এবং কেশের ঘটন বিষয় সম্পর্কে সবজসপের সহিত পরাবর্শ করা হয় এবং তাহাধের মতামত সওবা হয়।

কেবিদেট বা মন্ত্রীসভা:—৬ জন মন্ত্রী দাবলৈ কৈবিদেট বা মন্ত্রীসভা গঠিত। লাজা প্রবাদ-মন্ত্রী নির্বাচন করেন। আভাচ মন্ত্রী প্রবাদ নত্রী কর্তৃক নির্বাচিত হন। প্রবাদ নত্রীর ভল্পক নির্বাচিত হন। প্রবাদ নত্রীর ভল্পক নির্বাচিত হন। প্রবাদ নত্রীর ভলিক নিজ বিভাবের কার্যা পরিচালনা করিলা থাকেন। যদি ভোন বিষয় কোন মন্ত্রীর অবিকারের বাহিরে পজে, ভাহা হইলে উহালে উহালে অভিযুক্ত হন, ভাহা হইলে উহালার বিচারের কচ্চ অস্থায়ী কোট ছাপনের বিবি আছে। কোটের রারই চকাত বলিরা গণ্য হইলা থাকে।

আকগানিয়ানে জাতিবৰ্দ্ধ নির্বিশেষে সক্সেই সমাৰ অধিকার ভোগ করে। বনী বা গমীৰ বলিয়া কোন শ্রেইভেছ নাই। প্রত্যেকের মর্ব্যাগাস্থারী কর বার্ব্য করা হয় এবং প্রত্যেকেরই চার-বিচার পাইবার দাবি আছে। অবিচার করা বর্ষবিবোধী।



## পুশুক - পার্চয়

বাল্মীকি রামায়ণ—সারাহ্বাদ—জীবাদশেবর বহু। এব, নি, সরকার এও সন্স নিবিটেড, ১৪ কলেক কোরার, কনিকাতা। মৃদ্য ৫৪০ টাকা।

আছি কৰি ৰালীকিকে অসুসৰণ করিবা বুগে বুগে কৰি-কুল বাৰচরিভঙীর্তমে দেশবাসীকে আমক বিভয়ণ করিবা আনিয়াছেন। সংশ্বন্ত কালিদাস, হিন্দীতে তুলসীদাস, বাংলায় কৃতিবাস নহাক্ৰিয় হারা অন্প্রাণিত। সভর পঁচাতর বংসংবর মধ্যে মূল সংস্কৃত হইতে বাংলা প্ৰাে বাত্ৰীকি ৱাষাৱণের ক্ৰেক্ৰানি অস্বাদ বাহির **स्टेशार्ट। छन्। र्वहस्य विशादरभूद अभ्वाम नम्बर्** প্রসিভিলাভ করিয়াছে। বরাট প্রেস হইতে যে রামারণ প্রকাশিত হইরাহিল ভাহার প্রথম কিরদংশ হরপ্রসাদ শালী क्छुक चन्त्रिकः, भद्रवर्धी मकन चर्रानद्व चन्न्वावर भिक्ष আগুতোৰ কাব্যবিশাৱদ হত। "বদবাদী" যে সৰ শাল-এছ একাণ করিয়াত্তন বৃদ-সহ রামারণের অফ্বার ভৰ্বে অভভন। কোন অনুবাদই বৰ্ডমানে ভঞাপ্য নয়। লামারণের প্লোকওলি সরল হইলেও ভিন্ন ভাষার ছ্ত্রহতা অভিক্ৰম ক্ৰিয়া মূলের রস এছণ করা সংস্কৃতভাষাজ্ঞান-जार्यकः। (म कान वर्कन कर्ता मक्राज्य पर्क मखर्यन वर्षः। কিছ সকল আত্ৰহশীল পাঠকের পক্ষেই আদি কবির কবিছের পরিচয়লাভের কৌভূহল থাকা স্বাভাবিক। সে কৌভূহল মিটাইতে হইলে অনুবাদের প্রবোজন। অবচ সম্পূর্ণ রামারণ অধ্বা ভাতার অনুবাদ পঞ্চিবার বৈর্বা ও অবসর অল লোকেরই আছে। এ ক্ষেত্ৰ তীৰ্ক বাকশেবৰ বস্থ বালীকি-রামারণের ৰাংলা সাৱ-সম্বৰ কবিয়া সাধারণ পাঠককে একাডভাবে উপত্ত ক্রিরাহেন। সারাম্বাদ বলিয়া কবিত হইলেও এই আছে বুলের ষেটুকু বাদ পঞ্চিয়াছে ভাষা নিভান্তই গৌন। नाबाबत्वत छेणरवानी कविवास कक्षरतारव साकरणवंतवार् राहेक् সংক্রেপ ক্রিয়াহেন ভারাভে ভারার পরিপ্রমের বিলেব লাবব হর নাই। করেকট কারণে এই সারাহ্বার অত্যন্ত মূল্যবান। क्षवर्थः, ब-दावर बहेबन बहुवार वादावा एकस्कन कविया-হেন সংস্কৃতক্ৰ পৃথিত হুইলেও ভাঁহারা সাহিত্য হিনাৰে বাংলা चालाहमा करवन मारे। अञ्चार किन्द अकारादा चुनकिन, পুরসিক এবং পুলাহিভ্যিক। বিভীয়তঃ, এরপ মহাকাব্যের অভুবাবে কথ্য ভাষার ক্রিরাপর ব্যবহার অভ্যন্ত সাহসের কৰা। এই পৱীকাৰ ভিনি ছডকাৰ্য হইৱাহেন। চলিভ ভাষার জিরাপদ বে ব্যবহৃত হইতেছে এছপাঠকালে ভাষা बानहे एवं ना अवर अरे बीचि बहनाव शांधीर्यास्य अच्छेट् सूर्व करत नारे। एकीवणः, नमक प्रवे अवर नार्यक व्यवास्य वाद ইহা বুলের সৌন্দর্য উপভোগ করিতে পাঠকের বনকে উল্লিক্ত করে; দেই আএব এবং কৌতৃহদকে চরিভার্ব করিবার নিবিভ এছবব্যে ছালে ছালে অক্স অস্বাদস্থ বুল প্লোক-ভলিও সন্নিৰেশিভ হইয়াহে। এছে একট নাভিদীৰ্থ ভূষিকা जारह। अरबाजनीय अवर अक्षपूर्व जातक कवा जबनविनावय

ৰংশ্য কি কৰিবা বলা যাব এই ক্ৰিকাট ভাতাৰ নিয়ৰ্ণন। ৰাৰচল যোটেই বিয়াবিবাৰী বিলেব না। অবোব্যাকাণে আহে, ভাষণত্বৰ চাত্ৰিপ্ৰকাত্ত পণ্ড বৰ কৃত্ৰিত্বা ভাষাধ্যে পৰিজ ৰাংস লইবা ক্ৰিড ছইৱা লাৱংকালে বালের নিবিত্ব বনে প্ৰবেশ করিলেন। এই কাভেই দেবিভে পাই, মহবি ভাষালি ব্ৰহা বুৰিয়া নাজিক বা আজিক হইতেন। কুতিবাস বাহাৱা পদিয়াছেশ ভাঁহারা বে সীভার পরিচয় লাভ করিয়াছেন ভিনি **অত্যন্ত সুকোষলা, তেজু'হনী সীভার সাক্ষাংলাভ করিতে** হইলে বালীকিপাঠের প্রৱোজন। রামচক্রের অবভারত্বে বিখাসী হইরাও বালীকি তাঁহার মানবড় অঞ্প রাবিয়াছেন। मखरणः वालीकि नद्राकार७३ महाकावा (नव कदिशासन। ৰুছকাতের শেষে যে লামালণ-মাহান্তা আছে ভাহাই মহা-কাব্যের সমাপ্তি বোষণা করে। যে কবি উত্তরাকাও বচনা ক্রিয়াছেন ভিনিও আদি কবি অপেকা অন্তর্কবিত্বসম্পন্ন নছেন। উভয়-কবি সীভাকে নিৰ্ঝাসিভ এবং শেষে চিত্ৰবিচ্ছিত্ৰ করিয়া-एम । "देखव कविव दिएक प्रदेश जिमि जानाज विवृत देनादव রাম ও সীভার মর্ব।াদা বৃদ্ধি করিয়াছেন।" প্রকৃতি ও ঋতুর বে বৰ্ণনা বাল্মীকিতে আছে ভাষা অপূৰ্ব্ধ। কিছিড্যাকাণ্ডে বৰ্ষা ঋতুর বর্ণমার পাই. "দেব বর্গালা সমাগত হয়েছে, পর্বাতভুল্য মেৰে মডোমওল জাৱত। এই মেৰের লোপানপঙ্জি দিয়ে আকালে উঠে কুটক ও অর্জুন পুলোর মালার ভ্র্যাকে অলয়ত করা বেতে পারে। আকাশ মেবে আর্ড, ভারা হর্য। দেবা बाब मा, यरक्षमधाब धवने श्रीकृष्ठ, भक्षिक चढकारत चरण्छ स्टारह ।" अवर अङ्ग वर्गनाव भारे, "अञ्चल्याव आयाध, प्रया-চল্ৰ-ভাৱার প্ৰভাৱ এবং গ্ৰেছের দীলার শিক্ষ শোভা থিডক **ক'রে শরং আৰু উপশ্বিত হয়েছে। পুগর স্থলর** সুবর্ণগৌর প্ৰচুৱ পুলভাৱে প্ৰিয়ক ভক্লৱ শাৰাঞ্জ অবনভ , ভাভে বন যেন আলোকিত হরেছে। ক্জার-স্রভিত শীতল বারু বইছে, স্কৃষিক ভযোৰুক্ত হয়ে প্ৰকাশিত হয়েছে।" বহৰুৰী প্ৰতিভা অন্ত্ৰাদেও সাৰ্থকতা লাভ কৰিয়াহে।

ঞ্জীশৈলেন্দ্রকৃষ্ণ লাহা

` মূলসূত্ৰম্—(অথবা জিন দীতা) শীবভীক্ৰখোচন চটো-গাণ্যায় প্ৰণাত। ডি এম্, লাইব্ৰেয়ী, ৪২, কৰ্ণগুৱালিস দ্বীট, ক্লিকাতা। ১৬৮ পৃঠা, মূল্য এক টাকা মাত্ৰ।

মৃলের বে সংস্কৃত অবর, বাংলা অন্বাদ, টীকা ও ব্যাখ্যা প্রস্থান দিলাছেন ভাষা বেশ ভালই হইলছে। কিন্তু তাঁহার পারিছের দিলাছেন ভাষা বেশ ভালই হইলছে। কিন্তু তাঁহার পারিছের বিনিষ্ট পরিচর পারলা বার প্রস্থেব ভূষিকার। লেখক বে নানা শাল্লে স্থাভিত সে কথা খী গাব না করিল উপার নাই। ভবে, শক্ষ-ব্যবহারে ভাঁহাকে কথনও কথনও অসতর্ক দেখা বার। প্রস্থিক অর্থ পরিভাগে করিলা কান প্রচলিত শক্ষ পারিভাবিক অর্থেরার করিলে লেখকের উচিত পাঠককে সে সম্বন্ধ সভর্ক করিলা করেন। আলোচা প্রস্থেব লেখক সব সমর ভাষা করেন নাই। বেষন, 'উলান' শক্ষ পঞ্চ প্রাথবার্ব প্রকৃতিক বুঝার। লেখক ইহাকে অন্ত অর্থে ব্যবহার করিলাছেন, অবর্চ পাঠককে কোবাও

ভাহা বলিয়া দেন নাই। পাঠক বদি সবই জানিবে, ভবে নৃতন বই পড়িবে কেন ?

মূখবছেব শেব আংশে বাংলা ভাষার একাধিক বই প্রথম প্রকাশ করিবাছেন বলিরা লেখক বে একটু 'আল্মন্তরিভা' প্রকাশ করিবাছেন ভাষা হয়ত অমার্ক্তনীয় নয়। কিন্তু আমারের সকলেবই মনে রাখা উচিত বে, মাছুবের সমান্তরে টানিয়া প্রাচীন অভীতের দিকে লইবা বাইতে চেটা না করিবা অনাগত, উন্নত ভবিব্যতের দিকে ঠেলিয়া দিলে ভাষার উপ্রকাষ করা হয় বেশী। প্রাচীনকে ভূলিয়া বাইতে বলি না, কিন্তু অভিবিক্ত মূল্য দেওবারও কোন সার্থকতা আছে কি ?

গীতা ও হিন্দুধর্ম — বিজেশন খোন। কেনারেল প্রিন্টার্স ন্নাও পারিনার্স লি:। ১১৯, ধর্ম তলা ট্রাট্, কলিকাতা। ২৮০ পৃঠা, মূল্য চারি টাকা।

ইহা এখনও অপ্নকালিত একখানি বৃহত্তর প্রস্থের ভূমিকা মাত্র। এই ভূমিকায় বেদ ও উপনিবল্ এবং সাংখ্য ও অক্তান্ত দর্শনের তুলনার গীতার ছান কোখার এবং গীতার প্রকৃত শিক্ষা কি, ভাহাই বিশ্বত আলোচনা দারা বৃথাটবার চেষ্টা করা হইবাছে। এই আলোচনায় লারার উপনেশই লেপকের প্রধান অবলম্বন হইলেও আধুনিক কড়-বিজ্ঞানের সিভান্তের নিকে তিনি অনবহিত নহেন। এই দীর্ঘ বিচারে লেখকের গভার চিন্তা, ভূহেট অধারন এবং অনবদা প্রকাশভলীর পরিচার আম্বাপাই। আলোকরি, প্রথের বাকী অংশট্কুও শীত্রই প্রকাশিত হইবা প্রবীস্থাতে সমাদ্র লাভ করিবে।

প্রীউমেশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

সাহিত্যে প্রগতি—ভাঃ শ্রীভূপেজনাব বস্ত, পিএইচ-ডি। পূথবী পাবদিশাস, ৩৭।৭ বেনিরাটোলা লেন, কলিকাডা। পূঠা ২০০, মুল্য ভাটাকা।

লেবক সাহিত্য সম্বন্ধে বিভিন্ন সময়ে বে সকল প্ৰবন্ধ লিখিয়া-ছেন এই পুস্তকে ভাহা একল সংগৃহীত হইবাছে। প্রগতি-সাহিত্যের সংজ্ঞা, সাহিত্য ও সমাজ, সাহিত্যে সমাজচিত্ৰ, হিন্দী সাহিত্যে প্রপতি, উচ্/সাহিত্যে প্রপতি, বাংলা সাহিত্যে প্রপতি এবং অলেট্রীর সাহিত্যের খবণ মোট সাভটি প্রবন্ধে পুস্তক সম্পূর্ণ হুইরাছে। 'রূপ ও বস' সইবা বাঁছারা সাহিত্যের বিচার করেন তাঁহাৰেৰ সহিত প্ৰস্থকাৰেৰ দৃষ্টিভগীৰ মিল নাই; তাঁহাৰ মতে নানা ৰন্দ্ৰ-সংঘাতের ভিতৰ দিয়া ভাগতিক পৰিবৰ্ত্তন চলিয়াছে ইচাকে খীকার কবিয়া লইয়া বে সাহিত্য বুগে যুগে নানা পরিবর্ত্তনের মধ্য দিয়া পরিপৃত্তির দিকে অপ্রদর হইতেছে ভাহাই প্রগঙিশীল সাহিত্য। এ সাহিত্য কেবলমাত্র ইলিয়-পোচৰ ৰাজ্বকেই ভাৰাৰ প্ৰতিফলিত কৰে। ইংাৰ দৃষ্টি সন্মুপেৰ भिक्त हेश हम्मान । अञ्चलदिव विहास वारमा, हिन्दी अवर উতু সাহিত্যে বাস্তবভা ও প্ৰস্তিৰ দিক দিয়া আৰু পধ্যস্ত অঞ্ছ অপ্রশর হইরাছে। এই সাহিত্য প্ৰ-সাহিত্যে পরিবত হইতে অনেক বাকী। আৰু প্ৰয়ন্ত মধ্যবিস্ত শ্ৰেণীর লেখকদের হাতে সাম্ভ-বুগীর সাহিত্যই বেশী সৃষ্টি চইরাছে। বাঁটি বুর্জোরা সাহিত্য (वणी (तथा शत ना, ब्यालहेतीय माहिष्टा छ पृत्वत कथा। (मरबाक्त माहिका क्रमाराम वहन क्षाविक इहेरक्ष । अहे

আমাদের গ্যারান্টিড প্রফিট স্কীমে টাকা খাটানো সবচেয়ে নিরাপদ ও লাভজনক।

নির্বাদিত ক্লের হারে স্থারী সামানত গ্রহণ করা হইরা থাকে :--

- ১ বৎসৱের জন্ম শভকরা বাবিক ৪৪০ টাকা
- ২ বৎসরের জন্ম শভকরা বার্ষিক গাও টাকা
- ৩ বৎসরের জন্ম শতকরা বাবিক ৬৫০ টাকা

নাধারণতঃ ৫০০ টাকা বা ডডোধিক পরিষাণ টাকা আমাদের গ্যারান্টিভ প্রফিট স্থীমে বিনিরোগ করিলে উপরোক্ত হারে স্থন্ধ ও ডচুপরি ঐ টাকা শেরারে খাটাইরা অভিরিক্ত লাভ হইলে উক্ত লাভের শভকরা ৫০ টাকা পাওরা বায়।

১৯৪০ সাল হইডে আমরা জনসাধারণের নিকট হইডে হাজার হাজার টাকা আমানত গ্রহণ করিয়া তাহা স্থদ ও লাভসহ আদায় দিয়া আসিরাছি। সর্বপ্রকার শেরার ও সিকিউরিটি ক্রয়-বিক্রয় সম্পর্কে আমরা কাজকারবার করিয়া থাকি। অন্ধৃগ্রহপূর্বক আবেছন করুন।

# ইপ্ট ইণ্ডিয়া প্রক এণ্ড শেয়ার ডিলাস সিণ্ডিকেট

লিসিটেড

৫।১নং রয়াল একচেঞ্চ প্লেস্, কলিকাতা।

টেলিপ্রাম "হনিকর"

হোন্ ব্যাল ৩০৮১

সাহিত্যে কেবল 'জন'-পথের কথা আছে, 'রাজা, জমিদার, ৰনী'ৰ কথা ট্ৰডান্ডে স্থান পাৰ না। 'বে সাহিত্য সমাজেৰ অচলায়তন ভাতিয়া উন্নত অবস্থার দিকে পথ নির্দেশ করিয়া বের সেট চেইাকেট প্রাপ্তি-সাচিত্য বল। হয়। স্থভরাং প্রগতি আপেক্ষিক। বিভিন্ন কালে ইহার বিভিন্ন রূপ। দেশ ও কাল अक्रवादी हेहां 'भथ निर्द्धन' वहनाहेता हिनएएहं ।' स्मर्थन्य মতে বৃদ্ধি-সাহিত্য মোটেই প্রপৃতিশীল নহে, ববীল-সাহিত্যেও क्षत्रकि थव नाबाक, मब्द्रहात्क कफकी पाकित्मध 'विक्रमान'- हरिक স্টিবারা শর্থ-সাহিত্য প্রতিক্রিয়াশীল হইরা পড়িয়াছে।

প্রহার মার্পারী। মানুর ভাতির এবং সভাভার ক্রম-विकार्यं है किहान काहार विक्र विक्रि क्षेत्र वार्थिक व्यवहार এবং শ্রেণীসংঘর্ষের পরিণতি মাত্র। বর্ত্তমান সভ্য স্তপতে এই বিভিন্নমূখী দৃষ্টিভঙ্গী ও কর্মপ্রচেষ্টার জীবন-মরণ সংগ্রাম চলিয়াছে। সারিতো ভারাই আভ প্রতিফলিত করিবার প্রয়াস চলিতেটে লেখকের সহিত্যতের মিল না থাকিলেও পাঠক এই প্রয়ে মার্স্ত্র-পদীৰ ঘটিতে সাহিত্যেৰ স্বৰুপ কি প্ৰকাৰ প্ৰতিভাভ হয় ভাৰা বিশ্বভাবে জানিতে পারিবেন।

विकि---- के कि के निव्य की बूबी, अप, अ। प्राप्तन भावनिनिः हाँखेनं, २.व भाषाहरून ए ब्रीहे, कनिकाछ। शृक्षे। २०১। मुना 🔍, ।

क्षवास्त्र वह । विवाह विष, शृथिबीय सम्र ७ वदम, स्वर्थन, ভীবস্বপত্তের অভিব্যক্তি, অভিব্যক্তিবাদ, আদি মানবের স্থানে, মানবের জাতি বিভাগ, গভাতা, বাট্ট, ধর্ম প্রভৃতি ভেন্ট প্রবাদ্ধে श्रद अन्तर्भ इतेशारकः। अधिकात श्रद्धकाव विनित्तारक्त--- धेर्ड वटेरवद এক্ষাত্র উদ্বেশ্ত জ্ঞানপিশাসা ক্রমানো কিংবা বাডানো--জ্ঞান-পিপাসা মিটানো এর উদ্বেশ্য নহ। প্রমুকার বে সকল ভটিল বিষয়ের আলোচনা করিয়াছেন ভাঙা পাঠ করিয়া উচ্চপ্রেপীর ছাত্রপ্র, এমন কি সাধারণ পাঠকেরও জ্ঞানপিপাদা বৃদ্ধি পাইবে সন্দেহ নাই। বিভিন্ন জটিল বিষয়ের সরল আলোচনা এই প্রস্তের বিশেবস্থ। পুস্তাকের ছাপা ও কাপজ উৎকুট্ট। উপ্রাস-প্রাবিত বাংলা সাহিত্যে এইরূপ বৈজ্ঞানিক প্রবন্ধের বট ষ্ট্রট প্ৰচাৰিত হইবে ভড়ই দেশেৰ মঙ্গল।

#### **জ্রীঅনাথবন্ধু দত্ত**

জীবনের ভূল—এলিতেজনাধ পুরকারস্থ। প্রাধিয়ান— পেঃ আঃ গোপালগঞ্জ, কারছগ্রাম (জ্বিষ্ট্র)। বুল্য--২্।

এছকার নুতন, আলোচা উপস্থাসটিও ফ্রেটিবিচাভিশুও বছে। পর वनिवात कोमन छिनि चानिको बात्रस कतिशाहन । (र नकन बनिवार्त) ৰটনা চরিত্র-বিকালের সহায়ক এবং গলকে হুঠ পরিণ্ডিতে পৌধাইয়া लब---छाहात चकावरे काहिनीटक इस्तन कतिताहि। ब्लाकत-श्रमाद्वत কৰা হাডিয়া বিলেও চক্ৰবিন্দুগংযুক্ত প্ৰকলিয় চক্ৰবিন্দু বিচ্যুত হওয়াতে পাঠকালে বিরক্তি কথার।

(रमक: क्षांकेरणत सामत-->भाव छक क्रीके, क्लिकाछा। मूला-->भ-

द्रानात्त्र कार्य वस वनात्र अक्षेत्र विभिष्टे क्यी कार्यः, श्रुतास्त विनियक्तिरक नावारेश-कशरेश विदे कतिशा विनयंत्र क्षेत्रण नकरणत पारक ना-कि रान देवनम् किनिन। अवस्थित अवश्वि शक्ति चढारे मान सम এरे रेमनमक व्यक्तिकात व्यक्तिकारी बनिवारे किनि



#### रेनिया अस्त्रवर्श-अ বুগাভকারী উপভাস Fall of Paris-এর বাংলা অকুবাদ

পা রী র প তে ন

গত বহাবুদ্ধ ও তার আগেকার সবরের ফরাসীজীবনের একটা নিভূলি ও বলিট চিত্র। বিশাস্থাত্কতার ও বড়বন্তে, হতাশার ও ভীক্তার, নিক্তিরতার ও বার্থপরতার বিপর্যন্ত একটি বিরাট জাতির মর্ম ক্রম ক্রমতির কাহিনী। তিন বাবে সমাধা। প্রথম বাবে অনুবাদ করেছেন অমল দাৰভাত। দাৰ হ.। বিভীয় ও ভাতীয় বভ এই মানে প্ৰকাশিত হৰে। দাম ৩, ও ৪, বধাক্রম।

#### স্থাক্সিত্র গোর্কীর শ্রেষ্ঠ গল্পের সংকলন

## নৰ জাত ক

গভীর প্রাণপ্রাচর্ষে মহান, নির্বাভিত ও নিপীড়িভের সম-दिवनात्र अकिविक अहे नवश्चित असूनात वारमा माहित्या এক নতন সম্পর। চোর চেলকাশ, নাটাশা, প্রণতিনী त्रनिका, (मर्ट्यानकोविनी या जात (कारनत अवदात दिका মারের কোল জুড়ে কম নিল যে মানুষ-জামাদের নিশ্বডিত জীবনের সেই পরমান্তীয়নের কথাচিত্র। অকুবাদ করেছেন নীহার দাপতত। দান ৩:•

#### অক্সান্ত কন্নেকটি বই 🌑

ধাৰকাৰা (গৱ সংকলন) — ননী ভৌমিক	₹₩•
মতুন দিনের আলো (উপভাগ) —নিও কিয়াচেনী	81 •
ভাক (গৰ সংকলন) - এরেনবূর্গ ও অন্তান্ত	२॥•
অৱশভা কুৰণ চৰণৰ	211-
ৰু বীক্ৰমামা (কৰিডা গংকলন)	>110
সমুজের ভাদ - মাণিক বন্দোপাধার	<b>9</b>   •
<b>म्पालिस्य होत्र (महस्त्री - म्नानि शेष</b>	>11-
<b>লোভিয়েট বিজ্ঞান</b> —ডাইগৰ কাৰ্টার	२।•
স্চিত্র ভালিকার জন্ত পত্র লিখুন	

## एकाववाभवाल शवलिर्भः रि५५ लिः

৮৭, টৌরুসী রোড: কলিকাতা২০

অনায়াসে শিশু-চিন্ত কর করিতে সমর্থ হইরাভিলেন। এই পুতকের প্রত্যেকটি গলে ছোটদের কন্ত তার অকপট বরল পরিলন্ধিত হয়। শিশু-সাহিত্যের প্রেট বইওলি মুলাবান সম্পদ্। প্রকাহ আল ক্রিড, তার নূতন মুতন মনোহর পর শিশুসাহিত্যের ভাঙার পরিপূর্ণ করিবে না—এই বেদনাই বার-বার সনকে শীড়া দিতেতে।

শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

বিজিতা—এউংপলেন্দ্ৰেন। এতদ লাইবেরী। ২০৪, কর্ণ জ্যালিস ট্রাট, কলিকাতা। দাব দেড় টাকা।

সংগ্ৰন্থ কুৰ্মান মাধুলি একটি ঘটনাকৈ কেন্দ্ৰ কৰিয়া উপভাগধানি লিপিত। অসিত ব্যাহিষ্টার। বন্ধুমহলে নারীবিধেনী বলিয়া খাত— বিবাদ কৰে নাই। রমেন অসিতের বন্ধু। বন্ধুলোকের ছেলে। বাাকে অসাধ টাকা এবং ইল-বন্ধ সমাজে ধুব ধাতির। অসিত একটি মেজেকে এক সময় ভালবাসিত, কিন্তু যে কারবেঁই হোক ভাহা বার্থ ইইছাছে।
ঘটনাচক্রে রমেন না কানিয়া সেই বেরেটকেই ভালবাসিয়া বিবাহের করু
পারল হইরা উঠিল। রমেনের মা এই বিবাহের ঘোরতর বিরোধী এবং
শেব পর্যান্ত বাধা হইরা উল্লোকে অসিতের পরণাপর হইতে হইল।
অসিত অরপকাং না ভাবিরাই এই বিবাহ পঞ্জরিয়া বিবার প্রভিশ্নতি
বিরা বসিল। এইবান হইতেই উপভাসের আরম্ভ এবং শেব হইরাছে
নানা ঘাত-প্রতিঘাতের মধ্য বিরা অসিতের সহিত উক্ত বেরেটির পুনবিলনে। লেবকের ভাষা সহল এবং বেগবান, কিন্তু আগারোড়া ইংরেলীবাংলার সংমিশ্রণে ভিনি এক করাখিচ্ট্য পরিবেশন করিরাছেন।
এদিকে ভাহার সচেতন হওরা উচিত ছিল।

🗃 বিভূতিভূষণ গুপ্ত

অ'জে ওঠে চাঁদ--- ্ৰৰৰ ভটাচাৰ্য। সাৱদা সাহিত্য-সংসদ্, ৪১-ভি, একডালিয়া বোড, বালিগঞ্জ, কলিকাডা।

গানের বই। সংগৃহীত সদীতভানিকে দ্বীত-কবিতাও বলা চলে। রবীলোভর লাহিত্যে গান-রচরিতা হিসাবে বাহাবের নাম করা বাইতে পারে, অকর ভটাচার্ব্যের দাম তাঁহাবের প্রোভাগে লিখিত হইবে। কিল্লহগতের লহিত পরিচিত ব্যক্তিরাত্তেই 'রাজার কুমার প্রশীরাজে' 'রপকবারি রাজা এসে ভূলে নিল পারুল কুল' প্রভৃতি রোমান্টিক গামভানির ললে নবভীবনের ভাতীর উরোবন মূলক 'গৈনিক ভূমি হুর্জর বীর' 'বক্ষর হাজো বাঞ্জীরা সবে' 'মূতন উরার সৈনিক ভূমি' প্রভৃতি সঙ্গীতভানির সহিত পরিচিত আহেন। মূতন মূতন আতি—আগুনিক প্রের রচিত তাঁহার গামগুলি বাংলার রসিক সমাজে

# নেতাজীর অনুসরণে

বাংলার বিখ্যাত স্থত ব্যবসায়ী প্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহালয় ও তাঁহার "প্রী" মার্কা স্থতের নূতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিপ্প্রয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'প্রী' স্থতের ব্যবহার অত্যাবশুক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল স্থতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে প্রীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ স্থত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা স্থত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অনুকরণীয়।

ৰাঃ শ্ৰীসুভাষচন্দ্ৰ বসু

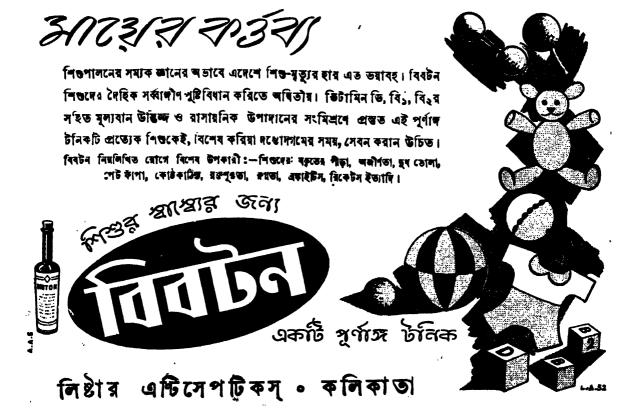
ছবিভিত অবচ সাহিত্যিকগবের অবেকেই ভাষার নাম ভাল করিরা ভানেম না, ভাষারা ভগু কবিকে "সৈনিক" (২র লং) প্রভৃতি কাব্যপ্রছের রচরিভা বলিরা ভানেন। কারণ ভাষার প্রকাল সফলম-প্রস্থ 'ভক-সারী' ও বর্তমান প্রস্থ ভাষার কাব্য-প্রতিভার সমাকৃ পরিচারক নতে, ভাষার শ্রেষ্ঠ সদীতসকলের অবিকাংশই পুত্রকালারে মুক্তিত হয় বাই। বহু অবপ্রিয় নাম-করা ছবির ক্রচ তিনি সূত্র প্রব্রে অভিনব অপরণ স্টিভিক্সা রচনা করেন। তিনি প্রায় হ'হাভার গান রচনা করিরা সিয়াছেন। যাল সাইজিল বংসরে ভাষার প্রবিদ্যাপিত হইরাছে, ক্রিছ তিনি বে সকল স্বত রচনা করিরা সিয়াছেন, নাংলার সদীত্র ও রসিকসমাক চিরকাল ভাষার আগর করিবে। যদি কোন সাহিত্যিক-বলু ভাষার সম্প্র স্থিত-কবিভা হইতে শ্রেষ্ঠ গানগুলি বাছিয়া একট সক্ষনগ্রন্থ প্রকাশ করেন, বাংলা সাহিত্য ভাষার নিকট ক্রত্য থাকিবে।

কবি কামিনীকুমারের সঙ্গীত— শ্রীদর্শক্ষণ ভটা-চার্ব্য কর্তৃক সংগৃহীত ও সম্পাদিত। প্রাচ্যবাধী সর্ক্ষণীন প্রদ্যালার ৭ম প্রছ। প্রকাশক—ভট্টর ষতীক্ষবিষল চৌবুরী, ৩ কেডারেশম ট্রাট, কলিকাভা।

ৰদেশী-গানের বনামধ্য রচরিতা বিক্ষেলাল, রজনীকাত, অভুলপ্রসাদ, নজরল প্রভৃতির সহিত ত্রিপুরার গীতি-কবি কামিনীকুমারের নাম বিঃসংলংক উরেব করা বার। তাঁহার এক্ষাত্র প্রকাশিত প্রভৃ 'পুরবা'। সমালোচকের অভ্রোবে সংখৃহীত বর্তনাদ ইতিসংশ্রহের পুত্রুট ক্রকলেবর হইলেও বে ক্ষেত্রট গান ইহাতে সংগৃহীত হইলাছে, তাহা হইতে পাঠক সলীতরচনার বিঃসন্দেহে তাহার বিশেব ক্ষরতার পরিচর পাইবেন। ছামাতাবে তাহার রচনার কোন অংশ উদ্ভুত করিতে পারিলার বা, সলীত ও কাব্যানোধী পাঠক-নাত্রেই তাহার হবেনী ও অভাত সদীতগুলির শক্রতার ও হলোনাবুর্ব্যে নোহিত হইবেন। সন্পাদকের সংশ্রহ আশাক্ষণ হর নাই, অবিলয়ে তাহার অবন্তপ্রার সদীতের আরও কতকগুলির পুদরুতার বাহুণীর।

ভাপুনিক চীন পান মুন পান। বাঙালী ছিলুর বর্ণভেল-শ্রনীহারপ্রন রার। আসালের অনুন্য শল্পশ্রনীহারপ্রন রার। আসালের অনুন্য শল্পশ্রনীহারপ্রন রার। আসালের অনুন্য শল্পশল্প। হিলু জ্যোতিবিল্যা—শ্রন্থররপ্রন দাপ। নডোরান্ধি—শ্রন্থরারত সরকার। আপুনিক মুরোপীয় দর্শন—
শ্রন্থরারার। প্রীক দর্শন—শ্রন্থরার রার চৌধুনী।
নব্য বিজ্ঞানে অনির্কেশ্যবাদ—শ্রন্থনাথ সেনগুণ্ড।
নামাদর্শন—শ্রন্থরর ভটার্গে। শিল্পকথা (সচিত্র)—
শ্রন্থলান বহু। হিলু সংগীত—শ্রন্থন চৌধুনীও শ্রাংশনা দেবী
চৌধুনাধী। প্রাচান ভারতের সংগীতিভা—শ্রন্থনাথ
সাভাল। বেভার (সচিত্র)—শ্রন্থনার বাভান। বেভার (সচিত্র)—শ্রন্থনার

প্রকাশক—বিষভারতী, ৩০ ধারকানাথ ঠাকুর লেন, কলিকাতা। প্রাপ্তিয়ান বিষভারতী এয়ালয়, ২ বছিম চাটুজো ট্রাট, কলিকাতা। প্রত্যেক্টির মূল্য—আট আনা।



এই এছঙলির প্রভোক্তির পৃথক্সবালোচনা সভবপর সহে,
ব্যক্তিটি পৃত্তকই দেশের ননীবী ও বিশেষজ্ঞান কর্তৃক লিখিড

হইরাছে। উাহালের উপর সভবা বা টিনানী প্রকাশ করা গুইডাবারা।
আনরা ওপু সাবারণ পাঠকসপের কৃষ্টি এই বিকে বিশেষভাবে আকর্ষণ
করিরাই ক্ষান্ত থাকিব। সর্বসাবারণের মধ্যে জানপ্রচার ও লোকশিকার
উচ্চেশিক্ষার প্রতী পার হওরা বাহালের পক্ষে নানা কারণে সভবপর হর নাই
অথবা সর্বোচ্চ শিক্ষার প্রবাস লাভ করিরাও বাহালের জানশিপাসা অভ্যুত্ত
রহিরা গিলাতে, বাহারা জগতের জানভাঙারের নানা বিচিত্র ও বিশ্বরকর

তথা সব্ধে পরিচর লাভ করিরা কৌত্তর পরিভৃত্তি ও চিছের উৎকর্ষ
সাধ্যে সমৃথ্যক, এই প্রভৃত্তি তাহালের নিকট অমুলা রম্ম বনিরা বিবেচিত

হইবে। 'বিশ্বিয়ালয়েহ' প্রভৃ-সিরিল ঃস্বসাধারণের মধ্যে অর মূল্যে
প্রচার করিয়া বিব্রচারতী দেশের বহন্তপ্রকার সাধ্য করিবেচ্ছেন।

#### श्रीविषयासकृष भीन

চৈতী ফসল—এগ্রীভা বস্থ ও এপথাকৰ চটোপাধ্যার। প্ৰবী পাবনিশান'। ১০, শিবনাবারণ দান লেন। মূল্য ছুইটাকা।

'চৈত্ৰী কৃদলে' সৰমূহ চৌৰ্টি ছোট গল ছান পাইবাছে, ভন্মৰো সাভটি শ্ৰীণীতা বস্থৱ এবং সাভটি শ্ৰীপ্ৰধাকৰ চটোপাধ্যাবেৰ লেখা: প্ৰায় সবস্তলি প্ৰকেই সাৰ্থক ছোট পল বলিয়া খীকাৰ ক্ষিয়া সউত্তে আমানের কিছুমাত্র বিধা নাই। প্রবঙ্গি ঘটনা-প্রধান নয়, মনজবমূলক। সেওলি জীবনের এক একটি নিগৃত আটিল বঙ্গান্তব 'দকে ইলিড কবিডেছে। মানুবের মনের প্রনে भवन्त्रवाद्वारी कछ व्यवृश्वि य भागाभानि वामा वैषिता चाट् अवर সময় সময় কত বড় বিপাইবের হৃতি করিতেছে, লেবকসণ প্রত্যেকটি প্রের প্রিণ্ডির মূথে আক্ষিক্তার অবভারণা ক্রিয়া পাঠককে সে গৰ্কে সচেডন কার্য। তুলিয়াছেন। ছোট গলেব আট বিশেষকপে আহত না থাকেলে এ ধরণের পদকে বসোত্তী করা হুকটিন। চৈত্ৰী কগলেৰ প্ৰত্যেকটি গল শেষ কৰিয়া অনেকৰণ ভাবিতে इयु-मान इयु श्रेष (नव इट्टेन वाहे, किन्नु मानक कथाई (यन मनुष्क ৰহিনা পেল : "Greatest art consists in concealing art" --- এ কথার সার্থকতা এই পুস্তকের অধিকাশে পারেই সপ্রমাণ इहेबार्ड । 'विम्याब' (ग्रेडा वस्त्र), चाव चत्रिमीरन ( स्थानव ) अह চুইট গলে প্রতিভাব সাক্ষ আছে। ভূক্তাভিভূক্ ঘটনার बाकूरवर बर्गाक्रभाष्ठ रव कि अवदर्ग कृषिकम्म केमिक्ठ स्टेर्ड পাৰে, ক্ষা এবং অগভীৰ অভবিষ্টি বলে লেখকগৰ পদ ছটিডে ভাছাই হপ্রিক্ষ্ট করিয়া তুলিয়াছেন।

গান্ধীজীর গর—এ প্রভাত ট্রহ। ইণ্ডিয়ান স্যাগো-দিরেটেড পাবলিশিং কোং দিঃ। ৮ সি রমানাথ মন্ত্রদার হীট, কলিকাডা। মূল্য স্থাট স্থানা।

এই কুত্র পৃত্তিকাথানিতে গাড়ীজীর জীবনের করেকটি গল ছোট ছোট ছেলেয়েয়েকের উপযোগী সহজ সরল ভাষার লিপিবড হুইরাছে। প্রভাগি পড়িয়া ভাষারা বেষন মুখ্য হুইবে ভেষনি চরিত্রগঠনোপবোগী শিক্ষালাভও করিবে। লেথকের বলিবার ভঙ্গীটি চর্ম্মান। পাড়ীজীর সাল্লিব্যে বাইবার সোভাগ্য তাহার হুইরাছিল। সেই ক্পনিটি বড়ই চিভাক্শিক হুইরাছে। মিলনভীর্ষ — শ্রী প্রবোধ ' সরকার। কারবারী হিন্দ্ লিবিটেড, ১০ গৌরবোহন মুখান্দি ফ্লিট, কলিকাজা। মূল্য ১০।

শিক-সাহিত্য বচনার বী প্রবোধ স্বকাবের হাত আছে।
কাশীরাজ ও কোশল-রাজের বিবোধ, পারস্পারিক প্রতিষ্পিতা
ও পরিণামে উভবের মিলন এই বিবরবজ্ঞ লইবা লিখিত বর্ত্তবান
নাটকগানি শিশুদের চিন্তবন্তর্কন করিবে। নাটকের শেব মৃশ্রে
কাশীরাজসভার অকসাৎ কোশলবাকের প্রবেশ, এংং বীবেজ্ঞসিংচের
প্রাথবক্ষার অক তাঁহার বেচ্ছার ধরা দেওরা, তাঁর উদ্বাপনাপুর্ব উক্তি ইত্যাদি স্ব কিছুতে মিলিরা একটি চমৎকার নাটকীয়
সিচ্ছেশুন স্কটি করিবাছে। জীচরিক্রবর্জ্জিত বলিরা নাটকথানি
বিশ্যালয়ের ছেলেদের অভিনরের পক্ষে বিশেষ উপ্রোক্তী।

মোপাসী থেকে—এৰীৰাভাতে মৈত্ৰ, এম-এ। ইণ্ডিয়ান আ্যাসোসিয়েটড পাবলিশিং কোং লিং। ৮ সি হমানাথ মন্ত্ৰদাৰ বীট, কলিকাডা। মূল্য ছুই টাকা।

অর্দ্ধ শতাকারও উর্দ্ধনাল হইল করাসী সাহিত্যিক মোপাসঁ।
ইচলোক ভ্যাপ করিরছেন, কিন্তু বিশ-সাহিত্যে প্রলেখক
হিসাবে আছও ভিনি শীবঁহান অধিকার করিরা আছেন।
জ্যোতিরিজনাথ ঠাকুর এবং ননীমাধর চৌধুরী মৃদ করাসী হইতে
মোপাসাঁর কভকওলি গল অলুবাদ করিরা বাংলা-সা'ইত্যিকে সমৃদ্ধ
করিরাছেন। প্রীযুক্ত শীভাংও মৈত্র সম্ভবতঃ ইংরেম্বা হইডে
গলওলিকে বাংলার রপান্তরিত করিরাছেন।

চীনে কংগ্রেদ মেডিক্যাল মিশনের বিববণ ভাঃ কোটনিদের অমর কাছিনী

# हारत तारे শुरु असरहात

চীনে কংগ্রেস বেভিক্যাল বিশনের অভিজ্ঞতার বিবরণ ও ডাঃ কোটবিসের মহান্ আত্মোৎনর্সের কাহিনী নিয়ে লেখা এই বইবানি উপস্থানের চেয়েও মনোজ ও চনকপ্রদ।

বহুবাদ্দ-জ্রীনেপালশন্তর সরকার। দান ৩, টালা আমাদের প্রকাশিত ও এজেলির অস্তান্ত বই

+ ক্ৰোধ বন্ধৰ •
পদ্মা-প্ৰস্ৰম্ভা নদী (২ সং) ৩।
ব্লাক্ষধানী (২র সং) ২।
সম্ভন্নী ক্ষম নামী(২ম)১৮৮

वांबेटवंब नेक बांबी(काः))।/-काः वलक्षां ह्हागायात्र के विक्वांब वस + বানবেজনাথ রারের + দর্শন ও বিপ্লব ১।• মার্কসবাদ ১।•

পুত্তক-প্রকাশক ও বিজ্ঞেতা
১৬০এ, রাম্বিরারী এভিনিউ, ক্লিকাডা—২১

বোপাসাঁব প্রের যত আঠ বস্নাহিত্যকে তির ভাষার রূপান্তবিত্ত-কর্ব অত্যন্ত ক্ষণ বাপার। কিন্তু নীতাংগুনার এই কঠোর পরীক্ষার উত্তাপ হইবাছেন। যোপাসাঁর প্রের বিশাল ভাগুর হইতে তিনি নেকলেন, তার ছেলে, ভ্যোৎক্ষা, বসভে, বেচারা মেরেটা, কুছিত, বনপুত, নিবিছ কল, নিন ছারিয়েট, মবণের পরে এই ক্ষাটি পল অভুবান করিয়াছেন। প্রভেত্তার মানরে ইহালের আসন চিহ্নালের জভ কারেম কইবা রহিরাছে। এর কোন্ট ছাড়িয়া কোন্ট্র কথা বলি। তরু মনে হর, বাভবতার দিক দিরা বমপুত প্রকৃতি কুলনা নাই। অবৃত্তির নিঠুর পরিতানে বিভূত্তিত বহ্নিত মান্তবের প্রতিবোদসকল অভিযাক্ত। বাভাগী পাঠককে যোপাসাঁর করা বে কত বেশী ছিল বিদ হেনবিরেটা পরে ভাহারই বেননাক্ষণ অভিযাক্তি। বাভাগী পাঠককে যোপাসাঁর কথা-সাহিত্যের বস পরিবেশন করিতে গিরা শীতাংগুবারু বে শিল্পান্তনোচিত নির্মাচন-ক্ষমভার পরিচর দিরাছেন সেলভ মনে আঁচাকে অভ্যন্ত সাধুবাদ দিভেছি।

ভূতোম পাঁচার নক্স— এবিনয়কুমার পলোপাগ্যার সম্পাদিত। আত্তোব লাইবেরী, ৫, কলেক কোয়ার, কলিকাতা। মূল্য দেড় টাকা।

কালীপ্ৰসন্ন সিংকের 'হুডোম পাঁচার নক্সা'র পরিচর एक्द्रा चनार्डर। चाल्लार माहेद्रशे कित्नारत्व चर वर्षभान मः इश्वी ध्रेमानिक कविवाद्या। **এই সংকরণের** সম্পাদক আদিবসাত্মক এবং কিশোবদের অনুপবেশী অন্যান্য অংশগমূহ সহত্তে পৰিহাৰ কৰিবা অকচিৰ পৰিচয় দিবাছেন। কিছ वर्षः शार्केक हेशास्त्र अन्नाव चानन बरनव चाचान शाहेरवन ना । 'আলমান' হইতে 'হতোম প্যাচা' এই পুস্তকে বে বস পরিবেশন ক্রিয়াছেন ভাহা নিরবচ্ছির, এবং ভাহার পূর্ণ ভাল উপত্তোপ क्विटक इंडेरन मृत बगडा शिक्ष हाथिया (मिया इंडेरन) वाहे हाक, বিপ্ত ৰূপেৰ বাংলা-সাহিত্যের এই সমস্ত ৰম্ববাজিৰ সহিত কিশোৰ ववन इहेटक है वाःनाव (इटलट्यरबटम्ब नविवव हक्ता केविक बवः मिक विशे बहे अल्जिन मान्यन ध्वकारन मार्थक मान्यक 'কলিকাভার চড়ক পার্কাণ' সম্ভেৰে অবকাশমাত্ৰ নাই। 'ক্লিকাভাৰ বাৰোৱাৰি পূলা' ইভ্যাদিৰ বৰ্ণনা পড়িয়া বিগ্ৰু শ্তাকীর কলিকাতার সামাজিক জীবনের চেহারা কিশোর পাঠক-পাঠিকাপৰ স্থলাইরপে মনশ্চকে দেখিতে পাইবে। অনেক্ওলি রেখাচিত্রছার। পুত্তকের সৌর্চববৃদ্ধি করা হইরাছে।

কুলটুর কামপফ্—ভার শীহরগর ঘোষাল। এব, সি সরকার এথি সল লিঃ, ১০, কলেল কোরার, কলিকাডা। পৃ. ৩১৫, বাম তিন টাকা।

শন্তভ্য বুজের প্রথম অধ্যারে যা রচনিতা ভটার প্রীক্রিয়ার বোবাল বাংলা-নাহিত্যে প্রণরিচিত। বিতীর বিবস্তুত্বে সমর করি পোলাওের ভারশো (Warsaw) বিশ্ববিভালরের অধ্যাপক-পদে নিবৃক্ত হিলেন। বটনাচকে, লার্থাণ আফ্রমণে বিপর্যাত পোলাওের পথে-প্রাভ্তরে বাগাতা বধুসত্ বাবাবর বীবন বাপনকালে বুজের ধ্বংসলীলা স্বর্থক ভটার ঘোবাল বে প্রভাক অভিক্রতা অর্জন করিবাহিলেন "নহন্তর বুজের প্রথম অধ্যারে" ভাৰাই বণিত ব্যৱহাতে। ভারণোঁতে পুনঃমত্যাবর্ত্তনাতে বোমাবিজ্ঞ নগরীন বে ভরাবত মৃত্ত ভারার চোবে পড়ে "কুলটুর কামপাকে" ভারারই ছবি তিনি আঁকিরাছেন। ইতাকে বলা বাইতে পারে বংগুর মৃত্ত সম্বাদ্ধ ভারার ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতামূলক কাহিনীর বিভার অধ্যার।

Kultur Kampi—বিসনার্ক-উভাবিত এই বৌদিক জার্নান কথাটির বাবে হইতেছে সংস্কৃতি-সংগ্রাব। হিটলার সমগ্র মুরোপের উপর ধ্ব সালীলা চালাইবার আরোজন করিরা এই 'কুলটুর কাম্প্রে'র পরাকাটা ক্রোইরা নিরাছেন। সেই সংস্কৃতি-সংগ্রাবের আসল রূপটি কি সে সহজে স্কুল্ট বারণা করিতে হইলে ডান্ডার বোবালের বই ছুখানি অবভাগার। জার্নানমের নির্মিচার বোবার্বিপে ভারশোর ধ্বংস্থাত প্রাচ্য বিভানিক্তেন, অগ্রিক্স পোলার চিত্রগৃত্ব, নাটালালা প্রভৃতির বে বর্ণনা লেখক হিরাছেন তাহা সংস্কৃতি-অপুরাধী ব্যক্তিনাত্রকেই বিচলিত করিরা তুলিবে। বে অব্যাপক নিজ লাইরেরির পাঁচ হালার বই বাঁচাইতে বিরা আগুনে প্রাণ বিরাহিলেন, দাবোরান মারিরানের করানীতে, (পূ. ২৮-৩৯) গেঁরো ভাষার তাহার বিরোগাত্ত কাহিনী ত্রনিতে তানিতে চকু অপ্রাণিত হইরা উঠে এবং সংস্কৃতি-সংগ্রামের এই সমত্ত ফাগ্র (?) ছুটান্তের কর্যা পাঠ করিরা তথাক্ষিত 'সভ্যতার পরাকাটা সংস্কৃতি' না চুড়ান্ত বর্ণরতা সেই প্রয় অতঃই মনে উলিত হর।

বইগানি পড়িবার সময় ভাষার উপর লেখকের অনায়ান্ত অধিকার এবং ভাব প্রকাশোপবাদী নৃতন দক্ষপ্রটিনপুণা দেখিয়া অবাক্ হইরাছি। ভার ঘোষাল আন্তে একজন কুণনা শিল্পী, সেইজল গ্রার ব্যক্তিগত অভিলাতাবৃদক সভা ঘটনার বর্ণনা কথা-গাহিত্যের প্রায়ে উরীত হইরাছে। লেখক জাহার বাপজা বধুর বড় বোনের কথা এমন বরবের সহিত বর্ণনা করিয়াছেন বে, এই প্রেহময়া বিদেশিনা মহিলা ঘেন একেবারে আমাদের জ্বানের মাঝখানটিতে আসিয়া আসন প্রহণ করেন এবং বইথানি শেব করিলে বুছের ধ্বসেনীলার দৃষ্ণের মধ্যেও জাহার বেগনাকরশ মুখছেনি যেন আমাদের মনশ্চক্রের সামনে বার-বার উঠিক বারিরা যায়।

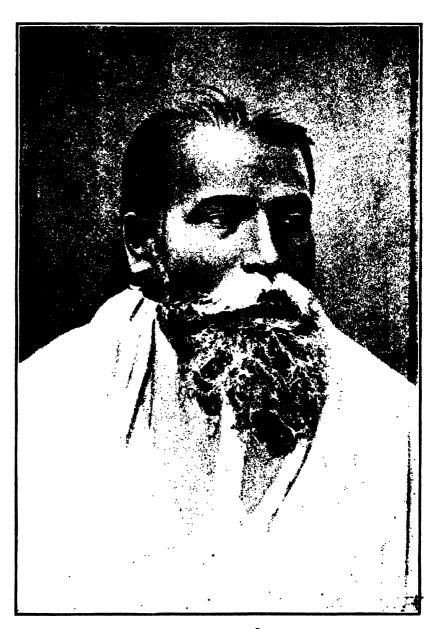
বেদিয়া ছণ্দ--- এরাধিকারপ্লন গলোপাধ্য'র। অএথ বুক ক্লাব, ১৬, বুলাবন বহু লেন, কলিকাতা। মূল্য চুই টাকা।

এক এক জন লেখক আছেন বাঁধারা প্রচুর ক্ষমতার অধিকারী হইরা জন্মগ্ৰহণ করেব, কিন্তু বেটুকু বল তাঁহাদের প্রাল্য জীবিভাবস্থার তাঁহারা ভাহা পান না। পরলোকগভ রাধিকারপ্রন গলোপাখার ভাহাদের অভতম। ছোট গল রচনার কেতেই ভাঁহার ক্রমণিকশমান প্রতিভার পরিচর পাওরা বাইভেছিল। বর্ত্তমান পুত্তকে---কেরাবনের পথ, অভ ल्य ब्रम्मी, ब्याब काना हिन, या नियान, व्यवित्रा हन्न, ध्रम वस्ति, अरे मिरे বাধাতীর্ব, ছোরা, পরাঞ্জিত বোদ্ধা এই আটট থোট গল ছান পাইরাছে। অত্যেক্ট গলের মূলে রহিয়াহে মাতুবের অভি অপরিসীম দরদ কার त्रकन बानत्वत्र हु: त्थ अकाष्टिक (वहनात्वाप । 'मा निवाप'--- **এই** नब-সংগ্ৰহের শ্ৰেষ্ঠ পৰা। ইহা বাংলা সাহিত্যে ছাত্ৰী আসন লাভ করিবার লাবি রাবে। লেথকের সাহিত্য-রচনার মূল স্ত্রটির সন্ধান মিলিবে, 'এই সেই ব্যথাতীর্ব' নামক প্রচিতে। ইহার অভিপাভ এই :—সমগ্র বিখ বেন এক বিরাট বাধা-ভার্ব, আর জগতের মরনারী এই ভীর্বের অভিযাত্রী—ভাহাদেরই অঞ্জলে অবস্তকাল ধরিয়া এই ভীর্বের অধিবেৰতার অভিবেকজিলা সম্পন্ন হইতেছে। 'বেলিয়া ছম্মে'র সৰগুলি भरत्रत मरपारे এই मूल चत्रकि पञ्चयात्र ।

🗬 নলিনীকুমার ভজ



মিলন শ্ৰীবৈদ্যনাথ দাস



निरमाय माझी



"সভ্যৰ শিবৰ স্বৰ্থৰ বাহৰাত্বা বসহীবেৰ সভাঃ"

৪৭শ ভাগ

ভাক্ত, ১৩৫৪

} - ৫ম সংখ্যা

## বিবিধ প্রসঙ্গ

কলিকাতায় দাঙ্গা ও মহাত্মাজীর অনশন

সোষবার ১০ই ভান্ত কলিকাভার পুনর্বার যে দালা चांत्रछ रव छाराव विटक्शांव ७ निर्वानम इरे-रे पछ चड्छ। बरे शालामादिक विद्यादा चाधन चनिवाद शृद्ध बाद चाठाद দিন কলিকাভার চড়বিকে শান্তি ও বৈত্রীর বাভাগ বহিয়া-हिन । बहाबाद बानगटन रश्त्रकान हात्री माखनाविक विवाध-विद्यास्य देशनम् एडेबाट्ट दनिवारे समनावाद्यदेव विद्यान क्वायः। विस्तृत शाकाय यूजनवात्मत अवर यूजनवात्मत शाकाय হিন্দুর গভাষাত প্রার বাবাপুন্য হইরা বার। লোকের ববে अत्मारक विष लाह यवन काहैना निवाद जबन कां। विमा वाद वळाबाट्य बच्च चावाद अहे बाबाद एडे बहेन । त्याववाद ध मननवाद नाम पार के वह नित्री प्राप्त वह प्रवित्र क्यी चाळाच चल्त्रसंब ७ र्लार्ड रहेन। (नहे नत्त करवक दर्ग শাভিকামী মূবক ও বালকের ঘলকেও উৰভ নরপশুরা चाक्रमन करत वाहात करण करवक्षे चमूना चीवमध चकारन. चकावान नहे एरेन , वारांव माना महीत्वव ७ मृणीत्मव হতা ভাতীহতাবাদের কেন্তে নিদারণ আক্ষেপের কারণ। হুই क्षमहे छेरमाही ७ विद्यानी , महाध्यमी दिलम । महीत्वद প্রতিভা ও উজ্জ কর্মপুদা আমাদের সকলেরই আশার বস্ত হিল, পভীশের সাহস ও কার্যভংগরভা তাঁহার পত পভ সহ-ক্ষা বছুবাছৰকৈ উৰ্ভ ক্রিড। করেক্ষণ থাবাছ অৰ্থীশাচ क करवक्रम पक्रि के श्रीकिश्तिकामी निर्द्याय मेक्यूर्वह श्रादाह्यात (र चाधन चनिन छाराष्ठ (रनारक चरारन चढाचर बरेवन चार्राक विरुक्त रहेन, राश्नाव हुर्बना बकरे লাংবাভিক।

রবিবার, ১৪ই তারের হাত্রে এতখন নরণত বেলেবাটার বহাত্মার বানহলে উপহিত হইরা গওলোল আরভ করে। ভাহারা একজন ব্যাতেক বীবা লোককে লইবা বার ও বলে বে লে বুনলবান আভভাতীর হতে আহত হইরাতে, সুভরাং বহারাকীর পাতি ভেটা বিধ্যা, ইত্যাবি। বহাত্মার শিবির হুইতে এ বিব্রে একট বিবরণ বেগরা হইরাতে। ৰহালা গানীর বিবৃতিট এই :

"অভি হ:বের সহিভ জানাইতে হইভেহে বে, গভক্স্য वाजिए करवक्षम बूदक व्याध्यम बीवा चवहांव अक व्यक्तिक সইয়া বাড়ীয় প্রাক্তে উপস্থিত হয়। সে ক্ষেক্তন মুসলমান क्षंक चाकाष स्रेवादिन वनिवा चानान स्व। अवान बद्धी ভাহাকে পরীকা করেন, কিছ ক্ষিত কোন ছরিকাষাভের চিক্ ভাষার পরীরে পাওরা যার নাই। আখাভের ওঞ্ছই এবান বিষয় ছিল না। আমি জোৱের সহিত বলিতে চাই বে. এই इतकश्व निर्ववादे विठायक ७ माखिनाचा एदेवाच (ठदे। कृतिया-হিল। তৰৰ বাজি প্ৰায় ১০টা। তাহারা ভাহাদের সাধারত চীংকার করিতেহিল। আমার নিজার ব্যাঘাত হইলেও কি বটবাহে, তাহা বা জানিয়া শাওভাবে ভাইয়া বাজিবার *ভে*ইট করি। আমি ভানালার সাবি ভাঙিবার বন্দ ভনিতে পাই। আমার উভর পার্বে হুইট অভ্যন্ত সাহসী বালিকা ভইরাহিল। ভাৰাৱা নিঞ্জি হিল না। সামায় চকু মুক্তিত থাকায় ভাৰাৱা আমার অভাতে সেই ক্লম ক্ষতার মধ্যে গিরা ভারারের পার क्तिए क्रेंट्रो करत । क्रेन्स्ट्र बनावार व समका कारावार কোন কভি করে নাই। আনার মনে হয় যে, বাড়ীর বুড়া মুসলবাৰ বহিলা ও একজন যুসলিন যুবক আয়াকে যুকা कवियां क्यारे जायांत्र विद्यानांत्र शार्थ क्लाब्यांन दिन। চীংকার ভবনও চলিভেছিল। করেকজন মধ্যের হলবরে প্রবেশ করিরা দরকা বুলিতে আরম্ভ করে। আযার ববে হইল বে, উঠিরা উক্ত রাগাবিত বলটর সমূবীন হওয়া উচিত। আরি একট বরভার চৌকাঠের উপর বাভাই। বছুরা আমাকে বিবিধা ব্যৱ এবং অপ্ৰসন্ন হইতে বাধা বের। এই সব ক্ষেত্রে बीनवण जन कहा नात निवार जानि छैरा जन कवि अवर छैछिक्छ रूवकरवर मांच रहेगार क्या पश्रदान करि। जाति चावाव बाढानी (भीववशृदक चावाव क्यांकनिव वारना चर्कवा कविदा रिष्क रनि । किन्न कारास्त कान कन कर नाहे। কোনৱণ বৃক্তি ভনিবার ক্ষম ভাষারা একত ছিল যা। আতি হিন্দুৰে ভাৰণাৰ হাডবোড় করি, কিছ ভাংতিও ভোৰ কল

হয় না। স্থানালার আরও সাদি ভাঙিতে থাকে। স্থভার ধবাত বছরা ভবভাকে শাভ করিতে চেঠা করে। হই বব পুলিস অকিসায়ত সেবাবে ছিলেব। " তাঁহাছা কোনৱপ "ভি প্ৰয়োগ" ৰা কৰিয়া হাতজোত কৰিয়া অনুৰোধ কৰেন। অৱের কত আবার ও আবার পার্যন্ত সকলের হেন্দে একটও লাটর আবাত লাগে নাই। আনার প্রতি একবত ইটক বিক্তিত হয়, কিছ ভাষা আনার পার্বে বভারনার একজন মুসলনার বছুর বেহে লাগে। বালিকা ছুইটু আবার পার্ব জ্যার বা করিয়া শেষ পৰ্যাত্ত আমাত্ৰ পাৰ্টেৰ থাকে। এই সময়ে পুলিদ ছুপাত্ৰি-ক্তেউ ও তাহার কর্বচারিবৰ উপস্থিত হব। তাহারাও কোন स्त रजश्रात मा कविया जावारक श्रास वादेवात का जन-রোব করেন। অভঃপর বুবকদের শাভ করিবার সুবোগ বেবা বিল। কিছুক্ৰ পৱে ক্ষমতা চলিৱা বাব। ক্ষমতা হত্ৰক করি-বার ক্ষা পুলিলের টিয়ার গ্যাস ব্যবহার করা হাড়া প্রাদণের वारित्व कि प्रदेशविन छारा चानि चानि ना। देखिनता छाः পি, বি, ৰোষ, অনুদা বাবু ও ডা: নৃপেন আসিরা উপছিত হন এবং কিছুক্ৰ আলোচনার পর চলিয়া বাব। প্ৰের বিষয় বে প্ৰভাবিত যোৱাবালি যাত্ৰার হত প্ৰথম ঘটবার নিবিত শহীদ লাহেব বাড়ী গিয়াছিলেন। উপবোক্ত বিত্ৰী ঘটনার ক্ষ্যা আমি নোৱাৰালি বাত্ৰাৱ কৰা চিছাও ক্ষিতে পাৰি না, কাৰৰ উহার পরিণতি বে ভি ভাষা কেইই বলিতে পারে না।

এই বটনা হইতে কি শিকা লাভ করা বার ? আবি সুপাই বেবিভেরি বে, ভারতবর্ধ বে বাবীনতা লাভ করিবাহে সেই নাবের বাবীনতা বিদ্ধ রুপা করিতে হয়, তবে প্রত্যেক নর-নারীর সম্পূর্ণভাবে "লিক আইন" বিস্তৃত হইতে হইবে। বর্তনান ক্ষেত্রে বাহা করার চেটা করা হইবাহে, ভাষা নোটা-রুট "লিক আইনে"র অহুকরণ। বিদ্ধ রুসলমানেরা অন্যায় করিরা বাকে, তবে অভিবোভারা বরীবের নিকট বাইতে না চাহিলে আবার নিকট বা আবার বন্ধ শহীহ সাহেবের নিকট বাইতে পারিত। বুসলমান অভিবোভাবের সম্পর্কেও এই ক্ষাই প্রবোজ্য। বিদ্ সভ্য স্বাক্তর প্রাথমিক নীতিসমূহ অহুস্ত বা হয়, তবে কলিকাতা বা অভর ক্রাণি শান্তিরকা করা অসন্তর। ভাহারা যেন পঞ্চাবের বা বহির্ভারতের বর্মবভার কথা বা বলে। নিক হতে প্রতিকারোণার না করার বে প্রকৃত্তীতি, উহার কোনও ব্যতিক্ষর বাকিতে পারে না।

পাটনাছিত আনায় সেকেটায়ী বেণপ্রকাশ তার করিয়া-বেল—'পঞ্চাবের ঘটনাবলীতে জননাবারণ বিচলিত হইয়া পভিরাছে। এই বিবরে জননাবারণ ও সংবাহণজ্ঞের কর্তব্য লন্দর্কে বিবৃতি বেওরা আবঞ্চক বলিয়া বলে করি।' জীবেন-প্রকাশ কর্যাণি অবধা বিচলিত হল না। সংবাহণজ্ঞ নিজ্ঞাই কোনও অসতর্ক উক্তি করিয়া থাকিবে। যদি তাহাই হইয়া থাকে, তবে ঘর্তমান সময়ে—বে সময়ে আমহা বাজবের ত্পের উপর বলিয়া আহি, সেই সময় সংবাহণগ্রেষ্ঠ বিশেষতাবে বিবেচনা করা ও সংবত হওরা আবস্তত। অসাবৃতার তল হইবে বাজনের তৃপে অলম্ভ বিরাশলাইরের কাঠি সংবোদ করার বত। আনি আশা করি, প্রত্যেক সম্পাদক ও রিশোটার উহার কর্তব্য সন্যক্ত উপস্থি করিবেন।

একট বিষয় উল্লেখ করা আখ্যুক। পঞ্চাব বাধ্যার কচ
আবার নিকট করুরী তানিদ আসিয়াছে। কলিকাতার
হালারা পুনরায়ত সম্পর্কে আরি নাবারণ ক্ষমর ভনিতে
পাইতেরি। আরি আশা করি, এই সকল ক্ষমর সম্পূর্ণ
ভিত্তিবীন না হইলেও অভিরন্ধিত। আবাকে কলিকাতাবাসীবের আখ্যুক করিতে হইবে বে, কলিকাতার কোমও
পোলবোগ ঘটবে না এবং শাভি পুনঃহাণিত হইলে আর উহা
তক্ষ করা হইবে না।

বেছিৰ শাভি ছাপিত হয়, সেই দিন হইতেই অৰ্থাং ১৪ই আগ্নপ্ত হইতেই আমি বলিৱ। আনিতেছি খে, এই শাভি হয়ত সাময়িক নিজহতা বাত্ৰ। অলৌকিক কিছুই বটে নাই। এই আশহা কি সভ্যে পরিণত হইবে এবং কলিকাভায় কি আবাত্র কদলের আইন প্রবর্তিত হইবে? তাহা যেন না হয়, সর্ম্মানিকান্ ভগবান বেন আনাদের অব্য পূর্ব ক্রিয়ান এবং বাচুলভায় পুনরাবির্ভাবে যেন ভিনি বাবা দেন।

**७**नरबाक विद्विष्ठ बह्माद नद चर्नार (वना क्ष्ठीद সময় আমি কলিকাভার বিভিন্ন অংশে সম্মুটত খুটুনা-সমূহের বোটার্ট বিভূত বিবরণ জানিতে পারিয়াছি। বে সকল ছান কাল পৰ্যন্ত নিৱাপন ছিল, উহার কতক-ভলি আৰু অক্সাং বিপন্ন হইবা পঢ়িবাৰে। ক্ষেক কনের ৰুত্য হইয়াছে। আৰি ছুই ক্ৰম অভিশৱ ছৱিল মুসল-মাৰের মতদেহ দেবিয়াছি। আমি দেবিয়াছি, করেকজন বিৱসবদৰ বুসল্মানকে গল্পৰ গাড়ীতে কবিয়া নিৱাপৰ খাৰে লইরা যাওয়া হইভেছে। আমি বেশ বেধিতে পাইতেছি বে. এই আক্ষিক হালায়ার তুলনার কালকার ঘটনাট ব্লান হইরা निशास्त्र। चामि अरे चनक चत्रिनिशाह मत्या निशा देश বিৰ্মাণণের চেটা করিলেও কোনও কল ঘটনে না। বে ৰক্ষ হিন্দু সন্ত্যাবেলা আমার সহিত সাক্ষাৎ করিছে আসিরা-विरमन अरे नियस कारास्त्र कर्तना कि कारा वानि कारा-বিগতে বলিবাহি। এই হালাবা ব্যবে আয়ার কর্তব্য কি १ এই ক্ৰমিন পূৰ্ব্য-পঞ্জাৰ কি ক্ৰিয়াহে ভাষা ভাষাকের বিশ্বভ रखवा छेक्टि नव । शन्तिम-शक्षाद्यव बूजनवादमवा छेवादमव जाव আচরণ আরম্ভ করিবাতে। বলা হইবাতে বে, পঞ্চাবের বটবার হিন্দু ও শিবেরা উভেজিত হইরা পড়িয়াতে। উপরে छेत्रच कविवादि, शक्षारच वांचवाव क्रम वांवाव विक्र करूवी ভাবিধ আনিবাহে। কিন্তু কলিকাভার বুধুৰ বৰ্ণন কাটবা দিয়াহে ভবৰ আৰি কোৰু মুধে পঞ্চাৰ বাইব ? ইভিপুৰ্কে আবার বিকট বে অল অবোৰ প্রতিপন্ন হইলাছে, ভাহা र्देष्ट्य छेन्यान । होरकाववक क्रमांव मसूर्य छेन्दिक

হইলেই দৰ্মণা কাৰ্যাসিতি হয় বা। গত রাজিতে তাহাতে কোনও কলোবৰ হয় নাই। আনায় বুবের কথার বাহা বা হয়, আনার উপবাদে তাহা হইতে পারে। বহি আনায় উপবাদে কলিকাতার বিবহনান পক্ষপদের হয়র জব হয়, তবে উহাতে পঞ্চাবের বিবহনান পক্ষ নকলের হায়রও জব হইতে পারে।

স্তরাং আমি অধ্য রাত্রি ৮টা ১৫ মিনিটের সময় অমশন আরম্ভ করিতেছি। বহি কলিকাতার শুতবুদ্ধি কিরিরা আসে এবং বর্ধন কিরিরা আদিবে তবে এবং তর্ধনই আমি এই অমশন তফ করিব। অমশনের সময় বহি আবি ক্ষল এহণ করি, তবে উহার সহিত লবণ ও লোড:-বাইকার্ক্সিপ্রিত করিরা লইবার অধিকার আমি রাধিলাম।

বদি কলিকাভাবাদীয়া চাহে বে, আমি পঞ্চাৰ দিয়া ভত্ৰত্য অধিবাদীদের সেবা করিব, ভবে বভ তাভাভাড়ি সম্ভব ভাহাদের আমাকে আমার অনপন ভড় করিতে সাহাব্য করা উচিত।"

ববিবার রাজের বটনা বৰন কলিকাভার অধিকাংশ लांद्व कांद्व चळाठ बदर के चंडेबाद निकटन बाजाटबर প্ৰৱোচনা কাৰ করিভেছে দে কৰা প্ৰায় সকলের অভাত এরণ অবহার কলিকাভার বছবাদার অঞ্লে বুন-ছবর ইভ্যারি चांबछ एव । (प्रवादय वाढाणी हाबदएव अक्षे माहिवाहिबीक अक रण नदर्भ कर्तुक चाळांच एत । अहे वहेबाद चक्क পরেই উত্তর ও মধ্য কলিকাতা এবং পূর্ব্ব কলিকাভার ৰানা ছলে পুঠভৱাৰ ও বুন-কৰৰ সমানে চলিভে থাকে। অধিকাংশ ছলেই উহা অভি বুশংস ও অভি ছুণা ভাবে চলে। देश दना वादना । छट्ट जामाद क्या बदेशांख हिन (व बहे वााणाद बाबत्यन ७५ (वानशानर नरन, वदक छेना वनत्व चन। প্রাণণণ চেটা করিতে থাকে। কলিকাতার বাঙালী ভন্তলোকশ্ৰেণীয় মুৰক্ত্মণের ছোট বড় দশত্ৰ বজীবাহিনীয় হলওলি, বাহা বিগত এক বংগরের দাদার কলে গটত रव. मध्निक बरे शका वरेट बाब नर्वाहर विनिध পাকে। পুলিস ছই একট কেন্ত্ৰ ভিন্ন অধিকাংশ ছলেই নিকেট বাকে এবং নিলিটারি অভান্ত দেরীতে আগবন করে।

নদলবাবের অবিশ্রাধ বৃষ্টপাতে পথবাট প্লাবিত হওরার কলিকাতার নাগরিকগণ গৃহবন্ধ হইবা নহাত্মার অনপনের পূর্ব অব উপলব্ধি করিতে পারিল এবং এই লালার পিছনে কাহারা আহে তাহাও সূতৃতভাজ এবং নরহত্যার বিবরণে বৃত্তিতে পারিল। আরবাহিনীর উপর স্বণ্য আক্রমণ, হিন্দুগুঙা কর্তৃক্ত হিন্দুর সম্পতি সূত্র্ক ইত্যাহির পূর্ব বিবরণ চ্ছুন্দিকে বিভারিত তাবে হতাইবা বাওরার জনসাবারণের ননে বিপরীত তাবের প্রবাহ বহিল। করেকট ক্ষেত্রে সম্পন্ন রকীর বল রালা ও সূত্র্ক-কারীদের উপর পাকী আক্রমণের তর বেবাইরা তাহাদের তাভাইতে আরগ্ধ করিল। অবেক অক্তে নেবাবকার

নাগরিকণণ বলবড তাবে বালা ও পুঠন বোধ করিতে লাগিলেন।

ব্ৰবার প্রাতে অনুন্ত হৈ বহাতার হৈছিক ও বাদ্সিক परहाइ क्या धनिहा क्लिकाधाराजी समनाशहर्यक विव्रतिष मन निकद रहेवा डेविन। इष्ट्राईक रहेट्ड वावाकावीवित्तव नगरमद क्या बास्ताम बाजिन। जाश्वाविकविद्यां जरकारम वाकाकावीविष्मव छेभव छनि हानाहेबाद क्या जूलाई विर्द्ध बदर माचिवादिनौरपद जमञ्ज जबर्यसद देकिछ चाजिल। जमञ्ज दरमबक्षीमामद माना महाबाद अननाम विराम कांक्ना रहती দেওবার একট দলের এক কম প্রতিনিধি খতঃপ্রবৃত্ত ক্ইরা মহান্তার সহিত সাঞ্চাং করিরা তাঁহাকে অনুনৰভাষের জন্য ,শহুৱোৰ কৰিল। বহালার সহিত অনেক আলাপ আলোচনার भव छेशारमव करवक्री मन तारे पिनरे निरक्रपद मर्या भवावर्ग करद अवर तारे करवक्ती वन ७ चन इरे-जिनी वन वाजा ও নুঠনে সৰলে বাৰা দিতে আৱম্ভ করে। এদিকে ক্ষমতের সহায়তার পাত্তিসেনা পূর্ণোভমে কার্য্যারত করে এবং পুলিস ও रिम्हणमध्य प्रामाकाविद्यां है पद मन्द्रम चार्थां कविद्य चांत्रच करत । এই तम इन्हिंदिक व हार भन्न पानाका विश्व क्षान নিজেক হইতে বাকে, খাহার দলে বুহুপভিবারে কলিকাভা नमंदी चक्र क्षेत्र नावन करव । वहन्निक्षतावव विक्षास्य नमझ-दभीनाम अधिनिविश्व बरायाचीय नाम पानक्य पानावमः करत ७ त्नरे विन जवाति भव छेशांचन बरना करनकी वनक বভঃপ্রবন্ধ ভাষা মহাবার বিকট আর্রেয়ার সমর্থণ করে। महाश्राकी अहे मूनक्षिरश्रत मत्नाकारवत शतिवर्तन रहिवत विराम मबहे रक्षार अवर क्रिकाणांत विकित वाहेरेविक सम्बद ভলিকাতার শান্তিরভার প্রতিশ্রুতি বেওয়ার কলে তাঁহার অবশ্বত্ৰত শেষ হইয়া যাওয়ায় কলিকাভাৱ উপর ধূরপনেয় क्रम बाद्यात्मव त्य व्य हिम छारा रूव रव।

বৈ সাপ্তারারিক আগুলে এক বংসর বাবং কলিকাতা খলিতেরে, বাবা হাজার হাজার বিটিশ ও দেশী সৈত, ট্যাক এবং সাঁজোরা গাভির বহরের সাহাব্যেও নিবাইতে পারে নাই, বে লশর ব্যক্তর ললকে পঞ্জাবী পুলিসের অতি কঠোর ব্যবহুচেটাও হটাইতে পারে নাই, এক বহাপুরুষের প্রভাবে বাজ ২০ বন্ধার সে সবই বটরা গেল। আবরা অলৌকিক ঘটনার বিখাল করি না, কিছ ইহা প্রার সেই পর্যারেই পজে। এই বটনার ইহাও প্রবাণ হইরা পেল যে লবল ও সাহসীয় অহিংসাই প্রকৃত অহিংসা, রুর্জন ও কাপুরুষের অহিংসার বৃদ্য ভাণা-কভিও নহে।

#### বাংলায় মন্ত্রিবদল

বাংলার থোড-বড়ি-বাড়ার বদলে বাড়া-বড়ি-বোড়ের ব্যবস্থা হইরাহে। ইহাতে বাংলাবেশ বে তিনিয়ে সেই তিনিরেই রহিরা বাইবে বলিরা বলে হয়। পশ্চিম বাংলার পরিবিভি এবন অভ্যন্ত সদীন, এবন এবানে প্রয়োজন এইরূপ মুদ্ধিবলের, বাংগাদের বাব্য সঞ্জির ও হিবন্তিক বিচক্ষণ লোকই অবিক্
বাকে, বাংগাদের প্রবান উক্তের দেশকে উরার করা। বিগত,
বার বংগারের অরাক্কতা ও চৌরতপ্রের প্রায়ী শাসকবর্গের
যুণ্য অর্থনোল্পতার কলে সম্ভ বেশ বারুল মুর্থশাঞ্জ হইরাবে
ও শাসনবর কর্মিত হইরাহে। এরপ অবহার বর্তনান প্রবাননমী ভাগার আঞাবাহী অন্তর্মণে মন্ত্রিসভাকে বে ভাবেই গঠন
কক্ষণ বা কেন, ভাগাতে দেশের উপকার বিন্দুরাত্রও হওরা সভব
বাহে। মন্ত্রিসভা বভাবিন হলগত বা ব্যক্তিগত হার্থকে
কেশের কল্যাপের উপরে রাখিবে ভত বিন একেশ ভূমিভেই
বাকিবে। প্রস্করাব্র মন্ত্রিসভার কার্য্যকলাশে আহ্বা
ফলগত বার্থের চিন্তার পরিচর পাইরাহি। স্তরাং এই অবহার
বেশের কল্যাপের আশা করা রখা।

चानन क्या बहे (व. (व मंदीव चित्रत सहेत्य अनुस वाव ভাঁছার সহকারী আনিভেহেন ভাষার মধ্যে বোগ্য লোক পাতার অসতব। বাংলাদেশে এবন প্রয়োজন বোগ্য, বিচক্ষণ ও অভিজ্ঞ লোকেয়। প্রসুদ্ধ বাবু বণি দিল্লীর মন্ত্রিসভার অভ্যুক্তরণে দেৱণ ৰোগ্য দোকের সভান করেব তবে বাংলার বোটেই चकाव स्टेटन ना । विवाहक वाक्रव्य विद्यालय वक विवासन ও সাহসী লোকের উপর যদি আইন ও শাসন্যৱের ভার অপিত হয়, অব্যাপক সভ্যেত্ৰনাৰ বন্ধুৱ ন্যায় জানী ও নিভান লোকের হাতে শিকার মধ্বর মেওয়া হয় এবং এইজ সভীশচন্ত্র দাসপত বা ডাহার বাভা এইক কিতীশচলের চার সেবাবর্শের প্রকৃত ও অক্লান্ত পূখারীর উপর বলি বেশগঠনের ভার বেওয়া एव. बर्श बरेबन प्रमार्शनव क्म्यवृक्ष लात्कव बुहिवित्वहमाव সহারতা বদি মন্ত্রিকা পার ভবেই এদেশের পরিত্রাণ সম্ভব, मध्यो नरह। श्रमुख वायुव वन श्राप्तव कथा ७ श्राप्तव **ভাৰের বিবর সম্পূর্ণ ভূলিরা কেবলমাত্র ভোটের মাধা গুন্**ভির চিভা করিয়া লয়র কাটাইতেহেন, কেননা উহাই তাঁহাদের খভাব। যদি দেশের কথা ভাবিরাউপর্ভ লোকের বৌদ করিতেন তবে ভোটের কথা তাঁহাকে ভাবিতে হইত না। দেশের জনসাধারণের মনের জবড়া এবন এইল্লপ বে ব্যবস্থাপক সভাহ যদি তাহার যনোনীত ঐবপ মন্ত্রিসভার বিরুদ্ধে ভোট হইত তবে বিৱশ ভোটদাতাদিগকে বাতে নাবা সইয়া বরে किविट रहेण भा। वदानबद्ध दैशक्तिक अधिनिवि रिनारव হেশের লোকে ব্যবহাপক সভারও নিভরই পাঠাইত। আহরা এ কথা বলিতেহি এইখত বে, খেশের লোকের আব্দ আর भागिष्ठ राकी नारे त. भारतामा ७ इकालकाडी तकुरार्मड কুপাৰ বলীৰ প্ৰাৰেশিক কংগ্ৰেস ক্ষিট্ৰ কি অবংগতন হইয়াছে बन्ध के अधिकान कराजातक जावर्गनावरक किकाल बुनाव विनारेश विशाद ।

বছতপক্ত বদীর প্রাবেশিক কংগ্রেস ক্ষিটির প্রকৃত চালক্ষর্গ বিগত বিশ বংলর বাবং দলগত ও ব্যক্তিগত স্থার্থ রক্ষা তির অন্য কোন কথা কথনও তাবেন নাই। ঐ বার্ণের বচ্চ তাবারা প্রতি পরে বেলের লোকের সহিত প্রবিক্ষা কৰিয়াৰেৰ এবং চচুৰ্দিকে ৰেকী চালাইয়াৰেন। তাহাৰা নেতৃত্বে वद्य कविदार्थिय एवं चक्चिंग क्ल्क्यकरक वद र्याव कवि-ৰাজ বিৰেক্ষুভিহীন লোককে। জনসাধান্তৰের প্রতিনিধি क्रा बरवाबीक कविवादिय जाकावारी वृष्टिशैय लाक वा बाबा হ্ৰণ হোৰকস্বিত ধূৰ্ত লোককে বাহাদের অসং উপাহে অৰ্জিড টাকার বাশি বেশের প্রাত্ত করিতে চালকবর্ণের কাৰে আসিতে পাৱে। ছই-চারিট সং লোক ইহাবের বিচারের ভূলে প্রাদেশিক কমিটতে বা ব্যবস্থাপক সভার বৃদ্ধি বা প্রবেশ করেন ভবে শীমই তাঁহাদিগকে অভিষ্ঠ কবিবা ভোলা হয়। দেশের লোক এত দিন এ সকল কৰা বুবিৱাও বুবে নাই, কেননা ভাহাদের চড়ছিকেই শক্ত ছিল। আৰু বাহিৱের শত্রু দূর হইরাছে, সুভরাং অচিরে খন পরিভার করা আরম্ভ ছইবে, একথা বদি প্রভুৱ বাবু না বুৰিৱা থাকেন তবে ভাঁহার নিভাত্তই বুদ্ধির অভাব। আৰু যদি একুল বাৰু নিৰ্দে অএসর হইলা এই পৃহসংখারে হাত দিতেন ভবেই ভাষার মন্ত্রিছ সার্থক হইত। এইরূপে ভোট গণিরা ও ৰেকী চালাইয়া ভিনি কোনু পৰে চলিয়াছেন সেক্ৰা কি ভাঁহাকে এবনও বুৱাইয়া বলিভে হইবে ?

#### শাসনযন্ত্ৰ

শাসনবন্তের বে সব বেশী কর্মচারী খাবীনতা আন্দোলন प्याप देश्यक्ष केश्नाद्य अधिक जावांचा कविद्याद्य । अहे সৰ লোককে খাৰীন বাংগার গবরে ঠে খান দেওৱা সহছে পভ মাসে আমরা সমালোচনা করিয়াছিলাম। কাইল রাধার দক্ষতার চেয়ে এবন আবর্শনিষ্ঠা, প্রবেশপ্রের এবং চরিত্তের ৰুচতা সৱকাৰী কৰ্মচাৰীদেৱ মধ্যে অনেক বেশী প্ৰয়োজন। প্রভূ ভোষণ ও ভাষার বর্ড বিবেক বর্জন এবং প্রদেশের चार्यंद विक्रकाहदन अछिम (य नव कर्चहादीद वृत नक्त हिन. বেশ বাৰীৰ হইবাৰ পৰ ভাৰাদিগকে উচ্চপদে বহাল বাৰিলে इरे कि विदा पिछमा पछि स्टेट्रा । अववष्टः, दिम्हानर्कदा বে দক্ত কৰ্মচানীৰ হাতে লাঞ্চিত ও প্ৰছত হইয়াছেৰ খাৰীৰতা লাভের পর ভাহাদিপকে ঐ সব কর্মচারীর হতুর ৱানিয়া চলিতে বাব্য করার অর্থ খাবীনভার দৈনিক্ষের চুড়াভ অপবাদ করা। ইহাছের মধ্যে অধিকাংশই স্বাধীনভালাভের পর মন্ত্রিক বা চাতুরির বভ অঞ্জের হন নাই, বেশপ্রেরকে ७ इ:ववत्रवटक चविष्ठटच चारवत्र अहादेश महेवार मृणवय ৰূপে বাঁহারা ব্যবহার করেন নাই এরণ লোকের অভাব वाश्मारकाम मारे। वैशक्तिम अवश्चरकमान्याम "व्यवहारव" বিৰ্বাভিত অসংব্য ভ্ৰমণৰে উপৰ যে সৰ ভ্ৰমানী বেটৰ ও খলি চালাইয়া শৈশাচিক অভ্যাচার করিয়াহে আৰু ভাহাদেরই ৰক্ষ মানিতে নেই সৰ ব্ৰেশনেৰককে বাৰ্য কৰা অভ্যন্ত বভার হইরাছে। এই সব বভ্যাচারী ও বেশল্রোহী কর্ম-চাৰীকে ভাৰবিচাৰ কৰিবা শাভিবাদের লাখন ডাঃ বোবের বা बाकिएक भारत किन्द्र देशाविश्यक केम्प्यन व्यविश्वक कविता ভাৰীৰভাৱ পূজাৱীখের অপনান ক্ষিমায় অধিকায় উচ্চিত্ৰ

নাই। নেকেটারিরেটের কেলা শাসনের ও লালবাজারের উচ্চতন কর্ম্বারী নিরোপের বেলার এই নূলনীতি কর্ম্বারীদের প্রথম তালিকা প্রথমনের সময় রক্ষিত হয় মাই ইহা আমহা গত সংখ্যার কেবাইরাছি।

পুলিস সহতেও ঐ কৰাই বাটে। আপাততঃ এবাবেও আবরা একট গুটাত দিতেতি। বাঙালী হিন্দু নামধারী কনৈক আই পি অকিসারকে কলিকাতার স্পোনাল ত্রাকের ভেপুট কবিপনারের পদে নিযুক্ত করা ক্ইরাছে। এই ব্যক্তির কার্য্যকলাপ আনাইরা এবং ইবার নিরোসে আপতি করিরা রাজসাহীর ৩২ট বহিলা গত ১১ই আগঠ তারিবে ভটর বোবকে একট পত্র পাঠাইরাছেন। প্রধান নত্রী যদি না পাইরা বাক্ষের তবে আমাদের নিকট সভান পাইবেন। এই ব্যক্তির অতীত ইতিহাস সবতে সভান পওরা হয় নাই ইহা ত বুবাই বাইতেছে। প্রধান মন্ত্রীর অবগতির কচ আনরা পত্রবামি প্রকাশ করিতেছি:

निक्तराक्त सामगीय अनाम सञ्जी जीवृक्त अकृतका पांच स्थानक जनीत्नयू— स्थानक

সংবাদপত্ৰ মারকং আমরা দেবিলাম যে \*\*\*\*\* •• शिक्ष्मनरम्ब Special Branch-अब Deputy Commissioner गए नियुक्त स्वेयार्थन । छोटार्क अवे পদে আগীন কৰিবার পূর্বে আমরা ভাষার ব্যক্তিগভ বাৰহার এবং কার্যাবলী সম্বদ্ধে আপনাকে কিছু আনাইতে हारे। **এर \*\*\*\* \*\* >>**३६२ मार्ल दावनारी क्लाब 1), S. P. शास नियुक्त विरामन । '82 मारमब গণ-আন্দোলনে ভিনি রাজসাহীর মহিলা এবং ভ্রতার देशव चक्या चलाहात हामादेशासन । বৈকাল চার ঘটকার সময় রাজসাহীর খুল ও কলেজের হাত্ৰী এবং মহিলাবন কৰ্মক একট বিৱাট শোভাষাত্ৰা রাভা অভিক্রম করিয়া কেলের অভিবূবে যাইভেছিল এবং শোভাৰাত্ৰাট বৰ্ণ হাজসাহী কলেছের নিকট পৌহার টিক সেই সময় তিনি পুলিলের লাটিবারা শোভাষালাটকে ध्यापन कविया तम् देशास्त्र वद् यदिना श्रवणव जात्य আহত হব। ইহা ছাতা তিনি কতিপৰ ছাত্ৰীৰ হাত হইতে ছাতীর পভাকা হিনাইরা সইবার সময় ভাঁচাবের প্রতি অলীল ইকিত ও ব্যবহার করেব। রাক্সাহীর বিশিষ্ট কংগ্রেসকর্মী জীয়ত কালিদাস চক্রবর্তীর মেততে আগই আন্মোলনের সময় বৰণ শোভাষাতা ভরিবা बाक्त्राही परदाद ध्रयान ध्रयान बाकाक्ष्मित ध्रयक्ति ভৱিতেছিল দেই সৰৱ বাজসাৎী বোড়াযাত্ৰা পোঠাপিলের সন্তবে ৩০০ ৩০র উপদ্বিভিত্তে এবং ছতুনে কালিবাদ-ৰাবুকে ভক্তৰভাবে প্ৰহাৰ কৰা হয় এবং ডিবি एएन बाद नरकारीम चनशास गरिया वान । नदकरन

ঐ অবহার তাঁহাকে থেকার করিবা প্রহার করিতে করিতে থানার সইরা বাওরা হয়। প্রীয়ুত কালিহান চক্রবর্তীকে হীর্থনিন কারানারে প্রেরণ করা হয়।
১৯৪২ সালের আগঠ আন্দোলন দ্বাইবার কচ বিটিশ
নারাভাবার বে নীতি প্রহণ করে ৩০০ ৩০ নেই নীতি
অহবারী তাঁহার কর্তব্য সন্পাহন করিতে ঘাইরা রাজনাহীর
বহু বিশিপ্ত কর্তের কর্মাকে প্রহার ও লাহনা করিবাহেন
এবং অনেক ক্ষেত্রে তাঁহার কর্তব্য কর্ত্বের চেরে অনেক
বেশী নির্বাহন রাজসাহীর কংপ্রেস্থানী জনসাধারণক
ক্রিরাহেন। প্রয়তাবস্থার তাঁহার যত প্রকলন চুর্নীতিপরারণ
ও সারাজ্যবাদী ক্ষতার্যর তাঁহার যত প্রকলন চুর্নীতিপরারণ
ও সারাজ্যবাদী ক্ষতার্যর তাঁহার যত প্রকলন চুর্নীতিপরারণ
প্রসাক্রবলের কংপ্রেস্থার বিহার পার প্রকট হারিছপূর্ণ
পারে আসীন করিলেন, আম্বরা ভাবিষা পাই না।

আৰু খাৰৱা খাৰীনভাৱ ধাৱপ্ৰান্তে খাসিরা পৌছিরাছি আর এই সৰ ব্যক্তিই যদি থারিছপূর্ণ পদে নিযুক্ত হন তবে কনগাৰারণ কংগ্রেসের উপর প্রধা এবং বিখাস দিনে দিনে হারাইবে। এই বিবরণের সভ্যভা সম্বন্ধে প্রমাণ পাইতে যদি চাহেন তবে রাজসাহীবাসী এবং রাজসাহী জ্বোল কংগ্রেস ক্ষিটির নিকট বৌক্ত কর্মন। ইতি—১১ই আগই ১৯৪৭ সাল।

निर्विषका---७५ क्रम महिलात शाक्त ।

বিতীয়ভঃ এই শ্ৰেণীয় নিয়োগের কুপ্রভাব শাসন্যৱের উপরও পড়িবে। উপরওয়ালাকে তুঠ করিয়া পদোরতিয লোভে উৎসাহের সহিত দেশদ্রোহিতা করিয়াহে এরপ লোক বেষণ আছে ভেষনিই চাকুরি বিপন্ন ও ভবিষ্কং উন্নতি চুচ্ছ क्षिया देशवाद्यामात यहार चारम्य भागत्य चन्नव रहेशास्य এবং নিজের কুন্ত্রদক্তি অসুসারে দেশের কাল করিবার চেটা করিরাভের এরপ কর্মচারীও আছেন। দেশ খাবীন ঘটবার পর ইছারা ধর্ম ছত্তির নিংখাস কেলিয়া থেলের সেবার সর্বাদ্ধি निर्दार्शन क्र शक्त क्रेस्टिंग क्रिक त्रदे नगर के नव विद्यकवर्ष्कित हाहेकाविष्यभवन दिन्दिशारी कर्वहाबी श्रीनिक चायबानी कविया कैवासित छेशवश्वानावर्थ यमावेबा स्थवा स्टेटिंट अवर देशांत करण मामगगरज्ञत morale अवात अरच-বারেই ভাঙিয়া পভিবার উপক্রম হইরাছে। প্রভাতাবণের बाबा "नवानिक"द शविष्ठद शामरे भवकावी कर्यकादीएवद खनान नका, दिनराजना वह, अहे यदि जदकादी कर्यकादीरिव बरमाणान হাত করাইরা বেওরা হয় তবে বাবীনতার ভিতিমূল পর্যাত্ত অনিৱা পঢ়িবে। বাহারা ফলগত রাজনীতি অর্থাৎ power politics-এ লিও তাহাবের নিকট এই অবস্থা সর্বা কাষ্য কিছ ইছাতে বেশের সর্জনাশের পথ একেবারে পাকা করা क्ट्रेट्व ।

এক্টিকে এই অবহা আর এক্টিকে উপর্ক্ত এবং সং কর্মচারীকের কোবঠানা করা হইক্টেছে। বাবীন রেলের

শাসনবন্ধ শোভাবর্ডনের বা বেশবাসীকে প্রভবের অন্ন নর। ট্টা সভাবত সমাজের প্রতিক্ষ্বি। শাস্থবন্ত উপযুক্ত এবং ছৰ্মীভিয়ক্ত হুইলে বেশের প্রথময়তি বৃত্তি পার: অবোধ্য এবং ছৰ্মভিপদ্বাৰণ হইলে দেশবাসীয় কঠ বাড়ে, এমন কি স্বাধীনতা রকা করাও ছব্রহ হইয়া পড়ে। কলিকাভার গভ করেক দিনের ঘটনার এই সাধাজিক সভাের কভক্টা পরিচর পাওরা সিয়াতে। ডা: বোৰ বাঁহাদের উপর পুলিসবাহিনী পরিচালনার ভার বিয়াদেন ভাঁহার: ১৫ই ভাগই হইতে ১লা সেপ্টেশ্বর পৰ্যাত পূৰ্ব ১৭ দিন হাতে পাইবাছিলেন এবং এই সময়ের মধ্যে শহরের শান্তি বাহাতে অব্যাহত বাক্তিতে পারে ভাহার ভঙ वर्षावर्ष यावणा चरलक्य कविवाद प्रथम शाहेशक्तिकम । ५ला দেপ্টেশরের সপ্তাহ্বাদেক আপে শহরে চুরি ভাকাভি রাহাকানি विटम्बट: विक्नबाद दिवादेश हैकि जाशादाद मरवा। वाहिश **চ**निशासिन। পुनिम छेपस्क स्टेरन देशांदक जावी विभासित ইদিত মনে করিরা সভর্ক হইত : সে সময়ও যথেটই পাওরা সিরাছিল। কিন্তু বর্ত্তবান পুলিস ক্ষিণ্যার, ডিটেক্টভ ডেপ্ট ক্ষিণ্যার, পিকিউরিট ক্রোলের ভেত্ট ক্ষিণ্যার এবং **७८** इत्याहिमी पविभावक, त्र्यमान बात्कव (७५) क्रियमाव ब विवास किष्टमाळ मानारांत त्यम मारे । वे वादा श्रास्क्री কলিকাভা শহরে নবাগভ, ই হাদের বোগ্যভার একষাত্র পরিচর ই হারা আই পি। অবচ লোকের অভাব ছিল না। জীংীরেন जबकाद शेर्यकान किरहेकहैक **(६१)** कथिनमाद्वदाश एकलाद স্থিত কাৰ করিয়াছেন। কলিকাভার বোৰ হয় সম্ভ খণ্ডা সর্বারদের ও ভাষাদের রুক্রনী ও বৃদ্ধিভাতাদের ভিনি চেনেন। শীগ আমলে ইহাদিগকে এেপ্তার বা বহিছার করিবার পূর্ব খাৰীৰতা হয়ত ভাহাত্ৰ ছিল না কিছ এখন উহাতে বাবা হইবে ৰা। হিন্দু-বুসলমান, বাঙালী-খবাঙালী ভৰাক্ৰিভ ভন্ত-অভন্ত নিকিশেৰে ওভাষির প্ৰপ্ৰৱদাভাদের সভান রাধা আৰু পুলিসের সৰচেত্ৰে বড় কাজ : ভার পরের কাজ জিমিনাল বুঁজিয়া বাছির ক্ষিবার যোগ্যতা। এইীরেন সরকার সম্প্রতি এ বিষয়ে বিলা-ভের ঘটন্যাও ইরার্ড হইভেও শিকালাত করিরা আসিরাধেন . বর্তবাদ অবহার ই হাকে পুলিস কমিশনার নির্ভ করিরা ৩৩। क्मान अवच क्रेटन मक्टवन माखि विवसायी क्रेयांव मखानमा वाकित्व । जैरूक मरकाळमाव मृत्वांभावात्वत कांत्र एक ७ मर কৰ্মচাৰী বে কোন বেশের পুলিন বিভাগের গৌরব। ই হাকে উপৰ্ক্ত ক্ষেত্ৰে নিৰোগ কৱিলে সমগ্ৰ পুলিস বাহিনীকে হুৰ্নীভি ७ क्रका बुक कविवाद छेगाद स्टेट्ड गाद्य । वर्ष खेरीद्वम সরকারের ভার ইঁহাকেও কোণঠাসা করিয়া রাখা হইয়াছে। শাসমবন্তের শীর্ষদেশে অযোগ্য লোক মিরোগ করা এবং धेनमुक ७ नर लाक्टक निवास कविया छन। क्रयंत्र (सट्यं বার্বের অনুকৃত্য হইতে পারে না। বহু জনকল্যাবের প্রতিশ্রুতি मिन्ना परकरमद बाना निर्द्धाहिक रहेना वीराता मनिष्पर पानीन হইয়াহেন, জাহালা আছবাৰ, বলগভবাৰ ও চাটকারবাৰ

রক্ষার রভী হইরা গণবার্থ উপেকা ক্ষরিবেদ না এটুক্ত কি "বার্থত্যাদ্ব" বাহিপছী কংগ্রেসদেবীদের নিক্ট আশা করা বাইবে না গ

#### মন্ত্রিত্বের দেড়মাস

ভাঃ বোবের বিরস্তা বেছমাস্কাল বহাল রহিরাছেন।
হারামনীরণে একমাস কাল তিনি শাস্বযন্তের সম্ভ ব্যাপার
বুবিরা লওরার সুযোগ পাইরাছিলেন এবং পূর্ব ই লগুছকাল
নিজের কর্মণছতি প্রস্তুত ও বোবণা করিবার সমর পাইরাছিলেন। কংগ্রেসের একট সুনির্দিষ্ট পঠ্যমূলক প্রোপ্রাম
আছে। পূর্বিবীতে ভারতীর কংগ্রেসই বোব হর একমান্ত্র
রাজনৈতিক প্রতিষ্ঠান বাহার বৈপ্রবিক কার্য্যকলাপের সঙ্গে
পঠ্যমূলক প্রোপ্রামও কার্য্যে পরিণত করিবার চেটা হইরাছে।
মূতন প্রোপ্রাম তৈরি করিবার প্ররোজন বা অস্ত্রবিণ প্রস্তুরবাধুর ছিল না কিন্তু তিনি বাংলার ভবিত্রৎ সক্ষেত্র কার্য ভাই করিবা এত দিন বলিতে পারেন নাই। বে শাস্ত্রন
বার তিনি তৈরি করিবাছেন ভাহাকে কংগ্রেসের বেনামীতে
একট সিভিলিরান ও আই পি রাজ বলা চলে।

ডা: বোষ পূর্ববদের লোক কিছ তাহার কর্মক্র পশ্চিমবদ। ভিনি ভাল কাজ করিলে পশ্চিমবলের উন্নতি ৰ্ইবে, ভুল করিলে পশ্চিমবলেরই ক্তি হইবে। মন্ত্রীরা পূৰ্ব্বৰদ অধবা পশ্চিমবঙ্গের অধিবাসী এটা মোটেই বড় কৰা ৰয়, আসল কৰা মন্ত্ৰীবের যোগ্যভা, আঘণনিষ্ঠা এবং সভভা। ভা: স্থুৱেশ ৰন্যোপাধ্যারও পূর্ব্ববৃদ্ধে লোক। ডিমি সব-क्राय क्रम क्या विज्ञास्त्र अवः नवक्राय विश्व क्रिया-ছেব। ইলেক্ট্র সরবরাছ ভাতীরকরণের সিভাভ করিবা-ছেল। ভুট ট্রাইবিউনাল নিযুক্ত করিয়া তিনি এমন একট কাক क्विबाद्यम याराव कन प्रमुख्यमात्री स्टेटन। अटे इटेडे কার্ব্যের বারা পশ্চিম্বর প্রভুত পরিমাণে উপরুত হইবে। ভুট ট্রাইবিউনালের লাকল্যের উপর বাংলার সর্ভি ও ইংরেজ কার্ব্যের ভার পভিবে টাইবিউদালের চেয়ারমানের উপর। ভা: বন্যোপাব্যার বাঁহাকে চেয়ার্য্যান নির্ভ ক্রিয়াহেন ভিনি পশ্চিম্বক্ষের লোক।

শ্রীরাধানার বাল পশ্চিমবদের লোক। তাঁহার অর করেকবিনের নরীসিরিতে চালের বরাক করিবাতে এবং করলার বান বাভিয়াতে। কাপক ও করলা রেপনের বোকানে পাওরা বার না কিছ বিশুণ লাম বিলে প্রকাত রাজপথে এবং করলাওরালাদের নিকটেই পাওরা বার। এই ক্ল্যাক নার্কেট বন্ধ করিতে সময় লাগিবে সত্য কিছ উহা বন্ধ করিবার আত্তরিক চেটা ক্লম্প ক্রিবাতে প্রট্রুত কি রাধানাধ্বারু বেবাইতে পারিতেম না ? তিনি ভাষা করেন নাই।

এইক বাৰ্যেক্ষণাৰ্ধ শীকা শক্ষিবকের লোক। ভাষার

উপর খাহাবিভাগের ভার হিল। কিন্তু বেভিক্যাল কলেজ, ক্যান্থেল হাসপাভাল, লেক বেভিক্যাল কলেজ প্রকৃতিতে উচ্চতম পদওলিতে যে সব বিরোগ হইরাছে ভার সবঙ্গিতে উপযুক্ত লোক বিযুক্ত হইরাতে ইহা কি ভিনি বলিতে পারেম ?

শ্রীহেমচক্র মন্তর পশ্চিমবন্দের প্রেলিভেনী ভিভিগনের লোক। মংভ-ব্যবসারের সহিত তাঁহার বনিষ্ঠ বোগ রহিরাছে। তাঁহার কার্ব্যের কলে মংভ-ব্যবসায়ী ভিন্ন বীবর অববা মংভ-ক্রেভা কাহারও কি কোন লাভ হইরাছে ? মাছের দান ক্রমশঃ বাভিতে বাজার জীরামপুর এবং কলিকাভার একট বাজারে ক্রেভারা বর্গুরট করিরা মংভ ক্রম বন্ধ করেন, ইহাতে বরং মাছের দরের ক্রমন্থতি একটু বানিরাছে। সমভ বাজারে ক্রমেক দিন এরপ হইলে মাছের দর আপনিই কমিরা আনিবে, মন্ত্রী শ্রীহেম নম্বরের চেঠার প্রয়োজন হইবে না।

শ্রীৰ্ভ ক্ষলকৃষ্ণ বাৰ পশ্চিমবদের লোক। বে বিভাগের ভার তিনি প্রহণ করিরাহেন বীকার করিতেই হইবে যে উহ। সাক্ষল্যভিত করিবার ক্ষা তিনি ব্যাসাধ্য চেষ্টা করিতেহেন। বাগমারীতে একট বভিতে হবং বাস করিবা বাছত্যাসীদের কিরাইরা আনিবার বে প্ররাস তিনি করিভেহেন তাহা প্রশংসনীর।

ৰবিসভাৱ আৰু বাঁহাৰ। বহিৰাহেন তাঁহাংগৰ অভিনের প্রিচয় পাঞ্চয়াই কঠিন।

পশ্চিমবদের পোক্ষের বেশী পরিমাণে সরকারী চাকুরি. বেশনের দোকান, কণ্টাইরী অথবা মেডিক্যাল কলেজের নিট लाखि बाटिर वर क्या नद, जाबारमद अनुर्व जानन लद ভাতি হিসাবে বাঙালীর বাঁচিবার সমসা। আসাম, বিহার ও উভিয়ায় বালালীর লাজনা সর্বভ্যবিভিত। দিলীতেও বাঙালী অৰজা ও কঞ্পার পাত্র। খরেও যদি আমরা আছ ৰলামলিতে প্ৰৱন্ত হই ভাষা হইলে বাঙালীর অভিত বসা कतारे इकद रहेवा छिटित। शास्त्रायत-शतिकत्रमा, कृतिव निर्दाद छेददन, प्रश्विकविष्ठ आमश्रीकर्ती, बाब ७ प्रकरमद সামবিক বিভা ও অন্তচালনা শিকা দান, সাধারণ শিকা, খাছ্য ও जार्षिक जनशाब धेवछि-- धरे मन कार्यव शिरकरे भूर्वानक প্ৰিষ্বদ, বৰ্ণবিশু, তপ্ৰীলী বিশু নিৰ্মিশেৰে প্ৰভোক ৰাঙালীকে মনোবোগ দিতে হইবে। অতি অন্তবিনের মন্যে बाधानी यहि अपन नक्ति चर्चन कहिएत ना शाद वाशास कि ভিত্ৰ প্ৰৱেশের কি বিহেশের কোন লোক বাঙালীকে অপমান ৰা অবকা করিতে ভীত হর তাহা হইলে বাঙালীর থাংস অবিবাৰ্য। বহিসভাৰ এবং শাসনবল্লে সাক্ষরারিক বা আঞ্চিত প্রতিনিবিছের হারা ভাতীর সম্ভার সমাধান না बहेबा बबर विश्वीक कनरे त एवं काराव वीर्कारनव प्रदेश बाबाद्यत नजूरन दरिवादा । वृद्धीय-पत्रम पना गारेटक गाउद. ब्राट्यत कृषिक थ कृषिकांच भन्त विकाद-ममचात मनावास्य ৰেঠকৰ উপায় যে সৰবায় সমিতি বাংগয় সহিত প্ৰত্যেক চাৰীয়

বদলাবদল বির্ত্তর করে গত হল বংগর ভাষার ভাষার বারীহিলেন ভণনীলী এবং বেজিট্রার হিলেন ব্ললনান। চাবীবের
ভিন-চ্চুর্থাংশেরও বেশী এই হুই সন্তাহারের লোক। কিছ কল কি হুইরাছে ? সমবার সমিতি বাংগ হুইরাছে। বাংলার সমবার আলোলনের ইতিহালে একটবার বার সমিতিওলি সন্ধীব করিরা কুষক্তে বাঁচাইবার ব্যবহা হুইরাহিল এবং ভাষা করিরাহিলেন বামিনী মিত্র নামক একজন বেজিট্রার। ভিনি ব্ললভামত নহেন ভণনীলীও বহেন।

#### রাডক্রিফ রিপোর্ট

রাভিক্লিক বিপোটে পশ্চিমবদের প্রতি ওকতর অবিচার করা হইরাছে। বাংলাবেশের পরশার সংগর হিন্দু এবং মুসলমান অধ্যতি অঞ্চল হুইটকে পূথক করিয়া বাংলাবেশকে ছুই ভাগে ভাগ করা ছইবে; ভবে প্রয়োজনবাবে অচাত কারণে ইহার কিছু অগলবণ করা বাইবে ইহাই ছিল সীমানা কমিশনের প্রতি নির্দেশ। রাভিক্লিক লাহেব এই বির্দেশ অনেক ক্ষেত্রে অঞ্জার করিয়াছেন, বাংলাবেশকে বিবভিত্ত করিতে বসিরা উহা তিন টুকরা করিয়াছেন, পরশার সংলগ্নভার নীতি লক্ষন করিয়াছেন এবং নিক্ষের অভিগতির ক্ষেত্রে বিভিন্ন প্রকার বৃত্তির অবভারণা করিয়াছেন। বাঙালী ভাতির উপর লারাজ্যবাদী বিটেনের আক্রোয় হীর্কালের। হ্যাভক্লিক রিপোট পাঠ করিলেই বনে হয় বিশ্বিদা নারিবার ব্যবস্থা করিয়া দেওরা হুইরাছে।

হিল্ যুগলবান কনগংখ্যার অহুপাতে পশ্চিরবেলর পাথরা উচিত ছিল ২ কোট ৭৩ লক লোক অধ্যুবিত শতকরা ৪৫'৩ তাগ ক্ষমি। ইহাতে পূর্ববেলে ৩ কোট ৩০ লক লোকসহ শতকরা ৫৪'৭ তাগ ক্ষমি পঢ়িত এবং তবিভতে লোক-বিনিমর অপরিহার্য্য হইরা উঠিলে উতর সন্তারারের নিক্ষর লোভ বলাইরা উপর্কু ক্ষমি উতরের হাতে থাকিত। কিছা ব্যাত্তিক লাহেবের রারে পশ্চিমবক প্রাণ্য ৪৫'৩ তাগ ক্ষরির পরিবর্তে পাইল রাজ ৩৬'২ তাগ, ভাষ্য প্রাণ্যের ৭০০০ বর্গনাইণ কম।

সীমানা সহতে সর্ব্যাপনে উল্লেখনোগ্য দার্ক্ষিলিং-জলপাইভঙ্গি এবং হিনাজপুরের মধ্যে একট বিরাট ব্যবধান। পরপার
সংলার হিন্দু এলাকা বরিলে দেখা যার যে এই ছুইট অংশের
মধ্যে পরিকার একট বোগহর রহিরাছে। জলপাইভঙ্গি ও
বিনাজপুরের মধ্যবর্তী হিন্দু থানাওলির বোগহর রক্ষা করিছে
পোলে পশ্চিম বিকের মুসলমান প্রধান থানাওলি পূর্ব্যাক হইছে
বিজ্ঞির হুইরা পড়ে বলিরাই বোব হর হিন্দু থানাওলিকে
পাকিহানে কুছিরা বেওরা হুইরাছে। অবাং র্যাভক্রিক লাহেব
ভীক্র বৃটি রাবিরাছেন বাহাতে মুসলমান প্রধান থানা সহক্ষে
পশ্চিমবদ্দে বা পড়ে ভার জন্ত ভব্দ হিলাবে হিন্দু থানা পাক্ষি

হাবে পভিলেও কভি নাই। এই এক চালে পভিষ বাংগাকে হুই টুকরা করা হইরাতে, দার্জিলিং ও অলপাইওভিকে আলাবে কৃতিবার ব্যবহা করিরা বাংগাকে আরও হুর্বাণ করিবার পথ পরিকার করা হইরাতে এবং পাকিছানের সীমানা বিহারের মুস্কান্য প্রধান পূর্ণিরা অলোর সংলগ্ধ করিরা বিহারে উপশ্রব কৃতিব পর্যও নিষ্কৃত্তক করা হইরাতে।

লম্ম বলৰা কেলাইকে পাকিয়ানে ঠেলিয়া দেওৱাৰ লোকে ভভিত ব্ৰৱাহে। এই বোল অভান কাৰ্য্যের বৃক্তিও চৰংকার। ব্যাভক্লিক সাহেবের মতে বশোহর বাহার হাতে থাকিবে, বুলনাও ভাহার থাকা উচিত। এই বুক্তি পঞ্চান वरमञ्ज चार्म क्रमिक वर्ड, किन्न अपन अस्मिरादार चक्रम। যশোহর এবং ধুলমা সম্পূর্ণ বিভিন্ন। একট খেলা সম্ভল बार चार बक्डे मधीमांना ७ क्लनश्रिशूर्। উভরের नम्ला এত বিভিন্ন বে তাহার খন ছটকে আলাহা জেলার পরিণত ভবিতে হইবাৰে। ঐক্যের দিক দিয়া দেবিতে গেলে চ্লিণ-পরগণার সহিত বুলনার যোগ অনেক বেশী। উভর ভেলারই विक विक वृत्तिवा चुक्रवयम अवर इटेडिवरे विकासित भागामानि বানাওলি হিন্দু প্রবান। বুলনার পূর্বহিকের পরববোলা ও বোৰেলগঞ্জ থানা ছট বাদ দিলেই বুলনা জেলায় হিন্দুপ্ৰাবাত बूद (वन्ने प्रेवा भएए। प्रख्वार जनावारम के इंडे बामा बार विवा बुलनारक शक्तिवरण वांचा वाहेछ। देहारछ यरणाहरवव হিন্দু প্ৰধান কালিয়া, নড়াইল, শালিবা ও অভয়নগর বানা **इन्हेंग्र** (शाशानशङ्क अदर दक्षिणात्मय **देख**रारण शक्तिवरस বাকিতে পারিত। ব্যাভত্লিক সাংহব এক অমুভ যুক্তি বলে बुलगांदक शाकिशांदन कृषिशा विशा अरे नवश रिमूखवान অঞ্চটকে পশ্চিমবঙ্গের বাহিরে কেলিয়া দিলেন, অবচ উহার পরিবর্তে ক্তিপুরণ-বন্ধণ কোন এলাকা বাংলার क्टिंग्य मा।

পার্কভ্য-চইঞান পাকিছাবে বেওরার সিবাছটও সনান বিচিত্র। পার্কভ্যকাতি অধ্যবিত এই বিরাট এলাকাটতে ব্সল্বান সংখ্যা শতকরা নাত্র তিন কন হওরা সভ্তেও তিনি উহাকে পাকিছানে ঠেলিরা দিলেন। পূর্কের নোটার্কট ভাগে বুলনাও পার্কভ্য-চইঞান উভরেই পশ্চিনবলের অভর্ত্ তিল। পার্কভ্য-চইঞানকে পাকিছানে বেওরা আরও অভার হইরাছে এই জারণে বে বলীর ব্যবহা-পরিবলে ভাহালের কোন প্রতিনিধি ছিল না এবং শাসন হিসাবে এই জ্বোট বাংলা-সর্ভাবের এলাকার বহিত্তি।

বেলওবে লাইন বন্ধন সহতেও ব্যাতক্রিক সাহেবের বাব আন্তর্যাক্ষক ভাবে পক্ষণাভিত্বপূর্ব। বাজিলিং লাইবের পাকিহানের অন্তর্তু এলাকাট বাহাতে বাবে কোবাও না ভাঙে ভার বন্ধ ভিনি হিপুপ্রবান বাল্যবাট বানা ভাঙিয়াকেন। শ্রীহটে হিন্দু ও বুললমান প্রবান পরস্বার নংলপ্প বানা ভাগ ক্ষাতে নিরা ব্যব ভিনি বেশিলেন বে ভার বিচার ক্ষাতে বেলে হুলাউড়া অংগৰ পাকিছ'নের বাহিরে পড়িরা বার অবন তিনি বৌলবীবাজার ও কুলাউড়া হুইট হিক্প্রবান বানা পাকিহানে বিবা প্রহুট বাতারাতের পথ ঠক রাবিলেন কিছ ভার পরিবর্তে রুলনানপ্রবান করিবর্গন্ধ ও বলরপুর বানা আসানে বিলেন। পজ্মি বাংলার সহিত কাইহার হইরা অসপাইওড়ি ঘাজিলিভের সহিত সংবোগ রাবার কচ গোলাগারী বাট অংশনট বাংলার বাকা একাভ প্ররোজন হিল। তিনট বুলনানপ্রবান এবং হুইট হিক্প্রবান বানা পাক্মিবলেই হুই, অপরিহার্ব্য রেলপর অকত রাবা এবং তার কচ কতিপুরব বেওরার নীতি বক্তিত হুইল না। দিনাকপুর, রংপুর ও অলপাইওড়ির বালীই বিক্রেবান বানা তিনি আনারানে বিনা বুজিতে পাকিছানে ঠেলিরা বিলেন কিছ গোলাগারী-আনহুরা রেল-লাইনট অকত রাবিবার কচ তিনট বুললান বানা পশ্চিমবলে বিতে পারিলেন না।

মিঃ ব্যাভক্লিক যে বাম বিষাছেন ভাষা লইবা সীমানা ক্ষিণনের সংগ্রহন সলে কোন আলোচনা করেন নাই। ছিন্দু ও বুসল্যান সম্প্রসংখ্যা স্বান ছিলেন এবং উচ্চারা এক্ষত ক্ষতে পারেন নাই ইকার পূর্ণ পুষোগ একণ করিবা তিনি একট সর্প্রমাণা সিভাভ বাঙালীর খাভে চাপাইরা বিরা গিয়াছেন। বিচারপতি বিভনকুমার মুখোপাধ্যার এবং বিচার-পতি চাক্ষচক্র বিশ্বাস সীমানা সম্বাহে বে প্রপার্থিশ করিবাছিলেন ভাষা পরে প্রকাশিত ক্ষরাছে এবং উচ্চাই যে সর্প্রাপেকা মুক্তিন্তু ক্ষরাছিল ভাষাতে সন্দেক্ নাই। পার্প্রভান ভিন্ন প্রদানাভানিকে উচ্চারা পশ্চিবক্রের অভর্তু করিবার অভিন্ত প্রকাশ করেন—

সম্ব্র বর্তমান বিভাগ, কলিকাতা, সম্ব্র ২৪-পরগণা ক্ষেলা, বোরেলগঞ্চ এবং পরপ্রেণা বানা ব্যতীত সম্ব্র বুলনা ক্ষেলা, ক্ষিপ্র ক্ষেলার গোপালগঞ্চ মহকুমা এবং রাজের বানা, বাবরগঞ্জের সাভষ্ট বানা, (গোরনরী, স্বরপনাট, বাল-কাট, নাজিরপুর, উজিরপুর বানরিপালা, বহিলাল পহর স্ক্র্রিশাল বানার ক্ষিরপুর, কালিরা, বাবিরপালা, মনোহর, বিকরপালা, মণিরার ক্ষরপুর, কেলবপুর, সারসা, গৈবাটা ও বনপ্রায় । মনীরা ক্ষেলার রাণাঘাট এবং কৃষ্ণনগর মহকুমা । মাবাভালা মনীর প্রক্রিম পার্বহ নহীয়া ক্ষেলার সক্ষ্য বানা, সম্ব্র বুলিহান্যার ক্ষেলা । উত্তর বলের সম্ব্র ক্ষ্যপ্রাইওভি এবং হাক্ষিলিং ক্ষেলা, রংপুর ক্ষেলার হাইট বানা, মালহন্থ ও বিনামপুরের কিছু অংশ, রাজ্যাহী ক্ষোর মানপুর বোলিরা বানা । ইহা ব্যতীভ সক্ষ্য এলাকা পূর্ববন্ধে বাইবে ।

বিচারপতি বুৰোপাথ্যার এবং বিচারপতি বিবাস যে অভিযন্ত প্রকাশ করেব ভাষাতে পূর্ববিদের আয়তন ৩৪,৩০৬ বর্গরাইল ও লোকসংখ্যা ৩০,২৫৬,৮২৫ তব হইত।

## বাংলা ও শ্রীহট্টের দীমানা দম্বন্ধে র্যাড্রিফ দাহেবের রায়

বলীর সীরাশা ক্ষিশনের চেরারব্যানের রার প্রকাশিত হইরাছে। সর্ব্র চট্টগ্রার ও ঢাকা বিভাগ পূর্ববৃদ্ধে এবং সর্ব্র বর্জমান বিভাগ পশ্চিনবৃদ্ধের ভাগে পভিয়াছে। রাজসাহী বিভাগের রংপুর, বওলা, রাজসাহী ও পাবনা জেলা এবং প্রেসিডেলী বিভাগের বৃদ্ধা জেলা পূর্ব্য-বঙ্গে এবং প্রেসিডেলী বিভাগের কৃষ্ণিকাল, ২৪ পরস্থা মূর্শিলাবাদ জেলা এবং রাজ্যাহী বিভাগের দার্জিলিং জেলা পশ্চিম বজের অন্তর্ভুক্ত করা হইরাছে। নদীরা, বশোহর, দিনাজপুর, জলপাইওড়ি, মালধহ জেলাকে চুইট নৃত্য প্রদেশের মধ্যে ভাগাভাসি করিয়া দেওরা হইরাছে।

শীমানা ক্ষিলনের চেয়ারম্যান সর ব্যাতক্রিক বছগাটের নিকট তাঁহার রিপোটে বলিরাছেন যে ক্ষিলনের সম্ভবের মধ্যে মতানৈক্য এতই প্রবল্যে সীমানা সম্পর্কেকোন আপোধ-মূলক সিদ্ধান্ত গ্রহণ করা সম্ভব হয় নাই। এমতাবহার তাঁহারা সর ব্যাতরিকের ক্ষীর সিদ্ধান্ত খোষণাম সম্বতি দেন।

বাংগার সীমানা কমিশনে ছিপেন বিচারপতি শ্রীবিশ্বন কুমার বুৰোপাব্যার, বিচারপতি শ্রীচাপ্রচন্ত বিবাস, বিচারপতি আক্রম ও বিচারপতি রহমান। বিচারপতি খীন মহশ্বন, বিচারপতি মুনীর, বিচারপতি যেহেরটাদ মহালন ও বিচার-পতি তেজসিংকে লইয়া পঞ্চাব সীমানা কমিশন সঠিত হয়।

নিৰাৰপুৰের নিয়োক্ত থানাসমূহ পশ্চিমবদের মধ্যে পড়িবে :—

রাইগঞ্জ, ইতাহার, বাঁশীহারি, কোশমঙী, তপন, গদারামপূর, ব্যারগঞ্জ, হেমতাবাদ, কালীগঞ্জ এবং প্রবান রেলপবের
(বি, এ রেলপব) পশ্চিম দিকের বতবানি বাদ্রধাট মহত্যার
মধ্যে পচে। দিনাকপুরের অবশিষ্টাংশ পূর্ববিদের মধ্যে
পভিবে।

অগণাই থভীর উেড্লিয়া, পচাগর, বোদা, দেবীগঞ্জ, পাট-এাম বানা এবং কুচবিহারের দক্ষিণ পর্যান্ত বাকী অংশ ছাড়া অগণাই গুড়ী অেলার বাকী সমুদ্ধ অংশ পশ্চিম-বাংলার অন্ত-ভূক্তি হইবে ।

নদীরা কেলার মধ্যে নিঃলিবিত বানাগুলি পূর্বাবদে প্রিবাহে :---

বোকসা, কুষারবালী, বীরপুর, আলমভালা, ভেড়াযারা, গাল্মী, ভার্রহুলা, চুয়াভালা, জীবননগর, মেহেরপুর এবং লৌলভপুর বানার নাবাভালা নদীর পূর্বে ভীরের অংশ।

বশোহর জেলার বনগাঁ ও গাইবাটা বালা হুইট ছাড়া আর সমুভ অংশ পূর্ববেদে পভিষাতে।

মালবহ জেলার গোমভাপুর, লাভোল, নবাবনঞ্চ, লিবনঞ্চ এবং কুলাহাট বালা পূর্ববেদে পভিবে, আর বাকী সধুদর অংশ পশ্চিববেদের অভতুক্ত হববে। আগাৰ এবেশের এইই জেলার পাধরকানি, রাভাবাতী, করিবগঞ্চ এবং ব্যৱপুর এই চারিট ধানা ছাড়া বাকী সমুখ্য অংশ পূর্ববেদ্য বধ্যে পভিবে।

সীমানা কৰিপনের চেরারন্যানের রারে বলা ক্ইরাছে :—
পাশাপালি অবছিত ব্নলমান ও অব্নলমান অঞ্চলর ভিডিতে
বাংলাদেশের ছই অংশের সীমানা নির্দারণের ভার সীমানা
নির্দারণ করিপনের হাতে দেওরা ক্ইরাছিল। এই প্রসদে
কমিশনকে অভাত বিষর সম্পর্কেও বিবেচনা করিতে বলা হয়।
এবং ১৫ই আগঠের মন্যে নিরাভ জানাইতে অল্পরোধ করা হয়।
প্রাথমিক বৈঠকাদির পর ক্রিশন সংগ্লিষ্ট বিভিন্ন দলের ভরক
ক্ইতে খারকলিপি ও দরবাভ চাহিরা পাঠান। উহার উভরে
অসংব্য খারকলিপি ও দরবাভ ভাক্র।

কলিকাভার কমিশনের প্রকান্ত অবিবেশন বসে এবং ১৯৪৭ সালের ১৬ই জুলাই ব্রবার হইতে ১৯৪৭ সালের ২৪লে জুলাই প্রবার হইতে ১৯৪৭ সালের ২৪লে জুলাই পর্যান্ত এই অবিবেশন চলে। তরবাে ২০লে জুলাই রবিবার কোন অবিবেশন হর নাই। উভর পক্ষের ভরক হইতে অসংবা্ ধল র্ভিভর্ক উপস্থিত করেন ভববাে একধিকে ভারতের জাতীর কংগ্রেন, বলীর প্রাদেশিক হিন্দু মহাসভা এবং নিউ বেছল এসোসিরেশন এবং অন্ত ধিকে রুসলিম লীগই প্রবান। ক্ষিশনের চেরারবাানকে পঞ্চাব সীমানা ক্ষিশনের কাঞ্চ চালাইতে হওয়ার ভাহার পক্ষেবাানা ক্ষিশনের কাঞ্চ চালাইতে হওয়ার ভাহার পক্ষেবাানা ক্ষিশনের প্রকাণ্ড অবিবেশনগুলিতে উপস্থিত বাকা সন্তব্যর হয় নাই। তবে তিনি বিভিন্ন হল কর্ত্তক উত্থানিত সমন্ত বুক্তিতর্ক ও তথ্যানি প্রীক্ষা ক্ষিয়া হিলেন।

প্রকাপ অবিবেশনের পর বাকি বে কর দিন হিল, সেই করদিন বরিয়া বিভিন্ন সমভা সইয়া আলোচনা ও ব্যাব্যা চলে।
কলিকাভার এই আলোচনা চলে। বিভিন্ন দলের দাবির মধ্যে
বৈষম্য বিশেষভাবে পরিলক্ষিত হয়। ভাহা আদা প্রদেশের
মধ্যে সীমারেবা চানা বার এরণ কোন সভোষকনক প্রাকৃতিক
সীমানাও বিশেষ নাই।

ভাই কভৰণ্ডলি খৌলিক প্ৰশ্নের উভবের উপরেই পূর্ব্য ও পশ্চিম বংগর সীমানা নির্ভর করে বলিয়া মনে হয়। প্রশ্নগুলি এইবপ----

- ১। কলিকাতাকে কোন্ রাষ্ট্রের অওপুঁক্ত করা হইবে কিবা এমন কোন পছার পহর আন করা বার কি বাহাতে উহা উত্তর রাষ্ট্রের অভতু ক্ত হয়।
- ২। কলিকাতা সহর যদি সমন্তাবে কোন রাষ্ট্রের অন্তর্ভুক্ত হর তাহা হইলে কোন এলাকার উপর এই শহরের অকাট্য ধাবী রহিরাছে, ধেনন সমন্ত্র নধীনা বা উহার অংশবিশেবের নদীসমূহ বা কুলট নধী—বাহার উপর কলিকাতা শহর ও বন্ধরের অভিত্ব নির্ভিত্ত করে।
  - ৩। গলা-পদা-বৰ্ষতী নদী বরাবর লাইন টানিলে

মশোহর ও নহীরার বুগলবানহের বিরাট সংখ্যাব্যিকের ঐতি । উহাসীত ও বুলনীতির ব্যতিক্ষম করা হয় কিনা।

- ৪। বলোহর বে রাট্রের অর্ভ কুক হইরাছে ভাবা ব্যতীত
   অত রাট্রের অর্ভুক্ত ক্ইরা বুলবার কোন লাভ আছে কিবা।
- ৫। বালহুছ ও বিৰাজপুৰের যথেষ্ট সংব্যক অনুসলনাৰ জনগৰক পূৰ্ববালের অর্ভ ভূকে করা উচিত ছুইবে কি ?
- ৬। বার্ক্জিনং ও জলপাইওড়ি জেলার রুসলমান জনসংখ্যা থাক্রমে ২'৪২ তার ও ২৩'০৮ তার। এক্সেরে কোন রাষ্ট্র এই চুইটি জেলা হাবী করিবে ? কিন্তু জলপাইওড়ির এমন একটি এলাকা রহিরাত্তে যাহা অনুসলমান এলাকার সংলপ্ত শহে।
- ( 1 ) পাৰ্ব্বভ্য চট্টবাৰ কোন এলাকার বুক্ত হইবে।
  চট্টবাৰ বে বাষ্ট্রের অন্তর্ভুক্ত ভাহা ভির অন্ত বাষ্ট্রের সহিত বুক্ত
  হইবা লাভ আহে কি ?
- (৮), (১) বহু আলোচনার পর আমার সহযোগিগণ বছ বছ সৰভার কোন নীনাংসার উপনীত হইতে সক্ষর হন নাই, কলে আনাকেই রাম বিতে হইয়াহে।

প্রবেশন পক্ষে গুরুত্বপূর্ণ রেল চলাচল ব্যবস্থা বা নদীপথের বির বধানতার এড়াইরা আনি লাইন টানিরাহি। এই বরণের কোন ব্যক্তিক না করিয়া আনাদের পূর্ববোষিত নীতি অহ্বারী লাইন টানা অনভব বিবার আনি বে সিঙাভ করিয়াহি ভাছাতে আনি গুরু এই আলাই করিতে পারি বে, এই ব্যবস্থার কলাকল বাহাতে কোন বড় ব্যাপারে না লাভার ভক্ষত উত্তর রাষ্ট্রের মধ্যে ব্যবস্থা করা বাইতে পারে।

- (১) বিহার প্রবেশের সহিত বে হানে সীবারেবা বিলিত হইরাছে, সেই হান হইতে হাজিলিং জেলার কানসীবেওরা বানা ও জলপাইওড়ি জেলার উচ্চুলিরা বানার বব্যবর্তী সীবানা বিরয় একট লাইন টানা হইবে; অতঃপর উচ্চুলিরা ও রাজগঞ্জ বানা এবং পচাগর ও জলপাইওড়ি বানার বব্যবর্তী সীবানা বরিরা এই লাইন চলিবে। পরে বেবীগঞ্জ বানার উভর কোণ বরিরা হুচবিহার রাজ্যের লীবানা পর্যন্ত উহা চলিবে। হাজিলিং জেলা এবং জলপাইওড়ি জেলার বে অংশ এই লাইনের উভরে পভিবে ভাহা পশ্চিমবন্দের অভর্তুক্ত বাকিবে। কিছু পাটগ্রাম বানা এবং জলপাইওড়ি জেলার অভ বে অংশ এই লাইনের পূর্বের বা ছিছিবে পভিবে ভাহা পূর্ববন্দের অভর্তুক্ত বাকিবে।
- (২) অভঃপর হিনাজপুর জেলার হরিপুর ও রারগঞ্জ থানার নব্যবর্জী নীবারেবা বেবাবে বিহার প্রবেশন নীবানার সহিত বিলিভ হইরাত্তে নেই হান হইতে ২৪-পরগণা ও পুলনা জেলার নব্যবর্জী নীবরেবা বেবাবে বলোপদার্গরে নিলিভ হইরাত্তে, নেই পর্ণ্যভ একট লাইন টানা হইবে। বাংলার বে অংশ এই লাইবের পশ্চিবে পৃতিবে ভাষা পশ্চিববংশন

অভৰ্ত থাকিবে। হাৰ্জিলিং ও জলগাইওড়ি জেলা সম্পৰ্কে ১ৰ অহচ্ছেৰে বেৱল ব্যবহা কৱা হইৱাহে ভাহা অভ্যু ৱাৰিৱা বাংলার অবশিষ্ঠাংশ পূৰ্জবদের অভযুক্ত থাকিবে।

- (৩) এই লাইন নিরোক্ত থানাসমূহের মধ্যবর্তী সীমারেথা বরিরা অঞ্জসর হুইবে, হরিপুর ও রারগঞ্জ, হরিপুর ও হেমভাবাদ, রাণী সাকাটল ও হেমভাবাদ, পীরগঞ্জ ও হেমভাবাদ, ও কালীগঞ্জ, চিরল ও কালারপুর, দিনাকপুর ও ক্রারগঞ্জ, চিরির বন্দর ও ক্যারগঞ্জ, ক্লবাভী ও বাল্রবাট। বাল্রবাট থানার পূর্ব্ধ কোণে বেথানে বেলল-আসাম রেলওরের উভর-বন্দিশ লাইনের সহিত ক্লবাভী ও বাল্রবাট থানার মধ্যবর্তী সীমারেথা বিলিভ হইরাহে সেই পর্যন্ত এই লাইন বিভ্ত হুইবে। এই লাইম উক্ত রেলওরে ক্ষমির পশ্চিম পার্ম্ম বিরম্ভা বাল্রবাট ও পাচবিবি থানার মধ্যবর্তী সীমারেথা পর্যন্ত বিক্তত হুইবে।
- (৪) ঐছান ছইতে নিয়োক্ত থানাসব্দের মধ্যবর্তী সীথানা ব্যিরা লাইনট অঞ্জন ছইবে :--বাল্রবাট ও গাঁচবিবি, বাল্রবাট ও অরপ্রহাট, বাল্রবাট ও বামইরহাট, তপন ও থামইরহাট, তপন ও গাঁচবিবি, বাল্রবাট ও অরপ্রহাট, বাল্রবাট ও বামইরহাট, তপন ও গাঁহবিলা ও গােরসা, হবিবপুর ও পােরসা, হবিবপুর ও লােরসাঁ, হবিবপুর ও লােরসাঁ, মাল্লহ ও ভালাহাট, ইংলিশ বাজার ও ভালাহাট, ইংলিশ বাজার ও ভালাহাট, ইংলিশ বাজার ও শিবগঞ্জ, কালিরাচক ও শিবগঞ্জ, বাল্লহ ও ব্র্ণিরাবাদ জেলার মব্যবর্তী সীমানা সলামনীর সহিত বে ছামে শেষাক্ত ছইট থানার সীমারেবা নিলিত ছইরাছে সেই পর্যান্ত এই লাইন বিভ্ত ছইবে।
- (৫) অতঃপর বাসদহ ও বুর্ণিদাবাদ জেলা, রাজসাহী ও ব্র্ণিদাবাদ জেলা এবং রাজসাহী ও নদীরা জেলার মধ্যবর্তী সীমানা হিসাবে গলামদী বরিরা দক্ষিণ-পূর্ব্ধ দিকে এই লাইনট ব্রিরা নদীরা জেলার উভর-পশ্চিম কোনে, বেবানে গলামদী হইতে মাধাভালা নদী বাহির হইরাছে। সেই ছান পর্ব্যও চলিবে। জেলার সীমারেবা দারাই পূর্ব্ধ ও পশ্চিমবঙ্গের সীমানা নির্ভাতিত হইবে; গলার গতিপবের সহিত ইহার সম্পর্ক বাকিবে না।
- (৬) গদানধীন বে ছান হইতে নাণাভালা নদী বাহির হইরাহে, নেই ছান হইতে নাণাভালা নদী ব্রিরা দৌলভপুর ও ক্রিনপুর থানার ব্যাবর্জী নীবানার বে ছানে উহা বিলিভ লইরাহে সেই ছান পর্যাভ এই লাইন চলিবে। নদীয় ম্বাব্জী লাইন বারাই প্রভুভ নীবানা বিজ্ঞীয়ত হইবে।
- (1) এইছাৰ ছইতে কৌলতপুর ও ক্রিবপুর থাবা, গাল্বি ও ক্রিবপুর থাবা, বেছেরপুর ও তেহাটা থাবা, বেছেরপুর ও চাপরা থাবা, হার্মহা ও চাপরা থাবা, হার্মহা ও কুক্গঞ্ থাবা, চ্রাভালা ও ফুফ্গঞ্ থাবা, জীবববগর ও কুক্গঞ্ থাবা, জীবববগর ও হাঁসথালি থাবা, বছেবপুর ও হাঁলথালি থাবা,

ৰহেশপুৰ ও ৱাণাৰাট ধাৰা, ৰহেশপুৰ ও বনগাঁও ধাৰা, বিকৰ-গাঁহা ও বনগাঁও ধাৰা, সল্লসা ও গাইবাটা ধাৰা এবং গাইবাটা ও কলালোৱা ধাৰাল নধ্যবৰ্তী সীলালা বলিলা ধূলনা ও ২৪-পল্লপণা জেলাল নধ্যবৰ্তী সীলালাল বেধানে ঐ সকল ধাৰাল সীলালেখা নিজিত হইলাছে, সেই ছাল পৰ্যান্ত পূৰ্ব্ব ও পশ্চিনবলেল সীলালেখা বিভাত হইবে।

(৮) অতঃপর খুলনা ও ২৪-পরগণা জেলার মধাবর্ডী সীনানা ধরিরা এই লাইন দক্ষিণ দিকে চলিবে এবং বে ছানে এই চুইট জেলার সীনারেব। বলোপসাগরে মিলিত হুইরাছে সেই তান পর্যাত উহা বিভাত হুইবে।

#### এছট সম্পর্কে সিদ্বাস্থ

এছা জেলা এবং আসাবে উহার পার্ববর্তী জেলা সহতে আমি বলীর নীমা নির্ছারণ কমিলনের রিপোর্ট পেল করিভেছি। সীয়ারেবা কি ভাবে চাঁমা হইবে সে সম্পর্কে কমিশনের সম্প্র-প্ৰ সৰ্বাসন্থত সিহাতে উপনীত হইতে অসমৰ্থ হব। ভাহাৱা আমাকে এই ব্যাপারে অভিনত দিতে বলেন, আমার নতে এই ব্যাপার এছট ও কাছাত ভেলার মধ্যে সীমাবত। এছটের ৩৫ট থানার মধ্যে ৮ট থানার অ-রুসসমান সংখ্যাগরিষ্ঠ। উক্ত আইট বানার মধ্যে শালা ও আক্ষীরিগঞ্ সম্পূর্ণভাবে বুদলিব এলকা-পরিবেটিত। দেকত ঐ চুইট পূর্ববাদের অভতু ভ হইবে। অপর ধানা হরটর লোকসংখ্যা ৫ লক ৩০ হাজার। উহা এই জেলার দক্ষিণ অংশ বরাবর অবস্থিত। ঐ বানাঞ্জি ছুইট বহতুমার মধ্যে বিভক্ত। উহার মধ্যে দক্ষিৰ প্ৰীষ্ট মহতুৰার লোকসংখ্যা ৫ লক ১৫ হাজারেরও অধিক। তথার অরুসলবাদরা সংখ্যাগরিষ্ঠ অপর দিকে করিব-श्रेष्ठ बानाव (जाकमरवा) e जम ७৮ श्रोमाद्वेव स्विक । **এবানে মুসলমানরাই সংব্যাগরিষ্ঠ**।

কাছাড় জেলার হাইলাকান্দি থানা বুসলিন সংখ্যাগরিষ্ঠ অঞ্চ এবং উহা এইটের ব্যৱপুর করিবগঞ্জের সহিত সংলগ্ন। সমঞ্জাবে হাইলাকানি বহুকুবার বুসলবাবরা নাম ৰাজ দংৰ্যাগরিষ্ঠ। ভৰাৰ ভাহারা শভকরা ৫১ ভাগ। হাইলাকান্দি বহুত্বাকে পূৰ্জবলের অভতু ভিত্র কচ বুলল্যানরা দাবী করিবাতে। কিন্ত আনার মতে নানচিত্র বেবিরা বুবা যাৰ বে, এইভাবে ভাগ করিলে শাসন পরিচালনা সমভার উত্তৰ কইতে পাৱে। এই অবস্থার অ-বুসস্থান অধ্যুবিত অঞ্চাকে পূর্ববিদে বিভে এবং করেকট বুসলিম সংখ্যাগরিষ্ঠ অঞ্চকে আসাৰে দিতে হইবে। তদম্বারী আনি নিয়লিবিত चित्रच विट्याच-अवन अक्षे शांत स्टेट्ड दावा होना स्टेटर বেৰাৰে পাৰাহকান্দি ও কুলাউৱা বাৰাহ মৰ্যছিত সীবাৰা ত্ৰিপুহা ৰাজ্যে দীবাছের সহিত বিলিড হইবাছে এবং উজ-(बबाड़े नावाबकान्य ७ वक्टनवा वामात्र मना विद्या छैदा।-ভিতৰে চলিবে। ভাতার পর উচ্চ রেবাট করিববঞ্জ ও বভলেৰা বানাৰ ব্যাহিত সীবানা ব্যৱহা চলিবে এবং ভাষার

পর করিবগঞ্জ ও বিভাগী বাজাবের বায় বিভা চলিরা এবন একট হাবে উপনীত হইবে বেবাবে ঐ দীয়ারেবা কুশিরারা নবীর সহিত বিলিত হইরাছে। অভংগর নবীকে উজ দীয়া-রেবা করিরা পূর্ব্ব বিকে মুরিরা বাইবে এবং এবন একট ছাবে আসিরা পড়িতে হইবে, বেবাবে ঐ নবীট শ্রীহট ও ভাছাভ জ্যোর মধ্যহিত দীরানার সহিত বিলিত হইরাছে।

### র্যাডিক্লিফ রোয়েদাদের পর পূর্ব্ব ও পশ্চিম বঙ্গের আকার

র্যাভক্লিক সাহেবের সিভাজের কলে ৩৪ট মুসলির সংব্যানরির্ভ বানা পশ্চিরবলে এবং ৫৪ট অনুসলির সংব্যানরির্ভ বানা পূর্ববলের এলাকাভুক্ত ক্ইরাছে। এই ৩৪ট মুসলরান বানার আর্থন ৩৮৫০ বর্গরাইল এবং লোকসংব্যা ২৯,০০,২৭৬ (মুলনান ১৮,১৬,৫৭৪, অনুসলরান ১০,৮৭,১০৬)। ৫৪ট অনুসলরান বানার রোট আর্থন ১৭৩৭ বর্গরাইল এবং লোকসংব্যা ৪৩,৮৫,৭৮৪ (মুসলরান ১৮,০১,৫২২ এবং অনুসলরান ২৫,৮৪,২৬২)। মুসলির সংব্যাগরির্ভ রাল ৩ট শহর পশ্চির বলে পভিয়াছে কিছ অনুসলরান সংব্যাগরির্ভ ৪৯ট শহর পভিয়াছে পূর্ববলে।

তরা জুনের মোটার্ট ভাগের কলে পশ্চিম্বদের আরভ্য এই রক্ষ ছিল:—

	আয়তন বৰ্গৰাইল
বৰ্ষৰান বিভাগ	787.06
<b>২8-পরগণা</b>	9636
<b>ক্লিকাভা</b>	. 98
ৰুলনা	8 <b>-</b> 0¢
<b>খ</b> লপাই <b>ও</b> ড়ি	9060
দার্জিলিং	225¢
চট্ট্ৰাৰ (পাৰ্ক্ষভ্য)	4009

যোষ্ট ৩৩৯১৯ বৰ্গমাইল

অনেকের বনে তুল বারণা আছে বে, সামরিকভাবে পশ্চিমবদের যে বোটার্ট সীনানা বরা হইরাহিল, ভাহার মধ্যে পার্কান্ত চইরাম বরা হর নাই। কিছ এই বারণা সম্পূর্ণ তুল। কারণ, ১৯৪৭ সালের ভারতীর হাবীনভা বিলে বলা হইরাছে বে, স্তন পূর্কবদ প্রদেশের মধ্যে বেসব হানের উল্লেখ করা হর নাই, সেই সব হান পশ্চিমবদের মধ্যে পভিবে। এই সম্পর্কে বেসব হানের বামোরেশ করা হর, ভাহার মধ্যে পার্কান্ত চইরাম হিল না। স্থভবাং পার্কান্ত চইরাম পশ্চিমবদের মধ্যে পভিবাহিল। বোটার্ট অহারী প্রদেশ গঠনভালে পূর্কবদের সীরামা হিল ৪৩৫২৩ হর্ববাইল।

ব্যাত্তিকের বোবণা অস্থ্যারী পশ্চিম্বক্ষের বর্তমান সীমানা বাভাইরাছে নিয়োক্ত রূপ :—

	আয়তন বৰ্গনাইল
বৰ্ডমান বিভাগ	7876
<b>२8-१वर्ग</b>	9636
<b>ক্লিকাভা</b>	<b>⊘</b> 8
वृत्तिशावाय	4080
नहीडा (चरम)	>409
ৰশোহৰ "	୭২ ೧
योगभर ?	2097
वियासन्द "	20F <b>&gt;</b>
अनगारे ७ 🔻 "	2424
षा <b>र्व्या</b> जिर	2256

ষোট ২৮,২৫৫ বৰ্গমাইল

বর্তবানের আরতন পূর্বাণেকা ৫৬৬৪ বর্গবাইল ক্ষ বইরাছে। ১৯৪১ সনের আগবস্থারি অগ্নারী পশ্চিমবদের কোন্ অঞ্চল কোন্ সন্ধানরের কভ লোক বাস করে ভাষা বিশ্বের হিসাব হুইভে বুঝা বাইবে :---

	ৰোট জনসংখ্যা হাজানের হিসাব	ৰুসলমান হালারের হিসাবে	মুস্বমান শতকরা
বৰ্ছদান বিভাগ	>-249	>85>	20.7
২৪-পরগণা	9696	2282	७२.६
<b>কলিকাতা</b>	٤٥٠>	829	₹ •••
ৰূৰ্লিণাবাদ	3483	PSA	60.6
नदीत्र। (चः	4) 6.	8-93	63.0
ৰশেহর _	5.0	99	47.5
मानवर ,	V88	8>8	85.
विवासभूत "	ero	२७६	<i>0</i> 4.9
অগণাইওড়ি "	746	289	7.9.9
<b>मर्क्सिनः</b>	. 916	>	₹'8
	(मार्वे २)>>०००		₹8,>

বাংলার ৩ কোট ৩০ লক্ষ রুসলরানের মধ্যে ৫৩ লক্ষ্ পভিরাহে পশ্চির বাংলার আর ২ কোট ৭৩ লক্ষ্ অ-রুসলযানের বব্যে ১ কোট ১৪ লক্ষ্ট পভিরাহে পূর্ব্ধ বাংলার । বাংলার বোট আরভব ৭৭৪৪২ বর্গরাইলের মধ্যে পশ্চির-বাংলা পাইরাহে শভকরা ৩৬'০ ভাগ। বোট ৬ কোট ৩ লক্ষ্মধিবালীর মধ্যে পশ্চির-বাংলার পভিরাহে শভকরা ৩৫'১ জন অর্থিং ২ কোট ১২ লক্ষ্ম। পূর্ব্ধবেদর অ-রুসলরান সংব্যা-লরু বাসিক্ষা শভকরা ২৯'১৭ জন আর পশ্চিরবদের রুসলরান বাসিক্ষার সংব্যা শভকরা ২৫'১১ জন । উভর প্রবেশের বোট রুসলমান ও অ-রুসলরান ক্ষমসংব্যা বিরোক্ত রূপে উভর বদ্ধে বিভক্ত হারাহে:

	পশ্চিৰ বাংলা	পূৰ্ব্ব ৰাংলা
	শতকরা	শতক্ষা
<b>ब्</b> ननवाय	३७'९ व्यव	10'F 44
অ-যুগলখাৰ	৫৮'ত ক্ষম	85'9 व्यय
इरे-शक्वारम्बर	<b>ৰণী হিন্দু পূৰ্ব্ব বাং</b> ল	াৰ পঞ্চিবাহে ।

## শাসন-কার্য্য ও আইন রচনার জন্ম মৌলিক রাষ্ট্রনীতি

সর্ধার বল্লভাই প্যাটেল বোলিক অবিকার সন্পর্কিত উপরেটা ক্ষিত্রীর সভাপতিরপে রাই পরিচালনার কল করেকট বুল নীতি সহলিত একট অতিরিক্ত রিপোর্ট দাবিল করিবা-ছেন। রিপোর্টে সর্ধার প্যাটেল বলেন বে, এই বুল নীতিগুলি আলালতের বিচার্য্য বিষয় না হইলেও এইগুলি অল্পন্যন করিবা দেশ শাসম ও আইন রচনা করা কর্ত্তব্য । 'ক' পরিশিটে এই নীতিগুলি বর্ণিত হইবাহে ।

বিপোটে বলা হইবাছে—আমরা এই সিভাতে উপনীত হইরাছি বে, ভারসকত যৌলিক অবিকারসমূহ হাভাও শাসনতরে এবন করেকট নৌলিক রাষ্ট্রনীতির নির্দেশ বাকা আবর্তক
বেওলি আদালতের বিচার্ব্য বিষয় না হইলেও দেশের শাসন
ব্যাপারে অপরিহার্ব্যরূপে গণ্য হইবে। আমাদের সুপারিশভলি 'ক' পরিশিটে ববিত হইল।

আমরা ইতিপুর্ব্বে যে রিপোর্ট দাখিল করি, ভাষার ৮নং অহুছেদে মৌলিক অবিকার সাধ-কমিটীর সুপারিশের উল্লেখ করিয়া আমরা বলিরাছিলাম যে, কোন নাগরিকের আলালতে রাষ্ট্রের বিরুদ্ধে কোন অভিবালের প্রতিকার প্রার্থনার অবিকার অবধা বাবা-নিষেধ দারা সীমাবদ করা উচিভ নছে। কিছ বিশেষ বিচার-বিবেচনার পর আমরা এই সিদ্ধান্তে উপনীভ ছইরাছি বে, এ সম্পর্বে ২২নং বারাতে ইভিপুর্বেই যে অবিকারের সুপারিশ করা হইরাছে ও বাখা প্রশ-পরিষদের এপ্রিল-মে বানের অবিবেশনে গৃহীত হইরাছে, শাসনভরে ভার অভি-রিক্ত আর কোন অবিকারের ব্যবহা রাখিবার প্রয়োক্তন নাই।

গণ-পরিষদ আমাদের পূর্ববর্তী রিপোটের ১৬, ১৭ ৬ ১৮(২) মং বারা পুনবিবেচনা করিতে বলিয়াছিলেন। আমরা বারাঞ্জি পুনবিবেচনা করিয়ানিরলিবিত পুণারিশ করিতেছি।

১৬নং বারা—"যে সকল বিভালর সরকারী অর্থে পরিচালিত হয় অথবা সরকারী সাহায্য লাভ করে, সেই সকল
বিভালরে যদি বর্মশিকা দানের ব্যবহা থাকে তবে ভাহাতে
কাহাকেও অংশ এহন করিতে অথবা বিভালরে কিলা বিভালরসংলগ্ন প্রাদশে অনুষ্ঠিত কোন বর্মানুষ্ঠানে কাহাকেও বোগদান
করিতে বাব্য করা যাইবে না।" আমরা পরিবদকে এই
ধারাইকে বর্জনান আকারে এহন করিতে অনুরোধ করিতেহি।

১৭নং বারা—"বলপ্ররোগে অথবা অভার প্রভাব বিভার করিরা কাহাকেও বর্ষাভরিত করা হইলে তাহা আইনত: বীকৃত হইবে বা।"

এই বাবাট আৰও বিবেচনাৰ পৰ আনাবের নিকট ইহা অনাবঞ্চক বোৰ হইতেছে। আমলা এই বাবাট সম্পূৰ্ণ বৰ্জন কমিবার স্থপায়িশ কমিতেছি।

১৮(২)বং বারা—"বর্ণ, সম্মনার অববা ভাষার ভিডিভেই ২উক, বাইপরিচালিভ বিভালরে প্রবেশাবিকার লাভের পকে কোন নংখ্যালয়ত্ব বিলয়ে কোন পঞ্চপাতহুঠ আচন্ত্ৰণ করা বাইবে না অথবা বৰ্ত্তশিকা বাধ্যতানুলক করা বাইবে না।"

উপবোক্ত ১৯নং বারা বৃষ্টে আলোচ্য বারার শেবাংশ বাহল্য বলিরা উহা পরিভ্যক্ত হইল। বারার অবশিষ্টাংশ অপরিবর্ত্তিত বাকিবে। রাষ্ট্রের সাহাব্যপ্রাপ্ত বিভালয়লমূহের ক্ষেত্রেও এই বারা সন্দ্রাগরিত করা আবরা বর্ত্তবানে রুক্তিমূক্ত বনে করি না।

মৌলিক অধিকার সম্পর্কে সাধ-ক্ষিষ্ট আষাধ্যে নিকট বে বিশোর্ট দাবিল করেন, ভাষাতে দেবনাগ রী অথবা কারসী অকরে লিখিত হিন্দুহানী ভাষাকে ভারতীয় ইউনিয়নের ভাষারণে এহণের স্থারিশ করেন। গত এপ্রিল বালে এই বিষয়টার আলোচনা আমরা হুগিত রাধিয়াহিলান। এ বিষয়ে ইতিমধ্যেই মুক্তরাষ্ট্রীয় পাসনতন্ত্র ক্ষিষ্ট কতকওলি স্থারিশ করার আমরা বিষয়টকে মৌলিক অধিকারের ভালিকার অন্তর্ভক্ত করা অনার্থক যনে করি।

পরিষদের এপ্রিল-বে মাসের অনিবেশনে বছসংখ্যক সংশোধন প্রভাব করা হইরাছিল, কিন্তু আহরা ভাহার এক্ষাপ্ত প্রহণ করিতে সক্ষম হই নাই।

#### ৰূল রাষ্ট্রণীতি

- ১। বিপোটের এই অংশে রাই পরিচালনার পঞ্চে আবগুরু বৃদ নীতি সরিবিষ্ট ইবরাছে। এই নীতিগুলি আইনের আমলে না আসিলেও দেশ-শাসনের পঞ্চে এগুলি অভ্যাবগুরু এবং এই নীতিগুলি অগুসরণ করিবা আইন রচনা করা রাষ্ট্রের কর্মবা ছইবে।
- ২। সারান্তিক, অর্থনৈতিক ও রাজনৈতিক প্রবিচারের তিভিতে একট স্বাধ্বাব্যা গড়িরা তুলিরা রাইকে সম্প্র ভাতির কল্যাণসাধনে যথাসাধ্য যথান হইতে হইবে।
- ৩। রাষ্ট্রকে বিশেষভাবে নিমুলিবিভ উদ্বেশ্বতনি সিভ क्विएक (इंडे) क्विएक स्टेरन--- (क) शुक्ष ७ नावी निर्कारनरव প্রত্যেক নাগরিকের ঘণোপর্ক্ত জীবিকার অধিকার: (ব) नवाटकत बटनारभाषय-यावषात वानिकामा ७ निरञ्जन अञ्चल-ভাবে ৰক্টৰ ক্রিভে হইবে বাহাতে বভদুরসম্ভব স্বাজের नब्द्रिनंच कन्तान स्टेट्ड शांद्र : (१) जानाबरनंद्र क्वि क्विया আৰম্ভক পণ্যত্ৰব্যের যালিকামা ও নিরম্রণ বাহাতে করেকলম ব্যক্তিবিশেষের হাতে ক্ষেত্রীভূত হইতে না পারে ভজ্ন্য चराव श्रीकरवानिका वह कहा ; (व) शूक्तव ७ माही निर्कित्यत्व नवान कारकद कड नवान शाहिखिनिक खेडान . (s) शूक्रव ७ নারী নির্বিশেষে কর্মীদের শক্তি ও স্বাস্থ্য এবং বালক-বালিকাবের সৌকুষার্ব্যের যাহাতে অপভর না হর এবং নাগরিকরা বাহাতে অভাবের ভাড়নার বরস ও শক্তির অনুপ-बूक कार्या कविएक नाया मा एवं काराव गायहां : (ह) निक क বুৰকাৰে শক্তিৰ আচাৰ ভাষােৰ বাহাতে কেহ এহৰ না ক্ৰিভে পাৱে এবং ভাষাবের নৈভিক ও বাত্তব উরভির প্রতি লক্তা वांचा ।

- ৪। আর্থিক সক্তি অন্থলারে রাই নাগরিকবের জীবিকার কচ কাকের অবিকার এবং বেকার, বৃদ্ধ, বীচিত, অক্ষম ব্যক্তি-বের নাহাব্যপ্রান্তির অবিকারের ব্যবহা করিবে।
- e। কণাঁৱা বাহাতে বহুডোচিত পরিবেশের বব্যে কাফ করিতে পারে ও নারীকণাঁরা সভান প্রসংবর সময় ছুট পায় তাহার ব্যবহা করা।
- ৬। রাই ঘাইন, ঘর্বনৈতিক সংগঠন ও অন্যান্য উপার ধারা প্রমন্থীবী বা অন্যান্য সমন্ত প্রকার ক্ষমীর ক্ষম কাজ, শীবন বারপোশযোগী বেতন, সুষ্ঠ্ শীবনবাত্রা, অবকাশ এবং সামাজিক, সাংকৃতিক মেলামেশার ব্যবস্থা করিবার চেটা করিবে।
- ৭। রাষ্ট্র সকল নাগরিকের কচ স্বাধ সাহাজ্যিক হীতির প্রবর্তমের চেটা করিবে।
- ৮। প্রত্যেক নাগরিকের অবৈতনিক প্রাথমিক শিক্ষা-লাভের অবিকার আছে। রাষ্ট্রকে এই শাসনভর চালু হইবার ১০ বংসরের মধ্যে সমস্ত শিক্তর জ্ঞ ১৪ বংসর বরস পর্যান্ত বাধ্যতাসুলক ও অবৈতনিক প্রাথমিক শিক্ষাধানের ব্যবহা করিতে হইবে।
- ১। ভাতির হ্রলেতর অংশ, বিশেষতঃ তগলিলী ও আদি-বাসীদের শিক্ষা ও অর্থনৈতিক বার্থের প্রতি রাষ্ট্রকে বিশেষ বস্থবান হইতে হইবে এবং তাহাধিগকে সামাজিক অবিচার ও শোষণ হইতে রক্ষা করিতে হইবে।
- ১০। কাভির পৃষ্টি, জীবন-যাত্রার মান ও সাহ্য উরভ করাকে রাষ্ট্রের প্রাথমিক দায়িত্রণে পণ্য করিতে হইবে।
- ১১। রাষ্ট্রকে সমস্ত স্থভিত্তত, ঐতিহাসিক স্থান ও শির নিয়র্শনকে স্বাভীয় সম্পত্তিরূপে রক্ষা করিতে হইবে।
- ১২। রাষ্ট্রকে বিভিন্ন জাতির সহিত সন্মানজনক সম্পর্ক স্থাপন করিয়া আওজাতিক শান্তি ও নিরাণড়া রক্ষার অসুকৃত্ করিতে হইবে।

#### কেন্দ্রীয় ও প্রাদেশিক যৌথ নির্ন্ধাচন ব্যবস্থা

নংখ্যালঘু সন্দ্রদার সন্পর্কে যে পরার্র্য কমিট গঠিত হইবাহিল, সেই কমিট অন্য গণ-পথিয়তে তিনট বিপোট বাধিল
করিবাছেন। ঐ বিপোটে পৃথক নির্বাচনের বিলোপসাধন,
বৌধ নির্বাচনের ভিত্তিতে কেন্দ্রীর ও প্রাদেশিক আইনসভার
সম্ভ নির্বাচন, বে সকল সন্দ্রদার সংখ্যালঘু সন্দ্রদার বলিরা
বীকত, অনসংখ্যার অত্থাতে প্রথমে দশ বংসরের অন্য বিভিন্ন
আইনসভার ভাহাদের ক্য আসন সংরক্ষণ, রূপ বংসরের ক্য
প্রবাদার উপর বিচার বিভাগের কোন হাত থাকিবে না সেইরপ
কৃতক্রলি নীতি প্রভানের বৌলিক অবিকারের অভতুতি
করার কথা বলা হইবাছে। সর্বার ব্যভাই প্যাটেল ঐ
ভবিটির সভাপতি।

প্রথম বিপোর্টে বাহা আলোচনা করা হইবাহে, ভাহাকে লংগ্যালর সম্প্রদারের রাজনীতিক রকাক্ষত বলিরা অভিহিত্ত করা বাইতে পারে, বিভীর বিপোর্টে কোন কোন চাক্রীতে প্রথমা-ইভিয়াননের অবহা এবং ভাহানের শিকার প্রবিধা নালের বিবরে আলোচনা করা হইবাহে। ভূভীর বিপোর্টকে বৌলিক অধিকার সহতে অভিবিক্ত বিপোর্ট বলা বাইতে পারে।

নহকারী প্রধান মন্ত্রী ও সংখ্যালমু সজ্ঞহার ক্ষিটির চেরারন্যান পরিবদে রিপোর্ট পেল ক্ষরেন। তিনি বলেন, গভ
২৩শে এপ্রিল প্রেনিডেকের নিকট বে রিপোর্ট পেল করা
হইরাহিল, উহার পরিপ্রক হিনাবেই এই রিপোর্টট প্রহণ
করিতে হইবে। ন্যারসফত নৌলিক অবিকার সম্পর্কেই
রিপোর্টে আ্লোচনা করা হইরাহে। ঐ সকল অবিকার
প্রভ্যেক নাগরিককে দেওরা হউক বা বিশেষভাবে সংখ্যালমু
সজ্ঞারগুলিকেই দেওরা হউক, নেগুলি স্নাক্ষীবনের
ন্যাপক ক্ষেত্রে সংখ্যালমু সক্ষান্তরের রক্ষাক্ষত বলিরা প্রহণ
করা হইবে। বোটার্টভাবে রাজনৈতিক রক্ষাক্ষত সম্পর্কেই
রিপোর্টে আলোচনা করা হইরাহে এবং উহাতে নিম্নোক্ষ
বিষরগুলি রহিরাহে:—

- (১) আইনসভার প্রতিনিবিছ; বৌৰ বনাম বভগ্ন নির্বাচন ব্যবহা; বিশেষ ক্রবোগ-সুবিধা।
  - (२) मञ्जिनकात मरनामन् मत्त्रकारकः क्या कामम मरवक्त।
- (৩) সরকারী চাতুরীতে সংখ্যালঘু সম্প্রদারের জভ আসন সংবক্ষণ।
- (৪) সংখ্যালয়ু সম্প্রদারের অধিকার রক্ষার ক্ষত সরকারী ব্যবসা।

সর্থার প্যাটেল বলেন, সংখ্যালঘু সন্তালার সাধ-ক্ষিট ও সংখ্যালঘু সন্তালার পরামর্শগাতা-ক্ষিটিতে পৃথাহুপুথ আলোচনা করিবাই আমরা প্রভাবগুলি রচনা করিবাহি। বিষয়ট এরপ বে, প্রত্যেক ব্যাপারেই সকলের সন্বতিলাতের আশা করা বার না। বে ক্ষেত্রে সর্প্রসন্থত অভিয়ত পাওরা বার নাই, সেখানে সংখ্যালঘু সন্তালারভুক্ত অধিকাংশ সদত বে অভিয়ত যাঞ্জ করিবাহেন, তাহাই গ্রহণ করা হইবাহে।

প্রবাহি। সংব্যাসমূ সম্ভাবের এবং সম্প্র দেশের রাজ-কৈতিক জীবনের পক্ষে ইংা বিশেষ গুরুত্বপূর্ণ বিষয়। অধি-ভাংশের মতামূলারে আমরা এই সিভাতে উপনীত হুইরাছি বে, সূত্রম লাসমত্রে এই পূথক নির্মান্ত্র-ব্যাহম অবস্তই রহিত ভারতে হুইবে। এই ব্যবহার কলে অতীতে সাম্ভাবাহিক বিভেন্ন মারায়ক আকার বারণ করিরাহিল এবং প্র্রুক্ত জাতীর জীবন পর্টনের পক্ষে প্রধান অভ্যায় বলিরা প্রমাণিত হুইরাছে। বেশে বে সূত্রম রাজনৈতিক অপ্রস্থতির স্থানা হুইরাছে তাহার উন্নতিক্যে এই সকল বিশন্ত প্রভাইরা চলাই বিশেষ প্রয়োজন। এই বিক হুইতে পূথক নির্মান্তন-ব্যবহার বিশক্ষে প্রয়ণিত ব্যক্তিসমূহ অকাট্য বলিরাই বনে হয়। এই হেড়ু আবরা স্পারিশ করি বে, কেন্সীর ও প্রাবেশিক পরিবাদের সর্ব্যক্তার নির্ব্বাচন বেণি নির্ব্বাচন ব্যবস্থারই অনুষ্ঠিত হওলা বিবের। অবাব বেণি নির্ব্বাচনে সংখ্যালয়ুবা বাহাতে শবিত না হর, সেজত লাবারণ নিরম হিসাবে বিভিন্ন আইন-পরিবদে বীকৃত সংখ্যালয়ু সম্প্রালয়ুবাহের সংখ্যাস্পাতে আসন সংরক্তি থাকিবে। প্রথমে দশ বংসরের ভত এই সংরক্ষণ-ব্যবস্থা প্রবৃত্তিত হইবে। দশ বংসর পর অবস্থা প্রক্রিবেচিত হইবে। আবরা ইহাও স্পারিশ করি বে, যে সক্তল সংখ্যালয়ু সম্প্রদারের ভত আসন সংরক্ষণের ব্যবস্থা আছে, ইক্ষা করিলে উহিরো লাবারণ আসনেও প্রতিবোদিতা করিতে পারিবেন। সাবারণভাবে কোন সংখ্যালয়ু সম্প্রদারের ভত রম্পাক্রত ব্যবস্থার আবরা বিরোধী।

সর্ভার প্যাটেল বলেন, নির্দিষ্ট সংখ্যালয় সম্প্রলারের প্রতি
পূর্ব্বোজ্ঞ নীতি প্ররোগ করা সভবপর কিনা, মুই কারণে কমিটি
তাহা বিবেচনা করিরাহেন। প্রথমতঃ, আমরা ভানিতে পারিলাম যে, সংখ্যালয় সম্প্রভারের ঘার্থের থাতিরে আইন সভার
আসন সংগ্রহণর বিবিষদ ব্যবহা প্ররোজন বলিরা সকল
সংখ্যালয় সম্প্রভার হনে করেন না। বিভীরতঃ, এংলোইতিরান সম্প্রভারের মত সংখ্যার নগণ্য একট সম্প্রভারের প্রতি
পূর্ব্বোক্ত নীতি কঠোরভাবে প্ররোগ করিবার পূর্বের তাহা
সবত্বে পরীভা করিরা দেখা প্ররোজন। সংখ্যালয় সম্প্রভার
ভালিকে আমরা তিন প্রেটিতে বিভক্ত করিরাহি। বেশীর রাজ্য
বাদ বিরা ভারতীর ভোষিনিরনে বাহাবের জনসংখ্যা শতকরা
ভিত্রর কম—'ক' প্রেণী; শতকরা 'ভতরে বেণী আবচ ১ইনএর
বেণী নহে—'ক' প্রেণী; শতকরা ১ইনএর বেণী—'গ' প্রেণী।
ভিনট প্রেণীকে এভাবে ভাগ করা হইরাহে:—

'ক' শ্ৰেণ

)। बरला-रेक्शिन

২। পাৰ্শী

৩। আসাৰ সৰ্ভল ভূৰির উপভাতি

'ব' শ্ৰেণ

৪। ভারতীর বীঠান

e 1 निव

'গ' শ্ৰেণী

७। बुननमान

৭। তপশিলী সম্ভালার

বেশীর রাজ্যভলিকে বাদ বিলে এংলো-ইভিরান্তরে সংখ্যা এক লক্ষের সারাভ কিছু বেশী (শতকরা '৪ জন)। এংলো-ইভিরান্তের পক্ষ কৃষ্টতে বিঃ ব্যাহনী বলিরাহেন বে, আর্বস্থারীর সংখ্যা বিভব নতে। কিছু সঞ্চিক সংখ্যা আরও বেশী
বলিরা বীকার ক্ষিত্রা ক্ষিপ্তে ভাষারা সংখ্যার স্থান্যই
বাকিবে। এ অবহার জনসংখ্যার ভিভিতে ব্যবহা কৃষ্টিতে
পেলে ভাষাবিদকে প্রভিনিবি প্রেরণের স্থান্যার কৃষ্টিত ব্যক্ত

করিতে হয়। ক্ষিটতে এংলো-ইভিয়ানদের বে সকল প্রতি-বিবি রহিয়াহেন, তাঁহায়া প্রবনে নিঃরণ দাবি ভানাইয়া-হিলেন:—

লোক-সভার—ভিন জন সৰভ ; পশ্চিমবদ ৩, বোহাই ২, মাত্রাজ ২, মন্যপ্রদেশ ও বেরার ১, বিহার ১, যুক্তপ্রদেশ ১।

কিছ পরে তাঁহারা মনোভাব পরিবর্তন করেন এবং গোক-সভার হুইট আসন এবং যে সকল প্রদেশের আইন সভার বর্তনানে তাঁহাদের প্রভিনিধি রহিরাছেন লে সকল প্রদেশের ভবিত্তং আইন সভার একট হিসাবে আসনের দাবি কানান। হিসাব করিরা দেবা সিরাছে বে, তাঁহারা মোট ৮ট আসনের দাবি করিভেছেন।

ক্ষিট এংলো-ইভিয়ানদের মভানত বিশেষ যত্নের সহিত চিতা করিয়া দেখিয়াছেন এবং সর্কাশভিক্ষানে নিয়ন্ত্রণ প্রভাব রচনা করিয়াছেন:----

এংলো-ইভিরামদের খন্ত আসম সংবৃক্ষিত থাকিবে মা—
কিন্তু সাধারণ নির্বাচনে যদি ভাঁছার। আইম সভার প্রভিনিবি
প্রেরণ করিতে না পারেন,তবে ইউনিরমের রাইপতি ও প্রদেশসমূদের সবর্ণরপণ ধথাক্রমে কেন্দ্র ও প্রদেশের আইম সভার
নির পরিষদে এংলো-ইভিয়াম সম্প্রদারের প্রতিনিধি মনোমরন
করিতে পারিবেদ।

পাশীদের সম্পর্কে গর্জার প্যাটেল বলেন, সংখ্যালয়ু সম্প্রধার সাব-ক্ষিষ্টিতে সর হোমি মোধি বলিরাছেন বে, কেন্দ্রীয় ও প্রাদেশিক আইন সভার পাশী সম্প্রদারের যথেষ্ট সংখ্যক প্রতিনিধি থাকা প্ররোজন—কেননা দেশের রাজ্যনৈতিক ও অর্থনৈতিক উন্নতি সাধনের ক্ষেত্রে উন্নরা অনেক প্রকার সাহায্য করিরা আসিরাছেন। এই দাবি মানিরা সওয়া প্রযোজন বলিরা ক্ষিষ্টি খীকাসর করেন। কিছু সর হোমি বিষয়ট পুনরার বিবেচনা করিয়া দেখিবার জভ সমর চাছেন।

এডতাইসরী ক্ষিষ্টতে এ সম্পর্কে আলোচনা আরম্ভ হইলে সর হোবি বলেন বে, বহিও ক্ষিষ্ট পার্লী সম্মানরকে 'ক' শ্রেইকুক্ত অভাত সম্মানরের রতই বিশেষ প্রবাসের অবিকারী বলিরা বনে ক্ষিতেছেন, তবাণি পূর্বেকার রীতিই তিনি অন্ত্যরণ ক্ষিবেন এবং বিধিবছভাবে আসন-সংরক্ষণ রাধার কাবি প্রত্যাহার ক্ষিবেন। কিছু শাসনতত্ত্বে যদি সংখ্যাসমূস্যাধারের অভ সভ্য প্রতিনিবিশ্বের ব্যবস্থা থাকে, তবে ভার্থের বাবি প্রশ্বিবেচনা ক্ষিয়া ধ্যিতে হইবে।

#### শাসাবের সমতল ভূমির উপজাতিগণ

শাসন-সংকার-বহিত্তি ও আংশিক শাসন-সংকার-বহিত্তি অঞ্চল সাব-ক্ষিটির রিপোর্ট পাওরা গেলে এ সকল উপকাতির সম্মা বিবেচনা করিবা ধেবা ক্ষিতে।

#### ভাৰতীৰ শ্ৰীপ্ৰাণ সন্মাণাৰ

ভাষতীয় ইটাৰ সন্ধাৰাবের প্রতিনিধি বলিয়াছেন খে, জাভায় ভাতিসঠনের ভার্ব্যে বাধা শুষ্ট করিবেন না। কেন্দ্রীয় আইন সভার এবং বারাক ও বোলাইবের প্রাচেশিক আইন-সভার উচ্চারা ক্ষমংব্যার হারে আসন সংরক্ষণের ব্যবহা নানিরা লইতে ইচ্চুক ছিলেন। অভাভ প্রবেশে উচ্চারা সাবারণ আগনের করু নির্বাচনপ্রার্থী হইতে প্রস্তুত ছিলেন। কোন বিশেষ সন্তাধারকে প্রাণ্য স্থারাক-স্থবিধার বেন্দ্র কিছু দেওরা হউক, ইহা উচ্চারা চাহেন না; কিছু 'ব' ও 'প' প্রেন্থ-ভূক্ত কোন সংব্যালয় সন্তাধারকে বহি অভিবিক্ত স্থার্থ-স্থবিধা দেওরা হয়, তবে ভারতীয় প্রশ্নারাও লে ধাবি কানাইবেন।

#### শিখ সম্প্ৰদায়

দীবানা কৰিশনের রার বাহির না হওরা পর্যন্ত শিববের অবস্থা অনিভিত রহিরাছে। শিব সম্প্রদারের রক্ষাক্ষত সম্পর্কে আলোচনা বর্তমানে তুলিত রাবা হুইতেছে।

#### ৰুসল্যান ও ভপলিলী সম্ভাগ

ক্ষিটির অভিনত এই বে, বুসনান বা তপশিলীদের ক্ষেত্রে সাবারণ নির্বের ব্যতিক্ষনের প্রয়োজন নাই। স্থারিশ করা বাইতেহে বে, এ হুইট সম্প্রধারের জনসংখ্যার হাবে আসন সংবক্ষিত রাখা হুইবে এবং বৌধ নির্কাচন ব্যবহার এ সকল আসন লাভ ক্রিতে হুইবে।

#### **যদ্রিসভার আসন-সংরক্ষণের প্রভাব**

ক্ষিট্র কোন কোন সহত এই অভিনত প্রকাশ ক্ষিয়াছেন বে, সংব্যাসহু সম্প্রবাহের জনসংব্যার ভিভিতে ব্যাসভার আসন সংবৃদ্ধিত বালা প্রবাহন । কিন্তু ক্ষিট্ট এই সুস্পষ্ট সিভাছে পৌছিরাছেন বে, শাসনভন্তে এরপ কোন বাবছা রাখিলে ভবিত্যতে ওপ্রতর অসুবিবা দেবা দিবে। অবস্ত, ববাসভব সংব্যাসহু সম্প্রদাহের লোক্সদিগভেও বে মন্ত্রিসভার প্রহণ করা বাছ্নীর পেদিকে রুক্তরাট্রের রাট্রশভি ও প্রদেশসরুহের গবর্ণর-বের মৃষ্টি আকর্ষণ করিতে হববে। আমরা প্রভাব করিতেছি বে, শাসনভন্তে তপশিলী এই কবাট উল্লেখ করা হউক।

সংখ্যালঘুদের বছ সংরক্ষণ-ব্যবহা হছিতঃ ব্যাহালঘু সংখ্যালঘু সংখ্যালঘু সংখ্যালয় প্রতিনিধিদের সংবৃদ্ধিত আসনের বছ কোন আইনগত ব্যবহা থাকিবে না, কিছ শাসনভয়ের তপশীলে ১৯৩৫ সালের ভারতশাসন আইনে গবর্ণরচের প্রতিপ্রায় নির্দেশ্যকীর ৭ন অহুদ্ধেদ অহ্বায়ী প্রথা প্রবর্তনের বিধান থাকিবে।

#### চাৰুৱীতে আসন-সংবৃদ্ধের প্রভাব

সংব্যালয় সন্তাহারের জনসংব্যার হারে সরকারী চাত্রীক্তে লোক নিরোগের জনও প্রভাব করা হইরাছে। জন কোন হেশের শাসনতরে এরপ ব্যবহা রহিরাছে বলিরা আবরা ভবি নাই। আনাদের বিখাপ, এরপ কোন প্রতিশ্রুতি হিলে নারাম্মক কল দেবা বিভে পারে। কিন্তু সদে লকে আবরা এ কথাও বীকার করি বে, শাসন-ন্যবহার সোগ্যতা বিনষ্ট না করিবা সংব্যালয় সন্তাহারের হাবির হিকেও লক্ষ্য রাখিতে হুইবে। আবরা প্রভাব করিতেতি বে, বারী নিরোগের ভার গ্রহারী চাকুৰীভেও লোক বিৰোধের কালে বাহাতে শাসন-ব্যবহার বোগ্যতা বজার রাবিরা সংখ্যালহু সম্প্রদারের হাবির বিকে লক্ষ্য রাবা হর, ভজ্জ শাসমভগ্র বা উহার কোন তপশিলী। কেন্দ্রীর ও প্রাবেশিক গবর্থে উসমূহের প্রতি নির্দেশ থাকিবে।

ক্ষিটির এংলো-ইভিয়ান সদত বলিরাছেন বে, করেকট বিশেষ শ্রেটির চারুরীর উপর তাঁহার। সম্পূর্ণ নির্ভর করিভেছেন এবং তজভ তাঁহাদের সম্পর্কে বিশেষ ব্যবহার প্রয়োজন রহিরাছে। যাহা হউভু, এ সম্পর্কে তথ্যাদি সংগ্রহের ভঙ একট সাব-ক্ষিট নিযুক্ত করা হইরাছে।

সংখ্যালবুদের ভাষা অধিকার রক্ষার প্রতিশ্রুতি: সর্থ-ভারতীর ও প্রাদেশিক চাকুরীওলিতে নিরোপের সময় ধোগ্য-ভার প্রতি সক্ষ্য রাধিরা সমস্ত সংখ্যালঘু সম্প্রধারের লোকধের ভাষ্য ধাবি সম্পর্কে বিবেচনা করা ক্ষরে।

#### এংলো-ইভিয়ান সম্ভাগন্ত সম্পৰ্কিত কমিট

বর্তমানে এংগো-ইভিয়ান সম্প্রদায়ের আর্থিক অবছা কতক্তলি বিশেষ চাকুরীর উপর নির্ভরশীল এবং তাছারা শিক্ষা খ্যাপারে কতক্তলি বিশেষ প্রবিধা ভোগ করিতেতে বলিয়া ভাছাদের সম্পর্কে রিপোর্ট ধার্বিল করার ৩০ নির্লিখিত খ্যাভিধিগকে লইরা একটি করিট নির্ভ হইয়াছে:—পতিত গোবিক্ষবন্ধত পছ, ত্রীর্ভ কে এম মূলী, ত্রীর্ভা হংস মেটা, বিঃ এল এইচ প্রেটার ও মিঃ ক্ল্যাভ একনী।

স্থার প্যাটেল বলেন, বে সক্স রক্ষাক্ষর রহিরাছে লেগুলি কার্যক্ষেত্রে যানিরা চলা হইবে কিনা, তাহা চিছা ক্ষিত্রা সংখ্যালয় সম্প্রদারগুলি উথেগ বোব করিতেছেন। এক্ষেত্রে ক্ষেপ্ত প্রধেশের পক্ষে প্রকৃষ্ট পথ হইবে এক জন নাইনরিষ্ট অকিসার নিরোগ করা। রক্ষাক্ষর ও অবিকার উপেকা করা হইলে এই অকিসার তবন্ধ করিবেন এবং আইন স্কার উচ্ছার রিপোট পেশ করিবেন।

#### ষ্ট্যাটুটরী কমিশন নিরোগের প্রভাব

আম্রা স্থাক ও শিকার থিক হইতে অন্থরত শ্রেণীওলির অবস্থা সম্পর্কে তথক করিবার অন্ত একট ট্রাটুটরী ক্ষিণ্য নিরোপের প্রভাব করিতেতি। অন্থরত শ্রেণীওলি কি কি অন্থবিধা ভাগে করিতেতে, তাঁহারা সে সম্পর্কে তথক করিবেন এবং অন্থবিধা দুরীকরবের উপায় সম্পর্কে নিউমিয়ন বা সংশ্লিট ইউনিট গ্রন্থে ভিয় নিকট প্রণারিশ করিবেন।

আমাদের স্থাবিশগুলির সংক্ষিপ্তার পরিশিষ্টের সহিত তুড়িরা বেওরা হইল:—বৌধ নির্বাচন ব্যবহার কেন্দ্রীয় ও প্রাদেশিক আইন সভার নির্বাচন হইবে। তপশীলে বণিত সংখ্যালয় সন্ধোষ্টার ভিত্তিতে আসন সংয়ক্তিত বাকিবে। বর্ত্তবাবে হল বংসরের ক্ষণ্ড এই সংয়ক্ষণ-ব্যবহা বলহং বাকিবে। পরে এই ব্যবহাটি সন্ধার্কে প্রক্ষিবেচনা করিতে হইবে। এংলো-ইভিরানদের ক্ষণ্ড আসন সংয়ক্ষিত বাকিবে না। কিছ সাবারণ নির্বাচনের ফলে বাফি ভাহারা আইন সভার প্রতিনিধি প্রেয়ণ করিতে না পারেন, তবে বাইলিভ ও প্রবেশনসূত্রের প্রশ্বরা ব্যাক্তরে ক্ষেত্রে ও প্রবেশন

ভাষাদের প্রতিনিধি ননোনরৰ ক্ষিতে পারিবেন । পার্নীদের
ক্ষ বিধিনম কোন সংরক্ষ-ন্যবহা থাকিবে না, কিছ ভাষারা
সংখ্যাসমু সন্তানারের অস্বাধিত তালিকার অস্তর্ভ কালিবে।
ভারতীর প্রীটানদের কনসংখ্যার হারে কেন্দ্রীর আইন সভার ও
বোঘাই ও মাঞাজের প্রাদেশিক আইন সভার আসন সংরক্ষিত
থাকিবে। অচাত প্রদেশে তাঁখারা সাবারণ আসনের কত
নির্বাচন প্রার্থী হইতে পারিবেন। সংখ্যাসমু শিব সন্তানারর
অধিকার সন্পর্কে খত্রভাবে বিবেচনা করিরা দেখা ঘ্রবৈ।
মুসলমান ও ভপশীলীদের কন্য তাঁখাদের কনসংখ্যার ভিত্তিতে
কেন্দ্রীর ও প্রাহেশিক আইন সভার আসন সংয়ক্ষিত থাকিবে।

#### অভিবিক্ত অধিকার

সংবৃদ্ধিত আসনের অবিকাষী সংখ্যাগনু সন্ত্রণারের লোকেরা আরও আসনের ক্ষয়ও প্রতিবৃদ্ধিতার অবতীর্ণ হইতে পারিবেন। ক্ষসংখ্যার ভিন্তিতে আসন সংবৃদ্ধিত বাকিবে—এতদ্বতিরিক্ত কোন প্রযোগ-স্থিবা কোন সন্ত্র্যারকেই দেওয়া হইবে না। সংবৃদ্ধিত আসনের ক্ষন্য নির্বাচনপ্রার্থী ব্যক্তিকে তাহার স্ব-সন্ত্রহারের নিকট হইতে একট নির্দিষ্ট স্থানতম সংখ্যা ভোট পাইতে হইবে, এখন কোন ব্যবস্থা বাকিবে না।

কংলো-ইভিয়ানদের অবস্থা সম্পর্কে তদন্তের জন্য নির্জ্জ ক্ষিটির বিপোর্ট বিবেচনা করিয়া প্রভাব করা হইয়াছে যে, (১) কেন্দ্রীয় ও প্রাদেশিক গবর্গেন্ট ক্রংলো-ইভিয়ানদের শিক্ষার জন্য যে অর্থ সাহায্য করিয়া আসিভেছেন, ভাহা যুক্তরাষ্ট্রীয় শাসনভন্ত চালু হইবার পরও তিন বংগর অপরিবর্তিত
থাকিবে; (২) প্রথম তিন বংগর অতিক্রান্ত হইগে পর
পূর্ব্বোক্ত সাহায্য শতকরা হল তাগ, ৬৪ বংসর অতিক্রান্ত
হইবার পর আরও হল তাগ, ১ম বংসর অতিক্রান্ত হইবার পর
আরও হল তাগ তাগ, ১ম বংসর অতিক্রান্ত হইবার পর
আরও হল তাগ তাগ করা হইবে। হল বংগর পরে বংগোইভিয়ান হলগুলি কোনরূপ অতিরিক্তা প্রবোগ-প্রবিধা পাইবে
না; (৩) এই হল বংসবের মধ্যে সরকারী সাহায্য রাপ্ত
বংগো-ইভিয়ান হলগুলিতে যে সক্ষণ কর্ম্ববালি হইবে, উহার
শতকরা ৪০ তাগ অন্য সম্প্রভাবের লোকেরা পাইবেন।

১৯৩৫ সালের ভারত-শাসন আইবে বে অর্থে এংলো-ইভিয়ান শব্দী ব্যবস্থাত হইয়াছে, ট্রফ দেই অর্থেই এ রিপোর্টে "এংলো-ইভিয়ান" শব্দী ব্যবহার করা হইয়াছে।

#### চাতুরী সম্পর্কে ব্যবস্থা

বেলপৰ, ভাক ও ভাব বিভাগ ও শুক বিভাগে বর্তমানে বে ভিন্তিতে এংলো-ইভিরান নিরোগ করা হব, ভাহা র্জ-রাষ্ট্রীর শাসনভর প্রবর্তনের পর হুই বংসর পর্যন্ত অপরিবর্তিত বাকিবে। উহার পর প্রভি হুই বংসর শভকরা ফণ্ট হারে সংরক্তিত চাত্রীর সংব্যা ক্লাক করা হুইবে। অবস্ত, ব্যক্তিগভ বোগ্যভার বারা বহি ক্লে অন্যান্য সন্তাবরের সহিত প্রভি-বন্দিভার করী হর, তবে নিষ্টিই "কোটা"র বাহিরেও ভাহাকে নিরোগ করা চলিতে পারিবে। রুজরাষ্ট্রীর শাসনভর প্রবর্তনের ক্লা বংসর পর পূর্বোক্ত চাত্রীওলির ক্লেন্তে সর্ব্যঞ্জার বংরক্তব-ব্যবহারও অবসান ব্টবে।

## হরিবংশ-পুরাণে ভারতীয় সঙ্গীত

#### শ্বামা প্রজ্ঞানানন্দ

ছবিবংশকে ঠিক ঠিক পুরাণই বগা যায়। পণ্ডি**ড উইন্টার-**নিজের অভিমত্ত ভাই। তিনি বগেছেন:

"\*\* the Harinamsa, a work which in reality a Purana and is also occasionally called 'Hariramsa-Purana' as part of the Mahabharata."

হবিবংশ মহাভাবতেরই যে পরিশিষ্ট ('a supplement or appendix') একথা 'বিল ছবিবংশ' নাম থেকেই প্রমাণ পাও। বার। বেশার ভাগ পণ্ডিভেরই অভিমত বে, সমগ্র इतिवर्ण-भूतान अकडन याज शहकात्रहे तहना करतन नि, जिन्न ভিন্ন ধংশ ভিন্ন ভিন্ন গ্রন্থকারই বরং বচনা করেছিলেন।১ ঙ্রিব-শের ভিতর বামায়ণের কিছু কিছু ঘটনারও পুনকল্পের আছে। তা ছাড়া বায়ুপুরাণের বেন্দর ভাগ म्बर्टनत উল্লেখই আবার হরিবংশে পাওয়া বায়। মহা-ভারতেও বায়ুপুরাণের উল্লেখ অনেক জায়গায় আছে। পণ্ডিত উইণ্টাবনিক, হণ্ডিক, হোণ্টম্যান, ভাগ্ডাবক্ব এঁদের সকলের অভিমন্ত যে, বায়ুপুরাণের অধিকাংশ ঘটনার কথাই হরিবংশে উল্লেখ করা হয়েছে। রামচন্দ্র দীব্দিত্ব, ভাণ্ডাবকৰ, দি. ভি. বৈষ্ণ প্ৰভৃতি প্ৰদিদ ঐতিহাসিকেরা বাযুপুরাণের বচনাকাল শুপু রাজাদের नामत्त्रत्र भगत्र वर्षः मध्या करवरहनः। वामठक गोक्किव বলেছেন :

"The version of the Visua-Purana with regard to the Mauryan dynasty, and of the Vuyu-Purana to the early Guptas has found general acceptance among scholars. The Vuyu version of the Gupta rule is believed to be a description of the reign of the Chandragupta 1, who ruled Magadha from 320-330 A.D."

পত্তিও উইন্টারনিজের অভিনতও তাই। পাজিটার সাহেব বারু ও ব্রন্ধান্তপুরাণ তৃটিকে আবার একটি মাত্র পুরাণই বলতে চেয়েছেন। মোটকথা বার্পুরাণের বচনাকাল বিদি গুপুর্গের সময়ে হয় তবে বার্পুরাণের আনেক প্রসদ্ধ ও বর্ণনাই মহাভারত ও হরিবংশে উল্লেখ থাকার করে মহাভারত ও হরিবংশকে অবশ্বই বার্পুরাণ তথা গুপুর্গের

1 Vide Winternitz: A History of Indian Literature, Vol. I, p. 443.

পরবতী বলে পণ্য করতে হবে। মধ্চ পণ্ডিত উইন্টারনিজ বলেছেন, স্বার সেয়ে গোড়াকার নিকের পুণ্ণ গ্রীষ্টার সন্তম শতাকার আগে মে:টেই রচনা করা হয় নি।

—

"All that we can safely conclude is that the earlier Puranas must have come into being before the 7th Century, \* \* ."."

वर्छमान প্রবছের আনোচা বিষয় হরিবংশ-পুরাণের বচনাকাল ও বৈশিষ্ট্য নিণয়ে নয়, প্রবন্ধ ভারতীয় স্কীতের প্রিচয় ক্ডটকু ও কিভাবে পাওনা যাম সেটাই দেশার বিষয়। আদিম ভারতীয় দলীতের রূপ বেমনই হোক না क्त-(वन, श्रिकाश्र, निका, बाभावन, भूबान ६ मश-ভারতে সঞ্চাতের বিকাশ-বৈচিত্রা যথেষ্ট পরিমাণে লক্ষ্য করা यात्। देविषक भामजात्मव युग (चटक श्विवः (नव युग ज्वा সময়ের বাবধানে সঞ্চীতের বিকাশে ধথেট রক্ম উন্নতি সাধিত হয়েছিল। হরিবংশের স্থাতে পান্ধার্গ্রামের রূপ ও বাদেরও খণেষ্ট প্রচলন ছিল তা "আলামারগ্রামরাগং" ( >८।२२-२७ ) नक्कांन स्थरक दिन वृक्षा याय । সপ্रयदि লালায়িত ছটি গ্রাম্বাগ ("ষড়,গ্রাম্বাগা,দ" [৮৯,৬৮]), ভিন্ন ভিন্ন বালিনা, ভিন খান, মুছনা, নৃত্য, নাট্য ও বাছ अमृत्वद कान किह्नदह अजाव हिंदियरला पूर्ण दिन ना। त्राचा ও সামগান বেকে আবস্ত করে গ্রামবালের পরিচয়ও পরিষার ভাবেই ছরিবংশের যুগের সমাজে আমরা পেয়ে থাকি।

হরিবংশপর ও ভবিশ্বপরেই বিশেষ করে গাধা, গান, উদ্পান ও সামগানের পরিচয় পাওয় যায়। হরিবংশের মুগেও যাগ্যজ্ঞ ও সত্তের বহুল পরিমাণে অন্ত্রান করা হ'ও। বেমন হরিবংশপরে আছে: "অধ্বর্গানগং বিপ্রং সদক্ষং সদনং সদং" (৪১।৬)। ভবিশ্বপরে দেশা যায়: "অচন্দ্র সক্ষয় পূর্বং সামগানাং চ ভারত" (২৪।১১) অধ্বা "উদ্পার্থনানং বিশ্রেশ্চ সামভিঃ সামগৈহরিম্" (১১৫।৫)। তা ছাড়া 'গান' বলতে 'সামগান'-ই বিপ্র অধ্বাৎ উদ্পাতারা ব্যক্তশালার গান করতেন। ধেমন,

'গানপ্ৰভাৰং সককে গৰবাণানশেষতঃ।
অভেষাং চৈব বিপ্ৰাণাং গানং ত্ৰম প্ৰভাষিত্য ।'(২১১১)
এখানে চীকা কাম নীগকণ্ঠও বলেছেন,

Vide Indian Historical Quaterly, Vol. VIII, December (1932), No. 4, p. 762.

<sup>• 1</sup> Vide A History of Indian Literature, Vol. I, p. 524.

अद्यादक राज्यक इतिकालक क्रियां का अंदेण्यं क्यू वं व्यवका शक्य माळावी गाम विर्द्धण करत्य ।

'গানং প্রভান্ততে ব্যুৎপান্যতেহ্বেবেভি গানপ্রভান্থ গাছর্থ-পান্ধং তথা ক্রক্তবি বেলে প্রভাবিতং গান্ধ সাধাব্যস্থ।'

u हाइ। উদ্যানের कथा हतिवः मनदि नः अश बाह ; ষেধন "উদ্গায়নম্পাগ্র:বিগ্রাভাবহুপ হ ব। পুন:।" চীকাকার नीनक्षे अव वााचा। कतरक निरंव वरलर्डन :"उत्नावनमण्ड क्रिकाः वर्धायस्य । हार्य • • । " व्यवनायस्य क्या जूलस ভিনি আবার বলেখেন: "সোমায় • • অধা নম: ইভি পূর্বমিভি উদগায়নপ্রাদেবাত 🛊 🛊 ।" স্বাহাকারেণায়িং মোটকথা चाहा अथवा चर्षा मध्य माशास्त्र हाम स्वय ও ভালষেপে গান করা হ'ত ভাকেই 'উদ্যান' আখ্যা (मुख्या हरवर्छ। ু পাথাপানের পরিচয় সম্বন্ধে হরিবংশ আবার হরিবংশপর্বে বংলছে: (১) "ডম্ম মঞ্চে পুরা গীতা পাথাঃ প্রীতৈর্মংবিভিঃ" ( ১৯,৬২ ) ; (২) "গাথান্চাপ্যাশনো-পীতা ইমা: শুলু ম্বেবিভা" (২১:১১৯); (৩) "ইভ্যেতা হাশনোপীতা পাথা ধাৰ্যা বিপশ্চিতা" (২১/১৩৭); (৪) "रुज रुटक करनी नाथाः नवर्ता नायम्ख्या" ( ७७ ১२ ; (e) \*शैश्यानाक भाषाक (मर्गःखवामिष्" ( ৪१।৪৬ ); (-७ ) "ভত্তাসীৎ প্ৰথিতা গাৰা যাদবানাং প্ৰিয়হবা" ( ৩৫।৩১ )।

এখানে 'গাখা' বলতে যাগ-যজ্ঞে মন্ত্র উচ্চারণ ক'রে ভিন্ন ভিন্ন খবে গান করা বুঝতে হবে; কারণ ভানা ছলে শিক্ষা ও সধীতশাল্পে তুই স্বরে গান কথাকেও 'পাথা' অথবা গাথিক গান ব'লে উল্লেখ করা হয়েছে। বেমন 'অরিমীলে পুরোহিতম্' এই শবস্তুলি গান করতে (भारत दक्रत राज्य-मधाय, यक्षत्र-भक्षम व्यथवा (र दिनान ছুটি শ্ববের সাহায়েই গান করার রীভি ছিল। গাখা-পানে ছটি খবের অধিক মোটেই ব্যবহার করা হ'ত না। এ ধরণের পাধা অধবা পাধিক পান বৈদিক যুগের গোড়াকার দিকে গাওয়া হ'ত। তথন সন্ধীতের শৈশব-কালই বলতে হবে ; সমীত আচিকের হুর কাটিয়ে পাথিক ষুগে ভখন পদার্পণ করেছে মাত্র। পার্থিক অথবা এই ধর-ণের গংখা-গানের পবে আবার সামিক গানের যুগ প্রবর্ত্তিত হয়। সামিক গানে ভিনটি খরই (সমণা বা ন্সরা) সাধারণতঃ ব্যবহার করা হ'ত। এই সামিক যুগকেই সামগানের যুগ বলা ধার। শিকাঞ্জিতেও সামপ্রতি-শাখ্য পুষ্পস্তত্ত্ব দেখা যায়, সামগানে ডিনটির বেশী স্বরেরও ব্যবহার করার পদ্ধতি ছিল। বেদের এক একটি শাখায় ভিন্ন ভিন্ন খবের ব্যবহার করার কথা আছে এবং সেদিক দিয়ে সামগানে চাঃ, পাঁচ, ছয় ও সাত খবেরও বাবহার করার রীতি দেখা যায়। সমীতরত্বাকরের চীকাকার কলিনাথ **त्रिक्टक "मात्रार कू जियत्रपर मश्चयत्रदावश्मि मङ्गामित्रामज्ञ-**বিব্দয়া" কথাওলির উল্লেখ ক'রে ঐ কথারই ইলিভ দিয়েছেন। সামপ্রাতিশাখ্যেও বলা হয়েছে:

"এতৈভাবৈত গায়তি গ্ৰাঃ পাৰাঃ পূৰক পূৰক। পকৰেৰ ভূ গায়তি ভূতিগাঁনি ব্যেষ্ ভূ । লাবানি বটুহ চান্যানি সভত্ম বে ভূ কৌধুৰাঃ।"

নারণীশিক্ষাকার নারদও ধবেদ ও তৈত্তিরীয় সম্প্রনার এবং সামবেদের সামগানে প্রচলিত খরসংখ্যার উল্লেখ করে-ছেন।৫ কাজেই একথা ঠিক যে ছরিবংশে যে, 'গাখা'-গানের উল্লেখ আছে ভাতে নির্দিষ্ট খরসংখ্যার কোন উল্লেখ না থাকলেও সেই গাখা-গান ভিন্ন ভিন্ন খবে ব্যঞ্জঃ উদ্দেশ্যেই নিশ্চর গান করা হ'ত বুঝা যায়।

হরিবংশ-পর্বে আবার ছ'টি গ্রামরাগের কথারও উল্লেখ পাওয়া যায়। যেমন.

> 'ছালিক্য লেখং বহুসন্নিধানং যদেব পাঙ্গতুদাহনতি। জ্ঞাহ বীধানৰ মানসভ

ষ্ট্ৰাম্যাগাদি সমাবিষ্কাম্।'' (৮৯,৬৭-৬৮)। টীকাকার নীলকণ্ঠও ষ্ট্গ্রামরাগের বিবরণ দিভে গিয়ে ভাই বলেছেন: "ষ্টু গ্রামা: স্থ:নানি ষেষাং রাগাণাং তৈর্ব: সমাণি: 5িজৈকাগ্নং ভদ্ৰস্তা: ভাম্। তেচ মধ্যশুদ্ধভিন-গৌড়মিশ্রমীতরূপা: ." এই গ্রামরাপের কথা নারদীণিকার ভেডবেও পাওয়া যায়; যেমন "অৱবাগবিশেষেণ গ্রাম্বাগ; ইডি স্বতা:।"৬ কিছ দেখানে গ্রামরাগদের সংখ্যা বা কোন নামেরও মোটেই উল্লেখ নেই। নাট;শাস্ত্রকার ভর্মত ছটি মাত প্রামের নাম করেছেন ও ছু'জামুগায় 'রাগ' **मत्यात छ देवर करबरहन, किन्ह श्रामदाराद कथा किहू**हे বলেন নি। ভরতের সমসাময়িক দক্তি:লর কথাও ভাই। ভরত ও দত্তিৰ ছ'জনেই ছটিমাতে গ্রামের উল্লেখ ক'ৱে ভাদের জাভি তথা জাভিরাগের (१) কথাট বলেছেন। কিছ আশ্চর্যের বিষয় মতক তাঁর বুহদেশীর রাগলকণে ভরভমুনির কথা উল্লেখ করে বলেছেন: "ভথা চাহ ভরতমূনি:—'লাভি-সভুতবাদ্ গ্রামরাগানামি' তি।" । মতদ কাশ্রপের উল্কিও তুলে দেখিয়েছেন। কিন্তু এই ভরতমূনি বান্তবিক পঞ্চে নাট্যশাস্থকার ভরতই কি-না এ সংখ্যে এখনও যথেষ্ট মতবৈত আছে। কারণ যে নাট্যশাল্প বর্তমানে ছাপা জক্তর পাওয়া বায় ভার কোথাও 'গ্রামরাগ' শব্দের অথবা মতক বে উক্তিটি ভরতের নামে করেছেন তার কোনটিরই উল্লেখ নেই। দবে একথা ঠিক যে, ভরতের নাট্যশাস্ত্র যে আকারে আমরা এখন দেখছি ভার অনেক অংশই নষ্ট হয়ে গেছে। কাজেই হয় মডক ভরতীয় নাট্যশাল্পের সেই লুপ্ত অংশ থেকে এই উক্তি ভূলে দেখিছেছেন, নয় বলা যায় যে<sub>।</sub> প্ৰভৱতের ভিতৰ নাট্যশাস্ত্ৰকাৰ ভণ্নভ ছাড়া নদ্দী,

<sup>&</sup>lt;। निकामःश्रह, मृष् ७३१-७३৮ अहेरा।

 <sup>।</sup> निकामः वरः, भृः ००० छहेता

१ । वृहरक्षत्री, शृः ४१ व्यः

8-04

বৃদ্ধ অথবা কোহল প্রভৃতি অন্ত কোন ভরতের উক্তিকেই উদার ক'রে দেখিয়েছেন। মডদ নিজেও গ্রামরাগের কথা দীকার ক'রে ও ষাষ্টিক ও দুর্গাশক্তি প্রভৃতির মডে গ্রামরাগের কথারও উল্লেখ করেছেন। মডদ "গ্রামরাগা ময়া সর্বে কথিতা লক্ষণাদিতাঃ"৮ ব'লে গ্রামরাগ ও গ্রাম-বাগ থেকে উৎপন্ন ভাষা, বিভাষা প্রভৃতি রাগের কথারও উল্লেখ করেছেন।

সমীতবদাকর প্রশেতা শার্ম দেবও গ্রাম্বাগের কথা স্বীকার করেছেন, ভবে ঠার মতে গ্রামরাগের সংখ্যা মাত্র পাঁচটি: "পঞ্চধা গ্রামরাগা: স্থা: পঞ্চদীতিসমাশ্রয়াং।" এই পাঁচটি গ্রামরাগের নাম শুদ্ধা, ভিন্না, গৌড়ী, বেসরা ও নাধাবণী—"গীভয়: পঞ্চ ভদ্মা চ ভিন্না গৌডী চ বেসরা। माधावनीिक \* \* ।"> हिवदः म-পুরাণে कि%"वড়् গ্রামরাগাণি" ব'লে ছটি গ্রামরাগের কথাই মাত্র উল্লেখ করা হয়েছে এবং नौनक्ष्रे कारत्र नाम मद्यस वरनहान मधा, अस, जिल्ला, जोण, মিশ্র ও গীত। বুল্ফেশীকার মতক্ষের অভিনতে গ্রামরাগ আবার সাভটি ও তাদের নাম ৩%গীতি, িরকা, গৌডিকা, রাগগীতি, সাধারণী, ভাষাগীতে ও বিভাষা, অর্থাৎ "প্রথমা অন্ধৰ্গীতি: তাদ বিভাষা ভিন্নকা ভবেৎ। তৃভাষা গৌড়িকা চৈব বাগগীভিশ্চভূর্থিকা। সাধারণী তু বিজেয়া গীডজৈ: পঞ্চমী তথা। ভাষাগীতিস্ত ষষ্ঠী স্থাৰিভাষা চৈব সপ্তমী ॥"১০ মতক তার বৃহদ্দেশীতে কিছু যাষ্ট্রক, লাভুলি ও ভুর্গালক্ষির অভিমত এবং সঙ্গে সংখে ভংতের মতে মাগধী, অধুমাগধী, সংভাবিতঃ ও পুথুগা এই চারটি গীতির নামোলেখও গ্রামবাগ অথবা গীতি-সংখ্যা শার্ক দেবের মতে পাচটি, ষ্টাকের মতে তিনটি ও চুর্গশক্তির মতে মাত্র ছ'ট। কাঙ্গেই হবিক'ণে উলিখিত ছটি গ্রাম-वार्शिव खेलार बाक्त हवाद किছू तहे. कादन मध्यमाइ-एक्टाम शारमद १६ कि व विवयवस गर्वनार कि कि कि একথা পরিকারই জানা ধার। প্রতরাং মতক ও টীকাকার সিংহক্ষণাল যে গ্রাম্থাগের পধায়ে ভবভের চারটি সীভিব নামোরেণ করেছেন ভাভে বোঝা যায় যে, যদিও নাট্য-শাল্পকার ভরত 'গ্রামরাগ' নামের কোন কথা বলেন নি. তব্ও মাগধী প্রভৃতি চাবটি গীতির উল্লেখ ক'বে প্রকারান্তরে গ্রামরাগের কথাই স্বীকার করেছেন একথা অস্তত: প্রাচীন সঙ্গীতশাগ্রকারের। বিশ্বাস করতেন। গ্রাম-

বাগ দশ রকম রাগের অঞ্চতম এবং ফাভি মণবা জাতিগান থেকেই গ্রামবাগের উৎপত্তি বলতে হবে।

এর পর উল্লেখবোগ্য গ্রামের কথা। হরিবংশে 'গ্রাম' কথার উল্লেখ১১ অভি সামান্তভাবে থাকলেও কোন গ্রামের সংক্রা অথবা সংখ্যার কথা স্পাই ক'রে থোটেই বলা নেই। টীকাকার নীলকণ্ঠই বরং "নিষাদর্বভগাদ্ধারবড় অমধ্যম-বৈবতাখ্যান্ সপ্তব্যান্ ব্যাপ্য গ্রাম: কভিপন্নব্যসক্তঃ। ডেচ এর:। রাগে। বসস্তাদি" কথাগুলি উল্লেখ করেছেন। কিন্তু সে সব কথা ছেড়ে দিলেও হরিবংশকার ব্যবন "আগাদ্ধারগ্রামরাগং গলাবভরণং তথা" কথাগুলির উল্লেখ করেছেন তথন নারদীশিকাকার নারদের মত তিনিও বে বড়ুছ, মধ্যম ও গাদ্ধার এই ভিনটি গ্রামই খীকার করতেন 'এ বিষয়ে কোন সন্দেহ নেই। অধিকাংশ মনীবীদের অভিমতও তাই। মহাভারতেও গাদ্ধারগ্রামের প্রশংসা আছে। ট্রাভ্রগ্রেশ্ব তাই তার The Murio of Hindoostan বইরের পাদটীকায় উল্লেখ করেছেন:

"The Harinama (fourth Century A.D.) speaks with enthusiasm of music composed in the agandharaga, the scale which comes down to gandhara', i.e. which, if taken upwards, begins on Ga.">>

মহাভারতে গাভারগ্রামের কথা ট্রাঙ্গমেজ ও পপ্লেও উল্লেখ করেছেন।>> কাজেই একথা ঠিক যে, মহাভারত ও হরিবংশের যুগে গাভারগ্রামের প্রচলন গোকসমাজে ছিল। তবে এরকম হতে পারে হৈ, ব্যবহারে সম্প্রদায়ংগে ছিল অথবা সমাজ বিশেষে গ্রামগুলিকে ব্যবহার করা হ'ও।
কেননা নারদী-শিক্ষায় নারদ গ্রাম তিন্টির ব্যবহারে সমাজতেদ দেখিয়ে ব্লেচেন.

"বদ্ধনব্যনগাভাৱালনো আবাঃ প্রকীতিভাঃ। ছূর্বোকাজারতে বদু ছো ভূবর্বোকাজ বব্যব। বর্গালাকু গাভারো নার্থত যতং ববা।"১৪

শবশ্য এই বিভেদ নারদের নিজের, কেননা 'নারদন্ত মতং ষ্ণা' ব'লে একথা তিনি শীকারই করেছেন। শামাদের মনে হয়, হরিবংশের যুগে পৃথিবীলোক তথা লোকসমাজেও গাছারগ্রামের প্রচলন ছিল। শুগলোকে প্রচলনের কথা নারদীকার নারদ যা উল্লেখ করেছেন সেই শুর্গলোক যে ঠিক কোন্ শাহগায় ছিল তার নিধারণও কিছু এখনো কিছু হয়

৮। বৃহদ্দেশী, পৃণ ১০৪ জণ। তথে একখা ঠিক যে, প্রাসনালের উল্লেখ থাকলেও নাগলখন এবং নিয়মিত বিভাগের কোন উল্লেখ নেই ।

<sup>&</sup>gt;। मकोरुवचाक्त (Adyar ed. ) २४ छात्र, १० ० छ॰।

<sup>&</sup>gt; । वृहरक्षी, १० ४२ अवर महो छवक्षाकरवत्र मिश्हकुणांत्मत्र हीका अहेवा (महोकाक्षाकत, [Adyar ed.] २व कान, १० ८-४)।

<sup>⇒</sup>১। इतिदःम, विकृष्यं a6.२8 ख°।

<sup>&</sup>gt; Vide The Music of Hindoostan, p. 111.

<sup>&</sup>gt;> 1 Vide The Music of Hindooston, p. 11; 4:: The Music of India, p. 10.

<sup>38 |</sup> निवास्त्रश्चर्, शृं अस्त्र <u>क</u>ा

নি। প্রাণের বৃদেই দেখা যার, জীটানদের মতে মর্গ ও নককের পার্থকা সাহিত্য, ইতিহাস ও নাটকের ভিতর বেশ ফুল্লাট্ট হয়ে উঠেছিল। নরকে চুছর্ম তথা পাপের শান্তি ও মর্গে শান্তি ও আনন্দের ব্যবস্থা করা হয়েছিল। মর্গে গছর্বআক্রাদের আবার অবাধ গতির কথাও বর্ণনা করা আছে।
এই স্বর্গলোক অনেকের মতে বর্তমান কান্দাহার বাকে
দক্ষিণ আফগানিন্তান বলা বার। এই কান্দাহারকেই গর্মবলোক ব'লে অনেকে বর্ণনা করেছেন। কাছেই ম্বর্গলোক
কলতে কান্দাহার অথবা গাছার যে কোন একটা জায়গাই
লোক না কেন, গর্মবদের প্রিয় গাছারগ্রামের প্রচলন বে
হরিবংশ ও মহাভারতের বৃগেও স্কীতসমাজে প্রচলিত
ছিল তা "আগাছারগ্রামরাগং" কথাগুলি থেকে অসমান
করতে মোটেই বই পেতে হয় না।

হবিবংশে সভীতের অহান্ত অংশ বেমন ভিন্ন ভিন্ন বক্ষমের নৃত্য, বাদ্য ও নাটোর কথারও উল্লেখ আছে। ঘন, স্থাবির, বেণু, মুরজ, মার্দল, তুম্মুভি এবং বিভিন্ন ভন্তীযুক্ত বীণা, কল্রবীণা, নান্দি, পটার, মুদল, ভেরী, শল্প প্রভৃতি বাদ্যেরও প্রচলন ভিন্ন। নাট্য অথবা অভিনয় বিবয়েও দেখা যার, হরিবংশের সময়ে ভংতীয় নাটাশাল্লের নিয়ম-কাছনই যথারথ অন্থানরণ করা হ'ত। টীকাকার নীলকঠও সেকথা শীকার করেতেন। বেমন বিকুপর্বের ৮০ম অধ্যায়ে উল্লেখ করা হয়েতে.

> 'ৰ্চচৰায়ানশহাংক বাদ্যান্ ব্য়ালয়াভা ভগৃহ: প্ৰতীভা: । আনাহিভাৱে চ তত: প্ৰতীভা হজোবিভা সাভিনহাৰ্থতত ভা ।

### पवेजन्जाचिमदेवस्यादेव: ।"

এবানে নৃত্যকারীদের ভিতর দেখা বায় উর্বনী, হেমা, বস্থা, মিল্লেকনী, ভিলোজমা, মেনকা প্রভৃতি অক্সরারাই আছে। ছারা নত কাপ্রবেশ, বিভিন্ন বাদ্যের সঙ্গে অভিনয়, নৃত্য ও ক্সিত নাট্যপাল্লের নির্মাল্লয়ারীই সম্পন্ন করত। টীকাকার নীলকর্চও ভাদের পরিচয় দিতে গিয়ে বলেছেন: "আসারিভাম্ক ইতি। ভরতো মৃনিক্ত্বিধমাসারিভং নৃত্যাবিধার্পদিদেশেতি। প্রথমং নত বীপ্রবেশং, ভভকাসারিভার্থাভিনরং নাটাং, ভভজালাল্লপভ্যালাহ্রকং, ভভোদেবভাচিক্রপেণ নৃত্যম্। এবং চতুর্ব পাভিসারের্ভৃত্য। এবং মৃত্রিকারের্ভৃত্য। এবং মৃত্রিকারের্ভৃত্য। এবং মৃত্রিকারের্ভৃত্য। এবং মৃত্রিকারের্ভৃত্য। এবং মৃত্রিকারের্ভিন্ন। এবং মৃত্রিকারের্ভারিরারিকার বিধারার বে, বীণা ও মৃদ্ধবোপে মৃত্রি প্রামরারার

গাওরা হছে, এমন সময় বভা থিগে সাভিনয়ার্যভল্ আ'—
আভিনয়-স্চতুরা অকারা রভা প্রথমে রজমঞ্চে প্রবেশ ক'রে
আভিনয় করতে লাগল। তারপর ('তয়াভিনীতে') বিশালনেত্রা উবনী বলমঞ্চে প্রবেশ ক'রে অভিনয় করক
('অথাবিশ-চাকবিশালনেত্রা')। এইভাবে ক্রমে ক্রমে
মিপ্রকেনী, তিলোডমা, ফেনকা প্রভৃতি অকারারা সকলেই
আভিনয় সম্পন্ন করলে। মৃত্রাম্বুক গ্রামরাপ নাট্যে
সর্বত্রই তথন গাওয়া হ'ত। তবে মৃত্রা বে সঙ্গীতে তথন
কতপ্রলি ছিল তার কোন ম্পাই উল্লেখ নেই ('য়ানেবিধানান্যথ মৃত্রায় । বড় গ্রামরাগেষ্ চ তত্ত্র কার্বং \* \* )।
এই অভিনয়ের প্রসঙ্গে তরত তার নাট্যপাল্পের চতুর্বাধ্যায়ে
উল্লেখ করে বলেছেন,

পূৰ্বেশৈৰ বিধানেম প্ৰবিশেকাশি নত কী। শীতকাৰপ্ৰযোগক বিতীয়াগায়িতত ভূ।"১৫

রক্ষকের কথা বকতে গিয়ে অনেক জায়গায় হরিবংশেও উল্লেখ আছে (১) 'স দৃষ্ট্রা স্বর্থনিমুক্তং প্রেক্ষাগারং নৃশোভ্যাঃ' (২৮,৬), (২) "মঞ্চারোহণমুভ্যম" (২৮.৮), (৬) "প্রেক্ষাগারঃ সকংসসক্ষ" (২৯।১৫)।

মোটকথা স্থাত তথা নৃত্য, গ্নীত, বাদ্য এবং অভিনয়ের কথা ছবিবংশ-পুরাণে উল্লেখ থাকলেও পূর্ণাবয়র স্থাতির কোন পরিচয়ই আমরা সেধানে পাই না। তবে রামায়ণের যুগের চেয়ে মহাভারত ও হরিবংশে স্থাতের রূপ ও সাধন বে অধিকতর উল্লভ হয়েছিল সে বিবল্প কোন সম্মেচ নেই। কাভেই এবংগাই পরিশেষে খীকার করতে হয় বে, রামায়ণকার বাল্লীকির মত হবিবংশ-প্রণেতা অথবা সংগ্রহকার ভদনীক্তন স্থাতিকলার পরিপূর্ণ মৃতি রচনা করতে নানা দিক থেকে অনিজুক ছিলেন, অথবা রাজবংশের পরিচয়েক আসল মনে ক'রে সামানিক রূপের পরিচয়েকেই আসল মনে ক'রে সামানিক রূপের পরিচয়ানের সঙ্গে স্থাতকলারও তিনি কথকিৎ আভাস দিতে চেটা করেছেন একথাই আমাদের খীকার করতে হবে।

১৫ ৷ বিকৃত আলোচনা 'নাটালার' (কাশা সংভরণ), পুং ৪৮-৪৯ রং ১

## শিবনাথ জন্মশতবাবিকী

( बच ७) बाइवांबी ১৮৪१—वृद्ध ७० (मर्ल्डिवव ১৯১৯ )

#### প্রীজীবনময় রায়

পভিত শিৰনাৰ শাস্ত্ৰী মহাশৱের কৰের পর এক শত বংসর পূর্ণ কইল। উনবিংশ শতাকীতে বলমাতা হইবাছিলেন রত্নসর্তা। এক শতাকীর মধ্যে একখেশে এত অবিক্লংখ্যক ননীবীর অভ্যানর পূৰিবীর অভ কোন দেশে বটবাছে কিনা সন্দেহ। পরাধীন দেশ মা হইলে বোব হয় এই একটি মান্ত্র কারণেই বাংলাদেশকে পূৰিবীর অভাত দেশ ও আতি উনবিংশ শতাকীর শ্রেষ্ঠ আতি বলিরা বীকার করিয়া কইত।

উন্বিংশ শতাকীতে যে সকল মহাত্মা ভারতীয় বর্ণ ও সমাৰকে পুনৰ্জীবন দান ও প্ৰগতিশীল করিতে প্ৰৱাগী ঘটৱা সর্বাপ্ত পণ করিয়াভিলেন শিবনার সেই মনীয়ীভিগের মধ্যে একতন শ্রেষ্ট মানুষ ৷ এই শতাকীর সমাত্র-সংভারক চিত্তা-किन वाकिएमस मरवा अकड़े विनिष्टे बासा कारचे अफिएएए. ধাৰাদের চিন্তার ছঃসাহস এবং জীবন ও সমাজে ভাহাকে প্রতিফলিত করিবার ক্ষতা ছিল অপরিগীয়--্যান্সিক শক্তিতে বাহারা হিলেন চর্তমনীর: এট বারার রামচক্র বিভাবাদীশ ভাঁছার শিল্প ঈশ্বরচন্দ্র বিভাগাগর এবং পরে विकामान्यत्व शिक्ष निव निवनाय । निवनात्यत्र हित्रत्व ও জীবনে স্বরচন্ত্রের প্রভাব বেন অক্রাড্সারেট আসিরা পভিত্রাছিল এবং দেইজ্জ ইশ্বরচন্তের চরিত্র ও জীবনের সহিত শিবনাবের চরিত্র ও ত্রীবনের কণ্ডকটা সাগুরু দেখিতে भाते । अ कथा जला य भित्रमांच हित्रकार अवहै। दिनिहै। এট ভিল যে মহং জীবনমাত্রেই জাহাকে আল্লাই করিত এখং নিচ্ছ জীবনকে গেই জীবনের আদর্শে পঠিত করিয়া ভুলিতে অনুপ্রাণনা লান করিত। এই মুচ মৃহ্যি দেবেলনার ব্ৰহ্মানক কেশবচন্দ্ৰ খননী গোলক্ষণি, প্ৰণিভাষৰ বাষ্ট্ৰয় ভর্কালভার, রাষকুক পরসভংগদেব বিভালাগর মহাশর ও ৰাতৃল বারকানাৰ বিভাতৃষণ সকলেই তাঁহার চুরিত্র ও লীবনের উপর প্রভাব বিভার করিরাছিলেন।

কিছ মহং জীবনকে আত্মভীবনে প্রতিভাত করাই শিবনাথের প্রবান সাবনার বিষয় ছিল না। তাঁহার প্রতিভা ছিল
বিচিত্রমূপী ও বেগবান; তাঁহার প্রতিভা ছিল প্রদানীল ও
প্রাণবছ। তাঁহার এই বাভাবিক উচ্চত্তরের প্রতিভা আনারাসে
সংসারে তাঁহাকে প্রভূত সম্পন্ন ও প্রেইতম প্রতিটা হান করিতে
পারিত। কিছ সেই সর্জ্বল ভবিত্রতের নোহ ও কাক্ষরের
লালসাকে, বর্মনাবনা, বর্মনার ও মানবের সেবার তিনি
লোইবং পরিত্যান করিরাছিলেন। বর্ম ও সাংসারিক সম্পদ্ধ
এই মূই কুল সবত্বে ও প্রকৌশলে রক্ষা করিতে চেটা তিনি
করের বাই। তাঁহার অন্তরের আহর্মকে করতে বাভবে

পরিণত ও প্রতিষ্ঠিত করিবার সাধনার তিনি ভোগ, সুধ, প্রতিষ্ঠা ও জীবনকে ভুক্ক করিৱাছিলেন।

"কৰ্ত্তৰ্গ থুবিৰ যাখা নিৰ্ভৱে কুৱিৰ ভাষা বাৰ যাক, থাকে থাক ধন প্ৰাণ বান ৱে শিভাৱে ধরিৱা বৰ পৰ্বাভ সহাম ৱে।" শত্ৰৰ "ৰৱেৱ সাধন কিছা শৱীৰ পভন।"

नियमात्यव मिक्कै अवे छेकि काका कविरवत विजान बाक विम मा। भौरामद श्राणिदक्कविन कर कविना निवनाय अहे আঘর্ণকে প্রভিষ্ঠিত করিয়া নিয়াছেন। ভীবনের প্রভি ক্ষেত্রে প্রভি কর্ম্মে প্রবল ইচ্ছাপঞ্জিধার: ভঠিন পাস্বে "মনের ভান মলিমা" मित्रो भएम भएम छोड़ारक भागत्वत भएम, छहारभन्न भएम, इन्ह সাধনার হুচ্চর পরে পরিচালিত করিয়াছেন। নিজের প্রতি খবার্ত্র করণায়, অভুযাত অবেষণ করিয়া নিজেকে কর্ত্রগাবলে भवाद्य स्टेटल (यन मार्टे : अर्थाप भन कविद्रा, ७ मर्वाप विमर्क्तम विवा. अटमर इ:व ७ हरम मार्टिमाटक छिनि समाबाटन मानि-मृत्य भारत भारत यहन कविया क्रिकारबन । अवेबारमें कार्याह চরিজের বিশেষত্ব এবং শীবনের প্রতিক্ষেত্রে এই জন্মই তাঁছার-জীবন, সাবারণের-ভাপুষের পক্ষে অভুকর্মীর : সংসারত্যামী महाभि ना करेहारे निष्कृत मकल वामना कायना देखाना अवर ভোগলিকা সমন্তই ভ্যাপ করিয়া শীৰ্ষের প্রভ্যেক ক্ষেত্রে ক্রিম সংক্রামে তিনি করী ভ্রমানিলেন। এইকর আমর্শ বিসাবে, चक्रकवित चौरन विजादन, निरमादन क्रांत्रक चामादनत मिक्के चम्रचैनन्द्यांत्रा अवर चौरमनरअद्वाद्यतः भटन प्रकात क्रेवात भटक অসুকুল। এইবানেই ভাঁছার জীবনের প্রকৃত বিশেষত।

#### বংশপরিচয়

দান্দিশাত্য বৈধিক শ্রেমীর বাংজ গোত্রীর রান্ধণ-বংশে শিবনাথের কর হব। শিতা পাঙত হরানক বিভাগানর মহালাইই প্রথম ইংরাজের লবীনে পাঙিতী কর্ম প্রথম করিরা সমারে নিলাভাকন হন। মাতামহ, স্থিবগাত সোমপ্রকাশ-সম্পাদক বারকামাথ বিভাগ্যণ মহালাহের শিতা, হরচন্ত্র ভাররত্ব মহালাহ করি ইবরভারের বন্ধু বিলেন এবং "প্রভাকর" পত্রিকা পরিচালনে ভারকে সাহাব্য করিতেন। মাতুল পঙিত বারকামাথ বিভাগ্যন মহালাহ সংগ্রভ কলেজের ভাত্র হিলেন এবং পরে সেই কলেজেই অব্যাশক নির্ভাক্ত হন। ভাহার নভানিটা ও তেজবিতা স্থানিটিত হিল। শিবনাথের মাতা গোলক্ষণি বেশী, বেষন তেজবিনী হিলেন, গ্রামিটাও তেমনি ভাবার প্রবল হিল। এই সকল পরিচয় সংক্ষেপ্ত হলেজে

अरेक्ड रिमान य निवनाय डेजन्मारम स्व जनम बर्रश्रव অবিকারী হইরাছিলেন, ভাহার উৎস কোবার ভাহার সভান বিলিবে। পিতা হরানক ও বাতাব্য হংচল্ল বড় প্রবসিক ৰাত্ব হিলেন। শিৰ্মাণ এ ৩৭৪ পূৰ্বাভাৱ উচ্চাদের নিকট ভ্**ইতে উত্তবাৰিকাৰণতে লাভ ক**রিয়াছিলেন। ত্রাক্ষ্যাব্যের তংকালীন ওক্রণভীর আবহাওরার বাস করিয়াও সে হাত-কৌতুক্বৰ তাহাত্ৰী কৰ্মত শুক্ত হয় নাই। শিতাত্ৰ নিক্ট चाव अक्री चर्वव छिनि, चर्वकावी स्वेशविष्ठम--- (मा প্রচত সংক্ষের ঘটতা। পিতকাল ঘটতেই এই ৬৭ট তাঁহার इदित्व दमना विदाधिन: अदेनात्म विमानानद मधानद्वद देननदर्व प्रकृष्ट निरमाद्वर अक्षेत्र पादक चादक । अक्षेत्र प्रकृत विशिष्ट वाशावत वृता याहरत । निवनाय निविदास्य, वामा-বের বাডীভে শালঞাম, শিব, পঞামন প্রভৃতি শৈতৃক ঠাকুর विलय । अधिवित चन्नवाश्य छात्रात्वत चटक निर्वत्वत मा করিয়া কাছারও আহার করিবার অবিকার ভিল না। আহার छवन अ। वरभव वरभ। (क । य चानाव मावाय अ मरकब চুকাইয়াহিল, বলিতে পাৱি না; আমার বহুর্জন পণ ছিল, ঠাকুৰদের নিবেদিত অন্ন আহার করিব দা। একচ বাবার ও বার হাতে ওরতর প্রহার সহ করিতায়, তবুও নিজের জেন হাঙিভাষ বা "

পভিত শিবৰাৰ তাঁহার বর্ষনিঠা ও ইবরে বিখাস লাভ করিয়াইলেন তাঁহার প্রশিক্ষাক রামকর তর্কালভার ও তাঁহার যাতা গোলকরণি হইতে। রামকর নিত্য পূলা-আহিক শেষ করিরা ক্ষণে পলিতেন এবং কণ ও বাান শেষ হইলে শিবনাবের ভাক পভিত। শিবনাব বলিরাহেন, ''আমি তবন দিগবর বৃত্তি বালক। বা আমাকে বেলার ভিতর হইতে বরিরা আনিতেন। অর্থনি হুই কনে হাতে হাত দিরা নৃত্য আরম্ভ হইত। রোক একই গাম করিতেন মনে আহে—

#### হুৰ্গা হুৰ্গা বল ভাই হুৰ্গা বই আৱ গভি নাই।

এই সাধু সিঙপুক্তবের স্থতি আনাদের পরিবারে জীবভা নিবারে। উদ্বাহ স্থতিচিক বন্ধপূর্বক বন্ধিত হইতেছে।" আরও লিবিরাছেন, "প্রশিতানহুদের আনার নাতার নর্মাতা ওক ছিলেন। তিনি (জননী) সম্প্র জীবনে ঐ সকল উপদেশ হইতে একপদও বিচলিত হন নাই। বর্ষাবন উদ্বাহ প্রতিদিনের কার্য্য ছিল। নাই দিরা নিব গড়িয়া নিত্য পূজা করিতেন। বাবার অর ঠাকুরকে নিবেদন না করিয়া কাহাকেও বাইতে দিতেন না।"

#### क्या ७ (मनव

বাংলা ১২৫০ সাল, ১৯শে যাদ, বাড়ুলালর হরিবাভি এাথে পাঙিত শিংৰাথ পাত্রী যাভাষহীর কোডে জয়এহণ করেন। বৰ্ণৰ ভাষার বয়স হাত্র হয় বাস তথ্য ভাষাকে লইবা ভাষাক ক্ষমী তাহাবের নিক বাগ্ঞায় মক্তিপুরে আসেন। মক্তিন পুরে আনিরা রক্তকের্থার রোগে শিবনাথের জীবনাত হইবার উপক্রম হয়। অতি কটে প্রাণে বাঁচিলেন বটে, কিড দেহ ক্ষের বত কর হইরা "হাত পা হিনা পঢ়িয়া পেল।" বেহের এই বৈক্ল্য ও হর্মলতা তাহার জীবনে শত বিল্ল উপন্থিত ক্ষিত্রেও প্রচণ্ড মানসিক বল ও সহরের অপরাক্ষের মুচ্তার তিনি জীবনের সকল বাবা কর ক্ষিয়া সার্থক হইয়াছিলেন।

বিভকালের ছই জনের কথা আমরণ ওাছার স্তিতে উজ্লেল হইয় ছিল। প্রথম কন ওাছার কনিঠা ভরী উবাধিনী। বিনাশ লিখিরাছেন, "আমার ছর বংসর বরুসে আমার ভরী উবাধিনীর কর হয়। উথাদিনীকে আমি প্রাণের সহিত ভালবালিভাম। সর্জ্বাই কাঁবে করিরা বেছাইভাম; কোশাও কিছু ভাল ফল বা কুল পাইলে ভালার কন্য আনিভাম। বা সভ্যার সময় আমাদের হুই ভাইবোদকে থাওরাইরা দিভেন; আমরা হুই জনে গিরা শহন ক্রিভাম। আমার ক্রমাণজ্ঞি শৈশন হুইভেই প্রবল ছিল; কত ধে গল্প বানাইরা উবাধিনীকে ভ্যাইভাম, এবন মনে হুইলে হালি পার।"

এই উথাদিনী এক এীখের চুইতে মারা যায়, শিবনাবের বরুস তথন বার বংসর। মুভূকোলে উরাদিনীর চক্ষে যে অলথার। বহিরাহিল ভাষা আয়ুত্য ভিনি ভূলিতে পারেন মাই।

খিতীয় কৰ উচ্চাদের ৰাজীর এক দাসী। তিনি লিবিয়াছেন, "আহার আনের সকার হইলেই দেবিলাম চিডাই আহাদের হার্ত্রীকর্মী। আমরা তাহাকে দাসী বলিয়া মনে করিতাম না, চিডাদিদি বলিয়া ডাকিতাম। চিঙা সকল কর্পেই পটুছিল। বন্দ হকৈ কাঠ কাটীয়া আমিত; কাল, পোলো প্রকৃতি লুইয়া প্রামের প্রান্তর্মী বাল হইতে মাছ বরিয়া আমিত; গেন-দোহন করিত, বাজার হাট করিত, বান ভানিত; সর্ক্রোপরি আমাদের প্রতি কেহ কোন অভ্যাচার করিলে বাদিনীর ন্যায় তাহার বাতে গিয়া পভিত।"

এই চিডাদিদির সাজ্মের শীবনে কোন দিন তিনি বিশ্বত হুইতে পারেন নাই।

#### পিতা ও মাতা

শিবনাথের পিতা হ্রানন্দ বিভাসাগর, ইন্মচন্দ্র বিভাসাগর মহাশর, মহনবোহন তর্কালকার প্রভৃতি তংকালীন প্রগতিশীল সমান্ত্রেকদিশের সংস্পর্কে আসিয়ায়িলেন। তাঁহার মতানত একটু উঘারতাবাপর হিল। তিনি শিবনাথের বাতাকে লেবাপড়া শিবাইরাছিলেন। এবন আমাদের পক্তে বার্বাক্রা কটিন যে এই বাংলাদেশের অঞ্পাড়াগাঁরে বাস করিয়া স্থাকে দেবাপড়া শেবানো ব্যাপারে কতবানি চুচ্চিত্রতা ও বীর্ব্যের আরক্ত হিল। শারীরহাশর পাঁচ বংসর ব্যুদ্রে পাঠশালার তর্তি হুইলে তাঁহার বাতা তাঁহাকে পড়াইরা দিতেন বলিরা পাঠশালার অন্যান্য বালকেরা পড়ার তাঁহাকে

আঁটিয়া উঠিতে পারিত না। শিবনাবের উভয়-প্রভান্তর ভ্রিয়া ভর্মবাশয় এক দিব অবাক হইয়া দিল্লাগা করিলেন, "ভোকে কে পড়া বলে দেব রে ?" শিবনাবের যা তাহাকে পড়া বলিয়া দেন ভ্রিয়া ভর্মবহাশয় একেবারে হতবাক্ হইয়া প্রেন্ম। এই সময় সম্বর্ধ-ক্রোরেল সভ হাতিলের আমলে দেশে অনেক ওলি আদর্শ বাংলা ছুল ছালিত হয়। এইরূপ একটি ছুলে শিবনাবকে পাঠশালা হাড়াইয়া আমিয়া ভর্তি করা হইল। মন্নমেছেন তর্কালছারের শিওশিক্ষার অনেক পাঠ মিঞাকর ও ক্রিতার মত ছিল, সেওলি ভাঁহার বছই ভাল লাগিত। ঐ শিওবরসেই শিবনাব বর্ণ মিলাইয়া মুবে মুবে ক্রিতা করিতে পায়িতেন।

अरे मश्राहरे बारमारम्यन सार्य मृज्य मण्डान चारमाक क्षर्यं क्रिए चावस क्रियासिंग। स्त्रिमात्र प्रश्न मार्थ अक्कन भूराकत छेरभार ४ (छ्ट्रेश अवर आस्त क्व-भारतत व्यर्गकृत्मा मक्मिन्द आरम अकड हेरदको यम श्वाणिक एवेल । देशायावे केश्मारक "बांकलमूब माजिका" নাৰে একবানি কাৰ্যকও বাহিত্ত হইয়াছিল। ভাতত ভালাৰ पर मार्थ बार्थव यदाविष्ठ अक अमरणाक बार्यव बाक्य-প্রিত ও জানী মাথুষ্টের প্রয়া জানামুশীলন করিছেন: ভতবোৰিনী পঞ্জিতার ভিনি প্রাছক ছিলেন এবং ভাঁচারই कार्ड पूर मिरक्क पर आध्य बाखवार्यत खगाव विषया महिदेशन ख बार्यं नानावित छेव्च विवास महा छेश्मार्ट কাৰ কবিতে থাকেন। ১৮৫১ সালে প্ৰায়ে বালিকা বিভালয় স্থাপিত হওয়া মাত্রই শিবনাথের মাতা শিবনাথের ভগিনীদিগকে ভাৰতে প্ৰেরণ করিলেন। জমিদার বাবুরা বাঙীতে বাঙীতে লোক পাঠাইলা বালিক: বিদ্যালয়ে 'যে যেয়ে পাঠাইয়ে ভাকে अकारत करते विभिन्न नामादेश हिल्लम । अकारत है श्राप्त शाकीत्या यह कतित्वन, त्करण निवमात्वध भाषाणिष्ठात पृह-চিত্ৰভাৱ ৩০ে তাঁহার ছই ভগ্নীকে লইবাই পঞ্জি মহাশর ছল চালাইতে লাগিলেন। শান্তীবহালর লিবিরাছেন, "বিদ্যা-সাগর মহালয়ের অনেক লোখ গুণ আমার পিতাতে ছিল।" किमि छ चहिनदी इहेबा शिलन: विलिम, "कि अब वड़ পৰ্তার কথা ? আমার ছেলেমেয়ে পঢ়াব কিনা, ভার ছকুম **অভে** बिर्द ?" बाध्यत्वद क्षकि बजाहात्वद क्षमा बाध्यत्वद नाव्यत्वी कित केश्वादम्ब नक्त्राजी स्टेन क जिनि क्षेत्राद्धे**र क**्षिमादम्ब কার্ব্যের প্রশংসা করিতে লাগিলেন। আছবর্ত্তের প্রতি লিব-मार्यत चाक्टे स्ववात देशाव चनाठम कादन प्रदेशकिन। चवह कोइटकत कथा बहे था. क्लिकाणात निवनाथ वर्षन मठाहे ৱাম্বৰ্ষে ৱতী দ্বলৈন এবং বহু চেষ্টাৰত শিভা ভাছাকে किंबारेट मा शाबिया (बरन किविया (बरनम माछा छोराव विवर्ध बूचे व्यविश विकामा क्वित्मम-"अमा, कामात बूचे এড ব্লাম কেন, ছেলে কেমন আছে ?° শিভা সংক্ৰেপ शकी व पदा विवासित्य. "(म बदादा ।"

#### জীবজন্তব প্রতি ভালবাসা

वाश रुकेक, कृत्म निश्नाय भार्त्व अर्थनव स्टेटल नागित्नम । किंद क्विम प्रकारका महेशा वा क्विम मानावन विमा विभिन्न ডাহার ড'র হইত না। হোটবেলা হইতে জীবজর ও পাবী (भाषा अवर कालारक सावकाव सामात-विसास मदारवस्य सर्वा. ডাঁহার প্রার একটা বেশার ষত হিল। এমন কি শিশীলিকার প্তিবিধি পৰ্যায় লক্ষ্য কৰিবাৰ চেটাৰ ভাষাদেৰ প্ৰিভ স্থানা-**७ कि भिनः पुनिएक पुनिएक औरक्वारत छन्नत स्टेबा वाटेरछन।** নানা রক্ষের পাবী, বিভাগ, কুঠুর প্রকৃতি পুষিদ্ধা ভাষাবের পরিচর্বা। করিয়া ভাঁহার যেন আন আর বিটিত না। পরে এক-দিন একট নুতৰ পাৰী দেবিলা তিনি ভাহার গুডবিবি দেবিভে व्यवित्व बाखाव केष्ठिका अवक्वादि कवव क्रेश विवादिन। ওদিকে পোলবন্দী সাহেবের হাতী আসিতেছে। পাড়ার লোকে क्रिंडिट्डट्स---"बिंग बिंग, लागः लागः।" छारात त्मिर्क दिशाम मार्थे। कार्त्व अक्ट्री होरकाव खर्चन कविटल्ट माज. कि क अभ्यूर्ग (6 छन। स्टेट्डिया मा। अयम अयब स्टार (बट्यम দাতী ভ'ড় দিয়া তাঁহাকে ধরিবার চেটা করিতেছে। ছাতীর ভাঁত থেৰিয় তথ্য তাৰে চীংকার করিয়া তিনি সরিয়া গেলেন। এমনি ভয়রতা ছিল জাঁহার সকল বিষয়েই। তিনি লিবিয়াছেন, "अक्षात काक कविष्ठ पाकिल, शकार स्टेख छाविता আৰি ভনিতে পাইতাৰ মা: বাবার বিখাস কবিল বে আমি কালা হইবা বাইডেছি। এই ভাবিষা বাবা আমাকে কলিকাডা व्यक्तिक करनाव्यत चाउँहै-(बार्ट्स नदेश शिलन। छर्पम ডা: ওঙীত চক্ৰৱৰ্তী আইট-,ভাৱে বলিতেন। তিনি প্ৰীকা ক্রিয়া হাসিয়া ব্লিলেন, 'এ ছেলে ত কালা নয় ।'"

(महार्मक भूव स्टेट्ड वाका (वनात कर्मः कविदा नानम क्तिशक्तिम विषयः कुकूटबब नाम प्रशक्तिम "(अश्राम-वाकी"। अरे व्यवानवाकी विभ व्हानव्यव व्यवस्य विनिक्षे मनो। मक्न द्वनाटाई (म उंश्वासित मनो १६७। हरू.देखांख कविटल यारेटवर (नवानवाको जाम अटन पादह । चाराबारक यथन नूरकाहृति र्यनः स्टेड स्मर्क छारायत मस्छि मबारम बरमब बरवा श्रकारेया विभाव वाक्रिक अवर निवमारवत দলের সকলে ভারাকে বুঁজির। বাহির করিত। এভিবেশীদের পুৰাতন দালানে চুকিলা পাললা ব্রিতে হইবে, দলবল সিলা भ्याप्त कृष्टिहारकः। किन्द अक्षेत्र वक्ष भूम किन स्वेद्यारकः। यह পুরাতন। সরকা কানল। তালিয়া এত গঠ ব্টয়াছে যে সেওলি বছ কৰিবাৰ ভৱ অনেকখলি ছেলেকে খবে চুকিয়া গৰ্ভে পিঠ বিৱা হাড়াইতে হইতেহে। চৌকাঠের কাহে একটা গর্ভের ক্ষ चार लाक भावता वार्टिकार ना। अवन भवत एवं। त्रेन শেরালবাকী আলিরা উপরিত। বাস সম্বলে নিশ্চিত্র। শেরাল वाकीरक वना रहेन "बहे शर्खंब मर्या तक विरव वर्ग बाक. दिश्वित दिन अ यावना दिस्क मिन्त्र मा।" त्मेशानवाकी क्षेत्रक হইয়া বলিল। ভাবিতে আকর্ষ্য বোধ হয় যে শেয়ালবাকী বালকবের কথা ব্রিত কি করিরা। বেলার সমন্ত কোতৃক ও বসটুকু বালকবের সকে দে বেন সমানে উপভোগ করিত।

चार अक्षित्मव क्या माजी बरामद निविदास्य-"(मदान-बाको बाबारमब जरम बाबारमब बुबीनकरक मदेवा बार्ट्ड वाहेक। कि कात्रत्य त्यन बाबामत्क विषाय कता स्टेबाविम । वृशी पत বাৰা পঢ়িল, ভাছাকে চরায় কে ? বাবাকে বলিগাম, বাবা, **त्यवानवाकोटक विराम (भ नक्ष क ब्रह्म आगरण भारत ।' वावा** खिनाः श्राभित्मन, 'शाः, कृकूरत धारात मक हताता।' किथ সভাই শেরালবাকী গরু গইয়া বাইতে আরম্ভ করিল। একখিন সন্ত্ৰা হইয়া গেল গৰু আৰু আংসে নাঃ বাবা ও যা চিখিত स्रेटि मानित्म । चवत्मद्य त्यमा तम दय क्या त्यज्ञानवाकी ৰহা চীংকার করিতে করিতে আসিতেছে। সলে গরু নাই। व्यानिता वाबारमञ्जूरवन भिरक हारिया हो देवा करत. अकह र्दोक्षित्र यात्र व्यावात काकात, व्यावात निकटके क्षक्रित व्याटम, बूर्वव क्रिक हांव, छाटक, जावाब होकिया याव, जावाब क्षेष्ठाव । छवन चाववा निवा एपवि, अक्ष्यत्नवा चावारभव नक ৰীৰিলা লাৰিলাছে। ভাছালা শেলালৰাকীকে দেবিলা বলিভে मानिम्--- 'अरब, कुक्वके। भावात आरम्स : निरम् मात्र (वरस সিবে বাছীর পোক ভেকে এনেছে'।"

কাবদ্বর প্রতি এই ভাগবাস। ও আগ্রহ ওঁছোর বচিত প্রত্যেক উপভাবে একটি বিশেষ কৌতৃক্রতিত আমন বলের স্কুট করিবাছে। কুথুর, বিভাগ, পদ্দী ও শিওগিগের ছাম কীহার উপভাবে তৃক্ষ নঃ।

### কলিকাতা-শিক্ষঃ

यत बरभव वदाप्र निर्भारयत छेन्यत्र स्टेन । अनिजायस बिका बिद्धा विकर्त महेवा काशा क बाहेरक লাসিলেন। ইহার অৱকাল পরেই, ১৮৫৬ সালে, শিডা হত্তাৰৰ বিভাগাগর তাঁহাকে কলিকাভার লইয়া আসিলেন। মিজের অবছা দেবিয়া হ্যানক ব্রিয়াছিলেন যে সংস্কৃতে হাভার পাভিতা থাকিলেও ইংরেজী শিকা না হইলে রাজ-কাৰ্য্যে প্ৰবিধা হইবে মা। তাহার নিজের আর কোন কালেই ७८ डीकांव व्यविक एव गारे। किंद व्यामाङ्कण रेश्टबनी निका (क्षश वर्गात्क, क्षण्यार छारा छाराव मार्याव অভীত হইল। ভাহা হাছ। ইবরচন্ত বিদ্যাসারর মহাশর ভবন जरक्र करणात्कव व्यक्षक अवर वाष्ट्रम धावकामान विकास्थन (मर्वाटम च्यानकः) विकामानव महायथ वावकामाटयव नामाव প্রায়ই আসিতেন, এবং চুই আছুল চিষ্টার মত করিয়া পিব-বাবের পেট টিপিছেন। শিবনাবের কুক্টি কিঞ্চিৎ ভারর विन, जारे प्रेक्षण नकायन । विशामानव महानदयव नवायर्ज ७ जाधुकूरमा भिरमान मरप्रक करमरक कर्छ स्ट्रेरमम ।

ৰাতৃলের বাদার থাকিয়া শিবৰাথের লেখাপড়ার ব্যবহা ক্ষুত্র। সঞ্জাবের অবেকগুলি ব্যক্কে বাতুল প্রতিশালন করিতেন। তাঁহাদের কেহ পচে, কেহ বা কিছু কাল করে, কেহ বা নিজ্বা বসিরা থার। আর সে কি থাওয়া। কেহ আর্থনের, কেহ বা তিন পোরা চালের তাত থাইতেন। আরীর-সম্পর্কপুর এক পাল কোরানমর্কের মধ্যে পভিরা ময় বংসরের বালকের বে কি অবরা হইল, তাহা করনা করাও কটন। থালা চুরি বাইত বসিয়া মেটে পাথরের থালা এক একবানি করিয়া নকলকে দেওয়া হইত এবং প্রভ্যেক্ত নিজের বিজের থালা মাজিতে হইত। তাঁহার ভাগো অভিরিক্তও কুটত।

এই বয়স্ক আমা মঙলীটিয় প্রভাব স্বাস্থ্যকর ছিল না। ভাতাদের অভন্ন আলোচনার মুবে পড়িয়া বালক শিবনাবেয় খনিষ্ট হইভেছিল। এই বালককালে একপাল বয়োজোঠ পুরুষের ঘলে বাস করিয়া, বাসনমাজা, বাজার করা প্রভৃতিভে ক্রমাস বাটিয়া বাটিয়া, সকলের মন রক্ষা করিয়া চলিতে শিবনাৰের পাঠের ব্যাঘাত ত ভবিতই উপরব্ধ নামা কু-অভ্যাসও ভাছারা শিবাইভ। কেবল ভাছার অনুভগাধারণ নিবিট-চিত্তভা ও পাঠে তথ্যতার খণ্ডই তাহার পাঠচটা কডকটা অএলর হইতে পারিয়াছিল। এই সময় ভাঁছার তের বংসর ষাত্র বয়স। এই অল বহুসে উঞ্জণ সঙ্গে বাস করিয়াও তাঁছার স্বাভাবিক ও নিউকি দতাপরায়ণতা কেম্ম করিয়া অক্র ছিল खारा खाविरम खवाक स्टेटल स्था। अ मश्रद्ध श्रंकी बहैनाव উল্লেখ ক্রিভেছি: বিদ্যাপাৰত মহাশ্রের পর কাউবেল जार्ट्य छ्यम प्रश्नुष्ठ करण्यस्य च्याकः। करण्यस् अक्षे भाषा **एकः। जकरमर्थे एम लामाय कुछः विभाः निवनायश्च विरम**ः कांधरतम मार्च मकनरक पाछ कतावेश किलामा कविरमम् "(क एक शामाब विरम, विविध शामाक।" मिनभाग कार्विपरक চাৰিবা দেৰেন কেব্ই কাড়াইভেছে লা। ইভিমৰো সাংহৰ খাবার বলিলেন, "ভবে কি খামি বুঝিব, ভোষরা কেছই शकाब बाध नारे ?" निवनाय आब बाकिएक भाविरनन मा উটিয়া হাভাইলেন। সাহেব বলিপেন, "ছুমি সভা বলিয়াছ ৰলিৱা আমি ভোষার মাৰ্জন: করিলাম " বিভীয় বটনাট এই। বাসার বছ বছ ছেলের। ভাষাক বাইত এবং শিবমাৰকে ষ্টানিতে শিবাইত। এক দিন ধারকানাৰ (ডিনি নিজে ভাষাক বাইতেন না ) শিবনাবের গাবে ভাষাকের গম পাইয়া ভিজাগা क्षिलन, "पूरे धानाक बान ?" नियमाय बिल्लन, "है।।" এবং বভবার বেভাবে ভাষাক বাইছা থাকেন ভাহাও বলিলেন। ধারকানাবের মত ওরুগন্তীর রাশভারি সংবত অভিভাবকের নিকট এ কৰা খীকাৰ করা যে বালকের পক্ষে কভ কটিন ছিল তাহ। সহজেই অনুযান করা বার।

এই বার তের বছর বয়সেই শিবনাবের প্রথম বিবাহ হয়।
পত্নী প্রসমন্ত্রীর ববন এক বাস বহস ও শিবনাবের বহুস হুই
বংসর, তথন এই বিধাহ ছিত্র হয়।

ইবাৰ বিছুদিন পৰেই পিতা বদলী বুইৱা কলিকাতা ভ্যাস কৰেন ও শিবনাৰ নাষ্ট্ৰেৰ বানায় সিৱা বাকিতে আৰম্ভ ক্রেন। রোজ বেবিতেন বিভাগারর বহাণর আনিরা উাহার বাড়লের সহিত পরারশ করিতেহেন। পরারশের কলে ১৮৫৮ নালে সোমপ্রকাশ কাগল বাহির হইল। আপাবামার কচ অনেক লোক বালার বাকিতে লাগিল। বালা হরিবাবের গোরাল হইল। হৈ-হাই পোলমাল সমস্ত বিম ও রাজি ১০টা ১১টা পর্বাভ। ভাহার ভিতরে ভিনি বহসে সর্ব্বাপেকা হোট, উাহার বাওরা-নাওরাই বা কে বেবে, পড়াভনার প্রভিই বা কে বৃদ্ধি রাবে। সেই প্রবের হলে পড়িরা বাবেন, বাসম মাক্রেম এবং কোনপ্রকারে নিজের পড়াঙনা করেন। এইভাবে কিছকাল বেল।

ভাষার পরে এ বাসা ভাদিয়া গেল। শিবনার্থ ছ'থিন ইছার বাড়ী হ'থিন উছার বাড়ী করিয়া ভাসিরা বেড়াইতে লাগিলেন। শেষে তাঁছার পিতা তাঁছাকে এক দূর সম্পর্কের দরির আগীরের বাড়ীতে রাবিলেন। ভিনি কম্পোজিটারের কাল করিতেন এবং একবানি গোল পাতার খরে বার্ড্বাসামে বাস করিতেন। এইবানে শিবনার্থকে ছুই বেলা রারা, বাসন মালা, ঝাড়ু দেওরা, বালার করা, কল ভোলা—সর্দর কাল করিতে ছুইত। বার হুত্তে পাঠ্যপুত্তক ও দক্ষিন হুতে ভাতের কাট সইয়া কি ক্টে বে লেবাপড়া শিবিতে ছুইরাছিল, এবনকার ছাত্রপন ভাষা করিতে পারিবে না। এই ক্ষেত্রে বিদ্যাসার্গর মহাশরের জীবনের সহিত ভাহার জীবনের আক্রিবানিক দেবিতে পাই।

ভবদেষে এই সপ্রম কারায়ত হইতে নিবনাথ মুক্তিলাত করিলেন। তাঁহার পিতা আসির! তাঁহাকে লইরা তবানীপুরে বংশচন্দ্র চৌবুরী বহাশরের বাটী রাখিরা আসিলেন। মহেশ চৌবুরী মহালর সাধু ও লঘাশর প্রকৃতির নাম্ব ছিলেন। তিনি হাইকোটে ওকালতী করিতেন। তাঁহারা সপরিবারে সকলেট এরণ সক্ষম ও মুক্তপ্রাণ নাম্ব ছিলেন যে নিবনারকে তাঁহারা একেবারে একক্ষম খরের লোক করিরা লইলেন। এবানে নিবনার্থর প্রভাবনার বিশেষ স্থবিধা হওরার তাঁহার বনে আর্থির আকাজনার বিশেষ স্থবিধা হওরার তাঁহার বনে আর্থির আকাজনার বন্ধবতী হইরা উঠিল।

১৮৬২ সালে তিনি ভবানীপুরে যান। বাসার নিকটেই ছিল ভবানীপুর রাজসমাজ। সেবানে মহর্ছি কেবেজনাথ, আচার্থ্য অবোধানাথ পাক্ডালি প্রভৃতির উপরেল এবং রজ্ঞানত ভেলবচজের Destiny of Human Life বিষয়ে বক্তভা ভনিরা রাজসমাজের প্রতি তিনি আকুই হন।

### বালকের তেজস্বিত।

এই চৌগুৰী মহাশৰের বাসীতে থাকিতে থাকিতে শিব-নাথের থীবনে এক ঘটনা ঘটে, যে ঘটনার বালক শিবনাথের তেওবিতা ও নিতাকতা ভাষণ্যমান হইরা ইটিয়াছে।

একবার শিবনাবের পিতা শিবনাবকে একবানি সরকারী কাগৰ দিয়া তুলসমূহের ইন্শেটর উভ্রো সাহেবের আশিগে পাঠান। তথ্যকার দিনে সাহেবের আশিলে যাইতে এরনিই লোকে ভরে মহিত। ছিল চট জুতা ও মলিব বল্ল পরিবিভ বলিল বালক শিবনাথ, ভলেকে বাইবাল পথে সাহেবের আপিসে বাইলা প্রবেশ কলিতেই উভ্লো সাহের উপ্র বলে বলিলেন, "ভূমি আপিনের বাহিলে জুতা বুলিলা এস নাই কেম গুল

শি—এ ববে চুকিতে বে স্তা পুলিতে হয় স্থানিতার না।
তাবা হবলৈ এ ববে চুকিতায় না।

উভ্—ভূমি জুতা পরিয়া এ বরে চুকিয়া আমাকে অপনান করিয়াছ। জুতা বুলিয়া এস।

শি—না সাহেব, আমি জুতা বুলিব মা। আমি কিলপে
আপনার অসমান করিলাম বুকিতে পারিতেছি না। আপনার
পায়ে জুতা রহিয়াছে, আপনার কেরাদীবাবুর পারে জুতা
বেবিতেছি, আপনারা হলি বোলেন, তবে আহি বুলিতে
পারি।

উড -- भूबि च्छा वृतिद किया दन।

**मि--मा अट्रब, पूजिय मा**।

ইত্যাদি ইত্যাদি। দারকানাপ বিদ্যাভূষণ সহাপ্রেয় 'লোমপ্রকাশে' এই ঘটনা ফলনা সাহেব ও চটকুতা নাম দিলা বাহির হইরাছিল। বালক শিবনাপের জীবনের এই ঘটনা বিদ্যাপার মহাপ্রের প্রোচ বয়সের ঘটনার সহিত আক্রব্য মেলে।

### নিকাসিতের বিলাপ

ঐ অন বয়পেই শিবনাথ মধ্যে ধ্যামপ্রকাণে ও 'এডুকেশন গেলেটে' কবিতা লিবিতেন। এইছত্তে এডুকেশন গেলেটের সম্পাদক স্থবিব্যাত প্যানীচরণ সর্ব্বার মহাশ্রের সদে তাঁহার ঘান্টতা হয়। তিনি এই সময় প্রেসিডেজি কলেকের অধ্যাপক ও স্থবাপান নিবারী সভার সভাপতি ছিলেন। ভাঁহার সংশ্রে আসিরা স্থবাপানের উপর শিবনাধের দাক্রণ বিভেষ ভাজিল।

মহেল চৌধুনী মহালয়ের বাড়ীতে থাজিতে থাজিতেই
১৮৬৬ সালে উনিল বংসর বরুসে নিবনাবের প্রথম কাব্য
"নির্কাসিতের বিলাগ" প্রকাশিত হয়। সন্তাহের পর সন্তাহ
'নোরপ্রকাশে' কবিতা বাহির হয় আর লোকে পরে থাটে
স্কার বলিতে থাকে "এ 'জীলিঃ' লোকটা কে হে ?" লামী মহালয় লিবিরাহেম, "আমার লাজুল ফীত হইরা উটিতে সালিল।
নিক্রের বনে মধে মন্ত একটা কবি হইরা ইাড়াইলাম।"
বান্তবিক তাহার কবিতার মধ্যে একটু মুক্তমছ ছিল। ইহাতে
ইপার ওপ্তের বাবা বিজ্ঞাক্ষর অববা মাইকেলের পোলা
অনিজ্ঞাক্ষর ছিল না। ছুইরের ম্বাছলে বাহা ভাহাই ছিল।
ভাবকে ছলের বলবর্তী না বিল্লা ছলকে ভাবের বলবর্তী করা
হুইরাছিল। ইহা বন্ধ সামাত কবা নহে। প্রবাদত এইকচ ইহা
তব্য সকলের বৃত্তীকে আকর্ষক করিরাছিল। সুধু ভাহাই নর,
ইহার মধ্যে আরও একট সারবন্ধ ছিল। নিহন ছলের চার্ড্রা

বাহ্বের ব্যৱকে তেন্দ্র করিরা আকর্ষণ করিতে পারে না, বেনন করে, বে-কবিতা ব্যবরে ছ্যারে বাইরা বা নিরা বলে—
"এগো আরি ভোরার মনের কর্মা।" বন কাছিরা সইবার বড
নেই প্রমিষ্ট আবেষন নিরনাথের কবিতার হিল; তাই আগরে
নারিরা ব্যরুপ্ত করিরা সইতে জাহার বুরুপ্ত বিলহ হয়
নাই। তবে ইহাও সভ্য বে, হল ও ভারাই ভাবের সংবাহন।
ভাহা ব্যক্ত্রের প্রভাবিত না হইলে পাঠকের চিত্তকে আকর্ষণ
করে না। উাহার এই নকল নব আবিহুত হল সিরিনির্কবিশীর
বভ সাবলীল, বঙ্গল ও বেগবান; জাহার কবিতার ভারা
অক্তরিম, আরাসহীন, সরস ও সভেজ—ভাহা সোলা প্রাবে
বাইরা আবাত ভরে। কার্যানি কিলোর ব্যবসের কাঁচা
লেবা হইলেও, ইহার বিশিষ্টভা এই বে ইহার মধ্যে তথনকার
কবিবের নকলনবীশী হিল না। ইহা সম্পূর্ণ বৌলিক। ইহাই
নির্কালিত্রের বিলাপের প্রের্চ সৌরন।

ঐ আন বরসেই তাঁহার কবিখ্যাতি বাংলা সাহিত্য-জগতে প্রতিষ্ঠালাত করিয়াছিল। কবি ববীনচন্দ্র সেম্বের প্রথম কবিতা লালী মহালর কাটনা কুটনা ভাহাতে নিজে কিছু বোগ করিয়া প্যানীচন্দ্রণ সরকার মহালন্ধের এচুকেশন গেজেটে হাপিতে বিলা আসেন। সেই পরিবর্তিত অবস্থাতেই তাহা নবীনচন্দ্রের প্রভাবলীতে স্থান পাইস্থাতে।

### দ্বিতীয়বার বিবাহ ও মানসিক প্রতিক্রয়া

এই ১৮৬৬ সালেই, শিবনাথের পাঠ্য অবহায়, শিবনাথের পত্নী ও খণ্ডরপুহের লোকের প্রতি রাগ করিয়া, শালী বহা-শরের আপন্তির প্রতি দৃক্পাত যাত্র না করিয়া, তাঁহার পিতা হরানক বিভাগানর নহাশর ক্ষোর করিয়া বিতীয় বার তাঁহার বিবাহ দেন।

শালী মহাশর লিখিরাছেন—''এই বিবাহের পর মনে লাক্রণ অন্তাপ হবল। একট নিরপরাবা লীলোককে গুরুতর সাঝা লেগুরা হবল; সেই অভার কার্ব্যের প্রবান পুরুষ হবলার আমি। আমার হাজপরিভাল কোবার উবিরা গেল। আমি বন বিবাদে নির্মা হবলাম। রাজি আনিলে মনে হবজ, আর প্রভাত না হবলৈ ভাল হয়। এই অবস্থার ইন্মরের শরণাপর হবলাম। ইন্মরের চরণে প্রাথনার অভ্যাস ছিল মা। এই নানসিক প্রানির অবস্থার ভাহা করিছে আয়ন্ত করিলাম। প্রার্থনা করিছে করিছে হর্মলভার বল আলিল। মনে সংকল্প করিলাম 'কর্ম্যর বুকির বাখা নির্ভারে করিব ভাহা, বার বাক, বাকে বাক বন প্রাণ বান রে।' ভবানীপুর রাজ্যনাকে ই 'রোপসনাতে হাইতে আয়ন্ত করিলাম।"

"বল ও আদা। পাইরং আমি নিজ বিধান অস্থারী চলিবার জল প্রতিজ্ঞারচ হইলার। বাজীতে গেলার। লেবার প্রতিজ্ঞা করিরা গেলার বে আর ঠাকুরপুলা করিব না।" ইংক্তি উচ্চার পিতা হ্যাবক বিভাসাধিত হহাশর তীব্দ কুত হইরা লাট হতে তাঁহাকে বাহিতে চলিলেন। শালী বহাণৰ পিতাকে
বীৰ ভাবে বলিলেন—"কেন বুধা আনাকে প্ৰহাৰ কৰিবেন।
আনি অকাভৱে আপনাৰ প্ৰহাৰ সভ্ কৰিব। আনাৰ ধেহ
হটতে এক একধানা হাড় বুলিলা সইলেও আন আনাকে
ভবানে গইতে পারিবেন না।"

ষ্কাৰে ধৰ্মভাবের টকর হওয়ার অর্থ পান্ধী মহাশরের নিকট ভাববিলাসিভা বা বছহীন ভাব্কভা ছিল না। উ:হার চিড সমভ প্রকার প্রেরকে ও প্রলোভনকে কটিন বলে সংঘত করিছা শ্রেমের মধ্যে চিডকে আবছ করিল। জীবনের সর্বাক্ষেত্রেই ভাহার স্কল কলিতে লাগিল। এমন কি কলেকে প্রথম হবিহা প্রবেশিকা পরীক্ষার সেকেও প্রেড বৃদ্ধি পাইয়া পাস করিলেন। এই সময়, ১৮৬৮ সালেই পান্ধী মহাশ্যের প্রথম সন্তাম হেম্লভা কেবীর কর্ম হয়।

#### সমাজ সংস্থারের আরম্ভ

ক্ষেই উংহার মত ও বিখাসকে কার্ধে। পরিণত করিতে তীবনে কটিন সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইতে হইল। গে সংগ্রাম বেষম কর্মনাতীত প্রন্ধ তেমনি বীরগ্রের ও নৃচ সংক্ষরের ইতিভাসে পূর্ব। শিশু বরস হইতেই শিবনাথ বিভাসাগর মহাশরের চেলা এবং মাত্র বিশাস-সংস্কারের ওক্ষভার করে তুলিয়া লইয়া-হিলেন। বিশাসীক বছু বোগেক্রমাথ বক্ষোপাধ্যায়ের সহিত বছু দিশান রারের ভরী রাজ্যজ্মীর বিধাহ দিলেন। শিবনাথের নিকট সংবাদ পাইরা বিভাসাগর মহাশাঃ নিজে উপহিত থাকিয়া বিবাহ সন্দার করাইলেন এবং বিবাহের সমুধ্য ব্যয়-ভার তিনিই বছন করিলেন।

বিবাহের পর বোগেজনাথ বজনগণকর্ত্তক বিবিধ প্রকারে
নির্বাজিত হইতে লাগিলেন এবং আরীরগণ বভাবতই তাঁহ!বিগকে পরিত্যাপ করিল। তথন বটক নিবনাথ নিজেয়
কলারশিশের টাক: বিরা তাঁহাবিগকে গাহাব্য করিতে লাগিলেন
এবং বোর বারিজ্যের রবো পড়িরা সংগ্রাম করিতে লাগিলেন।
নবর্ত্বশতিকে সাহাব্য করিবার জড় তিনি তাঁহারের সহিত
পিরা বাস করিতে লাগিলেন। নিবনাথের পিতা ইহাতে
বজাবতই বংপরোনাতি কুছ হইরা তাঁহাকে সন্ত্রীক গৃহত্যাপ
করিতে আবেশ করিলেন। এই বিপধে এক্যার হারকানাথ
বিভাত্বৰ মহাশর তাঁহার কার্যা সম্বর্ধন করিয়াছিলেন।

এবিকে বোগেক্সের বাতা ক'লকাতার আসিরা পুএকে
আটক করির: কেলিলেন। সেই সময় নিবনাথকে সমগ্র
সংসারট চালামোর অভ অর্থেগার্জন, অল ভোলা, বাজার
করা সমস্ট একাকী করিতে হইত। নিজের পড়াঙ্কা নিকার
উঠিল এবং ঐ বরদে এতবড় একটঃ ওরু কারিস্কের চিডাভারে
উহোর কেহমনের উপর আমাছ্বিক অভ্যাচার হইতে লাগিল।

ইবার উপর জারার বিজীয়া পদীর প্রতি বে অলাব করা

হইবাহে ভাহাও আঁহাকে পীড়িত করিতে ছিল কর নর। বিক্রমার হইবার মেশাও ভিন বছুকে এবনি পাইবা বসির। ছিল বে এক সময় এমন পরামর্শও হইয়াহিল বে ভাহার বিভীয়া পত্নী বিরাজযোহিনী দেবীর আবার বিবাহ দিবেল।

বাহাই হউক, ইহারই মধ্যে আবার বহু উপেক্ষনাথ দাসকে বিশ্ববা বিবাহ করাইলেন। এই বিবাহে কভার নাতা ও জ্যেতা ভরীর নাহাব্যে কভাকে চুরি করিরা আনিলা বিবাহ দিতে হইল। এক প্রকার বিচুক্তী বিবাহ হইল। পভিত শিবনাথ লালী জীবনে এই প্রথম অতের সামনে উপাসনা করিলেন। সিরা শোনেন বিবাহ সভার গান হইতেছে—"মনে কর শেষের দেদিন ভরতর, অতে বাক্য করে কিন্তু ভূমি রবে নিরুত্তর।" শিনি গান করিভেছিলেন ্ত্রহ্মসলীত বলিতে ঐ একটি বই আর গান জানিতেন না; তাহাই গাহিতেছিলেন। গানই রামমাহন হারের। এই সকল কর্ষে পভাক্তনার দক্ষা একেবারে মাধার উঠিয়াছিল। কলেকে অল্পস্থিত থাকিরা দেশোলার ও সলাক-সংখ্যার করিয়া বেছাইতে লাগিলেন। ইংকেকের করণ হইতে হুক্ত করিরা ভারতের থাবীনতা অর্জনের উপার-ধরণ কত অন্তুত কলনাই বে তাহার মাধার আগতে তাহার ইয়ন্তা নাই।

এই সকল বিষয়ে অক্লভর পরিপ্রথ করিতে করিতে ১৮৬৮ সালের সেপ্টেম্বর মাস আসিত্র। পতিল। তথ্য ভিলেমতের পোচায় পথীকা হইত। পড়াওনা একেবারেই হর নাই দেবিরা কলেতেও অধ্যক্ষ প্ৰসমূক্ষার স্কাৰিকারী মহালয় শিবনাৰকে ভাকিয়া বলিলেন, "ভূষি আগামী বাবের পরীকাতে কলেকের वर्ष वार्याय वरण जाम। करविष्णाय, किन्न अवन जब करक भाग হত কিনা।" নেলার খোরে চলিতে চ'লতে একটা বাহা বাইরা শিবনাথ বেন চমজিয়া দেখিলেন সমুখে পভীর খাদ। পাস क्टेरवम मा १ फनावनिय मा भावेरन रच छात्राव हनिरवह मा । त्वारमन ७ राज्यक्ती त्व मा चारेवा बहिरद । ७वन "क्रेबंब বাৰ: এই বিদদে বাৰ" বলিয়া একান্ত মনে ভাকিতে ভাকিতে बाब क्रीय दल शाहेर्ड लाजिएनम अवर अक ३ हर्डिय माना কৰ্মনা পৰ বিভাৱিত হয়। পেল। শিবনাৰ লিবিয়াছেন, "ভৰ্ম দিনের মধ্যে বছৰাও প্রার্থনা করিভাম। লোকে বেমন প্ৰধেৰ মৰ্যে বাৰ বাৰ চা ধাইৱা সৰল হয়, আৰি ভেষ্টি বাৰ বার প্রার্থনা করিয়া সবল ছইভাষ।" বোরেন ও মহালন্তীর निकड़े विशाय जहेश यहण कोशबी महानदाव करूब यहिया देशकिए स्टेरनम अवर चाणांचे बारमक चन अवकी यह कारिया लहेलन । वृह नश्यम कविया, त्यहे परवद मर्या भार्क अरक-वाद्य यश्च परेवा (शत्म । वित्म ১৮ वकी वाह्या अवर बाह्य ६ रके काम चारांद्र प्राप्त विका ७ चरा० यावणीय नाानाहर बाब कविया कार्ड (अब कवादिनिय ७०), मरकुछ छ देशस्त्रकीएड विविद्याला अवम श्राम विकास क्यांस क्या ३०८ अवर निर्वास करलाक क्षत्रम एक्साव बक्षण ३२, मर्कमावक ४३, डीक्! वृष्टि

পাইলেন। কিছ বাহার বত এই প্রাণাত পরিছেত করিলেন, সেই নহালত্মী ১৮৬৯ সালের প্রথম বিকে নারা গেলেন। শিবনার্থ বড়ই আবাত পাইলেন।

#### ব্ৰাহ্ম-সমাজে যোগদান

১৮৬৭ সাল পর্যান্ত শিবনাবের আকর্ষণ আছিরান্ত-সমাজের দিকেই ছিল। তাঁহার ভাতিখালা হেনচন্ত্র বিদ্যান্তর ছিলেন আদিসনাকের রাজ ও তত্ববোধিনী প্রিকার সম্পাদক। নাতুল ঘারকানাব, বিদ্যাসাগর মহালয়-প্রভৃতি, বাঁহারা পান্তী নহালরের বিশেষ প্রভার পাত্র ছিলেন, তাঁহারা তত্ববোধিনী প্রিকা ও আদিসমাজের সহিত বনিঠ ছিলেন। স্বভরার কেশবচন্ত্র-পরিচালিভ উর্লভিন্টল প্রাক্তগণকে শিবনার্থ তাঁহারের মতেই প্রকৃষ্টি বিরাগের চক্ষে দেখিতে অভ্যন্ত ছিলেন। কিন্তু ১৮৬৮ সালে, ১৭৭৫-প্রর ১১ই নাব তিনি আদিরান্ত্র-সমাজের উৎসবে বোগদান করিয়া যথম সিঁভি দিরা নামিতেছেম তথন কেশবচন্ত্রের দলের নগর-কার্ডনের প্রকর্ণানি কারক ভাঁহার হাতে পছিল। তাহাতে ছিল—

"তোরা আর্রে ভাই, এতদিনে রুখের নিশি হ'ল অবদান, নগরে উঠিল এক্ষণাম। নরনারী সাবারণের সমান অবিকার,

ৰার আহে ভক্তি পাবে মুক্তি, নাহি ভাত-বিচার।" ইভ্যাদি। এই আহ্বানক্ষি তাঁহার প্রাবে বিয়া বা'কল। ইহাতে ভাষ-ৰৰ্ষের যে আহর্শ জাহার নিকট ধরিল তাহাতে জাহার মনে এতদিন বে সম্ভা ওকতার হইয়া চাপিয়াছিল ভাহার একটা চৰংকার সমাবান পাইলেম। প্রাণ ভাঁছার মি:খাস কেলিয়া বাঁচিল। মহুষি ঘেৰেক্ৰমাণের বাড়ীতে উৎসবের পর যে चाशास्त्रत भित्रत्रन विम छाश अदक्तारत छुनिता त्रानन : क्म्राडीमात्र क्म्यकारस्य वामात्र बावेश देशहरू व्हेरमम । এইবানে তাঁহার পুরাতন বদ্ধ ও সহপাঠ বিজয়ক্ত श्रीथामी महामद्गरक (प्रवित्तम। श्रीप्राहेकी "कि **का**रे।" ৰলিয়া আলিয়া উচ্চাত্ত কঠালিল্য কবিয়া বহিংল্য এবং ঐ য়লে উচ্চাকে যেন একেবারে বাবিয়া ফেলিলেন। সন্ধার टक्नवहरूव वकुरा २३०। विवत, Regenerating Faith, क्षमिश्रा निवनाय दक्ष एरेशा शिरमम। "वर्षविश्राम यह मवसीवम मा चामिश्व विम. छट्ट छार्। वर्षियागरे मह बरे पछा छाराय क्षांत चाद्यांक्षिक कीनत्वत अक्टी मूळन बाद बुनिया दिन । অৱসর ভাষদদের প্রতি তাঁহার চিত্র আরও আরুই হইল।

১২৭৬ সনের ৬ই ভাত্র ভারতবর্ষীয় ত্রন্থানির প্রতিঠার দিন শাস্ত্রী নহাশর, হকবিহারী সেন, আনক্ষোহন বস্তু, রজনী নাথ রায়, জীনাথ দত প্রতৃতি একুশ জন ব্যক্ষ ত্রান্থার্কে হীজা প্রহণ করিলেন। তথ্য উপাধীত ত্যাগ্লহ্যা তাঁহার এক বিষয় সংপ্রায় উপস্থিত হইল। বৈদিক ত্রান্থা-পতিতের ব্রের এক নার পুরা, দরিত্র শিতামাতার আশা ও অবস্থান, বেশারার লোকাচারের বিরুদ্ধে এইরূপ বিদ্রোহ তথ্যকার বিষে এ বেশে এক অত্তপূর্ক সর্ক্রনাশের ব্যাণার—এবন হ্রন্ত কলাচারের করনাও কেহ কথনও করে নাই। চহুছিকে সকলেই বজাহত্ত হইরা উঠিল। না কাদিতে কাদিতে কলিকাভার আসিরা উহার গলার উপবীত পরাইরা ছিলেন, পিতা জোবার হইরা "এবন প্রের রভ্যুই কাষ্য" এই বলিরা হরিত্র পরিবারকে উপবাসী রাধিরা ২০।২৫ টাকা বরচ করিয়া তথা ভাভা করিলেন। কি করি, কি করি এবনি একটা অহিরতার নিবনাবের প্রাণ অতিঠ করিয়া তুলিল। এই বরণার মধ্যে (শাস্ত্রী মহালর নিবিভেছেন) "অবশেবে অনভগতি হইরা ইপারচরনে পড়িলার; আপনার বিচার ও কর্ভুত্ব ছাছিরা দিলার; প্রার্থনাতে বার বার বলিতে লাগিলার—"তুরি আরাকে লইরা বাহা হর কর। কি আকর্ষ্য। এত বে তর বিভীবিকা, কোবার বেন পলাইরা বেন। আবার বনে অভ্তপূর্ব বল ও উৎসাহ আলিল।"

### वियानवामी ও आनन्तवामी मन

১৮৬৬ সালে बचायम (क्नवहासद वस्तिक वस्त्रका "Jesus' Christ-Asia and Europe" - Fatteta विराप्त गर्भागाय रहे करत । देशांत अधिकिया, बेडाम, दिग्यू ও আৰু প্ৰভৃতি বিভিন্ন মঙলীয় বৰ্যে বিভিন্ন আকাৰে প্ৰকাশ পার। ত্রাক্ষ অঞ্চলর বাক্ট অংশে ইছার প্রতিক্রিয়ায় अक विवादवाधी मक्ती महिल स्टेन । देशेन जक्न्छान्नेनला क नानद्वाद्य कांश्वा व्यष्ट्रजान, क्ष्यम, शक्त-नविशान छात्र, अवर निरक्रक भागे त्वारव स क्लाम केलावि कविवा नवारक ভারি একট। আলোডন উপস্থিত করিলেন। আর এক্ষুদ ৰাম বলিতে লাগিলেন, "এত অমৃতাপ ও জন্মন কেন ? (बायम ७ माननवरम गृहर अठ कमानम (बान हम ?" अहे इरे नगरक "विवासवादी" ७ "बानववादी" पन वनिश लारक উল্লেখ করিত। অয়তথাজারের শিশিরকুষার ঘোষ ছিলেন वरे जानवराती परमद (मछा। निनिद्यमोद मिरक हमरकाद কীর্ত্তৰ দ্বিতেব। বিষাধবাদীগণের বিপরীত ভাবের যে সকল কীৰ্ছন তাহাদের দলে হইত, ভাহার ভাব অভি কুলর ছিল।

''তোদার রাগে রাজা নরন তলে বছে ছেবি অঞ্চনার।" ''বার বা আনক্ষরী তার কেন নিরানক গ"—ইভাছি।

মৃথ্য সালের ১৪ই আঘাচ জাতার একহার পুত্র প্রির্নাধ জন্মহন করেন।

### ন্ত্ৰীস্বাধীনতা-আন্দোলন

এই সময় পূৰ্ববিদ হক্ত্মিতে মাহীছিতৈয়ী পত্ৰ 'অবলা-বাহ্যব' অবতীৰ্থ হইল। ইছার সম্পাদক হারকামাৰ গলো-পাব্যার মহাশরের তাজা তাজা নির্তীক বাই শিবনাবের প্রাবে বিহা বা ছিল। কিছুদিন পরে ''অবলা-বাহ্যব' লইছা গাজুলী বহাশর কলিকাভার আসিলেন এবং রাজসমাজে বীহাবীমভার পতাকা উচ্চীন করিলেন। এই সময় বন্ধিশাল হুইতে চুর্গা- বোহন দাস মহাশয়ও কলিকাভার আসিলেন। জীগাণীব-ভার পক্ষে বিকাঞ্চনর বোগ হইল।

শিবমাণ, বারকানাণ, হুর্গানোহন, রক্ষীনাণ ছাত, আহাচরণ বাত্তমীর প্রভৃতি করেককন প্রস্থিতিশীল প্রাক্ষানের সহিত্য
ব্রীশিকা ও ব্রীবাধীনতার বিষয় লইবা কেশবচন্দ্র প্রথ্য
পুরাতনপত্মী প্রাক্ষানের সংবর্ষ হইতে লাগিল। বিখ্যাত বাস্ত্রী
ও রারমোহন ক্ষীবনীর লেবক রুক্তিবাধী নগেন্দ্রনাণ চটে:শাব্যার মহাশয়ও এই অপ্রসর হলে হিলেন। সংঘর্ষ ক্ষরেই
বভাত্তর হইতে মনাভারে গিরা পৌহিতেছিল। কেশবচন্দ্রের
নিক্ট তাহার সহিত এক পরিবারের যত হইরা বাহারা
ভারত-আপ্রবে বাভিতেন, এক এক করিয়া তাহারা বিদাধ
লইতে লাগিলেন।

### কর্মজীবন ও সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ

১৮৭২ সালে শিবনাৰ এম-এ পাস করেন। মাঙুল বাৰকাশাৰের আশা ছিল বে, তিনি নিধনাৰকৈ ভাহার প্রথাউত भक्त बन्द्रोय-अण्डिंदिय कांत्र विद्या याहेद्यम । कांचात बाहा ভয় ঘইয়াছিল। এদিকে নিজেকে ত্রাগ্মন্যাজের কাজে वर्षन कश्चित्वन विजया (कन्नवहत्त्वत्र वक्र-विद्यान) विद्यानश्चर कार नियमाय महेशाबिरमम । अक वरमह भ्रमुख (महे काक मृहाक्-ब्राण हानिए कहाएए द्यामक के विकास दिश्वत करमक्यानि निन्धि रहेबाधिरमन। এখন निरमाय সম্ভান্ন পড়িকেন। अक्तिक बाकुन बादकानाय, विनि वानाकान इटेल्डरे काहार **हिए वर्षनीणि ७ हिंदिखंद श्रणाय विचाद कदिया चानिदारयन.** তিনি ভরবাহ্য, ভার একছিকে কেশবচল্ল (বাঁদার প্রতি শিৰণাশের প্রীতি, ভক্তি ও নির্ভৱ প্রগায়) ও দীবনের শৃতন নিৰ্বাচিত পৰ। কোনু দিকে যান। খেষে তৰনকাৰ মত মাতুলের সাহায্যে বাওয়াই ছিত্র করিলেন। অবভ এমা-শব্দ কুর হইলেন ; শিবনাথ হরিমাভি মাড়লের ভূলে হেডমাটার • হইয়া গেলেন।

হরিনাতি বাইবা মহাকার্ব্যের আবর্তনের ব্বা পাছিলেন।
ব্যালেরিবার ছুলট প্রার তালিয়া গিরাছিল। প্রতরাং হেডনাটারের মাহিনা ১০০১ টাকা হইতে ছুলে ৪০১।৫০১ টাকা
করিবা নাহার্য করিতে হইত। ছুলে 'কুতা সেলাই হইতে
চণী পাঠ' পর্যন্ত স্বই করিতে হইত। আবার 'সোর
প্রকাশে'র ভারণ্ড অবিকাংশই জাহার উপর পছিল। হেশে
আনাতে রাভুলের বিষয় সংক্রান্ত বহু করিই জাহাকে করিছে
হইত। ভাহার উপর জাহার চির হুর্মল বেহে খ্যালেরিছা
বরিবাছিল। শালী বহাশর লিবিবাছেন বে, লিভারে রিন্টার
লাগাইরা ঐ সকল কার্য্য সর্বর চালাইরা বাইতেন। তাহার
উপর বিউনিসিগ্যালিট, লাইরেরী, প্রার সংক্রার প্রকৃতি শভ
রক্ষের কার্ড ছিল।

প্रভিত निरवाय भाषीय कौरनी चाटनाहमा कविटन बटन

रव व के नवीरत कल निवस्त बाहेगी गए हरेल कि कविशा। এক্ষেবাৰে কেন ভালিয়া পড়িভ না। ভিনি বেন একটা হবারের কীট ব্যাপ--বত কাৰ ঠাপা বাক বা কেন কিছতেই বেন ভাষা कांग्रेबा बाब मां। वडाठ, देशाव शव व्हेटल कांशाव कीवम বিলাৰবিহীৰ কৰ্ণেৰ খুৰ্ণাচক্ষ ও অকুষ্ঠিত অঞ্জ আত্মধাৰেৰ ইভিহাস বাত্র। তাহার প্রত্যেকট পঙ্জি বহড়ের ও ইবরা-चवार्यद दरम चिविक । द्यान्त वित्र बदर द्यान वाप पिर छाशांत विमा भावतार यात मा । भतार्य छेश्मर्जीक्छ बहे শীবনের মূল বারাট বরাইরা বিতে চেটা করিলার। তাঁহার আন্তচ্জিত পাঠ কল্লিলে জীবনে জভিনৰ চৰংকাৰ একটা বছৰ चायास्य भारेमाय रामद्रा भार्त्रदेशक यात्र स्थला चित्रवाद्य । कि সাহিত্যের দিক দিরা, কি সরসভার দিক দিরা এরপ বই বাংলা-সাহিত্যে একান্ত বিৱল। শান্ত্ৰী বহাণর আর খন্ত कारमा विभिन्न मा निविद्या क्लबन यथि और अक्बानि मास अध বাৰিয়া ঘাইডেন, তাহা হইলেই সাহিত্যকগতে ভাঁহার নাম ৰকঃ হইয়া থাকিত।

### শিবনাথ ও গণতান্ত্রিক প্রতিষ্ঠান

ভারতবর্ষীয় ত্রান্থসমান ও ত্রনান্দের সহিত মতাভার रक्षार निवनाय माजी, निवहस (प्रव, चामसरमाय्य वज्र, विक्य-क्ष (मानामे, नामकान कार्षामानाइ, वादकामान मावनी, গুৰুচৰৰ মুহলামৰীশ প্ৰভৃতি মিলিয়া যে-কেশবজে জাহাৱা প্রাণ দিয়া ভালবাসিভেদ জাভাতে ভারে ভরিষা ভারিষা ( )२৮६, २वा टेकार्ड ) भूष्टन नवाक गर्ठन कविटलम । ১৮৭৯ ( বাংলা ১২৮৬ ) সালের মাবোংগবের সময় ভূমি ক্ষর করিয়া সূত্ৰ মন্বিৱের ভিত্তি স্থাপন করা হইল। নাম রাখা হইয়া ছিল "সাধারণ ত্রাজসমাজ" এবং নিয়ম্বাবলী সাধারণ নিয়ম্ভয় श्रामीत्र किथि कविशा श्रमण पहेंगा। त्रवर तहे कथाडी নিৱৰাবলী প্ৰশ্বৰের সময় সুস্পষ্ট ভাষার লেখা রহিল বে এখানে সভ্যববের ও সমাজসমূহের মত এহণ করিয়া কার্যা করা ररेरव । अरे चारन रेश फेरबररांशा रव, वर्षममारकत अकी। রহং প্রতিষ্ঠান এই প্রথম সাবারণতম্বের দারা পরিচালিত प्रेम : देशक भव, देखिबाय अस्तानिक्षणन वा "खावछ मखा," বাহাকে ভাতীর প্রতিষ্ঠানের বীজ-বল্প বলা বার, প্রায় এই সম্বেই শিবনাৰ, আনন্দ্ৰোহন ও প্ৰেল্ডনাৰ কৰ্তক প্ৰতিষ্ঠিত ধ্য। তাহারও নিয়মাবলী ঐ একই সাধারণতত্র অনুসারে প্রস্তুত বয়। শালী বহাণর লিবিয়াহেন, "বলিতে কি ভারত সভা भावादन खाच्यमभाक (यम प्रमुक्त महामादद म्ह क्युड्न महिन। अकरे लाक हरे पिटक, अकरे चारव छेण्डाव कार्य চলিয়াহিল।" এই সকে সলেই জাহাতা নিট ছলও ছাপন कतिशिविद्यम ।

হুংৰের বিষয় এই যে ইঙিয়ান এগোগিয়েশনে শাস্ত্রী এহানৱের কোনো এতিকতি বন্দিত হয় নাই এবং উচ্চায় ক্ষণভবাৰিকী উপলক্ষেও নেই প্ৰতিষ্ঠাভাকে শ্বৰ কৰা হয় নাই। আশা কৰি এ বিচ্যুতি উহাৰা সংশোধন কৰিছা সকৰেন।

#### সাংবাদিক শিবনাথ

নাবাৰণ ৰাশ্বনাঞ্ছাণিত হওৱাৰ পৰ হইছে শাৰী বহাপৰ বেন কাজেৰ বড়েৰ মধ্যে বাস কৰিছে লাগিলেন। এতথলি বিনাট কৰ্পেৰ মধ্যে মুক্ত হইবা এবং সেঞ্চলিকে কত-কাৰ্য্য কৰিবাই তিনি কাছ হিলেন মান সক্ষে সক্ষে তিনি আজ্ঞ লেখা লিবিবাছেন। একই কালে তিনি বছ সংবাধ-পজ্ঞেৰ সম্পাৰকতা কৰিবা সিবাছেন এবং ভাহাছেৰ কোনো কোনোটতে অনিকাংশ লেখাই ভাহাকে লিবিতে হইবাছে। সাংবাহিক প্ৰীৰুক্ত সুনীৰকুমাৰ লাহিছী বহাপম লিবিবাছেন, "আজকালকাৰ সম্পানক ও লেখকগণেৰ নিকট ইহা অভ্যন্ত বিনৱেৰ বিবৰ যে পান্ধী বহাপদ্ৰেৰ ভাৱ প্ৰতিভালালী ও ব্যাতনামা লেখক বিনা পাৰিপ্ৰবিকে এতথালি সংবাদপ্ৰে বিভিন্ন বিবৰে এত প্ৰবন্ধ বিতে পাৰিবাছেন।" এইবানে স্মৰন বাধা আৰক্ত যে সাধাৰণ ৰাজসমাক ছাপ্যমেৰ প্ৰেই শিবমাৰ প্ৰত্বেক্তিৰ চাকুৰী ছাছিলা বোৰ বানিক্তা বৰ্ণ কৰিবা লইবা কাৰ্যাৰনে ভাহাৰ কৰ্প্যাণৰে বিশিষ্টাৰ প্ৰান্তনাৰ কৰ্প্যাণৰে বিশ্বাৰ প্ৰত্বেক্তিৰ চাকুৰী ছাছিলা বোৰ বানিক্তা বৰণ কৰিবা লইবা কাৰ্যাৰনে ভাহাৰ কৰ্প্যাণৰে বীপাইবা পছিলাছিলেন।

ৰত সংবাদপত্ৰে তিনি লিবিয়াছেন এবং বত সংবাদপত্ৰ किनि পরিচালনা করিয়াছেন ভাষার বিষয় চিছা করিলে বিশ্বৰে নিৰ্কাক ছইৱা ঘাইতে হয়। ১৮৭০ সালে "পুলভ সমাচাৰে" তিনি নিম্নতি লেখক ছিলেন। মদ না গরল ( & সময়) প্রিকার সন্পাধক ছিলেন। ১৮৬৪ সাল হইডে "নোৰপ্ৰকাশে" ও "এডুকেশন গেছেটে" ভিনি লেখা স্ক কৰেন এবং ১৮৭০ সালে কিছকাল সোৰপ্ৰকাশের সম্পাদকতা করেন। "সময়নী"র সন্পায়ক হন ১৮৭৪ সালে; ভিনি "मधारमाहक" बाधक बारमा नाखाहिरकत मन्नायक हिरमम। সাধারণ ত্রাহ্মসমান্তের ইভিয়ান মেসেঞ্চার (১৮৮০) ও **७७८कोडुको कांशरक्य मन्नायक्या यस वर्शय विद्या कांशास्क** ক্রিতে হইয়াছে। ত্রাগ্ধ পাবলিক ওপিনিয়ন, বেদল পাবলিক ঙশিনিরন "রুকুল" (বালক্বালিকাদিপের মাসিকপত ১২>¢ ছইভে সম্পাদক) "সৰা" প্ৰভৃতি কাগৰের সম্পাদক ও সেৰক ত্রণে এ সভল কাপজের পৌরব বৃদ্ধি করিয়াছেন। "বছবাসী" भावत केत्वाकांश्रत्व बादा मात्री बसामत विदेश अवर वस লেবা ভাষাতে নিবিয়াছেন। ভাষা হাছা সম্পাৰ্টিক নানা পত्र निविद्यादम बनिया छनियादि । मानी, अभीम, अवानी, ত্ৰভাৰ বিভিন্ন ইভ্যাহিতেও ভিন্নি লিবিভেন।

### সাহিত্য

শিশুকাল হইতেই বুবে বুবে অজর বিলাইতে শিবলাবের ভারি ভাল লাগিত। ভাষার উপর বাভাষ্ট্রের বব্য হিরা ক্ষর ওঠের কিছু প্রভাব বালক কবির উপর পড়িয়াহিল। ব্যদ-ক্ষিতা বিহা তিনি ক্ষিতা বিধিতে আহত ক্ষেত্ৰ। ক্লানে ঐ অন্ধ বহনে তাঁহাত্ৰ ক্ষিণ্যাতি প্ৰতিষ্ঠিত ক্ষয়াহিল। ক্লানেত্ৰ একট স্থলকাত্ৰ অহংকাত্ৰী বনী-পুত্ৰেত্ৰ নাবে

> চাৰৰ চাণভাম গাৰ ইছুলে আলে বাৰ মাৰ ভাৱ গলাবৰ হাতী, বড় ভাৱ অহংকাৰ ধৱা তেখে সৰাকাৰ চলে বেল মবাবেৰ বাভি।

ইত্যাদি এক দীৰ্ঘ কৰিতা নিধিয়া ভাষাকে বড়ই নাকাল করিয়াহিলেন। তাঁহার কৰিব্যাতির সজে সজে উৎসাহ্যে বেসে ভাষার বাতা ভরিয়া উঠিতে লাসিল।

এই কবিভাট পাঠ করিলে রবীক্রমাধের বাসক বরসের
"আমসত্ব হবে কেলি তাহাতে কললী দলি
সক্ষেশ মাধিরা দিরা ভাতে,
হাপ্রসহপুস শক্ষ চারি দিক নিজ্জ

হাপুসহপুস শব্দ চারি দিক নিজৰ শীপিয়া কাঁদিরা হার পাতে।"

মনে পড়ে। আক্ৰ্যা এই যে, ছুই ক্ষমেই দীৰ্য জিপদী ছক্ষ ব্যবহার করিরাছিলেন। ইহা ফুডিবাস ও কার্মিরাম দাসের প্রভাবেই ব্যৱহাছিল।

১৮৬৪ সাল रहेटचरे किटमांत निवबाटबंत लंबा "अक्रूटकमन शिक्टडे" बर "तावश्रकात्म" श्रकामिक स्ट्रेट बाद्ध । छवन कैशिव चिकारमें तानों वानोंचक दिन । किंद भावीहबन সরকার বহালর এবং হারকানার বিভাত্যণ মহালর উভৱেই এই কিশোর কবির মধ্যে ভবিতং মহতের আভাব দেবিরা-विरागम । ১৮৬৮ गार्ग अम-अ क्रारमय बांख निवसारबंद श्रवन কাৰ্য 'নিৰ্বাদিতের বিলাপ' বাহিত ছইলাই বাংলালেনের सन्त कर कतिल। देश किटलादात तहना वटी, किन्न देशांत ৰব্যে তংকালীন প্ৰতিষ্ঠাপর কবিদের বক্সধ্বীৰী ছিল না। नवीन चरक, ७ निक्य स्थेतिक उन शतिरवनस्यत कर देश विभिन्ने नवापत नाक कृतिवादिन। वहेवानि शरह करहक বংসর এক-এ ক্লাসের পাঠা নির্বাচিত হইরাছিল। ১৮৭৫ লালে ভাষার পুল্মালা প্রকাশিত হইরা ভাষাকে ভাষার ক্ৰিৰ্যাভিত্ৰ ব্ৰয়প্ৰশে প্ৰকাশিত এবং ভাৰত্ন ক্ত্ৰিল। ভাৰাত্ৰ পর ভাষার প্রথম উপকাস 'মেজ বে' প্রকালিত হুইল ১৮৭৯ সালে। এ সহতে ত্রীহক সুকুষার সেন বাহা লিবিয়াহেন ভাষা অতীৰ সভা। "প্ৰথম কাবা 'নিৰ্ব্বাসিতের বিলাপে'র বভ পিৰ-নাবের প্রথম উপভাস 'বেছ বে)' বুবই সমান্ত্র লাভ করিরাছিল। পত্ন বংগরই বিভীয় সংক্ষণ বাহিত্র হইল। ভবনভাত্র वित्यव **উপভা**त्यव क्याध्यक्षात हवस test विल **উপ**गरशंद बहुना ।...निवनात्वव तक वी-अबच 'छेननरहाव' हरेल---ब्हरवक्षमान मूर्यामानगरवद्य 'माक्षि मर्ठ'।" वेशाव भव भरव পরে তিব বৰ কবিতার বই বাহির হইল। 'হিষাত্রিকুন' ১৮৮৭, 'भूलाक्षनि' ( कविकामरअक् ) ১৮৮৭ अवर 'बाबावडीव **পরিবর' ১৮৮> সালে। ইহার মধ্যে হারামরীর পরিবর্তানি** 

বাংলায় বে ছুইবাৰি স্থাক কাৰ্য নাম করিবার মত আছে ভাষার একবানি। ছারামরীর পরিপরের একট বিশেষভ আছে। এই রূপক কাব্যবাদি আগাগোড়া লোকসাহিত্যের हलिए स्टब्स् हलिए जावाब, जमनाबाद्धवद नट्य नट्यानट्याना করিবা রচিত। বিবরের অভ্যাপ এই ছক বির্বাচনে শিব-বাবের কবিপ্রতিভার বিশিষ্ট্রতা প্রমাণিত কইতেতে। ইয়ার प्रविदेश e directness वार्म। इकाव अकास निकर वस बर भाषी बहानदाव हविद्या वित्नवह । निवनादव टाउं উপভাস 'बृशांखब' (১৮৯৫) সহতে রবীজনাবের কবাগুলি कृतिका किरमहे बूका बाहरव रव छेपकामबानि गुविबीय स्मर्क नाविच्यिक बन्ध चड्ड क्यां भवालाहकरक कि चार्य বিচলিত করিয়াছিল। সমালোচনাট বাহির হর ১৩০১ চৈত্ৰের 'সাৰ্যা'র। রবীক্রমাণ লিবিভেছেন--- 'যাহাতা বালি ধুইয়া হীয়া বাহিত্র করে, ভাহাত্রা অনেককাল বিভন্ন বালি বাঁটয়া এক-টুকরা হীরার সভান পায়। এছ-সমা-লোচকের ভাগ্যেও হীরা সহকে মেলে মা, সেইছভ বছকাল विश्वत मीवन अवर मिक्क शृतिक्षायत श्वत विविध अक्षामा थवार्थ अन्न शास्त्र चारम (महिम चामक्रावरम अन्नवादरम बम्हाबारकेत देशत कृतिता विता व्यवस्थात कृतिएक देव्हा करत । ... अथन श्रव्रादक्ष, अथम हतिक एक्स, अथन नदभ शृष्ट, अभम সরল সম্ভব্যতা বলগাহিত্যে ছর্লত।" ইত্যাধি অতি প্রদীর্থ সমালোচনা। রবীজনাথ পৃথাত্বপুথ বিচার করিয়া উপভাসটর ঘোষৰৰ নিৰ্বন্ন করিয়াছেন এবং সৰ্ব্যন্ত উচ্ছ সিত হইয়া লেখক य डावाद 'क्यवर्णिनी वाक्यविने-कह्मामकिवादा चामारवद বিশ্বাস আকর্ষণ করিতে পারিয়াছেন" প্রাণ ভরিয়া এই কর্ষা শীকার করিয়া যেন ভাঁছার আনক-সন্তোপের ধন পরিশোধ कविषाद्यम् ।

১৮৯৯ সালে উছার উপভাস 'নরনভার।' প্রকাশিত হয়।
এবানিও বুব সমাদর লাভ করে। লিবনাবের সাহিত্যপ্রতিভালত্য করিলা বে রাজনারারণ বস্থ মহালয় বলিয়াহিলেন, "হার কি পরিভাপ! এত বড় করিকে রাজনলাজ
বার্তার শিবিলা নারিলা কেলিল" ভাষা কিছু নার জড়াজি
নহে। লিবনাব বে কত বড় সাহিত্যিক হিলেন ভাষা উছার
এই সকল উভশ্রেমীর লেবা কি অবহার বাহিল্ল হইলাহে ভাষা
অন্থাবন করিলা দেবিলেই হুদ্রদ্য হইবে। ভীম বেনন
অর্জুনের নিরন্তর বাবর্ত্তীর মধ্যে সামালভ্য অবভাপ বুঁজিয়া
আপনার কার্যানিতি করিলা সইতেন পালী মহালয় ভেলনি
অক্স কর্মের মুর্গাবর্তের মধ্যেও সামানভ্য অবসর পাইরাই
এই সকল প্রের্ত সাহিত্য রচনা করিলা গিরাহেন। ভাবিলে
অবাক হইতে হল।

সর্কাগদ্বতিক্রমে ভাঁহার রচিত, "রামতত্ব লাহিড়ী ও ভংকালীন বলসমাত্ম" বাংলা ভাষার জীবনী রচনার এক আক্রব্যু এতু । এই পুরুক্যানির সহিত অনেকেই পরিচিত

चार्टन, कावन विश्वविद्यालय करबक बरमय देशांक वि-अव পাঠ্য রাবিরাছিলেন--আবার কেনই বে তাহা বছ করিয়াছেন তাহাও জানি না ৷ এই পুতকবানি হে ভাষার সভেত্ব গরিষ্ঠভাষ বদসাহিত্যের একবানি শ্রেষ্ঠতম এছ তবু ভাহা নয় , ইহার ब्रह्मादकोषन्द मण्युन चिक्रियत । बीयमी-अद्यु ब्रह्माय श्राह्य छ পাচ্চান্ত প্রধানীর সর্বায়ের এই কলাকৌশল ইভিপূর্বে ভারতীয় ভাষায় কেচ ভারলখন করেন নাই: ১৯১৩ সালে এই এর অপুবাদ করিতে বাইরা সার রোপার লেপত্রিক উক্তরণ মত প্রকাশ করেন। সেই কারণে শীবনী-দাহিছ্যে देश अंक्यानि त्यां अध्य वर्ष : किंद्र छात्। विनारे त्य ইছা চিত্ৰকাল পাঠ্য থাকা উচিত এমন কথা বলি না। भाक्षा अवस्था भाका के हेल (व. भाशास्त्र भववर्ती बूर्भव बुरकबुन: चाबुभिक रक्षाक्षण गर्डरमद चना रव नकन मनीवी चाञ्चार्ट्ड पियार्ट्स, डाँशाय्य है जिल्लाम अर्थ मर्च अहे अह হইতে সুসৰত আকারে সাত করিবে। এই এতে ছতি চ্মৎকার ভাবে উপলাদের মত চিত্রছারী এবং ইভি**হা**দের মত স্থবিভন্ত করির৷ দেকালের মনীষ্টদের কান্দ্রণামান किय बिक प्रदेशास । अरे शुक्षक शाक्षी ब्राटन मुक्कियान मरना প্রকৃত ক্ল্যাব্দাব্র ক্রিতে পারে এইক্রই ইং। পাঠ্যমূপে निकाहिक बाका छैहिक। अहे (मबाहित मत्ता, देकियान ध ভাষার প্রত্যুদ্ধরণ, যানবের প্রতি শিবনাবের গভীর ঐতি, खड़ा ७ महाबुक् जिल्ला धनबाहो हिडडि महक बानत्म जाननाव চিত্ৰক্ষণের সৰ্প্রদল খেলিরা বরিয়াছে।

১৩২৬ সালের ব্যবহারণ সাসের 'প্রবংগী'তে রবীজনাথ লিবিয়াছেন—"লিবনাবের প্রকৃতির একট সক্ষণ বিশেষ করিয়া চোবে পড়ে; সেট ভাষার প্রবল মানববংসলতা।…লিব-নাবের সভ্যয়তা এবং ক্লনাদীও অভ্যুক্তি মুই-ই ছিল— এইক্ল মাখ্যকে তিনি ভ্যার দিয়া দেবিতে পারিতেন, ভাষাকে সাজ্ঞালারিক বা অভ কোন বাজারদরের ক্টিপাব্যে ব্যব্যা যাচাই করিতেন নঃ।"

কি আকর্য তাহার "আর্চরিত" এছবানি। কেবলনার ইহার তারা ও বর্ণভানীর কঃই ইহা বে কোনও প্রথম শেনীর উণ্ডাসের মত উপভোগ্য। এক রবীক্রমাবের "জারনান্তি" ব্যতীত এবন চমংকার মনোবৃত্তকর কীবনীসাহিত্যও বাংলার আর নাই। কিও ইহাই এই নহংজীবনীর একমাত্র বৈশিষ্ট্য নর। তাহার আর্চরিতের মত এবন নির্ভাক আর্বিলেরবর, এমন স্থাপার্ভ বিবাহিনীন বীকৃতি বাংলা ভাষার লেখা আর্কীবনীতে আর কোবাও আরে বলিরা আনি না। এই আর্কাবনীতে নার কোবাও আরে বলিরা কিছিল কর্মানিকার ক্রেরে বে হাভাবিক সভ্যপরারণতা তাহার হভাবের হল্পেরারিই হিল এই আ্রচরিতে প্রতি হবে হলে ভাষাবিক্রিত হইরাতে।

শিংকাৰ আন্ধানকৈ আচাৰ্য্য হিলেন। আহাৰ উপ-বেশাবলী "বৰ্ণনীবন", "বাবোংসবের উপদেশ ও বঞ্জা" অভৃতি এছে প্রকাশিত হইরাছে। সেই সকল এছের ভাষার অক্ষিতা ও বর্ণনার আকর্ষী ক্ষরতা মাহুমকে ক্তঃই মুখ করে এবং একট বিখাপে দীপ্ত সর্গ প্রকার উক্ষল আছা পাঠকের বৃষ্টর সন্থাব ভাষর হইরা উঠে।

বাংলা ভাষার জাহার সরতুলা বক্তা আবাদের কালে আবরা দেবি নাই। বাহার: জাহার; বহুবি দেবেজনাব, বজানক কেলাচল, ইবরচজ্ঞ বিদ্যাদাগর অববা জিলোটেলনের ক্ষণ গভরেন্টের বিরুদ্ধে বে বক্তৃতা দেন ভাষা ভনিয়াছেন জাহারাই আবার সহিত একনত হইবেন। বাজসমাজের উংসব প্রভৃতির উপাস্থার বাদ্ধ এবং অবাদ্ধ নির্ক্ষিণেবে সকলকে ঘণ্টার পর ঘণ্টা কি মধ্যুক করিয়া রাবিভেন সে কবা চিতা করিলে এবন আকর্যা বোধ হয়।

### দেশপ্ৰেম ও স্বাধীনতা

অতি বালক ব্যুপ হইতেই শিবনাৰ ভারতের পরাবীনভার বেলনা অকুতৰ ক্রিডেন-ভীত্রতাবে ইয়ার অপহান জালার অভাৱে বিশ্ব হইত। ভারণ বরস হইভেই দেশাভাবোৰ ও বাৰীনতা সধৰে কবিতা দিবিৱা তিমি পাঠ ও প্ৰভাবিত করিয়াহেন। তাঁহার কবিচিও স্বভাবতই দেশের প্রাধীনভার विक्रांड चढात चढात विद्यान कविशास । এक-এक अध्य ভাষার কবিভা, ভাষার অভাত দেবা পভিয়া এই কবাই আয়ার माम स्वेशार एवं, छाशाय मकन वर्षकात ७ कर्वकारहे।व খন্তবে খন্তবে একটা খাৰেশিকভাৱ কৰুমোত বহিত : ভাৰাই বেদ তাহার সকল কর্পের, সকল চেটার মধ্যে প্রেছণা বোগাইত। বংশী মূগে 'প্ৰবাসী' পঞ্জিকায় জাভার প্ৰবন্ধ 'ব ও দেশ" পভিলেই এ বিষয়ে তাঁহার চিতের পভীরতা সহভেই **प्रश्रायम कहा बाहेर्यः (४८मद प्रायोग्छ) प्रदेश कहा (य** ক্ৰাৰ ক্ৰা নয়, নিকেকে কোনপ্ৰকাৰ আৱাম, প্ৰলোভন, चार्यंत मरना भिनिष्ठे बानिरम रम जाना प्रमृत्यामण स्टेरन. ভাঁহার সমস্ত লেবায় এবং সমস্ত জীবন দিয়া ভাষা ভিনি প্রমান कविशास्त्रम ।

- ১। "ইন্সিয়ের দাস ধেবা বার মাস বদেশ উদ্বার ভার কর্ম বয় :"
- ২। "গ্ৰহে প'ভৱত; বিধবা ছইবে ধেলপেডে থাকে ব্ৰহ্মচৰ্যা সংখ আৰু সে প্ৰকাৰে থাকি ভ্ৰহাচালে যত থাৰীৰতা ধনে উদ্ধেলিছে।"
- ৩। "শিবরাত্তি মত বাক অবিরও আলিরে সলিতা বলে বতক্ষা;" "হবে মা কথাতে কেবল লেখাতে ক্ষিতে হুইবে ক্ঠোর সাধ্যা।"

শিবনাথ থেশের রুক্তির কণ্ঠ, বাজ্বের সেবার এবনি করিরা নিরভর "কঠোর সাবনা" করিবা সিরাছেন, তিলে তিলে— অক্সাং একটা উল্লোসের আবেণে নয়—আর্থান করিরা সিরাছেন। শিবনাথ-চরিত্রের এইবানেই বিশেষ্ড। তালার সকল কর্মে ও সকল চেটার অল্পরে অল্পর একটা

88 -

দেশপ্রীতির রসমোত বহিত এবং তাঁহাকে তাঁহার অক্স কর্মের মধ্যে অপুরোরণা হাম করিত।

হিন্দু বেলার (২৮৬৮) ভরণ বরসেই দেশপ্রেন্থোতক কবিতা রচনার ক্ষয় তিনি আহুত হন; এবং এক শত প্লোক-ব্যাপী এক সুধীর্থ কবিতা পাঠ করেম।

১৮৭৭ সালে শিবনাধ শাস্ত্রী, (ভাজার) প্রশ্বরীনোহন দাস, বিশিনচন্ত্র পাল প্রভৃতি পাঁচ বাজি গভীর রাজে ছেরার ভূলের এক নিক্ত কক্ষে হোনারি প্রভৃতিত করিরা একট বটপত্রের উপর প্রতিজ্ঞার সর্ভ লিখিয়া আহতি দান করিতে করিতে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হন:—

- (১) বিৰেণী শাসৰ বিৰাভাৱ অভিনেত নহু--ভারতে স্বায়ন্ত শাসৰ প্ৰভিষ্ঠায় ক্ষয় প্ৰাণপৰ চেটা ক্ষিত্ৰ।
- (২) এই শাসনতভ্ৰের অধীনে চাকুরী বা দাসত ( দারভ শাসনের প্রতিভূপ বলিরা) ছংখ-দারিজ্যে নিশীভিত হইলেও বৰ্জন করিব।
- (৩) সাম্য-নৈত্ৰী-বাৰীনভা-বিৱোধী ভাতিভেদ-প্ৰধা রহিত করিতে চেষ্ট্ৰা করিব।
  - (৪) অৰ্থ সকৰ ক্ষিব না। ইত্যাদি ইত্যাদি।

এই সমর শিবনাধ হেরার খুলের হেডপতিত ছিলেন এবং তাঁহার উপর নির্ভগ্রীল ছিল হু-একট হুঃর সংসার ; বুছ পিতা মাতার তিনিই একমান অবলয়ন ছিলেন। বছু ও আল্লীয়কন সকলেই তাঁহাকে প্রবেক্টের চাকুরী ছাভিতে নিষ্ণে করিয়াছিলেন। তিনি ভীব্ণ সংগ্রামের মধ্যে পড়িয়া ঈশ্বরের শর্ণাপর হইলেন ও মনে বল পাইলেন। তথ্যই তিনি চাকুরী ছাভিয়া দিলেন।

ভারভ-সভার তিন কম প্রতিষ্ঠাতার মধ্যে শিবনাথ এক কম। এবং ইহার কচ টালা আলার প্রভৃতি পাটুনীর কাক তিনিই করিয়া ইহাকে প্রশান করিয়া ভূলিয়াছিলেন।

১৯০৮ সালে অধিনীকুষার দত্ত, কৃষ্ট্রার বিত্র প্রভৃতি বন্ধ অবকে ভিগোট করার বিরুদ্ধে বে সভা হর ভারাতে রাজ-ভরে সভাপতিত্ব করিতে শীর্ষভানীর দেশবায়কগণ রাজী হয় নাই—পাছে গবর্ষেন্টের কু-দৃটিতে পড়েম। শাস্ত্রী মহাশর সেই সভায় সভাপতিত্ব করেন এবং নির্ভিক তেজবিভার সহিত প্রথাকিত ভারোর প্রতিবাদ করেন।

ভারতের বাধীনভার অভতন শ্রেষ্ঠ পুৰারী শিবনাবের বিহাং-বর্ষী আবেগনত্বী কবিভাঙলি প্রভাক বাঙালীর কঠছ ও জীবনে প্রভিতাত করিবার যোগ্য।

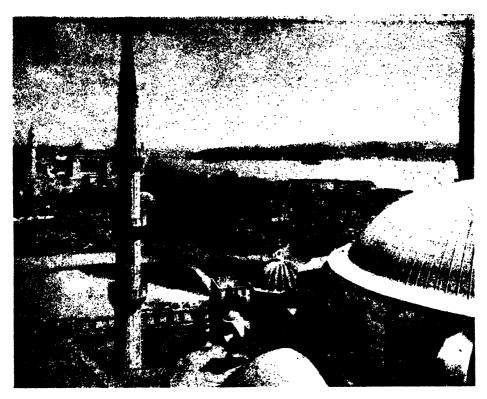
ইংলও বাসকালে শাল্লী মহাশন ভাৰতের অবছা ও দাবি জানাইরা করেকট বক্ততা করেন এবং ব্রিপ্তল হুইতে বাজা বামবোহন রাবের মুখর মুর্তি পাগতী প্রভৃতি স্থৃতিচিত্তলি আনিরা বলীয় সাহিত্য পথিয়বের হতে দান করেন।

এই খনে যদে হইতেছে পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রীর মত প্রাণবান সাহিত্যিকের স্কৃতিরকাকরে ও উহার জন্মপতবার্বিকী উদ্যাপন করিবার কনা বদীর সাহিত্য-পরিবৎ হইতে বিশেষ আহোকন করা উচিত।

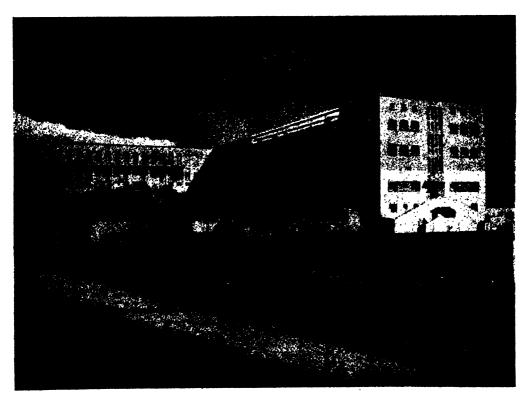
পতিত শিবনাথ শাখী মহালয়ের মত বধ্বুৰী ও বিচিত্র প্রতিভাগপার এবং সংখ্যাতীত অষ্ঠান-প্রতিঠানের সৃষ্টিত জিয়াশীল ভাবে ঘননিবিষ্ট কর্মার জীবনের প্রতিহালিক চিন্ন সংক্ষিপ্ত অবকাশের হবো কূটাইয়া তোলা হংসাধ্য। আসরা এখানে শিবনাথ সম্বান্ত রবীজনাথের হু একট কথা উদ্ধৃত করিয়া এই অনুধুৰ সমাপ্ত করিব।

"… তাঁহার আত্মা আপনার স্বভাবের প্রেরণাতেই সমন্ত নিষের ও প্রজাভন বিদীন করিয়া মৃত্যির অভিমূবে বাবিত হইয়াছিল। তরসো মা জ্যোতির্গময়, এই প্রার্থনাট তিনি আগ্র হইতে পান নাই, বৃদ্ধি-বিচার হইতে পান নাই, ইহা তাঁহার জীবনী শক্তিরই কেন্দ্রনিহিত ছিল, এইজন্য তাঁহার সমন্ত জীবনের বিকাশই এই প্রার্থনার ব্যাব্যা।

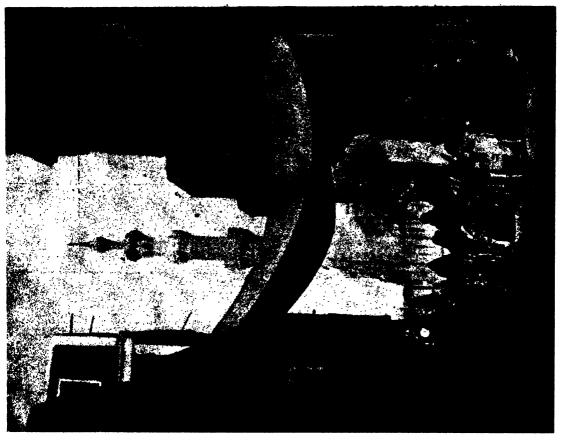
"কান্তত আত্মার এই বভাবের গভিটিই সকল বর্ষসরাক্ষের প্রধান নিকার বিষয় ।···বাবা পথ না থাকিলেও চৃষ্টি আপন পথ বুঁলিয়া বাহির করে ।···প্রাণাপজ্ঞি সহক প্রাণশজ্ঞির হারাই উবোবিত হয় । কেবল বাহিরের পথ নহে, সেই অভবের উবোবিত হয় । কেবল বাহিরের পথ নহে, সেই অভবের উবোবিত হয় । কেবল বাহিরের পথ নহে, সেই অভবের উবোবিত বাহারা প্রাক্ষণ করিয়াছেন, শিবনাথ প্রকৃতির একটি লক্ষণ বিশেষ করিয়া চোবে পজে; সেট তাঁহার প্রবল মানববংসলতা ।···অখচ এই তাঁর মানববংসলতা প্রবল থাকা সত্তেও সভ্যের অহুরোবে তাঁহাকেই পদে পদে মান্ত্রহক আঘাত করিতে হইরাছে ।···মান্ত্রের প্রতি তাঁহার ভালবাল; সভ্যের প্রতি তাঁহার নিঠাকে কিছুমান্ত মুর্মাল করিতে পারে নাই । যে ভূমিতে তিনি জীবনকে প্রতিষ্টত করিয়াছিলেন, তাহা মানব-প্রেমের হলে কোমল ও ভামল, আর বে আভাশে তিনি তাহাকে বিত্তীর্ণ করিয়াছিলেন, তাহা সভ্যের জ্যোতিতে নীপায়ান ও কল্যাবের সজ্ঞেরবাহে লমীরিত।"

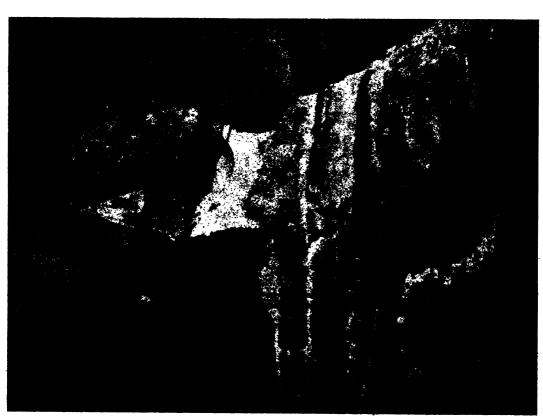


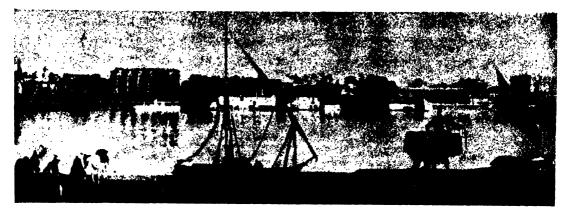
ইভাছুল, বাঁহিকে লেউ সোকিছা, সন্থে খুলভান আহংমেৰ বসজিয



कृषि-करमक, जावारा







नोजनादत्र अक्षि पृत्र

# বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ

### 🕮 বিনয়ভূষণ দাসগুপ্ত

### প্ৰথম অধ্যায় কলিকাভা হইতে লওন

সন ১৩৫৩ সালের আখিন যাস। বছমাতা ছুভিক ও দালা-বিধ্বতা। তথাপি তাহার উদার শারদাকাশে সর্বরানিহারী প্রস্থতা; শেকালিকাঞ্চলা পদ্দ-পত্র-নরনার বদনক্ষলে কাশ-কুল্নের হাসি; আনক্ষমীর আগমনী গানে বাঙালীর মন সহংক্র। ফত-সমাপ্য বাজ-কার্যোপলক্ষ্যে আমি দেশ-দেশভারে চলিয়াহি।

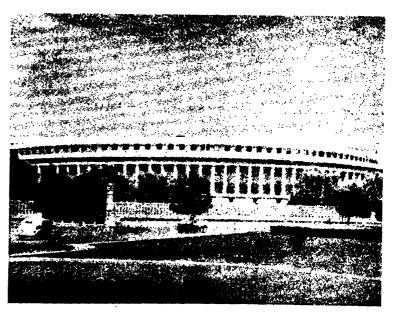
১৪ই चार्चिन (১ना चर्छावड ১৯৪৬) मननवाद। अकान

নোৱা আটটার (ভারতীর ই্যাঙার্ড
টাইন) দমদম বিমান-বাঁট হইতে
বিমান উভিগ, উঠুভি বিমানের
সামনে ও পিছনে দমদম শহরট কুলর
দেখাইতেছিল। গৃহরাজি বেন ভাষলকুল-মব্যবর্ডী। নারিকেল-রক্জ-শ্রেনী
সবার উপর মাবা ভূলিরা সমীরব-ভরে
হেলিরা-ছলিরা আমাকে হাভয়ানি
দিতেছিল। উইলিংডন সেতৃর উপর
দিরা গলা পার হইবার সমর বামে
উভর-কলিকাতার সোবশ্রেনী, উভ দ
হাঙ্ডার পোল এবং অসংখ্য নৌকানিথেবিভ গলামোভ সমবারে এক
অপূর্ব দুপ্ত চকুর উপর ভাসিরা উঠিল।

আট হাজার সূট উঁচু ধিরা
ঘণ্টার প্রার আভাই শত নাইল বেগে
বিনান গর্জন করিরা ছুটভেছে। বর্বাবিবোভ পরিভার আকাশ। ছু-এক
টুকুরা নালা বেদ এবানে ওবানে

উপরে ও নীচে ভাসিরা বেছাইভেছে। নীচের গৃভাবলী পরিকার দেখা যাইভেছে।

শত্ত-ভামলা সরিং-বেশলা বদমাতার রূপ উপর হইতে
অপরণ দেশইতেহে। মাবে মাবে স্বৃদ্ধ পাছে দেরা প্রাম ও
শহর। যামোদর নদ ও তাহার উপনদী, লাধানদীওলি বিলিয়া
বস্মাতার তরুলতালোভিত গালে অপূর্ব আভয়ন রচনা
করিবাছে। মাঠের মধ্যে ভ্ষিত্র আলগুলি পর্যান্ত দৃষ্টপোচর
হইতেহে। জনশং লালমাটির দেশে উপনীত হইলাম।
অ-প্রসর-সলিলা কুল্বধা শোন নদীকে ক্রতে অভিক্রম করিবা



বাৰহা পরিবৰ ভাৰ, নুভন দিলী

সঙ্গীলগতি গৈৱিক-বসনা গলানদী দৰ্শনে পবিত্ৰ বোধ করিলাম। কিছুক্তণ গলানদীকে সানক্ষে অহুসরণ করিলাম। গলার মনোরম হবি অন্তর্হিত হইল। চারি বিকে বিশাল প্রান্তর। প্রান্ত শহর গুলি এবন আর ঘন নর। স্থামা লক্ষ্ণে নগরী দর্শনে মন আহ্লাদিত হইল। সহসা সূত্রন দিল্লীর মৃত্যন সৌধ-প্রেমী গৃষ্টিপথে পতিত হইল। বেলা পৌনে বারোটার বিমান দিল্লীর পালাম বিমানঘাঁটিতে অবতরণ করিল।





পুরাতন দিলীঃ একট রাজাও দুগা

কিকিধবিক এক ঘণ্টা বিপ্রামের পর আমরা আবার উড়িলাম। এবার আর সর্ক চোবে পড়ে না। বিত্তীর্ণ মরুজুরি। করাচীর কিছু পূর্বে জলসেঁ চের খালগুলি দেখা বাইতে লাগিল। আবার কিছু কিছু সর্ক বেখা থিতে লাগিল। ন' হাজার কৃষ্ট চুঁ দিরা উড়িরা বৈকাল প্রার চারিচার করাচী বিনামবাঁচিতে নামিলাম। বিমান বাঁচি হুইতে কোন্দানীর বাস আনাদিগকে লহুরের প্যালেস্ হোটেলে লইরা পেল। রাভার উট্ট-পূঠারোহী বাজীবল ধেবিলাম। বিবালোকটুকুর সম্পূর্ণ সন্ত্রবহার মানসে একটি ট্যাজি লইরা শহর ধেবিতে ছুটলাম। ক্লিক্ট্ম সর্ক্রানেকতে নামিরা সরুস্ক ও পোভাপ্রবের হিবাবসাক্ষালের পোভা

ব্রাণ ভরিষা পান করিরা দইলান। বিজীপ বেলাজুনি। সমুবে দিগতবিভূত সন্ত্র। তবব্যে একট পাহাত মাধা উ চু করিরা আকল্যিত দেহে সর্ত্রের চেট উপভোগ করিতেছে। কলিপে চক্রাভার পোতাঞ্রর ও ইতভতঃ বিজিও কাহাকসরূহ। হর্যাভা হইরা গেল। চারি বিকে আলো অলিরা উঠিল। বলদেশে আনার গৃহে তবন হরতো বিধারক-মুলে মুর্গামাতার অকাল বোবন হইতেছে। হোটেল কিরিলাম।

হোটেলে রাজি যাপন করিরা ভোরে অৰকার বাকিতে বিষাণ্টাটর দিকে রঙনা হইলাম। সেধানে পুলিস, ভক ও বাহ্য বিভাগের খাঁট অভিক্রম করিয়া অর্থ্যোদরকালে লাভটার পুনরার উড়া সুক্র করিলাম। কিলিদ্বিক দশ ছালার সুট উৰ্দ্ধে ঘটাৰ প্ৰায় আড়াই শত মাইল বেগে উভিতেছি। ভৰাপি মনে হয় वियास अन्तर्ग हिंद, दिन देवर्रक बाना बद्ध বসিরা আহি। কেবল প্রেনের দারুণ গৰ্জন অনবরভ কানে আসিভেছে। चावारभव प्रक्रित देवारभव श्रवण-रक्षव অভূর্বর উপকৃত। বামে সমুদ্র। উপরে পরিষার নীলাকাশ। নীচে নীলাগুরাশির উপর ভাগষান যেখযালা বালভুর্যা-কিরুণে উত্তাসিভ। কোৰাও মেৰওলি সাদা ভেলার মত ভাগিতেছে। কোণাও মনে হইভেহে বেন তুলার পর্বতহালা দাড়াইয়া আছে। প্রভাত-হর্ষের কিরণ তাহাদের উপর পড়িয়া সুন্দর বেবাইতেছে। নীচে इ'बक्बाना श्रेमाद (मबा (मन। बक्री ৰদী বাগিয়া সহজে বিলিয়াছে। সহজ ছাছিরা নদীর উপর দিরা উভিভেছি। ছোট বড় নোকা ও প্রয়োর নদীতে চলিভেছে। সহসা অনুৰ্বন্ন ভূমির মাৰবানে নদীতীয়ে একবঙ ভূণাছাণিভ ভবি গৃটিগোচর হইল। অপর ভীরে খর-বাড়ী। প্লেম মামিতে স্থক কবিল। নীচে

আদিতে দেবিলাৰ বে ভ্ৰাচ্ছান্বিত ভূমিৰও আদলে বিভীৰ্ণ বৰ্ত্ব-বন। যা বড়া উদিলা ভাৰতীয় সময় একটার আমরা টাইত্রিস ভীরবর্তী বস্রা শহরে নামিলাম। তথ্য ছামীয় সময় সকাল দশটা। যায় বন্টায় আমালের তিন ঘন্টা সময় লাভ হইবাছে।

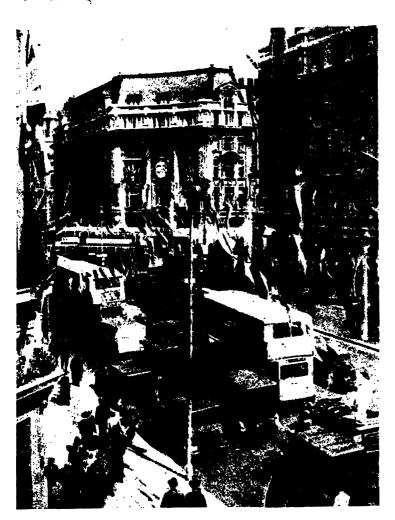
এক বন্ধী বস্বায় ব-পোতাল্লৱে বিশ্লান করিয়া যানীয় কর্মচারিগণের আতিবেরতা উপভোগ করিয়া আবার উড়িলান।
ভারপর ইয়াক ও টাল বর্ডনের বিতীর্ণ রক্ষত্বি পাতি সুরু হইল।
এক স্থানে ভাইনে দূর হইতে ভ্রবাসাগর দেবা গেল। স্বয়েজবালকে অভিক্রমকালে মুক্তামালার মত মনে হইল। বালট

পরিভার ষ্টপোচর হইল। সহসা দিগছ-বিভৃত মরুভূমির মধ্যে এক মরুবাভিরাম সবুদ্দ দেশ দেখা গেল। ইহা বিশ্ব দেশ। প্রার পাঁচ ঘণ্টা উভিরা নীলনদ-তারবর্তী কাররো শহরে মামিলাম।

কোম্পানী কাররোতে আমাদিগকে হোটেল নেটোপলিটনে
লইরা গেল। তথন ঘণ্টাথানেক
ধিবালোক আছে। একট গাইড
কোগাড় করিরা ট্যাজি লইরা
তংকণাং শহর ধেবিতে বাহির
হইরা পড়িলাম। শহরে করাসী
ইঞ্জিনীররগণের পরিক্রিত স্থন্দর
রাভাও বাড়ী লি বেশ লাগিল।
শহর হইতে দূরে বিশ্ববিধ্যাত



राणिका-मुभद्र वनवा



ल्खन बचतीत बाक्रमध्य वःस्वाहन हलाहरम ६ अक्टि पृत्र

পিৱামিত পৰ্যান্ত সোকা চলিলাব। পিরামিড গুলি প্রস্তর-নিমিত, বিরাটকার; ক্ৰমশীৰ্ণাৱমান হইয়া ভূতল হইতে ভাকাৰে উঠিয়াছে। কড রাজা ও রাজ্য একে একে মহাকালগর্ভে বিলীন হইয়া গিয়াছে। কিছু বক্তদেছ পিয়াহিড শ্ৰেণী महाकारभद्र सहदोषक्ष प्रशास पहेल। हेशास्त्र निर्मान-त्रक्ष चाकित चलाछ। ৰূপ ৰূপ ধ্রিয়া মরুভূমির মধ্যে উন্নতশীর্ষে টাড়াইয়া বাকিয়া ইহারা মহ্যাভাতির विश्व देश्यामम कविरक्षा मन्द्रे পিরামিত দেখিলাম। তিনট বড় ছবট (बाहै। बाहे ह विनन, वश्री ह छेकला शूर्व १४) कृष्ठे विल् अर्थन ११) कृष्ठे चार्छ। উপৱের ত্রিপ ফুট আলাবাটার নির্মিত ছিল। কালক্ৰমে ভাঙিবা গিৱাছে। রাইডটির মতে শিরামিডঞ্জলি ৩৭৩৩ **এ** প্রাক্তে নির্মিত । বচ পিরামিতের পার্বে রাজা ফারুকের এীশ্বনিবাস। এবন ৱাকা আলেকজাতি হার আছেন। সামী मृत्र श्रामाम भारावा मिरण्डा अपूरव विवाहेकाव किंड मु श्रीमिटक वृथ कविवा ছাসিতেছে। ভবন দিবালোক প্রার নিংশেষ হইয়া আসিয়াছে। সেই আলো-আঁবারের বিলনে কিছ সের বিষ্ট্রাসি মিষ্টক হটরা উঠিবাবে। ইতভত: অনেক-ভলি প্রাচীন বিশরের রাজা-উভিবের সমাধি-মভিত্ব। মাট খুঁ জিরা তাত্থালিগকে পুৰিবীর গর্ভ হইতে উভার করা হইরাছে। মন্দিরমধ্যত্ব পাণবের বৃতিভলিতে শিলীর



ওরেষ্টমিন্টার রাজপ্রাসাক্ষের ক্লকটাওরার: অথবানে রাণা বোডেসিরার রোমানকের বিরুদ্ধে অভিযানের বোঞ্চ বৃত্তি

নিপ্ৰ হতের পরিচয় পাই। শুক্লা সংগ্ৰীর চাঁহের আলোকে বর্ণাসন্তব উহানিগকে দেবিরা, আমাধের আগ্যন্থনা-লিপ্ত্রের লনিবঁদ্ধ অঞ্রোব উপেকা করিরা ট্যান্সিতে আলিরা উটিলার। নীলমদের উভয় তীরবর্তী, আলোকাবলী-বচিত শহরের রাজিকালীন দুখ পরম রমনীয় মনে হইল। বাজার, রাজ্ঞাসায় ও বছ বছ রাভাগ্ডলি দেবিরা হোটেলে কিবিলার।

বামি ১টা ২৫ মিনিটে আমরা হোটেল ত্যাপ করিলার।
বিমানবাটতে আসিরা পুলিশ ও ৩%-বিভাগের বাঁটওলি
অতিক্রম করিরা প্রেনে উটিলার। রামি ২টা ২৫ মিনিটে পুনরার উভিতে পুরু করিলার। অরকার তেল করিরা বিনাম
লগর্জনে চলিরাছে। বামিগণ খ-খ আসনের পিঠ ব্যালগুর
নীচে মামাইরা তঞাপ্রব উপভোগ করিতেছেন। ক্রমনঃ
হর্ব্যোদর হবল। আমরা আফিকার উভর-উপকৃল বরিরা
উভিতেছি। গুরুই মরুণ্ডরি দেখা বাইতেছে। ক্যাপ্টেন বলিরা

পাঠাইলেন বে, ভূষণ্যপাগতে বড় উঠাত্ত ভিনি সেহিকে যান বাই।

খানীর সময় আটটার ত্রিপোলীর ক্যাসেল্ বেনিটো বিমানবাঁটিতে নামিপাম। এই বিমানবাঁটিট মুক্কালে ক্ষেক্রার হভাভরিত হইরাছে। মেসিম গানের সহস্র ক্ষত এই বাঁটিটিতে বিদ্যানা। ঢেট-টনের ঘরঙলি হিপ্রেম্ব। বিভীর্ণ প্রাভবের মধ্যে এই বাঁটি। দূরে পর্বভ্রেণী দেখা যার। গোকালর কোবাঙ দৃষ্টগোচর হয় মা। এবানে আয়াদের প্রাভ্রানের ব্যবহা হইল।

দেছ থটা বিশ্রামের পর স্থানীর সময়
সাছে নয়্টার পুনরার উড়িতে স্থক
করিলাম। প্রথমেই ভূমব্যসাগর পাছি সুক্
ইইল। উপরে দিগন্তপ্রসারী নীলাকাশ,
নীচে স্থিভীর্থ নীলাকুরাশি। মাবে
মাবে মেঘগুলি সমুদ্রের উপর ভাসি-ভেছে। উপর হইতে স্থর্ব ভাষাদের
উপর আলোকপাভ করিভেছেন।
আকাশ, সমুদ্র ও মেঘের থেলা দেখিতে
দেখিতে সহলা ক্রাজের উপকৃপভাগ
দৃষ্টপোচর হইল।

উপর ছইতে করালী দেশের দৃষ্ঠ পরম রম্পীর। সর্বঅই শভ্মতিত ক্ষেত্র। দক্ষিণাংল পর্বতমর; কিছ তথাপি শভ্যতামল। বছুরগাত্র করালীভূমিকে কুটলগতি লোভবিনীগণ কোবাও মৃত্যা-হারের ভার, কোবাও বা রৌপ্য-মেবলার ভার বেইন করিরা আছে। মাবে মাবে সুক্ষর শহর। বাছীগুলির ছাল প্রারই

লাল। নগর হইছে নগরাভর পর্যাভ রাভা বা রেল-লাইম পরিভার দেখা যাইতেছে। নদীর উপর পুলগুলিপর্বভ বেশ দেখা যাইতেছে। চলভ নোটর গাড়ী বা রেলগাড়ীগুলিকে উপর হইতে চলনশীল বিন্দু বা রেখার ভার দেখাইতেছে। একট প্রবায় উদ্যানের মত সমন্ত ক্লালকে পশ্চাতে কেলিয়া লা-হাভ র্ বন্ধরের বিকট দিরা সমূত্রে পভিলাব। বাবে আটলাটিক। হজিবে ইংলিশ চ্যানেল। পিছনে সমূত্র-বিবৌভ পৃহবালা-শোভিত স্থভামল ক্লালের উপকৃল। সহসা সমৃত্রমধ্য হইতে বেন এক পুন্দর দেশ উবিত হইল। ইংলও চুট্টপথে পতিত হইবামাত্র মাত্রিমহলে আমন্দের চঞ্চলতা লচ্চিত হইল। ইংলও চুট্টপথে পতিত হইবামাত্র মাত্রিমহলে আমন্দের চঞ্চলতা লচ্চিত হইল। ইংলওের উপকৃলে সমৃত্রতীর পর্যন্ত গৃহরান্ধি পরিশোভিত। ভাইনে স্বরে নালা বভির পাহাজশ্রের দেখা বাইতেছে। অন্তমনোর্থ পর্যোর কিরণ ভাহার উপর পভিরা পরম রমনীর সৌল্ব কৃষ্টি করিবাছে। ধেবিরা আমার অ-কবি মনেও

বোধ হইতেছে এ বেন 
কার্মানী, তথা ইউরোপ
তথা—সমগ্র পৃথিবীর দিকে
তাকাইরা কর-দৃধ্য ইংলঙের
পৃঞ্জীভূত কট্টছাসি। বনসবুক বৃক্তশ্রেই, পুক্ষিত
ক্রেমালা এবং বন-বিভগু
প্রাসাদাবলী অভিক্রম
ক্রিয়া বিষান লগুনের
হিব রো বিষানবাটতে
অবতরণ করিল। তথন
হানীরসমর বৈকাল প্রার
চারিটা।

পুলিস, শুৰু ও খাছ্য বিভাগের গাঁট অভিক্রম করিতে প্রায় আববণ্টা সময় বেস: কোম্পানী বাসে আমাদিগকে ভাহাদের

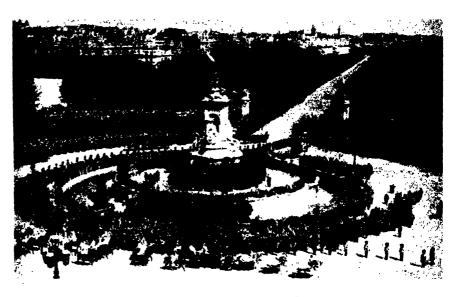
শহরের আপিস পর্যান্ত পৌছাইরা দিল। আপিসট বাকিংহাম পাালেস বোডে ভিটোরিয়া টেশনের কাছে। সেইবানেই ববর পাইলাম যে কেন্সিংটন হাইট্রাটের এক হোটেলে আমার জড় ছাম করা হুইরাছে। ট্যাল্লি-ঘোপে সেবানে পৌছিলাম। সেদিম মহাইমী। সঙ্গদেশে আমার গৃহে তবন হুমতো ছুর্গারাভার সভ্যারতি স্থাপনাস্তে ভোগের আরোজন হুইতেছে।

এই বাজার হয় গক্ষে যোঁট ৬৪০২ মাইল রাভা বিদাদ-বোগে অভিক্রম করিয়াছি। দ্রত্বের ভালিকা এইরূপ :---

কলিকাতা-—দিল্লী	742
দিল্লীক্রাচী	*78
করাচীবস্ব	)4 <b>&gt;</b> %
বস্বাকাষ্বরে	2060
কাররো ত্রিপোলী	8404
ত্ৰিপোলী— লওৰ	2400
	<b>&amp;80</b> 2

প্রত্যেক লক্ষের পর বঙ্গির কাঁচা পিছাইয়া দিতে হইচাছে।
এই রাজা অভিক্রম করিতে বোট লাড়ে পাঁচ বন্টা সমর লাভ
হইরাছে। লওন কলিকাভার পশ্চিমে। অভ্যাব স্থান্য এবানে
কলিকাভার লাড়ে পাঁচ বন্টা পরে বেবা বার। লেইবভ লওম
সমর কলিকাভা সমরের (ভারতীর ট্রাভার্ড টাইন) লাড়ে পাঁচ
বন্টা পিছমে।

বৈকাশ চারিচার লগুনে পৌছিলাম। তথন কৃলিকাতার রাজি সাক্তে নরটা। যদি কোন বিষান ঘন্টার ৬০০ যাইল বেগে সোজা পশ্চিমে চলে তবে উচ্। সর্বজ্ঞ একই স্থানীর সময় পাইবে। যদি কোন প্লেন প্রবোদরে লগুন ত্যাগ করিয়া ঘন্টার ৬০০ মাইল বেগে নিউ ইবর্ক পর্যন্ত যার তবে ঐ বিমানা-রোহিগ্রণ সর্বজ্ঞই প্রবিধানর কেবিতে পাইবেন। এ অবস্থার



১৯৩০ সৰে সম্ৰাট পঞ্চম জর্জের রঞ্জ জন্মন্ত উপলক্ষে ভিক্টোরিয়া মেমোরিয়াল পরিক্রমা

বদিও আহারাদির ব্যবহা বড়ি দেবিরাই করিতে হয় তথাপি প্রাই সমন্ত্র-বিজ্ঞান্ত ঘটে। করাচী হইতে বস্ত্রার পথে পুর ক্রত ক্রাবিনা-পরিবর্ত ন হয়। কারণ পস্রা নিধা পশ্চিমে। এই সক্রে আমরা প্রার তিন ঘটা সময় লাভ করিরাহিলাম। কলে বর্ম ভারতীয় সময় একটার আমরা বস্বার পৌছাই তর্ম হামীয় সময় ঘশটা। প্লেমের মধ্যে বর্ম আমাধিগকে ন্যাহ্য-ভোজন দেওরা হইল তর্ম হামীয় সময় বারটা—ভারতীয় সময় ধবন ভিন্টারও বেনী। অভএন আমাদের হুই নার আহারের মন্যবর্তী ব্যবধান অনেক বাভিনা সিয়াহিল। এইরূপ অনেক সময় এই ব্যবধান ক্রিয়া বার। কর্মন কর্মন প্রার বা ম্যাহ্য-ভোজন ভূট্টয়া বার। ক্রিন আমরা প্রার ১৮ ঘণ্টা দিবালোক পাইয়াহিলাম।

এই বাত্রায় আমাদের আহারাদি কবনও নীচে কবনও বা প্লেনে হইয়াছিল। প্লেনে বাবার কোন অস্থবিধা হয় না।

বে প্লেমে আমলা গিলাছিলাম, উহা ইয়র্ক-শ্রেমীর প্লেম। চারিট ইঞ্জিম, বুব ফ্রুডগামী—গর্জন একটু থেকী। বারট আসনে আমলা বার কম যাত্রী ছিলাম; ভববো মর কম বেডাল, তিন কম ভারতীর। বাঙালী আমি একা। ছিডীয়— পূর্ণিয়া ক্লোবাসী এক ক্ষমিদারপূত্র। মুবকট বিদ্যাশিকার্থ কেম্বিক যাইভেছেম। বুব অমারিক এবং সদালাকী। ক্লাচী এবং কারবোতে নগরত্বনি সমরে এই যুবকট আমার সলী হইলাহিলেম। ভৃতীয়—এক কম ভারতীর বিলিটারী অকিসার।

প্রেন-জনণ ধুব আরামধারক বলিরাই মনে হইল। প্রেন
ধুব ছিরভাবে চলে। নভিতেছে এরপ মনেই হর না। প্রেনের
মধ্যে চলাকেরা করার কোনই অপুবিবা হয় নাই। রেল বা
ভাত্তি বাহা অপুবিবা হয়, প্রেনে ভাহাও নাই। বরং নীচের
সভত-পরিবর্তনশীল রম্মীর হুভাবলী সর্বহাই চিতের আনন্দ
উংপাধন করে। আর ফ্রভাবামিধের ভো ক্বাই নাই।

## "ম্বপন যদি সত্য হয়—"

### बिनही सनान ताय

রারবাছাহ্র মহীতোষ বোস্ একবার বাড়ী আবার রাভার বোড় পর্বান্ত সারা বিকেলটা হুটাহুট করছিলেন। হুর্ভাবনার তাঁর বুড়ের ভিতরটা বড়কড় করছিল—কণ্ঠ ধন ঘন শুকিরে উঠছিল। শীভের দিনেও হুই-ভিন ঘন্টার মব্যে ভিনি কুঁজো-বানেক কল শেষ করে কেলেছেন। তাঁর স্ত্রী আনীতা দেবী আমীর মনের কথা বুক্তে পেরেও হুবে কিছুই বললেন না। ফতকগুলো কাটা কাপড় নিরে সেলাইরের কলের কাছে বংসাছলেন হুপুরবেলার—সেলাই শেষ করে ভিনি থখন উঠলেন ভবন বেলা প্রান্ত পড়ে এলেছে। মনে মনে ভিনিও উদির হরে উঠেছিলেন—কিছু তার বাহ্য-প্রকাশ ছিল না। তিনি আনাল। দিরে বাইরে রাখ্যার ছিকে ভাকালেন। দেবলেন, রাভার আয়গার আরগার ফুরু ক্ষে জনতা উদ্বেকিত—ভাবে আলোচনা করছে।

মহীতোষ বাবু আর সহ্ন করতে পারলেন না। রাভার মোড় থেকে ব্রে এসে স্ত্রীকে বললেন—গাঁচটা বেজে গেল— আবচ আনক কিরলো না এবনও। তামছ তো বর্ম্বভলার গুলি চলেছে ছেলেদের মিছিলের ওপার। যে হয়ুগে ছেলে ভোষার—আবার কোনও হালামা না বাবার। মালের মণ্যে বিশ দিন তো ইছুল কলেজ ট্রাইকই চলছে—তবু ওর কেনই বা কলেজে যাওরা। কি বিপদ বল দেবি। ঐ গোলাওলি, লাউ-মারামারির মধ্যে—যদিও গিরে খাকে—না:। ভারি আলাতনে পভতে হ'ল দেবছি।

অনীতা দেবী স্থানীর মুবের দিকে একবার তাকিবে তাঁর মনের ভাবট। বুববার চেটা করলেন। তাঁর রায় বাংগছর বামী নিরুপরর জীবনব'তার প্রবাগকেই যে জীবনের সর্বোপরি স্থান দিয়ে বাকেন, ত্রিশ বংসরের উর্দ্ধাল তাঁর সারিব্যে বেকে তিনি তা মর্গ্রে মুর্গের বুবেছিলেন। তাঁর ছেলেকে তিনি স্নেছ্ করেন অন্ত শিতার মতই এতে কোনও সন্দেহ নাই। কিছু পুত্র-স্নেহ বহু না, নির্ক্ পাটিই তাঁর কাছে কাম্য একবা টিক করে বুবে উঠতে পারেন নি এবনও।

আনী চা দেবী বললেন—বান্ত হরে কি হবে। এলে পভবে শীপ গিরই। পাঁচটা ছেলের সকে মিশে যদি একটু হঙ্গ করেই—কি আর করা যাবে বল।

বৃধে তিনি একথা বললেন বটে, কিছ বনে বনে তাঁর চিন্তাও কম হয় নি। ছাত্রদের উপর লাটিচার্ক, শুলি চলছে —একথা শুনে কোনু মা-ই বা হির পাকতে পারেম।

রার বাহাছর স্ত্রীর ক্থার বোটেই সান্ত্রনা পেলেন না বরং তিনি অলে উঠলেন, কটুকঠে বললেন—সকলের তেলে আর তোরার বেলে এক নর, একথা তুমি ভোলো কেন? একটু চাপা হাসি অনীতা দেবীর বৃথের প্রান্তে বেলে সেল, তিনি পাল করেই বললেন—সত্যিই তুমি অত উতলা হরো না। আমল এবনই এলে পড়বে। তা হাড়া হেলে এবন বছ হয়েছে —আর কি আঁচল চাপা দিবে বাধবার বয়স আছে।

—না-না-না, আমি বেঁচে থাকতে চগবে না ওসব। ছেলেকে ভোমার সহবে দিও—বুনেচ ? ইঃ । ছরটা বেকে গেল। না আলালে দেবছি।—ভিনি আবার ছুটে বেরিরে গেলেন।

অনীতা দেবী কামালার কাছে এবে ইাড়ালেন। রাভার ক্ষতা তেমনি ক্ষটলা করছে। তীব্র বেগে সৈংবোরাই ক্ষেক্রানি মিলিটারি লবি বেবিয়ে গেল। সেইদিকে ইঞ্চিত ক্ষেক্রার কোলাহল বেড়ে উঠল।

সভ্যা হয় হয় দেবে অনীতা দেবীও বেশ একটু চঞ্চা হয়ে উঠলেন। কিছু বিপদ ঘটগান। তো ? পাশের বাড়ীর একটি ছেলে আনক্ষের কলেকেই পড়ে। ভার কাজে গিয়ে বৌজ নেবার কথা ভার মনে হ'ল।

সভ্যা গভিবে গেছে। মহীতোষ বাবু ঘুরে ঘুরে হহরাণ হরে ব্যা নিরেছেন। অনীতা পাশের বাড়ী গিরে দেগলেন— সে বাড়ীর ছেলেট অনেক আগেট কিংহছে। ভার মুবে ভনলেন, আনক্ষ কলেছের ছেলেদের মিছিলে যোগ দিয়ে বর্মভার দিকে সিয়েছে। সেখানে গুলি চলার খবরও সে ভনেছে। একটা ছেলে ছলির আঘাতে মারা সিয়েছে ভাও সে আনে—ভারণর আর কি হয়েছে ভানে না, কারণ অনেক আগেই সে কিরেছে।

অনীতার মনের উদ্বেগ বেন্দে পেল। ঐ ছেলেট বদি
আনক হয় ? আনক—তার একমাত্র পুত্র আনক। তিনি নিজের
মনকে সাস্ত্রনা দিয়ে শান্ত করবার চেটা করলেন। তাবলেন,
যে ছেলেটকে ওবা খলি করে হত্যা করেছে সে তো কোনও
মা কোনও মায়েরই ছেলে। তার ছেলে মা হলেও বা কি ?
কত মায়ের ছেলেই তো এমনি করে প্রাণ দিয়ে এসেছে
পরাধীনতার অভিশাপে—আরও কত ছেলেকে এমনিতাবে
ভীবন বলি দিতে হবে।

বাছী কিবে এসে তিনি বারালার এক কোণে বসে প্রতান । আকাশ-পাতাল তাবতে লাগলেন তিনি । জেগে বপ্র দেবার অত্যাস আছে তাঁর । সে বপ্রের রব্যে ছঃবের বেদনা আছে—আনক্ষের স্থতি আছে । এবনি মানলিক অবহার সময় তিনি কিরে চলে বান সেই অতীতের বুগে ববন তাঁর বিত্তে হব নি । আর সেই সময়কার কবা মনে হলেই প্রবাহেই মনক্ষ্যুর সমূবে দেবা দেৱ বৌবনদীপ্র এক অপুর্য় তেক, রান্

ৰ্তি—দীৰ্ণ ছয় কৃট পৌৱবৰ্ণ ঋষুদেহ—চোৰে বাল অযুত কোভি—কৰমও ভাবাবেশে কোমল, কৰমও মদেন উদ্ভেশনার প্ৰবৰ, উপ্লঃ—ভাল সেই ছোভগা।

ছোড়দার কথাওলো এবনও বেন কানে বাছছে তাঁর ।—
অনি ভাই, তোকে আনি দীকা দেব—ভারতের নবরুগের দীকা
—বে দীকা নিলে গৃহলং দার, আনী ঃপরিজন সকলের কথা
ভূলে যেতে হয়—কেবল পরাবীনভার অভিশাপের কথা মনের
মবো সর্বদমরে অলতে থাকে । বাবা না দালারা যাই বলুক,
বিবে করিস নে ভূই। তোর মধ্যে শক্তি আছে আমি লক্ষ্য
করেছি—যা দেশের কাকে লাগাতে চাই আমি। আমি
ভোকে দীকা দেব অনি !

কিছ বিষে তাঁকে করতে হয়েছে। আর তা ছাছা এখন গোকের গৃহিণ হয়েছেন তিনি বার ছাঁগনের আফর্লের সঙ্গে ছোড়গার আফর্লের একভিল বিল নাই। সন্থানও তিনি গর্তে বারণ করেছেন। আমন্দ—তাঁর একবার পুত্র আনন্দ—কেমন হবে সে ? কোন আফর্শ সে এহন করবে ?

চিন্তাখন হিন্ন হবে পেল। কক্ষের ভিতর বেকে বড়ি বেকে ইঠল। ভনতে লাগলেন—এক, হুই, ভিন—। আটটা বেকে গেল, তিনি দীর্ঘাস কেলে উঠলেন। শ্বনকক্ষের দরকা দিয়ে উকি থেবে দেবলেন, খানী বাটের উপর ভয়ে এশাল-ওপাল করছেন। তার মানসিক যপ্রণা উপলব্ধি করতে পার্ছিলেন তিনি- কিছ তাকে সান্ত্রমা দেওয়া তার ক্ষমভার বাইবে।

ভিনি আবার বারাক্ষার এসে বসলেন। বার দেবা আবার স্থান্থ হ'ল। সেই রাজির কথাই মনে হ'ল ওাঁর। হোড়লা লাভ আট দিন পর বাড়ী কিরেছেন সঙ্খাবেলায়— নুববানি তাঁর চিভাক্ল। কোথার ভিনি গিথেছিলেন এ প্রার বাড়ীর কেউ করলেন না। অনীতা ছোড়লার মুখের ভাব দেখে মনে মনে বিচলিত হলেন, কিছু সাহস করে কিছু কিজাসা করভে পারলেন না। ঘোড়লা এমনি করে কিছু কিজাসা করভে পারলেন না। ঘোড়লা এমনি করে কিছু দিন্দের মত অনুষ্ঠ হছে যান, আবার কিরে আসেন—এ ব্যাপারটা বাড়ীর সকলের সা-সওরা হয়ে গেছে। কিছু মুখে তাঁর এমন চিভার রেখা কই আগে ভো কথনও দেখেন নি অনীতা দেবী! হোড়লার পালের ঘরটভে তাঁর ছিল পোবার ঘর। শেষরাত্মের দিকে হঠাং বুম ভেতে গেল, ভন্দেম দরকার মৃত্ব করাবাত। অনীতা কান বাড়া করে উঠলেন। আবার শক্ত ভন্তই ভিনি উঠে ইড়ালেন। ভারণর ঘরজার কাছে সিরে বিশ্বয়ের স্বরে বললেন—কে ? কে ?

চাপা পলার ছোড়দা বললেন—আছে। টেচাস নি। দরকা বোলু।

দরকা বুলে দিলে হোকদা খবে চুকে দোর বছ করে বল-লেন—অনি, পুলিসে বাজী বিবে কেলেছে। পালানোর উপায় নাই। আনি আগেই বুক্তে পেরে ছলান—আগাদের দলকে 'কলে।' করেছে 'গুরা। তেবেছিলান—আফকের রাভটা রেছাই দিলে সাম্লে নিতে পারব—কিন্ত সে ক্রসত গুরা দিলে না।---এই বলে তিনি একটু হাসলেন।

খনীতা বিচলিত হয়ে বললেন—কেন—কি কয়েছ তোষৱা হোডলা—পুলিব কেন ?

ছোড়ল। তেথ্নি একটু হেসে বললেন—আছে অনি। দেওৱালের ওপালেই ওরা কাম বাড়া করে ররেছে, জন্তে পাবে। করি নি বিশেষ কিছু—যারা ট্টাকার গণিতে বলে বসে অমান্ত্র হরে যাছে তাগের মান্ত্র হবার প্রবিবে করে দেওৱার কর মাবে যাবে আমরা তাদের মিরে একটু বেলা করে আসি—এই আমাদের অপরাব। বাকু গে, হরিবিলাস লা থিয়েছে মক্ষ নর—হাজার পণরো হবে। কিছু তাকে সাববান করে দিরে এসেছিলাম বে আমরা চলে আসবার অভত: চার বন্টা পরে যেন পূলিসে বব্র দের। কিছু দেবা যাছে তার আর তর সর নি। মালগুলো ভাগাভাগি করে সরিবে দিরেহিলাম রাভাতেই। অনেক পর্য মুরে কিছে এসেও দেবছি ওদের চোবে বুলো দেওৱা যার নি এবার—কিছানি বিশাসবাতকতা কেই করলে কি না।

অনীভার মুধ বিবর্ণ হয়ে গেল, চাপা গলায় বললেম---ছোড়ছা, ভোষার কাছে কি আছে বলভো ?

ছোড়দা একটু নিষ্টি হাসি হেসে বললেন—বিশেষ কিছু
নর, একটা রিভগভার, গোটা বিশেক টোটা আর হরিবিলাস
সা'র শ'বানেক বোব হয় 'গিনি' হবে। মুশকিল হচ্ছে কি
জানিস্—এই কটা সামাল কিনিস জাবিভার করে ওরা যে
মর্ব্যাদা পাবে, গেটা দেওয়ার জামার ইচ্ছে হিল মা। আর
এই সামাল ব্যাপারে দীর্ঘকাল কেলে পচতে হবে এ ভাবতেও
জামার ভারি বারাপ লাগছে। সব কাকই যে বাকি জাছে
জনি । এই বিভগভার দিয়ে অন্তত্তঃ গোটা দশ-পথরো হেরো
ফুলুর বেরে নিজেও বরা বার—কিছ ভাতেও মন উঠছে মা
জামার। গেটা যেন একটা কোন্ড রাভেড মার্ডারের মত হবে
বলে মনে হর। তা ছালা—এ বাড়ীতে ভোদের সামবে—
বাবা মা দাদারা তো ভরেই জ্ঞান হয়ে পড়বেন—মা, এ আর
ইচ্ছে করছে মা।

অনীতা সম্ভত হবে তেখনি চাপা গলায় বললেন—ছিনিস-ভলো আন দেবি দাদা। বালিশ আর তোষক ছিঁছে ওওলো পূরে এবনই সেলাই করে দিক্তি—ওরা টেরও পাবে না—।

ভোড়খা হেনে বলগেন—পাগল হয়েছিস। একটু পরেই বেবতে পাবি ওদের কাও। সার্ফ করবার নামে ওদের ভাঙৰ দীগা চলবে সারাধিন। ওরা চাবি বাফলেও বাস্ত ভাঙবে, চাল ভাল হাঁভি ভেডে হভিধে দেবে, ভোষক লেপ ছিঁভে ভূলো উভোবে, পাকা মেবেও বুঁভে কেগতে পারে।

অনীতঃ বি'নত হয়ে বললেন—বলো কি ছাছা । — টকুই বল্ধি ভাই। খনীতা বেবী একটু ভাষলেন, ভার পর বলদেন—ভা হলে ? আহা, ভূমি আন তো বেবি, কি কয়তে পারি বেবহি আমি।

••• সিঁভিতে পাৰের শব্দ পেরে সচকিত হরে উঠলের অনীতা দেবী। ব্যপ্তর বোর উার নিবিবে টুটে সেল। বীরে বীরে কে বেন উঠতে উপরে। বত বীরেই হোক, এ পারের শব্দ কুল করতে পারের না তিনি। তিনি চাপা গলার বল-লেন—আনক, এসেহিস্ বাবা !

আনন্দ মারের কাছে বলে রূব গন্ধীর করে বললে—ইয়া বা কিরে এলেছি, কুকুরের মন্ড কিরেছি।

অনীতা দেবী আঞ্ছতরে ছেলের রুখের দিকে তাকালেন, বললেন—সব ভন্বো। এইবার হাত বুধ ধুরে কিছু খেরে বে আনক, রুখ বে একেবারে ভক্তির গেছে।

বহীতোৰ বাব্র গলার আগুরাজ শোলা গেল এবার—কে ক্যা বলহে গুণাবে? আনক কিরেছে নাকি? আনক—আনক—! তিনি বরের বাইরে এসে বললেন—এই বে কিরেছেন বেবছি। তারপর গন্তীর হরে বললেন—এত বেরি হ'ল কেন তোমার? এবিকে ভোমার না আর আনি তেবে তেবে বর্ষার। ছেলের ফল আর পুলিসে গোলমাল হচ্ছে একথা তানে কোন্ বাপ মা টিক বাক্তে পারে বল। তোমারও একটা আবেল বাকা চাই। তোমার উচিত হিল আনক—কলেল বেকে গোলা একেবারে বাড়ী চলে আগা। তানকার গান্তীর্ব্ব আর তিনি বেক্তিক রাবতে পারকেন না। পুরকে বেবেই তার মন হাল্কা হরে সিমেছে। বুকের বোঝা নেমে বেতেই তার কঠবরের অনুত পরিবর্তন হরে গেল। তিনি বলতে লাগলেন—আর কবনো এমন দেরি করিস্নে রে বাবা। আমার কথা না হর ছেকেই দে—তোর মারের দিকটাও একবার তাবিস্।

অনীভা ধেবী খাৰীর বুবের দিকে চেয়ে একটু কেনে বললেন—আছা, এবন বান তুরি। যে ব্যাপার তুরি করছিলে। চলু আনক, বাবি চলু।

হো হো করে হেলে উঠে রারবাহাছর বললেন—ইয়া ভর আমি পেরেছিলান বটে, আর না পেরেই বা কি করি বল। কলকাভার রাজা ভো হরেছে পুলরবনের চেরে ভরের জারগা। এ্যাক্সিভেন্ট ভো লেগেই আছে। মিলিটারি লরীর উংশাত—কভ লোক বে রোক চাপা পকছে। অভাবের হোরাল্য, কথা নাই বার্জা নাই ছুরি বসিরে হিলেই হ'ল। ভারপর আছে পুলিস আর মিলিটারির অলি—নে যে হিট্কে এসে কার গারে লাগবে ভাও ভো জানার উপার নেই। এ লব বেবে ভবে কার না মন অহির হর বল বেবি। আমি জানি ও আমার ভেনে হেলে নর, বজাভ হেলের দলে ও বিশবে মা—আর বেশবার হরকারই বা কি ওর। আমার একমার হেলে ওর অভাব কি বল বেবি। আছো আছো.

বাচ্ছি আমি এবন। ৩কে কিছু বেতে হাও—পরে কবা হবে।--ভিনি ছেলেও নারের মুবের বিকে ভাকিরে ভাবের মনের ভাব বুরবার চেঙা করে সেবান বেকে সরে গেলেন।

ছেলের বুবে অনীতা দেবী শুবছিলেন সব। বিছিল চলেছে

—ছেলের ঘলের বিছিল। আবাদ হিন্দ কৌজের বিচারের
প্রতিবাদে আর্বহীন অতিনহ্যদের শাভ কিছ উচ্ছুসিত বিছিল।
চগার প্রবি—কঠের প্রবি ছাড়া—প্রতিবাদ ভাপনের ভাদের
আর কোনও অর নেই। 'চলো চলো দিরী চলো'—সমবেত
কঠের এই শক্তলি ভাদেরই কানে প্রবেশ করে উদীপনা
বাভিরে তুলছে। অধীর হরে উঠেছে ভারা। বল্পছে,
দিল্লীতে ভাদের বেভেই হবে, সেধানে উভাবে ভারা
বাধীনতার অরপভাকা।

বারে বারে বলে বাছে আনস। ভার বলার মধ্যে আবেগ স্টে বেরছে। ভনতে ভনতে অনীতা দেবী অবননছ হরে পড়েছিলেন—তিনি আবার বপ্ত দেবতে সুক্ষ করলেন।…

ভোর হতেই প্রথমে দরকা বুললেন বছদা। সামনেই সম্ম পুলিস দেবে তিনি অফুট চীংকার করে উঠলেন এ কি, এরা কে! বাজীর সকলেই উঠে পঞ্লেন, তারপর ব্যাপার ভানতেও বাকি বইল না কারও।

প্রথমেই বৌদ্ধ ই'ল ছোদ্যার। ভিনি বেরিয়ে আসতেই ইমস্পেটার সাহেব একটু হেসে বললেম আপনিই প্রমবেশ বাবু? ক্ষা করখেন, আপনার মাহে গ্রেপ্তারি প্রোয়ানা আছে।—আপনাকে এয়ারেট করলাম।

খানাভন্নালী পুরু হবে এবার—মারুলি বিবানমত বাইরে থেকে করেক জন লোক জানা হ'ল সাজী হবার জঞ। তার পর হকুর হ'ল মেরেদের লব একট ধরে বেতে হবে পুলিসের কর্ত্তাটির সামনে দিয়ে।

মেরেরা যাছে কশিত পদে—মূবে তাদের আতঙ্ক, আক্ষিক এই বিপদে তারা বিজ্ঞান হরে পড়েছেন। অনীতা ছিলেন সর্বাশেষে, তারও বুক কাপছে। পুলিলের কণ্ডাই তার মুবের দিকে, ভারপর তার সর্বাদেহের উপর তীক্ষ দৃষ্টিতে চেরে দেবছিলেন। বোচনী কুমারী, স্পরী অনীতা দেবী—মাধার অবশুঠন নাই। হাঁা, বেববার মত রূপ তার বটে। বাবা ছাকেন—অপভাষী মা আমার, মা বলেন—মেরে আমার চ্প্রো ঠাক্রন। ছোড়লা বলভেন—উত্, আনে হতে হবে তোকে ছিল্লয়া— তারপর অন্নপুর্বা। বুবলি রে অনি।

—আপনি একটু হাঁভান খেবি। পুলিশের কর্ডার এই কথার ছর ছর করে উঠল অনীতা দেবীর বুড়। আর একবার আপাদ মন্তক নিরীক্ষণ করে ইনস্পেটর লাখেব একটু অর্থপূর্ব হালি হেলে বললেন—আছা যেতে পারেন এথন।—বোড়দাও এক পাশে হাঁভিরেছিলেন—ব্যাপার বুবে তার রুবও বিবর্ণ হরে গেল। ছোড়দাকে এক পাশে ডেকেনিরে পুলিনের কর্ডাই চাপা গলার বললেন—আপনার বোন বুবি ? বিরে হয় নাই ভাও

বৃক্তে পায়লাম। আমার কিছ সন্দেহ হচ্ছে—যাক, ওর দানীর ভরাসী করার দরকার হতে পারে। বনে হ'ল ওর পেটের কাছে কাপড়ের ভলার কিছু ল্কোনো ররেছে। বিরে হলে মা হর সন্দেহ হ'ভ মা—ভাবভূর—। তিনি অর্পূর্ণ হাসি হাসলেন। হোড়ঘার বুব গভীর হরে উঠল। ইন্স্পেটর মোলারের হাসি হেনে বললেন—আপনি কিছু বনে করবেন না প্রমধ্বেশ বারু, পূল্সের লোক হলেও আমি আপমাদের বহাতি। ভারি কুজর কিছ আপনার বোনটকে দেবভে। যাই হোক, আমারও একটা কর্ত্ব্য আছে—ভাই আপনাকে ভানিরে ছিলাম।

হোড়দা পঝীর খরে বললেন---আপনি অভার সক্ষেত্র করছেন।

ইন্স্পেটর হেসে বগলেন—হতে পারে। পুলিস অনেক সমর ভূল দেবলৈও যাবে মাবে সভাটাও ভার চোবে পড়ে প্রম্বেশ বাব্। আপনার চোব মুব দেবে মনে হচ্ছে উভেজিত হবে উঠছেন আপনি। একবা যোটেই ভাববেন মা যে বেরে-দের কোনও রক্ষ অসন্থান হবে আমি উপস্থিত বাকতে। পুলিসের লোক হলেও আমাকে বছু বলেই ভাববেন এবন বেক: ···

বধের খোরেই অনীতা দেবী একটু হাসপেন। না—
ইন্স্পেট্রর সাহেব কথা রেবেছিলেন বৈকি। তা না হ'লে
অনীতা দেবীর কি দশা হ'ত তবন ? আর জার হোডদার ?
তার দরাতেই তো তিনি হতে পেরেছিলেন গোর্মকপ্রতাশ
ইন্স্পেট্রর-পত্নী, ভারণর আতে আতে এসিট্রাটি প্লিস
ক্ষিননারের 'বেটারহাক', রারবাহাছরের সহব্দিব।

লাচ্চের বটা একেবারে দক্ষকের ব্যাপারটর আধুনিক সংক্রণ। সভ্যা পর্যান্ত চলেছিল সে কাও। ভারণর ছোড়-দাকে নিরে পুলিসের কর্ডারা চলে গেলেন—ক্ষমকরেককে বাড়ীর স্থানে স্থানে পাদারার রেবে। দেবা গেল, বাড়ীর ভিতরের বেরা ইঁগারাট, বেবানে বেবেদের স্থান করার অধ্বতি পাওরা নিষেত্রিলে—সেবানকার পাদারার ব্যবহাটই বিশেব কঠোর।

সেধিনকার ব্যাপারের পর বাবা শব্যা নিলেন। দাদানের বুবের ভাব হরে উঠল ব্যবহার গভীর। বৌদিধিদের ভাব-বাবা এই বে—গৃহের শাভি বাকে দিরে নই হতে বসেছে ভার লক্ষে আর সমস্ত রাবা কেন। কিন্ত নাকে দেবে তার বনের চাঞ্চ্য বরার উপার হিল না কারও। ভিনি নিঃশব্দে ভাঙা সংগার গুছানোর কালে দেবে গেলেন।

এর পর বেকে বিন করেক ইন্স্পেটর সাহেবের খন খন বাভারাত চলতে লাগল তাঁবের বাছীতে। তাঁর আখালে বাবা লহা হৈছে উঠে বগলেন, বাবাদের গভীর বুবেও বালির রেবা বেবা গেল। অনীতা বেবী অবও পরে বুবতে পেরেছিলেন সবই। তাঁর বাবা আর দাবারা একটা বভও বিরেছিলেন তাঁর—তিনিও বভ বিরেছিলেন।

क्षि वक वा विराहरे वा कांव छेशाव दिल कि । श्रृतिराजव लाक रदंद कर्करण अवरहना देमन्रशक्के नारस्य क्वरक शादिय मा । एव विश्ववी त्यद्वदक त्यक् चाव करव विष्ठात्वव कर गाउँछि एव. मा एव छात और मत्मावृक्ति मश्मायत्मव ভার নিভে হর তারই--একেবারে অঞ্চলী করে। কাপকের তলার বিভলভার আর টোটা লুকিরে রাবা লোভা অপৰাৰ নৱ-তা হাড়া দিনিৱ বলেটাও ডাড়াভি ব্যাপাৰটাত সংক বোগাযোগের অকাট্য সাক্ষ্য। হাছাকে রক্ষা কয়তে গিবে দেখলো ভলপেটে বেৰে প্ৰযোগ বুৰে ইয়ায়ায় কেলে विश्वारी वात्यव गर्क वाराश्वि रूट गाव वरहे, कि जाव যত পুলিলের লোকের চোধকে কাঁকি বেওয়া তো আর সহজ নৱ। বাত্ৰের অভকাবে কৌশলে তিনি উভার করেছেন কলের ভল থেকে---সেওলো আছে ভারই কেলভডে। এ বাভীর একটা মভামত পেলেই তিমি এ সহতে যা ভোক একটা वावशं कदरवन । (व विक्रमणांत्रके भावशं निरम्राह त्नहेरके पिटारे नाकि काम अक रह पूर्णिम कर्यहाडी क कका छाड রাভার হত্যা করা হয়েছিল এবং সেট যে কোন্ এক বিশিষ্ট সরকারী কর্মচারীর বর থেকে তার কিছদিন আরেই ইবাও হরেছিল এ সব প্রমাণও তাঁর কাছে আছে। এ খাাপারপ্রমা ভিনি চেপেই বাবেন, কারণ এ পরিবারের লোকদের ভিনি भववाषीर वर्श मत्म कदाछ मूक्ष करवादम । विनिम्बरणारक কিছদিন পর হবিবিলাগ সা'ব বাজীর অধুরে কোনও কোণের মব্যে বেকে আবিধার করাটাও তার পক্ষে বিশেষ কটিন रत मा। किन दनि मछा क्या अवन अकाम एव छ। रत ব্যাপার কি হবে ভাবুন দেবি ৷ প্রমধেশ খাবুর কাঁসি পর্যায় হওয়া অসম্ভব নয়, আর অনীতা দেবীর কর পক্ষে যাবকীবন খীপাত্তর কেউ হোব করতে পারবে না। তার কথা ভানে বাবা श्रीव चळाम स्वाब मण स्टब्सिमा, चाव शाशाबा देनम्रावडेव সাহেবের মুবের বিকে অপুনরমাবা বৃদ্ধীতে চেরে অনবরত হাত कृ नाम्बिलन ।

বিষেধ বিন তিনেক আগে অনীতা দেবী হোট একথানি চিটি
পান ঘোড়দার কাছে থেকে—হাকত বেকে দেবা নেই চিটির
কথা এবনও তাঁর পাই মনে আছে। লিবেছিলেন—'অনি, বহীতোর বাবুর কাছ থেকে সবই ভনেছি। আশীর্কাদ করবো মা
অভিদাপ দেব তোকে টক করতে সমর লেগেছে আনার।
নিকেকে কি ভুই বলি বিলি ? আনি না তোর অবিস্তং কি !
অবিস্ততের কথা বলতে কিছ হাসি পার আনার। পরাধীন
ভাতির ছেলেয়েরেদের অবিস্তং বলতে আছে কি কিছু ? বাই
হোক, লেবটার মনস্থির করে কেলেছি—সর্বাভঃকরবে আশীর্কাদ
করছি আল তোকে। নাঃ—বহীতোর বাবুর বাহাছ্রি
আছে। এককন বিপ্লবীর বোনকে বিয়ে করার মধ্যে তাঁর
সাহস আছে বলতে পারিস। তিনি চতুর লোক—ভার বড়
ভর্তাদের অস্থতি নেওবা হরে গিরেছে নিকর। একট বিপ্লবী

পরিবারকে ভূলপথ থেকে কেরানোর অভ তার এই সার্থ-ভ্যান বিক্তরই তার বছকর্তারা সম্বন্ধ চিত্তে অভ্যোদন করেছেন। আমার বনে হচ্ছে—তার এই সাহস ও আছ-ভ্যানের কথা ভোকের বিষের পর সংবাদপরেও বোষিত হবে।

একটা কৰা ভাৰতি। 'ইউজেনিকস্' সথতে আমার ইাভি করার বেরাল আছে। 'ব্রেডিটি' নগতে আমার কৌত্তল অপরিলীয়। এমন দিন যদি আনে—অর্থাং বদি ভোর কোনও দিন সলান হর—ভাত্তে সে কি প্রকৃতি নিয়ে করাবে আমি ভাবতে চেঠা করতি। হয়ত দেদিন আর আমি বাক্ষ না এ পৃথিবীতে—যাক সে করা। আবার ভোকে আমির্কাল করতি ভাই। স্থাইতে চেঠাকরিন। ও জিমিসটা কারও আমির্কাদের অপেকা রাথে না—নিকের উপরই নির্ভর করে। আর দেশের দীনছংখী, লাভিতদের কর্ণা মনে কারিস্ নাকে মাকে। আর বলার কিই বা আছে আমার।'

হোভ্যার টুক্রো টুক্রো অর্থপ্ কথাওলো তার বৃক্তে

যাগ কেটে বলে আছে। কি করে যে তাঁলের পরিবারে

এবৰ এক বাজ্যের কর হ'ল—তা ভারতেও অবাক লাগে।

হোভ্যা বলতেন—মা আর বাজ্তুনি—এবের কি ভোলা যার কর্মণ্ড। বাইরে যবম ছবি এ দেশের বাট, গাহপালা,

পঙ্গক্তী,—মান্থ্যের থিকে চেরে চেরে আবার সমর কাটে—

আর বাভীতে কিরে মারের মুর্ণের বিক্তে চেরেও আবার

লাব বেটে না। অনি, অমন মা পেরেছিলান—ভাই এ

বাভীতে এবনও টকে আহি—বইলে যে কি কর্তুর কানি লে।

খনীতা বেবীর বিরে হ'ল বটে, কিছ হোডবার রুজি হ'ল না। তবে সাজা তার ব্বই কর হরেছিল—মাত্র চ্ই বংগরের দঞ্জর কারাব⊕। খানী হেসে বলেছিলেন—এ ভবু তারই চেঠার সভব হরেছে।

বেল থেকে বেরোবার পর হোড়বাকে তিনি একবার বেবেছন। বা তথন ইহলোকে নাই। তার গভার বৃধ, শীর্ণ চেহারার দিকে চেরে কল এলেহিল চোবে। হোড়বার চোবের জ্যোতি বেন তীকু চর হরে উঠেছিল আরও। কিছুদিন পরই তিনি নিরুদ্দেশ হন। তার নহছে অতুত আহত কাহিনী শোনা বেতে লাগল ভার পর বেকে। পুলিস তাকে খুঁলে বেরাছে গোটা কেশবর। জীবিত কি রুত বে কোনও অবহার তাকে ধরে আনতে পারলে ঘোটা টাকা পুরস্কারের বোবণাও করা হরেছে নাকি। কিছ জীবত তাকে বরুতে পারলে না কেউ। রুত্য হ'ল তার অভিনম্যর মত বাংলার সীরাছে এক অরণ্যের মধ্যে ভিনি আর তার হুই জন শিল্প আপনিত পুলিস বাহিনীকে বারেল করে। শের ওলিট নিজের বুকে বিরুক্ত করেন তিনি।…

বাবের কাবে ভবে আনত ভার নলা তড়িরে বরে আতে

আতে বলছিল—বা, একবার থেবতে বহি সেই বীরের রুড়াবুঞ্চ । কতই বা বরস হবে তার—হরত তের-চৌদ। বর্ম্মতলা
বিরে এগোতে বেবে লা আর হেলেবের বিছিল। অকম পুলিস
লাটি নিরে বন্দুক নিরে সামনের পথ আইকে ররেছে।
উএপুর্তি সার্কেউরা রিভগভার হাতে নিরে যুবছে। বোদসওয়ার পুলিস ভিকের বব্যে ঘোড়া চালিরে জনভাকে ছত্রভল
করে দেওরার চেটা করছে। কিছু আন্তর্ম্য হেলেটয় তেল।
বুচ্ছতে পভাড়া নিরে ইাভিরে সবার সামনে। বাবে বাবে
বলছে—বলে বাভরম্। এর প্রভিয়নি সকলের মুর্বে।…
'অর হিন্দ'। 'চলো চলো বিলী চলো'।

জ্মুটকুটল নেত্রে এগিছে এল বিভগভার বাগিছে ধরে এক সার্জেট।···দাট জাণ, বয় !

—'वर्ष्य वां-छ च-प्' ! 'इन इरलां---विज्ञी इरला' !···छेखर विराम द्वराम्बे ।

রিজনভার উ'চিরে সার্জেন্ট বললে—আই সে, শাট আগ। হেলেটার মুবে অনুভ হাসি বেলে গেল—সে উচ্চধরে বললে—বলে—। হাভের কবি লক্ষ্য করে ওলি মুঁডলে সার্জেন্ট।

——ৰা—ভ—বৰ্—ভান হাতের কব্দি বুলে প্রুণ। বা হাতে শব্দ করে পভাকা বরে হেলেট অবিচলিত খনে বললে আবার—চলো চলো—বিলী চলো। ব-কে মা-ত-রম্!

ক্ষিপ্ত সার্বেণ্ট আবার মুখনে গুলি কপাল পক্ষ্য করে। হেলেট স্টারে পড়ল বাটাতে। পালেই হিল আর একট হেলে; পতাকাটাকে সে প্রাণহীন হেলেটর হাত থেকে নিম্নে ইংছাল পোলা হয়ে।•••

অনীতা দেবী শিউরে উঠলেন, তার চোর কলে ভরে এল
—তিনি আর্ডনাজের স্থারে বলে উঠলেন—ট: ৷ বলিন কিরে
আনক ৷

আনক্ষ বলতে লাগল—কিছ তার পর কি বে হরে গেল
ব্রতেই পারলায় না । দেবলায় ভিডের চাপে আয়র। ছই
তিন ক্ষম আববোলা মরকার মর্যে দিরে একটা ঘোকানবরে
চুকে'পড়েছি । দোকানের লোক তাড়াভাছি মরকা বছ কল্পে
বিবর্ণ র্থে বললে—পালাও ঘোকরারা পেছনের মরকা দিরে
গলির মর্যে । এবনই হর তো আস্বে পুলিন ।···বল্তে বল্তে
মরকার বাভার পক । আমানের তাড়াভাছি পির্মের মরকা
দিরে বের করে দিলে তারা । যেতে বেতে গুন্তে পোলায়
ত্রহ মরে এক সার্কেট বলকে—ই্ডেট লোক কাঁহা ? ঘোকামী
বলহে—কোবার, এবানে আবার ই্তেট কোবার । স্পন
বেবভা হার নাকি সাহেব । বেব সাহেব ভাল করে বেব—
কেট বেই এ যরে ।

—না, কুকুরের বত পালিরে এলেছি। সলে আরও অনেকে হিল, কি অবহা হ'ল বোঁক বিভেও পারি নি। ভারা মলো না বাঁচলো কিছু কানি নে। কাল কিছু আইকে হাবতে পাঁহুৰে না---একবার বৌক নিতেই হবে আমাকে। বাবা বারণ করসেও শুনুৰো না কিছ আমি।

—কালকের কথা কাল হবে—এখন গুনো দেখি । তিনি ছেলের বাধার হাত বুলিরে দিতে লাগলেন। আনশ খুনিরে শচল, কির সে রাজে তিনি আর হুই চোবের পাতা এক করতে পারলেন না—কেপে কেপেই বপ্প দেখতে লাগলেন তিনি।

সকাল বেলার ছেলেকে না দেবে আবার বহীতোর বারু উদ্বিঃ হয়ে উঠনেন। অনীতা দেবীকে বললেন—আবার ও গেল কোবার ? নাঃ, ঝালাভন করে মারলে দেবছি।

শ্ৰণীতা দেবী একটু বেনে বললেন---পাৰ, পাৰ স্কাল থেকেই ন্যন্ত হতে হবে না।

মহীতোষ বাবু বিষক্ত হবে বগলেন—ভোষার মত পাগল হই নি ভো আমি। ব্যস্ত হবে না বলতেই হ'ল। যেবন হবেহে হেলে—ভেব্নি ভার মা। ওকে একটু সাববাম করে দিও তৃথি—বামার কবা ভো কামেই ভোলে না। আমার দশটা নয়—প্রী এক মাত্র হেলে। ব্যস্ত হব না।

আনন্দ কিরে এল হাণির্ব নিরে। জর হরেছে ছাত্র-দের। তাদের বিছিল গিরেছে আজ ভালহৌসি খোরারে। পুলিদের বাবা আছ না করার পুলিসই সরে যেজে বাব্য হয়েছে।

খানখের খানখ খাব খার ধরতে না। বাপের সাম্দে সে বড় একটা কথা বলত না, খাব সবিভাবে তাঁরই সামনে বলতে লাগল ছাত্রবের বিবরকাহিনী। এককালের পুলিসের বড়কটা মহীতোষ বাবু ভঙিত হলেন। পুলিসের পরাব্ধ ? নাঃ, খাব্দালকার ব্যাপার সভিত্ই বছলে গেছে দেখছি!

কথেক দিন পরের কথা। আদন্দ র্থ গভীর করে মাকে বললে—স্বাই বাড়ী সাঞ্চাক্তে—আমাদেরই বুবি বাদ যাবে না ?

चनीला दावी दराम वनालम--- नवारे नाबाद्य वृति ?

— সাজাবে না ? মেজর-জেনারেল শাহ নওয়াল আগছেন বে। বে-সে লোক নয়—নেভালীর রাইট্ ছাও। তা ছাঙা বাবীনতা দিবস হচ্ছে ২৬শে জালুরারী। কংগ্রেসের আদেশ প্রত্যেকটি বাড়ী সাজাতে হবে ব্যাক্ষ-পভাকা দিরে। রাভিরে ভালাতে হবে আলো। শাভিনিক্তেন বেকে পরিক্রনা ধেরিরেছে—নন্দলাল বস্ত্র পরিক্রনা। কি ভাবে সাজাতে হবে—মঙ্গলট, নিশান—। কি লজা বল দেবি বহি আমা-বের বাড়ী বাদ বার। একেই তো রার্যাহার্বের ছেলে বলে স্বাই টিকারি দেব—বাবার আর কি!

অনীভা দেবী কেসেই বললেন—কেন বাধ বাবে কেন ?
ভূইও সাজা না বাজী ?

जानक शबीत एरत वनरम-- पृति रणा वनस और कथा। किंद्र वांबात सरमत कथा रणा पृति कांरमा। -- (कम पूरे वष्ठ निवि कांद्र।

— মত বেধরার মতই লোক তিনি। একটু বাইরে গেলেই তাঁর যে তর। কিছ এমনি করে তোররা আমাকে আইকে রাণতে পারবে না বলে দিছি। আমি টিক করেছি কংগ্রেসে করেন করব—এ বাড়ীতে আমার আর পাকা হবে না।

খনীতা দেবী ছেলের খতিয়ান দেবে ছাসলেন---খাবার বললেন --কেন এ বাছীতে থেকে কাছ করা বার না বৃত্তি ?

উত্তেজিত হয়ে আৰম্প বসস—না—না। বাছ দা।
তৃষি সৰ আৰ তৰু তোষাৱ ঐ কৰা। তোৱাদের ৰাজী
একটা জেলবানা—এবানে আমার দ্ব আইকে আলে।

মহীতোৰ ধাৰু মিকটেই কোণার ছিলেন, ছেলের উত্তেজিত কণ্ঠবর তনে কাছে এসে বললেন— দম আটকে আবার কার আসে? কেন, হরেছে কি?

আনক মুব গভীর করে হইল। অনীতা দেবী বদলেন—
ও বাড়ী সাকাতে চার।

মহীভোষ বাবু বেসে বললেন—বাজী সাঞ্চাতে চার ?
সাকাক না। কত টাকা লাগবে ওর ? হাঁা, এ বরসে একটু
আচঁটিক টেওলী থাকা ভাল। আন্দা ভোর প্লান্টা ওনি
ধেবি। সভিয় এ বাজীটা বাল, ভেক্স, কার্বিচারে ভবোর
বনে গিরেছে। দম বছ হরে আসা বিশেষ আন্দর্ব্য বর।
আমারও ছিল হোটবেগায় এ সব বিকে টেউ—প্লিসের
কাকে চুকে সবই গিরেছে রসাভলে।

আনীতা দেবী পুঞ্জের ধর্ণমে সুধের দিকে একবার তাকালেন, তারপর বললেন—না, বেশী কিছু লাগবে না ওর, গোটা পঁচিশেক টাকা হলেই হবে, কি বলিস আনন্দ ? একটা বভগোছের বরাধ-পতাকা—আর বভকওলো হোট ছোট— তা হাড়া, আচ্ছা দেবানা রে ওঁকে কি পরিকলনা বেরিরেছে নাভিনিকেতন থেকে। ওঁরও তো আর্টিইড্ টেই ছিল বগলেন না—।

জ কুঁচকে মহীতোৰ বাবু বললেন—ভার মানে ? বরাজ-পভাকা ? আয়ার এবানে ? পাগল হয়েছ !

কিছ দেবা গেল তিনিই পাগল হবেছেন। বিকেলবেলায় ভাড়াভাড়ি বেরিরে পড়লেন ভিনি। গৃহে তার পাছি নাই। বহু অবসরপ্রাপ্ত সরকারী কর্মচারী তার বহু। ভিনি তাবের কাছে পরাবর্গ চাইবেন। তার স্ত্রী আর ছেলে-বে একটা বছরম্ব করেছে ভা বুবতে আর তার বাকি নাই। মান-ইক্ষত গেল তার সরকারের কাছে এবার। রাভার বেরিয়ে দেবলেন অভ্যুত চক্ষতা। ছাট ছেলেবেবেদেরই উৎসাহ বেনী। এক মল বলহে চলো চলো—। আর এক মল বলহে—
বিল্লী চলো। হালে হালে অভ্যুত্ত কর্মতংগরভা। এরই মধ্যে বিম্ববিশ্বিত পভাকা উচ্চছে বাড়ীর হালে। প্রবহে গেলেব অন্ত্র্কুলবাব্র বাড়ী। তিনি ভেণ্ট ব্যালিট্রেট বেকে ভিন্নিটের চার্ম্বত পেরেছিলেন। রারবাহাত্রর বেভার্যটিও তার

আছে। হতরাং তাঁকে অনেকটা নিজের সমকক মনে করেন তিনি। মহীতোর বাবু বেবে বিভিত হলেন অন্ত্রুলবাবু আদের উপর হেলেবেরেকের সঙ্গে এই নিরে আলোচনা কর্ছেন—টক কোন্ আর্গাটার বর্জ পতাকাট ভূলনে মানাবে ভাল।

মহীভোষণাবুকে দেবে অন্ত্ৰণাবু সৃহাতে অভ্যৰ্থণ করে বললেন—এল ভাই এল। খেলেবেছেল মাছোডবালা, বলছে স্বাক-গভাকাটা আলাকেই 'হুৱেট' ক্লভে হবে। গোলাৰি ক্লেও মন্ত্ৰাথের কিছু অবশিষ্ট আছে কিনা ওলা ভাই বাচাই ক্লভে চার। ভেঁগো ছেলেবেছেরে ক্লা ভবেছ। কি আল ক্লি বল—শীকাল ক্লেছে।

ৰহীভোষৰাৰু সেধান থেকে আন্নও করেক জারগা লুরে একই ব্যাপার ধেধগেন, ভারপর বাদী ফিরেই ডাক্লেন— আনক, আনক 1

আনৰ এল বা-এলেন অনীতা দেবী। মহীতোহবাৰু বললেম-কই তোমার ছেলেকে ডাক দেবি।

আনীতা বেবী মুখ ভার করে বললেন—কেন, আবার ছেলের বৌল কেন ? ভারে আছে ও ধরে।

ভবে ? এ অগনরে আবার লোহা কেন ? অগ্নুথ-বিভূধ করে নি তো ? না আনালে দেবছি । দেব, একটা ছেলে হয়েই বা আবার বত রুপজিল হরেছে। ভাবতে ভাবতেই গেলার আর জি ৷ ভাক, ভাক একবার ভাকে।

তার ভাব দেবে অনীভা দেবী বিসিত হলেন। আনক আসতেই হাসির্বে নহীতোধবারু বললেন, কত টাকা ছুই চাস বল বেবি। বিশ, গঁচিশ, গঞাশ ? যা নিবে বা এই টাকা! বাড়ী আমাদের সাঞ্চাতেই হবে। হাদের উপর বাল-পতাকা 'হরেট' করব আমি নিজে। আর ঐ বে কি সব পরিক্লমার কবা বলছিল— ঠিক সেই ভাবে সাঞ্চাতে হবে কিছা। অনুকৃল ভাবছে বড় বাহাছরি করে যাবে ও। সেট হচ্ছে না। আমে না ভো কত বড় বিপ্লবীর ভরীপতি আমি।—নিজের রনিক্তার নিজেই তিনি হেলে কেটে প্রস্থান।

ছেলের হল কেন্তে পড়েছে হাবে। স্থাক-পতাকা উচ্চছে বারবাহাছরের বাড়ী। বারবাহাছর স্বত্তে পতাকা উচ্চিরেছেন। আনন্দ তার বা আর বাবাকে প্রণান করলে। সক্ষে সলে হেলের হল উাধের পদধুলি নিতে লাগল।

পত্পত্করে উচ্ছে খবাক পভাকা। সেই দিকে চেয়ে চেয়ে আবার বল্লেবতে লাগলেন অনীতা দেবী। মনে পচ্ল ছোচ্দার মুধ, তাঁর দর্দকরা অবচ তীক্ষ চোবের দৃষ্টি। চোব তাঁর অলে করে এল। ভাবলেন—ছোচ্দার অভিলাম, তাঁর বল্ল কি সভ্য হবে এবার।

## প্রণতি

### **बीधीरतसक्**ष हस

হে বোর খেবভা, হে চির-সাধনা, বুলিল হুয়ার তব ?
পূর্ক্-ভোরণে দেবা দিল আজি, রক্তিন ছটা নব ?
আধার তবে কি বিচ্ছিত হ'ল রজনীর অবসান ?
ভঞ্জন সাবে কুপ্ত-কানন গাবে আগননী গান ?
হে দেবী ভনাও—এ নহে বিধ্যা, এ নহে ভাজিলাল;
এ নহে ভবিক স্থা-বিলাসী ক্লনা-ক্ষাল;
এ নহে ব্যবা ও বেদনার তরা চিডের বোহভার;
চিত্র-আরাব্য বুলিলে আজি কি ক্লড ভোষার যার ?

অবাবে বেবছি, বঞা বেবছি, বেবছি বুজটকা; বেবছি কাণের করাল বংগ্রা, মৃত্যুর বিভীবিকা; বেবছি বেবার করে' করে' বার কচি কচি কিললর; মৃত্তের বুকে নাচিতে বেবেছি তাওব নির্মন; বেবনার পলা অঞ্চ বেবিরা বেসেছে অইবান; নাছবের বেশে চারিদিকে বোরে পশুবের কীতবান; তবুও বে বেবী, ব্যব-অবর রাছবের সাবনার অঞ্চ-আবত অভয় আবে অর্থ্যের উপচার। অব্য তাদের অধর-কন্সল উপাছিল অবংগলে,
ক্রছ তোমার হ্বার বাহিরে অনারাসে গেল কেলে।
তোমার চরণ-পর্ল-পরল পাবে কি পাবে না তাহা,
সে নহে তাবনা—হজ্ঞ-অনলে অনিল খবা ও খাহা।
আপন অহি ত্যজিরা ধবীচি রচিল বজ্ঞ-খালা,
উপাছি অধ্য রচিল হেখার রক্তজ্বার বালা।
অভ্য-তর বাসনার রাগে রজিতে বার বার,
বে বোর বেবতা, বে চির্ল-সাবনা ক্রছ তোমার হার।

সলেহ থাগে, সংশব থাগে, সহট-ভরা পথ,
আলোৱে আড়াল কৰিবা ইড়াৰ হুৰ্গৰ পৰ্যত।
অভকালেৰ নাসিনীৱা কোঁলে বিবাক্ত নিখাল,
লানবেরা রোধি বানবের পথ থাগার অবিখাল।
হয় ত ভোষার পুলিবে না বার রুছ হাইবে আজো,
অহর-তত্ত্বে চির লাবদার বীণাধানি বহি বাজো,
বন্দীরা আলি বেবে বাবে বাবে নার্বক লাবদার
ন্ত্রন-গলিত অঞ্জ-সকল প্রথতি ক্ত্যার।

## নিখিলনাথ রায়

3246-3346

### **এ**ব্রভেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

উধবিংশ শতাকীয় ব্যব-জাগরণের কলে বাংলাদেশের সংকৃতি শিল্প লাহিত্য ও শিক্ষার বিভিন্ন বিভাগে বহু লাবকের উরব হুইরাহিল। দেশ ও জাতির ইতিহাস রচনার আনেকে অপ্রসর হুইরাহিলেন। তথাব্যে বিশেষ করিরা তিন অনের নাম উল্লেখযোগ্য বাহারা ইতিহাসের সহিত সাহিত্যের সম্বয় সাম্ম করিতে পারিরাহিলেন; সাহিত্যিক ঐতিহাসিক হিসাবে অক্যর্ক্ষার মৈত্রের, হরিগাবন মুবোণান্যায় ও মিবিল-নার রাহকে আম্রা শ্রন করিব। মিবিলনার ওবু নিজে ইতিহাস-সাহিত্যের সেবা করিরা ভাল হিসেন না, কোন কোন নবীন লেবক্তেও আন্তরিক উৎসাহ লানে এই প্রের প্রিক করিয়াহিলেন। বর্ত্রমান লেবক তাহাদের অভত্ম। সংক্রিপ্র জীবনী

১৮৬৫ ইটান্থের ভিসেম্বর সাথে (পৌষ ১২৭২) ত ২৪-পরগণার বসিরহাট মহকুমার অন্তর্গত পুঁড়া এামে নিবিধনাবের অব হয়। উহার শিভা কানকীমাব রার, বাভা---বসভক্ষারী। ভিনি ভাহার শৈশব-কীবন ও সাহিত্য-সাবনা সম্পর্কে এইরণ লিবিরা সিরাহেন :--

"আমার কিঞিং দ্যুদ ছুই বর্ষ বয়সের সময় পিতৃদেব पर्नारवाएन करवन।...चामि स्त्रदमती कनमीव (हडीब পালিত পালিত হইয়া, পুঁড়ার আদর্শ ছাত্রতি বিভালর হইতে ধানবৃত্তি পরীকার উত্তীর্ণ হইয়া, ভাহার পর ১৮৭১ मेडीट्य बर्वमभूदा चायात बाज्यनात मिक्ड चात्रम्य क्षि । আমার মাড়খনা বছরমপুরের ক্ষিণার স্থপ্রসিদ্ধ সেন মহা-শ্ৰের বাদীতে বিবাহিতা হইয়াছিলেন। তাঁছার স্বামী বিশ্বস্তর সেন মহাশয় আমার পিতৃদেবের পিতৃত্বপুত্র এবং ভাকার রামণাস সেনের জ্যেইতাত পুত্র। আমি ঘৰন বহরষপুরে আসিহাছিলাম, তবন বিশ্বস্তর সেন মহাশর বর্গারোহণ করিবাছিলেন। আমার মাতৃত্বপুত্র এীযুক্ত বিক্রচরণ সেন মহাপরের যতে আমি ইংরাজী শিক্ষার মনো-निरवण कति । आवि अववणः बात्रका विजयति कृत्य अविके হইরাহিলাম। বাল্যকাল হইতে আবি একটু একটু কবিভা নিৰিতে পাৰিভাষ। বহরষপুরে আসিরা আমার কবিভা লেবার বেগ বর্তিত হয়। অনেকে তক্তত আমাতে উৎসাত প্রধান করিভেন। এই বেগ ক্রমে বর্ডিত হওরার, আমি 'রাকপুততুত্ব' নাবে একবানি ভুত্ত কাব্য রচনা করি। ভাষাতে বাহণট রাজপুত বীবের কীর্ত্ত কবিভার বচিত হইরাহিল। ১২১১ সালে 'রাজপুভতুত্বন' বৃত্তিভ ভ

প্রকাশিত হয়। বদিও আমি কবিতা পঢ়িতে ও নিবিতে ভালবালিতার বটে, কিও বাল্যকাল হইতেই ইতিহালই আমার আদরের পাঠ্য ছিল। 'রাজপুতরুল্ল' ইতিহাল ও কবিতা উভরের প্রতি অল্বার্গেরই ফল। এই পঠকলা-



निधिनमाथ बाब

কালে আমি রাজহান, সিপাধী-মুদ্রের ইতিহাস ও অভাত ঐতিহাসিক এছ আনরের সহিত পাঠ করিভান এবং বহরনপুরের ভারীরবীতীরে বছুগণের সহিত নিলিত হইরা এই বিবরের আলোচনা করিভান। এই সময় হইতে আমি

श्रीपुछ जिरियनाथ बात्र शिखात अरे सम्मछातिथ जाबाटक आवारेबाटकय ।

বহরবপুর, কাশীববাজার ও কোন কোন সময়ে বুলিকাবাবের ঐতিহাসিক হানসমূহ পরিভ্রমণ করিয়া, তংগবছে
গল-গুলবাদি ভানিতে ভালবাসিভাম। এই সময়ে প্রেক্ত
বাবুর বক্তভা দেশের মধ্যে, বিশেষতঃ হাত্রগদের মধ্যে,
আন্দোলনের শ্রোভ প্রবাহিত করিয়াছিল। আম্বাও
সেই শ্রোতে বিচলিত হইয়াছিলাম। তক্তক রাজপুতকুল্মণ প্রেক্তবাবুর নামে উৎসর্গিকত হয়।

প্রেক্স বার্থ্য বস্তৃতা-ল্রোভে বিচলিত হইলেও, আবি সে বক্তভার সদেশের প্রতি একটা অনুরাধের আভাস পাইরাভিনার। ভারার কলে আমার ইতিহাস আলোচ্থা আরও বাভিত্রা বায়। যধন এক দিকে প্রবেজ বাবুর বক্ততায় আমাদিগকে টানিয়া লইয়া ঘাইভেছিল, গেই সমধে শ্ৰদ্ধাপদ শ্ৰীকৃষ্ণপ্ৰসন্থ সেৰ ও প্ৰধাৱাৰা পূক্যপাদ প্ৰিত শশবর ভর্কচড়াম্বি মহাশয়ের বর্ত্বান্ধোলন বদদেশে এক নুভন শ্রোভ প্রবাহিত করিয়াছিল। বহরমগুরও সেই স্রোতে ভাসমান হয়। বহরমপুর ভাহাদের একট প্রির ছাম ছিল: ভাছালের যতে বহরমপুরে একট 'স্নীভি স্কারিনী' সভা স্থাপিত হয়। আমি ভাহান্ত এক ক্ষম উং-দাহী সভা ছিলাম। এই সভা তইতে আমার কবিতা-बहुमां क्षिम क्षिम वर्षिण १६ श्रायब-बहुमा चायब एवं अवर বক্ততা করিতেও শিক্ষা করি। কলত: এই প্রনীতি সঞ্চারিণ সভা আমাকে বাললা লেখাইতে শেখায়। স্থনীতি সভা কেবল লেখা শিখাইখা কান্ত হয় নাই, ইহা ছাত্ৰা আহ্বা যবাসারা চরিত্রগঠনেরও সাহাযা পাইরাহিলাম। এরক্ষ-প্ৰসন্ন ও প্ৰমাৱাৰ্য চড়াম্বি দেবের সংস্রবে বাকিয়া আমরা नामा विवास छेनकात लाख कवितादिलाम । विरायखः চ্ছামণি দেবের অপুঞ্জ চির দিন সম্ভাবে বিরাজ্যান থাকার, পরিণামে ভাঁহার সহিত বনিঠ আব্যাঞ্জিক সহতও হাণিত হইয়াছে। এই সুনীতি সভা আমানের ক্ষু জীবনের একটা উদ্বেপ্ত নির্বেশ করিবাছিল। তাহার ধারা সুরেজ বারুর আন্দোলনে বিচলিত্রিভ সংযত হইরা, কোন উচ্চতর কর্ডব্যের আলোচনার প্রবৃত্ত হইরাছিল। ভাষার কলেও বদেশের পূর্ব্ধ ইতিরত আলোচনার আরও আদর বাড়িরা বার। এই সমরে আমি ভাভার রামদাস সেনের সহিত আশ্বীয়তা-খনে আবদ হই ; আনি ভাঁহার ভূতীয়া ক্লার [ পুরস্থার ] পাণিএংশ করি। তাঁহার এছাদি পাঠ আলোচনা, তাঁছার নিকট হইতে অনেক ঐতিহাসিক তথা প্ৰবণ ও তাহার সুপ্রসিদ পুতকালরে चारक केणिशांतिक अब दावियां, जामात रेणिशांतभार्त्व ঞ্জিভি উভবোদ্ধর বর্ষিত হয়। করেক বর্ষ বাগড়া বিশ্বারি কুলে অধ্যয়ৰ করিলা, আদি বহুবৰপুত্ৰ কলেজিয়েট ভূলে প্রবিষ্ট হই। এই সময়ে আমি চতুলাঠিতে সংহত ব্যাকরণ ও সাহিত্য কিছু কিছু অধ্যৱৰও ক্ষিত্ৰাছিলাৰ। বহুৱৰপুত্ৰ

কলেজিবেট ছলে পাঠকালে ত্ৰীৰ্ভ কীৰোণচল ছাৰ চৌৰুষীৰ নিকট আমৱা ইভিযাস অবায়ন কৰিভাৰ। ভিনি ইভিহাসের প্রতি আমানের অনুরাগ আকর্ষণের ভর যত লইভেন : ভক্ক ইভিহাস-পাঠের প্রতি আরও অনুরাগ বৰ্ডিত হয়। এই সমতে কবিভা-বচনাও একেবাতে পরি-जान कवि मारे। किन्न श्रवन-तंत्रमाद श्रिक दिम दिन मन আৰু হৈতে লাগিল, উহুত কালীপ্ৰসহ বোষ বহাণৱের প্ৰবদাৰণী পাঠ কৰিবা আমি বছ ভাল বাকিভাম : কাবা-এছের মধ্যে নবীনচন্ত্র সেনের 'পলাশির মুদ্ধ,' ক্ষেচজের 'বুত্রসংহার' ও 'কবিভাবলী' আমার প্রিয় পাঠ্য হইল। এইরপ সময়ে ১৮৮৭ খ্রীষ্টাব্দে বছরমপুর কলেভিরেট ছুল হইতে আমি প্রবেশিকা পরীকার উত্তীর্ণ হই। ভাষার পর উচ্চ কলেক হউতে জ্ঞামে এক-এ ও বি-এ পথীকাৰ উদ্বীৰ্ণ হুইখাছিলায়। ভা কলেভ বিভাগে অধ্যয়নকালে বছরুমপুর কলেকের ভগানীখন অব্যাপক ত্রীয়ক্ত ত্রজেক্রনার শীল মহালয়ের শিক্ষাণ্ডৰে স্বাধীন অসুসম্বানের প্রতি একট অপুরাপ উংশঃ হয়। এই সময়ে ভাস্কার বার্ধান সেনের পুতকালয়ের ও বহরমগুর কলেকের পুতকালয়ের ঐতি-হাসিক গ্রন্থসমূহ আমি দেবিতে আরম্ভ করি। আমার কলেভ বিভাগে পাঠারভারে প্রথমেই ডাক্তার দেন মহালয় **गर्दामाकश्रेष्ठ इन** [ ১৯ चाम**डे** ১৮৮१ ]। जिनि **चौ**विष्ठ থাকিলে আমার ইভিহাস-চর্চা আরও বৃত্তিত হট্ত। ঐ সমবে আমি মুশিদাবাদের ঐতিহাসিক স্থানসমূহে মধ্যে মধ্যে ভ্রমণ করিভাম। ক্রমে জামার মুশিদাবাদের একবানি বিভ্ৰুত ইভিহাস লিখিবার ইচ্ছা হয়। তংকালে আমার কবিতা-লেখা দেখে অনেক পরিমাণে প্রশংসিত হইয়াছিল। 'অঞ্ছার' নামে একবানি ভুত্র কবিতাপুত্তক আমি বছু-গণের মধ্যে বিভরণের বভ মুক্তিত করিবাছিলাম। 'ক্রছুমি' পত্রিকারও চুই একট কবিভা প্রকাশ করিরাছিলায। ... পুনীতি সভা হইতে প্ৰবন্ধ বচনা আৱন্ত কৱিয়া আমি মুশিগাবাদ পত্ৰিকা, প্ৰভিকার ও অনুসন্ধান পত্ৰে করেকট প্রবন্ধ লিখিরাহিলাম। ভাষার পর বি-এ পাসের পর षाधि वृत्तिनावारस्य है, इहात्र निविष्ठ षाद्य**स क**दि । अहे নম্বরে আমি সংস্কৃত এম-এ পরীক্ষার বাত প্রস্তুত দ্বরা-ছিলান। কিছ ইভিহাস রচনার ব্যাপুত থাকার ভাহাতে क्लनाक क्विएं शांति बारे। अरे प्रवास वर्यवशूत स्रेएं 'बूनियावाय रिटेंडवी' मारव अक्वायि नूडम जाडारिक नव প্রকাশিত হয়। আদি ভারাতে অভাত প্রবদ্ধের সহিত

<sup>ক বিববিদ্যালয়ের ক্যালেঙার হইতে কানা বার, নিবিলনাথ ১৮৮৭
সনে (বরস ১০ বংসর ) বহরমপুর কলেজিয়েট ছুলু হইতে প্রথম বিভাগে
এনট্রাল, ১৮৮৯ সনে বহরমপুর কলেজ হইতে ছুভীর বিভাগে এক-এ,
১৮৯২ সনে বহরমপুর কলেজ হইতে বি-এ, এবং ১৮৯৭ সনে বহরমপুর
কলেজ হইতে বিভার বিভাগে বি-এল পরীক্ষার উত্তারি হব।</sup> 

বুনিগাবাদের ঐতিহাসিক হান ও ব্যক্তিগণের বৃহাত্ত লিবিতে আরম্ভ করি। ক্রেরে ঐরপ প্রবন্ধ 'গাহিত্য', 'নব্য-ভারত' প্রভৃতি পঞ্জিকারও প্রকাশ করিরাছিলান। । । পরিশেষে ঐ সমন্ত প্রবন্ধ সংগ্রন্থ করিরা আমি ১৩০৪ লাগে 'বুর্নিগাবাদ-কাহিনী' প্রকাশ করি। ইংরেজী ১৮৯৭ লালে আমি বি-এল পরীক্ষার উত্তীর্গ হইরা ১৮৯৮ সালের মে মাস হইতে ওকালতী করিতে প্রবন্ধ হই। বহুরমণুর ক্ষম্বালালতে ৪ বংসর ওকালতীর পর আমি কলিকাভার আলি ও ১৯০২ সালের ভিসেম্বর মাস হইতে কলিকাভার আলি ও ১৯০২ সালের ভিসেম্বর মাস হইতে কলিকাভার হাইকোর্টে ওকালতী আরম্ভ করিরাছি। ১৩০৯ সালে—কানীমবাজারের প্রভিহাসবাদীর মহারাক্ষ মন্ত্রিচল নন্দী মহোগারের উৎসাহে ও সাহাব্যে 'বুর্শিগাবাদের ইভিহাস' প্রকাশিত হইরাছে। তিনি রাক্ষ্যশন্তি প্রান্তির পূর্ব্ব হুইতেই আমার ইভিহাস আলোচনার উৎসাহ দিয়া আসিতেছেন।" ('বঙ্ক-ভাষার লেক্ড' ১৩১১)

নিবিলনাথ হাইকোটে ও ছোট আদালতে কিছু দিন ওকালতী করিবার পর পুনরার বহুরমপুরে কিরিয়া যান। তিনি ১৬১৪ সালে (ইং ১৯১৭) কাশীমবাধার-মহারাজের চাট-বালিয়াপুরের অমিহারীর নারেনী-পদ লাভ করেন। ১৩০০ সালে (ইং ১৯২৩) তিনি চাকুরী ছাড়িয়া কলিকাতার আদেন।

১৯৩২ সনের ৪ঠা নবেম্বর (১৮ কার্মিক ১৩৩৯), ৬৭ বংসর বয়সে, নিবিধনার পরসোক্ষমন করিয়াছেন। বেদা ৮-৫ মিনিটের সময় তাঁছার মুত্যু হয়। ইছার ১৫ মিনিট পরেই তাঁছার সাধনী স্লামীর অন্তর্যনিনী হইরাছিলেন।

### মাসিকপত্ত সম্পাদন

নিবিলনাথ বে-সকল সাময়িক-পত্র সম্পাদন করিয়া সিয়া-ছেন, সেঞ্জির সংক্ষিপ্ত পরিচয় দিতেছি।

প্রতিহাসিক চিত্র' |—১৮৯৯ ব্রাইনের কাছ্যারি
মানে (পৌর-কাশ্তন ১৩০৫) অক্যর্নার নৈবের রাকশাংশী
দ্ইতে 'ঐতিহাসিক চিত্র' নামে একবানি ব্রৈমাসিক পত্র প্রকাশ
করেন। ইহা এক বংসর ছারী হইরাছিল। পাঁচ বংসর
পরে—১৩১১ সালের ভাক্র মাস (ইং ১৯০৪) হইতে নিবিলমাবের বড়ে মাসিকপত্র-রূপে 'ঐতিহালিক চিত্রে'র ২য় পর্যায়
প্রকাশিত হয়। পত্রিকা-প্রচারের উদ্বেশ্ব সম্বন্ধে তিনি প্রবন্ধ
সংবাার সেবেন :—

"আক্ষাল বদদেশে বীরে বীরে ইভিহাস-আলোচনার লোভ প্রবাহিত হইভেছে। কি সাহিত্যকাং, কি মাট্য-কাং সর্বাহাই ইভিহাসের স্থায়র দেবা থাইতেছে। বদ্যাসিগণ বে ক্ষমে ক্ষমে ইভিহাসের প্রতি অহ্রাগ প্রদর্শন ক্ষিত্রেহন, ইহা বেশের ভ্রত লক্ষণ বলিতে হইবে। আর্থির বিশ্বাস বে, ইভিহাস-আলোচনার বালা বেশের ও কাভির উর্ভি সংসাধিত হইল বাকে। বিশেষতঃ অবঃপতিত ভাতির পকে ইতিহাসালোচনাই একমাত্র সাত্রদা বলিয়া বোধ হয়। প্রবিশীয় বে বে ভাতি অবন্তির রসাতনে শারিত হইরাও আবার উন্নতির উচ্চত্র চুড়ার আবোহণ ক্রিডে সমর্থ হুইরাছে, সেই সেই জাভির পক্ষে ইভিছাদ-আলোচনা অনেক পরিষাবে বলস্কারের সহায়তা করিয়াছে। বিশেষতঃ যে ভাতির ভতীত ইতিহাস গৌরব-কাহিনীতে পরিপূর্ণ, উন্নতিশাভ তাহাদের পদে সুদাব্য থইয়া উঠে। সুৰেন্ত বিষয় ভারতের অতীত ইভিহাসের অভাব নাই। পাদ্যান্ত্য ভাবে লিবিভ ইভিহান না বাকিলেও অসংব্য প্রভেত্ত পত্তে পত্ৰে, শিলাগাত্ৰে ও ভাত্ৰৰতে ভাত্ৰতের অভীত কাহিনী উদ্দল অকরে লিখিত আছে। যে বাধানী করতের সমক্ষে হের বলিয়া পরিচিত, তাহার**ও অভী**ত ভাহিনীর অভাব নাই। বৰ্ডমান সময়ে দানা দিক হইতে ভাষার অনুস্থান আহম হইরাছে। ভাই এই ঐতিহাসিক যুগে অনুসাধারণের----বিশেষত: ভবিষাতের আলা-হল ছাত্রবন্ধের নিক্ট ঐতিহাসিক কথাপ্রচারের ভল 'ঐতিহাসিক চিত্রে'র অবভারণা। ঐতিহাসিক চিত্র কেবল নানা স্থান হইতে এতিহাসিক তথ্য সংএহ করিয়া সাধারণের নিকট উপগ্রাপিত করিবে। করেক বর্ষ পুৰ্ব্বে ঐতিহাসিক চিত্ৰ বোগ্যভৱ ব্যক্তি কতু ক সম্পাদিত হইয়া বিভিন্ন আকারে প্রকাশিত হইয়াহিল, অর্থাৎ সে ঐতিহাদিক চিত্ৰ প্ৰধানত: স্বাধীন অসুসন্ধান ও আলোচনার ক্লপ্রদর্শীরূপে আবিভূতি হইরাহিল। কিন্তু তবনও পর্যাত্ত ইতিহাস সাধারণের পক্ষে আহরের সামত্রী হইয়া উঠে নাই। বিশেষভঃ সেঞ্জপ অনুসন্ধান ও আলোচনার ফল-পাঠকের সংখ্যা যল্প হওৱার অচিরেই ভাষার অভবনি **ধটিয়াহিল। বর্ত্তমান ঐতিহাসিক চিত্র নাম। ছামের ও** নানা প্ৰকারের ঐতিহাসিক তথা সংগ্ৰহ করিয়া সাবারণের यत्नावश्वरमञ्ज अक्षात्र भारेत्य । शृक्षकन हिटकत मस्कि ৰঠমান চিত্ৰের পাৰ্ক্য বাকিলেও চিত্ৰের ভূতপূর্ব্ব সম্পাধক ষ্ট্ৰাশৱের অধ্যত্যধুসারে বর্তমান পত্র 'ঐভিহালিক চিত্র' ৰাম ৰাৱণ ক্রিয়াই আবিভুভি হইল। --- জাতীর ইভিহাস-আলোচনা ইহার মুখ্য উদ্দেশ্য থাকিলেও, অগভের উন্নতি**শ্ৰ**ণ জাতিগণের ইতিহাগও প্রক**টত করি**ছে ঐভিহাসিক চিত্ৰ চেষ্টা কৱিবে। কাৰণ কেবল খদে<del>বী</del>ৰ নতে, বিদেশীর ইভিহাস-আলোচনাও উন্নতির পঞ্চে সহায়তা কৰিয়া থাকে। সেইবভ ঐতিহাসিক চিত্ৰ ভাতীয় ও বিভাতীয় উভয়বিধ ঐতিহাসিক ভব্য সংগ্ৰহ कविका क्रममाबादागत विटमयकः बाळगरगत बर्या देखियान-আলোচনার সাহায্য করিতে চেষ্টা করিবে। সঙ্গে সদে বছাৰা সমাৰের ঐতিহাসিক সংবাদও প্ৰকাশিত स्टेट्य !---"

প্রথম পর্যারের ভার ২র পর্যারের 'ঐতিহাসিক চিত্র'ও এক বংসর পরে বন্ধ হইরা বার। ইহার ৩র পর্যার আরম্ভ হয়—১৩১৪ সালের বৈশাধ বাস হইতে। নিবিসমাথের সম্পাদমার 'ঐতিহাসিক চিত্র' ৭ বংসর চলিরাহিল।

'শাখ্তী'।—'ঐতিহাসিক চিত্রে'র প্রচার রহিত করিবা নিবিলনাথ ১৬২০ সালের বৈশাব নাস হইতে 'লাখতী' নাবে একখানি বাসিক প্রক্রিকা প্রকাশ করেন। ইহা চারি বংসর হারী হইরাহিল। পরিকা-প্রচারের উচ্চেত্র সথকে তিনি প্রথম সংখ্যার "হচনা"র সেবেন:—

"লাবতী বাহাতে বহু-সাহিত্যে দেশীর ভাব পরিস্কৃট করিব। তৃতিতে পারে, তাহারই বহু ববাসাব্য চেটা করিবে। লাবতী আমাদের বর্ষের কথা, সমাব্যের কথা, দর্শনের কথা, মাহিত্যের কথা বলিবে, আবার পাশ্চাত্য বিজ্ঞানের কথাও বব্যে মধ্যে শুনাইবে। নাহাতে দেশের লোকে দেশেই কিরিরা আসে, পারতী তাহারই চেটা করিবে। যাহাতে আমাদের সমাক্ষ শান্ত ও সংঘত হয়, তাহাই তাহার উদ্বেভ থাকিবে, এবং লোককে ধর্মালাচনারও পথ দেখাইরা দিবে। ইহাই শায়তীর মূলত্মর থাকিবে। সঙ্গে সহে সাহিত্য-বিজ্ঞানালোচনাও ইহার কলেবরকে অলহত করিবে। রাক্ষনীতির সহিত ইহার ভোনই সম্বন্ধ থাকিবে মা। না

আনরা ঐতিহাসিক চিত্রকে শাস্থতীর অদীভূত করিলাব। বেশের বর্তমান অবস্থার নিরবজ্বির ইতিহাসা-লোচনা সম্ভবপর নহে। সেইবার ঐতিহাসিক চিত্রকে প্রতিসংস্থার করিতে ক্টল। আমাদের ইতিহাসালোচনার কল অতঃপর শাস্থতীতেই প্রকাশিত ক্টবে।"

"বসিরহাটে বাইসবিগণীর প্রতিষ্ঠা হয়। প্রথম বংসজের বাই-পূজার সকলে আনাদিগকে পুরোহিতের ভাল করিবার অভ আহ্বান করিবারিতেন। উহিচ্চের সে আহ্বান আহ্বান করিবারিতেন। উহিচ্চের সে আহ্বান আহ্বান উপেকা করিতে পারি নাই। বসির-হাট মহকুরাতেই আনাদের অবস্থান। অবস্থানর পোকরিলের আহ্বান কে উপেকা করিতে পারে ? বাই-সবিলানীর সলে সলে 'পরী-বাইর'ও আবির্ভাব হয়। আহেই আনরা সেই সময় হইতেই 'পরী-বাই'র সহিত অভিত হইরা পভি। এবন ইহার প্রাণহাতা [ তুজদবর রারচৌহুরী ] ববন ইহাকে লালন পালন করিতে পারিরা উটিভেবেন না, তবন আনাদের ইহার সহিত বে সবস্থাই সহিবারে, সে সব্যাই হির্মির করা উচিত নহে বনে করিবা, আনরা ইহার সপাক্বতার তার বহন করিবার।"

্ৰিশিলনাথের রচিত ও সম্পাধিত এছের একট কালাছ্-ক্ষমিক তালিকা বিভেছি। বছনীমধ্যে প্রয়ন্ত ইংরেজী প্রকাশ-কাল বেদল লাইব্রেরি-সঙ্গলিত মুক্তিত-পুতক্-তালিকা হইতে গুলীত।—

১। ज्ञास्त्राव (कांत्रा)। १ । वृ. >>।

বিবাহের বংসরবানেক পূর্ব্ধে রচিত ও বিভরণার্থ মুক্তিত প্রেম-নিবেছম।

২। বাৰপুতকুমুৰ (ইভিকাৰ্য)। বৈশাৰ ১২১১ (ইং ১৮৮৪)। পু. ১০০।

"বাদশদী প্রাসিদ রাজপুত-বীরের বীর-কার্য্য-বর্ণন প্রতি-কাব্য।" এই বাদশট বীর:—বালা রাও, সমর সিংহ, পূরী-মল, বাদশ, বামির, চও, কৃত্ত, পূরীরাজ, সংগ্রার সিংহ, ক্ষমল ও পুত, প্রতাপ সিংহ, রাজসিংহ।

পুতকের আধ্যাপত্তে এছকারের নাম নাই। কবি ঈশান-চক্র বন্দ্যোপাধ্যার ইহার আভোপাত্ত দেখিয়া দিয়াছিলেন।

৩। ভাক্তার রামধাস সেন (জীবনী)। পু. ১৬

আনরা এই পুভিকাবানি ধেবি নাই। বেদল লাইত্রেরির ভালিকার ইহার ২র সংকরণের প্রকাশকাল—৭ আগই ১৮৯৯।

8। মূর্শিধাবাদ-কাহিনী (ঐতিহাসিক চিত্র)। প্রাবণ ১৩০৪ (১ ছুলাই ১৮৯৭)। পু. ৪৫০ 🕂 ৩৬।

ছটী:—কিরীটেবরী, কাশীনবাজার, রাজা উদরনারারণ, কাটরার নগজীল (জালানকোষা তোপ), রোলনীবাগ (কর্রাবাস), জগৎ শেঠ, বজাবিকারী, গিরিরা, একটী জুত্র কাহিনী, আগিবর্ডীর বেগন, জগবানগোলা, রভিবিল, হীরা-বিল, সুকে উরেসা, পলাশী, বোসবাগ, জাকরাগঞ্জ, উদুরানালা, বছনগর, নহারাজা নক্ষ্মার, কাছ বাবু, গলাগোবিন্দ সিংহ, দেবী সিংহ, ব্যারা, একছিনের স্মৃতি, পরিশিষ্ট।

"এই প্ৰবন্ধ চলির অবিকাংশই বুর্ণিদাবাদ-হিতেমী, সাহিত্য, নব্যভারজ, সংসদ, ভারতী প্রভৃতি পত্রিকার প্রফালিভ হইরাহিল।" 'বুর্ণিদাবাদ-কাহিনী'র ৪র্ণ সংক্রণট (প্রাবণ ১৩২৪) পরিবর্তিভ ও পরিবৃত্তিত।

e। বুৰ্ণিবাৰাৰের ইতিবাস, ১ন ৰও। আখিন ১৩০৯ (১৫ অক্টোবর ১৯০২)। পু. ৬৫০-(১৯-(২)

"এই এছে ব্সল্যান রাজ্ত্বের রাজ্বৈতিক বিপ্লবের মধ্যে এলেশের বংলাবাভ ব্যক্তিগণের বংলাবাভ কার্যাও কার্তি বাহা কিছু প্রকাশিত হইরাহিল, ববালাব্য ভাষার বিবরণ সংগ্রহু করিয়া প্রকাশ ভংসবৃদ্ধ প্রদাশ করিতে চেষ্টা করিয়াহেল।"

'ব্ৰিদাবাদের ইভিদান, ২র বঙ ২০৮ পুঠা পর্যন্ত হাপা হইরাহিল ; নাবা কারণে উহা সম্পূর্ণ হয় নাই।

७। मानाव वाक्ना। देर ১৯०७ (२२ क्नार्टे)। तृ. ১४१। "शरकी जारकानस्य नकरमत्र वहरूदे जवक्षित्र कुकान উটিয়াহে। সেই বিয়াট আন্দোলন এছকারেরও বর্ষপর্ণ করার সোনার বাললার অবভারণা। আনাবের সোনার বাললা পূর্ব্বেই বা কেমন হিল, আর কিরপেই বা ইহাভে বংসের প্রোভ প্রবাহিত হয়, এবং সেই প্রোভরোবের ভভ উপারচিতা, ইহা লইয়া চারিট প্রবন্ধ লিবিভ হয়। ভাহাদের প্রবন্ধটি 'বলদর্শনে' ও অপর ভিনটি 'উপাসনা'র প্রকাশিভ হইরাছিল।"

1। প্রভাণাদিভ্য। ভারে ১৩১৩ (২০ সেপ্টেমর ১৯০৬) পু. ৫১৩ — ১৪।

च्छी:—উপक्रमनिका। वाका প্রভাগাদিনতা চরিত্র ( श्रामत्राम वद्र ), \$शमी, অপ্রচলিত ও ছ্রুছ শব্দের অর্থ, সমালোচনা। মহারাক প্রভাগাদিতা চরিত্র ( হরিক্রম তর্কালয়ার ), মন্তব্য। অপ্রদামকল (ভারতচন্ত্র)। সায়তন্ত্র-তর্কালী ( রামলোপাল রার )। কিতীলবংশাবলীচরিতং, অন্থবাদ। ঘটক-কারিকা, অন্থবাদ, মন্তব্য। উন্তট-কবিতা (সাহ্যবাদ)। Statistical and Geographical Report-of the 24 Pergunnahs Dist. (Major Ralph Smyth,) অপ্রবাদ। Proceedings of the Asiatic Socy. for December 1868. Report of the Dist. of Jessore ( J. Westland ), অন্থবাদ। Histoire Des Indes Orientales ( Peirre Du Jarrie ), অন্থবাদ। Relatio Historica De Rebus In India Orientali ( Nicalao Pimenta ), অন্থবাদ। পরিশিষ্ট।

৮। কালীপ্রসর সিংহের বহাভারত অপ্রক্রমণিকা ও পর্যান সংগ্রহ অব্যার। আয়াচ ১৩১৪ (১৮ জুলাই ১২০৭)। পূ. ১১৩।

ইং মিবিলনাৰ কৰ্ত্ত সম্পাধিত। ভূমিকার প্রকাশ :—
"কালীপ্রসন্ন নিংছের মহাভারতের আদিপর্ব্বান্তর'ত অমৃক্রমনিকা অব্যার ও পর্ব্বসংগ্রহ অব্যার কলিকাতা বিববিল্যালয়
কর্ত্তক Intermediate in Arts পরীক্ষার পাঠ্য মিহ্নিষ্ট
হইরাহে। উক্ত হই অব্যার হাত্রগণের হুপ্রাণ্য বলিরা আমরা
বভন্ন করিরা বৃত্তিত ও প্রকাশিত করিলার। হাত্রগণের
ক্রবিরার ক্রম্ভ ইহাতে শকার্থ ও জীকাটগ্রনীও সন্ধিবেশিত
হইরাহে। ইহার অবিকাশে অর্থ নীলকণ্ঠ ও অর্কুরনিশ্রের
জিকা হইতে গৃহীত। কোন কোনট পরনারাব্য মহানহোপক্রেন্ডে পভিতরর শ্রমুক্ত শব্যর তর্কচ্ছারনি মহাশ্রকে
ক্রিক্রালা করিরা লিবিত হইরাহে।"

১। ইভিক্থা। ভাল ১৩১৫ (৪ অক্টোবর ১৯০৮) পূ. ৩০২।
"ক্ষেক্ট ঐতিহাসিক প্রবাদ অবলখন করিরা যে ক্ষেক্ট
কুল্ল কথা উপাসনা ও ঐতিহাসিক চিল্লে সিধিত হইরাহিল,
এক্ষ্যে ভাহাদিগের ইভিক্থা নাম দিরা প্রছাকারে প্রকাশ করা
হইল।"

पृष्ठी:-- क्लार्ट्सबी, चारहित्ता, खिल्ट्सिन, वानीयस्त्र, रोठीह्वामैत शृष्टे, चिल्मान, (खट्यत क्य, चायशन। ১০। वसन-वस्त्र। चारित ১७১१ (১७ चट्टीयस ১৯১०)।

यश्-तर्छ। जाचिम ১७১१ ( ১७ जटङीयस ১≥১० ) पृ. ७৪।

840

কীৰন, মৱণ, প্ৰকাল, ক্ব-ক্বান্তর সক্তে চার্শনিক আলোচনা।

১১। বারই ভিসেবর। ১৩১৮ সাল (ভাত্রারি ১৯১২)। পু.১০।

১৯১১ সনের ১২ই ভিলেম্বর অনুষ্ঠিত দরবারের সংক্ষিপ্ত বিবরণ। 'ঐভিহাসিক চিত্র' (পৌষ) হইতে পুনরু ক্রিড। ১২। ক্রগং শেঠ। ১৩১৯ সাল (১৪ সেপ্টেম্বর ১৯১২)।

"কাং শেঠ প্রথমে 'উংলাহ' পরে পরে 'ঐতিহালিক চিত্রে' প্রকাশিত হইতে আরম্ভ হয়, উক্ত প্রথমে কাং শেঠের কতকাংশ নাম প্রকাশিত হইরাছিল। এক্ষণে সম্পূর্ণ প্রম্ প্রকাশিত হইল।"

**५०। क्विक्या**ः

9 9391

১ম বঙ, কালিবাস ও ভবতুতি। ১৩২২ সাল। পূ.৫৬৬। ২য় বঙ, ভাস। ১৩২৬ সাল। পূ.৫১৬।

ইহাতে নাটকগুণি "কথা বা আব্যায়িকার আকারেই গিৰিত হইয়াহে।···গাবারণের নিকট নিবেদন এই বে, তাঁহারা বেন ইহাকে নাটকাবলীর অস্থবাদ মনে না করেন।" ১৪। চ্ণার (ইভিহান)। অঞ্জবারণ ১৩২৫ (২০ জুন ১৯১৯)। পু. ৬৬।

১৫। नवाबान (डेंगबान)। ১७२৮ मान। वृ. २১२।

"'বুরারেছভীর: পছা:' চিরপ্রসিদ। এই রাছে ভাছাই দেবান হইরাছে।" পুতকের আব্যাপত্রে এছফারে নাম বিনাবে "এবুরারিপ্রশীভ" বুলিভ আছে।

১৬। কাষহ-প্রসদ। ১১ চৈত্র ১৩২৯ (ইং ১৯২৩)। পূ. ২৭।
পৃত্তিকার উপসংহারে প্রহ্নার লিবিভেছেন:—"এইরপে
আমরা বেদিক দিরা দেবি মা কেন, কারহকে হতর জাতি
ভিন্ন অত কিছু বলিবার উপার নাই। কোনরপে কারহকে
বৃগ ক্তিরে প্রতিপন্ন করা বার না। কারহপণ হতর জাতি,
উাহাদের রীতিনীতি, আচারব্যবহার, সনতই হতর। প্রমন
কি, তাঁহাদের মধ্যে মিশ্র আচারই দেবিভে পাওরা বার।
প্রশ্ন হলে কারহপণের ক্তির হইতে বাওরা বিভ্রমা ব্যতীত
আর কি বলা বাইতে পারে? বাহারা শালীর প্রমাণ,
প্রতিহালিক প্রমাণ, বৃত্তি, পূর্মপুর্বসংশের গৃহীত কুলাচার প্রমাণ,
বৃত্তন সংখারের পঞ্চপাতী, তাঁহাদিগকে হুর হইতে বলভার
করিরা, সরিবা হাঁভান ভিন্ন আবাবের আর অত পছা নাই।
পিতৃপিভারত্বের আচারিত হাতর্যে বা বৈশিষ্ট্য রক্ষা করা প্রমান
সৌরব রন্দে করি।"

১१ । वृदीवाक । वाचिन ১००१ (देर ১৯६৮) वृ. ७৯৯ ।

শৃথীরাজরাসো অবলধন করিরাই পৃথীরাজ লিখিত ইইরাছে। পৃথীরাজরালো দিলীখন পৃথীরাজের সভাকবি টাধবরদাইপ্রমীত বলিরা ভূষিত। এই স্থানিভ প্রমূকে বল-ভাষার পরিচিত করিবার কচই পৃথীরাজের অবভারণা, সহজ-বোধ্য করিবার কচ ইয়া উপচাসাকারে লিখিত চইরাছে। নিবিল্নাথ 'বাদ্দার কথা' নাবে একথানি এছ সম্পূর্ণ করিয়া সিরাকেন।

পুজকাকারে অপ্রকাশিত রচনা।— নিবিদনাবের বহু রচনা 'দাহিত্য', 'ববাতারত', 'উপাসনা', 'প্রবাসী', 'বহুহর্শন', 'ভারতবর্ধ', 'নানসী ও নর্থবাদী', 'বাদী', 'পঞ্পূপ', 'বাদিক বস্থবতী' প্রভৃতিতে প্রকাশিত হইরাহিল। এই সকল রচনার অনেকভলি পুজকাকারে রুক্তিত হয় নাই। এভলির একট সংগ্রহ প্রকাশিত হওয়া বাহুনীর।

## শিক্ষার নবযুগ

बीनात्रायुग्हरू हन्त

ভারতবর বাধীনতার ঘর্গহারে উপন্থিত; দেশে এক বিরাট মুগপরিবর্ডন হইতে চলিয়াছে। এই নৃতন মুগ জ্ঞানে-পৌরবে, শক্তিতে-সম্বৃদ্ধিত মহান হইয়া উঠুক—ইহাই দেশবাসীর আকাজ্ঞা। ইংরেক আনলের প্রথম হইতে বর্ডনানকাল পর্যাত্ত পর্যালোচনা করিলে দেখা যাইবে, ভারতবাসী যে ওরু নারিত্ব বহন করিতে যাইতেছে এদেশের আবৃনিক কালের ইভিহাসে ভাহার ছুলনা নাই। এতদিন বিদেশী শাসকের মনভাহীন শাসকলের অধীনে দেশবাসী আত্মবিকাশের পরিপূর্ণ স্থযোগ পার নাই; নানা প্রতিকৃদ অবহার মধ্য দিয়া ভাহাদিগকে চলিতে হইরাছে। মহুস্তব্দের পূর্ণ বিকাশ, বিধের সভ্যসমাক্ষে প্রতিষ্ঠালাত ও সমন্ত্রীসত ভাবে আত্মরকা বাধীনতা ব্যতীত কোন ভাতির পক্ষেই সন্তব্দ নর। ভারত বর্ধন স্বাধীনতা অভন্নক করিতে বাইতেছে তর্ধন এই সকল ধারিত্ব এবং কর্তব্য সহত্বেও ভাহাকে সচেতন হইতে হইবে।

কোন বাছবের ব্যক্তিগত উরতি অথবা কোন আতির বা রানবগান্তর সমষ্ট্রগত উরতিসাবন, উতর ক্ষেত্রেই শিকার প্ররোজন সর্বারে। শিকা ব্যতীত কোন ব্যক্তির স্থ পশ্চির বিকাশ বেনন সভবপর নর, তেননি আতীর শিকা হালা কোন দেশের জনগপের উরতিবিবান ও শক্তির বিকাশসাবন অসভব। বাবীন এবং পরাবীন বেশের শিকা-পছতির মব্যে গতীর পার্বক্য থাকিবেই, কেননা বর্ত্তমানের গণতান্ত্রিক বাবীন থেশে প্রতিষ্ট নাগরিককে বিভার ও ঐবর্ব্যে শক্তিমান করিয়া সমগ্র দেশের উরতি সাবনই শিকার প্রধান লক্ষ্য। পকাভরে বৈরাচারী শাসক জনগপকে নিবীর্ব্য করিয়া রাবিবার জন্য ইহার বিপরীত অব্যাই কারনা করে। থনি ইলারা বাবিবার জন্য ইহার বিপরীত অব্যাই কারনা করে। থনি ইলারা বাবিবার আনবলে রাশিরার শিকার শোচনীর অবহা বিদেরণ প্রসক্ষে বিলারিকেন, ''ক্ষমনার্বের অঞ্চার মধ্যেই ক্ষেত্রারী গ্রন্থনৈক্টর শক্তি বিভিন্ত, গ্রন্থনিক্ট ইহা আনে, ভাতেই সর্ব্যাই ইহা প্রকৃত্ত

ভাষের বিকিরণ রোধ করিবে।" সোভিয়েট রাশিয়া এই সভ্য উপলজি করিয়া উপরুক্ত শিক্ষা-বাবস্থা প্রবর্জনের খারা দেশের শক্তিকেন্দ্র স্বরণ কমগণকে উদ্বুদ্ধ করিয়া অপুদানীর শক্তির ক্ষুরণ ঘটাইয়াছে।

খাধীনতা অর্জনের দলে সদে বিপুল দায়িত্ব ও চুরুছ কর্তবাতার আমাধের দেশবালীর বিশেষ করিয়া নেতৃবর্গের উপর
পড়িয়াছে। এই দায়িত্ব গৌরবের সলে বছন করিয়া, দেশের
আশা-আকাজনা সকল করিয়া ভূলিয়া আমাদিগকে বিখের
কাছে প্রমাণ করিতে ছইবে যে, আমরা গাধীনতার যোগ্য
মর্ব্যাদা দিতে ভাবি। আন্মোহতির সাধনার পৃথিবীর অন্যাভ
বাধীন দেশ অপেকা আমরা কোন অংশেই হীম নহি।

এতদিন গিরাছে প্রতিবাদ ও আন্দোলনের মূগ; এখন আসিরাছে গছিরা তুলিবার দিন। এবার দারিছ নিজেদের; দোষ ফ্রাট্ট বিবেশী শাসকের অথবা আমলাতপ্রের ছবে চাণাইরা আর নিছতি পাওরা বাইবে না। স্বাধীন দেশের প্রবোজনে, মৃত্য রূপের আলোকে দেশকে সকল দিক হইতে গছিরা তুলিতে হইবে। সকল বাধীন সভ্য দেশেই দেখা গিরাছে শিক্ষা-ব্যবহাকে ভাতিগঠনের সর্বপ্রধান উপার হিসাবে প্রহণ করা হইরাছে। আনাদের দেশেও ইহার ব্যতিক্রম করা চলিবে না। এতদিন শিক্ষাক্রেরে বে প্রাণহীন নিজিরতা, উত্তরহীনতা ও ব্যর্শতার ভাব বিরাক্ত করিতেছে তাহার অবসান ঘটাইরা সম্প্র শিক্ষা-প্রতির মধ্যে সবল প্রাণের উচ্ছল প্রবাহ সকার করিতে হইবে। দেশের সম্প্রদেশ বে অবসাবারণ তাহাবিগকে দেশের সার্থিক কল্যাণে নির্ভ্ত হইবার জভ্য বোগ্য ও সমর্থ করিরা তুলিবার উপর্ক্ত শিক্ষার প্রবর্তন করিতে হববে।

আৰৱা বৰণ পৱাৰীনভাৱ দৃথলে আবদ, সাবাভিক অৰ্থনৈভিক সকল বিবৰে বিপৰ্য্যত বেশের ভাগ্য দুভৰ করিৱা গভিষা ভূলিতে বাইতেতি, তবন রাষ্ট্রীর উন্নতির পরিক্রমার শিক্ষার উপরই সর্জাবিক মনোবোগ বিতে হইবে। বেশের বৃহত্তর ক্ল্যাণের প্রতি লক্ষ্য রাখিয়া আমাধের শিক্ষা-ব্যবহা কি তাবে আমূল পরিবর্তন করিয়া মৃত্য তাবে ঢালিয়া সাক্ষিতে হইবে সংক্ষেপে তাহারই আভাল বিবার চেষ্টা করিব।

সর্কানির ভর হইতে সর্কোক্ত ভর পর্যন্ত শিক্ষাকে একট 
নিরবজ্বির বারা হিলাবে প্রহণ করিরা ইহার বিভিন্ন ভরের 
মধ্যে সামঞ্জ বিবান করিতে হইবে। বর্তমানে আমাদের 
প্রাথমিক শিক্ষার স্থেমঞ্জন বোগছত্ত নাই। প্রাথমীন কলের 
প্রত্তেশিক্ষার স্থেমঞ্জন বোগছত্ত নাই। প্রাথমীন কলের 
প্রত্তেশকার স্থেমঞ্জন বোগছত্ত নাই। প্রাথমীন কলের 
ব্রহিরাহে। একই সজীব দেহের শিরা-উপশিরা সায়তভ্তবত্ত বিভিন্ন ভরের নত বাভাবিকভাবে পরিপৃষ্ট হইরা ওঠে 
নাই। শিক্ষা-পরিকল্পনার প্রথম প্রয়াস হইবে ভরাসছের 
বিভক্ত ভক্তের সংযোগসাধনের মত শিক্ষার বিভিন্ন পর্যারের 
সামঞ্জ বিবান ও সমগ্র দেহে প্রাণপ্রতিষ্ঠা। সংকীর্ণ মৃষ্টভলী 
সইরা পৃথক পৃথক ভাবে ভিন্ন ভিন্ন ভবের শিক্ষার সংভার 
ও পুনগঠন করিলে কোনই উপকার হইবে না।

वाबीय (भरमब क्रम निकाद प्रवर्त्तरम जार्क्क निका पदि-বলনা বিশেষ কাজে লাগিবে। ইহাতে একট পূৰ্ণাক শিক্ষা-ব্যবসার বরণ পরিক্ষিত হইয়াছে। বাংলাদেশে সভয়ভাবে প্রাথমিত ও মাধ্যমিক শিক্ষা-সংস্থারের চেঠা হইরাছিল। ইহা যে প্ৰফলপ্ৰত হইত না ভাষা বলাই বাহলা। পশ্চিম বলে পুৰক মনীমঞ্চ গঠিত হুইবার পর পুত্র শিক্ষামন্ত্রী মহোদ্যের যে সকল বিবৃতি ও আখাদ সংবাদপত্তে প্রকাশিত হইয়াছে ভাহা হইতে বুৱা যার অবিসংখ সে অঞ্চল বুনিরাদি শিক্ষার क्षेत्रर्थन स्ट्रेवात अखानमा । दूनिशापि निका निम्नख्टतत निका . विश्वविशानत्वत नैर्दरम्य छैठियात छैकाकिनाय देशात यदा माहे। जाबादन श्राद्यांक्षीय कानशान ७ वाक्रकीयामव অৱব্য্তের সম্বভা সমাবানের বোগ্য করিরা নাগরিক পভিয়া ভোলা ইহার উদ্বেশ্ন। সকল বেশে উচ্-মীচু-বাবারি নানা ভরের বেধাবিশিষ্ট হালছালী আছে: প্রভ্যেকের সামর্থ্য ७ क्रि चक्रवादी चाचिकात्मद प्रवांत्र निका-रावश्चाद यदा ৰাকা বাহনীয়, কেননা সভ্যভা সংস্থৃতি গঠনের কাবে বহ প্রকারের প্রভিভার প্রয়োজন। কাজেই বুনিরাধি শিকা क्षर्वात्वय जन दिनाद विकित बद्धावत बाबाधिक विद्यालय **श्रामिक । अधिकानिक मध्याद्य अधिकार्य ।** 

বৰ্তনানের বাধ্যবিক শিকা অভ্যবিক পাঠ্যপুতকের চাপে বঙ্গাংশে ব্যবভার পর্ব্যবসিত ক্টরাছে। ভাভিগঠনের ভিভিন্ন না হইবা, হাজহাজীবের বাজবজীবনের জভ প্রস্তুত না করিরা ইহা সভলকেই বিববিভালরে শৌহাইরা হিবার ভরবিশ্বরণ হইহাছে। ইহার আয়ুল সংকারসাবন না করিলে শিকাক্ষেত্রে সজীবতা আসিবে না। কাজেই ইহার ভিভি হুচ এবং আহর্শ উন্নত ও বলিঠ হুওরা একাভ আবক্তক।

মাধ্যমিক শিক্ষার থাতাবিক অন্তব্য হিসাবেই বিশ্ব-বিভাগরেরও পূন্দঠন প্রয়োজন হইবে। দেশের প্রতিভাবাদ তরুণগণ বধন তীক্ষু বুছি অধ্যবসায় ও কর্মণজ্ঞি সইরা উচ্চতদ শিক্ষাসত্তে উপনীত হইবে তথন তাহাঁদের প্রতিভা বিকাশের পূর্ণ প্রবোগ দান করাই হইবে বিধবিভাগরের প্রবান কর্মব্য। দেশকে নানাদিক হইতে সমুদ্ধ করিতে বে উচ্চশিক্ষা ও সাধনার প্রয়োজন এখানে হইবে তাহার প্রধান ক্ষেত্র।

উচ্চতম শিকা পর্যন্ত মাতৃভাষার মাধ্যমে দিবার ব্যবস্থা করিতে হইবে। কোন বাবীন দেশে বিদেশী ভাষার মাধ্যমে শিকাদান চলিতে থাকিলে তাহা কাহারও পক্ষেই পৌরবের নম্মনা সে দেশের ভাষার পক্ষে, না সে দেশবাসীর পক্ষে। সম্ঞ্র ভাতির পক্ষে ইহা অব্যান্ধনাকর।

শিক্ষার সদে স্বাস্থ্যের সমনর সাবনের বৃদ্ধ শরীরচর্চা শিক্ষার অভতন প্রবাম অদ হিলাবে প্রকৃণ করিতে ভ্রবে। সামরিক কারণার ডিল অবগু-শিক্ষণীর বিষয় হওৱা উচিত। ইহাতে নিরমান্ত্রতীতা ও একতা বৃদ্ধি শাইবে। আতীর পরি-ক্ষমা সমিতির সুপারিশমত বিভিন্ন বরসের শিক্ষার্থীর নির্দিষ্ট স্বাস্থ্যমান প্রবং প্রবেশিকা পরীক্ষার পর এক বংলর বাব্যতা-বৃলক সমাঞ্ব-সেবার ব্যবস্থা প্রবর্তন করা আবর্তক।

পূর্ণাল শিক্ষা-ব্যবহা রচনা করিয়া ইহার আন্ত প্ররোগের
বল করেকট পঞ্চবার্ষিক পরিকল্পনা অপ্রবারী কাল আরভ
হতৈ শিক্ষাক্ষেত্র পূভন উৎসাহ কেবা দিবে। শিক্ষার
প্রতি বাঙালীর স্বাভাবিক অন্তরাগ গবর্ণমেন্টের দীর্বদিনব্যাপী
উদাসীনভার মব্যেও লোপ পার নাই। লাভীর সরকার কর্তৃক
রচিত অন্তর্ক পরিবেশে বে ইহা নূভন উহ্যানে স্টেবর্লী হইরা
উট্টবে ভাহাতে সন্দেহ মাত্র নাই।

ভাতীর ভীবনের সভিজনে, বৃত্তন ভীবনের প্রবেশ-পূবে ভাতির বাঁহারা সত্যকার কর্ণবার অনাগত তবিষ্যতের গৌরবোজ্ঞল রূপ উাহাদের নানসচক্ষে উজ্জল হইরা কুটীরা ওঠে। সেই দূরদৃষ্টির আলোকেই উাহারা ভাতীর জীবনের অভ-কারে কল্যাণের পথ নির্দেশ করিয়া থাকেন। আনাদের বর্তনান বুগসভিজনে নেতাদের উপর এই বিরাট কর্তব্যভার অপিত ভইরাছে।

### **अर्थिएत त्राक्रा**

### শ্ৰীঅমুকৃক্তন্ত্ৰ চৌধুরী

बररापत चार्या-चार्यक विचित्र द्वाकाविकास जवाकीर्ग विम । चन्दरा जबू, क्षका, शूक, वड्-इक्ट्र ७ जवच ( -एरप )≉ और প্ৰ আৰ্য্যৱাভ্য সৰ্ববিদ্ধ প্ৰসিদ্ধ। পদ্ধান্ত, চেৰি, বুকি প্ৰভৃতি অপর আর্যারাজ্যের নামও উল্লেখযোগ্য। শেষোক্ত বৃক্তি बाक्तं विषय अक शतक (बाक्तान्या दक्षिश्य) अवश के चारह । बाक्छ बर्द्धक नाबावन बाहेछ्छ । बरदरव बाक् 'বিসপতি' বা জনসাৰাৱণের পতি। ধ্বেদের রাজা সর্বাক্ষয়তার অবিপতি ও নৰ্কাবিণতি। কিছ প্ৰভাৱ কল্যাণকামনা ও बिचाव बन्ननावम खाहाव बावाम कर्चता तनिवा भना । बारवास वाका 'वाकावरमकावी मवनिष्'। वाका---वक्क नामक रिष-क्व अवार्यम पूर्णामक इक्षेत्रमकादी क्लाला कर्यस्क वजीके-शृदक माश्रिक्षणः अरक चारह--'श्रकांबरमन दाका श्रकांद হিতকর কার্য্য করেন। অরি কর্মীল রাজার ভার বসুযোর পালক ও প্রির। হে কেব। ভূমি রাজার ভার জনগণের चणीक्षेत्रक । चावि नवाहे देख ७ वक्रत्य निकृष्टे बक्रत्य খভ ৰাজা করি। ভোষরা এই ভোত্তসকলকে দুপভির ভার क्षाबुक्त करा। अकार्य कर शाहेश बाकारक जातार करता। (ए देख ! जृति वृद्धेणवयकाची वाकाव वकू । एर लाव ! जृति क्वीपृष्ठीमस्र्भव वाकाव साव सावादक भाग स्राप्त कव। হিতৈহীগৰ সুণাগক নগৰপতিৰ পূজা কৰে। বৰণীল লোক-পতি আমাৰের শাভি প্রথ ষ্ট্রন।' ইত্যাদি। বংগ্রে রাজার नुबी नश्च इर्ग बायनवा प्रहोनिका नविष्य भव्या (मा वन बन्न ক্রব্য-সাম্প্রী ঐশ্বর্য লোকনন্তর সভা-পরিষদ অমাত্য দুত চর-অমূচর অন্তৰ্শন্ত যুৱসভার রথ অধ্য সেনা প্রভৃতি বাজ্যোপকরণ ७ क्षेत्रर्रिश्च कद्रति क्षा केक व्हेबार्ट । वर्ष्य बाक्नर्यक বেভনভোগ নেনা ছিল एडे হয়। একে আছে, 'অরি- ( यक ) ৰাৱা বছৰান বৰলাভ ক্ষরেন। সেই বন দিন দিন বুদিপ্রাও ও যশোহুক্ত হয় ও ভড়ারা অনেক বীরপুরুষ নিযুক্ত করা বায়। बर्दारम क्षेत्रम बांकर्गरमेव वृष्ट्र वृष्ट्र रममा विम मुद्रे एव ।००

सरक 'नहारमनाविभिक्षे नाक्मार्यनः' हैरत्नव चारह। सरवरम नाक्क युद्धार्थी नाक्कि हिन। जन्न नाक्ष्यरणं विर्वामान च जर्मून प्रवास व्यवस्था मृज्यूरम ७ जर्मून व्यवस्था च जर्मून क्रम्यन् , जर्मून हैर चक्रक व्यवस्था नाक्षा विराम। जन्न च मृज्य सर्वरम् इरे चक्रक व्यवस्था चार्या नाक्ष्यरम। जन्न च विर्वामाम च भूषाम व्यवस्था क्रम्याक मृज्यूरम च व्यवस्था चनार्यामिर्द्धा व्यक्ति वीत च भवाव्याच मन्न च विराम च वार्या च वार्यामिर्द्धा व्यक्ति वीत च भवाव्याच मन्न च व्यवस्था च वार्यामिर्द्धा व्यक्ति च वित्र च वार्यामिर्द्धा व्यक्ति च वार्यामिर्द्धा वार्यामिर्द्य

बरदरप बाका कुनी हैन्यम शैक्षिमान किवादिकिवपृष्टि हैन সভৰ্ক ক্ষিপ্ৰকাৰী শক্ষণাশক দওদাতা ভৰ্নীয় পূৰ্নীয় ইভ্যাদি। बाराएक वाकाव विवास किथा बक् ब बारा छेव्वछ स्टेन---'রাজগণ শত্রুদিগের ছর্গ বিনাশ করেম। মরুৎগণ নেভা ও রাভার ভার উপ্রকশ। বহুমান ভারিকে বরণ করিভেলেন এবং রাভার ভার উাহার প্রসাধন করিতেছেন ৷ ভূমি ভারাপণের সদে রাজার ভার দীঙ্কির সহিত বাস কর। আদিত্য বেমন जूरनगरीक जान (मन, महारामाविभिष्ठे बाधनन (महेन्नन महा-গণকে তাপ দেন। দ্বিদ্র ভোডা এবং ধনশালী রাজা উভয়েই ৰন বাজা করে। ৰক্তাৰ কৰ্ত্তক বন্ধিত হুইরা স্তোতা সামাজ্য-बुक्त एवं। वक्रम भवस भरभगार्यव बाक्षा। एवं विक ७ वक्रम । তোমাদের একখন সত্রাটু ও আর একখন স্বরাটু। রাখা শত্র-গণের প্রকশ্পক ৷ যে রাজার নিকট ত্রান্ধণশতি প্রথমে গমন করেন, ভিনি স্তৃত হইয়া ঘকীয় গুছে বাস করেন। পুৰিবী তাঁহার ছত সর্বাদাে কল প্রসৰ করে, প্রভাগণ নিজেরাই তাঁহার নিকট প্রণভ থাকে। নৃপতি পুৰুষীয়। রাজা পারিবদ ও অযাত্যবৰ্গ সৃহ হতিপুঠে বহিৰ্গত হন। ৱাজার ভার বজবিছকারী বহুত্তগণের অভিযুধে সোম গমন করেন। ওভি যারা রাজা বেরণ ভূঠ হন এবং সন্ত হোতা যজহারা বেরণ সংকৃত হর, সেইরুপ পব্যের দ্বারা লোম সংকৃত হয়। হে সোৰ। ভূমি রাজার ভার আমাধের ভতি স্বীড়ার কর। বন্দী-গণের বন্দবারীভিতে রাজার বিশ্রাভদ হয়। হে প্রাদ্ধপাতি। ভূষি প্রশংস্থীরহিগের যথ্যে রাজা। পক্তপাপুত রাজা বিজা-বরুণ সহস্রভাষ্টবিশিষ্ট এই ছালে উপবেশন করুন। সোম রাজার ভার উচ্চল ও স্থানী। বে লোব। ভূবি রাজ্যবহন-काबी बदर्गाल, बाकाब जाब जानबब कर । जाबादिना है बन-পत्रिभूर्व बाक्यांत्रा शृष्ट काम कत्र । वद्यश्यव बाक्यक्टिशत महात्र ছঞ্জী ও চিত্ৰবিচিত্ৰযুষ্টি বারণ করেন। প্রবল রাজার সেনা কেন্ বিবাৰণ কৰিতে পাৰে বা । অহুকুল বিশ্ববিশিষ্ট ৰাজাৰ ব্যায়

বংগদে ভরত ও ভৃৎক এক বংশ বলিরা দৃষ্ট হর। অন্ত নতে,
 ভৃৎকু ভরতগণের রাজবংশের নাব।

<sup>†</sup> এই উভিন্ন অৰ্থ হুলাই নহে। বৃক্তি রাজ্য অ-রাজ্যাত্রিক রাজ্য হিল, এজণ অর্থও করা বার। জানা বার, পরবর্তীকালে বৌত্তবুরে বৃক্তি নামক রাজ্য প্রজাতাত্রিক রাজ্য হিল।

বংগদে রব পক্ট গ্রন্থতি গ্রন্থানাবাদী প্রশন্ত রাজপথ ছিল।

এক বংক 'নির্ভর রাজপথ' এরপ উক্তি আছে। অন্ত বংক 'রক্ষানৃত
মুর্গন হানে' চৌরভকরের উপত্রবের কথা আছে।

<sup>§</sup> करक्टम बुकारकत्र मात्र 'प्रविक्या' ।

ভরতরাক রকানের সহিত বুদ্ধে অনু ও ক্রছা রাজের নিহতই হর ক্রেটি হালার বাট কর অনু ও ক্রছা সৈনিক। বর্গেরের প্রবল রাজ-কর্ণের বৃহৎ সুহৎ সেবা ছিল, ইহা সুন্দাই।

অহি পৃথিবীতে বাস করেন। সুক্তং রাজা প্রবল রাজার নিজ্
হীর লোককে কোঁতাকর্মে নিরোজিত করেন। ভোত্রণ
তোনাবিপের অসুপ্রত্ রাজাণ লাভ করে। তিনি সকলের
তজনীর, তিনি রাজা। রাজা চোরের লাভি বিবান করেন ও
লক্ষ করেন। প্রকৃত রাজা বৃহে বার। পৃথিবী বৃহ ও জীপ
নরপতির ন্যার ভরে কলিত হর। ইনি উজ্জল সতর্ক রাজার
ন্যার। (রাজার) চরপন নদীর কুল হইতে দর্শন করে। নিজ্
ও বর্মণ রাজার রাজা। তোমরা রাজার ন্যার ক্ষিপ্রভারী হও।
আবরা রাজসাম্প্রী সহকারে হক্ষ করিবাহি, অভ্যাব আবাহিপক্তে পদ্ব লাও।" ইত্যাদি।

ঝারেছে ব্রাক্তগণ দিবিকারে বহির্গত হইতেন। দিবিকারী রাজা ববেদে অতীব প্রশংসাভাত্তন। তরভরাত্ত পুদাস সহস্রত্ব ( অবব) সহস্রত্ব )+ যঞ করিরাছিলেন। ভিনি विविक्त विर्मिष्ठ रहेश पुर्व नमशासन श्रेष्ठनिष्ठ कृत्वम ও বলশালী রাজ্গণকে পরাভূত করিয়া রাজ্যসর্হ ক্ষ করেন। স্থাস ঝরেছের 'হল রাজার মুদ্ধ' নামক প্রসিদ্ধ রুদ্ধে দশ ক্ষম রাজাকে পরাজিত করেন। ব্যব্ধের প্রবল রাজ্পণ 'দর্ব্বোপরিবর্তী রাজা' ও 'অবিরাজ' হইতে খাকাজা করিভেন। বকে খাছে, 'খামি বেন সর্কো-পরিবর্তী রাজা ও অধিরাজ হইতে পারি।' প্রবীণ ক্ষিপণ রাজগণের প্রোহিত ও উপদেই। বা মনীসমূপ হইতেন। রাজো বাজার অভাবে বিচক্ষণ থয়িবল রাজ্য পরিচালনার ভারও এছণ করিতেন। কৰিত আছে যে, পুরুবংশের প্রসিদ্ধ নৃপতি পুরুরুংস वसी ( বোব হয় রুছে ) হইলে শর, সপ্ত বধি 'রাজ্যের অধীখন' হইয়াছিলেন ৷ 'পুরুকুংগে'র রাজী যক্ত করিয়া এস-দশ্ৰাকে পুত্ৰ প্ৰাপ্ত হইলে ত্ৰসদত্য ভংগর রাজা হন। ৰবেদের রাজ্পণ প্রজাবর্গ হইতে 'বলি' বা কর প্রছণ করিতেন। থকে আছে, 'হে রাজন। ইন্স ভোষার প্রজাবিপকে একারড ও করপ্রদানোর্থ করিবাছেন।'-----'বে অখিবর 🍴 ভোনরা बहर्यक श्रेन: खंडेवाच्या भरशांतिक कविवाहित्य । त्ये बहान चत्रि क्षचांत्रनीक रमवादा मिक्क क्रवणः महत्र दांचाक क्रवक कतिबाहित्समः । वार्वा वाक्शत्व वात्का प्रामीव क्य-वप्रकाय ছিল বলিরা বোধ হয়। আর্থা প্রায় ও নগরে জনাপ্রযোগিত সভাস্বিভিও হয়ত ছিল। সভার সভ্যপদ বিশেষ সন্থাৰ-হুদক। সভার ওছবিদী ভাষার বারিত। প্রকাশ বিশেষ প্লাখ্য ছিল। ভাষ্যপ্ৰাবের 'প্ৰাৰণি' বা প্ৰাৰণতি প্ৰাৰবাসিগণের ৰনোৰীত বা নিৰ্ফাচিত ছিল মনে হয়। মগৱের মগরণতি বিশেষ ক্ষতাৰীল ও হাছিছৰীল ব্যক্তি। থকে 'পুলাসক ৰগরণতি<sup>9</sup>র বিশেষ প্রশংসা আছে। সংগ্রায় ব্যাহত

भ भवत्रको जनस्मध्य स्टब्स्स छोत्र ।

† অধিন্ বুগল দেবগণের ভীষক ও আর্থিগণের ব্যাধিষোচনকারী ভীষক দেবতা। অবাহ্যবীর বলিরা গণ্য। তরাবহ সংগ্রার-মুংগ হুইতে পরিরাণের নিনিভ গুবিগণের প্রার্থণা-মন্ত্র আছে। এক গক্-বন্ধে
আছে, 'বোর সংগ্রাবে আমানিগের অপত্যবিগকে বলিবান
নিতে হয়।…'হে অবিব্র ! সংগ্রার-মুংগ হুইতে আমানিগকে
পরিবাণ কর।' কিও স্বাগত সংগ্রাবে বীরের ভার মুক্ত অবভ কর্তব্য। বর্ষেরে রাজ্পণ রণবির্থ হিলেম না। তাঁহারা মুক্তে
প্রমন্দরতঃ পরর পৌর্ব-বীর্থ প্রদেশ করিতেন। থকে আছে, 'প্রকৃত রাজা মুক্তে বার।' বর্ষেদে বীরুত্ব বিশেষ স্থান্য ও বীর পরর প্রভাজকন। বীরপুল্ল বিশেষ কার্য। 'বীরপ্রস্বিদী নাতা' স্বাক্তে প্রির্ব্রশণ। বুরু ক্ষেদে 'ব্লোলাভের ক্ষেত্রস্বরূপ'।

থাৰেৰে বাহুগৰ নানাগুৰে ভূষিত ছিলেন। ধৰেছের রাজগণের দরা, দান, দান্দিণ্য, অভিবিদেশা প্রভৃতি আর্থ-হল। ভরতবাক দিবোদাস অভিবিদেবা হারা 'অভিবিধ' আৰা প্ৰাপ্ত ভইৰাছিলেন। ৰংগ্ৰহে অভিবি 'দেবগৰের ভার পুজনীর'। ব্যবহ রাজগণের অগণিত গো অর ব্যর্জান্তি भारनव डेटब्रट्स शूर्व । वनिष्ठं अवि वाक्सारन 'मछसानविभिक्टे. भरुखनामविभिष्टे ७ मर्वानानिभिष्टे' रहेवाहित्मन । बार्यास्य রাক্ত্রে বিশেষ বিভাসুরার পরিলক্ষিত হয়। রাক্তবর্গ কবি, कामी ७ वरित्रानंद गुई(भावक विराम । दाक्षारमंद मरना वर्षास्क থক-রচক থবিও ছিলেন। রাজ্যবন্দের পরিবারবর্গেও শিক্ষার প্রভাব ও প্রসার হিল। রাজকভা বোবা, অসলরাজপদ্দী শৰতী, ভাৰমব্যৱাদপত্নী লোমশা প্ৰভৃতি ৱালকুলনামীগৰ बररायत विविध्या । जीवादियत त्रिष्ठ वक्तमपूर वरश्य ञ्चानलाल स्रेशारमः। अरधरम दाका शृक्षमीय ७ जनमीय। ৰবেদের হুক্তে 'রা**লভ**তি', দেবতা। 🖰 রা**লভ**তি-হুক্তে রাজার রাজ্যাভিবেক যজের পুলর পক্ষরে আছে,---'হে রাজন্ ! ভোষাকে রাজ্পদে অধিরোপিত করিলাম। ভূমি এই জনপদের बर्सा क्षेत्र २७। चडेन, चित्र १० कि १ देश पान । जारः প্রকাপণ ভোষাকে বাহা করুক। ভোষার রাজ্য বেন নই না হয়। ভূমি এই ছানেই পৰ্বতের ভার অবিচলিত হইরা ধাক। রাজাচ্যত হইও না। ইজের ভার নিক্তন হইরা এই ছানে बाक । अरे शांत्र बांकारक बांबन कहा। चक्क रहानवारा পাইরা ইল্ল এই নবাভিষিক্ত রাজাকে আশ্রন্ত দিয়াছেন। সোহ তাঁহাকে আৰীৰ্কাদ কৰিয়াহেন। ত্ৰহ্মণশতি আৰীৰ্কাদ কৰিয়া-(इस । बाकाम मिन्डन, गुवियो मिन्डन, बारे अबल गर्का मिन्डन, बरे विश्वकार निक्तन । रेनिश बक्राविश्वत मर्या व्यविक्रीक ৱালা হইলেন। হে ৱালা। বক্লণ ৱালা তোমার হাল্যকে অবি-চলিত করন। ইল ও অধি অবিচলিতরূপে বার্থ করন। দেব রহম্পতি অবিচলিত করন। বাহারা বিপক্ষ, বাহারা আমা-

<sup>া</sup> বেদে বাঁহার বাক্য তিনি 'ববি' এবং ববি বাইবন্ধে বক্তন তাহা 'দেবতা'। প্রক্রের প্রতিপাদ্য বে বিবর্গন ভাহাই প্রক্রের 'দেবতা'।

বিগের হিংগাকারী শব্দ, বে গৈচ দইরা বৃদ্ধ ক্ষিতে আনে, বে আরাহিগকে বেষ করে, বে রাজন্ । এতারুণ তাবং ব্যক্তির সন্মান কও । সবিতা বেব তোরার প্রতি অভ্তুল হইরাছেন, নের্মান প্রতি অভ্তুল হইরাছেন, নর্মানী তোরার প্রতি অভ্তুল। এই বেব অক্তর হোমবার সহকারে অক্তর। গোররাকে সংশোবিত করিতেরি। অভ্যাব ইক্স তোরার প্রভাবিগকে

একারত ও করপ্রবাদেশ্ব করিবাছেন। ..... (রাজার উজ্জিল)
আনার শক্র নাই। আনি শক্রদিগকে বন করিবাছি। আনি
রাজ্যের প্রভূ ও বিপক্ষ নিবারণে সমর্থ ক্ষরছি। এইরণে
আনি ভাবং প্রাণীবর্গের উপর এবং এই সকল লোক্যিগের
উপর অধীধর ক্ইরাছি, ইভ্যাদি।

শৌৰ্যাশ্বল ও কল্যাপকর রাজভন্ন কৰেদের আদর্শ রাইভন্ন।

## লেবুগাছ

[ বি লাইম **ট্র: ছ**ন্ বল্সওয়র্দি ] অনুবাদক: **ঞ্জিনেবত্রত মু**খোপাধ্যায়

পুণাই মানের এক সায়াকে একট লেবুগাছের বারে আমি ভারেলিাম। পুণীর্ব, পুশভারমত, মবুবর্ব তার কুপুমন্তবকে ধৌরাছির লল ব্যন্তভাবে বোরাকেরা করছিল। হাওবা এলে পাতার পাতার হরমর শক্ত ভুলছিল, ভালপালার লেগেছিল বোলা, আবার দিকে তেনে আসছিল তার পুণর। আমি তাই বেবতে বেবতে ভাবছিলাম হিশু-নিম্নপান্তের বারণা—সে মতে এই গাছটির বহিরাকৃতির কোন বৃল্য নিজীর কাছে নেই, তার ভাতে সভ্য কেবল এর 'ভরুব', বহুক্তব একার্ত্ত-বানে নাকি ভাকে উপলব্ধি করতে হয়। করেল বঙ্গ আমি নিক্তে ঐ রক্ম স্বাবিছ হ্বার টেটা করলাম তার ভামল শাধার অভ্যালে চেরে, বেবলাম সত্যিই ওর অভ্যবানির আভাস আমি পাই কিনা; কিছ পান্চান্ত্যসূল্ভ মনোভাবের বলে আমার ভাবনা উচ্চে পেল অভ বিকে—আমার সামনে তৃপক্তম ও স্বন্ধশাধার বাব্যে এক বাঁক মীল প্রভাপতির মৃত পর্লাবের অভ্সরণ করতে করতে।

আনার দৃষ্ট আকর্ষণ করল দ্বের বাঠটিতে করেকট লাল রঙের গরু, আর করল দ্বে একটা ফলাত্নির ওপর ভূপীরুত একরাল পাগর, দেগতে ট্রক পাহাড়ের বারে একট মাহ্বের মত। কিছু অরুক্রেনেই আনার মন আবার কিরে এল লেবু-গাছটির দিকে। আপুণারু বেল এগন তার, হাওরার দোলা লেগেছে তার অন্তরে, তার আবেগকলিত উচ্ছলতা দেশে তার বিকে না তাকিরে কেট পারবে না। এক বাক বৌনাহির রশ্যে বে আবেগ লন্দিত হর, এ লেই উচ্ছাল—উচাম গুলুরিত এক ব্রিবেগ, বেন প্রাণ ও প্রেম তাকে পাগল ক'রে ভূলেছে। কিছু বীরে গ্লীরে লাভ হরে এল এই চপলতা; আবার এক স্ক্রিত, সুঠান, মনোহাহিন্তর রগ নিল নে।

আমি ভাবলান, "ওগো, কৰন ভোষাত্ৰ ছবত্ত ভূমি প্ৰকাশ কল্পৰ আমাত্ৰ কাছে? ভোষাত্ৰ এই মিন্ত মাধুৰ্য্য, এই বাৰু-উল্লেখ্য জীবনচাকল্যেত্ৰ মধ্যে কি আহে সেই কলাশাল্লবৰ্ণিত 'ভল্লম্ব' ? কৰন আমি ভোষাত্ৰ লহবুৰ্থানি দেবতে পাব ?" আবার ভাবনা উড়ে চলল। এবারে আর প্রজাপতির মত নর, ঐ রক্তগোলাপকুল্পে সক্ষরণাণ কাল জনরগুলির মত স্থীর চরণজেশে। ক্ষমে ঐ লেবুগাছের মধুরিমা ব্যানের পাধ। থেকে সমস্ত শক্তি ভবে নিরে আমার চেতনাকে অবল ক'রে আনল, মাধা আমার আপনা থেকে ক্রে পড়ল বাসের ওপর। আবাের্নের এই অতীজির কুছেলিলীন অবস্থা, জীবনের এই মধুরতম মুহুর্ভ, ধবন জগৎ কাছে থেকেও আসর বর্ণের জ্যোৎসারতে রঙিন হরে উঠেছে, ভারই বেদনাবিহ্বল অঠনে আমার আছির ক'রে কেল্ল।

সহসা দেবলাম, আমার বুব কাছে, অবচ অসীম শুকের ব্যববানে এক নারী---দীপ্ত অলারবর্ণ ভার কেশভার বুকে 'এস্ফোভেল্' কুলের মভ চারদিকে সংবদ পুশারাভির ওপর ন্টবে পড়েছে। আঙুল দিয়ে সে ভার গলায় একটা বড় কাল মৌষাহি ব্যৱহিল। ঐ ছোট ছোট বৃচসংলগ্ন কুলে প্রায় আরত বাকলেও তার তহনতা বুব সুক্তর বেধান্ত্ন, আর ভার মুধ্বানি কি আক্রয় রক্ষ ষর্ব, পূর্ণ ভিলাকার, ভার কোমলতা ৰাজ্যের জনত্বে স্পাদন আনে। অবর ছুট হাভ্যমর, আৰু ৰভিৰ, স্চাক অৰুণলের শীচে ভাব চোৰ ছট চেৰেছিল আবারই থিকে---উচ্ছল, বনকাল, শিশিরসিঞ্চ লে চোব। ভার চারদিকে গোলাপী ও বধুরভের সব পাপড়ি বরছিল অবিরভ ; তবু তার ষৃষ্টি লে পাপজির মধা দিয়ে আমার বিদ্ধ করেছিল। শিশুকে ভিরম্বার করলে ভার গালে বেষম টোল পড়ে, এর কপোলের এক কোণে তেম্বি হোট একট টোল। একট কানে ভার একটা বছ ব্রুদ রঙের সুলগাহের পার্নে সেই क्लबरे वर बरविन, वर्गाव्यन अक्षे जानानि मर्चव वर्छ। ৰৱা পাপছিওলিতে ভাৱ বিঃখাস লাগছিল—আমি বেদ সে নিঃখান পাঠ বেবতে পাছিলায---রপোলি রং আর অপূর্ব্য এক কোৰণ ছৱে ভৱা।

ভাগবাসার প্রবীও তার চোবে চেরে আনি উঠে তার দিকে বেতে চেঠা করলান। কিড পারলান না; বত বারই পার- হিলাম না, তত বারই সে চোব হুটতে এবন করণতাব সুটে 
উঠিছিল বে তা দেবে কারার আবার বুক তরে এল। কিছ
এই করণ চাহনি সম্বেও তার ঠোঁট হুট তেমনই হাতমর রইল,
কবে কবে কেঁপে উঠতে লাগল 'এস্কোভেল্' স্লে-ছাওয়া
তার লীর্থ দেহ। কাল বৌষাহিটকে ব'রে অবিরত আদর
ক'রে হাত বুলিরে বিচ্ছিল সে—আঙ্গওলি জ্যোংমার্মির
মতই লীর্থ, পাণ্ডর, কোমল।

আমার মনে হ'ল একেই আমি জীবন তরে গুঁজেছি। অবচ, উঠে তার কাছে যাবার সকল চেপ্তাই আমার ব্যব হ'ল।

আমি বধন এমনিভর কামনাবিভার, কোকিলের মত ব্সর রঙের একট পাই, সক্র ভার পৃদ্ধ, উচ্চে এলে ভার আনার্ভ হাভের ওপর বসে ভাকিরে রইল ভার হীও, প্রণোল চ্টি চোবের পানে। বুজারঙের আনার্ভ বাহতে ভার এক শিহরণ বরে গিবে পাইটাকে বেন আদর করল, ঠিক বেমন ক'রে আবর করেহিল সে এীবালর মৌমাহিটিকে ভার জ্যোৎসাব্যক্ত আহু, লিরে। আমি বেশ বুবহিলাম, ভার হাদরের এভ কাছে এসে এ চ্টি প্রামীর বুব পুর্ব হচ্ছিল। দ্বীয়া আগল আমার বনে, শেষে সকল শক্তি দিরে আমি নিজেকে ভার দিকে ঠেলে দিলাম; কিন্তু সেই শৃতভাই আমার ব্যাহত করল, অবসরভাবে আমি আবার বসে পঞ্চলাম।

তথন যে আঙুল দিৱে মৌৰাহিটকে আৰৱ করেছিল, সেই আঙুল ভূলে ধরল সে। অধরে বিক্লিত হ'ল এক মধুর, অপূর্ব হালি, বুক হুলে উঠল তার, চোধ হুট হ'ল আরও গভীর, আরও কাল। সেই বর্ণহীন, অভেড বাবার বিরুদ্ধে এক অহাভাবিক শক্তি নিয়ে আমি ভিলে ভিলে এসিছে পেলামঃ বভই এপোতে লাগলাম, ভাষ চোৰ হৃষ্টতে প্ৰমুলভয় প্ৰাণের আভাল দেখা পেল । ববুর মত, মহের মত উক, মিই এক জ্যোভিতে উরালিত হয়ে উঠল লে চোর্ম । লিউরে উঠল ভাষ অল, একগোহা চূল ভেলে এল আমার বিকে, র্বে বেখা পেল মুখর মাহুবের অভাত এক প্রেম । প্রমুর ভার প্রীবা হেতে পেল, কিছু হুরে ভাষার ভগর অর ক'রে রইল, পোলা পেল বুছ গুলন । ভার বালর ওপর পাইট একটুও ভর মা পেরে কেবলই মাধা দোলাতে লাগল, আর কাল চোর্ম হুটর হিন্ন হৃষ্টি রইল আমার দিকে, বেল লে ব্রেছে, আমিই জনী । আমি হু'হাত বাছিরে দিলাম স্করীর দিকে, ভার অপরে প্রমুগ ভবি নি । ভার কেপভার আমার ঠোটের ওপর বুলিরে পেল । কিলের স্কর্ম আমার মাভোরারা করে ভূল্ল । আরুল-করা এক অহকারে সকল চেতনা পুর্য হ'ল আমার মা লোকের মত । । ।

লেবৃস্তের একট কুঁড়ি বৌষাহিতে বসিয়ে দিরেহিল, ভাই হাওরার উচ্চে এলে লেলেহিল আমার ওঠে, ভারই হ্বাস ভাসহিল আমার নাকে। আমার নামনে শুবু উদার প্রাপ্তর আর কলাভূমি আর কাহেই লেবুগাহট—আর কিছুই কোণাও নেই।

লেবুগাছটির পানে চাইলাম। লে বেন বহু দ্বে, উবাল এক সৌপর্বো ভ্ষিত, প্রামল, ক্লুখ্নিত আহ্বাবনে বছুই পায়। কিছ তবু তো ফানি বে, স্বপ্নে তার হুদ্মটি আমি দেবেছি, স্পান্তিক বি

# যুগান্তরে এল স্বাধীনতা

अञ्योतक्मात नको

হুর্ব্যোগ-ভাষণী রাজি হ'ল বৃধি ভোগ,
হ'ল অবসান,
কৈবিক জীবনযালা দৃথলিত হবে নাকি আর ?
অচল পাষাণ
জীবনের উংসর্বে অনিক্রম্ব প্রাণের সঞ্চার
ব্যর্থ করি দিবে না কি আর ?
শত কোট জীতহাল জীবনের প্রতিট প্রহরে
লাহ্নার ক্রত বহি' অবৃটেরে দিবে না বিভার ।
ভবু মুট অর নানি ক্ত রিজ প্রাণ
বিবাভার অগ্রোবে দিবে না কি আর্থনিভান ?

থেশের হাজারো হেলে, বাটর হাজারো বেরে ভাই,
ভার কি থিবে বা প্রাণ নিরপ্ত রাজ্যক্তি রোবে ?
কুপ্রকংকাল ভার রন্ধীর সব সেরা ধন
নিম্নল ভাক্রোশে,
ভার কি পথের পরে দুটাবে না নির্দ্ধন হেলার ?
শতাকীর বৃক বাট ভাষা পেরে থেন কথা কর
তিনির থিগত শেষে ও কাষের পদক্ষনি শুনি;
ভাষাত ভাগতক, তোষার ভাষার বত বর ।
পুরীর্থ-প্রতীকা রাজ শতাকীর ভ্যা-করা ব্যবা
হ'ল শেব, এল শাভি, র্গাভরে এল বাধীনতা ।

## চীনের সঙ্কট

### অধ্যাপক🖨 সুধাংত বিমল মুখোপাধ্যায়, এম-এ

বীৰ্ণ আট বংসর রঞ্জানের ক্ষের বিটতে বা বিটতেই বহা-চীৰের ভাগ্যাকাশে হুর্ব্যোগের বসীকৃষ্ণ বেদ দনাইরা আসিরাহে। সর্ক্ষালা গুহরুছের কেলিহান অরিশিবা নহা-চীৰের ভাগ্যার সভাকে আবার এাস করিতে উদ্যুত হুইরাছে। চীৰের ভাগ্যাকাশে কবে বে আবার নবারুণরেধার সন্ধান বিলিবে কে ভাবে!

बराठीरवद इरेडे अवाय दाकरेनछिक वन नावादावी वा क्यानिके अवर कुछिनिकेष (Kuomintong)। चायुनिक চীৰের শ্রপ্তা ডাঃ তুন ইরাট সেন কাওনিন্টাঙ প্রতিষ্ঠাতা। বর্তবানে এই দলই চীমের ভাগাবিবাতা। ১৯২০ সালে চীনে সর্বাধ্যক সাহাবাদী দল গঠিত হয়। প্রতিষ্ঠার পর হইতেই অভ্যম্ভ ক্রভগতিতে এই দলের শক্তি এবং প্রতিপত্তি বর্ত্তিত হুইতে কাকে। ১৯২৩ সালে সুন ইয়াট সেন বৰ্ষ কুশিবাৰ সহিত যৈশ্ৰীছাপন কৰেন, তৰ্ম বহাচীনের রাজনীভিক্তে ক্রানিষ্ট বল একট অনুপেক্ষর শক্তিতে পরিণত হইরাছে। তবন পর্যান্ত কর্যুনিষ্ট এবং ক্যুওবিন্টাঙ ছলের মধ্যে কোন ঋক্লভর মভবিরোধ বা বৌলিক পার্বক্য ছিল না। আভান্তরীণ রাইনীটিক্তেরে গণভর হাপন করিতে উভৱেই ভবন সমান আঞ্চৰীল। ১৯২৪ লালে বোৱোভিনের পরামর্শে কুঙ্বিন্টাঙ হল রুশীয় আহর্শে বৃত্তন করিয়া नक्रिक रहा। छर्ग रहेएक नहिंग भर्ताक क्यानिक्षेत्रन अहे ছলের সহিত সহবোগিত। করিয়াহেন। ১৯২৫-২৭ সালের বে বিপ্লব শিকিঙের অভ্যাচারী স্বেচ্ছাভন্তের অবসাম স্টাইরা-हिन, छाराव मश्तर्वेम अवर श्विताननाव क्यानिक्षेत्र अक्षे বিশিষ্ট খংশ এহণ করিবাছিলেন ৷

ভা: তুল ইয়াট সেন এবং ভাষার নেজ্ডাবীন হ্যঙ্মিন্টাঙ বল কর্জুক কর্মিন্ট বলের ছুইট প্রবান নীতি—আভক্ষাভিক রাইনীতিক্ষেরে সামাজ্যবাদ বিরোধিতা এবং আভ্যন্তবীৰ রাইনীতিক্ষের ভ্যামী এবং রণ-নামক সম্মানের ক্ষতার বিলোপ নাধন করিয়া গণভান্তিকভার ভিভিতে চীনের রাইকে, সামাজিক এবং অর্থনৈতিক জীবনের প্রপঠন—গুলীত হওয়ার কলেই ক্রামিন্ট-হ্যাওনিন্টাঙ সহবাসিতা সভব হুইয়াহিল।

কর্নিটাণ যনে করেন বে সান্যবাদ প্রতিষ্ঠার পূর্বের গণতারিক বিপ্লব (Bourgeois democratic revolution) আপরিহার্ব্য । স্বতন্ত্রাং বিংশ শতাকীর প্রথম এবং বিতীর পাবে বহাচীনে আতীর বাবীনতার পুন: প্রতিষ্ঠার কচ বিপ্লবী গণতারিক আন্দোলনে বোগবান করিয়া তাহারা আহর্শ প্রট হল বাই ।

ৰহাটীবের হুর্তাগ্যক্ষরে পুৰ ইরাট সেব-পরিক্ষিত বিপ্লব

করবুক্ত হইবার পূর্বেই ১৯২৫ সালে তাঁহার বেহাবসাম হয়। ছই বংসর পরে ১৯২৭ সালে কর্যনিষ্ট-ক্যুঙ্নিকাঙ বৈত্রীবন্ধন হিল্ল হইবা গেল। চিরাংকাইশেকের নেড়ভে ক্যুঙ্নিকাডের এক অংশ নান্কিঙে একট বভন্ন সরকারের প্রতিষ্ঠা করিল। কর্যনিষ্ট্রপণ এবং কুঙ্নিকাডের অধিকাংশ সম্ভেই বনে করিলেন বে এই প্রচেষ্টা বিপ্লব-বিরোধী এবং প্রতিক্রিরাশহী।

जब किहू शिरमद मरगुरे कृष्धिकीं प्रश्न रा जरम भूर्त्स ৰাৰ্ভিঙ সরকারের বিরোবিভা ক্রিরাছিল, ভাষা ইয়ার সহিত সহযোগিতা করিতে আরম্ভ করিল। করানি**ট-**কাও-बिकीड विद्वाद किन्द दक्षित्राहे (श्रेष । नान्किड नदकांद भर्क-শক্তি প্ৰয়োগ কৰিবা চীন হইতে সাম্যবাদ নিশ্চিক কৰিবা কেলিভে ক্লড্ড ছইলেন। সরকারী আহেশে সাম্যবাদী ভাৰৰাৱাৱ প্ৰচাৱ এবং সাম্যবাদীদলভুক্ত হইৱা চরম দওবোগ্য অপরাধ বলিয়া বোষিত ছইল। সাত্রাজ্যবাদ-বিরোধিতা এবং গণ-বিপ্লবের আহর্ণ প্রকৃত প্রভাবে পরিতাক্ত হইল। অভিনব वन-बाबक मध्यशाब शृक्षवर्की बूर्णव बन-बाबकशरनव शांन अहन क्तिराम । शृह-बृह अवर क्षत्रवर्षभाग कृथक चार्त्भागन प्रथम क्विएक मानकिक अवकाद वहनदिक्य स्टेर्लन । अस्य अस्थ সাহাবাদী এবং কুম্ব ও শ্রমিক সংগঠন ও আন্দোপনের নেতা প্রাণয়তে ছতিত হইলেন। অনেকে আবার প্লারন করিয়া প্রাণ রক্ষা করিলেন। সর্বাঞ্চকার বিরোধিভার বুলোক্ষেদ ক্ষিয়া একট্টমান্ত যাজনৈতিক ঘলের একনায়কম (Totalitarian Dictatorship) ছাপ্ৰের আরোপন করা খ্ইতে मानिम ।

সাৰ্যবাহিগৰের হৃচ বিশ্বাস বে চীনের বৃক্তির ক্ষণ্ড সাত্রাক্তবাহাবিরোধী পরবাষ্ট্রনীতির অভ্সরণ ব্যতীত গত্যত্তর নাই। নদে সদে দেশের অভ্যন্তরে কৃষক বিপ্লবন্ড অপরিহার্য্য।

নান্দিও সরকার ক্রমণাই এই বৈপ্লবিক আদর্শ হইতে দ্বে সরিয়া যাইতে লাসিলেন। ইহার কলে ক্রমনাবারণের আধিক অবহা এবং কীবনবারার বাবের ক্রম্ড অবনতি বটতে লাসিল। এক দিকে পদ্ধী অঞ্চলের অধিবাসিগণ দিনের পর বিন বেউলিরা হইরা বাইতে লাসিল। অপর দিকে আবার স্বল্লংব্যক ভূষানী এবং কুসীবজীবী কাঁপিরা উঠিতে লাসিলেন। ভূ-সম্পত্তি ক্রমণাই ব্রহাধিগের হাতে কেন্ত্রীভূত হইতে লাসিল। কলে বর্ত্তরান চীন সরাজে বিভবান এবং বিভবীন ব্যতীত অপর কোন শ্রেমীর অভিছ অপরিভাত। সরাজ হইতে বব্যবিভ স্প্রভার বিঃপেবে বিজ্ঞ হইরাবে।

১৯২৭ एरेएक ১৯০৭ नाम बरे ১০।১১ वरनव काम मानकिक সরকার জাপানের বিরুদ্ধে বুদ্ধে প্রবৃত্ত না হওয়ার কলেই সহা-চীনের প্রায় এক-পঞ্চমাংশ পরিমিত ছাব জাপাবের কুঞ্চিগত হইয়াহিল। কেবল ভাহাই নহে, চীনের বোট রেলপথের শভকরা ৪০ ভাগ, ভনাবাধী ভ্রির শভকরা ৮৫ ভাগ, করলা-সম্পদের একটা বিরাট অংশ, লৌহবনি সমুহের শভকরা ৮০ चान, छरङ्के चावना चक्रान्व महक्वा ৮१ चान बदर दक्षानी বাণিকোর প্রায় ৪০ ভাগ নান্কিও সরকারের অঞ্সত নীতির करनरे काशास्त्र शास्त्र हिनश निवाधिन। :>०१ नाम চীনের কার্পাদ শিলের শতকরা ৫০ ভাগেরও অবিক ভাগ কঠ হাৰীৰে পৰিচালিত হইত। মাঞ্বিয়া জাপ কবলিত হওৱাই भव होन अक्ष वित्वय खन्न द्वार मात्रव वानामनात अवर भग विक्रत क्लाबर श्रविश स्ट्रेंटि क्षांत्र मन्पूर्वजाद विक्र হয়। ভাগ কর্ত্তর প্রতিষ্ঠিত হওয়ার পূর্বে মাঞ্রিয়া চীনের আছাত প্রদেশে উৎপত্ন প্রধার শতকরা ২৭ ভার ক্রার করিত। কিছ ভাপ কর্ম্ব প্রতিষ্ঠিত হওয়ার পর ১৯৩৯ সালে মাঞ্ক্যুও ( মাঞ্রিয়ার ভাগানী নাম) চীনে মোট উৎপন্ন পণ্যের শতকরা ৪ ভাগ যাত্র করি করি ছিল। বৃহকালে মাঞ্কুত হইতে . চীনের বিরুদ্ধে অভিযান চালাইবার পক্ষে জাপানের বিশেষ স্থবিধা হইয়াছিল।

কিছ ৰাণানের সহিত যুছ করিলেও কিছু লাভ হইত কিনা বলা শক্ত। নান্কিও ক্যুডমিন্টাও সরকারের সর্কাবিনারক চিমাং কাই-শেক একাবিকবার প্রকাশ্তেই বলিয়াতেন যে ছুর্বল চীনকে শক্তিসম্পন্ন করিয়া না তোলা পর্যান্ত ভাষাকে যুছ-বিগ্রহে লিও করা সমীচীন হইবে না। ভূলনীর:—"We are still a weak people, and we dare not provoke a war. But if we are forced to fight, we shall not stop until the last man has fallen, or until we are victorious." অবাং আমরা এবনও ছুর্বল। কাহারও সঙ্গে করিয়া হুছ বাধাইবার সাহস আমাবের নাই। কিছু বুর বলি করিতেই হয় ভাষা হইলে শেব সৈনিক্টর দেহে প্রাণ বাকা বা ক্ষলাভ করা পর্যান্ত আমরা সংগ্রাম চালাইরা বাইব।

কাঙনিন্টাঙ দলের দক্ষিণ পদ্মীদিগের বরাবরই কর্যনিষ্ট-গণের সহিত সহবোগিতা করিতে আপন্তি হিল। তুন্ ইরাট সেনের অসাযাত ব্যক্তিত্ব এবং নেতৃত্বের ওপেই সামরিকতাবে হইলেও ইহাদের পারস্পরিক সন্ত্রীতি এবং সহবোগিতা সভব হইয়াহিল। কিন্তু তাঁহার রুড়ার পর কর্যনিষ্ট-ক্যুঙমিন্টাঙ বিরোধ আত্মঞ্চাল করিল। কাঙমিন্টাঙের দক্ষিণশন্ত্রী দল বলিতে লাগিলেন বে কন্ক্যুসিয়াসের ক্ষত্মি এবং ক্রেপ্রেক্স রহাচীনকে কোনক্রমেই বল্পেভিক বৃত্যন্ত্রের কেন্ত্রে পরিপভ হইতে দেওরা চলিবে না।

मान्कि नवकाव अवय एरेएकरे क श्वाबे विद्यांकी भीकि

অস্থ্যরণ করিরা আসিতেহেন। অভিবানের পর অভিযান পাঠাইরা কর্যনিষ্ট বল এবং ভাষাকের বাবভীর প্রচেষ্টাকে সমূলে ধাংস করিবার চেষ্টা করা হইরাছে। চীনের সৌভাগ্য-ক্ষয়ে আকু পর্যান্ত এই চেষ্টা সকল হয় নাই।

১৯৩৬ সালের ভিসেপর নাসে চিরাং কাই-শেক উত্তর
চীনের সিরানে যান। চ্যাংসোলিনের প্র চ্যাং ক্ষরে-লিরাঙের
আবেশে তাঁথাকে বনী করা হয়। কিছু থিনের মব্যেই তিনি
রুক্তি লাভ করেন। কিঙ মুক্তির পুর্বে কর্যুনিই এবং ক্যুক্তমিন্টাঙ এই ছুই ঘলের মব্যে একটা আপোষরকা হয়।
কর্মনিইগণ তাঁথানের চরম মতবাধ পরিভ্যাগ করেন। তু-খামী
এবং বিভ্যান সম্প্রধারের ভূমি এবং বিভ্ বাজেরাপ্ত করিবার
নীতি পরিভ্যক্ত হইল। নান্তিঙ সরকারও চীনকে বৈদেশিক
আক্রমণ হইতে রক্ষা করিবার দৃচ সহল খোষণা করিলেন।
ইংলার করেক বালের মব্যেই ১৯৩৭ সালের জুলাই মাসে চীমভাপান বুড আরম্ভ হইল।

যুদকালে কর্মনিষ্ট এবং ক্যাথমিণ্টাঙ এই ছুই রাজনৈতিক দলের বিরোধ সামরিকভাবে প্রাণমিত হুইরাছিল। কিন্তু মুচান্তে এই বিরোধ তীত্র হুইতে ভীরতর হুইরা অবশেষে সর্কাশা গৃহসুদ্বের আওব আলিরাছে।

ভাশ ভাক্রমণের কলে বেদিন ভাতির সন্তা এবং স্বাধীনতা বিশ্বপ্ত হইবার আশকা দেখা দিয়াছিল সেদিন এই হুই প্রতিদ্বাধী দল সমন্ত বিরোধ বিশ্বত হইয়া শক্রর বিরুদ্ধে দণ্ডারমান হইরা-ছিল। মাতৃভূমির রক্ষার ভাল উভয়েই সর্ব্যঞ্জার ত্যাপ স্বীকার ও হুঃব বরণ করিবাছে।

কিছ এই বৃহকাদেই বিভিন্ন ছত্তে বে সমন্ত সংবাদ পাওৱা সিরাহিল, ভালা কইতে স্পষ্ট বুঝা সিরাহিল যে অভঃসলিলা কল্পর মত করানিষ্ট-ক্যুত্তমিন্টাভ বিরোধের বারা বহিরাই চলিরাছে। উভরের মধ্যে সংবর্ধের ক্যাও মধ্যে মধ্যে শোনা সিরাছে।

আন্তৰিবোৰে মুৰ্বাল, নগ-বিধান্ত মহাচীন বছদিন হইতেই আন্তৰ্জাতিক প্ৰতিদ্বিতার অভতম প্ৰধান ক্ষেত্ৰ। এই প্ৰতি-বৃদ্বিতাই প্ৰধানত: ক্য়ানিষ্ট-ক্যুথমিণ্টান্ত বিবোধ মিটবার পৰে বাধা প্ৰট্ট ক্রিয়াছে। অভাভ কারণও যে না আছে এমন মছে।

অবিলবে কর্।নিষ্ট-ক্রথমিন্টাঙ বিরোধ মিটিয়া মা গেলে অনুর ভবিয়তেই হয়ত আমাদিগকে মিঃ বিল্লা এবং উহার খগ্র-সৌর পাকিছানের চৈনিক সংস্করণের কথা শুনিতে হইবে। যে যে কারণে প্রগতিশীল, ভ্যাগত্রতী এবং ব্যলেশর মুক্তিকামী একট রাজনৈতিক দলের সহিত প্রতিজ্ঞিয়াপন্থী ও ক্ষতালিলা, অপর একট দলের অনৈক্য, সংবর্ষ এবং বীর স্বার্থের বাতিরে ভৃতীর পক্ষ কর্তৃক এই শেবোক্ত চলকে প্রভ্যক

५)०१० नारनव माथ मारन खेवानीरक खेकानिक (लवरकव 'ब्रुवाक्तव मराशिम' खेवक खेडेवा ।

ও অপ্রত্যক প্রভার দাব—ভারতবর্ব দাবীনভার ক্বর্ণ দারে উপত্তিত হইরাও অবভঙ্ক, রক্ষা করিতে পারিল বা, কাতীর কংশ্রেদের দীর্ঘ বাট বংসরের সাধনা বাজ আংশিক কণ্প্রাদ হইল, পুণাধ্যতির রূপে ভারতবর্ব—দিবা— বছবা কিবা কে কাবে।—বিভক্ত হইরা পেল, চীনেও টিক সেই সমস্ভ কারণ বিধানান।

পূর্ব্বেই বলিয়াছি যে জাপ-রুছ পের হইবার পূর্ব্বেই বোঝা
বিয়াছিল যে করুনিঞ্চ-কুন্তবিদ্টাভ বিজ্ঞানের আজন নিজে
নাই। 'নিউইয়র্ক টাইয়্স্', 'গঙন টাইয়্স্' 'ওয়ার-য়াঙ দি
ওয়াকিং ক্লাস' প্রভৃতি প্রিকার বিভিন্ন সংবাদদাভা এবং
লেখক নান্কিভ (পরে চ্ছকিভ) জাতীয় সরকারের বিক্রছে
একাবিক ওক্রভর অভিযোগ করিয়াছেন। এই সমন্ত অভি-যোগের মধ্যে জাতীয় সরকার কর্তৃক কয়ুনিঞ্চ অবিকৃত অঞ্চলসমূহের অবরোব, উচ্চপদস্থ সরকারী কর্ম্বচারিগণ কর্তৃক চীমে
রাজনৈতিক ঐক্য প্রতিষ্ঠায় বিরোধিতা এবং সম্প্র চীনের জন্ম
এক্ট স্নিলিত সরকার গঠনের পর্বে অভ্যায় স্টি বিশেষ
ভাবে উল্লেখযোগ্য। তুলনীয়ঃ

"The Chinese Communists have good armies which are now fighting guerilla warfare against the Japanese...the Generalissimo regards these armies (i. c. not the Japanese) as the chief threat to his supremacy...For several years he has immobilised 300,000 to 500,000 Central Government troops to blockade the Communists...The Generalissimo is determined to maintain his group of ageing reactionaries in power until the war is over, when it is commonly believed, he will resume his war against the Chinese Communists without distraction." (Brooks Atkinson in the New York Times, October 31, 1944)

এট্কিন্সনের আশখা দত্যে পরিণভ হইয়াছে।

কৃতিনিটাত সরকার কর্ত্ক বিধিবত আইনের বলে কয়ানিই ছলের সমস্ত হওৱা আপ-বৃত্ত কালেও চরম দওবাগ্য অপরাধ ছিল। আকও এই দলের বৈশতা মীরুত হর নাই। বৃত্তের কলে যে আতীর এবং আন্তর্জাতিক রাশনীতি কেত্রে তার-সাম্যের ওলটপালট হইছাছে, সরকার তাহা কিছুতেই খীকার করিতেহেল না। কয়ানিইললের শক্তি এবং ইহার সমর্থকের সংখ্যা প্রাণেকা বহু তাৰ বিভিত্ত হইয়াছে। নিদারুণ প্রতিকৃত অবস্থার মধ্যেও এই গলের প্রভাব এবং প্রতিপত্তি উত্রোভয় বাভিয়াই চলিয়াছে। আপ-বৃত্তকালে বখন সর্ববিব্যে সরকারী বাহিনীর স্থলাই অবঃপত্ন পরিলক্তিত হইডেছিল, সেই ছ্রিনেও কয়ানিইলণ লক্ষ কল লোককে সল্পত্ত করিবা বেশের প্রশাক্তিকে বহুলাংশে স্থলংহত করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন।

বে বে দৰ্ভে কয়াবিটাণ ক্ৰাণ্ডিৰিটাণ কলেয় সন্থিত সম্পূৰ্ণ

ভাবে নিশিরা বাইতে সম্বত হিলেন, ভাহার বৌভিক্তা সম্বত্ত সম্বতঃ হিম্বত নাই। ইহালের উবাপিত প্রবাদ দাবিত্তলি নিয়ে প্রমন্ত হুইল:

- গুঙ্বিকীঙ্বাহিনী কর্ত্ত কর্যনিষ্ট অবিহৃত
  অঞ্চের অবরোধ প্রত্যাহার;
- '(গঙ-গিজ-চ্জি' ( Lend-Lease Agreement )
  অহ্যায়ী প্ৰাপ্ত সমলোপকলণসমূহ ক্যুওনিউটি ্বাহিনীর সহিত
  সমান ভাবে পাইবার অধিকার :
- ৩। একট মাত্র রাজনৈতিক দলের সর্বায়র কর্তৃথ্যের বিলোপনাধন এবং
  - B । अर्राष्ट्रीय अवकाद गर्ठम ।

ভূমি-বন্দোৰত প্ৰধান সংখ্যান ক্যুনিইগলের প্রধান উদ্ভেগ ("Stand upon a moderate agrarian platform with a Marxist colouration")। ভূম্যবিকারের সমতালাবন, অরভান প্রশোপাদন-ব্যবস্থা এবং ভূমি ব্যতীত যাবতীর প্রাকৃতিক সম্পদের উপন্ন সামাজিক কর্তৃত্ব খাপন, সর্কপ্রেণীর সমান ভোটাবিকার প্রবর্তন এবং নিয়মভান্ত্রিক শাসম-প্রভান প্রভিত্তা এই দকের কর্মস্থানীর অন্তর্ভুক্ত। এই দিক হইতে বিচার করিলে চীনের সাম্যবাদী প্রচেষ্টাকে উনবিংশ শতাকীর টাইশিং (Taiping) আন্দোলনের একট পরিবত সংক্ষমণ বিলান মনে করা যাইতে পারে। অত্যত্ত অনুকূল পরিবেশের মধ্যেও ৩০ বংলরের পূর্বে কোন ক্রমেই এই কর্মস্থানিক ক্যা সম্ভব নদে।

ভাঃ খুন ইরাট সেনের 'সান মিন চু-ই' বা 'গ্রি-প্রিভিপ ল্স খাব দি পিশ্ল'কে বাভাবে পরিপত করা হাওমিন্টাঙ দলের লক্ষ্য। মহাটীনের খাতীর সার্বভৌমত্ব প্রভিঙ্ঠা, গণতপ্র খাপন এবং খানসাবারণের খীবনবান্তার দৌকর্য্য সাবন 'গ্রি-প্রিভি-শ্ল্য' এর উচ্চেন্ত। কাজেই ক্য়ুনিষ্ট এবং ক্যুঙ্মিন্টাঙ্ দলের আপাততঃ বহুদিন পর্যন্ত একসকে কাল করিতে না পারিবার কোন কারণ দেখা বার না।

কৃত গোভার গলত এই বে উভর দলই রাজনৈতিক ক্ষরতা এবং কর্তৃত্ব প্ররাসী। বছদিন পূর্ব্যে চীনের অভত্য সাম্যবাদী নেতা পো-কু (Po-ku) আমেরিকান প্রস্তুলার এবং সাংবাদিক এত্পার স্থো-ব (Edgar Snow) নিকট বলিরাছিলেন— সর্বায় প্রবং সম্বাহেই যে আমারিগকে নেতৃত্বের ক্ষর সংগ্রায় চালাইয়া বাইতে হইবে ভাহা আমরা অধীকার করি না। যে রাজনৈতিক দলের হাতে নেতৃত্ব নাই, ভাহার থাকা এবং না থাকা উভরই স্থান।

ক্যুথনিউতি দলের কয়ুনিই-আতদ এই উভরের মধ্যে ঐক্যু প্রতিষ্ঠার আর একট প্রবান অভরার। প্রথমোক্ত দলের বারণা বে শেবোক্ত দল স্ববার পাইলেই খীর অধিকৃত অঞ্চলসমূহে এমন একট সরকারের প্রতিষ্ঠা করিবেন বে ভাতীয় সরকারের পক্তে ভাতাকে কোবক্তবেই খবলে রাখা সক্তব হুইবে না। -ছাওৰিণীঙ দলের ধৃচ বিধাস বে ক্রুমিট দলের বৈধতা একবার সীতৃত হইলে ইহাকে দন্দ করিবার সমন্ত সন্তাবনা লোপ পাইবে।

নীতি এবং বুল আদর্শের বিক হইতেও কর্।নিষ্ট এবং ক্যুত্মিন্টাঙ এই দল ছুইটর বব্যে বিরাট পার্থকা বিদ্যমান।
চিরাং কাই-শেক পরিচালিত ক্যুত্তমিন্টাঙ দল কৃষক সম্প্রদারকে লক্ষকার রাক্ষৈতিক হোঁরাচ হইতে কলা করিরা খীর ক্ষতা রক্ষার যত্ত্বমান। পকাভবে কর্যুনিষ্ট দল সমাক্ষের নেরুত্বভ কৃষক সম্প্রদারকে একট সক্ষির রাক্ষৈতিক শক্তিতে পরিপত ক্ষিয়া তাহার সহায়তার খীর শক্তি বর্জনে বছপরিকর।

বর্ত্তথান অবস্থায় একমাত্র নিম্নলিখিত ভাবেই ক্য়ানিই-কাঙ্থিপিটত সমস্থার খাষী সমাধান হইতে পারে। হয় ক্য়া- বিঠগণকে বিজেপের গৈতবাহিনী বিনা সর্প্তে ক্তেমিকাঙ কর্তুপক্ষের হাতে সঁপিরা দিরা চির্নিদের মত রাকনৈতিক কর্তুপের আকাজন পরিভ্যাগ করিতে হইবে অর্থাং তাহানিগকে রাকনৈতিক আত্মহভ্যা করিতে হইবে । আর না হয় ত ত্যুও-মিন্টাঙ দলকে একনায়কত্বের মোহ পরিভ্যাগ করিবা এবং অন্যাবারণের ভোটাবিকার দীকার করিবা প্রকৃত গণভব্বের ভিত্তি হাপন করিতে হইবে।

বৃহরত কর্যনিষ্ট এবং ক্রাণ্ডরিন্টান্ত নেতৃর্ক কি তাবে নিজেদের সমভার সমাবান করিবেন তাঁহারাই বলিতে পারেন। তাঁহাদের বিচারে দলীর স্বার্থকে ভাতীর স্বার্থ অপেকা প্রাবান্য দেওয়া হয় কিনা দেখিয়াই ইতিহাসে তাঁহাদের স্থান নিউ।বিভ হইবে।

## গাছগাছড়া হইতে বাংলায় রাদায়নিক শিঙ্গের সম্ভাবনা

🗃হরগোপাল বিশ্বাস, এম-এস্সি

আধুনিক সভ্যভা যে প্রকৃতপ্রভাবে রাসার্নিক শিল্পের উপর প্রভিষ্ঠিত ভাষা কাহাকেও মৃতন করিয়া বলিতে হইবে না। নিবিবার কালি কলম কাগক হুইতে আরম্ভ করিয়া কাপড-চোপঢ়, क्छ:-साका, अनावम-खवा, क्षेत्रवनशापि अवूत्रव সামগ্ৰীই যে বাসায়নিক শিলপ্ৰত তাহা অধীকার করিবার উপার নাই। রাসাধনিক শিলের কাঁচামালকে ভিন্ট প্রবান শ্ৰেণতে ভাগ করা যার---ধনিক, উদ্ভিক্ষ ও প্রাণীক। ধনিক কাঁচামালের মধ্যে পড়ে বিবিধ বাতুপ্রভয়, পাধুরিয়া কয়লা, গৰক, সাৰাৱণ লবণ, পেটোল প্ৰভৃতি। এই শ্ৰেণীর রাদারনিক পদার্থ না হইলে অপর ছুই শ্রেমীর রাসারনিক শিল্প উৎপর स्टेटि शादि था। छेवास्त्रव-स्वाग्, बाक्रश्यक्त स्टेटि छेरश्य लोर, छाज, भारत, तोभा, हैन, भीमा, शाहनाम, अनुविनश्य, সোডিরম, পটাসিরম, ম্যাগনেসিরম প্রভৃতি বাতু এবং ঐ সব ৰাত্ৰ অসংখ্য লবণ-পদাৰ্থ--- ৰাম্ব কাচ, সোডা, কৃষ্টক সোভা, সালকিউরিক, নাইট্র ও খাইড়োলোরিক এপিড। रेशास्त्र मार्या नानकिউतिक প্রভৃতি এসিড, লোডা, क्रिक-সোডা প্রভৃতিকে বলে হেডী কেমিক্যাল। মূলভ: এওলি ষ্ঠ স্বৰিকাংশ ৱাসাৱনিক শিৱের ক্লকাঠিবরণ। পঞ্চান্তরে পাধ্বিয়া করলা হইতে সঞ্চাত বেনজিন, টল্রিন, জাইলিন, ভাপবেলিন, জ্যান্ধ াসিন, কাৰ্ক্লিক এসিড, পিৱিভিন, কুইনো-নিন প্ৰভৃতি ক্ৰব্য এবং খেডসাৱ-প্ৰধান ৰাদ্যপত কিংবা ৰোগা ওছ হইভে উৎপন্ন এলকহল বা পুৱাসার এবং ভাছা হইভে शक्ष देवत, क्लार्ताकत्व, विभिन्ने, वर्त्मक्के विभन्न वर्त्मक এনহাইড়াইড ও ইবাইল সিটেট প্রভৃতি প্রার্থ অভ বছবিব बानावनिक निष्मवरे खानवक्षा। धरे काबत्वरे कानव

বেশে প্রাঞ্জিক কাঁচামালের প্রাচুর্ব্য বিদ্যমান বাকিলেও मिहे अन्नार्वित मधावशांत करा अखवनत इत मा यवि मि (म प्राप्त আছুৰ্দিক ৱাসাৰ্নিক শিল্পাল সদে সদে গছিব। না উঠে। कार्यानि बक्न-नवार्य वा dyestuff निष्य व मीर्वदान অবিকার করিরাছিল ভাছার গোড়ার ইতিহাস পর্যালোচনা कतिया (वर्ष) शिवाद्य (य. थे एम्ट्र वानावनिक निर्मात আব্রত সভগ বিভাগই একই সদে বিকশিত হইতে আরভ ক্রিরাছিল। ক্রন্তিম নীল, এলিকারিন প্রকৃতি রঞ্জন পদার্থকে विनि नाजक्यक निव्वत्त प्रविज्ञिष करवन, कार्यामीव मिर বনামৰত বাগায়নিক হাইনৱিধ কারোর "উধের দি এনটভিক-मुद्राच्य द्वेयकाश्चरवम वेसकृष्टि" (Uberdie Entwicklungder Teerfarben industrie—আলকাভৱাকাভ বঞ্ধ-শিলের ক্রমবিকাশ) নামক প্রামাণ্য এছে ভাহার বিভ্ত বিবরণ পাওৱা বার। মানব্দিত যেমন তবু মাধা সইরাই ক্বার না. পরত সমুদর অদপ্রত্যদ লইয়াই ভূমিঠ হর এবং বয়োয়ভিয় সঙ্গে সঙ্গে অঞ্প্ৰত্যক্ষ সমান ভাবে বুদ্ধি পাইডে बारक दानायभिक निरमय (यनाय अवस्था । शावरस्थे প্রবোদনীয় সকল বিভাগেরই গোড়াপতন ধরকায়; ভাড়া यक कृत बाकादारे (शक ना क्ना बाबारमय स्टब्स বাহাদের বারণা বে, বিশিষ্ট কোমও লাভ্যমক রালাভনিক শিল্পকে তাঁহার৷ রাভারাতি আধুনিক আকারে হাড় করাইবেম ভাছাৱা একৰা খেন কখনও বিশ্বত না হন খে, ৱালায়নিক নিম্ম এত অলাজিভাবে অভিত যে অত্যাবক্তৰ সকল বিভাগ একবোগে গড়িয়া মা ভুলিলে তাঁহাছের স্বপ্ন বাস্তবে পরিণত করা সুধুরণরাহত। রাসার্যনিক শিল্পখন্তে আর একট

প্ৰবাদ জাভব্য এই বে, ইহাতে কেবলখাত বসায়দ-পান্তের জাদ থাকিলেই চলে না পরত রাসারনিক ইঞ্জিয়ারিং বিভার পারবর্ণী লোক না ভুটলে নাকল্যের লকে রাসায়নিক শিল্প হাড় ক্রানো অসম্ভব। সহে সহে উল্লপ্ত এসিডও ভারে নই एव मा अमन बांकुशाबावि, निकासन-यञ्ज, चार्डिक्किक, अमारमाजव विविध गांड, हृहि, मन श्रक्तिव श्रह मश्राम मा वाकिरमध স্থাসাহনিক শিল্প দীভাইতে পারে ন।। একট উদাহরণ দিলে ইহা পরিকার বুবা যাইবে। কাঠ হইতে বনীভূত ও উভঙ এসিড যোগে গ্রুকোক প্রস্তুত হয়। আমরা লেবরেইরিতে চেঠা করিয়া বছলোর ছুই-এক পাটত হয়ত তৈরি করিতেও পারি, কিন্ত প্রকারবনের হাজার হাজার ট্য কাঠ হইতে প্ত শত মণ মুকোৰ তৈরি করিবার বল বে ইঞ্জিনিরারিং কৌশল ও বেৰণ বাচুণাত্ৰাদির আবশ্যক তাহা আমাদের আরতে নাই বলিরাই আমরা আৰু বহু বংসর হইতে ৩৫ "কুড ক্রম উড" ক্ৰাটই ক্পচাইতেছি। একটু অবান্তর হুইলেও বাসার্থিক निज्ञभण्य त्यांकाबृक्ति बादवा क्यांक्यांव केरकरमाहे अहे ক্ৰাণ্ডলি বলিতে হইল। এখন গাছগাছভা হইতে কোন কোন বাসাবনিক শিল্প বাংলাদেশে গভিত্বা উঠিতে পারে ভাষার করেকটর উল্লেখ করা হইভেছে।

গাহগাহতা হইতে লাভ্ৰমত হাসাহনিক শিল-সভাবনার প্ৰথমেই চাৰের পরিভাক্ত ভাঁড়া হইতে ক্যাফিন প্ৰভভের কৰা ষনে পড়ে। মাধাবরার ও্যব ক্যান্সিন ক্যাকিয়ান্সিরিন প্রভৃতির নাম অনেকেই ভ্রমিরাছেন। ভারভবর্ষে বার্ষিক ৪০ হইতে ৫০ কোট পাউও চা **কৰে এবং ভাহার স**দ্ধে প্রভি বংসর প্রার ৭৫ লক্ষ্ পাউও চারের ওঁড়া পাওরা যার। यांश्लादिन अवर चालादार (वनीत जात हा हैश्लत हत। চাৰের ওঁড়াতে শতকরা ২ হইতে ৪ ভাগ ক্যাফিন থাকে। गंछ करवक वरगद वरेन वारनास्मान करवक अधिकारिक ক্যাদিন প্ৰস্তুত হইতে আৰম্ভ হইৱাছে, তবে এবনও উচাত্ৰ ৰাবিক উৎপাদন ২০-২৫ হাজার পাউত্তের বেশী নছে। সুভরাং পূৰ্ব্বের ভার এবনও অবিকাংশ চারের ভাঁড়াই নাম্মাত্র মূল্যে বিবেশে চালান বাইভেছে। বাহাতে অভঃপর এক ছটাক চারের ভাঁডাও আর বিষেশে চালান না যার এবং সম্বন্ধটাই এবেশে ক্যাফিন প্রস্তুতকরে নিরোজিত হর তত্ত্বপ ব্যবস্থার প্রবোদন। আবাদের দেশের চারের ভাঁড়াওলি পুরাপুরি কাৰে লাগাইতে পাৱিলে বাৰিক প্ৰায় ১০০ টন বিক্ষয় ক্যাকিৰ পাওৱা বাইতে পাৱে এবং পাটওপ্ৰতি প্ৰৱ টাকা ৰুল্য ব্যৱদেও এই ৰুজায় প্ৰতি বংসর ৩০ লক্ষ্ণ ছাজা আসিতে পারে। বর্তমানে চারের ওঁড়া হইতে ক্যাকিন প্রস্তুতের প্রবাম অভয়ার উপযুক্ত পরিয়াণ ক্রাবক বেবজিনের অভাব। অনেকে হয়ত ভাষেত্ৰ, বেনজিন-সাহাব্যে প্ৰকাভ প্ৰকাভ নিভালক-যুদ্ৰ অবিবাদ উর্বাভন উপারে ভঁড়া হইতে ক্যাভিন পুৰক করা হইবা থাকে। চিনি বেষন ছলে গলিৱা বাব চাবের ঋঁচার

ক্যাকিন তেমনি সবটাই ঐ উপায়ে বেদজিনে ত্রবীভূত হয়,
পরে বেদজিন উভাপের সাহায্যে বাস্পীকৃত করিরা সেই বাস্প
পালবিশেষে লৈডাপ্রভাবে তরল আকারে বরা হয় ও পুনরার
ঐ কাজে ব্যবহার করা হয় এবং অবিভঙ্ক ক্যাকিন পাওরা যার;
অভ:পর রাসায়নিক উপারে এই ক্যাকিনকে বিভঙ্ক করা হয়।
পার্বিরা করলা ও আলকাতরা বেদজিনের উংস। স্বভরাৎ
কেশে করলাসংগ্রিপ্ত রাসায়নিক শিল্প স্প্রভিষ্টিত না হইলে
অপরাপর রাসায়নিক শিল্প গড়িয়া তোলা যে প্রার অসভব,
ইহা তাহারই একট প্রকৃষ্ট উদাহরণ।

বাংলার অভভয় মূল্যবান্ উদ্ভিক্ত পদার্থ কুইনিন। যদিও সম্রতি আমেরিকার রসায়নাগারে কুত্রিম কুইনিন প্রস্তুত হুইরাছে ভবাপি বিশেষজ্ঞগণের অভিয়ত এই যে, উহা কৃত্রিয় নীলের মত ক্লাভে বহুল পরিমাণে প্রভাতের সন্থাবনা নাই। পকাগুরে এটেবিন প্লাক্ষাকিন, ক্লোৱোকিন, মেটাক্লোৱিভিন, প্লাল্-দ্ৰিন প্ৰকৃতি ম্যালেরিয়ার ঔষৰ আবিষ্ণুত হওয়া সল্পেও কুইনিনের মর্ব্যালা দ্রাল পার নাই। সিনুকোনা-রক্ষের বন্ধলে অন্যুদ ৩০ট বিভিন্ন উপকাবের (alkaloid) সভাদ পাওয়া সিরাছে, ভরব্যে জ্যনির হারে জিরাসপর হিসাবে কুইনিন, क्रेमिडिय, त्रिम्काशिय अवश त्रिम्कामिडिय छैद्धवंद्यात्रा । ইছার মধ্যে ম্যালেরিরা ছবে কুইনিনই সর্ব্বাণেকা ক্রিরাশীল बार मर्खारमका कम व्यवकाती । मेल ১৯৩৮ मारण वहरूरम ह লক্ষের উপর লোক ম্যালেরিয়ার মারা গিয়াছে বলিয়া প্রকাশ ---ভত্তির ভগিরাতে বে কভ লোক ভাষার ভ ইরভাই নাই। বাংলার প্রতি বংসর অভত: পক্ষে লাড়ে তিন লক্ষ্ পাটও ক্টমিনের প্রয়োজন কিছ ১৯৩৭-৩৮ সালেও বাংলাতে যাত্র ১ লক ১২ হাজার পাউও কুইনিন পাওরা বিরাহে বলিয়া জানা যার। দাকিলিদের নিকট মংপু কুইনিন কারবানার বার্ষিক মাত্র ৫০ হাজার পাউতের কাছাকাছি কুইনিন তৈরি হইরা बाटक । के चक्र मिनटकामा शास्त्र हारवत है नरवाने वर्ष है ভবি ৰাকা সভেও এ যাবং প্ৰৰ্থমেণ্ট ঐ চাষ বুভিৰ বিশেষ (b) करवन मारे। **जाराकरे जारमन यवहीर**न अनमाम পুঁ জিপভিবের অধীনে সমত্র পুৰিধীর উংপর কুইনিনের প্রায় ১৩ ভাগ প্ৰয়ভ হইয়া বাকে। ভারতে কুইনিনের চাব বেশী হইলে পাছে কুইনিদের দাম কমিরা বার এবং ওলপাক বনিকগণের খাৰ্থানি ৰটে, এই কারণে ব্ৰহীপের ওলকান্ধ বণিক প্রতিষ্ঠান 'किमान्दा' नक्षणारे जातज-भवर्गमञ्जल প্रजापापिक कताव ওলকাভ বার্থ-সংক্রফণের ভন্য ভারতে সিন্ফোনা চাবের প্ৰসাৰ ব্যাহত হয় : ফলে লক্ষ্ লক্ষ্ লোক প্ৰতি বংসৰ বিশা-চিকিংলার যার। বার। আবরা হিরোপিয়ার এটন বোবে খাতভিত হই ৷ কিছ গ্ৰপ্ৰেটের কুটনীতির অদুত আপ্ৰিক বোহা যে প্রতি বংগরই হতভাগ্য বাংলাদেশের উপর পভিত্ৰা প্ৰাকে ভাতাত ধৰত আমতা ক্যক্তনেই বা তাৰি ? बारबाद अवजादादातद प्रदर्शनीहरमद नवष्टांद नरक क्षिण ক্ষনিনের উৎপাদন বাহাতে বেশের চাহিদা বিটাইতে পারে সেইজভ অবিলয়ে সিনকোনা-চাবের উপবাদী অবিকাংশ জ্মিতে গবর্ণবেন্টের ভরক হইতে চাবের প্রসার সাবন করা এবং আবন্ধক বোবে বেসরকারী প্রতিষ্ঠানকে সিনকোনাচাবের প্রযোগ লেওরা ও বেরুপ গাছে ক্ইনিন বেশী হয় সেইরুপ গাছের প্রবর্জন করাও সর্বাপ্রে আবন্ধক। বাংলার বর্জয়ানে বে সিনকোনার চায় হয় তাহার বাকলে ৪ হইতে ৭ অংশ নার ক্রিয়ালীল উপাদান বাকে, পকাভরে ববহীপের সিনকোনা রুক্ষে উহার পরিমাণ ১২ হইতে ১৫। স্নতরাং কৃষিবিভাগ ও সংশ্লিপ্ত প্রতিষ্ঠানকে উপরুক্ত গবেষণা করিয়া অসৌবে সিনকোনা রুক্ষের ক্রিনিনের পরিমাণ বুভির জর্মরি নির্কেশ দেওরা ও এই শিল্পের সন্তানারণকরে অভাভ ব্যবহা অবল্পমনে আলুনিরোগ করা আতীর প্রপ্রেবিক্টের সর্ব্বেধান কলা হুডরা কর্মরা।

কুঁচিলা বা নাক্সভবিকা বীক্ষের নাম অনেকেই ভনিরাছেন -এই বীজের মধ্যে প্রকলিম ও ক্রসিন নামে ভীত্র বিষ বাকে। ঠ্যবরণে ও ইশুর মারিবার জল ট্রকনিন সাধারণতঃ ব্যবহত क्रेश बादक । ভারতবর্ষ ও সিংক্লের ইকা একচেটিয়া সম্পদ। এক্ষাত্ৰ এট ব্ৰিটেনেই বাহিক আভাই হাজার ট্ৰ কুঁচিলা চালান হইয়া থাকে। যদিও উভিয়াতেই কুঁচিলা বেশী ভাষ তথাপি মেদিনীপুর কেলার কোনও কোনও অঞ্লে ইহা পাওৱা यात बनर बक्रे यप कविरम के सकल खावक विन कुँठिना ট্রংপাদন করা সম্ভবপর। কুঁচিলা রপ্তামী মা করিরা যদি ভাষা চইতে টিকনিন প্ৰস্তুত কৱিয়া বিদেশে চালান দেওয়া যায় তবে বচ লক্ষ টাকা আসিতে পাৱে এবং দেশের বচ লোক এতং वाशरहरम चन्नभश्यान कतिएछ शारतः। वर्षमारन वार्षिक बाळ ক্ষেক ছালার পাটত ট্রিকনিন প্রধানত: বাংলার রালায়নিক প্রতিষ্ঠানেই প্রস্তুত হইতে আরম্ভ হইরাছে। ক্যাকিন প্রস্তুতের वर्ष अक्टा अप्रव (वर्षाच्या अव्याज्य । प्रकार द्विकनिय শিলের প্রদারও আপাততঃ সীমাবর।

রংপ্র, কুচবিহার প্রভৃতি অঞ্চল প্রচ্র তারাক করে।
তারাক পাতা ভূলিবার সমর ও উহা বিদেশে চালাম দিবার
সমর উহার অনেক অংশ বাদ বার। ঐ পরিভ্যক্ত অংশ হইতে
বিকোটন প্রভাতর ব্যবহা হইলে দেশে আর একট লাভ্যনক
রাসারবিক শিল্প গছিলা উঠিতে পারে। আরেরিকার তামাকের
পরিত্যক্ত অংশ হইতে প্রচ্র পরিয়াণে নিকোটন প্রস্তুত ও শতক্ষেত্রের কীট বিনাশে ব্যবহৃত হর। নিকোটন একট তীর
বিব; কিছ উহা হইতে প্রস্তুত নিকোটনিক এসিভ ও বিকোটীবিক এসিভ হইতে প্রস্তুত কোরামিন স্থপরিচিত ওবর।
নিকোটনক এসিভ ভিটামিন বি-শ্রেমর অন্তর্গত—পেলাঝানাশক। ইহা আমাদের চাউলের বব্যে এবং চিনাবাদার
প্রভৃতি অনেক বাভের মধ্যেই বাকে। নিকোটনক এসিভ ভবেত
নিকোটনক এসিভ জবে ভনিরা কেহু বেন মধ্যে না করেব

বে তাৰাক, নিগাৰেট থাইলেই ঐ ভিটাৰিনের কাল হইবে।
কলতঃ, রাসারবিকের বাহুকাটি লার্শে তীর বিব নিকোটন
উপকারী প্রবনে স্থপান্তরিত হইরা থাকে। বাংলাদেশে
করেক হানে নিকোটনিক এসিডও ও কোরানিন কিছু কিছু
তৈরি হইতেতে। এখন দেশের অকেকো ভাষাকের ভঁডাওলি
সংগ্রহ করিরা স্থপতে নিকোটন প্রস্তাতের ব্যবহা হইলে কেন্দ্রীর
নিকোটনিক এসিড ও কোরানিন বিদেশী প্রবনের সঙ্গে
প্রতিযোগিতার ইাড়াইতে পারিবে।

বাৰ্চা প্ৰছতি জেলার ও সরিহিত অঞ্চল প্রচুর হরিতকী পাওলা যার। এবাবং জলের দরে ইহা বিলেশে রপ্তানী হইরাই আসিতেছে। দিবিবার কালির উপাদান রূপে, পোড়া বা প্রভৃতি বোগে এবং চামড়া পাকা করিবার কাজে ববেট ট্যানিক এসিড ব্যবহৃত হয়। হরিতকী হইতে ট্যানিক এসিড তৈরি করিবা দেশের চাহিদা মিটাইরা উচ্ছ ট্যানিক এসিড বিদেশে চালান দিতে পারিলে জাতীর অর্থাগ্রের স্বরাহা হইতে পারে।

यना अन्दर छेखन-चारलाव चाटनत हान एक--- के जन चकरल ইকুর চাব প্রসারেরও সম্ভাবনা আছে। আধের রস হইতে চিনি প্রস্তুত ক্রিবার সমর যথেই পরিয়াণে ঝোলা ৬৬ পাওরা যাহ। বোলা ওচ এলক্ষণ বা প্রাসার এছতের একট পুল্ড উংস। এলকংগ রাসায়নিক শিলের ভীবন-স্কুপ বলিলেও অত্যক্তি হয় না। কুয়চি, বাসক, চিন্নতা, খলক, কালমেৰ, অৰ্থ-পৰা, পুৰৰ্ণা প্ৰভৃতি দেশীয় ভেষক নিকাশন করা ও ভাষাৰের ক্রিরাশীল উপাদান পচন হইতে রক্ষা করা এলকহলের সাহায়েই হইরা পাকে। আক্কাল প্রাস্টকলের ভিষিষপত্রে ৰাজার ছাইবা কেলিভেছে। করেক প্রকার প্রাস্টকসেরও প্ৰবান উপাদান এলক্ছল। ভত্তির ক্রমে রঞ্জন পদার্থ বিন্দোরক, সালফোন এযাইড, ভালভারসান, এটেরিন প্ৰভৃতি বাৰতীয় ভাবুৰিক ঔষৰ বিবিৰ প্ৰন্তব্য প্ৰভৃতিতে অপর্যাও এলকহল লাগিবে। পঞ্চাত্তরে ভাটতে এলকহল প্রভুক্তকালে কিউছেল অয়েল নামক বে অংশ পাওৱা বার ভাহার মধ্যে থাকে প্রধানতঃ এমিল এলকংল। ইহা হইতে প্রৱত এঘাইল এলিটেট পাকা কলার আরক বলিরা লাবারবের বিকট পরিচিত। বার্ণিশ শিলের পক্ষে ইয়া चनीविश्वा । বভরাং বেশ বুকা যাইভেছে, রাসারনিক শিলের সম্প্রসারণ করিতে হইলে প্রভূত পরিবাণে এলকহল প্রভূতের ব্যবস্থা সর্বাধে করণীর।

গৰস্ক উভিদের নথ্য ভূলগী এবং গাঁগাল পাতার সহিত আহরা আশৈশন পরিচিত। অবক্স গাঁগালের স্থান নিফাশনে বা উহা নাবার তেলের সদে ব্যবহার করিতে কেই রাজী হইবেন বলিরা মনে হর না। পশ্চিম বাংলার স্থানবিশেষে ইউকালিপটাস্ রুক্ষের চাবের এবং ভাষার স্থাবান্ তৈল নিফাশনের লভাবনা রহিরাছে। অলপাইভড়ি জেলার

লেবুবালের (Lemon grass) চাষ হইতে পারে। ভার্দ্রানির জগদ্বিখ্যাত গ্ৰন্থয়া প্ৰতিষ্ঠান শিষেল কোম্পানীর ১৯১০-সালের বার্ষিক বিবরণতে প্রকাশ কলপাইছভি কেলায় পরীকা-ৰূপকভাবে উৎপন্ন লেবুবাসের ভৈলে উহার প্রবাদ উপাদাদ নিট্রালের পরিষ্থি কোচিম ও ত্রিবাছর রাজ্যে উৎপন্ন লেবু-বাসের নিট্রালের মতই দেবা নিরাছে। ঐ তেলে শতকরা ৭০।৮০ ভাগ নিটাল থাকে। নিটাল সাধান ও অভাভ নিল্লে সুপৰিকারক উপাদান হিসাবে ব্যবহাত হয়। এতদ্ভিন্ন সিটাল ধ্ইতে রাসার্নিক উপারে আরোমন নাবে দুল্যবান সুগরি क्षरा व्यक्षण रहेवा बारक । जाबारमञ रार्ग मन्त्रणि इदे-अक হানে লেবুৰাস হইতে সিট্রাল পুথক করা ও ভাচা হইভে আলোনন আল পরিমাণে তৈরি করা আরম্ভ হইয়াছে। দেশের এই সব কাঁচাখাণ বিদেশীরা ত্লভে কিনিয়া বুল্যবান স্থাৰি জ্বো পরিণত করিয়া ভাষার অবিকাংশই আবার এ-रिंग्स विकास करता। स्थापिक छेपश्च वावशा होता अहे क्षेत्रात বিলোপনাধন করা এবং সঙ্গে লঙ্গে অলপাইওভি প্রভৃতি **ভেলার লেব্বাস, সিটোনেলা ও পারারোজা প্রভৃতি থাসের** 

চাবের প্রবর্ধন করিয়া একট পাতজনক রাসার্থিক শিলের কাঁচামালের সংস্থান করা যাইতে পারে।

পরিশেবে হুত্রির রেশম-শিলের ভাবী সভাবদার উরেব করা বাইভেছে। বধবিভাগের কাঠ হইতে গ্রুকোকের মত হুত্রির রেশমও প্রস্তুত্ত হুকে পারে। প্রতি বংসর বহু লক্ষ্ণ টাকার হুত্রির রেশম এবেশে আর্লানী হইরা বাকে। ভবে এই শিলের প্রতিঠাকরেও প্রচুর ক্ষাক্ষ লোভা, এসিটোর, এসেটক এগিড ও এসেটক এনহাইড্রাইড প্রভৃতি পরার্বের প্রবোধন। সাবাভ পরিমাণ ক্ষাক্ষ সোভা বাতীত অপর রাসায়নিক ক্রবাণ্ডলি এবেশে প্রস্তুত হুর না বলিলেই চলে।

প্রাঞ্চতিক সম্পদ যথেই থাকা সত্ত্বে গোড়াকার রাসার্থকিক
শিল্পতির অভাবে আমাধিগকে কিন্তুপ পরমুখাপেক্ষী হইরা
বাকিতে হইভেছে ভাহার পরিচর পাইলার। দেশের
বাসার্থিক শিল্পের সহিত বৈদেশিক আক্রমণ প্রতিশ্রোব করা
ও জাতীর বনাগম তথা জনগণের জীবনযাত্রার উন্নতিবিধান
গতীরভাবে জভিত। এদিকে নেত্বর্গের এবং দেশের উন্নতিকামী ব্যক্তি মাত্রেই মনোযোগ আরুই হওয়া একাভ কর্তব্য।

## বেদনার বিনিময়ে

#### व्यार्गाशानमान (प

হে আবার দেশ ! বৃক্তির লাগি বেদনা সরেছ বড,
কে জানিত মনে কণ্টক বনে কৃত্য কৃটেছে ভত !
একদা বাসকাভ নিশীবে জাতি থুবে অচেতন,
তক্ষণ বালক কি ছবি হেরিয়া কাঁসি দিল চুখন !
রভ্য আবেশ ললাটে আঁকিয়া বেশ হেডে গেল হেলে,
বর্দ্ধা জাপানে চীন ইন্দোচীনে চলে বুতুকা ঠেলে ।
য়াজসম্পদ, গৌরবপদ কেলে ছোটে কাবাগারে,
মুভ্য বুছ, মবীন অশোক দেখা গেল বাবে বারে ।

ইব্যার আগে কেছ অপভাবে, কেছ বিশ্বরে প্রে, কেছ প্রধার বর হেছে বার, কেছ শুবু ছল বুঁ কে; বনের পশুর নিকারে বেনন একদল শিল্প বরে, বভাব-প্রবীণ, আন্ত পথের বৃচ্চা নিকা করে। পথে কৈলোর বৌবন গেল, মহাপ্রাণ কত বার, মাবে মাবে মানে গভীর নিরাশা, ফ্লান্ডি অলে ছার। 'কেরো কেরো আলও।' 'কে রে কাপুরুষ ? শীবন— হিরেছি দান।'

অভিনাধাৰত ৰূপ্ত সিংহ পুন: হ'ল **আও**য়ান।

হেনকালে ছবি ভাগিরা উঠিল কবি থবিদের চোখে,
'আসিছে আসিছে, হও প্রস্তুত'; ভবে হাসে বৃচ্ লোকে;
ওরা ত দমে না, 'রবি' বুচাইল ভাবের দীনতা যত,
'নোহন' দে 'চাদ' অহিংসা-পথে লাবিল 'সত্যৱত';
দেশের 'চিন্ত', ভারতের 'মতি' ভবে নব ইতিহাসে,
লক্ষ যোৱান অসি দের শান্ 'স্ভাবের' আবাসে;
রত্যাকরেতে 'কওহর' ভাগে, রাভিল কোটর প্রাণ,
উধীরিল নভে আবাসবাদী, 'হ্বরাতি অবসান।'

'সত্য' ? 'সভ্য, বিশ্বাস কর ; প্রাণ্য এ বর লছ, আপনার হাতে শেষ কর বীর অভিন হ্রাহ' ; হেনকালে ভাকে রক্তের-বান, অরি আবাস হার, হুত্রা মনের হানব আবারে ভরাভূবি ওরা চার। বহুরাণ দিলে, অনর বোরান ! ভবু ত জেগেছে বীর, 'অর হিল, অর বাবীনভারত !' বল উন্নত শির। নিশার তিনির খুচাইতে বারে উবার অভ্যুদর, হাবীন ভারত ! অগীয় বিষ্কে লহু নিক্ক পরিচর।

### বিশাখা

### শ্রীবিধুশেশর ভট্টাচার্য

কোশল বাজ্যের রাজা প্রসেনজিতের প্রধান অমাত্যের নাম ছিল মুগার। তিনি নিজের অন্তরূপ বংশে বিবাহ করেন। কালক্রমে তাঁহার সাতটি পুত্র উৎপন্ন হয়। সর্বকনিষ্ঠের নাম ছিল বিশাখ। কিছুকাল পরে মুগারের স্থার মৃত্যু হয়। মুগার প্রথম ছয়টি পুত্রের বিবাহ দিয়া-দিয়াছিলেন। পুত্রেরা নিজ-নিজ পত্নীর সহিত বেশভ্যা লইয়াই থাকিতেন, গৃহকাগের কোন চিন্তাই করিছেন না। অমাত্য ইহা দেখিয়া চিন্তিত হইয়া উঠিলেন। এক দিন তিনি বখন এই বিষয়ে অত্যন্ত চিন্তিত হইয়া বসিয়া আছেন তখন তাঁহার এক প্রিয় বান্ধাণ দেখানে উপন্থিত হইলান এবং তাঁহারে করপ চিন্তার্গত দেখিয়া ভাহার কারণ পিক্তাগা করিলেন, 'গৃহপতি, আপনি এরপ চিন্তিত হইয়া আছেন কেন গু'

'আনার পুত্রেরা নিজ-নিজ শ্বীর সহিত বেশভ্যাই লইয়া রহিয়াছে, গৃহকার্য কিছুই দেখে না! গৃহ এখন নট ছইতে যাইতেছে।'

'বিশাখের বিবাহ দিতেছেন না কেন ?'

'মে যে ভাহাদের অপেকা আরো নিক্কট হইবে নাকে বলিবে ''

'ভাহাদের অপেক্ষা যে উৎকৃষ্ট হইবে না ইহাও তো কেহ জানে না। ভা, আপনার যদি মত হয় তো একটি ক্যাকে অয়েষণ করিতে পারি।'

'ভাই করুন।'

ব্রাহ্মণ কথা অন্বেষণ করিতে করিতে চম্পায় গিয়া উপস্থিত হইলেন।

1

চম্পার বদমিত্র নামে এক গৃহস্থ বাস করিতেন।
ভাঁহার কন্তার নাম বিশাখা। তাহার যেমন রূপ, ডেমন
শুণ, ডেমন বৃদ্ধি, ডেমন শীল-খভাব ও চাল-চরিত্র।
বিশাখা এক দিন নিজের মনের মত করেকটি কন্তার সহিত এক উভানে চলিয়াছে। ঐ রাহ্মণও ঘুরিতে ঘুরিতে সেই সময়ে ঐ স্থানে উপন্থিত হন। তিনি ঐ কন্তাটিকে লক্ষ্য করিয়া ভাহাকে পরীক্ষা করিয়া দেখিবার ইচ্ছা করিলেন। ভাই তিনি সাবধানে ঐ কন্তা কয়টির পশ্চাতে পশ্চাতে গমন করিতে লাগিলেন। কন্তারা স্বভাবতই চঞ্চল প্রকৃতির হইয়া থাকে। দেখা গেল ভাহাদের মধ্যে কেউ দৌড়াই-ভেছে, কেউ লাফাইভেছে, কেউ বা পড়িতেছে, কেউ বা হাসিতেছে, কেউ বা গা-মুড়ি দিতেছে, কেউ বা গান করিতেছে; এইরূপ অনেকে অনেকরূপ থেলা করিতেছে। কিছ বিশাধা সেরূপ কিছু না করিয়া ধীর ও বিনীতভাবে ভাহাদের সঙ্গে চলিয়াছে।

·স্বার সব মেয়ে ঐ উভানের পুছরিণীর ভীরে নিজ-নিজ কাপড় খুলিয়া নগ্রহয়া স্থান ও থেলা করিতে লাগিল। কিন্তু বিশাথা ওরপ নগ্রহল না।

দেখা গেল, স্থার সমস্ত কলা প্রথমে নিক্ষে ভোজন করিয়া পরে পরিজনবর্গকে পরিবেষণ করিতে লাগিল, কিন্তু বিশাখা পূর্বে পরিজনবর্গকে ভোজন করাইয়া পরে নিক্ষে ভোজন করিল।

এইরপে উন্থানস্থ অস্কৃত্র করিয়া ক্যারা আবার একসংশ ফিরিল। পথে কিছু জল ছিল উহা পার হইতে হইবে। মেষেদের পায়ে জুভা ছিল, ভাহারা ভাহা ছাড়িয়া খালি পায়ে ঐ জল পার হইল, কিছ বিশাব। জুতা পায়ে দিয়াই ঐ জলেরও মধ্যে চলিল।

মেয়েদের ছাতা ছিন, তাহারা তাহা বন্ধ করিয়া আমবাগানের ভিতর দিয়া চলিয়াছে; কিন্তু বিশাধা ছায়াতেও তাহা মাধায় দিয়াই চলিয়াছে।

এমন সময়ে বাতাস উঠিল ও বৃষ্টি পড়িতে লাগিল।
আব সমস্থ মেয়েরা এক দেবমন্দিরের মধ্যে চুকিয়া পড়িল।
কিন্তু বিশাধা বাহিবেই অপেকা করিতে লাগিল।

.

বিশাধার এই সমন্ত আচরণ দেখিয়া ব্রাহ্মণের মনে বড় কৌতৃহল উৎপন্ন হইল। তিনি বিশাধাকে বিক্ষাশ করিলেন, 'মা, তুমি কাহার কন্তা ?'

'আমার পিতার নাম বলমিত্র।'

'বংসে, তোমাকে প্রশ্ন কবিব ।' রাগ ভো করিবে না ।' বিশাখা একটু হাসিয়া উত্তর কবিল, 'পিভা, প্রশ্ন কক্ষন। দোষ কি ।'

'বংসে, সব ক্যাই তো দৌড়াইতেছে, লাফাইতেছে, পড়িতেছে, হাসিতেছে, গা-মুড়ি দিতেছে, আবো কড কি কবিতেছে, তুমিই কেবল এদের সঙ্গে বিনীত ও ধীর-ভাবে চলিয়াছ।'

'সব কন্তাই তো মাডা-পিডার বিক্রের বস্তু। লাফাইডে বা পড়িডে সিরা যদি আমার হাত বা পা ভাঙিরা বার, ভবে আমাকে কে চাইবে ? বত দিন বাঁচিব বাবা ও মা আমাকে তো পোষণ করিবেন না।' 'বংসে, ভাল। ইহা হইল। আন্ত একটা প্রশ্ন করি। আর সব মেরেরা নিজ নিজ কাপড় খুলিরা ভীরে রাধিরা। জলে নামিরা পড়িল, কিন্ত ভূমি ভো সেরপ করিলে না, কেন ?'

'স্ত্রীলোকেরা শভাবতই লক্ষাসম্পন্ন হর। বুদি কেহ আমাকে ঐ অবস্থান্ন দেখিত ভবে সেটা ভাল হইত না।'

'বৎসে, কে ভোমাকে সেধানে দেখিতে আসিভেছে ?' 'পিতা, এই ভো আপনিই আমাকে দেখিতেন।'

'বংসে, ভাল; ইহাও হুইল। অন্ত কথা জিঞাসা করি।'

'এই সমন্ত মেয়ের। পূর্বে নিজে ভোজন করিয়া পরিজনবর্গকে পরে ভোজন করায়। কিন্তু তুমি পূর্বে পরিজনবর্গকে ভোজন করাইয়া পরে নিজে ভোজন করিলে। কেন ?'

'পিতা, আমরা পুণাের ফল তােগ উপভােগ করিতেছি, সব সময়েই আমাদের পর্ব। কিন্ত ইহারা কুকর্মের ফল উপভােগ করিয়া কচিৎ কধনাে উৎকৃত্ত খাছ পাইয়া থাকে।'

'ভাল, পুজি; ইহাও গেল। আর একটি প্রশ্ন করি। পথ ব্যন ওছ তথনই সকলে জুতা পারে দেয়। কিন্তু তুমি জ্বলের মধ্যে পারে জুতা দিলে। কেন দু'

'পিডা, লোক মৃথ'। জলেই পায়ে জুতা দেওয়া উচিত। কারণ ডাঙায় কাঁটা, কাঁকর, বিহুকের টুকরা বা ঐরণ আরও কিছু দেখিতে পাওয়া বায়, কিছ জলের মধ্যে তাহা দেখা বায় না। অভএব জলেই পায়ে জুডা দেওয়া উচিত।'

'ভাল পুত্রি, ইহাও হইল। অন্ত প্রশ্ন করি। এই মেরেরা রৌজে ছাভা ধরিয়া চলে, কিন্তু তুমি ভো আমের বালানের মধ্যে গাছের ছায়ায় ইহা করিলে ?'

'পিভা, লোকেরা মূর্থ। বাগানেরই মধ্যে ছত্র ধারণ করা উচিত। কেননা বাগান সব সময়েই পাবী ও বানরে ভরা থাকে, ভাহারা মল-মূত্র ত্যাগ করে, হাড়ের টুকরা ফেলে, অর্থ ভুক্ত ফলসমূহ ফেলে, ভাহারা চঞ্চল অভাব বলিয়া এক শাবা হইতে অন্ত শাবায় বায়, কাঠের টুকরা ফেলে। কিন্তু ফাঁকা ভায়গায় ভাহা হয় না। অথবা কথনো হইলেও ভাহা হালকা হয়। ভাই বাগানেরই মধ্যে ছত্র ধারণ করা উচিত।'

'ভাল, পুত্রি। ইহাও হইল। অক্ত প্রশ্ন করি।

'বাতাস বা বৃষ্টি হইলে এই সব মেন্বেরা দেবমন্দিরে প্রবেশ করিল, কিন্তু তুমি বাহিরেই থাকিলে। কেন ?'

'পিডা, বাহিরেই থাকা উচিড। দেবমন্দিরে বাওয়া উচিড নয়।'

'বংসে, বৃক্তি কী ?'

'এই সমন্ত দেবমন্দিরে সব সময়ে বে থ্র্ড, লম্পট প্রভৃতি থাকে না ভাহা নহে। আমি উহাতে প্রবেশ করিলে বলি কেহ সেই অবসরে কোন অল বা প্রভাক স্পর্শ করে তবে ভাহাতে আমার শিভা-মাভার কি কলম হইবে না ? ভাই বাহিরে থাকিয়া বলি প্রাণ বায় ভাহাও ভাল, কিন্তু শৃক্ত দেবালয়ে প্রবেশ করা ভাল নয়।'

8

ভাষার পর, ব্রাহ্মণ বিশাধার কথাবার্তা ও ব্যবহারে অত্যন্ত আনন্দিত হইয়া বলমিত্রের গৃহে 'ক্ষান্ত কথি' বলিয়া উপস্থিত হইলেন। বাড়ীতে বাহারা ছিলেন তাঁহারা বলিলেন.

'ব্রাহ্মণ, এ তো ভিকার সময় নয়, আপনি কী প্রার্থনা ক্রেন ?'

'কক্সাভিকা চাই।'

'কাহার জ্ঞা ?'

'প্রাবন্তীর প্রধান অমাত্য হইতেছেন মুগার। তাঁহার পুরের নাম বিশাখ, তাঁহার জন্ত।'

ভাছারা বদিলেন, 'ও বংশ ভো আমাদের অফ্রুপ। তবে কী p'

'বভাস্ত দূর।'

'দুরেই ভো কক্সা দিতে হয়।'

'(कन ?'

'ধদি স্থাপ থাকে ভো শুনিয়া বেশ আনন্দ হয়। কিন্তু বদি চুংবে থাকে ভো দান, মান, সংকার করিতে হুঃথ হয়, অর্থক্ষয় হয়।'

ক্সাপক বলিলেন 'ষদি ইংাই হয় ভবে ক্যা দান ক্রাই হউক।'

ব্রাহ্মণ 'হন্তি' বলিয়া প্রাবন্তীতে অমুক্রমে ফিরিয়া আসিলেন, এবং পথের প্রম অপনয়ন করিয়া অমাত্য মুগারের নিকট উপস্থিত হইলেন।

তিনি কল্পার রূপ, গুণ ও বিচক্ষণতার কথা বর্ণনা করিয়া বলিলেন, 'আমি নানা কটে নানা দিগ্দেশ অমণ করিয়া এই কল্পার সম্থান পাইয়াছি। এখন বিবাহ দিতে পারেন।' অমাত্য মুগার শুভদিন নিধারণ করিয়া চম্পায় আগমন করিয়া খুব ধুমধামে বিশাধের বিবাহ দিলেন।

ŧ

বিশাখার পতিগৃহে বাইবার সমরে তাহার মা তাহাকে এইরূপ উপদেশ দিতে লাগিলেন, 'মা, তুমি প্রতিদিন স্থা ও চক্রকে নমন্বার করিবে। অগ্নির পরিচর্বা করিবে। দর্শন নির্মাল করিবা রাখিবে। ওক্ল বসন পরিধান করিবে। এইন করিবে, দান করিবে না। কথা রক্ষা করিবে। উঠিয়া কাহাকেও আসন দিবে না। মিষ্ট ভোজন করিবে। সি'ডি বাধিবে।

মুগার ইছা শুনিভে পাইয়া ভাবিলেন ইছাকে মিধ্যা মত গ্রহণ করান হইডেছে, আমি ইহাকে বধার্থ মত গ্রহণ করাইব। এই ভাবিয়া মুগার পুত্রবধ্কে লইয়া বাইবার জন্ম প্রস্তুত হইলেন।

বিশাধার মাধ্যের হৃদয় স্বেহে ব্যাকুল। তাঁহার নয়ন জলে ভবিষা উঠিল। তিনি কলাকে কঠে আলিজন করিয়া বোদন করিতে করিতে বলিলেন 'মা আমার, এই শেষ দেখা।'

ক্সা সান্তনা দিয়া বলিলেন, 'মা, জিজাসা করি ভোমার জন্ম কি এখানেই হইয়াছিল, না জাতিগুছে ( নায়রে ) ?

'মা, জ্ঞাতিগৃহে।'

'ভাহাই ভোমার বাড়ী, না ইহাই খু'

'हेहाई।'

আমারও কয় এখানে, কিছ বাস করিতে ছইবে সেখানে (পতিগৃহে)। সংযোগের শেষে ছইভেছে বিয়োগ। চুপ কর। কেন কাঁদিভেছ ?'

৬

মুগার উপরে হলপথে, আর বিশাধা স্বামীর ও স্বগৃহ-লব্ধ পরিজন প্রভৃতির সঙ্গে নীচে জ্বপথে প্রাবস্তীতে যাত্রা ক্রিলেন।

বিশাধার সঙ্গে ঘোড়ার একটি খুবই ছোট বাচ্চা ছিল।
খলপথে বাইতে হইলে ভাহার অভ্যস্ত কট হইবে ভাবিরা
ইহাকেও ইহার মায়ের সহিত নৌকার করিয়া বাওয়া হির
হয়। কিন্তু বহু চেটাভেও ঐ ঘোড়াটি নৌকার উঠিতে
চার না। ইহা লইয়া একটা কোলাহল হয়। বিশাধা
ভাহা ওনিতে পাইয়া ভাহার কারণ কিক্সাসা করিয়া
ভানিলেন। ভিনি বলিলেন 'আগে বাচ্চাটিকে নৌকার
উঠাও, ভার পর ঘোড়াটি নিকেই উঠিবে।' ভাহাই
হইল, ঘোড়াটি নৌকার উঠিল। অমাত্য স্থপার তাহাদের
পৌহিতে বিলম্ব হুওয়ার কারণ কিক্সাসা করায় কিরূপে
বিশাধার বুদ্ধিতে ঘোড়াটি নৌকার উঠিরাছিল ভাহা
ভানিতে পারিয়া বলিয়া উঠিলেন, 'বুদ্বিমতী ("পণ্ডিভা")
চম্পাকুমারী!'

٩

পথিমধ্যে রাজিতে সকলেই এক ছানে বাসা লইলেন। ভাছাতে ছাদের একটা অংশ খুব ধারাণ ছিল। মুগারের জন্ত ভাহারই নীচে বিছানা করা হইরাছিল। বিশাধা ব্ধন জিজ্ঞাসা করিয়া জানিলেন বে, ঐ বিছানাধানি মুগারের জন্ত করা হইরাছে তথন বলিলেন,

'ইছা সরাও।'

'(**क्ब** ?'

'ৰদি তাঁহাৰ স্থাবস্থাৰ ইহা নীচে পড়ে তিনি মৰিয়া

• বাইবেন। আৰু বত দিন আমি বাঁচিয়া থাকিব ভত দিন

এই কলম থাকিবে বে, এমন কলাৰ সম্পে বিবাহ হইল বে,
পথেরই মধ্যে শুভ্ৰেৰ মৃত্যু হইল, তিনি বাড়ীভেও
পৌছিলেন না!

বেমনি বিছানাধানি ওধান হইছে সরান হইল, অমনি ছাদের ঐ অংশটা পড়িয়া গোল। চারি দিক হইডে লোক-জন ছুটিয়া আসিয়া বলিতে লাগিল 'গৃহপতি ( মুগার ) চাপা গিয়াছেন !'

তিনি কাছে ছিলেন, বলিলেন, 'আপনারা ভয় পাইবেন না, এই আমি এখানে আছি।'

লোকজনেরা দেখিলেন বিছানা ওখান হইতে স্বান হইয়াছে।

'কে সরাইয়াছে ?'

'বিশাখা !'

সকলে বলিল, 'বৃদ্ধিমতী চপ্পাকুমারী !'

একদিন বাত্তে সকলে এক পুরাতন বাগানে বাসা লইয়াছিলেন। মুগারের বিছানা হইয়াছিল এক শুনা দেবালরে। বিশাধা ইছা দেখিয়া বলিলেন, 'ইছা কাহার জন্য ?'

'গৃহপতির অন্য।'

বিশাখা বলিলেন, 'সরাও।'

'(本书?'

'বদি দেবালয় পড়িয়া বায়, তিনি চাপা পড়িয়া মরিবেন।
ভার আমার কলক হইবে।'

বিছানাও স্বান হইল, দেবালয়ও ভাতিয়া পড়িল। চারি দিক হইভে অনেক লোকজন ছুটিয়া আসিল। পূর্বের ন্যায় সকলেই বলিল, 'বুদ্ধিমভী চম্পাকুমারী!'

\_

ক্রমশ তাঁহারা প্রাবন্তীতে পৌছিলেন। পথের প্রম অপনীত হইলে ও আত্মীয়-স্বন্ধন বন্ধু-বাছর সকলে নিজ-নিজ গৃহে ফিরিয়া গেলে বিশাধাকে নিজ বংশের অন্তর্মপ কানকর্ম করাইতে আরম্ভ করা হইল। মুগারের আর ছয়টি পুত্রবধ্ বেমন নিজ-নিজ বাবে পাক করিতেন, বিশাধাও সেইরপ কার্বে নিষ্কু হইলেন। তাঁহাকে বলা হইল 'তোমার বার সপ্তম দিবদে।'

খণ্ডব, শাণ্ডড়ী ও স্বামীর ব্যবহারের পর বে চন্দ্রন বাঁচিয়া বাইড ডিনি ডাহা প্রতিদিন গুকাইয়া ছোট-ছোট গুলি করিয়া রাখিডেন। সংসাবে প্রতিদিন বে ছাড়ু দেওয়া হইড ডিনি ডাহা হইডে কিছু-কিছু স্থানান্তরে রাখিডেন, পরে উহাডে বি মিশাইয়া বোয়া করিডেন। খামী বা নিজের উপভূক যে গন্ধ মাল্যাদি থাকিত তাহা ঠাপা জাহগাহ বাধিয়া দিছেন। বাত্তি প্রভাত হইলে কর্মকরদিগকে গন্ধ, পূলা, ভোজন ও মন্ত দান করিছেন। ভাহারা অভ্যন্ত পরিভূই হইলা বলিত আন্ধ আমাদিগকে আমাদের প্রাতন গৃহিণী (অর্থাৎ বিশাধার শাভড়ী) আমাদিগকে দেখাওনা করিছেনে। ভাহারা দেদিন বিশ্রণ কান্ধ করিল। অমাভ্য স্থাবি ভাহা দেখিয়া ভাহাদিগকে জিল্লালা করিলেন 'ভোমবা কি মান্ধ আবো কতক মন্ত্র আনিয়াছিলে?' ভাহাবা বলিল 'না।'

'তবে ৰিপ্তণ কাম কিন্ধপে হইল ?' 'ৰেমন ভাত, তেমন কাম।' 'ইহার অৰ্থ কী ?'

ভাছারা সমস্ত খুলিয়া বলিল। মুগারের অন্যান্য পুত্রেরা নিজের নিজের স্থার নিকট এই কথা বলিলে ভাঁছারা ঠিক করিলেন বে, ভাঁহারাও বাড়ী হইতে কিছু কিছু অপহরণ করিয়া মঙ্গুরদের প্রীতি উৎপাদন করিবেন, বেমন বিশাখা করিয়াছেন।

এক দিন মৃগার বিশাখাকে বিশাসা করিলেন, 'ম', ভূমি খাজসামগ্রী প্রভৃতির কেমন তত্বাবধ'ন কর ।' বিশাখা সমস্ত খুলিয়া বলিলে তিনি অভ্যস্ত সন্তই হুইয়া ভাহাকেই গৃহকার্বের ব্যাপারে নিযুক্ত করিয়া বাড়ীর লোকজনকে বলিলেন 'ভোমাদের মধ্যে যাহারা বিশাখাব দানে সম্ভূট ভাহারা থাকিবে, ভাহারই অহ্নকুলভাবে ভোমাদিগকে চলিতে হুইবে, কেননা ভিনিই এখন গৃহস্বামিনী হুইয়া-ছেন।' ভাহার আচার-ব্যবহারে বাড়ীর সকলেই ভাহার উপর সৃস্ভূট হুইয়া উঠিলেন।

7

এক দিন বিশাখার গৃছের উপর দিয়া কডকগুলি হাস
উদ্ভর কুল্লীপ হইতে মুখে করিয়া এমন এক শালিধান্যের
মঞ্জরী লই রা উড়িরা বাইতেছিল বাহা বিনা চাবে বিনা
রোরাভেই উৎপন্ন হই রা থাকে। বাজবাড়ীতেও একটি হাঁস
ছিল। ইহা ঐ সমন্ত হাঁসকে দেখিরা ভাকিয়া উঠিল।
ভাহারাও বজাভির কণ্ঠবরে আনন্দে ভাকিয়া উঠিল। এই
সমরে ভাহাদের মুখ হইতে করেকটি শালিমঞ্জরী রাজার
পারের কাছে পড়িল। রাজা ভাহা আমাত্যগণের মধ্যে ভাগ
করিয়া দেন। প্রধান অ্যাত্য মুগার নিজের ভাগটি
বিশাখাকে প্রদান করেন। বিশাখা ভাহা কোটার মধ্যে
রাখিরা বিলেন, এবং অক্ত সমরে চাবীদের ভাকাইরা উহা
লাগাইবার অক্ত আদেশ করিলেন। ভাহারাও বুব সভ্ট
হইয়া ছোট এক টুকরা অমি ভালরণে চবিয়া ঐ ধান
লাগাইল। ব্যাসমরে বুটি ছইরাছিল। বীজের অন্তর্জন

বেশ ভাগ ফসল কলিল। পর বৎসর আবো বেশী ফসদ ট্টন, ডাহার পর বংসর ভাহা ট্টভেও বেশী চ্টন। এই-রূপে হংস্মৃষ্টের ছারা আন্ত ধারে কোশ্সরাজ প্রদেশ-জিভের গোলাঘর পূর্ণ ট্টরা উঠিল।

٥ د

কালক্রমে রাজা প্রদেনজিভের এক ব্যারাম হইল। বৈজগণকে ভাকা হইল। তাঁহারা বলিলেন, 'মহারাক্ষ, যদি হংসাহত শালি পাওয়া রায়, তবে ভাহার তণুলের মণ্ড করাইয়া তাহা পান করিয়া আপনি আবোগ্য লাভ করিছে পারেন।' রাজা অমাতাগণকে ডাকাইয়া বলিলেন, 'আমি আপনাদিগকে কিছু কিছু ক্রিয়া হংসাত্ত লালিমঞ্রা খাপনারা ভাহা কি করিলেন ?' কেহ বলিলেন, 'মহারাজ, আমি তাহা দেবালয়ে দিগছিলাম ' কেই বলিলেন, 'মামি অগ্নিতে নিকেপ করিয়াছিলাম।' অন্য একজন বলিলেন, 'আমি গুছের ছারে তাহা বাধিয়া রাধিয়াছিলাম।' সুগার বলিলেন, 'মহারাজ, আমি তাহা বিশাধাকে দিয়াছিলাম। জিঞাদা করিছা জানি ভিনি ইছা কি কবিয়াছেন।' ভিনি বিশাধাকে ঞ্চিজ্ঞাসা করিলেন। তিনি বলিলেন, 'পিতা, হংসাহত শালির কী প্রয়োজন ?' মুগার ভাগা বলিলে বিশাখা একটি স্থবর্ণাত্র ঐ শালির তণ্ডুলের মণ্ডে পূর্ণ করিয়া রাজার নিকটে পাঠাইরা দিলেন, রাজা ভাত। পান করিয়া হস্ত হইলেন।

>>

খন্য সময়ে জনপ্ৰবাদীরা বাজাকে তুইটি মাদী বোড়া দিয়াছিল; একটি মা খন্যটি ভাগার কন্যা। কিছু কোন্টি মা খার কোন্টি কন্যা কেহই জানিত না। বাজা খনাত্য-পণকে বলিলেন, 'খাপনারা ভালরপে বিচার করিয়া আমাকে জানান।' খনাভ্যের। সমন্ত দিন বিচার করিয়া ক্লান্ত হুইয়া পড়িবেন, নিশ্চর করিছে পারিলেন না। মুগার এড বেলার বাড়ী গেলেন। বিশাখা ভাছাকে প্রশাম করিয়া বলিলেন, 'পিতা, আজু এড বিলম্বে আসিলেন কেন ?' ভিনি সব কথা বলিলেন। বিশাখা বলিলেন, 'পিতা ইহাতে জানিবার কী আছে ? ছুইটি ঘোড়াকেই সমান আহার দিতে হুইবে। ইহাকের মধ্যে বেটি কন্তা, সে নিজের অংশ ধাইয়া মারেরও খংশ লাইবে। বে মা সে ভাহাতে কোন বিরোধ করিবে না, মুখ নীচু করিয়া থাকিবে। ইহাই হুই ভেছে জানিবার উপায়।'

মুগার আগিরা অমাত্যগণকে এই কথা বলিলে সেইরণ পরীকা করা হইল। রাজি প্রভাত হুইলে রাজাকে বগা হুইল, 'নহারাল এইটি মাতা আর এইটি কন্যা।'

'के.कर्प रेहा जापनांवा जानिस्पन ?'

'মহাবাল, আমাদের জানিবার সামর্ব্য কী ? বিশাখা এইরপ বলিয়াছেন।'

'ৰুদ্দিমতী চম্পাকুমারী !'

75

একদিন একটি মাতুৰ ঘাটে একথানি কৃষণ বাধিয়া আন করিডেছিল। ঐ সময়ে দেখানে আর একটি মাতুষ আদিল। এ ঐ ক্ষলগানি মাথায় জড়াইয়া সেইখানেই আন করিতে আরম্ভ করিল। প্রথম মাতুষটি আনাস্থে উঠিয়া নিজের ক্ষলগানি দেখিতে পায় না। দিতীয় মাতুষটি বলিল ওছে, 'তুমি কী গুঁজিডেছ ?'

'주렇러 !'

'কোথায় ভোমার কছল ?'

'ংইতে পারে আমি বেমন মাধায় কম্প কড়াইয়া ক্লে নামিয়াছি তুমিও দেইরূপ করিয়া থাকিবে।'

'এ তো আমার কমল !'

'তোমার ় আমার।'

এই বলিয়া উভয়ের মধ্যে বিবাদ আবস্ত হুইন। উভারা বাজার নিকটে গেল। রাজা অমাত্যপণকে বলিলেন. 'আপনাথা পরীকা কবিয়া এখানি যাহার ভাহাকে দিন।' তাঁহারা পরীকা করিতে আরম্ভ করিলেন। ভিক্কাসা क्तिरत এक क्रम वर्ल भागात, भागा अस्म वर्ण भागात। 'তোমার ? আমার।' এইরপ করিতে করিছে দিন শেষ হইয়া গেল। অমাত্যেরা ক্লান্ত হুইয়া পড়িলেন, ভাঁহারা কিছু নির্ণম্ব করিতে না পারিয়া বাড়ী গেলেন। বিশাধা পুর্বের ন্যায় প্রধান অ্যাত্য মুগারকে জিজাসা করিলেন। যাহা ঘটি গছে তিনি ভাহা বলিলেন। বিশাখা বলিলেন, 'বাবা, এখানে ভানিবার কী আছে ? ভাছাদের উভয়কেই বলা হটক, এই কমলকে ছি ডিয়া ভোমাদের এক জন এক व्यर्थ शहन कक्क, व्यन्त क्रम व्यन व्यन व्यन् शहन कक्का যাহার কমল দে বলিবে আমার কমল কেন ছেড়া হইতেছে। ष्यात वाशत कथन नव तम मत्न कतित्व, षाळा, षाध कहे আমার হটক, আমার ক্জি কী ? ইহাই এখানে পরীকা। মুগার পিয়া আমভ্যগণকে এই কথা বলিলেন, এবং বাজাও ইহা ওনিয়া পূৰ্ববৎ বলিলেন, 'বুৰিমতী চম্পাকুমারী।'

29

কোন গ্রামে এক গৃহত্ব বাদ কবিতেন। তিনি নিজের দমান বংশ হইতে ত্রী আনম্মন করেন। তাঁহার পুত্রও হয় নি, কনাও হয় নি। তাই তিনি বিতীয়বার বিবাহ করেন। এই ত্রীর বাহাতে দস্তান না হয় প্রথম ত্রী তাহার চেষ্টা করিবাছিলেন, কিন্তু তাহা দফ্ল হয় নি। তিনি একটি পুত্র প্রেশ্ব করেন। তিনি ভাবিলেন, সপত্নীদের প্রশার শক্রতা প্রশিদ্ধ। নিশ্চয়ই ইহার বিহাত্বা কেন্দ্রেশন

উপায়ে ইহাকে মারিবে। আমার খামী কী করিবেন ?
কত কালই বা আমি ইহাকে রকা করিতে পারিব ?
অতএব সপদ্মীরই হাতে ইহাকে দান করি। খামীর
সহিত ইহা ঠিক করিয়া ও তাহার অন্তমতি লইরা বিতার
ত্রী প্রথম ত্রীকে বলিলেন, 'এগিনী, এই পুর ডোমারই,
ডোমাকেই আমি দিলাম, তুমিই ইহাকে মান্তম কর।'
প্রথম ত্রী ভাবিলেন 'যাহার পুর, ভাহারই গৃহ। আমি
ইহাকে বর্ধন করি। আমিই গৃহেরু ক্রী হইব।'

কালক্রমে গৃহত্বের মৃত্যু হইল। আর বাড়ী লইয়া ঐ হই স্ত্রীর মধ্যে বিবাদ আরম্ভ হটল। এক জন বলেন 'এ আমার পুর', অপর জন বলেন,'এ আমার পুত্র।' ভাঁহার। রাভার নিকট গেলেন। রাজা অনাত্যগণকে মীমাংসা করি-वाद क्य आत्म मिलन, 'शन, आभनादा विठाद क्यन।' সমস্ত দিন কাটিয়া গেল কোন নির্ণয় হইল না। স্মাভ্যেরা वह विलक्ष वाकी शिलन। विनाधी भूर्वत नाम मुभावत्क কিজাদা করিয়া ও আদল ঘটনা জানিয়া বলিলেন, 'এখানে कानिवाद की चाह् ? जाशास्त्र डेंडश्टक वनिएड इहेंदि, "কাহার পুত্র আম্বা জানি না। ভোমাদের মধ্যে বে বনবতী সে তাহাকে নইয়া যাউক।'' ইহা ভনিয়া ভাহারা উভৱেই বাদকের বাছ ধরিয়া ষ্থাশক্তি টানিতে আবস্ত করিবে। বালক ভাছাতে চীংকার করিতে থাকিবে। ইহা দেখিয়া বালকের বে সভা মা সে দয়া বশত ভাহাকে চারিয়া দিবে--্রে ভাবি:ব, 'বাঁচিয়া থাকিলে অন্তত্ত পুত্রকে দেখিতে ভো পাইব।' কিছু অপর স্নালোকটি নির্দয় ভাবে টানিতেই থাকিবে, ছাড়িবে না। ভারপর ধ্থন ভাহাকে ক্ষাঘাত ক্রা এইবে তখন ঠিক হুইবে। ইহাই এখানে পরীকা।' মুগার গিয়া এই কথা জানাইলে ভাহাই করা হইল। বাজা বলিলেন, 'বৃদ্ধিমতী চম্পাকুমারী!'

>8

কোন সময়ে মুগারের ব্যারাম হয়। বৈশু আসিয়া তাঁহাকে এক দিন ঔষধ দেন, আবার জর হয়। বিশাধা লক্ষ্য করিতে লাগিলেন, কী জন্য তিনি এক দিন ভাল থাকেন, আব পরের দিন অক্ষয় হইয়া গড়েন। বিশাধা বৈশুগণকে দরজা হইতেই ফিরাইয়া দিয়া নিজেই চিকিৎসা আরম্ভ করিলেন। মুগার ক্ষয় হইয়া উঠিলেন। তিনি ভাবিলেন কিলে তিনি এক দিন ভাল থাকেন, আর পর দিন অক্ষয় হন। বে দিন বৈশু বাড়াতে প্রবেশ করেন না, নিয়ভই তিনি সে দিন ভাল থাকেন। তিনি বিশাধাকে ইহা জিজ্ঞাসা করিলেন এবং ভাহার উত্তর শুনিয়া বলিলেন 'ব্ছিমতী চম্পাকুমারী!'

34

এक किन युत्राद विभाषात्क वनित्नन, 'वर्तन, रखायाद

মা ভোমাকে যে সমস্ত উপদেশ দিয়াছিলেন ভূমি সে সমস্ত অফুসরণ কর ভো ?' বিশাখা বলিলেন—'হাঁ পিডা, আমি অভুসরণ করিয়া চলি। ঐ বে মা বলিয়াচিলেন সূর্ব ও চন্দ্ৰকে নমন্বার কবিবে, উহার ভাৎপর্ব এই যে, কল্পার পক্ষে শশুর ও শাশুড়ী হইভেছেন সূর্য চল্লের স্থানীর। ভাঁছা-দিপকে আমি প্রণাম করিয়া থাকি। ভিনি অগ্নি-পরিচর্বার কথা বলিয়াছিলেন, ইহার ভাৎপর্ব এই বে স্ত্রীর নিকটে খামী অৱিস্থানীয়। স্ত্রী খামীর নিকটে থাকিবেন দূরে নহে, আমি অগ্নির ন্যায় খামীর পরিচর্বা করিয়া থাকি। মা বে দর্পণকে নির্মান করিয়া রাখিতে বলিয়াছিলেন, ভাঙার ভাৎপর্ব এই বে, গুহবানিই হুইভেছে দর্পপন্থানীয় ইহাকে নিত্য মার্জন করিয়া লেপন করিয়। রাখিতে হইবে। ভাই শামি প্রতিদিন গৃহসংস্থার করিয়া থাকি। স্থার বে তিনি সাদা কাণড় পরিতে বলিয়াছিলেন তাহার ভাৎপর্ব এই বে **অন্য কাপড় পরিয়া গৃহ পরিষার করিতে হইবে আর** শুকুবসন পরিধান করিয়া দেবসেব। করিবে। ইহাও আমি করি। তিনি যে বলিয়াচেন গ্রহণ করিবে, দান করিবে না. ইহার ভাৎপর্ব এই যে, লোকে যদি কোন কিছু খারাপ বলে ভাহা ওনিবে, কিন্তু খারাপ কথা বলিবে না। ইহাও আমি অন্থসরণ করিয়া চলি। ভিনি বে বলিয়াছিলেন কথা বাধিবে, ইহার ভাৎপর্ব এই বে, গোপনীয় কথা প্রকাশ

করিবে না। এ বাক্সংবম আমার আছে। ঐ বে ভিনি বলিয়াছিলেন উঠিয়া কাছাকেও আসন দিবে না, ভালাব ভাৎপর্ব এই বে, ভূমি কুলবধু, ভূমি গুপ্তস্থানে উপবেশন করিবে। আমি ভাহাই করিয়া থাকি। ভিনি বলিয়া-ছিলেন মিষ্ট ভোজন করিবে। ইহার ভাৎপর্ব এই, ভাল কুধা হইলে ধাইবে। আমি প্রতিদিন বাড়ীর সকলকে থাওয়াইয়া কৃধিত হইয়া ভোজন করিয়া থাকি। আর বে ভিনি বলিয়াছিলেন স্থাে শুইবে, ভাহার ভাৎপর্য হই-তেছে বে, সমন্ত গৃহকার্ব করিয়া রাত্রিতে ভাগু-পাত্র সব অভাইয়া বাধিয়া বিভানা কবিয়া শুইবে ৰাহাতে এটা ঠিক বাখা হইয়াছে, এটা ঠিক বাধা হয় নি, এই চিম্ভায় স্থাবার উঠিতে নাহয়। আমি তাহাই করি। আর যে তিনি সিঁড়ি বাধিতে বলিয়াছিলেন, ভাহার তাৎপর্ব এই যে, 'তুমি নিজের শুভ কর্মদলে দেবলোকে উৎপন্ন হইয়া আবার মহয়-লোকে উংপন্ন হইয়াছ। ইহা কর্মভূমি, এখানেও তুমি मान मिरव, भूषा कविरव, भाभ कविरव ना. हेश भूर्याव সিঁডি, অর্গের সিঁডি।' ইহাও আমি যগাশক্তি করি।'

'ভাল ভাল, বিশাধা। তোমার মা বৃদ্ধিমতী, তুমি ভাঁছা হইভেও বেশী বৃদ্ধিমতী !\*

• চীৰৱৰৰ (Gilgit Manuscripts, vol. III, Part 2, pp. 52) হৈতে সম্ভাত ।

### স্বাধীন ভারত প্রশৈলেক্ত্রফ লাহা

বে খ্র্যা কাল উঠেছিল নভে সে খ্র্যা এ ভো নর, নব প্রভাতের নবীন খ্র্যা, নৃতন খড়াদর। দুতন বুগের খারত খাঞ্চ, নৃতন পথের খুরু, নবলীবনের নব খবিকার, নব দারিছ ভক্ত।

বে হংশপ্ন নেবেছিল বুকে বি-শতাকী বরি'
লহনা কানিরা চাহিরা বেবি বে নে বারা গিরাছে সন্থি।
উর্দ্ধে এ কি এ অপূর্জ নীল বে নীলের সীনা নাই,
আকাশে বৃক্তি, বাতালে বৃক্তি, বৃক্তি সকল ঠাই।
বৃক্ত বহু, বেন বৃহুর্জে ব'লে গেল নাগপাশ,
ভারহীন বেহু, প্রাণ ভ'রে আক নিতে পারি নিঃখাল।
আবি অকুঠ-কঠে কবি বে গাহিতে পারিবে গান,
বৃত্তন প্রভাত, হুর্ব্যোগমনী রাজির অবলান।

এত বিৰ বহি গেছেছি আমনা তোনান্তি বে আগন্নী, বাতাসে এবনো বিলাবে বাব নি প্ৰৱেশ্ব প্ৰতিক্ষণি। কেই প্ৰতীক্ষা সকল তাবের ? পুলার লগ্ন লাগি' বিনিজ-বাঁধি বুল বুল বহি যাহারা বর্বেছে জানি।

বাৰীনতা বোৰ বন্ধের ধন, আবার বাবার বনি, অমুল্য, নিবি, সুব বন্ধের বের্চ বন্ধু পুনি। কোধাৰ থাকিব ? কোধাৰ ঢাকিব ? কোধাৰ বাধিব ভোষা ? ছবি অপূৰ্ব্ব হৈ যদিবসৰী, ছবি সৰ্ব্বোভষা। এত ত্ব্যৰ বাধীনতা ছবি, ছবি এত ত্বন্থুর। কোধা ছিলে ছবি, কোধা ছিলে ছবি, কেন ছিলে এত দূর ?

আশোকচক্ষলাঞ্চিত ওই প্রিবর্ণ পতাকার
নব দীবনের গুড অচনার নবীন দীওি ভার।
কত তক্তের জনত্ত-রক্তে রঞ্জিত হ'ল এ বে,
জয়ক্ষনিতে তাবের কীর্তি শোন নি কি ওঠে বেজে?
বাধীন দেশের নিশানের পাশে এই কেতনের হান,
দেশের প্রতীক এই পতাকার রেবে বাব সম্মান।
এর পানে চেরে অভীতের সব হংব বাব বে তুলি,
নাগরে সাগরে ভাসিবে ভারী প্রিবর্ণ কেছু ছুলি।

এত দিনে দেবী, মিটালে কি আলা, মিটালে কি লব লাব ? এই জীবনেই লভিলাম বুলি নবজনের যাব। ভোষায়ি চয়বে নিবেদিত প্রাণ, ভোষায়ি তয়ে বা বরি, হে দেশজননী, এ গুত লয়ে আজি বজনা করি। ভূলেছি লক্ষল অতীতের ব্যবা, ভূলেছি সকল ক্লেশ, বাবীৰ, স্থানীৰ, খ্বীৰ জীবৰ, খাবীৰ আয়ায় বেশ।

## আবিফার

### **बि**वांगी द्राय

সে নিঃশব্দে ভবে আছে। তার নাম স্থনিতা। তার বরণ নাতাশ। সে একট আ্যাতভাটাইজিং একেভির ওপর নিকের অকিসার। তার বিধাহ হয় নি। লে সুক্ষরী।

এীয়ের বৌদ্রতপ্ত আকাশ সভার হারার এতক্ষণ কালো হরেছে। নেই কালো আকাশ আলো করে গাছে সূচেঁ উঠার হত সারি সারি তারা সূচেঁছে। বাতাসে এবনও উত্তাপ। ক্লাভ শরীরে তবু আরাম আসে।

স্মিজার বাড়ী তিনধানি বরের সমষ্টি মাল। পাচক, বাসবাসী নিরে স্থমিলা থাকে। এই আরাম ও বিলাসের
নিবিভতা স্মিজার নিজের গড়া। প্রসাধন-টেবিলের ওপর
রজনীগরার বাড়, উপহার নর, নিজের অর্থে জীত। থাটের
নীচে কংর-বসান চটিছুতো; প্রসাধন টেবিলের টুলে এক প্রভ প্রবাল বর্ণের পা-ভাষা; তেপারার উপর এক বাস্ত চকোলেট ও এক গুছু সচিত্র ইংরেজী মাসিক; কোণে রেভিও বীরে বেজে বাজে; রোট সেজেটারিরেটের ওপরে কলম-পেলিল সাজান, পাইলটের প্রেসেন্টেসন সেটু; মনোপ্রাম-করা কাগল, রূপোর কাগল চাপা। এর একটিও স্করীর প্রপদ্ধরে উপহার আলে নাই। স্করীকেই নিজের কটার্জিত উপার্জন থেকে ভিন্নে নিতে হরেছে। সেইধানেই গৌরব স্থমিলার।

বাটের নীল আহ্মাদনীর ওপর এলারিত চুল সরিরে হাত-বছি দেবল সুমিত্রা—সাতটা কুছি। আশিসের পোষাক হাড়বার পূর্ব্বেই ফ্লাড় শরীর বিপ্রার চেরেছিল।

পাশের বরে পোষাক-পরিক্ষণ ছেড়ে স্থানি রেজিজেরেটর বেকে কমপার ঠাঙা রস কাঁচের টামপারে চূম্ক দিতে দিতে কিরে এপ। দাসী মেমসাহেবের বাডাদি টক্ষত রেবে শেছে। তিম সুলে এক পদ্ধীর্থামবাসী কাকা তির কেট মেই স্থানির। ক্তি নেই, টাকা বাক্সে মন্থ-আদরও কেনা বার।

এবন কি করা বেতে পারে, স্থনিত্রা তেবে দেবল। কাল
দানিবার, তা হাড়া আণিনে কালের কোন চাপ নেই আছ।
কপি-রাইটং বা অনেছিল স্থনিত্রা বছনিব বাড়ীতে পর্যাত্ত কাজ
করে শেব করে কেলেছে। বেনন এও কোন্দানীর বিজ্ঞাপনের হবি কি তাবে বাকতে হবে তা-ও আর্চিইকে নির্বেশ
কেওরা হরেছে। লোনবার বিকালবেলা ব্যানেজিং ভিরেটর
পার্ট দেবেন, কিছ নে তার তার সেকেটারী নিস্ত্রাগিতেনের
ওপরে। তব্ চনংকার লাভ করে চা বেরে স্থনিত্রা রর নিচ্নতি
পাবে। তারতে বেশ লাগে। প্রকাও আণিলে প্রকাও টেবিল,
রপোর লাভিস্ সেট, চনংকার চারনা, অটুট ইরি পোরাক,
কেতাহরত আচরন। পাশে বিনি বনবেন তার নাম সংবাদপত্র প্রারহী অলক্ষত করে। বিত্ত বরুকে প্রটা-ওটা প্রনিরে

দিতে ব্যস্ত হবেল বিনি, তার বাসিক আরের বহু ভ্রমলে কাকা বিজ্ঞান হয়ে সন্তবের বৃষ্টিতে বার বার ভাইবির বিকে ভাকাবেৰ। কিন্তু এই সৰ পাৰ্টৰ পিছনে কি আছে ? বভাশা. সারাধিনের কান্ধের ক্লাভি, ওপরওয়ালার মন বোগাবার গ্লাবি, ভবিয়তের বিক্সতা। পাশের লোক চরিশের উর্জে, বিবাহিত, পরিবার-পরিবৃত। ব্যস্ত ভরতার विनि छेन्थीन स्टब फेंग्रेटनन, जुनिकांत्र मण स्टब्स बाणास नक সংখ্যার দেখা ভার অভ্যাস আছে। ম্যানেজিং ভিরেষ্টরের বুলভগ-মন মিল ব্যাগভেনের মোছিনীমারার শিকলে বাঁবা। অভ চারট পুরুষ অকিনাবের মধ্যে ছুই অনের নকে পুনিজার প্রচত বগড়া। কারণ বেরে হরেও প্রমিত্রার কর্মনৈপুণ্য ভাদের অপেকা বেৰী, পূর্বোই প্রোবোশন পেরেছে দে। ভাই আধ্বরসী, সংসারচাপক্লিই অফিসার ছটর বিহেবের অভ নেই। আর একজন অ-বাঙালী, অভ্যন্ত গভীর। কারুর সংক প্ররোজনাতিরিক্ত কবা বলেন না। চতুৰ্ ব্যক্তি সহাভ पृश्वय, परिवारिक कक्ष्म । किन्द्र निविद्यत क्रार्क मौमा वन्न कांत यन जन्मूर्ग एत्रव करबरहा। शैवरे माकि विवारक रत्।

নিনিয়র ক্লার্ক নীনা বছ এই টেবিলে নিমন্ত্রণ পার নাই, স্থিকা পেরেছে। কিছ স্থাকার নমত্বে নাহেবী ভলিছে বিভছ অনকাবনী, স্থাই নইর, জীণ-ছত্র দেহবল্পরী, রঞ্জীরক ওঠাবর, আপাবমন্তক স্থা পালিশ কিছুই প্রচ্যোত্র বস্ত্র চোবে পভবে না, ভাষে স্থাক্ষা। তার মনে জেগে বাক্ষে অস্থাছিতা নীনা বভের গোল মুব, এলোমেলো চূল, ভাকা ভাকা কথা, আর কথার কথার হাসাকাল। অভুত চু

এবন কি করা বার ? কাজেই 'কিস্মেট' হচ্ছে। বেবা বেতে পারে। কিছ একা সিনেনা ভাল লাগে না। মঞ্কে নদে ডাকা বেতে পারে। কাকীমার ভাইবি মঞ্ কোঙেলে বাকে, অহুনতি চাই ভার পকে। বাকলে সিরেই কাজ নেই ছবিতে।

বরক কিছু পড়া বাক। বছদিন ও বালাই নেই। কণি
লিবে আর বিজ্ঞাপনের যালরপদা নেডে নেডে জ্ঞানের পথ
বন্ধ করেছে ক্ষমিন্তা। জওছরলালের "The Discovery of
India" ("দি ভিদ্কভারি অফ ইঙিরা") সামাভ একটু পড়া
হরেছে বাল। সেক্শনাল বুক্তেস থেডে বইট নিরে বাটের
পাশে আরাম-ভেরারে বসল ক্ষমিন্তা টেবল-ল্যান্স আলিরে।

বইবাৰা ভ্ৰম্বিৰে এক বছুৱ উপহার। সেই বছুই বীৰা বছের ভ্ৰম্বিৰে উপহার দিবেছে নীল কুলভোলা ক্লেপ ভি-নিৰের রাউস্পিন্। এক পাৰ্থকা কেন ? সভাই কি ক্ষিত্রার জীবৰের প্রতীক The Discovery of India; আর বীবা ৰডের প্রতীক ফুলভোলা জায়া ?

বীনার কথা তেবে সময় নই করা হচ্ছে। মীনা অভি
সাধারণ, একশো বাট টাকা যাত্র পার। স্থিতার আহেশে
নীনা বৃদ্ধা পরিষ্ঠা বরণ করতে পারে। এক ক্ষ স্থাটে বাজ্ত পরিবারে নগণা জীবনধাত্রা মীনার। অভি ভাকা স্থাক বরণের মেয়ে। কি করে প্রক্ষোত বস্তুর বভাবীয়ান্ ভাকে প্রক্ষ করে কেললেন, বিশেষতঃ বর্গন দেখানে অভিসর স্থিতা রয় উপস্থিত হিলা।

ভাতে কোত নেই খুনিআর। নিকে উপর্ক পুরুষ সেপার নাই বুঁলে। নিঃসক জীবনের গান্তীর্থা নিরে সে পৌরবে সমাসীন। প্রাণ্ডোভ বহু প্রভ্যেকট হভামতে ভার প্রভাবেনান। ম্যানেকিং ভিরেক্টর পর্যান্ত খীকার করেন—".lliss Roy at times surpasses even herself." সে বা চেবে-ছিল —প্রভিট, সম্পন, সন্মান, সবই পেরেছে। অভের সক্ষেবিকর ভূলনা করে খুনিআ নিকেকে আর হীন করবে না।

মনোবার সহকারে অবিত্রা পড়ে বেতে লাবল। অল্প সমরের মবেই ভ্রম্বতা এসে পেল। একট বিরাট মানবের বিরাট জগরের অর্থেশ প্রিন্তার হিন্যানার ক্ষুতাকে কিছু-ক্ষণের জগুরু ভূলিরে বিল। ভারভবর্ণের প্রভিট সিরিগুছার, প্রতিট পত্রপরেরে বে অবর জীবনমোভ শভাজীর আবাত প্রতিহত করে আবার অভ্রম্ভ উংলাছে প্রবহ্মান, ভারই আনক্ষ নেহেন্দ্র চক্ষে ভারতের অন্ধনিহিত সভাকে প্রতীধ্যান ক্ষেত্রে। প্রিন্তা কি এই ভারভবর্ণ চেনে না ? এই ভারতের অবিকার ভার ক্রপ্ত। বুলাগুও উপনিবদের ক্ষেত্র আব্দুরার মত মেরের শ্বান কোবার সে করা 'দি ভিস্কভারি ক্ষ ইভিরা'র কোবার প্রের হুর ভারতীয় মনের বিশেষ্ড।

"The Upanishads are instinct with a spirit of enquiry, of mental adventure, of a passion for finding out the truth about things...The emphasis is essentially on self-realization, on knowledge of the individual self."

পুভরাং বনের বব্যে এই অবেষণের প্রদীপ আলিরে রাবভে ছবে। সহলা প্রদীপের কবা মনে পড়ে পেল। সহলাটিনী নিবেদিভার বড়ভাই সে। বছদিনের আলাপ আছও জনে ওঠে নাই। কারব প্রদীপ কিঞ্চিং লক্ষানীল; শিভার আশিলে নিক্ষিবাদে কাল করে বাজী সমর ক্যানেরা নিরে ভাটার। সেই ধল্ল পরিচরকে গভীরভা বিভে হলে উভাই হভে হবে প্রনিত্রার নিক্ষেক। হাত নিস্পিস্ করে উঠল পুরিত্রার; লবিভে টেলিকোন। এবন প্রদীপ বাজীভেই আছে। টেলিকোনে এই নির্দ্ধন সন্থার আলাপে নিক্ষর অভ্যরনভার হর লাগবে। ভার পর প্রব্রা ভাকে ভাকবে—'আহ্বন না, এবনও ভো হাত হয় বি। কাছাভাতেই ভো বাজী। আছেন না—'

ভবে নিশ্যুৰ পুৰুষকে বাৰ ইছা সাধুক, স্থনিতা সাধৰে না। সাধারণ প্রধাণ। প্রদীপের চেয়ে 'ভিস্কভারি অফ ইতিয়া'র আকর্ষণ বেশী।—

"But that very individualism led them to attach little importance to the social aspect of man, of man's duty to society. For each person life was divided and fixed up, a bundle of duties and responsibilities within his narrow sphere. This idea is perhaps a modern development."

ষরকার ঘটা বেকে উঠা। সহসা শোবার ঘবের পরদা ঠেলে কভক বলো প্যাকেট হাতে কছের বেগে প্রবেশ করল অনিক্রার বাহবী সুধীরা।—"উঃ, আন্ধ সারাদিন বুরছি ভাই। গাড়ীটা পেয়েছি কিনা। মনে হ'ল পথে ভোর সলে ধেবাটাও করে বাই। কি করছিল স্থমি একা বলে বঙ্গে পুন্ধংসকরা বাক।"

বই বেবে বৃহ্ হ'তে স্থানি। চেবে রইল। স্থানি তার বেকে বছর হ্রের ছোট। ত বুলেদের বাভিল আর বোকেটের স্লশোভিত এত উদ্ধানতের শোষাক পরবার বয়স স্থান রারও নেই। আহলাদে বুকী বর্ণে যাত থেতে স্থানা ংলল ——"বেশ আহিল স্থা। অতথলো টাকা পাঞ্চিস। স্থানীন ভাবে রবেছিল। নিভের কর্মানিতে।"

চাৰের কথা ভূচাকে বলে এসে সুবিত্রা স্থাবার পালে বিছালার বসল। হাকা সামীনের চাকনা — "দিন দিন সৌবিন হচ্ছিস, প্রবি। হবে লাকেন ? ভোর কগং ভে পুই নিজে।"

চা ঢেলে কাপ এগিছে ধিছে ভ্ৰিত্ৰা মীয়ৰে হাসল। ইব্যা-মিশ্ৰিত সপ্তমের দৃষ্টিতে তাকিছে প্ৰীয়া মন্তব্য পাস করল — "ভোর সঙ্গে নিকেকে বদলাতে পায়লে বেঁচে যেতাম পুলি।"

এবারে সমিনার মীরব হাতে দীবং আছপ্রসাদ মিলল।
সভাই বেশ আছে সে, বেশ আছে। মিজের ইচ্ছা মত নিজের
আদর্শে জীবন বাশন করবার ক্ষমতা লে ক্ষমন করেছে। এই
ক্ষমতা হতচ্যত করবে কেন প্রমিনা? প্রদীশের রোজগার
তার চেরে কর। তবে বনী বৌধ পরিবারে সাক্ষ্যেের অবকাশ
হবে। হর তো নিবেধিতার বটকালি এবং প্রমিনার নিজের
উভনে সক্ষামীল প্রদীশ লক্ষা ত্যাগ করে বিবাহ-প্রভাগ করতে
পারে। নিবেধিতা বিবাহিতা। তবু আনেক ননদ, আনেক
লা নিবে বর করতে হবে প্রমিনার। আছুলের ক্ষিউটেন্ধ-রং
পান সাক্ষার চুন-বরেরে মান হরে বাবে। কেতা-করা চুল
রাবা চলবে না। প্রত্যহ শান্ডলী নিশিতরা যাবাঘবা-নশলা
দেওয়া লাল গও তেল এবং কিতে কাঁটা হাতে ভাক্রেন—"ও
ছোটবৌনা চুল বাঁবতে এল।" প্রাত্যহিক বরাকের নাণ্ডিনী
এলে ধেক ইকি লখা সবস্থ বর্তিত পারের বর্ণ কর কর করে
তেটে কেলে ধর বর্ণ করে উক্টকে আলভা পারে চঙ্গা করে

লেপে দিবে বাবে। ছোটবট লে হবে, প্রভরাং মাধা থেকে ছুবে শাড়ীর আঁচল নামানো চলবে না। সারা ধিপ্রছয় শীতল পাটতে গঙাগাড় বিষয় আর নজেল পড়ে পড়ে চমংকার সাকল্য বভিত কর্ম-জীবনের সমাবি হবে প্রথমার।

কিছু মনের মত বিবাহিত জীবন হতে পারত সুমিন্ধার; প্রেমের সদে কর্মনীবনকেও মেলান চলত, বদি প্রভাত বসুর মত কোন ব্যক্তির সদে বিবাহ সভবপর হ'ত। যে জীবনে সে অভ্যত, সেই জীবন বাপন করা বেত। সুমিন্ধা ও প্রভাত বসু এক পর্যারের । সুমিন্ধা নিজের পর্যারে পাকতে চান, কিছু ভিন্ন পর্যারের ব্যক্তিকে কেন প্রভাত বসু মনোন্মরন করলেন, ববন সহবর্মী সুমিন্ধা সন্মুখে উপস্থিত ছিল্ ? এই বিশ্বকর প্রারের উত্তর আকও বুঁকে পার নাই সুমিন্ধা।

যাক, আনার জীবনই ভাল। কার-বসান চটর দিকে তাকিরে ছনিত্রা ছবের নিখাস কেলে এতক্ষণে স্বাহ্মন্য বোধ করল। ছবীবা এনে তাকে রকা করেছে। এবনই সে প্রনীপকে টোলফোন করেছিল আর কি ? হয় তো, কে ভাষে এই নি:লক্ষ্ সন্থাতেই ভার জীবনে চিরদাসত্বের সৃথালবন্ধন পড়ে খেড। ছবীরা ঠিক সমরে এসেছে।

আনন্দিত মনে হমিত্রা প্রস্ন করল—"কি হ্বীরা, লাল চিট্টি আসতে করে ?"

হ:ত বুৰ ঘূরিরে কেকে কামছ দিরে খ্ৰীরা তরা গলার উপন্ত দিল —"বার ভাই, ভাল লাগে না। এবারে সথম হচ্ছে ছমিদার-তনরের সলে। ব্ব বনেদী পেকেলে বাড়ী। প্রীমানের বয়স আটাল। ভেবে দেব খুমি, ভোর বয়সী। ভোর বয়সী লোক আমার বামী হবে, কি ভীষণ মঞ্চার ক্ষা।"

স্থিতার মনের প্রাপ্ত চমকে উঠে সংযত হরে গেল স্থাবার।
ভার বয়ণী ব্যক্তি ভারি বাহবীর বামী হবার বোগ্যভা রাবে ?
ভা হলে স্থিতার বয়স এতই বেশী হরেছে ?

ক্ৰেৰে ওঁছো ভাগভ থেকে বাছতে বাছতে স্থীয়া আৰআৰ পুতীয় খানে বলস—"এবানে বিষে হলে ভাই,
খাৰীনভাট বা সামাভও নেই নেই করে আছে, ভা-ও বাবে।
অভি গোড়া পরিবার। ছাফিলে ব্যেসই ছোক, আর বি-এ
পাসই করি চলতে হবে ছাফিলে বছর আগের কনে' বউরের
চালে। বাবা ওয়ের অভ টাড়া দেবে সব ভূলে লেহেন।"

ত্ৰিত্ৰা থীৱে থীৱে প্ৰশ্ন করল—"দেখাপড়া জানা বরহা মেৰে বৰে নিৰেও কি ভাৱা ভাৱ কাতে পৰ্যা আলা করবেন ?"

"ওই তো মৰা খনি। পুত্ৰ চাৰ শিক্ষিতা। তাই বি-এ পান, এম-এ পানের বোঁক পড়ে আক্ষান। কিছু অবর তার অবিকার হাজতে রাজী নর। খুডরাং আলোকপ্রান্তা বধুকে খরে এনে আবার তাকে অভকারে পোরবার চেঠা করা হয়। এই তো মলা খনি।"

এই ট্রাক্ডেডে মহার কি উপাদান পাকতে পারে ছবিত্রা পুঁলে পেল না। তবে ছবীরার কথাটার সত্য উপলব্ধি করল সে। প্রদীপকে বিবাহ করলে হমিত্রার ভাগ্যেও এই হবে। ভালই হরেছে, টেলিফোন করা হর নি। হবীয়াকে অলেয বহুবার।

ভূত্য চারের ট্রে অপসারিত করলে ছবিত্রা বলস---"তা ছলে এই বিরেতে তুরি অবত ভাষাও বা কেন ?"

হাত-ব্যাপ বুলে সিথের ক্ষালে বুব বুছে সুধীরা উত্তর দিল, "বত অমতের কি-ই বা আছে ? বিরে যুবন করতেই হবে, এক ভাবে হলেই হ'ল। বাবা-মাধের অঙে সব কিছু সহ করতেই হবে।"

কিছ উপরোবে টেকি গেলবার মত ব্বভাব নয় খ্বীরায়। ক্বার খ্রে কিছু মিলিপ্ত আত্মসমর্গণ বেকে উঠলেও ভার বাছ আঞ্চিত আচ ক্বা বলে। পুলক-প্রবাহ খ্বীরার ছেছের প্রভিট রেবায়।

তবে ? যদি হবীরা বেন তেন প্রকারেণ বিবাহে হবী হতে পারে, হমিনাই বা পারবে না কেন ? পর মুহুর্তেই মনকে শাসন করল হমিনা। অন্তের সলে নিকেকে তুলনা করবার দীনতা আদ্ধ তার জ্বাগত দেবা যাছে। মীনা দত্ত, হবীরা, এদের আশা-আকাজন সীমাবহ। গ্রুজিকা-প্রবাহের অন্তর্গত এরা। স্থিনার বাতপ্রা আছে।

মন শব্দ করে খৃথিত। খুণীরাকে একট নাভিচীর্থ উপবেশারক বড়তা বিতে প্রস্তুত হ'ল। কথা আরম্ভ করবার পূর্বেই টেলিফোন বেকে উঠল কন্তব্য করে।

"হালো !" গলার . সর স্থিতার আএবে ঈষং কলিভ, "হালো কে ?" 'Hoping against hope' বলে একট কথা ছিল শোনা, আৰু অন্তর দিয়ে ভার মানে বুবলে স্থিতা ৷ হয়ভ লক্ষার বাব ভেডেছে । প্রদীপ কি ?

পুরুষাণী গভীর গলার পরিবর্তে বিহি ও তীত্ম কণ্ঠ শোষা গেল, "বাষি যাসীয়া। পুষি, বীরা কি ওবানে আহে ?"

"ডেকে দিন্দি,"—স্থমিরা সরে এলে কানাল, "সুধীরা, ভোষাকে ভোষার যা বুঁক্ষেন।"

"কি মুশকিল, এক নিনিট শান্তিতে থাকবার উপায় নেই"— গৰণৰ করতে করতে সুধীরা গবিতে বেরিয়ে গেল। একলা ঘরে ইাছিরে সুবিত্রা বিবেকে বিকার দিতে গালগ। ছি, ছি, এত অংগতন হরেছে তার ? প্রদীপুের টেলিফোন দিয়ে ভার কি প্ররোজন ? একটা নেরের থেকে কম আর যার, ভাকে সুবিত্রা বয় চার না।

व्यक्षत वाका व्यक्त विक्त अनाविक चक्न नामान प्रवीवा किरत अन, "हमनाम चारे। वाकीत लाक्का नाकि चावपकी वात चामाक विकास चक्न ममक वक्ष्मत वाका वाकी दिनिकान कराय। बाक सरक्ष कि मा अक्रूं। चमनि उत्तम कर सरक्षय चामि त्याव स्व मत्यदे मिरकम स्व त्यक्ति। चात विन मा प्रवि, कृषे चामात चवशा व्यक्ति त्य। प्रवित्र चीवन काता। बा वृष्ति चारे कर्मक भाविन, वाना त्याव क्रिय वारे। चिनियम्स क्षित्य विश्व च्योवा हाल तम्। এবন ছবিজা একা। সম্পূৰ্ণ জনৱ, বৃদ্ধিছভি নিবে একা।
নাবা বেনার কেউ নেই, আনার ব্যাকুল হনারও কেউ নেই।
নারারাজি বদি নাড়ী না কেরে নে, কোন স্নেহাত জনর চিভিত
হরে তাকে পুঁজে বেডাবে না। দাসত করতে স্থবীরা, নে
দাসত তালবাসার কাতে। হার, স্থবীরা তার সকে নিকেঁকে
বহলাতে চার !

আনাৰ-চেনাৰে বুলে পড়ল সুনিনা, পানের কাছে পলে বুলার দুঠিত হচ্ছে অনাণ্ড 'ডিস্কভানি অক ইভিনা', পাতা উপ্তে বাজে পাবার বাভালে—"a passion for finding out the truth,…"…"a bundle of duties within his narrow sphere…"

বইবের থিকে মন নেই স্থানির। চারি পাশে ভার রচিত হরেছে একট নিঃসলভার চুর্স, বিলাবে বিলাবে প্রতিক্ষমিত হচ্ছে অগভের সমত নিঃসল নারীল্পবের বিলাপ। স্থানার উদ্যোভ আহ্বান হাল ভেল করে উঠছে না, ভাবতে পারছে না অভ কোন অগবকে।

চেষার হৈছে লাকিষে উঠল স্মিত্রা। ঠিক। এই নিংসদ ব্য়ণাকে এড়াবার বভ নারী স্বাবীনতা বেজ্যার বিসর্জন বের। ভার সমত বছুরা তাই বিবাহ করছে, তাই স্বীরা বিবাহে উংস্ক। স্থাত্রা কেবল নিংসদতাকে বরণ করে নিতে বাছে। স্থাত্রার এই নিংসদতা তীতিখনক। ঠিক। তাই তো নিংসদ প্রব্যাত বস্থ স্থাত্রার এই নিংসদতাকে ভর করে নিনিষর ক্লার্ক বীনা হতের কাছে আপ্রর বুঁকেছে। মীনা হত স্থাত্রার মত নিংসদ নর, তার গৃহ পরিজনপরিপূর্ণ, শিশুকঠের উল্লাল্থনিতে বুধর। বীনা হত গৃহ রচনা করতে ভানে।

আর সুবিত্রা ? কাকা-কাকীর ইচ্ছা হিল সুবিত্রার কাছে থাকেন। তা হলে ছেলেখেরেদের শিক্ষার পথ স্থান হবে, তাইবিরও রক্ষণাবেকণ চলবে। কিছ সুবিত্রার বাইরের বিঃসক্তা বে তার অভবের প্রতিক্লন। সে রাকী হব নি।

হলে হয়ত ভাল হ'ত। সামীর চরব একাকিছ পুরুষকে হুবে সহিষে দের, পুরুষ চার নীড়। আৰু স্থানীয়ার জীবদের ইাচ পৃথক হলে গেছে, নীড বাঁধবার কৌশল অকিসার প্রনিত্রা বিশ্ব ভালে না। ভাই প্রকাত বস্তু প্রবিত্রার ভঙ্গ নয়।

ব্যবের বব্যে পারচারি করে ভাবতে সাগল স্থানিরা। আছিজালা বেদ ও উপনিবদের দেশের জ্বগত অধিকার। 'আছানং বিভি' স্থানিরার নত আবুনিকারও নিজেকে জালা প্রবোজন। স্থানিরা, সুনি কি চাও ?

চাই পরম বিঃসক্তাকে এড়িরে বেতে। আমার গৃহ রচিত হরেছে আমার নিকেকে কেন্দ্র করে, আমার প্রাজ্ঞাহিক প্রের উপকরণ সবড়ে আর্ড করে। অভ কোন ব্যক্তির ক্য চিভা-ছ্শিভার মার্বাপ্-ব্যাহ্পভার বাদ আমার অগং আনে না। চাই এই আগ্রহাতী আল্লকেন্দ্রিকতাকে এড়িরে বেতে। নিক্ষের ভূজে কর্মপঙ্চি বিরে সমীর্ব গভিতে নিজেকে বেনে রাবতে চাই না।

প্রক্যোত বহুকে আমার প্ররোধন নাই। আমার অবচেতন মন চার প্রদীপকে, তার সুবপূর্ণ গৃহের বেউনীতে। আমি গৃহ বীবতে পারি নি, বে পেরেছে তারি গৃহে আমি আশ্রর চাই।

প্রবােত বহু আমার ধর্ম নর। দশটার বে যার কর্মছলে চলে যাব, ছরটার কর্ম্মান্ত বেছে কিরে এলে দেবব অপর কম অছুপছিত। অববা, সালান ফ্যাটের সাহেবী আবহাওরার আবার একাকিত্ব অহুতব করব বাঙীতে বলে বসে সামীর বহির্গমনে। আরি চাই অসংব্য পরিক্রমকে অসংব্য সেহের বছনে বাঁবতে; তার অভ প্রাত্যহিক ত্যাগরীকার ও অসুবিবা-অনটনের মব্যে আমার অভ্গুর অন্তরের অপরিসীর ভালবাসার প্রবৃত্তিকে বভ করতে। নিক্রেকে আমি আবিকার করতে পেরেহি। আমার পূর্কে সহস্র মারী যা করেছে, আমার পরে সহস্র মারী যা করেছে, আমার পরে সহস্র মারী যা করেছে, আমিও তাই করতে চাই। একট সাবারণ ছকের অলাভ্ড হরে জীবনের অটক্রম করতে চাই।

লবিতে চলে এল স্থিতা। টেলিকোনে আর ছবিত্রার কণ্ঠ কলিত নয়—"হালো, কে ?…প্রদীপনারু বাড়ী আছেন ? …একটু ওঁকে তেকে দিন না…

### অমরতা

( আইরিশ কবিভা হইতে ) জ্রীমধুস্দন চট্টোপাধ্যায়

বোঁছাছ আমন্ত্ৰ বিশিব কিংবা বাঁচিব প্ৰাণের আঙ্গ খেলে, বোঁহাটে আফাশই বোহের আঙ্গন, আঙ্গনে আত্মাপুচারে লব; বোলের চিডা-বর্ম ক্ইডে বর্মেই বাবে, কিংবা আশা— হাংকাল লম অলিয়া উঠিবে, কাগুনেরি মত বঙিব রব।

বোদের প্রভাভ ধূলর ভারার ক্র আলোর কবিকা গর,— এবাবে সভ্য--সভ্য ভবু সে চলিরা বাওরার বক্ষবানি ; আনরা বেঁচেরি প্রেনের আলোর, ভবরের শভ হুরার বেশে, বর্ম পথের সন্ধ পবিক রুষ্যু-করের উঠাব বারী !

# আধুনিক তুরক্ষ ও তাহার পুনর্গঠন-প্রচেষ্ঠা

#### এ যোগেশচন্দ্র বাগল

এশিরা মহাদেশের পশ্চিম প্রান্তে এশিরা মাইনর। ইহার কভক্টা পশ্চিমে দার্ছেনেলিস ও বসকরাস প্রধাসী। ওপারে ইউরোপের পূর্বে সীমা। এই ছুই মহাদেশের সংযোগহলে একট রাজ্য বহু শভাষী পর্যন্ত অবস্থিত রহিয়াছে। ১৪৫০ এটাকে



ভূরত্বের রে খোরার পিয়ানোবাধন-রত ভূকী মহিলা ভূৰ্ক ছাভি বোৰ সাত্ৰাছোৱ পূৰ্ব্বপ্ৰাছিক সংস্কৃতি-কেন্দ্ৰ ক্ষষ্ট্যান্টি-নোপল অধিকাৰ কৰে। ঐতিহাসিকাৰ এই অঞ্চীকে ইট-রোপের নবভাগরণের ছচনাকাল বলিছা নির্ছারিত করিয়াছেন। কারণ ঐ স্থান তুর্কিকাতির অবিকারতৃক্ত হইলে পভিতের। দেখানে ক্ৰমাত্ৰ ক্ৰমান না ক্ৰিয়া ইউৱোপ মহাদেশের স্ক্র इकारेका भएका। अवविद्यालय ध्राप्त अभिका-अभिका **উट**त-चाक्किका अवर शृद्धशांचिक देखेदार्ग चागन भागमहरू পরিচালনা করিতে থাকে। কিব ইউরোপীয় দেশগুলি অট্রাদন श्र छैनविश्म महाकीएए यथम विकारनद नव मन साविधारतत क्रां क्रम: मक्रि । महि चर्कन क्रिए हिन छन्न छुद्रक গতাৰুগভিকভার অভ্বতী হইয়া ইহাদের বহু পশ্চাতে পঢ়িয়া ছহিল। ইহার অধিকার ক্রমে সংকৃচিত হইল, শক্তি-সামর্গ্যও ক্ষীণতর হটয়া পভিল। ইউরোপের অভ্যঞ্জনর দেশগুলি তথন देशांव नाव जिन "Sick man of Europe" चर्थार देखेटबांटशब ক্লা মন্থা। কিছ ভূবককে ইউরোপের ক্লা মাত্র ভ্রয়া আর অবিক বিন বাকিতে হয় নাই। বিংশ শভাকীর প্রথম মহাসৰর অতে ইহা আবার একট প্রগতিশীল শক্তিমানু রাষ্ট্রে পরিণত হইরাছে।

প্রথম মহাসমরে ভূরক কার্দ্রানীর পক্ষে বোগ দেওরার বিটেন, ক্রাল, মার্কিন মুক্তরাষ্ট্র প্রয়ুখ বিক্ষী মিঞ্জলভিপুঞ্ ইহাকে ইউরোপের মান্চিত্র হইতে ধুইরা মুছিরা কেলিবার চেটার ছিল। ত্মলভান এবং তাহার মন্ত্রীসভা এই অপচেটা প্রভিরোধ করিতে অক্ষম হইলেন। ভাতির এই সম্কট-মুহুর্ডে ভামাল পাশা (১৮৮১-১৯৩৮) নামে এক্জন নাবারণ সৈনিক লক্ষদের পুরোভাগে আসিয়া হাছাইলেন। ভিনি ১৯২০ স্বের

এপ্রিল মালে আছোরা (বর্তমান নাম আছারা) শহরকে রাজবাদী করিতা সমগ্র এশিরা মাইনরের উপর কর্ম্বর প্রতিঠা क्वित्नन । छोहाद भवकारवद नाम एहेन 'भवर्गमके चक वि আৰাও ভাশভাল এলেম্ব্লি অক টাকি' অৰ্বাং এক কৰাৰ ভূৱতেই কাতীর সরকার। ইহার আড়াই বংসর পরে ১৯২২ সবের একট প্রভাবহারা সুলতান পদের উচ্ছেদ করিয়া দেওরা ছইল। প্রে ত্রত্বের সুলতানই আবার মুসলমান-জগতের বলিকা বলিয়া অভিহিত হইতেন। জাতীয় সরকার বলিকা পদ্ ভবনই রহিত না করিয়া সুগতান-খংলের খার একজনকে বলিকা পদে বসাইলেন। ভাতীয় সরকারের প্রভাপ প্রসন্তার অধিক দিন সহ করিতে পারিখেন না। ১৯২২ সমের ১৭ই নবেশ্বর তিনি দেশত্যার হইলেন। কাতীর সরকারও তৎক্ষণাং সমগ্র ভুরঞ্জের শাসনভার গ্রহণ ক্রিলেন। ১৯২৪ সমের ২রা মাৰ্চ বলিকা পদ উচ্ছেদ করার স্থলতান-বংশের শেষ কর্তুভূটুকু नर्शास चरम् स स्रेम । देशांत शत अरे शतिवादात महम्ब লোককে ভূবন্ধের নাগরিক অধিকার ছইতেও বঞ্চিত করা হয়।



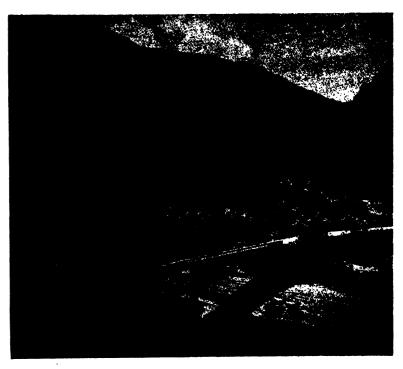
আহারার একট ক্যাণিয়াল কলেক। এবানে হারহাতীকের সহশিকার ব্যবস্থা আছে

কামাল ভ্রত্তের প্রতিক্রিয়াণহীদের শেষ চিফ্টুকু পর্যন্ত বিপ্র করিয়া ইহার প্নর্গঠনে মন:সংযোগ করিলেন। কিছ ইহার পক্ষে প্রথম প্ররোজন বলেনকে বিশ্বসভার হাবীন রাষ্ট্রেয় মর্ব্যালা লাভ করানো। স্বদেশে শক্তি সংহত করিবার সঙ্গে সঙ্গে বৈবেশিক রাষ্ট্রভানর নিকট হইতেও যাহাতে ইহার অভ্যুক্ত

নানা পুৰোগপুৰিবা আহাত্ৰ কত্ৰা বার ভবিবরে তিনি স্বান অবহিত হইলেন। এ কার্ব্যে তাহার প্রধান সহায় হইলেন বিশ্বত সহক্ৰী ইণ্যেভ পাশা (পরে, ইশ্যেভ ইনোছ)। ১৯২৩ সন নাগাদ ভিনি অভাত শক্তিবর্গের প্রতিনিবিদের সহিত আলাণ-আলোচনার পর ভরত্বের জাতীর সর্বার ও তাহার দাবি বৰাসন্তৰ বাস করাইয়া লইভে সহৰ্থ হন। স্বদেশে শাসম-যন্ত্ৰ সম্পূৰ্ণ অধিকার করিয়া এবং বিশেশে নৃত্য আতীয় রাট্র খীরুত্ করাইয়া ইব মেড পাশা প্রমুধ যোগ্য সহক্ষীদের সঙ্গে এক-যোগে কামাল পালা ভ্রম্বের উন্নৰ-কাৰ্য্যে তংপর হইলেন। আৱৰীয় ভাষা সাহিত্য সংস্থৃতিয় চাপ এভাইয়া থিছেদের সবল স্থন্ত कविवाद कर कामान शब्दमरे আরবি হরকের পরিবর্ডে রোমান অক্ষরের প্রবর্তন করিলেন। তুরক্ষে পুভক-পুভিকা, সরকারী ধলিল-দভাবেদ প্রভৃতি সকলই রোমান

অক্ষরে লিখিত হইতে আরম্ভ হইল। প্রাচীন কেন্দ্র ও মুসলমানী পোষাক-পরিচ্ছদের পরিবর্ত্তে আইন হার। জনসাধারণ কর্তৃক ইউরোপীর পোষাক-পরিচ্ছদের ব্যবহারেরও ব্যবহা হইল। শিক্ষাবিভাগের পূর্ব সংকার সাধিত হইল। খৌলবী মৌলানাদের হাতে শিক্ষার ভার না রাধিরা সরকার নিজেই শিক্ষার উপর কর্তৃত্ব প্রহণ করিলেন। নারীর অববোরপ্রধা ভিরত্তরে বিশ্বত হইল, নারীসমাক মুক্ত আকাশে পুরুবের সকে লমান তালে চলিবার অবিকার লাভ করিলেন। সরকারী উচ্চ উচ্চ পরেও শিক্ষিতা মহিলাগণ নিয়ক্ত হইতে লাগিলেন।

কামালের নেড্ছেই বরাবর সকল কার্য্য পরিচালিত হইতে বাকে। তুরন্ধের কাতীর সরকার ১৯২৩ সনের ২৯শে অক্টোবর তুরন্ধকে একট রিপাবলিক বা সাবারণতর বলিরা ঘোষণা করেন। তবন কামাল পাশা ইহার প্রেসিডেন্ট বা সভাপতি পদে বৃত হন। চারি বংসর পরে ১৯২৯ সালে ১লা মধ্যের তিনি প্নরার সভাপতি নির্বাচিত হইলেন। রভ্যুকাল পর্যন্ত (৯ই নবেধর ১৯০৮) কামাল এই পরে অবিটিড হইলেন। ১৯৩৪ সনের ভিসেবর মাসে তুরন্ধে সরকারীভাবে আর একট পরিবর্ত্তন সাবিত হইল। কামাল পাশা পারিবারিক নাম 'আতাতুর্ক' এহন করিরা ইহার পর হইতে কামাল আভাতুর্ক বলিরা পরিচিত হইলেন। এই নিরম অহুসারে ইশুরেজ পাশা ইশুরুত ইনোড় নাম এইন করেন। তুরন্ধের



আৰুনিকতৰ ক্লালভাক-বাৰ্টন ৱাক্পৰ

আপাষর সকলেই পারিবারিক নাম এইণ করিতে বাব্য। 'পালা', 'বে', 'একেডি', 'হকরেতলেরি' (বাহার ইংরেকী প্রতিশ্ব 'Excellency') প্রভৃতি প্রবীও বর্জিত হইল।

एर्मात मक्ति निर्वत करत देशांत वसमाना वृद्धित छैनत। কাষাল আভাতুৰ্ক ভূষি শিল্প বাণিক্য ভিন দিক হইতেই जुबक्दक अवष्ठे चार्निक देविनीम बाद्धे महिन्छ कविए यह-পরিকর ভইলেন। ভিনি ১৯৩৩ সলে একট পঞ্চায়িক পরি-कब्रमा चर्याशे कार्या चावक कविवा त्यम । अ कथा गरव यना হইবে। এ বিষয়ে গোভিরেট ক্লিরাই বর্ডবান বুগে সকলের প্ৰএদৰ্শক হুইয়াছে। কাৰাল দেখিলেন, খদেশের কোন পরিকল্পনাকে কার্যাকরী করিতে হইলে প্রচুর বুলববের चारक । क्षि वर मुमरन मरमुरीक स्टेटन कि धकारत ? विरमी वर्ष अर्थ क्यांत मान शूर्व्य वह बाका पारीमका হারাইয়াছে, এবনও নামে কোন কোন হাবীন দেশ প্রকৃত পক্ষে বিদেশীর অর্থাস হইয়া পড়িয়াছে। কামাল চড়ুর बाचगैष्ठिक: छिनि चर्राब क्रम चर्रायात चाबीनका विगर्कन দিতে কৰমও রাজী হব নাই। ত্রিটেব, ক্রাল, ভার্সানী, বার্কিন যুক্তরাষ্ট্র, সোভিষেট ক্লশিরা প্রভৃতি রাষ্ট্রের সংস্থাতিনি বিভিন্ন সময়ে পারভারিক চুক্তিতে আৰম্ভ হইরা অর্থ আম্লানী করিয়া-ছেন। ইহার ফলে থেখের বনসম্পদ্ম শ্রীসোঠন বর্ত্তিত হইহাছে. क्षमाबाद्यवद देवन्त्रिम कौरम्यत बामर७७ वाकिश निवास्त ।

कृतरकत श्रीयकत ३३२८ जरम विविवय एव । देशव वृत्र विश्वादय পণভব্ৰ নীভিব্ন মৰো। ভবে আপাভগ্টতে ইহার বিপরীভই ধারণা হইবে। ভারণ সভ্য কৰা ৰলিতে কি. ১৯২৩ সদ হইতে ১৯০৮ সন পথাত কামাল আতা-पूर्वरे द्वार्थ्ड गर्व्यगक्त विरम्भ। ष्ट्रदाक बहे भीवकारमञ्जू मर्या 'বিপাৰলিকাৰ পিপলস পাট' নামে একট বাত্ৰ বাত্ৰলৈভিক ৰল হিল। ১৯৩০ সনে কামাল यात चल किश्विद्य चण अक्षे বিরোধী দল গঠনের অনুমতি धिशक्तिम । किन्न माना कार्या रेश शाधी रव नारे।

১৯৩৪ সনের ৬ই ভিসেম্বর গঠনভারের দশম ও একাদশ বারার পারবস্তুন সাবিভ হর। ইহার ফলে ভূরকে প্রাপ্তবস্তুদ্ধর ভোটাবিকার থাকত হইয়াছে। ভেইল বংসর ব্যুক্ত প্রভাক নর-নারী সদস্য

নিৰ্বাচনে ভেট দিতে সক্ষ। সংস্যাহের পক্ষে নিয়তং বরস বরা হইবাহে একত্রিশ। এবাকে আন্তে হির হর হে, নির্বাচিত সংস্যাহের মধ্য হইতেই প্রেসিডেট মনোমীত হইবেন। মেশগাল এলেম্লির পরবর্তী মির্বাচন পর্যন্ত তিনি এই পদে বহাল থাকিবেন।

ভূষভের রাজ্বানী আনারার শাসন-ক্ষেত্র অবস্থিত।
নেশন্যাল এসেন্ত্রি বা ভূকী ভাষার 'কার্ভর'-এর হতে রাষ্ট্রের
ভার ভত। প্রতি চারি বংসর অন্তর এক বার করিয়া সাবারণ
নির্মাচন হইরা থাকে। জনগণ 'সেকেঙারী ইলেক্টর' বা
নাবানিক নির্মাচক-নঙলী নির্মাচন করেন। এই নির্মাচকনঙলীর বারাই এসেন্ত্রির সদস্তগণ নির্মাচিত হন। 'শিপলস
পার্ট'র ননোনীত সদত ব্যতীত বিশেষ বিশেষ বিষরে অভিত্র
কোন কোন সহতও নির্মাচিত হইরা থাকেন। এই ভাবে
নির্মাচিত এসেন্ত্রির সহতগণ জনসাবারণের মধ্যে বিভিন্ন সমরে
সকরে বাহির হন এবং ভাহাদের অবস্থা সম্বন্ধে প্রত্যক্ত
ভালত। লাভ করিরা কেন্দ্রীর সরকারকে ভাহা অবগত
করান। এই প্রশে সরকার ও জনসাবারণের মধ্যে সংযোগ
রক্তিত হইরা থাকে।

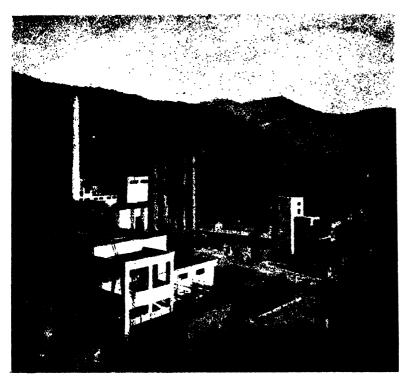
'বিপাৰ নিকান পিপলন পাৰ্টন' কৰ্মনাৱা সকৰেও এবাথে হুই একট কথা বলা আৰণ্ডক। পূৰ্বেই বলা ক্ইয়াছে, তুনন্ধে এই একটনাত বাক্টনতিক দল বহিষাছে। কাৰাত্য ১৯৩৭ সন্দেৱ এই কেকানাত্তি লয়কানী ভাবে ইয়ার ক্ষ্বানাকে লাল্য-



कार्य बर कार्डिक्टनव मन्त्रकी श्रुद्धाना काश्र्यक व मावनव ७ यहराकी

নীতির অন্তর্ভ করিয়া দইরাছেন। পিশদস পার্টর কর্মবারার পাঁচট অল—(১) জাতীংতা, (২) গণতর,(৩) ক্রমিকা ট্রতি, (৪) বর্মনিরপেক রাই এবং (৫) যানবাহন, শিল, বনি ও জনকল্যাপর্দক প্রতিষ্ঠানদমূহের উপরে সরকারী কর্তৃত্ব প্রতিষ্ঠা। বদা বাধেল্য, ত্রজ-সরকার বর্ত্তবানে এইটু পাঁচটি বিষয়ের প্রতি লক্ষ্য রাধিরাই সমুদ্র কার্য্য নিক্ষাহ করিয়া বাক্ষে।

ভূষত একট মাত্র হল কর্ত্বক শাসিভ ছইলেও ইহা জনসাধারণের সভিছার উপরই প্রভিত্তিত থলা চলে। কামাল
এই মলের প্রতিষ্ঠাতা। উছার মূলগত অভিপ্রার হিল দেশের
শিক্ষিত প্রগতিশীল জনগণের মতামত এসেম্রর মাধ্যবে
পরিব্যক্ত করা। ইহা অনেকাংশে সার্থক হইরাছে। কামাল
আতাত্র্কের রুত্যর পর উছার অহত্যর প্রবান সহক্ষী ইশ্ মেত
ইনোক প্রেসিডেক নির্কাচিত হন। তিনি পূর্বের বার
বংসর বাবং (১৯২৪-০৬) কামাল আতাত্র্কের প্রধান মন্ত্রী
হিলেন। ইনোক বর্ত্তরানেও সভাপতি রহিরাছেন। আবৃনিক
ভূরত্বে হক এতলেরি (Halk Evleri) এবং হক ওডালারি
(Ifalk Odalari) নামে ছুইট সংস্কৃতিস্কুলক প্রতিষ্ঠান আছে।
এই প্রতিষ্ঠান ছুইট শিশলদ পার্ট্র নির্দ্ধেশ্বে, পরিচালিত।
উত্তরেই শাবা সম্প্র ভূরত্ব কৃত্তিরা আছে। ইহান্তের ভাক
ছুইল প্রাপ্তবন্ধ্রের মধ্যে নিক্ষা বিভার এবং শিল্পাদি কর্প্রেরণা হোগান।



চতুর্বাধিক পরিকল্পনা অনুযায়ী জঙ্গালড়াক কয়লার পনি অঞ্লের বিশেষ উন্নতি সাধিত হইয়াছে

আধুনিক ভুৱস্ক বা ভুকি বিপাবলিক বলিতে প্ৰবামত: এশিরা মাইনর বা আনাটোলিরাকেই বুকার। তবে ইউ-रवारमञ्ज प्रक्रिय-पूर्व लाएक पूर्व-एवं मित्र अक्षे क्रूस वरमध ইছাল সঙ্গে সংযোজিত বহিবাছে। পরে, ইহার পরিবি আরও কিছু বাড়িয়া গিয়াছে। ১৯৩৯ সনের ২৩শে ভূম चारनक्वारक होत नक्षांक देशत चन्नपूर्क श्रेतारह । नवान সৰি ও অভাত চুক্তি অনুসাৱে দার্ছেনেলিস ও বসকরাস প্রণালী चक्रण मार्थमाळ जुदास्थर चशीन हिम, अरः जर्गन देशारक बिब्रम कृतिशाहे बाबात वावमा एव । किन ১৯৩६ मन्बर २०८४ क्नारेत मूख्य চু क्रियान এই चक्रन जुनस्कत भून व्यविकास चारम, देशांक मश्विष्ठ कवाव सर्वष्ट चिकाव ध माच करत । जुतस्त्रत चाकात (अर्ड जिट्टेन्स क्षात जिम चन् কিছ লোকসংখ্যা ১৯০৫ সনের সেলাস অভ্যায়ী যাত্র এক ভোট বাট লক। ১৯২৭ সনের সেলাগের উপরে শতকরা আঠার ক্ষম বৃদ্ধি পাইরাছিল। ১৯৩৫ সনের পরে গত বার বংসত্তে লোকসংখ্যা আরও বৃদ্ধিত হইরাছে। ত্রুগতের বিভিন্ন (राम्य याया प्रयास समाराज सामारिक।

এশিরা মাইনর বা আনাটোলিয়ার অভ্যন্তবাগ পাহাড়-পর্বাত সমাকীর্ণ। অবচ দেবানে ক্ষয়িত্রগঙ বিভর উৎপন্ন করা ক্ষতেহে। এবানকার ক্ষমকরণ একারণ বিশেষ কর্মাঠ ও অভিন্ন। ধীর্যকাল ব্যারা বন্দ্রকল কাটা ক্ষণেও পাহাড়-

পৰ্বতে পূৰ্ব ৰাকায় ইহা কৰনও निः (भिष्ठ एव मारे। সনের ৮ই কেজরারি একট আইন विविद्य कृषियां अवस्य वसक्रम সরকার বাস করিয়া সমূত্রভীরবর্ডী এবং সিরিরা ও ইরাকের দিকে ভূমি ক্রমণঃ সমভল হইরা সিয়াছে। কোণাও পাছাছ-পৰ্বত কোৰাও বন-জগদ. কোৰাও সমতল ভূমি---এ হেতৃ (प्रत्नेत क्वांत् द्वांत्व द्वांत्व বিভিন্ন রক্ষের। মধ্য-অবিভাকা ভূমিতে প্ৰধানত: ৰাজ্যত উৎপন্ন च्या भवाषित अवारम अहव। ভাষাক (ভুরকের প্রধান রপ্তানি ল্লব্য), ভূমুল, কিস্মিস, আভ রক্মারি ফল এবং অহিফেন উওর ও প্ৰিম উপকূলে কৰে। সাইলে-সিরায় ডুলা প্রচুর উংপন্ন হইভেছে। সরকারও ইছার চাথে বিশেষ উৎসাহ দেৰাইভেছেন। অঞ্জে পুর্ত্তকার্য্যের জ্ঞা সরকার मदनारशाम इदेशारचय । प्रक्रिन-

পূৰ্ব্ব অঞ্চেপ্ত চাষ্ণাস হইয়া থাকে, ভবে এথানে তৈলগনি আবিষ্কৃত হওয়ায় ইংগার ফ্রুভ উন্নতি অবঞ্চাবী। এই প্রসঙ্গে আন্ন একটি ফ্রাও বলা আবশ্যক। তুরত্ব সরকার ১৯৪৫, ৭ই জুন ভ্রিসংক্রান্ত একটি আইন পাস করাইয়া লইরাহেন। এই আইন বলে ভ্রিহীন বা বল-আয়ী চাবীর মধ্যে ভূমি বক্টনের বাবস্থা হইয়াছে।

এ তো গেল চাববাসের কথা। ভ্রত্তের থনিক প্রবাসর্ব্রের বব্যে কথলা, কোমিরম, ভাম, লৌহ, লিগনাইট, সীলা
ও লভা প্রবান। রিপাবলিক প্রভিত্তিত হইবার পূর্ব্যে এ সমভ
আহরণের বিশেষ কোম বাবহা ছিল না। কলালভাক করলার
থনি হইতে ১৯২০ সনে বে করলা পাওয়া সিরাছে, ১৯০৮ সনে
ভাহার অভত: চারি ওব অবিক উভোলিত হইরাছে।
১৯২০ সনে ভ্রত্ত হটতে কোমিরার রপ্তানির পরিষাধ
বার চৌম্রিশ শত টম, ১৯০৭ সনে এই রপ্তানির পরিষাধ
বাভাইরাছে এক লক্ষ বিরাম্নই হাজার টম। মুভরাথ
ইহা হইতে ঘতাই বুবা বাইতেহে, রিপাবলিক ছাপিত
হইবার পর ভ্রত্তের বৈবেশিক বাবিল্য অভি ক্রভ বাভিরা
চলিরাছে। বভ্রতঃ প্রেটরিটেন, ইটালী, ভার্মানী, ক্রাল,
মার্কিন র্ক্তরাই, সোভিরেট প্রশিরা, ভালাম প্রভৃতি বেশের
সলে বিভীর মহার্ত্রের পূর্ব্যে এবং এমন কি এই বুভের মরেও
বাবিল্যক আ্বান-প্রদান অপ্রভিত্তে ভাবে চলিতে বাতে।

ডুৱন্ধ কৃষিপ্ৰধান খেল, ইছার চারি-পঞ্চাংশ অধিবাসী ভবির উপর विर्धवनील : ভৰাপি বৈদেশিক বাৰিক্যের বিপুল সভাবনা ছেখিয়াই ৰাভাত্তৰ্ক দেশের শিল্প-সম্পদ র্ডির দিকে विध्यक्ष कादव सकत (प्रमा 1 3500 সৰে ভূৱস্ব-সরকার একটি পঞ্-খাৰ্ষিক পত্ৰিকল্পনাধারা দেশের এই শিল্ল-সম্পদ আহরণ ও রুছি बार चर्नी जिंद मिक स्टेट भरमन्द्रक वज्ञन्त्रन्तं कविवाद अक्ष कर्दन । ১৯৩৮ भरमक ये जन्हे উদ্দেশ্তে একট চতুৰ্বাধিক পরি-কল্পনা করা হয়। বিভায় বারের **এই পরিকল্পনার মুল উ**দ্দেশ্য ছিল ক্লফ্লাগর তীরবর্তী অসালভাক কমলার ব্নি অঞ্লের উরতি-भावन अवर ১৯৩৯ সলের সেপ্টেম্বর মাদ নাগাদ ঐ স্থান হইতে প্রায় এক শত মাইল ভিভৱের দিকে কারাবাকে একট লোহ ও कारवामा जानम। **ইম্পাতের** 

ক্ষালভাক ও কারাবাক রেল হারা এক্ত হইবাছে। বঙ্গণাতি ও অভাভ বৃহৎ শিল্পনির্দাণে এই কারণানা ভ্রম্থে একট প্রধান হাম অধিকার করিরা আছে। ভ্রম্ক-সরকার ১৯৩৭ সনে খনিজ ক্রব্য আহরণ ও উর্বাত সম্পর্কে একট ত্রি-বার্ষিকী পরিকল্পনা অধ্যারী কার্যা আরম্ভ করেন। এই উদ্দেশ্য সাধনকলে 'এট ব্যাক' নামে একট সরকারী ব্যাকের উপর ভারিত্তার দেওরা হয়।

ইতিপূর্কা ভূরকে ছানান্তরে যাতারাভের বছাই অপ্নবিধা ছিল। রিপাবলিক প্রতিষ্ঠিত হইবার পরে গবর্গনেন্ট এদিকে সবিশেব তংপর হন। ১৯২০ সনের পূর্ব্বে ভূরকে বছ রেললাইনের মধ্যে বার্লিন-বাগনান রেলপথের অংশবিশেষ মাত্র ছিল। এলিরা মাইনরের অভ্যন্তর ভাগেও ইহার কিছু কিছু লাবা। ছিল বার্ট, কিও ১৯২০ সনের পরেই ভূরকে রেলপথ বর্গেষ্ট বিভূতিলাভ করিরাহে। বার্লিন-বাগনান রেলপথ বোদাল পর্ব্যন্ত পৌহার ১৯৪০ সনের মার্চ্চ মানে। তিন মান পরে ভূম মানে (১৯৪০) ইহার নির্দ্ধাণ-কার্ব্য সমান্ত হয়। এই রালেই সর্ব্যপ্রম বাগনান হইতে ইভাত্ন পর্ব্যন্ত রেলগাড়ী বাতারাত ক্ষর হয়। রেলপথ বিভারের কলে পূর্ব্য-পান্তির, উভর-ক্ষিণ—ত্রকের বিভিন্ন অঞ্চলের মধ্যে বর্ত্তরানে গ্রমাগর্য সভরপর। ভূরকে রেলপথ বিভূতিলাভ করিলেও লাধারণগন্য রাভা কিও তেমন প্রসারিত হয় নাই। ক্ষুসারর ভার হুইকে ইরাবের নীমা, পর্বাত্ত একট রোটন চলাচলের



আহারার মিকটবর্তী কিউবাক বাঁধ

রাভা নির্দ্ধিত হইরাছে। মধ্যপ্রাচ্যের সলে সংযোগস্থাপনে এই রাভাটর গুরুত্ব সম্বিক। ভূরক্ষের অভ্যন্তর ভাগ রাভাষাট-বহুল করিবার উদ্দেশ্যে একট দল বংসরের পরিকর্মনা করা হইয়াছে।

কিছুকাল যাবং আন্তর্জাতিক অবহা বিশেষ স্থবিবাদনক বিবেচিত হইলেও, সমর-শক্তি বাছাইতেও ভূরত্ব বিরত হয় নাই। এবানে ১৯৪২, ২২শে জাহুরারীর আইন বলে প্রত্যেককে তিন বংগর হল ও নৌ-বাহিনীতে বুছবিদ্যা শিবিতে বাধা করান চলে। বিগত মহাযুদ্ধের সময় অনুস্ব বিশ লক্ষ লোক বুছ-কার্বোর হল ভাল করা চলিত। কুজার, ভেটুরার, গানবোট, মাইন সুইপার প্রভৃতি লইরা নৌ-বহর গঠিত। এবানকার বিবান-বাহিনীও জন্মশং বেশ পুই হইরা ইটিরাতে।

ত্কি রিপাবলিক প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে বাল পঁচিশ বংসর।
একটি লাভির জীবনে এই সমষ্ট্র অভি অর। কিছ এই বর
সমরের মধ্যে ভ্রম্ক পুনিরন্তিত পরিকলনাগ্যামী একটি
সম্বাধিশালী ভরুত্পূর্ণ রাপ্তে পরিপত হইয়াছে। বছেশের
সম্বাধিশালী ভরুত্পূর্ণ রাপ্তে পরিপত হইয়াছে। বছেশের
সম্বাধি বিদেশীকেও নানা ভাবে আরুই করিয়া বাকে। কিছ
প্রচত্ত্র ভ্রম্ক-সরকার সকল অবহাতেই স্কীরত্ব অন্ধ্র রাখিতে
সকলকার হইয়াছেন। প্রথম মহাসমরে ভ্রম্কে কিরপ
নাক্ষেল হইতে হইয়াছিল আরতেই বলিয়াছি। কিছ বিভীর
মহাসমরের বব্যে ভাহার ভূটনীতি সকলকেই চমংকুত

কৰিবা বিবাহে। আৰ্থানী ও সোভিৱেট কৰিবা এবং ত্ৰিটেন তথা বিত্ৰপভিপুত্ব ও সোভিৱেট কৰিবাৰ বিভালী—এবাবে কত কি ব্ট্ৰা গেল। কিব ভ্ৰত ত্ৰিটেন, আৰ্থানী ও সোভিৱেট কৰিবাৰ সংল সন্ত্ৰীতি প্ৰাৰ অটুট বাধিবাই চলিবাহিল। বাজ শেবেৰ বিকে আৰ্থানী ও আপানেৰ সংল বিত্ৰতা পৰিবাহ পৰ্জক উভৱেৰ বিক্ৰমে সে বছ খোষণা কৰে। কিব ইয়াভে

ভাষার ববং লাভই হইরাছে। বিজ্ঞানিকপুঞ্জের নিকট ভূরছের বান-মর্থাদা বাভিরাই চলিরাছে। ভারত আদ বাবিকার লাভ করিবাছে। আভ্যন্তবিক ও বৈদেশিক সকল বিকই ভাষার পুনর্গঠন অভ্যাবশ্যক। আদ ভূকী রিপাবলিকের প্রথম বুপের বভ ভারভবর্বের পুনর্গঠন-কার্য্যে হানীর নেতৃত্বক এবং ভননাবারন উভয়কেট যথের মনোবোদী চউতে চইবে।

## শৈবাচার্য্য আপ্লার

#### 🗬 ননীগোপাল চক্রবর্তী

ভারতে মুগে মুগে এক একজন বস্থাচার্য্য ভাবিভূতি দ্ইরা क्षरत्माञ्चर हिन्दू-त्ररङ्खियाता त्ररत्रक्षण कतिशादव । हिन्दूत का शैव कार्यवानव मृत्य विश्ववाद वर्षकार्यन । देविक अवर भौवानिक कान एकेएल कावरक प्रश्नावान्त अक अक्षम অবভার পুরুষ অন্মন্ত্র করিয়াছেন। সভার ঐভগবান ৰলিয়'ছেন-ৰাৰ্শ্বিকের পরিজ্ঞাণ ও চুরুভের বিনাশসাধন করিতে এবং ধর্মবাজা ছাপন করিতে হবে হবে আমি অবতীর্ণ হইরা বাকি। এই বে ভগবানের ত্রীরবনি: হত পাবত वापे देश नर्सकान, भर्माएन अवर नर्मालाएक बार्ट देखाविछ হইরাছিল। জবং পরিবর্ত্তনশীল। শিক্ষা, সভ্যতা এবং সংস্কৃতির আদর্শের পরিবর্ত্তমে ভগতের ভাবধারাভেও নামা বিপর্বায় উপপ্রিত হয়। কিছু অতীতের সাধনার ভাববারাকে অবভার-পুরুষপৰ বিশ্ব বিশ্ব শীৰ্মালোকে সঞ্চীবিভ করিয়া থাকেন এবং चित्रव कोनाल वर्षवात्मद छैन्यान क्र बनाम क्रवम। অনাগন্ত এবং অতীভ মুদের সেতৃবন্ধ নির্মাণ করিয়া ইঁছারা ভগতের ভল্যাণময় পথ প্রনিধিষ্ট করিয়া দিয়া থাকেন।

দাকিণাত্যে লৈব এবং বৈক্ৰাচাৰ্য্যণ প্ৰবৃত্তিত বৰ্দ্ধ প্ৰাবিকী সংস্কৃতি নামে পৰিচিত। দক্ষিণ ভাৱতের আব্যাদ্ধিক তুমি আৰও এই কৃষ্টি বৰ্দ্ধ-দৰ্শন দাবা সঞ্জীবিত বহিবাছে। মাণিক-বাচণর, সৰ্ভৱ, বাইণ, আধার সুক্ষরার প্রমুখ লৈব সন্ন্যাসীদের প্রভাব মহাবন্ধীপুরুত্ব কাঞ্চীর অপরূপ হাণতাশিরকলাপূর্ণ ঠি-বন্দিরে রূপান্ধিত কৃষরা আরও আন্ধ্রকাশ করিতেছে। নাধারণতঃ পরব রাজ্ত্বের কাল ইন্তীর তৃতীর শতক ক্ইতে ১০৭ অব পর্যন্ত নির্দিশ্বিত কৃষরা বাকে। আদি লৈব কবি সম্ভৱ এবং আধার ব্ব সন্তব ইন্তিয় সন্তব শতকের মব্যভাগে বিরাজ করেন। অব্যাপক কুল্বর্ষ্ পিলাই বলেন—"The opening of the seventh century is the latest period that can be assigned to Sambhandar." সুক্ষরার সভবতঃ ইন্তান করেন শতকে বাস করেন। ইন্তান করেন ভাগের বাবিত্ব বাস করেন। ইন্তান করিতে বাস করেন। ইন্তানে ক্রিকিড কুলাই বর্দ্ধন্তে শান্তরাজ ব্যব্তবের বাব বেশ্বিতে পান্তরা বার।

সিংছলের রাজরত্বাকরী পুথকে তংকপ্রক সিংহলীদের শৈববর্গ্দে থীকিত হইবার বিবরণ পাওরা যার। ইপ্রিয় নবম শতকের
শেষভাগে সিংহলে এই বর্গ্ধ-প্রচারের অভিযান সংখটত হয়।
পাতুরাক তিরুমল নায়েক মাহুরার মন্দির নির্মাণ-কার্য্যে যথেই
সাহায্য করেন। এই বিখ্যাত মন্দির প্রতিষ্ঠার মূসে ংহিরাছে
উক্ত শৈবাচার্য্যগণের ঐকাভিক সাধনা। এই মন্দিরতে ক্রেম্ন
করিয়া শৈব ধর্ণন সমস্ভ ভারতে বিভাব লাভ করে।

শৈব সন্ত্যানী আপ্লায় কুজ্ঞালোর জেগার থিক আয়ুর এনমে বেলাল-পরিবারে জন্ধন্তন করেন। পিতার নাম পুনলানার এবং বাতার নাম বাধিনিয়ার। ইহার জ্যেষ্ঠা ভরীর নাম বিলপ ববিলার। শৈশবে আপ্লার মাকলনীকিয়ার নামে পরিচিত ছিলেন। প্রবিত্তবাশা শৈব সন্ত্যানী সম্বন্ধ উহাকে আপ্লার বলিরা অভিহিত করেন। সাবারণ্যে এই মামেই তিনি পরিচিত। পদ্ধবরাজের সৈভাব্যক্ষ কালিপ্লহাইয়ারের সহিত বিলপ্ ব্যবিহারের বিবাহ-সম্বন্ধ ছির হয়। কিছ কুর্জাগ্যবশতঃ পরিপর-অন্তর্ভান সম্পন্ন হইবার পূর্বেই কালিপ্লহাইয়ার কোন একট ব্রুক্তে নৈত পরিচালনাকালে প্রাণত্যাগ করেন। এই সমন্ধ উচ্ছাদের বাতাশিতাও পরলোকগ্রন করেন। বিলপ্ ব্যবিহার পতির সহিত সহ্বরণে প্রাণত্যাগ করিতে বনহ করেন। কিছ কমির্চ লাতার অসহার অবহা শ্বরণ করিয়া তিনি এ সম্বন্ধ হুলৈ বির্ভুত্বন।

ভনীর ভড়াববাবে আসার ক্রমে বর:প্রাপ্ত হইলেন।
লৈলব হইভেই ধর্মবিবরে তাঁহার প্রগাচ অস্থরাগের পরিচর
পাওয়া বার। এই সময় পরবরাজগবের পৃঠপোষকভার
ক্রেমবর্ম ছক্মিণ-ভারতে ব্যাপকভাবে প্রচারিত হইরাহিল।
আগার ক্রেমবর্মে বীক্ষিত হব এবং শীমই ক্রেমবর্মপায়ে
আগার আম অর্জন করেন। তিনি জৈন এবং বৌর সংস্কৃতির
ক্রেম পাটলীপুরে গমন করেন। তথাকার ক্রেমবর্মবিলমীরা
ভদীর পাতিত্যে রুম্ম হইরা তাঁহাকে আচার্ম্য-পরে বরধ
করেন।

क्रिकं जाणात्र विरुष्ण शयन अवर श्वयदर्व शोक्कि श्रेरोह

সংবাদে বেলাল-কুষায়ী ৰশাহত হইয়া পড়েন। ভ্রাভার অগহার অবহা সরণ করিরা ভিনি সহবরণে ৰাৰ দেই ভাভা বিহত হইতে বাবা হৰ ছহছের প্রতি কিছুয়াত্র লক্ষ্য না করিবা তাঁহাকে পরিক্যার ভৱিল। সংসাহে তাঁহার আর কিছবাত আকর্ষণ রহিল না, ভিনি স্থাসিনীর জীবন যাপন করিতে মন্থ করিছা क्ष्रिनय भगीव **छोदवर्डी देनव मन्त्रित विक्र चाविकारे**टि गयम ভিনি মনিয়ে ধেৰভাৱ সেবাপুৰার আছনিয়োগ करतन। श्रवा-चर्छनात बाागुण पाकिरण कि श्रेरत जिनि সর্বাধা ধ্বপ্রত্যাপ লাভার সুষ্তির বল ভগবানের চরণে প্রাণের আকৃতি কানাইতেন। তাঁহার আকৃত প্রার্থনায় দেবাদিদেবের আসম নভিল। এক আক্ষিক ঘটনার আলার চৈতভের উদ্রেক হইল। হঠাৎ ভিনি পিতৃপুলে আকাম হইরা পঢ়িলেন। ভিনি বেদনার এরণ অভিভূত হইয়া পছিলেন যে ভাঁছার মনে च्हेन युक्त चनिवार्या । देवन क्रिकिश्मकारनद अवख क्रहे। वार्ष হইল। যে খেহময়ী ভয়ীকে ভিনি হাছিয়া ভাগিয়াহিলেন এই कौरन-मुहात महिकार डाएावर क्या डाएाव मान पहिना। ভিনি ভগ্নীকে তথার আনধন করিছে লোক প্রেরণ করিলেন। विशव विश्वाद छोड़ादक बहे मार्च जरवान (क्षेत्रव क्षित्रक---'আমি কোন কৈনবৰ্বাবলমীর মুধদর্শন বা কৈন-অধ্যুষিত প্রদেশে পদার্থণ করি না।' আগার ভরীর ইঞ্চিত বুঝিতে পারিদেন। নিশীৰ রাজির অভকারে কৈন সল্লাসীর পরিক্ষ পানপাত্র ও বয়ুরপুচ্ছ প্রভৃতি ভ্যাগ করিবা বদেশ অভিহুবে ভিনি যাত্রা করিলেন। একে রোপজীর্ণবেছ ভার উপর দীর্ঘপর। चाबाद कान क्षकारत खाच नतीरत चत्रीत निकृष्ठे छेनश्चि হইলেন। তিনি জোঠার পদপ্রাত্তে দুটাইরা পড়িয়া কাতরকঠে বলিলেন,'প্ৰিয় ভয়ী আমার, আর আমি রোগবল্পণা সহু করতে পাৰছি না। তোষাকে এবং আৰাদের নিজৰ বৰ্ষ ভ্যাপ করে আৰু আৰি বিৰ্ণ্মী হয়েছি। আনার সময় অপরাৰ মার্কনা কৰে আমাৰ বাঁচাও।' ভাভাৱ শোচনীৰ পৰিণভিতে विनव वर्षशाद अव्य नवत्व कृतिष्ठ शादिरम्म मा । मनिव হইতে পৰিত্ৰ হল:কণা দইয়া আতার সলাটে যাবাইয়া विटलम । अभीत जारमान मन्दिर निया रमनाविरमान मुखित সম্বাদে ভক্তিভারে ভূবিভাগে সুঠিত হইরা আকুল প্রাণে প্রার্থনা করিলেন। প্রার্থনাশেষে ভাছার সর্বাচের বেদনা যেন সম্পূর্ণ রূপে চুর হইরা গেল। এই উপলক্ষে তিনি বে সমস্ত ভোত্রগাণা হচনা করেন ভাষা ভাষিত সাহিত্যে এক অপ্রর্জ অবলান।

প্রবরাজ করত বৈদ্যবর্গাবদরী হিলেন। আগারার বৈদ্যবর্গ পরিত্যানে তিনি ভরানক তুছ হন এবং ওাহাকে তংগনীশে আনরম করিতে সমৈত বঙ্গীকে প্রেরণ করেন। রাজাকে ঘনতে আনরম করার উদ্দেশ্তে আগার বল্লীর সহিত গমন করিলেন। সেবানে তিনি অশেব লাভিত হইলেন। ভক্ত প্রক্রানের ভার ভারাকে বিভিন্ন পরীক্ষার সন্থান হইতে হয়। রাজাবেশে ভাঁহাকে অসভ চুনীয় নব্যে নিক্ষেপ করা হইল। আর একবার উত্তাল সর্জে ভাঁহাকে কেলিরা বেওরা হইল। কিন্তু ভাল্যবেল ভগবান ভাঁহাকে এই লাহনা হইতে রক্ষা করেন। পরিপেবে পরবরাজ বীর অন বুরিজে পারিরা আগারার নিকট করা প্রার্থনা করিলেন এবং ভংকর্জুক শৈববর্গে দীক্ষিত হইলেন। ভিনি সমভ কৈন মঠ-মন্দির বংগে করিরা ঐ সমভ উপকরণ রারা এক অপরূপ শৈব মন্দির নির্মাণ করেন।

প্রাপ্তক ঘটনার পর আপ্পার ভরীর সহিত কিছুদিন বাস করিব। তীর্ণজ্ঞবনে বাহির হইলেন। তিনি একে একে চিদাধরম, শিবালী, বিশ্ব অরোর, শাল্পুকালোর প্রভৃতি প্রসিদ্ধ লৈব তীর্থ দর্শন করেন। জীবনের অবলিট্ট কাল তিনি পাল্পুকালোরে অতিবাহিত করেন। এইবানে সহতর ও সম্বাধরিক অভান্য শৈবাচার্বপন উচ্ছার সহিত সাক্ষাং করেন। সহতর এবং আপ্পার প্রবায় শৈব তীর্থ দর্শনে বহির্গত হন। জনে উত্তরে বেদারণ্যমে উপনীত হন। ইহা তাঞ্জোর জেলার অপ্পরত। এবানে একটি প্রাচীন মন্দির ছিল। ইহা সর্জ্বহা অর্পনত বাহিত। কবিত আছে, পূর্ব্বে বেদগন এবানে আসিরা-শিবের পূলা দিতেন। কিত বহুদিন বাবং ভাছারা আর পূলা করিতে আনেন নাই। সহতর এবং আপ্পার উত্তরে শিবের ভব-পান করেন। কলে মন্দিরদার উদ্বাচিত হয়। কৈনবর্বের প্রপায় এবং বেদ উপনিব্রের প্রতি লোকেয় অপ্রাপহীনতার নিয়র্শন এই উপাধ্যানে স্থিত হইয়াছে।

সধ্যत थ चाक्षातात मत्या चाल्य खड़ा-चान्यानात जल्लक বিদ্যমান ছিল। কৰিত আছে মাছবার পাঙারাক নিন্রেশর নেডুমারর সম্বরের প্রভাবে জৈনবর্দ্ধ পরিভ্যাপ করিয়া লৈখবর্দ্ধ এহৰ করেন। এই বিশ্ববার্ছা আগ্লাহার নিকট জ্ঞাপন করিছে ভিনি শিবিকারোছনে ভংসভাবে সমর করেন। ভভিপদ ভক্ত बरे मिनिका वर्ग कविदा नरेश यान । चात्राव छाराटक जानक-সম্ভাষণ জানাইভে অএসর হন এবং সম্প্রের জ্ঞাতসারে निविका रहमकार्ष (वान (वन ) अवस्त बाधातात वाजकरणत সন্নিকটে উপস্থিত হইবা আপ্লার কোৰায় জানিতে চাহেন। **উভারে আগার বলেন, 'এই যে আমি এবানে, আপনার** শিবিকা বছন ক্রিতেছি।' সংহর ভড়িছেলে শিবিকা स्टेटि चरंडर करिया केरिटिक चालियमशास्त्र चारक কৰেন। ভাষার ছই নমন হইছে আনলাক্র বিগলিত হইছে नानिन। द्वान चक्रक्विश कोयत्न नदमादास्य द्वाद जावर्ग देशांक कृष्टेवा क्षेत्रेवारक । किमि क्षत्र जानाजिक दनवा ৰাৱা পৰিডণ্ড নহেন, কাৰিক দেবাও ডাঁহার একাছ কাষা।

কৈলাদ পৰ্মত শিবের আবাদখুমি। এবানে শিব ও পাৰ্মতী নদী ভূগী প্ৰভৃতি অম্চরবৰ্গ সহ বাদ করেন। মুডরাং এই হান শৈবদের অভি পবিত্র ভীর্ব। আগার এই ভীর্ববর্শনমান্দে বাত্রা করেন। প্রথমেও জুংশিশাদার ভিনি

अकास जास रहेवा शिक्षान्य । अहे अवद साम्राह सारवही यहीह चौरव चर्यां किया किया विकास क्षेत्र क् नार्राम्य । अवार्य काहार काहे रहेरवरका एव-नार्वकी হৰ্ণবের আৰা পূৰ্ণ হয়। এ সহতে ভিনি বহু ভোঞ রচনা করেন। মরমী ভক্ত অধরের আলেব্য ইহাতে অলওভাবে কুটরা উটিয়াছে। আগ্লার রচিত ভোত্র-সাধা ভিন শতেরও অবিক। विद्याद्वारे नामक गुष्टक वरे नमष्ठ (काळ जान शारेबाटा। ভাঁছার রচনার অনেক হল:পতন বাকিতে পারে, কিব ভাষার সাবলীল গভি এবং গান্তীৰ্য ইহাকে মাধুৰ্যমভিত করিয়াছে। সভাষ্ শিবষ্ স্বন্ধরমের পূজারী ভিনি। ভাষার মতে পূলিবীর সৰ্ব্যৱ ভগবান বিৱাছিত। ভিনি অসীন-- ছিভি, অণ, তেভ, बक्द. (बाब नविकृष्डं छिनि विदाकित। छिनिरे स्ट्री-ছিতি-প্রলবের কর্মা। তিনি অসীয় হইয়াও স্থীবের মধ্যে দীলা করিতেছেন। কবি আপ্লার আব্যাধিক এবং আগতিক হাৰতীয় ৭টনার মধ্যে নটরাজের নৃত্যতীলার রস উপলব্ধি করিতেন। মহতী প্রজা অবাাছ-চেতনা এবং আলোর ৰুৰ্ভ প্ৰভীক হইলেৰ ভগবাৰ শিব। নটবাজের নৃত্যে পৃথিবীর পভিছেক লীলাবিভ হইরা উঠে। অজ্ঞানরণ ভিনির এবং পাপ নৃভ্যের গভিৰেগে দূরীভূত হইয়া বাকে। শিবনৃত্য সৰছে णः **चानक्**यात स्यातशामी वर्णम---

"In the Night of Brahma, Nature is inert and cannot dance till Siya wills it: He rises from His stillness, and dancing sends through matter pulsing waves of awakening sound proceeding from the drum; then Nature also dances, appearing about Him as Glory: The orderly dance of the spheres, the perpetual movement of the atoms, evolution and involution, are conceptions

that have at all times occurred to men's mind's: but to represent them in the visible form of Nataraja's Dance is a unique and magnificent achievement of the Indians."

—Art and Crafts of India and Ceylon

बहैदाक নৃত্যের এই বিগৃচ ভাংপর্য সহতে আগার

হিলেম সম্পূর্ণরূপে সচেত্য।

শৈবাচাৰ্য্য আগ্লাৱ সৰ্ববদা লাকলের ভার একট বপ্ত ব্যবহার করিতেন। তীর্বপ্রবদ্ধলৈ তিনি এই বস্ত্র-দাহায্যে মন্দির-গাত্রে উংপর বাস, লতা আগাছা প্রকৃতি পরিভার করিতেন। তাহার রচিত বহু ভোত্র-গাবার কৃষিকর্ম সহজীয় জ্ঞানের পরিচর পাওরা বার। তামিল প্রমিক-সন্ন্যাসীদের জীবনে ভাবরাজ্যের জ্ঞানের সহিত প্রবদিলের কর্মপরামণতার অভুত সংমিশ্রণ দেখিতে পাওয়া বার। দান্দিণাত্যে এবং সিংহলে আগারার যে সমন্ত প্রভার-মৃত্তি আবিদ্ধত হইয়াছে ভাহাতে লাক্সমন্ত্র দেখা বার।

আগার পাশ্কুকালোর প্রামে কীবনের অবশিষ্টকাল অভিনাহিত করেন। এবানে অবস্থানকালে তিনি চুইট পরীকার সম্মান্ত্রীন হন। এক দিন মন্দিরে সেবাকার্য্য করিবার সময় করেক বঙ হারক এবং বর্গ হঠাং তাঁহার নকরে পড়ে। কিছু এই সমন্ত অনুল্য রপ্পরাক্তিতে তাঁহার কিছুমান্ত্র লোভ হইল না। মন্দিরের নির্মিত সেবাকার্য্য সমাপন করিরা নির্মিকার চিছে তবা হইতে প্রস্থান করেন। আর এক দিন স্বর্গের অপারীরা সেবানে উপস্থিত হবরা তাঁহার চিছবিকার ঘটাইবার চেটাকরে। কিছু তাহাদের সমন্ত কৌশল ব্যর্গতার পর্যবস্থিত হব। কিছু তাহাদের সমন্ত কৌশল ব্যর্গতার পর্যবস্থিত হব। কিছে তাহাদের মহাপুরুষ রুষ্ণীর মোহকাল ছিল্ল করিতে সমর্শ্ হন।

अवारमरे वर्षाहार्या पाक्षात भविष्ठ व्यटन स्वरूपान करवम ।

## ছু'জনে বাঁধিব ঘর

ঐকল্যাণী সেনগুপ্ত

পলার সাথে ধেষণা বিশেছে

ক্রিমোহানা বাল্চর—
ভার বাববানে ভোনাতে আমাতে

হ'জনে বাঁবিব বর।
দিনের সদী না কুরাতে বেলা
ক্রিরে বার ভীরে ভেঙে বার বেলা;
ভূবি আমি শুরু রহিব একেলা

হেরিতে চাঁকের কর।

প্রভাভের রোদে ভরে ওঠে দিক, বাদুকণাখলো করে চিক্ চিক্, বিবোহামী চেট হেসে কিক্ কিক্ লোহাগে গলিরা পঙ্চে। গাড্ডিল ডাকে ওড়ে বেলেইাস

স্থাপরী পালে লেপেছে বাভাস

চৰা বোৱে কেৱে নয়ন উলাস চৰী আছে যান ভৱে। জীবভ বাসূচর হ'জনে বাঁবিব বর।

সভ্যাবেদার সরে দীপবানি
দেবাবে কুটারে কুটারের রানী;
নমিবে আঁচল গলে দিরে টানি'
তুলসীনক-তলে।
আমি চূলি চূলি কাছে আদি নীরে
দেবাবো যতনে অক্রভতীরে,—
বাহর বাবনে তহুবানি বিরে
কত কবা বাব ব'লে।
একাত বাল্চর
হ'জনে বাবিব বর।

ভারতীয় শর্করাশিলের এই অভাবনীর উর্ভির প্রধান কাৰণ ভাৱত সৱকার কর্ত্তক অভুকৃত অভুকৃত সংবক্ষণণীতি। ভাহা ব্যতীভ আহও অবেক্ওলি ওক্রপূর্ণ কারণ আহে। ১৯৩২ नामে विश्ववानी अर्थनिक नक्के स्वा स्वकाद वय-পাতি ও কাঁচাবালের দাব অভ্যত্ত কবিবা বাব , ইহার কলে ভারতীর শর্করাশির সহজেই কলকারধানার সাহায্যে উন্নতিয় পৰে অএসর হয়। ভাহা ছাড়া ব্যবসায়-ক্ষেত্রে সুযের হার নামিরা যাওয়ার পর্করা-ব্যবসামীরা নামমাত্র স্থাদে ঋণত্রহণ कविवा कनकावनानाव উप्रचित्रायन करवा। अरे वर्ष-मश्रदेश हित्यक कुनाएक हाथ. बान क क्रिकेवलरश्रामंत्र मार्गार्वा कन-সেচন ও সন্তাম হাইড্রোইলেক্ট্র ক শক্তির ব্যবহার সঙ্গ হয়। चुन् अवन्तिः देख्य भवनवाद-नावश् ७ हार्यव श्रुरवान-স্থবিধার কলে ভারতায় শর্করাশিল সহক্ষেই প্রসার লাভ করে। देन्निविद्याम स्थात देवक्रिकेटे अरे निरस्त अध्यात्राहरन অনেকটা সহায়তা করে। এই সকল কারণে ভারত আৰু পুৰিবীর মধ্যে অঞ্চম বৃহৎ চিনি উৎপাদন-কেন্দ্র বলিয়া পরিগণিত হইয়াছে। প্রায় ২৫ হইতে ৩০ কোট টাকার সুলবন এই শিল্পে খাটালো ছইভেছে।

ভারতীয় শর্করাশিরের ফ্রুড প্রসারের ফলে নানাবিধ সম্ভাৱ স্ট্র হুইয়াছে। ইকুক্তেরে আয়তন নির্দেশ করা, काडिबीए रेक् महरहार निश्वन कहा, काडिबीह मानिक ध क्फें।डेबरवर भारेरभण रवखा, रेक्ट्र ७ हिमित अवन ७ मुग्र निश्चन कता, रेकू ७ हिनिय मत्रवार वावशा निश्चन कता, अब সমস্য निश्चन कवा देजापि नामानिन निश्चन निश्चन-नान्छ। चावछ-मवकात्रक कविएछ स्ट्रेप्टिस । नर्करा-निर्वाद छैनवरे नवकावी मिरद्धार्यंत हाश नर्कारणका व्यक्ति । दक्कीय नवकाव रेकू व्यय-विकास अवर रेक्ट्रस पत ७ ७कम निरुद्धरनत कर আদেশিক সরকার ভাগিকে আইমকাছন তৈয়ারী করিবার নিৰ্দেশ দিয়া ১৯৩৪ সালে পুগারকেন करबन। मुक्क्याबरम जन्द निशाब ১৯০৮ मारम व्यक्त ক্ৰিট্ৰ অহ্ৰোদন্কৰে ইকু ও চিনির মূল্য নিয়ন্ত্ৰণ ক্রা হয়: এই ক্ষিটভে চিনি ব্যবসায়ী ও চিনির কলের মালিক ৰ প্ৰনিক সকল দলের প্রতিনিবিই ছিল। অভঃপর ইছু ७ किनिय अप-विकास अवर छेरलायम-वावश नियम्बादय अक আইনকাত্ম তৈয়ারী হয় এবং ভাষার ভতাববানের নিমিত বহ कर्षांदी निवृक्ष रव । प्रवकाती थात्रहोत चात अक्ष छेवारतन খনার ক্যাইরিক কণ্ট্রোল এট : উহাতে আহে----

- (क) हिनिब कन श्रीनिक नारेरान क्या ;
- (व) हिनिब करण रेक् अवनवाद निववन कवा ,
- (গ) খগার কণ্ট্রোল বোর্ড এট এবং এতভাইসাখী ক্রিট-সমূহ নিরোগ করা;
  - (व) देक्य गर्वनित्र पत्र वैविद्या (पश्वा ;
  - (६) रेफ्य विकास वासाय करा।

এইভাবে বিভিন্ন ব্যাপানে হতকেপের কলে সংকেই বহু সমজার সমাবান হইরাছে এবং ১৯৩৮ সালের পর হইতে ভারতীর পর্ববাশির বিশেষভাবে উংকর্য সাভ করিভেছে। ১৯৩৭ এবং ১৯৪০ সালে ভারতীর শর্কবাশির হুই বার ভরতর সকটের সন্থান হয়। ১৯৩৭ সালে আশা করা সিরাহিল যে ইকুর দর ক্ষনেই রৃষ্টি পাইবে; কলে ইকুর চাব নির্দিষ্ট
চাহিলা অপেকা অনেক বেশী বাছিলা বার। চিনির উংপাধনের
পরিমাণ ইছার ১২,৩০,০০০ টনে, কিছ চিনির চাহিলা হিল
১১,৫০,০০০ টন। এই অভি-উংপাদনের কলে চিনির বুল্য
ক্রিরা বার। অভি-উংপাদন, আভ্যন্তবীণ প্রভিবাসিভা, সাভের
অক্রের কলা পড়া প্রভৃতি প্রভিবোবের ক্ষা সুগার সিভিকেট
সঠন করা হয় এবং সুগার কটে, াল এটা পাস হয়।

১৯৩৭ সালে ভারতীর ধার্বের বিরোধী বে আওজাভিক্
লর্করাচুক্তি নিলার হর ভাহার কলে একমাত্র ব্রপ্তেক হাতা
ভার সকল দেশে চিনি রগুনীর অবিকার হইতে ভারতবর্ব
বাক্ত হয়। ইহার কর আত-উংপাদনের সময়েও ভারতবর্ব
মধ্যপ্রাচ্যে বা অন্ত কোন দেশে চিনি রগুনী করিবা লাভবান
হইতে পারে নাই। ১৯০৯-৪০ সালে ভারতবর্ব প্রার করেক কঞ্চ
টন চিনি বাহিরে রগ্রানী করিতে পারিত, কিও আত্রজাভিক্
লর্করাচুক্তির কলে ভাহা সভব হয় নাই। ইহার দক্ষর
১৯৪০ সালে ভারতীয় লর্করাশিল্পে এক গুরুতর সহটের
উধ্ব হয়।

এত বাৰাবিপতি সংস্তুত ভাৰতীয় শৰ্কৱাশিল ক্ৰয়োৱভিত্ৰ পৰে অঞ্চর হইয়া চলিয়াছে এবং আৰু ভাষা ভারতের বিতীয় রুখ্যম শিলে পরিণত ক্ইয়াকে। উচ্চ বিজয়কর वशास्त्रांत करण अवर क्योप ७ शास्त्रांचक अवकारवत মব্যে বুৰাণভাৱ অভাবে এই শিল্পে নানাপ্ৰকার বাধা-বিপতির সমুখীন হইতে হইরাছে: অভি-উৎপালন বা यब-ष्टरभाषम---- (काम (क्टबरे कावक-भवकाव रेकू 😻 हिमिब परवद कीमामा निवधरंपय यह द्याम खनिष्ठि नौष्ठि अधूनव्य करबन नारे। जबकाबी जाशवा शाहरण ১৯৪० जारण वाहिएब চিনি রঙানী করিয়া ভারতীয় শর্করাশির সহটের হাত হইতে পরিত্রাণ পাইত। ভরুপরি ভারত-সরকার বোলাওড় হইছে अनक्ष क्षक मिथ्य कविया (पश्चाय क्षकि वरमद्व व्याद ७८ नम हैन दोना ७५ चर्नार क्षाद २ (काष्ट्र 80 नम গ্যালন এলক্ষণ নট হইতেছে: এই এলক্ষল রাগাহনিক हिक्रिक्त देवसायक ७ द्वाबकाल निध-राज्याबीएव दिल्य কাৰে গাগিত।

ভারতীর শর্করাশরের খান বর্ধাশরের পরেই; তিনি
আমাধের অভতম প্রবান জাতীর সম্পদ। বাছগুণের কথা বাছ
দিলেও দেবা বার বে, এই শিধের হারা প্রার বেড় লক্ষ্য লোকের
ভেলব্যে ০০০০ আটস, সারেল ও ইঞ্জিনিরারিং এ্যাজুরেট)
জীবিকার সংখান হইতেছে। এই শিল্প শুবু বে বেশের অর্থ বেশেই রাবিভেছে ভাষা নহে, বরং বহু চারী, প্রবিক্ত ও
ব্যবসারীধের বিশেষ লাভবান করিভেছে। ভারতীর শর্করাশিলের সন্মুবে আছে বিরাট সন্ধাননা। ধারীন ভারতবর্বে ভারতীর শর্করাশিল্প বেশের ও সম্পের প্রভুক্ত কল্যাণ সাধন করিবে, ইছাতে সম্পেষ্থ নাই।

### আলোচনা

## "আগমবাগীশ ভট্টাচার্য্যের কালনির্ণয়্র" শ্রীদীনেশচক্র ভট্টাচার্য্য

এ বিবাৰ ড: সরকারের প্রবংট (প্রবাসী, প্রাবণ, ১৩৫৪, পৃ.
৩৮২-৫) পড়িলার। যে বিবরে জানের পরিসর সংকীর্ণ সে বিবরে প্রবং রচিত হইলে ভূল-আভি হওয়া অবশাভাবী। প্রবংশাভ ভূইট যাত্র ভূল সিভাভ অভি সংক্ষেপে বিরে আলোচিত হুইল।

১। ভদ্ৰগাৱের বল্লাচরণ প্লোকে জীহুকের বন্দনা বেশিবা ভ: সরকার ববে করেন "কুফানশ বৈক্ববন্তে দীক্ষিত ভাষিক ছিলেন" (পু. ৩৮২) এবং ভিনি পাঠকবিগকে লক্ষ্য করিভে राजन (व, क्र्यामान्यत वरनवरायत "मामधीन व्यविकारमरे दिक्व अवर अन्त्र्वारण नाककाववर्ष्कित्र" ( तृ. ७৮৪ )। मन्दीन चक्रा ७ डेड्डन्ट चानमरानित्मत वरम बाद ७०० বংগর যাবং বহুতর সম্রাভ পরিবারে ভরুত্তপে সন্মান পাইতে-ছেম। ভিনি ও ভবীর বংশবরণণ শক্তিমধ্রে দীক্ষিত ভারিক ইহা সক্ষমবিদিত সভ্য। ভষীর আভি গোণালময়ে দীব্দিত बाववाबटकर महिक काराव विद्यादकारिनी नवबीटन विवकान क्षक्रिक चार्ट ( नवहीश-विद्या, ३व नरवदन, गू. ३०८-४ )। এই সক্স ভব্য উপেঞ্চা করা অভি সাহসের কাল। ভাগ্নিকগণ काशास्त्र श्रीका-वश्च नवर्षः शासन कविवा बारकम देश वर्षि-প্ৰসিদ্ধ কৰা এবং "গোপৱেৰাত্ৰাৱৰং" প্ৰভৃতি বচন ইহার প্রিপোষ্ক। ভদ্রসার সর্ব্যসন্তাদায়ের বঙ সিবিভ একট "সংগ্ৰহ"-এছ, সন্ত্ৰণায় বিশেষের ছত লিখিত গোপনীয় গ্ৰছ নহে। এছনেহে পূল্পকার পূর্বে একাবিক পুবিতে আহরা এই (ब्राक्षे भारेबाबि :- खैक्कामक्यात्रेन-क्काठावर्शिवनः अस्र । ৰুঠ্যৰবীভশালাৰি বীরাধ্যাপর সাম্ভতস্থ সভবভ: ভিনি একট গোণনীয় এছও লিখিয়াছিলেন, ভাছার নাম "এডছু-বোৰিনী"-একট বাল ৰভিত পুৰি মহালাভা বতীল্লমোহন ठीकूरवय अध्यानाय दिन ( L. 281, अधायरक "क्कामण-विषिरक्ष्वा विव्वक्रिणः अञ्चलवाविक्षिण मरविद्यार्थ वक्रय---काक्ष হুইতে প্রস্থার সহতে কিন্তু নিঃসন্দেহ হওয়া বার না )। সর্বাসাধারণের ভার সিবিভ এতাে একুক্তবন্দ্রা রীভিসিদ আচার। কারণ, ভারিকদের আচরণ সকরে একট প্রসিদ্ধ वहम चार्ट, "चडःमाका विराटेमवाः मणवार देवकवा वणाः।"

বিভীয়তঃ, পুঞাদির নামকরণ অভীইদেবতার নামাত্রারী হইবে এইরপ কোন সর্কারতনিত নিরম নাই। হরং নিত্যান্বকের পূত্র বীরভক্র বৈক্ষনামবারী নহেন। পঞ্চান্তরে ন্যানারহভাগার পূর্বানকের একট বংশবারার (কৌলভানরহভ) পু. ১০) একটও শাক্ত নাম নাই। পূর্বানক ও উাহার বংশ বৈক্ষরের বীক্তিত নহে।

२। जानवरात्रेश्यद कानविर्ध ज्ञानीय ७ राष्ट्र संवाय-गार्यकः। व्यनावयद्यः वर्गायक्षिक अक्षे छेर् इडे ध्यान-भड़ी श्रेटको नार्थय अकाम करवम (Oxf. Cat., p. 95)---चवारा अच्छिन्निवानि ७ श्रीनाम नारे। चड काम বুলিত সংখ্যাৰে কিছা পুৰিতে আময়া এ বাবং ভয়সাকে পূৰ্ণানন্দের উদ্ৰভি পাই নাই। স্করাং একনাত্র বছবাসী সংকরক द्विता बरे छ्याक्षिछ 'चक्किं' खनात्वत पश्चित्र पीकात कराः ৰাহ বা। প্ৰাণভোষিণীতে ৱামভোষণের পিভাষকের সৰছে যে त्राक्षणाव चार्य--- "चरशूरबाच्छपूरवशरवः। नाव अकाचवृद्धिः"---ভজারা সহজেই "রবুনাণ" নাম পাওয়া বার। ভঃ সরকার কল্পনাশক্তির পরাকাঠা ধেবাইরা "নাধরাম অথবা রামেছ ভক্তনাৰ" (পু. ৩৮৪) নাৰ গিৰিতে বিশ্বনাত্ৰ কুঠাবোৰ ক্রেন নাই ৷ রামভোষ্ণের নামমালায় একট নিশ্চিত জহ আছে, গোপাল ও মধুখদন বিশ্বনাৰের পুত্র নছে, পর্যভ ছরি-मार्विद पूळा कादव, बहे लोगांग गकामन कुछ ( "गकामम" ष्टेगावि, गुषक् मात्र भरत्) प्रवृद्दः "छत्रवीतिका" बाह्य न्यक्षेत्रस्ट निविष्ठ चार्टः --- चात्रवयात्रैम(भोरळव एकियावना प्रकृषा ।

জ্ৰীগোপালেন বিজেন কুভেরং ভন্নদীপিকা। ( L 2:02) वायरणायन कामियायरक "नावायनीकृर" बदर (नानानरक "নিৰ্ণঃ"কার বলিয়াও জন করিয়াছেন। যুক্তিত ভন্তসাহে সারাবলীর বচনের উদ্ধৃতি পাওয়া যায় এবং "মির্ণর"কার গোপাল ভারপকাষ্য (কেবল প্রকাষ্য মছে) নিশ্চিতই ভিন্ন এবং পূৰ্ব্ববৰ্তী। উভঃ গোপালের পার্বকা দেবাইবার জুঙই সম্ভবতঃ मिर्नबकात्रक "तृष" भर्द कृषिङ कता हरेख ( সाहिखा-भविष्-পত্রিকা, ১৩৪৮, পৃ. ৪০-৪৪ জ্রষ্টব্য )। কুলপঞ্চীর প্রতি অপ্রকা এক শ্ৰেণীয় শিক্ষিত লোকের মজাগত ; অবচ এছলে মূল কূল-পঞ্জীতে কোনই ভুল নাই। বাদৰ চক্ৰবৰ্তীর "কুলশাল্লদীপিকা" ( २व गर, ১०১७, पृ. १० ) एरेटल बर्धन वस् नकल करवन---ভৰব্যে আনন্দ্ৰাৰ ও সাতৃ নাৰ আছে। উভৱই ভাকনাৰ কিছা রাশিশার বরিষা সাবঞ্চ করা বার। আহরা কিন্তু বে সক্ষ वारबक्ष कुलनक्षीय भूषि भश्यक् कविवादि छत्राया अक्षेत्र नास এইলপ নামনালা পাইয়াছি :-- ( অবিকল উদ্ভত ব্ইল ) "बानववानिव च्हे। पूर स्तिवाय च्हे। पूर वर्शक्य वाजन्ति पूर কালীয়াৰ ভটা পুৰু বৰ্ষাৰ ভটা পুৰু ক্লৱাম ভটা কুক্মক च्डे।° एविश्रनाव च्डे।° कृष्धनाव च्डे।॰। + + + ( क्र<u>जवार</u>बङ ৰাৱা )। ক্ষমকল ভটা পু ৱামলোচন ভটা ৱামভোলক বিভালভার রামশোভন ভটা॰ রামলোভন ভটা॰।" এই নাম-बानारे नर्साराक। विश्व, बागरणायग्रक कृतरे अवास बाहे এবং বৰুছদৰের উপাধিট লিপিবৰ হইরাছে।

লামতোমণের এছবচনাকাল ছইতে উর্জানী গণনালালা ভল্লানের রচনাকাল "১৬৭০ এটাকের নিকটবর্তী" বলিলা ডঃ

भवकात निर्वत कतिवास्यम अवर अवस्तात्व पृष्टकात महिक লিবিয়াহেন, "এছবানি বে সপ্তরণ শভাষীর বিভীয়ার্ছে রচিত ষ্ট্রাহিল লে বিষয়ে কোন সম্ভেছ আছে বলিগ্রা মনে হয় না।" কাৰণ, "এইৰণ কেত্ৰে ঐতিহালিকগণ পঁটিণ বংসৱে একপুত্ৰয পৰনা করিবা বাকেন।" (পৃ. ৩৮৫) ডঃ সরকার প্রভৃতি रकान काम बेलिशानिक बाकाबाक्कारण्य वर्गावनी स्टेरल्टे "একপুলবে ২৫ বংসর" গড়পড়তা ধরিয়া থাকেন, কিন্তু ভাষা च्यांच मरह। चावदा वदर कांवि क्यांमरच्य नाम वारमाव ৰাত্মণপতিত সমাজে কমিন্কালেও ২৫ বংগৱে একপুরুষ পাওয়া যায় নাই, আমাদের গবেষিত পভাবিক বংশমব্যে আমরা अक्री भारे मारे। ए: नवकारवद मछ दर अ स्टा अकास ভাবে আৰু (ব্যবিও তাঁহার বনে 'কোন সন্দেহ' নাই) ভাহা ঐবতীক্ৰৰোহন দত্ত দিবিত "কত বংসৱে 'একপুক্ষ' ধরা উচিত" প্ৰবন্ধ পাঠে (প্ৰবাসী, পৌৰ ১৩৪১, পৃ. ২৩১-৪৩) বুৰ। যাইবে। বদৰাসী সংকরণ ভন্নসারে ১৫৮০ শকের একট পুৰিব পাঠ পদে পদে উদ্বভ হইবাছে। ১৫৮০ শক ( ১৬৫৮-১ ৰীটান্দে) ড: সৰকার-বিণীত রচমাকালের পূর্বে পঞ্চে। ছভরাং, "পুৰিবাৰির ভারিবের পাঠে ও ব্যাব্যার ফট বাকা व्यमधर वा स्ट्रेट भारत" (भू. ७৮৫)। सम्बाजी अरक्तर्यक्र সম্পাদক বিলেম বর্গত পঞ্চানন তর্করত্ব মহালর। অভি ভূচ্ছ কারণে তাঁহার পাঠে ও ব্যাব্যার ফটর আবহা করা अभौडोम मटह ।

ভন্নারের রচনাকাল সবদ্ধে আমাদের বহুকাল সঞ্চিত উপকরণরাজি হইভে সারাংশ সংক্ষেপে লিখিভ হইল। বাংলার প্রায় প্রতি ভাষাণ-গৃহে ভন্তসারের পুথি ছিল এবং এবনও অনেক পাওৱা বার। এই সকল পুৰি পরীকা করিলে ভদ্রসারের পাঠে, প্রকরণে, পরিচ্ছেদ বিভাগে ও আয়তনে অভি বিশ্বরকর প্রভেদ পরিলক্ষিত হয়। আমরা চাইঞাম च्हेट अकड़े पूर्वि मध्यम् कविवाधिनाव, निर्मिकान अहे :---"ক্ষণাৰবৰভিন্দৌ চ ভচে মানে চ ভাৰ্গৰে। নিৰিভা পৃত্তিকা रेडर जैक्करब्रण-वीवला ।" अञ्चादा ১७०১ मक एव ( ১७७३ बै:, बन चर्र )---नानाव काम क्रम चार किमा छः नवकाव व्यवित्वम् । ১१२।১ পরে পুলিকা আছে, "ইভি ভয়-লারে বাবশঃ পরিচ্ছেবঃ," ১৮২।১ পত্তে "ইভি---আগবভড়ে बरवावनः পৰিক্ষোঃ " ১৩২।৩৩ পত্তে শুৰ্চমীনত্তা: ও "অৰ मनरवर्षकोषकाः" नाजवा यात्र । मनरवर्षको नृष्य हामैआरमय বাহিত্তে কুলাপি প্রচলিভ লাই। লেবড় ছানীর পূজাপটল ও অবক্ৰচাৰি অভুটিভচিতে এখনবাে সহিবিট ক্রিয়াছেন। भूखबार ১৬१৯ बैडास्यव द्वन्स्टि ख्वनावअङ् वाःनाव नर्स्क প্রচারিত হইরাছিল সন্দেহ নাই। পুরাচীন পুরির পাঠ বিলাইরা कुकानरम्ब बहना विवरत निःगमिष रथवा महेगाया गांभाव। আৰলা হুইট পুৰিৰ সভাৰ পাইবাহিলাৰ। । একটৰ লিপিকাল শ্মীয়াঘৰ শৰ্মণ: যাক্ষর শ্বীনরসিংহ বাচলতে: পুত্তক্ষিত্য।

শক ১৫৫৮।" তঃ সরকার নিঃসনিধ হইতে পারেন বে এবাবে তারিবের পাঠে কোন জট নাই। কারণ, নরসিংহ বাচশতি প্রবন্ধ নেবকের উর্ভ্যন নবম পুরুষ এবং উবার পুরু হইতে ৮-পুরুবের প্রায় প্রভ্যেকের জ্বলকার পূবি হইতে আমরা উবার করিবাহি। হংবের বিষয়, এই বৃল্যবান সম্পূর্ণ পুবিট উবার করা বার নাই।

বলীর-সাহিত্য-পরিষদে ভরসারের প্রাচীনভম পূর্বি বক্ষিত আহে ( ১৭৫১ সংখ্যক সংস্কৃত পুৰি )। ইহাতে "এবিভা" প্ৰকরণ হইতে শেষ পৰ্যন্ত পাওৱা বাব—অভিজীৰ্ণ, ফ্লটভ এবং ক্তিপর প্রহীব। পুলিকা এই :--( ১৩৪।২ পর ) "--- নৰ-वानैपच्छावांदाविदविद्यनादः नवादः । ७७वदः पकाचाः ১৫८८ ব্ৰীরাজীবলোচন শর্ম্বর্ণ: স্বাক্ষরং স্বপুত্তক । ব্রীসরস্বত্যৈ নৰো নম:।" ( জীৰ্ণ পুৰির পাঠে জ্লাট থাকা অগন্তৰ নতে; আমরা नावरत छः नतकावरक अरे पूषि भन्नीकात कर वहरताय कति । ) এই পৃথির প্রবাণ-বলে ভল্লনার রচনাকালের অধ্তন সীরা ১৬২৫ এ: নিঃসন্দেহে নিৰ্বন্ধ করা বাব । মুক্তিভ এবের সহিত बाह्य में जिल बाकिरमध बरे पूर्वित पार्क चरनक देववशा वृक्षे হর। "বরসংকার" প্রতি বৃদ্ধিত এছে "তৃতীয়" পরিছেবের শেৰে আছে, কিন্ত এই পুৰিতে "বিজীয়" পরিচ্ছেদের শেষে (७२।२ १४ ) पृष्ठे एव अवर वर्गनाव्येक्षकवर्गव (नर्म (०)।२ পত্র) পরিজেদ বিভাগ নাই। অর্থাং এই পুৰির মডে ৩ পরিছেদে এছ সমাধ। বৃক্তিত এছের বহুংগই পুৰিষ্ঠতে বাদ পঞ্চিয়াহে ।

ভশ্ননারের প্রমাণশঞ্জী মব্যে রাখন ভটের রচনাকাল ১৪১৫ শক (১৪৯৯-৪ ঝঃ) সুনিশ্চিত। "আগমকরফ্রম" গৌদীর সম্মাণারের অতি প্রামাণিক এছ। পূর্বাহলীর ১০।রপ্রামানগুছে রক্ষিত পুনি হইতে পরিচয়-প্রোক উদ্ধৃত হুইলঃ (১১১।২ পঞ্জ)।

"बानानीम्रनीएक्सो क्षणिक्नमिन्नः खैकनवायमाना, गानिमायान्ति नरवायवस्यपूर्णः बाद्यस्थक्यः। बौद्यकादक्यायिन्दर्भमिन्नः खैनरनायिकमामा

শাকে বেদা ( वि ) শক্তে মক্রগতরবাবৃত্তং যেন তত্তং । স্থতরাং ইবা ১৪২৪ শকে ( ১৫০০ এঃ ) রচিত। তত্ত্বসারে প্রীবিভা প্রকরণে একটি ব্যাব্যাবচন আছে, "অভার্যং, প্রঃশন্ধ-ফরাসাং বিতীয়-লোগার্কাবিত্যর্থঃ। প্রক্রাবিতি তত্ত্বকৌর্বী-কারঃ।" সকল পুরিতে পাওরা না গেলেও ইবা অবিকাংশ পুরিতে ( Oxf. Cat., p. 95 ) এবং ১৫৮০ শক্রের পুরিতেও আছে ( বলবাসী সং, পু, ৩৭৪ )। "তত্ত্বকৌর্বী" বৈবিল মহাণভিত "বেবনাথ তর্বপঞ্চানন" কর্ত্বক কোচবিহারাবিশভি মল্লবেন নরনারারণের ( ১৫৫৫-৮৭ এঃ ) সভার রচিত হুইরা-হিল। পুর্বাহলীয় ভভারপঞ্চানন গৃহত্ব হুইটি পুরি আর্বা পরীকা করিরাহি। একটি বভিত ( ১৫১ পর ), স্বারীপট্রলে ( ২৫০১ পরে ) তত্ত্বসারোহত ব্যাব্যাট বর্ষাবর্ধ পাওরা বার—"লোপার্কাং বিতীয়ানের প্রক্রমাং।" অপর পুরিট সম্পূর্ণ

(২০১ পদ্ধ, ০০।১ পদ্ধে উদ্ধৃত ব্যাব্যা আছে)। কলিকাতা ব্যৱেল এলিবাটক লোলাইটির পৃথিও প্রট্রব্য (J.E. 3?, ২১।২ পদ্ধ)। এছের বহু ছানে বল্লবের উৎকৃত্ত ভতিবাদ আছে এবং নামা পরিজ্ঞেদের পেবে পূল্লিকা বৃত্ত হয়। পেব পূল্লিকা এই— "ইতি সমস্প্রক্রিকারিরাক্ষান — মহারাক্ষাবিয়াক উপ্তি সমস্প্রক্রিকারিরাক্ষান — মহারাক্ষাবিয়াক উপ্তি সমস্প্রক্রিকারিরাক্ষান — মহারাক্ষাবিয়াক উপ্তি সমস্প্রক্রিকারিরাক্ষান — মহারাক্ষাবিয়াক উপ্তিপ্রক্রিকার আরুকে ক্ষিত্রালিক। " দেবনার ব্রহিত "মস্বকৌর্লীর উল্লেখ ক্ষিত্রালিক। " দেবনার ব্রহিত "মস্বকৌর্লীর উল্লেখ ক্ষিত্রাকার হত লক্ষ্যাক (Mithila Mss., II, introd., p. 4.) অর্থাং ১০২০ ব্রঃ। বুলা বার বার্তক্যে দেবনার মন্ধ্রের সভার আন্দেশ। এইবার্কিক প্রক্রিকার আছে "গ্রহাক আছে "গ্রহাকর আছে "গ্রহাকর আছে "গ্রহাকর ব্যাহাকে স্থাবিক্র ক্ষাক্ষাক্রিকার স্থাবিক্র ক্ষাক্রিকারিক প্রক্রিকার স্থাবিক্র ক্ষাক্রিকারিক প্রক্রিকার স্থাবিক্র ক্ষাক্রিকারিক প্রক্রিকার স্থাবিক্র ক্ষাক্রিকারিক প্রক্রের । তল্পক্রিকার ১০৬০ ব্রীরাক্ষেত্র প্রাক্রিকারিক প্রক্রেরীয়া তল্পক্রিকার স্থাবিক্র ক্রাক্রিকারিক প্রক্রিকার ভালার প্রিক্রাক্রিকার স্থাবিক্র ক্রাক্রিকারিক প্রক্রিকার ভালার প্রিক্রাক্রিকার স্থাবিক্র ক্রাক্র স্থাবিক্র ক্রাক্র প্রিক্র ক্রাক্র স্থাবিক্র ক্রাক্র ক্রাক্র ক্রাক্র স্থাবিক্র ক্রাক্র স্থাবিক্র ক্রাক্র স্থাবিক্র ক্রাক্র স্থাবিক্র ক্রাক্র স্থাবিক্র স্থাবিক্র ক্রাক্র স্থাবিক্র ক্রাক্র স্থাবিক্র স্থাবিক্র

ৰচিত হইবাহিল ববিলে ভয়গাৰের বচনা ১৫৮০ বীটাবের পূৰ্ব্বে কিছুতেই হব না—১৬০০ সনে ববাই বৃত্তিবৃত্ত। আনৱা, বাহুল্য বোৰে কুলপঞ্জী হইতে ইহার সমর্থক উৎকৃষ্ট প্রমাণ পরিভ্যাগ করিলাম। এই কাল নির্ণয়বারা হৈততের সহা– বারুলাধি অনুলক প্রবাধ এক ক্বারুই নিরভ হয়।

উপসংহারে আরৱা একট কুত্র বছবা লিপিবছ করিতেছি। তঃ সরকার রহুনাথ শিরোমণির অভ্যাহর-কাল (১৪৭৭-১৫৪৭ ইঃ) উল্লেখ করিবা তঃ বিভাকুরণের প্রধানিদ্ধ এছের বোহাই দিরাছেন, অখচ তিনি শিরোমণির কালনির্ণরে প্রবাণাদি বিচার কিছুই করেন নাই এবং জাঁহার উক্তির কোনই বৃদ্যা নাই। তঃ বিভাকুরণ অচ্যত চৌবুরী মহাশরের প্রবহু হইতে (সাহিত্য-পরিবং-পঞ্জিকা, ১৩১১, গু, ১-১২) নির্কিচারে ইহা প্রহণ করিরাছেন। আমহা বিচারপূর্কক শিরোমণির কালনির্ণরে নামাত চেট্টা করিরাছিলাম, তবে ভাহা বাংলা ভাষার (ঐ, ১৩৫০, গু, ১৩-১৬; ১৩৫০, গু ১-৩) প্রকাশিত হইরাছিল, ইংরেজীতে নহে।

### চরকা

( Leconte de Lisle হ'ত La Chanson Du Rouet ক্ৰিডাৱ ব্যাহ্ৰবাদ )

🗃 ফ পি ভূষণ রায়

(2)

চরকা প্রির বিত্র আমার---

ভূলোর পাঁকা বকের পাবা,

কোৰায় লাগে ভোমার কাছে

লোনার বোহর, ক্লোর টাকা।

ভোষার দেওর' সব কিছু বোর--

**बद्द, गृर, ज**ंक्शकन

ভোষার ভরে জীবন ভরে

সুৰের প্রোতে সম্বরণ।

চৰকা প্ৰিৰ বিত্ৰ আমাৰ---

ভূলোর শাঁকা বকের পার্বা,

কোৰায় লাগে ভোষার কাছে

সোনার বোহব, রূপোর টাকা !

( 0 )

চরকা প্রির বছু আবার

ভূলোর শাঁজ' বকের পাবা,

ভোৱের পাধীর সঙ্গে শুনি

গাৰ\$ ভোষাৰ খ্ৰা-মাৰা |

গাৰ, গৰালে, এীথে, শীভে—

কাপাস, পৰের হয়ভাল,

**हतक!-भारक हरणहे (वर्ष्** 

চরকা খোরে ঘূর্বিভাল।

চরকা আমার--বছু আমার

ু ভূলোর পাঁজা বজের পার্বা,

ভোৱের পাৰীর করে ভূমি

গাষ্ট ভোমার সুধা-বাধা |

(0)

চরকা প্রির বিজ আমার--

ভূলোর শীকা বকের পাবা,

কোৰাম লাগে ভোৰাম কাছে

লোমার মোহর, ক্লোর টাকা চ

শেষের দিনে বছু আমার---

७व वाटन चाचामित्रा

(महे भारबंद एवं स्वय स्वाब

वृहान्द्वत देखतीय ।

চরকা প্রির বছু আবার---

ভূলোৰ শীকা ৰকের পাৰা,

কোৰাৰ লাগে ভোষাৰ কাছে

নোনার বোহর, রূপোর টাড়া 🛊

# ধর্মের উপর আধুনিক যুগের আক্রমণ

প্রীউমা সেন

केलिश्निक विवर्धायत क्षक दूर्य-मिक्स्य चायतः मह्पदिल । অগরোৰ ও বিজ্ঞান, অভৃত্তি ও বেদনা সর্বাত্র পরিক্ষুট। বিজ্ঞোহের আবাতে পৃথিবীর রাজনৈতিক, অবনৈতিক ও সামা-किर कीयम जाक विश्वशंक। श्रुवाकन विवि-वावकात माक्र्य আর ভৃত্তির সভাদ পার মা। পুরাতন আদর্শে ভাহার বিখাস ক্তৰণৰ শিবিল হইবা প্ৰিতেছে। তাহার অৱরে অবনৈতিক বিপৰ্যাৰে ও বিভানের প্রসারে অপরিসীয় সন্দেহ ও অবস্থ क्षिकां भा भिवाद । केक्षद्वत चानाव श्रृताल्यत विदक् वात বার ভাকাইয়া সে হইভেছে নিরাশ ও ব্যর্থ। এই নৈরাল ও বাৰ্থতা ভাষাত্ৰ মনে বোগাইভেছে প্ৰবল অনৱোয় ও বিল্লোছের উপাধান। এই মনোভাবের দক্ষম সে পুরাতনকে ভালিয়া-চরিয়া দুত্রমতে সৃষ্টি করিতে ব্যাকুল। এই স্ক্রির আকাজা অৰ্থনৈভিক ক্ষেত্ৰ, সামাজিক ক্ষেত্ৰে, শিক্ষার ক্ষেত্ৰে এবং সর্বোপরি আব্যান্ত্রিক ক্ষেত্রে মূর্ত্ত হইরা উঠিতেছে। নিদারণ আৰিক বিশুখলা ও সামাজিক ছুৰ্ব্যোগের মুগে পভাতুপতিক ধর্মের ভিতর হইতে প্রেরণা সভান করিতে পিরা যাত্রয় বার্থ হইয়াছে। ভাই পভাত্ৰপতিক বৰ্ণের বিবামেও দে আৰু আয়াহীন। গ্রন্থনই বর্মহীন হইরা সে নাত্তিকভার পথ এহব ক্রিভেছে। কারণ পুরাত্ম ধর্ম ভাষার সুগভীর বাছব প্রয়েজন ভলি পুরণ করিতে অক্ষঃ সমাজ-প্রচলিত বর্দ্ধ ভাষাকে আৰক্ষ দেয় না, ভৃত্তি দেয় না, জীবনের আৰক্ষ উপ ভোগের পথও উর্ক্ত রাবে ন । টহা ওপু মাতৃষকে পার-লৌকিক মিৰ্যা খণ্ডে ভূলাইয়া ইহুগৌকিক ক্ষেত্ৰে প্ৰবঞ্চা ভবিষাই চলে। ভাই ভবাকবিত ধর্মের বিক্রার মালুষের चाच विद्यार ।

বর্তনান বুলে বর্তের উপর আক্রমণ আসিতেতে প্রধানতঃ ছইট দিক হইতে; প্রথম আক্রমণ বিজ্ঞানীদের পক্ষ হইতে। প্রথম আক্রমণ বিজ্ঞানীদের পক্ষ হইতে। বিজ্ঞানীয়া জাহাদের নব নব আবিদার হারা প্রমাণ করিছালেন বিশ্ববিদ্যালে বামবেরাল অবাদ নির্মেষ্য হারা পরিচালিত। বিশ্ববিদ্যালে বামবেরাল বলিরা কিছু নাই। আপাত-চৃষ্টতে বাহাকে বামবেরালীও বিজ্ঞিয় বলিরা প্রতীমনান হয়, ভাহাও কার্য্য-ভারণ নির্মাণীন। অভ বিজ্ঞানের বিভিন্ন আবার্ত্তবিদ্ধি আবিভার হারা এই সভ্যাইই প্রমাণিত হইবাহে। ব্যক্তিগত বেরাল-পুনতে প্রকৃতিয় আবােদ নিরম্ব ক্ষমও বিচ্যুত হয় না। ইহাই বিদ্ধানিত সৌনবর্ত্তার আক্রমণে আবারা বে ইপ্রের অভিন্ন বর্ত্তার আক্রমণে আবারা বে ইপ্রের অভিন্ন বর্ত্তার বিভার করি ও ভারে বিহার উপাসনার অভ্যান্তর ও বিহার

আহে, ভাষার সার্থকতা বিজ্ঞানীরা স্থানিশ্রিত করণাত অধীকার করিবাহেন। উহিলা ক্রিলোপাসনার বিরুদ্ধে সাধারণতঃ ছইট রুক্তি ইবাপন করেন। দার্শনিক্তের্ঠ সর্ব্বপরী রাধাককন্ তাঁহার An Idealist View of life পুতকের প্রথম অধারে উহার বিভূত আলোচনা ক্রিবাহেন।

বিজ্ঞানীয়া বলেন যে, ঈশ্বর মাছযের কল্পনার শৃষ্টি (anthropomorphic conception ) বাত্ৰ। বাহুৰ ভাৰাত্ৰ চুৰ্বল মুহূৰ্তে প্ৰৱোজন মিটাইবার ও অভাব পুরণ ক্রিবাল উদ্বেশ্ত মানস-লোকে গড়িয়া ভোলে এক অতীন্ত্ৰিয় সন্তান্ত্ৰ প্ৰতিরূপ। কর্মলোড় বাতীও খন্ত কোৰাও সেই বৃত্তির প্ৰান নাই। ইয়ার কোন বাজৰ সভাও নাই। কাজেই ভাহাত্র নিকট জাগতিক জভাব পুরপের জল ব্যর্থ উপাসনাত্র সময় বাহ নিৰু ছিভামাত । "There is no God and we are the instruments of a cold, passionless fate to whom virtue is nothing and vice nothing and from whose grasp we escape to utter darkness." चर्नार चनवाम वा क्षेत्रव विश्ववा किष्ट्रदे भादे । चामवा छेलानीस ও নিঠুর নিয়ভির হভে যন্ত্রমাত্র। ইহার নিকট পাপ-পুণ্যের (कामध वालारे नारे, मधीत अवकारतत मर्या अवमूख एउदा হাড়া আমাদের পতান্তরও নাই : কালেই জাগতিক ছঃব-বেছনা (बाहत्वव छेगाव-वक्व केवंद्राणांत्रमा द्वाः कावन त्वरे ইববের কোণও অভিভূই ভো নাই। আরু যদি একাডই ইশ্বের অভিত্ব থাকেও, ভাহা হইলেও একব। সভ্য যে ভিনি कार्य-कावरवट मुख्ल चायब अवर विव-चन्नरकव विवयावनीड পরিবর্তম সাধন করিছে সমর্থ নহেন। কাজেই অক্সম দেব চার পূজার সময় ও শক্তিব্যর মিরর্থক। ইছা ছাজা, আধুনিক বিজ্ঞান বৰ্ষের অভাভ ভিভিত্তলিকেও ভীষণভাবে আক্রমণ করিয়াছে। আত্মার অমরতা ও পুনর্জন, পরলোকের অভিত্ ইত্যাদি অধ্যান্ত চিন্তার অসারতা প্রদর্শন করিবা আধুনিক विकानीया रार्च्य कि ब्रिटिक कठाउ इस्तेन कविता कुनिवाद्यम ।

ধর্মের উপর আধুনিক রূপে বিতীর আক্রমন আসিতেছে
সরাক-বিপ্লবীদের নিকট ক্টতে। তাহারা বলেন, ঈবর বা
পরলোকের অভিত্ব থাকুক বা নাই থাকুক ভাহা বড় কবা মর,
প্রধান কবা ক্টল গর্মের কোন সামাজিক বৃল্য আহে কিনা।
বর্ম বিদি সমাজে বলল আনে, বিদ মাগুবের আগভিক অভাবঅভিবোগ প্রপের পবে সহারতা করে, তবেই ভাহার বৃল্য।
সমাজে প্রচলিত বর্ম নাগুবের হংবমর জীবনে কোনও আভিই
আনে না—তাহাকে ভবু বিবাা করে বিভার করিলা
ভাহার কর্মজিকে পতু করে। বে বর্ম নাগুবকে ইছলোকে কোনও প্র-বাক্ষম্য বিতে পারিল না, নে বিভে

প্রলোকে বৃক্তি—ইহা কি বিখাত ? আর প্রলোকে বৃক্তি
বাদি আসেও ভাহাতে ইহলোকে, এই বাটর পৃথিবীতে ভাহার
কি মৃদ্য ? ধর্ম বদি বর্মের মতন সমাজের অভ্যাচার হইতে
বাহ্মকে রক্ষা করিতেই বা পারিল, ভবে ভাহা কিসের বর্ম,
কীবনে ভাহার প্রয়োজনই বা কোন্ধানে ?

স্থাৰ-বিপ্লবীৰের ভিতর বাহারা আবুনিক কালে সাম্যবাদী ৰা ক্য়ানিই বলিয়া পৰিচিত, বৰ্ষের উপর ভাষাদের আক্ষণ আছও এচও। ভাষারা বলে, বর্ষ ভবু বে মার্বের মদল বিৰাশ ক্ষিতেই অক্ষ ভাষা নহে, উপরত্ব ভাষা সাংসারিক ক্ষেত্র অনেক হংব ও বিভ্রমার প্রত্যক্ষ কারণ হইহা আছে। ভাষাদের বিচারে বর্ষ ধ্রল বনিরাদী খার্থরকার একট উপার-चत्रभ । चरिकावरीय थं क्यालारीयव विक्रास चरिकाव-श्राद्धव वार्यवका ७ क्रायान-क्षतिया-मश्राक्षात्व वार्गात्व वर्षाव জিয়াশীলতা ৰে কত বেশী ভাষা বলিয়া শেষ করা যার না। ক্ৰিড-ৰঞ্চিড-শোবিভ যান্তবের নিকট ইহা প্রলোকের খৰ্ণাৰ উদ্বাইত কৰিবা দেৱ, যাহাতে উংপীড়িত মাহুবের ন্দ্ৰ সমাজিক শাসনের বিরুদ্ধে বিজ্ঞোত করিতে না পারে ८मक्ड देशलाटक मध्यम ७ जाय-निर्धास्त्र जामर्ग क्षेत्राव করে। ধর্মের পোষক ও প্রচারকবর্গ সরাক্ষের শোষক ও শাসক শ্ৰেণীর ভাবক্ষাত্র। ব্যিষাদী স্বার্থরকার দিকে च्छावछ:रे छारायब म्हान मुद्रे । निर्द्यायब (अनेवार्यब च्छ এবং তাহাবের সমবোত্তীর শাসকবর্গের স্বার্থরক্ষার দিকে লক্ষ্য ৱাৰিৱাই ভাষাৰের বিবি-বিধানের শৃষ্ট । ইভিযাস পাঠে ইয়া সুম্পটভাবে দুট হয়। প্রাচীন ভারতের ইভিহাস পড়িলে দেবা नाव, अरहरम जायन-शृद्धाविक ध्येनेत अन्य केंद्रव एवं क्रिक রাজ্ভবর্ণের একাংশ<sup>†</sup>হিলাবে।» এই পুরোহিভবর্গ সমাজে ক্ষাৱকুলের ভাবক ও সর্বক হিসাবে কাক ক্রিড,এবং বুছের সময় সর্বাঞ্চলারে রাজ্ঞকুলের সহায়তা করিত। ভাহারা যাগ-यटका अवर्शन कविवा कनमारावादना मननकाममाव अनुवादक वार्यक्षिक्वविष्ठ भाष-बहुना होता क्रमनाबातर्यद वसरक শুখলিত করিরা রাখিত। ইহার কলে ক্ষগণের উপর লাসক-ও সলে সলে বাজক-শ্রেণীর পোষ্ণমূলক পৃথল ভূচ্চপে কারেম क्रेंच । रेडेटवार्यंत बनाव्येत रेखियांत्र गाउँ थ द्वर्था यात (व -বেছাচারী বাৰ্ডত্ত ও সাম্ভতত্তের সঙ্গে ক্যাণ্ডিক বাৰ্ডব-প্ৰেণীর বোগাবোগ ছিল অভাত গভীর। বর্তমানে ধনভন্নবারের বুৰেও পুঁজিপতিবের সঙ্গে বেশে বেশে বাজ্কভোষীর সজাবে-অভাবে সহযোগিত। চলিয়াছে। বনিয়ালী ভার্বের হারা ভালিত হইয়া বাজকলেই মুখ্য স্বাজ-গঠনের পরে সর্বত্তই নানা ভাবে কউক বট করিভেছে। অভীত গৌরবের বিধ্যা স্বাধ্বে ভুলাইয়া রাবিতেই ভাষারা বছপরিকর। সেই দিক দিয়া ভাষায়া এগভিবাদের मकः। कार्यस् त्रवारकः

কভট্টৰ ভূপেজনাৰ যন্ত প্ৰ**ৰ্থত "ভাৰতীৰ সৰাজ-প**ছডি" জটবা।

উরতির কচ বর্ণকাতীর বঙ্কে থংগে করা প্ররোজন। তাই
আক বর্ণের বিরুত্বে দেশে দেশে সামা মরে হীকিত মরনারীর প্রচ্ বিরোহ কাসিরা উট্টরাছে। সামাবাদী রাশিবার
ধনতন্ত্রবাদের বিলোশের সদে প্রাক্তন বর্ণেরও অবসান হইরাছে, শাসক ও শোহক প্রেটর ভাবক-স্বরূপ যাককপ্রেটও
বিস্ত হইরাছে। যাহা কিছু মাহ্বের ব্যক্তিগত বা সম্প্রিত,
সামাজিক অববা রাষ্ট্রক জীবনে বন্ধন আনব্রন করে, তাহাই
সেধানে বর্ণ্ণ, তাহাই মন্ত্র, তাহাই জীবনের আন্দর্শ।

बरेवांत नवाटनाइटकत हुई नरेवा दावा वाक, वर्धवान ব্দৰ্গতে বৰ্ম সৰ্বভোভাবে পৱিভাজ্য কিনা ? ইহা কি তথু बायुव्यक् मुच्छिक कविवाहे वार्ष १ अहे नक्न श्राप्तव वर्षार्थ উদ্ভৱ দিবার আগে প্রথমেই ধর্মের আদর্শ ও ভাষার সামাজিক পরিণতির দিকে एक রাধা প্ররোজন। আদর্শের সঙ্গে माबाधिक পরিণতির যে সকল সময় নিবিত্ন যোগ থাকিবেই, ভাছার ভোনও অর্থ নাই। আধর্ণ মহান হইরাও ভাহার সারাজিক প্রকাশ জতাত উৎকট হইতে পারে। বর্ণের বিক্লৰে আধুনিক যুগের যে আক্রমণ ভাষা কি ধর্মের বৃদ্গত আন্তৰ্শের বিরুদ্ধে, না ধর্শের নাষে সমাকে যে সকল প্রতিষ্ঠান ও অনুঠান বিভয়ান ভাষার বিক্রছে ? অর্থাৎ বর্ষের বিক্রছে না বৰ্মভন্তের বিক্লছে ইছাই হইল বৰ্ডয়ানে আগল প্ৰশ্ন। वर्ष ७ वर्ष्डा वर्षे इंडेडे क्यांव ब्राव्धा वरे अपरम अर्बाक्त। वरीक्रमार्यक क्यांच रता हरण: "यर्च ररन. মালুষকে বদি প্ৰছা না কর তবে অপনানিভ ও অপনান-কারী কারও কল্যাণ হর না। কিছু বর্শতন্ত্র বলে, বাস্থকে विश्वकार्य चलका कतियात विचातिक विवयायनी यकि विश्वक कविशा मा मारमा, जर्द वर्षक्षे इहेरत । वर्ष वर्ण, भीवरक बिहर्वक कहे या एवं एन पांचारकरे रूनन करते। किंद ৰৰ্শ্বতন্ত্ৰ বলে, বত অসহ কটাই হোক, বিধৰা মেয়ের মূৰে বে ৰাপ-ৰা বিশেষ ভিৰিতে অৱৰণ ভূলিৱা দেৱ দে পাপকে লালন করে। ধর্ম বলে, অস্থপোচনা ও কল্যাণ কর্মের ছার। অভৱে বাহিত্রে পাপের শোধন। কিন্তু বর্ষতন্ত্র বলে, এহণের দিনে কলে ভূব দিলে, কেবল নিজের নম, চৌষপুরুবের পাপ উভার। ধর্ম বলে, যে মাগুর ম্বার্থ মাগুর, সে যে-বরেই অবাক পূক্ষীর। বর্ষভন্ন বলে, যে মাতৃষ বান্ধব সে বড় বড় অভাক্ষই হউক, যাধার পা ভূলিবার বোগ্য, অর্থাৎ যুক্তির মন্ত্ৰ পৰ্যে, আৰু দাসছেব মন্ত্ৰ পঞ্চে বৰ্মভন্ত।" অৰ্থাৎ মূল ৰৰ্ম অভৱের বন্ধ-ভাষা ব্যক্তিগভ সাধনাসাপেক, কিছ বৰ্ষতন্ত্ৰ বহিন্দ্ৰগতের সাম্ঞী—ইহাতে বাক্কলেণীর প্রাধান। অৰ্থনৈতিক কাল্পে এই বৰ্ষজন্ত অবিকাল-বৈষ্ণ্যাকে সীকাল ক্রিয়া গড়িয়া উটিয়াছে এবং ভদ্মুরূপ অবিকারভেদ্যুলক পালও ৰচিত হইবাৰে। কিছ আৰু সাব্যের বুগ আসিরাহে। কোট কোট নহনাত্ৰী সাধ্য-ৰত্ৰে দীক্ষিত হইছা সহাজেৱ ও রাষ্ট্রের সকল ভেদ-বৈষয়া বিল্প করিতে আছ রুডসংকর।

তাই বন্ধণশীপ ধর্মের পোষক ও প্রচারক্ষর্মের সহিত প্রগতিন বালী ও বিপ্লবীরের বিরোধ অতি বাতাবিক ও সাংবাতিক। সনাক-বিপ্লবীরা মনে করে বে, বর্ম হইল শোষণমূলক পুরাতন সনাক-ব্যবহার অভতম ভত্তবন্ধণ। কার্কেই পুরাতন সনাক-ব্যবহা তাতিরা মুখন সনাক স্থানভাবে গভিয়া ভূলিতে হইলে বাক্ষকপ্রেমীর এবং বর্মতন্ত্রের উদ্ভেম্ন একার প্রয়োজন।

"Spiritually an external and ceremonial religion is good for nothing; materially it has failed to stop the stronger from exploiting his weaker brother; psychologically it has developed traits which are anti-social and anti-scientific."

কাকেই বর্ণের নামে বে-নকল সামাজিক অনুঠান ও প্রতিষ্ঠান সমাজের কৃতি করিতেছে দেওলি সমূলে ধ্বংদ করা গরকার। দেবা ঘাইতেছে বে, বিপ্লবীদের আসল আক্রমণের গক্য বর্ণের নামে প্রচলিত বর্ণ্ডন্ত এবং এই দিক দিরা বিবরট অবলোকন করিলে মনে হর, ভাষাদের আক্রমণ সার্থক ও কল্যাবিপ্রদ।

কিছ এই আক্রমণ যদি প্রকৃত বর্ষের উপরেই আসিরা পঞ্চেত্রের তাহা হইবে মাছুমের পক্ষে সর্ক্রমাণা। কারণ, যাক্ষক-শ্রেই-শাসিত বর্ষত্রের যত অমাচার ও হীমতা, এবং কল্বক্রালিমা থাকুক মা কেম, প্রকৃত বর্ষ মানব-কীবনের গতীরতম আকৃতি পূরণ করিবার পথ নির্কেশ করে। মাছুমের ভাগতিক দাবিগুলি চরমভাবে খীজার করিরাও বলা চলে যে, ইহাই তাহার জীবনের সবচুকু মর। তাহার অন্তরের গতীরে আহে সভা-শিব-স্করের প্রতি অন্তরার, অসীরক্ষে ভানিবার ব্যাকুলতা ও সূত্রের পিশাসা। ইহাধিগকে অধীকার করিলে কীবনের একটা বড় অংশকেই অধীকার করা হইবে। উপরিত প্রবাজনের মুহুর্ছে হরত ইহাদের সার্বক্রা আহাবান, তাহারা কর আবাহানিক আবাহািক আবাহার অবিলয় করিতে পারেন মা। বছনিচক্ষের সকর হারা আর যাহাই হোক, ভুমার কর আহরের যে আকৃত্রতা তাহার অবসান হর না। বালুরের

এই গভীৰতৰ প্ৰৱোজনেই বৰ্ণের মূল্য। অবর্থের এই নৌৰ আকাকা চিন্তৰ—ভাঙা-গড়ার বব্য বিবাও ইংগ অপরিবর্থিত। কাজেই বর্ণের প্রবোজনও চিন্নতন। বাবাকুকন্ টিকই বলিয়াহেন,

"There is an insistent need in the human soul to come to terms with the unseen reality so long as man is man, hoping and aspiring and reflecting on the meaning of existence and the responsibilities it entails, there is no fear of the loss of religion. It is only a question of reformulation."—Kalki, p. 55.

প্ৰকৃত বৰ্ষ ছাড়া মাহুৰ ক্ষেত্ৰ করিবা নিজেকে গড়িৱা ভূলিবে ? বৃত্তিনিচৰের সামগ্রন্থ বিধান ও ভগতের প্রভাকের সঙ্গে कन्यानम्ब अवद शामानद हादारे चाधरिकाम अखर । बरेक्ड चर्मक छात्र, छिछिका ७ भावनात बर्राक्य। अहे ত্যাগ ও তিতিকার আঘর্ণ দের বর্ম। এই বর্মের মহিষাই বৰীক্ষমাৰ ভাষাত্ৰ "মাহুবেল বৰ্ম" এছে বোষণা কৃত্তিছা-टब्स । अरे वर्षरे ववार्य मामववर्ष ।—बूटन बूटन देशांव ভিভিতেই সমাৰ গড়িয়া উঠিয়াতে। ভবিভতের সাম্যবাদী সমাজ গঠনের দিনেও এই মানব-ধর্মের প্রয়োজন ভইবে। देशांक विशक्ष दिया, जामबिक बार्बाक्तव विरक क्रिक क्रिक বাৰিৱা ভবিত্ত-সৰাজ গঠন কবিলে ভাহা শেব পৰ্যাভ যাভুষের चौराम चिनान स्रेतार बाकित्त । नमाव्यत नूमर्गर्जन एका अकडे। दृश्छद आमार्ट्स कमारे-कीयत्मध शविशूर्व विकासरे देशाव मका-भवादमव चार्षिक, ब्राह्मिक, नावाद्यक कीवत्मव चित्र मुचना ७ जेकाशायन छेपनका बाळ। बहे छेपनका খদি লক্ষ্যকে ছাপাইয়া বছ হইয়া ছেখা দেৱ, তবে ভাছা মাছবের পক্ষে আর এক ছদিবের লক্ষ্ণ বলিরা বিঃসংপত্তে विरविष्ठ स्टेरव । स्थाप्त अभ्यापन स्वरूप बाहर्य वाकिरव. কিছ মন থাকিবে উপবাসী ও আত্মার দীনভার পরিসীমা পাকিবে না। জীবন দেখানেও ছল্ডীন, অৰ্থীন বলিয়াই মনে হইবে। ঐথব্য বাকিবে, আন বাকিবে, প্রকৃতির উপর क्र्युच्छ पाकित्व, क्रिक चौवत्व पाकित्व मा प्रदेवनक चामत्वव ব্দর্শ। ভবিষ্ণতের এই ছবিন সহতে সচেতন হওয়ার প্রয়োজন বে খব বেশী, ভাষা অধীকার করিবার উপার নাই।



<sup>•</sup> S. Radhakrishnan: An Idealist View of Life, pp. 46-47.

## ভারতীয় প্রত্নতত্ত্বের আবিষ্কার

গ্রীগোপীনাথ সেন

ভারতবর্গ যে পুপ্রাচীন) বেশ ও ইহার পটভূমিকার যে বিরাট ইভিহান পঢ়িয়া আহে ভাহা প্রত্নভাৱ নহুদার আবিঞিয়া ৰ্ইভে প্ৰবাণিত ব্ইৱাহে। সহজ সহজ বংসর পূৰ্বে ভারত বে সভ্য ছিল ও এইছানে এক বহাজাভির উন্নভ বরণের প্ৰভাৱা ও কুট্ট বিভয়ান ছিল্ তাহা ইতিহাসের প্ৰত্যেক ছাত্ৰ ব্যানেন। পুৰিবীয় নিকটে আবাদেয় জাভীয় ইভিহান কত মহান ভাষা এমুভড়ের আবিক্রিরা হইছে প্রবাণিভ হইরা বিরাছে। ১৯২৭-২৮ সালের আকিওলভিক্যাল সার্ভে অব ইভিনাৰ বৰ্ষপঞ্চীতে দিৰুদেশের মোহেন-জো-দাৰো এবং বৃত্র, **পक्षार्वत रत्रक्षा उक्ष्मिना, बुक्क्यरभर्गत भावभाग, विराद्यत** युष्टनेशा ७ नामका, नारमात भाषाकृत्व अवर माळाटकत ৰাগাৰ্জ্ব কোণা প্ৰভৃতি নামগুলি উল্লেখযোগ্য। এই স্থানগুলি আবিড়ারের ফলে বহু সুন্দর সুন্দর চিত্রকলা, বিভিন্ন শিল্পকলা, এবং ছাপভ্যের নিদর্শন আমাধের দৃষ্টপোচর ক্ইরাছে। ইহা হইতে ভারতের সভাভা ও সংকৃতি বে অতাও উচ্চালের ছিল **८क्वन छारारे ध्यानिछ एव मारे, जावारमव नृर्वनृत्ररवा कि** বরণের জীবন বাপন করিভেন ভাছাও জানিভে পারা বায়। বাৰারণ ও বহাভারতে ভারভের প্রাচীন ইভিহাস কিছু কিছু আৰা বাৰ বটে, কিছ ভাহাকে টক প্ৰাৰাণ্য ইভিহাস বলা যাইতে পারে না। উহাতে কেবল ইতিহালের একট হক ছাড়া আৰু কিছু পাওৱা বাৰ না। বৰ্তমান ঐতিহাসিকদের নিক্ট বামারণ ও মহাভারত কেবল ধর্ম-এছ মাত্র ময়---এওলি হইতে তাহারা গবেষণারও প্রচুর উপকরণ সংগ্রহ করিয়া पाद्यम ।

শঞ্চান বাট বংসর পূর্ব্বে মেজর মকলার ও হারপ্রিভস
মধ্যভারত ও বেলুচিহানের বহু হান আবিকার করিয়াহিলেন।
উক্ত পার্ক্সতা প্রবেশে অতীতে একদা ভারতের নবরুগের
হচনা হইরাহিল ভাহাদের আবিকার হইতে ভাহার বহু প্রমাণ
শাওরা বার। ১৯২৭ লালের মবেহর এবং ১৯২৮ সমের
এপ্রিলের মধ্যে ভার অরেল প্রেম কলাট প্রেটের সারওরান,
বালাওয়ান, ধারান এবং মক্তরান এই প্রদেশগুলিতে বিধিব
আবিকার করেন।

সার কর বার্লালের বিলোট হইতে কানা বার দে, বিরি ও ডক্ষীলা এই হুইট হানে পক্ষ শতাকীতে বৌচ সংগ্রাসীরা বাস করিতেন। উাহারা বধন বর্দ্ধরাজিকার বাস করিতেন তথন বেড হনবের আক্রমণে তাহাবিগকে সেই প্রবেশ হাছিরা বাইতে হইল। সিরিতে ক্তকগুলি বৌহজুপ আবিহৃত হইরাহে। এই হানে বুডের একট বৃহৎ বৃত্তি পাওরা সিরাহে। এই সক্ষ ভূপ ও বৌচ বঠ হেবিলে কুশান বুলেরও পূৰ্ব্বে নিৰ্শ্বিত বলিয়া মনে হয়। বৌদ সন্থালীদের ভিকাই ছিল একনাত্র অবলম্বন। এই সকল বৌদমঠে রারাবর ছিল না। ভক্ষলাত্র বে সকল বুসর বর্ণের পাধরে ভৈনী প্রাচীন বুর্তি আবিহৃত ক্ইরাকে ভাকা গাভার বুগের বলিয়া মনে হয়।

সিক্রিপে এবনও বলি বননকার্য করা হয় তাহা হইলে ধয় কিংবা সাভভদাবিশিষ্ট প্রাচীন মটালিকা পাওরা যাইতে পাঁরে। হাৰিয়াল, ভিন্ন, মও এবং কোসাম এই সকল ছামে বঙ বিচিত্ৰ भाषरबंद बाजनभव चाविक्रण स्टेबार्ट वर्ड, किन्न बर्बनश्च वर्ट चनाविष्ठुच वृत्ति, रिज्यभभव बदर वह चडामिका स्मर्टे भव शास्त्र चारह । ১৯২१-२৮ महम बि: म्याटक स्माहसन-त्वा-पादा सनन ক্রিয়াছিলেন। এই ধনন্কার্বোর কলে বহু বাড়ী আমাদের বৃষ্টিগোচরে আসিয়াছে। বাড়ীগুলিতে লি'ড়ি আছে। নি'ড়ি দিয়া উটলে সারি সারি খর, খরগুলির পরে সারি সারি স্থানের ধর ও পারবানা। প্রভ্যেক বরে ছোট ছোট দরকা এবং ধরণা খলিতে বুব হোটা থোটা বাজু। বাহির হইতে बरत्तत चणाचत्रकान रमना चुन कविन। स्वारहन-रमा-मारतात ইটের শালা দেবিতে বৃব স্থকর। এই শালায় ইট পুড়াইবার কঞ কাঠের আগুন ব্যবহার হইছ। রাবাল্যাস বঞ্চোপাধ্যায় প্রথমে মোছেন-জো-দারো আবিদার করিয়া পুরিবীর নিকট ভারতের সন্মান বৃদ্ধি করিরাছিলেন। ভংপরে ননীগোপাল ষত্মদার প্রবুধ অভুগৰিংপু ঐতিহাসিকদের চেঙার মোহেন-জো-দারো দ্ইতে যোল মাইল দুৱে বুকর আবিছত হয়। এই সকল আবিদার ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ত যুগের স্বভিচিশ্ব বলিয়া क्षमानिक स्रेवाटम। त्मव चानिकात ७४व्टनत निवा मटन **44** 1

বিঃ বাবো বরণ ভাটও হরপ্ল। আবিদার করিরাছিলেন।
এই হানের দশ ও এগার দুট নীচে হইভে নরকলাল ও সুন্দর
পুন্দর জিনিবপত্র বাহির হইরাছে। এই সভ্যভাকে নাহুবের
প্রথম ভবের (Chalcolithic) সভ্যভা বলা যার। ভাহারা নুর্তি
পুলা করিভ। ভাহাদের বহু বেবদেবীর নৃতি ও বিবিধ
পুলার ক্রাসন্থার আবিহৃত হইরাছে।

১৯২৮ সন্দে রায় বাহাছ্র রবাপ্রসাদ চল বহালর সায়নাধ আবিছার করেন। সেইহান হইতে বে সকল বুলা আবিছ্নত হইবাহে তাহা প্রথম শতালীর বলিয়া বনে হর। তথব্যে একট হুতিকের ও অভাত চৌকা বুলাগুলিকে সূল বুলের বলিয়া বায়লা হয়। অভাত পুরামো জিনিবের মন্যে পোডাবাটির তৈরি স্তালোকের বাবা ও বোর্বাস্থলের বর্ধের চিত্রকলা আবিছ্নত হইবাহে। বিঃ পেক নালকা আবিছার করিবাছিলেন। এই হাবে প্রাচীন ভারতের প্রেট বিশ্ববিভাল্র হিল। ঐ হাবে বেশপাল

ভাৰতীয় শৰ্কৱাশিলের এই অভাবনীয় উন্নভিন্ন প্ৰবাদ কাৰণ ভাৱত সৱকার কর্তৃক অহুস্ত অহুকুল সংবক্ষণনীতি। ভাহা ব্যতীত আরও অবেকওলি ওর্ডপূর্ণ কারণ আছে। ১৯৩২ লালে বিশ্ববাশী অববৈভিক সমষ্ট দেবা দেওয়ায় যথ-পাতি ও কাঁচামালের দাম অভ্যত্ত কমিয়া বাব , ইহার কলে ভারতীয় শর্করাশিল সহকেই কলকারধানার সাহায্যে উন্নতির পৰে অপ্ৰথম হয়। তাহা হাটা ব্যবসায়-ক্ষেত্ৰ সুদের হার माजिला वाल्यात मर्कता-वावशासीता भाषमाज द्वरण वर्गकर्ग कृतिया क्रमकावनामात उद्यक्तिमानन करता। अरे वर्ग-मक्टित मिर्मिश कुमारण हाश. बाम श्र हिडेवश्वरहामत माहारश मन-সেচন ও সভায় সাইড্রোইলেক্ট ক শক্তির ব্যবহার সভব হর। चून्य अवर्षाक. देख्य मदरदाष्-रारश ও हार्यद दूरवान-সুবিধার কলে ভারতীয় শর্করা!শল সহজেই প্রসার লাভ করে। ইন্পিরিয়াল পুরার ইন্টাট্টড এই বিজের সম্প্রসারণে चायकी नशावण कावा वह मकन कावान चावण चाव जुबिबोब बर्दा खड्डम दूरर छिनि छैरलावन-क्टब दनिया পরিপ্রিভ হইয়াছে। প্রায় ২৫ হইভে ৩০ কোট টাকার সুলধন এই লিখে খাটালো হুইভেছে।

ভারতীয় শর্করাশিলের ক্রত প্রসারের ক্রে নানাবিধ সম্ভাৱ স্ট্রী হইরাছে। ইফুক্টেত্রের আয়তন নির্দেশ করা, क्राक्रितीए रेक् भवववार निवयन कवा, क्राक्रितीय माणिक छ क्ले । डेबर्पर भारेरमज रम्खना, रेक्स ७ हिनित अथन ७ मृण्य নিয়ন্ত্ৰণ কৰা, ইকু ও চিনির সরবরাত্ব্যবস্থা নিয়ন্ত্ৰণ করা, এব সমস্য নিয়ন্ত্ৰণ করা ইত্যাদি নানাবিধ বিষয়ের নিয়ন্ত্ৰণ-ব্যবস্থা चात्रज-मधकातरक कतिराज स्टेराजरम्। मर्कत्रा-मिरायत **উ**পत्रहे শরকারী নিরন্তবের চাপ পর্কাপেকা অধিক। কেন্দ্রীয় সরকার रेकू क्य-विकास अवर रेकूस पत ७ ७०म निवस्तिय कर ব্রাদেশিক সরকারগুলিকে আইনকাছন তৈয়ারী করিবার बिर्दिण विद्या ১৯৩৪ সালে পুগারকেন करबन । भूक्षधीरपरन जनर निहारत ১৯०৮ भारत विहला ক্ৰিটির অহুৰোধনক্ষে ইকু ও চিনির বুল্য নিয়ন্ত্রণ করা হয়: এই ক্ষিটতে চিনি ব্যবসায়ী ও চিনির কলের যালিক 🔏 अधिक नकन एरनद अভिनिधिर दिन। प्रशःभद रेपू किमित कर-विका अवर देश्यामन-वावदा निवस्तावत क्षा আইনকান্ত্ৰ তৈয়ায়ী হয় এবং ভাহায় ভৱাৰণানের নিষিত্ব বহ कर्षाती मिन्द्र एत । भवकावी अट्टहोब बाब अक्ष हिराएवन অগার ক্যাইরিক কঞ্চোল এই , উহাতে আছে---

- (क) हिनिब कन श्रीमारक माहेरतम विश्वता ;
- (व) हिमित करण रेक् अत्रवतार मित्रवन कता ,
- (গ) সুগার কট্রোগ বোর্ড এট এবং এতভাইসারী কমিট-অরুহ মিরোগ করা;
  - (व) रेक्ट अस्तिम पन वाविया (पश्चा ;
  - (६) रेफूब विकायना भाषात का।

এইভাবে বিভিন্ন ব্যাপারে হন্তকেপের কলে সংক্রেই বহু লবজার সরাধান হইরাছে এবং ১৯৩৮ সালের পন্ন হইডে ভারতীর পর্বরাধির কর্ম সাভ করিতেরে। ১৯০৭ এবং ১৯৪০ সালে ভারতীর শক্রাশিল ছুই বার ভারতর সকটের সপুষ্টিক হয়। ১৯০৭ সালে আশা করা নিরা-ছিল যে ইন্দুর দার ক্রেই বৃদ্ধি পাইবে; কলে ইন্দুর চাধ নির্দিষ্ট চাহিদা অপেকা অনেক বেশী বাছিরা বায়। চিনির উৎপাধনের পরিমাণ ইংডার ১২,৩০,০০০ টনে, কিও চিনির চাহিদা ছিল ১১,৫০,০০০ টন। এই অভি-উৎপাধনের কলে চিনির মুল্য ক্রিয়া বার। অভি-উৎপাধন, আভাজনীণ প্রভিবোসিভা, সাভের অবের কলা পড়া প্রভৃতি প্রভিরোবের ০ক্ত প্রগার সিভিকেট সঠন করা হয় এবং স্থায় কক্টোল এট পাস হয়।

১৯৩৭ সালে ভারতীর ধাবের বিরোধী যে আওজাভিক্
শর্করাচুজি নিশার হর ভাহার কলে একমাত্র রশ্বদেশ ছাড়া
ভার সকল দেশে চিনি রপ্তানীর আবিকার হইতে ভারতবর্ষ
বাঞ্চত হর। ইহার কর আত-উংপাদনের সমরেও ভারতবর্ষ
মধ্যপ্রাচ্যে বা অভ কোন দেশে চিনি রপ্তানী করিরা লাভবান
হইতে পারে নাই। ১৯৩৯-৪০ সালে ভারতবর্ষ প্রায় করেক লক্ষ
টন চিনি বাহিরে রপ্তানী করিতে পারিত, কির আভজাভিক্
শর্করাচুজির কলে ভাহা সপ্তব হর নাই। ইহার দরুল
১৯৪০ সালে ভারতীর শর্করাশিল্পে এক ওর্ভর সম্বটের
উল্লব হয়।

এত বাধাবিশাপ্ত সত্ত্বেও ভারতীয় শর্করাশিল্প ক্রমোরভিত্র পৰে অএগৰ হুইয়া চলিয়াছে এবং আৰু ভাষা ভারতের विकास वर्षम निवा निवास स्वेतार । केक विकास व বসাবোর ফলে এবং কেন্দ্রীর ও প্রাছোলক সরকারের মব্যে বুৰাণভাৱ অভাবে এই শিল্পকে নানাপ্ৰকার বাধা– বিপত্তির সমুখ্য হইতে হইয়াছে। অভি-উৎপাদ্য বা यब-प्रेश्नापन---कान (क्यां कावक-नवकाव देसू 🐞 हिनिब দরের ওঠানামা নিমুধ্রণের ২০ কোন স্থনিধিট নীভি অনুসর্ব क्दबन बारे। अबकाबी जाराया भारेटल ১৯৪० जाटल वाहिटब চিনি রঙানী করিয়া ভারভীয় শর্করাশিল সমটের স্থাত স্ইডে পরিত্রাণ পাইভ। ভরুপরি ভারত-সরকার কোলাওড় হইভে এলক্ষ্ল প্ৰস্তুত লাখৰ কবিয়া দেওৱাৰ প্ৰতি বংগৱে थाव ७८ नम हेन दोना ७३ वर्गर थाव २ द्वांके ८० नम गानन अनक्ष्म नहे स्टेल्ट्ट। अरे अनक्ष्म बागावनिक् हिक्रिक्त देवलावक च क्विकाल विश्व-वादशायीयव विटम्ब কাবে নাগিত।

ভারতীর শর্করাশিরের থান বর্মানের পরেই; চিনি
আমাদের অভতম প্রবান কাতীর সম্পদ। বাজগুণের কবা বাদ
দিলেও দেবা বারানে, এই শিরের ধারা প্রার দেক কম্প লোকের
(ভবব্যে ৩০০০ আটস, সারেল ও ইঞ্জিনিরারিং প্রাজুরেট)
জীবিকার সংহান হইতেহে। এই শিল্প ওবু বে বেশের অর্থ
বেশেই রাবিভেছে ভাষা নহে, বরং বহু চারী, প্রমিক্ত ও
ব্যবসারীদের বিশেষ লাভবান করিভেছে। ভারতীর শর্করাশরের সমূবে আছে বিরাট সভাবনা। বাবীন ভারভবর্বে
রতীর শর্করা-শিল্প দেশের ও দশের প্রমৃত্ত ক্ল্যাণ সাব্ব

ব, ইহাতে সন্দেহ নাই।

### আলোচনা

### "আগমবাগীশ ভট্টাচার্য্যের কালনির্ণয়" শ্রাদীনেশচক্র ভট্টাচার্য্য

এ বিষয়ে ডঃ সরকারের প্রবণ্ট ( প্রবাসী, প্রাবণ, ১০৫৪, পূ.
৩৮২-৫) পড়িলাম। যে বিষয়ে জানের পরিসর সংকীর্ণ দে বিষয়ে প্রবণ্ধ রচিত হইলে ভূল-আভি হওরা অবশাভাবী। প্রবড়োক্ত ছুইট মাত্র ছুল সিদ্ধান্ত অভি সংক্ষেপে নিমে
আলোচিত হইল।

১। ভश्रभारतेव मन्गाव्यन स्मारक ख्रीकृरकव रचना स्मित्री ভ: সরকার মনে করেম "কুফানশ বৈক্বমন্ত্র দীক্ষিত ভাঙ্কিক ছিলেন" ( পু. ৩৮২ ) এবং ভিনি পাঠকদিগকে লক্ষ্য করিতে बर्णम (व, क्र्यामत्मद वरमवदराव "मामधीन चविकारमहे বৈষ্ণৰ এবং সম্পূৰ্ণক্ৰণে শাক্তপ্ৰভাৰৰব্দিত" (পু. ৩৮৪)। मन्दीन चक्राम ७ डेक्टबन्टम चानमनानैरमद नरम ब्हास ७०० ৰংগৰ যাৰং বহুতৰ সম্ভাৱ পৰিবাৰে অকৰণে সন্মান পাইতে-ছেন। ভিনি ও ভদীয় বংশবরণৰ শক্তিমধ্রে দীক্ষিত ভাগ্রিক ইহা সক্ষেত্ৰবিদিত সভা। ভদীর জাতি গোণাপম্থে দী'ক্ড यायवानरच्य प्रस्थि काश्य विद्यायकाश्यि नवशीरण विश्वकाल क्षाइनिक चार्स ( मनदौश-महिमा, )म मरसत्तन, गू. २०४-४ )। এই সকল তথ্য উপেকা করা অতি সাহসের কাম। ভান্তিকরণ काहारम्ब मीका-मञ्ज नवरम् लागम कविश पारकम देश पछि-श्रीतिष क्या अक्र "(गागरश्याकृतादवर" श्रकृष्ठ वहन देश्व পরিপোষ্ক: ভদ্রপার সর্ব্যস্তালায়ের জঙ লিবিভ একট "সংগ্ৰহ"-এছ, সম্প্ৰধায় বিশেষের ত্বত লিখিত সোণনীয় এছ 'মছে। এছনেয়ে পু'প্ৰকার পূৰ্বে একাধিক পুৰিতে আৰৱা এই (माक्षेत्र) नारेवाचि :--- व्यक्षकावस्थानेन-करे।bार्योक्षमध्यस्य । ৰুঠ্যৰবীভশাল্পৰি বীরাধ্যাপথ সাম্ভত্ত সংখ্যত: ভিনি একট গোপনীয় এছও লিখিয়াছিলেন, ভাতার নাম "এভত্ব-বোৰিনী"--একট বাত্ৰ ৰভিত পুৰি মহারাজা বতীক্ৰমোহন ठीकूरश्य अष्ट्रणामात्र विभ (L. 281, अधावत्य "क्रकानम-विषिरचना विविष्ठिः 🕮 उष्रवानिक्षिण गरिषक्षान वहन-काश क्**रे**एक **अक्**रात नक्ष्य किस निःगत्कर क्रेबा यात्र मा )। সর্বাসাধারণের ভঙ লিখিত এখে এইফুফবন্দশা রীভিসিদ আচার। কারণ, ভাত্তিকংগর আচরণ সধ্যে একটি প্রসিদ্ধ वहन चारव, "चवःमाका विराटेमवाः अकाशार देवकवा बचाः।"

বিভীয়তঃ, পুঞাধির নামকরণ অভীইবেবভার নামান্ত্রারী কৃষ্টবে এইপ্রপ কোন সর্কানভনিত নিরম নাই। ধরং নিভ্যা-নন্দের পুঞাবীরভন্ন বৈকবনামবারী নক্ষে। পঞ্চান্তরে ন্যারারক্তকার পূর্ণানন্দের একট বংশবারার (কোনভানরক্ত) পু. √০) একটও শাভা বার নাই। পূর্ণানন্দ ও ভালার বংশ বৈক্রবরের বীক্তিভ নতে।

ৈ হ। আগৰবাদীশের কালনির্ণর অভূসীন ও বাছ প্রবাণ--गार्थक। ज्ञानावत्रव्य वर्गाध्कविक अक्ष छैरक्डे ध्रवान-नकी फेटकर्ड गारस्य अकान करवन (Oxf Cat., p. 95)---ভথবে এভড়চিভাষণি ও পূর্ণামন্দের নাম নাই। অভ কোফ ৰুদ্ৰিত সংখ্যাপে কিখা পূৰিতে আমহা এ যাবং ভয়গাছে **পূर्वामस्यत्र छेड्डलि পार्ड मार्ड । क्रुकार अक्याब रक्यांनी अरक्षक** र्विता और छवाकविछ 'बकाडे।' श्रवादित पश्चिम मौकात कर्ता বাৰ মা ৷ প্ৰাণভোষিণীতে রামভোষণের পিভাষ্ট্রে সহতে হে (माक गाव चारक -- "चरश्रकाष्ट्रसम्बद्धम् तह गरत। मान अकाष वृद्धिः"---ভভারা সহজেই "রছুনাৰ" নাম পাওয়া যায়। ভঃ সরকার কল্পাশক্তির পরাকাটা দেবাইয়া ''নাধরাম অধবা রামের ভক্তনাৰ" (পূ ৩৮৪) নাম লিবিতে বিশুমান সুঠাবোক করেন নাই। রামতোষ্ণের নামমালায় একট নিশ্চিত ভ্রহ चारम्, त्रामाण ७ मध्यमम विश्वभारवञ्च भूक मरम्, भन्न स्वि-मार्थिद পूछ । काद्रव, अरे शांशांश शकासम दूछ ( "शकासम" ष्टेणावि, गृषक् माथ न(ए) ज्युहः "छक्षगैलिका" बार्ड प्लंडाफरक शिरिक चार्षः --चानववामैन(गोर्छ) एविभाषभा चक्रवा।

আবোপালেন বিজেন কতেখা ভন্ননীপিকা। ( 1, ৩.০১) बाधरणायन काचैनाषरक "नाबावणोक्ट" बदर (नानामरक "নিৰ্বয়"কার বলিয়াও ভাষ করিয়াছেন। মুল্ডভ ভঞ্সায়ে जाबावजीव वहत्वत **উ**ष्ठ'के शाब्दा याद्य अवर "मिनेश"काद পোপাল ভারপকাষৰ (কেবল পঞ্চানৰ নতে) নিশ্চিতই ভিঃ এবং **পূर्क्तरही। উভর গোণালের পার্বক্য দেবাইবার ४०ই** সঞ্চ**বভ**ঃ भिनंशकावरक "वृष" भरम कृषि का कहा एवंक (आहिका-भाविष्-गाँवका, २०४৮, मृ. ४०-४४ महेरा )। क्रम्भीद श्रांत प्रश्चा এক শ্ৰেণীৰ শিক্ষিত গোকের মন্ধাগত; অবচ এছলে বৃল কুল-পঞ্চীতে কোনই ভূগ নাই। বাদৰ চক্ৰবৰ্তীর "কুগণামদীপিকা" ( २व गर, ১७১०, पृ. १० ) स्टेटिंग मात्रम यह सम्म कार्यस---जनत्तर चानक्षाय ७ शाह गांव चाटह । **डेज्यरे डा**क्याय क्रियाः রাশিণাম ধরিয়া সাবঞ্চ করা বার। আবরা কিন্তু যে সক্ষ बादिक क्लपक्षीय पूर्व मध्यक कविवादि छवर्या अकडे परक बरेक्य नामनाना शरेबादि :--( व्यविकन डेक्क इरेन) "बानवरात्रिय बहे।" भू" रुविमाय बहे।" भू" मयुक्तम बाहल्यकि भू" काजीवाय बडो॰ प्र बच्याय बडे। प्र क्रसवाय बडे। क्रक्यकः च्हे। एतिश्रमाप च्हें, कुकश्रमाप च्हे। । · · · · ( क्रश्रमाट्यक ৰাৱা )। ফক্ষল ভটা পু: বামলোচন ভটা বাৰভোশক विज्ञानकात बाबरमाज्य ज्ञान वायरनाज्य ज्ञान । " अहे याय-बानारे गर्कारणका विकड, बाबरणायनक्ष जूनके बनारव बाहे-अवर वयुष्परमय छैनाविष्ठै निनियद स्टेबाट्ट ।

নাৰভোৰণের এছবচনাকাল ধ্ইতে উৰ্ব্বানী গণনাবালঃ ভল্লাবের নচনাকাল "১৬৭০ এটাখের বিকটবর্তী" বলিরা ভচ্চা

সরকার বিশ্ব করিয়াহেল এবং এবছপেবে গুচুভার সহিত লিবিয়াছেন, "এছবানি বে সপ্তদশ শভাকীর বিভীয়ার্ছে রচিত স্ইয়াছিল শে বিষয়ে কোন সক্ষেত্ৰ আছে বলিপ্লা যনে হয় না i" কাৰণ, "এইৰণ কেত্ৰে ঐভিহাসিকণণ পঁটিণ বংগৰে একপুত্ৰৰ প্ৰশা কৰিবা থাকেব।" (পৃ. ৩৮৫) ডঃ সরকার প্রভৃতি क्लाम काम खेलिशांतिक बाबाबाबकारमव वरमावनी स्टेलिटे "একপুরুষে ২৫ বংসর" গড়পড়ভা ধরিয়া থাকেন, কিছ ভাষা चकाच मट्ट । जाववा वदर कामि क्यामटक्य महाव वारणाव ব্ৰাহ্মণপ্ৰিত সমাজে কমিন্কালেও ২৫ বংসৱে একপুঞ্ধ পাওয়া যায় নাই, আমাদের গবেষিত পভাষিক বংশহরো আহরা अक्ष्रिक भारे मारे। ७: महकादित मछ दा अ ज्ञान अकान्त ভাবে আছ (ব্যথিও তাঁহার বনে 'কোন সক্তেহ' নাই) ভাহা - এবতীজ্ঞবোহন হত লিখিত "কত বংগৱে 'একপুরুষ' ধরা **डे**डिड" झेरब भार्ट ( क्षरांनी, भीद ५७८०, मृ. २७७-८७) चूंबी योरेर्टि । वक्योंभी मश्यवन खडमारव ३०५० नरकद अक्षे পুৰিৱ পাঠ পদে পদে উদ্ধুত হইবাছে। ১৫৮০ পঞ্ (১৬৫৮-১ **ৰীটাকে**) ড: সরকার-মিণীত রচমাকালের পূর্বে পড়ে। স্ক্রাং, "পুৰিবানির ভারিবের পাঠে ও ব্যাব্যার জট বাকা चनस्य मा स्टेर्ड भारत" ( भू. ७৮৫ ) । यजवाजी जरखदायद সম্পাদক ছিলেন বৰ্গত পঞ্চানন ভৰ্কৱত্ব বহাপথ। ভ্ৰতি ভূচ্ছ কারণে তাঁহার পাঠে ও ব্যাখ্যার ফ্রটর আশহা করা সমীচান নহে।

ভন্নসারের রচণাকাল সহতে আ্যাদের বর্কাল স্ঞিভ ষ্টপকরণরাজি হইতে সারাংশ সংক্ষেপে লিখিত হইল। বাংলার প্রায় প্রতি ভ্রাহ্মণ-গৃতে ভরুসারের পুরি ছিল এবং এবনও অনেক পাওৱা বার। এই সকল পূর্বি পরীকা করিলে ভন্নসারের পাঠে, প্রকরণে, পরিজেদ বিভাগে ও আর্ডমে অতি বিশ্বরকর প্রভেদ পরিগক্ষিত হয়। আমরা চাইএাম च्डेटच अकडे পूषि मध्यच कविवाधिनाय, निर्मिकान अदे :---"অপাৰৱৰ্ডিনে) চ ডচে মানে চ ভাৰ্যৰে ৷ লিবিভা পৃত্তিকা देवन जैक्यनब्रष्ट-बीवजा ।" अञ्चाता ३५०३ नक एव ( ३५५३ बै:, बन चर्ड >)---नानाव कान करे चारह किना छः সম্বকার দেবিবেন। ১৭২।১ পত্তে পুলিকা আছে, "ইভি ভন্ত-সারে বাবদঃ পরিছেবঃ," ১৮২।১ পরে "ইভি—আগবভড়ে बारवायमः পविष्ययः।" )७२।७७ भट्ट छन्द्रमीयद्याः ७ "वर नगरवन्त्रीमकाः" भाषता यातः। मगरवन्त्री भूका हाहेकारमय বাহিবে কুমাণি এচলিভ নাই। লেবক ছানীয় পূজাণটল ও অবক্ৰচাৰি অভুটিভটিভে এখ্ৰব্যে সমিবিট করিয়াছেন। प्रकार ১৬१৯ बैडीएक वस्त्र्रिक चन्नावत्र वालाव नर्वव প্রচারিত হইবাহিল সন্দেহ বাই। স্থাচীৰ পুৰির পাঠ বিলাইরা কুঞানব্দের রচনা বিবরে নিঃসন্দিশ্ব হওয়া কটসাব্য ব্যাপার। আৰৱা হুইট পুথিৰ সভাৰ পাইৱাহিলাৰ। একটৰ লিপিকাল **"এ**বাৰৰ ল<del>ৰ্বাং</del> যাক্ষৰ **এ**বছসিংহ বাছপড়ে: পুডঞ্নিহং।

শক ১৫৭৮।" তঃ সংকার নিঃসলির হইতে পাবেন বে এবানে তারিবের পাঠে কোন ফ্রাট নাই। কারণ, মরসিংহ বাচলাতি প্রবন্ধ কোবকের উর্ভান নবম পুরুষ এবং তাহার পুরু হইতে ৮ পুরুষের প্রায় প্রত্যেকের ক্ষণকাত পুনি হউতে আমরা উর্ভায় করিবাহি। ছংবের বিষয়, এই মৃগ্যুবান সম্পূর্ণ পুনিট উর্ভায় করা বার নাই।

বলীর-সাহিত্য-পরিষদে ভন্নসাল্লের প্রাচীনভন্ন পুৰি রক্ষিত আহে ( ১৭৫১ সংবাদ সংশ্বত পূবি )। ইহাতে "ঐবিভা" প্ৰকরণ হইতে শেষ পৰ্যন্ত পাওৱা হায়—অভিজীৰ্ণ, ক্লষ্টভ এবং কভিপন্ন পঞ্জীন। পুল্পিকা এই ⊱ (১৩৪i২ পঞ্জ) °--- নক--वंत्रिन्छोडार्वाविविविधयनायः भवादः । ७७वदः नकायाः ১८८३ গ্ৰীরাজীবলোচন নর্দ্রণ: বাক্তরং বপুত্তক। গ্রীসরগত্যৈ মলো नमः।" ( नौर्ग पृषित्र भार्ष्ठ क्रष्ट्री पाका अन्नस्य मट्ट ; आयवा সাদরে ডঃ সরকারকে এই পুৰি পরীক্ষার বভ অন্তর্যের করি।) এই পৃথির প্রবাণ-বলে ভন্নসার রচনাকালের অণ্ডন সীরা ১৬২৫ এ: নিঃসঞ্চেৰে নিৰ্বৰ করা বাব । পুঞ্জিত এবের সহিত त्वाष्ट्रीवृष्टि विम बाकिरमध अहे भूषित भारते चरनक देववता वृक्षे হয়। "বল্লগংকার" পথতি বুফিত এছে "ভৃতীয়" পরিচ্ছবের শেষে বাছে, কিন্তু এই পুৰিতে "বিজীয়" পরিচ্ছেণের শেষে ( ७२।२ १वा ) वृद्धे एवं अवर वर्गमाभूषे अकवानक (मार्य ( ०)।२ পত্র) পরিক্রেদ বিভাগ নাই। অর্থাৎ এই পুৰির মডে ৩ পরিচ্ছেদে এছ সমাও। মুক্তিত এছের বছয়নই পুৰি**টতে বাদ अक्रिशाट्य** ।

ভরদারের প্রমাণশঞ্চী মধ্যে রাখন ভটের রচনাকাল ১৪১৫ শক (১৪৯৩-৪ ইঃ) সুনিশ্চিত। "আগমকরফ্রম" গৌড়ীর সম্মাণরের অতি প্রামাণিক এছ। পূর্বাংলীর ৺ভারণকামমগৃতে রক্তিত পুনি হইতে পরিচয়-গ্লোক উদ্ধৃত হুইলঃ (১১১।২ শঞ্জ)।

"आत्रानीम्हण्यो क्षणिक्नांत्र्यः अवनवायमाः, त्रानीमाथान्ति भरवापवस्यम्भः आवस्यक्यः। वीवकभावस्यायिमक्षमितृयः अन्तरायिकमामा

শাকে বেলা ( বি ) শক্তে নক্তরগতরবাবৃদ্ধতং বেন ভন্তং । স্বভবাং ইহা ১৪২৪ শকে ( ১৫০০ নঃ ) রচিত। ভরসারে ন্ত্রীবিভা প্রকরণে একট ব্যাব্যাবচন আরে, "অভাবঃ, প্রংশক্ষরাসাং বিভীব-লোপার্ক্তাবিভ্যবঃ। প্রক্রমানিতি ভরকৌর্বী-কারঃ।" সকল পূর্বিতে পাঙরা না গেলেও ইহা অবিকাশে পূর্বিতে ( Oxf. Cat., p. 95 ) এবং ১৫৮০ শকের পূর্বিতেও আরে ( বলবানী সং, পু, ৩৭৪ )। "ভরকৌর্বী" বৈধিল নহাপতিত "বেবনাথ ভর্কপ্রানন" কর্ড্ক কোচবিহারাবিশতি নম্বদেব নরনারারবের ( ১৫৫৫-৮৭ নঃ ) সভার রচিত হইনা-হিল। পূর্বহলীর ভভারপ্রানন গৃহে হুইট পূর্বি আর্বা পরীকা করিবাহি। একট বভিত ( ১৫১ পর ), স্বারীপ্রতিবে ( ২৫) পরে ) ভর্নারোম্ভত ব্যাব্যাট ব্যাব্য পাওরা বার—"লোপার্ভাং বিভীরামের প্রক্রমাং।" অপর পূর্বিট সম্পূর্ব

থেও পল্ল, ৩৬।১ পল্লে উদ্ধৃত ব্যাব্যা আছে )। কলিকাতা দ্বাহেল এনিহাটক সোনাইটিয় পূথিও লাইব্য ( I.E. ৪°, ২১।২ পাল্ল)। এছের বহু ছানে বল্লাদেবের উৎকৃত্রী ছতিবাল আছে এবং নামা পরিক্রেণের পাবে পূল্লিকা দৃষ্ট হয়। পোর পূল্লিকা এই— "ইতি সমন্তর্গ্রাক্তিয়াবিলাকান — মহারাজাবিলাক প্রীক্রেলাবরাক বালিকারাং মহামহোগাবার-তর্মপর্ক নিমানী প্রীক্রেলবনার কতারাজ্বকৌ মূলাং প্রতিপরিক্রেলঃ সমার্ত্তঃ।" দেবমার্থ হার্নিচ্চ "মন্তর্কার্যাত্ত প্রতিপরিক্রেলঃ সমার্ত্তঃ।" দেবমার্থ হার্নিচ্ছ "মন্তর্কার্যাত্ত বিভারঃ) — মন্তর্কার্যাত্ত বিভারঃ ( মান্তর্কার করের করেরাক্তার আল্লের সভার আল্লেম। এই রাজার পরিক্রান্তি প্রবেষ্টিয়। ভারকৌ মুলী ১৫৬০ ইটাকে বাজার পরিক্রান্তি প্রবেষ্টিয়। ভারকৌ মুলী ১৫৬০ ইটাকে

বচিত হইবাছিল বরিলে ভরসারের রচনা ১৫৮০ বিটাদের পূর্ব্ধে কিছুতেই হর না—১৬০০ সনে বরাই বৃতির্ক্ত। আমরা বাহল্য বোবে কুলপঞ্জী হইতে ইহার সমর্থক উৎকৃষ্ট প্রমাণ পরিত্যাগ করিলার। এই কাল নির্বর্হারা চৈততের সহা-বাহনাদি অবুলক প্রবাদ এক ক্রারই নির্বাহ হয়।

উপসংহারে আমরা একট কুত্র মন্তব্য লিপিবত করিতেছি। তঃ সরকার রথুনাথ নিরোমনির অক্যান্তর-কাল (১৪৭৭-১৫৪৭ ইঃ) উল্লেখ করিছা তঃ বিভাত্যনের প্রপ্রসিদ্ধ প্রস্থের করিছা তঃ বিভাত্যনের প্রপ্রসিদ্ধ প্রস্থের বাবাদি বিচার কিছুই করেন নাই এবং তাহার উক্তির কোনই বুল্য নাই। তঃ বিভাত্যণ অচ্যত চৌবুরী মহাশরের প্রবন্ধ হইতে (সাহিত্য-পরিবং-পত্রিকা, ১৩১১, গৃ, ১-১২) নির্কিচারে ইহা প্রস্থাক করিয়াছেন। আমরা বিচারপূর্বক নিরোমনির কালমির্নন্ধে সামান্ত চেটা করিয়াছিলার, তবে তাহা বাংলা ভাষার (ঐ, ১৩৪০, গু, ১৬-১৬; ১৩৪৩, গু ১-৩) প্রকাশিত হইয়াছিল, ইংরেজীতে মহে।

### চরকা

( Leconte de Lisle কৰ La Chanson Du Rouet ক্ৰিডাৰ ব্যায়বাদ)

### **শ্রীফণিভূষণ** রায়

(3)

চরকা প্রির বিত্র আমার----

ভূলোর পাঁকা বকের পারা,

কোৰায় লাগে ভোষার কাছে

পোনার বোহর, রূপোর টাকা।

তোমার দেওরা সব কিছু বোর- --

অল, পৃহ, আচ্ছাদন

ভোষার তরে জীবন তরে

ত্মৰের ফ্রোতে সম্বরণ।

চৰকা প্ৰিৰ মিত্ৰ আমাৰ--

ভূলোর শীকা বকের পাবা,

কোৰায় লাগে ভোমায় কাছে

সোনার খোহর, রূপোর টাকা 🖠

( 6 )

**इनका थिय रक् जामाय** 

ভূলোর পাঁজা বকের পাবা,

ভোৱের পাধীর সঙ্গে ভবি

গানট ভোষাত্ৰ স্থা-যাৰা 🖠

গাৰ, সকালে, এীছে, শীভে—

কাপাস, পথের হরজাল,

**इंदर्श-शांक इंटर्बर्ट (बंट्स्** 

চরকা খোৱে খুণিভাল।

চরকা আমার--ব্যু আমার

ভূলোর পাঁজা বকের পার্বা,

ভে'রের পাবীর করে ভনি

গানট ভোষার সুধা-বাৰা !

(0)

**চরকা প্রিম্থ থিজ আমার**--

ভূলোত পাঁকা বড়ের পাবা,

কোৰায় লাগে ভোৰায় কাছে

সোমার মোহর, কপোর টাকা 🖰

শেষের দিনে বছু আমার---

चल वारम चाम्हापिरका

সেই পাৰের হয় বেন যোৱ

ৰ্ত্যপুৰের উভরীয় ।

চরকা প্রিয় বছু আমার---

ভূলোর শীকা বকের পাবা,

কোণাৰ লাগে ভোষাৰ কাছে

সোৰাৰ ৰোহৰ, কপোৰ টাকা 👔

# ধর্মের উপর আধুনিক যুগের আক্রমণ

### শ্ৰীউমা সেন

ঐতিহাসিক বৈৰ্ত্তনের এক বুগ-সভিক্ষণে আমন্ত্রণ সমুপঞ্চিত। খনভাষ ও বিজেছ, খড়তি ও বেদনা সর্বাত্র পরিকৃট। বিজ্ঞোহের আঘাতে পুৰিবীর রাজনৈতিক, অৰ্থনৈতিক ও সামা-কিক জীবন আৰু বিপৰ্য্যত। পুৱাতন বিধি-ব্যবস্থায় মাতৃষ আর ভৃত্তির সভান পার মা। পুরাতন আদর্শে ভাষার বিখাস ক্ৰমনই শিধিল হইরা পড়িতেছে। তাহার অহরে অর্থনৈতিক বিপর্যায়ে ও বিজ্ঞানের প্রসারে অপরিসীয় সন্দেহ ও অবস্থ কিজাসা জাগিয়াছে। উত্তরের আলার পুরাতনের দিকে বার বার তাকাইরা দে হইতেছে নিরাপ ও বার্ব। এই নৈরাপ্ত ও বাৰ্থতা ভাষার মনে যোগাইতেছে প্রবল অসরোয় ও বিজ্ঞান্তর ইপাদান। এই মনোভাবের দক্ষন সে পুরাতনকে ভাঙ্গিরা-চরিয়া নুভনকে স্কট্ট করিতে ব্যাকুল। এই স্কটর আকাকা অৰ্থনৈতিক ক্ষেত্ৰে, সামাজিক ক্ষেত্ৰে, শিক্ষার ক্ষেত্ৰে এবং সর্বোপরি আধ্যান্ত্রিক ক্ষেত্রে মুর্ভ হইরা উঠিতেছে। নিদারুণ অংশিক বিশুখলা ও সামাজিক ছুর্ব্যোগের বুরে গভারুগভিক ধর্মের ভিতর হইতে প্রেরণা সভান করিতে দিয়া মালুয় বার্থ হইয়াছে। ভাই গভান্তগৃতিক ধর্মের বিধানেও দে আৰু আগ্ৰাহীন : জমশই বৰ্ষহীন হটৱা সে নাজিকভার পৰ এছৰ কবিভেছে: কাষ্ণ্ৰপ্ৰাতৰ বৰ্ষ তাহার সুগভীর বাভব প্রয়েজন ছলি পূরণ করিতে অক্ষ। সমাজ-প্রচলিত বর্দ্ধ **ভাগাকে আনন্দ (एवं मां, जुड़ि (एवं मां, कीरामव आनम डेन** (च्रातिद १४७ हेमुक्क द्वार्थ न । वेश् ७१ माक्ष्यक शाद-लोकिक विका अर्थ कुनावेश वेक्लोकिक क्वाब ध्रदक्रा করিয়াই চলে। ভাই ভথাক্ষিত বর্ত্তের বিরুদ্ধে মানুষের আৰু বিজ্ঞাহ।

বর্তমান মুগে বর্ণের উপর আক্রমণ আসিতেছে প্রধানতঃ ছুইট দিক হুইতে; প্রথম আক্রমণ বিজ্ঞানীদের পক্ষ হুইতে। এবং ছিতীর আক্রমণ সমাক্ষ-সংশ্বারকগণের তরক হুইতে। বিজ্ঞানীরা ভাহাদের নব নব আবিদ্ধার হারা প্রমাণ করিছা-ছেন বে, এই কুগং কার্য্য-কারণের অবাধ নিয়মের হারা পরিচালিত। বিশ্ববিধানে বামবেরাল বলিরা কিছু নাই। পাংপাত-চুইতে বাহাকে বামবেরালী ও বিজ্ঞিয় বলিরা প্রতীরমান হুন, তাহাও কার্য্য-কারণ নিয়মানীন। কছ বিজ্ঞানের বিজ্ঞিয় নাবার বিভিন্ন আবিদ্ধার হারা এই সভ্যাইই প্রমাণিত হুইরাছে। ব্যক্তিগত বেরাল-বুনীতে প্রকৃতির অবোধ নিয়ম ক্ষমও বিচ্যুত হুর না। ইহাই বিল স্তিয় হুন, ভবে ইশ্বত-উপাস্থার লাভ কি পু সক্ল জ্ঞান, পক্তিও সৌকর্ব্যের আক্রমণে আমরা বে ইশ্বের অভিয় বর্ণ-জীবনে বীকার করি ও পাছে ইগ্রাহা উপাস্থার অস্থ্যের্যন্ত ও বিশ্বাহ

আছে, ভাষার সার্থকতা বিজ্ঞানীরা স্থানিশ্রিত করণায় আধীনার করিবালেন। তাঁহারা ইবরোপাসনার বিরুদ্ধে সাধারণভঃ ছুইট বুক্তি উবাপন করেন। দার্শনিকল্রের্ড সর্ব্বপরী রাধাঞ্জন্ তাঁহার An Idealist l'seu: of life প্রকের প্রথম অধ্যারে উহার বিস্তুত আলোচনা করিবালেন।

विकामीता वरणम (य. क्षेत्रत मानुरवत कल्लमात एहै (anthropomorphic conception ) মাত্ৰ। মাত্ৰৰ ভাৰাত্ৰ इर्जन बुद्राई श्रादाक्य विदेशियात ७ चकार शृतन कतिराज्ञ উদ্বেধ্য যানস-লোকে গছিয়া ভোলে এক অভীক্রিয় সভার-প্ৰতিরূপ। করলোড় ব্যতীত অল কোণাও সেই মৃতির शाम शहे। देशांत (काम राख्य मधांश माहे। कार्यादे ভাষার নিকট জাগতিক অভাব পুরধের জভ বার্ব উপাসনায় সময় ব্যয় নিৰু ছিভামাত্ৰ। "There is no God and we are the instruments of a cold, passionless fate to whom virtue is nothing and vice nothing and from whose grasp we escape to utter darkness." चर्वार करवान वा क्षेत्रत विज्ञा किहूर गारे। जानता क्षेत्रात्रीक ও নিচুর নিষ্ভিত্ত হল্ডে ব্যুখাত । ইছার নিকট পাপ-পুণ্যের (कामध वालाहे माहे, शंकीत चचकारतत मरवा चवलूख इक्षत्ताः হাতা আমাদের গত্যত্তরও নাই। কাজেই আগতিক ছঃখ-বেদনা যোচনের উপায়-ব্রুপ কর্বরোপাসমা রবা। কারণ সেই দীৰবের কোনও অভিতই তো নাই। আরু যদি একাছই ইশ্বের অভিত্বাকেও, ভাহা হইলেও একবা সভ্য যে তিনি कार्या-कार्यातः मुचान चायक अवः विष-चन्रास्त्र सिवमावनीयः পরিবর্ত্তন সাধন করিতে সমর্থ নত্তেন। কাজেই অক্স एवर शांत श्रमात अस्य ७ मिखनाय निवर्षकः देश काणा. আধুনিক বিজ্ঞান বৰ্ষের অভাত ভিভিত্তলৈকেও ভীৰণভাবে আক্রমণ করিয়াছে। আত্মার অসরতা ও পুনর্কর, পরলোকের चचित्र देखानि चनाना विश्वाद चनादका अवर्गन कविदा चार्निक বিজ্ঞানীরা বর্শ্বের ভিন্তিকে অভ্যন্ত হর্মেণ করিরা ভূলিরাছেন।

বর্ষের উপর আব্নিক বুরে বিতীর আঞ্চমণ আসিতেতে
সরাজ-বিপ্লবীদের নিকট ক্রতে। তাহারা বলেন, দীবর বা
পরলোকের অভিহ পাকুক বা নাই পাকুক তাহা বছ কথা নর,
প্রধান কথা ক্রত ধর্মের কোন সামাজিক মৃল্য আহে কিনা ।
বর্ষ বিদি সরাজে বলল আনে, বদি মাহুবের জাগতিক অভাবঅভিবোল প্রণের পথে সহারতা করে, তবেই তাহার মূল্য ।
সমাজে প্রচলিত বর্ষ মাহুবের হংগমর জীবনে কোনও পাভিই
আন্নে না—ভাহাকে ওবু নিধ্যা স্থান বিভার করিরা
ভাহার কর্মান্তকে পতু করে। বে বর্ষ মাহুবকে ইছ্লোকে কোনও স্থা-বাজ্ন্য বিতে পারিল না, লে বিতে

পরলোকে বৃক্তি—ইহা কি বিবাভ ? আর পরলোকে বৃক্তি বলি আসেও ভাহাতে ইহলোকে, এই বাটর পৃথিবীতে ভাহার কি বৃল্য ? গর্ম বলি বর্ষের মতন সমাজের অভ্যাচার হইতে : বাহ্মকে রক্ষা করিভেই না পারিল, তবে ভাহা কিলের ধর্ম, ক্রীবনে ভাহার প্রয়োজনই বা কোন্বানে ?

नवाब-विश्ववीद्यत्र किञ्ज यात्राज्ञा चाव्यिक काटन नावावाणी ৰা ক্য়ানিই বলিয়া পৰিচিত, বৰ্ষের উপৰ ভাষাদের আক্ষৰণ चांबर्थ शहर । छाष्ट्रांबा नरम, वर्ष छपू रव मानूरवय मनम বিবাদ করিতেই অক্ষ ভাষা নহে, উপরত্ত ভাষা সাংসারিক ক্ষেত্র অনেক ছাব ও বিভ্রনার প্রভাক কারণ ত্ইছা আছে। ভাছাদের বিচারে ধর্ম হইল বনিরাধী খার্থরক্ষার একট উপার-**४६१: च**रिकाइशैम ७ **च्यालीत्य विक्रांद च**रिकाइ-क्षात्वव कार्यवक्षा ७ क्रायान-कृतिवा-मश्वकातव व्यानाद्व वर्षाव ক্ৰিয়ালীলতা বে কত বেৰী ভাষা বলিয়া শেষ কথা বাছ না। कृषिक-विक-त्याविक बाय्रदाब निकडे देश भारताहरूत পৰ্ণৰাৰ উদ্বাচীত কবিবা দেব, বাহাতে উৎপীড়িত মাসুবেক মন সমাজিক শাসনের বিরুদ্ধে বিজ্ঞোত করিতে না পারে নেজত ইছলোকে সংব্য ও আছ-নিএব্যের আহর্ণ প্রচার করে। ধর্মের শোষক ও প্রচারকবর্গ সমাজের শোষক ও শাসক শ্ৰেণীর ভাষক্ষাত্র। ব্যিরাদী সার্থরকার দিকে ৰভাৰত:ই ভাষাদের সভাগ গষ্ট। নিজেদের শ্রেণীয়ার্বের ভঙ এবং তাহারের সমধোত্রীর পাসকবর্গের রার্থরভার দিকে লক্ষা ৱাৰিৱাই ভাৰাদেৱ বিধি-বিধানের স্কট। ইভিহাস পাঠে ইহা সুন্দাইভাবে দুই হয়। প্রাচীন ভারতের ইভিহান পভিলে দেবা बाब, अरहरमें जायन-शरवाहिक खिबेब खेबब छेबर क्या प्रक्रिय বাৰ্ভবৰ্ণের একাংশ ছিসাবে :০ এই পুৰোছিভবৰ্গ সমাৰে ক্ষিরকূলের ভাবক ও সমর্থক হিসাবে কাক করিভ,এবং যুদ্ধের সমর দর্মপ্রকারে রাজ্ভকুলের সহারতা ক্রিত। ভাহারা যাগ-বজের অধুষ্ঠান করিয়া জনসাধারণের মঙ্গকাননার ওত্তাতে বাৰ্ব্ভিক্স্বিভ শাস্ত-বচনা ভাৱা জনসাৰাত্ৰের মনকে শৃখলিত করিরা রাখিত। ইহার কলে ক্ষণথের উপর শাসক-.ও সংক সংক বাজক-শ্রেণীর পোষ্ণপুলক পুঝল বুচুরূপে কারেয হইত। ইউরোপের স্থায়ুমর ইভিহাস পাঠেও দেখা যার যে বেছাচারী রাজ্তর ও সাম্ভতরের সলে ক্যাপ্লিক বাজ্ব-শ্ৰেণীয় যোগাযোগ ছিল অভ্যন্ত গভীয়। বৰ্তমানে বনভন্নবাৰের ৰূপেও পুঁৰিপতিকের সঙ্গে কেনে কেনে বাককলেইর সভাবে-चकारन महरवानिका छनिवारक। बनिवाकी वार्यव बावा ভালিত হইরা বাজকপ্রেণী নৃতন সরাজ-গঠনের পরে সর্বত্রই ৰানা ভাবে কউক হট কৰিভেছে। অভীভ গৌৱবের বিধ্যা ৰথে ভুলাইয়া রাখিতেই ভাষারা বছপরিকয়। সেই বিক দিরা ভাষার্যা প্রপতিবাদের শক্র। কার্থেই সরাজের

७७३व क्रिक्षवाय २७ अनेच "चावचीय नवाच-१५७ि" छ्रेषा ।

উন্নতির কথ বর্ণকাতীর বন্ধকে ব্যংগ করা প্রবােশন। তাই
আফ বর্ণের বিরুদ্ধে বেশে বেশে সামা মরে দীব্দিও নরনামীর প্রচণ্ড বিক্রোহ জাসিরা উটিয়াছে। সামানাদী রাশিয়ার
ধনতন্ত্রবালের বিলোশের সঙ্গে পুরাতন বর্ণেরও অবসান হইরাহে, শাসক ও শোষক প্রেণীর ভাবক-বরুপ বাককপ্রেণীও
বিস্পু হইয়াছে। বাহা কিছু মাপ্রবের ব্যক্তিগত বা সমষ্টিগত,
সামাত্রিক অববা রাষ্ট্রক জীবনে বরুল আনর্ম করে, ভাহাই
সেধানে বর্ণা, ভাহাই বন্ধ, ভাহাই জীবনের আন্দর্শ।

এইবার সমালোচকের গৃষ্ট লইড়া দেখা বাক, বর্ডমান জগতে বৰ্ম সৰ্বভোভাবে পৱিভাজা কিনা ? ইহা কি ভৰু बाज्यरक मुचलिल कविवादे वार्त १ वहे नकन क्षांत्रव वर्षार्य উত্তর দিবার আবে প্রথমেই ধর্মের আদর্শ ও তাহার সামাজিক পরিণতির ছিকে ছষ্ট রাখা প্রয়োজন। আহর্ণের সংস সাহাজিক পরিণতির যে সকল সহয় মিবিক হোগ বাকিবেই, ভাহার কোনও অর্থ নাই। আদর্শ মহান হইরাও ভাহার সামাজিক প্রকাশ জভ্যন্ত উংকট ঘ্টভে পারে। ধর্মের বিরুদ্ধে আধুনিক বুগের বে আক্রমণ তাহা কি বর্ষের মূলগড আহর্শের বিরুদ্ধে, না ধর্মের নামে সমাজে যে সকল প্রতিষ্ঠান ও অমুঠান বিভ্যান ভাষার বিরুদ্ধে ? অর্থাং বর্ণের বিরুদ্ধে या वर्षकरताव विकास देशाहे एदेन वर्षवारन जानन श्रेत्र । वर्ष ७ वर्षक्ष वरे इटेडे क्याद वाथा। वरे शंत्रक श्राबन । वरीक्षमार्यव क्याव नमा अला: "वर्ष वरम. মাছয়কে যদি প্ৰছা বা কর তবে অপমানিত ও অপমান-কারী কারও কলাব হর মা। কিছ বর্ষতর বলে, বানুষকে নির্বরভাবে অপ্রভা করিবার বিস্তারিত নির্মাবলী যদি নির্ভ कविश मा बार्ता, जरव वर्षेज्ये इटेरव । वर्ष वरन, कीवरक निवर्षक कहे (व एव (भ चांचाएक्ट एनन करव) कि ৰৰ্মতথ্ৰ বলে, যভ অসম কটাই হোক, বিৰবা মেয়ের মূৰে যে বাপ-ষা বিশেষ ভিবিতে অৱৰল ভূলিয়া দেয় গে পাপকে লালন করে। ধর্ম বলে, অনুশোচনা ও কল্যাণ কর্মের যারা অভৱে বাহিত্তে পাপের শোবন। কিন্তু বর্ষতন্ত্র বলে, এহপের विटंग करन कृप किरन, रक्पन निरमय गय, क्रीक्शूकरपद शान উভার। ধর্ম বলে, যে মাজুম মধার্থ মাজুম, সে বে-ঘরেই কৰাক পুৰুষীয়। ধৰ্মভন্ন বলে, বে মানুষ ব্ৰাহ্মৰ সে যড় বড় অভাকনই হউক, মাধার পা ভূলিবার বোগ্য, অর্থাং মুক্তির বন্ধ পড়ে বৰ্মা, আন দাসভের বন্ধ পড়ে বৰ্মভন্ধ।" অৰ্থাৎ বুল বর্ষ অভারের বভ-ভাষা ব্যক্তিগত সাবনাসাপেক, কিছ বৰ্ষতন্ত্ৰ বহিৰ্জ্ঞগতের সান্ত্ৰী—ইহাতে বাক্কশ্ৰেণীর প্ৰাৰাভ। चर्यरेमिक काहरन अरे वर्षकत चिकाव-देववग्राक चौकाव ক্রিলা গঢ়িলা উটিলাছে এবং ভবস্তুরণ অবিকারভেষ্যুদক শাল্প ৰচিত হইবাৰে। কিছু আৰু সাব্যের বুগ আসিরাহে। कोड़े कोड़े नवनावी नावा-बद्ध वीक्षिक स्वेदा नवारकत के बार्टिक नकन राज-रेनवना निग्रं कविराय याच क्राप्टना ।

ভাই রক্ষণীল ধর্মের পোষক ও এচারক্ষরের সহিত এগতি-বাদী ও বিপ্লবীধার বিরোধ অভি খাভাবিক ও সাংবাভিক। সরাজ-বিপ্লবীয়া বনে করে বে, বর্ম হইল শোষণমূলক পুরাভন সরাজ-ব্যবহার অভভন ভভয়রূপ। কাজেই পুরাভন সরাজ-ব্যবহা ভাতিরা দুভন সরাক পুলরভাবে গভিয়া ভূলিতে হইলে বাজক্ষেমীয় এবং বর্মভ্রের উল্লেখ একাভ এরোজন।

"Spiritually an external and ceremonial religion is good for nothing; materially it has failed to stop the stronger from exploiting his weaker brother; psychologically it has developed traits which are anti-social and anti-scientific."

কাকেই ধর্ম্মে নামে খে-সকল সামাজিক অনুঠান ও প্রতিঠান সমাজের ক্ষতি করিতেছে সেওলি সমূলে ধ্বংস করা দরকার। দেশা যাইতেছে বে, বিপ্লবীদের আসল আক্রমণের লক্ষ্য বর্মের নামে প্রচলিত বর্ম্মতন্ত্র এবং এই দিক দিরা বিষর্ভী অবলোকন করিলে মনে হয়, ভাষাদের আক্রমণ সার্থক ও কল্যাবপ্রদ।

কিছ এই আক্রমণ যদি প্রকৃত বর্ষের উপরেই আসিরা পড়ে তবে তাহা হইবে মাছ্যের পক্ষে সর্বানাশা। তারণ, যাজক-শ্রেই-লাসিত বর্ষত্রের বত অনাচার ও হীনতা, এবং কর্ষ-লাসিয়া থাকুক না কেন, প্রকৃত বর্ষ মানব-জীবনের গভীরতম আকৃতি প্রণ করিবার পথ নির্দেশ করে। মাছ্যের জাগতিক দাবিগুলি চরমভাবে ঘাঁকার করিবাও বলা চলে যে, ইহাই ভাহার জীবনের সবচুকু নর। তাহার অভরের গভীরে আছে সভ্য-শিব-ক্ষরের প্রতি অভ্যরাপ, অসীমকে জানিবার ব্যাকুলতা ও পুদ্রের শিপাসা। ইহাদিগকে অধীকার করিলে জীবনের একটা বড় অংশকেই অহীকার করা হইবে। উপথিত প্রভাজনের মুহুর্ছে হরত ইহাদের সার্থকতা গৃষ্টপোচর হর না, ভর্ম জীবনের সামাজিক আধার্শকে আহীকার করিতে পারেন মা। বছনিচরের সকর হারা আর মাহাই হোক, ভ্রার জভ

এই গভীৱতৰ প্ৰয়োজনেই বৰ্ষের বৃদ্য। অগরের এই বৌৰ আকাজা চিরন্তৰ—ভাগা-গভার বব্য বিরাও ইয়া অপরিবর্তিত। কাজেই বর্ষের প্ররোজনও চিরন্তন। রাবাক্তকন্ টিকই বলিয়াছেন,

"There is an insistent need in the human soul to come to terms with the unseen reality so long as man is man, hoping and aspiring and reflecting on the meaning of existence and the responsibilities it entails, there is no fear of the loss of religion. It is only a question of reformulation."—Kalki, p. 55.

প্ৰকৃত ধৰ্ম হাড়া মাছৰ কেমৰ কৰিয়া নিজেকে গভিয়া ভূলিবে ? বৃত্তিনিচবের সামগ্রন্থ বিধান ও ক্রপ্তের প্রত্যেকের गए कन्।। वस्त भवक श्राप्तित श्रातारे जास्तिकाम मध्य । এইকট অনেক ভাগে, ভিভিক্ষা ও সাধনার প্রয়োজন। সেই ত্যাগ ও ভিভিন্দার আদর্শ বের বর্ষ। এই বর্ষের মহিমাই বৰীক্ৰৰাৰ ভাষাৰ "ৰাহ্যের বৰ্ম" এছে বোধণা ক্রিয়া-ट्यम । अरे वर्षरे यथार्थ भागववर्ष ।—बूटन बूटन देशाङ्ग ভিভিতেই সমাৰ গড়িয়া উঠিয়াৰে। ভবিশ্বতের সাম্যবাদী जमाच गर्डरमत विरम्छ अहे मामव-बर्द्यत श्राह्मम एहेरव । देशांक विभक्षन विश्वा. नामधिक बार्साकानव भिर्क क्वा वि রাবিরা ভবিশ্ব-স্বাচ্চ গঠন করিলে ভাষা শেব পর্যন্ত মান্তবের শীবনে অভিনাপ হইয়াই বাকিবে। সমাজের পুনর্গঠন তো अक्कै। दृश्कत चाप्रत्यं चनारे--चौप्रत्यं शक्तिपूर्वं विकासरे रेराव भक्ता-भवारकव चार्विक, बाह्रिक, भावाकिक कीवरनव ভিতর পুথলা ও ঐক্যহাপন উপলক্ষ্য মাত্র। এই উপলক্ষ্য यपि जकारक द्यानादेश वक्ष इदेश (४वा (४४, ७८व छात्र) মায়ুবের পক্ষে আর এক ছদিনের লক্ষ্ণ বলিরা নিঃসংখরে विरविष्ठ इदेरव । (भवारम भन्नारभव इदाला क्षाक्र्या वाकिरव, কিছ মন বাকিবে উপবাসী ও আছার দীমভার পরিসীয়া वाकित्व ना। भौतन त्नवात्मध इन्होन, खबहोन बनिशाहे मान एटेरन । क्षेत्रकी वाकिरन, काम वाकिरन, अकृष्टित क्षेत्रत क्रमुख वाकित्व, किन्न चौवत्य वाकित्व ना श्रम्भक चामत्वन প্ৰদা প্ৰিয়তের এই ছবিদ সহতে সচেত্ৰ হওৱার প্ৰয়োজক ৰে বুৰ বেশী, ভাহা অধীকার ক্ষিবার উপার নাই।



<sup>•</sup> S. Radhakrishnan: An Idealist View of Life, pp. 46-47.

## ভারতীয় প্রত্নতত্ত্বের আবিষ্কার

ঞ্জীগোপীনাথ সেন

'ভाइভবর্থ যে পুপ্রাচীন) দেশ ও ইহার পটভূমিকার যে বিরাট ইতিহাস পভিষা আহে তাহা প্রত্নতত্ত্বে সমুঘার আবিজিয়া হইছে প্রবাণিত হইরাছে। সহস্র সহস্র বংসর পূর্বে ভারত বে সভ্য ছিল ও এইছানে এক মহাকাভির উন্নত বরণের পত্যভা ও কৃষ্ট বিভয়ান ছিল তাহা ইতিহাসের প্রত্যেক ছাত্র ভানেন। পুৰিবীর নিকটে আমাদের কাডীর ইভিহান কত মহান ভাষা প্ৰস্তুভাৱ আবিক্ৰিয়া হইতে প্ৰথাণিত হইয়া निवाद्य। ১৯২१-२৮ भारतव चार्किश्रमिकाल मार्छ चर ইভিয়ার বর্ষপঞ্জীতে সিদ্ধদেশের যোহেন-জ্যো-দারো এবং বুকুর, शक्षात्वत एतशा छक्षीना, बुक्कारमत्मत नातमान, विशासन বুছনতা ও নালকা, বাংলার পাছাত্পুর এবং মাঞাকের ৰাগাৰ্জুন কোণা প্ৰভাত নামগুলি উল্লেখযোগ্য। এই স্থানগুলি चाविकारवत्र करन यस प्रस्त प्रस्त विध्वकना, विध्वि निवक्ना, এবং স্থাপভ্যের নিদর্শন আমাদের দৃষ্টবোচর হইয়াছে। ইহা হইতে ভারতের সভাভা ও সংস্কৃতি বে অভান্ত উচ্চাকের ছিল **८क्वन छाहारे क्ष्मानिछ इत मारे, जाबाद्यत नृक्तनृक्रदाता कि** বরণের জীবন বাপন করিভেন ভাষাও জানিভে পারা যার। রামারণ ও মহাভারতে ভারতের প্রাচীন ইভিহাস কিছু কিছু জানা বাহ ৰটে, কিছ ভাহাকে ঠিক প্ৰামাণ্য ইভিহাস বলা বাইতে পারে না। উহাতে কেবল ইতিহালের একট ছক ছাত্বা আৰু কিছু পাওৱা যায় না। বৰ্ডমান ঐতিহাসিকদের निक्र प्रामायन क महाचादक दक्तन धर्च-ब्रह माळ सब--- এश्रीन হইতে ভাহার। গবেষণারও প্রচুর উপকরণ সংগ্রহ করিবা परिक्य ।

পঞ্চাশ ৰাষ্ট্ৰ বংসর পূর্ব্ধে নেজর মকলার ও হারপ্রিজস মধ্যভারত ও বেসূচিহানের বহু হান আবিকার করিয়াহিলেন। উচ্চ পার্ব্বভার প্রদেশে অতীতে একলা ভারতের নবর্গের হচনা হইরাহিল ভাহাদের আবিকার হইতে ভাহার বহু প্রমান পাওরা বার। ১৯২৭ সালের মবেদর এবং ১৯২৮ সমের প্রশ্নিলের মধ্যে ভার অরেল টেন কলাট টেটের সারওয়ান, বালাওরান, বারান এবং মকরান এই প্রদেশভলিতে বিবিধ আবিকার করেন।

সার কন বার্নালের বিপোট হইতে কানা বার বে, সিরি ও ভক্ষীলা এই হুইট ছানে পঞ্চর শতান্ধীতে বৌদ্ধ সন্থানীরা বাস করিতেন। জালারা ববন বর্ণরাক্ষিকার বাস করিতেন তবন বেত হনবের আক্রমণে ভালানিগকে সেই প্রবেশ হাছিলা বাইতে হুইল। সিরিতে ক্তকগুলি বৌদ্ধপুণ আবিক্রত হুইলাছে। এই হানে বুদ্ধের একট রুবং বুর্তি পাওরা সিরাহে। এই সক্ষম ভূপ ও বৌদ্ধ বঠ দেখিলে কুশান বুলেরও

পূৰ্ব্বে নিৰ্দ্বিত বলিয়া মনে হয়। বৌধ সন্নাদীধের ডিঞাই ছিল একমাত্র অবলগন। এই সকল বৌধমঠে বানাগর ছিল না। তক্ষ্মীলায় যে সকল খুসর বর্ণের পাণরে তৈয়ী প্রাচীন মুঠি আবিহৃত হইয়াথে তাহা সাধার মুগের বলিয়া মনে হয়।

সিক্রিণে এখনও বলি খননকার্য করা হয় তাহা হইলে হয় কিংবা সাভতলাবিশিই প্রাচীন মটালিকা পাওয়া বাইতে পারে। হাৰিয়াল, ভিন্ন মণ্ড এবং কোগাম এই সকল ছামে বহু বিচিত্ৰ পাৰৱের বাসনপত্র আবিহৃত হইয়াছে বটে, কিছ এবনও বহু चनाविश्रष्ठ वृद्धि, टिज्यमभ्य बादर वह चड्डामिका (महे भव श्वास चारकः। ১৯২१-२৮ भरम बिः म्याटक स्वाट्य-एका भारता चनन ক্ষরিয়াছিলেন। এই ধননকাধ্যের ফলে বহু বাড়ী আমাদের ৰুষ্টপোচৱে আসিয়াহে। বাড়ীওসিতে দিভি আছে। দিভি দিয়া উটিলে সারি সারি ধর, ধরওলির পরে সারি সারি স্নানের হর ও পাধবানা। প্রত্যেক হরে ছোট ছোট দরকা এবং দরভাতলিতে ধুব মোটা মোটা বাজু। বাহির হইতে ব্রের অভ্যন্তরভাগ দেশা গুর ক্টিন। যোক্নে-জো-দারোর देकित नीका प्रविष्ट चून कुमत । এই नीकाश देवे पूजादेवात कह কাঠের আখন ব্যবহার হইত। রাধানদাস বঞ্যোপাবাার প্রবয়ে যোডেন-জো-ভারো আবিষ্ণার করিয়া পুৰিবীর নিকট ভারতের সন্থান বৃদ্ধি করিয়াছিলেন। ভংপরে ননীগোপাল মতুমদার প্রবুধ অভ্সন্থিত্ ঐতিহাসিক্ষের চেটার খোহেন-জো-গারো হইতে যোল মাইল দূরে কুকর আবিষ্ণুত হয়। এই সকল আবিজ্ঞার ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ত যুগের স্বভিচ্ন্ন বলিয়া প্রমাণিত হইয়াছে। শেষ আবিকার ওওছপের বলিয়া মনে रवा।

মিঃ মাৰো বৰূপ ভাটও ব্ৰঞ্জা আবিভাৱ কৰিবাছিলেন।
এই খানের দশ ও এগার সূচী নীচে কইতে নরকলাল ও পুলর
ক্ষমর জিনিবপত্র বাছির ক্ইরাছে। এই সভ্যভাকে নাছবের
প্রথম করের (Chalcolithic) সভ্যভাবলা যার। ভাহারা সূত্তি
পূজা করিভ। ভাহানের বছ দেবদেবীর সূত্তি ও বিবিধ
পূজার ক্রালভার আবিভ্রভ ক্ইরাছে।

১৯২৮ সনে বার বাহাছ্র রবাপ্রসাদ চল বহালর সার্বাধ আবিভার করেন। লেইখান হইতে বে সকল মুলা আবিভূত হইরাহে তাহা প্রথম শতাকীর বলিরা বনে হয়। তবব্যে একট এতিকের ও অভাত চৌকা মুলাগুলিকে সুক বুরের বলিরা বারণা হয়। অভাত পুরানো জিনিবের মধ্যে পোড়াবাটর তৈরি স্লীলোকের বাবা ও মৌর্যুরের বরবের চিত্রকলা আবিভূত হই-রাহে। বিঃ পেজ বালকা আবিভার করিরাহিলেন। এই হানে প্রাচীন ভারতের প্রেচ্চ বিশ্ববিভালর হিল। ঐ হানে দেবপাল

হুলের একই ভরের প্রাচীন ঐতিহালিক চিত্র প্রভৃতি বাহির रदेशाय । जावरणव व्येष्टे निव-रक्त पक्का अवर देरनावा সভাতা ও কুটা কেন্তে গর্কের বস্ত হইবা আছে। পর্কতগাত্তে এত উচ্চাদের শিল্পকার নিমর্শন আর কোন ভাতি রাবিরা বার নাই। বি: বীক্তির পাহাত্রর আবিভারে বাংলার ভাতৰ্যশিলের শ্রেষ্ঠ নিদর্শন আবিছত হইরাছে। বাংলার ভাতর্যা-শিলীদের সাধনা, ভাঁছাদের অনিপুণ ছভের পরিচয় আবরা এই দক্ত দৃষ্ঠিতে পাই। পাহারপুরে আবিয়ন্ত চুণকাম-করা মছব্য সৃতি, পোড়া মাটর উপরে বিচিত্রিত মছব্যের সৃতি এবং জীবজন্ত প্ৰতিষ্ঠি, ইহা হাড়া থালা বাট ইত্যাহি আৰিছত হইবাছে। চৈৰিক পরিৱাছক হবেন সাঙের বুড়াছ হইতে জানা বার পুঞ্বর্ডনের বেশে শত বেবভার বন্দির ছিল। মান্ত্ৰাকে মাগাৰ্ক্ৰ কুভের বড় বড় বৌৰ মন্দির প্রভৃতি दिन वर्ष कर बहे जादम तीय जाबदकर बाज विन । वह ৰোদিত লিপি হইতে এই সৰৱে অবেক কিছু আনা বার। নাগাৰ্জ্যকুতার বুৰের অভি আবিছত হইরাছিল। ইহা বৌভ খগতের ববা এক্সদেশ, খাপান, চীন, ভিকাভ প্রভৃতি বেশের নিকট ভীৰ্ণহান হইৱা আছে। বিভীৱ কিখা তৃতীৱ শভাখীতে नाशार्क्नकुश विरमय धनिष्ठिनाच कविदादिन।

ভারতের প্রতিট প্রদেশ গৌরবোন্দল অভীভের বানা স্থতিচিত্ত বক্ষে বারণ করিবা আছে। আরও কড স্বর্যা হর্দ্যা-

যালার ধংলাবশেষ, চিত্রকলা প্রভৃতি প্রাচীব সভ্যভার বিষর্শন ৰাট্য ৰীচে চাণা পঢ়িয়া আহে ভাষা বৰ্ডবাৰ কালেয় केणिशामिकरण्य नरवयनाय विषय। ब्यारेनिणशामिक बूर्जब ক্ৰাও প্ৰভাক ইভিহাসের ছাত্ৰকে বিশেষ ভাবে আলোচনা ক্রিতে হইবে। সাধারণ ভাবে অলুসভান ক্রিরা প্রাচীন रेखिरान, बूबा, निनानिनि, वृद्धि रेखानि एरेट्ड बाठीन ঐতিহাসিক তথ্যাহি অবগত হওৱা বায়। কিছ বে সকল বিহুৰ্নচিহ্ন অভাপি আবিহৃত হয় নাই বা বাহা এবনও কোন ইতিহাসে পাওয়া বার না ভাহা কিরপে অভুসদান করা बारेरव ? ब बार्याय देखरव नमा बाद रव. बाह्मिक कारियी छ लाक-खवायब छेनद विर्वद कदिया अ अकन विरुद्ध चक्रमहान করা উচিত। কুবকরুল বাঠে আবাদ করিতে করিতে প্রাচীন ইতিহাসের কিছু কিছু বিয়ৰ্শন পাৰ কিছু সেওলিকে ভাহাৱা चबाच कविवा पाटक। केलिकानिक क के बादन क बनटक বলিয়াছেন---

67.0

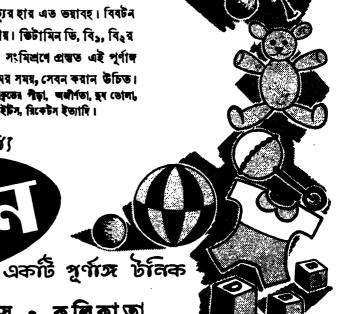
"The experiences of Archeological Missions prove nevertheless that the information obtained from people living on the sites themselves is the most valuable. Primitive people and peasants are generally excellent observers. While hunting, ploughing, digging pits, they notice many details, they have made accidental discoveries or secret

# आर्थस कर्य

শশুপারনের সম্যুক জ্ঞানের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এত ভয়াবহ। বিবটন ্লিন্তদের দৈছিক সর্বাদীণ পুষ্টিবিধান করিতে অবিতীয়। ভিটামিন ডি, বি১, বি১র সহিত মুলাবান উত্তিক্ষ ও বাসাধনিক উপাদানের সংমিশ্রণে প্রস্তুত এই পূর্ণাক ট্রিকটি প্রছ্যেক শিশুকেই, বিশেব করিয়া দক্ষোদ্যামের সময়, সেবন করান উচিত। বিবটন নিয়লিখিত রোগে বিশেষ উপকারী:-শিওদের বৃক্তের পীড়া, অলীপিডা, ছব ভোলা, ्नडे केंगा, क्वांडेकान्डि, ब्रह्मुंडडा, क्यांडा, ब्रह्मडेडिन, ब्रिक्डिन हेलापि।



লিষ্ঠার এটিসেপটিকস্ • কলিকাতা

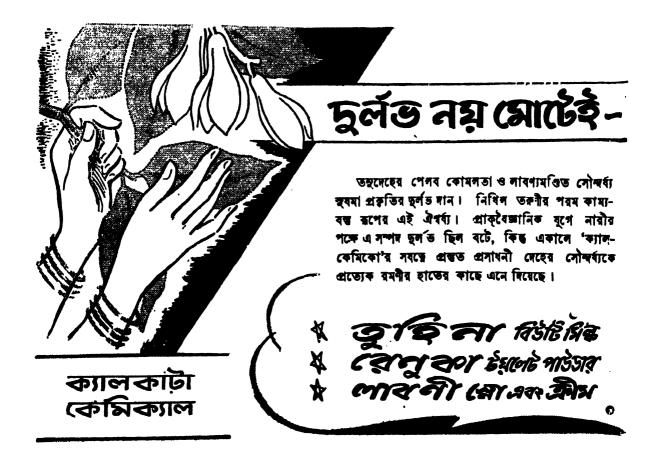


excavations. The secrets of the discoveries are handed down from father to son in certain families.

The questioning of mayors and peasants is a very delicate matter, requiring tact and experience. It is essential to go slowly and to use all one's ingenuity in order to obtain their confidence. When met by an evasive answer, do not be persistent, talk of something else, and then return to the question. Specialists in Folklore have for a long time used the best methods of making local enquiries; in fact it is their principal source of information. The questions when one puts to peasants, says one of them, ought to be of a kind not only not to induce psychical opposition, but also not to suggest an answer which would be false or indirect. Peasants often feel a kind of shyness with regard to people who belong to another social state and who they feel are better

educated. They believe that when they are questioned on their manners and customs one wishes to ridicule them. Sometimes they show very little interest."

গবৰ্ণবেষ্ট বে সকল বননকাৰ্ব্য করেন ভাষার বিষয়ণ প্রকাশ করিরা থাকেন। বাঁহারা নিজেবের চেটার ঐতিহাসিক ভথ্য আবিভার করিরা থাকেন ভাঁহারা প্রবর্ণনী ইত্যাবির আরোজন করিতে পারিলে ভাল হয়। প্রভ্যেক ছানের সলে যে সকল কাহিনী কড়ানো আছে ভাষা লেই খানের লোকদের মুর্বে ভনিলে অনেক কথা জানা বার। অহুসভিংসুরা বিদি উভােদী হইরা খানীর জনসাবারণের বব্যে অহুসভান করেন ভাষা হইলে বহু ভথ্য জানিতে পারিবেন। প্রায়া ব্যক্তিয়া নিজেবের বংশের এবং প্রানের কথা বলিবার জভ বান্ড হইরা পড়েন, এবং বলি একবার মুধ্ব খুলিরা বার ভাষা হইলে অনর্গল বহু থবর বলিতে থাকেন।



# পুশুফ - পার্চায়

क्रिको — वैनलक्षनाव जनवस्य बन, ब । भूकामा निविद्देष कनिकाको। भूको १३ । मूना २४० ।

करामी वर्णिक कोश् काव्यम् स्टबा ১৭১२ औहोस्य सम्बन्धन्य करतव अनर काशंत्र मृजू इत ১११४ वृद्धीरम । काशंत्र जीवन-व वा "कमरक्मन्तृ" নাৰক গ্ৰন্থ হইতে কভক পৰিয়াণে জানিতে পারা বার। নৈতিক আবর্ণ প্রচারই জাঁহার জাকনের বহান্ উদ্দেশ্ত হিল। সাবাজিক অভার, অবিচার ও উৎপীড়ন দুর করিবার এক তিনি জাহার শাণিত বুদ্ধি ও সাহিত্যিক এবং দার্শনিক প্রতিভা নিয়োজিত করিয়াছিলেন। দিক্ স্বংক তিনি বিখাতি এই 'এামিলিভেল এড়ুকেশন' প্রণয়ন করেন। ইহা যাণ্টত তিনি উপস্থাসও লিখিয়াছিলেন। কিন্তু জাঁহার সর্বাপেকা বিখ্যাত পুস্তক "লা কন্ট্রান্ট সোম্ভাল।" ১৭৮৯ খুষ্টাব্দের করাঙ্গী বিপ্লবের অন্তঃম জন্মহাতা হিসাবে রূপো শ্বরণীর হইষা আছেন। এই বৈপ্লবিক আদর্শ প্রচারের কল্প জাঁহার সাহিতা, বিশেষভাবে জাঁহার লা কন্টান্ত দোন্তাল' নামক এছ মৰ্য্যাদা পাইয়া থাকে। লেখক পূৰ্ববস্তুতী অষ্ট্ৰাদশ শতাক্ষীর ও সম্পাষ্থিক করাসী দার্শনিক ও ইংরেজ এবং অক্সান্ত চিত্তা-নারকগণের সহিত রুশোর তুলনাযুলক আলোচনা করিয়াছেন। ত্রীক णांनीनिक (शार्टे। ও এরিষ্টটলের চিস্তাধারা রূলোর মতবালের উপর কিরুপ প্রভাব বিস্তার করিয়াছে ভারাও স্থলরভাবে আলোচিত হট্রাছে। এরণ এর দর্শন ও রাজনীতির অমুবাদী পঠিকসহলে আছর পাইবে এ বিষয়ে আমাদের কোন সম্ভেছ নাই।

পরিবার, গোষ্ঠি ও রাষ্ট্র—এলেন্স। অমুবাদক—ভাঃ বিনয়ক্ষার সরকার। এন, এব, রার চৌধুরী কোং নিঃ, ৭২, হ্যারিসব বে'ড, কলিকাঠা। পৃঠাহবর। মুন্য ৪,।

কাল বার্কসের সহক্ষী ও লিখা ফ্রিড্ বিল এজেলস্ ১৮৮৪ খ্রীটাকে "পরিবার, নিজৰ এবং রাষ্ট্রের উংপত্তি" নামক গ্রন্থ প্রকাশিত করেন। বর্ত্তবার, নিজৰ এবং রাষ্ট্রের উংপত্তি" নামক গ্রন্থ প্রকাশিত করেন। বর্ত্তবার বাহ না। এজেল্স নিজেই বাকার করিয়াকেন বে, এই পৃথকের অনেক কথাই ওাহার গুলু মার্কসের। মর্গান চলিল বংসর ধরিয়া আমেরিকার রেড ইণ্ডিয়ান সমাজে নৃভাত্তিক অনুসন্ধানে বাপ্ত ভিলেন। ওাহার নুসন্ধ সমাজে বার্ত্তবার করিয়া বুলাইরা দিয়াকেন। তাহার নুসন্ধান আমিক বার্ত্তবার বার্ত্তবার বার্ত্তবার বার্ত্তবার বার্ত্তবার বার্ত্তবার সমাজেলান, গোলীর ভালন ও রাষ্ট্রের হুলু প্রভৃতি বিষয় আমিম ও ওথাক্ষিত বর্ষর-মানবের বিভিন্ন সমাজেন আলোচনা বারা পরিকৃত্তী করা হইরাছে। অবস্থা এই আলোচনা-পদ্ধতি ইণ্ডিহাসের অর্থনৈতিক ব্যাধ্যাসপ্রতা।

কিকিন বিক বিশ বংসর পূর্বে এই প্রস্থের প্রথম সংগ্রের প্রকাশিত হর, বর্ত্তমান গ্রন্থ ইহার ছিতীয় সংগ্রের। এই কালের মধ্যে মার্ক্তনীর সাহিত্য বাংগালেশে বিশেষভাবে ছড়াইয়া পড়িয়াকে। আশা করি এই প্রস্থ প্রত্যেক প্রথাগারে রক্ষিত হইয়া পাঠকবের জ্ঞানবৃদ্ধির সহায়তা করিবে।

#### নু ত ন मः ऋ त १ উ প হা র পু জার যোগেশচম্র চৌধুরীর জ্বলধর চট্টোপাধ্যায় দানেশ্রকুমার রায়ের কবি সভ্যেন্দ্রনাথ দত্তের সামাজিক নাটক मार्थाकिक नाठेक **শত্মকাশিত অভিনব সংশ্বরণ** নানাগাহেব ৩১ পাত্ৰতা 210 শ্ৰেষ্ঠ কাৰ্য-এম্ব ব্রীতিমত নাটক (প্রতপুরী वाश्लाब त्यस्य 110 সত্যের সন্ধান ১॥• ডাঃ নরেশ সেনগুপ্ত পরিণীতা 7110 রাঙারাখী যাক্ডসার জাল 210 710 সভী 210 লুপ্তশিধা পথের সাধী ১10 ভূপেন্দ্ৰনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় সামাজিক নাটক আ**ত**তোৰ ভট্টাচাৰ্য্য রূপের অভিশাপ 🧃 কুহু ও কেক<sup>†</sup> ৩**৷** ০ বাসালা সানাজিক নাটক 7110 সৌরীক্র মুখোপাধ্যায় বেলানেষের পান ১ পৌরাণিক নাটক *অগিমীকাল* 700 भवीदिव ছिल অভ্ৰ-আবীর অতিতোৰ সান্তাল क्षवराज 110 **७**||● বাহ্নাশখা विक्रमी তুলির লিখন 2110 10 जनाट ज 2110 শিবপ্রসাদ কর নগেন্দ্ৰনাথ ভট্টাচাৰ্য্য প্রমোদকুমার চট্টোপাধ্যায় মোহিতলাল ম**জুমদারের** শ্রেষ্ঠ কাব্য-এত পোরাণিক নাটক ৰৰ প্ৰশংসিত এছ পৌরাণিক নাটক স্বৰ্ণ লঙ্কা তন্ত্ৰাভিলাষীৰ সাধুসত্ত 🗸 Sho অভিষেক 2110 (रुभरु-(गावृत्ति २॥• बरेंह, सीमानी बख जन ३ २०८न१ कर्नध्यालिज क्रीहे, कलिकांछा ।

মন্ত্ৰী-মিশন ও পরবর্তী অধ্যায়--- এ ব্যৱহৃষার बस्माभाषातः क्षित्री जानाम, ७०१४:७, अस्तिन्दिन शिहे, क्लिकाका। शृंधा ३८७ । मृत्रा इरे होका।

634

১৯৪৬ সনের ২৩শে মার্চ মন্ত্রী-মিশন ভারভবর্বে পৌছেন। মিশন সকল বাজনৈতিকদলের সহিত, বিশেষত: কংগ্রেস ও মুসলীম লীপের সহিত ভারত-শাসনসম্ভা সহত্তে দীর্ঘ আলোচনা करवन। कराबन ७ नोर्शन मर्या कान मीमारमा ना इंडवाब ১৯৪७ मरनद ১७३ म् बही-मियन ও वहनाहे এक वृक्त विवृष्टि अहाद करान । इंहारक्रें छिखि कविशा जकन गरनत, विरम्बछः क्राज्ञज छ সীপের আবার আলোচনা ভুক্ত হয়। উভয়ের মধ্যে পার্বক্য এড ওক্তৰ বে মিলিবার সভাবনা আদে তথন দেখা বার নাই। অবৃও বড়লাটের চেষ্টার কেন্দ্রে অন্তর্বস্তাঁ-কালীন প্রব্যেট পঠিত হয়। দীপেৰ 'প্ৰভাক সংগ্ৰাম' ও অন্তৰ্বতী সৰকাৰে প্ৰবেশ আৰও পরে হয়। পর্ণপরিবদের সভ্য নির্ব্বাচন, লীপের পর্ণপরিবদ বৰ্জন আৰও পৰেকাৰ ঘটনা। এই পুস্তকে গণপৰিষদ গঠন পর্যান্ত বহ জ্ঞাভব্য বিবন্ধ সন্থিবেশিত হইরাছে। আশা করি बरे छपारहम भूछरकर विकीय पत्र नैयरे क्षेत्रांनिक रहेरर बरा ভাছাতে প্ৰপাৰিক পঠনেৰ প্ৰবন্তী, সাম্প্ৰভিক ৰাজনৈভিক ঘটনাঞ্জি ভান পাইবে।

এরপ পুত্তকের বছল প্রচার ছইবে বলিয়া বিশাস করি।

💐 অনাথবদ্ধ দম্ভ

व । ভाলक ।--- औन्तिकताथ गिरह । बैशक नाहेरवती, २-४, क्र्बंखवानिन श्रीहे, क्रिकाफा। नाम 🔍 ।

ভিটৰ হুপোৰ অথব উপন্যাস 'লে বিভাবেবল্গ'-এব সংক্ৰিপ্ত অভুবাদ। অভুবাদের ভাষাটি বেশ ব্যবহে--কিশোরদের উপবোসী। বিদেশী সাহিত্য অভুবাদকালে অনেকে ঘটনাম স্থান ও পাত্ৰপাত্ৰীৰ নামঙলিকে দেশী পোনাক পৰাইবা ঘৰোৱা বলিৱা চালাইবাৰ প্ৰহাৰ পান। ভাঁহাৰা ভূলিয়া বান-গৱেৰ ধাৰা অভুসৰণ কৰিবাৰ সঙ্গে সঙ্গে বহুদূৰেৰ অপৰিচিত দেশ, সমাজ, ব্যক্তি ও ভাহাদের রীভিনীতি জানিবার কৌভূহল কিশোর-মনে व्यवन रहेवा छेर्छ । व्यवस्थाव विवय क्याप क्याप क्याप क्याप नाहे। छेनवड अहे विवाहे छेननहारमव ब्याद मयक हविस्तव সংক্ষিপ্ত পৰিচৰ এবং সমসামৰিক ইভিহাসের সংক্ষিপ্ত-সাৰ আখারিকার সঙ্গে সাঁথিরা দিরাছেন। অতুবাদট আমাদের ভালই লাগিয়াছে।

**এ এ**বিশ্বকর্মার জীবনচিত্র—এ মণ্যাল্ভা দেরী। श्करमात्र हार्डीाभाषात अल अस, २०७ ३।३ वर्षवर्षाणन होहे. কলিকাভা। মূল্য পাঁচ টাকা।

এটকে ঠিক উপন্যাস বলা চলে না। একটি চবিত্রকে কেন্দ্র কৰিৱা দিনাভূদিন অনেকগুলি কৃত্ত কৃত্ত বঙ ঘটনাৰ সমাবেশ কৰা হইবাছে। চিত্রগুলি প্রস্পর্বিদ্যি হইলেও কডকগুলিকে স্কৃতিত্রিত বলা বার। পুতকের কলেবর অবধা দীর্ঘ করা হইরাছে। জ্ঞীরামপদ মুখোপাধ্যায়

# নেতাজী অৱনুসৱণে

বাংলার বিখ্যাত মৃত ব্যবসায়ী ঐঅশোক্চন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "🕮" মার্কা মতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিপ্পয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'শ্রী' দ্বতের ব্যবহার অত্যাবশুক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল ম্বতের ষেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে শ্রীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ স্থত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা ম্বত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অফুকরণীয়।

ৰাঃ শ্ৰীসুভাৰচন্দ্ৰ ৰস্থ

বিভিন্ন দেশের নারী ও সমাজ — জ্বীক্তীশচল বন্দ্যোপাধ্যার। প্রাপ্তিয়ান : প্রশ্বকার, পোঃ— গড়িয়া, ২৪পরগর্পা। মূল্য হ' টাকা চার আনা।

জাপান, চীন, বজদেশ, বহিতাবতীর চিন্দু মৃদ্দমান ও ইউবোপের নারী ও সমাজ সম্বন্ধে বহু তথ্য প্রস্থানিতে সন্নিবেশিত ইইবাছে। আহ্বা পুস্তকথানি বিশেষ আপ্রকেব সচিত পড়িবাছি। বর্জমান (বিভীয়) সংক্রণে পুস্তকথানি অধিকতর সমাধৃত হইবে বলিয়া মনে হয়।

বন্দেমাতরম — এছবীরবন্ধু বন্দ্যোপাধ্যার। দেন এ'লাস ১৫, কলেছ ভোরার, কলিকাডা। লার ৩। ।

কৰি নবেন্দু খাৰ্থত্যাকী আদৰ্শবাদী পুক্ষ। নিজেৰ বধাসৰ্কাহ দেপ্ৰথম ক্ষম্ভ নিজনের হাতে তুলিরা দিল, বার কলে অথি বিশ্বমচন্দ্রের পরিকজিত আনক্ষমঠের বাজব রূপ মৃষ্ঠি পরিপ্রায় করিতে আরম্ভ করিল। কিছ উপন্যানের মূল বিবরবস্তুটি ছাপাইরা শেব পর্যন্ত করি নবেন্দ্র প্রতি ভক্ষভার প্রেষ্ট বড় হইর' উঠিরাছে। উপন্যাসখানি বড় বেশী বক্তভাভারাক্রাম্ভ এবং ভাবোদ্ধ্যাসে পরিপূর্ণ। চরণ গোঁসাই এবং বলাই এ চ্টি চরিত্র চমৎকার ফুটিরাছে; কিছ কবিজননী হবিলল্লীর চরিত্র মাবে মাবে আত্যন্ত আভাভাবিক বলিরা মনে হয়। উপসংহাবে নবেন্দ্র স্ত্রী কমলের আক্ষিক মৃত্যু মংস্কৃর জনশনে মৃত্যুবরণ, সেই মৃত্যুকে উপলক্ষ্য করিরা আমীকির বক্তভা, হবিলল্লীর ভূগভাঞ্গা ইন্ড্যাফি সাং কিছতে মিলিরা একটি অতি-নাটকীর পরিবেশ স্কৃষ্টি করা হইরাছে। লেবকের এইদিকে একটু সতর্ক দৃষ্টি রাধা উচিত ছিল। ছাপার বহু ভূল আছে। প্রচ্ছদণ্ট মনোর্য ।

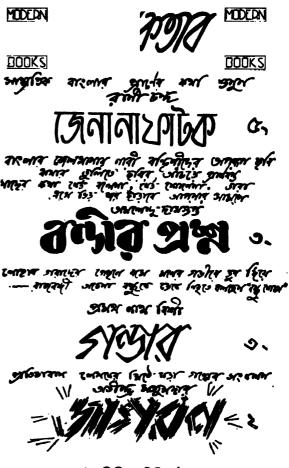
ঐবিভূতিভূষণ গুপ্ত

পাত্থেয়—সম্পাদক শ্রীনলিনীকান্ত স্বকার ও শ্রীবিমল বস্থ। কথা সাহিত্য মন্দির। ১৬-এ ডক স্থাট কলিকান্তা। মূল্য দেড় টাকা।

এই সহলন-গ্রহণানি হাতে লইবাই ইহাব প্রাক্তন-সক্ষা এবং মুন্ত্রণ-পাবিপাট্যে মুগ্ধ হইতে হব। প্রহারতে কথাসাহিত্য-মন্দিবের পরিচালিক। জীলঞ্জলি সরকারের 'নিবেদন'টি বেশ আন্তরিকভাপূর্ব। বিভূতিভূবণ বন্দ্যোপাব্যার, বনকুল, সজনীকাত্ত লাম, বিভূতি মুবোপাব্যার, পরিমল পোলামী, দিলীপকুমার রার, বাবী রার প্রমুধ লবপ্রতিষ্ঠ লেখক-লেখিকাদের রচনা-সভারে পুত্তকথানি সমৃদ্ধ। আধুনিকতম সাহিত্যসেবীবাও বাদ পড়েন নাই। রচনা নির্বাচনে 'পাবেম'র সম্পাদক্ষর উন্নত কচি এবং স্থপবিপত বসবোবের পরিচর দিরাছেন। তরু একটি বিবরে আমানের আপতি আছে। পুত্তকের গোড়ার দিকে 'সম্পাদনা করেছেন অমুক', 'প্রকাশ করেছেন অমুক' ইত্যাদি সিনেমাগন্ধী পরিচরপর না দিলেই ভাল হইত। সম্পাদকপণের মনে বাধা উচিত, চলচ্চিত্রে যে ধরণের চটকদার বিজ্ঞাপন জনচিত্তকে মুগ্ধ করে সাহিত্যে ভারা অচল; ইহাতে সাহিত্যের আভিজ্ঞাত্য সুর হয়।

সগরল--- এন ভাত্বৰ চৌধুরী। বভাৰ বুক ভিপো। বিশাবাদার--- এন্টা। নাম আড়াই টাকা।

প্ৰেৰ বই। সৰপ্ৰ বাৰটি প্ল ইহাতে ছান পাইৱাছে। পুতৰণানিতে বানান জুলের এত হড়াছড়ি যে বিভালংগৰ



(ম্বরলিপিস্থ গ্রীভিনাট্য)

অভিনব অথচ অতি পুরাতন পালা গানের আদিকে রচনা ১৯৪২—৪৫'-এর বাংলার বুক নিংড়ানো বাণী গানে ও মৃক অভিনয়ে অপরুপ Die Sabadhar Sinha

### Tagore:a5ocial approach 🛩

A brilliant analysis by a socially conscious and erudite scholar presents—Rabindranath from a new angle.

সব বই দামী কাগজে, স্থেব ছাপাই, স্থাপুত বীধাই
নিবে শীগ্ৰীওই বাব ছবে।



অবস্থাপণ ইচা ইহতে বাংলা প্রস্নপত্তের অভবি সংশোধনের ব্দেশ প্রস্তৃতিত বেশ সাহায্য পাইবেন। বানান ভূলের পালা বৰ হইবাছে ভূমিকা চইডেই ৷ ভাহাতে 'সম্বাধিকাৰী' এই অনুত बानानवृष्ट नक्षि इरेवाब चाट्ट । जीत्र वर्गाक्षव अक्षि किशिष्ट দিতেছি: সাতভূতে, মুখত, আধুনিকি, এয়ভা, উপরানেং, माक्षाल, रमकोवि, कोवनवानि, निवद् , कांग्रेस्टर, पून, पूर्व, উৰ্দৃধী। শেশক যে বছৰছজ্ঞানৰাক্ষত ভাৱার কতকওলি উণাহৰণ—কাকুণী, আওণ, দক্ষিন, কংন, প্ৰান প্ৰনাম। সহ চেৰে বেশী কেৱামতি দেখাইবাছেন তিনি শব্দ প্ৰয়োগে, ক্ৰিয়াপদেৱ वावज्ञात्व ७ वाका बहुनाव । (वधन : वृत्यव (कमा 'हृष्टिवा'(विहेकाहेबा পড়ে. मिठाहेबा छति ( मक्कवल-मिठा इहेबा : हेहा প्रकातस्थव 'বটাইবা দিব যত পাষও বৰ্কবে' এই বিখ্যাত ১৯৪ব কথা স্থ্ৰণ কৰাইয়া দেয়)। মালিকের মার-এ (কাগী শব্দ নয়-মারে)। কাছের ধার মাড়ার না, অভি স্থশ্ব ছু কাক কোষণ সেকেলে চিবুকটি (ড়িং हिः ६६ ) बाक्ष्रंत्रव धाक खेवाल बहेबा हत्न, विमुखन ( मस्वर: উচ্চ্ৰেল) স্বামী, মেবেটিব দিকে আমার পক্ষপাত হরে প্রল---ইন্ড্যাদ। ক্রটিঙলি একটু বিস্তারিভভাবে উল্লেখ করিলাম এই ভক্ত :ব ছ'একটি গৰু (ভল্লব্যে 'সগ্ৰল' প্ৰটিই বিশেষ ভাবে উনেধবোগ।) পড়িয়া লেখকের ভবিব্যৎ সম্বন্ধে কিঞ্চিৎ আলার স্কাৰ হয়, কিন্তু সঙ্গে সংক্ষেই বীভিষ্ঠ বৰ্ণ-প্ৰিচয় লাভ না कवित्रा এवः वाःला ভाষাय वहनानीचि ७ मकक्षदान-कोनलाहि আরম্ভ না ক বিহাই প্রস্থাব-পরিচিতি লাভ কবিবার মূল উল্লেখ

> মূলাবালিকা ও করার মূলাবালিকা ও করার

ব্যপ্রতা দেখির ছাও হয়। লেখককে আরও ছইট কথা মনে রাখিতে বলি। প্রথমতঃ, অপান্তাবিক ঘটনার অবভারণা কৃষিকেই বোমান্তিক গল নাোভাগিছর না। বিভাষতঃ ইতর প্রাণীদের লইয়া পর লেখা অভ্যন্ত ছক্ত কাজ। শ্বংচল্লের 'মহেশ' আর ল্বীজনাথ ঠাকুবের 'কালিমের মুবনী' ছাড়া ইতর প্রাণীদের লইয়া লেখা সার্থক গল বাংলাসাহিত্যে আছে কিনা সক্ষেঃ।

ত্রিবেশী — এক্সল রার। এস. সি. সরকার এও সভা লিঃ। ১ সি কলের কোরার, কলিকাতা। মূল্য আড়াই টাকা।

চারিটি অধ্যারে পরিসমাপ্ত এই উপজানখানির আজিকে নৃত্যক্ত আছে। প্রথম ক্ষান্তে আমরা করতোরা আর কাবেরা এই ছুই বোনের দেবা পাই। রাজির অক্ষকারে বড় বোন করতোরা অর কাবেরা এই ছুই বোনের দেবা পাই। রাজির অক্ষকারে বড় বোন করতোরা ঘর ছাড়িঃ। কোথার নিরুক্ষেন ইরা গেল, আর ঘটনাচক্রে ছোট বোন কাবেরাকে পরিবীতা হুইতে ছইল দিনির প্রং গ্রাইত সাহিত্য ছেটার মাহিত। ছিলীর অধ্যাহে দেখি, বৈমানিক দিলীপের সভেত সাহিত্যিক অপুক্রর মঙ্গে তারার অপ্রভাগিত পরিসমাপ্তির মঙ্গে সঙ্গেই মাহিত্যরুকিক অপুক্রর মঙ্গে তারার অপ্রভাগিত পরিবার, উভরের পরিপ্রের মধ্যে বাহার পরিবাত। তৃত্যার অধ্যাবে লগক আসরে আনিয়াছেন ছুর্জ্রের বোন, কোগলযাশাহিনা চার্জ্রেলিওর লাভাবে। চিকিৎসক উৎপালের সংগ্রবে অনিধা লতা হঠতে চাহিল লাখা এই। লবে বে উৎপাল একণা ছিল শক্তলার প্রতি আসক্ষ সে লবার সহিত আবছ ইইল পরিবারপ্রে। চতুর্ব অধ্যাবে উপযুক্ত পারিবার্থিক স্কটি করিয়া লেখক উপজানের সবস্কলি পারেপান্তাকৈ কিছুক্ষণের ক্ষক্ষ সিনেমার থেকাগুছে আনিয়া একত্রে মিলাইয়াকেন। সেথানে নিরুক্ষণে ক্ষরা কাবেরার

# প্রীঔমধালয় লিমিটেড্

প্রতিষ্ঠানের ঔষধগুলি শাস্ত্রনির্দিষ্ঠ মাত্রায় ও প্রথায় অভিচ্চ রাসায়নিক ও ভেষজিশারদ্

-গণ দারা প্রস্তুত হওয়ায় পর্বদা নির্ভরমোগ্য 🜟 পর্ববরোগে মকর্প্রবর্ত

**\*** খানতীয় রক্তদুষ্টিতে সারিবাদ্যরিষ্ট

₩ *সর্দ্ধি কাসি ইত্যাদিতে চ্যব*নস্রাশ

🗱 স্মেত ও রক্তপ্রদর এবং যাবতীয় স্ত্রীরোগে অশোকারিষ্ট

🗱 यानवीय क्रशसार्ग जाकादिष्ठ *प्रस्वभवूख वानवांग्रा वि*तिक

8**৬৮ • রসা রোড** (সাউথ) টালিগঞ্জ • কলিকাতা

নুক্তৰ পরিচয় আমধা লাভ করি ছারানটী কুন্ধারণে। উপস্থানের চারিটি অধ্যার পরক্ষার বিদ্ধির, অথচ ইহানিগকে একটি অনুস্থ অথচ অতি ক্ষমার বেক্তমন্ত্রে প্রথিত করিরা লেখক বিলেব নির্ক্তনান্তার পরিচয় দিয়াছেন। একান্ত বাস্থিতকে না পাওরার বেদনার্থ হইল এই উপস্থানের প্রয়েকটি চরিত্রের কর্মানক্ষা। জীবনের সহিত আপোষ করিরা ইহারা বরা সংক্ষার করিছেছে বটে, কিন্তু—

'We pine for what is naught.

Our sincerest laughter with some pain is fraught.'
এই কথাই ইংবের অসতক্ মৃত্তের আচরণ ও উভিতে ক্টিলা
উটিচাছে। আন কথার এবং ইলিডপুর্ণ ভাষার পাত্রপাটোবের অন্তপু চ্
মৌন বেলনার প্রকাশে লেখক বিশেষ কৃতিছের পরিচর দিরাছেন।
লেখকের ফুল্ল মনস্তম্বজ্ঞান এবং ভাষার ইলিডমরভার পরিচর পাই,
বেখানে তিনি বলিভেছেন, "টেক সেই সমন্ত এখান খেকে বচদুরে হোটেলে
ভিত্তেল বসে দক্সকা অপুকার ভাততি হাতে চেপে খরে মনে মনে
দিলীপের (ভার প্রথম প্রাট্র) কাছে ক্ষা চাইছে।"

লেগকের সাজাজান বছরানে, বিশেষতঃ উপদংহারে উপস্থাস্টিকে অপ্যাতের হাত ইইতে রক্ষা করিয়াছে।

ঐ্রানলিনীকুমার ভত্ত

জ্ঞান্ত্ৰীশনি পূজাও কথা—ভঞ্জিতীৰ ঐটমেশ চক্ৰ চক্ৰবৰ্তী। ১২০৷২ আপাৰ সাৰক্লাৰ বোভ, কলিকাতা। ১৬ পু:। মুল্য দশ শ্ৰসা।

चालाहा पुश्चिकाश मरअपूरावैश नवज्ञक् वर्गना, खेजीमनिश

ব্যান, পৃথামত্র, প্রধান, নবত্রহ তব, পনিদেবের বতর তব্যহ ক্লালিত পরার হলে পাঁচালী কথা হান পাইরাছে। বর্ষগ্রাধ নরমারীর পঞ্চে এ পৃত্তিকা বুবই প্রয়োজনীয়।

₽.

যক্তোপবীত—শ্ৰীগোনবোহন দেববৰ্ষণ বিদ্যাভ্যণ প্ৰাধিদান—১১৩ নং মনোহর দাস চক, কলিকাভা। বৃদ্য— এক চীকা বাম।

বেব কথা শ্রুতিমৃতিশাসিত আর্থ বাঁ হিন্দু জাতিয় পৰিত্র জাতীয় চিক্ত নিবাছয় । নবঙৰ বা তছমুক্ত ছজের ক্রিবেইনীকে পরিমিত আকারে এবিত করিয়া বজোলিতে পরিশোবন করিয়া লইলেই আর্থনৌরবের মহাপবিত্র চিক্ত যজোপবীত হয় । লইবালী পরমালার বা সর্বজীবের মিলনক্ষেত্রের নাম যজ্ঞ । সেই বজের সমীপে পৌহায় ছফ প্রুমহায়ল সাবনের বোগ্যতা লাভ হয় বে ছ্রুচিক্ত বারবে—তাহাই যজোপবীত, যজহুজ, পৰিত্রছয় বা পৈতা । আলোচ্য প্রস্থে, প্রস্থলার, যজ্ঞ ও বজ্মান গৈতা ও পুরোহিত, পৈতায় কালাকাল নিরপণ, মঞ্মহুলাক্তের প্রথম সোপান উপবীতকে শর্ম রাবিতে হইবে, পৈতায় সহিত বর্ষের থনিও সহজ্ঞ এই হয়ট অব্যারে বিভারিত স্ববেশা করিয়াহেল । জাতিয় সম্ভীময় ভেনবহল অবহায় ঐক্যলাবনের সহায়করণে বেলাগুল নহনায়ী য়ায়কেই

আমাদের গ্যারাণ্টিড প্রফিট স্কীমে টাকা খাটানো সবচেয়ে নিরাপদ ও লাভজনক।

নিম্নিশিভ স্থানে হারে স্থায়ী স্থামান্ত গ্রহণ করা হইয়া থাকে :---

- ১ বৎসদের জন্ম শভকরা বাবিক ৪৪০ টাকা
- ২ ৰৎসদের জন্ম শভকরা বার্ষিক ৫৫০ টাকা
- ৩ বৎসরের জন্ম শতকরা বাবিক ৬৯০ টাকা

নাধারণত: ৫০০, টাকা বা ততোধিক পরিমাণ টাকা আমাদের গ্যারান্টিভ প্রক্রিট দ্বীমে বিনিরোগ করিলে উপরোক্ত হারে স্থল ও ভত্নপরি ঐ টাকা শেয়ারে থাটাইরা অভিবিক্ত লাভ হইলে উক্ত লাভের শতকরা ৫০২ টাকা পাওয়া যায়।

১৯৪০ সাল হইতে আমরা অনসাধারণের নিকট হইতে হাজার হাজার টাকা আমানত এহণ করিয়া তাহা স্থদ ও লাভসহ আদায় দিয়া আসিয়াছি। সর্বপ্রেকার শেয়ার ও সিকিউরিটি ক্রয়-বিক্রয় সম্পর্কে আমরা কাজকারবার করিয়া থাকি। অন্থ্যাহপূর্কক আবেদন করুন।

# ইপ্ট ইণ্ডিয়া প্টক এণ্ড শেয়ার ডিলাস সিণ্ডিকেট

### লিসিটেড

৫।১নং রয়াল এক্সচেঞ্চ প্রেস্, কলিকাতা।

টেলিপ্রাম "হনিক্"

বোৰ ক্যান ৩০৮১

অবিভারী বিশিলেরে বজন্মবারণে উৎসাহতান পানীর ও ঐতিহালিক প্রবাবের ভিডিতে করা হইরাছে। কি রাজনীতি কি বর্মনীতি কোন বিষয়েই মান্য কর্মন্ত প্রক্রমতাবলহী নহে। বর্জনানে আমানের কল্যানের পথ পুঁজিবার সময় উপহিত। এ সময়ে প্রাচীন বেলেজ্বলা আর্থ-সংস্কৃতির বিক্টিও সম্মত্ আলোচনা হওয়া উচিত। তবিষয়ক আলোচনার এ এছ অনেক্বামি সাহায্য করিবে নিঃসক্ষেত্র।

প্রীউমেশচন্দ্র চক্রবর্ত্তী

# **५म-शिल्ला कथा**

#### নিধিল-ভারত সাহিত্য-সম্মেলন

নহা দিল্লীতে সম্প্ৰতি নিৰ্বিদ-ভাৰত সাহিত্য-সংখ্যন নাথে একটি সাহিত্য-প্ৰতিষ্ঠান পঠিত হইৰাছে! ভাৰতেৰ বাৰতীয় সাহিত্য ও ভাৰাৰ প্ৰতিনিধিবা বাহাতে পৰস্পাৰেৰ সহিত ভাৰ-বিনিষৰ ও সাহিত্যবাৰাৰ আদান-প্ৰদান কৰিছে পাৰেন সেই উদ্বেশ্যই এই প্ৰতিষ্ঠানটি গড়িবা ভোলা হইৰাছে।

সংখ্যনের প্রথম অধিবেশন ১৩, ১৪, ১৫ ও ১৬ই সেপ্টেম্ব নরা দিল্লীর 'বন্টিটিউশন হলে' (বিধান পরিবদ গৃহে ) ছইবে। একও সংখ্যনন সকল প্রদেশেই আমন্ত্রণ-পত্র পাঠাইরাছেন। সংখ্যনের কার্ব্যক্ষরী সমিভিতে বাংলাসাভিত্যের প্রতিনিধি প্রীযুক্ত দেবেশচক্স দাশ মহাশর জানাইরাছেন বে, টিকানা না জানার কোন কোন বাঙালী সাহিত্যিককে নিমন্ত্রণপ্র পাঠানো সন্তব হব নাই। প্রীযুক্ত দাশ ভাঁহাদিগকে

এবং সংখ্যান বোগদানেজ আভাত সাহিত্যাত্বাসীদের ১ নং ওন্ড মিল বোড, নরা দিল্লী—এই ঠিকানার তাঁহার সহিত পত্র ব্যবহার কবিবার জন্ত সনির্বন্ধ অভুবোধ জানাইরাছেন।

আশা কৰা বাব, সাহিত্যের জন্য বাঞালী বে সাধনা ও ভাগে বীকার করিবাছে ভাহার বোগ্য মর্ব্যাদা এই সম্মেগনে নিশ্চরট সে পাইবে।

#### ञ्नीनावाना वञ्

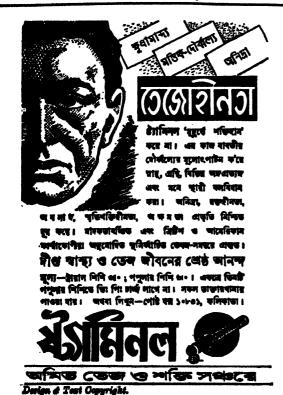
বিগত ৫ই আবাঢ় স্থালাবালা বহু প্রলোক্সমন করিৱাছেন। তিনি ১২৮৮ সালে বৈশাখ মানে নদীয়া ছেলাব অন্তর্গত
একলি প্রামে কর্মপ্রহণ করেন। মিত্র ইন্স্টিটিউসনের প্রতিষ্ঠাতা
ঘর্সীয় বিশেষর মিত্র ইনার পিতা ছিলেন। ১২৯৮ সালে উক্ত কেলার অন্তর্গত বাগ ঘাঁচড়া প্রামনিবাসী বিখ্যাত বস্থ-বংশে
ঘর্সীয় কেলারনাথ বস্থব জ্যেত পুত্র বতীজনাথের সহিত তাঁহায়
বিবাহ হয়। বিবাহের পর তিনি পল্লীপ্রামেই বাস করিছে
থাকেন এবং ক্রমে পল্লী-উন্নয়নকার্য্যে আন্ধানিয়াের করেন।
পল্লীবাসীরা তাঁহাঘারা নানাভাবে উপকৃত হইত। স্থালাবালা
অত্যন্ত বর্ষপ্রায়ণা মহিলা ছিলেন। ঘামীর সঙ্গে তিনি ভারতবর্ষের প্রায় সমন্ত প্রধান প্রধান তার্যছান পরিক্রমা করিবাছিলেন।
১৯৩০ সালে ইহার ঘামীর মৃত্যু হয়। তদবধি তিনি নির্নিগ্রভাবে
সংসারে থাকিয়া অধিকাংশ সমন্তই ভগ্রদারাধনায় ও ধর্মানোচনায়
রত থাকিতেন। উপর্যুগিরি কত্তকগুলি চুর্ঘটনায় জাঁহার খান্যু
একেবারে ভাত্তিরা পড়ে।

এই অংছারও তাঁহার পরোপকারপ্রবৃত্তি হানপ্রাপ্ত হয় নাই। মৃত্যুর পূর্ককাল পর্যস্তও তিনি প্রায়বাসীদিপকে নান। ভাবে সাহাব্য কৰিলা পিলাছেন।



ন্তন আবিস্কৃত। কাপড়ের উপর স্তা দিয়া অতি সহজেই নানাপ্রকার মনোরম ডিজাইনের ফুল ও দৃশ্যাদি তোলা বার। মহিলা ও বালিকাদের খুব উপবোগী। চারিটি স্ফাচ্সহ পূর্ণান্ধ মেশিন—মূল্য ৩, ভাক ধরচা ॥ ১০।

**डीन बानार्ग**; बानोबड़, बर 28



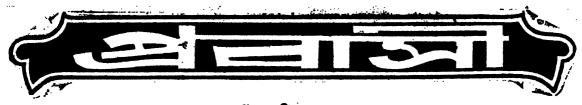


বোধিক্রম-মূলে 'ওগ্যরক্ষিতা শ্রীতিলক বন্দ্যোপাধ্যায়

থবাসী প্রেম, কলিকাডা।







"সভ্যৰ্ শিবৰ্ সুন্দৱৰ্ - শাৱৰাত্বা বসহীদেন সভ্যঃ"

৯০ মাজ ১৯ মাজ

### আশ্বিন, ১৩/৪

৩ সংখ্যা

### বিবিধ প্রসঙ্গ

পশ্চিম বাংলার সমস্তা

পশ্চিৰ বাংলার সন্থবে বে সকল ভট্টল সৰভা আসিয়া পর্কিবাছে দে সকলের সংখ্যা অনেক এবং গুরুষও ক্ষমেই वांक्रियां क्रिकारकः। वेकारक्ष्य मर्द्या मर्द्यक्षयाम मध्या पश्च-বল্লের, ভাহার পর ক্রনে শিক্ষা, আরুরক্ষা ও জাভি সংগঠনের। छाराव शव (बार्ड वर्क बर्माय श्रकादिव देवड-वारिव श्रव সমাবানের কথা তো আছেই উপরত্ত আছে পূর্ববদের সংখ্যা-লবিচাদিলের জীবনসম্ভা। বর্তমান ভারতের যে পরিছিতি ভাষার ধবা দিরা দেশকে সবল ও কাঞ্চ করিয়া ভোলা বে কি নিৱতিশহ কটিন ব্যাপার ভাষা বোৰ ছয় জনসাধারণেয় বারণার অভীত। উপরত্ত ঐলপ কটল বরণ-বাঁচনের সমভার জালে বদি দেশের লোড় জবেই বড়াইরা পড়ে তবে পরিণার বে কি ভয়তর হইবে সে কথা ভাবে কর জনে ? দিন-नल भाभवा क कांकि विशे कार्यााबात देशहे वरेशा क्रिशाटन चणांश वारमारपरनंद हम्छि क्षया । समस्यापा होवाकाववाव. কাঁকি-ছয়াচরি, ভাষার উপর খাছে প্রমিক আন্দোলন, হার चार्त्नामन क हांबी विरक्षांक अवर चार्क माना श्रकांव श्रीठ-क्रिशमिन यक्तरास्य श्रेष्ठ । अकान क्षेत्र । रहरमेव वर्षन अर्-बन चन्द्रा, पादाव मरत्नायम बाद नित्वद चनाया, त्मरे ममद বলি দেশ শাসন ও পরিচালনার ভার বাঁহাদের উপর অণিত হইরাবে ভাঁহারা দলাধলি, ভোট খন্তি এবং কবি-কিকিরে बाड बाटकम छटन बारलाव छ बाडालीव इर्चनाव मौमा बाकिटन কি ? ভিত্ৰ প্ৰদেশে ৰাঙালীয় স্থান এখন অভি নিয়ে, ৰাঙালী বিত্রপের পার, অবজার বন্ধ। বাংগাবেশের ভিতরে কাজ-काबबाद बाद नवरे विषयीय शाल. मनीबीबी ७ वृष्टिकीबी वाडामी क्यांन बकारत, नूर्वनूत्ररवत मिक्क मणावि कर-विकत कतिया, वैक्रिया चारक बाज । चात्र किष्टविन भरत वर्षम निष्-হীৰ অবহাৰ সভাৰ-সভতিৰ হাত ধৰিবা সে পথে ইাড়াইবে ভবৰ ভাহাকে বাহায় কৰিবে কে? বেশের কর্ণবারের আলৰ বাহাত্ৰা ধৰল কৰিবাহেন ভাহাত্ৰা বিপদ গ্ৰীভূত হই-জেৰে কেবিবাহাত হবে তক বিহা পলাইবেদ লে বিষয়ে সংগ্ৰহ बाद, दिवना छोरांदा चाक विन वरतंद्रकान और नवर चवनवन ক্রিরাহেন। ব্যবহাপক সভার প্রবল ভর্কের হবে, ক্রাভি-विश्वतिक वृत्ते, राजाराजावातः, पारणात्मत्तव त्यस्थानीक व्याव লভল লোভেই ভাব আগ করিবা ভাবকাৰীভিত্ত অহসত্তবই

ক্রিয়া আসিয়াহেন, ছই-এক জন বাঁছারা লে পর এছন করেন मारे छारायत कररे चाक वारमात मानमवस्त्रत व्यक्तिती नरस्म । अवह करबारमञ्ज भीचि कवमक ब भव महेर्ड वरम নাই এবং ভিন্ন ভাষেশের নেতৃবর্গ হর্গন পরে দৃচ পদক্ষেপ ক্ষিয়া চলাই শ্ৰেষ্টাৰ ক্ষিয়াছেন, বাদায় কলে নে সকল প্ৰদেশ নানা বাৰাবিদ্ব অভিজ্ঞয় ভৱিষা প্ৰপতিত পৰে চলি-বাবে। আৰাবের দেশেই প্রকৃত বেতার অভাবে দেশের লোক विखाय ७ श्रीराणिक करत्वन चावर्गहार रहेवा शक्तिहार । रवनवर् पान विरवन गाउँ गिरहेरवर खवा अस्टानर कराजरन क्षेत्रकं करवन । देशांव विश्वत कन कनिएक चावक करत (व অকালমুড়া ঘটে, হুভরাং ভিনি ভাষা সংলোবন করিয়া বাইভে भारतम मारे। काशात भव बरक बरक सरमास्य बारानिक कर्यात्रज्ञ नेवीएक नवांनीन व्हेशायन वर्क, किन्न कांवात्रक चम्रा रह गाँदे-- चर्या जन्मा वा देखा रह गाँदे-- वशीर প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিটকে চুর্নীতিয়ক্ত করিছে। ইয়ার ফলে वजीव बार्रात्मक करत्वन कविन्ने विकासक्ष एव । बरे विकासक ফলে পশ্চিববদই অধিক ক্তিএত হয়, কেনদা ঐ কাঁকে দুলি-বাৰ "বেডা"র ঘল পূর্বাবদের মুসলমান্দিলের কংরেদের প্রতি र्थशानीत्वद प्रतान अस्य कदिश अचि अक नक दमनदात्वद "बारनामीण क्षणिमिथ" चळाण निरक्रावर अक अक्कम जक्रव আনিয়া সম্ভ্ৰ কংগ্ৰেস কমিটাডে ভোটাৰিক্য লাভ করেন। बर्टे क्लोडेंक्टिकान क्लाटन केलान नाना नारमास्त्रक्त. বিশেষত পশ্চিম বদে, কোন বোগ্য বা শক্তিশালী লোককে काव क्षेत्रां बार्यायस्य शांव करत्व वारे शांक कीशांत्रा क्षक्रिको एरेवा राजभ । अरेवन राजशाद नविनामस्वन साक বলীত প্রাচেশিক কংগ্রেস কমিটাতে বোদ্য লোকের একাছ অভাব। সেইকডই আৰৱা গড সংখ্যাৰ দিবিবাহিলাৰ বে ঐ গ্ৰীয় মধ্যে যোগ্য মন্ত্ৰীয় খোন্দ কথা পণ্ডপ্ৰম।

বাহা হউক, আন্দেশ কৰিবাদ সময় আৰু নাই, আনাদের এবন চিন্তা করা প্রবোজন বে, আনাদের উন্নাহের পথ কোন্ বিকে। থেশের চালনভার বাহারা নিজেবের হাতে লইরাফেন ভাহাদের উপর তীক্ত হুট বাবিরা আনাদের বৃত্তিতে হইবে দেশ কোন্ পথে চলিরাহে, প্রগতির না অংবাস্তির। একবা আনাদের ভূনিলে চলিবে না বে আনাদের হাতে লবর অভি আৰু, বে কোন মুহুৰ্ছে দেশের উপর প্রচণ্ড বিপদের প্রাবদ আনিতে পারে। সেরপ অবহার নেডুছের অভাবে দেশের অবহা ও ভাষার ব্যবহা কি হইতে পারে ভাষার চিডা আরাদের এবনই ভরিতে হইবে। ইহা আরাদের বুবা দরকার বে আমরা একাডই ব্যুহীন ও নহারহীন হইরা অনুটের উপর নির্ভয় করিয়া বানিরা আহি।

#### প্রতিকার কোন পথে

বাংলা ও বাঙালী বে আৰু কেবলবাৰ "গতগোৱৰ বত-वानव वक्षवक मारक" कारारे वरत. बक्तवर्वत ७ महिरशैव एक्षात भारतक तम क्रम व्यवनत रहेता व्यवसाय । विरम्बन्धः পশ্চিম্বদ बिष्ठेम कृषाज्य ७ स्वनगीचित विष वरजदात शत नीन परनद वर्शन, चनाहाद ७ मारक्रशासद विदय चादछ एन বংসর কাল কর্মনিভ হইরাছে, বাহার কলে এই বর্ণপ্রস্থ অঞ্চ এবন দায়িত্র্য ও বৈচজনিত ব্যাধিতে বৃতক্ত্ম দুইয়া পড়ি-बारकः। अरे कविक ७ वृत्र्वान विषय धारत्यन नर्वादार्थन আভ উপশ্ব অভ্যাবতক, এ কথা বে ভাহারও বভিত্তে बारन करद नारे जारा का रहेक शास ना, किस बाज-ভাৱের চিছা কে করিতেতে, কি উপারে ভালা সম্ভব, সে কথা কোৰাও ভো ভৰিভেছি না। দেশে কৰ্ম্ম ও বৃদ্ধি বিবেচনা-শালী অভিজ্ঞ লোকের অভাব এবনও হর নাই ইহা সভ্য, কিঙ নে সৰুল লোকের হাতে ক্ষতা অণিত না হইলে ভাহাধের বৃদ্ধি-শক্তিও অভিন্ততা কালে লাগিবে কি কৰিয়া ? বড়ের আশহার বাহারা পূর্কাকাশের বিকে, কলিত বক্তে ও সাময়বে, ভাকাইবা দিব ভাটাইভেবেন ভাঁহারা কি একবারও ভাবিয়া-হেন বে বহি বছ সভাই আনে তবে বহাপ্রণীভিত চঃগ্রন্তর चाला, छेवात ७ मारारगुत गुरुष्टा भक्तिमयक स्टेर्फ वर्षमान অবহার কি উপারে কড্টকু হইতে পারে ? এ কবা তো এব সভা বে বড় আসিবা পড়িলে তবৰ সক্ষেত্ৰাৰ কবিবা বিলীৱ হুত্ববিধের সমূৰ্যে গিয়া গক্ষত্বের ভার কুডাঞ্চলপুটে বসিয়া অভাব-चिट्यांत्र चाट्यम-मिट्यम कविवास नम्बद्ध पाकिट्य मा. अवर नवर रविरे वा किए बाद्य छाराए किएबाबर कन स्टेट्स मा ক্ষেনা, হতুরেরাও এতদিন সময় কাটাইয়াছেন অভাজে ও খীৰ্বছবিভার, পুভরাং এবন জাতাদের সকল শক্তি সামৰ্থ্য প্রয়োগ कविएक स्टेटकट्ट मधादिक मास्त्रपादिक विक विकासित ।

পশ্চিম্বদ ও আসাধ এবৰ ভাৰত মুক্তরাষ্ট্রের পূর্ব্ব দীবাত।
দীরাতের উপর বরষ্টে রাবা প্রভ্যেক রাষ্ট্রেরই অবত কর্তব্য।
বিশ্বীয় কর্তাবের লে বিবরে ইভিপূর্ব্বে চিন্তা করিবার অবসর হুইরাহিল কি না ভানি বা, বর্তবাবে বে সে অবকাশ নাই লে বিবরে আনরা নিংলকের। স্করাং দীবাত প্রবেশের অবিবাদীবর্দের সে বিবরে চিন্তা করা ভবু কর্তব্য নতে উহা অবকাশনীর কর্তব্য। মুক্তপ্রবেশের ব্রিরভলে এত বিনে বৃচ্চেতা লোক আসিরাতে, স্করাং উহারা পশ্চির দীবাতের বিকে ভাকাইরা, সবর বাকিতে ব্যবহা করিতে অপ্রসর হুইরাহেন। আনাবের ভূপরপুক সভলী কি ভাবিতেরের ভারাভারি ভাবেন, কালে কর্মে এ বিবরে বে কিন্তুই অন্যাবনি করের নাই সে বিবরে আবলা নিংলকেছ। পশ্চিত

বদ ভূবিলে আনাৰ অভলে ভলাইয়া বাইবে ইহা নিশ্চিত, चानारबंद रचिएक रन क्या बारबन कविवाद नवद ब्रयंब चारन नारे. प्रकार त्न "वमान विषा" कविवा ७ शकिव वारनाव চাউদ ঘাটকাইরা আনকলাভ করিতেতে ও আনাবের কর্মণক ভাষা চুপ কৰিব। দেবিভেবেন। আসান, বিহার ও উচ্চিতার ৰলোভাৰ ৰেবিৱাও কি ভাঁহাৱা বুকিভেছেন না বে বিপদের সময় কেহই দাহায় ভৱিতে অঞ্জৱ হইবে না ? বিপদ শেব পর্যায় আসাৰের বাড়েও পড়িবে, স্বতরাং সেবান হইতে সাহায্য আশা क्या प्रया. डेक्यांच क्यांचा क्या क्या याचार याक्क, अवर विशास अपन नकन विश्वास विभवील वृद्धि इनिएल्टर, मूलवार সেধান হইতে সাহায্য প্রত্যাশা করাও বাছলভা, এবং সর্জ-**ार्य विहो अन्य प्रकारणाई "पृत्र जक्"--- नवपृत्र । अद्य**ा অবছার পশ্চিমবদের শীষাত রক্ষণাবেক্ষণের তত সদস্ত, সবস ও সর্কোপরি বিশ্বত, প্রবৃত্তীদল সংগঠন ও ক্রত সংবোদ্ধনের সময় কি এবনও আনে নাই? এক খল লোক আছেন বাহারা वकी-धरवी. जन्नमध्यत कवा देवित्वर हीरकात कतिरू पारकम "बुरदत धारताहमा करा स्टेरकरह, व्यक्शिमशैकित राजि-क्षम कवा स्ट्रेट्टर ।" निवीस (मनवानी नवनावी नवनवव एन कर्डक चाकांच स्टेटन दैशहा चच्छान करवन अक्षाब বে প্রায় অশীতি বর্বের রুদ্ধের নাম ভালাইরা ইংখা দেশে মাতব্যরী করেন সেই হছ এবং ভাঁচার করেকভন প্রকৃত সহকর্মীর উপরই সকল বোঝার ভার পড়ে। ছর্বালের রক্ষার ক্ত, রাষ্ট্রের প্রগতি ও মদলের ক্ত এবন কাত্র বর্ণের विदायम अवर (वनवकाद वावका वाराक विदायमा क्रकाद करण वार्य मा एवं जाराव कंड अवव मुद्रीत्ज वक्षीमालव विच्छ-ভার এভি সভা রাখা প্রয়োজন, এ কণা হিনি খীকার না क्विदिन किनि अपन (मान (पांच नक्न) कर्राक्षणा क्रिश्न-वार चारवा नवर्ग कवि. किस चरिश्नवाद्यव बाद्य क्रीवश्रक আমরা বরণ করিতে প্রস্তুত নহি। আমরা হিংসাও চাহি না প্ৰভিহিং লাও চাহি মা, কিব হিংল আভভাৱী খ্যুবের বে উপায় ইতিহাস-পুরাণ প্রসিদ, যাহা ভিন্ন অচ কোনও উপায়ের সাড়ল্য चायदा कानि ना. ८मरे छेगाद चयनवन कहा अवन चामारहरू অবঙ কর্ডব্য। কবিত আহে, গোৱানী তুলনীয়ান বুলাবনে গোণালজীর যুক্তিরে বিধেষণ ক্ষরিয়াছিলেন "বছুর্জাণ লেও হাৰ তো ভুগদী করে প্রবিশাভ" এবং বেবভা প্রসন্ন হইয়া সেই বেশেই ভাষাকে ধর্মন দেন। বাংলার প্রকৃত অভিংলবাধী-क्षित्रेड **चाक रम क्या गाउन क**र्या **टार्टाक**न ।

दिनंदकांत भव बांद्यत ७ बद्धत क्यां। व्यावादित मक्यां क्यां और दि, के हरे निवदारे व्यावा क्यां विवर्धत्व भवन्य व्यावाको निव्याद क्यां व्यावाको निव्याद क्यां व्यावाद क्यां व्यावाद क्यां व्यावाद क्यां व्यावाद व्यावाद क्यां व्यावाद व्यावाद क्यां व्याव्यावाद क्यां व्यावाद क्यां व्यावाद क्यां व्यावाद क्याव्यायाद क

লোকের সরবেভ চেটা এবন হইভেই আরভ হয়। বানোগর
উপভ্যকা পরিকরনা বাহাতে ক্রভ কার্ব্যে পরিবভ হয় ভাহার
ক্রভ অবিলবে শক্তিশালী আন্দোলন আরভ হওয়া উচিত।
বিহার বহি প্রতিকৃল আচরব না হাতে ভবে আবাবেরও ঐ
পর্য অবলবন করিতে হইবে। ছ্রা ভোকবাক্যে দেশের
লোকের পেট ভরিবে না এবং বুড্ডু বেশে পাভি পৃথলা
আনিতে পারে না—ইহা বেশের কর্ণবার্গণের বৃধিবার সময়
আনিরাতে।

বর্জনান বংসারের কলন উঠিবার প্রে আনাদের অনেককেই হরত বেড় হুই রাল অর্জাদনে ও কলর ভোজনে কাটাইতে হুইবে। আনাম চাল দের নাই, বিবেশের পাল্যর আহাত এক নাল দেরিতে আসিবে, প্রভরাং বিল গণিরা আবণেটা বাইরা থাকা হাড়া উপার কি ? হরত এই বাব্যতান্ত্রক কুন্তু সাবনে, পেটের আওনের আলার মগত ভরল ও চকল হুইলে, দেশের লোক বৃথিতে পারে বে বোগ্য লোকের হাতে বাদ্য সমভা প্রবের ভার না দিরা ভোক্ষাক্য বিশারহ-দিপের হাতে হিলে আগামী বংসারে অর্জাশনের বদলে অনশন, এবং কুন্তু লাবনের গুলে রুত্যবরণ, অনিবার্য হুইবেই।

ৰাল্য অৰ্জনের অভ উপার শিল প্রতিঠানে ও প্রাণালার वानिका वस छैरमावम । अ विवासक वारमां व्यवहां कारमें শোচনীর হটরা টাভাইভেছে। মালিকানা ছড়ের এবং কর্মী ও अविटक्त आना मानित विवास छ तक्ति। एक छन्त्र छन्त्र छन्त्र কারবার, বল্লাভাব ও বাদ্যাভাবে বিব্রভ কর্মী ও প্রমিকের দল অভি সহকেই প্রতিক্রিয়াশীল আন্দোলনকারীদিলের কাঁলে পভিভেছে। বে ভাবে বাংলার প্রভ্যেক কারবারে, প্রভ্যেক निव अधिकारमः डेरनावरम्य पश्नाक क्षिकारम् ७ त्रहे कावरम পড়ভা চড়িভেছে, ভাহাতে এ প্রবেশের কলকারবানা আর किक्षणित्वत बरवारे कित अरवन ७ विरवरनंत जावनामीत बरव হাভাইতে পাৰিবে না। চাষী বহি বলে ৰে "আমি ক্ষেত্ৰ লালল দিব অর্থেক ও বোপণ-বপন-নিভান করিব কর, কিছ আনার ক্ষুত্র বিশ্বণ তবে লোকে তাতাকে পাগলা-গারতে পাঠাইবার ব্যবহা করে, কিছ শ্রমিক বলি সেই মত বলে বে আনি কাল করিব অর্থেক সময়, বাকীটা প্রটাতে ও কাকিতে কাটাইব, কিছ আমার পারিপ্রমিক চাই বিওপ এবং আৰি কাল ভালই করি বা মলই করি সেই পারিশ্রমিকের ভার ক্রবেই বাভাইতে হইবে, তবে তাহার নাম হয় "গণ-चात्नामन","बुक्टि-मश्याम" रेक्यानि । त्रामन त्रक्रार्मन अधन লাই ভাষাৰ কৰ্মী ও প্ৰবিক্ষিপকে বলা উচিত যে ভাষাদেৱ इर्चनांत अधिकांत के शर्प मचन नव, रक्तमा के शर्प कांत्रवांत বছ হইলে "পুঁজিপতি" ভাষার পুঁজির অর্ডেক বোরাইরাও वीडिया वाकित्व, अविक विवय रहेवा शत्य शत्य प्रवित्य। প্রতিকের উন্নতির পথ কোন ছিকে ভাষা ইউরোপ বুবিয়াতে। ভাৰাৰা উংপাৰৰ বেড় ৩৭ বাড়াইরা পারিপ্রবিড় বিও৭ লই-ভেবে, বাহাতে কাৰবাৰের পক্তা বোটাবুট ঠিক বাকে অবচ ভাহাবের অবস্থারও উন্নতি হয়। লোভিবেট রাশিবা ভো चढ नव जरेहारह. त्यवारव कारक कैक्टि वारव कुछक.

এ প্রদেশের "প্রবিক বেভার" বেখাবে আর ছই বিবও হইড न। (न क्या अर्राया अविकास क्यांत नवद सानिवास)। শ্ৰমিক বিক্ষোভ এবং বেশের ম্বাবিভ ও দ্বিক পুৰুত্বের চুর্বশার প্ৰবাৰ কাৰণ চোৱাকাৰবাৰ। বাংলাবেশে বে ভালের বর वन कता 80 रहेटल 40-42, हैं को , तनहें काल बढ़ा टारार के উভিয়ার ১০-১২ টাকা বৰ দরে পাওয়া বার, রাজপুতবারও 🗳 रव, बुक्क श्रदरान नाबाक (वर्षे । अत्यान चानिवाद वंद्रव, न्याव्य লাভ, বড়ভি-পড়ভি, সৰ কিছু ব্যৱিলেও ২০১ মণ হয়ে चनावारम के विरमय करवाक्षीय बाक विक्रीक स्टेरक शास । होबाकाववादी वन-कवा २० एटेटल ७० काका मूर्ड कविका গৰীৰের সৰ্ব্যাশ কৰিভেছে। ফ্রান্সে বাড-বন্ধ ইত্যাৰিভে চোরাকারবারে র্ভাবত বেওরা আরম্ভ ক্ররাছে। এবাবেও छेरा रक्ष्या छेडिक, जबक: नरक वृत-क्षरमय नाकिय जब्रुवन দত দেওবা উচিত। চোৱাকারবারীর বছরপাঁচেক প্রীবর বাস ও তাহার সম্পত্তির হোটা অংশ বাজেয়ার করার ব্যবস্থা হওয়া উচিত এবং চোরাকারবার ধন্দ করার কন্য পুথক বল্লী ও পুৰক বিভাগ সাময়িক ভাবে করা প্রয়োজন। ভাগত, ভাল ইভ্যাদির কর্ণ্ডেল-দোকানওলির উপর তীক্ষু বৃষ্টি অবিলয়ে बांचा प्रवकात ।

#### পূর্ববক্ষের মাইনরিটি

পাকিছানী বাজতে পূৰ্ববদেৱ হিন্দুদের অবহা কি বাড়াইবে ভাহা গভীর ছন্ডিভার বিষয় হইরা উঠিভেছে। ইহা সভ্য বে वीका माकिक्कीम माकिक्कात कर ववामाना क्रके। करिएकट्टन। ভাঁহার আছবিকভার আমাদের লেখমাত্র সন্দেহ নাই। কিছ ৰাল্ডদাৰিকতাৰ বে ভুতকে ভা**ৰত কৰিবা ভোলা হ**ইৱাহে পাকিছান লাভ হইলে যে অসভব ছবিবা প্ৰাপ্তির প্ৰতিশ্ৰুতি ৰংসৱাৰিক্কাল বাৰং অপ্ৰপশ্চাং বিবেচনামাত্ৰ না কৰিয়া নিয়ক্তর ও অবিবেচক লোকবের বিয়া আসা ক্ইয়াছে, এবন ভাহাকে দূৰ কৰা কভটা বা কভ বিবে সভব হইবে ভাহা বিশেষ ভাবে বিবেচ্য। তবু ৰভ্যা বা আখাভ হইতে বাঁচিতে পাছিলেই ৰাছবের ৰভ বাঁচা হয় না,বছকচিতে আপন অধিকার नदेश यान कवियात चारीनकारे नयकार यक कथा। शरह পৰে অবিকারহারা হইরা বেবানে অপনানিত জীবনবাপন করিতে হয়, মাহুষ দেখানে বাদ করিতে পারে না। পবর্বে উ थर्म रूपी राष्ट्री-पद-जल्लकि वर्गन कविदा नरेटर, डेशकक वरेदा ৰালিশ করিলে প্রতিকাল বিলিখে না, ধর্মকর্মের সাধীনতা वाकित्व मा. कर्त्वाननत्क इंदर वादेत्व इंदरन जानमान नार्ड আসিয়া ঠেশৰে মালপৰ ধানাভয়াসী কৰিবে এবং ভাহাৰের इक्रम छाविल मा कविवा छेनाव बाकिरन मा. এই ভাবে नए পদে লাপ্ৰবা সভ কৰিবা বাছৰ কৰবো বাঁচিতে পাৰে বা।

চাকার অবাটনীর বিহিল উপলক্ষ্যে বাহা বটবা বিরাহে তাহাতে বেবা বাইতেহে আভবিক ইন্দা লক্ষেও বাজা নাজিমুকীন হিন্দুবের অবিকার রক্ষা করিছে পারিডেহেন না।
বিহিলের লাইলেল বেওরা ক্ইরাহিল, নলে পুলিল হিল, লীগনেভারা হিলেন তবাপি একট বসজিবের লাবনে এক্ষণ
লোকের অসম্ভ জিবের কলে বিহিল বহু করিছে ক্ইরাহে।

বাজা নাজিযুতীন কালেট্রী আশিলের আজিনাতে এক
হুললনান অনতাকে লক্ষ্য করিবা বলের, শত শত বংসর বাবং
বে শোভাবালা বিনা বাবার বাহির হুইরাহে আজ তাহারা
সেই শোভাবালার বাবারান করিবারে। তিনি হিন্দুরিগকে
শোভাবালা কিরাইবা লইবা বাইতে বলিবারেন এবং তাহারা
ভাহাতে রাজীও হুইরারেন। তিনি লোভাবিগকে একথা
খবন করাইরা বেন বে গত কর ও পাকিহান বিবলের শোভাবালার হিন্দুরা বেজার বোগবান করিবারিলেন। তিনি
হুললমানবিগকে শান্তিপ্রতারে চলিরা বাইতে বলেন। তিনি
হুললমানবিগকে শান্তিপ্রতারে চলিরা বাইতে বলেন। তিনি
হুললমানবিলে ভাহা সম্প্র প্রাংলার হুলাইরা পঞ্জিবার
আলক্ষা হহিরারে এবং ইহার কলে কলিকাতা ও পশ্চির
বাংলার লক্ষ লক্ষ্যলমানের জীবন বিশ্ব হুইতে পারে।

ক্লিকাভার কোন কোন লীগ প্রিকা এই বাধাদান-কারীবের তীত্র ভাষার নিকা করিয়ারেন কিও ভাষাতেও কন रव गाँर। पूर्वराज्य भराव है अवर वृज्जवान जवारक **डिडापैन ७ वृद्धिमाम लाकरमद यपि अरेकरण प्रमुद्धमर्मी** লোকদের বিকট পরাজ্য মানিতে হয় তাহা পূর্বা পাকিহানের **ভবিশ্বতের পক্ষে উদ্দেশ বনে হর না। সাল্লালারিকভাকে** রাজনীতির বনিবাদ রূপে এবন করিলে এই অবলা চইতে পরিত্রাণ লাভ সভব নর ইহা বুরিবার মত ববেট পুরোর দাল্লারিকভাবাদী নেভারা পাইরাছিলেন, কিছ নহছে ছ বিনা বাৰ্ড্যাৰে বাৰ্ট্যাভের বত ভাহারা উহা সন্প্রবেশ উপেকা করিয়াছেন। বাজা নাজির্ভীন নারারণগঞ্জে এক বকুতার বলিরাহেন, "পূর্বা পাকিয়ানে পাত্তিরকা আহাবের क्विएक स्टेटवरें। अवादन नालावादिक सामास्थि जावक रहेरम जाबारमत छेवछित जकन जाना हुन हहेरन, जनाजान-বাদ্যাভাব ও বেকার সমস্য লইরা আমরা ভীষণভাবে বিত্রত হইয়া পভিব। আমি আমার নিকট সর্বাল প্রার্থনা করিভেছি পূर्स शाकिशायत नाचि त्वव चहेते बादक अवर चावि चाना করি আপনারাও শাভিরকার *তত প্রাণপ্*ৰে বছবান হইবের।" পূর্ব পাঞ্চিত্রাবের সর্ভি বেষণ মুসলবানবের নির্বাহ্নতিতা ও কৰ্মসভাৱ উপর নির্ভয় করে, ঠিক তেন্দি ছিতুদের সহ-ৰোগিতা ভিন্ন পূৰ্ব্ব পাকিছাৰ গভিন্ন উঠিতে পান্তিৰে মা।

#### সামরিক শিক্ষা

ব্জনবেশৰ অৰ্থ ও প্ৰচাৰ সচিব জীবৃক্ত জীকুক্বত পালি-ওবাল নেবাৰে বকীবল গঠনের বে পবিকলনা কার্ব্যে পবিবত করিবার সংবাব বিরাহেন প্রত্যেক প্রবেশে তারা জহুলরও করা তথু বে কর্তব্য তাহা নর, এ বিবরে আর একট বিবও বিলগ করা অহচিত। জীবৃক্ত পালিওরাল বলিরাহেন বে এই বকী বাহিনীকে ব্রের কর্ত উপুর্ব করিরা তোলা হইবে না, লাবরিক নিক্ষা বিরা এই বাহিনীকে বেশরকার উপবৃক্ত করিরা গড়িরা তোলা হইবে। ব্রুরে অবতীর্ণ হওরার আলোন ইহা নর, ইহা বেশরকার প্রত্যতি রাজ। বুক্তপ্রবেশের ১,১০,০০০ প্রারের প্রত্যেক্টিতে এক কর্ম অধিবারক ও বর্ম ক্ষম ব্যক্তানেবক্ষের একট কৰিয়া বজীবল গঠিত হুইবে। ইহায়া গাবরিক শিকালাত করিবে এবং প্রয়োজনীয় অন্তর্শন্তও ইহাবের হাতে পাকিবে।

ভারতবৰ্ণ খাণীৰ ব্টৱাৰে কিন্ত খাণীনভা ৱজার সৰভা এখনই অক্তম হুইয়া উট্টতে আরম্ভ করিয়াছে। বিটেন ও পাকিছাৰ এক জোট ঘইয়া একবিকে ভারতে অপাতি ও হাবা-হাবিদ্ব আত্তৰ প্ৰত্নিত ৱাবিতেহে, অপর বিকে পুৰিবীর বেশে ছেলে ভারতবর্বের বিক্লছে সংবাহপত্তে ও সিনেরার প্রবল প্ৰচাৰ কাৰ্য্য চাৰাইতে আৰম্ভ কৰিবাৰে। পঞ্চাৰ, নিছু, নীৰাভ व्यापम ७ विज्ञीय पर्वेगायणी भवारयम् । कविरण देशांदे बुका बाद বে পাকিছানের সংভিগ্রারে বিশ্বাস করিছা নিশ্চিত মনে বলিছা বাকিলে সমূহ বিপদের আশহা হহিরাছে। বাংলা এবন कावकर्दाव अकड़े नीवास अरम्म । बाका नाकिवृक्तिनव क्याव খাছা ছাপন কৰিবা ইহা মনে কৰা মাইতে পাৰে বে. পূৰ্বা বাংলা হইতে আক্ৰমণ ভো গুৱের কথা সেধানে কোন বড় রক্ষের গোলবোগের আপড়াও আপাতত: নাই। কিছ কেন্দ্রীর शाकिश्वाम नवर्ष के यथि बूरबंद एक अवक रम अवर रम दिमारन যদি পূৰ্ববৈদে কোন মিৰ্ছেণ আসে তথ্য কি ঘটবে তাহা বলা थाय मा । बाडेनी जिब्र श्रवम कथा विशः मक्का विकार श्रवाण । আমেরিকা ও লোভিরেট যালিয়ার মধ্যে বিরোধ ক্রমেই বুদ্ধের हिटक अर्थनत स्टेटलट अन् देश्टक चाट्यदिकाटक नास्त्र ক্ষিতে বাব্য। পশ্চিম পাকিহান এই উদেৱে ব্যবহৃত হইতে পারে। পশ্চিম পাকিছানের ছুই কোট লোকের মন্যে পঞাপ লক ভিয়ভাবাপর পঞ্চাবী হিন্দু ও শিবকে মিঃ জিলা কেন ৰাকিতে দিতে চাংহৰ বা এই দিক দিয়া বিচার পরিলে ভাহার चर्च छेनलिक कहा कड़िन स्टेटर ना ।

বাংলাকে এবনই সভৰ্ক হইতে হইবে ও ভক্ৰণ চলকে উপর্ক্ত নামরিক শিক্ষাধান করিয়া এবনই রক্ষাধন পঠনে প্ৰবন্ধ ঘটতে ঘটৰে। বিশ্ববিদ্যালয় ট্ৰেনিং কোৱা পুনৰ্জীবিভ ক্রিভে হইবে। বিদ্যালয়ের উপরের শ্রেণীর ছাত্রদের অভ চালনা শিক্ষাদান এবং নীচের শ্রেম্বভলিতে বৃষ্ট্রমুছ, লাঠিবেলা ও ব্যংস্থ শিক্ষার ব্যবস্থা করিতে ব্টবে। অবেক ক্লাব এই भव क्रका बचाव वाविवा क्रिवारस्य, काशास्त्र विक्र हेर्ड अवनरे छेनपुक निक्रक मध्येष कवा वारेटक नाटा। व्यत्नव প্রত্যেকট ভরুব বহি লাম্বরিক শিকার প্রশিক্তি হয় ভাষা रहेरन अक विरक्त तारे कांकि विषय विश्वासक विकृष्टे वृद्धर्य প্রতীয়ধান হইবে তেমনি নামরিক পুথলা নিজার কলে বেশের লোকের নিরবাছবর্মিতা ও স্থাপ্রভাবে কাজ করার অভ্যানও বাড়িবে। ইহা বভঃনিত্ব লভ্য বে, নবলের অভিংনাই बक्क चरिरमा, इस्रामक चरिरमा कानुकारक इस्रमण চাকিবার তেক ভিন্ন আর কিছু বর। সুবে বিরপেকতা ভাল, किंद छोरा जनव निवरणक्छा (armed neutrality) ना হইলে বিত্রবঁক হইরা পঞ্চে।

ভারত-পাকিস্থান যুদ্ধ-সম্ভাবনা ও গাদ্ধীলী

নহা বিচীতে গাৰীকী এক প্ৰাৰ্থনা সভাৱ বনিহাছিলেন বে তিনি বহাবহুই সকল প্ৰকাম হবেছ বিহোধিতা ভৱিত্ৰা আসিরাবের কিন্তু পাকিছাবের নিক্ট হইতে ভার বিচার সাতের আর কোন পছা বলি বা বাকে, বলি পাকিছান গবর্ষে ক্রমানত ভাহারের প্রবাণিত ভূসগুলি উপেকা করেন ও সেওলিকে ছোট করিয়া বেবাইতে বাকেন ভাহা হইলে ভারতীর ব্রুয়াট্রের গবর্ষে উল্লে বিজকে বুল বোনণা করিতে হইবে। অবিচার সহু করিবার পরার্শ তিনি কর্বনও কাহাকেও হিতে পারের বা।

गांदीकीर बरे हैकि गरवायगत्त अकानिक वरेत बक्री कृत बाबबाब क्षे एवं दर बाबीकी वृत्ति वा बूद्धव बाबावर्न দিতেবেন। পাছীভীর বক্তভাত্তির অনুযোগিত বিপোর্ট পৰ্বাছ হাঁটৰা কাটৰা বৱাবৰই এত হোট কবিৱা কেওৱা হয় বে তাহার বর্ম উপলবি করা অবেক সময় কঠিন হবয়া উঠে ইহা আমরা পূর্বেও সক্ষ্য করিরাছি। রিগোর্ট বুব বেশী ছোট করা উচিত নর ইহা গাখীলী নিৰেও এবন বলিতেছেন। কিছ ष्ठेशरवाक विर्शाव्ये क्य स्टेलिक वेशव जार्श्या वायवनम ক্রিতে অপুবিধা হয় না। গাভীকী বুভের অপুকৃতে প্রচারকার্য্য चुक करवम मारे, भाकिशान भगवा के व खाव कविया চলিয়াছেন ভাছা বন্ধ না করিলে শেষ পর্যান্ত ভারত ও পাকি-ছানে বৃদ্ধ অনিবাৰ্য্য হইয়া উঠিতে পাৰে ইহাই তিনি অৱণ করাইরা দিরাছেন। ঐ বক্তভার সংবাদপত্তে প্রকাশিত विर्ाटिंड क्षेष्ठि भवविन छोहांत हो बाकर्रन कहा स्ट्रेस छिनि । क्रिक अहे क्यां हे रिन्दार्टन । शाकिशन प्रधान कार्या বিরভ না হইলে হুছের সভাবনা রহিরাহে ইহা ভিনি আবারও খবৰ কৰাইয়া দেন। ভিনি বলেন বে, ভারত ও পাকিহান नवका नवाबात्मव इरेडे बाब छेगाव चाट्य: श्रवन, नित्कत्वव बर्दा जार्गास विवेदां करा ; दिनीय, मानिम निर्दान कविया ভাছার নিহাত যানিরা লওরা। এই হুই পথে বীরাংলা না হইলে হছ ভিন্ন গভাৰত থাকিবে না। পাৰীৰী বলিবাছেন, "अक शक विव बाहार कविटाउर बाटक अवर देविविक विवह इंदेडेंड अक्डेंश जरनवन मा करड़, छादा द्देरन जरनिर्दे बारक আর একট যাত্র উপায়---বুর ।"

বুছ লগতে গাডীজীয় বে উক্তি লইবা চাঞ্চলা স্কট্ট হইবাছে ভাৱ সন্তাহ হুৱেছ আনেও তিনি অহুৱাণ কৰাই বলিবাছিলেন। দিলী বাওৱার করেছ দিল পরই তিনি বলিবাছিলেন, "পাছিহান বদি ক্ষাণত অভার করিতেই বাক্তে ভার ভবর্ব ও পাকিহানের বব্যে বুছ ঘটবেই।" (If Pakistan persisted in wrong-doing there was bound to be a war between India and Pakistan.) গাডীজীয় বুবে বুছের ক্যা শুনিলেই এ ক্যা খনে করিবার কোন কারণ নাই বে ভিনি বুছের ক্যা প্রায়কার্য্য চালাইড্রেছেন। বর্তনান বুলে পৃথিবীতে বুছের সবচেরে বড় বিছোমী বহি কেই থাকেন, ভবে ভিনি এক্যার বারীজী। শাভির এক বড় হুড আয়ুনিক বিশ্বে আরু ক্যের নাই। উন-অনীভিত্য বংগর বর্তনাও ভিনি

माक्रि श्रामत्मन क्य-नाष्ट्रतम वन स्टेटल स्थिन। ७ विराय **प्र**न করিবার বভ বে কঠোর কৃষ্ণু সাধন করিভেবেন ভাবাতে বিবের প্রভ্যেক বেশ ভাষার প্রতি প্রভার ও ভক্তিতে যাবা বভ করিতে বাধ্য হইয়াছে। কিছ গাড়ীজীকে প্রভার অর্থ্য অর্থণ করিলেও বুটাৰের করেকজন ব্যতীত ভাষার আদর্শ বাছর বা বাই কেবই এবৰ কৃষ্টিতে পাৱে নাই। কাজেই যুৱের সভাবনা বাভব অগতে হতিহা সিহাতে, গাডীজীয় নিকট উহা নিভাভ অগ্ৰিয় হইলেও হবের সভাবনার কবা তাঁহাকে চিতা করিতে হয় এবং প্রবোজন বোবে তাঁহাকে সতর্কবার রূপে উহা উচ্চায়ব করিতেও হয়। বে অভার নি:সংশবে প্রমাণিত হইরাছে ভাষা ৰীকাৰে অনিছা, অপৰের উপর বিধ্যা বোষাবোপ করিয়া বিজের দোব কালবের আএম এবং অভার কার্য্যে বিরভ বা হইবার বে সহয় পাকিছান গবরে ঠের কার্যকলাপে প্রতিপদ্র হইতেছে-ভাহার শেষ পরিণাম হত, গাড়ীভী এই কৰা বলিৱাই বেশকে সময় পাকিতে সাববান কৰিতে চাৰিতে-ছেন। অভায় সভ করিবার পরামর্শ তিনি কবনও কাহাতেও ৰেন নাই, বিভে চাহেনও নাই, ইহাই ভিনি আনাদের বারবার শ্বৰ করাইয়া বিভে চাহিতেহেন। অহিংসা চুর্বালের ও कारकरवर कर नरर, मकियात्मद कर--माधीकी देश रहवाद वनिशाद्यव ।

#### কলিকাতায় হিন্দু-মুদলমান সম্প্রীতি

গত ২৪ আগতের 'হরিজন' পত্রিকার এক প্রবদ্ধে গাড়ীজী নিবিরাহিলেন যে কলিকাভার হিন্দু ও মুগলমানের মধ্যে যে ঐক্য প্রতিষ্ঠিত হইরাছে ভালা আলৌকিকও মর, আক্ষিকও মর। ঘটনার পরিপ্রেক্তিত ইহাই বুবা বাব যে হিন্দু ও মুগল-রান পরস্পরের অভাতে এই নিলমের জভ প্রভত হইভেছিল। গাড়ীজীর এবং মিঃ প্রধাবর্তীর প্রবাস ভাহাতে পূর্ণভা লাম করিবাছে বাব।

বর্তনামে বিলীতে বাহা ঘটতেতে ভাহার সহিত ভূপনার কচ আমরা ইহা উদ্ভুত করিলাম। কেননা বেশের অবহা কোন্ বিকে চলিডেতে লে বিষয়ে পাঠকবিগের অবহিত হওৱা প্রয়োজন।

গাঙীতী বলেন, "শহীৎ সাহেব ও আনি বেলিয়াবাটার
এক বুসলিন অঞ্জে একতা বাস করিতেতি। বুসলনানর।
এই হালে হুর্গত বলিরা সংবাদ পাওয়া সিরাছে। ১৩ই বুবরার
আনরা এই বাস্তিতে আলিয়াহি, আর ১৩ই বলে ক্ইরাছে বেন
হিন্দু-বুললনানে কোন শক্রতা কবনও হিল না। তাহারা
হাজারে হাজারে আসিরা পরশারকে আলিকন করিতে লাগিল
এবং এক বা অপর বল বে সব ছানকে বিপজনক বলিরা মনে
করিত, সকলে অবাবে এবন সে সকল ছান হিরা বাভারাত
স্থল করিরা হিল। বুললনান ভাইরা প্রকৃতই বসজিকে
হিন্দুবের লইরা পেল, আর বিন্দুরা বন্ধিরে বুললানকের লইরা

বেল। উভরে বিলিভ কঠে "কর হিক্ব" হিল্-বুললবান এক হোঁ" কবি ভূলিতে লালিল। আনি আনে বলিরাহি তে, আরহা এক বুললবানের বরে বাল করিতেরি, আর বুললির ক্ষেত্রেলকদন অভিশব্ধ ননোবোল সহকারে আনাবের বাজকা বিবান করিতেরে। রায়ার কাল ভাহারা করে। বালি প্রতিষ্ঠান হঠতে অনেকের এবানে আলিবার আগ্রহ—ভাহারা আনাবের এই সব কালকর্ম করিরা বিতে চার; কিছ আনি নিবেশ করিরাহি। আনার সংকর হিল বে, বুললবান ভাইবোনেরা আনাবের পানীরিক স্থবিবানের জভ বাহা কিছু করিতে পারিবেশ আমরা ভাহাতেই সম্প্রিরণে তৃপ্ত হুইব। আর একবা এবন আনি বলিবই বে, আমার সহরের অবিনিত্র ভত কলিবাহে। এই হানে এই সীমানার মধ্যে আর্গতিত হিল্-বুললবান ভত কবি ভূলিরা জলপ্রোতের মত প্রবেশ করিতেরে। একবা বলা বার বে, আভূভান উর্বোবনের এই আনক্ষ বেল ঘন্টার ফ্রান্টাতের বাভিন্না চলিতেরে।

ইহাকে কি অনোজিক কাও বলিব, বা আক্সিক ?
বে নাবেই ইহার বর্ণনা হউক, একথা ধ্ব স্পষ্ট বে, ইহার অভ
চতুর্বিক হইতে আনাকে বে কৃতিত্ব বেওরা হইতেতা আদি
একথাবেই ভাষার বোগ্য যদি, আর শহীদ লাহ্বেও বে
ভাহার বোগ্য একথাও বলা বার বা। অনননের এই
আক্সিক আবেশচঞ্চল বিপুল উর্জাতি কোন এক বা হই অনের
কাক্সের কলে সভব হর নাই। আনরা ত ভগবানের হাতে কোর পুতৃন। তিনিই আনাবের আপন পুরে নাচান!
অভএব এই মৃত্যে বাবা পঞ্জ করিতে আনরা বেন বিরভ থাকি,
আর স্টেকর্তার ইছার কাছে বেন পূর্ণরূপে আত্মনর্শন করি।
ভাহা হইলে আনাবের হারা সর্জাবিক বাহা সভব ভাহা করা
হইবে। এইরপে বুলিরা বেলিলে বলা বার বে এই অলোজিক
ব্যাপার সংঘটনে তিনি আনাবের হুই অনকে ব্যরহার
করিবাহেন। আর আনি নিজেকে প্রস্ক করিতেতি, আনার
বৌবনের স্থা কি আক এই জীবন-সন্ধ্যার সকল হুইবে।

শভগবাদে বাহাদের পূর্ণবিধান আছে ভাহাদের কাছে
ইহা অলোকিকও নর, আক্মিকও নর। বটনাপরপরার লাই
প্রকাশ হইতে বুবা বার বে, হিছু ও বুলনান পরলারের
অভাতে এই আছ্বের উবোবনের কচ প্রস্তুত হইতেহিল।
ভারপর রক্ত্রে আমানের আবির্ভাব বেধিরা এই ভভ বটনা
ববন নল্প্তা প্রাপ্ত হইল, প্রস্তারা তবন আমানেরই ইভিড্
হান ক্রিল।

দে বাহা হউক, আনন্দের এই উন্নত প্রকাশে আনার বিলাকং আন্দোলনের প্রথম অবহার কথা বনে পভিতেতে। তথ্য প্রাভূতবাবের এই আবেগ লোকের উপর একটা সূত্য অভিতেতার আন্দোলন আনিরা বিল। তাহা হাড়া তথ্য বিলাকং ও হরাজ আনাবের হুইট লক্ষ্য হিল। আজ ঐরপ কিছুই আনাবের লক্ষ্যে নাই। আনহা আজ পরস্বাবের প্রতি হব্য ও বিবেৰের বিব পান করিহাছি, তাই আতৃত্ব-উবোধনের এই অতৃত এত বেলী ববুর লাগিতেতে। এ বাধুর্ব্যের বেল কর্বসঙ কয় বা হয়।

"বর্তবাবের এই উচ্ছাবের বব্যে বিশ্-র্গলবাবের বিলিভ কঠে 'বিশ্হান বিভাবাহ', 'পাকিহান বিভাবাহ' কবি ভনা বাইতেহে। আনাধের ববে হর, এই ক্ষমি সম্পূর্ণ লক্ত, বেশবিভাগে সম্বত হওরার কারণ বাহাই হউক, ভিন পক্ষই পাকিহান বীকার করিয়াহে। স্থতবাং এই হুই পক্ষ হি অপরের শক্ষ বা হর আর শক্ষ যে ভাহারা নর ভাহাও এবন লাই, ভবে ঐ ক্ষমিতে অভার কোবাও কিছু নাই। প্রকৃতপক্ষে ইহারা বদি পরস্বারের বন্ধু হুইয়া বাকে, ভবে উভয় রাইকে 'বিক্ষাবাহ' না ভানাইলে বোব লোহিভা করা হুইবে।"

#### वक्त्रत वाहिद्र वाक्षामी

বাংলার বাহিত্রে বাঙালীর উপর একটা সুপরিক্ষিত আক্ষমণ আরত হইরাহে বলিরা কিছুদিন বাবং বনে হইতেছে। আসাম, বিহার ও উড়িয়ার বাঙালী বিবেষ প্রবল ভাবে দেশা বিরাহে এবং অনেক ক্ষেত্রে বাঙালীবের উপর সম্পন্ধ ভাবে উংশীয়ন সুদ্ধ হইরাছে। এই স্বস্যা ক্ষমণঃ এত শুক্রতর আকার বারণ করিতেছে বে উহা আর উপেকা করা নিরাশদ নহে।

উড়িয়ার পুরীতে বাঙালী বিবেষ চরবে উটিয়াহিল, বহিলারা পৰ্বাত্ত আক্ৰমণের হাত হইতে রেহাই পান নাই। ইহা সইবা আলোলন হইলে উড়িয়া কৰ্ত্তপক আখান বেন বে ভবিয়তে **बहै (अनेत पूर्व करवड करवड कतिवाद वावडा परेटव । जनहा** ब्रवस चानाक्षकीरक चारकारीन रनिया प्रत्य प्रदेशक. राहानी विद्युद्ध वृत्र पृत्र एव नारे देश विक्थि । जानादा 'वाडान বেলা' আন্দোলন দীৰ্ঘকাল বাবং চলিভেছে। সম্ভতি রেলের হেত আপিস গোঁহাটতে প্ৰানাম্বরিত হইরাছে এবং ভয়পলকে অবেত বাঙালী ভৰ্মচারী দেখাৰে বিয়াছেন। আসায়ীয়া ইভাতে 'বাঙাল বেলা' আন্দোলনের উপলক্ষাম্বরণ ভরিষা লইয়া সভা সমিতি ভুৱ করিয়া বিহাহ্যের এবং এক সভা অভে বালালী বাতী ও বোকান প্রভতি দক্ষ্য করিয়া ইট-পাইকেল টোভাও হইডা নিভাছে। ইঁহাবের প্রধান অভিযোগ এই বে. আলাবের বেলপথে বাঙালী কেন চাকুরি করিবে গ আসামীতের ঐ সব কাজ বিলি করিয়া হিতে হইবে। এই সব চালী ভৰ্মচাৰী ভবন কোবাৰ বাইবেন এই প্ৰৱ অশিভিভ अबर आदश्मिक विद्यवहर्ड लाक्यक बदन मा डेडिएक शास. কিছ আনাৰ ভাতীৰ বহানভাৰ নভাগতি প্ৰভৃতি শিক্তিত লোভেয়াও এই কথা বিবেচনা করিছে পারিভেছের না, ইহাই আন্তর্য। বিহাৰেও বাঙালীর বিক্লতে রীভিন্ত বৃদ্ধ বোৰণা क्टेबा निवाद्य। ১৯০৫ नारमध वन-विकास चारमान्य देश्यक बाधानीय निकृष्टे नवाक्य बीकांत कविष्ठ वाया वरेता- ছিল। কিছ বল-বিভাগ হহিভের সিছাত বোষণার সংক देश्राच बार करवक्षे कांच कविदा निवाद, यायाव करन वाडाजीर चनवर कवि रहेशाय । व्यवकः, वारनार नर्सारमध সমুদ্বিশালী লোহা, ভাষা, অমু, কয়লা প্ৰভৃতি বনিক সম্পদপূৰ্ব এবং হাছ্যকর জেলাওলি কাট্টরা অকারণে ও বাবে অভুহাতে স্বাস্ত্রি বিহাত্তে ভুড়িরা বেওরা হইবাতে। বিভীয়ত:, नवस क्षरकरन बहे चार्त्यानरमद शब स्टेरक नवकादी हाकृतिरक वाडाजी विद्यान वद एवं। जवकांबी हाकृतिब विकाशत्म আগেই বলিয়া দেখনা হইড-Bengalees need not apply । ভতীৰতঃ, ব্যবসাধ-বাণিজ্যক্ষেত্ৰে বাঙালীকে বঞ্চিত **ক্ষিত্ৰা বাড়োৱাড়ী, ভাটৱা প্ৰভৃতিকে ইংৱেজ বণিকেৱা** প্রকারে সাহায্য করিতে আরম্ভ করে। ইংরেছের হাতে क्रकाइवामा अवर देवएशिक वाविका बाकाइ देश महस्रभावा হয়। বাদেশী আন্দোলন পর্যাত্ত পাঠের কারবার বাঙালীর হাতে হিল। ইছার পর উহা অবাধালীর হাতে বার, কারণ देश्यक बाधानीय निकृष्ठे स्टेट्ड शांडे दक्ता वक करता। विश्वव আন্দোলনে বাঙালী সকলের পুরোভাগে ছিল এই অপরাধে ভাষাকে धारम कवियात कम देशदाक छेम्और सदेश छैठि। ১৯০৫ সাল হইতে ১৯৪৭ সালের র্যাডক্রিক এওরার্ড পর্যাত पहेमारणी अक्षे जान कविवा विधाव कवितन देशत्वरकत बून অভিগত্তি বৃত্তিতে কঠ হইবে না।

এই বৃদ্ধের মব্যেও ইংরেক অনেক প্রকারে ভারভবানীর
নাথায় সইরাতে কিন্তু সবদ্ধে পরিছার করিবা চলিরাতে
বাঙালীকে। কলিকাভার বড় বড় ইংরেক কোম্পানীর
অনেক অংশীলার অবাঙালী হইবা সিরাতে। ইংরেকের ভারতভ্যানের সঙ্গে সঙ্গে বাঙালী বাবা ভূলিবার স্ববোগ পাওরার
আগেই ভারাকে আবারও আবাত হানিবার ব্যবহা হইতেতে
এবং ইহাতে এবার সেই ভিন্ত প্রচেশ বেশী করিবা বোগ
দিরাতে যাথারা ইংরেকের বহলে অথবা ইংরেকের সঙ্গে এক
ক্রোট হইরা বাংলাদেশকে নিক্রেকের শোবণ ক্রের করিবা
ভাবিতে চার।

বাংলার বে চারিট জেলা ১৯১২ নালে বিহারে জুড়িয়া বেওরা হইরাছিল লেইওলি কিরাইরা পাওরার বাবি অনেক-বিন বাবং উটিরাছে। এত বিন বিহারী বেভারা বলিরা আলিরাছেন বে ভাষার ভিভিতে বাংলাকেশ পুনর্গটিত হইলে ঐ জেলাওলির সলে এইট এবং গোরালপাড়াও বাংলার আলিবে। ভাহাতে বিহারের জেলাওলি পাইলেও বাংলার বুলনান সংব্যাগরিষ্ঠিতা বহলাইবে না। স্কুডরাং বাংলার বুলনান সংব্যাগরিষ্ঠিতা বহলাইবে না। স্কুডরাং বাংলার বিক কবনও হিন্দুর্ববান এবং বুলনানার্বান অকলে বিভক্ত হর ভবন এই দাবি বিবেচনা করা যাইবে। বল্বভালের পর কারনেকপুরে বাংলার অভ জেলাওলি রাভ্যপ্র হাবী করিরা একট প্রভাব আনা হয়। বিহারীরা ইহা ভবিয়াই কিরা হুইরা উঠেন, সভাজেত্রে বার্লিট করেন্দ্র এবং ক্রেক্ড্রন

বাঙালী আহত হন। ইহার পর পাটনার হৈনিক পল 'লার্ক লাইট' অসংবত ও অভন্ত ভাষার বাঙালীবের আক্রমন করিরা এক সন্পাদকীর প্রবহু লেবে। প্রীর্ক্ত ক্রমংনারাম্য লাল এক বিবৃতিতে বলেব বে, বাংলা বিভাগের পর ঐ ফেলাগুলি ক্রিরা পাওয়ার হাবী চুলিবার আর কোন কার্য নাই। ক্রেক বিন নাল আনে প্রীর্ক্ত বহানারাপ্রসাধ বলিরাহেন বে, বিহারীরা ঐ সব কেলা ক্রিরাইরা বিবে না, ক্লোভ্লির প্রতি ইকি ভূবি বক্লা ক্রিবার ক্লে ভাহারা সংপ্রাধ ক্রিবে।

बरे एरेन चानाम, विराद ७ हैकियांच चमनावादन अपर ৰেভাষের বনোরভি। এ সবছে আমরা আবোলন আরম্ভ कवि मारे अरेक्ट रव केट बारक्ष्यत्वद भगाव-ৰের ধনোভাব আমহা লক্ষ্য করিভেছিলার। তিন প্রবেশেরই প্ৰবান মন্ত্ৰীয়া মৌৰিক বাধানী বিভাতৰ আন্দোলনের বিকা ভৱিহাতেৰ ভিত্ৰ এ ভবা প্ৰবিহিত যে উহা ভোৰ প্ৰছেশেই কলপ্ৰত হয় নাই। ইহাছের উভিয় আছরিকভা সহতে সংক্র क्षकाम कविवाद वार्षडे कादन चारह बन्द वह चमहाद बन्द चाव बाबाजीव भएक बीवर बाकियांव देशाय बाहे । चात्रास्त এবং ইতিভার যে সব লোক প্রকাণ্ডে বাঙালী বিষেধ প্রচার ক্ষিতেতে উক্ত হুই প্ৰবেশেৰ প্ৰধান বন্ধীৰা ভাষাবেদ্ধ কান্ধেৰ विक्रांच हरे-अंको कवा विवासिय वर्छ, क्रिक काशास्त्र अंकाड कार्या वक्त कविवाद कान नावश करवन नावे । विकारवद स्थान ষৱী এইজ এক সিংহ কলিকাভার আসিরাহিলেন এবং অনেক মিষ্ট কৰাও বলিয়া নিয়াছেন। ক্ৰিছ ভাৰসেখপুৰে বাহারা বাঙালী সভার বারপিট করিরাহিল ভাষাকের শাভি-शारमञ्जू रहेश जिमि कविशारम निवा जामना जिम मारे। जार्कनारेट प्रयक्षात वाक्षानीविट्य हैकार बार्क स्टेटर मा এমন তথা মনে ভাইবার মত ভোন ভারা ভিনি ভরিয়ারেন বলিয়াও আম্মা ভূমি নাই। এই ভিন প্রদেশে বাঙালীবিবেষ अछ पृष्ट्यम स्टेशारक रव छप विदेशारका छेरा पृष्टिया बाटेरन विश्वा चाना कहा यात्र मा।

আসাম, বিহার ও উচ্চিতা এই তিনট প্রহেশই বাঙালীয় নিকট অসংখ্য প্রকারে উপকৃত। কোন কোন বাঙালী সেই সব ছানে নিয়া অচার কার্য্য করিয়া বাকিতে পারেন, বাংলার ঐ তিন প্রহেশের লোকেরও অনেক গহিত কার্য্যের নির্দর্শন বাহির করা কটন নর। কিন্ত এটা টক বে ঐ তিন প্রহেশের নানা বিবরের, বিশেবত: শিকার উর্জিয় ক্ষত বাঙালী বে লার্ব্যান ও পরিপ্রম করিয়াহেন বাংলায় তির প্রহেশীর লোকেরা তার প্রকাশেও করিয়াহেন বিনা সন্দেহ। তবে প্রকটি বিষয় এই প্রসংক সবচেরে বেশী উল্লেখযোগ্য যে, বাংলার বাহিরে প্রাহেশিকভার আবর্ত্তে বাঙালীর ছান দর্শর সমূচিত হইরাহে কিন্তু বাঙালী কর্বন্ধ বাংলাহেশের হায় তির প্রহেশীরের নিক্ট ক্রম্ব করিয়ার কর্মা হিলা করে বাই। আচার্য্য প্রস্থান্তর্ম বাংলার বর্ত্তান ক্রম্যান হর্ত্তা। ইয়ার প্রস্থান্তর্ম বাংলার বর্ত্তান হর্ত্তা। ইয়ার বর্ত্তান হর্ত্তা। ইয়ার ব্যাহার্য প্রস্থান্তর্ম বাংলার বর্ত্তান হর্ত্তা। ইয়ার প্রস্থান্তর্ম বাংলার বর্ত্তান হর্ত্তা। ইয়ার ব্যাহার্য প্রস্থান্তর্ম বাংলার বর্ত্তান হর্ত্তা। ইয়ার ব্যাহার্য প্রস্থান্তর্ম বাংলার বর্ত্তান হর্ত্তা। ইয়ার ব্যাহার্য প্রস্থান্তর্ম বাংলার বর্ত্তান হর্ত্তা। ইয়ার ক্রম্যান হর্ত্তান হিলাচক্ষের হেলিভে

भावेशक्रिक्त अवर कार कर बादानीटक बाद बाद जावबावक ভরিয়াছেন ভিছ বাঙালী ভাষার উপবেশ শোলে বাই। উড়িয়ার পুরীতে বাঙালী বহিলাবের পর্যান্ত অপবাদ করিতে विशे करवे ना किस तारे नरक काविया करवे ना व विशे वाश्ना বেশ হইতে উড়িয়া র'াগুনি বারুবের ঘল এবং কলিকাভার ইতিহা প্রতিকের খল বিভাভিভ হয় তবে খরিম উভিয়ার কি अवदा प्रहेरत । विशास अक्षा कारत मा रव. वारमा स्टेरक কারবাদার বিহারী অবিক, রেলের কুলি, বিভাগরালা, ঠেলা-ওয়ালা প্ৰভৃতির ক্লিকাতার ও বাংলার উপার্ক্ষণদর হুই কোট ষ্টাভা প্ৰতি যাদে বিহাৰে যা গেলে ভার ভি চর্মণা হইবে। ভলিভাভার ভিন্ন লক চটকল শ্রমিকের মধ্যে বোন হর আছাই লক্ই বিহারী। ভার পর কেরীওরালা, ঠেলাওয়ালা, রিম্বা-ওয়ালা প্রভৃতির সংখ্যাও লাব ছয়েকের মত হইতে পারে। ৰাঙালীৰ বিক্লছে ইহারা প্রথম হইতেই কি ননোভাব লইবা আলে আলামলোল ধেলনে ইছাছের বাক্যালাপ ভনিপেই ভাচা বুৱা বায়। কণিকাভায় আসিয়া ইহাবের অবিকাংশই कृष्टेशारव त्याव, कृष्टेशारव धेमाम शांख्या बाँरव, রাভা নোংয়া করে, এবং পাড়ার লোক আপত্তি করিলে बाबिएक चान्त। य नव चार्य देशांचर्त चाळा. त्रवारम রাবে ভূটপাবে চলাকেরা কি হছর তাবা ভূক্তভোগী বাবেই ভাবে। ঠেলাগাড়ী, বিস্নাধবালা ও বেলের কুলির ওঁডভোর পৰিচয় বা পাইবাছেৰ এবন লোক বাংলাছেলে বাই। ঠেলা-গাড়ী ও বিস্তাৱ হুড বাহুপৰে বোটৰ গাড়ী ও বালের গতি बुद्धि देशाब गारे, देशाबा जाहाब भव्यवाग जडवाब । देशाब সহিত আছে বিহারী গোৱালাদের নোংরাবি এবং অভ্যাচার। विश्राती (बानात वारमारमन शहेबा बारेएएर । मूर्डनाव देशास्त्र कामक क्षकादेवात शाम। देशास्त्र कार्यक्रमाम ৰেখিৱা মনে হয় বে কলিকাভা শহরটা ইহাদেরই, বাঙালীকে পৰে বাটে হয়া কৰিয়া একট চলাকেৱা কৰিতে হিবা ইহারা ৰেন আনামের কুতাৰ ক্ষিতেছে। ট্যাল্স দিবে বাঙালী কিছ পদৰ ভোগদৰল করিবে অবাঙালী ইছাই বেদ নিয়ন। বে সৰ বিহারী, উছিয়া প্রভৃতি ক্লিকাভার আদিয়া বলবাস এবং অর্বোপার্ক্তন করিতেছে ভাতারা কে কর প্রসা ট্যাস্থ ব্যে ভাতার অহুসভান হওরা ধরকার। সম্রভি বেবা নিরাহে ৰে ক্লিকাভাৱ ৫০ হাৰাৱ কেরীওৱালা আহে, ভৰব্যে ৪০ হাজার বে বিহারী প্রভৃতি অবাঙালী ভাহাতে সম্বেহ নাই। देशास्त्र मृद्यु माळ । शासाम कर्णादम्मगरक नादेरम्म है।। एव चर्निके नकान वाश्नारम्ब काकि राव ।

বাঙালীকে এবার সভাই কঠোর প্রাবেশিকভা অবলয়ম ক্ষিতে হবৈবে। আইন করিবা এবন বলোবত করিতে হবৈবে বে কোন প্রবেশ নিজ এলাকার বাঙালীর উপর উপরেশ করিলে তংক্ষণাং বাংলাকেশে নেই প্রবেশের লোকবের উপর নিবেধাজা আহ্রোপ করা হুইবে। বাংলাবেশ সন্ধান্তে বাঙালীর এই কথা

ৰ্যে ৱাৰিৱা অবিলয়ে পশ্চিম বাংলাকে শক্তিশালী করিৱা গভিষা ভূলিতে হইবে মাহাতে কোন প্রবেশ বাঙালীয় উপর चित्रांव क्रिए मार्मी मा रह। जावजर्व जावज्यांनीव. ভারতের প্রভাক প্রদেশে প্রভাক প্রবেশবাদীর সরান व्यविकास व्याद्य किन्द्र (काम व्यवस्था कृतिक वर्ग कृतिका ভাহার অবিবাদীদের উপর অন্যায় করিবার অবিকার কাহারও गाँदे । अन्तिय वारणा अक्षे अव्यवस्थात्य क्रक्षे कवित्वदे बदर-मन्तर्भ अवर पछिनद पछिनाजी अस्तर्भ नविष्ठ इहेर्छ नारव । ৰাত, ক্ৰলা, লোহা, বিৱন্তব্যের কলকারবানা, বনর প্রভৃতি একট আধুনিক রাষ্ট্রের শক্তিশালী হইবার উপযুক্ত সমস্ত কিছুই পশ্চিৰ বাংলার বহিষাছে। পশ্চিম বাংলার বাঙালী বহি বাঙালীকাভি হিদাবে সম্বৰ্ভ হয় তবে ভিন্ন প্ৰয়েশে বাঙালীয় छैनत अविष्ठांत अनावारम यह व्हेर्ट भारत। हैमनिश्म শভানীর মৰ ভাবৰারা সর্বাব্যে এহৰ করিয়া বাঙালী সকলের আগে শক্তি দক্ত কবিত্বাহিল এবং সম্প্র ভাততবর্ব বাঙালীর নেডছ বীকার করিয়া লইয়াহিল। বাঙালী আৰু বানা कांबर्त, विरम्बण: जाजकगरह अरर कणकश्री जुबा जागर्न विज्ञांच विषया ज्ञांच (त्र इस्तेन बदर विषय क्षरमीरवय जवका লাহনার পার। আবার শক্তি সকরের হুদ্য বাঙালীকে এবন হইতেই সজবত হইতে হইবে। ভাষার জন্য সর্বাধে वब श्वारमा बारवाचम. देशारम बार्शिमकण वनिश्व देशांचेश पिटल हिलाद ना । (य भव बादम बारमात महिल वहुए वका कविवा हिन्दि, बारना छाषायव अविवागीयव नामदव এহণ করিবে। কলিকাতা বেডিকেল কলেকে পঞাবী হাত্র লওবার নিবাভ করা হইরাতে, ইহা আমরা উচিত কার্য্য বলিবা মনে করি। পঞ্জাব ক্ষরের মুগ হইতে বাংলার সহিত বন্ধৰ ৰক্ষা কৰিবা চলিবাৰে।

#### আবার খাগ্যসমস্থা

পঞ্চলের ব্যহরের ক্ষে বিউতে বা বিউতে আবার বাংলারেশে অবটন ক্ষে হবল। পূর্ব ও পশ্চির উত্তর বাংলার অবহাই লবান ললীন হবল। গালাইবাবে। চাউলের দার আন্দের বাবের ভার এবারও এবনই সাবারণ লোকের ক্ষর্করভার দীবার বাহিরে চলিরা বাইতেহে। আসারী হুই বালে কি অবহা ইভাইবে তাহা বিশেষ চিভার কারণ হইলা ইভাইবাহে। পূর্ব বাংলার বোরাবালী ও চইপ্রার বভার ভাগিরা বাওরার পর অভি ললীন অবহা বেবা বিরাহে। চাকাও করিবপুরের অবহাও বারাপ। পশ্চিমবদে কলিভান্তর বরাহ ক্ষরাইতে করাইতে এবন একটা অসম্বন বারার আনিরা ইভাকবাহাতে করাইতে এবন একটা অসম্বন বারার আনিরা ইভাকবাহাতে বাহা লোকে সন্থ করিকে পারিবে ক্ষিয়া সংবারে হাইলাকে আটাল হটাক বাধ্য, ভরব্যে এক লের বার চাউল, এই বরাহে লোকে কি করিবা বাঁচিবে কুবা হুকর। ইবার বব্যে আবার অবাধ্য চাউল ও আটা আহে।

আটা বা চালিয়া বাগুৱা বার বা, চালিতে নেলে বেশ বানিকটা পুনি প্রভৃতি বাহির ক্ইরা বার। বিঃ স্থাবর্তীর স্থার স্থার বিলাইরা ডাঃ প্রস্তুর বোর গুকলা আপুর প্রশার্তীণ স্থান করিয়াছেন। কিন্তু ইহাতে কি লোকের পেট ভরিবে ? এক সের গুকনা আলু নিত্র করিয়া ভাহাকে বাগুৱার বোগ্য করিতে অভিনিক্ত পরিয়ার করলা প্রয়োজন, সেই করলা বিবে কে ?

কলিকাডার বেশন বভার না রাখিলে সম্প্র বাংলার অবহুং महीय एटेश डेब्रिटर, खेश्रक हात्रहम काकारीय वह डेक्टि অভিনয় সভা। কলিকাভা যদি বেশবোদা বাদ্য জ্বন সুক कार कार बारबाद वार्टक (बाकरक वा बाहेश प्रवेटक करें। ইহাতে সন্দেহ নাই। কিন্তু কলিকাডার লোককে এক পোর। চাউল ও তিন পোৱা বক্ততা দিয়া কি বেশন বজার রাখা यादेरन १ जिलाकाल जाजावी महत्रवासम्मित्रक नम अस्टनव পর চাউল সংগ্রাহের জন্ত জোর চেঠা স্থান্ত হুইয়াছে, কল যে কিছু লা হইরাছে ভাষা নছে। কিছু এই প্রসলে বেশের भारक काः श्रम्क त्यांच अवर श्राक्षम महबदाव महिव औदावा-मान पारमध मबारमाहमा मा कविशा भावित्व मा। धूर्किस्मव প্ৰচুৱ দঙাবনা ৱহিয়াছে ইহা বুৰিবার মত যথেষ্ট প্ৰযোগ ডাঃ খোষ পাট্যাছেন এবং সাবধান হটবার জভ প্রায় তিন মাস नमञ्ज लिनि भारेशास्त्रम् । मास्यायव खार्यव न्या भकरणव আপে, ব্ৰাষ্ট্ৰায়কভের সৰ্ব্যপ্ৰধান দায়িত খেলে একট লোকও যালাতে অনাভাৱে না যাত্রে ভালা হেবা। গড বংসর ভাল क्रमण कर मार्ड: वाक्टिवत जामनानी अटकवाटा मार्ड। कानिवात हेका बाकिएन क्षेत्रान मन्नी हेवा क्याबारमहे कानिएन পারিভেন্য সেপ্টেররের বারামারি হইতে ছতিকের আশহা বান্তৰ ত্ৰপ দইৱা ধেৰা দিৱাছে, ভাৱ আগে আড়াই যাগ সময় ছাতে ছিল। প্ৰবাদ মন্ত্ৰীর দল এবং জীৱাবাদাৰ দাল কাইল ট্ৰিক বাৰিতে এত ব্যস্ত ছিলেন বে চুৰ্ভিক বাকের উপর আসিয়া পঢ়িতেছে ইহা তাঁহারা লক্ষ্যই করেন নাই, তার জঙ সতর্ক ছঙাল ভোৰত দুৱের কৰা। সেপ্টেশবের গোড়ার পর্যাত मामा चारन जनस ठाउँभ वाकारत विकास स्ट्रेसारस, भावत अवन किह क्या दिन मा। जबकादी भरबस् कार्या अपन स्वतन জোরের সহিত আরও ব্ইরাছে চুই বা আড়াই মাস আসে হইতে সেই ভাবে পুরু হইলে অনেক চাউল সরকারের হাতে আসিবা বাইত। এবাৰানাৰ দান বদি ডা: বোৰের মুব চাহিং। कार्रेन राष्ट्र रनिया मा पाकिया बिद्धा अवस्था विन व्हेर्फ চাউল সংগ্ৰহে প্ৰয়ন্ত কইভেন, ভাকা কইলে আৰু জাকাকে গদী হইতে সভাইবার সাহস ডাঃ খোহের হইও না ইছা বিশ্চিত। चांबादिव नवटादेव वर प्रकीता व खवान वा चलवान कान महीत पाक्रिय अस्परादारे गारे। विक विक विकास प्रशति-চালবার বারা বেশের লোকের আরা ও এবা অর্কনের ভর বভটা চেঠা করা বাহ ভাহাও বেৰ ভাহারা করিভে সাহস भाव वा ।

বর্তনান মনীয়া এত্যেক তথ কার্ব্যে বেশের প্রত্যেকট লোকের সহাত্ম্বিত ও অনুষ্ঠ সহবোদিতা লাভ করিতেহেন। তংগত্বেও যদি উহিলের হাভ বিরা আবার এক তাবেই ছতিক বাকে আলিয়া পড়ে তাহা অতি বহু একট ছুর্তাগ্য বলিয়াই মনে করিতে হইবে। বাব্যের সহিত যাক্ষমীভিন্ন সম্পর্ক বাক্ষা উচিত বর—এ কবা সর্ক্রবাহিলম্বত, কিছ তবু এইটুকু বলিয়া কাছ বাক্ষিকেট চলিবে না। মন্ত্রীবের এবন সম্বত্ম রাজনীতি কেগির। একরাত্র ছতিক নিবারবের ক্বত প্রাণশন করিছে হইবে। কংত্রেসের নাম কেবা না-লেবা, নাম জানা না-জানা যে সহস্র সেবক ও ভভাল্ব্যারী রহিরাহেন তাহাদের সকলকে আহ্বান করিয়া একবোগে ছতিক নিবারবে অবতীর্ব হইতে হইবে।

#### পশ্চিমবঙ্গে কম্মচারী হ্রাস

भिन्धनरम थावीन नवस्त्र के निष्ठ करेबारक। আগামী করেক বংগত্তের লাসনকার্যা পরিচালনা করিবার বভ वर्ष अवे नवर्ष क्षेत्र माहे। अर्थरण क्षेत्रकि विवादमञ्ज्ञ एव প্ৰিকল্পনা আছে অৰ্থাভাবে তাহা অবেক বাচিত হইছে পাৰে। রাজ্য বৃদ্ধি করিবার সূত্র ফোন উপায় আবিকায় করিবার সভাবনা অলু কারণ রাজ্য আগার করিবার সঞ্জ প্রকার সম্ভব্পর উপায়ই ভাগতেরী তরা ছইয়াছে। তথ-সাৰারণের অধিয় বিজয়-৬% টাকার তিন প্রসং পর্যাত করা হইয়াছে। সুভয়াং মুভন গৰবেণ্টকে তাহার বর্তমানে থে সংস্থান 'আহে ভাৰার মব্যেই চলিতে হইবে: বায় সংখ্যচ ক্রিতে হইবে এবং লাগনকার্যোর বিভিন্ন লাখার লোকসংখ্যা क्यांवेटक क्वेटन । याथ मह्यांटहर च कर्यहाती मरना। क्यांवेनात যে যথেষ্ঠ উপায় আছে, সে<sup>ন্</sup>ব্যর সক্ষেদ নাই। এই এর\$ विभक्षणात्व जात्माहमा कहिबाद विश्विष्ठ अवर बाह्य मह्माहहद অভাত উপায় উত্তাবনের কর ও পরিবিভ বার করিবার কর অবিলয়ে একট শক্তিশালী ব্যৱসভাচ কমিট বা Refrenchment Committee ছাপৰ করা আবছক :

নিয়ে ব্যর-সংখ্যাচের এখন কতক্তলি সভ্যপর উপার
লিশিবত হবল বাহ। এবনই কার্ব্যে পরিবত করা বাইতে
পারে। বোর্ড অফ রেতিনিট এবং তিতিসনাগ কমিশনার এই
কুইট পদ এবন চালু রাবার আর কোন ভারসকত কারব নাই।
গত কুড়ি বংগর ব্যরহা ইহাদের উচ্ছেদ সাবনের অভ জ্ঞানত
আন্দোলন ফ্রনাছে এবং রোলাও কমিটও বলিয়াছেন যে
তিতিসনাল ক্ষিশনারের পদওলি ভূলিয়া দিয়া বোর্ড অফ
রেতিনিটরের সহত এক অন বাড়াইলেই চলে। লীগ ব্রির্থণ
বোর্ড অফ রেতিনিটরের সংতপদ বাড়াইয়াছেন ক্ষিত্ত
ক্ষিশনারের পদ ভোলেন নাই।

নৰগঠিত গৰতে উ ইতিবধ্যেই সাৰ্জন-কেনাৱেল ও তিৱেটৰ অব পাবলিক বেলব্ এই ধুইট পদ আলালা না ৱাবিভা

এতটাও পরিবত ভরিবারের। কিছ অচাত ভরেকট কেরেও बरेबन बक्बीक्वन नचन । बक् क्म राक्षिरे विकित्रेनरमा देवत्लक्षेत्र-त्कवात्वम् अपर चावमाडी कविनवात्वत् कार्या निकार कविएक शावित्वन, यनि और इरे निकारनव प्रक्रिक কৰ্মচাৰিগণের বধ্য হইতে কৰ্মচাৰী বিৰোগ কৰা হয় এবং ভাষার এই অভিজ্ঞভাবে ভাষাকরী ভরিবার ছবিবা কেরা एत । नारणांत कवि ७ जनवान वार्यन वार्या विके जवक वर्षवान, किन्न और हरे विचारमंत्र बर्या मरुरवाणिका चन्नात्र । बारमात नवनाव बर्द्य माराचा वाकिरवटक कृतिकार्यात वैविक-বিবাৰ অনভব। কিছ আনহা বেৰিভেছি বে ভ্ৰিবিভাবের केळनवर कर्यकाविक्य अवन नर्गक कृतिकार्या नवनाव वरनव ইপারওলি প্রবর্তন করিতেত্বের বা। জেলার ইক্রপরত কর্মচারী-विराध विकित हाडीय क्यान गाँद गर्ड, किथ देश बाबावाहिक ৰহে এবং বাহারা বেটুকু কৃতকার্যতা লাভ করিবা বাকেন, ভাষা ভাষাদের পরবর্তী অফিনারগণের উচালীনভার বিকল ভটবা বাব। ভবিভাগোঁ সমবার ধবের উপার্থনি পরিচিত क्षियांव क्षु और हरे विकाश अक क्ष क्ष्मकाबीय भागमाबीत्य রাবা উচিত। আনেকার দিলে কৃষি বিভাগের ভিরেটর সব-बाद नविकिथनिय दिक्षिद्वादिय कार्याथ श्विकानना कविरक्त : क्षि कानकार पुषक दिक्तिदाद श्रादाक्य स्टेन । प्रकार अकड़े नुबक नववाद विकास मंत्रिक एटेन अवर वह कर्यकारी नियक क्या परेन । कि व वैश्वा और विकारन केंग्रिकिवास কোন কাজ করিবার পরিবর্তে ইতাকে জংলের বুবেই টানিরা আৰিলেন। বিষ্টার অর্লে এবং জাহার পরবর্তী অভাত লোক-দিবের অক্লান্ত পরিক্রবে যে বৃহৎ কর্মকেন্দ্রট গতিবা উটিবাছিল शक्षिमी बिट्या नवरकी कर्यकादीएक सक्त्रकार कारा जान ভাঙিয়া পঢ়িয়াতে। ইহাতে বেখা বাইভেতে যে যদি সমবার विचान नूनर्गर्रत्यत देशांव देशांविच मा एव चरव चर्व चविद्याच्ये देशांत ज्ञान अवाह कार्याक्तांत वह स्टेश वाटेर्स । देशांक ভাৰ্য্যকরীভাবে পরিচালনা করিবার অভ বেভিটারের পদ ও কৃষি বিভাগের ভিরেটবের পদ একই কর্মচারীর অধীনে সংযুক্ত क्षियात अवाय क्या गारेटच शादा अवर अरे हरे वटमत कार्या বিৰ্জাৰ কৰিবাৰ কৰু একট ছবক কৰ্মচাৱী বিহক্ত কৰৈছে। त्व त्व नक्कांबी त्वकिक्षेत्र वर्षमात्व कार्यात्कात्व त्क्वनमात्व विक्रमणारे चर्चन कविदारसन, धाराविनरक अवर देनरम्बहेब-श्रविद व्यविद क्यांबियक्ष व्यविद्या है। विद्यविद्या कर् উচিত এবং উাহাবের কার্য্যকে কালেইর, ববকুষা হাজিব ও সার্কেন অকিসারবিধের হতে বেওরা উচিত। বিনি ভবিবিভাগের ভিষেত্ৰৰ এবং প্ৰবাদ স্বিভিত্ন ছেডিগ্ৰাল ক্ইবেন, ভাতাল चकार कर्यक्रमन २७३। बारवायन । देशायाक देकावित कार्यादे ভাতাকে আৰু অৰ্জন করিতে বইবে।

নেকেটারিরেটে নেকেটারী ও তেপুট নেকেটারীয় সংব্যা এরোকবের অধিক আবে। ইবাবের সংব্যা করে করার ইচিত। বর্তমানে প্রভ্যেক হোট হোট বিভাগ এক ক্ষম কৰিব। সহকারী নেকেটারী কর্ত্তক পরিচালিত হুইতে পারে এবং এক ক্ষম নেকেটারীর ক্ষমিন কাহার। সকলে থাকিতে পারেন।

বক্ষেণে বর্তমানে আই-সি-এলগণের সংখ্যা প্রয়ো-ক্ষমাভিবিক্ত। বাংলার আর্থিক অবস্থা পর্য্যালোচনা করিয়া ক্ষেত্রীর প্রয়োক্তির উচিত অভিরিক্ত অভিসারগণকে অভাত প্রয়োশ বহলি করা ভিয়া বেশ গঠন বিভাগে কেওয়া।

প্রতি বংগর পি-ভর্যু-ভিতে অভ্যবিক অর্থার ছইভেছে।
এই বিভাগের অপচর ও হুবাঁতি বছ করিবার হুভ উপার উদ্ভাবন
করা উচিত। ইহা কটিন কার্য্য বাটে, কিছ ইছা বাকিলে
কার্য্যটি অসভব হইবে না। এই বিভাগের হুবাঁতি নর্কজনবিহিত, কিছ আজ পর্যান্ত ইহা রহিত করিবার জন্য কার্য্যকরী
কিছুই করা হর নাই। কংপ্রেল প্রবর্গে সকল লোকের
আলা-ভর্মার হুল, স্তরাং এই অসহ্পারসমূহ এবনই বছ
হুঙরা সরকার। ইহার জন্য বদি এখন কোন অভিসারকে এই
পরে বিরুক্ত করিতে হর, বিনি ইঞ্জিরার নন, কিছ সভভার
জন্য ব্যাত, ভাহা হুইলেও প্রবর্গের ইহা করিতে ইভছতঃ
করা উচিত বর।

বাংলা-আসাম রেলপথের ভবিষ্যুৎ
ভারতবর্ণ ও পাকিছান এই হুই ভাবে পাকাপাকি বিভক্ত
হইবার পূর্বে আকাকী ভাগের সময় বাংলা-আসাম রেলপথ
বির্দিধিতরপে বিভূত হিল।

	পাক্ছাৰ	ভারত
ৰডগেক লাইন	413	.7>>
चनरंगक नारेय	31	20
নিটারণেক লাইন	2666	7870
যো	- 388F	2669

ন্যাভক্লিক বোৰেদাদের কলে নিয়লিবিভয়ণে উহা পরিবর্তিভ হইবে—

	পাকিছাৰ	else
बण्डांच नारेय	622	911
चनर्गक नारेव	<b>&gt;&gt;</b>	71-
বিচীয়গেজ লাইন	3034	7400
	3686	7907

व्यव वंद स्टेट्ड्ट्र रा वरे रामणय, मानाव राम, दे, मारे.
राम वंदर ७. है. राटमा बर्ट्य विष्ण कविवा राध्या स्टेट्य,
मा वि. व. राम स्मार्ट्य वक्तमार वाया स्टेट्य। यहि
मानारमा रामण्यस्य विश्वारम रामण्यस्य नाम स्वाम कविवा
राध्या स्व, कारा स्टेट्य मानाव ७ कारका नर्ट्य वाकावारका
मानारमा विषय वार्ट्य मानाव ७ कारका नर्ट्य वाकावारका
मानारमा विषय वार्ट्य वार्ट्य स्टेट्य ना। वार्ट्य वार्ट्य।
मानारमा वार्ट्य मानारम्य मानारम्य मानारम्य वार्ट्य वार्ट्य मानारम्य वार्ट्य वार्ट्य वार्ट्य मानारम्य मानारम्य मानारम्य मानारम्य मानारम्य मानारम्य वार्ट्य मानारम्य वार्ट्य मानारम्य मानारम्य मानारम्य मानारम्य वार्ट्य मानारम्य वार्ट्य मानारम्य मानारम मानारम्य मा

হাসিবারার গলে বাবারিহাট এবং বোগরাকটের সলে শিলি-ভঙি বোগ করিলে এবং শিলিভড়ি ও কিবণগঞ্জের বব্যে বে বলগেক রেল লাইন আহে ভাহাকে বহি বিটার গেলে পরি-বর্তিত করা বার ভাহা হইলে ভারতবর্ণের নাটর উপর বিরা আনাবের সহিত বোগ রকা সহক্ষাব্য হইবে। এই ভাগ্যট বভ বীর সভব সম্পন্ন করা উচিত।

ক্লিকাভা বন্দরের সর্বাচ এবং ভারতের স্বার্থরকাক্ষে এই বৰুৱের সহিত পশ্চিম বাংলার উল্লোংশ আলার ও বিহারে বিটার গেছের রেলপথ বিশ্বাণ আবচ্চ । এবনকার ভাষ বেলপৰ বভ, খল ৬ বিচার গেছে বিভক্ত বাকিলে বাভাৱাত ও যাল চলাচলে বিভৱ অন্তবিধা হইবে। বেলপৰ अक्ट बार्णव व्हेरल अहे चन्नुविश हुव व्हेरव । क्लिकाका क লালগোলা খাটের মধ্যে যে বেল লাইন আছে ভালার সলে একট বিটার থেক লাইব বলাইলে ইছা সহক্ষেই সম্পন্ন ছইবে বলিয়া বনে হয়। বর্তমানে কিছুছিনের জভ অবভ পাকিছানের বোহনপুৰ ও গোলাগাড়ী বাটের ভিতর বিরা উভব-বলে ৰাভাৱাভের ব্যবহা রাখিভে হইবে। ক্রমণ: র্শিবাবাদের नानदर्शनांको ७ बानवर त्यनात बदश श्रमात छैनदा त्याव টেশৰ পৰ্যায় একট জিল মাইল মিটার গেড রেলপৰ মির্দাণ করিতে ক্টবে। এই একট লাইন নির্বাণ করিয়া দটলে কলিকাতা হইতে দাৰ্জিলিং বাতাৱাতের সময় পাকিছান বিৱা वां शिक्ष हिन्दि।

वारमा, जामान, विनाकपूत, कमगारे थकि, वार्किमिर, नामवर, ভূটান, সিকিম, পূর্বা বেপাল, পূর্ণিরা প্রভৃতি স্থানের রেলপথে ৰে প্ৰতিঠানওলি শিৱৰুৱা ৬ বাড সৱবৱাত কৰে, ভাতাতের প্রভাবতীরই কেন্দ্র হইভেছে কলিকাভা। প্রভাবে কলিকাভা এত বিৰ বেষৰ বেলওৱের হেড অফিন ছিল এবনও ভাষাই ৰাভা ইচিত। হেলের বেড অফিল একট প্রধান বাণিজ্য-কেন্দ্ৰে অৰ্থিক ক্ষাদে ব্যবসায়ী ও কেন্দ্ৰা উভৱের পক্ষেই প্ৰবিধা হয়। কিন্ত বেলকৰ্মণক ইছা বিবেচনা না করিয়া পাও এবং গৌহাটতে আনাৰ ৱেলের হেড অফিন বনাইডেছেন। ইহাতে কৰ্মচানীকের বাসছাৰ প্রভৃতি বিশ্বাবের ভঙ প্রায় ছই কোট চাকা বাহ হইবে। অবচ ভিয়াবনত হইতে লগত প্রায় পৰ্যাত ৭০ ৰাইল খল গেজকে বিটার গেজে পরিবর্তন এবং ৮০ বাইল মুখ্যৰ বেলপৰ বিশ্বাৰ ক্ষিলে পাঙ্ ও গৌহাটডে ছেত অফিন পাঠাইবার কোন প্রয়োজনই থাকে যা। বর্তনানে এক ৰাইল বিচাৰ পেক লাইৰ বিশ্বাপের ব্যৱ ৰোট ৫০,০০০১ টাড়া, এই হিসাবে উক্ত বেলপৰ বিশ্বৰে ৭৫ লক্ষ্ টাড়া बाब नार्य ।

বর্তনান ব্যবহার বিচার গেলের গাড়ীখলিকে নাবে নাবে নারাইবার খড় সৈরপুরের কারবানার পাঠাইতে হয়। কিছ ভবিততে কাঁচড়াপাড়ার এই কার্য্য সম্পন্ন হইতে পারে, ডারণ নেবাবে বড় এবং হোট উভর্যবিধ রেলগাড়ীই বেরাবড ক্ষিবার ৰবোপৰ্ভ ব্যবহা আহে। এই ব্যবহার ব্যৱও কন হইবে নিভয়।

এতবিদ পর্যন্ত আলার রেলগ্রেকে প্রবোজনীর রায়ের কর্ত নৈরবপুরের তিপো ও কলিকাভার বাজারের উপর বির্ত্তর করিতে হইত। আলার রেল আলারা করিলে ভাষার প্রতিক্রিকর আবিজ্ঞ করিতে করিব জিনিরগুলির অভ গুলার ভৈরারী করিতে হইবে। ইহাতে করেক বংসর সররও লাসিবে কিন্ত বি. এ. রেল পূর্বোভ প্রভাবাহুসারে অভ্যুর রাবিলে আলার রেলপর্ব, হালিনহর ও কাঁচভাশাভা কারবানাগুলি হইতে সকল প্রকার লাহাব্যই পাইবে এবং কলিকাভার বাজারের সহিত ভাহার সম্পূর্ণ বোগারোগও বজার বাজিবে।

গদাৰ উভবিদ্যের ও কলিকাভার উভর-পশ্চিমের বেল-পথ-ভলিকে অবোধ্যা-বিহুত রেলওরের সদে মুক্ত করার ব্যবহা হুইতেরে। ইহাতে গোরকপুর হুইতে ইহাদের পরিচালকা করিতে হুইবে এবং ভাহাতে ববেও অল্পবিধা হুইবে। পুর্কোক্ত প্রভাব অসুসারে কাল হুইলে এবনও কলিকাভা হুইতেই ইহা পূর্ববিং সহকে পরিচালিত হুইতে পারিবে।

বিশেষ কোন জননি অবস্থা ঘটলে গৌহাটাতে এক জন তেপুট কোনানেল ন্যানেজারের অবীনে আসাম রেল সম্পূর্ণ যাবীন অংশরূপে কাজ করিতে পারিবে। বুছের সময় এই ব্যবস্থা প্রচলিত হইরাহিল এবং মধেষ্ট সফলও হইরাহিল।

বি-এ বেলওবেকে ভিন ভাগে বিভক্ত করিলে বত কর্মচারী লাগিবে উহা আভ রাবিলে ভাহা অপেকা অবেক কম কর্ম-চারী বারাই ভার্য্য চলিবে। আনাম বেলপবকে একট পুরক রেলপবে পরিণত করা হইরাছে, এবং বেলল-আনাম বেলপবের অন্যান্য অংশগুলির এক ভাগ ইই ইভিয়া রেলওবে ও অপর ভাগ অবোব্যা-বিহ্নত রেলওবের লহিত বুক্ত করা হইতেছে। বেলল-আনাম রেলকে পূর্ববং একট ললপুর্গ বেলপর হিলাবে বজার রাবিলে ব্যয়সংক্ষেপও ববেই হইবে। ইহাতে বাভারাতের অস্থবিবা হইবে না এবং বেলের বেত অকিল ক্লিকাভা হইতে লরিরা বাওরার প্ররোজন না বাড়ার লোকের অস্থবিবাও হইবে না।

নবনটিত বেদল আসান বেলওরের পরিচালনার ছবিবার জন্য কলিকাতা কাঁচড়াপাড়া এবং ডাটহার লইরা একট জেলা এবং আলান একট জেলা হিসাবে গটিত হইতে পারে। এক জন তেপুট জেলারেল ব্যানেখারের অবীন আসাম বেলকে কভকটা বাভান্ত বিলে আসানের কোন অপ্রবিশাই হইবে না।

গুলাবের বাল বউন, এক্সিন, বেলগাড়ী, বালগাড়ী এবং অন্যান্য জিনিবগুলি সম্পর্কে বৃত্তন করিবা হিসাব লগুরা বরকার। আআজী বিভাগ-অহুলারে যে সকল বউন হইরা সিরাহে ভাষা অভ্যন্ত ভাভাভাড়ি করা হইরাহে এবং কর্মারি-গুল, জুনসাবারণ ও সংবাদপ্তর সক্তল ইহার বিরোধিভা করা সম্ভেও ইয়া ভার্যকরী করা হইরাহে। এবন এ অবহার আৰুল পৰিবৰ্ত্তৰ হইবাছে। বন্ধীনভাব্যকে স্থাবিচালিত ভবিবার জন্য এবং অবধা নয়র ও অর্থ ব্যর না করিবার জন্য রেলওরে বার্চ হইতে এখনই আবেল দেওরা উচিত এবং বত শীর সভব পূতন ভিত্তিতে এই বন্ধীনভাৱ্য সম্পার করা উচিত। তবে পূতন হৈলে নির্মাণ ও সন্ধানারবের বে প্রভাব করা হইল ভাহাতে এখনই হাত বেওরা বরকার: ইহারারা ভারতবর্ত্তের সহিত আসাবের রেল রারা নাই হইট ভালই একসন্দে হইতে পারিবে। পান্তু ও গৌহাটিতে বর্ত্তনাণ ব্যবহার বহু বাঙালী কর্ম্বটারী প্রেরিত হইরাছেন। ইহাতে আসামীদের 'বালাল থেলা' আম্লোলন আরও প্রবল হইয়াছে। ইহারা ভলিকাভার চলিরা আসিলে আসাবের এই বিসম্পালবারও কতকটা প্রতিকার হইতে পারে।

#### হিন্দুসমাজ সংগঠন সমিতি

নবৰীপ, ভটপানী, কোটালিপাড়া, বাকলা, বিজ্ঞানপুর এবং কলিকাভার পণ্ডিত মহোদ্যগণ হিন্দুসমাজ রক্ষাক্তে কিছুবিম আগে বে সকল ব্যবহা বোৰণা করিয়াছিলেন ভাহাকে ভিঞ্জি করিয়া হিন্দুসমাজ সংগঠন সমিতি মামে একট প্রতিটান গঠিত হইয়াছে। পণ্ডিত সমাজের নির্দেশ কার্মো পরিণত করাই উহাকের উত্তেও। ঘোষণার নির্দেশগুলি এইরূপ:—

"চহুৰ্বৰ্ণ ও ভৰতৰ্গত শ্ৰেণীয় অভিত্ব সংস্থাও হিন্দুস্থাও এক ও অধিভাতা। হিন্দুকাভির বিভিন্ন বৰ্ণ ও শ্ৰেণীসবৃহত্ব মধ্যে সামাজিক অধিকার-বৈষৰ্য থাকিবে না। হিন্দুর মজিরে বা প্রামতণে হিন্দু মাজেরই প্রধ্যোবিকার থাকিবে, কেবল ব্যক্তিগত মজিরে বা মঙণে অগরের প্রবেশ মালিকের অসমতি সাপেক হইবে। হিন্দুস্মাজের কৌরকার, রক্তক প্রভৃতি হিন্দু মাজেরই কার্য্য করিবে। আক্ষণ হিন্দুরাজেরই পূজানি বর্ত্তকার্থে পোরাহিত্য করিতে পারিবেন, তক্ষত কোন সামাজিক অবমতি ঘটনে মা। অভ্যাচারনিশীভিত ও বলপ্রাক বর্ণাভরিত ক্ষমসবৃহত্ব ও বর্ষিতা নারীগণের হিন্দুর অক্স আছে। বলপ্রাক বিবাহ হইলেও শার্ষান্তিতে ভাষা বিবাহই নহে। উল্লেখ্য সকলেই ব্যমাজে পূর্বাধ্যে ক্ষমেক অবহান ক্ষরিতে পরিবেন।"

সমিতি নিয়লিবিত উদ্দেশ্য কাইরা কার্যাক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইরাছেন: (১) হিন্দুবর্দ্ধ ও সংস্কৃতি রক্ষা এবং জাতিবর্ণ-নির্কিলেবে হিন্দুসনাক্ষের উন্নয়ন; (২) জাতিবর্ণনির্কিলেবে সকল হিন্দুকে জীবনবাপন ও উন্নয়নের পূর্ব ও সমান ক্রেয়ার এবং সামাজিক অবিকার বৈষ্বায় সম্পূর্তাবে বিদ্যিত করিরা পরস্বারের সহিত প্রকৃত আড়্ড্বোবের উল্লেখ বারা হিন্দুসমাজের সংহতি প্রতি এবং (৩) কোন হিন্দু পুরুষ বা নারীর ইজার বিরুদ্ধে ভাষার কনীর বর্দ্ধ জীবনবাপন ব্যাহত হইলে তাহার সামাজিক অবিকার মাহাতে সম্পূর্বভাবে অক্রেধ বাকে সেইরূপ ব্যবহা করিয়া হিন্দুসমাজের হৃচতা ও অবওতা রক্ষা।

স্মিতির কার্যাহটীতে ভাতিবর্ম নির্মিশেবে সক্স হিন্দুর একর পানাহারের ব্যবস্থা ও প্রচলন করা এবং অপ্রভার দৃতিশাপ হইতে হিনুসমানকে সম্পূৰ্ণক্ৰণে মুক্ত করা সামাজিক गररणि वृद्धित चल्ठम भद्यासाम निर्दातिक स्टेशारक। अटे স্বিভিত্ত কর্ম্মবারা সন্পূর্ণরূপে রাজনীতিদর্জিত। হিন্দুস্বাজের বাহ্যকর সংগঠন ও পুনর্গঠন ইবার লক্ষ্য হইলেও কোন অহিন্দু সমাজের সহিত ইয়ার বিরোধ নাই এবং সকল অহিন্দু সমাজের প্রতি এই সমিতির ভাতেছা আহে। সমিতির উদ্বেচ্চ কার্ব্যে পরিণত করিবার খড প্রতি খেলার, বহুকুষার, ধানার এবং প্রায়ে পাৰা সমিতি খাপন করা হইতেতে। একট পরিচালকমঙলীর ভভাবধাৰে সমিভিত্ৰ কাভ চলিভেছে। নিয়লিখিত বাজিগণ প্রথম বংসরের পরিচালকমওলীর কর্মকর্ডা নির্বাচিত হইরা-ছেন: সভাপতি---রাম্ন মতীজনার চৌরুমী, সম্পাদক----প্ৰীসভ্যেক্তৰাৰ যোগত, জ্ৰীভাৱকচক বাব এবং প্ৰীপ্ৰবোৰচক রার। বলীর প্রাদেশিক রাষ্ট্রীয় স্থিতির সভাপতি, হিন্দু বহাসভার সম্পাদক এবং হিন্দু বিশ্বন, বৈঞ্সাহা বহাসভা, পাট্টৰী সভা ৰাপিত মহাসভা, রাজবংশী ক্ষিয় স্থিতি প্রভৃতির প্রতিনিধিরাও পরিচালক্ষঙলীর সভ্য আছেন।

আছরিকভার সহিত কাল করিলে সমিতি বাংশার লাতীর জীবনের বর্তমান সন্ধিক্ষণে একট বন্ধ অভাব পূরণ করিতে পারিবেন ইয়াতে সন্দেহ নাই।

#### উপেক্ষিত চিকিৎসক

ভারতীয় ষেভিকেল কাউলিলের ভাইশ-প্রেসিভেও নিম্ন-লিবিভ মধ্যে একট বিহুভি দিরাছেন :

গভ মহার্ভের সময় বিদেশ হইতে অনেক ভাভার ইংলভে আলেন অধবা বুছের প্রারতে অনেক ডাভার ইংলতে বসবাস করেন। কিছু এেট ত্রিটেনের ছেডিক্যাল काष्ठिन वैदारात निकारक चीकात करतव वा अवर আইনত: ইহারা বেলিটার ডাজার বলিয়া গণ্য হইডে भारतम् मा । किन्न प्रत्यत्र प्रयत् प्राकारतत्त्व प्रकार प्रकेशम ১৯৪৭ সালের ভিসেম্বর পর্যন্ত ভাঁহাদিগকে সাহয়িক ভাবে বেজিটার্ড ডাঞার বলিয়া বীকার করিয়া লওয়া ভইয়াছে। এই সৰ বিধেৰ ডাভারকে বাহাতে খারী বেলিটার্ড ভাভার হিসাবে এহণ করা সম্ভব হয় ইভিষ্যে সেই বর্ষে পার্লাবেটে একট বিল আবা হইয়াছে। ব্রিট্টপ বেভিক্যাল अर्गानिद्यम् वहे मीछि नवर्षम कविदास्य । जावास्यत দেশে বাৰীমতা সংগ্ৰামের বিভিন্ন ভৱে মহাছা গাড়ী ও অভাত বেডরদের আহ্বানে ১৯২১ দালে বহু ছাত্র উছি-দের বিশ্ববিভালর ভ্যাগ করিরা আগেন। ইঁহাবের অবিকাংশকে পত্নীয় কাৰেয় ছত পাঠান হয় এবং কাহাকে কাৰাকেও পত্নী অঞ্চের চিকিংলা-কার্য্যের অভ শিক্ষিত করিরা ভোলা হর। বাংলাবেশে বহাদ্বাদী ও বেশবদ্বর

অহুৰোহণাৰ ভাগভাল বেভিজ্যাল ইন্ষ্টটটট হাপন কৱা হয়। বেভিক্যাল ছলের ছাত্রগণ ৫ বংলর পর্যন্ত পাড়বার পর ভাষাদের পরীকা এবন করা হয়। পরীকা বেশ मक्कर रहेश बादक अबर विद्यासकानरे फाशाया गडीका नदेश पाटका । जवानि जवाबीयन वारमा नवट्य के दैश-দিগকে অন্ন্ৰাম্বিত ভাজার বিসাবে গণা করেন নাই। कार्यकाल व्यक्तिकाल देनक्षेत्रेकेटक शृद्ध 'बल बन बन क्लार्य व वड वड्टबावम कवा स्व बनर देशव क्लार्य स्व চারি বংসরের। কিছ এই অভুযোগদের পূর্বে যে সব হার ৫ বংসর পভিয়াহে ভাঁহারিগতে আর অলুরোধিত বলিয়া গণ্য করা হইল না । ইহাদের অনেকেই নীয়বে বহ বাৰাবিদ্ৰেৰ ভিতৰ দিৱা দেশের অপরিগীম সেবা করিয়া আসিয়াছেন। পূৰ্বে ইঁহাদিগকে বেলিটাৰ্ড ডাক্টার বলিয়া भेगा कविवाद अवस क्रिक्टी विकल क्रेबाट्य । किन्न वर्षमात्म भुष्ठन बूर्तिक प्रवृत्त एरेबार्क । वर्षमाम नवस्त्र के अरे नव ভাক্তারের বল কিছু করিবেদ ইয়া আলা করা কি অভার क्ट्रेट्र १

এই ভিকিংসক্সণকে বেজিটার্ড ডাক্টাররূপে গণ্য করিবার দাবি লামাইরা ইতিপূর্কে আন্দোলমণ্ড হইরাছে কিছ কোন কল হর নাই। কিছ এবন আর ইহাধিগকে উপেকা করিবার কোনই কারণ নাই। মন্ত্রীদের উভোগী হইরা এই চিকিংসক-দের ববারীতি রেজিটার্ড ডাক্টারের তালিকাভুক্ত করিরা লওরার কল অপ্রই হওরা উচিত। পল্পী অঞ্চলে এই চিকিংসক-দের অনেকে বীর্থকাল বাবং ব্ব ভাল কাল করিতেছেন। আমবালীদের স্থাচিকিংসার যে সরকারী পরিকল্পনা এবন প্রস্তুত হইন্ডেছে ইহারা প্রায় ২০ বংসর কাল ভদক্লারেই কাল করিরা আসিতেছেন, ইহাদের এই দান আল কৃতক্রতাসহকারে বীকৃত হওরা উচিত।

এই প্রসকে বাংলার ভাতীর বিশ্ববিভালর হুইতে যে সব बाब आक्टबर्ड वरेबाटिन छावाटम अवटबर्ड विट्यामा कवा **উ**চিত। वनीय चांचीय विविधानस्य वरीळगाव, मंबरहळ हर्शिभागात. सम्बद्ध हिस्तक्षम बार्च मनीवित्रक अवाभमा করিয়াছেন। যে সৰ ছাত্র এই বিশ্ববিভালরের পরীক্ষার উত্তীর্ণ হইরাছিলেন ভারাবের মধ্যে কেহ কেহ ভার্রামী দিরা ভাষা-ভত্ত, দুভত্ত প্ৰভৃতি সহত্তে গৰেষণা করিয়াছেল এবং নিজ নিজ বিষয়ে মৌলিক কাৰ্য্য হারা জাতির আনভাভারকে সমুদ্ধ কৰিবাৰেন। বদীৰ ভাতীৰ বিশ্ববিভালৰের ডিঞ্জীকে ভার্নানীর অনেক বিশ্ববিভালয় বি-এ ডিগ্রী বলিয়া শীকার করিয়া সইয়াছে किंद कांवकरर्य कांगाबा रन चीक्रकि भाग माहे। रकांव दैकांव अरहरनंद कराजन बडीनका देशायद कियी अकरमाहिक विध-বিভালবের ভিঞীর সমভূল্য করিরা বিরাহেন। আশা করি वारनाव वर्षमान महीमधन हिक्रिश्तकरम्ब नवकावी अञ्चरमाहम হাবের সময় দীর্থকালের উপেক্ষিত এই ছাত্রদের প্রাপ্য সন্মান शास कृष्ठिक स्टेरिय मा ।

#### গবর্ণব্লের দায়িত্ব

ভারতীর গ্রণরাক্ষে বে সব এণ থাকা উচিত বলিয়া গাড়ীকী মনে করেম গভ ২৪শে আগষ্ট ভারিখের হরিকম গরিকার একট প্রবছে ভিনি ভাগা আলোচনা করিয়াছেন। গাড়ীকী নিবিভেছেন:

- ১। ভারতীয় গবর্ণর নিজ দেহে এবং পরিবেশে সম্পূর্ণ-ভাবে য়ায়কপর্শ-রুক্ত থাকিবের। ইছা ব্যতিয়েকে য়ায়ক-বিয় বর্জনের সার্থক প্রয়াসের কল্পনা করা বায়ু না।
- ২। আঁহার পরিবেশ ও ব্যক্তিবের মধ্যে প্রকাশ পাইবে চরকার স্থাকাটা—ভারতের ডোট মৃক জনগণের সহিত একাছবোবের স্থাট প্রতীকরণে, কারিক প্রনই বে নাস্থার আরে অবিকারের মৃলে এই নীতির বারকরণে, আর বর্তমান শোষধ-নীতির বারা স্থাবেত হিংসার প্রতিটিত সমাজ-ব্যবস্থার ক্লে স্ব্যবস্থিত অহিংসার সচকরণে।
- ৩। সাহাত কুটারে ভিনি বাস করিবেন। ভাঁছার গুড়ের चार नकरनर क्रम्हे नमा बरादिल बाकिरर: बर्क स्वार्य লোকচক্ষের অন্তরালে ভাল করিয়া কাজ করিবার সহজ ব্যবস্থাৰ বাকা চাই। ত্ৰিষ্টাৰ প্ৰবৰ্তন ভ সভাৰভঃই ত্ৰিষ্টাৰ শক্তির প্রতিনিধি ছিলেন: কাজেই তাঁহার ও তাঁহার সালো-পাৰের বন্ধ পুরক্ষিত প্রাসাধ নিবিত হইয়াছিল। সাঞ্রাক্ষারকী অক্সরবর্গনত ভাতার বনকে এই প্রাসাদ খিরিয়া থাকিত। আঁছার প্রলাভিষিক্ষ দেশীর লাইকে রাজ্ঞবর্গ ও চনিয়ার বিভিন্ন থেশের দুত্রপক্তে অভ্যর্থনা করিবার অভ কতকটা অযকালো বাভীঘর বাবিতে হইতে পারে। এইরপে দেশীয় পাটের আতিব্য গ্ৰহণ বেন অভিবিদের মনে নৃতন চেতনা সঞ্চারের পৰ হটতা উঠে এবেশীয় লাটের আচরণ ও পরিবেশ কেবিয়া তাঁহাৱা যেন সাম্বোর প্রকৃত স্বরূপ--দীনত্বের সহিত একাস্থ-বোৰের বান্তব অভিব্যক্তি শিবিরা বাইতে পারেন। দেশী ও বিদেশী বুল্যবাধ আগৰাবপত্ৰ দেশীয় গৰণৱের জন্ধ নহে, তাঁহার यश स्टेंदर छेक किया थ नवन भीवम : अटे यश छाराव प्रसादव উৎকীৰ্ণ হইৱা শোভা বৃদ্ধি ক্রিবে না, পরস্ক তাঁহাব দৈনজিন কৰ্ম্বে নিভা মুৰ্ভ ঘটমা উঠিবে।
- ৪ ! তিনি কোনজনেই কুমাণি অপ্টেডা খীকার করিবেন
  না ; জাতি, বর্দ্ধ ও বর্ণগত কোন ভেন্নই তিনি নানিবেন না ।
  সকল বর্দ্দের এবং প্রাচ্য ও প্রতীচোর শ্রেষ্ঠ যাহা কিছু ভাষা
  তাহার মবো প্রতিকলিত হইবে । ভারতের নাগরিক থাকিরাই
  ভিনি জগতেরও এক জন নাগরিক হইবেন ৷ পানরা প্রবিতে
  পড়িরাছি বলিক; ওবর অভুল ঐপর্বোর অধিরাক হইবাও এইমুপ্
  সরল জীবন বাপন করিতেন ৷ প্রাচীন কালের জনক রাজাও
  এই পথে চলিরাছিলেন ৷ বিটিশ বীপপুঞ্জের লর্ড ও নবাবনজনদ্বের বারা পরিস্বত থাজিরাও ইটন বিদ্যা-মজিরের শিক্ষাভক্তকে স্বপ্তরে এইমুপ্ সরল জীবন বাপন করিতে দেবিরাছি ।

ভারতের বৃত্তু কোট কনগণের গবর্ণরও কি ইহার অণেকা কর কিন্তু করিবেল গ

ধ। যে প্রবেশের বিনি গবর্ণর হুইবেন সেই প্রবেশের বাড়ভাষার তিনি কবা বনিবেন। ভারতের রাইভাষার বিকুলানীও
তিনি নাগরী ও উর্জ্ নিশিতে পভিতে ও বনিতে পারিবেন।
সংস্কৃতবহন হিনী অববা পার্নীবহন উর্জ্ কোনটই এই রাইভাষা নহে। বিদ্যু পর্মাত্যালার উত্তরে কোট কোট লোকের
কব্য ভাষাই হুইল এই বিকুলানী।

ভারতীর গবর্ণবের বাব্যে কি কি গুণ প্রতিক্লিত হওর।
উচিত ভাহার সমগ্র খটা বিধার চেঠা ইহা বহে। উদাহরণবরশ কতকওলির উল্লেখ করা হইল বাল।

এবেশীর গবর্ণরগণ বে ভাবে জীবন বাগন জরিবেন আলা করা বাইভেছে, ভারতীর প্রতিনিধিবর্গ কর্ত্বক ঐ পদে নির্বা-চিত ইংরেজগণও সেইভাবে জীবন বাগন করিবার চেঙা করিবেন এইরূপ আলাও করা বার। তাঁহারাও ভ ভারভের প্রতি আহুগভ্যের শপর সইরাহেন। বিটেনের পক হইডে ভারভকে তথা জগংকে বাহা দিবার আহে ভাহার শ্রেষ্ঠ নিয়র্শন ভাহাবের বব্য দিবা প্রতিক্লিত হইবে।

**अवष्ठे चलाच अवद्यानदावि एरेवाद्य देश बनारे बाह्ना।** ইংরেজ প্রথরদের মধ্যে ছুই জন ব্যতীত অপর সকলেই ভারত-বৰ্ব হুইতে বিভাৱ লইয়াছেন। জাহাদের ভান এহন করিয়াছেন কংৰোদের শ্রেষ্ঠ নেভবুদের মধ্যে করেকখন। বেশের লোকে ৰবে করে কংশ্রেসের গঠনবৃদ্ধ কর্মতালিকা বাহাতে সুচার-ৰূপে বেশের সর্বান প্রযুক্ত হয় তংগ্রতি দক্ষ্য রাধা বর্তমান भवर्गहरूब क्षेत्रांन काविक । भवर्गद्रवा क्नेडिकेन्ट्रिय काम ना হইছা ক্ৰ\$টট্ৰনকে ভাহাছা বানবক্ল্যাণে নিহুক্ত ক্ৰিবেন ইহাই জাহাতের নিকট হেশবাসী আশা করে। অক্স বার্থপর ও সভীৰ্বতি মন্ত্ৰীৱা হাজবৈতিক চালবাজির বাহা অধিকসংখ্যক ভোট ছাতে ৱাৰিতে পারিবাছেন এই কারণে বৃদ্ধিনান বিচক্ষণ ७ दिनदिव्यम् भवर्गद यक्ति काराय्य भवायर्ग क्याक्यरंभ अस्य ভৱিষা বেশকে সৰ্বাবাদের পথে চলিতে বেন ভাষা ঘইলে कर्रावामब त्यां के विचारमब नवर्गवाब नाम निर्दान निवर्गक হুইরা পড়ে। মন্ত্রীবের কাকে বেশের কভি হুইডেছে, কংব্ৰেনের আদর্শের অম্ব্যাদা হইতেতে বলিয়া বদি প্রথর মনে করেন ভাষা হইলে কংগ্রেসের উচ্চ কর্মপক্ষের বারকং বেমন এক ভিতে ভিনি মন্ত্ৰীদের উপর চাপ আনিয়া ভারাদিগকে नश्यक कविएक शाविएवन, जनव विएक व्यवासनायात स्थ-সাধারণকে সমত অবছা অসংহাচে আনাইরা অনমতের ছাপে কেলিডাও বল্লীবের সারেতা করিতে পারিবেন। देश्यक भवर्गद्वका अदहरन या जकन निवयकांत्रिक बांबा বাৰিৱা চলিৱাহেৰ, স্বাধীৰ ভাৰতের প্ৰান্তেশিক প্ৰৰ্ণৱ-ৰের ভাতাই বানিরা চলিতে হইবে এবন কোন কৰা নাই। বস্তীয়া বেষৰ জনবায়ক, গ্ৰণৱেষাও ভেৰণি জননায়ক। গ্ৰ-

বার্থ জনগণকে বৃথিবার হবোগ বেওয়া এবং গণহাবি হানিয়া লইয়া জনকল্যানে আন্ধনিয়াণ করা গণর্গর এবং বারী উভরেছই কর্তন্য। শাসন কার্য্যসংক্ষান্ত সরন্ত বিবন্ধ জনসাধারণকে জানিবার ও বৃথিবার হবোগ বিলে ভিক্টেটরী শাসন বাবা ছলিতে পারিবে না। কংগ্রেসী গণর্গরেরা প্রাকেশিক ভাষা আরন্ত করিয়া এবং প্রদেশের কৃষি শিল্প শিল্পা সমান্ত ও রাজনীতি বৃথিরা কইয়া মরিবন্ডল এবং ব্যবস্থা-পরিষ্যকের বাবিরে বে সকল সমান্তসেবক নীরবে ও নিঃবার্থভাবে কেশনেনা করিয়া বাইতেছেন তাঁছাবের সহিত ঘনিও বোগাবোগ রক্ষা করিলে বেশের প্রকৃত কল্যাণ সাধন করিতে পারিবেন। কংগ্রেসী গণর্গরেরা পৃর্য্যের ভার নির্মভাত্তিক সাক্ষীগোলাল নহেন, উল্লেয়া জননারকও, এই বারণা লাবারপের বনে জন্মিতে দেওয়া ব্যবস্থা ভারতের প্রপ্রের হারিছ ও কর্তব্যের মধ্যে বে পার্থক্য ঘটনাহে ভাহা বৃথিতে পারে।

#### মাদ্রাজে অর্থসচিবের বক্তৃতা

কিছুদিন পূর্ব্বে নাজাকে ব্যবসায়ী ও প্রমিক্ষিপের একট বৃক্ত বৈঠকে অর্থসচিব মিঃ আর কে সন্থ্য চেট্রী ব্যবসায়ীদিন্নকে, বিশেষ করিয়া প্রমিক্ষিপতে, আখাস দিরা বলিয়াহেন
বে, জাতীর সরকার উহাদের ব্যংস করিবেন বলির। আশহা
করিবার কোন কারণ নাই। মনে হর, ক্যাবিনেটের করেকজন সহভের ও কংপ্রেসনেবীর বিবৃত্তি দানের কলে প্রমিক্ষের
মনে বে আতি অন্বিরাহিল তাহা দ্র করিবার ভাই অর্থসচিবের এই প্ররাস। এই অন্থ্যান সভ্য হইলে উহার
প্রচেটা বে বর্ণোপর্ক্ত ও সমরোচিত হইরাহে ভাহাতে
সন্থেহ নাই।

লকলের খাবঁ খুর হইবে, বনীধের সম্পন্তি খুঠ হইবে ইড্যাদি বে আগতা কডকঙালি বিশ্বা প্লোনানের কলে ড্ডক লোকের বনে অবিবাহে, অর্থ-সচিব ভাহার ভীব নিজা করিরাছেন এবং সকলকে সাববান হইতে উপরেশ দিরাছেন। অর্থনৈতিক বতবাদ গঠন করিবার উড্ডেও নিঃ নি, এইচ, ভাবা যে আহ্বান আনাইরাছিলেন অর্থসচিব উহার বির্ভিত্তে ভাহা সমর্থন করিরা সঞ্জক্তে আখত করিরাছেন। বর্তনানে লেশ বে অর্থনৈতিক বতবাদের সন্ম্বীন হইবাছে, মৃত্য অর্থ-সচিবের বির্ভিত্তে ভাহাই পরিস্কৃত্তী হইবা উটীরাছে।

বর্তনাদের জাতীর সরকার একাছ তাবে জনসাধারণের, কোর শ্রেণীবিশেষের নহে। বাজারে পণ্যশ্রব্যের যে জন্তন কোর বিরাহে তাহা প্রতিয়োগ করিবার জত বিঃ সন্ত্র্য চেন্তী কারণ কোইরা বলিয়াহেন বে কেবলমান সরব্যাহের ক্রটর জতই অভাব কোরা কোই। আন্টনের বুলে রহিয়াহে সরব্যাহের ক্রট ও বউনে গোষ। এই বউন-ব্যবহা বহি সুপরিচালিত হয় তবে বেশের বর্ণেই উপকার সাবিত হইবে। অর্থসির সক্ষকে ভবিষ্যং ছিতা হইতে বুক্ত বাজিতে বলেন এবং তাহাদের স্বরণ করাইরা দেন যে, দেশের শাসন পরিচালনাতেও তাহাদের বৃহৎ কর্তব্য রহিরাছে। বর্তমান করতে নারাজ্যের অর্থনৈতিক অভিত্ব বত বেলী, রাক্রৈতিক অভিত্ব তত বেলী বর বলিলেই সঞ্জিক বলা হবৈবে। স্কুতরাং নাবারপের প্রাক্তাহিক ও অর্থনৈতিক জীবনের সহিত ইহাকে সমান তালে চলিতে হুইতেত্বে। এই স্বয়হং পরিবর্তনের জাই ব্যবলায়ী ও বলিকদের প্রতিনিধিগণ নিজেদের দেশের পরিচালনার প্রবান অংশ প্রহণ করিতেত্বেন। এই সম্পর্কে বিঃ
সম্বান বলিয়াহেন,

"অভএব, বাবীন ভারতে আপনাদের বহান বারিত্ব এহণ করিতে হইবে। এই বিষয় আপনার। বহি আপনাদের অবিকার ও কর্ত্তব্য বিচার করিরা দেবেন, ভাহা হইলে বৃবিতে পারিবেন বে আপনারা নিজেদের প্রথ-প্রবিন্তালি পাইরা সভঃ থাকিলেই চলিবে না, কিছ জনসাবারবের সন্থবে বে সকল সমভা রহিরাছে, বিচক্ষণভার সহিত আপনাদের সেওলিকেও অনুধাবন করিতে হইবে। আমরা চাই যে বণিক সন্তালার ভাহাদের দেশের প্রতি কর্তব্য ও দারিত্ব সথছে বিশেষ সচেত্রন হউক।"

वका राजन, "बायुनिक नवाक बर्बरेमिक विक विश কক্টোল ও পরন্দর সহযোগিতার উপর প্রতিষ্ঠিত। প্রতি-ধন্দিতার হুগ চলিয়া গিয়াছে। যুদ্রহুগ ও প্রথশিধের আবর্তনের সলে সলে অৰ্থং সৰ্বান্ধ বিভব্যবিভা প্ৰতিষ্ঠিত করিবার কল সচেই হইয়াছে এবং দক্ত শক্তির দ্বেখারেখি বঙ হইয়াছে। আহর। সকলের প্রতিনিধি, কোন শ্রেণকে বিনষ্ট করিতে আমরা আদি নাই। ছারিপ্রকে ধ্বংস করাই আমাদের উদ্ভেপ্ত। वर्षे महर कार्र्या व्यवस्थ य यार्यवकात क्रम्य याबीम अवकारतव সহিত সমত্র ব্যবসায়ী সম্প্রদারের সহযোগিতা করা কর্তব্য। बरे पाविधारक थारम कविष्ठ करेरन मकन मध्यपादावरे প্রভাক লোককে সীর ক্ষমতা নিরোভিত ভরিতে ভরবে। मनात्म बनी-पविद्यालाय अरे व्यावदेश बार्याच त्या वाकित्य। সুভৱাং ৰদি ৰেবা বাৰ ৰে দক্তি অপেকা বনীকে বেশী ভ্যাগ **ক্রিভে ব্ইভেহে ভবে বৃথিতে ব্ই**থে বে প্রভ্যেক লোকের ক্ষতা অহবারী ভাষার বিকট হইতে কর লওৱা হইতেতে। আধুনিক কৰতে এই কঠোৱ সভা সকলকেই বাৰিয়া লইভে रदेर्य ।" विः मधुनेन छोरात जावरन बहे मक्क कथा विरामन णात् गाना कविवादम ।

নৰ্নপেৰে, বিঃ সমুধ্য চেটা সকলকে সাধবাৰ করিয়া বলেৰ বে, বৰ্তমানে কোন ব্যক্তি রককেলার বা কোতের ভাষ অপরিবিভ অর্থ সকল করিছে পারে না কিছ ভিনি ইহাও জোর বিরা বলেন বে, প্রব্য উৎপার্থনের কোন প্রচেষ্টা বা ব্যবদা-বাণিজ্যের বিভাবের পথে অবধা ভক্ত আরোপ করিয়া ভাষা নাই করা হবৈৰে না। বে সরকার ইয়ার বিপরীত করে.

নে দেশের ভবিত্বৎ উন্নতির বৃলে কুঠারাবাত করিবা থাকে।
অর্থান্তিব সার সর্থন চেরী মোটার্ট ভাবে বাহা বলিরাছেন
ভাহার সহিত অবেকেরই বততের হুইবে না। কিছ কালে
এবনও বিশেব কোন ভংগরতা রেবা বার নাই। ভারতবর্বের
ট্যার ব্যবহা ইংরেক এবন ভাবে করিবা কইবাহিল বাহাতে
ভারতীর শিল্প বাশিল্য বাবা ভূলিতে না পারে। অবিলাদে
সমর্থ ট্যারা ব্যবহার একট পুঝার্লুথ অভ্নতান হওরা
আবক্তন। হুংবের বিষয় ভারতের অর্থান্তির এবনও এরাপ
কোন করিট নিযুক্ত করিবার কথা বলেন নাই। ট্যারের
লহিত প্রোংপাদন এবং প্রোংপাদন-ব্যবহার সহিত
অবিক্রের ও ক্রেভার বোগ ওত্রবাত; সের্হিক বিরাও ট্যারের
গলক্তিল বরা হরকার।

#### পঞ্জাব সম্বন্ধে সীমানা কমিশনের চেয়ারম্যানের রায়

শঞ্চাব সীমানা ক্ষিশ্নের চেরারন্যানের সির্ভান্ধ অন্থ্যারী
বৃশ্ভান ও রাওরাস্থিতি বিভাগ সম্পূর্ণ এবং সাহোর
বিভাগের অব্যানগুরালা, সেবপুরা ও শিরাসকাট বেলা
পশ্চির-পঞ্চাবের মধ্যে পভিবে আর পূর্ব্ব-পঞ্চাবে পভিবে ক্লগ্রহ
ও আখালা বিভাগের সর্হম অংশ এবং সাহোর বিভাগের
অর্ভসর কেলা। লাহোর বিভাগের অর্লানপুর ও লাহোর
বেলা উভর অংশের মধ্যে ভাগ করিরা বেগুরা ক্রীরে।
অর্লানপুর কেলার ইরাবতী নদীর পশ্চির বিকন্থ শক্রগভ়
ভহনীলট পশ্চির-পঞ্চাবে এবং ইরাবতী নদীর পূর্ব্ববিকর
পাঠানকোট ও ওর্লাসপুর ও বাভালা ভহনীল পূর্ব্ব-পঞ্চাবে
পভিরাহে আর লাহোর কেলার চুনিরান ও লাহোর ভহনীলের
সর্ব্র অংশ পশ্চির পাঞ্চাবে পভিয়াহে। কাহ্র ভহনীলট
উভর অংশের ব্রে ভাগ করিয়া বেগুরা ক্রীরেছে।

ৰাৰদান প্ৰসলে পৰ গিৱিল ব্যাভক্লিক বলেন যে, সীমানা কমিশনের সৰল্যদের বতৈক্য না হওয়ার আমাকেই এই বাম দিতে হইতেতে। পূর্বা ও পশ্চিম পাঞ্চাবের সীমান্তেবার বিভূত বিবয়ণ নিয়ে দেওয়া হইল—

পঞ্চাবকে হুই ভাগে ভাগ করা অভ্যন্ত হ্রহ কাল।
উভর পক্ষ বিরাট অঞ্চল দাবি করিরাহেন। ভবে বোটার্ট বিপাদা-শতক্র ও ইরাবভী মধীর ন্যাবর্তী অঞ্চল লইরাই সর্ব্যাপেদা বেদী বিরোধ বেধা দিখাছে। এই অঞ্চলের বালগুলির ছভ সীবাবেধা নির্ভারণ করা আরও শভ্যন ক্রিয়া ইছিল কার বাল বা রাভা একট প্রদেশের দুটিভানী ক্রডেই প্রস্তুত করা ক্রিয়াছে। ভাই এই সব স্বস্যাও অভাভ প্রস্তু বিবেচনা করিয়া আমি এই বার দিভেছি।

পূৰ্ব্ব ও পশ্চিম পঞ্চাবের দীনারেখা

১। কানীর ক্ইতে উব নদী বে হলে পঞ্চাব প্রকেশের

বব্যে প্রবেশ করিবাছে উভবে সেই ছান হইছেই পূর্ব্য ও পশ্চিদ পঞ্চাবের সীবারেবা আরম্ভ হইরাছে। পাঠানকোট তহুলীলে বে ছলে পাঠানকোট, শক্রণণ ও ওরবানপূর ভ ভহুলীল বিলিভ হুইরাছে সেই পর্বায় উক নদীর হারাই হুই পঞ্চাবের শীবা নির্ভাৱন করা হুইরাছে।

্ পূৰ্ব্ব ও পশ্চিম পঞ্চাবের সীমা তছৰীলের সীমানার ছারাই নির্দ্ধারিত ছইবে, উব্ধ নদীর গতিপবের ছারা নহে।

২। উপরে যে তিনট ভহনীলের কথা উল্লেখ করা ছইয়াছে সেই তিনট ভহনীল যে হানে মিলিরাছে সেই পর্যান্ত প্রবহ্মান উর নদী ইরাবতীয় সদম্যাল পর্যান্ত সীমানা নির্দেশ করিবে। অভঃপর ভরুলাসপুর ও শকরগত ভহনীলের মধ্য দিয়া প্রবহ্মান ইরাবতী, বাভালা ও নরোওমালের মধ্য দিরা প্রবহ্মান ইরাবতী আজনালা ও নরোওমালের মধ্য দিরা প্রবহ্মান ইরাবতী অবং আজনালা ও সহারী ভহনীলের মধ্য দিরা প্রবহ্মান ইরাবতী এবং আজনালা ও সহারী ভহনীলের মধ্য দিয়া প্রবহ্মান ইরাবতী এবং আজনালা ও সহারী ভহনীলের মধ্য দিয়া প্রবহ্মান ইরাবতী এবং আজনালা ও সহারী ভহনীলের মধ্য দিয়া প্রবহ্মান ইরাবতী নদী ব্রিরঃ বেগ্লে অমুভসর জেলা লাহোর জেলার মিলিয়াছে সেই পর্যান্ত সীমারেবা মির্লিট হারাছে। উর মনী ইরাবতী নদীর গভিপথের সহিত সীমানার কোন সম্পর্ক নাই।

ইরাবতী নদীর বে ধুলে অয়তসর কেলা ও লাহোর কেলা দ্বিশিয়াতে দেই স্থান ত্ইতে প্ৰা ও পশ্চিম পঞ্চাবের সীমান্ ছক্ষিণ মূলে আন্ধনালং ও সাহোর তহলীলের সীমানা ব্রিয়া অঞ্জনর হউবে। অতঃপর পূর্বেও পশ্চিম পঞ্চাবের সীমানা ভারণ ও সাহোর ভহনীল হরিবা অঞ্চর হইবা কাভর, লাভোৱ ও ভারণ তহলীগের গংখোগ খল পর্বাধ্ব বাইবে। অভঃপর সীমারেশা পাহোর ও কাওর তহলীলের সীমানা ৰৱিছা ছক্ষিণ-পশ্চিম অভিমূৰে অঞ্জন্ন হুইবে এবং বাংৱালিয়ান প্রায়ের উত্তর-পূর্ব্ধ কোনে পিয়া মিলিবে। অভঃপর সীমারেবা এই প্রাধের পূর্বা কিনারা ধরিয়া অপ্রসর ছইয়া ছাতিয়ানওয়ালা ঞাছের সীধানা পর্যাত্ত ঘাইবে। অতঃপর সীমারেবা ছাতিয়ান-श्वाना आद्यत भूकी किमाता श्रीता पश्चमत एरेता श्वारेशन প্রাৰের সীমানা পর্বাত ঘাইবে। অতঃপর উহা ওরাইগল बाद्यत पूर्व किनाता बतिता चअंतर स्टेश काणिता आद्यत সীয়ামা পর্যন্ত যাইবে এবং ভাষার পর ওয়াইগল প্রাবের ছজিৰ সীমানা ব্যিয়া অধসত হইয়া পান্তরাওয়াল আবের जीशांक नर्वाक कश्चनत स्ट्रेटन । क्षणः नत भीगादान। नामस्या ভৱাল আমের পূর্বা সীবাদা বরিরা অঞ্জর হইরা গাখোকে बारबद जीवाच नर्वाच वाहेरव । चन्द्रानद जीवारबचा नारकारक এাবের পূর্ব সীয়ানা বরিয়া অএসর হইয়া কাভদুনি কালান এাবের সংবোগছল পর্বাভ বাইবে। কাতল্পি কালাবের পৰ্ব্ব সীহাৰা ব্যৱহা অৱসহ ভইহা সীহাহেৰা কালাল ও जान्त्रण आद्यव जरद्यानंत्रण भवान बाहेद्व ।

#### পশ্চিম-পঞ্চাবের অবস্থা

পশ্চিম-পঞ্চানের বিভিন্ন জেলার হিন্দু ও লিবনিগকে ব্যাপকভাবে হত্যা করা ও তাহাদের সমস্ত সম্পত্তি সম্পূর্বপে ধ্বংদ করিব। জেলার লোমহর্বণ আহিনী বর্ণনা করিবা লালা ভীমনেন পাচার সর্বার বরভভাই প্যাটেলের নিকট একট বিবরী লাগিল করিবাহিলেন। বি: সাচার কিছুদিন পূর্বের সশস্ত্র সাধিক বাহিনীর প্রহ্মাধীনে থাকিব। আপর হন্ত ক্ষম সদীর সহিত্ত সরকারের অপুষতি লইবা দালা-উপক্রত অঞ্চল-গুলি প্রিণ্শন করিবা আগিবাছেন।

উঠা বিধরণতৈ যিঃ সাচার বলিয়াখেন যে, পশ্চিম পঞ্চাবের শহর ও মকঃখলে হিন্দু ও শিবধের বাসহান বলিতে কিছুই নাই; ভাষাদের সমগু আবাসগৃহ ভণ্মীভূত করা হইরাখে। আন বিকে, মুসলমান অধ্যুষিত পাশের আমন্তলিতে ধালার চিহ্মান মাই, সেবানে প্রভাবিক জীব্দ অব্যাহত রহিরাখে।

হাজার হাজার নরনারী ও শিশু ভরানের ফুপার উপর নির্ভর করিয়া এবশগু করেকটি অঞ্চলে বাঁচিয়া আছে। টেনে বা বাসে চলা ছুছর। এই হুগুলাগ্যদিগকে খানাখনিও করাই আন্ধ সরকার ও নেতৃবর্গের সক্ষে সর্ব্বাণেক্ষা লাগ্যিক কর্মধা।

#### ७।: वानम द्यादयाया

ভারতবর্ষের যে ভার করেকজন সুসন্ধান ভারতীয় সংস্থাতর আলোকৰ্তিকা হতে বিবেশে সিয়াছিলেন, ডাং আমন কুমার-वामी काशास्त्र मर्या त्यार्थ अक्षम । जावजीय कना ७ मरक्रील পাশ্চান্ত্য বেশকে বুকাইবার এত বঢ় ক্ষমতা ব্রবীঞ্জনাথের পর পার কাহারও হিল না। পাষেরিকার ইদি দেহত্যাগ করিছা-**হেন এবং এই মৃদ্যুতে ভারতবর্বের যে ক্ষতি হইয়াহে** তাহা অপুরবীয়। ভাঃ কুমারবামী ছিলেন সিংহলের অধিবাসী, ভিনি শিকাপাত করিয়াহিলেন ইংগতে কিছ ভারতীয় সংস্কৃতি প্রচারকেই ভিনি জীবনের ব্রভ করিয়া সইয়াছিলেন। বিভাভীয় ভাব এবং পাকাতা সভাভার অঞ্চরণ ভিবি সম করিছে পারিতেন না। এবনে ভিনি ভারত ও সিংছলের সংভ্রতি-গভ ঐক্য বুৰাইবার কল একট পত্রিকা প্রকাশ করেন। তিনি বিখাগ করিভেন যে লকাবীপের সভ্যতা আর্ব্যাবর্ডের সভ্যতারই একট রপ যাত্র। ভারভীয় কলাবিভার চর্চা ভবন দেশ হইতে একস্ত্রণ উটিয়াই পিয়াহিল, ডা: কুষারবানী উহার পুনসভাবে बरनानिरनम करतन अवर मन्भून मक्नकाम एन । करन करन লম্ভ এশিরার কলাবিদ্যার মাধুর্য্য বিশ্ববাসীর সমূবে উদ্যাইভ করিবা তিনি পাশ্চাভ্য বেশের ননীবীবের চনংকুত করেন। रीर्व एक त्रव कावन काव और वनीवीक व्यवित्व बाडीव ভাৰতীৰ পৰিবেৰ কথাই বলে পড়িত।

## স্বাধীনতার উবায় চিস্তা

( ১৫ আগষ্ট ১৯৪৭ )

#### ডক্টর 🗬 যত্নাথ সরকার

আৰু ভারতের সমুধে স্বাধীনদোর দধকা ধোলা হইয়াছে। মাত্রমন্দিরে প্রবেশ করিবার আগে আমাদের দেই সব চিন্তার নেতাকে শ্বরণ করি, যাহারা প্রথমে এই স্বাধীনতার ম্বপ্ন দেখিয়াভিলেন এবং জীবনে ভাগাই প্রচার করিয়া পিয়াছেন। ভাঁহাদের বাণী আমাদের মধ্যে প্রাণ সঞ্চার করিয়াছে; দে বাণী যুগে যুগে অমর হইয়া থাকিবে, কারণ আমাদের ভারধারা এবং কার্যপ্রণালী সব তাঁহাদের অভিড পথে চলিয়া এতদিনে সফলভায় পৌচিয়াছে। প্রাচীন আর্থা-জাবিড়-মহারাষ্ট্রব্যাপী হিন্দুধর্মের স্বাধীনতা হইতে, অথবা বাৰপুত ক্ষত্ৰিয়দেৰ বৰ্ণগত, শ্ৰেণীগত স্বাধীনতা হইতে আমাদের আজকার খাধীনতা সম্পূর্ণ ভিন্ন। যে স্বাদীনতার জক্ত আৰু আমরা উন্মুখ হইয়া চাহিয়া আছি, তাহা ধর্মত গোষ্ঠাগত, স্থানবিশেষে সীমাবদ্ধ সন্ধীৰ্ণ স্বাধীনতা নহে। আজকার স্বাধীন ভারত পাশ্চাত্য পভাতার সবধন, নব বিজ্ঞানের সব ফলগুলি আদরে মানিয়া লইবে, দেই সব নবীন জগৎ-ব্যাপী বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিতে বাই চালাইবে—অথচ প্রাচীন আর্যাভূমির এবং মধাযুগীয় हिन्म-(मरनद जाधाचा मन्नम ও নৈতিক जामर्न श्रमस्य পোষণ করিবে। স্থামরা জগতের কোন লোককে, কোন জানকে, অছুৎ বলিয়া ভ্যাগ করিব না।

বর্তমান যুগের উপবোগী এই স্বাধীনভার স্থপ প্রথম দেখেন—বামমোহন রায়। ইহা প্রচার করেন—বিষেচন্দ্র ও রবীন্দ্রনাথ। বিদেশে আমাদের দৃত হইয়া ভারত্তের এই স্বাধীনভার দাবি ক্লগংসভার মধ্যে থাড়া করেন—বিবেকানন্দ ও রামানন্দ চট্টেগোধ্যায়। চিস্তার মৃত্যু নাই, চিস্তা অক্ষরটের মন্ত দেশ ছাইয়া শাবা ও শিক্ড বিস্তৃত করিতে থাকে। তাই আক্রকার দিনে প্রথমেই এই সব ভারতীয় চিস্তা-নায়কদের নাম স্বরণ করি, তাঁহাদের পদে মন্তক নত করি।

শামরা বে খাধীনভার মন্দিরে প্রবেশ করিতে বাইতেছি, এই গুভকার্য্যে কি অন্তর্চান কর। উচিত ? ইউরোপের রাষ্ট্রগুলিতে এরণ দিনে উৎসব হয়; ভাহারা "উচ্ছ সিভ স্বরাপাত্রে ত্বার গলায়ে করে পান"—ভোল, নৃত্য, কুচকাওরাল ও আমোদের বাবা ভাহারা খাধীনভাকে অভ্যর্থনা করে। কিন্তু এদেশের চারিদিকে ভাকাইয়া রবীক্রনাথের ভাষার আমার বলিতে ইচ্ছা করে— "হে আৰাহ

অপাত অধন, খিন হও । নতশিবে প্রতীকা করিবা থাকো বিবিন্ন বিবিন্নে বৈর্ব বরি । বেদিন স্থাপ রাজি পরে সত কেপে উঠে কাল, সংশোধন করে আপনারে, সে দিন বারুণ ছঃপদিন । ০০০ বুলে কেলো অলবার, নব রক্তাধর, থানাও উংলব বাধ্য, রাজ আভ্যন্ত, অবিপুত্র বাও পুজি, তাকো পুরোহিতে, কালের প্রতীকা করো, গুডু সন্ধ চিতে।"

ভারতবর্ষের বর্তমান অবস্থা একটু স্থির ভাবে চিম্বা করিলেই আমার কথার সর্ধ বুঝা ষাইবে। প্রথমত: আঞ हैः दिक्ष এक है मन्त्रुर्ग दिल्लो स्थानादी स्थानादा साद्ध প্ৰশিষা দিখা নিজে সবিষা পড়িতেছে। বিশ্বযুদ্ধের আপে ভারতে ছুই শত কোটি টাকার নোট চলিভ এবং ভাছা লইয়া রূপার টাকা দিতে গ্রব্মেন্ট বাধ্য ছিল। এখন বারো मं वार्व कार्ष कार्क विकाद नार्व वास्त्र वास्त्र हरेबाह, অর্থাৎ আগেকার নোটের ছয় গুণেরও বেশী ছাগুনোট সহী করিয়া গ্রথমেন্ট কাজ চালাইভেছে। ভা ছাড়া, এখন যে টাকা-মূদ্রা চলিভেছে ভাহাতে এক গ্রেণও রুণা নাই. नव পिতन वा निरक्त। अवह माधु अर्बनौक्ति निश्म অফুসাবে প্রতি টাকায় ১৭৫ গ্রেণ বিশুদ্ধ রূপা থাকা উচিত। এক টাকাব বে নোট আছে তাহা ভারতীয় যুদ্ধ-আইন অনুসাবে মুদ্রা বলিয়া গণ্য হয়, অর্থাৎ প্রণ্মেন্ট ইহার বদলে নিকেলের টাকা পর্যন্ত দিতে বাধ্য নছে। এই রৌপ্য-হীন রূপীয়া এবং বাধাতামূলক এক টাকার নোট মিলিয়া ১৮২ কোটি টাকা এখন বান্ধারে চলিভেছে: এটা প্রব্যেণ্টের কর্ম বা ছাওনোট ভিন্ন আর কিছু নয়।

ভারত প্রব্মেণ্ট এই ১২৬০ + ১৮২ বা ১৪৪২ কোটি টাকার স্থ্যাওনোট কি করিয়া শোধ দিবে শু

ভারতীয় কোবাগারে সোনারপা কিছুমাত্র নাই।
এত দিন আমাদের জোকবাক্য জনান হইত বে, ইংলগু
গত যুদ্ধে ভারতের নিকট ১১৭৪ মিলিয়ন পাউপু ধার
বীকার করিয়াছে অর্থাৎ ১৫৬৬ কোটি টাকা। বে দেনার
নাম Sterling balances, ইংরেজী ভাষায় ভাষার মানে
হয় বে, বিলাভি সিনির আকারে ঐ টাকাটা সে দেশের
রাজকোবে ভারতের নামে কমা আছে। স্বভরাং ঐ

টার্লিং ব্যালেন্সেন্ পাইনেই ভাহা দিয়া আমাদের দেশে চলতি ১৪৪২ কোটি টাকার সরকারী আগুনোট শোধ দেওয়া যাইবে। অভএব এই টার্লিং ব্যালেন্সেরে স্বটা পাওয়াই ভারত গ্রণিমেন্টের পক্ষে ঋণমুক্ত হইবার একমাত্র উপায়।

প্রথম বিশ্বযুদ্ধে ইংলগু আমেরিকার নিকট অনেক হাজার মিলিয়ন ডলার ধার করে। সেই যুদ্ধ শেব হইবার পর ইংলগু করেক বংসর মাত্র কিন্তীর টাকা দিয়া, অবলিট সর ক্ল-মাসল বন্ধ করিয়া দিয়াছিল। এখন সেই দেনা-শোধের নাম পর্বান্ধ উঠে না। স্থতরাং ভারতের কালা আদমিরা বে ইংলগুের নিকট হইতে ঐ ১৫৬৬ কোটি টাকা সব ফেরড পাইবে ইহা বে আশা করে সে বাতৃল। দিলীর লালকেলার কেন্দ্রীয় ভারতের রাজকোবে লালবাতি অলিডেছে, একথা লুকান যায় না।

ষিতীয়তঃ, inflation বা কারেন্সির পোদ ব্যাধি।

যুদ্ধের সময় লোকের হাতে আগের চেয়ে ছয় গুণেরও

অধিক নোট জমিয়াছে। তাহারা বাজারে এই নোট

থরচ করিতে ব্যগ্র। হাতে সোনারূপার আসল টাকা মোহর

আসিলে লোকে তাহা ষ্থাসন্তব ভবিষ্যতের জন্ত বাঁচাইয়া

রাখে। কিন্তু ইনফ্লেনের ফলে ভারতে সর্বত্র জিনিষের

দাম অন্ততঃ চারি গুণ বাড়িয়াছে, কারণ কেহ এই অপদার্থ

কাগজ বেশী দিন ঘরে রাখিতে চায় না। জিনিষের দাম

এই চৌগুণা হইবার ফলে চাকুরে, মুটে, মজুর, সকলেরই

বেভন বাড়াইতে হইতেছে নচেৎ তাহারা খাইবে কি ?

ক্রান্দে বেমন, এদেশেও তেমনি, গবর্ণমেন্ট সবচেয়ে বেলী চাক্রে-পোষক অর্থাৎ employer ! ধর্মটের চাপে বেল, থাল, পোষ্ট অফিস, কাছারী, কেরাণীথানা, কারথানা, সর্বত্র আমাদের গবর্ণমেন্ট বৃদ্ধ-পূর্বের বেজন গড়ে জিন গুণ বাড়াইতে থাথা হইরাছে ৷ কিন্তু এই বর্দ্ধিত বেজনের টাকা কোথা হইতে আসিবে ? যদি এই সক্ষে গবর্ণমেন্টের আয়ও জিন গুণ না বাড়ে গবর্ণমেন্ট দেউলিয়া হইবে ৷ কিন্তু ভমির খাজনা. কেনালরেট, রেলভাড়া, পোইকার্ড ও টিকেটের দাম, কাইম্ ভিউটি ইত্যাদি সরকারী আয় কিবর্জমান হারের জিন গুণ করা সম্ভব ? যথন সম্ভব নয়, তথন স্বীকার করিতে হইবে যে আমাদের গবর্ণমেন্ট শুধু ছাগুনোট কাটিভেছে যাহা শোধ দিবার শক্তি তাহার নাই ।

ঠিক এই কাবণে ফ্রান্স দেশে প্রব্যেন্ট-চাক্রেদের বেজনবৃদ্ধি এবং জিনিবের দাম সেই পরিমাণে চড়িয়া উঠা, বোড়দৌড়ের ছটি ডেজী ঘোড়ার মত পালা দিলা ছুটিডেছে, আর ইন্ফ্রেশন অর্থাৎ বদান্ত প্রব্যেন্ট কর্তৃক ছাপাখানা হইতে নৃতন নোট বাহির করা সঙ্গে সংস্ক বাড়িডেছে। এই ছুর্ভাগ্য হইতে ভারত কি উপারে উদার পাইবে?

এটা একটা ঐতিহাসিক চির-সভা বে সব দেশেই দীর্ঘকালব্যাপী যুদ্ধের পর গ্রব্মেন্ট দেউলিয়া ঘোষণা করিতে বাধ্য হয়। অর্থাৎ যুদ্ধের সময় বাহাকে আমি वनि नवकादी शाक्षतारे अवः चारमविकाव वना हव fiat money বা অবরদন্তির কারেলী, সেইরূপ নোট টাকার বদলে চালাইভে থাকে; এবং যুদ্ধ শেষ হুইলে আসল মুক্রা true currency দিয়া ঐ নোট শোধ দিতে প্রকাসভাবে অস্বীকার করে, যাহার নাম repudiation of public debt। ফরাসী দেশে রাষ্ট্রবিপ্লবের যুগে এক্লপ কাগজের টাকা বাহির হয়, নাম assignat এবং নেপোলিয়নের সময়ে ব্দার এক রকম ভাহার নাম mandat, অবশেষে অবস্থা এরণ দাড়াইল বে একশ' খানা এই কাগদ্ধ দিলে দেড়টা নগদ টাকা পাওয়া যাইত : তাহার পর দেওলি সব বাতিল কবিয়া দেওয়া হইল !!! আমেবিকায় পাঁচবর্ষব্যাপী দাসপ্রথা-বিরোধী যুদ্ধের মধ্যে ( ১৮৬১-৬৫ ) এইরূপ বাধাভামলক কাপজের টাকা বাহির হইল, নাম গ্রীন ব্যাক্স। ইহা ষ্মতি শীঘ্রই শতকর। ৬৫ বাটা দিয়া ভাঙান হইতে লাগিল. **অর্থাৎ একশ' ভঙ্গাবের কাগছ দিয়া ৩৫ ভলার দোনার মুদ্রা** পাওয়া ষাইভ। সতের বৎসর পরে কাগল ও সোনার মুজা সমান সমান হইল। ( Morison, ii, 272 )। প্রথম বিশ্বযুদ্ধের পর জার্মানীয় সমস্ত কাগ্রের নোট German merks একেবারে বাতিল ভইয়া গেল, নোটধারীরা কিছ পাইল না। ভারডেঃ ভাগাযে এর চেয়ে ভাল হইবে এক্স আশা করিবার ক্রায়সকত কোন কারণ আছে কি প

তৃতীয়তঃ, জগদ্বাপী অন্নাভাব এবং থাদ্যের মুদ্যাবৃদ্ধি। বে বে দেশে গম বা চাউল বেলী ক্ষয়ে, সেই সেই দেশ হইতে জাহাজের অভাবে এবং প্রমিকদের নিড্য হরতালের ফলে ঐ শক্ত ভারতে পৌছিতে পারিডেছে না। মনে রাখিবেন, সাধারণ বংসরেও ভারতকে আবশ্রক পাদ্যশক্ষের সিকি অংশ বাহির দেশ হইতে আনিতে হয়। কিছ এবার নিজ ভারতেই বক্সা, অনাবৃষ্টি, কাটাকাটি, এবং প্রমিকদের বিজোহের ফলে ঐ বাবো আনা শক্ত উৎপন্ন হইতে বাধা পড়িয়াছে; আমরা হয়ত এ বংসরে দেশের আবশ্রক শক্তের হয় আনা মাত্র জন্মাইতে পারিব, ভাহাতেই পেটের বোল আনা শ্বান পুরাইতে হইবে, অধবা দেশবাসীদের মধ্যে দশ আনা লোক ক্ষ্যায় মরিবে।

এই ত হইল দেশের দশা। বাহিরের রাষ্ট্রগুলির মডলব
কি ভাকা ভাবা উচিত। এডদিন ব্রিটিশ সাম্রাজ্যের
লগদ্ব্যাপী শক্তিদারা ভারতরক্ষা করার বে বন্দোবন্ত ছিল
ভাকা আন্ধ এক দিনে ভাঙিয়া ফ্লো হইল এবং ভারতকে
এক দিনে নিক্র পারে দাঁড়াইবার আত্রা দেওয়া হইল।
ভারতের পক্ষে এই আত্মরকার শক্তি অর্জন করিতে ছুই-

ভিন বংগর সময় ও পূর্ণ শান্তি আবস্তক; আমরা ভাছা কি পাইব ? বাহিরের শক্ররা লোলুপ হইয়া ভারভের উপর থাবা মারিবার জন্ত বদিয়া আছে।

আর আমাদের ভিতরের শক্ত হইতেছে বহি:শক্ত অপেকাও অধিক মারাত্মক। এই শুভ দিনের আগে इटें एक नामा पन निक निक लाग-वाटी बादाद पांची नहेंगा শত শত কৃত্ৰ গণ্ডীবন্ধ কেলা বা ধর্মসম্প্রদায়, এমন কি জাভিতে বিভক্ত হইবার এবং প্রভ্যেকে পূর্ণ স্বাধীনভা পাইবার জন্ম চারি দিকে জাপিয়া উঠিয়াছে। আমরা কেই কাহাকেও মানিব না. অন্ত কাহারও সঙ্গে একজোটে মিলেমিশে দেশের কাঞ্করিব না, এই ভ্রার শোনা ষাইভেছে। বছ বৎসর পূর্বে রবীক্সনাথ আক্ষেপ করেন বে পুরাতনপদী হিন্দুসমাজ বেন শত ছিত্রমুক্ত একখানি নৌকা, এই নৌকায় চড়িয়া জাতি কিরূপে সমুদ্র পার হইয়া শ্বরান্ধের বন্দরে পৌছিতে পারে ? এই সব ভিতরকার গলদ দূর করিয়া ভারতের যুক্তরাষ্ট্রকে সবল করিতে হইলে অনেক সময়, অনেক আপাসংযম, অনেক কঠোর পরিশ্রম, এবং নিয়মপালনে স্বেচ্ছাক্রত আগ্রহ অর্থাৎ discipline চাই। তাহা কি আমরা পাইব গ

পূৰ্ণ স্বাধীনতা পাইবাৰ প্ৰথম দিনে সৰ চেয়ে বেশী গুলাবনার কারণ আমাদের ছাত্রদের মধ্যে অতি ব্যাপক নিয়ম ও শুল্লাবিবোধিতা। ইহার ফল একট ধীরভাবে চিন্তা করা যাউক। ববিধার, পূঞ্জাপার্বণ ও গ্রীমের দীর্ঘ ছটি বাদ দিয়া বংসরের ৩৬৫ দিনের মধ্যে বড় বেশী ১৮০ দিন স্থলে কলেন্ডে পড়িবার সময় নিদিষ্ট আছে: এই ক্ষদিন মাত্র শিক্ষকপণ ছাত্রদের পড়া বুঝাইতে পারেন এবং ছাত্রেরা বিজ্ঞানের যন্ত্রপাতি লগ্না লেবরেটরীতে হাতে-কলমে শিকালাভ করিতে পারে। কিন্তু যদি নিত্য হরতালের খারা ঐ ১৮০ কাজের দিনের মধ্যে ৯০ দিন স্থল-কলেজ জোৱ করিয়া বন্ধ রাখা যায়, তবে অতি মেধাবী বা অসাধারণ শুলীগ ছাত্র ক'টি মাত্র ঘরে পডিগা প্রায় অঞ্চ বংসরের মত জ্ঞান অর্জন করিতে পারিবে (বিজ্ঞানের প্র্যাক্টিকালে নহে ), আর শতকরা ৯৫ জন ছাত্রই আব্দ্রক পড়ার অর্থেকমাত্র প্রস্তুত করিবার সময় পাইবে, অর্থাৎ তাহারা যে যে পরীকা দিবে তাহার নিদিট মানের অর্থেক মাত্র প্রস্তুত হইবে। কোন ছাত্র চির্দিন কলেকে থাকিতে পারে না: কয়েক বংসর পরে ভাছাকে কাল্কের ক্লেত্রে যাইতে হইবে। ঐ অৰ্থনিকিড ছাত্ৰগুলি যথন সংসাৱে প্রবেশ করিবে তথন ভাছারা ভারতীয় সমাজের নানা কেত্রে নানা বিশেষ কাজের জন্ত অতি কাঁচা কারিগররণে উপস্থিত হ'ইবে। এই সদক্ষার ফল স্বাধীন ভারত ভোগ করিবে।

তৃটি দুটান্ত দিয়া আমার কথা বুঝাইতেছি। ভাক্তানী পড়া পাঁচ বংসর এবং ভাহার পূর্বে আই এস্সি ক্লাসে পদাৰ্থবিখা, বৃদায়ন ও জীবতত্ব এই তিনটি বিষয় শিখিতে হয়, অর্থাৎ সাভ বৎসরের কাজ করিয়া ভবে পূর্ণ দক্ষ ডাব্ডার হওয়া যায়। কিন্তু যদি নিতা হরতালের অফুগ্রহে বংসরে অর্ছেক কাঞ্জের দিনই কলেজ বন্ধ থাকে ভবে আমাদের ছেলেরা মাত্র সাড়ে তিন বংসর পড়িয়া ডাব্ডার হইবে একথা খাকার করিতে হইবে। অর্থাৎ যেন মেডিকাল কলেজের ফিফ্প ইয়ারের শেবে পরীকা লইবার পরিবর্তে थार्ज देवाद्यव मायामायि काहेनान अम-वि नदीका नहेवा কতকণ্ডলি ছাত্ৰকে "ডাক্ডার" ছাপ দিয়া ভাহাদের চিকিৎসা করিবার অমুমতি দেওয়া হইল। স্বাধীন ভারত ব্ধন चार्यादकार कम निक शृत्रभारक विरम्मीय विकास मुद করিতে পাঠাইবে, তথন যুদ্ধকেত্রে আমাদের আহত পুত-বৈনাদের এইরপ কাঁচা ভাক্তারের হাতে পড়িয়া কি দশা হইবে গ

বর্ডমান যুগের শ্রেষ্ঠ কাথান চালাইতে নিশানা-কারী কর্মচারীর পক্ষে অতি উচ্চপ্রেণীর গণিতের জ্ঞান আবশুক. প্রায় কেন্তি ক্ষের অনার ম্যাথামেটিক্স-এর সমান। কারণ এসব কামান চোধে দেখিয়া দাগা হয় না, বিভানের সাহায্যে পোলা ফেলিতে হয় এবং যন্তের সাহায্যে ভাহার कन नका कविटक इम्र। किन्ह यनि औ नव व्यक्तिनाती-অফিসর অনার ম্যাথামেটিক্স পর্যান্ত না শিথিয়া নিজ্য হবভালের অন্থগ্রহে মাটিক ষ্টাণ্ডার্ডের বেলা শিখিবার স্থােগ ও সময় না পাইয়া থাকে, তবে তাহাদের দাগা কামান কিরুপে ভারত রক্ষা করিবে তাহা করনা করা সহজ। সেইরূপ অস্তু সব কার্যক্ষেত্রে, কাঁচা কর্মী যদি আমাদের একমাত্র সমল হয় তবে জগৎ-প্রতিদ্বস্থিতায় স্বাধীন ভারত কোশায় দাঁডাইবে গ আমাদের প্রস্তাবিত **मिन्न**वानिका, त्नोबान विखाद किन्नत मछव इटेरव ? तमत्म টাকা আছে বটে, কিছু ঠিক দক কৰ্মী যথেষ্ট সংখ্যায় কোথা হইতে পাইব গ

সাইমন কমিশনের সময় হইতে এই বিশ বংসর ধরিয়া ছাত্রগণকে—স্থলের অপোগগু শিশুদের পর্যান্ত—রাজ্ঞ-নৈতিক আন্দোলনে, নামতঃ "স্বাধীনতা-সংগ্রামের বীর সেনানী", কিন্তু কার্যান্তঃ নেতাদের বেগারখাটার কুলী, Camp followers রূপে ব্যবহার করিবার ফলে আমাদের ছাত্রমহলে (বিশেষতঃ বাংলায়) নিয়মপালনের রীতি ও প্রবৃত্তি discipline একেবারে লোপ পাইয়াছে। অকারণে অথবা ভুচ্ছ কারণে, কথায় কথায় ছেলেরা ট্রাইক্ খোষণা করে, তাহাদের দল, বয়ন্ত রাজনৈতিক দলের গঠন, বক্তৃতা, খোষণা, সংবাদপত্র চালনা এমন কি ভুই দলের মধ্যে

- - . . . . .

মারামারি ও সভা পশু করা পর্যান্ত অভুকরণ করিছে শিথিয়াছে। তুল-কলেজের দরজা আগলাইয়া পরীব ও স্থবোধ ছাত্রদের পড়াগুনা করিতে যাইবার বাধা দেয়। भवीकामस्मिद्दव श्रष्टवीरक अथवा निकर्करक श्रष्टाय क्या **क्हि कि वीवरमद 6िक् वा मार्मनायाद अन विवा नेना** करत, ভাহাদের কান্ধ দেখিয়া একুপ বোধ হয়। ইহার কুফল প্রথমত: তাহারাই নিম্ন ভবিত্রথ জীবনে ভোগ করিবে, এবং দেশ যে এজন্ত কিরণে কভিগ্রস্ত হইবে ভাষা चारा विवश्वाहि। चथ्ड, युड पृत नका कतिशाहि, কলেন্দ্রের চাল্রদের মধ্যে শতকরা ২৫ জনেরও কম চাল্র এইরূপ হর্ডাল করায় এবং নিয়ম ভদ করিয়া শিক্ষার কাজে বাধা দেওয়ায় উজোগী হয়, কিছ বাবো আনা চাত্ৰই প্ৰকৃত শিক্ষাৰ্থীৰ স্থায় কাৰু কৰিয়া শীঘ্ৰ শীঘ্ৰ সংসাৰে ঢ়কিয়া পিতামাতার বোঝা লাঘৰ করিবার জন্ম উৎস্থক। किन्दु এই শেষের দল ''ভালমামূর, স্থবোধ স্থাল'', ভাহারা निषयक्षक वादी दिव वांगा दिक शादा ना, वा हाथ ना, कावन ঐ নিয়মভদকারী তক্রপদের পুর্চপোষক এক শ্রেণীর বয়স্ক বান্ধনৈতিক নেতাবা এবং তাঁহাবা উহাদের "শহীদ" কবিয়া ভোলেন। ( नाक्नी विश्वविद्यानस्यत छाहेम-गारमनावत U.P. শিক্ষামন্ত্ৰীকে লেখা পত্ৰ অষ্টব্য।)

রাগ্রনৈতিক আন্দোলনে, অথবা ছই নেতা (বা দলের)
মধ্যে প্রকৃত্ব লইরা বন্দে, ছারনের অবৈতনিক মন্ত্র রূপে
লাগাইরা দেওয়ার ফল হইবে, ঠিক যেন কোন চাষী তাহার
বীঞ্চধান ধাইয়া বিদিয়া আছে, আগামী বৎসরে সে চাব
আরম্ভ করিতে একেবারে অসমর্থ হইবে। কিছু ইহার
প্রতিবিধানের আশা কোধায় ? কোন্ শিক্ষামন্ত্রীর, কোন্
ভাইস্-চ্যান্দেলরের এমন সাহস যে ছাত্রসমান্তকে নিজ্
উচিত কালে নিযুক্ত থাকিতে বাধ্য করিবেন, নিয়ম ভশকারীদের সরাইয়া দিয়া স্থল-কলেকে অবশিপ্ত ছাত্রদের
পড়ান্ডনা করার অ্যোগ দিবেন, বালীর মন্দিরে শান্তি ও
পবিজ্বতা ফিরাইয়া আনিবেন, এবং ক্রমে শিক্ষার মাজা
উচ্চতর করিবেন ?

বিনয় অর্থাৎ discipline ভক্লণ ভিক্ষুরা মানে না, একস্ত বৌদ্ধ মঠগুলি ভাডিয়া সেল, বৌদ্ধর্য ভারত হইতে লোপ পাইল, এ দৃষ্টাভ আমাদের চোথের সামনে বেন সর্বদা থাকে।

শতএব শামাদের সমন্ত লাভির সামনে আন্ধ এক কঠোর পরিপ্রথমের, এক কঠিন পরীক্ষার দিবস উপস্থিত, আন্ধ শানস্থের দিন নছে, আন্ধ চুটির দিন নঙে, আন্ধ কাজে চিল দিবার দিন নছে।

আৰু আমাদের সব শিক্ষানবীশদের, সমাজের সর্ববিধ ক্ষীদের, সব রাজপুরুষদের—অর্থাৎ উচ্চ নীচ সকল শ্রেণীর Public Servants বা দেশদেবকদের পক্ষে নিজ নিজ জীবনধারা এক নৃতন পথে প্রবাহিত করিব বলিয়া প্রতিজ্ঞা করিবার দিন আদিরাছে। যদি এই কঠিন ব্রত মাধা পাতিরা না লই, যদি এই ব্রত উদ্বাপন করিতে অর্ধপথে থামিয়া বাই, তবে এ জাতি মরিবে, স্বাধীনভার স্থপ্প লুগু ছইবে।

কিছ হতাশ হইবার কারণ নাই, যদি আমাদের হৃদয়বল থাকে, যদি আমাদের হৃবৃদ্ধি হয় এবং আমর। সভাই বিশাস করি যে খাধীনতা কাহারও দান হইতে পারে না, খাধীনতা নিজের অক্লান্ত প্রমে অর্জন করিতে হয়, বহু বর্ধব্যাপী সন্ধাগ চেটায় রক্ষা করিতে হয়, Eternal vigilance is the price of liberty. এই যে আমরা মূখে আওড়াই—"জননী অন্যভূমিশ্চ অর্গাদিশি সরীয়্দী", আমরা যেন ভূলিয়া না বাই যে খগে পৌছাইবার উপায় তিনটি "দম, তাার্গ, অপ্রমাদ"— আত্মসংয্ম, নিংসার্থ জনস্বো এবং হির সংবৃদ্ধি।

আমার বিশাস যে, বজদেশে এই আত্মগুর্দ্ধির অভাব হইবে না, যদি আমাদের নেতারা দেশসেবার সত্যপথ অন্ত্রপরণ করা অপেকা রজমঞ্চে নৃত্য ও হংকার করাই গরীষদী মনে না করেন, যদি আমাদের ক্মীগণ নিয়ম ও শৃথ্যলাকে খেল্ছায় মানিয়া লয়, যদি নবাজিত স্বাধীনতার সঙ্গে "বিনয়"কে (বৌদ্ধ অর্থ discipline) দৃঢ়বন্ধনে জোড়া যায়।

এই আশা হৃদয়ে পোষণ করিয়াই রবীক্রনাথ আখাস দিয়াছেন—

"পতন অভ্যানর বছুর পছা, বুগ হুগ বাবিত বাত্রী।

হৈ চিরসার্থি, তব রখচক্রে মুখরিত পথ দিন রাত্রি।

দার্রণ বিপ্লব বাবে তব শথকনি বাবে, সম্ক্রীম্মাতা।

অন্যাধনন প্রথারিক ভারতভাগ্যবিধাতা।"

অভএব আৰু এই জাতীয় জীবনের স্থপ্রভাতে, সাধীনতার মৃক্ত-ছ্যার মন্দিরে প্রবেশ করিবার আগে আমর। দেহমনচিত্তকে লাত, পবিত্র করিয়া, পূজার ফুলপাতা হাতে লইয়া, করবোড়ে কবির সংগই সমন্বরে প্রার্থনা করি—

"নোরে তাকি লবে বাও ব্জবারে—
তোষার বিবের সভাতে,
আজি এ বদল প্রভাতে !
উবরসিরি হতে উচ্চে কহ বোরে—
"তিমির লর হল বীপ্তি সাগরে
বার্থ হতে জাগ, বৈচ হতে জাগ,
লব কচতা হতে জাগ, জাগরে,
লতেক উন্নত শোভাতে ।"

# গুপ্ত মুদ্রায় সম্রাটগণের ব্যক্তি-জীবনের প্রতিফলন

बीय्नीनम्ब दाय

ভত্তর্গ ভারত-ইতিহাসের বর্ণব্দ বলে অভিহিত হয়ে থাকে এবং গুপ্ত রাজগণের বৃদ্ধা সে লাবির বৌজ্ঞকতা প্রমাণ করে। উত্তর-ভারতের বহু বিত্তীর্ণ ভূবতের উপর এই মুখ্রা-ভলির পরিব্যান্তি, ভাগের অসংখ্য বৈচিত্র্য ও বৈশিষ্ট্য, শিগ্ধমর কারুকার্য্য—এ সবই গুপ্তরুগের উচ্চ সংস্কৃতির ও অর্থনৈতিক সাক্ষ্যের পরিচারক। কিছু গুপ্তরাজ্ঞগণ কর্ত্তক প্রচলিত বিচিত্র প্রকার্যান্তের রুড়া, বিশেষতঃ স্বর্ণবৃদ্ধান্তনি থেকে গুণ্ই বে আম্বন্ন ওপ্তরামাঞ্জ্যের প্রচন্ত ক্ষমতা এবং অভুল বৈভব ও গরিমার পরিচয় পাই ভাই-ই নয়—এই মুদ্রান্তনি গুপ্তমানীন প্রবান বিশ্বনী, আফুভিগত বৈশিষ্ট্য ও রাজ্যকালীন প্রবান প্রবান বিদ্যান্তরেও পরিচয় প্রধান করে।

প্রথম চক্ত থবাই হচ্ছেন প্রথম থবা-নুপতি খিনি মহারাজাবি-রাজ উপাবি এছণ করেন। কিছ তিনি কি কোনও মুখার প্রচলন করেন? এক প্রকারের মুখা আছে যেওলির একদিকে চক্ত প্রথম কুমারদেবীর চিত্র ও নাম অভিত এবং অক দিক "লিচ্ছবয়:" এই কথাটি সহ সিংহপুঠে আদীনা দেবীমৃষ্টি আঁকা-আছে (১ম সংখ্যক চিত্র ভাইবা)। এল্যান সাহেবের মতে



) वर । **इन्छ ६ वः क्यांवर** एवी ब्रुक्षा

এই মুন্না থলি চক্রগণ্ডের পূত্র সমুক্রগণ্ড কর্তৃক তার শিতামাতার বিবাহের অরণার্থে প্রচলিত হয়েছিল। আবার থাঃ প্রমেশচক্র মন্ত্রমণার ও তাঃ এ এস আলটেকার ফ্রিট, শিব প্রভৃতি পূর্ব্বতন ঐতিহালিকগণের হতে যত দিয়ে বলেন বে এই মুন্নাথলি প্রথম চক্রগণ্ড শিক্ষা বার বে, ৩৫ সাম্রাজ্যের ভাবী গৌরবের প্রতিষ্ঠাতা প্রথম চক্রগণ্ড লিক্ষবি রাজক্তা প্রার্থেবীর সংল্পরিবর্থকে আবদ্ধ হন। এই বিবাহের কলাকল ভবুই যে প্রথম চক্রগণ্ডের ভীবনে অনুভৃত হয়েছিল তাই নর, শিলালিতি প্রাণ্ড সমুক্রগণ্ডের 'লিক্ষবিদৌহিন্ন' উপাবি বেকে মনে হর, এই বিবাহের কলেই ভণ্ডাক্রা ও লিক্ষবি রাজ্যের লহ-

বোগিতার বিশাল এগুনাআন্য গড়ে ওঠে। মুনার লিখিত 'লিছবর' কথাট সপ্তবতঃ গুগুন্দ কর্তৃক লিছবি সাহায্যের বণ-বীকার জাপক।

চল্লপ্ত-কুমারদেবীর নামাজিত মুদ্রা ব্যভিরেকেও সমুদ্রপত্ত সপ্তথীতির স্বৰ্ণযুক্তার প্রচলন করেন। সৰপ্রলিই তাঁর বাঞ্জিবন ७ वाक्ष्कारमद विभिष्ठे प्रमामबृत्यत श्रीकाञ्चक । अबुस्थाखन প্ৰবন রীভিত্র বর্ণমুক্তার আমরা তার রাজকীর মৃতির দেবা পাই। মুলার এক পিঠে দভারমান অবস্থায় সম্রাট দক্ষিণ হস্তবারা অগ্নিকুতে বুপ নিক্ষেপ করছেন, তার বাষহতে অজ ও দক্ষিণ ধিকে গঞ্চধ্যক আছে। রাক্র্রির চার দিকে উপস্থৈতি ছব্দে লিখিত শ্লোক হচ্ছে--"গমরশত বিভঙ্গবিদ্যোজিভারিপুরার্জ তো দিবস শ্বাভি।" বুলার অল দিকে দেবি কুখাব আরভক্সর অমুকরণে সিংহাসনে আসীন পদ্মীদেধীর মৃষ্ঠি এবং 'পরাক্রম' ্-এই অগ্ৰাপ্তক কৰাটি। এই মুদ্ৰার ধ্বৰ-হতে রাজমূর্তি সমুদ্ৰ-অপ্তের রাজক্ষতার নিদর্শন, উপস্থতি ছল্পের শ্লোকট বহ-সংগ্রামের সাক্ষ্যা জ্ঞাপক, এবং গরুড় ও লক্ষীবৃত্তি সত্রাটের বাঞ্চিগত বৰ্ষ, বৈষ্ণবছের পরিচায়ক। দ্বিতীয় রীভির মুদ্রার বাম হতে বসু ও দক্ষিণ হতে তীরমূক্ত রাজমৃতির দেবা পাই। এই মুদ্রায় লিবিত প্লোক হচ্ছে: "ৰপ্ৰতিৱৰ বিশিত্য ক্ষিতিষ্ স্চরিতৈদিবস্করতি ," তৃতীঃ রীতির মুদ্রায় কুভান্ত পরত-ক্ষতা কিত্যাৰ কেতাকিত:" স্লোক সহ স্থাটের মৃতি পর্তহতে দ্ভার্মান। উপরোক্ত ছুই নীভির মুদ্রাই সমুদ্রভারের যোগা ষ্ঠিট কুটারে ভূগেছে ৷ আর এক রীভির মুঞার কটবল ও পাত্রবাসপরিছিত সত্রাট বনুকছন্তে একটি ব্যাহ্রকে আঞ্চনৰ ও পদ্ধলিত করছেন। মুন্তার সংস্কৃত লোকে রাজাকে বলা হয়েছে "ব্যাগ্ৰপৰাক্ৰম।" এলাহাবাদ প্ৰদান্ত বেকে আমন্ত্ৰা কানি যে. সমুদ্রভথ মহাকাভারের জনৈক ব্যাপ্তরাজকে পরাজিত করেন। মুল্রাট কি সেই বিক্ষয়ের স্থতিচিত্র গুড়ীর রাবাকুষুদ মুর্বো-



२नः। नव्यक्षका 'कांड' व्या

পাৰ্যার মনে করেন, এই বুলাট সম্ভবতঃ ব্যাম-অব্যবিভ বাংলা-দেশে সমূত্রভারে অভিযান নির্দেশক। অভ এক রীভির ৰুজাৰ ৰামহতে চক্ষযুক্ত দও ও দক্ষিণ হতে যজাৱিতে ধুণ ৰিক্ষেপরত রাজ-প্রতিকৃতি দেবতে পাওয়া বার। বুল্লার এক দিকে সংস্থত প্লোক হচ্ছে--"কাচোগাম মজিত্য দিবৰ কৰ্মজিকত্ত-বৈশ্বতি" এবং অভনিকে "সৰ্বাহাজোচ্ছেন্তা" কথাট বুল্লিভ रतिष (२४ भरनाक विकास हैवा)। यभित अरे वृक्षा है एक भब्दा करखंद नाम (मने छव्छ 'मर्कादाक्यात्रक्या' कवाडि (बरक चन बन्धान ७ छहेब दश्यहच बाबरहोबबी ब्लाहिरक अबूलकरखंब वरण मर्ग करवन । जव्यक्ष रच 'नर्सवारकारक्षा' वर्गाः দক্ত বাজার উচ্ছেদ্কারী ছিলেন--ভার পরিচর পাওয়া যায় তার এলাহাবাদ প্রশন্তি-লিপি থেকে। সমুদ্রগুপ্তের উপরি-উদ্ধুত সৰ কৰট ৰুম্ৰার প্ৰতিভূতিই তার দৈনন্দিন জীবন বেকে वृरीछ । यह बोजिब बुक्ता अयदक्ष के कवारे वना करन । अह ৰুপ্ৰাচিতে কটবন্ধ-পৱিহিত সত্ৰাট সমুক্তখণ্ড একট পালকে বলে वीना वाकारक्रम ( ०४ भरबाक हिन्द सहैवा )। बीनावामक



<sup>ভন০</sup>ঃ সমুদ্র**থ**ণ্ডের বীণাবাদক রীভির মুদ্র!

বীতির বুজাট সপ্তবত সদীতকলার প্রতি সব্তপ্তরের অপুরাস প্রকাশক। সদীতাস্থাপের ক্ষর বোৰ হয় এলাহাবাধ প্রশন্তির প্রথমাংশে সমুদ্রগুলের গুতিকাবে। মারধের নাম উল্লিখিত হরেছে। সপ্তম রীতির বুজা সমৃদ্রগুলের অপুরের অপুরের মঞ্জের মারক। এর এক ধিকে যজ্জমূপের সমুবে দভারমান অবসৃত্তি এবং অভবিকে চামরহন্তে প্রধান রাজমহিনীর সৃত্তি অভিত হরেছে। বুজার লিখিত গোক হচ্ছে—"রাজাবিয়াজঃ পুরিবী-



৪নং। সমুক্ত ধ্রের অখনের রীভির মুক্তা

নৰিছাদিবৰ্জনতা প্ৰতিবাৰ্ধ্য বীৰ্বাঃ" (এৰ্থ সংখ্যক চিন্ধ কটবা)।
সৰ্অগুৱ ৰে অখনেৰ যজের অভ্নান করেছিলেন তার আৰ্থ প্রমাণ পাঞ্চর বার উত্তরাধিকারীদের শিলালিপি থেকে— বেখানে সর্অগুৱকে বলা হরেছে "চিরাংসর অখনেবাহর্ত্"। উপরোক্ত সকল রীভির বুজাই সর্অগুৱের সমরকালীন ও লাভি-সময়ের নানা বিচিন্ন ঘটনা ও ব্যক্তিগত অভ্যাসের সাজ্য দের এবং এগাছাবাদ প্রশুভিতে বর্ণিত সর্অগুরের বছবিৰ খণাবলীর সমর্থনহচক পরিচর দান করে। বুজার লোকভলিও সেই বিশেষ বুজান্থিত রাজস্থির বিশিষ্ট পরিচয়জাপক এবং সপ্রাটের শৌর্বা ও বীর্ব্য প্রকাশক। আর বুজার রাজবৃত্তি থেকে স্থাটের অবরব যা দেবি ভাকে বলা চলে—শাল-প্রাণ্ড মহাতৃক্ষ স্বযুক্ষর ব্যুচারকঃ

সৰ্ভভৱের পর দিতীয় চল্লগুণ্ড সিংহাসমারোহণ করেন। তিনি বর্ণ, রৌণ্য ও তাল—তিন রকবের বুধারই প্রচলন স্থান করেন। শিতার ভার থিতীর চল্লগুণ্ডের স্বর্ণবৃদ্ধাও ওপ্ত লামাজ্যের ঐবর্থা ও থ্যাতি ব্যতীত সম্রাটের ব্যক্তিও প্রকাশ করে। দিতীর চল্লগুণ্ডের অনেকর্ভাল বুলাই সর্প্রভাগের প্রচলিত বুলারীতির ক্ষ্কৃতি হলেও মৃতন রীতির মুন্ধান্ধলি বিশেষ উল্লেখযোগ্য। চক্ষপুণ্ডের এক রীতির মুন্ধান্ধ আমরা তাঁকে সিংহ্থাতীরূপে দেখতে পাই। বুলাইতে চন্দ্রপ্রথকে বলা হ্রেছে—"নরেশ্রচন্দ্র প্রবিত (৩৭) দিবং ক্ষতাক্ষেরা ভূবিসিংহ্বিক্রমঃ" (০ম সংখ্যক চিত্র ক্রইব্য)। মুন্ধান্ধ সিংহের



৫৭ং। দিতীয় চল্লগুৱের সিংহ্বাভী রীভিন্ন মুক্রা

বিদ্যনানত। সন্তবতঃ সিংহসভ্ল হজরাট অঞ্চল চন্দ্রগুণ্ডর রাজভ্রের প্রধার নির্দ্ধেল করে। দ্বিতীয় চন্দ্রগুণ্ড যে পশ্চিম ভারতের "শক্ষমণ"দের পরাজিত করে কাবিরাবাদ অঞ্চল বীর অবিকারে আনেন তার আরও প্রবাণ পাওরা বার চল্ল-ওপ্তের উদর্যনিরি অহালিশি এবং রৌপা মুলাগুলি থেকে। পালকে উপবিষ্ট অবস্থার চল্লগুণ্ডের বুলাগুলি প্রবানতঃ সর্ত্তও্তের বীণাবাদক বুলাগুলির মতই, কিছ বীণার পরিবর্ধে এখানে চল্লগুণ্ড তার উর্দ্ধোবিত দক্ষিণ হল্তে একট পরস্কাশ বারণ করে আহেন। এই বুলার লিখিত 'রূপাকৃতি' ক্যাট সন্তবতঃ চল্লগুণ্ডর রনমন্দ্রলাও গৈছিক সৌকর্যোর পরিচারক অথবা ক্লাশিরের প্রতি তার অস্থ্যাসের নিদর্শন। অপর একট শৃত্য রীভির বুলার বাম হল্ড ভরবারির উপর ভল্ক বিভীর চল্লগুণ্ডর বুলির বাম । একট বামন অস্কুর স্বাত্তির ব্রুক্তর বামর। একট বামন অস্কুর স্বাত্তির ব্রুক্তর বামর ব্যাহ্র বামন অস্কুর স্বাত্তির ব্রুক্তর বামর বামর স্বাত্তির ব্রুক্তর বামর বামর ব্যাহ্র বামন অস্কুর স্বাত্তির ব্রুক্তর বামর বামর স্বাত্তর ব্যাহ্র ব্যাহর ব্যাহ্র ব্যাহর বামর ব্যাহর বামর ব্যাহর হয় ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর হয় ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর হয় ব্যাহর ব্যাহর হয় ব্যাহর হয় ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর হয় ব্যাহর হয় ব্যাহর হয় ব্যাহর হয় ব্যাহর ব্যাহর হয় ব্যাহর ব্যাহর হয় ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর হয় ব্যাহর হয় ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর হয় ব্যাহর হয় ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর হয় ব্যাহর হয় ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর হয় ব

উপর হল ধারণ করে আছে। এখানে হল নিঃসন্দেহে চলওণ্ডের একছল আবিপত্যের প্রতীক। অভ একট বুলার তীর
ও তলোরার হতে সন্তাট্ট চল্লগুপ্ত ভীমবর্বা-পরিহিত একট
বাবমান অথের উপর বলে আছেন। অবারচ্ন ও সিংহ্বাতী
রীতির বুলাগুলি সভবতঃ চল্লগুপ্তের ব্যক্তিগত অভ্যাস ও
বীরত্বের পরিচারক—আর পালকে উপবিষ্ট রূপাকৃতি বুলাট
প্রমাণ করে বে, সর্ত্তেগুপ্ত গ্রাবলীর একল সমাবেশ। লক্ষ্য
করবার বিষয় যে, কুষাণ 'আরভোকসো' থেকে গৃহীত সিংহাসমাবিটিত দেবীবৃত্তি চল্লগুপ্তের সময় সম্পূর্ণভাবে হিন্দুদের
লক্ষ্যদেবীতে পর্বাব্দিত হরেছে। চল্লগুপ্তের রাজকীর উপাধি
বিক্রমাণিত্যের উল্লেখ্ড তার মুলার পাঙরা বার:

ৰিভীয় চক্সগুণ্ডের পূত্র ও উত্তরাবিকারী কুমারগুণ্ড বর্ণ, বোণা ও ভায়র্থার প্রচলন করেন। তার অধিকাংশ বর্ণ-র্থাই প্রেণ্ক্রদের প্রচলিত মুলারীতির অধ্কৃতি যাত্র। কুমার-গুণ্ড প্রতিক, চারিত্রিক অভ্যাস ও জীবনের বিশিষ্ট ঘটনার পরিচায়ক দুভন রীতির মূলার মধ্যে বিশেষ উল্লেখযোগ্য ময়বপুটে কান্তিকেয় ও ছভিপুটে স্ঞাট— এই ছই প্রকারের মুদা। প্রথম রীভির মূলার এক দিকে তেবি কার্তিকেয় তার বাংন পরবাশি ময়্রের উপর আসীন এবং অভ দিকে স্ঞাট নিক হতে একট ময়রুরকে বাওয়াছেন (৬ট সংবাক চিত্র



৬নং। কুমার ভারের 'মর্ব মুদ্রা'

মাইবা )। এ থেকে মনে হয় ধেবসেনাপতি কার্তিকেয় খুব সম্ভবতঃ কুষারগুপ্তের উপাক্ত দেবতা ছিলেন। এই প্রসাদ উল্লেখযোগ্য যে, কার্তিকেয়েরই অভ একট নাম কুষার। থিতীয় বুমাটিতে দেবি সমাই কুষারগুপ্ত একট ছতিপুঠে আসীন এবং কনৈক অভ্নতর সমাটের মতকের উপর একট ছত্র বারণ করে আছেন। গুত ছত্রটি মনে হয়, কুষারগুপ্তের একজ্ত্র আধিপভোর ভোতক। সর্মাগুপ্তের মত কুষারগুপ্তও অখনেব যজের খারক বুমা প্রবৃত্তিত করেম।

কুৰার ওপ্তের পর কল ৪৪ ৪৪ সানাল্যের অধীধর হলেন। কল ৪৫ কর্ত্ত প্রবর্তিত খর্ণবৃদ্ধা গুলিকে বস্তুক্তে রাজসূর্তি ও ভবাক্ষিত রাজা ও রাজসন্ধী--- এই হুই রীতিতে তাস করা বার। রাজা ও রাজ্যজী—এই রীতির বুলাট অভিনব।
বুলাটতে এক হতে বছক ও জত হতে তীর নিবে বভারমান
সন্নাট, সন্নাটের সন্থাব গরুভতত। গরুভততের পরে বুলার
হক্তিবে সন্থাটের দিকে বুব করে দক্ষিণ হতে পদ্ধ ও বার হতে
আজাত কোনও একট বভ গ্রভ এক নারীমূর্তি। পূর্বের নারীবুর্তিটকে ক্ষণগুরের সান্নাজীরণে কল্পনা করা হ'ত, কিছ
এল্যানের মতে মুর্তিট ওর্রাজ্যজীর। ফ্ষণগুরের জুনাগড়
প্রভালিপিতে উল্লিখিত হরেছে বে, রাজ্যজী স্কেন্সর রাজপ্রকে পরিত্যাগ করে ক্ষণগুরুকে গ্রীম পতিছে বয়ণ
করেন (ব্যপেত্য সর্বান্ বহুজ্জে পুরান্ সন্ধী: স্বয়ন মন্
বর্ষামচকার)। এল্যানের মতে মুন্তার চিন্তটি জুনাগড় প্রভানলিপির উপরোক্ত প্লোকের ব্যাব্যান-বন্ধণ। ক্ষণগুরু
করে পিতৃপিংহালনে আরোহণ করেন, মুন্তাট হ্রতো সেই
কণাই জ্ঞাপন করেছে।

ষণ্ণ থেরে পরবর্তীকালের গুপ্ত সামাজ্যের ইতিহাল একটি বৃহৎ সাত্রাজ্যের পভনের ইতিহাস। বর্ধন কোনও রাজশক্তির পভন হয়, তর্ধন ভংশ্রচণিত মুদ্রার নীতি-বৈচিত্র্য ও বুলার লিখিত প্লোকবৈচিত্র্য কয়ে আসে এবং মুলার একই রীতির ও একই প্লোকের পুনরার্ত্তি খটতে খাকে। গুপ্ত-নাত্রাজ্যের পভনের বেলায়ও ভাই দেখা যার। কলগুণ্ডের উপ্তরাবিকারীরা কেবলমাত্র বৃহ্নক হল্ডে রাজস্থি-এই রীতির মুলারই প্রচলন করেন। এর ব্যতিক্রম দেখি এক-যাত্র 'প্রকাশাদিভ্যের' মুলার। এই মুলাটি সিংহ্লাভী ও আবার্ত্ত—এই ছুই রীতির মুলার একটি অপূর্জ সংমিশ্রণ। কিছ প্রকাশাদিভ্যকে আমরা আমাদের আভ আন্য কোনও গুপ্ত-সমাটের সলে নিশ্বিভ্রমণে সমাক্ত করতে পারি না এবং কল-গুণ্ডের উন্তরাবিকারীদের ব্যক্তিগত জীবনের কোন ঘটনা বা চারিত্রিক বিশেষত্ব সহত্বে এই মুলাগুলি কোনও আলোকপাভ করে না।

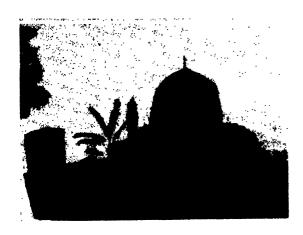
ষাই হোক, আমরা যথম গুরুবংশের প্রথম মুগের গাড়নামা দৃগভিদের মুলা দর্শন করি তথমই আমানের চোবের
সামনে ভেগে ওঠে স্থাটিত অবরবিশিট গুরুসমাটগণের
প্রতিভাগীর মৃত্তিভলি, বারা ভারতবর্ষকে বিদেশ আক্রমণকারীদের হাত থেকে রকা করেছিলেন, উংগীভিত কেশবাসীকে বহু আকাক্রিত শান্তিপূর্ণ কীবনের সন্ধান দিরেছিলেন, আর সাহিত্য ও শিরের পুরুপোষকভা করে
ভারত-ইতিহাসে একট অবিশ্বরশীর স্থার্গের অবভারণা
করেছিলেন।

# কালীসাধক মির্জা হুসেন আলি

( )240 9—(四 )240 )

## विनौत्नमध्य ভট्টाচार्या

বাংলার তান্ত্রিক সাবদার ইতিহাসে শক্তিসাবক মির্জা হসেন আলির নাম বিশিষ্ট ছান অবিকার করিবে সন্দেহ নাই। ছঃবের বিষয় তার্থার বিচিত্র জীবনকণা এ পর্যন্ত গবেষিত ও প্রচারিত হর নাই। কারণ, কলিকাতা মহানগরীর সুসজ্জিত



বির্জা হসেন আলির মদক্রিদ

এছালত্ত্বে বসিল্লা গৰেষকগণ সুধুর সীমান্তমিবাদী এই মহা-পুৰুষকে ধবিতে পাবেন নাই। বিগত শতাকীতে কৈলাসচন্ত্ৰ সিংছ ( ১২৫৮-১৩২১ ) মহাশয় একজন গৰপ্ৰতিষ্ঠ ঐতিহাসিক লেৰক ছিলেন। ভিনিই ১২৯২ সনে "গাৰকগদীত" গ্ৰন্থের প্ৰথম সংস্করণের বিভীয় ভাগে "ধ্বন শান্তের গান" নামক প্রকরণে "ত্রিপুরার অন্তর্গত বরদাধ্যাতের ছমিদার বৃদ্ধা হসেন আলীর দ্বত" ছুইট যাত্র প্রথম যুক্তিত করিয়াছিলেন ( পু. ১৭৭-१৮)। পार्श्वकाय छारात कांभ एठमा कविया निविष्ठ हत्. "আছৱা ইই ইণ্ডিয়া কোম্পানীর ঘশশালা বন্ধোবন্ধের কাপকে হল। ছলেন আলীর নাম পাইয়াছি। পুতরাং বলিতে হইবে বে इरनम चानी क्षात अरू मंचाशी शृर्क्स चौरिक हिरमन।" "रह-ভাষা ও সাহিত্য" এছে প্ৰথম গানট পুনৰু ত্ৰিত হইয়া বহল প্ৰচাৱ-नाच कविशाद वर्ड, किन्न विशेष ७० वरनदात मर्या करनम আলি সহৰে ভদভিৱিক কোন কৰাই প্ৰায় লিবিভ হয় নাই। ১৩০৩ সনে উक्त निरह यहान्य "बाक्याना" अर्थ प्रका स्टानन चानीव वरम-পরিচর দিবাছেন (পু ৪৪৩-৪) এবং "ভাছার ছাপিড" काजी वृতित क्यां किवितारस्य ( पू. 829 )-- छेक्तरे जल्मृर्वज्ञरण ख्याच्य । ১७४७ नरम "हुकीश्रकाण" नायक ছানীৰ পত্ৰিকাৰ পূজাসংখ্যাৰ আমৰা মিৰ্জা হসেন আলিব নহত্তে একট প্ৰবন্ধ দিবিবাহিলাৰ এবং ১৩৪৪ লবের পূজা-

সংখ্যারও "ব্রহ্মচারী নিবিল" লিখিত একট প্রবন্ধ ঐ বিষ্ধে বৃত্তিত হয়। বর্তনান প্রবন্ধে নৃতন সমস্থ তথ্য সংগৃহীত হইল।

यवशांबाट्यत समीमाववरत्मत किकिर পविषय प्रवाद्य (१७वा কর্তব্য। ত্রিপুরা কেসার এই প্রধান প্রপ্রাচীর প্রাচীন নাম "লির্চাইল" ( হিউ-এন্-সেলের লি-লি চ-ট-ল হইতে অভিন: I. H. Q., Vol. XX, pp. 7-8), পার্সি নাম "বলদাবাল" ( चार्न-हे-चाक्वति शक्षि । बदर भदननात चनिकांकी स्वरूप "বরদেখরী"র মামামুসারে প্রচলিভ ছিন্মুনাম "বরদাধাত"। ইছার আদি ক্ষীদার "প্রভাপ রায়" ত্রিপুরাবিপতি বত-यानिटकात (১৪৯০-১৫২৫ ऑ:) चाक्रनका चौकात कविदा-ছিলেন। বরদেশ্রীর ইভিবৃত্তমূলক দ্বিন্দক্তিশার রচিত "ব্ৰদান্ত্ৰ" নামক ছম্ভলিবিত এছে ( চ্ণ্টাপ্ৰকাশ, ১৩৪৯ সন शृकांभरना सहैवा) अवर बाक्यालाव (२व लहत, प्र २०) তাঁহার উল্লেখ আছে। তাঁহার শোচনীর পত্তের পর বর্ম:-ৰাত "১২ জিলা"ৰ বিভক্ত হুইৱা কৃত্ৰ কৃত্ৰ ভূৰামীৰ ২৬গভ হয়। তংপর পুঞ্জিছ ইশাবা অপরাপর ভূবভের সহিত বরলাবাভও অধিকার করেন। ইশা বার পুত্র মুসা বার সমধ্যে যোগলবাহিনী সামন্ত্রিক ভাবে সম্প্র পূর্বাঞ্চল কয় করিখা-**ब्रिट्सम् । बद्धात्रम्टम् बद्धावाज विक्रम्कादी (भागम (भग)-**পভিতৰ "ৰাঞা বাঁ ও কোভৱ বাঁ"র বিবরণ পাওয়া বায়। ইছারাই (বোৰ হয় ১০২৩ সমে) বরদেখরীর প্রভাব অগ্তব করিয়া প্রথম খেবোডর সম্পত্তি "বিশারার সপ্তথান" দান করিয়াছিলেন। বরদেশবীর বর্তমান দেবোছর ইশা বাঁর প্রশোত "মুহুহর বাঁ"র দান। ইশা বাঁর বুছপ্রপৌত্র "হরবভ ৰাঁণৰ নামীয় সমাট আওয়লজেবের ১৭০০ মীঠানের সন্দেও वजनावान भवनगार अहे बर्दानत चिवकात क्षेत्रांनिक एव (J. A. S. B., 1874, p. 214)। কিছ ভংকালে ইহাদের चिवकात माममाद्य পर्वविष्ठ स्टेबाबिन, शामीय क्यीशाववरमहे अकुछ्राच्य नाजनकर्छ। दिश । अवाय चकुत्राद सिर्मुहात वाच-বংশীয় "নম্ব ঠাকুর" ব্রদাধাত প্রকৃতি ৫ট প্রপ্ণার শাগন-कर्जा हिटनमः छ। हाद क्लोहिबीद सामी "मिर्का माहायर वाबद"रे जवुनान्छ जनीमान्दरत्वत्र जामिनून्य। সরাইল পরগণার ক্ষীদার ত্রিপুররাক্ষংশীর "দেওবান সাহেব-" গণের ও ইলা বাঁার বংলের সম্পর্কিত ছিলেন। অর্থাং ২।৩ট বুলভ: হিন্দুবংশের বারা তাঁহাতে মিশিরাহিল। বির্দা বাহারদ वायबरे विका स्टान्य जानिय निकायर । विश्वाय नवय वर-

কুৰাৰ অন্তৰ্গত "ৰোৱা" এাবে তাঁহার ও তদীর বংশবরগণের বাসস্থাৰ এবন কংগত,গে পরিণত হইয়াছে।

विक्। बारायर वाबरवद अवस वह सुविशास्त्र हैरहर साववा **পार्देशक्ति एकावा छाराव भागमकाम ১०३२-১১७১ मन मर्दा** निर्व कवा याद । क्षेत्रक (लवटकव পूर्वभूकव "महिनार वाह-"পতি" ১০৯৫ সৰে ভাছাত্ৰ নিকট ১/১৫ সভা নিজত্ৰ ভূমি ভাষ शादेशाधित्मन ( जिल्हा कात्मकृतिक ३००० मर्याक स्कीक्छ লাবেরাক ত্রষ্টব্য )। ১১৩৫ গলে ভিনি কীবিভ ছিলেম না ( ঐ, ১১৮৫ সংখ্যক হকীকত ), তংকালে ভাছার জ্যেষ্ঠ পুত্রের খণ্ডর দৈরদৰংশীর "আকা মাহাত্মদ নবি" বিপ্তত ক্ষ্মীদারীর "ওয়াগালার" ছিলেন। ক্রমে কাষাভাকে বঞ্চিত করিয়া ভিনি ১১৪৫ সন পর্যন্ত ব্যবং জ্বীধারী ভবল করিরাছিলেন। এই প্রাক্তম্পালী ছুর্দান্ত আকা নবি-ই মির্জা চ্পেন আলির নাতা-মহ। বাৰ্যের জ্যেষ্ঠপুত্র মির্জা বাহারণ ইত্রাহিম (ভাক নাম বিশ্ব ভেলা ) বিশ্বন্ত কৰ্মচাত্ৰীৰ সাহাব্যে মুখসিদাবাদ বাইৰা মবাৰ প্ৰেৱিড সৈৱের সাহায্যে আকা মধিকে ভাছাইতে সমৰ্থ चन । देश ১১৪৫ সমের শেষে **प**ष्टिशाधिण । विका (क्लात অংশে সমগ্ৰ ব্ৰহাৰাত প্ৰপ্ৰ পভিয়াছিল- -ভাছার মাৰ বৰা-यब नवाबी पश्रद नाज्या यात (Grant's Fifth Report, 1843 ed. p. 424 ) ৷ ভাছার ভিন পুত্র, সর্বক্ষরিষ্ঠ বিভাগ इत्म चानि चन्न्याम ১১৫० नत्म चयुत्रस्य करवम ।

অধীদারী: বিভা ভেদার জীবদশার অপ্রার্থবয়ক কনিষ্ঠ পুত্ৰকে বাদ দিয়া সমগ্ৰ ভূসম্পত্তি জ্যেষ্ঠ পুত্ৰ বিক্ৰ' আলি ( ৰুড়া ১১৮১ সম ) ও মধ্যম পুত্র মিন্দ্র্য বাধর আলির (মৃত্যু ১১৮৩ সন ) নাবে ছই অংশে বিভক্ত হয়। যিক'। ভেলার রচ্চার পর মিক্ৰণ হুসেৰ আজি প্ৰাপ্তবয়ত হইৱা তদানীখন চাকার নাজিয় मबाव क्यादल बाद मिक्ड मारी देवानम कदिल अम्ब नद-প্ৰায় ভতীয়াংশ ভিনি প্ৰাপ্ত হন। ইহা ১৭৬৫ এটান্দের देश्राक्त राज्यामी श्रावित यह शूर्व ১১१৮ विषति गरम ( ১৭৬৪-৫ জঃ লাভ আল্যের বর্চ রাজ্যাতে ) সংঘটত হয় ( बिनुवाद क्य क्य बुनाद भारहरवद १।)।)१३) भरमद हिष्ठे अकृष्टि सहेरा )। विकी इरनम चानि अपम स्टेर्टिस क्यीनावी कार्य क्रेमजीय जिल्ला । कल बन्धक रहेश ১११३ वैद्रीत्य कार्ड आकार निक्र विश्वाद करवन ( Press List. Revenue, Series 1, Vol. VIII, p. 205) | The च्चन रहेए चिनि वडी त्नव माळ चिनमादी दहितन । खाचा-ব্যে মুক্তার পর জাঁহাকে সময়ে সমরে সমগ্র সম্পত্তির ভড়াবধান ক্রিভে হইরাহে বটে, কিছ তিনি দেওয়ান হুর্ভরায়, এমভ ৰাগ প্ৰভতিত হতে কাৰ্যভাৱ অৰ্থণ কৰিব। নিভিত্ৰ পাতিভেন। ১৩।১১।১৭৮৭ সনের কালেকটরের চিটি হইতে কির্থংশ উদ্রভ रहेन।

"Mirza Hossun Ali...is a man without either abilities or inclination to look into his own

affairs and has been entirely the tool of Serimunt Naag his chief agent and Dolubram his Naib." भवनना वब्रमानारच्य बाक्य और भवरब अनुग्न रक्ष जम्म हीका ছিল। ১২০১-৬ সনে বিৰ্দ্ৰ। খলেন আলির অংশের রাজ্য क्ष्मभः वाक्षित्रा २७१००, एटेए७ ७२०००, अब छैनान ছিল। কালজ্বে বিৰ্জা আলির পদ্মী ও ভাষাভার সহিত ভাষার चलाच विदर्शन कर । ১৭/১/১৭১৪ সলে विकी चालिक पत्री "ওবিউল্লিসা বাদম্" জাহাকে সম্পত্নিচাত করার উদ্বেক্ত সম্বর দেওরানি আদালতে নালিশ করেন। ৩০।১২।১৮০৮ সনে ইছার নিশতি-পত্ৰ অভীব কৌতুহলখনক (S. D. A. Reports, 1827 Ed., Vol. 1, pp. 266-8 )। के बाबरबंद पर्स ৰুক্তি প্ৰদৰ্শিত হয় যে বিজা হুদেৰ আলি ভাষায় জাতা-(पद बुड़)द शद बुजनबाम वर्ष छात्र कदिशासम ("deserted the Mahomedan faith"৷ এবং বিৰমী ছওয়ায় সম্পত্তিয় খন্থাৰিকার হুইছে সম্পূৰ্ণ বিচ্যুত হুইরাছেন ("apostacy from the Mahomedan faith, which was the case with the respondent, as shown by his paying worship to Hindoo idols, precluded all right of inheritance.)। অপন্ন আভা নিৰ্দা বাধন আলিন হৌছিত্ৰ ( মির্জা মাহাপ্রথ বাধরের পুত্র ) মির্জা মাহাপ্রথ কাজিমও বির্জা হলেন আলির নিৰ্ভিভার (idiotism) উল্লেখ করিয়া ভাঁছায় অংশের শাসনভার প্রার্থনা করেন (৩১/৩/১৮১৯ ভারিবের कार्णकृतित्व शब बहेरा )। देख्य श्रापी-रे चलाए रहेरायिन। বিরোবের অচনা হইভেই ভিনি বোলার বাসহান পরিভাার ক্রিয়া তাঁহার সাধনায়ল নারারপপুরে চলিয়া আসেন এবং প্রবাদ অনুসারে সেবানেই তাঁহার সিছিলাত হয়।

কালীবাড়ী ও মস্কিদ: ত্রিপুরা কেলার টাদপুর মহকুষার "নারারণপুর" এক প্রাচীম ও প্রসিদ্ধ পরগণা (আইন্-ই-আকৰৰি এইব্য )। তৰব্যে একট বাহিছা তালুক মিৰ্জা ভেলার ভ্রাভা ( অর্থাং মির্জা হলেন আলির বুড়া ) পাটকারা প্রপণার ক্ষিয়ার "মির্জা আবুল হলেনে"র নামে ছিল ( রাজ্য ৭৫০১)। তাঁহার মৃত্যুর পর প্রথমত: এই ভাদুক মির্জা আলি প্রভৃত্তি আভূপুত্রহারের ভড়াববানে আবৃত হসেনের পদ্মী "বোলাকী বানবে"র ভরণার্থ নিযুক্ত হিল (W. Wroughton मार्ट्स्व ১২।২।১१৮৮ ভারিবের বিবর**ই এট**ব্য )। পরে ভাষা বিৰ্দা আলি প্ৰকৃতিৱ ভগ্নী উক্ত আবুল হসেনের জাঠ পুত্র विका वार्यावव विवया शृष्टी "नारकाश बानदा"व व्यविकादा यात ( ১৬।৪।১१৯७ छातिर्यंत कारमकृतितत शब )। विका হুনেৰ আলি আৰীবন ভৱীর এই ভালুকের সর্বয়য় কভ ছিলেন এবং ভরীর বুড়ার পর (১২২৬ সনের পূর্বেই ) ছরং ভাহার "বৰ্ণকার মালিক" হিলেব। ভাতুকের মোট "বৌজা ७ किनमण" २८, चन्द्रा "निक मात्राप्तरपूष" मामक चिक्क बावरे विका स्टानन चानित नारमात एन। चान्ना ১७०১

একট ৰাভিত্ন नत्व अरे पूर्वप्रांत श्रीवर्णन कृति। पुरुविशीय छेख्य भारक अकामीयांकी--रकाम मनिय-विश्वव मर्दर, शब्द अक्षे बाहीय अवस्थक । मृत्रारम्य भाषात अनुर्व विकारम একট কুত্ৰ প্ৰকোঠ গড়িয়া উটিয়াছে এবং ভন্নব্যে বুলাংশ টিক বেৰ ৰাভিবেশ হইতে পাহাত্ৰ পৰ্যন্ত প্ৰত্যালীচপদা দেবীবৃতি। देशादे निम्बद्धार्कि रहेवा शृक्ति रव । महीवाव नहाजीवस् "পাঞাল্য" ( ? পঞ্চার নয় ভ ) এাব ত্ইতে সন্মণ চক্ষবভী ও খুভত্ৰা বেৰীয় পুত্ৰ "কাৰীনাৰ চক্ৰবৰ্তী" স্বপ্নাদিঃ হইয়া এবানে আসিরা নিছিলাভ করেন। প্রবাদ অভুলারে ভিনি বেবীর দৰ্শন লাভ ও বাৰী আঁবৰ ক্ষিতেন। দেহত্যাগকালে ভিনি विक। स्टाम चालिएक भूकात चात्र विता माम । विका नारस्टरत প্রশাস্থলারে দেবী নাকি প্রতিশ্রুতি দিরাছিলেন "রুসলমান হইলেও আমি ভাহার ভাক ভনিব ও ভাহার সভে কৰা বলিব, কিছ ভাষাকে একবিদ মাত্ৰ দেবা দিব।" এই সকল প্ৰবাদের সমর্থক অভি আন্তর্থনক ২।১ট প্রমাণ বিদ্যমান সাছে।

পুষরিবীর পুরণাড়ে কাছারি, ছকিণপাড়ে নস্কিন ও পশ্চিন-পারে "হাট কালীগঞ্জ" ছিল (পরে "লাহেবের হাট" নামে পরিচিত হর)। নস্কিনট এবনও অংসপ্রাপ্ত হয় নাই। ভারবেশে শিলালিশির প্রথম পঙ্কিতে "বিসমিলা", বিতীয় পঙ্কিতে "কলবা"। তৃতীয় ও চতুর্ব পঙ্কি এই:

হাভ<sup>্</sup>ইন্যস্কিলে হসেন আলি, কে শোদ্ আয়াভা কে লুভ্জে সমদ্।

সাল ভারিব হিজ্রতে নববি, শণ্ কলুন্ বুদ্ আজু হাজার ও লো শদ্ ॥

্রিই বস্থিদ হলেন আলির, প্রভূর প্রসাদে ভূষিত হয়।

নির্মাণকাল বিজ্ রি নবির, হাজার হু'লতে বাছিল হয় ঃ]
১২০৬ বিজ্ রি লনে ( অবাং ১৭৯১-২ বিটাজে) মস্বিদ্ধ
নির্মিত হয় এবং অল্যন ৩০ বংসয় নির্জা হলেন আলি এই
নস্বিদে বলিয়া লাবনা করেন। কালীবাড়ীর চারি দিকে উচ্চ
প্রাচীর বিল, তাহার অংসাবশের এবনও বিল্যানান, পূর্ববিক্তে
সিংহ্বায় ও তাহার উভরপার্থে হুইট কোঠা হিল। পূলকরাজন তাহাতে বাস করিত। সিংহ্বারেও একট নিলালিশি
হিল, হুংবের বিষয় তাহা বিময়্ট হইয়ারে। মির্জা হুংসম আলি
হয়ং প্রাচীর মধ্যে প্রবেশ করিতেন না। মসজিলে বলিয়া
ভাকিতেন। একদিন ভাকিলেন "ভূমি যদি সভ্য হও, তবে
এবনই মস্ভিজে একট জানালা স্কট কর, আমি বেন হেবিতে
পারি।" তংক্পাং মস্ভিজের উভর স্বেডরালের ইট বনিয়া
পভিল এবং বুক্সুল র্টনোচর হইল।

কালীবাৰনার বির্জা হলেব আলি কিরপ বাভিরাহিলেব ভাষার উংক্ট প্রবাণ বিদ্যবাদ আহে। কালীবাৰের অভীট-বেবীর নাব "ক্রকালী", বির্জা হলেব আলির সমস্ত জ্মীদারি কাগজে "ঐক্রকালীচরণ সহার" লিবিত আহে। বরদাবাভ প্রবণার ভবীর অংশে ১৭ট প্রাম লইবা একট পূথক ভাসুক ছিল—১২০১ সনের কাগজে "এএজফকালী প্রকৃতক্ত ।" এবং "ভাগ্কদার ৺কষকালী কেবি" লিবিভ আছে। (জিপুরার ১৯০০ তৌশি জাইবা)। নায়ারণপুরের উক্ত ভাগ্কের বিবরণেও "কেবলাবিভী ৺কষকালী দেবি কিং নিক নায়ারণপুর ও বাজার কালিগঞ্জ" লিবিভ পাওরা বাব (২০০ ভৌলি)। ১২০০ সনের এই "দেবোক্রবিভী ক্রকালী দেবিঠাকুরাবির" বিবরণ হুইভে ক্রিরণংশ উদ্ধত হুইল।

"কিসমত মজনুর ধেহাইত হোট কিসমত অতবেৰ ৺ঠাকুরাণির সেবাপুলার পাতা ত্রীরাম্বস্থ চক্ষবর্তী পঞ্জর এই বিত্তীর উপসত্য ওযুগ করে ৺সেবাপুলার আক্ষরে বরচ হরে ইতি।"

নায়ারণপুর পরগণার সংসর্ধ এতকাদপুর প্রকৃতি প্রগণার ১০ হিডা দেবীর নাবে জীত হয়। ১২২২ সনে একট অতি মুল্যবান দলীলের প্রধ্যাংশ এই : ( ১৮ তৌজি স্তইব্য )

### এক্তব্যালীচরণ সহার

পাৰ্গি যোহর "ব্যেনৰ আলি ১১৭৮.৬" অইনলপল্লযয়ে "ব্যকালি | ভারিণী ভব | ভয়হারিণী" নহামহিম অহুত কিলে জিপুরার কেলেইর সাহেব ব্রাব্যের

লিখীতং শ্রীক্ষরকালীদেবিঠাপুরাণ লেখাইত্য শ্রীরাকা ছোগন আলি কয় ইরনিনামাপ্রমিধং কার্যাকাপে পরগণে এতকানপুর ও পরগণে কাশীনপুর-মাহরাবাল দপ্তর চৌবুরাই ক্ষরীদারি বনামে নরগুম কুকরার রার তাহতক্ষমা মবলগ ৪০০১ চাইর হাকার একটাকা সিকা লিবা কায়। এই পরগণা হায়ের ১০ আদ আনা হিতা ক্ষরীদারি মুখাকত শ্রীকিণ্ডী নারায়ণ নাগ আনার্যাহপের বরিদা। এই ১০ আদ আনা হিলা হক্ষুই ইক্তানি বহিতে আনার্যাহপের নাম দপ্তকারিতে লিবা গিরাছে। । । এই অংশ (১৭ মৌলা, রাক্ষ ১২৫ ১০) অভ্যতঃ ১২০০ সন পর্বন্ধ দেবীর মামে পূর্বক্ষ বিভ্নাম ছিল এবং সংগ্লিপ্ত সমন্ধ বাড্লা ও ইংরাজি ফ্লীলপত্রে ক্ষরীদারের নাম ক্ষরকালী দেবী গেষাইত বির্দা হুসেন আলিশ্বিতি আছে।

১২২৯ সন্তে বিশ্ব ধনেন আলি বর্ণাবাত শ্বনীগারির প্রার পোনর আনা অংশ ( ১/১০৮/০ ) ঢাকানিবাসী ( বৌদ্ধী আহানোরার পূর ) বাজা সলিবুলার নিকট বিজ্ঞার করেন। বিজ্ঞানত অবে নহাসনারোহে ১০৮ট বলিগান সহ মহামারার পূরা লাবিত হব। তবব্যে চুইট নরবলি হইবাহিল—চুইট নারিকেল গাহ নরবলির হান চিত্রিত করিরা গীর্বলাল বাঁচিরা ছিল। ১২৩০ সনের প্রারণ বানে হেবানামা করিরা ভাতৃক সাহজালা বান্য নিজপত্নী "প্রীনতি হালেহা বানবে"র নামে লিবিরা বেন এবং ১২৩০ সনের হৈল্পনালে প্রায় ৮০ বংগর বরনে ভালীবাড়ীতেই লীলালবন্ধ করেন। প্রবাদ, বুড়ার হিন তিনি বহাবারার প্রত্যক্ষ হর্ণন পাইরাহিলেন। ভাত্রার

শন্ধী শবদেহ ঢাকার নিয়া সমাহিত করেন। বলা বাহল্য তিনি কিসভান হিলেন এবং ওাঁহার পদ্মীও ১২৩৪ সনে রভার্বে পতিত হন। উল্লিখিত তারিধওলি কপোলক্সিত নহে, কালেক্টরীর বহুতর ঘলীলগল বাটরা উহার করা হইবাছে। কৈলান নিংহের "রাজ্যালা"র কিরপ বারাত্মক জম লিপিবছ হইবাছে ভুলনা করিবা দেখা বার।

মিৰ্জা চুসেৰ আলি সম্পাম,ত্বক সাৰক্ষের মধ্যে নাটোরের होका होमक्रक्ट नमरम्ब ७ जरमक्की नमस्यों हिल्ला। **উভরেই ক্**ষীদার এবং ব च क्ष्मोपातीत श्रदशकातक । "वार्या-मर्पन" निकास क्षकानिक ( ১৩২০, देवनार, न. २১-२ ) अक्षे धानम क्यांव विव्यवानधनात्मय महत्वद्वरण दावक्ष छ ষিৰ্জা হোসেনালীর নাম পাওছা যায়। গলট বিশ্বাসযোগ্য ना रुदेरमध मायकबाराव भवन्तव मरायाम चम्छाविक वार । ভাঁহার অপর এক সাধ্য সহচবের নাম "অক্ষরাম," ভাঁহার क्या धिक्यामध्यमारमञ्जलक विवयन बर्गा ( माहिका-भविष्य-भविका ১০৫२ भन, पू. ১৪) छहेरा। जामदा बुद्धर विका स्टाम আলির প্রসঙ্গে এই ছইট গল গুনিরাছি। চাকানিবাসী সম্ভাস্ত মুদলবানগৰ মিৰ্জাৱ মতিগতি কিৱাইয়া আনাৱ উদ্বেশ্ত বিৰেশ হইতে কতিপৰ বিব্যাত কডবিভ যৌলানাকে আনাইবাছিলেন এবং তাঁহাদের সহিত মির্জা হসেন আলির আলোচনার ব্যবস্থা হইলে তিনিও অধীকার করেন। নির্দিষ্ট সমূরে আলোচনা সভার উপবিষ্ট সম্লান্ত ব্যক্তিগণ তাঁহার আগমন প্রতীকার छेए और रहेश बारबद बिरक जाकारेश चारबन, अभव छेछीर्-প্রায়, হঠাৎ দেবা গেল সভার মধ্যেই উচ্ছার নির্দিষ্ট আসনে ভিনি বসিলা আছেন, অৰচ কেহই তাঁহাকে বাহিল হইভে পভাপুতে প্রবেশ করিতে ছেবেন নাই। "কোন পরে चाभित्मम," याच कवा सरेतन छिनि छेख्व कवित्मन "मचना-शास्त्र थर्म आंभारे (नन, जन्म आंद्र शर्यद्र किश्वा कदिद्रा नांक

কি ?" সকলেই তাঁহার বোনৈধর্বের প্রভাক প্রবাণ পাইরা বিচার-আলোচনার ব্যবভা পরিপ্রহ করিবা সভা ভ্যাগ করিবাছিলেন।

নির্দা ধ্রেন আলির আতা একবার তাহাদের বাবা বাইবার কর তাহাকে বিশেব মত্ন করের। তিনি বলিলেন, অদ্য ভোষরা আয়ার বাদা প্রস্তুত করিয়া এই দালানে রাব। তংশর সাবক ঐ বাদা বাকে নিবেহন করার সমস্ত বাদাই সব্দেশ রসপোলা ইত্যাদি নানাপ্রকার বিষ্ট্রের্য হইল।

উপদংহারে তাঁহার ছইট দাবন-সদীত উদ্ধৃত হইল। প্রথমট বাদলার শাক্ত সদীতমধ্যে চিরখারী হইবে সন্দেহ নাই—প্রবাদ অভুসারে তিনি ছই বার এইরূপ সদীতবারা ব্যক্তে কিরাইরা দিয়াছিলেন এবং ডুডীর বার আত্মসমর্থন করেন।

যা বে শমন এবার কিরি।
এসে। না যোর আদিনাতে গোহাই লাগে ত্রিপুরারি।
যদি কর জোর ক্বরি, সামনে আছে ক্ক কাছারি।
আইনের মত রসিদ দিব, আমিন দিব ত্রিপুরারি।
আমি ভোনার কি বার বারি.

শ্যাৰা মাৰের বাস ভাতুকে বসভ করি। বলে বুকা হসেন আলি, বা করে বা "ক্ষকালী"— পূব্যের বরে মুভ হিরে, পাপ নিবে বাও নিলাব করি।১

সকলই করিভে পার কালী (গো যা)।
কালী কং করালী বৃত্যালী ।
কবন রত্বসিংহাসন, কবন পাঠাও বন,
কবন বনে বনে বনবালী।
শবন সকট ভব, (নিবারিভে)
ভোষা বই আর কেহ নর।
ভার সাক্ষী হলা হসেন আলী ।

।

## অবকাশ

### শ্ৰীআ**ও**তোৰ সান্যাল

বছৰিৰ এ জীবনে পাই নাই কোন জনকাল;
আবি ভূলে কোৰ নাই লালাছেন বুগল আকাল—
বজ্ঞেন বলপিলি ৷ এ মণুল বিজীকলগান,
বঞ্জীৰ ভালে ভালে উলাগ এ পুনবীৰ ভাল,
এ বলল পথজনি, কননীৰ ক্ষণ-বজাল
ভানি কান পেতে বৰ্দিন ভূলে একবাৰে ৷
সভ্যানালভীল পাবে আলোহিত নননাভিনান
বিদ্যা স্বাস্থিত এ বিচিত্ৰ স্ট্ৰপুল্যান

গেৰি নাই বছৰিব ৷ এ সংসাৱ-প্ৰবাহের বায়
মূহৰ্তের অবকাশ ক্ষরুৰে জনবিবপ্রার
কোণা যায় বিলাইয়া ৷ এত ক্ষে, নথর জীবন—
তবু ভারি লাগি' কভ পাঁচা হোটা আর উচাটন ৷
আবি বেলি' বেবিবার বহি হার, নাহি অবসর—
এত বর্ণ-গ্র-ইতি কেম তবে বর্গীয় 'পর ?

# অগ্ৰবৰ্ত্তিনী

## 🎒 সুক্রচি সেনগুপ্তা

অষশেষে এসে গৌছেছি !

\$. বি. হস্পিটাল !

একাও অটালিকা, তুসজিভ, তুপরিছর, তুবিররিভা

ভেতনার এক কালি একবানা গর, চওছা একটা স্থানালার কাষে হোট একবানা বাট, পালেই একটা নিট্লেক, একবানা ভেয়ার 1 এই স্থানার বর্তমান বাসস্থান।

আসবার সময় দেবে এলাম, এই মাণেরই লারি নারি বর, একই প্যাচার্বের বাট, ভাতে বারা ভ্রেছিল, ভাবের সাঞ্জবন্ধী আমাকেই অহুসরণ করছিল। সকলেই বল ভারি করতে চার; মাঝবানে একটা বর বালি পড়ে বাকলে দেবতেই কিভাল লাগে? সম্পে এসেছিলেন অবেকে; সংশ্র সান্ধা, অজ্যর ভ্রেছা, অভ্রন্থ আধির্কাচন, মুহুর্থ সভর্কবারী। নির্মাক বর্মনায় ব্রহিত হবে উঠল।

নময় হলে একে একে স্বাই চলে গেলেন, কোলাহল থেল বেনে, রাজের পথ্য থেলে গড়লাম।

নির্দ্ধন বারে ভারে কি ভাবহিলান, টিক বলতে পারব না, আনেক অভীত, আনেক বর্তমান, সীমাধীন ভবিস্তং। কভক্ষণ কেটে গেছে ফানি নে, কোবাকার একটা বভিতে চং চং করে বারটা বেকে গেল।

হঠাৎ চহকে উঠলাম, কে বেম হেলে উঠল। কাৰে এলে ইাভিয়েহে একট মেয়ে !

দিব্যি বেরেট ৷ কিছ মুখবানা যেন রক্তপুন্য ক্যাকালে ৷
একরাশ চুল পিঠে সুটরে পড়েছে, নি'বিতে, কপালে সিপ্রের
নহারোহ ৷ পরবে লাল চঙকা পাক গরবের শাকী, গলার
কুলের বালা, বেশ বেরেট ৷

আমি কিছু বলবার আগেই লে হেলে বললে, 'ভূমি এনেছ ? বেল হরেছে ! ক'বিন হর ছুরে ছুরে কারো গলে একটা কবা কইকে পারি নে, ভা-রি বারাণ লাগত। চূপ করে আহ কেন ভাই ? কবা বলবে না আমার সলে ? ভূমি একা ভৱে আহ বলে ভোমার সদে গর করতে এলাম।'

মুদ্ হাসির সলে তার ছ্-টোটের নাবে ব্রুচার নত ইাজের সারি বেখা খেল।

ও হরি। তোৰায় বাবই কিজেদ কয়া হয় বি এবনও ? কি খুল আবার বেবেছ? তোৰায় নাব কি ভাই? আবার নাব 'বেবলা'। আবার হাবী আবার করে আবাকে বেলা বলে ভাকতেন।

বলভে বলভেই তার হাসির্ব রাণ হরে আনে। চোব ছুটোও ভকনো হিল কিলা ঠিক বুবতে পারি নে।

কিছ একটু পৰেই লে আবাৰ বেলে বলে, 'বালি বছবাৰা আৰু ভৱেছে; বিষ্টুলেক্টাও বাবাৰ ছিনিবে ভৱে নেছে। আৰাকেও অমনি কভ বাৰার জিনিব ছিরে বেভ। আরি বে বেভে পারভাব না, বেভে ইচ্ছে হ'ভ না, ভা কেউ বুকভে চাইভনা। না বেলেই বকুনি বেভে হভ।

ষেব, ভোষাকৈও সকলে বকৰে।

'বাঃ বে । ভূমি বেন আমার সদে আড়ি করে বসে আছ, আমি এলাম ভাব করতে, তা ভোষার বেরালেই আসছে না । চূপ করে ভরে বৃধি ভোষার ধুকুর কথা ভাবছ ? আর ভাবছ কভমিনে আবার ভাকে কাছে ফিরে পাবে ।'

বটট আবার হেলে থঠে—'আমিও তাই আবতান ভাই, দীপুকে হেছে এলে বুকটার মধ্যে যা করত—' তার চোধ-ছটো হল্ হল্ করে থঠে, দীপুকে কবে বুকের মধ্যে কিরে পাব সেই-ই হিল আবার সব চেমে প্রথম করনা !'— অভ্যমত হয়ে বউট কি যেন ভাবে!

একটু পরেই ভার দ্লান মুবে আবার হাসি দেবা দেব, 'সকাই বৃত্তি ভোলাকে বৃত্ত সাজ্বা দিছে বে, ভূমি ভাল হরে কীগ পিরই বাড়ী কিরে বাবে। আমাকেও সকলে ভাই বলভ, সেধিন ভোষার ওই বাটেই আমি ভ্রেছিলান, সামনের চেয়ার-বামিতে বলেছিলেন আবার হামী। আম, সেদিন আবার এক ভাবর রক্তবমি হরেছিল। মাধার ভিতর বিত্ত বিত্ত করছিল, চোব বৃলে চাইতেও ভাল লাগছিল না। কিছ উনি বললেন, 'মহা রক্তওলো পড়ে গিরে ভালই হরেছে ভাভার বললেন। এবন ভূমি সেরে উঠবে, আর একটু সেরে উঠলেই ভোষাকে বাড়ী নিয়ে যাব।'

'ওঁর সাত্নার, আদরে আমার নিজীব বেষ্টাও বেন সলীব হবে উঠেছিল। কেন ভাই ওঁরা এবন করে ছলনা করেন ? আমালের বুক ভয়ে এত আশার, এত ক্লমার স্ট করেন কেন ? ভূমি ভোষার বানীকে ও রক্ষর বলতে নিবের করে বিয়ো ভাই ! আশার বানী ভনতে ভনতে এই বরে, ওই বাটে ভয়ে আমি কর হরে গেছি, ভূমিও যাবে, তবনও এই বাটে ভয়ে আমালেরই মত আর এক কন ছই কান ভয়ে আশার বানী ভনবে। নকল আশাই বার স্থিতে বার, কাল কি ভাই, ভাকে অত আশার সপ্ত বেবিরে ?'

'বেব দেখি ভাই, কি আবোল-ভাবোল বকছি আছি, ভোৱার কোন কথা শোনা হয় নি, আহার কোন কথাও ভোৱাকে বলা হয় নি। ভূমি হয়ভো সৰ কথা ভ্ৰমবার ক্ষম হটকট কয়হ।

'কি আমার হিল না ভাই ৷ নোলার সংসার, টাপার কলির বত হেলে, এবলো সে ব্যের বোরে 'বা' বলে কেঁচে ওঠে, স্বেহ্মর বভর-শাভকী, সক্ষরের বত বেবর, আমার স্থতি অক্স করবার কচ লে 'বেবলা লাইবেরি করেছে, আমার ছবি বেবে বা বাবা এবনও ছ'বেলা চোবের জল কেলেন।
আর বাবী। তার জেবেরও জভ ছিল না, সেবা-বড়েরও
সীমা ছিল না। কভ চীকাই যে ভিনি জকাভরে আমার জল
ব্যর করেছেন। বাঁচিরে রাববার জভ কভ চেটাই বে করেছেন।
এবনও চোবের জলে জছভাশ করেন বে আমার এ জবছার
কভ তিনিই দাবী। আছো, বলত ভাই, নিয়তি কি কেউ রোধ
করতে পারে ৮ ওঁর সব ভাতে পাগলাবি '

मांच भिरब (म ठोंके ८५८म बरद।

'দীপুর ক্ষের পরেই আমার যাছ্য ক্ষেরে পড়ে; ডাকার কর বেবান যে আবার স্থান হলে আমাকে বাঁচানো কটিন হবে। নাই বাহ্য উভারের কচ চলে গেলাম গিরিতি। কি ক্ষর কারণা সেটা। সকে ছিলেন উনি, দীপু, বিধবা নন্দ আর ঠাকুর, চাকর। সকলেরই লক্ষ্য ছিল আমার বাক্ষ্যা, আমার বাহা।

'বিকেল বেলা উট্ট নদীয় তীরে ছ'লনে বসতাব নিবিছ ছয়ে। শালবনে মর্ম্মান্থনি উঠত, ক্ষমণ্ড নদীয় সক্ষ জলে নিজেনের ছায়া কেবে পরস্পাধকে চুধন ক্ষতাব।

'কি আনন্দেট বিষশ্বলি কেটেছিল। গে সৰ এখন বধা।
কাৰণটা এমন বধা হতে বাব কেন, বলতে পাৱ ভাট।
অঞ্চ তাব চোৰ ভাগিবে গছিবে পছল। একটু পৰেট গরখের
আচলে গে চোৰ ব্যাহ কেলে বললে—'বেল পেৱে উঠলাম,
গাবে এল বক্ত হ'ল, লালবনের শুক্লো পাতার উপর বিষে
উল্লী নদীর বালি ভেঙে প্রার এক মাইল করে ইটিভে
আরম্ভ করলাম। উর কি আনক। লেই আনন্দোক্ষল
মুববানা তার এবনো কুলতে পারি নে।

কিন্ধ সে ভো দ্বায়ী হ'ল না আমার ভাগ্য মন্দ্র, ভাই একট যুক্ত-লিক্ত প্রস্ব করে শ্বাাশায়ী হরে প্রভাব। আমাকে বাঁচিয়ে তুলবার কল ওর বে কি ব্যাকুলতা। আমি ভগবানের কালে প্রার্থনা করতাম বে আমার কল নয়, ওর ক্রচই তুমি আমাকে বাঁচিয়ে ভোলো। স্বায়ীর ঐকাভিক বড়ে আর ভগবানের অপ্রক্রে বেশ লেরে উঠলার, এবার বাবা আমাকে ভার কাছে মিয়ে গেলেন, কারণ ভাঞার বিশেষ করে ভর ধেবালেন বে আবায় সন্তান হলে কিছুতেই জীবন মুক্তা হবে বা।

বা বাবার কাতে কভ বড়ে ছিলাম, তবু ওঁকে হেন্ডে বাকতে আমার একটুও ভাল লাগত না। বিবের পর আমরা প্রার একসন্দেই হিলাম, সব সময় ওঁকে কাতে পাওয়াই আমার অভ্যেল ছিল। বৃষ্টু, বেরে ভূমি বৃষ্টি হালছ বে এবন কি করে হেন্ডে আহি, কি করে বে আহি'—হালি বৃষ্টামা ভার আবার বেবের মভ আধার হরে এল। –'যাক লে কবা, উমিও পুরে ছিলেম না আবাকে হেন্ডে। ছুট পোলেই চলে আসভেম আমার কাতে। করে আমি বেশ সেরে উঠলাম, ভাভার নির্ভর হলেম। কিন্তু ক্রিক সেই সময় ভিন বালের একট সভাম নাই হরে গেল। এবার আর সারতে পারলাম না, আগতে হ'ল এবানে। সব বন্ধ, সব ব্যাক্ষতা ব্যর্থ হরে গেল। শেব বন্ধা পাততে হ'ল আমাকে ভোষার ওই বাটের উপর।'

ভূমিও তো দেই বাটেই শব্যা শেভেছ। আবার কথা ভবে শিউরে ওঠোনা তাই, এক বিন এলৰ কথা ভবলে আবিও শিউরে উঠভান। আবার বানী পুর বেকে, নাজাবো সংগার কেলে আবি বে চিরবিনের কত চলে যাব, এ আবি ভাবতেও পারভার না। কিছ বেতে হ'ল ভো--ভোরারও ভাই-- বাক্ আর বলব না, ভূমি বড়ও তর পেরের, কিছ ভাই বলে কোন সার্নাও ভূমি আবার করে পাবে না ভা বলে বিছি। ভোরার বুকতরা আপা---আবারও কি কম হিল ? এই বুকবানা চিরে দেবাতে পারি কড সাব আপা সেবানে পুরীভূত হরে আহে। আওনেও ভো দে সব পোড়ে নি ভাই।'

সহসা তার মুখে সহাত্ত্তি বনিরে আলে, 'আমার কণার তর পেরেছ ? কিছ তর কি তাই ? তর তাবনা সবই পের হবে বাবে। দেবছ বা আমার আর কোন তর নেই। সেই বকীর বকীর ওয়ুব ইন্ছেক্সনের তর নেই, কর-প্রশের ছত বকীর বকীর অনিজ্ঞার বাবার তর নেই। নিতার বিরম্পনকে ছুঁলেও তর নেই, আমি এবন নির্ভর।'—একটু বেরে:

'আঞ্চা ভাই—ভোষার ভো একট বার বৃত্ত, ভোষার খাড়া कि करव महे र'न ? चावि अव बाबि, छुवि मुरकारण हारेल कि হবে : সামীর রোজগার নেই বলে সমস্ত শক্তি কি এমনি করে সংসারে বিলিয়ে দিতে হয় ? আন আন ধর হ'ত, শাভণী না হয় সেটা প্রাঞ্জ করভেন না, বলভেন ও সৰ ভোষায় চং, বার স্বামীর এক প্রদা বোজ্পার মেট, ভার রোগটাকে ভিনি মুৰের ঘাণটেই চাণা দিয়ে রাবতে চাইভেন, কিন্তু গলা দিয়ে হু' ছুবার রক্ত প্রকেও তুরি কেন ভাই সে কৰা সুকিয়ে ৰা যতীর বধ হয়েই নারী সংসারে আসে। এবন তো ভাতর খণ্ডর টাকা বর্ত করছেন, খ্রচনার কেন করেন বি ? चावारमञ कीवरनव कि त्कान मृत्रा त्वर कार ? जारमब बरन দিখো, ভোমাকে এবানে কেলে বেবেই বেন জানের কর্তব্য শেষ না করেন। ভারা বেন চাকা পাঠাতে অবহেলা না করেন, আর অভিবিক্ত বেন কিছু পাঠান। এবানে বাই नार्य व बरवा चक्क पान ना क्वरण कावाक चर्चक कर्ड (भएक एरव । अरबंद कक्षवारवान वा ववला किन्ने विके चार्यके अक्षा तम । (व अरक्क चार्य तम कक्षरय (म-वे शारव সেবা, সাধুনা, বমভা। বে ভাভে কার্পণ্য করবে ভার কর भवागार्थ अपने बावैक निरंत राजार्य मा, रच्डीय अप विज् ক্লও ভার গলার কেউ লেবে না। ক্লংটাই এমনি ভাই। ভূমি নতুন এলেছ, ভাই ভোষাকে দাৰবান করে দিছি।

'ভোষার বৃধি দ্ব পেরেছে ? বকে বকে ভোষাকে দুরোভেই দিছি নে। আমি ভাবি, আমারই বভ সবারই বৃধি বিদে, ভেটা, দুব, ভয় সব চলে গেছে। রাভ শেষ হয়ে এল আমি বাই, ভূমি দুরোও একটু।

জেগে দেখি যানে সালা গা ভিজে গেছে। ভোলের আলো এসে পড়েছে বিছালার। নাস', লাই, জ্বালার—চার বিকে জাগরণের সাড়া পড়ে নেছে—"

বছনত কৰে উঠে বলে চায়বিকে তাকাই কোৰাও কেট নেই, ভবু কায় বেন বিষ্ট হালিয় শব্দ বাতানে তেনে বেডাছে।

# জ্যোতিরিন্দ্রনাথ ঠাকুর

7589--: 796

### **ব্রীত্রভেন্তনাথ বন্দ্যোপাধ্যা**য়

स्याः देनमद-भिका

১৮৪৯ সৰের ৪ঠা বে ( ১২৫৬, ৭২ বৈশাধ, রাজি ১৪৫৩ বিনিষ্ট ) তারিধে ছোড়ার্সাকোর ঠাঁকুর-পরিবারে ছোডিরিজ-নাধের কর হয়। ত তিনি মহর্ষি দেখেজনাথের পঞ্চন পুর ।

>

"ইহাদের বাড়ীতে সে সময়ে একজন অক্সমহালয় ছিলেন, তাঁহার বিকটেই ইহার হাতেবভি হর। । । ইহার পর, বাভীতে ৰাষ্ট্ৰাৰেল কাছে ইংৱাজী পঢ়া আৰম্ভ হুইল। তথন জ্যোতি-বাবুর অভিভাবক হইলেন, তাঁহার সেজ্বালা ( হেনেজ্রনার ঠাকুর)। হেষেত্রবাবুর শিকারীভিও দেকালের অন্তরণ অভি কঠোৰ বিল। অষ্টপ্ৰহর বাড় ও বিহা টেবিলে বু কিয়া পড়িতে হইত। বিহামিতি সময় নই হইবে বলিয়া, তিনি বেলিতেও हुँ कित्त्व मा ।... (क्रमळवादू चवक छोकांद्र कानंद्र ककरे ভাষিতেন, কিছ ইহাতে হিতে বিপরীত হইল। লেখাপভার উপর স্যোভিবাবুর একটা বিষর বিভূকা ক্ষিরা গেল। হেমেজ বাবু জ্যোতিবাবুকে যুগুর-ভাজা, ভন-কেলা প্রভৃতি অনেক वक्त गांवाम चन्नान कवारेटच्य अवर कीनाकटन छानाटक সম্ভৰ-বিভাপ निर्वादेशहित्वन ।...वाज्ञना अ वेश्वाकीत्क বালীতে এইরপে প্রাথমিক শিকা লাভ করিয়া তিনি হলে ভর্মি स्टेरनम ।... अवस्य St. Paul's School, ভाর পর Montagne's Academy, ভার পর हिन्दू पूज । अवेक्श पन पन पन পরিবর্তনে বে ভাল কল হইয়াহিল তাহা বলা বার না ।...পূর্জ-ক্ষিত, বাড়ীয় কঠোর শিকাশাসমের কলে শিকার প্রতি ्काणितिक्षमार्थत (क्यन अक्**डी विज्**कार क्षिता निराहित : কাকেই ছুলের পড়ার ভিনি একেবারেই মনোযোগ দিভে गांतिकम मा।...(कांकियान् कथम हिन्सू कृत्म शक्म ट्यांनेक শঙ্কিত্ব। বৰস প্ৰায় বার কি তেরো, ... ক্লাসে বসিয়া ভিনি একবার তাঁহাদের বাঙার করগোপাল লেঠের ছবি আঁকিয়া-विलय । ... (नरव विमृ पून प्रदेख ब्यां जिवादू क्यारवायुक्त श्रीपण "कनिकाण करनव" [ शरव, जानवार्ड करनक ] कर्ड হৰেন।" ('জ্যোভিরিপ্রনাথের জীবনপ্রভি')

জ্যোতিবিজ্ঞদাৰ ১৮৬৪ সাৰে কলিকাতা কলেক হইতে এনটাত পৰীকা দেন। আক্ষর্বোর বিষয়, পাঠ্য পুডকে তেমৰ মনোবোদী না বাকা সভেও তিনি দ্বিতীয় নিভাগে উদ্বীৰ্ণ

শান্তিনিকেতন, মবীত্র-ভবনে মন্দিত পারিবারিক থাতার বলেত্রনাবের হতাক্তরে জ্যোতিরিজ্ঞনাথের রাশিচক্র ও কলকাল পাওলা বার।
মন্ত্রনাথ ঘোর 'জ্যোতিরিজ্ঞনাথ' পুতকে জ্যোতিরিজ্ঞনাথের স্বর্জনাক্ত
মূলক্ষ্যে ২২ বৈশাধ ১২৫৫ বলিলা উল্লেখ করিলাক্ষের।

হইবাহিলেন। এই বংগর রমেশচন্ত্র বন্ধও প্রবেশিকা-পরীক্ষার প্রথম বিভাগে উত্তীর্ণ হন। অভংগর ক্যোভিরিম্রনাথ প্রেসিডেনী কলেকে প্রবেশ করেন; এবানে রাজকুক বন্ধ্যোপাব্যার ও কুক্তমন ভটাচার্ব্য তাঁহার সংস্কৃতের অব্যাপক ছিলেন। আমোদ-প্রমোদ ও নাট্যকৌতুক

জ্যোতিরিজনাবের শৈশৰ প্রধানতঃ আবোদ-প্রযোগ ও নাষ্ট্রকৌচুকেই অতিবাহিত হইরাছিল। ধুরভাত-পুত্র গুণেজনাব (অবনীজনাবের শিতা) ভাহার শৈশব-সদী হিলেন। স্বতিক্থার জ্যোতিরিজনাব বলিবাছেন:—

"ওণ্ডাদা ও আৰি প্ৰাৱই একবৰসী। আমনা ছেলেবেলার वदावद अकृत्य पाकिष्ठाम, अकृतक (पंगायुगा अवर अकृतक পাঠাভ্যাসও করিভাষ ৷ - - আমরা ছুই জনে বেৰ হরিহয়-আছা হিলাম। এক হাভার মধ্যে আমাদের ছই বাড়ী। "এ-বাঙী" আর "৩-বাড়ী"। তিনি রোক সকালে আয়াদের বাড়ী আসিতেন। আরও চুই চারি কন সদী ভূটাইরা লইয়া, আমা-দের বাড়ীর বারাভার আবর। সারাধিনই প্রায় আভ্ডা বসাইতাম। গুৰুদালা বছ বছ কল্পনাম বছ আমোদ পাইতেন। কত বুকুম কল্পনা বে আমাদের মাধার আসিত, তাহার আর ইরভা নাই , किन विकारन श्राबर देविया यारेल, कारक किन्नरे श्राविश्ल एरेण मा। अबुध अबरे मत्या चामि अक्ट्रे क्ला हिनाम. कबनाटक कुड़ारेटल ना विश्व जरक्रनार जाराटक कार्ट्य श्रिवज ক্ষিবার কল উঠিয়া পঢ়িয়া লাগিয়া ঘাইতাম। ভা সে ছেলে-बाइविटे रुपेक बाब बाटे रुपेक ।... अक पिन कथा रुदेन, बाब!-(पद ज्ञित Extravaganza नांहे। नांदे। जानि जनसह Extravaganza প্रचल कतिवाद काद नदेनाव । প्रदालम 'সংবাদ প্রভাকর' হইতে কতকওলি মুলার মুলার কবিভা ৰোভাভাভা দিয়া একটা "অভভনাট্য" বাড়া করিয়া, ভাষাডে পুৰ বদাইৰা ও-বাভীৰ বৈঠকৰাশাৰ মহা উৎদাহের সহিত ভাহার মহলা আরম্ভ করিরা হিলাব। ভাহাতে একটা পান **E7.**--

ছ কৰা ছাত্ৰ ব'লো না, ছাত্ৰ ব'লো না, বল্ছো বঁবু কিলেত্ৰ বৌকে— ও বছ হানিত্ৰ কৰা, হানিত্ৰ কৰা, হাস্বে লোকে, হাস্বে লোকে— হাঃ হাঃ হাঃ হাস্বে লোকে।"•

शः शः शः-- अरे कांद्रशाष्ट्रीतिक चूद शनित चक्रकदान दहना

শেব গংজি হাড়া সমগ্র গানটি ইবরচক্র ছত্তের রচনা। ১৮৬৩ সনে প্রকাশিত 'বোদেশু বিকাস' কটব্য।

ক্ষিয়া দিয়াহিলায়। বৈঠক্ৰামায় ঐয়ণ "হাঃ হাঃ হাঃ" পুৱে অবিকাংশ সময়ে অট্ছাত হুইত আয় ৰুণ্ৰাণ্ শব্বে এচও তাওব মৃত্য চলিত।"

নাটকাভিনৱের দিকে ক্যোভিরিক্রনাথের বোঁক হিল প্রবল। এ বিধরে অপেক্রনাথেরও অন্থরাগ বড় কম হিল না। পোণাল উড়ের যাত্রা ভনিরা বাড়ীতে একট নাট্যশালা প্রতিষ্ঠার সকর তাঁহাকের কনে প্রথম উহিত হয়। তাঁহারা একট নাটকীর দল গঠন করিলেন। এই দলে রক্ষামক্ষ কেশবচল্লের আভা কৃফবিহারী সেন, কবি অক্রচক্র চৌবুরী প্রভৃতি হিলেন। কৃফবিহারী পূর্বের 'বিববাবিবাহ' নাটকে পড়ুয়ার ভূমিকা প্রহণ করিয়াহিলেন, এই কারণে ওভাদ-ভানে সকলেই তাঁহাকে অভিনয়-শিক্ষকের বর্ষাদা দান করিয়াহিলেন। শীনই তাঁহাকের চেটার মধুত্দন দভের 'কৃফকুরারী' ও 'প্রকেই কি বলে সভ্যতা' অভিনীত হইল। ছই বারই অভিনর বুব ভাল হইয়া-হিল। ল্যোভিরিক্রনার এই ছই অভিনরে যথাক্রনে কৃষ্ণকুরারীয় মাতা ও সার্কেনের ভূমিকা প্রহণ করিয়াহিলেন।

নাট্যশালার পরিচালকণণ অভিনরোপ্যােশী অবচ লোকশিক্ষার অধ্কুল বাংলা নাটকের অভাব অধ্কুল করিয়া ঠাকুরবাঙীর গৃংশিক্ষক ইবরচন্দ্র নন্দার পরামর্শে, ১৮৬৫ সন্মর জুন
( ? ) মাসে 'ইভিয়ান ভেলি নিউস' পত্রে বছবিবাছ বিষয়ে
একবানি উৎকৃষ্ট নাটকের জভ পূর্ভার বোষণা করিলেন।
কিছ পূর্ভার প্রধানের উপর্ক্ত কোন নাটক হন্তগভ না হওয়ায়
ভাহারা বিজ্ঞাপন প্রভাহার করিয়া 'কুলীন কুলসর্কার' নাটকরচয়িতা, সংক্ত কলেক্ষের পভিত রামনারায়ণ ভর্করন্দ্রের উপর
এই সামাজিক নাটক-রচনার ভার অর্পণ করেন। আন দিনের
মধ্যেই রামনারায়ণ নাটক-রচনার ভার অর্পণ করেন। আন দিনের
মধ্যেই রামনারায়ণ নাটক-রচনা শেষ ভরিয়া ছুই শভ টাকা
পারিভোষিক লাভ করেন। নাটক্রণানির নাম—'বধবিবাহ প্রভৃতি কুপ্রধা বিষয়ক ন্র্ব-নাট্রকা'; প্রকাশকাল—মে
১৮৬৬।

জ্যোতি বিজ্ঞান বৃতি কথার বালির হৈন—"পণ্ডিত রাম্নার্যণ ইংরাজী জানিতেন না, তিনি বাঁট দেশীর আদর্শেই নাটক রচনা করিতেন। তাঁহাকেই প্রকৃতরূপে আমাদের বাংলার সর্ব্ধপ্রথম (National Dramatist) জাতীর নাট্যকার বলা বাইতে পারে। —এই 'নব-নাটকে' বিদেশী আদর্শের একটু পর বে একেবারে না ছিল তাহাও নহে। আমাদের সংহুত নাট্যসাহিত্যে কোন বিরোগাভ নাটক নাই। তিনি ইংরাজী-লিভিত লোক্রিগের স্লুচিকে প্রশ্রের হিরাই, বাঁট বাল্লার এই সর্ব্ধেপ্রথম বিরোগাভ নাটক রচনা ক্রিলেন।"

গণেজনাথ ( ভণেজের অপ্রক্ ) প্রকৃতি অভিভাবক্ষাণ হথক ধেনিলেন ব্যাপার ক্ষমেই অক্তর আকার বারণ ক্রিভেছে, ভবন বাহাতে তেলেনাছবি বা বাষ্টানো প্রকাশ না পার, এই ভবে বিজেরাই অভিনরের আবোজনে ব্যাপৃত হুইলেন। ইহাতে ক্যোভিরিজনাথ প্রভৃতি অধিক্তর উৎলাহিত হুইরা



জ্যোতিরিজনাৰ ও তাহার সহবর্ত্তিৰ

উঠিলেন। সাত আট বাস ধরিরা দিবে রিহার্সাল ও রাভে কনসাটের বংলা চলিবার পর ১৮৬৭ সনের ৫ই জাত্মারি বহাসবারোহে 'দব-নাটক' প্রথম অভিনীত হইল। বহু দর্শকের অহুরোবে নাটকবানি ঠাকুর-বাড়ীতে উপর্পৃত্তি মন্থ বার অভিনীত হইরাহিল।

'নব-নাটকে'র অভিনয়ে জ্যোভিরিজনাথ ক্রসাটে হার্ম্মোনিয়ম বাজাইয়াছিলেন এবং নদীর ভূমিকার অবতীর্ণ হুইয়াছিলেন। নদী-বেশে ভিনি সংস্কৃতে রচিত একট বসন্তু-বর্ণনার গান গাহিতেন। গান্ট এইজপ:----

মগর নিগর পরিছবিপ্র:সর

থ্য সমাগম বীরে,

বিকচ কমলকুল-কলিকা পরিবল

বাহিনী বহুতি সমীরে।
বহু পরিপায়ক নাব বধু হয়—

সীহুতি সপদি শরীরে,

ঘলদভিবিহুহু ক্লাহুরুশা ভিল

বক্ষতি লোচন নীরে।

ক্যোভিরিজনাথের অভিনয় সহছে 'হিন্দু গেইরিয়ট' এইরূপ বছব্য করিবাহিলেন :---

The play opened with the usual appearance of Nat and Nattee with the customary prologue.

Both were clad beautifully and Nattee particularly presented a very graceful figure. Her attitude, gestures, and motions were as delicate as they were becoming, though her singing, we must confess, was not up to the mark.

"নব-নাটকের অভিনয়কালে জ্যোতিরিজনাথের নেজ-দালা,—ভারতের প্রথম সিবিলিয়ান সভ্যেজনাথ ঠাকুর চুটতে কলিকাভার হিলেন। ভিনি লিখিরাছেন:—

"নাষ্ট্য অভিনয় বিষয়েও বেজ্ঞাদায় [গণেজনাথের] বিশেষ উংলাহ বিল। আমি ইংলও থেকে কিয়ে আসবার হুই বংলর পরে ছুই নিরে কলকাতার এলে দেবি তাঁদের বাজীতে 'বব-নাইক' অভিনয়ের প্রভূত আরোজন হ্রেছে— আমি সেই নরাবোহের মধ্যে এলে পভি। রলমকে ব্যনিকার শিয়ো-বেইনী বিজ্ঞানভার ন্বরত্বের নামে অভিভ।" ('আমার বাল্যক্বা', পু. ৩৬)

পরবর্তী এবিল মাসে জ্যোভিরিজনাথ খেলদায়র সহিত বোছাই প্রহান করার জোলাগাঁকো নাট্যশালাও বিগতকীবন হুইরাছিল। আবেলাবাদ হুইতে ১৮৬৭ সনের ১৪ই কুলাই গুণেজ্ববাধকে লিখিত জ্যোভিরিজনাথের একবানি পত্র উদ্ধত ক্ষাভেছি; ইহা হুইতে জোলাগাঁকো নাট্যশালার উৎপত্তির কথা জানা বাইবে:—

> 14th July [1867] Ahmedabad.

My dear Goonoodada,

It is but a few days ago that I received a letter from yourself and one from Jadoo Nath Mookerjl; and I have already replied to them. You can't expect any letters to reach you, at least in less than 10 days. The origin of the Jorasanko Theatre, is now hidden in the deep folds of rusty antiquity!! It is well that some worthy historian, should bring it out into light, and expel the gloom which still hangs about it. Who knew at that time-in those jolly days of our Eating Club. that acorn would grow into an oak ?-that, small beginnings would give birth to mighty things? -that smoke would blaze into a tremendous conflagration?—who, I say, then looked into the seeds of time or would peep into the womb of futurity? who knew in fact that a mouse would give birth to a mountain? Had all this been known to us. we certainly would have taken good care to note down every particular of its birth, would have marked, with a vigilant eye, every symptom which it presented in its embryo state. If we but carry ourselves a couple of years back, we would perhaps find ourselves seated in the snug little room of old, where we passed the brightest moment of

our existence, which was the usual haunt of a few merry souls, would perhaps find ourselves seated in the snug little room of old where we passed the dozen voices, where we used to enjoy the delicious songs of Bama, and pleasant buflooneries of Jadoo, where about all "hot, hot" #pfs and cotots used to be heaped up in pyramids; and it was there-in the self-same place that this Jorasanko Theatre got its being! Now let me leave aside all metaphors and rather be homely. It was Ciopal Oorria's Jatra, that suggested us the idea of projecting a theatre. It was Gangooly |Saradaprasad|, you and I that proposed it; and I don't think that Jadoo can claim the credit of being one of its projectors. I do think that he had no hand in the matter.

Yours affly J. N. Tagore.

বোম্বাই প্রবাস

পূৰ্ব্বেই বুলিয়াছি, 'নব-মাটক' অভিনয়ের অব্যবহিত পূৰ্বে ১৮৬৬ সংখ্য নবেশ্বর মালে সভ্যোজনাথ কলিকাত'র আগমন করেম। অনুস্থতার ৩৩ তিনি প্রায় সাড়ে পাঁচ বাসের (२४-১०-७७ एहेट्ड १-४-७१) हु नहेशाबिटनमः वर्षात्म অবস্থানকালে ভিনি ভাৰীপুরের উচ্চান-বাটকার সদ্য-विजाज-প্रजानिक वाद्विदेश वह मत्नारमास्य (बार्यद मश्जि সন্ত্ৰীক কিছু দিন কাটাইৱাহিলেন। জ্যোভিরিঞ্জনাৰও আসিহা মেক্ষাদার সহিত মিলিত হন। ওাহার এক-এ প্রীকা তবন নিকটবর্তী : তিনি প্রীকার পড়া হাড়িয়া দিয়া ননোযোগ্যের নিকট করাসী ভাষা শিক্ষা করিতে আরম্ভ করেন। কামপুরে অবস্থানকালে ভিনি নেজ-বৌঠাকুরাম कानपानिक्तमी (प्रवीद निक्ते वाचारेत्व मह-- (म्यामकाव সহত্র, প্রাকৃতিক দুখাবলী প্রতৃতির কথা ভবিষা বোঘাই দেবিবার কর উংস্কুক হইয়া উটিলেন এবং কাহাকেও কিছু না বলিরা চুণচাপ সভ্যেন্তবাবের সহিত বোহাই পলায়ৰ खबिरलय ।

জ্যোতিষিজ্ঞনাথ নেজহাৰার নিকট আবেদাবাদে প্রার্থ নাত বাস অবস্থান করিয়াছিলেন। নেবানে করাসী ভাবা, চিপ্রাকন-বিভা ও এককন ওকরাট বুসলবানের নিকট সেভার-বাদন শিকার তাঁহার দিন কাটভেছিল। গণেজনাথকে লিবিভ সভোজনাথের নিয়োদ্ধত ইংরেজী প্রাংশের অস্থাদে প্রকাশ :---

১১-৫-৬৭ :--জোভি আনার নিকট করাসী ভাষা শিকা আরম্ভ করিরাহে। আনি ভাষার ক্ষত এককম ছবিং-নাটারঙ নির্ভ করিরা বিরাহি, কিম্ব জ্যোভি পারিবে কি বা জানি বা।

২-৬-৬৭ :---জ্যোভি সেভার শিকা করিভেবে।

৪-৯-৬৭ ঃ—ভ্যোতি বেতার নিবিতের। ইহাই তাহার একষার আনোর। আমি তাহাকে করানী নিবাইতেরি। দে ধুব বাইতেরে। বড় সাজুক—সমাজে মিনিতে পারে বা। বোধ হর বাড়ী বাইবার ছত ব্যাকুল হইরারে। ('জ্যোতিরিজ— নাধ', পু. ২০-২১)

### চৈত্ৰ বা হিন্দু মেলা

সভ্যেক্রনাথ অস্থভার অভ আট মাসের ছুট ( ১৬-১০-৬৭ হইডে ১৫-৬-৬৮ ) লইরা আরেরাবাদ ভ্যাগ করেন। তাঁহার নহিত জ্যোভিরিক্রনাথও কলিকাভা কিরিরাহিলেন। ইহার অল্প দিন পরেই চৈত্র-সংক্রান্তির দিন ( ১১ এপ্রিল ১৮৬৮ ) কলিকাভার উপকঠে—বেলগাহিরা ভিলার চৈত্রনেলা বা হিন্দুমেলার বিভীর অবিবেশন হয়। ঠাকুর বাজীয় সাহায্যে এই বেলার স্পষ্ট হইয়াহিল। ল গণেজনাথ ঠাকুর মেলার সম্পাদক এবং মহর্ষির আফুক্ল্যে প্রকাশিত ভাশনাল পেশার'-সম্পাদক নবলোগাল মিন্দ্র ইহার সহকারী সম্পাদক হিলেন প্রতিত্তির ক্রেন্দ্র বিভিন্ন শ্রেষ্টির হিন্দুর মধ্যে বাহাতে ঐক্যে প্রতিত্তিত হয়—পরাহ্চিকীর্বার পরিবর্গ্ডে বাহাতে আল্পনির্ভর্গর বাব্যখনরন্থির উর্লেখ হয়, ভর্তত্তেই চৈত্র বা হিন্দু মেলার স্ক্রি। ইহা প্রক্রভণকে ভারতীয় কংগ্রেলের অঞ্জুত।

"নবলোপালবাৰু দেবা হইলেই জ্যোতিরিপ্রদাবকে উড্জেমাপূর্ব জাতীর ভাবের কবিতা লিবিতে অনুরোব করিতেন।
জ্যোতিবাবু এ সমরে কবিতা লিবিতেন না, বা ইয়ার পূর্কেও
কবন লেবেন নাই। কিছ ক্রমাগত অনুক্রছ হওয়ার, তিনি
একট কবিতা লিবিয়াহিলেন। কবিতাট রচিত হইবামাত্র,
নবলোপালবাবু গণেপ্রবাবুকে দেবাইতে লইয়া গেলেন।
জ্যোতিবাবু নেবানে গিরা কবিতাট আত্বতি করিয়া ভ্রমাইলে,
গণেপ্রবাবু 'বেশ হয়েছে, এটা এবার মেলার পভতে হবে'
বলিয়া ভারাকে উৎসাহিত করিয়াহিলেন। সেবারকার
বলার শিবনাব ভরাচার্ব্য (পরে শালী), অক্রচন্ত চৌধুনী;
ও জ্যোতিবাবু—এই তিন জনের তিনট কবিতা পঠিত হয়।
জ্যোতিবাবু কর্গহর বুব কীন, অত ভিত্রের মধ্যে ঠিক শোনা

বাইবে না বলিয়া, ক্ৰেজনাৰ ঠাকুছ সেট বজগভীয় কঠে পাঠ কৰিয়াহিলেন" ('জ্যোভিডিজনাবেছ জীবনস্থি')। জ্যোভিডিজ-নাবেছ কৰিভাটছ নাম "উহোধন"; ইহা ভাঁহার ১৮ বংসছ বছসের বচনা; কৰিভাটিঃ ক্ষেক গংক্তি এইছাণ :—

> कार्य कार्य कार्य गटन कार्यक्रमकान । बारक कृषि कक काल बहिरव महाब १ ভারতের পূর্বানী কর্ম পরণ, बर्द चांब कछ कान बुल्सि मदन ? দেব দেবি ক্ষমীয় দলা এক্সায়, রুর শীর্ণ কলেবর, অন্থিচর্শ্বসার : षरीनठा चळानापि बाक्त इक्त्र. क्षित्य (नानिक कांद्र विश्वि स्थ्य . বার্থার অনৈক্য পিশাচ প্রচণ, मर्कान-प्रवद्ध (पर करद वंश वंश) মায়ের যাজনা ছেবি বল কোন প্রাৰে সুপুত্ৰ থাকিতে পাৱে নিশ্চিম্ব ৰষে 🤊 (य क्यमी भश्न-प्रश मक्ष्मणी शास्त्र. निवारेट मित्रवि चारा-अवाकारत . त्य जनमी वह शांति तय इःव छूनि छेशारवत्र माना अब दूर्प रचन कृति . এমন নামেরে ভোলে যে-কোন লভান, নিশ্চর অগর ভার পারাণ সমান।...

চৈত্রবেলার এই বিতীয় অধিবেশন আর একট কারণে অর্থায়। এই অধিবেশনেই সভোক্রমাথের রচিত "যিতে সংঘ ভারত-সভান, একভান মনপ্রাণ, গাও ভারতের যুশোগান" ভাতীয় সদীতট সংগাঁহবে বিভ হয়।

### বিবাহ

e জুলাই ১৮৬৮ (২৩ আবাচ ১৭৯০ শক) ভারিবে কাদখরী দেবীর সহিত জ্যোভিরিজ্ঞনাথের বিবাহ হর। ভবন ভারার বরস ১৯ বংসর। ১৭৯০ শক্তের প্রাবশ-সংব্যা 'ভছবোধিনী পঞ্জিকা'র এই সংবাহট বুল্লিভ হয়:---

"ৰাজ-বিবাহ।—গত ২০ আবাচ ৰাজসবাজের প্রবাদ আচার্ব্য প্রবাশনা শ্রীষ্ঠ বেবেজনার্থ ঠাকুর মহাপরের পঞ্চ পুত্র জীবান জ্যোতিরিজনার্থ ঠাকুরের সহিত কলিকাতা নিবাসী জীবুত বাবু ভাষলাল গলোপাব্যারের বিতীয়া কভার ব্যাবিধি রাজবর্ধের প্রতি অহুসারে ভত বিবাহ সবারোহ-পূর্বাক সম্পার হবা গিরাছে। বিবাহ সভার বহুসংগ্য রাজ এবং এতকেশীর প্রবান প্রবান অব্যাপক রাজগ সকল উপস্থিত ছিলেন। দ্বিপ্রতিগকে প্রচ্ব ভক্ষ্য ভোকে পরিভ্র করিয়া বিভর অর্থ প্রহান করাও হইরাছিল।"

পুত্ৰের বিবাহে গেবেজনাথ উপস্থিত হিলেম না। তিনি একবানি পত্রে আচুপুত্র গণেজনাথকে সিধিরাহিলেন ঃ

<sup>\*</sup> বেলগাছিল। ভন্ধিন সাহেবের বাগানে মেলার এখন অধিবেশন হর — "সেকানের কথা": অনুষ্ঠানা বন্ধ—'ভারতী', চৈত্র ১৩০২।

<sup>† &</sup>quot;আৰি ইংৰাজী ১৮৬৬ সালে 'Prospectus of a Society for the promotion of National Feeling among the Educated Natives of Bengal' আখা দিয়া ইংৰাজীতে একট কুল পৃত্তিকা প্ৰকাশ কৰি। তাহাৰ অনুবাদ 'ভাতীৰ সৌৰবেছা স্কাৰিণী সভা সংখাপৰেৰ প্ৰভাব' নামে এই প্ৰছে সনিবিট হটন। এই প্ৰভাব ঘানা উদ্বৃদ্ধ হটনা বাদ্ধবন্ধ প্ৰবৃদ্ধ বাবু নৰগোপাল বিক্ৰ মহালৱ হিন্দুমেলা ও আতীয় সভা সংখাপৰ করেন।"—ৰাজনাবাহন বহু: 'বিবিধ প্ৰবৃদ্ধ,' ভূমিকা।

<sup>‡ &</sup>quot;ভারত" নামে কবিতা; ১৩১● নালের চৈত্র-সংখ্যা 'ভারভী'ডে পুৰুষ্ ত্রিত ।

Willow Banks. Muree Hills 20th July 1868

#### वानाविक नरनवनाव

জ্যোভিত্ৰ বিবাহে যাহা কিছু আমার হয় ও কল্যাপকর कार्यः स्टेबाट्य कारा कामाब श्रवाप्टर स्टेबाट्य । देश स्टेटक এচুর বলগ উংপর হইরা ভোষার জনরকে আনলে লিভ যাবুক এই আহার আশ্বর্জাদ। ইভি ৬ প্রাবণ, ১৭১০ শব্দ।

Acecement with

#### আদি ব্ৰাহ্মসমাজ

**খত:পর আমরা ক্যোতিরিপ্রনাধকে কলিকাতা আদি ত্রান্ধ** নমান্তের সহিত দীর্ঘকাল সম্পর্কিত দেবিতে পাই।

আদি ব্রাহ্মসমাজের সম্পাদক।—বাদি ব্রাহ্মসমাজের লন্দাদক-রূপে ক্যোভিরিজনার প্রার বোগ বংসর অবিষ্ঠিত ছিলেন; পুরাতন 'ভভুবোৰিনী পত্রিকা'র সাহায্যে উচ্চার কাৰ্যাকালের হিলাব হিভেছি :---

रेवमार २१२२ मक ( बिला ১৮६३ ) श्वेटल (मीर ১१३६ শৰু (ভিলেম্বর ১৮৭০): বিজেঞ্জনাথ ও জ্যোভিবিজ্ঞনাক মুখ-जन्माष्ट्र ।

মাৰ ১৭৯২ শক ( কাপুৱাহি ১৮৭১ ) হইতে আন্ত ১৮০৬ नक ( जांत्रहे ১৮৮৪ ) ३ जन्नां एक ।

खाक्रायम्बद्धारिकी जन्छ। - ১৮१२ भरवद ১०३ मार्च (২৮ কান্তৰ ১৭৯৩ শক) ভারিবে আদি ত্রাজসমাজের ত্রাজ-দিলের দারা এই সভার ছচনা হয়। জ্যোভিরিজনাথ ও মবলোপাল মিত্র ইহার সম্পাদক ছিলেন। সভার উদ্বেচ হিল--"ব্ৰহ্মদান-প্ৰতিপাদক লাভ ও বৃক্তি অবলখন করিয়া সাধারণ লোককে ভ্রাহ্মধর্ম উপদেশ প্রদান"। এই সভার অধীনম্ব ক্রক্ষবিদ্যালয়ে প্রতি মাসের ছিতীয়, ভূতীয় ও हरूर्य दविवादय वशाक्तरम दाक्यात्रायन वरु, **व्या**वासामान भाक्षामी ७ जानमहस्र र्वपाद्यामेन वर्षविकाम, वर्षमीछि धवर বেদান্ত ও অঞার শান্ত বিষয়ে উপদেশ হিতেম। থিজেঞ্জমাথ ঠাকুর ব্রাহ্মধর্ম প্রছের ব্যাধ্যান করিতেন ৷ ব্রাহ্মধর্মবোধিনী त्रका क्षाप्त बृहे र<नव विकासान क्षित । ( 'कक्षुद्वाविनी निक्रिका,' ऽ१२०-३६ मंक खडेवाः )

ব্ৰহ্মসঞ্জীত রচনা ৷—১৮৬৮ সনের ত্ন বাদে সভ্যেত্র-नाय त्वाबार हिन्दा बारेबाद श्रद, त्याचितिसमाय, ভাৰাৰ বছলাৰা বিকেল্লনাৰ ও মেজদালা ছেলেল্লনাৰ---अरे जिम करम मिनिया उत्तरमीण बहुमाय क्षयक रूम । अ दिश्व बर्स काशास्त्र विमचन केश्मान पिट्यम : श्रेकृत-वाफीट बार्य बार्य बमान्छि बर्क्शानावाव, नाश्चिनुरवद स्वित्राव বাজ্চল বাব, বৌলা বকুশা বহু ভট প্রবুধ ওভালের।

্ৰজনিৰ বসাইভেন। **ভা**হাৰের হিন্দী-ৰাংলা গাৰ ভাঙিৱা জ্যোভিত্তিভ্ৰমাৰ ও ডিজেন্ত্ৰমাৰ অনেক ত্ৰস্বলীত বচনা কৰিবাহিলেন। জ্যোতিবিজ্ঞনাৰ জীবন-স্বভিতে বলিয়াহেন :---"কি সৌধীন কি পেশাহার কোনও গারকের কোনও গান ভাল লাগিলেই, অথনি সেট টুকিয়া সইয়া, আনৱা ব্ৰহ্মগৰীত বচনা কৰিতে বসিভাষ। এইয়াণে ত্রন্দ্রসদীতে অনেক বড়বড় ওভাদী হয় ও ভাল প্রবেশলাক করিবাছে। বাললার সলীতের উর্ভি এর্থন করিবাই হই-ষাছে।" জ্যোভিরিজনাবের রচিত ভিন্ট রক্ষনদীত নিয়ে ট্রভ ভরিভেডি:---

### ( ৰাখাৰ, কাওৱালি )

শহর শিব সহটহারি। নিন্তার প্রভো হয় দেব দেব। সংসাৱ সিছু সেডু, কে করে পার, ভোষা বিদা আগ্র হে দীনদাব , हर्यगार्विक याहि (छामादि । ( का**यु**न ১৭**>৪ मक, दे**र ১৮१७)

( चानारेश, काश्वानि ) অৱয়ত্ত্ব অভয়ত্ত্ব তিনি যে, ভূপ' না যে তায়; ৰান্ধিলে ভাঁছার সঙ্গে পাপ ভাপ ধূরে যার। अपरवंद शिव वन छोद नवान (क १ সেই সৰা বিনে স্থৰ-পাছি দিবে কে ভোষায় ? ৰন জন জীবন সৰ তাঁত্ৰি করুণা, ভার করণা মূৰে ৰদা নাহি যায়; बर बाद कदना, छादा कि छनिरव १ তারে ছাড়িয়ে ভবদাগরে ত্রাণ কোথায় ? ( शाबा, काश्वाणि )

कि अध्य जब करूना लाखा, कि अध्य जब करूना। তব করণা সব অগতহয়, সকলে গায় ভোমারি প্রভু করণা। नाब छत्रव चार्यव अभी मधी निदि क्नरम . यबाद्र छवाद छव क्य क्य दव शाद मदस्त्री क्रश्नम .

(क्ष वर्ष वीवव ।

अहे (चांत मश्मात कत (क् भांत क्वींवा कर-क्लींव-मार्च ; হুণৱের ধন ভূমি, নিয়ত সম হুদে বিরাজ', কি আর কব।

 <sup>&</sup>quot;अधि कामि कात्रक्तर्ग (य भक्त अभिक भक्तोक्ति आहरून) ভন্মধ্যে প্রক্ষোর মওলা বক্ষ অভি প্রধান বাজি। কণাটদেশ ইংর কল্পভূমি এবং বরদার রাজার ইনি প্রধান পায়ক। করেক মাসের অধ্কাশ লইয়া ইনি আপাততঃ বিখাতনামা রাজ। বভাক্স:মাহন ঠাকুরের প্রযোগ-ভাবে বাস করিতেছেন। ---ইনি সনেকগুলি বন্ধ বাজাইতে এবং পাইতে भारतम् । क्षि वीमा-बाहक अवः श्रीवक बिलावं विलावं धनिष्कः। (क्षेत्रक शांकेट बाक्कोरेट कारनन अपन नटक, प्रांत्रीट हैं होत्र दबन व्यक्तित व्यादह এবং সংগী চ-বিবয়ক অনে চ ভাৰ্কেঃ ফুল্মুর সীমাংসা করিতে পারের।••• ঞ্ৰাদ বেলাল, ট্রা, ঠারী, সংস্কৃত ভল্প ও কার্ডন্ ইনি সকল প্রকার প্ৰীত গাইতে পাৰেন। চিন্তা মাত্ৰ না কৰিয়া অংলীলাক্ৰমে বে কোন প্রামের বে কোন বর বাস্ক করিতে সক্ষ এবং সকল প্রকার বর অভুকরণে भट्टे" ('मार्थावनी,' ১৫ नरवयत्र ১৮१४)। हिन्सूरश्लातः २४ वार्विक व्यक्तिः (वनरमञ्जू क्षेत्र क्षेत्र ( ) क रक्ष्यकाति ) ४९०) स्त्रोता वक्ष्य महीए स्त्राफ-বুন্দকে যোগিত করিয়াছিলেন।

আদি আক্সমাজ সজীত বিস্তালয়। — ৪ ব্ব ১৮৭৫ তারিবে, ভ্যোতিরিপ্রনাবের লশাহতকে, "আদি রাজনবাজের রজনলীতের হারিছ ও উরতি নাধবের কল" সরাজ-বিদরের বিতীরতল গৃহে এই সলীত-বিদ্যালরের কার্য্য আরম্ভ হয়। এবাবে রবি ও ব্ববার ব্যতীত প্রভাহ সামাল । ৪ ইতে ১০টা পর্যাত হার্রিদরে বিনা-বেত্বে উভালের কর্ত ও বর্ষনাতীত বিভা বেওরা হইত। প্রসিদ্ধ গার্হক ও সলীত-বার্বেতা বর্ষনার তই অব্যাশনা-তার্ব্যের তার প্রহণ করিবাতিলেন। ('তত্বোধিনী প্রিকা', আবাচ ১৭৯৭ বন্ধ)

কেশৰচন্দ্ৰের প্ৰতি কটাক ।--১৮৫৯ সৰে ভদাৰৰ কেশবচন্ত্ৰ সেন আদি ত্ৰাক্ষণমাজের উৎগাতী কলিভগে व्यव्य कर्षाकाल व्यवन करवन । ১৮৬৪ সনের ভিসেত্র ৰাসে সমাজের প্রধান আচার্য্য মহর্ষি ছেবেজনাবের সহিত তাঁহার বভবিরোধ উপপ্রিত হয়। তিনি আদি প্রাক্ষসযাজের সহিত বিচ্ছিত্ৰ হুইৱা 'অএগর' ভ্রাক্ষণের প্রহা, 'ভারতব্যীর बाचनमांच' द्वांभन कटवन ( नटनचत्र ১৮५५ )। ১৮१२ जटनव কেবারি নালে ভাহার 'ভারত-আশ্রহ' প্রতিষ্ঠিত হয়, তিনি তথ্য পূৰ্বনাত্ৰার ত্রী-খাৰীমতা থানের ভ্রুত বছপত্রি-কর। ইহার করেক মান পরে--- সেপ্টেম্বর মাসে জ্যোভিরিত্র-मार्थित क्षेत्रम ब्रह्म 'किकिश चनर्यात्र' क्षेत्राणिक रह । देश একবানি প্রহুসন : ইহাতে ভিনি নব্যপন্থী কেলবচন্দ্রের প্রভি কিকিং কটাক করেন। ক্যোতিরিপ্রনাথ তথন আধি ত্রাখ-সমাজের সম্পাদক , এই কারণেই বোধ হর অপোত্র-জাবে পুৰুকে নাম প্ৰকাশ করেন নাই। তিনি জীবনছডিতে विवाद्यः--

"এ সমরে আমি কিছ প্রাত্মপত্তী ছিলাম। তাই বেরেদের বাবীমতা ব্যাপার লইয়া এই এছে একটু হাজরসের অবতারণা করিয়াছিলাম। প্রক্রমনামি প্রকাশিত হওরার পর, প্রায় প্রত্যহই ফেবিতাম 'ইঙিয়াম বিরারে' আমার উপর কিছু মা কিছু আক্রমণ বাকিতই। আক্রমণকারীদিনের মতে বইবামি অলীল বিবেচিত হইরাছিল। প্রথম সংহরণে এ প্রতক আমার নাম ছিল মা, তবুও কি করিয়া বেম আমার নাম প্রকাশিত হইয়া পভিয়াছিল, তাই সম্ভ আক্রমণ আমার নামেই হইত।"

'কিকিং কলবোগ' কলিকাভার সাধারণ রলালয়—'ভাশনাল বিরেটারে' ২৬ এবিল ১৮৭৩ ভারিবে সাক্ল্যের সহিত প্রথম অভিনীত হয়। এই অভিনয় সহছে 'ভাশনাল পেণার' লেবেন: —"It elicited great cheers from the visitors."

ব্যৱস্থান ব্যৱস্থান ( হৈন ১২৭৯ ) প্রত্যনবানির অনুক্ল স্বালোচনা করিয়াইলেন , ভিনি লেখেন :—

"একেই কি বলে সভ্যভার ক্যাবৰি প্রহ্মনের কিছু হড়া-ছড়ি হইরাছে। নেই সকল পাঠে আমরা ছিল্ল করিবাছি বে হাভয়স্থিতীয় অগ্নীল প্রদাপকেই বল্পেনে প্রহ্মন বলে। ছুই-

বাৰি প্ৰহুসৰ এই পৰিভাষা হুইছে বিশেষভ্ৰূপে বৰ্জিভ, 'এড়েই কি বলে সভাতা' এবং 'সৰবার একারণী'। সংবার একারণী অপ্লীলভা বোবে চুবিত হইলেও, অভাত গুণে ভারতবর্ষীর ভাষার अञ्चल क्षरमम इर्जा । 'किकिश क्रमावान' के हुई क्षरमाम ছুল্য নহে বটে কিছু ইহাকেও বৰ্জিত করিতে পারি। ইহাও अक्षानि छैरक्षे अस्त्रन । अ अस्त्रात्म अक्षे ७१ अरे व ভংগ্ৰণেতা গ্ৰহণৰ লিখিতে ৰাটক লিখিয়া কেলেৰ ৰাই। चार्यात्मवरे अवैष्ठ अर्गम् अर्गम मार् चानके मार्के मार्के मार्के ब बर्मन बर्मन भाव, किंद्र चन्द्रहे नरह । देशांक शास्त्र बाह्या मा पाकूक, मिछाछ चछार मारे, अरेर राज्य स्पष्ट । त्रहे ব্যক্ষ যদি কোন শ্ৰেৰ-বিশেষের প্রতি লক্ষ্য ঘটনা বাকে ভবালি নিশ্নীৰ নতে, কেমনা ব্যক্তে অভুপত্ত বিষয় লইৱা কোণাও वान दिवनाम मा। बाहा वाद्यद दोना, ७९४७ वान अपूषा . ভাষাতে অবিট নাই, ইট আছে।...बই প্রহ্পদের আল্যোপাড পাঠ বা অভিনয় দৰ্শন প্ৰীতিকর ় ইছা সামাভ প্ৰশংসা নহে, কেন না অভাত বালালা প্ৰদেশৰ প্ৰায় ভালা অসম কইকর।"

### ন্ত্ৰী-স্বাধীনতা

জ্যোতিরিজনাথ প্রথমে মী-বাধীনতার বিরোধী ছিলেন, এ কথা পূর্বেই বলিরাছি। সভ্যেজনাথ বিলাভ হইতে কিরিবার পর বধন ক্রমে করে অভঃপূরের অবরোধ-প্রধার আয়ুল পরিবর্তন করিলেন, তথন জ্যোতিরিপ্রনাথও মী-বাধীনতার উঠা পক্ষণাতী হইরা উঠারাছিলেন। তিনি জীবনপৃতিতে বলিরাছেনঃ

"বেজ্যাদা ( সভ্যেজনাথ ) বিলাভ হইতে কিরিরা, আমাদের পরিবারে বধন আমৃগ পরিবর্জনের বভা বহাইরা দিলেন,
ভবন আমারও মতের পরিবর্জন ঘটরাছিল। ভবন হইতে
আর আমি অবরোধ-প্রধার বিরোধী নহি, বরং ক্রমে ক্রেরে
এক্জন নেরা ন্যাপথী হইরা উঠিলান। ইহারই কিছু দিন পূর্বের লী-বাধীনভার উপর কটাক্ষপাভ করিরা আমি 'কিঞ্চিং জলবোল' লিবিরাহিলার বলিরা, অভ্যন্ত হঃবিভ ও অভ্তর্জ হইরাহিলাম। সেই ক্লা 'কিঞ্চিং ক্লাবোগে'র বিভীর সংক্রম আর আমি ছাপাই নাই।

"লী-হাৰীনভার দেবে আনি এত বড় পক্ষণাতী হইরা পড়িলাম বে, গলার বারের কোন বাগানবাড়ীতে সলীক অবহানকালে আমার মীকে আমি নিকেই অমারোহণ পর্যান্ত লিবাইতাম। তাহার পর জোড়াগাকো বাড়ীতে আলিরা, হুইট আরব বোড়ার হুই জনে পালাপালি চড়িরা, বাড়ী হুইতে গড়ের মাঠ পর্যান্ত প্রভাহ বেড়াইতে বাইতাম। মহদানে পৌছিরা হুই জনে সবেগে বোড়া হুটাইতাম। প্রতিবাদীরা ভজিত হুইরা গালে হাত হিছা। যাভার লোকেরা কৌতুহলে ও বিশ্বরে ব্ধব্যাহান করিরা চাহিরা, হুতভত হুইরা বাভিত। হারোরাবেরা আমারের পানে অবাক হুইরা চাহিরা বাভিত। লে সৰ বিকে আৰার প্রকেপও বিল বা। আবি তথন উভায বব্য তাবের নেশার উছত। এইরণে অভঃপ্রের পর্বাত উঠাইলামই, সদে সদে আযার চোবের পর্বাচিও একেবারে উঠাই সেল।"

### জমিদারী পরিদর্শন

'কিকিং ক্লবোগ' প্রকাশিত হইবার পর ক্যোতিরিজনাবের উপর ক্ষিয়ারী পরিদর্শনের ভার পরে। তিনি ক্ষীবনশ্বতিতে বলিরাহেন :—

"ইবার পরেই আনার উপর আনাদের জনিদারী পরিদর্শন ও সংসারের ভার পভিল। পিতৃদেব বহুতে আনাকে জনিদারী সংক্রান্ত অনেক ভাককর্ম লিবাইরাছিলেন। অনিবারী পরি-দর্শন উপলক্ষে একবার ওপুদাদার সলে আনাকে কটক বাইতে হউরাছিল। "কটকে বাকিতে বাকিতেই, আনি 'পুক্রবিক্রম' নাটকবানি [ইং ১৮৭৪] রচনা করিরা কেলিলান।"

ধ্বদাৱন্ত ক্ষিদার বলিরা ক্যোভিবিজনাধের খ্যাভি ছিল। 'বিজ্জ্জন-সমাগম'

কটক হইতে কি বিবার পর ক্যোতিরিজনাথ আর একট অনুষ্ঠানে মাতিবা উঠিলেন; উহা 'বিষক্ষন-সমাগম' নামে সাহিত্যিকদের সন্মিলন। কোডাসাঁকো ঠাতুর-বাড়ীতে এই বার্ষিক সন্মিলনের স্থচনা হয়—১৮৭৪ সনের ১৮ই এপ্রিল (১২৮১, ৬ই বৈশার)। বহু সরপ্রতিঠ সাহিত্যিক ও সাংবাদিক এই অনুষ্ঠানে আমন্ত্রিত হইরাছিলেন। সভার কবিভানি পাঠ, রভবাদ্য ও প্রীতিভোজনের আরোক্ষম ছিল। এই উপলক্ষেপরবর্তী ১২ই বৈশার ( ওঞ্জবার ) সাঝাহিক 'ভারত-সংভারক' লেকেন ঃ—

"যোঞ্চাসাঁকে। বিৰক্ষমগণ সমাগম সকা। --- আমরা গভ সপ্তাহে প্রভাবিত বিষয়ের যে একট বিজ্ঞাপন দিয়াছিলাম, গড শ্ৰিবার রাত্রে [৬ বৈশাৰ ] ভাষা কার্ব্যে পরিবভ দেবিয়া আৰ্নিভ হইরাছি। বাবু বিজেলনাথ ঠাতুর ও সিবিলিয়ান ৰাবু সভ্যেন্দ্ৰনাথ ঠাকুৰের আহ্বানে বাংলা এছকার ও সংবাদ-প্রের সম্পাদক্ষিপের অবেকে তাহাদিসের যোভাসাকোর ভৰ্মে সমূৰেত হয়। অভাত প্ৰসিদ্ধ ব্যক্তির মূৰ্যে আমরা এই का वाकिएक पर्यन कविनाम-(ववब्रक क्यार्यासन वामा). वावू बार्क्कनान विक, वावू बाक्याबादन पत्र, वावू नगाबीहरून সৱকার, বাবু রাজক্ষ বন্যো। সর্বান্তর সূমাধিক ১০০ ব্যক্তি উপস্থিত হিলেন: নিন্ত্ররিতা নহান্তারা ভরোচিত অভার্থনার ক্রাই করেন মাই। সভাত্তে একট বুবা প্রথমে বাৰু ব্যৱস্তা ৰজ্যোপান্যায়ের উদীপনী কবিভাষালা উচ্চ পভীর হরে ও উপর্ক্ত ভারতদীর সহিত অবর্গল আর্ডি ক্রিলেন, ভাহাভে আসর বেশ গরন হইরা উটিল। আসরা বহুবিব-বিশ্বত একট জাতীয় ভাব অস্তব করিলান, এবং ইংরেজাবীনে বা বাবীন রাজ্যে বাস করিতেছি বোধসন্য

ক্ষিতে পাহিলাৰ বা। পৰে ক্ৰিছ্ছ (প্যাহীবোহন) হড चनद्वरण रावकामाय विद्वत ७१गानानूर्वक अक्षे महीक ক্তিৰা শ্ৰোভবৰ্গকে বিষোহিত ক্তিলেন। ভিনি ভংপরে বকুত আর একট শ্রুতিমধুর গাম করিলেন, ভাহাতে বিলাভী खरवात महिक अरवीत खरवात विभिन्न कातरकत मर्कमान হইল বলিয়া ইংলভেখনীয় নিকট কলন কয়া হইতেছে। **খডঃপর ঠাকুর-পরিবারের ছোট ছোট করেকট বালক-বালিকা** চোতাল প্ৰভৃতি তালে ভানলয় বিশুৰ সমীত করিয়া সভাৰ-বৰ্গকে চমংকৃত করিল ৷ ভংগরে আমন্ত্রকাণ উপস্থিত ভত্ত-লোকদিগের মধ্যে কোন কোন ব্যক্তিকে কিছু কিছু বলিভে विष्य चश्रदाय कविरामम, किन्न (क्ष्म किन्न विशास मा। ইহাতে কবিৱদ্ব পুৰৱার গাজোবাৰ কবিবু ভাহার কবিত্ব-শক্তির পরিচর দিতে গেলেন, কিছু তিনি এবার এরণ একট ইতর গান বরিলেন, যে সভা এককালে বাট হইরা গেল এবং ভাঁছাকে বগাইছা দিভে হইল। পরে জ্যোভিরিজ বাবু এক অহ নাটক পাঠ করিলেন, ভাষাতে পুরুৱাকা বৰন শব্দ নিপাত क्विवाद चड रेजडरनरक डेएडकिल क्विएल्ट्स बर रेजडपन তাঁহার বাক্যের প্রতিথ্যনি করিয়া বীরমধে মাভিভেছে। [ 'পুরুবিক্রম নাটক,' ৩র অফ, ১ম গর্ডাছ |। তদনন্তর দিক্তের বাৰু খরচিত 'বল্ল' বিষয়ক একট সুন্দর কবিতা | 'ধল্ল-প্রয়াণ,' ১ম সর্গ । পাঠ করিলে শিশুর। সমীত করিতে লাগিল এবং পান, গোলাপের ভোচা, পুপামালা প্রভৃতি দারা নিম্মিডগণের প্ৰতি সমাদর প্ৰধৰ্ণ পূৰ্বাক সভাকাৰ্য্য শেষ হইল।"

'বিষক্ষণ-স্থাগৰ' উপৰ্তিপত্তি কয়েক বংসর ঠাকুর-বাড়ীতে অন্নষ্টিত স্ইয়াছিল। ইহার এই কয়ট অবিবেশনের সংবাদ পাওবা গিরাছে :—

- (১) শুপেজনাথ ঠাকুরের বারীতে ১৮৭৫ সনের ১ই (१) মে (বৈশাধ ১২৮২) রবিবার এই সন্মিলনের বিভীর অবিবেশন হয়। এই উপলক্ষে "বাবুরবীজনাথ ঠাকুর 'প্রকৃতির থেদ' নামে হয়চিত একটি পভপ্রবন্ধ পাঠ করেন। ঐ পড অতি মনোহর। পাঠকালে সকলের মনে ভারতভূমির বর্তমান হীনাবছা শ্বরণ হওয়াতে নেত্র হইতে অঞ্চপাত হইরাহিল।"
- (২) ১৮৭৭ সৰের অবিবেশনে জ্যোতিরিজ্ঞদাবের 'এমন কর্ম্ম আর কর'ব না' প্রহ্মনবানি অভিনীত হয় ৷ রবীজ্ঞদাব

 <sup>&#</sup>x27;গান্তাহিক' হইতে ১৬ মে ১৮৭৫ তারিখের 'গাধারণী'তে উছত।
 —'দেশ' (১৬ চৈত্র ১৬৫২) ত্রইবা। ১২৮২ সালের বৈশাধ মাসে
রবীক্রনাথের সংস্কৃত-শিক্ষক বামসর্থার বিভাত্বপের সম্পাদনার 'প্রতিবিখ'
নাবে মানিক পত্র প্রকাশিত হয়, ইহাতে রবীক্রনাথের কবিতাটি প্রথমে
মুক্তিত হইরাছিল। পত্রিকাথানির স্বালোচনা-প্রসঙ্গে 'তত্ববোধিনী
পত্রিকা' (ভাত্র ১৭৯৭ শক্) লিখিয়াছিলেন ঃ—"প্রকৃতির থেকে'র ভার
ক্বিতা বে পত্রিকার প্রকাশিত হয়, তাহা সাধারণের স্বালরভাত্রন না
হইরা কথনই থাকিতে পারে না।" ক্বিতাটি 'তত্ববোধিনী পত্রিকাতে'ও
(আবাচ ১৭৯৭ শক্) বুক্তিত হইরাছিল।

অলীকবাবুর ভূষিকা এছণ করিয়াছিলেন। ভাষার 'কীবন-স্থতি'তে প্ৰকাশ :---

"ৰাষ্ট্যমধ্যে সাধারণের সমক্ষে প্রকাশ হইবার পূর্বের জ্যোতি-शाराब 'अवन कर्च चाड कड़'र ना' श्रहमत्न चानि चनीक नांद् সাজিয়াছিলায়। সেই আমার প্রথম অভিনয়। ভবন আমার অৱ বয়ৰ, গান গাহিতে আমাত্ৰ কঠেত্ব ক্লাভি বা বাৰামাত্ৰ ছিল না :-ভবন বাড়ীতে দিনের পর দিন, প্রহরের পর প্রহর मरबैर्डिय जिन्द्रभविश्रमिक चंद्रशा चंद्रिया कार्याय विकासकर्रिय ৰ্ষের ব্ধ্যে পুরের রাষণ্ডুকের রং ছড়াইরা দিতেছে: তথ্য নববৌৰনে নৰ নৰ উভস নৃতন মৃতন কৌতুহলের পথ ধরিরা ৰাবিভ হইভেছে: তৰ্ন সকল জিনিষ্ট পত্নীকা কৱিয়া দেৰিতে हारे. किছ य भावित ना अपन मत्मरे एक मा, जनम निर्वित्विः গাহিতেছি অভিনয় ক্রিভেছি, নিকেকে সকল দিকেই প্রচুর-ভাবে ঢালিয়া দিভেছি- ভাষার সেই কৃতি বছরের বরসটাতে এমনি করিয়াই পদক্ষেপ করিয়াছি। সেদিন এই-যে আমার भग्न पंकित्क अवन क्षीय छैरनात्र लोक क्यारेशकिलन. ভাহার সার্থ ছিলেন জ্যোভিদাধা।"

- (७) २६ (कव्यवादि ১৮৮১ ( ১६ कास्त्र ১२৮१ ) छात्रिर्द অমুষ্টিত বিৰক্ষন-সমাগমে রবীক্ষমাধের 'বালীকি-প্রতিভা' অভিনীত হইয়াছিল। "হেষেত্ৰনাৰ ঠাকুৱের 'প্রভিভা' নামী কলা প্রবয়ে বালিকা, পরে সরস্বতী-বৃত্তিতে অপূর্ব্ব অভিনয় করিয়াহিলেন।" • রবীজনার বালীকির ভূমিকায় অবভীর্ণ হন। জ্যোভিরিজনাথ অভিনয়ে কোন ভূমিকা এহণ করেন ৰাই; তাহার উপর স্থীত ও ক্নসাটের ভার ছিল। "पर्नकरण्य मर्दा विषयकता बिर्मम-छिन करे श्रेष्टिमार्द्धाव অভিনৱ দেবিহা ভৃত্তি প্রকাশ করিয়াছিলেন i"+
- (৪) ২০ ডিসেম্বর ১৮৮২ (১ পৌষ ১২৮৯) ভারিবে অপ্রটিত বিধক্ষম-সমাগমে ববীক্ষমাথের 'কাল-মুবরা' অভিনীত হয়। া ববীশ্ৰমাৰ অৰ মুনি ও ব্যোভিবিজ্ঞমাৰ দশরবের ভূমিকা এহৰ করিয়াছিলেন।

बूद मखद, बहे विशव्यन-मर्यात्रम डेनलटक्ट श्रंकृत-वाकीएल क्यांकितिसमारवत 'बानवरी' श्रेकि-माष्ट्रेक। ১৮৮० मत्म **छ** 'হঠাং-নবাব' প্ৰহুসৰ ১৮৮৪ সনে অভিনীত হইয়াহিল।

সাধারণ-রঙ্গালয়ের জন্য নাটক রচনা

**ৰ্যোভিরিত্রণাথ হিন্দু যেলার সহিত ঘনির্ভাবে যুক্ত** हिल्म । (बनात नवम वरनदात (क्लाताति ১৮१৪ - क्लाताति ১৮৭৫) আত তিনি উহার "গংলিট সন্পাদক" নিযুক্ত

💌 রভেকুক রায় : "বালিকা-প্রতিভা"।—'লার্বাদর্শন,'বৈশাব ১২৮~, **जु. > जावहीका** ।

হইয়াছিলেন। হিন্দু নেলায় সংগ্ৰহে আলিয়া ভাঁহায় মনে নাটকের সাহায্যে জনচিতে দেশাপুৰোধ উদ্বুদ্ধ করিবার ইক্ষা বলবতী হয়। তিনি জীবনমৃতিতে বলিয়াছেন:--"হিন্-यगाव गव रहेए, क्यमरे चावाव वत रहेच--कि छेगार দেশের প্রতি লোকের অহুয়ার ও হবেশপ্রতি উদ্বোধিত হইভে পারে। শেবে হির করিলান, নাটকে ঐতিহাসিক ৰীৱত-গাৰা ও ভাৰতের গৌৱৰকাহিনী ভীৰ্তন করিলে, হয়ত কভকটা উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইলেও হইতে পায়ে।"

(क्वांकिविक्रमार्थित विष्ठ अथम माडैक—-'नूक्वविक्रम' ১৮१৪ সমের নবেশর মাসে প্রকাশিত হয়। विश्वप्रक 'বল্বপ্রে' ( ভাজ ১২৮১ ) ইহার স্বালোচ্না প্রস্তে লিবিয়াছিলেন :---

"লেৰক যে কুতবিদা ও নাটকের বীতি নীতি বিদ্যুত্ কানেন তাহা এছ পড়িলেই বোৰ হয়। এছবানি বীর্বসঞ্চান এবং প্রছে বীরোচিত বাকাবিদ্যাস বিভন্ন আছে বটে, কিছ अक्न शाम्बर (यम वीववाजव पश्चिम विनवा द्वार एव ।..... যাহা হউক, এইরপ কুত্বিভ এবং মার্জিভক্তি মহালয়গণ নাটক প্ৰথমধের ভার এছণ করেন, ইহা নিভাত বাঞ্নীর। ভাতা হইপে, নিভাভ পক্ষে বালালা নাটকের বর্তমান অল্লীলভা এবং কদৰ্ব্যতা পাকিবে না ।"

'পুরুবিক্তম' নাটকের অন্তর্গত সৈন্যগণের প্রভি পুরুৱাছের বীরবাদীর কয়েক পংক্তি উদ্ধুত করিতেছি :---

> थर्ठा जाता बीदनवा इंकींख घरमश्र श्राष्ट्र (यन करतरा टारामा হও সবে এক প্রাণ মাতৃত্বি কর আৰু, मक्षप्रात कवर निः त्मव ।

> এত ব্দর্মা ধ্বনের দাধীনতা ভারতের, व्यवादात्र कवित्व वद्यव । ভারা কি করেছে মধে, সম্ভ ভারভভূমে, পুরুষ নাছিক একজন ?

'বীর-যোনি এই ভূমি, यण वीरतन अमनी," मा कारम अ कवा छातः करवार यवन । पा**श्व विका अध्**ठिष्ठ (प्रश्नुक विक्रम ।

ৰংগৰ উদাৰ ভৱে. यद्र(१ (स चद्र कृद्रिः ৰিক সেই কাপুক্ষে শভ ৰিক্ ভাৱে, **भ**ठ्क (म हिरकाम मामध-षांबारत । ৰাধীৰতা বিনিষয়ে, कि रूप (म बान महरू त्व बद्ध अथम कान विक् बीन ভाৱে।

ষায় যাক প্ৰাণ যাক, খাৰীমভা বেচে থাক বেঁচে বাক্ চিরকাল দেশের গৌহব। विजय गारिक चाड. ৰোল সৰে ভলবার, ঐ শোৰ ঐ শোন বৰমের হব।

<sup>🕇</sup> त्रमेळवार : "बोरवयुण्डित राम्का"।--'विष्कात्री প्रक्रिका,' কাৰ্ত্তিক-পৌৰ ১৩৫ • ।

<sup>🛨 &#</sup>x27;रहेडेज्यान,' २१ फिरम्बन २४४२; 'स्कालिनिजन'रचेन कीवन-শ্বন্ডি,' পু, ১৬১।

'পুক্ৰিক্ৰ' ২২ আগষ্ট ১৮৭৪ ভারিবে সর্ব্ধপ্রথম বেদল বিষ্কেটারে অভিনীত হয়। পরবর্তী ৩রা অষ্টোবর ইছা এেট ভালনাল বিষ্কেটারেও অভিনীত হইয়াছিল।

স্যোতি শ্বস্ত্রশাবের দিতীয় নাটক— 'সংলাজিনী বা চিতোর আক্রমণ নাটক' ১৮৭৫ সনের মবেশ্বর বাসে প্রকাশিত হয়। ইহার অন্তর্গত রাজপুত-সলনামের চিতারোহণকালের এই বিভট্ট এক সময় সক্ষমে বিভ হুইত :—

> অল্ অল্ চিতা ! বিশুণ, বিশুণ, পরাণ সঁপিবে বিশ্বা-বালা । অল্ক অল্ক চিতার আঞ্ম, জুড়াবে এবমি প্রাণের আলা । শোন রে ব্যম !---শোন রে তোরা, যে আলা অদ্যে আলালি সবে, সাজী র'লেন ব্যবতা ভার এর প্রতিক্ল ভূমিতে হবে ।

১৫ জান্তবারি ১৮৭৬ তারিবে এেট ভাশনাল বিরেটারে স্বারোহে 'স্বোজিনী'র প্রথম অভিনয় হয়। জনপ্রিয়তা ওবে ইহা বারার ফলেও বর্ষার অভিনীত হইরাহিল।

ব্যোভিরিঞ্জনাবের চতুর্ব ও পঞ্চর নাটক—'অঞ্জনতী' (নবেছর ১৮৭৯) ও 'বশ্বমনী' (বার্চ ১৮৮২)।

প্রহুসৰ বচনাতেও তিনি সিহত্ত হিলেন। তাঁহার প্রথম প্রহু—ছাশনাল বিরেটারে অভিনীত 'কিঞ্চিং জলবোর' প্রহুলনের উল্লেখ পূর্বেই করা হইরাছে। তাঁহার হিতীর প্রহুগন—'গ্রুম কর্ম আর ক'রব না' (পরে, 'অলীক বাবু') ১৮৭৭ সন্মের জুলাই বালে প্রকাশিত হয়। তুথী প্রিয়মাধ সেনের নতে :—
'গ্রুম অপূর্বে কল্লনা হাজ-রসিকের স্কটি। সাহিত্যে ইহা বিরল। বলসাহিত্যে নাই বলিলেই হয়। জগতের সর্বন্ধের্ট হাজ-রসিক নোলিরের (Moliere) তাঁহার রচিত কোন কোন নাটকে এইরূপ হাজমরী কল্লনার অবভারণা করিরাছেন।"
('প্রিয়-পূলাঞ্ক'ল', পূ. ১৩৬)

এই প্রহসনের হুইট গান উদ্ধুত করিতেছি; ইহাতে বে ব্যাদায়কুতি আহে তাহা উপভোগ্য :---

না ভোলো বে নিশি অবসান প্রাণ।
বাশবনে ভাকে কাক, যালি কাটে পুঁইশাক,
নাবার পিঠে কাপক দিবে রক্ক বার বাগান।
বুডুবা ভ্যাবেডা আহি, ক্টে ফুল নানা ভাভি,
ভ্যাভেঞ্জারের গাভি নিরে বার গাভোৱান।

গা চালো বে, নিশি আঙৱান, বাণ।
"বেলকুল" "বেলকুল" খন হাঁকে বালি-কুল,
"বৱীক্" "বৱীক্" হৈঁকে বহক-ওলা বান।
ভাওড়া-বনে পালে পাল, ক্যাডা-হরা চাকে ভাল,
বাভাকুড়ে কিচিত্ব বিচিত্ব হুঁচোর করে গান।

হলো বেছাল বিষাও কোনে, বেংটে ইন্ন বাচ্চে বোনে, পেঁচা ভাবে আনার বাবার অতে কেন বান। পড়্ল ওড়ুব নটার ভোপ, এবনও কি বার নি কোপ, একটু-বানি বিরে হোপ্ রাব্লো আনার প্রাণ। ভোঁবোডওল নারচে উকি, গুমিরে পোলো বোকা গুঁড়ি, জীরাম বলেন হে ভানকী, ভাংবে কি ভোর নান ? বিজ বাজীকি কর, এ নান ভাংবার নর, চরণ বর হে সরামর, নইলে নাইকো আন।

للعادية الدارية المشتهدي

'এবন কর্ম আর ক'রব না' প্রথমে ঠাকুরবাড়ীডে বিহক্ষদ-সমাসম উপসক্ষেও পরে সাধারণ-রজালয়ে অভিনীত হইরা-হিল।

সাৰাৱণ-রকালরে অভিনরের তাত জ্যোভিরিজনার আর কোন নাউক রচনা করেন নাই। ইহার কারণ সহতে ভিনি স্থাতকর্বার বলিরাছেন—

"ইহার কিছু দিন পরেই [ইং ১৮৮১] সিরিপবারু যবন নাটক লিবিতে লাগিলেন, তথন আহরা ক্রমণ হটরা পভিতে লাগিলান। বেবিতে বেবিতে সিরিপবার্র অসাযাত প্রতিতা নাট্যনাহিত্যে একক্ষম অবিকার বিভার করিল। আমিও নাটক-রচনা বোগ্যভর ব্যক্তির হতে হাভিরা দিরা, সাহিত্য-সেবার অভ পহা অবলহন করিলান।"

### পরিবারে প্রভাব

স্ক্রচিসকত নাট্যএই রচনা ও সাধারণ রকালরে সেওলির অভিনর হারা জ্যোতিরিজনাথ পাঠক ও হর্ণক নহলের উপর অভাবনীর প্রভাব বিভার করিয়াহিলেন। এই সময়ে পরিবারেও উচ্চার প্রভাব বড় কম হিল না। উচ্চারই উৎসাহ-বারিসিক্ষনে ভলিনী বর্ণকুষারীর সাহিত্যসেবাকাক্ষা ভাগ্রভ ইয়াহিল। ভ্যোতিরিজনাথ জীবনস্থতিতে বলিয়াহেন:—

"আৰি সভ্যাবেলা [ বেরেছের ] সকলকে একল করিরা, ইংরাজী হইতে ভাল ভাল গল তর্জনা করিরা গুনাইতান—
ভাহারা সেগুলি বেল উপভোগ করিতেন। ইংরা আর দিন
পরেই দেবা গেল বে, আনার একট কনিঠ ভাননী জীনতী বর্ণকুমারী বেবী কতকওলি ছোট হোট গল রচনা করিয়াহেন।
ভিনি আনার নেইওলি গুনাইতেন। আনি ভাহাকে পুর
উংলাহ দিতাম। ভবনও তিনি অবিবাহিতা। বিবাহের
[১৭ নবেছর ১৮৬৭] পর তিনি 'দীপনির্জাণ' নামে একবানি
উপভান লেবেন। 'দীপনির্জাণ' প্রকাশিত হইলে, সকল
ভাগতেই ইহার বুব প্রশংসা বাহির হইরাছিল।" (পু. ১১৯)

"সরোজনী-প্রকাশের পর হইতেই [নবেছর ১৮৭৫], আবরা রবিকে প্রয়োপন দিয়া আবাদের সম-প্রেইতে উঠাইরা লইলাম: এবন হইতে সলীত ও লাহিত্যচর্ভাতে আবরা হইলাম ভিন জন—অক্সর (চৌধুরী), রবি ও আবি: পরে ভানকী বিলাভ বাইবার সমর, আবার কবিঠা তদিনী বর্ণকুষারী

আমাণের বাড়ীতে বাদ করিতে আসার, সাহিত্য-চর্চার, আমরা তাঁহাকেও আমাণের আর একক্ম বোগ্য দদীরণে পাইলার।" (পু. ১৫১)

কিশোর ববীজনাবের উপর ক্যোতিরিজনাবের প্রভাব কিরণ কল্যাণকর হইরাহিল, 'জীবনস্থতি'তে রবীজনাব নিজে ভাহার এইরণ বর্ণনা বিয়াহেন:---

"সাহিত্যের শিক্ষার, ভাবের চর্চার, বাল্যকাল হইতে জ্যোতিরাদা আমার প্রধান সহার ছিলেন। তিনি নিজে উৎসাহী এবং অন্যকে উৎসাহ দিতে তাঁহার আনক। আমি অবাবে তাঁহার সলে ভাবের ও জ্ঞানের আলোচনার প্রবৃত্ত হইভার—ভিনি বাল্য বলিরা আমাকে অবজা ক্রিভেন না।

''ভিনি আমাকে বুব-একটা বড়ো বক্ষমের সাধীনতা দিয়া-ছিলেন , তাঁহার সংপ্রবে আসার ভিতরকার সংস্থাচ বুচিয়া বিয়াহিল। এইরূপ খাবীনতা আমাকে আর কেই দিতে সাহস করিতে পারিত না--সেক্ষমা হয়তো কে**হ কেহ** ভাঁহাকে নিকাও কবিয়াছে। কিছু প্ৰথম এীছের পরে বর্ষার বেষন প্রয়োভন আমার পক্তে আবৈশব বাবানিষেবের পরে এই সাধীনতা তেমনি অভাবৈশ্বক ছিল। সে সময়ে এই বছন-মুক্তি না ধটলে চিরজীবন একটা পদুতা থাকিয়া বাইত। প্রবলপক্ষেরা সর্বালাই সাবীনতার অপব্যবহার লইয়া বৌটা দিয়া বাৰীনভাকে বৰ্জা করিতে চেষ্টা করিয়া পাকে. কিছ খাৰীমভার অপব্যয় করিবার যদি অধিকার না গাকে ভবে ভাষাকে স্বাধীনভাই বলা যায় না। অপবাংয়ের ছায়াই সদব্যবের যে শিকা হয় ভাহাই বাঁট শিকা। অভত, আমি একখা ভোৱ করিয়া ধলিতে পারি-সাবীমভার বারা যেট্র উংপাত ঘটরাছে ভাষাতে আমাকে উৎপাত-নিবারণের পছাতেই পৌছাইয়া शिवादए। भागत्मत वावा, शैकत्मत वावा, कानम्मा अवर कारन मध (पश्चाव पावा, जामारक यांचा कि দেওয়া হইয়াছে ভাহা আমি কিছুই গ্রহণ করি নাই। বতকণ আমি আগনার মধ্যে আগনি হাড়া না পাইয়াছি তভক্ষ নিক্ল বেছবা ছাড়া আর-কিছই আমি লাভ করিতে পারি নাই। জ্যোতিদালাই সম্পূৰ্ণ নিঃসংখাচে সমস্ত ভাল্যকর মধ্য দিয়া चाबाटक चाबात चारबाशनवित क्यांक चाकित विदारवन. अवर ভবন হইতেই আনার আপন শক্তি নিজের কাঁচী ও নিজের কুল বিকাশ করিবার জন্ন প্রস্তুত ক্ইতে পারিয়াছে। আযার এই অভিন্নতা হইতে আমি বে-শিকালাভ করিয়াছি ভাহাতে মনকেও আমি তত তম করি না ভাগো করিয়া ভূপিবার ष्ट्रेणज्ञवरक वल बढाहे---वन्दिमिक अवर बाह्रेटेमिक शामिक পুলিদের পারে আমি গড় করি--ইবাতে বে-দালভের ভাই করে তাহার মত বালাই জগতে আর কিছই নাই।

"এক নৰ্যে পিৱানো বাজাইবা জ্যোতিদাদা দ্তন দ্তম দ্তম দ্ব হৈ বি করার নাতিরাহিলেন। প্রত্যুই তাঁহার অনুদিন্ত্রের সকে সকে প্রবর্গ হইতে থাকিত। আনি এবং অক্তর-বাবু তাঁহার সেই সভোজাত প্রথলিকে কথা দিরা বাঁবিরা রাবিবার কেটার দিক্ত হিলাব। গান বাঁবিবার শিকাববিনি এইরণে আবার আরম্ভ হইরাহিল।" (পু.৮০-৮১)

'ভারতী' প্রকাশ

'ভারভী' পরিকার নাম সাহিত্য-সংসারে সুবিবিত।
ভ্যোতিরিজনাবই ইহার সরল্পতি। ও প্রতিঠাতা, একবা হরত
অনেকের জানা না-বাকিতে পারে। বভিনচক্রের 'বক্দর্শনে'র
ভার একবানি সাহিত্য-বিষয়ক বাসিক পরিকা প্রকাশের কলনা
নাবার উদর হইবা মাত্র তিনি রবীজনাব ও বছু অক্ষচজ্ল
চৌধুরীর সহিত পরামর্শ করিয়া অপ্রজের শ্রণাপর হন।
বিজ্ঞেনাব শেব-পর্যাও এই প্রভাবে স্বৃত্তি দিয়াহিলেন;
তিনিই পরিকার নামকরণ করেন—'ভারফী'। ভাঁহার স্থিত-কবার প্রকাশ :—

"জ্যোতির বোঁক হইল, একথানা নুতন মানিক-পত্র বাহির করিতে হইবে। আমার কিছ ততটা ইছা ছিল না। আমার ইছা ছিল, 'তত্ববোৰিনী পত্রিকা'কে ভাল করিরা ছাঁকাইয়া ভোলা যাক। কিছ জ্যোতির চেষ্টায় 'ভারতী' প্রকাশিত হইল। বহিমের 'বল্লফর্নম'র মত একথানা কাগক করিতে হইবে, এই ছিল স্যোতির ইক্ষা। আমাকে সম্পাদক হইতে বলিল; আমি আপত্তি করিগাম না। আমি কিছ ঐ নামটুকু দিয়াই থালাস। কাগক্ষের সমন্ত ভার জ্যোতির উপর পঢ়িল। আমি দার্শনিক প্রবন্ধ লিবিতাম।" ('পুরাতন প্রসন্ধা, ২র প্র্যার, পু. ২০৫)

'ভারতী'র ১ম সংখ্যা প্রকাশিত হয়—১২৮৪ সালের প্রার্থ (১৮৭৭, জুলাই) মাসে। জ্যোতিরিপ্রদাশ তাঁহার স্বৃতিক্থার বলিরাহেন—

"ভারতী-প্রকাশ হইতেই আমাদের আর একজন বন্ধুলাভ হইল। ইনি কবিবর প্রীয়ক্ত বিহারিলাল চক্রবর্তী। আনে তিনি বন্ধদাদার কাছে কবন কবনও আসিতেন, কিন্ধ আনার ললে তেমন আলাপ ছিল না। এবন 'ভারতী'র জন্য লেবা আদার করিবার জন্ম আমরা প্রারই তাঁহার বাড়ী যাইতাম এবং এই ছত্তে তিনিও আমাদের বাঙী আরও খন খন আসিতে লালিলেন। আমাদের বাঙী যবনই আসিতেন, তবনই তিনি আমাকে বেহালা বাজাইতে বলিতেন। আমি বাজাইতাম, আর তিনি তম্ম হইরা শুনিতেন।

"ভারতীর প্রথম বর্ষে 'সম্পাদকের বৈঠকে' 'সঞ্জিকা' নামে একটা বিভাগ ছিল। তাছাতে কেবল ব্যঙ্গকৌভুকের ক্ষাই থাকিত। এই তাগে বড়দাধাই প্রায় সব লিবিতেন। আমি ''উনবিংশ শতাধীর রামায়ণ বা রামিয়াড়" নামে কেবল একটা নক্ষা লিবিয়াছিলাম মাত্র। আমি তথন অনেক বিষয়েই লিবিতাম। প্রথম বর্ষের 'ভারতী'তে রবি ও অক্ষয়ের লেবাই কৌবিতাম। প্রথম বর্ষের 'ভারতী'তে রবি ও অক্ষয়ের লেবাই কৌবিতাম। প্রথম বর্ষের 'ভারতী'তে রবি ও অক্ষয়ের লেবাই কৌবিতাম বাহির হয়। অক্ষয় তথন বছণাহিত্যের সমালোচনা ও কবিতা প্রথম বাহির হয়। অক্ষয় তথন বছণাহিত্যের সমালোচনা ও অধ্যয়-ভাবের ক্ষম বিশ্লেষণ করিয়া এক একট প্রথম লিবিতেম, বেমম 'মান ও অভিযামে কি প্রত্যোদি। লোকের এসব তথন ধূবই ভাল লাগিত। ভারতীয় হিতীর বর্ষ হইতে, উমতী ফর্নম্মারী দেবীয় রচনায় গঞ্জিকার পূঠা পূর্ণ হুইতে আরম্ভ করিল।"

ক্যোভিরিজনাথের বধ স্থলিখিত রচনা ভারতী'র পূঠা অলহত করিয়াহিল।

## রবীন্দ্র-সংলাপকণিকা

## ঞ্জীবিধুশেশর ভট্টাচার্য

# সরস্বতীর ভূলি

শুক্রদেবের সহিত আলাপ-সালাপ হইতেছে। আর কেহ সেধানে ছিলেন কি না মনে হইতেছে না। প্রশ্ন করিলাম, 'শুক্রদেব, আপনি ছবি আঁকাটা কীক্রণে শিধিলেন, আর এত বয়সে ?'

ভিনি উভর করিলেন, 'ভছন। সরস্থতী প্রথমে আমাকে নিজের লেখনীটিই দয়া করিয়া দিয়াছিলেন। কিছু দীর্ঘকাল বাইবার পর ভাবিলেন, না, কাজটা সম্পূর্ণ হয় নি, সম্পূর্ণ করিতে হইবে। এই ভাবিয়া ভিনি নিজের ভালিকাটিকেও আমাকে প্রদান করিলেন।'

প্রশ্নকর্তা উত্তর পাইরা চমৎকৃত হইলেন, বলাই বাহলা।

### ৰ ব্ৰহ্মবিহার

ত্র ম বি হা ব শশ্টি আমার বড় প্রিয়। আমার কলিকাভার বাড়ীধানির এই নামই দিয়াছি। নামকরণের সময় এই শশ্টাই বার বার আমার মনে আসে, কিন্তু ইহা গ্রহণ করিতে বিশেষ বাধা অন্তত্ত্ব করিতেছিলাম। আমার ছেলের নাম ক্রম্মত্ত্রত্ব। ভাহার নামের সঙ্গে যোগ রাধিয়া বাড়ীর নাম করিতে একটুও মন অগ্রসর হইতেছিল না। পরে কলিকাভা-বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যাণক স্থন্ত্বর স্থনীতিবার্ব পরামর্শে ঐ নামটাই গ্রহণ করি। লোকের মধ্যে কেহ ভাবিলেন আমাকে রাম্ম, কেহ ভাবিলেন বৌদ্ধ, কেহ বা আর কিছু। কলিকাভা-বিশ্ববিদ্যালয়ে আমার সহযোগীদের মধ্যে কেহ-কেহ ঠাটা করিয়া আমার সংশ্বে মস্বব্য করিতেন,

"By dress he is a Brahmin, by religion a Brahmo, by education a European, and by culture a Buddhist."

শেবের কথাটির মৃলে বাড়ীর ঐ নামটারও বোগ থাকিতে পারে। বাই হোক, আমার হৃদরের কথাটি একখানি প্রস্তর্কলকে একটি চতুর্দর পদ্মের মধ্যে পাঁচটি শব্দ লিখিয়া আমার শ্রহের বন্ধু শ্রীষ্ঠ্ত নন্দলালবার তাহা প্রকাশ করিয়া দিয়াছেন। তিনি আমার অন্থরোধে পদ্মের ক্রিকায় অন্ধবিহার মার তাহার চারিটিদকে চারিটি দলে বৈত্রী, করুণা, মৃদিতা ও উপেকা এই চারিটি শব্দ লিখিয়া দিয়াছেন। এই কর্মটি শব্দের শুভি গভীর, শুভি পবিত্র, ও শ্রভি উচ্চ ভার আমাদের ভক্তিশাল, কৈন্দাল ও

বিশেষত বৌদ্ধান্তে স্থাসিদ। মৈত্রী, করুণা, মৃদিতা ক উপেকা এই কয়টির ভাবনাই হইল ব্রদ্ধবিহার, কেননা ইহাই হইল মনের শ্রেষ্ঠ অবস্থা। বৌদ্ধান্তে এধানে ব্রদ্ধ শব্দের অর্থ শ্রেষ্ঠ বা আর্থ।

শুরুদের নিজের সাধনা-নামক ইংরেজী পুস্তকেই ব্রহ্ম-বিহার সম্বন্ধে এইরূপ লিধিয়াছিলেন—

"Buddha, who developed the practical side of the teaching of Upanishads, preached the same message when he said, With every thing, whether it is above or below, remote or near, visible or invisible thou shalt preserve a relation of unlimited love without any animosity or without a desire to kill. To live in such a consciousness while standing or walking, sitting or lying down till you are askep, is Brahma vihara, or in other words, is living and moving and having your joy in the spirit of Brahma.

শুক্ষণেবের এই বিবরণ বৌদ্ধশান্তের অন্থগত নহে। বৌদ্ধশান্তে বিবরী শ্রীমতী রীস ডেভিডস্ (Mrs. Rhys
Davids) ইহা এক স্থানে উল্লেখ করেন। স্থামি ইহা
দেখিতে পাইয়া শুক্ষদেবকে জানাই। ডিনি একটু হাসিয়া
বলিলেন, 'নিজের নিজের মৃক্তি, তর্ক ও আলোক অনুসারে
অনেকেই অনেক ব্যাখ্যা করিতে পারেন। একটিমাত্র বিশেব কোন ব্যাখ্যা গ্রহণ করিতে হাইবে, ভাহা নহে।'

উপনিষ্ণেরও অর্থ সম্বন্ধে স্থানে-স্থানে গুরুদেবের অর্থের সঙ্গে প্রচলিত অর্থের অনৈক্য দেখা বাইড, এবং সেধানেও ভাঁহার ঐ কথা ছিল।

১। বাবের (J. Rahder) লাজের বৌদ্ধশাল বুরিবার অনুকৃতে নুনপক্ষে অন্তত সংঘৃত, চীনা, তিবতা, বলোলীর ও ফরাসী ভাগা লাবেন। কিন্তু ব্রহ্মবিহার শক্ষের ভিনি অর্থ করিয়াছেন 'hall of Brahma'!

২ 1 Macmillan & Co. Ltd. 1913, pp. 17-18.
ভরবেষ একথানি এই বই নিজে আমাকে বিয়াছিলেন, উহাতে
লিখিয়াছিলেন,

### "শ্রীৰুক্ত বিধুশেষর পাত্রী প্রিয়করকবলেবু শ্রীরবীক্রনাথ ঠাকুর"

ভরণেৰ তথনো শ্রী বর্জন করেব নি। জাহার নামের পূর্বে অবধাভাবে শ্রীর লোপ কেথিয়া আমি ভরণেবকে বলিয়াহিলাম বে, তিনি
নিজে নিজের নামের পূর্বে শ্রী না লিখিতে পারেন, কিন্তু আন্তে লিখিলে
তাহার তো আপন্তির কোন করেপ নাই। ভরণেব আবার কথা বীকার
করিয়াহিলেন। বর্গার রাবানক্ষাবৃত ইহা বীকার করিয়া পরে তাহার
নামের পূর্বে শ্রী বোর করিভেন। ভাহার বে রচনাবলী প্রকাশ করা
হুইভেছে তাহাতে ভাহার নামের পূর্বে ভাহার জীবক্ষণাভেও শ্রী বর্জন
কি টক-হুইয়াকে?

v

### "আত্মন্যপ্রতায়ং চেডঃ"

শুক্রদেবের ইংরেজী বিদ্যার কথা ভোলা আমার পক্ষে কেবল পাগলামি নয়, মহাপাগলামি। ভথাপি বাহিরের দিক হইতে একটু ভূলিভেচি।

আমি যখন কাশী হইতে প্রথমে শান্তিনিকেডনে আসি. সে গভ ১৬১১ সালে মাঘ মাসের কথা, ভধন ভাঁহার গ্রন্থশালাটি বর্তমান গ্রন্থশালার নীচের ভালায় মধ্যেকার কুঠবিতে আবদ। চারি দিকে আলমারীর মধ্যে মাঝ-খানে একখানি সভরঞ্চি বিছান থাকিত। ইহার আরম্ভ হয় একদিকে আদি ব্রাহ্মসমাব্দের সংষ্কৃত বই দিগ चात जनत मिक्क अकरमरवत निस्मत हेश्तको वहे দিয়া। সংষ্ঠত বইগুলির মধ্যে ছাপান পুশুক ও পুঁথি पृष्ठिक । भूषिश्वनित्र याथा दिक्तिक भूखक वातक हिन, এবং এগুলিকে বেশ যত্নেরই সহিত বন্ধা করা হইয়াছিল। সত্য কথা বলিতে কি সংস্কৃত পুলির উপরে সেই সময়ে আমার টান ছিল না। ঐ সময়ে সাহিত্য পরিষদ হইতে স্বৰ্গীয় বামেন্দ্ৰস্থন্দৰ ত্ৰিবেদী মহাশয় সংস্কৃত ও বাংলা পুঁ থি সংগ্রহ করিডেছিলেন। শত পথ বান্ধ ণের বছাত-বাদের সম্পর্কে তাঁহার সহিত আমার ঘনিষ্ঠ পরিচয় হয়। তিনি গুরুদেবকে বলিয়া আমার নিকটে সংস্কৃত পুঁথিগুলি চাহিয়া বসিলেন। বলিয়াছি তথন উহাতে আমার টান ছিল না, উহার গুরুত্বও আমি তখন বুঝি নি, তাই আমি কোন আপত্তি না করার, পরিষৎকে পুঁপিগুলি দেওয়াই শুক্রদেব স্থির করিলেন। জীযুক্ত রামক্মল বাবু আসিয়া পরিষদে ভাহা লইয়া গেলেন। আমার বাড়ী হইতেও কতক পুঁথি আমি পরিবদে দিয়াছিলাম। পরে যথন আমি পুঁথির গৌরব বুঝিলাম, তখন এই কার্বের অন্ত অভ্যন্ত অমুভপ্ত হইয়াছিলাম। আবার পুঁথি সংগ্রহের অস্ত্র উভোগ আরম্ভ করিলাম।

ঐ সময়ে আমি দক্ষিণ-ভারতের ত্রিবেক্সামের পণ্ডিত প্রীযুক্ত অনস্কর্মণ শাস্ত্রী মহাশরের সন্ধান পাই। ইনি কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের ভূতপূর্ব অধ্যাপক মহামহোপাধ্যায় পণ্ডিত প্রীযুক্ত অনস্কর্মণ শাস্ত্রী হইতে ভির। পূঁথি সংগ্রহে জাহার ক্যায় দক্ষ অন্ত কোন ব্যক্তির নাম এধনো আমি আনি না। তিনি বড়োদা, আদিয়ার, পঞ্জার বিশ্ববিদ্যালয় প্রভৃতিতে বহু সংখ্যক গ্রন্থ সংগ্রহ করিয়া দিয়াছেন। তিনি বলিতেন, পূঁথিগুলি হইতেছে জাতীয় সম্পত্তি, ইহাতে কাহারো ব্যক্তিগত কম্ব নাই। বে রক্মে হউক, এ সব সংগ্রহ করিয়া স্থাক্ষত করিতে হইবে। ভাই বদি কথন ইহাদের সংগ্রহে ভেমন কোন অসাধু উপায়ও অবলম্বন করিতে হইত ইনি ভাহাও করিতেন।

কীরণে পুঁথি সংগ্রহ করিলেন প্রশ্ন কবিলে ডিনি বলিডেন, 'ও কথা জিজাসা করিবেন না, আমি গ্রহণ করন।' ডিনি ছিলেন বানপ্রস্থ। কিছদিন শান্তিনিকেতনে সন্ত্ৰীক ছিলেন। তিনি বেতন গ্রহণ করিডেন না, কেবল পাথেয় ও সাধারণ আহারের ব্যয় সইডেন এবং পাই-পয়দা ক্ৰিয়া ভাহাৰ হিদাৰ দিভেন। পুঁথি সংগ্রহের জম্ম ভিনি গ্রামে-গ্রামে সন্ত্রীক ষাইভেন। কোন বাড়ীর ভিতরে নিজে যাইভে না পারিলে, স্বীকে সেধানে পাঠাইভেন, এবং ইনিই পুঁথি বাহির করিতেন। শান্তিনিকেডনের সন্ধিহিত অনেক গ্রাম হইতে তিনি এইরূপে পুঁধি সংগ্রহ করিরাছিলেন, আমরা বেধানে কিছুই করিতে পারি নি। সংগৃহীত পু'বিগুলিকে ঠিক-ঠাক করিয়া বন্ধারও ব্যবস্থার ইনি খাটিভেন। কোন কোন পুঁথির পাডাগুলিকে হুতা দিয়া গাঁথিয়া রাখা হয়। অনেক সময়ে এই সব স্থতা ছি ডিয়া থাকিত। গ্রন্থশালায় তিনি নিজের স্থীর সহিত বদিয়া আবার ঐ সব পুঁধির পাতার হতা লাগাইতেন। কী করিতেছেন প্রশ্ন করিলে বলিতেন 'এদের thread ceremony ( অর্থাৎ পৈতা ) হইতেছে। ইনি ইংরেজীতে কথা বলিতেন। ইনি ছিলেন নিষ্ঠাবান শৈব, কিন্তু উদার মতের। পরে ইনি ইউরোপে নরওয়ে পর্যন্ত ষ্ডদূর সম্ভব নিয়মনিষ্ঠা বক্ষা করিয়াই ভ্রমণ করিয়া আসিয়াছেন। আমাকে ঐ সময়ে লিখিয়াছিলেন, তীর্থ পর্যটনে মেরুবাত্রা করিভেছেন। নরওয়ে হইভে ফিরিবার সময় তিনি তুরুত্ব ইইয়া বিমানপথে আসিয়া-চিলেন।

কথার কথার দ্বে আসিয়া পড়িয়াছি। পূর্ব স্থানেই বাই। পূঁথির প্রয়োজনের কথার গুরুদেবকে প্রীয়ক্ত অনম্ভ শান্তীর কথা বলাভেই ভিনি রাজি হইলেন। দক্ষিণ-ভারতে "হিন্দু" প্রভৃতি স্থপ্রসিদ্ধ পত্রে গুরুদেবের নামে পূঁথির জন্ম আবেদন প্রকাশিত হইল। আর অনম্ভ শান্তী প্রথণে নির্গত হইলেন। আর সময়ের মধ্যে তিনি প্রায় আড়াই হাজার সংস্কৃত পূঁথি সংগ্রহ করিয়া ফেলিলেন। ইহাদের অধিকাংশই ছিল গ্রহ-অকরে। এই অক্ষর দক্ষিণ-ভারতে চলে, উদীচ্যদের নিকটে ইহা সহজে আয়ন্ত হয় না। এ জন্ম এক জন দক্ষিণী পণ্ডিভকে নিযুক্ত করা হয়। ইনি হইভেছেন পণ্ডিত প্রনিটেশ আয়া স্থামী। ইনি শান্তিনিকেজনে আসিয়া ও চীনা-ভিক্তী শিধিয়া নিজেকে নানারূপে বোগ্য করিয়া ত্লিয়াছেন। ইনি এখন সেধানকার চীনাভবনের অন্তক্তম অধ্যাপক।

পুথিগুলি হইডেছে খাতীয় সম্পত্তি। জনস্ক শাস্ত্রীর এই কথাটি মনে রাধিয়া বিশ্বভারতী বেন এই সংগৃহীত পুথিগুলি স্থয়ক্ষিত বাধেন।

শান্তিনিকেতনের প্রথমাবস্থার গ্রন্থশালার কথা বলিডে-চিলাম, ইহার ভখনকার সংস্কৃত বিভাগটি বেরুপে হয় বলিয়াছি. এবং ইছাও উল্লেখ করিয়াছি বে, গ্রন্থালার **সংশ্বত ভিন্ন অপর অংশ শুরুদেবের নিজেরই পুত্তকসমূহ** দিয়া আরম্ভ করা হয়। এই সংগ্রহের মধ্যে সাহিত্য ও ইভিহান প্রভৃতি সম্বন্ধে প্রচুর ইংরেমী পুস্তক ছিল। বলা वाह्ना, এই পুতৰগুলি কেবল আলমারী সালাইবার জন্ত কেনা হয় নি। শান্তিনিকেডনের তথন সে সম্ভ কেনা হয় প্রয়োজন অন্থুসারে। সমস্ত পুস্তকই শুক্লদেব কিনিয়া-**हिल्म । इंशापित यार्था चिक वर्शायाम मर्थाक चक्राप्रत्य** পরিবারের মধ্যে কাছারো কাছারো হইতে পারে। আমি यथन भासिनित्कल्यन दारे, विश्विष्ठ शारे, सामात न्लाहे যনে খাছে, পুত্তকবিক্ষেতা খ্যাকার, স্পিম্ব এও কোম্পানি, নিয়ম্মত প্ৰতি সপ্তাহে একধানি করিয়া ইংরেজী পুস্তক ভাবে প্রস্কারের নামে পাঠাইভেন। এইরপ করিবার এই উদ্দেশ্ত ছিল, বে, এক সপ্তাহের মধ্যে আগভ বইখানি ভাহার পড়া হইয়া ঘাইভই। এইরপে বহু পুত্তক সংগৃহীভ হইয়াছিল।

আর কিছু নয়, বদি এইমাত্র জানা বায় বে, কেই সেই বিপুল ইংরেজী গ্রহবাশি অন্তরাগের সহিত অধ্যয়ন করিয়াছেন, তবে ভাহাডেই বেশ বুঝিতে পারা বায় বে, ঐ ব্যক্তির ইংরেজী জান আছে কি না, এবং ভাহা কীরূপ।

ইংরেশী গীতাঞ্জলি বাহির হইয়াছে। গুরুদেব নোবেল পুরস্কার পাইয়াছেন। ইহার বহু দিন পরে এক দিন উাহার কাছে বসিয়া আছি। আর কেছ দেখানে ছিলেন, মনে হইছেছে না। উাহার ইংরেলী লেখা সম্বন্ধে কথা উঠিল। উাহার ইংরেলী গীতাঞ্জলি যে, তাঁহার নিব্দের লেখা, আমাদের দেশে অনেকে ভাহা বিশ্বাস করিভেন না। ইহাদের মধ্যে কেছ কেছ বলিভেন, গুরুদেব এণ্ড জ সাহেবকে দিয়া উহা লেখাইয়া লইয়াছেন। ইহা উল্লেখ করিয়া গুরুদেব বলিলেন 'বদি ভাহাই হয় ভবে এণ্ড জ নিজের নামে উহা প্রকাশ করিলেন না কেন ৮ ভিনিপ্ত ভো, নোবেল পুরুদ্ধার পাইতে পারেন, লইভেছেন না কেন ৮'

কীরণে নোবেল পুরস্কার পাওয়া যায়, ইহার ক্ষম কোষায়, কেমন উজ্ঞোপ-আয়োজন, চেটা-চরিত্র করিতে হয়, এইরপ প্রশ্ন করিয়া কত লোকে তাঁহাকে কড বক্ষ চিটিপত্র লিখিয়া বিশ্বক্ত করে, শুক্তবের ভাহার কিছু বিবরণ বিশ্বাছিলেন।

আমি প্রশ্ন করিলাম 'আছা, শুক্লেব, আপনি ডো এখন ইংরেকী লিখিডেছেন, আগে লিখিডেন না কেন গু

ভিনি বলিলেন, 'আমি কি আনিভাম বে, আমি

ইংরেজী নিথিতে পারি ? প্রয়োজন হইলে, জজিড ওপ্রতিকে ধরিয়া ইংরেজীতে চিঠিপত্র লেথাইয়া লইভাম। ভার পর, এক দিন পূঞার ছুটির পর শিলাইদহে আমার নৌকার মধ্যে আছি। পাশেই দোরাভ, কলম, কারজ ছিল। তুলিয়া লইয়া কারজধানায় জনির্দিষ্ট ভাবে একট্ একথা-সেকথা নিথিতে আরম্ভ করিলাম। ভাই-একটা করিয়া ইংরেজী কথাও নিথিয়া কেনিলাম। ভার পর দেখিলাম, ধীরে ধীরে একট্ করিয়া ইংরেজী কথাও কলমে আসিতেছে। ক্রমশং দেখিলাম আমি এক-আঘট্ ইংরেজী নিথিতে পারি। আমি সেই দিকে মন দিলাম। ভাহার ফলে পীভাঞ্জনির ইংরেজী হইল। প্রথমত ইহা কাহাকেও দেখাইতে জভান্ত সকলে হইত। পরে ভালা কাটিয়া গেল।

### বাঙলা ও সংস্কৃত

যথনকার কথা বলিতেছি তথন শান্তিনিকেতনে কলেজ খোলা হয় নি। সংস্কৃত ও বাঙলা স্যাটি কুলেশন প্ৰয় পড়ান হইছ। কয়েকজন শিক্ষক বাঙ্লা পড়াইতেন। কিছ ইহারা কেছই সংস্কৃত জানিতেন না। ইহাদের পড়ান দেখিয়া গুরুদেবের দৃঢ় ধারণা হয় যে, কিছু সংস্কৃত না জানিলে বাঙ্গা ভাল করিয়া জানা হয় না, বানান ঠিক হয় না, আবশ্রকমত নৃতন নৃতন শব্দও উদ্ভাবন করিতে পার। যায় না। ভিনি নিয়ম করিলেন, যাহারা এখানে (শান্তিনিকেডনে) বাঙ্গা পড়াইবেন, তাঁহাদিগকে সংস্কৃত পড়িতেই হইবে। অমুধা এথানে তাঁহাদের স্থান হইবে না। গুৰুদেৰ আমাকে ডাকিয়া ইহাদের সংস্কৃত পড়ার ব্যবস্থা করিতে বলিলেন। আমি অবিলম্থেই মূলকরপুর হইতে পণ্ডিত শ্রীযুক্ত কপিলেশর মিশ্র মহাশয়কে আনাইয়। এই কার্বে নিযুক্ত করিলাম। বিভাভবনেও ইহার কাজ किंग। देनि भाषिनि-वााकदार वित्यव वार्भन किरमन। वाक्ष नार निक्कापद शास्त्र नपूरकोम्बी त्वथा त्वन । हेहा ইক্ষায় ভো কথনো নহে, বহং তীত্র অনিক্ষা সম্বেও। ইহা না পড়িয়া উচ্চাদের উপায় চিল না। প্রস্লাদের এ বিষয়ে এডই কড়া নম্বর রাধিয়াছিলেন। এক দিন এক জন শিক্ষক ( নগেনবাৰু ) এ বিষয়ে অবলা করায় ওক্ষেব ভাঁছাকে ভীত্র ভৎ সনা করিয়াছিলেন।

<sup>&</sup>gt; ইয়েরতী অধ্যাপক পর্যার অভিভত্নার চক্রবতী।

২ ইহাদের বধ্যে ছুই জনের নার পাই বনে আছে, প্লানীবোহনবারু (বোব) আর নঙ্গেনবারু (আইচ)। ইহাদে বধন আনি ব্যাখ্যা করিব। বুবাইর। বিই বে, ইহার উপাধি আ ই চ শক্ষট সম্ভেড আ দি ভা (> প্রান্থত আ ই চচ) হইতে। বেংন বলোরে ছিলেন প্র ভা পা দি ভা, ভবন ভিনি আবার প্রতি বঢ় খুনী হইয়াছিলেন।

এই প্রসঙ্গে পণ্ডিত কণিলেশর মিপ্রজির একটা কথা বলা বাইতে পারে। শুকুদেবের বিশেব ইচ্ছা ও লক্ষ্য ছিল বে, আপ্রমের প্রভারতী শিক্ষক বেন কিছু-না-কিছু শিক্ষা বা আলোচনা করিয়া নিজেকে বোগাতর করিয়া ভোলেন। মিপ্রজি বিভারতনে তুই-একটি ছাত্রকে পাণিনি পড়াইতেন, তা চাড়া আমি তাঁহাকে একটা বিশেব কাক্ষে করিয়াছিলাম। বাাসের বেদান্তদর্শন বা ব্রশ্বস্থ্র স্থাসিছ। ইহার প্রাচীন বহু ভান্ত আছে। এই সকল ভান্ত আলোচনা করিলে দেখা বার বে, সকল ভান্তেই

একরশ পাঠপৃহীত হর নাই। তা ছাড়া, কোখাও পূর্ব ক্ষেত্রের শেষ শক্ষাটি পরবর্তী ক্ষ্রের প্রথমে, কোখাও ছুইটি ক্ষরের একটি করিয়া, বা কোখার একটি ক্ষরেক ছুইটি করিয়া পাঠ করা হইয়ছে। এইরূপ বছ অনৈক্য এই ভাব্যগুলিতে দেখা যায়। মিশ্রাজি আমার পরামর্শে এই সমত্ত অনৈক্য প্রথশন করিয়া ব্রহ্মক্ষরের একটি নৃতন সংক্ষরণ করেন। ইছা বিশ্বভারতী হইডে প্রকাশিত হইয়ছে। কিন্তু ছুংখের সহিত বলিতে হইবে, বিভাভবনের প্রকাশনগুলির প্রচারের দিকে বিশ্বভারতী-কর্তৃপক্ষের লক্ষ্য প্রথম হইতেই কম।

# অথগু ভারত অথবা খণ্ডিত ভারতের রাষ্ট্রভাষা

### ঐবেবতীর#ন সিংহ

বাংলা রাষ্ট্রভাষা প্রচার সবিভি হত্তে ওরার্ডাছিভ রাষ্ট্রভাষা প্রচার সমিভির প্রাহেশিক শার্বা। মূল এবং প্রাহেশিক, ছুইট স্মিভির সংস্থ ব্যৱভাবে সংগ্রিষ্ট থাকার রাইভাবা সন্দৰিত সমভাসমূহের সমাধানে ব্ৰাসাধ্য প্ৰবৃত্ত হছি। মহাত্মা नाची, चराक जैमहादादन चंडलहान बदर चांहार्या कारनन-কার---এঁবা প্রভাবেই বাইভাবা প্রচার স্বিভিত্ন প্রভিত্ন-कान (बरकरे वृत नविভिन्न भवाविकाती स्टब चानविराम। इरे वरनव र'न बराचाची बदर चनारवादा बद निरुष्ठ नरविष्ठे ৰাকা স্বীচীৰ মধে ৰা করে হিৰুত্বানী প্ৰচার স্বিভি कारबन करवन । महाश्राको बाह्रकांचा नवरक छात्र वक दश्रान क्लाम अवर अरे चण्यिक श्रकान करतम (व, विची-छर्न, ब्रेड्डिटे बाङ्केणाया चाव व्यवसानबी-कार्नी इटेडे निनिद बाङ्केनिनि। बरे जाया (बरक जरफ़ड, जावबी बबर कार्जी नव वाह हिस्क হবে। অভএব প্রভ্যেক খেশপ্রেমিক ভারতীয়কে উপরোক্ত ছইট ভাষা ও ছইট লিপিই পিৰতে বা ভাষত ক্ষতে रत: (क्यमा जांबर्फ बहे हरेड़े जांबा थ निनिह नर्साविक প্রচলিত, কাকেই ছুইটর সংমিশ্রণে প্রস্তুত রাইভাষা প্রষ্ট করা হবে। ভিনি ছইটকে গলা-বহুনার উপবা বিৱে লপকছলে काया-नवरकीय केरबन करविद्यान ७ कायाव विदन्ते एहे क्वरण हारावित्वन । क्वि वर्षक्रम नवरणी चाक वृक्षेत्राव्य २व मा । जत्र जायां-नववजी रवट्या चवःननिमा रृद्ध धवारिक

পাতিহান শৃষ্ট হওবাৰ আৰু বহি হিমুহান এই ভিডির উপর হিন্দীকে হাইভাবা বংশ চাহিতে আরভ করে—বে পাতিহান উর্ফ্ কারেন করতে (চঠা করবে—তবে ভাবের নেই চাওরাকে অভার বলা বার বা। ভারণ উর্ফ্ পাতিহানের রাইভাবা করবার প্রবাদ ইভিন্ধাই ক্লম্বরে বিরেছে। উভ

শীতির অসুসরণ ইতিমধ্যেই সিদ্ধু বিশ্ববিভালতে আরভ ক্ষে গেছে, বাংলা ভাষারও ভাষ প্রভাব বিভারলাভ করতে স্থক হৰেছে। অবঙ বাংলা হাইভাষা প্ৰচার সমিভি এই স্থীৰ্ণ মনোবৃত্তি নিৱে হিন্দীকে বাইভাষা বলে যেনে নিভে যাখী নন। বে বে কারণে গোড়া বেকেই কেট কেট হিন্দীকে बाईकाबाद शरिवक करवाद करना बाहादकारी हानारकन সেওলো একে একে উদ্ধেৰ করা হচ্ছে। প্ৰথম পঞ্চৰাল ভো ৰজীৰ বৃক্তিপ্ৰমাণ বারা এইটাই বেশী করে প্ৰমাণ করতে क्टाबरणन त्व, वेर्च, बूजनवानरमव चाव विकी विकृत्यत बाद्वे-ভাষা হথবা উচিত। আগলে কিন্তু তা বোটেই নয়। এর বারা হুই সন্মধারের বিভেদকেই স্পষ্টভাবে স্বীকার করে **ৰেওরা হরেছে, যদিও বৃধে ভারভের অবভারে লোহাই** বেওবা হচ্ছে। পাকিহানে উৰ্ব্ বাইভাষা করার প্রতিক্রিরার करन जावजीय रेडेनियरमय बाद्वेजाया दिन्ती एउवा जनियादा बाब करा पून श्रव । बहर बड़ी वना प्रातीकिक श्रव वा व এই মতবাদের প্রচারকণণ গোড়ার বে মীতি অভুসরণ করেছিলেন আৰু আবার ভার পরিবর্তমের সভাবনা খেবভে शास्त्र । अत शिवत्य त्राहरू चन्त्रप्तिका चयना चक्राकृत्रवय বার কলে সমস্ত ভারত রাইভাষা-সমস্তা নিরে বিত্রত হরে উঠেছে, ফলে বিভিন্ন ৰভবাদের শিক্ত প্রভাতে ভুষোগ भारतार । जानारमञ्ज नर्क नत्तर वर्गम (परक हरेकेव क्षक्रमान्य প্ৰয়াগ খুকু হয়েছে ভবন খেকে এই ভাষাগত সাল্ল-शांतिक विरक्षाय एक्के स्रवाद अवर अवे ब्रावावृद्धिक श्रास्त्र CARE LEGAL अर मृत्म क्षेत्र (पर्क्र क्षेत्रकार्य नाच्चनाविक्षात वान वटा त्रांट बदर चारनाव-वक् कवनाव প্রবাসও বার্থভার পর্ব্যবস্তি হয়েছে। আক্ষাল বোন্যভার রুব। বে বোণ্য লে উপরুক্ত ছাল অবিকার করবেই। অবর্ঞ

পুঠপোষক পেলে কর সমরে সকলকাম হওৱা-যার, নছুবা বেরি হয়।

আর একট কথা, তাবা কেট কোন দিন গড়ে নি, তাবা ব্যুক্ত বাহিত প্রোতের বত। বরং বর্থনই ভাষাকে বিশেষ ইটে গড়বার চেটা বাজিবিশের স্থক্ষ করেছে তথনই তার বাতাবিক গতি অনুহছে ব্যাহত। তাবা সম্পত্তিবিশেষ নর, বছ পরার্থ নর বে তাগ-বাঁটোরারা করে বিট্নাট করা বায়। এননি তাবে স্তিকারের ঐক্য হবে কিসে? অনুহছ পরিপ্রয়ে আর দীর্থ বিশেষ অপেন্দার কলে বলি হুইট তাবা মিলে বর্ণসহর 'হিন্দুলানী'র স্কট হয়ে থাকে তথালি তার হুইট লিশি কি প্রবাণ করবে? এবানে বে আবার গরমিল—পোড়ার গলহ। এবনিভাবে গোড়ামিল দিয়ে তৈরি বে বাই—তাবা তার হেহের এক অংশের সঙ্গে অচ অংশের কোন লাহুত বেই, তারা পরন্ধর সম্পর্কহীন।

**শতএৰ আমাধের মত এই বে, মুধ্য মুধ্য ভারতীয় ভাষা**∽ अनित्क यांबीवजारव निर्मापन मानि अनाव कवनाव प्रयोग দেওয়া উচিত ছিল এবং সেওলির দাহিতভার ক্ষমতের উপর হেছে দিলেই ভাল হ'ত। বাংলার ছতে বলীয় সাহিত্য-পরিবদ, হিনীৰ কৰে হিন্দী সাহিত্য-সংখ্যাৰ, উৰ্ব্যুৱ কচ আঞ্যাৰে चनकी वर्ष, अवृत्ति अधिकांगकति यति और मोतिए अरन करक ভা হলে দেখা বেভ বে বলকাল মধ্যেই স্বাভাষিক ভারণে হিন্দী হাড়া খৰ ভারতীৰ ভাষাগুলি বাইভাষাৰ দাবি হেড়ে शिरादः । अरे बद्रावंद किहू मा करत एठाए छेनत राष्ट्र रिकी-উৰ্বুৰ প্ৰচাৰেৰ বুৱা ভোলায় অভাত ভাষাওলি ভাষেৰ যোগ্যভা প্ৰমাণ কৰবাৰ স্থযোগ পায় নি। এই ভাবে বাত্তবিক্ই উপৱোক্ত ভাষাসমূহের প্রতি অবিচার করা . स्टब्स् चांत मरकात्रथ चमर्यामा कता स्टब्स् । উপরোক্ত পছা অবস্থন করলে হিন্দী ভাষা হাড়া অভাত ভাৰাভাৰীয়া খডঃই বুৰতে পাৱতেম বে, বুৰ্ডয় লাভের ভঙে ভাৰত্যাগ করাই বাঞ্নীয়। কাৰেই হিন্দী প্ৰচাৱের বিবোৰিভাও তাঁৱা করভেদ দা৷ বাংলা ভাষার ভরক থেকে বলা বেভে পারে বে, ভারতে উর্দু অপেকা বাংলা ভাষা বেৰী প্ৰচলিত ভাৱ লিপিও উৰ্ব চেয়ে কম প্ৰচলিত নয়। ভার উপর সাহিত্যসম্পদে তো ভারতের কোন ভাষাই ভার কাছে হাড়াতে পাবে না: ভবুও উহারমনা বাঙালী বুহতর সার্বের ৰাভিৱে ভাষার দিক দিবে সর্ব্ব ভারতীর অবওছ রকার আনৰ্শে উৰুৰ হবে নিজ দাবি জ্যাগ কৰে বিশীৱ সপক্ষে মত विश्वरूप । किन्र केन्ट्रिक किस चानाव, बाह्रकाया वारना निनिष्ठ (क्य लिया यार्य या ब क्षत्र हैयानिक स्रवाद । बरे প্ৰদৰ উৰাপৰ করার প্ৰযোগ দিবেছেন ভারা বারা বিন্দী বা বেষবাগরীত পাশে উর্বা ফার্নীকে এবে বদাবার করে আৰাজ্য থেৱে লেগে গেছেন। তারা বাইভাষা-সমভার সৰাবাৰ করতে বিয়ে ভাকে বোরালো করে ছুলেছেৰ আর ঐক্যের ভারগায় বিভিন্নতা ভার হলের শ্রষ্ট করেছেন।

विकी वैर्युत मार्या नाकत्रनामुक चार्य, किन्नुमाबात पच-নারাও আছে। নেওলিকে অনারানে হিন্দী বলেই চালানো বেতে পারে। কিন্ত উর্বাহ শব-ভাতার প্রার পুরোপুরি আহবী কার্সী শব্দে পরিপূর্ব, জালেই ভাবিদেশী। উত্তর-ভারভের অবিকাংশ ভাষার সজে সংস্কৃতের খনিষ্ঠ সম্পর্ক বিদ্যমান, আবার লিপি-সাব্যও রয়েছে। সে ক্ষেত্রে উত্তর ভারতের সর্ব্ধ-সাধারণ কেবলাগরী লিপি সহকেই আরভ করতে পারে। বাংলাদেশের লেবাপড়া জানা অনেকেই দেবনাগরী অকর চেনেন। যাদের দেবনাগরী আকর পরিচয় নেই ভাদের **शिष्म छ। जावस कर्या त्व कडेशावा करव वरमध घरम एव म**े। আৰ হিন্দী ভাষাকে বিদেশী বলে মনে ক্যারও কোন সক্ত কারণ নেই। কিন্তু সংস্কৃত্যক্ষিত, ফার্সীলিপিসংলিত, হিসুস্থানীকে সেই সৰ ভাষাভাষীয়া কি ভাবে ভাগন করে নিডে পারেন ? বাদের ভাষার শব্দ-ভাঙারে সংগত শব্দ অক্স আৱৰী-ফাৰ্সী বাদ দিলে অধৰা কাৰ্সী লিপি বাদ দিলে সেই বাঙালীদের অপুবিধা হবে মা ় উত্তর ভারতের অভাত প্রদেশের বিভিন্ন ভাষাভাষীদেরও ধুব মুশ্কিলে পড়তে হবে না ৷ অসুবিবা বদি হয় তো একমাত্র ভাঁদেরই হবে বারা গোঁড়া উর্ঘু-ভাষাভাষী। আৰু বাংলার মুগলমান ভারেরা সাম্প্রদারিকতার মোহে উৰ্জ্ব উপর অভিবিক্ত অক্তর আরোপ করলেও একবা সভা যে বাংলাই ভালের মাড়ভাষা, বাংলা ভাষার সলেই ভাবের অন্তরের বোগ গভীর: আর বাংলা ভাষা বা লিপি জানা মানে সংস্কৃত বা দেবনাগরীর সলে খানিকটা পরিচিত হওয়া। তা ছাঞ্চাবাংলা ভাষার মাসভুত বোন, শৌরসেনী-লাকৃড-অপরংশ হিন্দী দেবনাগরী-বসবে সঞ্চিত হলেই অপৰিচিভ কি ক্ষে হভে পাৰে ? অবচ উৰ্জ্বা কাৰ্সী লিপি আরভ করা গোটা বাংলার অবিবালীদের পক্ষেই নর, সমভ ভারভবালীর পক্ষে হুংসাধ্য। বলিই বা পুদুর ভবিষ্ঠতে ভার लियमाळ ज्ञावयाच बाटक, छ। स्टाब काटक घटवडे भगत, कर्काद अब, अहव कर्यंत्र अरबाक्य ।

উভয়-ভারতের হিষালয়ের বিরবর্তী অঞ্চলসমূহের নেপালী ভাষা এবং দক্ষিণ-ভারতের নারাস্ট ভাষা সম্পূর্ণ বিভিন্ন হলেও ছুইটাই দেবনাগরীতে লিখিত হয়। ওজরাতীও বাংলার ভাষ দেবনাগরীই রূপাভরিত লিশিতে লেখা হয়। নারাস্ট ভাষী অঞ্চ হাছা দক্ষিণাত্যের অভত্র যথিও উভব-ভারতের কোন ভাষা বা লিশিরই প্রাবাভ নাই তথুও ভামিলে দের সংস্কৃত শব্দ ব্যবহৃত হয় আর সমন্ত নাক্ষিণাত্যে সংস্কৃত ভাষার বৃহ্ণার ব্যক্তিও অনেক আছেন। ভাকেই হিন্দী এবং দেবনাগরী আরভ করা বে উাদের পক্ষে ধুব কৃষ্টিন বর, ভা বলাই বাছলা। অবচ উাদের জার করে ছট 'বিদেনী' ভাষা বা লিশি শেবামো—অর্থ, পরিমান এবং লম্ম এই ভিন্টিরই অপব্যবহার নার। ব্যক্তিণত প্রভাবের অশ্বপ্রবাণ করে ভাতীয় কল্যাণ-প্রচেটাকে কি ভাবে ব্যাহত

করা হচ্ছে তার একটা বৃটাত বিচ্ছি। গত ২৭ বংগরের বৃক্তিব-তারত হিন্দী প্রচার-গতাকে—বার মৃগরের হিল 'এক রাইতাবা হিন্দী হো', 'এক অধর হো তারত অবনী'—পারিপার্বিক চাপে কেলে 'হিন্দুরানী প্রচারসভা' নাম নিতে বাব্য করা হরেছে। আর এই সব অনুঠান মহাভবরে দেশের বরেণ্য নেতাবের বারা করান হরেছে বাতে বেশবাসীকের মনে সন্দেহ অনুরিত না হতে পার। গণতপ্রের বুবে তারতে অনমতকে বে কি তাবে প্রদ্যাতিত করা হচ্ছে এট তার একট প্রকৃষ্ট উলাহবন।

কাৰ্নী লিপিয় সৰচেয়ে বৰু ক্ৰাট্ট ইচ্ছে এই বে, এই লেখা ভাষা-বিশায়ৰ না হলে পাঠ কয় সক্ৰব হয় না। কায়ৰ আকার হাড়া আয় কোন হয় উচ্চায়ৰ গেৰায় কালে বাকে না। উপায়ৰ বহু উচ্চায়ৰ ইংৱেছীয় মত অক্য বোগ করে লিখতে হয়। ওলিকে বে আবার কৃত রক্ষেয় 'ন', 'গ' আর 'ল' তার ঠিক নাই। একেবারে অবৈঞ্জানিক প্রশালীতে সাজান—কোন উচ্চায়বের ক্রে বর্ণের আবশুকভাই নাই। ভার পর যদি বা হাতের-লেখার বাঁচের লিখো-জাভীর হাপা উর্জ্ব পড়া যায়, লোহার চীইপের উর্জ্ব কোন্যতেই বোৰপ্যা হয় না। এ অভিবাস প্রত্যেক উর্জ্বাহীর মুখে শোনা যাবে।

अवारन द्यायान चक्रद्यव कवा चेटब्रव कवा चक्षात्रक्रिक হবে না। রোমান লিপির সপক্ষে সবচেরে বড় যুক্তি এই যে, বাইলাবা এই লিপিতে লেখা হলে ভাষাট ভবু ভারতের মধ্যেই পীমাৰত থাকৰে না, ভাৱতের বাইবেও ভার প্রণার ও প্রচার হওয়ার বিশুল সম্ভাবনা আছে। আর ভাতে করে দেবনাগরী-কার্সীর হন্দ্র বেকেও নিছতি পাওয়া যাবে। এ বিষয়ে আমাদের বক্ষরা এই যে, খরের প্রদীপ না ভাগিয়ে কেউ वाहित प्रतकाश चारमा (प्रत्न मा। दिरामिक मामच (परक মৃতি পাৰার জল এত দিনের সাধনা আজ জরমুক্ত হতে চলেছে অৰ্চ গাৰীৰ ভাৱতের নিজৰ লিপি বাকৰে না এর চেয়ে ছঃবের কথা আর কি হতে পারে। উপরস্ক, পূর্ব্ব-প্রভূত্যের নিধৰ্শন হলপ বিষ্টপ্ৰাভি শেষ আঁচড় বেৰে যাবে আমাদের রাইভাষার বুকে, এটা কিছতেই সমর্থনখোগ্য নয়। ভাষার উপর शानावित । इत्रम्पात कनक-हिस् क्षेत्र श्रुष्ट वाद ना । তা ছাড়া ছইট ভাষার ছব্দের বধ্যে ততীয় পক্ষকে তেকে এনে বসানোই বা কোন मीछि ? বিশেষভ: दिवसानही इ यछ এরণ বৈজ্ঞানিক ও ছাভাবিক লিপি ভগতে আর বধন নেই. তৰ্ম তাকে বৰ্জন কয়ার কি সাৰ্থকতা ? তা ছাড়া তবু दायाम वर्ष्यामा हानू कवाव कथा वनत्नरे एक र'न मा. छा ক্তছৰ কাৰ্য্যকৰী হবে দে**টাও** তো তেবে বেৰা **উ**চিত। আভ পৰ্যাত্ত ভাততীয় উচ্চারণ-পদ্ধতি প্রকাশে রোমান বর্ণমান্য ८६ इन क्षेत्र(वादे का अवातिक एव नि । अक n जकवरकरे ্ষ্ণ এ এ ইভ্যাদি ক্ড বিভিন্ন স্থপ বিবেই না ভারতীয় वर्धवालाव लाजिवर्धवाला विविधे कवाक स्ट्रा अम्बावशाव

ভারতত্ব ইংরেজী ভাষাভাষীয়াও বে রাইভাষার রোমান বর্ণমালা প্রচলন সমর্থন করতে পারেন না, ভা ভেবে দেখলেই বৃত্তে পারা যার। এক main-কে নাইন, নেন, বেইন, ন্যান, নঁয়া, নৈঁ ইভ্যাদি কত কি-ই না পঢ়া যার। 'ট' বর্গীর এবং 'ত' বর্গীর বর্ণমালার উচ্চারণগুলির রোমানে রূপ বিতে বহু আরাসের দরকার। আর যদি বা রোমান বর্ণমালাকে এমনি ভাবে মৃতন ইাচে গড়া কোনো চূর ভবিষ্যতে সভ্যপন্ন হব ভা হলেও ভার অর্থ, উচ্চারণ, পাঠপততি ইভ্যাদি ভারতের চল্লিশ কোট লোককেই মৃত্তন করে শেখাতে হবে। সেটা প্রায় অনন্তব বললে অন্ত্যুক্তি হব মা। ভাই আপাততঃ এই বুয়ো উঠিয়ে লিপির প্রস্তাকে আরও কটল করে না ভোলাই প্রেয়া এবং অভিপ্রেত।

একৰা সৰ্বাহিসমূভ বে. আৰু ভারতে বভঙলি লিপি **अहिन्छ, छाद्यत्र मर्द्या (प्रवसानतीत्रहे अहन्य नवरहरत्न (वर्षे ।** ভারতে বেবনাগরী ভানা লোকের ভভাব নাই। ভাঁছের বাদ দিৰে, বাদবাকীদের দেবনাগরী শেবাতে, কাৰ্সী ও বোষাৰ প্ৰচাৱ ও শিক্ষাদানের চেমে চেম্ব কম শক্তি পরিশ্রম সময় ও অবের ধরকার হবে। ভাই আনাদের প্রব বিশ্বাস বে, স্বাই বৃদ্ধি আছবিক ভাবে বেবনাগ্রীর প্রচারে বছপরিকর হন তো ধুবই অর সমরের মধ্যে তা সারা ভারতের একষাত্র লিণিতে পরিণত হতে পারে। দেখনাগরী ভার विमीदक मार्ख्यपाविक पृष्ठित्व त्यवा वा दक्रवन्याव अक्षे বিশেষ ভাতির লিপি বা তাবা ভাব্যা বেওরা সঙ্গীর্ণ মনো-ভাবের পরিচারক হবে। তার উপর গণভারের বুগে, গণদেবভার চোবে বুলো বিধে দেবনাগরীর পালে, ভারতের অভাভ লিপির প্রতি অবিচার ক'রে ফার্নীকে সমাধ মহ্যাধা দেওৱা জন-কল্যাণের নামে অনগণকে প্রভারিত করা ছাড়া আর কিছুই मद्र। जावरण्य जनमञ्जानश्चा रहन (वर्षा थारव रव. वाजविक একমাত্র দেবলাগরীই দর্মভারতের পক্ষে সবচেরে স্থবিধা-ৰণক ও সৰ্বাৰণপ্ৰাহ লিপি এবং তা আৰম্ভ করাও সকলের **१८क महक्रमा**शः।

এবন ভাষার বিক বেকেও একটু আলোচনা করা যাক।
আনরা হিন্দী বলতে কি বুবি ? এককালে রুগলনানেরাই উচ্চ
ভাষার নাম 'হিন্দী' বেবেছিলেন। ভটন ইক্ষালও উার
একট বিব্যাত কবিভার 'ভারতীয়' এই অর্বেই—'হিন্দী' ক্বাট
ব্যবহার করেছেন—"হিন্দী হৈ হন বতন হৈ হৈ কো
ভা হ্যারা।" ভা হলে আন্ধ 'হিন্দী' নম্পে রুগলনানগণ ভীত
হচ্ছেন কেন ? উাবের দেওবা নামে কেনই বা আন্ধ সাজ্যনারিভার গর আগছে ? ভার কারণ, আনাদের মতে, "ঐক্যের
নওলা" করতে বাওবার কুকল আর গোড়ার সভ্য ও ভারেছ
ভাবের পাওবা অধিকারকে, বিধ্যা উলারভা ও ভারবিচারের
ভাওভা বিরে হারানো। খাবীন ভারতে বেনন অভাত ভাষার
নভান অন্ধ বাকবে, ভাবের সাহিত্য ও ভাষার শ্রীবৃদ্ধি

কৰবাৰ পূৰ্ব ঘোগ তাৰা পাৰে, তেননি সেই অধিকাৰ উৰ্কৃত বাকৰে। কিছ অবু প্ৰতিক্ৰিয়াৰ তবে তাকেও ৰাইতাবাৰ পৰ্যাৱস্কুক কৰা ক্ষেত্ৰেত্ৰৰ অন্তৰ্গৰ অন্তৰ্গৰ নামতাপ পৃষ্ট কৰা— তাবেৰকে তাবেৰ ন্যায্য অধিকাৰ খেকে বনিত কৰা। তাই অৰ্থক তাবতেৰ বেলাৰও বা বাটত আৰু ৰভিত তাবতেৰ বেলাৰও তাই বাটৰে। তাৰতেৰ ৰাইতাবা হওৱা উচিত সেই হিন্দী তাবাই বেট, সম্পূৰ্ণ তাবতীৰ; বা আৰ্থ্য সংস্কৃতি আৰ্থণ ও ঐতিহেৰ বাহক, সংস্কৃতবহল, ইল্লামীৰ কৃষ্টি ও বৰ্ণসংক্ৰাভ ব্যবহাৰিক প্ৰতিশ্ৰিত এবং তাৰতেৰ ব্যাপক অঞ্চলে প্ৰচলিত প্ৰসম্পাধে সম্ভৱ—বাকে ইংবেজীৰ একট ক্ৰাৰ ব্যক্ত কৰা বাৰ BASIC—আৰ তাৰ অৰ্থ এই তাৰে ক্ষা হবে বেৰৰ: B—Bhartiya, A—Aryan, S—Sanskritic, I—Islamic, C—Chalu

কিছ সৰচেৰে অক্লৰপূৰ্ণ সমস্তা বা দে সহছে আৰু বিশেষ ভাবে ভেবে বেখা উচিত। বিষয়ট হচ্ছে এই বে, আৰু অবর্চ रिकी-वेर्ष, इरेडेटक नवाय नवान चान (वश्वा रहक, किन्छ अरे নীতি অহুসরণ করে চললে ভবিভতে ভবু উর্বাই নির্মিরোধে 'ভি ক্যাঠো' ৱাই-ভাষা হয়ে ইাড়াবার সভাব্যতা আছে। তথ্য হিনীকে বাইভাষা হওয়ার হাবি ভ্যাগ করতে হবে, সে ভার ভাষা আসম বেকে বঞ্চিত হবে। আজ বেকে ছুই বংসর আর্গে रिन्त्री कावा अवर रश्यमानशी निनित्त कथा वारमव बूर्व करम-दिनाम बाब डाटबर्स्ट बूटब विकी-डेर्च, अवर रवनमंत्री-कार्भीत क्या अन्ति, अविद्याल (व अपू वेर्यू अवेर कार्नी अनव ना जाव ্কি কোৰ নিশ্চৱতা আছে 🤊 আৱ`পাকিছাৰ যদি শুৰু উৰ্ব্ কে ভাৰের রাইভারা বলে এহব করে ভা হলে সেবানকার আগ-বাসীরা সবাই উর্জ্ পিববেম। এদিকে যাতৃভাষা খাদের উর্জ্ (धवन लाटकव मरनेत कव यह, छनत ह 'विक्यानी'टक बाड़े-ভাষাত্ৰণে প্ৰচাৰ ও প্ৰসাহের নীতি অংলছন ক্রলে ভারতীর ইউনিয়নেরও স্বাই সাম্ভবারিক বাঁটোরারা এবং ভোষণ-मीणित करण दिन्नी अवर वैर्क् इन्हेंबेरे निर्द्ध ताबरवय । कारकरे দৰ্শ ভারতে উৰ্ব ভাষা প্রচারের অনুকৃষ অবহা এবন বেকেই তৈরি হয়ে রইল। আবার ধবন এক দিন আক্ষের এই বভিত ভারত অবত হবে; ভবন দেবা বাবে যে সমূল ভারতের চল্লিপ কোট লোকই উৰ্জ্বাবে। আৰু বাইভাষা হৰাব ৰঙ हेर्ब, व वावि किकिबात मो बाका माइक वनि हेर्ब, ममर्गरकत्रा ভারতের রাই-ভাষার ক্লেমে উর্জুকে বিভীর সলে সমান वद्याचात्र जानत्म बनावात घटक ७९१वं स्टब केई:क शास्त्रम जाव (बर्मा खार्ड मिछ्नर्स, अपन कि चत्र महाचा ताकी गर्नाच अरे অসমত দাবিকে বেষে নিভে পারেন, তো ভবিষ্ঠতে কি হবে তা সহজেই অমুনের। ভারতের বাবভীর অধিবাসীয়াই ভবন উর্ব, जावा निवट्ड वावा स्टब । तारे निविधिष्ट स्मिव जानने কোণাৰ নিৰ্মিষ্ট হবে, ৰাইভাষাৰ কেৰে লে কি অপাও কেৰ बाल श्रेश क्रांच मा ? अंशालाहि, व्यवस्थित वाता व्यव देश्री के এক্ষাত্ৰ স্বাইভাষা এবং ফাৰ্সীই এক্ষাত্ৰ স্বাইভিশি বলে পৰি-প্ৰিভ হবে। আজু যে-সকল 'হিন্দুছানী' সমৰ্থকেয়া হিন্দী-ছেব-

নাগরীর অবিভার ভূর করতে উভত তারা কি এই ইন্ট্র্ শোষণ করেন বে, বভিত ভারত বহি পুনরার অবও হয় তবে ভার রাইভাষা হবে উর্জু আর কার্সী-লিপি হবে রাই-লিপি । আর রাই-ভাষার আসনে বসবার সভ্যিকারের অবিভার যার রবেবে, প্রতিভূল অবহার ভাই ক'রে নিভাতই গারের জারে সেই ভাষাকে ফ্রেক প্রাক্ষেকি ভাষা বলে গণ্য করাষ্ট্রাকেই কি তারা বাহুশীর বলে বনে করেন।

তবে দেশের নার 'হিল্ছান' হলে তার রাইতাবাকে এবং নেই দেশবালীকে 'হিল্ছানী' নার দিলে আররা আপতি করব না। কিছ আফ ববি গুরু বিশুত তারতের নার 'হিল্ছান' হর এবং আফ তারাগত বে অর্থে 'হিল্ছানী' ব্যবহৃত হয়, নেই অর্থ তারের হয় তবে আয়য়া কর্বনই তা সর্থন করতে পারি না। 'হিল্ছানী'র নামে রেতিও বে তারার সংবাদ পরিবেশন করে এবং দেশের বরেণ্য নেতারা আফ 'হিল্ছানী'র নামে বে তারার বজ্লা কেন, আয়য়া প্রশ্ন করতে পারি কি, এ বিভিদ্দ তারার ব্যাপকতা ভত্তুকু এবং তা এই বিয়াট দেশের কয়জন অবিবালীর বোবগর্য।

তবে কি এটাই আমাদের বেনে নিতে হবে বে আন্ধ পর্যাক্ত তারতের বিভিন্ন প্রধেশবাসীরা ইংরেজী হাড়া আন কোন তারার তাবের আনান-প্রদান করেন না। হিলী বে ভারতীর সমাধের সকল তরে হড়িরে পড়েছে এ কথা এক গারের কোন হাড়া আন কিলে অখীকার করা বান ? হিলীকে বে আন্ধ্রহার করে শেথান হচ্ছে তা মর; হিলী দেশমন আগনা হতেই পরিব্যাপ্ত হরেছে। এর একটা প্রাচীন ঐতিহ্ আছে। সর্বভারতীর ভাষাগত কোন প্রসদ্ধ উঠনেই, সে ক্ষেত্রে হিলীরও কথা উঠবেই। প্রাচীন ভারতীর সাম্ভ মুগের ইতিহাস, হিলী ভাষার 'রাসো' প্রস্থানিতে নিপিব্রহ রয়েছে। প্রেন্ডভিন্ন উংস্বরপ সভ-কাব্যসমূহে বিশ্বপ্রেরর সুক্ষর অভিয়ত্তি আছে, ভাই রবীক্ষনার নির্বেহিনেন—

"নব্য বুগের সাথক কবিরা হিন্দী ভাষার বে ভাবরদের 
বৈর্ব্য বিভার করিরাছেন ভাষার মধ্যে অসানাত বিশেষত্ব 
আছে। নেই বিশেষত্ব এই বে উাহাদের রচনার উচ্চ অলের 
লাবক এবং উচ্চ অলের কবি একর রিলিভ ক্ইরাছেন—এবদ 
নিলন সর্ব্যরই কুর্লত।" এই কারণেই ক্বীর, বাহু, মীরা, ভূলসী 
লাস, অরবান এবং অভাত সভ-কবিরা ওবু উভর-ভারতেই 
ব্যাতি অর্জন করেন নি, বীরে বীরে সমর্ব্য ভারতে 
উালের সাধনার বারা পরিব্যাপ্ত ক্রেছিল। মুস্সমানস্থক 
ক্রী-মভ প্রচারার্থে প্রস্থাধি এই হিন্দীতেই রচনা করেন। 
পর্যাবত রচরিভা ভারসী, মুভবন, উসনান এই পর্যারের 
কবি। রহীয় এবং মুল্যান্ড লোকপ্রিয় কবি হতে পেরেভেন ক্নিতি রচনা করেই। বাংলাক্রেণ্ড কেল্যকর্ত্র 
লেন প্রবং মনীবী ভ্রেণ বুর্বোপান্যার এই ভাষার ভবিতং 
ক্রোবন। সম্বন্ধ আর্গে বেকেই ইনিভ না গ্রেছেন।

## আজ—আগামী কাল

### শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায় -

হুৰ্গাৰোহ্ৰেছ বৈঠকবানার প্রাত্যহিক পাশার আজ্ঞা বলেছে। থান-কেলা ও আছি-বারার চীংকারে বর্ধষে হুপুর বেলাটা বান বান হরে ছড়িয়ে পাক্তহে—এ পাড়ার বর্জুর পর্যান্ত। বস্ত্র-বর্ধী সংসারের কাক সেরে এই লমহ একটু বিশ্রাম করেন। আর এই সময়েই পাশার আজ্ঞার কোলাহলটা প্রচ্চ হরে ওঠে। অপ্রসর মুবে তুরু কুঁচকে বস্ত্-বর্ধী বলেন, বেলা তিনটের আরম্ভ হ'ল হুপুরে মাতন। মাধুবের বেরে ভরে একটু সোরাভি নেই গা। গ নিভ্যি নিভ্যি কানের কাছে ভাকাত পভাগভি—কারই বা ভাল লাগে গ

কানের কারেই বটে-এক পাঁচিলের এপিঠ ওপিঠ ছুৰানা বাজি। সাধারণ ভাবে সংসারের ক্বাবার্ডা কইলে---এক বাছির দরের হাক জানালা দিয়ে আর এক বাছির রোরাকে কাভিয়ে অনায়ালে কৰ্বনাচর হয়। পাড়ার্নায়ে এড থেঁমা-খেষি বাভি তৈরি করার অর্থ---সেকালের প্রীভিবভনবশভ ঘটে বাকলেও-এ কালের সৌহাব্য-বিবিদ আবহাওয়ার क्रिक्स श्रिक्त रह ना। विश्व दिए निर्देश विवास आरम्ब মৰো পাকাপাকি ভাবে কিংবা আক্সিকও না ৰটে বাক্ষেও একের গোপন সাংসারিক বার্ছা অভের সোচরে আসে-এটা बराष्ट्रि अराष्ट्रिय (क्षेष्ट्रे हाम ना । (क्ममा, कारमय धराष्ट्र प्र'वाषित अनुविद्युष्टे किहू-मा-किहू कांभिष्ट निष्ट (शब्द) ছোভ ভবি-ৰা নিৱে এককালে ৰাছ্যের সম্পাহের নিরিখ ৰিবাঁত হ'ত-তার বারাও গেছে বদলে। এবন কোন্ বাছির ছেলে—কোন ভাল আপিলে বছ চাক্ত্রি করে তাই নিয়ে মান-লক্ষানের পালা বেওরার বেওরাজ। বেষন নেকেলে পহনা বারকেল কুল আজ ইলেকট্ট ক প্যাচীর্ণের চুডির ক্যাপানে শৌহেছে। ভাভেও কি নিভার আছে। খনি বেখন সেকালের ল্বান-খার এড়ালের উপহাসের বস্ত-ভেমনি গ্র্যাও ভরিছে বা বিভ্য বুভব ক্যাসানের অভিনৰতে মাপ্তবের বনকে প্ৰদাৰা গোৱৰাখিত করতে পারছে না। হ'হটো বুছের (क्षे-- नावा श्रविनीय छेनव शिंदा वरत (मन । यदम स्'म, रव কালের স্রোভ খনিরবে খাভাবিক গভিকে বহু পরিবর্তনের বাৰবাৰ দিয়ে বাছবের সভ্যতাকে---স্বাদ্ধে ভার বনকে चार पृष्ठेचनित्व प्रताम चामरच भारच--चा चन्नाच चन्नार আৰু চুৰ্ব্বাৰ গভিতে এসে পড়েছে পুৰিবীৰ উপর। এক প্ৰাৰী-ৰায় এক প্ৰাৰীকে কাের করে বটরে বিচ্ছে। তার चात्रकान त्यरक विनिद्ध नित्क नवय-छात्र विवि-विवानरक बिट्ड केटके-छात्र जनारक बूट्ड स्कान मुख्य वर्गमान महार्यम कहरक हारेरच-अवर विकृष पृथिवीरक चणाव

সভীর্থ করে—খরের সামনে ওটরে আনছে। আরু পাড়া-পারে বলে—রনে হবে না—এখানকার প্রবিধা-অপ্রবিধার মধ্যে বাগ করছি। ইচ্ছে করজেও—শহরের চেউকে— গাঁরের মাঠ ধিরে—বনের পাঁচীল বিরে বা নদীর রেখা টেমে আটকে রাখা যার না। আবার এখানকার সাধাসিবা প্রব প্রবিধাওলিকে ধরের মধ্যে বলী করাও কঠিন। একের বাওরা-আলার মধ্যেই নভূন কালের সলে বাজ্বের পরিচর ঘটতে। কালের লোভ প্রবল হবেছে বলেই ব্যোর্ডেরা আহরহ অভ্যাগ ভূলহেন, কলিকাল।

বাই হোক—বন্ধ-পৃথিবীর উক্ত মন্তব্য ধূর্গারোদ্ধের বৈঠকবানায় প্রবেশ করলেও সেবানকার ক্ষরকাট ভাবট বাই
করতে পারে না। বৈঠকবানার ঠিক সামধ্যে পাবা-সমুভ
ভামগাছের ভাগে বলে ছুটো ইভিকাক প্রভান ধূর্পুরে বেরন
কর্কশ ধরে প্রবন্ধ-আলাপের ধারা প্রান্ধনানীকের অনুদল
আশ্বাকে বর্ত্তিত করলেও—ধূর্গারোদ্ধনের বৈঠকবানাকে
বিভ করতে পারে না—তেমনি পাশের বাভির অন্থ্যানও
প্রস্তানে তেনে চলে বার। যান ও আভি মারার চীংকারে
বভ বর্তী। কল কল করতে বাকে।

কচে বাবোর থান মেরে হুর্গানোহন লেব হুঁটিটক বরে ছুলতেই একটা সহর্ব চীংকার উঠল। কিছ সে চীংকারের রেশ বেশিকণ হারী হ'ল না। প্রাথিত হানটির সঙ্গে একথানি বামের চিটি…বৈঠকবানা বরের ধোরগোড়ার টুপ করে কেলে থিবেছে পিওন। পিওনের মূহু 'চিটি' শব্দটি সহর্ব চীংকার ক্ষমির মধ্যে ছুবে গেলেও—প্রতিপক্ষ বিশিন রারের হুটী বানবামির উপর পড়ল—চিটিবানা ছুলে এমে তিনি ভজাপোবের উপর রেখে বললেন, 'হুর্গা—ভোষার চিটি। চিটিবানা হুরিরে তিনি বছব্য করলেন, হাপ বেবছি—ছি-পি-ওর—; প্রশার থিরেছে বোব হয়।

হুৰ্গাৰোহন পত্ৰবানি বোলবার উল্যোগ করছেন—কালীকক নিজ বললেন, প্ৰশান্ত বি-শি-খতে গেলিম একটা ইন্টারভিট বিবে এল না ?

ইা—বোৰ করি—চাকরি পেরে গেছে। বারবানার এক পান হি'কে চিট্টবানা হুর্গাবোহন বেলে ব্রলেন।

বিশিন রার করাদের উপর চাপড় বেরে বললেন, ভবে আর কি ভোষার ভো পাধরে গাঁচ কিল। ভাল রক্ষ ব্যাটের ব্যবহা করবে কিছ—হঁ।

লবাই চীংকার করে বিশিষের বছব্য লবর্থন কর্বায় উল্যোগ করতেই হুর্গানোহন হাত ভূলে তাঁলের নিষেধ করলেন গোলবোগ করতে। চিটির হুট হরও অভিক্রম করেন নি— ইতিমধ্যেই হুৰ্গাৰোহনের বুব গান্তীর্ব্যে ব্যবহার হয়ে উঠল। বেছুটা সাধারণের বোবগদ্য লা হ্বারই হুবা। পাশার বাজি আর সংসারের বাজি সাকল্যের লক্ষ্ক বুরে পাশাপাশি চলেছে। সক্ষটা অনিভিত্ত নর-এব। অবচ----

্ হুলাবোহন অভান্ত গন্ধীয় মুবে পাঠ করে চলেছেন নিঃশব্দ। তার গান্ধীর্ব্য অবদল আলহা করে আর সকলে তার হবে গেছেন। নিজর ছুপুরের প্রকৃত রুপটি এই গন্ধীর বৌনতার ববে। প্রকৃট হবে উঠল। অহতার ছঃসহ অহতি সকলকে শীলন করছে—কৌতুহল তো প্রথম হ্বারই কথা। বিশিন রার স্থাংবাদ অহ্বান করে ভুরিভোজের দাবি আনিরে এই মুহুর্জে নিজেকে অভ্যন্ত অপরাধী বনে করছেন। এই আক্ষিক ছুব্টনার দাবটা বেন তার বাভেই বোকার মত চেপে বসেছে। এপাল ওপালে হেলে—একটা কিছু বলে নিজেকে হাকা করে বেবার নানসে তিনি শুক্ কঠে বলনেন, প্রশান্ত ভাল আছে ভো ?

চিটি শহতে পছতে ছুৰ্গামোহন সংক্ৰিপ্ত সন্ধান উত্তর হিলেন, ভাল।

সাৎস পেত্রে বিশিষ রায় বললেন, চাকরিট হরেছে ভো 🤊 এপারোহন বললেন, বলছি।

, হ'পৃঠার চিট শেষ বতে আরও করেকট নিজন নিনিট কেটে গেল। হুর্গানোহন মুব ছুলে বললেন—বডটুকু বিদ্যাশিক্ষা ভার হয়েছে—ভাতে ইন্টারভিউতে উংরে বাবারই কথা।
ইা—চাকরি সে পেরেছে—একশো টাকা বাইনের একটা
ভাল চাকরিই। কিছ বিশিন, কবার আছে না—কপালে
নেইকো বি, ঠক্ঠকালে হবে কি ! এও হয়েছে ভাই।

টিক বুৰতে পাৰণাম না হুৰ্গা---

আৰিও বৃক্তে পারছি না তাই। বৃদ্ধের পেষ হয়েছে, বিনিষের দাধ তব্ও বাছছে। কেউ বলেন—এবন ধ্বংস হয়েছে বে কলপড়র কিছু নেই। অবচ মানুষ্ও তো ক্র্ল । কেউ বল্ছেন—টাকার দাব আৰু আর ট্রক চৌষট্র প্রসা নর, তের প্রসা। তাই যে অমুপাতে ব্যব বেক্ছে লে অমুপাতে আর হচ্ছে না। আর্যারের তকাং বদি আকাশ-পাতাল বাকে—তো শান্তি আসৰে কোবা বেকে।

কেউ কোন কৰা কইলেন না। ছুৰ্গানোহন হিসাব করে কৰা বলেন—বেনন পাশার চাল বিতে উন্ন পুড় মেলা ভার। খহিবে কৰা বলতেও উনি পট়। সন্থানির আপিনে চল্লিল বছর চাকরি করে অবসর নিরেছেন। ব্রিশ চাকার ক্র্য়— সাকে চার শোর শেব। করলে-কম পঁচিল বিলচী সারেব উার হাত বিবে পার হবে সেছে—সার্ভিস-পটে স্বারই কলবের জোর স্থানিশ ছল খল করছে। কলে—অবসর বেবার পরও টক পোনসন বা হলেও কর্ম্যকভার পুরভারহত্রপ বাস বাস বাইলের আহেক পেরে আনছেন। এবনও খটন

ছুটভে হয়। তিনি বলেন, সারেবেরা কান্ধ বোকে—বাহুবের বান ঠিক করে কান্ধের করিপাধরে করে। একেন পোক—কান্ধি বার আল্না বা এলােমেলাে নর—একবানা চিঠি পেরে এ রক্ষম অর্থনীন প্রলাপ বক্ষেন এ তাে বারপার আলে না। গােভা বেঁবে কান্ধ না করলে র্ডাভে হান্ধার হান্ধার ব্যক ব্যন পাকা পাতাটির বত চাকরির বিশাল তরু বেকে টুপটাপ বলে পড়ভে—ভবন ভার ভেলে বােগাড় করে নিলে একশাে টাকার এক চাকরি। ভাগ্য আর কাকে বলে। আর এইবাল পাশার প্রথম বালিটাঙ—

হুৰ্গাযোহৰ একট নিধাস কেলে—চিটটা ভাজ কলে কভুষার পকেটে কেললেম। মুখে ওবু উচ্চারণ করলেন, ভারা —ভারা।

স্বাই ব্রপেন---আপাভত উনি এ প্রস্কু তুলতে চান না। কালীক্স আগত্যা বললেন--এই দানটা শেষ করবে, না নতুন করে বুটি সাজাব ?

হুৰ্গামোহন বলগেন--লোকের প্ত হলে--আনক করে
--লানব্যান করে--কেন আন ? পুরাম নরক বেকে সে হেলে
যত তাণ করক আর না করক-- ইংকালের হুঃবক্ট বেকে
তাণ করবে এ আলাটা কোন্ বাপে না করে থাকে ? অবচ---

একটু থেমে বললেন— আলার অন্ত নেই বলে এত কট তোপ করি আমরা। পকেট থেকে চিট্টবানা বার করে বিপিন রারের হাতে দিরে বললেন—ভূমিই পড়ে বল তো বিপিন—এই কথাওলে: দেখা তার ভাষ্য হরেছে কিনা ? আমি যা পেনসন্ পাই—তাতে জীবিত কাল পর্যান্ত নিজের ভাষনা ভাবি না। চাকরি করে ভোরই সংগার সঞ্চল হবে— তিমটে পাস দিরে একটু বুদ্ধি যদি ভোর ঘটে না থাকে ভো--এই নির্ম্বান্তিতার জভ আপলোস হয় যা ভাই।

বিশিন সাগ্রহে চিটিবানা নিয়ে ইবং উচ্চত্বরেই পাঠ করতে লাগলেন :

বাবা, ক্ষমা করবেন। এক সঞ্জাহ চাকরি করতে-মাকরতে বৃবতে পারছি—এ কিনিস আমার সইবে না। ছ্—
এক বিনের মবো চাকরিতে ইক্কা দেব টক করেছি। সারঃ
জীবন বরে—এই রাজপ্রতি! দশচার নাকে রুবে বা ভা
বেরে—ছুইতে ছুইতে আলিসে এসে হাজিরা দেওরা—লাচ্টা
পর্যান্ত একই চেরারে—কতকওলো বাভাগন্ত নিরে হিলাব টক্
করা—এর চেরে বেঁবে যারলেও সহু করা বার। ভার ওপর
বারা উঁচু চেরারে বলে আছেন—ভাবের বোলাযোদ—সে
বোলাযোদের বারা আপনি নিক্তর জানেন—এ রক্ম ভোষা—
বাদ করে একপট চাকা পকেটে তুলতে এক বালেই আরি
শেব হরে বাব। এত দিন লেখাগড়া লিবিরেছিলেন কি
আনপ্রক এই কতে? নিকেকে চেনবার বেটুকু প্রবোগ কিরেভোনাই আপনার, চাকরির চাকার পিবে ভা বই হতে
বেবেন না। আপনাকে বিনতি ক্রছি—

এই পৰ্বান্ত পভা হয়েছে—ছুৰ্গালোহৰ বিপিনের হাত থেকে কাগৰবানা টেনে নিয়ে বললেন—ব্যস—ব্যস— এইটুক্ পভলেই হবে। এর পর ইনিয়ে বিনিয়ে পিড়ভক্তির নর্বা হতিবাহেন। ভাতে ওঁর সাহ্না বিলভে পারে—আমার শাভ হবার কথা নর। বল ভো ভোমরা—ওঁকে একশো টাজার একটা চাকরি কুটবে দিয়ে কি এখন মহা অভার কাজ করেছি আমি—

ওঁর উচ্চ কণ্ঠদরে ঘরটা গন গম করে উঠল। প্রচণ্ড একট আষাত উক্তে অপ্রকৃতিত এবং কোবাবিট করেছে এ স্বাই বুর্বলেম। বুবে স্বাই বেন সেই ছংবক্তে অপ্তরের সক্ষে এছন কর্মদেন।

সান্ত্ৰার হুবে বিপিন বললেন-ছু:পু করে লাভ মেই ছুর্গা, একালের ছেলেগুলোর বারাই এই।

হুৰ্গাংশাহন ভাষ পানে কিন্তে ভীকু কঠে ধবাব দিলেন, ভূমি এ কথা বগতে পার না বিশিন—ভোষার ভিন ছেলেই কাক্তি করছে—ভারা ভোষার ধবাবা নয়।

বিশিন বলগেন—সে ভগবানের নরা, হুর্গ। কবাটা যবন ভুললেই ভো বলি—লেবাপড়া শেবানোর ব্যাপারে ছেলেনের আমি বরাবর দাসনে রেবেছি। চাকার করার মত বিল্যে হুবামাত্রই ওচের কাকে চুকিছে দিয়েছি—বিয়ে দিয়েছি।

কালীরুফ ছেলে বললেন —কেংমার ছিলাবে তুল থাকবার কবং নয় বি<sup>চ</sup>ল্মন—কেননঃ তামার ঠাকুরদাদাও চাকরি করে গেছেন। তেঁলেকে নিয়ে হ'ল গিয়ে চার পুরুষ।

ংশিন এই শ্লেষ বুৰজে পেৱে ইষণ উত্তর খবে বললেন বাঁ—তবু কমি বাকলে মানুষের পেট তবে মা, এটুকু ঠাকুরদা
বুৰতে পেরেছিলেন বৈকি ! বাবে গলা ভূ'বরে কমিলার সেকে
বসবার যোগ্যতা তে! সকলের বাকে না।

বাকা-কটাকে কালীকৃষ্ণ বিচালত হয়ে হাত উঠিরে কি একটা চড়া উত্তর দিতে বাঞ্চিলেম—ছুর্গায়োহম বজতেন—ভোষার কথা গুরোপুরি না মানলেও—কিছুটা মানি বিশিন। কিছু এইটিই বুবতে পারতি মে—আলফের দিনে চাফরি না করে—গামাদের মত পৃহত্তর ছেলেদের গতি কি । ছুলে-পড়া ছেলেরা ছতুরে বাভে—বড় বড় কথা বলে—কল্পা করে—আলর্শের প্রপ্র দেখে—এ সবের অর্থও বুবি—কিছু উপার্জনের টাকা হাতে পড়লে—ভারা কি বদলে বার না। যে যাই বল্ক—টাকা হাতে পড়লেই না মাহুর সভিচালারের স্বাবলবী হতে পারে। দরা—দান ব্যান পুণ্য ব্রত—স্বদেশ-সেবা সবই কি টাকার ধেলা নর।

সবাই মাধা নেভে খীকার করলেন।

ভূমি একবার কলকাভার বাও হুলা। প্রথমে ভাল কথার বুবিবে, না হর ধনক বিরে—না হর কিছুবিন ওবানে থেকে হাভে চাকরিভে ভার সদট বলে ভাই করে এল। বীকের বাধার একটা কিছু করে বদলে চিরটা কাল কঠ পাবে হেলেটা। ইা—এ বাবার কর্তব্য । বাবালক হেলে সাবালক করা

সাবালক হেলেকে টাকা উপার্জনের তত্ব বৃত্তিরে বৈত্তর।

এ সংই বাপেকের কর্তব্য । হো হো করে উচ্চ হাসি হাসলের
হর্গানোহন।

ছপুর বেলার বেবেতে জাঁচল থা বাছর পেতে ওলেই ভিছু
ঘুর জালে না। বসু-গৃথিবী হেমপতা বলেন, সারাধিন বাটুনিয়
পর একটু সাধ্যর নেওয়া—ঘুর নয় ভাই, জালিভি ভাঙা—ভাঙ
জি সুধির হয়ে—ছ'বভ--বাভ পাশাবেলা।

ছোট বউ স্থাচনা ভিবেম করে ছট পান—কার্মান সিল-ভারের ছোট কোটাম করে ধোঞা ভার কারার রাসে এক গ্রাস কল পিয়বের ফাছে চেবে বলে, মা—পাকা চুল ভুলব ?

(र्यंग्छः वर्णन---नः। पृ'म (नाष (नः।

পাকাচুগ ভোলার বিলাগ বেনলভার নাই। নরম হাজের ইয়োর মাধার স্কুছ্ডি লেগে বেশ আরাম হয়—বুনটাও ছ'চোবের পাভার করেই আলে—যথিও ভিনি বীকার করেই না চোথ বুকলেই বুন আলে। কিন্তু এক লভের আরাম নিজে গিরে নিকেকে হভন্তী করার কোন মানে হয় না। একেই ওঁর মাধার চুল পাভলা—ছোট। মহা বুল্ফি কিনা ভগবানই আনেন-চিক্রণী ঠেকালেই গোছা গোছা উঠে আনে। কভ গর ভেল কভ ওমুব—াক্সভেই কি কিন্তু হ'ল। ফাস্তুনে পাভা করার হভ—বার মাস চুল উঠছে ভো উঠছেই। এর ওপর মাসুবের হাত লাগলে কি আর রক্ষা আছে।

স্বামী বলভেম---সংসারের বাটুনি বেশি বলে জগবান ভোষায় দলা করেছেন---চূল বাবার পরিপ্রম বেকে বাচিয়ে-দেশ।

হেমগতা এ:এম জোবে বগতেন, কেন,—আধার কি চুল বেবে দেবার গোকের অভাব—ন: কারো চুল বেবে দিই না ? তোমার সংসারে এনে কোন;দন গভর কোলে করে বলে আছি—বলুক দিকি কেউ এ কব: !

---ক্ৰান্তর ব: মনান্তর ষাই বোক— প্রভাতের মেধ-গর্জনের মত আৰও তা মৃতিতে ক্রতি স্পর্ণ করে উৰ্মা করে বের। সে সব দিন আর আসবে শা।

আৰও শোবার আগে যথারীতি মধ্যা করে চোর বুদ্দের

ক্রি সাত্যই ধুম তার এল ন। দান বেতার পর বেকেই
ও্রের বৈঠকবানা নিখন হয়ে পেল কেন। যে চীংকারের
তালে দুমের সংখ্যের বন্ধিভতর হয়—তা বেন ব্যাহত হ'ল।
ওরা বর হেতে চলে গেল কি ? না অথাতাবিক কিছু বটেছে ?
বিশিন একবার প্রশাস্তর নাম করলেন না ? প্রশাস্ত চাকরি
করছে ? একট নিখাল কোনমতে বুক্তের মারে আটকারো
গেল না। তা হবে বৈকি। বাশ পাছে বোটা শেনসম—
হেলের হ'ল একশো টাকা বাইনের চাকরি। তগবান ববন

বেশ---কিন্তু আনঅ-সংবাদ---এন্দ চূপি চূপি চুবি করার বত কিন্কিসিরে বলতে কেন ওরা ? তবে কি---

and comprehensive the second control of the

পাশ্যোভা ভেঙে উঠে বদলেম। বিষয়ে যাব। প্লাস বেকে বানিকটা কল বেলেম—একট পান ও ছু' আঙ্লে ভূলে বানিকটা লোভা গালে কেললেম, ভারপর বলে বলেই কেওয়ালের দিকে এগিয়ে গেলেম। ওদের বৈঠকবামার হাজ্ ভানালাটা এ ব্যের রোরাকের ওপরই হুম্ভি বেরে পড়েছে বলতে হবে।

চিট্টর বেটুকু পড়: ২'গ — সবই কানে গেগ—ওদের মন্তব্যও। হু'চোব বেকে ভলার বোর কেটে গেগ—শ্রমকির বলিরেবা'কভ মুবমন্ডল প্রসর দীবিতে হ'ল উত্তাসিত। বারাকা বেকে ধোরাকের শেষপ্র'ত্তে এসে দেওয়ালের গায়ে বিশে বংগ রইলেন—কারও কিছু শোধবার আশার।

কৈও আর িছু শোধা দেল মা। অকালে পাশার আজ্ঞা তেতে গেল—বৈঠকবামার ধরকা বঙ করে ছুর্গামোহন অকর মহলে চলে গেলেম।

হেম্পতা ভাক্পেন, ছোট বট্না--- আ ছোট বট্না---এক্বার শোন ভোষা।

দোভলার ধরে বুকে বালিশ দিয়ে আব-শোওয়: অবহায় স্কৃতিতা একবা'ন চিট লিবছিল। পালে বোলা পড়ে ছিল আর একৰানি মাভিনীর্ণ অল-ভারই প্রত্যুক্তর। সামী মলর মাভিদ্র প্রবাদ শহর ক্লকাভার বাকে। চাকরি করে কিনা দে সধৰে ফুচিত্ৰা ক্ষমিলত নয়-তবে উপাৰ্জন করে ্সে। কোন একটা আপিলে দশ্ট; পাঁচটার বাবং বাট্নিভে बामकाबादवत वै'वा भारत नश्च; जात देशार्कत्नत है।का क्ष्यम् अरम्पदः चारम--- क्ष्यम् चारम् भा । (सक् चास्ट्रहः মৃত ডা নিয়মিত নর---আর মেক আহরের মৃত শ'ন্বার (भावतात्वव चामा चाववाव कै:एक विवादवव क्रुक्टि। (भावतात्वव चामा चाववाव के:एक विवादवव क्रुक्टि। (भावताव्यवाव के:एक विवादवव क्रुक्टि) (भावताव्यवाव के:एक विवादवव क्रुक्टि) (भावताव्यवाव के:एक विवादवव क्रुक्टि) (भावताव्यवाव के:एक विवादवव क्रुक्टि) (भावताव्यवाव के:एक विवादवव के:एक विवादवव क्रुक्टि) (भावताव्यवाव के:एक विवादवव क्रुक्टि) (भावताव्यवाव के:एक विवादवव के:एक विवादवव के:एक विवादवव के:एक विवादवव के:एक विवादवव के:एक विवादवाव के:एक विवादवाव के:एक विवादवाव के:एक विवादव के:एक विवादवाव के:एक ৰাভিত্ৰ আবহাওয়ায় প্ৰিয়ণ উত্তৰদেৱ মধ্যে কাটাবার স্থযোগত পাছ ন:। ভার ষেশে আদা অনিষ্মিত বলেই চিটিটা নিষ্মিত इति। (मकालिव (यरवदा (वर्षण वन्नष्णन, अ वाराद कि **हिंद्रि (लवाब जी | दिन्यू पृश्य वर्षक वर्षे-- वामीरक पक्ष** লেবার পূর্বে একট ভভিবাচক কিংবা প্রণয়বাচক সংখাবনের धादा च च ए इ करत मा--- १८८ मध्य-। जनामात्र (काम (be (बर्ट) कारणत बाता करूरे (बब्द)

সভিত্রই ওদের চিট্ট অনাদ্যর—পরশারের নাম করেই প্রালাপ আরম্ভ করে—আর যে সব বিষয় ভাভে আলোচিও হয় ভাতে প্রবাহর বাম্পবিন্দুর থাকে না। ভাষার আবেগ-পৃথিত অক্র সদসদ নর—না আছে কাছে আসবার হুত আহমের বাবেদন—মা প্রকাশ পার—ছুর ও ধীর্ব বিরহের হুত অর্থের বেহনা।

মলর লিবেছেঃ এবার একটা মতুন অভিন্তা লাভ করলার ছচিত্রা। আই, এন, এর আকুল বলিব-বিবলটা

কি ভাবে শহরে হড়িয়ে পড়গ—ভা বোৰহয় ভাগতে পড়েছ 🕸 कांगक क्रिक सबद्ध अकःचरण (त्रर्ष्ट किया अरक्क्--कांबन यान--वारंग बनावन, चानिन, रेपून, नवर वय स्टब (नट्ट। अहे। আন্দোলনের কোয়ারে যারা ভিন্ন ধর্মী বলে চুরে সরে ছিল---ভাৱা এক আয়গায় এলে মিশল—বারা বভ ভায়ভবর্ষেক্র ধাৰিতে রাজনৈতিক সম্ভাবে জটল আর 'মুইট ইভিয়া' শীতিকে বিগণিত করে চুল্যে—ভারাও এলে বিশ্লত—ক্ষ-नर्वित नरका अथक कात्रप्यर्वित अथक क्रिके काकि व्युक् বেংশেটের সামনে নিতীকভাবে ধুক পেতে স্বাড়াল। বজি কোনাৰৰ কোৰ ভিষৰুৰী শ্ৰোছে ভাৱা প্ৰশাৱ বিভিন্ন হয়ে ষায়ও—ভবু এ দিনের কবা আহং। ভূচতে পার্য হা।---व्यात्र कृ'त्मा यक्षरदेव-- कार्रिक मिन्दर्ग (व कक्ष्मा हैर्टेश---ভার ধ্বনি--মনের গভার থেকে যে অভিযাম উচ্চাহিত হ'ল ভার প্রাণশক্তি আমর৷ ডুগ করে নিছক ভাবের উল্লাস বলে উভিয়ে দিতে পারি না। এই সভ্য স্পষ্ট নিভীক আগচণের ষম্ভ কোন নিৰ্জিত দেশ—কোন-না-কোন অসভৰ্ক ১ছুৰ্ছে উচ্চারণ করে কেলে। রাজনীছির গোলকবাঁবা পার হয়ে नुबक का ७१४४ मधी (७५ कर्द--- बाक्र न दिन-पिराम আমহা এক সুবিজীণ মিলম-ডোহণের সাম্যে এসে পৌছেছি वर्ष रह्मा अवष्ठी अध्य वश्च-पांतर एरम (टाए---বাফদের বোষা আর প্রীদের রঞ্জ--এই উথাদনায় ক্পকৃতি। আৰু ভাগছে। সাইগ্ৰের বেভিওতে ধ্ব'নভ **ব্যক্ত-ভারতবাসী বিন্যুল্যান এক ২ও**। (ijve me your blood-1 will give you freedom

the contract of the contract o

হুট পুটা মলম ভার আছহাতা ভভি- দিয়ে ভায়েছে। সে তীর অগ্রন্থতিতে সুচিত্র আছেছ---অভিত্ত হয়েছে বলেই कार्यक निरंत रामास आञ्चाकत भिष्ठ । अने कड्यू छि हो रहा ही : मश्रा अरमारवत नामा पूँडमाडे काक ७ वर्षरा---शरेरदव वनर चार्चाम कर्ध द्वारन । (काम दृश्रक ८४ कनर श्रका निष्ट হলেও মনের বিচিত্র অমুভূতিতে তা রদ্দিভ ও শঙ্গবিভ হৰার সুযোগ পায় না। বুহুৎ কোলাহুপের মধ্যে পরাবী-ভাস্ত মর্থবার্থা প্রকাশের প্রবিধা হয়তো ঘটে—ভূক্ত কভক্তলি विद्राविक्षेत्र भारमाधिक काक या मरभारत्व क्षा रकाव द्रार्वः बन्द दृद्दः चन्नकुण्डेव वृत्त चाराण कृत्व छोत्र वृत्तः चन्द्रः इ **च्या मरनद भाष्मारकात पहेः इन्छ यहै कि। भि**यदाश्चित्रः (काम (काम करन (मदे इज्ञाक-मन्य पृष्ट्कक्षण चारभ, कारकः वन चाञ्चत एव--- हम्म एव---चात श्रामा-नावात हेम् हेन् करण वाका--- विविविद्यासम्बद्धाः अत्य विद्य अहे समू-ভূতির বিভাগী গাচ় ও পুচু কিনা প্রচিত্রা ভাবে না—ভবে निर्कार प्रश्रीत और जनायांच युद्ध है दिन सरवज्ञ चौक-(यहम्--প্রণর-সমুক্তিত ভাষাকে পত্রে দ্রুপ না থিলে এর সুকুষায়ং चार् वारेटवर ७६ पृथिनी मिश्रमः क्रार (वर्षः) चिक्रियमः সহকাৰে হুচিত্ৰ। চিট লিবছিল।

হেন্নভাৱ ভাকে ভার অহত্তিতে বচ আবাত লাগন।
বাবে মনে ক্র হ্রে গে ভাবনে উত্তর দেবে না—হ্রিরে পড়েরে
আর্থনি ভাব দেবিয়ে চুপচাপ বাকরে। কিছ সক্ষার ভাব
ভাই ভাকের প্রথম আবাতেই আকাশে পাবা মেনে দিবেরে।
প্রকৃত্তিক বিরে বিরক্তি আর একধিক বিরে পাভচীকে কাঁকি
কোরা মন্থা—মভিক্কোরে উভ্তেলা সঞ্চার করেরে।
বিহাতের মত ইবলন্ধ গভি এরা—কবন পালার আর কবন
ক্তে বলে নাল্য ভেবে উঠতে পারে মা। কর্ত্তরা এই
কাঁকে সভাগ হরে উঠন—এই সারাভ কৌশলে ভোরার
ক্তিটুকুই বা কভি। হু' মভের মরকার বিটারে আবার ভূমি
কোবার মনোবোগ কিতে পারবে।

चृष्टिका इवाव ब्रान वाहरव अन ।

টক ছ' য় । নর—হেষল চার নাতিদীর্থ অভিবাদগুলি আবনোবালের সংগ এবং করণেও মনেতে ভার প্রতিক্রিরা করু হ'ল না। ছুনুর ভবনও নিভন্ধ, করেকট লাইন আঁচড় কাটা কাগকবানা অভাবিত মুহুর্তের দাক্ষাররূপ একবানি আগত পরের শ্বামি অৱ অর নছতে—কিন্তু কলর নিরে আভাত একাঞ্জিতেও লে হারানো মুহুর্ত্তকে কিরিরে আনতে পারলে না। ছুর্লুর্ভ্রেলি স্পর্কিটক।

ছোট বৃক-শেলকে থানকতক বই ববেছে, অবসর বিনােদনের উপারথলপ নর—চিরার ক্ষলি বৃহুর্ভের সহারক।
একবেরে সংসার—ভোঁতা ও ভারি কাকভলির প্রহারে চিন্তাকে কর্জরিত করে দের—বৃতিতে আনে ক্ষভা। এক একটি থিন আসে নিশ্ছিল অওকারের নত নিখাল বোনকর—বৃত্যর ইন্দিত ববে আনে তার মূর্ভ্তিলি। স্টিনার তথন প্রারোক্ষ হর ওই বইওলিকে; ওবা প্রারিত্রাণ করে—ভোঁতারি বেকে—অওকার থেকে—বৃত্যর হিন্দীতল করে—ভোঁতারি বেকাতে তার দিন রাত্রির অপুরর্ভন চলে—সে ক্ষণং অভহীন নর—অতলক্ষণী অওকারের নত বিভীবিকা দেবার না। স্টিনা আনে এক বিন এই বাধন কাটবে—আলোর ভরা ক্ষণং ভার কর্মবিভনে বরা দেবে। বই না থাকলে সে কবে স্থিবে

ছুৰোৱের বাইরে বৃহু করাবাতের শব । কে ? বৃহুক্তে -ক্ষতিরা প্রার করলে।

আমি। বেক জা মুকাকিনী। চিটির কাগক অভিবে স্থাচিত্রা চুরোয় বুলে বিলে।

ষ্টপুট দেহ--এক গাল পাদ---বাধার বলবলৈ নিঁহর
্বেক কা বকাকিনী বরের মধ্যে এনে বসলে। এক গাল বেনে
বললে--ভনেহিল ? বা বলহিলেন--ওমের প্রশান্ত নাকি
ভাকরি করবে না।

স্থানি এ সৰ বৰষ নিৰে বিভাৱিত আলোচনা ভালবাদে বা। বাহি বেষৰ এক কোঁটা বাবাৰ ভিনিবের চারবাবে তব্তব্ করে বেডার—তেবনি কডকণ্ডনি লোকের বভাব

ৰোটবাটো বিষয়কে কেনিৰে কাশিৰে যদিৰে গাঁচ জায়গায় য'তৰে বেওয়া। সেই জুজ বন্ধ বেকে চুবে বাবার ক্ষমতা তাবের বেই।

ৰনে যদে বিষক্ত হলেও মুৰ্বে ইবং হালি ফুটবে বললে, তা সৰাই বে চাক্তিই কয়ৰে – যেকলি—

ৰূপের কথা কেন্ডে নিবে নক্ষকিনী বিশ্ববের প্রবে বললে— ওমা, চাকরি করবে না ভো পুরুষবাহুষ করবে কি ভবি !

य'हडा शामियूर्य बनाल, का बरहे---।

নকা'কনী ভার হানিটাকে উপেকা মত্তে করে ভারি গলার বললে—ওঃ মনে হিল না—ভোনরা আবার চাকহিটাকে বাভবিভি বল কিনা !

দে বাগ করে পিছন কিবভেই স্থচিত্রা বপ করে ভার একবানি হাভ ধরে ংললে--- রাগের কবা মর---সভিটিই বল বিকি নেক্তি---বে কাকে নিকের বাবীন ইচ্ছা বাটানো চলে না ভা দাভর্ডি ছাড়া কি !

হাত হাড়াধার (চই। করতে করতে ম্পাকিনী বললে— জানি না — ধবং কুড়ে স্বাই যা করহে, তা যদি নক হ'ড কেট করত না।

স্চিত্রা বললে—খণতের কথা আরবা কচ্টুকু জানি বেজদি। কিন্তু নিজের চোবেই ভো বেবলায়— সেবার ভোরার
ভারি অসুব বেবেও বেজ ভাররকে কলকাভার বেতে হ'ল।
কি-মা বিনা নোটলে কানাই করলে চাক্রির ক্ষতি হতে
পারে। আজু সভাি বলভা মের্লি—ভোনার ভাতে একটুও
কঠ হর নি ? বলে স্টিত্রা ওকে হ' হাতে বেইন করে বরলে।

মুখাকিনী কেনে কেগলে। সুচিনার ওপর ওব রাগ হর, মুম্বতাও হয়। এমনি ভাবে ছেলেনাছবি কথলে কার মা স্নেহ্ হয়—হালি আসে। ওরা এত লেবাপড়া পিবেও মনের ফিক্ বিয়ে গিরিছ লাভ করে নি। বিদ্যেটা ওলের বাইরের চটক—সংসারে ওলের মৃত অস্বার বৃধি মুট নেই।

হকাকিনী বললে— আমার কট হর কিলে আমিল ? ঠাকুরণো কি হবার যদি আলে মা বলে।

সুচিত্ৰা বললে—ভাকে সে কথা বল না কেন ?

বলেছি—কল হয় মি। ওরা একালের ছেলে— আর কিছু
মা থাক, বাহাছবিটা ভো আছেই। কিছ এ-ও বলে ভার্বছি,
এক দিন পভাতে ওকে হবেই। কাজের সময় কাজ মা
করলে বিবাভাপুরবের সাব্য নেই বে নাস্থকে সুবী করেন।

স্থৃতিত্বা বললে—বিধাতাপুত্ৰৰ স্বাইকে সুধী কৰেব না— বেক্ষি।

নে দোষ ৰাজ্যের না বিৰাভা পুরুষের ?

चन्द्रे बामरल बल्डाम-- चन्द्रदेव । श्रुविध शामरल ।

ৰকাকিনী পুনক গভীৱ হ'ল। বসলে—কানি—হিঁছ হয়ে ভোষয়া অনেক কিছু— যাম বা। এ ভাল নয়। সে বাবায় বভ পা বাড়ালে। ছচিনা ৰন্দাভিনীকে বাবা বিলে না। বিভ্রানি বাজে বলে—এবের রুবে সে বহুবার শুনের। আচার-বিচারের নির্ভ বিবান ও উপবিধান—সে সবের অবহুলার প্রায়লিচছ —ইহুভাগের শাভি—ও পরকালের নরক ভোগ—এ সব বহু জবের কার বেকে অগংখ্যবার সে শুনের। শুনের—প্রহা করতে পারে নি। বুঁত বরা কিংবা বুঁং বুঁং করা ভো বভাবের বলেই বটে এবং সংভার—বিচার এসবতে রুক্তি বলে বঙ্কন করা—এতেও হুভাবের ক্রিয়া প্রকৃট। কার্যান্তারবের উপলব্ধতে নাড়া নিরে প্রবল বেগে বে কালের লোভ ছুটে চলেরে—ভার ইলিভ অরাছ করলে—ভার্যা কারপকে উপলব্ধি করা বার বা। এ সংসারে এসিরে চলার ক্যা বললে—এরা নাসিকা কুকিত করবে—ধারলে বলবে—সাবাল।

ক্তি বাহাছরি বেবার বত শিকা সুমিত্রা পার বি।

হেমলভার খানী অবোরনাথ শেষ বরুসে চাকরি বেন। निस्नृत्वदव **स्वन**्जान-चर्नाहे (व क' विवा क्षत्रि हिन---छाए **लिटिंड कार्य ७ १४८४३ काल्एक्ट मरहाय हरम७**—मरमाद বিন বিন বেতে উঠ ছল। বাওয়া-পরা ছাড়াও নানান রক্ষের वंबठ—य। वायब धेनवच (वटक (बडेाटना इ:मान्)। (नव चत्रत हाकवि बिर्ण ए'ल -विशादि भरकांच कार्य। जावहे चारब ट्रांजवा विका निवान-द्वमञात शीर्ववर्त्त, वाश्यक यवानावा ए'न : পुतालन वत (सत्तामल---वाक्या है)। अ सिहास --- वादवावाविव केम्।---(बर्लरभव (वी-काक---माकिरमव अव-वाणन देशांच वर्गाचा अध्यक्षी क्रमणव रक्षाद्य। अवय बराबूरका बाका अ भरभातरक विरमय कावू कतरछ भारत -বি--বিভার বহাহতও শেষের দিক বেকে তর দেবাছিল। ছেলেরা উপার্ক্তনক্ষ হওয়াতে সে বাঁচও তেম্ম গারে লাগে नि । व'नव नाम क'है। (छत्र(मा शक्रारम छन्दे महाकृष्णिक र्वार वान बका करव नि-छेब्छ बारभव विभिन्द कि वन काम-नारम अरन निरुद्ध । यान दि मधी अ कवा (छश्रहमा भगम जान बर्फरे अमान करत विद्वार ।···वहेश वनरक तारे --- जान वद (वंटकरे अटगटर। श्राठीय जाहांद्र विहे।-श्रवय गरनाव (परक---अरगरव वक् ७ (यक्, द्वावेटक अरगरवन---ब कार्णव मरक मनवद्य भावन करतः ब वाकिएक स्म विद्वा चारा। (गराषः। (यत छक चिकः (गरावित-चार चरत बरे मिकाब श्रवादमरे श्रामिक बक भ'तवादब भट्ट छात्र चानान पर्छ । चूहिबाद मरन छाद नृस्देवान वर्ड्डेट् पर्छ बाक —এ বা'উতে ড: বিষে বিশ্ব-বিভিত আলোচনা বৰেষ্ট स्वाद । विद्यव भव भवत भारतिकारी त्राभरवर इनक---**च्रांत (बक्ष्य क्रियोक्ति वस (ब्रांट प्रेंट्**क्रिय वाप्र मि। **जावा व मरमारव बरमरक च मरियाय--- मस मदी मरवाद पूर्वा षड्डांटनड नट्या निरन--पान प्रतिवान निरन लाकाहाटनड** 

অহঠানগুলি পালন কৰেও—বছৰিৰ লোকায়ত বৰ্ণাগাত প্ৰতিষ্ঠিত হয় মি। বে বধু উপৰাচিকা হয়ে আলে—ভাষ্ণ প্ৰতিটা বিলবেই ঘটে। বাই হোক সুচিয়াও এবন প্ৰতিষ্ঠিত বলতে পালা বায়।

এট ছোটবাটো হুৰ্বটনার অন্তৰ্গত হলেও বড় ছুৰ্বটনা এ সংসাধে বটেছে বৈকি। কণ্ডার ধর্ণাছোত্ব সেটা কালবৰ্ণেঞ चन्न -- वर्ष वर्ष वर्षात्वार्यास्त्व विद्यानीके--वर्षाचिक । ষ্বাৰোহন ভেনী বভাবের হেলে--চাক্রি করতে রাজী হয় নি প্রথমটা। প্রতিজ্ঞা করেছিল—বিদেশীর আলিলে সে কিছতেই দাসৰত লিবে ধেবে না। স্বধেশীয়ানা ভার ছিল মা—ধই গদটা পাঁচটার ওপর বিরাগ হিল অসীয়। হেলে-(यन) (यदकरे नामवाकमा---भाष्का देशावकि धरे नदर भाष-विक रम्छ दीवायका जमस्यक मत्या यह प्रित्यक श्रव विम अकरे বৰুষের কাল করে যাওয়া ভার পক্তে ছিল অসম্ভব: খে कारक উপ্তেক্ষা मেই--- म कांक जावाब बाग्रस करत । स्वक পৰাত কাজ অবত তাকে নিতেই হয়েছিল--তবে আপিলের চাকরি নর । . . বাবা ভাকে কোর করে বলিরেছিলেন--- এক অবিহারি সেরেভার। সেধানে দিন কডক কাক করে ও भागित्व त्रम- भक्तिवा कान भर्ता क्रिक विव भरक किरत जन किकिर विमंत्री स्टब । जवारे जायल विरवरणक কটে ওর সমূচিত শিক্ষা হয়েছে—হয়ত বা মতিও কিরেছে। वावा चामकक्षम बार वनकारमम-- ७ मावा (देंडे कार समाम ।

ওর সহিষ্ণৃতা দেবে বাবা অবাক হরে বললেন, বলি টো টো করে ঘ্রলেই দিন কাটবে - না উপাৰ্জন করে দশ ক্ষেত্র এক জন হবি ?

ছেলে বললে, চাকরি ক্রুরব—ভবে আপিনে নর । সায়েবের আপিনে ভো ভোষার চুকিরে ধেওরা হয় নিং বাপু।

ও রক্ষ বাভা দেবার কাক আনার পোবাবে না---বাক্চ শিঠ টন্ টন্ করে।

ভবে কি লাটগাৰেবী ভোৰায় কোগাড় করে দিতে পারি 🕏

সেও তেঃ লিবতে হবে--- বাটডে হবেঁ---প্ৰজা শাসক করতে হবে---

ভা হোক---ভাষি মামেবি করব।

আবোরনাথ কাল্বিল্য করলেন না—ভার প্রতিনইতেলেকে নিয়ে রঙনা হলেন কাকনপুরে। এবে বেকে কণ্
কোশ চ্বে—কিও চুরই ভাল। বাজীর কাত্যে—আজ্ঞা
ইরার্যাকর পুরোনো টানটা চাকরির ক্ষেত্রে অরুকুল হবে না
বলেই এই বাবছা। নারেবি পাওলা বুব সহক্ষাব্য হিল না
—এ বিষয়ে অভিজ্ঞভার বর্জার বটে। ভবে বাপের অর্বোঞ্চে
থ'বাসের কভারে তেলে শিকান্বিশীতে লাভি হরে গেল।
নাইনে নার্যার, বাটুনিটাও উপেক্ষর বহু, তবু ব্রুবারোহক

এই চাকরি বীকার করে নিলে। নারেবরা ক্ষিণাবের অধীন হলেও বহু ক্ষরতা তালের হাতে। প্রকা শাসন বাংপারে তারা নিংছুপ। ববন ধূশি কাহারিতে আগ—ববন ধূশি পুরে বেড়াও—আজ্ঞা ইয়ারকি দাও কেট বলবার নেই। আর বাজিতে অহুপত সহচরহকের সাহচর্বো—গামবাজনা—পাম ভোজনে অর্ড রাজি পর্বান্ত বংগ্র মত কেটে বার। হ'মান পরে বাবাকে সে চিটি লিখনে, আপনার জীচরন আশীর্জাকে কাকনপুরের নারেবি পরে পাঞ্চাপাকিভাবে বহাল হইরাছি আনিবেন।

ৰাডিঃ স্বাই বুশি হয়ে দেবভার মানত শোধ দিলেন— কেউ কেউ শুভন মানতও করলেন

প্রথম বছরের উপান্ধিত টাকার বাড়িটা আগাগোড়া বেরামত করা হ'ল। ভার আট নাস পরে কর্তা গত হলে— নানসাগর প্রাচ্চ করে মধুরামোহন বথেট নার কিবলো। সবাই বললে —এক ছেলে হভেই কুল উন্ধান হয়—বের না আয়াদের মধুরাকে।

তারপর একবিশ হেমলতা বধারীতি ছুপুরে পান জরদা ধাবার জল শিররে রেবে সবে চোব বুজেছেন, এমন সময় কড় কড় শব্দে সময় ধরজার কড় বেজে ইঠল। বাড়িতে কেউ পুরুব মাল্লব না বাকার হেমলতাই উঠে সম্বলা বুলে—ছু' পা আতত্তে শিহ্যের এলেন।

লাল পাগড়ী মাধার ছ'জন পাছারা-ওরালার মাঝবানে বাকি ছাক্প্যান্ট পরা একজম সারেব তাঁর পানে কটু ষট্ করে চেবে জিজাগা করলে, এইটাই তো মধুরামোলনের বাড়ি ? আপনি তার কে হন ?

भारस्थाय निवर्तन माता है। (७८% भरकृष्ट । पुरा करव ভারাই কবাব দিলে। সে সওয়াল কবাবের বেলিয় ভাগই হেনলভা বুকভে পারেন নি-ভবে ভবে ভার বুক এর এর করে উঠেছিল। লাল পাগড়ী বে গুড সক্ষেত্র ময় এ কবা এাবের একজন অব নিরক্ষর লোকও বুবাতে পারে। অভিয়ে ভার আশহা সভ্য হ'ল----পাছার সোকে আনিয়ে দিল পুলিসে वांकि बामालद्वाभी कदरव । मधुदारमाहम काकनपूरत अमन এক কাও করেছে যার কলে পুলিদ এলেছে ভরাদী করতে। হাঁ---ঘটণাটা পাড়ার কমেকজন বর্ষীরান সবিভারে ( এবং সোৎসাৰে ) ৰলে গেলেন। সামেৰি করে মধুরা মাকি সদরে बाक्या माठांड वि----अविटक माटिब किचित माटा क्षिमाती मीलाय एवं त्वरं मनद (बंदक मार्गिकात मनावे अरलम जनव করতে। ভিনি যে দিন আগবেন ভার আগের দিন বাজিভেই अक प्रदेश प्रदेश छहतेन छहतन बद्धा नक्रत -- अरे चानकारी। প্ৰবৃদ হওৱাতে প্ৰযোগ-বাগৱে বৰুৱা অপরিবিভ মহা পান করে। ভারণধ সারারাত্রি বরে চলে ভাওব নৃত্য। পরিশ্রাভ नाविचरवता (मरवेद **वर्ष डेनन कार्य ग्रं**शिक वाटक--वारनाव ভেল ক্ষে এলে বাতিটাও হবেছে নিবু নিবু--বৰ্বা কিছ

আৰ হাঙার বি। রাজি প্রভাতেই তার হিণাব বিভাশ হাবিদ করার কথা—এ কথাটা প্রধার উপ্রাক্তরার মধ্যেও নে ভূলতে পারে বি। অসহার রায়তের উপর বিরম্প আংশপত্যের শেব হবে কালকের স্বর্গোগরের সঞ্চে—এ কথা নে ভাবতেই পারে বা। যে করে হোক—মান তথা প্রতিপ্রতি বাঁচাতে হবে। চটু করে একটা কন্দী তার মাধাধ আসতেই অর্ক্ত আচেতন— বার-বধুর হাত বরে একটা ইেচ্কা টান ধিতে বললে, ভ্যহিস্ ?

'উ:' বলে মেয়েট ভঞ্জ:-শিবিল দেই বেকে সৰ আলক্ষ বেকে কেলে সোকা হয়ে বসল।

শোন ৷ মধুৰা ভাৱ চোবের ওপর বজ-বাধা বৃষ্ট বেকে কর্বশ কঠে বললে, ভোর সিন্দুকে কড টাকা আছে ?

होका ।

ইা---চাৰিটা দে দিকি---। বলে হাত বাভাতেই বেরেট-চীংকার করে উঠল।

উভেজিত মধুৱা---পাশের টুল বেকে বপ করে ভোরালে বান! টেনে নিয়ে ভার মুবের ওপর চেপে বরলে। ভারপর হ'ক্ষে নি:শব্দে ধ্যক্তাধ্যতি করতে করতে বেখেট আছ হয়ে ঢলে পড়ল খেবের। মধুরা ভবন উত্তেজনায় কাঁপছে---কোন धिदक दक्षाण मा करब अब बाहम (बदक हावित शाक्षा बुरक ৰিলে। নগৰ টাকা আলাহুৱণ পাওয়া গেল না-- ডাভেই जनशास्त्र विदय छात्र मक्त भएन। (ब्राह्मीक जनशास मुख्य করতে করতে ভার মনে হ'ল—সে কি গভাই অচেৎন হয়ে भएकर १ विष्यक विषय *एक्-*-दूरकय क्रेंग्र-माथा । हेद भाख्या বার না, নাকের কাছে হাত রেখে নিবাসের একটু ভাগও ভো भावता (नम मा। छटन कि-- १··· छ-छ कटन छे/छवना वस **डिजिएड (मरम बन । डान करब (मरबन्दिक नहीक) करब (म** व्यटण-मा अरकट्रव किष्ट्रशास कावन (बहे । अवारव (बामक्क ধাকলে তহৰিল ওছফুপের দায়ে কারাবাস না হোক নারী হত্যার ধারে কাঁসি বা ধীপাণ্ডর তার অনিবার্য। নেশা ১টে (नम । वास (वनि (महे---- अवनि वा एवं अक्टें। करण हरत । উপায় বেছে নিভে ভার বিলহ হয় নি।—সকালে ২বুরা-(मार्गरक बूरक भावता (नम मा--- कनकात वरीमा (मर्बहेक भारत बज्जुबा बड़ा भक्ता। अश्वारमाष्ट्रस्य बार्फ स्मात्र काशिएक भवारे बक्यारका क्यामवन्त्री पिरम । छात्रभव हरमरक बरे অভুসভান-- যার কলে ছেলের বাড়িতে বানা-ভন্নানীর পরো-बाबा निष्य भूलिम विद्युष्ट साना ।

হেমলতা এই হীৰ কাহিনীর এক বিশ্বত বিশাস করলের না—দালানে পা ছড়িছে বসে ই'নছে বিশ্বতে কাছতে লাগলেন। পুলিসকে বনের বাল মিউছে গাল লিভে না পেছে প্রতিবেশীদের মধা-বারা নিবে তীক্ষ তীক্ষ বাক্যবান প্রয়োগ করলেন। তারপর পূর্ণেল চলে গেলে তাক্ষের চড়বল পুরুষেই বরকবাসের কারনা করলেন। এই বটনার কলে বড় বউষেই

আছত হ'ল ঘন ঘন কিট্, পৰে ভাছ নাথাৰ শোলখোগও দেখা বিলে। কলে এই সংসাহে থেকেও শে বিভিন্ন হয়ে নইল। হেনলভা আছও ভোৱে আঁকড়ে বংলেন সংসাত, এবং পরেছ সংসাবের লেখ্যাট ভাল যক নিয়ে ঘরে ঘরে বে ভারও ভাছে বলে বেভানো হ'ল ভাছ সান্ধনা বা আনক লাভের উপায়। বার বছর না গেলে নিক্লিট বাধীকে বুড বলে বোষণা করার নিবৰ নাই, কাথেই বছ বট সংবার আচার নিহন পালন করে বাজেন। অর্কানে—অর্চ অকানে বডকুটু করা সভব ভাই ভিনি করেন—ভাকে সামলে বাধবার দাবিছ নিরেছে সুচিনা। ক্রমণঃ

## অমৃতের সন্তান প্রশোরীক্ষনাথ ভট্টাচার্য্য

গাঁহে হ্ভির গান্ ' বল্ তোৰা বল্—খামৰা অধর অধ্তের সন্তান। শি⊛র ভেৰে যচিত বৃঠি

একাকার আজি হরেছি ছাজার অংশ, অজে নাহি যে সংহার ময

অভিতে জলে নাহি—নাহি মন ধ্বংস।
লীলার লাগিরা রচিছি শধীর বুক্ত অগীর প্রাণ,
'বঁও বঁও আমরা যে ভগবান।
ক্ষম আমানের জয়,
অবতের ছেলে মুহাবিকটা নির্জন্ন নির্জন।
বজের চেরে ছুক্তর মোরা মান্তার পথে অটল চিন্নছিন,
ব্যুক্তির চুক্ত মোডা ভাবী এই বক্তিনী পুর্বিধীর।
অন্তিতে যোৱা স্থান করি ছেলে

সংখিত গাহি অকু অকু বেশ্যক্তে, ভূষ্য বাজাই সংখ্যে যাখে

स्व माना नीवि अरह ভाরকার চলে।
वृद्धार दाया हम्म कि दोर्ग-स्वा चार्यापत हिर्दछ्छा,
वागा वृद्धि वाकादेवा नान नत्व त्यापत्व हिर्दछ्छा,
वागा वृद्धि वाकादेवा नान नत्व त्यापत्व हिर्दछ्छा,
वाणा वृद्धि वाकादेवा निष्ठा भड़्य विदे त्याचा महान,
विवि मत्यत्वत यावाण्य्यंछ एक्टल कवि वाग् वाग् ।
ना'त्व एक्टा अदे नान,
चावता चवत चावता चयत चहुएच महाय ।
चावता अत्वत चावता चयत चहुएच महाय ।
चावता अत्वत व्यवत्व विविध्य त्यापत्र कीवत्वत विद्याणा ।
चावता व्यवत विवाय त्यापत्र कीवत्वत विद्याणा ।
चावता व्यवत चावत माना कवित्व त्यापत्र च्यत्व व्यवत्व व्यवत्व व्यवत्व व्यवत्व च्यत्व च्यत्य च्यत्व च्यत्य च्यत्य च्यत्य च्यत्व च्यत्य च्य

বাঁণ বিষা যোষ। সংগ্রাহে ভূলি বঞ্চা, বংগ করিতে জীর্থ সমাজে বংগের রূপে

বধন যা' ধুনী ভাই কৰি চাহে বন যা'। লোকে কেৰে মোৱা বৰি সংগ্ৰামে, বিধ্যা কৰা সে বুড়ায় বহানকে—

পাৰ্থিৰ ন্নণ-ন্নলের যাতে নৰ জীবনের সমীত বাগে নবীৰ জবে বেজে উঠি নৰ কলে। নিত্য নবীৰ মূল স্কটা জোণখোৰ; বাণাখাপি ক'বে চলি চকল বজেতে কবি বোস্বাই। ভোগ গোলা খলি পারে নাই কড় করিভে নোদের খাংস, প্রলয়ের সাবে করি' মহারণ আহি অকর বটের মতন, বাহুবের চেয়ে বড় বোরা ওরে

দেবতার মহাবংশ।
বিস্থ আমরাই পৃথিবীতে এই করিবল্লে প্রথম বার্চাদাম,
মোহা ধরণীর আদিম মামব অধর অমর অমৃত্তের সভাশ
শক্তবেহ থেকে মরের বিকাশ বলিয়াছে বারা

निक्षण व्यवस्था विकास वाजवाद वाका निक्षण जावा विद्यं सामय-वरम्, जामका वर्णिक —करविक (साक्षा ज्युष्ठ (बेटक यांक्रवाकि (कर्म श्रीक्षश्वरस्य ज्युष्ट्य)। जामारम्य अहे (स्वकृत्यस्य समारशोदयः,

এই ইভিহাস এর চেরে বাহি গর্জ, ইহারি লাগিয়া গুগগুগান্ত আছি বাব। ভূলে' আকো হই নাই বর্জ। আবাহেরি বাবে ভবিল আসি এমনি কভ না নর ভাষাদের কাছে ভটয় ভিভূবন,

কেছ করেছিল মদন তথ্য কেছ বা ধগংবানি বছন বিষয়ে করাইল দর্শন।

কেছ ভাষেত্ৰ কি মাত্ৰ কৰমো গড়ৰ কৰি পান কৰিবাহে সিছু
সেতৃ বতি কেউ ক'বতে পেবেছে সিছুতে ভাগৰান ?
সাগৰ মহি' উঠাবেছে কাবা সৌক্ষোৱ অপৰূপা উৰ্বাদী

তুৰার ভাও উঠাবে একদা দেবতার দিল দান। তাহাদেরি মাবে এক মহামর সকল গরল বরিবা আপন কঠে

দুচাল বিধে মুহার হাহাকার, ভারা আবাদেরি প্রপ্রথ হুগা বহং আমাদেরি মহামারী— দেবলমে সে আমাদেরি অবিকার।

বাঢ়া তবে ওবে হ্র্ম হর্জন,
বলু বোরা এই বিশ্বের বুকে কাহারে করি না তর।
চলু তবে চলু কটির শত স্টের মন্থানে,
চলু বেচে চলু মহাপ্রলয়ের অংগের মহানকে।
চলু—সিংহের মুর্থে লাগাম্ টানিরা বজের হথ
বর্থি ছাড়ু হন্কার,

ভোৱ—ছৰ্জৰ জনবানাত্ৰ পথে গৰ্জন ভনি' বাজেনাকো বেন বুন ভাল। চল ছ্বাড় গাড়ে অবে এই গান,

চল হ্ৰাচ সাংগ্ৰহণ অহ সাম, এই পৃথিবীয় আৰহা যালিক আৰহা অহয় অহুভেয় সভাৰ।

# ভারতীয় চিত্র-প্রদর্শনী ও চিত্রশিশ্পী

### ঞ্জীরঞ্চিত সিংহ

লক্ষতি ভারতবর্ষের বিভিন্ন প্রদেশে চিত্র-প্রধর্ণনী বিশেষ ভ্রমন্তিরতা লাভ করেছে। প্রতি বংগরেই নামা ভারগার আবদ্দাল চিত্র-প্রধর্ণনী অণুষ্ঠিত হতে দেখা বার এবং দেওলোভে বর্ণকের অভাব হয় না। লাভার সংস্কৃতির ক্ষেত্রে এর বৃদ্য কয় বয়। চিত্র-প্রধর্ণনীর ভ্রমন্তিরতা ঘতই বৃত্তি পাবে ভ্রমনার:প্রবের সঙ্গে শিল্পী ও শিল্পকলা এ চুবের বিলম্প ততই নিবিভ্তর হতে উঠবে। ভার এই সংখোগের কলে শিল্পার রমে বরু মর



वापूरी --वाविभी बाव

ভাবৰাৱার উদ্বেহ হতে বাক্ষে, মনীন অসপ্রেরণা আগবে ভার হৃদ্ধে এবং স্কীর ক্ষেত্রে একটা সামাজিক বোৰও ভারত হবে। বে সামাজিক পরিবেশে চিত্রপিনী বাছম, সেই সমাজের প্রতিক্ষ্ বি কুটে উঠবে ভার তুলির আঁচড়ে। প্রকৃতির অপমার্থ্য এবং বর্ণ-বৈচিত্রা থেকে শিল্পী আহরণ কর্মের ভার ক্ষ্মীর উপকরণ। আলো, বাভাগ, আকাশ, মাট ও পৃথিবীয় সঙ্গে মাসুবের জীবন সীলার বর্ণ-বিজ্ঞানে শিল্পীর স্ক্রী সার্থক হয়ে উঠবে।

কিছুদিয় আবেও আয়াদের দেশে চিত্র-প্রদর্শনীয় এবন ক্ষাপ্রিয়তা ছিল বা। কোন চিত্র-প্রদর্শনী হলে ভার সংবাদ সাবায়ণতঃ ক্ষাণায়বের কাছে পৌহাত মা, তাই আশাস্ত্রণ

জনসহাগৰত হ'ত না। উপরত্ধ বারা এই সব চিত্র-প্রথণীয় আরোজন কহতেন, বেশীর জাগ ক্ষেত্রেই জারা ভিলেন লজীর প্রসাদপুই উচ্চপ্রেশীর লোক। তথন আর্টের আয়তি হ'ত লজীর রম্বর্গিত ব্যাবাজ্যতনে—তাই তার বোপনাই বাইরে আগতে পারত না। বাংলাদেশের বে, সমত হ'ব নিষে চিত্র-প্রধানার আরোজন করা হ'ত—সেওলো দিরে রাজ-মহা-রাজাদের ভুইং-রুন সাজান হ'ত। অভিজাত সম্প্রভাবের কৃণাচুষ্টি পঞ্চলে হবত শিল্পীর ভবিশ্বং উত্তল হরে উঠত, কিও পে-সব চিত্র-প্রধানীর সলে জনসাবারণের প্রাণের বোগ ছিল মা। এক কর্বায় ভবনকার দিনে চিত্রশিল্প জন-মঞ্চের পালপ্রথাবিশ্ব সামনে আগতে পারে বি—ভব্ নিজের জৌল্স নিরে বৃষ্টবেশ্ব বনী ও রসপ্রাহীর প্রশংসাপ্র অর্জন করেছে।



मनवपु --- वास्त्रमी वाद

কিছ আক্ষেত্র দিনে এই সব চিত্র-প্রকানীর ক্ষমপ্রিরতা ও ক্রমোগতি দেবে এই কথাটাই মনে কর বে, এবন অবভার পরিবর্তন হরেছে। বুর্ক্রোরা কালচার এবন ধ্বংসের মূবে, তাই বুর্ক্রোরা আটও এবন গুরু ভূইং-ক্ষরের 'লো-কেসে' সাজিয়ে রাবার অবস্থায় এসেছে। এ আট কত দিন বাঁচবে সে প্রস্ন মূবে ছালে। কালক্ষরে এক দিন বা এক দিন সোভিয়েট বাশিবার ভার হয়ত এই শিল্পকলা বাংলাবেশ থেকেও বিক্তিত্ত হয়ে বাবে। গুণ-পরিবর্তনের সঙ্গে সলে, সবাজের চেহারা বছলে বাওয়ার কলে অভিনয় শিল্পবাতর উত্তর হতে বেখা বাজে— এই সম্ভ শিল্পের শ্রপ্তারা প্রাণশক্তির প্রাচূর্ব্যে চিত্র-



আম্বার সাম্বে

--- चरमी (अम

নবীনের অঞ্চত। চিত্রলিয়ের সচ্চে এবন জনসাধারণের আবের রভীর বোগ ছাপনের চেটা চলছে। আজকের দিনে এই মতবাদ প্রবল হয়ে উঠেছে যে আটকে জনকল্যাণের কাজেলাগাতে ছবে—দেশের উপ্রতিকল্পে শিলীকেও তার ভূলি নিয়ে জনভার সলে এসে হাত মেলাতে হবে।

সোভিষেট রালিয়ায় তাই হ্রেছে। সেখানে চিত্রলিয় সমাক-জীবদের সহিত সম্পর্কহান নয়। গোভিয়েট চিত্র-লিলীরা যে সমাকে নাত্র, সেই সমাকের জীবনধারাকে প্রতিফলিত করবার প্ররাস পাছেন তাঁরা তাঁলের ছবিতে— ওবু তাই ময়, চিত্র-লিলকে তাঁরা দেশের কাকে পাগিরেছেম। বৃচ মৃক জাণিত জনসন্দ যেন তাঁদের নিলকসার তেতর বিরে কথা করে উঠেছে। তাই সোভিয়েট যাশিয়ার আট জ্বসাযারণের স্বদ্ধ কর করেছে: এ ওবু সন্ধব হ্রেছে এইকত যে, সোভিয়েটের জ্বসাধারণ থবীর ক্ষম বোকে— তালের রসবোব স্কর্ম পরিণতি লাভ করছে। তারা একথা ব্রুতে পেরেছে বে, এ রুগের আট সাবারণ মাতুষের রস্বোবকে বিদ্ধান্ত করতে পারে ভবেই ভার সাবিক্তা। এই কথাটাই লেনিন যালেছিলের :—

"Art belongs to the people. Its deepest roots must reach into the very thick of the broad masses of working people. It must be comprehensible to these masses and loved by them. It must unite the emotions, thoughts and will of these masses; it must raise them. It must awaken artists in them and develop them. That art may come nearer to the people and the people to art, we must first raise the general educational and cultural level."

গোভিষেট চিত্রশিলীরা লোকশিকার দারিও সবজেও সম্পূর্ণ সচেতন। শুরু সোভিষেটেই নয়, ইউরোপের অভাত দেশেও চিত্র-প্রদর্শনীর বিশেষ করর আছে। বিশেষ্ডঃ ক্লাল আর ইংলতে কোন আরগার চিত্র-প্রদর্শনী হলে যে পরিষাণ দর্শক আলে, আমাদের দেশের ভূলনায় ডা চের বেশী।



পাঠতভা

—विचनाय बूटबालायात्र, विजी

এবেশে আটের অনপ্রিরতা বৃদ্ধি করতে হলে চিত্র-প্রজনীর সলে জনসাধারণের যোগ যাতে গভীর হয় সে ব্যবস্থা করতে হবে। দর্শকের সলে আর্টিপ্রদের বোগাবোগ এবং ভাব-বিনিমবের উপায় বাতে এই সমস্ত প্রদর্শনীতে হয় সে বিষয়ে মনোবোদী হতে হবে। এমনি ভাবেই শুরু জনচিত্তের তথা সম্ম্য দেশের সলে শিলীর গভীর সম্পর্কের স্থানা হতে পারে----শিলীয় ই্তিবোর ক্লে গভীর ভেতর খেকে শিলকলা বাইরে ছড়িবে পড়ে জনগণের অধ্বন্ধ আসন লাভ করবার প্রবোগ পায়। রবীজনাথের ইউরোপ অধন-কালে ভারতীয় চিত্রকলার একট নৃতন দিকের সঙ্গে পাশ্চান্ডোর জনগণের পরিচর ছরেছিল। সেধানে ভবন "Tagore School of



হয়েছেন। লোভিরেটের বৃদ্ধ-চিত্র দেবলেই সে কথা বিশেষ করে বোকা বায়। বৃদ্ধকালে ইউরোপের অভাত দেশেও আর্টিইরা অনকল্যাণ-কর্ম্মে আর্টকে নিরোজিত করেছিলেন। আনেরিকার বৃদ্ধিত্রজলি গৃতন এক বরপের চিত্রশিল্পকার পরিচর দের। বাংলাদেশেও চিত্রশিল্পে দেশ ও সমাজের প্রকৃত রূপকে প্রতিক্লিত করবার প্রয়াস বে দেবা যায় নি তা নর। বিগত ছভিক্রে সময় বাংলার চিত্রশিল্পীদের অনেকেই মগজর-সম্পর্কিত চিত্র একেছিলেন। কিন্তু চিত্রক্রলাকে করকল্যাণে নিরোজিত করবার চেটা বাংলাদেশে এবপৌ হয় নি।

ভারতবর্ষের বিভিন্ন প্রাদেশে যে সব ভারগার আট ছুপ আছে, সেইবানেই সাবারণত বছরের কোন এক সমতে চিত্র-প্রদর্শনীর ব্যবহা হতে থাকে। কলিকাভার গবর্গমেন্ট ছুল অফ আটস, লড়ে ও বে'ঘাইন্যের মূল অক আটস এবং আরো ক্ষেক্ট প্রভিঠানে প্রভি বংসরেই চিত্র-প্রদর্শনী হরে থাকে। এ ছাড়া দিন্তীর কাইন আট সোগাইট ও কল্কাভার মেশ্ডাল একাভেনি অক কাইন আটস, পাটনার শিল্পলা পরিষদ প্রভৃতি ক্ষেক্ট বিব্যাভ প্রতিভানের কর্তৃপক্ষের উদ্যোগে বছ নবীন ও প্রবীণ চিত্রশিল্পীর ছবি নিয়ে সময় সময় চিত্র-প্রদর্শনী

CERT'BE

- প্ৰীৱ ৰাভগৱ

l'ainting" নামে একট চিত্রপ্রনর্দমীর ব্যবস্থা করা হয়েছিল। রবীজনাবের ছবির অন্তর্দিহিত ভাষকে সেদিন যে ইউরোপ ও আমেরিকার শিল্পরসিক এবং ক্ষমদাবারণ সকলেরই কিন্তুপ্র চমক লাগিয়ে দিয়েছিল নীচেকার উদ্ধৃতি হইতে ভাষ্ঠা বুরা যাবে।

"Paris arranged a great exhibition of the 'Tagore School of Painting' as it was called, and the whole art-world of France went crazy over the new vision of art. Berlin followed suit, and the whole of Europe, including England saw something original, something beautiful, something true that was India's. New York got up an Exhibition and saw for the first time the creative value of India and welcomed the Renaissance as of great artistic import to the world.'

ভাতীর ভীবনে চিত্র-প্রদর্শনীর বৃল্য ও প্রয়োজনীরভা বে অত্যবিক তা বলাই বাহল্য। ভাতির শিল্প ও সংস্কৃতিকে বাঁচিয়ে রাধবার কাকে এই সব প্রদর্শনী অনেকটা সহায়তা করে। সোভিয়েট চিত্রশিলীয়া একথা মর্শ্বেমণ্টে উপলব্ধি করে চিত্র-নিম্মন ভিজন দিয়ে ভাতীয় সংস্কৃতি সংবজ্ঞানৰ কাকে এতা



হৰপাগী

---ব্ৰেণ্ড আৱান হত, কলিকাভা

গোভিরেট চিত্রশিলীরা একণা মর্গ্লেমর্গ্লে উপলব্ধি করে চিত্র- হরে পাকে। সম্রাভি চারুশিল ছাড়া জড়াড় চিত্রশিল্লেরও শিল্পের ভিডর দিরে জাতীর সংস্কৃতি সংরক্ষণের কাকে এত? প্রদর্শনী হবে পাকে। বেমন জার্ট-ইন-ইভান্নি চিত্র-প্রদর্শনী। কিছ সর্ব্ধাই অধিকাংশ বর্ণকের মধ্যে প্রকৃত শিল্পবোৰের অভাব পরিকৃতিত হয়।



'কলকে' — স্বিউৎীন আহ্মেদ, কলিকাতা ভাৱ কাৰণ আছে। এই সব চিএ-প্রধানী দেবতে কারা আগে এবং ভারা কোন্ শ্রেক্টর দর্শক ? সাবারণভঃ দেবা যার বে, বেশীর ভাগ ঘাত্রহাই ছবি দেবতে আসে, আর আনেন শিলাগুৱাকী ব্যক্তিয়া। শিগ্ধ-প্রধর্শনীতে সাবারণ লোকের স্বাগ্র যে বাব বেশী হয় না সে কবা আসেই বলেছি। সেই

चरनारे चांबारमंत्र विस्कृता अवर विस-শিলীদের সঙ্গে অনসাধারণের ভবিত্র পরিচর হর না। কাছেই শিরেরও প্ৰসাৱতা ৰটতে পাৱে না। সাৰায়ৰ वर्गटकव निवास्त्रात्वत चणाव अब अक्डी कांबन रहन ७५ (अवेष्ट्रेक्ट जन मन। প্রকৃত কারণ দেশের ক্ষণিকা ও गरक्षित अध्यक अवस्। জনগণের সাংস্তিক জীবন যদি উন্নত শা হয়, ভাহলে চাক্রশিল ও অভাত শিলের **ब्रीवृद्धि ७ टानाव चभक्षव**। वाश्मारमरम শিকার দৈত অপরিগীম। ভাই চিত্র-व्यवनीय देखाकारमय देखक (यम এক দিকে হওৱা উচিত ক্ষমাধারণের সহিত নবীন শিলীবের পরিচয় করানো অন্য দিকে তেম্বি দর্শকদের শিলবোৰ বাৰত কৰা সহবেও ভাবের অবহিত

रथश अकास कर्षना । जावजीव किल्लियात दारानीय नेवा শ্বদৃত, ডাবের বেশীর ভাগই বাংলাবেশের চিত্রশিল্পী। বছ বাবাবির অভিজ্ঞান করে এই সব প্রতিভাগালী শিলী ভারতীয় চিত্ৰকলাকে সম্ভ্ৰ পুৰিবীতে মুখ্যাছাত্ৰ আসৰে সুপ্ৰতিষ্ঠিত करबरहम । अ क्लाउ चार्यमे एरकम चारमीक्षमान । अहे শিলাচাৰ্ব্যের সাধনার অভতম প্রধান পাদপীঠকণে দি ইতিয়াৰ গোলাইট অব ওৱিয়েণ্টাল আই—ভারতীয় চিত্র-क्नांत रेखिशांत्र भवनेत स्टब बाकरवः भवभीव्यनार्वत শিষ্যদের মধ্যে কারো কারে। কৃতিসমূহ দেশবিদেশে সমানৃত হয়েছে। তথ্যে নক্লাল বসু, গগনেজনাৰ ঠাকুর অগিত-क्यांत राज्यात, यूक्जब्स (ए, प्रमश्मी (एवी अञ्चित माम বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। অপেকাক্ত আধনিক কালে याभिनी बाब, श्रवीब बाखनेत, विट्नापविशाबी मूरवाामावाध, অভুগ বস্থ, দেবীপ্ৰসাদ ৱাম চৌধুৱী প্ৰভৃতি শিল্পীগৰ চিত্ৰকুলাৱ **ক্ষেব-ৰ প্ৰতিভাৱ স্বান্ধর রাবতে সমর্ব হরেছেন**। সম্প্রতি বাংলাখেলে আরো কয়েকজন নবীন শিল্পী বিশেষ ক্ষমভার পরিচয় দিচ্ছেন, সেটা আশার কথা।

শিলকপার ক্ষেত্রে বাঙাপী শিলীধের অবদান হয়ত উপেক্ষণীয় নর, কিছ মনে হয় জনসাবারণের মনে প্রকৃত শিলবোৰ ভারত না হওয়া পর্যন্ত তাঁদের সাবনা কিছুতেই চরন সাকল্যমভিত হয়ে উঠতে পারে না। তথু বাংলা-দেশে নয়, ভারতবর্বের সর্ব্যন্তই ক্ষণপর্যের মন্যে শিল্পবোরশ'ক্তর একাভ অভাব বিভয়ন। প্রত্যেক শিল্পীয়ও একট বিষয় মনে বাবা উচিত। নিক্ষের চোব গুটোকে বোলা প্রেবে তাকে প্রচুর অভিজ্ঞতা সক্ষর করতে হবে। রবীক্ষনার্থ এ বিষয়ে একবার হঃব করে বদেছিলেন:

"बाबाद बरन रह बाबारमद रम्हा दही खबान बजार---



বৰ্যক্ষৰাত বুদীয়

—স্বিট্ডীৰ আহমেদ, ক্লিকাভা

আমরা দেববার প্রবোগ পাই নি। विव वामवा (परि नि। विद्या-चाक्यम क्रिक्टि किंद्र राजा राजा আটিইদের হবির, কিছ তা বত ভলাং। সেই যে ভাইর দীলা, আমরা কেউ এ না দেখার ক্ষে একটা ছোট সীমানার মধ্যে তা বরতে পারি মাত্র। একেবারে অভিভূত লাগার উবাদনা, আনন্দ-ভা হবার খো নেই। নরওয়েভে দেখেছি এক বড়ো আর্টিই বৃত্তি श्राप्ताचन--- जार क्षण (पार्य चार्क् स्य (यण एव। আন্তা অভি দ্বিদ্ৰ-- আৰৱা কোৰায় যাব। কেউ বা আধুনিকভায় আছে, কেউ বা অক্সায় আছে কিন্তু তা বছো কয়। তাতে করে inspiration হয় না ।' এ ভোগেল ছবি দেবার কথা----

শিলীকে গুৰু ছবি নছ—জীবনকেও দেবতে হবে, মাহুষকে জানতে হবে পরিপর্বভাবে। জীবন ও যাহুষের আগল ক

পরিপূর্বভাবে। কীবন ও মাত্ত্বের আগদ রূপ যদি যধাথবভাবে ভাবে ভাদের শিল্প-স্ট্রভে প্রভিফলিত হয় ভবে ভো হবে চিত্রকলার মাব্যমে জনসাধারণের সঙ্গে ভাদের আগ্রিক বোগ।

আমাদের দেশে যে সব চিত্র-প্রদর্শনী হয়ে থাকে, ভার ভেডর বৈচিত্র্য ও অভিনবর থাকে কম। বেশীর ভাগ ক্ষেত্রই এক একট বার্ষিকী হিসেবেই এই সব অগুটান হয়ে থাকে— এবং সেইক্রেই প্রায় প্রতি বংসরেই একই রক্ষের ছবি দেখতে পাঙ্যা যার। জল-বং, ভেল-বং পোট্রেট আর স্কেচ ছাড়া ক্যাচিং মাত্র ছই-একট নভুন বরবের ছবি নহরে পড়ে।



অহল্যা উভার — ( বোলাইছের জে জে ভুল অফ আটের দৌজতে )

ভারতীয় চিত্র-শিলীদের অমভিজ্ঞতা ও মৃত্য বরণের শিল-প্রভিত্র পরীক্ষণে অসুংসাহের ক্ষাই এই গতাসুগতিকতা।

দেশে চিত্রপ্রধর্ণনীর প্রপার ও প্রচার না হলে চিত্রশিলের উন্নতি সন্তব নর। একই বিষরের চিত্র-প্রদর্শনী না করে এবং একসন্দে সবরকম ছবির সংমিশ্রণ না করে, বিভিন্ন বিষরের অথবা এক একট বিষর নিরে চিত্র-প্রদর্শনীর আরোজন করা উচিত। ধেমন কার্চুন, পোপ্রার, উভ্কাট, কটোঞাকি, শিশু-শিল, আল্পনা, স্চী-শিল্প প্রভৃতি। শিশুশিল্প অথবা কার্চুন ইত্যাধির চিত্র-প্রদর্শনী আমাধের হরই না। বিভিন্ন জারগার

> এক এক বিষয় নিরে এই ধরণের চিত্র-প্রদর্শনীর আরোকন করা থেতে পারে।

কোন একজন বিশিষ্ট শিলীর ছবি
নিবেও চিত্র-প্রদর্শনী করা বার— বেমন,
অবনীজনাথ কিংবা বামিনী থারের
ছবি। এতে করে প্রত্যেক চিত্রশিলীর
নিজন অন্তন্সভাত ও বৈশিষ্টা ঘর্শকের
চোবে বলা পড়ে। একই শ্রেণীর দালীর
ছবি নিরে চিত্র-প্রদর্শনী করলে তাতে
অভিনবদ্ব রুদ্ধি পার—বেমন, শান্তিনিকেতন কলাভবন কিংবা আধুনিক
শিলীদের ছবি। ক্রেকজন বিশিষ্ট
চিত্রশিলীর ছবি নিরে চিত্র-প্রদর্শনী
করা যার। ক্টোপ্রাক্রির চিত্রপ্রদর্শনীর
বেওরাক্ব আমাদের দেশে নেই। পরিমল
গোধানী, কামাকীপ্রসাদ চটোপাধ্যাত,
নীলোধ রার প্রকৃতির ক্টোপ্রাক্ষ নিরে



**ৰিয়ালায়** 

--- শক্লাল বসু

বাদর্শনীর আবোজন করা উচিত। তা ছাতা কার্চু নের চিত্রপ্রদর্শনী আরাদের দেশে কোপাও এপর্যন্ত হয় নি।
বাংলাদেশের শৈল চক্রবর্তী ও 'পিসিংচল' ও উত্তরভারতের 'Shanker'—এ দের কার্চু নের চিত্র-প্রবর্ণনী করলে
দর্শক-চিন্তে প্রচুর আনক বিধান করা বেতে পারে। সাবারপতঃ
কল-রঙ্ ও তেল-রঙ্ ছবিকেই আমরা চিত্রশিল্লের সবচুকু
বলে জানি। এ বিধরে আর্ট-ইন-ইভান্তি চিত্র-প্রদর্শনী ববেই
অভিনবছের পরিচর দিরেছে। ভারতবর্বে ইমপ্রেসনিই আর্ট
অথবা কিউবিক আর্টের পরিচর সামান্তই পাওরা বার।
এ ক্লের এক্যাত্র ওভাে ঠাকুরের নামই মনে পড়ে। তার
"রবীক্রমাণ" চিত্রধানি সতাই চিত্র-ক্লগতের বিশ্বর। আরও
আনেক উনীর্মান শিলী আছেন—বাদের নিক্র রচ্যাত্রদী ও
বৈশিষ্ট্য আছে।

সম্প্রতি পাটনার "শিল্প-কৃলা পরিষদের" উদ্যোগে একট চিত্র-প্রধর্শনী হরেছিল। পরিষদের কর্তৃপক্ষ হির ক্রেছেন বে পাটনার একট আট-গ্যালারি প্রতিষ্ঠা করবেন। পাটনা আট কুলের গহুযোগিতার যদি তাঁরা এবন একট আট-গ্যালারি প্রতিষ্ঠা করতে পারেন, তা হলে একটা স্ত্যি-ক্যালারি প্রতিষ্ঠা করতে পারেন, তা হলে একটা স্ত্যি-ক্যালার প্রতিষ্ঠা করতে পারেন, তা হলে একটা স্ত্যি-ক্যালার কর নি যেবানে ক্ষমগাবারণ গিরে ছবি থেবতে পারে। এই প্রণকে গোভিরেটের "টেটরাক্ত টেট আট গ্যালারির" কবা মনে পড়ে। রবীক্রনাথ রাশিরায় গিরে এই আট-গ্যালারি থেবে বিশ্বিত হ্রেভিলেন। যাবতীয় গোভিরেট চিত্রশিলীর ছবিসমূহের একর স্মাবেশ করা হ্রেছে গেবামে। ইংল্ডের "টেট গ্যালারি" এ বিষয়ে প্রসিদ্ধ। তারতীয় চিত্রশিলীরা সকলে মিলিতভাবে যদি এই কাকে ক্ষমসর হন, তা হলে হয়ত এক দিন ভারতীয় চিত্রশিল্প ক্ষমগাবারণের ক্ষমর করতে পারবে।

এই প্রবন্ধের ছবি ছলি পাটনার "শিল্প-কল:-পরিধদের"
সৌক্তে প্রাপ্ত

### **সাময়িক**

#### শ্রীপৃথীশচক্স ভট্টাচার্য্য

ভালবাসাচী আক্সিক একটা আবেগসকার মাত্র কিনা তাহা আত্তও বুবি না।

কলিকাভার পথে দৈহারী নামিয়াহিলাম---

সহণাঠি প্রভ্রের সজে বহুদিন দেখা হর না, সে বার বার বাইছে লিবিলাছিল। প্রভ্রের বোটা মাহিনার চাকুলী করে, থাহাকে লোকে নারেব বলে। সাহেবী ফাটে সোফা, ফ্যান, রেডিও লইলা পাহেবী চালে থাকে কিছ মনটা একেবারেই বাঙালী রহিলা পিলাছে। বদু-বাছবী সকলেই আনন্দিত হইলেন, সারাটা দিন বাজার হালে কাটাইলা বেড়াইতে বাহির হওয়া গেল।

জীবনের স্বহংবের আদানপ্রদান হইল। প্রস্থা কহিল—সবই আছে কিছ বড় একা। নিশবার লোক নেই। এবানে সাধি বলতে দেবকী ডাঞার,কিছ ডাঞার—তাই রোগর সাধি, আমার ময়। চল সেবানেই বাই—তিনি ত আবার কল্ট্রোলের চা বাইরে বলেন বাওরানটা অভার। বেশ পরিবারট—

অভনৰ ঘূৰিয়া কিবিয়া দেখানেই যাওয়া গেল। ভাঞায় বাড়ীতে নাই, তাহার করা বেপু, রেপু, টুটু প্রভৃতি শিক্ষিতা ও স্করী, অভার্থনায় আপ্যায়িত করিলেন। পাড়ার নমিতাও উপরিভ ছিল- দেবিতে দেবিতে আক্তাও কমিয়া উটিল।

চা পানের সময় ভাঞার আসিলেন। আসিয়াই বলিলেন—কন্ট্রোলের আমধ্যে চা দিলে যে রেণু। তাহার কথা বলার ভলিই এমন যে কথাটা ব্যক্ত না সভিয়েকার তাহা বোঝা ক্টিন—ওঠটার বক্তভা প্রায়শঃই প্রতারিত করে —

পরিহালে ব্যক্তে এই আধুনিক পরিবারট সভ্যাটকে ধেৰিতে দেখিতে গরগরম করিয়া ভূগিলেন।

পরিচর-প্রদরে ভাজার কহিলেম- আপমার পুত-কভা কি?
আমি প্রস্কুর মুপের দিকে চাহিলাম। প্রস্কুর কহিল--ব্যুট্ট ভরেই বিরে করেন মি, পাছে বরচ হয়।

অবিবাহিত। ব্যাপ ত প্রিত্তিশ হবেই—বোর অভার। ভাঞার বলিলেন।

अनुत्र करिन-अदेवत्वदे छ क्वामात्र मात्र स्टब्स् ।

রেণু কোত্কান্দল আঁৰি মেলিয়া কহিল— বোর অভায়, বিবে না করলে মানায়ই না----

(रन्ध कहिन--विकार प्रधाद---

আমি কহিলাম—অতএব আমি যে অঙার করেছি এ বিষয়ে আপনারা একমত ?

ति क्षिम- विःमत्मद्द ।

্দেৰকীবাৰু একটু ব্যঙ্গ ক্ষিত্ৰ। কৃছিলেন---শেছাত কাপুন্ধ

—ইা ভবে কাৰণ গুনলে কেন্টা abnormal কিনা বিচার করা বেড।

আমি হাসিয়া কহিলাম—অভায় যথন কয়েই কেলেছি ভথম—

বেণু চট্ করিরা কবিল—বিষে করে কেলুন। বয়ন কি আর আছে।

(विवकीवाद कहिएन--- चाबि किंहे भाँठिकिएक है । एवं।

কিছুক্দৰ আলোচনার পর আখার কুমার জীবনের কারৰ
লইয়াই কথা চলিতে লাগিল। আমি নিজেকে রক্ষার ক্ষতে
কহিলাম— এটার এমন কোন কারণ নেই, বিয়ে করব না বলে
ক্ষ সকলের মতই একটা খোঁক ছিল কিছু যেদিন বুবলাম
বিয়ে করা উচিত দেদিন বিবাহের আর প্রয়োজন ছিল না।
তাই বিয়ে করা হয় নি।

শে কেষণ ? আচএৰ সৰ্ট বলিতে হইল :

আমি সুরু কবিলাম---

বাবা ও কাকারা চুই ভাই ছিলেন। আমি ভাদের বছ ছেগে। আমার পভালনা প্রভৃতির ছতে কাকাই চেই। করেছেন, বরচপত্র চালিরেছেন। পাস করে যথন চাকুরী করাও আরপ্ত করপাম ভখন কাকা বিয়ে দেবার ছতে পত্র লিখেছিলেন, ছ-একবার কথাবার্ছাও বলেছিলেন, কিছু আমি এখন মা ভখন, সংসারে খ্যুচ, ভাল চাকুরী না হলে বিয়ে করব কি ইভাদি অযৌজিক ছুজি দেলিরে কেবল দেরী করতে আরপ্ত করপাম। কাকা ছু চারটে মেরেও দেখেছিলেন জানি কিছু ছঠাং সংসারে এল বিপ্লব, কাকা ছঠাং বিদেশে মারা লেলেন। সে শোক সামলাতে না সামলাভেই বাবাও গেলেন, সংসার ছিল-ভিন্ন ছয়ে গেল। অঞ্চাও ভাইরেরা ছিটকে চলে পেল, বোনদের বিবাহের দেনা লোধ করতে পৈত্রিক সম্পত্তি বিক্রিক করা প্রয়েজন হবে পড়ল, ভাই দেশে গেলাম

বাবা বাছীতেই থাকতেন—এক দিন পুরাতন দলিলপত্র খুঁশতে খুঁশতে হঠাৎ একটা চিটির কাইল পেলাম। ভবন রাত্রি পভীর

সংসাবের শভীত ইতিহাদের প্রতি কোতৃহল থাকা খাভাবিক তাই চিটিখলি দেখতে শারম্ভ করলাম, ছু-একধানা চিটি প্রতেই মনে পছল কাকা বাবার সদে বগছা করেই শেষভীবনে কয়েক বছর দেশে শাসেন নি—মুক্ত শার দেশেও শাসতে দেয় নি— বগছা আমাকে নিয়েই।

**এक्दाना शक्ष काका मिट्टरहन---**--

"বোকা যধন ছোট ছিল, আমারই বুকের উপর শুরে ঘুমোও তথন ভূমি ত ভানতে না কেমন করে আমি রপ্প দেশতাম। খোকা কম কবে, তার প্রাঞ্ছেট বে) আনবো, বুড়ো কালে তার বাদার বিধে থাকব, বৌষাট বেশ দেবং যত্ন করবে, পরম পরিভৃত্তির মাবে শেব দিন ক'ট কাটরে বেব। সারা জীবনই এই আকাক্ষা আবার রয়েছে, আজ বোকার বিবাহের বরস হয়েছে আজ সে ভার ভাই আবার। আবি ভূঁতে যে নেরেটকে মনের মত বলে মনে করব সে-ই আবাহের বৌরা হবে। সে নথতে তোবার মতাবত কিছু থাকতে পারে কিছ ভাই বলে তোবার পদশে সেঁরো অলিভিডা একটা মেয়ে ঘরে আবা চলবে বা। বেরে পছক সমতে আবার মতাবতই শেহ সিছাত্ত হবে।"

বাবা এর কি কবাব দিয়েছিলেন তা কানি না, কারণ সে
চিঠি ছিল না তবে মনে হয় তিনি লিখেছিলেন যে তিনি বাবা,
পুত্রের বাবা, তার বিবাহ সহতে তার মতামতই শেষ সিছাত্ত
হওয়া উচিত, আর আকাজন কাকার মত তারও বাক্তে পারে
এবং সেটা পেরো মেরে বিরেও হতে পারে। এ পত্রের ক্বাবে
রীতিমত উল্লাসকারেই কাকা লিখেছিলেন—

"ভূষি বোকার বাবা হতে পার, কথ্যগাতা পিতা সন্দেহ নেই কিছ তাই বলে সবচুকু দাবিই ভোষার নর। বোকার কাপড় ভাষা, লেবাপড়ার বরচ বাবদ ভূমি সাবা জীবমেও নর টাকা হয় আনার বেশী বরচ কর নি। আল বিষের সময় বাবা হয়ে বাবাসিরি করছ। প্রার সময় কোবার ছিলে ? ভোষার থেষের বিষের সময় কাকারাই ত সব দিল কিছ ছেলের বিষের সময় হঠাং বাবা হত্তে বসলে…"

শেষের দিকে লিখেছেন-

"বোকাকে কিলাস। করব, সে আমার মতাগুসারে বিয়ে করবে কিনা, যদি সে রাজি হয় তবে বিয়ে ঠিক করে তোমাকে নিমন্ত্রণ করব, ইচ্ছে হয় এস না হয় আমার মতেই বিবাহ হবে। গোকতঃ বর্মতঃ সেইটাই ছায়া। শুবু তাই নয়, বিয়ের পরে বৌমা আমার এবানেই বাক্বের যত দিন না বোকঃ বাসাক্রে—"

মাৰ্কের ক্ষেক্থানা পত্র বোধ হয় ফাইলে ছিল না। শেষের চিটিখানা ছিল----

"বোকার বিবে দিরে বৌধাকে নিরেই বাড়ী যাব, নইপে আর যাব না। যদি জীবনের সমস্ত আকাজনা তাদের খরের মত তেঙেই পড়ে তবে আর সংসারের এই অসাগ্য হংব বরণ করার কি মানে হয় ? তবন তোমগ্রা বোকা ও বৌধাকে নিরে খরসংসার কর—আমি বিদেশেই থাকব, এবানেই মরতে চাই।"

শ্রোভ্যওলীর পরিদাসপ্রিয়তা দূর দ্বয়া ধরের মাবে একটা বেধনার্ভ ক্ষতা পরিবাধি দ্বয়া সিয়াছিল। রেণুর চোব চ্ইট যেন কলে ভরিয়া উটিয়াছে—নমিতা বাহিরের পাবে চাহিয়া কি যেন ভাবিতেছে—

चामि श्रवाय चावश्च कविणाम---

চিটিগুলি পড়ে যখন শেষ করলাম ভখন রাত্রি গভীর---ভোর হতে বোধ হয় ঘটাখানেক আছে। নিজম নিযুম নাত্রি—আবের সেই অভকারমর নির্ক্তনতার বাবে বিগভ বিষেয় সেই প্রিরজন সব বেন তাদের শত ইছোর বাহ থেলে আবাকে বিরে বরল। এই বরে, এই বাছীতে ববন আধার জভাতে আবি বছ হজিলায় তবন আবাকে বিরে তারা সব কত বর্গ্যই না বেবেছেন—সেই বর্গ্যকে অবলম্বন করেই সংসারে বেচে ছিলেন—

কাকা বা বাবার মৃত্যু বে ছংগ দিতে পারে নাই, সে দিন রাত্রে তাঁদের পত্র ভার শতগুণ ছংগ্ আমাকে অভিভূত করে কেলল। আমি বিবাহ করতে চাই নি এখন নয় কিছ বিবাহ করে আমি হবী হতে চেরেছিলাম, সেটা যেন একাছই আমার আপনার ব্যাপার। সেদিন ব্রলাম আমি আমার কলেই নর, আমার বিবাহ কেবল আমারই ব্যাপার নয়। আমার বিবাহকে কেন্দ্র করেই ছুট প্রিয়ন্ধন দীর্ঘাসে পূলিবী থেডে গেছেম। বিয়ে করলে তাঁরা হবী হতেন এবং আমার জীবনের চেরে ভাঁলের জীবনে সেটা বেলী প্রয়োজন ছিল কিছ আন্ধ তাঁরা নেই ভাই বিবাহের প্রয়োজনও নেই। আমি ত আর স্থী হব না—কানি, তাঁলের আনন্ধ-উদ্পাদার মারে বা সার্থক ছ'ত আন্ধ তা নির্থক হয়েই রইবে—

কথা শেষ করিতে হয়ত কণ্ঠবর ভারি হইয়াছিল। বরধান। একট বেদদার্জ নিভস্কতার ব্যবিত হইয়া উঠিয়াছে। রেপু, বেপু, নমিতা, দেবকীবাবু সকলেই যেন বিমনা হইয়া বসিয়া আছেন।

নমিতা প্ৰথম কথা কছিল- সত্যিই, পৃথিবীতে আমহা কৈবল আমাদের অভেই নয়। আমাদের বিয়ে কত জনের কত আলা, আকাঞ্জা----

ে বেণু জিলা কঠে কহিল—বারা চলে গেছেন, তারা আছ পরণারে বলে হয়ত খুখ হতে পারতেন বদি আপনাকে বিবাহিত দেশতেন। আৰি শান্ত ভাবেই কহিলাম—বদি ভাই হয়, যদি পরপারে
মান্থ্যের বোৰণক্তি থাকেই ভবে তাঁরা একথাও ভাবতে
পাত্রে—সেই বিবাহই করেছি কিন্তু ভাগের করে করি নি,
করেছি কেবল আমার করেছে—আমি এবনি খার্থপর—

রেণু আমার মুবের পামে প্রশান্ত দৃষ্ট হানিয়া কহিল— কিন্ত আপনার কাহিনী ভনে যনে হয়, বিবাহ না করবার চেয়ে করবার মুক্তিই এর মাবে বেশী।

দেৰকীবাৰু কহিলেন—আপনার শান্তি হ'ত এই তেবে যে উাদের অপূর্ণ ইচ্চাকে আপনি পূর্ণ করেছেন সেচী কম নয়।

প্রসদ ত্যাগ করিবা আমি উঠিয়া পড়িলাম। নমস্বারাছে বিদায় লইবা আসিতেছিলাম কেবলমাত্র রেণুই সামনের বাগানের গেট পণ্যন্ত সলে আসিল। তাহাকে বিদায় আনাইতে লে কহিল—কছ আপনার বিয়ে করাই উচিত বলে মনে হয়।

আমি হালিখা কহিলাম—এ বয়পে কে আর আমাকে বিয়ে করে—বিয়ে করে কুই হবে। রেণু কহিল—যাতা আপনাকে আনে ভাবে ভারা সকলেই করবে।

ক্ৰাট বলিয়া কেলিয়া সে যেন লক্ষিত হইয়াই খুজ নমগাৱাতে ফ্ৰুত পাৱে চলিয়া গেল।

ভাহার পর করেক দিন রেণুদের ওবানে বিরাছি, রেণু অভান্ত আছরিকভার সচ্চেই আলাপ করে এবং আমি অবিবাহিত বলিয়া অগুযোগও করে। মাবে যাবে কর্মভ কাকার সম্বাদ্ধে প্রায় করে।

জানি ভাহার জন্তর স্ভিত্ত সমবেদনাপূর্ণ।

কিছ এটা কি সামধিক একটা আবেগ মাত্র ? না কেবল সহাস্তৃতি ? রেণুর নিকটেই যদি বিবাহের প্রভাব করিয়া কেলি তবে তাহা সমীচীন হইবে ক্রিমা বলিতে পারেন ?

#### মৃত্যু

এ এন এম বজলুর রশীদ

আশনার স্বার্থস্থে স্থানির ছিলান শ্রান
জীবনেরে জ্ঞ করি—ক্ষম তব নির্বন আহ্বান
ভাঙৰ দৃত্যের ভালে বিছাতের আলি বহিলিবা
ভাঙিল স্থের বুল। মর্বান্তিক মৃত্যুর লিশিকা
নিমিষে পভিশ্ববে—মুহুতে কি যত লাভক্তি
ভীবনের ভ্লচ্ক শত নারা লভিল বিরতি
ছ'ফোটা চোবের জলে। জীবনের ভভক্বে
পর্ম লগনে কোন্ অভানার বাঁদী ওঠে বাজি

আঁবারের পার হতে—অনির্বাণ ভারার আলোক
পদুক নরনে এসে—ভূলে বাই শভ ছ:ব শোক।
পূর্ণভা লভিবে প্রাণ অসীমের বুক্ত বক্ষে আসি——
ছ:ব নাই, নাই কোভ, নাই সেবা ভালবাসাবালি
ভীবনের কুল্ত আশা—মরবের বাভাষন বুলি
দেবিত্ সুক্তর ভূমি বন্ধু বোর—শভা গেরু ভূলি।

# বাংলা গান ও রবীক্রনাথ

#### গ্রীমুনীলচন্দ্র বমু

গানেরও যে একট। কাত আছে, কাতীরত। আছে লবংলা গান ও রবীপ্রনাবের আলোচনা প্রস্কে সেটা উল্লেখ করা আবঙ্ক বলে মনে করি। অগুনা আমরা যে সমন্ত গান ভবে থাকি, গেরে থাকি, সে গানের ভাষা বাংলা ছলেও সেওলোর ভাতীরভারকা ছয় নি। কারণ ভারতীয় সমীত বলভে যা বুবার আমানের আধুনিক বাংলা গাম মোটেই ভা নয়। এরা বর্ণনাছর্ব্যে ছই।

আবুনিক বাংলা গানে এই যে স্বভাবগত বিভেদ সেটাই জাতীয়তা-হীনতার প্রধান গক্ষণ। বর্তমানে এই প্রেইর গানের প্রচলন ও বাহ্নিক উন্নতি যথেই পরিবানে ঘটে থাকলেও দেটা বাংলা গানের গান্ধক ও গান্তিকার পক্ষে—এখন কি বালাগী আতির পক্ষে—পূব গৌরবজনক নম্ব; কারণ জাতীয়তার লক্ষণ এলব গানে প্রকাশ পান্ধ নাঃ বর্তমানে এই প্রেইর গানের প্রাকৃতিব দেখতে পাওয়া যায় প্রেকর্ত, বেভিও আর সিনেমান্ন। বারা সৌবিন গান্ধক, যারা সত্যকার সঙ্গীতনিক্ষার্থ, তারা প্রভাবান্তিও ও বিভান্ত হচ্ছেন ও বেক্ত, বেভিও এবং সিনেমান্ন ঘারা।

আমাদের ভারতীর সদীতশান্তে হর রাগ ও ছব্রিশ রাগিণী ধেনী গানের জাতি-বিচারের একটা প্রধানতম নিদর্শন হলেও সেটা গানের জাতীরতা নর। সাংস্কৃতিক ক্ষেত্রে বাঙাগী চির্নিনই এতটা এগিরে আছে বেবানে সে জাতির চেয়ে জাতীরতাকে প্রভা জানিবেছে চের বেনী, গানের বেলারও ভার ব্যতিক্রম ঘটে নি। বাংলা গান ভারতীর রাগ-রাগিণীর ছারাতলে বেকে উঠলেও সে বরাবরই আপনার মৌলিকছ বজার রেবে এসেছে।

দেশতে পাওরা যার, আমাদের বাংলাদেশে উচ্চাদের
সঙ্গীতের অতঃপতন আরপ্ত হরেছে ইংরেজ-শাসন প্রতিষ্ঠার
সঙ্গে সদেই। ভারতের অর্থনৈতিক পরিবর্তনই সারা ভারতবর্বে, বিশেষ করে বাংলাদেশে, উচ্চাদের সঙ্গীতের অবনতির প্রবাম কারণ: ইংরেজ-শাসনের পূর্বের বাংলার
মধ্যবিত্ত বরে যেমন উচ্চাদের সঙ্গীতের চর্চা হ'ত, সমবলার
মিলত, ভার অভাব বটতে আরপ্ত হ'ল ইংরেজের প্রতুত্ত
প্রতিষ্ঠার পর বেকে: শেষ অবধি উচ্চাদের সঙ্গীত
(যা প্রবামতঃ হয় রাগ ও ছারিল রানিণী এবং কভকভলো উচ্চাদের মুসলমানী সঙ্গীতের অবর্গত) এমন একটা
বরে এনে শৌহাল বেবানে লেই সঙ্গীতের বুল উচ্ছে প্রার
সকলেই তুলতে আরপ্ত করলে বা তুলে গেল। গান গাওরার
চেরে গান গাইবার প্রয়ানই সেবানে বড় হরে উঠল—এ হাড়া
সেই উচ্চাদের সঙ্গীত ভার বৃহত্তর ক্ষেত্র হারিরে এক সংখীর্ণ

ক্ষে সীমাৰত হ'ল—সে হ'ল ব্যোয়ামা। অৰ্থাং হাল আমলের বনিক-সমাক এবং অংসোমুব প্রাচীন ক্ষিদাহ-সমাক আপনাধের আভিকাত্য বঞাম রাব্যায় ক্ষেত ভাকে কীবন্ত অবস্থায় বাহিয়ে রাব্যায় বাহিয়ে রাব্যায় ব্রিচের হার্যালের বা উচ্চালের স্কুসীত অর্থ্যুত অবস্থায় বেঁচে রইল।

अरमरण केकारण्य अजीरकत अभि यथम व्यवसा, यथम रज ভেঙে পড়েও অভঃসারশৃত হয়ে আহত অভিযানে ইাভিয়ে আছে, যংল ভার প্রাণরগ শুভ হয়ে গেছে এবং যুধন গীভি-কলার শ্রেষ্ট উদ্দেশ্য ব্যর্থতার পরিণত হতে চলেছে- -সঞ্চীতের সেই বিজ্ঞ রপট লক্ষ্য করেছিলেন রবাল্যনাথ অভি আল বয়সে। কোড়াগাঁকোর ঠাকুরবাড়ী ছিল সংগ্রভিত্ন কেন্দ্রস্থল। রবীজনাৰ দেই পরিবারেই মাত্রয়। শিশুকাল হভে ভিনি चरनक क्रमा (सर्वरहन, चरनक मक्रिम (सर्वरहन, चरनक নাট্যাভিনর আর অনেক ওভাদি গাম ওনেছেন--সেওলো সবই ছিল ক্ল্যাপিক্যাল স্থীত। ভবে সহজাত ভুলা বস-বোৰের অবিকারী রবীজনার এটাই অনুভব করেছিলেন ধে বেশীর ভাগ ভেটেই গায়কগণ ভাগের কঠবরকে সঞ্চীতশাল্লসম্মত প্ৰণালীতে চালনা করবার আছে প্ৰথাগত সংস্থারের বর্ণবন্ধী হয়ে অঞ্জ্ঞীধারা রাগ-রাগিবির সঠিত ভাব প্রকাশ করবার হুতে একাছমনে চেটা করছেন चर्क नक्नकाम स्टब्स्स मा । त्र नशीर क्षेत्रदात चूनिहै **छेळ्**भछ। (सरे, चाद (सरे श्राप्ति श्राप्ति । अ मण्यार्क दवील-मारवत वर देकि अविवादयाता :--

"যে মাজুৰ গান বাঁৰবে আর যে মাজুৰ গাইবে ছ'জনেই বিলি স্টেক্ডা হর তবে তো রদের গগা-বর্না সদন। যে গান গাওৱা হচ্ছে গেটা আর্ডি নর, সে যে তবন তবনি জাবন-উৎস হতে তালা হরে উঠছে এটা অমুক্তর করণে শ্রোতার আনক্ষ অমান থাকে। কিছ মুদ্ধিল এই যে, স্টেক ববার ক্ষরতা ক্ষরতে বিরল। যাগের শক্তি আছে তারা গান বাঁবে, আর যাদের শিক্ষা আছে তারা গান গার, সাধারণতঃ এরা ছ' আতের মাল্ব। গৈবাং এদের জোড়া মেলে, কিছ সর্বাধা মেলে না। কল ইড়ার এই যে, কলাকৌশলের কলার অংশটা থাকে গানক্ডার ভাগে, আর ওভাগের ভাগে পড়েকৌশলের অংশটা। কৌশল কিনিসটা থাল হিলাবেই চলে সোনা হিলাবে নর। কেননা ওভাল মাল্বটাই মালারি, এবং মালারি মাল্যের প্রভ্রতীই ক্ষতে সব চেরে বছ ছুর্বটনা। এই ক্ষতে ভারতের বৈঠকী সদীত কালক্রের স্থ্র-সভা ছেক্ডে অন্তরের আব্দার নেবছে। সেথানে ভান-মান-বাহের

ভাতৰটাই এবল হয়ে ওঠে, আসল গানটা বাণগা হয়ে বার ৷"০

बबीक्रमाथ जन्मीब बीक्रयमिक मिर्द्य अहीरे स्मर्थिश्यम যে, সমীত-পাছটাই হয়ে উঠেছে বুৰা আৰু আসল বা পান ছুৰ্ভাগ্যবশতঃ ভাই হয়ে গেছে গৌণ। রবীঞ্নাৰ আহো লক্ষ্য করেছিলেন যে, বাংলার ফ্লাসিক্যাল পান যেখন श्वचारमञ्ज सार्क शाक शामशीम स्टा क्रिक चार्य अवर भवन श्र সুত্ব হয়ে উন্নতি লাভ করতে পারছে না, তেমনি সেই উচ্চাঞ্চের স্থীতের ছ'পাশে বেসব গান ভটপুনি গড়ে ভোলবার চেটা করছে সেওলিও লে প্রযোগ থেকে থঞ্চিত হচ্ছে। তথা-क्षिक चाक्किका - भगवनी, कौर्डन, चाहियान, वार्डन, चार्डिन, পানকে উচ্চাকের সঙ্গীতের আসরে স্থান দেয় নি। খান না দিলেও বিলেষ কভি হয় নি. কারণ বাঙালীর প্রাণের স্কীবভা ७ शास्त्र बाह्मजीशासाटक वाहित्य बार्ट के एनक शास्त्रण। या ट्रांक केका (श्व मनी एवं नाट क्या नव्याव कावन अकि मझ जामक। य जून भाषि । नगरस्त आहूरशांत भरना ताका ক্ষিণারদের আশ্রবে এরা লালিও-পালিত ও বার্থিত হচ্ছিল ভার অভাব এর একটা কারণ, এ ভিন্ন উচ্চাদের সদীভের পিছনে যে একটা এভিছ ও মানসিক অভিবাক্তির একটা ল্প আছে তার অভতাই বোৰ হয় এর অব:পতনের সর্বশ্রেষ্ঠ কারণ।

আসল গান বলতে যা ব্ৰায় তথাক্বিত উচ্চাদের সদীত যে তা ময় এ কথা অনেকেই বোৰ হয় বীকার করবেন মা; কিছু সত্য বলতে কি এই শ্রেমর গানে রাগ-রাগিনর প্রাধান্যই বেনী, 'কথা' বলতে কিছুই নেই। এই শ্রেমর ছ'ছত্তের একটা গান (?) ছ' ঘটা আসর ক্ষিয়ে রাখতে পারে কিছু সেখানে রাগ-রাগিনীর পরিচয়টাই বভ হয়ে ওঠে,'কথা' ও হরের' বিলিত পরিচয় হয় গৌব। উচ্চশ্রেমীর গায়কের কঠে এর সার্বকতা লাভ হয় বীকার করি, কিছু যেখানে তার অভাব সেখানে অবিকাশে ক্লাসিক্যাল গান হয় গায়কের শক্ষে আগায় সাধ্য করবার চেটা। রাগ-রাগিনীর সদে সীতিকলাব্দ্রিত ওভাদি কসরহ ভবু কর্ণশীঞ্চাদায়কই নর, চন্দ্র বিরক্তি উংশাদকও বটে। এখানে যেন গানের কথাকে ভুক্ত করে রাগিনী আগনার প্রভাব বিভার করবার চেটা পায়—'কথা' বয়ে যায় অনুক্ত।

বাঙালী সুরশিলী ও সদী চক্তগণ সদীত-দগতে রবীজনাথকে বিটোতেন, মোজার্ট প্রমুখ স্বকারদের অপ্রশ মর্থাদা দেবেন কিনা জানি না, কিছ বাঁটি বাংলা গান-রচরিতা ও স্বকার হচ্ছেদ রবীজনাথই। গানের সত্যকার ভাবক্রনাকে রবীজনাবের মত আর কেট প্রকাশ করেছেন কিনা গতেহ
—ভাই বাঁটি বাংলা গানের প্রবর্তক হিসাবে রবীজনাবের

🔹 হল। 'সদীতের বৃক্তি'—পুঃ ১৬৪-৫ রবীঞ্রবাধ ঠাকুর।

নাম করতে হয় সকলের আগে: গান সহতে ধ্*বীয়া-*मार्चय अक्टी निषय वनिर्ध यखवाम गर्फ केर्किल कांद्र अवय विमाध खेरामकात्म । वर्षमाम त्मक बरीजमात्वव माम সম্বন্ধে তার বিভিন্ন সময়কার বিভিন্ন রচনা পাঠান্তে ও আলাপ-আলোচনার হারা এই সিহাত্তে উপনীত হয়েছেন বে তিনি श्रुरदेव क्षेत्रक (प्रवीति) अर्थका नाम नाक्षारक वे করে দেবতেন; শুরু দেবতেন কেন সেই আদর্শকে তিনি সমর্থন করতেন। সঙীতকে আদরের তথাকবিত ওভা'দর এই छैएक वैश्वाम त्यत्क त्वशहे त्ववाव कत्वाहे जिनि त्वाव हव नान-बठनाय, ७४। जूदभश्रयाक्नाय मरनानित्य कर्द्यम এবং 'গান সাধাটাই' নয় 'গান গাওয়াটাকেই' ভিনি গানের खबान देए इर्ज बरन कहा छन । अर्दे अभरक अवारन बना पवकाव (य. वान-वानिवेद केटच्ट्छेद भएम नाटनंत्र केटच्छ अक নর। রাগ-রাগিণীর মধ্যে যে 'ভূমা'র স্পণ আছে, ইঞিয়াতীত অভুভূতি খাছে, গানে তা নেই ৷ আয়ুগ্রকাশের বিচিত্রভায় नात्मद मार्वकणाः क्या अद व्यवस्य, एद अद शाव। वरीक्षनाय स्वर अक्षा अहे कथारे वर्षाक्षरणन, "मेरिक्नाव निक्ति व करें। वित्यम अञ्चित क काक चारक। जारब য়ৰণ কৰা ৰাকে ভৰণ কৰাৱ উচিত হয় না শেই সুযোগে गानटक चाक्राहेश याख्या, (भवादन ६म गादनव चारक মাত্র। পান নিজের ঐবর্থেটি বছু বাক্যের দাসং সে क्विट्ड यांबेटव ट्वन १ वाका ध्यवारम ट्वय व्हेशांक अहे-बार्या शास्त्र वादछ। द्ववार्य विक्रितीयुका (प्रदेवार्यह পানের প্রভাব। বাকা যাহ: ববিতে পারে না পান ভাহাই वर्ष । ... किस वारमारम्य रक्षाम घरेट क्याब वार्यप्रा এত বেশী যেবানে বিশুছ সঙ্গীত নিজের ধার্যান অবিকার লাভ করিতে পারে নাই। সেইকন্যে এদেশে ভাষাকে ভরিনী কাব্যকলার আশ্রেষ্টে বাস করিতে হয়। বৈফার করিছের পদাৰলী হইতে নিধুবাৰুর গান প্র্যান্ত সকলেরই অবীন বাভিয়া সে আপনার মার্থ্য বিকাশের চেষ্টা করিয়াছে। কিছু আমা-एक एएम औ यमन वामीर **भ**रीनला श्रीकाद करिशांके सामीत উপর কর্ত্তর করিতে পাতে, এদেশে পানও তেমনি বাকোর অসুবর্ত্তন করিবার ভার লইয়া বাক্যকে ছাড়াইয়া যায়। পান বচনা কবিবার সময় এইটে বার বার অভত করা সিহাছে।"

গানের কথা ভবু কথাই, কথার অভিবিক্ত যেটা দেইটাই হ'ল গান ও সে থাকে পরের মধ্যে। সুলের দৌকর্য্য ভার পাপভি-বিন্যাসে, কিন্তু ভার প্রাণ ভার গন্ধের মধ্যে। গানের নির্ন-নৈপুণ্য কথার —প্রাণ থাকে গানে, কথা যা ব্যক্ত করতে পারে না সে ভাই প্রকাশ করে, যেমন—

"আমার সকল ছবের প্রদীপ কেলে দিবস গেলে করবো নিবেদন আমার ব্যধার পূকা হরনি সমাপন।

<sup>🔹</sup> भीरन पृष्ठि, शृ. २১৪-৫, ।

ষধন বেলা শেষের ছারার পাবীরা বার আপন কুলার বাবে, লড়া। পূজার ঘট। তথন বাজে, তথন আহার শেষ শিবাই আলবে এ জীবন আহার ব্যধার পূজা হয়নি সমাপন।"

গানট পাঠ করলে ক্লাভ ভদবের সভ্যকার বেদনা প্রকাশ পাবে না, সে বেদনা জেপে উঠবে গানের প্ররে। এ গান বিনাভের ক্লাভ পরিপ্রাভ দেহনন নিরে ঘনারমান সন্থার ক্লান লীপনিবার পানে চেরে বেদ অপ্রুমোচন—এর প্রের ভার অনির্কাচনীরভা। বিপুল আনক্ষে নানব-ভদর নির্কাক, ভেমনি নির্কাক গভীর হংবে। মাধুবের প্রবৃহ্ণ ও ভ্রদরাবেশের বহিপ্রেকাশ এই গানে। রবীজনাবের সব গানই প্রায় এই অনির্কাচনীয়ভার ভরা, ভার গান বাক্যকে হাভিরে সিরে এমনি ভারগার এসে বেমে যার বেধানে চরম হংবের মব্যেও পরম শান্তি; সে ভার সেই সভা হারিরে বিশ্ব প্রকৃতির সলে একাল হরে যার।

ইতিকলার প্রধান কথাই হচ্ছে কথাকে বাদ দিয়ে গান হতে পারে না, কিছ সে গানের বকীরতা হবে কথাকে ছাড়িরে এগিরে বাওরা। সে হবে বনের পাখীর মতন বরা হোঁরার বাইরে, কিছ ভার গান হবে সকলের। রবীক্ষনাবের ভাষাতেই বলি:—

"কে সে আমার কেইবা জানে, কিছু বা ভার ধেবি আভা।
কিছু বা পাই অসমানে কিছু বা ভার বুবি না বা।
মাবে মাবে ভার বারভা
আমার ভাষার পায় কি ক্থা,
ও সে আমার জানি পাঠার বাবী, আমার গানে
স্কিরে ভাবে ॥"

রবীজ্ঞাথ ভব্ গানকে গান বলে দেখেন নি, ভারও
অভিরিক্ত কিছু তিনি গানের মধ্যে দেখেছিলেন। আর্ক
শভানীরও আগে তিনি বর্ধন বাংলা গান নিরে পরীকা
করছিলেন এবং নিকের মধ্যেও একটা ব্রাণভার চেটা
করছিলেন, ভর্ধন ভীউন,বাউল, ভাটরাল, ভারি প্রভৃতি লোকসদীভগুলোর সলে আগরের গানের বিরাট বাবধান
ছিল। গাঁচালী, ভর্জা, কবিগান ছিল বহু দ্বে। য়ামপ্রসাদ,
নির্বাব্র গানও আগরে ঠাই পেত মাল-বিষেটারী গানের
সহত্তে কোন কর্ধা না ভোলাই ভাল। ভাই এ সব গান বেমন
উচ্চালের সদীভের তি-সীমানার প্রবেশাধিকার পেত না,
ভেষ্ণি বৈচিত্রামর বাভ্য জীবনের বিভিন্ন ক্ষেত্রেও এবা আগন
পাতবার অবকাশ পার নি। জীবনের বিভিন্ন ক্ষেত্রেও আমাদের
বাংলা গানের বিভারের সেই অভাব রবীক্ষমার অবেলাকালে
এ সহত্তে লিবেছিলেন—ভিনি ভার প্রথম ইউরোপ প্রবাসকালে
এ সহত্তে লিবেছিলেন:

"আৰু পৰ্যান্ত আমার মনে হয় বে, ইউরোপের গান এবং আমাবের গানের মহাল ভিয় টক এক বয়কা বিয়া কবরের এক বহালে ধেন ভাষারা প্রবেশ করে না। ইউরোপেন্ট সলীত বেন বাহুবের বাজব জীবনের সলে বিচিত্র ভাবে ব্যক্ত। ভাই বেবিতে পাই, সকল রক্ষেই বটনা বর্ণনা আগ্রয় করিবা ইউরোপের গানের পুর বাটান চলে—আবালের বেশী ক্ষরে বলি সেরপ করিতে যাই ভবে অভুত হইরা পঞ্চে, ভাষার রস বাকে না।"

•

चावारपद नारमद वहे देशकी बरन मरम त्यरम निरम् এ অভাব পুরধের ছতে হবীজনাবই সেহিন প্রধন অএসহ হরেছিলেন। পথীকণ হিসাবে ভিনি "বাখিকী প্রভিভা" ७ "कान प्रवर्ग"व करवक्षे भारत वेहेरवाश्वेष खब मिरब जाकना লাভ কৰেন। বিলাভে থাকা কালে ভিনি সে দেশীর গামের সঙ্গে ভুগনা করে আমাদের দেশী গানের যে বিপুল সম্ভাবনার আভাষ পেয়েছিলেন সেটা তার "সেই সময়কার একটা সদীত উত্তেজনার" প্রকাশ করে এবং সেই রক্ষ একটা "দত্তর ভাঙা वैजि-विश्रायत धनवानाम्ब वार्या (याक्रे के ब्रिविक क्रू के नाहिकात रहे। अरे मनद (यदक त्रवी प्रमाय चनुष्ठत कृत्राष्ठ बादकन (व. जाबादम्ब वारमा शादनबन्ध वित्मव अक्डी वर्ष चारम, अवानजः (म वर्षके अरे, या चार्यापद वास्त्र चीवरम নিক্রক, খব্যক্ত তাকে প্রকাশ করা। গানকে রাগ-রাগিনীর वहन ও অনুশাসন (बेटक मुख्य कडा बवर ওভাষ্টের tradition ও ববেঞ্চাচার বেকে মুক্তি দিরে মুভ্ন প্ররের ক্রন্থেরা। এবানেও আমরা রবীজনাবের কবাই ভূলে বেবাছি:---

"গুধু মাত্র রপকে জোগ করা মর কিছ আপমাকে প্রকাশ করা যথন মাহুবের অভিপ্রার হয় তথন সে এই বিশেবছের বৈচিত্রকে বাক্ত করবার করে ব্যাপুল হয়ে ওঠে। তথন সে নিক্রের আশা-আকাজা, হাসি-কারা সমন্তকে বিচিত্ররূপ ধিরে আটের অমৃতলোকে আপনার হাতে স্পষ্ট করতে থাকে। আন্থ্রকাশের এই স্পষ্টই বাবীনতা। — শাসন-তন্ত্র যতই উৎক্তই এবং তার মধ্যে শাসেতের আন্থ্রকাশের কোন কাকই যদি কোবাও না থাকে তবে এ সোমার মঙ্গিতে চির উর্থম মহাদেব নারদ ভরত বুনি বিলে পরামর্শ করে যদি আমাদের সঙ্গীতকে এমন চুলার উৎকর্ষ দিরে থাকেন যে আমরা কেবল মান্তেই পারি, স্পষ্ট কর্তে না পারি তবে ঐ সুসম্পূর্ণতার বারাই সঙ্গীতের প্রধান উচ্চত মই হয়েছে বলতে হবে "†

আমাদের বাংলা গানে তার 'প্রধান উচ্ছেও'কে সকল করেন রবীক্রনাথ সরচিত গানে। পূর্বে আবাদের বাংলা সধীত বলতে রামপ্রসাধ, রাম বস্থ, নিধু করে, গোণাল উচ্ছে প্রমুখ অনেকেই গান রচনা করলেও আমাদের দৈনকিন বাভব জীবনে সেওলির প্রভাব বেটি দিন ছাঙী হয় নি। এঁতের অনেক গান যথেই ভাব ও ক্রিছপূর্ণ হলেও ইংরেডী শিকা ও

<sup>•</sup> बोरम-प्रक ; पू. ১৯৮-১

十 更年 ; 質. 390-8

সংস্কৃতি-প্রভাবে সে সম্ভ গাম ক্রমেই সকলের রুচিবিরুছ হয়ে উঠতে থাকে। তাঁথের ভাষা ও তাংকালিক রচনা-পছতি মধ্য সম্প্রদায়ের ভাবে বাক্তে বাকে-কালফমে ভাৰের গামের চর্চা আর বা থাকার দর্যন গে সব গান সকলেই ভুলতে থাকেন। বাংলার সমীত-ক্সতে রবীক্রনাথের আরু প্রকাশ ঠিক দেই বিবর্জনের মূবে---এমন কি, জাকে এই क्रि-निवर्षामद वाराम भावक रजाल पूज करा स्टब ना । স্ববীক্ষমাৰ কাৰ্য ও সাহিত্যে যেখন আমাদের রস ও এচি-বোৰকে সম্পূৰ্ণ পরিবর্ত্তিত করেন তেমনি গানেও তার ব্যতিক্রম **घटडे** थि। दारभा गान्य यूगाख्य चायभ्रम कटबम बरौक्ष माबरे। चार्मिक वारणा त्रास्त्र चान्द्र दरीक्रमाव अवग विकित्तं विभि क्यांव भएक व्यव्य भयवश्च क्रियन ; क्यार्ट्स रह কৰা সে সমস্ত পানের স্থর ভাবেই দেওরা। প্রথম তিনি কতক-গুলি বিলিভি পুর ভেঙে সেগুলৈকে বাঙালী কঠেই উপযোগী ক্ষবার প্রয়াস পান; শেষ অধ্য রবীজনাব সে পর ছেচে षित्य कावकीय वान-वानिनीय साधा ज्ञान (बरकर जाननाव खब-ভলিকে সৰ্বজনপ্ৰান্ত করে ওলেন। ইউরোপীয় গানের হুরের ছাৰ্দ্মনিত্ৰ যে অভাব তিনি দেৰেছিলেন বাংলা গানে, পেই অভাব মেটানোও তার নিজ্য হর-স্টার অঞ্চম উদ্বেগ। আমরা বিভত বাগরাগিটর কথা ছেতে দিলাম: বামপ্রসাদ, बिध्वाव अभूव विভिकादास्य शान्य अवत वाहाणीय दाखर জীবনের বিভিন্ন অভৃভূতি ও রসবোধ মেটাতে পারে না -सबौध-मञ्जील (भद्रे विरम्ध स्मर्भारत अवान পরিপুরক।

वर्गे जमार्यव मार्गव विषय चारमाह्या अध्यक्त मह्यवभव ময়--ভবে এ কথা সভা যে তার গান ও হর আনাদের **খীবৰের প্রতিট অ**ধুভূতিকে কৰা ও গানে মুখরিত করে ভূলে, যা ভার ১২গাম্থিক আর কোন গীতিকার ধারা সম্ভবপর হয় নি। রবালখাবের সমগাম্মিক শ্রেষ্ঠ গীতিকার 📽 श्रुवकावत्पव भत्या अयम जामता शाहे वित्यक्षणाण ज्ञुण-बानावटक । अवा इ'करनरे विरागन मन्पूर्न कारन बनीख-श्रकाव-বৰ্জিত। ববীক্ৰনাৰ, খিৰেক্ৰলাল, অভুলৱদাদ এঁবা তিম-ক্ষেই ছিলেন পা-চাত্তা সলীতের বারা প্রভাবাধিত ও অমু-প্ৰাণিভ, কিন্তু এঁৱা সকলেই লেখ পৰ্য্যন্ত শে প্ৰভাব খেকে बुक्तिनाच कदवन बदर दारशा नाम ७ श्वरक प च दिनिहै। बादा भव्य करवन । अ वाष्ट्रा गांदा मधी छ-बहनाव मरनानिर्दर्भ करतम कारमद भारमक वर्षीयमार्थित क्या ७ ऋरवद अक्डी मानका भाग (बरक शिरम-धंता क्येंटे नवानिव वरीक्ष-क्षांबरक चहीकात कहरण शास्त्र मि ।

वर्षमाम कारण अक ट्रांचैव नारमव श्रामम क्रांचर राज्यान चूब-रेबिका अधीकांत क्रतवांत छैनांत त्वे, क्रिक म्बलांत जवरे लाव वर्गशरकार्या इहै। चाधुनिक शास्त्रव विविध् এবং হাৰ্যনিত্ৰ আভিশ্যা বাংলা গানেত্ৰ প্ৰৱেত প্ৰবাদ শব্দ হয়ে হাড়িয়েছে। বাংলা গান, তথা ভারতীয় গানের বা

প্রধান বৈশিষ্ট্য—বেলভি, ভার অভাব আলাদের আধুনিক গানে অভ্যপ্ত বেশী। এই সৰ গানে পুরের প্রাবাদ অপেকা दनभरवाज यहननीष्ठ वा back gound music-बद वय बनाभिरे पुर (वने ।

रेयरभनिक नान नारेटन चयवा भिर ग्रुट्य मनीछ-५६६। क्यान ए। नायक्त क्षेत्रदेव भविवर्धन यहि, (महै। स्वनिविकान-সম্বত। ভাই বিদেশী প্রৱে সঙ্গীত-১৯টা করতে করতে সেটা পায়কের বিভীয় খভাবে পরিণত হয়। তথন অভ্যাদের দর্শণ কৃতক্তাল প্ৰবেব প্যাষ্টাৰ্ণ বা কাঠাখো গড়ে উঠে যাব कण २८% अहे थे. त्राम त्राहेबाब अभव वा बहना कवबाब भयद शाहरकत कर्षत्रत अक्षाभवनकः (मह भागिन स्टाहे हरण, चर्चार, गांशरकत कर्श्वरत खत-रेनहिता नहे श्रम निरम এক্ষেয়েহিতে পরিণত হয়, এর প্রত্যক্ষ প্রয়াণ 'আধুনিক' পানভূজি একটু মনযোগ দিয়ে শুনলে পাওয়া যায়। बबीलभाष नाम दहना कंदरङ्ग छ। ब श्रमस्य क्राय क्ष स्टम्, আবার,কংনে বং গান লিখে হুর দিজেন। কিন্ত আধুনিক প্রতিকারণণ তথানতঃ গান লেখেন কোনো বিলেষ সুধকারের ञ्चटक भारतथन कःव---यात भटण श्राप्त भर श्रुवरे रूट्य श्रह अक बीट्डब अब बादबा अकठा भाष अबे त्य पत मथ्दब গায়কেরও কোন সাধীনতা থাকে না, তাকে স্বীতকারের মুখ (हारारे क्रमां इसे इसे अनात्या भाग बरे भव (मायक्र) বেকে মুক্ত: রবীজনাধের সূর একান্ত ভাবে তার আপনার, তা ভারতীয় সঙ্গীতের সঙ্গে নাভির সম্পর্কটুকু বহিষ্কে ধের 🖟 কিছ चावृत्रिक महौराज अद चकाव विरामस कार्टरे भदिनाक्रिज एता। विरम्पी निक राक्षामीय परव राज्यामी बारवय रकारम ल'ज-পালিত হলেও খেষন ছ'ক্ষনের মধ্যে রক্তের টান বাকে না এবং মননধর্বেরও বৈপরীভা ঘটে থাকে, ভেমনি বিদেশী শ্বর বাংলা কথার গীত হলেও তার মধ্যে মেলভি ও ছার্মনির ভকাং ঘটবেই: বাংলা গানে এটাই বিভাতীয় প্রভাবের পরিচায়ক : 'রবীজনাবের গাম' বীর্ষক একট প্রবদ্ধে জীংহবেজ কুষার রাম্ব লিবেছিলেন---

"যে হর ও গান বেশের প্রাণকে বরতে পারে ভাইভো राष्ट्र काछोत्र नाम। विस्तर्भ (बर्क बात कवा सूत्र ७ नाम्ब চেরে ভাতীর সঙ্গাডের মর্ব্যাদা নিশ্চরই বেনী।"

এই ছত্তে এবানে ব্যিষ্টপ্ৰের 'বন্ধেয়াভরম্' সঙ্গীভের ছর भररवाक्या **मध्य किइ यमाम (वांव एव क्यांमिक ए**व না। বব্দেমাভরম্ গান্ট বহু বংসর যাবং আমাদের ভাতীয় সমীত হিসাৰে গীত হচ্ছে। বিভিন্ন হুৱে এ গান গাওৱা খৰ, ভৰণ্যে যেট সৰ্কাৰিক প্ৰচলিত ভাৱ পুৰকাৰ হলেন রবীজনাব। করেক বছর আরে আনন্দবাকার ও হিনুদ্বান क्षेत्रार्थ पश्चिकाव प्रविधानकान मर्ग करवम (य. वरीक्रमार्थक (रक्षा पर कममस्य गर्बर्ड (क्षत्रमा कांगीएक नांबरक मा : अर খন্যে তাৰা ৰশেৰাভৱৰ সদীতে সূতৰ সূহ বেৰ—তা হয় भूषाभूषि विषयी, किंद तारे मञ्च भूत त्वक्छि विषयणी एत भारत, समयान प्रदेश छात्र भाग्युष्टा। दानी श्वत छ विषयी भ्रत्यत भारतावना श्वास छहे कथारे वमाल एत स्था, विनिश्चि भ्रत्यत भारताव दानी भ्रत्यत मलन भविष्टित भन्न, छता विश्विकारत भागामीन भाकारना। वस्थ्याज्ञत्य भारत्य भागम्यवाकाती श्वत एरब्डिन विश्वित, कांग्रेगिन । भागदिन । भ्रत्यत मन्भूर्ग विष्यायी। सम्मी छ विभिष्ट श्रद्यत लकार स्थायत जाम्युर्ग विष्यायी। समी छ विभिष्ट श्रद्यत लकार

শ্বিলেতির সঙ্গে এই দেশী গানের ইাথের ভফাংটা কোনবানে, প্রবান ভফাং সেই ত্বল ত্বরগুলি নিয়ে যাকে বলে
ক্রতি। এই ক্রতি আমাদের গানের ত্বল নার্ভল্প। এরি
যোগে এক ত্বর ক্রেল যে আর এক ত্বরের পাশাপালি থাকে
তা নর ভাগের মব্যে নাভির সম্বন্ধ ঘটে। এই নাভির সম্বন্ধ
হিন্দ্র করলে রাগ-রাগিশী যদি বা টেকে ভাগের ইাদটা বছল
হয়ে যার। কিন্তুকাল পূর্বে যে কলাটের প্রচলন হলে ভার
গংগুলি এর প্রমাণ। এই গ্রেন্দ্র ত্বগুলি কাটা ক্রাচ্চা
করতে থাকে, কিন্ধ ভাগের মধ্যে সেই কেদনর সম্বন্ধ থাকে

না যা নিয়ে সঙ্গীতের গভীরতা। ... এই সব কাটা সুরস্কনি
নিয়ে নানা প্রকার বেলানো যার, উত্তেজনা বলো, পরিহাস
বলো, থাপুষের বিশেষ বিশেষ জনরাবেদ বলো নানা তাবে
তাদের ব্যবহার করা যেতে পারে, কিছ বেবানে রাগ-রাদিনী
আপনার সম্পূর্ণতার গাস্তীর্ব্যে নির্মিকারতাবে বিরাজ করছে
নেখানে এরা সন্ধিত ।" •

এইবানেই প্রবন্ধের সমান্তির পূর্ণছেব টানব। ববীক্ষসঞ্চীত যে থকীর বৈশিষ্ট্য নিয়ে আনাদের বর্তমান বাংলা
গানের একটা বিবাট অংশ অবিকার করে আছে ভার সম্পূর্ণ
চর্চ্চা এবনে! হয়নি। মনে হয় রবীক্র-সঙ্গীতের চর্চা এবন
বাপকভাবে হওয়া একান্ত আবহুদ্দ , এতে করে ভুরু গানের
আতীয়তা বা বাঙাপীয়ানার বজায় বাকবে না এর ঘালা
সাংগ্রতিক অনুশীলনও হবে। কারণ রবীক্রনাবের গানের
পুর ভারতীর রাগ-রাগিনির ছায়াতলে বিক্লিত।

● W# ; 9. 393 1

### ভারত-মাকিন বাণিজ্য

#### ই দীনবন্ধু দাস

2505-80 ACA

রাষ্ট্রক ক্ষেত্রে মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র বেরূপ ক্ষমভাশালী ও প্রতিষ্ঠা-বান ভাষাতে অনেকৈ মনে করিতে পারেন যে ভারতীয় वानिकाब क्षात्रक काश्वत श्वाम पूर फैटल हे इहेटर् क्षि क्षकुणरूष जारु! नर्ह । यमिश्व देश्ट्यक क्षक कारण क्ष (भरम यां विका क्रतिष्ठ चानिया चवरणस्य क्रस्य क्रस्य क्रम ৱাৰত্ব ত্বাপন করিয়াছে, তথাপি বাণিকাকে সব সমন্ত রাষ্ট্রিক बानकार्डि भिशा बाला याथ ना । अक अबब बाबाटलब बाबपानी ও রপ্তানি উভয়বিধ বাণিজার ক্ষেত্রে ইংবেজের প্রাধার हिन। किन्न अक्षा मान कविवाद कान कारण नाहे य वाकरण्य भएक वानिकास अक्षेत्र चटकरा भवद दिखाएए। ইংরেকে ও ভার্মানে যে এত শক্ততা তথাপি শাভিকালে वानिका-व्याभारत दैंशारम्ब अक रम्भारक शक्तिः अभव रम्भाव কিছতেই চলে না। ভাপানের উপর বিন্দুধাত রাষ্ট্রার কর্তৃত্ব না থাকা সভেও বিগত মুছপূর্বকালে মার্কিনের সবচেরে বেশী বাণিজ্যিক আদান-প্রদানের সম্বর ছিল কানাডার পরেই ভাপানের সঙ্গে। ভারতবর্ষেও বিগত ৬০।৭০ বংসরের মধ্যে देश्याक्य मान वानिका द्वाम भारेया काभाग, मार्किन पूक्त हो. वाबाबी क्षप्रं एएटम्ब मरम वाविका-मन्त्रकं वृष्टि भारेबार्ट ।

গভ ৩০।৩৫ বংসরের মধ্যে বিভিন্ন সমূরে ভারতের আম্লামি ও রপ্তামী বাশিজ্যে কোন্ বেশের কভট। ভংশ থিল, শীচে ভাষা বেশাশ হইল।.

(১) ভারতের আমদানী বাণিজ্যের শতকরা অংশঞ जिटिय जन्मराम काशान कार्यामी बार्किय क्षणम महाबुद्धक भूवे ৫ বংসংব্র প্রপ্রভা PH:4 .... せぇル क्षणम अस्यूषकारण প্ৰপঞ্জা হি**সা**ব 4.0 প্ৰথম মহামুদ্ধের भदवड़ी ४ वरभदाव গভণভতা হিলাব 49.6 90°€ 74,0 70.7 P. 6 १३७४-७७ भूरन

(২) ভারতের রপ্তানি বাণিজ্যের শতকরা অংশ ভারতের রপ্তানি আপান মার্কিন প্রকাদেশ ভার্মানী
প্রথম মহার্ছের পূর্বে ২৫'১ ৭'৫ ৭'৫ ··· ১'৮

,, মহো ৩১'১ ১১'২ ১১'১ ··· ০'৯

,, পরে ২৪'২ ১৩'৩ ১২'০ ··· ৪'১
১৯৩৮-৩৯ সালে ৩৪'৩ ৮'৮ ৮'৪ ৬'৬ ৫'০
১৯৩৯-৪০ লালে ৩৫'১ ৬'৬ ১২'৭ ৬'৩ ···

75.0

5.0 %

77.4

>.0

 ১৯০৭-৩০ সালের পূর্বে ভারতীর বাণিজ্যের হিসাবের মব্যে একদেশকে ভারতের অন্তর্গত বলিয়া ধরা হইয়াছে।

#### (৩) বোট বাণিজ্যের শতকরা অংশ#

বিটেন ব্যাদেশ আপান বার্থিন ভার্নানী প্রথম মহার্থের পূর্বে ৪০'০ ... ৫'৫ ৫'৮ ৮'৫ ,, , মব্যে ৪১'২ ... ১০'৪ ১০'৪ ৪'০ ১৯৩৮-০৯ সলে ৩২'৫ ১১'০ ৯'৪ ৭'৫ ৬'৬ ১৯০৯-৪০ সলে ৩০'৮ ১১'৮ ৮'৮ ১১'১ ২'৫

#### ভারভীর বাণিজ্যে মার্কিন বুক্তরাটের স্থান

बरे दिनाव स्टेएंड (४व) यात्र (य युद्धपूर्व ১৯৩৮-७৯ जत्म च'त्राज्य मान वानिकाकायी (यम क'शव भारता मार्किम बुक्कवाटहेव স্থান ছিল চতুর্ব। ঐ সালে ভারতের যোট বাণিজ্যে মার্কিনের **बरम विन मछ क्या १३०। देशदाब्य बरम विन ७३३ मछारम** বা প্রায় এক-ভৃতীয়াংশ। (পূর্বে ভারতের বাণিজ্যে ত্রিটেনের **पर्य पात्रक प्रत्य (वर्षे विश । ) उद्यागत्मत पर्य ১১** मछारम, चार कार्गात्मत >°8 मछारम विम । मार्कित्मत সক্তে ভারতের বাণিজ্যের পরিমাণ অপেকা ভারানীর সক্তে ভারতের বাণিজ্যের পরিষাণ কম ছিল। ১৯৩৮-৩৯ স্থে ভারতের বাণিজ্যের ৬-৬ পভাংশ হইরাছিল ভার্মানীর সলে। अहै। रहेन चामनानी ७ इस्रामि छेण्य श्रीकाद वानिकाद अक्ष হিনাব। ১৯৩৮-৩৯ সৰে ভারতের আম্বানীর ৬০৪ শতাংশ আসিরাহিল বার্কিন বুক্তরাই হইতে, আর ভারতের রপ্তানির **৮'8 मछारम बार्किस बुक्रबार्ड्ड त्रिवादिल। बुद्धशृर्द बूर्ड** ভারতের আমলামী বাণিজ্যে মার্কিনের খান ছিল পঞ্ম, আর वदानि-वानित्का कृतीय । देक्य वानित्कारे ब्रिटिम ७ कानाम काराव केंगदा विभ । तथानि-वानिका चनक वार्कित्वव वान শাশানের বুব কাছাকাছি ছিল। ভারভের বাবিদ্যা-ব্যাপারে वॉक्टिंग्य शांग काथाय (एवं) (एवं) धार्क ষার্কিনের বাণিজ্যে ভারভের স্থান কোবার।

#### মাৰ্কিন মুক্তরাষ্ট্রে বাণিক্যে ভারভের স্থান

ভারতবর্ধের আনলানী ও রপ্তানির পরিষাণ অপেকা বার্কিন যুক্তরাষ্ট্রের আনলানী ও রপ্তানির পরিষাণ অনেক বেশী। প্রভরাং ভারতের বানিজ্যে মার্কিনের বে প্রান নার্কিনের বানিজ্যে ভারতের স্থান ভাহা অপেকা অনেক নীচে। ১৯১১ সন ক্রতে ১৯৪৪ সনের মধ্যে মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র বংসর বংসর বিবেশ ক্রতে বভ নাল আনলানী করিরাছে ভাহার ও ক্রতে ৪ শতাংশ আনিরাছে ভারত ক্রতে। আর বিবেশে নার্কিন বভ নাল রপ্তানি করিরাছে ভাহার ১ ক্রতে ২ শভাংশ নার ভারতে সিরাছে। প্রভরাং বেশা বাইতেকে বে এবন পর্বর ভারত ও মার্কিনের মধ্যে বানিজ্যিক আঘান-প্রভান পুর প্রসার লাভ ভরে নাই। বিভীয় সহাযুদ্ধের মধ্যে ভারত-মার্কিন বাণিজ্যের অবস্থা

বিগত মুডকালে ভাষত ও বার্কিন মুক্তরাষ্ট্রের মধ্যে বার্গিছোর প্রদার হইরাছে। ১৯৩৯ সন হইতে ১৯৪৫ সন এই १ বংসরে বার্কিন মুক্তরাষ্ট্র হইতে ভাষতে বোট ১৪০ কোট ভলার (১ ভলার—৩ টাকার) বেশী। ইতিপূর্বে ১৯০০ সন হইতে ১৯৩৮ সন এই ৩৯ বংগরে বার্কিন হইতে ভারতে যত বাল আসিরাছিল, এই ৭ বছরে আসিরাছে ভাষার ছিওপের চেরেও বেশী। এই সম্বর আমলানীর চারি-পঞ্চরাংশ বাশ-ইকারা ব্যবহা অপ্রহারী আসিরাছিল, বাকী এক-পঞ্চরাংশ আসিরাছিল নগদ হামে সাবারণ জহু-বিক্রমের বাতে।

১৯৩৮ সনে, যুদ্ধ সুরু ছইবার পূর্বৎসরে ভারভ, মার্কিন ছইভে ৩'০৪ কোট ভণার বুল্যের মাল আমদানী করিরাছিল, আর দেদেশে রপ্তানি করিরাছিল ৫'৮৪ কোট ভগার। ১৯৪৫ সনে বুছের শেষ বংসরে মার্কিন ছইভে আমদানীর পরিষাণ ছিল ৪৯'১০ কোট ভগার, আর দেদেশে রপ্তানি ছইরাছিল ১৭'০২ কোট ভলার। ১৯৪৪-এ আমদানীর পরিষাণ ছিল আরপ্ত বেশী। ৭৭'৭৬ কোট ভলার। রুভপূর্ব বংসরের ভূলনার ১৯৪৪ সনে আমদানীর ২০ গুণ বৃদ্ধি পাইরাছিল। আর রপ্তানি (১৯৪৫ সনে) ৩ গুণ বাভিয়াছিল। এই হিসাবের মধ্যে গুণ-ইক্লারা এবং পান্টা-সাহাব্য ব্যবহা সংক্রান্ত মালের আদান-প্রদান বরা ছইরাছে। নগধ ক্ষরবিক্তরের বাভে ক্ষরণ আমদানী রপ্তানি ছইয়াছিল ভাছা নীচে দেখান ছইল:—

ভারতের বগুনি ভারতের আবদানী
(বার্কিন মুক্তরাট্রে) (বার্কিন হইতে)
(হাজার ভলার)

220r	4,50,78	@,%8, <b>8</b> }
>8€	-	>,०4,२১
2>80	<b>32,41,48</b>	
2>88	<b>&gt;&gt;,0&gt;,</b> ৮٩	
2584	78.27.00	<b>5.30.</b> ₩

নাৰাৱৰ জন্ধ-বিজন বাতে ১৯৪৫ সনে ভানত হইতে নাজিৰ বুজনাট্টে ১৯৩৮ সালের ভূলনার ২১ গুণ বেশী বুলোর মাল নগানি ইইনছিল। আন ১৯৪২ সনে নাজিন বুজনাট্ট হইতে ভানত ১৯৩৮ সনের প্রায় ৩ গুণ অবিক বুলোর নাল আনহানী করিবাহিল। বুজের নব্যে উজন্ধ কেশেই পণ্যবৃদ্যা কর বেশী বাভিনাছিল। প্রভাগ বুলোর হিসাবে বাণিজ্য বভাটা নাভিনাছে বলিনা মনে হইতেছে আসলে আনহানী ও নগানির পরিনাণ অভটা বাজে নাই। ভবাগি কিছু বে বাভিনাছে সে সহছে কোন সন্দেহ নাই। এবানে প্রসক্ষমে উল্লেখ করা বাইতে পালে বে গত বুহুপূর্ব বুলে ভানত-নাজিন বাণিজ্যের বৃদ্যা সবচেত্রে বেশী হইনাছিল ১৯২০ সনে, সেই বংসর পণ্যবৃদ্যা বুল চড়া ছিল। ১৯৩৯ সনের পণ্যভূব্লোয় ভূসনার ১৯২০ সনের পণ্যবৃদ্যা গতে প্রার বিতৰ ছিল।

১৯২৭-৩৮ সালের পূর্বে ভারতীয় বাণিজ্যের হিসাবে অক্ষরেশকে
 ভারতের অন্তর্গত বলিতা বরা হৃইরাছে।

১৯২০ গৰে বাৰ্কিন হইতে ভারতে আন্দানী বালের মূল্য ছিল প্রায় ১০ কোট ভলার, আর লে দেশে বস্তানি নালের মূল্য ছিল ১৭'৬ কোট ভলার। এ বারের বুডের নধ্যে কোন বংসারেই নগদ ক্রম-বিক্রারের বাতে এত বেকী দানের নাল আন্দানী অববা রস্তানি হর নাই।

#### হুছোত্তর ভারত-মার্কিম বাণিক্য

মার্কিনের সভে ভারভের বাণিক্য বুরণেবে বাভিরাই हनिवाद । ১৯৪৫ সনের খেব ভিন বালে বার্কিন বুক্তরাই ভারত হইতে নগৰ হাবে ৪ কোট ভলার মূল্যের মাল বরিষ कविशाधिन । ১৯৪৬ भन्दित श्रवम जिन मार्ग प्रतिष कविशाधिन । ৬৮৪ কোট ভগার বুলোর খাল। ভারতও মার্কিন হইভে পূৰ্বের চেবে বেশী মাল ব্রিছ ক্রিভেছে। ১৯৪৫ সনে সারা বছরে ভারত মার্কিন ছইতে নগদ দামে ৬'৯০ কোট ভলার মুল্যের মাল ধরিদ করিয়াছিল, ১১৪৬এর প্রথম তিন মালেই २'१७ (काष्ठे फ्लाब बृत्माव मान रविष कविवादः। आवणानी ब्रुक्षानिब উপর भागाशकात विनिधिष्य बाका अवशाहर वर्षम বাৰিক্যের হার বৃদ্ধি পাইতেছে, তবন বিবিনিধেৰ অপেকাকত শিবিল হইলে বা উঠিয়া পেলে উভয় খেলের মধ্যে বাণিকা আরও বৃদ্ধি পাইবে বলিবাই মনে হয়। প্রথম মহার্ডের পরেও বংগর ছই ভারত-মার্কিন বাণিজ্য বৃদ্ধি পাইয়াছিল। ১৯২০ সবে द जामनाभी ७ दक्षाभी कर राजियादिन जाना नृदर्वे वनियादि । मत्म एव, अवाद्यक्ष चायक त्मक्ष कि हुई वरमत चावक-मार्किन বাৰিকা বাভিয়া চলিবে।

#### ভারভ-মার্কিন বাণিজ্যে ভারভের উদ্বন্ধ ভলার

ভারত-মার্কিন বাণিজ্য সম্পর্কে আর একট বিলেষ উল্লেখ-रवाना विषय और रव, कि बूरवत मरवा कि बूचनूर्ववूरन नर्रवादे भार्किन मुख्याहे रहेए जावज यज मान जामहानी करत. वार्कित्व निकृष्ठे जारात करत पानक राम वान রপ্তানি করিয়া থাকে। ভারত মার্কিন হইতে হত মাল পরিদ करत. शरफ छाश्व बाव विश्व मान मार्कित्मत निकृष्टे विश्व করিরা থাকে। পুভরাং প্রভি বংসর ভারভের হাতে অনেক উৰ ভ ভলার ক্ষা হয়। যুৰের সমধে ত্রিটেন তাহার সাত্রাজ্যের সকল ভলার একর ক্যা করিবা ভাকা সাত্রাক্যের স্থার্থে गरबक्त क्वांब मीछि अस्त कटब, देशांक्ट वना एवं "छनाब পুল" বা ভলার জ্বাক্রণ শীতি। ভলার-ভাতারের বছন হইতে ৰুক্তি পাইবার বত ভারতের পুঁলিপতিরা বিশেষ ব্যক্ত হইরা-ছেন, কাৰণ ভাষা না হইলে ভাষারা নার্কিন বুক্তরাই হইভে ৰ্শিষত বন্ধপাতি ক্ষয় করিতে পারিতেছেন না এবং শিল-बानारबद्ध बक्डी पूर्व प्रयोग बहे विभारक काशास्त्र शक-ছাড়া হইবা বাইতেছে। ভারতীয় জেতারা ভলার পাইলে मार्किन यश्चनिर्वाण अवर यश्चगुवनाशीरवश्च विरमद नाण। ब्रिटिन ১৯৪७ जरन वार्क्टिनड निक्डे एव बन्धरून करियार

ভাগার সর্ভাধির বব্যে এ কবার আছে যে, বণ এবণের এক বংগরের বব্যে ত্রিটেনকে সাত্রাব্যিক তথার অবাকরণ নীতি ভাগ করিবা ভারতকে বার্কিন বরণাতি কিনিবার অত তসার ব্যবহারের অবার স্বাধীনতা বিতে হইবে। তসারের বাবা কাইবা গেলে বার্কিন হইতে ভারতের আনহানী অবেক বাড়িবে। তদারের টানাটানির অত বর্তবানে ভারত ইত্যাহরণ বার্কিন বাল কিনিতে পারিতেহে বা।

#### ভারত-যকিন বাণিকা সামগ্রী

১৯১৩-১৪ সৰে, প্ৰথম মহাবুছের পূৰ্বি, এবং ১৯৩৯-৪০ সনে, বিভীয় মহাবুছের প্রারম্ভে, মাধিন মুক্তরাই হইতে ভারভ প্রধানতঃ কি কি মাল আনিয়াহিল এবং ঐ সব মালের ভারতের বোট আমদানীর কত শতাংশ মাধিন মুক্তরাই হইতে আলিরাহিল, তাহার হিগাব নীচে দেওবা গেল—

ভারতের আমদানী মালের কত শতাংশ মার্কিন মুক্তরাই ক্ষতে আসিরাহিল---

	১৯১७-১৪ স <b>्य</b>	১ <b>৯৩১-৪০ স্থে</b>
যোটৰ গাড়ী	>4.>	81'>
বরপাতি	જ જ	390
লোহালকভের জিনিব	<b>&gt;</b> 1	78,7
ৰাভৰ ভৈদ	40,2	v'e
লোহা ও ইন্সাত	<b>૨</b> ••	6.9
কাগৰ, পেইবোর্ড ইত্যা	<b>चि</b> —	<b>6</b> '9
কাৰ্ণাসভাত ত্ৰব্য	o' <b>8</b>	o <b>*•</b>

( ১৯১৩-১৪ সনের হিসাবে ব্রহ্মদেশকে ভারতের অন্তর্গত বলিরা ধরা হইরাহে।)

উজ হুই লালে ভারত হুইতে প্রধানত: কি কি মাল মার্কিম মুক্তরাট্রে রপ্তানি মুইরাহিল এবং এই সমস্ত মালের মোট রপ্তানির কত শতাংশ মার্কিনে নিরাহিল, তাহার হিলাব নীচে বেওয়া মুইল।----

ভারতের যোট রঙানির কত শতাংশ বার্কিন বুজরাট্রে গিরাহিল—

	১৯১७- <b>১</b> ৪ সবে	১ <b>৯७&gt;</b> -८० नरव
পাইকাত স্তব্য	87.4	<b>₹%</b>
কাচা চামভা	₹8*●	40.7
কাচা পাট	77.>	30°R
কাঁচা তুলা		<b>€.&gt;</b>
চা	o <b>°9</b>	۵,7
তৈল-বীক	2,6	<b>v</b> *o

( ১৯১৩-১৪ সলের হিসাবের মধ্যে রক্ষরেশকে ভারভের অন্তর্গত ধরা হইয়াছে।)

বিতীর বহার্ছের প্রারভে, ১৯৩৯-৪০ সনে, ভারতে বভ নোটরগাড়ী আবলানী হইরাহিল ভাহার অর্থেকের কিছু কর বার্কিন বুভারাই হইতে আলিয়াহিল। বরণাভির বোট আমদানীর এক-ষঠাংশের বেশী এবং লোহার কিনিবেরও প্রার এক-সর্থাংশ বার্কিন হইতে আদিরাহিল। এ হাড়া বাতব তৈল, লোহা ও ইম্পাত এবং কাগক প্রকৃতির বোট আমদানীর উল্লেখবোগ্য অংশ বার্কিন যুক্তরাই হইতে আমা হইবাছিল।

১৯৩৯-৪০ সনে ভারত হইতে বত পাট্ডাত দ্রব্য বিবেশে

রস্তানি হইবাছিল ভাষার এক-চতুর্বাংশের কাষাকাছি বার্কিন

বুক্তরাট্রে নিরাছিল। কাঁচা চাবছার এক-চতুর্বাংশ রপ্তানি

হইবাছিল মার্কিনে। কাঁচা পাট্ড রপ্তানীর এক দলাংশ মার্কিন

বুক্তরাট্রে নিরাছিল। কাঁচা ভূলা, চা ও তৈল-বীক্ষের ব্যাক্তরে

ত'১ শভাংশ, ত'১ শভাংশ এবং ত'০ শভাংশ সে মেশে

রপ্তানি হইবাছিল।

১৯৭৫ সনে মার্কিন যুঞ্জাপ্ত ক্টতে ভারতে নগদ দামে বে পব কিনিম নামদানী ফ্টরাছিল, তালাদের মধ্যে এইওলি প্রধান। (ইল্পিগকে আমদানী মূল্যের জ্ঞমান্সামে সাজান ফ্টল) \*
(লক্ষ্ডলার)
রাগায়নিক প্রবাগান্তী
১৫১ (২২'৫)

(১) আলকাভৱা ভাভ স্তব্য	
(ভৰব্যে ৰং প্ৰধান )	
<b>3</b> 4	ລ*•
(২) ঔষ্ণশত্ৰ	-
(৩) সাবাৰ ও প্ৰসাৰন দ্ৰব্য	-
যম্বণাভি:	, 7,04 (76
(১) শিল্প কারধাধার যন্ত্র	98
(২) বৈহাতিক যন্ত্ৰ	₹#
(৩) স্কৃষি-যন্ত্ৰ	e*9
ভাৰাক:	>+ (78)

নোট আমদানীর কত শতাংশ তাহা বঙ্নীর মধ্যে দেখান হইল।

कांश्कारि :	8•
লোহা ও ইস্পাতের বিশিষ :	20
উন্নত বরণের লোহা ও ইন্পাডের জিনিষ:	80
্যোটর গাড়ী :	>8

১৯৪২ গনে ভারত বার্কিষের নিকট বে সব জিনিষ বিক্রী করিয়াহিল ভাষার মব্যে প্রধান প্রবান করেকটির রপ্তানির হিসাব নীচে দিলাম। ইহাদিগকে রপ্তানিষ্প্রের ক্রমান্সারে সাজান হইল।†

	লক ডলার
পাট ও পাটকাত মাল	१,७० (४२)
চা	(۵) ده. (۶)
কেও নাট	٥, ٩٩ (٥)
কাঁচা চাম্ভা	96
ভূপা	44
কার্ণেটের পশষ	60
পাত গালা ( শেলাক )	81-
Ala.	ও৮
भाका दं! शंका	₹8

১৯৪৫ সনে মার্কিন যুক্তরাই ভারত হইতে যে সকল মাল আঘদানী করিয়াছিল, তাহা মার্কিনের সমুদ্য আঘদানীর ৪°২ শতাংশ মাত্র। কিন্তু ভারত হইতে এমন কডকওলি কিনিষ্ন সেদেশে রপ্তানী হয়, ষেগুলি ভারত ছাছা আর কোপাও পাওয়া যার না। এই প্রকারের ৮ রকম মাল আছে। এ ছাছা আরও ১৫ রকম মাল আছে, এই প্রতির চার-পক্ষাংশই মার্কিন যুক্তরাই ভারত হইতে আঘদানী করিয়া থাকে। মার্কিনের নিকট ভারতের মালের প্রযোজন পুর বেশী। পাট ও পাটলাত দ্রব্য লাকা, পাত গালা, অল্রের কিন্তু, ইল্যেনাইট, কেন্ডু নাট, কেন্ডু নাটের তেল এই স্ব জিনিষ্কে ভারতের একচেটিয়া অথবা প্রায় একচেটিয়া কার্যার রহিয়াছে।

† মোট রপ্তানীর কত শতাংশ ভাহা বছনীর মধ্যে দেখান হইল।

#### আলোচনা

"মেডিক্যাল কলেজ প্রভৃতিতে নিয়োগ" <sub>বাননীয়</sub>

জীবুক্ত "প্ৰবাসী" সম্পাদক

মহোদর সমীপে

नविनय निरंदमन,

बाषा-खबा :

মগাশয়, এই ভাজ মাসের "প্রবাসী"র 'বিবিধ প্রসঙ্গে' (পূ. ৪২২-৪২০) মেডিক্যাল কলেজ প্রভৃত্তির পদ্ধলির নিরোগ ব্যাপারে আপনি আমার সম্বন্ধে মন্তব্য করিয়াছেন, "---স্বঞ্চিতে উপযুক্ত লোক নিযুক্ত চইয়াকে ইচা কি তিনি ব্লিতে পারেন।"

বাস্তবিকই সংগুলিতে সর্বাপেকা উপযুক্ত লোক নিৰুক্ত হয় নাই। আপনাদের, বাহিবের লোকের, কাছে আমার দপ্তর সম্বন্ধ আমি গামী বটি, কিন্তু হাবের সহিত্ত জানাইতেছি বে আমার দপ্তবেও আমার সম্পূর্ণ ক্ষমতা ছিল না। ইতি

> বিনীত শ্ৰীযাদবৈজ্ঞনাথ পাঁজা

# घटत्र-वाइटत

#### ঞ্জীবিভূতিভূষণ গুপ্ত

শাবাচের সন্থা। কাব্য করিব না। করিবার মত মানসিক শবহাও নর। চতুর্ণকের বিশুখল আবহাওরার বিণাকে পঢ়িরা প্রার শেব হইরা সিয়াছি। তর্পরি দেহবঞ্জীও বিজ্ঞাহ বোষণা করিরাছে। দোষ দিব না। পেটের ভাত, পরবের কাপ্তবানাও যার নির্মিত যোগাড় করিরা উঠিতে পারি না ভার কাছে এ ছাড়া আর কি আলা করা যায়। দেড়শভ বংসরের দাসত্ব শুখল লে পারে পরে নাই। মিব্যার কুহেণিকায় ভাই দে বিভ্রান্ত হইরা পড়ে নাই। দাবি ভার রুদ্রন্দেশ প্রকাশ পাইরাছে—বে দাবি ভার বাচিয়া বাক্ষিবার ভক্ত অপরিহার্য। ঐ দেবুব কি ক্থার কোন প্রসঙ্গে আসিয়া গছিয়াছি।

সভাটি আযাচের। ছান আমার এক এবং অধিতীয়
লয়ন অথবা বাহিবের হর। তাস বেলিতেখিলাম। বেলা
বেল অমিয়া উঠিয়াছে। এমন সময় সদরের কড়া নাড়ার
লম্ম এবং সেই সলে দরকা বোলার আদেশ আসিল। যিনি
আসিয়াছেন তিনি বর্তমানে আমার দওগুডের কর্ত্তী—বাড়ীওয়ালি। বেলাট অবঞ্চ দানা বাবিয়াছিল নহিলে এত বড়
ছংসাহল আমার নিশ্চর হইত না। কহিলাম, এদিকের দরকা
বোলা আছে, আসুন না।

প্রভাৱে কঠিন প্রতিবাদ আদিল। আমার সাবারণ কাওজান সহছেও তিনি যথেষ্ট সন্দেহ প্রকাশ করিলেন। যেহেতু এতপ্তলি পুরুষ মাছ্যের উপছিতি আমি উপেন্দা করিয়াছ। তিনি যে এতক্ষণ বহু রাখাঘাট পুরিরা গৃহে কিরিয়াছেন এ কথাটা প্রায় ভূলিয়া পেলাম। বরং প্রতিবাদ না করিয়া অভিযোগটা নিঃলব্দে মানিয়া লইয়া অত্যন্ত সত্তিত ভাবে দরকা বুলিয়া দিয়া চোবের পলকে কিরিয়া আদিলাম। ভিনি আর একবার মধ্র কঠে আপ্যারন করিয়া সলক্ষে উপরে উটিয়া গেলেন। তার জুছ পদশন্ধ যেন নৃতন করিয়া আনাইয়া দিল যে, এইবানেই লেখ নয়। যাঁহার আসিবার আসিলেন এবং চলিয়া গেলেন কিছু আমাদের ক্যাট বেলাটি একেবারে আট হুইয়া গেল। কিছু সেক্ত বিশেষ হু:বিত হুইলাম না। উৎকৃষ্টিত ভূইয়া উটিলাই ইয়ার পরিবর্তী পরিছিতির অভ।

অধিল আনার মুখের প্রতি কিয়ংকণ চাহিয়া বাকিয়া ভীত্র কঠে কহিল, একেবারে কেনা কভ্য দেব ছি।

আমি শক্তিত হইয়া উটিলাম, সবিনয়ে কহিলাম, একটু আন্তে ভাই। এ বাজীয় দেয়ালগুলোর পর্যন্ত কাম আছে। ভা ছাড়া ঐ সদয় দরশা বোলা-বৰ্ণন চুক্তিতে এই কামরাবানি পেরেছি। আয়াকে আশ্রহচুত ক'র না অনিল।

অনিল ভিক্ত কঠে কহিল, খানবতও লিবে খিরেছ ভাহলে। ভাবেশ করেছ। কিছ আইন নেই १পুনরার তেমনি মুছ গলার কহিলাম, আছে তা যানি। কিছ ব্যবহার করতে জানি না। তা হাড়া ভদ্রমহিলার মুবে বেন আত সাপের বিষ। বিচার নেই বিবেচনা নেই অন্যূল ছোবল থেরেই চলেন।

স্থীল একটু হাসিয়া কছিল, এত দিনে নীলকণ্ঠ নাষ্টা ভোষার ধার্থক হবে। জনমহিলাট এ, আর, পিভে চাকরি করেন মা ?

সন্থতি জানাইলান।

মণি এতক্ষণ চুপ করিরা ধিল। সহসা মুখ খুলিল, তোমাদের সমালোচনা শুন বিলাম। আমি বলি এ তোমাদের অভার। তিনি নিকের বাড়ীতে যদি আক্র বাঁচিরে চলতে চান তাতে বলবার কিছু নেই। বর্তমান বুলে বেঁচে থাকাটাই একটা বড় সমস্র। পেটের দাবি অকর মহলকেও আক্র মালা দিয়েছে। সব করে মেয়ের। আরকিছু বাাইরে মেয়ে আসে নি । বাইরের জীবনটাকেই ওদের সত্য পরিচর বলে সিঙাও করায় আর যাই থাক যুক্তি নেই—আভ্রিকতা নেই।

অনিল গ্রীভিমভ গ্রম হইরা উঠিয়াছে। সে সোকা হইয়া উঠিয়া বসিল। বক্ত কঠে কহিল, অভ্যন্ত বাঞ্চাবাভি হয়ে যাছে মৰি।

মণি হাসি মুখে কহিল, সোটেই নয়। রাভায়, ঘাটে, ট্রানে, বাসে এখন অনেক মেবেকেই দেখা যায়। পালাপালি ঠালাঠানি হবেই ভাদের অনেক সময় চলতে হয়। ভা বলে এই ব্যবহাই ভাদের সর্বাত্ত মেনে চলতে হবে, এমন কি নিজেদের গভির মধ্যেও এর অভ্যা করা চলবে না, এমন দাবি করতে বাঙারা ভাষু অবিচার করা নয়—অভায়।

অনিল পুনরার ভিক্ত কঠে কহিল, গভা দামের বোলাব্দি—
মণি তার খভাবসিদ্ধ লাভ কঠে কহিল, তুমি অত্যন্ত
উত্তেজিত হয়েছ অনিল, নইলে একটু ভেবে দেবলেই
আমার কথাটা বুবতে পারতে। তথু বছ গলার চিংকার
করে সমস্তাকে উভিরে দেওয়া যার না, বরং আরও অন্তল
হরে উঠে। ভারতবর্গ আজও বিলেত হয় ি। তার নিজের
একটা বৈশিষ্ট্য আছে। এ দেশের মেহেরা খুব সাধারণ
কারণে বাইবের কগতে বেরিরে আলে না। নিতাভ
প্রয়োজনেই আগতে হয়। তাই পুরোপুরি বাইবের শীব
ওরাশ্বের উঠতে পারে নি। এর বুলে রয়েছে ওদের রভ্জের
বারা। সামাজিক শীরনের সহজ্ব অভ্যাব। এতে রাগ না
করে আমাবের বয়ং বুশী হওয়া উচিত।

ৰণি একটু গাৰিষা পুনৱার কবিল, আবাকে ভোনৱা স্বাই

ভান। আনার বর্তনান এবং অতীত জীবনে এডটুকু গোঁজানিল নেই। তা প্রকাশ করতেও তাই আনার কোন নজাচ নেই। আনার অতীত জীবনের সঙ্গে আভাকের বটনার বড় ক্ষমর একটা সদতি বেধা বিরেছে তাইতেই তোমাদের বাবা বিচ্ছি নইলে কাউকে আবাত করা কিংবা ধোঁসানোদ করবার অতিপ্রার আনার নেই। সাভগ্ন নেই।

অধিল এবারে আর প্রতিবাদ করিল না। মণি রার বলিরা চলিল, আমার বর্ত্তবানের বোপদোরত ভক্র চেহারার সলেই ভোষাদের পরিবর ঘটেছে। এর অভ্যালে যে আমার আর একটা বৃহৎ কর্মর জীবন অভিবাহিত হরে গেছে সেই ভবাই ভোষাদের বলব।

अवन मरदा अरम ना विजाब बाब अवहा विदार बाकाव्या बर यत्वत चार्काल बक्ती विदेश चर्मिका निरद। আৰি শিক্ষিত, ভদ্ৰ, আৰি সক্ষৰ। পূৰ্ব্যপুৰুষের ক্ষিদায়ীয় ইক রক্তের শ্রোত আমার দেহের এবং মনের অলিতে-গলিতে। আমার বংশের অভিযান চিত্তকে রেবেছিল আচ্ছর করে। भीरनवाबाब बुलरम दिशादर अब वर्षार्य शाबना चाबाब दिल ৰা। যাত্ৰ কলে পৰে পৰে এল বাৰা। যা জীবনেত্ৰ গভিকে ভিন্ন পৰে চালিভ কয়লে। কোৰাও প্ৰবেশপৰ পাই না। কৰ্ম-बार्वी चावि । काटका मचान नारे चर्क यांकारे क'रत अवर বাছাই ক'ৱে নেবার সে কি অন্তাপ্র বাসনা। অর্থ নেই-- সামর্থ্য ঠেলে নিয়ে চলেছে ভূল পৰে। কথাটা বুৰেও টিক এহণ করতে পারি নি। ছানা বিলাম বড় বড় লোকের বাড়িতে পরিচর-পত্ৰ সংগ্ৰহ করতে। বিকল হবে কিবে আগতে হয় তাদের অনুসার ব্যক্তিছের কাছে নতি জানিরে। কডই বা বয়স তবন আর কভবানিই বা অভিত্রতা। বকুভার ভারা সর্বসাধারণের, बाराक्त काक्ष्य नव-क्वांका बूटक बाव अक बृहुई एवि कवि নি। কিবে এসেছি। আবছের বিকলভার মনটা ভিক্ত করে থঠে। হিসাবে গোল বাধিছেছি ক্ৰাটা বুৰলেও মন মানতে চার মা। সিলে করা আদি পাঞ্চাবীর মোহ ভবনও আমার অভ্যন্ত প্ৰবল। অৰচ চোৰের সন্মূৰে মাড়োরারী এবং ভাট্টবাদের পর্বনুষী অটালিকাঙলি সার বেঁবে আহার খ্যদ করে। নিজের দলে চলল আয়ার খোরতর মুখ। किटनव भव क्षिम, मारमव भव मान। तम मूख रहरव राजन चावाद चाक्रावद अरकाद---चावाद वरानद वस, विया অহলার। বেঁচে বাকার দাবি বড় হরে দেবা বিল। যিতি (चर्ड वाहीय बनाय। शाश्चावी (चर्ड क्ट्रबा। श्रक्त ए'न বেটে ৰাজাৱ সংগ্ৰাম। গুৱা পারতে আৰি কেম পারব वा १ किन जरन १ निरम्दन निरम क्षत्र कवि । विरम् गर्दन ওঠে, বলে, আন্নবিধান। আমি ভলিবে গিরেও-ফুল পেলার। মণি রার নবকর লাভ করলে মধ্যেত্র কেরিওরালা क्रांभ । भरतक त्वार्ड वर्ष माना भक्षीएक बरनास्टबंद चाविकीय হ'ল কাপত-কেরিওয়ালার বেশে।

ৰণি বাৰ থাবিল। সাবি বিশিষ্ঠ চোৰে ভাৰ প্ৰজি চাহিৰা বহিলাৰ। ৰাজবেৰ জীবনে কোন কিছুই অগভৱ নই। নইলে বৰ্ত্মান যণি বাৰকে দেবিলে ভাৱ কথা কে বিবাস কবিবে? কিছ আনাৰ মন বলিল, সে বিখ্যা বলে নাই। অভাবের সহিভ সভ্য পত্মিচর বাহার বটীবাছে সে আনে ভার আলা। যণি বাৰকে উৎদেশ করিবা কহিলাৰ, ভারণর ?

ষণি যার পুনয়ার আরত্ত করিল, মনোছরের মুড্ন জীবনযাত্রার পদে পদে হল কেটে বেতে লাগল। মণি রারের
আক্রের সংস্কার তাকে ভূলপথে চালাতে চার। পেটের
দাবি চোব রাভিরে বনক দের, সাবধান। লাববান মনোছর
ববেইই হরেছিল, মহিলে মণি রায়কে আজ ভোমাদের
মবো পেতে না। লত্য বলতে কি; আমার নবজন্মের মূডন
অভিচ্নতার আরি ভড়িত এবং বিমিত হলাম। তবু পরসাই
সব নর। আবার ভত্রবেশ যেবানে কোন দিন প্রবেশ
আবিকারও পার নি সেই সব দুরভিক্রম্য ছান বেকে আসতে
লাগল সাঞ্জব আহবান। অক্রমহল তাদের স-গোরীর মর্ব্যাদা
দিলে। কোন অস্তরাল নেই কোন সক্রোচের বালাই নেই।

এডক্ৰে অনিলের বুবে হাসি দেবা গেল।

যণি কবিল, হাসির কথা নর অনিল। একেবারে নিছক সত্য। অনেক সময় আমি নিজেকেই ভূলে বেভাম। নিজের অভিদ্ব সথছে সক্ষেত্র আমি নিজে কাণ্ডর হাম নিরে দয় করাক্ষি—ভার বুনোট নিয়ে সন্দিয় প্রশ্ন, কোথাও আসন ছেকে ব্যক্তিগত আক্রমণ, এমনি বহু সমস্তা এসে একের পর এক পথ রোধ করে ইছির। কথনও অনভাত কঠে প্রতিবাদ করেছি—সকোচে কুঠিত হরেছি, কথনও অসহিত্ত্বতি প্রতিবাদ আনিহেছি। পরবৃত্তর্তি অসৌজন্তের অভ্নাপ চেরেছি। এ পথে শৃতন এতী কি না—এ প্রশ্নও বহু হামে উঠেছে। বোটের উপর আমাদের বে ভাত আলাহা এ তথ্যটা ভানতে এবং ভার উপরুক্ত হয়ে ইঠতে বেশ কিছু সময় লাগল। হাম কাল পাত্র বিশেবে বা, বৌদি অথবা ছিলিমনি এমনি নানা বৈব্যক্তি বুলি আয়ত্ত করে নিলাম। ব্যবসাটা ভবে উঠল।

পশ্চিমবাশীদের লোটাক্যলের ইভিন্নত শোনা থাকলেও

ঠিক বিশ্বাস করতাম না। বাঙালী—চাকুরিটাকেই জীবনের
চরম এবং পরম প্রাথি ব'লে জেনে এমেছি। ভার উপর

ঐকাভিক টানও আমার ছিল। কাজেই এই অবিশ্বাসের
মূলে সক্ষত কারণ ছিল। কিন্তু আজু সে বিশের গর আমার
ভাতে জীবলু সভা।

অৰ্টবৰ্ণে এবন দেশেই কৰণ্ডৰ করেছি বেবানে বাছ্য অনাহাত্তে নিমে দিনে তিলে তিলে ডকিছে বরতে জানে কিছ কেডে নিজে জানে না। বাঁচবাছ যাব নিরে সোজা হয়ে বাঁড়াতে ভাষা শেবে নি। শভ শত বছরেছ গোলাবীয় নাগণাশ হাডনৌত সব চূর্ণ করে বিরেছে। আটুট আছে ৩৭ বোলসট। কোন সভ্য বৃল্যই ভার নেই। অবচ ভাকেই নাজপোবাক পরিবে নিজেবের হ্রবহা ঢাকার কি চমংকার আমাজের অপ্রধান।

অনিল অক্সাং বাৰা দিল, কহিল, বছ বেশী অবাৰঞ্চ সাহিত্য কয়ছ ভূমি ৷

ৰণি ভেৰণি হাসিবুৰে কহিল, ওটা আমার ঘোৰ নয় অমিল। বাংলাদেশের ক্লবায়র ছোঁরাচে ব্যাবি। ভারপর (नाम: वादमाकी जब शित्मवे त्वन वश्र वृक्ष (भन। वा. বৌদি, অৰ্থা দিদিয়ণি সম্ভাষণের অষোধ কল হাতে হাতে মিলল। লাভের অহ্ব দিনে দিনে কেঁপে উঠতে লাগল। কিছ চিত্ৰপ্ৰ এতিনিয়ৰ বছ বছ ঘটালিকা থলি আমায় প্ৰতি (पत्र मा। मात (वैरव कार्यंत्र मणुरव मणा क्रक निरम। नाट काह्या, नाट मारकाशायी, नाट वामात बुटकंत केक রক্ত। চোবের সন্মুবে দুর্মি পরিএছ করে এক বিরাট কলিত ভবিত্তং। যাকে আমি গড়ে ভুলবই। সারা থেছে একটা উত্তেজনার কম্পন অভূতব করি। গাবাড়া দিই। মাধার বোৰ। হিটকে পড়ে। চোৰের সন্মুৰে ফুটে ওঠে মাঞ্চোয়ারীর গদি -- মিলের চোত। ভার বেকে উর্থ্যী ব্রজালের বিগপিল গতি। অপণিত শ্রমিকের কর্মব্যন্ত কোলাহল। ভোষরা ছেস না। আমার কলনার গতি আরও বংগুরে অঞ্জনর ছয়ে যায়। যেখানে গোটা পুৰিবীয় দৃষ্ট আৰু নিবছ। বেৰানে মাপুষের বৃদ্ধি আর কর্মকুলগতা ভগৰানের অভিছকে भर्वाक अधीकात कराए अविक कांगाय। निर्मादक निर्म स्वक দিলাম। অলগ কল্পনা করাও বিলাগ। বিলাসিতা আমি ত্যাগ করেছি: ভা ছাভা আমি কেরিওয়ালা। সম্বর্ধে পড়ে আছে আমার মাধার বোঝা। এত বছ প্রতাক্ষ সত্যকে অহীকার कृति (क्यम कृत्त । माथात त्वाचा ज्ञाल भिष्य १४ छनि । धिन हरन बार । किन्न वार्रास्थ क्यार वन वार्यास्य पृष्ट कर विज्ञाम (शत मा। कश्चमा अवर दृष्ट्य जाकाका मरभव मार्ट প্ৰচত আপোড়ন কুড়ে দেয়। সে বিপুল আপোড়নে সমোহর কেরিওরালা ভলিয়ে যায়। যুত মণি রায় পুনরায় নৃতন জীবন बार नवष्य कर्चालक्ष्म मिरव (वैरु ७१६ वर्गाएरवर्व चवावजांव अवर भावमांव (काटव ।

चनिन गर्चन कविश छेडिन, सामराग्--

পদে পদে অনিলের এইরণ অসহিষ্ণ উচ্চি আধার ভাল লাগে না। একটু ভিচ্চ কঠেই কহিলার, ভোষার এই বরবের অনিষ্ঠতা অবার্জনীর। কবাটা বাব্য হয়েই আবাকে বলতে হ'ল।

অবিল দ্যিল বা। স্বান ওজনে ক্ছিল, ভোষরা স্বাই স্বান—

আৰি পুনৱাৰ একটা বচু জবাৰ দিতে উভত হইতেই বৰি আহাতে ইলিতে নিধেৰ কৰিল এবং অনিলকে লক্ষ্য কৰিবা কহিল, নীলকণ্ঠ ভোষার উপর অলম্ভ ই হলেও আমি হইবি।
আমার বিগত হিনের ইতিহাস আমার নিজের কাছেও নাকে
মাবে অবিয়াত ব'লে মনে হয়। জীবনে এক হিল কড় উঠেহিল বার প্রচণ্ডতা আমার ননের অমাবন্তক বাবাকে চিরহিনের কত বিনাশ করেছে। ভাইতেই তথাক্বিত সজা-তরমান-সত্রম সব কিছু বিসর্জন হিতে পেরেছি। ভা হাড়া
আমাদের জীবনবারণের সরভা আজ এত বড় হরে বেথা
হিবেছে যাকে কতকওলি বাকে বৃক্তি হিরে আয় কোনমতেই
ঠেকিরে রাথা উচিত ময়। বে অসার বৃক্তি এবং অমাবন্তক
সকোচ আর্থিক জগং থেকে আমাদের হুরে সরিয়ে রেথেছে
ভাকে মুলবন হিসেবে ব্যবহার ক'রে অভ জাতি আমাদের
উপর প্রভুত্ব করছে। আময়া ভারই কিকিং কুপা-প্রার্থ হরে
ভাবের হুরারে বয়া হিরে পড়ে থাকি। তবু বুটার মোহ ভ্যাস
কর্ম না।

অনিল পুনৱায় শ্লেষ করিল, নীলকণ্ঠর পাঠশালায় ছিন দিন এরতি হউক।

অনিলকে সম্পূৰ্ণরূপে অঞান্ত করিয়া আমি মণিকে কহিলাম, অনিলের হয়ে আমি ছঃখিত কিন্ত ভূমি খেম না। বল।

ষণির এডটুকু ভাববৈলকণ্য দেখা গেল মা। সে হাসিরুবে বলিয়া চলিল, বড় করে ব্যবসা স্থ্রু করলাম এবং
যাদের অস্কশা, সহুদয়ভা আমি জীবনের সভিয়কারের
প্রারুৱে শেরেছিলাম ভাদের কাছে কুভঞ্জা জামাম কর্ভব্য
বলেই মনে হ'ল।

কাগতে কাগতে বিলাম বিজ্ঞাপন। ছাপালাম নিমন্ত্রণচিটি; নিজেই ভা বহন করে নিরে চললাম আমার এছক,
অপ্রাহকদের বাজী। আমার শুভন কর্মক্ষেত্র ভাষের পদগুলি
পেরে বল হতে উঠুক। কিছ আমার প্রবান এবং বিশিপ্ত প্রাহকের বাজী বেকে যে ভাবে অভ্যবনা পেলাম ভাতে বভ ব্যবা পেলাম। আমাদের মত মন্যবিত্ত ভক্রলোকের ছ্রবভা আর একবার শুভন করে উপলব্ধি করলাম।

আইপ্ মিঃ সেনের বাড়ীতে আমার প্রথম অভিযান।
প্রবেশ পথে বাধা পেলাম। পাঁড়েজি গর্জন করে উঠল।
বুধ কেরাডেই সে উচ্চরবে হেসে উঠল। বিশিত কঠে বললে,
আরে—ইয়ে তু মনোহর ভাইরা ? মার দোঁচা কোই বাঙালী
ভছরবাবু আছে।

ভাগ একটু বিশেষভাবেই হয়েছিলাম। কৰাটা অধীকায় ক্ষাবার উপায় শেই। তাই ব'লে এমন পরিছিতির অভও প্রছাত ছিলাম না। প্রবেশ-অধিকার মিলল। কিছ অল্যের প্রবেশ-প্রে আয় এক বিপ্রাট বাবল। বিঃ সেনের পুরুবধু বাইয়ের ব্রেই ছিলেন। আমার আবির্তাব উাক্তে রাভ ক'রে তুলল। ভাল করে একবার চেয়েও বেবলেন না। অক্ট একটা শক্ত করে চকিতে পর্বার আছালে সরে গেলেন। মুর্বে আমার ভাষা বোগাল না। কিংকর্ডব্যবিদ্যান্ত ভার ছিয় হয়ে ইণ্ডিরে

বইলাব। অবচ আবি জানি এঁবের আলা-বাওরা বড় বড় লনাজে। প্রবোজনে-অপ্রবোজনে সকলের লকেই এঁবা সমান ভাবে বেলা-বেশা করেব। সভা-সমিভিতে বড়ুতা বেন। কিছ নিজেবের বাড়ীতে এড়ুটা সীবাবর পড়ীর এড়ুচ্ন এধিক-ওবিক্ হবার বো নেই। সভলেই ওয়া সচেতন।

পর্বার আভালে নিসেন্ সেনের কর্ডের ব্যঞ্জনা কালে এল।
পাঁডেকি কি গুনিরে আছে নাকি ? চাকর-বাকরওলোই বা
কোধার পেছে। পর্বার আভালে অনেকওলি নারীকঠের
উত্তেকিত কথাবার্ডা আনার কালে এল এবং পর বৃত্তর্ভেই নিসেন্
সেনের বৃধ পর্বার আভাল থেকে ধেখা বিল। আল কিছ
আর সহজ কঠের রা অথবা বৌদিননি সভাবন বৃধে এল না।
ভানাভিকে কথা ক'রে উঠলান। নিসেন্ লেন সন্বীরে প্রকাশ
পেলেন। সেই সলে ধেখা দিলেন তার পুরবধু এবং থেরেরা।
সকলের বৃথেই কৌতুক্রিপ্রিত বিশ্বর। নিসেন্ সেন এক বৃধ্ থেলে বললেন, ভাই বল—ভূবি আনাদের ননোহর। নীরা
কোন ভয়লোক ভেবে অবন করে সরে গিরেহিল। তিনি একট বভিন্ন নিংখাল কেললেন। অথচ এর সভ্যিই কোন সম্ভ কারণ হিল না।

এক মুহুর্ছে বালি বালি প্রশ্ন বনকে আছের করে কেললে।
তরলোকের সহজ প্রবেশ অবিকার বর্বন এবানে বেই তর্বন
ইাভিরে এবের আলোচনার ইয়ন বোগাই কেন। একটা প্রবন্ধ
আহতি নিরে নিঃশব্দে কিরে এলান। মন্যবিভ জীবনের আর একটা বিক সভ্যরূপে বেবা বিল। বারা মানব সমাজের
ব্যার্থ নেরুত্ত।

মণি রাম বামিল।

রাগটা অনিলেরই কিছু বেশী, পুনরার সে প্রতিবাদ করিল, এ অবিসায় ।

কিছ মণি বার সে প্রতিবাদ গাবে বাবিল না। সোজা উট্টরা ইাড়াইল এবং এতখণের বাগ্বিততা খোর করিবা বছ করিবা দিয়া নিঃশব্দে বর হইতে বাহির হইয়া গেল। অনিল উঞ্জ দৃষ্টিতে তার অপ্তির্মান স্থির প্রতি চাহিয়া রহিল।

### বলিবার কথা ছিল

প্রীকরণাময় বস্থ

কুরালা জড়ানো টাদ, বিষে ভেকা বাস,
ভূমি আবি আছি বলে যারামর রাভের আকাল।
ভোনাকির বিকিমিকি, বিসিমিলি এই নদীক্ষণ
ক্রপালি সভোর বোনা পরীদের ক্রীর বাঁচল;
যনে হয়, টাদ মর, সোমার কুমুম,—
হাওরার হ্বাদ আদে, চোবে রুবে ভেডে আলে দুম,
টাদ মর, সোমার কুমুম।

আমি বেদ বরাপাভ: বভের হাওরার
এলোনেলো উভে বাই বনের হাযার,
উভে বাই পাহাভের গার;
তুরি বেদ নীল পাই, তীর মমতার
বভর্টো, মূলশারণ, লতার পাতার
একবানি হোট নীভ বচিতে কি চাও?
আবার এ বরাপাতা লাবে নিরে বাও।

হয়ভো বা বেভে বিভে হবে, যাযাবর বুনো পাই উড়ে যাবে দূর নীপ নভে,-আছিকার কুলখাবা, বাঁকা চাঁদ মনে নাহি রবে; হয়ভো বা বেভে বিভে হবে। এবনো সময় আছে, আছে চাঁধ, কোরেলিয়া ভাকে কুণ কুণ,
কুলের সভায় কাঁপে মৌস্মী বায়;
নদীর স্রোভের মডো বরে যায় সময়ের আয়,
এবনো সময় আছে, কোরেলিয়া ভাকে কুণ কুছ।
ভার পর বাবে কভো কাল,
মাঠের খাসের শীষে পাভা রবে শিশিরের কাল,
কুষাশা নিমীল চোবে চেম্বে রবে শীভের সকাল,
ভার পর বাবে কভো কাল।

ভূমি বাবে ভই পারে, আমি এই পারে,
কান পেতে বনে হবো খুভির হ্রারে;
আফিকার চেনা মুখ বুছে বাবে কালের আঁথারে,
সেহিন কি নমে রবে কভো কথা বলেছিছ ভারে ?
আফিকার ফুলরাই, বাঁকা টাহ, এই হাসি গাম
সেহিন হবে বা নমে এ হক্ষী হলে অবলান;
চাবেলির করাপাভা উচ্চে বাহ, টাহ বলে, ভবে বাই, বাই;
বলিবার কথা ছিল,
এ ভীবনে বে কথাট কভু বলি বাই।

# সমুদ্রের জল হইতে বাংলায় রাসায়নিক শিপের সম্ভাবনা

👼 হরগোপাল বিশ্বাস, এম-এসসি

বে-কোৰও আবুনিক শিল্পেরই, বিশেষ করিয়া রাসারনিক শিলের পক্ষে স্থলত ও অপর্যাপ্ত কাঁচাবাল ব্যতীত পাধুরিরা करना नक्षां पश्चि वा देवहाछिक पश्चि. निर्विष्ट निम्न नवदय चिक देशिविदाद ७ (कविडे अदर निव्रमाण गांदजी अपण প্যাক প্ৰভৃতি কৰিবাৰ ভঙ যাহাবান সুধক কাৰিবৰ বা কর্মাশ্রেইর আবঞ্চন। কোনও দেশে করলার পরিবাদ মধেই হইলেও উহার ভাঙার অকুরভ নর , শহাভরে, পাণুরিয়া कत्रमा चाक्काम रहिर चर्नारिक्निक त्रामात्रमिक निरम्ब অপরিহার্য কাঁচামালরপে পরিগণিত হওয়ার পাণুরিয়া কর্মাকে শক্তি উৎপাদমের উপকর্বরূপে খত ক্ম ব্যব্ছার कदा यात एकहे ताहे त्यरमंत कमान एत । अहे कांद्रताहे নধনদীর ক্লন্ডোত-সাহায্যে উৎপন্ন বৈছ্যভিক শক্তিম ব্যবহার भक्ष (मामदे धाराम माम्बाद विवय प्रदेश प्रक्रियात । দাক্ষিণাত্যের ষেট্রে এই পরিকল্পনা কার্য্যকরী অবস্থায় গাড়াইরাছে, কলে সেবানে রাসায়নিক শিল্পেরও প্রপাত परेशारकः। वारमारक्षरमञ्जू मारबायन मनिक्वमा महेवा आरबन फ्लेड दावनाम माना बट्नाम्ड चक्राच (bg) चार्ड करिहाट्स । जरव क्रांच वर्षवारम **देशबळ गरवाक प्रथक देशि**निवाद श चामक क्षकार चारककीर देशकरायर चलावनिवदन के शह-কলনা কৰে যে কাৰ্যো পৱিণত ছইবে তৎসম্বাদ্ধ এবনও সঠিক কিছু বলা হাইভেছে না। উত্তর বলের ভিতা পরি-কল্পনারও ঐ একই অবস্থা। আৰু আমি যে বিষয়ের चारनाहबाद क्षेत्रक वृदेशकि चन्द्रां निवसारन चनक বৈছাতিক শক্তি ভাষার বিকাশ ও সাকল্যের পক্ষে নিভাছ व्यक्ताक्तीतः।

বৈহাতিক শক্তির পরেই আগে জনশক্তির কথা।
রসারন-পারে পাভিত্যসম্পর লোক বাংলাদেশে নিভান্ত অর
নাই-প্রবান অভাব হুইভেছে রাসারনিক ইঞ্জিনিররের।
আনাদের বেশে বে রাসারনিক নিরের বিশেষ প্রসার ঘটে
নাই-ইহা ভাষার অভভন কারণ। নিরক্তেরে ভারতবর্ষ
অভিপন্ন অভ্যন্ত বলিরা নক্তেই শুনিরা থাকি। আনরা বে
এই বিষয়ে কভচ্ব অনপ্রসর ভারতের পেটেন্ট বিভাপোর কনন্ট্রোলার বেওরান বাহাহ্র রান পাই-এর The
Patent System and its Role in India নামক
সম্প্রকাশিত পৃতিকা হুইভে ভাষা ম্পাই বুবা বার। ১৯৩০১৯৩৭ নালে পৃথিবীয় কোন্ বেশে গ্রুপভা বার্থিত ক্ত
পেটেন্ট লওরা হুইরাছে উক্ত পৃতিকা হুইভে নিয়ে লিবিভ
হুইল:

দেশ	গদপ্তা বাৰ্ষিক বৃহীত পেটেব
ৰাৰ্কিন ৰুভৱাই	87429
<b>ভাৰা</b> ণী	2062)
<b>শ্ৰ</b> ণ	• 40046
(बर्व बिर्टम (১৯৩०-७८)	34839
ইটালি	20# <b>2</b> 8
বেলজিয়ম	10)6
সুইকারল্যাও (১৯৩০-৩৬)	) ৭৩০৭
ভাগাৰ	8784
<b>ৰেলোগ্নেভ</b> কিয়া	<b>0630</b>
<b>Via</b> Bat	<b>+3</b> +

কোনও দেশে যত পেটেক দেওবা হর তাহার মধ্যে বিদেশী লোকেরাও উহা সইরা বাকেন। নিয়ে করেকট দেশের শতকরা দেশী ও বিদেশী পেটেন্টের উল্লেখ করা হইল।

८४म	শতকরা কভ পেটেন্ট দেওয়া হইয়াছে		
	দেশের লোককে	वि <b>रम्नी</b> विश्वत्क	
মার্কিন মুক্তরাষ্ট্র	۶ <b>৬</b> ۴.	70,5.\"	
শাৰ্শান	18'2'/.	₹4'₽	
<b>ৰু</b> শ	10.7	45.9	
<b>थिं</b> बिर्हेम (১৯	<b>60-</b> 0€) 8 <b>F.0</b>	42.1	
ভাগাৰ	9&°0	₹8'0	
ভারভবর্ব	30.0	0.0€	

প্রথম তালিকার পেটেক ক্ষেত্রে তারতের স্থান বে শোচনীর তাবে সর্বনিয়ে তাকা দেবা দেব এবং সর্বাপেকা কুংবের বিষয় এই বে, বার্ষিক প্রদত্ত সত পেটেন্টের মধ্যে ১০ট বার তারতীরকের নিকর। পেটেক বে-কোনও কেশেরই শিলোরতির নাপকাঠি। স্ক্তরাং শিলক্ষেরে আবাদের স্থান উক্ত তালিকার স্থাই কেবা যাইতেতে।

আমাদের দেশে রাসায়নিক শিলের কর সুষক করিপ্রেইরও অভাব বিহারান। তথাকথিত উচ্চবর্ণের ঘরিত্র ব্যক্তিরাও এখন পর্বান্ত হাতের কাজের প্রতি তাচ্ছিল্যের তাব পোষণ করিয়া থাকেন। এছিকে অপেকাকুত নিরভ্যের লোকেদের পুটকর থাল্যাভাবে অপরিপুট বেহ ও প্রাথমিক শিক্ষার অভাবে অগঠিত যম ও অপরিপত বৈভিক্ত চরিত্র ভাল্যাদের কর্মশিক্ষা বিকাশ ও কর্ষেয়াদের ব্যাখাত স্কৃত্রী করিতেতে। কাজেই এরপ প্রমিক সভা হইলেও প্রম্ন স্থাত বর। অভাত বেশের अविरम्ब छुन्याव देशार्वत शांतिअविम एवछ अम छ्रुपीश्म, কিছ অভবেশের প্রবিক্ষের ভূলনার ইবারা কাল বের এক षष्टेवारम । बार्वाविव बानाविक निष्मव त्राकाव देखिराहन रावी यात. त्म रावा काववीमां मध्य व्यावीत अविक्रिक्षित मनविवादक वान कविवाद वावदा चाटक । कारादक क्रिक्श्नाद ७ पारशावित्वक गुवशा. शुक्कारमद विमा गुरद निका-হাবের ব্যবস্থা, কাল করিতে করিতে আক্ষিকভাবে কাহারও মুত্রা হুইলে ভাঁছার স্তীর ভরণ-পোইণ ও পুর-কভালের সাবালক मा एक्सा भर्ग्य भिकाशाम अकृष्टित ७ तक अवर अकर्मना ক্ষীবের পেষসমের ব্যবস্থাও শিল-প্রতিষ্ঠানই করিবা বাকেন। সকল কৰ্মীকেই দামৱিক শিকাও নিৱমাস্বভিতা শিকা বেওরা হইরা থাকে। কলে, প্রমিকেরা সভষ্ট চিছে শিলোছভিতে আন্দনিয়োগ করিয়া থাকেন এবং তাঁহাবের (बरमदा छेपबुक निका शांधवाद विकिष्ट निव्नशतिहासमाव कमन: उपक प्रेश: डिडिए बाद्यम । बाबाद्यत (बटन বৰ্ডবাৰে অধিভাংশ শ্ৰমিকট আলে প্ৰামের একাচবৰ্তী ष्ठावी **প**विवाद स्टेप्छ । आस्य बाद्यन खासारक वाना मा. णारेरवाम ७ श्रीनृत । रहरन स्थालक्या कारास्त्र बारक . শুভরাং শার্বানীর বত ব্যবহা করিলেও আমাদের অবিকাংশ প্রবিকের পদেই শহরে খ্রীপুর দইরা আসা আপাভত: সম্ভব स्टेरव विनदा बर्ग स्व मा। प्रख्तार य भव अविक-म्ब বিদেশের প্রমিকদের সদে আবাদের প্রমিকদের ভূলনা করিবা অগভোষ স্টার প্রবাদ পান তাঁহাদিনের উভর দেশের শবাক-ব্যবস্থার থিকেও লক্ষ্য হাবা কর্মব্য। সমাজ-ব্যবহার বিভিন্নভার দক্ষ আমাদের প্রমিভারিকের একট নিষ্টির আরের रवनी चार वर्षवारय छात्रारण्ड विश्ववंगियलाड शार्वत स्वेता হাভার। অবর কারিগরি কার্যো দক্ষ যে অৱসংবাক শ্রমিক এখন সহত্তেত্ৰ উপকঠে সপত্ৰিবাহে বাস করেন কাত্ৰধানা-সংলগ্ন খাখাকর খাবাস পাইলে ভাঁখাদের খাখা ও নৈভিক চরিত্রের देशकि कतिया व्यविक्रकेत कर्यानश्रमा लाक कतिरम्य अवर ভাঁহাদের দেবাদেবি আরও শ্রমিক এইরপ আবাসের প্রবিধা এছৰ কৰিতে বাজী হইবেন। আমাধের ভাতীয় চরিত্রে বিষয়াক্রমন্ত্রিভার অভাবও বিশেষ ভাবে দক্ষিত হয়। পঞ্চাছরে সভ্যিকাৰের ইউনিয়নও আনাবের বেশে এবনও গড়িয়া উঠে मारे। करन, कर्मिनच्चनात अवर निवयण्डिंग डेच्यरकरे যথেই অসুবিধা ভোগ করিতে হইতেছে।

দেশের শিল্প-সংগঠন ও সংরক্ষণে রাজনীতিকদেরও ওর হারিছ
বিভবান । আইনের সাবাভ গলদে দেশীর শিল্পের সবৃহ কৃতি
হইতে পারে। একারণ আইন-সভার শিল্প সহতে সাকাং
অভিজ্ঞতা বাহাদের আহে তাঁহাদের নির্বাচন বাহানীর। অবুনাস্থ অবর্থতা কেন্দ্রীর সরকারের বাফেট, শিল্প সহতে অবভিজ্ঞ
ন্যুক্তি (বহুস্বর নিরাক্ষং আলি বান) কর্তৃক রচিত হওরার
ক্রুদ্রের শিল্পজ্ঞারণের পক্ষে উহা পরিপত্তী হইরা

গাঁভাইবাহিল। বাজেটের স্বালোচনার ইভিয়ান চেমার ক্ষম ক্ষাপের প্রেসিডেন্ট জীবুক্ত ভরাম কারসেটিকি ফ্লাইভার এ বিষয় যে মন্তব্য করিরাহিলেন তাহা বিশেষ প্রশিশান-বোগ্য। এখনে তাঁহার বক্তৃতার করেক হল উদ্ভুক্ত করা ক্ষম—

"We have experienced the effects of this Budget and they are ghastly. At one fell swoop it has destroyed the confidence of the investing public which had only recently learnt to invest in industries instead of in land and gold; by the insane stepping up of supertax-slabs, it has dried up, savings which would have gone to nourish and fertilize new industries ... This perverse Budget spells negation to all our planning....The Assembly that passed the Budget was the Assembly of the yes-men of the Congress and the yes-men of the League hailing mostly from rural areas. These paddy politicians are green with the jealousy about the progress of our industry and the success of our industrialists. This will explain their bias and their vote."

শিলের প্রসার ও শ্রীর্ভির সহিত ভাষারও খনির্চ সম্বন্ধ ৰীকাৰ্য। পুৰিবীর কোৰার শিল্প-বিজ্ঞানের কি উন্নতি হইতেছে ভাষার দৈনন্দিন ববর রাবিতে এবং সারা প্রবিীর সদে ব্যবসা-বাণিজ্যের আধান-প্রধান করিতে ভুইলে ইংরেজী ভাষার দাহাব্য এহণ করিতেই হইবে। যে বাংলাদেশ এবনও পঠ্যন্ত নিরক্তেরে বিশেষতঃ বাসায়নিক নিরে ভারত-বৰ্ষের মধ্যে অঞ্জী ভাষাকে ভাষার স্থাম ও মর্যাদা অস্থুর बाबिए इटेरन देश्राको जावा जुनिरन हमिरव भा। बाह्रे-মেতাগৰ ভাষা সহছে ভাষাবেগ দেবাইতে পারেম কারণ कारात्व काववाद व्यविकाश्य मधात्वे (प्राय्य क्ममनाक महेता । क्षि विकास ७ निश्न-साधकशत्यव चापर्न मन्त्रूर्य विकित---कारायत कार्याव प्रविवाद एक क्यनमाम देशतकीरे मह. পরত ভার্বান ও ক্লীর ভাষার বাংপত্তিও অনেক ক্লেইে चनविद्यार्थे । अदे जब देवरमनिक काम ७ विद्यानावात कमनः ৰাতৃভাবাকেও সমুদ্ধ করিবা তুলিভে ব্ইবে--বাহাতে বেশের ব্দন্ধের চিভোংকর্ব ও কর্বপুহার বিকাশ সাধিত হয়।

আর একট উরেববোগ্য বিষয় এই বে, এতবিন আই-সি-এস প্রকৃতি পালের অর্থ ও নর্ব্যালার বোলে প্রকৃত প্রতিভাষান হাজেরা বিভালের, বিশেষ করিয়া শিরের প্রতি আরুই হন নাই। ইহাতে দেশের কম ক্ষতি হর নাই। শিরের উরতির পহিত দেশের অর্থ নৈতিক উরতি, তথা অনগণের আবনবারার নামের উররন নিবিভভাবে অভিত, স্কুতরাং এবন বাহাতে প্রতিকে প্রতিভাষান ব্যক্তিয়া আরুই হইতে পারেন ভক্ষত বেশের শিরপ্রতিগণের ষ্যাবিহিত ব্যবহা করা কর্তব্য। আর একট ওঞ্তর বিবেচ্য বিবর এই যে অনেকেই মনে করিতেহেন বে, লেলের গোক তৈরি না হইলেও কতি নাই, 
টাকা বাকিলেই বিদেশী বরণাতি ও টেকনিক্যাল একস্পার্ট 
বা পির-বিশেষজ আমদানী করিবা যে কোনও লাভকনক পির
বাঁচ করান বাইবে। এ বিধরে দেওরান বাহাছ্য রামপাই 
ভাবার পৃতিকার লিবিরাহেন—

"It must be borne in mind that every country is at present zealously working for its own industrial rehabilitation, and, therefore, it would be not at all easy to obtain the necessary supply of machinery or technical experts."

অৰ্থাং--- "ইছা বিশেষভাবে খন্তৰ রাখিতে ছইবে যে, প্রত্যেক দেশই বর্তমানে শিল্পবিষয়ে তাহার নিজের খন সামলাইতেই বিএত নহিনাছে, স্তরাং এখন বিদেশ ছইতে যন্ত্রপাতি বা স্থান্ধ যন্ত্রবিদ্ পাওলা আছে। সহজ্যাব্য ছইবে না।"

শক্ষাৰতে শিলপ্ৰবাদ দেশে গিয়া কোনও নিৰ্দিষ্ট শিল্প সৰতে হাতে-কলমে অভিন্তাতা অৰ্জন করা সৰতে প্রকারতাবে নিবেৰ না বাকিলেও ঐ পৰও যে যথেষ্ট বাবাবিশন্তিসভূল লে সকতেও দেওৱান বাহাছর একট সত্য ঘটনা বিশ্বত করিয়াছেন। অবচ তিনি দেশের নাম ইহাতে প্রকাশ করেম নাই। নিয়ে ক্ষেক হল উদ্ধৃত হুইল—

"No stranger was allowed to enter a workshop and no manufacturer was permitted to give any exhibition of, or otherwise to disclose any processes, methods or particular implements. A strict watch was kept on all foreigners entering the industrial area and suspects were rigorously expelled therefrom. Offences against these protective measures were punishable with great severity. In extreme cases the maximum penalty was death."

উদ্ধৃত বিষয় হইতে ইহা সুম্পষ্টভাবে বুঝা যাইতেহে বে, শিল্পবিভাৱে বিদেশীর ব্যাভতার উপর নির্ভৱ করা আহেঁ। সমীচীন হইবে মা। দেশে ইতিমধ্যে যে-সব কারখানা গভিষা উঠিলাছে সেওলিকে আঘর্শকরণ বিষয়া দেশে ইতিমধ্যে বে-সব কারিগর বা বৈজ্ঞানিক যন্ত্রাদি নির্দাণে দক্ষতা লাভ করিয়াছেন ভারাকের লাহাব্যেই আবাদের দেশীর শিল্পসন্ত্রান্তর ব্যবহা করিতে হইবে। বাংলাবেশে রাগারনিক শিল্পভাবে অভিতার ও উহার সম্প্রদারণকরে প্রাভক্ত বিষয়প্তলি অফালিভাবে অভিতার প্রকার এওলি ব্যাসভ্য বিষয়প্তলি আনালিভাবে অভিতার প্রধান সমুদ্রম্যক হইতে বাংলাকেশে কোন্ কোন্ রাসারনিক শিল্প গভিষা উঠিতে পারে তংসক্তে আলোচনা করা বাইতেহে।

সমুক্তকলের প্রধান উপায়ান বে আনাধের লাবারণ লবণ তাহা প্রার সকলেই জানেন। এই সাবারণ লবণ আনাধের জীবন-রক্ষার বেরূপ 'অপরিহার্য্যিকেশে প্রবোধনীর তেননি রাসায়নিক শিল্পেরও ইহা একট অভ্যাৰঞ্জ কাঁচাবাল। কারণ এই লবণ হইতেই প্ৰভত হয় আমাদের কাপড়ড়াচা লোডা, বাবার সোডা এবং সাবান, কাগজ, কুত্রিব হেশম ও অভ অসংখ্য রাসাহনিক বিজের প্রাণবরণ কষ্টক সোডা। পকারতে এই ক্ষিক সোভা বৰ্ণ খনীভূত লবণ-খল হইতে প্ৰস্তুত করা হয় ভবৰ সঙ্গে পাওৱা যায় ভাইছোকেম ও ক্লোৱিৰ গাস। হাইড়োকেন গ্যাসের সাহায়ে হুর্গর মাছের ভেল বা ভরল উদ্ভিদ্ধ তেল কঠিন, গছহীন দ্রব্যে পরিণত হয়। ভাছিয় এবোনিয়া ও মিধাইল এলকংল প্রস্তৃত্ত এবং করলা হইতে পেটোল উংপাধনেও হাইছোলেন বাৰজত হইয়া থাকে। ক্লোরিণের ব্যবহারও বছবিচিত্র। রিচিং পাউভার अन्द्री कार्या कर्या अत्द्रेशिय गान् क्षित गाम अक्टमम् ভি ভি ট, পুৰিনাল প্ৰভৃতি আধুনিক ঔষৰ ও ৱালাৱনিক পদার্থ প্রছতকরে ক্লোরিনের অসম্ভব চাহিলা বিদ্যবান। বে কাৰ্যলিক এগিড স্থপৱিচিত ক্র্যালভিত্তিভ-ভিনোল প্লাপ-টকুলের অপরিহার্য উপাদান এবং পিক্রিক এসিড নামক विक्लाइक ७ वर्श्वन क्षेत्रावद युन क्षेत्रावन-- त्मरे कार्रनिक এসিড ও বেনজিন হইভে ক্লোরিনের সাহায্যে ভৈরী করা ষ্ট্রা থাকে। ক্রেরিণের এই সম্প্রবিধ ব্যবহারের 🖘 ভ্ৰু উহাতে বৰ্তমানে 'ৱাসায়নিক প্লাব্তে ৱাৰী' আৰ্য্য (ए७श्र) र्देशां हा । अवन अबुधक्रान्य श्रवान देशांगानक्रिय কথা বলা ঘাইতেছে। এক হাজার ভাগ সমুদ্রভাগে লাধারণ नवन बाटक २१ ७। न् मानिट्यभिवय क्रावावेष खाव ४ जाने. ম্যাগনেসিয়ন সালকেট দেড় ভাগ, ক্যালসিয়ন সালফেট সোয়া ভাগ পটাসিয়ম ক্লোৱাইড একভাগ এবং ম্যাগনেসিয়ম বোষাইভ থাকে দশ হাকার ভাগে এক ভাগ। সমুদ্রকলে অভি সামাত পরিমাণে আয়োডিনও থাকে। সমুদ্রের জলক উথিকে এই আৱোডিৰ শোৰিত হয় এবং গায়ুঞিক উত্তিক সংগ্ৰহ ক্ষিয়া ভকাইয়া উহা পুড়াইলে ভাহায় ছাই হইছে আবোডিন এডভ করা হইরা বাকে। অনেকে ভনিয়া বিশিত হইবেন যে সমুদ্রজনে অভ্যন্তমানার বর্গ রৌপ্য এবং ভারও विषायानं। चारमतिकात अबुक्षक्त स्टेट्ड अक अमरत पर्व मध्यास्त ८४को स्टेशांसिन वनिश छमा बाद। वना वास्ना. ঐ প্রচেপ্তা লাভক্ষক না হওয়ার উচা পরিভাক্ত হইয়াছে। ওবৰরণে, বছাদি বং করিভে, কাগক রেশৰ ও চামড়া মহত ক্ষিতে ম্যাগনেলিয়ম সালকেট ব্যবস্থত হয়। ইনসিন্ডিয়ারী ৰোষের প্রধান উপাদান যে ন্যাগনেসিয়ন বাড় ভাহা গভ ब्राइत नमत जाताकर अभिवादम । वर्षमान ब्राइतिक क्लार्य मान्यमिश्य बाह्य हारिया प्र इवि भारेबार्य। কারণ একুমিনিয়ন ও ন্যাগনৈদিয়নের নিশ্র বাচু অভিশয় হাল্কা অবচ ৩৫ এলুনিনিয়নের অপেকা অধিকভয় শভা ও बाक्तर रक्ष्यांव छेरा अरबाद्मारमय जरमानि अवकरण वस्त পরিবাবে ব্যবহুত কইতেতে। বলা বাহল্য, ব্যাগনেলিয়ন

ফোৱাইড প্ৰভৃতি হইতেই ন্যাগদেশিয়ন ৰাভূ প্ৰভুত করা হইয়া বাকে।

এবন কি উপায়ে বাংলায় সমুম্রোপকৃলে কোবায় এই অভ্যাৰঙক লোভিৰৰ ন্যাগৰেসিৱৰ ও পটাসিৱৰ লবপসমূহ প্ৰছত করা বাইতে পারে তংগছতে লেবা বাইতেছে। ভারতবর্বের ওজরাট, করাচি প্রভৃতি অকলে সর্ব্রজন হইতে বহুকাল হইতেই প্ৰচুত্ৰ পৰিষাণে লবণ (সোভিত্ৰৰ ক্লোৱাইড) ভৈয়ারী হইরা আসিভেছে। ঐ সৰ অঞ্লে বারিপাভ অভ্যন্ত বলিয়া সাধারণতঃ প্রবিদ্ধ ভাগের সাহাব্যেই হল শুকাইরা লবণ প্ৰস্তুত কৰা হইবা বাকে। বাংলাহেলে ট্ৰফ ঐ ইপাৱে প্ৰস্তুত পরিষাণে লবৰ সাত্রা বংগর বরিষা ভৈয়ারী করার প্রধান অভবার বাংলার বারিপাতের আধিক্য। অনেকেই ভমিরা वाकित्वम, अक्टबार्केड काविद्याचाक खरकरमंत्र विक्रीनरत पत्रीह ক্ৰিলয়ৰ ভক্তিৰে অক্লাভ চেটার প্রভূত পরিবাবে লবৰ তৈৰাহীৰ সংক সংক সোডা, ক্ষ্ৰীক সোডা ও আছ্বলিক বছবিৰ অভ্যাবন্তক ৱাদায়নিক পদার্থ প্রস্তুত্তত ব্যবস্থা হইয়াছে। বাংলাদেশের ষেদিনীপুর জেলার সমৃদ্রোপকূলে লবণ ভৈরারীর বাৰ্ষিক ব্যবহা ব্যাপকভাবে করিবা স্ব্যতাণে ঐ ক্ল অনেকটা ঘনীভূত হইলে যদি পাইণ লাইনের লাহায্যে সেই ৰশীভূত সৰণকৰ কোলাবাটে একট কাৱবানা ছাপন কৰিয়া লেখানে আনীত হয় এবং কয়লায় তাপে বা পরে দামোদর পৰিকল্পার বৈছ্যতিক শক্তির সাহায্যে উপযুক্ত নাত্রার বনীভূত कविवा नवन क्षत्रक कवा वाद करन स्मार्थन नश्मिर्द वामाविक সামনী থলিও প্রস্তুত করা যাইতে পারে।

বর্ডমানে মেদিনীপুর জেলার কাঁখি বছকুমার সমুজ্রোপকুলে অল পরিবাণ লবণ ভৈয়ারী হইয়া থাকে। সর্জভীরের একট বাল ভিতরে একট বিলের মত নীচু ভারগার সহিত সংৰুক্ত বাকে। কোৱারের কল ঐ বালবারা ভিভরে প্রবেশ कविटल बीटलंब मूर्व वह कविद्या (बहुबा एवं । के विटलंब मह খানের সংলগ্ন অনেকণ্ডলি ক্রমনিয় চুরবুস করা ও পাখাড়ের পাৰ্ছেশের আনবাঁৰা বাদের কেভের বভ বাঁৰ দেওয়া কেভ बाटक । के क्यांत क्या क्षवरम छात्रात मश्मक स्थापन देकि मंजीत क्रम कविया गाँठ वर्त विम मिनाय राया एत। তংপৰে ঐ ক্ষেত্ৰৰ কল ভাষাৰ সংলগ্ন নীচেৰ ক্ষেত্ৰে আনিয়া আবার করেক দিন বৌত্তে ভকাবো হয়। এইরপ ছই ভিন কালি कवित्र छैनत वित्रा करनकी पनीकृष्ठ के कम अकड़े नर्स्ट बता रह । পরে पनीकृष्ठ के कन गर्ड स्टेस्ट कृतिहा ककार ना कड शास्त्र चान विवा नवन अवच कवा एरेवा नाटन । क्रिक के छेभारबरे पनीकुछ मबुखकन स्थारब गर्ड एरेटछ भारेभ-जारेन সাহাব্যে কোলাবাটের প্রভাবিত কারবাবার আনিরা লবণ প্ৰকৃত কৰা বাইতে পাৰে। বনীভূত সৰুত্ৰকৰ বাস বিতে বিতে এবন একট অবহার আনে বৰন ক্যালনিয়ন নালকেট পুৰক হুইয়া বাব। তথন নেওলি হাঁকিয়া কেলিয়া তলট আরও বনীত্ত করিলে লবণ করিতে বাকে। ঐ অবহার উহা ঠাঙা করিলে লবণ করিবা বার ও তাহা পূবক করিবা বিশুর ও তক করিবার পর উহা অবারকাত করা হয়। লবণ তুলিরা লইবার পর বে বনীত্ত তরল পরার্থ বাকে তাহা হইতে ব্যাগনেলিরম নালকেই, ব্যাগনেলিরম লোরাইড, পটালিরম লোরাইড ও রোমিন প্রভাভ করা যার। টাটা কোম্পানীর বিঠাপুর কারবানার সমূরকাল হইতে বার্ষিক এক লক পটিশ হাজার ইন সাবারণ লবণ ও তৎসক্ষে ঐ রাসায়নিক প্রবাতনিও তৈরারী করা হইতেহে। এক লক ইন সাবারণ লবণের সক্ষে বোল হাজার ইন ব্যাগনেলিরর সালকেই পাওরা যার বলিরা কানা বিরাহে।

পূর্বেই উরেব করা হইরাছে সাবারৰ সবৰ বেবানে প্রছণ্ড হয় লেবানে কটিক গোড়া ও সোড়া তৈরীর প্রকৃষ্ট সভাবনা। বনীত্ত বিভ্রুছ লগে করেব ভিতর উপরুক্ত পাত্র মধ্যে বিহুংপ্রবাহ চালিত করিলে ক্লোরিব ও হাইছোক্ষেম গাস এবং কটিক গোড়া উংপন্ন হয়। এইওলির ব্যবহার সবরে পূর্বেই লিবিত হইরাছে। রাসাহনিক শিল্পজনি বে অলানিতাবে কড়িত ভাষা পূর্ব প্রবরেই লিবিত হইরাছে। স্থভরাং প্রভাবিত কোলাবাট কারবানার একট বিভাবে হাইছোক্ষেন সাহাব্যে তেল বনীত্ত করা, প্রমোনিয়া ও ক্লোরিশের সাহায্যে কার্বলিক এনিড, রিচিং পাউভার ও ক্লোরিশের সাহায্যে কার্বলিক এনিড, রিচিং পাউভার ডি টি ও তংসকে হাইছোক্লোরিক এনিড তৈরীর বিভাগ বোলা যাইতে পারিবে। উর্ব্ভ ক্লোরিব ভরলীত্ত করিবা নিলিভার বা ট্যানে পুরিষা অভ্রুছ চালান দেওরার ব্যবহা করা বাইবে।

এবন ব্লিচিং পাউডার ভৈরারী করিতে চুনের দরকার হইবে, স্বভরাং ঐ ভারধানাভেই চুনাপাধর হইভে বিশুদ্ধ চুন ভৈৱীর ব্যবস্থাও রাখিতে হইবে : আর চুণ প্রস্তাভালে বে कार्यन डाइबबाइड गान डरनइ स्टेटर डाहा नरन वन स्टेटड নোডা প্রৱতক্ষে আবঞ্চক হইবে। পূর্বেব বে এবোনিরা ভৈত্ৰীৰ বিষয় উল্লেখ কৰা হইল ঐ এয়োনিয়া গ্যাস ও সোভা व्यवस्था का व्यवस्थात । नवनका रहेरा कार्यन परि-অস্ত্ৰাইড ও এবোনিয়া লাখাব্যে লোডা প্ৰস্তুতকে এবোনিয়া লোভা-পিল বলা ঘইলা থাকে। টাটা কোন্দানির বিঠাপুর কারবানার দৈনিক এই উপারে ১৫০ টন সোভা উৎপর হইতেহে। পুতরাং আবরা দেখিতে পাইতেহি বতরিব বা দাবোদর পরিকল্পনা কার্যকরী হইতেতে ভতদিন আবাদের প্রভাবিত কোলাবাট রাসার্যবিক কারবানার জড় দেবাবে প্রভুত পরিবাবে পাবুরিরা ক্রলা এবং ক্সলপুর বা কাট্নী হইছে चारक्रकीय इवानायय चानिटक रहेटर । यनीक्क नर्यक्र বংসরের সকল বছুতে সমভাবে সরবরাত্ত্র খত কাঁবি উপকূলে স্থপরিক্ষিত বিভূত লবপকলের ক্ষেত্রের ব্যবস্থা করিতে হইবে।

এই প্রবাহে সর্বর রাসার্থিক শিলের প্রাণয়রণ যে পদার্থ-খনি উংপার্থের আভান বেওরা হইল উহা বহি আগানী আট বশ বংগরের মধ্যেও ব্যাব্যভাবে কার্য্যে পরিপত হয় ভবে উহা সভ্য সভ্যই বেশে ন্বর্গের খুচনা করিবে; কার্থ ইহার উপরেই ফাভির ভবিছং নিরাপভা, অর্থনিভিক ভ্যা ক্ষমপ্রের জীবন্যালার সান্ধ্রের উন্নতি বহুলাংশে নির্ভর করিতেহে। এই বিরাট পরিক্রনার রূপদান করিতে যে স্ব অভ্যাবন্তক ব্যাগভিত প্ররোজন ভাহা শিল্পান্য কোনও বেশ হইতে আগাভত: সংগ্রহের কোনও আশা নাই ভাহা

পূর্বেই উদ্লিখিত হইবাহে। সুভবাং আনাদের নব্যে বে সব 
কারিগর ও বিজানী বল্লাকি প্রস্তত-কার্ব্যে ককভালাত করিবাহেল ভাষাদের সাহাব্যেই উহা আরভ করিতে হইবে। বিঠাপুর
বা বেটুর কারবানাকে আবর্শবরূপ বল্লিরা আনাদের আতীর
কর্বোধ্যরকে উক্তীপিত করিবা ভার্যাক্তেরে সাহসের সহিত
অবতীর্ণ হরবাই সরভা সরাবাবের এক নার উপার বলিরা
মনে হর। আশা করি ভাতীর প্রব্রেক্তর এ বিষয়ে
সর্ব্যরকার নাহাব্য ও উৎসাহ হানের ভক্ত সর্ব্যাই প্রস্তাত
বাকিবেন।

# পাড়ি

#### ঞ্জীক্ষেত্রপ্রসাদ সেনশর্মা

কালো কোছো রাভ, আক্ষকে বন্ধু, হ্রেছি পার !
নবজীবনের হুর্বেরে করি নমন্ধার !
এই মাট, আর এই সোমারঙা ক্ষেত-বামার—
আকু বেকে ভাই বলা বেতে পারে—'এরা আমার'
নীলাকাশ-ভলে বলভে পারবো—'আমার দেশ'
কালো বোডো রাভ, বন্ধু আমার, হ্রেছে শেষ !

বছু আমার, চোবে কেন ভবু কাণছে জল ?

---ভিকা পোনা---আপোব পোনা---বর্গকল ৷

এর বেশী আর, কাম্য কি বলো ?---মণিপুরের,
রাঙা ইভিহাস ?---কিংসার প্রথা নেইক লোভ !

নিপুন মুরিতে হু'টুকরো বেশ, বিটেছে কোভ !

ক্ৰিৱাৰ, আৱ ক্ৰ্বেৰ ও কানাইলাল—
ব্ৰেৱ রজে, কানি বেলে গেল বংমশাল,—
হাজাৱ হাজাৱ, ভিলক ভেলা, ও নাডদিনী
তুল ব্ৰোনাক, আবিও বছু, ভাগেৱ চিনি!
আবি তুলিনিক', কোৰো পরিচয়,—ওলি—বোনায়—
তবুও বছু,—গংবত রাখো—ক্ষা ভোষার।

মনে করিও মা, লে সব দিনেরে আছ—দোহাই;
বিখাদ হবে, যা পোগাম ভাঙ,— বাকরে ভাই;
অনেক দিলাম—টের হারালাম 'ঘাবীম' আছ,
কি চেরেছিলাম,—কি পেলাম—ভার ভাবী সমাদ বিচার করবে !—কাছ কি বছু, আছকে ভার,
হিসাব নিকাশে ?—আমাদের

নেই সে অধিকায় ৷

মিছিলে বছু, যোগ থিছে চলো, ভোলো নিশান কঠে 'বন্দেষাভৱন্' স্থান—উঠুক গান। ( তবু একবানি ৱাবি চুপিচুপি, তীক প্রধাম। কালো বোডো রাভে যারা বেষে গেছে,

গোপনেতে খবি ৷—একট প্রণাম রাখি সকল,
বলি—আমাদের মাপ করো, গভ বন্ধুদল…
রক্তের ধণ মেটেনি যা আকো—খরণে থাক…। )
পাড়ি বুঝি শেষ, রাঙা বঞ্জ—আমার ডাক।

নবজীবনের, আর্গতে করি, নমখার··· কালো বোডো রাত, বড়ু আমার, হয়েছি পার।

# বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ

#### **बि**रिनग्रज्य मामश्र

#### ৰিভীয় অধ্যায় ইংলতে হয় গঞ্জাহ

বে হোটেলে গিরা উটিগাম তাহা কেন্সিংটন উভানের পশ্চিন-ছন্দিন কোনে কেন্সিংটন হাই ট্রাট ও কেন্সিংটন কোটের সংযোগহকে অবহিত। আমার গৃহ-সংলগ্ন বৃল-বারাক্ষা হইতে উদ্যানট দেখা বার।

কেনসিংটন উধ্যানট ছাইছ পার্কেরই প্রসারিত অংশ এবং
উহার পশ্চিমে অবহিত। পার্ক ও উদ্যানে মিলিয়া থৈওা
নাইলের উপর। ইহাদের বাবে বাবে বনস্তি-বিরচিত
ননোরন কুরু ও ছোটবড় হব। হুদের মবো রাজহংসপ্রেণ
বৈলিয়া বেডাইডেছে। দিন ভাল থাকিলে বৈকালে হুবওলির
পাড়ে যথেট জনসনাগন হয়। বালক-বালিকাগন ছোটবড়
নৌড়া পালসংখাগে বুদের বব্যে ছাড়িয়া দের। ঘর্বন পালসবেত নৌড়াওলি বায়্তরে প্রদের এক পার হইতে অপর পার
পর্যান্ত চলিয়া বেডায় তবন দেবিতে বেশ লাগে। নৌড়াভলির দৈর্ঘ্য আব হাত হইতে ছুই ছাত আড়াই হাত পর্যান্ত
হইবে।

ৰ্থকালীন রেশনপ্রবা তবন প্রাদ্যে চলিতেছে। বেশন কার্চ ব্যতীত পাঁচ দিন পর্যন্ত হোটেলে থাকা বার। সেক্ত প্রার্থ হোটেলেই পাঁচ দিনের বেশী কাহাকেও রাবিতে চাহে না। স্বাহাতে রেশন কার্চ সংগ্রহ করিয়া আমি অভ হোটেলে গিয়াছিলাম। সেট উদ্যানের উত্তর-পশ্চিম প্রান্তে বেইস্-ওরাটার অকলে অবস্থিত। এই হোটেলেই আমার লঙনবাস লমার হইরাছিল এবং গঙ্গে অবস্থানকালে এই উদ্যানটিই আমার প্রথবের প্রথান স্থান ছিল।

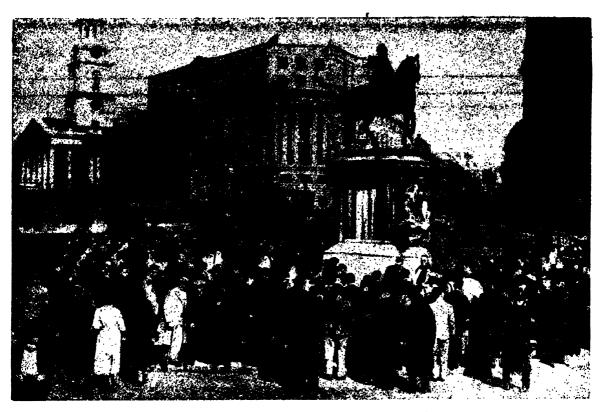
১৭ই আখিন ভক্ষণাৰ ইভিয়া-হাউসে গিয়া তন্ত্ৰত্য কৰ্মচায়ী-বুন্দের সহিত পরিচিত হইলাব। ইহাদের সহারতার আধার সমস্ত কাক অনায়ানে সম্পন্ন হইয়াছিল।

ইভিয়া-হাউলে আমার বৃদ কর্ম্মণ ছাপন করিলাম।
এবানে বহু ভারতীয়ের সক্ষে আলাপ হইল। কেই হিছাহাউলের কর্মচারী, কেছ ছারু, কেই আনারই বভ রাজকার্ব্যে
আগত, কেই ব্যবসারী এবং কেই লগুনের ছারী বালিকা।
কেই ছারাবছার এবানে আসিরা ইংরেজ রবনীর পাণিএইণ
করিরা এবানেই রহিরা সিরাহেন। এবানে আনার লোধরএতিন জীবান জগবীশচক্র যাশওপ্রের সক্ষে লাজাং হইল।
জীবান কলিভাতা বিব্রিধ্যালয়ের কৃতী ছারু। বর্ত্তবানে লগুন
বিশ্ববিদ্যালয়ে ভ্রম্ব-এভজের ক্রিভি বিবরে গ্রেব্রণার নিরভ
আহেম। ইনি লগুনে আনার নিত্য-সহচর ছিলেন।

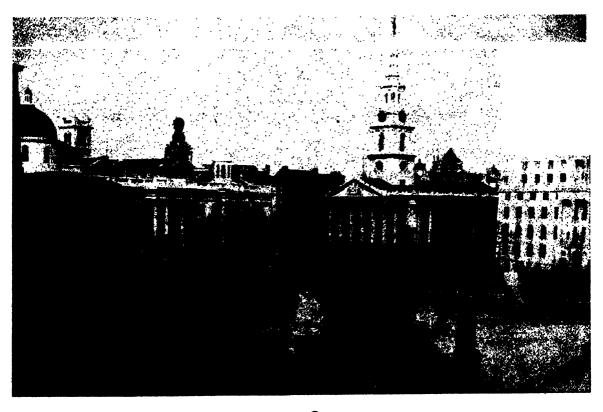
ৰুছের পর সভবে ভারতীর-স্মাগ্র প্রচুর। ভাতাবের মধ্যে

बाबरे (वर्षे । अवकाती ब्रह्मिकां वे बाब परम परम ब (परम আসিভেছেন। বিলাভের প্রায় সমস্ত বিশ্ববিদ্যালয়েই কিছু কিছু ভারতীর হাত্র আহে। ভরব্যে লওবেই সর্বাণেকা বেলী। কেছি ছ ও অন্তলোডেও কম নয়। সওলের কোন কোন কলেকের গবেরণা-বিভাগে ইংরেজ হাত্র অপেকা ভারতীর बाळहे माकि त्वी । बाळापद बना कालाक श्राम मध्यह छ বাসভান সংএত্যে ভার ইভিয়া-হাউসের উপর। বুড়োল্ডর चन्डेरनद प्रित्म अ काक चन्डेर इक्कर । देखिया-शंक्रेरभद यद সভেও এ বিষয়ে কিছু কিছু বিজ্ঞাচ খট্টয়াছে। সেখত হাত্ৰ-बर्टन अक्ट्रे सम्राचार प्रविभाग । अभिमान अक्ट्रे शास अक् बरभन्न यांवर अवीरम चाभिन्नारम : अवमन छामान चना काम কলেবে প্রান পাওরা যার নাই। বরাত্মত সরকারী বৃত্তি অবঙ ভাহাকে দেওৱা হইভেছে। আমি থাকিভে থাকিভে এক ধল ছাত্ৰ লওনে আসিয়া পৌছিল। তাছাদের ভটী কোন বাসস্থান সংগ্ৰহ না হওয়ার পূর্ব্য-ক্ষরডেনে এক উাবুতে ভাহা-দিগকৈ রাবা খ্টদ। পাডের দেশে ভারতে থাকা অবভাই স্বৰায়ক নতে এবং পাৰ্থানার ব্যবস্থাও নিক্ষয়ই সভােষ্ট্ৰনক हिन मा। अक्ष हाळ अर्थान "हिक्निकाल निकात" कह আসিতেছেন ব্যৱ পাইয়া ভাছার জন্য এক "টেক্নিক্যাল কলেকে" দ্বান দ্বির করা হইয়াছিল। তেলেট আসিয়া প্রথম দিন কলেকে বাইয়া দেখে যে পেখানে সেলাই, কাঠের কাঞ্চ अकृष्ठि नागाविक साख्य काक (नवान स्त । (स्त कि निवन्त কলেকের বি-ই এবং দেখানকার একক্ষম কৃতী ছাত্র।

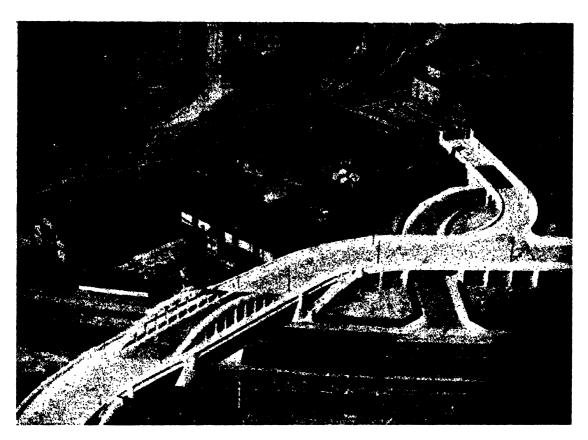
১৮ই আধিন শনিবার পূর্ব-ক্ষরভেনে বিজয়া সন্মিলনীতে সেঘন বঙ্গদেশে বিজয়া উৎসব। যোগদান করি। ভহুপলক্ষে পূৰ্ব্য-কয়ডেনে একট তুলবুৱে বিশভাবিক ভারভীয় পশ্বিলিত ভ্ৰমান্তিলেন। সভল ধর্মের এবং সভল প্রয়েশের लाकरे त्रवारम रहिवलाय। करेमक वाक्षांनी पूर्वरकद अध्युव সেতার-বাধ, ভারতীয় মহিলাদের হিন্দুখানী, বাংলা ও নেপালী সদীত, বেণুচি বুৰকের বেলুচি ভাষার গঞ্জ ইভ্যাবি শ্রবণ क्षिनाय। जन्नद्रक हा ७ दक व्यवसा रहेन। वह देशद्रक मत्रमात्री त्मर्थात्म छेणदिक बिर्मम । दैशात्रा माधात्रम पृष्ट्-**ट्यनेव अवर जामरक अर्थ छरजरन रवाजनाम कविशाहिरजन।** সর্ব্ধশেষে শিবাবারী--- পুতি পাঞ্চাবী ও আলোৱান পরিহিত এবুক ভটাচাৰ্য্য মহাশয় ইংৱাৰী ভাষার সৰুলকে বছৰাৰ জাপন क्तिराम । अभिनाम क्षेत्रांच्यं मरामद्य कान्त विविद्यानद्वत কৃতী হাত্ৰ ও অব্যাপক। এবহাগৰত বিভা সহতে গভীৱ ভাৰ লাভের বাৰলে ভানী হইতে এছেলে ভানিয়া লঙ্গ বিশ্ববিভালত্ত্বে ভণ্ডি হইৱাছেন। পত্তে এক ভারতীয়



হোৱাইট হলের সন্থুৰে রাজা প্রথম চার্লসের প্রতিমৃত্তি



ৰেশব্যাল গ্যালান্তি---লঙ্গ



'সিলভারটাউন ওয়ে'—বিলাভের নৃতন বয়বের একট রাজপৰ



বলবারীতে লওন বিব্যবিদ্যালয়ের কেন্দ্রীয় ভবন

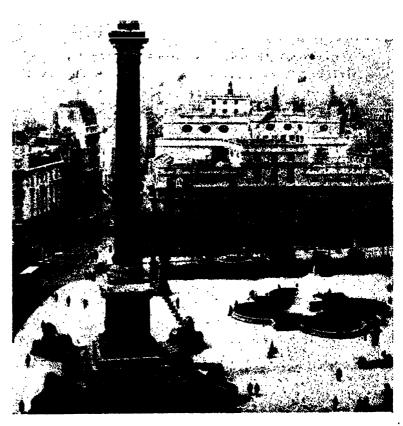
হোটেলে ছই বিনিটের জভ
ভারলোকের সহিত সাক্ষাং হইরাহিল । তথন আমার প্রপ্রের উত্তরে
তিনি বলিরাহিলেন বে এলেশে
দীতার বিষয়বন্ত সম্বন্ধে শিবিবার
কিছুই নাই । তিনি তথু ইহাদের
গবেষণা-প্রতি আরও করিতে
চেটা করিতেছেন । ইহার সহিত
হীর্যতর আলোচনার স্বযোগ পাই
নাই ।

আমার লওনে অবস্থানকালে ভারতীয় হাই ক্ষিশ্নার মহাশ্র এক্থিন ২বা কাতিক, :১শে অক্টোবর ইভিয়া হাউলে একট "ইল ভারভীয়" বুলসার আংহাকন ৰলগাট নানাভাবে करदन । केंद्रचरवाता । विक्रम द्रष्ठवाहिर कर्द्राभारद्रमात्वत चार्विद्रेशन अहे কলসা পরিচালনা করেন। গায়ক ও বাদক্ষণ স্থ বাবসায়ে ব্যাভিদপর ইংবেদ মহিলা ও পুরুষ: ভাছাদের নেতা একজন ভারতীয় (মাঞানী) ওভাগ। জনসাট বি বি সি সমন্ত সাত্ৰাকো প্রেরণ করিয়াছিল। বহু বিশিষ্ট ভদ্রলোক ও মহিলা ৰুলসাতে নিমন্ত্ৰিত হইয়াছিলেন। ভারতীয় স্থীত পাশ্চাত্য হাচে **छालिक्षा वेश्टबक्टलक अवन्यात्रा** कदाहे नाकि अहे मत्नद छैद्दछ। ছারিওনেট বেছালা ও ছার্পসিকর্ড এই ভিন প্রকার যন্ত্র ব্যবস্থত

ছইয়াছিল। ভারতীর ওভাদট মাবে মাবে ভামপুরাও বরিয়া-ছিলেন। করেকট ভারতীর প্রর পাশ্চাত্য ছাঁচে ঢালিরা বাদিত হইল। সর্বাপ্রথম ক্লারিওনেটে রবীজনাথের একট ভাটরালি স্বরের গান বাজান হইল। ভারপর অভাভ গান ও পুর বাজান হইল। আশা করি সকলেই ধ্ব উপভোগ ভাটরালি গানট এবং উপসংহারের মানাবিব মিটারবৃক্ত চা-ই আমার নিকট সর্বাপেক। উপভোগ্য হইয়াছিল।

১৯শে আবিন রবিবার—প্রাভরাশের পর বাহির হইরা পঞ্জিনার। পরিভার আকাশ। প্রথম রৌজ উঠিবাছে। ভাপ ৫০ ভিঞ্জির কাহাকাছি। পশ্চিমগানী একট বাসে উঠিব। দসিলাম। কেন্সিংটন হাই ট্রাট, হারারমিধ ও চিস্উইক অভিক্রম করিরা সেতুবছ টেম্স নদী পার হইরা কিট উভানে





ট্রাকালগার ফোর:র, লঙ্ম--বাংপার্থে মেলদনের স্বভিত্ত

ব্রবেশ করিলাম। এখান হইতে আঁকিরা বাঁকিরা মদী দক্ষিব চলিরাছে। নদীর পূর্বপারে কিউ উভান। মাহুবের জালা লর্বপ্রকার ভরলভা নাকি এ বাগানে আছে। উদ্যানটি সভাই পরম রন্ধীর। হোট বড় গাছ, নানাবিধ লভা। কেই পূলা-ভবকে মভিতগাল, কেই ভামল প্রসভারে ভ্বিতদেই; কোন গাছ বৌছ প্যাণোভার মত, আবার কোন গাছ ছল্লাকার। কোন গাছ হলাকার। কির্বালির রাজহংসপ্রেণী জীভারত। স্থলজিত মনোজ উদ্যান্মব্যে বিচরণ করিরা ভরলভার লীলা ও লোভা দর্শন করিলাম। টেম্স নদীভীরে পদচারণা করিরা নদীগানী বানাবিধ নোকা দেবিতে লাগিলাম। নদীভীরবর্জী রাজাটি অনেকটা আবাদের প্রায় রাভার যত অপ্রশৃত্য, ভাল বাঁধানো নয়, বাবে মারের

কৰ্মতে, হ'পাশের গাছ হইতে করা-পাভার স্বাকীণ।
নহীৰ ওপাছে পৃত প্রান্তর; বাবে বাবে পভ্যতিত। নিকটবর্তী একটি হোটেলে ম্ব্যান্ত ভোজন স্বাপন করিবা হাজিবে
বিচ্নুতের হিকে চলিলার। এ অঞ্চলে বড়লোকের বাস।
প্রশন্ত পরিক্ষর রাজপথ। পুগটিত, স্বাজ্যিত সৌবলেই।
রাভার লোকের ভিচ্ন নাই। রিচ্নুও পার্ক ও উইম্বেল্ডন্
প্রান্তর বেবিরা সভ্যার হোটেলে কিরিলান। বোনার ক্ষতি
কোবাও কেবিলান না।

किष्ठ षेणात्म व्यवेशाच वा ववेशात्म्य मण वक् शांच स्वि बारे। रिकारक चार्यात्मत त्मरनेत चर्यानात शतिवातरक ৰটিপ্ৰকের সংক ভূলনা করিরাছেন। ৰটবুক বেমন সর্বাধা নানা পকার আশ্রহণ ও ভারাদের কোলাবল-বুবরিত, ভ্রিদার वाजि ७ मिरेबन चाचीब चनाचीब वह निविवाद्यव चालबहुन এবং ভাষাদের কোলাবলে সভত রুবরিত। ইংলভে বটরুকও मारे, क्षिणात-वाफीश मारे। निका-नूजश बनात्म (वनी विम अक्य वान करत मा। वर्षमाम बृह-प्रमुखात जिल्ल निका क পুত্ৰকে অনেক সময় বাব্য হইয়া এক বাড়ীতে বাকিতে হইতেহে। কাগৰে বেৰিলাৰ ভাষাতে খাঞ্চী ও বে-এর मर्था माकि रक्षरे मन्दर्भ वादिएएए। मन्दर्धत क्षराय कावन बाबायत् । লাৰাৱণতঃ ইছাৱা ছোটেলেই বাৰ। कांवन (बादबाक बारेटर कांक कांवन। (करण वृदिवादव ৰিক বাড়ীতে রালা করেন। রবিবারে যধন খাড়ড়ী ও বৌ अकरे बाबायत य य शुवक बाबाब छैट्यांग करवन छवन ৰটাৰট বাবিতেছে। কাগকে ধিবিলাৰ এককৰ পাঞী প্ৰভাৱ ক্ষিয়াহেন বে, বভবিন এই প্রহ-বন্ধতা পাকে ভভবিন খাওতী-ষের শিক্ষার কর একট কলেক প্রতিষ্ঠিত হওয়া উচিত।

अब नबरे दिन्य कार्ड जरअटर मर्त्यारमान विटल एकेन। ৰাভ ৱেশন কাৰ্ডের কভ কেন্সিংটন এলাকার অকিসে নেলান। পনর কৃতি ক্ষম লোক কাজ করিতেছে। অধিকাংশই ছীলোক। রেশন কাভ প্রার্থীদের ভিড় মূল নর। কেছ আবার মত বিবেশী, কেং ববাগত ইংরেজ। কেং শিক ना चन्नद्वत क्या इस दिल्य बार्ची। क्य व्रकाश व्यवहरू আসিরাছেন। প্রভাক শ্রেণীর কন্য আলালা কাউন্টার আহে। প্রবেশনার এক ব্যক্তি আমার আগন্দের উদ্বেপ্ত শুনিরা আমাকে উপর্ক কাউন্টারে লইরা গেল। ভর্ত্য कर्वनांविया जानारक क्षत्र कविया अकड़े कवम निर्कट निर्विश चावारक नरे कविरच रनिरमन । नरे कविराव भव चावारक বিনিট পনের অপেক্ষাণ প্রার্থীবের ক্ষম্য নির্বিষ্ট আসমে বসিরা বাকিতে হইল। ভারণর অন্য এক কর্মচারিদী আবাকে ভাকিছা আমাৰ কাৰ্ড আমাকে প্ৰদান কৰিলেব। कार्ड विवाद जमद चिक च्याकात्व कार्र्डद नावशाद-विवि আমাকে বুৱাইয়া ধিলেন। বলুগেশীর বেশন অভিসেত্র चिक्कण-नव चार्वात वन देशारक चित्रका, भ्रोका बक्र অন্তায় বিশ্বিত হইয়াহিল।

ইহার পর বয়-য়ুপ্রেয় জন্য বোর্ড-জন-ট্রেডে যাই। প্রবেশরাজ এক ব্যক্তি আনার প্রবোদন জানিরা লইরা আনাকে
উপরুক্ত কক্ষে প্রেরণ করিল। সেধানে গিরা একটা করবে
কি কি বল সরকার ভাষা লিবিতে হইল। আনি শুনিরাবিলাম বে একেশে বল্লের বিশেষ জ্ঞার এবং মুপন প্রধান
বিবরে ইংগানের বিশেষ কছাকভি। কাজেই আমি ধ্ব
সংক্রেশেই আনার প্রবোজন নিবিলাম। ভত্তভা কর্মচারিদী
আমার লিবিত কর্ম ধেবিরা বলিলেন বে আপনি এলেশে
নবাগভ, কাজেই এফেশের শীতের ভীত্রভা জানেম না।
আপনার নিশ্চরই এটা সরকার, ওটা সরকার ইভ্যাধি। ভিনি
আরও ভিন চার প্রকারের বল্ল করমে নিকেই লিবিরা আমাকে
সব ১লি কিনিবার বভ্ত কুপন দিরা দিলেন।

টেমস্ মদী লওনের মব্যখল দিয়া পূর্ব্ব-পশ্চিমে প্রবাহিত।
মদীর উত্তর ও দক্ষিণ উভর দিকেই শহর বর্দ্র পর্যান্ত বিভূত।
মদী পশ্চিম হইতে পূর্ব্বেশ্ব চলিয়াছে। চলিতে চলিতে
কোণাও বাঁকিয়া উত্তর-দক্ষিণে লখা হইয়াছে। এইরূপ একটি
উত্তর-দক্ষিণ বাঁকের পশ্চিম তীরে পার্লাহেন্ট ভবন অব্ধিত।
পার্লামেন্ট ভবনের পাশে ওবেইমিনটার সেতু। এরূপ
শহরের মধ্যে টেম্প মদীর উপর বহু সেতু বিদ্যমান। টেম্প
মদী বেশ্ব প্রশাভ মর। ওবেইমিনিটার সেতুর নিকট
কলিকাভার গদার অর্থ্যেক হইবে। প্রশাভাগ পশ্চিম দিকে
ক্ষমশঃ ক্ষিয়া লিয়াছে। পূর্বাহিকে বাছিয়াছে।

পশ্চিৰে পাৰ্লাধেন্ট ভবন হইতে পূৰ্ব্বে টাওৱার অব লঙন পৰ্যান্ত টেব্ল নদীর উভর তীরে, বিশেষতঃ উত্তর পাছে, লঙ্গের বানিজ্যবহল অংশ। পার্লাধেন্ট ভবন ও টাওৱার অব লঙন উভরই নদীর উভর তীরে অবস্থিত। ছুই শিলিং দিলে টেম্ল নদীতে ওরেইনিমন্তার সেতৃ হইতে টাওৱার অব লঙন প্রান্ত মোটর-বোটে ত্রিরা আসা বার। বাভারাতে প্রভারিশ মিনিট সম্ম লাগে।

পার্গাদেউ ভবন হইতে উত্তর বুবে বিরাছে হোরাইট হল
ইটি এবং পশ্চিম-দক্ষিণে বিরাছে ভিটোরিরা ইটি। এই
উত্তর রাভার, বিশেষতঃ হোরাইট হল ইটিট, বহু সরকারী
আপিন। এই উত্তর রাভার সংবোগহলের নিকটবর্তা এেটকর্ম ইটি। এই রাভার ঠেকারী। ভাষারই অনভিদ্রে
ইতিরা-অফিন। হোরাইট হল ইটির গোড়া হইতে বাহির
হইবা এেট কর্ম ইটি বিরা পশ্চিমে দেউ ক্যেস্-পার্ক পর্যন্ত
বিরাছে। রাভাটির বৈর্ধ্য বুব কর। পার্কের পরেই রাজপ্রান্ধান এবং রাজপ্রান্ধানের অপর পারে এীণ পার্ক। এীণ
পার্কের পরেই পিকাভেলি—সঙ্গেরর অভিনাত-ভৃত্তিই অঞ্চল।
ঐ হামেই হাইভ-পার্কের পূর্ম-দক্ষিণ কোন। পিকাভেলি
ইটি হাউভ-পার্কের দক্ষিণ বিরা পশ্চিমাভিত্ত্বের বিরা ক্ষেমিটের
রোভে বিলিভ হারছে। কেন্দিংটন রোভঙ প্রথমে হাইভপার্ক এবং পরে ক্রেনিংটন গাভে মের বৃক্ষিণ বিরা বিরা
ক্রেনিংটন হাই ইটিট বিলিহাছে।

হোৱাইট হল ট্লাট পার্লানেট ভবন হতে নদীর বাঁক বহিবা উভর বুবে আসিরাছে। রাভার উভর পার্থে বছ সরকারী আপিস। ভাউনিং ট্লাট হোরাইট হল ট্লাট হুইডে বাহির-হওয়া একট ছোট রাভা। ইংলভের প্রধান মন্ত্রীর সরকারী আবাসহল ১০ নং ভাউনিং ট্লাটে। হোরাট হল ট্লাট আসিরা চেরারিং জেশ রেল ও উটব কৌশনে পভিরাছে। নদী এবানে পূর্ক্রবাছিনী হুইয়াছে।

চেরারিং ক্রণ সঙ্গের ক্রেম্বলে অবহিত। পহর চেরারিং ক্রণ হইতে প্রত্যেক দিকেই সাত-আট মাইল পর্যন্ত বিভ্তা। এবান হইতে পশ্চিম দিকে রাজ-প্রাদাদ পর্যন্ত যে বড় রাজা গিরাছে

ভাহার নাম মল। কোনও বিশেষ উপলক্ষে রাজারাণী মধন শোভাষাত্রা করিয়া পার্লামেন্ট ভবনে আসেন, ভবন মল ও ছোয়াইট হল প্রীট ছিয়াই আসেন।

চেষারিং ক্রশ হইতে নদীর উত্তর পাভ বরিষা ট্রাও রোড পূর্বাভিবৃবে নিরাছে। অঞ্চইচ রাডাট একট ছোট ব্রচাপের মত; ট্রাও ইইতে বাহির হইরা ট্রাওই পূর্মন্তিত হইছাছে। ইতিয়া-হাটস অফ্টইচের উপর অবস্থিত। অফ্টইচ হইতে কিংস্ওরে নামক একট রাভা উভরে অনতিহ্রে হাই হবর্ণ পর্যাভ গিয়াছে। কেন্সিংটম উদ্যান ও হাইত পার্কের উভর দিরা বেইস্ওরাটার বোড নামক যে রাভা পূর্বাভিবৃবে আসিরাছে ভাহারই পার্কের পরবর্তী অংশের নাম অয়লোর্ড ট্রিট এবং তংশরবর্তী অংশের নাম হাই হবর্ণ। এই অঞ্চল লগন বিশ্ববিদ্যালর ব্রিটশ বিউলিয়াম এবং লগম মূল অব্ ইকন্মিক্স অবস্থিত। হাইকোর্ট এবং ব্যারিপ্রারগণের আভ্যাও অফ্টইচের নিক্টে।

ইয়াত পূর্ব্ব দিকে গিবা ক্লীট হ্লীট নাম বারণ করিছাছে।
এবানে ববরের কাগকওয়ালাদের আজ্ঞা। এই পূর্ব্বাভিমূবী
রাভার পরবর্ত্তী অংশের নাম ক্যানন ব্লীট। ইংবাই উন্তরে
গিভারপুল ব্লীট। ভাষারই দক্ষিণে ব্লেড নিডলু ব্লীটে ব্যাদ
অব্ ইংলত ও ইক এমচেক্ল। অগুরে লেউপল গির্জা।
ইংবাই কিছু পূর্ব্বে টাওরার অব লওন। ভাষার পূর্ব্ব বিকে
লগুনের তক এলাকা।

পূৰ্ব্বেই বলা হইবাছে চেয়াবিং ক্ষণ টেশৰ নগীর উত্তর পাতে। নগীর দক্ষিণ পাতে গুৱাচীবলু টেশন; চেয়াবিং ক্ষণ হইতে গুৱাচীবলু পর্যান্ত বেল লাইন নগীর উপরিধ লেড় দিয়া গিরাছে, আর টিউব লাইন নগীর নীচের পুড়ক দিয়া গিরাছে।

চেয়াবিং ক্লা টেশনের পালেই ট্রাকালগার কোরার।
এবাবে নেল্ননের ব্ব বছ সৃষ্ঠি আহে। পালে বোগাই করা
আহে—"ইংলও আশা করেন তাঁহার প্রভাক সভাব হীর



**७८वळेबिन्होब ब**रि

কর্ত্তব্য পালম করিবে।" কাহে ভারভবিরোহ দমনকারী সেনানা হাভেদকের একট বৃত্তি আহে। অনভিচ্বে এক আকাশচুখী চুভার উপর দভারমান নেসসন। ট্রাকালগার ফোরারে বহু পারাবভ আদিরা বসে এবং জনভার হাভ হুইভে বাদ্য ঠোকরাইরা বার। ইহারই পাশে জাভীর আট গ্যালারী। ইউরোপের শ্রেঠ চিত্রকরগপের প্রভিভ্:র সর্ক্ষণ ভাংর, সজীব ও আনক্ষমর।

লঙন পৃথিবীর বুহতের শহর। সন্তর-আশী লক্ষ্য লোকের বাস। লোকের বাতারাতের প্রধান উপার ইউব বা প্রকলপথ প্রবং মোইর বাস। শহরের মধ্যে অনেক রেল টেশনও আছে। শহর হইতে শহরতলীতে যাইতে হইলে অনেকস্থলে রেলপথই প্রশান্ত। মাইর নীচ দিরা প্রকলপণ লঙ্গনের সর্বন্ধ পিরাছে। প্রকলের মধ্য দিরা ইলেক্ট্রক্টেন্ সর্বাধা বাতারাত করিতেছে। বাটির নীচে এক একট কৌনন ব্যব ক্ষ এবং প্রসন্ধিত। কোন কোন লাইন মাইর ব্য নীচে দিরা গিরাছে। বেশী নীচের ঘোট কৌশনে লিক্ষ্ট এবং বছ কৌশনে বোরানো গিছি আছে। কৌশনে এবং গালীর মধ্যে ক্ষমর প্রথমণকি ইলিত এবং ব্যাপ আছে। নবাগতের পক্ষে এ সব বেশিরা বাতারাতের কোন অস্বিধা হয় না। সকাল ৮টার পর হইতেই মধ্য-লঙ্গনের প্রকল্প ভলি অন্বর্যত ক্ষমেতে উল্পীরণ করিতে বাকে।

চীওয়ার অব্ লওন বিশ্বরী উইলিয়ন রাজ্প্রাসাদরণে নির্দাণ করাইরাহিলেন। পরবর্জী দুপতিগণ ইহাকে বাজাইরাহেন। ইহা কথনও রাজ্প্রাসাদ, কথনও ছুর্গ এবং কথনও বা কারাগার রূপে ব্যবহৃত হুইরাহে। বর্তনানে ইহাকে একট মিউলিয়ান-রূপে রকা করা হুইতেহে। ইংল্ডের ইতিহাস এই বাজীটির সকে বিশেবরূপে কভিত। যাকা প্রথম জেম্ল পর্যন্ত এই বাজীতে বাস করিরাহেন।

বড় বাড়ীটর মধ্যে অনেকওলি প্রাসাধ আছে। প্রভ্যেক-টকে এক একট টাওয়ার বলা হয়। রাজধরবারের কড় বড়- ষর, কড নিঠ্রতা এক সমরে এই প্রাসাদগুলিতে অনুষ্ঠিত ক্ষমতে।

প্রাণাদে চুকিরাই টাওয়ার হিল। এবানে সর সাইমন বার্লির কাসী হইরাছে। সপ্তম হেন্ত্রীর মন্ত্রী ভাত লি এবং তাঁহার পুর ও পৌত্রের শিরণ্ডেদ হইরাছে। বেল টাওয়ারে বটারের বিশপ কিসার, রাজকুমারী এলিকাবেধ, মন্মাউপের তিইক কেম্স প্রভৃতি বহু ব্যক্তি- কারাবাস করিরাছেন। হোয়াইট টাওয়ারে থিতীর রিচার্ড সিংহাসন ত্যাগ-পত্র হাক্তর করেন। পক্ষম হেন্ত্রী এজিনকোটের মুহ্বন্দী অলিকার তিইককে এখানেই কারাগারে নিক্ষেপ করেন। টাওয়ার প্রীনে বে সমন্ত ব্যক্তির কাসী হইরাছে ভাতাদের মধ্যে অপ্তম হেন্ত্রীর বিতীর রাই এনিবোলিন এবং পক্ষম রাই ক্যাথারিন হাওয়ার্ডের নাম উল্লেখযোগ্য। রাভি টাওয়ারে পক্ষম এডায়ার্ড ভাতার আতা ইয়র্কের ভিউকের হত্যাকাও সংঘটত হয়। ভার ওয়াল্টার র্যাপের দীর্ঘ কারাবারের কতক সমন্ত্র এখানে বাপিত হয়।

এই টাওবারের মধ্যে একট বর্ষ ও প্রাচীন মুড়াগ্রের প্রবর্গনী আছে। আটম বেন্ধী এই সংপ্রবের কান্ধ সূত্র করেন। বিজ্ঞানী উইলিরন্ বেট্টংসে এবং প্রথম রিচার্ড প্যালেটাইনে থে বর্ষ ও আন্ধ ব্যবহার করিয়াছিলেন ভাছা এবানে আছে। আটম ক্নেরীর চারিটি বর্ষ আছে। ভগ্গব্যে একট সম্রাট ম্যান্ত্রি-মিলিয়ানের উপভার। প্রথম চার্লদ, দিতীর ক্ষেম্ন প্রভৃতি আনেক রাজার বর্ষ এবানে আছে। বর্ষ এবং অন্তের বহু শভানীর ইভিশ্যন এই প্রদর্শনীতে একত্র প্রভাক করা যায়।

সেছিৰ শনিবার। মব্যাক্ত ভোজনের পর ওরেই মিন্টার সেতৃর থিকে চলিরাছি। রাভার ফ্রুতগানী জনপ্রোত। চেরারিং ক্রুপের নিকট একট ইংরেজ যুবকের সলে বাজা গাগিয়া সেল। আমরা উভরেই বলিরা উঠিগাম "হু:বিভ"। ইংরেজ যুবকট আমার থিকে ভাকাইরা বলিল, "আপনি কি ভারতবাসী ?" আমি বলিলাম "ই।।" যুবকট—"আপনি কি কলিকাভায় বাকেন ?" আমি—"ই।"। যুবকট বলিল—"আপনার কি বিশেষ কোষও কাজ আছে ? আপনি কোন থিকে বাইবেম ?" আমি—"আমি ওরেই মিন্টার সেতুর থিকে বাজি।"

ब्रक्ड-- "हन्त वामिश वागमात महन वाहे।"

বাইতে বাইতে ব্ৰক্ট বলিল—"আদি বিস্তা। (মিন্তা কৰাট বাংলা ভাষাহই উচাৱৰ কবিল) আনার বাড়ী কট-লঙ। বুডোপলক্যে আদি প্রায় এক বংসর কলিকাভার হিলাম। হারিংটন ট্রাটে বাকিভাম। অযুক বোকানে আমি প্রাই বাইভাম। ভাহাদের সক্ষে আমার ব্য ভাব হিল। কলিকাভা সহর একটু গরম; কিছ আমার ব্য ভাল লাগিভ। হবিবা হবৈল আমি আবার ক্লিকাভা যাইব।"

আমার প্রের উত্তরে ব্রক্ট বলিল—"আমি আমার ব্যবসার পুনঃপ্রতিঠা করিবার জভ লওনে আগিরাছি। এবনও কিছু টিক করিতে পারি নাই।" কলিকাতা সকৰে আলোচনা করিতে ব্ৰক্টীৰ বুব আগ্ৰহ ধেৰিতে পাইলাম। এর মধ্যে ওরেইমি-টার সেতৃ আলিরা গেল। আমি মোটববোটে অবণার্ব চলিরা গেলাম। মুৰক্টী আমাকে সম্ভাষণ ও ওতেহা আনাইরা আমার দিকে অনেকদ্র পর্যন্ত তাকাইতে ডাকাইতে সেতৃ পার হইরা চলিরা গেল।

৭ই কার্ডিক, ২৪শে অক্টোবর ব্রহশতিবার হাউস অব্ করকা সভার বিভর্ক হেবিতে গেলায়। সদর দরকা পার হইরা একটি দরদালান দিয়া কেন্দ্রগণে বছ বরে অপেক্ষা করিতে হইল। দরদালানে এবং কেন্দ্রগণরে দেওয়ালে বছ বছ ছবি টাঙানো আছে। ইংলও ও পার্লামেন্টের ইতিহাসের বিশিষ্ট ঘটনা লইয়া এই ছবিগুলি অকিত। একটা ছবিতে ভারতবর্ধের উল্লেখ দেবিলায়। ছবিট হইডেছে সমার্ট ফাহালীরের দরবারে সর ট্রাস রো। অনেক ইতিহাসের বইয়ের পৃঠায় এই ছবিট দেবা যায়। ছবিটির শীচে এইরুপ লিবিত আছে—"সর ট্রাস রো আন্তর্মীর দরবাবে জ্ঞাতা ও দৃচ্ তা হারা ভারতবর্ধে ইংরেক প্রভাবের ভিত্তি পতান করিতেছেন।" দৃচ্তা ক্বাটা কানে বাজিল।

यसीभवट्य भएं, भानंत्र ७ अञ्चल्यक्य भरित्र हरेश भौकार আৰাদের সামনে দিয়া বিভক্-কক্ষে প্রবেশ করিলেন। জাহার পশ্চাতে আমরা চুকিলাম ৷ হাউগ অব ক্মলের ক্ষট ১৯৪১ খুটাব্দের ১০ই যে তারিখ রাত্রে জার্মান বোমাংগ্রে সম্পূর্ণ-রূপে বিধ্বন্ত হইছা যায়। কক্ষ্টকে পুতন করিয়া নির্দ্বাণ করা ছইতেছে। একৰে ক্যন্তের সভ্যাপণ হাটস অব সভ্যাপ বসিতে-ছেন। কক্ষট হয় শতাবিক সভ্যের বসিবার পক্ষে যথেষ্ট थन्छ नव । करकद ठावि पिरक मामावी । এक शास न्नीकारहरू আসন। ভাষার দক্ষিণে সরকারী দল, বামে সরকার বিরোধী मेल । यदाश्वरण चरनक है। केंकि कार्या कार्या है ध कार्लिडें मर्या वानिक्डै। (बाना स्मर्य चार्छ। मण्डान्य बक्का कविवाब मध्य कार्ल है न्यन कविएक भारत्य ना- के ৰালি কাষগায় বাড়াইয়া তাঁহাদের বভূতা করিতে হয়। পূর্বে সভ্যপ্ৰ নাকি বক্ত হা করিতে করিতে সহনা উত্তেজনাবলৈ অসি নিফাশিত করিয়া অপর পঞ্চে আক্রমণ করিতে উভত হইতেন। দেইৰঙ নিয়ম করা হয় যে, কোন সভ্য কার্পেটের উপর উঠিতে পারিবেন না এবং ফার্পেটের যাপও এমনি ভাবে টিক করা হইভ যে হুই দিক হুইভে হুই ক্ষে ভরবারী ৰাভাইছা षित्न (यन (कह काहात्कश्व चावाज कवित्र ना शादम। चाचरकार्य म्लीकाद अवा बावराद कदिएक। वर्छमात्व छैरा স্থবৰ্ণমভিত রূপার গদায় পরিবত হইয়া শীকাষের মুর্যাদার প্ৰতীক হইয়া হাডাইয়াছে।

ধর্শকগণের আসন উচ্চে, চারি বিকে ধোরানো নঞ্চের উপরে। আমার আসন ছিল স্পাকারের মাধার উপর। ঠিক বিপরীত বিকে রাজপরিবারের তথা নির্থিষ্ট আসম স্পীকারের ক্ষিণে উপবিট মধিগণ। বাবে চার্চিল প্রমুখ বিভোগী দলের নেতাগণ। প্রধান মন্ত্রী এটিল ঐ দিন্ন

অন্থান্থিত ছিলেন। প্রধান প্রশ্নোন্তর চলিল।

পরে বৃহমন্ত্রী পদাতিক বাহিনীর পুনর্গঠন সম্বদ্ধে

এবং ক্বনি-মন্ত্রী কল আনদানী এবং বন-মীতি

সম্বদ্ধে বক্তৃতা করিলেন। বক্তৃতার মধ্যে এবং

পরে সভ্যগন মন্ত্রীধিগকৈ প্ররাণে বিদ্ধ করিতে

লাগিলেন। মন্ত্রিগণ প্রত্যেক প্ররের কবাব

দিলেন। অনেক সমর মনে হইতেছিল যেন

বক্তার কোরা চলিতেছে। প্রোন্তর কালে এবং

পদাতিক বাহিনীর পুনর্গঠন সম্বদ্ধে চার্চিল

ঘন্দন প্ররা করিতেছিলেন। প্রশ্নোন্তর ছলে

পরস্পরকে আবাত করার চার্চিলের বিশেষ

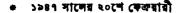
নিপুণ্ডা লক্ষ্য করিলাম। বিদেশ হইতে বেশী

কল আম্লানী সম্ভব কিনা এ বিষয়েও সভ্যগণের

বেশ আগ্রহ গকিত হইগ। বন-নীতি সধৰে বঞ্জা আগ্রন্থ হইতেই কক বালি হইতে গাগিগ। প্রবাহ তিন শতাবিক সভা উপস্থিত ছিলেন। ক্রথশ: ক্ষিয়া ১৫।২০ কনে পরিণত হইল; পরে দেবিলাম ইহাদের প্রত্যেকেরই বঞ্জা করিবার বাসনা হহিয়াছে। আমি উঠিয়া চলিয়া আগিলাম।

কার্যাণিপকে আমাকে ইডিরা অকিসে বাইতে হইড।
ইডিরা অফিসে কৃতকটা পরিবর্তন লক্ষ্য করিলাম। ভারতীর
রাষ্ট্রের গঠনভন্তের পরিবর্তনকাল সম্প্রিত। তবালি এবানে
কোনও কর্ম্মবাভতা নাই। কনৈক উচ্চপদস্থ কর্মচারী
আমাকে বলিলেন, "এবার তো সমত সিধান্তই ভারতবর্বে
গৃহীত হইবে, আমরা সই করিব মাঞ।" ইহার কিছুদিন
পরেই ইংরেজ সরকার খোষণা করিরাছিলেন যে ১৯৪৮
ইটাব্যের জুন মাসে তাহারা ভারত ভাগে করিবেন।

সর বিওতার প্রেপরি তবন স্বেষাত্র ভারত-সরকারের অবনৈতিক উপদেষ্টার পদ হইতে অবসর প্রহণ করিয়া ইংল্ডে প্রত্যাবর্তন করিয়াছেন। লগুন কুল অব ইকন্মিক্সে ভারতবর্ব সহছে তিনি তিনটি বস্তৃত্য প্রদান করিলেন। তাঁহার শেষ্ট ভানতে বিহাছিলার (এই কার্তিক বা ২২শে অট্টোবর)। যথেষ্ট ইংরেজ প্রোভা। ভারতীর শ্রোভাও মক নর। অনৈক সিংহল দেশীর ভগ্রলোকের সদে প্রবানে আমার আলাপ হইরাছিল। প্রেরী মহাশর বলিলেন যে, ভারতবর্ব পণতত্ত্বের পরে চলিবে, না টোটেলটেরিয়ানিজ্যের পথে চলিবে ভালা করিন। কারণ রাজ্যপ্র ভারতবাসীর ঐতিহ্যের সদে রিশেষ রূপে অভিত প্রবং বর্তমান ভারতের শিক্ষিত সন্দ্রোলয় রূপে করিয়া করা করিল বর্তমান ভারতের শিক্ষিত সন্দ্রোলয় রূপে অভ্যার বোল পর্যান্ত করিয়া ভারতবির ভালা করিন। কারণ রাজ্যপ্র ভারতবাসীর ঐতিহ্যের সদে রিশেষ রূপে অভিত প্রবং বর্তমান ভারতের শিক্ষিত সভ্যান্ত প্রকান করেন। রাশিয়ার কর্যানিজ্য প্রাক্ষান্ত ব্যান্তির প্রাক্ষান্ত স্থানীর কর্যানিজ্য উভারই যে প্রকানরক্ষযুগক শক্তির উপর প্রতিষ্ঠিত ভাহা ভারতীর্থন





টেম্স নদীয় জীয়ে অঠাদুৰ পভাকীতে নিৰ্মিত স্থায়াসট ভাষ

বিশেষরপে গক্য করিরাছেন: ভারতীয় সিবিল সার্বি:লর ভবিগং সথছে অনিশ্চয়তার করু রেগরী মহাশয় ক্ষোভ প্রকাশ করিলেন: তাঁহার মতে সমস্ত ক্ষমিতে সরকারী মালিকামা ছাপন করিলে কোন অপনৈতিক সমস্তার সমাগান হইবে মা; কারণ কেবলমাত্র মালিক পরিবর্ত্তনে ক্ষমির উৎপাদম-শঞ্জি বাছিবে মা। কৃষি, শিল্প এবং সামাজিক কল্যাবস্থলক বিভাগগুলির স্থামপ্রস উম্বিভ ধারাই ভারতের হুংগ দূর হুইতে পারে। কোনটকে অবহেলা করিলে চলিবে মা এই সম্পর্কে তিনি লবণকর, মদ-গাঁকা-আক্রিমের উপর আবগারী কর এবং মৃত্য-করের প্রশংস। করিলেন।

২৬শে কার্ত্তিক (১২ই মবেমর) রাজে লগুনের ছাজ-মন্ধলিসের উচ্চোপে প্রকেশর লেজি একটি উপাদের বঞ্জা দান করেন। তাঁহার দীর্থ বঞ্জার করেকট কথা আমার বেশ মনে পজে। তিনি বলিলেন বে, ভারতীর ছাত্রসন পাঠা বিষয় নির্মাচন করে, কোন্ বিষয়ট পেশের উন্নতির সংগয়ক হইবে, ইছা চিছা করিয়া। ইংরেক ছাত্রসন পাঠাবিষয় নির্মাচন করে কোন্ বিষয়ট ভাছার নিক্ষের জীবিকার্জনের সহায়ক হইবে ইহা চিছা করিয়া। বছ ভারতীর ছাত্র বনন ভাছাকে বলিরাছেন বে তিনি এ বিষয়ট পভিতে চাহেন না, কারণ ইহা ভাছার দেশের বিশেষ কাকে লাগিবে না, তবন তিনি আনন্দিত হইয়াছেন। কিছুদিন পূর্ব্বে তাঁহার এককন কৃতী ভারতীর ছাত্র কৃবি-বিষয়ে গবেষণা ক্রিভেছিলেন। এক দিন তাঁহাদের মধ্যে বে ক্রোপ্রকার হুইয়াছিল ভাহার ভাবার্থ এইরূপ:

প্রক্ষেত্র--- তুমি দেশে গিরা কি করিবে ?

হাত্র---হরতো কোন কুমি-কলেছে শিক্ষকতা করিব।

প্র:---তাহা হইলে বুবই ভাল হইবে। তোমার গবেষণা
লব্ধ মৃতন পছতি হারা ভারতীয় কৃষির প্রস্তৃত উন্নতি করিতে
পারিবে।

ছাত্র---আপনি বোৰ হয় আনেন না যে, ভারতীয় কৃষিকলেকখলি কুমির উয়তিয় ক্ষ প্রতিষ্ঠিত হয় নাই।

**এ:---( বিশিত ভাবে )--ভবে ?** 

হার---আমানের মত হ্-চার কম শিক্তি ও চকুয়ান লোককে চাতুরী বিয়া সভাই রাধাই ঐ ক্লেক্ডলির উত্তেও।

বৰ্ণবিদাৰে সরকারী চাকুরী বক্টৰ সহতে প্রক্রের ক্রেভি বিদ্যালন এই প্রবা দেশের দারিন্ত্র-প্রস্ত । ইংলতে বেকার সমস্তা নাই। কাকেই প্রবাবে চাকুরী লইরা কাকাকাভি মাই। আরাল তে বেকার-সমস্তা সদীন। কাকেই কোন্ বর্ণসন্তানার কভ চাকুরী পাইল ইং। লইয়া কামভাকামভি লাগিরাই আছে।

मिष्य चावल धराती करेनक फेक्स्पप वेश्टबक कर्यकादीत পত্নী পিকাভেলি সার্কাদে এক ছোৱেলে আমাকে মধ্যাক ভোজনে আপ্যাৱিত করেন। ভারতবর্ষের অনিশ্চিত ভবিরং नवद कांकात महत्र किए चारनाहमा करेन । देशदक ताक्या-বনাৰে ভাৰতবৰ্বে কিব্ৰণ শাসনপ্ৰণালী প্ৰভিষ্টিত হইবে এবং कावकरार्वत बाकासबीन बर्वरेनिक बनवे ना किवन वहेरन देश वर्षवात्म जावजवार्य ७ देशमा जातम्बदे विश्वाव विश्व । ক্লিকাভার হত্যাকাও এবং তংগরবর্তী মেরোবাদী এবং विशादन कीमाननीत कथा देवित नकार आयान माथा (देवे एक। हिन्तु-वृत्रनमान नव्छ। चन्छहे नर्युग्छ प्रमुख मकः हेरा वृज्छः बटक्टेविक नवना। जाबादम्ब निटक्टम्बरे अ भवनाव সমাৰাৰ করিতে হইবে এবং এ সমদ্যার সমাৰান একদিন ष्ट्रे(वर्षे । यथन সমন্যার সমাধান प्रेट्य, छथन हरे अव्यक्षात ভাবার নাভিতে এবং সপ্রেষে পাণাপানি বাস করিবে। ভবে काम भर्व प्रथमा। विकेटन-विश्मात भर्व मा त्थायत भर्य-देशदे जारनाव कथा । हिन्दू-बूजनमान रहकान रविवा भाषा-পানি বাস করিহাছে। বর্ষোপাসনা ব্যতীত সম্ভ কার্যাই **जारादा अक्टार्टाट कदियः जानिदाद्य । माद्य माद्य मादा-**मादिक कविदारह । धेरतकना कमिता शिल जानाव मिनिया সিয়াছে। কিছু এবাবের গোল কি সাম্বিক উত্তেজনা-প্রস্ত ৰা ৱাৰ্ত্ৰতিক অভিদ্বিপ্ৰশোষিত ? বৰ্ষণত পাৰ্থক্যকে হাজ-देविक केटक्क्रिवित केशाहबार चर्छ शृद्धि वावशाह करा स्रेबार्ट । किंद्र शृंदर्स शामायान क्षेत्रक अक नामक क साबी एक मारे।

বব্যাক ভোকনের পর গৃহকর্মী আনাকে ওরেইবিনইার এবিতে লইবা গেলেন। পার্লাধেক ভবনের পাশেই
ওরেইমিনটার এবি। প্রকাণ দীর্জা। পবিক দ্বাপত্যশিরের
বিষর্পন। বত বড় অন্তের উপর সু-উচ্চ বিলামগুলি ভালরুন্তের
মত চারি বিকে প্রশারিত। হব্যবর্তী লখা হলের উভর
পার্বে বারাভা—ভত্তপ্রেমী দারা বিভক্ত। হলের শেবে
উপাসনা-মক। বত ইংলভাবিপতিগবকে এই ধরে স্বাহিত
করা হর। দেশের প্রতিভাশালী ব্যক্তিগবকেও রুত্যর পর এই

এবিতে সমাহিত করিছা সমানিত করা হয়। তাঁহাকের স্থতি
তত্ত ও পিলাবৃতিতে এবি ততি। রাভটোন, ভিকরেলি পিট

প্রভৃতি রাজনৈতিক এবং নিউটন, ভারটান, হার্সেল প্রভৃতি

কৈলানিকগণের বৃতি এই বাজীতে আছে। ১৯১৪-১৮ মীটাকে

প্রথম বিশ্বছে বে সমত মুক্ত সৈনিকের বেঁাল পাওরা যার

নাই বা বাহাকের মুক্তরেহ সমাক্ত হর মাই, ভাহাকের সরবার্থ

একটি "অলানা সৈনিকের সমাধি" এই মীর্জার মন্যহলে আছে।

মুইট প্রভর্তনক ভারতবর্ষের সকে ভড়িত। একটি রেজর

লরেনের সরবার্থ, অপরটি সেনানী কুটের স্মরবার্থ। বিভীর

কলকটিতে লিবিত আছে বে ইনি ভারতবর্ষে করামীগণকে

এবং হার্যর আজীকে প্রাভিত করেন।

উপাসনা-মধ্যে উপরে শিছনের দিকে একট প্রস্থানির্দ্রিত পর্যা আছে। পর্যানির উপরে অনেক কারুকার্য্য আছে।
ইহার অনেকটাই বিনঐ হইরা গিয়াছে। ব্ব উচ্চাদের মনে
হইল না। ইংলতে পাধর-বোদাই কাজের আর কোনও ময়ুনা
আমি দেবি নাই। যে গিংহাসনে বলিরা ইংলতের রাজাদের
রাজ্যাভিষ্কে হর তাহা এই পাধরের পর্যার পিছনে ছক্তিত
আছে। ব্ব সাবারণ চেরার। পারার নীচে চারিটী ছোট ছোট
গিংহ এবং মব্যহলে একবও পাধর আছে। এই পাধরটকে
জোনের পাধর বলে। প্রথম এডওরার্ড পাধরট
ফটল্যাও হইতে আনিরা এই গিংহাসন তৈরী করেন।
তদববি এই গিংহাসনেই সম্ভ রাজার রাজ্যাভিষ্কে
হইরাছে।

সমন বিজাটতে একট রহস্যময় শীরবতা বিরাজ করিতেছে। প্রবেশ করিলেই অন্তর বিশ্বরে পূর্ণ হইয়া যায়।

বিটিশ বিউল্বিয় দেখিরা আবি হতাশ বোধ করিয়াছিলাম। কলিকাতার বিউলিয়নের তুলনার ছোট। ইংলও
ছোট দেশ এবং প্রাচীন দেশও নর। পাবরের কাল এদেশে
প্রচলিত ছিল না। কালেই এদেশের পুরাকীর্তি ভারতবর্ষের তুলনার নগণ্য। কিছুদিন পূর্ব্বে বিঙেল হল নামক
ছানে একট কুবক ক্ষরি চাব করিবার সমর ক্ষরেকট রৌপ্যপাত্র পান। পভিতরণ নেওলিকে রোমান আমলের বলিয়া
নাব্যন্ত করিয়াছেন। এই রৌপ্য-শাত্রভিল 'বিভেন হল ইেলার'
নামে পরিচিত হইয়া বর্তবানে একট বিশেব ত্রাইব্য বন্ধ হইয়া
বালাইয়াছে। এই বিউলিয়নের মধ্যে চীন, ভারতবর্ষ, ভাতা
এবং আফ্রিকা প্রভৃতি হেশের এক একট বিভারে ক্রেকট
কুক্ষর বৃত্তর্ভি আহে।

সভবে প্রাচীন কীর্ত্তি প্রধানতঃ ভিনট—সভব টাওয়ার, পার্সাবেক ভবন এবং ওয়েইমিনটার এবি। আর সবই আধুনিক।

# হিন্দীভাষা ও পাশ্চান্ত্য পণ্ডিতগৰ

ঞ্জিত্র্যপ্রসন্ন বাজপেয়া চৌধুরী

অবেকের ব্যার্থ বারণা বছরুল হরেছে যে হিন্দীভাষা প্রারভাষার পরিণত হবে। এই হিন্দীভাষা প্রারভাষার পরিণত হবে। এই হিন্দীভাষা প্রারভাষার পরিণত হবে। এই হিন্দীভাষা প্রারভাষার পরিণত হবে। অবঞ্চ এ ভাষার রূপ বহুলেছে প্রার প্রতি প্রারহণে। মুক্তপ্রহেশে কোন কোন অঞ্চলে আব বী, নগমী, রজমুলী, কারণী, হতিয়া ও আরগী-কারলী বিপ্রিত 'বড়ী বোলী'র ভাষাসমূহ প্রচলিত আহে। হুমার্ম প্রভৃতি অঞ্চলে এক প্রকার পাহাটী 'বোলী'র হিন্দী প্রচলিত আহে। কিন্তু এসব বিভিন্নতা বাকা সম্বেও মুক্তবেদেন, মব্যপ্রহেশ ও বেয়ার, বিহার, পঞ্চাবের অর্জাংশ ও সিমু, এবং সীরাজপ্রহেশের কতক অংশে হিন্দীভাষা নিজের আসম কার্যের করে নিরেছে। বোখাই ও মান্রাক প্রহেশেও হিন্দীভাষার প্রভাব ক্রেই ব্যাশক্তর হরে চলেছে। বাংলা বেশের কলিকাতা ও তার সহরত্নী, বর্ত্তমান ও ঢাকার অবিবাসীকের মধ্যে অনেকেই এই ভাষার সহিত অরবিভর পরিচিত।

হিন্দী সাহিত্যের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস ও উক্ত ভাষার কবিষের সহত্তে অনেকেই অনেক কিছু সিবেছেন। পঞ্জি কিছি-মোহন সেন শাল্লী হিন্দীভাষার প্রগাচ পাভিড্যের ক্ষম ব্যাতি লাভ করেছেন।

বাংলা ভাষার নানা প্রবাহে ও আব্যারিকার আমরা হিন্দী ভাষার অভি বিব্যাত গত কবিদের ববা তুলগীবাল, তুরবাস, নানক, বাহ, কবীর, পলটুবাস, মীরাবাঈ, কেশোবাস, হিত হরিবংশ, রহীম, রগবাম, ভারসী প্রভৃতির রচনার সহিত অরবিভর পরিচর লাভ করেছি।

বহুকাল আগেই ইউরোপের অধিবাসীদের মধ্যে ইংরেজ, করাসী, ওলপাক ও পর্জু বিকাশ এদেশবাসীদের সহিত ব্যবসার-ক্ষে আবহু হরেছিলেন। তারা প্রায় সকলেই গোড়া থেকেই হিন্দীভাষার সহিত পরিচিত হয়েছিলেন।

ইংরেজগণ যথন থেকে এদেশে আসেন প্রায় তথন থেকেই হিন্দীতানা আয়ন্ত করতে চেটা স্থান করেন। হিন্দীতানা ও সাহিত্যের বর্তনানে বে উরতি সাবিত হরেছে তার বুলে ইংরেজনের চেটাও কিরংপরিমাণে কার্যাকরী হরেছে। অবও একথাও নানতে হবে বে ইংরেজনের এদেশে আগননের গোডার বিকে এদেশবাসিগণ নিজেনের তাবা ও সাহিত্যের উরতি বিবানে তেবন বছবান ছিল বা। অনেকওলি পুরাতন শারগ্রন্থ বিনট হরেছিল।

ৰ্গলমানগৰ এবেশে এনে প্ৰথমে বিদ্যীভাষাকে এহৰ কৰে বি। কিছ বৰ্ধন এই ভাষার বহিন, বনধান, ভাষগী, ব্যাবক প্ৰভৃতি অভূলনীয় প্ৰতিভাশালী ক্ৰিবের অভ্যুত্তর হ'ল ভবন ভাষাও এ ভাষার প্ৰতি বিশেষ সমাবর প্রহর্শন করভে লাগল।

বেষরিধ নাথ (Henrich Noth) নামক একজন বিহান্
আর্থান ১৯৬৪ এটাকে কানীতে এনে ত্রান্ত্রণ পভিতরণের
নিকটে সংগ্রুত অব্যয়ন করেন এবং হিন্দী প্রভৃতি বিভিন্ন
ভাষাতেও বৃংগতি লাভ করেন। আর একজন আর্থান পভিত
ব্যের লেডেন (Habaksa Ladden) ১৯৯৯ এটাকে ভারতীর
সাহিত্য সহত্রে প্রভুত জানলাভ করেছিলেন।

ভারতীয় সাহিত্য ও শাল্লাফি সহর্দ্ধে ইংরেজকের আন-লাভের বিশেষ প্ররোজনীয়তা হয় ওরারেণ ক্ষেইংসের সময় থেকে। অবস্থাবেশ শাসন স্থ্যতিষ্ঠিত করার ক্ষেই ভার বিশেষ আবঞ্চকতা হরেছিল। তাই স্পাঞ্জে সর্ট্টলিয়ার জোল সংস্কৃত, আরবী, কারসী, হিন্দী ও বাংলা ভাষার ব্যুংপত্তি লাভ করেন। সংস্কৃতে ভার অগাব পাতিভার নিদর্শন 'অভিজ্ঞান শকুতলে'র ইংরেজী অনুবাদে। উক্ত অনুবাদ-এম্ব বিশেষ সমান্ত হরেছিল।

প্রাকৃত ভাষাসমূহ অব্যহনের অভেও অনেক পাশ্চান্ত্য পতিত প্রভূত পরিত্রম করেছিলেন। বৌদ্ধর্ম ও বৈন্ধর্মের প্রছাদি তারা বিশেষ যতের সহিত অব্যহন করেছিলেন।

জনে দেখা গেল, হিন্দীভাষা শিক্ষা করা শাসকবর্গর একার প্রবাদন, অপরিহার্য্য বলগেও চলে। ভাই কোর্ট উইলিরম কলেকে ডান্ডার কন দীল ক্রাইড, কার্ডেন আরাহিম লাকেট, বিঃ কে তবলিউ টেলর ও ডান্ডার ইন্টার হিন্দী-ভাষার পাঠ্যপুত্তক ও অভাত প্রস্থ প্রধাননে দেশীর পভিত্রপালকী 'প্রেমলাগর' নামক বিব্যাত প্রস্থ রচনা করেন ও পভিত্রপালকী 'প্রেমলাগর' নামক বিব্যাত প্রস্থ রচনা করেন ও পভিত্রপালকী নাচিকেতা উপাধ্যান হিন্দীভাষাতে পর্যক্ষতিক্রের সহিত অনুবাদ করেন। প্রায় ভবন বেকেই হিন্দী গর্যা-লেবার অনুবাভ হয়।

উইলিয়াম কেরী হিন্দীতে বাইবেলের অম্বাদ করেন—ভা বেমনি বিশ্ব তেমনি ঘণাবপ হরেছিল। এই অম্বাদ ১৮১৮ উঠাকে বুজিত হয়।

জন চেমারলেন ও জন কিন্দিয়ান হিন্দীতে কবিতা রচনা করেছিলেন। এতদ্ব্যতীত বিল্লীবাসী ইনমন সাহেন, ইটাওয়া-বাসী জনসন সাহেন ও বেডন সাহেবের নামও উল্লেখযোগ্য। নব চাইতে বেশী প্রব্যাত হরেছিলেন এপরিংটন সাহেন, বার রচিত 'ভাষাভাক্তর' অব্যাণি হিন্দী পাঠশালাসমূহে পড়ান হয়। কিশোরবের জতে এই প্রস্থ রচিত হয়।

হিন্দীভাষার সব চাইতে বেশ্বী সেবা করেছেন ডাঞার সর্
কর্ম এরারদন। হিন্দীভাষার প্রানাদিক ও তথ্যসংবলিত
বিরাট ইতিহাস ও হিন্দী বিধকোষ অভিবাদ তাঁর ঐকাভিক
অহসভিংসা ও অক্লাভ সাধনার কল। ভারতবর্ধের রাজকার্ব্য
ধেকে অবসর নিয়ে তিনি বিলাভ যান, কিছ সেবানে যাবার

পথও তাঁর হিনী সাহিত্যসেবার অবসাদ হয়দি; হিনী সাহিত্যের সকল বিভাগের প্রতি সর্বাল তাঁর সভাগ দৃষ্ট হিল। তিনি হিন্দী ভাষার সর্বালীণ উন্নতির ভঙ আজীবন বছবান হিলেন। হিনীভাষা বভলিন বিদ্যান্য বাকবে, ভঙলিন গ্রীয়ারগন সাহেবের অজয় কীর্মি মান হবে না।

ভাজার হার্ণনী, বিঃ এক এস এটিক ও বিঃ ক্ষম বীব্যও হিন্দীভাষার অপের দেবা করে গেছেন। যাতে ইংরেজগণ এই দেশবাদীর উপর ওবু কর্তৃত্ব করেই নিজেদের কর্ত্ব্য নেষ হ'ল বলে মনে না করে, যাতে ভাদের আনা-আকাজ্ঞার সহিত ভাহার। সহাস্ত্তিপরারণ হয় এবং হিন্দীভাষার সহিত ভাদের যোগাযোগ সংস্থাপিত হয়, ভার জচ্চে উরিবিত ইংরেজ পভিতরণ প্রভূত কই বীকার করে হিন্দীভাষা আরম্ভ করেছিলেন। অবঞ্জানকবর্গের হিন্দীভাষা আনাও একান্ত আবশ্রক হরে পড়েছিল।

একদা মুদলখানেরা যথন এলেশে এসে আবিশত্য বিভার করতে তুরু করেছিল তবন গোড়া থেকেই তারাও হিন্দী শিগতে আরস্ত করেছিল। তারা ঐ হিন্দী কথা কারসী লিশিতে লিখে এক নৃতন ভাষার স্কট্ট করে নাম দের উর্দ্ধ। আসলে হিন্দীভাষার কথাবার্ত। বলা তাদের শক্ষে সহক্ষাব্য হলেও হিন্দী লেখা সহক্ষাব্য ছিল না, তাই আরবী কারসী শক্ষবংগ এক ভাষার—বাকে হিন্দীর ক্ষপান্তর বললে অসম্বত হয় না—প্রচলন হল, এবই নাম রেখভা বা উর্দ্ধ।

ইংরেজদের ববেও অনেকে প্রথমে অন্তর্ভ হিনী পিবেভিলেন, কিন্ত উপরে বে সকল সুপ্তিভ ইংরেজের নাম করা
হ'ল তারা হিনীভাষার প্রগাচ পাতিত্য অর্জন করেছিলেন।
কারণ তারা জানতেন যে, ভারতবাসীদের নিকট থেকে
তালেরও অনেক কিছু শিক্ষা করতে হবে। ভাই প্রাচ্য ও
পাশ্চান্ত্যের ব্যবধান হুর ক্রবার উক্তেপ্ত তারা এবেশবাসীগণের ভাষা ও সংস্থৃতির সহিত হনিষ্ঠভাবে পরিচিত হবার
জলে প্রাণণণ চেষ্টা করেছিলেন। তাদের সে প্রয়াস ব্যর্থ
হয়নি বরং আংশিকভাবে কলবতী হ্রেছিল।

হিন্দীভাষার গভীর ব্যুংগত্তি অর্জন করেছিলেন এক এদ প্রাটন সাহেব। ভিনি মহাকবি গোরামী তুলদীদাস-রচিত অমর কাব্য 'রামচরিত মানস' ইংরেজীতে স্থলনিত অস্বাদ করে অশেষ মশের অবিকারী হন: প্রাটস সাহেব ১৮০৬ প্রীপ্তাদে ইংলণ্ডে জন্মরহণ করেন এবং এবং অস্বফোর্ড বিশ্ববিদ্যালর থেকে এম-এ উপাবি লাভ করে ১৮৬০ প্রীপ্তাদে আই-সি-এস পাশ করে বাংলাদেশে চাকরী করতে আসেন। প্রার বিশ বংসর যাবং তিনি বাংলাদেশে সিভিলিয়ান রূপে কার্য্য করেন। ১৮৭৬ প্রীপ্তাদে থেকে উক্ত কাব্যের অস্থাদ স্থাক করেন। ১৮৭৬ প্রীপ্তাদেশ ইংরেজীতে তংকুত 'রামচরিত্রমানসের' অমুবাদ প্রকাশিত হওয়ার পর বিলাতের শিক্ষিত সম্প্রদায় এই অভি-প্রসিধ প্রহের সহিত পরিচিত হন। এই প্রক বিলাতের বিহুৎসমাজের ভূমণী প্রশংসা

ডক্টর শ্রীজ্ধীরকুমার দাশগুর প্রণীত

# n कावा(लाक >२\

প্রাচ্য ও প্রতীচ্যের কাব্যশাস্ত্রের মৌলিক তত্ত্বনিচয়ের তুলনান মূলক বিচার এবং কাব্যতত্ত্ব সহস্কে নৃতন মতগাদ। ভারতের সর্ব্যব্ধ স্থান্তন কর্তৃক উচ্চপ্রশংসিত ওসমানৃত মহিতীয় গ্রন্থ।

श আমাদের পরিচয় ২।•

**৩। গ**ম্পে উপনিষদ্ (সচিত্র) ২১

জীনলিনীকিশোর শুহ এনীত

ভারতের দাবী ঐবিভয়ভূষণ দাসভপ্ত প্রণাত

ছায়ালোকের নরনারী ২।•

৬ রূর শ্রীদীনেশংক্র সরকার প্রণীত

মালপ্ত (শচিত্র) ১০

ক্তিপন্ন খ্যাতনাম! বিদেশীয় দাহিত্যিকের বিখ্যাত রচনার ভাবাবলম্বনে রচিত ও ভারতের "স্বাধীনতা দিবদে" পরিক্রিত অধ্যাপক শ্রীত্রপুরারি চক্রবন্তী কত্তক ভূমিকা দমগিত এবং অধ্যাপক শ্রীত্রধাণগুরিমল মুগোণাধ্যায় প্রণীত

# ্য কঃ পৃস্থাঃ ? ৬

নৃতন জীবনাদ.শর খিতিতে প্রতিষ্ঠিত সোডিয়েট রাষ্ট্রের বিগত ত্তিশ বংসরের নিরপেক ঐতিহাদিক আলোচনা-প্রসক্ষে বিপ্লবোত্তর রাশিয়ায় জাতিসমক্ষার যাবতীয় শিধ্যের আলোচনা এবং বিশ্ব-সভাতার এই যুগ-সন্ধিক্ষণে নিপীড়িত গণ-আত্মার আর্ত্ত প্রপ্লপ্রশাস্থি কোন্প্রেণ্ ?" "স্থাব কোন্ পথে ।" স্বাধীনতা, বস্ত্মতী প্রভৃতি পত্রিকায় উচ্চপ্রশংসিত।

# থ সহাচীন (ব্ৰন্তৰ) ৩10

বিরাট চীন মহাদেশের আফুপুর্বিক ঐতিহাসিক আলোচনা এবং বিশের বর্তমান পরিস্থিতিতে মহাচীনের আসন ও অবলান।

প্যাতিগাদার (দেশে (সচিত্র) ও বেলুড় রামকৃষ্ণ মঠের দেবাব্রতী মহাক্মী স্থাসী খামী ত্যাপীখরানক্ষীর ব্রহের ভ্রমণ-কাহিনী

वौगा नाहरखदौ

۶,

১৫নং কলেজ ছোয়ার, কলিকাডা ৩৩৷হনং বাংলাবাজার, ঢাকা লাভ করে। এীরারদন সাহেব কর্ত্ত্ব এই এছের বিশহ আলোচনা প্রকাশিত হওয়ার পর বিলাতে এই পুত্তক আরও ব্যাপকভাবে সমাযুত হতে থাকে।

নীরারসম সাহেব বহুভাষাবিদ্ ছিলেম; তার ভার ভাষাভবিদ্ আৰু পর্যন্ত করঞ্জন করেন নি। কবিত আছে তাঁর
এক শত ত্রিপট্ট ভাষার দবল ছিল। তবু তাই মর, অনেকথলি
ভাষাতে পরীকা হিরে তিনি কৃতিছের সহিত উত্তীর্ণ হম।
হিন্দীভাষা তাঁর পরম প্রের ছিল এবং তিনি গোষামী কুলগীলাসের রচমার এক কম অন্থরাদী পাঠক ছিলেম। তিনি
'রামচরিত নামসে'র অর্জনিহিত সৌশর্ষ্য ও শ্রেঠছ সহতে
ইউরোশের পাঠকমঙলীকে সচেতম করতে সমর্থ হম এবং
তারই কলে ভাকার টেসী টোরী নামক এককম ইটালিরাম
পতিত 'রামচরিত মানস' ইটালী ভাষার অনুবাদ করেন
এবং তা ইটালীর সর্বত্ব পরম সমান্ত হয়।

হিন্দীভাষা বিষারসন সাহেবের নিকট যে কণ্ডভাবে ধণী তা বলে শেষ করা বায় না। তিনিই প্রথমে বিহারী-কবির 'সংলই'-এর অহবাদ প্রকাশ করেন। এই অহবাদকার্য ১৮২৪ এটান্দে সমাপ্ত হয়। তাহাভা হিন্দীভাষার মুস্প্রমান বহাকবি মালিক মুহত্তম ভারসীর অমর প্রহ 'প্রাবত' নামক বিধ্যাত কাব্যের অহবাদ তিনিই প্রকাশিত করেন।

ক্ষণ বীষ্স নামক সার এক হুন ইংরেক 'ভড়ার্গবোৰক' ব্যাকরণ প্রথমন করে ব্যাতি লাভ করেন। ইউরোপীয়ক্তর বব্যে ভিনিই সর্বপ্রথমে হিন্দীভাষার আহি ভবি চন্দ্রবাহীর কবিতা অব্যৱন করে তাঁর সৌন্দর্য্য বিলেবণ করেন। ভিনি অনুবাহকার্য্যও আরম্ভ করেনিলেন, কিন্তু নানার্য্যণ বিশ্ব-বিপত্তিতে তা আরু সভবপর হয়ে ওঠেনি।

ভাজার হার্ণনী চন্দ্রবরদাদীর বিব্যাত এছ 'রাসে'র প্রথম বঙ ইংরেজীতে অহুবাদ করে এসিরাটক সোলাইটর Bibliothica Indica নামক এইবালার অভতম পুডক হিলাবে প্রকাশিত করেন।

নিঃ এব এ বেলীয়ং শিণদের বিশ্বাভ বর্ণএছ 'এছ সাহেবে'র অভ্বাদ হরবতে একাশ করে অপায় বৈর্ব্য ও জানাত্মবিৎসার পরিচয় দিয়ে গেছেন।

# দি বেঞ্চল নার্শরি

শ্বাপিত ১৮৯৮ খুঃ ] [পোঃ জালনবাজার, ২৪ পরপুণা।
উৎকৃষ্ট ভালা বিলাতী সজীর বীল সুলকণি, বাধাকণি, ওলকণি, গালর,
বীট ইল্লাদি বিবিধ রকষ ১২টা বড় প্যাকেট দ্লা ৬,টাকা ও ২৫ প্যাকেট
১১০ জালা, মরওমী কুলের বীল, এটার, তালিরা, পিঙ্ক, প্যানলি, জিনিরা
ইভ্যাদি বড় প্যাকেট বিবিধ রক্ষের ১২ প্যাকেট দ্টাকা ও ১৮ প্যাকেট
১১, টাকা। বোঘাই লাল দূলা উৎকৃষ্ট জাতীর ৩,, পিরাল লাল ৬,,
প্রতি পাউও। সুলকণি প্রতি জাউল ২৯ এবং ৯, টাকা, বাধাকণি ২০০
ওলকণি ১০০, গালর ১১ টাকা, বীট লাল ১০০, টকেটো লাল ২০০, বটর
বিলাতী ০০, গিলেরী শালা ১০০, বেঙৰ /০ সেরা ০১, লকা ক্লবি কিং ১০০

बुना-छानिका विनाब्दना । वीक नांबेहिबात धत्रा जानाहिता।

# প্রীওসধালয় লিমিটেড্



প্রতিষ্ঠানের ঔষধন্তলি শারনির্দিষ্ঠ মান্রায় ও
প্রথায় অভিজ রাসায়নিক ও ভেষজিবশারদ
াগণ দারা প্রস্তুত হওয়ায় পর্কাশ নির্ভরয়োগা ৄ সর্কারোগে মক্ষর্কার্যক্র

\* বাবতীয় রক্তর্যুটিতে সারিবাদ্যরিট

\* সার্দি কাসি ইত্যাদিতে চ্যাব্র নাপ্রামার্শ

\* প্রতে ও রক্তর্যদর এবং যাবতীয় রীরোগে অশাক্ষারিট

\* বাবতীয় ক্ষরারোগ ক্রাক্রারিট সর্কার্যুত্ত ব্যবহার্য্য টারিক

\* বাবতীয় ক্ষরারোগ ক্রাক্রারিট সর্কার্যুত্ত ব্যবহার্য্য টারিক

\* ১০৮ - রসা রোড (সাউগ্রু) টালিগঞ্জ - কলিকাতা

বিঃ ভাবলিউ আর ক্ষনসম বুক্তেলাদের ইতিহাস অত্যাদ করেন। ঐ গ্রন্থে বুক্তেলতের বিব্যাত লাল-কবির কাষ্যগ্রন্থ 'হত্তপ্রকাশে'র অপ্যাদও সন্নিবেশিত হরেছে।

হিন্দীভাষা ও সাহিত্যের আর এক কন মর্গ্রন্থ ও বিদেশী নেবক হজেন মিঃ ক্রেভারিক পিন্কাট । পিন্কাট সাহেব ক্ষমও ভারতবর্বে আসেন নি। অবচ তার হরনী ও সভাগ খন হিন্দীভাষা ও সাহিত্যের প্রচার-কার্য্যে সর্বাদা সঞ্জির ছিল। কি প্রকারে হিন্দী সাহিত্যের প্রকৃত স্বরূপ ভার পরিপূর্ব মহিমার ও অপরপ সৌলর্ব্যে ইউরোপ-বভের সাহিত্য-রসিক সন্ধারারের জনগণের সমক্ষে উদ্যান্তিত হর ভার অভে তিনি তার ভর্ষনংব উৎসর্গ করেছিলেন।

এই মহানদা পশ্চিতের অন্তর্ম, কর্মপুমি ছিল বিলাতেই এবং সেবানেই তিনি তার শেব নিঃবাল ত্যাল করেছিলেন। কিছ তা সংবৃত্ত যে হিন্দীভাবাকে তিনি কি করে এত নাপনার করে নিরেছিলেন তা ভাবলে বিশ্বিত হতে হয়।

হিন্দীভাষাতে নিবিত তার পতাবলী বহু প্রাণ্ড হিন্দী বাসিক পত্রে প্রকাশিত হরে হিন্দীভাষাভাষীদের অপরিসীর আনন্দ দিরেছে। ঐ সব পত্রে তিনি নিবেছিলেন যে, ইউ-রোপের সভাতা ও বর্জনান সংস্কৃতিতে ভারতের অবদান কর বর। ইউরোপের যে সংস্কৃতি প্রার হয় শত বংসর ধরে গড়ে উঠেছে, তার মূলে ভারতীর কৃষ্টির দান প্রক্ষরভাবে বিভয়ান!

ভিনি আরও লিখেছেন যে সাহিত্যের দরবারে, বানীর পবিত্র

অঙ্গনে, প্রাচ্য ও পাশ্চান্ত্যের বিলম বোটেই অসম্ভব নর এবং কাংস্কৃতিক ক্ষেত্রে উদার বিলম না হলে ইংরেজনের যে একদিন না একদিন ভারতবর্ষ ত্যাগ করে চলে বেতে হবে এ ইনিডও তার লেবার আছে। এটাও তার আলা হিল যে ভারতীর সাহিত্যের প্রেষ্ঠ রম্বরান্ধি একদিন ইংরেজী অম্বান্ধের বারকতে সমগ্র বিশ্বের সমাধর পাবে।

পূর্ব্বোক্ত পভিতরণ ছাড়া মি: আর পি ডিউহার্ট হিন্দী ভাষার একজন শ্রের বর্ত্ত ও অহুরার ছিলেন। অল্পার্চ বিশ্ববিদ্যালয়ের কুড়ী ডাজার কে এন কারকুরই বিলাতের বিশ্ববিদ্যালয়ের কুড়ী ডাজার কে এন কারকুরই বিলাতের বিশ্ববিদ্যালয়সমূহে হিন্দীভাষা ও লাহিত্যের প্রবার ও প্রচারের কড় অশেষ প্রথম করেছিলেন। অবনলগ্রের প্রবান পাল্লী Rev. Frank E. Keay হিন্দীভাষার অসীর অনুরাগের ছড়ে বিশেষ কর্মপ্রিয়ত। অর্জন করেন। এরনিধারা হিন্দীভাষা ও লাহিত্যের অপ্রাপী আরও বহু পাল্যাও্য পভিত্তের নামোর্ট্রের করে ডালিকা বাড়ানো যেতে পারে, কিছু ডা নিপ্রয়োজন। এই লাহিত্যারসমূহ হিন্দীভাষা যাতে ভারতবর্ত্বের রাইভাষা হয়, সকল প্রচাশের অধ্বরান্ধিগণের বিকটে যাতে এর বোবসমাভা ও জনপ্রত্বে বাড়ে গে চেটা প্রভ্যেক দেশবালীর করা একাছ আবর্ত্তক হয়ে টাড়িয়েছে: ৩

শ্রমিক নেভা ও পশ্চিম বঙ্গের মাননীর শ্রমমন্ত্রী ভাঃ ক্রেশ বংশ্যাপাধ্যার প্রণীত

# । শৃথিবীর ইতিহাসের ধার

(**ষ্ট্রস্থ্র**) দাম—**৭**৪ শ্রীমৃক্ত দেবেন সেনের

१। জড়বাদের সমালোচনা ১।•

জড়বাদ সম্বন্ধে বিশেষ ভাবে আনিং হট ল : বই শবশ্বপাঠা অধ্যাপক স্বোত ১৮৮ন

৬। সভ্যতার ক্রমবিকাশ ।•

সাম্যবাদকে সঠিক ভাবে বৃঝিণ্ড হইলেইসমাজ সহজে জ্ঞান থাকা আবশ্যক। পুত্তকথানিতে এ-সম্পর্কে সংক্ষেপে ও প্রাঞ্চল ভাষায় আলোচনা করা হইয়াছে।

৪। মার্কসবাদের মর্মকথা ५०

লেলিনের বিখ্যাত Teaching of Karl Marx-এর
অঞ্বাদ, বাহারা বাংলা ভাষার সাহায্যে মার্কসবাদ সহছে
ভানিতে চান উছোদের অবস্থানায়।

**এযুক্ত গোণাল চ**ক্রবভীর

# । সোভিয়েট ইউনিয়নের ছেলেমেয়ে ৩।•

বিখ্যাত ডিনা লেভিনের Children of U.S.S.R. অবলয়নে লিখিত। সোভিয়েট শিক্ষাণছভির সহিত পরিচিত হইতে হইলে পুশুক্থানি অপরিহার্য।

প্রসিদ্ধ লেখক গিরীন চক্রবর্তীর

ा इक्ति (लश

110

এসিয়ার নিপীড়িত জনগণের মুক্তি সংগ্রামের ইতিহাস বাংলার তরুণ-তরুণীর অবস্থাণীঠা।

প্রীযুক্ত ভূপেক্র চৌধুরীর পরের বই

१। किंबाए এবার



প্রমিক ক্লয়ক ও অবজ্ঞাত জনগণের জীবন-কাহিনী। প্রতিটী লেখার লেখকের দরদী মন ও অস্তর্দু ষ্টির পরিচয় পাওরা বায়।

वर्गानत्मन त्कार—) १न९ कर्नक्षां लिम क्रीहे, कलिकां हा



অনুম্পা কেমিক্যাল: কলিকাতা

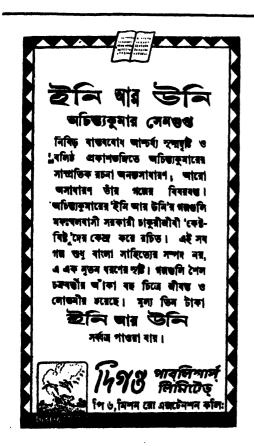
# অম্পৃষ্ঠতার প্রতিকার

**এ**মুরেক্রচক্র গোস্বামী, কাব্যভীর্থ

বিবাট এই ভারতবর্বে এবং ইহার প্রাচীন অবিবাসী হিন্দুর তেবনি বিবাট এই সমাজবেহে হ্রপনের ক্লছ-হরপ দীনভা ও সভীর্ণভা প্রভৃতি বভগুলি লোব . কালে কালে হামলাভ করি-রাহে ইহাদের বব্যে অপুঞ্জা অভতব ও প্রবানভর।

বিব বাহুবের প্রাণ সংহার করে, কিছ সে বিব বহি শোবিত
হবঁরা উপর্ক্ত বাজার প্রযুক্ত হয় তবে লে বিব বুজের থেছেও
কীবন সকার করিতে সমর্থ হয় । প্রথমতঃ এই অপ্রতা, বোধ
হয় সমাজবেহে সে ভাবেই প্রযুক্ত হইরাহিল । কিছ কালজবে
ভাতি বর্ণন সে বিষের পোবন-প্রক্রিরা ও নাজাহ্বারী প্ররোগ
বিশ্বত হবঁরা অপপ্ররোগ আরম্ভ করিল তবন হইতেই এই
অপ্রতা সমাজের অভ্যান সাবন করিতে লাগিল । ইহা
সহর অতীতের কথা, কিছ আর্জ ইহার বিষয়র ফল এত
উপ্র আভার ধারণ করিরাহে বে, ভাতি আর্জ সর্কটাপর অবহার
আসিরা পৌহিরাহে । এ কথা আরু আর কাহারও অবিধিত
নহে ।

बरे चन्त्र्यका-विव मृत कविवाद क्य वह जवाब-हिटेल्यी



मायाजारन क्षांननन क्रिक्षे कृतिबार्यम, क्रिक्ष देश अवनि ছুক্তিকিংভ ব্যাধির মত বিশ্বর স্বাক্তাহে স্থানলাভ করি-बार्ड य क्ष्मे देश जन्मुर्वब्राम स्वीक्वरण जवर्ष स्व वारे। হৰ্ণভিকে মাতৃৰ কাৰ্যনোবাক্যে পৰিবাৰ কৰিভে চাৰ, কিছ হুৰ্গতি বেষণ 'কৰ্লি মেহি ছোড্ভা'ৱ ভার বাছ্যকে শাক্তাইরা বরিরা বাকে, ছাড়িলেও ছাড়িতে চাছে না---এই সম্প্রভাকেও ভেষনি স্বামরা এভ দিন প্রাণপণ প্রয়াস-সত্তেও পরিহার করিতে পারি নাই। সৌভাগ্যক্রবে আৰু नकरमञ्जू बृर्वरे अक कवा--- जन्मुक्रज्ञा वर्ष्यन कश्चिष्ठ वर्रेरव । আৰম্ভা কভকাল যাবং ভো এই চেঠা ক্ষিত্ৰা আসিভেছি। কিছ ভাষাতে আশালুরপ নামন্যনাভ হইন কই ? কাম্বেই আৰু এ বিষয়ে ছই-চারিট কৰা বোলাগুলি ভাবে বলিবার नवह रहेहारह । वीक यवनह छेख रहेक ना दक्त ववाकारणहे তাহা অধুরিত হয়। নতুবা বহাদ্বা গাঙীর অপ্রভাতা বর্জন আন্দোলন এত দিনে পূৰ্ণ লাকল্যৰভিত হইবে না কেন ? বছৰিম পূৰ্বেই বাহাকে আমধা ফলপুলে সুশোভিড দেবিরা ভূপ্ত হইতে পারিতার আজ তাহার অরুরোদান মাত্র দেবিভেছি কেন ? পুডরাং শীকার করিভে হয় যে "কালই সকলের নিয়ন্তা।" অম্পৃত্রতা যে আৰও টকিয়া আছে দেবৰ ৰাজিগত ভাবে কাৰাকেও বা কোৰ সমাজকে দোষ দিয়া লাভ নাই। আৰু সম্ভা হাভাইয়াছে সকলেরই সম্বৰে। "সংহতি: কার্যসাধিকা"। আঞ্চ সকলকেই এ বিষয়ে পথাৰী হইতে হইবে। নতুবা ইহার সমাধান হওৱা

প্রার পদর বংলর পূর্কে "ইতো দেবং ততো প্রাক্র্য" অর্থাং বৈক্র বৈক্ষের নিকট হইতে নিবেও দিবেও ঝই নেওৱা-বেওরা বিবরে সমাজ-শিরোমণি ছুই জম মহামহোপান্যায়ের মধ্যে লীর্থ বিম ব্যাপী মসীযুহ হুইরাহিল, কিছ শেষ পর্যাত্ত কে অবলাভ করিরাহিলেন জানি না, কিছ ইহাকে দেশ-বাসীর কোন লাভ হয় নাই। আজ যদি ইহা লংগ্রাত হুইত তাহা হুইলে ইহা সর্বাসাবারণে মনোবোগ দিরা প্রিভ এবং শুনিত, কাজেরও সহায়তা হুইত।

অস্থতা হিন্দুর সরাজবেহে অহিবজ্ঞাগত ছ্রারোগ্য ব্যাধি-বরণ এবং ইহা বুগর্গাভরের কুসংভার, সুভরাং ইহার চুরীকরণোপবোদী ববোর্ডি অর্জন ভ্রিতে ভিছু নমর লাসিবেই। বাংলাবেশে অস্থতা বর্জনের অঞ্জী বলা চলে ঞ্জীনীরালবেহকে। তিনিই নর্জ্যবন আচতাল নবাইকে 'নান' বিবা স্থ-সন্তার্ভার এহণ আরভ ভ্রেন। লে আছু প্রায় ৪৫০ সংসর পূর্বের ভ্রা। ইহার কল কি

# रीक, शाह ४ ফून शार नार्भवीराउँ छान

# স্থবিখ্যাত চারা ও কলম

আমাদের নির্বাচিত প্রতি ভল্পনের মূল্য আম—১৫১, লিচ্—১৫১, লেব্—১০১, কমলালেব্—১০১, কলা—১০১, পেরারা—৮১, জামকল—৮১, নারিকেল—১০১, গোলাপ জাম—৫১, কাটাল—৪১, কদবেল—২॥, জলপাই—৮১, ভালিম—৮১, আমড়া বিলাভী—৫১, সপেটা—১০১, কুল—১০১, লক্টে—১০১, বাভাবী লেব্—১৯১, টাপা—৫১, ম্যাগনোলিয়া—২৫১, জবা—১০১, রজন—১০১, পাম গাছ—৮১, জোটন—৮১, লভানে ফুল গাছ—১০১, স্থপারী—২॥০. স্থপছি ও বড় জাভীয় গোলাপের কলম—১০১।

# করেকটি বাছাই সজী বীজ সবেমাত্র আমদানী হইয়াছে প্রতি আউন্সের দর

বাধাকলি শ্লোব প্লোবী—২॥০, বাধাকলি বুণ্ডক্ট্রা—আলি এক্সপ্রেস—২॥০, বাধাকলি মাউন্টেনহেড ড্লামহেড—২॥০, ফুলকলি আলি ও লেট স্নোবল—৯১, ফুলকলি শ্লোব বেটার—৪১, চিনাকলি—২॥০, ওলকলি—১॥০, বাট লাল গোল—১॥০ (প্রতি পাউগু—১৮১), শালগম—১১ (প্রতি পাউগু—১২১), লেটুস—১॥০০০, মুলা বোঘাই ১নং লাল—॥০ (পাউগু—৬১), মুলা লাল গোল—১১, টমেটো পাবফেকসন—২৬০, পিয়াক বোঘাই—॥০ (পাউগু—৬১), গাজর আমেরিকান—১০০ (পাউগু—১০০০), ক্রেক্বীন—০০ (পাউগু—১॥০), দিলেরী—১০০, বেশুন মুক্তকেশী—১১, মটর আমেরিকান—০০ (প্রতি পাউগু—১॥০), মরস্থমী উৎক্ট ফুলবীজ (এক শন্ত রক্ম) প্রতি প্যাকেট—॥০ ও ১১, দেশীয় বীজের প্রতি প্যাকেট—১০০, লহা বারমেদে—॥০, লহা চাইনিজ জারেন্ট—২০, তামাক—২০, ঝাড়পালম—০০।

কৃষিলক্ষী পত্তিকার সম্পাদক ও গ্লোব নার্শরীর স্বত্বাধিকারী

**শ্রীঅমরনাথ রায়,** এফ, আর, এইচ, এগ ( গওন ) প্রণীত

#### করেকখানি উৎকৃষ্ট কৃষি পুস্তক

১। ৰাংলার সজী	<b>२</b> ।•	ে সর <b>ল গোল্ট</b> ্রপালন ২।	]•
২। চাৰীর কসল	২॥•	৬। সরল সারের ব্যবহার ১	•
৩। আদর্শ ফলকর	२॥•	৭। শাছের চাব ১	•
৪। পুল্পোস্থান	ર્‼•	৮। পশু খাডের চাব 💮 🔾	ŀ

ক্যাটলগের জন্ম নিমুলিখিত ঠিকানার পত্র লিখুন

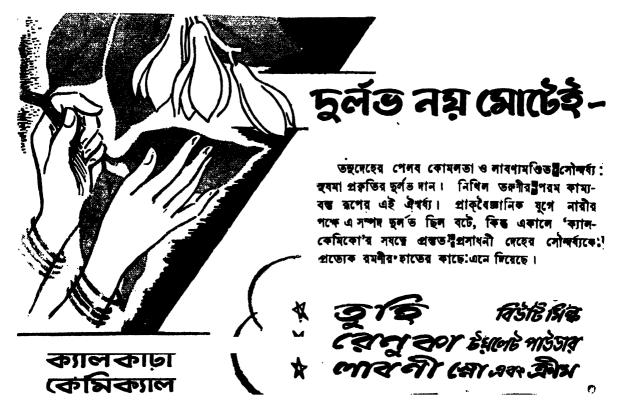


হাওড়া টেশনেও দোকান আছে

হইবাৰে ? বাট্টার কবভা হাভবাড়া হইবা গেলে শিকা-দীকার পুধিবীর অভাভ সভ্যকাতি অপেকা কোন অংশে হীৰ বা হইৱাও একটা ভাতি বে ক্তৰাৰি অবংপ্তিত र्रेष्ठ भारत वर्षनाम रिम्ह काकिर देशात क्षेत्रहे क्षेत्रान । मकुना এএগোরালদেবের অমুসত নীভি বহুদিন পূর্বেই কলপ্রস হইত। আশার কথা, হিন্দু ভাতি যে আজ কি কারণে খৰ:পভষের এভচুর গভীর গঞ্জরে নিপভিত হইরাছে তাহা বেশের নেতৃথানীয় বিচক্ষণ ও চকুমান বাঞ্চিগণের নিকট भूम्मडे एदेवा छेडिराटर अवर जाएक हावि मेळ वरजव পূর্বেকার, মহাপ্রভূ কর্তৃক অহুগত অপুঞ্চাবর্জন ও অপুঞ্চকে সমাজে এহণ নীভি কাৰ্য্যে পৱিণত কৰিতে ভাষাৱা কত-সহয় হইয়াহেন। দীৰ্ঘ দিন খাবংই নানাবিৰ খাতপ্ৰতিবাতে এই অপুঙভার প্রতি জনসাধারণের মনে একটা বিরভিত্র ভাব দিন দিন পুরীভুভ হইভেছিল, কিন্তু আৰু ভাষা চরমে উঠি-রাছে। তাই আৰু সকলেই অপুরতা বর্জন করিতে বধ-পরিকর। কিছু প্রশ্ন হইল—কি বর্জন করিতে হইবে, কি এছৰ ক্ষরিতে হইবে এবং কি বন্ধা ক্ষরিতে হইবে ? অস্প্রভা বর্জন क्विए इरेप्ट, छारे विनेश विवत ठीकृत मा 'नाणित' (हीता ধান না এই বরপের অস্থ্রতা বর্জননীতি অভুসরণ করিলেই ७१ इनित्व मा। विजीवजः वाहित्व जकन वर्त विनिद्या चाहाव করিয়া পঞ্জিকার ছাপাইয়া খরে আসিয়া অস্তীকার করিবার মনোরভি পরিহার করিতে হটবে। ভূতীয়ভঃ ব্যক্তিবিশেষ

বৰি ছবিশ ছাতের দকে আহার করিতে না চার তবে তাহার উপর বলগুরোগ করাও স্বীচীন হইবে না।

**क्रांक वर्गत शृद्ध (काम शिवक)-मर्श्लिड बक्कम बामारक** ক্ৰাপ্ৰদলে বলিয়াছিলেন যে, শালীয় বুক্তি দিয়া অপ্ৰচতা বৰ্জনের ভঙ প্রবন্ধ লিবুন আমি ভাষ্। পত্রিকার ছাপাইবার ব্যবস্থা করিব: উভরে আমি পূর্ব্বোক্ত মসীযুদ্ধের কবা উল্লেখ ক্ষিয়া বলিয়াহিলাম দেবুন, এগবে কিছুই হইবে দা। আবার যতে অস্থভা বৰ্জনের প্রবাদ উপার হইল---যাহার: সমর্ব এমন সকল বর্ণহিন্দ্র পাচক ও ভ্ভাের কাবে অনুরভ শ্রেণীর লোক্ষের নিযুক্ত করা। ভাষা হইলে থে কেহই উচ্চ ৰাজির সংস্পর্শে আসিবে ভাহাদের मकरनदरे भीचं विरमद अधिमकाशक मरकारदद मूरन आवाक লাগিতে লাগিতে এক দিন না এক দিন ভাষা চুৰ্ণবিচুৰ্ণ হইবে। কিছু ভখন ভিনি আমার কথার বুব মন:সংযোগ করিরাছেন বলিরা মনে হইল না। আমি কিছ গুচ্ছার সহিত এবনও সেই ক্ৰাই বলিতেছি। ইহাতে যত শীল অশ্রভা বিদূরিভ হইবে ভত শীধ আর কিছুতেই হইবে না। আৰু এ বিষয়ে পুৰুষের চেৰে নারীর কর্ত্ব্য অনেক বেশী; कावन छोषावार एरेएम नृत्य नर्समती कर्यो । अपन मामारमव সমাজে পুরুষণৰ অম্পুঞ্জাবর্জন ব্যুপারে যভবানি অঞ্চসর নারীপণ ঠিক ভতবানি পশ্চাংপদ। নারীরা যভই অঞ্চন্ত হইবেন অশুপ্রভাপ্ত ভতাই ফ্রন্ড দুরীভূত হইবে।



# দি বুক এম্পোরিঅম লিমিটেড—২২।১, কর্নগুল্লিস ব্লীট :: ক্লিকাভা ৬

আমাদের উপন্যাস

থবাধ সরকারের

যাবার বেলায় পিছু ডাকে ২০০

পারঘাটের যাত্রী ২০০

ভবানী মুধোণাধ্যাবের নবভম উপভাস
কালোরাত

জ্যোতির্বর রারের বহু প্রচারিত উপত্তাস
উদরের পথে ২৮০
মাণিক বন্দ্যোপাখ্যারের বিরাট উপত্তাস
দর্পন ৪৪০

প্রেম চন্দের ঘটনাবছল উপস্থাস গৌদান

( অফুবাদক: প্রিয়রঞ্জন সেন )

গোঁকর (ধরেন্দ্রনাথ মিত্র অনুদিড)
আমার ছেলেবেলা ৪১

শিবখাম চক্রবর্তীর লেখা ও শৈল চক্রবর্তীর **আঁ**কা

त्यदार जन २॥० वाणे (शंदक भानिता १८

হিমাংগুপ্রকাশ রায় কুড

Treasure Islandএর সারাস্থ্রাদ

त्रष्ट्रीश

210

প্রেমেক্র মিজের বৈজ্ঞানিক উপজ্ঞান
পৃথিবী ছাড়িয়ে ১॥০

चानकी न शास्त्र

नारक। १॥०

( বিভ মুখোপাখ্যায় অনুদিত )

পূর্ণান্দ সংস্করণ ব্যক্তিত্য প্রস্থিত বিশ্বনার কো বিশ্বনার কো সমূর্ণ আছে, সংক্ষিত্র নাংক্ষেত্র করা হর নাই।

জ্যোতির্বয় বায়ের ব্যক্তিগত প্রবন্ধগ্রহ

অন্যান্য ২ দৃষ্টিকোণ ২

করেক্তি গ্রেসমন্ত্র গৌরারপ্রসাদ সম্পাদিত ডিটেক্টিভ গশ্পের সংকলন ২॥০ ভূ তে র গশ্পের সংকলন ২॥০ হা সি র গশ্পের সংকলন ২, বাংলার বিধ্যাত লিধিরেদের লেখার সমুদ্ধ

দেবতার

**ज**न्म

শিবরাম চক্রবর্তীর লেখা ও শৈল চক্রবর্তীর ঝাঁকা মেরেধরা ফাঁদ ২॥০ প্রেমের বিচিত্র গতি ৩২ শিব্রাম চকরবর্তির মত বলার বিপদ ১।০

জ্যোতির্স রায়ের দৈনন্দিন ২।।০ তমসা ২।।০ পদ্মনাভ ২১

নারায়ণ বন্যোপাধ্যায়ের

সোভিয়েট রাষ্ট্র ও সমাজ ব্যবস্থার কাঠামো ১।•

নরেজনাথ সিংহের

প্রমধ চৌধুরীর (বীরবল) শেব লেখা

দিতীয় মহাযুদ্ধ ৪০ আত্মকথা ২০

**ভালির উদ্দীনের** ( কবিভা )

দিনেশ দাসের ( কবিভা )

वानूठिद (२व्र मर्) ।॥॰

ভুধ-মিছিল

THE BOOK EMPORIUM LTD., 22-1, Cornwallis St., Calcutta 6.



# আধুনিক চীনা গপা

কু ক্ষম, লাও চাঅ, ডিওলিও ও বভার বাট কন শক্তিপালী পোধুনিক চীনা এগারোট সাহিত্যিকের গ্রের সংকলন। ১৯১৯ সালে 'গ্রী মে আলোলনের' কোরারে চীনা সাহিত্যের ধারা প্রোনো পণ্ডিতী প্রায় হুর্গম কটালাল মুক্ত হুর্গের স্বাচন্টনার উন্মুক্ত প্রান্তরে যে প্রায়ন এবেচে ভারই প্রিচর আধুনিক চীনা ধর। অয়ল দাশগুপ্রে অনুবাদ।

शाय जिन होना चाहे चानाः

#### 

বর্ত নান সামাজিক পরিবেশে সাধারণ মানুবের বৃক্তরা কামনার সার্থকতা কোমার ? তারা তাবে এক, ঘটে আর এক। পৃথিবীর এই বিরাট বলমকে তারা তথুপুতুল, বৈন এক অদৃত হাতের প্রতার চানাপোড়েনে তারা হাসে, শুকারে, নাচে। এই সৈব পৃত্তারের বাজিক জীবনের নির্মুত প্রতিক্ষিব পুতুলানাচের ইতিক্থা'। ২র সংকরণ।
দাম হয় টাকা

#### ● অক্তান্ত করেকটি বই:● পারীর পভন—ইণিরা এরেববুর্গ:(১বইবঙ)

(২র গণ্ড) ৩,
মৰজান্তক—নারিন-গোনী ৩৷
রবীজ্ঞনালা (কবিডা গংকলন) ১৷৷
ভাক (গল সংকলন)—এরেনবুর্গ:ও অভাভ
লোভিবেট বিজ্ঞান—ডাইসন নার্চার

त्ना जित्तके विज्ञान—शरेगन को ति २। मजून निरमद्व जारना ग्लिकांग)—

সচিত্ৰ ভালিকার জন্ত পত্ৰ লিখুন 🖁

निव क्रियाक्रमी

811-

# श्चित्रतप्रभवान भावनिर्भिः रिका लिः

৩০. চৌৰলী বোদ্ধ: কলিকাভা ১৬

সকল বৰ্ণে বিলিয়া একত্ৰ আহায় কয়া অপ্ৰক্ৰতা বৰ্জনের অভতৰ উপায় ৰটে, কিছ সেইক্ডই ব্যৱতত্ত্ৰ বা তা আহায় কয়া সমাজের পক্ষে কল্যাণকর কিনা ভাষা বীরভাবে বিবেচ্য। আবার পক্ষে একেবারে অতীত বুর্গে কিরিয়া বাওয়া বেষণ ভাল ছইবে না ভেষ্টি বর্তমানেরও স্বক্টিছেক্ট নির্বিচারে আঁকড়াইয়া বরিয়া রাধাও বে ভাল ময় এ বিষয়ে সন্দেহ নাই। অভীভের স্থাপ্তলি এহণ করিতে হইবে ভেষ্টি वर्षवात्वव वायक्रकेशनिश्व वर्ष्यम कविष्य स्टेरन-एत्वरे আৰম্ভা নিৰ্ব্বিদ্ধে ও নিৰ্ব্বিবাদে সক্ষান্থলৈ গৌছিতে পাৱিব। অস্পাতা প্রসদে যে বিষয়ট সকলের চেরে অরম্বণর্থ নেট হুইতেছে এই যে, কোন কোন ভুণাক্ষিত নীচ্প্ৰেণীয় পোক वर्गिकृत गृहरू क्षरवम कतिहरू व्यवन व्यक्ति न्यम् अवस कि क्रम পৰ্যাত ছু'ইলে ভাষা অব্যবহাৰ্য্য বলিৱা পৱিভাক্ত হইয়া বাকে। देशांकरे चामना क्षरमणः कार्यात राज निवानन कतिएण চাহিভেছি। শুৰু ভাহাই শৱ একাক বাহাতে আশু সুসম্পন্ন হয় সেই দিকে সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করিভেছি।

এই অপ্রভাই আনাবের হিন্দু সনাবের তথা বাবীনতাসংগ্রামের কতবানি যে অনিষ্টসাধন করিরাছে ভাহা বলা
বাবল্য নাত্র। আমরা দীর্ঘ দিন বাবং অপ্রভার বিরুদ্ধে
আন্দোলন আরম্ভ করিরা কি কি বাবার সন্মুবীন হইরাছি ভাহা
উর্ন্নেধ করা অপ্রাসদিক হইবে না। ভবব্যে প্রধান হইভেছে—
প্রথমতঃ, বর্ণহিন্দুদিগের আভাজিনান ও গোড়ানি, চিরাচরিত
সংভার ও সামাজিক নিন্দার তর ইভ্যাদি। বিভীরতঃ
ভবাড়বিত অম্বতবিগের পারস্পরিক প্রতিষ্কিতা। ইহা একটা
প্রবল বাবা। আশা করা বার আছ হিন্দুর এই মুর্জিনে কি
বর্ণহিন্দু কি অম্বতপ্রেনী সকলেই ভাহাদিগের মুর্জনভাঙাল
আচিরে পরিহার করিরা হৃচ ও সবল মনোর্ভির পরিচর
দিবেন। আল এক দিকে বেমন আনাবের সন্দেবভার
প্রয়েজন, অভ দিকে ভেমনি হুচ্ছা ও সবলভারও প্রয়েজন।
একথা সর্জনাই মনে রাখা অবঞ্চকর্ত্র্যা বে মুর্জনবনা ব্যক্তিয়ারা
কোন মহৎ কর্মই সম্পন্ন হয় না।

সক্য করিবার বিষয় এই বে, আমরা বতই অন্বয়তনেশীকে নিকটে টানিবার চেটা করি তাহারা বেন ততই বিরুদ্ধ মনোরতি লইরা চ্রে সরিবা থাকিতে চার। অবস্ত বর্তনানে তালুশ মনোরতির অনেকটা পরিবর্তন হইরাছে। বিতীরতঃ, অপুরত, তপশীলী, হরিকন প্রভৃতি শব্দ ব্যবহার কোন মতেই সমর্থন করা বার না। উক্ত শব্দকি ব্যবহার করার অর্থ কি এই নহে বে, আমরা তাহাবিগকে সমাক্ষে বতই পাংক্রেয় করিরা সই না কেন একটা হীনভার হাণ তাহাবিনের আটে-পূঠে থাকিরাই বার। এখন সময় আসিরাছে—বর্থন সময় অনুরত প্রবী উঠাইরা তাহাবিনের ব্যত প্রমান প্রবাহ বিরোধ্য বি

বিটাশের সালে সালে আবাবের সমন্ত বিভেগ চলির। বাইবে এই আপা অবেকে পোবণ করেন কিন্তু আবরা নিজির হইরা বলিরা থাকিলে তাহা কবনও সভব হুইবে লা। স্কুডাং আবাবের ফাতীর সন্ধ্ববৃত্তার নিভান্ত প্রয়োজন। এই কথা বৃতীর ভাবে ভাবিরা বেধিতে হুইবে।

## চোমরা গ্রামের প্রাচীন বৈভব

#### জীবিজয়গোপাল বস্থ

ब्लवा वात्मबसाडित चडामाडी स्वातमध्य बामात चरीम हायदा अकड़ बाहीय नहीं। अक अबद देशांक चारतक উচ্চবর্ণের হিম্মর বাস ছিল।

ভারভেশ্ব আকবর বাদৃশাহ ১৫৭৬ ইটান্সে গৌভাবিপ দার্দকে বিভাতিত করিয়া বৰ্ণ বদদেশে বাঁয় আবিপভ্য व्यक्तिक कटबम, क्रवन बाका क्षाक्तवम निविक्त करवात्र विक्र ৰদেৱ শাগনগোকৰোঁৱ হুত বে সমস্ত ভৌকি স্ট করেন চোমবার তৌকি ভাষাদের অভতম। কমি-কমা ইত্যাদির পরিষাপাদি সমাপ্তির পর সহারাক বিঞ্চমাদিতোর উপর যশোহর রাজ্যের আবিপভার ভার অপিত হয়। সংক অবাত্য ব্ৰাক্ষা কালিকাপ্ৰসাদ আধুনিক বাণেৱহাট উপ-বিভাগের প্রতিনিধি নিমুক্ত হিলেন।

बाककीय चट्ड बहर बहर क्लामब डेमम, बाक्य रेकापि बिर्विष्ठ इरेन । विकत खुबि भागांभित धाता श्रीण, बाह, हाका क्षप्रिक द्वान स्टेटल अधिकाल-वरनैत बाञ्चव, कात्रद्रपत

চীনে কংগ্রেদ খেডিক্যাল মিশনের বিবরণ



অনুবাদ্ -- শ্রীতেপা**লশন্তর সরকার**। দাব ৩, টাকা সবে বের হল

মানবেশ্রনাথ বাষের—ভারতীয় নারীতের আর্থর ( শ্রীমতী মারা গুপ্ত অনুনিত ) দাস--->॥•

**अभागी वाने बारबय मुख्य यनवष्यमूगक भवावध-- मृटमाज जाह्य** (यज्ञष्ट) আমাদের প্রকাশিত ও এতেনির অক্সাক্ত বই

+ শ্ৰোধ ৰপুৰ • পদ্মা-প্রসন্তা নদী (২ সং) ৩- 📗 बाजशानी (२३ गः)

 গৌরালগোণাল সেনগুতের • श्नव পথের श्ना + बानरबद्धवाच ब्राइब्र +

नम्ब मामदबन मंद्र वानी((कार))।। + वशांशक हत्यमहत्व वहीहार्रात : \* **७**१३ नरश्चनाच ठटिशिधारतत \*

२। पर्मन ও विभवत। मार्कनवापता छात्म' वष्टरबर भाकांका पर्वम रा

विकाधि वस

नुष्ठक-श्रकामक ও विद्याला ১৩০এ, বাসবিহারী এভিনিট, কলিকাডা---২> আনাইয়া উপনিবেদ গঠিত হইল। চাপড়ি, ভেলিগাতি, चाठीवशील, गानवाकिया, निवर्ड, त्यानावरकाना, कांडेरकाना, ৰালবণাহা, বাৰুষকাটি, চোৰৱা প্ৰভৃতি পদ্ধীসমুহ সেই সময়েই গভিবা উঠে। ইচ্ছামতী নদীর উভর তীরে মুদুরুবসভিওলি थोद्या-मन्मारव ७ वर्रववर्षा महत्व एरेहा डिर्फ । अन्ववस्ताह সাবাদিক বৰ্ষ চোৰৱার বিখ্যাত নাবেই পরিচিত ছিল।

চোমরা-সমান্ত বে সংস্থতির বীপ প্রথলিত করে, প্রভারন্ত-সাহিষ্যে বিজ্ঞবাধিত্য-প্রতিষ্ঠিত অভাত ক্ষণত ভাতার সমুজ্ঞ্য প্ৰভাৱ সমূতাসিত হয়। চোমবার আচার-ব্যবহার রীতি-নীতি निका-शैका नानाशास পরিবাধ বইয়া পরে।

তৰন বেশে উৰ্ব্যুৱ প্ৰভাব হিল বিপুল। অনেক উৰ্ব্যুখ এই नमर रक्षाचार चनीपूछ एर। "(हारदा" देव नचक --- (अर्डेषट्रायक । "(सामता-Colaul" "(blautu नेश्वा" প্ৰভৃতি বাৰ্যাংশ এবনও সচৱাচর ব্যবহৃত স্ইতে দেবা যায়।

চোৰবা আবের বদক কাৰছ-বংশীর বাৰ্ছাট বোধ চৌধুৱী এতদক্ষের এককন ভূষানী খিলেন ৷ ভিনি সমাজের এককন

মহাত্মা গান্ধীর আশীর্কাদপুত ও আদর্শপবিত্র অভিনব উপস্তাস স্থানীল বন্ধ্যোপাধ্যায় প্রাণীড

ধন্দ ও হিংসার মাঝে মিলনের সেতু বাধিয়াছে। ককণ ও বাঙাৰ বৰ্ণনা ভবিখাতের পথ কেবাইবে। বিভিন্ন ভাষায় অনুদিত হইভেচে। আকই সংগ্ৰহ ককন।

ব্যাহার, ব্যবসায়ী ও অর্থনীতির ছাত্রগণের অবশ্রপাঠ্য গ্রন্থ দেবেশ রায় প্রণীত

## ভারতীয় ব্যাঙ্ক ও অর্থনীতি

সকল পত্রিকায় উচ্চপ্রশংসিত। সঞ্চয়ীর বন্ধতুল্য।

হিন্দী ভাষা শিকা করিবার একটি শ্রেষ্ঠ পুস্তক

### হিন্দুস্থানী টিচার

বাংলা ও ইংবাজি ভাষাসহ হিন্দি পরিচয়

সরস্বভী বৃক্ত ডিলেশ ৮১नः निमना शिंह, क्निकाछा **এবং সকল পুত্তকাল**য়।

মাতগণ্য ব্যক্তি বলিৱা ভাষার ভ্রাসন্তিভিত পরী "চোমরা" विरमवर् विरम्बिक इरेन । यह बाचन, कात्रप, महसूकत, র্থক, বালী, কুডকার প্রভৃতি হজিণ ভাতির স্বাবেশে চোৰৱাৰ ক্ৰপশ্ৰৰ বৃদ্ধি করা হয়। বৈহাভিটা কোন চিকিংসকের বসভির নির্দেশক। চোনরা এাবের চড়ুডু ক ৰাহ্যৰে মৃতি সম্পৰ্কিত বহু কাহিনী আৰও লোকমূৰে শোনা यात । अ नवरक माना क्रमक्षणि अवनिष्ठ चारक । वृत्रवृत्राक्षत रदेरक वह एक बरे शांत्य जानिया हैक विवासय भूका-जर्कमा সমাপনাতে বাহ্নিত কর্মে হতকেণ করিতেন। বাসুবেবের শেষ পুরোক্ত কেলান ঠাকুরের গৃহবাবে বিএইট দ্বীভূত হয়। বহুত কোন পাপের কলে এইরণ অভত বটনা বটরাছে ইবা ৰ্ষে ক্ষিয়া পুৰোহিত ঠাকুৰ একেবাৰে বুষ্ডাইয়া পঢ়িলেন এবং বর্ণার-বৃতিটকে কোন সাধকের হতে সর্বাণ করিবা नाक्ष्मद्राय पूजकणक्षमर शान छात्र करवम । वर्षमारम पूजमा-বালেরহাট লৌহপথের যাত্রাপুর টেশনের সাহিব্যে সাটকালা পদীর বোপাল-মন্দিরের প্রাচীরগাত্তে এই মৃষ্টিট সরিবেশিত। আম্বৰে কাৰিদভের ভিটা, বস্থ চৌধুৱীর ভিটা, ঈশব মাগীর किं। भारत किंग गरकिछ श्रामनपृष्ध रिन्द्र-वन्निक कानक।

বাতক্ষের পরিবেটিত বোৰচৌধুবীর তিটার খানাভর হইতে আগত কোন নবঃশুদ্র পরিবার ক্রবিকার্য্য বারা জীবিকা কর্জন করিয়া পুরুষাধূক্রবে প্রায় এক শত বংলর যাবং বাস করিতেহে। এই অংশের পরিচারক সংজ্ঞা-ন্যানুত্র হাওলাকারের বাস্-বাজী। ভদ্রাসনের উত্তর কোবে একটি বন্দির
ও ইঙক-ভূপ ভতীতের সহিত বর্তমানকে সহত রাধিরাহে।
"বর্তবাজী" হানটবই নামান্তর।

ৰন্দিবের উচ্চতা পরতারিশ কৃষ্ট। বহির্তাগের বৈশ্য ও व्यष्ट् बिम सूडे बिम सूडे । व्याठीरवय (वक्ष गीड सूडे । चिक्रिय অধিকাংশ ভূগতে গ্রোধিত। দক্ষিণ দিকের অদিক্ষের আরভন বোল कुड़े, गाँठ कुड़े ७ विम कुड़े। ठाविड़े खरखब छैनब ইটক নিৰ্দ্বিত খুদুও আহোদন। ইহা অভিক্ৰম করিয়া মনিয়ে চুকিতে হয়। এইটই প্রধান ছার। এই ছার এত সভীর্ণ যে ইহা দিয়া হুই খন লোক এক গলে কোনজমে গভায়াভ ক্রিভে পাৰে। অভ্যন্তর-দেশ ভিন ভাগে বিভক্ত। মধ্যমূলে সিৰেখনী रायी शृक्षिण स्टेरण्य । उत्तव विरुद्ध लाजीवनात्व वाच सूत्रे मीर्य अवर इस कृष्ठे अञ्च (पर-व्यविश्रासित किन्न विनाडे व्हेश निश्रादः। শীৰ্ষদেশ গৰুকাঞ্চি—আহবীয় ছাপত্যের আদর্শে প্রছত। ইহার চড়ুলার্ঘ রঞ্বর পুল-শুবক শোভিত। পশ্চিমাংশে নারায়ণ শিলা, লক্ষী কনার্কন, শীতলা, সমসা প্রভৃতি বিভিন্ন विश्रास्त कार्तिक कृत्वी । उत्थादि अक्के माळ कृत्वी--- निव-निरम्ब भूकाष्ट्रम । अभिरम्थ अक्षक्र मतका । वात व्यर्गनयक কবিবার ছিত্র প্রাচীরগাত্তে অভাগি সুস্পষ্ট নকরে পর্যে।

मिल्दित रेडेकथिन बाहीन बदाबत- अक अकवानि पक्ष

# নেতাজীর অনুসরণে :—

বাংলার বিখ্যাত মৃত ব্যবসায়ী প্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "প্রী" মার্কা মৃতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিপ্পয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'প্রী' মৃতের ব্যবহার অভ্যাবশুক হইয়া পঞ্চিয়াছে, বাজারে ভেজাল মৃতের ব্যেরপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে প্রীষ্কু অশোকবাবুর বিশুদ্ধ মৃত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা মৃত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অমুকরণীয়।

ৰাঃ শ্ৰীসুভাৰচন্দ্ৰ ৰস্থ

বংশত। চূণ-বালি, চূণ-ভৱকি এবং ভগু নাত্র চূণে ইউকসমূহ এখিত। বেবারতন-শীর্ণে নানা কাতীর পাদপে একট অসম্বদ্ধ অফল বট হইরাছে। ত্রিশ হস্ত ব্যবধানে একট বৃহ্যাকার ভিত্তিতী বৃক্ষ ইহার উপর শারিতাবহার বাহিত হইতেছে।

প্রাচীর-গাবে খোষিত লভা-পর-চক্ত প্রভৃতিতে উচ্চাদের ভার্য্য-শিবের নিগর্শন বিভনান। হুই কোশ দূরবর্তী পোরাল মঠ উচ্চ ইংরেকী বিভাগর তবন এই প্রাচীন বেবছনীর অহরণ কারুকার্য্যে অলহত। মনীয়া শান্তিপুর এবং মুশিলাবারের কক্ষ্যুপতিগন কর্তৃক এই পূজায়ঙ্গ ইচিত হয়। তবন মুসলনাম রাক্ত্মাল। ভাষায়, আচরণে, হিন্দুর দৈনন্দিন কীবনে মুস্লিয় সংস্কৃতির প্রভাব তবন কৃত্কটা অহুপ্রবিঠ হয়। দেব-শালার এরণ আকৃতি—-মুসলিয় কৃষ্টিরই অহুকৃতি।

স্ত্রাট সাজাহানের রাজ্থকাপে বামসর্বন্ধ খোষ চৌবুরীর দিল্লী গমনের স্থাবাগ খটে। আগ্রার ভাজ্যহলের নির্দাণকার্ব্য ভবন সবেষাত্র পরিসমাপ্ত হইরাছে। পুৰিবীর অভভ্য বিশ্বর—ভাজ্যহল-সোধের গঠনলোঠব তাঁহার অভবে যে ব্রুরোপাভ করে, ভাহাই রহিরাছে চোমরা গ্রামের কারকার্ব্য-ব্যিত সিজেরী-নিকেভনের পরিক্রমার মূলে।

ভ পের অধিকাংশ ভূগর্ভগত: ইহার বর্তমান আকার হয়× চারি× পাঁচ ফুট। বলীক স্বভিকার ইউক্তালি পরস্পার সংযুক্ত হইরা রহিরাছে। দুর্বা প্রভৃতি বিভিন্ন জাতীয় ভূণ-রাজি ইহার অদ-শোভা স্থি করিয়াছে। শ্রীশিশিরকুমার আচার্য চৌবুরী সম্পাদিত

# বাংলা বর্হালিপি

১৩৫৪ (৪র্থ বর্ব) সালের বর্বলিপি—স্বধিক্তর:ভথ্যসভাবে সমুদ্ধ হইলা বাহির:হইলাছে। দৈনন্দিন জীবনেরটুপ্রযোজনীয় তথ্যে পূর্ব। মূল্য ভুই টাকা, ভি-পি-ডে ২৮∕•

শভিক্ত মনোবিদ ও কলিকাতা বিজ্ঞান কলেকের উপাধ্যায় ভা: নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়

निर्द्धान य

ডা: গিরীজ্রশেষর বস্তুর মুধবন্ধ সম্বলিত। এই **এছে সহজ্ঞ** ভাষায় মনের বিচিত্র ক্রিয়া-কলাপের পরিচয় দেওয়া হয়েছে। মনোবিভার একধানি উপাদের গ্রন্থ। আড়াই টাকা

অধ্যাপক উবেশচন্দ্র ভট্টাচার্বের

সহজ ভাষার গড চার শ' বছরের ইউরো-আমেরিকার দর্শনের আলোচনা সরল অবচ তথাপুর্ণ। আড়াই টাকা

नाम्हाखा मर्भन

চাৰশ'

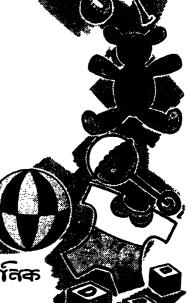
সংস্কৃতি বৈঠক—১৭, পণ্ডিভিন্ন প্লেম, বালিগন্ধ, কলি:} কলিকাভার পরিবেশক: **জিজ্ঞাসা**—কলিকাভা ২>

# आर्अस सर्वेश

শশুপালনের সম্যক জ্ঞানের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এত ভয়াবহ। বিবটন শিশুদের দৈছিক সর্বাদীণ পৃষ্টিবিধান করিতে অধিতীয়। ভিটামিন ভি, বি১, বি১র সহিত মৃল্যবান।উভিক্ষ ও রাসায়নিক। উপাদানের সংমিপ্রণে প্রস্তুত এই পূর্ণাক। টিনিকটি প্রভাবে শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দক্ষোদ্যামের সম্ম, সেবন করান উচিত। বিবটন নিয়মিতি রোগে বিশেষ উপকারী:—শিশুকের ব্যুক্তর শীড়া, অনীর্ণতা, হ্ব তোলা, বিশেষ করিয়া লগুলে, ব্যুক্তর শীড়া, অনীর্ণতা, হব তোলা, বিশেষ করিয়া লগুলে, ব্যুক্তর শীড়া, অনীর্ণতা, হব তোলা, বিশেষ করিয়া, বিশেষ্টা করিয়া, বিশেষ করিয়া, বিশ্বতি বি



লিপ্তার এটিসেপটিকস্ • কলিকাতা



উভয় পার্থ কৃষিক্ষের ধনিত চুইট দীর্ষিণা অতীতের দ্বতি বহন করিতেরে। বৃহত্তরট হুই শত 🗙 এক শত হত। ক্ষতরট আশী 🗙 বাট। প্রতি বংসর হলকর্বন কালে অলাশর হুইটর জীগ সোণানাবলীর বৃত্তিকান্তত ভরাবশেষ আবিদ্ধত হুইতেরে। ইহালের স্থ-উচ্চ পাড় এবনও ভর ও ব্যংসপ্রাপ্ত হর নাই।

স্ত্রাট আঙ্রদ্দেবের রাজ্যকালের শেষাতে ইছামতী ক্ষমণ: জীব-লোতা হইতে থাকে। পূরীভূত বর্ধার জন, বঙার বারিরালি জনশদসমূহকে জনাভূমিতে পরিবত করে—কলে উক্ত অঞ্চল ব্যাপেরিরা সহিপাত প্রভূতি রারাশ্বক ব্যাবির প্রকোপ ধেবা দের। তেলিগাতি, যালমগাহা বারমভাঠিও চোমছা প্রভূতি প্রামগুলি পরিত্যাগ করিরা লোকেরা ক্ষরে হামাছরে চলিরা বাইতে বাব্য হইল। মহন্তবস্তিপূর্ণ অঞ্চলসমূহ ক্ষরে সম্পূর্ণরূপে জনমানবন্ত হইরা বীরে বীরে নল-বাগভা, হোগলা আদি জলজ উদ্ভিবে পূর্ণ হইরা পতিল। রাহেরকাঠি, বলিশাবালি, দৈবজহাটি, সোলারকোলা,

প্ৰকৃতি পদ্ধীর অনেকে চোৰৱা-সৰাজের লোক বলিয়া গৰ্বাযুত্তৰ করেন।

বলিপাথালি প্রানের বোব চৌবুরী-পরিবার চোনরার ভূমাবিকারী বংশীর। ভারতে ইংরেক পাসন স্থাতিটিভ হই-বার পর পরিত্যক্ত স্থানসমূহে পুনরার ক্ষবসভি আরভ হয়। পভবর্বে ভূমির উচ্চতা আভাই কুট হইরা থাকে। ইংরেজী ১৮৫৮ অকে ক্ষসাভূমি প্রার পাঁচ কুট উন্নত হয়।

ভেলিগতি গ্ৰণ্মেন্টের বালম্বল। এবাম্কার ক্ষেত্র প্রচুর বাভ উংপল্ল হয়। প্রাভরবক্ষে কালিকা দীবি রাজা কালিকাপ্রলাদ প্রভিষ্টিভ জনপদের সাজ্য প্রদান করিতেছে। বে সম্বভ জলাপরের চতুর্জিকে সু-উচ্চ পাড় ছিল, সেইগুলি আজগু বিভ্যান রহিয়াছে।

অধুনা দেববিএহণ্ড হইলেও এই প্রাচীন মন্দির হিন্দু্সংস্থতির নিদর্শন-সরূপ। নিতৃতে অবস্থিত এই দেবারতন্টর
রক্ষণাবেক্ষণের ক্ষম স্থানীর লোকদের বিশেষ মনোযোগ
হওরা উচিত।

#### বিশ্বসাহিত্য গ্রন্থসালা সম্পাদনা: শগদিন্দু বাগচী

### ১৪ই ডিসেম্বর

মেরেল কোব্ডীর প্রিণাত উপভাবের অনুবাদ করেছেন; নীচিন্তরন্ত্রন রার ৩: নিজনোক বোব। কারের অপসারবের লভে অপবার্থারা; কারেছিল বক্ষণোপিত, বার্থ হয়েছিল; তারা, তবুও তাদেরই; রজের আভাবংরাশিরার ্বিভাল রক্তর্বির অভ্যানর। তারই বর্ম কাইনাইন। দাস—০০

#### পঞ্চিল

আলেকলাভার কুণরিশের স্থবিধাত উপভাস 'ইরামা'র অপুবাদ । গণিকা-বৃত্তির বাত্তর ক্যান্টির । নদ্মার এ নোডরা ঘাটা[কেন]?—নিজেবেই বাহ্যক্রার ক্ষয় । দাস------------

**নূতন চীনা গল-- ন্রীগোরাদ** প্রদাদ বহু কর্ড্ ক অন্দিত;

#### শ্ৰীকুমাৰেণ গোবেৰ ভাঙাপড়া

আধুৰিক সৰজাবূলক উপভাস। বিষবিভালরের কৃতীট্রাত্র হরেও কলবেরট্ট বহলে সকর্বে বে ধরতে পারে ছেনি-হাতুড়ি ওধু সেই বলতে পারে দোবী কে'? মুন্সানি ?ক্রনা,াঅমুভা ? না, আবাদের ভীক্ন সবাজ। চাক—২।•

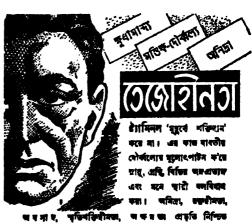
ম্যানিকা

প্রীভূমিকা ও দুপ্তপটবলিত ছেলেমেয়ের ক্লভিনরোপবাদী রসনাটকা। ১১

শিশুক্ৰবিতা

ইবাণ্ডভোৰ কাৰাভীৰ্থ সকলিত। বাস--।/-

बीफार्ज कर्नाब :: १, महद खाव लग, वनिवाण--



ব ব ব ব, বৃতিবভিনীনতা, ব ব ব তা প্রের্ড নিশ্চিত
মূহ করে। বানকরাবিত এবং বিষ্ঠিব ও আমেরিকান
কার্যাকোশিয়া অনুবোধিত পুনিকাটিত কেম্ম-সময়ে প্রকর।
মৃত্যাক্ত্যাক্ত্যাক্ত ক্রিকাটিত কেম্ম-সময়ে প্রকর।
মৃত্যাক্ত্যাক্ত্যাক্ত ক্রিকাটিত কেম্ম-সময়ে প্রকরে তিনটি
পশ্চার দিনিতে তিঃ লিং চার্ম্ম লাগে না। সকল ভাজাবশাস্ত্র
পাবরা বার। অথবা দিখুন—পোট মন্ত্র ১৮০১, কলিকাতা।



অমিত তেজ ও শক্তি সঞ্চল্ডে Daign & Test Oppright.

# পুশুক - পারচয়

বঙ্গীয় নাট্যশালার ইতিহাস-প্রীত্তকেলাথ বন্দ্যো-পাধ্যায়। পরিবৃত্তিত ও সংলোধিত ওয় সংস্করণ। ২৩৫ পূর্চা, মৃল্য-চারি টাকা। বলীয়-সাহিত্য-পরিবৎ, ২৪৩।১ আপার সাকুলার বোড, কলিকাতা।

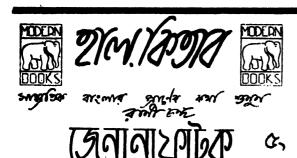
এই বইখানা বাঙালী-সমান্তের ইভিচাসের পক্ষে বে কড
উপকারী তাহা সকলেই জানেন। এরপ সৃদ্ধ ও বিশুদ্ধ তথ্যসংশ্রহকে ভিজি করিবাই আমবা জাতীর অভিব্যক্তির স্বরূপ বৃধিতে
পারি। এজেন্দ্রবার্ অক্লান্ত পরিপ্রামে প্রতি সংকরণেই পূর্বকার
ভূল সংশোধন এবং নৃতনপ্রাপ্ত সভ্য থবর বোগ করিবা দিরা
ইচার গৌরব বৃদ্ধি করিবাছেন। এই ভূতীর সংখরণে করেনটি
পূঠা বাড়াইয়া দেওরা চইয়াছে, বিলেবতঃ ছ্প্রাপ্য প্রাতন পত্রিকার
প্রকাশিত বিবৃতি (বেমন রসরাজ অমৃত বস্তর আছকাহিনী)
ছাপানতে জ্ঞানপিপাস্থদের বিলেব স্থবিধা হইবে। অনেকেই অপ
বীকার না করিবা প্রজেশ্ল বাবুর প্রস্ত হইতে তথ্য সংগ্রহ করিবা
নিজ রচনার ভান দিরাছেন। তাঁহারা বেন এই সংকরণে নিব্দি
সংশোধনগুলির প্রতি বৃত্তি বাথেন—অস্ততঃ তাঁহাদের পাঠকগণ বেন
এই সতকবাণী মনে রাথেন। এইরপ নিভূলি সাহিত্য ও সমাজের
ইতিহাসের উপাদান বহু মূল্যবান। এজন্ত প্রজেশ্ববিবৃর নিকট
আমবা নানা ক্ষেত্রে খণী।

শ্রীযত্নাথ সরকার

ইহা একথানি উপন্যাস। নদীবছৰ পূৰ্ববজেৰ একথানি वाय---कृष्णामा । भन्नीय व्यविकाश्य व्यविवामीहे व्यव्य व्यवः हाँगी। ত্ঃখ-দাৰিত্ৰ্যের মধ্যে ইহাদের জীবনধারা একটানা চলিডেছিল। ব্দমিদারীর অভিম দশা খনাইরা আসিরাছে। ব্যবসাদার এবং ধনিকের আমদানি বান্ত্রিক সভাতার সংঘাতে বেই শাস্ত মহর কুবি-নির্ভর জীবনধাত্রার মধ্যে বিপ্র্বার উপ**ছিত** হুইল। সেই সঙ্গে লবণ-সভ্যাপ্রহ এবং গান্ধী-আন্দোলনের ভরসাভিয়াতে পদ্মীন্দীবনের মধ্যে যে আলোড়ন উপস্থিত হইল বইখানিতে সেই ছবি দেখানো **এটারাছে। অমিদারের ছেলে শহর সেই আন্দোলনে বাঁপাইরা** পড়িয়াছে। উপন্যাসের নায়ক শহর। হাত্র, পন্ন প্রভৃতি অনেকণ্ডলি দ্রী-চরিত্র থাকিলেও নারিকাপদবাচ্য কেই নর। উপন্যাস্থানি বুপস্কিকালের একটি পলী-চিত্র। চিত্র হিসাবে ইহা সার্থকত। লাভ করিয়াছে। স্থানীয় বৈশিষ্ট্য লইয়া চরিত্র-গুলি জীবস্ত। স্থান ও কালের মধ্যে যে মাসুবওলি ধরা পড়িয়াছে ভাহাৰা আলোকপাতে স্থল্পট হইরা উঠিয়াছে। সেই পণ্ডীর মধ্যে ভাহাদের সম্পূর্বভা। কাহিনী বে সমান্তির অপেকা করে এরণ ক্ষেত্রে সেই সমান্তি থাকিছে পারে না। রাজনৈতিক, সামাজিক এবং আঞ্লিক পরিবেশের মধা দিয়া চরিত্রগুলিকে

#### নু ত ন উ প হা র **मः ऋ द्र व** ৺ পুজার যোগেশচন্দ্র চৌধুরীর দিলীপকুমার রায়ের वनथत्र ह्योभाशाग्र কবি সভ্যেন্দ্রনাথ দত্তের नावाकिक नावक শ্ৰেষ্ঠ উপস্থাস সামাজিক নাটক সগপ্রকাশিত অভিনব সংস্করণ পতিব্ৰতা (अर्ड कारा-अर ৰীতিমত নাটক নানারপী ٨, ۶, वाश्लाब त्यस्य 110 সত্যের সন্ধান ১॥• চরণদাস ঘোষের পরিণীতা **2** ⋅ 7110 অভিনৰ উপভাস রাঙারাধী 210 गक्णाव जान 110 ভেপান্তর পথের সাধী ১10 ভূপেশ্ৰনাথ বন্দ্যোপাথায় প্রবোধকুমার সাক্তালের সামাজিক নাটক विलादियं भाग ७ আ**ও**ভোৰ ভট্টাচাৰ্য্য যাযাবর 710 বাসালা 210 সাবাজিক নাটক মোহিভলাল মজুমদারের লৈলজানন্দ মূখোপাধ্যায়ের পৌরাণিক নাটক वावाबाकाल জেঠ কাবা-এছ 7110 পূর্ণচ্ছেদ 100 31 (रुभउ-(गावृलि २॥• क्रवराव ব্যান্তভোব সাম্যাল **विक्र**नी 200 ব্ৰঙ্গতেজ >no অতম গুরের 41 অভিশাপ (यर्ड अस्टब्स्)रतत वरे শিবপ্রসাদ কর নগেন্দ্ৰনাথ ভট্টাচাৰ্য্য ভয়ম্বর তুব্দরবন প্রফুরকুমার সরকার পোরাণিক নাটক গোরাণিক নাটক আবৃত্তি-ধারা বালির বাঁধ 200 यनगढ **340** অভিষেক 2110 চমৎকার রেসিটেসনের বই

—षांव, बरेंচ, लीमांनी बश्च जन ८ २०८ न९ वर्गध्यालिज ब्रीवे, विलवांषा १



यर भाव क्षिण्यामात्र तारी यद्गीतुन्त अनुसार श्रीर समार क्ष्या एक स्थाम, एक एकामाने, जन्म साम्य क्ष्या एक स्थाम, एक एकामाने, जन्म साम्य अस्ति। इतिस् अस्ति। अस्तिम् अस्ति।

रिभोर्ग् श्रेश •

अभित्र बाजर क्रिया अभित अभीत क्रिया विद्या — मार्क्सि आस्मा अहिल देश क्रिया क्रिया क्रिया - मार्क्सि अस्मार्थ राज्या बाजर क्रिया

Signal Empires (34) and substantial (1)

(স্বরলিপিস্থ গীতিনাট্য)

শতিনৰ শ্বৰ্ণচ শতি পুৱাতন পালা গানের আছিকে বচনা ১৯৪২—৪৫'-এর বাংলার বুক নিংড়ানো বাণী গানে ৩ মৃক শভিনয়ে শপরুপ Dr. Sasadhar Sinha

------

# Tagore:a5ocial approach \*

A brilliant analysis by a socially conscious and erudite scholar—presents Rabindranath from a new angle.

সব বই দামী কাগজে, স্থন্দর ছাপাই, স্থদ্ভ বাধাই
নিবে শীগ্রীবই বার হবে।



অকৌশলে পৰিকৃট কৰিবা গ্ৰছকাৰ শেব পৰ্যান্ত আবাদেৰ আগ্ৰহকে লাগাইবা বাধিবাছেন। এইখানে ডাঁহাৰ কৃতিছ। "কৃৰপালা" বহু অপৰিচিতকে পৰিচিত এবং বিশ্বতকে শ্বৰণ ক্ৰাইবা দেৱ। উপন্যাসটি পাঠকেব চিত্তকে উৰ্ভ কৰে।

পঙ্গপাল--- এথাণভোষ ঘটক। বঞ্চন পাবলিনিং হাউন, ২০।২ মোচনবাগান বো, কলিকাভা। মূল্য--এক টাকা আট আনা।

ছোট পজের বই। আটটি পলের স্মন্তী। চতুর্থ প্রান্তির নামান্ত্রপারে পুস্তকের নামকরণ হইরাছে—"পঙ্গপাল"। ছোট গজের বিবরবন্ধর অন্ত নাই। রচরিকার দৃষ্টি ও ক্রচির উপর বিবরের নির্বাচন নির্ভর করে। তীবনের বে অংশ শীড়াগারক বলিরা সাধারণত: দৃষ্টির বাহিরে থাকিরা বার, লেখক সেই অংশ বাছিরা লইরাছেন। "ধোঁরা"ও "পঙ্গপাল" পঞ্চাশের মরস্তরের সৃষ্টি চিত্র। মরস্তরের বিভিন্ন দিক লইরা বহু লেখক প্রান্তিরিছেন। অনেক গলেই ভরক্কর অপেক্ষা বীভংস দিকটাই কুটিরা উঠিরাছে। প্রস্থকারের শক্তি আছে। বর্ণনাগুণে দৃষ্ট ও ঘটনা প্রক্রমান্তর হেখার গ্রানি লেখক নির্মান্তাবে সেই স্থানগুলি উদ্বাটিত করিরাছেন। তাঁলার দৃষ্টি তীক্ষ। ইছো করিলে ভিনি মূল ব্যাধি নির্দ্ধ করিছে পারিছেন, তাহা হউলে গরগুলিতে বীভংস অপেক্ষা ভরক্কর বস্ট বিশেষ ভাবে ফুটিরা উঠিও। আটটি গলই বিবরবন্ধতে বিচিত্র। "পঙ্গপাল" ভোট গলের ক্রেলে লেখককে প্রভিন্তিত করিবে।

#### ব্রীশৈলেন্দ্রকৃষ্ণ লাহা

উপনিষদ — প্রথম থগু: ঈশ, কেন, কঠ। শ্রীবসস্থকুমার চট্টোপাধ্যার এম-এ। গুকলাস চট্টোপাধ্যার এপু সল, ২০৩১১ কর্ণভ্রালিস খ্রীট, কলিকাভা। মৃল্য—২।•

এই প্রন্থে ঈশ, কেন. কঠ এই তিনধানি প্রাস্থিত উপনিষদের সংগ্রন্থ সাল বাংলা অকরে মুদ্রিত উইরাছে এবং শঙ্কর ও রামামুজ্যের মতামুসারে ইচাদের ব্যাধ্যার সংক্ষিপ্ত সার বাংলা ভাষার উপনিষদ্ধ ইইরাছে। মারে মারে মধ্রাচার্য্যের মতও প্রাথশিত ইইরাছে। ছানে ছানে রামামুজ্যের ব্যাধ্যার আকর নির্দিষ্ট ইইরাছে—কান্ প্রত্থে কোন প্রসঙ্গে রামামুজ্য উপনিষদের আলোচ্য অংশ ব্যাধ্যা করিরাছেন ভাষা বিবৃত্ত ইইরাছে। সর্ব্র এইরূপ না করার হেডু বুঝা বার না। বাহা ইউক, উপনিষদের ভাৎপর্ব্য সম্বন্ধে বিভিন্ন সম্প্রদার থে বিভিন্ন মত পোষণ করেন সাধারণ ভাবে ভাষা ব্রিবার পক্ষে এই প্রন্থ সহারক ইইবে। বিশেষতঃ বাংলা ভাষার মধ্য দিয়া উপনিষদের বামামুস্তী ব্যাধ্যার স্বতন্ত্র পরিচর দিয়া প্রস্থান্য বাহালী পাঠকের আশ্বরিক কুম্বন্তা অর্জন করিবেন।

ঞ্জীচিম্ভাহরণ চক্রবর্ত্তী

"অপমানিতা মানবী"—ইভিয়ান জ্যাসোসিটেড পাৰ-লিনিং কোং। ৮ সি রখানাথ মজুমদার ব্লীট। পৃ. সংখ্যা ২০১, মূল্য—৩

ৰুগধৰ্ষের বশে মেরেদের মনও যে আত্মপ্রভিষ্ঠার ত্রন্থ চক্ষণ হইরা উঠিয়াছে এ কথা অধীকার করা বার না, আর এটা অবাতা-বিকও নর; কিন্তু দেশ বা সমাজ এব ত্রন্থ প্রবৃত্ত হইরা না ওঠার, এখনও এই আত্মপ্রতিষ্ঠার চেষ্টার পদে পদে বিশ্ব। শিক্ষিতা ব্যক্তী কল্পনায় জীবনের মধ্যে দেখিকা এই জিনিবটি ফুটাইরা ভূলিবাৰ টেটা কৰিবাছেন। পদে পদে বাধাৰ সন্থান হইবাৰ
মত ভেজৰিতা কলনাৰ চৰিত্ৰে আছে, কিছ এক এক জাৰপাৰ
উহাৰ উপ্ৰতা এবং পূক্ৰ সম্বন্ধ একটা চ্যালেক্ষেৰ ভাব দেখিবা
মনে হয় পূক্ৰেৰ প্ৰতি বিষেষবদেই লেখিকা এই চৰিলটি স্ফী
ক্ষিরাছেন। কলনাৰ আপিস-জীবনে ভাহাৰ চাৰি দিক্ষে বে বক্ষ পূক্ৰের সমাবেশ কৰিবাছেন এবং ভাহাদেৰ ব্যবহাৰে বা ভাল এবং
আইবে বা ভাবা দিবাছেন ভাহাতে এই ধাৰণাই মনে বছমূল হয়।

লৈখিক। একটা সমস্তা সইরা উপভাসটি লিখিরাছেন নিশ্ব !
কিন্তু মনের সেই নিরপেক্ষভাটুকু বকা করিছে পারেন নাই—
যাহাতে সমাধানের একটা আদর্শ রূপ ধরিরা দিতে পারেন।
এ ধরণের উপন্যাস নিজের উক্তেক্ত ব্যর্থ হইরা পড়ে, পাঠকের
মনে ভিক্তভা ভাগার মাত্র।

বচনার দিক দিয়া বইটি ভাগ হইরাছে; ভাষা স্বচ্ছ, চিন্তারও মৌলিকভা আছে; বিচারের নিরপেকভা থাকিলে লেখিকার কাছে ভাল জিনিব পাইব বলিয়াই আশা হয়।

#### জ্রীবিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

যাঁরা ছিলেন মহীয়সী :—ডা: এইপেক্সনাথ ভটাচার্য্য, এম-এ, পিএইচ-ডি। বুন্দাবন ধর এও সন্স নিমিটেড, আতভোব লাইবেরী। ৫ নং কলেজ খোরার, কলিকাডা। মূল্য—১৮০।

আমাদের দেশের নারীকাতি ইছে। করিলে সংসারের, তথা
সমাজের কড বে উপকার তাঁদের হোট বড় নানা কাজের হারা,
নিঃশক্ষে করিতে পারেন তাহারই করেকটি কাহিনী পুস্কথানিতে
হান পাইরাছে। সারদা ঠাককণ, দরবারী বৌ, চৌধুরীদের হোট
বৌ এবং হোড়দি এই চারিটি কাহিনীতে পুস্কথানি সমান্ত।
কাহিনীগুলির মধ্যে একটি বোগগুত্র আছে, কিছু এদের প্রকাশ
ঘটিয়াছে বিভিন্ন পরিবেশে। লেখকের সহজ ভাবা স্বাভাবিক
ঘটনা-প্রবাহের সৃহিত চম্বকার খাপ খাইরাছে।

#### ঐবিভৃতিভূবণ গুপ্ত

মাদাম বোভারি—( এখন খণ্ড) গুণ্ডাভ ক্লবেরার—জন্ব-বাদক: বীশীভাগ্ডে নৈত্র এম-এ। ইভিয়ান এসোসিরেটেড গাবলিশিং কোং লিঃ। ৮ নি, রবানাথ সকুববার ট্রাট, কলিকাভা। বুলা ভিন টাকা

ভতাক দ্বৰেয়াৰ ক্যাসী সাহিত্যের একজন বিক্পাল। তাঁহার যাঘাব বোভারি ওধু ক্যাসী-সাহিত্যের নর, বিব-সাহিত্যের একথানি ত্রেষ্ঠ আবচ কুথাও প্রস্থা। এই পৃথকের সজে একট ইতিহাস করিত আছে। প্রায় এক শভালী পূর্বে পৃথকেবানি বধন প্রথম প্রকাশিত হয় তথন ইহাতে ব্যক্তিচারের প্রয়োচনার পরিচর পাইরা ক্যাসী রাষ্ট্রের কর্তৃপক্ষ বিচলিত হুইয়া উঠেন এবং সামাজিক অপরাধের কল্প দ্রবারিকে শান্তি দিবার আয়োলন করেন, কিন্তু শেন পর্যান্ত প্রমাণিত হয়, বে-সনাকের ছবি তিনি আক্রিয়াহেন ভালা বিছক তাঁহার কল্পনার প্রটি নহে, আদ্রান্ত ক্যাসীনের সমাল-লীবনই তথন তলে তলে ব্যক্তিয়ে পরিপূর্ব হুইয়া উটোলছিল—সমাকের নয়নারী তথন প্রযুক্তির নাল আল্যা করিয়া দিয়া ছুবাঁতির প্রোতে গা ভাসাইয়া দিয়াছিল। 'বালাব বোভারি'তে সেই উন্মার্গনাবী সমাক্রের চিন্তই হবছ ক্লানিত হুইয়া উট্টয়াহে যান্ত্র ৷ ব্যক্তিচারের মুনীলিও হুইলেও ইহা ভ্যানীত ক্যাসী-সমাক্রের সভাচিত্র !

ভাজার চার্লাস বোভারির পত্নী, সন্তানবতা বাদার বোভারির অবৈধ অবরসীলার কাহিনীই এই উপভাসের চৌদ্দ আনা কুড়িরা আহে। খানীয় এতি অনমুদ্ধক এবা এখনে আসক হইল লেও-এর এতি, তার পর নে আলুসমর্পণ করিল বাভিচারী ক্লক্ষ্-কে--বাছার কাছে প্রেম বাবে (परकायना । এই एर्ट्स्प (धनिक अक्षिम अवारक कैकि विदा ननारेता গেল। এই অতি সাধারণ বিষয়বন্ধকে ক্লবেয়ার এখনি শিক্ষয়বনায় যভিত করিয়া প্রকাশ করিয়াছেন বে, তাহা পাঠককে রুমকিত করে। নিস্পৃচিত্রণ আৰু এবার রূপবর্ণনার জারগাঞ্জলি অনবত্ত--পড়িতে গভ-কাৰোর যত লাগে। আর একটি বিষয় লক্ষ্মীর ভাহা এই যে, যাদায বোভারিতে ব্যভিচারের কথা আহে সতা, কিছ তথাক্ষিত অন্নীলভা नारे बनित्नरे छत्न। এ विवतः क्रायबाब चनावात्रन नत्वत्वत्र अविष्ठत বিরাছেন। অর্থা করাসী সাহিত্যে অরীলভার একেবারে ছড়াছড়ি। वांभाग 'ते The Window भक्त व वदर्गत प्रज्ञीन वर्गना चार्क वांध হয় তাহার তুলনা সচয়াচর বেলে না। ইহার উপর সরকারের নেকনজর পড়ে নাই, অথচ 'মাদাম বোভারি'কে রাজরোবে পড়িতে হইয়াছিল, ইহা ভাষিলে আশ্চৰ্য্য লাগে। নগ্ন সভ্যের প্রকাশেই কি ভদানীশ্বন অচলায়তন রাষ্ট্রের ভিৎ নড়িয়া উটিয়াছিল। শীতাংশু বাবুর অনুবাস পতন্ত বসস্টি হিসাবে সার্থক হইরাছে। এ অসুধাদ 'বাচায বোভারি'কে গাউনের বছলে শাড়ী পরানো ভাতীর ব্যাপার নছে, এই উপক্তাদের নারিকাকে ডিনি নব বৃত্তিতে গড়িরা তাহাতে আপএছিঠা कक्रिक मधर्ष स्टेशास्त्र ।

প্রত্রত্ন বিজ্ঞান বা রত্ন-সমীক্ষা— শ্রানেজনাথ শারী। ভারত-সাহিত্তবন। ২০০২ কর্তিরালিশ ব্লট, কলিকাতা। বুলা চারি টাকা।

জ্যোতিব শারে অগুরু এইকে প্রদের কারবার মন্ত, এইপুরা এবং বিশেষ ভাবে সরীকাপুর্বাক ও শোধনান্তর এইবছারি ধারণের বিধি আহে। জ্যোতিব বেলের অল। এই-রত্ন-সমীকার কথা ধর্মের পাওরা নার। বধা—অধাতঃ এই-রত্ন সমীকার্ক্রবিভাবঃ। ধক্ ১)১)১)— অর্থাং 'অনন্তর এইবড় সমীকা বিবরে বধাক্রমে বর্ণনা করা ইইতেই।'

## প্রকাশিত হইরাছে প্রথিভয়না দেখিলা জীনাভা দেখার ভারত-মুক্তিসাধক মানিক সেটালাগ্রা

# অৰ্দ্ধ শতাব্দীর বাংলা

বাংলার সাংশ্বতিক আন্দোলনের পটভূষিকার বঞ্চয়ন বুলের অক্সন্তর প্রেট মনীবার জীবনায়নের হৃষিপুন বর্ণন ও বিজেবন।

প্রবাসার আকারে বহু পৃঠার সম্পূর্ণ, এক চিত্রশোভিত, বাংলা-সাহিতে: অভিনব কাবনচরিত। ইহা একাবারে মনীবা রাবানন্দ চট্টাপাথারের কাবনী এবং সমসাময়িক বাংলার সাংস্কৃতিক প্রধৃতির ইতিহাস। বিশ্বত পঞ্চাল বংসরের বাংলার সাহিত্যিক, রাক্টবৈভিক ও সামাজিক ইত্যাধি বাবতীয় আন্দোলনের প্রকৃত বরুগ উপলব্ধি ক্রিতে হুইলে এই পৃত্তক্বানি অপরিহার্বা।

মুল্য ছয় টাকা মাত্র

প্রবাসী কার্য্যালর ১২০া২, আগার সার্গার রোঙ, কলিকাডা। রহবালে যে বিরন্ধানক অবর্কা ব্যাক্ত জাবা উলিনিত আহে। ববা:নেবৈক্তিক ববিনা অনিতেন মরোভুবা। বিকক্ত স্বর্ধা মুক্তানি বালানে
স্থানতে। অবর্কা হাসারান। লাভকের লক্ষ্তনীতে কোনো এব ববি
নাচর, পাপুবুক পাপদীভিত অবরা পাপান্ট বর তবে জাহা অওক কলের
উপান্তি করিয়া আহে। জ্যোতিবিন্তবা বলের বে, এব্রয়াবি বারণ
করিলে উক্ত এব্লোবের বঙ্গন হুইরা স্থাসোভাগ্য বৃদ্ধি পার। এব্রয়াবি বারণ
করিলে উক্ত এব্লোবের বঙ্গন হুইরা স্থাসাভাগ্য বৃদ্ধি পার। এব্রয়াবি বারণ
আক্ত-নাশালারিভার বাঁহাসের আহা আহে তাঁহারা এব্রয়বিজ্ঞান একবানি নিজ্য ব্যবহার পঞ্জিকার মত সক্রে রাখিলে বিশেব ভগত্বত ইবেন।
কিন্ত ইহাকে ওপু এব্রয়েয়র প্রশাবিদ্দান একবানি পুরুক্ত বালিরা বনে
করিলে ভুল করা ইইবে। ইয়াকে প্রস্কারনে নিগুচ ধাশনিক ওবের
বিশাবনুলালোচনা নিগিবক ব্রয়াকে। সর্বধার্মাসার্ম্য প্রস্কার বাঁর
বন্ধবা সমর্থনকরে কেন্ট উপনিবদ দীতা বন্ধবর্ণন, মনু সংহিতা, জ্যোতিবশাল্ল, এবন কি চলক ক্রান্তত ভব্তিতও ভূরি ভূরি বচন উন্ধ ও করিরাহেন—
উল্লেখন শাল্লব্যাথানেকোশসভ অপুর্বা।

চক্ৰথারী---গ্রন্থান্ত নেন। বুক টাভে, ১০১১এ, বছিন চ্যাটাজি ইট, কলিকাতা। মূল্য চারি টাকা।

আলোচ্য ট উপভাস্থানি ভারতের গণ-অভ্যুথানকে কেন্দ্র করিয়া রচিত। লেখক এই কাহিনীটকে দুটাইরা তুলিরান্দ্রন বাঙ্থব ও ঐতিহানিক ঘটনার পটকুরিকার। ১৯৪২ এর আগাই আব্দোলনকে উপলক্ষ্য করিয়া কাহিনীর পচনা, আর ১৯৪২ এ আগার হিন্দু কোন্দ্রের বলী অহিন্দ্রার্থির ক্রি-আব্দোলন উপলক্ষেত্র আগার হিন্দু কোন্দ্রের বৃদ্ধি-আব্দোলন উপলক্ষেত্র আগার হিন্দু কার্য্য বিদ্যালয় বিশ্বার বিশ্বার আগার বিশ্বার বিশ্বার আগার বিশ্বার বিশ্বা

বিশ্বা দে হইল পলাভক। ভাগ পদ এক খ্যাকের সলে সংগ্রিট হইলা সে इसनाम बाधातानम कतिया बहिन-व्यक्तिण त्योगानिमीय मदन हरेलं पार्श्व विटक्षर । मुख्य नविद्यरमध् मुख्य किटकरक क्षेत्र वाल्याहेम् अहेराख মত প্রাণ্ডণ ডেটা করিয়াও সে বার্ব হইল । তথাজায়িত বহিন্য যত ভার অন্তরের আওরের হ'একটি কৃষিক অসভর্ক মুদ্রর্যে বাহিবে হিটকাইবা পভিষা আচনকা ভার সহক্ষীদের চনক লাগাইয়া বিভ। শেব প্রীয় সে সেই কুত্র শহরত্ব বিক্তির আরাহের আতার হাডিয়া কলিকাডার 🔀 আনিয়া অথত্যানিত ভাবে জানিতে পাঞ্জি বে, ভাহার উপর হইতে প্রেক্তারী পরোরাধা প্রভাকত হইরাছে। কাহিনীর কঠোবোট নোটা-मृति करें। व्योगक्षत्र क्रिया कारणारे मुक्तिराय, यक्षा क्रम क्रम क्रियाय त्या ভাহা বেন কার সবস্ত চরিত্রকে আক্ষর করিয়া রাখিয়াছে। সৌধানিনীর षुष्ठ बांचमर्याषांग्राया ७ व्यन्त प्रमध्यम मनस्य मूद्र स्टा, किंद्र स्वीतस्य ভাহার জীবনের একটা অধ্যায়ের সঙ্গে পড়িত না করিলে কোনই ক্ষতি হইত না। 'পিশিষাকে' লেখক শেবের কবিভার যাসির ছ'iচে পড়িডে शिवा वार्ष रहेवांट्य । शार्षात्रित्वत्र मत्या मिः वात्यत्र हतिवाहि व्यवः পরিসরের মধ্যে ক্কীয় বৈশিষ্টো বেল কুটিয়া উটিয়াছে।

উপভাসধানি একচু অচারগড়ী এবং কারগার কারগার সংলাপ অভি
বীর্য এবং বঞ্চাভারাক্রান্ত হটরাছে। ইবার এধান এব এই বে, করা
সভা ভাবালুতার আবিল হচরা উঠে নাক, ভাবুকভার চপভোগা হচরাছে।
ভারতের তেলিশ কোটি নরনাবীর বধা হইতে চক্ধারী প্রশংঘতার বে
বিরাট অলুম্থান ব্লভেছে ভাঁছার র্থচক্রের ধ্বর-ধ্যনি বেন এই উপভাসের
ঘটনা-অবাব্যের মধ্যে সুস্পাই লোনা বার।

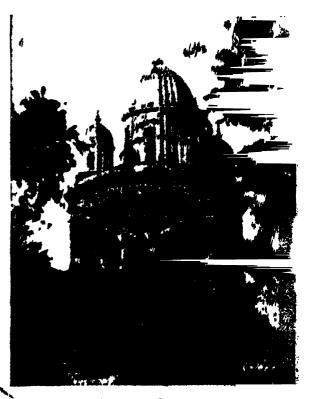
শ্রীনলিনাকুমার ভদ

### (मन-विरम्धन कथा

#### বাঁকুড়ার আকৃই গ্রামে প্রীপ্রীরাধাকান্ত জীউর প্রীমন্দির

বাঁকুড়া খেলার আকৃই প্রানের পক্ষত্ন নশিরট বাংলার হাণড্য-শিরের একট প্রের্ড নিবর্ণন। উভ্য নশিরণাত্রে সংলগ্ধ প্রকাশি প্রভাব প্রাচীন বলাভারে উৎকীর্ণ ভারক পংজি লেব হুটে জানিতে পারা বার বে, ১৭৬১ প্রীপ্রতার এই নশিরের নির্মাণড়ার্য্য আরম্ভ হর এবং তিন বংসরে শেব হর। বাঁকুড়া জেলার অন্তর্কত আকৃই প্রানের বজিব পাড়ার রায়-বংশের পূর্ব-পূক্ষর প্রকাশির বার বহাবার ইহার প্রতিষ্ঠাতা। উহা বর্তনানা-বিশতি নহারাজা জিলোড্টার (ভিলক্টার) বাহারবের অনিহারীজ্জ ছিল। কেবলেরা নির্মাহের অভ নহারাজা বে কেবোডর নশ্যতি বান করিরাহিলেন ভাহার পরিনাণ ২৫০/০ বিশা।

শ্রীবান বুলাবনের স্থাবিদ্যাত শ্রীকীবদোবানী প্রতিষ্ঠত শ্রীক্রাবা বানোবর কঠিন লেবাইভগবের সহিত আকুই প্রানের বাধ-পরিবারের অলমিত সহত। এই বলিয়ে যে বিপ্রত চকুইর (শ্রীক্রাবাকাত কঠি, শ্রীকতী রাবারাই, শ্রীক্রাবাকাত কঠি ও শ্রীক্রাবা বানোবর কঠি ) বিরাজিত আহেন ও বিত্য প্রতিত হল উহারাও শ্রীবান বুলাবন কঠিলে শ্রীক্রাকীত। মেতা ও বাপর স্থাবের পৌরাধিক কাহিনী অর্থনিকর প্রতিরাধিক কাহিনী অর্থনিকর প্রতিরাধিক কাহিনী প্রতিরাধিক বার্থনিকর বার্থনিকর বার্থনিকর প্রতিরাধিক প্রতিরাধিক কাহিনী প্রতিরাধিক বার্থনিকর বার্থনিকর প্রতিরাধিকর প্রতিরাধিক



विवासकांच क्षेत्र मनिव